असमिया

माधव कन्दली रामायण

अनुवादक एवं लिप्यन्तरणकार

नवारुण वर्मा

प्रकाशक

भुवन वाणी ट्रस्ट

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चोपटियाँ रोड, लखनऊ-२२६००३

प्रथम संस्करण—

१९७९ ई०

पृष्ठसंख्या—९४३

मूल्य— ६०·०० रुपया

मुद्रक —

वाणी प्रेस

'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ- २२६००३

प्रकाशकीय परिशिष्ट

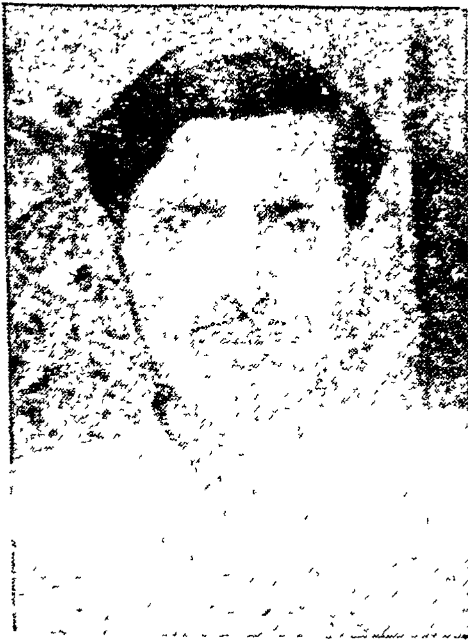
कामरूप अञ्चल में प्रवहित मञ्जु असमिया धारा।
पहन नागरी-पट उसने भी भूतल-भ्रमण विचारा॥

विषय-प्रवेश

असमिया भाषा के सुमधुर काव्य "माधव कन्दली रामायण" का हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण सन् १९७१ ई० में आरम्भ हुआ था। भुवन वाणी ट्रस्ट का विविध भाषाई सानुवाद लिप्यन्तरण कार्य जिस जोश के साथ आरम्भ हुआ, और जिस तीव्रगति से इतने विशाल पैमाने पर अब तक कार्य हुआ है, उसको देखते 'माधव कन्दली रामायण' की पूर्ति में सचमुच बड़ा विलम्ब हुआ। यह ग्रन्थ वर्ष ७९-८० में लगभग दस वर्ष बाद अब पूर्ण हो सका है।

भुवन वाणी ट्रस्ट की विद्वत्-परिषद् के बंगला भाषा के विद्वान् श्री प्रबोध मजुमदार महोदय इस कार्य को कर रहे थे। असमिया भाषा के विद्वानों से तब तक हमारा सम्पर्क नहीं हो पाया था। श्री मजुमदार ने समग्र आदिकाण्ड और अयोध्याकाण्ड का अति सामान्य अंश पूरा करने के उपरान्त कई अनिवार्य कारणों से असमिया के कार्य से अपना योगदान हटा लिया। इस प्रकार विवश होकर 'माधव कन्दली' का प्रकाशन रुक गया।

कुछ वर्षों बाद सौभाग्य से, खारगुली, गुवाहाटी (असम) के तरुण और श्रमजीवी साहित्यकार श्री नवारुण वर्मा से सम्पर्क स्थापित हुआ। भुवन वाणी ट्रस्ट से विद्वानों को कोई उल्लेखनीय पारिश्रमिक तो मिलता नहीं। यथाशक्य पत्र-पुष्प पर राष्ट्रसेवी विद्वान् इस वाणी-यज्ञ में हविर्दान करते हैं। ट्रस्ट के पुनीत उद्देश्य और विशद उत्पादन से मुग्ध होकर श्री नवारुण वर्मा ने माधव कन्दली का अयोध्याकाण्ड से अन्त तक सानुवाद लिप्यन्तरण, अपनी दैनिक जीविका निर्वाह करते हुए, बड़ी लगन और तुष्टि के साथ सम्पन्न किया। इस बीच जब कभी हमने उनको रुपया भेजने की अनुमति चाही, तब प्रायः मौन, उन्होंने यह लिखा कि 'उसको जमा रखिये; उसका सदुपयोग, कार्य सम्पन्न हो जाने के उपरान्त, मैं अपने एक काव्य-संग्रह के प्रकाशन में करूँगा, तब लेना समुचित होगा।'



श्री नवारुण वर्मा
खारगुली, गौहाटी (असम)

सरस्वती के उपासक, मध्यम श्रेणी के श्रमशील कर्मठ विद्वानों की ज्योति श्री वर्मा में जाज्वल्यमान है। आज ग्रन्थ पूरा हुआ। हम सम्मान के साथ उनके प्रति आभार प्रकट करते हैं। श्री वर्मा ने ट्रस्ट के लिए एक और कार्य हाथ में लिया है। श्री नवारुण वर्मा का चित्र भी हम पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर रहे है; यह चित्र बड़े आग्रह करने पर, उन्होंने भेजना स्वीकार किया।

आभार प्रदर्शन

जहाँ तक ग्रन्थ-परिचय की बात है, पृष्ठ ९ पर प्रकाशनारम्भ के समय दिया गया प्रकाशकीय दृष्टव्य है। अन्य भाषाई ग्रन्थों के साथ यह असमिया का श्रेष्ठ ग्रन्थ, भुवन वाणी ट्रस्ट के सीमित साधनों में, उदार सदाशयों, विद्वानों, एवं उत्तरप्रदेश शासन से प्राप्त सहायता से सहज सामान्य गति से शनैः शनैः छप रहा था। इसी बीच शिक्षा तथा समाज कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार की कृपा हुई। उनकी सहायता से वर्ष १९७९-८० ई० में यह ग्रन्थ पूर्ण होकर राष्ट्र के सम्मुख प्रस्तुत हो रहा है। हम उनके प्रति अतिशय अनुग्रहीत हैं। अपनी निजी लिपि में, असम प्रदेश में लोकप्रिय यह अद्भुत रामायण ग्रन्थ नागरी कलेवर मे अब सारे राष्ट्र का मन रञ्जन करेगा।

असमिया वर्णमाला

कुछ चर्चा असमिया लिपि और उसके नागरी लिप्यन्तरण के सम्बन्ध में भी आवश्यक है। असमिया, बँगला और नागरी लिपि की वर्णाक्षरी समान है। स्वर-व्यञ्जन एक ही हैं, अतः अन्य अनेक भारतीय भाषाओं के अनुरूप इस असमिया काव्य के नागरी लिप्यन्तरण में हमको किसी अक्षर-विशेष को गढ़ना नहीं पड़ा। प्रचलित नागरी वर्णमाला ही इस कार्य के लिए पर्याप्त रही।

असमिया और बंगला के अक्षरों का लेखन-स्वरूप भी प्रायः एक ही है। बँगला में अक्षर कुछ नुकीले, और असमिया में वे ही कुछ गोलाई लेकर लिखे जाते है। यदि असमिया और बँगला लिपि व, ब और र को अदल-बदल कर परस्पर एक रूप में स्वीकार कर ले तो फिर बंगला में व और ब जो एक ही समान लिखे जाते हैं, उनको उच्चारण करते समय पृथक् व्यक्त करने में कठिनाई का निवारण हो सकता है। व, ब और र, ये तीन अक्षर विना भ्रम लिखे और पहचाने जा सकते हैं। असमिया-देवनागरी वर्णमाला चार्ट पृष्ठ—४ पर अवलोकनीय है।

ध्वनि-विन्यास

असमिया, बँगला और ओड़िया भाषा में, यजयोः, वबयोः सूत्रों के अनुसार य और व का प्रायः ज और ब उच्चारण करते हैं। यदि को जदि; सूर्य्य को सूज्र्ज; वसुधा को बसुधा। इस भाँति ज और ब के वर्ग्य और अवर्ग्य ये दो प्रकार हैं। किन्तु असमिया में और भी ध्वनि-वैचित्र्य हैं:—

वर्ण-लेखन	उच्चारण	शब्द-लेखन	उच्चारण
च, ण	स, न	चरम, चर्चा, चरण	सरम, सर्सा, सरन
छ	स	छवाल, छल	सवाल, सल
य (शब्दारम्भ में)	ज	यम, काय, कार्य्य	जम, काज, काज्र्ज
व ,, ,,	ब	वर्ण	बर्न
श, ष, स	ख, ह़	शशि, आदेश	ह़ह़ि, आदेख
		विषय, विष, पुरुष	बिखय, बिख, पुरुख
स और ह के बीच का		सिंह, सीता	ह़िह, ह़ीता

संयुक्त प्रयोग होने पर श, ष, स का उच्चारण हिन्दी ही की भाँति होता है यथा :— विश्वास बिश्वाख
स्वर्ग स्वर्ग

सारांश यह कि असमिया भाषा में, उपर्युक्त प्रयोगों में लेखन तो हिन्दी के समान होगा किन्तु उच्चारण असम देश की प्रकृति के समान; लिखेंगे शशि, असम, गोसाईं, और उच्चारण करेंगे ह़ह़ि, अह़म, और गोह़ाईं। हमारा प्रयोजन लिप्यन्तरण से है; जो असमिया में जैसा लिखा है, तद्वत् नागरी लिपि में लिख देना। अब यह पढ़नेवाले की रुचि है और उसके लिए दोनों मार्ग खुले हैं कि चाहे हिन्दी उच्चारण अपनाये अथवा असमिया उच्चारण।

साहित्य अकादमी, दिल्ली इसी प्रयोग में भ्रमित हो गई है। रवीन्द्र साहित्य के नागरी लिप्यन्तरण में उन्होंने उच्चारणान्तरण प्रयुक्त कर लिया है। जल को जोल, एक का ऐक, सूर्य्य को सूज्र्ज है, जो बँगला अथवा हिन्दी दोनों के लेखन के अनुरूप नहीं हैं।

अन्त में भाषाविद् मनीषियों की दृष्टि एक नये संकेत की ओर हम ला रहे है। भारत के पश्चिम, ईरान में असुर को अहुर, सप्ताह को हफ़्तः बोलते हैं। फिर बीच में कई देशों के भूखण्ड इस प्रयोग से रिक्त हैं, और सुदूर पूर्व में असम में पुनः स का ह में उच्चारण मिल रहा है। क्या यह संकेत किसी समय सर्वाञ्चल में एक ही प्रयोग की ओर नही है ?

और ह, ह़ के दो भिन्न उच्चारण क्या सामी कुल के छोटी और बड़ी हे, ह़ के प्रतिनिधि तो नहीं हैं? इसी प्रकार ह़ और ख का प्रयोग सामी कुल के ह़ और खे के प्रतिनिधि तो नहीं हैं?

असमिया-देवनागरी वर्णमाला

অ अ	আ आ	ই इ	ঈ ई	উ उ
ঊ ऊ	ঋ ऋ	ঌ ऌ	এ ए	ঐ ऐ
ও ओ	ঔ औ	অং अं	অঃ अः	
ক क	খ ख	গ ग	ঘ घ	ঙ ङ
চ च	ছ छ	জ ज	ঝ झ	ঞ ञ
ট ट	ঠ ठ	ড ड	ঢ ढ	ণ ण
ত त	থ थ	দ द	ধ ध	ন न
প प	ফ फ	ব ब	ভ भ	ম म
য य	ৰ र	ল ल	ৱ व	শ श
ষ ष	স स	হ ह	ক্ষ क्ष	জ্ঞ ज्ञ
শ্র श्र	ড় ड़	[illegible]	ৎ त्	য় य

एक बात और उल्लेखनीय है कि चान्दपुर, चटगाँव की यात्रा में पूर्वी बंगाल में ग़, ख़, ज़ आदि का भी उच्चारण बंगला भाषा में करते, मैंने सुना है। क्या असमिया और बंगला के यह उच्चारण यह संकेत नहीं करते कि सामी, आर्य, और द्रविळ आदि कुलों का पार्थक्य हम लोगों की बाद की खोज है? किसी समय यह सब एक उच्चारण और एक भाषा के अभ्यस्त थे; केवल जलवायु से प्रभावित होकर उनके प्रयत्न मात्र कालान्तर मे कुछ भिन्न हुए।

इन पंक्तियों के बाद हम उदार पाठकों से प्रार्थना करते हैं कि असमिया के इस मधुर काव्य का रसास्वादन करें।

—नन्दकुमार अवस्थी

प्रतिष्ठाता, भुवन वाणी ट्रस्ट

विषय-सूची

अरण्यकाण्ड ३३०—४२२

किष्किन्धाकाण्ड ४२३—४९८

सुन्दरकाण्ड ४९९—६०३

लंकाकाण्ड ६०४—८४३

माधव कन्दली रामायण

(प्रकाशकीय)

कहा जाता है कि भारत की प्रादेशिक आर्य भाषाओं में प्रकाशित रामायणों में माधव कन्दली कृत असमिया रामायण सर्वप्रथम विरचित हुई। जब कि तुलसीदास ने 'राम चरित मानस' की रचना सोलहवी सदी के अन्त में की, कृत्तिवास ने बंगला भापा में रामायण की रचना पन्द्रहवीं सदी में की, माधव कन्दली ने उससे सौ वर्ष पूर्व चौदहवी सदी में अपनी असमिया भापा में रामायण की रचना की। जयन्तपुर के कछारी राजा महामाणिक्य के आदेश से माधव कन्दली ने इस रामायण की रचना की। दावा किया जाता है कि गोस्वामी तुलसीदास और पंडित कृत्तिवास ओझा वाल्मीकि-रचित रामायण से काफी दूर हट गये हैं, और माधव कन्दली वाल्मीकि कृत रामायण की विपयवस्तु से अधिक विश्तस्त रहे। इन्होंने इसमें कुछ स्थानीय रंग भी चढ़ाया है जिससे यह असमिया लोगों के निकट अनन्यतम ग्रन्थ बन गया।

माधव-कन्दली-प्रणीत रामायण में आदि तथा उत्तरकाण्ड उपलब्ध नहीं है। कहा जाता है, किसी उथल-पुथल में ये दो काण्ड नष्ट हो गये। इनके एक शती पश्चात् शंकर देव ने स्वयं उत्तर तथा अपने शिष्य माधव देव से आदि काण्ड की रचना करवाई। इस प्रकार प्रस्तुत 'माधव कन्दली रामायण' सात काण्डों में लोकविख्यात हुई। माधव कन्दली की कृति प्राचीन असमिया साहित्य का गौरव है—यह रामायण और इसके प्रणेता भी। भापा, शैली, छन्द, लय, घटनाओं के अविकल वर्णन और चरित्र-चित्रण में माधव कन्दली अद्वितीय हैं।

'माधव कन्दली रामायण' को भक्ति-काव्य की अपेक्षा इतिहास-ग्रंथ ही कहना अधिक ठीक होगा। एक वात उल्लेखनीय यह भी है कि माधव कन्दली तथा अन्य असमिया रामायणों में राम के लिए कृष्ण, हरि आदि शब्द भी प्रयुक्त है। असम-बंगला के वैष्णवों की अपार कृष्ण-भक्ति ही इसका आधार है। राम के रूप में भी कृष्ण का गान करने से नही थके हैं।

पाठकवृन्द हिन्दी गद्यानुवाद का आधार लेते हुए इस ललित असमिया काव्य का अव रसास्वादन लें।

श्रीराम-पञ्चायतन



श्री कृष्णाय नमः

आर्य भाषाओं में प्राचीनतम

माधव कन्दली कृत

सप्तकाण्ड रामायण

आदिकाण्ड

रामाय रामचन्द्राय रामभद्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ।।

वन्दना

जय जय कृष्ण देव दैवकीनन्दन * ब्रह्मा हरे करे यार चरणे वन्दन
आति अन्त्य जाति तरे यार लैले नाम * हेन कृष्ण पदे करो सदाय प्रणाम १
नमो नमो राम रघुकुलर कमल * करियो प्रकाश निज यश सुनिर्मल
पूरिलाहा यिटो जगतर मनकाम * हेन रामपदे करो सदाय प्रणाम २
एके ब्रह्म आसि चारि मूर्त्ति अवतरि * हरिला भूमिर भार राक्षस संहरि
ब्रह्मा आदि देवर साधिला प्रयोजन * प्रणामो सादरे हेन रामर चरण ३

देवकीनन्दन श्रीकृष्णदेव की जय हो जिनके चरणों की वन्दना ब्रह्मा और शिव किया करते हैं। जिनका नाम लेने से निम्न श्रेणी के लोग भी तर जाते हैं; ऐसे कृष्ण के चरणों में सदा नमन करो ।। १ ।। हे रघुकुल के कमल तुमको नमन है। अपना निर्मल यश स्वयं ही प्रगट करो। संसार की मनोकामना को जिन्होंने पूरा किया उन राम के चरणों में सदा प्रणाम करो ।। २ ।। एक ब्रह्म ने आकर चार मूर्त्तियों के रूप मे अवतार लिया और राक्षसों का वध कर भूमि का भार हरण किया। ब्रह्मा आदि देवताओं का प्रयोजन जिन्होंने सिद्ध किया ऐसे राम के चरणों में सादर प्रणाम करो ।। ३ ।। अपने गुरु के चरणों में नमस्कार कर माधव ने आदिकांड की सार-कथा

निज गुरु चरणत करि नमस्कार * रचिलो माधवे आद्य कांड कथा सार
आचरि मंगल गुण कीर्त्तन कृष्णर * कृष्णक स्मरणे सिद्ध हौक आरम्भर ४
वोलो कृतांजलि शुना सवे सभासद * महामूढ़ हुया करो रामायण पद
परम चंचल मइ अधमर दोष * क्षेमिवा सकले न करिवा असन्तोष ५
नाहिके कविता गुण नुहिको पंडित * तथापितो भैला पद करिवाक चित्त
महाभोग इच्छा येन हैल दरिद्रर * मइ अज्ञानीर जाना सेहि पटन्तर ६
जानि महाजने निन्दा न करिवा आत * करो हेरा मइ कृतांजलि प्रणिपात
जेइ सेइ विके जेन अमूल्य रतन * ताक वाछि आछे जाना कोन महाजन ७
मोर पद पटन्तर जेन हीन जाति * रामर चरित्रचय महारत्न आति
मोर पद जानि दोष करि परिहार * लैयो राम गुणमय महारत्न सार ८
तेवेसे कलित हैवा कृतार्थ सम्प्रति * रामकथा सुन अनायासे पाइवा गति
उत्तम मनुष्य जन्म न करियो वृथा * एकचित्त मने शुना रामायण कथा ९
महाऋषि वाल्मीकिर निर्म्मल हृदय * करिला लोकक महा कृपा कृपामय
रामकथा अमृतक करि महादान * साधिलन्त जगतर परम कल्याण १०
एकदिना वाल्मीकि उठिया प्रभातत * स्नान करिवाक प्रति गंगार वालत
शिष्य भरद्वाजक वुलिला ऋषिराज * सत्वरे लैयोक स्नान करिवार साज ११
शुनि भरद्वाज साज लैला तेतिक्षणे * स्नानिवाक चलिला समस्ते ऋषिगणे
स्नानिते लागिला ऋषि गंगार जलत * देखिलन्त क्रौंच पक्षी वृक्षर डालत १२
परम हरिषे पक्षी करय संगम * व्याधगोटे आनि पशिलेक येन यम

की रचना की। कृष्ण के गुण-कीर्त्तन का मंगलाचरण गाकर, कृष्ण के स्मरण से सिद्धि प्राप्त होगी (ऐसा सोचकर कथा का) आरम्भ किया जाय ॥ ४ ॥ ए सारे सभासदो, मैं हाथ जोड़ कर कहता हूँ, सुनो! महामूर्ख होते हुए भी मै रामायण के पदों की रचना कर रहा हूँ। मैं परम चचल हूँ—इस अधम के दोष को क्षमा करना और कोई भी असन्तोष न प्रगट करना ॥ ५ ॥ न तो मुझमे कवि के गुण है और न तो मैं विद्वान् हूँ—फिर भी मेरे मन मे पद रचना करने की इच्छा हुई। जिस प्रकार दरिद्र को महाभोग प्राप्त करने की इच्छा होती है उसी प्रकार मुझ जैसे अज्ञानी की भी इच्छा हुई है ॥ ६ ॥ जानता हूँ कि महाजन इस बात की निन्दा नहीं करेंगे—यही बात मैं हाथ जोड़ कर प्रणाम करते हुए कहूँगा। यह मानों जो-सो कोई भी अनमोल रत्न बेच रहा हो—उसको चुनने-परखने का काम किस महाजन को मालूम है ॥ ७ ॥ मेरे पदों की तुलना निम्न जनों के साथ की जा सकती है और राम का चरित्र मानो महारत्न के समान है। मेरे पदो को दोषपूर्ण जानकर चाहे उसका परिहार करो किन्तु गुणनिधि राम को महारत्न के समान ग्रहण करना ॥ ८ ॥ उसी से इस युग मे, कलिकाल में, कृतार्थ हो सकोगे। रामकथा सुनकर अनायास ही तुम्हे सद्गति मिल जायगी। मनुष्य का जन्म बड़ा उत्तम है. इसको व्यर्थ न जाने देना—एकचित्त होकर रामायण की कथा सुना करना ॥ ९ ॥ महाऋषि वाल्मीकि का हृदय बड़ा निर्मल था, उन्होंने संसार के लोगों पर बडी कृपा की। रामकथा के समान अमृत का दान कर कवि ने सारे संसार का बडा कल्याण किया ॥ १० ॥ एक दिन सवेरे उठ कर वाल्मीकि गंगास्नान करने चले। शिष्य भरद्वाज को बुलाकर ऋषिराज ने उनको शीघ्र नहाने का सामान ले चलने को कहा ॥ ११ ॥ सुनकर भरद्वाज ने स्नान करने का सामान ले लिया और सारे ऋषि स्नान करने के लिए चल पड़े। गंगा के जल मे ऋषि स्नान कर रहे थे कि उन्होने वृक्ष की डाली पर क्रौंच पक्षी को देखा ॥ १२ ॥ परम हर्ष से वह पक्षी

संगम समये दुष्टे पक्षीक हानिल * देखि वाल्मीकिर महा करुणा मिलिल १३
महाक्रोधे व्याधक बुलिला ऋषिराज * शुनरे अधम कि नो करिलि अकाज
संगम करिते पक्षी करिलि संहार * चिरकाल नरके पचिबि दुराचार १४
इहलोके दुर्यश थाकिन वर तोर * मोह हुया कर्म ताइ करिलि दुर्घोर
एहि बुलि मने ऋषि करन्त विषाद * अकस्माते आसि किनो देखिलो प्रमाद १५
स्नान करि जलहन्ते उठि तपोधन * शिष्य समे करिलन्त गृहक गमन
घरे आसि बसि मुनि गुणन्त मनत * केनमते वाक्य मोर बजाइल मुखत १६
चारि पद हुया मोर आसिल वचन * श्लोक नामे इहाके बुलियो सर्व्वजन
बाल्मीकिर मुखे भैल वचन उत्तम * श्लोक नामे कविता शुनन्ते मनोरम १७

'मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः
यत् क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ॥'

वाल्मीकिर आगत नारदर रामायण कथन

अनन्तरे ब्रह्मादेवे सेहि समयत * सर्व्वलोकेर हित तेवे चिन्तिया मनत
चराचर जगतर कुशल कारणे * रामरूपे अवतार हैवा नारायणे १८
वाल्मीकिर मुखे सेइ दिव्य कथामृत * श्लोकबन्धे कराओ सर्व्वजनत विदित
ताके शुनि भणि सुखे तरोक संसार * हेन मने गुणि ब्रह्मा करिलन्त सार १९
आछन्त वाल्मीकि चिन्ति पूर्व्व कथामृत * नारदे सहिते ब्रह्मा मिलिल तहित

संगम कर रहा था कि तभी यम के समान बहेलिया आ धमका। संगम के समय में ही उस दुष्ट ने उस पक्षी को मार डाला। यह देखकर वाल्मीकि के हृदय में बड़ी करुणा उपजी ॥ १३ ॥ क्रोधित होकर ऋषिराज ने व्याध से कहा, अरे नीच, सुन, तूने कितना बुरा कर्म किया। संगम करते हुए इस पक्षी का तूने वध किया। हे दुराचारी, तू अनन्तकाल तक नरक मे सड़ता रहेगा ॥ १४ ॥ इस लोक में तेरा बड़ा अपयश होगा, तुझको प्रमाद हुआ तभी तूने ऐसा घोर दुष्कर्म किया। इतना कह कर मुनि मन ही मन विषादमग्न हो गये कि अकस्मात ही यहाँ आकर ऐसा प्रमाद देखने को क्यों मिला ॥ १५ ॥ स्नान के उपरान्त वे तपोधन जल से बाहर निकल आये और शिष्य के साथ गृह चले गये। घर आकर मुनि मन ही मन विचार करने लगे कि मेरे मुख से ऐसा वाक्य कैसे निकल पड़ा ॥ १६ ॥ मेरा वाक्य चार पदों मे पूर्ण हुआ, सारे लोग इसी (शोकयुक्त छन्द) को श्लोक कहा करेंगे। वाल्मीकि के मुख से यह उत्तम वचन निकला जो कि श्लोक नामक छन्द है और सुनने में मनोरम है ॥ १७ ॥

'हे निषाद ! तुम्हें अनन्तकाल तक प्रतिष्ठा न प्राप्त हो, क्योंकि तुमने क्रौंच पक्षी के जोड़े में से काम-मोहित एक क्रौञ्च का वध कर दिया है।'

वाल्मीकि के निकट नारद का रामायण-कथन

उसी समय वैकुंठ में ब्रह्मा सारे लोक के हित मे चिन्तन-मनन कर रहे थे कि सारे चराचर-संसार के कुशल-मंगल के लिए स्वयं नारायण, राम के रूप मे अवतार लेंगे ॥ १८ ॥ वाल्मीकि के मुख से निकले वे अमृत के समान वाक्य—श्लोक के रूप में सारे लोगों में प्रसिद्ध कराओ। उसे पढ़कर और सुनकर तीनों लोक सुख प्राप्त करें,

देखिया वाल्मीकि ऋषि उठि तावक्षणे * सुवर्ण आसन आनि दिला रंगमने २०
नारदे सहिते ब्रह्मा बसिल तथात * करिला वाल्मीकि दुइरो पावे प्रणिपात
पाद्य अर्घ गन्धे धूपे पूजि महाऋषि * कृतांजलि हुया स्तुति बुलिला हरिषि २१
साम्फलिलो जन्म दुइरो देखिलो चरण * करियोक आज्ञा किवा साधो प्रयोजन
वाल्मीकिक ब्रह्मा पाचे बुलिला वचन * शुना महाऋषि मोर येन प्रयोजन २२
बुलिला वचन येन क्रौंचक वधिते * सेहिमते रामायण करा एकचिते
दशरथ नृपतिर गृहे अयोध्यात * श्रीराम स्वरूपे हरि जन्मिला साक्षात् २३
नारदर मुखे कथा शुनिवा सकले * पाचे रामायण करिवाहा कौतूहले
युगे युगे तोमार कविता प्रचारिन * ताके शुनि मणि लोके संसार तरिव २४
नारदक पाचे बुलिलन्त पितामह * रामर चरित्र किछु वाल्मीकित कह
एहि बुलि ब्रह्मा निजलोके गैला चलि * नारदत वाल्मीकि पुछिला कृतांजलि २५
केनमते रामायण करिवो आताइ * सिसव काहिनी सवे कहा मोर ठाइ
कोन कुले रामचन्द्र हैब्रा उतपन * कोन देशे कोन कर्म करिवा शोमन २६
केनमते हैवा राम कोन प्रयोजने * सिसव कारण तुमि जानाहा आपोने
बोलन्त नारदे शुनियोक महाऋषि * रामर चरित्रचय कहिवो हरिषि २७
हैवन्त इक्ष्वाकु नामे राजा अयोध्यात * दशरथ राजा सेहि कुले हैवा जात
तान गृहे विष्णु रामरूपे अवतरि * हरिवा भूमिर भार राक्षस संहरि २८

ब्रह्मा ने मन मे ऐसा सोचकर निश्चय कर लिया ॥ १९ ॥ वाल्मीकि (अपने मुख से निकले) अमृत समान वाक्य के विषय मे चिन्तन कर रहे थे कि इतने मे ही नारद के साथ ब्रह्मा वहाँ आ पहुँचे। उन्हे देखकर ऋषि वाल्मीकि उसी क्षण उठ कर खड़े हो गये और प्रसन्न मन से सोने का आसन लाकर दिया ॥ २० ॥ नारद के साथ ब्रह्मा उस पर बैठे। वाल्मीकि ने दोनो के चरणो की वन्दना की। महाऋषि ने पाद्य-अर्घ्य और गन्ध-धूप से उनकी पूजा की, फिर हाथ जोड़ कर हर्प से उनकी स्तुति करने लगे ॥ २१ ॥ आप दोनो के चरणों का दर्शन कर जन्म सफल हुआ। हे साधु, आप आज्ञा करे कि मैं आपकी किस आज्ञा का पालन करूँ। इसके पश्चात् ब्रह्मा ने वाल्मीकि से कहा, हे महर्पि ! सुनो मेरा प्रयोजन क्या है ॥ २२ ॥ जिस प्रकार का वाक्य तुमने क्रौंच-वध के समय कहा उसी प्रकार (के वाक्यो द्वारा) तुम एकचित्त होकर रामायण की रचना करो। अयोध्या मे राजा दशरथ के घर पर स्वयं नारायण, राम का रूप लेकर जन्म ग्रहण करेंगे ॥ २३ ॥ सारी बातें नारद के मुँह सुन लेना, और उसके अनन्तर कौतूहल से रामायण की रचना करना। युग-युग में तुम्हारी कविता प्रचारित होगी और उसी का पाठ कर और सुनकर लोग संसार (रूपी समुद्र) को पार कर जायेगे ॥ २४ ॥ इसके पश्चात् पितामह (ब्रह्मा) ने नारद से कहा, वाल्मीकि से राम के चरित्र के विपय मे कुछ वताओ। इतना कहकर ब्रह्मा अपने लोक चले गये। नारद से वाल्मीकि ने हाथ जोड़ कर पूछा ॥ २५ ॥ किस प्रकार से मैं रामायण का वृत्तांत लिखूँगा। वे सारी कथाएँ मेरे समक्ष वताइये। रामचन्द्र किस कुल में उत्पन्न होगे और किस देश मे कौन सा उत्तम कार्य करेंगे ॥ २६ ॥ किस प्रयोजन से राम किस प्रकार हो जायेगे, वे सारे कारण आप स्वय ही मुझे वताइये। नारद ने कहा, सुनो महर्पि, मैं तुमको राम का चरित्र सहर्ष सुनाता हूँ ॥ २७ ॥ अयोध्या में इक्ष्वाकु नाम का एक राजा होगा। उसी कुल मे दशरथ नामक एक राजा का जन्म होगा। उन्ही के गृह मे विष्णु, राम का अवतार के रूप मे जन्म लेंगे और राक्षसों का वध कर संसार का भार दूर करेंगे ॥ २८ ॥ राम का चरित्र अमृत के

रामर चरित्रचय अमृत समान * शुना अनुक्रमे ऋषि कहो विद्यमान
अयोध्यात हैबा दशरथ नरेश्वर * पुत्र न हैवेक नव हाजार बत्सर २९
पुत्रर निमित्ते यज्ञ करिब अनेक * तथापितो नृपतिर पुत्र नुहिबेक
दुर्व्वासात उपदेश पाया महामानी * करिबा बिशिष्ट यज्ञ ऋष्यश्रृंग आनि ३०
तेवे जन्मिवन्त राम चारि रूप धरि * बले बीर्ये धैर्यधिक देवतात करि
चारि भाइ महावीर विष्णु अंशे जात * दुष्ट विनाशन हेतु जगते प्रख्यात ३१
अस्त्रे शस्त्रे शास्त्रे सर्व्वगुणे अनुपाम * गुह चंडालक मित्र करिब श्रीराम
मारीच सुवाहु दुइ राक्षस दुर्जन * विश्वामित्र मुनिर यज्ञक करे छन ३२
जाइवा विश्वामित्र दशरथर गृहक * यज्ञ राखिबाक प्रति खुजिना रामक
शुनि नृपतिर मुखे हरिष बचन * करिबन्त भक्तिभारे ऋषिक अर्च्चन ३३
रामक ना पाया ऋषि करिवन्त क्रोध * वशिष्ठे करिब दशरथक प्रबोध
दिवा राम लक्ष्मणक वशिष्ठ बचने * लैया दुई भाइक ऋषि जाइबा रंगमने ३४
चलिवन्त दुयो विश्वामित्रर संगत * राक्षसर कथा मुनि कहिबा रामत
प्रथमते रामे वधिवन्त ताड़काक * श्रीरामक प्रशंसा करिब देवजाक ३५
रामर बिक्रमे वर हरिषक पाइव * यत अस्त्र-शस्त्र मुनि दोभाइक शिखाइब
नाना अस्त्र शस्त्र जानि हैब रंगमन * ऋषि समे दुयो प्रवेशिब तपोवन ३६
थाकिब दिनेक रामे राक्षसक ध्याने * यज्ञ नष्ट राक्षसे करिब विद्यमाने
मारीचक रामे उरुराइब एक शरे * सुवाहुक ससैन्ये डाकिबा यमघरे ३७
देखि विश्वामित्र आदि यत मुनिगण * रामक बुलिब सबे प्रशंसा बचन

समान है। हे ऋषि, उसे क्रम से सुनो—मैं अभी कहता हूँ। अयोध्या में दशरथ नरेश होंगे। नौ हजार वर्ष तक उनके कोई पुत्र नही होगा ॥ २९ ॥ पुत्र के निमित्त वे कितने ही यज्ञ करेंगे फिर भी उनके कोई पुत्र नही होगा। तब दुर्वासा से उपदेश पाकर महामान्यवर ऋष्यश्रृंग को बुलाकर वे विशेष यज्ञ करेंगे ॥ ३० ॥ तब राम चार रूपों को धारण कर जन्म लेंगे—बल-वीर्य और धैर्य में वे देवताओं से भी अधिक होंगे। विष्णु के अंश से उत्पन्न चारों भाई महावीर होंगे और दुष्टों के विनाश के हेतु संसार मे प्रसिद्ध होंगे ॥ ३१ ॥ शस्त्रास्त्रो एवं शास्त्रो मे अत्यन्त निपुण होकर अनुपम श्रीराम, चंडाल गुह से मित्रता करेंगे। मारीच और सुवाहु नामक दो दुष्ट राक्षस विश्वामित्र मुनि का यज्ञ नष्ट करते रहेंगे ॥ ३२ ॥ विश्वामित्र दशरथ के घर जायेंगे और यज्ञ रक्षा हेतु राम को माँगेंगे। यह सुनकर नृपति भक्तिपूर्ण भाव से ऋषि की अर्चना करने लगेंगे ॥ ३३ ॥ राम को न पाकर ऋषि क्रोध करने लगेंगे तो वशिष्ठ आकर दशरथ को समझायेंगे। वशिष्ठ के कहने पर वे राम-लक्ष्मण को दे देंगे। तब प्रसन्न होकर ऋषि दोनों भाइयों को लेकर चल देंगे ॥ ३४ ॥ दोनों (भाई) विश्वामित्र के साथ चलेंगे। मुनि राम से राक्षसों के बारे में बतायेंगे। पहले राम ताड़का (राक्षसी) का वध करेंगे और श्रीराम की प्रशंसा सारे देवतागण करेंगे ॥ ३५ ॥ राम का पराक्रम देखकर मुनि अत्यन्त प्रसन्न होंगे और दोनो भाइयों को सारे अस्त्र-शस्त्रों की शिक्षा देंगे। विभिन्न अस्त्र-शस्त्रों के प्रयोग में पारंगत होकर दोनों भाई बड़े प्रसन्न होंगे और ऋषि के साथ दोनों तपोवन में प्रवेश करेंगे ॥ ३६ ॥ दिन भर राम राक्षसों की प्रतीक्षा में रहेंगे। राक्षस आकर उनके सम्मुख यज्ञ नष्ट करेंगे। मारीच को राम एक बाण से मार कर उड़ा देंगे और सुवाहु को सारी सेना के साथ यम-सदन भेज देंगे ॥ ३७ ॥ यह देखकर विश्वामित्र आदि सारे मुनि राम को प्रशंसा के वाक्य कहेंगे। इसके पश्चात् सारे ऋषि देव-मंत्र का उच्चारण

पाचे ऋषिसवे देवमंत्र उच्चारिया * करिवन्त यज्ञ सांग पूर्णाहुति दिया ३८
आत अनन्तरे कथा शुना महामति * मिथिला नगरे हैव जनक नृपति
ताने जीउ हैवा सीता लक्ष्मी समसर * धर्म्म यज्ञ पातिवा सीतार सयम्वर ३९
दूत पठाइ आनिवन्त राजा सकलक * संगे लैया, विश्वामित्र राम लक्ष्मणक
परम हरिषे ऋषि जाहन्ते पथत * प्रवेशिवे जाइ गौतमर आश्रमत ४०
अहल्याक मुक्त रामे करिवा साक्षात * रामे समे ऋषि प्रवेशिव मिथिलात
धनुक भांगिया रामे पाइवन्त सीताक * अनायासे युद्धे जिनिवन्त राजाजाक ४१
दूत पठाइ जनके आनिवा दशरथ * सीताक रामक दिवा पूरि मनोरथ
लक्ष्मण भरत शत्रुघन महामति * आरो तिनि कन्या दिवा तिनिको नृपति ४२
चारि पुत्र चारि वधु लैया दशरथ * धरिवा कौतुके राजा अयोध्यार पथ
भृगुपति रामे पाचे शुनि धनुभंग * पन्थ निषेधिया आसि करि महा रंग ४३
ताँक स्तुति नति वुलिवन्त दशरथ * रामे परशुरामर छेदिवा स्वर्गपथ
रामे भृगुपतिक जिनिवा लीला करि * महोत्सवे प्रवेशिवा अयोध्या नगरी ४४
पाचे दशरथ शत्रुघन भरतक * पठाइवन्त वुइको युद्धजितर गृहक
रूपे गुणे रामे रंजिवन्त सर्व्वजन * राम राजा हैवन्त सवारो एहि मन ४५
सवारो आनन्द राम हैवन्त नृपति * दशरथे रामक दिवन्त अनुमति
जानि कैकेयीये तात पातिव विघिनि * सत्यजयी नृपतिक छान्दिव पापिनी ४६
भरत हैवन्त राजा कैकेयीर मन * चैध्यय वत्सर प्रति राम जाइव बन

कर पूर्णाहुति देकर यज्ञ समाप्त करेंगे ॥ ३८ ॥ हे महामति, अब इसके बाद की कथा सुनो। मिथला नगर में एक जनक नामक राजा होंगे। लक्ष्मी के समान सीता उनकी बेटी होगी। सीता के स्वयंवर के लिए वे धर्म-यज्ञ की व्यवस्था करेंगे ॥ ३९ ॥ दूत भेजकर वे सारे राजाओं को बुलवायेंगे। राम-लक्ष्मण को साथ लेकर विश्वामित्र ऋषि-पथ पर आनन्दमग्न चलेंगे और गौतम के आश्रम में प्रवेश करेंगे ॥ ४० ॥ अहल्या को राम साक्षात् रूप से उद्धार करेंगे। फिर राम के साथ ऋषि मिथिला में प्रवेश करेंगे। धनुष तोड़ कर राम सीता को प्राप्त करेंगे और अनायास ही सारे राजाओं को युद्ध में परास्त करेंगे ॥ ४१ ॥ दूत भेजकर जनक दशरथ को बुला भेजेंगे। सीता को राम के हाथ सौंपकर अपनी मनोकामना पूर्ण करेंगे। लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न तीनों महामतियों को नृपति तीन अन्य कन्याएं देंगे ॥ ४२ ॥ चार पुत्र और चार बहुओं को लेकर दशरथ अयोध्या के पथ पर सानन्द चल पड़ेंगे। बाद में धनुष-भंग की बात सुनकर भयंकर क्रोध में आकर भृगुपति (परशुराम) आकर रास्ता रोक लेंगे ॥ ४३ ॥ उनका नमन कर दशरथ उनकी स्तुति करेंगे। राम, परशुराम का स्वर्ग का पथ छिन्न कर देंगे। खेल ही खेल में परशुराम पर विजय प्राप्त करेंगे और बड़े उत्सव के साथ वे अयोध्या नगरी में प्रवेश करेंगे ॥ ४४ ॥ इसके पश्चात् दशरथ भरत और शत्रुघ्न को युद्ध जीतने के लिए अपने घर से मामा के घर भेज देंगे। राम रूप और गुण से सभी का मनोरंजन करने लगेंगे। राम राजा हो, यही सबके मन की कामना होगी ॥ ४५ ॥ राम राजा होंगे, यह जानकर सभी लोगों को बड़ी प्रसन्नता होगी। दशरथ राम का अभिषेक करेंगे, यह जानकर माता कैकेयी उसमें विघ्न डालेगी। सत्यव्रती नृपति को वह पापिन फाँस लेगी ॥ ४६ ॥ कैकेयी के मन में है कि भरत राजा हो और राम चौदह वर्ष के लिए वन चले जाये। यही वचन राजा दशरथ से वह लेगी और सारे लोगों को अधिक शोकाकुल करेगी ॥ ४७ ॥ पिता के सत्य वचन का पालन करने के लिए राम प्रसन्न मन से लक्ष्मण

हेन सत्य कराइ दशरथ नृपतिक * समस्ते लोकक शोक दिवेक अधिक ४७
पितृ सत्य प्रतिपालि राम रंगमने * लक्ष्मण जानकी संगे प्रवेशिवा वने
पुत्रर शोकत जीव तेजिवा नृपति * सात दिन वाहि शव हैव कर्म्मगति ४८
दूत पठाइ वशिष्ठे अनाइव भरतक * कराइबा राजार यत प्रेतर कार्यक
पिपृकार्य्य करिया भरत वितोपन * रामक आनिवे प्रति प्रवेशिव वन ४९
शुनि रामचन्द्रे सिटो पितर मरण * तिनिओ करिवे शोके विस्तर क्रन्दन
भरते कातर आति करिव रामक * मइ सत्य पालो प्रभु चलियो राज्यक ५०
वशिष्ठ प्रमुख्ये बुलिवन्त पात्रगण * नराखिवा रामचन्द्रे काहार वचन
निष्ठुर वचन रामे बुलि भरतक * पुनरपि पालटाइ पठाइवा राज्यक ५१
पाचे रामचन्द्र सीता लक्ष्मण सहित * फल मूल मांस शाक भूँजि मन प्रीति
शिरे जटा परिधान वाकलि वसन * कतो तृण शिला मृग चर्म्मत शयन ५२
एहिमते रामचन्द्र वंचिवा वनत * कतोदिन थाकि चित्रकूट पर्वतत
वेढ़ाइवन्त रामे पाचे ऋषिर आश्रमे * सुतीक्ष्ण ऋषिर घरे जाइवन्त प्रथमे ५३
शरभंग ऋपिक देखिवा तातपर * तात पाचे वधिवा विराध निशाचर
घरे घरे ऋषिर आश्रमे निरन्तरे * जाइव दश वत्सर फुरन्ते रघुवरे ५४
पाइवन्त हरिप रामे ऋषि संभापणे * अगस्त्यत पुछि जाइव पंचवटी वने
तथात करिव रामे हरिषे निवास * शूर्पनखा जाइब कामे राघवर पाश ५५
लक्ष्मणे काटिव ताइर धरि नाक काण * खर-दूषणर शूर्पनखा दिव जान
चतुर्द्दश सहस्र राक्षस समन्विते * खर-दूषणक रामे वधिवा तहिते ५६

और जानकी के साथ वन मे प्रवेश करेगे। पुत्रशोक मे राजा अपने प्राण दे देगे, सात दिन तक शव को रखने के वाद (भरत के आने पर) उसका क्रियाकर्म होगा ॥ ४८ ॥ दूत भेजकर वशिष्ठ भरत को बुलवायेंगे और राजा का सारा श्राद्ध-कार्य उनसे करायेंगे। पिता के अन्त्येष्ठि-संस्कार का सारा कार्य करने के वाद राम को लाने के लिए भरत वन में प्रवेश करेगे ॥ ४९ ॥ रामचन्द्र भरत के मुख से पिता की मृत्यु का समाचार सुनकर रोने और शोक करने लगेगे। भरत राम को यह कह कर वहुत आकुल करेगे कि हे प्रभु, तुम चल कर राज्य करो, मैं (तुम्हारे स्थान पर) (पिता के) सत्य (वचन का) पालन करूँगा ॥ ५० ॥ वशिष्ठ प्रमुख सभासद आदि भी यही वात कहने लगेगे किन्तु रामचन्द्र किसी की भी वात नही मानेगे। इसके वाद राम भरत से निष्ठुर वाक्य कह कर उनको फिर से अयोध्या लौटा देगे ॥ ५१ ॥ इसके पश्चात् रामचन्द्र, सीता और लक्ष्मण के साथ प्रेम से फल, मूल, मांस और शाक का आहार करेंगे। सिर पर जटा रखेगे एवं पेड़ की छाल का वस्त्र पहनेंगे—घास और पत्थर पर मृगछाला विछाकर सोयेंगे ॥ ५२ ॥ इसी प्रकार से रामचन्द्र वन-वन भटकते रहेंगे; कितने ही दिन वे चित्रकूट पर्वत पर रहेंगे। इसके पश्चात् राम ऋषियो के आश्रम में घूमेंगे और सवसे पहले सुतीक्ष्ण ऋषि के आश्रम जायेगे ॥ ५३ ॥ इसके वाद शरभंग ऋषि से जाकर मिलेगे, वहाँ वे विराध नामक निशाचर का वध करेंगे। ऋषियों के आश्रमों में घूमते हुए रघुवर (राम) के दश वर्ष वीत जायेंगे ॥ ५४ ॥ ऋषियों के साथ सम्भाषण में राम को पर्याप्त आनन्द प्राप्त होगा। फिर अगस्त्य से पूछकर राम पंचवटी के वन में जायेगे। वहाँ राम आनन्द से वास करने लगेगे। वहाँ काम से पीडित हो शूर्पनखा राघव (राम) के पास जायेगी ॥ ५५ ॥ लक्ष्मण उसे पकड़कर उसके नाक-कान काट लेगे। शूर्पनखा के द्वारा खर और दूषण को इस (घटना) का पता लगेगा (वे राम को घेरेंगे)। तव राम चौदह हजार राक्षसों के

खर-दूषणर वध देखि विद्यमान * रावणर आगे शूर्पनखा दिव जान
सीतार रूपर कथा कहिव प्रचुर * शुनिया रावण राजा हैवा कामातुर ५७
सीताक हरिते यत्न करिव विस्तर * रथ लैया जाइव राजा मारीचर घर
मारीचे विस्तर बुजाइवेक रावणक * तथापि रावणे तार नु शुनिवे वाक ५८
मारीचक लगे लैया दुर्ज्जन रावण * सीताक हरिवे जाइवे दंडुकार वन
रामर शरत मृत्यु जानि आपुनार * धरि मृगरूप सिटो सुवर्ण आकार ५९
फुरिवे मारीच चरि आगत रामर * देखि रामचन्द्रे जाव धरि धनुशर
निवेक रामक विदूरक निशाचर * रामर शरत तेजिवेक कलेवर ६०
मरन्ते तेजिवे राव रामर समान * शुनि सीता गोसानीर डरिव पराण
रामक राक्षसे मारे सीता हेन जानि * लक्ष्मणक बुलिवेल दुराक्षर वाणी ६१
शुनिया सीताक तेजि जाइवन्त लक्ष्मणे * शून्य स्थाने सीता हरि निवेक रावणे
सीतार कारणे युद्ध करिव जटायु * पाखा छेदि रावणे हरिव तार आयु ६२
थैवेक सीताक निया अशोकर वने * राक्षसिनीगण रक्षा दिवेक रावणे
देखि ब्रह्मा बुलिलन्त इन्द्र देवताक * अमृत पायस निया दियोक सीताक ६३
इन्द्रे निया पायस दिवन्त तेतिक्षण * देखि सीतादेवी ताक करिव भक्षण
न पाया सीताक पाछे श्रीराम लक्ष्मण * महाशोके दुयो भाइ करिव क्रन्दन ६४
बधिवा कवन्ध रामे सीताक खोजन्ते * ऋष्यमुख पाइवा गइ दंडुकार हुन्ते
तथा रामचन्द्रे कार्य्य करिवा विचित्र * सुग्रीव वानर समे रामे करि मित्र ६५

साथ खर-दूषण का वध कर डालेगे ।। ५६ ।। खर-दूषण का वध अपने सम्मुख देखकर शूर्पनखा रावण के सामने जाकर धरना देगी । वह जाकर सीता के रूप के बारे मे बहुत कुछ कहेगी जिसको सुनकर राजा रावण कामातुर हो जायगा ।। ५७ ।। सीता का हरण करने के लिए वह बहुत चेष्टा करेगा । रथ लेकर राजा मारीच के घर जायगा । रावण को मारीच बहुत समझायेगा, फिर भी रावण उसकी एक न सुनेगा ।। ५८ ।। दुष्ट रावण मारीच को साथ लेकर सीता को चुराने दंडकवन जायगा । राम के बाण से अपनी मृत्यु होगी, यह जानकर वह स्वर्णमृग का रूप धारण कर लेगा ।। ५९ ।। राम के सम्मुख मारीच घूम-घूम कर चरने लगेगा । उसे देखकर रामचन्द्र धनुप-बाण लेकर पीछा करेंगे । यह निशाचर राम को लेकर बहुत दूर चला जायगा और राम के बाण से शरीर त्याग देगा ।। ६० ।। मरते समय वह राम के स्वर मे चिल्लायेगा जिसको सुनकर देवी सीता के प्राण विकल हो जायेंगे । ऐसा समझकर कि राक्षस राम को मार रहा है, सीता जी लक्ष्मण को भलाबुरा कहने लगेंगी ।। ६१ ।। सीता की बातें सुनकर लक्ष्मण उनको छोड़ कर चले जायेंगे तब सीता को सूने स्थान पर पाकर रावण उन्हे चुरा ले जायगा । सीता के निमित्त जटायु (रावण से) युद्ध करेगा । रावण उसके डैने काटकर उसके प्राण ले लेगा ।। ६२ ।। सीता को लेकर रावण अशोकवन में रखेगा । राक्षसियाँ उसके पहरे पर रहेंगी । यह देखकर ब्रह्मा इन्द्रदेव से कहेगे कि वह जाकर सीता को अमृत पायसान्न दे आवे ।। ६३ ।। उतनी देर मे इन्द्र जाकर सीता को पायस (खीर) दे आयगा और यह देखकर सीता देवी उसका भक्षण कर लेगी । पीछे लौटकर सीता को न पाकर राम-लक्ष्मण दोनों भाई महाशोक से क्रन्दन करने लगेंगे ।। ६४ ।। सीता को ढूंढ़ने के लिए निकले हुए राम कवन्ध का वध करेगे । दडकवन के अन्त मे पहुँचकर उनको ऋष्यमुख (ऋष्यमूक) (पर्वत) मिलेगा । वहाँ रामचन्द्र एक अनोखा कार्य करेंगे । सुग्रीव वानर के साथ राम मित्रता कर लेंगे ।। ६५ ।। वे वानरो के राजा वालि का वध करेंगे और उसके

वानरर राजा बीर वालिक बधिब * तार यत राज्यभार सुग्रीवक दिब
पासरिब रामक सुग्रीव राज्य भोले * लक्ष्मणे तर्जिब ताक राघवर बोले ६६
कपि सेनागण लैया वानर नृपति * रामर चरणे नमि करिब प्रणति
पांचिवा वानरगण रामर आदेशे * सीताक खुजिबे पठाइबा देशे देशे ६७
लगत सहाय दिब बीर हनुमन्त * दक्षिण दिशक अंगदक पांचिबन्त
बिचारिया सीताक फुरिबा कपिजाक * सम्पातिर मुखे पाइबा सीतार बार्त्ताक ६८
शिशपा वृक्षर तले लंकात आछन्त * सागर एराइबा डेबे बीर हनुमन्त
देखिवा सीताक जेवे वायुर तनय * रामर बार्त्ताक कहिवन्त महाशय ६९
रामर आंगुठि निया सीताक दिबन्त * हिये मुठि हानि सीता देवी कान्दिबन्त
हाते तृण धरि बीरे सीताक बुजाइब * कपिर कातरे सीता गोसानी जुराइब ७०
अशोक बनत पशि बायुर नन्दन * करिबन्त छन्न रावणर मधुबन
अनेक राक्षस मारि निवा यमघर * अक्षकुमारक मारिबन्त बीरबर ७१
पाचे नागपाश हानिबन्त इन्द्रजिते * हैबा बन्दी रावणक देखिबार चित्ते
राक्षसे योगाइब निया रावणर आगे * बिस्तर भर्तसिबा रावणक महाभागे ७२
कपिर बचने महाकोपे लंकेश्वर * लगाइबे लाँगुले जुइ मेढ़ाया कापोर
होहकाया नागपाश पवननन्दन * लगाया आगनि लंका करिबन्त छन्न ७३
सागर लंघिवा डेबे पृथिवीक आसि * कहिबा सीतार बार्त्ता रामत हरिषि
सीतार माथार मणि रामक दिबन्त * देखि हिये मुठि हानि राम कान्दिबन्त ७४
सुग्रीव लक्ष्मणे धरि रामक बुजाइबा * दुइरो प्रबोधे रामे किंचित जुराइबा

राज्य का सारा भार सुग्रीव को दे देंगे। राज्य पाकर सुग्रीव राम को भूल जायेगा तो राघव के कहने पर लक्ष्मण उसको धमकायेंगे ॥ ६६ ॥ वानरराज (सुग्रीव) अपनी सारी वानर-सेना के साथ आकर राम के चरणों में नमन करेगा तथा राम के आदेश से वानरों को देश-देश में सीता को ढूँढ़ने के लिए भेजा जायगा ॥ ६७ ॥ वीर हनुमान् जितनी सहायता की आवश्यकता हो देंगे। दक्षिण दिशा में अगद को भेजा जायगा। सीता का स्मरण कर वानर उनको ढूँढ़ते फिरेंगे। सम्पाति के मुँह उनको सीता का सन्देश मिलेगा ॥ ६८ ॥ लंका में शिशपा वृक्ष के नचे वह है। वीर हनुमाम् समुद्र लाघ कर जायेंगे सीता को देखकर पवनपुत्र (हनुमान्) उनसे राम का सन्देश कहेंगे ॥ ६९ ॥ वे राम की अँगूठी लेकर सीता को देंगे, सीता अपने हृदय को पीटकर रोयेंगी। तव हाथ मे तृण लेकर वीर (हनुमान्) सीता को समझायेंगे कपि (हनुमान्) के कहने पर सीता देवी का मन शान्त होगा ॥ ७० ॥ अशोक वन मे घुसकर पवननन्दन (हनुमान्) रावण का मधुवन छिन्न-भिन्न कर डालेंगे। बहुत से राक्षसों को मारकर यमालय भेज देंगे। वीरवर (हनुमान्) अक्षयकुमार का भी वध करेंगे ॥ ७१ ॥ इसके उपरान्त इन्द्रजीत नागपाश अस्त्र फेकेगा। तव रावण को देखने की इच्छा से वह (हनुमान्) वन्दी वन जायँगे। राक्षस उनको रावण के सम्मुख ले जायँगे। महाभाग (हनुमान्) रावण को वहुत डाँट-फटकार वतायेंगे ॥ ७२ ॥ वानर (हनुमान्) के वाक्यो से क्रोधित होकर लकेश्वर उनकी पूँछ मे कपडे लपेट कर आग लगा देगा। पवननन्दन (हनुमान्) नागपाश से मुक्त होकर आग से सारी लका नगरी का ध्वस करेंगे ॥ ७३ ॥ उसके वाद सागर लाँघ कर पृथ्वी पर आकर वह सीता का सन्देश सहर्ष राम को देंगे। वह सीता के सिर का माणिक्य राम को देंगे। उसे देखकर राम छाती पीट कर रोने लगेंगे ॥ ७४ ॥ सुग्रीव और लक्ष्मण राम को थामकर उनको समझाने लगेंगे। दोनों के समझाने पर

पाचे कपिसेना समे राम महाबीर * आपुनि चलिया जाइव सागरर तीर ७५
सीताक दिबाक बुलिलन्त विभीषणे * मारिबन्त लाथि ताक दुर्ज्जन रावणे
रामत शरण आसि लैवा विभीषणे * तांक अभिषेक रामे करिवा तेखने ७६
हैवा विभीषण अभिनव लंकेश्वर * सागरत पन्थ मागिवन्त रघुवर
निदिवा सागरे देखा रामक गर्व्वत * देखि धनुशर रामे धरिवा क्रोधत ७७
भयत कम्पिव आति सागरर हिया * रामक करिव स्तुति पाद्य अर्घ्य दिया
चलियोक दिलो पन्थ बोलन्त सागरे * नजाइबेक तल सेतु वान्धियो पाथरे ७८
अदभुत कर्म्म करिवेक रघुबरे * पर्ब्बत आनिया सेत वान्धिव वानरे
लक्ष्मण सुग्रीव विभीषण समन्वित * ससैन्ये हैवन्त गैया सिबेलात थित ७९
सेनागण गणिवाक प्रति राघवर * शुक सारणक पठाइवेक लंकेश्वर
विभीषणे धरि दुइको रामत योगाइव * ताते रामे रावणक वार्त्ताक पठाइव ८०
आचरिया कपट रावण बुद्धिहत * माया-शिर दिव निया सीतार हातत
देखि सीता सती माया-शिर राघवर * भूमित लुटिया देवी कान्दिब विस्तर ८१
प्रभातते वेढ़िया लंकार चारि द्वार * दूत पठाइवन्त रामे बालिर कुमार
भर्त्सिव अंगदे रावणक वारे बार * मारिवन्त चारि गोटा वीर रावणर ८२
लाथि मारि भांगिवन्त रावणर घर * रामर पाशक आसिवन्त कपिवर
रावण युजिव लैया कटक अपार * वानरे करिव राक्षसक बुन्दामार ८३
अंगदे जिनिब इन्द्रजितक इंगिते * अन्तरीक्ष शर बरषिब इन्द्रजिते
मायाबले पीड़िवेक वानर कटक * नागपाशे वान्धिवेक राम लक्ष्मणक ८४

राम कुछ शान्त होगे। इसके बाद महावीर राम वानर-सेना सहित स्वयं समुद्र-तट पर पहुँच जायेगे ॥ ७५ ॥ जब विभीषण (रावण से) सीता लौटा देने के लिए कहेगा तो दुष्ट रावण उसे लात से मारेगा। तब विभीषण आकर राम की शरण ले लेगा। राम उसी समय उसका अभिषेक कर देगे ॥ ७६ ॥ विभीषण लंका का नया राजा बनेगा। रघुवर सागर से पथ देने की प्रर्थना करेगे। मारे गर्व के सागर राम को दर्शन नही देगा। इस पर क्रोधित होकर राम धनुष-बाण उठा लेगे। ॥ ७७ ॥ यह देखकर सागर का हृदय भय से काँप उठेगा। वह पाद्य-अर्घ्य देकर राम की स्तुति करने लगेगा। सागर कहेगा मै आपको पार जाने का पथ दिये दे रहा हूँ। आप पत्थर से पुल का निर्माण कीजिए, पत्थर डूबेगे नही ॥ ७८ ॥ तब रघुवर (राम) अद्भुत कार्य करेगे। पर्वत लाकर बन्दर सेतु का निर्माण करेगे। लक्ष्मण सुग्रीव और विभीषण सहित सारी सेना लेकर वे (राम) सागर के दूसरे तट पर स्थित होंगे ॥ ७९ ॥ राम की सेना की गणना के लिए लकेश्वर शुक और सारण को भेजेगा। विभीषण दोनों को पकड़कर राम के सामने उपस्थित करेगा। उनके मुँह से राम रावण को सन्देश भेजेगे ॥ ८० ॥ बुद्धिभ्रष्ट रावण कपट आचरण कर राम का माया-मुंड बनाकर सीता के हाथ मे देगा। राघव (राम) का माया-मुड देखकर सती सीता जमीन पर लेटकर बहुत रोने लगेगी ॥ ८१ ॥ सवेरे लंका के चारो द्वारों को घेर कर राम बालि के पुत्र को दूत बनाकर भेजेगे। अगद रावण की बार-बार भर्त्सना करेगा और रावण के चार वीरो को मार गिरायेगा ॥ ८२ ॥ लात मार कर वह रावण का घर तोड़ डालेगा और फिर वह कपिवर (अंगद) राम के पास आ पहुँचेगा। रावण अपना असख्य सैन्य लेकर युद्ध करेगा। वानर राक्षसों को मार-मार कर पटरा कर देगे ॥ ८३ ॥ अंगद इन्द्रजीत पर अनायास ही विजय प्राप्त करेगा। इन्द्रजीत अन्तरिक्ष में जाकर बाण बरसाएगा और इन्द्रजाल के बल

गरुड़र आश्वासे गुचिब नागपाश * देखि रावणर लागिबेक महात्रास
अनेक राक्षस सेनागण समन्विति * सेनापतिगण पांचिबन्त लंकापति ८५
चारि सेनापति जाइब यमर सदन * धुम्राक्ष प्रहस्त बक्रदन्त अकम्पन
तेवे समदले आसि युजिब रावण * वानर कटक मारिबेक दशानन ८६
देखि रामचन्द्रे हाते धरि धनुशर * केशे समे किरीटि काटिब रावणर
यम येन राघवक देखिया साक्षात * भंग दिया पलाइ गैया पशिब लंकात ८७
महामर्म्मे जानुत थापिया दश माथ * अपमान पाया कान्दिबन्त लंकानाथ
श्रीहत हैवे मुख परिब विवर्ण * पठाइबे युजिबाक जगाइ कुम्भकर्ण ८८
घोर शरे रामे तार छेदिबन्त शिर * शोके रावणर हिया हैब दुइ छिर
तेवे चारि पुत्र मरि जाइब यमघर * रणत परिब आरो दुइ सहोदर ८९
अतिकाय कुमारक मारिब लक्ष्मण * इन्द्रजिते आसि पुनरपि दिवे रण
राम लक्ष्मणक आदि यत सेनागण * रावणर शरे सबे हैब अचेतन ९०
जाम्ववन्त उपदेशे वीर हनुमन्त * औषध आनिया समस्त के जीयाइवन्त
रावणर मने महा मिलिब शंकट * चमकि रहिब दिया दुवारे कपाट ९१
वानर भालुकगणे महाहृष्ट हुइ * दहिब सुवर्णपुरी लंका दिया जुइ
पाचे सात महावीर मारिब वानरे * मकराक्ष वीरक वधिब रघुवरे ९२
तेवे माया सीताक काटिब इन्द्रजित * शोकर जमके राम हैवन्त मूर्च्छित
विभीषणे बुजाइबन्त कहिया सम्भेद * लक्ष्मणे करिब रावणर स्कन्ध छेद ९३
पुत्रस्नेहे अनेक कान्दिब लंकानाथ * शोके विदारिब दिया येन वज्रपात

पर वानर-सेना को पीड़ित करेगा और नागपाश से राम-लक्ष्मण को वाँध डालेगा ॥ ८४ ॥ गरुड़ के श्वास से नागपाश खुल जायगा। यह देखकर रावण को वड़ा डर लगेगा। वहुत सारी सेना के साथ लंकेश सेनापतियो को भेजेगा ॥ ८५ ॥ धूम्राक्ष, प्रहस्त, वक्रदन्त और अकम्पन ये चार सेनापति यमालय चले जायेंगे—फिर रावण अपने दल-वल के साथ आकर युद्ध करेगा और वहुत सारी वानर-सेना को मार गिरायेगा ॥ ८६ ॥ यह देखकर रामचन्द्र हाथ मे धनुष लेकर आयेगे और रावण का केश-सहित मुकुट काट गिरायेगे। राम को अपने सम्मुख यम के समान देखकर रावण भागकर लंका मे घुस जायगा ॥ ८७ ॥ अत्यन्त क्लेश से लंकेश अपने दसों सिर जाँघों के बीच में दवा कर अपमान से रोने लगेगा। उसके मुख से रौनक उड़ जायगी और वह निस्तेज हो जायगा। कुम्भकर्ण को जगाकर वह युद्ध करने भेज देगा ॥ ८८ ॥ भीषण वाण से राम उसका सिर काट कर गिरायेगे। शोक से रावण का हृदय विदीर्ण हो जायगा। तव उसके चार पुत्र मरकर यमालय जायेंगे, और दो सहोदर भाई भी रण में गिरेगे ॥ ८९ ॥ कुमार अतिकाय को लक्ष्मण मारेंगे। इन्द्रजीत फिर आकर युद्ध करने लगेगा। रावण के वाण से राम, लक्ष्मण और सारी सेना अचेतन हो जायगी ॥ ९० ॥ जाम्ववन्त के उपदेश से वीर हनुमान् औपध लाकर सवको जिलायेगे। रावण के मन मे वड़ा भय उपजेगा, वह किवाड़ वन्द कर अन्दर चकित वैठा रहेगा ॥ ९१ ॥ वानर और भालू वड़े आनन्द से स्वर्णपुरी लका को आग लगाकर जलायेगे। सात महावीरों को वानर मार डालेंगे। वीर मकराक्ष का वध राम करेगे ॥ ९२ ॥ तव माया-सीता को इन्द्रजीत काट डालेगा। शोक और क्रोध से राम मूर्छित हो जायेगे। विभीपण सारा भेद खोलकर समझायेगा। लक्ष्मण जाकर रावण-पुत्र का वध करेगे ॥ ९३ ॥ लंका-नरेश पुत्र-स्नेह से वहुत रोयेगा। मानों सिर पर गाज गिरी हो इस प्रकार शोक से हृदय विदीर्ण हो जायगा।

क्रोधर वेगत देखिवेक अन्धकार * सीताक काटिवे खेदि जाइव दुराचार ९४
देखि मन्दोदरी तांक प्रबोधि आनिव * असंख्य कटक युजिवाक पठाइ दिव
गन्धर्व्वर अस्त्र रामे करिव प्रकाश * क्षणेके करिव दुष्ट राक्षस विनाश ९५
समस्ते राक्षस संगे लैया लंकापति * बजाइव आटोपे साजि युजिवाक प्रति
तिनि सेनापति तार जाइव यमघर * राम रावणर घोर मिलिव समर ९६
रावणर शकतित परिव लक्ष्मण * ताक कोले धरि रामे करिव क्रन्दन
औषध आनिबे जाइव वायुर कुमार * तथापि मारिव कालनिमि निशाचर ९७
तिनि कोटि गन्धर्वक मारिव तहिते * आनिव औषध वीरे पर्व्वते सहिते
विशल्यकरणी औषधर गन्ध पाइ * जीवन्त लक्ष्मण जय आनन्द वढ़ाइ ९८
रावणक वधिते रामर हैव चित * आसिवेक देव-रथ मातलि सहित
ताते चड़ि कौतुके युजिव रघुनाथ * वारे-वारे रावणर काटिवन्त माथ ९९
न मरिव तथापि रावण महावीर * ब्रह्म अस्त्र हानि पाचे छेदिवन्त शिर
आकारात देवगणे आनन्द करिव * जय राम ध्वनि दशोदिशक पूरिव १००
राघवर शिरे वरषिव पारिजात * पाचे राम देव कार्य साम्फलि साक्षात
विभीषण मित्रक आश्वासि रघुवर * पातिवन्त ताक अभिनव लंकेश्वर १०१
जावे थाके चन्द्र सूर्य पृथिवी पवन * तेवे राज्य करिवा लंकार विभीषण
अंगीकार साफल करिवा रघुवर * बोला राम राम सभासद निरन्तर १०२

क्रोध से वह चारो ओर अन्धकार देखने लगेगा और सीता को दुष्ट काटने दौड़ेगा ।। ९४ ।। यह देखकर मन्दोदरी उसको समझाकर लायेगी और असंख्य सेना को युद्ध करने भिजवा देगी । गन्धर्व अस्त्र का प्रयोग कर राम क्षण भर में दुष्ट राक्षसों का विनाश करेंगे ।। ९५ ।। सारे राक्षसो को साथ लेकर लंकापति वड़े अहंकार से युद्ध-सज्जा मे सज्जित होगा । उसके तीन सेनापति यम-सदन चले जायँगे और राम रावण मे घोर युद्ध छिड़ जायगा ।। ९६ ।। रावण के शक्तिशेल से लक्ष्मण गिरेंगे और राम उनको गोद मे लेकर क्रन्दन करने लगेंगे । पवनकुमार औषधि (सजीवनी बूटी) लेने जायँगे । वहाँ निशाचर कालनेमि का वध करेंगे ।। ९७ ।। इसके वाद वे वहाँ तीन करोड़ गन्धर्वो का सहार करेंगे, फिर वीर हनुमान् पर्वत सहित औषध ले आयेंगे । विप को हरनेवाली औपध की गन्ध पाते ही लक्ष्मण जी उठेंगे और सभी वानर वहुत हर्प मनाने लगेंगे ।। ९८ ।। राम के मन मे रावण का वध करने की इच्छा होगी तो मातलि इन्द्रदेव के रथ को लेकर आ पहुँचेगा । उस पर सवार होकर रघुनाथ कौतुक से युद्ध करने लगेंगे और वार-वार रावण के सिर काट गिरायेंगे ।। ९९ ।। फिर भी महावीर रावण नही मरेगा । फिर ब्रह्म अस्त्र चला कर उसके सिर काट गिरायेंगे । आकाश मे देवता आनन्द करने लगेंगे और 'जय राम' की ध्वनि से दशों दिशाए गूँज उठेगी ।। १०० ।। राघव (राम) के सिर पर पारिजात (कल्पवृक्ष के) फूलों की वर्पा होगी । इसके पश्चात् राम देवताओ के कार्य को सफल करेंगे । मित्र विभीपण को आश्वासन देकर राम उसको लका का नया राजा वनायेंगे ।। १०१ ।। जव तक चन्द्र, सूर्य, पृथ्वी और पवन रहेंगे तव तक विभीपण लका मे राज्य करेगा । राम अपनी प्रतिज्ञा पूरी करेंगे । हे सभासदो, निरन्तर राम का नाम लो ।। १०२ ।।

दुलड़ी

नारद वदति पाचे रघुपति पुरुष महा महन्त ।
लगाइ अपमान सभा विद्यमान जानकीक त्यजिवन्त ॥
जगत जननी जनक नन्दिनी रामत हुया नैराश ।
अगनि संजालि घृतचय ढालि ताते करिवन्त जास ॥ १०३
नदहिब गाव हुया शुद्धभाव बहिबन्त जगमाव ।
देवगण समे राजा दशरथ आसिवा रामर ठाव ॥
तिनि पितापुत्रे एकथान हुइ गले बाँन्ध कान्दिवन्त ।
पाचे दशरथे रामक प्रशंसि कैकेयीक निन्दिवन्त ॥ ४
अनन्तरे ब्रह्मा देव राघवक स्तुति करिबन्त गैया ।
मरा वानरक रामे जीयाइवन्त वासरत वर लैया ॥
पितृर वचने सम्बरिया रामे सीताक परम तुष्टि ।
देवगण समे राजा दशरथ जाइबन्त स्वर्गक उठि ॥ ५
वानर भालुक राक्षस सहिति पुष्पक विमाने चड़ि ।
लक्ष्मण जानकी समन्विते राम अयोध्याक जाइब लरि ॥
पाचे रामे भरद्वाजर आश्रमे रहिया लैवन्त वर ।
समस्ते वृक्षत हैव मधुफल भुँजिब ताक वानर ॥ ६
भरत लक्ष्मण राम शत्रुघन चारि हुया एकथान ।
करि जटा छेद एरिवन्त खेद चारियो बीर प्रधान ॥
तात अनन्तरे अयोध्या नगरे हैवन्त राजा राघव ।
तुलि छत्र दंड वाया वाद्यभंड करिव लोके उत्सव ॥ ७

दोलड़ी (छन्द)

नारद ने कहा, इसके वाद पुरुषोत्तम महान् रघुपति सारी सभा के सम्मुख सीता पर लांछन लगाकर उसका त्याग करेंगे। जगत्-जननी जनक-नन्दिनी राम (के कटु वचनों) से निराश होकर आग जलाकर उसमें घी आदि डालकर प्रवेश करेंगी ॥ १०३ ॥ उनकी देह जलेगी नहीं और (उसमें से) शुद्ध पवित्र होकर जग-माता सीता निकल आयेंगी। देवताओं के साथ राजा दशरथ राम के पास आयेंगे। तीनों पिता-पुत्र एकत्र होकर गले मिलकर रोयेंगे। वाद में दशरथ राम की प्रशंसा करते हुए कैकेयी की निन्दा करेंगे ॥ ४ ॥ इसके वाद ब्रह्मा आकर राघव की स्तुति करने लगेंगे। वासव (इन्द्र) से वर लेकर राम मरे हुए वानरों को जिलायेंगे। पिता के वाक्यों से राम सँभल जायेंगे, और सीता को भी परम सन्तोष प्राप्त होगा। देवगणों के साथ राजा दशरथ भी स्वर्ग की ओर प्रयाण करेंगे ॥ ५ ॥ वानर-भालू और राक्षसों के साथ पुष्पक विमान में सवार होकर राम लक्ष्मण तथा जानकी के साथ अयोध्या के लिए चल पडेंगे। इसके वाद राम भरद्वाज-आश्रम मे रह कर वर प्राप्त करेंगे कि सारे वृक्षों में मीठे फल फलेंगे जिनको वानर खायेंगे ॥ ६ ॥ भरत, लक्ष्मण, राम और शत्रुघ्न चारों एक स्थान पर इकट्ठे होंगे। जटाएँ कटवा कर चारों वीरश्रेष्ठ शोक से मुक्त होंगे। इसके वाद अयोध्या नगर मे राघव (राम) राजा होंगे। छत्र-दंड उठाकर वाजा वजाते हुए लोग उत्सव मनायेंगे ॥ ७ ॥ राम के ऊपर

रामर उपरे देव निरन्तरे पुष्प बरषिव छानि।
परम हरिषे प्रजायो करिव जय जय राम ध्वनि ॥
वानर भालुक राक्षस सकल प्रसाद पाया रामर।
परम हरिषे रामक प्रणामि चलि जाइव निजघर ॥ ८
अयोध्याक पाचे अगस्त्य आसिव करिबा रामे सम्मान।
रावणर जन्म कहिबा अगस्त्य राघवर विद्यमान ॥
येनमते रणे परम दुर्जने जिनिलन्त त्रिभुवन।
कुवेरक जिनि पुष्पक विमान आनिला राजा रावण ॥ ९
हरि वेदवती रावण दुर्मति पाइबेक शाप दुर्यश।
आनारणे वधि सबाको जिनिव दुर्जन सिटो राक्षस ॥
इकथा शुनिया मिलिवे कौतुक हासिबे रामे आनन्दे।
सहस्र अर्ज्जुन बालित समर हारिबा रावण मन्दे ॥ १०
ब्रह्मार वरत यमक जिनिवे पाताले जिनिव नाग।
वरुण कटक जिनिव रावण विष्णुक पाइवे लाग ॥
मान्धाता सहिते करिब समर चन्द्रक जिनिव रणे।
कपिलर ठाइ हारि अपमान पाइबेक गैया रावणे ॥ ११
रम्भाक हरिब नल कुबेरत शाप पाइव निशाचर।
देवगण समे इन्द्रक समरे जिनिबेक लंकेश्वर ॥
एहिनते राम— चन्द्रर आगत कहि कथा रावणर।
रामत विदाय करि मुनिगण चलि जाइवा निजघर ॥ ११२

सारे देवता निरन्तर फूल बरसाने लगेंगे और प्रजा भी परम हर्ष से 'जय राम' 'जय राम' की ध्वनि करेगी। वानर, भालू और राक्षस सभी राम का प्रसाद पायेंगे और राम को प्रणाम कर सब अपने-अपने घर चले जायँगे ॥ ८ ॥ इसके उपरान्त अयोध्या में अगस्त्य आयेंगे और राम का सम्मान (गुणगान) करेंगे। राघव के सम्मुख अगस्त्य रावण के जन्म के बारे मे कहेंगे; वह परम दुष्ट किस प्रकार से त्रिभुवन पर विजय पायेगा। कुबेर पर विजय प्राप्त कर राजा रावण किस प्रकार पुष्पक विमान ले आयेगा ॥ ९ ॥ वेदवती का हरण कर दुर्मति रावण अपयश का अभिशाप प्राप्त करेगा। विना युद्ध ही वध कर सब पर वह दुर्जन राक्षस विजय प्राप्त करेगा। यह सुनकर राम कौतुक से आनन्दित हो हँसेंगे। सहस्रार्जुन और वालि के साथ युद्ध मे रावण हारेगा ॥ १० ॥ ब्रह्मा के वर से वह यम पर और पाताल में नागों पर विजय प्राप्त करेगा। वरुण की सेना को जीत कर रावण विष्णु के सन्निकट पहुँच जायेगा। मान्धाता के साथ वह युद्ध करेगा और इन्द्र पर भी रण में विजय प्राप्त करेगा। किन्तु कपिल के निकट जाकर रावण को अपमानित हो हारना पड़ेगा ॥ ११ ॥ वह रम्भा का हरण करेगा—नल और कूवर से इस राक्षस को शाप मिलेगा। देवताओ सहित इन्द्र को लंकेश्वर पराजित करेगा। इसी प्रकार से रामचन्द्र के पास रावण की कथा कहकर राम से विदा लेकर मुनिगण (अगस्त्य के साथ) अपने-अपने आश्रम को चल देंगे ॥ ११२ ॥

छवि

अयोध्यात रामदेवे राज्यभोग करिबेक सुखे दश हाजार बत्सर ।
सीतार दुर्ब्वाद कथा लोकर मुखत शुनि चिन्ता बर मिलिबे रामर ॥
तोमार आश्रमे निया सीताक निर्ब्वास दिया पांचमहीया गर्भ समे ।
जीउवोधे प्रतिपाल करिवा सीताक तुमि थाकिवन्त तोमार आश्रमे ॥ ११३
उपजिव जानकीर यवंजा कुमार दुइ हैव दुइर लव-कुश नाम ।
परम हरिष मने विरचिवा तुमि एहि रामायण कथा अनुपाम ॥
सीतार कुमार दुइक पढ़ाया शिखाइवा एहि रामर चरित्र कथा सार ।
तोमार आज्ञाक पालि लव-कुश दुइ भाइ करिबन्त लोकत प्रचार ॥ ११४
अनन्तरे राघवर आज्ञाक शिरत धरि शत्रुघने बधिबा लवण ।
मधुरात पाति पाट राज्य प्रतिपालि पाचे देखिबन्त रामर चरण ॥
रामक देखिया स्वर्ग कुकुर सारण जाइव, पुत्र काटि जीयाइव ब्राह्मण ।
गृध्रिनी पेचार न्याय रामचन्द्रे बुजिवन्त कि कहिबा राघवर गुण ॥ १५
देवगण समे राम अगस्त्यर घरे जाइव करिबन्त आलार विस्तर ।
अगस्त्ययो राघवक दिव्य आभरण दिब पाचे राम आसिवन्त घर ॥
अश्ववेध करिवाक रामर हैवेक मन अनाइबा बहु ऋषिजाक ।
सीतार कुमार दुइक लगे लैया रंगमने जाइबा यज्ञभूमि देखिवाक ॥ १६
रामर आगत गैया परम हरषे गीत गाइबा दुयो सीतार तनय ।
सीतार निकारचय गावन्ते विदित हुइवा पिता-पुत्रे हैवा परिचय ॥

छवि (छन्द)

अयोध्या में देव राम सुख से दस हजार वर्ष तक राज्य भोग करेंगे । लोगों के मुँह से सीता की निन्दा सुनकर राम को वड़ी चिन्ता होगी । तुम्हारे आश्रम में ले जाकर सीता को निर्वासित किया जायगा, उस समय उसके पाँच महीने का गर्भ होगा । त्रेटी के समान समझ कर तुम सीता का पालन करोगे और वह तुम्हारे आश्रम में रहेगी ॥ ११३ ॥ जानकी के दो जुड़वा कुमार जन्म लेंगे, दोनों का नाम होगा—लव और कुश । परम हर्ष से तुम इस रामायण की अनुपम कथा की रचना करते रहोगे । सीता के दोनों कुमारों को राम के चरित्र के इस कथा-सार को तुम पढ़ा-सिखा दोगे । तुम्हारे आदेश का पालन करते हुए दोनों भाई लव और कुश लोगों में इसका प्रचार करते रहेंगे ॥ ११४ ॥ इसके उपरान्त राघव की आज्ञा शिरोधार्य करते हुए शत्रुघ्न लवण (असुर) का वध करेंगे । मथुरा में सिंहासन की स्थापना कर, राज्य का प्रतिपालन करने के पश्चात् वह राम के चरणों के दर्शन करेंगे । राम का दर्शन कर श्वान 'सारण' स्वर्ग जायगा । और (शम्बुक को) मार कर राम ब्राह्मण-पुत्र को जिन्दा कर देंगे । गिद्ध और उल्लू (के द्वन्द्व में) रामचन्द्र न्याय करेंगे, इस प्रकार राघव के गुणों का कौन वर्णन कर सकता है ॥ १५ ॥ देवताओं के साथ राम अगस्त्य के आश्रम जायेंगे और वहुत संलाप करेंगे । अगस्त्य भी राम को दिव्य आभरण देंगे, उसके वाद राम घर लौटेंगे । राम के मन में अश्वमेध (यज्ञ) करने की इच्छा होगी—वे अनेक ऋषियों को आमंत्रित करेंगे । सीता के दोनों कुमारों को साथ लेकर तुम (वाल्मीकि) प्रफुल्ल मन से यज्ञभूमि देखने जाओगे ॥ १६ ॥ राम के सम्मुख जाकर सीता के दोनों वेटे परम हर्ष से गीत गाने लगेंगे । सीता की दुख-दुर्दशा के बारे में

जानकीक आनिवाक तोमाक बुलिबे रामे दिवा निया तुमिओ रामत ।
पाया देवी अपमान सबे सभा विद्यमान पशिवन्त गैया पातालत ॥ १७
सीताक नेदेखि रामे हैवन्त विकल चित्त पृथिवीक करिवा कातर ।
नापाइ समाधान रामे क्रोधे पृथिवीक प्रति हाते तुलि लैया धनुशर ॥
देखिया हँसत नामि रामक बुजाइबा ब्रह्मा सुनि क्रोध गुचिव रामर ।
पाचे पुत्रवते रामे राज्य प्रतिपालिवन्त एकादश सहस्र वत्सर ॥ १८
सज्जनक प्रतिपालि दुर्ज्जनक वधिवन्त करिवन्त राज्य अकंटक ।
चारि भाइर आठ पुत्र आठ दिने राजा पाति समुचिते दिवन्त वंटक ॥
ब्रह्मार आदेश पाया काले आसि दिवा देखा सत्य कराइ छलिवा रामक ।
सत्य प्रतिपालि रामे लक्ष्मणक तेजिवन्त देखाइ आति अतर्क लोकक ॥ १९
आगवाढ़िवाक प्रति ब्रह्मादेव समन्विते आसिवन्त देवता पर्यन्त ।
तात अनन्तरे रामे स्वर्गक चलिवा रंगे संगे लैया पिम्परा पर्यन्त ॥
तिनि भाइ प्रवेशिवा रामर शरीर गैया प्रवेशिवा विष्णुत राघवे ।
राक्षस वानर नर पशु पक्षी तृण वन समन्विते चलिवा उत्सवे ॥ २०
श्रीरामर प्रसादत जीवन्त शरीरे गैया सन्तलोक स्वर्गे हैवा थिति ।
कृतकृत्य हुया सुखे अमृत करिवा पान रामगुण गाइवा प्रतिनिति ॥
एहिमते रामायण करा तुमि तपोधन सुमरिवा ब्रह्माक मनत ।
रामर चरित्रचय परम अमृतमय सुनि सुखे तरोक जगत ॥ २१
नमो नमो रघुकुल— कमल प्रकाश सूर्य श्रीरामचन्द्र सीतापति ।
हुयोक प्रसन्न येन मोर मन मधुकरे तयु पाद-पद्मे करे रति ॥

गायन से ही उनको विदित होगा और पिता-पुत्रो मे परिचय होगा। जानकी को लाने के लिए राम तुमसे कहेगे और तुम भी उसे लाकर राम को दोगे। सारी सभा के सम्मुख देवी फिर अपमानित होकर पाताल मे प्रवेश कर जायगी ॥ १७ ॥ सीता को न देखकर राम का चित्त व्याकुल हो जायगा और (वे) पृथ्वी के प्रति क्रोध प्रकट करेगे। कोई समाधान न पाकर राम क्रोध से पृथ्वी के प्रति धनुष-वाण उठा लेगे। यह देख कर हस से उतर कर ब्रह्मा राम को समझायेगे, इससे राम का क्रोध दूर होगा। इसके उपरान्त राम ग्यारह हजार वर्ष तक प्रजा को पुत्रवत् पालन करते रहेगे ॥ १८ ॥ वे सज्जनो का प्रतिपालन कर और दुर्जनों का वध कर राज्य को निष्कटक वनायेगे। चारो भाइयों के आठ पुत्रों को आठ दिनो मे राज्य में स्थापित कर समुचित ढग से बाँट देगे। ब्रह्मा का आदेश पाकर महाकाल आकर दर्शन देगा और उनसे वचन लेकर राम को छलेगा। सत्य का प्रतिपालन कर राम लक्ष्मण का त्याग करेगे जो कि लोगों की वुद्धि को असंगत सा लगेगा ॥ १९ ॥ ब्रह्मा के साथ सारे देवता आगे वढकर अगवानी करने आयेगे। इसके अनन्तर राम प्रसन्न मन होकर अपने साथ (अयोध्या मे रहने वाली) चिउँटी तक को भी लेकर स्वर्ग के लिए चल पडेगे। तीनो भाई राम के शरीर मे प्रवेश कर जायेगे और राघव विष्णु मे प्रवेश कर जायेगे। राक्षस, वानर, नर, पशु, पक्षी, तृण, वन—सभी उत्सव मे साथ चल देगे ॥ २० ॥ श्रीराम के प्रसाद से वे जीवित शरीर लेकर सन्तलोक स्वर्ग मे जाकर स्थित होगे। कृतकृत्य होकर वे सुख से अमृत का पान करेगे और प्रतिदिन राम का गुण गायेगे। ब्रह्मा को मन ही मन स्मरण कर तुम इसी प्रकार से रामायण की रचना करो। राम का सारा चरित्र परम अमृतमय है जिसे सुनकर सारा ससार सुख से तर जायगा ॥ २१ ॥ हे रघुकुल-कमल को विकसित करने वाले सूर्य (सीतापति

तयु निजदासे मोर परम सुहृद हौक लौक मुखे तयु गुण नाम ।
न छारिवा प्रभु मोक यत सामाजिक लोक निरन्तरे बोला राम राम ॥ १२२

पद

नारद वदति ऋषि शुनियो साक्षात * क्षुद्ररूपे रामायण कहिलो तोमात
प्रपंच स्वरूपे तुमि करा रामायण * ब्रह्माक स्मरिले व्यर्थ नुहिबे बचन१२३
कहिलोहो अल्प करि चरित्र रावर * शुनियो बृत्तान्त आरु कहो राक्षसर
उपजिव रावण अद्भुत कलेवर * दश मुंड कुरि बाहु देखि भयंकर २४
घोर तप आचरि ब्रह्मात लैब वर * सुरासुर लोकत अवध्य कलेवर
वेद विश्वस्रवा वीर्ये नैकेषीत जात * हैब तिनि सहोदर जगत प्रख्यात २५
आरो एक श्रेष्ठ भाई हैब वैमातर * इरार तनय कुबेर धनेश्वर
विष्णुभक्त हैवन्त कुवेर विभीषण * हैब दुष्ट दुर्जन रावण कुम्भकर्ण २६
रावणर हैव आरो भगिनी दुतय * त्रिजटा हैबेक विष्णुभक्त आतिशय
शूर्पणखा हैव आति परम पापिनी * धर्माधर्म नाजानिव सिटो राक्षसिनी २७
विश्वकर्मे नाना चित्र करिब लंकात * दुति अमरावती येन देखिव साक्षात
ताते राज्य करिबा कुबेर धनेश्वर * हैब लोकपाल राजा यक्षर उपर २८
सुवर्णर पुरी लंका रत्ने जातिष्कार * नाना चित्र विचित्र प्रकाशे घर-द्वार
नाना उपवने फले फुले समन्वित * भुंजन्त कुवेर बहु भोग मनोनीत २९

श्रीरामचन्द्र !) तुमको नमन है । तुम प्रसन्न हो ताकि मेरा मन-मधुकर तुम्हारे चरण-कमलों पर आसक्त रहे । तुम अपने दास मुझको अपना सुहृद वना लो, जो मुँह से तुम्हारे नाम और गुण का कीर्त्तन करता रहे । हे प्रभु, मुझको न छोड़ देना । सारे समाज के लोगों, तुम लोग निरन्तर राम का नाम लो ॥ १२२ ॥

राक्षसों का विवरण

नारद ने कहा, हे मुनि तुमने साक्षात् सुना, तुमसे मैंने संक्षेप में रामायण (की कथा) वताई । तुम इसी से विस्तार-पूर्वक रामायण की रचना करो । ब्रह्मा का स्मरण करने से तुम्हारे वचन व्यर्थ नही जायेगे ॥ १२३ ॥ राम का चरित्र मैंने संक्षेप मे तुमसे वताया । अव आगे तुम राक्षस का वृत्तान्त सुनो, मै कहता हूँ । अद्भुत शरीर लेकर रावण का जन्म होगा, उसके दस सिर होंगे और वीस हाथ—देखने में वह अत्यन्त भयंकर होगा ॥ २४ ॥ घोर तपस्या करने के वाद वह ब्रह्मा से वर लेगा कि सुर और असुर लोगों द्वारा उसका शरीर अवध्य होगा । विश्वश्रवा मुनि के वीर्य से निकषा के गर्भ से वह उत्पन्न होगा । उसके तीन सहोदर होंगे जो कि संसार में विख्यात होंगे ॥ २५ ॥ उसकी विमाता से और एक श्रेष्ठ भाई का जन्म होगा जो कि इरा का पुत्र धनेश्वर कुवेर होगा । कुवेर और विभीषण दोनों विष्णु के भक्त होंगे । रावण और कुम्भकर्ण दोनों दुष्ट और दुर्जन होंगे ॥ २६ ॥ रावण की दो वहिनें भी होंगी जिनमें त्रिजटा अत्यन्त विष्णुभक्त होगी । शूर्पणखा वड़ी पापिन होगी और वह राक्षसी धर्म-अधर्म के ज्ञान से रहित होगी ॥ २७ ॥ लंका को विश्वकर्मा विभिन्न रूप से चित्रित करेगा—मानों साक्षात् अमरावती का दर्शन हो रहा हो—उसमें धनेश्वर कुवेर राज्य करेगा जो कि यक्षों का प्रतिपालक राजा वनेगा ॥ २८ ॥ सोने की वनी लंका नगरी रत्नों से जगमगायेगी और विभिन्न चित्रों से घर-द्वार शोभित

तप करि रावणे ब्रह्मात वर पाइ * कुबेरर पाशे दूत दिवेक पठाइ
लंकापुरी कुबेरे आमाक देउक छारि * सुखे येवे नेदय आपुनि लैवो काढ़ि ३०
दूते एहि कथा कैव कुबेरर आगे * नकरिवा विवाद कुबेर महाभागे
दैत्य अंश रावणर विवादत रति * विष्णु अंशे कुबेरर विष्णुत भकति ३१
एतेके विवाद नकरिया धनपति * पठाइबा मधुर वुलि रावणक प्रति
लंकापुरी राज्य तेजि दिबा रावणक * यक्षगण समे चलि जाइवा कैलासक ३२
अलकावती नामे एक पातिया नगर * तथाते रहिवा सुखे धनर ईश्वर
लंकात हैवेक राजा दुर्ज्जय रावण * त्रिदश देवक हिंसा करिव दुर्ज्जन ३३
विश्वजिसु नामे दैत्य कुले हैव जात * शूर्पणखा भगिनीक विहा दिव तात
रावणे करिव विहा कन्या मन्दोदरी * मयदानवर जीउ परम सुन्दरी ३४
रावणर पुत्र हैव नामे इन्द्रजित * देवे नपारिव तार प्रताप सहित
रथत चड़िया जाइव स्वर्गक रावण * इन्द्रर नन्दन वन करिव उछन ३५
देखिया इन्द्रर महा मर्म्मे दहे मन * कुबेरक हाते धरि देखादन्त वन
बासवर बचने कुबेर बुद्धिमन्त * रावणर ठाइ दूत पठाइ दिवन्त ३६
प्रबोध बचन वुलि पठाइबा बहुत * रावणर आगे ताक कहिवेक दूत
शुनि महा कोपे झंकारिया दश माथ * कुबेरर दूतक काटिव लंकानाथ ३७
रथे चड़ि साजि धाया जाइब लंकेश्वर * यक्ष राक्षसर घोर मिलिव समर
कुबेर रावणे रण हैव भयंकर * करिव समर तिनि सहस्र वत्सर ३८

और प्रकाशित होगे। फलों और फूलों से भरे विभिन्न प्रकार के उपवन होगे। मन लुभाने वाले विलास के उपकरणों का कुबेर भोग करेगा ॥ २९ ॥ तपस्या करने के बाद ब्रह्मा से वर प्राप्त कर रावण कुबेर के पास दूत भेज देगा कि कुबेर लंकापुरी मुझको दे दे; यदि सरलता से न देगा तो मैं छीन कर ले लूंगा ॥ ३० ॥ कुबेर के सम्मुख जाकर दूत ऐसा कहेगा। महाभाग कुबेर झगड़ा नही करेगा। रावण दैत्य-अंश से उत्पन्न है इसलिए विवाद मे ही उसकी आसक्ति है और विष्णु-अंश मे जन्म लेने के कारण कुबेर की विष्णु-भक्ति में ॥ ३१ ॥ इस कारण विवाद न कर कुबेर रावण को मधुर सन्देश भेजेगा। लंकापुरी का राज्य रावण को देकर वह यक्षो के साथ कैलास चला जायगा ॥ ३२ ॥ वहाँ अलकावती नामक एक नगरी की स्थापना कर धनेश्वर कुबेर वहाँ सुख से रहेगा। दुर्जय रावण लका का राजा होगा और त्रिदश (तीनों दशा—जन्म, वृद्धावस्था और मृत्यु—के अधीन निम्नस्तर के देवता) देवताओ से शत्रुता करने लगेगा ॥ ३३ ॥ दैत्यकुल मे विश्वजिसु नामक एक दैत्य जन्म लेगा। उससे रावण अपनी वहन शूर्पणखा का व्याह करेगा। रावण स्वयं मयदानव की परम सुन्दरी बेटी मन्दोदरी से विवाह करेगा ॥ ३४ ॥ रावण के इन्द्रजित नामक एक पुत्र होगा जिसका प्रताप देवताओ से सहा नही जायगा। रथ मे सवार होकर रावण स्वर्ग मे जायगा और इन्द्र के नन्दन-वन को ध्वंस करेगा ॥ ३५ ॥ यह देखकर इन्द्र का मन और हृदय जलने लगेगा और वह कुबेर का हाथ पकड़कर उसको वन दिखाने लगेगा। इन्द्र के वचन सुनकर बुद्धिमान कुबेर रावण के पास दूत भेज देगा ॥ ३६ ॥ बहुत सारी प्रबोध देने वाली बातें कहकर वह दूत को रावण के पास भेजेगा जिनको दूत रावण के सम्मुख कहेगा। उन्हे सुनकर भीषण क्रोध से दसो सिर झटकारते हुए रावण कुबेर के दूत को काट डालेगा ॥ ३७ ॥ लंकेश्वर रथ सजाकर द्रुतगति से जायगा और यक्ष और राक्षसो में घोर युद्ध ठन जायगा। कुबेर और रावण में भयंकर रण छिड़ जायगा और तीन हजार वर्ष तक यह युद्ध चलता रहेगा ॥ ३८ ॥ ब्रह्मा

ब्रह्मार वरत भैला रावण दुर्ज्जय * ताहार बिक्रम कार शकति सहय
कुवेरक जिनि लैव पुष्पक विमान * सेना समे चड़ि ताते करिव पयाण ३९
महावलवन्त रावणर सेनागण * युद्धे जिनि वश्य करिवेक त्रिभुवन
यैंते यैते महा यज्ञ शुनय रावण * लुरि पुरि खाया दाया करय उच्छन ४०
सुन्दरी कन्यार कथा शुने यतमान * बले हरि आनिबेक आपुनार थान
अनेक प्रहार करि संग्रामर माज * करिबेक विकर्थना जिनि देवराज ४१
संजमणि गैया वीर रावण प्रचंड * यम जिनि काठिया लैंबेक यमदंड
चन्द्रक जिनिया तान हरिबे प्रकाश * वरुणक जिनि तान लैव नागपाश ४२
तवे षडऋतु सव हैव विपर्य्यय * नवग्रह सबार खंडाव भाग्यचय
करिव अधीन जिनि दैत्य दानवक * युद्धे जिनि मन्द तेज करिव सूर्यक ४३
अपेस्वरा गन्धर्व्वो सेविव निरन्तर * भये मन्दगति आति हैव पवनर
समस्ते देवरे खंडाइवेक अधिकार * शुक्रक देखिया किछु करिव सत्कार ४४
नकरिव जगतक इंगित दुर्म्मति * आपुनि हैबेक त्रिभुवन अधिपति
समस्तके रावणे लगाया अपमान * रामर हातत हैब सबंशे निर्ध्र्याण ४५
संक्षेपे कहिलो कथा राम-रावणर * प्रपंचिया रामायण करा मुनिवर
वाल्मीकिक एतेक बुलिया देवऋषि * हरिगुण गाय चलि गैलन्त हरिषि ४६
वाल्मीकिओ रामर चरित्र शुनि काणे * भैलन्त तृपिति येन अमृतक पाने
रामायण करिवाक भैल तान मति * एकचित्ते मुनि सुमरिला सरस्वती ४७

के वर से रावण दुर्जय वन गया है। उसका विक्रम सहने की शक्ति किसमें है। कुवेर पर विजय प्राप्त कर वह पुष्पक विमान ले लेगा और सेना के सहित उस पर सवार होकर वह चला जायगा ॥ ३९ ॥ रावण की सेना असीम शक्तिशाली वन जायगी और युद्ध में पराजित कर त्रिभुवन को वश में कर लेगी। जाते-जाते, कहीं महायज्ञ हो रहा है, सुनकर रावण वहाँ यज्ञ के हव्य का भक्षण कर यज्ञ को भ्रष्ट कर देगा ॥ ४० ॥ जव भी रावण यह सुनेगा कि कहीं पर सुन्दरी कन्या है तो उसको जवरन चुरा कर अपने स्थान पर ले जायगा। संग्राम मे अनेक प्रहार करने के वाद देवराज को पराजित कर काफी बुरा-भला कहेगा ॥ ४१ ॥ संयमिनी पुरी में पहुँचकर प्रचंड वीर रावण यम को पराजित कर उसका यमदण्ड छीन लेगा। चन्द्र को पराजित कर उसका प्रकाश हर लेगा। वरुण को पराजित कर उससे नागपाश ले लेगा ॥ ४२ ॥ तव छह ऋतुओं में गड़वड़ी होगी। नवोदित क्रूर ग्रह रावण सवके भाग्य को खंडित करेगा। दैत्य-दानवों को पराजित कर वह अपने अधीन कर लेगा (यहाँ तक कि) युद्ध में जीत कर सूर्य का प्रकाश भी धीमा कर देगा ॥ ४३ ॥ अप्सरा और गन्धर्व उसकी निरन्तर सेवा करने लगेंगे। उसके भय से पवन की गति अति मन्द पड़ने लगेगी। वह सारे देवताओं के अधिकारो को खंडित करेगा, केवल शुक्र को देखकर उनका कुछ सत्कार करेगा ॥ ४४ ॥ यह दुष्ट, जगत् की कुछ परवाह नही करेगा और स्वयं त्रिभुवन का अधिपति वन जायगा। सभी को अपमानित कर रावण राम के हाथ सवंश ध्वंस हो जायगा ॥ ४५ ॥ राम-रावण की कथा मैने संक्षेप मे वता दी। हे मुनिवर, अव तुम विस्तार से रामायण की रचना करो। वाल्मीकि से इतना कहकर देवऋषि (नारद) हरि (ईश्वर) का गुण गाते हुए प्रसन्न-मन चले गये ॥ ४६ ॥ वाल्मीकि भी राम का चरित्र सुनकर ऐसे ही तृप्त हुए मानों अमृत के सेवन से तृप्ति मिली हो। रामायण रचने के लिए उनकी इच्छा हुई और उन्होंने ध्यान लगाकर सरस्वती का स्मरण किया ॥ ४७ ॥ अत्यन्त प्रसन्न होकर सरस्वती देवी ने दर्शन

सुप्रसन्न हुया देवी भैलन्त साक्षात * देखियां वाल्मीकि करिलन्त प्रणिपात
ब्रह्मार आज्ञाये आमि करो रामायण * आमार कंठत माव हुयोक प्रसन्न ४८
बुलिलन्त सरस्वती मुनिक वचन * थाकिवोहो आमि तयु कंठे सर्व्वक्षण
तोमार बचनचय नुहिवे अन्यथा * करा सावधाने राम अवतार कथा
निस्तरोक लोक शुनि रामर चरित * एहि बुलि सरस्वती भैला अन्तर्हित१४९

सूर्य्यवंशर विवरण

अनन्तरे हरिषे वाल्मीकि तपोधन * रामक सुमरि आति भैला शुद्धमन
शुभक्षणे वसिला करिते रामायण * आचरिला सुमंगल हरिर कीर्त्तन१५०
धरिया शिरत मुनि ब्रह्मार आदेश * सुमरिला मने नारदर उपदेश
रामायण करिते लागिला अनुक्रमे * वंशावली कहिवाक लागिला प्रथमे ५१
भैलन्त मारीच नामे ब्रह्मार तनय * तान पुत्र भैलन्त कश्यप महाशय
कश्यप ऋषिर पुत्र भैलन्त आदित्य * श्राद्धदेव मनु सूर्यतनय विदित ५२
भैलन्त सुयाज्ञ नामे मनुर तनय * तान पुत्र भैलन्त इक्ष्वाकु महाशय
भैलन्त इक्ष्वाकु आति नृपति प्रधान * तेन्ते करिलन्त पुरी अयोध्या निर्माण ५३
विकुक्षि भैलन्त पुत्र इक्ष्वाकु राजार * भैला विकुक्षिर पुत्र पृथु नाम यार
प्रसाकृतु भैलन्त पृथुर वीर्य्ये जात * भैलन्त मान्धाता तान तनय प्रख्यात ५४
करिला मान्धाता सप्तद्वीप अधिकार * कुरु नामे भैला तान तनय प्रचार
भैलन्त ताहार पुत्र स्वयंभुव नाम * अनारण्य भैल तान पुत्र अनुपाम ५५
तान पुत्र आरण्य विष्णुर समसर * दीर्घबाहु नामे पुत्र भैल आरण्यर
भैल दीर्घबाहुत दिलीप नरेश्वर * हार्यक नामत पुत्र भैल दिलीपर ५६

दिया। उन्हे देखकर वाल्मीकि ने प्रणाम किया। (उन्होने कहा) ब्रह्मा की आज्ञा से मै रामायण रच रहा हूँ, हे माँ तुम प्रसन्न होकर मेरे कंठ पर विराजो ॥ ४८ ॥ तब सरस्वती ने मुनि से कहा, मै तुम्हारे कठ मे सदा बनी रहूँगी, तुम्हारा वचन कभी मिथ्या नही होगा, तुम सावधानी से राम-अवतार की कथा रचो। राम का चरित्र सुन कर लोक मुक्ति प्राप्त करे। इतना कहकर सरस्वती अदृश्य हो गयी ॥ १४९ ॥

सूर्यवंश का विवरण

इसके उपरान्त तपोधन वाल्मीकि ने हर्ष से राम का स्मरण कर अपने मन को पवित्र कर लिया और शुभ घड़ी पर रामायण की रचना करने बैठ गये। मंगलाचरण में हरि का कीर्त्तन किया ॥ १५० ॥ मुनि ने ब्रह्मा का आदेश शिरोधार्य कर नारद के उपदेशों का स्मरण किया। अनुक्रम से वे रामायण की रचना करने लगे। प्रारंभ मे वे सूर्यवश की वंशावली का वर्णन करने लगे ॥ ५१ ॥ मरीचि नामक ब्रह्मा का एक पुत्र हुआ। उसका पुत्र हुआ महाशय कश्यप। कश्यप ऋषि का पुत्र हुआ आदित्य। श्राद्धदेव मनु आदित्य या सूर्य के तनय के रूप में विदित हुए ॥ ५२ ॥ सुयाज्ञ नाम से मनु का बेटा हुआ। उनका बेटा महाशय इक्ष्वाकु हुआ। इक्ष्वाकु बहुत बड़े राजा हुए और उन्होने अयोध्यापुरी का निर्माण किया ॥ ५३ ॥ इक्ष्वाकु राजा का पुत्र हुआ विकुक्षि। विकुक्षि का पुत्र वह हुआ जिसका नाम था पृथु। पृथु के वीर्य से प्रसाकृतु (प्रसुश्रुत) ने जन्म लिया। उनका पुत्र मान्धाता बड़ा प्रसिद्ध हुआ ॥ ५४ ॥ मान्धाता ने सातो द्वीपों पर अधिकार कर लिया। इसका पुत्र पुरु नाम से प्रचारित हुआ। उसके पुत्र का नाम हुआ स्वयम्भुव। उसका एक अनुपम पुत्र हुआ अनारण्य नाम

हार्यके पाइलन्त माधवत पुत्रवर * हारिद्र भैलन्त तेवे पुत्र हार्यकर
सालुक नामत पुत्र भैल हारिद्रर * मन्दाक्षिणि नामे पुत्र भैला सालुकर ५७
मन्दाक्षिणिर तनय भैलन्त सगर * शशविन्द भैलन्त तनय सगरर
भैला नन्दा नामे शशविन्दर सन्तति * तान पुत्र भैलन्त नन्दन महामति ५८
विश्वनाथ नामे पुत्र भैल नन्दनर * अम्वत्रक नामे पुत्र भैल विश्वनाथर
भगीरथ भैल अम्वत्रकर तनय * गंगाक नमाइला भगीरथ महाशय ५९
भैलन्त सौदास भगीरथर सन्तति * सौदासर तनय दिलीप नरपति
दिलीपर पुत्र रघु नामे नरेश्वर * रघुर तनय भैल अज नृपवर ६०
अजर ये पुत्र भैला- दशरथ नाम * पृथिवीत यार गुणे नाहि अनुपाम
अज नृपतिर पटेश्वरी इन्दुमति * दशरथ नृपतिर मातृ महासती ६१
अनुक्रमे वंशावली कहिलो सकल * अयोध्या नगरे राजा हैवा महावल
सूर्यवंशे वत्रिश पुरुष अनन्तर * भैल उतपति दशरथ नरवर ६२
कि कहिवो कथा दशरथ नृपतिर * सागर गंभीर धीर गुणर मन्दिर
महा महापापी तरे नाम लैले यार * हेन रामचन्द्र भैला यात अवतार ६३
तान आन गुण किवा वर्णाइवो विस्तर * नाहि सुपुरुष दशरथ समसर
यिटो वाहुवले असुरक करि हत * देव समे वासवक थापिला स्वर्गत ६४
ताहान गुणक कोने करिवेक अन्त * विष्णुत भकत यिटो परम महन्त
संक्षेपे कहिलो दशरथर महत्व * विस्तारिया कहो किछु शुनियो साम्प्रत ६५
कोशलर उत्तरत अयोध्या नगर * दुति स्वर्गपुर अम्रावती पटन्तर
वार प्रहरर पथ पर्यालि प्रमाण * पंचिश योजन पथ दीर्घर निर्म्माण ६६

से ॥ ५५ ॥ उनका पुत्र आरण्य विष्णु के समान हुआ। आरण्य का दीर्घवाहु नामक पुत्र हुआ। दीर्घवाहु का पुत्र दिलीप नरेश हुआ। दिलीप का हार्यक नाम से एक पुत्र हुआ ॥ ५६ ॥ हार्यक को माधव जैसा पुत्ररत्न प्राप्त हुआ; हार्यक के पुत्र का नाम हुआ हारिद्र। हारिद्र का सालुक नामक पुत्र हुआ और मन्दाक्षिणि नामक सालुक का पुत्र हुआ ॥ ५७ ॥ मन्दाक्षिण का पुत्र हुआ सगर और सगर का शशिविन्दु नामक पुत्र हुआ। शशविन्दु का नन्दा नामक तनय हुआ। उनका पुत्र महामति नन्दन हुआ ॥ ५८ ॥ नन्दन का एक विश्वनाथ नामक पुत्र हुआ और विश्वनाथ का अम्वत्रक नामक पुत्र हुआ। अम्वत्रक का पुत्र हुआ भगीरथ, जिन महाशय भगीरथ ने (भूतल पर) गंगा का अवतरण कराया ॥ ५९ ॥ भगीरथ के वेटे का नाम हुआ सौदास और सौदास का पुत्र नरपति दिलीप हुआ। दिलीप का पुत्र रघु हुआ जो कि नरेश्वर हुआ। रघु का पुत्र नृपवर अज हुआ ॥ ६० ॥ अज का जो पुत्र हुआ उसका नाम दशरथ पड़ा जिसके गुणो की कोई उपमा संसार में नही है। राजा अज की पटरानी थी महासती इन्दुमती जो कि नरपति दशरथ की माँ थी ॥ ६१ ॥ (इस प्रकार) सारी वंशावली का क्रम से वर्णन किया गया। अयोध्या नगरी में महावली राजा, सूर्यवंश की वत्तीसवीं पीढ़ी के वाद होगा। इस प्रकार नरवर दशरथ का जन्म हुआ ॥ ६२ ॥ राजा दशरथ के वारे में क्या वर्णन करूँ—वे समुद्र जैसे धीर और गम्भीर और गुणों के आलय हुए। जिनका नाम लेने से वड़े-वड़े घोर पापी भी तर जाते हैं ऐसे श्रीरामचन्द्र ने उन्ही के यहाँ अवतार लिया ॥ ६३ ॥ उनके गुणों का क्या वर्णन करूँ। दशरथ के समान सुदर्शन पुरुष कोई नहीं था। उन्होने अपने वाहुवल से असुरों को मार कर देवताओं सहित इन्द्र को स्वर्ग में स्थापित किया ॥ ६४ ॥ उनके गुणों का अन्त कौन वता सकता है? वे परम भक्त और विष्णुपरायण थे।

पृथिवीत पटन्तर नाहि अयोध्यार * त्रिभुवन जिनि पुरी करे जातिष्कार
भुवनदुर्ल्लभ नगरर परिपाटि * सुवर्ग रत्ने विरचित हाटी वाटी ६७
स्थाने स्थाने प्रकाशय दीघि सरोवर * नानारत्ने रचि आछे चारिओ कापर
नाना फल-फुल पारे-पारे रहि आछे * नाना उपवन शोभा करे काछे काछे ६८
चौमिति नगर गड़ प्रांची सुवर्णर * नानाविध अस्त्रे शस्त्रे दुर्द्धर निरन्तर
नगरर द्वार आछे लंघिया आकाश * नाना जलजन्तु तात करय प्रकाश ६९
नाना रत्ने विरचित चौपन्था पदूलि * ध्वज दंड पताका तोरण आछे तुलि
नानाविध गृह शारी शारी प्रकाशय * उपरत पंच सुवर्णर घटचय ७०
येन देव-देवी अयोध्यार नरनारी * दिव्य वस्त्र अलंकारे फुरे काछि पारि
परम संकुल हस्ती घोरा रथे आति * ब्रह्मग क्षत्रिय वैश्य शूद्र चारि जाति ७१
आचरे हरिषे यार येन जातिधर्म्म * निज वृत्ति विने नकरय आन कर्म्म
नाहि अनाचर हिंसा मिछा डका चुरि * नकरय परद्वार अन्याय चातुरी ७२
नाहि शोक सन्ताप नाहिके द्वन्द्ववाद * अकालत मृत्यु आसि न करे प्रमाद
नाहि दुखी भिक्षी जन अयोध्या नगरे * समस्तरे अचला सम्पत्ति घरे घरे ७३
हेन महासुखे वंचे अयोध्यार प्रजा * ताते भैला पाचे दशरथ महाराजा
परम महन्त सन्त शीतल स्वभाव * भैला येन लोकर सम्यक वापमाव ७४
स्वधर्मत शुद्धवुद्धि सुन्दर शरीर * रमणीरमण रति रंग महावीर
सदाय धर्म्मत रति विष्णुत भकत * सर्व्वगुणयुत गुण समस्ते महत ७५

सक्षेप मे दशरथ का यह महत्व वताया। अव विस्तार से वताता हूँ, सुनो ।। ६५ ।। कोशल के उत्तर अयोध्या नामक एक नगरी है। उसकी शोभा की तुलना स्वर्ग की अमरावती से की जा सकती है। चौड़ाई में वह वारह प्रहर के पथ के समान है और लम्वाई मे पच्चीस योजन के पथ के समान निर्मित ।। ६६ ।। संसार में अयोध्या की कोई तुलना नही। यह नगरी तीनो लोक से भी वढ़कर दर्शनीय है। यह नगरी ऐसी साफ-सुथरी है जैसी सारे भुवनो मे भी दुर्लभ है। इसके घर द्वार सव सुवर्ण तथा रत्नों से वने है ।। ६७ ।। स्थान-स्थान पर तालाव और सरोवर शोभायमान हैं जिनके चारो किनारे रत्नों से जड़ित है। इनके किनारे-किनारे विभिन्न फल-फूलो (के वृक्ष) लगे है और निकट ही तरह-तरह के उपवन शोभा पाते है ।। ६८ ।। नगर के चारों ओर गढ़ वने है जिनमे सोने के प्राचीर वने है जो विभिन्न अस्त्र-शस्त्रो से निरन्तर अभेद्य हैं। नगर का द्वार आकाश छूता है जिस पर विभिन्न प्रकार के जल-जन्तु प्रगट है ।। ६९ ।। चारो पथो पर विभिन्न रत्नो से वने फाटक हैं जिनके तोरणों पर ध्वजदंड और पताकाएँ शोभित है। विभिन्न प्रकार के गृह पक्तियों में सुशोभित है जिनके ऊपर स्वर्ण के वने पचघट लगे है ।। ७० ।। अयोध्या के नर-नारी मानो देवी और देवता हो जो कि सुन्दर वस्त्र और अलंकारों से सुसज्जित हो घूमते रहते है। वहाँ के पथ हाथी, घोड़े और रथो से भरे है, और वहाँ व्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार जातियाँ है ।। ७१ ।। वहाँ सभी लोग सुख से अपनी जाति का पेशा करते है—अपनी वृत्ति के अलावा दूसरा कर्म नही करते है। वहाँ न तो अनाचार है न हिंसा, न डाकाजनी और न चोरी। कोई भी दूसरे के दरवाजे पर अनुचित चतुराई नही करता ।। ७२ ।। वहाँ न एक दूसरे से कोई द्वन्द्व है। वहाँ मृत्यु असमय आकर विपत्ति नही ढाती। अयोध्या नगरी भर में न कोई दुखी है और न कोई भिखमंगा। सभी के घरों में सम्पत्ति अचला वनी हुई है ।। ७३ ।। ऐसे महासुखो से अयोध्या की प्रजा वास करती है। वही पर कुछ समय वाद दशरथ राजा हुए। वे वड़े ही शांत स्वभाव के सन्त-महन्त

धैर्य्ये येन मेरु गिरि गम्भीर सागर * प्रतापत आदित्य क्रोधत महेश्वर
दाने वलि कर्ण हरिश्चन्द्र समसर * वले बुद्धि समान भोगत पुरन्दर ७६
अस्त्रे शस्त्रे शास्त्रे नाना गुणे सुमंडित * बृहस्पति सम राजा परम पंडित
शाम दाम भेद दंड जाना चारि नय * महासुर समरे यमको नाहि भय ७७
सातोद्वीपा पृथिवीर भैला अधिपति * पुत्रवते लोकक पालन्त प्रतिनिति
नाहिके शत्रुक शंका राजार आगत * भृत्य येन खाटय नृपति आछे यत ७८
महामुनि वशिष्ठ भैलन्त पुरोहित * सुमंत्र प्रमुख्ये आठ मंत्री सुवेष्ठित
हृष्ट पुष्ट सन्तुष्ट वलिष्ट महाशूर * अस्त्रे शस्त्रे समन्विते कटक प्रचुर ७९
समरत यम सम येन करे गति * असंख्य प्रमाण गज वाजी रथपति
महा श्रीयुत राजा महेन्द्र पराय * कतेक वर्णाइवो गुण कहन नयाय ८०
सुवलित भुजयुग वासुकी समान * वज्रतो अधिक तान शरर सन्धान
महा यशराशि प्रकाशय त्रैलोक्यत * भये तर तरि सुरासुर नाग यत १८१

दशरथर लगत कौशल्यार बिवाह

कोशल राजार जीउ कौशल्या सुन्दरी * त्रैलोक्यत याक रूपे नाहि पटन्तरी
सर्व्वगुणे आनन्दिता आति महासती * तांक विहा करिलन्त प्रथमे नृपति १८२

व्यक्ति हुए—मानों वे लोगों के योग्य माता-पिता वन गये ।। ७४ ।। वे अपने धर्म पर रत, शुद्ध वुद्धि वाले तथा सुन्दर शरीर वाले थे। वे रतिरंग में रमणियों का मन-हरण करने वाले तथा महावीर थे। धर्म में उनका सदा अनुराग था और वे विष्णु के भक्त थे। वे सारे गुणों से समन्वित और सभी तरह से महान् थे ।। ७५ ।। धैर्य में वे मेरु-गिरि के समान और गाम्भीर्य में समुद्र के समान थे। प्रताप में सूर्य के समान और क्रोध में शिव के समान थे। दान में वे वलि, कर्ण और हरिश्चन्द्र के समकक्ष थे, और वल और वुद्धि में वह इन्द्र के समान भोग करने लगे ।। ७६ ।। अस्त्र-शस्त्र और शास्त्र आदि में वे परमनिष्णात और वृहस्पति के समान परमपंडित थे। वे साम, दाम, दंड, भेद आदि चारों नीतियों को जानते थे। महासुर के साथ युद्ध में वे यम से भी नहीं डरते थे ।। ७७ ।। सप्तद्वीप वाली पृथ्वी के वे अधिपति वने और प्रजाओं का पुत्रवत् प्रतिपालन करने लगे। राजा के निकट शत्रु का कोई भय नहीं और सारे नृपति उनके पास ऐसे काम करने लगे मानों नौकर हों ।। ७८ ।। महामुनि वशिष्ठ उनके पुरोहित वने। सुमंत्र आदि आठ मंत्रियों द्वारा वे घिरे रहे। हृष्ट-पुष्ट वलवान और सन्तुष्ट, कितने ही अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित महावीर उनकी विशाल सेना में रहे ।। ७९ ।। समर में इनकी गति यम के समान हो जाती थी। इनके पास असंख्य हाथी, घोड़े और रथ थे। महान् श्रीयुक्त महेन्द्र जैसे राजा दशरथ के गुणों को कैसे वर्णन करूँ, वे वर्णन नहीं किये जा सकते ।। ८० ।। वलय से शोभित उनके दोनों भुज मानों शेषनाग के समान हो। उनके वाणों का निशाना वज्र से अधिक कठोर था। तीनों लोकों में उनका यश प्रकाशमान था और उनके भय से सारे सुर-असुर और नाग थरथराते थे ।। १८१ ।।

दशरथ के साथ कौशल्या का विवाह

कोशल राजा की वेटी सुन्दरी कौशल्या थी जिसके रूप की तुलना तीनों लोकों में किसी के साथ नहीं हो सकती। सभी गुणों से सम्पन्न वह महासती थी जिसके साथ राजा ने सर्वप्रथम विवाह किया ।। १८२ ।। राजा दशरथ में जितने गुण थे उससे भी

दशरथ राजार यतेक गुण सार * ताहान्तो अधिक किछु आछे कौशल्यार
महा सौभागिनी कन्या पाया दशरथ * भैलन्त आनन्दे परिपूर्ण मनोरथ१८३
कौशल्या समान शान्ती नाहि त्रिभुवने * नृपतिक शुश्रुषा करन्त सर्व्वक्षणे
भार्य्याये सहिते अज नृपतिर सुत * रत्नमय मन्दिरत क्रिड़िला बहुत१८४

दशरथर लगत कैकेयीर बिबाह

आत अनन्तरे कथा शुनियो सम्प्रति * केकय राज्यत आछे केकय नृपति
दाने माने कुले धर्म्मे शीले आनन्दित * सर्व्वगुणे गुणान्वित जगते विदित१८५
कैकेयी नामत कन्या एक आछे तान * त्रिभुवने नाहि यार रूपर समान
नाहि खति खुन सर्व्वगुणे निरुपमा * तुहिके समान रति रम्भा तिलोत्तमा ८६
हरिणनयनी आतिशय मध्यक्षीणी * सुकोमल केशे चामरको आछे जिनि
पूर्ण चन्द्रमाको जिनि वदनर कान्ति * मुकुतार शारी येन ज्वले दन्तपान्ति ८७
नासागोट देखि येन रत्न तिलफुल * बिम्बफल जिनि ज्वले अधर रातुल
मृणाल सदृश बाहु देखिते सुठान * सुगम्भीर लीलागति गजर समान ८८
बहल जघन उरु येन रामकल * थल कमलको गंजे चरण-कमल
हास्यत अमृत स्रवे बचन मधुर * हवे रूप देखि कन्दर्पर दर्प चूर ८९
बदरी प्रमाण स्तन बाढ़े हृदयत * कटाक्षेते मोहे सुर नर मुनि यत
केकय राजार हेन आछे कन्या रत्न * बिबाह दिवाक राजा करे महा यत्न ९०

कुछ अधिक कौशल्या में थे। अति सौभाग्यवती पत्नी को पाकर दशरथ की मनोकामना अति आनन्द से पूर्ण हुई ॥ १८३ ॥ कौशल्या के समान पतिव्रता तीनों भुवनों मे नही थी; वह सदा नृपति की सेवा-शुश्रूषा करती थी। अज राजा के पुत्र दशरथ अपनी भार्या कौशल्या के साथ रत्न-जड़ित भवन में अनेक प्रकार की क्रीड़ाएँ करने लगे ॥ १८४ ॥

दशरथ के साथ कैकेयी का विवाह

इसके वाद की कथा अब सुनो। केकय राज्य में केकय राजा थे। वह दान, मान, वंश, धर्म और शील से शोभित, सारे गुणों से समन्वित, संसार भर में प्रसिद्ध थे ॥ १८५ ॥ उनके कैकेयी नामक एक कन्या थी—तीनो लोकों मे उसके समान किसी का रूप नही था। उसमें न कोई खोट थी और न कोई खामी—सर्वगुणों में वह निरूपमा थी। उसके समकक्ष रति, रम्भा, तिलोत्तमा भी नही थी ॥ ८६ ॥ हिरणों-जैसे उसके नैन थे और शरीर का मध्यभाग अत्यन्त क्षीण था। चँवर से भी अधिक कोमल उसके केश थे। उसका मुखड़ा पूर्णिमा के चाँद से भी अधिक आभामय था। उसके दाँतो की पाँत मोतियों की लड़ी जैसी चमकती थी ॥ ८७ ॥ उसकी नासिका मानो रत्न का बना तिल का फूल थी, मुन्दर अधर विम्बफल जैसे चमक रहे थे। कमल के डंठल जैसी सुडौल बाँहें थी, तो सुगंभीर चाल गज के समान थी ॥ ८८ ॥ उसकी चौड़ी जांघे मानो केले के खंभ थे और उसके चरण-कमल मानों थल-कमल को नीचा दिखा रहे थे। उसके हँसने से अमृत झरने लगता था और उसके वाक्य वडे मधुर थे। उसका रूप देखकर कन्दर्प का घमंड भी चूर-चूर हो जाता था ॥ ८९ ॥ बेर के समान स्तन उसके हृदय पर बढ़ने लगे। वह अपने कटाक्षों से सारे सुर, नर, मुनियों को मुग्ध किये हुई थी। केकय राजा की ऐसी श्रेष्ठं कन्या थी जिसके विवाह के लिए राजा प्रखर चेष्टा करने लगे ॥ ९० ॥ किस प्रकार कन्या के योग्य वर पाऊँ, ऐसा सोचकर

केनमते कन्यार सदृश पाइबो बर * हेन शुनि नृपति पातिला स्वयम्बर
देशे देशे पांचि दिला दूत बहुतर * कह समस्तत कैकेयीर सयम्बर ९१
गेल देशे देशे दूतगण असंख्यात * जनाइलेक सयम्बर समस्ते राजात
कैकेयीर सयम्बर शुनि यत राजा * संगे साजि गैया रथ गज बाजी प्रजा ९२
केकय नगरे आसि भैला एकथान * सबाको केकय राजा करिला सम्मान
आछे पुत्रवर तान युद्धाजित नाम * पितृत भकत सर्ब्बगुणे अनुपाम ९३
तान्ते राज्यभार राजा सपि निरन्तर * बिबाहर कार्यक चिन्तन्त नरवर
करिला मजुत आनि अनेक सम्भार * कुसुम चन्दन गन्ध वस्त्र अलंकार ९४
सुवर्णर झारी खुरि ताम्बुल कर्पूर * नाना उपहारे द्रव्य मिलाइला प्रचुर
आसि आछे यत राजा शुनि सयम्बर * सबाको दिलन्त रत्नमय बासा घर ९५
ताम्बुल चन्दने दिब्य वस्त्र अलंकारे * अर्च्चिला सबाको नानाबिध उपहारे
कुसुम कुंकुम गंध चन्दने तुषिला * नाना भक्तिभारे समस्तके सन्तोषिला ९६
आछन्त नृपतिगण पातिया समाज * सेहि समयत दशरथ महाराज
संगे साजि लैया गज बाजी सेना यत * सेहि समज्यात गैया भैल उपगत ९७
दशरथ आसिबार देखि राजागणे * गाव चालि आथेवेथे उठिला तेखने
केकय राजार देखि हरिष मिलिला * परम गौरवे आनि सिंहासन दिला १९८
दशरथ नृपति बसिला गैया तात * येन पुरन्दर देवगणर सभात
नृपतिर माजे राजा प्रकाशन्त बसि * ग्रहगण माजे येन पूर्णिमार शशी १९९
दशरथ आगे नज्वलन्त राजाचय * येहेन नक्षत्रगण सूर्य्यर उदय
पात्र पुत्र मित्र समे केकय नृपति * दशरथ नृपतिक करिला भकति २००

राजा ने स्वयंवर-सभा का आयोजन किया। देश-देश में उन्होंने दूत भेज दिये कि जाकर सबसे बताओ कि कैकेयी का स्वयंवर है ॥ ९१ ॥ विभिन्न देशों में असंख्य दूत गये। उन्होंने समस्त राजाओं को सूचित किया कि कैकेयी का स्वयंवर है। ऐसा सुनकर कि कैकेयी का स्वयंवर है, सारे राजा अपने हाथी, घोड़े, रथ और प्रजा के साथ सुसज़्जित हुए ॥ ९२ ॥ केकय नगर में आकर सभी राजा एक जगह इकट्ठे हो गये। राजा केकय ने सबका सम्मान किया। उनका युद्धाजित नामक एक पुत्र था जो कि पितृभक्त और सर्व गुणों में अनुपम था ॥ ९३ ॥ उस पर सारे राज्य का भार सौंपकर राजा विवाह के कार्य के बारे में निरन्तर चिन्ता करने लगे। कुसुम, चन्दन, गन्ध, द्रव्य, कपड़े, आभूषण आदि बहुत सारी सामग्री लाकर उन्होंने इकट्ठी की ॥ ९४ ॥ सुवर्ण का श्रृंगार, पान, कपूर आदि विभिन्न वस्तुओं का ढेर लगा दिया गया। जितने राजा स्वयंवर-सभा में योगदान करने आए थे, सभी को रत्न-जड़ित भवन रहने के लिए मिले ॥ ९५ ॥ ताम्बूल, चन्दन और सुन्दर वस्त्र-अलंकारों तथा विभिन्न उपहारों से सबकी अर्चना की गई। फूल, कुंकुम और चन्दन की गन्ध से सभी को सादर सन्तुष्ट किया गया ॥ ९६ ॥ सारे नृपति जिस समय बैठक लगाकर बैठे थे उसी समय राजा दशरथ वहाँ जा पहुँचे। घोड़े, हाथी और सेना से सुसज्जित वे उसी नृप-समाज में जा उपस्थित हुए ॥ ९७ ॥ राजाओं ने दशरथ को आते हुए देखा तो उठकर सम्मान से खड़े हो गये। केकय राजा ने देखा तो वे बड़े हर्षित हुए। उन्होंने सम्मान के साथ उनको सिंहासन दिया ॥ ९८ ॥ राजा दशरथ जाकर उस पर बैठ गये, मानों देवताओं की सभा में पुरन्दर (इन्द्र) आ बैठे हों। सारे नृपतियों के बीच राजा (दशरथ) यों शोभायमान होने लगे ज्यों सारे नक्षत्रों के बीच पूर्णिमा का चांद ॥ १९९ ॥ दशरथ के सम्मुख सारे राजा यों आभाहीन हो गये ज्यों सूर्य के उदय से नक्षत्रगण हो जाते हैं।

सादरे भृंगार धरि प्रक्षालिला पाव * षड़र्घे करिला पूजा वुलि वहु भाव
कुसुम चन्दन दिव्य वस्त्र अलंकार * नाना द्रव्य दिया अर्च्चिलन्त वारे वार२०१
वुलि आति स्तुति बाणी सन्तोषिला मन * षड्रसे पंचामृते कराइला भोजन
कर्पूर ताम्वुल दिला भोजनर शेषे * गृह व्यवहार राजा करिला निशेषे२०२
केकय राजार आति देखिया भकति * भैलन्त सन्तुष्ट दशरथ महामति
करिलन्त केकयक प्रशंसा आशेष * अनन्तरे भैला आसि रजनी प्रवेश२०३
उत्तम मन्दिरे रत्नमय आसनत * सुकोमल शय्यात शुतिला दशरथ
सुखे नृपतिर भैल रजनी प्रभात * स्नान दान करि आसि वसिला सभात ४
प्रभात समये उठि केकय नृपति * स्नान दान तर्पण करिला महामति
विधिर नियम समर्पिया नृपवर * पातिलन्त सभा कैकेयीर सयम्वर ५
रत्नमय आसन थैलन्त स्थाने स्थाने * ताते आसि वसिला नृपतिगण माने
वसि आछे दशरथ सवारे माजत * तान तेजे संकुचित राजागण यत ६
ज्वले उत्पल येन सूर्य्यर उदय * दशरथ समे सेहिमत राजाचय
केकय नृपति आतिशय वुद्धिमन्त * यथायोग्य समस्ते राजाक अर्च्चिलन्त ७
वुलिला सवाको पाचे सुमधुर वाणी * कैकेयी नामत मोर आछे कन्याखानि
आति शिष्टमती कन्या आसि समज्याक * आपोन इच्छाये कन्या वरय याहाक ८
ताहाने हैवेक सिटो कन्या महासती * एहि वुलि कैकेयीर पाशक नृपति
निज गुरु ब्राह्मणक दिलन्त पठाइ * आनियोक कन्या गैया सभाक आताई ९
शुनि पुरोहिते गैया वुलिला कन्याक * आसियो कैकेयी पितृवाक्ये समज्याक

अपने पात्र-मित्र और पुत्र के साथ राजा केकय ने राजा दशरथ को भक्ति अर्पित की ॥ २०० ॥ आदर के साथ झारी लेकर उनके पाँव धोये और छह अर्घ्यों के साथ उनकी पूजा की । कुसुम, चन्दन, सुन्दर वस्त्रों, आभूषणों तथा अन्य द्रव्यो से वार वार उनकी अर्चना की ॥ २०१ ॥ स्तुतिपूर्ण वाणी वोलकर उनको सन्तुष्ट किया और छह-रस और पंच-अमृत-सम्मिलित भोज्य पदार्थो से उनको भोजन कराया । भोजन के उपरान्त उनको पान-कपूर दिया । इस प्रकार गृहस्थ का सारा समुचित कर्त्तव्य राजा ने पूरा किया ॥ २०२ ॥ राजा केकय की अति-भक्ति देखकर महामुनि राजा दशरथ प्रसन्न हुए । उन्होंने केकय की वडी प्रशंसा की । इसके वाद रात हो गई ॥२०३ ॥ श्रेष्ठ भवन में रत्नमय आसन पर विछाये हुए कोमल विस्तर पर दशरथ सो गये । राजा ने सुख से रात काटी । सवेरे स्नान-दान आदि करके वे सभा मे आकर वैठे ॥ २०४ ॥ राजा केकय ने सवेरे उठकर स्नान, दान और तर्पण किया । नरवर ने विधि के नियम पर सव सौंपकर कैकेयी की स्वयंवर सभा का आयोजन किया ॥ ५ ॥ स्थान-स्थान पर उन्होंने रत्नमय आसन विछा दिये और उन पर सारे नृपति आकर स-सम्मान वैठ गये । सभी लोगों के वीच राजा दशरथ वैठे थे जिनके प्रताप के सम्मुख सारे राजा सकुचे से वैठे थे ॥ ६ ॥ जिस प्रकार सूर्य के उदय से कमल खिल उठते हैं उसी प्रकार दशरथ के सम्मुख सारे राजा प्रफुल्ल थे । राजा केकय अत्यन्त वुद्धिमान थे, उन्होंने प्रत्येक राजा की यथायोग्य अर्चना की ॥ ७ ॥ इसके अनन्तर उन्होने मधुर वचनों द्वारा सवसे कहा—कैकेयी नामक मेरी एक वेटी है वह वड़ी ही शिष्ट है । इस सभा मे आकर वह अपनी इच्छा से किसी को भी वरण करेगी ॥ ८ ॥ इसके वाद वह कन्या महासती उसको अर्पण होगी । इतना कहने के वाद राजा ने अपनी वेटी के पास अपने गुरु ब्राह्मण को भेज दिया कि वह कन्या को अव इस सभा में ले आवे ॥ ९ ॥ सुनकर पुरोहित ने जाकर कन्या से कहा,

शुनिया कन्यार हरिषर नाहि पार * पिन्धिला उत्सुके दिव्य वस्त्र अलंकार
एकचित्त हुया शुना सभासद लोक * गुचोक संसारभय राम बुलियोक२१०

दुलड़ी

कैकेयी कामिनी सुचन्द्रवदनी काछिलन्त बहु भावे।
करि लीलागति समज्याक प्रति चलि यान्त भूमिपांवे ॥
कृश मध्यदेह बुलन्ते हालय चले अति लयलासे।
अनेक सुन्दरी तांक मध्ये करि वेढ़ि यान्त चारि पाशे ॥ २११
त्रैलोक्यमोहिनी गजेन्द्रगामिनी पाइला सयम्वरशाला।
प्रवेशिला गइ मेरुत उदय येन चन्द्रमार कला ॥
भैलन्त विस्मय यत राजाचय कन्यार रूप देखिया।
चाहन्त निरीखि अमृतक देखि येन लुभियार हिया ॥ १२
रूप विपरीत देखि विमोहित भैल यत राजाचय।
स्थिर नोहे मन पीड़िले मदन देखे सबे तमोमय ॥
कम्पय शरीर कतो वेलि स्थिर भैल राजागण यत।
अन्यो अन्ये माति कहे कथा आति रूपर किनो महत्व ॥ १३
स्वर्ग हन्ते किवा आसिल उर्व्वशी किवा रति तिलोत्तमा।
इन्द्रर घरिणी किवा आइल शची किवा अपेस्वरी हेमा ॥
रोहिणी पार्व्वती किवा लक्ष्मी देवी आसि आछे मूर्त्ति धरि।
इटो त्रैलोक्यत इहेन रूपक नुहि आने सरिवरि ॥ १४

हे कैकेयी, पिता के कहने पर तुम सभा में आओ। यह सुनकर वह कन्या हर्ष से भर गई और उसने उत्साह से सुन्दर वस्त्र और आभूषण पहन लिये। हे सभासद लोग, ध्यान लगा कर सुनो। राम का नाम लेकर संसार का भय दूर करो ॥ २१० ॥

दोलड़ी

चाँद सी मुखड़ेवाली कामिनी कैकेयी वड़े हाव-भाव के साथ निकट आने लगी और मन्द सौम्य गति से वह सभा की ओर पाँव वढाने लगी। उसके शरीर का मध्यभाग क्षीण है और चलने पर आन्दोलित होने लगता है, इसीलिए उसकी चाल छन्द-लय वद्ध है। वहुत सी सुन्दरी स्त्रियाँ उसको वीच में रख चारों ओर से घेर कर चलने लगीं ॥ २११ ॥ त्रिलोक को मोहने वाली उस गजेन्द्रगामिनी ने स्वयंवर-शाला में इस प्रकार प्रवेश किया मानों मेरु पर्वत पर चन्द्रमा का उदय हुआ हो। वहाँ पर उस समय जितने राजन्यवर्ग थे वे सव कन्या का रूप देखकर विस्मित रह गये। वे इस प्रकार से उसकी ओर निखरने लगे मानो लोभी अमृत की ओर देख रहा हो ॥ १२ ॥ उसका ऐसा अनोखा रूप देखकर सारे राजा मोहित हो गये। उनका मन चंचल हो उठा। जव मदन पीडित करने लगता है तव सभी कुछ तमोगुण-पूर्ण लगने लगता है। उनके शरीर काँपने लगे। वहुत देर में वे सारे राजा अपने को स्थिर कर सके और एक दूसरे के साथ उसके असामान्य रूप के महत्व के वारे में वातें करने लगे ॥ १३ ॥ स्वर्ग से क्या उर्वशी चली आई, या तिलोत्तमा आ गई। कही इन्द्र की घरवाली शची तो नही आ गई। ऐसा तो नही कि यह अप्सरा हेमा हो। या रोहिणी, पार्वती या लक्ष्मीदेवी

एक हाते जल झारी आउर हाते धरिया पुष्पर माला ।
राजगण माजे आपन सदृश वर निरीक्षन्त बाला ॥
सखीगण समे फुरन्त सुन्दरी गोटे गोटे राजा चाइ ।
सबे राजागणे बोले मने मने मोके वरिबेक पाय ॥ १५
पाछे सुदर्शन नामे एक राजा सबाको बोले वचन ।
सुदक्षिणा नामे कन्यार काहिनी सुनियोक राजागण ॥
मगध राजार जीउ सुदक्षिणा परम पद्मिनी कन्या ।
सर्व्वगुणयुत रूप अदभुत त्रैलोक्यमोहिनी धन्या ॥ १६
तान सयम्बरे गैलो निरन्तरे आछो राजागण यत ।
हाते माल्य धरि वर अनुसरि फुरे कन्या समाजत ॥
सूर्य्यवंशे राजा आछिला दिलीप परम गुणे महन्त ।
माथे माल्य दिया गैया सुदक्षिणा दिलीपक बरिलन्त ॥ १७
इओ महासती येन सुदक्षिणा समस्त गुणक धरे ।
कोन पुण्यवन्त आछे भाग्यवन्त नाजानो काहाक बरे ॥
एहिमते राजा सबे अन्यो अन्ये कन्यार गुण बखाने ।
पाछे धीरि धीरि कैकेयी सुन्दरी गैला दशरथ स्थाने ॥ १८
तांक देखि कन्या गुणे मने मने एन्ते हैबा मोर पति ।
इहान समान इटो पृथिवीते नाहिके आन नृपति ॥
इहान आगत नब्वलय केर यत आछे राजागण ।
त्रिभुवने सार रूप चमत्कार साक्षाते येन मदन ॥ १९
इहान अधीन सकलो नृपति आछन्त खाटिया नित ।
इहाकेसे मइ बरिबो बुलिया दृढ़ करिलन्त चित ॥

मानवी रूप धर कर चली आई हो । इन तीनों लोकों में इसके समान कोई रूप नहीं है ॥ १४ ॥ एक हाथ में पानी की झारी लिये और दूसरे हाथ में फूलमाला लिये वह राजाओं के बीच अपने योग्यवर को देखने लगी । सखियों के साथ वह सुन्दरी एक-एक राजा को देखती हूई आगे बढ़ने लगी । सारे राजा मन ही मन कहने लगे, यह सुन्दरी मेरा ही वरण करेगी ॥ १५ ॥ इसके अनन्तर सुदर्शन नामक एक राजा ने सब राजाओं से यह कह सुनाया कि हे राजागण! सुदक्षिणा नामक कन्या की कहानी सुनो । मगध राजा की एक बेटी थी सुदक्षिणा जो कि पद्मिनी वर्ग की नारी थी । वह सारे गुणो से सम्पन्न थी, अद्भुत रूपवती थी और त्रैलोक्यमोहिनी थी ॥ १६ ॥ उसकी स्वयंवर-सभा मे जितने राजा थे सभी गये । हाथ में माला लेकर वह कन्या सभा मे वर ढूंढती हुई चलने लगी । दिलीप नामक सूर्यवंश के राजा भी उन्हीं में बैठे थे जो सारे गुणो से विभूषित थे । सुदक्षिणा ने जाकर उनके गले में माला डालकर दिलीप का वरण कर लिया ॥ १७ ॥ यह महासती भी सुदक्षिणा जैसी सारे गुणो की खान है । ऐसा कौन सा पुण्यवान् या भाग्यवान् है जिसका यह वरण करेगी । इसी प्रकार से राजालोग एक दूसरे से कन्या का रूप बखानने लगे । इसके अनन्तर सुन्दरी कैकेयी धीरे-धीरे उस स्थान पर गई जहाँ दशरथ थे ॥ १८ ॥ उनको देखकर वह कन्या मन ही मन सोचने लगी, यही मेरे पति होंगे । इनके समान संसार में दूसरा राजा कोई नहीं है । जितने सारे राजा आए है इनके सामने कोई भी इतने प्रकाशमान नही है । तीनों लोकों मे इनके समान रूप किसी मे नही है—मानों स्वयं मदनदेव हों ॥ १९ ॥ इन्ही के अधीन सारे नरपति नित्यप्रति परिश्रम करते रहते है । इन्ही

परम सादरे दशरथ शिरे दिला निया पुष्पमाल ।
चरणत धरि करि नमस्कार बरिलन्त बरबाला ॥ २०
हेन देखि यत लोक समज्यार करे जय जय ध्वनि ।
सार्थक बरक वरिला सुन्दरी कन्या वर बिचक्षणी ॥
वर कन्या दुइको प्रशंसा करिल समस्त लोके सादरि ।
सयम्बर रंग उत्सव मंगल देखिल नयन भरि ॥ २१
कैकेयीक पाया दशरथ राजा भैला आति कृतकृत्य ।
हरिषे बिस्तर मथिया सागर पाइलन्त येन अमृत ॥
केकय राजार आनन्द अपार जमाइ पाइ दशरथ ।
विधि व्यवहारे कन्या सम्प्रदान करिलन्त महारथ ॥ २२
उत्सुके मनत हय हस्ती रथ दास दासी ग्राम देश ।
सुवर्ण रजत मुकुता माणिक यौतुक दिला आशेष ॥
बियार सभात यत असंख्यात आछिलन्त राजागण ।
यौतुक संभार दिलन्त अपार नृपतिर तुषि मन ॥ २३
केकय नृपति अनेक भकति समज्याक सन्तोषिल ।
कुसुम चन्दने वस्त्र अलंकारे सबाको राजा तोषिल ॥
पाया सतकार हरिष अपार देखि सुखे सयम्बर ।
राजाक सादरि गैला घराघरि राजा प्रजा निरन्तर ॥ २४
राजा दशरथ पूरि मनोरथ कैकेयीक लैया संगे ।
महा कतूहले बाद्य सुमंगले गृहक गैलन्त रंगे ॥
शुना सभासद रामायण पद रामक हुया समुख ।
डाकि बोला हरि संसारक तरि लभिबा परम सुख ॥ २२५

का मैं वरण करूँगी ऐसा सोच, उसने अपने मन को दृढ़ किया और बड़े ही आदर से दशरथ के गले में उसने पुष्पमाला डाल दी। चरणों पर हाथ रख उनको प्रणाम किया और इस प्रकार श्रेष्ठ वाला ने दशरथ को वरण किया ॥ २० ॥ यह देखकर सभा के सारे लोग जयध्वनि कर उठे—इस सुन्दरी कन्या ने सार्थक वर को चुना—बड़ी विचक्षण कन्या है। सभी लोगों ने वर-कन्या दोनों को सादर सराहा, मंगलोत्सव स्वयंवर के गीत-वाद्य का आनन्द लिया और उसको जी भर कर देखा ॥ २१ ॥ कैकयी को प्राप्त कर राजा दशरथ कृतकृत्य हो गये, मानों सागर मथ कर अमृत पा गये, यों हर्ष-मग्न हो गये। दशरथ जैसा जमाई पाने के कारण राजा केकय को अपार आनन्द प्राप्त हुआ। उस महारथ ने विधि और व्यवहार के अनुसार कन्या का सम्प्रदान किया ॥ २२ ॥ उत्साह भरे मन से उन्होंने दहेज के रूप में घोड़ा, हाथी, रथ, दास, दासी, सोना, चाँदी, माणिक, मोती असंख्य पदार्थ दिये। विवाह-सभा में जितने असंख्य राजा उपस्थित थे उन्होंने नृपति को तुष्ट करते हुए पर्याप्त दहेज दिया ॥ २३ ॥ राजा केकय ने सारे समाज को भक्ति से सन्तुष्ट किया और उनको कुसुम, चन्दन, वस्त्र और अलंकार से प्रसन्न किया। आदर-सत्कार पाकर वे बड़े प्रमुदित हुए और सुख से स्वयंवर देखा, तथा राजा के प्रति सम्मान प्रदर्शित कर वे राजा-प्रजा अपने-अपने घर चले गये ॥ २४ ॥ राजा दशरथ की मनोकामना पूर्ण हुई और वे कैकेयी को साथ लेकर महा कौतूहल के साथ वाद्य वजाते हुए अपने घर चले गये। हे सभासद, राम को सम्मुख समझकर रामायण-पद सुनो। हरि का नाम पुकारो, तभी तुम संसार से तर कर परमसुख प्राप्त करोगे ॥ २२५ ॥

पद

दशरथ नरपति भार्याये सहित * रत्नमय मन्दिरत भैला उपस्थित
शुनि नृपतिर पाछे मातृ इन्दुमती * पुत्रवधू देखिवे आसिला महा सती२२६
कैकेयीक देखि पाइला हरिष अपार * दिला वहारीक नाना रत्न अलंकार
कौशल्या कैकेयी दुइ महिषी प्रधान * दुहांको नृपति स्नेह करन्त समान२२७
कैकेयीर रूपे नृपतिर मोहे मन * तान्त अनुराग आति बाढ़े अनुक्षण
दुइ भार्या समे सुखे आछन्त नृपति * सुनियोक अनन्तरे कथाक सम्प्रति२२८

दशरथ लगत सुमित्रादि सात श राणीर विवाह

सिंहल द्वीपत राजा नामत सुमित्र * परम महन्त सर्व्वगुणत विचित्र
आछन्त सुमित्रा नामे दुहिता ताहान * परम सुन्दरी नाहि गुणत समान२२९
विवाह दिबार काल भैल राजा जानि * पुरोहित ब्रह्मणक बुलिलन्त वाणी
चला गुरु दशरथ नृपति थान * त्रिभुवने नाहि राजा ताहान समान ३०
तान्ते विहा दिवो मोर जीउ सुमित्राक * वाछा थाके आसन्तोक विहा करिवाक
शुनि दशरथ पाशे गैलन्त ब्राह्मण * तान आगे कैला सुमित्रार यत गुण ३१
शुनि दशरथर हरिष भैल आति * पुरोहित वशिष्ठक अनाइलन्त माति
आरो पात्र मंत्रीगण समस्तके आनि * सवाके प्रवोधि राजा वलिलन्त वाणी ३२
विहा करिवाक याइवो सुमित्रार थाने * दिन तिनिमान थाकिवाहा सावधाने
निचिनि आपोन पर अंधकार चित * शून्य पाट देखि सवे चिन्तिवे अहित ३३

पद

राजा दशरथ अपनी पत्नी के साथ स्वर्ण-निर्मित भवन में पहुँचे। सुनकर राजा की माँ महासती इन्दुमती पुत्र-वधू को देखने आई ॥ २२६ ॥ कैकेयी को देखकर उनको अपार हर्ष हुआ, उन्होने उसको अनेक रत्न-अलंकार आदि दिये। दशरथ के कौशल्या और कैकेयी दो प्रधान रानियाँ थी। उन दोनों से ही नृपति समान स्नेह करने लगे ॥ २२७ ॥ कैकेयी के रूप से दशरथ मुग्ध हो गये तथा दिन प्रति दिन उसके प्रति उनका अनुराग वढता ही गया। दो भार्याओ के साथ नृपति वड़े सुख से रहने लगे। इसके अनन्तर वाद की कथा सुनना ॥ २२८ ॥

दशरथ के साथ सुमित्रा आदि सात सौ रानियों का विवाह

सिंहल द्वीप मे सुमित्र नामक एक राजा थे जो कि सर्वगुणों से सम्पन्न महामना व्यक्ति थे। उनकी सुमित्रा नामक एक वेटी थी जो कि परमसुन्दरी थी और गुणों मे भी वेजोड थी ॥ २२९ ॥ सुमित्रा के विवाह करने का समय आ गया है यह जानकर राजा ने पुरोहित ब्राह्मण को वुलवाया और कहा, हे गुरु, राजा दशरथ के स्थान पर जाओ—तीनो लोकों में उनके समान दूसरा कोई राजा नहीं है ॥ ३० ॥ उन्ही से मै अपनी वेटी सुमित्रा का विवाह करूँगा। यदि उन्हें स्वीकार हो तो व्याह करने को आ जायें। यह सुनकर ब्राह्मण दशरथ के पास गया और उससे सुमित्रा के गुणों की वर्णना की ॥ ३१ ॥ यह सुनकर दशरथ को वड़ा हर्ष हुआ और उन्होने अपने पुरोहित वशिष्ठ के लिए वुलावा भेजा। अन्य मंत्री और सभासदो को भी वुलवाया और सभी को सम्बोधित कर उन्होने कहा ॥ ३२ ॥ मै सुमित्रा से विवाह करने उनके स्थान

जानि सवाहित थाकिवाहा सावधाने * आसिवोहो आमि तिनि दिन अवसाने
एहि वुलि सभा बिसर्ज्जिया दशरथ * सारथिक बोलन्त सत्वरे आन रथ२३४
शुनिया सारथि रथ तेखने आनिला * सुमित्रार ब्राह्मणक ताहाने तुलिला
आपुनिओ पाचे विवाहर सव साजे * शुभक्षणे रथत चड़िया महाराजे२३५
हस्ती घोड़ा रथ सर्व्व सैन्य सुमंगले * नाना वाद्यभंडे चलि गैला महावले
नक्षत्र संचारे येन रथ करे गति * सिंहल द्वीपत प्रवेशिला महामति ३६
सुमित्रार पुरोहित रथर नामिला * शीघ्र वेगे गैया सुमित्रात जान दिला
दशरथ राजा याइ नगरे प्रवेश * शुनि नृपतिर भैला हरिष आशेष ३७
पात्र-मित्र पुरोहित सैन्य सुमंगले * आग बाढ़ि नृपति आसिला कुतूहले
दशरथ नृपतिर पाइला गैया लाग * निधिवते सभार्ये पूजिला महाभाग ३८
वोलन्त सुमित्रे भाग्य मिलिल आमार * कत पुण्ये देखिलोहो चरण तोमार
तुमि सम राजा नाइ इ तिनि लोकत * तयु निजगुणे वश्य हुया राजा यत ३९
तोमार चरणे सेवा करे भृत्य सम * दाने धर्म्मे कुले शीले तुमि सर्व्वोत्तम
सातोद्वीपा पृथिवीर तुमि अधिपति * सूर्य्यवंशधर तुमि येन विष्णु मूर्त्ति ४०
लोकक शीतल करा चन्द्रवंश धरि * महावल पराक्रमे इन्द्रो नोहे सरि
धन वृष्टि करा तुमि कुवेर समान * लोक दंडधर तुमि येन यम सम ४१
धर्म्म प्रतिपालत विष्णुर समसर * लोकपालनत तुमि सर्व्व अंशधर
आनो नाना स्तुति राजा अनेक करिला * परम गौरव करि अन्तःपुरे निला ४२

जा रहा हूँ। आप लोग तीन दिन सावधानी से रहिएगा। चित्त अन्धकारमय है—अपना-पराया किसी को भी पहचानता नही हूँ—शून्य सिहासन देखकर सभी लोग अमंगल की चिन्ता करेंगे ॥ ३३ ॥ सभी लोगों का हित-चिन्तन करते हुए सावधानी से रहना—तीन दिन के उपरान्त मै आ जाऊँगा। इतना कहकर दशरथ ने सभा विसर्जित की और सारथी से शीघ्र रथ लाने के लिए कहा ॥ २३४ ॥ यह सुनकर सारथि तुरन्त रथ ले आया और सुमित्रा के ब्राह्मण को उस पर वैठोला। इसके वाद स्वयं महराज, विवाह की सारी सज्जा से सज्जित हो, शुभघड़ी पर रथ में वैठ गये ॥ २३५ ॥ हाथी, घोड़ा, रथ—सारे सैन्य और विभिन्न वाद्य-वादन के साथ महावली दशरथ मंगल-यात्रा पर चल पड़े। रथ भी नक्षत्र-गति से चल पड़ा और महामति शीघ्र ही सिंहलद्वीप में पहुँच गये ॥ ३६ ॥ सुमित्रा का पुरोहित रथ से उतरा और शीघ्रगति से जाकर सुमित्र को सूचित किया। दशरथ राजा ने नगर में प्रवेश किया है, यह सुनकर नृपति को वड़ा हर्ष हुआ ॥ ३७ ॥ नृपति अपने पात्र-मित्र और पुरोहित के साथ सुमंगल सैन्य को लेकर कौतूहल से अगवानी करने चले। आगे वढ़कर वे दशरथ नृपति से मिले और विधिवत् उनकी सभा की अर्घ्य से पूजा की ॥ ३८ ॥ सुमित्र ने कहा, कितना सौभाग्य था मेरा कि अपने पुरातन पुण्यो के कारण तुम्हारे चरणों के दर्शन हुए। इन तीनों लोकों में तुम्हारे समान राजा कोई नही है। तुम्हारे गुणो के कारण ही सारे राजा तुम्हारे वश मे है ॥ ३९ ॥ वे तुम्हारे चरणों की सेवा भृत्य के समान करते हैं। तुम दान, धर्म, कुल, शील मे सर्वोत्तम हो, तुम सातों द्वीप वाली पृथ्वी के अधिपति हो, सूर्यवंश मे उत्पन्न तुम साक्षात् विष्णु की मूर्ति के समान हो ॥ ४० ॥ तुम सारी प्रजा को शीतल करते हो इसलिए तुमको चन्द्रवंश का मानता हूँ। वल और पराक्रम में इन्द्र भी तुम्हारे तुल्य नहीं है। कुवेर के समान तुम धन का वर्पण करते हो। प्रजाओं में तुम दडधर यम के समान हो ॥ ४१ ॥ धर्म के प्रतिपालन में तुम विष्णु के समान हो, लोक-पालन मे तुम सर्वशक्तिमान हो।

यत्ने रत्नमय सिंहासन दिला आनि ॐ वसिलन्त सुखे दशरथ महामानी
अशेष प्रकारे पूजा करिया सुमित्र ॐ लैया संगे रंगे पाचे पात्र मंत्री मित्र ४३
करिलन्त एक स्थान विहार संभार ॐ पुष्प गन्ध चन्दन ताम्बुल उपहार
नाना फल मूल दिव्य वस्त्र अलंकार ॐ दधि दुग्ध घृत मधु मिलाइला अपार ४४
कराइलन्त वहुविध लोकर आचार ॐ सांजि मांजि कराइला नगर जातिष्कार
पताका तोरण छिन्न चौंडा ध्वज दंड ॐ मृदंग गोमुख शंख नाना वाद्य भंड ४५
नाना नृत्य गीत जय उत्सव मंगल ॐ मिलि गैल लोकत अनेक कुतूहल
आचरि नृपति आति विधि व्यवहार ॐ करिलन्त अधिवास वर-कनियार ४६
रजनी प्रभाते दशरथ नरेश्वर ॐ स्नान दान तर्पण करिला निरन्तर
नान्दीमुख श्राद्ध पाचे करिला नृपति ॐ देव पितृ कार्य संकलिला महामति ४७
विवाहर लग्न पाचे भैल उपगत ॐ वसिला नृपति पाचे यज्ञर थानत
सुमित्र नृपति जयवाद्य सुमंगले ॐ कन्या सम्प्रदान करिलन्त कुतूहले ४८
नाना रत्न दासी दास हस्ती घोरा रथ ॐ अनेक यौतुक दिला कन्यार लगत
सुवर्ण रजत मणि मुकुतार दाम ॐ दिलन्त सुमित्रे आति पूरि मनकाम ४९
राजा दशरथे कन्या सुमित्राक पाइ ॐ भैलन्त हरिष आनन्दर सीमा नाइ
अमृतक पाइ येन लोभाविष्ट जन ॐ दरिद्र पराणी येन पाइल महाधन ५०
कन्या पाया सेहिमत भैला दशरथ ॐ विवाहमंगल पाचे भैला समापत
अयोध्याक याइवे नृपतिर भैला मन ॐ करिलन्त सुमित्रक सादरे वन्दन ५१

इस प्रकार से और भी कितनी ही स्तुतियाँ राजा ने की और वहुत सम्मान दिखाते हुए उनको अन्तःपुर ले गये ॥ ४२ ॥ यत्नपूर्वक रत्नमय सिंहासन लाया गया। उस पर महामान्य दशरथ आराम से वैठे। सुमित्र ने अपने साथ सारे पात्र-मित्र-मन्त्री आदि को लेकर कितने ही प्रकार से उनकी पूजा की ॥ ४३ ॥ एक स्थान पर विवाह की सारी सामग्रियाँ—पुष्प, गन्ध, ताम्बूल, चन्दन, उपहार, विभिन्न फल-मूल, सुन्दर वस्त्र और अलकार आदि—इकट्ठी की गई। दूध, दही, घी, शहद, आदि भी पर्याप्त मात्रा मे रखे गये ॥ ४४ ॥ कितने ही प्रकार के लोकाचारो का पालन किया। नगर को साफ-सुथरा और सुसज्जित कर शोभायमान वना दिया। तोरण पर लम्वे ध्वजदडों पर पताकाएँ लगाई गई। मृदग, गोमुख, शंख आदि विभिन्न प्रकार के वाद्य वजने लगे ॥ ४५ ॥ मगल जयोत्सव मे विभिन्न नृत्यों-गीतों का अनुष्ठान हुआ, जिससे लोगो मे कौतूहल का सचार हुआ। नृपति ने रीति-रिवाज के अनुसार वर-कन्या के अधिवास का सारा प्रवन्ध किया ॥ ४६ ॥ प्रभात होने पर राजा दशरथ ने उठकर स्नान किया, तर्पण और दान भी किया। इसके अनन्तर उन्होने नान्दीमुख श्राद्ध भी किया। इस प्रकार नृपति ने देवता और पितरो का कार्य सम्पन्न किया ॥ ४७ ॥ इसके अनन्तर विवाह की शुभघडी आई तो नृपति यज्ञ के स्थान पर वैठ गये। राजा सुमित्र ने मंगलकारी जयवाद्य-वादन के साथ अपनी कन्या का सम्प्रदान सोत्साह किया ॥ ४८ ॥ कन्या के सहित अनेक धन, रत्न, दास-दासी घोड़ा-हाथी, रथ आदि दहेज के रूप मे दिया। सुमित्र ने अपनी मनोकामना पूरी करते हुए सोना, चाँदी, माणिक, मोती आदि भी दान मे दिये ॥ ४९ ॥ कन्या सुमित्रा को पाकर राजा दशरथ वडे हर्पमग्न हुए, उनके आनन्द की सीमा नही रही। लालची व्यक्ति को मानो अमृत मिल गया हो या दरिद्र व्यक्ति को मानो विपुल धन प्राप्त हो गया हो ॥ ५० ॥ इस प्रकार दशरथ को कन्या प्राप्त हुई। इसके अनन्तर विवाह के सारे शुभकार्य समाप्त हुए और नृपति ने अयोध्या जाने के लिए विचार किया। उन्होने

सुमित्रे बुलिला पाचे बचन विनय * मोर जीउखानिक पालिवा महाशय
अवोध छवाल नोहे तोमार उचित * तथापितो दासी बुलि पालिबाहा नित ५२
समर्पिला कन्याक सुमित्र महाराज * दशरथ राजा चलिवाक भैला साज
काछि पारि आसि लाग लैला सेना यत * सुमित्राक तुलिलन्त सुवर्णरथत ५३
अयोध्यार पति सेहि रथे आरोहिला * सुमंत्र चाबुक धरि घोराक डाकिला
चलि गैल रथ येन विजुलीसंचार * सेनागणे करे जय शबद जोकार ५४
चल चल बुलि प्रजा करे हुलस्थुल * काहाली महरी भेरी शवद तुमुल
दुन्दुभि मृदंग दामा बाजे ढाक ढोल * नाना वाद्यभंड हस्ती घोरार आन्दोल ५५
दशोदिशे वियापि शवदे गैल छानि * आकाशक लंघिया स्वर्गतो लागे ध्वनि
सुमंत्र चलान्त वेगे नृपतिर रथ * पृथिवी एरिया गैल आकाशर पथ ५६
सुमित्रा सहिते राजा परम कौतुके * अयोध्या नगर गैया पाइलन्त उत्सुके
आपुन आवासे नाना जय सुमंगले * सुमित्रा सहिते प्रवेशिला कुतूहले ५७
दशरथ नृपतिर मातृ इन्दुमती * कौशल्या कैकेयी दुइ बोहारी सहिति
आनो शान्ती सुन्दरी आयती लैया संगे * मंगल आचार यत करिलन्त रंगे ५८
सुमित्रार रूप गुण चरित्र आचारे * मनत मिलिल आति सबारे
सबेओ दिलन्त दिव्य वस्त्र अलंकार * नाना मणि रत्न दिया करिला सत्कार ५९
एहिमते नृपतितिलक दशरथ * एके एके बिवाह करिला सात शत
सवाते प्रधान भैला तिनि महादइ * कौशल्या सुमित्रा सती सुन्दरी कैकेयी ६०
कैकेयीर रूपे मुहिलेक नृपतिक * तांक स्नेह करे राजा सबातो अधिक

सुमित्र का सादर वन्दन किया ॥ ५१ ॥ इसके वाद सुमित्र ने विनय-वचन कहा। हे महाशय, मेरी वेटी को यत्न से पालना। अवोध वच्ची तुम्हारे योग्य तो नहीं है—फिर दासी समझकर उसका प्रतिपालन करना ॥ ५२ ॥ इस प्रकार महाराज सुमित्र ने अपनी कन्या सौंप दी। राजा दशरथ चलने के लिए सुसज्जित होने लगे। जितनी सेना थी वह निकट आकर खड़ी हो गई। सुमित्रा को स्वर्ण-निर्मित रथ में विठाया गया ॥ ५३ ॥ अयोध्या-पति उसी रथ पर सवार हो गये। सुमन्त्र ने चावुक पकड़ कर घोड़े को पुचकारा। वह रथ यों चल पड़ा मानो विजली चमककर चली गयी। सारी सेना जय-ध्वनि कर उठी ॥ ५४ ॥ सारी प्रजा में चलो-चलो शव्द से उथल-पुथल मच गई। काहाली, महरी, भेरी, दुन्दुभि, मृदंग, दमामा और नगाड़ा, ढोलक आदि वजने लगे। विभिन्न वाद्ययंत्रों की ध्वनि और हाथी, घोड़ों का चलना-फिरना ॥ ५५ ॥ ये शव्द दशों दिशाओं में छा गये। आकाश को लांघकर यह ध्वनि स्वर्ग से जा टकराई। सुमन्त नृपति का रथ वेग से चलाने लगा तो पृथ्वी का पथ छोड़ उसने आकाश का मार्ग ले लिया ॥ ५६ ॥ सुमित्रा के साथ राजा परम कौतुक से अयोध्या नगर में उत्सुकता के साथ जा पहुँचे। अपने भवन में सुमित्रा के साथ शुभ लक्षणों सहित कौतूहल से प्रवेश किया ॥ ५७ ॥ राजा दशरथ की माँ इन्दुमती अपनी दोनों वहुओं—कौशल्या और कैकेयी के साथ, एवं अन्यान्य सुघर सुन्दरी साध्वियों के साथ, कितने ही मंगलाचार सानन्द करने लगीं ॥ ५८ ॥ सुमित्रा के रूप-गुण और आचरण-चरित्र से सभी लोग वड़े सन्तुष्ट हुए और हृदय से उससे मिले। सभी लोगों ने सुन्दर वस्त्र-अलंकार और विभिन्न मणि-रत्न देकर उसका आदर-सत्कार किया ॥ ५९ ॥ इसी प्रकार से नृपतियों में श्रेष्ठ दशरथ ने एक-एक कर सात सौ विवाह किये। इनमें सवसे प्रधान तीनों महा-देवियाँ हुईं—सती सुमित्रा, सुन्दरी कैकेयी और कौशल्या ॥ ६० ॥ कैकेयी के रूप ने नृपति को मुग्ध कर लिया, इसलिए राजा उसी से सवसे अधिक प्रेम करने लगे।

दशरथर राज्यर ओपरत शनिर दृष्टि आरु जटायुर लगत वन्धुता

राज्यभोग भुंजे भार्या-समूह सहित * राज्य चिन्ता नाहि भैला भार्यात मोहित २६१
स्त्रीगण लैया क्रीड़ा करय नृपति * हेनकाले आसिला नारद महामति
नारदक देखि दशरथ नरेश्वर * आथेवेथे गाव चालि उठिला सत्वर ६२
सुवर्ण आसन दिला करि नमस्कार * पाद्य अर्घ्य दिया करिलन्त सतकार
आशीर्व्वाद करि मुनि वसिला आसने * कृताञ्जलि करि राजा मधुर वचने ६३
पुछिलन्त सादरे कुशल आगमन * कहियोक मुनि किवा साधो प्रयोजन
शुनिया राजाक बुलिलन्त मुनिवर * भाल मन्द चिन्ता तुमि नकरा राज्यर ६४
सूर्य्यवंशे भैला यत नृपति महन्त * पुत्रतो अधिक करि राज्य पालिलन्त
सेहि सूर्यवंशे तुमि नृपति प्रधान * स्त्रीत भैलाहा वाउल चिन्ता नाहि आन ६५
यिटो राजा नकरे लोकक प्रतिपाल * होवय अल्पायु भोग नाहि चिरकाल
तोमार राज्यर लोके पावे बर दुख * नभैल अपत्य नेदेखिला पुत्रमुख ६६
तुमि सुखे आछा दुख पावे लोक यत * एहि पापे पाचे परिवाहा नरकत
राजा बोले शुना मुनि वचन आमार * करिछो लोकक आमि किवा अपकार ६७
नाहि दंड वन्ध वलावल वैरभय * नाहि पाल पांच लोक कुशले आछय
नाहि चोर चोंच शत्रुभय अकालत * केने अपयश मोक करय लोकत ६८
नारदे वोलन्त शुना नृपति महन्त * शनिर दृष्टित परि रोहिणी आछन्त
सम्पूर्णे शनिर दृष्टि भैल रोहिणीत * वृष्टि नाहि एको शस्य नोपजे भूमित ६९

दशरथ के राज्य पर शनि की दृष्टि और दशरथ-जटायु-मित्तता

अपनी पत्नियों के सहित राजा राज्य-सुख का उपभोग करते रहे। पत्नियों में मुग्ध पडे रहने से राज-काज की चिन्ता नहीं रही ॥ २६१ ॥ नृपति नारियों को लेकर क्रीडा मे मत्त थे कि ऐसे समय महामना नारद वहाँ आ पहुँचे। नारद को देखकर राजा दशरथ अत्यन्त आदर के साथ झटपट उठ कर खडे हो गये ॥ ६२ ॥ प्रणाम कर उन्होने सोने का वना आसन दिया और पाद्य-अर्घ्य देकर उनका सत्कार किया। मुनि आशीर्वाद कर आसन पर वैठ गये। राजा ने हाथ जोड़कर मधुर वचन से पूछा ॥ ६३ ॥ उन्होने सादर पूछा, कुशल तो है, आने का कारण क्या है, हे मुनि वताओ कौन सी आवश्यकता है? यह सुनकर मुनि ने राजा से कहा, तुम राज्य के भले-बुरे की चिन्ता नही करते ॥ ६४ ॥ सूर्यवंश मे जितने भी महान् राजा हुए उन्होंने पुत्र से भी अधिक मानकर प्रजा का प्रतिपालन किया। उसी सूर्यवश में तुम एक प्रधान नृपति हुए हो, स्त्री के पीछे तुम पागल वने हुए हो—दूसरी कोई चिन्ता ही नही है तुमको ॥ ६५ ॥ जो राजा प्रजा का प्रतिपालन नही करता है वह अल्पायु होता और सदा के लिए भोग नहीं कर सकता। तुम्हारे राज्य के लोगों को वडा क्लेश प्राप्त होगा। तुम्हारे कोई सन्तान भी नही हुई और न तुमने वेटे का मुख देखा ॥ ६६ ॥ तुम सुख से हो और सारे लोग दुख पा रहे है, इसी पाप से वाद मे तुम नरक जाओगे। राजा ने कहा, हे मुनि! सुनो, मैं लोगों का कौन सा अपकार कर रहा हूँ ॥ ६७ ॥ सजा या दंड देना भी वन्द नही, कोई शत्रुभय भी नहीं, बुरे लोगो को कोई वढावा नही, लोग कुशल से है। चोर-चाँई शत्रु और अकाल का कोई भय नही—तो फिर क्यो लोगो मे मेरा अपयश करते हो ॥ ६८ ॥ नारद ने कहा, हे महान् नृपति सुनो, रोहिणी पर शनि की दृष्टि थी ही, अव उसकी

सि कारणे अन्न-दुख पावे लोक यत * आपुनि देखियो राजा फुरिया राज्यत
लोके येन बोले ताक शुनाहा आपुनि * राजाक एतेक बुलि चलि गैला मुनि ७०
नारदर वाणी शुनि पाचे दशरथे * दक्षिण दिशक गैला चड़ि निज रथे
प्रवेशिला गैया राजा घोर अरण्यत * नाना मृग पक्षीगण देखिला वनत ७१
दिव्य सरोवर देखिलन्त महाबले * कौतुके बसिला राजा एक वृक्ष तले
सेहि वृक्षडालत शालिका दुइ आछे * ताहार बचन राजा शुनिलन्त पाचे ७२
शालिका बोलय शुना शालिकी वचन * इ बन एरिया आसा जाओं आन वन
शालिकी बोलय देखा इ बर अकाज * सपत पुरुष वंचो एहि वन माज ७३
इहाक एरिते वर दुख लागे मने * इ बन एरिया केने याइबो आन वने
शालिका बोलय शुना गुचो यि कारण * सूर्य्यर वंशत यत राजा महाजन ७४
नजानिलो एको दुख वंचि सिटो राजे * निमिले आधार एवे एत काल बाजे
जानो दशरथ राजा अधर्म्म करय * स्त्री लैया क्रीड़े राजा प्रजा नपालय ७५
राज्यभोग करे चिन्ता नकरे राज्यर * संसारतो नतो देखो हेन नृपवर
इहार राज्यत आमि मरिबो पराणे * इ बन एरिया आसा याओं आन वने ७६
आछिलो सुखत एको नाछिल प्रमाद * नाना फल फुल पाइलो सुरस सुस्वाद
एकोरे आधार एवे नापाओं वनत * नाहि बरषुण पंच बत्सर राज्यत ७७
सुख दुख दशरथे नाजाने राज्यर * झांटे गुचि जाओं आमि आनो वनान्तर
एहि बुलि शालिका तलक निरेखिल * वृक्षर मूलत दशरथक देखिल ७८

सम्पूर्ण दृष्टि उस पर छा गई है। वर्षा नही होगी और धरती पर कोई भी फसल उत्पन्न नहीं होगी ॥ ६९ ॥ इसी कारण लोगों को अन्न के लिए दुख सहना पड़ेगा। राजा, स्वयं अपने राज्य में घूम-फिर कर देख आओ। लोग जो कुछ कहते है वह स्वयं सुनो। राजा से इतना कहकर मुनि चले गये ॥ ७० ॥ नारद के वचन सुनने के उपरान्त दशरथ अपने रथ पर सवार होकर दक्षिण दिशा की ओर गया। घोर अरण्य में राजा जा पहुँचा। वहाँ वन में उसने नाना प्रकार के मृग और पक्षी देखे ॥ ७१ ॥ महावल ने एक दिव्य सरोवर देखा। राजा एक वृक्ष के नीचे सानन्द वैठ गया। उसी वृक्ष की डाल पर दो सुग्गे वैठे थे। उनकी वातचीत राजा ने इसके वाद सुनी ॥ ७२ ॥ सुग्गा सुग्गी से कहता है—मेरा वचन सुनो, इस वन को छोड़कर, चलो दूसरे वन चलें। सुग्गी ने कहा, लेकिन यह तो वड़ा अटपटा काम वता रहे हो। सात पुश्त से हमारा इस वन में निवास है ॥ ७३ ॥ इस वन को छोड़कर जाने में वड़ा क्लेश होगा, इस वन को छोड़कर आखिर दूसरे वन में जाएँ भी क्यों? सुग्गा ने कहा, सुनो, यहाँ न रहने का कारण वताता हूँ। सूर्यवंश में अनेक महान् राजा हो चुके हैं ॥ ७४ ॥ उनके राज्य में रहते हुए एक भी दुःख नही मिला। इतने दिनों के वाद अव अन्धकार उतर आया है। जानती हो, राजा दशरथ अधर्म कर रहा है, प्रजा का पालन न कर अपनी नारियों के साथ क्रीड़ा करता रहता है ॥ ७५ ॥ राज्यभोग करता है, लेकिन राज्य की कोई चिन्ता नहीं करता। संसार मे ऐसा नृपवर नही दिखाई पड़ता। इसके राज्य में मै प्राणों से मारा जाऊँगा। यह वन त्याग कर, चलो दूसरे वन को चला जाय ॥ ७६ ॥ सुख से यहाँ थे, कोई विपत्ति नहीं थी। स्वादिष्ट फल-फूल मिला करते थे। अव एक भी आहार्य यहाँ नहीं मिलता। पाँच वर्ष तक राज्य में वर्षा नही होगी ॥ ७७ ॥ दशरथ राज्य का सुख-दुख नही जानता। मैं झटपट दूसरे वन को चला जाऊँगा। यह कहकर सुग्गा ने पेड़ के नीचे देखा और वृक्ष के तने के पास दशरथ को वैठा देखा ॥ ७८ ॥

भैल भय राजाक देखिया विद्यमाने * बुलिलो राजाक मन्द नारिब पराणे
पक्षीर देखिया डर हासि महाशय * नकरा तरास बुलि दिलन्त अभय ७९
कर अधिकार इटो वन दिलो तोक * सुखे थाक पक्षी भय नकरिवि मोक
एहि बुलि नृपति स्वर्गक गैला लरि * इन्द्रर भुवन गैया पाइला दरदरि ८०
महाकोपे बुलिलन्त देवतागणक * जान देह आमि युद्ध करिवो इन्द्रक
देवगणे बोले कोप एरा महारथ * नकरिवे युद्ध इन्द्रे तोमार लगत ८१
हेन शुनि नरनाथे बुलिला वचन * इन्द्रर अधीन इटो यत मेघगण
मोहोर राज्यत वृष्टि किसक नकरे * अनावृष्टि नष्ट भैल राज्य निरन्तरे ८२
नाहि पंच वत्सर राज्यत वरिषण * मोर अपयशे दुख पावे प्रजागण
वृष्टि करि करन्तोक राज्य मोर रक्षा * नुहि अमरावती जिनि लैवो मोर कक्षा ८३
शुनि नृपतिर दर्प युगुत वचन * वासवर आगे जान दिला देवगण
कृतांजलि बोले शुना त्रिदशर राय * दशरथ राजा आसि आछे तयु ठाइ ८४
अपमाने गर्व्वबाक्य बोलय कर्कश * अनावृष्टि देखि देन्त तोमार दुर्यश
वासवे बोलन्त हुया आपुनि मानुष * मोक मन्द बाणी बुलि देखावे पौरुष ८५
नकरिबा अहंकार बोले देवगण * पाद्य अर्घ्य दिया ताँक करियो पूजन
तांक कोन जने जिनिबेक समरत * परम विक्रमी नाना अस्त्रत पारगत ८६
कराहा आलाप तांक मधुर वचने * सतकार पाइले ताप नबाढ़िब मने
मने अनुमानि इन्द्र देवतार वाक * पाद्य अर्घ्य दिया पूजा करिला राजाक ८७
सतकार पाया दशरथ नृपवर * इन्द्रक बोलन्त शुनियोक पुरन्दर
मोहोर राज्यत केने नाहि बरिषण * अनाहारे मरे लोक कहियो कारण ८८

सामने राजा को देखकर उसको डर लगा। राजा को बुरा-भला कहा है, वेशक प्राणों से मार डालेगा। पक्षी का भय देखकर राजा ने हँसकर 'डरो मत' कहकर उसको अभय दिया ॥ ७९ ॥ ऐ पक्षी, यह वन मैंने तुमको दे दिया, इस पर अपना कब्जा कर लो। सुख से रहो और मुझसे मत डरो। यह कह कर ही राजा स्वर्ग के लिए चल पडा और इन्द्र के भुवन मे जा पहुँचा ॥ ८० ॥ देवताओ से उसने महाक्रोध में कहा, यह खबर कर दो कि मै इन्द्र से युद्ध करने आया हूँ। देवताओ ने कहा, महारथ ! आप अपना क्रोध शान्त करे, आपसे इन्द्र युद्ध नहीं करेगा ॥ ८१ ॥ यह सुन कर नरनाथ ने कहा, ये सारे बादल इन्द्र के अधीन हैं। मेरे राज्य मे किस कारण यह पानी नही बरसा रहा है। सूखा से मेरा राज्य चौपट हो रहा है ॥ ८२ ॥ पाँच वर्ष से राज्य मे वर्षा नही हुई। मेरे अपयश के कारण प्रजा दुखी हो रही है। पानी बरसा कर मेरे राज्य की रक्षा करो वर्ना मैं अमरावती को जीतकर अपने अधीन कर लूँगा ॥ ८३ ॥ नृपति का दर्पपूर्ण वाक्य सुनकर देवताओं ने इन्द्र को सूचित किया। हाथ जोड़ कर उन लोगो ने कहा, हे त्रिदश (देवता) के राजा, राजा दशरथ तुम्हारे यहाँ आ पहुँचे है ॥ ८४ ॥ वह (तुम्हारे लिए) अपमानजनक गर्वित वाक्य बोल रहे है, अनावृष्टि देखकर तुम्हारी निन्दा कर रहे है। वासव ने कहा, स्वय तो मनुष्य है, मुझको बुरा-भला कहकर अपना पौरुष प्रदर्शित कर रहा है ॥ ८५ ॥ देवताओ ने कहा, अहकार मत करना। उनको पाद्य-अर्घ्य देकर पूजा करना। उनको कौन जीत सकेगा, कौन इतना समर्थ है। वह बड़े ही पराक्रमी है और विभिन्न अस्त्रों में पारंगत है ॥ ८६ ॥ उनके साथ मधुर वाक्यो से बातचीत करना। यदि उन्हें अच्छा बरताव मिलेगा तो उनके दिमाग की गर्मी नही बढेगी। देवताओं के वाक्य सुनकर और मन में विचार कर इन्द्र ने पाद्य-अर्घ्य देकर राजा की पूजा

इन्द्रे बोले शुना राजा करि थिर चित * सम्पूर्ण शनिर दृष्टि भैल रोहिणीत
सिहेतु नाहिके वृष्टि तोमार राज्यत * शनिर पाशक तुमि याहा महारथ ८९
वुलिवा छारोक शनि रोहिणीत दृष्टि * तेवेसे तोमार राज्ये हैबे जाना वृष्टि
शुनि दशरथे वासवर वचनक * रथे चड़ि लरि गैला शनिर पाशक ९०
दशरथ नृपतिक देखिया आगत * चाहिलेक शनि कोप करिया मनत
छिडिल रथर जोरा शनिर दृष्टित * घोरा समे परे राजा हुआ विमोहित ९१
पाके पाके परे राजा हुया अचेतन * करे तांक रक्षा हेन नाहि एकोजन
गरुड़तनय पक्षी जटायु महन्त * परे दशरथ राज तांक देखिलन्त ९२
परम पूजनी राजा लोकत विदित * भूमित परिले हाड़ होवे चूर्णाकृत
धरो पिठि पाति दशरथ महाराज * थाकिबेक कीर्त्ति मोर त्रिभुवन माज ९३
विष्णु समसर राजा धर्म्म अवतार * पिठि पाति लैया आजि करो उपकार
एहि वुलि पाखा पातिलन्त पक्षीवर * परिलन्त राजा तान पाखार उपर ९४
घोराये सहिते परि नमरिला प्राणे * रहिला नृपति पक्षीराजर निदाने
भैलन्त सुस्थिर नरनाथ कतोक्षणे * मरि उपजिला हेन नृपतिर मने ९५
कँर हन्ते आसि पक्षी आमाक राखिल * इहार कारणे मोर जीवन रहिल
नाहिके वान्धव आन पक्षीर समान * एहि वुलि करिलन्त पक्षीक सम्मान ९६
नाना स्तुति करि राजा वुलिला वचन * महावलवन्त पक्षी तुमि महाजन
आकाशर हन्ते परि जाओं यमघर * पिठि पाति आमाक राखिला पक्षीवर ९७

की ॥ ८७ ॥ नृपवर दशरथ को जो आवभगत मिली तो उन्होंने इन्द्र से कहा, सुनो पुरन्दर, मेरे राज्य में वर्षा क्यों नही हो रही है, लोग अनाहार से मर रहे हैं, इसका कारण वताओ ॥ ८८ ॥ इन्द्र ने कहा, राजा, शान्त चित्त होकर सुनो। रोहिणी मे शनि की पूर्ण दृष्टि पड़ी, इसी कारण तुम्हारे राज्य मे वर्षा नही हुई। हे महारथ, तुम शनि के पास जाओ ॥ ८९ ॥ उससे कहना कि रोहिणी मे दृष्टि डालना छोड़ दे। तव तुम्हारे राज्य मे वर्षा होगी। वासव का वचन सुन कर दशरथ रथ पर चढ़ कर शनि के पास चल पड़ा ॥ ९० ॥ नृपति दशरथ को आते हुए देखकर शनि ने कोप से उसकी ओर देखा। शनि की दृष्टि से रथ के जोड़े टूट-विखर गये। घोड़ा समेत राजा सम्मोहित हो नीचे गिरे ॥ ९१ ॥ अचेतन होकर चक्कर खाते हुए राजा नीचे गिरने लगे। उनकी रक्षा करे, ऐसा कोई भी नहीं था। गरुड़ का वेटा महान् पक्षी जटायु ने दशरथ राजा को गिरते हुए देखा ॥ ९२ ॥ लोगों मे यह विदित है कि राजा परम पूजनीय है। जमीन पर गिरने से उसकी हड्डी चूर-चूर हो जायगी। इस महाराज दशरथ को (पंख) पसार कर पीठ पर रोक लूँ, ससार में मेरा यश वना रहेगा ॥ ९३ ॥ यह राजा विष्णु के समान धर्मावतार है, पीठ पसार कर इसको थाम आज इसका उपकार किया जाय। इतना कह कर पक्षीराज ने अपने डैने फैला दिये और राजा उसके पंखो पर आ गिरे ॥ ९४ ॥ घोड़े के साथ गिर कर भी नृपति प्राणो से नही मरे और पक्षीराज के आश्रय मे रहे। नरनाथ कितनी ही देर के वाद स्वस्थ हुए और नृपति को लगा कि वे मरकर भी जी गये ॥ ९५ ॥ जाने कहाँ से आकर पक्षी ने मेरी रक्षा की और इसी के कारण मेरे प्राण वच गये। इस पक्षी के समान कोई मित्र नही, यह कह कर उन्होने पक्षी का सम्मान किया ॥ ९६ ॥ अनेक प्रकार से स्तुति करते हुए राजा ने कहा, हे पक्षी, तुम महा वलवान हो, तुम महान् हो। आकाश से गिरकर मै यम के घर जा रहा था, तुमने अपनी पीठ पसार कर, हे पक्षीराज, मेरी रक्षा की ॥ २९७ ॥ मुझको दुर्दशा से वचा दिया और मेरे

एराइलो दुर्गति प्राण राखिला आमार * नाहि त्रैलोक्यत हेन करे उपकार
किवा पितामह रघु अज पितृ मोर * तयु उपकार कथा कहि नपाओं ओर२९८
महावलबीर्य्य तुमि विष्णु अवतार * तयु प्रसादेसे प्राण रहिल आमार
कोन कुले जात तुमि काहार तनय * किवा नाम तोमार दियोक परिचय२९९
शुनि वुलिलन्त पक्षीराज महामति * आमार जटायु नाम जानिवा नृपति
ज्येष्ठ भाइ सम्पाति आछन्त पक्षीवर * दुयो सहोदर आमि पुत्र गरुड़र३००
पक्षीर उपरे राजा भैलो दुयो भाइ * जानिलो वुलिया मातिलन्त महाराय
भैला महामित्र पक्षीराज महाशय * करिलाहा हित मोर प्राणर संशय३०१
तुमि विने आन महामित्र नाहि मोर * तोमार प्रसादे वर एराइलो दुर्घोर
काष्ठ आनि अग्नि ज्वालि दुइको दुयो धरि * करिलन्त मित्र दुयो अग्नि साक्षी करि३०२
जटायुर हेतु प्राण रहिल आमार * ताँक मित्र करि पाइला हरिष अपार
जटायुर आति वर कौतुक मनत * भैला पक्षी सुखी मित्र पाया दशरथ३०३
करिला जटायु नृपतिक वाहु मान * मेलानि मागिया गैला आपोनार थान
जटायु प्रसादे राजा एराइला संशय * वोला राम राम यत समाजिकचय ४

दशरथक शनिर वर प्रदान

झुमुरि

अनन्तरे दशरथ, दुनाइ जुरिलन्त रथ * एराइ महाशत्रु भय रथे, चड़ि महाशय ५
पुनरपि स्वर्गे गैला, शनिर समुख भैला * पाचे शनि महाभागे राजाक देखिला आगे ६

प्राणो की रक्षा की—तीनो लोक मे ऐसा उपकार करनेवाला कोई दूसरा नही। मेरे पितामह थे रघु और मेरे पिता अज थे। तुम्हारे उपकार के वारे मे जितना भी कहूँ उसका अन्त नही ॥ २९८ ॥ तुम महावलवीर्य-सम्पन्न विष्णु-अवतार हो, तुम्हारे प्रसाद से मेरे प्राणों की रक्षा हुई। किस वश में तुम्हारा जन्म हुआ, तुम किसके पुत्र हो और तुम्हारा नाम क्या है। अपना परिचय वताओ ॥ २९९ ॥ सुनकर महामति पक्षीराज ने कहा, हे नृपति, यह जान लो कि मेरा नाम जटायु है। मेरा वड़ा भाई पक्षीवर सम्पाती है। हम दोनो सहोदर, गरुड़ के पुत्र है ॥ ३०० ॥ पक्षी और राजा दोनो भाई वन गये। ऐसा समझकर (और परिचय जानकर) महाराजा ने कहा, हे महाशय पक्षीराज, तुम मेरे महामित्र वन गये, मेरे प्राणसंशय के समय तुमने मेरा वड़ा हित किया ॥ ३०१ ॥ तुम्हारे सिवा मेरा कोई दूसरा मित्र नही। तुम्हारे ही प्रसाद से मै वडी दुर्दशा से वच गया। लकड़ी लाकर आग जलाकर, दोनों ने एक दूसरे का हाथ थाम कर, अग्नि को साक्षी कर परस्पर मित्र वन गये ॥ ३०२ ॥ जटायु के कारण मेरे प्राणों की रक्षा हुई। उसको मित्र के रूप में पाकर मेरा मन वड़ा हर्षमग्न हुआ। जटायु के मन में भी कौतुक का उदय हुआ। पक्षी दशरथ को मित्र के रूप मे पाकर वड़ा सुखी हुआ ॥ ३०३ ॥ जटायु ने राजा का वड़ा सम्मान किया, फिर अपने स्थान के लिए रवाना हो गया। जटायु के प्रसाद से राजा विपत्ति से वच गये। जितने समाज के जन हो 'राम-राम' वोलो ॥ ३०४ ॥

दशरथ को शनि का वरदान

इसके उपरान्त दशरथ ने दुवारा रथ जोता। महाशत्रु का भय पार कर महाशय रथ पर सवार हो गया ॥ ५ ॥ फिर वह स्वर्ग गया और शनि के सम्मुख पहुँचा। इसके अनन्तर महाभाग शनि ने अपने सामने राजा को देखा ॥ ६ ॥

भैला आति चमत्कार,आइल राजाआरोवार* किनो महापुण्यशील, शनिर दृष्टित जील ७
चारियो घोटक रैल, किनो बिपरीत भैल * मोर महादृष्टिपात, समुखे परय यात ८
ताक येन यमदंड, पाया करो लंडभंड * येन महावह्नि घोर, हेन दृष्टिपात मोर ९
ताहांतो निस्तरि आइल,किनो इटो तपसाइल* महावली तेजवन्त, भाग्यरो नाहिके अन्त १०
मोहोर दृष्टित रैल, पुनरपि आसि भैल * आपोनाक करि धिक- मातिलेक नृपतिक ११
शुनियोक नृपबर, गुचा मोर समुखर * आथेबेथे रथ लैया, पाचत रहिला गैया १२
शनिर शुनिया वाणी, दशरथ महामानी * समुखर गुचिलन्त, पाचु हुया रहिलन्त १३
देखि शनि तुष्ट भैला,राजाक बुलिवे लैला* शुनियोक दशरथ, आमार वृत्तान्त यत १४
मोहोर समुख दृष्टि, परे यात निष्टि निष्टि* नाहिके कल्याण तार होवे सिटो बुन्दामार १५
हेन मोर समुखत, रथे चरि महारथ * रैला किनो बिपरीत, देखि भैलो सचकित १६
तयु इटो साहसर, सीमा नाहि नृपवर * एहिमते ग्रहराज, देखि नृपतिर काज १७
प्रशंसिला वारे बार, शुना लोक समज्यार* पुण्यकथा रामायण, शुनि सन्तोषियो मन १८
इटो जीव समस्तर, सीमा नाहि जनमर * नानान शरीर धरि, पाप पुण्य भोग करि १९
फुरे यत जीवगण, नाहि ताक सुमरण * निशेष जन्मर अन्ते, कोन महा पुण्यवन्ते २०
अनुग्रहे माघवर, धरे नर कलेवर * हेन तनु आछा पाया, भैल माधवर दाया २१
कृष्णर दुखानि पावे, दिया मन सर्व्वभावे * यार वैकुण्ठत काम, लैयो हरि गुण नाम २२
इसि धर्म्म अनुपाम, तेजिया समस्त काम* करि आति अविश्राम,निरन्तरे बोला राम २३

वह वहुत चमत्कार करने लगा कि राजा फिर एक वार आ गया, कैसा महापुण्यवान है कि शनि की दृष्टि पड़ने के वाद भी जी गया ॥ ७ ॥ चारों ही घोड़े वच गये, यह कैसी विपरीत वात है। मेरी महादृष्टि सामने जिसके ऊपर भी पड़ जाय ॥ ८ ॥ उसी को मानों वह यमदण्ड की नाईं तहस-नहस कर देती है मानों वह महावह्नि के समान मेरा दृष्टिपात है ॥ ९ ॥ उससे भी निस्तार पाकर आ गया, यह कैसा तपस्वी है। यह तो महावली और तपस्वी है और इसके भाग्य का भी कोई अन्त नही ॥ १० ॥ मेरी दृष्टि को भी झेल गया और फिर मेरे सामने उपस्थित हो गया। मैं अपने को धिक्कारता हूँ, नृपति से उसने कहा ॥ ११ ॥ हे नृपवर सुनो, मेरे सामने से हट जाओ, झटपट रथ लेकर पीछे जाकर खड़े हो जाओ ॥ १२ ॥ शनि का वचन सुनकर महामान्य दशरथ सामने से हट गये और पीछे जाकर खड़े हो गये ॥ १३ ॥ देखकर शनि प्रसन्न हुआ और वोला, लो सुनो, दशरथ, मेरा सारा व्योरा सुनो ॥ १४ ॥ मेरी दृष्टि के सम्मुख जो कोई भी आ जायगा उसका फिर कल्याण नही, उसका ध्वंस हो जायगा ॥ १५ ॥ ऐसे मेरे सम्मुख हे महारथ, तुम रथ पर सवार होकर आये, लेकिन विपरीत ही हुआ और मैं चकित रह गया ॥ १६ ॥ तुम्हारे इस साहस की कोई सीमा नही है नृपवर! इसी प्रकार से ग्रहराज (शनि) ने नृपति का कार्य देखकर ॥ १७ ॥ वार वार उनकी प्रशंसा की। हे समाज के व्यक्ति! रामायण की पुण्यकथा मन में सन्तोप लेकर सुनो ॥ १८ ॥ सारे जीवो के जन्म की कोई सीमा नही, विभिन्न शरीर धारण कर पाप-पुण्य भोग करते रहते है ॥ १९ ॥ जितने जीव फिरा करते है उनका (राम का) सुमिरन नही करते। जन्म के अनन्तर कौन ऐसा पुण्यवान है जो नि:शेप हो जाता है ॥ २० ॥ माधव के अनुग्रह से वह नया कलेवर धारण करता है, यह माधव की ही दया है कि ऐसा अच्छा कलेवर प्राप्त हुआ ॥ २१ ॥ कृष्ण के दोनो चरणों में सर्वतोरूप से मन लगा कर, जिनको वैकुण्ठ की कामना हो, हरि गुणमय का नाम ले ॥ २२ ॥ यही धर्म अनुपम है। सारा कार्य त्याग कर अथक और निरन्तर राम का नाम उच्चारण करो ॥ २३ ॥

पद

अनन्तरे शनि पूर्व्वकथा आपोनार * करिवे लागिला दशरथर प्रचार
मोहोर पूर्व्वर कथा शुना महामति * पार्व्वती देवीर पुत्र भैला गणपति ३२४
महेशर स्थाने देवगण गैला शुनि * मइ मात्र केवल नगैलो मने गुणि
मोहोर दृष्टित जन्म भैला गणेशर * मइ गैले वर मिलिवेक अथन्तर २५
देवर लगत मोक नेदेखि सभात * पार्व्वती गोसानी पुछिलन्त देवतात
आमार थानक आइल सवे देवगण * शनि किय नाइल वुलि करि कोपमन २६
दूत पठाइ दिला देवी आमार पाशक * दूते वोले शनि तुमि चला कैलासक
शुनि शीघ्रे गैलो मइ कैलासक प्रति * मोक देखि कोप पाचे तेजिला पार्व्वती २७
प्रवेशिला गैया आमि येखने सभात * गणेशेर मुंडगोट देखिलो साक्षात
तेतिक्षणे तान माथगोट छिडि गैल * केहो नेदेखिल मुंड अन्तरीक्ष भैल २८
हेन देखि चिन्त वर मिलिल आमार * सकल समाजे आति करे हाहाकार
परम विकलचित्त भैलन्त पार्व्वती * पुत्रशोके अचेतन भैल महासती २९
मुंड चाइ फुरन्त सकल देवगणे * नपाइल बिचारि मुंड इ तिनि भुवने
पुछिला पार्व्वती सवे देवताक चाइ * कि कारणे आमार पुत्रर मुंड नाइ ३०
देवगणे वोले माव शुनियो उत्तर * शनिर दृष्टित जन्म तोमार पुत्रर
आरो शनि आसि करिलन्त दृष्टिपात * ताते से छिडिल मुंड कहिलो साक्षात ३१
देवर वचने देवी प्रकोपित भैला * क्रोधवेगे धाया मोक मारिवाक गैला
हेन देखि स्तुति करि वोले देवगणे * स्रजिला आपुनि शनि मारिवा केमने ३२

पद

इसके अनन्तर शनि अपनी पूर्वकथा दशरथ को सुनाने लगा। हे महामति, मेरी पूर्वकथा सुनो। पार्वती का पुत्र गणपति ने जन्म लिया ॥ ३२४ ॥ महेश के स्थान पर, सुना है कि, सारे देवता गये हैं। केवल मैं ही मन ही मन यह सोचकर नहीं गया कि मेरी दृष्टि (दशा) मे गणेश का जन्म हुआ है, मेरे जाने पर वड़ी दुर्घटना हो जायगी ॥ २५ ॥ मुझको उस समावेश मे देवताओ के साथ न देखकर पूज्य पार्वती ने देवताओ से पूछा, मेरे स्थान पर सभी देवता तो आए, किन्तु शनि नही आया, क्या वह कुपित है? ॥ २६ ॥ देवी ने मेरे पास दूत भेज दिया। दूत ने कहा, शनि, तुम कैलास को चलो। इसके पश्चात् मुझको देखकर पार्वती ने कोप त्याग दिया ॥ २७ ॥ जिस समय मैंने सभा मे प्रवेश किया साक्षात् ही गणेश का पूरा मुड मैने देख लिया। तत्क्षण उसका मुड कट गया—किसी ने भी देखा नही और मुंड अदृश्य हो गया ॥ २८ ॥ ऐसा देखकर मैं वड़ा ही चिन्तित हुआ। सारा समाज भी अत्यन्त हाहाकार करने लगा। पार्वती भी अति व्याकुल हो गई और वह महासती पुत्रशोक से अचेत हो गई ॥ २९ ॥ मुड चाहिए, ऐसा मनस्थ कर, सारे देवता फिरने लगे किन्तु ढूँढ कर भी इन तीनों भुवन मे कही मुड नही मिला। पार्वती ने सभी देवताओ से पूछा, किस कारण मेरे पुत्र के मुंड नही है? ॥ ३० ॥ देवताओं ने कहा, हे माता, सुनो तुम्हारे पुत्र का जन्म शनि की दृष्टि में हुआ है। फिर शनि ने आकर उस पर दृष्टिपात भी किया, इसी से उसका मुंड छिन्न हो गया ॥ ३१ ॥ देवताओ के ऐसा कहने पर देवी कुपित हो गयी और क्रोध से मुझको मारने के लिए दौड़ी। ऐसा देखकर देवगण ने उनकी स्तुति की और कहा, शनि का सर्जन तुमने

तोमार स्रजन इटो यत चराचर * यत देवगण ब्रह्मा विष्णु महेश्वर
जल स्थल त्रिभुवन स्रजिला आपुनि * भैला तुष्टा देवी देवतार स्तुति शुनि ३३
देवक वोलन्त यत्न करा निरन्तर * जिमते उपाय मुंड होवय पुत्रर
तेवेसे शनिर प्राण रहे मोर ठाव * पवने वोलन्त कोप तेजियोक माव ३४
एखने आनिवो मुंड तोमार पुत्रर * एहि वुलि वायु उठि गैलन्त सत्वर
देखिलन्त ऐरावत हस्तीक पवने * उत्तरक शिर करि आछय शयने ३५
तार माथागोट देवे काटिया आनिल * गणेशर गलत लगाइ जोरा दिल
भैला गजानन नाम देखिते सुन्दर * गजमुंड शुंड महाकाय लम्वोदर ३६
सुन्दर आकृति पुत्र देखि गजानन * परम हरिष भैल पार्व्वतीर मन
ऐरावत मुंड काटि पवने आनिला * देखिया इन्द्रर मने विषाद मिलिला ३७
हेन देखि देवगणे चिन्ता वर पाइला * सवे मिलि ऐरावत हस्तीक जीयाइला
पाचे वासवर मने मिलिल हरिष * सबे देवगण चलि गैला दिशे दिश ३८
एतेक प्रमाद मिले मोर दृष्टिपाते * हेनय दृष्टित राजा रहिल साक्षाते
गणेशरो विघात मिलाइलो एतमान * नर हुया आसा तुमि मोर विद्यमान ३९
यि कारणे भैलो आमि सूर्य्यर तनय * सेहि वंशे उपजिला तुमि महाशय
सि हेतु रहिला मोर आगे नरेश्वर * येन लागे मागा मोत दिबो सेहि वर ४०
राजाये वोलन्त दृष्टि छारा रोहिणीत * तेवे जलवृष्टि हैवे मोर पृथिवीत
शनि वोले छारिलोंहो रोहिणीत दृष्टि * तोमार राज्यत आजि हन्ते हैव वृष्टि ४१
वर पाया हरिषे नृपति गृहे गैला * अनन्तरे राज्यत विस्तर वृष्टि भैला

स्वयं किया अब उसको कैसे मारोगी ॥ ३२ ॥ यह सारा चराचर तुम्हारा ही सिरजा हुआ है। जितने देवगण है, ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर है, जल-थल त्रिभुवन है—सभी तुम्हारा सिरजा हुआ है। देवताओं की स्तुति सुनकर देवी प्रसन्न हो गई ॥ ३३ ॥ देवताओं से उन्होंने कहा, निरन्तर प्रयत्न करो, जिस प्रकार से भी हो पुत्र का मुंड आ जाय, तभी मैं शनि का प्राण छोड़ दूंगी। पवन ने कहा, माँ अपना क्रोध त्याग दो ॥ ३४ ॥ अभी तुम्हारे पुत्र का मुड लाकर मैं देता हूँ। यह कहकर पवन झटपट वहाँ से चला गया। पवन ने देखा कि ऐरावत हस्ती, उत्तर की दिशा में सिर किये लेटा हुआ है ॥ ३५ ॥ देवता उसका मुंड काट कर ले आए और गणेश के गले से उसे जोड़ दिया। उनका नाम गजानन पड़ गया। वे देखने मे वड़े सुन्दर लगने लगे—वे गजमुंड और सूँड़ के सहित महाकाय लम्वोदर वन गये ॥ ३६ ॥ पुत्र की गजानन-आकृति देख कर पार्वती हर्पित हुई। पवन ऐरावत का मुड काट कर ले गया, देखकर इन्द्र वड़े दुखी हुए ॥ ३७ ॥ यह देखकर सारे देवता वड़े चिन्तित हुए। सभी ने मिलकर हस्ती को पुनर्जीवित किया। इसके अनन्तर वासव (इन्द्र) वड़े हर्षमग्न हुए और सभी देवता अपनी अपनी दिशाओं में प्रस्थान कर गये ॥ ३८ ॥ मेरे दृष्टिपात से ऐसा प्रमाद उत्पन्न हो जाता है। ऐसी दृष्टि के सम्मुख राजा तुम अक्षत वने रहे। इस प्रकार गणेश पर भी विपत्ति आई, किन्तु नर होकर भी तुम मेरे सम्मुख उपस्थित हो रहे हो ॥ ३९ ॥ इसका कारण यह है कि मै सूर्य का पुत्र हूँ, और हे महाशय, तुम भी उसी सूर्यवंश में उत्पन्न हुए हो। इसी हेतु तुम मेरे सम्मुख पहुँच कर भी रक्षा पा गये। अव तुम्हारे मन में जो आवे सो वर माँग लो ॥ ४० ॥ राजा ने कहा रोहिणी पर से अपनी दृष्टि हटा लो, तभी मेरी पृथ्वी पर वर्पा होगी। शनि ने कहा, आज से रोहिणी पर से मै दृष्टि हटाये लेता हूँ, तुम्हारे राज्य मे आज से वर्पा होने लगेगी ॥ ४१ ॥ वर पाकर प्रसन्न होकर राजा

नानाविध शस्ये भैल पृथिवी पूरण * भोग भुंजि भैल महासुखी सर्व्वजन ४२
प्रजा सुखी भैला देखि हरिष राजार * लोक प्रतिपालि भोग भुंजिला अपार

अज्ञातत दशरथर शरत सिन्धुमुनि वध, आरु अन्धमुनिर दशरथक अभिशाप दान

एकदिना राजा मृग मारिबाक प्रति * घोर अरण्यत भैला प्रवेश नृपति ३४३
सरयूर वनत पशिया निशाकाले * नानाविध पशु मारिलन्त पाले पाले
शरदर अनुसारे फुरे मृग मारि * यतेक मारिला पशु गणिते नपारि ४४
ताते एके अथन्तर भैल नृपतिर * श्रीफल वनत वासा अन्धक मुनिर
आपुनि अन्धक तान भार्य्याओ अन्धक * सिन्धु नामे पुत्र मागि पोषे दुहांतक ४५
सरयूक सिन्धु जल आनिवाक गैला * ढउ दिया पाचे घड़ा भरिवाक लैला
कलस भरन्ते एक शवद उठिला * अरण्यर हन्ते ताक नृपति शुनिला ४६
हस्ती पानी खाय मने मानि नृपवर * शवदर अनुसारे मारिलन्त शर
वज्रर समान वाण अगनि साक्षात * परिल सन्धाने सिन्धु मुनिर हियात ४७
अग्नि ज्वलि बुके पिठि शालिलेक वाणे * मुनि वोले हरि हरि मरिलोहो प्राणे
कोन निदारुणे प्राण लैलेक आमार * किवा अपकार मइ करि आछो कार ४८
देखन्ते झमक बिषे छानिलेक गाव * कम्पि कम्पि मुनि परिलेक सेहि ठाव
लागिल हस्तीत वाण पाइलोहो उशान * एहि वुलि गैया राजा देखे विद्यमान ४९

घर चला गया और इसके अनन्तर राज्य मे खूब वर्षा हुई। विविध प्रकार के शस्यों से धरती परिपूर्ण हो गई और सारे लोग उसका भोग कर महासुखी हुए ॥ ४२ ॥ प्रजा को सुखी देख कर राजा को अपार हर्ष हुआ। लोगो का प्रतिपालन करते हुए उसने अपार सुख का भोग किया।

अनजाने में दशरथ के वाण से सिन्धुमुनि का वध और सिन्धुमुनि का दशरथ को अभिशाप देना

एक दिन राजा आखेट के लिए घने जगल में प्रवेश कर गये ॥ ३४३ ॥ सरयू के वन में रात्रि को प्रवेश कर उन्होंने विभिन्न प्रकार के पशु-झुंड के झुंड मार डाले शरद ऋतु के अनुकूल अवसर पर वह खूब आखेट करते फिर रहे थे। इतने पशु उन्होने मारे, जो गिने नही जा सकते ॥ ४४ ॥ इसी समय नृपति पर एक आकस्मिक विपत्ति आ पडी। वेल के जगल में अन्धक मुनि का निवास था। वे स्वयं अन्धे थे और उनकी पत्नी भी अन्धी थी। सिन्धु नामक पुत्र पाकर दोनों ने उसको पाला पोसा ॥ ४५ ॥ सिन्धु सरयू नदी मे पानी लाने के लिए गया। पानी मे घड़े को तैरा कर बाद में उसे डुवोकर पानी भरने लगा। घडे के भरने से एक शब्द उत्पन्न हुआ। जंगल के भीतर से नृपति ने यह शब्द सुना ॥ ४६ ॥ हाथी पानी पी रहा है ऐसा सोचकर नृपवर ने शब्द के अनुसार वाण फेका। साक्षात् अग्नि और वज्र के समान वह वाण सिन्धु मुनि के हृदय पर जाकर लगा ॥ ४७ ॥ अग्नि के समान जलता हुआ वह वाण सीना और पीठ को छेदता प्रविष्ट हो गया। मुनि वोला, हाय हरि, मुझे प्राणों से मार डाला। किस निर्दयी ने मेरा प्राण ले लिया, मैंने किस व्यक्ति का कौन सा अपकार किया था ॥ ४८ ॥ देखते ही देखते तुरन्त

हस्ती बुहि शर परि आछय ऋषित * नाशिलो बुलिया भय भैला विपरीत
हा कि करिलो मइ किनो निदारुण * हस्ती बुलि शर करि मारिलो ब्राह्मण ५०
महा शान्तमति आति ऋषिर तनय * तप येन मूर्त्ति धरि प्रकाश करय
इहांक वधिलो मइ परम कुमति * वंशे समन्विते आवे गैलो अधोगति ५१
राखिलो कलंक मइ सूर्यर वंशत * कुलको नाशिलो आपुनिओ भैलो हत
एहिमते राजा खेद करन्त वहुत * पाचे नृपतिक देखिलन्त ऋषिसुत ५२
अरे कोन तइ कैर अधम वर्व्वर * कोन शत्रु किसक करिलि मोक शर
ब्रह्मवध करि तइ कोन यश पाइलि * कनन कारणे वेटा कालकूट खाइलि ५३
विष भुंजे यिटो सिटो मरय एकल * ब्रह्मवध करि तइ वंश निलि तल
वृद्ध माव वाप मोर अन्ध दुयो प्राणी * मइ मात्र पुत्र मागियाचि पोषो आनि ५४
मोक मारि तारा दुहान्तरो वध लैलि * कोन काम कैलि पापी अधोगति गैलि
एहिमते नृपतिक भत्सिया अपार * शरर विषत आति देखे अन्धकार ५५
मुदिल नयन वने कम्पय शरीर * अनन्तरे नृपति मातन्त धीरे धीर
सूर्यवंशे भैलो अज राजार तनय * दशरथ नाम मोर जाना महाशय ५६
महामन्दमति मइ परम उन्मत * पशु मारि फुरो एइ सरयू वनत
शब्दभेदी मइ घोर आन्धार निशात * शरे हानि पशु मारि फुरो असंख्यात ५७
पानी भरा तुमि मइ ताहाक नाजानि * हस्तीगोटे पानी खाइ बुलि मने मानि
शब्द अनुसारे शर करिलो प्रहार * परे आतिशय वाण हियात तोमार ५८

सारे शरीर में विप फैल गया। काँपते हुए मुनि उसी ठाँव गिर पड़ा। हाथी को वाण लग गया है यह अनुमान कर राजा वहाँ जा पहुँचा ॥ ४९ ॥ (उसने देखा) हाथी नही, वाण लग कर ऋपि पड़ा हुआ है। ऋपि को मार डाला, ऐसा सोचकर उसको वड़ा भय हुआ। हाय मैंने यह कैसा घनघोर कार्य कर डाला। हाथी समझकर मैंने वाण से ब्राह्मण को मार डाला ॥ ५० ॥ ऋपि का पुत्र वड़ा ही शान्तमति है, मानो तपस्या मूर्त्तिरूप से प्रकाशमान हो। हाय, मेरी मति मारी गई जो इसका वध कर डाला। सारे वंश के साथ मेरी अधोगति हो गई ॥ ५१ ॥ सूर्यवंश में मैं यह कलंक ले आया, सारे वंश का भी मैने नाश किया और स्वयं भी नष्ट हुआ। इस प्रकार राजा वहुत प्रकार से खेद प्रकट करने लगा। वाद में ऋषिपुत्र ने राजा को देखा ॥ ५२ ॥ अरे तू कौन सा अधम वर्वर है, किस शत्रुता को मान कर तूने मुझपर वाण चलाया। ब्राह्मण वध कर तुझे कौन सा यश प्राप्त हो गया। किस कारण तूने यह कालकूट का सेवन कर डाला ॥ ५३ ॥ विप से जर्जर हो कोई अकेला मर रहा है। ब्राह्मण का वध कर तू अपने वंश को पतन की ओर ले गया। मेरी माँ और वाप दोनों वृद्ध और अन्धे हैं। मैं ही उनका एकमात्र पुत्र हूँ, माँग जाच कर उनका पालन-पोपण करता हूँ ॥ ५४ ॥ मुझको मारकर उन दोनों का भी वध तूने कर डाला। ऐ पापी, तूने यह कैसा काम कर डाला—तेरा पतन हो गया। इस प्रकार से नृप को काफी बुरा-भला कह कर वाण के विप से वह अन्धकार देखने लगा ॥ ५५ ॥ उसने आँखें मूँद ली और उसका शरीर काँपने लगा। इसके वाद नृपति धीरे धीरे वोलने लगा। सूर्यवंश में उत्पन्न अज राजा का पुत्र हूँ—हे महाशय, मेरा नाम दशरथ है ॥ ५६ ॥ मैं अत्यन्त मन्दमति हूँ और वड़ा ही उन्मादी हूँ। सरयू के जंगल में पशु मारता फिर रहा हूँ। अँधेरी रात में शव्दभेदी वाण चलाकर असंख्य पशुओं को मारता फिर रहा हूँ ॥ ५७ ॥ मैं नहीं जानता था कि तुम पानी भर रहे हो। मैने समझा कि हाथी पानी पी रहा है। शव्द के

अज्ञानत थाकि मइ वधिलो तोमाक * हौक प्रायश्चित्त भस्म करियो आमाक
शुनि सिन्धु मुनि वुलिलन्त नृपतिक * मोर कर्म्मफल तोक शापिवोहो किक ५९
पितृ-मातृ शापे दैवे हैवे सर्व्वनाश * मोक लैया याहा राजा तारा दुइर पाश
आछे मोर वाप माव श्रीफल वनत * करियो कातर गैया धरि चरणत ६०
महा कारुणिक दुयो परम महन्त * अज्ञान दोषक तोक क्षमा करिवन्त
तोमार निस्तार हैवे एहिसे उपाय * शर काढ़ राजा मोर हेर प्राण जाय ६१
शुनि दशरथे तान काढ़िलन्त वाण * कम्पि कम्पि ऋषिर तथाते गैला प्राण
महापुण्यबले ऋषिपुत्र स्वर्गे गैला * पाचे दशरथ मरा शव कान्धे लैला ६२
धीरे धीरे गैला राजा श्रीफल वनक * वसि आछे देखिलन्त दुयो अन्धकक
मराशर थैला राजा कान्धर नमाइ * अन्ध मुनि मातिल भरिर शार पाइ ६३
एत निशा घरे केने नासस पुताइ * सिंहे वाघे मारिवेक एकेश्वरे पाइ
गोधलाते गैलि पुता पानी आनिवाक * एत निशा करि खेद लगाइलि आमाक ६४
तोत बिना आमार सहाय नाहि आन * तइसे केवले आमि अन्धकर प्राण
आनखन इटो कर्म्म नकरिवि आर * इवोल शुनिया धातु उरिल राजार ६५
महाभये नृपतिर हृदय शुखाइल * चिन्तादुखे मुखे तान वचन हरिल
हा कि करिलो वुलि तेजिला निश्वास * लासे लासे ऋषिर चापिला गैला पाश ६६
मातिवे खोजन्ते मुखे नासय वचन * थिर नोहे वुकु भये काम्पय चरण
कतो वेलि राजा पाचे मन करि स्थिर * अन्धक मुनिक मातिलन्त धीरे धीर ६७
नुहिके तोमार पुत्र शुना मुनिवर * तयु पुत्रबधी मइ अधम पामर
अजर तनय मोर दशरथ नाम * तयु पुत्र मारि करि आछो मन्द काम ६८

अनुसार मैने वाण चलाया और वही वाण आकर तुम्हारे हृदय में लग गया ।। ५८ ।। मैंने अज्ञानतावश तुम्हारा वध कर डाला है। मेरा प्रायश्चित्त हो जाने दो—मुझको तुम भस्म कर डालो। सुनकर सिन्धु मुनि ने राजा से कहा, यह तो मुझको अपना कर्म फल प्राप्त हो गया, मै शाप किसको दूँ ।। ५९ ।। पिता-माता के शाप से तुम्हारे भाग्य का सर्वनाश हो जायगा। मुझको लेकर, हे राजा, उन दोनो के पास चलो। मेरे पिता-माता वेल के जंगल में है, जाकर उनके चरणो में गिरकर शोक प्रकट करना ।। ६० ।। दोनों ही बडे करुणाशील और महान् है—अज्ञानतावश किये हुए तुम्हारे दोप को वह क्षमा कर देगे। इसी उपाय से तुम्हारा निस्तार होगा। हे राजा, वाण निकाल लो, मेरे प्राण निकल रहे है ।। ६१ ।। सुनकर दशरथ ने वह खीचकर वाहर निकाला। तव कॉपते हुए ऋपि के प्राण निकल गये। महापुण्य के वल पर (पुण्यवान) ऋषिपुत्र स्वर्ग चला गया। इसके अनन्तर दशरथ ने मृतदेह कन्धे पर उठा लिया ।। ६२ ।। धीरे धीरे राजा वेल के जंगल में गया। देखा, दोनों अन्धे बैठे है। शवदेह को राजा ने कन्धे से उतार कर रख दिया। अन्ध मुनि ने कहा, पैरों की आहट मिल रही है ।। ६३ ।। ऐ पुत्र, इतनी रात हो गई, घर क्यों नही लौट रहे हो। अकेला पाकर सिंह-वाघ तुमको खा डालेंगे। ऐ पुत्र, गोधूलि के समय तुम पानी लाने गये, इतनी रात कर तुम मुझको दुख दे रहे हो ।। ६४ ।। तेरे बिना मेरा दूसरा कोई सहारा नही। केवल तेरे में ही इन अन्धों के प्राण है। फिर ऐसा काम मत करना। यह सुनकर राजा के प्राण उड़ गये।। ६५ ।। भय से नपति का दिल सूख गया। चिन्ता और दुख से उसके मुँह से शव्द न निकल सका। हाय क्या कर डाला, कहकर उसने सॉस ली और धीरे-धीरे जाकर ऋषि के सामने झुक कर खड़ा हो गया ।। ६६ ।। वोलने को सोचते हुए भी मुँह से वाक्य न निकले,

शब्दभेदी मइ मन्दगति अहंकारी * निशाकाले बने बने फुरो मृग मारि
तयु पुत्रे पानी भरे ताक नजानिया * हस्ती पानी खाय हेन मनत मानिया ६९
शवदर लक्षे हानि पठाइलोहो शर * हियात परिल शर तोमार पुत्रर
लाग पाया कातर करिलो वहुतर * तोमार तनय मोक भर्त्सिला बिस्तर ७०
मइ वुलिलोहो मोक शापि करा छाइ * नशपिया मोक मुनि बुलिला बुजाइ
पितृर मातृर पाशे चला मोक लैया * चरणत धरिया कातर करा गैया ७१
एहि वुलि मुनिवरे छारिलन्त प्राण * ताक लैया मइ आसि आछो तयु स्थान
एवे मुनि शाप दिया भस्म करा मोक * गुचिबेक तेवे तोरा दुहान्तर शोक ७२
मौन भैला राजा वुलि एतेक बचन * शुनि दुयो अन्धे पाचे पुत्रर मरण
पुत्रशोक अगनि छानिला दुइरो गाव * उठिल जमक भैला आकुल स्वभाव ७३
परिला भूमित दुयो हुया अचेतन * मूर्च्छित स्वभावे आछिलन्त कतोक्षण
चेतन लभिया पाचे दुयो जने उठि * कान्दिबे लागिला हृदयत हानि मुठि ७४
राजात खुजिया शव पाय गले वान्धि * भैलन्त मूर्च्छित दुनाइ दुयो जने कान्दि
श्रुति पाया पुनु पृथिवीत पारे लुटि * नरहय जीउ येन प्राण जाय फुटि ७५
पुत्र पुत्र वुलि दुयो जने देइ डाक * कैक गैलि प्राणपुत्र तेजिया आमाक
दुयो जन अन्धक नेदेखो दिश पाश * तइ विने आमि दुयो अन्ध भैलो नाश ७६
अन्धलार लाठि पुत्र गैला कैक लागि * कोने एवे आमाक पुषिवे मिक्षा मागि
अइ सिन्धु पुत्र वुलि नाम लैवो कार * इह परलोके शून्य करिलि आमार ७७

दिल स्थिर नहीं, पैर काँप रहे है। कितनी ही देर वाद राजा ने अपने मन को शान्त किया और धीरे धीरे अन्धे मुनि से कहने लगा ।। ६७ ।। हे मुनिवर सुनो, तुम्हारा पुत्र नही रहा। मैं अधम पापी तुम्हारे पुत्र का हत्यारा हूँ। मैं अज का वेटा हूँ, मेरा नाम दशरथ है। तुम्हारे पुत्र को मार कर मैंने बुरा काम किया है ।। ६८ ।। मै मन्दमति और अहंकारी हूँ। शव्दभेदी के रूप में रात्रि को वन-वन में मृग मारता फिरता हूँ। तुम्हारा पुत्र पानी भर रहा यह न जानकर मैंने सोचा कि हाथी पानी पी रहा है ।। ६९ ।। शव्द को लक्ष्य कर मैने वाण फेका और वह वाण जाकर तुम्हारे पुत्र के हृदय मे लगा। पैरो पड़कर मैंने वहुत दुःख प्रकट किया और तुम्हारे पुत्र ने मेरी वड़ी भर्त्सना की ।। ७० ।। मैंने उससे कहा कि मुझको शाप देकर भस्म कर दो, लेकिन उसने मुझको शाप न देकर समझा कर कहा, मुझको मेरे माँ-वाप के पास ले चलो और उनके चरण पकड़ कर विनती करो ।। ७१ ।। यह कहकर मुनि ने प्राण त्याग दिया तो उसको लेकर मैं तुम्हारे स्थान पर आया हूँ। अव हे मुनि, शाप देकर मुझको भस्म कर डालो तो तुम दोनों का शोक उससे दूर हो जायगा ।। ७२ ।। इतना कह कर राजा चुप हो गया। दोनों अन्धों ने पुत्र की मृत्यु का समाचार सुना। सुनते ही दोनों के शरीर में पुत्रशोक की आग फैल गई। प्रचंड क्रोध उपजा और स्वभाव व्याकुल हो उठा ।। ७३ ।। दोनों भूमि पर अचेतन होकर गिर पड़े। कुछ देर तो मूर्छित होकर पड़े रहे। चेतना लौटने पर दोनों उठ कर छाती पीट-पीट कर रोने लगे ।। ७४ ।। राजा को ढूँढ़ते हुए शव पाकर दोनों उससे लिपट गये और रोते-रोते फिर मूर्छित हो गये। सुधि लौट आने पर फिर वे भूमि पर लोट गये—मानों जीवन रहा ही नही और प्राण छिटक कर निकल जाना चाहता हो ।। ७५ ।। दोनों ही पुत्र-पुत्र कहकर पुकारने लगे। हे प्राणपुत्र मुझको त्याग कर तू कहाँ चला गया। हम दोनों अन्धे आस-पास कही देख नही पाते—तेरे विना हम दोनो अन्धों का नाश हो गया ।। ७६ ।। अन्धे के लाठी के समान हे पुत्र ! तू किसके लिए चला

एहिमते दुयो जने कान्दि कतोक्षण * नृपतिक चाइ मुनि बुलिला बचन
मोर पुत्रवधी शुन दशरथ पापी * ब्रह्मवध करि तइ जीयस तथापि ७८
सूर्य्यवंशी राजा हुया करिलि अकर्म * पुत्रक बधिया दिलि आमासाक मर्म्म
ज्वालिलि आमार तइ दारुण सन्ताप * शुन तोक राजा दिओं निदारुण शाप ७९
जानिया मारिलि हन्ते तनयक मोर * करिलोहो हन्ते भस्म दिया शाप घोर
किन्तु मोर पुत्रक मारिलि अज्ञानत * ब्रह्मशाप दिया तोक नकरोहो हत ८०
तथापितो शापो तोक शुनरे दुर्ज्जन * पुत्रशोके मरो जेन आमि दुइ जन
तइ पुत्रशोके राजा मरिबि निश्चय * आने येन ब्राह्मणर द्रोह नाचरय ८१
हेन शुनि हरिष भैलन्त नरेश्वर * नुहि इटो शाप प्रभु दिला मोक वर
केमने मरिबो पुत्र नाहिके आमार * कतो काले हैबे पुत्र कहियोक सार ८२
शुनिया राजाक मुनि बुलिलन्त बाणी * करिबाहा यज्ञ तुमि ऋष्यश्रृंग आनि
शिशुमति मुनि तान गुण कैबो कत * आगम पुराण वेद सबातो पार्गत ८३
देखिबाक शिशु मुनि बिष्णु समसर * छवालर थाने क्रीड़ा करे निरन्तर
तेहे यज्ञ कराइले कहिलो राजा सार * चारि अंशे विष्णु पुत्र हैवन्त तोमार ८४
एगुटि श्रीफल नियो सन्देश आमार * चलाहा गृहक पुत्र हैवेक तोमार
शुनि राजा प्रणामि ऋषिक प्रणिपाते * गृहे गैला आनन्दे श्रीफल धरि हाते ८५
कौशल्यार हाते निया दिलन्त श्रीफल * पुत्र हैवे सबारे शुनिया कौतुहल
कौशल्या कैकेयी सती सुमित्रा सुन्दरी * राजा वोले तिनियो भुंजिबा भाग करि ८६

गया। अव भीख माँग कर कौन मेरा पालन-पोषण करेगा। ऐ पुत्र, सिन्धु कहकर अव मैं किसको पुकारा करूँगा। तूने मेरा इहलोक-परलोक दोनों सूना कर दिया ।। ७७ ।। इस प्रकार दोनो कितनी ही देर तक रोते रहे; फिर नृपति से मुनि ने कहा, सुनो, मेरे पुत्र को वध करने वाले पापी दशरथ, ब्रह्मवध करने के वाद भी तू जीवित है ।। ७८ ।। सूर्यवंशी राजा होकर तूने यह कुकर्म किया। पुत्र का वध कर तूने हमारे मर्म पर आघात किया। तूने मुझमे घोर सन्ताप भडकाया। सुन राजा, मैं तुझे भयानक शाप देता हूँ ।। ७९ ।। यदि तूने जानकर मेरे पुत्र की हत्या की होती तो घोर शाप देकर तुझको मैने भस्म कर दिया होता; किन्तु तूने अनजाने मे मेरे पुत्र की हत्या की, इसलिए ब्रह्मशाप देकर तेरा नाश नही करूँगा ।। ८० ।। फिर भी ऐ दुर्जन सुन, तुझे शाप दूँगा। जिस प्रकार हम दोनो पुत्रशोक से प्राण दे रहे है वैसे ही पुत्रशोक से हे राजन्! तू निश्चय रूप से प्राण देगा। अन्य किसी ब्राह्मण से कभी द्रोह न करना ।। ८१ ।। ऐसा सुनकर राजा अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसने कहा, हे प्रभु यह मेरे लिए अभिशाप न होकर वरदान हो रहा है। मेरा पुत्र कैसे मरेगा जव वह है ही नही। यह वता दो कि कितने दिनो मे पुत्र होगा ।। ८२ ।। राजा का वचन सुनकर मुनि ने कहा, ऋष्यश्रृग को लाकर तुम यज्ञ करना। शिशु के स्वभाव वाले उस मुनि के गुणो का क्या वर्णन करूँ, वह आगम, पुराण, वेद आदि मे पारंगत है ।। ८३ ।। देखने में वह मुनि शिशु के समान है, किन्तु है वह विष्णु के समान। वच्चों के स्थान पर निरन्तर खेलता रहता है। मैं तुमसे सार सत्य वताता हूँ; हे राजन्! उससे यज्ञ कराने पर विष्णु के अंश से तुम्हारे चार पुत्र होगे ।। ८४ ।। यह वेल का फल मुझसे ले जाओ। घर जाओ, तुमको पुत्र होगा। सुन कर राजा ने ऋषि को प्रणाम किया और हाथ मे वेल लेकर घर गया ।। ८५ ।। जाकर कौशल्या के हाथ में वह वेल दिया। सभी को पुत्र होगा सुनकर वे कौतूहली हो गई। कौशल्या, कैकेयी और सुन्दरी सुमित्रा तुम तीनो इसको वाँट कर खा लेना ।। ८६ ।।

एहि वुलि राजा सुखे वंचिला रजनी * उठिलन्त प्रभाते नृपति शिरोमणि
स्नान दान करिया वसिला सिंहासने * चौपाशे उपासि आछे पात्र मंत्रिगणे ३८७
सेहि बेला इन्द्र असुरत पाइया त्रास * त्रिवशे सहिते आइला नृपतिर पाश
देवे समे इन्द्रक देखिया नृपवर * गाव चालि उठि करि अनेक सादर ८८
बसिवाक दिलन्त इन्द्रक सिंहासन * त्रिदशक दिला आनि सुवर्ण आसन
देवे समे आसने वसिला पुरन्दर * पाद्य अर्घ दिया पूजिलन्त नृपवर ८९
नमस्कार करि राजा पुछिलन्त काज * राजाक सादरि मातिलन्त देवराज
शुनियोक नृपति आमार प्रयोजन * हारिलो त्रिदशे आमि असुरत रण ९०
महावलवन्त आति असुर दुर्म्मति * खेदाया देवक काढ़ि लैला अम्रावती
तुमि विने आमार सुहृद आन नाइ * आपद कालत एवे हुयोक सहाय ९१
देवतात अधिक तोमार पराक्रम * जगतत नृपति तोमाक नाहि सम
रणे जिनि सबे असुरक करि हत * त्रिदश देवक राजा स्थापियो स्वर्गत ९२
असुरत हारि लाज पाइलो देवगण * लैलोहो शरण असुरक करा रण
विनय बवन आति शुनि वासवर * प्रणति पूर्व्वक मातिलन्त नृपवर ९३
हैनाहो सहाय रणे मारिवो असुर * प्राणदान करिवो राखिवो स्वर्गपुर
हेन शुनि बासव हरिषमन भैला * देवगण सहिते स्वर्गक चलि गैला ९४
सूर्य्यबंशे राजा हेन नाहि एकोजन * प्राणदान खुजिलेओ हैवे निवर्त्तन

बाँटकर खा लेना ।। ३८६ ।। यह कहकर राजा ने सुख से रात काटी। सवेरे शिरोमणि नृपति उठे। स्नान-दान कर वे सिंहामन पर बैठे। चारों ओर मंत्रीगण और पात्र-मित्र बैठे हैं ।। ३८७ ।। उसी समय इन्द्र असुरो से त्रस्त होकर त्रिदश देवताओं के साथ नृपति के पास आया। नृपवर ने देवताओं के साथ इन्द्र को आते देखा तो उठकर उनकी आवभगत की ।। ८८ ।। इन्द्र को बैठने के लिए उन्होंने सिंहासन दिया और त्रिदश देवताओं के लिए स्वर्ण-निर्मित आसन दिये। देवताओ के साथ पुरन्दर ने आसन ग्रहण किया तो दशरथ ने उनकी पाद्य-अर्घ्य देकर पूजा की ।। ८९ ।। नमस्कार करने के उपरान्त राजा ने काम पूछा। देवराज ने सादर राजा को सम्बोधित किया। सुनो राजा, मेरा प्रयोजन सुनो। देवासुर संग्राम में मैं हार गया हूँ ।। ९० ।। यह दुराचारी असुर वड़ा ही वलवान है, इसने देवताओं को खदेड़ कर अमरावती छीन ली। तुम्हारे सिवा मेरा कोई मित्र नही—अव मेरी विपत्ति के समय मेरी सहायता करो ।। ९१ ।। तुम्हारा पराक्रम देवताओं से भी अधिक है, संसार में तुम्हारे समान दूसरा नृपति नही है। रण में असुर को वाण से मार कर त्रिदश देवताओं को स्वर्ग में स्थापित करो ।। ९२ ।। असुरो से हार कर देवता वड़े लज्जित हुए। तुम्हारी शरण ली है, अव असुर से युद्ध करो। वासव का विनय-वचन सुनकर नृपवर ने प्रणाम कर कहा ।। ९३ ।। रण में मै सहायक वनूंगा और असुर को मार गिराऊँगा, देवताओ के प्राणों की रक्षा करूँगा और स्वर्गपुर को वचा लूंगा। ऐसा सुन कर इन्द्र प्रसन्न हुआ और देवताओं के साथ स्वर्ग चला गया ।। ९४ ।। सूर्यवंश में ऐसा एक भी राजा नहीं है जिससे प्राण भी दान मांगने पर किसी को विमुख लौटना पडा हो।

दशरथर स्वर्गयात्रा आरु असुर वध

अनन्तरे दशरथ नृपति प्रधान * सैन्य समे करिलन्त स्वर्गक पयाण३९५
पूर्ब्बे स्वर्ग लैला वलि इन्द्रक खेदाइ * सिकालत विष्णु भैला देवर सहाय
पुनरपि स्वर्ग काढ़ि लैलन्त दानव * दशरथरूपे सहाय भैलन्त माधव३९६
सैन्य समन्विते गैला राजा दशरथ * रथे चड़ि असुर सेनात उपगत
धनु धरि टंकार करिला महावल * भये चमकिला आति असुरसकल३९७
नाना अस्त्र नृपति लागिल वरिषित * शरे फुटि असुर भैगैल जर्ज्जरित
समुखे नापारि जानि असुर निस्खले * माया करि गैला कतो गगनमंडले३९८
आकाशक गैया माया करिला विस्तर * नाना अस्त्र वरषिला राजार उपर
हेन देखि ब्रह्मअस्त्र जुरिला गुणत * एतेकते असुरर माया भैला हत३९९
महावले राजा ब्रह्मअस्त्रक एरिल * वेगे ज्वलि असुरर हियात परिल
एको गोट वाणे हुया सहस्रेक वाण * लक्ष लक्ष असुर सेनार लैला प्राण४००
परि गैल रणत असुर असंख्यात * उठिया लागिल पुनु असुरर माथ
आराधिया असुरे ब्रह्मात पाइ वर * ब्रह्मार अस्त्रत मृत्यु नाहि असुरर४०१
सेहि हेतु ब्रह्मास्त्रत गोटेको नमरे * मारि पुनु पुनु उठि उठि रण करे
महाकोपे ब्रह्मवाण असुरे प्रहारे * जाके जाके राजात परय एकेवारे४०२
रणत पंडित राजा नघाटन्त तात * ब्रह्मअस्त्र ब्रह्मवाणे करन्त विघात
पाचे एक महा अस्त्र हानिया पठाइल * असंख्यात असुरक काटिवे लागिल४०३

दशरथ की स्वर्गयात्रा और असुर वध

इसके वाद नृपतियों में प्रधान दशरथ अपनी सेना के साथ स्वर्ग रवाना हो गये ॥ ३९५ ॥ इससे पूर्व, इन्द्र को खदेड़कर जब (असुरों ने) स्वर्ग छीन लिया था, उस समय विष्णु देवताओ के सहायक वन गये थे। फिर (दुवारा) दानवो ने स्वर्ग छीन लिया तो दशरथ के रूप में माधव (भगवान्) सहायक वन गये ॥ ३९६ ॥ राजा दशरथ सेना के साथ गये और रथ मे चढ कर असुर सेना से भिड़ गये। महावली ने धनुष टकार किया जिससे सारे असुर भय से चौंक पडे ॥ ३९७ ॥ राजा विभिन्न प्रकार के अस्त्र वरसाने लग गये। वाण से विंधे असुर जर्जरित हो गये। सामने असमर्थ हो कितने ही दुष्ट असुर माया कर गगनमंडल मे चले गये ॥ ३९८ ॥ आकाश में पहुँच कर उन लोगो ने माया का वहुत विस्तार किया और राजा पर विभिन्न अस्त्र वरसाये। ऐसा देख कर उन्होने धनुष पर ब्रह्म अस्त्र लगाया, इससे असुरों की माया जाती रही ॥ ३९९ ॥ राजा ने महावल से ब्रह्म अस्त्र फेका, वेग से जलते हुए वह जाकर असुर के हृदय पर लगा। एक वाण से वह सहस्र वाण वन गया और लाख-लाख असुर-सेना के प्राण उसने ले लिये ॥ ४०० ॥ रण मे असंख्य असुर गिरे किन्तु पुनः असुरो के सिर जमने और इस प्रकार वे पुन. जीवित होने लगे। असुर ने ब्रह्मा की आराधना कर वर प्राप्त किया था कि ब्रह्मा के अस्त्र से असुर की मृत्यु नही होगी ॥ ४०१ ॥ इसी कारण ब्रह्मास्त्र से पूरा पूरा वह नही मरता। मरने के वाद भी फिर वह उठकर युद्ध करने लग जाता। असुर महाकोप से ब्रह्म वाण का प्रहार करने लगा और वह झुंड के झुड राजा की सेना मे आकर गिरने लगे ॥ ४०२ ॥ राजा रण मे पंडित है और उससे नीचा नही देखते। वे ब्रह्मअस्त्र से ही ब्रह्मवाण का मुकावला करते। पीछे एक महाअस्त्र फेक कर मारा और

रथे चड़ि दशरथ रणत सुजान * काटिला दानवगण हानि चक्रवाण
हेन देखि असुरर वर वर वीर * दशन कामुरि कोपे झंकारिया शिर४०४
करिलेक नाना अस्त्रगण वरिषण * बाटते काटिया सबे करिलेक छन
हेन देखि असुर रणत अनिर्व्वार * पुनरपि शरवृष्टि करिला अपार४०५
बिन्धिलेक निसन्धि राजार कलेवर * वाणबिषे जर्ज्जरित भैला नृपवर
अधिक किटाइल राजा पाया शरचोट * महाकोपे हानिल गन्धर्व्व अस्त्रगोट४०६
आकाश प्रकाशि शरपाट जाय चलि * असुर सेनात लगाइला खलमलि
महाबेगे गैया शर परम प्रचंड * बाणविषे सेनाक करिला लंडभंड४०७
शर हानि रंग चाहि आछे महाराज * दैत्यर लागिल युद्ध आपोनार माज
गन्धर्व्व अस्त्रर महा महिमा प्रचुर * मरे काटाकाटि करि समस्ते असुर४०८
शर हानि केहो कारो माथा बेलेगावे * काहाको दोहार केहो करे खांडाघावे
कंकालत काटि काको करय दुखान * केहोजने वाणे हानि लवे कारो प्राण४०९
केहो घाड़ मोचारि पकाया छिंडे मंड * जाठीर प्रहारे कारो भसारय तुंड
चवरर चोटे केहो कारो दान्त सारे * कारो हिया छिरे केहो परशु कुठारे १०
केहो कारो नाक काण करे खान खान * केहो काको गैया कंकालत मारे हान
केहो वाणे हानि काटे उरु शिर कर * भुमित परिया केहो करे धरफर ११
वाणबिषे केहो पृथिवीत ढलि परे * आधाकाटा दैत्य केहो परिया वागरे
निदारुण शरे फुटि कारो प्राण जाय * मरो मरो बुलि कत्तो परिया डेराइ १२

उससे असंख्य असुर कटने लग गये ।। ४०३ ।। रण मे कुशल दशरथ रथ पर चढक़र चक्रवाण चलाते हुए दानवों को काटने लगे। ऐसा देखकर असुरों में बड़े-बड़े वीर भी दाँत से (होंठ) काट कर सिर झटकने लग गये ।। ४०४ ।। फिर विभिन्न प्रकार के अस्त्रों की वर्पा की और रास्ते में सभी को काट कर ध्वंस कर दिया गया। ऐसा देख कर रण में दुर्द्धर्प असुरों ने फिर से अपार वाणों की वर्पा की ।। ४०५ ।। राजा के शरीर पर कोई ऐसा स्थान न वचा जहाँ वाण न चुभे हों। वाण के विप से राजा का शरीर जर्जर हो गया। वाणों का आघात पाकर राजा अधिक सन्नद्ध हो गये और अत्यन्त क्रोध से उन्होने गन्धर्व अस्त्र फेका ।। ४०६ ।। जव आकाश को प्रकाशित करता हुआ वह वाण चला तो असुरों की सेना में खलवली मच गई। वह परम प्रचंड वाण महावेग से जाकर अपने विप की ज्वाला से उस सेना को तितर-वितर करने लगा ।। ४०७ ।। वाण चलाने के उपरान्त महाराज कौतुक से देखने लगे कि दैत्यों मे आपस में लड़ाई होने लग गई। गन्धर्व अस्त्र की वड़ी महिमा है। उसके कारण सारे असुर आपस में मारकाट मचाकर मरने लगे ।। ४०८ ।। वाण चलाकर कोई किसी का सिर शरीर से विलग कर देता तो कोई किसी को खड्ग के आघात से दो टुकड़े कर डालता, किसी को कमर के पास से काट कर दो खंड कर डालता तो कोई वाण चलाकर किसी के प्राण ले लेता ।। ९ ।। किसी की गर्दन मरोड़ कर कोई उसका मुंड नोच फेंकता, तो कोई भाले की चोट से किसी का थूथन छेद डालता, किसी के दाँत कोई झाँपड़ मार कर गिरा देता तो कोई फरसे के प्रहार से किसी का कलेजा (तक) काट डालता ।। १० ।। कोई किसी के नाक-कान काट कर टुकड़े-टुकड़े कर डालता, तो कोई जाकर किसी की कमर पर चोट करता, कोई वाणो से किसी की जाँघ शिर और हाथ काट डालता तो कोई धरती पर पड़ा छटपटाता रहता ।। ११ ।। वाण के विप से मूछित होकर कोई जमीन पर लुढ़क पड़ता तो कोई अधकटा दैत्य दर्द से लोट पोट होने लगता। भीपण वाण से घायल होकर किसी के प्राण चले

केहो लर देव पलाइवाक नाहि स्थान * नृपतिर शरे खेदि खेदि लवे प्राण
असुरर तेजे रणभूमि गैल तल * मरे दैत्य दानव देवर कुतूहल १३
अस्त्र एरि अन्तरीक्षे आछे दशरथ * अन्यो अन्ये असुर आपुनि भैला हत
समस्ते असुर मरि गैल यमालय * राजार विक्रम देखि देवर विस्मय १४
लक्षकोटि असुर क्षणेके भैल हत * लागिल चमक आति इन्द्रर मनत
येन मेघ गुचि भैल प्रसन्न आकाश * असुर मरिल देवे देखिल प्रकाश १५
अवशिष्ट दैत्य पलाइ गैल दशोदिश * दशरथ नृप मने परम हरिष
अनायासे नृपवरे जिनिलेक रग * जय जय शंखनाद करे देवगण १६
इन्द्र पद लैवे दुष्ट दैत्यगण आइल * आछोक इन्द्रपद निज प्राणको हराइल
पर श्री आशा करि गैल रसातल * रण जिनि पाचे दशरथ महावल १७
विपरीत प्रकाश करिल महाशय * तिमिर विनाशि येन सूर्येर उदय
राजा रण जिनिलन्त देवर हरिष * शंखध्वनि करि पुरिलन्त दशोदिश १८
आनन्दे दुन्दुभि वाद्य वाजे असंख्यात * राजार शिरत सिंचिलन्त पारिजात
वखानन्त पुरन्दर राजार विक्रम * धन्य धन्य दशरथ नृपति उत्तम १९
आमाको जिनिलो यिटो प्रचंड असुर * रणे जिनि नृपति करिला ताक चर
नाहि नृपजीव राजा तोमार समान * एहि बुलि इन्द्रे करिलन्त वहुमान २०
पूजिला त्रिदशे नृपतिर वाहुवल * राजाक मातिला पुनु देव आखंडल
राज्य राखि दिला मोक असुरक मारि * तोमार गुणक आमि शुजिते नापारि २१

जाते तो कितने ही डर के मारे "मरा मरा" कह कर चिल्लाते ॥ १२ ॥ कोई दौड़ लगाता लेकिन उसे भागने का ठौर नहीं मिलता; नृपति का वाण खदेड़-खदेड़ कर उसके प्राण ले लेता। इस प्रकार रणभूमि मे असुरो का सारा रोब-दाव खत्म हो गया। दैत्य-दानव मर रहे है यह देखकर वेवताओ को कौतूहल होने लगा ॥ १३ ॥ अस्त्र फेंककर दशरथ अन्तरीक्ष मे ठहरे हुए हैं। आपस मे एक दूसरे पर प्रहार कर असुर स्वयं ही मर रहे है। सारे असुर मर कर यमालय चले गये। राजा का ऐसा पराक्रम देखकर देवताओं को वड़ा विस्मय हुआ ॥ १४ ॥ क्षण भर में लाखों करोड़ों असुर मर गये यह देखकर इन्द्र के मन में वड़ा विस्मय हुआ, मानों वादल छट जाने से सारा आकाश साफ हो गया। इस प्रकार असुरों को मरते देखकर देवताओं ने मानों प्रकाश देख लिया ॥ १५ ॥ मरने से वचे दैत्य दशो दिशाओं में भाग गये। राजा दशरथ मन ही मन वड़े हर्षित हुए। नृपवर ने अनायास ही रण में विजय प्राप्त कर ली। देवता जयध्वनि करते हुए शंखनाद करने लगे ॥ १६ ॥ दुष्ट दैत्य इन्द्र का पद हड़पने के लिए आए थे। इन्द्रपद पाना तो दूर उलटे उन लोगों ने अपनी जान ही गँवा दी। दूसरे की सम्पदा की आशा कर वे सव चौपट हो गये। रण-विजय के पश्चात् महावली दशरथ वीरता की आभा से इस प्रकार उज्वल हो उठे मानों अन्धकार का नाश कर सूर्य का उदय हुआ हो। राजा ने रण जीता और देवता हर्ष-मग्न हुए। उन्होंने शंखध्वनि से दशों दिशाएँ भर दी ॥ १७-१८ ॥ आनन्द से असख्य दुन्दुभि वजने लगे और राजा के सिर पर पारिजात पुष्प वरसाये गये। पुरन्दर ने राजा के पराक्रम को वखाना—"उत्तम नृपति दशरथ धन्य है।" १९ ॥ "मुझको जिस प्रचंड असुर ने हराया था, राजा ने रण में उसे हरा कर उसको चूर-चूर कर डाला। तुम्हारे समान कोई राजा आजतक उत्पन्न नही हुआ"—यह कर इन्द्र ने दशरथ का वहुत सम्मान किया ॥ २० ॥ देवताओ ने राजा के वाहुवल की प्रशसा की। फिर इन्द्रदेव ने राजा से कहा—"असुर को मार कर तुमने मेरे राज्य की रक्षा की, तुम्हारे

पूर्ब्बे नारायणे येन वंचि दानवक * अमृतक पियाइलन्त देवतासवक
सेहिमते असुरक मारिया नृपति * रक्षा करि दिला मोक पुरी अम्रावती २२
तयु महायश राशि रैल त्रिभुवने * घूषिबेक तोमार कीर्त्तिक सर्व्वजने
एहिमते राजाक प्रशंसि वारंबार * राजाक दिलन्त दिव्य वस्त्र अलंकार २३
दिला दिव्यरथ अष्ट घोटके सहित * वायुत अधिक महावेगे विपरीत
रथ पाया भैल आति हरिष विस्तर * मनत सन्तोष दशरथ नृपवर २४

दशरथे कैकेयीक दुटा वर दिवलै अंगीकार करार विवरण

इन्द्र समे देवतात मागिया मेलानि * अयोध्याक आनन्दे आसिला महामानी
दिब्य रथे चड़ि दशरथ महाराज * प्रवेशिला गैया निज ओवारिर माज४२५
दिव्य सिंहासनत वसिला राजा गइ * स्वामी आसिबार पाचे देखिया कैकेयी
सादरे प्रणाम आसि करिला सुन्दरी * आश्वासिला नृपति ताहाक हाते धरि २६
महारण करि श्रम पाइला नृपबर * ईषत कुंचित मुख परिल झामर
देखि महादइ नानामत सेवा करि * स्वामीर श्रमक दूर करिला सुन्दरी २७
नाना भावे नृपतिर चित्त सन्तोषिला * कैकेयीक चाइ राजा वचन बुलिला
सेवा करि सन्तोष कराइलि देवी मोक * खोज मोत जेहि लागे दिवो वर तोक २८
महादइ बोले सत्य करियोक आगे * तेवेसे मागिबो वर जेहि मोक लागे
शुनि सत्य अंगीकार करिला नृपति * सत्ये वोले येहि खोजा ताके दिवो सती २९

गुणों का ऋण मैं चुका नहीं सकता। प्राचीनकाल में जिस प्रकार नारायण ने दानवों को धोखा देकर सारे देवताओं को अमृत पिलाया था उसी प्रकार हे नृपति, तुमने असुर को मार कर मेरी अमरावती की रक्षा की। तुम्हारी महान् यशराशि त्रिभुवन में फैल गई। तुम्हारी कीर्त्ति को सभी लोग वखानते रहेंगे"। इस प्रकार वारवार राजा की प्रशंसा कर इन्द्र ने राजा को सुन्दर वस्त्र और अलंकार भेंट किये॥ २१-२३॥ इन्द्र ने दशरथ को आठ घोड़ों का एक सुन्दर सा रथ दिया जिसका वेग वायु से तीव्र था। रथ पाकर राजा वड़े प्रसन्न हुए। इस प्रकार नृपवर दशरथ को मन में सन्तोष प्राप्त हुआ॥ २४॥

दशरथ द्वारा कैकेयी को दो वर देने का वादा

इन्द्र सहित सारे देवताओं से विदा माँगकर, महामान्य दशरथ आनन्द से अयोध्या चले आए। सुन्दर रथ पर सवार हो महाराज दशरथ ने अपनी हवेली में प्रवेश किया॥ ४२५॥ राजा दशरथ दिव्य सिंहासन पर जाकर वैठ गये। वाद में, मेरे पति आ गये है यह देखकर कैकेयी ने आकर उनको सादर प्रणाम किया। राजा ने उसका हाथ थाम कर उसको आश्वासन दिया॥ २६॥ भीषण युद्ध करने के कारण महाराज दशरथ को काफी परिश्रम करना पड़ा था। उनका चेहरा झटक गया था और उसमें झुर्रियाँ आ गई थी। यह देखकर महादेवी ने उनकी कई तरह से सेवा की। उस सुन्दरी ने पति की थकान को दूर किया॥ २७॥ उसने विभिन्न प्रकार से नृपति के चित्त को सन्तुष्ट किया। कैकेयी की ओर देखते हुए राजा ने कहा—"हे देवी, तुमने मुझको सेवा के द्वारा सन्तुष्ट किया है इसलिए तुम मुझसे जो कुछ भी माँगोगी वही वर तुम्हें दूंगा"॥ २८॥ तव महादेवी ने कहा, मेरे निकट सच्ची प्रतिज्ञा करो कि जो वर मैं माँगूंगी वही तुम मुझको दोगे। यह सुनकर राजा ने उनसे

कुजीत कैकेयी पुछिलन्त माति आनि * वर दिबे चाहे राजा करि सत्य वाणी
कुजी बोले वर माव नलेबा एखन * यदि वर दिबाक राजार आछे मन ३०
समय पाइलेसे वर मागिबा राजात * शुनिया कैकेयी बोले करि योरहात
शुनियोक प्रभु बोलो स्वरूप बचन * मोक वर दिबाक तोमार आछे मन ३१
एतिक्षणे तोमात नलैबो मइ वर * समयत खुजिले दिवाहा नरेश्वर
एहिमते दशरथ भार्जाये सहित * नानाविध भोग भुंजिलन्त मनोनीत ३२
पात्र मंत्रीसमे राज्य करे नृपवर * गैला काल वहि सात सहस्र वत्सर
अनन्तरे ग्रहगति दैवर विपाक * महाव्रण गोट हुआ पीड़्य राजाक ३३
गुह्यर भितरे व्रण भैला आति टान * वेदनात राजार संकले येन प्राण
शुखाइ गैल मुख पानी नाहिके जिभात * नाहिके चेतन येन पागल साक्षात ३४
पात्र मित्र पुरोहित आसिला सकल * महादइगण सव भैलन्त विकल
निरन्तरे लोकर चिन्तार नाहि पार * प्राणर संशय आसि मिलिल राजार ३५
नाहि भात पानी एको हरिल चेतन * आसिलन्त वैद्य धन्वन्तरिर नन्दन
महामन्त्रे जारिया औषध दिला आनि * नृपतिक वैद्ये पाचे बुलिलन्त वाणी ३६
चाइबो तोमाक मइ करिया जतन * उपायासे रहे राजा तोमार जीवन
घिण एरि तोमार गुह्यत महाराज * मुख दिया हुपिया करोक पुंज बाज ३७
वैद्ये हेन उपदेश वचन बुलिला * अधिके राजार आवे वेदना मिलिला
इटो मोर कार्य साधिबेक कोनजन * चिन्ताविषे अतिशय भैला अचेतन ३८
चेतन कराइल पाचे सबे मिलि धरि * राजार सम्मुख भैला कैकेयी सुन्दरी
बोलन्त मूर्च्छित तुमि न हैवा नृपति * इ कार्य तोमार मइ साधिबो सम्प्रति ३९

सच्ची प्रतिज्ञा की—"हे सती, तुम जो कुछ भी माँगोगी वही दूंगा" ॥ २९ ॥ तव कुबडी मन्थरा को बुलाकर कैकेयी ने पूछा—"राजा ने मुझे सत्य-वचन दिया है, वह मुझको वर देना चाहते हैं। कुब्रडी ने कहा, माँ इस समय वर मत लो। यदि राजा का वर देने का मन है तो समय आने राजा से वह वर माँग लेना। यह सुनकर कैकेयी ने हाथ जोडकर कहा, हे प्रभु सुनो, मेरा अपना वचन सुनो। मुझको वर देने को तुम्हारा मन हुआ है पर इस समय मैं तुमसे वर नही लूंगी। समय पर माँगने से हे नरेश्वर वह वर देना। इस प्रकार से दशरथ ने अपनी भार्या के साथ मनचाहा भोग-विलास किया ॥ ३०-३२ ॥ इस प्रकार राजा दशरथ अपने मंत्री तथा पात्रमित्रों के साथ राज्य करने लगे। सात हजार वर्ष वीत गये। इसके अनन्तर ग्रहों के फेर से या दैववश राजा के एक वहुत वड़ा फोड़ा हुआ जिससे उनको वड़ी पीड़ा पहुँची ॥ ३३ ॥ गुदा के भीतर फोडा पक गया, दर्द के मारे मानों राजा के प्राण निकल जाएँगे। मुँह सूख गया, जीभ पर नमी न रही। चेतना जाती रही मानों मूर्त्तिमान पागल हो ॥ ३४ ॥ पात्र-मित्र पुरोहित सभी आ पहुँचे। सारी महादेवियाँ व्याकुल हो गयी। सभी लोगो मे चिन्ता की सीमा नही रही कि राजा के प्राण संकट में है ॥ ३५ ॥ भोजन तथा जल के विना उनकी चेतना जाती रही। धन्वन्तरी के समान नन्दन वैद्य आया। उसने महामंत्र से भस्म कर औपध दिया। वाद मे वैद्य ने महाराजा से कहा—॥ ३६ ॥ तुमको मै यत्नपूर्वक नीरोग करूँगा किन्तु उपाय से ही तुम्हारे प्राण बच सकते है। हे महाराज, यदि कोई घृणा त्याग कर मुँह से चूस कर तुम्हारी गुदा से पीप निकाल दे तो तुम्हारा रोग दूर हो सकता है ॥ ३७ ॥ वैद्य ने जब ऐसा उपदेश दिया तो चिन्ता के कारण राजा की पीड़ा और अधिक वढ़ गयी। मेरा यह कार्य कौन करेगा, यह सोचते हुए अतिशय चिन्ता रूपी विष से वे फिर अचेतन

कैकेयीर वाणी शुनि भैला सबे त्रास * किमत कार्यक सती करिलन्त सास
नृपतिर गुह्यत कैकेयी मुख दिल * वायु धरि देवी टान करिया हुम्पिल ४०
भोसरिल व्रण सबे पुँज भैल वाज * गुचिल वेदना स्वस्थ भैल महाराज
व्रणपीडा एराइया हरिष आति भैला * कैकेयीर मुख चाइ मातिबाक लैला ४१
सार्थक करिलो बिहा तोमाक सुन्दरी * महाव्रण वेदनात जाओं मइ मरि
तोमारेसे प्रसादे रहिल मोर प्राण * नाहि आन प्रिया आरो तोमार समान ४२
कराइला सन्तोष कर्म्म करि गरिहित * लैयो जेहि लागे वर मनर वांछित
शुनिया कैकेयी वाक्य बुलिला राजाक * पूर्व्वे एक वर दिया आछाहा आमाक ४३
भक्ति देखि आरो वर दिबे खोजा मोक * सभार माजत सत्य करि बुलिग्रोक
जेतिक्षण जिवा वांछो दिवा सेहि वर * सत्य करि बोला राजा सभार भितर ४४
ताके दिवो जिवा मोत खोजा येतिक्षण * हेन शुनि कैकेयीर तुष्ट भैला मन
बारम्बार राजा कैकेयीक दिया वर * दैवर निर्व्वन्ध आति आछय पूर्व्वर ४५
ताक एराइबाक लागि काहार शकति * आतपरे कथा आवे शुनिया सम्प्रति

पुत्र नोहोवात दशरथर असन्तोष आरु वशिष्ठर उपदेश

सात शत भार्या विहा करिला नृपति * नभैल कहातो हन्ते पुत्र उतपति ४६
महा मनदुखे बसि गुणे महाशय * न भैल सन्तति करो किमत उपाय
नेराइलोहो मइ पित देवतार ऋण * नरहिल बंश मोर भैलो धर्महीन ४७

हो गये ॥ ३८ ॥ सब लोग मिल मिलाकर फिर उनको होश में लाये। सुन्दरी कैकेयी राजा के सामने आई। बोली, हे राजा तुम फिर अपना होश मत गँवाना, तुम्हारा यह कार्य मैं पूरा करूंगी ॥ ३९ ॥ कैकेयी के वचन सुनकर सब लोग डर गये। किस प्रकार इस सती ने यह कार्य करने का साहस किया। राजा की गुदा पर कैकेयी ने मुँह रखा—साँस रोककर देवी ने जोर से चूसा ॥ ४० ॥ फोड़ा फटकर उससे सारा मवाद निकल आया। पीड़ा दूर हो गयी और महाराज स्वस्थ हो गये। फोडे की पीड़ा से मुक्त होकर वे बड़े प्रसन्न हुए और कैकेयी के मुख की ओर देख वे कुछ कहने को उद्यत हुए ॥ ४१ ॥ हे सुन्दरी, तुमसे मेरा विवाह सार्थक हुआ। इस महाव्रण की पीडा से मैं मर रहा था, तुम्हारी ही कृपा से मेरे प्राण बचे। हे प्रिये, तुम्हारे समान दूसरी कोई भी स्त्री नही है ॥ ४२ ॥ ऐसा अटपटा कार्य कर तुमने मुझको सन्तुष्ट किया है। अपने मन की इच्छा के अनुसार कोई भी वर मांग लो। यह सुनकर कैकेयी ने राजा से कहा, तुमने इससे पूर्व भी मुझको एक वर दे रखा है ॥ ४३ ॥ मेरी भक्ति देखकर तुम मुझे माँगने पर और वर दोगे ऐसा सभा के बीच सत्यवचन दिया है। जिस समय जो इच्छा होगी वही वर दोगे, सभा में खड़े होकर यह सत्यवचन बोलो ॥ ४४ ॥ "जब कभी माँगोगी जो भी माँगोगी वही दूंगा"—ऐसा सुनकर कैकेयी का मन प्रसन्न हुआ। बार बार राजा कैकेयी को वर देते है इसके पीछे दैव का लेखा पूर्व से बना हुआ है ॥ ४५ ॥ उससे कतराने की शक्ति भला किसमें है। इसके बाद इसकी कथा आवेगी, अभी यह सुनो।

पुत्र न होने के कारण दशरथ का असन्तोष और वशिष्ठ का उपदेश

नृपति ने सात सौ नारियो से विवाह किया किन्तु किसी से भी पुत्र नहीं हुआ ॥ ४६ ॥ बड़े दुःख में बैठे महाशय चिन्ता करने लगे—"सन्तान उत्पन्न नही हुई, अब कौन सा उपाय किया जाय। मै पिता और देवताओं का ऋण न चुका सका,

एहिमते नृपति चिन्तित दिने राति * पाचे वशिष्ठक राजा आनाइलन्त माति
आनो मुनि समस्तक मातिया आनिल * सवाहाते आपोनार दुख निवेदिल ४८
न भैल आमार पुत्र शुना मुनिगण * मिछा राज्यभोग मोर निष्फल जीवन
श्राद्ध तर्पण यज्ञ करो अपर्यन्त * अपुत्रक देखि देव पितृ नलवन्त ४९
यत यज्ञ पितृ कर्म्म करो निते नित * विष्ठात अधिक बुलि नलवे किंचित
पुत्रर निमित्ते यज्ञ करिलो विस्तर * नाहि पुत्र सिओ व्यर्थ भैल निरन्तर ५०
बहुकाले मोक अन्ध मुनि शाप दिल * सियो शाप मोत एतकाले नफलिल
मुनिरो वचन व्यर्थ भैल मोर ठाइ * आछोक पुत्रर शोक दरशन नाइ ५१
हेन शुनि नृपतिन पुछिल वशिष्ठ * केन बुलिलन्त मुनि कहा मोत निष्ठ
राजाइ बोलन्त मुनि शुना कहो सार * गैलो घोर अरण्यक मृग मारिबार ५२
मुनिपुत्र जल भरे ताहाक नजानि * प्रहारिलो शर हस्ती हेन मने मानि
सेहि शरे सिन्धु मुनि तेजिलन्त प्राण * देखि गैया भैलो मइ मृतक समान ५३
अन्धकर पाशे पाचे गैलो शव लैया * सकल वृत्तान्त तान्त निवेदिलो गैया
पुत्रर सन्तापे मुनि शापिलन्त मोक * मरिबि नृपति तइ पाया पुत्रशोक ५४
पुछिलो हरिष मइ तान शाप शुनि * केमने हैवेक पुत्र कैयो महामुनि
ऋष्यशृंगे यज्ञ आसि कराइवे तोमाक * तेवे हैवे पुत्र मुनि बुलिलन्त वाक४५५
अन्धकर कथा यत कहिलो वशिष्ठ * कोया आछे ऋष्यशृंग नजानोहो निष्ठ
आरो एक कथा कहो शुनिया सम्प्रति * दुर्व्वासा ऋषिक पाइ करिलो भकति४५६

मेरा वंश नही रहा अतः मैं धर्महीन हो गया" ॥ ४४७ ॥ इस प्रकार राजा रातोदिन चिन्तित रहने लगे। बाद में राजा ने वशिष्ठ को बुलवा भेजा। अन्य सब मुनियों को भी बुलवा भेजा। सभी से उन्होंने अपना दुख कह सुनाया ॥ ४८ ॥ हे मुनिगण, सुनो, मेरे कोई पुत्र नहीं हुआ। अतः यह राज्यभोग करना मेरे लिए व्यर्थ है, मेरा जीवन निष्फल है। आज तक श्राद्ध, तर्पण, यज्ञ जो कुछ भी मैंने किया है मुझको अपुत्रक देखकर मेरे पुरखों ने और देवताओं ने उनको ग्रहण नही किया है ॥ ४९ ॥ जितने भी यज्ञ और पितृ-कर्म आदि मैं नित्य-प्रति करता रहा उनको विष्ठा से अधिक न समझ कर उन्होंने ग्रहण नहीं किया। पुत्र के निमित्त भी विस्तार पूर्वक यज्ञ किया। पुत्र नही हुआ और वह भी निरन्तर व्यर्थ ही गया ॥ ५० ॥ बहुत दिनों पहले अन्ध मुनि ने मुझको शाप दिया था वह शाप भी इतने दिनों में नहीं फला। मेरे लिए मुनि का वचन भी व्यर्थ हो गया। पुत्रशोक पाना तो दूर पुत्र का दर्शन ही अभी तक मुझे नही हो सका ॥ ५१ ॥ ऐसा सुनकर वशिष्ठ ने राजा से पूछा, मुनि ने क्यों ऐसा कहा मुझसे सच-सच बताओ। राजा ने कहा, सुनो मुनि, संक्षेप में कहता हूँ। एक बार घोर अरण्य में मैं मृग का शिकार करने के लिए गया ॥ ५२ ॥ मुनिपुत्र पानी भर रहा है यह न जानकर, हाथी जानकर मैंने उस पर बाण से आघात किया। उसी बाण से सिन्धु मुनि ने प्राण त्याग दिया। जाकर उसे देखने के बाद मैं मृत के समान हो गया ॥ ५३ ॥ इसके पश्चात् वश लेकर मैं उसके पिता अन्ध मुनि के पास गया। उनसे जाकर मैंने सारा विवरण कह सुनाया। पुत्र के शोक से उस अन्धे मुनि ने मुझको शाप दिया—ऐ राजा, तू (भी) पुत्र शोक से मरेगा ॥ ५४ ॥ उनका शाप सुनकर मैने हर्ष से पूछा, हे महामुनि, बताओ मुझको पुत्र कैसे होगा। मुनि ने कहा, ऋष्यशृंग आकर तुम्हारा यज्ञ करेंगे तभी तुमको पुत्र होगा ॥ ४५५ ॥ इस प्रकार दशरथ ने वशिष्ठ से अन्ध मुनि की सारी बातें बता दीं। ऋष्यशृंग कहाँ हैं यह ठीक-ठीक मालूम नही। और एक बात बताना हूँ।

पुछिलोहो कृतांजलि ताहार आगत * जाना महामुनि तुमि भूत भविष्यत
हैबेक आमार किवा पुत्र उतपति * बुलिलन्त मुनि चिन्ता नकरा नृपति४५७
महामुनि ऋष्यश्रृंग विभांड तनय * तांक आनि यज्ञ करियोक महाशय
तेवे आसिवन्त हरि चारि रूप धरि * तोमार गृहत उपजिव निष्ठ करि ५८
हेन शुनि भैल मोर हरिष मनत * कहिलो सकलो कथा तोमार आगत
वशिष्ठे वोलन्त शुना नृपति प्रस्तुत * नृत्यगीतप्रिया सिटो विभांडर सुत ५९
मोदकर नामे येन मरिया जीवन्त * शुनि गीत मुनि येन अमृत पिवन्त
देखिते छवाल मुनि विष्णु अवतार * चारिवेद शास्त्र तान कंठत प्रचार ६०
प्रहरेक मात्र करे सन्ध्याक वन्दन * छवालर थाने क्रीड़ा करे सर्व्वक्षण
आनाहा गायक जार सुर सुललित * सुस्वादु सन्देश लाडु लौक यथोचित ६१
सुस्वरे पंचम कन्यागणे गाउक गीत * शुनि विमोहित आति हैव तान चित्त
मोदक सन्देश दिवा सेहि समयत * देखाइवेक रति रस ताहान आगत ६२
शिशु मुनि गीत सन्देशर स्वाद पाइ * आसिव आमार स्थाने एरि निज ठाइ
एहिमते उपाये मुनिक आनियोक * रचिला माधवे हरि हरि बुलियोक४६३

ऋष्यश्रृंगर उपाख्यान

छवि

सुमंत्री सुमंत्र गुणि वशिष्ठर वाणी शुनि उठिलन्त करि जोरहात ।
सुमधुर करि वाणी बुलिलन्त महामानी शुनियोक पृथिवीर नाथ ॥

हाल में दुर्वासा मुनि से मेरी भेंट हुई ।।४५६।। भक्तिपूर्वक हाथ जोड़कर उनसे मैंने पूछा, हे महामुनि, तुमको भूत-भविष्यत सब ज्ञात हैं, मुझको पुत्र उत्पन्न होगा या नहीं यह बताओ। मुनि ने कहा, हे राजा तुम चिन्ता मत करो ।। ४५७ ।। विभांडक के पुत्र महामुनि ऋष्यश्रृंग है, हे महाशय, उनको बुलवाकर यज्ञ करना। तब भगवान् चार रूप धारण कर तुम्हारे घर में निश्चयरूप से जन्म लेंगे ।। ५८ ।। ऐसा सुनकर मेरे मन में हर्ष हुआ। तुम्हारे सामने मैंने सारी बातें बता दी। वशिष्ठ ने कहा, राजा सुनो, तैयारी करो। विभांडक का वह लड़का नाच गाने का शौकीन है।। ५९ ।। मोदक-मिठाई का नाम सुनकर यदि वह मृत हो तो भी जीवित हो जाय। वह गीत यों सुनता है मानों अमृत का सेवन कर रहा हो। वह देखने मे लड़का है लेकिन वह मुनि साक्षात् विष्णु का अवतार है। चारो वेद और शास्त्र उसके कंठ से प्रकट होते है ।। ६० ।। वह केवल प्रहर-भर के लिए सन्ध्या-वन्दना करता है फिर वाकी सारा समय लड़कों के साथ खेल-कूद में मस्त रहता है। ऐसा गायक ले आओ जिसका स्वर सुललित हो और स्वादिष्ट पेड़ा, लड्डू आदि यथोचित मात्रा में ले जाओ, ।। ६१ ।। कन्याएं पंचम सुर में सुललित गीत गाती हुई, जिसे सुनकर उसका चित्त विमोहित हो जाय, उसी समय पेड़ा लड्डू भी देना और उसके सम्मुख श्रृंगार-रस का प्रदर्शन करना ।। ६२ ।। शिशु मुनि गीत और मिठाई का स्वाद पाकर, अपना स्थान छोड़ कर हमारे स्थान पर आ जायगा। इसी उपाय से मुनि को ले आना। माधव ने इसकी रचना की। हरि का नाम लो ।। ४६३ ।।

ऋष्यश्रृंग का उपाख्यान

वशिष्ठ की बातें सुनकर उत्तम मंत्री सुमंत्र हाथ जोड़ कर खड़े हो गये और मधुर वचन वोले, हे महामान्य पृथ्वीपति, आप सुनें। वशिष्ठ ने जो कुछ कहा वह सब

वशिष्ठे कहिला यत सवे सत्य स्वरूपत पूर्व्वकथा सुमरिलो आमि ।
आपुनियो जाना तुमि साम्प्रते पासरि आछा सुमिराइले सुमरिबा स्वामी ॥४६४
शान्ता नामे कन्याखानि तयु गृहे महामानी उपजिल परम सुन्दरी ।
लोमपाद नरपति अंगदेश अधिपति शान्ताक खुजिला भक्ति करि ॥
मित्रर भावत थाकि तुमियो शान्ताक दिला लोमपादे शान्ताक निलन्त ।
आनन्दे नधरे हिया कन्याक गृहक निया जीउ बुलि तेन्ते तुलिलन्त ॥ ६५
लोमपाद महामुनि विभांडर पुत्र आनि शान्ता कन्या दिलन्त विवाह ।
ऋष्यश्रृंग निया यज्ञ करि पाचे लोमपादे पुत्र पाया मिलिल उत्साह ॥
द्वादश वत्सर वृष्टि ताहार राज्यत नाइ ताते लोक मरय समस्त ।
ऋष्यश्रृंग आसिलात भैला वृष्टि असंख्यात पाचे सुखी हैला लोक यत ॥ ६६
शुनि दशरथ पाचे सुमंत्रत पुछिलन्त शुनियोक सुमन्त्र साक्षात ।
केनमते ऋष्यश्रृंग करिला शान्ताक विहा प्रपंचिया कहियो आमात ॥
सुमंत्र बोलन्त राजा शुनिओ कौतुक मने सिटो विभांडक महाऋषि ।
ऋष्यश्रृंग पुत्र लैया माधवत मति दिया करे तप तपोवने वसि ॥ ६७
अपुत्रक भैलो बुलि लोमपाद नृपतिर मने आति असुख अशेष ।
ऋष्यश्रृंग आनि यज्ञ कराइले हैवेक पुत्र पाइला नारदत उपदेश ॥
लोमपाद राजा पाचे ऋषिपुत्र आनिवाक करिलन्त उपाय उत्तम ।
नौकार उपरे नाना फल-मूल समन्विते मायावले पातिला आश्रम ॥ ६८
सुगन्ध कर्पूर चिनि घृते पाक करि आनि साजिलन्त विविध सन्देश ।
फल-फुल रूपे ताक वृक्षते निर्म्मिया थैल देखि वन परम सुवेश ॥
नाना गन्धे हुया मत्त गुंजरे भ्रमर यत कोकिलर कुहु कुहु राव ।
वहय शीतल वात कामुक रमणी येन मदनक देय हाय वाव ॥ ६९

सत्य है। मुझको पुरानी बात याद आ गई। हे स्वामी, आप भी जानते हैं किन्तु इस समय भूले हुए है, याद दिलाने से याद आ जायगी ॥ ४६४ ॥ हे महामान्य आपके घर में शान्ता नामक जिस परम सुन्दरी कन्या ने जन्म लिया, अंगदेश के राजा लोमपाद ने भक्तिपूर्वक उस शान्ता को ढूंढ निकाला। मित्र-भाव से तुमने भी शान्ता को दिया और लोमपाद ने शान्ता को ग्रहण किया। (राजा लोमपाद) आनन्दपूर्ण हृदय से कन्या को अपने घर बेटी के रूप में ले भी गया ॥ ६५ ॥ लोमपाद ने महामुनि विभांडक के पुत्र को लाकर शान्ता के साथ विवाह कराया। वाद मे लोमपाद ने ऋष्यश्रृग को लेकर यज्ञ किया और पुत्र प्राप्त कर उत्साहित हुआ। उसके राज्य मे वारह वर्ष से वर्षा नही हो रही थी और इस कारण लोग मरने लगे थे। ऋष्यश्रृंग के आने से पर्याप्त वर्षा हुई और सारे लोग सुखी हुए ॥ ६६ ॥ यह सुन कर दशरथ ने सुमंत्र से पूछा, हे सुमंत्र सुनो, मेरे सम्मुख यह विस्तार से बताओ कि ऋष्यश्रृग ने शान्ता से कैसे विवाह किया। सुमंत्र ने कहा, राजा कौतुक से सुनो। विभाडक नामक महाऋषि अपने पुत्र ऋष्यश्रृग को लेकर माधव का ध्यान कर तपोवन में बैठा तपस्या करता था ॥ ६७ ॥ अपुत्रक होने के कारण राजा लोमपाद के मन में बड़ा दुःख था। नारद से उसको परामर्श मिला कि ऋष्यश्रृंग को बुलवाकर यज्ञ करने से पुत्र प्राप्त होगा। इसके अनन्तर राजा लोमपाद ने ऋषिपुत्र को बुलवाने के लिए अच्छा उपाय ढूंढ निकाला। नाव पर फल-मूल से पूर्ण एक आश्रम मायावल से बनाया ॥ ६८ ॥ सुगन्धित कपूर और चीनी से विविध प्रकार की मिठाइयाँ घी मे तलकर बनाई गई। उनको फल-फूल के रूप में वृक्षों मे जड़ दिया और वन देखने

जाने यत नृत्य गीत आतिशय सुशिक्षित युवती सुन्दरी सुवदनी ।
कामकला केलि यत जाने आति नानामत नाना रसे परम शुवनी ।।
गावे येन पट्टवासे अतिशय लयलासे काछि पारि नावत चड़िल ।
कतेक वर्णाइबो ताक ऋष्यश्रृंग आनिवाक सुमंगल समये लरिल ।। ७०
कतो दिन अनन्तरे पाइला गैया तपोवन माया नौका आर करि थैला ।
विभांडक मुनिवरे पुत्र थैया निजघरे तप करिबाक लागि गैला ।।
पाचे नटीगण यत छेग पाया समयत गैया ऋष्यश्रृंगर आगत ।
हाते तालयंत्र धरि सुर सुललित कर नृत्य गीत करे नानामत ।। ७१
विभांडक आसिवार समय जानिया सवे तरातरि आश्रमक जाइ ।
एहिमते नृत्यगीते क्रीड़ा करि नानामते ऋषिक मोहिला समुदाय ।।
नाचनिर लयलास देखि मुनि तोले हास कुतूहले करन्त जिज्ञास ।
मूर्त्ति आति अनुपाम कमन तोमार नाम कोन थाने कराहा निवास ।। ७२
शुनि नारी निरन्तरे दिला तांक प्रत्युत्तर सबे आमि उत्तम तपस्वी ।
जानो तुमि मुनिराज पशि तपोवन माज करा तप एक मने वसि ।।
निकटते तपोवन तयु आगे सर्व्वक्षण नृत्य गीते करो कौतूहल ।
तोमार संगक मने आमि सव ऋषिगणे वेदपाठ करो सुकोमल ।। ७३
ऋष्यश्रृंग माया वाणी शुनि मने अधुमानि बोले शुना शुना ऋषिगण ।
तोमासार पाया संग मोहोर कौतुक रंग भिलय मनत सर्व्वक्षण ।।
आमिओ तोमार तुले थाकिवोहो कौतूहले सुमधुर वेदध्वनि शुनि ।
आति सुललितभावे सुन्दर कोमल गावे तुमिसव समे महामुनि ।। ७४

मे वहुत ही सुन्दर लगने लगा । विभिन्न प्रकार की सुगन्ध से मत्त होकर भौरे गुंजन करने लगे और कोयल कूकने लगी । शीतल पवन चलने लगी मानो कामुक रमणी मदन को संकेत कर रही है ।। ६९ ।। नृत्यगीत में सुशिक्षिता सुमुखी सुन्दरी युवतियाँ जो विभिन्न प्रकार की कामकला-क्रीडा में सुनिपुणा तथा परम रसिका और रूपवती थी, पट्टवस्त्र पहने हुई नृत्यभंगिमा में कछाना मारकर नाव पर चढ़ गई । भला उसकी कितनी वर्णना करूँ । वे ऋष्यश्रृंग को लिवा लाने के लिए शुभघड़ी में रवाना हुई ।। ७० ।। कितने ही दिनों के वाद वे तपोवन के पास पहुँची । मायामयी नौका को वाँध दिया । मुनिवर विभांडक अपने पुत्र को अपने आश्रम पर छोड़कर तपस्या करने के लिए चले गये । पीछे नटियाँ मौका पाकर ऋष्यश्रृंग के पास जा पहुँची । वहाँ वे अपने हाथों में तालयंत्र लेकर सुललित स्वर में वजाते हुए नृत्य-गीत करने लगी ।। ७१ ।। विभाडक के आने के समय का पता लगाकर वे तुरन्त आश्रम पहुँच गई । इस प्रकार नृत्य-गीत एव क्रीड़ाओं के द्वारा उन लोगों ने ऋषि को मुग्ध कर दिया । नृत्य का छन्द और लास्य देखकर मुनि हँसने लगा और कौतूहल से पूछने लगा, तुम लोगों की मूर्त्ति अनुपम है, तुम लोगों का क्या नाम है और तुम लोगों का निवास कहाँ है ? ।। ७२ ।। यह सुनकर उन नारियो ने उत्तर दिया हमलोग सव उत्तम तपस्वी है । हे मुनिराज यह जान लो कि हम तपोवन के वीच वैठकर ध्यान लगाकर तपस्या करते है । निकट में तपोवन है । तुम्हारे सम्मुख कौतूहलवश नृत्य-गीत कर रहे है । तुम्हारी संगत में आकर हम ऋषिलोग सुकोमल ध्वनि मे वेदपाठ कर रहे है ।। ७३ ।। यह मायामयी वाणी सुनकर मन ही मन गुन कर ऋष्यश्रृंग ने कहा, सुनो ऋषिगण, तुमलोगों की संगत पाकर मेरा मन कौतुक और रंग से भर गया है । मै भी तुम्हारे साथ रहकर तुम्हारी सुमधुर वेदध्वनि कौतूहल से सुनूँगा । तुम

सुशोभन जटाभार बाकलि वसन गार अत्यन्त शीतल आतिशय ।
तोमासार शरीरर भस्म धूलि निरन्तर उत्तम सुरभी गन्ध कय ।।
आमार बृक्षर छाल पिन्धिवाक नुहि भाल शिरे आउल जाउल जटाभार ।
करे आति जटाजट शुनि आनि खटमट वेदध्वनि यतेक आमार ।। ७५
शरीर सकल रक्षा भस्म धूलि यत देखा घपिते कुत्चित करे गाव ।
एहिमते मुनिवर वर्णाइला निरन्तर अतेक आपोन पर भाव ।।
उपजारे परा ऋषि निज आश्रमते वसि तप करि थाकन्त सदाय ।
परम महन्त सन्त आन एको नजानन्त तपे मन मग्न समुदाय ।। ७६
मायारूपीगणे यत कपटे कहिला कथा ताके सत्य मनत मानिल ।
पाचे स्त्रीसवे आनि मोदक सन्देश निया ऋषिर पुत्रर हाते दिल ।।
ऋष्यश्रृंग महामुनि फल हेन मने मानि भुंजिला हरिष करि मन ।
नजानि कपट माया सुस्वादु सुरभी पाया पुछिलन्त शुना ऋषिगण ।। ७७
तोमार राज्यर फल खाया भैलो कुतूहल इटो ताति स्वादत विचित्र ।
आछय आमाक दाया अन्ये अन्यो आलिंगिया आसा तुमि आमि करो मित्र ।।
तोमासार संगे जाइबो इटो मधुफल खाइबो शुनिवो मधुर वेदध्वनि ।
थाकिवो तोमार संगे तप करि महारंगे अन्यो अन्ये वंचिवो रजनी ।। ७८
नमो नमो नमो राम जार जश अनुपाम जगतरे मंगल निश्चय ।
अमृततोधिक करि पिया आक कर्ण भरि महाजने मोक्षको तेजय ।।
हेन तयु गुण नाम मोर मुखे अविश्राम कीर्त्तन करोक प्रभु राम ।
एहि कृपा कर मोक यत समाजिक लोक बोला राम तेजि आन काम ।।४७९

सभी महामुनि सुन्दर व कोमल शरीर वाले हो ।। ७४ ।। तुम लोगो की जटाएँ कितनी शोभन है, वदन पर जो वल्कल-वसन है वह कितना शीतल है। तुम लोगो के शरीर पर मले हुए भस्म और धूल से कितनी उत्तम सुगन्ध आ रही है। मेरे पहिनने वाली पेड की छाल पहनने मे अच्छी नही, सिर पर अस्त-व्यस्त जटाओं का भार है, मेरी वेदध्वनि सुनने मे कठोर और कटु है ।। ७५ ।। शरीर राख हो गया है, राख और धूल जो वदन पर मलता हूँ तो उतना ही शरीर कुत्सित हो जाता है। इस प्रकार मुनिवर अपना और पराया जितना भाव था वर्णन करता रहा। जन्म से ही ऋषि आश्रम में बैठकर सदा तपस्या करता रहा। वह वहुत वड़ा सन्त था. किसी दूसरे को जानता ही नही था और सदा तपस्या में लीन रहता था ।। ७६ ।। मायारूप धारण करने वाली नारियों ने जो कुछ भी कपट से कहा सभी कुछ ऋषि ने सत्य मान लिया। इसके पश्चात् उन नारियों ने लड्डू-मिठाई आदि लाकर ऋषिपुत्र के हाथों में दिया। महामुनि ऋष्यश्रृंग ने उनको फल जानकर वडे आनन्द से खाया। उनका छल-कपट न भाँप कर सुगन्धित और स्वादिष्ट फल पाकर उसने पूछा, हे ऋषिगण, तुम्हारे राज्य का फल खाकर मुझे वड़ा कौतूहल हो रहा है, इनका स्वाद तो वड़ा अनोखा है। आओ हम लोग एक दूसरे से गले मिलकर मित्र वन जाये। तुम लोगो के साथ जाऊँगा, यह मधुफल खाऊँगा और मधुर वेदध्वनि सुनूँगा। तुम्हारे साथ रहकर वड़े आनन्द से तपस्या करूँगा और सव लोग मिलजुल कर रात काटेंगे ।। ७७-७८ ।। राम का नमन करो जिनका यश अनुपम है, ससार का अवश्य कल्याण होगा। महाजन मोक्ष को त्याग कर अमृत से अधिक समझकर (यह नाम) कान की अंजलियो मे भर कर पीते है। हे प्रभु राम, ऐसा जो तुम्हारा नाम है, वह मेरे मुख से कीर्त्तन के रूप मे निकले। इतनी ही कृपा मुझ पर करना। हे समाज के लोगो, अन्य सारे काम छोड़ कर राम का नाम वोलो ।।४७९।।

पद

नटीसबे शुनि ऋष्यश्रृंगर वचन * भैला मित्र बुलि करिलन्त आलिंगन
देखिला नजाने किछु ऋषिर तनय * नाना कामकला रसे भाव दरशय४८०
केहो जनी आलिंगि धरिला तान गले * केहो जनी वसुवाइला वस्त्रर आंचले
केहो जनी निया तांक बसाइला कोलात * स्तनर उपरे केहो थैला तान हात ८१
केहो जनी तान मुखे मुखे चुमा दिल * बुकत लगाया स्तन केहो सावटिल
केहो जनी हृदयर वस्त्र दूर करि * उच्च कुच भार ताक देखावे सुन्दरी ८२
आपोनार उरु तान उरुत लगाय * कटाक्षे निरीखि हासि तोले मुचुकाइ
कतो जनी गाव घेलावय तान संगे * लयलासे हासे कतो जनी भुरुभंगे ८३
कतो जनी वाहु धरि करय मर्दन * कोले तुलि कतो जनी जान्तय चरण
कतो जनी आपोनार गावे आयोजाय * मुख काटि करिया थाकय ताके चाइ ८४
पाचे ऋषिकुमारक करि वहुमान * सुगन्ध शीतल जले कराइलेक स्नान
भस्म धूलि तान शरीररो दूर करि * पिन्धाइलेक कुसुम चन्दन सादरि ८५
वाकलि गुचाया दिव्य पिन्धावे वसन * रुद्राक्ष गुचाया दिव्य पिन्धावे भूषण
शिलिखा गुचाया देइ कर्पूर ताम्बुल * सुरभी शीतल पिन्धावय कतो फुल ८६
तालजंग धरि सुललित गीत गावे * मधुर मृदंग धरि कतो जनी वावे
कतो लयलासे भंगिभारे करे नृत्य * एहिमते मोहित करिल तान चित्त ८७

पद

ऋष्यश्रृंग की वातें सुनकर सभी नर्तकियाँ 'हम लोग एक दूसरे के मित्र हो गये' यह कहकर उनका आलिंगन करने लगी। उन लोगों ने देखा कि ऋषिपुत्र कुछ भी नही जानता है। वे उसे लुभाने के लिए कितने ही ढंग से काम के भाव प्रदर्शन करने लगीं ॥ ४८० ॥ कोई तो गले मिलकर आलिंगन करने लगी तो कोई अपने वस्त्र के आँचल पर उसको विठाने लगी, कोई उसको लेकर अपनी गोद पर विठा लेती तो कोई उसका हाथ लेकर अपने स्तन पर रख लेती ॥ ८१ ॥ किसी ने उसके मुख का चुम्वन लिया तो किसी ने अपने स्तन उसके हृदय सीने से लगाकर आलिंगन किया, किसी ने कपड़े हटाकर अपने ऊँचे ऊँचे स्तन उसे दिखाये ॥ ८२ ॥ किसी ने अपनी जाँघ से उसकी जाँघ मिलाकर कटाक्षपात कर मुसका दिया। कितनी ही नारियाँ उसकी देह से देह मिलाकर हँसती तो कितनी ही हास्यलास्य से भ्रूभंग करती ॥ ८३ ॥ कितनी ही नर्तकियाँ उसकी वाँह पकड़कर मसलने लगी, कितने ही उनके पाँव अपनी गोद में लेकर चाँपने लगी। कोई अपना शरीर उसके वदन पर टेक लगाकर मुँह फैलाकर उसकी ओर टकटकी लगाये रहती ॥ ८४ ॥ इसके पश्चात् ऋषिकुमार का काफी सम्मान करती हुई वे नर्तकियाँ उसको सुगन्धित शीतल जल से नहलाने लगी। उसके शरीर के भस्म और धूल को धोकर उसपर चन्दन पोत दिया और फूल पहना दिये ॥ ८५ ॥ पेड़ की छाल फेंक कर वस्त्र पहना दिया। रुद्राक्ष फेंककर आभूपण पहना दिया। हड़ फेंककर उसको कपूर और पान दिया। कितने ही सुगन्धित शीतल फूलों की मालायें उसको पहना दी ॥ ८६ ॥ इसके वाद वे ताल-लय में सुललित गीत गाने लगी, कोई मधुर मृदंग लेकर वजाने लगी, वे कितने ही छन्द और मुद्राओं में नृत्य करने लगीं। इस प्रकार से वे उसके चित्त को मोहित करने लगी ॥ ८७ ॥ सुमंत्र ने कहा, सुनो महाशय, विभांडक-पुत्र को ग्राम्य-जनों का संग मिला। उसक सारा ऋषि-धर्म चौपट हो गया।

सुमंत्र बदति शुनियोक महाशय * ग्रामी जन संग पाया विभांडतनय
ऋषि धर्म्म सकले गुचिल समुदाय * भैल उलमाल नारीगण संग पाइ ८८
स्त्री समस्तक मुनि बुलिला वचन * तोमार आश्रम कत दूर मुनिगण
तुमिसव महामित्र भैलाहा आमार * देखिते उत्सुक आछे आश्रम तोमार ८९
मायावतीसवे बोले शुना मुनिवर * निकटे आश्रम जाइबा उठियो सत्वर
शुनि ऋष्यश्रृंग उठिलन्त शीघ्र करि * चलिला कौतुके तासम्वार हात धरि ९०
कथामातो नौकात तुलिला नारीगणे * आश्रम देखिया मुनि रंग भैला मने
भालर आश्रम तपोवन वित्तोपन * नाना फल-फुले आमोदित करे मन ९१
हरिषे फुरन्त ऋषि मायावन चाइ * मायारूपी सवे नाव वाया लैया जाय
नाना केलि कौतुक करिया ऋषिसंगे * मायानौका पार करिलेक महारंगे ९२
श्रम पाया ऋषिर कुमार निद्रा गैला * अनन्तरे नौका आनि अंगदेश पाइला
भांगिल ऋषिर निद्रा पाचे कतोक्षणे * स्त्री सकलत मुनि पोछे संगी मने ९३
कहियोक तुमि सवे स्वरूप वचन * नोहा तुमिसवे ऋषि नुहि तपोवन
तुमि सवे आमाक मोहिला माया करि * आपोनार देशे आनि आछा छल करि ९४
कि कारणे आनिला कहियो प्रयोजन * शुनि जोरहाते मातिलेक नारीगण
शुनियोक मुनि नकरिवा कोप मन * कहिवो तोमात आछे यत प्रयोजन ९५
लोमपाद राजा अंगदेश अधिपति * शान्ता नामे कन्या तान आछे महासती
त्रैलोक्यमोहिनी कन्या महागुणवती * करिवा विवाह ताक तुमि महामति४९६
अपुत्रक राजा मने करे अपमान * तुमि यज्ञ कराइले हैवेक पुत्र तान
द्वादश वत्सर बृष्टि नाहिके राज्यत * अन्नर विकले दुख पावे प्रजा यत४९७

नारीसग पाकर उसका सव कुछ अस्त-व्यस्त हो गया ॥ ८८ ॥ मुनि ने सारी नारियों से कहा, हे मुनिगण, तुमलोगो का आश्रम कितनी दूर है ? तुम सव हमारे महामित्र वन गये। तुम्हारा आश्रम देखने को मै उत्सुक हूँ ॥ ८९ ॥ तव उन मायावतियों ने उत्तर दिया, हे मुनिवर सुनो, हम लोगो का आश्रम निकट ही है, यदि चलना है तो तुरन्त उठो। यह सुनकर ऋष्यश्रृग झट उठ कर खड़ा हो गया और उनका हाथ पकड़ कर कौतुक से चलने लगा ॥ ९० ॥ वातों में वहला कर नारियो ने उसे नाव पर चढाया। आश्रम देखकर मुनि वडा प्रसन्न हुआ। यह तो वड़ा सुन्दर आश्रम है, अति उत्तम तपोवन है। तरह तरह के फल और फूलो से मन को आमोदित करता है ॥ ९१ ॥ मायावन को देखकर ऋषि हर्प से घूमता-फिरता रहा। जितनी मायामयी नारियां थी वे नाव खे कर ले चली। ऋषि के साथ तरह तरह की केलि और क्रीडा करती हुई वडे आनन्द से वे नाव लेकर आगे वढ चली ॥ ९२ ॥ ऋषि-पुत्र जव थक कर सो गया तो नाव आकर अगदेश से लगी। कुछ ही देर के वाद ऋषि की नीद टूटी। साथी समझ कर ऋषि ने नारियों से पूछा— ॥ ९३ ॥ तुम लोग मुझको सच सच वताना। तुम लोग ऋषि नही हो और न वह तपोवन है। तुम लोगो ने मायावल से मुझको मोह लिया और धोखे से अपने देश मे ले आए ॥ ९४ ॥ किस कारण मुझको यहाँ तुम ले आए, तुमको क्या जरूरत आ पड़ी ? यह सुनकर नारियों ने हाथ जोड़ दिये और वोली, हे मुनि, क्रोध मत करो, हम लोगों की आपसे जो आवश्यकता है वह अभी वताती हूँ ॥ ९५ ॥ अंगदेश के राजा लोमपाद की एक महासती कन्या शान्ता है। वह कन्या त्रैलोक्यमोहिनी तथा महागुणवती है। हे महामति, तुम उससे विवाह करो ॥ ४९६ ॥ राजा का कोई पुत्र नही इसलिए अपुत्रक राजा अपना अपमान समझता है। तुम्हारे यज्ञ कराने पर उसको पुत्र होगा।

तुमि गैले राज्यत हैवेक वरिषण * हैवे लोक सुखी शष्य मैंवेक सम्पन्न
लैया जाओं तोमाक एहिसे प्रयोजने * कहिलो कारण मुनि कोप एरा मने४९८
एहि कथा माते नटीगण निरन्तर * कतो दिने पाइला लोमपादर नगर
शुनि लोमपादे ऋष्यश्रृंग आनिवार * आगवाढ़ि आसिया करिल सतकार४९९
भैलन्त हरिष राजा ऋषिक देखिया * करिल ऋषिक पूजा पाद्य-अर्घ्य दिया
जेवे अंगदेशे आसि भैलन्त प्रवेश * तेवे जल वृष्टि मेघे करिला अशेष५००
भैल शष्य सम्पूर्ण राज्यत निरन्तर * नाना भोग भुंजि सुखी भैला सबे नर
लोमपादे नाना द्रव्य एकत्र करिल * ऋष्यश्रृंग मुनित शान्ताक विहा दिल५०१
भैल कुतूहल मुनि पाया कन्यारत्न * पाचे यज्ञ करिते राजार भैल यत्न
एकत्र करिया यत यज्ञर सम्भृत * करिला युगुति पुरोहित समन्वित५०२
अश्वमेध महायज्ञ राजा आरम्भिल * ऋष्यश्रृंग यज्ञत कौतुके प्रवेशिल
परम पंडित सर्व्व कर्म्मंत कुशल * शुभ समयत आचरिला सुमंगल५०३
लोमपाद राजा भैल यज्ञत दीक्षित * यज्ञकार्य कलाक्रिया कार्य सुशिक्षित
सांगोपांगे यज्ञ करिलाहा नरपति * पाइलन्त यज्ञत पुत्रवर महामति५०४
उपजिल चारि पुत्र परम महन्त * बुद्धि वल तेज महा गुणे गुणवन्त
शान्ताये सहिते ऋष्यश्रृंग महाऋषि * लोमपाद आश्रमत रहिला हरिषि५०५
सम्प्रति आछन्त शान्ता समे कुतूहले * ताहान चरित्र यत कहिलो सकले
ऋष्यश्रृंग आनि यज्ञ करियो नृपति * हैवेक तोमार तेवे उत्तम सन्तति५०६
भैलन्त हरिष सुमंत्रर कथा शुनि * दशरथ राजा मातिलन्त मने गुणि

बारह वर्ष से इस राज्य में वर्षा नहीं हुई, विना अन्न के सभी प्रजाएँ व्याकुल हो दुःख भोग रही हैं ॥ ४९७ ॥ तुम्हारे जाने पर राज्य में वर्षा होगी पृथ्वी अन्न से सम्पन्न होगी और लोग सुखी होंगे, तुमको इसी प्रयोजन से ले आई हूँ। हे मुनि, हमने कारण वता दिया, अव क्रोध मत करो ॥ ४९८ ॥ नटियाँ निरन्तर यही वात कहती रहीं। कितने दिनों के वाद लोमपाद का नगर आया। लोमपाद आगे वढ़कर ऋष्यश्रृंग मुनि की अगवानी करने आ गये ॥ ४९९ ॥ ऋषि को देखकर राजा वड़े प्रसन्न हुए। पाद्य, अर्घ्य आदि देकर ऋषि की चरण-वन्दना की। जैसे अंगदेश में उनका प्रवेश हुआ वैसे ही वादलों से पर्याप्त वर्षा होने लगी ॥ ५०० ॥ सारे राज्य में प्रभूत अन्न उत्पन्न हुआ। सारे नर हर प्रकार का सुख भोगकर सुखी हुए। लोमपाद ने विभिन्न द्रव्य एकत्रित किये और ऋष्यश्रृंग मुनि के साथ शान्ता का विवाह कर दिया ॥ ५०१ ॥ कन्यारत्न पाकर मुनि को कुतूहल हुआ। इसके पश्चात् राजा ने यज्ञ करने का प्रयत्न किया। यज्ञ के सारे सामान एकत्र कर पुरोहित के साथ मंत्रणा की ॥ ५०२ ॥ इसके वाद राजा ने अश्वमेध यज्ञ आरम्भ किया। ऋष्यश्रृंग ने कौतुक से यज्ञ में प्रवेश किया। सभी कर्मों में कुशल उन परम पंडित ऋष्यश्रृंग ने शुभघड़ी पर सुमंगल कार्य आरम्भ किया ॥ ५०३ ॥ राजा लोमपाद यज्ञकार्य में दीक्षित हुए और यज्ञकार्य की कला और क्रिया में संलग्न हो गए। राजा ने आद्योपान्त यज्ञ किया; उस यज्ञ से उनको पुत्ररत्न प्राप्त हुआ ॥ ५०४ ॥ उनके चार पुत्र उत्पन्न हुए जो कि परमश्रेष्ठ हुए, वे वुद्धि वल तेज आदि सर्वगुणों से युक्त थे। महर्षि ऋष्यश्रृंग शान्ता के साथ लोमपाद के राज्य मे आनन्द से रहने लगे ॥ ५०५ ॥ इस समय वे शान्ता के साथ आनन्द से हैं। उनका सारा विवरण मैंने कह सुनाया। हे नृपति, ऋष्यश्रृंग को बुलवाकर यज्ञ करो, इसमे तुमको अच्छे पुत्र उत्पन्न होंगे ॥ ५०६ ॥ सुमन्त्र की वातें सुनकर राजा दशरथ प्रसन्न हुए और मन मे सोचकर वोले—

ऋष्यशृंग मुनिक आनिवलै लोमपाद नृपतिर घरलै दशरथर गमन आरु ऋषिक आनि यज्ञ सम्पादन

शुनियो सुमंत्र कथा कहिला विशेष * जाइबो मइ लोमपाद नृपतिर देश५०७
पात्र मित्र पुरोहित चलियो सकल * एहि बुलि यात्रा करिलन्त महावल
वशिष्ठ प्रमुख्ये पुरोहितगण रंगे * चलिला हरिषे सवे नृपतिर संगे ८
सुमंत्रे सहिते आठ पात्र ढलि गैला * गज वाजी रथ सेना साजि लगे लैला
काहालि महरी भेरी मृदंग तवल * ढाक ढोल दुन्दुभि शबदे टलवल ९
चिह्न चौंडा ध्वजदड गाहुल वम्वाल * नृपतिर आगे पाचे चलिला सकल
कांचने रचित रथे चड़िल नृपति * कटकर भरे दलक्षेप वसुमती १०
राजार उपरे क्षत्र प्रकाशे धवल * आकाशे प्रकाशे येन चन्द्रर मंडल
त्रिभुवन चमत्कार राजार पयान * कम्पे सुरासुर यत तरतरिमान ११
हेन आड़म्वरे अंगदेश प्रवेशिला * लोमपाद नृपतिर आश्रमे मिलिला
देखि लोमपादर हरिष भैल मन * दशरथ नृपतिक करिला वन्दन १२
कृतांजलि करि धरि प्रणति प्रचुर * दशरथ राजाक निलेक अन्तःपुर
सुवर्णर सिंहासन दिला वसिवाक * पाद्य अर्घ्य दिया पूजा करिला राजाक १३
वशिष्ठक आसन दिलन्त महावीरे * धुवाया चरण पादोदक लैला शिरे
दशरथ नृपतिक करे राजा स्तुति * तयु आगमने भैला थानर मुकुति५१४

ऋष्यशृंग मुनि को लाने के लिए दशरथ का राजा लोमपाद के पास जाना और ऋषि को लाकर यज्ञ सम्पन्न करना

सुनो सुमन्त, तुमने यह बात ठीक बताई। मैं राजा लोमपाद के देश जाऊँगा ॥ ५०७ ॥ 'पात्र मित्र पुरोहित आदि सभी मेरे साथ चलें' यह कहकर महाबली दशरथ ने यात्रा की। वशिष्ठ आदि सारे पुरोहित नृपति के साथ सहर्ष चल पड़े ॥ ८ ॥ सुमंत्र के साथ आठ पात्र गये। वे हाथी, घोड़ा और सेना सुसज्जित कर अपने साथ ले गये। काहाली, महरी, भेरी, मृदंग, तवला, ढाक, ढोल, दुन्दुभि आदि वाजों के शब्द से चारो ओर चहल-पहल मच गई ॥ ९ ॥ ध्वज-पताका-चँवर आदि से शोभित राजा के आगे-पीछे गायक आदि चलने लगे। राजा स्वर्णनिर्मित रथ मे सवार हुए। सेना की पदचाप से धरती डोलने लगी ॥ १० ॥ राजा के ऊपर श्वेतवर्ण छत्र इस प्रकार शोभित हुआ जैसे आकाश में चन्द्र का मंडल शोभायमान होता है। राजा के इस अभियान पर तीनो लोक चमत्कार करने लगे और सारे सुर और असुर थर-थर काँपने लगे ॥ ११ ॥ ऐसे आडम्बर के साथ उन्होने अंगदेश मे प्रवेश किया और राजा लोमपाद के भवन में जा पहुँचे। उन्हे देखकर लोमपाद को बड़ी खुशी हुई और उन्होने राजा दशरथ की वन्दना की ॥ १२ ॥ हाथ जोड़ नमन करने के उपरान्त वे राजा दशरथ को अन्तःपुर ले गये। बैठने के लिए स्वर्ण-सिंहासन दिया और पाद्य-अर्घ्य के द्वारा राजा की पूजा की ॥ १३ ॥ महावीर लोमपाद ने वशिष्ठ को बैठने के लिए आसन दिया, उनके चरण धोकर पादोदक को सिर से लगाया और फिर राजा दशरथ की स्तुति करने लगे—"तुम्हारे आगमन से इस स्थान को मुक्ति मिल गई ॥५१४॥

किवा प्रयोजन हुआ आछे आगमन * शुनि दशरथ पाचे बुलिला वचन
आपुनि मिलिला आसि मोहोर गृहत * नजानोहो मइ भाग्य करि आछो कत
त्रिभुवने नाहि तुमि हेन महाराज * आदेशियो मोक मइ करो किवा काज५१५
शुनियो नृपति मोर नाहिके सन्तान * ऋष्यशृंग महामुनि आछे तयु स्थान५१६
तेहे यज्ञ कराइलेसे हैवेक तनय * तांक निवे प्रति आसि आछो महाशय
शुनि लोमपादे ऋष्यशृंगक आनिल * नमस्कार करि दुयो राजा सादरिल १७
सुवर्णर आसन ऋषिक आनि दिला * दुयो राजा विस्तर ऋषिक सन्तोषिला
लोमपादे बुलिलन्त वचन विनय * एन्ते दशरथ राजा हुयो परिचय १८
प्राणसम एन्ते मोर वान्धव विचित्र * कत कोटि पुण्येसे इहांक पाइलो मित्र
इहाने दुहिता शान्ता मागिया आनिलो * यत्न करि आनिया तोमात विहा दिलो १९
एन्तेसे जानिवा निज श्वसुर तोमार * करियोक ऋषि आवे आंक उपकार
मनत असुख आन नाहिके तनय * सिहेतु तोमाक राजा करिल आश्रय २०
शुनि मुनि ऋष्यशृंग भैला सुप्रसन्न * शान्ता समन्विते भैला चलिवाक मन
शान्तार कौतुक आति पितृक देखिया * मावक देखिते दशगुणे भैल दिया २१
देखि लोमपादक आश्वासि दशरथ * शान्ता समे ऋषिपुत्र गैलन्त लगत
पात्र पुरोहित सैन्य समे नृपवर * त्वरित गमने पाइला अयोध्या नगर २२
शान्ता आसिवार शुनि तिनि महादई * कौशल्या सुमित्रा शान्ती सुन्दरी कैकेयी
हरस फरस करि आसिल वजाइ * गलाबान्धि धरिला शान्ताक लग पाइ २३
निलन्त गृहक हरिषर नाइ पार * शान्ता सती करिला मातृक नमस्कार
सबे महादइ आसि शान्ताक वेढ़िला * अन्तःपुर माजे महा आनन्द मिलिला २४

तुम स्वयं आकर मेरे घर मुझसे मिले, न जाने मेरा भाग्य कितना प्रवल है। त्रिभुवन में तुम जैसा कोई महाराज नही, मुझको आदेश करो कि मुझको कौन सा कार्य करना है।। ५१५ ।। किस प्रयोजन से तुम्हारा यहाँ आगमन हुआ?" यह सुनकर दशरथ ने कहा, हे राजा सुनो, मेरे कोई सन्तान नहीं। महामुनि ऋष्यशृंग तुम्हारे स्थान पर है।। ५१६ ।। उनसे यज्ञ कराने पर पुत्र होगा। हे महाशय, उन्हीं को ले जाने के लिए मैं आया हूँ। यह सुनकर लोमपाद ऋष्यशृंग को ले आये और दोनों को राजा ने सादर नमस्कार किया।। १७ ।। सुवर्ण का आसन लाकर ऋषि को दिया गया। दोनों राजाओं ने ऋषि को पर्याप्त सन्तुष्ट किया। लोमपाद ने विनयपूर्वक कहा, यह राजा दशरथ है, इनसे परिचय प्राप्त करें।। १८ ।। यह मेरे प्राण के समान प्रिय मित्र है। अनन्त कोटि पुण्यों के वल पर मैंने इनको मित्र रूप में पाया, इन्ही की पुत्री शान्ता को मैं माँग कर लाया था और यत्नपूर्वक लाकर तुम्हारे साथ उसका विवाह कर दिया।। १९ ।। इनको अपना श्वसुर मानना। हे ऋषि इनका उपकार करना। पुत्र न होने से इनके मन में वड़ी पीड़ा है। इसी कारण ये राजा तुम्हारी शरण में आये हैं।। २० ।। यह सुनकर मुनि ऋष्यशृंग अत्यन्त प्रसन्न हुए और शान्ता को साथ लेकर चलने के लिए निश्चय किया। पिता को देखकर शान्ता को वड़ा हर्ष हुआ। माँ को देखने के लिए उसका हृदय दसगुना प्रसन्न हो उठा।। २१ ।। लोमपाद की अनुमति पा दशरथ को आश्वासन देने के लिए ऋषिपुत्र शान्ता के साथ चल पड़े। पात्र, पुरोहित और सेना के साथ फुर्ती से चल कर राजा दशरथ अयोध्या नगर पहुँच गये।। २२ ।। शान्ता के आने की चर्चा सुनकर कौशल्या, शान्त सुमित्रा और सुन्दरी कैकेयी ये तीनों रानियाँ हर्षोत्फुल्ल होकर वहाँ आ गईं और शान्ता को गले से लगा लिया।। २३ ।। घर में हर्ष का वार-पार

समस्तरे आनन्द शान्ताक लाग पाइ * तान्त विने कारो आर पुत्र जीउ नाइ
एतेके शान्ताक पाया सवे शत मारे * वस्त्र अलंकार आनि दिला गावे गावे २५
दशरथ राजा ऋष्यश्रृंगक आनिया * करिला विस्तर पूजा पाद्य-अर्घ्य दिया
आन्ते हन्ते हैवे मोर मनोरथ सिद्धि * भैलन्द आनन्द जेन पाया नवनिधि २६
एहि वुलि अर्च्चा करिलन्त वहुतर * जेन वृहस्पतिक पूजिला पुरन्दर
करिलन्त नृपति अनेक सम्भाषण * पूजा पाया ऋषिर हरिष भैल मन २७
अयोध्याते रहिलन्त शान्ताये सहित * जेन देवगुरु स्वर्गपुरे भैला थित
अनन्तरे नृपति यज्ञर घोरा आनि * विधिवते अभिषेक करि महामानी २८
रखीया कटक दिला लगत अनेक * मेलि दिया घोराक पालिला वरिषेक
बसन्त प्रवेश भैला गुचिया शिशिर * आरम्भिला यज्ञ पाया आदेश मुनिर २९
वशिष्ठे कहिला यत यज्ञर संभार * अनेक देशर द्रव्य आनिला अपार
सुमंत्र मंत्रीक दशरथे आदेशिला * अनेक यज्ञेर द्रव्य सुमंत्र आनिला ३०
सुवर्ण रजत रत्न अनेक भाजन * कस्तुरी कुंकुम लखि अगुरु चन्दन
मुकुता प्रबाल मणि माणिक कर्पूर * दिव्य वस्त्र अलंकार आनिला प्रचुर ३१
आनो नाना द्रव्य आनिलन्त वहुतर * शुभक्षणे यज्ञ आरम्भिला नृपवर
मनत हरिषि शुनि यज्ञर कथाक * आसिला अनेक महाऋषि अयोध्याक ३२
काश्यप कपिल कारु कण्व कात्यायण * वामदेव देवल दुर्व्वासा तपोधन
राम पराशर भृगु भार्गव गौतम * अत्रि विश्वामित्र त्रित मुनि नरोत्तम ३३

न रहा। सती शान्ता ने माँ को प्रणाम किया। सभी महादेवियो ने आकर शान्ता को घेर लिया और अन्तःपुर मे महान् आनन्द छा गया ।। २४ ।। शान्ता को निकट पाकर सभी को आनन्द मिला। उसके विना, किसी के भी कोई दूसरा पुत्र या कन्या नही है। ऐसी शान्ता को पाकर सभी माताएँ वस्त्र और अलंकार लाकर देने लगी ।। २५ ।। राजा दशरथ ने ऋष्यश्रृंग को लाकर पाद्य-अर्घ्य आदि देकर वड़ी पूजा की कि इन्ही से मेरी मनोकामना पूरी होगी। मानों नयी निधि मिली हो इस प्रकार उनको आनन्द हुआ ।। २६ ।। यह कहकर अनेक प्रकार से उन्होंने उनकी इस प्रकार अर्चना की मानों इन्द्र वृहस्पति की पूजा कर रहा हो। नृपति ने उनसे अनेक प्रकार से सम्भाषण किया। पूजा पाकर ऋषि का मन अत्यन्त प्रसन्न हुआ ।। २७ ।। अयोध्या मे शान्ता के साथ ऋष्यश्रृग इस प्रकार टिक गये मानों स्वर्ग मे देवगुरु स्थित हो गये। इसके अनन्तर राजा दशरथ ने यज्ञ का घोड़ा लाकर विधिपूर्वक उसका अभिषेक किया ।। २८ ।। उसकी रक्षा हेतु साथ में वहुत वडी सेना दी। सेना ने प्रस्थान किया और वर्ष भर तक सैनिक लोग घोड़े की रक्षा करते रहे। जाड़े के अन्त मे जब वसन्त आया तो मुनि का आदेश पाकर यज्ञ आरम्भ कर दिया गया ।। २९ ।। यज्ञ के सामान के लिए जब वशिष्ठ से कहा गया तो वे कितने ही देशों के असंख्य द्रव्य ले आए। मन्त्री सुमंत्र को दशरथ ने आज्ञा दी तो सुमंत्र भी यज्ञ के वहुत से द्रव्य ले आए ।। ३० ।। सोना, चाँदी, कितने ही प्रकार के रत्न, कस्तूरी, कुकुम, अगुरु, चन्दन, मोती, मूँगा, मणि, माणिक्य, कपूर, सुन्दर वस्त्र और अलकार आदि सभी पदार्थ मँगाये गये ।। ३१ ।। 'विभिन्न द्रव्य लाओ' जव यह कहा गया तो अनेक द्रव्य लाये गये। शुभघड़ी पर राजा दशरथ ने यज्ञ आरम्भ किया। यज्ञ हो रहा है यह सुनकर मन में हर्षित होकर वहुत सारे महर्षि अयोध्या मे आ पहुँचे ।। ३२ ।। काश्यप, कपिल, कारु, कण्व, कात्यायन, वामदेव, देवल, तपोधन दुर्वासा, राम, पराशर, भृगु, भार्गव गौतम, अत्रि, विश्वामित्र, त्रित तथा नरोत्तम मुनि (आए) ।। ३३ ।। मरीचि, च्यवन,

मरीचि च्यवन चन्द्राविन्दु भरद्वाज * आंगिरस अगस्ति नारद ऋषिराज
सनक सनन्द कन्द सनतकुमार * पुलस्ति पुलह सनातन बेदसार ३४
आर्ष्टिसेन मुनि मार्कंडेय सिद्धेश्वर * इसव प्रमुख्ये महामुनि निरन्तर
आसिला कौतुके नृपतिर यज्ञस्थान * दशरथे सबाको करिला बहुमान ३५
ऋषि ऋष्यश्रृंग पाचे हुआ शुद्धचित * राजाक करिला महा यज्ञत दीक्षित
अभिषेक हुया राजा पात्रक बरिला * वस्त्र अलंकार गन्ध चन्दने अर्च्चिला ३६
कुशहस्त हुआ राजा विष्णुक सुमरि * सभार्ये बसिला चित्त सावधान करि
आठ पात्र बसिला राजार अनुक्रमे * जार जेन कार्ज्ज ताक चिन्तन्त नियमे ३७
ऋष्यश्रृंग मंत्र पढ़ि यज्ञ आरम्भिला * नृपतिर पुत्र हेतु संकल्प करिला
मंत्र पढ़ि मुनिसमे करिला आह्वान * पशुपति देवे समे आइला यज्ञस्थान ३८
बिभांडे देखन्त ऋष्यश्रृंग नाइ घरे * ध्यान करि तेखने जानिला मुनिवरे
दशरथ राजा मोर निलेक तनय * पुत्र प्रयोजने यज्ञ करे महाशय ३९
ध्याने जानि पाचे बिभांडक महाऋषि * अयोध्याक आसिलन्त परम हरिषि
बिभांडक ऋषिक देखिया नरेश्वर * पाद्य अर्घ दिया तांक करिल सादर ४०
विभांडक देखिया सकले मुनिगण * सादरिला बुलि तांक मधुर वचन
करिलन्त विभांडके प्रशंसा राजाक * पुत्र समे बसिलन्त यज्ञ करिवाक ४१
करन्त हरिषे यज्ञ यत मुनिगण * थाने थाने करिलन्त द्रव्य निरूपण
हुया ब्रह्मचारी मन सावधान करि * भैला शुद्ध प्रथमते बिष्णु विष्णु स्मरि ४२
मूल मंत्र उच्चारिला ब्राह्मण सकल * निरन्तरे उच्चारिला स्वस्ति सुमंगल
सांगोपांगे पूजिलन्त यज्ञ पुरुषक * दशरथ राजा मने चिन्तय पुत्रक ४३

चन्द्राविन्दु, भरद्वाज, आंगिरस, अगस्त्य, ऋषिराज नारद, सनक, सनातन (आए) ।। ३४ ।। मुनि आर्ष्टिसेन, मार्कण्डेय, सिद्धेश्वर—ये सारे प्रमुख मुनि (भी) नृपति के यज्ञस्थल पर सानन्द आए। दशरथ ने सभी का बड़ा सम्मान किया ।। ३५ ।। इसके पश्चात् शुद्धचित्त होकर ऋषि ऋष्यश्रृंग ने राजा को महायज्ञ में दीक्षित किया। राजा का अभिषेक हुआ और उन्होने पात्र का वरण किया और वस्त्र अलंकार तथा गन्ध-चन्दन आदि से अर्चना की ।। ३६ ।। राजा ने विष्णु का स्मरण कर हाथ में कुश धारण किया और चित्त को सावधान कर यज्ञमंडप में बैठ गये। राजा के साथ क्रमानुसार आठ पात्र बैठे। जिसका जो कार्य है उसे वह नियमपूर्वक करने लगा ।। ३७ ।। ऋष्यश्रृंग ने मंत्र पढ़कर यज्ञ आरम्भ किया। राजा की पुत्र-प्राप्ति के हेतु संकल्प किया। मंत्र पढकर मुनियों के साथ उन्होंने आवाहन किया तो अन्य देवताओं के सहित यज्ञस्थान में महादेव प्रकट हो गये ।। ३८ ।। (विभांडक-आश्रम में) विभांडक ने देखा कि ऋष्यश्रृंग घर में नहीं है। उसी समय ध्यान द्वारा मुनिवर ने [लोमपाद के अंगदेश का इतिहास जाना। पश्चात् यह भी] जान लिया कि दशरथ राजा मेरे पुत्र को ले गया है। अपने पुत्र के प्रयोजन से वह महाशय यज्ञ कर रहे हैं ।। ३९ ।। ध्यान से यह जान लेने के पश्चात् विभाडक महाऋषि बड़े आनन्द से अयोध्या चले आए। विभांडक ऋषि को देखकर नृपवर ने पाद्य-अर्घ्य आदि देकर उनका स्वागत किया ।। ४० ।। विभांडक को देखकर सभी मुनियों ने उनसे सादर व मधुर सम्भाषण किया। विभाडक ने राजा की प्रशंसा की और पुत्रेष्टि यज्ञ करने के लिए बैठ गये ।। ४१ ।। सारे मुनि हर्ष से यज्ञ करने लगे। स्थान-स्थान पर विविध द्रव्यों का निरूपण किया। चित्त को सावधान कर वे ब्रह्मचारी बने और आरम्भ में विष्णु का स्मरण कर वे शुद्ध हुए ।। ४२ ।। सारे ब्राह्मण मूलमंत्र का उच्चारण कर

पुत्रमंत्र जप राजा करे मने मने * अग्नि संस्थापन करिलन्त शुभक्षणे
अनन्तरे द्विजगणे आहुति करिल * मुरुख माधवे आदिकांड विरचिल ४४
नमो नमो नारायण चरणत धरि * दशरथ गृहे रामरूपे अवतरि
निजगुणे जगतर पूरिलाहा मन * बोला राम राम सबे सभासदगण५४५

दशरथर घरत नारायणर चारि अंशे जन्म वृत्तान्त

दुलड़ी

राजा लंकेश्वरे उपद्रव करे जिनिया ए त्रिभुवन ।
बले पराक्रमे इतिनि लोकत सम नाहि एकोजन ॥
तार पराभव सहिते नपारि त्रिदश देवतागण ।
वासवे सहित एकत्रे वसिया करिलन्त आलोचन ॥५४६
रावणर हन्ते नाहिके निस्तार विने देव गदाधर ।
ब्रह्माये आमार मिलाइला प्रमाद रावणक दिया वर ॥
इतिनि लोकत त्रिदश देवत रावण अवध्य भैल ।
नर वानरत हैव सिटो हत ब्रह्मा वर छिद्र थैल ॥ ४७
पुत्रर निमित्ते करे महायज्ञ दशरथ नृपवर ।
एहि समयते ईश्वर विष्णुक पठाइ दिओं तान घर ॥
हेन युक्ति करि क्षीरोदधि तीरे गैलन्त देवतागण ।
लक्ष्मी समन्विते क्षीरोद सागरे आछा प्रभु नारायण ॥ ४८
अव्यक्त स्वरूपे आछन्त ईश्वर नुहिके कारो गोचर ।
जय जय हरि बुलि हुलस्थूल करे देव निरन्तर ॥

निरन्तर मागलिक स्वस्ति पाठ का उच्चारण करने लगे । सभी लोग यज्ञपुरुष की पूजा करने लगे और राजा दशरथ अपने मन मे पुत्र के विषय मे विचार करने लगे ॥ ४३ ॥ राजा मन ही मन पुत्र-मत्र का जाप करने लगे । शुभघड़ी पर अग्नि की स्थापना की । इसके अनन्तर द्विजो ने आहुति दी । मूर्ख माधव ने आदिकाड की रचना की ॥ ४४ ॥ हे नारायण, मै तुम्हें प्रणाम करता हूँ, तुम्हारे चरणो का स्पर्श करता हूँ । दशरथ के गृह मे तुम राम के रूप मे अवतार ले रहे हो । तुमने अपने गुणों के द्वारा संसार की कामना पूर्ण की । हे सभासद्गण, तुम सभी लोग राम का नाम लो ॥ ५४५ ॥

दशरथ के घर मे नारायण का चार अंशों में जन्म लेने का विवरण

इस त्रिभुवन पर विजय प्राप्त कर राजा लकेश्वर उपद्रव मचाने लग गया । तीनों लोको मे वल और पराक्रम मे उसके समान कोई भी नही था । उसके हाथों पराभव सहन न कर करने से देवता इन्द्र के साथ बैठकर विचार करने लगे ॥ ५४६ ॥ विना देव गदाधर (नारायण) के रावण के हाथो से किसी का निस्तार नही । हमारे ब्रह्मा ने रावण को वर देकर और मुसीबत खडी कर दी है । तीनो लोकों मे देवताओं के लिए रावण अवध्य वन गया है । वह नर-वानर के द्वारा ही मारा जायगा, ब्रह्मा ने अपने वर मे इतनी ही गुजाइश रखी है ॥ ४७ ॥ पुत्र के निमित्त नपवर दशरथ यज्ञ कर रहे है, इसीलिए इसी समय भगवान् विष्णु को उनके घर भेज दिया जाय । ऐसी सलाह करके देवता क्षीरसमुद्र के तट पर गये । प्रभु नारायण क्षीरसमुद्र में

नमो नारायण जगत कारण सनातन लक्ष्मीपति ।
हुयोक सदय प्रभु कृपामय करोहो पावे प्रणति ।। ४९
तोमार चरणे आमि देवगणे शरण लैलो सम्प्रति ।
तुमिसि ईश्वर इटो जगतर तुमि विने नाहि गति ।।
हुयो सुप्रसन्न दियो दरशन गुचोक आमार दुख ।
त्रिदश सकले देखो कौतूहले तोमार प्रसन्न मुख ।। ५०
क्षीर सागरर तीर जुरि सवे हरिक देखिवो मने ।
जय जय हरि बुलि उच्च करि डाकय देवतागणे ।।
देवर कल्लोल जय जय रोल शुनिया कृपा मिलिल ।
हुया दायायुत रूप अदभुत देवताक देखा दिल ।। ५१
कोटि एक शशि सूर्य्यतो करिया शरीरर ज्योति वले ।
आसिल रामक लागिल चमक देखिला देव सकले ।।
कृष्णक आकलि धरि कृतांजलि माथार उपर करि ।
कृष्णर आगते परि दंडवते रवे जय जय हरि ।। ५२
सुप्रसन्न विधि भैल कार्य्यसिद्धि दिला देखा नारायण ।
श्रीमुख देखि भैला सवे सुखी यतेक त्रिदशगण ।।
येनरूपे देखा दिलन्त देवक कहिबे कार शकति ।
सर्पर फणात चरण थापिया आछा त्रिजगतपति ।। ५३
सर्पर फणात मणि ज्योति करे अरुण चरण तले ।
सुकोमल पद्म कोषक जिनिया चरण युगल जले ।।

लक्ष्मी के साथ विराजमान थे ।। ४८ ।। अव्यक्त रूप लिये भगवान् विष्णु वहाँ पर विराजमान थे, किन्तु किसी को दृष्टिगोचर नही हुए। सभी देवता वहाँ पहुँचकर जय जय हरि कर निरन्तर शब्द करने लगे। (कहने लगे—) हे नारायण, जगत्कारण सनातन लक्ष्मीपति तुमको प्रणाम है। हे कृपामय प्रभु, हम तुम्हारे चरणों मे प्रणाम करते है, तुम हम लोगों पर सदय हो जाओ ।। ४९ ।। इस समय हम देवता तुम्हारे चरणों की शरण में आए है। तुम इस संसार के ईश्वर हो, तुम्हारे बिना कोई गति नही। सुप्रसन्न होकर हमलोगो को दर्शन दो, हमलोगो का दुख दूर हो। सारे त्रिदश (देवगण) तुम्हारे प्रसन्न मुख का कौतूहल से दर्शन करे ।। ५० ।। हरि को देखने की इच्छा लिये क्षीर-सागर के तट पर इकट्ठे देवता ऊँची आवाज में हरि हरि पुकारने लगे। देवताओं के कल कल शब्द एवं जय जय रव से दयालु होकर अद्‌भुत रूप धारण कर (हरि ने) दर्शन दिया ।। ५१ ।। करोड़ों सूर्य और चन्द्रमा को एकत्र कर जैसी ज्योति निकलती है ऐसा ज्योतिर्मय शरीर (लेकर) वे जल के ऊपर आये, उन्हें देखकर सभी देवता आश्चर्य करने लगे। हमलोग विष्णु का दर्शन कर रहे है यह सोचकर सवने हाथ जोड़ सिर के ऊपर उठाये। विष्णु के आगमन पर वे दडवत् प्रणाम करने लगे और जय जय हरि का शब्द करने लगे ।। ५२ ।। विधाता सुप्रसन्न है, काम वन गया, नारायण ने दर्शन दे दिया, यह सोचकर जितने त्रिदश (देवगण) थे सभी श्रीविष्णु का श्रीमुख देखकर सुखी हुए। जिस प्रकार से उन्होने देवताओं को दर्शन दिया उसका वर्णन करने की शक्ति किसमें है। साँप के फन पर पैर धर कर त्रिजगत्पति खड़े हैं ।। ५३ ।। श्रीविष्णु के लाल चरणों के तले साँप के फन की मणि जगमगा रही है। सुकोमल कमल-कोष को लजाने वाले चरण-युगल चमक रहे है। दशों उंगलियों मे रत्न की अंगूठियाँ झलमला रही है। नाखून की मणियाँ चन्द्र की

दशो आंगुलित ज्वले मनोनीत रत्नर उज्वांटिचय ।
चन्द्रर ज्योतिक जिनि आतिशय नख मणि प्रकाशय ॥ ५४
मणि रत्नमय नुपुर ज्वलय चरण कमल माजे ।
जंघा मनोहर उरु करीकर कटित किंकिणी वाजे ॥
पाट मुनि पीत रतने रचित फंकालत कटिवन्ध ।
ज्वले मनोहर नाभि सरोवर उदर आति सुचन्द ॥ ५५
हृदये श्रीवत्स देखि अति स्वच्छ हार गज मुकुतार ।
रत्न मणिचय ज्वलन्ते आछय जिलिमिलि पेचन्दार ॥
आपादलम्बित गले बनमाला भ्रमरे वेढ़िया रंजे ।
कौस्तुभ मणिर प्रकाशे प्रभात सूर्य्यर ज्योतिक गंजे ॥ ५६
नील मोलानर पावक निन्दिया शोभे वाहु चारिखान ।
सुवलि वलित आजानुलम्बित देखिते आति सुठान ॥
सुवर्णर तार बलया कंकण सुन्दर आंगुलि पान्ति ।
आति सुबलित कुरि आंगुलित नखचन्द्र करे कान्ति ॥ ५७
वाखरे रचित आंगुठि शोभित करे येन किशलय ।
शंख चक्र गदा पद्म चारि हाते अनुक्रमे प्रकाशय ॥
उशासते आति चलन्ते आछय उदरत तिनी रेखा ।
कषति सोणार रेखा येन उरे लक्ष्मी देवी दिला देखा ॥ ५८
सिंहबन्ध स्कन्ध चारु कम्बुकंठ चिबुक आति सुन्दर ।
बन्दुलि पुष्पको निन्दि प्रकाशय अरुण चारु अधर ॥
शरतर पूर्ण-चन्द्रको गंजिया प्रकाशे मुखमंडल ।
ईषत् हसित अमृत वरिषे देखि मिले कौतूहल ॥ ५९

ज्योति से भी अधिक प्रकाशमयी है ॥ ५४ ॥ चरण-कमलों पर मणि-रत्न से जड़ित नुपुर शोभायमान है । हाथी की सूँड जैसा मनोहर जाँघ है और कटि मे किंकिणी वज रही है । रत्नों से जड़ित पीले रंग के वस्त्र का कमरवन्द कमर से वँधा है । नाभि सरोवर सी प्रकाशमय है और उदर अत्यन्त शोभन है ॥ ५५ ॥ वक्ष पर गज-मोती का स्वच्छ हार और मणि-रत्न झिलमिलाते है । पैरो तक लटकती हुई वनमाला के चारो ओर भौरे गुजन कर रहे है । कौस्तुभ मणि का प्रकाश प्रभात-सूर्य की ज्योति का तिरस्कार करता है ॥ ५६ ॥ नील-कमल के मृणाल को लजाकर चारों वाहु शोभायमान है जो कि जाँघ तक लम्वे है और देखने में अति सुडौल और सुन्दर हैं । स्वर्ण के तारो के वने कडे और कंगन उनमे शोभा दे रहे है । ऊँगलियों की पाँति भी अति सुन्दर है । अति सुडौल वीस ऊँगलियो पर नखचन्द्र शोभायमान हैं ॥ ५७ ॥ रत्न से जड़ी अँगूठियाँ यो शोभित हो रही है मानों कर मे कमल हों । चारो हाथों में क्रम से शंख चक्र गदा और पद्म शोभायमान है । श्वास के चलने से उदर पर तीन रेखाएँ यों दिखती है जैसे कसौटी पर सोने का दाग पड कर ही उड़ जाता है—मानों लक्ष्मी ने दर्शन दिया हो ॥ ५८ ॥ सिह को वाँधनेवाले कन्धे, सुन्दर शंख सा गला और अत्यन्त सुडौल ठोढ़ी । लाल-कनेर के फूल को लजाते हुए लाल रंग के चारु अधर है । शरत् के पूर्ण-चन्द्र को तिरस्कार करता मुखमंडल प्रकाशमान है । उनके तनिक मुस्कान से मानो अमृत वरसने लगता और उसको देखने से आनन्द प्राप्त होता है ॥ ५९ ॥ मोतियों की पाँति जैसे दाँत मुखको शोभित करते है । शरत् में

मुकुतार शारी जिनि दन्तपान्ति मुखको आति रंजय ।
शरत सुजात प्रफुल्ल पद्मको नयनयुगे गंजय ।।
नासा तिलफुल येन प्रकाशय सुवलित भ्रुव दुइँ ।
सुसम कपाले तिलक ज्वलय पूर्णचन्द्रो सम नुइ ।। ६०
चारु कम्बुकर्ण मकर कुंडल करे आति जलमल ।
रत्ने विरचित किरीटि शिरत सूर्य्यर येन मंडल ।।
कुटिल कुंडल अलंकार पंक्ति कान्ति करे कपालत ।
प्रमत्त भ्रमरे येन मधुपान करे परि कमलत ।। ६१
शिरर उपरे चड़ामणि ज्वले सूर्य येन मूर्त्ति धरि ।
श्याम शरीरक सजल जलद कदाचितो नुहि सरि ।।
पीतवस्त्र येन सजल मेघत विजुली भैल सुथिर ।
कोटि कन्दर्पको दर्पचूर करि ज्वलन्ते आछे शरीर ।। ६२
पद्मपत्र सम दुखानि चरण राजहंस गति धीर ।
ईषत हसित मुखचन्द्र ज्वले वचन आति गम्भीर ।।
अमृत कोटित करिया सन्तोष सागर कोटि गम्भीर ।
कोटि हेमवन्त गिरित करिया देखय आति सुथिर ।। ६३
कोट कोटि महा महेन्द्रत करि श्री आति चमत्कार ।
हेनय रूपक देखिया देवर आनन्दर नाहि पार ।।
नमो नारायण देव सनातन तुमि अनाथर नाथ ।
करा मोक दाया कृपादृष्टि चाया माया एरा जगन्नाथ ।।
नामर आभास मात्रके तारिला महापापी अजामिल ।
भक्तरेसे मात्रे पूतनाको मोक्ष दिला देव दयाशील ।। ६४

प्रस्फुटित उच्चकोटि के कमलों की भाँति दोनो नयन हैं । नथुने तिलफूल के आकार के और दोनों भौहें बड़ी ही सुललित हैं । चौरस माथे पर तिलक जगमगा रहा है, पूर्णचन्द्र भी उसके समान नही है ।। ६० ।। शंख जैसे सुन्दर कानों में मकर के आकार के कुंडल झलमलाते हैं । सिर पर रत्नों से जड़ा मुकुट है—मानों सूर्य का मंडल हो । वालो के टेढ़े-मेढ़े गुच्छे माथे पर यों शोभा देते है मानो वौराये हुए भौरे मधु पीने के लिए कमल पर टूट रहें है ।। ६१ ।। सिर पर चूड़ामणि यो जगमगा रही है मानों सूर्य ने शरीर धारण कर लिया है किन्तु श्याम-शरीर रूपी जल भरे बादल को हटा नहीं पा रहा है । पीले रंग के वस्त्र मानों इस जल भरे वादल में स्थिर-विजली की भांति हैं । कोटि कन्दर्प के दर्प को चूर्ण करता हुआ सुन्दर शरीर जगमगा रहा है ।। ६२ ।। दोनों चरण मानों कमल के पत्ते के समान हों, राजहंस जैसी मन्थर चाल है । इस प्रकार मुस्कान से मुखचन्द्र उद्भासित है, और वचन वड़े गम्भीर है । मानों कोटि अमृत से सन्तोष प्राप्त कर गंभीर कोटि समुद्र हो । कोटि हेमवन्त (हिमालय) गिरि जैसे स्थिर दिखाई पड़ रहे हैं ।। ६३ ।। कोटि कोटि महा-महेन्द्र से भी वह सौन्दर्य अत्यन्त चमत्कारी है । ऐसे रूप को देखकर देवताओं के आनन्द का ओर-छोर न रहा । हे नारायण, नमोनमः, तुम सनातन-देव हो, अनाथों के हो । हे जगन्नाथ, माया त्याग कर मेरी ओर कृपादृष्टि से देखो । केवल नाम के आभास पाते ही तुमने महापापी अजामिल को तार दिया । हे दयाशील देव, तुमने केवल भक्ति के कारण पूतना को मोक्षवान् किया ।। ६४ ।। इतना जानकर ही तुम्हारे चरणो में हमलोगों ने शरण ली है । [माधव कहते है—] केवल तुम्हारे चरण-कमलों

एतेक जानिया तोमार चरणे शरश करिलो सार।
केवल तोमार चरण पंकजे थाकोक रति आमार॥
तोमार भृत्यर भृत्यर भृत्यर भृत्य बुलि धरा मोक।
तेजि आन काम बोला राम राम यत समाजिक लोक॥५६५

पद

अनन्तरे सर्पर नामिला नारायण * देवक समुखे वसिलन्त पद्मासन
हातर पद्मक लक्ष्मी थैलन्त कोलात * ताहार उपरे थापिलन्त दुइ हात५६६
दुइ पादपद्म ताते थापिलन्त हरि * स्वामीर चरणे देवी धरिला सादरि
लक्ष्मीर हातर शाखा ज्योति आति करे * प्रकाशे चरण सेइ शाखार उपरे ६७
अव्यक्त ईश्वर हरि भैलन्त साक्षात * देखि ब्रह्मा आदिदेवे करि जोरहात
अवनत माथे स्तुति करे देवगण * त्राहि त्राहि हरि लैलो तोमात शरण ६८
तुमि बिने आमार नाहिके आन गति * चराचर जगतर तुमि एक पति
सृष्टिर आदिते थाका तुमिसे केवल * पुनु सृजिवाक जेवे भैला कौतूहल ६९
कटाक्षे करिया प्रकृतिक सचेतन * कोटि कोटि ब्रह्मांड सृजाहा नारायण
अन्तर्यामीरूपे ताते प्रवेशिया हरि * कराहा विहार नानाविध रूप धरि ७०
ब्रह्मारूप धरि सृजा इतिनि भुवन * विष्णुरूप धरि करा सृष्टिक पालन
रूद्ररूप धरि करा आपुनि संहार * एहि महा मोक्ष लीला कौतुक तोमार ७१
मायार अधीन आमि जीव निरन्तर * तुमिसे केवल मात्र मायार ईश्वर
मायाये मोहित हुआ आमि जीव यत * तोमार मूर्त्तिर केहो नजामोहो तत्व ७२

मे मेरी मति वनी रहे। तुम्हारे दास के दास उनके भी दास रूप में मुझे ग्रहण करो। हे समाज के लोगो, सभी काम त्याग कर राम राम का उच्चारण करो॥ ५६५॥

इसके अनन्तर नारायण सर्प से उतरे और देवताओ के सम्मुख कमलासन (की मुद्रा) मे वैठे। हाथ के कमल को लक्ष्मी ने अपनी गोद मे रख लिया और उस पर अपने दोनों हाथ रख दिये॥ ५६६॥ उस पर हरि ने अपने दोनों चरणकमलों को रखा। देवी ने पति के चरणो को सादर थामा। लक्ष्मी के हाथो की शंख की बनी चूड़ियाँ (सुहागिन की चूड़ियाँ) अत्यन्त ज्योतिपूर्ण है—उन चूड़ियों पर चरण शोभा पाने लगे॥ ६७॥ अव्यक्त ईश्वर नारायण से साक्षात् भेंट हो गई। यह देखकर ब्रह्मा आदि देवतागण हाथ जोडे सिर झुकाये स्तुति करने लगे—हे हरि, त्राहि त्राहि, हम लोग तुम्हारी शरण मे आए है॥ ६८॥ तुम्हारे विना हम लोगों का और कोई सहारा नही, सारे चराचर जगत् के तुम एक मात्र स्वामी हो। सृष्टि के आदि मे केवल तुम्ही थे, फिर तुमको सृष्टि करने का कौतूहल हुआ॥ ६९॥ हे नारायण, प्रकृति को अपने कटाक्ष से सचेतन कर, तुमने कोटि कोटि ब्रह्मांडों का सृजन कर डाला। हे हरि उसमे अन्तर्यामी के रूप में प्रवेश कर विभिन्न रूप लेकर तुम विचरते हो॥ ७०॥ ब्रह्मा का रूप धारण कर तीनो लोकों का तुमने सृजन किया, विष्णु का रूप धारण कर तुम इस सृष्टि का पालन करते हो, रुद्ररूप धारण कर स्वयं इसका विनाश करते हो। यह महान् मोक्ष-लीला तुम्हारे कौतुक का विषय है॥ ७१॥ हम सारे जीव निरन्तर माया के अधीन है और तुम केवल माया के ईश्वर हो।

केवले तोमार पावे पशिया शरण * तयु गुण नाम करे श्रवण कीर्त्तन
सेहिसे महन्ते जाने तयु व्यवहार * मोक्षको एरिया भजे चरण तोमार ७३
कोन वेला कोन रूपे कर कोन कर्म्म * ब्रह्माये बुजिवे नपारन्त तार मर्म्म
आन कोने बुजिवेक तोमार लीलाक * बेदे नपारन्त कहि सीमा करिबाक ७४
नित्य निरंजन तुमि अनादि अनन्त * कालमायादिरो तुमि प्रभु भगवन्त
अनन्त विभूतिपति मुकुतिदायक * वेदविधायक एक जगतनायक ७५
सुख-दुखदाता दीन दरिद्रवत्सल * तुमिसे समस्ते जगतरे सुमंगल
निजानन्द लाभे पूर्ण सत्य सनातन * कारणरो कारण तुमिसे अकारण ७६
नाहिके काहातो प्रभु प्रार्थना तोमार * तुमि पुनु करा जगतके उपकार
संसारत नाहिके तोमार आविदित * जगतरे हित तुमि चिन्ता प्रतिनित ७७
नलवय जीवे जेवे तोमात शरण * तावत नेरावे जीवे उत्पति मरण
नाना पाप पुण्य करि नाना देह धरि * फुरे नाना सुख दुख फल भोग करि ७८
तुमि अज नाहि देव जनम तोमार * लीलाये धराहा नानाविध अवतार
महन्तक पाला धर्म्मपथ रक्षा करि * कराहा विनाश दुष्ट दुर्ज्जनक हरि ७९
तुमि काल मूर्त्ति सर्व्व संहारकारण * तुमि चराचर गुरु जगततारण
धर्म्म अर्थ काम मोक्षदाता तुमि देव * तुमि विने संसारत सार नहीं केव ८०
निज योगबले प्रकृतिर गुण तिनि * आपोनाते आपोनाक स्रजाहा आपुनि
आपुनि पालाहा करा आपुनि संहार * आपुनि ईश्वर तुमि आपुनि संसार ८१

हम सारे जीव माया से मोहित है, तुम्हारी मूर्त्ति का तत्व हम कोई नही जानते हैं ।। ७२ ।। केवल तुम्हारे चरणों में शरण लेकर, तुम्हारे नाम और गुण का श्रवण और कीर्त्तन करते हैं। तुम्हारे आचरण को केवल वही मोहरहित व्यक्ति जानता है जो मोक्ष को त्याग कर तुम्हारे चरणों की सेवा करता है ।। ७३ ।। तुम किस समय किस प्रकार से कौन सा कर्म करते हो, इसका मर्म ब्रह्मा भी नही समझ पाते हैं। फिर दूसरा कौन है जो तुम्हारी लीला को समझ सके। वेद भी उसकी सीमा तक नही पहुँच सकता है ।। ७४ ।। तुम अनादि-अनन्त हो और नित्य-निरंजन हो। तुम काल, माया आदि के भी प्रभु भगवन्त हो। तुम अनन्त विभूति के स्वामी हो, मुक्तिदायक हो, वेदविधायक हो और जगत् के नायक हो ।। ७५ ।। तुम सुख दुख के दाता हो, दीन दरिद्रों के वत्सल हो। तुम्ही सारे विश्व के कल्याणकारी हो। स्वयं के आनन्द की प्राप्ति में पूर्ण सत्य सनातन हो। तुम कारण के भी कारण हो और तुम्ही कारणशून्य भी हो ।। ७६ ।। हे प्रभु, तुम किसी से प्रार्थना नहीं करते। तुम पुनः पुनः जगत् का उपकार करते हो। संसार में कुछ भी तुम्हारा अविदित नही है। नित्यप्रति तुम जगत् के हित की चिन्ता करते रहते हो ।। ७७ ।। जो जीव तुम्हारी शरण नही लेते है, उन सारे जीवों को जन्म और मरण के फेर में वार-वार घूमना पड़ता है। तरह-तरह के शरीर अपनाकर तरह-तरह का पाप-पुण्य कर वे तरह-तरह के सुख-दुख भोगते फिरते हैं ।। ७८ ।। देव, तुम्हारा जन्म नही होता, तुम अजन्मा हो, लीलावश विभिन्न अवतार लेते हो। सज्जनों का पालन तथा धर्म-पथ की रक्षा करते हो। दुष्टों एवं दुर्जनों का विनाश करते हो ।। ७९ ।। तुम काल-मूर्त्ति हो, सर्व-संहार के कारण हो, तुम चराचर के गुरु हो, जगत् के त्राता हो। देव, तुम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के दाता हो, तुम्हारे विना संसार मे कुछ भी सार नही है ।। ८० ।। अपने योगवल से आप ही प्रकृति के गुण हो। अपने में ही अपने को स्वयं स्रजते हो। आप ही पालन करते हो और आप ही संहार करते हो। आप

कालर हातत रक्षाकर्त्ता नाहि आन * तुमि से केवल मात्र विश्रामर थान
एक मूर्त्ति नाना मूर्त्ति नाना मूर्त्ति एक * तोमार जगत तुमि तात व्यतिरेक ८२
तुमि प्राण मन मुख चक्षु कर्ण नासा * तोमातेसे सकल जगत करे बासा
अन्तर्यामी रूपे तुमि जगत आधार * प्रवर्त्ताया यतेक जीवर ब्यवहार ८३
तोमार मुखत चारि वेद उपजिल * ब्रह्मा आदि देवर नियम नियोजिल
तोमात उपजि वेदे तोमाकेसे कय * मायाये मोहित जीवे ताक नेदेखय ८४
नाना कार्य्य कर्म्म धर्म्म करय प्रवन्धि * फुरे संसारत सेहि कामे हुया वन्दी
साधुसंग लैया जावे नभजे तोमाक * तावत नपारे कर्म्मबन्ध एराइवाक ८५
एतेकेसे एक चित्त करि देवगणे * तोमार चरणे आसि पशिलो शरणे
करियो करुणा मात्र एकलेश मान * त्रिदश देवर हौक दुख परित्राण ८६
नमो नारायण सर्व्वजन अधिपति * नमो दयाशील देव अगतिर गति
नमो दामोदर ब्रह्ममय कलेवर * नमो विघ्नहर नमो कृपार सागर ८७
नमो नमो त्रिभुवनपति महादेव * नमो नमो सदा त्रिजगते करे सेव
नमो वासुदेव नमो सर्व्व रूपधर * प्रकृतित पर नमो नमो योगेश्वर ८८
नमो शुद्ध बुद्ध नित्य निरंजन काया * हुयो सुप्रसन्न त्रिदशक करा दाया
नजानोहो स्तुति नति प्रणति तोमार * जय जय हरि हेरा गोचर आमार ८९
एहिमते देवे स्तुति करिल विस्तर * शुनिया सन्तुष्ट भैला त्रैलोक्य ईश्वर
त्रिदश देवर दुख देखि विपरीत * दाया रसे परम प्रसन्न भैला चित ९०

स्वय ईश्वर हो और आप ही ससार भी हो ।। ८१ ।। काल के हाथो से रक्षा करने वाला कोई दूसरा नही है। केवल तुम्ही विश्राम के स्थान हो। एक मूर्त्ति (अमूर्त्त) होते हुए भी अनेक मूर्त्ति वन जाते हो। तुम्हारा ही जगत् है और तुम उसमें व्यतिरेक हो ।। ८२ ।। तुम ही प्राण हो, मन हो; आँख, कान, नाक हो। तुम्ही में सारा जगत् निवास करता है। अन्तर्यामी के रूप में तुम जगत् के आधार हो। जितने जीव है उनके आचरण का तुमने प्रवर्त्तन किया है ।। ८३ ।। तुम्हारे मुख से चार वेदो ने जन्म लिया है। ब्रह्मा आदि देवों के लिए तुमने नियम बना दिये। तुम्ही से उत्पन्न होकर वेद तुम्हारी ही वात कहता है। माया से मुग्ध जीव इसको नही देख पाते है ।। ८४ ।। विभिन्न कार्य, कर्म, धर्म आदि का तुम प्रवन्ध करते हो। कार्य के वन्दी बनकर सारे संसार भर मे घूमते रहते हो। साधुसंग का आश्रय लेकर जो तुम्हारा भजन नही करता हैं वह कर्म का वन्धन नहीं तुड़ा पाता है ।। ८५ ।। इस कारण सारे देवता एकचित्त होकर तुम्हारे चरणों मे आकर शरण ले रहे हैं। केवल लेश-मात्र करुणा करना जिससे देवों को दु:खों से परित्राण मिल जाये ।। ८६ ।। हे सर्वजन-अधिपति नारायण, तुमको नमस्कार है। हे दयाशील देव, हे अगति के गति तुमको नमस्कार है। हे ब्रह्ममय देहधारी दामोदर तुमको नमस्कार है। हे कृपा के सागर विघ्नहरणकारी तुमको नमस्कार है ।। ८७ ।। हे त्रिभुवनपति महादेव, तुम्हारा हम नमन करते हैं। तीनो लोक सदा तुम्हारी उपासना करते है, तुम्हारा हम नमन करते है। हे वासुदेव तुमको नमस्कार है, हे सर्वरूपधर तुमको नमस्कार है। हे प्रकृति से परे योगेश्वर तुमको नमस्कार है ।। ८८ ।। हे नित्य-निरंजन-काय, शुद्ध बुद्ध तुमको नमस्कार है, सुप्रसन्न होकर देवताओ पर दया करो। हम लोग तुम्हारी स्तुति, नति, प्रणति कुछ भी नही जानते है। हम अपनी आँखो के सम्मुख तुमको निहार कर तुम्हारी जय-जयकार करते है ।। ८९ ।। इस प्रकार देवताओं ने पर्याप्त स्तुति की। उसे सुनकर त्रिलोकीपति विष्णु सन्तुष्ट हुए। देवताओं का दु:ख देखकर

मेघर गम्भीर ध्वनि मातिला हरिषे * देवर शरीरे येन अमृत वरिषे
हे ब्रह्मा शुनियोक वचन आमार * केने एत वर दुख मिलिल तोमार ९१
मिलिल परम दुख तोमार वासव * शुना यम तयु केने भैल पराभव
वरुण तोमार नागपाश कोने निल * शुना सूर्य्य तयु तेज केमने हरिल ९२
केने शशधर तुमि भैला कान्तिहीन * धर्म्म केने तोमार शरीर भैल क्षीण
कि शोके सुथिर गति भैला हुताशन * भैला मन्दगति तुमि किमते पवन ९३
किय वसुमती सती कराहा विलाप * कमन दुर्ज्जने दिले तोमाक सन्ताप
सागर सुथिर वेग भैला कि कारण * कुवेर दरिद्र भैला कोने निले धन ९४
षड़ऋतु किवा हेतु भैला विपर्यय * कमने विरूप भैला विद्याधरचय
स्वरहीन गन्धर्व्व भैलाहा कि कारण * कि हेतु कातर भैला नवग्रहगण ९५
भैलाहा स्वतंत्र पूजा एरि किवा काज * कमने प्रमाद भैला त्रिदशर माज
कहियोक सवे मोत स्वरूप वचन * तोमासार वर किवा साधो प्रयोजन५९६
विष्णुर वचन शुनि हरिष मिलिल * सवे देवगणे वृहस्पतिक वुलिल
रावणर चरित्र कहियो वृहस्पति * मिलाइ आछे जगतर यिमत विपत्ति५९७
शुनि देवगुरु त्रिदशर वचनक * कृतांजलि हुया चाहि कृष्ण चरणक
वुलिवाक लैला करि सुमधुर वाणी * शुनियोक परम ईश्वर चक्रपाणि५९८
त्रिभुवने नाहिके तोमार अविदित * तथापितो तयु आगे कहिवो उचित
तोमाते जनाइले दुख हैव निवारण * एहि हेतुतेसे यत यत महाजन५९९
आपोनार सुख दुख तोमात अर्पन्त * सर्व्व कर्त्ता वुलि मने तोमाक भावन्त
एतेके कहिवो येने देवर दुर्गति * वेद विश्वश्रवा पुत्र रावण दुर्म्मति६००

विपरीत दया रस से उनका चित्त परम प्रसन्न हो गया ॥ ९० ॥ उन्होंने हर्ष से मेघ के समान गम्भीर ध्वनि की जिससे देवताओं के शरीर पर मानों अमृत वरस पड़ा। वे वोले—हे ब्रह्मा, मेरी वात सुनो, इतना वड़ा दुख तुमको किस प्रकार मिला ? ॥ ९१ ॥ हे इन्द्र, तुमको इतना अधिक दुःख मिला ? हे यम तुम्हारी ऐसी पराजय क्यों हुई। हे वरुण, तुम्हारा नागपाश किसने ले लिया ? हे सूर्य, तुम्हारा तेज किसने चुरा लिया ? ॥ ९२ ॥ हे चन्द्र, तुम कान्तिशून्य क्यों हो गये ? हे धर्म, तुम्हारा शरीर दुवला क्यों हो गया ? हे अग्नि, किस शोक से तुम्हारी गति स्थिर हो गई ? हे पवन, तुम किस प्रकार से मन्दगति वन गये ? ॥ ९३ ॥ हे सती वसुमती, तुम विलाप क्यों कर रही हो, किस दुष्ट ने तुमको सन्तप्त किया ? समुद्र किस कारण सुस्थिर हो गया। कुवेर क्यों दरिद्र हो गया, किसने उसका धन ले लिया ? ॥ ९४ ॥ किस कारण छह ऋतुओं में गड़वड़ी आ गई ? विद्याधर भी कैसे विरूप हो गये ? ये गन्धर्व स्वरशून्य किस कारण वन गये ? ये नवग्रह किस कारण दुखी हो गये ? ॥ ५९५ ॥ कार्य से मुक्त होकर पूजा स्वतंत्र हो गई ? देवताओं में यह विपत्ति कैसे आन पड़ी ? तुम सव मुझसे साफ साफ वता दो कि तुम सवको कौन सा प्रयोजन साधना है ॥ ५९६ ॥ विष्णु के वचन सुनकर हर्ष प्राप्त हुआ और देवताओं ने वृहस्पति से कहा, हे वृहस्पति, रावण का चरित्र व्योरेवार वताओ कि उसने संसार पर कैसी विपत्ति ला दी है ॥ ५९७ ॥ देवताओं की वात सुनकर वृहस्पति ने हाथ जोड़ कर विष्णु के चरणों की ओर देखा। सुमधुर वाणी में वे कहने लगे, हे चक्रपाणि परमेश्वर, सुनो ॥ ५९८ ॥ त्रिभुवन में तुम्हारा अविदित कुछ भी नहीं है। फिर भी तुम्हारे सम्मुख कहना उचित ही है। तुमको वतला देने से दुःख का निवारण होगा। इसी कारण कितने ही—और सारे के सारे महाजन— ॥ ५९९ ॥ —अपने-अपने सुख-दुख तुममें सौंप कर,

राक्षसर कुले निकषात जात भैल * घोर तप करिया ब्रह्मात वर लैल
सुरासुर लोकत अबध्य कलेवर * त्रिभुवन जिनि पीड़ा करे लंकेश्वर६०१
सि कारणे देवे दुख पावे बिपरीत * नाना रत्न सागरे योगावे प्रति नित
पुष्पक विमान काढ़ि आनि कुवेरर * सेहि रथे चड़ि फुरे वीर लंकेश्वर६०२
हुया विपर्यय षड़ ऋतु निरन्तरे * संकोचित भावे रावणक सेवा करे
रावणत हन्ते आति पाया पराभव * विद्याधरी अपेस्वरी योगान्त वासव६०३
थान मांजि थाकन्त पवन महाभागे * चन्द्रे छत्र धरि यान्त रावणर आगे
नपान्त करिबे यज्ञ मुनि निरन्तरे * राक्षसक पठाइ रुधिर वृष्टि करे६०४
भये नवग्रहे भोग तेजिलेक सर्व्व * नृत्य गीत करि तथा थाकय गन्धर्व्व
कतेक कहिब प्रभु तोमार आगत * कोन देवे लाज नाहि पावे रावणत६०५
हरि निले रावणे पाइलेक यार यत * काहारो नाहिके आर कार्य विषयत
समस्तरे सम्पत्ति रावणे हरि निल * अधम राक्षसे देवताक विड़म्बिल ६
नीच जने उत्तमक पीड़य अधिक * आमार उत्तम जन्म आछो धिक् धिक्
शुनि बृहस्पतिर बचन दामोदर * कृपाय हासिया हरि दिलन्त उत्तर ७
हे बृहस्पति कह कह भाल करि * एहि बुलि पुनु मातिलन्त देवहरि
मोर पारिषद बुलि केहो नजानय * नीच बुलि आतिशय गरिहा करय ८
कोटि एक देवे रावणक नोहे सम * सेहि भैल अधम कोन आछय उत्तम
एतेकेसे उच्च करि हासिला ईश्वरे * सागरर उर्म्मिक ढाकिला सेहि स्वरे ९

तुमको सभी कुछ का कर्त्ता-धर्त्ता मानते है। अब मै देवताओं की दुर्दशा के बारे में कहूँगा। वेदज्ञ विश्वश्रवा (विश्रवा) का पुत्र हुआ दुष्ट रावण ॥ ६०० ॥ राक्षस-कुल की निकषा राक्षसी से उसका जन्म हुआ। उसने घोर तपस्या कर ब्रह्मा से वर ले लिया। सुरो और असुरो द्वारा उसका शरीर अवध्य बन गया; जिससे यह लंकेश्वर त्रिभुवन को जीत कर पीड़ा देने लगा ॥ ६०१ ॥ इसी कारण देवताओं को विशेष दुःख प्राप्त हुआ। सागर प्रतिदिन विभिन्न रत्न लेकर उसे पहुँचा रहा है। कुवेर का पुष्पक विमान छीनकर वीर लकेश्वर उसी रथ पर घूमता फिर रहा है ॥ ६०२ ॥ निरन्तर छह ऋतुओ में भी गड़बड़ी आ गई। वे संकुचित भाव से रावण की सेवा कर रही है। रावण के हाथों से पूर्णरूप से पराजित होकर वासव उसको विद्याधरी और अप्सराएँ पहुँचा रहा है ॥ ६०३ ॥ मध्यस्थान मे महाभाग पवन खड़ा रहता है। चन्द्र छतरी हाथ मे लिए रावण के आगे आगे चलता है। मुनि निरन्तर यज्ञ नही कर पाते। राक्षसो को भेजकर वह (रावण) वहाँ खून की वर्षा करता है ॥ ६०४ ॥ नवग्रहों ने भय से सारा भोग त्याग दिया है। गन्धर्व वहाँ नाच कर और गाना गाकर रह रहे है। तुम्हारे पास प्रभु भला कितना कहें, ऐसा कोई भी देवता नही जो रावण द्वारा लज्जित न किया गया हो ॥ ६०५ ॥ रावण को जिसका भी जो कुछ मिला उसने चुरा लिया। किसी को भी अब अपनी सम्पत्ति से कुछ सरोकार नही रह गया। रावण ने सारी सम्पत्ति चुरा ली। अधम राक्षस ने देवताओं को विड़म्बित कर डाला ॥ ६ ॥ नीच व्यक्ति उत्तम व्यक्ति को अधिक पीड़ित करता है। इसलिए अपने ऐसे उत्तम जन्म को धिक्कार है। बृहस्पति की बातें सुनकर दामोदर हरि ने हँसकर उत्तर दिया ॥ ७ ॥ हे बृहस्पति, जरा अच्छी तरह से बताओ। इतना कहने पर देवगुरु बृहस्पति फिर बोलने लगे। मुझको पारिषद के रूप में कोई नही जानता है। नीच कहकर रावण मेरा बड़ा ही अपमान करता है ॥ ८ ॥ कोटि देवता भी रावण के समान नही है। वही जब इतना अधम

हरिर हासित शोभा करिल वदन * मुकुतार ज्योति जिनि प्रकाशे दशन
बुलिलन्त वचन शबद अनुपाम * सेहि शब्दे चारि पदे भैला श्लोक नाम १०
जानिलोहो बृहस्पति दुख तोमासार * राक्षस रावणे दुख दिलेक अपार
नीच हुया उत्तम देवक पीड़िलेक * अधमर पराभव लभिया अनेक ११
प्रज्वलित हुआ आछे रावण प्रखर * परम आकुल चित्त करिया देवर
शुक्रे समे उपाय करिया बलिराय * पूर्ब्बे स्वर्गपद लैला इन्द्रक खेदाइ १२
सिकाले आपुनि भैलो सहाय इन्द्रर * बलिक पाताले निलो खेदाया स्वर्गर
इबार इन्द्रक पीड़ा करे लंकानाथ * अस्त्रे हानि ताहार काटिवो दश माथ १३
हुयाछे प्रचंड वर लभिया ब्रह्मात * त्रिदश देवक मोर करे उतपात
काटिबोहो शिर करि दारुण प्रहार * तेवे गुलगुलि मोर गुचिब हियार १४
दशदिगपालर साधिबो प्रतिकार * त्रिभुवन लोकक पीड़िल दुराचार
यिहेतु सहिछो उपद्रव रावणर * शुना बृहस्पति तार स्वरूप उत्तर १५
महादुखे हरक आराधि लंकेश्वर * आपोन इच्छाये मागि लैया आछे वर
सुरासुरे जिनिबाक नपारय आने * अजर अमर महेशर बरदाने १६
ब्रह्माक आराधि सिटो आरो बर लैला * मानुषे मारिवे ब्रह्मा वरछिद्र थैला
तार बध हेतु मानुषत हैवो जात * दशरथ राजा सूर्यवंशत प्रख्यात १७
देवतार प्रयोजने चारि रूप धरि * दशरथ गृहे उपजिवो निष्ठ करि
तपस्वीर बेशे देवकार्यक साधिबो * दुराचार रावणक सवंशे वधिबो १८

हो गया तो उत्तम कौन बना रहा। इतने में विष्णु ने उच्च स्वर में हास्य किया और उस स्वर से समुद्र का कल्लोल भी नीचे दब गया ॥ ९ ॥ हास्य से हरि का सारा चेहरा खिल उठा। उनके दाँत मोतियों के समान ज्योति बिखेरने लगे। वे अनुपम शब्दों से बने वाक्य बोले। उन्हीं शब्दों से बने चार पदों का नाम श्लोक पड़ा ॥ १० ॥ हे बृहस्पति मैंने तुम लोगों के दुःख का कारण जान लिया। राक्षस रावण ने तुम लोगों को अत्यन्त कष्ट पहुँचाया। नीच होकर उसने उत्तम पद के देवताओं को पीड़ा पहुँचाई। अधम के हाथों तुम लोगों को पराजय सहनी पड़ी ॥ ११ ॥ रावण प्रखर रूप से प्रज्वलित होकर धधक रहा है और देवताओं का चित्त अत्यन्त व्याकुल कर रहा है। शुक्र के साथ परामर्श कर बलिराजा ने इससे पूर्व इन्द्र को खदेड़ कर स्वर्गपद ले लिया था ॥ १२ ॥ उन दिनों यह (विष्णु) स्वयं इन्द्र का सहायक बन गया और बलि को स्वर्ग से खदेड़ कर पाताल ले गया। अब लंकेश्वर रावण इन्द्र को क्लेश पहुँचा रहा है। मैं अस्त्र से उसके दसों सिर काट डालूँगा ॥ १३ ॥ ब्रह्मा से वर प्राप्त कर रावण बड़ा ही प्रचंड हो गया है। मेरे प्रिय देवताओं पर भी उत्पात मचाये हुए है। भीषण प्रहार से मैं इसके सिर काट डालूँगा, तभी तेरे हृदय की जलन शान्त होगी ॥ १४ ॥ दश दिग्पालों का भी प्रतिकार करूँगा। त्रिभुवन के लोगों को इस दुष्ट ने कष्ट पहुँचाया। किस कारण तुम लोग रावण का उपद्रव सह रहे हो, हे बृहस्पति मैं इसका प्रत्यक्ष उत्तर देता हूँ ॥ १५ ॥ लंकेश्वर ने अनेक कष्ट सहते हुए हर (महादेव) की आराधना की और अपनी इच्छा के अनुसार वर माँग लिया। महेश के वरदान से वह अजर अमर बन गया, सुर और असुर भी उसको युद्ध में नहीं हरा सकेंगे ॥ १६ ॥ ब्रह्मा की आराधना कर उसने और भी वर ले लिये। लेकिन ब्रह्मा ने वर में बड़ा सा छिद्र (कमी) रख दिया जिससे वह मनुष्य द्वारा मारा जायगा। उसके वध के लिए मनुष्य रूप लेकर मैं सूर्यवंश के प्रख्यात राजा दशरथ के घर जन्म लूँगा ॥ १७ ॥ देवताओं की

रावणर दश माथ काटिबो उत्सुके * आकाशेते थाकि सबे देखिवा कौतुके
मोर क्रीड़ा हेतु देवगण आछा यत * छद्मरूपे उतपति हैवा वानरत १९
शुनि त्रिदशर महा हरिष मिलिल * बजाया दुन्दूभि नृत्य करिवे लागिल
माधवे बोलन्त सबे लैयो परमाण * दशरथ नृपतिर याहा यज्ञस्थान २०
अद्भुत पुरुष साजि दिला नारायण * हाते धरि पायस सकले देवगण
भैलो परित्राण मने आनन्द मिलिल * हरिक प्रणामि यज्ञस्थानक चलिल २१
सेहि समयत लक्ष्मी बुलिलन्त बाणी * मोक किवा आज्ञा हय प्रभु चक्रपाणि
दशरथ गृहे तुमि हैवा उतपन * आमि कत उपजिवो बुलियो वचन २२
शुनिया कौतुके बुलिलन्त दामोदर * आछन्त जनक राजा मिथिला नगर
आचरन्त राजा ऋषि धर्म्म निरन्तरे * अयोनिका हुआ थाकिवाहा तान घरे २३
एहि बुलि अन्तर्द्धन भैला देवहरि * देवगणे माधवर आज्ञा शिरे धरि
दशरथ राजार यज्ञर थाने गैला * ब्रह्मा समन्विते सबे आकाशते रैला २४
करे यज्ञ नृपति पुत्रक एकचिते * महा पुष्पवृष्टि आसि भैला आचम्बिते
ताक देखि हरिष भैलन्त सर्व्वजन * राजार दक्षिण बाहु स्पन्दे घने घन २५
दक्षिण नयन स्पन्दे दक्षिण हृदय * पुत्र हैब हेन नृपतिर मने लय
परम आनन्द भैल हृदयत जात * सुगन्ध चम्पक माला पिन्धिया माथात २६
अगरु चन्दन शुक्लबस्त्र पिंधि गावे * नाना द्रव्ये देवक पूजन्त सर्व्वभावे
नाना सुमंगल वाद्य बाजन वावय * शुभ हेतु सर्व्वजने करे जय जय २७

आवश्यकता से चार रूप धारण कर दशरथ के घर में निश्चित रूप से जन्म लूँगा। तपस्वी का वेश धारण कर देवताओ का कार्य पूरा करूँगा। दुष्ट रावण का सवंश संहार करूँगा ।। १८ ।। रावण के दस सिर सोत्साह काट डालूंगा, तुम लोग आकाश में रहकर कौतुक से देखना। मेरी इस लीला मे सारे देवता छद्मरूप धारण कर वानरों में जन्म लोगे ।। १९ ।। यह सुनकर देवताओ को वड़ा हर्ष उत्पन्न हुआ। वे दुन्दुभि बजाकर नाचने लग गये। माधव ने कहा, सब लोग प्रमाण प्राप्त करने के लिए राजा दशरथ के यज्ञस्थान मे पहुँच जाओ ।। २० ।। अद्भुत पुरुष का रूप धारण कर नारायण ने अपने हाथों सब देवताओ को पायस (खीर) दिया। देवताओ को मानों कष्टों से मुक्ति मिल गई और उनके मन मे बडा आनन्द उत्पन्न हुआ। हरि को प्रणाम कर सभी देवता यज्ञस्थल की ओर चल दिये ।। २१ ।। उसी समय लक्ष्मीजी ने कहा, हे चक्रपाणि, मेरे लिए क्या आज्ञा है। तुम तो दशरथ के घर मे उत्पन्न होगे, यह बताओ, मै कहाँ जन्म लूँगी ।। २२ ।। यह सुनकर दामोदर ने कौतुक से कहा, मिथिला नगर में जनक नाम के राजा है। वह राजर्षि निरन्तर धर्म का पालन करते है। अयोनिका (किसी योनि से उत्पन्न नही) वन कर तुम उस घर में रहोगी ।। २३ ।। यह कह कर हरि अन्तर्धान हो गये। माधव की आज्ञा शिरोधार्य कर सारे देवता दशरथ के यज्ञस्थल मे जा पहुँचे और ब्रह्मा के साथ सभी आकाश में वने रहे ।। २४ ।। राजा पुत्र के लिए एकचित्त होकर यज्ञ कर रहे थे कि अचानक ही पुष्पवृष्टि होने लगी। यह देखकर सभी लोग हर्षमग्न हुए। राजा का दाहिना हाथ वार वार फड़कने लगा ।। २५ ।। दाहिनी आँख और दाहिना वक्ष भी स्पन्दित होने लगा। नृपति को लगने लगा कि पुत्र होगा। उनके हृदय मे परम आनन्द का अनुभव हुआ। वे सिर पर सुगन्धपूर्ण चम्पक की माला पहन कर— ।। २६ ।। —वदन पर अगुरु चन्दन लगाकर और श्वेतवस्त्र पहनकर विभिन्न द्रव्यो के द्वारा सब तरह से देवता की पूजा करने लगे। विभिन्न सुमगलकारी वाद्ययन्त्र वजने लगे। कल्याण के हेतु सभी

पुत्रमंत्र जप राजा करे मने मन * सुमंगल जपन्त सकल मुनिगण
मुख्य मुख्य मुनिगणे वह्निात हुनन्त * पिंगल आकृति वह्निकुंडत ज्वलन्त २८
अद्भुत पुरुष हाते पायस लैलन्त * यज्ञर कुंडर गैया भितर भैलन्त
आकाशत थाकि ब्रह्मा बुलिला वचन * राजार वांछित सिद्धि हैव मुनिगण २९
करियोक पूर्णाहुति कुंडर वह्नित * उठिबेक आति दिव्य पायस अमृत
परम सादरे दशरथे तांक निव * महादइ समस्तक विर्बत्तिया दिव ३०
तेवे चारि पुत्र हैव विष्णु अवतार * करिवन्त वंश समे राजाक उद्धार
एहि बुलि ब्रह्मा निजथाने चलि गैला * अद्भुत शुनिया मुनिगण रंग भैला ३१
ऋष्यश्रृंगे पूर्णाहुति वह्नित दिलन्त * कुंड मध्य हन्ते पुरुषेक उठिलन्त
सुन्दर आकृति आति विष्णु समसर * दिव्य वस्त्र अलंकारे शोभे कलेवर ३२
माथात पिंगल जटा शरीर पिंगल * शवद गम्भीर अनु प्रकाशे उज्ज्वल
सम्पूर्ण पायस-पात्र हाते आछे धरि * ऋष्यश्रृंग हाते पाचे दिलन्त सादरि ३३
रंगे ऋष्यश्रृंगे लैला दुइ हस्त पाति * अद्भुत पुरुषे वाक्य बुलिलन्त माति
सुवर्णर पात्रत पायस थैव भरि * तिनि महादइ भुंजिवन्त भाग करि ३४
तिनित हैवेक चारि तनय राजार * साक्षाते हैवन्त नारायण अवतार
साधिवन्त जगतर परम कल्याण * एहि बुलि अद्भुत भैलन्त अन्तर्द्धान ३५
अद्भुतर कथा शुनि महामुनिगणे * वसिला पायस लैया हरिष वदने
ऋष्यश्रृंग मुनि महायज्ञ समापिला * दशरथ राजा ऋषिगणक अर्च्चिला ३६
वस्त्र अलंकार पुष्प चन्दने भूषिला * वहुविध रत्न दिया मन सन्तोषिला
दिला राजा दक्षिणा सुवर्ण एक कोटि * मुनिसवे आशीर्व्वाद दिला मनतुष्टि ३७

लोग जय जयकार करने लगे ।। २७ ।। राजा मन ही मन पुत्रमंत्र जप करने लगा। सारे मुनि सुमंगल के लिए जप करने लगे। मुख्य मुख्य मुनि अग्नि में हवन करने लगे और अग्निकुंड में एक पिंगल (पीली) आकृति प्रकाशित हो उठी ।। २८ ।। यह अद्भुत पुरुष हाथ में पायस लिये हुए यज्ञकुंड के बीच खड़ा हो गया। आकाश में रहकर ब्रह्मा ने कहा, हे मुनिगण, राजा की अभिलाषा पूर्ण होगी ।। २९ ।। यज्ञकुंड के अनल में पूर्णाहुति देने तो अमृत जैसा पायस (खीर) प्राप्त होगा। आदर सहित दशरथ उसे ग्रहण करेंगे और सारी महादेवियों को बाँट देंगे ।। ३० ।। तब विष्णु के अवतार चार पुत्र होंगे जो कि अपने सारे वंश के साथ राजा का उद्धार करेंगे। यह कहकर ब्रह्मा अपने निवास स्थान को लौट गये। यह अद्भुत बात सुनकर मुनि लोग अत्यन्त प्रसन्न हुए ।। ३१ ।। ऋष्यश्रृंग मुनि ने अग्नि में पूर्णाहुति डाली तो कुंड में से एक पुरुष निकला। उसकी आकृति विष्णु के समान बहुत ही सुन्दर थी। दिव्य वस्त्रों और आभूषणों से वे अत्यन्त शोभायमान थे ।। ६२ ।। उनके सिर पर पिंगलवर्ण की जटा थी, उनके शरीर का रंग भी पिंगल था। उनके शब्द गम्भीर थे और वे उज्वल प्रकाश से प्रकाशित हो रहे थे। वे हाथों में पायस का पूर्ण-पात्र लिये हुए थे। बाद में उन्होंने वह पात्र सादर ऋष्यश्रृंग के हाथों में दिया ।। ३३ ।। श्रृंगी ऋषि ने दोनों हाथ पसार कर उसे सानन्द ग्रहण किया। फिर अद्भुत पुरुष ने उन्हें सम्बोधित कर कहा, यह पायस स्वर्ण के पात्र मे रखना। तीनों महादेवियाँ इसको बाँट कर खायेंगी ।। ३४ ।। तीनों से राजा के चार पुत्र होंगे, वे साक्षात् नारायण के अवतार होंगे। वे संसार का बड़ा कल्याण करेंगे। यह कहकर अद्भुत पुरुष अदृश्य हो गये ।। ३५ ।। अद्भुत पुरुष की बातें सुनकर महामुनिगण पायस लेकर प्रसन्नचित्त हो बैठ गये। ऋषि श्रृंगी ने यज्ञ समाप्त किया। राजा दशरथ ने ऋषियों की अर्चना

रजत बत्रिश कोटि दिला दशरथ * आशीर्व्वाद पाया पूर्ण भैल मनोरथ
राजा प्रजा दुखी भिक्षु यतेक आछिल * अन्ने-पाने नाना दाने सबाको तुषिल ३८
राजार यशक करि प्रशंसा अशेष * राजा प्रजा मुनिगण चलि गैला देश
पाचे ऋष्यश्रृंग मुनिराजक नृपति * अनेक प्रकारे पूजि करिला भकति६३९
स्तुति नति प्रणति करिया बहुमान * शान्ता समन्विते पठाइ दिला निजस्थान

कौशल्या कैकेयी आरु सुमित्रार पायस-भक्षण आरु राम, लक्ष्मणादि चारि भ्रातृर जन्म

पाया राजा पायस हरिष बिपरीत * देवे येन सागरत पाइलन्त अमृत६४०
जगत दुर्ल्लभ इटो पायस साक्षात * चारि अंशे विष्णु तेज आछय इहात
दुइ भाग पायस करिया महाराज * दुइ चरु लैया गैला अन्तःपुर माज ४१
कौशल्या कैकेयी दुइ महादेक दिल * पायस भुंजिते राजा दुइहांको बुलिल
इहाक भुंजिले हैवे उत्तम सन्तति * चारि अंशे विष्णु आसि हैव उतपति ४२
पायसर परम महिमा शुनि आति * सादरे लैलन्त दुयो जने हात पाति
हरिषे खोजन्त दुयो पायस भुंजित * सुमित्रा आसिया दुइरो आगे भैला थित ४३
किबा खाहा बाइ बुलि पुछिला विनय * शुनि कौशल्यार दाया भैल आतिशय
कैकेयीक बुलिलन्त कौशल्या सुन्दरी * सुमित्राक निदि आमि खाइबो केन करि६४४

की ॥ ३६ ॥ उन्होंने उनको वस्त्र आभूषण पुष्प और चन्दन से विभूषित किया, अनेक रत्न आदि देकर उनके मन को सन्तुष्ट किया। राजा ने दक्षिणा के रूप में एक करोड़ सुवर्ण प्रदान किया। मुनियों ने तुष्ट होकर आशीर्वाद दिया ॥ ३७ ॥ दशरथ ने बत्तीस करोड़ चांदी (के सिक्के) प्रदान किये। आशीर्वाद प्राप्त कर उनकी मनोकामना पूर्ण हुई। राजा-प्रजा दीन-दुखी जो भी जहाँ था सभी को भोजन-पान से तुष्ट किया गया ॥ ३८ ॥ राजा के यश की अत्यधिक प्रशंसा करने के बाद राजा-प्रजा और ऋषि-मुनि अपने अपने देश चले गये। इसके बाद मुनिराज शृंगी ऋषि की अनेक प्रकार से पूजा कर राजा ने अपनी भक्ति प्रदर्शित की ॥ ६३९ ॥ अनेक प्रकार से स्तुति नति (विनय) और प्रणति (प्रणाम) कर उनको शान्ता के साथ अपने स्थान भेज दिया।

कौशल्या कैकेयी और सुमित्रा का पायस खाना और राम-लक्ष्मणादि चार भाइयों का जन्म

पायस (खीर) पाकर राजा को इस प्रकार अत्यन्त हर्ष उत्पन्न हुआ मानो देवताओं को समुद्र से अमृत मिल गया हो ॥ ४० ॥ यह खीर निश्चित रूप से जगत् में दुर्लभ है क्योंकि इसमें विष्णु के चार अंशों का तेज है। महाराज ने पायस को दो भागों में बाँटा फिर दो चरु लेकर वे अन्तःपुर गये ॥ ४१ ॥ दोनों महारानी कौशल्या और कैकेयी को उन्होंने दिया। राजा ने दोनों को खीर खाने के लिए कहा। इसको खाने पर उत्तम सन्तान होगी। विष्णु चार अंशों में आकर उत्पन्न होंगे ॥ ४२ ॥ पायस की ऐसी महिमा सुनकर दोनों ने हाथ बढ़ाकर सादर ग्रहण कर लिया। हर्ष से दोनों पायस खाने के लिए धीरे धीरे चलने लगीं तो सुमित्रा आकर दोनों के सामने खड़ी हो गई ॥ ६४३ ॥ दीदी क्या खा रही हो, विनयपूर्वक उसने पूछा।

पाचे बुलिलन्त नृपतिर विद्यमान * सुमित्राक दिवे आज्ञा करा किछुमान
हासिला नृपति कौशल्यार वाणी शुनि * सुमित्राको दिवे आज्ञा दिला महामानी ६४५
पाचे आसि वशिष्ठे दिलन्त शुभक्षण * शुद्ध हुया करिवन्त पायस भक्षण
चारि अंशे विष्णु आसि हैव अवतार * भुंजिव पायस करि मंगल आचार ४६
वशिष्ठर वचन शुनिया तिनिजने * आचरि मंगल शुद्ध हुया शुभक्षणे
पायस भुंजिवे वसिलन्त भिन्ने भिन्नि * राज आज्ञा पाइला आगे दुइ सतिनी ४७
पाचे सुमित्राक प्रति आदेश करिल * आगे दुइ भाग दुइ महादेक दिल
कौशल्या कैकेयी पाचे दुइ पटेश्वरी * आपोनार भाग दुयो दुइ भाग करि ४८
सुमित्राक दुइ भाग दिला रंग मने * निवन्धन वाक्य बुलिलन्त दुई जने
शुनिवि सुमित्रा तइ आमार उत्तर * आपुनि निदिल तोक भाग नृपवर ४९
आमिसे स्नेहत भाग दिलो तोक जान * एतेकेसे वोलो आमि वचन वन्धन
यार भागहन्ते तोर यिटो पुत्र हय * आमार पुत्रर हैव सहाय निश्चय ५०
शुनि सुमित्रार भैल हरिष मनत * वोलन्त विनय भावे दुयारो आगत
शुना दुयो जन वोलो स्वरूप वचन * होवे येवे मोर दुइ पुत्र उतपन ५१
हैवेक सेवक तोरा दुइरो तनयर * शुनिया कौतुक वर भैला दुइहान्तर
अनन्तरे तिनि जने पखालिला पाव * धौत वस्त्र पिंधि भैला पवित्र स्वभाव ५२
आपोनार भाग सवे लैया रंगमने * पायस भोजन करिलन्त तिनि जने
पाचे पुष्पशय्यात शुतिला तिनि सती * शुभलग्ने अन्तःपुरे गैलन्त नृपति ५३
अनुक्रमे प्रवेशिला तिनिरो शय्यात * पुत्रकाम विभागे करिल रेतःपात
निद्रा अचेतने तिनि देवीये आछन्त * स्वपनत तिनियो देखिल भगवन्त ५४

सुनकर कौशल्या को वड़ी दया आ गई। सुन्दरी कौशल्या ने कैकेयी से कहा, सुमित्रा को विना दिये मै कैसे खा सकती हूँ॥ ६४४॥ इसके पश्चात् राजा के सम्मुख जाकर वह वोली, सुमित्रा को थोड़ा सा देने की आज्ञा मिल जाय। कौशल्या की वात सुनकर महाराजा हँस पड़े। और महामानी राजा दशरथ ने सुमित्रा को भी देने की आज्ञा दे दी॥ ६४५॥ इसके पश्चात् वशिष्ठ ने आकर शुभघड़ी वताई। (कहा) शुद्ध होकर खीर खाना। विष्णु चार अंशो में आकर अवतार लेगे। मंगल आचरण करने के उपरान्त पायस खाना॥ ४६॥ वशिष्ठ का वचन सुनकर तीनों रानियाँ मंगल आचरण कर शुभवड़ी पर शुद्ध हो गयीं। पायस खाने के लिए वे अलग अलग वैठ गई। पहले दो सौतों को राजा की आज्ञा मिली॥ ४७॥ पहले दो भाग दोनों महादेवियों को मिले। पीछे सुमित्रा को आज्ञा मिली। इसके अनन्तर दोनों पटरानियाँ कौशल्या और कैकेयी ने अपने अपने हिस्से को भी दो भागों में वाँटा॥ ४८॥ दोनों ने सुमित्रा को प्रसन्न मन होकर खीर के दो भाग दिये और निवन्धन-वाक्य कहे। सुनो सुमित्रा, मेरी वात सुनो। राजा ने स्वयं तुम्हें कोई भाग नही दिया॥ ४९॥ यह जान लो कि मैंने स्नेहवश तुमको हिस्सा दिया इसलिए वचन दो कि तुम वचन-वद्ध रहोगी। जिसके भाग से तुम्हारा जो पुत्र होगा वह मेरे पुत्र का सहायक निश्चय वन जाये॥ ५०॥ सुनकर सुमित्रा के मन में हर्ष उत्पन्न हुआ। उसने दोनों से विनयपूर्वक कहा। तुम दोनों मेरा स्पष्ट वचन सुनो। जव मेरे दो पुत्र उत्पन्न होंगे—॥ ५१॥ तो वे तुम्हारे दोनों वेटों के सेवक वन जाएँगे। यह सुनकर दोनों को वड़ा ही आश्चर्य हुआ। इसके वाद तीनों ने पैर धोए और धुले हुए कपड़े पहनकर पवित्र हो गईं॥ ५२॥ अपना-अपना हिस्सा लेकर सभी प्रसन्न मन वैठ गईं और तीनों ने पायस खाया। इसके वाद तीनों सती फूलों की सेज पर लेट गईं इसके

शंख चक्र गदा पद्म चारि अस्त्र धरि * स्वप्ने तिनि महादेक देखा दिला हरि
गरुड़र दुइ पाखा ज्वले सुवर्णर * ताहान स्कन्धत वसि आछे दामोदर ५५
महा मेघखंड येन मेरुर उपरे * दिशपाश प्रकाशि शरीर ज्योति करे
पीतवस्त्र ज्वले आति श्याम शरीरत * स्थिर विद्युतिका येन प्रकाशे मेघत ५६
गले वनमाला मणि कौस्तुभ कंठत * रत्न उड़ियानि ज्वले कटि प्रदेशत
पूर्ण शशधर रुचि प्रसन्नवदन * प्रफुल्ल पंकज जिनि शोभय नयन ५७
श्याम शरीरत शोभे रत्न अलंकार * निर्म्मल गगने येन तारा जातिष्कार
गरुड़र स्कन्धे ज्वले पाद्यपद्म दुइ * शरतर निर्म्मल पंकजो सम नुइ ५८
कटाक्ष हासित येन अमृत वरिषे * तिनि महादइ आछन्त हरिषे
हैव अवतार हेन देखाइ स्वप्नत * करिलन्त स्नान हरि सागर जलत ५९
तिनिरो आगते पाचे भैला अन्तर्द्धान * स्वप्नत हरिक देखिया विद्यमान
स्नान दान करिलन्त उठि प्रभातत * कहिला स्वरूप कथा राजार आगत ६०
विपरीत स्वपन देखिला तिनि जने * हैवा हरि पुत्र राजा जानिलन्त मने
पाचे नारायण आसि चारि मूर्त्ति धरि * तिनि महादेर गर्भे प्रवेशिला हरि ६१
धरिलन्त गर्भ एकेवारे तिनिजन * सूर्य्यर सदृश गर्भ करय प्रसन्न
गर्भर प्रकाशे प्रकाशय तिनि नारी * चक्षुक ताड़य रूपे चाहिते नपारि ६२
ईश्वर कृष्णर तेज वाढ़य गर्भत * गर्भभावे तिनि हुया आछे अशकत
तेजोमय गर्भ आति देखिते उज्ज्वल * विष्णुपुत्र हैवन्त राजार कौतूहल ६३

वाद शुभघड़ी पर राजा ने अन्तःपुर में प्रवेश किया ॥ ५३ ॥ क्रम से उन्होंने तीनों के विस्तर में प्रवेश किया और पुत्र कामना से गर्भाधान किया। तीनों देवियाँ जव नींद में वेसुध थीं तो तीनो ने भगवान् का स्वप्न देखा ॥ ५४ ॥ शंख चक्र गदा और पद्म—इन चारों अस्त्रों को धारण कर हरि ने सपने में तीनों महादेवियों को दर्शन दिया। गरुड़ के दोनों सोने के डैने चमक रहे हैं उसी के कन्धे पर दामोदर वैठे हैं ॥ ५५ ॥ मानों मेरु पर्वत पर विशाल मेघ का खंड हो, सभी दिशाओं को प्रकाशित कर इस प्रकार उनका शरीर ज्योतित है। अत्यन्त श्याम शरीर पर पीला वस्त्र चमक रहा है, ज्यों वादलों में विजली चमकती है ॥ ५६ ॥ गले में वनमाला और कंठ में कौस्तुभ मणि है। कमर में रत्न-जड़ित चदरा (कमरवन्द) शोभा दे रहा है। पूर्ण-चन्द्र सा प्रसन्न मुखड़ा है और नयन खिले हुए कमल के समान हैं ॥ ५७ ॥ साँवले शरीर पर रत्न-जटित-अलकार इस प्रकार शोभायमान हैं जिस प्रकार निर्मल आकाश में तारे शोभा पाते है। गरुड़ के कंधे पर दोनों चरण-कमल यों शोभा पा रहे है मानो शरद ऋतु के निर्मल पंकज हों ॥ ५८ ॥ उनकी मंद मुस्कान से मानों अमृत वरसने लगा। तीनों महारानियाँ परम प्रसन्न हो गई। सपने में मे यह दिखाकर कि वे अवतार लेंगे, हरि सागर के जल में स्नान करने लगे ॥ ५९ ॥ इसके पश्चात् वे तीनो के सम्मुख से अदृश्य हो गये। स्वप्न में साक्षात् हरि को देखकर वे सवेरे उठी तथा स्नान करने के वाद दान दिया। और राजा के पास जाकर सारी वात वता दी ॥ ६० ॥ तीनों ने एक असंगत स्वप्न देखा। राजा ने मन ही मन जान लिया कि नारायण चार मूर्त्तियों को धारण कर तीनों महादेवियो के गर्भ में प्रवेश कर गये है और हरि ही पुत्र वनेंगे ॥ ६१ ॥ एक साथ तीनों रानियों ने गर्भ धारण किया, सूर्य के समान गर्भ उनको प्रसन्न करने लगे। गर्भ के प्रकाश से तीनों रानियाँ प्रकाशमयी होने लगीं। उनका रूप आँखों को चकाचौध में डाल देता था, उसका देखना संभव नही था ॥ ६२ ॥ इस प्रकार गर्भ में विष्णु का तेज वढ़ने

जेतिक्षणे यिबा वस्तु खोजय खाइवाक * हरिषे नृपति तेतिक्षणे देय ताक
पंचम मासत चाया दिन शुभक्षण * घृत मधु पंचामृत कराइला भोजन ६३
नाना द्रव्ये उत्सव करिया नानामत * करिलन्त पुंसवन अष्टम मासत
करन्त गर्भक व्रह्मा यत देवगण * हुया अवतार हरि वधिवा रावण ६५
मुनिसवे आचरिला मंगल अपार * उपजिवा हरि हैव जगत उद्धार
नछारन्त राजा तिनि महादेव पाश * अनन्तरे गर्भ हैल पूर्ण दशमास ६६
शुभग्रह नक्षत्र मिलल शुभक्षण * कौशल्या देवीर पुत्र भैला उतपन
जगतरे सुमंगल भैलन्त उदय * शीतल दीपिति दशोदिश प्रकाशय ६७
त्रिजगत लोकर कुशल हेतु हरि * उपजिला कौशल्यात नररूप धरि
देवगणे स्तुति नति करे आकाशत * जय जय नृत्य गीत करे नानामत ६८
येतिक्षणे कौशल्यात पुत्र उपजिल * अन्तःपुर माजे महा कौतुक मिलिल
जय जय कोलाहल करे हुलस्थूल * नाना नृत्य गीत वाद्य शवद तुमुल६६९
सुगन्ध शीतल जले शिशुक धोवाइल * दुग्ध दिया सुकोमल शय्यात शुवाइल
अनन्तरे दूते नृपतित जान दिल * शुना प्रभु कौशल्यात पुत्र उपजिल६७०
शुनि नृपतिर हरिषर नाहि पार * दूतक दिलन्त राजा वस्त्र अलंकार
सवस्त्रे नृपति पाचे करिलन्त स्नान * वहु विध रत्न राजा करिलन्त दान६७१

लगा। गर्भ के भीतर वे शक्तिशून्य होकर स्थित है। यह तेजपूर्ण गर्भ देखने में अति उज्वल है। राजा के मन में वड़ा कौतूहल है कि विष्णु पुत्र के रूप में उत्पन्न होंगे ॥ ६३ ॥ जिस समय भी जिस वस्तु को खाने के लिए (रानियाँ) इच्छा करती थीं, उसी समय हर्ष से नृपति उन्हें वही वस्तु देते थे। पाँचवे महीने में मुहूर्त आदि देख भाल कर घृत मधु आदि पंचामृत का भोजन कराया गया ॥ ६४ ॥ विभिन्न द्रव्यों के द्वारा विभिन्न ढंग से उत्सव कर आठवें महीने में पुंसवन संस्कार किया गया। ब्रह्मा आदि जितने देवता हैं उन्होने गर्भ को सुफल किया कि रावण का वध करने के लिए हरि का अवतार हो रहा है ॥ ६५ ॥ सारे मुनियों ने यह जानकर मंगल आचरण किया, कि हरि जन्म लेंगे और संसार का उद्धार होगा। राजा तीनों महारानियों के निकट से हटते ही नहीं। इसके वाद गर्भ पूरे दस महीने का हो गया ॥ ६६ ॥ शुभघड़ी में शुभ ग्रह नक्षत्रों का योग हुआ तो कौशल्या देवी के पुत्र उत्पन्न हुआ। जगत् में सुमंगल का उदय हुआ और शीतल ज्योति से चारों दिशाएँ जगमगा उठीं ॥ ६७ ॥ तीनों लोकों के लोगो के कुशल के हेतु हरि ने नया रूप धारण कर कौशल्या से जन्म लिया। देवगण आकाश में स्तुति एवं नमन करने लगे और जय जयकार सहित तरह तरह से नृत्य गीत करने लगे ॥ ६८ ॥ जिस समय कौशल्या के पुत्र उत्पन्न हुआ, उस समय अन्तःपुर में आनन्द का स्रोत बह चला। जय जय का कोलाहल मच गया और चारों ओर दौड़धूप होने लगी, विभिन्न नृत्य-गीत-वाद्य से तुमुल शव्द होने लगा ॥ ६६९ ॥

सुगन्धित शीतल जल से वच्चे को धोया गया। दूध देकर उसको नर्म विस्तर पर लिटा दिया गया। इसके वाद दूत ने जाकर राजा को यह सूचना दी हे प्रभु सुनो, कौशल्या से पुत्र ने जन्म लिया ॥ ६७० ॥ सुनकर राजा के हर्ष की सीमा न रही। दूत को राजा ने वस्त्र और आभूषण दिये। फिर वस्त्र पहनकर राजा ने स्नान किया। फिर राजा ने कितने ही धन-रत्न दान में दे दिये ॥ ६७१ ॥ जितने भंडार निकट उपलव्ध हुए उन सभी को पुत्र के कल्याण के हेतु वाँट दिया। इसके

यतेक भांडार माने समीपते पाइल * पुत्रर कल्याण हेतु समस्ते विलाइल
तात पाचे कैकेयीर पुत्र उपजिल * शुनि नृपतिर महा हरिष मिलिल ७२
आत अनन्तरे शुभक्षण समयत * सुमित्रार पुत्र दुइ भैलन्त वेकत
सर्व्व सुलक्षण दुई यवंजा कुमार * शुनि नृपतिर नाहि आनन्दर पार ७३
उपजिल चारि पुत्र वंशर उद्धार * हरिषे विलाइला राजा प्रधान भांडार
भूमिते वेकत येवे भैला दामोदर * खसिल माथार मणि राजा रावणर ७४
देखिया पुछिला माल्यवन्तत रावणे * खसिल माथार मोर मणि कि कारणे
माल्यवन्त बोले शुना कारण इहार * याहार हातत मृत्यु हैवेक तोमार ७५
सेहिजन पृथिवीत भैल उतपन * शुनिया कुपिल माल्यवन्तक रावण
गरिहार छले तांक अनेक निन्दिल * पुनरपि तुलि मणि माथात पिंधिल ७६
येतिक्षणे अवतार भैला नारायण * तेखनर हन्ते शुभ देखे देवगण
नानाविध अशुभ देखय लंकेश्वर * शुनियोक कथामृत आत अनन्तर ७७
दशरथ घरे हरि भैला अवतार * देखिया उत्सुक वर भैल देवतार
दुन्दुभि शवद आति करे निरन्तरे * वरषिला पुष्प दशरथर उपरे ७८
शुभक्षण चाइ दशरथ नृपवर * क्रमे देखिलन्त मुख चारिओ पुत्रर
पूर्णिमार चन्द्र येन ज्वलन्ते आछय * देखि नृपतिर भैला आनन्द हृदय ७९
महानिधि लाभ जेन भैल दरिद्रर * लोभी पाइला येन पूर्णघट अमृतर
वद्ध आसि जीव जेन भैलन्त मुकुत * सेहिमते राजार आनन्द अदभुत ८०
तपहन्ते आसिल कौशिक मुनिवर * वेद पढ़ि आशीर्वाद करिला विस्तर
नृपतिर उपजिल चारि पुत्रवर * अयोध्यात मिलि गैला आनन्द विस्तर ८१

पश्चात् कैकेयी के पुत्र उत्पन्न हुआ, यह सुनकर नृपति को वड़ा आनन्द हुआ ।। ६७२ ।। इसके अनन्तर किसी शुभघड़ी मे सुमित्रा के भी दो पुत्र उत्पन्न हुए यह मालूम हुआ। सारे सुलक्षणो से युक्त दो जुड़वे पुत्र उत्पन्न हुए, सुनकर राजा के आनन्द की सीमा न रही ।। ७३ ।। वंश का उद्धार करने के लिए चार पुत्रों ने जन्म लिया। राजा ने परम हर्ष से अपना मुख्य भंडार लुटा दिया। जिस समय भूमि पर दामोदर का आविर्भाव हुआ, उसी समय राजा रावण के सिर का माणिक गिर पड़ा ।। ७४ ।। रावण ने यह देखकर माल्यवन्त से पूछा, मेरे सिर से यह माणिक किस कारण गिर पडा। माल्यवन्त ने कहा, इसका कारण सुनो। जिसके हाथो तुम्हारी मृत्यु होगी— ।। ७५ ।। —वही व्यक्ति पृथ्वी पर उत्पन्न हो गया। यह सुनकर रावण माल्यवन्त पर कुपित हो गया। अपमानित करने के निमित्त उसने उसकी वडी निन्दा की। फिर माणिक उठाकर उसने सिर में पहन लिया ।। ७६ ।। जिस क्षण से नारायण ने अवतार ले लिया उसी क्षण से देवता शुभ देखने लगे। लका के अधिपति (रावण) तरह-तरह की अशुभ वाते देखने लगा। इसके वाद का कथामृत सुनो ।। ७७ ।। दशरथ के घर मे हरि ने अवतार लिया है, यह देखकर देवता वडे प्रसन्न हुए। वे निरन्तर दुन्दुभि का शव्द करने लगे और दशरथ पर पुष्प वरसाने लगे ।। ७८ ।। नृपश्रेष्ठ दशरथ ने शुभ क्षण की प्रतीक्षा की, फिर चारों पुत्रों के मुख का दर्शन किया। मानों पूर्णमासी का चन्द्र जगमगा रहा हो। देखकर नृपति का मन आनन्द से भर गया ।। ७९ ।। दरिद्र को मानो महान् निधि मिल गई हो, लालची को मानो अमृत का पूरा घड़ा मिल गया हो, मानो वँधे हुए प्राणी को मुक्ति मिल गई हो, इस प्रकार राजा को अद्भुत आनन्द का अनुभव हुआ ।। ८० ।। तपस्या के उपरान्त मुनिवर कौशिक आए। उन्होने वेदपाठ कर पर्याप्त आशीर्वाद

नृत्य गीत वाद्यभांड नाना कौतूहल * आचरिला पूजा वहुविध सुमंगल
पृथिवीर राजागणे करि वहु यत्न * दशरथ राजाक योगाइल वहु रत्न ८२
चारि मूर्त्ति धरि भैला ईश्वर विदित * मिलिल उत्सव सातोद्वीपा पृथिवीत
देवर कौतुक वर मिलिल स्वर्गत * परम आनन्द भैल नगर लोकत ८३
त्रैलोक्यत भैल महा हरिष प्रचुर * नाशिब दुर्ज्जन महन्तर दुख दूर
चारि अंशे चतुर्भुज देव नारायण * उपजिला शुनि आसिलन्त मुनिगण ८४
ऊच्चैःस्वरे शुद्ध वेदमंत्र उच्चारिला * चारिओ शिशुक सवे आशीर्व्वाद दिला
ऋषि समस्तक रंगे अर्च्चिया नृपति * चारिओ पुत्रक राजा कराइल गणति ८५
जगतरंजन गुण देखि अनुपाम * कौशल्यार पुत्रर थैलन्त राम नाम
कैकेयीक राजार अधिक स्नेहभर * थैलन्त भरत नाम ताहान पुत्रर ८६
सुमित्रार पुत्र दुइ सर्व्व सुलक्षण * देखि नाम थैलन्त लक्ष्मण शत्रुधन
ऋषिगणे वोलन्त शुनिओ दशरथ * तयु पुत्रे पूरिव सवार मनोरथ ८७
एक नारायण चारि अंशे मूर्त्ति धरि * भैल चारि पुत्र आक जाना निष्ठ करि
आपुनि भैलन्त पुत्र जगत आधार * कमने वर्णाइवो राजा भाग्यक तोमार ८८
रामरूपे अवतार भैलन्त ईश्वर * लभिला सन्तति राजा सूर्य्यवंशोद्धार
सन्तक पालिवा राम पुरुष प्रधान * दुर्ज्जन जनक मारि करिवा निर्य्याण ८९
वले वीर्ये धैर्ये गुणे रूपे निरूपम * रावणे सहिते राक्षसर हैवे यम
तुहिवेक सुपुरुष रामर समान * अनुरूपे जगतरे साधिवा कल्याण ९०

किया। नृपति के चार पुत्र उत्पन्न हुए। अयोध्या में सभी को पर्याप्त आनन्द प्राप्त हुआ ॥ ८१ ॥ नृत्य-गीत, गाजा-वाजा और तरह-तरह की चुहलवाजी चलती रही। मंगलकामना में तरह-तरह की पूजाएँ की गईं। पृथ्वी के अन्य राजाओं ने काफी यत्न से राजा दशरथ को अनेक रत्न लाकर दिये ॥ ८२ ॥ भगवान् विष्णु चार मूर्त्तियों को धारण कर आविर्भूत हुए हैं, यह जानकर सप्तद्वीप पृथ्वी पर उत्सव होने लगा। स्वर्ग में देवताओं को वड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। नगर के लोगों को भी वड़ा उल्लास हुआ ॥ ८३ ॥ तीनों लोकों मे हर्ष का पारावार न रहा। दुर्जनों का नाश होगा और सज्जनों का दुख दूर होगा। देव नारायण चतुर्भुज ने चार अंशों में जन्म लिया है, यह सुनकर मुनिगण चले आए ॥ ८४ ॥ ऊच्च स्वर में उन्होने शुद्ध वेदमंत्र का पाठ किया, चारो वच्चों को सभी ने आशीर्वाद दिया। नृपति ने सारे ऋषियों की मन लगाकर अर्चना की। चारो पुत्रो की राशि-गणना भी उन्ही से करवा ली ॥ ८५ ॥ संसार को प्रसन्न करने वाले अनूप गुण इनमें देखकर कौशल्या के पुत्र का नाम राम रखा गया। कैकेयी से राजा को अधिक स्नेह था, उसके पुत्र का नाम भरत रखा गया ॥ ८६ ॥ सुमित्रा के दो पुत्र सारे सुलक्षणों से युक्त थे, उनके नाम लक्ष्मण और शत्रुघ्न रखे गये। ऋषियों ने कहा, दशरथ सुनो, तुम्हारे पुत्रों द्वारा सभी की मनोकामना पूर्ण होगी ॥ ८७ ॥ एक नारायण चार अंशों मे मूर्त्त होकर चार पुत्र वन गये, यह निश्चित् रूप से जान लो। तुम्हारा पुत्र स्वयं संसार का आधार वन गया। हे राजा, तुम्हारे भाग्य का क्या वर्णन करूँ ॥ ८८ ॥ राम के रूप मे ईश्वर ने अवतार लिया है। राजा को सन्तति मिल गई, सुर्यवंश का उद्धार हो गया। पुरुषोत्तम राम सन्तों का पालन करेंगे और दुष्टों को मारकर उनका विनाश कर देंगे ॥ ८९ ॥ वल, वीर्य, धैर्य, गुण और रूप में यह वेजोड़ होंगे और रावण के वध करने में यह राक्षसों का यम वन जाँयगे। राम के समान कोई दूसरा इतना सुदर्शन नही होगा। इसी प्रकार वे संसार का भी कल्याण करते

निज गुणे यशे जगतक रंजिवन्त * रामर महिमा कहि कोने पाइबे अन्त
समस्त लोकरे आन्त हैव अनुराग * किनो तुमि सुपुत्र लभिला महाभाग ९१
एहिमते गणित करिला ऋषिगण * शुनि दशरथर सन्तुष्ट भैला मन
ईश्वरक पुत्र पाया भैल कौतूहल * मुनि सकलक पूजिलन्त महावल ९२
परमान्न पंचामृते कराइला भोजन * तुपिलन्त दिया पुष्प अगरु चन्दन
पिन्धाइला सवाको दिव्य वस्त्र अलंकार * दिला रत्न अंजलि सुवर्ण एको भार ९३
कृतांजलि सवाको करिला नमस्कार * सवाको नृपति अर्च्चिलन्त वारे वार
हस्ती घोरा रथ दोला दासी दास देश * सुवर्ण झारि खुड़ि भाजन अशेष ९४
मनत वांछिया राजा पुत्रर कल्याण * नपारि कहिवे यत करिलन्त दान
नट भाट तेली माली दुखी भिक्षुजन * अन्नपाने महादाने सन्तोषिला मन ९५
आछिलेक खाटनिया नृपति यतेक * दिला वस्त्र अलंकार प्रसाद अनेक
देव पितृ मुनिगण यतेक जगत * सवाको तुषिल राजा पुत्र उत्सवत ९६
राज-सतकार पाया मुनि निरन्तर * राजाक प्रशंसा करि चलि गैला घर
समाजत लोक आछिलेक यतमान * महा मनरंगे चलि गैल स्थाने स्थान६९७
पाचे दशरथ संकलिया यत काज * परिपूर्ण मनोरथ भैला महाराज
नखंडे तृपिति आति देखि पुत्रमुख * जीवर सन्तोष येन पाया मोक्षसुख६९८
ईश्वर अंशर तेज महा प्रज्वलित * चन्द्रमार कला येन वाढ़े निते नित
चारि भाइर माजे ज्येष्ठ भैलन्त श्रीराम * परम उज्ज्वल तनु दुर्व्वादलश्याम६९९

रहेगे ॥ ९० ॥ अपने गुण और यश के द्वारा वे संसार को आनन्दित करेंगे। राम की महिमा का किसी को अन्त नही मिलेगा। सभी लोगों को इनसे प्रेम हो जायगा। हे महाभाग, तुमको, कितना अच्छा सुपुत्र प्राप्त हुआ है ॥ ९१ ॥ ऋषियों ने जव इस प्रकार से उनकी राशि-गणना की, तो दशरथ का मन अत्यन्त सन्तुष्ट हुआ। ईश्वर को पुत्र के रूप मे पाकर उनके मन मे वड़ा कौतूहल उत्पन्न हुआ। महावली दशरथ ने सारे मुनियों की पूजा की ॥ ९२ ॥ परमान्न और पंचामृत से उनको भोजन कराया। पुष्प, अगरु और चन्दन देकर उनको तुष्ट किया। सभी को सुन्दर वस्त्र और आभूपण पहनाये। अँजुरी भर कर रत्न और एक भार सुवर्ण भी दिया ॥ ९३ ॥ नृपति ने सभी को हाथ जोड़ कर नमस्कार किया। और सभी की वार-वार अर्चना की। हाथी घोडा रथ डोली दास दासी, सोने की वने झारी, कुल्हड़ कितने ही संख्या मे— ॥ ९४ ॥ —राजा ने पुत्र के कल्याण की मन में इच्छा कर मनमाना दान दिया। कितना दान किया यह नहीं कहा जा सकता। नट, भाट, तेली, माली, दुखी, भिखमगो को भोजन, पेय तथा दान द्वारा सन्तुप्ट किया ॥ ९५ ॥ जितने भी अधीनस्थ राजा थे उनको प्रसाद (उपहार) स्वरूप पर्याप्त वस्त्र तथा अलकार आदि दिये। देवता, पुरखो और मुनियो के सहित राजा ने पुत्र उत्सव मे सभी को सन्तुष्ट किया ॥ ९६ ॥ इस प्रकार निरन्तर राजा का सत्कार प्राप्त कर सारे मुनि राजा की प्रशसा कर अपने-अपने घर चले गये। समाज मे जितने भी लोग थे, सभी प्रसन्न-मन होकर अपने-अपने स्थान चले गये ॥ ६९७ ॥ इसके वाद राजा दशरथ सारे कार्यो का सम्पादन कर पूर्ण-मनोरथ हुए। पुत्र का मुखड़ा देखकर उनका मन भरता ही नही था, मानो मोक्षसुख प्राप्त कर जीव को सन्तोप मिल रहा हो ॥ ६९८ ॥ विष्णु के अश का तेज अति आभापूर्ण है। चन्द्रमा की कला के समान प्रतिदिन वह वढता ही जाता था। चारों भाइयो मे राम सबसे ज्येष्ठ थे। उनका शरीर नये दूव के साँवलेपन की आभा लिये हुए है ॥ ६९९ ॥ दोनो नयन मानों कमलयुक्त

पद्मगर्भ अरुण नयनयुग ज्वले * सुप्रसन्न वदन चन्द्रतो करि वले
शोभन कपोल कर्ण स्कन्ध सुवलित * शिर छत्राकृति केश नील आकुंचित ७००
धनुर समान भ्रुवयुग करे कान्ति * नासा तिलफुल मनोहर दन्तपान्ति
सुन्दर स्कन्धर कम्बुकंठ मनोनीत * भुज भुजंगम सम समान वलित ७०१
सुदीर्घ आंगुलि कर किशलय सम * नख मणि प्रकाशे देखिते मनोरम
वक्षस्थल सुन्दर देखिते मनोहर * त्रिवलि वलित नाभिपद्म सरोवर ७०२
बहल जघन कटि सिंह सप्रमाण * उरु करीकर जानु जघन सुठान
पद्मकोष जिनि ज्वले चरण युगल * चम्पक कलिका सम आंगुलि उज्ज्वल ७०३
नख मणिचय येन ज्वले चन्द्रगण * जाक देखि स्तम्भि रहे भकतर मन
आलता गुलिले येन देखि पदतल * अत्यन्त लावण्य आतिशय सुकोमल ४
रेखारूपे चरणत प्रकाशे कमल * महापुरुषर चिह्न ज्वले इसकल
सर्व्वांग सुन्दर रूप परम मधुर * देखन्ते लोकर पाप ताप हवे दूर ५
परम श्रीमन्त सन्त शीतल शरीर * सागर गंभीर धीर गुणर मन्दिर
अमृत समान वाणी मधुर आलाप * सर्व्वजनरंजन नाहिके कोप ताप ६
कैकेयीर तनय भरत शुभानय * परम सुन्दर सर्व्व गुणर आलय
सुमित्रार तनय लक्ष्मण शत्रुघन * दुयो सर्व्व सुन्दर शीतल सुशोभन ७
दुयो सुकुमार दुयोजन शुभाशय * सर्व्व गुणान्वित दुयो भाइ शुभानय
कौशल्या कैकेयी परमान वाटि दिल * दुयो भाग परमान सुमित्रा भुंजिल ८

सूर्य के समान प्रकाशित हो रहे है। प्रसन्न मुखड़ा मानो चन्द्रमा हो। गाल, कान और कन्धे सुडौल हैं। सिर पर छत्र के आकार के नीले घुंघराले वाल हैं ॥ ७०० ॥ दोनों भौंहे धनुप के समान शोभायमान हैं। नाक तिलफूल के समान है और दाँतों की पाँत मनोहर है। सुन्दर कंधों के ऊपर शंख जैसा मनमोहक कंठ है। दोनों बाँहे सर्प के समान एक ही प्रकार से पुष्ट हैं ॥ ७०१ ॥ उँगलियाँ लम्बी-लम्बी और हाथ नव-पत्र के समान है। नाखून से माणिक्य की आभा निकलती है जो कि देखने में मनोरम है। वक्षस्थल देखने में वड़ा ही सुन्दर और मनोहर हैं। त्रिवली अंकित पेट रूपी सरोवर में नाभि पद्म के समान है ॥ ७०२ ॥ पुष्ट कूल्हों के ऊपर कमर उनको सिंह सिद्ध करती है। जाँघ हाथी के सूंड़ के समान सुडौल है। दोनों चरण कमल-कोप जैसे झलकते है और चम्पे की नाईं उँगलियाँ दीप्तिमान है ॥ ७०३ ॥ नाखून की मणियाँ मानों चन्द्रमाओं की तरह प्रदीप्त है, जिनको देखकर भक्तों का मन स्तम्भित रह जाता है। पदतल देखने से लगता कि आलता से रंगे हुए हैं। उनमें वड़ी ही लुनाई है और वहुत ही कोमल है ॥ ७०४ ॥ चरणों में रेखा के रूप में कमल अंकित है। महापुरुप होने के ये सारे लक्षण शोभा पाते हैं। उनके सारे अंग सुन्दर हैं और रूप वड़ा ही मधुर है जिसको देखते ही लोगों के सारे पाप-ताप दूर हो जाते है ॥ ५ ॥ वे वड़े ही श्रीमन्त हैं, सन्त हैं और उनका शरीर शीतल है। वे समुद्र के समान धीर और गम्भीर है, गुणों के मन्दिर है। उनकी वाणी अमृत के समान मधुर है। वे सभी लोगों को आनन्द देते हैं और उनमें कोई क्रोध या संताप नही है ॥ ६ ॥ कैकेयी का वेटा भरत सच्चरित्र है, देखने में रूपवान और सभी गुणों का आलय है। सुमित्रा के दो पुत्र लक्ष्मण और शत्रुघ्न हैं। दोनों ही सर्वांग-सुन्दर, शीतल स्वभाव (ठंडे मिजाज) के और सुदर्शन है ॥ ७ ॥ दोनों ही सुकुमार है और दोनों ही सच्चरित्र हैं। कौशल्या और कैकेयी ने अपने-अपने पायस से हिस्सा दे दिया था, उन दोनों हिस्सों को सुमित्रा ने खाया था ॥ ८ ॥ उन दोनों भागों के

सेइ दुयो भागे भैल दुइ सहोदर * कौशल्यार भागे भैल लक्ष्मण कुमार
कैकेयीर भागत भैलन्त शत्रुघन * एतेको दुइको भक्ति करे दुयो जन ९
रामत भकति सदा करन्त लक्ष्मणे * भरत शत्रुघन थाकन्त मिलने
भरत लक्ष्मण शत्रुघन महासन्त * ज्येष्ठ रामत सदा भकति करन्त १०
अन्यो अन्ये चारि भाइ परम मिलन * एके विष्णु अंशे आसि भैल चारि जन
नमो नमो राम रघुकुलर तिलक * सज्जनरंजन दुष्टजन विनाशक ११
यार नामे पूरे जगतर मनकाम * पलाओक पातक डाकि बोला राम राम १२

छवि

परम पुरुष हरि लीला नरतनु धरि राम रूपे हुया अवतार ।
वाढ़ि यान्त प्रतिनित समस्तरे रंजि चित्त आचरन्त क्षत्र व्यवहार ॥
पितृ-मातृ चरणत सेवात सतते रत देव द्विज गुरुर चरणे ।
करन्त भकति नित सदाय धर्म्मत चित दंभ अहंकार नाहि मने ॥ १३
परम आचारी सन्त आतिशय नीतिमन्त पढ़िलन्त शास्त्र निरन्तर ।
अत्यन्त करुणाशील नानागुण अभ्यासिल अस्त्रे शस्त्रे भैला धनुर्द्धर ॥
दानधर्म राजधर्म कुलर यतेक कर्म्म जानिला चारिओ महाशय ।
गुरुक करिया मान साम दंड भेद दान जानिलन्त आरो यत नय ॥ १४

कारण ही दो सहोदरों ने जन्म लिया। कौशल्या के हिस्से से कुमार लक्ष्मण और कैकेयी के हिस्से से शत्रुघ्न उत्पन्न हुए। इसी कारण दोनो राम और भरत क्रमशः इन दोनो की भक्ति करने लगे ॥ ९ ॥ लक्ष्मण सदा राम की भक्ति करते और शत्रुघ्न सदा भरत के साथ जुड़े रहते थे। भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न बडे ही सच्चरित्र थे। वे सदा ज्येष्ठ राम का आदर करते थे ॥ १० ॥ चारो भाइयो का आपस में बड़ा मेल था। एक ही विष्णु ने चार अशों मे जन्म लिया था। हे रघुकुलतिलक राम, तुमको नमन है, तुम सज्जनों के हितकारी और दुर्जनो के विनाशक हो ॥ ११ ॥ जिसके नाम लेने पर ससार की सारी मनोकामनाएँ पूरी हो जाती है और पातक दूर भाग जाता है, उस राम का नाम लो ॥ ७१२ ॥

छवि

परम पुरुष ईश्वर नया शरीर धारण कर राम के रूप में लीला करने अवतीर्ण हुए। प्रतिदिन वह बढ़ते जाते और सारे लोगों का चित्त प्रसन्न करते। क्षात्र धर्म का आचरण करते। माता-पिता के चरणो में तथा देव, द्विज और गुरु के चरणों की सेवा मे सदा तत्पर रहते थे। वे सदा धर्म मे तल्लीन, नित्यप्रति भक्ति में लवलीन रहते थे, उनके मन मे दम्भ या अहंकार रचमात्र नही था ॥ १३ ॥ उनका आचरण सन्तों जैसा था, वे पूर्णरूप से नीतिज्ञ थे, उन्होंने निरन्तर शास्त्रों का अध्ययन किया। परम करुणामय ने विभिन्न गुणो का अभ्यास किया और अस्त्र-शस्त्रों की शिक्षा पाकर धनुर्धर बन गये। दानधर्म, राजधर्म, वंश के सभी करणीय कर्म आदि चारों राजकुमारो ने जान लिए। गुरु का पूर्ण सम्मान करते हुए उन्होंने साम, दाम, दड, भेद की नीति जान ली और भी न जाने क्या-क्या जान लिया ॥ १४ ॥ चारो भाइयों मे राम सभी गुणों मे अतुलनीय है, राम के समान दूसरा कोई नहीं।

चारि भाइर माजे राम सर्व्वगुणे अनुपाम नाहि आन रामर समान ।
समस्तरे अग्रगणि रघुवंश-शिरोमणि भैला राम पुरुष प्रधान ॥
अस्त्र शस्त्र शास्त्र यत चौषष्ठि कलार तत्त्व यत विद्या आछे संसारत ।
क्षेपण जोरण वाण मंत्र पढ़ि संहारण समस्तते भैलन्त पार्गत ॥ १५
राघवर यश जत प्रकाशिल जगतत जेन पूर्णचन्द्र प्रज्वलित ।
शुनन्ता लोकर माने येन अमृतर पाने अधिक सन्तोष करे चित ॥
दशरथ नरेश्वर गुण देखि राघवर मने जेन अमृत वरिषे ।
कौशल्यार मन प्राण रामते मगन भैल सुधा जेन पिये अहर्निशे ॥ १६
रामर प्रसन्न मुख देखन्ते मिलय सुख अयोध्यार यत नारी नर ।
रामकेसे करे ध्यान रामते मजिल प्राण भैल लोक अधीन रामर ॥
सर्व्व पाप विमोचन राघवर गुणगण कहे जुमाजुमि सर्व्वजने ।
निर्म्मल चरित्रचय केवल अमृतमय शुनि सबे पिये सर्व्वक्षणे ॥७१७।

दुलड़ी

रामर समान नाहि सुपुरुष इतिनि लोकर माजे ।
दुर्व्वादल श्याम सुन्दर शरीर देखिया मदनो लाजे ॥
गजेन्द्र गमन हास्य निरीक्षण समस्तरे हरे मन ।
पूर्णचन्द्र रुचि वदन देखिते स्तम्भि रहे सर्व्वजन ॥७१८

सभी लोगों में अग्रगण्य बन रघुवंशशिरोमणि राम पुरुष-प्रधान वन गये । अस्त्र-शस्त्र-सम्बन्धित सभी शास्त्रों, चौसठ कलाओं, और संसार में जितनी विद्याएँ है, सभी में वे निष्णात वन गये । वाण का डोरी पर रख कर चढ़ाना, फेंकना और मंत्र पढ़कर बाण का संहार करने (लौटालने) की कला सभी मे वे पारंगत वन गये ॥ १५ ॥ राम का पूर्ण यश संसार भर में यों फैला मानों पूर्णचन्द्र की चन्द्रिका हो । सुनकर लोगों के मन में इस प्रकार सन्तोष होता मानों वे अमृत का पान कर रहे हों । राजा दशरथ के मन में राम के गुण देखकर मानों अमृत वरसने लगा । कौशल्या का हृदय राम में इस प्रकार मग्न हो गया, मानो रात-दिन अमृत का सेवन कर रही हों ॥ १६ ॥ अयोध्या के सारे नर-नारी राम का मुख देखकर सुख पाते है । वे सदा राम ही का ध्यान करते थे, राम ही में उनका मन रम गया, और वे लोग राम के अधीन हो गये । लोगों के समूह सर्व पापों से मुक्त कर देने वाले राम का गुण गाने लगे । उनका निर्मल चरित्र केवल अमृतमय है, सभी लोग सदा श्रवणों (कानो) के द्वारा उसे पीते रहते हैं ॥ १७ ॥

दोलड़ी

इन तीनों लोकों में राम जैसा सुदर्शन पुरुष कोई नही । दूव के रंग जैसा उनका साँवला सुन्दर शरीर है जिसे देखकर मदन लज्जित हो जाता है । उनकी गज जैसी चाल और मुस्करा कर देखना सभी स्तर के लोगों का मन हर लेते है । उनका मुखड़ा सुन्दर पूर्णचन्द्र जैसा है, जिसे देखकर सभी लोग स्तम्भित रह जाते है ॥ १८ ॥ गुण से रूप, रूप से गुण को अन्योन्याश्रयी (एक दूसरे के सहारे निर्भर) वल मिलता है । रूप और गुण दोनों से लोग मुग्ध होकर कौतूहल से देखते रह जाते

गुणहन्ते रूप रूप हन्ते गुण दुयो अन्यो अन्ये वले।
रूप गुणे लोक दुयो विमोहित चाइ थाके कौतूहले ॥
येन दिनमणि प्रकाशे धरणी ढाकिल रामर गुणे।
पाप हय क्षय धर्म्मर उदय जानिया जगते शुने ॥ १९
क्षमा दाया धृति सत्य शौच नीति समस्त गुणे सम्पन्न।
धर्म्ममय मन सदाय प्रसन्न सज्जन जन रंजन ॥
दुर्ज्जनर यम विपुल विक्रम दुर्ज्जय दक्ष शरीर।
वज्रर समान सुदृढ़ सन्धान धनुर्द्धर महावीर ॥ २०
अनादि अनन्त नाहि यार अन्त यिटो देवतार देव।
ब्रह्मा आदि देवे सदाय करन्त याहार चरणे सेव ॥
तेन्ते भगवन्त देव महेश्वर भैल आसि अवतार।
समस्ते लोकर कुशल कारणे करिला गुण प्रचार ॥ २१
सकल निगमे नपावन्त अन्त वखानि यार महिमा।
आन कोन जने कहि करिवेक रामर गुणर सीमा ॥
राम हेन नाम शुनन्ते मनत अमृत येन वरिषे।
महा महाजने सदा राम राम उच्चरे मुखे हरिषे ॥ २२
राम हेन इटो नामर मधुर जानि कोन महाजने।
राम राम वुलि फुरन्त सदाय मुकुतिको हेलि मने ॥
रामर नामर माजत सदाय समस्त धर्म्मर मेला।
महा महा पापी तरे राम वुलि संसारक मारि ठेला ॥ २३
हेनय रामर महिमा कहिते शकति आछे काहार।
मूरुख माधव दासे विरचिल आदिकांड कथा सार ॥
शुना सभासद रामायण पद निन्दा नुवुलिवा मोक।
रामर चरित्र करियोक पान पद येन तेन हौक ॥ २४

है। सारी धरती जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश से भर जाती है उसी प्रकार संसार राम के गुणों से ढक गया। पाप का क्षय होने लगा और धर्म का उदय होने लगा, यह सारे संसार को विदित हो गया ॥ १९ ॥ क्षमा, दया, धैर्य, सत्यनिष्ठा और पवित्र नीतिपरायणता आदि सारे गुणों से सम्पन्न उनका मन धर्म से परिपूर्ण है और वे सदा ही प्रसन्न है। वे सज्जनों के हृदय-रंजन है। वे दुष्टों के लिए यम के समान है, उनका निशाना वज्र के समान अमोघ (अचूक) है, और वे महावीर धनुर्धर हैं ॥ २० ॥ उनका कोई अन्त नही, वे अनादि और अनन्त है, वे सारे देवताओं के देवता है। ब्रह्मा आदि सारे देवता जिनके चरणों की सदा सेवा करते रहते हैं उन्ही भगवान् देव महेश्वर (विष्णु) ने आकर अवतार धारण किया है। समस्त संसार के कुशल के हेतु गुणों का प्रचार किया है ॥ २१ ॥ सारा वेद-शास्त्र जिनकी महिमा को अन्त तक नहीं वखान सकता, उन राम के गुणों की सीमा दूसरा कौन सा व्यक्ति है जो कूत सके। राम का नाम ऐसा है जिसे सुनते ही मन में अमृत वरसने लगता है। वड़े-वडे महान् लोग हर्ष से मुंह से राम राम उच्चारते हैं ॥ २२ ॥ राम जैसा मधुर दूसरा कोई नाम किसी महान् जन को क्या मालूम? राम राम कहते हुए वे मुक्ति की भी परवाह न कर फिरते रहते है। राम नाम मे सदा सारे धर्मो का मिलन है, बड़े-बड़े पापी भी राम का नाम लेकर संसार को दूर धकेल कर तर जाते है ॥ २३ ॥ ऐसे राम की महिमा वखान सके ऐसी शक्ति किसमे है। मूर्ख माधवदास ने आदिकांड

रामर चरित्र विरचि आछन्त महा महा कवि जने।
तासम्बाक देखि पद करिवाक स्वाद भैल मोर मने ॥
प्रमत्त हस्तीक सिहे विमर्द्दय आपोनार वले रागि।
ताक देखि येन क्षुद्र मूषकर श्रद्धा होवे ताक लागि ॥ २५
सिहर् मूषर यतेक अन्तर मोरो सेहि पटन्तर।
इटो मोर दोष क्षमिवे उचित तुमि सव महन्तर ॥
अधम जनेसे जानिवा निश्चय विचारय दोष गुण।
दोष परिहरि गुणक लवन्त उत्तम यिटो निपुण ॥ २६
रामर चरित्र श्रवणेसे जाना समस्त धर्म्मेर सार।
हेला परिहरि शुना कर्णभरि तेवेसे पाइवा निस्तार ॥
रामेसे परम धर्म्म अनुपाम सर्व्वोत्तम सर्व्वसार।
रामेसे सुहृद सोदर वान्धव तेहेसे जगत उद्धार ॥ २७
निज आतमा देव प्रभु महेश्वर सर्व्वानन्द निरंजन।
जगतकारण कौशल्यानन्दन हुयाछे वधी रावण ॥
इतिनि भुवने रामर चरण विने नाहि आन गति।
महाभागवत पुराण भारत सवारो एहि जुगुति ॥ २८
वेद शास्त्र जत विचारि चाहिवा राम विने नाहि आन।
केतिक्षण जाना परय शरीर इटो येइ सेइ थान ॥
कलिर प्रभावे स्वभाव लोकर भै गैल मलिन मति।
आन धर्म्मे कर्म्मे मलिन जनर किमते साधिव गति ॥
परम मलिन जनो पावे गति सुमरिले हरिनाम।
जानिया समस्त समज्यार लोक डाकि वोला राम राम ॥ २९

का कथा-सार प्रस्तुत किया। हे सभा के सज्जनो! रामायण के पद सुनकर मेरी निन्दा मत करना। पद चाहे कैसा भी क्यों न हो, राम का चरित्र सेवन करना ॥ २४ ॥ राम के चरित्र की रचना वड़े वड़े कवि करते रहे हैं। उन्हीं सवको देखकर मेरे मन में भी पद-रचना करने की इच्छा हुई। सिंह क्रुद्ध होकर अपने वल से मदमत्त हाथी का मर्दन कर देता है। यह देखकर छोटे मूस (चूहे) को भी उसके प्रति आदर का भाव उत्पन्न हो जाता है ॥ २५ ॥ सिंह और चूहे में जितना अन्तर है वही मुझमें और उनमें है। तुम सव महान् हो, मेरे इस दोष को क्षमा कर दोगे। निश्चय रूप से यह जानकर कि अधम जन है उसका गुण और दोष विचारना। जो उत्तम और निपुण जन हों वे दोप को त्याग कर गुण को ग्रहण करें ॥ २६ ॥ राम का चरित्र कानों से सुन लेना ही सारे धर्म का सार है। उपेक्षा त्याग कर कान भर कर सुन लो, तभी निस्तार मिलेगा। राम ही सर्वोत्तम सर्वसार अनुपम परम धर्म हैं। राम ही परम सुहृद, मित्र व वन्धु हैं। उन्हीं के द्वारा संसार का उद्धार होगा ॥ २७ ॥ सर्वानन्द निरंजन, निजात्मा, देव, प्रभु, महेश्वर (विष्णु) संसार के हित में रावण-वध के लिए स्वयं कौशल्यानन्दन वन गये हैं। इन तीनों लोकों में राम के चरणों के सिवा अन्य कोई गति नही। महाभागवत, पुराण, महाभारत आदि में भी यही युक्ति वतलायी है ॥ २८ ॥ सारे वेद शास्त्रों को विचार कर देखो कि राम के विना कोई दूसरा नहीं। यह जान लो कि किसी न किसी समय शरीर का पतन होगा और वह गिरने का स्थान यही है। कलियुग के प्रभाव से लोगों का स्वभाव वड़ा ही मलिन हो गया है। अन्य धर्म-कर्म से मलिन जन है वह भी हरि का नाम

जनकर घरत सीतारूपे लक्ष्मीर जन्म

पद

जगतरे हित चिन्ति हुया चारि जन * दशरथ घरे उपजिला नारायण
जेतिक्षणे रामरूपे उपजिला हरि * त्रिजगत सुखी भैल सेहि दिन धरि७३०
मिलिल हरिष आति महन्तर मने * पद्मर प्रकाश येन सूर्य दरशने
परिल निजम यत दुर्ज्जन सकल * आदित्यर तापे येन जावे उतपल ३१
अधर्म्म विनाशि भैल धर्म्मर उदय * सूर्य्यर प्रकाश येन गुचि तमोमय
रावण वधिते हरि भैल अवतार * देखिया कौतुक वर भैल देवतार ३२
पाचे आसि ब्रह्मार आदेशे देवगण * अंशे सबे भैलन्त वानरत उतपन
परम दुर्ज्जय बले वीर्य्ये आति चार * पर्व्वतक उपारिया करन्त प्रहार ३३
ब्रह्मा आदि करिया देवता निरन्तर * कतोहो भालुक भैला वानर विस्तर
देवतो अधिक वले तेज पराक्रम * संसारतो नाहि वीर वानरक सम ३४
विपरीत लीला केने देखा ईश्वरर * देवता सबको आनि करिला वानर
विषयत आशा जार नुगुचे सर्व्वथा * सिजनर नुहि जाना कोननो अवस्था ३५
जानिया विषय सुख यत्ने दूर करि * एकान्त शरणे निते भजियोक हरि
ईश्वरर भकतिसे जीवर कुशल * आत अनन्तरे कथा शुनियो सकल ३६

स्मरण कर ले तो उसका बेडा पार लग जायगा। समाज के लोगो, यह सब जान कर राम का नाम बोलो ॥ ७२९ ॥

जनक के घर में सीता के रूप में लक्ष्मी का जन्म

पद

संसार की कल्याण-कामना करते हुए नारायण चार रूप धारण कर दशरथ के घर में उत्पन्न हुए। जिस समय से हरि राम का रूप धारण कर उत्पन्न हुए उसी दिन से तीनों लोक सुखी हो गये ॥ ३० ॥ साधु-सन्तों के मन इस प्रकार हर्षित हो गये जिस प्रकार सूर्य के दर्शन से कमल खिल उठते हैं। सारे दुष्ट इस प्रकार निस्तब्ध हो गये जिस प्रकार सूर्य के उत्ताप से कुमुद मुरझा जाते है ॥ ३१ ॥ अधर्म का विनाश कर इस प्रकार धर्म का उदय हुआ मानो अन्धकार को दूर कर सूर्य का प्रकाश फैल गया। हरि ने रावण का वध करने के लिए अवतार लिया है, यह देखकर देवताओं को बड़ा कौतूहल हुआ ॥ ३२ ॥ इसके अनन्तर ब्रह्मा के आदेश से सारे देवता वानरो में आकर उत्पन्न हो गये। शक्ति में दुर्जय और वीर्य में अति प्रबल ये पर्वतों को उखाड़-उखाड कर प्रहार करने लगे ॥ ३३ ॥ ब्रह्मा से लेकर जाने कितने ही देवता कितने ही भालू और वानर वन गये। वे तेज, पराक्रम और बल में देवताओं से अधिक हुए। उस समय संसार मे वानरों से वढ़कर अन्य कोई वीर नहीं थे ॥ ३४ ॥ ईश्वर की यह अद्भुत लीला देखो, सारे देवताओ को लाकर वानर बना दिया। जिसकी आशा विषय-सम्पदा से सम्पूर्ण रूप से अघाती नही उस व्यक्ति को किसी भी अवस्था का ज्ञान नही होता ॥ ३५ ॥ यह जानने के बाद सांसारिक सारे सुखों का यत्न से परिहार कर एकान्त शरण लेने के लिए हरि का भजन करो। ईश्वर की भक्ति से ही जीव का कल्याण है। इसके अनन्तर सारी बातें सुनना ॥ ३६ ॥ राम

रामर जन्मर कथा अमृत समान * मति अनुसारे विरचिलो किछुमान
सतीर जन्मर कथा कहो आलपरे * जिमते जन्मिला देवी जनकर- घरे ३७
दशरथ घरे उपजिला भगवन्त * परम ईश्वरी लक्ष्मी देवी देखिलन्त
आपोनार रूप आति करिया सुवेश * पर्व्वते आछन्त वसि मुक्त करि केश ३८
सेहि बेला रथे चरि फुरे लंकेश्वर * गोसानीक देखिलेक पर्व्वत उपर
त्रैलोक्यमोहन रूप देखि चमत्कार * भैल आति मोहित रावण दुराचार ३९
तारे वध चिन्ति मने आछन्त गोसानी * सिटो पापी निशाचरे ताहाक न जानि
रथत तुलिल आनि ताक वले धरि * लक्ष्मी मावे तेखने जानिला ध्यान करि ४०
कोपे शापि रावणक दिलन्त उत्तर * मोक निचिनिस तइ शुनरे वर्व्वर
जन्मिवाक जाओं तोर ववर कारणे * उपजिला हरि तोक मारिवाक मने ४१
भैल अन्तर्द्धान एहि बुलि रावणक * शुनि रावणर मने लागिल चमक
महाभये भैल आति कम्पित स्वभाव * पाचे आपोनार जन्म चिन्ति लक्ष्मी माव ४२
सागरत जाम्प देवी दिला विद्यमान * शतेक योजन तथा भैल द्वीपखान
पाचे वसुमती गैया लक्ष्मीक सादरि * तथाते रहिला तांक उदरत धरि ४३
रहिलन्त लक्ष्मी पृथिवीर उदरत * करन्त प्रकाश रक्तपिंड येनमत
ताहार निकटे आछे मिथिला नगर * आछे सेहि नगरे जनक नरेश्वर ४४
महातपशील राजा राजऋषिवर * पुत्रवते पाले प्रजा धर्म्मत तत्पर
यज्ञ करिवाक मने जनक नृपति * करिला जिज्ञासा पाचे स्थान महामति ४५

के जन्म की कथा अमृत के समान है। अपनी ज्ञान-बुद्धि के अनुसार जो कुछ भी वन पड़ा वह कथा गाई। इसके अनन्तर सती (लक्ष्मी देवी) के जन्म की कथा कहता हूँ कि किस प्रकार से देवी ने ज़नक के घर मे जन्म लिया ॥ ३७ ॥ दशरथ के घर में भगवन्त ने जन्म लिया यह परम ईश्वरी लक्ष्मीदेवी ने देखा। अपने रूप को अति सुन्दर वना कर वाल खोलकर देवी पर्वत पर वैठीं ॥ ३८ ॥ उसी समय रथ पर लंकेश्वर उस ओर से जा रहा था—देवी को उसने पर्वत के ऊपर देखा। अति चमत्कारी त्रैलोक्यमोहन रूप देखकर दुराचारी रावण वड़ा मुग्ध हो गया ॥ ३९ ॥ देवी मन ही मन उसका वध करने का विचार किये हुई हैं लेकिन वह पापी निशाचर इस वात को नहीं जानता है। उनको वलप्रयोग द्वारा उसने रथ पर उठा लिया। लक्ष्मी माता ने तभी मनन के द्वारा जान लिया ॥ ४० ॥ कुपित होकर शाप देती हुई उन्होंने रावण को उत्तर दिया—अरे वर्बर! तू मुझको पहचानता नहीं। तेरे वध के हेतु मैं जन्म लेने जा रही हूँ। तुझे मारने का निश्चय कर हरि ने जन्म ले लिया है ॥ ४१ ॥ रावण से इतना कहकर देवी दृष्टि से ओझल हो गई, तो रावण मन ही मन चौंका। महाभय से वह काँपने लगा। इसके अनन्तर लक्ष्मीमाता के जन्म के सम्वन्ध में वर्णन करते हैं ॥ ४२ ॥ देवी ने सागर में छलांग मार ली। उस स्थान पर सौ योजन का एक टापू वन गया। इसके अनन्तर वसुमती (धरती) ने जाकर लक्ष्मी को आदर से अपने उदर में रख लिया ॥ ४३ ॥ लक्ष्मी धरती माता के पेट में रह गईं। वह यों आभासित होने लगीं मानों रक्त का पिंड हों। वहीं निकट मिथिला नगर था जिसमें नरेश्वर जनक रहते थे ॥ ४४ ॥ वह राजा महा-तपस्वी और राजर्षि थे। वे अपनी प्रजा को पुत्रवत् पालते थे। राजा जनक को यज्ञ करने की इच्छा हुई तो उन्होंने स्थान के वारे में पूछा ॥ ४५ ॥ भूमि को वारह साल तक खेती के लिए जोतना पड़ता है तभी वह स्थान यज्ञ के लिए पवित्र वनता

चाषिवाक लागे भूमि द्वादश बत्सर * तेवेते पवित्र स्थान होवय यज्ञर
गर्भवती हुआ मही आछय यथात * अनेक लांगल निया जुरिल तथात ४६
उठिलेक डिम्बगोट बाजिया लांगले * रक्तमय डिम्ब सूर्य्यगोट येन ज्वले
हालोवा सकले पाचे जुगुति करिया * जनकर आगे डिम्बगोट दिल निया ४७
परम सुन्दर डिमा देखि महामानी * भांगि चाहे भितरत आछे कन्याखानि
उपजिया कान्दे आति आर्त्तराव करि * भुवनदुर्ल्लभ कन्या परम सुन्दरी ४८
जनक नृपति मने हरषित भैला * महा सुलक्षणा कन्या कोले तुलि लैला
अन्तःपुरे गैला राजा हुया रंगमन * देखिला कन्याक पाचे महादइगण ४९
स्वामीक चाहिया पाचे हासिया बुलिला * काहार कन्याक प्रभु काढ़िया आनिला
इटो सुलक्षणी कन्या वर रूपवती * आति अदभुत लक्ष्मी जेन मूर्त्तिमती ५०
राजा बोले यज्ञभूमे पालो कन्याखानि * मुख्य महादेक दिया बुलिलन्त वाणी
तोमाके दिलोहो तुलिवाहा करि जतन * भैलन्त हरिष देवी पाया कन्यारत्न ५१
परम दरिद्रे जेन पाइला नवनिधि * कराइलन्त संस्कार जेन वेदविधि
नाम थैबे बिचार करिला मुनि यत * उपजिला कन्या लांगलर सीरलत ५२
एतेकेसे तान सबे सीता नाम थैला * एहिमते सीता गोसानीर जन्म भैला
जनक नृपति आति तुलिला यतने * ताहान दुहिता सीता बोले सर्व्वजने ५३
सीता नाम धरि लक्ष्मी जगत जननी * येन चन्द्रकला वाढ़ि जान्त सुवदनी
एकचित्त मने सदा विष्णुक धियान्त * हरिक निचिन्ति सती एकोके नखान्त ५४

है। जहाँ धरती-माता गर्भवती वनी पड़ी थी वहीं वहुत से हल लेकर लोग जुट गये ॥ ४६ ॥ हल से टकराकर एक अडा सा निकला। लहू के रंग का वह अंडा यों प्रकाशमान हो उठा मानो सूर्य हो। जितने हलवाहे थे उन्होंने आपस मे सलाह कर अडा लाकर जनक के सम्मुख रख दिया ॥ ४७ ॥ महामान्यवर ने सुन्दर अंडा देखकर उसको तोड़ा तो देखा भीतर एक कन्या है। उत्पन्न होने के साथ ही साथ वह जोर से चिल्ला कर रोने लगी। यह कन्या संसार में दुर्लभा परमासुन्दरी है ॥ ४८ ॥ राजा जनक मन ही मन बड़े हर्षमग्न हुए। सुलक्षणा कन्या को उन्होंने गोद में उठा लिया। राजा आनन्दमग्न होकर रनिवास मे गये। इसके अनन्तर महादेवियों ने कन्या को देखा ॥ ४९ ॥ पति की ओर देख हँसकर उन्होंने कहा, हे प्रभु, यह किसकी कन्या तुम छीन कर ले आए। यह तो वड़े अच्छे लक्षणों से युक्त रूपवती कन्या है, मानो मूर्त्तिमती लक्ष्मी हो ॥ ५० ॥ मुख्य पटरानी को देकर राजा ने कहा, यज्ञभूमि मे इस कन्या का पालन-पोपण करो। तुमको दे रहा हूँ कि तुम जतन से इसको पाल-पोस कर वड़ा करो। कन्यारत्न पाकर देवी हर्पमग्न हो गई ॥ ५१ ॥ घोर दरिद्र को मानो नौ निधियाँ मिल गईं। वेदोक्त रीति के अनुसार सारा संस्कार मनाया गया। मुनियों ने निश्चय किया कि कन्या का नामकरण किया जाय। इस कन्या ने हल की नोक के सिरे पर जन्म लिया है ॥ ५२ ॥ इस कारण उन सवों ने उसका सीता नाम रखा। इस प्रकार से सीता देवी का जन्म हुआ। राजा जनक ने उसे यत्न से उठा लिया। सीता उनकी वेटी है यही सव लोग कहने लगे ॥ ५३ ॥ जगज्जननी लक्ष्मी सीता का नाम धारण कर चन्द्रमा की कला के समान उत्तम मुखड़े वाली (कन्या) के रूप मे दिन प्रति दिन वढ़ने लगी। एकचित्त होकर वह सदा विष्णु का ध्यान किया करती। विना हरि का स्मरण किये वह एकवार भी खाना नही खाती ॥ ५४ ॥ सव लोगों ने जव देखा कि कन्या परम वैष्णवी है तो मन ही मन

परम वैष्णवी कन्या देखि सर्व्वजने * जन्मिल लक्ष्मीर अंश जानिलेक मने
सीतार चरित्र यत एतिक्षणे थओं * सम्प्रतिके प्रभु राघवर कथा कओं७५५

गुह चंडालर वृत्तान्त

पुष्या नक्षत्रत दशरथ महाबीर * चारि पुत्र समे गैला भागीरथी तीर
स्नान दान तर्पण करिया नृपवर * देवऋषि पितृक तर्पिल निरन्तर७५६
शुनियोक आतपरे अद्भुत कथन * सैन्ये समे भैला तैत जेन महारण
परम दर्पिष्ठ हृष्ट पुष्ट कलेवर * सेहि समयते मिलिलेक आथान्तर ५७
पूर्ब्बत ब्राह्मण आसि अधर्म्म करिल * सेहि पापे चंडाल योनित उपजिल
गुह नामे भैल सिटो राजा चंडालर * सेहि समयत लैया सेना निरन्तर ५८
दशरथ नृपतिक नगणि मनत * चंडाले करिल स्नान गंगार जलत
दशरथ देखे अहम्मम चंडालर * धरि आनिबाक आज्ञा दिला नृपवर ५९
शुनि गुह नृपतिर क्रोध वर भैल * अनेक चंडाल समे जुजिबाक लैल
दशरथ नृपतिर कटक अपार * दुयो सेना अन्यो अन्ये करे धर-मार ६०
लागिल समर भागीरथी तीर जुरि * उभय कटके लगाइलेक हुराहुरि
अनेक कटके वेढ़ि करे हुलस्थूल * परम दुर्घोर रण मिलिल तुमुल ६१
मारय खांडार कोब वारुक जंकारि * बारु समे शाले केहो जने शर मारि
खरतर अस्त्र धरि दोहाते प्रहारे * लवरन्ते गैया कतो हाते खोंचा मारे ६२

उन्होंने जान लिया कि लक्ष्मी के अंश ने जन्म लिया है। सीता की कथा अबतक यहीं पर रहे, अब प्रभु राम की कथा कहता हूँ ॥ ५५ ॥

गुह चंडाल की कथा

महावीर दशरथ अपने चारों पुत्रों के साथ पुण्य नक्षत्र में भागीरथी गंगा के किनारे गये। नृपवर ने स्नान दान तर्पण कर देवता ऋषि और पितरों का तर्पण किया ॥ ५६ ॥ इसके बाद अद्भुत कथा सुनो। सैन्यो के साथ वहाँ बड़ा युद्ध हुआ। परम दर्पित, तगड़ा बलवान शरीर वाला गुह उसी समय अचानक आ धमका ॥ ५७ ॥ पहले ब्राह्मण था किन्तु अधर्म करने के कारण उसने चंडाल योनि में जन्म लिया। वह गुह नाम से चंडालों का राजा बना। उसी समय वह अपनी सेना लेकर वहाँ पहुँचा ॥ ५८ ॥ राजा दशरथ की कोई परवाह न कर गंगा के जल में चंडाल ने स्नान किया। राजा दशरथ ने चंडाल का अहंकार देखा तो उन्होंने उसको पकड़ लाने का आदेश दिया ॥ ५९ ॥ सुनकर राजा गुह को बड़ा क्रोध आया। अनेक चंडालों के साथ वह युद्ध करने को तैयार हो गया। राजा दशरथ की सेना भी असंख्य थी। दोनों सेनाएँ एक दूसरे को मारने-गिराने लगी ॥ ६० ॥ गंगा के तट पर युद्ध शुरू हो गया। दोनों सेनाएँ एक दूसरे से गुँथ गयी। सारे सैनिक मिलकर हल्ला-गुल्ला मचाने लगे। भीषण युद्ध प्रबल रूप से शुरू हो गया ॥ ६१ ॥ प्रमत्त होकर कोई किसी पर खड्ग से प्रहार कर रहा है तो कोई लकड़ी के बने बरछे से तो कोई बाण से मार रहा है। भीषण अस्त्र लेकर दोनों एक दूसरे को मारते। लड़ने को जाकर कोई तो हाथों से ही कोंच देता ॥ ६२ ॥ मदमत्त चंडालों का कलरव उठा। ढाल आदि लेकर वे जूझने के लिए आगे बढ़े।

मदमत्त चंडालर उथलिल रोल * आगुवान हुया युजे लैया ढाल खोल
चारिभिते शवद उठिल भयंकर * परम चंचल चित्त भैल चंडालर ६३
मद्य लागि आछय चेतन नाहि गावे * हातत चौवरी धरि हुलाहुलि धावे
भैल आउल जाउल बाउल जेन खेदि आसे * अरे तइ कोन बुलि फुरे चारि पाशे ६४
नाहि अस्त्र शस्त्र कतो प्रहारय दलि * दशरथे देखिया हासन्त खलखलि
आपोनार कटकक दिलन्त निशान * गुह नृपतिक जीवन्तते धरि आन ६५
शुनि नृपतिर आति कटक प्रखर * युजिवार सन्धि आति जानय विस्तर
चारिभिति बेढ़िया अनेक सेनागणे * गुह चंडालक वन्दी करिला तेखने ६६
पाचे पात्रे निया नृपतिर आगे दिल * रामक देखिया पूर्व्ववृत्तान्त स्मरिल
रामर चरणे गैया करि नमस्कार * रामत कहन्त गुहे कथा आपोनार ६७
शुनियोक राम कहो तजु चरणत * आछिल ब्राह्मण मइ पूर्व्व जनमत
जि दोषे चंडाल भैलो शुना स्वरुपत * भगीरथ महाराजा तोमार वंशत ६८
ब्रह्माक आराधि राजा महाधर्म्मशील * ब्रह्मलोक हन्ते गंगा नमाया आनिल
विष्णुपदरज मिश्र तुलसी सहित * भैल सर्व्वोत्तम गंगा जगते विदित ६९
नाहि त्रिभुवने तीर्थ गंगार समान * यत महाजन सबे करिलन्त स्नान
ब्राह्मण बुलिया गर्व्व करिलो मनत * गंगा आदि तीर्थ आछे मोर शरीरत ७०
नकरिलो स्नान मइ गंगार जलत * शपिलन्त गंगा क्रोध करिया मनत
मोक स्नान नकरिलि ब्राह्मण गर्व्वत * एहि पापे तोर जन्म हैव चंडालत ७१
गुह नामे हैवि तइ राजा चंडालर * एहि बुलि पाचे सीमा दिलन्त शापर
थाकय तोहोर मन येवे मोक प्रति * जन्मे जन्मे मोत तेवे करिवि भकति ७२

चारों ओर भयंकर शव्द होने लगा। चंडालो का चित्त वड़ा चंचल हो उठा ॥ ६३ ॥ मदिरा पीने के कारण उनके शरीर मे कोई चेतना नही थी। वे हाथ में छड़ी थामे इधर-उधर दौड़ने लगे। वे वावले से होकर दौड़-दौड़ कर आने लगे और "तू कौन है" कहकर इर्दगिर्द मँडराने लगे ॥ ६४ ॥ उनके पास कोई अस्त्र-शस्त्र नही, इस पर भी वह पटक-पटक के मार रहे है। दशरथ को देखकर खिलखिलाकर हँस रहे है। अपनी सेना को उन्होने सकेत किया कि राजा गुह को जिन्दा पकड़ कर ले आओ ॥ ६५ ॥ सुनकर दशरथ की प्रवल सेना ने, जिसको युद्ध के सारे कौशल ज्ञात है, चारों ओर से घेर कर गुह चडाल को वन्दी कर लिया ॥ ६६ ॥ इसके पश्चात् सभासदो ने उसको लाकर दशरथ के सामने पेश किया। राम को देखते ही (गुह को) पुरानी वातें याद आ गई। उसने जाकर राम के चरणों में प्रणाम किया और राम से अपनी वात कहने लगा ॥ ६७ ॥ सुनो राम, तुम्हारे चरणों मे निवेदन करता हूँ, मै पूर्व जन्म में ब्राह्मण था। किस दोप के कारण मैं चंडाल वना वह स्वयं सुनो। तुम्हारे वश मे एक राजा भगीरथ थे ॥ ६८ ॥ वह महाधर्मशील राजा थे, ब्रह्मा की आराधना कर वे ब्रह्मलोक से गंगा को उतार लाए। विष्णु के पैरों की धूल से युक्त और तुलसी के साथ सर्वोत्तम गगा ससार मे प्रकट और सर्वत्न प्रसिद्ध हो गई ॥ ६९ ॥ गंगा के समान त्रिभुवन मे दूसरा कोई तीर्थ नही। सारे महान् पुरुपों ने इसमें स्नान किया। मैने मन ही मन गर्व किया कि मैं ब्राह्मण हूँ और गंगा आदि सारे तीर्थ मेरे शरीर मे है ॥ ७० ॥ मैने गंगा के जल मे स्नान नही किया। इस पर गंगा ने क्रोधित होकर मुझको शाप दिया। ऐ ब्राह्मण तूने अपने गर्व में मुझमे स्नान नही किया। इसी शाप से तेरा जन्म चडालो मे होगा ॥ ७१ ॥ तू गुह नाम लेकर चडालो का राजा वनेगा। इतना कहने के वाद शाप के खडन का उपाय भी वताया।

एकशत जन्म मोत भक्ति करा जेवे * इटो पातकर विप्र मुक्त हैबि तेवे
जेवे दरशन तइ पास श्रीरामक * एके जन्मे तोर तेवे खंडिव पातक ७३
एहि सीमा थैया गंगा दिला मोक शाप * उपजिलो चंडाल योनित मइ पाप
भैला नारायण रघुबंशे अवतार * तयु दरशने पाप गुचिल आमार ७४
तोमार चरणे आवे लैलोहो शरण * तुमि विने मोर गति नाहि आन जन
सदा सेवा करि मइ थाकिवो तोमात * तोमार पितृत मागि लैयोक आमाक ७५
शुनि राघवर महा करुणा मिलिल * अनेक विनय करि पितृक बुलिल
शुनियोक पितृ कृपा करियोक मोक * गुह नृपतिक मेलि मोहोक दियोक ७६
जगतर पति राम देवर वचन * शुनि दशरथर सन्तुष्ट भैल मन
स्वभावे रामत दाया राजार बिस्तर * मेलिया गुहक तांक दिला नृपबर ७७
पाइलन्त गुहक रामे पितृत मागिया * करिला आश्वास वस्त्र अलंकार दिया
अनेक शासन रामे दिला ग्राम देश * निर्भय वचने तांक बुलिला अशेष ७८
आजि धरि गुह तुमि भैला मोर मिता * थाकियोक सुखे किछु नकरिवा चिन्ता
हेन शुनि गुह चंडालेर अधिपति * रामक बुलिल करि अनेक भकति ७९
कैर मइ हीन जाति चंडाल अधम * तुमि त्रिजगत् गुरु ईश्वर परम
ब्रह्मा हरे न जानन्त जाहार महिमा * चारि बेदे कहि यार नपारन्त सीमा ८०
अधमो उद्धरे जार नाम लैले मात्र * मइ केने तोमार मित्रर भैलो पात्र
कमने तर्किवे प्रभु तोमार लीलाक * करा अनुग्रह केने केतिक्षणे काक ८१

तेरा मन जब मेरे प्रति होगा, जन्म-जन्म तू मेरी भक्ति करेगा ॥ ७२ ॥ जब एक सौ जन्म तू मुझसे भक्ति करता रहेगा हे ब्राह्मण, तव तू इस पातक से मुक्त होगा। (किन्तु) जब तू श्रीराम का दर्शन पा लेगा तव एक ही जन्म में तेरा पाप खंडित हो जायगा ॥ ७३ ॥ यह प्रतिकार रखकर गंगा ने मुझे शाप दिया। तो मैने अपने पाप-कर्मो के कारण चंडाल योनि मे जन्म लिया। हे नारायण, तुमने रघुवंश मे अवतार लिया है। अब तुम्हारे दर्शन से मेरा पाप दूर हो गया ॥ ७४ ॥ तुम्हारे चरणों मे अब शरण ले ली। तुम्हारे सिवा अब मेरी अन्य कोई गति नही। सदा तुम्हारी सेवा करते हुए तुम्हारे पास रहूँ। अपने पिता से मुझे माँग लो ॥ ७५ ॥ यह सुनकर राघव को वड़ी करुणा आई। वड़े विनय से उन्होने अपने पिता से कहा, सुनो पिता, मुझ पर कृपा करो और गुह नृपति को मुझे दे दो ॥ ७६ ॥ जगत् के पति देवता: राम के वचन सुनकर दशरथ का मन प्रसन्न हुआ। स्वाभाविक रूप से राजा की राम पर वड़ी दया है। नृपवर ने उसे खुलासा गुहक को दान कर दिया ॥ ७७ ॥ पिता से माँगने पर राम को गुहक मिल गया। उन्होने उसको वस्त्र-आभूपण देकर आश्वस्त किया। तथा अपने अधीन रख उसे कई गाँव दे दिये। फिर उसे भयशून्य वाक्यों से सम्वोधित किया ॥ ७८ ॥ हे गुह! आज से तुम मेरे मित्र बन गये। तुम सुख से रहो और कोई चिन्ता मत करो। ऐसा सुनकर चंडालों के अधिपति गुह ने अति भक्तिपूर्वक राम से कहा ॥ ७९ ॥ कहाँ तो मै नीच जाति का अधम चंडाल हूँ और कहाँ तुम तीनों लोकों के गुरु परमेश्वर हो। ब्रह्मा और हरि भी जिनकी महिमा नही जानते और चारों वेद भी जिसके वारे में वता कर अन्त नही पाते ॥ ८० ॥ जिनका केवल नाम लेते ही अधम का उद्धार हो जाता है ऐसे तुम जैसे मित्र के योग्य मैं कैसे वन गया। तुम्हारी लीला के वारे में कौन विचार कर सकता है। तुम किस समय, किसलिए, किस पर अनुग्रह करते हो यह कोई क्या जाने ॥ ८१ ॥ तुममे जात-पाँत का भेदभाव नही है। तुम्हारे चरणों में शरण

मदमत्त चंडालर उथलिल रोल * आगुवान हुया युजे लैया ढाल खोल
चारिभिते शवद उठिल भयंकर * परम चंचल चित्त भैल चंडालर ६३
मद्य लागि आछय चेतन नाहि गावे * हातत चौवरी धरि हुलाहुलि धावे
भैल आउल जाउल वाउल जेन खेदि आसे * अरे तइ कोन बुलि फुरे चारि पाशे ६४
नाहि अस्त्र शस्त्र कतो प्रहारय दलि * दशरथे देखिया हासन्त खलखलि
आपोनार कटकक दिलन्त निशान * गुह नृपतिक जीवन्तते धरि आन ६५
शुनि नृपतिर आति कटक प्रखर * युजिवार सन्धि आति जानय विस्तर
चारिभिति वेढ़िया अनेक सेनागणे * गुह चंडालक वन्दी करिला तेखने ६६
पाचे पात्रे निया नृपतिर आगे दिल * रामक देखिया पूर्व्ववृत्तान्त स्मरिल
रामर चरणे गैया करि नमस्कार * रामत कहन्त गुहे कथा आपोनार ६७
शुनियोक राम कहो तजु चरणत * आछिल ब्राह्मण मइ पूर्व्व जनमत
जि दोषे चंडाल भैलो शुना स्वरुपत * भगीरथ महाराजा तोमार वंशत ६८
ब्रह्माक आराधि राजा महाधर्म्मशील * ब्रह्मलोक हन्ते गंगा नमाया आनिल
बिष्णुपदरज मिश्र तुलसी सहित * भैल सर्व्वोत्तम गंगा जगते विदित ६९
नाहि त्रिभुवने तीर्थ गंगार समान * यत महाजन सबे करिलन्त स्नान
ब्राह्मण बुलिया गर्व्व करिलो मनत * गंगा आदि तीर्थ आछे मोर शरीरत ७०
नकरिलो स्नान मइ गंगार जलत * शपिलन्त गंगा क्रोध करिया मनत
मोक स्नान नकरिलि ब्राह्मण गर्व्वत * एहि पापे तोर जन्म हैव चंडालत ७१
गुह नामे हैवि तइ राजा चडालर * एहि बुलि पाचे सीमा दिलन्त शापर
थाकय तोहोर मन येवे मोक प्रति * जन्मे जन्मे मोत तेवे करिबि भकति ७२

चारो ओर भयंकर शब्द होने लगा। चडालो का चित्त वड़ा चचल हो उठा ॥ ६३ ॥ मदिरा पीने के कारण उनके शरीर मे कोई चेतना नही थी। वे हाथ मे छड़ी थामे इधर-उधर दौडने लगे। वे वावले से होकर दौड़-दौड़ कर आने लगे और "तू कौन है" कहकर इर्दगिर्द मॅडराने लगे ॥ ६४ ॥ उनके पास कोई अस्त्र-शस्त्र नहीं, इस पर भी वह पटक-पटक के मार रहे है। दशरथ को देखकर खिलखिलाकर हँस रहे है। अपनी सेना को उन्होंने सकेत किया कि राजा गुह को जिन्दा पकड़ कर ले आओ ॥ ६५ ॥ सुनकर दशरथ की प्रवल सेना ने, जिसको युद्ध के सारे कौशल ज्ञात है, चारों ओर से घेर कर गुह चंडाल को वन्दी कर लिया ॥ ६६ ॥ इसके पश्चात् सभासदो ने उसको लाकर दशरथ के सामने पेश किया। राम को देखते ही (गुह को) पुरानी वाते याद आ गई। उसने जाकर राम के चरणो मे प्रणाम किया और राम से अपनी बात कहने लगा ॥ ६७ ॥ सुनो राम, तुम्हारे चरणो मे निवेदन करता हूँ, मैं पूर्व जन्म मे ब्राह्मण था। किस दोप के कारण मै चंडाल वना वह स्वयं सुनो। तुम्हारे वश मे एक राजा भगीरथ थे ॥ ६८ ॥ वह महाधर्मशील राजा थे, ब्रह्मा की आराधना कर वे ब्रह्मलोक से गगा को उतार लाए। विष्णु के पैरों की धूल से युक्त और तुलसी के साथ सर्वोत्तम गंगा संसार में प्रकट और सर्वत्र प्रसिद्ध हो गई ॥ ६९ ॥ गंगा के समान त्रिभुवन मे दूसरा कोई तीर्थ नही। सारे महान् पुरुषों ने इसमें स्नान किया। मैने मन ही मन गर्व किया कि मै ब्राह्मण हूँ और गगा आदि सारे तीर्थ मेरे शरीर मे है ॥ ७० ॥ मैने गगा के जल मे स्नान नही किया। इस पर गगा ने क्रोधित होकर मुझको शाप दिया। ऐ ब्राह्मण तूने अपने गर्व मे मुझमे स्नान नही किया। इसी शाप से तेरा जन्म चडालो मे होगा ॥ ७१ ॥ तू गुह नाम लेकर चंडालो का राजा वनेगा। इतना कहने के बाद शाप के खडन का उपाय भी बताया।

एकशत जन्म मोत भक्ति करा जेवे * इटो पातकर विप्र मुक्त हैबि तेवे
जेवे दरशन तइ पास श्रीरामक * एके जन्मे तोर तेवे खंडिब पातक ७३
एहि सीमा थैया गंगा दिला मोक शाप * उपजिलो चंडाल योनित मइ पाप
भैला नारायण रघुबंशे अवतार * तयु दरशने पाप गुचिल आमार ७४
तोमार चरणे आवे लैलोहो शरण * तुमि विने मोर गति नाहि आन जन
सदा सेवा करि मइ थाकिवो तोमात * तोमार पितृत मागि लैयोक आमाक ७५
शुनि राघवर महा करुणा मिलिल * अनेक विनय करि पितृक बुलिल
शुनियोक पितृ कृपा करियोक मोक * गुह नृपतिक मेलि मोहोक दियोक ७६
जगतर पति राम देवर वचन * शुनि दशरथर सन्तुष्ट भैल मन
स्वभावे रामत दाया राजार विस्तर * मेलिया गुहक तांक दिला नृपवर ७७
पाइलन्त गुहक रामे पितृत मागिया * करिला आश्वास वस्त्र अलंकार दिया
अनेक शासन रामे दिला ग्राम देश * निर्भय वचने तांक बुलिला अशेष ७८
आजि घरि गुह तुमि भैला मोर मिता * थाकियोक सुखे किछु नकरिबा चिन्ता
हेन शुनि गुह चंडालेर अधिपति * रामक बुलिल करि अनेक भकति ७९
कॅर मइ हीन जाति चंडाल अधम * तुमि त्रिजगत् गुरु ईश्वर परम
ब्रह्मा हरे न जानन्त जाहार महिमा * चारि ब्रेदे कहि यार नपारन्त सीमा ८०
अधमो उद्धरे जार नाम लैले मात्र * मइ केने तोमार मित्रर भैलो पात्र
कमने तर्किवे प्रभु तोमार लीलाक * करा अनुग्रह केने केतिक्षणे काक ८१

तेरा मन जब मेरे प्रति होगा, जन्म-जन्म तू मेरी भक्ति करेगा ।। ७२ ।। जब एक सौ जन्म तू मुझसे भक्ति करता रहेगा हे ब्राह्मण, तब तू इस पातक से मुक्त होगा। (किन्तु) जब तू श्रीराम का दर्शन पा लेगा तब एक ही जन्म में तेरा पाप खंडित हो जायगा ।। ७३ ।। यह प्रतिकार रखकर गंगा ने मुझे शाप दिया। तो मैने अपने पाप-कर्मों के कारण चंडाल योनि में जन्म लिया। हे नारायण, तुमने रघुवंश में अवतार लिया है। अब तुम्हारे दर्शन से मेरा पाप दूर हो गया ।। ७४ ।। तुम्हारे चरणों में अब शरण ले ली। तुम्हारे सिवा अब मेरी अन्य कोई गति नही। सदा तुम्हारी सेवा करते हुए तुम्हारे पास रहूँ। अपने पिता से मुझे माँग लो ।। ७५ ।। यह सुनकर राघव को बड़ी करुणा आई। बड़े विनय से उन्होंने अपने पिता से कहा, सुनो पिता, मुझ पर कृपा करो और गुह नृपति को मुझे दे दो ।। ७६ ।। जगत् के पति देवता राम के वचन सुनकर दशरथ का मन प्रसन्न हुआ। स्वाभाविक-रूप से राजा की राम पर बड़ी दया है। नृपवर ने उसे खुलासा गुहक को दान कर दिया ।। ७७ ।। पिता से माँगने पर राम को गुहक मिल गया। उन्होंने उसको वस्त्र-आभूषण देकर आश्वस्त किया। तथा अपने अधीन रख उसे कई गाँव दे दिये। फिर उसे भयशून्य वाक्यों से सम्बोधित किया ।। ७८ ।। हे गुह! आज से तुम मेरे मित्र बन गये। तुम सुख से रहो और कोई चिन्ता मत करो। ऐसा सुनकर चंडालों के अधिपति गुह ने अति भक्तिपूर्वक राम से कहा ।। ७९ ।। कहाँ तो मै नीच जाति का अधम चंडाल हूँ और कहाँ तुम तीनों लोको के गुरु परमेश्वर हो। ब्रह्मा और हरि भी जिनकी महिमा नही जानते और चारों वेद भी जिसके बारे में बता कर अन्त नही पाते ।। ८० ।। जिनका केवल नाम लेते ही अधम का उद्धार हो जाता है ऐसे तुम जैसे मित्र के योग्य मैं कैसे बन गया। तुम्हारी लीला के बारे में कौन विचार कर सकता है। तुम किस समय, किसलिए, किस पर अनुग्रह करते हो यह कोई क्या जाने ।। ८१ ।। तुममें जात-पाँत का भेदभाव नही है। तुम्हारे चरणों में शरण

नाहिके तोमात जाति आचार विचार * तयुपदे शरण करोक मात्र सार
एतेके तोमार तात करुणा मिलय * येइ सेइमते येन अमृत पिवय ८२
एतेके अजरामर होवे सिटो जन * लैलो आजि मात्र मइ तोमात शरण
एतेकते मोक मित्र बुलिया धरिला * एहिटो अतर्क तयु विपरीत लीला ८३
आनो नाना स्तुति नति करिला भकति * पाचे तांक विदाय दिलन्त रघुपति
रामत मेलानि पाया करि योरहात * दंडवते परि आति करि प्रणिपात ८४
माथात माखिल चरणर धूलि आनि * पुनरपि कृतांजलि बुलिलन्त वाणी
तोमार चरणे रति नुगुचोक मोर * याक दरशने पाप एराइलो दुर्घोरि ८५
धरिवाहा आमाक दासर बुलि दास * जन्मे जन्मे एहि चरणत हौक आश
एहि बुलि कतो दूर गैला पाचभरि * पुनरपि प्रणामिला दंडवते परि ८६
राम पादपद्म दुइ मने धरि रैल * सैन्यसमे गुह निजस्थाने चलि गैल
अनन्तरे दशरथ नृपति प्रधान * पात्र पुत्र ससैन्ये करिया गंगास्नान ८७
चलिबाक चान्ते दिनकर अस्त गैल * देखि भरद्वाजर आश्रम गैया पाइल
चारि पुत्र समन्विते राजा शुद्धमने * करिलन्त नमस्कार ऋषिर चरणे ८८
भरद्वाजे वेदमंत्र करिया सम्वाद * पुत्रे समे राजाक करिला आशीर्व्वाद
नानाविध द्रव्य मुनिराज कौतूहले * अतिथिर व्यवहार करिला सकले ८९
रामक देखिया मुनि भैला रंगमन * कोले लैया ऋषिराज करिला शयन
निद्रा गैल रामचन्द्र ऋषिर लगत * इन्द्रे समे आसिलन्त देवगण यत ९०
रामक करिला अभिषेक पुरन्दर * मंत्र समे दिला सवे दिव्य धनुशर
पाचे इन्द्रे दिलन्त रामक समिधान * एहि धनुशरे शत्रु करिवा निर्व्वाण ९१

लेना सभी धर्मो का एकमात्र सार है। इसी कारण तुम्हारे पास करुणा मिलती है। जो भी आता है वह इस अमृत का पान करता है ॥ ८२ ॥ वह व्यक्ति तो इससे अजर-अमर हो जायगा। मैने केवल आज ही तुम्हारी शरण ली। इतने में ही तुमने मुझे अपना मित्र कहकर अपना लिया। तुम्हारी यह विपरीत लीला बड़ी अटपटी है ॥ ८३ ॥ इस प्रकार उसने और भी कितने ही भक्तिपूर्ण नमन और स्तुति की। इसके पश्चात् रघुपति ने उसे विदा दी। राम से विदा पाकर उसने हाथ जोडा और दंडवत् लेट कर उनको प्रणाम किया ॥ ८४ ॥ चरण की धूलि लेकर सिर से लगा ली। फिर हाथ जोड़ कर बोला, तुम्हारे उन चरणो मे प्रेम कभी समाप्त न हो जिनके दर्शन से मेरा घोर पाप दूर हो गया ॥ ८५ ॥ मुझको अपने दास का दास समझना। जनम-जनम इन्ही चरणों की आशा वनी रहे। यह कहकर कितनी ही दूर तक पीछे की ओर (विना मुँह किये) चलता रहा, फिर दंडवत् लेटकर प्रणाम करने लगा ॥ ८६ ॥ मन में राम के चरण-कमलों को स्मरण करता हुआ गुह अपनी सेना के साथ अपने स्थान को चला गया। इसके वाद दशरथ ने पात्र-मित्र-पुत्र और सेना के साथ गंगा में स्नान किया ॥ ८७ ॥ जव वे चलने को उद्यत हुए तो सूर्य अस्त हो गया। यह देखकर वे भरद्वाज के आश्रम में गये। चारों पुत्रों के साथ राजा ने शुद्धमन से ऋषि के चरणों में प्रणाम किया ॥ ८८ ॥ भरद्वाज ने वेदमन्त्र का पाठ कर पुत्रों सहित राजा को आशीर्वाद किया। मुनिराज ने अतिथियों के सत्कार के लिए विभिन्न प्रकार के द्रव्य दिये ॥ ८९ ॥ राम को देखकर मुनि बड़े प्रसन्न हुए। ऋषिराज ने उन्हे गोद में लेकर शयन किया। रामचन्द्र ऋषि के पास सो गये। इसके वाद वहाँ इन्द्र के साथ सारे देवता आ गये ॥ ९० ॥ इन्द्र ने राम का अभिषेक किया। मंत्र के साथ सुन्दर धनुष-वाण दिया। इसके

नाना दिव्य कामे धनुवाण अनुपाम * मंत्र समे पाया रंगमन भैला राम
धनुशर दिया चलि गैला देवगण * रात्रि अवसाने राम पाइलन्त चेतन ९२
देखन्त हातते आछे दिव्य धनुशर * करे फटफट मने मंत्र निरन्तर
देखि धनुर्ब्बाण ऋषि रामर हातत * परम विस्मय भैल मुनिर मनत ९३
प्रभाते उठिया राम करिलन्त स्नान * ऋषि समे दशरथ भैला एकस्थान
करि करजोर रामचन्द्र महाभागे * कहन्त स्वप्नर कथा दुहान्तर आगे ९४
ऐरावत स्कन्धे आसिलन्त पुरन्दर * मंत्रे समे दिला मोक दिव्य धनुशर
देवगण समे आरो बुलिला वचन * एहि धनुर्ब्बाणे जिनिवाहा शत्रुगण ९५
एहि बुलि चलि गैला देवगण जत * जागि देखो धनुर्ब्बाण आछय हातत
मनत सुमरो महामंत्रगण जत * एहि बुलि रामचन्द्रे दुहानो आगत ९६
स्वपनर लब्ध धनु शर आनि दिल * देखि समस्तर मने विस्मय मिलिल
भरद्वाज ऋषि धनु देखि विद्यमान * अद्भुत मानिया मने करिलन्त ध्यान७९७
जानिलन्त ऋषि राम नुहिके मनुष * भैला अवतार विष्णु परम पुरुष
दिलन्त अजय धनुर्ब्बाण देवराजे * वधिवन्त रावणक संग्रामर माजे७९८
जानि महामुनि मने भैल कौतूहल * पाचे रामचन्द्रक स्वप्नर दिला फल
स्वप्नत तोमाक धनु दिला पुरन्दर * जिनिवा शत्रुक यश बाढ़िव बिस्तर७९९
नपारि कहिबे राम तोमार महत * स्वप्न शुनि हासिलन्त राजा दशरथ
भरद्वाज ऋषिक करिया सतकार * चारिपुत्र सहिते करिला नमस्कार८००

पश्चात् इन्द्र ने राम से कहा—इस धनुष-वाण से तुम शत्रु का नाश करोगे ॥ ९१ ॥ विभिन्न सुन्दर पच्चीकारी से बने वे धनुष-वाण बड़े अनुपम थे। मंत्रसहित उनको पाकर राम बड़े प्रसन्न हुए। धनुष-वाण देकर सारे देवता चले गये। रात्रि के अन्त में राम को चेतना आई ॥ ९२ ॥ उन्होंने देखा कि हाथों मे सुन्दर धनुष-वाण है। मन में निरन्तर वह मंत्र गूँज रहा था। राम के हाथों में ऋषि ने धनुष-बाण देखा तो मन ही मन मुनि को बड़ा विस्मय हुआ ॥ ९३ ॥ सवेरे उठकर राम ने स्नान किया। ऋषि और दशरथ एक स्थान पर इकट्ठा हुए। महाभाग रामचन्द्र दोनों हाथ जोड़कर दोनों के सामने खड़े होकर स्वप्न की वातें कहने लगे ॥ ९४ ॥ ऐरावत की पीठ पर सवार होकर इन्द्र आए और मुझे मंत्रसहित यह धनुष-वाण दे गये। देवताओं के सहित उसने कहा, इसी धनुप-वाण से तुम शत्रु को जीतोगे ॥ ९५ ॥ यह कहकर जितने देवता थे वे चले गये। तव जागकर मैंने देखा कि मेरे हाथों में धनुष-वाण हैं। और मन में वह महामंत्र स्मरण हो रहा है। यह कहकर रामचन्द्र दोनों के सामने आये ॥ ९६ ॥ राम ने स्वप्न में पाये धनुप-वाण लाकर दिये। यह देखकर सभी का मन विस्मय से भर उठा। भरद्वाज मुनि ने जव धनुप को साक्षात् देखा तो अद्भुत जानकर ध्यान करने लगे ॥ ७९७ ॥ ऋपि ने जान लिया कि राम मनुष्य नही है। परमपुरुप विष्णु ने (राम के रूप में) अवतार लिया है। देवराज ने रावण को सग्राम में वध करने के लिए इन्हे अजय धनुर्वाण दिया है ॥ ७९८ ॥ यह जानकर महामुनि के मन में वड़ा कौतूहल हुआ, इसके पश्चात् उन्होने रामचन्द्र को स्वप्न का फल वताया। स्वप्न में पुरन्दर ने तुमको धनुप दिया है, तुम शत्रु पर विजय प्राप्त करोगे और तुम्हारा यश वढ़ेगा ॥ ७९९ ॥ हे राम! मैं तुम्हारी महत्ता का वर्णन नही कर सकता। स्वप्न का वृत्तान्त सुनकर राजा दशरथ हँसे। और चारों पुत्रों सहित ऋपि का सत्कार करते हुए उन्होने प्रणाम किया ॥ ८०० ॥ इसके

मागिया मेलानि आति बुलि प्रियवाणी * पुत्र समे अयोध्याक गैल महामानी
निज मन्दिरत राजा रैल रंगमने * मिलय आनन्द पुत्रमुख दरशने८०१
महागुणे गुणवन्त चारिओ तनय * यत अस्त्र शस्त्र शास्त्र चारिओ जानय
केवल धर्म्मत मात्र रति सर्व्वक्षणे * करन्त भकति निते रामर चरणे८०२
चारि भाइर माजे रामचन्द्र गुणे चार * तान्त आतिशय प्रीति वाढ़य राजार
रामर समान आरो नाहि त्रिभुवने * ताहान गुणर अन्त कहिवेक कोने८०३
देखय गम्भीर कोटि समुद्रत करि * क्षमागुणे कोटि वसुन्धरा नुहि सरि
धैर्य्ये कोटि एक मेरु नुहि पटन्तर * श्रमत समान नुहि कोटि महेश्वर८०४
कोटि एक सूर्य्य सम नुहि प्रतापत * एक कोटि जम सम नुहिके क्रोधत
बिलासत सम नुहि कोटि पुरन्दर * शीतलत चन्द्र कोटि नुहि समसर ५
गजेन्द्र कोटिको जिनि गमन गम्भीर * कोटि हेमवन्त जिनि निष्कम्प शरीर
अमृत कोटितो करि देखिय मधुर * रूपे कोटि कन्दर्परो दर्प करे चूर ६
नुहि दुर्गा कोटि सम शत्रुमर्द्दनत * इतिनि भुवने सम नाहिके दानत
कोटि एक वह्नि नुहि तेजत समान * बृहस्पति कोटि जिनि शास्त्रत सुजान ७
एक कोटि ब्रह्मा सम नुहिके मानत * धनुर्गुणे सम नाहि इतिनि लोकत
आनो नाना गुण जत आछय रामत * त्रिभुवन माजे कोने वर्णाइवे शकत ८
अनन्त शकतिधर परम ईश्वर * जाहार किंकर हर ब्रह्मा पुरन्दर
जाक योगेश्वर सवे चिन्तंत ध्यानत * तेन्ते रामरूपे आसि भैलन्त वेकत ९

वाद विदा माँगकर और वहुत मधुर वचन वोलते हुए पुत्र के साथ महामानी दशरथ अयोध्या चले गये। प्रसन्न होकर राजा अपने मन्दिर मे रहने लगे। पुत्र का मुख देखकर उनको वडा आनन्द मिलता ॥ ८०१ ॥ चारों पुत्र महान् गुणो से युक्त हैं। चारो सभी अस्त्र-शस्त्रों से परिचित है। उन सभी का केवल धर्म मे मन है। वे राम के चरण प्राप्त करने को भक्ति करते ॥ ८०२ ॥ चारों भाइयो मे रामचन्द्र गुणों में चौगुने हैं। उनके प्रति राजा की प्रीति वहुत वढ़ती जाती थी। त्रिभुवन में राम के समान कोई अन्य नही। उनके गुणो का अन्त कौन कह सकता है ॥ ८०३ ॥ रामचन्द्र कोटि समुद्र के समान गम्भीर हैं, कोटि वसुन्धरा से अधिक क्षमाशील हैं, धैर्य में कोटि मेरु उनके समान नही और परिश्रम में कोटि महेश्वर भी उनके समान नही ॥ ८०४ ॥ प्रताप में कोटि सूर्य भी उनके समान नही। क्रोध मे कोटि यम भी उनके समान नहीं। विलास-व्यसन में कोटि पुरन्दर भी उनके समान नही। शीतलता में कोटि चन्द्र भी उनके समान नही है ॥ ५ ॥ उनकी चाल कोटि गजराज के समान गंभीर है। उनका शरीर कोटि हिमालयों के समान धीर-स्थिर है। उनकी चितवन कोटि अमृत के समान मधुर है। रूप में वे कोटि कन्दर्पो का भी दर्प चूर्ण करते है ॥ ६ ॥ शत्रुमर्दन मे कोटि दुर्गा भी उनके समान नही। दान करने मे उनके समान इन तीनों भुवनों में कोई नही। तेज मे कोटि अग्नि भी उनके समान नही। कोटि वृहस्पति से भी वढ़कर शास्त्रों के जानकार है ॥ ७ ॥ सम्मान में एक कोटि ब्रह्मा भी उनके समान नही। इन तीनो लोको में धनुर्गुण में उनके समान कोई नही। और भी कितने ही गुण जो राम में है उनकी वर्णना करने की शक्ति त्रिभुवन मे किसके पास है ॥ ८ ॥ वे अनन्त शक्तिधारी ईश्वर है, शंकर, ब्रह्मा और इन्द्र उनके किंकर है। सारे योगेश्वर ध्यानावस्था मे जिनका चिन्तन करते है वे ही राम के रूप में आकर प्रकट हो गये ॥ ९ ॥ उनके गुण और धर्म का

निज गुण यश महाधर्म्म माजे सार * कृपाय करिला आसि लोकत प्रचार
आक शुनि भणिया तरोक सर्व्वजने * ईश्वरर अवतार एहिसे कारणे १०
रावण मारण तान कोन प्रयोजन * यार कटाक्षेते कोटि ब्रह्मांड उछन
मारिला रावण कोन पौरुष ताहार * याक जिनिलेक बालि बनर बानर ११
हेन राम चरणत करियोक रति * आन परिहरि राम देवत करा मति
अनित्य संसार विलम्बत काज नाइ * चिन्तामणि जन्म हेरा हातते हराय १२
शुना सभासद पद रामर चरित * एहिसे प्रधान धर्म्म जानिबा कलित
मनुष्य हैवार प्रयोजन एहिमान * बोला राम राम हौक पातक निर्व्वाण८१३

मारीच-सुबाहु वधार्थे राम-लक्ष्मणक आनिबलै बिश्वामित्र आगमन

दुलड़ी

शुना आतपरे कथा निरन्तरे चरित्र जेन रामर।
परलोक हित ऋषि विश्वामित्र आरम्भिला यज्ञबर ॥
मारीच सुबाहु नामे दुइजन राक्षस आति दुर्जन।
चतुर्द्दश कोटि राक्षस सहिति करय यज्ञ उछन ॥८१४
बारम्बारे ऋषि आरम्भंत यज्ञ अनेक करि जतन।
रक्तमय वृष्टि करिया समस्ते राक्षसे करे ध्वंसन ॥

सार है। कृपा कर पृथ्वी पर आकर इसका प्रचार किया। इसे सुनकर-कहकर सभी लोग तर जाये इस कारण से ही ईश्वर का अवतार हुआ है ॥ १० ॥ जिनके कटाक्ष मात्र से कोटि ब्रह्मांड ध्वस हो सकता है, उनको रावण को मारने के लिए जन्म लेने की क्या आवश्यकता है। जिसको वन के वन्दर वालि ने पराजित किया था उस रावण को मारने मे उनको पौरुष दिखलाने की क्या आवश्यकता ? ॥ ११ ॥ ऐसे राम के चरणों में ध्यान लगाओ और सब कुछ त्याग कर देवता राम के चरणों में मन लगाये रखो। संसार अनित्य है अतः विलम्ब की कोई आवश्यकता नहीं। विलम्ब करने से चिन्तामणि जैसा बहुमूल्य माणिक अर्थात् मानव-जीवन अचानक ही अदृश्य हो जायगा ॥ १२ ॥ हे सभासदो ! राम के चरित्र के पद सुनो। कलियुग मे यही प्रधान धर्म है, यह जान लो। इसी का पालन करने मे मनुष्य का जन्म सार्थक है। राम राम बोलो जिससे सभी पाप दूर हो जायें ॥ ८१३ ॥

मारीच-सुबाहु के वध के लिए राम-लक्ष्मण को लिवा ले जाने हेतु विश्वामित्र-आगमन

दोलड़ी

इसके बाद राम का चरित्र निरन्तर सुनो। परलोक के कल्याण के लिए विश्वामित्र ने वृहद् यज्ञ का आरम्भ किया। मारीच और सुबाहु नामक दो दुर्जन राक्षसों ने चौदह करोड़ राक्षसों के साथ यज्ञ का ध्वंस किया ॥ १४ ॥ बार-बार ऋषि बड़े यत्न से यज्ञ आरम्भ करते किन्तु बार-बार रक्त की वर्षा कर राक्षस सारा का सारा यज्ञ चौपट कर देते। यदि ऋषि शाप देने का कष्ट करें तो सारे राक्षस

समस्ते राक्षस भस्म होवे जेवे शापे ऋषि करि कष्ट ।
नशपन्त क्रोधे उपजिया मरे तपव्रत होवे नष्ट ॥ १५
सिहेतु राक्षस यज्ञ नष्ट करे ऋषिर मने असुख ।
उगुल थुगुल चित्त असन्तोष उपजय बर दुख ॥
पाचे ध्यान करि सकल वृत्तान्त जानिलन्त मुनिवरे ।
राक्षस वधिते अवतरि हरि आछा दशरथ घरे ॥ १६
तांक आति सवे राक्षस मराया करो यज्ञ समापति ।
एहि मने गुनि चलिलन्त मुनि रामक आनिवे प्रति ॥
दशरथ राजा पुत्रवते प्रजा पालि सुखे अयोध्यात ।
आछन्त नृपति येन सुरपति वसिया दिव्य समात ॥ १७
वशिष्ठ प्रमुख्ये पुरोहित सवे वसि आछा रंगमने ।
इन्द्रर आगत वृहस्पति आदि येन महामुनिगणे ॥
सुमंत्र सहिते महामंत्री सवे राजाक आछे उपासि ।
सेहि समयत विश्वामित्र मुनि तथाते मिलिल आसि ॥ १८
देखिया नृपति समाजे सहिति उठिला आति सत्वरे ।
प्रणाम करिया चरणर धूलि मायात लैला सादरे ॥
सुवर्ण आसन आनिया नृपति समाजर माजे दिला ।
समस्तके आशी— र्व्वाद करि ऋषि आसने आसि वसिला ॥ १९
आपुनि चरण धुवाइ दशरथे पादोदक लैला माथे ।
परम सादरे सअर्घे ऋषिक पूजिला पृथिवीनाथे ॥
जोरहाते राजा मधुर वचने कुशल वार्त्ता पुछिल ।
तयु दरशने अमृतर पाने सन्तोष येन मिलिल ॥ २०

भस्म हो जायें । किन्तु क्रोध में आकर उनको वे शाप नही देते । यदि वे क्रोध उत्पन्न होते ही राक्षसों को भस्म कर देते तो इसमे उनका तपव्रत नष्ट हो जाता ॥ १५ ॥ इस कारण राक्षस यज्ञ नष्ट करते रहते और ऋषि मन ही मन बड़ा कष्ट पाते । उनका मन उद्वेग से भर जाता, चित्त असन्तुष्ट होता और बड़ा दुःख उत्पन्न होता । इसके पश्चात् ध्यान करने पर मुनिवर को सारा हाल मालूम हुआ कि राक्षसों का वध करने के लिए ईश्वर ने दशरथ के घर में अवतार लिया है ॥ १६ ॥ उनको लाकर सारे राक्षसों को मरवाकर यज्ञ की समाप्ति की जाय । यही मन मे विचार कर मुनि राम को लाने के लिए चल पड़े । प्रजा का पुत्रवत् पालन करते हुए नृपति बड़े सुख से अयोध्या में दिव्य सभा के बीच यों बैठे हैं जैसे सुरपति इन्द्र हो ॥ १७ ॥ वशिष्ठ आदि सारे पुरोहित बडे आनन्द से बैठे हैं, मानों इन्द्र के सम्मुख वृहस्पति आदि महामुनि हों । सुमन्त्र आदि महामन्त्रीगण राजा की सेवा में हैं । ऐसे ही समय विश्वामित्र मुनि वहाँ आ पहुँचे ॥ १८ ॥ विश्वामित्र को देखकर राजा अपने सारे समाज के साथ उठकर झट खड़े हो गये । प्रणाम कर उनके चरणों की धूलि सादर सिर से लगा ली । समाज के बीच में सोने का आसन लाकर नृपति ने दिया । सभी को आशीर्वाद देकर ऋषि उस आसन पर बैठ गये ॥ १९ ॥ दशरथ ने स्वयं उनके चरण धोकर उनका पादोदक सिर से लगाया । पृथ्वीनाथ (राजा) दशरथ ने बडे आदर से अर्घ्य सहित ऋषि की पूजा की, फिर हाथ जोड़कर राजा ने उनका कुशल-मंगल पूछा । हे मुनिवर ! तुम्हारे दर्शन से मानो अमृत-पान का सन्तोष प्राप्त हुआ ॥ २० ॥ हे

आपोनार निज भृत्य बुलि मोक धरिबाहा मुनिराज ।
आज्ञा करियोक सम्प्रति तोमार साधो मइ किबा काज ।।
राजार वचन शुनि बिश्वामित्रे भैला आति रंगमन ।
राजाक् बोलन्त शुनियो नृपति येन मोर प्रयोजन ।। २१
बारम्बारे आसि यज्ञ आरम्भिलो अनेक करि यतन ।
मारीच सुबाहु राक्षसे आमार करय यज्ञ उछन ।।
अनेक सम्भार आनि आरोबार चाहो यज्ञ करिबाक ।
राक्षसक मारि यज्ञ राखिबाक रामक दियोक मोक ।। २२
शुनिया राजार माथात परिल वज्रर येन प्रहार ।
उभय संकटे बाजिया नृपति देखन्त दुखे आन्धार ।।
रामक निदिले शाप दिया ऋषि करिबेक वंश छन ।
ऋषिर लगत रामक पठाले हैबेक मोर मरण ।। २३
एकभिति बाघे खेदे आरोभिति नदी घोर बारिषार ।
जाम्प दिले मरे जाम्प नेदिलेओ बाघे लवे प्राण तार ।।
सेहि पटन्तर पाया आछे मोक करिबो कोन उपाय ।
हेन मनदुखे थाकि राजा पाचे मातिला ऋषिक चाइ ।। २४
बार बरिषर छावा राम मोर शिशुमति आतिशय ।
किमते रणत मारिबेक रामे राक्षस बर दुर्ज्जय ।।
ब्रह्मार बरत राक्षस गणर बाढ़िल बल अपार ।
सैन्यसमे गैया राक्षस मारिया राखिबो यज्ञ तोमार ।। २५
आपुनि चलिबो रामक नेदिबो बुलिला दृढ वचन ।
शुनि बिश्वामित्र राजाक बोलन्त नुबुजि तोमार मन ।।

मुनिराज, तुम मुझे अपने भृत्य के समान समझो। आज्ञा करो इस समय तुम्हारा कौन सा कार्य करूँ। राजा के वचन सुनकर विश्वामित्र बड़े प्रसन्न हुए और राजा से कहा, हे नृपति, मेरा क्या प्रयोजन है, सुनो ।। २१ ।। मैने बड़े यत्न से बारबार यज्ञ आरम्भ किया, किन्तु मारीच-सुबाहु आदि राक्षस मेरा यज्ञ ध्वंस करते रहे। अब अनेक संभार जुटाकर फिर एकबार यज्ञ करना चाहता हूँ, अत: राक्षसों को मारकर यज्ञ की रक्षा करने के लिए राम को मुझे दे दो ।। २२ ।। यह सुनकर राजा के सिर पर मानों गाज का प्रहार हुआ। दो संकटों में फँसकर राजा दु:ख से चारों ओर अंधियारा सा देखने लगे। राम को न देने पर शाप देकर ऋषि वंशनाश कर देंगे; और ऋषि के साथ राम को भेजने पर मेरी मृत्यु हो जायगी ।। २३ ।। एक ओर शेर पीछा कर रहा है तो दूसरी ओर वर्षा की घोर नदी है। छलाग मारने से भी मृत्यु है और छलांग न मारने से शेर प्राण ले लेगा। इसी प्रकार के संकट में मैं फँस गया हूँ—कौन सा उपाय करूँ। इस प्रकार दु:खित मन से राजा ने ऋषि की ओर देख कर कहा ।। २४ ।। मेरा राम बारह वर्ष का बालक है, अभी अत्यन्त शिशुमति है, वह किस प्रकार युद्ध मे उस दुर्जय राक्षस को मार सकेगा। ब्रह्मा के वर से राक्षसों का अपार बल बढ़ गया है, अत: सैन्य के साथ चलकर राक्षसों को मारकर मैं तुम्हारे यज्ञ की रक्षा करूँगा ।। २५ ।। मै खुद ही चला चलूँगा, राम को नहीं दूँगा, इस प्रकार राजा दृढ़ वाक्य बोले। उन वचनों को सुनकर विश्वामित्र ने राजा से कहा, तुम्हारा मन कुछ समझ में नही आ रहा है। राम के बिना किसमें राक्षस मारने की शक्ति है।

रामत विनाइ राक्षस मारिते शकति आछे काहार।
आमाक भांडिया वचन वोलाहा वुजिलो वोल तोमार ॥ २६
रामक निदिया आशा भंग करि पालटाइ पठा मोक।
कोप देखि राजा वोले योरहाते महाऋषि शुनियोक ॥
तोमार क्रोधत कम्पे तरतरि व्रह्मा आदि देवगण।
हेनय तोमार आगे कोन हुओ आमि आति आल्पजन ॥ २७
कत दुखे मइ पाइलोहो रामक देवता सवर वरे।
तोमार लगत ताक पठाइ दिले मारिवेक निशाचरे ॥
धन जन यत प्राणात करिया रामेसे आति प्रधान।
एक क्षण मान देखिते नपाइले नरहे मोहोर प्राण ॥ २८
हेनय रामक किमते पठाइवो राक्षसक युजिवाक।
इन्द्र आदि करि त्रिदश सकले हारिया आछे याहाक ॥
सिटो राक्षसक किमते युजिव अवोध मोर छवाले।
निदिलेओ शपि करिवाहा भस्म जानिलो ग्रासिले काले ॥ २९
हरि हरि विधि कि काम करिलो परिलो महा विपाके।
राम हेन पुत्र पायाओ नपाइलो दंडिला दैवे आमाके ॥
रामक पठाइले मरिव कौशल्या आमिओ मरिवो प्राणे।
रामक नेदेखि मरिव सकले यत नरनारी माने ॥ ३०
दान्ते तृण धरि तोमात मागोहो रामक दियोक मोक।
तोमार प्रसादे अयोध्यार लोके नपाओक रामर शोक ॥
तोमार लगत आपुनि चलिवो कटक लैया अपार।
तोमार यज्ञक राखिवो करिया राक्षसक वुन्दामार ॥ ३१

तुम मुझको धोखा देकर वोल रहे हो, मै तुम्हारी वाते समझ गया ॥ २६ ॥ राम को न देकर मेरी आशा भंगकर मुझको वापस भेजे दे रहे हो। उनका कोप देखकर राजा ने हाथ जोड़कर कहा, हे महर्षि सुनो—तुम्हारे क्रोध से व्रह्मा आदि देवता भी थरथर काँपते है। तुम ऐसे प्रभाव-सम्पन्न हो, कि तुम्हारे सामने कौन खड़ा हो सकता है। फिर मै तो वहुत ही मामूली आदमी हूँ ॥ २७ ॥ सारे देवताओं के वरदान से मुझे कितने दुख से राम जैसा पुत्र मिला। तुम्हारे साथ उसको भेज देने पर राक्षस उसको मार डालेगे। धन, जन तथा प्राण की तुलना मे राम प्रधान है। क्षणभर भी मै उसको नही देख पाता तो मेरे प्राण निकलने लगते है ॥ २८ ॥ ऐसे राम को किस प्रकार राक्षस से युद्ध करने के लिए भेजूं। इन्द्र आदि देवता जिससे हार माने हुए है, उस राक्षस से मेरा अवोध वालक कैसे लड सकेगा। न देने पर तुम शाप देकर मुझे भस्म कर डालोगे। मैं भी यह जान लूंगा कि काल के गाल-ग्रस्त हो गया ॥ २९ ॥ हे विधि! हे ईश्वर! यह कैसा काम किया कि मै इस विपत्ति में फँस गया। राम जैसा पुत्र पाकर भी न पा सका—दैव ने मुझको दण्ड दिया। राम को भेजने पर कौशल्या मर जायगी और मै भी प्राण त्याग दूंगा। राम को न देखकर जितने नरनारी है वे सव भी मर जाएँगे ॥ ३० ॥ मैं दाँतों मे तिनका लेकर तुमसे भिक्षा माँगता हूँ कि राम को मुझे दे दो। तुम्हारे प्रसाद से अयोध्या के लोगों को राम का शोक न सहना पड़े। तुम्हारे साथ अपार सेना लेकर मैं खुद ही चलूंगा तथा राक्षसो को सम्पूर्णरूप से ध्वंस करके तुम्हारे यज्ञ की रक्षा करूँगा ॥ ३१ ॥

यदि तथापितो रामक नेराहा स्वरूप बोलो वचन ।
निरन्तरे लोक रासर लगत चलि याइवो तपोवन ॥
राम विने आसि अयोध्या नगरे साधिबो कमन काम ।
समज्यार लोक पातक छारोक डाकि बोला राम राम ॥८३२

राम लक्ष्मणक दिवलै सन्मत नोहोवात ऋषिर कोप आरु राम-लक्ष्मणक लै ऋषिर गमन

पद

दशरथ नृपतिर शुनिया वचन * महाकोप करि वले गाधिर नन्दन
रघुर वंशत तुमि भैला उतपति * धर्म्मशील हुया अधर्म्मत कैला रति८३३
पुत्रर स्नेहत मोक करस नैराश * मिछा मोहजाले परि कर धर्म्मनाश
नजानस कतगुण आछय रामत * वाहुवले जिनिवाक पारे त्रिजगत ३४
राक्षस मारिव रामे इटो कोन काज * विमुख करह राजा दिया मोक लाज
कपटे भांडिया मोर आशा कर भंग * सवंशे नाशिव पुनु मोर भैले खंग ३५
आछन्त वशिष्ठ तोर मंत्रणार वास * तार बोले अपमान आमाक लगास
सत्ये सत्ये बोलो राजा मइ निष्ठ करि * निदिलि रामक जाओं क्रोध परिहरि ३६
निष्ठुर वचन राजा शुनिया मुनिर * पृथिवी कम्पन येन गाव नोहे स्थिर
आछोक नृपति चराचर कम्पि गैल * प्रलयर काल येन उपगत भैल ३७

फिर भी यदि राम के विना काम न वने तो साफ-साफ वता दो। राम के साथ सारे लोग तपोवन चले जाएँगे। राम के विना मैं अयोध्या नगर में कैसे अपना काम कर पाऊँगा। हे समाज के लोगो!, पाप छोड़ो और उच्च स्वर से राम का नाम लो ॥ ८३२ ॥

राम-लक्ष्मण को देने को सम्मत न होने पर ऋषि का क्रोध और राम-लक्ष्मण को लेकर ऋषि का जाना

पद

राजा दशरथ के वचन सुनकर गाधि के नन्दन विश्वामित्र अत्यन्त क्रोधित होकर बोले, रघु के वंश में जन्म लेकर धर्मशील होते हुए भी तुमने अधर्म किया ॥ ८३३ ॥ पुत्र के स्नेह के मारे तुम मुझको निराश कर रहे हो। झूठे मोहजाल में फँसकर अपना सर्वनाश कर रहे हो। तुम नहीं जानते कि राम में कितने गुण हैं। वह अपने वाहुवल से तीनों लोकों को जीत सकता है ॥ ३४ ॥ राम राक्षसों को मारेंगे यह कौन वड़ा काम है। हे राजा! तुम मुझको लज्जित कर विमुख कर रहे हो। छल से मुझको धोखा देकर तुम मेरी आशा भंग कर रहे हो। मुझको यदि क्रोध आ गया तो तुम्हारा सवंश नाश कर दूंगा ॥ ३५ ॥ तेरी मंत्रणा के लिए वसिष्ठ है। उसके कहने पर तू मुझको अपमानित कर रहा है। राजा यदि तुम मुझसे सच-सच वता दो तो मैं राम को न देने पर भी क्रोध त्याग कर चला जाऊँ ॥ ३६ ॥ मुनि का निष्ठुर वचन सुनकर राजा को लगा कि पृथ्वी कम्पित हो रही है और शरीर स्थिर

क्रोध प्रकम्पित विश्वामित्र मुनिवर * देखि अन्तरीक्ष धातु भैल निरन्तर
पात्र मित्र समे दशरथ महाराय * भय त्रासे भैल येन मृतक पराय ३८
अनन्तरे वशिष्ठे देखिया तमोमय * राजाक बोलन्त शुनियोक महाशय
प्रथमे ऋषिक तुमि बुलिला बचन * बुलियोक ऋषि किबा साधो प्रयोजन ३९
कदाचितो व्यर्थ नाहि बचन तोमार * एतेके रामक दिते भैल अंगीकार
सिटो अंगीकार आवे लरिला किमते * तुमि सत्यवन्त हेन जानय जगते ४०
नकरिवा राजा सत्यधर्म्म परिहार * तुमि सत्य लंघिले राखन्ता नाहि आर
सत्य सम धर्म्म आर पुरषर नाइ * जानि ऋषि संगे दियो रामक पठाई ४१
तांक नपठाइले विश्वामित्रे दिवे शाप * गाधिर तनय महा प्रचंड प्रताप
हेन जानि रामर निमित्ते एरा शोक * ऋषिर वचन राखि रामक दियोक ४२
तांक पाइले ऋषिर सन्तुष्ट हैवे चित * नाना अस्त्रे शस्त्रे विश्वामित्र सुशिक्षित
मुनिसवे अस्त्रशिक्षा दिवन्त रामक * ताके लैया रामे जिनिवेक राक्षसक ४३
विशेषत बिष्णु रामरूपे अवतार * राक्षस कुलक रामे करिव संहार
अणुमात्रो चिन्ता नकरिवा महामानी * दशरथ राजा वशिष्ठर शुनि वाणी ४४
पाइलन्त भारसा तान शान्त भैल हिया * जिज्ञासा करन्त राजा रामक आनिया
आसि आछे विश्वामित्र तोमाक निवाक * राक्षसक मारि राम यज्ञ राखिवाक ४५
शुनि रामचन्द्रर हरिष भैल मने * पितृक बोलन्त रामे प्रसन्न वदने
कत भाग्ये इसब कार्यक पाया लाग * मोक प्रति चिन्ता नकरिवा महाभाग ४६

नही है। नृपति को लगा चराचर कम्पित हो रहा है और प्रलय का काल आ गया है ॥ ३७ ॥ मुनिराज विश्वामित्र को क्रोध से काँपते देखकर सारा वातावरण भयविह्वल हो गया। पात्र मित्र सहित राजा दशरथ भय-त्रास से यों ग्रस्त हो गये मानों किसी की मृत्यु हो गई हो ॥ ३८ ॥ इसके पश्चात् सब कुछ अन्धकारपूर्ण देख कर वसिष्ठ राजा से बोले, हे महाराज! शुरू मे तुमने ऋषि को इस प्रकार वचन दिया कि बोलो ऋषि वर! मुझको तुमसे कौन सी आवश्यकता है? ॥ ३९ ॥ तुम्हारा वचन कभी व्यर्थ नही गया। इस प्रकार तुमने राम को देने का वादा किया। उस वादे से किस प्रकार तुम हट गये। सारा संसार तुमको सत्यवादी के रूप में जानता है ॥ ४० ॥ हे राजन्! तुम सत्यधर्म का त्याग मत करो। तुम्ही ने यदि सत्य का लघन किया तो फिर रक्षा नही। पुरुप के लिए सत्य के समान दूसरा कोई धर्म नही है, यह जानकर ऋपि के साथ राम को भेज दो ॥ ४१ ॥ उनको न भेजने पर विश्वामित्र शाप दे देंगे। गाधि के पुत्र विश्वामित्र का प्रताप अत्यन्त प्रचंड है। ऐसे जानकर राम के लिए शोक का त्याग करो और ऋपि के वचन की रक्षा करते हुए राम को दे दो ॥ ४२ ॥ उनको पाने पर ऋपि का चित्त सन्तुष्ट होगा। विश्वामित्र विभिन्न अस्त्र-शस्त्रों मे दक्ष हैं। उन सभी अस्त्रों की शिक्षा वह राम को देंगे। उस शिक्षा को ग्रहण कर राम राक्षसों को पराजित करेंगे ॥ ४३ ॥ विशेप रूप से विष्णु ने राम के रूप मे अवतार लिया है। राम राक्षसकुल का संहार करेंगे। हे महामानी, तुम कतई चिन्ता न करो। राजा दशरथ ने वसिष्ठ की वाणी सुनकर— ॥ ४४ ॥ भरोसा प्राप्त किया और उनका चित्त शान्त हुआ। राम को बुलवाकर राजा ने पूछा, विश्वामित्र तुमको ले जाने के लिए आए हैं। अतः हे राम! तुम राक्षसों को मारकर उनके यज्ञ की रक्षा करना ॥ ४५ ॥ यह सुनकर रामचन्द्र का मन हर्पमग्न हुआ। राम ने प्रसन्न हो पिता से कहा, कितने भाग्य से ये सब कार्य मिलते हैं। हे महाभाग! मेरे लिए चिन्ता मत करना ॥ ४६ ॥ पुत्र

पुत्र हुया न पालय पितृर बचन * चिरकाले नरकत पचे सिटो जन
प्रचंड प्रताप मुनि गाधिर कुमार * ताहान कार्य्यत चिन्ता करा परिहार ८४७
रामर वचने राजा भैल हरषित * मरार मुखत येन परिल अमृत
ऋषिर हातत राजा पुत्र समर्पिल * नमस्कार करि राजा बचन बुलिल ८४८
रामे मोर धन जन जीव मन प्राण * राम बिने गति मोर नाहि नाहि आन
पाइलोहो रामक पुत्र कत तपस्याय * आवे ज्ञान गुण जानिबेक तयु ठाइ ४९
किछुवे नजाने राम छवाल चंचल * जानिवे अस्त्रर सन्धि तोमात सकल
तोमार सेवक राम भैल आजि धरि * निजदास बुलि पालिबाहा यत्न करि ५०
राघवक पाया मुनि भैलन्त सन्तोष * पूष्प वरषिला देवे करि जयघोष
सेहि वेला योरहाते उठिला लक्ष्मण * रामक बुलिला करि चरणे बन्दन ५१
मोक संगे नियो प्रभु जगतर पति * तोमार चरण बिने मोर नाहि गति
यथा तथा याइते नाथ नेरिबा आमाक * दास हुआ सेवा प्रभु करिबो तोमाक ५२
हासे राजा लक्ष्मणर शुनिया वचन * रामर संगत चलि याइवन्त लक्ष्मण
दुइ पुत्र दिला राजा ऋषिर लगत * यात्रा सुमंगल करिलन्त यत यत ५३
आपोनार अस्त्र यत लैया दुयो जन * दुइ भाई वशिष्ठक करिला वन्दन
पितृक मातृक करिलन्त नमस्कार * दशरथे दुइको शिक्षा दिला बारे बार ५४
पालिवाहा दुइ भाइ ऋषिर वचन * थाकिवाहा सदाय ऋषिर बुजि मन
ऋषिर क्रोधत सबे वंशे हैवो नाश * सर्व्वदाय थाकिवा ऋषिर पालि आश ५५

होकर जो पिता का वचन नहीं मानता वह चिरकाल तक नरक में सड़ता रहता है। गाधि के पुत्र विश्वामित्र प्रचंड प्रतापी है। उनके कार्य मे चिन्ता करना छोड़ दो ॥ ८४७ ॥ राम के वाक्य सुनकर राजा हर्षमग्न हो गये मानों मृत व्यक्ति के मुख में अमृत पड़ा हो। राजा ने ऋषि के हाथो में पुत्र को सौंप दिया। और नमस्कार करते हुए कहा ॥ ८४८ ॥ राम ही में मेरा धन, जन, जीवन, मन तथा प्राण वसे हुए है। राम के विना मेरी अन्य कोई गति नही। कितनी ही तपस्या के उपरान्त मैने राम को पुत्र रूप में पाया। अव वह तुम्हारे पास ज्ञान व गुण को को प्राप्त करेगा ॥ ८४९ ॥ राम कुछ भी नही जानता है अभी वह चचल वालक मात्र है। तुम से सभी अस्त्रों का भेद जान लेगा। आज से राम तुम्हारा सेवक वन गया। अपने दास के रूप में उसको यत्न पूर्वक पालते रहना ॥ ८५० ॥ राम को पाकर मुनि को वड़ा सन्तोप हुआ। देवताओं ने जयध्वनि कर पुष्पों की वर्षा की। उसी समय लक्ष्मण हाथ जोड़कर उठे और चरण-वन्दना करते हुए राम से वोले ॥ ८५१ ॥ हे प्रभु, जगत् के पति, मुझे अपने संग ले चलो। तुम्हारे चरणों के सिवा मेरी कोई गति नही। हे नाथ, जहाँ-तहाँ जाते वक्त मुझे अपने संग लो। दास वनकर मैं तुम्हारी सेवा करूँगा ॥ ८५२ ॥ लक्ष्मण के ये वचन सुनकर राजा हँसने लगे। राम के साथ लक्ष्मण भी जाएगा। राजा ने ऋषि के साथ दोनों पुत्रों को भेज दिया तथा यथारीति यात्रा के लिए उन्होंने सुमंगलपूर्ण कार्य किये ॥ ८५३ ॥ दोनों भाइयों ने अपने-अपने सारे अस्त्र ले लिये और वशिष्ट को तथा माता-पिता को नमस्कार किया। दशरथ ने दोनों को बार-वार उपदेश दिया ॥ ८५४ ॥ "तुम दोनों भाई सदा ऋषि का कहना मानना, ऋषि का मन समझकर सदा रहना, नहीं तो ऋषि के क्रोध से सारे वंश का नाश हो जायगा। हमेशा ऋषि की सभी आज्ञाएँ पूर्ण करते रहना" ॥ ८५५ ॥ यह कहकर वह दोनों पुत्रों से लिपट गये।

एहि बुलि पुत्र दुइको सावटि धरिला * शिर घ्राणि दुइहन्तरो मुखे चुमा दिला
कौशल्या सुमित्रा दुयो पुत्रक धरिया * करिला चुम्बन चक्षु सजल करिया ५६
अन्तःपुर माजत आछय यत प्राणी * स्नेहे सवे लोकर चक्षुर परे पानी
यात्रा लैया वाज भैला श्रीराम लक्ष्मण * दुइको लैला विश्वामित्र करिला गमन ५७
आग भैला ऋषिराज हरिष मनत * माजत चलिल राम लक्ष्मण पिचत
ऊर्ध्वमुखे चाहिया थाकिल सर्व्वजन * रामर लगते गैल समस्तरे मन ५८
जइया परिल लोक बियोगे रामर * शुनि येन भैल मिटो अयोध्या नगर
श्रीरामर वियोगे आकुल भैल चित * सूर्य्य गस्ते गैले येन कमल मुदित ५९
चलि यान्त दुयो भाइ पिचत ऋषिर * गजेन्द्र जिनिया दुइरो गमन गम्भीर
येन शिशु सिंह लीलागति चलि यान्त * अमृत वरिषे येन यिदिशक चान्त ६०
सुरासुरे सेवा करे यार चरणत * येन राम चलि यान्त ऋषिर पिचत
परम कोमल पद गमन मधुर * आति सुकुमार तनु लावण्य प्रचुर ६१
रत्ने बिरचित शोभे पिठित चोखर * कापत खड़ग दुइरो हाते धनुशर
प्रकाशे शरीर रत्नमय अलंकार * देखन्ता लोकर मन हरन्त सबार ६२
परम हरिषे दुयो यान्त ऋषि संगे * आढ़ै प्रहरर पन्थ वहि गैला रंगे
रामर देखिया मुख हरिष ऋषिर * अनन्तरे पाइला गैया सरयूर तीर ६३
देखि रामचन्द्रर हरिष भैला मन * विश्वामित्रे बुलिलन्त रामक वचन
सरयू नदीर कथा शुनियोक राम * परम निर्म्मल जल तीर्थ अनुपाम ६४

मस्तक सूंघ कर दोनों के मुख का चुम्बन किया। कौशल्या और सुमित्रा ने दोनों को पकड़कर आँखों मे आँसू भरकर उनका चुम्बन किया ॥ ८५६ ॥ अन्त.पुर में जितनी रानियाँ थी सभी की आँखें स्नेह से सजल हो उठी। श्रीराम-लक्ष्मण यात्रा के लिए निकल पड़े। दोनो को लेकर विश्वामित्र चल पड़े ॥ ८५७ ॥ हर्ष भरे मन से ऋषिराज आगे बढ़े। बीच में राम चले और पीछे लक्ष्मण। सभी लोग ऊपर की (राम की) ओर मुँह किये रहे। सभी लोगो का मन राम के साथ-साथ गया ॥ ८५८ ॥ राम के वियोग से लोग मुरझा गये। सुन कर मानों अयोध्या नगर भी मुरझा सा गया। श्रीराम के वियोग से सबका चित्त इसी प्रकार व्याकुल हो गया जिस प्रकार सूर्य के अस्त हो जाने पर कमल मुरझा जाता है ॥ ८५९ ॥ दोनों भाई ऋषि के पीछे चले जा रहे हैं। दोनों की चाल गजराज की चाल से गंभीर है। मानों सिंह के शावक क्रीड़ा की चाल मे चले जा रहे हों। जिस ओर भी वे ताकते अमृत वरसने लगता ॥ ८६० ॥ जिनके चरणो की सेवा सुर और असुर करते रहते है वही राम ऋषि के पीछे-पीछे चले जा रहे हे। उनके चरण बड़े ही कोमल हैं और उनका गमन भी मधुर है। उनका तन अत्यन्त सुकुमार लुनाई से पूर्ण है ॥ ८६१ ॥ पीठ पर रत्न से वना तरकस शोभा पा रहा है, म्यान में तलवार और दोनो के हाथो मे धनुष-वाण है। शरीर पर रत्नमय अलंकार झलमलाते हैं। वे दर्शन मात्र से लोगो का मन हर लेते है ॥ ८६२ ॥ वड़े ही आनन्द से दोनो ऋषि के साथ चले। ढाई पहर का रास्ता वे मजे मे चले गये। राम का मुख देख कर ऋषि का मन वडा प्रसन्न हुआ। अन्त में वे सरयू के तट पर जा पहुँचे ॥ ८६३ ॥ सरयू को देखकर रामचन्द्र का मन वड़ा हर्षमग्न हुआ। विश्वामित्र ने राम से कहा, राम, सरयू नदी के वारे में सुनो। इसका जल वड़ा ही निर्मल है और यह अनुपम तीर्थ है ॥ ८६४ ॥ तुम दोनों भाई सरयू के जल मे स्नान करो। इससे तुम्हारी

करियोक स्नान दुयो सरयूर जले * बाढ़िबेक बल श्रम गुचिबे सकले
त्रिभुवन मध्ये राम पुरुष उत्तम * महाबलशाली हैबा विपुल बिक्रम ६५
क्षुधा तृष्णा एरे ज्वर व्याधि निपीड़िव * गुचिव आयास यशे जगत जुरिव
त्रैलोक्यर अधिपति तुमि से ईश्वर * इटो जगतर हैबा एक दंडधर ६६
ऋषिर बचन शुनि हरिष मनत * बिधिवते स्नानिलन्त सरयू जलत
ऋषियो करिला स्नान संध्या यत यत * वसिला तिनियो सेइ नदीर कूलत ६७
वुलिलन्त ऋषि रंगे रामक वचन * दिओं महासंत्र विद्या लैयो दुयो जन
याहाक जानिले श्रम गुचय सकल * होवे महाधनवन्त बाढ़े तेजवल ६८
एहि वुलि दुयो भाइत मंत्र कहिलन्त * त्रिभुवने सार बिद्या दुभाइक दिलन्त
मंत्र पाया दुयो भाइर हरिष मिलिल * ऋषि संगे रंगे तथा रजनी वंचिल८६९

ताड़का राक्षसी-बध

प्रभाते उठिया नित्य करि समापत * चलिला हरिषे दुयो ऋषिर संगत
सुललित लीलागति गमन सुथिर * कौतूहले पाइला गैया मन्दाकिनी तीर८७०
देखिया विचित्र एक स्थान अनुपाम * काहार आश्रम वुलि पुछिलन्त राम
ऋषिये बोलन्त इटो अनंग भुवन * मदनक एखाने दहिला त्रिनयन ७१
अनंग क्षेत्रक रंगे एराइ तिनि जने * ताड़कार बन गैया पाइला रंगमने
रामचन्द्र पुछिला ऋषिर चापि पाश * कहियोक मुनि इटो काहार निवास ७२

थकान दूर हो जायगी और शरीर में बल बढ़ेगा। हे राम, तुम तीनों भुवनों में सबसे उत्तम पुरुष हो। तुम विपुल विक्रमशाली और महाबली बनोगे॥ ८६५॥ इससे तुम्हारी भूख-प्यास मिट जायगी, हारी-बीमारी कष्ट नही देगी, थकान दूर हो जायगी और संसार भर मे यश फैल जायगा। तुम त्रैलोक्य के अधिपति ईश्वर हो, तुम इस जगत् के एक दंडधर (राजा) बनोगे॥ ८६६॥ ऋषि का वचन सुनकर उन्होंने हर्षभरे मन से सरयू के जल में विधिवत स्नान किया। ऋषि ने भी स्नान और संध्या-जप आदि किया। तीनों उस नदी के तट पर बैठ गये॥ ८६७॥ ऋषि ने प्रसन्न हो राम से कहा, मै तुम्हें महामंत्र विद्या देता हूँ, तुम दोनो उसे ग्रहण करो। जिसको जान लेने पर सारे श्रम दूर हो जाते हैं, इससे तुम महाधनवान् होगे और तेजबल भी बढ़ेगा॥ ८६८॥ यह कहकर दोनो भाइयों से उन्होने मंत्र कहा। त्रिभुवन में सार विद्या उन्होने दोनों भाइयो को दी। मंत्र पाकर दोनों भाई हर्षित हुए। ऋषि के साथ सानन्द उन्होंने वहाँ रात बिताई॥ ८६९॥

ताड़का राक्षसी का वध

सुबह उठकर नित्यकार्य समाप्त करने के उपरान्त ऋषि के साथ दोनों चल पड़े। उनकी सुन्दर चाल छन्द (स्वच्छन्दता) पूर्ण है और गमन सुस्थिर है। इस प्रकार वे मन्दाकिनी के तट पर जा पहुँचे॥ ८७०॥ एक अनुपम विचित्र स्थान देखकर राम ने पूछा, यह किसका आश्रम है। ऋषि ने कहा, यह कामदेव का नगर है। त्रिनयन शिव ने यहाँ मदन को भस्म कर दिया था॥ ८७१॥ अनंग के क्षेत्र से कतरा कर तीनों खुशी खुशी ताड़का राक्षसी के वन में पहुँच गये।

मुनिये बोलन्त राम शुना महायशी * एहिटो वनत थाके ताड़का राक्षसी
विकट दशन ताइर रूप भयंकर * ब्राह्मण तपस्वी मारि खाइलेक विस्तर ७३
यत लोक खाइले कोने लेखा करे ताक * त्रैलोक्यर लोक पाइले पारय खाइवाक
चोब्राया गिलय माथा वृद्ध मानुहर * छवालर मुंडे ताइर कुंडल कर्णर ७४
मनुष्यर तेजे ताइर वदन पखाले * गावर कापोर ताइर मनुष्यर छाले
ताइर डरे नरे आउर इ पथे नायाय * आमि कोन पथे याइबो कहियो उपाय ७५
प्रहरेक लागे येवे याइ एइ पथे * तृतीय प्रहर लागे दक्षिणर पथे
जगरा एराया यावों मोर हेन मन * शुनि रामचन्द्रे हासि बुलिला वचन ७६
किसक इबोल बोला तुमि मुनिराज * चमु एरि दूर पथे याइबो कोन काज
लक्ष्मणक चाहि पाचे बुलिलन्त राम * स्त्रीबध हैवे पाप करो कोन काम ७७
लक्ष्मणे वोलन्त केने वोला हेन मत * पितृये पठाइ आछे ऋषिर लगत
मुनि यिवा वोले करिवाहा सेहि कर्म्म * गुरुर वचने किछु नाहिके अधर्म्म ७८
मुनि बुलिलन्त राम नकरिवा भय * राक्षसी मारिले किछु दोष नोपजय
विस्तरक अपकार यिजने करय * नाहि दोष ताक मारि पुण्य से लभय ७९
मारीच सुवाहु दुई पुत्र ताड़कार * मारि मारि खाइल गरु ब्राह्मण अपार
ताड़का खाइल गरु मानुष विस्तर * ताक मारि पाइवा राम पुण्य बहुतर ८०
शुनिया टंकार करिलेक रघुवरे * ताड़काक मारो आजि एकपाट शरे
मानुषर शवद शुनिया निशाचरी * क्रोधे खेदि आशे दिश अन्धकार करि ८१

ऋषि के निकट पहुँचकर रामचन्द्र ने पूछा, मुनि, यह बताओ कि यह किसका निवास है ॥ ८७२ ॥ मुनि ने कहा, हे महायशधारी राम, सुनो। इस वन मे ताड़का राक्षसी रहती है। उसके बडे विकट दाँत है और उसका रूप भयकर है। उसने पर्याप्त संख्या मे ब्राह्मण और तपस्वियो को मार-मार कर खा डाला है ॥ ८७३ ॥ न जाने कितने लोगों को उसने खा डाला, इसका हिसाब कौन रखता है। तीनों लोकों के लोगों को पा जाय तो यह खा सकती है। वृद्ध मनुष्यों के सिर यह चबा कर लील जाती है। बच्चों के मुड इसके कर्ण के कुडल है ॥ ८७४ ॥ मनुष्य के रक्त से वह अपना शरीर धोती है। मनुष्य का चमड़ा उसके शरीर के वस्त्र हैं। उसके डर से मनुष्य इस पथ से अब नही जाता है। बताओ अब मैं किस रास्ते से जाऊँ ॥ ८७५ ॥ इस रास्ते से जाने पर पहर भर लगेगा और दक्षिण के मार्ग से जाने पर तीन पहर लग जाएँगे। मेरा मन कहता है कि हम इस बखेड़े से कतरा कर चलें। यह सुनकर रामचन्द्र ने हँसकर कहा, ॥ ८७६ ॥ हे मुनिराज, किस कारण तुम ऐसा वाक्य बोल रहे हो। सीधा रास्ता छोड़कर दूर रास्ते से जाऊँ, यह कैसी बुद्धिमानी है। बाद में लक्ष्मण की ओर देखकर राम ने कहा, नारी का वध करने से पाप होगा, क्या करूँ ॥ ८७७ ॥ लक्ष्मण ने कहा, ऐसा क्यों बोलते हो। पिताजी ने ऋषि के साथ भेजा है। मुनि जो कुछ भी कहें वैसा ही काम करो। गुरु के वचन पालने पर कोई अधर्म नही होता ॥ ८७८ ॥ मुनि ने कहा, राम डरो मत। राक्षसी के मारने पर कोई भी दोष उत्पन्न नहीं होगा। जो भी प्रचुर अपकार करता है उसको मारने से दोष नही लगता, (बल्कि) पुण्य होता है ॥ ८७९ ॥ ताड़का के दो पुत्र सुबाहु और मारीच ने असंख्य ब्राह्मण और गाय मार-मार कर खा डाले थे। ताड़का ने भी प्रभूत सख्या में गाय और ब्राह्मण मार-मार कर खाये थे। उसको मारकर हे राम, तुमको बहुत पुण्य प्राप्त होगा ॥ ८८० ॥

कर्णे लड़वड़ करे मुंड मानुषर * वदन प्रकटि आसे यम समसर
करे मड़मड़ गावे छाल मानुषर * पर्व्वत समान घोर रूप भयंकर ८२
शाल वृक्ष सदृश मेलिया दुइ वाहु * सूर्य्यक ढाकिबे येन खेदि जाय राहु
रामक देखिया भीम तेजिला आटास * त्रैलोक्यर लोकत लागिल महात्रास ८३
सकल ब्रह्मांड जुरि प्रतिध्वनि गैल * वज्र परे बुलि सर्व्वजन भय भैल
पाताल सदृश करि वेन्तगोट वाया * सवाके खाइबाक याय पृथिवी कम्पाया ८४
राक्षसीक देखि ऋषि महाभय भैला * रामर पिचत गैया आर हुया रैला
ऋषिक आश्वासि रामे जुरिलन्त वाण * ताड़कार हृदयत करिल सन्धान ८५
सरकिया वाण हियाते गैल पशि * घोर आटासेक दिया परिल राक्षसी
वज्रर प्रहार येन हृदये परिल * ताड़का तेजिल प्राण पृथिवी लरिल ८६
आकाशत आनन्द मिलिल देवतार * जय जय राम बुलि करय जोकार
रामर शिरत वरिषिल पारिजात * दुन्दुभि शवदे नाचे तुलि दुई हात ८७
दारुणी राक्षसी मरि गैला यमघर * रामर प्रसादे दुख खंडिल लोकर
राक्षस वधिबे प्रति भैला अवतार * प्रथमते रामे प्राण लैल ताड़कार ८८
देखि विश्वामित्रर हरष भैल मन * रामक बुलिला मुनि प्रशंसा बचन
धन्य धन्य राम तुमि पुरुष प्रधान * एकपात शरे राक्षसीर लैला प्राण ८९

यह सुनकर रघुवर ने धनुष में टंकार किया। ताड़का को आज एक ही वाण में मार गिराऊँ। निशाचरी (राक्षसी) ने मनुष्य की आहट पा ली तो दिशाओं को अन्धकारपूर्ण करती क्रोध से भागती हुई आई ॥ ८८१ ॥ उसके कान में मनुष्य के मुंड लटक रहे हैं। वह मुंह खोले आ रही है मानों स्वयं यम ही हो। वदन पर मनुष्य का चमड़ा खड़खड़ा रहा है। उसका रूप पर्वत के समान भयंकर है ॥ ८८२ ॥ वह शाल वृक्ष के समान दो हाथों को वढ़ाकर इस प्रकार आती है मानों सूर्य को ढकने के लिए राहु दौड़ रहा हो। राम को देखकर वह भीषण शब्द से चीख पड़ी जिसे सुनकर तीनों लोकों के लोगों में भयानक त्रास का संचार हो गया ॥ ८८३ ॥ उसके शब्द की गूँज सारे ब्राह्मांड भर में फैल गई। गाज गिर रही है यह समझकर सारे लोग भयभीत हो गये। ताड़का अपने मुँह को पाताल के समान खोलकर पृथ्वी को कम्पित करती हुई सभी को खाने दौड़ी ॥ ८८४ ॥ उस राक्षसी को देखकर ऋषि को वड़ा भय हुआ। वे राम के पीछे जाकर छिप गये। ऋषि को आश्वासन देकर राम ने धनुप पर वाण लगाया और ताड़का के हृदय पर निशाना साधा ॥ ८८५ ॥ धनुप से छूट कर वह वाण सीधे जाकर ताड़का के हृदय में घुस गया। भीषण चीत्कार कर वह राक्षसी गिर पड़ी; मानों हृदय पर वज्र का आघात आ पड़ा हो। ताड़का ने प्राण त्याग दिये और पृथ्वी काँप उठी ॥ ८८६ ॥ आकाश में देवताओं को आनन्द प्राप्त हुआ। वे जय-जय राम कहकर हर्षध्वनि करने लगे। राम के सिर पर पारिजात पुष्पों की वर्पा होने लगी। दुन्दुभि के के शब्द के साथ वे दोनों हाथ उठाकर नाचने लगे ॥ ८८७ ॥ इस प्रकार निर्दया राक्षसी मर कर यमालय चली गई। राम की कृपा से लोगों का दुःख दूर हुआ। राक्षसों का वध करने के लिए उन्होंने अवतार लिया। पहली वार राम ने ताड़का के प्राण ले लिये ॥ ८८८ ॥ यह देखकर विश्वामित्र वड़े प्रसन्न हुए। मुनि ने राम की प्रशंसा की। हे राम, तुम धन्य हो, तुम पुरुपोत्तम हो। तुमने एक ही वाण में राक्षसी के प्राण ले लिये ॥ ८८९ ॥ हे राम, तुम्हारी ही कृपा से लोगों की दुर्दशा दूर हुई। हे राम!

गुचिल दुर्गति राम तोमार प्रसादे * हुयो चिरंजीव राम मोर आशीर्व्वादे
तोमार निर्म्मल यश वाढ़ोक अशेष * अनन्तरे भैला आसि रजनी प्रवेश ९०
महासुखे सिटो राति बंचिला तथाते * रामक मातिला ऋषि उठिया प्रभाते
तोमार विक्रमे राम तुषिला आमाक * नाना अस्त्र दिया मइ तुषिवो तोमाक ९१
मंत्रे समे ब्रह्म अस्त्र लैयो महाशय * दिबोहो वैष्णव अस्त्र त्रैलोक्य विजय
रुद्रमंत्र समन्विते दिबो रुद्र शर * वज्रसाय समे अस्त्र दिवो वासवर ९२
शिखाइबो अग्निर बाण परम विक्रम * लैयोक गरुड़ वाण आति निरुपम
शिखाओं गन्धर्व्व वाण वैरी क्षयंकर * संग्राम विजयी वाण लैयो गन्धर्व्वर ९३
शकति तोमार त्रिकंटक कनियाल * असि अर्द्धचन्द्र शेल शूल भिंडिपाल
खड़ खुर त्रिकुश विशाल टांगि भल्ल * परिघ पट्टिश गदा परशु मुषल ९४
हरित लोहित प्रास शतघ्नी कुलिश * व्याघ्रमुख नागपाश त्रिशूल निदुंश
कुवेर बरुण वाण स्तम्भन मोहन * लह अहिपत्र वायु वाण वितोपन ९५
लैयो निशाचक्र अस्त्र त्रिभुवने सार * चन्द्रसूर्य्य मंत्र अस्त्र शत्रु क्षयंकार
यम अस्त्र दिबो यमदंड समसर * शिखियोक दिव्य अस्त्र मंत्र निरन्तर ९६
असुर मानुष यक्ष रक्ष पिशाचर * शिखाइवो तोमाक माया मोह यत शर
स्नान करि आसि अस्त्र लैयोक एखने * शुनि राम लक्ष्मणे हरिष भैल मने८९७
स्नान करि ऋषिर आगत वसिलन्त * नाना अस्त्र शस्त्र मुनि दुइको शिखाइलन्त
बिश्वामित्र ऋषिर भैलन्त दुयो शिष्य * अस्त्र शिखि दुयो भाइ मनत हरिष८९८

मेरे आशीर्वाद से तुम चिरंजीवी हो। तुम्हारा निर्मल यश दिन प्रति दिन वढ़ता रहे। इसके वाद रात आ गई॥ ८९०॥ वहाँ बड़े आनन्द से वह रात वितायी गयी। सवेरे उठकर ऋषि ने राम से कहा, हे राम, तुमने अपने पराक्रम के द्वारा मुझको तुष्ट किया है, मैं विभिन्न अस्त्र देकर तुमको तुष्ट करूँगा॥ ८९१॥ हे महाशय, तुम मंत्र सहित यह ब्रह्म अस्त्र लो। इसके अतिरिक्त मैं तुम्हें त्रैलोक्य विजय करने वाला वैष्णव अस्त्र भी दूगा। रुद्रमंत्र समन्वित रुद्रवाण दूँगा। इन्द्र के वज्र जैसा अस्त्र दूँगा॥ ८९२॥ परम पराक्रमी अग्निवाण भी सिखाऊँगा। अत्यन्त अनुपम गरुड़-वाण भी सिखाऊंगा। वैरियों का नाश करने वाला गन्धर्ववाण भी सिखाऊँगा। गन्धर्वों का संग्रामविजयी वाण सिखाऊँगा॥ ८९३॥ शक्ति, तोमर, त्रिकंटक, कनियाल, असि, अर्धचन्द्र, शेल, शूल, भिंदिपाल, खंग, क्षुर (छुरा), त्रिकुश, विशालाकार फरसा, भाला, परिघ, पट्टिश, गदा, परशु और मूसल भी सिखाऊँगा॥ ८९४॥ पीला और लाल प्रास, शतघ्नी कुलिश, व्याघ्रमुख, नागपाश, त्रिशूल, निदुंश, कुवेर-वाण, वरुणवाण, स्तम्भन, मोहन, अहिपत्र तथा वायुवाण और वितोपन वाण भी सिखाऊँगा॥ ८९५॥ त्रिभुवन में सार अस्त्र निशाचक्र लेना। शत्रु-क्षयकरी चन्द्र-सूर्य मंत्र वाला अस्त्र लेना। यमदण्ड के समान यम अस्त्र लेना। इस प्रकार दिव्य अस्त्रों (का प्रयोग) और मंत्रों को निरन्तर सीखना॥ ८९६॥ असुर मनुष्य, यक्ष, राक्षस व पिशाचों के माया-मोह वाले सारे वाण सिखाऊँगा। स्नान करके यहाँ आकर अस्त्र लेना। यह सुनकर राम-लक्ष्मण मन ही मन वहुत खुश हुए॥ ८९७॥ स्नान कर वे दोनों आकर ऋषि के पास बैठ गये। मुनि ने दोनों को विभिन्न अस्त्रों का प्रयोग सिखाया। इस प्रकार वे दोनों विश्वामित्र मुनि के शिष्य वने। अस्त्र सीखकर दोनों भाई मन में वहुत प्रसन्न हुए॥ ८९८॥

मारीच-सुबाहु-बध

अनन्तरे ऋषि राम लक्ष्मणक लैया * रंगमने तपोबने प्रवेशिल गैया
विश्वामित्रे बुलिलन्त शुनियोक राम * एहि तपोवन मोर सिद्धाश्रम नाम८९९
मारीच सुबाहु एहि बनेर भितर * आछे दुइरो लगे चैध्य कोटि निशाचर
राखिबा आमार यज्ञ ताक मारि रणे * आनिलो तोमाक मइ एहिसे कारणे९००
राक्षसक मारि दियो आमाक निर्भय * तोमार प्रसादे हौक यज्ञर उदय
शुनि रामचन्द्रे बुलिलन्त एहि हौक * मारिबो राक्षस सुखे यज्ञ करियोक९०१
शुनि मुनिराजर हरिष भैला मने * रामक देखिला आसि यत मुनिगणे
फले मूले दुयो भाइक कराइला भोजन * पाचे तृणशय्यात शुतिला दुयोजन९०२
रजनी प्रभाते उठि मुनिगण यत * स्नान संध्या तर्पण करिया समापत
यज्ञर सम्भार माने एकत्र करिल * शुभक्षणे मुनिगण यज्ञ आरम्भिल९०३
रामक बुलिला विश्वामित्र मुनिवर * स्नान करि नियमे धरियो धनुशर
शुनि राम लक्ष्मणे करिला गैया स्नान * दुयो भाइ नियमे धरिला धनुर्व्वाण९०४
अनन्तरे ऋषिराजे करिला सुवेश * मंत्रे राम लक्ष्मणर बान्धिलन्त केश
मणिरत्न कंठा दिला दुयो भाइर गले * ऋषिक पुछिला रामचन्द्र कौतूहले ५
केतिक्षणे आसिबेक राक्षस दुर्ज्जन * ऋषिये बोलन्त राम शुनियो वचन
रात्रिदिने मौन ब्रत दिन छय माने * शर धनु धरि दुयो थाका सावधाने ६

मारीच-सुबाहु का वध

इसके बाद ऋषि ने राम-लक्ष्मण को लेकर सानन्द तपोवन में प्रवेश किया। विश्वामित्र ने कहा, हे राम, सुनो, यही मेरी तपोवन है। इसका नाम सिद्धाश्रम है ॥ ८९९ ॥ इसी वन में मारीच और सुबाहु रहते है। उन दोनों के पास चौदह करोड़ निशाचर रहते हैं। उसको युद्ध में मारकर मेरे यज्ञ की रक्षा करना। इसी कारण मैं तुम लोगों को लाया हूँ ॥ ९०० ॥ राक्षस को मार कर मुझको भयशून्य करो। तुम्हारी कृपा से यज्ञ आरम्भ हो जाय। यह सुनकर रामचन्द्र ने कहा, ऐसा ही हो। मैं राक्षस को मारूँगा, तुम आनन्दपूर्वक यज्ञ करो ॥ ९०१ ॥ (यह) सुनकर मन ही मन मुनिराज बड़े खुश हुए। जितने मुनि थे सभी ने आकर राम को देखा। दोनों भाइयों को फल-फूल का भोजन कराया गया। इसके बाद दोनों घास के बने विस्तर पर लेटे ॥ ९०२ ॥ रात्रि समाप्त हुई, प्रभात होने पर सारे मुनि उठकर स्नान करने गये और संध्या-तर्पण के उपरान्त यज्ञ के सारे उपकरण एकत्र किये। शुभघड़ी देखकर मुनियों ने यज्ञ आरम्भ कर दिया ॥ ९०३ ॥ इसके बाद राम से विश्वामित्र मुनि ने कहा, तुम स्नान कर नियमानुसार धनुष-वाण का धारण करना। यह सुनकर राम-लक्ष्मण ने जाकर स्नान किया और दोनों भाइयों ने नियमपूर्वक धनुष-वाण ग्रहण किया ॥ ९०४ ॥ इसके उपरान्त ऋषिराज ने मंत्र पढकर अच्छे वस्त्र पहनाकर राम और लक्ष्मण के केश बाँधे। दोनों भाइयो के गले में मणिरत्न के बने कंठहार डाल दिये। रामचन्द्र ने कौतूहल-पूर्वक ऋषि से पूछा ॥ ९०५ ॥ हे मुनिवर, वह दुष्ट राक्षस कितनी देर में आएगा? ऋषि ने कहा, हे राम, मेरा कहना सुनो। तुम दोनों रातोंदिन मौन रहकर छह व्रत रखो और सावधानी से धनुष-वाण थामे रहो ॥ ९०६ ॥ वह राक्षस छह दिन

आसिब राक्षस छय दिन अनन्तरे * दुयो भाइ शर करि मारिवा सत्वरे
शुनि धनु धरि राक्षसक बाट चाइ * उजागरे रैला सावधाने दुयो भाइ ७
बिश्वामित्र मुनि यज्ञ करिबाक लैल * आचार्य्य ब्राह्मण तिनि सहस्रेक हैल
मंडल नियमे वेदमंत्र उच्चारिला * सांगोपांगे ईश्वरक पूजिवे लागिला ८
निरन्तरे पूजिलेक छय दिनमान * अग्नि थापिलन्त कुंड करिया निर्म्माण
दिलन्त आहुति आति करि वेदध्वनि * घृतर सुरभी घ्राण उठि गैल छानि ९
अरण्यर परा निशाचर गन्ध पाइल * मारीच सुवाहु यज्ञ विध्वंसिवे आइल
चैध्य कोटि निशाचर आसिल लगत * मारीच राक्षस आइल सवारो आगत १०
पिचत सुवाहु आसि रैल महाबल * आकाश व्यापिल येन घोर मेघदल
येन वज्र परे राव तेजे भयंकर * देखि निरन्तरे ऋषि भय भैला वर ११
पाचे राम लक्ष्मणे ऋषिर देखि डर * नाहि भय बुलि आश्वासिला रघुवर
मंत्र पढ़ि रामे शर जुरिला धनुत * देखिया राक्षस भय भैल अदभुत १२
वायुवेगे रामचन्द्रे प्रहारन्त शर * दारुण सन्धाने फुटि मरे निशाचर
वज्रतो अधिक आति रामर सन्धान * एकछोटे राक्षस चलय यमस्थान १३
लक्ष्मणे धरिया धनुशर प्रहारन्त * यम येन खेदि खेदि राक्षस मारन्त
शानत शनाइल शर येन खुरधार * करन्त लक्ष्मणे राक्षसक बुन्दामार १४
निदारुण छोटे मारि गैल यमघर * लक्ष्मणे मारिला आठ कोटि निशाचर
रामर शरत मरि गैल छय कोटि * दुइ भाइ राक्षसक करिला निगुटि १५

के वाद आएगा, तव दोनों भाई वाण चलाकर उसको झटपट मार डालना। यह सुनकर धनुप पकड़कर राक्षस की वाट जोहते दोनो भाई जागते हुए चौकन्ने वने रहे ॥ ९०७ ॥ विश्वामित्र मुनि यज्ञ करने लगे। तीन हजार ब्राह्मण आचार्य वने। मडल के नियमानुसार वे वेदमंत्र का उच्चारण करने लगे।' सव लोग समवेत रूप से ईश्वर की पूजा करने लगे ॥ ९०८ ॥ छह दिनों तक वे निरन्तर पूजा करते रहे। कुड का निर्माण कर उनमे अग्नि की स्थापना की। वेदध्वनि कर उन्होने आहुति दी तो घृत की सुगन्ध चारों ओर छा गई ॥ ९०९ ॥ जव अरण्य से दूर स्थित राक्षसों को इसकी गन्ध मिली तो मारीच और सुवाहु आए। उनके साथ चौदह करोड निशाचर भी आए। राक्षस मारीच उन सव के आगे-आगे आया ॥ ९१० ॥ उसके पीछे-पीछे महावली सुवाहु भी आकर स्थित हो गया। ऐसा प्रतीत हुआ मानों आकाश मे घोर वादल छा गये। मानों भीपण शव्द के साथ वज्र गिरने लगे। यह देखकर ऋपियो को वड़ा डर लगा ॥ ९११ ॥ इसके पश्चात् जव राम-लक्ष्मण ने ऋपियों को डरते हुए देखा तो 'डरो नही' यह कहकर उनको आश्वासन दिया। मन्त्र पढ़कर राम ने धनुप पर वाण चढ़ाया यह देखकर उन राक्षसो के मन मे अद्‌भुत भय छा गया ॥ ९१२ ॥ रामचन्द्र ने वायु-वेग से वाण चलाकर प्रहार करना शुरू कर दिया। गजव के निशाने से घायल होकर राक्षस मरने लगे। एक ही चोट में अनेकों राक्षस यमालय जाने लगे ॥ ९१३ ॥ लक्ष्मण धनुप-वाण लेकर ऐसा प्रहार करने लगे मानो साक्षात् यम ही खदेड़ खदेड़ कर राक्षसो को मार रहे हो। वाण इस प्रकार क्षुर की धार के समान तेज थे मानों शान पर चढाकर धारदार वनाये गये हो। लक्ष्मण ने राक्षसो मे मारधाड़ मचा दी ॥ ९१४ ॥ भयानक आघात से मर कर वे राक्षस यमालय जाने लगे। लक्ष्मण ने आठ करोड निशाचर मार गिराये। राम के वाणों से छह करोड़ मरे। दोनो भाइयों ने राक्षसों

हेन देखि सुबाहु राक्षस भयंकर * लक्ष्मणक खेदि गैल यम समसर
देखि भल्लशर जुरि लक्ष्मणे गुणत * सन्धाने हानिला सुबाहुर हृदयत १६
महा चोटे फुटिया मरिल दुराचार * परिल भूमित सिटो पर्व्वत आकार
देखि मारीचर आति क्रोध वर भैल * भयंकर आतासे रामक खेदि गैल १७
हासि रामे पाँच शरे भेदि हृदयक * वायुबाण हानि उरुवाइला मारीचक
ऊर्द्ध्वमुख करि चाहि आछे मुनिगणे * शुकान तृणक येन लै यान्त पवने १८
रामशरे राक्षसक लै यान्त आकाशे * देखिया त्रिदश देवे खलखलि हासे
महावेगे गैया सिटो छेराया सागर * हेट माथे लंकात परिल निशाचर १९
भांगि गैल घार मूर भैल छिराछिर * भैल अचेतन वहे बोम्वाले रुधिर
नपावे उशास तेज वहे नाके मुखे * न मरिल कथमपि जील वर दुखे २०
वाण विषे क्षणे क्षणे होवे श्रुतिहत * राममय मात्र देखे सकले जगत
रामे पाइल बुलि भय होवे स्वपनत * राघवर शरे लैया फुरे आकाशत २१
सपोन सचिते सिटो राम विने आन * नेदेखय रामत लागिल येन ध्यान
नजाय नुपुहाय तार रामर भयत * एरिल मारीचे विषयर भोग यत २२
सेहि धरि विदाय लइया रावणत * तप हेतु चलि गैया रहिल वनत
राम लक्ष्मणर देखि विक्रम साक्षात * पुष्प बरिषिला देवे दुइरो माथात २३
अद्भुत महिमा देखि राम लक्ष्मणर * भैलन्त विस्मय मुनिगण निरन्तर
दुइ भाइक प्रशंसा करिला वहुतर * धन्य राम लक्ष्मण सार्थक धनुर्द्धर २४

को मारकर निर्मूल कर दिया ॥ ९१५ ॥ ऐसा देखकर भयकर राक्षस सुवाहु यम के समान लक्ष्मण की ओर लपका। यह देखकर लक्ष्मण ने प्रत्यंचा पर मल्लशर साधा और सुवाहु के वक्ष का निशाना साधकर मारा ॥ ९१६ ॥ इस भीपण प्रहार से वह दुष्ट घायल होकर मरा। वह पर्वत के समान आकार धारण करके भूमि पर जा गिरा। यह देखकर मारीच को वड़ा क्रोध आया। वह भयंकर चीत्कार के साथ राम की ओर लपका ॥ ९१७ ॥ तव हँसकर राम ने पचशर से उसका हृदय वीध दिया। फिर वायु-वाण चलाकर मारीच को हवा में उडा दिया। सारे मुनि मुँह ऊपर उठाये ताक रहे है—"मानों तिनके को हवा उडाये ले जा रही है" ॥ ९१८ ॥ राम का बाण राक्षस को हवा मे उड़ाये लिये जा रहा है यह देखकर देवता खिलखिला कर हँस पड़े। तीव्र गति से उडता हुआ वह राक्षस सागर को पार करके मुह के वल लंका में जा गिरा ॥ ९१९ ॥ उसके सिर और गर्दन आदि अग टूट गये और शरीर छिन्न-भिन्न हो गया। वह अचेतन हो गया और शरीर से खून वहने लगा। नाक-मुँह से तेजी से वह साँस नही ले पा रहा है। किसी प्रकार से वह मर तो न सका लेकिन वड़ी ही यातना लेकर जीवित रहा ॥ ९२० ॥ वाण के विप से वीच-वीच मे उसे कुछ सुनाई न पडा। वह सारे-संसार को राममय देखने लगा। राम आया है यह सुनकर उसको सपने में भी डर लगने लगा। राम का वाण उसको लेकर आकाश में फिरता रहा ॥ ९२१ ॥ चाहे सपने मे हो चाहे सचेत, उसे राम के विना कुछ दिखाई ही नही पड़ता था, मानो वह राम ही के ध्यान में रम गया हो। राम के प्रति उसका भय न तो जाता और न समाप्त होता। मारीच ने विपय का भोग करना भी त्याग दिया ॥ ९२२ ॥ मारीच ने रावण से विदा ले ली और तपस्या करने के लिए वन में जाकर रहने लगा। राम-लक्ष्मण का पराक्रम प्रत्यक्ष देख कर देवता दोनों के सिर पर पुष्पवर्षा करने लगे ॥ ९२३ ॥ राम-लक्ष्मण की अद्भुत महिमा देखकर समस्त मुनि निरन्तर विस्मित होते रहे।

ईषत कटाक्षे दुयो करि महालीला * चैध्य कोटि राक्षस क्षणेके संहरिला
कर्म्म देखि जानिलोहो नुहिका मानुष * भैला अवतार हरि परम पुरुष २५
राक्षस मारिया भार करिवा निर्व्वाण * साधिवाहा जगतर परम कल्याण
यार नामे सांग होवे धर्म्म कर्म्म यत * हेन तुमि भैला आसि सहाय यज्ञत २६
जानिलोहो आमार भाग्यर नाहि सीमा * एहिमते दुहान्तरो वखानि महिमा
मुनिगण समे विश्वामित्र महाऋषि * पूर्णा दिया यज्ञ सांग करिला हरिषि २७
अग्नि विसर्ज्जिया पाचे दक्षिणा करिला * राम लक्ष्मणक सवे आशीर्व्वाद दिला
विश्वामित्र मुनिर हरिष आति मन * परमान्ने भोजन कराइला मुनिगण २८
दाने माने समस्तरे मन सन्तोषिला * सुवर्ण रजत वस्त्र गावे गावे दिला
भैलन्त सन्तुष्ट मुनिगण निरन्तर * रंगमने चलि गैला आपोनार घर २९
रामर प्रसादे विश्वामित्र मुनिवर * यज्ञ सांग करि भैला हरिष विस्तर
हाते लुंडि घुंडि आति दुइहन्तर गावे * आशीर्व्वाद करि वुलिलन्त वहुभारे ३०
तुमि नारायण देव अनादि अनन्त * तूमिसे यज्ञर फलदाता भगवन्त
तुमिसे आपुनि धर्म्म कर्म्म यज्ञ यत * जानि समर्पिलो यज्ञ तयु चरणत ३१
तुमि केवल सत्य वोलो परमार्थ * तोमार प्रसादे राम भैलोहो कृतार्थ
तोमार विनाइ आन सवे व्यवहार * ताके प्रवर्त्ताइवे प्रति भैला अवतार ३२
आपुनि आचारी धर्म्म मनुष्यर नय * तोमाक ईश्वर वुलि केहो नजानय
योगवले छद्म हुया आछा महाशय * व्यवहार पालिवाक आमार लागय९३३

उन्होने दोनों भाइयों की भूरि-भूरि प्रशसा की—राम-लक्ष्मण दोनों धन्य है—वे सार्थक धनुर्धर है ।। ९२४ ।। दोनों ने अपने नेत्रों के कटाक्षमात्र से ही यह महालीला की, चौदह करोड़ राक्षसों को क्षण भर में मार गिराया। इनके कार्य देखकर मालूम हो गया कि ये मनुष्य नही है। परमपुरुष श्रीहरि ने ही अवतार लिया है ।। ९२५ ।। राक्षसो को मार कर ये पृथ्वी का वोझ हल्का करेगे और जगत् का परम कल्याण करेगे। जिनका नाम लेते ही सारे धर्म-कर्म के फलों की प्राप्ति हो जाती है—ऐसे तुम सशरीर आकर यज्ञ मे सहायक वन गये ।। ९२६ ।। हमने यह भलीभाँति जान लिया कि हम लोगों के भाग्य की कोई सीमा नही। इस प्रकार से उन दोनों की ही महिमा वखानी गई तथा समस्त मुनियो के साथ महाऋपि विश्वामित्र ने पूर्णाहुति देकर यज्ञ समाप्त किया ।। ९२७ ।। अग्नि का विसर्ज्जन कर उसकी प्रदक्षिणा की। सभी ने राम-लक्ष्मण को आशीर्वाद किया। विश्वामित्र मुनि वड़े प्रसन्न हुए। उन्होने परमान्न वनाकर सभी मुमियो को भोजन कराया ।। ९२८ ।। दान और मान के द्वारा सभी को सन्तुष्ट किया। प्रत्येक को स्वर्ण, रजत और वस्त्र प्रदान किया। सभी मुनि वड़े सन्तुष्ट हुए और आनन्दित होकर अपने घर चले गये ।। ९२९ ।। राम की कृपा से मुनिवर विश्वामित्र यज्ञ समाप्त कर वडे हर्षित हुए। दोनो के वदन को अपने हाथों से सहलाते हुए कितने ही प्रकार से वे उनको आशीर्वाद देते रहे ।। ९३० ।। हे देव नारायण, तुम अनादि अनन्त हो। हे भगवन्, तुम्ही यज्ञ के फलदाता हो। तुम्ही स्वयं धर्म-कर्म तथा यज्ञ आदि हो यह जानकर मैं तुम्हारे चरणों में यज्ञ समर्पित करता हूँ ।। ९३१ ।। हे परमार्थ, केवल तुम्ही सत्य वोलते हो। हे राम, तुम्हारी कृपा से हम कृतकृत्य हुए। तुम्हारे आधार पर ही सारे आचरण है। उसी को प्रवर्त्तित करने के लिए ही तुमने अवतार ग्रहण किया ।। ९३२ ।। तुम स्वयं ऐसे धर्म का आचरण करते हो जो मनुष्य नही

यज्ञ रक्षा करि हित करिला आमाक * उचित प्रसाद आवे कि दिबो तोमाक

सीतार स्वयम्बरलै विश्वामित्र मुनिर लगत राम-लक्ष्मणर गमन

एहि बुलि मने गुणिलन्त मुनिवर * उपजिया आछे लक्ष्मी जनकर घर ९३४
येहि येहि रूपे अवतार हन्त हरि * उपजन्त लक्ष्मी देवी सेहि रूप धरि
रामरूपे नारायण आछन्त साम्प्रत * सीतारूपे लक्ष्मी आछा जनक घरत ३५
निश्चये हैवन्त सीता भार्या राघवर * जनक नृपति पाति आछे सयम्बर
राम लक्ष्मणक मिथिलाक लैया जाओं * सीता समे राघवर विवाह कराओं ३६
हेन मने गुणि मुनि करिलन्त सार * रामक बोलन्त शुना बचन आमार
मिथिला नगरे आछे जनक नृपति * राजऋषि धर्म्म आचरन्त महामति ३७
पुत्रवते प्रजाक पालन्त नृपवर * सीता नामे आछे तान दुहिता स्नेहर
अयोनिका रूपे आछे जनकर घरे * येन अमृतर घट दुगुध सागरे ३८
त्रैलोक्य मोहिनी कन्या परम सुन्दरी * किबा लक्ष्मी पार्व्वती आछन्त मूर्त्ति धरि
जानकीर रूपर नाहिके पटन्तर * देखि चूर होवे यत दर्प कन्दर्पर ३९
मुनिमनमोहन वदन रुचिकर * देखि लाजे थिर नथाकन्त शशधर
नयनक देखि आतिशय पाया लाज * पलाइ गैया कमल थाकिल जलमाज ४०

कर सकते। तुमको ईश्वर के रूप में कोई नही जानता। हे महाशय, तुम योगबल से छद्मवेश धारण किये हुए हो। व्यवहार का पालन करने के लिए ही मेरे साथ आए हो ॥ ९३३ ॥ यज्ञ की रक्षा कर तुमने मेरा उपकार किया। बताओ तुमको अब इसके लिए कौन सा उचित प्रसाद दें।

सीता के स्वयम्वर में विश्वामित्र मुनि के साथ राम-लक्ष्मण का जाना

यह कहकर मुनिवर ने मन ही मन ध्यान लगाया तो ज्ञात हुआ कि जनक के घर लक्ष्मी जन्म लेकर बैठी है ॥ ९३४ ॥ जिस-जिस रूप में हरि अवतार लेते हैं, लक्ष्मी देवी भी उसी-उसी रूप में अवतार लेती है। सम्प्रति नारायण राम का रूप धारण किये हुए हैं और सीता का रूप लिये लक्ष्मी जनक के घर मे है ॥ ९३५ ॥ निश्चित रूप से सीता राम की भार्या बनेगी। राजा जनक ने स्वयंवर रच रखा है। राम-लक्ष्मण को मिथिला ले जाऊँ और सीता के साथ राम का विवाह करा दूँ ॥ ९३६ ॥ मन मे ऐसा सोचकर मुनि ने निश्चय कर लिया। राम से कहा, मेरा वचन सुनो। मिथिला नगरी मे जनक राजा है। वे महामति राजऋषि का धर्म निभाते है ॥ ९३७ ॥ वे नृपवर प्रजा का पुत्रवत् पालन करते हैं। सीता नामक उनकी एक स्नेहमयी कन्या है। वे अयोनिसम्भवा के रूप में जनक के घर मे इस प्रकार है जिस प्रकार दूध के समुद्र मे अमृत से भरा घट हो ॥ ९३८ ॥ वह कन्या त्रैलोक्य-मोहनी और परम सुन्दरी है। ऐसा लगता है मानो मूर्त्तिमती लक्ष्मी या पार्वती हों। जानकी के रूप की कोई तुलना नही। उनको देखकर कन्दर्प का सारा दर्प चूर-चूर हो जायगा ॥ ९३९ ॥ उनका रुचिकर मुखड़ा मुनियों का मन भी मोह लेता है जिसको देखकर चन्द्रमा भी लज्जा से स्थिर नहीं रह सकता। उनके नयनों को देख [illegible] हो कमल भाग कर जल के बीच रहने लगा ॥ ९४० ॥ [illegible] रत्न के वने तिलफूल जैसा है। उनके

रत्न तिलफुल जिनि नासा करे कान्ति * प्रकाशे दशन जिनि मुकुतार पान्ति
भ्रुव सुवलित मदनर धनु सम * कपालत सुन्दर तिलक मनोरम ४१
हास्यत वरिषे येन अमृत प्रचुर * नयने काजल ज्वले शिखत सिन्दुर
दीर्घ केशचय जिनि आछे चामरक * भ्रमरार शारी येन कुटिल अलक ४२
बिम्बफल अधिक अधर मनोहर * अमृत सुरस वाणी स्वर कोकिलर
नयनर प्रान्ते येन दलित अंजन * मदनर शर येन कटाक्ष ईक्षण ४३
समान कर्णर तले कुंडल ज्वलय * उपरत चाकि चिकिमिकि प्रकाशय
कुंडलर कान्ति गंडस्थले प्रकाशित * गले गलपाता मणिमय मनोनीत ४४
सुवलित भुजयुग देखि लाज पाइ * थाकिल मृणाल गैया पंकजे लुकाइ
वाहुत वाहुति शांख दुयो हाते आछे * रत्नमय वलया कंकन आगे पाछे ४५
सुन्दर आंगुलि पान्ति ललित वलित * सुवर्णर आङठि प्रत्येक आंगुलित
मणि चन्द्र सम नख परम उज्ज्वल * कर किशलय तुल रातुल कमल ४६
हृदयत वाढ़े स्तन वदरी समान * दरशने युवतर हरय पराण
स्तन मध्ये शोभा करे सातसरि हार * कांचने रचित मणि माला मुकुतार ४७
सुविपुल नितम्बक देखिते सुवेश * हरर डम्वरू येन क्षीण मध्यदेश
कुन्दत कुन्दला येन मुठिते लुकाय * वतासेते हाले भागि परिल पराय ४८
रत्नर मेखला ज्वले खोंचार उपर * सुवरित उरु रामकल समसर
याक देखि स्तम्भि रहे मदनर मन * नव पद्मकोष येन दुखानि चरण ४९

दन्त यों शोभा पाते हैं मानो मोतियों की पाँति हो। भौंहें मदन के धनुष के समान सुघर हैं और उनके माथे पर मनोरम व सुन्दर तिलक लगा है ॥ ९४१ ॥ उनके हास्य से मानो अत्यधिक अमृत वरसता है। उनके नयनों मे काजल प्रकाश देता है तो शिखा मे सिन्दूर। चँवर को नीचा दिखाते हुए उनके लम्बे केश हैं। उनकी कुटिल अलकें मानो भौंरो की पाँत हों ॥ ९४२ ॥ उनके अधर बिम्बफल से अधिक मनोहर है। उनकी वाणी अमृत जैसी रसभरी है और स्वर कोकिल सा है। नयनों के सिरों पर मानो अंजन लगाया गया हो। उनका कटाक्षपूर्वक देखना मानो मदन का वाण चलना हो ॥ ९४३ ॥ एक ही समान दोनों कर्णो के नीचे कुंडल चमक रहे है। ऊपर जूड़ा चमचमा रहा है। गाल पर कुंडल की कान्ति प्रकाशित है। गले में मणिमय मनोज्ञ गलपाता (आभूषण) है ॥ ९४४ ॥ सुडौल दोनो वाँहों को देखकर मृणाल लज्जित होकर पंकज मे जाकर छिप गया। दोनों हाथों में शंख का बना वलय (कंकण) है और उसके आगे-पीछे रत्न के बने कंगन हैं ॥ ९४५ ॥ ऊंगलियों की पाँति वड़ी ही ललित व वलित हैं। प्रत्येक ऊंगली मे सोने की अंगूठी है। नाखून चन्द्रमणि जैसे उज्ज्वल हैं। कोंपल जैसे कर मानो लाल-कमल हों ॥ ९४६ ॥ वक्ष पर वेर के समान स्तन वढ रहे हैं जिनके दर्शन से युवको के प्राण मुग्ध हो जाते हैं। स्तनों के वीच सात हारो की लड़ियाँ शोभा देती है। वह मणिमाला काचन से वनी हुई है जिसमें मोतियाँ पिरोयी गई है ॥ ९४७ ॥ उसका विशाल नितम्ब भी देखने में इस प्रकार सुदर लगता है मानो शंकर का डमरू हो। उसका मध्यदेश ऐसा क्षीण है जैसे खराद पर चढाकर ऐसा सुडौल वनाया गया है कि मुट्ठी मे आ जाय। हवा के चलने पर वह उसका तन इस प्रकार हिलने लगता है मानो उड़कर अभी कही जा गिरेगा ॥ ९४८ ॥ कमर पर रत्न की वनी करधनी चमकती है। सुडौल जाँघें मानों वृहद केले के खम्भे हो जिनको देखकर मदन का भी मन स्तम्भित रह

माणिक मंजिर रुणजुन करि वाजे * सुवर्ण उज्झटि दश आंगुलिर माजे
पदतल रातुल कमल आतिशय * फुटि येन साक्षाते रुधिर वाज हय ५०
प्रथम यौवनी राजहंसर गमनी * सर्व्वांग सुन्दरी कन्या आति वितोपनी
त्रैलोक्यर रूप हुया आछे एकखान * अनेक यतने विधि करिला निर्म्माण ५१
आति शुभान्विता जनकर जीउ सीता * विष्णुत भकत सर्व्वगुणे आनन्दिता
आन एको नाहि तान हरिचिन्ता विने * येन चन्द्रकला वाढ़ि यान्त दिने दिने ५२
रूपगुण सीतार करिवे कोने सीमा * स्रजिया थैलन्त विधि मोहन प्रतिमा
गुणन्त मनत वसि जनक नृपति * कमन वरत दिहा दिवो सीता सती ५३
सर्व्वसुलक्षणी कन्या परम सुन्दरी * इहान समान वर पाइवो केने करि
गुणि गुणि राजा पाचे करिलन्त सार * मृग मारि महादेवे द्वारत आमार ५४
धनु एरि पूर्व्वकाले गैला महाशय * ताते यिटो जने गुण दिवाक पारय
इटो लक्ष्मीसमा कन्या विहा दिवो तात * एहि अंगीकार राजा करिला साक्षात ५५
आलोचिया मने जानकीर सयम्बर * मिथिलात सभा पातिलन्त नृपवर
विश्वकर्म्मा सम शिल्पी आनि सर्व्वजन * कराइलन्त पुर चित्र मन्दिर निर्म्माण ५६
अनेक उच्छ्रित गृह वहल विस्तर * प्रकाश करय येन कैलाश शिखर
सुवर्ण रजत रत्ने करिला आरम्भ * अनेक सहस्र फटिकर दिला स्तम्भ ५७
हीरा मणि माणिक लगाइला थाने थाने * करिला अनेक शिल्पी जानिलेक माने
नाना रत्ने चिकिमिकि करे ठाइ ठाइ * सूर्य्यर ज्योतिक येन चाहन नयाय ५८

जाता है। दोनों चरण मानों नये कमल-कोष हों ॥ ९४९ ॥ माणिक्य की वनी पैंजनियाँ झुन-झुन वजा करती हैं। सुवर्ण की वनी उजंटी नामक अलंकार दस उँगलियों मे शोभित है। पदतल मानों रक्त कमल हो या मानो खून फूटकर निकल रहा हो ॥ ९५० ॥ उस प्रथम यौवनवती सीता की चाल राजहंस जैसी है। वह कन्या सर्वांगसुन्दर और अति श्रेष्ठ है, मानों त्रैलोक्य का रूप एक ही स्थान में एकत्र है। विधि ने वड़े ही यत्न से इसका निर्माण किया है ॥ ९५१ ॥ जनक की वेटी सीता वड़ी ही कल्याणी है। वह विष्णु की भक्त है और सभी गुणों से समन्वित है। हरि के चिन्तन के सिवा उसका दूसरा कोई काम नही। वह चन्द्रकला के समान दिन व दिन वढ़ती जा रही है ॥ ९५२ ॥ सीता के रूप और गुणों को कौन सीमित कर सकता है। व्रह्मा ने मानों मोहन-प्रतिमा का सर्जन कर रखा है। राजा जनक मन ही मन वैठे सोच रहे है कि सती सीता का विवाह कैसे वर से करूँ ॥ ९५३ ॥ सारे सुलक्षणों से युक्त यह कन्या परमसुन्दरी है इसके योग्य वर कहाँ पा सकता हूँ। काफी सोचने के उपरान्त राजा ने निश्चय किया कि मृग को मार कर महादेव मेरे द्वार पर—॥ ९५४ ॥—धनुप छोड़कर प्राचीन काल मे चले गये। उस पर जो प्रत्यंचा चढ़ा पाएगा उसी से इस लक्ष्मी के समान वेटी का विवाह करूँगा ॥ ९५५ ॥ मन ही मन जानकी के स्वयंवर की वात सोचकर नृपवर ने मिथिला मे सभा वुलाई। विश्वकर्मा के समान सारे कारीगरों को वुलवाकर चित्र के समान पुरी और मन्दिरों का निर्माण कराया ॥ ९५६ ॥ अनेक ऊँचे-ऊँचे गृह अनेक संख्या में कैलाश शिखर जैसे शोभा पाने लगे। सोने, चाँदी और रत्नो से उसने इसके निर्माण का आरम्भ किया और हजारों स्फटिक के खम्भे वने ॥ ९५७ ॥ स्थान-स्थान पर हीरा, मणि, माणिक्य आदि लगाये गये। कारीगरो ने सम्मान प्रदर्शित करते हुए वहुत कुछ किया। विभिन्न रत्नों से प्रत्येक स्थान

सुवर्णे रजते बिरचिल रथली यत * थाने थाने मंच सजाइलन्त नाना मत
राजाक उचित सिंहासन थैला पारि * नानाविध आसन थापिला शारी शारी ५९
राजागण रहिवाक प्रति नृपवर * नाना स्थाने सजाइलन्त यत वासाघर
भोजन सम्भार बहुविध उपहार * भराइ थैलन्त राजा अनेक भंडार ६०
अनन्तरे माति आनि दूत बहुतर * समस्तके वचन बुलिला नृपवर
देशे देशे यत राजा आछे निरन्तर * समस्तके कह जानकीर सयम्वर ६१
शुनि दशोदिशे दूत गैल असंख्यात * घोषिलेक सयम्वर समस्ते राजात
जानकीर सयम्वर शुनि राजा यत * अमृत पिलेक येन हरिष मनत ६२
वस्त्र अलंकार दिया दूतक सादरि * पुछय सीतार कथा कह भाल करि
शुनि दूते रूपगुण वर्णावे सीतार * कथाते हरय मन सकले राजार ६३
मने गुण केनमते पाइबो जानकीक * तान्त बिने जीवन यौवन धिक धिक
एहि बुलि राज्यभार भार्य्या परिहरि * चतुरंग सेना समे चले शीघ्र करि ६४
याहन्ते गुणय पथे मने अवगाइ * जानो आगे बिहा करे मोके आगे पाइ
मइ आगे पाओं येवे नतु पावे आने * मोर आगे सीताक निवेक कार प्राणे ६५
रूपे गुणे समस्ते राजात मइ चार * मोते वरिबेक भाग्य आछय आमार
जनक नृपति भाले जानन्त आमाक * अवश्ये मोतेसे बिहा दिवन्त सीताक ६६
एहि गुणि रात्रि दिने पथ वाहि जाय * उगुल-थुगुल मने सुख-शान्ति नाइ
हस्ती घोरा रथे राजागणे निरन्तरे * मिथिला पशिल गैया महा आडम्बरे ६७

जगमगाने लगा मानो सूर्य की ज्योति हो, उस ओर देखा नहीं जाता ॥ ९५८ ॥ सोने और चाँदी से विभिन्न स्थलों की रचना की गई। विभिन्न प्रकार के मंच स्थान-स्थान पर बनाये गये। राजा के योग्य सिंहासन स्थापित किये गये—और विभिन्न प्रकार के आसन जगह-जगह पर स्थापित किया गया ॥ ९५९ ॥ नृपवर ने राजाओं के रहने के लिए जगह-जगह पर निवास स्थानो का निर्माण कराया। भोजन आदि पदार्थों और उपहारों से राजा ने अनेक भंडार भरवा दिये ॥ ९६० ॥ इसके बाद बहुत से दूतों को बुलाकर नृपवर ने कहा, देश-देश में जितने राजा हैं, सबसे जाकर बता दो कि जानकी का स्वयंवर है ॥ ९६१ ॥ यह सुनकर असंख्य दूत दशों दिशाओं मे चले गये और राजाओ मे उन्होंने स्वयंवर की घोषणा कर दी। जब जानकी के स्वयवर की बात सुनी तो राजाओं ने मानो हर्ष से अमृत पा लिया ॥ ९६२ ॥ उन्होंने दूतो को वस्त्र अलकार आदि देकर उनसे सादर पूछा कि तुम सीता के बारे में अच्छी तरह से बताओ। यह सुनकर दूत सीता के रूप और गुण की वर्णना करने लगते और अपनी बातों से सभी राजाओ के मन को हर लेते ॥ ९६३ ॥ मन ही मन वे सभी राजा लोग चिन्ता करते कि जानकी को किस प्रकार से प्राप्त किया जाय। उसके बिना इस जीवन और यौवन को धिक्कार है। यह कहकर राज्य का भार और अपनी भार्या को त्यागकर, चतुरंग सेना साथ लेकर वे चल पड़े ॥ ९६४ ॥ जाते समय पथ मे मन ही मन मे यह सोचते जाते कि सीता मुझ ही से पहले ब्याह करले, मैं ही उसे पहले पा जाऊँ। मुझ ही को वह पहले मिलेगी, किसी दूसरे को नही। मुझसे पूर्व सीता को लेने की हिम्मत किसको पड़ेगी ॥ ९६५ ॥ रूप और गुणो मे मै सभी राजाओ में सुपटु (श्रेष्ठ) हूँ। मेरा ही वह वरण करेगी—मेरा ही भाग्य ऐसा है। राजा जनक मुझको अच्छी तरह से जान ले तो अवश्य ही मेरे साथ सीता का विवाह कर देंगे ॥ ९६६ ॥

जनके देखिया राजागण आसिवार * पाद्ये अर्घे पूजि करिलन्त सतकार
वसिबाक प्रति राजा दिला सिंहासन * प्रिय वाक्य पुछन्त कुशल आगमन ६८
वुलिला सवार प्रति मधुर वचने * आजि सुप्रभात तोमासार दरशने
यार यार कथा कर्णे शुनिया आछिलो * किनो भाग्य तोमासाक चक्षुवे देखिलो ६९
एहिमते चाटुपटु अनेक वुलिला * रहिवाक प्रति दिव्य बासाघर दिला
अन्नपान षड़रस भोजन संभृत * समस्तके दिला याक येन समुचित ७०
एकें एकें राजा आइल येन दिगपति * सन्तोषिला सवाके जनक नरपति
पात्र मंत्री सेनागण हय हस्ती रथ * नाहि तार सीमा संख्या आसि आछे यत ७१
सवाके नृपति रहिवार स्थान दिला * अन्ने पाने समस्तरे चित्त सन्तोषिला
एक गोटा पद्म फुलि आछे सरोवरे * तार मधु लोभे धावे भ्रमर विस्तरे ७२
सेहिमते पृथिवीर राजा निरन्तर * जानकीक आशे आइल मिथिला नगर
भैला एकथान राजा वरिषेक मान * सवाको जनक करिलेक वहु मान ७३
अनन्तरे शुभ दिन तिथि वार चाइ * जनक आनिला सवे राजाक मताइ
वोलन्त नृपति शुना राजा निरन्तर * आजि पातिबोहो जानकीर सयम्बर ७४
एहि काजे तुमिसव आइला मोर ठाइ * वहु दिन प्रवासत आछा दुख पाइ
आशा वा निराशा आजि परिच्छेदा हौक * वोला राम राम सवे सभासद लोक ९७५

यह विचारते हुए रातोदिन पथ पर चलते रहते। उनके मन में उथल-पुथल मची हुई है—कोई शान्ति नहीं। हाथी, घोड़े और रथ पर सवार होकर राजा लोगों ने महा आडम्बर के साथ मिथिला नगरी में प्रवेश किया ।। ९६७ ।। जनक ने जब राजाओं को आते हुए देखा तो उनका पाद्य-अर्घ्य आदि से सत्कार किया। बैठने के लिए प्रत्येक राजा को सिहासन दिया तथा प्रत्येक से प्रेम भरे वाक्यों से पूछने लगे ।। ९६८ ।। सभी से मधुर वचन में उन्होने कहा, आज तुम लोगों के दर्शन से मेरा सुप्रभात हुआ। जिन-जिन के बारे में मैंने कानो से सुना था, कितना सौभाग्य है कि आज उन सबको अपनी आँखों से भी देख सका ।। ९६९ ।। इसी प्रकार बहुत सारी मन-लुभावनी बातें की। रहने के लिए प्रत्येक को सुन्दर आवास-गृह दिया। षड्रस-सम्पन्न विविध भोजन सामग्री तथा पेय दिया; इस प्रकार जिसके लिए जो समुचित है वही दिया ।। ९७० ।। एक-एक राजा ऐसे आए मानों दिक्पति हों। सभी को राजा जनक ने सन्तुष्ट किया। जितने पात्र, मित्र, हाथी, घोड़ा, रथ और सेनाएँ आई है उनकी न कोई सीमा है और न गिनती ।। ९७१ ।। सभी को राजा ने रहने का स्थान दिया और अन्न और पेय आदि से सभी को सन्तुष्ट किया। ऐसा प्रतीत होता था मानों सरोवर में केवल एक कमल खिला हुआ है उसी के मधु की आशा में असंख्य भौंरे भागते हुए आए है ।। ९७२ ।। इसी प्रकार संसार के सारे राजा जानकी की आशा में निरन्तर मिथिला नगर में आते रहे। एक ही स्थान पर साल भर तक सारे राजा एकत्र होते रहे। सभी का जनक ने बड़ा सम्मान किया ।। ९७३ ।। इसके उपरान्त शुभ घड़ी-साइत आदि निश्चित कर राजा जनक ने सारे राजाओं को बुलवा भेजा। राजा ने कहा, हे नृपतिगण, आप लोग बेखटके सुनें, आज मै जानकी की स्वयंवर-सभा का आयोजन करूंगा ।। ९७४ ।। इसी कार्य के लिए आप लोग मेरे पास आए है तथा बहुत दिनों से क्लेश सहते हुए प्रवास में पड़े है। आज आशा और निराशा का अन्त हो जायगा। हे सभासद लोगो, सब लोग मिलकर राम का नाम लो ।। ९७५ ।।

दुलड़ी

जनकर वाणी राजागणे शुनि मनत हरिष भैल।
करिया सत्वर आसि वासाघर काचिवाक सवे लैल ॥
अगरु चन्दन कस्तुरि कुंकुमे सुपिलेक सवे गावे।
नानाविध दिव्य रत्न अलंकार पिन्धिलेक ठावे ठावे ॥ ९७६
पाट पाटोरणे विचित्र वसने भैल आति जातिष्कार।
सुवर्णर माला शिरत चराया हरिषर नाहि पार ॥
दर्पण धरिया मुख चाया बोले विधि भैल सुप्रसन्न।
मोक सम रूपे इतिनि भुवने नाहि आरो एकजन ॥ ७७
धने जने मान्ये गुणे कुले शीले देखिया मोक विशिष्ट।
जनक नन्दिनी सीता सुवदनी मोकेसे वरिव निष्ट ॥
एहि वुलि आति— शय रंगमने राजागण असंख्यात।
काचि लासे वेशे परम सुवेशे वसिला गैया सभात ॥ ७८
रत्न सिंहासने प्रकाश करय राजागण भाल भाल।
मेरुर उपरे येन ज्योति करे वसि दश दिकपाल ॥
पात्र मंत्री यत राजार पिचत वसिला गैया उत्सुके।
आन यत जन मंचत वसिल मनत महा कौतुके ॥ ७९
नटी नाचे गावे मृदंग वजावे वावे नाना यंत्र ताल।
भाटे चाटु पटु वोले मालसवे युजय करि आस्फाल ॥
नाना वाद्य भंडे शवद प्रचंडे कर्णत हानय ताल।
रंग ढंग बोले प्रजार आन्दोले सागर येन उल्लाल ॥ ९८०

दोलड़ी

जनक की वाते सुनकर सारे राजा मन मे वड़े खुश हुए और झटपट अपने-अपने आवास-गृह मे जा-जाकर वेश-भूषा सजाने लगे। सब लोगों ने अपने वदन पर अगरु, चन्दन, कस्तूरी व कुंकुम आदि लगाया और अंगों में स्थान-स्थान पर विविध रत्न-आभूषणो को पहना ॥ ९७६ ॥ रेशम आदि के विचित्र वस्त्रों में वे वहुत शोभायमान होने लगे। सोने की माला उन्होने अपने गले में डाल ली। उनके हर्ष का अन्त न रहा। आईना लेकर अपना मुख देखते हुए वे वोले, आज विधाता मुझ पर प्रसन्न है। मेरा जैसा सुदर्शन पुरुष इन तीनों लोकों में दूसरा कोई नही है ॥ ९७७ ॥ धन, जन, सम्मान, गुण, वंश मर्यादा और शील में मुझको विशिष्ट देखकर उत्तम मुखड़े वाली जनकनंदिनी सीता मेरा वरण अवश्य करेगी। यह कहकर अतिशय प्रसन्न मन से असंख्य राजा सुन्दर वेश-भूषा से सज्जित हो सभा में जाकर वैठ गये ॥ ९७८ ॥ अच्छे-अच्छे राजा रत्न सिंहासन पर इस प्रकार सुशोभित हो रहे है जैसे सुमेरु पर्वत पर दशो दिक्पाल वैठे हों। जितने पात्र, मित्र और मंत्री हैं वे राजाओ के पीछे जाकर वैठ गये। दूसरे जो लोग थे वे मन में वडा कौतुक लेकर मंच पर वैठ गये ॥ ९७९ ॥ नर्त्तकियाँ नाचने गाने लगी, मृदंग वजने लगा, विभिन्न वाद्ययंत्र ताल से वजने लगे। भाट चाटुकारी भरी बाते करने लगे, पहलवान ताल ठोंक-ठोंक कर हेकड़ी जताने लगे। विभिन्न वाद्य यंत्रों के प्रचंड शब्द से कान वहरे होने लगे। प्रजा के उल्लासपूर्ण कलरव से ऐसा प्रतीत होने लगा मानों सागर कल्लोल कर रहा है ॥ ९८० ॥

छबि

एहिमते नृपगणे जानकी सीताक दिव्य सभा साजे वसि आछे।
मिथिलार अधिपति सभाक निवाक प्रति कचाइला सीताक दिव्य आछे ॥
आगत सीताक लैया समाजत चलि गैला नानावाद्य शुभ सुमंगले।
अनेक युवती नारी चलि जाय काचि पारि सीतार संगत कौतुहले ॥९८१
यत इष्ट वन्धुजन पात्र मंत्री पुत्रगण चलि यान्त महारंगमने।
हाते दिव्य घट धरि नाना लासवेश करि गावन्त मंगल नारीगणे ॥
ब्राह्मण सकले वेद पढ़ि यान्त अविच्छेद आतिशय हरिषे मनत।
चपये पठय भाट नटीसबे करे नाट करि लयलास नाना सत ॥ ८२
मिथिलार नृपवरे एहिमते अनन्तरे प्रवेशिला सयम्बरशाला।
सीताओ लगत गैला मेरुत उदय भैला येन अभिनव चन्द्रकला ॥
सीतार मुखर कान्ति दशोदिशे प्रकाशन्ति येन पूर्णचन्द्रर उदय।
आछे यत राजागण सबारो हरिष मन देखि आति भैल तमोमय ॥ ८३
सीतार कोमल मुख देखिते परम सुख समस्ते एरिल धैर्य्यभार।
लाजकाज परिहरि चाहय नयन भरि मदने कम्पित सर्व्वगाव ॥
नभासय नेत्रे आति करय मदने साति आस इस करे उसमिस।
ज्वले आति कामानल करे चित टलवल मने एको नपारे उद्दिश ॥ ८४
हृदयत कामशरे पशि महापीड़ा करे काहारो नुहिके मन थिर।
चेतन हरिया गैल वृद्धसब युबा भैल देखि रूप सीता गोसानीर ॥

छवि

इस प्रकार से राजा लोग जानकी सीता के लिए दिव्य सभा में वैठे हैं। मिथिला के नृपति ने सभा में ले जाने के लिए सीता को दिव्य वस्त्र पहनाए। अपने सामने सीता को लेकर वे समाज में चले। अनेक सुमंगलकारी वाद्य बजने लगे। वहुत सी युवती नारियाँ अच्छी वेश-भूषा मे सीता के साथ कौतूहल से चल पड़ीं ॥ ९८१ ॥ जितने इष्ट-मित्र, पात्र व मंत्रियों के पुत्र हैं वे वड़े आनन्दित होकर चल रहे हैं। हाथों में सुन्दर घट लिये तरह-तरह की वेश भूषा मे नारियाँ मंगल गीत गा रही हैं ॥ ९८२ ॥ इसके उपरान्त इसी ढंग से मिथिला के नरेश ने स्वयंवर-शाला में प्रवेश किया। सीता भी यों लगने लगी मानों मेरु पर्वत पर अभिनव चन्द्रकला का उदय हुआ हो। सीता के मुख की कान्ति दशों दिशाओ मे यों प्रकाशित होने लगी मानों पूर्णचन्द्र का उदय हुआ हो। जितने राजा थे सभी का मन प्रसन्नता से भर गया और उनका (मुग्ध) मन वहुत तमोभावपूर्ण हो गया ॥ ९८३ ॥ सीता का कोमल मुखड़ा देखने में सभी राजाओ को परम सुख मिलता था। धीरे धीरे सभी लोगो का धैर्य जवाव देने लगा। सारी लाज-लज्जा त्याग कर वे भरी आँखों से उसको देखने लगे। उनका सारा शरीर काम-वश काँपने लगा। उनको नयनों से कुछ दिखाई नहीं पड़ता था। जव कामदेव का वेग वढ़ने लगा तो वे उह-आह के शब्द करने लगे। काम की आग वढने लगी, चित्त अकुलाने लगा और मन में कोई स्थिरता नहीं रही ॥ ९८४ ॥ हृदय पर मदन का वाण चुभ कर वड़ा दुख देने लगा। किसी का भी मन स्थिर नही रहा। सभी लोगों की चेतना पूज्य सीता का रूप देखकर जाती रही और वूढ़े भी जवान

नमो नमो रघुनाथ चरणत थैया माथ मन मोर रहोक तोमात ।
समज्यार यत लोक राम हरि बुलियोक तेवे दुख तरिवा साक्षात ॥९८५

पद

विश्वामित्र वदति शुनियो रघुवर * सभात आछिल यत लोक निरन्तर
देखिया सीतार आति रूप विपरीत * कामवाणे सवार मोहित भैल चित ९८६
येहि अंगे सीतार पारिल दृष्टि यार * तार हस्ते पुनरपि नपालटे आर
सवारे हरिल मन सीतार रूपत * निसिजिल मन येन योगीर ब्रह्मत ८७
जानकीर मुख चन्द्रमाक निरन्तरे * सुन्दर अमृत पिये नयन चकोरे
अमृतक देखि येन लुभीया विस्तरे * नत पूरे मन येन लटपट करे ८८
सेहिमते जानकीक देखि राजागण * केनमते पाइवो बुलि नसम्वरे मन
केहो राजागणे वसि गुणय मनत * वोलो गैया धरि जनकर चरणत ८९
तोमार दुहिता सीता आमाक दियोक * भृत्य बुलि प्रभु मोक किनिया थैयोक
सेवा करि तोमाक थाकिवो अहर्निश * नपाइवाहा जोवाइ आन आमार सदृश ९०
केहो जने वोलय मंत्रीर चापो पाश * कत लक्ष धन दिया बुजो तान आश
मंत्रीर अधीन राजागण निरन्तर * तान वोले कन्या मोक दिव नृपवर ९१
केहो बोले धरो लाग राजार पुत्रर * शाकुति काकति ताक करिवो विस्तर
हातत धरिया वाक्य बुलिवो विनय * तोमार भगिनी मोक दियो महाशय ९२

हो गये। हे रघुनाथ, तुम्हारे चरणो मे सिर रखकर मैं तुम्हारा नमन करता हूँ, मेरा मन तुम्ही मे रमा रहे। हे समाज के सारे लोगो ! राम और हरि का नाम लो, जिनकी कृपा से निश्चय रूप से दुःख को पार कर सकोगे ॥ ९८५ ॥

पद

विश्वामित्र ने कहा, सुनो राम, उस सभा में जितने लोग थे सभी ने सीता का विपरीत रूप देखा तो कामवाण से सभी के चित्त मोहित हो गये ॥ ९८६ ॥ सीता के जिस अंग पर भी जिसकी दृष्टि पड़ी फिर वहाँ से उसकी दृष्टि पलट न सकी। सीता के रूप ने सब का मन इस प्रकार हर लिया मानों योगी का मन ब्रह्म मे स्थिर हो गया हो ॥ ९८७ ॥ ऐसा प्रतीत होता था मानो सबके नयन-चकोर जानकी के मुखचन्द्र से अमृत पी रहे हों। जिस प्रकार अति लोभी को अमृत दिख जाय तो उसका मन नही भरता—लटपटाता रहता है ॥ ९८८ ॥ उसी प्रकार से जानकी को देखकर राजा लोग, किस प्रकार वह मिल जाय यह सोच सोचकर मन को सँभाल नही पा रहे हैं। कोई-कोई राजा वैठे हुए अपने मन में यह सोच रहे है कि जाकर जनक के पैर पकड़ ले ॥ ९८९ ॥ और कहें कि तुम अपनी वेटी सीता मुझको दे दो और भृत्य के रूप में मुझको खरीद लो। तुम्हारी मैं दिनरात सेवा किया करूंगा। मुझ जैसा जँवाई तुमको दूसरा नहीं मिलेगा ॥ ९९० ॥ कोई राजा यह कहता कि मन्त्री को धर दवाओ। लाखों धन देकर उसकी आशा पूरी करो। राजा सदा मंत्री के अधीन हुआ करते हैं। उसके कहने पर नृपवर मुझको कन्या दे देगे ॥ ९९१ ॥ कोई कहने लगा कि राजा के पुत्र को जाकर पकड़ना चाहिए। उसकी पर्याप्त चिरौरी-विनती, करके हाथ से

तयु भगिनीर बर आमि से उत्तम * पुछि चायो आन कोन आछे मोर सम
शुनि राजपुत्रे कन्या आमाकेसे दिव * राजायो पुत्रर बाक्य अवश्ये करिब ९३
केहो बोले चाटुवाणी बोलोहो कन्याक * शुनियो सुन्दरी तुमि वरियो आमाक
यत राज्यभार भार्या आछय आमार * आजि धरि सकलो तोमार अधिकार ९४
थाकिबोहो आमिओ तोमार पालि आश * करोहो शपत यदि संजात नयास
आमाक महन्त बुलि जाने सर्व्वलोक * जानिलो निश्चय सीता वरिब आमाक ९५
हेठमाथे वसि आलोचय कतो जन * सीतार सखीक बोलो काकूति वचन
बुजायोक सीता सती बरोक आमाक * येहि चाहा ताके मइ दिबोहो तोमाक ९६
स्त्रीर उतले आति चित्त लोभ पाइ * अवश्ये बुलिबे तेवे सीताक बुजाइ
निश्चय धरिव सीता सखीर वचन * एहिमते आलोचे सकले राजागण९९७
शुनियोक कथा आवे आत अनन्तर * समज्यात उठिया जनक नृपवर
कृतांजलि हुया राजा बुलिला वचन * सावधान हुया शुनियोक राजागण९९८
महा महा राजा वहु दिन मोर ठाइ * सीतार निमित्ते रहि आछा दुख पाय
आजि सवाहाने एक परिच्छेदा हौक * यिमते कन्याक पाय ताक शुनियोक९९९
पूर्व्वकाले हरे मृग मारिया वनत * एरि गैला धनुखान मोर दुवारत
परम सुदृढ़ धनु येन वज्रसार * घरे आनि थैया करिलोहो अंगीकार१०००
पारय धनुत येहि गुण लगाइवाक * सुचन्द्रवदनी सीता दिवोक ताहाक
आछोहो पूर्व्वत एहि अंगीकार करि * एवे येहि गुण दिबे पारे धनु धरि१००१

उसके पैर पकड़कर विनय-वाक्य कहूँगा कि हे महाशय, आप अपनी वहिन को मुझे दे दें ॥ ९९२ ॥ क्योंकि मैं ही तुम्हारी वहिन के लिए उत्तम वर हूँ। पूछ कर देखो, मेरे समान दूसरा कोई राजा है? यह सुनकर राजपुत्र मुझको कन्या दे देगा और राजा भी पुत्र का कहना अवश्य ही करेगा ॥ ९९३ ॥ कोई कहने लगा कि कन्या से खुशामदी वातें करो। हे सुन्दरी सुनो, तुम मेरा वरण करलो। मेरा जितना भी राज्य है आज से सव कुछ तुम्हारे अधिकार में होगा ॥ ९९४ ॥ मैं भी सदा तुम्हारी आशा पूर्ण करता रहूँगा, अगर विश्वास न पड़े तो सौगन्ध खाता हूँ। सभी लोग मुझ को महन्त (ईश्वर-परायण) जानते हैं। मैने जान लिया कि सीता मेरा वरण अवश्य करेगी ॥ ९९५ ॥ सिर झुकाये कुछ राजा लोग आलोचना कर रहे है कि सीता की सहेली से प्रार्थना करो कि वह सीता को समझाए जिससे वह मेरा वरण करे। वह जो कुछ भी चाहे मैं देने को तैयार हूँ ॥ ९९६ ॥ स्त्री का मन लोभ से उतावला होगा और वह अवश्य ही सीता को समझाकर कहेगी। सीता अवश्य ही अपनी सहेली का कहना मानेगी। इसी प्रकार से सारे राजा अनेक प्रकार की आलोचना करने लगे ॥ ९९७ ॥ अव इसके वाद की कथा सुनो। सभा में आकर नृपवर जनक ने हाथ जोड़ कर कहा, हे राजा लोगो! सावधान होकर सुनो ॥ ९९८ ॥ कितने ही वड़े-वड़े राजा कितने ही दिनों से मेरे इस स्थान पर सीता के निमित्त रहकर काफी दुख झेल रहे है। आज सभा में इसका एक निर्णय हो जाय। किस प्रकार से कन्या प्राप्त होगी वह सुनलो ॥ ९९९ ॥ प्राचीनकाल में शिवजी वन में मृग का शिकार कर मेरे द्वार पर यह धनुप छोड़कर चले गये। वह धनुप वज्र के समान सुदृढ है। इसे घर में लाकर रखते हुए मैंने एक प्रतिज्ञा की थी ॥ १००० ॥ कि जो भी इस धनुप पर प्रत्यंचा चढा सकेगा उसी को मैं चन्द्रवदनी सीता दे दूंगा। पहले से ही मै यह सौगन्ध लिये हुए हूँ। अब जो कोई भी धनुष उठा कर उस पर प्रत्यंचा चढ़ा सकेगा, ॥ १००१ ॥

ताहाके वरिब सीता वुलिलो निश्चय * एहि वुलि लोक पांचि दिला महाशये
वर घर माजे थैंया आछे धनुखान * सांगि वान्धि समज्याक लागि गैया आन १००२
राजार वचन शुनि तेतिक्षणे गैल * अर्व्वुदेक लोके धनु सांगि करि लैल
कुजि मुनि हुया सवे आने वल दिया * आदखान धनु आसे माटित लुटिया १००३
येने तेने आनि समाजर माजे थैला * देखिया धनुक राजागण भय भैला
आछो गुण दिव दाडिवाको नाइ सास * जानकीर मुख चाइ तेजय निश्वास ४
समज्यात धनु थैंया जनक नृपति * सीताक वोलन्त शुनियोक महासती
तोक आशा करि महा महा राजाचय * राज्य एरि वरिषेक प्रवास खाटय ५
एकै एकै राजा सुरपतिर समान * तोमार कारणे आसि आछे मोर थान
सुवर्णर मालागाचि धरिया हातत * एतिक्षणे थाका गैया सभार माजत ६
धनुत लगाइवे गुण यिजने पारय * सेहि निजपति तयु जानिवा निश्चय
तान माथे माला दिया करि नमस्कार * वरिवाहा गइ एको नकरि विचार ७
शुनिया जानकी पाचे पितृर वचन * सखीर माजक चलि गैला तेतिक्षण
सुवर्णर माला माव हाते तुलि लइ * पृथिवीक निरेखिया थाकिलन्त रइ ८
जनके वुलिला राजागणक वचन * लगायो पचार जानकीक यार मन
जनकर वाणी शुनि कतोहो नृपति * करन्त यतन गुण लगाइवाक प्रति ९
करे उसमिस उठे वसे कतोजन * आगे पाचे चावे कतो चोवावे दशन
वाहु निरेखिया कतो फोफाय येन नागे * भांगो धनु आजि कोन वस्तु मोर आगे १०

उसीका सीता वरण करेगी—यह निश्चय रूप से कह रहा हूं। यह कहकर राजा जनक ने सभी सेवक लोगों को भेजा कि वड़े कमरे के वीच में वह धनुष रखा है। सव लोग मिल-जुल कर उसको उठा ले आओ ॥ १००२ ॥ राजा का कहना सुन कर एक अरव सेवक गये और उस धनुष को ढो कर लाने लगे। जोर लगाने के कारण सव झुक गये और कुवड़े से वन कर आये। आधा धनुष जमीन से घिसटता हुआ आया ॥ १००३ ॥ किसी प्रकार से उसे लाकर सभा के वीच में रखा गया। वह धनुष देखकर राजागण घवरा गये। इसमे प्रत्यचा चढ़ाना है लेकिन इसको उठाने का भी तो साहस नही। जानकी का मुख देख-देख कर वे ठंडी साँस लेने लगे ॥ १००४ ॥ समाज के वीच धनुष रखवाकर राजा जनक सीता से वोले, सुनो महासती, तुम्हारी आशा करते हुए वड़े-वड़े राजा अपने-अपने राज्य छोड़कर साल भर से प्रवास में जीवन विता रहे है ॥ १००५ ॥ इनमें से एक-एक राजा सुरपति इन्द्र के समान है। तुम्हारे ही लिए वे मेरे स्थान पर आकर टिके हुए हैं। अव तुम सोने की माला हाथ में लिये सभा के वीच में जाकर खड़ी हो जाओ ॥ १००६ ॥ जो व्यक्ति भी धनुष पर चिल्ला चड़ा सकेगा उसी को तुम अपने पति के रूप मे निश्चय रूप से जान लेना। उन्ही के गले मे माला डाल नमस्कार कर विना कुछ सोचे-विचारे तुम उसी एक का वरण करोगी ॥ १००७ ॥ पिता के वचन सुनने के वाद जानकी सहेलियों के वीच में चली गई। जानकी माता हाथों मे माला उठाकर धरती की ओर दृष्टि किये खड़ी रही ॥ १००८ ॥ जनक ने सभी राजाओं से कहा कि जानकी को वरण करने के लिए जिनका मन लालायित हो वे झटपट प्रत्यचा चढ़ाने को तैयार हो जाये। कितने ही नृपति जनक के वचन सुनकर चिल्ला लगाने का प्रयत्न करने लग गये ॥ १००९ ॥ कितने ही लोग आह-ऊह करते हुए उठकर वैठ गये। कितने ही आगे-पीछे देखने लगे और दाँत निपोर दिये। कितने ही अपनी भुजाएँ देख-देख कर इस

देखोक सकले वाहुवलर महत * प्रथमत उठि गैला राजा शुभदत्त
ओचर चापिया गैया आस्फोट करिल * वाहु दाम्फि मारि वीरे धनुक धरिल ११
अनेक यतने धनु धरि वल दिल * गुण दिते छारि लारिवाको नपारिल
शुभदत्त राजार भागिल चटिमटि * लाज हुया आसनत वसिला पालटि १२
आत अनन्तरे शतधनु नृपवर * मइ गुण दिवो बुलि चापिला ओचर
दशन कामुरि शरीरर वले धरि * कतो वेलि चाहिलेक दंगादंगि करि १३
बल दिया चाइल राजा अनेक प्रकारे * आछो गुण दिवो धनु लारिबे नपारे
ताक देखि हासिलन्त सकल समाज * वसिल उलटि शतधनु हुया लाज १४
तात अनन्तरे मगधर नरेश्वर * आति वर वलवन्त परम प्रखर
मइ गुण दिवो बुलि हास्फोलिया गैल * उलटि वसिल आति मरा येन भैल १५
लारिबे नपारे धनु अनेक यतने * ताक देखि रिंग पारि हासे सर्ब्बजने
मगधर राजार महागर्व्व भागि गैल * उलटि वसिल आतिशय लाज भैल १६
क्षीरोदधि तीरे वसे उत्तर दिशत * सनातन नामे राजा अनन्त भकत
हुंकारेते समस्ते राजार मान लय * लक्ष्मी सरस्वती येवे कन्दल करय १७
तारा दुइको बुजाइ राजा भांगय कन्दल * परम विक्रमी राजा आति महाबल
हेन राजा गुण दिवे गैला वले रागि * दांगिवाको नपारि वसिल गर्व्व भागि १८

प्रकार फुफकारने लगे मानों नाग हों और बोले चलो धनुप तोड़ा जाय—मेरे सामने इस तुच्छ धनुप की क्या विसात है ॥ १०१० ॥ सभी लोग मेरे वाहुवल का महत्त्व देखें। पहले राजा शुभदत्त उठकर गया। निकट जाकर उसने अपनी वाहों पर ताल ठोका। वाँहों का दम्भ दिखाते हुए वीर ने धनुप थाम लिया ॥ १०११ ॥ वड़े ही प्रयास से धनुप थाम कर उसने जोर लगाया। चिल्ला चढ़ाना तो दर-किनार वह उसको हिला भी नहीं सका। राजा शुभदत्त की सारी हेकड़ी धरी रह गई और वह लज्जित हो अपने आसन पर वापस लौट कर वैठ गया ॥ १०१२ ॥ इसके उपरान्त नृपवर शतधनु यह कहते हुए कि मैं चिल्ला चढ़ाऊँगा, धनुप के निकट गया। दाँत किटकिटाकर सारे शरीर का वल लगाकर कितनी ही देर तक वह उठा-पटक करता रहा ॥ १०१३ ॥ सारी शक्ति लगाकर उस राजा ने कितनी ही वार कोशिश की किन्तु चिल्ला लगाने की क्या कहें वह धनुप ही नहीं हिला सका। उसको देखकर सारी सभा हँसने लगी, तव लज्जित हो शतधनु पलट कर अपने आसन पर वैठ गया ॥ १०१४ ॥ इसके वाद मगध के नरेश जो कि वड़े ही वलवान व प्रखर थे—'मैं चिल्ला चढ़ाऊँगा' यह कहकर हुमकते हुए वढ़े, किन्तु मानों मर गये हों इस तरह पलट कर वैठ गये ॥ १०१५ ॥ कितने ही प्रयत्न करने के वाद भी धनुप को हिला नहीं सके। तव सभी लोग ठहाका मारकर हँसने लगे। मगध के राजा का अतिशय गर्व टूट गया। वहुत लज्जित होकर वह लौट आया और वैठ गया ॥ १०१६ ॥ उत्तर की दिशा में क्षीरसमुद्र के तट पर सनातन नामक एक अनन्त भक्त राजा रहता था। हुंकार से उसने सारे राजाओं का सम्मान ले लिया था। सरस्वती और लक्ष्मी दोनों जव झगड़ते थे तव—॥ १०१७ ॥ उन दोनों को समझा-वुझा कर वह राजा दोनों के विवाद का अन्त करता था। यह राजा वड़ा ही महावली और पराक्रमी था। ऐसा राजा क्रोधित हो चिल्ला चढ़ाने के लिए चल पड़ा। किन्तु धनुप को उठा न सकने से उसका भी गर्व चूर हो गया और वह आकर वैठ गया ॥ १०१८ ॥ वड़े-वड़े राजा वड़ी लज्जा में पड़ गये, यह देखकर सारे नृपतियों का चित्त स्तव्ध हो गया। मन शक्तिशून्य हो गया और

वर वर राजा लाज भैल विपरीत * देखि सबे नृपतिर चमकिल चित
बलहीन मन भैल मुंड नलारय * परिल निजम हुम निश्वास तेजय १९
नोतोलय माथा मने मिले महादुख * केर चक्षु करि जानकीर चावे मुख
धनुक देखिया पुनु चपरावे माथ * विवर्ण वदने गुणे गाले दिया हाथ २०
हरि हरि आजि विधि कि काम करिलो * मान्य हरुवाइलो आउर लाजते मरिलो
धनुत लगाइवे गुण गर्व्व करि गैलो * आछोक लगाइवो गुण लघुमात्र भैलो २१
आगे जानो नपारिवो उठि गैलो किक * समाजत लघु भैलो मरणतोधिक
आसिलोहो यत राज्यभोग परिहरि * वरिषेक आछो जानकीर आशा करि २२
सीताक नपाइलो आरो गर्व्व भैल छन * धनुरूपे विधाता करिले विड़म्बन
आपोनार निज भार्या करि परिहार * जानकीर आशा मात्र करिल अपार २३
नपाइलोहो सीताक लभिलो वर दुख * किमते चाहिवो पूर्व्व कामिनीर मुख
आमाक एरिया विहा करिवाक गैला * कि कार्य्यक आमार पाशक आसि भैला २४
यि जनीक राजा आनि आछा विहा करि * हैवेक खिजनी जानो परम सुन्दरी
ताइर पाशत थाका करि सुखभोग * आमि पुनु नृपति तोमार नोहो योग २५
एहिमते विस्तर करिव परिहास * चापिवो किमते आवे तासम्वार पाश
किसक आसिलो मइ कि काम करिलो * सीतार आशाये निज भार्य्यातो नरैलो २६
एक वास चाहन्ते हराइलो दुयो वास * एहि वुलि घने घने तेजय निश्वास
दिवे पारो धन जन यतेक खोजय * धनुत लगाइवे गुण किसक वोलय २७

उनके सिर का हिलना वन्द हो गया। वे निस्तब्ध हो गये और हुँह कर ठंडी साँस लेने लगे ॥ १०१९ ॥ मन मे महादुःख मिलने से सिर नही उठाते। टेढ़ी आँखों से जानकी के मुँह की ओर देखते। धनुष देखकर फिर सिर धुनने लगते और वदरंग चेहरा लिये चिन्ता करने लगते ॥ १०२० ॥ हाय ईश्वर आज विधना ने यह क्या कर डाला। हमने अपना सम्मान भी गँवा दिया। अव हमें शर्म से पृथ्वी मे गड जाना चाहिए हम लोग गर्व से धनुष पर प्रत्यचा चढाने के लिए गये किन्तु प्रत्यंचा लगाना तो धरा रह गया खुद छोटे वन गये ॥ १०२१ ॥ पहले जानते होते कि यह काम नही कर सकेंगे तो उठ कर न गये होते। अव सारे समाज में हेठी हो गई, यह तो मृत्यु से भी वढकर है। जितने राजा अपना राज्य-भोग त्याग कर आए थे वे साल भर से जानकी को पाने की आशा लिये वैठे थे ॥ १०२२ ॥ सीता भी नही मिली और गर्व भी चूर-चूर हो गया। धनुष का रूप लेकर विधाता ने विडम्वना में डाल दिया। अपनी भार्या का परित्याग कर जानकी की अपार आशा की ॥ १०२३ ॥ सीता को प्राप्त नहीं कर सका और वडा दुःख भी मिला। अपनी पुरानी पत्नी का मुख किस प्रकार से देख सकूँगा। (वह कहेगी) 'मुझको छोड़कर तुम व्याह रचाने गये थे अव किस लिए मेरे पास आ उपस्थित हुए हो ॥ १०२४ ॥ हे राजा, जिसको तुम व्याह कर लाये हो वह वेशक परमसुन्दरी होगी। इस लिए सुख का भोग करते हुए उसी के पास रहो। हे राजा, अव मैं तुम्हारे योग्य नही रही' ॥ १०२५ ॥ इस प्रकार जाने कितना ही मखौल उड़ायेगी। अव मै किस प्रकार उनके निकट फटक सकूँगा। मैं किस काम के लिए आया और क्या कर डाला। सीता की आशा में अपनी भार्या भी गँवा दी ॥ १०२६ ॥ एक आवास चाहने पर दोनो आवास गँवा दिये, यह कह कर सभी राजा लोग तेज-तेज साँस लेने लगे और कहने लगे, जितना चाहो उतना धन-जन दे सकते है लेकिन वताओ धनुष में चिल्ला कैसे चढ़ाया जाय ॥ १०२७ ॥

नभैल सुबुद्धि इटो जनक राजार * किसक करिल हेनमत अंगीकार
धनुत लगाइवे गुण नपारिले केवे * जानिलोहो जीयेकक निवे महादेवे २८
आमि सवे गृहक नयाइवो एतिक्षण * धनुत लगाइवे गुण चाहो कोन जन
एहि बुलि गोष्ठि करि यतेक नृपति * सयम्बर सभा माजे आछन्त सम्प्रति २९
आमि चलि याओं आसा सेइ समज्याक * पारिबा धनुत तुमि गुण लगाइवाक
तोमार विक्रम राम कहिवोहो किक * धनु भांगि विवाह करियो जानकीक ३०
जानकीर सयम्बर शुनि अनुपाम * हासिया ऋषिक पाचे बुलिलन्त राम
शुना ऋषिराज मइ कहो स्वरूपत * पितृ पठाइ दिया आछे तोमार लगत ३१
यि कार्य्यक लागि तुमि पाञ्चाहा आमाक * अवश्येक लागे मोर ताके करिवाक
बुलिलाहा याओं तयु संगे मिथिलाक * केनमत धनुखान देखिवोहो ताक ३२
रामर वचने विश्वामित्र रंग भैला * राम लक्ष्मणक ऋषिराज लगे लैला
कुतूहले मिथिलाक करिला गमन * पिचत - चलिला असंख्यात शिष्यगण १०३३
कत दूर यान्ते भैला सूर्य अस्तगत * रहिलन्त गैया एक नदीर कुलत

कान्यकुब्ज देशर वृत्तान्त

ऋषित पुछिला राम करिया सादर * कार इटो राज्य कहियोक मुनिवर १०३४
मुनिये बोलन्त राम शुनियो हरिषि * कुशध्वज नामे आछिलन्त राज ऋषि
उपजिल तान घरे कन्या एक शत * विद्याधरी सवे सम नुहिके रूपत ३५

राजा जनक की यह कोई सुवुद्धि नहीं है। किस तरह उन्होंने ऐसी प्रतिज्ञा कर डाली। कोई भी अगर धनुप पर चिल्ला नही चढा सका तो जान लो वेटी को महादेव ही ले जाँयगे ॥ १०२८ ॥ इस समय हम लोग घर नही जाएँगे। धनुप में कौन व्यक्ति चिल्ला चढाना चाहता है, यह कह कर सभी राजा लोग गुट वनाकर स्वयंवर-सभा के वीच इस समय वैठे हैं ॥ १०२९ ॥ मै उस समाज में चलूँगा। तुम धनुप पर चिल्ला चढ़ा सकोगे। राम तुम्हारे पराक्रम के वारे में भला क्या वताऊँ। तुम धनुप तोड़कर जानकी से विवाह करना ॥ १०३० ॥ इसके पश्चात् जानकी के अनुपम स्वयंवर की वात सुनकर राम ने ऋपि से कहा, सुनो ऋपिराज, मैं आपसे साफ-साफ कहता हूँ। पिता जी ने मुझको आप के साथ भेजा है ॥ १०३१ ॥ जिस कार्य के लिए भी आप मुझे भेजोगे वह करना मेरे लिए आवश्यक है। आपने अपने साथ मिथिला चलने के लिए कहा है। वह धनुप कैसा है, मैं उसको देखना चाहता हूँ ॥ १०३२ ॥ राम के वाक्य सुनकर विश्वामित्र को वड़ा आनन्द आया। ऋषिराज ने राम-लक्ष्मण को साथ ले लिया। और कौतूहल से मिथिला के लिए चल पड़े। उनके पीछे-पीछे असंख्य शिष्य भी चले ॥ १०३३ ॥ कितनी ही दूर जाने के वाद सूर्य अस्त हो गया। वे जाकर एक नदी के तट पर ठहर गये।

कान्यकुब्ज देश का वृत्तान्त

राम ने ऋपि से सादर पूछा, हे मुनिवर वताएँ यह किसका राज्य है ॥ १०३४ ॥ मुनि ने कहा, राम आनन्द से सुनो। कुशध्वज नामक एक राजपि थे। उनके घर में सौ कन्याओं ने जन्म लिया। रूप में सभी विद्याधरियाँ भी उनके समान

नृत्य-गीत करि सदा थाके पुष्पबने * देखि कामे बिमोहित भैलन्त पवने
आसिलन्त बायु पाचे तासम्वार पाश * करिलन्त कन्यागणे ताहांक निराश ३६
देखि कोप करि बायु उनपंचाशत * भांगिलन्त मध्यदेह पशि शरीरत
कान्यकुब्ज नाम देश भैल सेहि धरि * कुशध्वजे मनत आछन्त चिन्ता करि ३७
ताहान पाशक आइल ऋषि ब्रह्मदत * ताहांक दिलन्त दान कन्या एकशत
तुष्ट भैला ब्रह्मदत्त पाया कन्यागण * हरिषे बुलिला कुशध्वजक बचन ३८
हैवेक तोमार एक तनय उत्तम * एहि बुलि गैया ऋषि आपोन आश्रम
हरिषे आछन्त कुशध्वज महाशय * भैलन्त सुपाशु नामे ताहान तनय ३९
कुशनाभ नामे पुत्र भैल सुपाशुर * भैलन्त ताहान गाधि नामे पुत्रवर
आमार जनक गाधि जाना महाशय * विश्वामित्र नामे आमि गाधिर तनय१०४०
वंशावली कथा राम कहिले निशेष * कान्यकुब्ज नामे आमासार निज देश

उनपंचाशत बायुर उत्पत्ति विवरण

पुनरपि रामे कथा पुछिला ऋषित * एक लोकपाल बायु जगते विदित१०४१
किमते पवन भैला उनपंचाशत * शुनि विश्वामित्रे कथा कहन्त रामत
आछन्त काश्यप मरीचित हन्ते हुइ * दिति आरु अदिति ताहान भार्या दुइ ४२
काश्यपक सेवा दुयो करे अनुक्षण * दुइत हन्ते उपजिल देवासुरगण
अदितित हन्ते देवगण भैला जात * दितित असुर भैला जगते प्रख्यात ४३

नही थी ।। १०३५ ।। वे पुष्प-वाटिका मे रहती हुई सदा नृत्य-गीत किया करती थी। उनको देखकर पवन कामातुर हो गया। पवन उन सबके निकट आया, लेकिन कन्याओ ने उसको निराश किया ।। १०३६ ।। यह देखकर उनचासों पवन क्रोधित हो उनके शरीर में प्रवेश कर गये और उनके शरीर के मध्य भाग को टेढ़ा कर डाला। तभी से इस देश का नाम कान्यकुब्ज पड़ गया। कन्याओं को कुवड़ी देखकर कुशध्वज मन में अत्यन्त चिन्तित हो गये ।। १०३७ ।। एक बार ऋषि ब्रह्मदत्त उनके पास आए। तब उन्होने उनको एक सौ कन्याएँ दान में दे दी। कन्याओं को प्राप्त कर ऋषि ब्रह्मदत्त बड़े तुष्ट हुए। उन्होने प्रसन्न होकर कुशध्वज से कहा, ।। १०३८ ।। हे राजन् ! तुमको एक उत्तम पुत्र प्राप्त होगा। यह कहकर ऋषि अपने आश्रम चले गये। कुशध्वज महाशय बड़े आनन्द से रहने लगे। कुछ समय वाद उनके सुपाशु नामक एक पुत्र हुआ ।। १०३९ ।। हे राम ! मैने वंशावली की कथा पूरी कह सुनाई। कान्यकुब्ज नाम से प्रसिद्ध यह हम लोगो का देश है ।। १०४० ।।

उनचास पवनों की उत्पत्ति का विवरण

फिर राम ने ऋषि से पूछा। वायु एक लोकपाल के रूप में जगत् में विदित है ।। १०४१ ।। पवन किस प्रकार से उनचास बन गये। यह सुनकर विश्वामित्र ने राम से कहा, मरीचि राजर्षि से उत्पन्न कश्यप नामक प्रजापति थे। उनकी दो पत्नियाँ थी—दिति और अदिति ।। १०४२ ।। दोनों निरन्तर कश्यप की सेवा किया करती थी। दोनो से देवों और असुरो का जन्म हुआ। अदिति से देवताओ ने जन्म लिया और दिति से असुरों ने, ऐसा ही संसार में प्रसिद्ध है ।। १०४३ ।।

सर्व्वकाले देवासुरे करय कन्दल * देवताक जिनिला असुर महाबल
पाचे देवताक शिक्षा दिला नारायण * भैल समवन्ति यत देवासुरगण ४४
करिला युगुति देवासुर निरन्तर * पाइ दिब्य अमृतक मथिला सागर
अजर अमर हैवो भुंजिया अमृत * एहि बुलि देवासुरे करि एक चित्त ४५
मथिलन्त गैया पाचे क्षीरोद सागर * करिल मथनि दांडि पर्व्वत मन्दर
सर्पराज बासुकीक जरि करिलन्त * लांगुलर भिति देवगणे धरिलन्त ४६
दैत्यगणे टानि धरि सर्पर शिरत * उपजिल कालकूट बिष प्रथमत
देखि भय भैला देवासुर निरन्तरे * ताक पान करि जीर्ण करिलन्त हरे ४७
दिब्य नारी अपेस्वरागण भैला जात * तारे अनुचरी उपजिला असंख्यात
अपेस्वरा समस्तक देवगणे निल * देखि दैत्य सकलर असुख मिलिल ४८
उपजिल उच्चैश्रवा घोरा अनुपान * भैला जात कल्पतरु पारिजात नाम
आठ गोट दिग्गज भैलेक उपगत * उपजिल आसि गजराज ऐरावत ४९
दिब्यमणि कौस्तुभ जन्मिल तेजोमय * माधवर कंठ माजे प्रकाश करय
जगतजननी लक्ष्मी भैलन्त वेकत * बिष्णुक बरिया रहिलन्त हृदयत ५०
लैया मद्य कलस वारुणी उपजिल * गन्ध पाया दानव सकले ताक निल
अनन्तरे आसि उपजिला धन्वन्तरी * सम्पूर्ण अमृत घटे आछा हाते धरि ५१
देखि देव दानवर हरिष मिलिल * देवताक हेलि दैत्यगणे ताक निल
पाचे नारायणे दुख देखि देवतार * धरिलन्त माधवे मोहिनी अवतार ५२
कपटर छले बंचि दैत्य समस्तक * पियाइला अमृत हरि देवतासवक
अजर अमर देव भैला सेहि धरि * दैत्यक बधिला देवे घोर रण करि ५३

सदा से देव और असुर झगड़ते रहे। महाबली असुरों ने पहले देवताओं को जीत लिया। पीछे नारायण ने देवताओं को शिक्षा दी तो देव और असुर एक दूसरे के मित्र बन गये ॥ १०४४ ॥ फिर देवों और असुरों ने यह विचार किया कि सागर के मथने पर अमृत मिल सकता है। अमृत का सेवन कर हमलोग अजर-अमर बन जाएंगे—यह कहकर देवासुर एक-चित्त हो गये ॥ १०४५ ॥ इसके पश्चात् उन-लोगों ने जाकर क्षीरसागर को मथ डाला। मन्दर पर्वत को मथानी बनाकर सर्पराज वासुकी को रस्सी बना डाला। उनकी पूँछ की ओर देवतओं ने पकड़ा ॥ १०४६ ॥ दैत्यो ने साँप का सिर पकड़कर खींचा तो पहले ही काल-कूट विष उत्पन्न हुआ। यह देख कर देव और असुर दोनों डर गये। उसको शिवजी ने पीकर हजम कर डाला ॥ १०४७ ॥ फिर दिव्य नारी अप्सराएँ और उनकी असंख्य अनुचरियाँ उत्पन्न हुईं। सभी अप्सराओं को देवताओं ने ले लिया तो दैत्यों को बड़ा दुःख हुआ ॥ १०४८ ॥ फिर उच्चैःश्रवा नामक अनुपम घोड़ा उत्पन्न हुआ, पारिजात नामक कल्पवृक्ष भी उत्पन्न हुआ। पूरे आठ दिग्गज उत्पन्न हुए और गजराज ऐरावत ने भी जन्म लिया ॥ १०४९ ॥ आभामय दिव्यमणि कौस्तुभ उत्पन्न हुआ और माधव के कंठ में शोभा देने लगा। जगत्जननी लक्ष्मी आविर्भूत हुई और विष्णु का वरण कर उनके हृदय में निवास करने लगीं ॥ १०५० ॥ फिर मदिरा का कलश लेकर वारुणी उत्पन्न हुई। गन्ध पाकर सभी दानवों ने उसे ले लिया। इसके अनन्तर हाथ में अमृत का पूर्ण-घट लिये हुए धन्वन्तरि उत्पन्न हुए ॥ १०५१ ॥ उन्हें देखकर देव-दानव दोनों हर्षमग्न हुए। देवताओं की उपेक्षा कर दैत्यो ने उस अमृत को उनसे ले लिया। बाद में जब नारायण ने देवताओं को दुखी देखा तो उन्होने मोहिनी का रूप धारण कर लिया ॥ १०५२ ॥

शुनि दिति धरि काश्यपर चरणत * करन्त क्रन्दन देवी परम शोकत
किसक कान्दस देवी काश्यपे पुछिला * पाचे दिति काश्यपत दुख निवेदिला ५४
मोर पुत्रगणक मारिला पुरन्दर * अमृतक खाया भैला अजर अमर
नुगुचय मोर हृदयर पुत्रशोक * मोर पुत्र इन्द्र हौक वर दिया मोक ५५ ५५
वर दिया काश्यपे बुलिला हास्य करि * शुचि हुया गर्भ तुमि धरिवा सुन्दरी
नियमे थाकिवे पारा द्वादश बत्सर * हैवे तयु पुत्र इन्द्र दिलो मइ बर ५६
शुनि दिति काश्यप ऋषिक सेवा करि * शुचि हुया गर्भ पाचे धरिला सुन्दरी
हेन देखि पुरन्दर त्रास आति भैला * कपटे दितिक सेवा करिवाक लैला ५७
छिद्र पाइले आन गर्भ करिबो बिनाश * अहर्निश दितिर नछारे इन्द्र पाश
येतिक्षण येहि लागे योगान्त सकल * गर्भ नष्ट करिवाक नपावन्त छल ५८
गर्भभरे दिति नियमक पासरिला * मुक्तकेशे सन्ध्या वेला शयन करिला
शीयरे चरण दिया चरणके शिर * हेन छिद्र पाया हासिलन्त पुरन्दर ५९
माया वले गर्भत पशिला वज्र धरि * काटिलन्त छवालक सातखान करि
ताको सात सात खान करिल गर्भत * कान्दय छवाल हुआ उनपंचाशत ६०
चेतन लभिया दिति देखिला विस्मय * किसक मारस छावा इन्द्रक बोलय
शुनि इन्द्रे बुलिलन्त दितिक वचन * यि कारणे अनियमे करिला शयन ६१
सि कारणे गर्भ नष्ट करिलो तोमार * देव हुया थाकिवेक लगत आमार
बिश्वामित्रे बोले राम कहिलो वेकत * उनपंचाशत वायु भैला एहिमत ६२

अपने छल-कपट के द्वारा सारे दैत्यो को मोहित करते हुए नारायण ने सारे देवताओं को अमृत पिलाया। तभी से सारे देवता अजर-अमर वन गये। इसके वाद देवताओ ने घोर युद्ध करके दैत्यों का वध किया ॥ १०५३ ॥ यह सुनकर कश्यप के चरण पकड़कर दिति देवी परम शोक से रोने लगी। कश्यप ने पूछा, देवी तुम क्यो रो रही हो। तव दिति ने कश्यप से अपना दु.ख निवेदन किया ॥ १०५४ ॥ कि मेरे पुत्रों को इन्द्र ने मार डाला है और अमृत का सेवन कर वे अजर-अमर वन गये हैं। मेरे हृदय से पुत्र-शोक दूर नही हो रहा है। मुझको वर दो कि मेरा पुत्र इन्द्र वने ॥ १०५५ ॥ तव वर देकर कश्यप ने हँसते हुए कहा, हे सुन्दरी पवित्र होकर तुम गर्भ को धारण करना। यदि वारह वर्ष नियम से रह सको तो तुम्हारा पुत्र इन्द्र होगा, यह मै वर देता हूँ ॥ १०५६ ॥ यह सुनकर दिति ने कश्यप ऋषि की सेवा की। इसके पश्चात् पवित्र होकर उसने गर्भ धारण किया। ऐसा देख कर इन्द्र वडा त्रस्त हो गया और छल से दिति की सेवा करने चल पड़ा ॥ १०५७ ॥ कोई भी छिद्र (कमी) मिल जाय तो गर्भ का नाश करूँगा, ऐसा सोचकर इन्द्र रातोंदिन दिति के निकट से नही हटता था। जव जो कुछ भी जरूरत पडती देता जाता, किन्तु गर्भ नष्ट करने का वहाना कोई भी नही मिल पाता ॥ १०५८ ॥ एक वार गर्भ के भार से दिति नियम भूल गई और सध्यावेला खुले वाल लेट गई। सिरहाने की ओर पैर और पैताने की ओर सिर करके लेटी। ऐसा छिद्र (भूल) पाकर इन्द्र हँस पड़ा ॥ १०५९ ॥ माया के सहारे वज्र लेकर वह गर्भ में प्रवेश कर गया। फिर उस पुत्र को सात खंडों में काट डाला। फिर उन सात खंडों में एक-एक खड को सात-सात वार काट डाला। रोते हुए वह पुत्र उनचास रूपो मे वँट गया ॥ १०६० ॥ तव होश में आकर दिति ने विस्मय से देखा और इन्द्र से कहा तूने मेरे पुत्र को क्यो मारा ? यह सुनकर इन्द्र ने दिति से कहा, चूंकि तुम अनियम से लेटी हुई थीं ॥ १०६१ ॥ इसीलिए

बंचिला रजनी राम हेन कथा माते * तैरपरा चलि गैला रजनी प्रभाते
गौतमर आश्रमक देखि अनुपाम * कौतुके ऋषित कथा पुछिलन्त राम ६३
कार इटो आश्रम कहियो तपोधन * नाना फले-फूले देखिबाक सुशोभन
सर्व्वशून्य आश्रम ने देखो एको प्राणी * ऋषिये बोलन्त राम शुनियोक वाणी१०६४
भाल सुमराइला राम कमललोचन * इठाइत तोमार किछु आछे प्रयोजन

अहल्यार-मुक्ति

पाचे राम लक्ष्मणक लैया ऋषिराज * प्रवेशिला गैया पाचे आश्रमर माज१०६५
गौतम ऋषिर शाप लभिया प्रचंड * आछन्त अहल्या सती हुया शिलाखंड
बिश्वामित्रे रामक बुलिला मृदुभावे * एहि शिलाखंड राम परशियो पावे ६६
शुनि रामे शिले मात्र परिशिला पाव * शाप एराइ अहल्या भैलन्त शुद्धभाव
ईश्वरर पदधूला जगत दुर्ल्लभ * महा महा महन्तर नुहिको सुलभ ६७
हेनय धूलाक सुखे अहल्या पाइलन्त * ताहान भाग्यर कोने कहिबेका अन्त
घोर ऋषिशाप एराइ प्रकाशन्त ज्योति * देखिया ऋषित रामे पुछिलन्त माति ६८
किबा नाम आन एन्ते भार्य्या वा काहार * परम सुन्दरी आति रूप चमत्कार
शिला हुया आछे केने शून्य आश्रमत * इहार कारण कहियोक स्वरूपत ६९

तुम्हारा गर्भ नष्ट कर डाला। वह देवता बनकर मेरे साथ-साथ रहा करेगा। विश्वामित्र ने राम से प्रकट रूप से कहा, इस प्रकार से पवन उनचास बन गया ॥ १०६२ ॥ इन बातों में राम ने रात्रि व्यतीत की। फिर सवेरा होते ही झटपट चल पड़े। गौतम का अनुपम आश्रम देखकर राम ने कौतुक से ऋषि से पूछा ॥ १०६३ ॥ हे तपोधन, यह बताना कि यह किसका आश्रम है। विभिन्न फल-फूलों से यह सुशोभित है। किन्तु आश्रम बिलकुल निर्जन है, एक भी प्राणी नहीं दिखाई पड़ता। ऋषि ने राम से कहा, मेरा कहना सुनो ॥ १०६४ ॥ हे कमललोचन राम ! तुमने भली याद दिलाई यहाँ तुम्हारी कुछ आवश्यकता है।

अहल्या की मुक्ति

इसके पश्चात् राम-लक्ष्मण को साथ लेकर ऋषिराज (विश्वामित्र) आश्रम के भीतर प्रवेश कर गये ॥ १०६५ ॥ गौतम ऋषि का प्रचंड शाप प्राप्त कर सती अहल्या शिला-खंड बनकर पड़ी है। विश्वामित्र ने राम से धीमे स्वर में कहा, हे राम ! इस शिलाखंड को अपने पैरों से स्पर्श करो ॥ १०६६ ॥ यह सुनकर राम ने उस प्रस्तर-खंड को पैरों से स्पर्शमात्र किया, जिसके कारण शाप से मुक्त होकर अहल्या शुद्ध-सात्विक बन गई। ईश्वर की पद-धूलि संसार में दुर्लभ है— वह बड़े-बड़े महन्तों के लिए भी सुलभ नहीं ॥ १०६७ ॥ ऐसी धूलि (प्राप्त करने का) सुख जिस अहल्या को मिला, उसके भाग्य की सीमा को कौन बखान सकता है। ऋषि के भीषण शाप से मुक्त होकर (अहल्या) ज्योति फैलाने लगी। इसलिए राम ने ऋषि को बुलाकर उनसे पूछा ॥ १०६८ ॥ इनका शुभ नाम क्या है ? यह किसकी भार्या है ? यह तो परमसुन्दरी और रूपवती है। इस सूने आश्रम में आखिर शिला बनकर क्यों पड़ी हुई हैं ? इसका कारण आप मुझे सच-सच बतावें ॥ १०६९ ॥ यह सुनकर विश्वामित्र ने राम को उत्तर दिया, इनका

शुनि विश्वामित्रे दिला रामक उत्तर * इहान अहल्या नाम भार्य्या गौतमर
महाऋषि गौतमक जगते जानय * तान तप देखि इन्द्र भैल महाभय ७०
रात्रि दिने माने तान सुख शान्ति नाइ * आन तप भंग करो कमन उपाय
इटो ऋषि येने तप करय दुर्घोर * कोन दिन इन्द्रपद काढ़ि लैवे मोर ७१
मदनक आनि पांचिलन्त पुरन्दर * येने तेने तप भंग करा गौतमर
शुनिया मदने बोले नपाओं आमि सास * जाज्वल्य वह्निनत कोने करिवेक जास ७२
जीवन्त यमर कोने चापिवेक पाश * शुनि पुरन्दरे दीर्घ तेजिला निश्वास
दिगपाल समस्तक बुलिला सभात * करा सवे गौतमर तपक बिघात ७३
देवगणे वचन बुलिला एकेवारे * कालकूट खाया कोने मरिवाक पारे
यदि स्वर्गपद ऋषि लन्त एतिक्षणे * तथापितो आगवाढ़ि मारवो कमने ७४
देवतासबक इन्द्रे बुलिलेक वाणी * स्वर्गपद लैले तोमासार किवा हानि
येहि इन्द्र होवे तुमिसव हैबा तार * मोरेसे केवले मात्र गुचे अधिकार ७५
गौतमर तपभंग मइ करो जाइ * किन्तु तुमिसव हैवा पिचत सहाय
एहि बुलि निश्चय करिया देवराज * आसिलन्त गौतमर तपोवन माज ७६
ऋषिक देखिया महाभये भीत भैला * माया करि गृहर ओचर चापि रैला
प्रभातर कार्य्य यतकरि समापति * फल मूल आनिते गौतम महामति ७७
प्रवेशिला गैया उपवने आश्रमर * पाचे अहल्याक देखिलन्त पुरन्दर
त्रैलोक्यमोहिनी आति परम सुन्दरी * नुहिके समान विद्याधरी तपेस्वरी ७८

नाम अहल्या है। ये गौतम ऋषि की पत्नी है। महाऋषि गौतम को सारा संसार जानता है। उनकी तपस्या देखकर इन्द्र बडा भयभीत हुआ ॥ १०७० ॥ रात-दिन उसके मन मे किञ्चित् शान्ति नही। किस उपाय से इसकी तपस्या भंग हो सकती है? यह ऋषि जैसी घोर तपस्या कर रहा है इससे तो यह किसी भी दिन मेरा इन्द्र-पद छीन लेगा ॥ १०७१ ॥ तब कामदेव को बुलाकर इन्द्र ने उसको आज्ञा दी कि किसी भी ढंग से गौतम की तपस्या भंग करो। यह सुनकर कामदेव ने कहा, मुझे साहस नही हो रहा है। जलती हुई आग को कौन पचा सकता है ॥ १०७२ ॥ जीवित यमराज (मौत) को कौन अपने आलिगन मे ले लेगा। यह सुनकर इन्द्र ने एक लम्बी सॉस ली, और उसने सारे दिक्पालों को सभा मे बुलाकर उन लोगों से गौतम की तपस्या में विघ्न पहुँचाने को कहा ॥ १०७३ ॥ देवताओ ने दो टूक कह दिया—कालकूट बिप खाकर कौन जिन्दा रह सकता है। यदि ऋपि इसी क्षण आकर स्वर्गपद भी ले ले फिर आगे बढ़कर हमलोग उसको कैसे मार सकेंगे ॥ १०७४ ॥ तब इन्द्र ने देवताओ से कहा, यदि वह स्वर्गपद ले भी ले तो तुमलोगों की क्या हानि है? जो भी इन्द्र होगा तुम लोग उसी के होकर रहोगे। केवल मेरा ही अधिकार छिन जायगा ॥ १०७५ ॥ इसलिए चलो मै ही जाकर गौतम का तपोभग करता हूँ, लेकिन तुम सब मेरे पीछे-पीछे मेरे सहायक बने रहना। यह कहकर और ऐसा निश्चय कर देवराज इन्द्र गौतम के तपोवन में आए ॥ १०७६ ॥ ऋषि को देखकर अत्यन्त भयभीत होकर वह इन्द्र माया का सहारा लेकर उनके आश्रम के निकट बना रहा। सबेरे का सारा कार्य समाप्त कर महा बुद्धिमान् गौतम फल-फूल लाने चले गये ॥ १०७७ ॥ तब इन्द्र ने आश्रम के उपवन में प्रवेश करके अहल्या को देखा। वह परमसुन्दरी तीनों लोको को मुग्ध कर देने वाली थी। विद्याधरी और अप्सराएँ भी (रूप मे) उसके समान नही ॥ १०७८ ॥ अहल्या

अहल्यार रूपे वासवक परशिल * कामे विमोहित हुया बुलिवे लागिल
गौतमर तप भंग एखन आछोक * अहल्यार रूपे आति मोहिलेक मोक ७९
मोक्ष तुहिवेक आन संगमर सरि * कोन छार स्वर्ग विद्याधरी अपेस्वरी
आहान अधर-मधु पिबे येवे पाय * तेवे कोटि कोटि अमृततो कार्य्य नाइ ८०
आक एरि स्वर्गे गैया कि काम करिबो * प्राणे यदि मरो आजि तथापि हरिबो
एहि बुलि इन्द्रे मने गुणिया अशेष * गौतम ऋषिर पाचे धरिलन्त वेश ८१
गृहत प्रवेश पाचे भैला छद्म करि * स्वामी आसिवार देखि अहल्या सुन्दरी
आथवेथ करिया आसन आनि दिल * करंडि पेलाया थैया आसने वसिल ८२
अहल्या मधुर वाणी पुछिला सादरे * अरण्यक नगै केने उलटिला घरे
इन्द्रे मने बोले विधि सुप्रसन्न भैला * छद्मरूपे गौतमे मातिवे पाचे लैला ८३
कि पुछस सुन्दरी बिपाक आजि मोर * घर हन्ते याहन्ते देखिलो मुख तोर
शरत कालर पूर्णचन्द्र नुहि सरि * कामवाणे पीड़ा मोक करे सेहि धरि ८४
विहा करि आनिवार परा कदाचित * हेनमत रूप नतो देखो विपरीत
आजि जानो विधाता करिल विड़म्बन * तोहोर निमित्ते पीड़ा करय मदन ८५
चल याओं शय्याक पुछस आर किक * शुनिया अहल्या सती बोलय स्वामीक
आजि देखो तुमि प्रभु केनमत भैला * लाज काज तप व्रत पाच करि थैला ८६
त्रिजगते जाने तुमि महा मुनिबर * तोमार अकार्य्ये हासिवेक निरन्तर
समस्ते शास्त्रत तुमि आपुनि पार्गत * करिब आलाप स्त्रीक ऋतु समयत ८७

के रूप ने इन्द्र को मोहित कर लिया। वह काम से मुग्ध होकर कहने लगा। अब गौतम का तपोभंग करना रहने दो। क्योंकि अब तो अहल्या के रूप ने मुझे मोह लिया है ॥ १०७९ ॥ इसके साथ संगम करने (के सुख) के समान मोक्ष भी नही होगा। स्वर्ग की विद्याधरी और अप्सराएँ इसके सामने तुच्छ है। इसके अधरों का मधु जिसको पीने को मिल जाय उसको करोड़ो-गुना अमृत की भी कोई आवश्यकता नही ॥ १०८० ॥ इसको छोड़कर स्वर्ग जाकर मैं क्या करूँगा। अगर आज मैं प्राणों से भी रहित हो जाऊँ तो भी मैं उसका हरण करूँगा। यह कहकर मन में काफ़ी सोच-विचार करने के पश्चात् इन्द्र ने गौतम ऋषि का वेश-धारण कर लिया ॥ १०८१ ॥ छद्मवेश धरने के पश्चात् इन्द्र ने गृह में प्रवेश किया। सुन्दरी अहल्या ने पति को आते हुए देखा। आदर पूर्वक उसने आसन ला दिया। पुष्पपात्र को अलग फेक कर वह आसन पर बैठ गया ॥ १०८२ ॥ अहल्या ने सादर मधुर शब्दो में पूछा, जंगल मे न जाकर तुम घर क्यों लौट आए ? इन्द्र ने मन ही मन कहा, विधि मुझपर सुप्रसन्न हो गया है। तब छद्म रूप धारी इन्द्र ने कहा ॥ १०८३ ॥ हे सुन्दरि, तुम मेरी विपदा के बारे में क्या पूछती हो ? घर से जाते समय तुम्हारा वह मुख मैंने देख लिया। जिसके समान शरत् ऋतु का पूर्ण चन्द्र भी नही है, तभी से कामवाण मुझको पीड़ा देने लगा है ॥ १०८४ ॥ विवाह कर लाने के पश्चात् कभी भी ऐसा सुन्दर रूप नही देखा था। आज समझ लो विधाता ने मेरे साथ विड़म्बना की। तुम्हारे लिए कामदेव मुझको क्लेश देने लगा है ॥ १०८५ ॥ अब आगे क्या पूछती हो, आओ, विस्तर पर लेट जाओ। यह सुनकर सती अहल्या ने अपने पति से कहा। प्रभु आज तुम कैसे ऐसे हो गये कि लाज भरे कार्य के निमित्त अपनी तपस्या व व्रत की उपेक्षा कर रहे हो ॥ १०८६ ॥ तीनों लोक जानते हैं कि तुम महामुनि हो। तुम्हारे इस अनुचित कार्य को देखकर

ऋषि सकलर धर्म्म एहिसे निश्चय * ऋतुबाजे स्त्रीक आलापिले पाप हय
तुमि केने ऋतु बिने करिवा आलाप * नपारोहो बुजिबे तोमार किवा काप ८८
मोकेसे परीक्षा करा जानिलोहो निष्ठ * नुहि केने इबोल बुलिला तुमि शिष्ट
हेन शुनि कपट गौतमे बोले बाणी * भाल तुमि अहल्या बुलिला धर्म जानि ८९
किन्तु मोर धर्म्म तुमि करिला बिघात * तोमार रूपेसे कामे करे उतपात
यिहेतु भैलाहा तुमि परम सुन्दरी * त्रैलोक्यर रूप थैले एकस्थान करि ९०
जिकालत विहा करि तोमाक आनिलो * हैवे मोर धर्म्म नष्ट तेखनि जानिलो
तोमार रूपत यार निमजिल मन * राखिबेक धर्म्म हेन आछे कोनजन ९१
आजि येवे प्राण रहे मदन अनले * तेवे तप धर्म्म कर्म्म पाइबोहो सकले
एखने कामिनी मोर प्राण रक्षा करा * चलियोक शय्याक विलम्ब परिहरा ९२
पुनरपि बुलिलन्त अहल्या वचन * शुनियोक प्रभु तुमि थिर करा मन
हरिक सुमरि ब्रह्ममंत्र करा जप * कपट गौतमे बोले एरा काप-झाप ९३
बारम्बार हरि स्मरि धरिलो धियान * तोक विने समाधितो नेदेखिलो आन
किवा मोक बुजास नजानो किवा मइ * मोत करि अधिक पंडित भैलि तुइ ९४
कामबाणे फुटि मोर प्राण संकलय * कामातुर भैले परदाराको हरय
करिलन्त ब्रह्मा निज दुहिता आलाप * तथापितो तान्त देखो निसिजिल पाप ९५
निज भार्य्या आलापिबो दोष आत वर * मोर प्राण जाय तइ पातस जगर

वे निरन्तर हँसते रहेगे। सारे शास्त्रों में तुम स्वयं पारंगत हो। किस प्रकार तुम ऋतु के समय पत्नी से मिलित होगे ॥ १०८७ ॥ अवश्य ही यह ऋषियो का धर्म-कथन है कि ऋतुकाल में स्त्री से मिलित होने पर पाप होता है। क्यों तुम इस ऋतुकाल मे मिलित होना चाहते हो ? तुम्हारा रंग-ढंग कुछ मेरी समझ मे नही आ रहा है ॥ १०८८ ॥ मैंने यह स्पष्ट रूप से जान लिया कि तुम मेरी परीक्षा ले रहे हो। हे सदाशय, तुमने यह अपने मुँह से क्यों नही कहा ? यह सुनकर कपटी गौतम ने कहा, हे अहल्या, धर्म को जानकर यह तुमने अच्छा ही कहा ॥ १०८९ ॥ लेकिन मेरे धर्म में तुमने व्याघात पहुचाया है। तुम्हारे ही रूप के कारण काम उत्पात मचाने लगा है, चूंकि तुम परमसुन्दरी हो तुमने तीनों लोक का रूप एक ही स्थान पर लाकर रख दिया ॥ १०९० ॥ जिस समय मै तुमको ब्याह कर लाया उसी समय जान लिया कि मेरा धर्म नष्ट होकर रहेगा। तुम्हारे रूप मे जिसका मन डूब गया है, ऐसा कौन व्यक्ति है जो धर्म की रक्षा कर सकेगा ॥ १०९१ ॥ आज यदि कामदेव की आग से प्राण बच जायें तब तो तप-धर्म-कर्म सब कुछ कर सकूँगा। हे कामिनी, अब तुम मेरे प्राणों की रक्षा करो, विलम्ब त्याग कर शीघ्र शय्या पर चली जाओ ॥ १०९२ ॥ फिर अहल्या ने कहा, हे प्रभु सुनो, तुम अपने मन को स्थिर करो। हरि का स्मरण कर ब्रह्ममंत्र का जप करो। तब कपटी गौतम ने गर्व का त्याग कर कहा ॥ १०९३ ॥ मैंने बारबार हरि का स्मरण कर ध्यान लगाया, किन्तु तुम्हारे बिना समाधि मे और कोई दिखाई ही नही पड़ा। मुझको तुम क्या समझ रही हो, मैं क्या जानता नही हूँ ? मुझसे क्या तुम अधिक पडित बन गई ॥ १०९४ ॥ कामबाण से छिद कर मेरा मन तड़प रहा है। कामातुर होने पर मनुष्य अन्य की पत्नी को भी चुराता है। ब्रह्मा ने अपनी आत्मजा से सभोग किया फिर देखो उनपर पाप नही लगा ॥ १०९५ ॥ अपनी पत्नी से संगम करूँगा यह कौन सा बड़ा दोप है। मेरे प्राण निकले जा रहे हैं।

अहल्या गुणय जानो मिलय अकाज * आलाप नापाइ शापिवेक ऋषिराज१०९६
जानिलोहो बिधाता आमाक विड़म्बिल * महाभय हुया आति वचन बुलिल
शुनियोक महाऋषि वचन आमार * धर्मत थाकिया बुजाइलोहो बारे बार१०९७
स्त्री जाति किवा आमि जानि शास्त्रचय * आन आन महाऋषि तोमात पुछय
तथापितो करा यदि धर्म्म परित्याग * दिबा गुचि आसि तेवे हौक निशाभाग१०९८
दिनत श्रृंगार धर्म्म नुहिके उचित * सामान्य जनरो इटो अति गरहित
मायाबी गौतमे बोले शुना प्राणेश्वरी * तइ धर्म्म चिनास आछिलो मइ मरि ९९
कामातुर भैले तार धर्म्म कैत आछे * चल याओं शय्याक बुजावि मोक पाचे
अहल्या बोलय येने लागे करा ताक * हाते कोने पारय हस्तीक ठेलिबाक११००
शुनि वासवर अति रंग हैला मने * आथवेथ करिया उठिल तेतिक्षणे
शय्याक निलन्त ताक धरिया हातत * करिला अनेक क्रीड़ा कामे हुया मत्त११०१
महा कामातुर इन्द्र रतिते कुशल * षोडश श्रृंगार भाव देखाइला सकल
देखिया विस्मय मन भैल अहल्यार * गौतम ऋषिर नोहे इमत श्रृंगार २
जानिलो नुहिको इटो वासवत पर * एहि बुलि भैला देवी शय्यार अन्तर
भैलो सर्व्वनाश बलि भैला महाभय * थिर नोहे हात भरि शरीर कम्पय ३
मातिला अहल्या पाचे कोप करि मन * अरे तइ कह कोन परम दुर्ज्जन
शुनिया इन्द्रर भये गर्भ गैल गलि * प्रकम्पित हुया मातिलन्त कृतांजलि ४

और तुम इसको अपराध वता रही हो। अहल्या ने मन में सोचा कि यह कुकार्य करना ही पड़ेगा। संगम न कर पाने से ऋषिराज गौतम श्राप दे देंगे ॥ १०९६ ॥ जव यह जान लिया कि विधाता ने मुझसे विडम्बना की है तो वड़े ही भय से उसने कहा। हे महर्षि, मेरी वात सुनो। धर्म मे रहकर मैने तुमको वार-वार समझाया ॥ १०९७ ॥ मैं स्त्री जाति की हूँ, मुझे शास्त्रों का क्या ज्ञान है ? कितने ही ऋषि तुमसे (धर्म के विषय में) पूछते हैं। फिर भी यदि धर्म का लंघन कर ही रहे हो तो दिन को समाप्त हो जाने दो और रात्रि को आने दो ॥ १०९८ ॥ दिन को रतिक्रीड़ा करना उचित नही। यह सामान्य व्यक्ति के लिए भी वहुत ही निषिद्ध है। तव मायावी गौतम ने कहा, हे प्राणेश्वरी, तुम मुझे धर्म का ज्ञान दे रही हो और इधर मेरे प्राण निकले जा रहे है ॥ १०९९ ॥ जव कोई व्यक्ति कामातुर हो जाता है तो उसमें धर्म कहाँ रह जाता है। आओ विस्तर पर चली आओ, मुझको वाद में समझाती रहना। अहल्या ने कहा, जो करने के लिए तुला हुआ है ऐसे (उन्मत्त) हाथी को हाथ से कौन धकेल सकता है ॥ ११०० ॥ यह सुन कर इन्द्र का मन वडा प्रसन्न हुआ। प्रेम से पूर्ण हो वह उठ खड़ा हुआ। उसको हाथ से पकड़ कर विस्तर पर ले गया। काम से मत्त हो उसके साथ अत्यन्त रतिक्रीड़ा की ॥ ११०१ ॥ इन्द्र वड़ा कामातुर और रतिक्रीड़ा में कुशल था। इसलिए उसने सोलह प्रकार की रतिक्रीड़ाओं का प्रदर्शन किया। यह देखकर अहल्या के मन में वड़ा विस्मय हुआ कि गौतम ऋषि की रतिक्रीड़ा तो इस प्रकार की नहीं होती ॥ ११०२ ॥ तव उसने जान लिया कि यह इन्द्र के सिवा और दूसरा कोई नहीं हो सकता। यह जान कर अहल्या विस्तर से दूर हो गई। सर्वनाश हो गया, ऐसा कहकर वह वहुत भयभीत हो गई। उसका शरीर काँपने लगा और शौचकार्य में उसके हाथ स्थिर नहीं रह सके ॥ ११०३ ॥ इसके वाद मन में कुपित होकर अहल्या ने कहा, अरे महादुष्ट ! तू कौन है। यह सुन कर इन्द्र का अन्तर भय से भर गया,

शुनियोक महामति मइ देवराज * आने कोने करिवेक इमत अकाज
अहल्या वोलन्त दूर गुच दुराचार * पतिव्रता धर्म नष्ट करिलि आमार ५
शापि तोके एखने करिबे पारो छाइ * तथापितो मोर आरो परिक्रिया नाइ
अवश्यके मइ घोर नरकक याइवो * तोक शाप दिया मइ कोन फल पाइवो ६
मइ तोक किवा काजे करिवोहो दंड * स्वामीर शापत तोर हैवे लंडभंड
यि भैल सि भैल मोर शुनरे वर्व्वर * तइ मात्र आपोनार प्राण रक्षा कर ७
नतो पान्त आसि तोक गौतमे यावत * सत्वरे एथार पापी अन्तर तावत
हेन शुनि महाभय लाजे पुरन्दर * तेखने धरिला वेश वृद्ध ब्राह्मणर ८
शण पांजि हेन केश भोवोकार दाढ़ि * भगा छातिखानि वाम कान्धे आछे पारि
हाते गले शिरे माला आछे रुद्राक्षर * लरवर दान्त फोटा करे चरचर ९
करे कम्प कम्प हाथ पाव नुहि थिर * काखे भणी जुलि लाखुटित दिया भिर
भिक्षुकर वेशे नंगलार भैला वाज * सेहि वेला आसिला गौतम ऋषिराज १०
सारि याओं बुलि आगे वेग दिया गैल * गौतमक देखि पाचे वेग थिर भैल
कासे ढुलु ढुलु करि थिर नुहि मन * गौतमे वोलन्त इटो याय कोन जन ११
काहाको नेदेखि आगे गैल सरसरि * मोक देखि इहार काम्पय हाथ भरि
नुहिके भिक्षुक इटो जानिलो निश्चय * कपट ब्राह्मण वेश भैल मोक भय १२
आन कोनो नोहे इटोजन पुरन्दर * छद्मरूपे जानो विध्वंसिल मोर घर
एहि बुलि गौतमे करिया मने हास * मातिलन्त रह अरे कोन तइ यास १३

और हाथ जोड़ कर काँपते हुए उसने कहा ।। ११०४ ।। हे महामती, सुनो, मैं देवराज इन्द्र हूँ । दूसरा कौन हो सकता है जो ऐसा कुकार्य करे । अहल्या ने कहा, ऐ दुराचारी, दूर हो जा, तूने मेरा पातिव्रत धर्म नष्ट कर दिया ।। ११०५ ।। तुझको शाप देकर मैं अभी राख वना सकती हूँ । फिर भी मेरे लिए तो कोई परिक्रिया (वचाव) रहा नहीं ? अवश्य ही मैं घोर नरक में जाऊँगी । तुझको शाप देकर मुझको कौन सा फल मिलेगा ।। ११०६ ।। भला मैं तुझको दंड क्यों दूँ, तेरा सर्वनाश तो मेरे पति के शाप से ही हो जायगा । जो हुआ सो हुआ, अरे वर्वर अव सुन, तू केवल अपने प्राणों की रक्षा कर ले ।। ११०७ ।। हे पापी, जव तक गौतम आकर तुझको पा न लें तव तक तू तुरन्त यहाँ से दूर चला जा । ऐसा सुनकर इन्द्र ने भय और लज्जा से उसी समय वृद्ध ब्राह्मण का वेश धारण कर लिया ।। ११०८ ।। धुने हुए पटसन जैसे केश और घनी वड़ी दाढ़ी, वाएँ कन्धे पर टूटी हुई छतरी रखी है । हाथ, गले और सिर पर रुद्राक्ष की मालाएँ । टूटे हुए दाँत और माथे पर तिलक चमक रहा है ।। ११०९ ।। हाथ काँप रहे है और पाँव भी स्थिर नही हैं । कमर में फटा हुआ झोला और हाथ की लकुटी पर झुके हुए भिखमंगे के वेश में जैसे ही वह फाटक के पास आया कि उसी समय महाराज गौतम वहाँ आ पहुँचे ।। १११० ।। हट जाओ, कहकर वह आगे वेग से वढ़ गया किन्तु वाद में गौतम को देखकर उसका वेग धीमा पड गया । वदन को आगे-पीछे डुलाते हुए वह खाँसने लगा—उसका मन चंचल हो गया । गौतम ने कहा, यह कौन है जो रहा है ।। ११११ ।। किसी को इस पथ से आगे जाते हुए नहीं देखा । मुझको देखकर इसके हाथ काँप रहे है । यह तो निश्चय रूप से जान लिया कि यह भिक्षुक नहीं है । इसने छल से ब्राह्मण का वेश धारण कर लिया और मुझसे डर रहा है ।। १११२ ।। यह और कोई भी नही, यह इन्द्र है । लगता है कि इसने छद्म रूप धरकर मेरे घर का ध्वंस किया है । यह कहकर गौतम ने मन ही मन हास्य किया । पुकारा, ठहर, अरे तू कौन है जो जा

शुनिय वासवे आति भैला भये त्रास * निश्वास तेजिया बोले भैलो सर्व्वनाश
हा कि करिलो कोन समये लरिलो * गौतम स्वरूप मृत्यु मुखत परिलो १४
नाइ श्रुति ज्ञान भये उरि गैल जीव * कपट एरिया गैया आगे भैला थिव
यम येन गौतमक देखन्त साक्षात * मरा येन भैल थिर तुहि भरि हात १५
नाइ मात बोल आति सेपके नोढोके * बुढ़ा वानरक येन पाइल पुत्रशोके
हृदय शुकाइल मुखे धूला उरि याय * कृतांजलि रहिला तलक लागि चाइ १६
कोपे वासवक ऋषि मातिलन्त हासि * मोहोर घरक वेटा बिध्वंसिलि आसि
छाग येन भैल एको नाइ लाज काज * एहिसे कर्म्मक लागि भैलि देवराज १७
नटत अगन तइ भैलि दुराचार * निरशंक हुया भार्या हरस आमार
मइ त्रैलोक्यर राजा बुलि गर्व्व तोर * एकोके नचास कर्म्म करह दुर्घोर १८
विश्वरूप ब्राह्मणक काटि पाइलि लाइ * बांटि दिया ब्रह्मवध पाप कैलि छाइ
आमार भार्याक हरि सेहिमत चास * मोर हात सारि आजि सेन्थरे नयास१११९
कोने कि करिव मोक हेन मने मान * गौतम ऋषिर एको महिमा नजान
स्वर्गर यतेक नारी तोक नुजुरिल * गौतमर स्त्रीते तोर मनक पूरिल २०
परनारी हरे यार घरे भार्या नाइ * तोर यत भार्या तार लेखाओ नपाइ
तथापितो ब्राह्मणर भार्याक हरस * करो शास्ति येन हेन कर्म्म न करस २१
एहि बुलि क्रोधे ज्वलि भैला वह्नि सम * इन्द्र बोले तुहि ऋषि पाइले मोके यम
कोपे वासवक ऋषि बुलिलन्त माति * शुन पुरन्दर हेर बिहो तोर शास्ति २२

रहा है ॥ १११३ ॥ यह सुन कर इन्द्र भयभीत हो गया। और उसने साँस लेते हुए कहा, सर्वनाश हो गया। हाय, यह क्या कर डाला, कैसे समय पर चल पड़ा कि गौतम के समान मृत्यु सम्मुख आ गई ॥ १११४ ॥ भय से उसकी श्रवण शक्ति और ज्ञान शक्ति नहीं रही और प्राण भी उड़ गये। कपट छोड़, आगे जाकर स्थिर होकर खड़ा हो गया। और साक्षात् यम के समान गौतम को देखने लगा। उसके हाथ-पैर निश्चल हो गये और वह मृत के समान हो गया ॥ १११५ ॥ उसके मुँह से कोई बोली नही निकलती और लार भी नहीं घूंट पा रहा है, मानो बूढा वानर पुत्रशोक से कातर है। उसका मन सूख गया और मुँह पर धूल उड़ने लगी। वह हाथ जोड़ कर नीचे की ओर देखने लगा ॥ १११६ ॥ तव क्रोध से हँसते हुए ऋषि ने इन्द्र से कहा, अरे दुष्ट, तूने अपने लिए मेरा घर बरवाद कर दिया। मानों तू वकरा हो गया है, कोई भी कार्य लज्जाजनक नही रहा। क्या इसी काम के लिए तू देवराज वना हुआ है ? ॥ १११७ ॥ अभिनय में कुशल अरे ! तू दुराचारी वन गया। निडर होकर तूने मेरी पत्नी का शील हरण किया। मै तीनों लोकों का राजा हूँ, यह कहकर तू गर्व करता है। और किसी की भी परवाह न कर विपय कार्य करता रहता है ॥ १११८ ॥ विश्वरूप ब्राह्मण को काटकर तुझको शरण मिल गई। और तूने ब्रह्मवध के पाप को वाँट कर उड़ा दिया। मेरी पत्नी का शील हरण कर तू वैसा ही चाहता है। आज तू मेरे हाथों से बचकर कही नही जा सकता ॥ १११९ ॥ तू अपने मन में यह मानता है कि कोई मेरा क्या विगाड़ सकता है। तू गौतम ऋषि की महिमा विल्कुल नहीं जानता। स्वर्ग की सारी नारियों से भी तेरा मन नहीं भरा। गौतम की स्त्री से ही तेरा मन भरा ॥ ११२० ॥ जिसके घर में पत्नी नहीं होती, वही दूसरे की नारी का शील हरण करता है, तेरी कितनी पत्नियाँ है। इसका तो कोई हिसाव ही नहीं। फिर भी तू ब्राह्मण की पत्नी का शील हरण करता है। मैं तुझे ऐसी सजा दूंगा कि आगे ऐसा काम न कर सके ॥ ११२१ ॥ यह

सर्ब्वदाइ तइ योनितेसे मात्र रत * सहस्र हउक योनि तोर शरीरत
येन आनक्षण नकरस हेन दोष * एतिक्षणे छिण्डिया परक अण्डकोष २३
बिहिलोहो शास्ति तोर येहेन उचित * ब्राह्मणक आरो येन नकर इंगित
हेन शाप गौतमे इन्द्रक येवे दिल * पातकर फल आसि तेखने मिलिल २४
इन्द्रर शरीर गोट योनिमय भैल * दुइ अंडकोष तेतिक्षणे छिण्डि गैल
देवर ईश्वर आति भैल लण्ड भण्ड * एराइते शकति नाहि ब्राह्मणर दण्ड २५
महाहित उपदेश शुनियोक सर्ब्ब * ब्राह्मणत अल्पो न करिबा अबगर्ब्ब
एरियो बिप्रत अवहेला सर्ब्बदाइ * देखा केनमत भैल देवर बिलाइ २६
हुया आति बीभत्स शापत गौतमर * महातापे मनत गुणन्त पुरन्दर
याइबोहो स्वर्गक आवे मइ कोन लाजे * पूर्ब्बत दिलेक हाक देवता समाजे २७
तथापि आसिल तपभंग करिबाक * आछो तप भांगिवो नाशिलो आपोनाक
कोनबा विधिये मोक ठेकिले बिपाक * जगतर लोके आवे हासिवेक मोक २८
हरि हरि बिधाता न भैला मोर फाल * इ लाजत करि जाना मरणेसे भाल
शाप दिया भस्म ऋषि न करिला किक * भैलोहो बीभत्स मइ मरणतोधिक २९
कोन कर्म्म करो आवे कैक लागि याओं * इटो लाज अपमान कहिते एराओं
एहि बुलि उत्तर दिशक लागि याइ * पद्मर तन्तुत गैया थाकिला लुकाइ ३०
शाप दिया इन्द्रक गौतम मुनिवर * कोपमने गैया प्रवेशिला निज घर
अहल्या आछन्त महा मने ताप करि * स्वामी आसिवार पाचे देखिला सुन्दरी ३१

कहकर क्रोध से गौतम आगवबूला हो गये। इन्द्र ने कहा कि मेरी भेंट ऋषि से नहीं वल्कि यम से हो गई है। क्रोध से ऋषि ने इन्द्र को वुलाकर कहा, अरे इन्द्र, मै तुझे दड दे रहा हूँ ।। ११२२ ।। तू सदा योनि में ही रत रहता है इसलिए तेरे सारे शरीर मे सहस्रो योनियाँ वन जाये। जिससे फिर कभी ऐसा अपराध न कर सके, इसलिए इसी समय तेरे अडकोश गिर जाये ।। ११२३ ।। तुझे मैं ऐसी ही सजा दे रहा हूँ जो तेरे लिए उचित है। जिससे फिर कभी ब्राह्मण को इगित न कर सके। जव गौतम ने इन्द्र को ऐसा शाप दिया तो तुरन्त ही उसे उसके पाप का फल मिल गया ।। ११२४ ।। इन्द्र का समूचा शरीर योनिमय वन गया। तुरन्त ही उसके अडकोश टूट कर गिर गये। देवताओ के ईश्वर की वड़ी दुर्गति हो गई। ब्राह्मण के दंड से बचने की कोई शक्ति नही ।। ११२५ ।। अरे संसार के सभी लोगो! तुम यह मगलकारी उपदेश सुन लो। ब्राह्मण से कभी भी थोड़ा सा भी गर्व न करना। ब्राह्मण की अवहेलना करने से सदा बचे रहना। देखो, देवराज की किस प्रकार दुर्दशा हो गई ।। ११२६ ।। गौतम के अभिशाप से वह अति वीभत्स वन गया। इन्द्र वड़े पश्चाताप से मन ही मन सोचने लगा, अव मै कौन सा मुँह लेकर स्वर्ग को जाऊँगा। देवताओं के समाज मे पहले ही निपेध जारी हो गया था ।। ११२७ ।। फिर भी मै तपोभग करने के लिए आया। तपोभग करना तो दरकिनार, मैं अपना ही नाश कर बैठा। किस विधि ने मुझे इस विपत्ति में डाल दिया। अव से संसार के लोग मेरी हँसी उड़ाएँगे ।। ११२८ ।। हाय हाय विधाता, मेरा हृदय टुकड़े-टुकड़े क्यों नही हो गया? इस लज्जा से तो मर जाना अच्छा था। ऋषि ने शाप देकर मुझको भस्म क्यो नही कर दिया। अव तो मैं मृत्यु से भी अधिक वीभत्स वन गया ।। ११२९ ।। अव मै क्या करूँ? किसके पास जाऊँ, कि इस लज्जा और अपमान की वात वताने से वच जाऊँ? यह कहकर वह उत्तर दिशा की ओर चल पड़ा और कमलनाल में जाकर छिप गया ।। ११३० ।। इस प्रकार कुपित होकर

महात्रासे स्वामीर नहन्त सती आग * अहल्याक मातिला गौतम महाभाग
शुना सती अहल्या कहिवि निष्ठ करि * किवा भाल मन्द कर्म्म आछस आचरि ३२
शुनि अहल्यार हेन उरि गैल जीव * योरहाते गौतमर आगे भैल थिव
लाजे भये धीरे धीरे मातन्त स्वामीक * आपुनि सर्व्वज्ञ तुमि मोत पुछा किक ३३
तयु रूप धरि इन्द्र आइल छलिवाक * नुहिका सर्व्वज्ञ मइ नजानिलो ताक
तोमाके से जानिया कहिलो धर्म्म यत * कपट वासव ताक नधरि मनत ३४
कामे मत्त हुया इन्द्रे हरिलेक मोक * शापि भस्म करियोक प्रायश्चित्त हौक
गौतमे बोलन्त मिछा नामातिलि तइ * शापि तोक भस्म आरो न करोहो मइ ३५
अज्ञान दोषर तथापितो करो दंड * कतो काल माने हुया थाक शिलाखंड
रामरूपे हरि आसि हैव अवतार * राक्षसक मारिया खंडिव भूमिभार ३६
तान पदरेणु पाइले हैवि पूर्व्ववत * न करिवि संशय कहिलो स्वरूपत
आजि हन्ते कोन प्राणी तोक नेदेखोक * इटो आश्रमत आरो लोक ना थाकोक ३७
एहि बुलि गौतम तेखने चलि गैला * उत्तर दिशत गैया तप करि रैला
अहल्या भैलन्त शिला स्वामीर शापत * सेहि धरि नाहि एकोजन आश्रमत ३८
तयु पद पंकजर रेणु प्रसादत * एहेन्ते अहल्या सती भैला पूर्व्ववत
गौतमर भार्या एन्ते जानिवाहा राम * शुनि अहल्याक रामे करिला प्रणाम ३९
विश्वामित्र मुनित पुछिला रघुवर * कहियोक पाचे केन भैल वासवर
ऋषि बोले शुना राम रघुवंशधर * शची एको थिति नजानिया वासवर ४०

मुनिवर गौतम ने इन्द्र को शाप देकर अपने घर मे प्रवेश किया। वहाँ अहल्या मन में पश्चाताप लिये वैठी थी, उसने पति को आते हुए देखा ॥ ११३१ ॥ भय के कारण सती अहल्या अपने पति के सम्मुख न आई। तव महाभाग गौतम ने अहल्या को पुकारा। सुनो सती अहल्या, सच-सच वताना तुमने भला-वुरा कौन सा कार्य किया है ॥ ११३२ ॥ ऐसा सुनकर अहल्या के प्राण उड़ गये। वह हाथ जोड़कर गौतम के सम्मुख निश्चल खड़ी हो गई। लाज और भय से उसने धीरे-धीरे अपने पति से कहा, आप स्वयं सर्वज्ञ है, मुझसे क्या पूछते है ॥ ११३३ ॥ तुम्हारा रूप धर कर इन्द्र मुझे छलने के लिए आया। मैं सर्वज्ञ नही, अतः मैं उसको जान न सकी। तुम्हें समझकर मैंने उसे कितनी ही धर्म की वातें वताईं, किन्तु कपटी इन्द्र को वह कुछ भी न भाया ॥ ११३४ ॥ काम से उन्मादी वनकर इन्द्र ने मेरा शील हरण कर लिया। तुम शाप देकर मुझको भस्म कर डालो, जिससे मेरा प्रायश्चित्त हो जाये। गौतम ने कहा, तूने झूठ नहीं कहा है, इसलिए मैं तुझे शाप देकर भस्म नही करूँगा ॥ ११३५ ॥ यद्यपि तूने अनजाने में पाप किया है फिर भी इसका दंड भोगना पड़ेगा। तू दीर्घकाल तक शिलाखंड वनकर पड़ी रह। जव राम के रूप में भगवान् अवतार धारण करके आएँगे और राक्षसों को मारकर भूमि का भार हरेगे ॥ ११३६ ॥ तव उन्हीं की पदधूलि पाने पर तू फिर पूर्ववत् हो जाएगी। इसमें कोई सन्देह मत करना, मैं तुझे सच-सच वताये दे रहा हूँ। आज से कोई भी प्राणी तुझे न देख सकेगा और इस आश्रम में आज से कोई व्यक्ति भी न रह सकेगा ॥ ११३७ ॥ यह कहकर गौतम चले गये और उत्तर दिशा में जाकर तपस्या करने लगे। पति के शाप से अहल्या शिला वनकर पड़ी रही। उस समय से आश्रम में भी कोई नहीं रह सका ॥ ११३८ ॥ तुम्हारे चरण-कमल की धूलि की कृपा से आज सती अहल्या पूर्ववत् वन गई। राम, तुम यह जान लो कि यही गौतम की भार्या है। यह सुनकर रामचन्द्र ने अहल्या को प्रणाम किया ॥११३९ ॥ इसके वाद राम ने विश्वामित्र मुनि से पूछा, यह

पाचे वृहस्पतित पुछिला शची सती * स्वामी किवा भैला कहियोक वृहस्पति
देवगुरु बोलन्त नजानो मइ ताक * तेवेसे स्वामीक पाइवा पूजियो दूर्गाक ४१
शुनि शची देवी तेवे दुर्गाक पूजिला * तुष्ट हुया दुर्गायो शचीक देखा दिला
शचीक बोलन्त येन लागे लैयो वर * शची बोले कैयो किवा भैल पुरन्दर ४२
इन्द्रर बृत्तान्त दुर्गा कहिला शचीत * पाइवाहा स्वामीक वुलि भैला अन्तर्हित
वर पाया शची आनन्दित आति भैला * वृहस्पति समे सरोवर तीरे गैला ४३
पाचे पुरन्दरक मातिला वृहस्पति * हैबेक कल्याण उठियोक महामति
गुरुर बचन शुनिलन्त पुरन्दर * पद्मर तन्तुत आछा सहस्र वत्सर ४४
तारपरा उठिया तीरक लागि गैला * शची वृहस्पति समे एकथान भैला
शापर वृत्तान्त कहिलन्त पुरन्दर * देखा गुरु केन मोर भैल अथन्तर ४५
कि करिबो गुरु आवे उपदेश दियो * वृहस्पति बोलन्त देवीक आराधियो
पाचे पुरन्दर शुनि गुरुर वचन * एकचित्ते करिला देवीक आराधन ४६
तुष्ट हुया देवी आसि भैलन्त साक्षात * देखि पुरन्दरे प्रणामिला नमाइ माथ
स्तुति नति भकति करिला वहुतर * पार्व्वती बोलन्त येन लागे लैयो वर ४७
वासवे बोलन्त माव वर दिवा मोक * महाऋषि गौतमर शाप दूर होक
पार्व्वती बोलन्त ब्रह्मशाप आछा पाइ * ताक गुचाइवाक लागि मोर शक्ति नाइ ४८
तथापितो देओ वर ताक शुनियोक * योनि गुचि इटो सहस्रेक चक्षु होक
हैवेक तोमार नाम सहस्रलोचन * भैला अन्तर्द्धान बुलि एतेक बचन ४९

बताइए कि बाद में इन्द्र का क्या हुआ। ऋषि ने कहा, हे राम, सुनो। इन्द्र के स्थान का पता इन्द्राणी को मालूम न था ॥ ११४० ॥ बाद में सती इन्द्राणी ने वृहस्पति से पूछा, हे वृहस्पति मेरे पति को क्या हो गया? वह कहाँ चला गया? यह सुनकर देवगुरु (वृहस्पति) ने कहा, यह तो मुझे मालूम नही। तुम दुर्गा जी की पूजा करो, तभी अपने पति को पाओगी ॥ ११४१ ॥ यह सुनकर इन्द्राणी ने दुर्गा की पूजा की। सन्तुष्ट होकर दुर्गा ने भी इन्द्राणी को दर्शन दिया। इन्द्राणी से उन्होंने कहा, जो चाहती हो वैसा ही वर माँग लो। इन्द्राणी ने कहा, मुझे यह बता दो कि इन्द्र का क्या हुआ है ॥ ११४२ ॥ तब दुर्गा ने इन्द्र का सारा हाल इन्द्राणी से कहा, और तुझको तेरा पति मिल जायगा, यह कहकर वह अन्तर्धान हो गई। यह वरदान पाकर इन्द्राणी बहुत प्रसन्न हो गई और वृहस्पति के साथ सरोवर के तट पर पहुँची ॥ ११४३ ॥ इसके बाद वृहस्पति ने इन्द्र से कहा, हे महामति, कल्याण होगा, उठो। इन्द्र ने गुरु का वचन सुना। सहस्र वर्ष तक वह कमल के नाल में छिपा रहा था ॥ ११४४ ॥ फिर इन्द्र उठकर सरोवर के तट पर पहुँचा और इन्द्राणी तथा वृहस्पति के साथ एक स्थान पर खड़ा हो गया। इन्द्र ने शाप का विवरण सुनाकर कहा, देखो गुरुवर, मेरी कैसी दुर्दशा हो गई है ॥ ११४५ ॥ हे गुरुवर, अब मैं क्या करूँ, इसका उपदेश दो। वृहस्पति ने कहा, देवी की आराधना करो। गुरु के वचन सुनकर इन्द्र ने एकचित्त होकर देवी की आराधना की ॥ ११४६ ॥ देवी प्रसन्न हो गयी और उन्होने आकर इन्द्र को दर्शन दिया। इन्द्र ने उनको देखकर प्रणाम करके सिर झुकाया। कई प्रकार से स्तुति की और भक्ति प्रकट की। पार्वती ने कहा, जो आवश्यक हो वह वर माँग लो ॥ ११४७ ॥ इन्द्र ने कहा, माँ! मुझको वर दो कि महर्षि गौतम का शाप दूर हो जाय। पार्वती ने कहा, तुमको ब्राह्मण-शाप मिला है, उसको मिटाने की शक्ति मुझमे नही है ॥ ११४८ ॥ फिर भी मै वर देती हूँ, उसे सुनो। ये योनियाँ अदृश्य होकर तुम्हारे शरीर मे सहस्र आँखे बन जायेगी

योनि गुचि क्षणे भैल चक्षु सहस्रेक

देवीक आराधा वर पाइलन्त प्रत्येक * देखिया हरिष भैला देवतासबर ५०
तेवेसे स्वर्गक लागि गैला पुरन्दर * अश्विनीकुमार दुइक आनि पुरन्दरे
शचीर आनन्द स्वामी आइलन्त घरे * छागलर अंड वैद्य आमि जोराइलन्त ५१
अंडकोष नाहि मोर कथा कहिलन्त * खासिक दिलन्त वर सहस्रलोचन
तेवें इन्द्र देवर सन्तुष्ट भैल मन * लागिबेक देव पितृ कार्यत सकल ५२
हौक खासि छागल पवित्र सुकोमल * खासि करिलात वीर्य वाढ़य इन्द्रर
भैला आसि पवित्र इन्द्रर पाया वर * एहिमते शापमुक्त भैला पुरन्दर ५३
कहिलो तोमात राम कथा निरन्तर * भैलन्त अहल्या सती मुकुत शापत
अनन्तरे जानिलन्त गौतमे ध्यानत * भार्याये सहिते आसि भैला एकथान ५४
परम हरिष मने ऋषि सर्व्वजान * दुयो भाइ गौतम ऋषिक प्रणामिला
राम-लक्ष्मणक ऋषि आशीर्व्वाद दिला * गौरवे प्रशंसिला बहुतर ५५
विश्वामित्र मुनिक गौतम मुनिवर * परम अहल्या मुकुत भैला प्रसादे तोमार
साधिलो आमार किनो वर उपकार * निजगुणे किनि येन थैलाहा आमाक ५६
तयु उपकार नपारिवो शुजिबाक * शुनियोक राम तुमि पुरुष महन्त
पाचे ऋषि गौतमे रामक मातिलन्त * अनाथर गति तुमि विने नाहि केव ५७
अनादि ईश्वर तुमि देवतारो देव * याहार परशे भैला अहल्या मुकुत
तयु पद धूलार महिमा अदभुत * महा महा महन्ते समस्त परिहरि ५८
भालेसे तोमार पदधूला आशा करि *

और तुम्हारा नाम सहस्रलोचन पड़ जायगा। इतना वचन कहकर देवी अदृश्य हो गई ॥ ११४९ ॥ देवी की आराधना कर हर एक को वर मिला है। इन्द्र के शरीर से योनियाँ अदृश्य होकर सहस्र आँखें वन गईं। तव इन्द्र स्वर्ग के लिए चल पड़ा। उसे देखकर सारे देवता हर्षमय हो गये ॥ ११५० ॥ पति को घर मे आया हुआ देखकर शची अत्यन्त आनन्दित हुई। तव दोनों अश्विनीकुमारों को बुलवाकर इन्द्र ने कहा, मेरे अंडकोश नहीं रहे। तव वैद्य अश्विनीकुमारों ने वकरे के अंडकोश लाकर इन्द्र के जोड़ दिये ॥ ११५१ ॥ तव इन्द्रदेव का मन प्रसन्न हुआ और खस्सी वकरे को सहस्रलोचन ने यह वर दिया कि खस्सी वकरा पवित्र और सुकोमल होगा और देवकार्य, पितृकार्य आदि सभी कार्यों में लगेगा ॥ ११५२ ॥ इन्द्र का वर पाकर वह पवित्र हो गया। खस्सी का अंडकोश लगाने के वाद इन्द्र का वीर्य बढ़ने लगा। हे राम, मैंने तुमसे सारी वातें बता दीं। इस प्रकार इन्द्र शापमुक्त हुआ ॥ ११५३ ॥ इसके वाद गौतम ने ध्यान से जान लिया कि सती अहल्आ शाप से मुक्त हो गई है। सर्वज्ञ ऋषि प्रसन्न हो पत्नी के पास आकर खडे हो गये ॥ ११५४ ॥ ऋषि ने राम-लक्ष्मण को आशीर्वाद दिया और दोनो भाइयों ने गौतम ऋषि को प्रणाम किया। मुनिवर गौतम ने विश्वामित्र मुनि की परम गौरव के साथ वार-वार प्रशंसा की ॥ ११५५ ॥ तुमने मेरा वड़ा उपकार किया। तुम्हारी ही कृपा से अहल्या मुक्त हो गई। तुम्हारे उपकार का बदला मै कभी न चुका सकूँगा। तुमने गुणों से मुझको खरीद लिया है ॥ ११५६ ॥ इसके पश्चात् ऋषि गौतम ने राम को सम्वोधित किया। हे राम, तुम महान् पुरुष हो, तुम अनादि ईश्वर हो, देवताओं के भी देवता हो। तुम्हारे सिवा अनाथों की कोई गति नही ॥ ११५७ ॥ तुम्हारे पैरों की धूलि की वड़ी अद्भुत महिमा है, जिसके स्पर्श से अहल्या मुक्त हो गई है। महान् महान् सन्त भी सव कुछ छोडछाड़ कर तुम्हारे पद की धूलि अपने माथे पर धारण करने की आशा करते हैं ॥ ११५८ ॥ वे सदा तुम्हारे चरणों की सेवा करते रहते हैं। तुम्हारे

तोमार चरणे सेवा सदाय करन्त * तयु महा प्रसादे मोक्षको नादरन्त
एहिमते करि स्तुति रामक विस्तर * अहल्या सहिते चलि गैला मुनिवर ५९
शुना सभासद पद रामर चरित * शुनन्ते कर्णत येन वरिषे अमृत
अनायासे गुचिवेक संसारर दुख * बोला राम लभिवा परमानन्द सुख ६०

रामर हरधनु भंग

अनन्तरे महा ऋषि विश्वामित्र राम-लक्ष्मणक लइ।
सहरिष मने मधुर गमने मिथिला पाइलन्त गइ॥
ऋषिर पाचत हरिष मनत चलन्त राम लक्ष्मण।
येन शिशु सिंह देखिते विड़िग गजर येन गमन॥११६१
मृदु सुकोमल चरण युगल चलावन्त लयलासे।
दिश पाश प्रति करि प्रज्वलित रामर देहा प्रकाशे॥
परम मधुर लावण्य प्रचुर साक्षात येन मदन।
महा मनोहर मुरुति सुन्दर देखि चावे सर्व्वजन॥११६२
ईषत हसित वरिषे अमृत देखन्ता लोकर गावे।
जुराय मन प्राण नभासे नयन यतेक रामेक चावे॥
लगत उभति चले सर्व्वजन प्रशंसिया बहुभावे।
इटो पुरुषक तुलिले कोनेनो सुवर्णकुक्षीया मावे॥ ६३
यिटो भाग्यवती पाइला आंक पुत्र ताइर विधि सुप्रसन्न।
सिजनीर सम पुण्य जानो आर नतो करे एकोजन॥

महाप्रसाद से वे मोक्ष को भी कोई मूल्य नहीं देते। इस प्रकार राम की पर्याप्त स्तुति करने के बाद अहल्या को साथ लेकर मुनिवर गौतम चले गये॥ ११५९॥ हे सभासदो, राम के चरित्र की कविता सुनो। इसके सुनने से मानों कानो में अमृत बरसने लगता है और अनायास ही संसार के सारे दुख दूर हो जाते है। राम का नाम लो, तो परमानन्द प्राप्त करोगे॥ ११६०॥

राम द्वारा शिव-धनुष भंग करना

इसके अनन्तर महर्षि विश्वामित्र राम-लक्ष्मण को लेकर मधुर चाल से चलते हुए सहर्ष मिथिला जा पहुँचे। ऋषि के पीछे-पीछे राम-लक्ष्मण सानन्द चलते रहे। वे दोनों वीर सिंह-शावक से लगते थे और उनकी चाल गज के समान लगती थी॥ ११६१॥ उनके दोनों कोमल पैर छन्द-लय की गति से चलते थे और राम का शरीर आस-पास को प्रकाशित करता था। पर्याप्त लावण्य से पूर्ण बड़ी ही मधुर और साक्षात् मदन के समान बड़ी ही मनोहर व सुन्दर उनकी मूर्ति देखकर सभी लोग निरखने लगते॥ ११६२॥ लोगों के शरीर की ओर उनके मुस्करा कर देखने से ही अमृत बरसने लगता, सभी के प्राण जुड़ा जाते। जो भी राम की ओर देखते उन्ही की आँखे अपलक रह जाती। दोनों के संग-संग सारे लोग चलने लगते और तरह-तरह से उनकी प्रशंसा करते। वे कहते, इस पुरुष को भला किस स्वर्ण-गर्भा माता ने जन्म दिया है॥ ११६३॥ ऐसा पुत्र जिस भाग्यवती को मिला है उसके प्रति विधि अत्यन्त प्रसन्न है। उसके समान, किसी अन्य माता ने इतना पुण्य नही किया है।

रामर समान पुरुष उत्तम इतिनि लोकत नाइ।
त्रैलोक्यर रूप इहान शरीरे थैला विधि एक ठाइ ॥ ६४
सीतार सदृश एहेन्तेसे बर विधि निर्म्मिलन्त जानि।
सयम्बर सम— यत मिथिलात दैवे मिलाइलन्त आनि ॥
जनक नृपति कि कार्य्य करिला अंगीकार विपरीत।
कठिन धनुत कोमल शरीरे नपारिबे गुण दित ॥ ६५
इहेन वरत आपोन इच्छाये सीताक दिवे नपाइल।
येन कोनजने हातर अमृत आपुनि ठेलि पलाइल ॥
येन नवनिधि पाया हरुवावे दरिद्र आपोन दोषे।
रामक देखिया यत नर-नारी एहिमते सबे घोषे ॥ ६६
मुनिर पिचत परम हरिषे चलन्त राम—लक्ष्मण।
विश्वामित्र मुनि सयम्वर शाला पाइल गैया कतक्षण ॥
जनक नृपति देखि सचकित उठिलन्त चालि गाव।
आपुनि आसन पारिया दिलन्त बुलि आति मृदुभाव ॥ ६७
पाचे जानुशिरे परशि सादरे करिलन्त नमस्कार।
सअर्घ ऋषिक करिलन्त पूजा हरिषर नाई पार ॥
सुखे आसनत वसिया आछन्त विश्वामित्र मुनिवर।
दक्षिणत राम रामत लक्ष्मण आरो शिष्य निरन्तर ॥ ६८
गौतमर पुत्र नामे शतानन्द पुरोहित जनकर।
विश्वामित्र महा मुनिक देखिया सादरिला बहुतर ॥
राम—लक्ष्मणक देखि शतानन्द पुछिला बिश्वामित्रत।
काहार कुमार रूपे मनोहर देखि नलो हेनमत ॥ ६९

राम के समान उत्तम पुरुष इन तीनों लोकों मे नही है। तीनो लोकों का सारा रूप विधाता ने एक ही स्थान पर एकत्रित कर दिया है ॥११६४॥ यह जानता हूँ कि सीता के योग्य ऐसा वर विधाता ने ही निर्माण किया है। दैव ही ने इनको स्वयम्वर के समय मिथिला में ला पहुँचाया है। राजा जनक ने यह कैसी विपरीत प्रतिज्ञा कर डाली। यह कोमल शरीर उस कठिन धनुप पर प्रत्यंचा नही चढ़ा पायेगा ॥ ११६५ ॥ इन सरीखे वर को जनक अपनी इच्छा से सीता को न दे सकेगे—मानों किसी ने अपने हाथ का अमृत खुद ही धकेल कर गिरा दिया हो। मानों नवनिधि पाकर दरिद्र ने अपने ही दोप से उसे गँवा दिया हो। राम को देखकर सारे नर-नारी इसी प्रकार की घोपणा करने लगे ॥ ११६६ ॥ मुनि के पीछे-पीछे वड़े हर्प से राम-लक्ष्मण चलते रहे। कितनी ही देर में विश्वामित्र मुनि स्वयंवर शाला में जा पहुँचे। चकित होकर राजा जनक उठकर उनकी ओर चल पड़े। स्वयं ही उनके लिए आसन विछाकर वड़े मृदुभाव से उनसे वोले ॥ ११६७ ॥ वाद में जाँघ और शिर का स्पर्श कर उनको सादर नमस्कार किया और अर्घ्य सहित ऋपि की पूजा की, जिससे उनके हर्प का ओर-छोर न रहा। सुख से आसन पर मुनिवर विश्वामित्र वैठे हैं। उनके दक्षिण में राम और वाम दिशा में लक्ष्मण एवं कितने ही शिष्य वैठे हैं ॥ ११६८ ॥ शतानन्द नामक गौतम का पुत्र जनक का पुरोहित है। उसने महामुनि विश्वामित्र को देखकर उनका कई तरह से समादर किया। शतानन्द ने राम-लक्ष्मण को देखकर विश्वामित्र से पूछा, ये किस राजा के कुमार हैं ? ऐसा मनोहर रूप धारण करनेवाला और कोई नहीं देखा ॥ ११६९ ॥ तव शतानन्द के सम्मुख ऋषि विश्वामित्र ने

शतानन्द आगे ऋषि विश्वामित्रे कहिला कथा सकल।
दशरथ महा राजार तनय राम एन्ते महाबल ॥
रामर कनिष्ठ एहेन्ते लक्ष्मण परम गुणे युगुत।
चरणे परशि मातृक तोमार करिला रामे मुकुत ॥ ७०
रामर चरण प्रसादे अहल्या घोर शाप निस्तारिला।
गौतम आसिया रामक प्रशंसि अहल्याक संवरिला ॥
शुनि शतानन्दे भैलन्त हरिष पाइलन्त मातृ निस्तार।
रामक प्रशंसि ऋषिक बोलन्त प्रसाद इटो तोमार ॥ ७१
नोहन्त मानुह परम पुरुष जानिलो राम निश्चय।
जगत निस्तार हेतु अवतार भैला एन्ते महाशय ॥
यिटो पदधूलि सदा आराधन्त ब्रह्मा आदि देवगणे।
याक आशा करि सर्व्व पुरुषार्थ एरे महा महाजने ॥ ७२
हेनय परम दुर्ल्लभ धूलाक पाइला मातृ मोर लाग।
जानि लोक तरा कोटि जनमर आछे तान महाभाग ॥
आमियो चक्षुये देखिलो रामक कतवा पुण्यर फले।
एहि बुलि शता— नन्दे राघवक अर्च्चिलन्त कौतुहले ॥ ७३
यत यत महा महाराजागण आछय वसि सभात।
रामक देखिया समस्ते राजार मुखत हरिल मात ॥
राघवर महा तेजे धरषिल भैल आति संकोचित।
प्रमत्त सिंहक देखि मृगगण होवे येन भये भीत ॥ ७४
सयम्बर सम— ज्यात यत यत आछे नर-नारीचय।
रामर अद्‌भुत रूपक देखिया भै गैला महा विस्मय ॥

सारी बाते बतायीं। यह महाबली राम महाराजा दशरथ के पुत्र है। राम का छोटा भाई यह लक्ष्मण परम-गुणो से युक्त है। इसी राम ने तुम्हारी माँ को चरणों से स्पर्श कर मुक्त किया है ॥ ११७० ॥ राम के चरणो की कृपा से अहल्या को घोर शाप से निस्तार मिला है। गौतम ने आकर राम की प्रशंसा कर अहल्या को सँभाल लिया है। माँ को निस्तार मिला है, यह सुनकर शतानन्द हर्षित हुआ। राम की प्रशंसा कर उसने ऋषि से कहा, यह तुम्हारी ही कृपा से संभव हुआ ॥ ११७१ ॥ यह मैंने निश्चय रूप से जान लिया कि राम परम पुरुष हैं, मनुष्य नही। संसार के निस्तार के लिए इन महापुरुष का अवतार हुआ है। जिस पदधूलि के लिए ब्रह्मा आदि देवता सदा आराधना किया करते हैं, जिसकी आशा करते हुए बड़े-बड़े महापुरुष भी सभी पुरुषार्थो का त्याग कर देते है ॥ ११७२ ॥ ऐसी परम दुर्लभ धूलि मेरी माँ को मिल गई। मैं जानता हूँ कि वह कोटि जन्म के लिए तर गई। वह महाभाग्यवती है। मैंने भी कितने ही पुण्यों के बल पर अपनी आँखों से देखा। यह कहकर शतानन्द ने कौतूहल से राम की अर्चना की ॥ ११७३ ॥ जितने बड़े-बड़े महाराजा सभा मे बैठे थे, राम को देखकर उन सभी राजाओं की बोलती बन्द हो गई। राघव के महातेज ने उनको अभिभूत किया, वे अत्यन्त संकुचित से हो गये जिस प्रकार प्रमत्त सिंह को देखकर हिरन भयभीत हो जाते है ॥ ११७४ ॥ स्वयंवर-समाज मे जितने नर-नारी थे, राम का अद्‌भुत रूप देखकर सब दग रह गये। जिसकी दृष्टि राम के जिस अंग पर भी पड़ गई वहाँ से वह हटाई नही जा सकी, वही की

यार येहि अंगे रामर रूपत परि गैला दृष्टिपात ।
पुनरपि आर पालटि नासय रहिल तंभि तथात ॥ ७५
रामक देखिते नखंडे तृपित लागि गैल येन ध्यान ।
अमतृक येन पिवन्ते पिवन्ते जुराय तनु मन प्राण ॥
जनकनन्दिनी देखिले रामक रूप आति बिपरीत ।
रामर रूपत निमजिल मन भैगैल देवी मोहित ॥ ७६
मनत बोलन्त कोन नो बिधिये सृजिला रूप रामर ।
कोटि एक काम देवो जानो आन नुहिबेक समसर ॥
एहेन्तेसे मोर हैबे निजपति करिलो मने निश्चय ।
इहान आगत देखो येन मरा आछे यत राजाचय ॥ ७७
रामत बिनाइ आन पुरुषक नबरिबो कदाचित ।
किवा काजे मोर पितृ करिलन्त अंगीकार बिपरीत ॥
तथापि आनक नभजिबो यदि धनुत गुण लगावे ।
पितृर बचन छन्न करि मइ भजिबो रामर पावे ॥ ७८
रामर नखर समान नाहिके इतिनि लोकर माजे ।
इहांक एरिया आन पुरुषक भजिबो कमन काजे ॥
मोहर कर्म्मर फले जानो आनि रामक मिलाइला विधि ।
अकस्मात् हेन दरिद्रर हाते उपगत नवनिधि ॥ ७९
रामक एरिया कोन अभागिनी आनक भजिबे जाय ।
हातर अमृत एरि कोनजनी मरिबेक विष खाइ ॥
एहिमते सीता देवी कान्दिलन्त रामर चरण सार ।
तेजि आन काम बोला राम राम यत लोक समज्यार ॥११८०

वही चिपक कर रह गई ॥ ११७५ ॥ राम को देखते हुए मानों किसी का भी मन भर नही रहा है—सभी मानों ध्यान-मग्न हो गये। मानों अमृत पीते-पीते सभी के तन-मन जुड़ाने लगे। जनकनन्दिनी सीता ने राम का ऐसा अद्भुत रूप देखा। राम के रूप में उनका मन डूब गया और वे मुग्ध हो गई ॥ ११७६ ॥ वे मन ही मन बोली, जाने किस विधाता ने राम के रूप का सृजन किया है। एक करोड़ कामदेव भी इनके समान नही होगें। सीता ने अपने मन में यह निश्चय किया कि यही मेरे पति होंगे। इनके आते ही मानो सारे राजाओं का समूह मृत सा हो गया ॥ ११७७ ॥ राम के विना अन्य किसी भी पुरुष का मैं कभी भी वरण नही करूँगी। जाने किस कारण मेरे पिता ने ऐसी विपरीत प्रतिज्ञा कर डाली। फिर भी यदि अन्य किसी ने धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ा दी तो मैं पिता की वात की उपेक्षा कर राम के चरणों की सेवा करूँगी ॥ ११७८ ॥ इन तीनों लोकों में कोई राम के नख के समान भी नही है। इनको छोड़ कर दूसरे पुरुष का भला मैं क्यों भजन करूँगी। मेरे कर्मों के फल के कारण ही शायद विधाता ने राम को लाकर मिलाया है। सहसा ही ऐसे दरिद्र के हाथों में नवनिधि आ गई है ॥ ११७९ ॥ ऐसी कौन अभागिन होगी जो राम को छोड़ कर अन्य की उपासना करेगी। कौन है जो हाथ का अमृत छोड़कर विष का पान कर मर जायेगा। इसी प्रकार से सीतादेवी राम के चरण को सार समझकर रोती रहीं। हे समाज के लोगो ! दूसरा काम छोड़कर राम का नाम लो ॥ ११८० ॥

पद

राम लक्ष्मणक देखि जनक नृपति * विश्वामित्र मुनित पुछिला महामति
किवा नाम आन दुइरो काहार तनय * महा रूपवन्त आतिशय शुमानय११८१
आपोनार कहियो कुशल आगमन * आज्ञा करियोक किवा साधो प्रयोजन
शुनि हासि विश्वामित्रे बुलिला वचन * आरा दुइ दशरथ राजार नन्दन११८२
आन राम नाम सर्व्वगुणर आलय * आन नाम लक्ष्मण परम शुमानय
श्रेष्ठ राम कनिष्ठ लक्ष्मण वीरवर * जानिवा रामक तुमि परम ईश्वर ८३
परम पुरुष हरि जगत आधार * रामरूपे भैला पृथिवीत अवतार
हरिवा भूमिर भार राक्षस संहरि * तयु गृहे लक्ष्मी आछे सीता नाम धरि ८४
रामरेसे भार्य्या सीता जाना स्वरूपत * दियोक सीताक तुमि विवाह रामत
हैवेक तोमार तेवे परम कल्याण * एहि प्रयोजने आसि आछो तयु स्थान ८५
त्रैलोक्य विजयी राम महा धनुर्द्धर * त्रिभुवने नाहिके रामर समसर
जनक नृपति मातिलन्त हेन शुनि * मोहोर वचन शुनियोक महामुनि ८६
नाहि दशरथ राजा पृथिवीत सम * ताहान तनय राम पुरुष उत्तम
महा सुकुमार रूप लावण्य प्रचुर * भुवन मोहन आति मूरति मधुर ८७
एन्तेसे निश्चय पति हैवन्त सीतार * किन्तु मइ एक करि आछो अंगीकार
मृग मारि महादेवे दुवारे आमार * एरि गैल धनुखान येन वज्रसार ८८
ताक घरे थैया मइ बुलिलो वचन * इहाते लगाइवे गुण पारे यिटो जन
ताहान्ते विवाह सीता दिवोहो निश्चय * नपारिले गुण दिवे यत राजाचय ८९

राजा जनक ने राम-लक्ष्मण को देखकर विश्वामित्र मुनि से पूछा, हे महामति, इन दोनों के क्या नाम है, ये किसके वेटे है ? ये तो वड़े ही रूपवान् और सुचरित्र है ।। ११८१ ।। अपना कुशल-मंगल वतावे और आगमन का कारण वतावे । आज्ञा करे, कौन सा प्रयोजन पूरा किया जाय । यह सुनकर विश्वामित्र ने हँस कर कहा, ये दोनो राजा दशरथ के वेटे है ।। ११८२ ।। इसका नाम राम है जो कि सारे गुणों का धाम है । इसका नाम लक्ष्मण है जो कि वडा ही चरित्रवान है । राम वड़ा है और वीरवर लक्ष्मण छोटा है । राम को तुम परम ईश्वर के रूप में जानना ११८३ ।। वे परमपुरुष भगवान् है और विश्व के आधार हैं । राम का रूप धारण करके उन्होने ससार मे अवतार लिया है । राक्षसों का संहार कर ये धरती का भार हरण करेगे । तुम्हारे घर में सीता के रूप में लक्ष्मी है ।। ११८४ ।। यह प्रत्यक्ष रूप से जान लो कि सीता राम की भार्या है । राम से तुम सीता का विवाह करना । इससे तुम्हारा वड़ा कल्याण होगा । मैं इसी प्रयोजन से तुम्हारे पास आया हूँ ।। ११८५ ।। राम तीनों लोको की विजय करनेवाला महान् धनुर्धर है । त्रिभुवन में राम के समकक्ष कोई नही । ऐसा सुनकर राजा जनक ने कहा, हे महामुनि, मेरी वात तो सुनो ।। ११८६ ।। ससार मे दशरथ के समान कोई राजा नही । उनका पुत्र राम पुरुपोत्तम है । वह वड़ा ही रूपवान् है, उसमे लावण्य कूट-कूट कर भरा हैं । उसकी भुवन-मोहन मूर्ति अति मधुर है ।। ११८७ ।। यह अवश्य ही सीता का पति वनेगा, किन्तु मैंने एक प्रतिज्ञा कर रखी है । मृग मारने के उपरान्त महादेव मेरे दरवाजे पर अपना वज्रसम धनुप छोड़ गये ।। ११८८ ।। उसको घर में रखकर मैंने यह वचन कहा, इस पर जो भी व्यक्ति प्रत्यंचा चढा सकेगा उसी से मैं निश्चय रूप से सीता का विवाह करूँगा । जितने राजा है कोई भी प्रत्यंचा नही चढ़ा

रामक देखिया बसि गुणे मने-मने * मिछा अंगीकार करिलोहो कि कारणे
एन्तेसे जानिबा वर सीतार उचित * विधाता आनिया करिलन्त उपस्थित ९०
महा उचपिच मुनि करे मोर चित्त * नपारिबे राघवे धनुत गुण दित
रामक चाहन्ते अंगीकार हरुवाओं * अंगीकार चाहो येवे रामक नापाओं ९१
एकक चाहन्ते मोर अपरे नघटे * बाजिया रहिलो मइ उभय-संकटे
विश्वामित्रे बोलन्त जनक महाभाग * इसब चिन्ताक तुमि करा परित्याग ९२
कोन वस्तु धनुखान रामर आगत * नजानाहा तुमि रामचन्द्रर महत्त्व
ईषत कटाक्षे धनु भांगिबन्त रामे *पाइबन्त सीताक चिन्ता करा किवा कामे ९३
बुलिला जनके विश्वामित्रक दुनाइ * केमने गुचिबे चिन्ता शुनिओ आताइ
धरिलेक धनु महा महा राजागणे * लारिबाको नपारिला अनेक यतने ९४
कोमल शरीर राम वयसत अल्प * परम कठिन धनु येन वज्रकल्प
ताक धरि गैया रामचन्द्रे कि करिब * आछो गुण दिबे लारिबाको नपारिब ९५
धनुत लगाइबे गुण रामर नलागे * समाजत लघु केने हैब महाभागे
अंगीकार लारि सीता दिबोहो रामक * कैत खुजि पाइबो आर इमत वरक ९६
अजिज्ञासि पूर्ब्बत करिलो अंगीकार * ताक एरिलात दोष नाहिके आमार
यदि दोष होवे ताक नकरोहो उर * गुचिवे सकले दोष प्रसादे रामर ९७
शुनि बिश्वामित्र हासि बुलिलन्त बाणी * कराहा संशय तुमि रामक नजानि
एन्तेसे ईश्वर चराचर जगतर * धनु भांगिबन्त कोन प्रयास रामर ९८

सका ॥ ११८९ ॥ राम को देखकर वे मन ही मन विचारने लगे, नाहक मैने ऐसी प्रतिज्ञा क्यों कर डाली। इसी को मैने सीता का उचित वर जान लिया। विधाता ने स्वयं इसको यहाँ लाकर उपस्थित किया ॥ ११९० ॥ हे मुनि, मन व्याकुल हो रहा है, कदाचित् राम धनुप पर प्रत्यंचा नही चढा सकेंगे। राम को चाहूँ तो अपनी प्रतिज्ञा गँवाता हूँ, और यदि प्रतिज्ञा को चाहूँ तो राम को गँवाता हूँ ॥ ११९१ ॥ एक को चाहने पर मुझे दूसरे से हाथ धोना पड़ता है। मैं बड़े ही उभय-संकट में फँस गया हूँ। विश्वामित्र ने कहा, हे महाभाग जनक, ये सारी चिन्ताएँ तुम त्याग दो ॥ ११९२ ॥ राम के सामने धनुप कौन बड़ी चीज है। तुम रामचन्द्र के महत्त्व को नही जानते। तनिक कटाक्ष से ही राम धनुष को तोड़ डालेगे और सीता को प्राप्त करेगे, क्यों नाहक चिन्ता करते हो ॥ ११९३ ॥ जनक ने फिर विश्वामित्र से कहा, हे गुसाईं सुनो, मेरी चिन्ता किस प्रकार दूर हो। बड़े-बड़े राजाओं ने धनुप सँभाले, किन्तु काफ़ी प्रयत्न करने के उपरान्त भी उसे हिला न सके ॥ ११९४ ॥ राम उम्र में छोटा और कोमल शरीर का है। धनुप अत्यन्त कठिन है, मानो वज्र हो। उसको रामचन्द्र कैसे उठा सकेगा ! उस पर प्रत्यंचा चढ़ाना तो दरकिनार, उसको हिला भी नही सकेगा ॥ ११९५ ॥ राम धनुप पर प्रत्यंचा नही चढ़ा सकेगा। यह महाभाग व्यर्थ ही में समाज में क्यों अपमानित हो। प्रतिज्ञा भंग कर मैं राम को अपनी सीता दे दूँगा। इस प्रकार का वर मुझे और कहाँ ढूँढ़े मिलेगा ॥ ११९६ ॥ विना पूछे-जाँचे पहले मैंने यह प्रतिज्ञा की थी। उसका उल्लंघन करने में मुझे दोप नहीं लगेगा। यदि दोप हो भी तो मैं उससे नहीं डरूँगा। राम की कृपा से मेरे सारे दोप मिट जाएँगे ॥ ११९७ ॥ सुनकर विश्वामित्र हँसे और वोले, तुम राम को जाने विना ही मन में यह संशय कर रहे हो। यह तो चराचर विश्व के ईश्वर हैं। धनुप को तोड़ने में भला राम को कौन सा प्रयास करना पड़ेगा ॥ ११९८ ॥ राजा

चाहि थाका जनक नृपति कौतूहले * धनुते परीक्षा आजि पाइबाहा सकले
शुनि सीता मने कोप करन्त ऋषिक * मोहोर विपक्ष एन्त आछरन्त किक ९९
अंगीकार पारि मोक विहा दिबे चान्त * ऋषिर कारणे पितृ ताहाक नपान्त
धनु भांगिवाक एन्ते बोलन्त किसक * इहान निमित्ते मइ नपाइबो रामक१२००
राम मोर स्वामी हाते मिलाइलेक विधि * विश्वामित्र हेतु हरुवाइबो नवनिधि
लवनु पुतलि येन सुकोमल तनु * हेन रामे किमते भांगिबे वज्रधनु१२०१
नलागे भांगिबे धनु सीता देन्त हाक * अंगीकार एरि विहा दियोक आमाक
पाचे विश्वामित्र ऋषि बुलिला वचन * शुनियोक राम रघुकुलर नन्दन २
धनुखानि भांगि विहा करियो सीताक * उठियो सत्वरे राखियोक मोर वाक
शुनि रामचन्द्रे उठिलन्त तावक्षणे * कंकालत वस्त्र काचिलन्त रंगमने ३
ऋषिक प्रणामि चलिलन्त रघुवर * देखि हासि तुलिलेक राजा निरन्तर
बर बर वीरे नपारिला लारिवाक * भैलो लघु लोके वेढ़ि हासिले आमाक ४
शिशुमति हुया ताक प्रति करे सास * हेनसे इहार जानकीक भैल आश
विश्वामित्र मुनि शुनि चपराइला माथ * जानो धनु भांगिवे नपारे रघुनाथ ५
असुख अशान्ति आति मनत सीतार * हरि हरि विधि सिद्धि न सैल आमार
हासिया चलन्त रामचन्द्र महावल * प्रत्येक भरित मही करे टलमल ६
प्रमत्त केशरी येन यान्त महाशय * देखि राजागण भैल परम विस्मय
गुचिल सवार हासि विवर्ण वदन * सीता गोसानीर मन भैगैल प्रसन्न ७

जनक कौतूहल से देखने लगे कि आज सभी को धनुष की परीक्षा देखने को मिलेगी। यह सुनकर सीता ने मन ही मन ऋषि पर कोप किया कि यह किस प्रकार मेरे विपक्ष में हो गये ॥ ११९९ ॥ प्रतिज्ञा को परे रखकर पिता जी मेरा विवाह करना चाहते थे, किन्तु ऋषि के कारण वे ऐसा नही कर पा रहे है। किस कारण ये धनुष तोड़ने को कह रहे है? इन्ही के कारण मैं राम को प्राप्त नही कर सकूँगी ॥ १२०० ॥ विधि ने मेरे लिए राम को पति के रूप में मेरे हाथो मे ला दिया। विश्वामित्र के कारण ही मैं इस नवनिधि को खो दूँगी। राम का शरीर मक्खन के बने हुए गुड्डे के समान सुकोमल है। ऐसा राम किस प्रकार से उस वज्र-कठोर धनुष को तोड़ सकेगा ॥ १२०१ ॥ सीता ने निषेध किया कि धनुष तोड़ने की आवश्यकता नहीं है। प्रतिज्ञा का उल्लघन कर मेरा व्याह कर दो। इसके पश्चात् ऋषि विश्वामित्र ने कहा, हे रघुकुल के नन्दन राम, मेरी बात सुनो ॥ १२०२ ॥ धनुष को तोड़ कर सीता से विवाह कर लो। झटपट उठो और मेरा कहना मानो। यह सुन कर रामचन्द्र तत्क्षण उठ खड़े हुए और उत्तरीय को कमर पर कस कर बाँधा ॥ १२०३ ॥ ऋषि को प्रणाम करके रामचन्द्र चल पडे। यह देखकर सभी राजा हँसने लगे। बड़े-बड़े वीर इस धनुष को हिला नही सके। मुझको घेर कर लोग हँसते रहे और मुझको नीचा देखना पड़ा ॥ १२०४ ॥ जो अभी शिशुमति है उसमें इतना साहस कहाँ? ऐसे व्यक्ति के प्रति जानकी की आशा है। विश्वामित्र मुनि ने यह सुनकर माथा ठोक लिया कि रघुनाथ धनुष को तोड़ नही सकेगा ॥ १२०५ ॥ सीता के मन में बड़ा दु.ख और बड़ी अशान्ति है। हाय ईश्वर, मेरी मनोकामना सिद्ध न हो सकी। महावली रामचन्द्र हँसते हुए चले। उनके प्रत्येक पग पर धरती डगमगाने लगी ॥ १२०६ ॥ महाशय राम यों चलने लगे, मानो प्रमत्त सिंह हों। देखकर राजाओ को बड़ा आश्चर्य हुआ। सभी के चेहरे से हँसी उड़ गई और सबके

धनुर निकट गैया चापिलन्त रामे * करे चिकिमिकि सुवर्णर चित्र कामे
बाम हाते लीलाये धरिला धनुखान * क्षेपिलन्त आकाशक कतोदूर मान ८
पुनु बामहाते धरि परम निपुण * निमिषेके धनुत लगाइला रामे गुण
आगत थापिला निया तुलि राम भरि * दिला टान गुणत दक्षिण पाच करि ९
टानन्ते धनुर आग पाच नासि आइल * देखि सबे राजागण माथा चपराइल
विश्वामित्र माथा तुलिलन्त हास्य करि * रामर भरत थिर नुहि बसुन्धरी १०
धनु टानिवार देखि हरिष सीतार * पृथिवी कम्पिते चिन्ता भैल आरोबार
भरि थिर नभैले नपाइवे वल गावे * पृथिवीक कातर करिल सीता मावे ११
मातृ बसुमती कृपा करियोक मोक * थिर हुया प्रभु राघवक धरियोक
दिग्गज सकल तुमिसबे हैवा थिर * शुनियो अनन्त तुमि नलारिबा शिर १२
हे कूर्म्म भाले अनन्तक धरिबाहा * दिगपाल सकल स्वामीर हैवा सहा
एहिमते सीता हुया आछन्त आकुल * पाचे रामचन्द जगतर आदि मूल १३
गुणगाच एरि दिया टंकार करिला * प्रचंड शवदे आदि ब्रह्मांड लरिला
दशोदिश व्यापि प्रतिध्वनि गैल बरे * त्रास भैल सर्ब्बजने बोले बज्रपरे १४
सातोखान स्वर्ग बारम्बार लरि गैल * सप्तद्वीपा वसुमती टलबल भैल
काखर लंघिल सातो सागर खलकि * जलजन्तु भैल त्रास प्रलयक शंकि १५
दिग्गज सकल कम्पे तरतरिमान * महात्रासे कम्पिल पाताल सातोखान
कम्पिलन्त अनन्त यतेक नागगण * कूर्म्म कम्पि फोकार तेजय घने घन १६

चेहरे फीके पड़ गये। सीतादेवी का मुखमंडल प्रसन्न हो गया ॥ १२०७ ॥ राम धनुष के निकट जाकर खड़े हो गये। वह धनुष स्वर्ण की पच्चीकारी से चमचमा रहा था। बाएँ हाथ से अनायास उन्होंने धनुप को पकड़ा फिर उसको आकाश की ओर कितनी ही दूर तक फेंक दिया ॥ १२०८ ॥ फिर बाएँ हाथ से परम दक्षता से उसको गोच लिया। क्षणभर में राम ने धनुप पर प्रत्यंचा चढ़ा दी। बायाँ पैर उठाकर उन्होंने आगे रखा और दाहिने को पीछे कर उन्होने धनुष की प्रत्यंचा खीची ॥ १२०९ ॥ खींचने पर धनुप का आगा-पीछा उतर आया। यह देखकर राजाओं ने अपने-अपने माथे ठोक लिए। विश्वामित्र ने हँसकर सिर उठाया। राम के भार से धरती स्थिर नही रहीं ॥ १२१० ॥ धनुष को खीचते देखकर सीता हर्षित हुई। पृथ्वी को काँपते देखकर उनको फिर चिन्ता होने लगी। पैर अगर स्थिर न रहे तो शरीर में वल नही मिलेगा। सीता माता ने पृथ्वी से कातर निवेदन किया ॥ १२११ ॥ हे माँ वसुमती, मुझ पर कृपा करना। स्थिर होकर प्रभु राघव को थामे रहना। हे दिग्गजो! तुम लोग स्थिर होना। हे अनन्तनाग! तुम अपना सिर न हिलाना ॥ ११२ ॥ हे कूर्म ! अपने माथे पर अनन्तनाग को सँभालना। हे दिक्पालो ! तुम लोग मेरे पति की सहायता करना। इसी प्रकार सीता व्याकुल बनी रही। इसके पश्चात् संसार के आदि मूल रामचन्द्र ने, ॥ १२१३ ॥ प्रत्यंचा को खीचकर टंकार किया। अति प्रचंड शब्द से ब्रह्मांड हिल गया। दशों दिशाओं को व्याप्त कर उसकी गूँज ऊपर उठ गई। सभी लोगों में भय छा गया कि वज्र गिरा है ॥ १२१४ ॥ सातों स्वर्ग बार-बार हिल गये। सप्तद्वीप वाली पृथ्वी डगमगाने लगी। सातों सागरो में उथल-पुथल मच गई। सारे जल-जन्तुओं में प्रलय की शंका से भय छा गया ॥ १२१५ ॥ सारे दिग्गज कम्पन से थरथराने लगे। महात्रास से सातों पाताल काँप उठे। अनन्त आदि सारे नाग कम्पित होने लगे। कूर्म काँपते हुए जोर से बार-बार फुंकारने लगा ॥ १२१६ ॥

मेरु आदि कम्पिल यतेक गिरिवर * भय हुया काम्पे आति देवासुर नर
चराचर लोके कम्पि कम्पि लैल ठाइ * समाजर लोकर चेतन ज्ञान नाइ १७
कर्णत हानिला ताल हृदय शुकाइल * पाचे कतक्षणे कथमपि धातु आइल
पाचे रामे गुणत धरिया वल दिल * ठाकोर करिया धनु माजते भांगिल १८
पुनरपि प्रकम्पित भैल त्रिभुवन * प्रलय मिलिल हेन बोले सर्व्वजन
मिथिलार लोक माने भैल पूर्व्ववत * चेतन लभिया पाचे राजागण यत १९
रामक निरेखि महाभय चित्त भैल * हेट माथे चक्षु मुदि मरा येन रैल
त्रासत हृदय कम्पे बुद्धि नोहे थिर * मने बोले नतु देखि शुनि हेन बीर २०
जानिलोहो एन्ते राम मानुष नोहय * देवतो उत्तम देव हेन मने लय
रामचन्द्रे धनुखान भांगि अप्रयासे * हासि वसिलन्त गैया विश्वामित्र पाशे २१
धरिया रामक विश्वामित्र मुनिवर * चुम्बन करिया प्रशंसिला बहुतर
धन्य रामचन्द्र तुमि बिक्रम तोमार * रहिल निर्म्मल यश जुरिया संसार २२
धनु भांगिलन्त रामचन्द्र महाशय * आनन्दे नधरे सीता देवीर हृदय
परम प्रेमत नीर बहे नयनर * सुप्रसन्न बिधि बुलि उठिला सत्वर २३
सुवर्णर पुष्प माला हाते तुलि लैला * विष्णुक बरिवे येन लक्ष्मी साज भैला
सखीगण माजहन्ते बाज भैला सती * हरर पाशक येन चलिला पार्व्वती २४
दिश पाश प्रकाशिया शरीर ज्वलय * गजेन्द्रर पाशे येन हस्तिनी चलय
राजहंस जिनि आति गति लयलास * चलि यान्त रति येन मदनर पाश २५

मेरु आदि जितने भी श्रेष्ठ पर्वत थे काँप उठे। देव, असुर और नर अत्यन्त भय से काँप उठे। चराचर के लोगों ने काँप कर अपना-अपना आश्रय ले लिया। सभा मे उपस्थित लोगों मे न कोई चेतना रही और न होश ॥ १२१७ ॥ सबके कान बधिर हो गये और मन सूख गये। बहुत देर के बाद सभी कुछ-कुछ अपने आपे में आए। इसके पश्चात् प्रत्यंचा पकड़ कर राम ने उस पर जोर डाला तो भयानक शब्द करता हुआ धनुष बीच से टूट गया ॥ १२१८ ॥ फिर त्रिभुवन प्रकम्पित हो उठा। सभी लोग कहने लगे मानो प्रलय आ गया हो। मिथिला के सारे लोग फिर से पूर्ववत् हो गये। इसके पश्चात् सारे राजाओं को होश आ गया ॥ १२१९ ॥ राम को निरख कर मन मे बड़ा भय आ गया। सिर झुका कर आँखें मूँद कर लोग मानों मृत के समान बैठे रहे। भय से उनके मन काँपने लगे, बुद्धि स्थिर नही रही। वे मन ही मन कहने लगे कि न तो ऐसा वीर देखा है और न सुना है ॥ १२२० ॥ यह जान लिया कि यह राम मनुष्य नही है। लगता है कि यह कोई उत्तम देवता है। रामचन्द्र बिना प्रयास के धनुष तोडकर, हँसकर विश्वामित्र के बगल में जाकर बैठ गये १२२१ ॥ मुनिवर विश्वामित्र ने राम को पकड़ कर चुम्बन किया और उसकी बहुत प्रशसा की। रामचन्द्र, धन्य है तुम्हारा पराक्रम, सारे संसार भर में तुम्हारा निर्मल यश फैल गया है ॥ १२२२ ॥ रामचन्द्र ने धनुप तोड़ डाला। सीतादेवी का हृदय आनन्द से भर गया। परम प्रेम से उनके नयनों से आँसू ढरकने लगे। विधाता सुप्रसन्न है कहकर वह झटपट उठकर बैठ गई ॥ १२२३ ॥ स्वर्ण की पुष्प-माला उसने हाथ मे उठा ली, विष्णु का वरण करने के लिए मानो लक्ष्मी सुसज्जित हो गई। सखियों के बीच में सती आगे बढ़ी मानो महादेव के निकट पार्वती चल पड़ी ॥ १२२४ ॥ चारो दिशाएँ उसके शरीर की ज्योति से प्रकाशित हो उठी है। मानो करिवर के पास हस्तिनी जा रही हो। उसकी चाल राजहस की चाल जैसी ही स्वच्छन्दतापूर्ण है। मानो रति मदन के निकट जा रही हो ॥ १२२५ ॥

राघवर निकट चापिया वरबाला * सादरे माथात दिला सुवर्णर माला
बरिल रामक आनन्दर नाहि पार * चरणत धरि करिलन्त नमस्कार २६
देखि रामचन्द्रे पाचे सीताक आश्वासि * आपोनार पाशक चपाइला प्रभु हासि
प्रकाशन्त सीता सती राघवर पाशे * चन्द्रर पाशत येन रोहिणी आकाशे २७
लक्ष्मी-नारायण दुइ भैल एकथान * जगतर भैल आसि परम कल्याण
समस्त लोकर भैल परम मंगल * जय जय बुलि जोकारन्त सर्ब्बजन २८
आकाशत थाकि देवगण असंख्यात * पुष्प बरिषिला राम-सीतार माथात
दुन्दुभि बजाया देवे करे जय जय * मुख्य मुख्य अपेस्वरा काछिया नाचय २९
त्रिजगत लोकर मिलिल महोत्सव * दशोदिश छानि मात्र शुनि जयरव
सार्थक लभिल वर माव सीता सती * भैलन्त आनन्द आति जनक नृपति ३०
राजागणे देखे सीता रामक बरिल * बज्रपात भैल येन सम्यके मरिल
सीताक चाहिया सबे तेजिल निश्वास * कि कारणे बरिषेक खाटिलो प्रवास ३१
सीतात नैराश हुया यत राजाचय * महा मर्म्मे सबे तेजिलेक लाज भय
कोपे अपमाने आति प्रज्वलित भैल * जनक राजाक आति गर्ज्जिबाक लैल१२३२

राम लक्ष्मणर सैते रजाबिलाकर युद्ध

देखा देखा केने बुढ़ा जनकर काज * माति आनि समस्त राजाक दिला लाज
जीथारीक आनक दिबेक येवे जाने * किसक आमाक दूत पठाइ माति आने१२३३

राघव के निकट पहुँच कर उस श्रेष्ठकन्या ने उनके गले मे सोने की माला पहना दी। उन्होंने राम का वरण कर लिया—उनके आनन्द की कोई सीमा नही रही। चरण छूकर उन्होने नमस्कार किया ॥ १२२६ ॥ इसके पश्चात् रामचन्द्र ने सीता जी को आश्वस्त किया। प्रभु ने हँसकर अपने पास बिठा लिया। सती सीता राम के बगल में यों शोभा पा रही है मानों चन्द्र के बगल मे रोहिणी शोभा पा रही है ॥ १२२७ ॥ लक्ष्मी और नारायण दोनों एक स्थान पर हो गये। संसार का बड़ा कल्याण हुआ। सभी लोगों को बड़ा मंगल हुआ। सब लोग जय-जय की ध्वनि करने लगे ॥ १२२८ ॥ असंख्य देवता आकाश मे स्थित होकर राम-सीता के सिर पर पुष्प-वर्षा करने लगे। दुन्दुभि बजाते हुए देवता जय-जयकार करने लगे। मुख्य-मुख्य अप्सराएँ सुसज्जित हो नाचने लगीं ॥ १२२९ ॥ त्रिलोक के लोग महोत्सव मनाने लग गये। दशों दिशाओं में जय-शब्द सुनायी पड़ने लगा। सती सीता माता को सार्थक वर प्राप्त हुआ। राजा जनक अत्यन्त आनन्दित हुए ॥ १२३० ॥ राजाओं ने देखा कि सीता ने राम का वरण कर लिया। उनपर मानों बज्र आ गिरा और वे सचमुच मर गये। सीता को देखकर सब लोगों ने ठंडी साँस ली। किस कारण उन लोगों ने सालभर से प्रवास मे क्लेश उठाया ॥ १२३१ ॥ जितने राजा थे सभी सीता से निराश हुए; तो सभी ने बड़े दुख से लज्जा और भय त्याग दिये। क्रोध और अपमान से वे तमतमा उठे और राजा जनक पर गरज पड़े ॥ १२३२ ॥

राम-लक्ष्मण के साथ समस्त राजाओं का युद्ध

देखो भला इस बूढ़े जनक का काम देखो, बुलाकर सारे राजाओं को लज्जित किया। जब जानता था कि बेटी को किसी और को ही देना है तो उसने दूत भेजकर आखिर बुला क्यों भेजा ॥ १२३३ ॥ राजर्षि होते हुए भी यह बड़ा ही निर्बोध है।

राजऋषि हुया भैल परत अज्ञान * वर वर राजाक दिलेक अपमान
धरि आन बुढ़ाक सकले मान सारो * चाहो कोने राखे आक बेढ़ि सबे मारो ३४
तेवेसे हियार शाल गुचिव आमार * कपट जपट भांगो रामन बुढ़ार
आमाक आनिया दुख दिल वरिषेक * सवाके बंचिया सीता टामक दिलेक ३५
नाहिके बुढ़ार दोष केहो बोले वाणी * किसक मारिबे खोजा आहांक नजानि
बिचारि चाहिले दोष केवले कन्यार * करिलेक आशाभंग सकले राजार ३६
आति निदारुणी कन्या कठिन हृदय * सबाको वंचिया शिशु छवाक बरय
माणिक एरिया काछ करिलेक सार * एइक आने निब हुनु आगत आमार ३७
यत राज्यभार भार्या पुत्र एरि आश * एइर निमित्ते मरो खाटिया प्रबास
महाकोप करि उठि बोले कतो जने * धरि आन आंफालिया मारोहो एखने ३८
सीताक मारिबे चाहो राखे कोन वीर * केहो जने बोले दोष नाहि जानकीर
कैर हन्ते आसिल छवाल मन्दबुद्धि * आमार भार्य्या निबे चास कात सुधि ३९
हेनसे अवध्य सव जीवन जानय * मत्त सिंहसमूहक हाते हेम्पोचय
जला जुइर माजत फरिंग झास करे * जाम्प दिया पार हुइबे खोजय सागरे ४०
जीवन्त यमर मुखे परि तोले हास * वेखा केनमत इटो छवालर सास
वर वर राजागण आछो सावधाने * पिसिया मारिबो आमि ताहाक नजाने ४१
एकोके नजाने आति शिशु अल्पमति * सीताक निवेक देखो काहार शकति
प्राणे येबे बर्त्तिवेक एरोक सीताक * नुहि तेवे भालमते नपठाइनो ताक ४२

इसने वड़े-वड़े राजाओ का अपमान किया है। वूढ़े को सव लोग पकड़ कर लाओ और उसका सम्मान समाप्त करो। देखे, कौन इसकी रक्षा करता है, सव लोग इसको घेर कर मारो ॥ ३४ ॥ तभी मेरे मन का काँटा दूर होगा। इस छोटे-से वूढे की धोखा-धड़ी तोड़ दो। इसने मुझे वुलाकर साल-भर कष्ट दिया। सव लोगों को वंचित कर सीता राम को दे दी ॥ ३५ ॥ किसी ने कहा, वूढ़े का कोई दोष नही, विना जाँच-पडताल किये क्योंकर उसे मारोगे। यदि विचार कर देखो तो दोष केवल कन्या का है। उसने सभी राजाओं की आशा भंग की ॥ ३६ ॥ यह कन्या वड़े ही कड़े मन की और निर्दय है। सवको वंचित कर इस वालक का वरण कर रही है। माणिक्य को त्याग कर काँच को कैसे सारवस्तु समझती है। इसको भला मेरे सामने दूसरा कोई कैसे ले जायेगा ॥ ३७ ॥ राज्य का भार, स्त्री-पुत्र सभी छोड़ कर इसी की आशा में इसी के निमित्त प्रवास में कष्ट उठाते रहे। कितने ही लोग अत्यन्त क्रोध से उठ कर वोले, पकड़ कर ले आओ और यहाँ पटक कर मारो ॥ ३८ ॥ सीता को मारना चाहूँ तो कौन वीर उसकी रक्षा कर सकता है। कोई कहता है कि जानकी का कोई दोप नही। जाने कहाँ से एक दुष्ट वालक आ गया और मेरी भार्या को ले लेना चाहता है ॥ ३९ ॥ ऐसा वह अपने जीवन को अवध्य समझता है। वह तो मत्त सिंह-समूह के सम्मुख मात्र नेवले के समान है। जलती हुई आग मे पतिंगे टूट पड़ते है। छलाँग मार कर पार करने के लिए समुद्र ढूँढ़ते है ॥ ४० ॥ जीते-जागते यम के चंगुल में पड़कर भी यह हँसता है। देखो, भला इस वालक का साहस कितना है! हम वड़े-वड़े राजा सावधानी से है। हम लोग उसे पीसकर मार डालेगे, यह वह नही जानता ॥ ४१ ॥ यह एक को भी नही जानता है, अभी अल्पवुद्धि वालक ही है। देखता हूँ कि किसकी शक्ति है जो सीता को ले जाये। अगर प्राणों से वचना चाहता है तो सीता को छोड़ दे वर्ना इसको कुशल से जाने नहीं दूंगा ॥ ४२ ॥ कितने ही दुष्ट राजा अहंकार करने लगे, देखने-भालने की

कतो दुष्ट राजागणे करे अहंकार * चाहिवे नलागे आक मुछरिया मार
चाहो आक मारन्ते राखय कोन जन * एहि वुलि उठिला सकले राजागण ४३
ससैन्ये धाइलेक हाते अस्त्र शस्त्र तुलि * घरमार वुलि आति करे हुलस्थूलि
हेन देखि महाभये नृपति जनक * आथे वेथे पलाइ गैला ऋषिर माजक ४४
मिथिलार लोक वशोदिशक पलाइल * देखि रामचन्द्रे हासि लक्ष्मणक चांइल
देखियो लक्ष्मण राजासकलर टाइ * उठा झांटे समस्तरे दर्प करो छाइ ४५
सिंहक जोकावे आसि शृगालर पाले * तार होज होज ठाइ लगायो सकले
रामर आदेश वाणी दुनिया लक्ष्मणे * प्रणामि रामक उठिलन्त तावक्षणे ४६
मारो आजि राजागण दारुणय समरे * वान्धिला अक्षय तण पिठिर उपरे
प्रचंड धनुक वामहाते तुलि धरि * धाइलन्त मृगक येन प्रमत्त केशरी ४७
आइस बुलि राव तेजिलन्त बीरवर * सागरर ढउ येन राखिल काखर
सिंह येन शशार आगत भैल थिव * समस्त राजार देखि डरि गैल जीव ४८
करिलन्त टंकार धनुत पाक दिया * राजा समूहर भये चमकिल हिया
हासिया लक्ष्मणे शर वरषिवे लैला * निरन्तरे राजा फुटि जर्ज्जरित भैला ४९
उरु शिर नासिका ललाट मुख काणे * वाहु वक्ष स्थल गल फुटिल सन्धाने
पेट पिठि शालिलेक आंजरे पांजरे * छेदिलेक हाथ भरि लक्ष्मणेर शरे ५०
कारो माज कंकालत छिड़िलन्त वाणे * परिया वागरे कतो आधा काटा माने
करिलन्त लंडभंड लक्ष्मणर वाणे * कदली वनक येन पाइलन्त पवने ५१

आवश्यकता नहीं, इसको मरोड़-मरोड़ कर मारो। इसको मारना चाहूँ तो कौन इसकी रक्षा कर सकता है। यह कह कर सारे राजा उठकर खड़े हो गये ॥ ४३ ॥ हाथों में अस्त्र-शस्त्र लेकर अपनी सेना के साथ वे दौड़ पड़े। पकड़ो-मारो, यह शब्द करते हुए वे काफी कोलाहल मचाने लगे। ऐसा देखकर राजा जनक बड़े भय से ऋषियों के बीच में भाग गये ॥ ४४ ॥ मिथिला के लोग दशों दिशाओं मे भाग खड़े हुए। यह देखकर रामचन्द्र ने हँस कर लक्ष्मण की ओर देखा। लक्ष्मण ! इन राजाओं का वढ़-चढ़ कर वातें करना देखो। उठकर झटपट इन सभी का घमण्ड चूर करो ॥ ४५ ॥ गीदड़ों का झुण्ड आकर सिंह को तंग कर रहा है। इनकी हों-हो को ठिकाने से लगा दूँ। राम का आदेश-वाक्य सुनकर लक्ष्मण तत्क्षण राम को प्रणाम कर उठ खड़े हुए ॥ ४६ ॥ आज राजाओं को भयंकर युद्ध में मारूँगा—ऐसा सोच कर उन्होंने पीठ पर अक्षय तूण वाँध लिया। वाये हाथ में प्रचण्ड धनुप उठा लिया, मानों मद-मत्त सिंह मृग की ओर लपका हो ॥ ४७ ॥ वीरवर लक्ष्मण ने आओ कह कर सव राजाओं को ललकारा, मानों समुद्र की लहरों को लंगर ने सँभाला। सिंह मानों खरगोश के सामने आकर स्थित हो गया। उन्हे देखकर सारे राजाओं के प्राण उड़ गये ॥ ४८ ॥ धनुष को घुमाते हुए उन्होंने टंकार शब्द किया, जिसे सुनकर राजाओं के समूह का मन चौंक पड़ा। लक्ष्मण हँसकर वाण वरसाने लगे, वाणों से विंध कर राजा लोग जर्जर हो गये ॥ ४९ ॥ वाणों का निशाना साधकर मारने से राजाओं के जाँघ, सिर, नाक, माथा, मुख, कान, वाँह, सीना और गले छिद गये। पेट-पीठ अंजर-पंजर सव छिद गये। लक्ष्मण के वाणों से हाथ-पैर भी कट गये ॥ ५० ॥ किसी की कमर वाण से छिन्न हो गयी। कितने ही अधकटी दशा में पीड़ा से छट-पटा रहे है। लक्ष्मण के वाणों ने चारों ओर भाग-दौड़ मचा दी, मानों पवन को केले के वृक्षों का वन मिल गया हो ॥ ५१ ॥ लक्ष्मण का काम देखकर सभी को वड़ा विस्मय हुआ। सभी लोगों ने शावाश-शावाश कहकर उनकी प्रशंसा की। वालक

लक्ष्मणर कर्म्म देखि परम विस्मय * साधु साधु वुलि सर्व्वजने प्रशंसय
शिशुमति हुया कर्म्म करिलन्त भाल * कतो बोले नोहे शिशु एन्ते यमकाल ५२
शरे फुटि आति वर वर राजाचय * क्रोधे ज्वलि गैला आठु वाहु कामोरय
छावागोटे एत वर करिले आमाक * एकेवारे धाइलेक सव राजाजाक ५३
चतुरंग सेनागण धाइलेक लगत * राहुति दिलेक चुटि उठि घोटगत
हस्ती स्कन्धे चड़ि साजे माहुत सकले * वेगे रथ गति करि रथीसव चले ५४
पदाति कटके वाजु धरि पाटोवारि * धाते क्रोध करि वारु खाण्डाक झंकारि
धनुशर धरि धावे धानुकी सकल * नसहे धरणी खंड करे टलमल ५५
एकेवारे धावे मुख्य मुख्य राजागण * कटाक्ष नाहिके चाहि आछन्त लक्ष्मण
करे धर मार सेना सागर सङ्काश * हासन्त लक्ष्मणे एको नाहि भय त्रास ५६
धनु धरि राजा सवे टंकार करिल * पृथिवी आकाश दिश शवदे पूरिल
ढालिलेक लक्ष्मणक शर वरिषणे * पर्व्वतक येन आवरिला मेघगणे ५७
नानाविध वाण वरिषय अविच्छेद * देखि देवासुर नर मुनि करे खेद
निदारुण राजागण परम दुर्ज्जय * मारिवेक लक्ष्मणक वुलि भैल भय ५८
रामर कनिष्ठ वीर लक्ष्मण कुमार * रणत सुजान आतिशय अनिर्व्वार
राजागणे शर वरिषय यत यत * खान खान करिया काटय आकाशत ५९
समस्ते शरक छन्न करिला लक्ष्मणे * शिशिर शुषिल येन रविर किरणे
शरचय विनाशि लक्ष्मणे अनन्तरे * गोटे गोटे राजाक ताड़िला निज शरे ६०
शर छोटे फुटि महाकोप करि मने * लक्ष्मणक मध्य करि वेढ़िला तेखने
एकेश्वर लक्ष्मण अनेक राजागण * रामचन्द्र देखन्ते विषय भैल रण ६१

होते हुए भी इसने काम अच्छा किया। किसी ने कहा, यह वालक नही—यह तो भयकर यम है ॥ ५२ ॥ वहुत वड़े-वड़े राजा वाणों से छिदकर क्रोध से अपने हाथ-पैर दाँतो से काटने लगे। मामूली वालक ने हम लोगों की यह दशा कर दी। एक साथ सारे राजा टूट पड़े ॥ ५३ ॥ उनके साथ उनकी चतुरंग सेना भी दौड़ पड़ी घुड़सवार घोड़े पर सवार हो दौड़ पड़े। हाथियो के कन्धो पर सारे महावत सुसज्जित होने लगे। जितने सारथी थे, वे अपने रथ वेग से चलाने लगे ॥ ५४ ॥ पैदल सेना ढूह की आड़ लेकर खड्ग को झनझनाते हुए क्रोध से आगे दौड़ी। सारे धनुर्धर धनुष और वाण लेकर दौड़ पड़े। धरती यह सहन नही कर सकी, डगमगाने लगी ॥ ५५ ॥ मुख्य मुख्य सारे राजा एक साथ दौड़ पड़े। लक्ष्मण ने उनको कटाक्ष-मात्र भी नही देखा। समुद्र के समान सेना मारो-मारो कहने लगी। लक्ष्मण हँसने लगे, उनको जरा भी भय-त्रास नहीं हुआ ॥ ५६ ॥ धनुष थाम कर राजाओं ने टंकार शव्द किया। धरती, आकाश और दिशाएँ शव्द से भर गयी। लक्ष्मण पर उन्होने इस प्रकार वाणो की वर्षा की मानो वादलों ने पर्वत को ढक लिया ॥ ५७ ॥ वे निरन्तर कितने ही प्रकार के वाण वरसाने लगे। यह देखकर देव-असुर, नर, मुनि आदि खेद करने लगे। ये राजा वडे ही दुर्ज्जन व निर्दय हैं। लक्ष्मण को ये मार डालेंगे, ऐसा भय होने लगा ॥ १२५८ ॥ राम का कनिष्ठ भाई वीरवर लक्ष्मण सग्राम में अतिशय अचूक योद्धा है। राजा जितने भी वाण वरसाते, उनको वह आकाश ही मे काट कर गिराने लगा ॥ ५९ ॥ सारे वाणों को लक्ष्मण ने ध्वंस कर दिया, मानों रवि की किरणो ने ओस सोख ली। वाणों को नष्ट करने के वाद लक्ष्मण ने एक-एक राजा को अपने वाणो से मारा ॥ ६० ॥ छुटते हुए वाणों से विंधकर मन मे महा क्रोध करते हुए राजाओं ने लक्ष्मण को वीच मे करके घेर लिया।

उठिला तेखने कोप करिया मनत * सीताक थैलन्त विश्वामित्रर पाशत
नमस्कार करि रामे बुलिला ऋषिक * तोमार हातत समर्पिलो जानकीक ६२
शिष्यगण समन्तिते राखिबा सीताक * शरे हानि समरत मारो राजाजाक
राम हाते धनु धरि पिठित चोखर * पवन संचारे लाग लैला लक्ष्मणर ६३
जनक नृपति आसि चतुरंग दले * राम लक्ष्मणर लाग लैला कौतूहले
एके लक्ष्मणर रणे नाइ भये भीत * रामे लग पाइल गैया जनक सहित ६४
एक थान हुया पाचे तिनि बीरबर * पंच लक्ष राजा समे करन्त समर
आम्फाल करिला तिनिजने आतिशय * तिनिरो आन्दोले महीमंडल कम्पय ६५
करिलन्त सिंहनाद महा भयंकर * त्रास हुया कम्पिल सकले चराचर
तिनि महाबीरे धनु धरि खरतर * नलक्षय केहो केतिक्षणे करे शर ६६
यत यत शर प्रहारिला राजाजाक * पथते कांटिल तिल सम करि ताक
पाचे तिनि शर करि छानिल गगन * रात्रि येन भैल नाहि रबिर किरण ६७
अविच्छेदे मेघे येन करे बरिषण * सहिमते शर प्रहारिला तिनिजन
निरन्तरे राजागणे फुटि शरचोटे * परम विह्वल भैला सेपको नोढोके ६८
बोम्बाले रूधिर बहे शरीर ढाकिया * सेनागण सकले भागिल फाट दिया
शरे फुटि राजागणे उठिल किटाया * ज्वलिल पावक येन घृत दान पाया ६९
धनु धरि टंकारिला बीरनाद करि * कर्ण ताल हानिल कम्पिल वसुन्धरी
करिलेक निरन्तरे शर बरिषण * भैल अन्धकार ढाकि रबिर किरण ७०

लक्ष्मण अकेला और राजा बहुत सारे, रामचन्द्र ने जब यह देखा तो मन में दुखी हो गये ।। ६१ ।। तब रामचन्द्रजी मन मे कोप करते हुए उठे । जानकी को विश्वामित्र के पास रख दिया । राम ने नमस्कार कर ऋषि से कहा, तुम्हारे हाथों मे जानकी को सौप रहा हूँ ।। ६२ ।। अपने शिष्यों के साथ सीता की आप रक्षा करना । वाण मारकर सारे राजाओ को मै मारता हूँ । वायें हाथ में धनुष थामकर और पीठ पर तरकस वाँधे पवन की गति से वे लक्ष्मण के पास पहुँचे ।। ६३ ।। अपनी चतुरंग सेना के साथ जनक आकर राम लक्ष्मण के साथ हो गये । एक तो लक्ष्मण युद्ध से कोई भयभीत नही, फिर उसको राम-सहित जनक का संग भी मिल गया ।। ६४ ।। तीनों वीरवर एक साथ होकर फिर पाँच लाख राजाओ से युद्ध करने लगे । तीनों भयानक रूप से उछले । तीनों के आन्दोलन से पृथ्वीमंडल काँपने लगा ।। ६५ ।। उन्होने महाभयंकर सिंहनाद किया । सारा चराचर (संसार) भय से काँप उठा । तीनों महावीर प्रचण्ड धनुष लेकर यों वाण चलाने लगे कि किसी ने भी नहीं देखा कि कौन कितने वाण चला रहे है ।। ६६ ।। राजाओं के समूह ने जितने भी वाण चलाये, उनको पथ में ही काट कर तिल वरावर कर दिया । वाद में तीनों ने वाण चालकर आकाश को यों ढक दिया कि सूर्य की किरणे छिप गयीं, मानों रात्रि आ गयी हो ।। ६७ ।। मानों मेघ से निरन्तर वर्षा हो रही है, इस प्रकार तीनों ने वाणों की वर्षा की । वाणों के निरन्तर प्रहार से राजा विह्वल-से हो गये—उनसे लार भी घूँटते न वना ।। ६८ ।। शरीर-भर से सोते की तरह खून निकलने लगा । सारी सेना भाग खड़ी हुई । वाणों से विंधकर राजा अपने वचाव में अस्त्र लेकर सन्नद्ध हो गये, मानों घी पाकर अग्नि जल उठा हो ।। ६९ ।। उन्होंने वीरनाद कर धनुष टंकारा । कान वहरे हो गये और पृथ्वी काँप उठी । उन्होने निरन्तर वाणों की वर्षा की । सूर्य की किरणें ढक गयी और अन्धेरा छा गया ।। ७० ।। वड़े-वड़े वाणो से तीनों वीर घायल हुए । खून वहने लगा और उनके शरीर स्थिर नही रहे ।

महाशर चोटे फुटिलन्त तिनिबीर * वहवे रुधिर थिर नुहिके शरीर
व्रद्ध राजा जनक भैलन्त अचेतन * शरे लाल काल आति भैलन्त लक्ष्मण ७१
रामो आशकत हुया थाकि कतोक्षण * कोपे प्रज्वलित भैला येन हुताशन
वज्रसम धनुखानि नाम हाते धरि * वहुवार फुराइलन्त चक्राकार करि ७२
परम आटोपे कोपे कटिल टंकार * त्रैलोक्यर लोकर लागिल चमत्कार
पंचलक्ष राजाक धाइलन्त कोप करि * मृग देखि धाइल येन प्रमत्त केशरी ७३
देखिया रामक राजागण भैला भय * कुपित यमक देखि येन प्रजाचय
पाक दिया धनुखानि करिया कुंडली * घोर शरचय प्रहारिला महाबली ७४
दारुण सन्धाने राजागणे तेजे प्राण * ढाकिल विदिश दिश हानि कुशबाण
घोरतर आटास तेजिल भयंकर * कर्णत हानिल ताल समस्त लोकर ७५
निरन्तरे लोक रहि आछिल यथात * महाभये फुरि फुरि पटिल तयात
भै गैल तवध लोक येन वज्रपाते * कदली वनक येन निदलिल बाते ७६
रामशरे फुटि राजागण समुदाय * भैल अचेतन धारे तेज वहि जाय
काहाको माजते काटि करिल दुखान * कतो राजागण मरि गैल यमथान ७७
राघवर शरचय परम प्रचण्ड * दीघल वर्त्तुल स्थूल येन यमदण्ड
आकर्ण पूरिया टानि करन्त प्रहार * हस्ती घोरा रथपति काटिला अपार ७८
करिलन्त रामचन्द्रे दुर्धोर समर * रुधिरे वहिल नदी महा भयंकर
कतो शुनि देखि हेन राम विपरीत * पलाइ राजा प्रजागण हुया भयभीत ७९

वृद्ध राजा जनक अचेत हो गये। वाणो से लक्ष्मण का शरीर रक्तमय और पीड़ा से स्याह पड़ गया ॥ ७१ ॥ कुछ देर तक राम भी अशक्त वने रहे। फिर क्रोध से तमतमाते हुए जलती हुई अग्नि के समान वन गये। वाये हाथ मे वज्र के समान धनुप को पकड़कर वहुत वार उन्होंने उसको चक्राकार घुमाया ॥ ७२ ॥ वड़े ही दर्प और क्रोध से उन्होंने धनुप पर टंकार किया। त्रैलोक्य के लोग आश्चर्य करने लगे। गुस्से मे वे पाँच लाख राजाओं की ओर दौड़ पड़े, मानों मृग को देखकर प्रमत्त सिंह दौड़ पड़ा हो ॥ ७३ ॥ राम को देखकर राजाओं को इस प्रकार भय हुआ, जिस प्रकार कुपित यमराज को देखकर प्रजा भयभीत होती है। धनुष को चक्कर लगाकर और उसको नवा कर महावली राम ने भीपण वाणों से प्रहार किया ॥ ७४ ॥ उनके अचूक शर-सन्धान से राजाओं ने अपने प्राण दे दिये। कुश के बने वाणों से दिशा-विदिशाएँ सभी ढक गयीं। भयंकर व घोर शव्द फूट पड़ा। सारे लोगों के कान वहरे हो गये ॥ ७५ ॥ जहाँ पर भी जो व्यक्ति था, वह भीपण भय से चक्कर खाकर वहीं गिर पड़ा। लोग मानों गाज गिरने से भौचक्का हो गये हों। केले के वन को मानों पवन ने रौंद दिया हो ॥ ७६ ॥ राम के वाणों से विंध कर राजाओं का समूह अचेतन हो गया। उनके शरीरों से रक्त की तेज धारा वहने लगी। किसी को वीच से काट कर दो टुकड़े कर दिये। कितने ही राजा मर कर यम के घर पहुँच गये ॥ ७७ ॥ राम के वाण वड़े ही प्रचण्ड है मानों लम्वे, गोलाकार और मोटे यमदण्ड हों। कान तक धनुप खींचकर वे प्रहार करते और असख्य हाथी, घोड़े और रथपतियों को मार डालते ॥ ७८ ॥ रामचन्द्र ने घोर युद्ध किया। खून से महा भयंकर नदी वहने लगी। कितना ही देखा-सुना, किन्तु यह रण कुछ विचित्र ही है। राजा-प्रजा सभी भयभीत हो भागने लगे ॥ ७९ ॥ वाप-वेटा, कोई भी ठहर न सके, भय से भाग खड़े हुए। सारी दिशाओं मे वस 'गिरा-गिरा' शव्द सुनने को मिलता। महाराज शुभदत्त ने जो

वापे पोवे नसम्बरे लवरे भयत * गिर गिर मात्र शुनि समस्त दिशत
पलाया प्रजा देखि शुभदत्त महाराज * राघवक धाइले कोपे संग्रामर माज ८०
रामे शुभदत्तक धाइलन्त कोपमने * हस्तीक देखिया येन धाइला पंचानने
दुयोबीरे धनु धरि करन्त आस्फाल * दुइहानो आन्दोले आति जाय भूमिचाल ८१
धनुक टंकारि दुयो प्रहारिला बाण * दुयो शर आकाशत भैल एकथान
शरंत परिया शर बह्नि ज्वलि गैल * सहि बह्नि ज्वलि दुयो शर भस्म भैल ८२
पाचे रामे प्रहारिला दशपाट शर * शुभदत्त दश शर काटिला रामर
आन दश शरे भेदिलेक राघवक * दुर्ज्जय शरीर रामे सहिला शरक ८३
शर पाया राघवर क्रोध ज्वलि गैला * कुरिपाट शर तूण हन्ते बाछि लैला
गुणत चड़ाया टानि आनि कर्णमाने * शुभदत्त नृपतिक हानिल सन्धाने ८४
बाज हुया गैला शर परि हृदयत * आरो तिनिपाट भेदिलन्त ललाटत
ध्वजगोट काटि सारथिर लैला प्राण * चारि घोरा मारि भांगिलन्त रथखान ८५
धनुखान काटिलन्त मरि क्षुरबाण * कृपायुत हुया तार नगैल पराण
लालकाल हुया आति रामर शरत * आधामरा हुया पलाइ गैला शुभदत्त ८६
हेन देखि शतधनु राजा कोपमने * नाइस बुलि तार लाग लैलन्त लक्ष्मणे
सुमित्रार तनय प्रचण्ड धनुर्द्धर * करिलन्त सिंहनाद आति भयंकर ८७
दिश पाश आकाश पृथिवी कम्पि गैला * महा मनत्रासे रिपुगण भय भैला
मृगपाल शुनि येन सिंहर आटास * प्राण राखि शत्रुगण पलाइ दिश दिश ८८
देखि कोप करि शतधनु बिपरीत * रथे चड़ि लक्ष्मणर आगे उपस्थित
भूमित लक्ष्मण रथे शतधनु वीर * लागिल दारुण रण रथी बिरथीर ८९

प्रजा को भागते हुए देखा तो संग्राम के बीच क्रोध से टूट पड़ा ॥ ८० ॥ राम भी क्रोधित हो शुभदत्त की ओर दौड़ पड़े मानों हाथी को देखकर सिंह टूट पड़ा हो। दोनों वीर धनुप थामे टंकार करने लगे। दोनों के आन्दोलन से भूचाल-सा आ गया ॥ ८१ ॥ दोनों ने धनुष पर टंकार कर वाणों का प्रहार किया। दोनों वाण आकाश में एक स्थान पर पहुँच गये। वाण से वाण टकराने से आग जल उठी। उसी आग से जल कर दोनों वाण भस्म हो गये ॥ ८२ ॥ इसके पश्चात् राम ने दस वाणों का प्रहार किया। शुभदत्त ने राम के दसों वाण काट गिराये। और दस वाणों से उसने राम को बींध दिया। अपना दुर्जय शरीर लिये राम ने उन वाणों को सह लिया। ८३ ॥ वाण खाकर राम का क्रोध जल उठा। उन्होंने तरकस से वीस वाण चुन लिये। प्रत्यंचा पर चढ़ा कर उन्होने उसे कान तक खींचा, फिर शुभदत्त राजा पर निशाना साध कर फेंका ॥ ८४ ॥ वाण शब्द करते हुए जाकर शुभदत्त के हृदय पर पड़े। तीन और वाणों ने उसके माथे को भेदा। ध्वजा को काटकर उसने सारथी के प्राण ले लिये। चारो घोड़े मारकर रथ को चूर्ण कर दिया ॥ ८५ ॥ क्षुरवाण चलाकर उसके धनुप को काट गिराया, कृपावश ही उसके प्राण नहीं लिये। राम के वाणों से वह लाल और काला हो गया। अधमरा-सा होकर शुभदत्त भाग खड़ा हुआ ॥ ८६ ॥ यह देखकर राजा शतधनु ने 'आ जाओ' कहा तो लक्ष्मण ने उसका मुकावला किया। सुमित्रा का पुत्र लक्ष्मण प्रचंड धनुर्धर है। उसने भयंकर सिंहनाद किया ॥ ८७ ॥ आकाश पृथ्वी और चारों दिशाएँ सब काँप उठे। भीषण त्रास से शत्रु भय-भीत हो गये। सिंह का गर्जन सुनकर हिरणों के झुण्ड के समान शत्रुगण प्राण लेकर चारों ओर भागने लगे ॥ ८८ ॥ यह देखकर शतधनु को वड़ा क्रोध आया। रथ पर सवार होकर

देखि राजा जनकर मने नसहय * मातिया बोलन्त पुत्र शुनियो अजय
रथ साजि जाण्टे लक्ष्मणर लैयो लाग * ताते चड़ि शत्रु मारन्तोक महाभाग ९०
हुयोक सारथि रथी हैवन्त लक्ष्मण * करिया समर मारियोक रिपुगण
मइ लाग लैवो चतुरंग दले साजि * राजासकलक रणे जिनियोक आजि ९१
अजय कुमारे शुनि पितृर वचन * दशगोटा घोड़ारे साजिल रथखान
आति चमत्कार करिलन्त रथवर * वान्धिला विजय ध्वज रथर उपर ९२
नाना अस्त्र शस्त्रचय निवन्धिया थैल * वायुवेगे गैया लक्ष्मणर लाग लैल
लक्ष्मणक बुलिलन्त वचन विनय * मोहोर अजय नाम जनक-तनय ९३
चड़ियोक रथे मइ सारथि तोमार * करियोक लीलाये शत्रुक बुन्दामार
लक्ष्मणे शुनिया पाचे वाणी अजयर * डेव दिया चड़िलन्त रथर उपर ९४
प्रकाशन्त लक्ष्मण रथत हुया थिव * राजासकलर देखि उड़ि गेल जीव
पवन संचारे रथ फुरांत अजय * नमनिय रथवेगे पृथिवी काम्पय ९५
धूलाये ढाकिल रण--धरणीसकल * पाचे रथखान थिर करि महावल
राखिलन्त निया शतधनुर पाशत * लक्ष्मणक शतधनु देखिया आगत ९६
आति आड़म्वरे साज भैला युजिवाक * दुयो महावीर धनु धरि दिला पाक
दुयो दुइको शर प्रहारन्त एकेवारे * आकाशत चले शर विद्युत संचारे ९७
दुइरो शर वरिषणे ढाकिल गगन * भैल अन्धकार नाहि रविर प्रसन्न
सकले आकाशखान देखि शरमय * सुरासुर नर मुनि भैल महाभय ९८

वह लक्ष्मण के सम्मुख जा उपस्थित हुआ। लक्ष्मण भूमि पर और वीर शतधनु रथ पर, इस प्रकार रथी और विना-रथी में घोर युद्ध आरम्भ हो गया ॥ ८९ ॥ यह देखकर राजा जनक का मन न सह सका। पुकार कर उन्होंने अपने पुत्र से कहा, अजय, झट रथ सजाकर लक्ष्मण के पास ले आओ। उस पर सवार होकर यह महाभाग शत्रु का निधन करे ॥ ९० ॥ तुम सारथी बनना, लक्ष्मण रथी होंगे। युद्ध कर शत्रुओं को मारना। मुझसे सुसज्जित चतुरंगिनी सेना लेना और सारे राजाओं को आज युद्ध मे पराजित करना ॥ ९१ ॥ पिता के वचन सुनकर कुमार अजय ने दस घोड़ों से रथ को सजाया। श्रेष्ठ रथ को अति चमत्कारपूर्ण बनाया। रथ के ऊपर विजय-ध्वज भी बाँध दिया ॥ ९२ ॥ उसमे विभिन्न अस्त्र-शस्त्र ढंग से रख दिये। फिर वायु की गति से लक्ष्मण के पास पहुँच गया। लक्ष्मण से उसने सविनय यह वाक्य कहा कि मेरा नाम अजय है, मैं जनक का पुत्र हूँ ॥ ९३ ॥ तुम रथ पर सवार हो जाओ, मैं तुम्हारा सारथि हूँ। खेल-खेल में शत्रु का ध्वंस कर डालो। इसके बाद अजय की बात सुनकर लक्ष्मण उछल कर रथ पर चढ़ गये ॥ ९४ ॥ लक्ष्मण रथ पर स्थिर बैठे दिखायी पड़ने लगे, उन्हें देखकर सारे राजाओं के प्राण उड़ गये। पवन-गति से अजय रथ को घुमाने लगा। आँखो से ओझल हो जानेवाले रथ के वेग से पृथ्वी काँपने लगी ॥ ९५ ॥ सारी रण-भूमि धूल ने ढक ली। इसके पश्चात् उसी महाबली ने रथ को स्थिर कर शतधनु के पास ले जाकर खड़ा कर दिया। शतधनु ने लक्ष्मण को आते देखा तो—॥ ९६ ॥ बड़े आडम्बर से जूझने के लिए तैयार हो गया। दोनों महावीरों ने धनुष पकड़कर घुमाया। दोनों ने एक साथ ही दोनो पर बाण से प्रहार किया। आकाश मे विद्युत्-गति से बाण चलने लगे। दोनों के बाणों की वर्षा से आकाश ढक गया। अँधेरा छा गया और सूर्य उज्ज्वल न रहा। सारे आकाश को बाणो से ढका देखकर सुर, असुर, नर, मुनि सभी अत्यन्त भयभीत हो गये ॥ ९८ ॥ दोनों एक-दूसरे के बाणों से निरन्तर बिंध से रहे।

दुइर शरे दुइ फुटिलन्त निरन्तर * जर्ज्जरित भैल दुइहन्तर कलेवर
दुइहानो शरीर ढाकि रुधिर वहय * फुलिल अशोक येन प्रकाश करय ९९
रणे आति सुजान लक्ष्मण बीरबर * काटिलन्त धनु शतधनुर हातर
खरतर शरे पाचे भेदिलन्त तनु * शरचोटे विह्वल भैलेक शतधनु१३००
स्वस्थ हुया पाचे शतधनु गैला रागि * प्रहारिला मुदगर लक्ष्मणक लागि
देखिया लक्ष्मणे काटिलन्त शरे हानि * पाचे शतधनु शूल प्रहारिला टानि १
ताको खण्ड खण्ड करि लक्ष्मणे काटिला * तात पाचे शतधनु शकति मारिला
महाशब्द करिया शकति धाया आसे * लक्ष्मणे हानिया शर काटिला आकाशे २
देखि शतधनु महा असन्तोष पाइल * भयंकर गदागोट हानिया पठाइल
आकाशत आसे गदा महावेग धरि * काटिला लक्ष्मणे गदा सातखान करि ३
शतधनु देखे मोर गदा भैल नाश * पाचे लक्ष्मणक प्रहारिला नागपाश
लक्ष्मणे देखन्त नागपाश आसे खेदि * हानिया गरुड़ बाण पेलाइलन्त छेदि ४
कौतुहले लक्ष्मणे छेदिला नागपाश * हानिलन्त बह्नि बाण देखि लागे त्रास
प्रलयर वह्नि सम चलय सत्वरे * निमाइलेक शतधनु बरुणर शरे ५
देखि बर कोप ज्वलि गैल लक्ष्मणर * शूलपाट लैलन्त देखिते लागे डर
प्रकाश करन्त शूल धरिया हातत * येन महेशर आति प्रलय कालत ६
चामर मृदुरा घट आछे थाने थाने * कालान्तक यम येन देखि विद्यमाने
करे लहलह अग्रप्रदेश शूलर * देखि त्रासयुत भैला देवासुर नर ७

दोनों के ही शरीर छिन्न-भिन्न हो गये। दोनों के ही शरीर से खून वहने लगा, मानों अशोक के फूल खिल आये हो, यों शोभा देने लगे ।। १२९९ ।। वीरवर लक्ष्मण रण में अति कुशल है। उसने शतधनु के हाथ का धनुष काट डाला। इसके पश्चात् भयंकर बाण से उसका शरीर भेद दिया। शतधनु बाण के आघात से विह्वल हो गया ।। १३०० ।। इसके बाद शतधनु स्वस्थ होकर क्रोधित हो गया। उसने लक्ष्मण पर मुद्गर का प्रहार किया। यह देखकर लक्ष्मण ने बाण से उसे काट डाला। इसके पश्चात् शतधनु ने खींच कर शूल मारा ।। १३०१ ।। उसको भी लक्ष्मण ने खंड-खंड कर काट डाला। इसके बाद शक्ति दे मारी। महाशब्द कर शक्ति भागती हुई आने लगी। लक्ष्मण ने बाण चलाकर उसको भी आकाश में काट डाला ।। १३०२ ।। यह देखकर शतधनु के मन में बड़ा असन्तोष उत्पन्न हुआ। अपनी भयंकर गदा उसने फेक कर मारी। आकाश में गदा महावेग से आने लगी। लक्ष्मण ने उस गदा को सात टुकड़ों मे काट डाला ।। १३०३ ।। जब शतधनु ने देखा कि मेरी गदा भी नष्ट हो गयी तो उसने लक्ष्मण पर नागपाश फेका। लक्ष्मण ने देखा कि नागपाश लपकता आ रहा है। तो उन्होंने गरुड़ बाण फेककर उसको छेद डाला ।। १३०४ ।। लक्ष्मण ने बड़ी सरलता से नागपाश को छेड डाला। फिर उसने अग्निवाण फेका तो देखकर भय होने लगा। प्रलय की आग के समान वह बाण शीघ्रगति से चलने लगा। शतधनु ने उसको वरुण बाण चलाकर बुझा डाला ।। ५ ।। यह देखकर लक्ष्मण का क्रोध प्रज्वलित हो उठा। उसने शूलपाट उठा लिया जिसको देखते ही डर लगने लगता। हाथ में शूल लिये वह ऐसा लगने लगा मानों प्रलय के समय महेश हो ।। ६ ।। स्थान-स्थान पर चँवर और घंटियाँ लगे है। साक्षात् कालान्तक यम मानों सामने दिखायी पड़ने लगा। शूल की नोक लपलपा रही थी। उसे देखकर देवता, असुर और नर त्रास से भर गये ।। ७ ।। लक्ष्मण ने शूल फेका तो देवतागण आर्त्तनाद कर भागने लगे, धरती काँप गयी।

मारिला लक्ष्मणे शूल आर्त्तनाद करि * पलाय देवगण कम्पि गैला वसुन्धरी
देखि महाभये शतधनु नृपवर * लवरि पलाइला वेगे नामिया रथर ८
रथे परि शल वह्नि ज्वलि विपरीत * भस्म भैल रथ घोरा सारथि सहित
राजागणे देखे शतधनु भंग खाइल * शर धनु धरि सवे लक्ष्मणक धाइल ९
एकेवारे धाय सेना सागर समान * लक्ष्मणे सवाको ढाकि वरिषिला बाण
महा तीक्ष्णतर शर त्रिशूल साक्षात * हेन शरे हानि सेना करन्त निपात १०
राजा प्रजागण मारि लै यान्त निदलि * मृगगण पाया येन सिंह महाबली
हस्ती घोरा रथपति काटिला अपार * यमे येने प्रजागण करन्त संहार ११
उरु शिर कारो काटे बाहु वक्षःस्थल * कारो नाक कान कारो छिण्डिलन्त गल
केहो आधा मरा केहो समूलि मरिल * मराशव सवे रण-धरणी भरिल १२
रुधिरे वहवे नदी देखि लागे डर * महाभये भंग दिला राजा निरन्तर
हस्ती घोरा रथ छत्र ध्वज दंड यत * अस्त्र शस्त्र वस्त्र एरे प्राणर भयत १३
मुखत उशासे आति लवरि पलाय * कार कोन कैक गैल थान थिति नाइ
सुरा जेठा मामा पेसा सुहृद सोदर * वापे पोवे एराएरि भैल निरन्तर १४
पाया आछे सेनागण लक्ष्मणर कांडे * विषते मरय तेज वहे धारा दण्डे
वाटत परिया थाके जाइवाक नपारे * हस्ती घोरा रथे पाया चटकिया मारे १५
सागर सङ्काश सेना लण्डभण्ड भैल * कतोहो मरिल कतो कतो पलाइ गैल
पाचक नचावे मात्र पलाय राजागण * रथे चरि परिहास करन्त लक्ष्मण १६

उसको देखकर राजा शतधनु भीषण भय से रथ से उतर कर दौड़ा और भाग गया ॥ ८ ॥ रथ पर गिर कर शूल की आग जलने लगी। घोडे और सारथी-सहित रथ भस्म हो गया। राजाओ ने देखा कि शतधनु भाग खड़ा हुआ तो वे धनुष-वाण लेकर सब के सब लक्ष्मण की ओर दौड़ पड़े ॥ ९ ॥ एक ही साथ सारी सेना सागर के समान धावित हुई। लक्ष्मण ने सबको वाण-वर्षा से ढक दिया। वड़े ही तीखे-तीखे वाण मानों साक्षात् त्रिशूल हो। ऐसे वाण चला कर वे सेना का विनाश करने लगे ॥ १० ॥ लक्ष्मण राजा और प्रजाओं को जड़-मूल से मारते हुए यों चले जाते मानों महावली सिंह को मृग मिल गये हो। उन्होंने असंख्य हाथी, घोड़े और रथ और पैदलों का संहार किया मानों यम प्रजाओं के प्राण ले रहा हो ॥ ११ ॥ किसी की जाँघ कटती तो किसी का सिर, किसी की वाँह तो किसी का वक्षस्थल, किसी के नाक-कान तो किसी का गला। कोई अधमरा हो गया तो कोई सम्पूर्ण रूप से मर ही गया ॥ १२ ॥ रक्त की नदी वहने लगी। देखकर डर लगने लगता। सारे राजा भीषण भय से भाग खड़े हुए। हाथी, घोड़े, रथ, छत्र, ध्वज, दंड, अस्त्र-शस्त्र, वस्त्र आदि छोड़ प्राण के भय से वे भागे ॥ १३ ॥ मुख से साँस लेते हुए तेज दौड़ कर वे भागने लगे। किसका कौन कहाँ चला गया, कोई भी ठीक-ठिकाना नही। चाचा, ताऊ, मामा, फूफा, मित्र-सहोदर, वाप-वेटे में विछोह हो गया ॥ १४ ॥ लक्ष्मण के इस काड से सारे सैनिक मूर्च्छित हो गिर पड़े। विष की क्रिया से उनका तेज नष्ट हो गया और क्षण-भर मे रक्त की धारा वहने लगी। चलने में असमर्थ हो कर वे रास्ते में पड़े रहे। हाथी, घोड़े और रथ के पहिये कुचल कर उनको मारने लगे ॥ १५ ॥ समुद्र के समान सेना तितर-वितर हो गयी। कितने तो मर गये और कितने ही भाग गये। पीछे की ओर विना ताके राजाओं का समूह वस भागने ही लगा। रथ पर सवार लक्ष्मण उनकी खिल्लियाँ उड़ाने लगे ॥ १६ ॥ ठहर जा अरे दुष्ट राजाओ! किधर जा रहे हो, वालक से रण में पराजित होकर क्योंकर भाग

रह अरे दुष्ट राजसब कँक यास * छवालत रण हारि किसक पलास
बरिषेक आछस सीताक आसा करि * एवे कि कारणे यास ताङ्क परिहरि १७
क्षेत्रि हुया युद्ध पाया कर परिहार * धिक बाहुवल धिक जीवन तोमार
पांच लक्ष राजा एके छवालत हारि * शृगालर पाल येन पलाय लेंज मारि १८
आसिलि सीताक बिहा करिबार काजे * नकरि बिबाह पलाइ यास कोन लाजे
स्त्रीर आगत किवा कहिबि महत * बोलन्त लक्ष्मणे उपालम्भ नानामत १९
प्राणर कातरे राजागण निरन्तर * नुशुनिल भये पलाइ गैल निजघर
अनायासे लक्ष्मण भैलेक रणजय * आकाशत देबगणे पुष्प बरिषय २०
जय जय बुलिया कोढ़ाल करे छानि * धन्य धनुर्द्धर महावीर चूड़ामणि
अजय सहिते रण जिनिया लक्ष्मणे * निवर्त्तिया आसि दुयो महारंग मने २१
प्रणामिला विश्वामित्र मुनिक हरिषि * आशीर्व्वाद करि गाव मार्ज्जिलन्त ऋषि
मुनिर प्रसादे दुइरो गुचिल भागर * लक्ष्मणे नमिला पाचे चरणे रामर २२
रामे लक्ष्मणक गले वान्धिया धरिला * मुखे चुमा दिया बहु प्रशंसा करिला
भैलन्त हरिष अति नृपति जनक * अजय सहिते प्रशंसिला लक्ष्मणक २३
सीता गोसानीर आति आनन्द बिस्तर * शुना रामायण सभासद निरन्तर
लभिबा मुकुति दुख हैब उपशाम * डाकि घने घने घोषियोक राम राम २४

रहे हो ? साल-भर से सीता की आशा करते हुए यहाँ ठहरे हुए हो। अब किस कारण उनको त्याग कर भागे जा रहे हो ॥ १७ ॥ क्षत्रिय होकर युद्ध का मौका पाकर भी उसका त्याग कर रहे हो। तुम्हारे बाहुबल को धिक्कार है, तुम्हारे जीवन को धिक्कार है। अकेले एक बालक से पाँच लाख राजा इस प्रकार हार गये मानों गीदड़ों का झुंड दुम दबा कर भाग गया ॥ १८ ॥ सीता से विवाह करने के लिए ही तुम लोग आये थे। बिना विवाह किये ही किस मुँह से भागे जा रहे हो ? अपनी पत्नी से जाकर, हे महान् ! तू क्या कहेगा ? इस प्रकार लक्ष्मण तरह-तरह के ताने देने लगे ॥ १९ ॥ प्राणों के भय से राजाओं ने यह सब सुना ही नहीं। वे अपने घर को भाग गये। अनायास ही लक्ष्मण ने युद्ध जीत लिया। आकाश से देवता फूलों की वर्षा करने लगे ॥ २० ॥ जय-जय कहकर संग्राम समाप्त हुआ। महावीर चूड़ामणि धनुर्धर ! तुम धन्य हो ! लक्ष्मण ने अजय के सहित युद्ध में विजय प्राप्त कर ली और दोनों अत्यन्त प्रसन्न मन से लौट आये ॥ २१ ॥ उन्होंने विश्वामित्र मुनि को प्रसन्न करते हुए उनको प्रणाम किया। आशीर्वाद देकर ऋषि ने उनके बदन पर हाथ फेरा। मुनि की कृपा से थकान मिट गयी। लक्ष्मण ने बाद में रामचद्र जी के चरणों को प्रणाम किया ॥ २२ ॥ राम ने लक्ष्मण को गले लगा लिया। मुँह को चूमते हुए उनकी बड़ी प्रशंसा की। राजा जनक भी बड़े आनन्दित हुए। उन्होंने अजय के साथ लक्ष्मण की बड़ी प्रशंसा की ॥२३ ॥ सीता माता को भी बड़ी प्रसन्नता हुई। हे सभासदो ! निरन्तर रामायण सुना करो। इससे मुक्ति मिलेगी और दुख मिट जायगा। बार-बार जोर से राम के नाम की घोषणा करो ॥ १३२४ ॥

दशरथक आनिबलै शतानन्दक अजोध्यालै प्रेरण

दुलड़ी

जनक नृपति पाचे महामति मनत महा कौतुके ।
विश्वामित्र समे राम लक्ष्मणक आगत लैया उत्सुके ॥
जानकीक आग करि महाभाग चलि गैला निजघर ।
आथानर बाज पातिया समाज बसिलन्त नृपवर ॥ १३२५
पुरोहित शता नन्दक मातिया बुलिला मधुर वाक ।
शुनियोक गुरु बिलम्ब नकरि चलि जाइयो अजोध्याक ॥
दशरथ महा- राजात जनाया तान पुत्र रघुवरे ।
धनुक भांगिया जानकी सीताक लभिलन्त स्वयम्बरे ॥ २६
वशिष्ठ सहिते आसन्त सत्वरे बिहा कराइबाक प्रति ।
शत्रुघन भर- तको लगे आनि आसिबन्त महामति ॥
शुनि शतानन्दे परम आनन्दे अयोध्याक लागि गैला ।
दशरथ आगे राम लक्ष्मणर कथा प्रपंचिया कैला ॥ २७
राम लक्ष्मणर कुशल काहिनी शुनि राजा दशरथ ।
शतानन्द मुनि- वरक सत्कार करिलन्त महारथ ॥
वृद्ध मंत्री पात्र गणक नृपति नगरर रक्षा दिला ।
रामर विवाह निमित्ते परम उत्सुक मने साजिला ॥ २८
हस्ती घोड़ा रथ- पति चतुरंग दल लगे भैला साज ।
शत्रुघन भर- तक लगे लैया चलिलन्त महाराज ॥
वशिष्ठ प्रमुख्ये ब्राह्मण सकल कौतुहले चलि गैला ।
वस्त्र अलंकार अनेक सम्भार सुमन्त्र लगत लैला ॥ २९

दशरथ को लिवा लाने के लिए शतानन्द को अयोध्या भेजा जाना

इसके पश्चात महामति महात्मा राजा जनक कौतुक-भरे मन से विश्वामित्र-सहित राम-लक्ष्मण को लेकर उत्सुक हो, जानकी को सम्मुख रख कर अपने घर चले गये । शान्त कक्षों से बाहर सभा बुलाकर नृपवर बैठ गये ॥ १३२५ ॥ पुरोहित शतानन्द को बुलाकर वे मधुर वाक्य बोले, गुरुजी सुनो, बिना विलम्ब किये तुम अयोध्या चले जाओ । महाराजा दशरथ को सूचित करना कि उनके पुत्र रामचंद्र ने धनुष तोड़ कर जनक-पुत्री सीता को स्वयंवर में प्राप्त किया ॥ २६ ॥ वे वशिष्ठ के साथ, व्याह कराने के लिए झटपट चले आवें । भरत और शत्रुघ्न को महामति अपने साथ लेते आवें । यह सुनकर शतानन्द अति आनन्द से अयोध्या के लिए चल पड़े और दशरथ के सम्मुख जाकर उन्होंने राम-लक्ष्मण की बातें बड़े विस्तार से बतायीं ॥ २७ ॥ राजा दशरथ ने राम-लक्ष्मण के आश्चर्यजनक कामों की कथा सुनकर मुनिवर शतानन्द का बड़ा सत्कार किया । राजा ने नगर की रक्षा का भार वृद्ध मंत्री तथा पात्रगण पर अर्पित किया और राम के लिए बड़े उत्सुक मन से अपने को सुसज्जित किया ॥ १३२८ ॥ हाथी, घोड़े, रथपतियों के साथ चतुरंग सेना भी सज्जित हुई । शत्रुघ्न और भरत को साथ लेकर महाराज चल पड़े । वशिष्ठ आदि सारे प्रमुख ब्राह्मण कौतूहल से चल पड़े । वस्त्र-आभूषण आदि कितनी ही सामग्रियाँ सुमन्त ने साथ ले ली ॥ १३२९ ॥ छत्र-दंड उठाये, विभिन्न वाद्य-यन्त्र सारे प्रजा-वृन्द बजाने लगे ।

तुलि छत्र दण्ड   नाना वाद्य भण्ड   बजाते प्रजासकल ।
असंख्य सेनार   पदधूलिचय   करिल रविमण्डल ॥
जय जय रोल   करय कल्लोल   प्रजार बहु घंचाल ।
प्रमत्त हस्तीर   घोरार शवदे   कर्णत हानय ताल ॥ ३०
प्रजार आन्दोले   पृथिवी हिन्दोले   कम्पे सुरासुर यत ।
महा आडम्बरे   मिथिला नगरे   प्रवेशिला दशरथ ॥
जनक नृपति   अनेक भकति   करि आगबाढ़ि निला ।
परम सादरे   दिव्य सिंहासन   आपुनि पारिया दिला ॥ ३१
सुवर्ण आसन   पारिया दिलन्त   वशिष्ठ महाऋषिक ।
जनके हरिषे   सअर्घे पूजिया   दशरथ नृपतिक ॥
वशिष्ठको पाद्य   अर्घे पूजिलन्त   करि आति सतकार ।
श्रीराम लक्ष्मणे   पितृर चरणे   करिलन्त नमस्कार ॥ ३२
पुत्र दुइक पाया   परम स्नेहत   सावटि धरिला गले ।
शिर घ्राणि दुइरो   शरीर तियाइल   हरिषे नेत्रर जले ॥
दशरथे विश्वा-   मित्रक देखिया   नमिला करि आह्लाद ।
करि वेदध्वनि   बिश्वामित्र मुनि   करिलन्त आशीर्ब्बाद ॥ ३३
दशरथ महा-   राजार लगत   आसियाछे प्रजा यत ।
जनक सवाको   दिला वासाघर   हरिषे आति मनत ॥
भोजन सम्भारे   नाना व्यवहारे   समस्तके सन्तोषिला ।
चारि पुत्र समे   राजाक जनके   अन्तःपुरे बासा दिला ॥ ३४
वहु सतकार   करिया भोजन   कराइलन्त पंचामृते ।
बिवाहर कार्य्य   चिन्तिबे लागिला   ऋषिगण समन्विते ॥
बिश्वामित्र मुनि   बोलन्त जनक   उर्म्मिला जीउ तोमार ।
लक्ष्मणक विहा   दियोक बचन   पालियो येवे आमार ॥ ३५

असंख्य सेना की पदधूलि से सूर्य का मंडल लुप्त होने लगा । जय-जय की ध्वनि से कल्लोल-शब्द उठा । प्रजागण की भीड़ के हो-हल्ले, प्रमत्त हाथियों के चिंघाड़ और घोड़ों की हिनहिनाहट के शब्द से सबके कान वहरे हो गये ॥ ३० ॥ प्रजाओं की उथल-पुथल से पृथ्वी डोलने लगी और सुर-असुर काँपने लगे । दशरथ ने वडे आडम्बर से मिथिला नगर में प्रवेश किया । राजा जनक ने बड़ी भक्ति के साथ उनकी अगवानी की । बड़े ही आदर से उन्होंने स्वयं उनके लिए सिंहासन रख दिया ॥ ३१ ॥ महर्षि वशिष्ठ के लिए स्वर्ण-आसन विछा दिया । जनक ने राजा दशरथ की सानन्द पूजा की । वशिष्ठ को अति सत्कार से पाद्य-अर्घ्य देकर उनकी पूजा की । श्रीराम-लक्ष्मण ने पिता के चरणों में प्रणाम किया ॥ ३२ ॥ दोनो पुत्रों को पाकर उन्होंने बड़े ही स्नेह से गले से लगा लिया । दोनों के मस्तक सूँघकर उनके सारे बदन को अपने हर्ष के आँसुओं से भिगो दिया । दशरथ ने विश्वामित्र को देखकर आह्लाद से नमस्कार किया । मुनि विश्वामित्र ने वेदध्वनि कर उनको आशीर्वाद दिया ॥ ३३ ॥ राजा दशरथ के साथ जितने प्रजा-जन आये थे, जनक ने उन सबको प्रसन्न मन से रहने का आवास दिया । भोजन आदि सामग्री से एवं हर तरह के आचरण से सभी को सन्तुष्ट किया । चार पुत्रों-सहित राजा दशरथ को जनक ने अपने अन्तःपुर में निवास-स्थान दिया ॥ ३४ ॥ काफी सत्कार कर पंचामृत का भोजन कराया । विश्वामित्र मुनि ने ऋषियों के सहित विवाह-कार्य के बारे में चिन्ता करने लगे ।

जनके बोलन्त लक्ष्मणक विहा दिब्रो जीउ उर्म्मिलाक।
जनकर भातृ कुशध्वजे दश- रथक बुलिला बाक ॥
शुनियोक राजा आमार दुइखानि दुहिता घरे आछय।
शत्रुघन भर— तक विहा दिओं तयु आज्ञा किबा हय ॥ १३३६
शुनि दशरथे बुलिलन्त वाणी पुछिबे नलागे आक।
विबाह कराया सत्वरे गृहक पठाया दिया आमाक ॥
कुशध्वज जन- कर शुनि वाणी हरिष भैल मनत।
चारि वर चारि कन्याक कराइला अधिवाम कर्म्म यत ॥ ३७
नानाबिध जय वाद्य सुमंगले रजनी भैल प्रभात।
देव पितृकार्य्य करि दशरथे वसिला गैया सभात ॥
मिथिला नगरे महा महोत्सव मिलिया गैल अपार।
हाटी बाटी यत सांजि मांजि आति करिलन्त जातिष्कार ॥ ३८
पदूलि पदूलि ताम्बुल कदली रुइला चरे समे काटि।
पताका तोरण चिरले रचिल करि आति परिपाटि ॥
नाना चित्र फल पल्लवे रंजिया थैला पूर्णघट पाति।
प्रत्येक दुवारे पातिलेक द्रोणि घृतर लगाया बाति ॥ ३९
थाने थाने आति प्रकाश करय ध्वज दंड शारी शारी।
दिव्य अलंकारे वस्त्रे काछि पारि शोभा करे नर-नारी ॥
ससस्ते प्रजार हरिष अपार बिबाह हैब सीतार।
किनो भाग्यवती पाइलन्त सुपति रामक पुरुष सार ॥ ४०
चारि अंशे हरि आछा अवतरि रूप धरि मनुष्यर।
बिहा करिबाक प्रति गैया आछा जनक राजार घर ॥

कहा, जनक ! उर्मिला तुम्हारी बेटी है। यदि मेरा कहना मानो तो लक्ष्मण के साथ उसका विवाह करना ॥ ३५ ॥ जनक ने कहा, मेरी भी इच्छा है कि बेटी उर्मिला का लक्ष्मण से विवाह करूँ। जनक के भाई कुशध्वज ने दशरथ से कहा, सुनो राजा, मेरे घर में भी दो बेटियाँ है। मै चाहता हूँ कि शत्रुघ्न और भरत से उनका विवाह करूँ, इस विषय मे आप की क्या आज्ञा है ॥ ३६ ॥ यह सुनकर दशरथ ने कहा, इसमें पूछने की कौन-सी जरूरत है। विवाह कराकर झटपट मुझको घर भिजवा दो। कुशध्वज जनक की बातें सुनकर प्रसन्न हुए। चार वर और चार कन्याओं से अधिवास कार्य कराया ॥ ३७ ॥ विभिन्न प्रकार के सुमंगल वाद्य-वादन से रात्रि व्यतीत हुई। देव और पितृ कार्य करने के पश्चात् दशरथ जाकर सभा में बैठ गये। मिथिला नगर में महोत्सव का वातावरण छा गया। भवन-आवास, घर-द्वार सब सजधज कर चमकने लग गये ॥ ३८ ॥ प्रत्येक फाटक पर सुपारी और केले के दरख्त समान दूरी पर रोपे गये। बड़े ही सुव्यवस्थित ढंग से पताका और तोरण की रचना की गयी। विभिन्न चित्रों से चित्रित कर और फल और पल्लव से सुसज्जित कर पूर्णघट रख दिये गये। घृत के दीपक जलाकर प्रत्येक द्वार पर जलपात्र रखे गये ॥ ३९ ॥ स्थान-स्थान पर ध्वज और दण्ड कतारों में शोभा पाते। वस्त्र और आभूषणों से सुसज्जित नर-नारी भी शोभा पाते। सारी प्रजाओं को अपार हर्ष है कि सीता का विवाह होगा ॥ कितनी भाग्यवती है कि उसको राम-जैसा पुरुषोत्तम वर मिला है ॥ ४० ॥ मनुष्य का रूप धर कर ईश्वर ने चार अंशों में अवतार लिया है। वे विवाह करने के लिए राजा जनक के घर आये है।

सीता रूपे लक्ष्मी भैला उतपति राक्षस बध करणे ।
लक्ष्मी नारायणे एकत्र हैवन्त जानिया देवतागणे ॥ ४१
महारंग मने आसिलन्त सबे समज्याक जनकर ।
पुत्रगण समे आसिलन्त ब्रह्मा पार्ब्बती सहिते हर ॥
गन्धर्ब्ब चारण अपेस्वरागण समे आइला पुरन्दर ।
परम हरिषे आइला मिथिलाक आनो देव निरन्तर ॥ ४२
बासुकी सहिते यत नागगण आसिला सबे हरिषि ।
बिबाह देखिते आसिला आनन्दे नारद प्रमुख्ये ऋषि ॥
पृथिवी मध्यत आछे यत यत राजा प्रजागण माने ।
अनेक सम्भारे मंगल आचारे आइला बिबाहर थाने ॥ ४३
नाना बाद्य देव दुन्दुभि बाजय पृथिवी आकाश चानि ।
स्वर्ग मर्त्य नाग- लोकत करय जय जय राम ध्वनि ॥
नमो रघुपति पूरियो सम्प्रति जगतर मनष्काम ।
यत समज्यार लोक बारम्बार बोला जय राम राम ॥ १३४४

राम लक्ष्मणादि चारि भाइर बिबाह

पद

नाना जयमंगल प्रजार कोलाहल * बहुबिध शबदे कर्णत हाने ताल
त्रैलोक्यर लोक एकथान मिथिलात * ब्रह्मा आदि बसि आछा बियार सभात १३४५
मधुर मृदंग धरि बिद्याधरे बावे * गन्धर्ब्ब सकले सुललित गीत गावे
मुख्य मुख्य बाछि अपेस्वरा करे नाट * नाना छन्दे बिछन्दे चपये पढ़े भाट ४६

राक्षस-वध के हेतु सीता का रूप लेकर लक्ष्मी ने जन्म लिया है। देवतागण जानते हैं कि लक्ष्मी-नारायण एकत्र होंगे ॥ १४ ॥ सभी लोग बड़े आनन्द से भर कर जनक की सभा में आये। ब्रह्मा अपने पुत्रों के साथ और महादेव पार्वती के साथ आये। इन्द्र, गन्धर्व, चारण और अप्सराओं को साथ लेकर आये। अन्यान्य देवता भी बड़े हर्ष से मिथिला में आये ॥ ४२ ॥ वासुकी के साथ सारे नाग सहर्ष उपस्थित हुए। विवाह देखने के लिए नारद आदि ऋषि सानन्द आये। पृथ्वी में जहाँ भी जितने राजा और मान्य प्रजा हैं, वे मंगल आचरण कर कितनी ही सामग्रियों सहित विवाह के स्थान पर आये ॥ ४३ ॥ देवता, आकाश और पृथ्वी को गुँजाते हुए दुन्दुभि आदि विभिन्न वाद्यों का वादन करने लगे। स्वर्ग, मर्त्य और नागलोक में राम-राम की जयध्वनि होने लगी। हे रघुपति, इस समय जगत की मनोकामना पूर्ण करो। सभा में जितने लोग हैं, बार-बार जय-राम बोलो ॥ १३४४ ॥

राम-लक्ष्मण आदि चार भाइयों का विवाह

विविध मंगल-सूचक जय-ध्वनि, प्रजाओं के कोलाहल और तरह-तरह के शब्दों से कान बहरे हो जाते। तीनों लोकों के लोग मिथिला में एकत्र हुए। ब्रह्मा आदि विवाह की सभा में बैठे हैं ॥ ४५ ॥ मधुर मृदंग लेकर विद्याधर वादन कर रहे हैं। सारे गन्धर्व सुललित गीत गा रहे हैं। मुख्य-मुख्य चुनी हुई अप्सराएँ नृत्य कर रही है। भाट विभिन्न छन्दों में विरुदावली पढ़ रहे हैं ॥ १३४६ ॥

नाना थाने नाना रंगे नाना कौतूहले * नाना कुटि नाटि लोके करय सकले
प्रजाये जुरिल हाट घाट बाट माने * नानाविध रस मिलि आछे थाने थाने ४७
सर्व्वजान जनक नृपति महामति * देव पितृ कर्म्म यत करि समापति
द्विज कन्यागण माति आनिया समस्त * मंगल आचार कराइलन्त यत यत ४८
लौकिक वैदिक व्यवहार निरन्तरे * समस्ते कराइला राजा विधि व्यवहारे
आयती सकले करि मंगल विधान * चारि वर चारि कन्या कराइलन्त स्नान ४९
दिव्य बस्त्र अलंकारे कराइला भूषण * हातल दिलन्त फल कटारी दर्पण
मेनका सुन्दरी महादइ जनकर * संगे लैया द्विज कन्यागण निरन्तर ५०
सीता सती उर्म्मिला माण्डवी श्रुतकीर्त्ति * चारिरो मंगल आचरिला सावहिति
नानाबिध बिभूषणे कराइला भूषित * कपाले तिलक दिला करि सुवलित ५१
सिन्दुरर माजे दिला चन्दन धवल * सुबिचित्र करि दिला नयने काजल
कुशध्वज महाभति नृपति जनक * अर्च्चिलन्त विधिवते चारि कुमारक ५२
दिलन्त चारिको बिहा मंडपर तले * चारिर प्रकाशे सभाखान आति ज्वले
बिवाहर लग्न आसि भैल अनन्तरे * जानि पाचे हरिषे जनक नृपवरे ५३
कन्या सम्प्रदान करिबाक वसिलन्त * रामे समे देवतासवक अर्च्चिलन्त
बिश्वामित्रे बिधि पाठ करन्त हरिषि * रंगे होम करन्त वशिष्ठ महाऋषि ५४
येन अनुक्रमे बिधि आचरिया ताक * रामर लगत निया बसाइला सीताक
तिल कुश धरिया जनक नरनाथे * उत्सर्गि सीताक दिला राघवर हाते ५५
सेहि समयत भैला महा महोत्सव * उरुलि जोकार वहुविध जय रव
देव मनुष्यर वाद्य एकत्रे बाजय * सिद्ध मुनि सकले कुसुम बरिषय ५६

विभिन्न स्थानों पर तरह-तरह की तरंग और खुशी में लोग आपस में हँसी-मजाक, भँड़ैती कर रहे है। प्रजा लोग राह-रस्ते हाट-वाजार हर कही छा गये। लोग अपनी-अपनी रुचि के गुट वनाकर स्थान-स्थान पर एकत्र है ॥ ४७ ॥ सर्वज्ञ महामति राजा जनक ने सारे देव और पितृ-कर्म समाप्त कर ब्राह्मण कन्याओं को बुलवाकर जितने मगलाचार के कार्य थे, करवाये ॥ ४८ ॥ राजा ने लौकिक और वैदिक समस्त आचार विधिवत् कराये। सभी सुहागिनों ने मंगल-विधान के अनुसार चार वर और चार कन्याओ को स्नान कराया ॥ ४९ ॥ सुन्दर वस्त्र और आभूषणों से उनको सुसज्जित किया। हाथो मे फल, कटारी और दर्पण दिया। जनक की महारानी मेनका ने साथ में ब्राह्मण कन्याओ को लेकर—॥ ५० ॥ सती सीता, उर्मिला, माण्डवी और श्रुतकीर्त्ति चारो का सावधानी से मंगलाचार किया। तरह-तरह के आभूषणों से उनको विभूषित किया और माथे पर ललित तिलक अंकित कर दिया ॥ ५१ ॥ सिन्दूर के मध्यभाग में श्वेत चन्दन लगा दिया। नयनो में विचित्र ढंग से काजल लगाया। कुशध्वज और महामति राजा जनक ने विधिवत् चारों कुमारो की अर्चना की ॥ ५२ ॥ चारो को विवाह के मंडप के नीचे ले आये। चारों के प्रकाश से सभा-स्थल अति उज्ज्वल हो उठा। इसके वाद विवाह की शुभ घड़ी आ गयी, यह जान कर राजा जनक हर्ष से—॥ ५३ ॥ कन्या-दान करने के लिए वैठ गये। उन्होंने राम सहित सारे देवताओ की अर्चना की। विश्वामित्र सहर्ष विवाह-विधि के मंत्रों का पाठ करने लगे और महर्षि बशिष्ठ सानन्द होम करने लगे ॥ ५४ ॥ जिस क्रम से विधि का आचरण करना है, वैसा कर राम के पास लाकर सीता को बिठा दिया। राजा जनक ने हाथ में तिल और कुश लेकर सीता को उत्सर्ग कर राम के हाथो मे दिया ॥ ५५ ॥ उसी समय महा महोत्सव हुआ।

बेदध्वनि करन्त सकले देवगण * नाना शुभ मंगल घोषय सर्व्बजन
समस्त लोकर महा मिलिल हरिष * जय जय रामध्वनि शुनि दशोदिश ५७
जनक नृपति आति पूरि मनोरथ * अनेक यौतुक दिला सीतार लगत
हय हस्ती रथ दोला दासी दास देश * मुकुता माणिक रत्न दिलन्त अशेष ५८
दिव्य बस्त्र अलंकार सुवर्ण रजत * घटस्रवा धेनु उत्सर्गिला शते शत
एहेन्ते ईश्वर बुलि मनत जानिला * राज्यभार समस्ते रामत समर्पिला ५९
आजिसे करिलो सवे पुरुष उद्धार * परम ईश्वर जोवाइ भैलन्त आमार
भैलोहो कृतार्थ बुलि आनन्दे नाचन्त * अनन्तरे ब्रह्मा आदि यतेक आछन्त ६०
यार येनमत इच्छा ताके उत्सर्गिल * सुवर्ण माणिक रत्ने येन बरषिल
त्रैलोक्यर लोके सबे उत्सर्गा करिल * यौतुक सम्मारे पुरी मिथिला भरिल ६१
अनन्तरे लक्ष्मणक जनक नृपति * ऊर्म्मिलाक बिबाह दिलन्त महामति
लक्ष्मणको यौतुक दिलन्त बहुतर * तात पाचे कुशध्यज भातृ जनकर ६२
निज जीउ माण्डवी सुन्दरी महासती * मरतक बिबाह दिलन्त महामति
श्रुतकीर्त्तिक दिला शत्रुघ्नक उत्सुके * अनेक यौतुक दुइको दिलन्त कौतुके१३६३
जनक नृपति कुशध्वज महासन्त * दुइ भाइर चारि कन्या चारिको दिलन्त
बस्त्र अलंकार पुष्प ताम्बुल चन्दने * यथायोग्य समज्या रंजिला रंगमने१३६४
सतकार लभिया सन्तोष आति भैला * स्वकी स्वकी थाने ब्रह्मा आदि चलि गैला
जनक नृपति वर कन्या आठजन * परमाने पंचामृते कराइला भोजन ६५

चारों ओर हुलूध्वनि और जय-जयकार होने लगी। देवताओं और मनुष्यों के वाद्य-यंत्र एक साथ बजने लगे। सिद्ध मुनियों ने फूलों की वर्षा की ।। ५६ ।। सारे देवता वेद-ध्वनि करने लगे। सभी लोग शुभ और मंगल की घोषणा करने लगे। सभी लोग अति उल्लसित हुए। दसों दिशाओं में राम की जयध्वनि सुनायी पड़ने लगी ।। ५७ ।। राजा जनक ने मन की अभिलाषा पूरी कर सीता के साथ बहुत सारा दहेज दिया। घोड़े, हाथी, रथ, डोली, दास-दासी, देश, मोती, माणिक, रत्न बहुतायत में दिये ।। ५८ ।। सुन्दर वस्त्र, आभूषण, स्वर्ण, रजत और सैकड़ों घटस्रवा (घड़े के समान थन वाली) गायें भी दी। मन में राम को ईश्वर के रूप में जान लिया और सारे राज्य का भार राम को सौंप दिया ।। ५९ ।। आज राम ने मेरे सारे पुरखों को तार दिया। परमेश्वर मेरा जँवाई (दामाद) बना, मैं कृतकृत्य हो गया— यह कह कर जनक आनन्द से नाचने लगे। इसके बाद ब्रह्मा आदि जितने सारे हैं—।। ६० ।। जिसको जिस प्रकार की इच्छा है, उसको वही दान किया गया। स्वर्ण, माणिक और रत्नों की मानों वर्षा हुई। तीनों लोको के लोगों ने सब कुछ उत्सर्ग (निछावर) कर दिया। दहेज के संभार से मिथिलापुरी भर गयी ।। ६१ ।। इसके बाद महामति राजा जनक ने लक्ष्मण के साथ उर्मिला का विवाह किया। लक्ष्मण को दहेज में बहुत कुछ दिया। इसके पश्चात् जनक के भाई कुशध्वज ने—।। ६२ ।। अपनी बेटी सुन्दरी महासती माण्डवी का विवाह भरत के साथ किया और बड़ी उत्सुकता से श्रुतकीर्ति का विवाह शत्रुघ्न से किया और दोनों को सकौतुक बहुत सारा दहेज दे दिया ।। १३६३ ।। राजा जनक और महासन्त कुशध्वज—दोनों भाइयों की चार कन्यायें चारों वरों को दे दी गई। वस्त्र, अलंकार, पुष्प, ताम्बूल और चन्दन से सभी को यथायोग्य सानन्द प्रसन्न किया गया ।। ६४ ।। सत्कार प्राप्तकर ब्रह्मा आदि सभी देवगण बड़े सन्तुष्ट हुए और अपने-अपने स्थानों को लौट गये। राजा जनक ने कन्या और वर आदि आठ लोगों को पंचामृत से भोजन कराया ।। ६५ ।।

पुष्पशय्या माजे पाचे कराइला शयन * सुखे अनन्तरे भैला रजनी प्रसन्न
करिलन्त स्नान दान उठि प्रभातत * कराइलन्त वासि विहा हरिषे मनत ६६
दशरथे मातिलन्त जनक राजाक * वर कन्या समे विहाइ पाठायो आमाक
राजा हुया आसि आछो पाट परिहरि * शत्रु शंका लागि चलि याओं शीघ्र करि ६७
शुनि अन्तःपुरे गैया जनक नृपति * सीताक प्रवोध वुलिलन्त महामति
अयोनिका तोमाक लभिलो यज्ञभूमि * पितृर मातृर प्रियतम जीउ तुमि ६८
त्रिभुवने निरुपमा तुमि महासती * परम दुर्ल्लभ आति लभिला सुपति
सती स्त्रीसकलर स्वामीसे भूषण * कदाचितो नलंघिला रामर वचन१३६९
एकचित्ते सेवा करिवाहा सर्व्वक्षणे * करिवा शुश्रुषा शाशु श्वशुर चरणे
अवहेला नकरिवा देवरसवक * करिवाहा दाया आति समस्ते जनक१३७०
तेवे तयु शुद्ध यशे जुरिव संसार * इह पर लोके सुख मिलिवे तोमार
नालागे शिखावे सवे जानाहा आपोने * तोमार सदृश आरो नाहि एको गुणे ७१
पाचे आसि मेनका जनक पटेश्वरी * करन्त क्रन्दन जानकीर गले धरि
काक लागि एतपान करियो जीयाइ * घर शुवनीया कैक याइवे सीता आइ ७२
सीता सीता वुलि नाम लैवोहो काहार * तइ गैले प्राण केने रहिव आमार
आजि सर्व्वशून्य करि जाइवे मोर घर * आनेसे आपोन भैल मइ भैलो पर ७३
मोर वुक शून्य करि कोने लैया जाय * थाकिवि काहार गैया घरक शुवाइ
कौशल्या विहनी आछा कत तपसाइ * आजि तान वुक जुराइवेक तोक पाइ ७४

इसके पश्चात् फूलों की सेज पर उनको शयन कराया गया। सुख से रात्रि व्यतीत हो गई। सवेरे उठकर स्नान दान किया गया। हर्षित मन से वासी-विवाह (कन्या-दान के अगले दिवस का अनुष्ठान) कराया गया ॥ ६६ ॥ दशरथ ने राजा जनक से कहा, समधी जी, अब मुझको वर-कन्या के साथ विदा करो। राजा होकर राजपाट छोड़कर चला आया हूँ। शत्रु-शंका के कारण शीघ्र चला जाऊँ ॥ ६७ ॥ यह सुनकर राजा जनक अन्तःपुर चले गये और महामति ने सीता को स्वान्त्वना के वाक्य कहे। यज्ञभूमि से तुमको अयोनिका के रूप में मैंने प्राप्त किया। माता-पिता की तुम सबसे प्यारी वेटी हो ॥ ६८ ॥ त्रिभुवन में तुम अनुपमा महासती हो। तुमको परम दुर्लभ उत्तम वर मिला। पति ही सभी सती नारियों का भूषण होता है। तुम कभी भी राम के वचन उल्लघन न करना ॥ ६९ ॥ एकचित्त होकर सदा उनकी सेवा करना। सास-श्वसुर के चरणों की सदा सेवा करते रहना। किसी भी देवर की कभी अवहेलना न करना। सभी लोगों पर सदा दया करते रहना ॥ १३७० ॥ तब तुम्हारा विमल यश संसार में फैल जायगा। तुमको इहलोक और परलोक में सुख प्राप्त होगा। स्वयं यह जान लो और सभी को सिखाना, जिससे तुम्हारे समान गुण में कोई दूसरा न हो ॥ ७१ ॥ वाद में जनक की पटरानी मेनका ने आकर सीता से गले मिलकर रोना शुरू कर दिया। वेटी, इतना सब मैंने किसके लिए किया, वेटी सीता, घर सूना करके तुम कहाँ जा रही हो ॥ ७२ ॥ अब मैं सीता-सीता कहकर किसको पुकारा करूँगी। तुम्हारे जाने पर मेरे प्राण कैसे रह सकेंगे। आज सब कुछ सूनाकरके तुम मेरे घर से जाओगी। गैर तुम्हारा सगा हो गया और मै तुम्हारी गैर वन गई ॥ ७३ ॥ मेरा हृदय सूनाकर कौन तुम्हे ले जा रहा है। किसके घर जाकर उसको शोभित करोगी। वहिन कौशल्या ने कितनी तपस्या कर रखी है। आज तुमको पाकर उनका मन कितना जुडाएगा ॥ ७४ ॥ सीता भी मेनका से गले लगकर रोने लगी। और सारे सुहृद भी क्रन्दन करने लगे। मिथिला के सारे नर-नारी एकसाथ रोने लगे।

सीताओ कान्दय मेनकार धरि गले * करय क्रन्दन आर सुहृदसकले
एकत्रे कान्दय मिथिलार नारी-नर * आतिशय ऊर्म्मि उथलिला क्रन्दनर ७५
कंक याहा सीता सती जीउ जनकर * आजि शून्य करिलाहा मिथिला नगर
तइ बिने दुखत मरिलो सर्ब्बजन * अयोध्यापुरीर बिधि भैला सुप्रसन ७६
चक्षुर लोतक मुचि जनक नृपति * करिलन्त दशरथ राजार भकति
बुलिलन्त बिनय धरिया तान हाते * सीता जीउखानि मोर सपिलो तोमाते ७७
जीउ बुलि प्रतिपाल करिबा बिहाइ * बिहनाक बुलिबाहा आपुनि बुजाइ
तुलि तालि वर करि दिलो जानकीक * आपुनि पालिना किबा बुलिनो अधिक ७८
अनन्तरे दशरथ उत्सुके मनत * चारि पुत्र चारि बधू तुलि बिमानत
सुमंत्र योगाइल रथ ताते चड़िलन्त * अयोध्याक प्रति शुभक्षणे लरिलन्त ७९
आगे पाचे वजावय ब्यालिलश बाजन * चमत्कारे साजिया चलिल सेनागण
ध्वज दंड तुलि प्रजा करे जय जय * असंख्य प्रमाण रथपति हस्तीचय ८०
छानिलेक दिशपाश शबद कल्लोले * प्रजार आन्दोले महीमंडल हिल्लोले
चलिल आनन्दे दशरथ महामति * मिथिलार लोक समे जनक नृपति ८१
आग बढ़ाइबाक प्रति गैला नरेश्वर * हरिषे चलिला बिश्वामित्र मुनिबर
सीतासमे रामचन्द यान्त बिमानत * रोहिणी सहिते येन चन्द्र आकाशत ८२
दुर्ब्बादलश्याम रामदेवर शरीर * सुवर्ण गौरांग तनु सीता गोसानीर
दुइहन्तरो रूप दशोदिश प्रकाशय * पथिक लोकर आति मनक हरय ८३
ऊर्द्धमुख हुया चाहि आछे सर्ब्बजने * येन अमृतक पान करय नयने
नखंडय तृपिति चाहय नेत्रभरि * रामर रूपक येत पिये चलु करि ८४

क्रन्दन की लहरें ज़ोर मारने लगीं ।। ७५ ।। हे सती सीता, जनक की बेटी कहाँ जा रही हो । आज मिथिला नगर तुमने सूनाकर दिया । तुम्हारे बिना दुख से हम सभी मर जाएँगे । अब अयोध्यापुरी का भाग्य जग गया ।। ७६ ।। राजा जनक आँखों से आँसू पोंछते हुए राजा दशरथ की विनती करने लगे । उनका हाथ थामकर विनयपूर्वक बोले, अपनी बेटी सीता को तुम्हारे हाथ सौंप रहा हूँ ।। ७७ ।। समधी जी, अपनी बेटी जानकर इसका प्रतिपालन करना । बहनजी को खुद ही समझाकर बता देना । पालपोसकर जानकी को बड़ा कर दिया । अधिक क्या बताऊँ, जानकी को खुद ही पालना ।। ७८ ।। इसके बाद दशरथ ने उत्सुक मन से चारों पुत्रों और चारों वधुओं को विमान पर सवार कराया । सुमंत्र रथ ले आया तो सब उसमें सवार हो गये और शुभघड़ी पर अयोध्या के लिए रवाना हो गये ।। ७९ ।। आगे पीछे बयालीस प्रकार के बाजे बजने लगे । सेना-समूह सुसज्जित होकर चल पड़ा । ध्वज-दंड उठाकर प्रजा जयध्वनि करने लगी । असख्य रथपति और हाथियों के समूह चले ।। १३८० ।। चारों ओर शब्द-कल्लोल से भर दिया । प्रजा की उथल-पुथल से पृथ्वी डोलने लगी । महामति दशरथ बड़े आनन्द से चले । मिथिला के लोग राजा जनक के साथ इनको आगे पहुँचाने के लिए चल पड़े । मुनिवर विश्वामित्र हर्ष से चल पड़े । सीता सहित राम विमान में इस प्रकार जा रहे हैं मानों रोहिणी के साथ चन्द्र आकाश में जा रहा हो ।। ८१-८२ ।। रामचन्द्र का शरीर दूब जैसा साँवला है । सीतादेवी का शरीर स्वर्ण जैसा गोरा है । दोनों का रूप दशों दिशाओं में आभासित हो रहा है, जो पथचारियों का भी मन मोह लेता है ।। ८३ ।। सभी लोग ऊपर की ओर मुँह किये हुए हैं । मानों नयनों से अमृत का पान कर रहे हों । तृप्ति नहीं होती तो वे इस प्रकार आँखें भरकर देखते हैं मानों राम के रूप को चुल्लू भरकर पी रहे हों ।। ८४ ।।

जलकुम्भ काखे लैया युवतीसकले * रामर रूपक चाहि थाके कौतूहले
चित्रर पुतलि येन नभासे नयन * रामर सीतार रूपे हरिलेक मन ८५
परम तृपिति हुया यत नारी-नरे * रामर सीताक प्रशंसय निरन्तरे
धन्य रामचन्द्र धन्य सीता वरनारी * दुइहन्तर पटन्तर दिवाक नपारि ८६
पुरुष रतन राम त्रिभुवने सार * नाहिके समात आन जानकी सीतार
प्रवन्धे स्रजिला विधि दुइहानो रूपक * धन्य माव-वाप तलिलेक दुइजनक ८७
एहिमते प्रशंसय पथिक सकले * दशरथ राजा चलि यान्त कौतूहले
गैलन्त जनक कतोदूर आनन्देते * वुलि माति पालटाइ पठाइला दरशने ८८
पात्र पुरोहित चारि पुत्र लैया संगे * अयोध्याक यान्त चलि दशरथ रंगे
सेहि वेला वात वृष्टि भैला आकाशत * राजार आगत आसि भैला वज्रपात ८९
नमनिय दिश पाश भैला अन्धकार * करे मर मर चक्र रथर राजार
घोर शिला सम्पा वायु वहे विपरीत * हस्ती घोरा सेना यत भैल भये भीत ९०
शीते पीड़िलेक थिर नोहे हाथ भरि * नासे मुखे मात वुक कमो तरतरि
यिवा यैत आछिल तहिते तम्भि गैल * राजार आगत रक्तमय वृटि भैल ९१
नानाविध विमंगल देखि आतिशय * वशिष्ठत नृपे पुछिलन्त हुया भय
इहार कारण कहियोक मुनिवर * कि कारणे पथत एतेक अथान्तर ९२
कोन ना विघिनि भैल आमार राज्यत * अन्धकार शाप जानो भैल उपगत
गुचिल आमार जानो राज्यभार यत * किना मोर आयु आसि भैल समापत ९३
शुनिया राजाक दिला प्रवोध वशिष्ठे * नाहि किछु शंका राजा नानिवाहा निष्ठे

पानी के घड़े कमर पर थामे सारी युवतियाँ कौतूहल से राम का रूप देख रही हैं। चित्र में वनी पुत्तलिका के समान उनकी पलकें नही झँपती। राम और सीता के रूप ने उनका मन हर लिया है ॥ ८५ ॥ सभी नर-नारियो को वड़ा सन्तोप हुआ। वे राम और सीता की वड़ी प्रशंसा करने लगे। धन्य है रामचन्द्र और धन्य हैं वर-नारी सीता। दोनों की उपमा नही दी जा सकती ॥ ८६॥ पुरुषों में रत्न राम त्रिभुवन के सार है। जानकी सीता के समान संसार में दूसरी कोई नही है। विधि ने दोनो के रूप को वड़े सुव्यवस्थित ढंग से वनाया है। वे माँ-वाप धन्य है जिन्होने इनको वड़ा किया ॥ ८७ ॥ इसी प्रकार से सारे पथिक प्रशंसा करने लगे। राजा दशरथ वड़े कौतू-हल से चल पड़े। जनक कितनी ही दूर तक आनन्दपूर्वक उनके साथ चलते चले गये। यह देख, कह-सुनकर दशरथ ने उनको वापस भेज दिया ॥ ८८ ॥ पात्रमित्र, पुरोहित और चारों पुत्रो को साथ लेकर दशरथ आनन्द से अयोध्या चले जा रहे हैं। उसी समय आकाश मे आँधी-पानी आ गया और राजा के निकट एक गाज आ गिरी॥ ८९ ॥ अन-देखे ही चारों दिशाये अन्धकार से भर गई। राजा के रथ का पहिया चरमराने लगा। घोर पाला गिरने लगा और विपरीत हवा चलने लगी। हाथी, घोडे, सैनिक सभी भय-भीत हो गये ॥ १३९० ॥ ठंड पीड़ा देने लगी और हाथ-पैर स्थिर नही रहे। नाक, मुख, सिर, सीना (सव) थरथराकर काँपने लगे। जो जहाँ पर था वही ठिठका रह गया। राजा के निकट रक्त से पूर्ण वर्पा हुई ॥ ९१ ॥ विभिन्न प्रकार के असगुन दिखाई पड़ने लगे तो राजा ने भयभीत होकर वशिष्ठ से पूछा, मुनिवर, इसका कारण वताइये। किस कारण पथ में ऐसे विघ्न आ रहे हैं॥ ९२ ॥ मेरे राज्य में कौन सा उपद्रव आ गया। लगता है अन्धक मुनि का शाप फलनेवाला ही है। यह मैंने जान लिया कि मेरे राज्यभार का समय समाप्त हो गया, या मेरीआयु अव समाप्त होनेवाली है॥ ९३ ॥ यह सुनकर वशिष्ठ ने राजा को सान्त्वना दी और कहा हे राजन् ! यह निश्चय रूप से जान लो कि कोई शंका नही है।

बाटत परशुरामर सैते रामर साक्षात आरु परशुरामर पराभव

सेहि समयत पाचे जामदग्नि राम * धनु भंग शुनि कोपे निकलिल घाम१३९४
कमने भांगिल धनु मोहोर गुरुर * सिजनर दर्प आजि करिबोहो चूर
परशु कुठार खान धरिया कान्धत * भयंकर धनुखान धरिया हातत ९५
राजार सेनार माजे भैला उपगत * शृंगे समन्विते येन सचल पर्ब्बत
दुर्ज्जय शरीर धनुर्द्धर महाबीर * क्रोधर बेगत आति नुहिकन्त थिर ९६
फुरावन्त चक्षु दुइ अगनि समान * देखि कटकर भये उरि गैल प्राण
बृष्टि अन्धकारे नेदेखिय दिशपाश * परशुरामर मूर्त्ति देखि भैल त्रास ९७
किसे पाइले बुलि धातु चुरुति उरिल * चक्षु जपाइ सेनासबे भूमित परिल
कैरा राम बुलिया मातन्त शीघ्र करि * ब्राह्मणर चिह्न यज्ञसूत्र आछा धरि ९८
क्षत्रिय लक्ष्मण हाते आछे धनुखान * परम निर्द्दय दाया नाहि अनुमान
पितृर बचने काटि आछन्त मातृक * हेन जने आनक करिबे दाया किक ९९
शिरे जटाभार गले रुद्राक्षर माला * कटित बाकलि वस्त्र कुशर मेखला
झक झक दान्त शोभा करे गोफ डाड़ि * गावे मल पंक बनबासी रूपधारी१४००
हाते माला धरिया जपन्त सर्व्वक्षण * उफरन्त क्रोधत देखिबे यम येन
भ्रूब चालि कपालर गाठि शिहराइ * दशन चोबाया कोपे मातन्त शेहाइ ०१
गर्ज्जिबे लागिला आति निष्ठुर बचने * आमार गुरुर धनु भांगिल केमने
बामहाते धरि घोरतर धनुखान * पृथिवीर क्षत्रि मारि करिलो निर्याण ०२

पथ में परशुराम के साथ राम की भेंट और परशुराम का पराभव

इसके पश्चात् उसी समय जमदग्नि के पुत्र परशुराम ने जब धनुष-भंग का समाचार सुना तो उनको क्रोध से पसीना निकल आया ।। १३९४ ।। किसने मेरे गुरु का धनुष तोड़ा है ? उस व्यक्ति का गर्व आज मैं चूर-चूर कर दूँगा । कन्धे पर फरसा रखे और अपने हाथ में भयंकर धनुष थामे— ।। ९५ ।। वे राजा की सेना के बीच उपस्थित हो गये, मानों चोटी सहित सचल पर्वत हो । महावीर और धनुर्धर दुर्जय-शरीर परशुराम क्रोध के वेग से स्थिर नहीं थे ।। ९६ ।। दोनों आँखें अग्नि के समान चमकने लगी । यह देखकर सारे कटक के प्राण उड़ गये । वर्षा और अन्धकार में चारों दिशाएँ दिखाई नहीं पड़ती थीं । परशुराम की मूर्ति देखकर सबके मन में भय उत्पन्न हो गया ।। ९७ ।। यह कौन आ धमका यह सोचकर सबके होश उड़ गये । सारी सेना आँखें मूँदकर जमीन पर लेट गई । वह राम कहाँ है, यह कहकर वह शीघ्रतापूर्वक पुकारने लगे । वह ब्राह्मण का चिह्न यज्ञोपवीत धारण किये हुए है ।। ९८ ।। और क्षत्रिय के लक्षण के रूप में हाथ में धनुष है । लगता है कि इनमें कोई दया नहीं, परम निर्दय है । पिता के कहने पर इसने अपनी माता को काट डाला था । ऐसा व्यक्ति दूसरे किसी पर क्या दया करेगा ।। ९९ ।। सिर पर जटा का भार, गले मे रुद्राक्ष की माला, कमर में वल्कल का वस्त्र और कुश की बनी पेटी । दाँत चमक रहे है और मूँछ-दाढ़ी शोभायमान है । बदन पर कीच और मैल (भस्म) है इस प्रकार वनवासी का रुप धारण किये ।। १४०० ।। हाथ में माला पकड़े सदा जप करता रहता है । क्रोध से ऐसा ज्वलंत हो रहा है मानों देखने में यम ही हो । भवें नचाते, माथे की लकीरों में बल, दाँत किटकिटाते हुए कोप से हाँफता हुआ बोला ।। १४०१ ।। बड़े ही निर्दय वचन से वह गरजने लगा, मेरे गुरु का धनुष कैसे टूटा । बाएँ हाथ

क्षत्रि हुया कोन वीर पुनरपि आइल * जानिलो सिजने मोर वार्त्ताक नपाइल
मोर कथा शुनि क्षत्रि नाम कोन धरे * हेनमत भय सिटो सासक नकरे ०३
एवे कोन जने मोक नगणे मनत * एतिक्षण थिर हौक मोहोर आगत
रौद्रे वरिषणे आत्ति परिया आछय * खुखुन्दा धनुक भांगि मुनिष कहय ०४
आजि येवे जीउ लैया जाय मोर आगे * तेवे गैया वीरत्व कहोक यत लागे
शुनि दशरथ राजा गुणन्त मनत * भैलो वृद्ध आमार शरीर आशक्त ०५
देखिया छावाल निज पुत्र चारिखान * विपरीत चिन्ता लभिलन्त महामानी
रामे समे आमि यदि आछो दुइवीर * तेवे कि करिव आंको दुर्ज्जय शरीर ०६
बिपाके ठेकाइला आनि विधाता आमाक * विवादे नपरि आंक वोलो प्रियवाक
एहि वुलि परशुरामक नरनाथे * पाद्ये अर्घे पूजि चरणत धरि हाते ०७
तुति नति प्रणति वोलन्त दशरथ * तथापितो दाया तार नोपजे मनत
हाते घोर धनु धरि चक्षु पकाइ चान्त * वाघे येन गर्ज्जिया रामक धाया यान्त ०८
देखि रामचन्द्रे मुखे अल्पहास्य करि * परशुरामर आग भैला धनु धरि
जामदग्नि रामे श्रीरामक देखिलन्त * करिया तर्ज्जन पाचे वाक्य वुलिलन्त०९
नजानाहा रण किछु छावाल राजार * जानो तुमि कथा नतु शुनाहा आमार
परशुराम नाम मोर बिदित संसार * निक्षत्रि करिलो मही तिनि सातवार१४१०
क्षत्रियर निमित्ते साक्षात मइ यम * सम्प्रति आछोहो मइ परिया निजम
डाकिया आनिला मोक देखाया दर्पक * दांडि दिया योगाइलाहा काहाल गोमक ११

से भीषण धनुष पकड़कर मैंने सारे संसार के क्षत्रियों को मारकर साफ़ कर दिया है ।। १४०२ ।। क्षत्रिय होकर कौन ऐसा वीर फिर से आ गया । लगता है उसको मेरे बारे में जानकारी नही है । ऐसा कौन है जो मेरी बात सुनकर अपने को क्षत्रिय कहता है । सबको ऐसा डर समा जाता है कि कोई क्षत्रिय कहलाने का साहस भी नहीं करता ।। १४०३ ।। अब यह कौन है जो मुझको नही मानता । अब वह मेरे सामने आकर खड़ा हो जाय । जो धूप और वर्षा मे पड़ा हुआ था—ऐसे जंग लगे हुए धनुष को तोड़कर वह अपनी मर्दानगी जाहिर करता है ।। १४०४ ।। आज जब मेरे सामने से प्राण बचाकर वह चला जाय तब वह चाहे जितनी वीरता की बातें बघारे । यह सुनकर राजा दशरथ मन ही मन सोचने लगे, मैं वृद्ध हो गया हूँ और मेरा शरीर अशक्त है ।। ०५ ।। अपने चारो पुत्रों को बालक देखकर महामानी के मन में दूसरी ही चिन्ता समा गई । राम और मैं दोनों वीर तो है, किन्तु इससे क्या होगा—इसका तो शरीर दुर्जय है ।। ०६ ।। विधाता ने मुझे विपत्ति में डाल दिया है । इससे झगड़ने में मैं मुकाबला नही कर सकूँगा, इससे मीठी-मीठी बातें करूँ । यह कहकर नरनाथ दशरथ ने परशुराम के चरणो को हाथों से पकड़कर पाद्य अर्घ्य से उनकी पूजा की ।। ०७ ।। दशरथ स्तुति, नति और प्रणति की भाषा बोलने लगे । फिर भी उनके मन में दया न उपजी । हाथ मे भीषण धनुष थामे आँखे गुरेरते ही रहे । मानों शेर गरजकर राम की ओर लपक रहा है ।। ०८ ।। यह देखकर रामचन्द्र मुस्कराते हुए हाथ में धनुष लिये परशुराम के सम्मुख खडे हो गये । जमदग्नि-पुत्र परशुराम ने श्रीराम को देखा और गर्जन करने के पश्चात् बोले ।। ०९ ।। हे राजा के छोरे, युद्ध के बारे में कुछ भी मालूम नही है । मुझे लगता है तुमने मेरे बारे में कुछ भी नही सुना है । सारे संसार को विदित है कि मेरा नाम परशुराम है, मैने इक्कीस बार पृथ्वी को क्षत्रियो से शून्य किया है ।। १४१० ।। क्षत्रिय के लिए मै साक्षात् यम हूँ । इन दिनों मैं चुपचाप पड़ा हूँ । घमंड दिखाकर तुम मुझको बुला लाए हो । छड़ी कोंचकर तुम क्रोधी

कुपित सिंहेर मुखे घेलाइलाहा गाव * आनिला यमक येन दिया हात बाव
मइ अन्तकर कोप तुलिला किसक * शिशु हुया करा केने दुर्घोर कर्म्मक १२
धनु भांगि यश बर लभिला डांगर * उपारिया श्रृंग येन मेरु पर्वतर
कार बर पाया तुमि करा हेन कर्म * आमार गुरुर धनु भांगि दिला मर्म १३
जानिलो करिला गुरु देवत भकति * नुहि केनमते हैब इ दूर शकति
त्रिभुवने परम उज्जवल राम नाम * नाहि संसारत इटो नामक उपाम १४
सेहि राम नाम धरि आमार प्रकाश * हेन नाम लैला तुमि करि अभिलाष
बोला राम नाम लैले मोर हैबे ख्याति * आमाक विद्वेष तुमि करिलाहा आति १५
वर तेजवन्त बीर भैलाहा अधिक * करिबाहा लुप्त तुमि आमार कीर्त्तिक
त्रिजगत लोके जाने मोर विक्रमक * क्षत्रियर नामे मइ साक्षाते अन्तक १६
नपारो जिनिबे येवे तोमाक रणत * निष्फल जीवन मोर इटो संसारत
जनकर घरे भांगि पचा धनुखान * ताते बोला नाहि मोत मुनिष समान १७
मइ चूर करिब तोमार गर्व्व यत * परिल चेंगेलि आजि बुढ़ार हातत
रहि आछा वृक्ष येन नदीर तीरत * अलपते परे शिफा नाहिके तलत १८
होवा यदि राम तुमि बीर अदभुत * लगायोक गुण देखो आमार धनुत
तेवेसे मुनिष बुलि जानोहो साक्षात * अना युद्धे भंग मइ मानिबो तोमात १९
ताक देखि रामचन्द्र लागिला हासित * धनु देखि दशरथ भैला भयभीत
प्रसन्न बदने रामे बुलिला बचन * शुनियोक ऋषि जमदग्निर नन्दन१४२०

गेहुअन साँप को बुला लाए हो ।। ११ ।। क्रोधी सिंह के सम्मुख तुम अपना शरीर प्रदर्शित करने लगे । मानों सकेत करके यम को बुला लाए । साक्षात् काल के समान मुझको तुमने कुपित क्यों किया, बालक होकर तुमने ऐसा घोर कर्म क्यों किया ।। १२ ।। धनुष तोड़कर तुमको बड़ा महान् यश मिला । मानों तुमने मेरु पर्वत की चोटी उखाड़ डाली है । किसका वरदान पाकर तुम ऐसा कर्म कर रहे हो । मेरे गुरु का धनुष तोड़कर तुमने मेरा मन तोड़ दिया है ।। १३ ।। मैं जानता हूँ कि तुमने देव और गुरु की भक्ति की होगी, नहीं तो इतनी शक्ति तुममें कैसे आ जाती । त्रिभुवन में राम का नाम परम उज्वल है, संसार भर में इस नाम की कोई उपमा नही ।। १४१४ ।। वही राम नाम अपनाकर मेरा आविर्भाव हुआ । ऐसा नाम तुमने अपनी अभिलाषा से ग्रहण किया । तुमने सोचा कि राम का नाम अपनाने से तुम्हारी ख्याति बढ़ेगी । तुमने मेरे साथ बड़े विद्वेष का कार्य किया है ।। १५ ।। तुम बड़े तेजस्वी वीर बन गये हो । तुम मेरी कीर्त्ति को लुप्त कर दोगे । तीनों लोकों के लोग मेरे पराक्रम के बारे में जानते हैं । क्षत्रिय के लिए मैं साक्षात् काल ही हूँ ।। १६ ।। यदि मैं युद्ध में तुमको पराजित न कर सका तो इस संसार में मेरा जीवन निष्फल है । जनक के घर मे सड़ा हुआ धनुष तोड़ डाला—इसी से कहने लग गये हो कि मुझ जैसा कोई पुरुष नही ।। १७ ।। तुम्हारा सारा घमंड मैं चूर-चूर कर दूंगा । आज यह छोकरा बूढ़े के चंगुल में पड़ गया । नदी के किनारे के वृक्ष के समान थोड़े प्रयत्न मे ही गिर पड़ोगे, क्योंकि उसकी जड़ गहराई मे नही होती है ।। १८ ।। हे राम यदि तुम अनोखे वीर हो तो मेरे धनुप पर प्रत्यंचा चढ़ाकर दिखाओ । तव मैं तुमको साक्षात् वीर-पुरुप मान लूंगा । नहीं तो युद्ध में ही मैं तुमसे हार मानूंगा ।। १९ ।। उसको देखकर रामचन्द्र हँसने लगे । धनुष देखकर दशरथ भयभीत हो गये । राम ने प्रसन्न-मुख से कहा, हे ऋषि जमदग्नि के पुत्र, सुनो ।। १४२० ।। हे महाभाग, तुम ऋषि-धर्म का पालन करते हो । तुमको हमसे इतना अभिमान और क्रोध क्यों ? तुम्हारा उचित धर्म

ऋषि धर्म अनुसरि आछा महाभाग * आमात तोमार केने एत मान राग
क्षमासे उचित धर्म्म होवय तोमार * किसक करिला तुमि ताक परिहार २१
धर्म्म एरि अधर्म्म करय यिटो नर * ताक दण्ड करिबे लागय क्षत्रियर
ब्राह्मणत जन्म धर्म्म धरिछा ऋषिर * ताक एरि धर्म्म केने आचर क्षत्रिर २२
शम दम दान दया क्षमा तयु धर्म्म * क्रोध अहंकार आदि क्षत्रियर कर्म्म
करिलाहा तुमि सिटो धर्म्म विपर्य्यय * विचारत दण्डिबाक तोमाक लागय २३
भांगिलोहो धनु आमि गुरुर तोमार * क्षत्रियर धर्म्म इटो उचित आमार
कोन दोषे करा तुमि आमाक विरोध * ऋषिर तोमार केने एतमान क्रोध २४
ज्ञानशून्य हुया अधर्म्मत प्रवर्त्तिला * माल भैल आसि मोर आगत मिलिला
करो आजि तोमाक उचित प्रायश्चित्त * येन आनक्षण अधर्म्मत नेदा चित २५
धर्म्महीन हुया दर्प कर मोर आगे * अवश्य तोमाक दंड दिवा मोर लागे
भांगो आजि सकले तोमार मिह्रा टोल * बुजा केनमत शिशु छावालर बल २६
तुमि केनमत वीर परीक्षाक चाओं * नुहि येवे वोला क्षमा करिया पठाओं
यद्यपि आमार मुनि नुहि क्षमा धर्म्म * वृद्ध देखि तोमाक लागय भीर मर्म्म २७
यायोक गुहक गुरु दिलोहो विदाय * तथापितो यद्यपि तोमार क्षमा नाइ
मोर दोष नाहि तेवे कहो स्वरूरत * करो चूर सकले तोमार गर्ब्ब यत २८
तोमार धनुर बर वखाना महत्त्व * बल बुजि चाओं धनुखान केनमत
इहात लगाइले, गुण भंग यदि माना * लगाइबोहो गुण धनु मोक दिया आना २९

तो है क्षमा। किस कारण तुमने उसको त्याग दिया है ॥ १४२१ ॥ धर्म छोड़कर जो व्यक्ति अधर्म करता है उसको दंड देना क्षत्रिय का कर्त्तव्य है। ब्राह्मण से तुम्हारा जन्म हुआ है, ऋषि का धर्म धारण करते हो तो फिर उसको त्यागकर क्षत्रिय के धर्म का क्यो आचरण करते हो ? ॥ २२ ॥ तुम्हारा धर्म है शम, दम, दान, दया और क्षमा। क्रोध और अहंकार क्षत्रिय का धर्म है। तुमने इस धर्म-आचरण को उलट-पुलट दिया है। न्याय करने के लिए तुमको दड देना आवश्यक है ॥ २३ ॥ मैंने तुम्हारे गुरु का धनुप तोड़ा है। क्षत्रिय के रूप में यह मेरा उचित धर्म है। किस दोप से तुम मेरा विरोध कर रहे हो। ऋषि होकर तुमको इतना क्रोध क्यों ॥ १४२४ ॥ ज्ञान शून्य होकर तुमने अधर्म आचरण किया। अच्छा हुआ जो तुम मुझसे आकर मिले। आज तुमसे उचित प्रायश्चित्त कराऊँगा, ताकि आगे कभी अधर्म में चित्त न लगाओ ॥ २५ ॥ धर्म-शून्य होकर तुम मेरे सामने दम्भ प्रकट कर रहे हो। अवश्य ही तुमको दडित करना मेरे लिए उचित है। मैं आज तुम्हारी सारी झूठी शान भुला दूंगा, आज एक छोटे वालक में कितना वल है यह जान जाओगे ॥ २६ ॥ तुम कैसे वीर हो, यह मैं परखना चाहता हूँ। वर्ना कहो तो क्षमा करके छोड़ दूं। हे मुनि ! यद्यपि क्षमा करना मेरा धर्म नही है पर तुमको वूढ़ा देखकर मेरे मन में यह भाव उत्पन्न हो गया है— ॥ २७ ॥ यदि तुम मुझे जाने भी दो और गुरु को विदा कर दो। फिर भी तुम्हारे लिए कोई क्षमा नही। तुमसे साफ़-साफ कह रहा हूँ कि इसमें मेरा कोई दोष नही, तुम्हारा सारा गर्व मै चूर कर दूंगा ॥ २८ ॥ अपने धनुप का गुण तुम वहुत वखान रहे हो। यह धनुप कैसा है, इसका वल जानना चाहता हूँ। इस पर प्रत्यचा चढाने पर यदि तुम हार मान लेते हो तो लाओ मुझे दो, मै इस पर प्रत्यंचा चढ़ा देता हूँ ॥ २९ ॥ जिस समय तुम्हारे धनुप पर मै प्रत्यंचा चढ़ा दूंगा उस समय मैं तुमको रण में जीत लूंगा। यह सुनकर परशुराम ने अपना धनुप राम को दे दिया।

तोमार धनुत गुण पारो येवे दिते * जिनिबो रणत तेवे तोमाक इंगिते
शुनिया परशुराम धनुखानि दिला * श्रीरामे लगाइला गुण करि महालीला ३०
बल दिया राघवे टानन्त धनुखान * लेक लेक करे फुल-धनुर समान
धनु टानि रामचन्द्रे हासन्त हरिषि * इहारेसे महत्त्व बखाना तुमि ऋषि१४३१
एहि बुल रामे पुनरपि दिला टान * महाशब्दे माजते भांगिला धनुखान
शबदर त्रासत कम्पिल त्रिभुवन * महाभये अचेतन भैल सर्ब्बजन ३२
राघवे बोलन्त गुरु करिलो अकाज * टानन्ते भांगिल धनु भैलो मइ लाज
नसहिल धनु छवालरो टानिबाक * बीर बोलाइ तुमि केने लैला फुरा आक ३३
आमाको करिला लघु आपुनियो भैला * देखिया परशुराम स्तब्ध हुया रैला
अनन्तरे रामचन्द्र पुरुष निपुण * निज धनुखान लैया लगाइलन्त गुण ३४
बाण जुरि मातिलन्त परशुरामक * हेरा देखा करो छाइ तोमार गर्ब्बक
राखिबाहा प्राण येवे मागा पराजय * भैलन्त परशुराम देखि महाभय ३५
बल दर्प गुचि मुखे हरिल बचन * हइल बिवर्ण आति मलिन बदन
परशुरामर भागि गैला काप जाप * बैदय देखि येन मुंड चपराइल साप ३६
श्रीरामर आगत भागिल सबे भाष * सूर्य आगे नाहि येन चन्द्रर प्रकाश
अस्तकाले येन नज्वलय दिनकर * गरुड़र आगे दर्प हरय सर्पर ३७
जमदग्निसुत राम भैला सेहि नय * लोक बिद्यमाने लघु भैला आतिशय
यम हेन साक्षाते देखन्त राघवक * मारिबन्त शर बुलि लागिल चमक ३८
देखि रामचन्द्र आति भैला दायायुत * हासिया बोलन्त शुना जमदग्नि सुत
आसिलाहा धाया तुमि आमाक मारित * जानिलोहो तोमार कठिन बर चित्त ३९

श्रीराम ने अपनी महालीला से उस पर प्रत्यंचा चढ़ा दी ॥ १४३० ॥ रामचन्द्र ने शक्ति लगाकर धनुप को खीचा तो धनुप पुष्प-धनुष सा लचकने लग गया। धनुष खींचकर रामचन्द्र हर्प से हँसने लगे। हे ऋषि, इसी के महत्त्व को तुम बखानते रहे ॥ १४३१ ॥ यह कहकर राम ने फिर उसे खींचा। महाशब्द करते हुए धनुप वीच से टूट गया। शब्द के त्रास से त्रिभुवन कम्पित हो उठा। सारे लोग भीषण भय से अचेतन हो गये ॥ ३२ ॥ रामचन्द्र ने कहा, गुरु, मैने बुरा कार्य कर डाला। खींचते ही धनुप टूट गया, मै लज्जित हूँ। यह धनुष वालक का खीचना भी सहन न कर सका। इसको लेकर तुम अपने को वीर कहते हुए क्यों फिरा करते हो ॥ ३३ ॥ मुझको भी आपने छोटा बनाया और खुद भी छोटे बन गये। यह देखकर परशुराम स्तब्ध बने रहे। इसके वाद कुशलपुरुष रामचन्द्र ने अपना धनुष लेकर उस पर प्रत्यंचा चढ़ाई ॥ ३४ वाण चढ़ाकर उन्होंने परशुराम से कहा, अरे, देखो तुम्हारे गर्व को मैं किस प्रकार मिट्टी में मिलाये देता हूँ। अगर अपने प्राण वचाना चाहते हो तो पराजय स्वीकार कर लो। यह देखकर परशुराम वड़े भयभीत हो गये ॥ १४३५ ॥ उनका वल, दर्प, सव कुछ मिट गया, कण्ठ रुद्ध हो गया। चेहरा फीका पड़ गया और लटक गया। परशुराम की सारी हेकड़ी इस प्रकार धरी रह गई जैसे ओझा को देखकर साँप शान्त हो जाता है ॥ ३६ ॥ श्रीराम के सम्मुख परशुराम की जिह्वा वन्द हो गई। जिस प्रकार सूर्य के सम्मुख चन्द्र का प्रकाश नही रह जाता है। अस्त होते समय जिस प्रकार सूर्य प्रभामय नही रह जाता है। गरुड़ के सम्मुख जिस प्रकार सर्प का दर्प धरा रह जाता है ॥ ३७ ॥ उसी प्रकार लोगों के [सम्मुख परशुराम को बहुत नीचा देखना पड़ा। राम को सम्मुख वह यों देखने लगे मानों राम साक्षात् यम हों। राम के द्वारा, वाण मारूँगा, यह कहने पर वह चौक पड़े ॥ ३८ ॥ यह देखकर

ऋषि हुया भैला तुमि एनुवा निर्द्दय * तोमाक मारिने मन आमार नलय
राखिलो तोमार प्राण नकरिवा भय * किन्तु मोर वाण जाना अमोघ निश्चय ४०
कदाचितो वृथा वाण नुहिके आमार * कहियोक तोमार छेदिवो कोन द्वार
शुनिया रामर दायायुगुत वचन * वोलन्त विनये जमदग्निर नन्दन ४१
निचिनिलो तोमाक बुद्धित मन्द आमि * तुमि से ईश्वर जगतर अन्तर्यामी
भैला अवतार तुमि आसि मनुष्यत * तोमार अधीन इटो सकले जगत ४२
तुमिसे ईश्वर निष्ठो जानिलो साक्षात * आमार विक्रम थाइ लागिलो तोमात
जगतर आत्मा तुमि पुरुष पुराण * हारिलोहो तोमात दियोक प्राणदान ४३
करिलाहा मोक येन दाया दामोदर * शुनियोक मोर तेवे स्वरूप उत्तर
नाहिके स्वर्गत किछु मोर प्रयोजन * शरे हानि प्रभु स्वर्गपथ करा छन्न ४४
तयु अंशे आमि हुया आछि अवतार * आमाते आछिल तयु पृथिवीर भार
आपुनि वेकत आसि भैलाहा साम्प्रत * गुचाइलाहा आपुनि आमार भार यत१४४५
सज्जनक पालि संहरिवा दुष्ट यत * तीर्थ करि फुरो मइ तयु प्रसादत
नयाइवो स्वर्गक निष्ठे बुलिला वचन * करियोक मोर स्वर्गपथ निवारण ४६
शुनि रामचन्द्रे पूर्व्वदिशे मुख दिला * परशुरामक स्वर्गपथक छेदिला
श्रीरामर कीर्त्ति प्रकाशय संसारत * अद्यापिओ रामशर देखिओ स्वर्गत ४७
परशुरामक रामे करिला आश्वास * मोर वाण देखि ऋषि भैला महात्रास
क्षत्रि जाति आमार दारुण वर हिया * पालो अंगीकार ब्राह्मणक दुख दिया ४८

रामचन्द्र को बडी दया आ गई। हँसकर उन्होंने कहा, हे जमदग्नि के पुत्र परशुराम, तुम मुझे दौडकर मारने आए हो, मैं जानता हूँ कि तुम्हारा मन बड़ा कठोर है ॥ ३९ ॥ ऋषि होकर भी तुम इस प्रकार निर्दय हुए। तुमको मारने को मेरा जी नही करता है। डरो मत, मैं तुम्हारे प्राण नही लूंगा, लेकिन मेरा वाण भी निश्चित रूप से अमोघ होता है ॥ १४४० ॥ मेरा वाण कभी वेकार नही जाता। वताओ मैं तुम्हारा कौन सा द्वार भेदन करूँ। राम की दयाभरी वाते सुनकर जगदग्नि के पुत्र ने विनय से कहा ॥ १४४१ ॥ मैं मन्दवुद्धि हूँ जो तुमको पहचान न सका; तुम ही जगत् के अन्तर्यामी ईश्वर हो। तुमने मनुष्यों मे आकर अवतार लिया है। यह समस्त जगत् तुम्हारे अधीन है ॥ ४२ ॥ मैने यह प्रकट रूप से जान लिया कि तुम्हीं वह ईश्वर हो। मेरा सारा पराक्रम जाकर तुममें विलीन हो गया। तुम पुराण-पुरुष हो, जगत् की आत्मा हो। मैने तुमसे हार मान ली, मुझे प्राणदान कर दो ॥ ४३ ॥ हे दामोदर, जव तुमने मुझ पर दया ही की है तो मेरा सच-सच उत्तर सुन लो। मुझको स्वर्ग की कोई आवश्यकता नही। हे प्रभु, तुम वाण चलाकर मेरे स्वर्ग का पथ छिन्न कर दो ॥ ४४ ॥ तुम्हारा ही अंश लेकर मैं अवतार वना हुआ था। मुझ ही पर तुम्हारे ससार का भार था। अव तुम स्वयं ही यहाँ आ उपस्थित हुए। स्वयं ही तुमने मेरा सारा भार ले लिया ॥ ४५ ॥ तुम सज्जनों का पालन कर सारे दुष्टों का विनाश करोगे। तुम्हारी कृपा से मै तीर्थयात्रा पर घूमता रहूँगा। मैं निष्ठापूर्वक यह कह रहा हूँ कि मैं स्वर्ग नही जाऊँगा। मेरा स्वर्गपथ रोक दो ॥ १४४६ ॥ यह सुनकर रामचन्द्र ने पूर्वदिशा की ओर रुख किया और परशुराम के स्वर्गपथ को छिन्न कर दिया। श्रीराम की कीर्त्ति सारे संसार में प्रकाशित है। आज भी राम का वह वाण स्वर्ग में दिखाई देता है ॥ ४७ ॥ राम ने परशुराम को आश्वासन दिया। हे ऋषि! मेरा वाण देखकर तुमको वडा भय हुआ। मैं क्षत्रिय जाति का हूँ, मेरा हृदय वड़ा कठोर है। ब्राह्मण का मन दुखाकर मैंने प्रतिज्ञा पालन की ॥ ४८ ॥ सव लोग मेरे

मरबिबा सकले आमार इटो दोष * करो हातयोर नकरिबा असन्तोष
श्रीरामर भकति देखिया आतिशय * दुखभय गुचि गैल प्रसन्न हृदय ४९
बुलिला परशुरामे बचन मधुर * स्वाभावते क्षत्रियर हृदय निष्ठुर
हेन महाक्षत्रि तुमि पुरुष उत्तम * देखिलो साक्षाते आजि तोमार बिक्रम१४५०
तथापि कराइला तुमि आमाके प्रसन्न * धन्य धन्य राम रघुकुलर नन्दन
शत्रु हुया प्रसन्न कराइला बुलि नति * तुमियो सन्तुष्ट हैवा आमार भकति१४५१
शुनियोक राम बोलो स्वरूप बचन * अनादि ईश्वर तुमि सत्य सनातन
तुमि नित्व निरंजन पुरुष पुराण * जगतर पति तुमि बिने नाहि आन ५२
तोमात भकति मोर सतते थाकोक * याओं तपोबने मोक बिदाय दियोक
एहिमते दुयोजन जगत ईश्वर * करिलन्त लीला नजानिला एको नरे ५३
दुइहान्तरो सम्बाद बिबाद यत यत * चाहि आछे लोक सबे बिस्मये मनत
अनन्तरे बिदाय लइया श्रीरामत * गैलन्त परशुराम हरिष मनत ५४
दशरथे देखि आति बिक्रम रामर * मनत हरिषे प्रशंसिला बहुतर
धन्य धन्य पुत्र तुमि भैलाहा आमार * रहिल तोमार यश जुरिया संसार ५५
आसिल परशुराम खेदि येन यम * ताहांको जिनिला रणे करिया बिक्रम
साधु साधु राम तुमि बंशर तिलक * गले वान्धि राजा धरिलन्त राघवक ५६
उपजिल प्रेम तनु भैला पुलकित * पाइलेक सन्तोष येन पियन्ते अमृत
आकाशत तृपिति भैलन्त देवगणे * अर्च्चिला रामक आति पुष्प बरिषणे ५७
देखिया जानकी बल बिक्रम रामर * भैलन्त तृपिति रोमांचित कलेवर
बिश्वामित्र वशिष्ठ प्रमुख्ये ऋषिगणे * पूजिलन्त राघवक प्रशंसा बचने ५८

इस अपराध को क्षमा करना। मैं हाथ जोड़ता हूँ, कोई भी असन्तुष्ट न होना। श्रीराम की यह भक्ति देखकर परशुराम का दुख और भय मिट गया और उनका मन प्रसन्न हो गया ॥ ४९ ॥ परशुराम ने मधुर वचन से कहा, स्वभाव से ही क्षत्रिय का हृदय बड़ा निष्ठुर होता है। ऐसे महान् क्षत्रिय होकर भी तुम पुरुषोत्तम हो, आज मैंने तुम्हारा साक्षात् पराक्रम देखा ॥ १४५० ॥ तथापि तुमने मुझे प्रसन्न किया है। हे रघुकुलनन्दन, तुम धन्य हो। मेरे शत्रुभाव के प्रति भी तुमने विनम्र वचन कहे। मेरी भक्ति पर तुम संतुष्ट होवो ॥ १४५१ ॥ सुनो राम, मै सत्य-वचन बोलता हूँ। तुम अनादि-ईश्वर हो, तुम सनातन-सत्य हो, तुम नित्य-निरंजन हो, पुराण-पुरुष हो। तुम्हारे विना दूसरा कोई जगत् का पति नही है ॥ १४५२ ॥ तुममे सदा मेरी भक्ति बनी रहे। मुझको विदा दो, मैं तपोवन चला जाऊँ। इसी प्रकार से दोनों, जगत् के ईश्वरों ने लीला की और एक भी मनुष्य इसको जान नही सका ॥ १४५३ ॥ दोनों में जो संवाद और विवाद होते रहे, लोग उनकी ओर विस्मय से देखते रह गये। इसके उपरान्त श्रीराम से विदा लेकर परशुराम प्रसन्न-मन चले गये ॥ ५४ ॥ दशरथ ने राम का प्रचंड पराक्रम देखा तो आनन्द से उनकी बड़ी प्रशंसा की। तुम मेरे पुत्र बने, तुम धन्य हो। तुम्हारा यश संसार भर में बना रहा ॥ १४५५ ॥ परशुराम ऐसे भागते हुए आये थे मानों यम हों। उनको अपने पराक्रम द्वारा तुमने युद्ध में पराजित किया। हे राम ! तुम वंश के तिलक हो, धन्य हो, यह कहकर दशरथ ने राम को गले से लगा लिया ॥ ५६ ॥ प्रेम के उत्पन्न होने से उनका तन पुलकित हो गया। उनको ऐसा सन्तोष मिला मानों अमृत पी रहे हों। आकाश में स्थित देवता प्रसन्न हो गये। उन्होंने पुष्प-वर्षा कर राम की अर्चना की ॥ ५७ ॥ जानकी ने जो राम का बल-पराक्रम देखा तो प्रसन्नता से उनका शरीर रोमांचित हो उठा।

परम पुरुष राम जगत-आधार * रामरूपे पृथिवीत भैला अवतार
परशुरामर दर्प करिलन्त चूर * काहार शकति कर्म्म करय ए दूर ५९
एहिमते रामक प्रशंसे सर्व्वजने * अनन्तरे दशरथ राजा रंग मने
अयोध्याक प्रति चलि गैला महाशय * करय कटके वेढ़ि राम जय जय ६०
नाना वाद्ये सुमंगले चले समदले * अयोध्यात प्रवेश भैलन्त कौतूहले
देखि नगरीया लोके राजा आसिवार * तेतिक्षणे करिला नगरी जातिष्कार१४६१
सांजि मांजि लिपिला बिचित्र गन्धजले * पताका तोरण ध्वजा रचिला चिरले
ताम्बुल कदली रुइला ठोक समन्वित * थाने थाने आलिपन करिला रंजित ६२
मुखत पल्लव फले पाति पूर्णघट * घृतर प्रदीप दिला ताहार निकट
दुवारे दुवारे दुलि थापिला प्रवन्धि * लगाइला विचित्र धूप अगर सुगन्धि ६३
कुसुम चन्दन हाते लैया दूर्व्वाक्षत * चड़िलन्त नारीगण गृह उपरत
आति मनोहर पुरी अयोध्यानगर * तार माजे यान्त दशरथ नरेश्वर ६४
चारि पुत्र चारि कन्या यान्त रंगमने * दुर्व्वाक्षत पुष्प वरिषन्त नारीगणे
उरुलि जोकार जय अनेक मंगले * भूमित परिल पुष्प शतेक सदले ६५
नगरत मिलि गैला आनन्द प्रचुर * पुत्रगण समे राजा पाइला अन्तःपुर
कौशल्या सुमित्रा सती सुन्दरी कैकेयी * कन्यागण समे दीप घट हाते लइ ६६
तिनि महादइ नाना मंगल आचारे * सिंचि दूर्व्वाक्षत पुष्प उरुलि जोकारे
भिन्ने भिन्ने आसि पाचे तिनि पटेश्वरी * आपोनार पुत्र बोटारीर हाते धरि ६७

विश्वामित्र वशिष्ठ आदि ऋषियों ने राम की प्रशंसा कर उनकी पूजा की ।। १४५८ ।। राम परम-पुरुष है, जगत् के आधार है। राम के रूप मे उन्होने धरती पर अवतार लिया है। उन्होंने परशुराम का घमंड चूर किया। किसमे शक्ति है जो ऐसा कर्म कर सके ।। ५९ ।। इसी प्रकार से सभी लोग राम की प्रशंसा करने लगे। इसके उपरान्त राजा दशरथ आनन्दमग्न हो अयोध्या के लिए चल पड़े। सारा कटक राम को घेर कर जयजयकार करने लगा ।। १४६० ।। विभिन्न मंगलसूचक वाद्यों सहित जलूस चला, और सबने आनन्द पूर्वक अयोध्या में प्रवेश किया। नगर के लोगों ने राजा को आते हुए देखा तो उतनी देर में उन्होने सारी नगरी चमका दी ।। १४६१ ।। साफ-सुथरा कर उसको विचित्र सुगन्धित जल से सीचा। पताका, तोरण और ध्वजाओं का सुन्दर निर्माण किया। प्रवेश-पथ बनाकर ताम्बूल और केले रोपे गये। स्थान-स्थान पर चौक पूरी गई ।। १४६२ ।। ऊपर फल और पल्लव रख पूर्ण-कलश स्थापित कर उसके निकट घी के दीये रखे गये। द्वार-द्वार पर झालर लगाये गये, और विचित्र धूप-अगरु आदि सुगन्धियाँ सुलगाई गई ।। ६३ ।। हाथों में कुसुम, चन्दन, दूब और अक्षत लेकर नारियाँ गृह के ऊपर चढ़ गई। अयोध्यानगरी बड़ी ही मनोहर पुरी है। उसी के बीच नरेश्वर दशरथ चले ।। ६४ ।। चारों लड़के, चारों कन्याएँ बडे प्रसन्न-मन से चले जा रहे है। नारियाँ दूब-अक्षत और फूल बरसा रही है। मगलसूचक हुलूध्वनि और जयध्वनि कर रही है। भूमि पर सैकड़ों डंठलवाले फूल बिछे हुए है ।। ६५ ।। नगर अत्यन्त आनन्द से भर गया। राजा अपने पुत्रों के सहित अन्त.पुर चले गये। सती सुमित्रा, सुन्दरी कैकेयी और कन्याओं के सहित कौशल्या हाथ में दीप और घट लिये आई ।। १४६६ ।। तीनों महारानियाँ विभिन्न मंगलाचार के साथ दूब-अक्षत और फूल बरसाकर हुलूध्वनि करने लगीं। इसके पश्चात् तीनों पटरानियों ने अलग-अलग आकर अपने-अपने पुत्र और वहू के हाथ थामे ।। ६७ ।। विभिन्न प्रकार के आचारों के उपरान्त उनको घर में प्रवेश कराया।

नाना व्यवहारे गृह कराइला प्रवेश * पुत्रबधू देखि पाइला आनन्द अशेष
सीतार देखिया रूप कौशल्या देवीर * अमृतर पाने येन जुराइल शरीर ६८
चारि कुमारर बिहा भैल एकेबारे * देखिया आनन्द आति मिलिल सबारे
नाना नृत्य गीत बाद्य बाजन बआइल * रामक सीताक लोके देखिबाक आइल ६९
दुहानर रूप आति देखि विपरीत * नयन भरिया येन पिवय अमृत
दिला आनि लोके यत यौतुक अपार * सुवर्ण रजत रत्न वस्त्र अलंकार१४७०
राजागण आइला लैया यौतुक सम्भार * नाना रत्ने भूपतिर भराइला भांडार
दशरथे समस्तके प्रसादे रंजिला * वस्त्र अलंकार पुष्प चन्दने तुषिला१४७१
चारियो पुत्रक समुचिते बण्टा दिला * हस्ती घोरा रथ राज्ये मन सन्तोषिला
अनायासे भैल विहा चारियो पुत्रर * परम कृतार्थ मन भैला नृपवर१४७२
शुनियोक सभासद पद आदिकांड * रामर चरित्र येन अमृतर भाण्ड
संसार मध्यत इसि महाधर्म्म सार * बोला राम राम सुखे तरियो संसार१४७३

छवि

यिटो देव नारायण सदाशिव सनातन नाहि आदि अन्त मध्य यार ।
देवे याक नजानन्त तेन्ते देव भगवन्त रामरूपे भैला अवतार ॥
निज योगमायाबले छद्म हुया महीतले दशरथ नृपतिर घरे ।
सीमा नाहि महिमार मनुष्यर व्यवहार देखावन्त प्रभु निरन्तरे ॥ १४७४
जनकनन्दिनी सीता देवी जगतर माता ताक बिहा करि आनिलन्त ।
लक्ष्मीसमे एकथान हुया नानाविध दान दिया समस्तके रंजिलन्त ॥

पुत्र-वधुओं को देखकर उनको अपार आनन्द प्राप्त हुआ । सीता का रूप देखकर कौशल्या देवी का शरीर ऐसा जुड़ा गया मानों अमृत का सेवन किया हो ॥ १४६८ ॥ चारों कुमारों का विवाह इकट्ठे ही हो गया यह देखकर सभी बड़े आनन्दित हुए । तरह-तरह के नृत्य-गीत होने लगे और बाजे बजाये जाने लगे । राम और सीता को देखने के लिए बहुत से लोग आए ॥ ६९ ॥ दोनों के अद्‌भुत रूप को देखकर मानों सभीजन नयन भरकर अमृत पीने लगे । लोग तरह-तरह की भेंट-सामग्रियाँ जैसे, स्वर्ण रजत, रत्न, वस्त्र और आभूषण आदि ले आए ॥ १४७० ॥ राजा लोग भी विवाह के उपलक्ष्य में भेंट-सामग्री ले आए । विभिन्न रत्नों से भूपति का भंडार भर गया । दशरथ ने भी सभी को प्रसाद से सन्तुष्ट किया और वस्त्र, अलंकार, पुष्प, चन्दन आदि से सबको प्रसन्न किया ॥ १४७१ ॥ समुचित रूप से यह सामग्री चारों पुत्रों को बाँट दी गई । हाथी, घोड़े, रथ और राज्य से उनको सन्तुष्ट किया । चारों पुत्रों का विवाह अनायास हो गया, इससे नृपवर दशरथ का मन कृतार्थ हो गया ॥ १४७२ ॥ हे सभासदो, आदिकांड के पद सुनो । राम का चरित्र भी क्या है मानो अमृत का पात्र है । संसार में यह प्रकृत महाधर्म है, राम-राम बोलकर सुख से संसार-सागर से तर जाओ ॥ ७३ ॥

छवि

जो स्वयं देव नारायण हों, जो सदाशिव सनातन हों, जिनका न आदि है, न अन्त है और न मध्य है, देवता भी जिनको जान नहीं पाते हैं उन्हीं देव भगवन्त ने राम के रूप मे अवतार लिया है । अपनी योग माया के बल पर धरती पर छद्मवेश में दशरथ के घर में आए । उनकी महिमा की कोई सीमा नहीं, वे प्रभु निरन्तर मनुष्य

सीता समन्विते राम पूरिया सबारे काम रत्नर मन्दिरे भैला थित ।
दशरथ नृपवर विहा कराइ तनयर भैला आतिशय आनन्दित ॥ १४७५
महामुनि विश्वामित्र कहिलन्त नृपतित गुण ग्राम राम-लक्ष्मणर ।
ताड़काक एकेश्वरे मारिलन्त रघुवरे समरे वधिला निशाचर ॥
अहल्यार शापमुक्त धनु भांगि अदभुत जिनिलन्त राजागणे रणे ।
पुत्र दुइर पराक्रम शुनिया अमृत सम सन्तोष राजार आति मने ॥ ७६
विश्वामित्रक राजा करिला अनेक पूजा चलि गैला मुनि मनरंगे ।
अयोध्या नगरे राजा देवतो अधिक राज्य भोग भुंजे पुत्रगण संगे ॥
राघवर गुणगणे समस्ते लोकर मने मिलय आनन्द आशरिस ।
राज्य प्रतिपालिबाक समर्थ भैलन्त राम देखि दशरथर हरिष ॥ ७७
कतोकाल अनन्तरे देखिलन्त नृपवरे निशाकाले स्वप्न बिपरीत ।
परिल उलुकापात आकाशर राहु चन्द्र लाम्फे लाम्फे फुरय भूमित ॥
रक्त शय्या आकाशत देखे वसि सिथानत कान्दे कालनारी एकजन ।
कृष्ण कुसुमर माला दुई हाते धरि आनि सुंगन्त नृपति घने घने ॥ ७८
मृत्युर सूचक स्वप्न देखि दशरथ राजा बसिया गुणन्त मने मन ।
अन्धक मुनिर शाप समीप चाहिल मोर निकटते मिलिन मरण ॥
यावत चेतन गावे आछत रामत तावे राज्यभार करो समर्पण ।
प्राणत अधिक मोर रामचन्द्रे पालिवेक पुत्रतो अधिक सब्बंजन ॥ ७९
रामक पातन्ते राजा पातिने विघिनि जानो भरत आवर शत्रुघने ।
गुचोक विघिनि सबे पढ़िबार चले दुइको राज्यर गुचाओ एतिक्षणे ॥

जैसा आचरण दिखाते है ॥ १४७४ ॥ सीतादेवी जगत् की माता है, उनको वे विवाह लाये। लक्ष्मी के साथ एक स्थान पर तरह-तरह के दान देकर सबको प्रसन्न किया। सबकी मनोकामना पूर्णकर राम, सीता के साथ रत्न के मन्दिर में स्थित हुए। राजा दशरथ बेटे का विवाह करके अत्तन्त आनन्दित हुए ॥ ७५ ॥ महामुनि विश्वामित्र ने राम-लक्ष्मण के गुणों की गाथा राजा से बतायी। राम ने अकेले ही ताड़का को मार डाला और युद्ध में निशाचरों का वध किया। अहिल्या को शाप से मुक्त किया, अद्भुत रूप से धनुष भंग किया और राजाओं को युद्ध में पराजित किया। दोनों पुत्रों के पराक्रम का वर्णन अमृत के समान है, उसे सुनकर राजा के मन में बड़ा सन्तोष हुआ ॥ ७६ ॥ राजा ने विश्वामित्र की बडी पूजा की। मुनि प्रसन्न होकर चले गये। अयोध्यानगर में राजा दशरथ देवताओं से भी अधिक राज्य लिये, पुत्रो के साथ उसका भोग करने लगे। रामचन्द्र के गुण के कारण सभी लोगों के मन को पर्याप्त आनन्द मिलता। राज्य का प्रतिपालन करने के लिए राम समर्थ हो गये, यह देखकर दशरथ को बड़ा हर्ष हुआ ॥ ७७ ॥ कितने ही दिनो के बाद राजा ने रात मे एक विपरीत स्वप्न देखा। उल्कापात हुआ, आकाश के राहु और चन्द्र धरती पर उछल-उछल कर घूमने लगे। आकाश में रक्त से सनी सेज, जिसके सिरहाने बैठकर एक काली नारी रो रही है। काले फूलों की एक माला दोनों हाथों से थामे राजा बार-बार उसे सूंघ रहे हैं ॥ ७८ ॥ मृत्यु-सूचक यह स्वप्न देखकर राजा दशरथ मन ही मन सोचने लगे कि अब मेरे समीप अन्धक मुनि का अभिशाप आ गया, मानों मेरी मृत्यु बहुत निकट आ गई है। जब तक शरीर मे चेतना है, तभी तक राम को राज्यभार सौंप दूं। प्राणों से अधिक मेरा रामचन्द्र पुत्र के समान सबका पालन करेगा ॥ ७९ ॥ राम को राजा के रूप में प्रतिष्ठित करने में मैं समझता हूँ कि भरत-शत्रुघ्न विघ्न उपस्थित

एहि गुणि दुहान्तको मातिआनिलन्त राजा बुलिलन्त मधुर बचने ।
युद्धाजित मातुलर राज्यक पढ़िबे प्रति चलिया यायोक दुईजने ॥ ८०
पितृर बचन शुनि भरत ये शत्रुघने मातामह राज्ये चलि गैला ।
पाचे दशरथ राजा रामक हरिष मने राजा पातिबाक साज भैला ॥
एहि माने आदिकांड येन अमृतर भांड सांगोपांगे भैल समापति ।
सुनियोक साधुजन पुण्य कथा रामायण रचिला माधव मूढ़मति ॥ ८१
बोलो कृतांजलि बाणी मोक मूढ़ हेन जानि निन्दा नुबुलिबा महाजने ।
मोत परे मतिहीन ज्ञानशून्य बुद्धिक्षीण नाहि आन इतिनि भुवने ॥
करि आति गर्ब्ब मद तथापि रचिलो पद देखा केने मोर अहंकार ।
इटो मोर दोषचय छमिबे उचित हय महन्तर क्षमा अलंकार ॥ ८२
अन्तर्यामी नारायणे येने प्रवर्त्ताइला मने ताके मूर्ख करिलो बेकत ।
कहिलो सकले सार जानि करा परिहार बढ़ा टुटा देखा यत यत ॥
परे राम चरित्रत आनो सब कथा यत सियो राम कथासे निश्चय ।
गंगार जलत यत परे नदी नाना मत ताक कोने तेजिया आछय ॥ १४८३

दुलड़ी

इकथा थाकोक शुना सबे लोक चिन्ता हित आपोनार ।
दुर्घोर संसार सागर निकार यिमते पाइबा निस्तार ॥

करेंगे । इसलिए यदि पढ़ने के लिए दोनों को राज्य से बाहर भेज दिया जाये तो सारे विघ्न दूर हो जाये । यह सोचकर राजा ने दोनों को बुलाया और मधुर वचन से कहा, मामा युधाजित के राज्य में पढ़ने के लिए तुम दोनो चले जाओ ॥ १४८० ॥ पिता के वचन सुनकर भरत और शत्रुघ्न मातामह के राज्य में चले गये । इसके पश्चात् राजा दशरथ ने राम को हर्षित मन से राजा के रूप में प्रतिष्ठित करने की व्यवस्था की । इसी प्रकार से रामायण का आदिकांड जो कि अमृत के कलश के समान है शुरू से अन्त तक समाप्त हो गया । हे साधु-सज्जनो, रामायण की पुण्य-कथा सुनो, मूढ़मति माधव ने उसकी रचना की है ॥ १४८१ ॥ हाथ जोड़कर यह कहता हूँ कि मुझको मूर्ख जैसा जानकर महाजन निन्दावाक्य नही बोलेगे । इन तीनों लोकों में मुझ जैसा ज्ञानशून्य, मतिहीन और क्षीणवुद्धि दूसरा कोई नही है । फिर भी गर्व और दम्भ के साथ मैंने पदों की रचना की—मेरे अहंकार का भी क्या कहना है । यही मेरे दोष है, इनको क्षमा कर देना उचित है । क्षमा महान् लोगों का आभूषण है ॥ १४८२ ॥ अन्तर्यामी नारायण ने मेरे मन में जो भाव उत्पन्न किया उसी को मुझ जैसे मूर्ख ने प्रकट किया । अपने ज्ञान में जो कमीबेशी प्रतीत हुई उनको त्याग करते हुए मैने सार ही वताया है । वाद में राम के चरित्र में और भी जो सारी कथाएँ है वे भी निश्चय रूप से राम कथा ही है । गंगा के जल में विभिन्न नदियाँ आकर गिरती है । उनको क्यों त्याग किये हुए हो ॥ १४८३ ॥

दुलड़ी

यह वात भी रहने दूँ । सारे लोग सुनो । अपने हित की चिन्ता करो कि इस घोर संसार के कष्ट के समुद्र को जिस उपाय से पार कर सकते हो । ज़रा विचारकर देखो, काल वड़ा वली है, कोई वुरा कर्म करने पर सारे लोगों को अथाह पाप-सागर की

देखियो आकलि कलि महावली करिले केने अकाज।
समस्ते लोकक तल नियाइलेक पाप सागरर माज ॥ ८४
पापत मगन हुआ यिटोजन आन धर्म्मे आशा करे।
एको फल तात नाहिके मिछात दुख पाया मात्र मरे ॥
तात परे आर नाहि दुराचार तारो हरिनाम धर्म्म।
नाम गुण लैले संसार तरय जानिबा इसव मर्म्म ॥ ८५
ब्रह्मा मुनि याक बांछिया नपावे पाया हेन कलेवर।
हरिर कीर्त्तन नकरे यिजन आत्मघाती सिटो नर ॥
इटो तत्त्वसार जानिया संसार तरियो नाम सुमरि।
कलिर युगत अन्यत्र धर्म्मत थैयो आशा दूर करि ॥ ८६
तेजि आन काम सुमरियो नाम धर्म्मर ईश्वर जानि।
करि थिर मन हरित शरण लैयोक ईश्वर मानि ॥
नमो नमो राम करोहो प्रणाम दिया चरणत चित्त।
महा मूढ़ मति हुया बिरचिलो तोमार इटो चरित ॥ ८७
तुमि बुद्धि वृत्ति येन प्रवर्त्ताइला हृदये थाकि आमार।
सेहिमते भय तरिब सकले करिलो मुखे प्रचार ॥
पद रचनात आछय यतेक दोष मइ अधमर।
ताक कृपामय क्षमिबे लागय जानिबाहा हृदीश्वर ॥ ८८
तयु कृपामय समस्ते वेकत आपुनि तुमि करिला।
भक्तवेश मात्र धरिला पूतना एतेके ताइक तारिला ॥
भयत तोमाक सुमरिया गति पाइले पापी कंसराय।
घोर अघासुरे तोमाक गिलिया सियो महामोक्ष पाय ॥ ८९

तली में पहुँचा देगा ॥ १४८४ ॥ जो व्यक्ति भी पाप मे मग्न होकर अन्य धर्म की आशा करता है, उसको एक भी फल नही मिलता, क्योकि वह मिथ्या है, वह केवल दुःख पाकर ही मरता है। ऐसा दुराचारी जिससे वढ़कर कोई न हो, उसका भी धर्म हरि नाम ही है। असली वात यह जान लेना कि नाम लेने के गुण से ही संसार तर जाओगे ॥ १४८५ ॥ ब्रह्मा मुनि आदि भी अभिलापा करने पर जिसको प्राप्त नही कर पाते है, ऐसा शरीर तुमको मिला है। जो व्यक्ति हरि का कीर्त्तन नही करता वह आत्मघाती है। संसार मे यही सार तत्त्व है, यह जानकर नाम का सुमिरन कर तर जाओ। कलिजुग मे अन्य किसी धर्म में आशा मत रखना ॥ १४८६ ॥ दूसरा काम-काज छोड़कर धर्म को ईश्वर जानकर नाम का सुमिरन करता हूँ। मन को स्थिर कर ईश्वर मानकर हरि की शरण लेता हूँ। चरणों में चित्त लगाकर नमो नमो राम कहकर प्रणाम करता हूँ। महामूढ़मति होते हुए भी तुम्हारे इस चरित्र की रचना कर रहा हूँ ॥ ८७ ॥ तुमने मेरे हृदय में रहकर जिस प्रकार की वुद्धि-वृत्ति प्रवर्त्तित की उसी प्रकार से सभी लोग तर जाएँगे, यह मैं मुख से प्रचार करूँ। पदों की रचना में मुझ अधम के जितने दोष हों, हे कृपामय ! उनको क्षमा करना होगा, हे हृदयेश्वर यह जान लेना ॥ ८८ ॥ तुम दयामय हो, तुमने स्वयं ही सभी कुछ प्रकट किया। पूतना ने केवल भक्त-वेश धारण किया था इसलिए तुमने उसको तारा। पापी कंसराय ने भय से तुम्हारा स्मरण किया तो उसको गति मिल गई। घोर अघासुर ने तुमको निगल लिया तो उसको भी महामोक्ष प्राप्त हुआ ॥ ८९ ॥ परम दुर्बुद्धि राजा पौड्रक ने तुम्हारा वेश धारण कर लिया तो, हे हृषीकेश ! इसी से तुमने उसको उत्तम मुक्ति दे दी।

परम दुर्म्मति पौंड्रक नृपति धरिल तोमार वेश।
एतेकते तार उत्तम मुकुति दिला तुमि हृषीकेश॥
पापी अजामिल नामर आभास सुमरिल अज्ञानत।
ताके एतेकते करि अनुग्रह थान दिला बैकुंठत॥ १४९०
पशु जाति आति बनर बानर करिले मात्र आश्रय।
ताते तासम्बात महा अनुकम्पा करिलाहा कृपामय॥
मइ महामूढ़ परम पामर तोमात लैलो शरण।
तोमात भकति रहे येनमते कृपा करा नारायण॥ ९१
तयु गुणनाम धर्म्म अनुपाम रहोक मोहोर मुखे।
परम दुर्ल्लभ तोमार चरण सुमरो परम सुखे॥
श्रवण कीर्त्तन विने प्रभुराम नाहि मोर आनकाम।
समाजिक लोक सदगति हौक डाकि बोला राम राम॥ १४९२

पापी अजामिल ने अपने अनजाने तुम्हारे नाम का उच्चारण किया तो इतने ही पर अनुग्रह कर तुमने उसे वैकुंठ में स्थान दे दिया॥ १४९०॥ वन के वानर पशु है, उन्होंने केवल तुम्हारी शरण ली, उसी से हे कृपामय, उन पर तुमने बड़ी अनुकम्पा की। मै महामूर्ख और परमपापी हूँ, तुम्हारी शरण लेता हूँ। हे नारायण ! ऐसी कृपा करना कि तुममें मेरी भक्ति बनी रहे॥ १४९१॥ तुम्हारा गुण-नाम ही अनुपम धर्म है, वह मेरे मुख मे बना रहे। तुम्हारे चरण परम दुर्लभ है, मै परम सुख से उनका स्मरण करूँ। प्रभु राम के कीर्तन को सुनने के विना मेरा कोई दूसरा काम नहीं है। हे सभा के लोगो, सबकी सद्गति हो, सभी लोग ऊँचे स्वर से राम का नाम लो॥ १४९२॥

॥ आदि काण्ड समाप्त॥

अयोध्या - काण्ड

श्रीराम आदिर अयोध्यालै प्रत्यागमन आरु भरत शत्रुघनर मातुलालय यात्रा

पद

जय जय रामचन्द्र जगत आधार * ब्रह्मा हर पुरन्दर सेवक याहार
सृष्टि स्थिति लय यार लीला अनुपाम * हेन राम पदे कर सदाय प्रणाम १४९३
स्वरूप आवरि निज माया बश्य करि * दशरथ गृहे लीलारूपे अवतरि
मनुष्यर नय कर्म्म करिला अपार * याहार श्रवणे महापापीरो उद्धार ९४
लक्ष्मण सहिसे विश्वामित्र संगे आसि * राखिला ताहार यज्ञ राक्षस बिनाशि
ऋषि समन्विते रंगे गैया मिथिलाक * धनुभंग करि विहा करिला सीताक ९५
परम सुन्दरी भार्य्या पाया हृषीकेश * परम उत्सुके भैला अयोध्या प्रबेश
चन्दर उदये येन कुमुद प्रकाश * रामक देखिया सर्व्वजनर उल्लास ९६
सुरभि शीतल बहे मलया पवन * पुष्पवन सुगन्धे आमोद करे मन
धने जने विचित्र मंडित सर्व्वजन * राज्यर पतन येन स्वर्गर भुवन ९७
सुपक्क कदली रुइल बाहिरे तोरण * कनके रचित ध्वज भूषित बसन
जमके जमके ज्वले माणिक अपार * शेते नेते मंडित नगरी जातिष्कार ९८

श्रीराम आदि का अयोध्या लौट आना और भरत शत्रुघ्न की मामा के घर की ओर यात्रा

ब्रह्मा, इन्द्र, शिव जिनकें सेवक हैं, ऐसे जगत् के आधार रामचन्द्र की जय हो। सृष्टि, स्थिति और विनाश जिनकी अनुपम लीला हो, ऐसे राम के चरणों मे सदा प्रणाम करता हूँ ।। १४९३ ।। अपने स्वरूप को ढक कर, माया के वश में उन्होंने दशरथ के घर में लीलारूप अवतार लिया। ऐसे कितने ही काम उन्होने किये, जो मनुष्य के लिए सम्भव नही—जिसकी वर्णना सुनने पर महापापी भी उवर जाता है ।। १४९४ ।। लक्ष्मण सहित विश्वामित्र के साथ जाकर उन्होंने राक्षसों का विनाश कर उनके यज्ञ की रक्षा की। फिर ऋषि के साथ सानन्द मिथिला जाकर धनुष तोड़ा और सीता से विवाह किया ।। ९५ ।। हृषीकेश (राम) को परम सुन्दरी भार्या मिली तो परम उत्साह से उन्होने अयोध्या मे प्रवेश किया। चन्द्र को देखकर जिस प्रकार कुमुद खिल उठते हैं—राम को देखकर सारे लोग उसी प्रकार उल्लास से भर गये ।। ९६ ।। सुगन्धित व शीतल मलय पवन वहने लगा और फुलवाड़ी की सुगन्ध से मन प्रफुल्लित हो उठा। धन-जन द्वारा विचित्र रूप से मंडित यह सारे लोगो का राज्य यों लगने लगा मानों यहाँ स्वर्ग ही आ गया हो ।। ९७ ।। सुपक्व कदली फलों से तोरण शोभायमान थे, सुवर्णचित्रित वस्त्रों के ध्वज, जिन पर अपरिमित माणिक्य झिलमला रहे थे। इस प्रकार सारी नगरी सजावट से प्रकाशमान थी ।। ९८ ।। पुरुष रमणियो से अधिक आतुर हो उठे। नगर के पथ पर चलने

पुरुवे रमणी तंत मैल उसमिश * नगरर पथत याइबाक नाइ दिश
शङ्खपट हरिषर मादलर जाक * नन्दिनी निवाद बाद्य रावे बीरढाक१४९९
रमणीर बदन निर्म्मल शशधर * कुंडल युगल सुवलित दिनकर
तारागण सदृश माणिक सब ज्वले * अयोध्या नगरी देव भुवन तो बले१५००
घंटार शवदे हस्ती चले सहरिषे * आगे पाचे चलन्ते तुरंग सब ह्रेसे
चतुरंग दलत शवद कोलाहल * पूर्ब्बर कालत येन स्वर्गर आस्फाल१५०१
बिमान सदृश रथ चतुर्द्दिशे चले * नेमिर सन्धाने सबे नागलोक टले
उपरे शकति धनु नराच कटार * नयनत चमक खरश जातिष्कार१५०२
बिदगद जन तंत मिलिला आशेष * बाल बृद्ध तरुण आसिल देशेदेश
बन्दीगणे तुति पढ़े ब्राह्मणे आशीष * जय जय शवदे पूरिल दशोदिश ३
राम आगमन शुनि कौतूहल मने * कुन्दरूख जाले चाहे केहो नारीगणे
धौवलिर उपरत चड़िल युवती * कैलास शिखरे शोभे येहेन पार्ब्बती ४
सखीगण सम्बुधि बोलय बरनारी * रामर स्वरुप चित धरिते नपारि
राम मुखपद्म मोर नयन भ्रमर * बारिते नपारो भोग करे निरन्तर ५
कांचिर शवद नूपुरर रुण झुन * बर्णाइबेक केमने रामर रूप गुण
रम्भा तिलोत्तमा आरो उर्ब्बशी सुन्दरी * सीतार रूपक केहो नुहि सरिबरि ६
राम सीता आगमन देखि सर्ब्बलोके * थाने थाने उरुलि पारय जाके जाके
केहो नृत्य करे केहो आनन्द बधाव * नटी सबे नाचय करिया भंगीभाव ७

का रास्ता नही मिलता। हर्ष से भरा शंखनाद और मादलों पर थाप की ध्वनि ! नन्दिनी नामक गोमुख वाद्य और वीर ढाक (नगाड़ा) का निनाद ॥ १४९९ ॥ रमणियों के मुख निर्मल चन्द्रमा जैसे शोभित हैं। उनके युगल-कुंडल सूर्य के समान प्रभामान है। तारों के समान सारे मणि-माणिक्य चमक रहे है। अयोध्यानगरी को देवताओं का भुवन कहा जा रहा है ॥ १५०० ॥ घटियों के शब्द के साथ हाथी सहर्ष चल रहे है। आगे-पीछे सारे घोड़े हिनहिनाते हुए चल रहे है। चतुरग सेना के शव्द से कोलाहल उत्पन्न है, मानों प्राचीनकाल में स्वर्ग में तर्जन-गर्जन हो रहा हो ॥ १५०१ ॥ चारों दिशाओं में विमान के सदृश रथ चल रहे है। रथ के पहियों के आघात से नागलोक भी हिल उठता है। (रथ के) ऊपर शक्ति, धनुष, नराच और कटार (जैसे हथियार) रखे है; इतने धारदार और चमकते हुए है कि आँखें चौधिया जाती है ॥ १५०२ ॥ वहाँ जाने कितने विद्वान् विशेपज्ञ आकर एकत्र हुए, देश-देश से बच्चे बूढ़े जवान इकट्ठे होने लगे, भाट लोग स्तुतिपाठ करने लगे और ब्राह्मण आशीर्वाद देने लगे। दशों दिशाएँ जय-जयकार से गूँजने लगी ॥ ३ ॥ राम आ रहे है, सुनकर कौतूहल से कोई-कोई नारी गवाक्ष (झरोखो) की जालियो के भीतर से झाँकने लगी, तो कोई सफ़ेद अटारी पर चढ़ गई और यों शोभा देने लगी मानों पार्वती कैलाश शिखर पर शोभा दे रही है ॥ ४ ॥ श्रेष्ठनारी अपनी सखियों को सम्बोधित कर कहती है, 'राम का स्वरूप अपने चित्त में धारण नहीं कर पा रही हूँ। राम का मुख कमल के समान है और मेरे नयन भ्रमर के समान है। उनको मैं रोक नही पाती हूँ और वे (आँखे) निरन्तर भोग करती रहती है' ॥ ५ ॥ करधनी की ध्वनि और पैंजनियों की रुन-झुन किस प्रकार से राम के रूप और गुण का वर्णन करेंगी। रम्भा, तिलोत्तमा और सुन्दरी उर्वशी कोई भी सीता के रूप की बराबरी नही कर सकती ॥ ६ ॥ राम-सीता को आते देखकर सभी लोग जगह-जगह पर हुलूध्वनि कर उठते। कोई तो नृत्य करने लगता, तो कोई खुशी के मारे दौड़ने

रामक सीताक देखि गैला थाने थाने * नगरीर लोकक तुषिला दाने माने
सुवर्ण रजत रत्न यतेक सम्भार * रामक सीताक दिला यौतुक अपार ८
राम सीता रथे थित भैलन्त चौपथे * उर्म्मिला लक्ष्मण थित भैला एके रथे
हाट वाट एराइ गैला जंगाल चौपथ * कौशल्यार घरे चलि गैला दशरथ१५०९
कौशल्या गृहत कैला विविध आचार * कहिला, सुमन्त्र शुन वचन आमार
आगबाढ़ि सुमंत्र जुरिला जोरहात * राज राजेश्वर बुलि नमिलन्त माथ१५१०
दशरथे आज्ञा करिलन्त सुमन्त्रक * शीघ्रे गैया आन कुलनन्दन रामक
माथे धरि मन्त्री नृपतिर आज्ञा बाणी * राम सीता लक्ष्मणक मिलाइलन्त आनि ११
थापिलन्त गृहत सुवर्णमय घट * कन्यासवे पारिल वाटत नेत-पट
आपोनार आचार करिल नारीगणे * दशरथ थित भैला सहरिष मने १२
राम-सीता प्रवेशिला राजार मन्दिरि * भार्य्या समे सूर्य्य येन थित अस्त गिरि
नमिलन्त बापक आवर निज माव * कैकेयीर सुमित्रार नमिलन्त पाव १३
छय शत माव आर पंचाश वेकती * एके एके सवाहाक करिला प्रणति
श्रीराम लक्ष्मण आदि करि चारि भाइ * चारि कन्या लैया चलि गैला निज ठाइ १४
नारी मिलिलन्त यत कौशल्यार घर * सीतार रूपक केहो नोहे समसर
सीतार प्रभावे मुख मलिन सवार * पूर्णचन्द्र उदये नज्वले येन यार १५
काश्यपक अदितिक येन सुरपति * बापक मावक निते करिला भकति
देव द्विज आराधिया सन्तोषन करि * निजगुणे रंजिलन्त समस्ते नगरी १६

लगता। नर्त्तकियाँ हावभाव प्रदर्शन करती हुई नाचने लगती ॥ ७ ॥ राम और सीता को देखकर लोग अपने-अपने स्थान को लौट गये। नगरी के सारे लोगों को दान और मान द्वारा सन्तुष्ट किया गया। स्वर्ण-रजत और रत्न पर्याप्त माता में यौतुक के रूप में राम और सीता को दिया गया ॥ ८ ॥ राम सीता रथ मे बैठे चौराहे पर पहुँच गये। उर्मिला और लक्ष्मण एक ही रथ में स्थित हुए। वे हाट बाजार पार कर चौराहे के समीप पहुँच गये। दशरथ कौशल्या के घर चले गये ॥ ९ ॥ कौशल्या के गृह मे विविध आचार अनुष्ठित हुआ। (दशरथ ने) कहा, सुमंत्र! मेरी बात सुनो। आगे बढ़कर सुमन्त्र ने हाथ जोड़ लिये और राज राजेश्वर कहकर सिर झुका लिया ॥ १५१० ॥ दशरथ ने सुमंत्र को आज्ञा दी, झट जाकर कुलनन्दन राम को ले आओ। नृपति की आज्ञा सिर-माथे रखकर मन्त्री ने राम, सीता और लक्ष्मण को लाकर (राजा से) मिलाया ॥ १५११ ॥ घर मे सुवर्णमय घट स्थापित किया गया। सारी कन्याओं ने पथ पर रेशमी-वस्त्र विछा दिया। नारियो ने (कुलरीति के अनुसार) अपना स्त्रिआचार पूर्ण किया। फिर सहर्ष दशरथ के सम्मुख वे पहुँचे ॥ १२ ॥ राम और सीता ने राजा के मन्दिर में प्रवेश किया। भार्या के सहित (वे यो लग रहे थे) मानो सूर्य अस्ताचल पर स्थित हो। पिता और माता के पैरो मे नमन किया। कैकेयी और सुमित्रा के भी चरण छुए ॥ १३ ॥ छः सौ माताओं और पचास व्यक्तियों को एक-एक कर प्रणाम किया। श्रीराम, लक्ष्मण आदि चारो भाई चारो कन्याओ (पत्नियो) को साथ लेकर अपने-अपने स्थान चले गये ॥ १४ ॥ कौशल्या के घर में जितनी नारियाँ उपस्थित हुई उनमें से कोई भी सीता के समतुल्य नही। सीता के प्रभाव से सभी के चेहरे मलिन हो गये, जिस प्रकार पूर्णचन्द्र के उदय से तारे उज्वल नही रह जाते ॥ १५ ॥ मानो सुरपति इन्द्र कश्यप और अदिति को, पिता और माता को लाने मे भक्तिभाव दिखा रहे हो। देव और द्विज की आराधना कर उनको सन्तुष्ट कर अपने गुण से सारी नगरी को

चारि भाइ मिलि धर्म्मपथ अनुसरि * हरिषे आछन्त नानाविध भोग करि
मातुलक देखो भरतर भैल मन * तुलत लैलन्त प्राण भाइ शत्रुघन १७
रामर चरण दुइ नमस्कार करि * अनुज्ञा मागिला पाचे पुरांजलि धरि
प्रणामिला बापक आवर निज माव * पाइलन्त भरत गैया युद्धाजित ठाव १८
राजा युद्धाजिते तांके भाले सादरिल * मास कतिपय तथा भरते वंचिल
विविध सम्वाद तथा मिलिल बहुत * रामर काहिनी आवे शुनियो प्रस्तुत१५१९

राजा दशरथर ओचरत श्रीरामक युवराज पातिवलै प्रजासकलर अनुरोध

प्रजासबे वोलय हरिष करे मन * राम युवराज भैले साफल जीवन
धन्य उतपति तेवे नेत्रर साफल * जीवन्तते स्वर्ग महा मिलिवे मंगल१५२०
मन्त्री पुरोहित यत रामर भकत * वशिष्ठ प्रमुख्ये नृपतित अनुगत
मुख्य मुख्य पात्रे मिलि सम्मत करिल * दशरथ ओवारित सबहि मिलिल २१
सिंहासने वसिया आछन्त दशरथ * प्रतिहारे कैला गैया वृत्तान्त समस्त
यत मुख्य मुख्य जन तोमात भकत * हरिषे मिलिल आसि सिंह दुवारत २२
नयन कटाक्षे राजा करिला आदेश * द्वारी जने आनि सबे कराइला प्रवेश
बशिष्ठक देखि राजा चालिलन्त गाव * येन इन्द्रे नमिला गुरुर दुइ पाव २३
वशिष्ठ बसिला तथा आनन्द वदने * दशरथ, बसिलन्त रत्न सिंहासने
राजाक प्रणामि भक्ति करे सर्व्वजने * इन्द्रक येहेन तुति करे देवगणे २४

प्रसन्न किया ।। १६ ।। चारों भाई धर्मपथ का अनुसरण कर विभिन्न प्रकार (सुखों का) भोग कर आनन्द से रह रहे है। भरत के मन में आया कि मामा को देख आऊँ—साथ में उन्होंने प्राणप्रिय भाई शत्रुघ्न को ले लिया ।। १७ ।। दोनों ने राम के चरणों में नमन कर वाद में हाथ जोड़कर उनसे अनुज्ञा माँगी। अपने पिता और माता को प्रणाम किया, फिर भरत युद्धाजित के स्थान पर पहुँच गये ।। १८ ।। राजा युद्धाजित ने उनकी भलीभाँति आवभगत की। भरत ने वहाँ कई महीने व्यतीत किये। वहाँ कितने ही प्रकार के समाचार मिलते रहे। अब राम की कथा सुनने के लिए तैयार हो जाओ ।। १५१९ ।।

राजा दशरथ के निकट, श्रीराम को युवराज नियुक्त करने के लिए समस्त प्रजा का अनुरोध

सारी प्रजा प्रसन्नता से कहने लगी, राम के युवराज हो जाने पर हम लोगों का जीवन सफल हो जायगा। उनके जन्म लेने से हमलोग सब धन्य हो गये और हमारे नयन सार्थक हो गये। जीवित दशा में ही महामंगलमय स्वर्ग प्राप्त हो गया ।। १५२० ।। राम के भक्त जितने मंत्री और पुरोहित थे, वशिष्ठ आदि राजा के जो अनुगत मुख्य-मुख्य पात्र थे, वे लोग सब मिलकर एकमत हुए और दशरथ के महल मे जाकर सम्मिलित हुए ।। १५२१ ।। दशरथ सिंहासन पर विराजमान है। प्रतिहार (द्वारपाल) ने जाकर सारा विवरण कह सुनाया। जितने तुम्हारे मुख्य भक्तजन है वे सहर्ष सिंहद्वार पर समागत है ।। २२ ।। आँखों के इशारे से राजा ने (स्वीकृति का) आदेश दिया। द्वारपाल सभी को ले आया और उन सब ने अन्दर प्रवेश किया। वशिष्ठ को देखकर राजा उठकर चल पड़े और इन्द्र के समान अपने गुरु के दोनों चरणो का नमन किया ।। २३ ।। तब वशिष्ठ प्रसन्न मुख विरजामान हुए। रत्न-

समस्तरे भक्ति देखि दशरथ राय * बुलिल बचन पाचे समस्तके चाइ
तोमासार देखो आजि प्रसन्नवदन * किनो वाक्य बुलिते सवारो आछे मन २५
अनन्तरे पात्रलोके कृतांजलि धरि * राजाक मातिला पाचे नमस्कार करि
शुनियो गोसाइ निज पृथिवीपालक * राज राजेश्वर रघुवंशर तिलक २६
तोमार तनय राम साफल जीवन * निजगुणे रंजिलन्त नगरीर जन
देवर आगत आमि नोवोलोहो मिछा * राम युवराज हैवे समस्तर इच्छा २७
धर्म्मदुखे आतिशय पीड़ा पाया जन * मेघजल वृष्टिक येहेन करे मन
राम युवराज भैले मिले कौतूहल * होवय आमार तेवे जीवन साफल २८
हेन वाक्य शुनि राज सहरिष मन * धन्य धन्य प्रजा राजा बुलिला वचन
अनुग्रह आछे मोक जानिलोहो काज * अविलम्वे रामक करिवो युवराज१५२९

श्रीरामर अभिषेक आयोजन

फाल्गुन एराया भैल चैत्रर प्रवेश * वृक्षसव पुष्पित मंडित सब देश
इहाते रामक भाले अभिषेक करि * राज्यभार समर्पिवो अयोध्या नगरी१५३०
शुनियो वशिष्ठ कुलदेवता आमार * शीघ्रे मिलायोक आनि समस्ते सम्भार
राजार वचन सवे जानिल प्रस्तुत * शीघ्रे मिलाइलन्त आनि सम्भार वहुत ३१
दशरथे वोलन्त सुमंत्र मंत्रीवर * रामक रथत तुलि आनियो सत्वर
राजार आदेश मन्त्री माथात लैलन्त * रामक आनिया आति शीघ्रे मिलाइलन्त ३२

सिंहासन पर बैठे दशरथ को सबने प्रणाम किया, जिस प्रकार देवगण इन्द्र की स्तुति करते है ।। २४ ।। राजा दशरथ ने सब लोगों की भक्ति देखी, फिर सबको सम्बोधित करते हुए बोले। तुम सभी के मुख आज प्रसन्न दिखाई पड़ रहे है। कछ कहने के लिए सबका मन कर रहा है ।। २५ ।। इसके उपरान्त सारे पार्षदों ने कृतांजलि की और नमस्कार के उपरान्त राजा से कहा, हे स्वामिन्! तुम स्वयं पृथ्वी-पालक हो, राज-राजेश्वर हो तथा रघुवंश के तिलक हो ।। २६ ।। तुम्हारे वेटे राम का जीवन सफल है। उसने अपने गुण से नगरी की सारी जनता का मनोरंजन किया है। देव के सम्मुख हम झूठ नही कह रहे है—सभी लोगों की इच्छा है कि राम युवराज हो जायँ ।। १५२७ ।। घाम मे पसीने से तरबतर हो कष्ट पाती हुई जनता का मन जिस प्रकार बादल और वर्षा की इच्छा करता है, (उसी प्रकार हमारी अभिलाषा है कि) राम युवराज वने हम लोगों का कौतूहल पूर्ण हो और जीवन सफल हो ।। १५२८ ।। ऐसा वाक्य सुनकर राजा आनन्दमग्न हो बोल पड़े, धन्य है ऐसे राजा और प्रजा। मुझपर आप लोगों का अनुग्रह है कि मैने अपना काम जान लिया—शीघ्र ही मै राम को युवराज वनाऊँगा ।। १५२९ ।।

श्रीराम के अभिषक की व्यवस्था

फागुन पार कर चैत का महीना आ गया। सारे वृक्षों पर फूल आ गये और सारा देश सुशोभित हो उठा। इसी बीच राम का मंगलमय अभिषेक कर उस पर अयोध्या नगरी का राज्यभार सौंप दूं ।। १५३० ।। हे मेरे कुलदेव वशिष्ठ सुनो! जल्द से जल्द सारा साज-सामान उपस्थित हो जाय, ऐसी व्यवस्था करो। सभी लोगों ने तत्परता से राजा का वचन सुना और शीघ्र ही पर्याप्त साज-सामान लाकर इकट्ठा किया ।। १५३१ ।। दशरथ ने कहा, हे मंत्रिवर सुमन्त, जाकर राम को रथ पर बिठा

प्रासाद उपरे राजा माथा तुलि चाइल * हृदय नन्दन श्रीरामक भेट पाइल
गन्धर्व्व राजार समसर मनोहर * सुकीर्त्ति बिदित दशोदिश निरन्तर ३३
प्रलम्बित बाहु मत्त गजर गमन * कोमल कमल दल समान नयन
दशरथे न करिल चक्षुर निमेष * पुत्रमुख देखि भैला हरिष आशेष ३४
प्रासाद नामत रथ करि परित्याग * पाचत सुमन्त्र रामचन्द्र भैला आग
बापक देखिया राम प्रासाद उपरे * कुबेर आछन्त येन कैलास शिखरे ३५
प्रदक्षिण करि कृतांजलि करिलन्त * येन नलकुबेरे चरण बन्दिलन्त
रामक आनिया राजा आलिंगि धरिला * गुण रूप बर्णाइ माथे चुम्बन करिला ३६
सुवर्णर आसनक करिला आदेश * ताहाते बसिल रामचन्द्र हृषीकेश
रामर दीपिति सिंहासनत लागिल * रबिर किरणे येन मेरु उज्ज्वलिल ३७
रामक देखिला राजा हरषित मने * दर्पणत प्रतिबिम्ब येहेन आपने
सभाखान भैल येन निर्म्मल गगन * राजासब भैल येन नक्षत्र शोभन ३८ ३८
राघवर कान्ति चन्द्र समान बलिल * स्वर्गर खंडेक येन भूमित परिल
अल्प हास्य करिया बोलन्त दशरथ * शुनियोक श्रीराम तोमार हितपथ१५३९
जनक पालिबा बुजिबाहा राज काज * गुण्य योगे तोमाक पातिबो युवराज
बुलिते नलागे तुमि शोभन चरित * स्नेहरूपे त्रिजगते पालिबाहा हित१५४०
आपोन परक किछु नेदेखिबि भिन * जन प्रतिपालिबे जानिबे छयगुण
सन्धि बिग्रहर तत्व आवर आसन * द्वैध सख्य यान छयगुणे दिबे मन१५४१

कर ले आओ। राजा का आदेश शिरोधार्य कर मंत्री ने तुरंत राम को लाकर मिलाया ॥ ३२ ॥ महल पर से राजा ने सिर उठाकर देखा तो हृदयनन्दन राम पर दृष्टि गई। गन्धर्वराजा के समान वह मनोहर है और उसका सुयश दशों दिशाओं में विदित है ॥ ३३ ॥ उसकी बाहें लम्बी है और उसकी चाल मदमत्त गज के समान है। नयन कोमल कमल की पंखुड़ियों के समान है। दशरथ अपलक निहारते रह गये। पुत्र का मुख देखकर उनको अत्यन्त हर्ष हुआ ॥ ३४ ॥ रथ छोड़कर महल में (रामचन्द्र) उतरे। पीछे-पीछे सुमंत्र और आगे-आगे रामचन्द्र। राम ने पिता को महल के ऊपर देखा, मानों कैलाश पर्वत के शिखर पर साक्षात् कुवेर खड़े हों ॥ ३५ ॥ प्रदक्षिणा कर उसने कृतांजलि की मानों नल-कुवेर ने चरणों की वन्दना की। राम को राजा ने गले लगा लिया और उसके रूप और गुणों की वर्णना कर उसके सिर पर चुम्बन किया ॥ ३६ ॥ उन्होंने स्वर्णनिर्मित आसन के लिए आदेश किया। उस पर हृषीकेश रामचन्द्र बैठ गये। राम की ज्योति सिंहासन पर छा गई; रवि की किरणों से मानों मेरु पर्वत उज्वल हो उठा ॥ ३७ ॥ राजा ने हर्ष भरे मन से राम को देखा, मानों आईने मे वे अपनी ही परछाई देख रहे हों। सभा मानों निर्मल गगन बन गई और सारे राजा उसमें नक्षत्र की तरह शोभा देने लगे ॥ ३८ ॥ राघव की सुन्दरता चन्द्रमा के समान प्रतीत हुई, मानों स्वर्ग का एक खंड धरती पर आ गिरा हो। मुस्करा कर दशरथ ने कहा, राम अपना मंगलमय पथ सुनो ॥ १५३९ ॥ राज-काज को समझकर जनता का पालन करना। शुभ घडी में मैं तुमको युवराज के रूप में प्रतिष्ठित करूँगा। यह कहने की आवश्यकता नही कि तुम सच्चरित्र हो, तीनों भुवन में स्नेह के साथ सबका कल्याण करोगे ॥ १५४० ॥ अपने और पराये मे कोई फ़र्क नही देखोगे, जनता का प्रतिपालन करोगे, सन्धि-विग्रह का तत्व और आसन, द्वैध (समयानुसार दुधारी नीति), मित्रता और यान (अभियान), इन छह गुणों के प्रति ध्यान दोगे ॥ १५४१ ॥ इन गुणों में ही राजा के लक्षण

एहि छय गुणे हय राजार लक्षण * सर्व्वकाले सुखे तेवे वंचे राजागण
शुन पुत्र श्रीराम आवर कहो विधि * एहि सात प्रकारे राज्यर होवे सिद्धि ४२
आपुनि पालिव राज्य आरो मन्त्रीगण * बहुमित्र करिव संचिव बहुधन
राज्य देश हैव आनो नाना थान * राजा भैले करिव सैन्यक बहुमान ४३
परजन समे येवे राजा करे संग * हेन अष्ट प्रकारे राज्यर होवे अंग
यिबा राज आक जाने तार नाहि भय * आछोक नृपति त्रैलोक्यतो पावे जय ४४
ज्येष्ठ महादइ मोर साफला कौशल्या * याहार गर्भत तुमि उतपति भैला
कुलर नन्दन बाप मोर वर भाग * तुमि राजा हैवाहा जनर अनुराग ४५
बृद्ध भैलो करिलो राज्यर उपभोग * यज्ञ शत करिलो वनर उपयोग
देव पितृ पुत्रर नभैल ऋण शेष * प्रजाक पालिलो भाले अनेक विशेष ४६
स्वप्नेक देखिया विचलित मोर चित * भूमिकम्पे निर्घात परिल पृथिवीत
दुइ ग्रह मन्द मोर राहुरे मंगले * दैवज्ञे गणिया मोत कहिल सकले ४७
हेन उपघातत राजार काल हय * प्रजार अनिष्ट आसि मिलिल निश्चय
यावे नैयो जाने लोके इटो सब काज * कालि शुभ दिनत तोमाक दिवो राज ४८
तोमाक भकति मने भरत कुमारे * तोमारेसे आज्ञा पालि अन्नपान करे
तथापितो नुबुजोहो कुमार स्वभाव * शीघ्रे राज्य लैयोक देशत नाहि याव १५४९
कालि राजा हैवा चलो आपोनार थान * सीताये सहिते चाहियोक अनुष्ठान
राजार आदेश रामे माथे तुलि लैला * कौशल्यार ठावक सत्वरे चलि गैला १५५०

निहित है। सभी युग मे राजा लोग सुख से इन्ही गुणों का अभ्यास करते है। हे पुत्र श्रीराम, और सुनो, इन्ही सात प्रकार से राज्य को सिद्धि प्राप्त होगी ।। १५४२ ।। मंत्रियों सहित स्वय राज्य का पालन करोगे, अधिक सख्या मे मित्र वनाओगे, काफ़ी धन का संचय करोगे। अन्यान्य स्थानों मे भी तुम्हारे राज्य का विस्तार होगा। राजा वन जाने के वाद सेना मे वृद्धि करोगे ।। ४३ ।। अन्य जनों के साथ जो राजा मित्रता करता है। इन आठो प्रकारो से राज्य का अग (संचालित) करेगा। जो राजा यह जान लेगा कि उसको कोई भय नही है वह नृपति वना रहेगा और तीनों लोकों में उसकी विजय होगी ।। ४४ ।। सफल कौशल्या मेरी सवसे वड़ी महारानी है जिसके गर्भ से तुमने जन्म लिया। वेटा, मेरा अहोभाग्य है कि तुम मेरे कुल के नन्दन हो। जनता की इच्छा है कि तुम राजा वनो ।। ४५ ।। मैं वृद्ध हो गया हूँ, राज्य का उपभोग कर चुका हूँ, सौ यज्ञ भी कर चुका हूँ, अव वन (वानप्रस्थ) के योग्य वन गया हूँ। देव, पिता और पुत्र का ऋण अभी तक पूरा नही हुआ। भलीभाँति विशेप रूप से प्रजा का पालन भी किया ।। ४६ ।। एक स्वप्न देखकर मेरा चित्त व्याकुल है। धरती पर हालाडोला आ गया है। राहु और मंगल, ये दो ग्रह मेरे वुरे है। ज्योतिपी ने गणना करके मुझसे कहा है ।। ४७ ।। ऐसे असगुन से राजा की मृत्यु होती है और निश्चयरूप से प्रजा का भी अमंगल होता है। जव तक लोगों को इन सव वातों का पता नही चलता (तव तक अच्छा है)। कल ही शुभ-दिन है—तुमको राज्य दे दूँगा ।। ४८ ।। तुम्हारे प्रति कुमार भरत के मन में भक्ति है। तुम्हारी सम्मति लेकर ही वह अन्न-जल ग्रहण करता है। फिर भी कुमारों का स्वभाव नहीं समझ सकता हूँ। जव तक वह देश मे नहीं है तव तक तुरन्त राज्य ले लो ।। ४९ ।। कल तुम राजा होगे, जाओ अपने स्थान को चले जाओ। सीता के सहित ही यह अनुष्ठान होगा। राजा का आदेश राम ने शिरोधार्य कर लिया।

राम अभिषेक शुनि सहरिष मने * आसिया आछन्त आगे सुमित्रा लक्ष्मणे
कथा शुनि कौशल्यायो शुक्ल वस्त्र धरि * आछन्त देवर घरे कृतांजलि करि१५५१

एकान्तिक ध्यान मने जगतर माव * विष्णुक पूजन्ते रामे नमिलन्त पाव
शुनिला कि माव मोर कार्य्य सविशेष * प्रजा पालिवाक वापे करिला आदेश ५२
हेन शुनि कौशल्यार परम हरिष * चिरकाल जीव बुलि करिला आशीष
धन्य मोर जीवन फलिल मनोरथ * तुषिला तोमार गुणे राजा दशरथ ५३
साफल बिष्णुत आमि भकति करिल * कर्म्मगत लक्ष्मी आसि आपुनि बरिल
देवगण सहिते बिष्णुये देन्त वर * चिरकाल जीव बुढ़ा राजा राजेश्वर ५४

श्रीरामे बोलन्त कुखिधर मोर माव * कालि राजा हैवोहो जनाइलो तयु पाव
आशीर्व्वाद दिया माव करियो आश्वास * सीता समन्तिते मोर आजि अधिवास ५५
मांगल्य दियोक माव स्त्रीर आचार * विघिनि बिनाश हौक सीतार आमार
राघवे बोलन्त शुन कनिष्ठ लखाइ * प्राण सम तुमि मोर सुभाषित भाइ ५६

आमार राज्यत तोर नाहि विपरीत * अविकले भोग कर शोभन चरित
लक्ष्मणक सम्बुधि आवर यत माव * शीघ्र बेगे चलिया गैलन्त निज ठाव ५७
बसिलन्त सुवर्णर आसन बिशेषे * बशिष्ठ गैलन्त चलि राजार आदेशे
सादरिल तांक रामे सहरिष मने * चलिलन्त कौतूहले ब्रह्मार नन्दने ५८
नृपतिये पठाइ दिला मोक तयु पाश * कालि राजा हैबा राम आजि अधिवास
अधिवास कराइ गुरु चलि गैला रथे * देखिलन्त वशिष्ठे आनन्द सब पथे१५५९

वह तुरन्त कौशल्या के स्थान के लिए चल पड़े ।। १५५० ।। राम का अभिषेक सुनकर सुमित्रा और लक्ष्मण सहर्ष वहाँ आ गये। यह सुनकर कौशल्या भी श्वेत वस्त्र पहनकर देवता के कक्ष में कृतांजलि बैठी रहीं ।। १५५१ ।। संसार की माता एकाग्रमन से ध्यान करती विष्णु की पूजा कर रही है कि राम ने जाकर उनके चरणो मे प्रणाम किया। माँ, क्या तुमने मेरा विशेष कार्य सुना। पिताजी ने प्रजा-पालन के लिए आदेश किया है ।। ५२ ।। ऐसा सुनकर कौशल्या को बड़ा हर्ष हुआ। उन्होंने 'युग-युग जिओ' कहकर आशीर्वाद किया। मेरा जीवन धन्य है कि मेरा मनोरथ पूर्ण हुआ। तुमने अपने गुणों से राजा दशरथ को तुष्ट किया ।। ५३ ।। विष्णु में मेरी भक्ति आज सफल हुई। कर्म में रत लक्ष्मी ने आकर स्वयं तुम्हारा वरण किया। सारे देवताओं सहित विष्णु ने वर दिया—राजराजेश्वर बनकर तुम युग-युग जीवित रहो ।। ५४ ।। श्रीराम ने कहा, हे मेरी गर्भधारिणी जननी, तुम्हारे चरणो में निवेदन करता हूँ कि कल मैं राजा होऊँगा। माँ, मुझे आश्वासन देकर आशीर्वाद करो। सीता-सहित आज मेरा अधिवास है ।। ५५ ।। स्त्री-आचार पालन कर माँ मुझे मांगलिक देना ताकि मेरे और सीता के विघ्न दूर हों। रामचन्द्र ने कहा, हे लखन सुनो, तुम मेरे प्राणों के समान मधुरभाषी भाई हो ।। ५६ ।। मेरे राज्य में तुम्हारा कोई अनहित नही होगा। हे सच्चरित्र, तुम अविकल चित्त हो उसका भोग करो। लक्ष्मण और अन्य माँओं को सम्बोधित कर वे द्रुत गति से अपने स्थान चले गये ।। ५७ ।। स्वर्ण-निर्मित विशिष्ट आसन पर वे बैठ गये। राजा के आदेश से वशिष्ठ वहाँ चले गये। राम ने उनका सहर्ष सादर स्वागत किया। ब्रह्मा के नन्दन कौतूहल से चल पड़े ।। ५८ ।। नृपति ने मुझे तुम्हारे पास भेज दिया है। राम कल तुम राजा बनोगे, आज तुम्हारा अधिवास है। अधिवास (का अनुष्ठान) करा कर गुरु रथ पर चले गये। वशिष्ठ ने मार्ग में सर्वत्र आनन्द ही आनन्द देखा ।। ५९ ।।

निरन्तरे प्रजा बोले रात्रि परिहरि * राम अभिषेकक देखिवो नेत्र भरि
तेवेसे आमार हैबे साफल जीवन * करे कौतूहल अयोध्यार यत जन१५६०
नगरी जनर वाक्य शुनिया आशेष * राजात कहिया गुरु गृहत प्रवेश
बशिष्ठर वाक्य रामे शिरत धरिल * वेदमंत्रे अगनित आहुति करिल ६१
आहुतिर शेषे रामे आनन्दित मने * देवघरे थाकिलन्त कुशर शयने
रात्रि प्रहरेक थिते रामे चालि गाव * शरीरत अलंकार पिन्धि नाना भाव ६२
ऊषा काल भैल जानि बिधिर बिधाने * पूर्व्व सन्ध्या उपासिल हरिक धियाने
आनो सब नियमक करि एक चिते * आनन्दे रहिला राम सीता समन्विते ६३
निरन्तरे प्रजागणे मनत कौतुके * नगरीक अलंकृत करिला उत्सुके
विचित्र पताका ध्वज तुलिया धरिल * हाट बाट पुष्पे गन्धे धूपे आवरिल ६४
जीवन साफल प्रजा बोले निरन्तर * रामचन्द्र हैब आजि राज राजेश्वर
चिरकाला जीव बुढ़ा राजा दशरथ * याहार प्रसादे साफलिल मनोरथ ६५
सूर्य्यर वंशत धन्य भैला उतपति * राघवक राज्य दिते यार भैल मति
राम अभिषेक शुनि सहरिष मने * नगरी भरिल आसि आनो देशीजने ६६
हासो हासो करे पुरी अयोध्या सम्प्रति * नृत्य गीत वाद्ये येन देखि अम्रावती

मन्थरार कैकेयीक कुमंत्रणा दान

कैकेयीर कुबुजी मन्थरा तार नाम * प्रासाद उपरे चढ़ि देखे अनुपाम१५६७

प्रजा निरन्तर कह रही है, रात समाप्ति पर, प्रभात होते ही राम का अभिषेक नयन भर कर देखेंगे। तभी मेरा जीवन सफल होगा। अयोध्या की सारी जनता कौतूहल से भरी है ॥ १५६० ॥ नगरी के जन-साधारण की बाते अन्त तक सुनकर और राजा से वह बता कर, गुरु ने गृह में प्रवेश किया। राम ने वशिष्ठ का वाक्य शिरोधार्य किया और वेदमन्त्र सहित असख्य आहुति चढ़ाई ॥ १५६१ ॥ आहुति के अन्त मे राम सानन्द देवता के कक्ष मे कुश के विस्तर पर पड़े रहे। पहर भर रात रहते राम ने चलकर सारे शरीर पर तरह-तरह के आभूषण पहन लिये ॥ १५६२ ॥ विधि के विधान के अनुसार ऊपाकाल उपस्थित हुआ जानकर, हरि का ध्यान कर, पूर्व-संध्या का अनुष्ठान किया। और सारे नियमों का एकचित्त पालन कर राम सीता के सहित आनन्द से रहे ॥ ६३ ॥ कौतुक भरे मन से सारे प्रजा जन निरन्तर उत्साह से नगरी को अलंकृत करते रहे। उन्होने विचित्र ध्वज व पताका फहराया और हाट-बाट को फूल और धूप की सुगन्ध से भर दिया ॥ ६४ ॥ निरन्तर प्रजा कहने लगी कि जीवन सफल है। आज रामचन्द्र राज-राजेश्वर होगे, हे वृद्ध राजा दशरथ ! तुम चिरकाल जिओ—तुम्हारे ही प्रसाद से हम सबका मनोरथ पूर्ण हुआ ॥ ६५ ॥ सूर्यवंश मे तुम्हारा जन्म धन्य हुआ कि राम को राज्य देने मे तुम्हारी मति हुई। राम का अभिपेक होगा जानकर अन्यान्य देश के लोग भी आकर नगरी में भर गये ॥ १५६६ ॥ इस समय अयोध्यापुरी मानो हास्यरत है। नृत्य-गीत बाजा-गाजा आदि से वह अमरावती सी लगने लगी है ॥

मंथरा द्वारा कैकेयी को कुपरामर्श देना

कैकेयी की कुवड़ी (दासी) का नाम है मंथरा। वह महल के ऊपर चढ़कर अद्‌भुत (दृश्य) देखने लगी ॥ १५६७ ॥ नगरी के हाट और पथ लोगों से भर गये

हाट वाट नगरी पूरिल सर्व्वजने * देवगणे क्रीड़े येन स्वर्गर भुवने
केहो गावे केहो रावे केहो करे रोल * आउरे आउरे हरिषे धरिया कोले कोल ६८
नृत्य गीत शवद वाजय वाद्य भंड * पताका तोरण ध्वज चिन्ह चौंडा दंड
भरतर धाइत कुजीये पुछे काज * विपरीत रंग देखो ब्राह्मण समाज१५६९
आनन्द उत्साह नगरीत भैल जने * जय नन्दि घोषे लोके सहरिष मने
कौशल्या राजार माव राजात विनय * मेन स्वर्ग जनर आनन्द जय जय१५७०
धाइ बोले कुजी तइ नलक्षिलि काज * दशरथे रामक करन्त युवराज
एतेके कौशल्या भैल आनन्दित चित्त * तनयर आनन्द देखिवा निते नित१५७१
धाइर वचन शुनि कुजीये खंगाइल * आथे वेथे गैया कैकेयीर पाश पाइल
उठ उठ दुहा शयनक परिहर * तोहोर उपरे कथा वर आथान्तर ७२
सचकित मने शय्या हन्ते चालि गाव * कुजीत शोधत कथा भरतर माव
शुनि बोलो कुजी तोर केने देखो मन * किनो आथान्तर कथा कह एतिक्षण ७३
कैकेयीक मन्थरा वुलिल पाचे वाणी * मिलिल तोमार क्षय किसक नजानि
तुमि येन सुभागिनी जानिलोहो काज * दशरथे रामक करन्त युवराज ७४
अकल्याण वर आसि मिलिल दुर्घोर * इटो दुख सागरे उद्धार नाहि तोर
किनो पाप करिलो यौतुके दिला मोक * सतिनीर चेड़ी हैवी देखिवोहो तोक ७५
राम अभिषेक शुनि सहरिष मने * ग्रीवार काढ़िया हार दिला तेतिक्षणे
राज्य देउक रामक नृपति दशरथ * लउ कुजी प्रसाद फलिल मनोरथ ७६

हैं, मानों स्वर्ग के भुवन में देवता क्रीड़ा कर रहे हैं। कोई गा रहा है, तो कोई वजा रहा है, तो कोई शोर मचा रहा है। एक दूसरे को वाँहों में भरकर लोग आलिंगन कर रहे हैं ॥ १५६८ ॥ चारों ओर नृत्य और गीत हो रहा है, वाजे वजने का शव्द हो रहा है। तोरणों पर पताका और ध्वजों के दंड शोभा पा रहे हैं। भरत की धाय से कुवड़ी ने पूछा, यह वात क्या है? ब्राह्मण समाज में यह विपरीत रंग देख रही हूँ ॥ १५६९ ॥ नगरी के जन-जन में आनन्द और उत्साह है। लोग उल्लास से जयनन्दि की घोषणा कर रहे हैं। कौशल्ला राजा की माँ है और लोग राजा को विनय प्रदर्शित कर रहे हैं। मानों स्वर्ग के लोग आनन्द से जयध्वनि कर रहे हैं ॥ ७० ॥ धाई ने कहा, कुवड़ी तूने असली वात नहीं देखी। दशरथ राम को युवराज वना रहे हैं। इससे कौशल्या का हृदय आनन्द से भर गया है। अपने पुत्र का आनन्द वह नित्य-प्रति देखा करेगी ॥ ७१ ॥ धाई की वातों पर कुवड़ी को गुस्सा आ गया। झटपट वह कैकेयी के पास जा पहुँची। उठो उठो वेटी, विस्तर छोड़ो, तुझ पर वहुत वड़ी विपत्ति आन पड़ी है ॥ ७२ ॥ चौंक कर विस्तर से उठने के वाद भरत की माँ ने कुवड़ी से पूछा, सुन कुवड़ी, तुझसे मैं पूछती हूँ, तूने क्या देखा है? अव वता कि कौन सी विपत्ति आ पड़ी है ॥ ७३ ॥ इसके पश्चात् मंथरा ने कैकेयी से कहा, जाने कैसे तुम्हारी ऐसी हानि आ पड़ी। तुम जैसी सौभाग्यवती सारा

क्रोधत खंगिल कुजी जाज्ज्वल्य समान * आछारिया पेलाइलेक कँकेयीर दान
हाते हाते पिषय बजाया दान्ते दान्त * आसज शुनिया येन तेलीयार जान्त ७७
सापे खाया मारोक गरल नोहे खाहा * गले हांडि बान्धि नोहे मरिबाक याहा
आवे जाना भैल तोर अधम विपत्ति * आपद कालत तोर हेन भैल मति ७८
प्रलये हरिष तोर पाच नमनस * चुन्देवासे तल यास पावक गिलस
येवे तोर जीवेक स्वपुत्र परिवार * राघवर राज्य दिते राजाक निवार१५७९
दशरथ सागर तरंगी नदी तइ * अलपते शुखाइ याइवि जानिलोहो मइ
प्रिय गंगा कौशल्या गम्भीर वेगे वहे * राम अभिषेकक वेकत करि कहे१५८०
कँकेयी बोलन्त कुजी हेन से दारुण * मोहोर आगत आसि बोल निकारुण
राम राजा भैले मन्द नलखोहो आन * भातृक देखिव रामे पुत्रर समान१५८१
गुणर सागर राम देखिलि तइ किस * अमृत कुंडत कुजी तइ ढाल विष
ज्येष्ठ तनयक दिव राज्य धन कोष * दशरथ राजार नेदेखोहो किछु दोष ८२
गुणर मन्दिर राम बाप शुद्धमति * कौशल्यातोधिक मोत करय भकति
सत्ये सत्ये बोलो किछु नाइ अन्ययथा * भरततोधिक मोर रामकेसे वेथा ८३
कतोकाल राज्य भुञ्जि सहरिष नने * भरतत रामे राज्य सम्पिव आपुने
कुजी बोले भाल तुमि रामक बखान * राजवंशे उतपति कि छुरे नजान ८४
राम राजा भैले पाचे ताहार तनय * पुत्र पौत्र वंशे राजा हैवेक निश्चय
दुयोकुले राजा तार नजानस काज * कहित शुनिलि भायेकक दिये राज१५८५

हुए दाँतो से दाँत पीसने लगी। बुरा-भला सुनकर मानों कोई जोर से चक्की चलाने लगा ॥ ७७ ॥ साँप काट कर मार डाले, व विष खा लिया जाय। वर्ना गले में हाँडी वाँधकर मर जाया जाय। अब जान लिया कि तुझ पर बड़ी बुरी विपत्ति आ पड़ी है और इस विपद के समय तेरी मति मारी गई है ॥ ७८ ॥ तुझे प्रलय से हर्ष होता है। जड़मूल से तेरा नाश हो रहा है। तू आग निगल रही है। यदि अपने पुत्र और परिवार के साथ जीना है तो राजा को राम के हाथ राज्य सौंपने से रोक दे ॥ १५७९ ॥ दशरथ सागर के समान है और तू तरंग वाली नदी है। मुझे यह मालूम हो गया कि तू थोड़े में ही सूख जायगी। प्रिय गंगा कौशल्या गंभीर वेग से वह रही है। राम के अभिषेक के बारे में प्रकट रूप से कह रही है ॥ १५८० ॥ कैंकेयी ने कहा, कुबड़ी तू मेरे पास आकर ऐसी भयानक निर्दय बातें कर रही है! राम के राजा होने पर कुछ भी बुरा नही होगा। अन्य भाइयों को राम. अपने पुत्र के समान देखेगा ॥ १५८१ ॥ गुण के सागर राम में तूने क्या देखा? अमृत के कुड मे कुबड़ी तू जहर डाल रही है। अपने सबसे बड़े पुत्र को राजा राज्य धन और राजकोष देगा। इसमें राजा दशरथ का मै कोई दोष नही देखती हूँ ॥ ८२ ॥ राम गुणो का मन्दिर है और (उसका) पिता निर्मल चरित्र का है। (राम) कौशल्या से भी अधिक मेरा आदर करता है। मैं सच-सच बोल रही हूँ, इसमें कोई अन्यथा नही; मेरा स्नेह भरत से अधिक राम पर है ॥ ८३ ॥ आनन्द से कितने ही काल तक राज्य भोग करने के बाद राम स्वय ही भरत को राज्य सौंप देगा। कुबडी ने कहा, वाह! राम के बारे मे तुम खूब बखान रही हो। राजवंश में जन्म लेकर भी तुम कुछ नही जानती ॥ ८४ ॥ राम के राजा होने पर उसके पश्चात् उसका पुत्र, पौत्र और अन्य वंशधर अवश्य ही राजा होगे। दोनों कुल (पितृ-कुल व पति-कुल) राजवंश होने पर भी उनका काम नही जानती हो। कहाँ से सुन लिया कि भाई, भाई को राज्य दे देगा ॥ ८५ ॥ तुम्हारे बाप का भाई संसार में विदित है। उसको

तोहोर बापर भाइ जगत बिदित * तांक राज्य नेदिया थापिला युद्धजित
हेन सब जानि तोर मति बिपरीत * बुद्धि हत भैले बोलो नुशुनस हित ८६
सतिनीर पोर गुण बखानस किस * मुखत अमृत तार हृदयत बिष
आंगारक दुग्धे करे शतेक क्षालन * तथापितो नेरय स्वभाव काल वर्ण ८७
राजा भैले राघव भरत बने जाइब * रामर हातत नुहि प्राण सुजाइब
मोर बोल नुशुनस नुबुजस काज * सकुटुम्बे जानिलो देशर भैलि बाज१५८८

मन्थरार कथामते दशरथर ओचरत कैकेयीर बर भिक्षा आरु दशरथर खेद

हेन शुनि कैकेयीर बिहृरिल मन * बोलन्त मन्थरा तोर साफल जीवन
रामक गुचाया भरतक दिबो देश * कोनबा उपाय फले बुलियो बिशेष१५८९
कुजी बोले कैकेयी हरिष कर मन * एके उपदेशे राम चलि जाइब बन
आलखनी कुंजीत सुधिलि तइ काज * आर बुद्धि बोलोहो भरते पाइब राज१५९०
एतेक वचन शुनि भरतर माव * बुलिओ उपाय बुलि चालिलेक गाव
भरत नृपति भैले तइ हैवि सुखी * अन्तेषपुरत तोक करिबो प्रमुखी ९१
राजा भैले भरत कीर्त्तिक तोक निबो * तोर कुज गुटि शुद्ध सुवर्णे बान्धिबो
बेटी शत दिवो आरो रत्न अलंकार * ग्रीबात तोहोर दिबो सातेसरि हार ९२
पद्मकेशरर वर्ण प्रिय दरिशन * उरुस्थल लखि तोर अति सुशोभन
उन्नत नासिका मुख देखिया स्वभाव * कुज गुचि देखि हेन सुवर्ण सराव ९३

राज्य न देकर उसने युद्धजित को स्थापित किया। ऐसा जान पड़ता है कि तुम्हारी बुद्धि मारी गई है। मति तेरी विपरीत हो जाने के कारण मै जो कहती हूँ वह हित तुम नहीं सुनती ॥ ८६ ॥ सौत के बेटे का गुण कैसे बखान रही हो। उसके मुँह मे अमृत है और हृदय में विष। कोयले को सौ बार दूध से धोने पर भी वह अपना स्वभाव यानी काला रग त्याग नही करता है ॥ ८७ ॥ राम राजा बनने पर भरत वन चला जायगा, नही तो राम के हाथ प्राण दे देना पड़ेगा। मेरी बात तू सुनती नही और न अपना कर्त्तव्य समझती है। मुझे यह प्रतीत हो रहा है कि तू सपरिवार देश के बाहर हो गई ॥ १५८८ ॥

मंथरा के कथनानुसार दशरथ के पास कैकेयी की वर-भिक्षा और दशरथ का खेद

ऐसा सुनकर कैकेयी का मन भटक गया। वह बोली, मथरा तेरा जीवन सफल है। राम को हटाकर भरत को देश दूँ, तो किस उपाय से—स्पष्ट बता ॥ १५८९ ॥ कुवड़ी ने कहा, कैकेयी, तू अपने मन को प्रसन्न कर। एक ही उपदेश पर राम वन चला जायगा। कुलक्षणा मंथरा कुवड़ी से तूने काम पूछा है। दूसरी बुद्धि तुझे बताऊँ कि भरत को राज्य मिल जायगा ॥ १५९० ॥ इतना वचन सुनकर भरत की माँ ने बढ़कर पूछा, बताओ वह उपाय। भरत के राजा बनने पर तू सुखी होगी। अन्तःपुर मे तुझे प्रमुख बना दूँगी ॥ १५९१ ॥ भरत के राजा बनने पर तुझे यश मिलेगा। तेरा समूचा कूबड़ सोने से मढ़वा दूँगी। सौ लड़कियाँ दूँगी और रत्न-आभूपण भी। तेरे गले में सात लड़ों वाला हार दूँगी ॥ ९२ ॥ तेरा रंग कमल के

आन सब कुबुजीर हियाखान खाल * ग्रीवा गोट नलखिय पेचा हेन गाल
पेट गोट खाल आति अशोभन देखि * इसब दोषक तोर किछुवे नलखि ९४
तोहोर उदर कृश सरस जघन * शोभन यौवन देखि युवत मोहन
आगत थाकिले मन करय उल्लास * लीला हंसी येन केलि करतेहि यास ९५
कुजी बोले उपाय शुनियो तोर हित * यिमते जिनिवि राजा दशरथ चित
पुरणि कथाक तइ सुमरण कर * राजा बुलियाछे तोक दिवो दुइ वर ९६
देवासुर रण बर मिलिल पूर्व्वत * जिनिला देवक रणे असुर समस्त
महेन्द्रर सखा भैल दशरथ राय * भंगाया असुर वल खेदाइला लीलाइ ९७
युद्ध जिनि आसि पाचे भैलन्त नृपिति * आगवाढ़ि कैला तुमि राजात भकति
वर दुइ दिवाक राजार भैल मन * तुमिओ बुलिला वर लैवो आनखन ९८
क्रोधघरे थाकियो मलिन वस्त्र लैया * माटित वस्त्रक पारि विमन करिया
कोप करि थाकिवि मुकुत करि केश * राजा आसि चाटु पाटु बुलिव अशेष१५९९
रत्न मणि मानिबन्त निधिर भांडार * यतेक मानिव ताक नकरिवि सार
वाक्ये छान्दि नृपतिक शपत कराइबि * हेन बुद्धि कैले तइ दुयो वर पाइबि१६००
एक बर मागि भरतक दिबि राज * राम बन जाइवाक बुलिबि आर काज
वृद्धर तरुणी भार्य्या आति वर रति * तोर बोल बाधिवाक नुहिबे शकति१६०१
चलिला कुजीर वोले हरषित मने * रामर लिखित विधि वाधिब केमने
कुजी तोर बचने भूमित थाको लुटि * हा राम बोलन्ते पराण जाय फुटि१६०२

पराग जैसा है, तू सुदर्शना है। तेरी जाँघे बहुत सुडौल देखती हूँ। तेरी उन्नत नाक, मुख और स्वभाव देखकर लगता है कि तेरा वह कूबड़ नही बल्कि सोने का सकोरा है ॥ ९३ ॥ अन्य सब कुवड़ियों के हृदय मानों गढ़े के समान है जिनकी समूची गरदन दिखाई ही नही पड़ती और जिनके गाल उल्लू के जैसे है, जिनके पेट खाई की भाँति अत्यन्त कुरूप है। किन्तु तुझमें ये सारे दोप बिल्कुल नही दिखाई पडते ॥ ९४ ॥ तेरा उदर क्षीण है, जाँघे पुष्ट है, सुहावनी जवानी है और तू मोहनी युवती। तेरे निकट रहने पर मन उल्लसित हो उठता है। लीला-हंसिनी की तरह तू केलि करती रहती है ॥ ९५ ॥ कुबड़ी ने कहा, तेरे हित की बात सुन ले जिस उपाय से तू राजा दशरथ के चित्त पर विजय पा सकती है। पुरानी बात को याद कर। राजा ने तुझे दो वर देने को कहा था ॥ १५९६ ॥ प्राचीनकाल मे देव और असुरो में बहुत बड़ा युद्ध हुआ। सारे असुरों ने देवताओं पर विजय प्राप्त कर ली। राजा दशरथ महेन्द्र के मित्र वन गये और असुरों की शक्ति चूर्ण-चूर्ण कर उनको आसानी से उन्होने खदेड़ दिया ॥ ९७ ॥ युद्ध जीतकर लौटने के उपरान्त उनको सन्तोष हुआ। तुमने आगे वढ़कर राजा की सेवा-भक्ति की। तुम्हे दो वर देने का राजा का मन हो आया। तुमने भी कहा, ये वर फिर कभी लूंगी ॥ ९८ ॥ मैले वस्त्र पहनकर कोपभवन में जाकर वैठ जाओ। धरती पर वस्त्र विछाकर उदास मुख लिए केश खोलकर कोप किये पड़ी रहना। राजा आकर तरह-तरह की खुशामद की बातें करेगा ॥ १५९९ ॥ वह मणि-माणिक्य, रत्न-धन का खजाना देने के लिए तुझे मनायेंगे। कितना ही वह मनाया करे उसको सार न मानना। बातों से फँसाकर राजा से सौगन्ध करा लेना और ऐसा करने से ही तुझे दोनों वर मिल जाएँगे ॥ १६०० ॥ एक वर माँगकर भरत को राज्य दे देना और दूसरा काम बताना राम को वन भेजने के लिए। वृद्ध की तरुणी भार्या बड़ी जवर्दस्त होती है। तेरी बात काटने की शक्ति उनमें नही रह जायगी ॥ १६०१ ॥ कुबड़ी के कहने कर हर्ष भरे मन से वह चल पड़ी। राम के लेखे

पापिष्ठी कुबुजी मोर भेदिलि हृदय * जानिलि कथाक कहि अनेक संशय
तोहोर वोलोत आवे करो मन्द यत्न * भरत काँचक लागि हराओं राम रत्न ३
मोर बोले राम वन जाइबे हेन जानि * मरिबो कटार हानि नखाइ भात पानी
मनत विषाद करि भरतर माव * क्रोधघरे थाकिलन्त विमन स्वभाव ४
राघवक राज्य दिबो बुलि आइला ठावे * कैकेयीक खोजे राजा हरषित भावे
स्त्रीगण लैया खुजि फुरा नृपबरे * देखन्त कैकेयी शुति आछे क्रोधघरे ५
हस्तिनी आछय येन परिया नेराश * महागज सम राजा चापिलन्त पाश
करे कर धरि राजा बुलिलन्त भाव * राम अभिषेक कालि शीघ्रे चाल गाव ६
उठा प्राणेश्वरी अवसान भैल बेला * लोक यि अनिष्ट चिन्ते मोक करे हेला
नारीजन होवे अनुरूप करो दंड * पुरुषर नामे काटि करो नव खंड ७
मइ मन्द करिलोहो नलखोहो हेन * बृद्धर तरुणी भार्य्या देखो प्राण येन
कोने मन्द चिन्तिलेक पाइबे पाप फल * सपुत्र बान्धव समे जाइब रसातल ८
निर्धनी हइबेक धनी धनीये निर्धन * काहाक दंडिबो बोल तोर याक मन
यत रत्न भंडार आछय एथा मोर * येइ लागे लैयोक हरिष मन तोर१६०९
उठ उठ प्राणेश्वरी नतु शुन काज * पुण्य योगे कालि श्रीरामक दिबो राज
एतेक बचन शुनि भरतर माव * नृपतिक दुख दिबे चालिलन्त गाव१६१०
कैकेयी बोलन्त प्रभु वचन धरियो * यि कार्य्यक बोलो ताक शपत करियो
हेन शुनि दशरथ स्त्रीवश भैला * आपोन बधक लागि गलपाश लैला१६११

को कौन टाल सकता था ? कुवड़ी तेरे कहने पर मैं धरती पर लेटी रहूँगी। हाय, राम कहते ही मेरा दिल टूटने लगा ॥ १६०२ ॥ ऐ पापिन कुवड़ी, तूने मेरा दिल छेद दिया। जानी हुई बातों को बताकर तूने कितने सशय में डाल दिया। तेरे ही कहने पर अब मैं दुष्प्रयत्न कर रही हूँ। भरत जैसे काँच (मूल्यहीन) के लिए राम जैसे रत्न को खो रही हूँ ॥ ३ ॥ मेरे कहने पर मैं जानती हूँ कि राम वन चला जायगा। विना अन्न-जल लिये मै कटार मारकर मर जाऊँगी। भरत की माँ दुखी मन लिये क्रोधकक्ष में उदास बनी पड़ी रही ॥ ४ ॥ राम को राज्य दूँगा, यह निश्चित रूप से कहकर राजा आया और हर्ष से कैकेयी को खोजने लगा। नारियों को साथ लेकर राजा ढूँढ़ते फिरने लगा तो देखा कैकेयी क्रोधकक्ष में लेटी हुई है ॥ ५ ॥ मानों हथिनी निराश पड़ी हुई है। गजराज के समान राजा उसके वगल में जा पहुँचा। हाथों से उसका हाथ थाम कर राजा ने वताया, कल राम का अभिषेक है, जल्दी उठो, चलो ॥ ६ ॥ हे प्राणेश्वरी, वेला का अन्त हो चुका है। तेरी बुराई की जो भी चिन्ता करता है वह मेरी उपेक्षा करता है। अगर वह नारी हो तो उसको अनुरूप दंड दूंगा और यदि वह पुरुष हो तो उसको काटकर नौ टुकड़े कर डालूँगा ॥ ७ ॥ मैंने कोई बुरा किया है, ऐसा तो मैं नही देख पाता हूँ। मैं तो तुमको वृद्ध की युवती स्त्री-जैसा प्राणों के समान देखता हूँ। कोई अगर तुम्हारी बुराई की चिन्ता भी करे तो उसको अपने पाप का फल मिल जायगा। अपने पुत्रों और मित्रों के साथ वह रसातल पहुँच जायगा ॥ ८ ॥ निर्धन धनी बन जायगा और धनी निर्धन। तुम्हारा मन जिसको चाहे बताओ उसी को सजा दे दूँ। यहाँ मेरे भंडार में जितने रत्न हैं—जितना चाहो प्रसन्न मन से तुम उसे ले सकती हो ॥ १६०९ ॥ हे प्राणेश्वरी, उठो-उठो, सुनती क्यों नहीं ? कल शुभघड़ी पर श्रीराम को राज्य दूँगा। इतना वचन सुनने के वाद भरत की माँ राजा को दुख देने के लिए चल पड़ी ॥ १६१० ॥ कैकेयी ने कहा, प्रभु, अपने वचन पर टिके रहना। जो कार्य मै बताऊँ उसके लिए

राजा बोले प्राणेश्वरी शुनियो मनत * रामत तोमात परे प्रिय आछे कत
रामक तेजिया आन यत माग वर * हृदय काटिया दियो पुण्य निरन्तर १२
हेनसे आवुधि तइ मिछा कर गह * किनो मोत साधिवि वेकत करि कह
कैकेयी वोलय आपोनार मत राखि * चन्द्र सूर्य वायु वसुमती हैवा साखी १३
सत्य एरिलात यिवा आछे दोष तात * तुमिसव दुष्ट देव देखाहा साक्षात
पूर्व्वत नृपति मोक दुइ वर दिल * सुमरियो प्रभु तार समय मिलिल १४
शुनियो गोसाइ दशरथ महाराज * एइ सव साजे भरतक दियो राज
रामत सम्प्रति तुमि हैयोक नेराश * चौध्य वरिषक लागि दियो वनवास १५
राज्य एरि गैया रामे वचोक वनत * करि युवराज राज्ये थापियो भरत
एइ दुइ वर मोक दिया प्रभु येवे * पूर्व्व अंगीकार तव सत्य होवे तेवे १६
एतेके आमार होवे चित्तत सन्तोष * सत्यक एरिले जाना येन होवे दोष
कैकेयीर वचनत हृदय भेदिल * वाघिनीक देखि येन मृग चमकिल १७
भय हन्ते नृपतिर शिहरिल गाव * मृतक स्वभाव भैला काम्पे हाथ पाव
शोके दुखे राजार मोहित भैल चित * विमूर्च्छित हुया राजा परिला भूमित १८
विह्वल भैलन्त राजा काम्पे कलेवर * परिला अनाथ येन राज राजेश्वर
कतोवेलि दशरथे पाइलन्त चेतन * महाक्रोधे कैकेयीक वुलिला वचन १६१९
शुन वोलो पापिष्ठी वधिते भैलि मोक * कुलविनाशक लागि विहाइलोहो तोक
राघवे वा मन्द तोक करिलेक किस * पुत्रक वा वधिते वुलिलि वाक्य विष १६२०

शपथ कर लो। ऐसा सुनकर दशरथ स्त्री के वश में आ गये—अपने ही वध के लिए गले में फाँसी ले ली॥ १६११॥ राजा ने कहा, प्राणेश्वरी! ध्यान लगाकर सुनो। राम से और तुमसे अधिक मेरा कौन प्रिय है। राम को छोड़ कर कोई भी अन्य वर माँगो। हृदय (भी माँगो तो) काटकर दे दूँगा इससे मुझे पुण्य मिलेगा॥ १६१२॥ तुम ऐसी बुद्धिहीन हो जो नाहक अहंकार करती हो। मुझसे क्या माँगना है, खुलासा बताओ। कैकेयी ने अपना अभिमत प्रकट करते हुए कहा, हे चन्द्र, सूर्य, वायु और वसुमती! तुम लोग साक्षी रहना॥ १३॥ सत्य से कतराने पर जितना दोष होता है तुम सारे देवता उसको साक्षात् देखते रहना। पूर्वकाल में नृपति ने मुझे दो वर दिये थे। हे प्रभु, उनका स्मरण करो—उनको लेने का समय आ गया है॥ १४॥ हे गुसाईं महाराज दशरथ, सुनो। इन्ही सब साज-सज्जा में भरत को राज्य देना। अब राम से तुम निराश हो जाओ, उसको चौदह वर्ष के लिए वनवास भेज दो॥ १५॥ राज्य छोड़ राम वन जाकर समय बितावे। भरत को युवराज बना कर राज्य में स्थापित करो। हे प्रभु, जब तुम मुझे ये दोनों वर दे दोगे तभी तुम्हारा वादा सत्य होगा॥ १६॥ इससे हमारे मन में सन्तोष होगा। सत्य से कतराने पर जानते ही हो क्या दोष लगेगा। कैकेयी के वचन दिल को छेद गये। शेरनी को देखकर मानों हिरन चौक पड़ा॥ १७॥ भय से नृपति का वदन सिहर उठा। उनकी दशा मृत के समान हो गई और हाथ-पैर काँपने लगे। शोक और दुःख से राजा का चित्त व्याकुल हो गया। राजा मूर्छित होकर धरती पर गिर पड़े॥ १८॥ राजा विह्वल हो गये और उनका शरीर काँपने लगा। राजराजेश्वर मानों अनाथ हो गये। कितने ही समय के बाद दशरथ होश में आए और भीषण क्रोध से कैकेयी से बोले॥ १६१९॥ हे पापिन सुन, तुझसे मैं कह दूँ, तू मेरा वध करने को उत्पन्न हुई। कुल का विनाश करने के लिए मैंने तुझसे व्याह किया। राघव ने तेरी कौन सी हानि पहुँचाई, जो तूने पुत्र की हत्या करने के लिए ऐसे विषभरे वचन

राम हेन पुत्र मोर आति शुद्धमति * कौशल्यातोधिक तोत करय भकति
राम गुणे तुषि सर्व्व जनर उल्लास * कोन अपराधे ताङ्क दिवो बनवास१६२१
शुद्ध चित्त रामर अनिष्ट चिन्त किक * महावैरी भार्य्या आछे कोन ततोधिक
चरणत धरो तोर कृपा कर मोक * नकरिबि द्रोह दाया कर राम पोक २२
मोर चित परिक्षा करिलि परिहास * कृपा कर मोक चरणर भैलो दास
हेन बुलि चरणत परिला नृपति * कैकेयी निष्ठुर बोले निकारुण मति २३
त्रैलोक्यत जाने दृढ़ चित्त दशरथ * आल-जाल एरि तुमि पालियो शपत
शिवि राजा कपोतक अभय दिलन्त * आपोनार मांस काटि शेन तुषिलन्त २४
सत्य पालि रामक सत्वरे पठाव वन * नुहिवा तोमार आगे तेजिबो जीवन
हा बुलि दशरथ पृथिबीत लुटि * हा रामपुत्र बुलि प्राण जाओक फुटि २५
आति सुचरित राम वन जाइवि तइ * केने प्राण धरिवो कौशल्या समे मइ
यदि मोत सोधे लोकवृद्ध गुरुजन * केने राजा राघवक पठाइलन्त वन २६
सत्ये वोलो प्राणेश्वरी एरा इ बचन * करिबे गरिहा मोक आनो देशीजन
स्त्रीजित क्रूर राजा निकारुण मन * शोक ज्वालि राघवक पठाइलन्त बन २७
परम दुष्कृति मोर रैल देशे देश * हेन जनबादे मोर प्राण भैल लेश
शिशुकाले राघवर बर दुख भैल * ब्रह्मचर्य्य आचरन्ते कत काल गैल २८
येवे आसि मिलिल राज्यत उपभोग * बनवास खाटिवेक किनो बिधि योग
छल पाशे करिलेक नृपतिक बन्दी * बामने बलीक येन नाना बोले छान्दि१६२९

वोले ॥ १६२० ॥ राम जैसा मेरा पुत्र जो कि अत्यन्त शुद्धमति का है, कौशल्या से भी अधिक तेरी भक्ति करता है। राम अपने गुणों से सभी लोगों को उल्लसित किये हुए है। किस अपराध पर उसको वनवास भेजूँ ॥ १६२१ ॥ शुद्धचित्त राम की बुराई तू किस प्रकार सोच रही है। तुझसे अधिक महाशत्रु भार्या और कौन होगी? तेरा चरण पकड़ता हूँ ॥ २२ ॥ तूने मेरे मन की परीक्षा ली और परिहास किया। मुझ पर कृपा कर, मैं तेरे चरणों का दास बनता हूँ। ऐसा कहकर नृपति उसके चरणों पर गिर गया। कैकेयी निष्करुण रूप से निर्दयभाव से बोली ॥ २३ ॥ तीनों लोक में यह विदित है कि दशरथ दृढ़चित्त के हैं। अंटसंट बातें छोड़कर तुम अपने शपथ का पालन करो। राजा शिवि ने कबूतर को अभयदान किया था तो अपना मांस काटकर उसने बाज को सन्तुष्ट किया था ॥ २४ ॥ सत्य का पालन करते हुए शीघ्र राम को वन भेज दो, वर्ना तुम्हारे सम्मुख ही मैं प्राण त्याग दूँगी। हाय, कह कर दशरथ धरती पर लोट गये। हाय, पुत्र राम! कहकर मेरे प्राण निकल जाएँ ॥ २५ ॥ अति सुचरित्रवान् राम, तू वन जायगा। कौशल्या-सहित मैं कैसे रह सकूँगा। यदि मुझसे वयोवृद्ध एवं गुरुस्थानीय व्यक्ति पूछे कि क्यों राजा ने राघव को वन भेजा तो (क्या उत्तर दूँगा) ॥ २६ ॥ हे प्राणेश्वरी, सत्य कहता हूँ—यह दुराग्रह छोड़ो। देश के कितने ही लोग मुझसे घृणा करने लगेंगे। (कहेंगे) नारी के वश राजा का मन करुणा से शून्य है। शोक प्रज्वलित कर उसने राघव को वन भेज दिया है ॥ २७ ॥ देश-देश में मेरी परम दुष्कृति छा जायगी। ऐसे जन-अपवाद से मेरे प्राण समाप्त हो जाएंगे। बचपन में राघव ने बड़ा दुःख पाया है। ब्रह्मचर्य-पालन करने में कितने ही दिन बीत गये ॥ २८ ॥ अब राज्य उपभोग करने का समय आया तो वनवास जाने को मिला—विधि का कैसा योग है। जिस तरह वामन (अवतार) ने बली (राजा) को बातों के छल से बाँध डाला गया था, उसी प्रकार छल की रस्सी से राजा को बाँध डाला गया ॥ १६२९ ॥ क्षणभर में वे मूर्च्छित

खनो मूर्च्छा यान्त खनो चेतनक पाइल * अनेक बिषादे तान रजनी पुहाइल
मन्त्री पुरोहित यत रामत भकत * अभिषेक साजे मिलिलन्त दुवारत१६३०
शिङ्गा शङ्ख आदि करि सुमंगल यत * आभरणे आठ कन्या भैल उपगत
शुकुला चामर फल पुष्प दधि क्षीर * सुवर्णर घटत सात सागरर नीर१६३१
गंगा यमुनाक आदि यत तीर्थजल * श्वेतछत्र ज्वले येन चन्द्रर मंडल
सुवर्ण कुम्भत सुगन्धित भरि जल * सुवर्ण पताका ध्वज रचिल चिरल ३२
निरन्तरे लैया अभिषेक साज यत * सबहि मिलिल आहि सिंह दुवारत
मन्त्री पुरोहित मिलि आलोचिल काज * सुमन्त्रक बुलिल जनायो महाराज ३३
रविर उदय भैल नुयुवाइ हेला * राम अभिषेकर लग्नर हैल बेला
शुनिल सुमन्त्र हेन बचन बिशेष * अन्तेषपुर दुवारत भैलन्त प्रवेश ३४
जागियोक प्रभु मन्त्रीगणे पारे राव * रविर उदय भैले चालियोक गाव
रजनी प्रभात भैले राजा दशरथ * ब्रह्मा विष्णु शंकरे पूरन्तो मनोरथ ३५
मन्त्रीर बचन राजा शुनिला श्रवणे * सुमन्त्र समीप चाप बुलिला सघने
कैकेयीर वाक्य-बह्नि दहे कलेवर * तोर वाक्य अमृते जुरायो निरन्तर ३६
राममुख देखिलेसे हैबेक निर्ब्बाण * राम गुण-सागरक शीघ्रे करि आन
राजार आज्ञाक मन्त्री माथे करि लैल * रामक आनिबे प्रति शीघ्रे चलि गैल ३७
हाट बाट एराइया रामर पाइल थान * रंग करे सर्ब्बजने देखि विद्यमान
युवाजन क्रीड़ा करे धरि हाते हात * ग्रीवे ग्रीवे जड़िल लागिल माथे माथ ३८

हो जाते तो क्षणभर में उनकी चेतना लौट आती। ऐसे ही विषाद के वातावरण में उनकी रात समाप्त हुई। सारे मंत्री और पुरोहित, जो राम के भक्त है, अभिषेक की साज-सज्जा लिये द्वार पर आ मिले ॥ १६३० ॥ शंख और नृसिंहा आदि मंगल-दायक वाद्य बजाकर आभूषणों से सज्जित आठ कन्याएँ उपस्थित हो गईं। श्वेतवर्ण का चँवर, फल-फूल, दही-खोवा, स्वर्ण-घटो मे सात समुद्रों का जल (सब उपस्थित था) ॥ १६३१ ॥ गंगा-यमुना आदि तथा सारे तीर्थो का जल (आ गया)। श्वेतवर्ण का छत्र यों दमक रहा है मानों चन्द्र का मंडल हो। सोने के कलश में सुगन्धित जल भर कर स्वर्ण पताका का ध्वज सुन्दर रूप से रचित किया गया ॥ ३२ ॥ अभिषेक का साजो-सामान निरन्तर लाते हुए सबलोग सिंह-द्वार पर आकर मिलने लगे। मंत्री और पुरोहित ने मिलकर कार्य की चरचा की और सुमंत्र से कहा महाराज को सूचित करो ॥ ३३ ॥ सूर्य उदित हो गया है और अब लापरवाही उपयुक्त नही। राम के अभिषेक की शुभ-घड़ी आ पहुँची है। ऐसा विशेष वचन सुनकर सुमंत्र अन्त पुर के द्वार में प्रवेश कर गये ॥ ३४ ॥ हे प्रभु! उठो, जागो, सारे मंत्री शोर मचा रहे है। सूर्य का उदय हो गया है—अब चल पड़ो। हे राजा दशरथ, रजनी के प्रभात होने पर ब्रह्मा विष्णु और शकर तुम्हारी मनोकामना पूर्ण करेगे ॥ ३५ ॥ राजा ने मत्री का वचन कानो से सुना। सुमंत्र के निकट आकर जोर से बोले, कैकेयी के वचन की आग से बदन जला जा रहा है. तुम्हारे वाक्य के अमृत से हृदय शीतल हो रहा है ॥ ३६ ॥ राम का मुख देखने से मुझको निर्वाण प्राप्त हो जायगा। गुणों के सागर राम को जल्दी ले आओ। राजा की आज्ञा मंत्री ने शिरोधार्य कर ली और राम को लाने के लिए वह जल्दी चल पड ॥ ३७ ॥ बाजार-रास्ता पार कर राम के स्थान पर वह पहुँचा। उसे विद्यमान देखकर सभी लोग हँसी-तमाशा करने लगे। युवकदल हाथों मे हाथ डाले क्रीड़ा कर रहे है। उनके गले से गला और सिर से सिर मिल रहे है ॥ ३८ ॥ दादा, भैया, मित्र कहकर

ददा भाइ मिता बुलि धरि कोले कोल * बाहुत चापर मारि करय आस्फाल
आउरे आउरक केहो सावटि धरिल * मुख चाइ केहो केहो बिगति करिल१६३९
राम राजा हैब आजि जीवन साफल * हेन बुलि प्रजासबे करे कौतूहल
नगरीजनर हेन लखिल स्वभाव * पाइलन्त सुमन्त्र गैया राघवर ठाव१६४०
रामर प्रासाद शोभे कैलास समान * विद्युतर कान्ति येन ज्वले थानेथान
सुवर्णर मांडलि चालत बलियाइल * वैदूर्य्य रुवलि शुद्ध रजतेहि चाइल१६४१
शतेक शतेक हात चैध्यय मांडल * पंचाश पंचाश हात एकैक रुवलि
चौषष्टि तम्भत ताक करिल निबेश * बैजयन्त समसर देखिते सुबेश ४२
रतने खसिया सुवर्णर पता दिल * सुषि कामि समन्विते एकत्र करिल
रामर ओवारि सव जगते बखानि * प्रवेशिले दिन राति एकोके नजानि ४३
हस्ती दन्ते वार दिला हिंगुलर काम * कुन्दरुख जाला थैला देखि अनुपाम
हिर्म्माणि माणिक ज्वले मरकत मोति * ज्वले बासघर पूर्ण चन्द्रमार ज्योति ४४
प्रासाद उपरे दिल माणिकर कान्ति * इन्द्रनील मणि दिल थाने थाने जान्ति
बिद्युत् मणिर भाले लागि गैल काप * शुक्ल मेघखने येन ज्वले शत्रुचाप ४५
शंकरक लेखिल आछन्त बृष याने * पार्व्वतीक लेखि आछे सिंहर बाहने
मुषर पिठित लेखि आछे गणपति * मयूरर उपरे कार्त्तिक सेनापति ४६
वामनक लेखिल कान्धत दिव्य छाति * बलिराय आगत आछन्त हात पाति
तिनिपाव भूमिक मागन्त बोले छान्दि * पातालत बलिक थापिजा करि बन्दी ४७

वे परस्पर आलिंगन कर रहे है। हाथ पर हाथ मारकर कोई डींग हाँक रहा है। कोई-कोई एक-दूसरे से लिपट गये। मुख की ओर देखकर किसी ने परिहास किया ।। १६३९ ।। राम आज राजा होंगे, हमलोगों का जीवन सफल हुआ यह कहकर प्रजावृन्द कौतूहल प्रकट करने लगा। नगर-निवासियों का ऐसा हावभाव देखते हुए सुमंत्र राम के स्थान पर पहुँच गया ।। १६४० ।। राम का प्रासाद कैलाश के समान शोभा पा रहा है। स्थान-स्थान पर मानों विजली चमक रही है। स्वर्ण के खम्भों पर वितान तना है। वैदुर्यमणि की बनी धन्नियों पर शुद्ध चाँदी का चँदवा है ।। १६४१ ।। सौ-सौ हाथ की दूरी पर चौदह खम्भे हैं और पचास-पचास हाथ पर एक-एक धन्नी। चौसठ खम्भों पर उसको स्थापित किया गया हैं। इन्द्र के महल वैजयन्त के समान ही वह सुन्दर है ।। ४२ ।। रत्न-खचित सुवर्ण की पत्ती से मढ़ी हुई राम की हवेली में सुषमा और कारीगरी का समन्वय हुआ है। सारे संसार-भर में उसको बखाना गया है। वहाँ प्रवेश करने पर रात-दिन में फ़र्क़ नही जान पड़ता ।। ४३ ।। हाथी-दाँत से दीवार वनी है, जिस पर सिन्दुर का काम बना है। गवाक्ष की जाली भी अनुपम हैं। हीरा, माणिक्य, मरकत और मोती चमचमा रहे हैं, और निवास के कक्ष में मानों पूर्णचन्द्र की ज्योति छिटकी हुई है ।। ४४ ।। प्रासाद के ऊपर माणिक्य की शोभा है। स्थान-स्थान पर इन्द्रनीलमणि जड़ दिये गये है। विद्युत-मणि के लगने से रंगों में वहार आ गई मानों सफेद वादलों मे इन्द्रधनुष चमक रहा हो ।। ४५ ।। शंकर साँड के वाहन पर अंकित है। पार्वती सिंहवाहिनी के रूप में चित्रित है। चूहे की पीठ पर गणेश अंकित हैं और मोर के ऊपर सेनापति कार्त्तिक अंकित है ।। ४६ ।। वामन (अवतार) कन्धे पर छतरी लिये चित्रित हैं राजा बलि के सम्मुख वे हाथ पसारे खड़े है। छल से तीन पग भूमि वे माँग रहे है (और इस प्रकार) पाताल में वलि को वन्दी वनाकर रख दिया ।। ४७ ।। गरुड़ के

विष्णुक लेखिला गरुड़र स्कन्धे आति * डाहिनत लक्ष्मी वामपाशे सरस्वती
लेखि आछे ब्रह्माक कुवेर देवराज * वायु वरुणक आदि देवतासमाज ४८
भूमित परिल नेत बस्त्र अहर्निश * शुकुल चामरे सुमंडित चतुर्द्दिश
पुष्पमाला सुगन्धे आमोद सर्व्वक्षण * रत्नसब ज्वले आति देखि सुशोभन१६४९
पूर्णघट पंकति मुखत रंजि फले * सुगन्धि पूरित भैल सरयूर जले
सुमंडित सिन्दुरे सर्व्वांगे कलेवर * ऐरावत समसर रामर कुंजर१६५०
मयमत्त गजक माहुते आछे जान्ति * आकाशक लागि येन करय आक्रान्ति
रथखान साजिल विचित्र अनुपाम * माणिके रचिल शुद्ध सुवर्णर काम१६५१
आठगोट तुरंगम धवल जुरिल * दिव्य विमानेक येन भूमित पटिल
ओवारिर लोके वर आनन्द करन्त * थाने थाने अनेक मांगल्य निर्म्मिलन्त ५२
हेन देखि सुमंत्र आनन्द करि मने * रामर समीपे चापिलन्त तेतिक्षणे
सुवर्ण खाटत राम आछा रंग करि * समीपत सीता श्वेत चामरक धरि ५३
मेरुगिरि शिखरत येन वासुदेव * धवल कमल धरि लक्ष्मी करे सेव
रूपे रति-कामदेव देखि समसर * अलंकारे मंडित दोहानो कलेवर ५४
कृतांजलि धरिया सुमन्त्र मन्त्रीगण * नन्दि वन्दिलन्त येन पार्व्वती शंकर
सुमन्त्र बुलिला पाचे वचन विशेष * दशरथ नृपतिर तोमाक आदेश ५५
बुलिलन्त जाइवाक कैकेयी शतमाव * रथत चड़ियो जाण्टे चालियोक गाव
सुमन्त्र वचनामृते सहरिष मने * सीताक सम्बुधि रामे बुलिला तेक्षणे ५६
शुना रामायण सभासद निरन्तर * श्रवणेते तरि सुखे संसार सागर
परम मंगल रूप माधवर नाम * तांक मने धरि डाकि वोला राम राम१६५७

कन्धे पर विष्णु अंकित है। उनके दाहिने लक्ष्मी और बाएँ सरस्वती हैं। ब्रह्मा, कुवेर, देवराज, वायु, वरुण आदि सारे देवता-समाज चित्रित है ।। ४८ ।। भूमि पर (बहुमूल्य) नेत-वस्त्र रातोदिन बिछा है। श्वेत चँवर से चारों दिशाएँ सुशोभित है। फूल मालाओं की सुगन्ध सदा महमहा रही है। सारे सुन्दर रत्न जगमगा रहे है, देख रहा हूँ ।। १६४९ ।। पूर्णघटों की पंक्ति खड़ी है जिनके मुख पर फल रंजित हैं। सरयू के जल में सुगन्ध मिली हुई है। राम के हाथी का सारा शरीर सिन्दूर से पुता हुआ है और वह ऐरावत (इन्द्र का गजराज) के समान है ।। १६५० ।। (इस) मदमत्त गज को महावत ले जा रहा है—मानों आकाश पर आक्रमण करने जा रहा हो। विचित्र और अनुपम रथ सुसज्जित है, खरे सोने पर माणिक जड़े है ।। १६५१ ।। आठ श्वेतवर्ण के घोडे जोते गये। मानो दिव्य विमान धरती पर आ पड़ा हो। हवेली के लोग बड़े आनन्द-मग्न है—स्थान-स्थान पर बहुत से मांगलिकों का उन्होंने निर्माण किया ।। ५२ ।। ऐसा देख सुमंत्र आनन्दित हो तब तक राम के समीप पहुँच गया। राम सोने के बने पलँग पर प्रसन्न वैठे है। निकट ही सीता श्वेत चँवर थामे खडी है ।। ५३ ।। मानो मेरुपर्वत के शिखर पर वासुदेव हों और श्वेत-कमल हाथ में लिये लक्ष्मी सेवा कर रही हो। दोनों रूप में रति और कामदेव के समान है। दोनों के शरीर आभूषणों से सुशोभित है ।। ५४ ।। सुमंत्र आदि मंत्रीगण हाथ जोडकर वन्दना करने लगे, मानों नन्दि पार्वती और शंकर की वन्दना कर रहे हों। इसके पश्चात् सुमंत्र ने विशेष वाक्य कहा, राजा दशरथ का तुम्हारे प्रति आदेश है ।। ५५ ।। विमाता कैकेयी ने तुरंत आने के लिए कहा है। चलकर रथ पर चढ़कर जाओ। सुमंत्र के सुमधुर वाक्य से प्रसन्न हो राम ने सीता को सम्बोधित करते हुए तब कहा ।। ५६ ।। हे सभासद, निरन्तर रामायण का श्रवण किया करो। इसके

दुलड़ी

राघवे बोलन्त शुनियो जानकी तोमात बोलोहो काज ।
निश्चय करिया आवेसे जानिलो आमि हैबो युवराज ।।
कौशल्या मावर सदृश देखोहो कैकेयी शत मावक ।
मोक राज्य दिते पुछिते नृपति आसिछे तान ठावक ।। १६५८
आमि हेन मने बुजाहो राजात बुलिलन्त मावे काज ।
विलम्ब नकरि सत्वरे आनिया रामक दियोक राज ।।
जाना प्राणेश्वरी युवराज हुया आमि आछो येतिक्षण ।
मोर संगे चलि आसिवेक सवे यत पात्र मन्त्रीगण ।। ५९
तासम्बाक अर्च्चा करिते जानकी मइ येन नोहो लाज ।
जानिवा निश्चय तोमाते लागिल इठावर यत काज ।।
स्वामीर वचन शुनि सीता देवी बुलिला हरिष मने ।
इठानर कार्य चर्च्चिवोहो आमि चलियो तुमि एक्षणे ।। ६०
एहि बुलि द्वार माने आगवढ़ाइ थैला जगतर माव ।
स्वामीक सम्बुधि पाचे सीता सती आसिलन्त निज ठाव ।।
आपोनार निज धवलि घरर बाज भैला रघुबर ।
तिमिर फारिया श्वेत मेघ हन्ते येन पूर्ण शशधर ।। ६१
रत्ने बिरचित सुवर्ण रथत चढ़िलाहा तेतिक्षण ।
चामर छत्रक धरिया पाशत चड़िला गैया लक्ष्मण ।।
मनत परम आनन्दे पाचत सुमन्त्र चड़िया याइ ।
हातत चाबुक धरिया रथक डाकिल येन युवाइ ।। ६२

श्रवण से संसार-रूपी सागर को सुख से तर जाओगे । माधव का नाम परम मंगलमय है । उन्हीं को मन में स्मरण कर राम-राम का उच्चारण करो ।। १६५७ ।।

राघव ने कहा, जानकी सुनो, तुम्हे काम वताता हूँ । अव मैने निश्चय रूप से जान लिया कि मैं युवराज वनूँगा । माँ कौशल्या के समान ही विमाता कैकेयी को देखो । मुझे राज्य देने के वारे में राजा उनसे पूछने उनके स्थान गये होगे ।। १६५८ ।। मेरी समझ में ऐसा आ रहा कि राजा ने माँ से यह वात वताई होगी (तो उन्होंने कहा होगा) विना विलम्व किये झटपट वुलवाकर राम को राज्य दे दो । सुनो प्राणेश्वरी, जव तक मैं युवराज वनता हूँ तव तक मेरे साथ मंत्री और सभासद साथ-साथ चलेंगे ।। १६५९ ।। उन सवकी सेवा करने में जानकी मुझे लज्जित न होना पड़े । यह निश्चय रूप से जान लेना कि यहाँ के सारे कार्य का भार तुम पर रहा । पति का वचन सुनकर सीतादेवी ने हर्ष भरे मन से कहा, यहाँ का सारा कार्य मै करूँगी, तुम अव जाओ ।। १६६० ।। यह कहकर अगत् की माता ने आगे वढ़कर द्वार खोल दिया । पति को सम्वोधित करने के पश्चात् सती सीता अपने स्थान पर आई । अपने श्वेत भवन के वाहर रघुवर निकल आए, मानों श्वेतवर्ण के वादलों से अन्धकार को चीरते हुए पूर्णचन्द्र निकल आया ।। १६६१ ।। रत्न से जड़े सोने के रथ पर (राम) तव तक जाकर चढ़े । छत्र और चंवर को धारण किये उनके वगल में लक्ष्मण जाकर वैठ गये । मन में परम आनन्द लिये, वाद को सुमंत्र सवार हुआ । हाथ में चावुक थामे रथ को यों हाँका मानों युवक (जैसी स्फूर्ति) हो ।। ६२ ।। श्रीराम-

श्रीराम लक्ष्मण इन्द्र विष्णु येन यान्त दुइ महारथी ।
सुमन्त्र मन्त्रीक देखिया साक्षात मातलि येन सारथि ॥
नयन आनन्दे कुन्दरुख जाले चावे यत नारीगणे ।
मुख भरि भरि रामक गुणक वखानन्त नारीगणे ॥ ६३
जनमे जनमे प्रयाग वटत सीता तेजि कलेवर ।
सिकारणे गुण— सागर रामक पाइला मनोनीत वर ॥
अरण्ये तोमाक दिवन्त राज्यक महाराजा दशरथे ।
शुनियो गोसाइ आमाक पालिवा तुमि प्रभु पुत्रवते ॥ ६४
साफला कौशल्या गोसानी तोमाक गर्भत माले धरिला ।
कि भैल आनन्द कर्म्मागत लक्ष्मी आपुनि याक वरिला ॥
अन्यो अन्ये वोले राम राजा भैले वहुतर हैवे सुख ।
निश्चये जानिलो विस्तर कालक लागि पलाइवेक दुख ॥ ६५
एहिमते रामे नगरी जनर शुनन्त वोल आशेष ।
मधुर वचने प्रजाक सम्वुधि ओवारि भैल प्रवेश ॥
कैकेयीर घरे मिलिलन्त गैया श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण ।
आसनत वसि आछन्त नृपति पाइला दुयो दरिशन ॥ ६६
परम निःश्रीक देखिलन्त रामे वदन दशरथर ।
राहुग्रस्त हैले नज्वलय आति किरण येन सूर्यर ॥
प्रथमते नम्र भावे नमिलन्त नृपतिर दुयो पाव ।
राम लक्ष्मणक आशीर्व्वाद पाचे दिलन्त कैकेयी माव ॥ ६७
परम विकल स्वरुप वापर देखिलन्त दुई भाइ ।
करयोरे नम्र भावे थाकिलन्त पितृर चरण चाइ ॥
पितृर आगत आछे रामचन्द्र करिया आति भकति ।
रामक निष्ठुर वुलिते राजार नभैल किछु शकति ॥ ६८

लक्ष्मण दोनों महारथी मानों इन्द्र और विष्णु के समान चले । मंत्री सुमंत्र यों दीख रहा है मानों साक्षात् मातलि सारथी हो । खिड़कियों की जाली में से सारी नारियों की आँखे (देखने लगी) । मुख भर-भर कर नारियाँ राम के गुणों का वखान करने लगी ॥ ६३ ॥ सीता ने जन्म-जन्म प्रयाग के अक्षयवट वृक्ष के नीचे प्राण त्यागा है इसी कारण उसे गुण के सागर राम मनचाहे वर के रूप मे मिले हैं । महाराजा दशरथ अवश्य ही तुमको राज्य देंगे । हे गुसाँई, सुनो, हमें पुत्रवत् पालना ॥ ६४ ॥ स्वामिनी कौशल्या सफल है जिन्होंने तुमको गर्भ में धारण किया । कितना आनन्द हुआ जव प्रारव्धवश लक्ष्मी ने स्वयं आकर राम को वर लिया । तरह-तरह के लोग वचन कहने लगे, राम राजा होंगे, तव कितने ही सुख प्राप्त होंगे । यह निश्चय रूप से मालूम हो गया कि लम्वी अवधि के लिए दु:ख भाग जायगा ॥ ६५ ॥ इसी प्रकार से राम नागरिकों की कितनी ही वातें सुनते रहे । मधुर वचन से प्रजा को सम्वोधन कर, हवेली में प्रवेश किया । श्रीरामचन्द और लक्ष्मण दोनों कैकेयी के कक्ष में जा पहुंचे । नृपति आसन पर वैठे थे, दोनों को दर्शन मिला ॥ ६६ ॥ राम ने दशरथ का मुखड़ा वड़ा प्रभाशून्य देखा । जिस प्रकार सूर्य को राहु के ग्रस लेने पर उसकी किरणें मन्द पड जाती हैं । पहले नम्रभाव से नृपति के दोनों चरणों का नमन किया । इसके पश्चात् माता कैकेयी ने राम-लक्ष्मण को आशीर्वाद दिया ॥ ६७ ॥ दोनों भाइयों ने पिता का अत्यन्त व्याकुल रूप देखा । पिता के चरणों की ओर दृष्टि रख

एको अपराध नाहिके रामर चाइला करि बिमरिष।
केनमते आवे सुपुत्र रामक बुलिबोहो बाक्य बिष॥
कतोक्षणे राजा राम हेन बुलि बिमन्यु आति करिल।
महामन दुखे किछु नुबुलिल कंठत शोक धरिल॥ ६९
अतिशय शोके आथाके नयने तोतक वहे राजार।
राहुग्रस्त हुया येन पूर्णचन्द्रे अमृत तेजे दुधार॥
राजार बिषाद दुखक देखिया रामर चित्त लरिल।
करि बिमरिष येन सूर्येदेव भूमित आसि परिल॥ ७०
भूमि परिवर्त्त येन भैल आति सागर येन शुखाइल।
हरषिते आति राजा दशरथ बिषादक बर पाइल॥
मइ जानो एको दोष नैयो करो काये वा वाक्ये वा मने।
तथापितो माथा तुलि नचावन्त मोक बिषादित मने॥ ७१
एकवार मोक राम हेन बुलि किछु नुबुलिला आन।
एको नजानिलो कि कार्ये बापर मिलि गैल अपमान॥
राधवे बोलन्त शुनियोक माव कोनबा मिलिल दोष।
कहियोक तुमि कि कारणे इटो करे बापे असन्तोष॥ ७२
परम अमृत रामर चरित्र शुना समाजिक जने।
दशरथ हेन राजायो आपद एराइब आर कमने॥
आति दुखमय विषयक जानि करा मन उपशाम।
परम मंगल मिलोक सवारो डाकि बोला राम राम॥ १६७३

वे हाथ जोड़े नम्रभाव से खड़े रहे। पिता के सम्मुख रामचन्द्र भक्तिपूर्ण भाव से खड़े हैं। राम से निर्दय वाक्य कहने की राजा में कोई शक्ति नही रही॥ ६८॥ राम का कोई भी अपराध नही, (दशरथ ने) विमर्षभाव से उसकी ओर देखा। किस प्रकार से अव सुपुत्र राम को विष-वाक्य कहूँ। कितनी ही देर में राजा 'राम' ऐसा कहकर विषादमग्न हो गये। अत्यन्त मानसिक दुःख से कुछ भी न कह सके। उनका गला शोक से भर आया॥ १६६९॥ अत्यन्त शोक से राजा के नयनों से वेरोक-टोक निरन्तर आँसू गिरने लगे। मानों पूर्णचन्द्र राहुग्रस्त हो गया हो और दोनों ओर से अमृत को त्याग दिया हो। राजा का विषाद और दुःख देखकर राम का चित्त आन्दोलित हो उठा। मानो विमर्श होकर सूर्यदेव धरती पर आ गिरे॥ १६७०॥ मानों भूमि में अत्यन्त परिवर्त्तन आ गया हो, सागर सूख गया। राजा दशरथ को अति हर्ष में विषाद प्राप्त करने का वर मिला था। मैं जानता हूँ कि मैंने कायमनो-वाक्य से कोई दोष नही किया है, फिर भी मेरी ओर मारे विषाद के सिर उठाकर भी नही देखते॥ १६७१॥ एक वार मुझसे 'राम' कहकर फिर कुछ भी नही कहा, यह भी नहीं जान सका कि किस वात पर पिता जी को अपमान मिला। राघव ने कहा, माँ सुनो, कौन सा ऐसा दोष हो गया, तुम वताओ, पिता जी किस कारण इतने असन्तुष्ट हो गये॥ ७२॥ राम का चरित्न परम अमृत के समान है। हे समाज के लोगो, सुनो। दशरथ जैसे राजा की विपत्ति से कैसे पार पाया जाय। यह अत्यन्त दुःखपूर्ण विषय है, ऐसा जानकर मन को दिलासा दो। पुकार कर राम का नाम लो, सभी को परम मंगल प्राप्त होगा॥ १६७३॥

दशरथर विषाद देखि श्रीरामर आश्वास वाणी

वापर इन्द्रक प्रति भैल क्रोध मन * वान्धिया आगत आनि दिवो एतिक्षण
दशदिकपाल पुर खोजा नृपवर * वश्य करि दिवो आजि धरि धनुशर १६७४
पितृपुर पयाण करिवो एकेश्वर * वन्दी करि आनिवो यमर परिकर
क्षत्र वीर यतेक आछय रवितले * केहो नोहे शकत मोहोर वाहुवले ७५
काहाको मारिवे काको कमरत धरि * वापर आगत वान्धि दिवो जड़ करि
गजकन्धे वीर मोक नाहि समसर * घोड़ार पिठित मइ अजय पाथर ७६
रथे वा पयदा मोक केहो नोहे सम * अरि विमर्द्दन साक्षातते मइ यम
त्रिभुवन वीर समे एकेश्वर जोड़ो * दुर्ज्जय मालक सवे धरि घार मोड़ो ७७
महा महा वीरर हृदय फांडे फाड़ो * खांडार प्रहारे आजि रिपुशिर तोड़ो
सातो द्वीपा पृथिवी रुधिरमय करि * तिनि सात वार फुरि क्षत्रिय संहरि ७८
हेन यामदग्नि राम दुर्ज्जय शरीर * कान्धत कुठारे मोर आगे भैल थिर
जिनिलोहो ताहाक वापर विद्यमान * निष्प्रभ हुया गैला आपोनार थान ७९
देखिलन्त आपुनि नृपति दशरथ * शरे हानि निरुधिलो तान स्वर्गपथ
देवराज हैवाक वापर आछे मन * इन्द्रक खेदाया थापिवाहो एतिक्षण ८०
सुरगण वन्दी करि दिवोहो सकले * स्वर्ग भोग भुंजन्तोक मोर वाहुवले
अभिलाष आछे येवे चौदान्त नागत * दिग् गजक वन्दी करि दिवोहो आगत ८१
वहुतर वितक वापर मन जानि * मेरु गिरि उपारि आगत देओं आनि
मोहोर आगत किछु नोहे देवासुर * मुठिर प्रहारे पर्व्वतक करो चूर १६८२

दशरथ का विषाद देखकर राम की आश्वासन-वाणी

पिता के मन में इन्द्र के प्रति क्रोध आया है तो अभी उसे बाँधकर सामने ला दूं। दशदिक्पाल के नगर को ढूंढ़कर आज धनुष-वाण थामे, नृपवर! मैं उसे वश्य कर डालूंगा ।। १६७४ ।। एकेश्वर बना पितृपुर के लिए प्रस्थान कर दूंगा और यम के परिचारकों को वन्दी बनाकर ले आऊँगा। सूर्य के नीचे जितने क्षत्रिय वीर हैं उनमें कोई भी वाहुवल में मेरे समान नहीं ।। ७५ ।। किसी को मारूंगा तो किसी को कमर से पकड़कर पिता के सम्मुख बाँध कर ढेर लगा दूंगा। हाथी के कन्धे पर कोई वीर मेरा समकक्ष नही है और घोड़े की पीठ पर तो मैं अटल पत्थर सा हूँ ।। ७६ ।। चाहे रथ पर हो चाहे पैदल, कोई भी मेरे समान नहीं, शत्रु-मर्दन में मैं साक्षात् यम के समान हूँ। त्रिभुवन के सारे वीर अकेले इस एकेश्वर के समान हैं, अजेय सारे मल्लवीरों की मैं गर्दन मरोड़ दूँ ।। ७७ ।। वड़े-वड़े वीरों का हृदय मैं वाण से चीर दूं, खड्ग के प्रहार से शत्रु का सिर तोड दूं। सप्तद्वीपा इस पृथ्वी को रक्तप्लावित कर जिन्होने इक्कीस वार क्षत्रियों का संहार किया है ।। ७८ ।। ऐसे दुर्ज्जय शरीर वाले यामदग्नि राम भी कन्धे पर फरसा लिये मेरे सम्मुख निश्चल हो गये। उनको मैंने पिता के सम्मुख ही पराजित किया। वे आभाशून्य होकर अपने ठाँव लौट गये ।। ७९ ।। स्वयं नृपति दशरथ ने देखा कि वाण चलाकर मैंने उनका स्वर्गपथ रुद्ध कर दिया। (यदि) पिता के मन में देवराज वनने की इच्छा है तो इसी दम इन्द्र को भगाकर उनको स्थापित कर दूँ ।। १६८० ।। सारे देवताओं को वन्दी कर डालूं, मेरे वाहुवल से स्वर्गसुख का भोग कर लें। यदि चारों दिगन्त तक अभिलाषा हो तो दिग्गजों को वन्दी वनाकर सामने ला दूँ ।। १६८१ ।। यदि पिता का मन प्रभूत वित्त पर आया है तो मेरुगिरि को उचार कर सामने ला दूं। मेरे सामने देवासुर कुछ भी नहीं है, मुट्ठी के प्रहार से पर्वत को चूर-चूर कर दूं ।। १६८२ ।।

आज्ञा बाधे आसि येवे नृपति निकर * जिनिया आनिबा आजि रणर भितर
हातत नराच धरि पृथिवीक भेदो * मुख्य मुख्य नागर फनाक सबे छेदो १६८३
आज्ञा पाइ बापर पाताल पुरे याओं * सर्पराज वासुकीक बान्धिया भेटाओं
निरन्तरे नागक अन्तक लागि निबो * शरर सन्धाने सात सागर शुषिबो ८४
रत्न सब दिया मन बापर पूरिबो * तिनि भुवनक नुहि एकत्र करिबो
व्याघ्रमुख चन्द्रमुख चन्द्र जे तापन * दीर्घबाहु सुबाहु प्रचण्ड सम्मर्द्दन ८५
समभन नतासन समुद्र समान * त्रिभुवन कम्पन सक पाताल नाशन
धेनुक प्रलम्ब बाण नरक सम्बर * अनुह्राद ह्राद एक नयन प्रवर ८६
एहि आदि करिया दुर्ज्जय महासुर * एको एको बीरे देव-दर्प करे चर
देवगण गज येन असुर केशरी * लोकर सन्धाने कापे नागर नगरी ८७
बापर आज्ञाये ए सम्बात मान छारो * सकले दानव मुण्डे मुण्डे हानि मारो
तिनियो भुवने मोक नाहि समसर * बापक करिबो तिनि भुबन ईश्वर ८८
युवक हैवार इच्छा बापर मनत * तान वृद्ध भार लैया करो परिवर्त्त
घोर पाप करि कोने जनिल तरास * तान परिवर्त्ते नरकत दिबो बास ८९
पुत्र हुया नकरय पितृक निस्तार * सिटो पुत्र भैल पृथिवीर महाभार
जीयन्ते नोपोषे मरिबाक बाट चाइ * नरक भुञ्जिते सिटो करय उपाइ १६९०
बापर आज्ञाक बाधे आछे ताक धिक * आज्ञा करा येवे घरे घरे मागो भिख
देशान्तर करो नोहो हाते खाण्डा धरो * हृदयत खाण्डा हानि प्राण परिहरो ९१
निष्ठे बोलो यद्यपि बापर आज्ञा पाओं * राज्य परिहरि तेवे बनबासे याओं

यदि राजागण आदेश की अवज्ञा करें तो उन्हें आज रण में जीत लाऊँ ! हाथों में नाराच ले पृथ्वी को फाड़ डालूँ और मुख्य-मुख्य नागों के फन काट डालूँ ।। १६८३ ।। पिताजी की आज्ञा हो तो पातालपुरी में जाकर सर्पराज वासुकी को बाँध लाकर उन्हें सौंप दूँ । निरन्तर नागों को यमलोक भेज दूँ और बाणो से सातों समुद्रों को सोख डालूँ ।। १६८४ ।। त्रिभुवन के सारे रत्नों को एकत्रित कर पिता के मन को संतुष्ट करूँगा । व्याघ्रमुख, चन्द्रमुख, चन्द्र को जीतनेवाले राहु, दीर्घबाहु, सुवाहु, प्रचंड समर्दन, समुद्र जैसे समभन, नतासन, त्रिभुवन को कम्पित करनेवाले पाताल-नाशक शक, धेनुक, प्रलम्ब, बाण, नरक, सम्बर, अनुह्राद, ह्राद, बीर एकाक्ष, इन जैसे दुर्जय असुरों को—जो अकेले ही देवों के दर्प को चूर-चूर कर सकते हैं, देवगण जिन असुर सिंहों के समक्ष हाथी जैसे हैं, जिनका नाम सुनते ही जनपद काँपने लगते हैं; पिताजी की आज्ञा से इन सभी का मान-मर्दन कर सकता हूँ । सिर काटकर सभी दानवों का वध कर सकता हूँ । त्रिभुवन में मेरे तुल्य कोई नही है । पिताजी को मैं त्रिभुवन का स्वामी बनाऊँगा ।। १६८५-८८ ।। यदि पिता के मन में युवक बनने की इच्छा है तो उनका बुढापा मैं लेकर बदल डालूँ । घोर पापकर किसने उन्हें त्रसित किया है ? इसके बदले में मैं उसे नरक भेजूँगा ।। ८९ ।। पुत्र होकर भी जो पिता की रक्षा नहीं करता, वह पुत्र पृथ्वी का महाभार है । जीवित रहते उनका पालन नहीं करता, उनके मरने की प्रतीक्षा करता रहता है, वह नरक-भोग का ही उपाय करता है ।। ९० ।। जो पिता की आज्ञा उल्लंघन करता है उसे धिक्कार है, यदि पिता आदेश दें तो मैं घर-घर भीख माँग सकता हूँ, देश-त्याग कर चला जा सकता हूँ । हाथ में खंग ले, अपने हृदय में चुभोकर प्राण तज सकता हूँ ।। ९१ ।। सत्य कहता हूँ, पिताजी की आज्ञा पाने पर मैं राज्य तजकर वनवासी बन सकता हूँ । पिताजी, आप जो भी कहें; मै वही कर सकता हूँ । पिताजी, आप कुछ बोलते नही इसी से

येहि बोला पितृ ताके करिवाक पारो * नो बोलन्त किछु पितृ आतमइ हारो ९२
मरिव वचन शुनि प्रगुण स्वभाव * निष्ठुर बुलिते लैल भरतर माव

कैकेयीर श्रीरामर आगत वरर वृत्तान्त कथन—श्रीरामर वनवासत सम्मति-दान

शुन पुत्र राम तइ वोलो तोत काज * हेन आज्ञा करन्त तोमाक महाराज१६९३
देवासुर युद्ध महा मिलिल पूर्व्वत * दानवे जिनिल देवताक समरत
इन्द्रे निला नृपतिक करिया सम्मान * असुरक जिनिया आसिला मोर थान ९४
तोमार वापक सेवा करिलो विस्तर * सिकालत राजा मोक दिला दुइ बर
एक वर लैलो भरतक दिवो राज * तुमि बन याइवाक बुलिलो आर काज ९५
पितृ सत्य पालिते आछय ये वेमन * राजार आदेश भैल चलि याइयो वन
राज्यर वासना एरि चिर जटाधर * चैध्य वरिषक लागि वनवास कर ९६
शुनिया रामर भैल राज्यत नैराश * हास्य करि बोलन्त याइबोहो वनबास
इसे कार्य्ये माव मोर दहे कलेवर * आपुनि आदेश न करिला राजेश्वर ९७
राघवे बोलन्त माव वाक्य शुनियोक * शीघ्रे दूत पठाइ भरतक आनियोक
यावे प्राण धरिया आछन्त महाराज * अविलम्वे भरतक आनि दियो राज ९८
वापक आश्वास वुलि पालिवेक जन * पितृद्रोही राम हेरा चलि गैलो वन
शुनियोक वापदेव अजर नन्दन * पितृद्रोही राम हेरा वोलय वचन ९९
अनाथिनी माव मोक पालिव केमने * मइ चलि याओं हेरा घोर तपो वने
शुनियोक वाप पृथिवीर निजनाहा * वदन कमल देखो माथा तुलि चाहा१७००

मैं हारा हुआ हूँ ॥ ९२ ॥ तव भरत की माँ कैकेयी यह निष्ठुर वचन कहने लगी, जिसे सुनकर सरल स्वभाव वाले (राजा) की मरने जैसी अवस्था हो गयी।

कैकेयी का श्रीराम से वर की कथा सुनाना—वनवास में जाने हेतु श्रीराम को सम्मति देना

हे पुत्र राम, सुनो, मैं तुमसे कहती हूँ। महाराज ने तुम्हें यह आज्ञा दी है ॥ १६९३ ॥ पूर्वकाल में देवासुरों का महायुद्ध हुआ था। दानवों ने युद्ध में देवताओं को जीत लिया था। इन्द्र महाराज को वड़े सम्मान-पूर्वक ले गये थे। महाराज दशरथ असुरों को पराजित कर मेरे पास आये ॥ ९४ ॥ तव मैंने तुम्हारे पिता की वड़ी सेवा की। तव राजा ने मुझे दो वर दिये थे। मैंने एक वर यह माँग लिया कि भरत को राज दिया जाय। दूसरे में यह कहा कि तुम वन में चले जाओ ॥ ९५ ॥ यदि पिता के सत्य की रक्षा करना तुम चाहते हो तो राजा का आदेश है कि तुम वन में चले जाओ। राज्य की अभिलाषा तजकर चीर और जटा धारणकर चौदह वर्ष वनवास में रहो ॥ ९६ ॥ यह सुनकर राम के मन से राज्य की अभिलाषा जाती रही। हँसकर उन्होंने कहा, मैं वनवाम को जाऊँगा। मेरा शरीर तो इस कारण जल रहा है कि राजेश्वर ने स्वयं मुझे यह आज्ञा नही दी ॥ १६९७ ॥ राम कहने लगे, हे माँ, मेरी बात सुनो। शीघ्र दूत भेजकर भरत को बुलवा लो। महाराज के जीवित रहते-रहते ही अविलम्व भरत को बुलवाकर राज्य दिलवा दो ॥ १६९८ ॥ भरत पिताजी की वात मानकर प्रजा-पालन करे; पितृ-द्रोही राम वन को चला जायेगा। हे अज-नन्दन, पिताजी, सुनिये, पितृ-द्रोही राम आपसे कह रहा है ॥ १६९९ ॥ हे

देखोहो दुर्लभ पुनरपि दरशन * आशीर्व्वाद करियोक चलियाओं बन
कैकेयी बोले राम बोलो हो तोमाक * यावे थाका तुमि तावे नुतुलिबे माथ१७०१
लज्जा भैला बिस्तर राजार मन दुख * तुमि सत्य पालिले राजार हैबे सुख
बुलिलि बचन हित आनिबो भरत * तुम बन गैलेहे राजार बहे सत २
कैकेयीर बाक्य शुनि निष्ठुर स्वभाव * हा राम बुलि राजा एरिलन्त गाव
क्षणेकते राजार मोहित भैल मति * आसनते मूर्च्छा गैला अयोध्यार पति ३
दुख देखि राजार बुलिला रामे काज * कैकेयीक बुलिला एरिया मुख लाज
आमाक निष्ठुर बापे नोवोलन्त वाणी * हेर हात योरो सुखे थाकियो गोसानी ४
मोत नुबुलिवा तुमि भरतर काज * प्राण दिते पारोहो आछोक धन राज
मोर बनवासत बापक दिया दुख * इटो राज्यभार कत बर हुइबे सुख१७०५

कौशल्यार आगत कैकेयीर बरप्राप्तिर वृत्तान्त कथन

अन्तेषपुरे यतेक रामर शत माव * शुनि सन्तापित भैल उदवेग भाव
कैकेयीक भये सवे सङ्कोचित मति * कौशल्यात जनइबाक न भैल शकति१७०६
उदबेगे विकले भ्रमन्त मन्यु करि * हा हा अनाथ भैला अयोध्या नगरी
पापिष्ठी कैकेयीर हैल किनो मन्द मति * भरतक राज्य देइ रामर विपति ७
एहि पापे पापिष्ठी मैं गैल सुभागिनी * रामर राज्यत बहु पातिक विघिनी
हा राम बापु तुमि आपुतिर पो * सुमरन्ते तोमाक चक्षुर बहे लो ८

पृथ्वी के प्रभु, पिताजी, सुनिये। आप सिर उठाकर देखिये ताकि मैं आपके कमल-मुख के दर्शन कर सकूँ ॥ १७०० ॥ आपके दर्शन कर लूँ, जो पुनः दुर्लभ है। आप आशीर्वाद दे जिससे वन में चला जाऊँ। कैकेयी बोली, राम, तुमसे कहती हूँ। तुम जब तक रहोगे तब तक ये सिर नही उठायेंगे ॥ १७०१ ॥ राजा को बड़ी लज्जा हो रही है, उनके मन में बड़ा दुःख है। तुम सत्य-पालन करो तो राजा को सुख होगा। तुमने हितकारक वचन कहा। मैं भरत को बुला लूँगी। तुम्हारे वन-गमन से ही राजा की सत्य-रक्षा होगी ॥ २ ॥ निष्ठुर स्वभाववाली कैकेयी के वचन सुन राजा 'हा राम' कहकर ढल गये। पल में उनकी मति मोहाच्छन्न हो गयी। अयोध्यापति दशरथ अपने आसन पर ही मूर्च्छित हो गये ॥ ३ ॥ राजा का दुःख देखकर राम सकोच छोड़कर कैकेयी से कहने लगे—निष्ठुर पिताजी मुझसे बात नही करते, हे माता, मैं हाथ जोड़ता हूँ। तुम सब सुखी रहो ॥ ४ ॥ भरत के लिए तो मैं प्राण भी दे सकता हूँ, धन और राज्य की तो बात ही क्या है ? मेरे वनवास से पिताजी को दुःख पहुँचा-कर, इस राज्य-भार में कौन-सा बड़ा सुख होगा ? ॥ १७०५ ॥

कौशल्या से कैकेयी की वर-प्राप्ति का वृत्तान्त कहना

अंतःपुर में राम की जो सैकडों माताएँ थी, यह समाचार सुनकर संतप्त हो उद्विग्न हो उठी। कैकेयी के डर से मति संकुचित होने के कारण कौशल्या से यह बात बताने की उनकी शक्ति नहीं हुई ॥ १७०६ ॥ उद्वेग से व्याकुल हो मन ही मन यह कहती हुई वे इधर-उधर घूमने लगीं कि हाय, हाय, अयोध्यानगरी अनाथ हो गयी। पापिनी कैकेयी की यह कैसी मन्द बुद्धि हुई जिससे कि वह भरत को राज्य दे रही है और राम को संकट में डाल रही है ॥ ७ ॥ वह सुभागिनी इसी पाप के कारण पापिनी बन गयी। राम के राज्याभिषेक में उसने बड़े विघ्न डाल दिये। हे

हा विधि मोर कोन कार्य्यक करिले * आगे निधि दिया केन पाचत हरिले २७
मोहोर हृदय बज्र लोहाय गढ़िल * तोर वनवास शुनि प्राण न छारिल
जानिलो कैकेयी आवे स्वामीक वधिल * तोमार आगत विधि मरिवे निदिल २८
हातजोर करि वोले प्रेत महीपाल * सव दुख एराइ सत्वरे करा काल
चित्रगुप्त तुमि केने पासरिला मोक * पाँजि मोक सत्वरे कातर करो तोक २९
अपाय मिलिल किनो अयोध्या नगर * शुचि मुखे कैकेयीये शुषिल सागर
टीपचिर वावे मेरु पर्व्वत उरिल * तुनि सापे सव नागपुरीक गिलिल१७३०
तोमाक पठाइव वन दशरथ राय * ततोधिक मोर वाक्य पालिते युवाइ
स्त्री जित पितृर नकरि तुमि वाक * वनक न जाइवे वाप मोर पाशे थाक१७३१

लक्ष्मणर क्रोध, श्रीरामर कौशल्या आरु लक्ष्मणक प्रवोध दान

शुनिया लक्ष्मणे हेन वुलिलन्त वाणी * उत्तम वुलिला माव जगत गोसानी
स्त्रीजित वृद्ध वाप कपट चरित * तान वोले वन याइबा किनो विपरीत१७३२
कैकेयी पापिष्ठी नृपतित राज्य मागे * वैरिणीर वोलत मरिते केन लागे
हेन वुलि क्रोधिलन्त लक्ष्मण प्रचण्ड * वुढ़ारे आगते काटि करो खण्ड खण्ड ३३
भरतक साराइल तोमाक परिहरि * निर्म्मल करिवो आजि अयोध्या नगरी
समदले साजि आसन्तोक महीपाल * लक्ष्मणर हातत सवारो हैव काल ३४
अश्वदल गजदल नरदल छेदि * आजि मइ शोणिते वोवाइबो एक नदी

कौशल्या राम के गले में हाथ डालकर "मर गयी" कहती हुई अनेक अनुशोचना करने लगी। हाय विधि, तूने मेरा कौन-सा कार्य किया ? पहले निधि देकर वाद को क्यों हरण कर लिया ? ।। २७ ।। मेरा कुटिल हृदय लोहे का बनाया हुआ है जिसने तेरे वनवास की वात सुनकर भी प्राण नही छोड़े। समझ गयी अव कैकेयी ने स्वामी को मार डाला, विधाता ने तुम्हारे सम्मुख मरने नही दिया ।। २८ ।। हाथ जोड़कर कहने लगी, हे दिवंगत महाराज; सव दुखो से मुक्तकर मुझे भी काल-कवलित करो। चित्रगुप्त, तुम मुझे क्यों भूल गये ? अपनी वही मे समय मिलाकर मुझे शीघ्र ले चलो। तुमसे कातर विनती करती हूँ ।। २९ ।। इस अयोध्या नगर पर यह कैसा संकट आ पड़ा। कैकेयी ने सुई के मुख से सागर को सोख लिया। 'टीपचि' पक्षी के पंखों की हवा से मेरु पर्वत उड़ गया। 'तुनि' सर्प ने समस्त नागपुरी को ग्रासकर लिया ।। १७३० ।। तुम्हें राजा दशरथ वन में भेज रहे हैं। उनकी अपेक्षा मेरे वचन पालन करना अधिक युक्ति-युक्त है। स्त्री द्वारा पराभूत पिता का वचन न मान के पुत्र, तुम वन न जाओ, मेरे पास रहो ।। १७३१ ।।

लक्ष्मण का क्रोध : श्रीराम का कौशल्या और भरत को सांत्वना देना

यह सुनकर लक्ष्मण ने यह वचन कहा— जगत की देवी मां, तुमने उत्तम कहा। स्त्री द्वारा पराभूत पिता जी कपट चरित्रवाले हैं। उनकी वात पर वन में जाओगे, यह कैसी विपरीत वात है ? ।। ३२ ।। पापिनी कैकेयी राजा से राज्य माँगती है। वैरिणी की वात पर मरना क्यों ? ऐसा कहते हुए लक्ष्मण प्रचंड क्रुद्ध हो उठे। पहले वूढ़े को ही काटकर खड-खंड कर डालूँ ।। ३३ ।। तुम्हें भूलकर भरत को राजा बनाया, मैं आज अयोध्या नगर को निर्मूल कर डालूंगा। भले ही राजा दल वनाकर आवें, लक्ष्मण के हाथों सवका अन्त-काल होगा ।। ३४ ।। मामा सहित यदि लाखों

मातुले सहिते यदि साजिया आसय * लक्षेक भरतो मोर लाहारि नसय१७३५
देवगण समे भरतत अनुवले * इन्द्रदेवो धाव यदि करे समदले
ताहाङ्को जिनिबो आजि समरर माज * मइ आजि तोमाक करिबो युवराज ३६
भरतर पक्ष यक्ष राक्षस असुर * रण माजे सबारे करिबो दर्पचूर
नन्दी महाकालक जिनिबो गणपति * कार्त्तिकक जिनिवो देवर सेनापति ३७
तोमार चरणे भाले करिबोहो सेव * रणे समसर मोर नुहिकय केव
काम वश बापर बचन परिहरि * राज्य भार लैयो झाण्टे अयोध्या नगरी ३८
हेन शुनि कौशल्यायो बुलिला बचन * हित उपदेश बोले सुमित्रानन्दन
अनुदिने लखाई भकति तोत करे * तोमार अनिष्ट देखि अनुशोच करे ३९
आन बोल करियोक जीवन उपाइ * आमार वचन भाले करिते युवाइ
मावत भकति आवे करि निते नित * सिकारणे काश्यपर कैलासत थित१७४०
मोर जीवनक जेबे आछे अभिप्राय * बापर बचने बने याइते नुयुवाइ
सापत्न्य भातृक जिनि मातृर बचने * इन्द्रे काढ़ि लैला अम्रावती रङ्ग मने ४१
हेन बुलि थाकिला कोशल राज जीव * हातजोरे रामचन्द्र आगे भैल थिव
अनुज्ञा दियोक माव चरणत धरो * बापर आदेश मइ केने परिहरो ४२
विनये कातर करो कुखिधर माव * आज्ञा दियो चलो बने तेजि निज ठाव
कैकेयीर बोले वन आदेशिला राय * सन्मत दियोक बाधिबाक नुयुवाय ४३
यामदग्नि राम यत बुलिलन्त गर्व्व * मोर बाहुवले ताक हरिलेक सर्व्व
आमि हेन महावीर पितृत भकत * आज्ञा भैले त्रिभुवन जिनिबे शकत ४४

भरत भी सजकर आवे तो भी घोड़ों, हाथियों, मनुष्यों के दलों को खंड-विखंडकर आज मैं रक्त की नदी बहा दूँगा; यह परिहास मुझे सहन नहीं होता ।। ३५ ।। देवगण समेत यदि भरत का पक्ष लेकर इन्द्र भी दल-बल लेकर धावा करें, तो उन्हें आज मैं समर में जीतकर तुम्हें मैं युवराज बनाऊँगा ।। ३६ ।। भरत का पक्ष लेकर आनेवाले यक्ष, राक्षस, असुर, रण क्षेत्र में सबका दर्प चूर कर डालूंगा । नन्दी, महाकाल और गणपति को जीत लूंगा । देव-सेनापति कार्तिकेय को भी पराजित करूंगा ।। ३७ ।। युद्ध में मेरी समानता कोई भी नहीं कर सकता । मै तुम्हारी चरण-सेवा उत्तम रूप से करता रहूँगा । काम के वशीभूत पिता जी का वचन भूलकर अयोध्या नगरी का राज्य-भार शीघ्र ग्रहण कर लो ।। ३८ ।। यह सुनकर कौशल्या भी कहने लगी— सुमित्रानन्दन ने हित-वचन ही कहा है । लक्ष्मण निरंतर तेरी भक्ति किया करता है, तेरा अनिष्ट देखकर अनुशोचना करता है ।। ३९ ।। अन्य वचन मानकर जीवन-रक्षा का उपाय करो । मेरा वचन मानना तुम्हें उचित है । नित्य माता की भक्ति की थी इसी कारण काश्यप कैलास पर स्थित हो सके थे ।। १७४० ।। यदि मेरे जीवन की रक्षा का अभिप्राय है तो पिता के वचन के अनुसार वन में न जाना ही उचित है । माता के वचनानुसार सपत्नी-भाइयों को जीतकर इन्द्र ने प्रसन्नचित्त से अमरावती को छीन लिया था ।। ४१ ।। ऐसा कहकर कौशल्या चुप हो गयीं । रामचन्द्र हाथ जोडकर उनके सामने खड़े हुए । माँ, मुझे अनुमति दो, तुम्हारे चरण पकड़ता हूँ, पिता जी का आदेश भला मैं कैसे उल्लंघन करूँ ? ।। ४२ ।। जननी, मैं कातर विनती करता हूँ । आज्ञा दो कि मैं अपना स्थान छोड़कर वन में चला जाऊं । कैकेयी की वात पर महाराज ने मुझे वन में जाने का आदेश दिया है । तुम भी सम्मति दो । बाधा देना उचित नहीं है ।। ४३ ।। जमदग्नि राम ने जब गर्व किया था तो मेरे बाहुबल ने उसे सम्पूर्ण रूप से हरण कर लिया था । मुझ-सा

सत्य पाशे कँकेयी राजाक वन्दी कैला * पलवर छावत दिग्गज वन्दी भैला
अनुमति दियोक वाधिते दुपुवाय * एहिसे करिते आदेशिला महाराय ४५
मोर विधि लिखितेक वाधिते नोवारि * राज्यश्री एरिलोहो आपोन ओवारि
मोर शोके दग्ध वापेक भाले चाहा * ताहाक निष्ठुर बोला मोर माथा खाहा ४६
परशुरामक कोपे वापे आदेशिल * काटिया मावर माथा पितृ आगे दिल
गण्डु नामे ऋषि पितृ आज्ञाक धरिल * अद्भुत कर्म्म तेवे गोवध करिल ४७
स्वरूप बुलिलि वाप लखाइ महावीर * तोहोर आगत कोने हैवे पारे स्थिर
असार जीवन दिन मात्र कतिपय * ताके लागि चिन्तिवोहो गोत्रर प्रलय ४८
भाले जानो लखाइ तोर आमात भकति * मोर अर्थे प्राण दिते आछय शकति
शुन शुन बोलोहो लक्ष्मण विद्यमान * पितृशोके मरो हृदयत देस स्थान ४९
तइ जान कँकेयीर निकारुण काया * भरतत अतिरेक मोत वर दाया
मोर दैवे चित परिवर्त भैल तान * अन्यथा नुहिके वाप सत्ये सत्ये जान१७५०
राजवंशे उतपति स्वभावे कल्याणी * दैव वशे तानचित हैल हेन जानि
मोर कर्म्मे अभिषेके मिलित विघात * मन परिताप परिहरियो हृयात ५१
सुख दुख दुइ भुञ्जिलेहे जाय क्षय * तुला धरियाछे विधि भाग्ये से मिलय
दैवे समे युजे कोने कहतो काहिनी * कँकेयीक दोष किय दियम नजानि ५२
हेन शुनि क्रोधिलन्त लक्ष्मण प्रधान * खाण्डाक झङ्कारि कम्पे तरतरिमान
तारा येन रकत नयन दुइ फुरे * अविरल धारे येन मेघ जल झुरे ५३

महावीर पितृ-भक्त यदि आज्ञा हो तो त्रिभुवन को जीत सकता है ।। ४४ ।। सत्य के पाश से कैकेयी ने राजा को वन्दीकर लिया, मानो मछली पकड़ने की बाँस की 'पलु' में दिग्गज वन्दी हो गये । अनुमति दो, वाधा देने पर दोष लगेगा । महाराज ने ऐसा ही करने का आदेश दिया है ।। ४५ ।। मेरे विधि ने जो लिख दिया है उसे वाधा दिया नही जा सकता । अपनी इच्छा से ही मैं राज्य-लक्ष्मी को छोड़ रहा हूँ । मेरे शोक से दग्ध पिताजी की भलाई की कामना करो । उनको निष्ठुर कहो तो मेरा सिर खाओ ।। ४६ ।। परशुराम के पिता के क्रोध मे आकर आदेश करने पर माता का सिर काट उन्होंने पिता के सम्मुख कर दिया । गंडुनाम के ऋषि ने पिता की आज्ञा से गोवध-रूपी अद्भुत् कर्म किया था ।। ४७ ।। महावीर लक्ष्मण, तूने सत्य कहा, है वत्स ! तेरे सम्मुख भला कौन ठहर सकता है ? यह असार जीवन केवल कुछ ही दिनों का है । भला उसी के लिए अपने वंश का विनाश सोचूँ ? ।। १७४८ ।। लक्ष्मण, मेरे प्रति तेरी भक्ति मुझे भलीभाँति ज्ञात है । मेरे लिए प्राण देने की सामर्थ्य तेरी है । सुनो लक्ष्मण, मैं यथार्थ कहता हूँ, पितृशोक से मैं मर रहा हूँ । मेरी वात को अन्तर में स्थान दो ।। १७४९ ।। तुम जानते हो, कैकेयी करुणाहीना नही हैं । भरत की अपेक्षा मुझपर उनकी अधिक दया रही है । मेरे दैव के कारण उनका चित्त परिवर्तित हो गया है । वत्स, तुम सत्य जानो, इसका कोई अन्य कारण नही है ।। १७५० ।। उनका जन्म राजवंश में हुआ है; स्वभाव से कल्याणमयी है, दैव-वश उनका चित्त ऐसा हो गया है । मेरे अभिषेक-कर्म में वाधा आ पड़ी । ऐसा समझकर मन का परिताप छोड़ दो ।। ५१ ।। सुख हो या दुःख, भोगने पर ही दोनों का क्षय होता है । विधाता तुलादंड पकड़े हुए है । ऐसा संयोग भाग्य से ही प्राप्त होता है । वताओ तो भला दैव से युद्ध कौन कर सकता है । विना जाने, तुम कैकेयी को दोष क्यों दे रहे हो ? ।। ५२ ।। यह सुनकर श्रेष्ठ पुरुष लक्ष्मण क्रोधित हो उठे । तलवार को झंकारते हुए थर-थर काँपने लगे । दोनों

आकाश निर्म्मल येन खाण्डा तुलि लैला * कैकेयीक धावे यमदूत साज भैला
भ्रुकुटि कुटिल आखि भैगैल वदन * रामक बुलिला महा कोप करि मन ५४
क्षत्रकुले उपजिला भैला बुद्धि नाश * प्रिय वाक्य बुलिया बैरक दिला आश
पौरुष एरिया दैब करिलाहा सार * नपुंसक वृत्ति सब भैगैल तोमार ५५
भैल दैव तोमार कुञ्जर मयमत्त * पौरुषअङ्कुशे आजि करो परिवर्त्त
तुमि राजा हैवाक याहार नाहि मन * मारिया पठाइबो ताक यमर करण ५६
राज धर्म्म एरिया हैबा तापसीर वेश * केमन मुगुधे हेन दिल उपदेश
किनो पाप करिलो बचन नुशुनाहा * मावर सतिनी बोले मरिबाक याहा ५७
किहक तोमार भैल हेन बुद्धि मोस * सकल लोकक कराइलाह असन्तोष
लोकर बिद्वेष करिबाक नुयुवाय * राज्य धर्म्म धरि दृढ़ करियोक काय ५८
दाव सुहायन मोर नोहे चन्द्रहास * टोन हात सुहायन नोहे बनवास
शरीर शोभन मोर नोहे दुइ बाहु * जिनिबो शत्रुक चन्द्रक येन राहु ५९
खरतर लक्ष्मणक त्रिभुवने जानि * बीर गणे तात तयु पाछत बखानि
कदली वनक येन गुरित छेदिवो * विपक्षक मारि यम सदन पूरिवो १७६०
कैकेयीक नृपतिक कोप करि मने * मेलानि दियोक बुलि धरिला चरणे
सत्ये सत्ये पालिबोहो तोमार आदेश * आज्ञा दियो परिवर्त्त करिबो निशेष १७६१
सकल राज्यर लोक भैलोहो असार * बापकर गोसानीक करिलेक सार
आज्ञा दियो प्रभु मोक बोलो बारे बार * बुढ़ारे आगते काटि करिवो दोहार ६२

आँखें रक्तवर्ण हो तारों जैसी चमकने लगी। उनमें से मेघ की भाँति अविरल धारा से जल झरने लगा ॥ ५३ ॥ निर्मल आकाश की भाँति चमकती तलवार उठा ली। कैकेयी पर धावा करने हेतु यमदूत जैसे वन गये। भौहें टेढ़ी हो गयीं, मुखमंडल लाल हो उठा। मन में महान् कुपित होकर राम से कहने लगे— ॥ ५४ ॥ क्षत्रिय कुल में उत्पन्न होकर भी तुम्हारी बुद्धि नष्ट हो गयी है। प्रियवचन बोलकर वैरी को प्रश्रय दे रहे हो। पौरुप छोड़कर दैव को सार वना लिया है। तुम्हारी सारी वृत्तियाँ नपुंसक हो गयी है ॥ ५५ ॥ तुम्हारा दैव मदमत्त हाथी वन गया है, पौरुष रूपी अंकुश से आज उसका परितवन कर डालूँगा। जो तुम्हें राजा बनाना नही चाहता, उसे आज मारकर यमलोक भेज दूंगा ॥ ५६ ॥ राजधर्म छोड़कर तपस्वी का वेश धारण करोगे, भला किस मूढ़ ने ऐसा उपदेश दिया है ? हमने कौन सा पाप किया कि हमारे वचन नही सुनते। माता की सौत की बात पर मरने चले हो ॥ ५७ ॥ किस कारण तुम्हारी बुद्धि ऐसी भ्रष्ट हो गयी जिससे कि सभी लोगों के मन में असन्तोष भर रहे हो ? लोगों से विद्वेष करना अनुचित है। राज-धर्म धारण कर दृढ़ कर्म करो ॥ ५८ ॥ मुझे चाँदनी की अपेक्षा दावानल सुहावना लगता है। हाथों में तरकश सुहावना लगता है, बनवास नहीं। मेरा शरीर ही सौन्दर्यपूर्ण है पर दोनों भुजाएँ नही। राहु जैसे चन्द्र को जीतता है वैसे ही मैं भी शत्रुओं को जीत लूँगा ॥ ५९ ॥ तेजस्वी लक्ष्मण को त्रिभुवन जानता है। वीरगण पीछे भी उसकी प्रशंसा किया करते है। केले के वन को जैसे जड़ से काट डालते हैं, उसी प्रकार विपक्षियों को मारकर यमलोक को परिपूर्ण कर दूंगा ॥ १७६० ॥ कैकेयी और राजा पर क्रोधकर मुझे आदेश दो। ऐसा कहकर चरण पकड़ लिये। सत्य-सत्य तुम्हारा आदेश पालन करूंगा। आज्ञा दो, समूल रूप से परिवर्तन कर डालूँगा ॥ ६१ ॥ (तुम्हारे लिए) हम राज्यभर के लोगों की बातें असार हो गयीं, पिताजी की देवी की बात ही सार हुई। हे प्रभु, तुमसे मैं वारंवार कहता हूँ, आदेश दो, उस बूढ़े को

बापक करन्त कोप लखाइ महावीर * निरन्तरे कम्पे आति सकल शरीर
क्रोध देखि रामे लक्ष्मणर हाते धरि * बिनय बचन जने चित्त शान्त करि ६३
भाले जानो लखाइ मोत भकति करस * व्यसने मगन भैलो तारिते पारस
यदि स्नेह आछे करा आमार सम्मत * परिहर बाप इटो क्रोध भार यत ६४
यदि प्रिय हव मोर वाक्य कर हित * बापर चरण सेवा कर निते नित
मइ बन गैले पाला मातृक सकले * राज्यभार वहिवे भरत अनुवले ६५
शुनि लक्ष्मणर कोप उपशाम भैल * हस्ती-मद येन हस्तीते अन्त गैल
येहेन सर्पर बिष शिखाग्रक गैल * नमाइ आनि गारुड़ी निष्प्रभ करि थैल ६६
एको पक्षे राघवर चित्त न लरिल * हात जोरे लखाइ गैया चरणे परिल
शुनियोक ददा मोर कृपामय मति * राज्यभोग शतेक तोमार पावे गति ६७
दुखर सहाय हैवो योगाइबोहो फल सेवा करि थाकिबोहो चरण युगल
तोमार सङ्गति हैवो मोर एहि सार * बनबासे परिचर्या करिबो तोमार ६८
राघवे बोलन्त शुन सुमित्रानन्दन * बन्धुजन एरि तुमि नायाइवाहा वन
कौशल्या मावर शोक हैव अनुपाम * तोर दरशने किछु हैब उपशाम ६९
एकुतीर पुत्र मइ बन बासे जाइबो * सि कारणे माव मोर वर दुख पाइव
आश्वासिबि इहाङ्क सुमित्रा आर आइ * केन बने याइबि तइ लक्ष्मण भैयाइ१७७०
वनबासे गैले वर निकार के पाइव * चैध्य बरिषक लागि अन्न के नखाइव
फल मूल एरिया भक्षण नाहि आन * वृक्षर बाकलि मात्र हैबे परिधान ७१

पहले काटकर दो खंड कर दूँगा ।। ६२ ।। पिता के ऊपर महावीर लक्ष्मण ने भयंकर क्रोध किया । उनका सम्पूर्ण शरीर क्रोध के मारे निरंतर कम्पित होने लगा । उनका क्रोध देख श्रीराम, लक्ष्मण का हाथ पकड़, चित्त को शान्तकर विनयपूर्ण वचन कहने लगे ।। ६३ ।। हे लक्ष्मण, मुझे भलीभाँति ज्ञात है कि तुम मेरी भक्ति करते हो । यदि मै व्यसन-लीन हो जाऊँ तो मुझे तुम उवार सकते हो । यदि मुझपर तुम्हारा स्नेह है तो मेरी जो सम्मति है, वही करो । हे वत्स, यह जो क्रोध-भार है, सब तज दो ।। ६४ ।। यदि तुम मेरे प्रिय हो तो मेरा हितकारी वचन मानो । नित्य पिताजी की चरण-सेवा करते रहो । मेरे वन-गमन के पश्चात् माताओं का पालन करो । भरत के सहित मिलकर राज्य-भार वहन करो ।। ६५ ।। राम के वचन सुनकर लक्ष्मण का क्रोध मिट गया । हाथी का मद मानो हाथी में ही विलीन हो गया । मानो चोटी के अग्रभाग तक पहुँचे हुए सर्प-विष को गारुड़ी ने उतारकर निष्प्रभ कर डाला ।। ६६ ।। राघव का हृदय किसी भी प्रकार से विचलित नहीं हुआ । हाथ जोड लक्ष्मण जाकर चरणो मे गिर पड़े । हे मेरे परम कृपामय भैया, सैकड़ों राज्य-भोग के बजाय तुम्हारे चरणों में ही मेरी गति है ।। ६७ ।। मैं तुम्हारे दु:ख का सहायक बनूँगा, तुम्हारे लिए फल जुटाऊँगा । तुम्हारे चरण-युगल की सेवा करता रहूँगा । तुम्हारी सगति रहे, यही मेरे लिये सार है । वनवास में मैं तुम्हारी परिचर्या करता रहूँगा ।। ६८ ।। राघव बोले, सुनो सुमित्रानन्दन, 'बन्धुजनों को छोड़कर वन में जाना तुम्हारे लिए उचित नहीं है । कौशल्या माता को जो अतुल दु:ख होगा वह तुम्हारे दर्शन से कुछ मिटेगा ।। १७६९ ।। माता का इकलौता पुत्र मैं वन में चला जाऊँगा इस कारण माता मेरी असीम दु:ख पावेगी । तुम इन्हें और सुमित्रा मैया को आश्वासन देते (धीरज बँधाते) रहना । लक्ष्मण भाई, भला तुम वन मे क्यो जाओगे ? ।। १७७० ।। वन में जानेपर अनेक कष्ट ही मिलेंगे । चौदह वर्ष तक अन्न खाने को न मिलेगा । फल-मूल को छोड़ और कुछ भी भोजन नहीं

बापेर आज्ञाक आमि शिरोगत करि * चलि जाइबो आजि अयोध्याक परिहरि
राज्यर भोगत आमि भैलोहो नैराश * अति बर दुखे खपिबोहो बनबास ७२
जटार भितरे पशि ओकणीये खाइब * हातर पावर नख बाढ़ि बाढ़ि जाइब
वरिषा कालत आमि बर दुख पाइब * एको एको रजनी वरिष सम जाइब ७३
किशलय सम तोर कुशल स्वभाव * आदित्यर रश्मि भाले न सहय गाव
वाहुरिया चल भैयाइ आपोनार ठाव * मरिबन्त कान्दिया सुमित्रा तोर माव ७४
आग बाढ़ि लक्ष्मणे जुरिला दुइ हात * प्राणदादा राम बुलि नमिलन्त माथ
तुमि एरि गैले मइ जाइबो देशान्तर * नुहि आजि कटारत करिबोहो भर ७५
हेन शुनि रामर कौतुक बर भैल * बनक याइबाक लक्ष्मणक लगे लैल
शुन शुन बोलो तोक भैयाइ लक्ष्मण * आमार लगत बाप तइ जाइबि वन ७६
आदि अन्त कथा शुनि आपोनार ठावे * आथे बेथे आसिला सुमित्रा निजमावे
दुइ बाहु मेलि दोहान्तर गले धरि * दीर्घ रावे कान्दिला अनेक मन्यु करि ७७
किनो पाप करिलोहो कौशल्याये बाइ * दुइ आन्धलीर लाठि कहि लागि जाय
एत हन्ते तान दुइ चरणत धरि * आगे सविनये कोप उपशाम करि ७८
हेन देखि कौशल्या हृदये मुठि हानि * मुख चाइ रामक बुलिला देवी वाणी
जपे तपे पाइलोहो तोमाक गर्भ धरि * परम आशाये तुलिलोहो बर करि ७९
कैकेयी प्रचण्ड सूर्य जनिल तरास * पुत्र तरु छायात करिलो बर आश
फल धरिबार जेवे हैं गैल समय * मोर कर्म्मवायु उरे बिधि विड़म्बय१७८०
सतिनीर पराभव कतक सहिबो * सत्ये सत्ये कहिलोहो जीवन त्यजिबो

मिलेगा। वृक्ष का वल्कल ही परिधान होगा ॥ ७१ ॥ पिताजी का आदेश शिरोधार्य कर आज मैं अयोध्या को छोड़कर चला जाऊँगा। राज्य में, भोग में मेरी आशा नही रही। बड़े दुःख में वनवास की अवधि पार करूँगा ॥ २ ॥ जटा के अन्दर घुसकर जूँएँ खाया करेगी, हाथ-पैर के नाखून बढ़-बढ़ जायेंगे। वर्षाकाल में मुझे अनेक कष्ट होंगे। एक-एक रात वर्ष के समान बीतेगी ॥ ७३ ॥ तुम्हारा कुशल स्वभाव किसलय जैसा है। तुम्हारा शरीर सूर्य की किरणो को भी अच्छी तरह सह नही पाता। हे भाई, तुम अपने स्थान पर लौट जाओ। नही तो तुम्हारी माता सुमित्रा रोते-रोते मर जायेगी ॥ ७४ ॥ लक्ष्मण ने आगे बढ़कर दोनों हाथ जोड़े। प्राणों के भैया राम, कहते हुए सिर झुका दिया। यदि तुम मुझे छोड़ जाओगे, तो मैं देशान्तरित हो जाऊँगा। नहीं तो आज कटार पर ही निर्भर करूँगा ॥ ७५ ॥ यह सुनकर राम को बड़ा कौतुक हुआ। उन्होंने वन जाने हेतु लक्ष्मण को संग ले लिया। सुनो भाई लक्ष्मण, तुमसे कहता हूँ। वत्स, तुम मेरे संग वन चल सकते हो ॥ ७६ ॥ अपने भवन में आदि-अंत संपूर्ण वृत्तान्त सुनकर माता सुमित्रा अस्त-व्यस्त हो वहाँ आयी। दोनो हाथ फैला दोनों के गले पकड़कर अनेक अनुशोचना करती हुई जोर जोर से क्रंदन करने लगी ॥ १७७७ ॥ ओ कौशल्या बहन, हमने कौन सा पाप किया था ? दोनों अन्धियों की लाठियाँ ये दोनों कहाँ चले जा रहे है ? तब श्रीराम, लक्ष्मण दोनों ने उनके चरणों को पकड़कर बड़े विनय-पूर्वक उनका क्रोध शान्त किया ॥ ७८ ॥ यह देख कौशल्या हृदय पर मुक्का मार राम के मुखमडल को देखती हुई कहने लगी— जप-तप के द्वारा तुम्हें गर्भ मे धारण कर पायी थी। परम आशा से तुम्हें पाल-पोस कर बड़ा किया था ॥ ७९ ॥ कैकेयी रूपी प्रचंड सूर्य ने त्रास उत्पन्न कर दिया है। पुत्र रूपी तरु की छाया में बड़ी आशा थी। परन्तु फल लगने का जब समय आया, विधि-विडम्बना से मेरी कर्म-वायु उसे उड़ा ले गयी ॥ १७८० ॥ सौत से पराभव

वैरिणीर बोले राम देशर वजास * राजधर्म्म देखे वापु न जा वनवास ८१
नुशुनिलि वापु तइ मनुर वचन * आमि कहो शुन राम भाले दिया मन
काम काज नुबुजस बातुल चरित * हेन गुरु वचन बाधिव निते नित ८२
दश विप्र अधिक गौरव उपाध्याय * तातो दशगुण पिता देखिते युवाय
बापत अधिक दशगुण होवे माव * पृथिवीत गुरुतर देखिव सुभाव ८३
हेन मनु वाक्य तुमि न करिवा वाधा * पाप एरि वापु तुमि धर्म्मपथ साधा
मोत परे तोर आर नाइ गुरुतर * कामबश बापर वचन परिहर ८४
हरि हरि राम तइ वहिवाक भैले * निर्य्याण कालर बाति ज्वालिया मिलाइले
दुइ पुत्र हरुवाइलो कि काम करिलो * एवेसे जानिलो मइ जीवन्ते मरिलो ८५
प्राण प्रभु दशरथ महामहीपाल * जानिलोहो एवेसे तोमार भैल काल
कैक जाइवे राम मोर एकुतीर पो * तोक सुमरन्ते सदा झरिवेक लो ८६
नृपतिर वाक्य बाधि कर मोक मत्त * राजारो हरिष हैव जानियोक तत्व
कैकेयीक बाक्य बुलिवन्त महाराज * बुलिलोहो रामक याइवाक वनवास ८७
वचन न करे पुत्र आवचन कर * येन अभिमत आवे लैयो आन वर
मोर बाक्य करिले सवार होवे हित * ज्येष्ठ पुत्रक राज्य दिवाक उचित ८८
कामबश बापर बचन परिहर * लखाइ समे विमरिष करि राज्य कर
तुमि एरि गैले शून्य देखो दशो दिश * अगणित प्रवेशो नुहिबा खाओं विष ८९
यदि वने जाइवे वापु मोको लैया चल * तोहोर लगते मइयो खाइवो वनफल

का दुःख कितना सहन करूँ ? मैं सत्य-सत्य कह रही हूँ कि जीवन तज दूँगी। हे राम, वैरिणी की बातपर तुम देश को छोड़ जाओगे ? तुम राज-धर्म को देखो, वत्स, वन को न जाओ ।। ८१ ।। वत्स, तुमने क्या मनु का वचन नही सुना है ? मन लगाकर सुनो, मैं सुना रही हूँ। जिसे राज-कार्य का ज्ञान नही, जो बावले-स्वभाव का है, ऐसे गुरुजन के वचन की नित्य अवज्ञा कर देनी चाहिए ।। ८२ ।। दस विप्रों से अधिक गौरव उपाध्याय का है। पिता का गौरव उससे भी दसगुणा अधिक मानना चाहिए। पिता से दसगुणा अधिक माता होती है। उसे पृथ्वी से भी गुरुतर मानना चाहिए ।। ८३ ।। मनु के ऐसे वचन की तुम्हे अवहेलना नही करनी चाहिए। हे वत्स, पाप को छोड़कर तुम धर्म-पथ की साधना करो। मुझसे परे कोई अन्य तुम्हारे लिए गुरुतर नही है। काम के वशीभूत पिता के वचन को मत मानो ।। १७८४ ।। हरि, हरि, राम, तुम जलाने वाले ही बने। बुझने के समय मे प्रदीप भभकाकर बुझा दिया। दो पुत्रों को खो बैठी, हाय, मैंने कैसा कर्म किया ? अभी ही समझ पायी कि मैं जीवित ही मर चुकी ।। १७८५ ।। प्राण-प्रभु दशरथ महान् राजा हैं, परन्तु अभी ही समझ सकी हूँ कि वे तुम्हारे काल बन गये। मुझ इकलौती का पुत्र राम, तुम भला कहाँ जाओगे ? तुम्हारा स्मरण आते ही सदा मेरे आँसू बहा करेंगे ।। ८६ ।। राजा की बात अस्वीकार कर मुझे प्रसन्न करो। यह तत्व समझ लो कि इससे राजा को भी हर्ष होगा। महाराज कैकेयी से कहेंगे, राम को वनवास में जाने को कहा था ।। ८७ ।। परन्तु पुत्र वह वचन नहीं मानता, अब इस वचन को बदल डाल। तेरी जैसी इच्छा हो अन्य वर मांग ले। मेरा वचन मानने पर सबका हित होगा। ज्येष्ठ पुत्र को ही राज्य देना उचित है ।। ८८ ।। काम के वशीभूत पिता का वचन न मानो। लक्ष्मण के साथ परामर्शकर राज्य करो। तुम यदि मुझे छोड़ जाओ तो दशोदिशाएँ सूनी दिखाई देती है। मैं या तो अग्नि मे प्रवेश कर जाऊँगी या विष खा लूँगी ।। १७८९ ।। यदि तुम वन में जाओगे ही तो हे वत्स, मुझे भी साथ

श्रीराम बोलन्त माव कोशल जियारी * तोमार आमार नृपतिसे अधिकारी१७९०
ताहान बचन बाधि कत फल पाइब * गृह एरा त्रिभुवने कुखियाति जाइब
नारीर पति से गति आन देव नाइ * तान बोल हेला करि पाप केसे पाय ९१
व्रते दाने तुषिला देबता ब्रह्मण * मोहारे दायात ताक बिनाशिबे मन
कैकेयीक देखिबा भगिनी सम हित * प्रबले सहिते द्वन्द नुहिके उचित ९२
यावत तोमार आछा स्वामी दृढ़काय * आमार तुलत बन जाइबे नुयुवाय
राजा बर दिला लैंला कैकेयी सादरी * तान अपराध आचरिबो केन करि ९३
कैकेयीक नृपति पूर्व्वत दिला बर * आत किछु दोष मइ ने देखो बापर
तोमार स्वामीसे देव शुश्रूषा करिबा * ताहान बचन माव शिरत धरिबा ९४
पतिव्रता धर्म्मे आइ स्वर्ग चलि जाइबा * तान बाक्य हेला करि अधर्म्मक पाइबा
दशरथ बाप मोर तुमि निज माव * जगते विदित रघुकुले यार ठाव ९५
रामर बचन शुनि कौशल्या कान्दन्त * पुत्र शोके दुखर कमने पाइबो अन्त
याहार किङ्कूरे सबे हस्ती रथ राय * विधिर बिपाके राम वन चलि जाय ९६
ओवारि श्मशान शाल चिन्ता आम गाण्डि * कैकेयीर वचने खोचनि भैल दाण्डि
शोक बहूनि श्वास धूम वियोग तोमार * निरन्तरे शवदाह करिबे आमार ९७
तुमि एरिलातो मइ शोक दुख पाइबो * निहरे नलिनी येन ठावते शुखाइबो
धेनु येन बत्सर पाछत करे गति * तोमार लगते जाइबो हेन मोर मति ९८

ले चलो। तेरे साथ मैं भी वन के फल खाया करूँगी। श्रीराम ने कहा, हे कोशल राजकन्या, माता, राजा ही तुम्हारे और मेरे भी अधिकारी है ॥ १७९० ॥ उनके वचन की अवज्ञा करने पर सुफल कहाँ मिलेगा? घर की बात क्या कहना, त्रिभुवन में कुख्याति (बदनामी) फैल जायेगी, नारी की गति तो पति ही है, अन्य देव नहीं है। उनका वचन अवहेलना करने पर तो पाप ही मिलता है ॥ १ ॥ तुमने व्रत-दान आदि द्वारा देवता-ब्राह्मणो को तुष्ट किया है। मेरे लिए क्या तुम उस (पुण्य) को विनष्ट करने की इच्छा करती हो? कैकेयी को अपनी बहन की भाँति हित-दृष्टि से देखना। प्रबल के साथ विरोध करना उचित नही है ॥ ९२ ॥ जब तक कि दृढ़ शरीरवाले तुम्हारे पति वर्तमान हैं, मेरे साथ वन में जाना तुम्हारे लिए उचित नहीं है। राजा ने वर दिया, कैकेयी ने उसे सादर ग्रहण किया। भला उनसे अपराध का आचरण कैसे करूँ? ॥ ९३ ॥ कैकेयी को राजा ने पूर्वकाल मे वर दे रखा था, अत: मैं इसमें पिताजी का कोई अपराध नही देखता। तुम्हारे तो पति ही देव हैं, उनकी सेवा-शुश्रूषा करना। माता, उनका वचन शिरोधार्य करना ॥ १७९४ ॥ पातिव्रत-धर्म से, माता, तुम स्वर्ग की अधिकारिणी बनोगी। उनके वचन की अवहेलना करनेपर अधर्म ही होगा। दशरथ मेरे पिता हैं, तुम मेरी माता हो, जगत्-प्रसिद्ध रघुकुल में मुझे स्थान मिला है ॥ ९५ ॥ राम का वचन सुनकर कौशल्या रुदन करने लगी। पुत्रशोक-रूपी दु:ख का अंत कहाँ मिलता है? सब जिसके किंकर है, जो हाथियों, रथों का स्वामी है, विधि-विडम्बना से वही राम वन को चला जा रहा है ॥ ९६ ॥ राजभवन श्मशान है, चिन्ता आम की लकड़ी है। कैकेयी के वचन खोदकर जलाने का लम्बा दंड (लकड़ी) है, शोक अग्नि है, तुम्हारे वियोग की साँसें धुआँ हैं। ये निरंतर मेरा शवदाह करते रहेंगे ॥ ९७ ॥ तुम्हारे छोड़ जाने पर तो मुझे शोक-दु:ख ही मिलेगा। शीतकाल की कमलिनी की भाँति स्थान पर ही सूख जाऊँगी। गाय जैसे बछड़े के पीछे जाती है वैसे ही मेरी इच्छा है, मैं भी तुम्हारे साथ जाऊँ ॥ ९८ ॥ जैसे बाघिन हरिणी को नित्य दबाये रखती है, सर्पिणी के

कैकेयीक देखिया शरीर मोर काम्पे * हरिणीक निते येन वाधिनीये जाम्पे
सर्पिनीर आगे येन मण्डूकीर गति * शेनीर आगत येन कम्पे कपोवती ९९
कैकेयीर दास राजा मइ याइवो बन * तुमि एरि गैले मोर नाहिके जीवन
राघवे बोलन्त माव शोक एरियोक * चलिवोहो वनक माङ्गल्य करियोक१८००
त्रिभुबने विदित नृपति दशरथ * सत्यक एरिया केने तेजि धर्मपथ
मोर कर्म्मे आसिया भैलन्त उदभाव * चरणत धरो मोक आज्ञा दियो माव१८०१
युगुत बचने रामे मावक जुराइल * अनिच्छाये मावर अनुज्ञा रामे पाइल
आखि मुख पखालिला रामे दिला जल * शिशिर प्रकाशे येन रकत कमल २
देवता पूजिया देवी करि समापति * मङ्गल करिल मंत्र जपिया सम्प्रति
रक्षा बान्धिलन्त माथे राम लक्ष्मणर * रक्षा करन्तोक पथे देव निरन्तर ३
रक्षा औषधक पिन्धाइलन्त दुइरो हाते * देवर निर्म्मल्य पिन्धाइलन्त दुइरो माथे
धृति स्मृति कीर्ति कान्ति सती सरस्वती * गति मति शान्ती आदि करि तुति नति ४
असंख्य रहस्य शास्त्र निगम पुराण * इतिहास आदि करि करन्त कल्याण
सिंह बाघ घोड़ आदि कुन्जर महिष * राक्षस पिशाच सर्पगण महाविष ५
वराह भालुक गण्ड गवय सकल * ऋषभ प्रभृति करि करय मङ्गल
धाता विधाताक आदि इन्द्र देवराज * कुबेर वरुण आदि देवता समाज ६
स्वर्ग मर्त्य रसातल अनिल अनल * चन्द्र सूर्य्य दिन राति नक्षत्र सकल
जलचर थलचर नभचर यत * त्रिभुवने थित यत मङ्गल करन्त ७
पुत्र दुइको कौशल्या कोलाक लागि निला * आपोन पावर धलि दुइरो माथे दिला
चैध्यय वरिष सुखे वने जाओक काल * अविरोधे तरिवाहा विपिन विशाल ८

सम्मुख मेंढ़की की जैसी गति होती है, मादा-वाज के सम्मुख जैसे कपोती कम्पित होती है, कैकेयी को देखकर मेरा शरीर भी उसी प्रकार कम्पित रहता है ।। १७९९ ।। राजा कैकेयी के दास हैं, मैं भी वन मे चलूँगी । तुम्हारे चले जाने पर मेरा जीवन नही रहेगा । राम बोले, माता, शोक करना छोड़ दो, मै वन को चल रहा हूँ, तुम मंगल-विधान करो ।। १८०० ।। महाराज दशरथ त्रिभुवन-विख्यात है । सत्य को तजकर धर्म-पथ क्यों छोड़ दूँ ? मेरा कर्म ही आज उपस्थित हुआ है । माता, मैं चरण पड़ता हूँ, मुझे आज्ञा दो ।। १८०१ ।। युक्तिपूर्ण वचनों द्वारा राम ने माता को शान्त किया । अनिच्छा होने पर भी राम ने माता की अनुमति पा ली । राम ने जल दिया, माता ने आँख, मुख धोये । ओस-कणों से धुलकर जैसे रक्त-कमल प्रकाशित हो उठा ।। २ ।। तव देवी ने देवताओं की पूजा करने के पश्चात् मंत्र जपकर मंगलानुष्ठान किया । राम-लक्ष्मण के मस्तक पर रक्षा बाँधकर कामना की, देवगण निरंतर मार्ग में रक्षा करें ।। ३ ।। रक्षा-औषधि दोनों के हाथों मे पहनाई । देव-निर्माल्य दोनों के सिरों पर पहनाया । धृति, स्मृति, कीर्ति, कान्ति, सती, सरस्वती, गति, मति, शान्ति आदि की स्तुति-विनय की ।। ४ ।। असख्य रहस्यशास्त्र, निगम, पुराण, इतिहास आदि सभी कल्याण करें । सिंह, बाघ, शार्दूल, हाथी, महिष, राक्षस, पिशाच, महाविषधर सर्पगण, वराह, भालू, गेंडा, गवय समूह, ऋषभ आदि सभी मगल करें । धाता, विधाता आदि, देवराज इन्द्र, कुबेर, वरुण आदि देव-समाज, स्वर्ग-मर्त्य-पाताल, वायु, अग्नि, चन्द्र, सूर्य, दिन, रात्रि, नक्षत्रों का समूह, जलचर, थलचर, नभचर आदि जितने भी त्रिभुवन में स्थित है, सभी मंगल करें ।। १८०५-१८०७ ।। दोनों पुत्रों को कौशल्या ने गोद में लिया और अपनी चरण-धूलि दोनों के सिरों पर डाली । चौदह वर्ष की अवधि वन में सुख से बीते । निर्विरोध विशाल वन को जैसे

आकाशे पवन येन थाके निरन्तरे * एक प्राणे दुयो भाइ बञ्चिवा दुस्तरे
दुयो भाइ माव दुइको प्रदक्षिण करि * माव दुइयो पद धूलि शिरे आनि धरि१८०९
जन मन हरन्ते चलिला दुइ भाइ * लीला गति पाइला गैया आपोनार ठाइ
नमो नमो रघुकुल कमल दीनेश * ब्रह्मा हर आदि पाले जाहार आदेश१८१०
भव दुख दूर होवे यार लैले नाम * तान कैत दुख आछे जानि बोला राम१८११

श्रीरामे सीतार आगत बनबास-आज्ञा कथन

दुलरी

धवलि ओवरत आछन्त जानकी राघवर मनोरमा।
श्वेत मेघ हेन जगत विदित रोहिणी देबी उपमा ॥
आति अपर्य्यन्त हरिष करन्त गावे अलङ्कार धरि।
मोर स्वामी राम राजा हैबा आजि आमि हैबो पटेश्वरी ॥ १८१२
मने कौतूहल अनेक मङ्गल करिलन्त ठावे ठाव।
मनत हासन्त नियमे आछन्त सीता जगतर माव ॥
प्रसन्न नयन हरिष बदन करि दुवारक चाइल।
प्राणनाथ राम गुणे अनुपाम आसा दरशन पाइल ॥ १८१३
परिल झामर नोशोभे रामर मुख अनुरूप दिन।
गधूलि कालर येन दिनकर प्रभाय भैला विहीन ॥
प्रदक्षिण करि स्वामीक नमिल सीता जनकर जीव।
हात योर करि रामर पाचत सङ्कोचे भैलन्त थिव ॥ १८१४
अन्तर्गते पाचे कार्य्यक लखिया राघवर बरनारी।
धीरे धीरे माव बुलिला बचन जनक राजा जियारी ॥

पार कर जाओ ॥ १८०८ ॥ आकाश में जिस प्रकार पवन निरंतर रहा करता है, उसी प्रकार दोनों भाई एक प्राण बनकर दुस्तर बाधाओं के पार उतर जाओ ! दोनों भाई दोनों माताओं की प्रदक्षिणा कर, दोनो माताओ की चरण-धूलि सिर पर ले, जनमन को हरण करते हुए चल पड़े। वे लीला-गति से अपने-अपने भवनों में पहुँचे। रघूकुल-कमल-दिनेश जिनके आदेश का पालन ब्रह्मा, शिव आदि किया करते है, उन श्रीराम को नमस्कार है ॥ १८०९-१० ॥ जिनके नामोच्चारण से संसार के दुःख मिट जाते है, उन्हें भला दुःख कहाँ है ? ऐसा समझकर राम वोले ॥ १८११ ॥

श्रीराम का सीता को वनवास की आज्ञा सुनाना

राघव की मनोरमा श्वेत मेघ जैसी, रोहिणी देवी तुल्य, विश्वविख्यात, जानकी श्वेत भवन में बैठी हुई थी। शरीर में अलंकार-मंडित, अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक वह हर्ष मना रही थी। मेरे पति राम आज राजा बनेगे। मै पटरानी बनूँगी ॥ १२ ॥ मन में कौतूहल था। स्थान-स्थान पर अनेक मंगलाचार किये। जगत्-जननी सीता मन में हँसती हुई नियमादि पूर्वक थी। उन्होने प्रसन्न नयन, हर्षित मुख, द्वार की ओर देखा। अतुलनीय गुणसम्पन्न प्राणनाथ राम के आते हुए दर्शन किये ॥ १३ ॥ दिन के अनुरूप राघव का मुखमडल मलीन था। मानो संध्या का सूर्य प्रभा-हीन हो गया हो। जनक-कन्या सीता ने प्रदक्षिणाकर पति को नमस्कार किया। तत्पश्चात् हाथ जोड़कर राम के पीछे संकोच से खड़ी हो गयी ॥ १४ ॥ राघव की श्रेष्ठ भार्या,

प्राण प्रभु देव पावे करो सेव मिलिल किनो प्रमाद।
किकारणे प्रभु हरिप कालत देखिय केने विपाद ॥ १८१५
आति अप्रमादी मन्त्री पात्र आदि ब्राह्मण यत आछन्त।
पढ़ि मन्त्र मूल दूर्व्वाक्षत फुल निदिला तयु शिरत॥
तोमार लगत धवल चामर नाहि राज अलङ्कार।
किनो विपरीत अथिर चरित देखोहो चित्त तोमार ॥ १८१६
राजलक्ष्मी धर प्रमत्त कुञ्जर नासिल केने लगत।
चलन्ते वेगत मेरु पर्व्वतक तुलिते दान्ते शकत॥
आति मनोरम अष्ट तुरंगम युगुत काञ्चन मय।
हेन पुष्परथ तोमार लगत केने प्रभु न चलय ॥ १८१७
तोमार भकत मन्त्री पात्रयत आनो राज-सेनागण।
समरे शकत गोसाइ लगत न करे केने गमन॥
सुवर्णर रथ शुक्ल घोड़ायत शोभन करि युगुत।
करि कौतूहल करन्ते मङ्गल नचलय अद्भुत ॥ १८१८
आनो नाना मत तोमार सङ्गत नलखोहो राज्य अङ्ग।
कैयो अभिप्राय कि कारणे प्रभु अभिषेक भैल भङ्ग॥
हेन शुनि पाचे प्रभु रामचन्द्रे सीताक दिला उत्तर।
सावधान करि शुना प्राणेश्वरी येन भैल अथान्तर ॥ १८१९
परम निर्म्मल राज ऋषि कुले तुमि भैला उतपति।
सुशोभन चित धर्म्मसे चरित्र शुद्धमति शान्ती सती॥
अभिषेक विधि विहिया नृपति गैला कैकेयीर ठाव।
वचने चान्दिया वर दुइ मागि लैलन्त कैकेयी माव ॥ १८२०

जनक-नन्दिनी माता सीता इसके अनन्तर कार्य को देखते हुए धीरे-धीरे कहने लगी— हे प्रभु, इस हर्ष के काल में किस कारण, यह कैसा विषाद देख रही हूँ ? ॥ १५ ॥ कभी प्रमाद न करने वाले मंत्री, पात्र-परिजन, ब्राह्मण आदि जो हैं उन लोगों ने मंत्र-पाठकर, दूर्वा-अक्षत-फूल आपके मस्तक पर नही दिया। आपके साथ श्वेत चमर नहीं है, राज-आभूषण नही हैं। यह कैसा विपरीत चरित्र है। देख रही हूँ आपका चित्त भी स्थिर नही है ॥ १६ ॥ राजलक्ष्मी को धारण करनेवाला प्रमत्त गजराज जो वेग से चलते हुए मेरु पर्वत को भी दाँतों से उठा सकता है, साथ क्यों नही आया ? स्वर्ण-साज से सज्जित अत्यन्त मनोहर अष्ट तुरंगवाला पुष्प-रथ आज आपके साथ क्यों नहीं चलता ? ॥ १७ ॥ मंत्री, पात्र-परिजन आदि जो आपके भक्त हैं तथा युद्ध में प्रचंड राजसेना आदि आज प्रभु के साथ क्यों नही है ? मंगलाचरण करनेवाला, श्वेत घोड़े जुते, सुन्दर रूप से सुसज्जित वह सुवर्णरथ आज साथ नही चल रहा है, यह कैसी अद्भुत बात है ? ॥ १८ ॥ आपके साथ चलनेवाले राज्य के नाना प्रकार के विभिन्न अंग नहीं देख पाती। प्रभु, बताइये किस कारण अभिषेक भंग हो गया। यह सुनकर प्रभु रामचन्द्र ने सीता को उत्तर दिया— प्राणेश्वरी, जिस कारण यह अनहोनी हो गयी वह सावधान होकर सुनो ॥ १९ ॥ तुम परम निर्मल राजर्षि के वंश में जनमी हो, हृदय तुम्हारा सुशोभन है, स्वभाव धर्म में लगा रहता है, तुम शुद्धमति, शान्तिमयी, सती हो। अभिषेक के विधि-विधान की व्यवस्था कर महाराज कैकेयी के निवासभवन मे गये। वचनवद्ध उनसे माता कैकेयी ने दो वर माँग लिये ॥ १८२० ॥ चौदह वर्ष के लिए राज्य त्यागकर मुझे वन में जाना है। दूसरा

तेजिया राज्यक चैध्य वरिषक आमि जाइबो वनमाज ।
आउर बर मागि लैलन्त राजात भरतक दिते राज ॥
पापक सञ्चिले शरीर दंशिले कैकेयीये काल-सर्प ।
मिलिल विघात वाक्य विषे छलि हरि लैल बल दर्प ॥ १८२१
मावर वचन शुनि आतिशय भैल चित उपशाम ।
काले पाइले आर नाहिके जीवन साक्षाते लै याय यम ॥
नाहि आन मन बापर बचन . आमि शिरोगत करि ।
श्री भैल चन्न आजि जाइबो बन अयोध्याक परिहरि ॥ १८२२
शुना प्राणेश्वरी चित्त स्थिर करि न करिबा किछु शोक ।
आसियोक बान्धै परिछेद करि देखिलोहो मइ तोक ॥
परम दारुण रामर वचन शुनिया सीता गोसानी ।
हा प्रभु बुलि परिला भूमित हृदयत मुठि हानि ॥ १८२३
विषादे मनत शिवर आगत येहेन देवी पार्व्वती ।
येन महादेव दहिला कामक बिलाप करन्त रति ॥
आति महाभय शरीर काम्पय हातर खसे बलय ।
नाहि गावे तत सिंहर त्रासत येन मृग न लरय ॥ १८२४
चेतन लभिया सीताये बोलन्त कतनो पाप करिलो ।
माटिर भितर प्रबेशि आछिलो तथापितो न मरिलो ॥
किनो अपराधे प्रभु तुमि मोक शोक अगनित दिया ।
आमि पतिव्रता नारीक गोसाइ चलिला केने तेजिया ॥ १८२५
नयाइबाहा प्रभु बुलिया जानकी आञ्चलत धरिलन्त ।
येन लक्ष्मीदेवी ईश्वर विष्णुर चरणत परिलन्त ॥

वर उन्होंने राजा से माँगा कि भरत को राज्य दिया जाय । काल-सर्प कैकेयी ने मानो उनके शरीर को डँसकर पापों का संचय किया । वचन रूपी विष से छलकर उनका बलदर्प सब कुछ हरणकर लिया, इससे उन्हे बड़ा व्याघात हुआ ॥ २१ ॥ माता के वचन सुनकर मेरा चित्त अत्यन्त शान्त हो गया । काल प्राप्त होने पर जीवन नहीं रहता । साक्षात् यम आकर ले जाता है । मेरी और कोई अभिलाषा नहीं है । श्री नष्ट हो गयी है । पिता का वचन शिरोधार्यकर अयोध्या को परित्याग कर मैं वन में चला जाऊँगा ॥ २२ ॥ प्राणेश्वरी, तुम कोई शोक न करो । प्रिय वान्धवी, वस्त्राभूषण में सजकर आओ, मैं तुम्हें देख लूँ । राम का परम दारुण वचन सुनकर देवी सीता, हृदय पर मुक्का मार, हा प्रभु ! कहकर धरती पर गिर पड़ी ॥ २३ ॥ वह मन में विषाद भरी ऐसे हो गयी, मानो शिव के सम्मुख पार्वती हो । वह वैसे ही विलाप करने लगी जैसे कि काम के भस्म हो जाने के पश्चात् रति विलाप करती थी । अत्यन्त महाभय से शरीर कम्पित होने लगा, हाथ से वलय निकल पड़ने लगा । सिंह के भास से जैसे मृग स्तब्ध हो जाता है, उसी प्रकार सीता की सुध-बुध न रही ॥ २४ ॥ चेतना लौटने पर सीता बोली—मैंने कितना ही पाप किया था, मृतिका के भीतर प्रविष्ट थी, फिर भी मृत्यु नही हुई । प्रभु, किस अपराध से आप मुझे असीम शोक दे रहे हैं । हे देव, मैं पतिव्रता हूँ, मुझे आप क्यों छोड़े जा रहे हैं ?॥ २५ ॥ हे प्रभु, न जाइये—कहती हुई जानकी ने उनका आँचल पकड़ लिया । मानो लक्ष्मीदेवी ईश्वर विष्णु के चरणों में गिर पड़ी । राघव ने कहा, प्राणेश्वरी, उठो, हितकारी वचन सुनो । पिता के वचन को तजकर वन में न जाऊँ, यह नहीं हो

राघवे बोलन्त उठा प्राणेश्वरी शुनियोक हित पक्ष।
बापर बचन तेजिया बनक नायाइबो इटो अशक्य ॥ १८२६
कौशल्या मावक आदि करि यत तेजिलोहो बन्धुगण।
मायामय इटो गृहसुख तेजि आजि चलिजाइबो वन ॥
नमो नमो राम, याहार उपाम, नाइ इटो त्रिभुवने।
दुख उपशाम, हौक राम राम, बोला समाजिक जने ॥ १८२७

रामर लगत जाबलै सीतार प्रार्थना

पद

तेजिलोहो मित्र यत अयोध्या नगरी * मोह एरिलोहो सीता सर्ब्बाङ्ग सुन्दरी
मुखचन्द्र अरि अमृतर अभिलाषे * ग्रसिबाक लागि राहु आसि भैला पाशे१८२८
भ्रुव युग धनुत कटाक्ष येन शर * चमकिया राहु गैल गगन उपर
नीलोत्पल दल सम नयन युगल * देखि मुनिगणे होये मोहित सकल २९
नासा भैल तिल फुल बन्दुलि अधर * मुकुता पङ्कति दन्त पान्ति मनोहर
मनोहर अधर अधिक बिम्बफल * तिनि रेखा समे ज्वले सुशोभित गल ३०
बाहु दुइ खान तोर मृणालत सरि * उदरत त्रिबलिका मरखाट खरि
हर कोप बह्नि पीड़े खुजि ना पाइ जुर * नाभि सरोवरे कामदेवे दिल बुर ३१
निज पुर पशि कामे मुदिल दुवार * उदरर लोम पान्ति धूम भैल तार
डम्बरुर मध्यदेश सदृश कङ्काल * काञ्चिये रञ्जित आति नितम्ब विशाल ३२
अमृतर कूप सम मन्मथर पुर * सरस जघन तोर प्रकाशे प्रचुर

सकता ॥ १८२६ ॥ माता कौशल्या समेत सभी बन्धुओ को मैने तज दिया। यह मायामय गृह को भी तजकर आज वन को चला जाऊँगा। जिनकी तुलना त्रिभुवन में नही है, उन राम को नमस्कार है। नमस्कार है। हे सामाजिक जन, राम राम बोलो, जिससे दुःख मिट जाये ॥ १८२७ ॥

राम के साथ जाने हेतु सीता की प्रार्थना

मैने सभी मित्रों, अयोध्यानगरी को छोड़ दिया। सर्वांग सुन्दरी सीता का मोह भी छोड़ दिया। अमृत की अभिलाषा से मुखचन्द्र को ग्रास करने हेतु शत्रु राहु समीप आ गया ॥ १८२८ ॥ दोनो भौंहो रूपी धनुष पर कटाक्ष रूपी शर को देख मानो वह राहु चौक कर आकाश मे चला गया। नीलोत्पल-दल जैसे दो नयन, जिन्हें देखकर सभी मुनि मोहित हो जाते हैं ॥ २९ ॥ तुम्हारी तिल-फूल सी नासिका, वन्धूक जैसे होंठ, मोतियों की कतार जैसी मनोहर दाँतो की पंक्ति, बिम्बा फल से भी अधिक मनोरम होंठ, तीन रेखाओंवाला उज्ज्वल कंठ सुशोभित है ॥ १८३० ॥ तुम्हारी भुजाएँ मृणाल जैसी हैं। उदर की त्रिवली चिता की लकड़ी-सी हैं। शिव के कोप रूपी अग्नि से कही शान्ति न पाकर कामदेव ने मानो नाभि-सरोवर में जाकर डुबकी लगायी है ॥ १८३१ ॥ अपने पुर में प्रविष्ट होकर मानो कामदेव ने द्वार बन्द कर लिया है। उदर पर के रोएँ मानों उसी का धुँआ है। कमर डमरू के मध्यभाग जैसी है। वडे नितम्ब कांचि से रजित है। मन्मथ की पुरी अमृत के कुएँ जैसी है। तुम्हारे सरस नितम्ब वड़े प्रकाशमान हैं। सुकुमार जाँघें राम-कदली के समान है।

सुकुमार उरु राम कदलीर सम * जङ्घा दुइर कान्ति आति देखि मनोरम ३३
सुगुपुत ग्रन्थि आति रङ्गादुइ पाव * नव किशलय दल सदृश स्वभाव
पन्थर गमने कुञ्जरर तेज हरे * नूपुरर शबदे सारस अनुसरे ३४
सूर्य्यर उपमा दुइ कुण्डलर ज्योति * तारागण चमक माणिक गजमति
सुरगण गन्धर्व्व नागर तेज हरे * वेश देखि किमते युवते प्राण धरे ३५
जीवन्ते मृतक मइ तोक परिहरो * गले शिला बान्धिया सागरे जाम्प करो
परिहर दुख सीता चिन्ता शोक रोग * मरन्ता जनर दूर नोहे येन योग ३६
बापर बचन मइ केने परिहरो * गह एर क्षमा कर हाते तोर धरो
सीताये बोलन्त प्रभु देव निज नाहा * कोन दोषे प्रभु मोक परिहरि जाहा ३७
पूर्व्व जन्मे नाराधिलो पार्व्वती शङ्कर * सिकारणे मोक परिहरे प्राणेश्वर
सूर्य्य कुले उतपति अयोध्यार पति * दुखवती नारी करो तोमात भकति ३८
चैध्यय बरिष लागि तुमि बन याइबा * इजन्मक लागि मोर माने बुरवाइबा
चम्पक कलिका येन मोर कलेवर * लुण्डि घुण्डि आछिलाहा येहेन भ्रमर ३९
येवे आसि बिकशित हैल फुलफल * उपभोग एरि केने कराहा निष्फल
सूर्य्य अविहने येन नो शोभय दिन * रजनी नोशोभे येन शशधर हीन१८४०
बसन्त नोशोभे बिने कोकिलर रोले * निष्फल जीवन प्रभु तुमि बिने कोले
सुमरन्ते प्रभु मोर लागे हृदि खेद * बोलो स्वामीदेव न करियो बन्धुछेद ४१
कमन अङ्गत मोक हीन देखिलाहा * कि कारणे प्रभु मोक उपेक्षिया जाहा

दोनों जाँघों की कान्ति अत्यन्त मनोरम है ।। ३२-३३ ।। ग्रंथियाँ बहुत ही गुप्त हैं। पैर बड़े ही लाल है। स्वभाव नवकिसलय दल सा है। मार्ग मे तुम्हारी चाल हाथी का तेज भी हर लेती है। सुन्दर नूपुर सारस की भाँति शब्द करते है ।। ३४ ।। दोनों कुंडलों की ज्योति सूर्य की भाँति चमकती है। मणियाँ और गजमोती ताराओं जैसे चमका करते हैं। तुम्हारा रूप सुर, गधर्व, नागों का तेज भी हर लेता है तो उसे देख भला युवा-नर के प्राण किस प्रकार स्थिर रह सकते है ? ।। ३५ ।। जीते हुए ही मृतक के समान मै तुम्हें छोड़े जा रहा हूँ। मानो गले में पत्थर बाँधकर सागर में कूद रहा हूँ। सीता, चिन्ता, रोग, शोक छोड़ दो। जैसे मरते जन के लिए योग (दवा आदि) की आवश्यकता नही होती ।। ३६ ।। पिता के वचन मैं कैसे तज सकता हूँ। अपराध क्षमाकर तेरा हाथ पकड़ रहा हूँ। सीता बोली, मेरे नाथ, प्रभु, देव, किस अपराध से मुझे तजकर जा रहे हो ।। ३७ ।। संभवतः पूर्व जन्म में मैंने शिव-पार्वती की आराधना नहीं की, इसी कारण मुझे आज प्राणेश्वर छोड़े जा रहे हैं। सूर्यवंश में उत्पन्न तुम अयोध्या के प्रभु हो। मैं दुःखिनी नारी तुम्हारी भक्ति करती हूँ ।। ३८ ।। तुम चौदह वर्ष के लिए वन में जाओगे। इस जन्म-भर के लिए मेरा मान डुवा दोगे। मेरा शरीर चम्पाकली जैसा है। तुम भौरे की भाँति उसका उपभोग करते थे ।। १८३९ ।। जैसे ही उसमें फूल-फल लगने का समय आया, उपभोग करना छोड़कर उसे विफल क्यों कर रहे हो ? सूर्य के विना जैसे दिन शोभित नहीं होता, चन्द्रहीन रात शोभित नही होती; कोयल की ध्वनि के बिना वसन्त शोभा नहीं पाता, प्रभु, मेरा जीवन भी तुम्हारे बिना उसी प्रकार सम्पूर्ण रूप से निष्फल है। इसका स्मरण आते ही मेरे जीवन में दुःख होता है। पतिदेव, मैं तुमसे विनती करती हूँ, अपने बन्धु धन का परित्याग न करो ।। १८४०-४१ ।। मुझे किस अंग से हीन देखा ? किस कारण प्रभु मुझे उपेक्षा कर चले जा रहे हो ? तुमसे कह रही हूँ, तुम राजकुमार हो। एकेश्वर तुम भला भयंकर वन में किस

तोमाक बोलोहो तुमि राजार कुमार * दारुण वनक केने जाइवा एकेश्वर ४२
यमर करण राम दुर्गम दुस्तर * सुमरन्ते हृदि खेद गहन गह्वर
राघवे बोलन्त सीता थिरचित करा * आमार वचन तुमि दृढ़ करि धरा ४३
आमि वन गैले देव द्विज आराधिवा * उपवास व्रते मोर कल्याण साधिवा
भाइ मोर सुबोध भरत शत्रुघन * देव हेन आराधिवे सकरुण मन ४४
दर्प मान एरि तान चित्तक तुषिवा * तेवे अनुरूपे तोमाक भरते पुषिवा
प्रभात समये उठि चलिवाहा गाव * करिवाहा प्रणाम आमार वाप माव ४५
हित सुहृदक छारि ने देखिवा आन * सव शाशु देखिवाहा कौशल्या समान
सीताये बोलन्त प्रभु शुनियो वचन * मोर वाक्य हेला नकरिया दिया मन ४६
वापर सुकृते पोर नुपजय सुख * पोर कर्म्मे वापेकरो न खण्डय दुख
स्वामीर सुकृत भुञ्जे पतिव्रता जन * प्रभुर लगत आर शोके जाइबो वन ४७
वनक जाहन्ते आगे मिलिबेक यत * भाङ्गिया कण्टक वन चलिबो आगत
मोर अभिप्राय येन आपुनि जानाहा * अनुगत तेजि अपमानक पाइवाहा ४८
केशरी कुञ्जर वाघ भालुक महिष * तुमि सङ्गे थाकिते करिवे मोक किस
नदी नद देखिवो बिविध सरोवर * कुमुदिनी नलिनी अनेक मनोहर ४९
उत्सुक मनक गोसाइ न करियो भङ्ग * तुमि समे वनक जाइवाक वर रङ्ग
तुमि समे भ्रमण करिबो वन माज * जेहेन स्वर्गत शचीदेवी देवराज १८५०
रत्नमय विचित्र पर्व्वत वन देश * विविध पुष्पित वन सुगन्धि निशेष
समुचित क्रीड़ा स्थान कुञ्जर विशेष * कामे समे रति जेन करिवो आशेष ५१

लिए जाओगे ? ।। १८४२ ।। वन यमलोक जैसा दुर्गम और दुष्तर है, गहन कन्दराओं का स्मरण आते ही हृदय में खेद होता है। राघव ने कहा—सीता, चित्त को स्थिर करो। मेरा वचन तुम दृढ़ होकर मानो ।। ४३ ।। मेरे वन-गमन के पश्चात् देव, द्विजों की आराधना करना। व्रत उपवास कर मेरा कल्याण-साधन करना। मेरे भाई भरत, शत्रुघ्न सुबोध हैं। वे सकरुण चित्तवाले देव जैसे तुम्हारी आराधना करेंगे ।। १८४४ ।। दर्प, मान छोड़कर उनके चित्त को संतुष्ट रखना। तुम्हारे अनुरूप मान करते हुए भरत तुम्हारा पालन करेगा। प्रातः उठकर शरीर को स्नानादि द्वारा साफ करना। फिर मेरे माता-पिता को प्रणाम करना ।। ४५ ।। उन्हे हितकारी सुहृद के सिवा और कुछ न समझना। सभी सासों को कौशल्या के समान ही मानना। सीता बोली, प्रभु, मेरा वचन सुनो। मेरे वाक्य की अवहेलना न कर ध्यान दो ।। ४६ ।। पिता के सत्कर्मों से पुत्र का सुख नही होता। पुत्र के कर्मों से पिताके दुःख भी नहीं मिटते। पर स्वामी के सत्कर्म का भोग पतिव्रता करती है। इसी शोक के कारण प्रभु के साथ मैं भी वन को जाऊँगी ।। ४७ ।। वन में जाते हुए तुम्हारे सामने जो काँटो के जंगल मिलेंगे उन्हें तोड़ती हुई तुम्हारे आगे चलूँगी। मेरा अभिप्राय तुम जानते ही हो। अनुगत को छोड़ने पर अपमान ही पाओगे ।। ४८ ।। सिंह, हाथी, बाघ, भालू, भैंस भला आपके साथ रहते मेरा क्या कर लेंगे ? मैं नद-नदियों, विविध सरोवरों, अनेक मनोहर कमल-कमलिनियों को देखूंगी ।। १८४९ ।। हे गोसाईं, मेरे उत्सुक मन को न तोड़ो। तुम्हारे साथ वन में जाने की बड़ी इच्छा है। स्वर्ग में जिस प्रकार शची देवराज इन्द्र के साथ रहती है वैसे ही मैं तुम्हारे साथ ही वन में भ्रमण करूँगी ।। १८५० ।। रत्नमय विचित्र पर्वत, वन-प्रदेश; विविध पुष्पित, असीम सुगन्धित जंगल, कुजों की भाँति विविध क्रीड़ाओं की स्थली हैं। रति जैसे कामदेव के साथ क्रीड़ा किया करती है,

मावे मोक पूर्ब्बत शिखाइला हाते धरि * नकरिवा भोजन स्वामीक परिहरि
सिसब बचन आनि शिरोगत धरो * नदी बने तोमार तुलते अनुसरो ।५२
हेन शुनि बुलिलन्त जगतर नाथे * सीता देवी आगते आछन्त हेट माथे
शुन शुन सीता बोलो जनकजियारी * नारी समे वनबास खाटिते नपारि ५३
सिंहर नादक शुनि गिरिर कन्दरे * काम्पे कलेबर चमकित हैबा डरे
पर्ब्बत समान हस्ती गर्ज्जे निरन्तरे * द्वादश मासर भितरत मय धरे ५४
महिष बराह बाघ सरभ गवय * सिंह घोङ रावे आति त्रासक जनय
गोलासते राजगोम पर्ब्बतीया बोर * माण्डलीक अजगर याक नाहि योर ५५
इ सबक आदि करि भयङ्कर सर्प * दरशन मात्रेकते हरे बल दर्प
कीट पतङ्ग जोक नकुल इन्दुर * इटो सब जन्तु आछे बनत प्रचुर ५६
गुण्डकुरि परुवा आछय आस थान * याहार प्रहारे सिंहे न सहय टान
बिहङ्गम चातक बनत सब मिले * आचोक मानुष हस्ती गोटे गोटे गिले ५७
रकत कमल सम तोर हात पाव * सर्ब्ब क्षणे नेतक मलित यार गाव
रत्नगृहे फुरन्ते शोणित पावे बहे * उलु कण्टकत फुरिबेक कोन साहे ५८
अनेक दिनर पथ हैब मरुस्थल * महादुख थान कतो अपवित्र जल
कुशर कण्टक लता गुला यत देश * घोर अरण्यत केने हैबाहा प्रवेश ५९
परिधान वल्कल हैबेक जटा केश * नख लोम चोवर हैब भोबोकार बेश
अस्थि चर्म्म नाम मात्र हैब मोर सार * किनो प्रीति हैब तोर सुरत आमार ६०

मैं भी तुम्हारे साथ इनमें क्रीड़ा करती रहूँगी ।। १८५१ ।। पूर्वकाल में माता ने मुझे हाथ पकड़कर सिखाया है कि स्वामी को छोड़कर पहले कभी भोजन न करना । वह वचन मैं शिरोधार्य कर नदियो, बनो में सदैव तुम्हारा अनुसरण करती रहूँगी ।। ५२ ।। यह सुनकर सिर झुकाये सामने खड़ी सीता से जगत के नाथ श्रीराम ने कहा—जनक-नन्दिनी, सीता, सुनो । नारी के साथ रहकर बनवासी बना नहीं जा सकता ।। ५३ ।। गिरि-कन्दराओं मे सिंहो का गरजना सुन, चौककर डरके मारे तुम्हारा शरीर काँपने लगेगा । पर्वत-जैसे हाथी निरंतर चिंघाड़ते रहते है । बारह मास के भीतर ही हस्ति-मद धारण करते हैं ।। ५४ ।। भैंसे, शूअर, बाघ, शरभ, गवय, सिंह, शार्दूल आदि की गर्जना लोगों को वहुत ही त्रस्त करती रहती है । पर्वतीय राज-गेहुँअन सर्प, कुकुरमुत्ता के वीच कुंडली वनाये बेजोड़ अजगर आदि जैसे भयंकर सर्प जो दर्शन-मात्र से वल-दर्प को हरण कर लेते हैं; कीट-पतंग, जोंक, नेवले, चूहे, आदि जैसे जन्तु वन में प्रचुर हैं ।। १८५५-५६ ।। नन्हीं-नन्ही चीटियाँ, जिनके प्रहारों से सिंह की शक्ति नही रह जाती, अड्डे वनाये रहती हैं । अनेक प्रकार के पक्षी, चातक आदि सब वनों में रहते हैं, जो समूचे मनुष्य को पूरा-पूरा निगल जाते हैं ।। ५७ ।। तुम्हारे हाथ-पैर रक्त-कमल की भाँति हैं, तुम्हारा शरीर सदा वस्त्रों से मंडित रहता है । रत्न-गृह में घूमने पर भी पैरों से रक्त निकलने लगता है । फिर तुम उलू कुश और काँटों में किस साहस से चल पाओगी ।। ५८ ।। मरुस्थल में लम्वे दिनों की यात्रा करनी होगी । कहीं तो महाकष्ट मय स्थान मिलेगे और कही अपवित्र जल मिलेगा । वह समूचा वनांचल कुश, कंटक लताओं-गुल्मों से परिपूर्ण है । ऐसे घोर अरण्य में भला तुम कैसे प्रवेश कर पाओगी ? ।। १८५९ ।। वल्कल का पहनावा होगा, वाल जटा वन जायेंगे । नाखून, रोंयें चँवर जैसे हो जायेंगे, वेश वीभत्स हो जायेगा । मेरे अस्थिचर्म नाम मात्र को सार रह जायेंगे । तुम्हारे स्वरों से मुझे कौन सी प्रीति

धर्म्म काले पङ्कत ब्रतक धरिवो * शिशिर समये जले निवास करिवो
उपवास करिते लागय घने घन * अन्नक तेजिया फल-मूले से भोजन ६१
आमार लगत वनवासे येवे जाइवा * उपवास ब्रते महा दुख मात्र पाइवा
जनक नन्दिनी मोर वचन न वाधा * गृहे पतिव्रता धर्म्मे परलोक साधा ६२
रामर वचन शुनि जानकी गोसानी * क्रन्दन करिया देवी वुलिलन्त वाणी
तुमि एरि गले मोर जीवन निष्फल * कटारत भर नुहि भुञ्जिवो गरल ६३
सीतार विलापे चित रामर द्रविल * वनक जाइवाक ताङ्क अनुमति दिल
शुन शुन जानकी लखिलो तोर काज * मोहोर वुलत वने जाइवे होवा साज१८६४

लक्ष्मणर वनयावलै अनुमति लाभ; राम-सीता-लक्ष्मणर वनगमनर उद्योग

राघवे वोलन्त लक्ष्मणर हाते धरि * पलटाउ मन वापु ग्रह परिहरि
दुखी दुइ माव मोर वर शोक पाइव * कैकेयीक मान सारि लघनक पाइव१८६५
शुनिया लक्ष्मणे पाचे वुलिलन्त वाणी * लक्षक पुषिते पारे कौशल्या गोसानी
धन जन समन्विते ग्राम दशशत * तोमात गौरवे ताङ्क पालिव भरत ६६
तुलत जाइवाक मोक निरोधाहा किक * किनो मन्दचिन्तिलो मोहोर आछो धिक
प्राण मोर दहे आति एतमान स्नेह * हृदयत खाण्डा हानि तेजिवोहो देह ६७
येन अभिमत कर भैयाइ लक्ष्मण * सुयज्ञ द्विजक गैया आन एति क्षण

मिल पायेगी ? ।। १८६० ।। पसीना निकलने के दिनों में (ग्रीष्मकाल में) मैं पंकत-व्रत धारण करूँगा, शीतकाल मे जल में निवास करूँगा। वन में बार-बार उपवास करना पड़ता है। अन्न खाना छोड़कर फल-मूल ही भोजन करना पड़ता है ।। ६१ ।। मेरे साथ यदि वनवास मे चलोगी तो उपवास-व्रतो के कारण महा दुःख होगा। जनक-नन्दिनी, मेरे वचन का उल्लंघन न करो। गृह में रहकर पतिव्रता धर्म का निर्वाह करते हुए परलोक साधन करो ।। ६२ ।। राम के वचन सुनकर देवी जानकी रोती हुई बोली—तुम्हारे छोड़ जाने पर तो मेरा जीवन ही निष्फल है। मुझे कटार का सहारा लेना होगा या मैं विष खा लूंगी ।। ६३ ।। सीता का विलाप सुनकर राम का हृदय द्रवित हो गया। वन जाने हेतु उन्हें अनुमति दे दी। सुनो जानकी, मैंने तुम्हारे कार्य देख लिये। अब मेरे साथ वन मे जाने हेतु प्रस्तुत हो जाओ ।। १८६४ ।।

लक्ष्मण का वन-गमन हेतु अनुमति प्राप्त करना, राम-सीता-लक्ष्मण का वन जाने हेतु उद्योग

राघव ने लक्ष्मण का हाथ पकड़कर कहा, वत्स, आग्रह छोड़कर अपना मनोभाव बदल लो। मेरी दोनों दुःखी माताओं को बड़ा शोक होगा। कैकेयी से अभिमान के कारण वे उपवासी रहेंगी ।। १८६५ ।। यह सुनकर लक्ष्मण ने कहा—देवी कौशल्या लाखों का पालन कर सकती है। धन-जन समेत एक हजार ग्राम हैं, तुम्हारे जैसा ही मान करते हुए भरत उनका पालन करेंगे ।। ६६ ।। अपने साथ जाने में मुझे बाधा क्यों दे रहे हो ? मुझे धिक्कार है, मैंने तुम्हारा कौन सा अनिष्ट-चिन्तन किया है ? तुम्हारे प्रति इतना प्रेम है जिससे कि मेरे प्राण जल रहे हैं। हृदय में तलवार चुभोकर मैं शरीर तज दूंगा ।। ६७ ।। तब राम बोले, भाई लक्ष्मण, तुम्हारी जैसी

बशिष्ठर पुत्र तेहो राघबर मित्र * तेखने लक्ष्मणे आनि करिला उपस्थित ६८
सुयज्ञक रामदेवे अर्च्चना करिला * आपोनार अलङ्कार ताङ्क दान दिला
राघवक देखिया सीतार अभिमत * मितिनीक आनि दिला अलङ्कार यत ६९
शयन कामलि आरो सिंहासन खाट * रत्नर बाहुति दिला चतुःषष्टि पाट
पाट पट कुण्डल कङ्कण मणिहार * नूपुर पागरी दिला नाना अलङ्कार ७०
कौशल्या सुमित्रा आदि मावगण यत * ब्राह्मण प्रमुख्ये आनो यत अनुगत
बन्धुजन नट भाट दास दासी जन * मनोरथ पूरि रामे बिलाइलन्त धन ७१
पाचे वृद्ध ब्राह्मणे रामक पाइल भेट * आमि पाञ्च बरिषे राजात करि ज्येष्ठ
शिशु सुत मोहोर बिस्तर परिजन * पुषिते न पारि मोक किछु दियो धन ७२
राघवे बोलन्त धन आगे दिया गैल * सहस्रेक चरु तार अवशेष रैल
राखिते पारिबा यत आपुनि लैयोक * बिलम्ब न करि झाण्टे लैयो धरियोक ७३
शुकाइ गैल चर्म्म सम पाञ्जि समकेश * दृढ़करि गाठि बान्धि आगत प्रवेश
हाते चरु धरि चलिलाहा द्विजवर * पाव थिर नोहोवय काम्पे कलेबर ७४
बाहुरियो गोसाइ बुलि रामे दिला राव * परिहास बुलिलो लखिलो कुट भाव
गोरक्षे सहिते गो सकल नियोक * आरो यत धन लागे मोत मागियोक ७५
यज्ञ करिबोहो बुलि मागि लैया धन * रामक आशीष करि चलिला ब्राह्मण
यत धन दिया रामे करिलन्त शेष * अस्त्र आन लक्ष्मणक करिला आदेश ७६
बरुणे पितृक दिला धनु दुइखान * तूण दुइ अक्षय सम्पूर्ण यत बाण

इच्छा हो वही करो। द्विज सुयज्ञ को जाकर अभी ले आओ। वे वशिष्ठ के पुत्र और राघव के मित्र थे, लक्ष्मण ने तत्क्षण जाकर उन्हें उपस्थित किया ।। ६८ ।। रामचन्द्र ने सुयज्ञ की अर्चना की, अपने आभूषण उन्हे दान किये। राघव की सम्मति देखकर सीता ने मित्र-पत्नी को बुलवाकर अपने सभी आभूषण दानकर दिये ।। १८६९ ।। शयन की पलंग, सिंहासन की चौकी, रत्नमय बाजूबन्द, चौसठ पाट दान किये। रेशम के वस्त्र, कुंडल, कंकण, मणिहार, नूपुर, पगड़ी आदि विभिन्न प्रकार के अलंकार दान किये। कौशल्या, सुमित्रा आदि सभी माताओं, ब्राह्मणों से लेकर अपने सभी अनुगत लोगों, बन्धुजन, नट, भाट, दास-दासी जनों को मनोरथ पूर्ण कर राम ने धन दान किया ।। १८७०-७१ ।। इसके पश्चात् एक वृद्ध ब्राह्मण राम से मिले और कहने लगे, मै राजा से पाँच वर्ष बड़ा हूँ। मेरे बाल-बच्चे परिजन अनेक हैं, मै उनका पालन-पोषण नही कर पाता, मुझे कुछ धन दो ।। ७२ ।। राम ने कहा, धन तो पहले दिया जा चुका है। अब तो केवल उसके एक हज़ार के लगभग पात्र ही बचे है। आप जितने पात्र रख सकें, ले जाइये। बिना विलम्ब तुरंत ले लीजिये ।। ७३ ।। वह सूखकर चमड़े भर हो गया था, उनके बाल पूनी जैसे हो गये थे। दृढ़ता से कमर मे गाँठ बाँधकर उन्होंने सामने प्रवेश किया। हाथों में बर्तन उठाये वह ब्राह्मण श्रेष्ठ चले। उनके पाँव स्थिर नहीं रहते थे, शरीर काँप रहा था ।। ७४ ।। राम ने पुकारा, विप्रवर, मैंने आपसे परिहास किया था; जरा कूट-भाव देखा। गोपालकों समेत मेरी जितनी गौएँ है उन्हें ले जाइये। और भी जितना धन आवश्यक हो मुझसे माँगिये ।। ७५ ।। यज्ञ करने हेतु धन माँगकर राम को आशीर्वाद दे ब्राह्मण चले गये। सारा धन राम ने दानकर समाप्त कर दिया। लक्ष्मण को आदेश किया, मेरे अस्त्र ले आओ ।। ७६ ।। पिताजी को वरुण ने बाण-समेत दोनों अक्षय-तूणों के साथ जो दो धनुष और जो दो अभेद्य विमल कवच दिये थे, उन सब को शीघ्र ले आओ ।। ७७ ।। मेरा दिव्य धनुष भी गुरुजी के यहाँ है,

आरो दिला अभेद कवच दुइखान * विमल कवच दुइ झाण्टे गैया आन ७७
दिव्य धनु मोहोर आछय गुरुघरे * ताहाक आनियो गैया लक्ष्मण सत्वरे
राघवर आदेश शिरत करि लैया * त्वरिते लक्ष्मणे धनु आनिलन्त गैया ७८
राम सीता लक्ष्मण धनुक दान करि * राजाक देखिते यान्त थान परिहरि
ओवारिर नारी कान्दे सीता पावे परि * कैंक याहा माव आमासाक परिहरि ७९
न करिलो पाप अकालत मृत्यु नाइ * अन्तेषपुरर लक्ष्मी एरि कैंक याय
पूरुव कालत आछो खण्ड तप करि * तार फले सीता माव यान्त परिहरि१८८०
धवलीवरत परि कान्दे नारी जन * येन हिम गिरित परिल तारा गण
राजपथे प्रजा यत आदि अन्त नाइ * चतुर्भिति वेढ़िया क्रन्दन करियाय ८१
निरन्तरे प्रजा यत कान्दय चौपथे * किनो कर्म्म करिले नृपति दशरथे
जानिलोहो इहाङ्क आपदे आसि पाइल * सिकारणे प्रिय पुत्र वनक पठाइल ८२
आमि सब रामर लगते चलि याइवो * इहाने पाशते गैया नगरी बसाइवो
निरन्तरे लइया याइबो पुत्र परिवार * इटो शून्य नगरी कैकेयीर हौक सार ८३
राजार कुमारी तुलिलन्त वापे मावे * प्रजागणे देखे सीता यान्त भूमि पावे
सुकोमली सीता देवीर भूमित चरण * किसक न भैल विधि आमार मरण ८४
नगरी जनर वाक्य शुनि हेन काणे * सिंहद्वार पाइलन्त मनत अभिमाने
सुमन्त्रक वोलन्त जनायो महाराजे * वापर चरण देखो जाइवो वनवाजे ८५
संक्षेप करिया कहिलोहो इटो कथा * दशरथ नृपतिर शुनियो व्यवस्था

लक्ष्मण, उसे जाकर शीघ्र ले आओ। रामचन्द्र का आदेश शिरोधार्य कर लक्ष्मण शीघ्रता से जाकर धनुष ले आये ॥ ७८ ॥ धनुष दानकर राम, सीता और लक्ष्मण अपने स्थान से निकल राजा दशरथ को देखने चले। राजभवन की नारियाँ सीता के चरणों में गिरकर रोने लगीं। हमें छोड़कर कहाँ जा रही हो ? ॥ १८७९ ॥ हमने पाप नही किया, अकाल में किसी की मृत्यु नही होती। अन्तःपुर की लक्ष्मी हमें छोड़कर कहाँ चली ? पूर्वकाल में संभवतः खंडित तप किया था, इसी कारण माता सीता हमे छोड़कर चली जा रही है ॥ १८८० ॥ भवन के वरामदे में पड़कर नारियाँ रो रही थी, मानों हिमगिरि पर तारे टूट गिरे है। राज-मार्ग पर प्रजा-जनों का समूह, जिसका आदि-अन्त न था, चारों ओर से रामचन्द्र को घेरकर क्रन्दन कर रहा था ॥ १८८१ ॥ चौराहों पर प्रजाजन निरन्तर क्रन्दन कर रहे थे— राजा दशरथ ने भला यह कैसा कर्म कर डाला। समझ गये, इन्हें भी संकट ने पकड़ लिया है, इसी कारण प्रियपुत्र को वन में भेजा है ॥ ८२ ॥ हम सब भी राम के साथ ही वन में चले जायेंगे। इन्ही श्रीराम के समीप रहकर नगरी बसायेंगे। निरंतर अपने पुत्र-परिवार को ले जायेंगे। यह सूनी नगरी कैकेयी के लिए ही सार रहे ॥ ८३ ॥ जिसे माता-पिता ने पाल-पोसकर वड़ा किया है, उस राजकुमारी सीता को भूमि पर पैदल चलते हुए प्रजागण देख रहे थे। सुकोमल शरीरवाली सीता के चरण आज भूमि पर पड़ रहे हैं, हे विधाता, इससे हमारी मृत्यु ही क्यों नही हुई ? ॥ ८४ ॥ नागरिकों के ऐसे वचन कानों से सुनते हुए (वे तीनों) मन में अभिमान लिए सिंह द्वार पहुँचे। रामने सुमंत्र से कहा, महाराज को सूचना दीजिये। पिता के चरण-दर्शन कर हम वनवास में जायेंगे ॥ ८५ ॥ यह कथा संक्षेप में कही। अब राजा दशरथ की अवस्था सुनें।

दशरथत श्रीरामर बिदाय-प्रार्थना आरु दशरथर शोक

चेतन लभिया शोके कैकेयीक चाइल * रोगयुत गजे येन सिंह भेट पाइल ८६
काल राति शुनिबि कैकेयराज जीव * राम बन गैले मइ ते जिवोहो जीव
तोर पुत्र केन मते करिबेक राज * छवाल चरित्र किछु नुबुजय काज ८७
मधुफल आशाये सेबिलो वृक्ष मूल * फल काले भैल सियो शिमलीर तुल
बिरिध कालत हेन निकारुण भैले * मुखर गरास मोर ताको काढ़ि लैले ८८
एबेसे जानिलो तोक येने पतिव्रता * मोहोर रुधिर पान करिते शकता
जन्मे जन्मे होवे येन तोर सद्गति * राज्यलोभे बध कैले मइ हेन पति ८९
कीर्त्ति कर्म्म धर्म्म माने सबे परिहरि * अनाथ करिलि तइ अयोध्या नगरी
हाय ! प्रिय पुत्र मइ परिहरो किक * स्त्रीर अधीन मोक आछो धिक धिक१८९०
प्रतिपाल करे मोक सुभाषित राम * तिनियो त्रैलोक्ये याक नाहिके उपाम
हा बिधि मइ आबे करिलोहो किस * पापष्ठीये ढालिलन्त अमृतते बिष ९१
पाविष्ठ निष्ठुर मइ भैलो स्त्रीर बश * रामक बनक पठाइ पाइलो अपयश
किनो अधोगति तइ पाविष्ठी दारुणी * बिहता स्वामीक केने भैलि निकारुणी ९२
बिलाप करन्ते येबे आछे महारथ * हात जोरे सुमन्त्र आगत उपगत
श्रीराम लक्ष्मण सीता दुवारत थित * वने जाइते आसिलन्त चरण देखित ९३
कान्दि राजा सुमन्त्रक बुलिलन्त बाणी * महादइ समस्तक मिलायोक आनि
परि छेदा देखन्तोक राम पुत्रमुख * राम बने गैले अन्तर्गते पाइब दुख ९४

दशरथ से श्रीराम की विदा-प्रार्थना और दशरथ का शोक

चेतना लौटने पर शोकमग्न राजा ने कैकेयी को देखा। मानों रोगी गज के साथ सिंह की भेंट हो गयी हो ॥ ८६ ॥ राजा बोले, केकय राजकन्या, कल रात को तू सुन लेना, राम के वन जाने पर मैं अपना जीवन तज दूंगा। तेरा बेटा भला राज कैसे करेगा। वह बाल-स्वभाव का है, राज-कार्य कुछ नहीं समझता ॥ ८७ ॥ मधुफल की आशा से मैंने वृक्ष की जड़ को सींचा, पर फल लगने के समय वह भी सेमल की रुई जैसा हो गया। मेरी वृद्धावस्था में तू निर्मम बन गयी, मेरे मुँह का कौर भी छीन लिया ॥ ८८ ॥ अब समझ पाया हूँ कि तू कैसी पतिव्रता है। मेरा रक्त-पान भी कर सकती है। जन्म-जन्म में जैसे तुझे सद्गति मिले! राज्य-लोभ से तूने मुझ-जैसे पति का वध कर डाला ॥ १८८९ ॥ कीर्ति, कर्म, धर्म, मान सब कुछ तजकर तूने अयोध्या नगर को अनाथ कर डाला। हाय, प्रिय पुत्र का त्याग मैं कैसे करूँ? मैं स्त्री के अधीन हो गया हूँ। मुझे धिक्कार है, धिक्कार है ॥ १८९० ॥ त्रैलोक्य में जिसकी उपमा नहीं है, वह सुन्दर वचन बोलनेवाला राम मेरा प्रतिपालन करे। हा विधि मैंने यह क्या किया? पापिनी ने अमृत में विष डाल दिया ॥ १८९१ ॥ मैं निष्ठुर पापी स्त्री के वशीभूत हो गया। राम को वन में भेजकर अपयश का भागी बना। पापिनी, दारुणी तू कितनी नीच है। ब्याहता पति के लिए क्यों इतनी निर्मम बन गयी? ॥ ९२ ॥ महारथी दशरथ जब इस प्रकार विलाप कर रहे थे, सुमंत्र हाथ जोड़कर उनके सम्मुख उपस्थित हुए। श्रीराम, लक्ष्मण और सीता द्वार पर ही खड़े रहे ॥ ९३ ॥ रो-रोकर राजा ने सुमंत्र से यह वचन कहा—सभी महादेवियों को यहाँ बुला लाओ। अन्तिम बार के लिए सभी पुत्र राम का मुख-दर्शन कर लें। राम के वन-गमन के पश्चात् सब के

राजार आदेशे मन्त्री गैला अभ्यन्तरे * निरन्तरे नारीगण मिलाइला सत्वरे
बसिला राजाक बेढ़ि रमणी सकले * चन्द्रक बेढ़िया येन तारागण ज्वले ९५
देवता भूषित यत सुन्दरी समाज * अपेश्वरा बेढ़िले येहेन देवराज
सुमन्त्रयो नृपतिर वचन प्रमाणि * राम सीता लक्ष्मणक भेटाइलन्त आनि ९६
वापक देखिल हेम सिंहासन थित * उदय गिरित येन ज्वलन्त आदित्य
कैकेयी कौशल्या दुयो आछन्त दुभिति * काश्यपक बेढ़ि येन दिति ये अदिति ९७
दशरथ आछे कन्यागणर माजत * हस्तिनीगणर माजे येन ऐरावत
रामक देखिया राजा चालिलन्त गाव * सावटि धरिते लागि बढ़ाइलन्त पाव ९८
शोके शिहरन्त गाव न पाइलन्त उलि * ढालिया परन्ते रामे धरिलन्त तुलि
श्रीराम लक्ष्मणे निया थापिला आसने * तिनि हन्ते कान्दिला विषाद करि मने ९९
विचिलन्त अनेक चामर धरि हाते * सुशीतल जल आनि ढालिलन्त माथे
कौशल्याक प्रमुखे रामर शत माव * हा प्राण प्रभु बुलि तेजिलन्त राव१९००
हरि हरि विधि कत करिले सङ्गति * दशरथ नृपतिर हेन से विपति
सुखर भितरे केने मिलिल अपाय * वन्धुच्छेद करि रामे वनवासे जाय १
कहि याइबे सीता आइ सर्वाङ्गे सुन्दरी * कैक याहा लखाइ बाप देश परिहरि
विनाश मिलिल आसि अयोध्या नगरी * कैक याइबे रामाइ मोक अनाथिति करि २
कत वेलि नृपतिर आसिलेक जीव * कर जोरे श्रीराम आगत भैला थिव
तयू सत्य पालिया चलिबो वन माज * शुभ दृष्टि चाहि आज्ञा दियो महाराज ३
लक्ष्मण सीताक मइ बुलिलोहो माव * गह करि तेजिलन्त आपोनार ठाव

अन्तर में दुःख होगा ।। ९४ ।। राजा के आदेश से मंत्री रनिवास गये और सभी नारियों को वहाँ शीघ्र ही एकत्रित कर दिया। जैसे चन्द्रमा को घेरकर तारे जलते हैं उसी प्रकार नारियाँ राजा को घेरकर बैठ गयी ।। ९५ ।। राजा दशरथ ऐसे लग रहे थे, मानों देवता-विभूषित सुन्दरी-समाज में अप्सराओं से घिरे देवराज। सुमंत्र ने भी राजा के कथनानुसार राम-सीता-लक्ष्मण को भी वहाँ उपस्थित किया ।। ९६ ।। उन्होने देखा, पिता स्वर्ण-सिंहासन पर ऐसे स्थित हैं मानों उदय गिरि पर ज्वलन्त आदित्य हो। कैकेयी और कौशल्या दोनों दो ओर हैं। मानों काश्यप को घेरे हुए दिति और अदिति हों ।। ९७ ।। हथिनियों के बीच ऐरावत जैसे राजा दशरथ कन्याओं के बीच थे। राम को देखते ही राजा खड़े हो गये। उन्हें आलिंगन करने हेतु चरण बढ़ाये ।। ९८ ।। शोक से शरीर रोमांचित हो रहा था, सुध नहीं थी। वे ढलकर गिर रहे थे तभी राम ने उन्हे पकड़कर उठा लिया। श्रीराम लक्ष्मण ने उन्हें उठाकर आसन पर बैठाया। तीनों मन के विषाद से रोने लगे ।। १८९९ ।। हाथो मे चँवरें लेकर बहुत हवा करने लगे, सुशीतल जल लाकर सिर पर डाला। कौशल्या सहित राम की सौ माताएँ 'हा प्राण प्रभु' कहकर चीख उठी ।। १९०० ।। हरि, हरि, विधि ने यह कैसा संयोग किया जिससे कि राजा दशरथ पर ऐसी विपत्ति आयी। सुख के बीच यह कैसा संकट आ पड़ा, अपने बन्धु-जनों को तजकर राम वन को जा रहे हैं ।। १९०१ ।। सर्वांग सुंदरी सीता माँ, कहाँ जा रही हो। लक्ष्मण बेटे, देश छोड़कर कहाँ चले हो? अयोध्या नगरी का विनाश हो गया। हे राम, भला हमें छोड़ अनाथिनी कर कहाँ जा रहे हो? ।। २ ।। कितनी देर बाद नृपति की चेतना लौटी। हाथ जोड़ श्रीराम उनके सम्मुख उपस्थित हुए। आपके सत्य का पालन करते हुए आज वन को चल रहा हूँ। मैं शुभ-दृष्टि चाहता हूँ, महाराज, आज्ञा दीजिये ।। ३ ।। लक्ष्मण सीता को मैंने भाव समझाया

पलटाइते ना पारिलो करिबोहो किस * तिनि हन्ते चलिलोहो दियोक आशीष १९०४
जगतर नाथे एइ बुलि रहिलन्त * माथा तुलि पाचे दशरथे बुलिलन्त
स्त्री जन बढ़ाइ बर भैलोहो हताश * कैकेयीक बर दिया चिन्तिलो बिनाश १९०५
जन्मे जन्मे मइ करिलोहो मन्द कर्म्म * ज्येष्ठ पुत्र बने जाइ कोन युगधर्म्म
अयोग्य करिया गले सत्य पाशे धरि * राज्य भार लवय निग्रह मोक करि ६
दशरथे बोले शुना हृदयनन्दन * एरि याइबे मोहोक बिकल करे मन
तुमि एरि गैले मोर नाहिके जीवन * दुख भाग लैबो मोक लैया चलो बन ७
प्रदक्षिण करि रामे बुलिलन्त वाणी * आमार जीवन येन पद्मपत्र पानी
पितृदेव तोमार सत्यक रक्षा करि * निश्चये चलिबो बन राज्य परिहरि ८
धर्म्मपथ राखो मोत तेजियोक स्नेह * सत्यक पालन करो दृढ़ करा देह
पुत्र सङ्गे राजार जाइबाक नोहे योग * बन्धुजन पालि करियोक राज्य भोग ९
दशरथे बोले राम कुलर नन्दन * मावक बापक बोलो आश्वास बचन
मावर बापर पुत्र सर्व्वकाले छोट * माज करि गले बान्धि थाको राति गोट १९१०
राजाये बोलन्त राम बुजिलोहो चित * एक बोल बोलोताक देखियोक हित
आजि थाकि अनुग्रह करियो आमात * परिच्छेदा एके थाने भुञ्जो आजि मात ११
राघवे बोलन्त बाप सुनियो आपोने * आजि दुयो भात खाइबो कालि खाइबो कोने
मोहोर वासना एरि पालियो शपत * अबिलम्बे राज्ये आनि थापिये भरत १२
मोहोर निमित्ते किक शोकक ज्वलय * गम्भीर सागर कदाचितो न टलय

परन्तु इन दोनों ने हठकर अपने स्थान को छोड़ दिया है। इन्हें मैं लौटा नहीं सका तो क्या करूँ? हम तीनों चल रहे है, हमें आशीष दीजिये ॥ ४ ॥ जगत के नाथ यह कहकर मौन हो गये। तब सिर उठाकर दशरथ ने कहा—स्त्रियों को बढ़ावा देकर मुझे हताश होना पड़ा। कैकेयी को वर देकर अपना विनाश बुला लिया ॥ ५ ॥ जन्म-जन्म में मैंने मंद-कर्म किये है। नही तो ज्येष्ठ पुत्र वन को जाये, भला यह कहाँ का योगधर्म है? गले में सत्य का बंधन डाल, मुझे अयोग्य बना निग्रह करते हुए इसने राज्य-भार ले लिया ॥ ६ ॥ दशरथ ने कहा—हृदय नन्दन, सुनो। तुम मुझे छोड़ जाओगे इससे मेरा चित्त व्याकुल हो रहा है। तुम्हारे छोड़ जाने पर मेरा जीवन नहीं रहेगा। मुझे भी वन में ले चलो, मैं वहाँ तुम्हारे दुःख का भाग ले लूँगा ॥ ७ ॥ प्रदक्षिणा करते हुए राम यह वचन बोले—हमारा जीवन तो वैसा ही है जैसा कि पद्म-पत्र पर जल। पितृदेव, मैं आपके सत्य की रक्षा करते हुए राज्य छोड़कर अवश्य ही वन में जाऊँगा ॥ ८ ॥ धर्म मार्ग की रक्षा कीजिये। मेरे प्रति स्नेह को छोड़ दीजिये। मैं सत्य का पालन करूँ, आप अपने शरीर को दृढ़ कीजिये। पुत्र के संग राजा को जाना उचित नहीं है। वन्धु-जनों का पालन करते हुए राज-भोग कीजिये ॥ १९०९ ॥ कुलनन्दन राम ने दशरथ से ऐसा कहकर माता-पिता को अपने वचनों से आश्वासन दिया। माता-पिता के लिए पुत्र सदैव छोटा होता है ॥ उसे वे रात भर अपनी छाती से बाँधे रखना चाहते हैं ॥ १९१० ॥ राजा ने कहा, राम, मैंने तुम्हारे हृदय की बात समझ ली। एक वचन बोलनेवाले का तुम कल्याण कामना करते हो। आज रहकर हमारे ऊपर अनुग्रह करो। आज एक ही स्थान पर मिलकर हम भोजन करें ॥ १९११ ॥ राघव बोले—पिताजी, सुनिये। आज हम दोनों मिलकर भोजन करें, पर कल कौन करेगा? मेरी वासना छोड़कर अपनी शपथ का पालन कीजिये। अविलम्ब भरत को लाकर राज्य पर प्रतिष्ठित कीजिये ॥ १२ ॥ मेरे निमित्त शोक में क्यों दग्ध

निश्वास काढ़िया राजा माथा तुलि चाइला * सुमन्त्र आगते आछे ताङ्क भेट पाइला १३
बोलोहो सुमन्त्र शुन वचन आमार * चतुरङ्ग दल मोर सत्वरे हाङ्कार
श्रीरामर लगते चलोक सेवा करि * भरते आसिया लौक इ शून्य नगरी १४
प्रथम यौवनी यत विविध सुन्दरी * राघवर लगते चलायो झाण्ट करि
भाण्डार वेहार धन जन यत देश * रामर तुलत हौक वनत प्रवेश १५
पात्र मन्त्री सकल यतेक बीर सार * एको एको बीरे वासवको देइ धार
रामर तुलत गैया बसायोक नगरी * कैकेयीक राज्य इटो देओ शुण्य करि १६
शुनि कैकेयीर मुख जिह्वा शुकाइ गैल * क्रोधे नृपतिक वाक्य बुलिवाक लैल
सार भाग काढ़िलैला पाइलो सत्य वोल * घृत काढ़ि लैला मइ कि करिवो घोल १७
राजार चरित्र देखि भरतर माव * चमत्कार जवलिल काम्पन्त हात पाव
बिवर्ण वदन भैल निश्रीक कुचान्द * अमृत पानक येन राहुग्रस्त चान्द १८
तोमार उपरि वंश सगर आछिल * शुनि आछो तेहो श्रेष्ठ पुत्रक त्यागिल
सेहि मते रामक करियो परिहार * ताङ्क योग्य नुहिके अयोध्या राज्यभार १९
धिक तोक पापिण्ठी बुलिला महाराज * लाजे शोके थाकिला भूमिक लागि चाइ
हेन देखि बुलिलन्त वृद्ध महापात्र * नामत सिद्धार्थ तेहो चिरकालि पात्र १९२०
आछिला असमञ्ज शङ्कट वर थले * शिशु मारि पेला वय सरयूर जले
शोके बिनावय प्रजा नृपतित काज * सि कारणे तेजिला सगर महाराज २१
गुणर सागर राम सर्व्वजन हित * देव द्विज भक्त पितृ मातृत बिनीत

हो रहे है ? गंभीर समुद्र तो कभी विचलित नही होता। राजा ने दीर्घ निःश्वास लेकर सिर उठा देखा। सुमंत्र आगे थे, उन्हे देखा ॥ १३ ॥ सुमंत्र मेरे वचन सुनो। मेरी चतुरग सेना को शीघ्र बुलाओ। राम के संग सभी सेवा करते चलें। भरत आकर यह सूना राज्य ले ॥ १४ ॥ प्रथम यौवनवती जो विविध सुन्दरियाँ हैं, सभी राघव के साथ शीघ्र चले। राज-भंडार, व्यापार के जो घन हैं, देश के जो जन है सभी राघव के संग वन मे प्रवेश करे ॥ १५ ॥ राज कर्मचारी, मंत्री और वे वीर गण जिनमें एक-एक पुरुष वासव इन्द्र को भी पराभूत कर सकता है, राम के सग जाकर नगरी बसाये। यह राज्य शून्य कर कैकेयी को दें ॥ १६ ॥ यह सुनकर कैकेयी की जीभ और मुँह सूख गया। वह राजा से क्रोधपूर्ण वचन बोलने लगी। तुमने सार-तत्व को छीन लिया, मुझे सत्य-वचन मिल गया। घी निकाल लिया मैं छाछ लेकर क्या करूँगी ? ॥ १७ ॥ राजा का चरित्र देखकर कैकेयी का शरीर चमत्कृत हो उठा। हाथ-पाँव काँपने लगे। उसका मुखमडल सौन्दर्यहीन मटमैले चन्द्रमा जैसा विवर्ण हो गया। मानो अमृत पीने के लिए राहु-ग्रस्त चाँद हो ॥ १८ ॥ सुना है, तुम्हारे पूर्वज राजा सगर थे, उन्होंने भी अपने श्रेष्ठ पुत्र को तज दिया था। उसी प्रकार राम को भी तुम तज दो। उन्हें राज्य-भार देना उचित नही है ॥ १९१९ ॥ महाराज ने कहा—पापिनी, तुझे धिक्कार है और लज्जा व शोक मे भूमि की ओर देखते रहे ॥ १९२० ॥ यह देखकर सिद्धार्थ नाम के वृद्ध महापात्र, जो सदा सम्मान के पात्र थे, बोले—वह असमंज था जो प्रजा के लिए संकट का कारण बन गया था। शिशुओं का वधकर वह सरयू के जल में फेंक दिया करता था। शोकाकुल प्रजा राजा के सम्मुख जाकर दुःख प्रकट करने लगी। इसी कारण राजा सगर ने उसे त्याग दिया था ॥ १९२१ ॥ पर रामचन्द्र गुण-सागर है, सर्वजन हित में लगे रहते है, देव-द्विज-भक्त, पिता-माता के सम्मुख विनम्र हैं। प्रकाश-सरोवर में जगमग कुसुद हैं। भला उन्हे किस अपराध से

जलमल कुमुद प्रकाश शशधर * कोन दोषे श्रीरामक गुचाइबे राज्यर २२
बारे बारे बोल तइ रामक गुचित * मइ जानो तोक येने करिबे उचित
सब राजे साजिया रामर पाशे जाउक * कुकुर श्रृगाले तोक लारि चारि खाउक २३
राजार कुमारी रूपे आइलि राक्षसिनी * दशरथ हेन स्वामी लैलि निकारुणी
परम पापिनी देखिबाक नोह योग * अचिकित्स्य व्याधि भैले येन गर्भरोग २४
नृपति बोलन्त शुन हाओरे पापिष्ठि * तोक देखि परे येन नरकत दृष्टि
राजभोग तेजि मइ भैलो हो निराश * सुखे थाक राम सङ्गे चलो बनवास २५
राघवे बोलन्त पितृ चित्त करा थिर * बनबास योग मोक दियो आनि चीर
पुत्रर लगत बन जाइते नोहे योग * बन्धुजन पालियो करियो राजभोग १९२६

श्रीराम आदिर बाकलि बस्त्र परिधान आरु सकलोरे प्रति आश्वास-वाक्य प्रदान

शुनिया कैकेयी आति सहरिष मने * तिनिको बाकुलि बस्त्र दिला तेति खने
लाज एरि बोलय निष्ठुर मन करि * चीर पिन्धि चल झाण्टे देश परिहरि १९२७
भरते आसिया लौक एहि दण्ड पाट * चैध्यय वरिष लागि बनबास खाट
देवाङ्ग बस्त्रक तेजिलन्त तेति क्षणे * पिन्धिला बाकलि बस्त्र श्रीराम लक्ष्मणे २८
सीता देवी थैलन्त गलत चीर बास * मृगी येन देखिय गलत लैल पाश
लाजे नमाइलन्त माथ जनकर जीव * स्वामीर पाशत धीरे धीरे भैला थिव २९

राज्य से वंचित किया जाये ? ।। २२ ।। बार-बार तू राम को चले जाने के लिए कहती है । तुझे जैसा करना उचित है, मैं जानता हूँ । राज्यभर के सब लोग सज कर राम के पास चले जायें । तुझे कुत्ते श्रृगाल नोच-नोचकर खायें ।। २३ ।। राजकुमारी के रूप में तू राक्षसी आयी है । निष्ठुरे, दशरथ जैसे पति मिले । तू परम पापिनी है, तुझे देखना नहीं चाहिए । गर्भ रोग की भाँति तू भी एक ऐसी व्याधि है जिसकी चिकित्सा नहीं हो सकती ।। २४ ।। राजा ने कहा, हाय री पापिनी तुझे देखने पर जैसे दृष्टि नरक में पड़ रही है । राजभोग तजकर मैं अब निराश हो गया हूँ । तू सुख से रह, मैं राम के संग वनवास को चला ।। २५ ।। राघव ने कहा, पिताजी, मन स्थिर कीजिये, वनवास के योग्य मुझे चीर ला दीजिये । पुत्र के संग वन में जाना आपके लिए उचित नहीं है । आप बन्धुजनों का पालन करते हुए राज-भोग करें ।। २६ ।।

श्रीराम आदि का बल्कल वस्त्र धारण करना और सबको आश्वासन देना

राम के वचन सुन कैकेयी ने बड़े प्रसन्न मन से उसी क्षण तीनों को बल्कल-वस्त्र लाकर दिया । लज्जा छोड़, मन को निर्भय बनाकर बोली, चीर पहनकर शीघ्र देश छोड़कर चले जाओ ।। २७ ।। भरत आकर यह राजदंड और राज-पाट ग्रहण करे । चौदह वर्ष तक तुम वनवास भोगो । तब श्रीराम-लक्ष्मण ने उसी क्षण देवांग- (रेशमी) वस्त्र त्यागकर बल्कल-वस्त्र पहन लिए । देवी सीता ने चीर-वस्त्र लेकर अपने गले में डाल लिया । वह गले में रस्सी लगाये हुए मृगी जैसी लगती थी । जनक-जाया सीता ने लज्जा से सिर झुका लिया और धीरे-धीरे पति के समीप जाकर खड़ी हो गयी ।। १९२८-२९ ।। हे मेरे स्वामी, प्रभु राम !

शुनियोक प्रभु राम मोर निज पति * केन मते चीर पिन्धो कहियो सम्प्रति
हेन बुलि चीर नेत्र ऊपरे धरिल * महादइ लोके देखि क्रन्दन करिल ३०
हा विधि बुलि रोल उथलिल जारि * सीता गोसानीक लागि नाहि पाट शारि
राजा बोले पापिष्ठी अख्याति रव थैले * एके रामे वने जाइते वर मागि लैले ३१
किनो निदारुणी तोर पापर शरीर * लक्ष्मण सीताक केने पिन्धावस चीर
राघवे बोलत बाप तयु पावे धरो * एकुटीर पुत्र मइ आइक परिहरो ३२
मोहोर वियोगे आइर जीवन संशय * हेन काज करायेन तान प्राण रय
परिला कौशल्या माव शोकर सागरे * इहार शरीर रक्षा करा निरन्तरे ३३
हेन शुनि नृपति विह्वल आति भैला * भूमित परिमा तेति क्षणे मूर्च्छा गैला
कतो क्षणे चेतन लभिया महाराय * करिला आदेश राजा सुमन्त्रक चाइ ३४
मोर रथ खान आन शीघ्रे घोड़ा साजि * रामे वने जाहन्ते सारथि हुयो आजि
राजार आदेश मन्त्री माथे तुलि लैया * सव साजे रथ साजि आनिलन्त गैया ३५
भण्डारीक नृपतिये करिला हाङ्कार * सीताक दियोक राज योग अलङ्कार
राजार वचन मन्त्री शिरोगते लैया * तेखने आनिला दिव्य अलङ्कार गैया ३६
नृपति बोलन्त कुल बोहारी आमार * परिच्छेदा देखो पिन्धियोक अलङ्कार
तेति क्षणे सीता वल्कलक तेजिलन्त * सुनिर्म्मल वस्त्र परिधान करिलन्त ३७
शाश्त पाञ्च शते पिन्धाइलन्त अलङ्कार * मुकुट कुण्डल ग्रीवे साते सरि हार
नूपुर पागरि आनो अलङ्कार यत * थाने थाने प्रति प्रति पिन्धाइला समस्त ३८
कङ्कण कुण्डल रत्नाङ्गुलि आरो काञ्चि * समस्त शरीर अलङ्कारे निला खाञ्चि

सुनिये, चीर कैसे पहनूँ, मुझे अव समझा दीजिये। यों कहकर उन्होंने चीर को अपने नेत्रों पर रख लिया। महादेवियाँ (रानियाँ) और अन्य लोग यह देखकर रोने लगे ।। १९३० ।। 'हा विधि' यह ध्वनि चारों ओर गूँज उठी। आज देवी सीता के लिए रेशमी साड़ी भी नहीं रह गयी। राजा ने कहा—री पापिनी, तेरी कुख्याति चिरकाल रह जायेगी। तूने तो एक राम के ही वन-गमन हेतु वर माँगा था ।। ३१ ।। तेरा पाप शरीर कैसा निर्मम है। भला तू सीता और लक्ष्मण को चीर क्यों पहना रही है? रामचन्द्र ने कहा—पिताजी, मैं आपके चरण पकड़ता हूँ। मैं माँ का इकलौता वेटा हूँ। माँ को छोड़कर मैं चला जा रहा हूँ ।। ३२ ।। मेरे वियोग से माता का प्राण-संशय उपस्थित हो गया है। ऐसी व्यवस्था कीजिये जिससे उसके प्राण बचे। कौशल्या माता शोक-सागर में पड़ी हुई है। निरंतर इसके शरीर की रक्षा कीजिये ।। ३३ ।। यह सुनकर राजा बहुत ही विह्वल हो उठे। भूमि पर गिरकर उसी क्षण मूर्च्छित हो गये। कितनी देर में चेतना प्राप्तकर राजा ने सुमंत्र की ओर देख यह आदेश दिया— ।। ३४ ।। मेरे रथ में घोड़े जुतवाकर शीघ्र ले आओ। राम के वन-गमन के अवसर पर आज तुम्हीं सारथी वनो। राजा का आदेश शिरोधार्य कर मंत्री रथ को सव प्रकार से सुसज्जितकर ले आये ।। ३५ ।। राजा ने भंडारी को बुलाकर कहा—सीता को राज-योग्य आभूषण दो। राजा का आदेश शिरोधार्य कर मंत्री तत्क्षण जाकर दिव्य आभूषण ले आये ।। ३६ ।। राजा ने कहा—हे मेरी कुलवधु, तुम ये आभूषण पहनो, मैं तुम्हें सजी देखना चाहता हूँ। सीता ने तव वल्कल वस्त्र त्याग दिया और सुनिर्मल वस्त्र पहन लिया ।। ३७ ।। पाँच सौ सासों ने उन्हें आभूषण पहनाये। मुकुट, कुंडल, गले में सत-लहरी हार, नूपुर, पगरि (पाजेव) आदि जितने भी आभूषण हैं, एक-एक कर सवको पहनाया ।।३८।। कंकण, कडल, रत्नजड़ित अंगूठियाँ, कांचि आदि आभूषणों से सीता का शरीर भर

मङ्गल करिला भाले जनकर जीवे * गाव चालि कौशल्यायो धरिलन्त ग्रीवे ३९
मावे जीवे येन धरिलन्त गले गले * लोहो मलचिला सीता वस्त्रर अञ्चले
माथात चुम्बन दिया रामर जननी * बोलन्त शुनियो माव जनकनन्दिनी १९४०
निर्गुण सुस्वामी तोर दुर्गति पतित * आर मान नासाधिया करिबाहा हित
सीताये बोलन्त माव तेजा चिन्ता शोक * इतर नारीर सम नेदेखिबा मोक ४१
सुस्वामी थाकन्ते शोभे सबे अलङ्कार * स्वामीहीन हैले होवे सबे छारखार
परिमित धन मात्र देन्त बाप भाइ * पुत्रत थाकिले धन हाते तो ना पाइ ४२
स्वामीर धनक सुख भोगे करे दान * कोन नारी करावे स्वामीक अपमान
कोकिल शोभन होवे सुशोभन रावे * नारीगण शोभे पतिव्रता धर्म्मभावे ४३
पुरुष शोभन गुण सद विद्या भारे * तापस शोभन होवे क्षमा अलङ्कारे
शुनियो गोसानि बोलो सीता परबासु * जन्मे जन्मे राम स्वामी तुमि हैबा शाशु ४४
कौशल्या शुनिया हेन बचन कुशल * हरिष विषादे परे नयनर जल
रामर गलत धरि बुलिला विशेष * सीताक राखिबा यत्ने दिला उपदेश ४५
सुकुमार बाप मोर लक्ष्लण कुमार * ताहाङ्को देखिबा येन निज कलेवर
राघवे बोलन्त माव तेजियोक चिन्ता * लक्ष्मण डाहिन बाहु छाया मोर सीता ४६
आङ्क पराभवे पशे हरत शरणे * पाति मलछिल तार यमर करणे
मोर लगे शोभन लक्ष्मण बीरबर * रबितले नाहिके आमाक समसर ४७
एके आरो अग्नि मइ लक्ष्मण पवन * रिपु आरण्यक करिबोहो पुरि छन
कौशल्या मुठिक धरि हानिलन्त हिये * चापिया धरिला गैया लक्ष्मणर ग्रीवे ४८

दिया। जनक-नन्दिनी का मंगल करती हुई कौशल्या ने भी उठकर गला पकड़ उनका आलिंगन किया।। १९३९ ।। मानों प्राण और शरीर एक दूसरे को गले लगा रहे हैं। सीता ने आँचल से आँखों के आँसू पोंछे। सिर चूमकर राम की जननी ने कहा, बेटी जनक-नन्दिनी, सुनो ।। १९४० ।। तुम्हारा निर्गुण (तीनों गुणों से परे) पति संकट मे पड़ा है। मन में कोई मान न रखकर उसका हित साधन करना। सीता ने कहा—माता, चिन्ता-शोक छोड़िये। मुझे नीच नारियों जैसी न समझें ।।४१।। पति के रहते ही सारे आभूषण शोभा पाते हैं, पति के बिना सब भस्मशेष-राख के समान हैं। पिता और भाई तो सीमित धन मात्र दिया करते है। पुत्र का धन रहे तो हाथ में भी नही मिलता ।। ४२ ।। नारी पति के धन से ही सुख भोगती है, दान करती है। तो भला कौन नारी पति का अपमान करावेगी? कोयल अपनी मधुर ध्वनि से ही सुशोभित होती है उसी प्रकार नारियाँ पतिव्रता-धर्म-भावना से ही सुशोभित होती है ।। १९४३ ।। विद्या-भार के गुण से ही पुरुष सुशोभित होता है, तपस्वी क्षमारूपी अलंकार से सुशोभित होता है। हे देवी, सुनिये, मैं सीता कहती हूँ। जन्म-जन्म में राम मेरे पति हों, तुम मेरी सास होवो ।। ४४ ।। ऐसे कुशल वचन सुनकर हर्ष-विषाद से कौशल्या की आँखों से आँसू बहने लगे। राम के गले को पकड़कर विशेष रूप से उपदेश दिया—सीता को यत्न से रखना ।। ४५ ।। मेरा वत्स कुमार लक्ष्मण सुकुमार है। उसे भी अपने अंग की भाँति समझना। राघव ने कहा—माता, चिन्ता छोड़ो। लक्ष्मण मेरा दाहिना हाथ है, सीता मेरी छाया है ।। ४६ ।। इसे पराभूत कर शिव की शरण जाने पर भी समर-भूमि में उसकी जीवन-रक्षा नही हो सकती। वीरवर सुन्दर लक्ष्मण के मेरे साथ रहने पर इस सूर्य के नीचे कोई भी हमारे समकक्ष नहीं हो सकता ।। ४७ ।। मैं अग्नि हूँ, लक्ष्मण पवन है। हम दोनों एक साथ रहने पर शत्रु-रूपी अरण्य को जलाकर भस्म कर

शुन शुन वापु मोर लक्ष्मण कुमार * सीताक राखिवा भाले बनर भितर
लक्ष्मणे बुलिला वाणी जोर हात करि * चिन्ता तेजियोक शोक मन्यु परिहरि ४९
सीतार निमित्ते माव न करिवा भय * धनु धरि राखिबोहो लक्ष्मण दुर्ज्जय
अश्विनीकुमारो मोक नुहिवन्त सम * हाते धनुशर धरि जिनिवोहो यम१९५०
काल विकालक जिनि कीर्त्ति वर थैवो * महेशर हातर त्रिशूल काढ़ि लैवो
एकेश्वरे जिनिवो सकले देवासुर * मुठिते करिवो वासवर वज्र चूर ५१
हाते धरि छिण्डिबोहो बरुणर पाश * गदा भाङ्गि कुवेरक करिवो उदास
श्रीरामे बोलन्त माव तेजियोक ताप * आश्वासियो भाले मोर दशरथ वाप ५२
भक्ति भावे तुषियो शङ्कर देव हरि * सत्वरे आसिवो मइ वनबास तरि
सुविनय सुरूप पुत्रर शुनि बोल * स्त्री सब माजे भैल क्रन्दनर रोल ५३
क्रौञ्च समूहे येन नादय आकाशे * क्रन्दनर उर्मि दशरथर आवासे
राम सीता लक्ष्मण राजाक नमिलन्त * पुनु पुनु पावे धरि धूलिक लैलन्त ५४
वन्दिलन्त पाचत कौशल्या देवी माव * अनन्तरे नमिलन्त सुमित्रार पाव
चरण वन्दिला लखाइ विनय स्वभावे * बसाइलन्त कोलात सुमित्रा निज मावे ५५
साफल जीवन मोर कल्याण साधिलो * कत जन्म पुण्ये मइ हेन पुत्र पाइलो
उद्धारिलि वंशक साम्फल उतपति * ज्येष्ठ भाइत भैल तोर इमत भकति ५६
सीता तोर मइ सम राम दशरथ * अविरोधे चल वाप कल्याणर पथ
शुना रामायण मन सावधान करि * भकतिक इच्छा यार डाकि बोला हरि१९५७

सकते है। कौशल्या ने मुट्ठी बाँधकर अपनी छाती पर मार लिया। जाकर लक्ष्मण के गले को पकड़कर छाती मे दबा लिया ॥ ४८ ॥ वत्स मेरे लक्ष्मण सुनो, वन में सीता को अच्छी तरह से रखना। लक्ष्मण ने हाथ जोड़कर कहा—शोक-क्रोध का परिहार कर चिन्ता छोड़ दो ॥ १९४९ ॥ माता, सीता के लिए भय न करो। मैं दुर्जेय लक्ष्मण हाथों में धनुष-धारण किये हुए उनकी रक्षा करूँगा। अश्विनीकुमार भी मेरे समकक्ष नही है। हाथों में धनुष-वाण लिये मैं यम को जीत सकता हूँ ॥ १९५० ॥ काल-अकाल को जीतकर महान् कीर्ति रख जाऊँगा। महेश के हाथो का त्रिशूल छीन लूँगा। अकेले ही समस्त देवासुरों को जीत लूँगा, मुट्ठी में ही इन्द्र के वज्र को चूर-चूर कर डालूँगा ॥ १९५१ ॥ हाथ से पकड़कर वरुण का पाश तोड़ डालूँगा। कुवेर का गदा तोड़कर उदासकर डालूँगा। श्रीराम ने कहा—माता, दुःख न करो। मेरे पिता दशरथ को भलीभाँति सान्त्वना दो ॥ ५२ ॥ भक्ति-भावना से देव शंकर तथा हरि को तुष्ट करना। मै शीघ्र ही वनवास बिताकर लौटूँगा। पुत्र राम के सुविनय, सौम्य वचन सुनकर नारियों में रुदन-ध्वनि गूँज उठी ॥ ५३ ॥ जैसे क्रौंच समूह आकाश में रोर करते है, उसी प्रकार दशरथ के निवास-स्थान में रुदन की ध्वनि गूँज उठी। राम-सीता-लक्ष्मण ने राजा को प्रणाम किया। बार-बार चरण पकड़कर चरण-धूलि सिर पर लगायी ॥ ५४ ॥ इसके पश्चात् माता कौशल्या की वंदना की। तत्पश्चात् सुमित्रा के चरणों में प्रणाम किया। लक्ष्मण ने विनय-स्वभाव से चरण-वंदना की। माता सुमित्रा ने उन्हें गोद मे बैठाया ॥ ५५ ॥ सुमित्रा बोली—मेरा जीवन सफल है, मैंने कल्याण-साधना कर ली। कितने जन्मों के पुण्य-बल से तुम जैसा पुत्र मुझे मिला। तुमने वंश का उद्धार कर दिया, तुम्हारा जन्म सफल हो गया। जिससे कि बड़े भाई के प्रति तुम्हारी ऐसी भक्ति हुई ॥ ५६ ॥ तुम्हारे लिए सीता मेरी जैसी है, राम दशरथ है। वत्स, निर्बाध रूप से तुम कल्याण के मार्ग में अग्रसर होवो। मन को सावधान कर रामायण सुनो। जो भक्ति पाना चाहते हो तो पुकार कर हरि बोलो ॥ १९५७ ॥

श्रीराम आदिर बनगमन

दुलड़ी

अनन्तरे राम सीता एके रथे चड़िलन्त रङ्गे गइ।
पाचत लक्ष्मण चड़िला हरिषे हाते धनुशर लइ ॥
चैध्य बरिषक लागिया सीतार वस्त्र अलङ्कार लैया।
पेटारित भरि लैया झाण्ट करि सुमन्त्र चड़िला गैया ॥ १९५८
समस्ते प्रजार तिनि रत्नसार चड़िला थान तेजिया।
ओवारि जनर गावर साक्षाते अगनि कुण्ड ज्वालिया ॥
सिंह दुवारक एरि अनन्तरे पाइला गैया राजपथ।
शोके दुखे मर्म्मे परिजन समे पाचे यान्त दशरथ ॥ १९५९
उच्वल प्रच्छल भैला तल बल अयोध्या यत नगरी।
राम सङ्गे जाइ आग पाच चाइ पलाइ यत देशान्तरी ॥
योगीर कान्धत कनि जुलि यत हाते दोवादश काथि।
लवरन्ते लव- रन्ते पाचे चान्ते हिया माने गैल फाटि ॥ १९६०
पाइलेक भागर वोकण्डा काखर सवे परि गैल खसि।
मुखे शिव शिव सुमरन्ते आति पलाइला यत तपसी ॥
आस बुलि योगी आचारि पेलाइले पूजार देवता मान।
पूजिवाक लागि पाचे पाइबो देव थाकय येवे पराण ॥ १९६१
रामर पाचत पञ्चाश छापन कोटि जाय कोण्डकर।
तार सीमा संख्या नाहिके यतेक चलि जाइ धनुर्द्धर ॥
बारु खाण्डाधर यतेक युजार आदि अन्त नाहि तार।
एको एको बीरे सागर पर्य्यन्ते युजिबाक देइ धार ॥ १९६२

श्रीराम आदि का वनगमन

इसके अनन्तर राम और सीता प्रसन्नतापूर्वक एक ही रथ पर सवार हो गये। तत्पश्चात् हाथों में धनुष-वाण लिये लक्ष्मण भी चढ़ गये। चौदह वर्ष हेतु सीता के वस्त्राभूषण पिटारी में भरकर, शीघ्रता से सुमंत्र भी उस पर चढ़ गये ॥ १९५८ ॥ सारी प्रजा के ये सारभूत तीनों रत्न स्थान तजकर रथ पर सवार हो गये। राजभवन के लोगों के शरीर में मानों अग्नि-कुंड जल उठे। सिंहद्वार अतिक्रमण कर राजमार्ग पर आ पहुँचे। शोक-दुःख वेदना से भरे परिजनों के संग दशरथ पीछे-पीछे आये ॥ १९५९ ॥ अयोध्या नगरी में उथल-पुथल के कारण खलवली मच गयी। आगे पीछे देखते हुए राम के संग जाने लगे। भाग कर लोग देश छोड़ने लगे। योगीगण कन्धों पर गूदड़-चिथड़े, हाथों मे वारह लकड़ियाँ लेकर भाग चले। दौड़ते-दौड़ते पीछे की ओर देखते हुए मानों हृदय फट गया ॥ १९६० ॥ मुँह से शिव-शिव स्मरण करते हुए सभी तपस्वी भाग चले। भागते-भागते वे थक गये, वगल की तुमड़ी (लौकी का पात्र) आदि सब कुछ गिर पड़े। आह, कहकर योगी ने पूजा के देवताओं को फेंक दिया— यदि प्राण बच जाये तो पूजने के लिए देवता वाद को मिल जायेंगे ॥ ६१ ॥ राम के पीछे-पीछे पचास-छप्पन करोड़ कोदंडधारी सैनिक चल पड़े। कितने धनुर्द्धर चले उसकी सीमा-संख्या ही नहीं है। कितने असिधारी योद्धा चले उसका आदि-अंत नहीं है। एक-एक वीर सागर तक लड़ने हेतु तलवार में धार देते थे ॥ ६२ ॥ पुत्रों को कंधों पर लिये ब्राह्मण-गण चले। नट-भाट, किंकर आदि

पुत्रक कान्धत धरिया पाचत चलिला ब्राह्मण माने ।
नट भाट आदि किङ्कर लरिल आछिल यतेक माने ॥
सूर्य्य देवतायो यार रूप देखि चलिया न यान्त रथे ।
हे नय सुन्दरी सकले कान्दय परि परि चतुष्पथे ॥ १९६३
नयन कटाक्ष करि राम देवे पाचक लागिया चाइला ।
भूमि पावे चलि आछय कान्दन्ते नृपतिक भेट पाइला ॥
हाँ बाप राम लक्ष्मण जानकी एरि मोक फैंक याहा ।
इ जन्मक लागि देखो परिछेदा माथा तुलि मोक चाहा ॥ १९६४
बापर वचन शुनि राम देवे मन आकरषि आनि ।
मक मक करि क्रन्दन्त करन्त मुखत नासय वाणी ॥
सुमन्त्र मन्त्रीक बुलिलन्त रामे शीघ्रे रथखान डाक ।
शुनरे सुमन्त्र न डाकिवि रथ दशरन्थेदेन्त हाक ॥ १९६५
नया थाक थाक डाक डाक डाक उथलिल दुइ रोल ।
सुमन्त्र मन्त्रीर मन दोधा भैल करय चित्त आन्दोल ॥
खरतर करि राघवे बोलन्त मन्त्री आर किवा चाहा ।
बापर वचन नुशुलिला मावे रथखान झाण्टे वाहा ॥ १९६६
सुनिया सुमन्त्र मन्त्रीये राजाक चाइ करि हात योर ।
आति शीघ्र वेग केरिया रथर डाकिलन्त चारि घोड़ ॥
मन पवनर वेगे चले रथ धरि अरण्यर पथ ।
क्षणेकते सबे पाछ करिलन्त नगरर लोक यत ॥ १९६७
सबाके तेजिया शीघ्र वेगे आति चड़िया गैलन्त रथे ।
हिया धाकुरिया परि वाहूरिया नारीगण कान्दे पथे ॥
राजा दशरथ कान्दन्त पथत चलि यान्ते भूमि पावे ।
महादइ यत कान्दन्ते चलन्त राम बुलि दीर्घ रावे ॥ १९६८

जितने भी थे सब दौड़ चले । सूर्य भी जिनका रूप देखकर रथ आगे नहीं बढ़ाते थे वैसी सुन्दरियाँ चौराहों पर पड़ी-पड़ी रो रही थी ॥ ६३ ॥ रामचन्द्र ने पीछे की ओर मुड़कर देखा । भूमि पर पैदल चलते, रोते हुए राजा दशरथ को उन्होंने देखा । हा वत्स राम, लक्ष्मण, जानकी मुझे छोड़कर कहाँ जा रहे हो ? इस जन्म के लिए सब कुछ समाप्त हो गया । सिर उठाकर मुझे देखो ॥ ६४ ॥ पिता के वचन सुनकर रामचन्द्र मन को आकर्षित करते हुए फूट-फूट कर रो पडे । उनके मुख से वाणी नही निकल रही थी । मंत्री सुमन्त्र से राम ने कहा— रथ को शीघ्र हाँको । दशरथ ने मना करते हुए कहा— सुमंत्र, सुनो, रथ न हाँको ॥ ६५ ॥ "मत जाओ रह जाओ", "हाँको-हाँको", दो प्रकार के शब्द गूँज उठे । मन्त्री सुमंत्र का मन द्विविधा में पड गया । चित्त आन्दोलित होने लगा । राम ने शीघ्रता से कहा— मंत्री, और देख क्या रहे हो ? पिता जी के वचन सुन नही पाये इस भाव से रथ को शीघ्र हाँक ले चलो ॥ ६६ ॥ यह सुनकर मंत्री सुमंत्र ने राजा की ओर देखते हुए हाथ जोड़कर, रथ को अत्यन्त तीव्र वेग से चलाने हेतु चारों घोड़ों को हाँका । वन के मार्ग पर मन-पवन के वेग से रथ चल पडा । नगर के सभी लोगों को उसने क्षण भर में पीछे कर दिया ॥ ६७ ॥ सबको छोड़कर, रथ पर चढे हुए वे अति शीघ्र वेग से चले । बार-बार छाती पीटती हुई, भूमि पर पडी नारियाँ पथ पर रो रही थी । राजा दशरथ क्रन्दन करते हुए मार्ग पर पैदल ही चल रहे थे । महादेवियाँ 'राम' कहकर

वशिष्ठ प्रमुख्ये करिया यतेक आछन्त गुरु ब्राह्मण ।
राजाक सम्बुधि मधुर वचन बुलिलन्त तेतिक्षण ॥
रामर पुनरा गमने तोमार आछे येवे अभिप्राय ।
बहुदूर ताङ्क आग बढ़ाईबाक एतिक्षण नुयुवाइ ॥ १९६९
शुनियो नृपति आपुनि चिन्तिला आपोनार सर्व्वनाश ।
आगे सत्य करि वर दुइ दिला कैकेयीक दिला आश ॥
वशिष्ठे देखन्त राजा दशरथ मत्तगज येन आछे ।
युगुत वचन अङ्कुशे ताहाङ्क पालटाइला गुरु पाछे ॥ १९७०
गुरुर युगुत वचन शुनिया रहिला तथा नरेश ।
रामर भितिक चाहिया नृपति नकरे चक्षु निमेष ॥
काढ़न्त निश्वास भैलन्त निराश पुनु पुत्र दरशने ।
मर्म्मे पोरे हिया भूमित परिया मूर्च्छा गैला तेतिक्षणे ॥ १९७१
हाहाकार करि डाहिने कौशल्या धरिला बिकल भावे ।
बामपाश चापि धरिलन्त पाछे भरतर निज मावे ॥
कतोक्षणे पाछे राजा दशरथ गावत चेतन पाइला ।
क्रोध दृष्टि आति करिया नृपति कैकेयीक लागि चाइला ॥ १९७२
हाओरे पापिष्ठी परम अनिष्ठी नुचुबि नुचुबि मोक ।
गुच इथानर जीओं माने आर मइतो नाचाइबो तोक ॥
शुन छारि ओंरे तोर वाक्य येवे भरते लवय राज ।
नलैबो ताहार पिण्ड जलाञ्जलि आदि करि यत काज ॥ १९७३
देखिया सुन्दरी तोक बिहा करि नष्ट भैलो मइ छार ।
नथाक एथात तेहोर आत्मात परि याउक महामार ॥

जोर-जोर से पुकारती हुई, रोती हुई चल रही थीं ॥ ६८ ॥ वशिष्ठ आदि समेत जितने गुरु ब्राह्मण थे, राजा को सम्बोधन करते हुए उस समय मधुर वचन बोलने लगे। हे राजा, राम पुनः लौट आवे यदि तुम्हारी ऐसी इच्छा है तो उन्हे बहुत दूर तक आगे बढ़ विदा देना अभी उचित नही है ॥ ६९ ॥ राजा, सुनिये, आपने स्वय अपना सर्वनाश चिन्तन कर लिया है। पहले ही सत्य-प्रतिज्ञा कर दो वर देकर कैकेयी को आशा दे दी थी। गुरु वशिष्ठ ने देखा, राजा दशरथ मत्त गज जैसे हो रहे हैं। उन्होंने युक्तिपूर्ण वचन रूपी अंकुश से उन्हे पीछे लौटाया ॥ ७० ॥ गुरु के युक्तिपूर्ण वचन सुनकर राजा वही रुक गये। राम की ओर अपलक नेत्रों से देखते हुए राजा दीर्घ-निःश्वास लेने लगे। पुनः पुत्र के दर्शन होगे इस बात से निराश हो गये। स्नेह के कारण हृदय जलने लगा, भूमि पर गिरकर वे तत्क्षण मूर्छित हो गये ॥ ७१ ॥ हाहाकार कर दाहिनी ओर कौशल्या ने व्याकुल भाव से उन्हें पकड़ लिया। तत्पश्चात्, बायीं ओर से समीप आकर भरत की माता कैकेयी ने उन्हे पकड़ा। कुछ क्षण पश्चात् राजा दशरथ के शरीर में चेतना लौटी। राजा ने अत्यन्त क्रुद्ध दृष्टि से कैकेयी की ओर देखा ॥ ७२ ॥ हाय री पापिनी, परम अनिष्ठ करनेवाली, मुझे स्पर्श न कर, स्पर्श न कर। यहाँ से चली जा, जब तक जीऊँगा अब मैं तुझे नही देखूँगा। अरी सर्वनाशिनी, सुन, तेरे वचन के अनुसार यदि भरत राज्य लेगा तो मैं उसके दिये हुए पिण्ड, जलांजलि आदि कार्य ग्रहण नही करूँगा ॥ ७३ ॥ तुझे सुन्दर देखकर विवाह किया था, इस कारण मैं जलकर नष्ट हो गया। यहाँ तू न रह, तेरी आत्मा पर महाभार पड़े। राम जैसे पुत्र को तूने वनवास दे दिया, तुझे धिक्कार है। सुन री

धिकाचोक तोक राम हेन पोक दिलि तइ वनवास।
शुनरे पापिष्ठी दूर याहा तई मोक वधिवाक चास॥ १९७४
रामे तंत वन फलक खाइवन्त मइ भुञ्जिवोहो भात।
राज्य भोग सवे तेजिवो वासमा इटो पुरी अयोध्यात॥
नाइ मोर सिद्धि हरि हरि विधि कि करिलि तइ मोक।
मरिवार काले पाइलोहो दारुण प्रिय पुत्र राम शोक॥ १९७५
कौशल्या गोसानी गदगद वाणी बुलिला वचन हित।
केन मति हीन भैला प्रभु एवे थिर करियोक चित॥
नाहि तुल्य यार त्रिभुवने आर तुमि मोर निज पति।
भाल कार्य्य आर ने देखोहो प्रभु मिलि गैल विसङ्गति॥ १९७६
विषादे मनत बुलिलन्त पाछे अयोध्यार निजनाहा।
मात नासे आर याने कौशल्यार मोक आवे लैया याहा॥
किछु स्वस्थ मन राजार वचन मन्त्रीगणे येवे पाइला।
कौशल्या देवीर ठावत राजाक प्रवेश निया कराइला॥ १९७७
पटेश्वरी सव सहिते नृपति पशिला निज पुरत।
रामर उत्तम ओवारिक राजा देखिला कतो दूरत॥
मलिन परिल गरुड़े एरिल सर्पर येन गह्वर।
केशरी खेदिल कुञ्जरे तेजिल येहेन गिरि कन्दर॥ १९७८
पाछे शोके दुखे कौशल्या सहिते शय्यात एरिला 'गाव।
हा राम बुलि वाहु दुइ तुलि कान्दे दिया दीर्घराव॥
हरि हरि राम मोक शोक दिया एरि कैक लागि गैला।
किनो तोर चित मोहोक वधित लागि उतपति भैला॥ १९७९

पापिनी, तू दूर हो जा, तू मुझे वध करना चाहती है॥ ७४॥ राम वहाँ वन के फल खायेगा, मैं भात खाऊँगा। इस अयोध्यापुरी मे सभी राज्य भोग तज देने की इच्छा है। मेरा मनोरथ सिद्ध नही हुआ। हरि, हरि, विधि, तूने मेरा क्या कर डाला। मरने के अवसर पर प्रिय पुत्र राम का दारुण शोक मुझे मिला॥ ७५॥ तव कौशल्या देवी ने गद्गद वाणी से यह हित वचन कहा— प्रभु, यों मतिहीन क्यों हो रहे हैं, चित्त को स्थिर कीजिये। त्रिभुवन मे जिसके तुल्य कोई नहीं है, वही आप मेरे पति हैं। प्रभु, जवकि अनहोनी हो गयी तो ऐसा करना मैं उत्तम कार्य नहीं समझती॥ ७६॥ इसके पश्चात् अयोध्या के स्वामी राजा दशरथ ने मनोविषाद से कहा— मेरी वोली वंद हो रही है। मुझे अव कौशल्या के स्थान में ले चलो। मन के कुछ स्वस्थ होने पर जव राजा का यह वचन मंत्रियो ने सुना तव वे उन्हें कौशल्या के निवास-स्थान में ले गये॥ ७७॥ राजा के साथ-साथ सारी पटरानियाँ अपने भवनों में गयी। राजा ने कुछ दूर से राम के उत्तम भवन को देखा। वह वैसा ही मलिन पड़ गया था मानो गरुड़ ने सर्पों के विलों को तहस-नहस कर छोड़ दिया हो। या मानो सिंह के द्वारा खदेड़ा हुआ हाथी गिरि-कंदरा को छोड़ गया हो॥ ७८॥ तत्पश्चात् दुःख-शोक से कौशल्या सहित शय्या पर पड़ गये और दोनों हाथ उठाकर 'हा राम' कहते हुए उच्च स्वर से रोने लगे। हरि, हरि, हे राम, मुझे यों शोकाकुल कर छोड़ कहाँ चले गये। तुम्हारा चित्त भला कैसा है? मुझे वध करने हेतु ही तुम्हारा जन्म हुआ है॥ ७९॥ संभवतः मैंने पूर्व जन्म में पिता-पुत्र में कभी वियोग करवाया होगा जिसके फल-स्वरूप मुझे यह निदारुण पुत्र-शोक प्राप्त हुआ। प्राणेश्वरी कौशल्या, सुनो, मेरे कंधों

पूर्व्वे जन्मे हैवे मइ पिता-पुत्रे कराया आपो वियोग।
तार फले घोर मिलिल मोहोर नियारुण पुत्रशोक ॥
प्राणेश्वरी मोर शुनियो कौशल्या ग्रीवत चापिया धर।
तोहोर गर्भत मैलो उतपति राम मोर पुत्रबर ॥ १९८०
आर ने देखिबो गैल कैक लागि मोहोर कुल नन्दन।
महा बीरबर शरीर सुन्दर गजर येन गमन ॥
परम निर्म्मल नील उतपल समान शोभे बदन।
सुबलि बलित आजानुलम्बित बाहु प्रिय दरशन ॥ १९८१
अति सुशोभन शिशु तिनिजन मोर येबे बने गैल।
बिधिर बिधाते आमि हेन नाथे पुत्र अनाथिति भैल ॥
कोमल तुलित नेत कामलित शुति उतपात करे।
तृणर शय्यात शुतिया साक्षात एवे केने प्राण धरे ॥ १९८२
अल्प बयसर सुखीया कुमर राजार भोग उचित।
तेजि गृह सुख बनबास दुख भुञ्जिबेक नितेनित ॥
शरीरक छानि पुत्रशोक बह्नि दहे दुइको निरन्तर।
शोके सर्व्बक्षणे रविर किरणे येन शोषे सरोवर ॥ १९८३
निद्राक न पाइला विषादे थाकिला राजा आरु पटेश्वरी।
रामर शोकत भैल निशबद अयोध्या सिटो नगरी ॥
शुनियोक लोक संक्षेपे आछोक इटो कथा एहिमाने।
महालाभ जानि रामर काहिनी शुनियोक विद्यमाने ॥ १९८४
घोर कलिकाल नाहि आत भाल रामत बिने भकति।
जीवा कतकाल तेजि आलजाल राम पावे दिया मति ॥

को दबाकर पकड़ो। तुम्हारे ही गर्भ से मेरे पुत्रवर राम का जन्म हुआ है ॥ १९८० ॥ मेरा वह कुलनन्दन, सुन्दर शरीर वाला, महा वीरवर, गज जैसी चालवाला, नीलोत्पल जैसे परम निर्मल सुशोभित बदनवाला, सुन्दर नाभिवाला, आजानु लम्बित भुजाओंवाला प्रियदर्शन कहाँ चला गया? अब उसे देख नही पाऊँगा ॥ १९८१ ॥ अतीव सुन्दर मेरे तीनों शिशु जबकि वन में चले गये, विधि-विधान से मेरे जैसे प्रभु के पुत्र निराश्रित हो गये। जो कोमल गद्दे पर, कोमल कम्बल पर शयन कर उपद्रव किया करते थे, भला अब वे तृण-शय्या पर यथार्थ रूप से सोकर कैसे जीवन-धारण करते होंगे?॥ ८२ ॥ जिन अल्प वयस्क, सुख मे पले कुमारों को राजभोग करना उचित था, वे अब गृह-सुख तजकर नित्य वनवास के दु:ख भोगा करेंगे। शरीर और उनकी बोली दोनों को पुत्रशोक रूपी अग्नि निरन्तर दग्ध कर रही थी। जैसे कि सूर्य की किरणें सरोवर सोख लेती है उसी प्रकार शोक उनका शोषण कर रहा था ॥ ८३ ॥ राम के शोक में सम्पूर्ण अयोध्यापुरी निस्तब्ध हो जाने पर भी विषादमग्न राजा और पटरानी कौशल्या को निद्रा नही आयी। सब लोग सुने, यह कथा संक्षेप में यही है। महालाभ समझकर राम की कथा सबके विद्यमान में सुने ॥ ८४ ॥ इस घोर कलियुग में राम की भक्ति के बगैर कल्याण का अन्य साधन नही है। यहाँ कितने समय तक जीवित रहोगे? सभी जजाल छोड़कर राम के चरणों में मन लगाओ। यह परम अस्थिर मानव शरीर न जाने किस क्षण में नष्ट हो जाय, ऐसा समझकर सब लोग पुकार-पुकार कर राम-राम वाणी बोलो ॥ १९८५ ॥

परम अथिर मनुष्य शरीर परे केति क्षण जानि ।
जन्मर साफल हौक लोक डाकि बोला राम राम वाणी ॥ १९८५

प्रजा सकलर प्रति श्रीरामर प्रबोध-बाक्य

पद

अयोध्या तेजिया राम गैला येतिक्षण * नगरीया लोक नाथाकिल एकोजन
निज प्राण तिनिजन बन चलि याय * मृतक शरीरे थाकिबोहो काक चाइ ८६
एहि बुलि प्रजा राघबर लाग लैला * याइबे कतो न पारि पथते परि रैला
राघवे बोलन्त शुना अयोध्यार जन * यदि दाया थाके मोर करियो बचन ८७
मोहोर बासना एरि अयोध्याक याहा * भरतक राजापाति धर्म्म पथ चाहा
सोहोर शोकते दग्ध राजा दशरथ * ताङ्क येबे आश्वासियो मोर हित पथ ८८
प्रजा बोले राम प्रभु धर्म्म चाहियोक * बाहुराया मन अयोध्याक चलियोक
नोहे आमि तेजिलोहो पुत्र परिबार * तोमार तुलत बन करिलोहो सार ८९
कैकेयीर बचनक दृढ़ मने धरि * कोथा चलि याहा आमासाक परिहरि
राग रोष सकलो आमात क्षमा करि * प्रतिपाल करियोक अयोध्या नगरी १९९०
पिठि दिया प्रजाक निर्द्दय रामबीर * शीघ्र बेगे पाइलेक तमता नदी तीर
राघवे बोलन्त शुना लक्ष्मण बिनीत * प्रथम प्रबासे आसि भैलो उपस्थित ९१
असुख नकरा वापु मन्यु परिहरि * रात्रिगोठ बञ्चियो प्रजाक रक्षा करि
केनमते फल मूल भुञ्जिबोहो आजि * झाण्ट करि तृण शय्या दियो मोक साजि ९२
रामर बचन शुनि लखाइ महाबीरे * तृण शय्या निर्म्मिला तमसा नदी तीरे
राम सीता पाचे तथा शयन करिला * निद्रा गैला दुयो दुख शोक पासरिला ९३

प्रजाजनों को राम का सांत्वना देना

अयोध्या को छोड़कर जब राम चले गये— तो नगर में कोई भी मनुष्य नही रह गया। अपने प्राण-स्वरूप वे तीनो वन मे चले जा रहे है, तब भला मृतक शरीर मे रहना कौन चाहता है ? ॥ १९८६ ॥ यह कहकर प्रजा राघव के पीछे लगी। कही जा न पाने के कारण मार्ग मे पड़ी रही। राघव बोले, हे अयोध्या के नागरिको, यदि मुझ पर दया हो तो मै जो कहता हूँ उसे मानो ॥ ८७ ॥ मेरी वासना छोड़कर अयोध्या में लौट जाओ। भरत को राजा बनाकर धर्म-पथ का अनुसरण करो। राजा दशरथ मेरे शोक से दग्ध हो रहे है; उनको जाकर आश्वासन दो। यही मेरे कल्याण का मार्ग है ॥ ८८ ॥ प्रजाजनो ने कहा, हे प्रभु राम, यदि आप धर्म चाहते हैं तो मन को मोड़कर अयोध्या चलिये। नही तो हमने भी पुत्र-परिवार छोड़ा। आपके संग वन को ही सार बनाया ॥ ८९ ॥ कैकेयी के वचन को दृढता से मन में धारणकर हमें छोड़ आप कहाँ चले जा रहे है ? राग, रोष सभी हमारे लिए क्षमा कर अयोध्या नगरी का प्रतिपालन कीजिये ॥ १९९० ॥ निर्दय वीर राम प्रजा से मुँह मोड़कर शीघ्र वेग से तमसा नदी के तट पर जा पहुँचे। राघव बोले, विनीत लक्ष्मण, सुनो। हम प्रथम प्रवास में आकर उपस्थित हुए है ॥ ९१ ॥ वत्स, तुम अनुशोचना छोड़ दो। असुखी न होवो। प्रजा का रक्षण करते हुए यह रात विताओ। किसी प्रकार से आज फल मूल खायेगे। शीघ्रता से तुम मेरे लिए तृण की शय्या सजा दो ॥ ९२ ॥ राम के वचन सुनकर महावीर लक्ष्मण ने तमसा नदी के तट पर तृण की शय्या बना दी। तत्पश्चात् राम सीता ने वहाँ शयन किया।

चतुर्भिति बेढ़ि शुइला अयोध्यार लोके * निश्चेष्टे गैलन्त निद्रा पीड़िलेक शोके
रामर विविध गुण कथा आदि कहि * सुमन्त्र लक्ष्मण जागि थाकि लन्त बहि ९४
समधिके गैल येवे निशा दुइ पर * पाइलन्त चेतन निद्रा भागिल रामर
राघवे बोलन्त लखाइ प्रजार बिपत्ति * पुत्र दारा गृह तेजि आमात भकति ९५
दारुण वनत आसि तमसा कूलत * मोत अनुरागे शुइल वृक्षर मूलत
प्रजाक आमार दुख दिते नुयुवाइ * सवाहाङ्को परिहरो चिन्ताहा उपाय ९६
शुना बोलो बचन सुमन्त्र सदभाव * अयोध्याक लागि मोर रथ बाहुराव
कतो दूर गैया पाछे आन पन्था धरि * अन्तरीक्ष भावे रथ आन झाण्ट करि ९७
श्री रामर वचन सुमन्त्रे परिमानि * सेहि मत करि रथ योगाइलन्त आनि
राघवे सीताये सेहि रथत चड़िया * तमसार पार भैला प्रजाक एरिया ९८
पार हुया राम येवे बहु दूर गैला * प्रभातत आदित्य उदय आसि भैला
जागि प्रजा सवे बोले हरि हरि विधि * खुजि फुरे हातर हराइल येन निधि ९९
अयोध्याक गैल राम देखि रथ चिन जानि निरन्तरे प्रजा भैल शोकहीन
क्षमाशील राम कोप उपशाम भैल * हेन बुलि प्रजा सब अयोध्याक गैल २०००
पाचे प्रजा देखे राम नाहि अयोध्यात * सूर्य्य अस्त गैले पद्म सङ्कोच साक्षात्
भूमित परिया प्रजा आपोनार ठावे * पुत्र परिवार समे कान्दे दीर्घ रावे १
नारी गणे स्वामीक बोलय अनुत्तर * रामगुण पासरिया आसि लैले घर
दिनेकरो गुण तान सुजिते न पारि * स्वामी सकलक गालि पारे यत नारी २

दोनों दुःख शोक भूलकर निद्रा-मग्न हो गये ।। ९३ ।। उन्हें चारों ओर से घेरकर अयोध्या के लोगों ने शयन किया । शोक उत्पीड़ित वे लोग एकदम निश्चेष्ट होकर निद्रामग्न हो गये । राम के विविध गुणों की कथा आदि कहते हुए सुमंत्र और लक्ष्मण जगे हुए बैठे रहे ।। ९४ ।। जब आधी रात बीत गयी तो राम की निद्रा टूट गयी, वे जग उठे । राघव ने कहा, लक्ष्मण, पुत्र, भार्या सबको छोड़कर मुझमें भक्ति करने के कारण प्रजापर विपत्ति आयी है ।। ९५ ।। मेरे प्रेम के कारण इस दारुण वन में आकर तमसा तट पर ये लोग वृक्ष-मूल पर सोये हुए हैं । हमें प्रजा को दुःख देना नहीं चाहिए । सबको छोड सकूँ इसका उपाय सोचो ।। ९६ ।। हे सद्भावना वाले सुमंत्र, मेरे वचन सुनो, अयोध्या की ओर मेरा रथ मोड दो । कुछ दूर जाकर पुनः अन्य मार्ग से रथ को अन्तरिक्ष में चलते हुए से शीघ्रतापूर्वक लौटा ले आओ ।। ९७ ।। श्रीराम के वचन सुनकर सुमंत्र उसी प्रकार कर रथ को लौटा लाये । राम और सीता उस रथ पर चढकर प्रजा को छोड़ तमसा नदी के पार चले गये ।। ९८ ।। पार होकर राम जब बहुत दूर चले आये तब प्रभात-सूर्य आकर उदित हुए । प्रजाजन जगकर कहने लगे, हरि हरि विधि ! मानो हाथ की निधि खो गयी इस प्रकार से राम को खोजने लगे ।। १९९९ ।। रथ की निशानी देख 'राम अयोध्या लौट गये हैं' ऐसा जानकर प्रजा निरंतर शोकहीन हो गयी । राम क्षमाशील हैं, उनका कोप मिट गया है, ऐसा कहकर सारी प्रजा अयोध्या चली गयी ।। २००० ।। परन्तु जब प्रजा ने देखा, राम अयोध्या में नही है तो सूर्यास्त होने पर जैसे कमल सिकुड़ जाता है, वैसे ही संकुचित हो गये । भूमि पर लोट-लोट प्रजाजन अपने-अपने स्थान में, पुत्र-परिवार समेत जोर-जोर से रोने लगे ।। २००१ ।। नारियाँ अपने पतियों से उलाहना देने लगीं— 'रामगुण भूलकर घर में आ घुसे हो । उनके एक दिन के गुणों को भी चुकाया नही जा सकता' । नारियाँ अपने पतियों को गालियाँ देने लगी ।। २००२ ।। कोई-कोई पति के सिर पर बड़ी मार मारती हुई कहती थीं— राम को छोड़कर तू

स्वामीर माथात केह्रो देय मार घोर * एरि आइलि रामक टेण्तन येन चोर
एभो हेन करह रामर पाशे याहा * सेवा करि विनय रामक मनबाहा ३
फल मूल जोटाय आनि रामक तुषिव * तोमाक आमाक राम सीताये पुषिव
स्त्रीमुख चाइते आइलि रामक तेजिया * पापी मोक्ष तेजि मरे नरके मजिया ४
एहिमते प्रजाये रामक करे मर्म्म * तेजिल समस्ते लोके यार येन कर्म्म
देवरीये देव पूजा करिले विच्छेद * ब्राह्मण सकले न पढ़य आरो वेद ५
क्षत्रे एरिलेक अस्त्र शस्त्र कर्म्म धर्म्म * वैश्ये एरिलेक कृषि वाणिज्यर कर्म्म
शूद्रे एरिलेक सेवा विषादित लोक * पुत्रे मातृ एरिले तेजिल मावे पोक ६
सकले प्रजार भैल असुख आधृति * छत्रिश जातिये तेजिलेक निज वृत्ति
देशे देशे प्रजा सवे कान्दे मन्यु करि * सकले नगरी छानि शुनि हरि हरि ७
दशरथ कैकेयीक प्रजा बोले धिक * बिना दोषे रामक पठाइल वने किक
कतो दिने प्रजा सबे खाइले अन्न पानी * शुनियो पयत येन रामर काहिनी ८

श्रीरामचन्द्रर गुह राजार लगत साक्षात

उपाय विशेषे प्रजागणे परिहरि * अविलम्बे पाइला आसि कोशल नगरी
ताको एराइ गैला वेद श्रुति नदी तरि * लक्ष्मण जानकी समन्विते मन्यु करि ९
गोपकूल पाइला गैया घृत दधि सार * शीघ्र वेगे भैला गैया गोमतीर पार
रथ नेम संधाने पृथिवी तल भेदि * शीघ्र वेगे तरिला सरयू महानदी १०

धोखेवाज चोर की भाँति भाग आया। अव ऐसा करो कि राम के पास चले जाओ। विनय सहित सेवाकर राम के मन को प्रसन्न करो ॥ ३ ॥ फल मूल संग्रहकर राम को तुष्ट करना। हमें तुम्हे राम सीता ही पालन करेंगे। तू राम को छोड़कर स्त्री का मुँह देखने के लिए चला आया। पापी तो मोक्ष को छोड़कर नरक में ही डूब मरता है ॥ ४ ॥ प्रजा इसी प्रकार राम से गहन प्रेम रखती थी। सब लोग अपने-अपने कर्मो को भी छोड़ बैठे। पुरोहितों ने देव-पूजा छोड़ दी। ब्राह्मणगण वेद-पाठ नही करते थे ॥ ५ ॥ क्षत्रियो ने अस्त्र-शस्त्र, धर्म, कर्म छोड़ दिये। वैश्यों ने कृषि-वाणिज्य कर्म त्याग दिये। शूद्रों ने सेवा करना छोड़ दिया। सभी लोग विषाद मग्न हो उठे। पुत्रों ने माताओ को, माताओ ने पुत्रों को तज दिया ॥ ६ ॥ सारी प्रजा असुखी, अशान्त हो उठी। छत्तीस जातियों ने अपनी-अपनी वृत्ति तज दी। देश-देश मे प्रजा मन में दुखी होकर रोने लगी। सभी पुरों को व्याप्त कर हरि हरि ध्वनि सुनायी पड़ती थी ॥ ७ ॥ प्रजा दशरथ और कैकेयी को धिक्कारती हुई कहती थी— विना किसी अपराध के राम को वन मे क्यों भेज दिया। कितने ही दिन वीतने पर प्रजा ने अन्न-जल ग्रहण किया। राम के मार्ग में जो कुछ हुआ उसकी कहानी सुनो ॥ ८ ॥

श्रीरामचन्द्र की राजा गुह के साथ भेंट

विशेष उपाय से प्रजाजनों को छोड़कर राम शीघ्र ही कोशल नगरी पहुँचे। उससे आगे वढ़कर लक्ष्मण जानकी सहित मन में दुःख करते हुए वेद श्रुति नदी पार हुए ॥ ९ ॥ वहाँ से गोप कुलों के निवास स्थान पर पहुँचे जहाँ घी-दही मुख्य रूप से मिलते हैं। तत्पश्चात् शीघ्र वेग से जाकर गोमती पार हुए। रथ-नेमि द्वारा भू-तल को अतिक्रम करते हुए शीघ्रता से महानदी सरयू के पार उतरे ॥ २०१० ॥ मंत्री को सम्बोधन करते हुए राम ने कहा— सरयू के वन के लिए मेरा दुःख रह गया। किस

मन्त्रीक सम्बुधि रामे बुलिला वचने * बिषाद थाकिल मोर सरयूर बने
कोन काले आसि माव बाप भेट पाइबो * सरयूर बने मृग मारिबाक याइबो २०११
हेनय बिषादे येबे गैला वहुदूर * गोधूलिर बेला पाइला श्रृङ्गवेरपुर
देवनदी गङ्गाक देखिला गैया तथा * जगत पवित्र करि बहन्त सर्व्वथा १२
शत योजनत थाकि सुमरण करे * तेतिक्षणे दुर्घोर दुस्तर पाप तरे
स्नानत दुष्कृत यत गुचय निशेष * कल्याण लभिया पाप पुण्य कथा शेष १३
देखिले पातक हरे एक जनमर * परशिले नष्ट होवे जनम शतर
स्नानिलाते सहस्र जनमर पाप नाश * स्नान दान जपे होवे ब्रह्मर प्रकाश १४
अन्तकाले यिवा जने गङ्गात मजय * मुकुति लभिया घोर संसार तरय
चारि मुखे ब्रह्मा गुण वर्णाइते न पारि * हेन गङ्गातीर पाइला राघव मुरारि १५
वायुर परशे ढौ उठलन्ते आछे * राम दरशने गङ्गादेवी येन नाचे
फेन गण हैल येन सचकित हास * जलर उत्ताल रोल देखय प्रकाश १६
निजावर्त हाते गङ्गा आह्वान करिल * गङ्गाक देखिया रामे सोक पासरिल
कुम्भीर कच्छप मत्स्य शिशु घरियाल * नाना बिधि जल जन्तु करय आस्फाल १७
हंस सारसर मध्ये बक चक्रवाक * जलचर पक्षीगण लखि जाक्के जाक
दुखते हरिष किछु भैल गङ्गा कूले * बसिला रथर नामि इङ्गुदिर मूले १८
सुमन्त्र रथर घोड़ा करिला उदास * जल पान कराया घोराक दिला घास
श्रृंगवेर पुरे वीर इन्द्र समसर * गुहनाम्ने राजा बर सुहृद रामर १९
चाण्डालर राजा तेहो वार्ता पाछे पाइल * मुख्य मुख्य पात्र लैया राम पाशे आइल
दूरते रामक देखि नमाइलेक माथ * साष्टाङ्गे प्रणामि युरिलेक योर हात २०२०

काल में लौटकर फिर माता-पिता से मिल पाऊँगा। सरयू के वन मे मृगों का शिकार करने जाऊँगा ।। ११ ।। इस प्रकार विषाद करते हुए वहुत दूर जाकर संध्या समय श्रृंगवेरपुर पहुँचे। वहाँ जगत को पवित्रकर वहनेवाली देवनदी गंगा को देखा ।। १२ ।। सौ योजन दूर रहकर भी गंगा का नाम स्मरण करते ही भयंकर दुस्तर पाप से मुक्ति मिल जाती है। गंगा में स्नान करने पर सभी दुष्कृतियाँ निःशेष रूप से मिट जाती है। कल्याण प्राप्त होता है, पुण्य कथा ही शेष रह जाती है ।। १३ ।। गंगा दर्शन मात्र से एक जन्म के पाप हरण कर लेती है। उसके स्पर्श से सौ जन्मों के पाप मिट जाते है। उसमे स्नान करने पर सहस्र जन्म के पाप नष्ट हो जाते हैं। स्नान-दान जप करने पर ब्रह्म का प्रकाश होता है ।। १४ ।। अन्तकाल में जो गंगा में डुवकी लगाता है, वह घोर संसार के पार होकर मुक्ति प्राप्त करता है। ब्रह्मा अपने चारों मुखो से गंगा के गुणों का वर्णन कर पार नही पाते। राघव मुरारी ऐसी गंगा के तट पर पहुँचे ।। १५ ।। वायु के स्पर्श से गंगा में तरंगे उठ रही थी। मानो राम के दर्शन से गंगादेवी नाच उठी हों। फेन जैसे उनके विस्मयपूर्ण हास हों। जल की उत्ताल रोर मानों उनका प्रकाश हो ।। १६ ।। अपने आवर्त (भँवर) रूपी हाथों से गंगा ने राम का आवाहन किया। गंगा को देखकर राम दुःख भूल गये। मगर, कछुए, मछलियाँ, सोंस, घड़ियाल आदि नाना प्रकार के जल-जन्तु कूदफाँद कर रहे थे ।। १७ ।। हंस-सारसों के वीच बगुले और चक्रवाक आदि जलचर पक्षी झुंड के झुंड दिखाई पड़ते थे। गंगा तट पर पहुँचकर दुःख में भी कुछ हर्ष हुआ। रथ से उतरकर वे इंगुदी वृक्ष के नीचे वैठ गये ।। १८ ।। सुमंत्र ने रथ के घोडों को खोलकर उन्हें जल पिलाया, घास दी। श्रृंगवेरपुर में इन्द्र जैसा वीर राम का परम सुहृद,गुह नाम का राजा रहता था ।। १९ ।। चाण्डालों के उस राजा ने समाचार पाकर मुख्य-

कर्पूर ताम्बुल यत विविध भक्षण * रामर आगत करिलेक उपसन
आइस आइस गुह बुलि रामे दिला राव * सन्नित चापिला गैया विनय स्वभाव २१
दुइ बाहु मेलि रामे सावटि धरिला * ग्रीवत धरिया माथे चुम्बन करिला
किनो शुभदिन आजि देखिलो हो तोक * एराइलोहो क्षणकते हृदयर शोक २२
कुशल वार्ताक पुछि दिलन्त सिद्धान्त * आदि अन्त कहिलन्त आपोन वृत्तान्त
परिग्रह तेजिलोहो तापसर भाव * अन्न पान द्रव्य यत ठावक पठाव २३
बाकलि बसन फल मूले मोर आश * पाइलो तोर आदर घोराक दिये घास
सन्ध्या करिलन्त राम लखाइ महाबीरे * तृण शय्या निर्म्मिला लक्ष्मण गङ्गा तीरे २४
तृणर शय्यात रामे घेलाइलन्त गाव * सीताओ चापिला गैया सलज्जित भाव
सुमन्त्र लक्ष्मण गुह गङ्गार कूलत * तिनिजने विषादित वृक्षर मूलत २५
गुहराजे बोले लक्ष्मणर मुख चाइ * तोमाक दिबाक आछे पत्रक बिछाइ
इहाते शुतियो तुमि मन्यु परिहरि * ससैन्ये पहरा दिबो हाते धनु धरि २६
लक्ष्मणे बोलन्त शुना गुह महाबीर * केने निद्रा याइबो शोके दगध शरीर
कौशल्या सुमित्रा माव वाप दशरथ * छत फटाइ मरे दुइयो दहे अन्तर्गत २७
याहार तुलत लरे चतुरङ्ग दल * स्वर्गद्वार भेदय सैन्यर कोलाहल
हेन राम सीता शुतिलन्त तरुतल * न रहय प्राण मन करय बिकल २८
याहार सेवक हस्ती घोड़े रथे चड़ि * आगे पाछे सेवा करि चले दर दरि
ताहान विपति हेन मिलिल आपाय * जीवन तो धिक मोर पराण नयाय २९

मुख्य पात्रों के सहित राम के समीप आया। दूर से ही राम को देखकर सिर नमाया और साष्टांग प्रणामकर हाथ जोडे ॥ २०२० ॥ कर्पूर, ताम्बूल आदि जितने विविध प्रकार के भक्षणीय पदार्थ हैं, सब कुछ राम के सम्मुख उपस्थित किया। आओ, आओ गुह— कहकर राम ने पुकारा। विनय स्वभाववाला गुह उनके समीप आया ॥ २१ ॥ राम ने दोनों हाथ फैलाकर उसे बाहों में भर लिया और गले लगकर सिर को चूम लिया। आज कैसा शुभ दिन है कि तुमसे भेंट हुई। हृदय का शोक क्षण भर के लिये मिट गया ॥ २२ ॥ कुशल समाचार पूछकर उन्होंने अपना वृत्तान्त आदि-अंत सुनाया और अपना सिद्धान्त कहा। मैंने तपस्वी जैसा बनकर परिग्रह तज दिया है। इसलिए अन्न-पान के ये द्रव्य अपने स्थान में भेज दो ॥ २३ ॥ वल्कल-वसन और फल-मूल पर ही अब मेरा निर्वाह होगा। तुमने घोड़ों को जो घास दी उसी में मैंने तुम्हारा आदर पा लिया। महावीर राम-लक्ष्मण ने संध्या वंदन किया। लक्ष्मण ने गंगा-तट पर तृण-शय्या लगायी ॥ २४ ॥ राम ने तृण शय्या पर शयन किया। सीता भी लजाती हुई वहाँ सोयी। सुमंत्र, लक्ष्मण, गुह तीनों गंगा के तट पर वृक्ष के नीचे बड़े विषाद मग्न थे ॥ २५ ॥ गुह राज ने लक्ष्मण की ओर देखते हुए कहा— तुम्हारे लिए पत्ते बिछा दे रहा हूँ। तुम इस पर मनोदुःख छोड़कर शयन करो। मैं सेना सहित हाथों में धनुष लिये पहरा दूँगा ॥ २६ ॥ लक्ष्मण ने कहा, महावीर गुह सुनो, शोक से मेरा शरीर दग्ध हो रहा है। भला मैं सो कैसे पाऊँगा ? कौशल्या-सुमित्रा माताएँ और पिता दशरथ अन्तर में जलते हुए छटपटा कर मर रहे हैं ॥ २०२७ ॥ जिसके साथ-साथ चतुरंग सेना चला करती है, सेना का कोलाहल स्वर्ग द्वार को भेद करता है, ऐसे राम सीता वृक्ष के तले सो रहे है। मेरे प्राण रहना नहीं चाहते; मन व्याकुल हो रहा है ॥ २०२८ ॥ जिनके सेवकगण हाथियो, घोड़ों, रथों पर चढ़कर आगे पीछे सेवा करते हुए शीघ्रता से चला करते हैं उन पर इस प्रकार अनहोनी संकट आ-पड़ा, मेरे जीवन को धिक्कार है कि प्राण भी नहीं निकलते ॥ २९ ॥ यह सुनकर

शुनि गुह नृपतिर पराण न सहे * दशरथ बह्नि ज्वलि अन्तर्गत दहे
तिनिको पीड़िले शोक जलिया प्रचण्ड * कान्दन्ते पोहाइल राति उदित मार्त्तण्ड ३०
राघवे बोलन्त लखाइ झाण्टे चाल गाव * प्रहाइल रजनी कुलि तेजिलेक राव
मयूरर नादे शुन पूरिलेक वन * धनु काण्ड लैयो भाइ करियो गमन २०३१
रामर बचन शुनि विनीत लक्ष्मणे * तूण वाण खड्ग साजि लैला तेति क्षणे
आगत लक्ष्मण सीता पाछे रघुनाथ * आगि बाढ़ि सुमन्त्र जुरिला योरहात ३२
लखिलोहो भूमि पावे धरिलाहा दिश * आज्ञा दियो प्रभु मइ करिबोहो किस
राघवे बोलन्त मन्त्री अयोध्याक चल * लोकत जनाइबे मोर बार्त्ताक कुशल ३३
हेन शुनि मन्त्री भैल बिकल स्वभाव * मरिलोहो बुलिया दिलेक दीर्घराव
आशेष कान्दिया बोले चरणत धरि * देशक न याइबो थाको तयु सेवा करि ३४
श्रीरामे बोलन्त मन्त्री हेन नोहे योग * तिनि दिन बापर नाहिके राजभोग
जीवन्ते कि दशरथे तेजिलन्त मोक * आश्वासिबि भाले ताङ्क येन पलाइ शोक ३५
रामर चरित्र कथा अमृत परम * संसार तरण इटो उपाय सुगम
जानिया रामर पावे थिर करि मन * बोला राम राम सबे समाजिक जन ३६

सुमन्त्र बिदाय

दुलड़ी

आमार बापर तुमि प्रिय मन्त्री बचन मोर शुनह ।
दुखर भाजन बापर आगत कुशल बार्त्ताक कह ॥

राजा गुह के प्राणों को सहन नहीं हो सका। दशरथ की शोकाग्नि उसके अन्तर में भी धधककर जलाने लगी। तीनों को प्रचंड शोकाग्नि जलाने लगी। रोते-रोते रात बीत गयी, सूर्योदय हो गया ॥ २०३० ॥ राघव ने कहा, लक्ष्मण जल्द उठो। रात बीत गयी, कोयल कूकने लगी है। सुनो, मोर की ध्वनि समूचे वन में गूँज रही है। धनुष वाण लेकर चल पड़ो ॥ ३१ ॥ राम के वचन सुनकर विनीत लक्ष्मण ने तुरन्त तरकश, वाण और खड्ग लेकर तत्क्षण प्रस्तुत हो गये। आगे लक्ष्मण और सीता पीछे-पीछे रघुनाथ रामचन्द्र चल पड़े। सुमन्त्र ने आगे बढ़कर हाथ जोड़े ॥ ३२ ॥ देख रहा हूँ कि तुम लोग पैदल ही चल पड़े हो। प्रभु, आज्ञा दो कि मैं अब क्या करूँ? राघव बोले, मन्त्री, अयोध्या लौट जाओ। लोगों को मेरी कुशल-वार्ता कहना ॥ ३३ ॥ यह सुनकर मंत्री का चित्त व्याकुल हो उठा। 'मर गया' कहकर जोर से चीख उठा। अपार रोते हुए राम के चरण पकड़कर कहा, मैं देश नहीं लौटूंगा। आपकी चरण-सेवा करता रहूँगा ॥ ३४ ॥ श्रीराम ने कहा, मंत्री, ऐसा उचित नहीं है। आज तीन दिनों से पिताजी ने राज-भोग नहीं किया है। जीवन में क्या पिता दशरथ मुझे तज सकते हैं? उन्हें उत्तम रूप से आश्वासन देना, जिससे कि उनका शोक मिटे ॥ ३५ ॥ राम की चरित्र-कथा परम अमृत है। संसार से उद्धार का यह सुगम उपाय है। ऐसा समझकर राम के चरणों में मन लगाकर, समाज के सभी लोग राम-राम बोलो ॥ २०३६ ॥

सुमंत्र की बिदाई

तुम हमारे पिताजी के प्रिय मंत्री हो, मेरे वचन सुनो। दुःख में पड़े हुए पिताजी से कुशल-वार्ता कहना। दुःख में पड़ी हुई माता कौशल्या और सुमित्रा जीवन रखे हुए

जीवन्ते आछन्त दुखर भाजनी कौशल्या सुमित्रा आइ ।
कैवे दुइरो आगे सुखे जीवे तिनि स्वादु वनफल खाइ ॥ २०३७
कैकेयी प्रमुख्ये मावक प्रणामि जनाइवाहा पाछे मोक ।
रामे बुलिलन्त भाले मइ आछो तुमि सब तेजा शोक ॥
वापर चरण वन्दिया बुलिव तोमात राम भगत ।
आछो वनवास तयु सत्य पालि नरक चाइवे शकत ॥ २०३८
भरतक झाण्टे राज्ये थापियोक तेजियोक सब शोक ।
अविरोधे वन तेजिया याइवो त्वरिते देखिवा मोक ॥
भरतक मोर वचन बुलिबि सुभाषित मोर भाइ ।
कैकेयी सदृश देखिवे मोहोर कौशल्या सुमित्रा आइ ॥ २०३९
लक्ष्मणे बोलन्त वापक बुलिवि गुचिल तोमार छलि ।
कैकेयीर हित चिन्तिया आमाक वनक पठाइला बुलि ॥
लोक पतियान विषाद एरिया हरिषे कैकेयीक चाहा ।
सात पुरुषर तोमार गोसानी कान्धत करि बुलाहा ॥ २०४०
तुमि हेन राजा स्त्री वश हैया वर इटो धर्म्म पाइला ।
देशे देशे ख्याति थाकिल तोमार रामक वने पठाइला ॥
सकले लोकक असार देखिला कैला कैकेयीक सार ।
मरिवार काले कामवश्य हुया धर्म्म नष्ट आपोनार ॥ २०४१
लक्ष्मणक वाधि रामे बुलिलन्त मन्त्री शुना परिमाण ।
लक्ष्मणर वोल राजाक जानाइले तेखने तेजिव प्राण ॥
शोक दुख एरि किछु नुबुलिवि हरिषे अयोध्या याहा ।
आमार कुशल सवे वार्त्ता कहि नृपतिक भाले चाहा ॥ २०४२

हैं, उन दोनों से कहना, हम तीनों वन के स्वादिष्ट फल खाकर सुख से जी रहे हैं ॥ २०३७ ॥ कैकेयी आदि माताओं को प्रणामकर कहना, राम ने कहा है कि मैं अच्छा हूँ, तुम सब लोग शोक छोड दो । पिताजी की चरण-वंदना कर कहना, राम तुम्हारा भक्त है । तुम्हारे सत्य को पालने के लिए मैं वनवास में हूँ; यहाँ तक कि नरक में भी जा सकता हूँ ॥ ३८ ॥ भरत को शीघ्र राज दीजिये, सभी शोक छोड़ दीजिये । मैं अनायास वन को छोड़कर आ जाऊँगा, आप मुझे शीघ्र ही देख पायेंगे । भरत से मेरे वचन कहना । हे मेरे सुन्दर वचन बोलने वाले भाई ! हमारी कौशल्या और सुमित्रा माताओं को भी कैकेयी जैसा ही समझना ॥ ३९ ॥ लक्ष्मण ने कहा, पिताजी से कहना, कैकेयी का हित-चिन्तन कर हमे वन मे भेजा, इसलिए आपके बच्चे वन में चले गये । लोक-दिखावे का यह विषाद छोड़कर हर्ष से कैकेयी को देखिये । आपकी देवी सात पुरखो की है, उसे कंधे चढ़ाये फिरिये ॥ २०४० ॥ आप जैसे राजा ने स्त्री के वश होकर यह बड़ा धर्म कमाया । राम को वन में भेजा, देश-देश में आपकी प्रसिद्धि रह गयी । समूचे लोक को असार देखा, केवल कैकेयी को सार बनाया । मरने के समय कामवश होकर अपना धर्म नष्ट किया ॥ ४१ ॥ लक्ष्मण को रोककर राम बोले, मन्त्री, बात सुनो । लक्ष्मण की बाते राजा से कहोगे तो वे तत्क्षण प्राण तज देंगे । दुःख शोक छोड़कर उनसे कुछ न कहना, हर्ष पूर्वक अयोध्या लौट जाओ । हमारी कुशल वार्ता कहकर राजा का भला करना ॥ ४२ ॥ राजा गुह से राम ने कहा, अभी-अभी गोंद ले आओ । माथे पर जटा धारणकर तापस के वेश में हम दोनों वन चलेंगे । आज्ञा शिरोधार्यकर गुह ने तुरन्त घनी गोंद ला दी ।

गुह नृपतिक रामे बुलिलन्त आठ आन एतिक्षण ।
माथे जटा धरि तापसर बेशे दुभाये चलिवो वन ॥
आज्ञा शिरे धरि तेतिक्षणे गुहे आनि दिला वर आठ ।
जटा निर्म्मि शिरे दुभाये गङ्गार पार हैते लैला बाट ॥ २०४३
गङ्गातीर चाहि गुहये सुमन्त्रे आछय बिकल भावे ।
सीतार हातत धरिला लक्ष्मणे रामे चड़िलन्त नावे ॥
राम सीता लखाइ गुह सुमन्त्रर नयने लोतक बहे ।
दुइहाङ्को सम्बुधि रामे चलि गैला शरीरे कारो न सहे ॥ २०४४
परम अमृत रामर चरित्र सुना समाजिक यत ।
असार संसार आर आशा एरि करियो रति रामत ॥
रामर भकति एहि से सम्पत्ति समस्ते शास्त्र सम्मत ।
थिर मन करि बोला हरि हरि लागोक जुइ पापत ॥ २०४५

श्रीरामर बनत प्रवेश आरु भरद्वाज मुनिर आश्रमत आगमन

पद

माज गङ्गा पाइला गैया लइया नाव बाहि * हात योरे बोलन्त गङ्गाक सीता चाहि
शुनियो गोसानी तुमि देव नदी गङ्गे * आमि यिटो बोलो ताक शुनियोक रङ्गे ४६
प्रणामोहो गङ्गादेवी हेर योर हात * दशरथ सुत राम मोर प्राणनाथ
रक्षा करा माव आङ्क दुर्गति तरन्त * बनबास खाटि आसि राज्यक करन्त ४७
लक्ष्मणको पालिबाहा आमार देवर * मोक रक्षा करा सबे तरोहो दुस्तर
अयोध्याक आसिले करिबो बहुमान * तोमार उद्देश्ये दिबो सहस्र गोदान ४८

सिर पर जटा बनाकर दोनों भाई गंगा पार जाने के मार्ग पर चल पड़े ॥ ४३ ॥ गुह और सुमंत्र व्याकुल होकर गंगा-तट की ओर दृष्टि लगाये रहे । लक्ष्मण ने सीता का हाथ पकड़ा, राम नाव पर सवार हुए । राम, सीता, लक्ष्मण, गुह, सुमंत्र सबकी आँखों से आँसू बहने लगे । गुह और सुमंत्र दोनों को सम्बोधित कर राम चले गये । किसी को भी शरीर की सुध नहीं थी ॥ ४४ ॥ हे समाज के लोगों परम अमृत राम का चरित्र सुनो । संसार असार है, इसकी आशा छोड़कर राम से अनुराग करो । राम की भक्ति ही सर्व-शास्त्र-सम्मत सम्पत्ति है । मन स्थिर कर 'हरि हरि' बोलो, जिससे पाप भस्म हो जायें ॥ २०४५ ॥

श्रीराम का वन में प्रवेश और भरद्वाज मुनि के आश्रम में आगमन

नाव चलाते हुए गंगा के बीच पहुँचने पर सीता ने हाथ जोड़ गंगा की ओर देखते हुए कहा— हे देवनदी गंगा मैया, मैं जो कहती हूँ उसे प्रसन्न चित्त होकर सुनो ॥ २०४६ ॥ गंगादेवी, हाथ जोड़कर मैं तुम्हें प्रणाम करती हूँ । दशरथ-सुत राम मेरे प्राण नाथ हैं । माता, रक्षा करो । ये जैसे दुर्गति से पार हो जायें । वनवास पूरा कर जैसे राज्य का भोग करें ॥ ४७ ॥ मेरे देवर लक्ष्मण को पालन करो, मुझे भी रक्षा करो, जिससे दुस्तर संकट से हम सब पार उतर जायें । अयोध्या आने पर तुम्हारा बड़ा मान करूँगी । तुम्हारे उद्देश्य से सहस्र गोदान करूँगी ॥ ४८ ॥ सीता की स्तुति करते हुए सब गंगा के पार उतरे । गंगा को प्रणामकर वन में प्रवेश

सीता तुति करन्ते गङ्गार भैला पार * प्रणमिया गङ्गाक वनत पयोसार
सीता आगे चले लखाइ धनुशर धरि * पाछत चलन्त राम दुइको रक्षा करि ४९
तिनिओ अनेक वन विषम एराइला * कतो दूर गैया वर वृक्षमूल पाइला
हरिणके मारिया रान्धिया ततै खाइला * वृक्षमूले लखाइ पत्र शय्याक विछाइला २०५०
श्री रामे वोलन्त वाप शुनियो लखाइ * तोर शय्या कर मोर सन्नित चपाइ
आजि भाले जानिवि प्रथम परवास * सुमन्त्रे एरिल देखि तेजिला निश्वास ५१
कतो निशा याहन्ते उदित भैल शशि * लक्ष्मणक वुलिला शय्याते रामे वसि
आजि जानो साफलिलो वापर शपत * कैकेयी मावर सिद्धि भैल मनोरथ ५२
हरि हरि वाप दशरथ महीपाल * कैकेयी तोमार भैलन्त निज काल
भरत नृपति भैले लखाइ वुजि उलि * मारिवे कैकेयी मोर माव वाप पुलि ५३
एओ तइ लखाइ देशक चलि याहा * अनाथिति मावक वापक भाले वाहा
तोक दरशने किछु सन्ताप तेजिव * सीता समे आमि पितृसत्यक पालिवो ५४
लक्ष्मणे वोलन्त शोके तोमाक वाधय * इसव क्रन्दने आरो किछु न साधय
पुनु पुनु वोलाहा देशक लागि चल * मइ प्राण तेजिले पाइवाहा कोन फल ५५
लक्ष्मणर वोले भैल शोक उपशाम * पुहाइल रजनी गाव चालिलन्त राम
आग भैला लक्ष्मण सीताक माज करि * चलियान्त राम वृक्षमूल परिहरि ५६
नदी नद गहन पर्व्वत महादेश * सीताक आपुनि विनावन्त हृषीकेश
देखियोक सीता गङ्गा यमुना सङ्गम * पाइलोहो प्रयाग भरद्वाजर आश्रम ५७
भरद्वाज ऋषिये करन्त होम याप * त्रिभुवन दहिते पारन्त दिया शाप
होम धूम पंकति देखियो सीता आग * मुक्ति क्षेत्र आसि आमि पाइलोहो प्रयाग ५८

किया। धनुष वाण लेकर लक्ष्मण सीता के आगे-आगे चले। उनके पीछे-पीछे राम दोनों की रक्षा करते हुए चले ॥ ४९ ॥ तीनों ने अनेक विषम वनों को पार किया। कितनी दूर जाकर वे एक वरगद के नीचे पहुँचे। वहीं एक हिरण मार पकाकर खाया। उसी वृक्ष के नीचे लक्ष्मण ने पत्तों की शय्या वनायी ॥ २०५० ॥ श्रीराम ने कहा, वत्स लक्ष्मण, अपनी शय्या मेरे समीप लगाओ। अच्छी तरह से समझ लो, आज ही हमारा प्रथम प्रवास है। सुमंत्र भी छोड गया यह देखकर लम्वी साँस ली ॥ ५१ ॥ कितनी रात वीत जाने पर आकाश में चन्द्रमा उदित हुए। राम ने शय्या पर वैठकर लक्ष्मण से कहा— आज संभवतः पिताजी की शपथ सफल हुई। माता कैकेयी का मनोरथ सिद्ध हुआ ॥ ५२ ॥ हरि, हरि, हे महीपाल पिताजी, कैकेयी स्वयं तुम्हारा काल वन गयी। लक्ष्मण, भरत राजा वनने पर अवसर पाकर कैकेयी हमारे पिता-माता को मारकर समूल नष्ट कर देगी ॥ ५३ ॥ लक्ष्मण, अव तुम देश चले जाओ। निराश्रित माता-पिता को उत्तम रूप से रक्षण करो। तुम्हें देखकर उनका संताप कुछ मिटेगा। मैं सीता सहित पितृ-सत्य का पालन करूँगा ॥ २०५४ ॥ लक्ष्मण वोले, शोक तुम्हें वाधा डाल रहा है। पर इस रुलाई-धुलाई से अव कुछ सिद्ध होने वाला नहीं है। तुम वार-वार कहते हो, देश चले जाओ। पर मैं प्राण तज दूँ तो कैसा फल मिलेगा ? ॥ ५५ ॥ लक्ष्मण के वचनों से राम का शोक मिट गया। रात वीती, राम उठ गये। वृक्ष तल से सीता को मध्य में रखकर लक्ष्मण आगे-आगे चले, उनके पीछे राम चल रहे थे ॥ ५६ ॥ नदी, नद, गहन पर्वत, महादेश आदि दिखलाते हुए सीता को राम स्वयं सांत्वना दे रहे थे। सीता, देखो, यह गंगा-यमुना का संगम है। हम अव भरद्वाज मुनि के आश्रम प्रयाग में पहुँच गये ॥ ५७ ॥ भरद्वाज ऋषि यहाँ होम-जप किया करते हैं। वे शाप

गधूलि समये येबे आदित्य नामिला * ऋषिर दुवारे गैया तिनिओ मिलिला
राम आसिबार पाछे ऋषि बात्ती पाइला * शिष्यक पठाइया ऋषि रामक अनाइला ५९
सर्ब्बे मुनिगणे भरद्वाजक आवरि * बाघ घोङ भालुके आछय सेबा करि
भैल यज्ञे सबे मुनि तपे उपशाम * नमिलन्त मुनिक लक्ष्मण सीता राम २०६०
ऋषिये रामक करिलन्त आशीर्व्वाद * वेदध्वनि उथलिल ब्राह्मणर नाद
आसने बसिला राम ऋषि सभा माजे * फले मूले जले अर्च्चिलन्त भरद्वाजे ६१
कमन कारणे राम अथिर चरित * ऋषिये सुधिला तब किवा अपेखित
राघवे बोलन्त शुनियोक ऋषिराज * आदि अन्ते संक्षेपे कहिबो सबे काज ६२
कैकेयी मावे बर लैलन्त राजात * भरतक राजा पातिबन्त अयोध्यात
चैध्य बरिषक मोक पठाइलन्त बन * तुलत लरिल सीता भैयाइ लक्ष्मण ६३
तोमार चरण आसि देखिलो बनत * एराइलोहो शोक किछु हरिष मनत
कमन थानत आसि हैबो उपस्थित * उपदेश बुलियोक आमाक उचित ६४
ससम्भ्रम रूपे ऋषि बुलिला बचन * त्रिभुवने सार इटो मोर तपोबन
प्रयाग सुतीर्थ गङ्गा यमुना सङ्गमे * आमि सभे हुयो थित एहितो आश्रमे ६५
राघवे बोलन्त शुनियोक ऋषि रत्न * इथाने थाकिते मोक न करिबा यत्न
मोक देखिबाक आसिबन्त बन्धुजन * निरजन थाने उपदेशियोक बन ६६
ऋषिये बोलन्त आमि बिभरिषि चाइलो * अनुरूपे तोमार थानक खुजि पाइलो
तृतीय प्रहर पथे आछे गुप्त देश * चित्रकूट पर्ब्बतत हुयोक प्रवेश ६७

देकर त्रिभुवन को भस्म कर सकते हैं। सीता, सामने देखो, होम के धुँए की पंक्ति निकल रही है। हम अब मुक्ति-क्षेत्र प्रयाग मे आ पहुँचे है ।। ५८ ।। गोधूलि समय में जब सूर्य ढल गये, तीनों जाकर ऋषि के आश्रम में उपस्थित हो गये। ऋषि को जब राम के आगमन का समाचार मिला तो वे शिष्यों को भेजकर उन्हें लिवा लाये ।। ५९ ।। सभी मुनि ऋषि भरद्वाज को घेरे हुए थे; बाघ, शार्दूल, भालू आदि उनकी सेवा में निरत थे। मुनियों के यज्ञ-तप समाप्त हो जाने पर राम, लक्ष्मण और सीता ने मुनि को प्रणाम किया ।। ६० ।। ऋषि ने राम को आशीर्वाद दिया। ब्राह्मणों की वेद ध्वनि और ब्राह्मणों का नाद गूँज उठा। ऋषियों की सभा में राम आसन पर बैठ गये। भरद्वाज ने फल-मूल और जल से उनकी अर्चना की ।। ६१ ।। हे राम, तुम अस्थिर किसलिए दिखाई दे रहे हो? ऋषि ने पूछा— तुम क्या चाहते हो? राघव बोले, मुनिराज सुनिये, मैं आदि-अन्त सब कुछ संक्षेप में वर्णन करूँगा ।। ६२ ।। कैकेयी माता ने राजा से यह वर लिया है कि भरत को अयोध्या का राजा बनायेंगी। चौदह वर्ष के लिए मुझे वन में भेज दिया। मेरे साथ सीता और भाई लक्ष्मण भी चले आये ।। २०६३ ।। वन में आकर आपके चरणों के दर्शन मिले। इससे शोक मिट गया; मन में कुछ हर्ष आया। मै किस स्थान में जाकर रहूँ, मुझे उचित उपदेश दीजिये ।। ६४ ।। ऋषि ने सम्मान पूर्वक कहा— मेरा यह तपोवन त्रिभुवन में सर्वोत्तम है। गंगा-यमुना संगम पर स्थित प्रयाग उत्तम तीर्थ है। हमारे सहित इसी आश्रम में निवास करो ।। ६५ ।। राम ने कहा, ऋषिरत्न सुनिये। मुझे यहाँ रहने के लिए आप प्रयास न करें। मुझे देखने के लिए बन्धुजन आवेगे। इसलिए वन मे कोई निर्जन स्थान बताइये ।। ६६ ।। ऋषि बोले— हमने विचार कर देखा। तुम्हारे अनुरूप स्थान मिल गया। यहाँ से चलने पर तीसरे पहर एक गुप्त देश में पहुँचोगे, उसी चित्रकूट पर्वत-प्रदेश में तुम प्रवेश करो ।। ६७ ।। वहाँ मुनिगण है, बहुतेरे फल मूल हैं। बड़े बलवान और काले मुँहवाले भालू वन्दर रहते हैं।

मुनिगण देखिबाहा बहु फल मूल * भालुक बानर सम गोदा गोलाङ्गुल
कतो कतो ऋषि ताते स्वर्ग पथ चाइला * केहो केहो मुनिगण मुकुतिक पाइला ६८
ऋषि समे कथा मते रजनी प्रभात * मुनि समे पाइला गैया यमुना साक्षात
पथ उपदेशि मुनि बाहुरि आसिला * भेल बान्धि तिनिहन्ते यमुना तरिला ६९
शाम नामे वटवृक्ष पाइला कतो दूरे * भाल रूपे ताहाक जानय देवासुरे
मुनि उपदेशे सीता वृक्षक आराधि * चलि गैला तिनिओ अनेक वर साधि २०७०
दण्ड दुइर पथे पाइला नील नामे वन * मृग मारि रान्धि हैते करिला भोजन
तरुतले लखाइ पत्र शय्याक बिछाइला * प्रयास तेजिया सुखे निद्रा ताते पाइला ७१
लखाइक जगाइला रामे जानिया प्रभात * हात मुख धुइया सन्ध्या करिला तथात
अविलम्बे चित्रकुट वन पाचे पाइला * हरिष वदने रामे सीता मुख चाइला ७२
देखा देखा जानकी हरिष करि मन * फल मूल युकुत विविध तरु वन
जाइ यूति बकुल बन्दुलि कर्णिकार * काञ्चन टगर कुन्द मेवाती मन्दार ७३
अशोक पलाश फुलि गैल हिसा हिसि * नागेश्वर चम्पक फुलिल अहर्न्निशि
पौण्डीति गरवक फुलिल सेवति * धुन्दुर कनौर आरो फुलिल मालती ७४
ओर पुष्प मालि दुवामालि आरु मालि * तमाल तुलसी माधै मरुवा सेवाली
वसन्त समये काम राजार पयाण * पुष्पर धनुत आरोहिया पाञ्च बाण ७५
भार्य्या पुरुषर कामबाणे करे लख * विरही जनर भैल सहन आसख
सेनापति लरि भैल मलयर वाव * महावीर नाद भैल कोकिलर राव ७६
पक्षीगण रावे येन बावे वाद्य भण्ड * नागेश्वर फुल काम नृपतिर दण्ड
गुञ्जरित रावे सवे भ्रमर भरिल * केतकी कुसुमे येन कोण्डक गढ़िल ७७

कितने ही ऋषि वही स्वर्गपथ का अन्वेषण करते रहे हैं। कोई-कोई मुनि मुक्ति भी प्राप्तकर चुके हैं ।। ६८ ।। ऋषि के कथनानुसार रात बीतने पर वे सभी यमुना के तट पर पहुँचे। मार्ग बताकर मुनि लौट आये। तीनों भेल (बेड़ा) बनाकर यमुना पार हुए ।। ६९ ।। कुछ दूर जाकर शाम नाम का वटवृक्ष मिला जिसे देवासुर भली-भाँति जानते थे। मुनि के उपदेश से सीता ने वृक्ष की आराधना की। फिर तीनों ने अनेक वरो की याचनाकर वहाँ से आगे बढे ।। २०७० ।। दो दंड का मार्ग अतिक्रमण कर नील नाम का वन मिला। वहाँ मृग मार पकाकर सबने भोजन किया। वृक्ष के नीचे लक्ष्मण ने पत्र शय्या बिछायी। बिना प्रयास वे वही सुखपूर्वक निद्रा गये ।। ७१ ।। प्रभात होने पर राम ने लक्ष्मण को जगाया। हाथ मुँह धोकर वही संध्या-वंदन किया। शीघ्र ही वे चित्रकूट वन में पहुँचे। प्रसन्न-वदन राम ने तब सीता के मुख को देखा ।। ७२ ।। जानकी, मन में हर्षित होकर फल-मूल से परिपूर्ण विविध वृक्षोंवाले वनो को देखो। जाति फूल, जूही, बकुल, बन्धूक, कर्णिकार, कांचन, टगर, कुन्द, हरसिंगार, अशोक, मंदार आदि सघन रूप से खिले हुए है। नागेश्वर, चम्पा आदि दिन-रात खिले रहते हैं। अशोक, कुरुवक, सेवती, धुन्दुर, कनेर और मालती आदि फूल भी खिले हुए हैं ।। ७४ ।। वसन्तकाल में काम राजा ने पुष्प धनुष पर पंच बाण चढाकर प्रयाण किया है ।। ७५ ।। काम पति-पत्नी को लक्ष्यकर बाण छोड़ता है। विरहीजनो का वह सहन करना अशक्य होता है। मलय पवन दौडकर सेनापति बन गया है। कोयल की कूक महावीरों का नाद बना है ।। ७६ ।। पक्षियों का कोलाहल मानो बजते हुए वाद्य हैं। नागेश्वर के फूल राजा काम के दण्ड हैं। गुंजन करते हुए भौरे वेग से टूट पडे है। केतकी पुष्प ने मानो धनुष बना दिया है ।। ७७ ।। कोयलों, भौरों, पक्षियों और मोरो की बोली से मेरा शरीर असहनीय

कोकिल भ्रमर पक्षी मयूरर रावे * काम व्याधि पीड़िया न सहे मोर गावे
शुनि मन मोहित पावय निरन्तरे * भाले से क्रोधत काम दहिला ईश्वरे ७८
देख देख सीता आम जाम पनियाल * ताम्बुल कण्ठाल नारिकल नाना फल
कमला मोहरि श्री फलर गन्ध कहे * नाना फुल फलर सुरभि बायु बहे ७९
सब वृक्षे बाह्लय मासर फल धरे * आशेष चटके परि परि रोल करे
जलचर थलचर जाके जाके पक्षी * सीताक बिनान्ते चलि यान्त लखि लखि ८०
कङ्क बङ्क मडपिया पक्षी मनोनीत * नाना बिध चित्र पक्षी देखिते शोभित
कोकिलर राव पेचा फिञ्चा शुकसारि * मनोहर पक्षी यत बर्णाइते न पारि ८१
मन्दाकिनी नदीत देखिया पक्षीगण * सीताक सम्बुधि रामे बुलिला बचन
राज हंस देखा सीता तोमार गमन * चक्रवाक युगल तोमार दुइ तन ८२
कल हंस राव काञ्चि नूपुरर नाद * बदन कमल तोर देखन्ते आह्लाद
बदन उपरे तोर नयन युगले * खञ्जन दुतय येन चलय कमले ८३
जनकर जीव देख नदी मन्दाकिनी * तोमार सदृश सुशोभित मध्यक्षिणी
बिदूर गमने येन मिलिले प्रयास * कृश भैल शरीर ईषत येन हास ८४
चित्रकूट पर्व्वतक देखियोक सीता * पका आमे गौर बर्ण करिल चौमिता
ओपरत मेघ येन देखिय शोभन * बाढ़िल निकलि येन पृथिवीर तन ८५
शिखर उपरे मन्दाकिनी शुक्ल जल * तनक ढाकिया येन बस्त्रर आञ्चल
सुरभि शीतल बायु बहे वृक्षतले * उपभोग करिओ अमृत सम फले ८६

काम व्याधि-पीड़ित हो रहा है। इन्हे सुनकर मेरा मन निरन्तर मोहित हो रहा है। यह भला हुआ कि ईश्वर-शिव ने क्रोध से काम को दग्ध कर डाला॥ ७८॥ सीता, देखो वह आम, जामुन, पानी-आँवला, ताम्बूल, कटहल, नारियल आदि फल लगे हुए है। मनोमोहक नारगी, श्रीफल की गध इनका पता दे रही है। नाना फूल-फलों से सुगन्धित वायु वह रही है॥ ७९॥ सभी वृक्ष बारह महीने फल दिया करते हैं। अनगिनत गौरैया पक्षी उनपर कूद-कूदकर कोलाहल किया करते है। जलचर, स्थलचर, झुंड के झुंड पक्षी सीता को दिखा-दिखाकर प्रसन्न करते हुए आगे बढ़ते थे॥ ८०॥ कंक, बगुले, मधुपायी पक्षी आदि मन को प्रसन्न करनेवाले नाना प्रकार के रंग-बिरंगे पक्षी देखने में बड़े सुशोभित थे। मधुर ध्वनि करनेवाली कोयल, उलूक, फिंचा, तोता, मैना आदि इतने मनोहर पक्षी थे जिनका वर्णन नही हो सकता॥ ८१॥ मंदाकिनी नदी मे पक्षियों को देखकर राम ने सीता को सबोधित करते हुए कहा— सीता, तुम्हारी जैसी गतिवाले राजहंसों को देखो; ये चक्रवाकों की जोड़ी मानों तुम्हारे ही दो शरीर हैं॥ ८२॥ कल हंस की बोली काञ्चि नूपुर की ध्वनियों सी है। कमल तुम्हारे मुखमंडल जैसे हैं जिन्हें देखते ही आनन्द होता है। मुखमंडल पर तुम्हारे नयन ऐसे ही है मानो दो खजन कमल पर चल रहे हैं॥ ८३॥ जानकी, मदाकिनी नदी को देखो जिसका मध्य भाग तुम्हारे ही जैसे क्षीण है। दूर तक चलने के कारण श्रम के मारे मानों उसका शरीर भी कृश हो गया है पर मुख पर मंद मुस्कुराहट छायी हुई है॥ ८४॥ चित्रकूट पर्वत की शोभा देखो, मानो पके आमों ने चारों ओर इसे गौरवर्ण का कर रखा है। ऊपर की ओर यह मेघ जैसा सुन्दर दिखाई देता है। मानो पृथ्वी का शरीर बढ़कर निकल आया है॥ ८५॥ शिखर पर मंदाकिनी का जल शुक्ल है मानो वस्त्र का आंचल शरीर को ढँके हुए हैं। वृक्ष के नीचे सुगंधयुत शीतल वायु बहती है। तुम इसके अमृत-जैसे फलों का उपभोग किया करना॥ ८६॥ सुन्दर केशरिया रंग की विचित्र उत्तम धातुएँ, स्वर्णमय मणियाँ,

सुशोभन गैरिक बिचित्र धातु भाल * सुवर्णर तन मणि रतन पोवाल
पारिजात मन्दार चम्पक शाल ताल * आशेष रमन सुखे बञ्चियोक काल ८७
तुमि समे चित्रकूट हैबो आमि थित * गौरी महादेवे येन कैलास गिरित
मृग सब मारिया भुञ्जिबो निते नित * अयोध्यार जन एबे भैला अविवित ८८
एहिमते नाना बन पर्ब्बत एराइला * कथा माते जानकीक पथ पासराइला
शिथिल गमने राम जानकी लक्ष्मणे * पर्ब्बत निकट गैया पाइला कतो क्षणे ८९
दुयोभाइ तेति क्षणे पर्ब्बत मूलत * आश्रम निर्म्मिला मन्दाकिनीर कूलत
बासा दुइ साजिला लक्ष्मणे रघुनाथे * माटि जल लैया सीता लिपिलन्त हाते २०९०
राघवे बोलन्त यज्ञ करिबो एखन * मृगसार मृग मारि आनियो लक्ष्मण
ज्येष्ठ भाइर आदेशक शिरे तुलि लैया * तेतिक्षणे मृगमारि आमिलन्त गैया ९१
सीताये रान्धिला रामे हुनि बहिन मुखे * यज्ञ समपिया तिनि भुञ्जिलन्त सुखे
फल मूल भुञ्जिया रहिला सेहि थाने * राम लक्ष्मणर कथा आछो एहि माने ९२
गङ्गा पार हैया रामे बनत पशिला * देखि गुह सुमन्त्रर शोक उथलिला
दुइ हान्त को दुइ पाचे धरि गले बान्धि * हा राम बुलिया विह्वल भैला कान्दि ९३
राम सीता लक्ष्मणर शोके देहा दहे * नेत्रर लोतक दुइरो अविच्छेदे बहे
सुमन्त्र बोलन्त गुह करी कोन काम * दशरथे दिलन्त तेजिला मोक राम ९४
रथ लैया अयोध्याक चाइबो केन मते * एमो बने गैया थाको रामर लगते
पाचे गुहे सुमन्त्रक बुलिला बचन * तेजिया सन्ताप मन्त्री थिर करा मन ९५
आपुनि बुजाया रामे तेजिले तोमाक * तान आज्ञा शिरे लैया चला अयोध्याक

रत्न पुखराज मणि, पारिजात, मंदार, चम्पा, शाल, ताड़ आदि के बीच अनन्त क्रीड़ाएँ करते हुए सुख से अवधि बीत जायेगी ।। ८७ ।। तुम्हारे संग हम चित्रकूट में निवास करेंगे । जैसे महादेव गौरी के साथ कैलास पर्वत पर रहा करते हैं । मृग मारकर नित्य भक्षण किया करेंगे । अयोध्या के लोग अब हमारा पता नहीं पा सकेंगे ।। ८८ ।। इसी प्रकार विभिन्न वार्तालाप के द्वारा जानकी के पथ के कष्ट भुलवाते हुए नाना वन-पर्वत को पार कर गये । धीरे-धीरे चलते हुए राम, जानकी और लक्ष्मण कुछ समय पश्चात् पर्वत के निकट जा पहुँचे ।। ८९ ।। तब दोनों भाइयों ने पर्वत के नीचे मंदाकिनी के तट पर आश्रम बनाया । रघुनाथ और लक्ष्मण ने दो घर बनाये । सीता ने मिट्टी और जल से अपने हाथों से लीपा ।। ९० ।। राम ने कहा, लक्ष्मण, मैं एक यज्ञ करूँगा । इसके लिए मृगसार (मृगों मे उत्तम) एक मृग मारकर ले आओ । ज्येष्ठ भाई का आदेश शिरोधार्य कर लक्ष्मण उसी क्षण मृग मारकर ले आये ।। ९१ ।। सीता ने राँधा । अग्नि-मुख मे होमकर राम के यज्ञ समाप्त करने के पश्चात् तीनों ने सुखपूर्वक भोजन किया । फल मूल खाते हुए तीनों वही रहने लगे । राम लक्ष्मण की कथा यही छोड़ रहे हैं ।। ९२ ।। गंगा पारकर जब राम को वन में प्रवेश करते देखकर गुह और सुमंत्र का अन्तर शोक से भर उठा । दोनों को दोनों ने आलिंगन कर हा राम, कहते हुए रोते-रोते विह्वल हो उठे ।। ९३ ।। राम, सीता और लक्ष्मण के शोक से शरीर जलने लगा । दोनों के नेत्रों से अविरल अश्रुधारा बहने लगी । सुमंत्र ने कहा— गुह, मै क्या करूँ । दशरथ ने मुझे राम को दिया था पर राम ने मुझे तज दिया ।। २०९४ ।। रथ लेकर अयोध्या किस प्रकार जाऊँ अब मै भी वन में जाकर राम के साथ रहूँगा । तत्पश्चात् गुह ने सुमंत्र से कहा— मंत्री, संताप छोड़कर मन को स्थिर करो ।। ९५ ।। राम ने स्वयं तुम्हे समझाकर तज दिया है । उनकी आज्ञा शिरोधार्यकर अयोध्या चले जाओ । अनेक युक्तियों से गुह ने मंत्री को

अनेक युगुति गुहे मन्त्रीक बुजाइल * राम शोके पोरा देहा किञ्चित जुराइल ९६
गुहक सम्बुधि मन्त्री रथे चरिलन्त * मनत असुखे अयोध्याक लरिलन्त
रामक तेजिया मन्त्री निवर्त्तिया आइल * गोधूलिर समये अयोध्यापुर पाइल ९७
मन्त्री बोले मनत आसज भैल काज * राम शोके दगध भैलन्त महाराज
नगरत देखो प्रजागण आति दीन * दिवसर तरा येन दीपिति विहीन ९८
शून्य येन देखो प्रजा निशबद भैल * कमल सङ्कोच येन सूर्य अस्त गैल
कुमुद मलीन येन दिव्य सरोवरे * हरिष न करे प्रजा अयोध्या नगरे ९९
कुन्दरुखे नारीगणे मन्त्रीक चाहावे * वेढ़ार उपरे कतो गभुरा वढ़ावे
शून्य रथ देखि सवे कान्दिवाक लैला * हा राम लखाइ सीता एरि कैक गैला २१००
निरन्तरे वेढ़िया मन्त्रीक पारे गालि * एरि आइला रामक चण्डाल पापशाली
किनो हियाखन तोर वज्रे से गढ़िल * रामक एरिते केने मनत फलिल १
जानिलोहो इटो भरतर भारि खाइले * छले निया रामक बनत एरि आइले
नगरर बाज करि खेदायो इहाक * मारधर बुलिया गालिर् देइ जाक २
करे हुलस्थूल वहु क्रन्दनर रोल * अन्तेषपुरत गैया सञ्चरिल रोल
निरन्तरे यतेक राजार महादइ * धौलिवर शिखरत चरिलन्त गइ ३
हा राम आमाक अनाथ करि गैलि * दुख-नदी कैकेयी तरिया राज भैलि
सुहृदत तोहोरि गुचिल अनुराग * आमि भैलो कैकेयीर अष्टमीर छाग ४
आमि आपुतीर आन्धलीर लाठि तइ * जलशून्य तरु येन मरिवोहो जइ
कैक गैलि वापु तइ आमाक बिछुइ * आमाक मारय पुरि तोर शोक जुइ ५

समझाया। इससे राम के शोक से दग्ध मंत्री का शरीर कुछ शान्त हुआ ॥ ९६ ॥ गुह को सम्बोधित करते हुए मंत्री रथ पर चढ़ा। मन मे दुःख लिये हुए अयोध्या लौटे। राम को छोड़कर मत्री चलकर गोधूलि के समय अयोध्या पहुँचे ॥ ९७ ॥ मत्री ने मन ही मन सोचा, यह कार्य अनुचित हुआ। राम के शोक में महाराज जल रहे हैं। देखता हूँ नगर में प्रजागण वैसे ही अत्यन्त दीन हो उठे है जैसे कि दिन में तारे दीप्तिहीन हो जाते हैं ॥ २०९८ ॥ सब ओर सूना-सूना देख रहा हूँ। प्रजा कुछ भी वोल नही रही है। जैसे कि सूर्यास्त हो जाने पर कमल संकुचित हो जाते हैं। दिव्य सरोवर में मानो कमल मुरझाकर मलीन हो गये हों, उसी प्रकार प्रजा अयोध्या नगर मे हर्ष नही मनाती ॥ २०९९ ॥ गवाक्षो से नारियाँ मंत्री की ओर देख रही थी। कहीं-कहीं दीवारो के ऊपर अपने बच्चो को चढ़ाकर दिखाती थी। रथ को खाली देख सभी रोने लगे। हाय, राम, लक्ष्मण सीता हमें छोड़कर कहाँ गये ॥ २१०० ॥ मंत्री को घेरकर निरन्तर गालियाँ देने लगी। पापी, चांडाल राम को छोड़ आया। तेरा हृदय कैसे वज्र से वना है, राम को छोड़ने की बात तेरे मन में कैसे आयी ? ॥ २१०१ ॥ जान गये इसने भरत का उत्कोच (रिश्वत) खाया है। छल से राम को ले जाकर वन में छोड़ आया है। इसे नगर से निकालकर भगा दो। मारो-पीटो कहकर लगातार गालियाँ देने लगे ॥ २ ॥ अनेक लोगों की रुलाई की ध्वनि से चारो ओर कोलाहल मच गया। वह कोलाहल क्रमशः अन्तःपुर तक सचारित हो गया। राजा की सभी रानियाँ महल की अटारियों पर जा चढी ॥ ३ ॥ और लगीं—हा राम, तू हमें अनाथ कर गया! कैकेयी दुख-नदी पारकर राज करनेवाली बन गयी। सुहृदों मे तेरा अनुराग मिट गया। हम कैकेयी के अष्टमी के बकरे बन गयी ॥ ४ ॥ हम पुत्रहीनाओं की तू अन्धे की लाठी है। जल के बिना वृक्ष की भाँति हम मुरझाकर मर जायेगी। वत्स हमें छोड़कर

पाचे सुमन्त्रत सबे सुधिलन्त कथा * कहिला सुमन्त्र सबे बनर व्यवस्था
नारीगण पराभव शुनन्ते आशेष * कान्दाते सुमन्त्र सात बेबन्धा प्रवेश ६
छटफट करे राजा बसि आसनत * आसुक अशान्ति सुस्थ नाहिके मनत
शून्य रथ देखि भैला बियाकुल चित * आसनर हन्ते शोके परिला भूमित ७
कौशल्या सुमित्रा दुयो राजपटेश्वरी * क्रन्दन करन्ते हाते तुलिलन्त धरि
उठा उठा प्रभु तुमि चिन्ता तेजियोक * राम सीता लक्ष्मण वार्ता पुछियोक ८
शुनि पुत्र पुत्र बुलि बिमोहित भैला * वातुल चरित्र येन परि मूर्च्छा गैला
देखिया कौशल्या परिलन्त स्वामी कोले * ओवारि पूरिला सब क्रन्दनर रोले ९
चिरकाले दशरथ चेतनक पाइल * पटेश्वरी कौशल्यार पाचे प्राण आइल
प्रथमे धरिल येन अरण्यर हाती * निश्वास फोकारे येन ठाठारिर भाटि २११०
प्रणामिया सुमन्त्रे जुटिला दुइ हात * धीरे धीरे सुधिलन्त अयोध्यार नाथ
मोहोर तनय राम पितृ पितामह * कोथा एरि आसिलि प्रस्तुत कथा कह ११
हस्ती घोरा रथे याक आग पाच करि * हेन पुत्र बने आछे राज्य परिहरि
बुलिते न पारे सीता कोमल थानत * हेन माव हाण्ठे केन कण्टक बनत १२
कुमार लक्ष्मण यत मोर बर स्नेह * केने बनबास खाटे सुकुमार देह
राजार वचन शुनि पाचे मन्त्रीबर * लोतक मलचि दिला राजाक उत्तर १३
शुनियो गोसाइ मोर बचन सन्देश * प्रणाम अञ्जलि हेरा रामर आदेश
प्रदक्षिणे भूमित थापिला पाचे माथ * कृताञ्जलि बोलो शुना पृथिवीर नाथ १४

तू कहाँ चला गया। तेरा शोकरूपी अग्नि हमें जला मार रहा है ॥ ५ ॥ तत्पश्चात् सबने सुमन्त्र से बातें पूछी। सुमंत्र ने सबसे वन की स्थिति बतायी। नारियों की अशेष शोक-वाणियाँ सुनते हुए रोते-रोते सुमन्त्र ने सात बन्धनों में बँधे हुए-से भवन में प्रवेश किया ॥ ६ ॥ राजा आसन पर बैठे छटपटा रहे थे। वेदना और अशान्ति से मन मे स्वस्थता नही थी। खाली रथ को देख उनका चित्त व्याकुल हो उठा, शोक के मारे आसन पर से भूमि पर गिर पड़े ॥ ७ ॥ कौशल्या सुमित्रा दोनों पटरानियों ने रोते हुए हाथ पकड़कर उन्हें उठाया। प्रभु उठिये, चिन्ता तज दीजिये। राम-लक्ष्मण-सीता की वार्ता पूछिये ॥ ८ ॥ यह सुनकर राजा पुत्र-पुत्र कहते हुए मोहमत्त हो गये। वावले की भाँति गिरकर मूर्च्छित हो गये। यह देख कौशल्या पति की गोद में गिर पड़ी। रुदन के शब्द से सम्पूर्ण राजभवन गूँज उठा ॥ ९ ॥ अनेक विलम्ब से दशरथ की चेतना लौटी। पटरानी कौशल्या को मानो प्राण मिले। वन के हाथी को पहले पहल पकड़ा गया है। ठठेरे की फुंकनी की भाँति राजा लम्बी साँसें लेने लगे ॥ २११० ॥ सुमन्त्र ने प्रणामकर दोनों हाथ जोडे। अयोध्या के नाथ दशरथ ने धीरे-धीरे पूछा—राम मेरा पुत्र, पिता-पितामह है। ऐसा पुत्र राम आज राज्य छोड़कर वन में रह रहा है। सीता कोमल स्थानों में पैदल नहीं चल सकती। ऐसी वह माँ मेरी, काँटों के जंगल में कैसे चलती होगी ॥ १२ ॥ मेरे बड़े स्नेही सुकुमार शरीरवाला कुमार लक्ष्मण भला किस प्रकार वनवास के कष्ट सहन करता होगा। राजा के वचन सुनकर मन्त्रीवर ने आँसू पोंछकर राजा को उत्तर दिया ॥ १३ ॥ देव, मेरा वचन और सन्देश सुनिये। प्रणाम अजलि लीजिए, यह राम का आदेश । यह कहकर प्रदक्षिणा करते हुए भूमि पर सिर रखा। हाथ जोड़कर कहने लगे, पृथ्वीनाथ, सुनिये ॥ १४ ॥ राम ने हमारे गले को आलिगन कर कहा है, हमारा सन्देश पिताजी से कहियेगा। शोक-दुःख छोड़कर अपने सत्य का पालन करें और अतिशीघ्र

रामे बुलिलन्त मोर नरिया प्रीवत * जानाइबा आमार वार्त्ता बापर पावत
शोक दुख एरि पालन्तोक निज शत * आति शीघ्रे राजे आनि थापन्तो भरत १५
लक्ष्मणे बुलिला पाचे तोमात सिद्धान्त * थिर मन करि शुना सिसब वृत्तान्त
सर्व्वजन हित रत राम महाभाग * बनक पाठाइला राजा करि परित्याग १६
भरते ताहाङ्क बर करिबेक हित * कान्धे करि कैकेयीक फुरान्तोक नित
भरतक बुलिलन्त निदारुण बाक * गर्व्वमान एरिया अवस्था राखि आक १७
देखिबे समस्ते भाव कैकेयीर सम * नुहि अविलम्बे पाति मलछिल यम
कौशल्याक बुलिलन्त तेजियोक शोक * बनबास तरि याइबो देखिबन्त मोक १८
मन कष्टे रामे वाक्य बुलि पठाइलन्त * दुइ भाये बर आठे जटा निर्म्मिलन्त
आगत लक्ष्मण जानकीक माज करि * तिनिहन्ते चलि गैला गङ्गानदी तरि १९
गुह राजा समे चाहि थाकिलो सन्तापे * मोक एरि गैला राम जगतर बापे
बने प्रबेशिला तिनि भैलोहो उदास * नरकर पलुर स्वर्गत नाहि आश २१२०
हुया आति नैराश आछोंहो हात योरे * आर पानी तेजिया कान्दय चारिघोरे
चिहरिते लागिल रामर दिश चाइ * गुहर मोहोर देखि प्राण फुटि याइ २१
शीघ्रवेगे आसि मइ पाइलोहो चियाली * शून्य रथ देखि लोके मोक पारेगालि
केहो देइ मार घोर केहो तोले लाथि * केहो बोले मार किले केहो घरा काति २२
केहो बोले इटो भरतर आइला खाइले * सिकारणे चण्डाले रामक एरि आइले
यात भेरु निशा नवाजय बीरढाक * हेन अयोध्यात शुनो क्रन्दनर जाक २३
हाहाकारे कान्दे सबे शत्रु मित्रवर्ग * जीवन्तते रामर मिलिल महास्वर्ग
करियो शरीर थिर मन्यु परिहरि * सत्वरे आसिबा राम बनबास तरि २४

भरत को लाकर राज्य पर प्रतिष्ठित कीजियेगा ।। १५ ।। पर लक्ष्मण ने अपने विचार आपसे यों कहने के लिए कहा है, सुनिये । महाभाग राम सर्वजन-हित-रत है । राजा ने उनका परित्याग कर वन में भेजा है ।। १६ ।। भरत उनका बड़ा हित करेंगे, अब वे कैकेयी को कंधे पर चढ़ाकर नित्य घुमावें । भरत को उन्होंने निर्मम वचन कहे । गर्व-अहंकार छोड़कर और स्थिति को देखते हुए सभी माताओं को कैकेयी के समान देखना । १७ अविलम्ब यम को बुलाकर मिटा न डालना । कौशल्या से कहा है शोक तज दो । वनवास की अवधि बिताकर हम लौटेंगे, तुम मुझे देख पाओगी ।। १८ ।। मनोवेदना से राम ने अपना सन्देश भेजा है । फिर दोनों भाइयों ने बरगद की गोंद से जटा बनाया । आगे लक्ष्मण और जानकी को बीच में रखकर चलते हुए तीनों गंगा पार कर गये ।। १९ ।। गुह राजा सहित मैं संताप के मारे देखते ही रह गये । जगतपिता राम मुझे छोड़कर चले गये और वन में प्रवेश किया तब मैं उदास हो गया । नरक के कीट को स्वर्ग की आशा नहीं रहती ।। २० ।। अत्यन्त निराश होकर हम हाथ जोड़े रह गये । गुह आँसू बहाते हुए फूट-फूटकर रोने लगा । राम की ओर देखते हुए चीखने लगा । गुह की ममता देखकर मानों प्राण निकलने लगे ।। २१ ।। तेजी से आकर मैने यहाँ सियारिन देखी । शून्य रथ देखकर लोग मुझे गालियाँ देते हैं । कोई बड़ी मार मारता है, कोई लात उठाता है । कोई कहता है घूंसा मारो, कोई धरती पर फेंक देता है ।। २२ ।। कोई कहता है, इसने भरत की रिश्वत खायी है इसी कारण चाण्डाल राम को छोड़ आया है । जहाँ भेरी और रात को नगाड़े नहीं बजते, ऐसे अयोध्या में सामूहिक रुलाई सुनाई पड़ती है ।। २३ ।। सभी शत्रु मित्रवर्ग के लोग हाहाकार करते हुए रोते हैं । जीते ही राम को महास्वर्ग मिल गया मनो-दुःख छोड़कर शरीर को

राजा वोले सुमन्त्र विकल करे गाव * आजि गैया सत्वरे रामक वाहुराव
याहन्ते आसन्ते चिरकाल देखो मइ * झाण्टे नियो मोक तथा प्राण सङ्कलय २५
यदि वा सुमन्त्र तोक करि आछो हित * एतिक्षणे थैयो गिया रामर सन्नित
कण्ठागत प्राण मोर प्रमाणक पाइल * हृदय लरिल मोर जिह्वावो शुकाइल २६
सिंहवन्ध स्कन्ध राम दीर्घ वाहु दुइ * देवासुर माजे याक केहो सम नुइ
आयत नयन चन्द्र समान वदन * पुत्र ने देखिले याइवो यमर सदन २७
हा राम लखाइ सीता जनकर जीव * परित्राण करे मोरु सङ्कलय जीव
आशेष मिनति करि मतिहीन भैला * पुनरपि धरणीत परि मूर्च्छा गैला २८
स्वामीक देखिला येवे भूमित पतन * कौशल्याये सुमित्राये वुलिला वचन
आमाको वनत मन्त्री थैया आस गैया * गले वान्धि तिनिको धरिवो कोले लैया २९
शुना वोले मन्त्री मोर प्राण खिनि याइ * घोर वने तिनिजने वनफल खाइ
कण्टक भाङ्गिया घोर वनमध्ये थित * वापर मावर शोके अधीर चरित २१३०
मन्त्री वोले माव शोक करा उपशाम * देखिबाहा सत्वरे लक्ष्मण सीता राम
स्वामीर तुलत थित सीता वनवासे * लक्ष्मीदेवी क्रीड़न्त येहेन विष्णु पाशे ३१
श्रीराम लक्ष्मण दुयो दुइहन्तर हित * दुइको दुइ राखन्ते वनत भैला चित
मधुमय फल तिनि भक्षण करन्त * तिनिको तिनियो देखि दुख पासरन्त ३२
वाप मावे वन्धुजन सवाको पासरि * तिनिजने वनत आछन्त क्रीड़ा करि
ताहान निमित्ते शोक दुख परिहरि * अविकले थाकियोक स्वामी सेवा करि ३३

स्थिर रखिये। राम वनवास को पारकर शीघ्र ही आवेंगे ।। २४ ।। राजा वोले, सुमन्त्र, शरीर व्याकुल हो रहा है। आज जल्द जाकर राम को लौटा लाओ। मैं उन्हें आते-जाते नित्य देखता रहूँ। वहाँ मुझे शीघ्र ले चलो, जैसे प्राण वध न हो ।।२५ ।। सुमंत्र यदि मैंने तुम्हारा हित किया है तो इसी क्षण ले चलकर मुझे राम के पास पहुँचा दो। यह सिद्ध हो गया है कि मेरे प्राण कठागत हो रहे हैं। मेरा हृदय स्पन्दित हो रहा है, जीभ भी सूख रही है ।। २६ ।। राम के कंधे सिंह जैसे हैं, दोनों भुजाएँ दीर्घ हैं, देवासुर के वीच कोई भी उनके समकक्ष नहीं है। नयन आयत हैं, मुखमण्डल चन्द्र जैसे हैं, पुत्र को अगर न देखूं तो निश्चय यमलोक जाना ही पड़ेगा ।। २७ ।। हा राम-लक्ष्मण, जनकनन्दिनी सीता, मेरा परित्राण कर जीवन-रक्षा करो। इस प्रकार अशेष विनती करते हुए उनकी सुध-वुध खो गयी, पुनः धरती पर गिरकर वे अचेत हो गये ।। २८ ।। पति को धरती पर गिरते देखकर कौशल्या और सुमित्रा ने कहा, मन्त्री, हमें भी वन में रख आओ। तीनों को गोद मे लेकर गले बाँध रखेंगी ।। २९ ।। सुनो मन्त्री, हमारे प्राण निकले जा रहे हैं, घोर वन मे तीनों जाकर वन के फल खा रहे हैं। काँटों के वीच घोर वन में वे रह रहे हैं। माता-पिता के शोक से वे अधीर हो रहे हैं ।। २१३० ।। मन्त्री ने कहा—माता शोक छोड़ो। शीघ्र ही राम, सीता और लक्ष्मण को देख पाओगी। देवी लक्ष्मी जिस प्रकार विष्णु के निकट क्रीड़ा किया करती हैं उसी प्रकार सीता वनवास मे अपने पति के साथ रहती हैं ।। ३१ ।। श्रीराम और लक्ष्मण दोनों एक-दूसरे के हितू हैं। दोनों एक दूसरे की रक्षा-हेतु वन में रह रहे हैं। तीनो मधुमय फल खाते हैं, तीनों तीनों को देखकर दुःख भूल जाया करते हैं ।। ३२ ।। पिता-माता, वन्धुजन सबको भूलकर तीनों वन में क्रीड़ा कर रहे हैं। उनके लिए दुःख-शोक करना छोडकर पति की सेवा करते हुए शान्तिपूर्वक रहो ।। ३३ ।। सुमन्त्र के वचनों से उनके शरीर का ताप कम हुआ। शान्त होकर राजा को सम्मुख देखा। कौशल्या वोली—

सुमन्त्रर बाक्ये तान शरीर जुराइल * सन्धुकिया आगते राजाक भेट पाइल
कौशल्या बोलन्त शुना पृथिवीर नाहा * मरिबार बेला सत्य बोल हेराइ लाहा ३४
एकशत अश्वमेध एके भिति करि * आउर दिके सत्य दिया दुइको तुलि धरि
महायज्ञ शततो करिया सत्य बले * हेन सत्य एरिला तोमार दैव छले ३५
राम अभिषेक लागि सम्भार मिलाइला * सकलो लोकक हेन कार्यक जनाइला
गर्भर पुत्रर भैला एनुवा नादर * राज्य नेदि दिला तुमि अरण्य सागर ३६
अज्ञानत बुराइला तोमार नाहि लाज * मोर्कहिसि साधिलाहा कैकेयीर काज
रामक देखुवा हेन आये प्राण धरो * नुहि आजि आगते कटार हानि मरो ३७
सुमित्राये बोलन्त कौशल्या शुनाबाइ * हा राम बोलन्ते राजार प्राण जाइ
इटो दोष परिहरा स्वामीर सकल * मरन्ताक मारिले नाहिके किछु फल ३८
छोट हन्ते राम पितृ आज्ञा न बाधिल * वनबास करि रामे कल्याण साधिल
हेनय पुत्रक एको न करिवा चिन्ता * देखिबाहा सत्वरे लक्ष्मण राम सीता ३९
सुमित्रार बोले शान्त चित्त कौशल्यार * स्वामीक निष्ठुर बुलि भैला चमत्कार
क्षमियोक प्रभु बुलि चरणे धरिल * प्रबोध बचने स्वामीक कातर करिल २१४०
पुत्रर शोकत विमोहित मोर मन * प्रभुक बुलिलो ताते लाघव वचन
पाञ्चदिन भैल राम बनबासे गैल * आते मोर शत बरिषर सम भैल ४१
हेन शुनि दशरथ शान्त किछु भैला * अनन्तरे सुमन्त्रयो बुलिबाक लैला
छोट हन्ते सेवा करो तोमार चरण * एको काले न बाधिला आमार वचन ४२
मृत्यु काले पाइले आसि तोमाक विबुधि * कैकेयीक बर दिया आमाक नुशुधि

पृथ्वीनाथ सुनिये। मरने के समय आपके सत्य वचन खो गये ॥ ३४ ॥ एक ओर सौ अश्वमेध यज्ञ और दूसरी ओर सत्य को रखकर तोला जाय तो उन सौ अश्वमेध यज्ञों की अपेक्षा भी सत्य ही बढ़कर होता है। दैव की छलना से आपने ऐसे सत्य को छोड़ दिया ॥ ३५ ॥ राम के अभिषेक हेतु आपने सभी संभार जुटाये थे। सभी लोगों को इन कार्यो की सूचना दी थी। और पुत्र का ऐसा अनादर हुआ कि राज्य न देकर उसे अरण्यरूपी सागर आपने दिया ॥ ३६ ॥ अज्ञान डूबे आपको लाज नही आती। मुझे ईर्ष्या करे कैकेयी का कार्य सिद्ध किया। राम को देखूंगी इसी आशा से प्राण रखे हुए हूँ। नहीं तो आज सामने ही कटार चुभोकर मर जाती ॥ ३७ ॥ सुमित्रा बोली, कौशल्या बहन, सुनो। हा राम कहते हुए राजा के प्राण निकल रहे है। पति के सभी दोष गुनना छोड़ दो। मरते हुए को मारने से कोई फल नहीं ॥ ३८ ॥ छोटे होने पर भी राम ने पिता के आदेश का उल्लंघन नहीं किया। वनवास में जाकर राम ने कल्याण ही किया। ऐसे पुत्र के लिए कोई चिन्ता न करो। तुम शीघ्र ही राम, लक्ष्मण सीता को देख पाओगी ॥ ३९ ॥ सुमित्रा के वचनों से कौशल्या का चित्त शान्त हुआ। पति को निष्ठुर कहने के कारण वह चमत्कृत हो उठा। 'प्रभु, मुझे क्षमा करें', कहकर चरण पकड़ लिए। सान्त्वना के वचनों से पति से कातर विनती की ॥ ४० ॥ पुत्र के शोक से मेरा मन विमोहित हो उठा था इसी कारण मैंने लघु-वचन कहे। राम को वन में गये केवल पाँच ही दिन हुए हैं तो भी यह मेरे लिए सौ वर्ष के बराबर लगा है ॥ ४१ ॥ यह सुनकर दशरथ कुछ शान्त हुए। तदनन्तर सुमंत्र भी बोलने लगे, बचपन से ही आपके चरणों की सेवा करता आया हूँ। कभी आपने हमारे वचनों को नहीं ठुकराया है ॥ ४२ ॥ मरण-समय आपको दुर्बुद्धि ने आ घेरा। हमसे पूछे बिना ही कैकेयी को वर दे दिया,

वृद्धर तरुणी भार्य्या लोकत शुनिल * सिसव सकलो कथा तोमात मिलिल ४३
राम अमृतक तुमि तेजिला तरल * मरिबार बेला खाइला कैकेयी गरल
गुरु बन्धुजन किछु न भैल तोमार * वंशक बिनाशी कैला कैकेयीक सार ४४
सार्थक बुलिला बाक्य कौशल्या गोसानी * केनेमते तोमार रहिल सत्य बाणी
समस्त लोकत शुनाइ बुलिलाहा काज * कालि आनि रामक पातिवो युवराज ४५
सिसव बचन केने परिवर्त भैला * गुणि चोवा तयु सत्य केन मते रैला
कोन फल पाइला तुमि असतीक सेवि * कैकेयी तोमार मात्र भैल मुख्य देवी ४६
ताहाक कान्धत लैया फुरियो राज्यत * तेवे परिपूर्ण हैवे तोमार शपत
कौशल्या बोलन्त मन्त्री नो बोला अधिक * पुत्रशोके मरिछे आउर मारा किक ४७
कौशल्यार बोले मन्त्री किछु शान्त भैला * विदाय करिया निजस्थाने चलिगैला
अनन्तरे आसिया रजनी उपगत * शोके दुखे पीड़ि निद्रा गैला दशरथ ४८

दशरथ रजार मृत्यु

कौशल्या सुमित्रा दुयो सती शोकमने * राजार दुइ पाशे शुतिलन्त दुइ जने
मध्य निशा भैले राजा चेतनक पाइल * शय्यात वसिया दुयो भार्य्याक जगाइल ४९
पूर्व्वर कथाके मइ सुमरिया पाइलो * निश्चय जानिबे एवे प्राण हेरु वाइलो
आम्रबन देखि येन कइलो पलाश * काले फल शून्य देखि हइलो हताश २१५०
नुगुणिया रामक दिलोहो बनवास * ऋषि शापे आसि मोर मिलाले विनाश

'वृद्ध की तरुणी भार्या' यह कहावत सुनी थी, वह सारी बात तुमसे मिल गयी ।। ४३ ।। रामरूपी अमृत को आपने अनायास तजकर मरने के समय कैकेयी रूपी गरल पान कर लिया। गुरु-बन्धुजन कोई आपके नहीं हुए। वंश का विनाश कर कैकेयी को ही सार बनाया ।। ४४ ।। देवी कौशल्या ने यथार्थ वचन कहा है। आपकी सत्यवाणी भला किस प्रकार रही ? सारे ससार को सुनाकर आपने यह कहा कि कल राम को युवराज बनाऊँगा ।। ४५ ।। वे सारे वचन कैसे बदल गये ? चिन्तन कर देखिये आपका सत्य किस प्रकार रहा ? असती की सेवाकर आपको कौन सा फल मिला ? केवल कैकेयी आपकी मुख्य देवी बनी ।। ४६ ।। उसी को कंधों पर लेकर राज्य भर में घूमिये। तभी आपकी शपथ पूरी होगी। कौशल्या बोली, मंत्री, अधिक न बोलो। ये पुत्रशोक से मर रहे हैं, इन्हें और क्यों मार रहे हो ? ।। ४७ ।। कौशल्या के वचनों से मन्त्री कुछ शान्त हुए। विदा लेकर अपने स्थान को चले गये। तदनन्तर रात हुई। दु:ख-शोक से पीड़ित राजा दशरथ सो गये ।। ४८ ।।

राजा दशरथ की मृत्यु

कौशल्या और सुमित्रा दोनों सती नारियाँ शोकाकुल मन से राजा के दोनों ओर जाकर सो रहीं। आधी रात बीतने पर राजा की चेतना लौटी। शय्या पर बैठकर दोनो भार्याओं को जगाया ।। ४९ ।। बोले, पूर्वकथा मुझे स्मरण हो आयी है। निश्चय जानो, मेरे प्राण निकलनेवाले हैं। आम समझकर पलाश लगाये। पर समय पर उन्हें फलहीन देखकर हताश होना पड़ा ।। २१५० ।। बिना सोचे राम को वनवास दे दिया, ऋषि के शाप से मेरा विनाश आ गया। मैं दुर्मति ने, पूर्वकाल में मन्द कर्म किया था। इसके फलस्वरूप अब मन्दगति

पूर्व्ब काले मन्द कर्म्म करिलो दुर्म्मति * तारफले मन्दगति फलिल सम्प्रति ५१
तोक नतु विहा करो युवराज भैलो * बारिषा कालत हाते धनुशर लैलो
तूण बाण साजिया दुर्ज्जय महावीर * निशाकाले पाइलो गैया सरयूर तीर ५२
शब्दमेदिमय लुकि विलोहो तथात * शब्दलक्षि पशु मारिलोहो असंख्यात
कतो वेलि आछो येबे धनुशर धरि * जल कुम्भ भरान्ते बाजिल घटांकरि ५३
मइ बोलो हस्ती गोटे जलपान करे * गरजन्ते आछय मुखत जल धरे
यावे आहि नतु उठे सरयूर घाट * एइ बुलि शीघ्रे हानि लोहो शरपाट ५४
हा मरि लोहो बुलि दिलेक आटास * कोन हेनमते मोर चिन्तिले बिनाश
कारो मन्द निचिन्तिलो ऋषिर तनय * अन्ध माव बाप दुइरो शोकक ज्वलाय ५५
मइतो जानो कारो नतो चिन्तो अपकार * कोने नो पापीष्ठे कैल हृदये प्रहार
अन्ध माव बाप मोर दुइरो मइ लाठि * तिनिको मारिले कोने एहि शर काठि ५६
हेन शुनि मोर बर जन्मिल तरास * धीरे धीरे गैया तार चापिलोहो पाश
भये गाव काम्पय लागिल घसमसि * राहुर आगत येन पूर्णिमार शशि ५७
हृदयत शर देखो ऋषिर कुमार * सर्व्वांग पानीत आछे तटे जटाभार
जाज्ज्वल्य समान करि कटाक्ष नयने * मोक चाइ बुलिलेक निष्ठुर वचने ५८
हा ओरे पापीष्ट नष्ट कि करिलो तोक * कि कारणे शरे हानि मारिलिहि मोक
अन्ध माव बापर ज्वलाइलि कैने शोक * बापर शापत आजि याइबि यमलोक ५९
आमार बापर शाप प्रचण्ड अगनि * शुकान बनक येन दहिबेक छनि
एराइते पारस यदि विनय भावत * आमार वार्त्ताक कहि धर चरणत २१६०

मिली ॥ ५१ ॥ तुमसे विवाह के पूर्व जब युवराज बना, वर्षाॠतु में हाथ में धनुष-बाण ले लिये, तरकश और बाणों से सजकर दुर्जय महावीर मैं रात्रि के समय सरयू के तट पर जा पहुँचा ॥ ५२ ॥ वहाँ शब्दवेधी निशाना लगाया। शब्दों का अनुसरण कर असंख्य पशु मारे। कुछ देर तक जब मैं धनुष-बाण हाथों में लिये खड़ा था, जल भरते हुए एक घड़े से घन्टा का शब्द हुआ ॥ ५३ ॥ मैंने सोचा, कोई हाथी पानी पी रहा है। मुख में जल लेकर गरज रहा है। जैसे वह सरयू के घाट पर चढ़ न आवे। ऐसा सोचकर शीघ्रता से बाण चला दिया ॥ ५४ ॥ 'हाय, मर गया' कहकर वह चीख उठा। किसने इस प्रकार मेरा विनाश करने को सोचा है? मैं ऋषिपुत्र हूँ। किसी का भी बुरा नहीं सोचा है। अन्धे माता-पिता दोनों का शोक प्रज्ज्वलित कर दिया ॥ ५५ ॥ मैंने तो कभी किसी का अनिष्ट-चिन्तन नहीं किया है। किस पापी ने मेरे हृदय में प्रहार किया? अपने अन्धे माता-पिता दोनों की मैं लकड़ी हूँ। तीनों पर किसने यह बाण मारा है? ॥ ५६ ॥ यह सुनकर मेरे हृदय में बड़ा सत्रास हुआ। धीरे-धीरे उसके निकट पहुँचा। भय के मारे शरीर काँपने लगा, भावनाएँ बिखर गयीं। मानो राहु के सम्मुख पूर्णिमा का चन्द्र आ पहुँचा है ॥ ५७ ॥ देखा, हृदय में बाण-बिद्ध वह एक ऋषि कुमार है जिसका सर्वांग पानी में है और जटा भार तट पर। कटाक्ष कर जलते नयनों से मेरी ओर देखते हुए उसने निष्ठुर वचन से कहा ॥ ५८ ॥ हाय रे पापी, मैंने तेरा क्या बिगाड़ा था? किस कारण मुझे बाण से मारा? मेरे अन्धे माता-पिता का शोकरूपी अग्नि क्यों धधका दिया? पिता के अभिशाप से आज तुम्हें यमलोक जाना पड़ेगा ॥ ५९ ॥ मेरे पिता का शाप प्रचण्ड अग्नि है। वह सूखी घास जैसे तुझे क्षण भर में जला डालेगा। यदि उससे बचना चाहता है तो विनय-भाव से मेरी वार्ता सुनाते हुए उनके चरण पकड़ ॥ २१६०॥ तुझसे ब्रह्मवध हुआ, ऐसा न

ब्रह्मवध भैल ताक नजानिवि तइ * ब्रह्मऋषि जनिल शूद्रार पुत्र मइ
हृदयर काढ़ शर प्राणक सुजाओं * सरयू जलत मरि स्वर्गे चलि याओं ६१
हेन शुनि तार मइ खसाइ लोहो बाण * कतो छणे ऋषिर पुत्रर गैल प्राण
प्राण वायु तेजि मरि गगनक चाइल * ताक देखि बर आमि दुख-शोक पाइल ६२
शुन बोली कौशल्या प्राणार पटेश्वरी * ऋषि पाशे गैलो कान्धे जलघट धरि
मने मने गुणो आजि भैलोहो निर्व्याण * ऋषिर शापत मोर छारिबेक प्राण ६३
पथ चाहि आछे दुयो ने देखिय आखि वृद्ध चातकर येन छेदिलोहो पाखि
धीरे धीरे गैया मइ चापिलोहो कोल * पुत्र बुलि दुइ हान्तर उठलिल रोल ६४
तोहोक नेदेखि दुइरो प्राण याय फुटि * विलम्ब करिल किय अन्धर लाखुटि
आनखन चिरकाल न करिवि वापे * प्राणक तेजिलो हय तोहोर सन्तापे ६५
हेनशुनि आगत युरिलो योर हात * क्षेत्रि जाति मइ गोसाइ जनाइलो तोमात
ऋषिपुत्र नहो मइ अज मोर बाप * सूर्य्यकुले कलङ्कित दशरथ पाप ६६
सूर्य्यर कुलत मइ भैलो पाप रोग * अपराध करिलो देखिते नोहे योग
वंशनाश करिलो चिन्तियो प्रतिकार * चण्डशाप दियो येन हओ छार खार ६७
सरयूक आसिलोहो मृगक वधिते * हाते धनुधरि लुकि दिया भैलोथिते
जलकुम्भ भरन्ते शुनिलो गजराव * शरे हानि मारिलोहो अज्ञान स्वभाव ६८
हेन शुनि अन्ध दुयो विमोहित भैला * वज्रपात भैला येन परि मूर्च्छा गैला
किछु क्षणे ऋषि पाछे चेतनक पाया * छटिफुटि करि बुलिलन्त मोक चाया ६९

समझ। शूद्रा के गर्भ से उत्पन्न मै ब्रह्मऋषि का पुत्र हूँ। हृदय से वाण निकाल ले, मैं प्राण त्याग दूँ। सरयू जल मे मरकर स्वर्ग मे चला जाऊँ।। ६१ ।। यह सुनकर मैंने उसका वाण निकाल लिया। कुछ क्षण में ऋषिपुत्र के प्राण चले गये। प्राण-वायु तज मरकर उसने आकाश की ओर देखा। उसे देखकर मुझे बहुत दुःख-शोक हुआ ।। ६२ ।। प्राणों की पटेश्वरी कौशल्या सुनो, जल का घड़ा लिये मैं ऋषि के पास गया। मन ही मन सोच रहा था, आज मेरा अन्त होगा। ऋषि के शाप से मेरे प्राण चले जायेंगे ।। ६३ ।। वे दोनो बाट जोह रहे थे। उन्हे आँखो से कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। लगा जैसे वृद्ध चातक के पंख मैंने काट डाले हों। धीरे-धीरे जाकर मैं उनकी गोद के पास पहुँचा। दोनों 'पुत्र' कहकर जोर से पुकार उठे ।। ६४ ।। तुझे देखे विना हम दोनों के प्राण निकल रहे हैं। अन्धों की लकड़ी, तूने भला विलम्ब क्यों कर दी ? अव पुनः ऐसा विलम्ब न करना। वत्स, तेरे संताप से हम प्राण तज देते ।। ६५ ।। यह सुनकर सामने खड़ा हो हाथ जोड़ दिये। हे देव, तुमसे वता रहा हूँ, मैं क्षत्रिय जाति का हूँ, मैं ऋषिपुत्र नहीं, अज मेरे पिता हैं। सूर्यवंश में कलंकित पाप मैं दशरथ हूँ ।। ६६ ।। सूर्यवंश में मैं पाप रोग वनकर जन्मा हूँ। मैंने ऐसा अपराध किया है जिससे कि मुझे देखना उचित नही है। मैने आपका वंश नाशकर डाला इसका वदला सोच लीजिये। ऐसा प्रचण्ड शाप दीजिए जिससे भस्म हो जाऊँ ।। ६७ ।। मै सरयू तट पर मृग मारने हेतु आया था। हाथ मे धनुप लेकर छिपा रहा। घड़े में जल भरने के शब्द से ऐसा लगा मानो गज की ध्वनि हो। स्वभाव से अज्ञान मैंने उसे वाण चलाकर मार दिया ।। ६८ ।। यह सुनकर दोनों अन्धे मोहाछन्न हो गये। मानो वज्रपात हो गया हो, वे गिरकर मूर्छित हो उठे। कुछ क्षण पश्चात् ऋषि सचेत हो तडपते हुए मेरी ओर देखकर वोलने लगे ।। ६९ ।। हाय रे पापी, आज मैं तेरा अभिमान

हा ओरे पापीष्ट आजि तोर मान सारो * सब रघुबंश नाश करिवाक पारो
शापिया दहिबे पारो देवासुर नर * ज्ञानत मारिलि हन्ते याइबि यमघर २१७०
जानिया मारिलि मोर तनय तापस * गैल हन्ते नरके पुरुष चतुर्दश
आपुनि जानाइलि आसि हुया गृहागत * तोहोक मारिले मोर केमन महत्व ७१
भैल आसि बेकत मोहोर कर्म्म फल * दुइ हान्तक पुत्रक पाशक लैया चल
हेन शुनि मोर बर जन्मिल तरास * लैया गैलो दुहान्तको मरा पुत्र पाश ७२
दुइ हान्तक निया पाछे थापिलो तथाते * दिलो निया मरा पुत्र दुइ हान्तोर हाते
दीर्घ रावे कान्दि आसि हियात धरिल * कोले तुलि लैया मुखे चुम्बन करिल ७३
मावे बुलिलन्त पुताइ तेजिलिहि मोक * मरिबार दिने दिलि निदारुण शोक
मोक एरि यास बाछा निदारुण मने * अन्ध माव बाप तोर पुषिब केमने ७४
हरि हरि बाप मोत शोक परिहरा * पाछे एरि याइबि मोर ग्रीवे चापि धरा
छटफटाइ मरोहो तोहोर बाप माव * क्षणितेक प्राण धरो माथा तुलि चाव ७५
चिरकाले ऋषि पाछे क्रन्दन तजिल * सरयूत बुरदिया अञ्जलि करिल
स्वर्गहन्ते रथ तेति क्षणे नामि आइल * ताते बसि ऋषिपुत्रे मातक लगाइल ७६
शुनियोक बाप कुखीधर मोर आइ * इटो राजकुमारर किछु दोष नाइ
प्राण राखि इहाक देशक पठायोक * मन्यु एरि लिखित कर्म्मक चाहियोक ७७
अबिलम्बे तोमासार हैब सदगति * मइ चलि गैलो हेरा पुरी अम्रावती
हेन बुलि ऋषिपुत्र स्वर्ग चलि गैल * देखि दुइ हान्ते पाछे बर शोक भैल ७८
आगत थाकिलो मइ पुष्टाञ्जलि करि * थाकिलन्त ऋषिये निष्ठुर मन करि

चूर-चूर सकता हूँ। सम्पूर्ण रघुवंश को नष्टकर डाल सकता हूँ। शाप देकर देवों, असुरों, मानवों को भस्मकर सकता हूँ। यदि मेरे पुत्र को जानबूझकर मारा है तो अभी यमलोक भेज दूँगा ॥ २१७० ॥ मेरा पुत्र तापस है, यदि यह जानकर उसे मारा होता, तो तेरा चौदह पुरुष नरक में गये होते। आपही घर में आकर मुझे सूचना दी है। अतः तुझे मारकर मुझे कौन-सा महत्व मिलेगा? ॥ ७१ ॥ यह मेरा ही कर्मफल प्रकट हुआ है। अब हम दोनों को पुत्र के पास ले चल। यह सुनकर मेरे मन में बड़ा आतंक हुआ। मैं दोनों को मृत पुत्र के पास ले गया ॥ ७२ ॥ दोनों को ले जाकर वहीं रखा। मृत पुत्र को दोनों के हाथों में दे दिया। जोर-जोर से रोते-रोते उन दोनों ने उसे गोद में ले, छाती से लगाया और मुँह चूमने लगे ॥ ७३ ॥ माता बोली, रे पुत्र, तूने मुझे छोड़ दिया। मरने के दिनों में निदारुण शोक दे गया। निर्मम भाव से हमें तू छोड़ जा रहा है। तेरे अन्धे माता-पिता का अब कौन पालन करेगा? ॥ ७४ ॥ हरि, हरि, वत्स, हमारा शोक मिटा दे, पहले मुझे गले से पकड़ ले, इसके बाद मुझे छोड़ जाना। तेरे माता-पिता हम तड़पते हुए मर रहे हैं। क्षण भर प्राण रखें, तू सिर उठाकर देख ॥ ७५ ॥ बहुत देर बाद ऋषि की रुलाई रुकी। तत्पश्चात् सरयू में डुबकी लगाकर अंजलि दी। उसी क्षण स्वर्ग से रथ उतर आया। उस पर बैठकर ऋषिपुत्र ने पुकारकर कहा ॥ ७६ ॥ पिता और मेरी जननी आप लोग सुनें। इस राजकुमार का कोई दोष नहीं है। इसकी प्राण-रक्षा कर देश भेज दीजिये। मन से विचारकर अपने लिखित कर्म को देखिये ॥ ७७ ॥ शीघ्र ही आप लोगों की सद्‌गति होनेवाली है। मैं अब अमरावतीपुरी को चल रहा हूँ। यह कहकर ऋषिपुत्र स्वर्ग चला गया। यह देख दोनों को बड़ा शोक हुआ ॥ ७८ ॥ मैं हाथ जोड़े सामने खड़ा रहा। ऋषि मन को निष्ठुर किये रहे। वे बोले—तेरा वंश महाशुद्ध, संसार भर में श्रेष्ठ है। ऐसे रघुवंश में तू कलंक ले

महाशुद्ध वंश तोर भुवनते सार * हेन रघुबंशर अनाइलि खिलिङ्गार ७९
पुत्रर शोकत आजि प्राणक सुजाइव * अन्तकाले तोरो पुत्रशोके प्राण याइब
पूर्व्वंत आमार हेन ऋषिशाप भैल * दिन कतिपये दुयो अन्ध स्वर्ग गैल २१८०
सेइ ऋषिशापे मोर मरण मिलिल * यमदूत देखो मोर सन्नित चापिल
चक्षुरे नेदेखो मइ नुशुनोहो बोल * पुत्र सुमरन्ते भैल हृदय आन्दोल ८१
एबे येबे रामे बाप बुलिया मातय * स्नेहरूपे आसिग्रीवे चापिया धरय
अमृतक पीया येन जीवय आतुर * तेबे प्राण रहे मोर नायाओं यमपुर ८२
मरण कालत राम नेदेखिलो तोक * यम कवलको गैले नेराइबोहो शोक
शुना बान्धै कौशल्या न करा हृदि खेद * तोमार आमार एबे भैला परिच्छेद २१८३
चौधय वरिष रामे बनवास तरि * पुनरपि आसिबन्त अयोध्या नगरी
स्वर्ग हन्ते येहेन आसिब सुरराजे * लोके बेढ़िवेक येन देवता समाजे ८४
ताक देखि वाक कपालत भाग्य नाइ * पुत्रशोके हेरा मोर प्राण फुटि जाय
हा राम बुलिया शय्यात एरि गाव * भैलन्त निचेष्ट राजा बिमोहित भाव ८५
बनत याइवार छय दिन भैल काल * मध्यनिशा भैल मरिलन्त महीपाल
कौशल्या देखन्त राजा याशेष विलापे * अचेतन दशरथ पुत्रर सन्तापे ८६
ना जानिला निर्य्याणक राघवर भाव * न जगाया शुइला शय्यात एरि गाव
कौशल्या सुमित्रा देवी आवर कैकेयी * राजाक बेढ़िया शुइला सबे महादइ ८७
उइ गोट मुखे येन शुषिला सागर * कैकेयीर काजे मरिलन्त नृपबर

आया ।। ७९ ।। पुत्रशोक से मैं आज प्राणों को तज रहा हूँ। अन्तकाल में पुत्रशोक से तेरे भी प्राण निकलेंगे। पूर्वकाल में इसी प्रकार मुझे ऋषि का शाप मिला था। कुछ ही दिन मे अन्धे दम्पति स्वर्ग सिधार गये ।। २१८० ।। उन्ही ऋषि के शाप से मेरी भी मृत्यु होनेवाली है। देखो यमदूत मेरे समीप आ पहुँचे हैं। आँखों से मुझे दिखाई नहीं पड़ता, बोली सुनायी नहीं पड़ती। पुत्र का स्मरण करते हृदय आन्दोलित हो रहा है ।। ८१ ।। अब जबकि राम 'पिता' कहकर पुकारेगा, आकर स्नेहपूर्वक मेरे गले लग जायेगा तब अमृत पानकर जैसे आर्त-व्यक्ति जी उठता है, वैसे ही मेरे प्राण रह जायेंगे, मैं यमपुरी नही जाऊँगा ।। ८२ ।। हे राम, मैं मृत्यु के समय तुझे देख नही पाया, यम के चंगुल में पड़ने पर भी वह शोक नही मिटेगा। प्रिये कौशल्या, सुनो, हृदय मे दुःख न करो। तुममे हममें अब विच्छेद होनेवाला है ।। ८३ ।। चौदह वर्ष पश्चात् राम वनवास की अवधि विताकर पुनः अयोध्या ऐसे लौटेगा मानो स्वर्ग से देवराज इन्द्र आ रहे हों। देव-समाज जैसे देवराज इन्द्र को घेरे रखता है वैसे ही लोग राम को घेरे रहेगे ।। ८४ ।। उसे देखने का भाग्य मेरा नहीं है। अरे, पुत्रशोक से मेरे प्राण निकले जा रहे हैं। 'हा राम' कहकर विस्तर पर ढलकर राजा मोहग्रस्त चेतनाहीन निश्चेष्ट हो गये ।। ८५ ।। राम के वन-गमन के छह दिन पश्चात्, मध्यरात्रि को राजा की मृत्यु हो गयी। कौशल्या ने देखा राजा अशेष विलाप कर रहे हैं। पुत्र के सन्ताप से दशरथ अचेत हो गये हैं ।। ८६ ।। रामचन्द्र की माता कौशल्या उनकी मृत्यु समझ नही पायी। उन्हें जगाये वगैर विस्तर पर पड़ सो रहीं। महारानी कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी राजा को घेरकर सो रहीं ।। ८७ ।। ·········ने मानो मुँह से सागर सोख लिया। वैसे ही कैकेयी के कर्मों से राजा दशरथ की मृत्यु हो गयी।

राजार मृत्युत महादइ सकलर विलाप

प्रभात समये बाजि गैल ढोल ढाक * बन्दीगणे स्तुति बोले आसङ्गि राजाक ८८
शब्दर बोले सब्लोक जागि गैल * नारीगणे आपोन नियोज कर्म्म कैल
स्त्रीर आचार यत करिला सकल * सुवर्ण कुम्भत करि आनिलेक जल ८९
तिल, फुल, गन्ध, पुष्प, चन्दन मिलाइला * स्नानर समस्त साजनीय आनि थइला
नारीगणे बोलय पीड़िल पुत्रशोके * जगाइबाक लागिलन्त महादइ लोके २१९०
उठा उठा प्रभु आमासर निज नाथ * सूर्य्यर उदये तयु संन्ध्या हैब पात
आशेष प्रकारे जगाबन्त नारीगण * तथापितो नृपतिर न भैल चेतन ९१
शङ्का बर देखिलन्त स्वामीर जीवन * चन्डबावे काम्पे येन कदलीर बन
काषचापि गावर वस्त्रक गुचाइलन्त * मृतक शरीर नृपतिर देखिलन्त ९२
चापरि चापरि कतो नारीगणे चाय * गावत धरिया कतो स्वामीक जगाय
तबध नयने देखे हिम येन गाव * जिह्वा खान कुञ्चिला नासात नाहि बाव ९३
निष्पाण दशन पान्ति शुकाइल अधर * निश्चल चरण दुइ नलरय कर
स्वामीर मरण देखि रमणी सकले * बेढ़िया कान्दिल सबे हाकले बिकले ९४
महामर्म्मे मूरत चापर मारे टानि * केशमणि छिङ्गे कतो हिये मुठि हानि
हा नाथ, हा प्रभु, हा महाराज * बेढ़िया कान्दिल सबे सुन्दरी समाज ९५
रोल शुनि कौशल्या सुमित्रा पटेश्वरि * चमकि उठिला चकु तरबर करि
कौशल्या बोलन्त प्रभु किनो पुण्यकैल * राम राम सुमिरन्ते प्राण छुटि गैल ९६

राजा की मृत्यु से महारानियों का विलाप

प्रभातकाल में ढोल-नगाड़े बज उठे। बन्दियों ने स्तुति-वचनों द्वारा राजा को सम्बोधित किया ॥ ८८ ॥ शब्दों के नाद से सब लोग जग उठे। नारियों ने अपने अपने उचित कर्म किये, स्त्रियों के आचारों का पालन किया। स्वर्ण-कलश में पानी ले आयीं ॥ ८९ ॥ तिल, फूल, गंध, पुष्प, चन्दन दिये। स्नान की सभी आवश्यक वस्तुएँ लाकर रखीं। नारियाँ कहने लगी, राजा पुत्रशोक से पीड़ित है। महारानियाँ उन्हे जगाने लगी ॥ २१९० ॥ हमारे नाथ, प्रभु, उठिये, उठिये। सूर्योदय हो जाने पर आपकी संध्या का समय निकल जायेगा। अनेक प्रकार से नारियाँ उन्हें जगाने लगीं फिर भी राजा की चेतना नहीं लौटी ॥ ९१ ॥ पति के जीवन के सम्बन्ध में बड़ी शंका उत्पन्न हो गयी। प्रचण्ड आँधी में कदली वन के जैसे वे काँपने लगीं। पास आकर पति के शरीर पर का वस्त्र हटा दिया। तब उन्हें राजा का मृत-शरीर दिखाई पड़ा ॥ ९२ ॥ छाती पीटती हुई नारियाँ उन्हें देखने लगीं। कुछ तो शरीर पकड़कर पति को जगाने लगीं। स्तब्ध आँखों से देखने लगीं, शरीर हिम जैसा है, जीभ सिकुड़ गयी है, नाक से साँस नही चलती ॥ ९३ ॥ दन्त पंक्तियाँ निस्पन्द हैं। होंठ सूख गये हैं। चरण निश्चल हैं, हाथ नहीं हिलता। पति की मृत्यु देखकर नारियाँ व्याकुल हो, हाहाकार करती हुई रोने लगीं ॥ ९४ ॥ कुछ तो महादुःख से जोर-जोर से सिर पीटती थीं, कुछ केश में गूँथी मणियाँ नोच-नोचकर फेंक रही थी, कुछ छाती पर घूँसे मार रही थीं। हा प्रभु, हा नाथ, हा महाराज, कहती हुई सभी सुन्दरी नारियाँ घेरकर रोने लगीं ॥ ९५ ॥ शोर सुनकर महारानी कौशल्या और सुमित्रा चौंककर आँखें मलती हुई जग पड़ीं। कौशल्या बोली, प्रभु, आपने कैसा पुण्य किया था कि राम-राम कहते हुए ही आपके प्राण छूटे ॥ ९६ ॥ प्रभु किस कर्म

किनो कर्म्मे प्रभु एराइलन्त पुत्रशोक * यमपुरी गैला प्रभु सुमिरि रामक
ओवारिर लोके शुनि राजार अवस्था * उल्का सञ्चारिल येन बाजि भैल कथा ९७
स्त्री बाल वृद्ध सब यत युवा लोके * मूर्च्छा गैया परिल राजार महाशोके
येहेन शुकान काण्ठ मोर कलेवर * राम शोक रवि जाले शोषे निरन्तर ९८
स्वामी शोक अगनिये पुरि पुरि दहे * एभो प्राण नयाइ शरीर केने रहे
उलट पालट स्वर्ग मर्त्य पातालत * युग परिवर्त्त येन भैल अकालत ९९
मरिबाहा तुमि सब कोने पतियाय * हा प्रभु बोलन्ते मोहोर प्राण याय
रामाइ वन गैला छाड़ि तुमि गैला स्वर्ग * चतुर्भिते वेढ़ि कान्दे महादइ बर्ग २२००
समिधान निदिशा टिकर निज नाहा * आमाक अनाथ करि कैक लागि याहा
राघवर शोके तुमि गैला यमपुर * खण्डाइलाहा अलङ्कार शिखर सिन्दूर १
हेन मन करय याइबोहो मइ मरि * पुत्र वासनातहे जीवन आछो धरि
हा स्वामी दशरथ वृद्ध महीपाल * हा राम लखाइ सीता भैल मोर काल २

कौशल्यार कैकेयीक भर्त्सना आरु सकलोरे राज्य रक्षार मंत्रणा।

विषादे कौशल्या कैकेयीक लागि चाइला * कुल संहारिणीक आगते भेट पाइला
हा ओरे पापिष्ठी चारी तइ स्वामी खाइलि * समस्त लोकक शोक सागरे पेलाइलि ३
तोर गर्भे ठाइ भैल सुस्वामी आमार * सब रघुवंशर चिन्तिलि बुन्दामार
तोर कुखियात तिनि भुवनक याइब * नरकर पोके तोक लारि छारि खाइब ४

से आप पुत्रशोक से मुक्त हो गये, राम का स्मरण करते-करते यमलोक चले गये। राजभवन के लोगों में राजा की अवस्था सुनकर मानों बिजली दौड़ गयी, चारों ओर बात फैल गयी ।। ९७ ।। स्त्री, बालक, वृद्ध, युवा सभी सुनते ही राजा के महाशोक से मूर्छित होकर गिर पड़े। मेरा शरीर सूखे काठ जैसा है, जिसे राम के शोकरूपी रवि-ज़ाल निरन्तर सोख रहा है ।। ९८ ।। पति के शोकरूपी अग्नि जला-जलाकर दग्ध कर रहा है। फिर भी प्राण निकले बिना शरीर कैसे रहे ? स्वर्ग-मर्त्य पाताल में जैसे उलट-पुलट हो गयी। अकाल में मानों युग परिवर्तन हो गया ।। ९९ ।। तुम मरोगे भला यह बात कौन विश्वास करेगा ? हा प्रभु, कहने में हमारे प्राण निकले जा रहे हैं। राम तो छोड़कर वन चले गये, तुम स्वर्गवासी हो गये। यों कहती हुई महारानियाँ चारों ओर घेरकर रुदनकर रही थी ।। २२०० ।। हमारे सिरों के प्रभु तुम कोई उत्तर क्यों नही देते। हमें अनाथ कर कहाँ चले जा रहे हो ? रामचन्द्र के शोक में तुम यमपुरी चले गये। हमारे गहनों और मस्तक का सिन्दूर मिटा डाला ।। १ ।। ऐसी इच्छा हो रही है कि मैं भी मर जाऊँ। पर पुत्र की वासना से ही जीवन रखे हुए हूँ। हा स्वामी दशरथ, वृद्ध महीपाल, हा राम, सीता-लक्ष्मण, हमारा काल आ गया ।। २ ।।

कौशल्या द्वारा कैकेयी का तिरस्कार और सबकी राज्य रक्षा हेतु मंत्रणा

विषाद के मारे कौशल्या ने कैकेयी की ओर देखा। कुल-नाशिनी से सम्मुख ही भेंट हो गयी। (कौशल्या कहने लगी) हाय री पापिनी नारी, तूने पति को खा डाला। सभी लोगों को शोक-सागर में डाल दिया ।। ३ ।। हमारे उत्तम पति को तूने खा लिया। सारे रघुवंश का तूने विनाश चिन्तन किया। तीनों लोकों में तेरी कुख्याति फैलेगी। नरक के कीड़े तुझे नोच-नोच उलट-पुलट कर खायेंगे ।। ४ ।।

यावेचन्द्र दिवाकर पृथिवी सागर * घोर क्रिमिकुण्डत थाकिबि एकेश्वर
रामर भकत येन लखाइ महाबीर * भरतो रामत तेन एकेसे शरीर ५
पुतेयो न लैबे राज्य स्वामी को बधिलि * एकोबे न भैल तइ नरक साधिलि
तोहोर कारणे रामचन्द्र गैला बन * पुत्रशोके नृपतियो तेजिले जीवन ६
सिंह गज राव शुनि जनकर जीवे * चमकिया राघर धरिलन्त ग्रीवे
तइ भैलि प्रजार दुखर आदि मूल * करिलि निर्म्मूल तइ इटो रघुकुल ७
एइ बुलि मुठि हानि परिलन्त शोके * बोधिते न पारिल सब नारी लोके
पाछे वशिष्ठक गैया माताइया अनाइल * कुलगुरु कौशल्याक प्रबोध कराइल ८
विषादे थाकिला देवी अस्थि चर्म्म मात्र * बशिष्ठ बसिला गैया आउर यत पात्र
सेनापति, यूथपति, मन्त्री सन्धिक * महा महा साधुग्रत सबहाङ्के लइ ९
बामदेव, याज्ञवल्क, बिश्वामित्र गर्ग * मार्कण्डेय, गौतम राजार गुरुवर्ग
बशिष्ठक मध्यकरि बसिला बिमने * आदित्यक बेढ़िया येहेन ग्रहगणे २२१०
सबे बिमरिष पाछे करिलन्त थिर * तैल द्रोणी करि थैल राजार शरीर
पात्र पुरोहित मिलि आलोचिला काज * अराजके निरन्तरे छन्न हैबे राज ११
सबे हन्ते बुलिलन्त बशिष्ठक चाइ * राज्य छन्न हैबेक नृपति केहो नाइ
दशरथ चक्रवर्ती भैलन्त विनाश * राम लक्ष्मणे ओ एरि गैला बनबास १२
परदारा हरण करिब महापाप * पुत्र हुया नमानिब आपोनार बाप
नारीगण स्वामीत हैबेक अबिनीत * अनियमे सबे दोष हैबे उपस्थित १३
मातुलर घरत भरत शत्रुघन * सत्त्वरे आनायो येबे राज्य नोहे छन्न

जब तक चन्द्र, पृथ्वी, दिवाकर रहेंगे, तू घोर कृमि-कुण्ड में लगातार पड़ी रहेगी। महाबीर लक्ष्मण राम का जैसा भक्त है, भरत भी उसी प्रकार राम का एक ही शरीर जैसा है।। ५ ।। पुत्र भी राज्य नही लेगा, तूने पति को भी मार डाला; नरक-प्राप्ति के सिवा और कुछ भी होनेवाला नही है। तेरे ही कारण रामचन्द्र को वन में जाना पड़ा; पुत्रशोक से राजा ने भी जीवन तज दिया।। ६ ।। सिंह गज के नाद सुनकर जानकी चौंककर राम के गले लग जायेगी। तू प्रजा के दुःखकी मूल जड़ है। तूने इस रघुवंश को निर्मूल कर डाला ।। ७ ।। यह कहकर शोक से छाती में मुक्का मारकर गिर पड़ी। उन्हें सारी नारियाँ सांत्वना नहीं दे सकीं। तत्पश्चात् उन्होंने जाकर वशिष्ठ को बुलवा लिया। कुलगुरु ने कौशल्या को धीरज बँधाया ।। ८ ।। सूखकर अस्थि चर्ममात्र हुई देवी कौशल्या विषादमग्ना हो रही। वशिष्ठ और सभी लोग वहाँ आकर बैठ गये। सेनापति, यूथपति, मन्त्री, सामंत, महान् साधुगण सभी के साथ वामदेव, याज्ञवल्क्य, विश्वामित्र, गर्ग, मार्कण्डेय, गौतम और राजा के गुरुगण वशिष्ठ को बीच में रखकर उदास हो बैठ गये। जैसे सूर्य को घेरकर ग्रहगण बैठे हों ।। २२०९-१० ।। सबने विचार-विमर्श करने के पश्चात् निर्णयकर तैल-द्रोणी बना राजा के शरीर को रख दिया। पुरोहित और सभी सम्बन्धियों ने कार्य के बारे में चर्चा की कि अराजक होने पर राज्य नष्ट हो जायेगा ।। ११ ।। वशिष्ठ को देखते हुए सबने कहा—कोई राजा नहीं है इससे राज्य नष्ट हो जायेगा। चक्रवर्ती राजा दशरथ मर गये, राम-लक्ष्मण भी छोड़कर वनवास चले गये ।। १२ ।। (राज्य अराजक होने पर) लोग परस्त्री के हरण रूपी महापाप करेंगे। पुत्र होकर अपने पिता को नहीं मानेंगे। नारियाँ अपने पति से दुर्विनीत हो उठेंगी। अनियम के कारण ये सभी दोष उपस्थित हो जायेंगे ।। १३ ।। भरत-शत्रुघ्न मामा के यहाँ हैं। उन्हें जल्दी बुलवा लेना चाहिए नही तो राज्य विनष्ट हो जायेगा। अराजक होने पर दुष्ट खलों

अराजके दुष्ट खले आसङ्क पाइब * अनेक दुर्ज्जन चोर मछल उठाइबो १४
राजायो आहन्ते मोत पुछिलन्त काज * सत्वरे चिन्तियो येवे छन्न नोहे राज
शुनियो समाजे इटो रामरचरित * राम राम बुलि सुखे तरियो कलित १५

दूत पठाइ भरतक आगमन

दुलड़ी

हेन शुनि पाछे निज कुल गुरु वशिष्ठे बुलिला वाणी।
कहिला सुमन्त्र मन्त्री जाण्टे करि दूत मिलायोक आनि ॥
शुनि मन्त्रीबर आज्ञा बशिष्ठर माथात लैया सादरि।
परम चतुर दूतगण मन्त्री मिलाइलन्त शीघ्रकरि ॥ २२१६
बशिष्ठ दूतक बुलिलन्त वाणी विलम्बक परिहरि।
आमार बचने तुमि सब शीघ्रे चला राति दिन करि॥
केकय राजार राज्य एथा हन्ते होवे आति बहुदूर।
मोर वाक्य धरि चला शीघ्र करि यथा गिरि बज्रपुर॥ १७
एथार वृत्तान्त कथा तुमि सबे भरतक न कहिया॥
राजार आदेश बुलि जाण्ट करि आनियो एथा लागिया॥
वशिष्ठर वाणी शुनि दूतगण लरिला चरि रथत।
नाहि अन्न पान सात दिन मात्र याहन्ते भैला पथत॥ १८
येबे दूतगण गिरि बज्रपुरे शीघ्र बेगे प्रबेशिला।
भरते तथात अनिष्ट सूचक सपोन बर देखिला॥
नाइ सुस्थ मन मलिन बदन भैल भरतर मुख।
श्री हानि देखि मित्र सकलर मनत बर असुख॥ १९

को वढ़ावा मिलेगा। अनेक दुर्जन चोरों की मंडलियाँ जुलूस निकालेंगी॥ १४॥ राजा ने भी मेरे आने पर इस सम्बन्ध मे पूछा था। राज्य नष्ट न हो, इस विषय में आप लोग शीघ्र सोच-विचार कीजिये। सज्जनो यह राम का चरित्र सुने। राम-राम कहकर सुखपूर्वक कलिकाल में पार उतर जायें॥ १५॥

दूत भेजकर भरत को बुलवाना

यह सुनकर उनके कुलगुरु वशिष्ठ जी ने यह वचन कहा—मन्त्री सुमंत्र, शीघ्र दूत को यहाँ बुलाओ। सुनकर सुमंत्र ने परम आदर से वशिष्ठ ऋषि की आज्ञा शिरोधार्य कर परम चतुर दूतो को वहाँ शीघ्र ही उपस्थित किया॥ १६॥ विलम्ब किये बिना वशिष्ठजी ने दूत से कहा—हमारे वचन के अनुसार तुम लोग शीघ्र ही चल पड़ो। केकय राजा का राज्य यहाँ से अनेक दूर है, रात-दिन चलकर शीघ्रता से गिरिबज्रपुर पहुँचो॥ १७॥ यहाँ के वृत्तान्त तुम लोग भरत से न कहना। यह राजा का आदेश है, ऐसा बताकर उन्हें शीघ्र यहाँ ले आना। वशिष्ठ जी के वचन सुनकर दूतगण रथ पर चढ़ शीघ्रता से दौड़ पड़े। मार्ग में अन्न-पान के लिए रुके नहीं। मार्ग में जाते केवल सात दिन लगे॥ १८॥ जब दूतों ने तेजी से गिरिबज्रपुर में प्रवेश किया, वहाँ भरत को अनिष्ट सूचक अनेक सपने दिखलायी पड़े। भरत का मन स्वस्थ न रहा, मुख मलीन हो गया। उनको श्रीहीन देखकर मित्रों के मन में बड़ा दुःख हुआ॥ १९॥

हात जोर करि
मित्र सकलत पूछिलन्त पाछे देखिया तान अवस्था ।
एहिसे कारणे कहिला भरत यत सपोनर कथा ॥
शरीर दहय जानिबाहा मोर बिकल करय मन ।
कि कहिबो आर हृदय कम्पय शुकाइ मुख सघन ॥ २२२०
जानिलोहो निष्ट तोमरा सवर कथा शुनि विमरिष ।
परम दुर्घोर कोनबा अनिष्ट आसि भैला असदृश ॥
आकाश छानिया स्वप्न देखि मोर थिर आर नोहे चित ।
आवर देखिलो देखिलो सम्पूर्ण परिल चन्द्र भूमित ॥ २१
बिना मेघे आसि सागर शुकाइल राहुवे ग्रासिल सूर ।
आमार पितृर निर्घात परिया येन भूमि भैला चूर ॥
थिर नुहि काया शरीर देखिलो रक्त वस्त्र आनि दिल ।
देखि गाव पोरे माटित घसाइया दक्षिणक लागि निल ॥ २२
करिया आक्रान्ति उपरक गोड़े बुर दिला तैलकुण्डे ।
आरो एक स्वप्न आतिशय यान्ति तैल दिला गावे मुण्डे ॥
पितृ दशरथ देखिलोहो मइ गावे कला वस्त्र लइ ।
देखिलो आओर लोहार खाटत थेपेकाइ बसिला गै ॥ २३
पिङ्गल बरणी रातुल पुष्पर माला माथे तुलि दिल ।
इ सब स्वप्नर नारी एकजनी आलिङ्गि आसि धरिल ॥
लय मोर मन फले निरन्तर कहय वापर काल ॥
नेदेखोहो भाल नोहेवा जीवन तेजिलन्त महीपाल ॥ २४
न जानो तथात भैल बहुकाल आसिलो तेजि नगर ।
कोनोबा विघात मिलियाछे अनन्तर ॥

उनकी अवस्था देख हाथ जोड़कर उन मित्रों के पूछने पर भरत ने मित्रो से सपनों की सारी बातें बतायी और कहा—समझ लो इसी कारण मेरा मन व्याकुल हो रहा है। शरीर जल रहा है, हृदय कम्पित हो रहा है, मुख बारबार सूखा जा रहा हैं ॥ २० ॥ क्या बताऊँ, तुम लोगों की बाते सुनकर विचारकर यह समझा गया हूँ कि अवश्य ही कोई अनिष्टकारक हमारे अदृश्य में उपस्थित है। परम भयकर स्वप्न देखकर मेरा चित्त अब शान्त नही है। स्वप्न मे देखा—समूचा आकाश परिव्याप्तकर चन्द्रमा धरती पर गिर पड़ा ॥ २१ ॥ और देखा कि सागर सूख गया है, राहु ने सूर्य को ग्रस लिया है। बिना मेघ के बिजली गिरकर मानो धरती चूर-चूर हो गयी। देखा कि हमारे पिताजी के शरीर पर लाल वस्त्र है। शरीर स्थिर नही है, उन्हें कोई धरती पर घसीटकर दक्षिण की ओर लिये जा रहा है ॥ २२ ॥ शरीर के ऊपर के सभी अवयव जलते देख तैल-कुण्ड में कूद पड़े। अत्यन्त यन्त्रणा से चीखते हुए उन्होने अपने शरीर और मस्तक पर तेल लगाया। और एक स्वप्न भी मैने देखा कि शरीर में काला वस्त्र-खंड पहने पिता दशरथ लोहे की पलंग पर थप से जा बैठे ॥ २३ ॥ और देखा कि रक्तवर्ण पुष्प की माला उनके सिर पर डाल एक पिङ्गलवर्णी नारी ने उन्हें आकर आलिंगन कर लिया। इन सब स्वप्नों का फल यही कह रहा है कि पिताजी का काल आ पहुँचा है। मेरा मन सोच रहा है, या तो महीपाल पिता ने प्राण त्याग दिये हों ॥ २४ ॥ मुझे वह नगर छोड़कर आये बहुत दिन हो चुके; कोई कल्याण दिखाई नहीं देता। पता नहीं, वहाँ कौन-सा व्याघात हुआ है या अनजान घटना घट गयी है। अपने मन में ऐसा अनुमान करते हुए कैकेयी के पुत्र भरत ने स्वप्न की कथा

मने अनुमानि स्वप्नर काहिनी कैला कैकेयीर सुत।
सेहि समयत नगर पशिल आहि अयोध्यार दूत ॥ २५
राजाक प्रणामि पाछे नमिलेक भरतर दुइ पाव।
भरतक दूते वचन बोलय जाण्टे चालियोक गाव।
चला एतिक्षण चारि कोटि धन राजार लोवा सन्देश ॥
न बाधिवा वाक आमि देखो ताक कराइयो आगे प्रवेश ॥ २६
हेन शुनि पाछे भरते बोलन्त शुनियो दूत सकल।
दशरथ निज पितृर आमार कहियो वार्त्ता कुशल ॥
परम श्रीमन्त भाले कि आछन्त राम पितृ सम भाइ।
रामर पाछत मोक सुमरन्त कौशल्या ये बर आइ ॥ २७
प्रकृति सुन्दर दार्त्ता लक्ष्मणर कहियोक सम भाव।
अति महाशान्त भाले कि आछन्त सुमित्राये शत भाव ॥
बापर सुभगा कहलत प्रिय प्रचण्ड यार स्वभाव।
स्वामी सेवा करि भाले कि आछन्त आमार कैकेयी माव ॥ २८
हेन शुनि दूते शोकक तम्भाया कहिलन्त धैर्य्य धरि।
सकले कुशल राजार आदेश चला तुमि जाण्ट करि ॥
शुना रामायण सभासद गण रामक मनत धरि।
राम चरणे पशियो शरणे बिलम्बक परिहरि ॥ २९
जाना सारतत्त्व कालर मुखत परिया आछो निश्चय।
केतिक्षणे गिले मिले एकेतिले दारुण मरण भय ॥
परम चञ्चल विषय सकल तेजियो बिश्वास भात।
इसे निज काम बुलि राम राम एरायो कालर हात ॥ २२३०

सुनायी, उसी समय अयोध्या के दूत आकर नगर में प्रवेश किया ॥ २५ ॥ दूतों ने राजा को प्रणाम करने के पश्चात् भरत के चरणों में सिर नवाया। भरत से कहा, शीघ्र उठिए। धन-सम्पत्ति छोड़कर राजा का सदेश लें, तुरन्त चलिए। बात के लिए रुकिए नहीं, हम वह सब देखेंगे। आप पहले भीतर जाकर विदा ले लीजिए ॥ २६ ॥ यह सुनकर भरत ने कहा—दूतगण, हमारे पिता दशरथ जी का कुशल समाचार सुनाओ। परम श्रीमन्त पिता के समान बड़े भाई रामचन्द्र अच्छे तो हैं? राम के साथ ही मुझे स्मरण करनेवाली बड़ी माता कौशल्या भली है न? ॥ २७ ॥ सुन्दर स्वभाववाले लक्ष्मण का समाचार सद्भावपूर्वक कहो। बहुत ही शान्त स्वभावशाली सुमित्रा सहित सौ माताएं अच्छी हैं न? पिताजी की प्रिय, कलहप्रिया, प्रचण्ड स्वभाववाली माता कैकेयी पति-सेवा करती हुई अच्छी है न? ॥ २८ ॥ यह सुनकर दूत ने शोक को मन में दवा धैर्य धारणकर कहा—सभी सकुशल हैं। राजा का आदेश है आप शीघ्र चलिये। सभासदगण, रामको हृदय में धरकर रामायण सुनो। राम के चरणों की शरण लेने में विलम्ब न करो ॥ २९ ॥ यह सारतत्व समझ लो, कि काल के मुख में पड़े हुए हो। क्षण भर में न जाने कब आकर भयंकर मृत्यु ग्रास कर ले। विषय-भोगादि परम चंचल हैं, इन पर कोई विश्वास न करो। अपना कर्तव्य यही है कि राम-राम कहते हुए काल के हाथों से उद्धार पाओ ॥ २२३० ॥ गिरिव्रज राजा सिंहासन पर आसीन हुए। भरत ने तब जाकर उनके सम्मुख हाथ जोड़े। राजा ने कहा, मेरे सद्भाववाले नाती, अपने पिता के आदेश से तुम शीघ्र चल पड़ो ॥ ३१ ॥ दशरथ, कौशल्या, राम, लक्ष्मण, कैकेयी, सुमित्रा आदि सभी

पद

सिंहासने थित भैला गिरिबज्रनाथ * तेति क्षणे भरते जुरिल योर हात
देखि राजा बोले मोर नाति सदभाव * वापर आदेशे झाण्टे चालियोक गाव ३१
दशरथ कौशल्या राघव लखमन * कैकेयी सुमित्रा आरो यत बन्धुगण
वशिष्ठ प्रमुख्ये गुरुपात्र यत जन * सवाको सन्देश दिल तिनि कोटि धन ३२
भरतको दिला पाछे आशेष सम्भार * सहस्रेक घोड़ा दिला पवन सञ्चार
माणिके मण्डिया दिला रथ दशखान * मयमत्त हस्ती दिला दशशत मान ३३
लक्ष तोला सुवर्ण सहस्र अतिरेक * कोटि एक धन दिला सन्देश अनेक
केकयक नमिला मातुल युद्धाजित * चड़िला भरत रथे हैंया सुनम्रित ३४
आगत भरत पाछ भैला शत्रुघन * रथखान गति करे येहेन पवन
पूर्ब्ब दिश लागि दुयो भाइ चलिलन्त * नदी नद नगर अरण्य एराइलन्त ३५
यमुनार तीर पाइल कटक सकल * सबे प्रजा सन्धुकिल पान करि जल
एराइल अनेक ग्राम नगर आशेष * धीरे आस प्रजा बुलि करिला आदेश ३६
प्रजाक एरिया नाना देशक एराइल * शीघ्रे गैया आति नदी गोमती छाराइल
चलिला भरत येवे गोमतीक तरि * रिणि रिणि देखियाथ अयोध्या नगरी ३७
सात दिने पाइला गैया नगरीर कोल * एविनार मते तात नुशुनिय रोल
विपरीत देखि बोले कैकेयीर सुत * किबा आथान्तर मोत न कहिलि दूत ३८
तिनि प्रहरर पथ यार ध्वनि गैल * अयोध्या नगरी देखो निशवद भैल
सागर मथन्ते येन आसिल आस्फाल * बेदध्वनि नृत्य गीत नाहि कोलाहल ३९
किछुवे नुशुनि आजि सिसब शबद * बायु थिर भैला येन सागर तबध
निरन्तरे चले यत हाथी घोड़ा रथ * चौदोलर निमित्ते याइबाक नाहि पथ २२४०

बन्धुगणों, वशिष्ठ आदि सभी गुरुजनों के नाम सन्देश देते हुए : महाराज ने तीन करोड़ की सम्पत्ति दी ।। ३२ ।। इसके पश्चात् भरत को अनेक धन-सम्पत्ति दी । पवन की भाँति तेज-गतिवाले एक हजार घोड़े दिये । मणिमंडित दस रथ दिये । मंदमत्त हाथी लगभग एक सौ दिये ।। ३३ ।। इनके अतिरिक्त एक लाख एक हजार तोले स्वर्ण दिये, एक करोड़ अर्थ देकर नाना प्रकार के अनेक संदेश दिये । केकय तथा मामा युद्धाजित को प्रणामकर विनम्रता के साथ भरत रथ पर सवार हुए ।। ३४ ।। आगे-आगे भरत और पीछे-पीछे शत्रुघ्न चल पड़े । रथ पवन की भाँति वेग से चला । कितने ही नदी-नद-पर्वत पार करते हुए दोनों भाई पूर्व दिशा की ओर चल पड़े ।। ३५ ।। सभी लोग यमुना तट पर पहुँचे । जल पीकर सब लोगों ने थकावट मिटायी । भरत ने प्रजाजनों को आदेश दिया, तुम लोग धीरे-धीरे आओ और वे अनेक ग्राम, नगर पार करते चले ।। ३६ ।। प्रजाजनों को पीछे छोड़कर भरत अनेक देशों को पारकर चले और बड़ी ही शीघ्रता से गोमती नदी पारकर गये । गोमती को पारकर आगे बढ़ने पर भरत को दूर से अयोध्यापुरी की झलक दिखायी दी ।। ३७ ।। सात दिन में भरत नगर में पहुँचे । वहाँ पहले की भाँति कोलाहल सुनायी नहीं पड़ा । ऐसा विपरीत दृश्य देखकर भरत ने कहा—दूत, कुछ अनहोनी हो गयी है, तूने मुझसे नहीं बताया ।। ३८ ।। जिस अयोध्या नगरी का कोलाहल तीन प्रहर मार्ग दूर से ही सुनाई देता था । आज देखता हूँ कि वह अयोध्यापुरी निस्तब्ध हो गयी है । समुद्र-मंथन में हुए प्रचण्ड निर्घोष की भाँति अब यहाँ वेद-ध्वनि, नृत्य-गीत आदि का कोलाहल सुनायी नहीं पड़ता ।। ३९ ।। आज वह कोई शब्द सुनायी नहीं देता, लगता है, वायु स्थिर और सागर स्तब्ध हो गया है । जहाँ निरन्तर हाथी, घोड़े, रथ चला करते थे, शिविकाओं के लिए चलने का

कि कारणे आजि नारी शून्य देखो बाट * कोलाहल नुशुनोहो पाञ्चशत हाट
मलिन देखोहो नगरर उपवन * विलास विनोद यत करे नारीगण २२४१
वृक्षत चातक सबे नकरय रेलि * नगरर लोकर ने देखो किछु केलि
शुन ओरे सारथि बचन बोलो तोक * आमाक नमाते किय नगरर लोक ४२
मलिन वस्त्रक पिन्धि करे नरे शोक * कि कारणे अभिनन्दा न करय मोक
हेन बुलि प्रवेशिला अन्तेष पुरत * दुवरी देखिया माथा नमाइल दूरत ४३
म्रातम्रित करे देखो अयोध्या नगरी * बुलिलन्त भरते बिषाद मन करि
नाश हेतु राजार देखिलो विमङ्गल * सि सब अनिष्ट स्वप्न मिलिल सकल ४४
प्रजा सबे मोक माथा तुलिया नचाय * चकु दुइ टेर करि पिठि दिया याय
आशेष बिषादे राज ओवारीक पाइ * म्राण्ट करि रथर नामिला दुयो भाइ ४५
आथे बेथे पाइलन्त बापर निज ठाइ * हाति शाल शून्य-येन मत्त गज नाइ
नेदेखिया बापक विकल दुयो भैला * मावर थानक शीघ्रे चाहिबाक गैला ४६

कैकेयीर परा सकलो वृत्तान्त शुनि भरतर क्रोध

पुत्रक देखिया पाछे भरतर माव * कौतूहले आसनर चालिलन्त गाव
मावक देखिया किछु सहरिष मन * पावे परि प्रणाम करिला ततिक्षण ४७
दुइ बाहु मेलि मावे सावटि धरिल * ग्रीवत सावटि मुखे चुम्बन करिल
युद्धाजित भ्रातृर कुशल वार्ता कह * भाले किवा आछन्त तोमार मातामह ४८

मार्ग नहीं मिलता था, आज किस कारण वहाँ के मार्गों पर नारियाँ नही दिखाई देती ? पाँच सौ बाजारों का कोलाहल वहाँ क्यों नहीं सुनायी देता ? जहाँ नारियाँ विलास विनोद किया करती थीं ।। २२४०-४१ ।। नगर के वे उपवन म्लान दिखाई दे रहे हैं। चातकगण वृक्षों पर क्रीड़ाएँ नहीं करते । नगर के लोग भी कोई क्रीड़ा करते दिखाई नही देते । अरे सारथी, तुझसे कहता हूँ, भला नगर के लोग मुझसे बात क्यों नही करते ।। २२४२ ।। लोग मलीन वस्त्र पहने शोक कर रहे हैं । किस कारण लोग हमें अभिनन्दित नही करते ? यों कहकर भरत ने अन्तःपुर में प्रवेश किया । द्वारपाल ने दूर से ही देखकर सिर नमाया ।। २२४३ ।। भरत ने विषण्ण होकर कहा— देखता हूँ अयोध्या नगरी निष्प्राण हो गयी है । राजा के विनाश हेतु जो अशुभ लक्षण दिखाई पड़े थे स्वप्न के वे सब अनिष्ट यहाँ मिल रहे हैं ।। २२४४ ।। प्रजागण सिर उठाकर मुझे नही देखते । आँखें टेढ़ीकर मुंह मोड़ चले जाते हैं । अत्यन्त विषाद से राजभवन पहुँचकर दोनों भाई तुरन्त रथ से उतरे ।। २२४५ ।। जल्दी-जल्दी गिरते-पड़ते परेशान अपने पिता के स्थान को पहुंचे । पर हाथीसाल खाली था, मत्त गजराज वहाँ न था । पिता को न देखकर दोनों बड़े व्याकुल हो, दोनों माता के निवास-स्थान पर पहुँचे ।। २२४६ ।।

कैकेयी से सारी बात सुनकर भरत का क्रोधित होना

पुत्र को देखकर भरत की माता कैकेयी आनन्दपूर्वक आसन से उठ पड़ी। माता को देखकर कुछ प्रसन्न मन से भरत ने चरणों में प्रणाम किया ।। २२४७ ।। दोनों हाथ फैलाकर माता ने उन्हें बाँहों में भर लिया, फिर गले लगाकर मुँह चूम लिया। वह पूछने लगी—भाई युद्धाजित का कुशल समाचार बताओ। तुम्हारे नाना अच्छे है न ? ।। २२४८ ।। मेरे उस नगर के लोग अच्छे हैं न ? मेरे लिये

कल्याणे आछन्त मोर सैहरीर लोक * किबा बस्तु सन्देश पठाइल दिया मोक
आमार बापर देश अनेक बिदूर * कैसानि एरिला बाप गिरि बज्रपुर ४९
पथत कतेक दिन मै गैल प्रबास * तोक देखि बाप मोर शरीर उल्लास
भरतर मावे यार कल्याण इच्छन्ति * सकले कुटुम्ब माव सकले आछन्ति २२५०
सात दिने भैलो आसि अयोध्या पुरत * तोमार सन्देश आछे कतोहो दूरत
आनिल बापर दूते सत्वर गमन * सिकारणे पाछे एरि आइलो यत धन ५१
मलिन देखोहो केने अयोध्या नगरी * बियाकुल मन मोर कोबा झाण्ट करि
शून्य नगरीक मइ आसिलोहो चाइ * दिवसर चन्द्र येन तारागण नाइ ५२
पताका न लड़े येन बिजुली चटक * लण्ड भण्ड पुरी देखो उत्सन्न कटक
शुनियोक माव, कथा कहियोक तत्त्व * आछे पितृ दशरथ कमन गृहत ५३
तोमार थानत पितृ आछे हेन आशे * आसिया देखोहो किन्तु नाहि तयु पाशे
आमार बापक कोन थाने भेट पाइबो * उतपात करे मन तेबेसे युराइबो ५४
भरतर बोल शुनि लाज परिहरि * कहिबाक लागिला मनत रङ्ग करि
नुशुनिलि बापु तइ भैल काज यत * माज निशा मरिल नृपति दशरथ
आपोन सुकीर्ति करि चलिलन्त स्वर्ग * अनाथ करिला आपोनार बन्धु बर्ग ५५
हेन शुनि भरते तेजिला दीर्घ राव * येन बज्रपात माथे मोहित स्वभाव
हां मोर पितृ तुमि केने गैला यमे * कान्दिला अनेक करि शत्रुघन समे ५६
बाप पठाइबार दूते शीघ्रे आनिलेक * मनत मानिलो इटो राम अभिषेक
कौतुके आछिलो हेन मने मने गुणि * सकले निष्फल भैलो पितृनाश शुनि ५७

उन्होंने जो सन्देश दिया है, जो वस्तुएँ दी है, वे मुझे दो। मेरे पिताजी का देश अनेक दूर है। बेटा, वह गिरिबज्रपुर छोड़े हुए कितने दिन हो गये ।। २२४९ ।। मार्ग में तुझे कितने दिन प्रवास में बिताना पड़ा है। बेटा, तुझे देख मेरे शरीर में उल्लास हो रहा है। भरत ने कहा—माता, तुम जिनका कल्याण चाहती हो वे सभी कुटुम्बीजन कुशलपूर्वक हैं ।। २२५० ।। अयोध्यापुरी में आते सात दिन लगे है। तुम्हारे लिए जो सदेश लाया हूँ वे मार्ग में कुछ दूर हैं। मुझे पिताजी का दूत बड़ी शीघ्रता से ले आया है, इसी कारण जो धन थे सब पीछे छोड़ आया हूँ ।। २२५१ ।। परन्तु अयोध्यापुरी भला मलीन क्यों दिखायी देती है ? मेरा मन व्याकुल हो रहा है, जल्दी बताओ। मैंने देखा है, सूनी नगरी ऐसी लग रही है जैसे दिन का नक्षत्र-हीन चन्द्रमा हो ।। २२५२ ।। बिजली की चमक की भांति पताकाएँ नहीं उड़तीं। देखता हूँ नगर बिखरा हुआ है, सेना विनष्ट हो गयी है। माता, इसका कारण क्या है ? बताओ, पिता दशरथ किस भवन में है ? ।। २२५३ ।। पिताजी तुम्हारे भवन में होंगे, इस आशा से आकर देखा। पर वे तुम्हारे यहाँ भी तो नहीं हैं। पिताजी से कहाँ मिल पाऊँगा। मेरा अशान्त मन उनके दर्शन से ही शान्त होगा ।। २२५४ ।। भरत के वचन सुनकर लज़्जा छोड़ मन में उमंग भरकर कैकेयी बोलने लगी—यहाँ जो कुछ हो चुका है, बेटा, तूने वह सब नहीं सुना है। उसी मध्य रात्रि मे ही राजा दशरथ की मृत्यु हो गयी। अपनी सुकीर्ति रखकर, अपने बन्धुवर्ग को अनाथकर वे स्वर्गवासी हो गये ।। २२५५ ।। यह सुनते ही भरत जोर से चीख पड़े। मानो सिर पर वज्रपात होने के कारण वे अचेत-से हो गये। हाय; पिताजी, आप यमलोक क्यों चले गये ? कहते हुए शत्रुघ्न सहित अनेक प्रकार से रुदन किया ।। २२५६ ।। पिताजी का भेजा हुआ दूत मुझे जब शीघ्रता से ले आ रहा था, तब मन में सोच रहा था कि यह राम का अभिपेक होनेवाला है। मन ही मन

एहि बुलि महा दुखे पृथिवीत लुटि * बिलाप करन्त येन प्राण याइ फुटि
देखिया कैकेयी पाछे तुलि धरिलन्त * प्रबोध बचने भरतक बुलिलन्त ५८
उठा उठा बाप शोक न करियो मने * उलटि कि आसिवन्त तोमार क्रन्दने
बहुतर कीर्त्तिक भैलन्त महीपाल * बृद्ध बयसत नृपतिर भैल काल ५९
प्रजाक पालिया करिलन्त राज्यभोग * सत्य पालि मरिला कान्दिते नुहि योग
मरिबार बेला राजा बुलिला वचन * झाण्ट करि आसोक भरत शत्रुघन २२६०
राम सीता लक्ष्मणक बनक पठाइल * हेन देखि सबलोके कौतुक पाइल
शुनि भरतर हृदयर कम्प भैल * रोगीर मुण्डत येन बज्र परि गैल ६१
हाय विधि यमे किय नेनिलेक मोके * एइ बुलि पृथिवीत परिलन्त शोके
अचेतने आछे येन भैल वायुपात * मृतकर येन प्राण नेखेले नाशात ६२
राम लक्ष्मणर शोके परि शत्रुघन * भरतक धरि धीरे करन्त क्रन्दन
कतोक्षणे भरते चेतन लभिलन्त * शोकक तम्भाया पाछे बाक्य बुलिलन्त ६३
कि कारणे नृपतिर मति बिहरिल * राम सीता लक्ष्मणक बनवास दिल
रामे किनो ब्रह्मबध गोबध करिल * नोहे महापाप गुरु भार्य्याक हरिल ६४
सिधारणे प्राण भाइक दिला बनवास * चिन्तिलन्त किय पितृ आपोनार नाश
सबे राज्य स्नेह एक भिति करिलन्त * आउर दिकि राम स्नेह तुले धरिलन्त ६५
रामत बासना आति बापर मिलिल * मरिबार बेला केन बिधिये छलिल
कैकेयी बोलय सबे पात्रे आलोचिला * राजार पाशक शीघ्रे सबहि आसिला ६६

ऐसा सोचकर बहुत ही प्रसन्न हो रहा था। पिताजी की मृत्यु सुनकर वह सब कुछ निष्फल हो गया ॥ २२५७ ॥ यह कहकर महादुःख से धरती पर लोट-लोटकर ऐसे विलाप करने लगे जैसे प्राण निकल रहे हों। यह देखकर कैकेयी उन्हें उठाकर धीरज बँधाती हुई कहने लगी ॥ २२५८ ॥ उठो, उठो, बेटे, मन में शोक न करो। तुम्हारे रोने से क्या अब वे लौट आवेंगे? महाराज अनेक कीर्ति रख गये है, वृद्धावस्था में राजा का काल आ पहुँचा ॥ २२५९ ॥ प्रजा का पालन करते हुए उन्होंने राज्य भोग किया। अपने सत्य की रक्षा करते हुए वे मरे है, इसलिए रोना उचित नही है। मरते समय राजा ने कहा था—भरत और शत्रुघ्न को शीघ्र ले आना ॥ २२६० ॥ उन्होंने राम, लक्ष्मण और सीता को वन में भेज दिया, यह देख सब लोगों को बड़ा कौतुक हुआ। यह सुनकर भरत के हृदय में बड़ा कम्प हुआ। मानो रोगी के मस्तक पर वज्रपात हो गया हो ॥ २२६१ ॥ हाय विधाता, मुझे यम क्यों नहीं ले गया? कहकर वे शोक के मारे धरती पर गिर पड़े। ऐसे अचेत हो गये, साँस रुक गयी। जैसे मृतक की प्राणवायु नाक में आया-जाया नहीं करती ॥ २२६२ ॥ शत्रुघ्न राम लक्ष्मण के शोक से व्याकुल हो भरत को पकड़कर रोने लगे। कितने क्षण बाद भरत की चेतना लौटी। शोक को रोककर यह वचन कहा ॥ २२६३ ॥ किस कारण महाराज की मतिभ्रष्ट हो गयी कि उन्होंने राम लक्ष्मण को बनवास दे दिया। राम ने कौन-सा ब्रह्मवध, गोवध किया था, या गुरु-पत्नी का हरणरूपी महापाप किया था? ॥ २२६४ ॥ जिस कारण प्राणप्रिय भैया को वनवास दे दिया। पिताजी ने अपना विनाश किसलिए चिन्तन किया? राज्य भरका स्नेह एक ओर और राम का स्नेह तुलादंड के दूसरी ओर रख दिया ॥ २२६५ ॥ राम पर तो पिताजी का अतीव प्रेम था। मरते समय उन्हें विधाता ने उस प्रकार क्यों छल लिया? तब कैकेयी बोली—सब लोगों ने परस्पर विचार-विमर्श कर शीघ्र ही राजा के पास आये थे ॥ २२६६ ॥ महाराज से विचार

राजाये सहिते पाछे बिमरिषि काज * कौशल्यार तनयत समर्पिला राज
बशिष्ठे आनिला अभिशेकर सम्भार * कालि राज दिव हेन करिलन्त सार ६७
रामर सीतार पाछे अधिवास कैल * एतके देखिया मोर हृदि कम्प भैल
आलोचिया थित सब करिलोहो काय * तोमाक लागिया मइ मागि लैलो राज ६८
शपत कराया नृपतिक कैलो वन्दि * रामक पठाइलो बने सत्य पाशे छान्दि
हेराइल देखिलो राज्य सपोनर निधि * कतमते साधिलो सहाय भैल बिधि ६९
वपाहाङ्क लागि वाप न करिवि मर्म्म * क्षाण्टे राज्य लैयो मोर साफलोक श्रम
राजार आदेश राम शिरोगते लैल * सीताये लक्ष्मण समे वनवासे गैल २२७०
हाहाकार शवदे कान्दिल सब लोके * मरिलन्त महीपाल सेहि पुत्रशोके
राजार शरीर आछे नारान तेलत * तान कर्म्म करि राज्य लैयोक भरत ७१
एवेसे पलाइल मोर इ दुख ललाट * शुभ क्षण करि वाप लैयो दण्डपाट
दुयो भाइ जानिल रामर वनवास * कुजीर कारणे भैल राजार विनाश ७२
चारिगुणे भरतर क्रोध उपजिल * गरिहा वचने पाछे कैकेयीक बुलिल
हाओरे पाविष्ठी माव कि करिलि काय * कोन नो वापेरे तोत मागिलेक राज ७३
राम लक्ष्मणर खण्डिलिहि राज्यभोग * वापक मारिलि तइ अचिकित्स रोग
किबा राम ददा तोक अनिष्ट करिल * सि कारणे तान तइ राज्य बिहराइल ७४
राज्यलोभे आपुनियो नरकत गैलि * मोर केने त्रिभुवने अख्यातिक थैलि
एके वारे तिनिगोट अकार्य्य करिलि * मोहोर दुष्कीर्ति राम वनवास दिलि ७५

विमर्श कर कौशल्या के पुत्र पर राज्यभार सौप दिया। वशिष्ठ अभिषेक की सामग्रियाँ ले आये, कल राज्य दिया जायेगा, ऐसा निर्णय किया ॥ २२६७ ॥ अभिषेक से पहले दिन राम और सीता के मांगलिक कार्य करवाये गये। यह देखकर मेरा हृदय कम्पित हो उठा। तव चर्चा करने के बाद सब कार्य निश्चित कर मैंने तुम्हारे लिए राज्य माँग लिया ॥ २२६८ ॥ महाराज को शपथ देकर बचनवद्ध कर लिया। सत्य के वन्धन में डालकर राम को वन में भेज दिया। मैंने जब देखा कि स्वप्न की निधि राज्य खोया जा रहा है तव कितनी विनती करने पर विधि सहायक बना ॥ २२६९ ॥ बेटा, पिता के लिए शोक न कर। शीघ्र राज्य ले ले जिससे मेरा श्रम सफल हो। राजा का आदेश रामने शिरोधार्य किया और सीता लक्ष्मण सहित वन में चला गया ॥ २२७० ॥ सब लोग हाहाकार कर रो पड़े। राजा उसी पुत्र-शोक से मर गये। महाराज का शरीर तेल में रखा हुआ है। भरत, उनकी अन्त्येष्टि-क्रिया कर तुम राज्य लो ॥ २२७१ ॥ मेरे भाग्य का दुःख अभी ही मिट पाया है। बेटा, शुभ लग्न देखकर राजदन्ड और सिंहासन ग्रहण करो। दोनों भाइयों को राम के वनवास का और कुब्जा मन्थरा के कारण राजा के विनाश का पता चला ॥ २२७२ ॥ तव भरत का क्रोध चौगुणा वढ़ गया। वे निन्दापूर्ण वचनों में कैकेयी से कहने लगे—हाय री, पापिनी माँ, तूने यह क्या कर डाला। भला तेरे किस वापने तुझसे राज्य माँगा था ? ॥ २२७३ ॥ तूने राम-लक्ष्मण का राज्यभोग खण्डित कर दिया; दुरारोग्य व्याधि से पिताजी के प्राण ले लिये। भैया राम ने तेरा कौन-सा अनिष्ट किया था जिससे कि तूने उन्हें राज्य से वंचित कर दिया ॥ २२७४ ॥ राज्यलोभ से तू स्वयं भी नरक में गयी पर मेरे लिए त्रिभुवन में कलंक क्यों रख दिया ? एक ही साथ तीन-तीन दुष्कार्य तूने किये। मुझे कलंकित कर राम को वनवास दिया ॥ २२७५ ॥ अपने पति महाराज दशरथ के प्राण लिये। अरी भयंकरी, तथापि तुझे लज्जा नहीं है ? इस लोक या परलोक में तेरा

स्वामीक मराइलि दशरथ महाराज * तथापितो दारुणी तोहोर नाहि लाज
इहलोके परलोके शुभ नाहि तोर * देशे देशे मोहोर कुयश थैलि घोर ७६
स्वामी घातिनीक पृथिवीचे केने धरे * फाट दिया लुकाइ थैया तोक न सम्बरे
शुखिनी नागिनी निकारुणी संहारिणी * निर्द्दयिनी राक्षसिनी वाघिनी दारुणी ७७
यक्षिणी डाहिनी तइ स्वस्वामी-भक्षिणी * पिशाचिनी आवे रण्डी भैलि अलक्षिणी
सकलो लोकक शोके मारिलि विछुइ * अयोध्या राज्यत तइ भैलि सोण गुइ ७८
बापक मारिलि आगे आवे मोक खाहा * निलाजी वैरिणी चारी मारिवाक याहा
कौशल्या सुमित्रा विकलित पुत्रशोके * नरकत पचिवि खाइवेक जोके पोके ७९
दशो दिशे व्यापिल निर्म्मल यार यशे * तान भार्य्या भैलि तोक जनिल राक्षसे
कौशल्या मावक तइ दिलि वर शोक * मयो आवे पेट पुरि मारिवोहो तोक २२८०
एतिक्षणे मयो आजि याइवो वनमाज * स्वतन्तरी दारुणी आपुनि लह राज
हा बाप बुलिया विकल वर भैला * हा राम भाइ बुलि परि मूर्च्छा गैला ८१
आशेष कान्दन्ते शत्रुघने गैया पाइल * आश्वासि अनेक तुलि धरिया बसाइल
लक्ष्मण ददार भैल कमन महत * सव प्रतिकार तेहो करिते शकत ८२
राघवर सङ्गति गैलन्त वनमाज * पितृबोल बाधिया रामक निदि राज

शत्रुघ्नर हातत कुँजीर विपत्ति

शुनिलेक कुँजीये भरत आसि भैल * सत्वर गमने कैकेयीर पाशे गैल ८३
पिन्धिलेक हरिषे बत्रिश अलङ्कार * मुकुट कुण्डल ग्रीवे सातेसरि हार

कल्याण नहीं होगा। देश-देश में तूने मेरा भी घोर अपयश रख दिया ॥ २२७६ ॥ स्वामीघातिनी को भला पृथ्वी धारण क्यों किये हुए है, वह फटकर तुझे छिपा क्यों नही लेती? अरी शोषिनी, नागिनी, निर्मम, सँहारिणी, निर्दयिनी, राक्षसी, भयंकर बाघिनी ॥ २२७७ ॥ तू यक्षिणी, डाइन पति-भक्षिणी है। पिशाचिनी अलक्षणी अब तू रांड हो गयी है। सब लोगों को तूने शोक में डालकर मार डाला। अयोध्या राज्य में स्वर्ण-गोधिका बनी है ॥ २२७८ ॥ पहले तो पिताजी को मार डाला, अब मुझे खा डाल। निर्लज्ज, वैरिणी नारी इसके बाद तू भी मरने जा। कौशल्या, सुमित्रा पुत्रशोक से व्याकुल हैं। तू नरक में सड़ेगी, तुझे जोंक कीड़े खायेंगे ॥ २२७९ ॥ जिनका निर्मल यश दशो दिशाओ में परिव्याप्त है, उनकी पत्नी तू है, जिसे राक्षस ने जन्म दिया है। माता कौशल्या को तूने महान् शोक दिया है। अब मैं भी तुझे पेट जलाकर भूखों मारूँगा ॥ २२८० ॥ अब मैं भी आज वन में जाऊँगा। अरी दारुणी, स्वतन्त्री, तू स्वयं राज्य ले रख। हा पिता, कहते-कहते भरत अत्यन्त व्याकुल हो गये। हा भैया राम, कहकर गिर पड़े और अचेत हो गये ॥ २२८१ ॥ भरत की अशेष रुलाई देखकर शत्रुघ्न उनके पास आये। उन्हें बहुत सांत्वना देते हुए पकड़कर बैठाया। लक्ष्मण भैया तो इन सबका प्रतिकार कर सकते थे, उन्होंने अपना प्रभाव क्यों नहीं दिखाया? ॥ २२८२ ॥ पिता के वचन को अमान्य न कर राम को राज्य न देकर वे भी रामचन्द्र के साथ वन चले गये।

शत्रुघ्न के हाथों कुब्जा मंथरा की दुर्गति

कुब्जा मन्थरा ने सुना कि भरत आ गये। वह शीघ्रता से कैकेयी के पास गयी ॥ २२८३ ॥ बड़े हर्ष से उसने बत्तीसों आभूषण पहने। मुकुट, कुण्डल, गले

बलय कङ्कण काञ्चि नूपुरर साजे * हंसी केलि करे येन सरोबर माजे ८४
सुबर्णर खोल निया कुजत चड़ाइल * कटाक्ष दृष्टिये भरतर मुख चाइल
शरीरत पिन्धिलेक अगुरु चन्दन * कैकेयीर गृह लागि करिल गमन ८५
राजयोग्य अलङ्कार पिन्धि उरि गावे * कपिला थाकिला येन चण्डालर ठावे
बिमरिष करे कुंजो आउर किबा चाओ * भरतक समीपक किसक न याओ ८६
मइ बान्धो रूप बर हेनय नोहय * मोहोर स्वरूपे देखो आ थानो ज्वलय
बयसत बर मइ भरतत करि * कामवश भैले सिटो दोषक न धरि ८७
बिदिते कुमारे येबे लाज किछु करि * गुप्तरूपे तथापितो हैवो पटेश्वरी
अनन्तरे अन्तःपुरे भरते चाहिल * सेहि बेला कुंजी आसि आगते मिलिल ८८
देख भाइ समस्तरे बहिन कुण्ड आइल * हेन बुलि कुंजीक ताहन्ते सङ्कटाइल
सकल आपद हेतु एइ से आषुधी * लाथि भुकु चवर मारस यथाबिधि ८९
हेन शुनि शत्रुघने मन्थराक पाइल * येन क्षुद्र मृगी देखि केशरी खङ्गाइल
धारे धरि कुँजीक फुराइल बहुपाक * मन्थरा घूरय येन कुमारर चाक २२९०
कतो बेलि पेलावन्त आचारि हातर * हिया माटि पाइल येन कुर लाङ्गलर
मारिलन्त कुजत अनेक शत कील * चित करि हियात डाङ्गर शिल दिल ९१
दुइ कोषे मारिलन्त निदारुण लाठि * धुकुचा धारत दिल बहुधरा काटि
पुनुपुनु केशत धरिया आजुरिल * कान्दन्ते मारिल भुकु मुखे धूलि दिल ९२
बारे बारे तुलि तुलि भूमित आस्फालि * चवरत भाङ्गि गैल दन्त दुइ पारि
कुँजीर बिलाइ देखि ताइर बन्धुजन * हा बान्धै बुलिया कान्दिल घने घन ९३

में सात लहरी हार, वलय, कँकण, कांचि, नूपुर आदि से सजकर ऐसा लग रहा था कि सरोवर में हँसिनी केलि कर रही है ।। २२८४ ।। स्वर्ण की गिलाफ अपने कूवड़ पर चढ़ाया । कटाक्ष दृष्टि से भरत के मुख की ओर देखती हुई शरीर में अगुरु चन्दन का लेप कर वह कैकेयी के यहाँ आयी ।। २२८५ ।। कपिला गौ मानो चाण्डाल के यहाँ हो इस प्रकार से कुब्जा मन्थरा शरीर पर राजोजित आभूषण धारणकर मन में विचार-विमर्श करने लगी—मुझे और क्या चाहिए । भरत के यहाँ भला मैं क्यों न जाऊँ ? ।। ८६ ।। मैं जैसा रूप वना सकती हूँ वह तो ऐसा वैसा नहीं है । मेरा रूप देखकर तो लोगों के गुप्तांग भी जला करते हैं । आयु में मैं भरत से वड़ी हूँ । पर कामवश होने पर वह दोष लिया नहीं जाता ।। ८७ ।। प्रकट रूप से संभवतः कुमार कुछ लज्जा करे तथापि गुप्त रूप से मैं तो पटरानी बनूँगी ही । इसके पश्चात् अन्तःपुर में भरत को देखकर कुब्जा उनके सम्मुख आ गयी ।। ८८ ।। 'देखो भाई, यह सभी का अग्नि-कुण्ड आ गयी ।' ऐसा कहकर भरत ने कुब्जा की ओर संकेत किया । सभी विपत्तियों के कारणरूपी औषधि यही है । इसे भली-भाँति लात, घूंसे, थप्पड़ मारना चाहिये ।। ८९ ।। यह सुनकर शत्रुघ्न मन्थरा के पास आ गये । मानों नन्हीं-सी मृगी को देख सिंह क्रोध में आ गया हो । गर्दन पकड़कर कुब्जा को बहुत चक्कर घुमाया । मन्थरा कुम्हार के चाक की भाँति घूमने लगी ।। २२९० ।। वहुत समय पश्चात् उसे हाथों से पटक दिया मानों हल की नोक को भुरभुरी मिट्टी मिल गयी, कूवड़ पर अनेक सौ मुक्के मारे । चित्त गिराकर छाती पर वड़ा पत्थर रख दिया ।। ९१ ।। दोनों पंजरों में निर्मम हो लात मारी । झुकी हुई गरदन पर मार-मारकर धरती पर पटक दिया । वार-वार वाल पक कर खींचा । जव वह रोती तो घूंसा मारकर मुख में धूल भर देते थे ।। ९२ ।। वार-वार उठा-उठाकर भूमि पर पटक दिया । थप्पड़ों से दाँतों की दोनों

मारिबेक आमाक दुर्व्वार शत्रुघने * कौशल्यात सवे गैया पशिल शरणे
पाछ चाइ पलाइल कुँजीर चेड़ीगण * कैकेयीक चाहि बुलिलन्त शत्रुघन ९४
तोर वाक्ये आमार ज्वलिल वर शोक * कुल संहारिणी आसि न राखय तोक
एहि मुखे बुलिलि राघव वने याउक * आरो बोल बुलिलि भरते राज्य पाउक ९५
हेन बुलि कुमारर हृदय भागिल * आवर कुँजीक गैया किलाइवे लागिल
राम सीता लक्ष्मण गैलन्त वन माजे * राजाओ मरिला एइ पापिनीर काजे ९६
हेन बुलि गालत निर्द्दय दिला मुठि * एकोमते कुवुंजीर प्राण न याइ फुटि
छिङ्गि सिञ्चिलन्त कुँवुजीर अलङ्कार * स्वर्ण येन आतिशय झिकमिक तार ९७
शत्रुघ्नर कोप देखि भरतर मावे * भये चमकिया गैल भरतर ठावे
अथिर नयन तार मुखे नाहि पान * शत्रुघ्नर हाते आजि हैवोहो निर्य्याण ९८
भये तरतरि काम्पे अधर शुकाइल * एक दोवा करि भरतर काष पाइल
मोर प्राण राख बाप तोहोत शरण * आसज मिलिल देखो शुनियो वचन ९९
मइ तोक बोलोहो अलप मति छोट * कुँजीक मारिल निदारुण पुत्रगोट
दुइ गोटा मायेकक परे गर्व्वी नाइ * घने घने मोक चावे चक्षुक पकाइ २३००
निदारुण देखो वर सुमित्रार पोक * दुयो गोया मायेके मारिते चाहे मोक
लक्ष्मणेओ मोक मारिवाक साज भैल * रामर वचने पाछे वाहुरिया गैल १
भरते बोलन्त शत्रुघ्नर मुख चाहि * मराक मारिले आरो किछु फल नाहि
कुँजी पर चेरी से नुहिके स्वतन्तर * वोझार ऊपरे शाक येन पटन्तर २

कतारें टूट गयी। कुब्जा की दुर्गति देख उसके मित्र-सखी आदि 'हाय, सखी' कहती हुई बार-बार रोने लगी ॥ ९३ ॥ "दुर्वार शत्रुघ्न हमें भी मारेंगे।" ऐसा सोचकर सभी कौशल्या की शरण में दौड़ गयी। कुब्जा की दासियाँ पीछे की ओर देखती हुई भाग गयी। कैकेयी की ओर देखकर शत्रुघ्न बोले—॥ ९४ ॥ तेरे वचनों से आज हमारे हृदय मे शोक की बड़ी आग जल उठी। कुलनाशिनी आज तुझे नहीं छोड़ूँगा। इसी मुख से तूने कहा है कि राम वन को चले जायँ, और कहा है कि भरत को राज्य मिले ? ॥ ९५ ॥ कहते-कहते कुमार का हृदय टूट गया। पुनः जाकर कुब्जा को घूँसों से मारने लगे। इसी पापिनी के कर्मो से राम, सीता, लक्ष्मण को वन में जाना पड़ा, महाराज को भी मरना पड़ा ॥ ९६ ॥ यह कहकर गाल में निर्मम रूप से घूँसा मारा। इतने पर भी मन्थरा के प्राण नही निकले। उसके स्वर्ण आभूषण जो अत्यन्त जगमगा रहे थे, खींच-तोड़कर बिखेर दिये ॥ ९७ ॥ शत्रुघ्न का क्रोध देखकर भरत की माता कैकेयी भय से चौंककर भरत के पास चली आयी। उसके नयन अस्थिर हो उठे थे, मुँह में पानी न था, वह सोच रही थी कि आज शत्रुघ्न के हाथों से मरना होगा ॥ ९८ ॥ भय के मारे वह थर-थर काँप रही थी, होंठ सूख गये थे, वेग से कदम बढ़ाकर वह भरत के पास पहुँची। बेटा, मैं तेरी शरण हूँ, मेरे प्राण बचा। अरे सुन यह तो बड़ा बुरा हो रहा है ॥ ९९ ॥ मेरी बात सुन, वह अल्पबुद्धि, छोटा शत्रुघ्न मन्थरा को मार रहा है। लक्ष्मण और शत्रुघ्न इन दोनों भाइयों से बढ़कर अहँकारी कोई भी नही है। यह बार-बार मेरी ओर आँखें लाल-लालकर देख रहा हैं ॥ २३०० ॥ सुमित्रा के ये बेटे बड़े ही निर्मम हैं। ये दोनों भाई मुझे मारना चाहते हैं। लक्ष्मण भी मुझे मारना चाहता था पर राम के वचनों से लौट गया ॥ १ ॥ भरत ने तब शत्रुघ्न की ओर देखकर कहा—मरे हुए को मारकर कोई फल नहीं है। मन्थरा दूसरे की चेरी है, स्वतन्त्र नही है। बोझ के ऊपर साग जैसे महत्वहीन ॥ २ ॥ ज्ञानपूर्ण बचन सुनकर शत्रुघ्न ने मन्थरा को धकेलकर

गुरुतर बचन शुनिया शत्रुघने * हेम्पोचिया कुंजीक पेलाइला तेतिक्षणे
चुञ्चरिया पाइल कुँजी कैकेयीर पाश * धीरे धीरे कैकेयीये बुलिला आश्वास ३
भरते बुलिला शत्रुघन मुख चाइ * दैबे बिमोहित भैला कैकेयीये आइ
रामत बासना आनो मोतो अतिरेक * ददार बिपद दैबे कोने बाधिवेक ४
हरि हरि दुखिनी कौशल्या शत आइ * केने सम्बुधिबोहो तोमार मुख चाइ
बुलिते न थैल मोर कैकेयी मावे * हेन, बुलि तहिते कान्दिला दीर्घ रावे ५

कौशल्या आरु भरतर कथोपकथन

क्रन्दनर रोल बर कैकेयीर बैठाइ * बुलिला कौशल्या पाछे सुमित्राक चाइ
आसिलेक भरत दारुणी यार माव * देखियोक आसा गैया चालियोक गाव ६
हेन बुलि दुइहन्ते लरिला सेहि क्षणे * भरतो आसन्तो दुइको देखिबाक मने
सुमित्रार तनय पाछत शत्रुघन * बाटते ताहारा दुइको पाइला दरिशन ७
कौशल्याक देखिया भरत दुखी भैला * हा मरिलोहो बुलि परि मूर्च्छा गैला
आसिलि वोपाइ कुल-नाशिनीर पो * दुइको धरि कान्दिला नयने बहे लो ८
उठ उठ बापु तइ मुखे एर लाज * मावेरर हाते तइ मागि ललि राज
राजा को मराइलि राम बनबास दिलि * पितृवध करि कोन कर्म्मक साधिलि ९
मोहोत बुलिलि हन्ते एहि राज काज * रामे करिलन्त हन्ते तोक युवराज
कि कारणे आमासार विद्वेष करिलि * सुमित्राक मोक बहिन कुंडत थापिलि २३१०

भूमि पर गिरा दिया। वह घिसटती हुई कैकेयी के पास आयी, कैकेयी ने धीरे-धीरे उसे आश्वासन दिया ॥ ३ ॥ शत्रुघ्न के मुँह की ओर देखते हुए भरत ने कहा—यह माँ कैकेयी दैव से मोहित हुई है। राम के प्रति इसका प्रेम मुझसे भी अधिक था। पर भैया पर विपत्ति पड़े, दैव के इस विधान को कौन रोक सकता है ॥ ४ ॥ हरि-हरि, कौशल्या आदि सौ माताएँ दुखी हैं, भला तुम्हारा (कैकेयी का) मुँह देखकर उनसे किस प्रकार बात करूँगा? मेरी माँ कैकेयी ने कहने के लिए कुछ भी न रखा। यह कहकर वहीं जोर-जोर से रोने लगे ॥ ५ ॥

कौशल्या और भरत का वार्तालाप

कैकेयी के यहाँ से रुलाई का बड़ा शब्द आ रहा था। तब कौशल्या ने सुमित्रा से कहा—जिसकी माता बड़ी निर्मम है, वह भरत आ गया है, चलो, चलकर उसे देख आवें ॥ ६ ॥ यह कह दोनों तभी वेग से चल पड़ीं। भरत भी दोनों को देखने के लिए मन ही मन सोच रहे थे। सुमित्रा के पुत्र शत्रुघ्न ने भी उन दोनों को मार्ग में आते देखा ॥ ७ ॥ कौशल्या को देख भरत दुखी हुए। 'हाय, मर गया' कह गिरकर मूर्च्छित हो गये। इसके पश्चात् दोनों को कौशल्या पकड़कर रोने लगी, आँखों से आँसू बहने लगे। कौशल्या बोली—बेटा, कुल-नाशिनी का पुत्र, तू आ गया ॥ ८ ॥ बेटा, उठ, उठ, तू मुँह की लज्जा छोड़ दे। माता के द्वारा तूने राज मँगवा लिया, राजा को मरवा डाला, राम को वनवास दिलवाया। पिता का वध करवाकर तूने भला कौन-सा कर्म-साधन किया? ॥ ९ ॥ यदि तूने मुझसे कहा होता कि यह राज-कार्य तू चाहता है तो राम ने तुझे ही युवराज बनवाया होता। किस कारण तूने हमसे विद्वेष किया? सुमित्रा को और मुझे अग्निकुण्ड में क्यों डाल दिया? ॥ २३१० ॥ एक के शोक में तो मर ही रही थी, इसके अतिरिक्त तूने और भी सन्ताप से जलाया।

एके शोके मरो आरो ज्वालिलि सन्ताप * येन गङ्गाजल मोर रामाइ निष्पाप
कौशल्यार सुमित्रार हेन वाणी शुनि * किनो बुलिवन्त नपावन्त मने गुणि ११
कटो वेलि मने थिर करिला भरत * दुइ हन्तरो आगे पाछे करन्त शपत
मोहोर कपट येवे सत्य पतुवाओं * मिछा येबे बोलो ब्रह्मबध पाप पाओं १२
दश कपिलाक मारो गुरु भार्य्या हरो * रामक पठाइलो बने आत्मघात करो
मोर बोले बुलिला कैकेयी निज भाव * घोर नरकत तेबो मोर होक ठाव १३
बचने दिलेक दान निदिले अधर्म्म * राजद्रोह करिले यतेक पाप कर्म्म
सब पाप पाओं येबे मोर आछे मन * यत धर्म्म करि आछो सिओ होवे छन १४
कौशल्या बोलन्त तोक जानो शुद्ध भाव * दारुण शपत शुनि पोरे मोर गाव
चिरकाल जीवि आशीर्व्वाद दिलो तोक * राम आइले देखि पासरिबे सबे शोक १५
कौशल्यार कोले दुखे आछन्त भरत * तपत खोलात करे माछ येन मत
मन्द कर्म्मे मावर शरीरे देइ ताप * सुरापान करियेन द्विजर सन्ताप १६
आशेष करन्त शोक कौशल्यार ठावे * पितृशोक बह्नि येन ज्वले तान गावे

बशिष्ठादिर आगमन आरु राजार प्रेत-कार्य्यर-व्यवस्था

सूर्य्य अस्त गैला निशा दुख वर पाइल * बरिष समान तान रजनी पोहाइल १७
प्रभाते वशिष्ठ गुरु चालिलन्त गाव * मंत्री पात्र लैया गैला भरतर ठाव
दशरथ राजार देखिला वासघर * इन्द्र नाहिकन्त येन स्वर्गर भितर १८

मेरा राम तो गंगाजल के समान निष्पाप है। कौशल्या की यह बात सुनकर भरत क्या कहें मन में कुछ भी विचार नही कर पाये ॥ ११ ॥ कितनी देर बाद भरत कुछ प्रकृतिस्थ होकर दोनों के सम्मुख शपथ करने लगे। मेरे कपट की बात यदि सत्य हो, यदि मैं मिथ्या कहूँ तो मुझे ब्रह्मवध का पाप लगे ॥ १२ ॥ यदि मैंने राम को वन में भेजा हो तो दस कपिला गौओं के मारने, गुरुपत्नी के हरण का पाप लगे। मै आत्मघात कर लूं। यदि मेरी माता कैकेयी ने मेरे कहने पर वैसा किया हो तो घोर नरक में मेरा स्थान हो ॥ २३१३ ॥ वचन द्वारा दिया गया दान न देने पर जो अधर्म हो, राजद्रोह करने पर जो पाप हो, यदि मेरे मन में वह है तो वे सारे पाप मुझे लगे। मैंने जो कुछ धर्म कमाया हो वह सब नष्ट हो जाये ॥ १४ ॥ कौशल्या बोली, मैं जानती हूँ, तू शुद्ध भाववाला है। तू जैसा भयंकर शपथ कर रहा है, उससे मेरा शरीर जल रहा है। तुझे आशीर्वाद देती हूँ, तू चिरकाल जीवित रह। तुझे 'राम आया' समझकर सब लोग दुःख भूल जायेंगे ॥ १५ ॥ कौशल्या की गोद में भरत दुःख में पड़े हुए थे। गर्म तवे पर मछली जैसे वे छटपटा रहे थे। मंद-कर्मों से माँ के शरीर में दुःख पहुँचाने पर या सुरापात करने पर ब्राह्मण को जैसा संताप होता है ॥ १६ ॥ भरत कौशल्या के पास वैसे ही अशेष शोक करने लगे। पितृशोक की अग्नि मानों उनके शरीर में जल रही थी।

वशिष्ठ आदि का आगमन और राजा दशरथ की अन्त्येष्टि की व्यवस्था

सूर्य अस्तमित हो गया। रात को उन्हें बड़ा ही कष्ट हुआ। एक वर्ष के समान वह रात बीती ॥ १७ ॥ प्रातःकाल गुरु वशिष्ठ उठ पड़े और मन्त्री व सामन्तों के साथ भरत के यहाँ गये। उन्होंने राजा दशरथ का निवास-स्थान देखा। मानों स्वर्ग में इन्द्र नहीं रहे ॥ १८ ॥ सामन्तों को देखकर भरत ने कहा—आप लोग

पात्र सब देखिला राज्यर महाहिते * भरते बोलन्त आइला आमाक देखिते
बाप भाइर द्रोहिया आमार नाहि गति * कैकेयी मावे कैला चाण्डाल सङ्गति १९
तेजिलोहो राज्यधन सबे बन्धुजन * बिने बाप भाइ मोर निष्फल जीवन
हेन बुलि भरत भूमित परिलन्त * पात्र सबे देखिया क्रन्दन करिलन्त २३२०
बशिष्ठ बोलन्त दशरथर तनय * तोमार किसक इटो सन्ताप ज्वलय
पितृकार्य्य करिया लैयोक राज्य पाट * खण्डोक लोकर दुख-दुर्गति ललाट २१
आछिलन्त भुविद्युम्न राजा रवि तले * गैलन्त स्वर्गक आपोनार कर्म्म फले
सकले कुटुम्बे पाछे शोके कान्दिलन्त * सिकारणे पुण्यक्षय हइया परिलन्त २२
हेन जानि शोक तुमि करा उपशाम * त्वरिते देखिया सीता लक्ष्मण श्रीराम
स्वर्गे गैल दशरथ राजा शुद्ध भाव * क्रन्दन करिया ताङ्क पेलाइबाक चाव २३
भरते बोलन्त हेन किय बोला मोक * मावे कैला अपयश किमते गुचोक
पितृर करिबो आदि दशपिण्ड काज * करिबो रामक सेवा नलागय राज २४
हेन शुनि बशिष्ठ मनत रङ्ग भैला * भरतक लैया मराशर पाशे गैला
मरा बाप देखिलन्त कैकेयीर सुत * दुइ भाइ लुटि परि कान्दिला बहुत २५
तैलहन्ते नृपतिक तुलिलन्त कोले * दुइ भाइ निया थापिलन्त चतुर्दोले
अगुरु चन्दने देहा भूषित कराइल * सब अलङ्कार निया गावत चड़ाइल २६
आगे पाछे बहन्त भरत शत्रुघने * दुइ पाशे धरिला राजार बन्धुजने
मुख्य मुख्य नृपतिर यत बन्धुलोके * राजाक दहिते लागि चलि गैला शोके २७
राजाक थापिला निया नदीर तीरत * बेढ़िया कान्दन्त महादइ लोक यत
हाँ प्रभु आमार टिकर निज नाहा * आमाक तेजिया तुमि कैक लागि याहा २८

राज्य, के महाकल्याण हेतु हमें देखने आये है। पिता और भाई का द्रोही बनकर हमारी कोई गति नहीं है, माँ कैकेयी ने चाण्डाल की संगति की है ।। १९ ।। मैं राज्य, धन और सभी बन्धु-बाँधवों को तज रहा हूँ। पिता और भाई के बिना मेरा जीवन निष्फल है। यह कहकर भरत धरती पर गिर पड़े। सभी सामन्त देखकर रोने लगे ।। २३२० ।। वशिष्ठ ने कहा—दशरथ के पुत्र भरत, भला तुम्हें यह संताप किसलिए हो रहा है? पिता के क्रिया-कर्मकर राज-पाट ले लो जिससे लोगों के भाग्य की दुर्गति मिटे ।। २१ ।। सूर्य के नीचे याने धरती पर भुविद्युम्न नाम के राजा थे जो अपने कर्म-फल से स्वर्ग में गये थे। उनके कुटुम्बीगण शोक से रोने लगे इस कारण पुण्य क्षय होकर वे स्वर्गभ्रष्ट होकर गिर पड़े ।। २२ ।। ऐसा समझकर तुम शोक करना छोड़ दो। श्रीराम, लक्ष्मण और सीता से शीघ्र ही भेंट होगी। शुद्ध भावनाओं वाले राजा दशरथ स्वर्ग चले गये हैं, तुम लोग क्रन्दन कर क्या उन्हें गिराना चाहते हो? ।। २३ ।। भरत ने कहा कि ऐसा मुझसे क्यों कह रहे हैं? माता ने जो अपयश रख दिया है वह भला कैसे मिटेगा? मै पिताजी का दश-पिण्ड कार्यादि करूँगा। इसके बाद राम की सेवा करूँगा, मुझे राज्य नहीं चाहिए ।। २४ ।। यह सुनकर वशिष्ठ के मन में बड़ी प्रसन्नता हुई। वे भरत को लेकर राजा के शव के पास गये। कैकेयी के पुत्र भरत ने मृतक पिता को देखा, तब दोनों भाई धरती पर लोट-लोटकर रोने लगे ।। २५ ।। तेल से राजा को निकाल गोद में ले, दोनों भाइयों ने उन्हें अरथी पर रखा। शरीर को अगुरु-चन्दन से विभूषित किया। सारे आभूषणों से उनके शरीर को सजाया ।। २६ ।। अरथी के आगे-पीछे भरत-शत्रुघ्न ढो रहे थे। दोनों ओर राजा के बन्धुओं ने पकड़ा। राजा के जो मुख्य-मुख्य बन्धु-बान्धव थे राजा के दाह-कर्म हेतु शोकमग्न हो साथ चले ।। २७ ।। नदी के किनारे

मुकुट कुण्डल शोभे विविध मण्डन * हासो हासो करे आति राजार वदन
महादइ सवे क्रन्दन करे आगे * उत्तर नेदन्त येन मनत वैरागे २९
अगुरु चन्दन दारु निर्म्मिलन्त चिता * वन्धुजने कादन्त राजार चतुर्मिता
चितात थापिला निया उत्तर शिथाने * उपरते यज्ञपात्र थैल थाने थाने २३३०
ओहित ब्राह्मणे तिनि अगनि थापिया * घृताहुति दिलन्त हातत श्रुव दिया
उडुखल मुषल को थापिलन्त निया * अग्नित हुमिला पशु गोटक मारिया ३१
सवत्सा अनेक धेनु प्रदान करिल * विधिर नियमे पाछे मुखाग्नि करिल
कलसे कलसे घृत अनेक ढालिल * जाज्ज्वल्य समान चिता अगिनि ज्वलिल ३२
अगनि लागिल येवे नृपतिर गावे * प्रमाणिल कुमारे राजार दुइ पावे
आर्त्तनाद करि कान्दिलन्त दुइ भाइ * हाँ वाप कैक याहा आमाक पेलाइ ३३
मोक एरि कैक याहा दशरथ वाप * सहिते न पारो आरो हृदयर ताप
अनुदिने वाप यात समर्पणा करि * पितृ सम राम गैला देश परिहरि ३४
हां राम ददा मइ कत पाप कैलो * तुमि हेन भ्रातृत वञ्चित मइ भैलो
वशिष्ठे वोलन्त सवे अवश्ये मरिव * मृतक पराण पुनरपि उपजिव ३५
अनुशोच एरिओ संसार विधि वक्र * संहारिव सवाको दुर्व्वार काल चक्र
तुमि आमि प्रमुख्ये आवर यत जन * दिन कतिपय थाकि सवे हैवो छन्न ३६
पद्मर पत्रर येन नीर वहि याइव * शोक एरा सवे हन्ते प्राण हरुवाइव
दुइ भाइक वशिष्ठे तुलिला हाते धरि * गुरुर वचन शुनि शोक परिहरि ३७

ले जाकर राजा की अरथी को रखा। महारानियाँ उन्हें घेरकर रोने लगी। हाय, हमारे प्रभु, हमारे नाथ, हमें छोड़कर आप कहाँ चले जा रहे है ? ॥ २८ ॥ विविध अंगराग, मुकुट, कुण्डल आदि से सुशोभित राजा का मुखमण्डल ऐसा लग रहा था मानो अब हँसा, अब हँसा। महारानियाँ शव के सम्मुख रुदन कर रही थीं पर जैसे वे मन के वैराग्य से उत्तर नहीं दे रहे थे ॥ २९ ॥ अगुरु, चन्दन की लकड़ियों से चिता बनायी गयी। राजा को चारों ओर से घेरकर बन्धुजन रोने लगे। उत्तराभिमुख सिरहाना कर मृतक की स्थापना चिता पर की गयी और उसके ऊपर स्थान-स्थान पर यज्ञपात्र रखे गये ॥ २३३० ॥ वहीं ब्राह्मणों ने तीनों अग्नियों की स्थापना कर हाथों में श्रुवा ले घृताहुति दी। ओखली और मूसल की स्थापना भी की। पशुबलि देकर अग्नि मे आहुति दी ॥ ३१ ॥ बछड़ों सहित अनेक गौएँ दान कीं। इसके पश्चात् विधिवत् मुखाग्नि की। घड़े पर घड़े अनेक घी डाला गया। धधकती हुई चिताग्नि उज्ज्वल होकर जल उठी ॥ ३२ ॥ जब राजा के शरीर ने अग्नि पकड़ ली तब कुमारों ने उनके चरणों में प्रणाम किया। दोनों भाई आर्तनाद कर रो पड़े—हा, पिताजी, हमे छोड़कर कहाँ चले जा रहे है ? ॥ ३३ ॥ पिता दशरथ, आप हमें छोड़ कहाँ जा रहे हैं। हृदय का ताप अब सहन नहीं हो रहा। यथासमय पिताजी जिसके हाथ समर्पित कर जाते, वे पितृ-तुल्य राम देश छोड़कर चले गये ॥ ३४ ॥ हाय, भैया राम, मैंने कितने पाप किये थे जिस कारण तुम जैसे भाई से वंचित होना पड़ा। वशिष्ठ बोले, सब लोग अवश्य ही मरेंगे। मृतकों के प्राण पुनः जन्म लेंगे। सँसार की विधि बड़ी टेढ़ी है, इसलिए अनुशोचना छोड़ दो। दुर्निवार कालचक्र सबका सँहार करेगा। तुम, हम आदि और जितने भी व्यक्ति है कतिपय दिन रहने के पश्चात् सबको विनष्ट होना पड़ेगा ॥ ३६ ॥ सबको प्राण खोने ही पड़ेंगे। सबके प्राण कमल के पत्ते पर के जल जैसे बह जायेंगे। इस कारण शोक करना छोड़ दो। वशिष्ठ ने दोनों भाइयों को हाथ पकड़कर उठाया।

लोतके तितिल दुइरो शरीर सकले * शुक्रध्वज युग येन बरिषण जले
निशेष दगध भैला दशरथ राज * सरयूत वुर दिया प्रेताञ्जलि काज ३८
जलदान करिते भरत लरि गैला * निरन्तरे तीर्थ यत तैते आसि भैला
पयस्विणी गङ्गादेवी यमुना गोमती * चन्द्रभागा कावेरी लौहित्य सरस्वती ३९
नर्म्मदा सुरेषा सोण नदी हीरन्मति * गोदावरी कृतमाला नदी भानुमती
सव तीर्थ आसि भैला सरयूर जले * कुमारे तर्पण कैला कुटुम्ब सकले २३४०
निरन्तरे ज्ञातिये करिल जलदान * तेतिक्षणे आसि भैला इन्द्रर विमान
तीर्थजल पान करि तृपिति भैलन्त * रथे चड़ि दशरथ स्वर्गक गैलन्त ४१
इन्द्रे आसि कतो दूर आग बढ़ाइ निला * आपोनार अर्द्धासन ताङ्क एरि दिला
पाछे प्रजा सब उठि चालिलन्त गाव * पिण्ड दिया भरत लरिला निज ठाव ४२
आगे पांछे गैल प्रजा पीड़िलेक शोके * इन्द्रक पीड़िल येन असुरर लोके
दूरते भरते देखि अयोध्या नगरी * प्रजाक सम्वुधि मातिलन्त मन्यु करि ४३
राम दशरथे शून्य ग्राम देखा जने * नारीक नोशोभे येन स्वामी अबिहने
तेजिलोहो सबे देश यत वन्धुजन * विना वाप भाइ मोर निष्फल जीवन ४४
भरतक बुलिला ब्राह्मण महामात्र * धर्म्मपाल नामे नृपतिर पूर्व्वपात्र
अनुशोच परिहरा भरत कुमार * कान्दिले कि आसे आउर जनक तोमार ४५
स्वर्गे गैला दशरथ राजा महाजन * क्रन्दन करिया ताङ्क पेलाइवाक मन
कान्दिले वाहुड़े येवे मरार जीवन * आजि कान्दि जियाइब सकले बन्धुजन ४६

गुरु के वचन सुनकर शोक करना छोड़ दिया ।। ३७ ।। आँसुओं से दोनों का सम्पूर्ण शरीर भीग गया, मानो दो शुक्रध्वज वर्षा के जल से भीग गये हों। राजा दशरथ का शरीर सम्पूर्ण रूप से जलकर भस्म हो गया। सरयू में डुबकी लगाकर प्रेताञ्जलि के कर्म करने तथा जलदान करने हेतु भरत वेग से उतर गये। वहीं सम्पूर्ण तीर्थ आकर उपस्थित हो गये। जलमयी (पयोष्णी) गंगा, यमुना, गोमती, चन्द्रभागा कावेरी, लौहित्य, सरस्वती ।। ३८-३९ ।। नर्मदा, सुरेषा, सोन, हीरन्मती, गोदावरी, कृतमाला (कावेरी ?) भानुमती आदि सभी नदियों के तीर्थ सरजू के जल में आकर उपस्थित हो गये। कुमार भरत और सभी कुटुम्बीजनों ने तर्पण किया ।। २३४० ।। कुटुम्बियों ने निरन्तर जलदान किया। इतने में इन्द्र का विमान आकर उपस्थित हो गया। तीर्थ-जल पीकर तृप्त हो रथ पर चढ़ दशरथ स्वर्ग चले गये ।। ४१ ।। इन्द्र ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया। अपने सिंहासन का आधा भाग उनके लिए छोड़ दिया। इसके पश्चात् सारी प्रजा उठकर चल पड़ी। पिंडदान के पश्चात् भरत वेग से अपने निवास-स्थान को चले आये ।। ४२ ।। उनके आगे-पीछे प्रजा चल रही थी। वे ऐसे शोक-पीड़ित थे मानो असुर लोगों ने इन्द्र को उत्पीड़ित कर रखा हो। भरत ने दूर से अयोध्या नगरी को देखकर प्रजा को सम्बोधित कर दुःख से कहा— ।। ४३ ।। देखो राम दशरथ से शून्य ग्राम ऐसा लग रहा है जैसा कि पतिहीन नारी शोभित नही होती। मैं भी देश, वन्धुजनों को छोड़ रहा हूँ। पिता और भाई के बिना मेरा जीवन निष्फल है ।। ४४ ।। धर्मपाल नाम के राजा दशरथ के पहले के सामन्त महामात्र ब्राह्मण ने भरत से कहा—हे कुमार भरत, अनुशोचना छोड़ दो। क्या रोने से तुम्हारे पिता पुनः लौट आयेंगे ? ।। ४५ ।। महा-जन राजा दशरथ स्वर्ग चले गये हैं। रोकर क्या उन्हें नीचे गिराना चाहते हो ? रोने पर यदि मृतक का जीवन लौट आवे तो आज हम सभी वन्धुजन रोकर उन्हें जिला सकते हैं ।। ४६ ।। यह सुनकर भरत ने लम्बी साँस ली और अयोध्या में पिता के निवासगृह

शुनिया भरते पाछे तेजिलन्त श्वास * अयोध्या पशिला पाछे वापर आवास
शून्य थान देखिया सवारे मन जीण * तृण शय्या दोभाये करिला दशदिन ४७
दश पिण्ड दिलन्त आवर दश कर्म्म * त्रिदशा करिला यतेक कुल धर्म्म
एक दशा दोवा दशा श्राद्ध निर्वर्त्तिल * नानाविध दान पाछे ब्राह्मणक दिल ४८
हाथी घोड़ा रथ यत चतुर्द्दोलि यान * दासी दास रूपा सोणा गृह वस्त्र दान
ताम्बुल भोजन माल्य आरो वर-वस्त्र * शय्या धेनु वृषभ दिलन्त वर छत्र ४९
इसब पूर्व्वके यत वापर उद्देशे * दिला दान कर्म्मकाण्ड करिला विशेषे

रामक ओलोताइ आनिवलै भरतर उद्योग

सर्व्व कार्य्य निर्वर्त्तिले रजनी पोहाइल * वरवर पात्र भरतर पाशे आइल २३५०
शुनियो भरत आमि सवर वचन * मन्यु परिहर सवे देश हैवे छन्न
अन्तकाले वापे तोर मतिहीन भैल * रामे वनवास दिया राजा स्वर्ग गैल ५१
पात्र सवे आसि आमि आलोचिल काय * सम्भार मिलाइलो आवे यान्ते लैयो राज
भरते बोलन्त, येवे मइ लैवो राज * मइसे करिलो तेवे यतेक अकाज ५२
देशे देशे अखयाति थाकिव त्रिभुवने * एतेक अकाज भैल भरतर मने
ज्येष्ठ भाइ गुरु सम तान मइ भृत्य * चरणत सेवा करि थाकिबोहो नित्य ५३
आउर वार हेन निदियाहा उपदेश * सैन्य सजायोक वने हैवोहो प्रवेश
ज्येष्ठ भाइर राज्य मइ केने करो भोग * वेदत शास्त्रत ज्येष्ठरेसे राजयोग ५४
किमते लङ्घिबो सिटो वेदर वचन * रामक आनिबे प्रति चलि याइबो वन

में चले आये। उस सूने स्थान को देखकर सभी का मन दुखी हो गया। दोनों भाई दस दिन तक तृण शय्या पर सोये ॥ ४७ ॥ दश पिण्ड दे, दश-कर्म कर कुल धर्म के अनुसार त्रि-दशा कर्म किये। एकादशाह, द्वादश श्राद्ध किये, तत्पश्चात् ब्राह्मणों को नाना प्रकार के दान दिये ॥ ४८ ॥ हाथी, घोड़े, रथ, पालकी, दास-दासी, सोना-चाँदी, गृह, वस्त्र दान किये। ताम्बूल, भोजन, मालाएँ और उत्तम वस्त्र, शय्या, गौएँ, बैल, उत्तम छत्र आदि पिता के उद्देश्य से दान दिये और विशेष प्रकार से कर्म-काण्ड किये ॥ ४९ ॥

राम को लौटा लाने के लिए भरत का उद्योग

इन सभी कर्मों के करते-करते रात बीत गयी तब बड़े-बड़े सामन्तगण भरत के पास आये ॥ २३५० ॥ वे बोले, भरत सुनो; अनुशोचना करना छोड़ दो नही तो देश नष्ट हो जायेगा। अन्तकाल में तुम्हारे पिता मतिहीन हो गये थे जिससे राम को वनवास दे स्वयं भी स्वर्गवासी हो गये ॥ ५१ ॥ हम सभी सामन्त इसकी चर्चा कर इस सिद्धान्त पर पहुँचे हैं कि तुम राज्य ले लो। भरत बोले—यदि मैं राज्य ले लूँगा, तो यह सिद्ध हो जायेगा कि मैंने ही यह सारा दुष्कर्म किया है ॥ ५२ ॥ देश-देश में, त्रिभुवन में मेरी कुख्याति रह जायेगी कि भरत की इच्छा से ही यह दुष्कर्म हुआ है। बड़े भाई गुरु के समान है, मै सेवक उनकी नित्य चरण-सेवा करता रहूँगा ॥ ५३ ॥ पुनः आप लोग ऐसे उपदेश हमें न दें, सेना सजाइये, हम वन को चलेंगे। बड़े भाई का राज्य भला मैं कैसे भोगूँ? वेद-शास्त्रों के अनुसार बड़े भाई का ही राजयोग होता है ॥ ५४ ॥ वेद-वचन का उल्लंघन भला मैं कैसे करूँ। राम को लाने हेतु हम वन को चले जायेंगे। राम को लाकर राज्य का राजा बनाऊँगा

रामक आनिया राजा पातिबो राज्यत * मइ प्रतिपालिबोहो पितृर शपत ५५
राम बिने इटो राज्य पाले कोनजने * सिहर कार्य्यक मृगे करिब कमने
निष्ठे बोलो मोहोर राज्यत नाहि आश * रामर बदले खाटिबोहो बनबास ५६
शुनियो सुमन्त्र मोर बचन पालियो * पन्थ भाल करिबाक सैन्य पाञ्चि दियो
शृङ्गबेरपुर गुह नृपतिर पाट * गङ्गातीर सीमा करि चाञ्चियोक बाट ५७
दीघि सब निर्म्मल करोक थाने थाने * असंख्यात भण्डार चलायो विद्यमाने
भोजन सम्भार चलायोक बहुतर * सैन्यर विहार सजायोक बासा घर ५८
न करियो बिलम्ब शुनियो मन्त्रीबर * मइ सुखे आछो राम बनर भितर
येन ईश्वरर उपबास परे नित * भृत्य सब भोजन करय पञ्चामृत ५९
भरतर आज्ञा मन्त्री शिरत धरिल * तेतिक्षणे असंख्य सैन्यक पाञ्चि दिल
खाल खोप पुरि करिलेक राज बाट * दीघि सब खानिल करिल शिले घाट २३६०
भरतर बहिबाक आवास कराइल * भोजन सम्भारे बहु भाण्डार भराइल
दोकान बाजार हाट करे थाने थान * अनन्तरे मन्त्री भरतक दिला जान ६१
शुनिया भरते चलिबाक साज भैला * देखिया बशिष्ठे ताङ्क बुलिबाक लैला
शुनियो भरत तुमि बचन आमार * भालमते नुबुजिलो चरित्र तोमार ६२
तोमार मातृर बोले तेजि इटो राज * भार्य्या भातृ समे राम आछे बनमाज
राज्य सुख एरि बन फल करे भोग * ताङ्क हिंसा करिते तोमार नोहे योग ६३
तोमार मातृये दिया आछे बहु खेद * तुमियो करिते केन चाहा बन्धु छेद
बुलिबाहा रामक आनिबे प्रति याओं * इटो वचनक आमि केने पतियाओं ६४

और पितृ-वचन का पालन मैं करूँगा ।। ५५ ।। राम के सिवा इस राज्य का पालन भला कौन कर सकता है ? सिंह के कार्य को भला मृग कैसे कर सकता है ? सत्य कहता हूँ, मुझे राज्य की आकांक्षा नहीं है, राम के बदले मैं वनवास भोगूँगा ।। ५६ ।। सुनो सुमंत्र, मेरा वचन मानो । मार्ग ठीक करने के लिए सेना को भेज दो । शृंगवेरपुर राजा गुह का राज्य, गंगा-तट को सीमा बनाकर मार्ग छील-छालकर ठीक करो ।। ५७ ।। स्थान-स्थान पर जो पोखरे हैं उन्हें साफ करवाओ । अनगिनत भण्डार खुलवा दो । जहाँ बहुत-से भोजन संभार हो । सेना के बिहार हेतु डेरे वनवाओ ।। ५८ ।। मंत्रीवर, विलम्ब न करो । मै यहाँ सुख में हूँ, वहाँ राम वन में हैं । यह तो ऐसा ही है जैसा कि ईश्वर नित्य उपवासी है और उनके सेवक पंचामृत भोजन कर रहे हैं ।। ५९ ।। मंत्री ने भरत का आदेश शिरोधार्य किया और उसी क्षण अनगिनत सैनिकों को भेज दिया । ऊवड़-खाबड़ नाले-गड्ढे भरकर राज मार्ग बनाया । तालाब वनाकर पत्थरों से घाट वाँध दिये ।। २३६० ।। भरत के बैठने की जगहें वनायीं, भोजन-संभार द्वारा अनेक भंडार भरवा दिये । स्थान-स्थान पर दूकान, वाजार, हाट वनवा दिये, यह सव करने के अनन्तर मन्त्री ने भरत को सूचना दी ।। ६१ ।। सुनकर भरत चलने के लिये तैयार हुए । तव गुरु वशिष्ठ उनसे कहने लगे—भरत, मेरे वचन सुनो । तुम्हारा चरित्र उत्तर रूप से समझ नही पाया ।। ६२ ।। तुम्हारी माता के कथनानुसार यह राज्य तजकर राम, पत्नी और भाई सहित वन में रह रहे हैं । राज्यसुख छोड़कर वन के फल खा रहे हैं । उनसे हिंसा करना तुम्हारे लिये उचित नही है ।। ६३ ।। तुम्हारी माता ने उन्हें वहुत दु:ख दिये हैं, तुम भी भाई को मारना क्यों चाहते हो ? तुम कहोगे कि मैं राम को ले आने के लिए जा रहा हूँ । इस वात पर भला हम विश्वास कैसे करें ? ।। ६४ ।। तुम्हारा कपट पहले ही विदित हो चुका है । माता के द्वारा तुमने छद्म रूप से राज्य मँगवा लिया ।

तोमार कपट भैल विदित पूर्व्वत * छद्मे राज्य लोवाइलाहा मातृर हातत
एबे केन जानिवो तोमार शुद्ध मन * बुलिला भरते शुनि करि क्रोध मन ६५
अपकार- तोमार करिछो मइ किस * केने बरिपिला गुरु इटो वाक्य विष
भूत भविष्यत तुमि जानाहा आपुनि * बुलिला इ सब वाक्य किसक नुगुणि ६६
तुमिओ जानिला मोर कपट चित्तत * हिया मोहे काटि देखाओ तोमार आगत
निदारुण वाक्ये दिला हृदयत शाल * कुलगुरु हुया आजि खाइला तुमि काल ६७
आने कि इसब वाक्य बुलिवेक मोक * देखाइलोहो हन्ते आजि ताक यमलोक
स्वरूपत नाहिके तोमार गुरु दोष * कैकेयी मावेसे कराइले असन्तोष ६८
स्वप्न तो यि सब कार्य्य न जानोहो मने * पाइलो इटो दुष्कीर्तित मातृर कारणे
मइ राजा हओ राम याइब वनवास * स्वपोनते यदि मोर आछे इटो आश ६९
करोहो शपत गुरु तोमार आगत * तुमि हेन सहस्र ब्राह्मण करो हत
सहस्र कपिला मारो गङ्गार तीरत * पूर्व्व पुण्य आछे यत सिओ हौक हत २३७०
गोत्र हत्या सुरापान अगम्या गमन * महापाप ब्राह्मणर सुवर्ण हरण
इसब प्रमुखये पाप करो निरन्तर * येवे मइ द्रोह चिन्ति आछोहो रामर ७१
मइ तो जानो रामेसे सुहृद मोर प्राण * रामर चरण विने न जानोहो आन
रामे जप तप मोर रामे इष्टदेव * रामेरेसे चरणक करिवोहो सेव ७२
यत यत महागुण आछय रामत * त्रिभुवन मध्ये कोने कहिब्रे शकत
सर्व्वक्षणे देव द्विज गुरुर भकत * पितृत मातृत सर्व्वक्षणे अनुगत ७३
परम विनीत वेद शास्त्रत कुशल * धनुर्व्वेद आदि विद्या जानन्त सकल
क्रोधे यमकाल येन क्षमाइ वसुमती * गम्भीरे सागर येन बुद्धि वृहस्पति ७४

अब तुम्हारा मन शुद्ध है, यह कैसे समझें ? भरत ने यह सुनकर मनमें क्रोध कर कहा— ।। ६५ ।। गुरुदेव, मैंने आपका कौन-सा अनिष्ट किया है, जिस कारण विष जैसे ये वचन वरसा रहे हैं। आप स्वयं भूत-भविष्य सब कुछ जानते हैं, तो फिर इन वचनों को विचार कर क्यों नहीं कहा ? ।। ६६ ।। आप भी समझ गये कि मेरे चित्त में कपट है। हृदय नहीं है कि आपके सामने काटकर दिखा दूं। निर्मम वचनों से आज आपने हृदय में काँटे चुभो दिये। कुलगुरु होकर आज आपने काल बनकर खा डाला ।। ६७ ।। दूसरा कोई क्या मुझसे यह सब कह सकता था ? उसे आज ही यमलोक दिखा देता। वास्तव में गुरुदेव आपका दोष नहीं, कैकेयी माँ ने ही यह असन्तोष दिया है ।। ६८ ।। स्वप्न में भी मैं मन मे यह सब कार्य नहीं जानता। यह दुष्कीर्ति केवल माँ के कारण ही मुझे मिल रही है। मैं राजा बनूं और राम वन को जायें, यदि स्वप्न में भी मेरी ऐसी इच्छा रही हो तो गुरुदेव, आपके सम्मुख मैं शपथ कर रहा हूँ कि आप जैसे सहस्रों ब्राह्मणों की हत्या मुझे लगे। गंगा-तट पर सहस्र कपिला गायों के वध का पाप मुझे लगे। पूर्व के जो पुण्य हों वे भी नष्ट हो जायें ।। ६९-७० ।। गोत्र-हत्या, सुरापान, अगम्यागमन, ब्राह्मण के स्वर्ण की चोटी के महापाप जैसे भयंकर पाप मुझे निरंतर लगें यदि मैंने राम के द्रोह का चिन्तवन कभी किया हो ।। ७१ ।। मैं तो जानता हूँ कि राम ही मेरे सुहृद हैं, मेरे प्राण हैं। राम के चरणों के सिवा मैं और कुछ नही जानता। राम ही मेरे जप-तप हैं, राम ही इष्टदेव है। मैं राम के ही चरणों की सेवा करूँगा ।। ७२ ।। रामचन्द्र में जितने महागुण हैं, त्रिभुवन में भला कौन उनका वर्णन कर सकता है ? वे प्रत्येक क्षण देव, द्विज, गुरु के भक्त हैं; सदा माता-पिता के अनुगत है ।। ७३ ।। वे परम विनीत, वेद-शास्त्रों में कुशल तथा धनुर्वेद आदि सभी विद्याएँ जानते है। क्रोध में यमकाल

सर्ब्बगुणे बिधि येन बेशत गन्धर्ब्ब * राजार लक्षण रामतेसे आछे सर्ब्ब
चलिबोहो निश्चय रामक आनिबाक * कातर करोहो गुरु निदिबाहा हाक ७५
प्रीति करि आनि थापि रामक राज्यत * मइ बने थाकि पालो पितृर शपत
बशिष्ठे बोलन्त दशरथर कुमार * मइ भाले जानो शुद्ध मतिक तोमार ७६
चित्तक लखिते करिलोहो परिहास * सार्थक रघुर बंशे तोमार निवास
बिलम्ब न करि चल सत्वरे बनक * तोमार प्रसादे देखो आमियो रामक ७७
भरते बोलन्त मन्त्री चालियोक गाव * सेनापति सब मोर सत्वरे चलाओ
हस्ती घोड़ा रथ आगे करोक पयाण * रथखान साजिया सत्वर करि आन ७८
शिरत धरिया भरतर आज्ञा बाणी * सैन्यक चलाया रथ मिलाइलन्त आनि
देखि शत्रुघने समे चड़िला रथत * रक्षण बिहिया चलि गैलन्त भरत ७९
शुना सामाजिक राम चरित्र उपाम * संसार निर्म्मल होक बोला राम राम २३८०

रामक आनिबलै भरतर यात्रा; रामर विपद आशंकात गुहर बाधा दिबलै उद्योग

दुलड़ी

चड़िया रथत लरिला भरत रक्षण बिहि राज्यत ।
कौशल्या सुमित्रा कैकेयी चलिला रथत चड़ि पाचत ॥
निज कुलगुरु बशिष्ठ प्रमुखे ब्राह्मण आछन्त यत ।
भरतर आग हैया चलिलन्त चड़िया निज रथत ॥ ८१

के समान, क्षमा में धरती के जैसे, गम्भीरता में सागर जैसे तथा बुद्धि में बृहस्पति के समान है ॥ ७४ ॥ वे विधाता जैसे सर्वगुण-सम्पन्न, वेश में गन्धर्व जैसे है। राजा के सभी लक्षण केवल राम में ही है। मैं निश्चय ही राम को लाने हेतु जाऊँगा। गुरुदेव, मैं आपसे विनती करता हूँ कि मुझे रोकिये मत ॥ ७५ ॥ मैं प्रेमपूर्वक रामचन्द्र को ले आकर राज्य पर प्रतिष्ठित करूँगा और स्वयं वन में रहकर। पिता के वचन का पालन करूँगा। वशिष्ठ ने कहा—दशरथ के पुत्र भरत, तुम्हारी शुद्ध मति मैं भलीभाँति जानता हूँ ॥ ७६ ॥ तुम्हारे मन को परखने के लिए तुमसे मैंने परिहास किया था। रघुवंश में तुम्हारा जन्म सार्थक है। विलम्ब न कर शीघ्र ही वन में चलो जिसे तुम्हारे प्रसाद से हम भी राम को देख लें ॥ ७७ ॥ भरत बोले, मन्त्री जाकर मेरे सभी सेनापतियों को शीघ्र चलने को कहो। हाथी, घोड़े, रथ आदि पहले प्रयाण करें, मेरा रथ सजाकर अविलम्ब ले आओ ॥ ७८ ॥ भरत का आदेश शिरोधार्य कर मन्त्री ने सेना को आगे बढ़ने का निर्देश दिया तथा रथ ले आये। देखकर भरत शत्रुघ्न सहित रथ पर चढ़ गये। नगर-रक्षा की व्यवस्था कर भरत चल पड़े ॥ ७९ ॥ सज्जनवृन्द, राम के अनुपम चरित्र सुनो, राम-राम कहो जिससे संसार निर्मल हो जाये ॥ २३८० ॥

राम को लाने हेतु भरत का प्रस्थान; राम पर संकट की आशंका से गुह का रोकने के लिए उद्योग

राज्यरक्षा की व्यवस्था कर भरत रथ पर चढ़कर चले। उनके पीछे कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी रथ पर चढ़कर चलीं। कुलगुरु वशिष्ठ सहित जितने ब्राह्मण थे अपने अपने रथ पर चढ़कर भरत के आगे-आगे चले ॥ ८१ ॥ क्षत्रिय, वैश्य, सज्जन कायस्थ,

क्षत्री वैश्यगण कायस्थ सज्जन नट भाट तेली तान्ती ।
ठठारि सोणारि कसार सेङ्खारि भरतर लगे यान्ति
बणिया चमार कमार सुतार धोवा आटो कुम्भकार ।
इसब प्रमुख्ये चलिल यतेक आदि अन्त नाहि तार ॥ ८२
मनत उत्सुक नारीगणे बोले स्वामी आटो किबाचाहा ।
चलियो सत्वरे भरतर लगे रामक आनिबे चाहा ॥
विलम्ब नकरा हेरा देउधरा कर्पूर ताम्बुल खाहा ।
रामक देखिबो शोक पाशरिबो सत्वरे गैया आनाहा ॥ ८३
शुनि चलिलन्त नाहि आदि अन्त लरिल पदाति यत ।
पावर प्रहारे पृथिवी कम्पाया चले हस्ती मयमत्त ॥
वेगे वायु जिनि तेजिया हेसनि चलिल यत घोटक ।
आड़म्बर करि खाण्डा वारु धरि असंख्य चले कटक ॥ ८४
बावे ढाक ढोल शबदर रोल येहेन मेघे गर्ज्जय ।
चमक मनत गिरि गह्वरत निर्घात येन परय ॥
एहि मते चलि गैया निरन्तरे पाइल पाचे गङ्गातीर ।
पथ श्रम यत एराइल समस्त पान करि गङ्गानीर ॥ ८५
भरते बोलन्त सम्प्रति रहोक सबे प्रजा एहि थान
सुरनदी जले आमि कौतूहले करोहो अञ्जलि दान ॥
भरतर वाणी निरन्तरे प्रजा शिरोगत करि लैल ।
कटक अपार सवे आपोनार थाने थाने थित भैल ॥ ८६
अनन्तरे शृङ्ग वेर अधिपति देखिलन्त गुहराज ।
मुख्य मुख्य पात्र गणक बोलन्त मिलिल देखो अकाज ॥
दश दिशे पर दले वेढ़िलेक समुद्र येन अपार ।
पक्षी परिवारो नाहिकय थल धूलाये भैल आन्धार ॥ ८७

नट, भाट, तेली, तन्तुवाय, ठठेरे, स्वर्णकार, कासकार, शंखकार आदि भरत के साथ-साथ चले । वणिया, चमार, लुहार, बढई, धोबी, कुम्हार आदि सहित जितने लोग चले उनका अन्त नही था ॥ ८२ ॥ मन मे उत्सुकता भरी हुई नारियाँ कहती थी; स्वामी, और क्या चाहते हो ? भरत के साथ शीघ्र ही राम को लाने चलो । प्रभु विलम्ब न करो । लो, कर्पूर-युक्त ताम्बूल खा लो । राम को देखकर शोक भूल जाये इसके लिए शीघ्र ही जाकर उन्हें लिवा लाओ ॥ ८३ ॥ यह सुनकर सभी पैदल ही चल पड़े, उनका आदि-अन्त नही था । चरण-प्रहार से पृथ्वी को कम्पित कर मदमत्त हाथी चल पड़े । हिंहियाते हुए अपने वेग से वायु को भी पराभूत कर घोड़े चले । बड़े ही आडम्बर से तलवार लिये हुए असंख्य सेना चल पड़ी ॥ ८४ ॥ ढोल नगाड़े बजने लगे । उनकी ध्वनि ऐसी लगती थी मानो मेघ गरज रहा हो । मानों वे कड़कड़ाते हुए निश्चित रूप से गिरि-कन्दराओं में गिरते थे । इसी प्रकार निरन्तर चलते हुए वे सभी गंगा-तट पर पहुँचे । गंगा-जल पीकर सभी का पथ-श्रम मिट गया ॥ ८५ ॥ भरत बोले, प्रजाजन सम्प्रति यही रहे । हम देवनदी गंगा के जल में बड़े ही आग्रह से अंजलि दें । प्रजाजनों ने भरत के वचन शिरोधार्य कर लिये; अपार सेना अपने-अपने स्थान पर स्थित हो गयी ॥ ८६ ॥ इसके पश्चात् शृंगवेर-राज गुह ने उन्हें देखा । तब प्रमुख सामन्तों को बुलाकर उन्होंने कहा, देखो यह तो बड़ा संकट आ पड़ा । समुद्र-जैसे अपार अन्य राज्य की सेना ने हमें दसों

दिशक ब्यापिल अकार्य्य मिलिल मोर अन्तर्गते भय ।
इक्ष्वाकु बंशर सेना निरन्तर नाहिके तात संशय ॥
इटो ध्वज दण्ड पताका देखिया जानिलोहो स्वरूपत ।
आन हेतु नाइ रामक मारिते आसिला साजि भरत ॥ ८८
कैकेयी मावर हाते राघवर करिला राज्य नैराश ।
बापेकर हाते कपटे रामक दियाइलेक बनबास ॥
राज्यभार लैया बनवास दिया तथापितो क्षमा नाइ ।
सबाके हानिया मारिब सेन्थरे एराइया आजि नयाय ॥ ८९
मोर प्रभु राम आछे बनमाजे तेवे मोर महाभाग ।
धिक धिक मोर जीवन निष्फल मोहोर इटो अयोग ॥
हृदयर यत आछे गुल गुलि भरतक सबे सारो ।
हस्ती घोंटा यत पदाति समस्त मुण्डे मुण्डे हानि मारो ॥ २३९०
रामेसे मोहोर निज अधिकारी मइ भृत्य राघवर ।
यत सेना बल चतुरङ्ग दल सजायो मोर सत्वर ॥
इटो परदल सेनार सकले लगाइबोहो हृदिकम्प ।
आति आड़म्बरे गरुड़े सागरे येन करिबोहो जाम्प ॥ ९१
भरते आगत चाहिया देखोक मोहोर बल बिक्रम ।
वीर सैन्य मारि हृदय बिदारि शोणिते करो कर्द्दम ॥
आउर किबा चाव कोटि संख्या नाव सजायो झाण्टे आमार ।
न करिबा दैन्य येन पर सैन्य गङ्गात नुहिके पार ॥ ९२

दिशाओं से घेर लिया है। यहाँ तक कि उस सेना के मारे पक्षी उतरने भर का स्थान भी नहीं रहा है। धूल से सब ओर अंधकार हो रहा है ॥ ८७ ॥ सेना सभी दिशाओं में फैल गयी है। यह तो बड़ा संकट आ पड़ा। मेरे अन्तर में यह भय हो रहा है कि निस्संदेह यह इक्ष्वाकु वंश की सेना है। यह ध्वज-दंड और पताका देखकर निश्चित रूप से समझ रहा हूँ कि राम को मारने हेतु भरत सजकर आये हैं। इसके सिवा अन्य कोई कारण नहीं है ॥ ८८ ॥ अपनी माता कैकेयी को प्रेरित कर राघव को राज्य से वंचित किया और पिता के द्वारा कपट-पूर्वक राम को वनवास में भेजा। राज्यभार लेकर, वनवास देकर भी भरत ने छोड़ा नहीं। हम इन सबको मार डालेंगे, ये आज बचकर यहाँ से जा नहीं सकते ॥ ८९ ॥ मेरे प्रभु राम वन में रह रहे हैं—यह भी मेरे लिए परम सौभाग्य है। यह संकट मेरा भी है। यदि इसे छोड़ दूँ तो मुझे धिक्कार है, मेरा जीवन निष्फल है। हृदय में जितनी वेदनाएँ है सब भरत पर उतारूँगा। हाथी, घोड़े, पैदल जो भी हैं सबको सिरों पर चोट कर मारूँगा ॥ २३९० ॥ रामचन्द्र ही मेरे प्रभु हैं, मैं—राघव का भृत्य हूँ। मेरी जितनी चतुरंगिनी सेना है, सबको शीघ्र सजाओ। इस परायी सेना में मैं हड़कम्प मचा दूँगा। गरुड़ की भाँति मैं इस सेना-सागर मे बड़े आडम्बर से कूद पड़ूँगा ॥ ९१ ॥ भरत भी मेरा बल-विक्रम अपने सम्मुख देखे। वीर-सेना को मारकर, उनका कलेजा फाड़ रक्त से पक ही पंक कर दूँगा। और देख क्या रहे हो, हमारी करोड़ों की संख्या में नावें शीघ्र सजाओ। यह परायी सेना जैसे गंगा के पार न हो सके इस विषय में तनिक भी दुर्बलता न दिखाओ ॥ ९२ ॥ राजा का आदेश सुन उन सबने साष्टांग प्रणाम किया। सेनापतियों ने अनगिनत सेना को सजा

शुनिया अशेष राजार आदेश परि तंते तल पाइल।
सेनापति सबे अशेष सेनाक साजिया आनि मिलाइल॥
हाती घोंरा रथ साजिया बजाइल चण्डाल सेना सकल।
देवताक धारे येन चमत्कारे चले असुरर दल॥ ९३
भैला सेना साज देखि गुहराज हरिष करे मनत।
आति खरतर सेना भरतर देखिल कतो दूरत॥
हाङ्कार करिल सेना झिङ्करिल देव दाम्फि आति करे।
गर्व्वे छाड़े डाक जोकारे खाण्डाक पृथिवी काम्पय भरे॥ ९४
उभय सेनार आरावे अपार लागि गैल धसमसि।
पाया पयोभर खलके सागर पर्व्वतोपरय खसि॥
करय आस्फाल कम्पय पाताल सर्पगण तलवल।
भर सहिवाक नपारि पृथिवी येन यान्त रसातल॥ ९५
शुना रामायण सभासदगण शरण लैयो रामत।
राम गुण नाम गावा अविश्राम तरा सुखे संसारत॥
भकत जनर जाना निजधन रामर चरण दुइ।
मुख भरि भरि बोला राम हरि लागोक पापत जुइ॥ ९६

भरतर लगत गुहर मिलन आरु रामर वृत्तान्त शुनि इङ्गुदि गछरतलत बहि भरतर विलाप

पद

एहिमते पाछे भागीरथी तीर जुरि * उभय सेनार लागि गैल हुड़ाहुड़ि

लाकर उपस्थित किया। हाथी, घोड़े, रथ आदि से सजकर चाण्डाल-सेना उपस्थित हो गयी मानो देवताओं से संग्राम करने हेतु असुरों की सेना अद्भुत रूप से चल रही हो॥ ९३॥ सेना को सज्जित देखकर राजा गुह मन में बड़ा प्रसन्न हुआ। भरत की सेना कुछ दूर है, यह देखकर उसने हुंकार कर आदेश दिया। सेना विजय-निनाद कर बड़ी कूदती हुई आगे बढ़ी। गर्व से तलवारें हिला-हिलाकर चुनौती देने लगी, उनके चरणों से धरती कम्पित होने लगी॥ ९४॥ दोनों सेनाओं के प्रचण्ड नाद से वहाँ भयंकर शोर मच गया। मानो जल से उमड़कर सागर टलमलाने लगा, पर्वत ढहने लगे। उनके आस्फालन से पाताल कम्पित हो गया। सर्पगणों में खलबली मच गयी, भार सहन न कर पाने के कारण मानो पृथ्वी रसातल को जाने लगी॥ ९५॥ हे सभासदगण, रामायण सुनो, राम की शरण लो। अविराम राम-गुण-नाम गान कर सुख-पूर्वक संसार से पार हो जाओ। राम के चरण भक्तजनों के अपने धन हैं। ऐसा समझकर मुख भर-भरकर राम हरि बोलो, जिससे पाप जलकर भस्म हो जायें॥ ९६॥

भरत के साथ गुह का साक्षात्कार और राम का वृत्तान्त सुनकर इंगुदी वृक्ष के तले बैठकर भरत का विलाप

इसी प्रकार गंगा के तट पर दोनों ओर की सेना में घोर हलचल मच गयी।

दुइ गोटा सेनार लागिल पञ्च काण्डि * शरक प्रहारि शालि थोवे मुण्डे गाण्डि ९७
युजिबाक दियो हाक आमार सेनाक * देखि गुहे मन्त्रीक बुलिला पाछे वाक
अबिचारे प्रथमत युद्ध करो येवे * पर्य्यन्ते आमार घाटि मिलिबेक तेबे ९८
प्रथमते भरतक भेटिबाक याओं * भालमते तान चित्त जिज्ञासिया चाओं
शुनि आछो भरतर रामत भकति * रामक निबाक येवे आसिछे सम्प्रति ९९
तेवे युजिबाक योग्य आमार नहय * रामयेन आमार भरतो सेहि नय
रामर चरणे मात्र मोर येन चित * भरतता हय सेवा करिते उचित ।। २४००
एखन उचित ने देखोहो युजिबाक * एहि बुलि आपोन सैनक दिला हाक
तेतिक्षणे अनेक सैनक साजि लैला * भरतक भेटिबाक गुह चलि गैला १
पात्र मन्त्री सेना वेढ़ि चलिल अपार * समस्ते देखिल पाछे गुह आसिबार
आथे बेथे मंत्री भरतक जान दिल * तोमाक भेटिते गुह नृपति आसिल २
रामर परम एहो सखा महाहित * सतकार करिबाक तोमार उचित
देखिलोहो रामे येन आश्वास करिल * आलिङ्गि धरिया आन माथे चुमा दिल ३
जानि आङ्क भालमते करियो सादर * आते हन्ते वार्ता तुमि पाइबाहा रामर
भरते दिलन्त सुमन्त्रक आज्ञाबाणी * आपुनि सत्कार मन्त्री करा आङ्क जानि ४
सुनिया सुमन्त्रे आके बेथे गैला चलि * तुलिलन्त हासि दुयो दुहाङ्को आकुलि
गुह नृपतिक मन्त्री आलिङ्गि धरिल * मधुर वचन बुलि आश्वास करिल ५
भरतर आगत दुइहन्तो गैला चलि * देखि भरतक गुहे करि कृताञ्जलि
बिदूरते देखि दण्डवते परिलन्त * पाछे जानु पारि नम्रभावे रहिलन्त ६

दोनों ओर सेनाएँ युद्ध करने के लिए तैयार हो गयीं। वाणों का प्रहारकर सिर मे चुभो देने लगी ।। ९७ ।। यह देखकर गुह ने मंत्री से कहा—हमारी सेना को लड़ने से रोको । बिना विचारे यदि हम पहले-पहल युद्ध करेगे तो अन्त में हमारी ही हानि होगी ।। ९८ ।। पहले मै भरत से मिल लूँ। पूछकर उनके मन की बाते जान लूँ। सुना है कि राम के प्रति भरत की भक्ति है। यदि वे सम्प्रति राम को ले जाने के लिए आ रहे है, तो उनसे युद्ध करना हमारे लिए उचित नहीं होगा। हमारे लिए राम जैसे हैं, भरत भी वैसे ही हैं। केवल राम के चरणों मे मेरा चित्त जिस प्रकार रहता है, भरत की सेवा भी उसी प्रकार करना उचित है ।। ९९-२४०० ।। इसी से अभी लडना उचित नही देखता, यों कहकर गुह ने अपनी सेना को लड़ने से रोका और अनेक सैनिकों को लेकर भरत से मिलने चल पड़ा ।। १ ।। उसे घेरकर सामन्त मंत्री, अनेक सैनिक चले। भरत के सभी लोगों ने गुह को आते देखा। मंत्री ने शीघ्रता से भरत को सूचना दी, आपसे मिलने के लिए गुह आ रहा है ।। २ ।। यह राम का परम सखा और महाहितैषी है। आपको इसका सत्कार करना चाहिये। राम इससे किस प्रकार मिले हैं यह मैंने देखा है। उन्होंने इसका आलिगन कर सिर चूम लिया था ।। ३ ।। ऐसा समझकर अच्छी तरह से इसका स्वागत करें। इससे आपको राम के सम्वन्ध मे समाचार मिल सकते है। भरत ने सुमंत्र को आज्ञा दी, मंत्रीवर, आप ही इनका उचित सत्कार करें ।। ४ ।। सुनकर सुमंत्र शीघ्रता से चले आये। गुह और सुमंत्र ने हँसकर अधीरता के साथ परस्पर आलिंगन किया। मंत्री ने गुह को वाँहों में भरकर मधुर वचन कहते हुए स्वागत किया ।। ५ ।। दोनों भरत के पास आये। भरत को देखकर गुह ने हाथ जोड़ दूर से ही दण्डवत् प्रणाम किया, फिर विनम्र भाव से घुटने टेके ।। ६ ।। गुह की भक्ति देखकर

गुहर भकति देखि भरत कुमर * प्रिय वाक्ये पूजा करिलन्त बहुतर
सुमन्त्र कहिछे मोत तोर गुण यत * महाशुद्ध भाव तइ रामर भकत ७
रामर वृत्तान्त यत तुमि आछा जानि * कहियो आमात तान कल्याण काहिनी
रामर वृत्तान्त तोत नाहि अविदित * कहियो रामर वार्त्ता हौक थिर चित्त ८
शुनि गुह रजा पाछे बुलिला बचन * केनमते जानिवो तोमार शुद्ध मन
भालमन्द तोमार जानिते मइ चाओं * तेवेसे रामर वार्त्ता तोमात जनाओं ९
केनमते कहिबोहो रामर काहिनी * पर चित्त अन्धकार एकोवे नजानि
भरते शुनिला वाक्य गुह नृपतिर * वज्रर प्रहारे हिया येन भैल छिर २४१०
चाण्डाले गरिहा मोक करिवाक पाइल * कैकेयी मावेसे मोक दुर्यश कराइल
चुइबे भाल नहे सर्ब्ब जातितो अधम * ताहारो रामत भैल भकति उत्तम ११
आमाक गरिहा करे अधम चण्डाल * इलाजत करि मोर मरणेहे भाल
एहिबुलि तेजि बीर दीर्घ निश्वासक * महामनोदुखे पाछे बुलिला गुहक १२
यिबोल बुलिला गुह उचित तोमार * मातृये दियाइल मोक इसब संसार
मइतो जानो रामेसे जीवन मोर प्राण * पितृतो अधिक मोर रामेसे प्रधान १३
तान बनवास दुख मातृर कारणे * ताहाङ्क निवाक प्रति प्रवेशिला वने
रामत कपट चित्त नाहिके आमार * कहिलो स्वरूप कथा आगत तोमार १४
पितृ तुल्य श्रीरामक आनिवाक याओ * मिछा यदि वोलो ब्रह्मवध पाप पाओ
भरतर सत्य शुनि सहरिष मने * गुहराजे सम्बुधि बुलिला तेतिक्षणे १५

कुमार भरत ने प्रिय वचनों से उसकी अभ्यर्थना की। सुमंत्र ने तुम्हारे गुणों के सम्वन्ध मे मुझसे कहा है। तुम महान् पवित्र-भावो वाले राम के भक्त हो ।। ७ ।। तुम राम के जो वृत्तान्त जानते हो, हमें उनकी वे कल्याण-कथाएँ सुनाओ। राम के वृत्तान्त तुमसे अनजाने नही है। वह वार्ता सुनाओ जिससे हमारा चित्त स्थिर हो ।। ८ ।। यह सुनकर राजा गुह ने कहा—तुम्हारा मन शुद्ध है भला यह हम कैसे समझें ? तुम्हारे मन की अच्छाई-बुराई मैं जानना चाहता हूँ। इसके बाद ही राम का वृत्तान्त तुमसे कहूँगा ।। ९ ।। दूसरे का चित्त अंधकार है, कुछ भी समझ नही पाते, अतः उससे राम की कथा किस प्रकार कही जाये ? राजा गुह के वचन सुनकर भरत को लगा कि वज्र के प्रहार से उनका हृदय फट रहा हो ।।२४१० ।। चाण्डाल भी आज मुझे तिरस्कृत कर सका है। माता कैकेयी ने ही मुझे इस प्रकार कलंकित कर डाला है। जिसे छूना भी अच्छा नहीं माना जाता, जो सभी जातियो में अधम है, उसकी भी राम में उत्तम भक्ति है ।। ११ ।। मुझे अधम चाण्डाल भी तिरस्कृत करे, इस लज्जा से तो मेरी मृत्यु ही अच्छी है। यह कहकर वीर ने लम्बी साँस ली और घोर मनोदुःख से गुह से कहा— ।। १२ ।। गुह, तुमने जो कुछ कहा वह उचित ही है। माँ ने मुझे ससार में यह सब दिलवाया है। मै तो जानता हूँ राम ही मेरे जीवन-प्राण है। राम मेरे लिए पिता से भी अधिक बढ़कर प्रधान हैं ।। १३ ।। माता के कारण उन्हें वनवास का दुःख उठाना पड़ा। उन्हें लेने के लिए हम वन में आये है। मेरे चित्त मे राम के प्रति कपट-भाव नही है। तुम्हारे सम्मुख सत्य वात कहता हूँ ।। १४ ।। पिता तुल्य श्रीराम को मैं लाने जा रहा हूँ। यदि मिथ्या कहता होऊँ तो ब्रह्म वध का पाप लगे। भरत की शपथ सुनकर प्रसन्न-मन राजा गुह ने उन्हें सम्वोधित करते हुए कहा— ।। १५ ।। कुमार भरत, राम जैसे श्रेष्ठ भाई में तुम्हारी भक्ति है इससे तुमने स्वर्ग को जीत लिया है। तुम्हारा

स्वर्गक साधिला तुमि भरत कुमार * राम हेन श्रेष्ठभाइत अधति तोमार
साफल जीवन तुमि मुकुति साधिला * तुमिहेन भाइ रामे भाग्ये से लभिला १६
दशरथ सुत तुमि राघवर भाइ * मोरघर जाना येन आपोनार ठाइ
रातिगोट थाकियो अर्च्चना किछु करो * सकले सेनाक एक साञ्ज भात धरो १७
हेन शुनि बुलिलन्त भरत कुमार * किनो अद्भुत देखो शकति तोमार
धन्य तोर जीवन साफल तोर सास * एकेत सैन्यक आल धरिबाक चास १८
प्रशंसि भरते हरिषक बर पाइल * मनुष्य पठाइया सब सम्भार अनाइल
भक्ष्य भोज्य मत्स्य मांस बहु फल मूल * थाने थाने थोवाइल पर्ब्बत येन थूल १९
भरते ससैन्ये आहार करिल * दुयो भाइ किछु शोक दुख पाशरिल
पर्ब्बत समान शोके पुनुहो जान्तिल * गुह नृपतिक पाछे सम्बुधि मातिल २४२०
मोहोर ददार शोक नुहि उपशाम * कोथा गैया देखिबो लक्ष्मण-सीताराम
तिनिक सुमरि आमि निद्राक नयाओ * इङ्गुदि वृक्षर मूले तृणशय्या चाओ २१
श्रीरामर सन्तापे दगध भैला चित * मन उतपात करे त्वरिते देखित
आगत कुमर दुइ गुह भैल पाछ * देखाइला दुइहाङ्को निया इङ्गुदिर गाछ २२
देखा हेरा श्रीरामर तृणशय्या खान * प्रहर धरिलो मइ रात्रिगोट मान
दुइ भाइ प्रभातते निर्म्मलन्त जट * सुमन्त्रर मोर देखि मिलिल सङ्कट २३
सुमन्त्र सहिते एथा एरिलन्त रथ * तिनि जने भूमि पाबे धरिलन्त पथ
गङ्गा पार हुआ भैला बनत प्रबेश * सुमन्त्र सहिते परि कान्दिलो अशेष २४
भरते रामर सिटो तृणशय्या चाइ * शत्रुघने समे कान्दिलन्त दुयो भाइ

जीवन सफल है, तुमने मुक्ति की साधना कर डाली। राम ने तुम जैसा भाई सौभाग्य से ही पाया है।। १६ ।। तुम दशरथ के पुत्र, राम के भाई हो। मेरे घर को अपना ही समझो। आज रात यहीं रह जाओ जिससे मैं कुछ सेवा कर सकूँ, सारी सेना को एक साँझ खिला-पिला सकूँ।। १७ ।। यह सुनकर कुमार भरत ने कहा—तुम्हारी कैसी अद्भुत शक्ति देख रहा हूँ। तुम्हारा जीवन धन्य है; तुम्हारा साहस सफल है जिससे कि इतनी सेना को खिला-पिलाकर परिचर्या करना चाहते हो ।। १८ ।। भरत गुह की प्रशंसा कर बड़े हर्षित हुए। लोगों को भिजवाकर सारी सामग्रियाँ मँगवा लीं। प्रचुर भक्ष्य, भोज्य, मत्स्य-माँस, फल-मूल आदि स्थान-स्थान पर पर्वतों की भाँति ढेरी लगवाकर रखवा दीं।। १९ ।। तत्पश्चात् भरत ने सेना सहित भोजन किया। दोनों भाइयों का दुःख-शोक इससे कुछ घटा। परन्तु पर्वत-जैसे शोक ने उन्हें पुनः दबा लिया। उन्होंने तब राजा गुह को बुलवाया।। २४२० ।। भैया का शोक घट नहीं रहा है। मैं कहाँ जाकर राम, सीता, लक्ष्मण को देख पाऊँगा ? उन तीनों का स्मरणकर हम सोयेंगे नहीं। यहीं इंगुदी वृक्ष के नीचे तृण-शय्या चाहते हैं।। २१ ।। राम के संताप से हृदय दग्ध हो रहा है। उनके दर्शन हेतु मन उतावला हो रहा है। आगे-आगे दोनों कुमार और पीछे-पीछे गुह चला और दोनों को वह इंगुदी का पेड़ दिखाया।। २२ ।। वह तृण-शय्या देखो, यहाँ मैंने रात भर पहरा दी थी। दोनों भाइयों ने प्रातः जटा बनाया था। मै और सुमंत्र देखकर बड़े सकट मे पड़ गये थे।। २३ ।। सुमन्त्र सहित रथ को यहीं छोड़कर तीनों पैदल ही वन के मार्ग पर चल पड़े थे। गंगा पार कर उन्होंने वन में प्रवेश किया। मै सुमंत्र सहित यहाँ पड़ा-पड़ा अशेष रोता रहा।। २४ ।। राम की वह तृण-शय्या देखकर भरत, शत्रुघ्न, दोनों भाई रोने लगे। महान् वेदना से मानो दोनों के प्राण निकलने लगे। 'हा राम' कहते हुए पृथ्वी पर

महा मर्म्मे दुइरो येन प्राण याइ फुटि * हा राम बुलि कान्दे पृथिवीत लुटि २५
इसव अवस्था देखि केने जीओ प्राणे * तोमार निकार मइ पापीर निदाने
आशेष कान्दन्त दुयो आर्त्तनाद करि * गुहराज सुमन्त्र कादन्त दुइको धरि २६
हा राम बुलिया कान्दन्त चारिजन * चमकि उठिल शुनि कौशल्यार मन
शत्रुघन भरतर शुनिलन्त मात * राम राम बुलि कान्दे शुनिला साक्षात २७
बुलिला वचन पाछे सुमित्राक चाइ * राम अवार्त्ता जानो पाइले दुयो भाइ
राम बुलि अन्यथा कान्दिवे कि कारणे * राम सीता लक्ष्मणर किवा भैला वने २८
सुमित्रा सहिते एहि बुलि राम मावे * मिलिला तहिते गैया वियाकुल भावे
शत्रुघन भरत कान्दन्त परि दुइ * कौशल्यार गावत लागिल येन जुइ २९
कौशल्या सुमित्रा धरि दुहान्तर गले * दीर्घरावे कान्दिलन्त हाकले विकले
वत्सक न पायो येन धेनु हाम लावे * कुरुइ विलाप येन करे आर्त्त रावे २४३०
ऐ वाप शत्रुघन कहियो भरत * रामर अवार्त्ता किवा शुनिलि वनत
जानिलो तातेसे दुयो कान्द आर्त्तनादे * प्राण फुटि चाय मोर रामर विषादे ३१
सत्वरे कहियो किवा भैल अयन्तर * किवा मन्द वार्त्ता वापु पाइलिहि रामर
हा राम लक्ष्मण जानकी मोर आइ * तोमासार वने किवा मिलिल विलाइ ३२
किसक न माता मोक ऐ वाप भरत * कहियोक निष्ठ करि मोहोर शपत
एहि बुलि मूर्च्छा गैला श्रीरामर मावे * देखि आनो नारी सबे कान्दे दीर्घरावे ३३

लोट-लोटकर रोने लगे ॥ २५ ॥ वे कहने लगे—यह सव अवस्था देख भला हम कैसे जीवित रहेंगे ? हे राम मुझ पापी के कारण ही तुम्हे यह सजा भोगनी पड़ रही है। दोनों आर्त्तनाद करते हुए अपार रुदन करने लगे। राजा गुह और सुमंत्र भी दोनों को पकड़कर रोने लगे ॥ २६ ॥ 'हा राम' कहकर चारो रोने लगे। यह ध्वनि सुनकर कौशल्या का हृदय चौंक उठा। उन्होंने भरत और शत्रुघ्न की वोली सुनी। उन्होंने स्पष्टतः सुना कि वे राम-राम कहकर रो रहे हैं ॥ २७ ॥ तव उन्होंने सुमित्रा को देखकर कहा—संभवतः दोनों भाइयों को राम का कुछ दुःसंवाद मिला है। नही तो भला वे 'राम, राम' कहकर किस लिए रोते ? संभवतः राम, सीता और लक्ष्मण का वन में कुछ हो गया है ॥ २८ ॥ यह कहकर कौशल्या व्याकुल हो सुमित्रा सहित वहाँ जा पहुँची। भरत-शत्रुघ्न दोनों धरती पर पड़कर रो रहे थे, देखकर कौशल्या के शरीर में मानो आग लग गयी ॥ २९ ॥ कौशल्या और सुमित्रा दोनों एक दूसरे का गला पकड़कर हाहाकार करती हुई वैसे ही जोर-जोर से रोने लगीं, जैसे वछड़े को न पाकर गाय डकारती है, कुरही जैसे आर्त्तस्वर से विलाप करती है ॥ २४३० ॥ वेटे भरत, शत्रुघ्न कहो, तुम लोगों ने क्या राम का कोई वुरा समाचार सुना है ? हमने समझा कि इसी कारण दोनों आर्त्तनाद कर रो रहे हो। राम के शोक से मेरे प्राण निकले जा रहे हैं ॥ ३१ ॥ शीघ्र वताओ, कौन-सी अनहोनी हो गयी है। वेटा, राम का कौन सा वुरा समाचार मिला है ? हा राम लक्ष्मण, हा माँ सीता, वन में तुम पर कौन-सा संकट आ पड़ा ? ॥ ३२ ॥ वेटा भरत, तुम वोलते क्यों नहीं ? मेरी सौगंध है, सच-सच वताओ। यह कहकर राम की माता कौशल्या मूर्छित हो गयी। देखकर अन्य नारियाँ भी जोर-जोर से रोने लगीं। ॥ ३३ ॥ 'हा राम' कहकर रुलाई की ध्वनि प्रचण्ड रूप से फैल गयी, जो दसो दिशाओं में व्याप्त होकर स्वर्गलोक को पार गयी। तत्पश्चात् भरत, शत्रुघ्न दोनों भाइयों ने देखा कि दोनों माताएँ मूर्छित हो गयीं हैं। व्यस्त होकर दोनों ने दोनों को पकड़कर

हा राम क्रन्दनर उथलिल रोल * दशो दिश बियापि लङ्घिल स्वर्गकोल
अनन्तरे शत्रुघन भरत दुइ भाइ * देखिलन्त मूर्च्छा गैया आछे दुयो आइ ३४
आथे वेथे दुइको दुइ धरि तुलिलन्त * सुस्थ हुआ दुयो आइ प्रबोध बोलन्त
रामर आवर्त्ता भाव आन किछु नाइ * कान्दिलोहो आमि तान तृणशय्या चाइ ३५
इङ्गुदि वृक्षर तले तृणर शय्यात * सीता समे रामे शुति आछिला एथात
इहाक देखिया कान्दो किछु नाहि आन * हस्ती घोड़ा रथे याक धरय योगान ३६
दुग्ध फेन सम शुक्ल कोमल शय्यात * इन्द्रसम सुखे शुति थाकन्त साक्षात
कुसुम चन्दन गन्धे भूषित करिया * पद्मिनी सेवय करे चामर धरिया ३७
हेनर प्रभुर तृणशय्या तरु तले * इहाक देखिया मोर गावे जुइ ज्वले
नाना वाद्य नृत्य गीते जगावे याहाक * वनर चाटके आवे चियावे ताहाक ३८
ध्वज दण्ड छत्र आदि याहार योगान * नानाविध तरु भैल ध्वज दण्ड तान
सदाइ भुञ्जन्त यिटो दिव्य पञ्चामृत * आबे वन फल शाक मांस भुञ्जा नित ३९
दिव्य वस्त्र अलङ्कार यार परिधान * वृक्ष चर्म्म जटाये भूषण भैल तान
भाल भाल मनुष्येसे याहार प्रहरी * एबे बन जन्तुसे प्रहर थाके धरि २४४०
हस्ती घोड़ा रथे यार पयान स्वभावे * हेन रामे किमते हन्थन्त भूमि पावे
पद्म कोष सम यार सुकोमल भरि * शिल खोला कण्टक सहय केन करि ४१
राज्यभोग अलङ्कार मयो परिहरो * बन फल भुञ्जोहो शिरत जटा धरो
तृणशय्या करोहो पिन्धोहो वृक्षचर्म्म * रामर सेवक मइ धरो तान धर्म ४२

उठाया। दोनों माताओं के स्वस्थ होने पर भरत ने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा—माता, रामचन्द्र का कोई भी अशुभ समाचार नहीं है। हम उनकी यह तृण-शय्या देखकर ही रो पड़े थे ॥ ३४-३५ ॥ इस इंगुदी वृक्ष के नीचे तृण-शय्या पर सीता सहित राम यहीं सोये हुए थे। इसी को देखकर हम रो रहे थे और कोई बात नहीं है। हाथी, घोड़ा, रथ जिनके लिए सदा तैयार रहते हैं, ॥ ३६ ॥ दुग्ध-फेन से श्वेत कोमल शय्या पर जो साक्षात् इन्द्र की भाँति सोये रहते, कुसुम-चन्दन-गन्ध द्रव्यों से भूषित कर चामर धारिणी पद्मिनी जिनकी सेवा किया करती, ॥ ३७ ॥ ऐसे प्रभु की शय्या इस वृक्ष के नीचे! यह देखकर मेरे शरीर में अग्नि जल रही है। जिन्हें नाना वाद्य, नृत्य-गीत आदि से जगाया जाता था, अब वन के पक्षी उनका यशोगान करते हैं ॥ ३८ ॥ जिनके लिए ध्वज दंड, छत्र आदि तैयार रहते थे; उनके लिए अब नाना प्रकार के वृक्ष ही ध्वज-दंड बने है। जो सदैव दिव्य पंचामृत का भोग लगाया करते थे, अब वे वन के फल, साग माँस ही नित्य खा रहे हैं ॥ ३९ ॥ दिव्य वस्त्र-आभूषण जिनके पहनावे थे, वृक्ष की छाल और जटा ही अब उनका आभूषण बना है। अच्छे-अच्छे मनुष्य ही जिनके प्रहरी थे, अब वन के जन्तु ही उनका पहरा दिया करते है ॥ २४४० ॥ जो स्वभावतः हाथी, घोड़े, रथ पर यात्रा किया करते, ऐसे रामचन्द्र भला भूमि पर पैदल कैसे चलते होंगे? जिनके चरण कमल-कोष के समान सुकोमल है, वे भला कंकड़, ठिकरे, काँटे आदि को किस प्रकार सहन कर सकते होंगे ॥ ४१ ॥ मैं भी अब राज्य-भोग, आभूषण आदि तज रहा हूँ। मैं भी वन के फल खाऊँगा और सिर पर जटा धारण करूँगा, तृण-शय्या पर सोऊँगा, वृक्ष की छाल पहनूँगा। मैं राम का सेवक हूँ, उन्हीं के धर्म को धारण करूँगा ॥ ४२ ॥ इसी प्रकार अनेक प्रतिज्ञाएँ कर भरत ने तापस का वेश धारण किया। अपने पर वीर भरत ने राघव का वेश देखकर सोचा—प्रभु, रामचन्द्र को

एहिमते अङ्गीकार करिलन्त यत * तापसर चिहून यत धरिला भरत
आपोनाते देखि वीरे राघवर बेश * मोर प्रभु राघवर हेन भैला क्लेश ४३
राघवर दुखक सुमरि पोरे मन * मातृक शुनाया वीरे बुलिला बचन
हाँ माव कैकेयी करिलि तइ किस * पूर्ण अमृतर घटे ढालि लिहि विष ४४
रामर निकार तइ पापिनीर काजे * राज्य एरि रामचन्द्र आछे बनमाजे
स्वामीक मराइलि मोक कराइलि दुर्यश * आचरि रामर द्रोह एखनो जीवस ४५
गले काठ चिपि तोक मारिवाक पारो * मातृबध लागिबे इहाते मइ हारो
किनो निदारुणी तोर रामत कपट * नुहिके रजार जीव जनिलेक नट ४६
भरतर वाणी शुनि जननी रामर * किछु सुस्थ भैला शोक गुचिल चित्तर
गुहक भरते पाछे बुलिला वचन * श्रीराम ददाक केने पाओ दरशन ४७
चरणत धरिया राज्यक लागि निवो * पितृर पाटत ताङ्क नृपति पातिबो
अयोध्यार लोक तान सेविब चरण * पालन्तोक रामे राज्य मइ खाटो बन ४८
शुन गुहराज तइ निज गृहे चल * आमार शोकत तयो होवस बिकल

भरतादि नै पार हय

गुह नृपतिक येवे गृहक पठाइल * शत्रुघन समे सोके निद्राक न पाइल ४९
युगर समान तान रजनी पोहाइल * भरते मातिया शत्रुघनक जगाइल
प्रभात समय भैल कुलि तेजे राव * गुहक बुलियो झाण्टे आनियोक नाव २४५०

भी इसी प्रकार का कष्ट हुआ होगा ॥ ४३ ॥ राघव के दुःखों को स्मरण कर भरत का अन्तर जलने लगा। वे वीर माँ को सुनाकर कहने लगे—हा माता कैकेयी, तूने यह क्या किया? अमृतपूर्ण घड़े में विष डाल दिया ॥ ४४ ॥ तुझ पापिनी के कर्मों से रामचन्द्र को दण्ड मिल रहा है। उन्हें राज्य छोड़कर वन में रहना पड़ रहा है। तूने पति को मार डाला; मुझे कलंकित किया। राम से द्रोह का आचरण कर तू अब तक जीवित है? ॥ ४५ ॥ लकडी से गला दबाकर तुझे मैं मार डाल सकता हूँ। पर मातृ-वध का पाप लगेगा इसी से मैं हारा हूँ। अरी निष्ठुर, राम से तेरा यह कपट क्यो हुआ? तू राजकन्या नही, किसी नट ने तुझे जन्म दिया है ॥ ४६ ॥ भरत की वाणी सुनकर राम की माता कौशल्या कुछ स्वस्थ हुई, चित्त का शोक कुछ मिटा। भरत ने गुह से पूछा—भैया श्रीराम के दर्शन कैसे पा सकूँगा? ॥ ४७ ॥ उनके चरण पकड़कर राज्य में लौटा ले जाऊँगा। पिताजी के सिंहासन पर बैठाकर उन्हें राजा बनाऊँगा। अयोध्या के लोग उनकी चरण-सेवा करेंगे, राम राज्य का पालन करें, मैं वनवास में रहूँगा ॥ ४८ ॥ राजा गुह, सुनो, तुम अपने भवन में जाओ। हमारे शोक से तुम भी विकल हो रहे हो।

भरत आदि का (गंगा) नदी पार करना

जब भरत ने राजा गुह को घर भेज दिया, तत्पश्चात् शोक के कारण शत्रुघ्न समेत उन्हें निद्रा नही आयी ॥ ४९ ॥ उनकी रात युग की भाँति बीती। प्रभात होने पर भरत ने शत्रुघ्न को उठाकर कहा—प्रभात हो गया, कोयल बोल रही है, जाकर गुह से कहो, वह शीघ्रता से नाव ले आवे ॥ २४५० ॥ इसके बाद भरत ने उठकर मुख धोया। कौशल्या-सुमित्रा आदि सभी जग उठीं। शत्रुघ्न

भरते उठिया पाछे मुखे दिला जल * कौशल्या सुमित्रा आदि जागिला सकल
शत्रुघने बोले किय जगोवाहा मोके * जगाया आछय मोके बाप-भाइर शोके ५१
गुहक आनिते प्रति दूतक पठाइल * दूत नतो यान्ते गुह आपुनि आइल
गुहे बोले उठियोक भरत कुमर * भरते बोलन्त भृत्य तइसे रामर ५२
अब्याहते सैन्य मोर कराइयोक पार * त्वरिते अनायो बाप यतेक नावार
हेन शुनि गुह राजा नाथाकिल रहि * आपोनार कटकक शीघ्रे गैला बहि ५३
भरतर आज्ञा निया शिरत चड़ाइल * तेतिक्षणे पञ्चशत नावारा अनाइल
निरन्तरे मावारा गङ्गात केलि करे * कतो कतो नावत सहस्र लोक धरे ५४
पञ्चदश शत लोक काहातो धरय * काहातो षोड़श शत कातो सतरय
गैला लरि रङ्गे बर अश्व गज दले * दिन गोटे पार भैल कटक सकले ५५
पञ्चिशे तिरिशे चल्लिशे से हाति चड़े * तथापितो नाव सब खानिको नलरे
पर्ब्वत समान नाव सब वाहि याय * छापे छापे नाव येन पवन उड़ाय ५६
हस्ती घोड़ा रथपति कटक अपार * गुहर किङ्कर सबे करिलेक पार
कतो दृष्टि कतो भुरे कतो लोक भेले * कतो कतो सान्तरिया पार होवे हेले ५७
गुहराजा योर हाते साकुत स्वभाव * भरतर आगे गैया योगाइलेक नाव
रजतर पतादिल सुवर्णर छाल * जमके जमके ज्वले रतन पवाल ५८
वशिष्ठ प्रमुख करि यत द्विजगण * राज भार्य्या यतेक भरत शत्रुघन
सेहि नावे भैला गुह आपनि काण्डार * अब्याहते गङ्गार भैलन्त सबे पार ५९
पार हैया भरथे गुहत शोधे काज * कोन पथे चलिबो देखिते भरद्वाज

बोले—मुझे जगा क्यों रहे हो, मुझे तो पिता और भाई के शोक ने जगाये रखा है ।। ५१ ।। गुह को बुलाने के लिए दूत भेजा पर दूत के जाने के पहले ही गुह स्वयं आ पहुँचा । गुह वोला—कुमार भरत उठिये । भरत ने कहा—तुम्ही राम के सेवक हो ।। ५२ ।। हमारी सेना को निर्विघ्न रूप से पार उतार दो । शीघ्र ही माझियों को बुलवाओ । यह सुन राजा गुह विना रुके जाकर अपनी सेना को शीघ्र ही बुला लाया ।। ५३ ।। भरत की आज्ञा शिरोधार्य कर उसने तत्क्षण पाँच सौ मंत्रियों को बुलवाया । ये माझी निरन्तर गंगा में केलि करते रहते थे, किसी-किसी नाव में हजार आदमी आ सकते थे, ।। ५४ ।। किसी में पन्द्रह सौ, किसी में सोलह सौ तो किसी में सत्रह सौ तक मनुष्य सवार हो सकते थे । घोड़े, हाथी सभी वड़े आनन्द से आगे बढे । दिन भर मे सारी सेना पार उतर गयी ।। ५५ ।। एक-एक नाव मे पचीस, तीस, चालीस तक हाथी संवार हो जाते थे पर नावें जरा भी नहीं हिलती थी । पर्वत जैसी नावों को माझी खेते जा रहे थे, तिरती हुई चित्रित नावें मानो हवा में उड़ती जा रही थी ।। ५६ ।। हाथियों, घोड़ों, रथों से परिपूर्ण उस अपार सेना को गुह के सेवकों ने पार किया । कहीं-कही लोग पैदल ही नदी पार कर रहे थे, कही बेड़े पर तो कही-कही तैरकर लोग अनायास नदी पार हो रहे थे ।। ५७ ।। सहानुभूतिपूर्ण स्वभाववाला राज गुह हाथ जोड़कर भरत के पास स्वयं नाव ले आया । उस नाव पर स्वर्णमंडित चाँदी का आसन लगा दिया, भाँति-भाँति के मणि-रत्न उसमें जगमगा रहे थे ।। ५८ ।। वशिष्ठ आदि द्विजगण, सभी रानियाँ, भरत-शत्रुघ्न उस नाव पर सवार हुए । गुह स्वयं नाव का कर्णधार बना । सब लोग निर्विघ्न रूप से गंगा पार हो गये ।। ५९ ।। गंगा पार होने के पश्चात् भरत ने गुह से पूछा—भरद्वाज मुनि के दर्शन हेतु किस मार्ग से जाना है ? निषादराज ने मार्ग दिखलाया, भरत ने सेना

निषाद नृपति पथ करिला उद्देश * ससैन्ये भरत भैला वनत प्रवेश २४६०
नदी नद दुर्ग वन बहुत एराइल * प्रहर देड़के गैया प्रयागक पाइल
महाक्षेत्र थान सिटो मुकुति दुवार * सेना समन्विते सेइ थाने पपसार ६१
शङ्करक प्रणामि आसन धरिलन्त * मातृगण समे प्रदक्षिण करिलन्त
निरन्तरे प्रजाक थैलन्त सेइ ठाव * मन्त्रीगण सहिते आवर यत माव ६२
कुलगुरु वशिष्ठक आगत लैलन्त * भरद्वाज थाने गैया प्रवेश भैलन्त
वशिष्ठक देखि ऋषि चालिलन्त गाव * चमकिया आसनर नमाइलन्त पाव ६३
भरतक देखि भैला मनत उल्लास * वशिष्ठ सहिते भैल तत्तुल्य सम्भास
मावे भाइ भरते ओ प्रदक्षिण करि * करिलन्त नमस्कार ऋषिक सादरि ६४
कृताञ्जलि धरि पाछे आगे भैला थिव * ऋषिये बोलन्त सबे हैयो चिरञ्जीव
यथायोग्य भरद्वाजे सबाको अर्चिचल * बसिवाक लागिया आसन अनाइ दिल ६५
सादर करिला येवे ऋषि भरद्वाजे * सवहि वसिला मुनिगणर समाजे

भरद्वाज आरु भरतर कथा वतरा आरु भरद्वाज मुनिर अतिथि-सत्कार

हासिया बुलिला पाछे महाऋषि राज * भरत तोमार भाल ने देखोहो काज ६६
परम धार्मिक राम तापसर वेश * बापर आज्ञात भैला वनत प्रवेश
चतुरङ्ग दले साजि मारिवाक याहा * अकण्टके सवराज्य भुञ्जिवाक चाहा ६७
भरते बोलन्त मोक दैवे से नाशिल * तोमार मुखत हेन वचन आसिल
पितृसम ज्येष्ठ भाइ आनिबाक याओ * मिछा येवे बोलो ब्रह्मवध पाप पाओ ६८

सहित वन मे प्रवेश किया ।। २४६० ।। अनेकों नद-नदियों, किले-वन आदि को पार करते हुए डेढ़ प्रहर में वे प्रयाग पहुँच गये। वह स्थान महातीर्थ क्षेत्र है, मुक्ति का द्वार है, सेना सहित उसी स्थान में प्रवेश किया ।। ६१ ।। शिव को प्रणामकर उन्होंने आसन लगाया, माताओ के साथ प्रदक्षिणा की। तत्पश्चात् मन्त्रियों, माताओं सहित प्रजा को वही ठहराकर कुलगुरु वशिष्ठ को आगे-आगे ले भरत ने भरद्वाज के आश्रम मे प्रवेश किया।। ६२ ।। वशिष्ठ को देखकर ऋषि उठ पडे, विस्मित होकर आसन से पैर उतार लिये ।। ६३ ।। भरत को देखकर वे मन में बहुत ही उल्लसित हुए। वशिष्ठ के साथ उन्होंने उनके अनुरूप ही सम्भाषण किया। माताओं और भाई शत्रुघ्न सहित भरत ने भी ऋषि की सादर प्रदक्षिणा कर उन्हे नमस्कार किया ।। ६४ ।। सभी हाथ जोड़कर ऋषि के सम्मुख खड़े हो गये। ऋषि बोले—सभी चिरंजीव बनो। भरद्वाज ने सबकी यथायोग्य अर्चना की। बैठने को आसन मंगवा दिया ।। ६५ ।। ऋषि भरद्वाज के स्वागत करने पर सब लोग मुनियों के समान बैठ गये।

भरद्वाज और भरत की बातचीत और भरद्वाज मुनि द्वारा अतिथि सत्कार

इसके पश्चात् महर्षि ने हँसकर कहा—भरत, तुम्हारा कार्य मुझे अच्छा दिखाई नहीं देता ।। ६६ ।। परम धर्मात्मा रामचन्द्र तपस्वी का वेश धारणकर पिता की आज्ञा से वन में आये है। तुम चतुरंगिनी सेना सजाकर उन्हें मारने जा रहे हो। समूचा राज्य निष्कंटक भोगना चाहते हो ? ।। ६७ ।। भरत बोले—मुझे दैव ने ही विनष्ट किया है। तभी तो आपके मुख में ऐसी बात आ सकी। पिता जैसे बड़े भाई को मैं लौटा लाने जा रहा हूँ। यदि मिथ्या कहता होऊँ तो ब्रह्म वध का

मावर कारणे बर अख्यातिक पाइलो * सिकारणे रामक निबाक प्रति आइलो
रामक स्मरिते तान लोतक बझाइल * देखि ऋषि राजे पाछे प्रत्ययक पाइल ६९
ऋषिये बोलन्त दशरथर कुमार * भाले जानिलोहो चित्त उत्तम तोमार
तोमाक करिलो आमि परिहास लीला * सूर्य्यर बंशत तुमि साफल जन्मिला २४७०
अनुग्रह करियोक बोलोहो तोमाते * राम सेना सादरिबो चलिबा प्रभाते
भरते बोलन्त तयु बाक्यत शरण * निशा गोट थाको देखि तोमार चरण ७१
देव विश्वकर्म्माक बुलिला मुनिबर * भरतक लागि भाल निर्म्मियो नगर
ऋषिर बचन विश्वकर्म्मे शिरे धरि * दण्ड दुइट भितरत निर्म्मिला नगरी ७२
पताका सञ्चरे येन विजुली छटक * दश प्रहरर पथ जुरिल कटक
उत्तम धवलियर राजार ओवारि * हाती घोरा शाल निर्म्मिलन्त शारी शारी ७३
दीघी सब थैलन्त निर्म्मिल जले भरि * मत्स्य मांस द्रव्य थैला परिपूर्ण करि
भरद्वाजे आदेश करिला तेतिक्षण * देवलोक छारि आइल अपेस्वरागण ७४
घृताची मेनका गौरी रम्भा तिलोत्तमा * अनम्बुषा उर्ब्बशी कनका रतिहेमा
महेन्द्रर लगरी अपेस्वरागण * भरतर ठावत भैलन्त उपसन ७५
पद्मर भितर येन शरीरर कान्ति * बदन कमल सुवलित दन्त पान्ति
उन्नत कठिन घन पीन स्तन-भार * उपरत हार जिक मिक करे तार ७६
याक येन रुचय भुञ्जिल अन्नपान * पुष्प गन्ध चन्दन करिला परिधान
कुबेरे पठाइया दिला आठ कोटि नारी * अपेस्वरागण संख्या करिते न पारि ७७

पाप लगे ॥ ६८ ॥ माँ के कारण ही मुझे बड़ा अपयश मिला। इसी कारण मैं रामचन्द्र को लिवा ले जाने आया हूँ। राम का स्मरण करते ही भरत की आँखों से आँसू निकलने लगे, यह देख ऋषि को उनकी बात पर विश्वास हो गया ॥ ६९ ॥ ऋषि ने कहा—दशरथ के पुत्र भरत, मैं अच्छी तरह समझ गया हूँ कि तुम्हारा हृदय पवित्र है। तुमसे हमने परिहास की लीला की थी। सूर्यवंश में तुम्हारा जन्म सफल है ॥ २४७० ॥ तुमसे कह रहा हूँ, अनुग्रह कर आज रह जाओ, राम की सेना का मै स्वागत करूँगा। तुम कल प्रभात को जाना। भरत बोले—प्रभु आपके वचन की शरण ले रहा हूँ। आपके चरणों के दर्शन करता हुआ आज की रात रह जाऊँगा ॥ ७१ ॥ तब मुनिवर ने विश्वकर्मा को बुलाकर कहा—भरत के लिए उत्तम नगर का निर्माण करो। विश्वकर्मा ने ऋषि का वचन शिरोधार्य कर दो दण्ड में ही नगर-निर्माण कर दिया ॥ ७२ ॥ पताकाएँ बिजली की भाँति चमक रही थी। सेना ने दस पहर का मार्ग घेर लिया। राजभवन उत्तम श्वेत वर्ण था। हस्तीशाला, अश्वशाला आदि कतारों में निर्माण कर दिया ॥ ७३ ॥ सभी सरोवरों में निर्मल जल भर दिया। मत्स्य, माँस, विविध द्रव्यादि वहाँ पूर्णरूप से रख दिया। भरद्वाज ने उसी क्षण आदेश किया, तब अप्सराएँ देवलोक छोड़कर आ गयी ॥ ७४ ॥ घृताची, मेनका, गौरी, रम्भा, तिलोत्तमा, अनम्बुपा, उर्वसी, कनका, रति, हेमा आदि इन्द्र की सगिनी अप्सराएँ भरत के यहाँ उपस्थित हो गयी ॥ ७५ ॥ जिनकी शरीर-कान्ति कमल-कोरक की भाँति थी, मुख-मँडल कमल जैसा, दंत-पंक्ति सुन्दर रूप से सजी हुई। कुच युगल, उन्नत घने स्थूल थे, जिसके ऊपर हार जगमगा रहे थे ॥ ७६ ॥ सबने अपनी-अपनी रुचि के अनुसार अन्न-पान खाया-पिया, पुष्प, गंध, चन्दनादि पहना। कुवेर ने आठ करोड़ नारियाँ भेज दी। अप्सराओं की संख्या तो गिनी ही नही जा सकती थी ॥ ७७ ॥ ऐसी देव-सुन्दरियाँ जो कटाक्ष से देवों का मन हरण कर लेती थीं वे मनुष्यों के साथ आ गयी थी। सभी ने

महामुनि सवरो कटाक्षे मन हरे * हेन देव-सुन्दरी मानुषे अनुसरे
अपेस्वरा नारी समे क्रीड़िला आमोदे * निशागोट वञ्चिलन्त विविध बिनोदे ७८
सकल प्रजाये बोले पलाइलेक दुख * रामर कल्याण भरतर हौक सुख
एरिलोहो छाड़ नारी पुत्र परिवार * ऋषिर कटाक्षे एहि भोग हौक सार ७९
भरते प्रभात जानि चालिलन्त गाव * करिलन्त प्रणाम ऋषिर दुइ पाव
भरद्वाजे बोलन्त भरत सदभाव * परिचय करायो काहार कोन माव २४८०
शुनिया भरते करि ऋषिक प्रणति * यार यिटो माव चिनावन्त प्रति प्रति
दशरथ राजार प्रथम पटेश्वरी * नम्र भावे आछा यिटो कृताञ्जलि धरि ८१
त्रैलोक्यतो याक गुणे नाहि पटन्तर * दुखर भाजनी एन्ते मातृ श्रीरामर
तोमार चरण चाहि तान राम भिता * शत्रुघ्न लक्ष्मणर मातृ शोभनिता ८२
तान पाशे हातयोरे तोमात भकति * तप्त सुवर्णर वर्ण निकारुण मति
कलहत प्रिया एहो प्रचण्ड प्रभाव * कैकेयी नामत आमि चण्डालर माव ८३
रामहेन भातृक दिलेक वनवास * इहाने कारणे भैल वापर विनाश
जन्मान्तरे कतेक पातक मइ कैलो * सिकारणे आन गर्भे उतपति भैलो ८४
भरद्वाजे बोलय इहान नहि दोष * दैव कार्य्य हैव तुमि एरा असन्तोष
ऋषिर चरणे धूलि शिरत करिल * मुनि उपदेशे नदी यमुना तरिल ८५
कटक-सागरे जुरिलेक सवे वन * भरते बुलिला शत्रुघनक वचन
चित्रकूट गिरि देखि नदी मन्दाकिनी * इथावते आछे राम लखाइ सीता तिनि ८६
भरतर कथा आवे एहि माने थओ * रामर चरित्र किछु संक्षेपिया कओ

अप्सराओं के साथ आमोद पूर्ण क्रीड़ाएँ करते हुए, विविध विनोदों में रात बिता दी ।। ७८ ।। सारी प्रजा कहने लगी, हमारे दुःख मिट गए। राम का कल्याण हो, भरत को सुख मिले। हमने निस्सार नारी, पुत्र-परिवार तज दिया, ऋषि के कृपा कटाक्ष से यही भोग सार हो ।। ७९ ।। प्रभात में भरत उठे और जाकर ऋषि की चरण-वन्दना की। भरद्वाज बोले—सद्भाववाले भरत, कौन किसकी माता है, परिचय करवाओ ।। ८० ।। यह सुनकर भरत ऋषि को प्रणाम कर कौन किसकी माता है, उनकी पहचान करवाने लगे। राजा दशरथ की पहली पटरानी, जो विनम्र भाव से हाथ जोड़े खडी है, त्रैलोक मे जिसके गुणों की तुलना नहीं है, दुःख भाजिनी ये ही श्रीराम की माता हैं ।। ८१ ।। आपके चरणो की ओर जो देख रही हैं, वे सौन्दर्यमयी, राम के प्रति स्नेह रखनेवाली लक्ष्मण-शत्रुघ्न की माता हैं ।। ८२ ।। उन्ही के समीप हाथ जोड़कर तुममें भक्ति लगाये जो खड़ी है, जिसका वर्णतप्त स्वर्ण-जैसा है, पर मति निर्मम है, उस प्रचण्ड स्वभाववाली, कलह प्रिया का नाम कैकेयी है जो इस चाण्डाल की माता है ।। ८३ ।। इसी ने राम जैसे भाई को बनवास दिया। इसी के कारण पिताजी की मृत्यु हुई। पूर्व जन्मों में मैने न जाने कितने पाप किये थे, जिस कारण इसके गर्भ से मेरा जन्म हुआ ।। ८४ ।। भरद्वाज बोले, भरत इनका कोई अपराध नही है। इससे दैव कार्य सम्पन्न होनेवाला है। तुम असन्तोप न करो। तत्पश्चात् भरत ने ऋषि की चरण-धूलि सिर पर ले उनके उपदेशानुसार यमुना पार हुए ।। ८५ ।। सागर-समान सेना ने सारे वन को व्याप्त कर लिया। भरत ने शत्रुघ्न से कहा—वह देखो, चित्रकूट पर्वत और मंदाकिनी नदी दिखाई दे रही है। यही राम, लक्ष्मण, सीता तीनों रह रहे है ।। ८६ ।। भरत की कथा अब यही छोड़कर राम का कुछ चरित्र संक्षेप मे कह रहा हूँ।

चित्रकूटत रामर बास : भरतर सैन्यर कोलाहल श्रवण

राम सीता क्रीड़ा करे चित्रकूट बने * शची समे देवराज येहेन नन्दने ८७
सीताक बुलिल राम हरिष बदने * अयोध्यार भोग आउर न परय मने
गिरिर कन्दरे मन्द सुरभि अपार * आछोक मनुष्य मन मोहे देवतार ८८
पुत्र पुत्र बुलि शुनु पक्षी काढ़े राव * एहिमते कान्दिया मरन्त मोर माव
फल पुष्प देखि सीता नाना चित्र बन * अनेक सन्तोष करियोक वितोपन ८९
थाने थाने देखियो किन्नरी विद्याधरी * रमण करन्त नाना बिध वेश करि
मानस शिलार फोट सीतादेवी दिल * आलिङ्गन्ते रामर हियात सञ्चरिल २४९०
हेन देखि सीतये करिला परिहास * सुरत शृंगार बर भैल अभिलाष
मृग मारि लक्ष्मणे योगान्त निते आनि * सीता देवी रान्धन्त भुञ्जन्त तिनि प्राणी ९१
मृग हेतु लक्ष्मण चलिला आन क्षिति * शृङ्गारे थाकिला राम सीताये सहिति
अनेक हरिष भैल रामर शरीरे * सीतार उरूत शिरे शुइला नदी तीरे ९२
लक्ष्मण गैलन्त यबे मृग मारिबाक * सीतार सन्निते बृक्षडाले परि काक
सीतार रूपक देखि काक भैल भोल * एक दोवा करि गैया चापिलेक कोल ९३
राघवर आतिशय बिद्राक देखिया * सीतार तनत परिलेक जाम्पदिया
तनमाजे गोसानीर करिलेक घाव * क्रोधिलन्त सीता माव काम्पे हात-पाव ९४
कोपे शोके सीता देवी क्रन्दन करिल * रामर शरीर सबे लोतके भरिल
सीतार आगते काके केलि करे बरे * थपा मुण्डि दिया बेगे तन माजे परे ९५

चित्रकूट में राम का निवास : भरत की सेना का कोलाहल सुनना

देवराज इन्द्र नन्दन वन में शची के साथ जिस प्रकार क्रीड़ा किया करते हैं, राम सीता चित्रकूट वन में वैसे ही क्रीड़ा करते थे ।। ८७ ।। प्रसन्न वदन राम ने सीता से कहा, अयोध्या के भोगों की बात अब याद नही आती । गिरि-कन्दराओ मे मन्द अपार सौरभ है । मनुष्य की तो बात ही क्या, देवों का मन भी जो मुग्ध कर लेती है ।। ८८ ।। सुनो, पक्षी 'पुत्र, पुत्र' कहकर पुकार रहे हैं, मेरी माता भी रो-रोकर मरती होगी । हे सीता, सुन्दर फल-पुष्पोंवाले नाना चित्रमय वन को देखकर मन मे संतोष रखो ।। ८९ ।। देखो, स्थान-स्थान में सुन्दरी विधाधारियों, किन्नरियाँ नाना वेप धारणकर रमण कर रही है । सीता ने रामचन्द्र को मानस-शिला का तिलक लगाया, राम ने सीता को आलिंगन कर लिया । वह तिलक मानो उनके हृदय में संचारित हो गया ।। २४९० ।। यह देखकर सीता ने परिहास किया, सुरति-शृंगार की वड़ी अभिलाषा हो रही है । लक्ष्मण मृग मारकर लाया करते, सीता राँधती, तीनों प्राणी भोजन करते ।। ९१ ।। मृग मारने हेतु लक्ष्मण दूसरी ओर चले गये । राम सीता के संग रहकर शृंगार-केलि करने लगे । राम को बड़ा हर्ष हुआ, वे नदी तट पर सीता की जाँघ पर सिर रख सो गये ।। ९२ ।। लक्ष्मण जब मृग मारने के लिए गये तो सीता के समीप एक वृक्ष की डाली पर एक कौवा आकर बैठा । सीता के रूप को देखकर कौवा मुग्ध हो गया । एक दो पग बढ़ाता हुआ वह उनकी गोद तक आ पहुँचा ।। ९३ ।। कौवा रामचन्द्र को अतिशय निद्रा-में पड़ा देख सीता के स्तन पर कूद पड़ा । उसने सीताजी के स्तन पर घाव कर दिया । क्रोध के मारे माता सीता के हाथ पैर काँपने लगे ।। ९४ ।। क्रोध और शोक से देवी सीता रुदन करने लगी । उनके आँसुओं से राम का शरीर भीग गया । सीता

मारिब न पारे सीता कान्दिल वहुत * जागिया देखिला राम दशरथ सुत
सीतार तनर माजे वहय रुधिर * क्रोधिलन्त रामे देखि नसहे शरीर ९६
नगणिया रामक सीताक प्रहारय * पुनु पुनु प्रहारिया तनत परय
क्रोधिया बोलन्त राम लैबोहो पराण * मन्त्र पढ़ि मारिलेक ईषिकर वाण ९७
अग्नि सम शर देखि बायस उराय * राघवर शरे तार पाछे खेदि याय
इन्द्रर तनय काक अति वर खल * शरे खेदि नेइ पलाइ गगन-मण्डल ९८
काके मने गुणे एवे मिलिल मरण * देव समाजत गैया पशिला शरण
देवलोके बोले गुछ गुछरे पापिष्ठ * सीताक हिंसिलि तइ सवारे अनिष्ठ ९९
एको थाने काके येवे शरण न पाइल * शीघ्र वेग करिया रामर पाशे आइल
खेदे यमदूत सम राघवर वाण * बोले निचिनिलो प्रभु राखियोक प्राण २५००
क्षमा करियोक मोर अज्ञानर पाप * तुमिसि त्रैलोक्यनाथ जगतर वाप
वरद्रोह आचरिलो जगतर मावे * एहि बुलि वायस परिल दुइ पावे १
राघवे बोलन्त आसि शरण पशिलि * आपोनार पापे तइ आपुनि नशिलि
अबाध्य मोहोर बाण जान तइ साङ्ग * प्राणे येवे जीवि छारि देह एक अङ्ग २
विमरिषि काके एक चक्षु एरिलेक * राघवर शरे ताक छन्न करिलेक
रामक प्रणामि काक गैल प्राण राखि * सेहि धरि काके ने देखय एक आखि ३
घार गोट पालटाया एक आखि चाइ * सचकित मने सि आहार पानी खाय
अमृत समान जुर राघवर हस्त * माजिला सीतार तन भैला देवी सुस्थ ४

के सम्मुख कौवा बड़े आनन्द से केलि करने लगा। पंखे खोल-खोलकर वह वेग से स्तन पर जा गिरता था ।। ९५ ।। सीता उसे मार न पाने के कारण बहुत रोती थी। राम ने जगकर देखा, सीता के स्तन से रक्त वह रहा था। यह देख राम सह नहीं सके, वे क्रोधित हो उठे ।। ९६ ।। कौवा राम की परवाह किये विना सीता पर प्रहार करता जा रहा था। वार-वार प्रहार कर स्तन पर गिरा पड़ता था। राम ने क्रोधित होकर कहा—मैं तेरे प्राण ले लूंगा। उन्होंने एक सरकण्डे को मंत्र पढकर वाण मारा ।। ९७ ।। अग्नि जैसा वाण देखकर कौवा उड़ चला। रामचन्द्र का वाण उसे पीछे-पीछे खदेड़ता चला। वह कौवा इन्द्र का वेटा था। जो वड़ा खल था। वाण उसे खदेड रहा था, वह गगन मंडल में भागता फिरता था ।। ९८ ।। कौवा मन ही मन सोच रहा था, अव मेरी मृत्यु आ गयी। वह देव-समाज की शरण में गया। देवों ने कहा—अरे पापी, तू दूर हो जा। तूने सीता से हिंसा की है, तू सव का अनिष्टकारी है ।। ९९ ।। जब कौवे को कहीं शरण नहीं मिली तव वह तेजी से राम के पास आ गया। रामदूत जैसा राम का वाण उसे खदेड़ रहा था। उसने कहा, प्रभु, मैं आपको पहचान नहीं पाया, मेरे प्राणों की रक्षा कीजिये ।। २५०० ।। मेरे अज्ञान-जनित पाप क्षमा करें। आप ही त्रैलोक्य के नाथ, जगत्पिता है। जगज्जननी सीता से मैंने वड़ा द्रोह किया। यह कहकर कौवा राम के चरणों पर गिर पड़ा ।। १ ।। राम ने कहा, तू मेरी शरण में आया है। अपने पाप से तू स्वयं नष्ट हुआ है। मेरा वाण अमोघ है। समझ ले कि तेरा अन्त ही होगा। यदि तू प्राण रखना चाहता है तो शरीर का एक अंग छोड़ दे ।। २ ।। अन्त में विचार कर कौवे ने एक आँख छोड़ दी। राम के बाण ने उस आँख को नष्ट कर दिया। प्रणाम कर कौवा प्राण वचाकर चला गया। तभी से कौवा एक आँख से नही देखता ।। ३ ।। वह अपनी गरदन उलट-पलटकर एक ही आँख से देखकर चौकन्ना होकर खाया-पीया

श्रीराम लक्ष्मण दुयो शिरे जटाजुटे * सुखे उपस्थित भैला गिरि चित्रकूटे
राघवर चरित्र आछोक एहि खन * भरते पशिला येबे चित्रकूट वन ५
कटकर रोले बन पूरिल सकल * पाव धूलि व्यापिलेक गगनमण्डल
वृक्षर चटक सबे सागरान्त गैल * राम सीता लक्ष्मणर चमत्कार भैल ६
सीताये रामर गले सावटि धरिल * वीरत्व वचने रामे आश्वास करिल
राघवे बोलन्त लखाइ वार्त्ताक नपाइल * कमन नृपति मृग मारिबाक आइल ७
शीघ्र करि चला हाते धनुशर धरि * सुधि आसि आमात कहियो जाण्ट करि
रामर बचन येबे परितोल पाइल * शाल बृक्षे चड़िया लक्ष्मण बीरे चाइल ८
देखे चतुरङ्ग दल बन जुरि आइल * प्रलय कालर येन सागर जन्ताइल
हेन देखि लक्ष्मणर बियाकुल मन * बृक्ष हन्ते नामि आसि जनाइल तेखन ९
शुनियोक ददा आमि अनुमानि पाइल * भरते सेनाक साजि मारिबाक आइल
मावेकर हाते राज्य लवाइलेक मागि * तोमाक पठाइले घोर बनबास लागि १०
तथापि नभैल क्षमा मारिबाक चाय * मारिबो भरत आजि जीयन्ते नयाय
भरत विशिष्ठ हेन बुलि आछा बाणी * पानीर कण्टक येन विन्धिले से जानि ११
आततायी भरतक काटिबो समूलि * कैकेयीक मारिबोहो पुत्रशोके पुलि
हाती घोरा रथ सेना मारो निरन्तर * शोणिसे करिबो आजि नदी भयङ्कर १२
अयोध्यात पातो निया नृपति तोमाक * दिया अनुमति मोक निदिबाहा हाक
बधोहो तोमार शत्रु किछु दोष नाइ * राघवे बोलन्त बापु शुनियो लखाइ १३

करता है। राघव ने अपने अमृत जैसे शीतल हाथों से सीता के स्तनों को सहला देते ही देवी स्वस्थ हो गयीं ॥ ४ ॥ सिर पर जटा-जूट बाँधे, श्रीराम लक्ष्मण इसके पश्चात् चित्रकूट पर्वत पर आ गये। भरत के चित्रकूट वन में प्रवेश तक राम का चरित्र इसी प्रकार ही रहा ॥ ५ ॥ भरत की सेना के निनाद से सम्पूर्ण वन-प्रदेश गूँज उठा। उनके पैरों से उड़ी धूल से गगन-मंडल व्याप्त हो गया। भयभीत हो वन के पक्षी भागकर सागर के पार चले गये। राम, सीता, लक्ष्मण बड़े ही विस्मित हुए ॥ ६ ॥ सीता राम के गले से लग गयी। राम ने ओजस्वी वचनों से उन्हें आश्वासन दिया। राम ने कहा—लक्ष्मण, कौन राजा मृग मारने हेतु आया है इसका पता नही चला ॥ ७ ॥ तुम हाथों में धनुष-बाण ले शीघ्र ही जाओ। पता लगाकर मुझसे तुरन्त बताओ। राम का आदेश पाकर वीर लक्ष्मण ने शाल वृक्ष पर चढ़कर देखा ॥ ८ ॥ देखा कि चतुरंगिनी सेना वन को घेरे हुए चली आ रही है। मानो प्रलयकाल का समुद्र एकत्रित हो गया हो। यह देख लक्ष्मण का हृदय व्याकुल हो उठा। वृक्ष से उतरकर उन्होंने सूचना दी ॥ ९ ॥ भैया, सुनिए, मेरा अनुमान है कि भरत सेना सजाकर हमें मारने के लिए आ रहा है। उसने माता के द्वारा राज्य मँगवा कर ले लिया और आपको वनवास में भेज दिया ॥ २५१० ॥ इतने पर भी क्षमा नहीं की। वह हमें मारना चाहता है। परन्तु मैं भरत को मार डालूँगा, जीते-जी लौट नहीं पायेगा। भरत विशिष्ठ है—आप ऐसा कहा करते हैं। पर वह तो पानी के अन्दर के काँटे की भाँति चुभकर कष्ट दे रहा है ॥ ११ ॥ आततायी भरत को समूल रूप से काट डालूँगा। कैकेयी को पुत्रशोक से जला मारूँगा। हाथी, घोड़ा, रथ, सेना आदि को निरन्तर मारूँगा। रक्त की आज नदी बहा दूँगा ॥ १२ ॥ आपको अयोध्या ले जाकर राजा बनाऊँगा। मुझे अनुमति दीजिये, मना न कीजिये। आपके शत्रु का वध करूँगा, इसमें कोई दोष नही है। तब राघव ने कहा—वत्स लक्ष्मण सुनो, ॥ १३ ॥

जानो मोत भकति करिस शुद्ध मति * भरतक दोष भाइ निदिवि सम्प्रति
तइ मोर यिमत भरतो सेहि नय * ताक मन्द बोला मोर दुख से जनय १४
भरतक कष्ट आरो न करिवि तइ * यि कार्ये भरत आसे भाले जानो मइ
अयोध्याक निया मोक नृपति पातिब * मोर वनवास सिटो आपुनि खाटिब १५
मोक चाइ हासे देख घोटक वापर * शत्रुञ्जय नामे पाट हस्ती भयङ्कर
आक द्रोह करिले वापर द्रोह हय * सत्य धर्म नाशि सिटो पापक साञ्चय १६
आनो सव प्रजा मोक निवाक आसय * दशो दिशे राम ध्वनि शुनो जय जय
शुनि राघवर पाछे निष्ठुर वचन * लाज पाइया हेट माथे रहिला लक्ष्मण १७
आपोनाक आपुनि काटिला येन मत * धन्य राम धन्य राम बोलन्त मनत
अनन्तरे गुह राजा गुणिला मनते * भरतर चित्त नुबुधिया भाल मते १८
सैन्य समन्विते भरतर लाग धरो * भालमन्द जानि पाछे तार काज करो
एहि वुलि गुह यमुनार पार भैल * आति शीघ्रे वेगे भरतर लाग लैल १९

भरत आरु श्री रामर मिलन

राम पाशे भूमि पावे चलिला भरत * शत्रुघने सुमन्त्रये चलन्त पाछत
सुधि सुधि यान्त वार्त्ता तपसी लोकत * धोंवा देखिलन्त मन्दाकिनीर पारत २५२०
रामर आश्रम गैया पाइला धीरे धरी * वाहिरर परा चाइला करि आखि थिर
वसि आछे रामचन्द्र तृणर गृहत * आछन्त अगनि येन भस्मर माजत २१
श्री हानि रामर शरीर गैल जसि * मेघर सन्नित येन पूर्णिमार शशी

जानता हूँ कि तुम मुझमें शुद्ध मति से भक्ति किया करते हो। पर भाई, सम्प्रति भरत पर दोषारोपण न करो। तुम जैसे मेरे हो, भरत भी उसी प्रकार वैसा ही है। उसे बुरा कहने पर मुझे दुःख ही होता है ॥ १४ ॥ भरत को तू और कष्ट न देना। भरत जिस कार्य के लिए आ रहा है, मैं अच्छी तरह जानता हूँ। वह मुझे अयोध्या ले जाकर राजा बनायेगा, मेरे बदले वह स्वयं वनवास झेलेगा ॥ १५ ॥ देखो, मुझे देखकर पिताजी का घोड़ा हँस रहा है। वह शत्रुंजय नाम का राजकीय हाथी बड़ा भयंकर है। भरत से द्रोह करना पिताजी का द्रोह है। उससे सत्य-धर्म नष्ट होकर पाप का संचय होता है ॥ १६ ॥ अन्य सारी प्रजा मुझे लेने आ रही है, दिशा-दिशा में वह राम की जयध्वनि सुनाई दे रही है। रामचन्द्र ने जब लक्ष्मण से इस प्रकार निष्ठुर वचन कहा तो लक्ष्मण लज्जित हो सिर झुकाये रह गये ॥ १७ ॥ मानो स्वयं को स्वयं ही काट डाला हो। वे मन ही मन 'धन्य राम, धन्य राम' कहने लगे। भरत के अन्तर में क्या है, ठीक से समझ न पाने के कारण राजा गुह ने सोचा ॥ १८ ॥ सेना सहित भरत से मैं मिलूँगा, अच्छा-बुरा समझने के पश्चात् उचित कार्य करूँगा। यह कहकर गुह यमुना के पार आकर बड़े वेग से भरत से मिला ॥ १९ ॥

भरत और श्रीराम का मिलन

भरत पैदल ही राम के पास चले। उनके पीछे-पीछे शत्रुघ्न और सुमंत्र भी चले। वे तपस्वियों से समाचार पूछते जाते थे। मंदाकिनी के तट पर उड़ता हुआ धुँआ देखा ॥ २५२० ॥ वे धीरे-धीरे राम के आश्रम में पहुँचे, बाहर से ही विस्मय से देखा कि रामचन्द्र फूस के बने घर में बैठे हुए हैं। जैसे राख के बीच अग्नि हो ॥ २१ ॥ राम का शरीर श्रीहीन ऐसे मुरझा गया है मानो मेघों से मंडित पूर्णिमा का चाँद हो।

डाहिनत लखाइ बामे जनकर जीव * नन्दि गौरी समे येन बसि आछे शिव २२
देखि भरतर नीर नेत्रर झरिल * हाँ प्राण ददा बुलि चरणे परिल
देखिया विषाद बर पाइला शत्रुघने * हाँ मारिलोहो बुलि परिला चरणे २३
सुमन्त्र रामर आगे धरि कृताञ्जलि * रामर चरणे गैया करिला सेवलि
हात योरे गुहे करिलन्त नमस्कार * सबारे चक्षुर परा बहे जलधार २४
शुना रामायण पद सभासद यत * परम सम्पद इसे कलिर युगत
आपोनार कुशलक इच्छा आछे यार * बोला राम राम सुखे तरिवा संसार २५

पितृर मृत्यु शुनि रामर शोक

दुलड़ी

राम शत्रुघन भरत लक्षमण आवर सीता गोसानी ।
दारुण शोकर घावे पीड़िलेक मुखे न सञ्चरे वाणी ।
राघवे बोलन्त भैयाइ भरत तइ चिन्ता बर पाइलि ।
मोर वृद्ध माव बापक एरिया कि कार्य्ये वनक आइलि ।। २६
वशिष्ठ गुरुर वार्त्ता कह बाप आरो शत माव वर्ग ।
सबलोक मन्त्री पात्र आछे यत भाले कि आछय सर्ब्ब ।।
कौशल्या सुमित्रा आइर वार्त्ता कह यत अयोध्यार लोक ।
वृद्ध दशरथ बापे कोन दिन करे युवराज तोक ।। २५२७
भेद दण्ड साम दानर उपाय बुजिला ताक बिचारि ।
देव द्विज गुरु पितृर चरण भाले तुषिबाक पारि ।।

दाहिने लक्ष्मण और बायें जानकी ऐसे लगते थे मानो नन्दी और गौरी सहित शिव बैठे हैं ।। २२ ।। देखकर भरत की आँखों से आँसू झरने लगे । हाय ! प्राण-भैया, कहते हुए चरणों में गिर पडे । यह देख शत्रुघ्न को भी बड़ा विषाद हुआ, हाय, मर गया, कहते हुए चरणों में गिर पड़े ।। २३ ।। सुमंत्र ने राम के सम्मुख हाथ जोड़कर आगे बढ़ उनके चरणों में प्रणाम किया । हाथ जोड़कर गुह ने नमस्कार किया । सबकी आँखों से आँसुओं की धारा बह रही थी ।। २४ ।। हे सभासदों, रामायण पद सुनो, यही कलियुग में परम सम्पदा है । अपने कुशल की इच्छा है, तो राम-राम कहो । सुख से संसार तर जाओगे ।। २५ ।।

पिता की मृत्यु सुनकर राम का शोक

राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न और देवी सीता दारुण शोक के आघात से पीड़ित हो उठे । मुख से वाणी नहीं निकलती थी । राघव बोले—भाई भरत, तुम्हें देखकर बड़ी चिन्ता हो रही है । भला, मेरे वृद्ध माता-पिता को छोड़कर तुम किसलिए वन में आ गये ? ।। २६ ।। गुरु वशिष्ठ की वार्ता सुनाओ । वत्स, और हमारी ही माताएँ, मंत्री-सामन्त आदि सभी अच्छे तो हैं न ? कौशल्या-सुमित्रा का समाचार कहो । अयोध्या के लोग और वृद्ध पिता दशरथ किस दिन तुम्हें युवराज बनानेवाले हैं ? ।। २५२७ ।। साम, दाम, भेद, दड के उपाय पूछकर देव, जान लेने पर द्विज, गुरु, पिता के चरणों की सेवा उत्तम रूप से कर सकते हैं । जितने प्रमुख व्यक्ति है, महावत-रैयत इन सबका पालन उत्तम रूप से करते रहो । देश को, माता-पिता आदि सबको छोड़ जटा धारणकर तुम भला

मुख्य मुख्य लोक   माहुत राहुत   ताक पाल माल करि ।
सकल देशक   माव बाप एरि   केने आइलि जटा धरि ॥ २८
रामक प्रणाम   करिया भरते   नमिला पाछे सीताक ।
कान्दो कान्दो मुख   करि बुलिलन्त   किय हेन बोला मोक ॥
श्मशान-शालीर   पोरा छाइक येन   देखिते नुहिके भाल ।
कैकेयीर गर्भे   उपजिलो आमि   अधम येन चण्डाल ॥ २९
तोरा तिनि येवे   वनक आसिला   पूर्ण छय दिन भैल ।
मध्य रात्रि भैले   तोमार शोकत   बापर पराण गैल ॥
वशिष्ठ गुरुवे   नाराण तेलत   मृतक देहक थैया ।
अयोध्याक लागि   शीघ्र वेगे दूते   आमाक आनिले गैया ॥ २५३०
शत्रुघने समे   दुइ हन्ते आसिया   दुवार पाइलो बापर ।
पितृर गृहक   शून्य देखि पाचे   ठावक गैलो मावर ॥
बापर मरण   तपु वन-वास   कहिला दारुणी मावे ।
हृदय विकल   भैल आति मोर   दारुण वचन - घावे ॥ ३१
सब सतकार   करिलो बापर   दिलोंहो दान दक्षिणा ।
एक दण्ड येन   युग याइ मोर   तोमार चरण बिना ॥
आसि भैलो वन   तोमार चरण   देखिया एराइलो शोक ।
बोलो प्रभु काय   आसि लैयो राज   अनुग्रह करा मोक ॥ ३२
आपात मधुर   शुनिया प्रचुर   स्वादत पाचे काञ्जि ।
सउरा वृक्षक   रइल मोर मावे   उत्तम वट उभाञ्जि ॥
तोमाक नैराश   करि वन वास   दियाइ राज्य लैला मागि ।
हेनय कैकेयी   माव आछे आसि   तोमाक निवाक लागि ॥ ३३
इटो वनाश्रम   तोमार नियम   कार्य्यक आमि गञ्जाइबो ।
करिया हरिष   चैध्यय वरिष   वने फल मूल खाइबो ॥

किसलिए यहाँ आ गये ॥ २८ ॥ भरत ने पहले राम को प्रणामकर सीता को सिर नमाया । रुआँसे होकर बोले, मुझे यों किसलिए कहते हो ? श्मशान की राख जैसे देखना अच्छा नहीं उसी प्रकार कैकेयी के गर्भ से जन्मा हुआ मैं अधम-चाण्डाल जैसा हूँ ॥ २९ ॥ जब तुम लोग तीनों वन में चले आये तो छह दिन हो जाने पर तुम्हारे ही शोक से आधी रात को पिताजी के प्राण निकल गये । गुरु वशिष्ठ ने मृतक शरीर को तेल में रखवा दिया । तीव्र-वेग से दूत जाकर हमें अयोध्या ले आये ॥ २५३० ॥ शत्रुघ्न सहित मैं पिताजी के द्वार पर गया, परन्तु पिताजी का भवन सूना देख माँ के यहाँ गया । निर्मम माँ ने पिताजी की मृत्यु और तुम्हारे वनवास की बात बतायी । दारुण वचन-रूपी आघात से मेरा मन अत्यन्त व्याकुल हो उठा ॥ ३१ ॥ पिताजी के सारे अन्त्येष्टि-सत्कार किये, दान-दक्षिणाएँ दी, परन्तु तुम्हारे चरणों के बिना एक-एक दंड, एक-एक युग की भाँति लग रहा था । इसी कारण वन में चला आया । तुम्हारे चरणों के दर्शन कर शोक मिट गया । प्रभु, मैं तुमसे प्रयोजनीय बात कहता हूँ, मुझ पर अनुग्रह कर. चलकर राज-पाट ग्रहण करो ॥ ३२ ॥ जो देखने में मधुर, सुनने में प्रचुर मीठा है, परन्तु स्वाद में कड़वा कांजि-फल है, माँ ने उत्तम वट-वृक्ष को उखाड़कर ऐसा ही वृक्ष रोपा है । तुम्हें वंचित कर वनवास दे राज्य माँग लिया वही कैकेयी माँ तुम्हें लिवा ले जाने हेतु आ रही है ॥ ३३ ॥ इस वनाश्रम में तुम जो नियम आदि पालन कर रहे हो सबको मैं भोगूँगा । परम प्रसन्नता से चौदह वर्ष वन में फल-मूल खाऊँगा ।

शास्त्रर विधाने ज्येष्ठ विद्यमाने कनिष्ठर नोहे राज ।
राज्यक चलियो आपुनि करियो पितृर अञ्जलि काय ॥ ३४
बापर मरण शुनिया बचन राघवर पोरे गावे ।
अलप जलत मत्स्य येन मत बहवे सूर्य्य प्रभावे ॥
शोक कालमेघ भैल येन आति मुख येन भैल शशी ।
नदीर तीरत वृक्ष येनमत परिलन्त राम खसि ॥ ३५
करन्त सन्ताप हाँ हाँ वृद्ध बाप दशरथ महीपाल ।
जानिलोहो निष्ठे आमिसे पापिष्ठे तोमार करिलो काल ॥
पाये तल गैलो ज्येष्ठ पुत्र भैलो पृथिवीर महाभार ।
बाप गैला कहि निज कान्धे बहि न करिलो सङ्स्कार ॥ ३६
धन्य धन्य तयु तनय भरत धन्य शत्रुघन बीर ।
निज कान्धे बहि दहिल आपुनि पितृर सिटो शरीर ॥
शुन शुन सती प्राणेश्वरी सीता विधि कैल एत दूर ।
दुखे दहे मोक पीड़ि पुत्रशोके मरिला तयु श्वशुर ॥ ३७
रामर चरित्र परम अमृत शुना समाजिक जन ।
धर्म्म शिरोमणि संसार तरणी इसे भकतर धन ॥
राम गुण गान मुक्ति बित्त मूल सकलो शास्त्रर सार ।
एहि मुख्य काम बोला राम राम गुछोक दुख निकार ॥ ३८

रामर पितृ तर्पण

पद

सीता दीर्घरावे कान्दि बोलन्त शशुर * तोमार बिनाश शुनि भैलो मसि मूर

शास्त्र के विधान के अनुसार बड़े भाई के रहते छोटे भाई का राज नही होता। तुम राज्य में लौट चलो और अपने हाथों से पिताजी की अंजलि आदि कार्य करो ॥ ३४ ॥ पिता का मरण सुनकर राघव का शरीर जलने लगा जैसे कम पानी में रहनेवाली मछली सूर्य-ताप से तड़पने लगती है। शोक काला मेघ और मुख, चन्द्रमा हो गया। नदी के किनारे का वृक्ष जैसे ढह जाता है वैसे ही राम भूमि पर गिर पड़े ॥ ३५ ॥ वे संतप्त होकर कहने लगे—हाय, हाय वृद्ध पिता, महीपाल दशरथ, सचमुच समझ गया मै पापी ही तुम्हारा काल वन गया। सचमुच समझ गया मै पापी ही तुम्हारा काल बन गया। मै वड़ा पुत्र होकर भी पाप में डूबा हुआ हूँ। पृथ्वी का महाभार हूँ। पिता स्वर्गवासी हो गये पर उन्हें अपने कधों पर चढ़ाकर अन्तिम सस्कार नहीं कर सका ॥ ३६ । आपके पुत्र भरत धन्य है, शत्रुघ्न भी धन्य है जो अपने कंधों पर ढोकर पिता की उस देह का संस्कार किया। प्राणेश्वरी, सती सीता सुनो, विधि ने हमें कितना दूर कर दिया है, यही दुःख मुझे जला रहा है कि पुत्रशोक से पीड़ित हो तुम्हारे श्वसुर मर गये ॥ ३७ ॥ हे सामाजिक लोगों, राम के चरित्ररूपी परम अमृत का श्रवण करो। धर्मशिरोमणि, संसार से पार उतारनेवाली यही भक्त का धन है। राम गुणगान मुक्तिरूपी सम्पदा का मूल, सभी शास्त्रों का सार है। मुख्य कार्य यही है, राम-राम बोलो जिससे कि दुःख की यातनाएँ मिट जाये ॥ ३८ ॥

राम द्वारा पिता का तर्पण

सीता फूट-फूटकर कहने लगी—ससुरजी आपका देहान्त सुनकर हमारा सर्वनाश

बापे निज जीउ येन पालिलेक मोक * काक देखि पाशरिब नेहरिब शोक ३९
लक्ष्मणे बोलन्त मइ नरक साधिलो * बापक निष्ठुर बुलि पुनु ने देखिलो
श्रीराम लक्ष्मण सीता कान्दिला बहुत * प्रबोधिया बुलिलन्त कैकेयीर सुत २५४०
उठा उठा ददा शोक एरियोक सर्व्ब * रघुर वंशर सबे तोमाते से गर्ब्ब
निरन्तरे प्रजार तुमिसि निज नाहा * क्रन्दनक त्यजिया अञ्जलि कार्य्य चाहा ४१
माज करि सीताक लक्ष्मण भैला आग * पाचे राम चलन्त विषादे नेरे लाग
जानकीक आग करि जलत नामिल * नदी जले बुरदिया अञ्जलि करिल ४२
इङ्गुदीर द्रव आम जाम आदि फल * एक खान करिलन्त मन्दाकिनी जल
कुश पारि भूमित ऊपरे पिण्ड दिल * हेरा पिण्ड लोवा वने येहेन मिलिल ४३
दक्षिणक सम्मुखे अञ्जलि दिल जल * नाष्टिल भूमिर भोगे भुञ्जा वनफल
तिता छाले पाइला गैया थान आपोनार * तिनि हन्ते बरशोके कान्दिला अपार ४४
भरतर लक्ष्मणे ग्रीवत धरि टानि * आस बाप बुलिया कान्दिल दीर्घ वाणी

मातृ आरु ऋषि सकलर सैते रामर साक्षात् आरु कथा-वार्त्ता

प्रजासबे शुनिलेक क्रन्दनर राव * निरन्तरे लोक सबे चालिलेक गाव ४५
राघवक देखि क्रन्दनर कोलाहल * प्रलय कालत येन सागर आस्फाल
याक येन योग्य रामे आश्वास करिल * काहाको हियात कोले सावटि धरिल ४६
दशरथ राजार येतक पटेश्वरी * धीरे धीरे द्विजे नेन्त प्रतिपाल करि

हो गया। पिता अपनी कन्या का जैसे पालन करता है, उसी प्रकार आपने मेरा पालन किया था, अब किसे देखकर आपके स्नेह का वह शोक भूल पाऊँगी ? ।। ३९ ।। लक्ष्मण बोले—मैंने नरक का कर्म ही किया। पिताजी को निर्मम कहकर पुनः उनके दर्शन नहीं कर पाया। श्रीराम, लक्ष्मण और सीता बहुत रोते रहे। भरत ने उन्हें धीरज बँधाते हुए कहा— ।। २५४० ।। भैया, उठो, सारा शोक छोड़ दो। रघुवंश का गौरव एकमात्र तुम्हीं हो। प्रजा के स्वामी एकमात्र तुम्हीं हो। अब रोना छोड़कर अंजलि दान के कार्य करो ।। ४१ ।। सीता को बीच में लेकर लक्ष्मण आगे-आगे चले, उनके पीछे-पीछे राम चले। विषाद उनका पीछा नहीं छोड़ता था। सीता को आगे कर वे नदी के जल में उतरे, डुबकी लगाकर अंजलि प्रदान की ।। ४२ ।। इंगुदी का रस, आम, जामुन आदि फल और मंदाकिनी का जल एकत्रित किया। भूमि पर कुश बिछाकर यह कहते हुए पिंडदान किया—पिताजी, पिंड जैसा मिला ग्रहण कीजिए ।। ४३ ।। दक्षिणाभिमुख होकर जलांजलि देते हुए कहा—पृथ्वी के भोग, भोग नहीं पाये, अब वन के फल ग्रहण कीजिये। भीगे वल्कल पहने हुए वे अपनी कुटिया में आये। तीनों ने बड़े ही शोक से अपार क्रन्दन किया ।। ४४ ।। लक्ष्मण भरत का कंधा पकड़कर 'हाय पिताजी' कहते हुए ज़ोर-ज़ोर से रोते रहे।

माताओं और ऋषियों के साथ राम की भेंट और वार्तालाप

प्रजाजनों ने रुलाई की आवाज सुनी, वे उठकर शीघ्रता से उधर चल पड़े ।। ४५ ।। राघव को देखते ही क्रन्दन का कोलाहल बढ़ गया। मानो प्रलयकाल में सागर उमड़कर गरज रहा हो। राम ने सबको यथायोग्य आश्वासन दे धीरज बँधाया, किसी को छाती से लगाया तो किसी को गोद में ले लिया ।। ४६ ।। राजा दशरथ की सभी पटरानियों को ब्राह्मण लोग धीरे-धीरे देख-भाल कर ले जा रहे थे। कुछ समय

कत्तो बेलि गैया मन्दाकिनी कूल पाइल * कौशल्याये सुमित्राक मात परुजाइल ४७
देखतो सुमित्रा राम नाहि बार घाट * हेर देख लखाइ पानी बहिबार बाट
किनो सुदुष्कर कर्म लक्ष्मणे करिल * रामत भकति राज्य भोगक एरिल ४८
कुशर उपरे देखिलन्त नाना फल * रामेसे करिल पितृ कर्म्मक सकल
हा किनो प्रभु भैल विपत्ति तोमार * राजभोग एरि बनफुल भैल सार ४९
महादइ सबो शोक पाइल बहुतर * बहुत कान्दिया पाश पाइलन्त रामर
रामचन्द्र आछन्त सभार माजे बसि * स्वर्गहन्ते येन इन्द्रदेव आइला खसि २५५०
राम सीता लक्ष्मणर अवस्था देखिल * महाशोक उथलिया सबाको पीड़िल
कौशल्या सुमित्रा आदि महादइ यत * गुणक वर्णाया धरि कान्दन्त शोकत ५१
हा सीता सती आइ जनकर जीव * तोर दुख देखि आइ केने धरो जीव
सुन्दर बदन श्री हरिल सकल * शिशिरे विनष्ट येन शोभित कमल ५२
हरि हरि राम दशरथर तनय * लखाइर बिपत्ति देखि दहवे हृदय
चक्षु चल चल करि प्रणामिल राम * देखि राम मुख शोक भैल उपशाम ५३
सूर्य्यर तापत देहा दहिल सकल * चन्द्रर रश्मिये येन करिले शीतल
रामक देखिया लोक भैल आनन्दित * पाशरिल दुख येन पीया पञ्चामृत ५४
चतुरङ्ग दले रङ्गे बेढ़िया थाकिल * पात्र सबे राघवर समीप चापिल
शत्रुघन भरत सुमन्त्र गुहराज * इन्द्रक वेढ़िया येन देवता समाज ५५
नमाति आछन्त बसि रघुबंश नाथ * गाव चालि भरते युरिला योर हात
शुनियोक प्राण ददा मन्यु परिहरि * लैयो आपोनार राज्य अयोध्या नगरी ५६
आमि न थाकन्ते माव करिलन्त दोष * चरजत धरो एरियोक असन्तोष

पश्चात् सभी मंदाकिनी के तट पर पहुँचे। कौसल्या सुमित्रा से कहने लगी—॥ ४७ ॥ सुमित्रा, देखो, यह राम के नहाने का घाट है। देखो, यह लक्ष्मण के पानी ले जाने का रास्ता है। लक्ष्मण ने कैसा सुदुष्कर कर्म किया, राम की भक्ति कर राज्य-भोग तज दिया ॥ ४८ ॥ कुश के ऊपर नाना प्रकार के फल देखकर बोली—राम ने पिता के कर्म किये हैं। हाय प्रभु, तुम पर यह कैसा संकट आ पड़ा, राजभोग छोड़कर जंगल के फूल ही सार बने ॥ ४९ ॥ अन्य सभी रानियाँ भी बड़ी शोकग्रस्त हुईं। बहुत रोती हुईं सभी राम के पास पहुँचीं। रामचन्द्र सभा में ऐसे बैठे हुए थे, मानो स्वर्गभ्रष्ट इन्द्र हों ॥ २५५० ॥ राम, सीता, लक्ष्मण की अवस्था देख महाशोक उमड़ आने के कारण सभी दुखी हो गयी। कौशल्या, सुमित्रा आदि महारानियाँ गुणों का वर्णन करती हुई शोक से रो रही थीं ॥ ५१ ॥ हाय सीता, सती माँ, जनकनन्दिनी तेरा दुःख देखकर प्राण कैसे धारण करें? तुम्हारे सुन्दर मुंडमंडल की सारी श्री चली गयी; मानो शिशिर ने कमल को विनष्ट कर डाला ॥ ५२ ॥ हरि-हरि दशरथनन्दन राम और लक्ष्मण की विपत्ति देखकर हृदय जल रहा है। राम की आँखें आँसुओं से छलछला रही थीं। उन्होंने माताओं को प्रणाम किया। राम का मुख देखकर उनका शोक मिट गया ॥ ५३ ॥ मानों सूर्य-ताप से सबके जलते हुए शरीरों को चन्द्र की किरणों ने शीतल कर दिया। राम को देखकर लोग आनन्दित हो उठें। मानों पंचामृत पीने के कारण वे सारे दुःख विस्मृत हो गये ॥ ५४ ॥ चतुरंग सेना उन्हें घेरे रही, भरत, शत्रुघ्न गुहराज समेत सामन्तगण राम के समीप पहुँचे। मानों देवता-समाज इन्द्र को घेरे हुए हैं ॥ ५५ ॥ रघुवंशनाथ राम मौन बैठे थे। भरत ने उठकर हाथ जोड़े, कहा—प्राणप्रिय भैया, सुनो, मन के दुःख को तजकर अयोध्यानगर का अपना राज्य ग्रहण करो ॥ ५६ ॥ मेरे न रहने के समय माँ ने

पितृ सम भाइ तुमि मोर गुरुदेव * तोमार चरण छारि गति नाहि केव ५७
धर्म्मत थाकिया आमि न करोहो दण्ड * मातृका ये काटिया न करो खण्ड खण्ड
जीवन निष्फल मोर कैकेयी आइ * येन काक जीवय बलिर भात खाइ ५८
तोमार द्रोहत मातृ दैवे पाइले फल * सबाहाङ्कु शोक दिया गैल रसातल
गुछायोक बल्कल तेजियो जटा भार * सकाले पिन्धियो राज योग्य अलङ्कार ५९
मोत येवे दया ददा आछय तोमार * झाण्टे गैया लैयोक अयोध्या राज्य भार
करिलन्त नृपतिये पात्रक आदेश * भरते वनत गैया हैवेक प्रवेश २५६०
श्रीरामक बाप सम देखय भरत * वनवास खाटि मोर पालिव शपत
राघवक आनिया दिवेक सब देश * हेनय बुलिया भैल प्राण अवशेष ६१
श्रीरामे बोलन्त शुना भरत कुमर * तोमार मुखत आसे अधर्म्म उत्तर
हुया तुमि कनिष्ठ भाण्डिते मोक चाहा * चाप चुपे एरिया देशक चलि याहा ६२
साफल भरत भाइ स्वर्ग पथ सास * पितृ आज्ञा बोलाया रामक निते चास
इ सब वचने आर आमात नोशोभे * पितृ सत्य बाधिवोहो राज्य भोग लोभे ६३
आछिलेक मान्धाता इन्द्र को दिल धार * करिलेक काल सर्पे ताहाङ्को संहार
सगर नृपति तेहो खनाइल सागर * यमर एराइते धार न भैल नागर ६४
हिरण्यकशिपु सम नाछिलेक केव * बाहिलेक सकले त्रिदश कोटि देव
नरसिंह रूपे ताको करिल संहार * कमन मुगुधे जीवनक देखे सार ६५
हेन बुलि राम देव रैला मौन हुइ * थाकिलन्त भरत जाण्टिया पद दुइ

दोष किया है। मैं चरण पड़ता हूँ, वह असन्तोष छोड़ दो। भैया, तुम मेरे पिता-समान हो, गुरुदेव हो, तुम्हारे चरणों को छोड़कर मेरी कोई गति नही है ॥ ५७ ॥ धर्म के कारण ही मैं इसे दंड नहीं दे पा रहा हूँ। माँ है, इसी कारण इसे काटकर खंड-खंड नही कर डालता। माँ कैकेई के कारण मेरा जीवन निष्फल वैसा ही हो गया है, जैसा कि बलि का उच्छिष्ट भात खाकर कौवा जीता है ॥ ५८ ॥ तुमसे द्रोह करने के कारण माँ को दैव ने ही फल दे दिया। सबको शोक देकर यह भी रसातल को चली गयी, वल्कल उतार दो, जटा-भार तज दो, शीघ्र ही राजयोग्य आभूषण धारण कर लो ॥ ५९ ॥ भैया, यदि मुझ पर तुम्हारी दया है, तो शीघ्र ही जाकर अयोध्या का राज्यभार ग्रहण कर लो। राजा दशरथ ने सामंत से आदेश दिया है कि भरत जाकर वन में रहे ॥ २५६० ॥ भरत श्रीराम को पिता के समान देखा करता है। वह वन-वास झेलकर मेरी शपथ का पालन करेगा। राघव को लाकर सारा देश सौंप देगा, यों कहकर उनके प्राण छूटे हैं ॥ ६१ ॥ श्रीराम ने कहा, कुमार भरत, सुनो, तुम्हारे मुख से यह अधर्म उत्तर आ रहा है। तुम कनिष्ठ होकर भी मुझे फोड़ना चाहते हो, चुपचाप यह सब छोड़कर देश लौट जाओ ॥ ६२ ॥ भाई भरत ने स्वर्ग का मार्ग जीत लिया है। 'पिता की यह आज्ञा है,' कहकर राम को लौटा ले जाना चाहता है। ये सारे वचन अब मुझे शोभा नहीं देते कि राज्यलोभ से पिता के सत्य का उल्लंघन करूँ ॥ ६३ ॥ राजा मांधाता ने इन्द्र को भी पराभूत किया था पर कालसर्प ने उनका भी संहार कर डाला। जिस सगर राजा ने सागर खुदवा डाला था, यम को पराभूत करने की उनकी भी शक्ति नही हुई ॥ ६४ ॥ हिरण्यकशिपु के समान कोई भी नहीं था, उसने तीसकोटि देवों को पराभूत कर डाला था। नरसिंह रूप से काल ने उसका भी संहार कर डाला, फिर कौन मूर्ख जीवन को सार समझेगा? ॥ ६५ ॥ यों कहकर रामचन्द्र मौन हो गये। भरत उनके चरणों को पकड़े रहे। बोले—पिताजी तो छोड़कर चले ही गये, तुम भी वनवास में रहोगे, समझ गया कि अब मेरा

बाप एरि गैला तुमि खाटिबाहा बन * एवेसे जानिलो मोर मिलिल मरण ६६
भरत थाकिला येवे विषादित मने * रामक मातिला पाचे जञ्जाली ब्राह्मणे
इटो रघुबंशत तुमिसे भैला सार * सत्य पालि करिबाहा वंशक उद्धार ६७
शुनियोक राघव तोमात बोले काय * सत्ये सत्ये कैकेयी तोमाक दिल राज
पालिला निश्चये तुमि बापर बचन * देश चला भरते खाटिब सत्ये बन ६८
तुमि येवे हेन सत्य धर्म्मक एरिबा * रहिब दुष्कीर्ति ताक कमने खण्डिबा
ज्येष्ठरेसे राज्य कनिष्ठर नोहे योग * एरियोक मन्यु करियोक राज्य भोग ६९
कुलगुरु पुरोहित बोलन्त वशिष्ठ * कि कारणे राघव कराहा मने निष्ठ
निर्द्दय उचित नोहे क्षमा करियोक * मन्यु परिहरिया देशक चलियोक २५७०
तोमार शोकत राजा तेजिल शरीर * रात्रि दिने शोक मात्र तोमार मातृर
सकले राज्यर लोके हरिष करन्त * तोमाक देखिया सबे शोक पासरन्त ७१
कौशल्या बोलन्त राम वचन बाधस * हेन ग्रह करि कोन कार्यक साधस
रघुवंशे हुयामोक बधिबे खोजस * गङ्गा जल एरि कूप जलत नावस ७२
सकल प्रजाये वेढ़ि बुलिलेक बाक * यायोक यायोक बुलि कोलाहल डाक
तथापितो रामर बनेसे बिमरिष * कोटियेक नदी सागरक करे किस ७३

रामर धर्म्मतत्व व्याख्या; रामर खरम मूरत लइ भरतर अयोध्या प्रत्यागमन

सबाको बोलन्त रामे दृढ़ करि मन * सबे लोके सोक ग्रह करा कि कारण

मरण ही हो गया ।। ६६ ।। कहकर जब भरत मौन रह गये तो जंजाली ब्राह्मण ने राम से कहा—इस रघुवंश में तुम्हीं सार हो, सत्य का पालन कर वंश का उद्धार करोगे ।। ६७ ।। राघव सुनो, तुम्हारे कर्तव्य के बारे में बता रहा हूँ। सत्य ही कैकेयी तुम्हें राज्य दे रही है। तुमने तो निश्चय ही पिता के वचन का पालन कर लिया, अब तुम देश लौट चलो, भरत सत्य ही वनवास झेलेगा ।। ६८ ।। यदि तुम ही सत्य-धर्म का उल्लंघन करोगे तो जो अपयश लगेगा उसे किस प्रकार रोकोगे? राज्य तो ज्येष्ठ का ही होता है, कनिष्ठ का राजा बनना उचित नहीं है। इसलिए मनोवेदना छोड़ दो और राज्यभोग करो ।। ६९ ।। पुरोहित कुलगुरु वशिष्ठ बोले,—हे राम, मन में ऐसा संकल्प क्यों किये हुए हो। निर्मम होना उचित नही, क्षमा करो। मनोवेदना छोड़कर देश चलो ।। २५७० ।। तुम्हारे शोक से राजा ने शरीर तज दिया, तुम्हारी माता दिन-रात केवल शोक ही करती रहती है। तुम्हें देखकर राज्य के सब लोग दुःख भूल जाते है और हर्षित हो उठते है ।। ७१ ।। कौशल्या बोली—राम, तू वचन की अवज्ञा कर रहा है, ऐसा हठ कर भला तू कौन सा कार्य सिद्ध करना चाहता है? रघुवंशी होकर मुझे वध करना चाहता है, गंगाजल छोड़कर कूपजल में उतरना चाहता है ।। ७२ ।। सारी प्रजा उन्हें घेरकर कहने लगी। चारो ओर 'चलिये, चलिये' का कोलाहल छा गया। तथापि राम का तो वन में ही रहने का संकल्प था, करोड़ो नदियाँ भी भला सागर का क्या कर सकती हैं? ।। ७३ ।।

राम द्वारा धर्म की व्याख्या, राम की खड़ाऊँ सिर पर लेकर भरत का अयोध्या प्रत्यागमन

राम ने मन को दृढ़ कर सबको सम्बोधित करते हुए कहा—सभी लोग मुझसे

जलर बुद्‌बुद्‌ येन अथिर जीवन * आमि केने एरिबोहो बापर बचन ७४
नृपति तिलक यत जगते वखानि * मरि मरि गैल येन जोवारर पानी
चक्षु ने देखिलो ताक शुनिलो श्रवणे * आछिल नाछिल येन पातियाइव कोने ७५
पुरुकुच्छ धुन्धुसार नृपति दिलीप * चक्रवर्ती भरत सगर रघु नृप
भगीरथ ययाति मान्धाता हेन वीरे * सवे मरि मरि गैला यमर मन्दिरे ७६
वलि रायर पयाणत भुवन टलिल * वामन स्वरूपे ताको विष्णुए छलिल
वरिषण जल येन शोषा रवि जाले * संहरय सवाको दुर्व्वार यम काले ७७
पूर्ण चन्द्रमार कान्ति हरय सकल * येवे शुकाइवरे सात सागरर जल
पाताल पर्य्यन्ते सातो पृथिवी नगय * मेरु मन्दरक आदि पब्बंत खसय ७८
सूर्य आदि ग्रह खसि भूमित परिव * तथापितो आमि पितृ वाक्यक नेरिब
प्राणर संशय येवे मिलय आमार * तथापितो न जाइवे मोहोर अङ्गीकार ७९
मोहोर वचन निष्ठ जानिया मनत * अयोध्याक लागि चला उलटि भरत
यावे छत्र नतोहोवे मोर पितृ राज * तावत भरत गैया चावा राज काय २५८०
कौशल्या सुमित्रा माव मरिवन्त शोके * भाले दुइको पालिवि जुराइव देखि तोके
कैकेयी मावे मन्द चिन्तिला आमाक * मोर दैव आछे कोने वाधिबेक ताक ८१
ताङ्क कोप न करिवि देखोहो सञ्जात * एतिक्षणे मोहोर मायात देस हात
मोर वाक्य वाधिया नलस राज्य भार * जीव माने तेवे तोक नामातिबो आर ८२
जानिया कमन जने ब्राह्मण वधिव * कमन अधमे सुरा पानक करिव
कोन जने ब्राह्मणर सुवर्ण हरिव * अगम्या गमन पाप कमने करिव ८३

आग्रह क्यों कर रहे हो ? यह जीवन पानी के बुलबुले जैसा अस्थिर है। मैं पिताजी के वचन का उल्लंघन कैसे करूँ ।। ७४ ।। विश्वविख्यात जितने राजागण थे सब ऐसे मर गये जैसे ज्वार का पानी उतर जाता है। हमने आँखों से नहीं देखा, कानों से सुना है—वे थे, या नहीं थे, इसका विश्वास कौन करेगा ? ।। ७५ ।। पुरुकुच्छ, धुन्धुसार, राजा दिलीप, भरत, सगर, रघु जैसे चक्रवर्ती राजा, भगीरथ, ययाति, मान्धाता जैसे वीर, सब मर-मरकर यमालय चले गये ।। ७६ ।। राजावलि के पराक्रम से भुवन कंपित था, वामनरूपी विष्णु ने उन्हें भी छल लिया। जैसे सूर्य की किरणें वर्षा का जल सोख लेती हैं, उसी प्रकार दुर्निवारकाल सबको संहार कर डालता है ।। ७७ ।। यदि सप्त-समुद्रों का जल सूख जाये, पूर्णचन्द्रमा की कान्ति खो जाये, पाताल तक सातों भुवनों का वह नाश हो जाये, मेरु-मंदर आदि पर्वत ढह जायें ।। ७८ ।। सूर्यादि ग्रह उतरकर पृथ्वी पर टूट गिरें, तथापि मैं पिता के वचन का उल्लंघन नहीं करूँगा। यदि मेरे प्राणों का संसय उपस्थित हो जाये, तथापि मेरी प्रतिज्ञा नहीं टलेगी ।। ७९ ।। मेरा वचन अटूट है, ऐसा समझकर हे भरत, तुम अयोध्या लौट जाओ। मेरे पिता का राज्य जैसे विनष्ट न हो जाय इसके लिए भरत शीघ्र ही जाकर राज्यकार्य की देख-भाल करो।। २५८० ।। माता कौशल्या और सुमित्रा शोक से मर जायेंगी, इन्हें अच्छी तरह पालन करना, तुझे देखकर ही इनका हृदय शीतल होगा। माता कैकेयी ने मेरा अनिष्ट चिन्तन किया, मेरे दैव को भला कौन रोक सकता है ।। ८१ ।। मेरे सिर पर हाथ देकर अभी शपथ लो कि माता कैकेयी पर क्रोध न करोगे तभी मुझे विश्वास होगा। यदि मेरे वचनों का उल्लंघन कर राज्य-भार नहीं लोगे तो जीवन रहते तुमसे बातें नहीं करूँगा ।। ८२ ।। जान-बूझकर कौन व्यक्ति ब्राह्मण-वध करेगा ? कौन अधम सुरा-पान करेगा ? कौन ब्राह्मण का स्वर्ण हरण करेगा ? पर-नारी से संभोग का पाप कौन करेगा ? ।। ८३ ।। भृत्य होकर प्रभु का

भृत्य हुया ईश्वरर बोल न करिब * कमन मुगुधे गुरु बचन बाधिब
इसब पातेक करिबोहो केने जानि * नजाइबो देशक बुलिलोहो सत्य बाणी ८४
आसिलि भरत तइ मोक परीक्षित * येन शिशु मति मोर नजान चरित
रामर निष्ठुर बाणी शुनिया भरत * येन बज्रपाते दुख मिलिला मनत ८५
बुलिलन्त राघवर चरणत धरि * तोमाक एरिया मइ याओ केते करि
चेध्यय बरिष खाटिवाहा बनबास * तयु दुखे आमार जीवने नाहि आश ८६
परमदारुण बोल आमाक बुलिला * हानिलाहा आमार हियात बज्रशिला
तयु आज्ञापालि देश चलिबो निश्चय * पारन्ते कि जीयन्ता पराणी किन सय ८७
तोमार दुइ खानि पाने प्रभु दियो मोक * माथात धरिया ताक पाशरिबो शोक
सेहि पाने जुरि सिंहासनत थापिबो * ताके रजा पात सबे राज्य भार दिबो ८८
तोमार चरण सेवा ताहाते करिबो * बनबास ब्रत यत गृहते धरिबो
भरतर भकतिक राघवे देखिल * कुशर खरम जुरि पाछे ताङ्क दिल ८९
एक ऋषि थानत पाइलन्त रघुनाथे * सादरे भरते ताक चराइलन्त माथे
फुरि फुरि प्रदक्षिण करिया भरत * प्रणामिला रामक धरिया चरणत २५९०
शिरत धरिया आछिलन्त कतोक्षण * सलोतक मने पाचे बुलिला बचन
तोमार चरण मइ तेजिया अभागी * तयु आज्ञा पालि याओं अयोध्याक लागि ९१
थाकियोक बुलि पुनु करिला प्रणाम * कान्दन्ते चलिला मुखे बुलि राम राम
राम देश याइबो हेन आशा गइल टुटि * निरन्तरे लोके कान्दे पृथिवीत लुटि ९२
ऋषि वर्गे कान्दन्त नुहिके चित्त रात * परम आकुले कान्दे यत नट भाट
सीताये राघवे कान्दे आश्रमत पशि * सकले वृक्षर मूल फुल गैल खसि ९३

आदेश न मानेगा ? कौन मूढ़ गुरु-वचन अवज्ञा करेगा ? जान बूझकर यह सब पाप मैं कैसे करूँ ? मै सत्य-वचन कहता हूँ, देश नही जाऊँगा ।। ८४ ।। भरत, तुम मेरी परीक्षा लेने आये हो ? मैं मानो शिशु-मति हूँ, मेरा चरित्र तुम नहीं जानते । राम की निर्मम वाणी सुनकर भरत को मन में ऐसा दुःख हुआ मानो उन पर वज्रपात हो गया हो ।। ८५ ।। उन्होंने राम के चरण पकड़कर कहा—तुम्हे छोड़कर भला मैं कैसे लौट जाऊँ ? चौदह वर्ष तुम बनवास के कष्ट सहोगे, तुम्हारे इस दुःख के कारण हमारे जीवन की कोई आशा नही रह गयी है ।। ८६ ।। तुमने मुझे परम दारुण वचन कहे, मेरे हृदय में वज्रशिला से चोट की । तुम्हारी आज्ञा मानकर मै अवश्य ही देश लौट जाऊँगा । चाहने पर भी क्या जीवित रहते, ये प्राण चले जा सकते है ? ।। ८७ ।। प्रभु, तुम्हारे दोनों पनहियाँ मुझे दे दो, उन्हें सिर पर लेकर मैं शोक भूल सकूँगा, उन्ही पनहियों को सिंहासन पर स्थापित करूँगा । उन्हे राजा बनाकर सब पर राज्यभार सौपूँगा ।। ८८ ।। उन्ही के द्वारा तुम्हारी चरणसेवा करूँगा । गृह में रहते हुए बनवास के व्रतों को धारण करूँगा । रामचन्द्र ने भरत की भक्ति-भावना देखकर कुश की बनी खड़ाऊँ जोड़ी उन्हें दे दी ।। ८९ ।। वह खड़ाऊँ उन्हें एक ऋषि से मिली थी । भरत ने उन्हें सादर सिर पर चढ़ा लिया । घूम-घूम प्रदक्षिणा करते हुए भरत ने राम के चरण पकड़कर प्रणाम किया ।। २५९० ।। देर तक वे सिर पकड़े रहे, इसके पश्चात् सजल नयनों से देखते हुए कहने लगे—मैं अभागा तुम्हारे चरणों को तजकर तुम्हारी आज्ञा के अनुसार अयोध्या लौट रहा हूँ ।। ९१ ।। 'सकुशल रहे'; कहकर पुनः प्रणाम किया और मुँह से 'राम-राम' कहते रोते-रोते चल पड़े । राम देश लौटेंगे, यह आशा नष्ट हो गयी । लोग धरती पर लोट-लोटकर रोने लगे ।। ९२ ।। ऋषिगण भी रो रहे थे, उनका चित्त भी अस्थिर हो गया था । नट, भाट आदि सभी परम व्याकुल हो रहे थे । सीता और राम आश्रम

आनो ऋषि कान्दे कुशासनत बसिया * वन जन्तु कान्दिलेक आहार तेजिया
भरतर कान्वन्ते शरीर भैल जीण * चित्रकूट पर्व्वतको फरि प्रदक्षिण ९४
परिर्वात्त पाइला पाचे भरद्वाज ठाव * नमिलन्त भरते ऋषिर दुइ पाव
पुछिलन्त वार्त्ता पाचे ऋषि भरद्वाजे * कहिला भरते बसि ऋषिर समाजे ९५
मने बिमरिषि ऋषि रावण विनाश * भरतर वोले किछु करिलन्त हाँस
गुहराजा गैला पाछे श्रृङ्गवर पुरे * अयोध्याक भरते देखिला कतो दूरे ९६
नोशोभे नगरि येन प्रजा भैले हीन * चन्द्र सूर्य्य विने नोशोभय राति दिन
भरते बुलिला पाचे सुमन्त्रक वाणी * अयोध्या नगर देखियोक महा मानि ९७
स्वर्गतो अधिक करि यार कीर्ति गैल * हेनपुरी येहेन श्मशान शाल भैल
राम दशरथे छिरि गैलन्त सङ्कलि * हाट खान मलिन येहेन शून्य स्थलि ९८
कैकेयी मावे भैला प्रचण्ड अगनि * शुकान अरण्य प्रजा लागि गैल छनि
जाज्ज्वल्य समान भैल राम हिंसा वावे * प्रजा अरण्यक दहि अगणि उधावे ९९
सबराज पुरि दशरथ गैला चलि * अयोध्या नगरी भैल येन पोरा थलि
अयोध्या नदीत भैला दशरथ जल * कैकेयी रवि जाले शुपिल सकल २६००
प्रजा मत्स्य कच्छप तरत परिमरे * रामशोक मत्स्य रङ्गे खेदि खेदि धरे
शोकानले भैल येन जल सागरर * ताते खेदिलेक येन कुञ्जर कन्दर १
बन्धुजने समे थाकिलन्त बिमरिषि * सब जन आपुनि गैलन्त दिशादिशि
शुना सभासद राम चरित्र सकल * बोला राम राम इसि परम मङ्गल २६०२

में घुसकर रोने लगे। इस रुलाई से सभी वृक्षों के मूल फूल झड़ गये ॥ ९३ ॥ दूसरे ऋषि भी कुशासन पर बैठे रो रहे थे; वनजन्तु आहार छोड़कर रोने लगे। रोते-रोते भरत का शरीर जीर्ण-शीर्ण हो गया, चित्रकूट पर्वत की प्रदक्षिणा कर, ॥ ९४ ॥ वे भरद्वाज मुनि के आश्रम मे पहुँचे और उनकी चरण-वन्दना की। ऋषि भरद्वाज ने समाचार पूछा, ऋषि-समाज में बैठकर भरत ने सब कुछ कह सुनाया ॥ ९५ ॥ ऋषि मन ही मन रावण के विनाश का चिन्तन कर भरत के वचनों से कुछ हँस पड़े। राजागुह इसके पश्चात् श्रृंगवेरपुर चला गया। भरत ने कुछ दूर से ही अयोध्यापुरी की ओर देखा ॥ ९६ ॥ मानो नगर की शोभा चली गयी है; प्रजा दीन-हीन हो गयी है जैसे कि चन्द्र के बिना रात और सूर्य के बिना दिन सौन्दर्यहीन रहते हैं। इसके पश्चात् भरत ने सुमंत्र से कहा—महामान्य मंत्री, अयोध्यानगरी को देखो ॥ ९७ ॥ जिसकी कीर्ति स्वर्ग से भी अधिक थी, ऐसी पुरी श्मशान जैसी बन गयी। राम और दशरथ तो जंजीर तोड़कर निकल गये। यहाँ की हाट शून्यस्थली सी बन गयी है ॥ ९८ ॥ कैकेई माँ प्रचंड अग्नि बन गयी। उसने प्रजारूपी सूखे अरण्य को जलाकर नष्ट कर दिया। उसकी हिंसा के कारण राम जल रहे हैं। प्रजारूपी अरण्य को जलाकर वह वेग से बढ़ी आ रही है ॥ ९९ ॥ समग्र राज्य को जलाकर दशरथ चल बसे, अयोध्यापुरी मानो जली हुई स्थली बन गयी है। अयोध्यारूपी नदी मे राजा दशरथ जल थे जिसे कैकेईरूपी सूर्य-किरणो ने सोख लिया ॥ २६०० ॥ प्रजारूपी मत्स्य-कच्छप नीचे पड़े मर रहे है। राम शोकरूपी मगर उन्हे उमंग से पीछाकर पकड़ रहा है। एक तो राम का शोकानल सागर-जल जैसा बन गया है, तिस पर हाथी और जलजन्तु पीछा कर रहे है ॥ १ ॥ सब लोग अपने-अपने गंतव्य स्थानों मे चले गये, भरत इस प्रकार अपने बन्धु-जनों से चर्चा करते रहे। सभासदों राम के चरित्र सुनो, राम-राम कहो, यही परम मंगल है ॥ २६०२ ॥

नन्दिग्रामर सिंहासनत श्रीरामर पादुका स्थापन

दुलड़ी

प्रभाते उठिया नित्य समापिया मिलाया पात्र समाज ।
मधुर बचने सम्बुधि सबाके भरते बुलिला काय ॥
रामर मन्दिर शून्य देखि मोर शोक नोहे उपशाम ।
अयोध्या नगरी परिहरि मइ चलि याइबो नन्दिग्राम ॥ ३
सेहि नन्दिग्रामे थित हुया किछु जुराइबो शोक रामर ।
सबे राजकाय साधिबो तथाते आज्ञा पालि राघवर ॥
हेन शुनि पाचे यत पात्र मन्त्री हरिष करिल मने ।
नन्दि ग्राम प्रति चलिबाक सबे साजिलन्त तेतिक्षणे ॥ ४
कौशल्या प्रमुख्ये मातृक प्रबोधि अयोध्यापुरत थैला ।
प्रदक्षिण करि प्रणामि सबाके शिरे धरि धुलि लैला ॥
शत्रुघन भ्रातृ सहिते भरत रथत गैया चरिला ।
वशिष्ठ प्रमुख्ये यत गुरुगण आगत सबे लरिला ५
सबार आगते भरत लरिला पाचे यान्त शत्रुघन ।
पात्र मन्त्री यत सबहि लरिल आनन्दित करि मन ॥
समदले शीघ्र बेगे नन्दिग्राम कतो बेलि गैया पाइल ।
रथर नामिया पाचे पानै जुरि भरते माथे चराइल ॥ ६
भरते बोलन्त राम भैल सिंह आमि भैलो येन शश ।
प्राण ददा मोर भैलन्त गरुड़ तान आगे आमि मश ॥
राम ददा भैल प्रफुल्ल पङ्कज आमि भैलो तात भृङ्ग ।
मइ भैलो येन क्षुद्र सरिसृप ददा भैलो मेरु शृङ्ग ॥ २६०७

नन्दीग्राम में सिंहासन पर श्रीराम की पादुका-स्थापना

प्रात:काल उठकर नित्यकर्म समाप्त करने के पश्चात् सामन्त-समाज को भरत ने एकत्र किया। सबको मधुर वचनों से सम्बोधित कर उन्होंने अपना अभिप्राय प्रकट करते हुए कहा—राम का मदिर सूना देख मेरा शोक शान्त नहीं हो पा रहा है। मैं अयोध्यानगरी को छोड़कर नन्दीग्राम में चला जाऊँगा। उसी नन्दीग्राम में रहकर राम का शोक कुछ मिटाऊँगा। राघव की आज्ञा का पालन करते हुए वही राजकार्य का निर्वाह करूँगा। यह सुनकर सभी सामन्त, मंत्री आदि मन में बड़े ही हर्षित हुए सभी नन्दीग्राम जाने हेतु उसी क्षण सजकर प्रस्तुत हो गये ॥ ३-४ ॥ कौशल्या आदि माताओं को धीरज बँधाकर उन्होंने अयोध्या में ही रखा और सबकी प्रदक्षिणाकर चरण-धूलि सिर पर ले लिया। भाई शत्रुघ्न समेत भरत रथ पर सवार हुए, वशिष्ठ आदि सभी गुरु-गण आगे-आगे चल पडे ॥ ५ ॥ अन्य सबके आगे-आगे भरत चले, उनके पीछे शत्रुघ्न, सामन्त मंत्री सभी आनन्दपूर्वक चल पड़े। यह जुलूस कुछ समय पश्चात् वेग से शीघ्र ही नन्दीग्राम पहुँचा। रथ से उतरकर चरणपादुकाओं की जोडी को भरत ने मस्तक पर चढ़ा लिया ॥ ६ ॥ भरत वोले—रामचन्द्र सिंह हैं, हम तो जैसे खरगोश है। मेरे प्राणप्रिय भैया गरुड़ है, उनके सम्मुख हम मच्छर हैं। भैया रामचन्द्र प्रफुल्ल कमल हैं, उनके समक्ष हम भौरे हैं। मैं तो मानो एक नन्हा-सा सरीसृप (साँप, केंचुआ) हूँ, भैया रामचन्द्र मेरुशिखर है ॥ २६०७ ॥ प्रभु राघव का मैं सेवक भर हूँ। उनके चरणों में मन लगा, मै सत्य ही निष्ठापूर्वक उनके आदेश का

प्रभु राघवर मइ से सेवक तान पदे मने धरि।
सत्ये सत्ये मइ आदेश ताहान पालिवोहो निष्ठ करि ॥
चैध्यय वरिष मोर प्रभु राम यावे थाके वन माज।
ताहान पादुका शिरे धरि मइ चर्च्चिवोहो तावे राज ॥ ८
वशिष्ठ प्रमुख्ये यत पुरोहित पढ़िलन्त सुमङ्गल।
धवल छत्रेक भरते धरिल प्रजा करे कौतूहल ॥
पातै जुरि निया पाटत वैसाया ताङ्के राज्यभार दिल।
जय जय राम वुलि प्रजा सवे आनन्द आति करिल ॥ ९
ढोल ढाक शङ्ख बाजय असंख्य झमके वाजे मादल।
उटत निशान अनेक विशाल घोड़ात वाजे तवल ॥
वेमुचि खुमचि डिण्डिमदगर वाजे भाण्डि कांशताल।
मुहुरी दोशरि झड़ झड़ि भेरी शवदर कोलाहल ॥ २६१०
अनन्तरे शत्रु- घन कुमरक अयोध्या लागि पठाइल।
भरते तहिते पात्र समन्विते यत राज कार्य्य चाइल ॥
अन्याय तेजिया समुचिते यत धन उपार्ज्जन भैल।
हुया अवनत पानैर आगत समस्ते ताक योगाइल ॥ ११
सतते रामर भक्ति ततपर भरतये सुविनीत।
राजकाय नित करि समुचित नन्दिग्रामे भैल थित ॥
यत शिष्ट शान्त जन पालिलन्त दुष्टक दण्डि सर्व्वथा।
एहि माने आवे भैला समापति अयोध्या काण्डर कथा ॥ १२
अयोध्या नगरे दशरथ गृहे श्री राम अवतार।
रूपे गुणे माने दाने त्रिभुवने समान नाहिके यार ॥
सनत कुमार आदि योगेश्वर नजाने यार रहस्य।
यिटो कोटि कोटि ब्रह्माण्डर पति तेन्तो भकतित वश्य ॥ १३

पालन करूँगा। मेरे प्रभु रामचन्द्र चौदह वर्ष जिस प्रकार से वन में रहेंगे उनकी चरण-पादुका का शिरोधार्य कर मैं उनके राज्य की देखभाल करूँगा ॥ ८ ॥ वशिष्ठ आदि पुरोहितों ने सुमंगल का पाठ किया, भरत ने श्वेत-छत्र धारण किया। प्रजा को बड़ा कौतूहल हुआ। पादुकाओं को सिंहासन पर बिठाकर उन्हीं को राज्यभार दे दिया। प्रजा ने 'जय जय राम' कहकर अत्यधिक आनन्द मनाया ॥ २६०९ ॥ अनगिनत ढोल, नगाड़े, शंख बजने लगे, मृदंगों की ध्वनि गूँजने लगी। अनेको बड़ी-बड़ी पताकाएँ उड़ने लगी। घोड़ों पर तबले बजने लगे। डिंडिम, दगर, भांडि, कांस्यताल आदि बाजे चारों ओर बजने लगे। मुहुरि, दोशरि, झड़झड़ी, भेरि आदि शब्दों का कोलाहल गूँजने लगा ॥ २६१० ॥ इसके अनन्तर कुमार शत्रुघ्न को उन्होंने अयोध्या भेज दिया। भरत वहीं रहकर सामन्तों के साथ सभी राज्यकार्य की देख-भाल करने लगे। अन्याय न कर समुचित रूप से जो धन अर्जित करते थे वह धन विनम्रतापूर्वक सभी पादुका के सम्मुख भेंट करते थे ॥ ११ ॥ सुविनीत भरत निरंतर राम की भक्ति में तत्पर रहते थे। समुचित-रूप से राजकार्य करते हुए वे नन्दीग्राम मे रहने लगे। दुष्टों को दंडित कर सभी शिष्ट-शान्तजनों का सर्वथा पालन करते थे। अब यहीं अयोध्याकाण्ड की कथा समाप्त होती है ॥ १२ ॥ अयोध्यानगर में दशरथ के यहाँ श्रीराम का अवतार हुआ, जिनके रूप, गुण, मान, दान आदि में त्रिभुवन का कोई भी समान नहीं है। सनतकुमार आदि योगेश्वर भी जिनका रहस्य नहीं जानते, जो

सकलो निगम गणे कहियार गुणर न पावे अन्त।
ब्रह्मा हर पुरं- दर आदि देवे याहार पद सेवन्त॥
अनन्त शकति- धर महेश्वर यिंटो देव भगवन्त।
भकतित बश्या हुया भकतर तेहेन्तो आज्ञा पालन्त॥ १४
पितृर सत्यक पालिया बनक गैला भ्रातृ भार्य्या सङ्गे।
माधव कन्दली भणिलन्त राम रहिला बनत रङ्गे॥
भकत जनर मनक पूरण करन्त रामे निश्चय।
हेनय परम कृपालु देवता आवर कोन आछय॥ १५
हेन महेश्वर प्रभु राघवर कृपालु गुणक जानि।
रामर चरण पङ्कजक मात्र भजियोक सबे प्राणी॥
शुना निरन्तर दुर्ज्जन जनर नकरिबा जानि सङ्ग।
एकेजनी दुष्ट कुजीर निमित्ते ईश्वरगे छत्र भङ्ग॥ १६
अयोध्यात नगरे आछेयत जन रामत सबे भकत।
मन्थरात हन्ते पाइला यत दुख कहिबे कोने शकत॥
हेन निष्ठ जानि दुसङ्ग तेजिया लैयो सङ्ग महन्तर।
तेसम्बे सहिति बसि एक प्रीति शुनियो कथा रामर॥ १७
सकले शास्त्रर एहि तात्पर्य्य जानिया तेजियो हेला।
अथिर जीवन याइ केतिक्षण अपेक्षारो आरो बेला॥
कलित सम्प्रति नाहि आन गति बिने माधवर नाम।
माधव कन्दली कहे निरन्तरे डाकि बोला राम राम॥ २६१८

इति अयोध्याकाण्ड समाप्त

करोड़ों ब्रह्मांड के पति हैं, वे भी भक्ति के वश में हैं ॥ १३ ॥ सभी वेद-वर्णन कर भी जिसके गुणों का पार नही पाते; ब्रह्मा, शिव, इन्द्र आदि देव जिनकी चरणसेवा करते रहते हैं, अनन्त शक्तिधर, महेश्वर जो देव भगवन्त हैं, वे भी भक्ति के वश में होकर आज्ञा-पालन किया करते है ॥ १४ ॥ पिता की सत्य-रक्षा-हेतु भाई और पत्नी सहित वन में गये। माधव कन्दली कह रहे है, राम वन में बड़े हर्ष से निवास करने लगे। रामचन्द्र भक्तजनों के मनोरथ अवश्य ही पूर्ण करते है। उनके जैसे परम कृपालु देवता भला और कौन है ? ॥ १५ ॥ ऐसे महेश्वर प्रभु राघव के कृपापूर्ण गुणों को समझकर केवल राम के चरणपंकज का भजन सभी प्राणियों को करना उचित है। निरंतर सुनो, जान-बूझकर दुर्जन-जनों की संगति मत करो। केवल एक दुष्टा कुब्जा मंथरा के कारण ईश्वर को भी छत्र-भंग (राज्य-वंचित होने के योग) का शिकार होना पड़ा ॥ १६ ॥ अयोध्यापुरी में रहनेवाले सभी राम के भक्त थे, मंथरा से उन्हें जितने दुःख मिले उनका वर्णन कौन कर सकता है ? ऐसा निश्चित समझकर दुस्संग तज, महन्तों (सत्पुरुषों) की संगति करो। उनके संग बैठकर प्रीति-पूर्वक राम की कथा सुननी चाहिए ॥ १७ ॥ सभी शास्त्रों का तात्पर्य यही है, ऐसा समझकर आलस्य छोड़ दो। यह अस्थिर जीवन कब चला जाये, पता नहीं। प्रतीक्षा करते-करते बहुत विलम्ब हो चुका है। माधव (रामरूपी भगवान कृष्ण) के नाम सिवा कलिकाल में सम्प्रति कोई अन्य गति नहीं है। माधव कन्दली कहते हैं, निरन्तर पुकारकर राम-राम कहो ॥ २६१८ ॥

इति अयोध्याकाण्ड समाप्त

अरण्य - काण्ड

भरतर नन्दिग्रामत बास, श्रीरामचन्द्रादिर अत्रि ऋषिर आश्रम प्रवेश, ऋषिपत्नीर ओचरत सीतार वृत्तान्त

नमो नमो रामचन्द्र प्रभु भगवन्त * याहार लीलार केहों न पावन्त अन्त
इच्छा मात्रे होवे सृष्टि पालन संहार * हेन रामपदे करों कोटि नमस्कार १९
याक स्मरि तरे महामहा पापीचय * भजोहों सादरे हेन राम कृपामय
यार कृपालेशे सिद्धि होवे मनस्काम * महा पुरुषार्थ रूप यार गुणनाम २६२०
याहार किङ्कर हर पुरन्दर बिधि * हेन राम स्मरणे आरम्भ हौक सिद्धि
करि शिरोगत राम देवर चरण * माधव कन्दलि बिरचिला रामायण २१
शुनिलाहायत समाजिक निरन्तर * रामर अमृत कथा अयोध्या काण्डर
शुनियोक आर रामचरित्र उत्तम * आरण्य काण्डत येन भैल अनुक्रम २२
रामर पादुका पुरि पूजि निरन्तर * नन्दिग्रामे स्थिति भैला भरत कुमर
अयोध्या नगरे रहिलन्त शत्रुघन * रामर आदेश शिरे धरि दुयोजन २३
परम सादरे प्रजा पालन्त सकल * पूरुब कालर मते नाइ कौतूहल
सुमरिया सिटो राघवर बनबास * हाँ राम बुलि सदा तेजन्त निश्वास २४
अहर्निशे रामर चरण युग स्मरि * नाहिके हरिष सदा थाके मन्यु करि
चौध्यय बरिष बहि याइब केतिक्षण * हुइबोहों हरिष देखि रामर चरण २५

भरत का नन्दीग्राम में निवास; श्रीरामचन्द्र आदि का अत्रिमुनि के आश्रम में आना, मुनिपत्नी से सीता का वृत्तान्त कथन

जिनकी लीला का कोई पार नही पा सकता, उन प्रभु भगवन्त रामचन्द्र को नमस्कार है। जिनके इच्छा-मात्र से सृष्टिपालन-संहार हुआ करते हैं, ऐसे राम के चरणों में कोटि नमस्कार है ।। १९ ।। बड़े-बड़े पापीगण जिनका स्मरण करते ही तर जाते हैं, ऐसे कृपामय राम का सादर भजन करता हूँ। जिनकी कृपा के लेश-मात्र से मनस्काम सिद्ध हो जाते हैं, जिनके गुण-नाम महापुरुषार्थ रूप हैं, शिव, इन्द्र, ब्रह्मा जिनके किंकर हैं ऐसे राम के स्मरण से सिद्धि आरंभ हो ।। २६२० ।। प्रभु रामचन्द्र के चरणों को शिरोधार्य कर माधव कन्दली ने रामायण की रचना की है ।। २१ ।। हे सामाजिक-जन, आप सबने अयोध्याकाण्ड की राम की अमृत-कथा सुनी, अब अरण्यकाण्ड में जैसा हुआ वह उत्तम रामचरित्र सुनें ।। २२ ।। राम का आदेश शिरोधार्य कर उनकी चरणपादुकाओं की निरन्तर पूजा करते हुए कुमार भरत नन्दीग्राम में और शत्रुघ्न अयोध्यापुरी में रहने लगे ।। २३ ।। वे परम आदर के साथ सारी प्रजा का पालन किया करते थे। पर पहले की भाँति मन में कौतूहल (आनन्द, सुख) नहीं रह गया था। राम के उस बनवास का स्मरण कर 'हा राम' कहकर सदा लम्बी साँस छोड़ा करते थे ।। २४ ।। अहर्निश राम के चरणों का स्मरण करते हुए सदा यह अनुसोचना किया करते रहते थे, चौदह वर्ष कब बीतेगा, कब राम के चरणों के दर्शन कर हर्षित होंगे, कोई हर्ष नही रह गया था ।। २५ ।। कौशल्या आदि माताएँ

कौशल्या प्रमुखे आछे यत मातृगण * रामक सुमरि सदा करन्त क्रन्दन
कृष्ण पक्षे चन्द्र येन टुटे प्रतिदिन * पुत्रशोके सबारो शरीर भैल क्षीण २६
राम सीता लक्ष्मणर कल्याण साधन्त * कौशल्या सुमित्रा दुयो विष्णुक पूजन्त
शोक जुरावन्त आश्वासिया शत्रुघने * रामक सुमरि मात्र थाके अनुक्षणे २७
अयोध्यात आछे नर नारी यतमान * धर्म्म आचरिया साधे रामर कल्याण
राम सुमरिया वञ्चे दुख शोक यत * रामर चरित्र येबे शुनियो साम्प्रत २८
रामक तेजिया येबे आसिला भरत * शोकाकुल हुया राम थाकिला मनत
चित्रकूट वने सीता लक्ष्मण सेहित * कतोदिन आछे प्रभु स्थिर नुहि चित्त २९
लक्ष्मणक सम्बोधि मातिला रघुबरे * न पारों धरिते चित्त उतपात करे
महादुख दिला आसि भरत भैयाइ * नुमाइल अगनि येन ज्वालिल बुनाइ २६३०
आमाक सुमरि मने सुखनाइ तार * एइ स्थाने खेदि योनो थासे आरोबार
महादुख दिला मोर आनि प्रजागण * देखि भरतर दुख पोरे मोर मन ३१
भरत भैयाइ यावे आसि नतो पावे * इ थानक छारिं आनदेश याओं तावे
एहि होक बुलिया लक्ष्मण भैला आग * पाचत चलन्त रामचन्द्र महाभाग ३२
लासे लासे सीता सती माजत चलन्त * कतो क्षणे चित्रकूट बन तेजिलन्त
नदी नद गहन विशेष बन देश * दल बिल एराइलन्त निकुञ्ज अशेष ३३
नाहिके प्रयास राम हरिषे चलन्त * दण्डक वनत गैया प्रवेश भैलन्त
पाइलन्त प्रथमे अत्रि ऋषिर आथान * प्रणामिला तिनियो ऋषिक करि मान ३४

राम का स्मरण कर सदा रोती रहती थी। कृष्णपक्ष में जैसे चन्द्रमा नित्य घटता जाता है, उसी प्रकार पुत्रशोक से सबके शरीर क्षीण हो गये थे ॥ २६ ॥ कौशल्या और सुमित्रा दोनों राम, सीता और लक्ष्मण की कल्याण-कामना करती हुई विष्णु की पूजा किया करती थीं। शत्रुघ्न उन्हे आश्वासन देकर शोक शान्त करते और निरन्तर राम का स्मरण करते रहते थे ॥ २७ ॥ अयोध्या के सभी नर-नारी धर्म-आचरण द्वारा राम की कल्याण-कामना किया करते थे। राम का स्मरण कर दुःख-शोक सह रहे थे। अब सम्प्रति रामचन्द्र के चरित्र सुनें ॥ २८ ॥ राम को छोड़कर जब भरत चले आये, तब रामचन्द्र मन ही मन शोकाकुल हो उठे। सीता लक्ष्मण सहित प्रभु कितने ही दिन चित्रकूट वन में रहे, परन्तु उनका चित्त स्थिर नहीं था ॥ २६२९ ॥ रामचन्द्र ने एक दिन लक्ष्मण को बुलाकर कहा—मैं चित्त को स्थिर नहीं कर पा रहा हूँ यह बडा अशान्त किये रहता है। भाई भरत यहाँ आकर महा दुःख दे गये, मानो बुझी हुई अग्नि को उसने दुबारा धधका दिया ॥ २६३० ॥ मेरा स्मरण करते हुए उसके चित्त मे सुख नही रह गया है। कही पुनः वह दौड़ा यहाँ न चला आवे। मेरी प्रजा को यहाँ लाकर उसने महान् दुःख दिया है। भरत का दुःख देखकर मेरा अन्तर जल रहा है ॥ २६३१ ॥ इस स्थान को छोड़कर किसी ऐसे दूसरे देश को चले जायें जहाँ भाई भरत आ न सके। ऐसा ही हो कहकर लक्ष्मण आगे-आगे चले, उनके पीछे-पीछे महाभाग रामचन्द्र चले ॥ ३२ ॥ धीरे-धीरे सती सीता उनके बीच चलने लगी। कुछ समय पश्चात् वे चित्रकूट वन को छोड़कर आगे निकल गये। गहन नद-नदी, वन-देश, दलदल, झील, अनेक झाड़ियाँ आदि पार करते हुए वे आगे बढ़े ॥ ३३ ॥ राम अनायास हर्षपूर्वक आगे बढ़ने लगे और दंडक वन में जाकर प्रवेश किया। सबसे पहले उन्हें अत्रिमुनि का आश्रम मिला। ऋषि को सम्मान करते हुए तीनों ने प्रणाम किया ॥ ३४ ॥ राम को देखकर अत्रिमुनि बहुत ही प्रसन्न हुए। वे कहने लगे, परम ईश्वर आज मेरे आश्रम में आये हैं। मैंने आज ही समझा कि

अत्रिवर हरिष देखिया राघवक * परम ईश्वर मोर आइला आश्रमक
आजिसि जानिलो मइ जन्म साफलिलो * ईश्वरर पाद-पद्म साक्षाते देखिलो ३५
विधिवते फले जले पूजिया रामक * परम सादरे पूछिलन्त कुशलक
ब्रह्मार नन्दने येवे कुशल पुछिल * शुनि राघवर मने हरिष मिलिल ३६
ऋषित कहिला रामे आपोन कुशल * शुनिया ऋषिर मने भैल कुतूहल
पाचे अभ्यन्तरे ऋषि सीताक पठाइला * मुनिर भार्य्याक गोसानीये लाग पाइला ३७
अत्रिवर भार्य्या तान अनसूया नाम * रूपे गुणे त्रिभुवने नाहिक उपाम
चन्द्रर जननी पतिव्रता शुद्ध भाव * हर्षित वदने सीता नमिलन्त पाव ३८
विनये थाकिला देवी जनक नन्दिनी * आसन वड़ायादिला चन्द्रर जननी
अनसूया वुलिलन्त प्रफुल्ल वदने * रामर लगत केने आसि भैला वने ३९
वापर आदेशे राम आइला वनवासे * तुमि केने ना थाकिला श्वाशुरीर पाशे
दारुण वनत माव वर दुख पाइवा * तृणर शय्यात शुइवा फलमूल खाइवा २६४०
सीताये वोलन्त केने लघुवोला माति * आमाक जानिवा शान्ति पतिव्रता आति
देशत थाकिले आमि कोन फल पाइवो * स्वामी भकतित स्वर्ग मुकुतिक पाइवो ४१
सत्यवती रमणी सावित्री येन सती * चन्द्रर रोहिणी वशिष्ठर अरुन्धती
अत्रिवर तुमि येन शङ्करर माया * आमारो रामत जाना तेहन दृढ़ काया ४२
तोमरा सवरो येन स्वामी आदि देव * आमारो रामत परे आननाइ केव
वाप माव सुहृदर वासना विषय * स्वामीत भकति स्वर्ग मुकुति साधय ४३
अनसूया शुनिलन्त सीतार वचन * ग्रीवे चापि धरिलन्त हर्षित वदन

मेरा जन्म सफल हुआ। ईश्वर के चरण-कमलों के साक्षात् दर्शन किये ।। ३५ ।। फल-जल आदि से उन्होंने विधिवत् राम की पूजा की। परम आदर से उनकी कुशल पूछी। ब्रह्मा के पुत्र ने कुशल पूछा तो राम को बड़ा ही हर्ष हुआ ।। ३६ ।। राम ने ऋषि से अपना कुशल-समाचार कहा, सुनकर ऋषि के मन मे बड़ा कौतूहल हुआ। इसके पश्चात् ऋषि ने सीता को भीतर भेज दिया, जहाँ देवी सीता की भेंट ऋषि पत्नी से हुई ।। ३७ ।। अत्रि-ऋषि की उन भार्या का नाम था अनसूया जिनकी रूप-गुण मे त्रिभुवन मे उपमा नही थी। वे चन्द्र की जननी पतिव्रता पवित्र स्वभाव-वाली थी। सीता ने प्रसन्नता से उनके चरणों में प्रणाम किया ।।३८ ।। जानकी परम विनय से खड़ी रही, चन्द्र की जननी अनसूया ने वैठने को आसन बढ़ा दिया। अनसूया ने प्रसन्न चित्त से कहा, तुम भला राम के संग वन में क्यों चली आयी ? ।। ३९ ।। राम तो पिता के आदेश से वन में आये हैं, तुम भला सास के संग क्यों नही रही ? माँ, दारुण वन मे तुम्हें बड़ा दुःख मिलेगा, तृण की शय्या पर सोना पड़ेगा, फल-मूल खाना पड़ेगा ।। २६४० ।। सीता ने कहा—मुझसे ऐसा कहकर क्यों लघु कर रही हो ? समझ लो कि मैं परम पतिव्रता और सती हूँ। देश में रहकर भला मुझे कौनसा फल मिलेगा ? स्वामी की भक्ति से स्वर्ग और मुक्ति प्राप्त करूँगी ।। ४१ ।। मैं सत्यवती नारी, सावित्री-सी सती हूँ। चन्द्र की जैसी रोहिणी है, वशिष्ठ की जैसी अरुन्धती है, अत्रि की जैसी तुम हो, शंकर की जैसी माया है, समझ लो कि राम में हमारा चित्त उसी प्रकार दृढ़ रूप से लगा हुआ है ।। ४२ ।। तुम सबके जैसे पति ही आदिदेव हैं, उसी प्रकार मेरा भी राम के सिवा और कोई नहीं है। पिता-माता और सुहृद की वासना-विषय के हेतु हैं। पति की भक्ति स्वर्ग, मुक्ति साधन करने-वाली है ।। ४३ ।। अनसूया सीता के वचन सुनकर परम हर्षित हो उनके गले लग गयी। मन की संतुष्टि से उन्हे अपना कंठहार दे दिया। अंगराग और वत्तीस आभूषण

मनत सन्तोष रूपे दिला कण्ठहार * अङ्गराग दिलन्त बत्रिश अलङ्कार ४४
पतिव्रता नारीत मोहोर अनुराग * हरिष कराइला माव मोत बर माग
सीताये बोलन्त माव दाया दृष्टि चाइल * एतेकते आमिओ सकल बर पाइल ४५
अनसूया बोले यत दिलो अलङ्कार * सिन्दूर चन्दन तोर नुगुचोक आर
कदाचितो भाठि तोर नुहिब यौवन * महासुखे रामे समे करिबा रमण ४६
बर दिया आरो बुलिलन्त अनसूया * स्वामीत भकति कर पतिव्रता हुया
तयु स्वयंबरर शुनिछो किछु कथा * कहियोक मिथिलार यिमत व्यवस्था ४७
हेन शुनि सीता सती बुलिलन्त वाणी * उतपति धरि मोर शुनियो काहिनी
बाप मोर राजा भैला मिथिला नगरे * याहार प्रसिद्धि गैल देवासुर नरे ४८
जनक मोहोर बाप अपुत्रक भैला * भार्य्या समे यज्ञभूमि चाहिबाक गैला
मनर कौतुके बापे माथा तुलि चाइला * त्रैलोक्य मोहिनी कन्या एक भेट पाइला ४९
नामत मेनका तेहें देव अपेश्वरी * रूपे गुणे त्रिभुवने नाहि पटन्तरी
देखिया बापर बर बाढ़ि गैले मन * विमरिषि तथाते आछिला कतो क्षण २६५०
एतेहन्ते आकाशत शुनिलन्त वाणी * तोमार कुशल देवे मिलाइलेक आनि
पाइबा मनोरथ हालबाहा एहि थान * लभिबा अपत्य तुमि इहाने समान ५१
हेन शुनि पितृ मोर मने रङ्ग करि * यज्ञ भूमि बाहिलन्त हाते हाल धरि
शुनियोक अनसूया आमार सङ्गति * भूमि भेदि शिरलत भैलो उतपति ५२
धूलिये धुसर मइ करोहो घञ्चाल * विस्मय स्वरूपे चाहि आछा महीपाल
कोले करि गैला निज महिषीर भिता * शिरलत उपजिलो नाम भैल सीता ५३

प्रदान किये ।। ४४ ।। पतिव्रता नारियों से मुझे बड़ा अनुराग है, हे माँ, मेरा बड़ा भाग्य है कि तुमने मुझे बड़ा ही आनन्दित किया। सीता ने कहा—माता आपने मुझ पर कृपादृष्टि की, इससे मुझे सारा वरदान मिल गया ।। ४५ ।। अनसूया बोली—जितने अलङ्कार थे सभी तुम्हें दे दिये, तुम्हारा सिन्दूर और चन्दन जैसे कभी न मिटे। तुम्हारा यौवन कभी ढलेगा नहीं। महासुख से राम के संग तुम रमण करती रहोगी ।। ४६ ।। ऐसा वर देकर अनसूया ने पुनः कहा—पतिव्रता बनी रहकर तुम पति की भक्ति करती रहो। तुम्हारे स्वयंवर की कुछ कथा मैने सुनी है। मिथिला में जैसी व्यवस्था है, मुझे बताओ ।। ४७ ।। यह सुनकर सती सीता बोली—मेरी उत्पत्ति से लेकर सारी कथा सुनो। मेरे पिता मिथिलानगर के राजा है, जिनकी प्रसिद्धि देव, असुर, नर लोक तक फैली है ।। ४८ ।। मेरे वे पिता जनक संतानहीन थे। पत्नी समेत वे एक बार यज्ञभूमि देखने गये। मन की उत्सुकता से उन्होंने सिर उठाकर देखा तो त्रैलोक्य-मोहिनी कन्या को देखा ।। ४९ ।। उस देव-अप्सरा का नाम मेनका था, त्रिभुवन में जिसके रूप-गुण की कोई तुलना नहीं थी। उसे देखकर पिता को बड़ा कौतूहल हुआ। कुछ क्षण वे वहीं सोचते रह गये ।। २६५० ।। इतने में आकाशवाणी सुनाई पड़ी—दैव ने तुम्हारा कुशल मिला दिया है। तुम यहीं हल चलाओ तब तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होगा, तुम इन्हीं की जैसी संतान प्राप्त करोगे ।। ५१ ।। यह सुनकर पिता मन में बड़े प्रसन्न हो, अपने हाथ से यज्ञ-भूमि पर हल चलाया। अनसूयाजी अब हमारी अवस्था सुनिये। भूमि भेदकर हल की नोक पर मेरी उत्पत्ति हुई ।। ५२ ।। धूल में लियड़ी मै रोने-चीखने लगी। राजा मेरी ओर विस्मय से देखते रह गये। मुझे गोद में ले अपनी रानी के पास गये। हल की नोक (सीता) पर उत्पन्न होने के कारण मेरा नाम सीता पड़ा ।। ५३ ।। राजा जनक की जितनी प्रमुख पटरानियाँ थीं, कन्या बताकर मुझे उन सबके हाथ सौंप दिया।

जनक रजार यत मुख्य पटेश्वरी * ता सम्वात सुम्पिला आमाक जीउ करि
सुखे बर भैलो तासम्बारो नाहि आन * आमाक देखन्त शत पुत्रर समान ५४
त्रैलोक्य मोहिनी मइ भैलो बरवाला * बाढ़िलो ताहान घरे येन चन्द्रकला
दिन माने मोहोर यौवन भैल भेव * वर न पाइ सदृश बापर हृदि खेद ५५
चिन्ता अग्नि सदाये दहवै कलेवर * बिमरिषि पातिला आमार स्वयम्बर
पूर्व्वकाले यज्ञभूमि वाहिलन्त बाप * सेहिकाले महादेवे दिला निज चाप ५६
राजा सब मताइला जनक महीपाले * नृपति समाज भैल स्वयंबर शाले
अनेक सहस्र लोके धनु तुलि लैल * सबारो आगत महेशर धनु थैल ५७
सवाको सम्बुधि बुलिलन्त नृपबरे * सबे आसि आछा मोर जीउर अन्तरे
यिटो दिते पारे एइ धनुत पछार * सिसि मोर जमाइ वर हैबेक सीतार ५८
हेन शुनि यतेक नृपति आसि भैल * धनुक प्रणामि सबे दिशादिशि गैल
जोर दिबे लागि कतो चापिल सन्नित * आछो जोर दिबे धनु देखि भैल भीत ५९
राजा सब गैल येबे मनत विरङ्गे * बापर विषाद भैल स्वयम्बर भङ्गे
विश्वामित्रे पाचे राम लक्ष्मणक निल * भालमते जनके तिनिको सादरिल २६६०
रङ्गमने बापर चापिलो गैया कोल * रूप देखि रामर भैलोहो आति भोल
सुन्दर रूपक देखि सन्तोष मिलय * मने मने गुणो जोनो विधिये छलय ६१
सबहि गैलन्त पाचे स्वयंबर शाले * धनु उपदेशिला जनक महीपाले
धनु देखि राघवे ईषत हास करि * लीला रूपे वाम हाते धनु तुलि धरि ६२
निमेषेके राघवे धनुत गुण दिल * टङ्कार करिला तिनि भुवन कम्पिल

वे सभी मुझे परायी न समझकर सौ पुत्रों के समान समझती थी ।। ५४ ।। मैं बड़ी होकर त्रैलोक्य-मोहिनी बालिका बनी । उनके यहाँ चन्द्रकला-सी बड़ी हुई । समय पर युवती बनी । मेरे योग्य वर न पाकर पिता के हृदय में बड़ा खेद हुआ ।। ५५ ।। चिन्ता-रूपी अग्नि निरंतर उनके शरीर को दग्ध करने लगी । विचार-विमर्श कर उन्होने मेरा स्वयंवर रचाया । पूर्वकाल में पिता ने जब यज्ञभूमि पर हल चलाया था तो महादेव ने उन्हे अपना धनुष प्रदान किया था ।। ५६ ।। राजा जनक ने सभी राजाओं को बुलवाया । स्वयंवर-शाला में राजाओ का समाज जुड़ा । अनेक हजार लोगों ने शिव का धनुष उठा लिया और उन राजाओं के सम्मुख लाकर रखा ।। ५७ ।। सबको संबोधित करते हुए राजा ने कहा—आप सभी लोग मेरी कन्या के हेतु आये हैं । जो व्यक्ति इस धनुप पर डोरी चढा सकेगा, वही मेरा जमाई, सीता का वर बनेगा ।। ५८ ।। यह सुनकर जो राजा वहाँ उपस्थित हुए थे सभी धनुप को प्रणाम कर अपने-अपने स्थान की ओर चल पड़े । कोई-कोई डोरी चढ़ाने के लिए धनुष के निकट पहुँचे, पर वे क्या डोरी चढ़ाते ? धनुप को देखकर ही डर गये ।। ५९ ।। व्यर्थ मनोरथ होकर जब राजागण चले गये और स्वयंवर भंग हो गया तो पिता विषादग्रस्त हो गये । इसके पश्चात् विश्वामित्र राम-लक्ष्मण को ले आये । राजा जनक ने तीनों का उत्तम रूप से स्वागत किया ।। २६६० ।। बड़ी ही उमंग से मै पिता की गोद में चढ गयी । राम का रूप देख अत्यन्त विभोर हो उठी । सुन्दर रूप देखकर बड़ा संतोष मिला । मन ही मन सोचने लगी जैसे विधि छलना न करे ।। ६१ ।। सभी इसके पश्चात् स्वयंवर-शाला में गये । राजा जनक ने धनुष के संबंध में निवेदन किया । धनुप देख राघव ने मृदुहास कर लीला से ही बायें हाथ में धनुप उठाकर क्षण मात्र मे धनुप पर डोरी चढा दी और टंकार किया, जिससे तीनों लोक कम्पित हो उठे । पुनः मृदुहास्य करते हुए उन्होंने धनुष पर डोरी

अल्प हास्य करिया धनुत बल दिल * प्रचण्ड शवदे धनु माजत भाङ्गिल ६३
शिलार उपरे येन निर्घात परिल * ससागरा सातो द्वीपा पृथिवी लरिल
विश्वामित्र जनकेओ थाकिलन्त चाइ * लक्ष्मण रामर कटाक्ष- ओकिछो नाइ ६४
आन सब नृपति यतेक आसि भैला * रामलक्ष्मणत हारि निज स्थाने गैला
बापर आज्ञाक मइ शिरत धरिलो * पद्मर मालाक दिया रामक बरिलो ६५
पाचे दशरथक जनक राजा निल * ताहाने आगत मोक बापे बिहादिल
आपोनार जीउ आछे जनक राजार * कनिष्ठा उर्म्मिला नामे बहिनी आमार ६६
त्रैलोक्य मोहिनी कन्या महा रूपवती * सुन्दर नासिका दन्त मुकुतार पान्ति
मृणाल युगल बाहु कृश मध्य देश * कमल नयनी नील आकुंचित केश ६७
बन्दुलिको जिनिया अधर रुचिकर * पूर्णचन्द्र जिनि मुख पद्म समसर
कर्णत कुण्डल कम्बु कण्ठ मनोहर * उन्नत कठिन स्तन त्रिवलि उदर ६८
गले गजमुक्ता शोभे सूते सरि हार * बाहुत कङ्कण ताँर बलया सोणार
रत्नर शलाका सम आङ्गुलिर पान्ति * आङ्गुठि उज्ज्वल नख चन्द्रे करे कान्ति ६९
जङ्घा मनोहर उरु येन राम कल * रत्नर नूपुरे शोभे चरण-युगल
चम्पार पाकरि सम आङ्गुलिर पान्ति * उज्झटी उज्ज्वल नख मणि करे कान्ति २६७०
आरक्त पद हस्ते प्रकाशे कमले * शरीरर कान्तिये चन्द्रतो करि बले
चन्द्रकला सम वाढ़े गजेन्द्र गमन * लक्ष्मी सम रूपे गुणे मोहे मुनिगण ७१
परम सुन्दरी कन्या जनकर घरे * कटाक्षते त्रिभुवन मोहिबाक पारे
उर्म्मिला बहिनी पाचे जनके मताइल * सब अलङ्कारे ताङ्क लक्ष्मणे बिहाइल ७२

चढ़ा दी। प्रचंड शब्द से धनुप बीचोंबीच से टूट गया ।। ६२-६३ ।। मानो शिला पर वज्रपात हुआ। ससागरा सात द्वीपोंवाली पृथ्वी हिल उठी। विश्वामित्र और जनक भी देखते रह गये। पर राम और लक्ष्मण की भौह भी टेढ़ी नहीं हुई ।। ६४ ।। और जो राजागण आये हुए थे सब राम, लक्ष्मण से हार मानकर अपने-अपने स्थान पर चले गये। पिता की आज्ञा शिरोधार्य कर मैने कमल की माला पहनाकर राम का वरण किया ।। ६५ ।। इसके पश्चात् राजा जनक ने दशरथ को आमंत्रित किया और उनके सम्मुख मेरा विवाह कर दिया। राजा जनक की अपनी छोटी बेटी है, मेरी उस बहन का नाम उर्मिला है ।। ६६ ।। जो त्रैलोक्य-मोहिनी महा-रूपवती कन्या है। नाक सुन्दर, दाँत मोती की लड़ियों जैसे, हाथ मृणाल जैसे, कमर पतली, नयन नील कमल-से, केश कुंचित। सुन्दर अधर बिम्बाफल से भी अधिक लाल मनोरम; मुख चन्द्र से भी अधिक सुन्दर, कमल जैसा कानों में कुंडल, कंठ शंख जैसे मनोहर, स्तन ऊंचे और कठोर, उदर त्रिबलियुक्त है ।। ६७-६८ ।। गले में गज-मोती का सतलड़ी हार शोभित है, हाथों में सोने के कंकण, तार और वलय है। उँगलियों की पंक्ति रत्नशलाका जैसी, उज्ज्वल अंगूठियाँ और नाखून चन्द्र जैसे कान्तिमान है ।। ६९ ।। जाँघे मनोहर, उरु राम केले जैसे, चरण युगल मे रत्न नूपुर शोभित है। उँगलियों की पंक्ति चम्पा कलि जैसी, पैरों मे उज्झटी नाम का चमकीला आभूषण, नाखून मणियों जैसे कान्तिमान है ।। २६७० ।। रक्तवर्णी हाथ और पाँव कमल जैसे प्रकाशित है। शरीर की कान्ति चन्द्र की अपेक्षा अधिक चमकीली है। वह गजेन्द्रगामिनी चन्द्रकला की भाँति दिनोंदिन बढ़ रही थी, रूप में वह लक्ष्मी की भांति, गुण में ऋषियों को भी मोहनेवाली, जो अपने कटाक्ष से त्रिभुवन को मोहित कर सकती है ।। ७१ ।। ऐसी परम सुन्दरी कन्या जनक की है। जनक ने इसके पश्चात् उस बहन उर्मिला को बुलवाया। सभी अलंकारों से मंडित कर उसे लक्ष्मण से विवाह

पूर्ब्बजन्मे आनेक तपस्या कँलो आमि * तार प्रतिफले राघवक पाइलो स्वामी
मोर मने राघव स्वामी से निज देव * रामक एरिया आन न जानो हो केव ७३
हेन शुनि अनसया आनन्दक पाइला * रामर पाशक लागि सीताक पठाइला
देखि राम लक्ष्मणे कौतुक वर पाइला * कथा कहि अलङ्कार आगत योगाइला ७४
सीतार सम्पत्ति देखि श्रीराम लक्ष्मणे * रात्रिगोट वञ्चिलन्त हरषित मने
प्रभाततते ऋषिक करिया नमस्कार * तिनि हन्ते दण्डका वनत पयसार ७५

रामर दण्डकारण्यत प्रवेश; ऋषिर अभ्यर्थना, विराध राक्षस वध

हाते धनुशर धरि लक्ष्मण श्रीराम * आश्रमेक पाइला रविमण्डल उपाम
भँला महा तृपिति आशेष स्तुति भावे * आकर्ण शवद ऋषि सब गलरावे ७६
रामक देखिया सवे परम हरिषे * सहस्रेक सङ्ख्यात वेढ़िलेक चतुर्द्दिशे
वेद पाठ उच्चरिया आशंसार जाक * सवे हन्ते सम्बोधि वुलिला स्तुतिवाक ७७
याहार विनोद इटो सकले संसार * तेन्ते धर्मरक्षा हेतु भँला अवतार
अत्यन्त पापीयो तरे याहाक सुमरि * हेन ईश्वरक देखिलोहो नेत्र भरि ७८
जगत कारण तुमि विधातारो विधि * तयु दरशने तपस्यारो भँल सिद्धि
जन्मरो साफल भँल तयु दरशने * रहोक भकति प्रभु तोमार चरणे ७९
पाचे राम वुलिलन्त शुनियोक ऋषि * निर्भये करियो तप एहि वने वसि
घोर अन्धकार येन पूर्णिमार शशी * मारिवो राक्षस सव तपोवने पशि २६८०

दिलवाया ॥ ७२ ॥ पूर्वजन्म में मैने अनेक तप किये थे, जिसके फलस्वरूप रामचन्द्र को पति-रूप मे पा सकी हूँ। मेरे विचार से पति राम ही निज देव हैं। राम को छोड़ मैं और किसी को नही जानती ॥ ७३ ॥ यह सुनकर अनसूया आनन्दित हुई और सीता को राम के समीप भेज दिया। उसे देखकर राम-लक्ष्मण को वड़ा कौतुक हुआ। सीता ने सारी वात कहकर उनके सम्मुख आभूषण रख दिये ॥ ७४ ॥ सीता की सम्पत्ति देख श्रीराम-लक्ष्मण ने हर्षित मन से रात वितायी। प्रभातकाल में ऋषि को नमस्कार कर तीनो ने दंडक वन मे प्रवेश किया ॥ २६७५ ॥

श्रीराम का दंडकारण्य में प्रवेश, ऋषियों द्वारा स्वागत, विराध राक्षस वध

हाथों में धनुष-वाण लिये श्रीराम और लक्ष्मण ने रविमंडल जैसे सुशोभित आश्रम में प्रवेश किया। ऋषिगण आकर्ण शब्द उच्चारण कर रहे थे. उनकी अशेष स्तुति-भावना से राम-लक्ष्मण को वड़ी तृप्ति हुई ॥ ७६ ॥ राम को देखकर सवने परम हर्ष से हजारों की संख्या में चारों ओर से घेर लिया। वेद-पाठ का उच्चारण करते हुए स्वस्तिवाचन किया और सवको सम्वोधित कर यह स्तुतिवचन कहा—॥७७॥ यह समस्त संसार जिसका विनोद है, वही धर्मरक्षा हेतु अवतरित हुए है। जिसका स्मरणकर अनेक पापी भी तर जाते है, ऐसे ईश्वर को हमने नयन भरकर देखा ॥७८॥ तुम जगत के कारण, विधाता के भी विधि (विधाता) हो। तुम्हारे दर्शन से हमारी तपस्या की सिद्धि होगी। तुम्हारे दर्शन से जन्म भी सफल हो गया। हे प्रभु तुम्हारे चरणों मे हमारी भक्ति रहे ॥ ७९ ॥ इसके पश्चात् राम ने कहा—हे ऋषिगण सुनिये, इस वन में निवास करते हुए आप निर्भय हो तपस्या कीजिए। पूर्णिमा का चन्द जिस प्रकार घोर अधकार को नष्ट कर देता है, उसी प्रकार मैं सभी राक्षसों को तपोवन मे प्रवेश कर मारूँगा ॥ २६८० ॥ ऋषियों के संग हर्षपूर्वक रात विता,

ऋषि समे हरिषे रजनी गोट बञ्चि * चलिला ऋषिक रामे निर्भयक सञ्चि
हाते धनु काण्ड गावे सन्ताहा चड़ाइल * माज करि सीताक गहन बन पाइल ८१
राम सीता लक्ष्मण भ्रमन्त बने बन * राक्षस गोटक गैया पाइला दरिशन
नामत बिराध एको अङ्ग नोहे छोट * बसिया आछय सिटो येन गिरि गोट ८२
चक्षुयेन धोन्द काया आङ्गारर वर्ण * नाक गोट बेङ्का कुला हेन दुइ कर्ण
लह लह जिह्बा मुख माजते लरय * अगनि खण्डेक येन गह्वरे ज्वलय ८३
दुइ भरि भेङ्गुरा पिङ्गल वर्ण केश * बिकट दशन मुख बिभञ्ज कुबेश
माथा गोट जोड़्कारि गगने उधाइ गैल * देखि जानकीर बर चमत्कार भैल ८४
आठ गोटा शिङ्ग सिटो कपाले लैलेक * हस्तीर माथाक काटि ताते आलाइलेक
क्षणिकते गैया बाघ मारिया खाइलेक * रुधिरे सहिते चर्म्म गावे मेढाइलेक ८५
ऋषि सब मारिया भुञ्जय प्रति नित * निर्भय स्वरूप दण्डकर बने स्थित
तिनिको देखिया घोर नादे खेदि गैल * बिराधे पाइलेक ऋषि सब भय भैल ८६
चिले येन थाम्प दिया माछक निलेक * माया करि सीताक गगने उछाइ लेक
राक्षसर अङ्गे रूप सीतार बलिल * अञ्जन पर्व्वते येन माणिक ज्वलिल ८७
सीता भैला सुवर्ण बिराध काठ नय * येन हेम लता काल पर्व्वते ज्वलय
निशाचर घोर मेघ सीता भैल तार * अङ्गार ओचरे येन बह्निर सञ्चार ८८
हासिया बिराधे बोले अन्तरीक्षे बसि * कहिर टेण्टन दुइ भैलाहा तपसी
हाते धनुशर देखो लगत सुन्दरी * आनो तपस्वीर फुरा भिक्षा छन्न करि ८९

उन्हें निर्भय कर राम चले। हाथों में वाण-धनुष, शरीर पर कवच धारण किया और सीता को वीच में लेकर गहन वन में पहुँचे ॥ २६८१ ॥ राम, सीता, लक्ष्मण वन-वन में भ्रमण करने लगे और एक राक्षस से उनकी भेंट हुई। विराध नाम के उस राक्षस का कोई भी अंग छोटा न था, वह एक पूरे पर्वत की भाँति बैठा हुआ था ॥ ८२ ॥ उसकी आँखें वृक्ष-कोटर की भाँति, शरीर कोयले-सा काला, नाक टेढी और दोनों कान सूप की भाँति थे। लपलपाती जीभ मुँह के बीच हिल रही थी, मानो गुफा में कोई अग्नि-खंड जल रहा था ॥ ८३ ॥ दोनों पैर टेढ़े-मेढ़े, केश पिंगल-वर्ण, मुँह और दाँत विकट, वेश बहुत ही कुत्सित और वीभत्स था। सिर हिलाता हुआ वह आकाश में उड़ गया, देखकर जानकी को बड़ा विस्मय हुआ ॥ ८४ ॥ उसके सिर पर आठ सींग थे हाथी का सिर काटकर उन पर रखे हुए था। क्षण भर में वाघ मार खा डाला। रक्त-सहित उसकी खाल को शरीर में लपेट लिया ॥ ८५ ॥ ऋषियों को मारकर वह नित्य खाया करता था और निर्भय होकर दंडक वन में रहता था। तीनों को देखकर घोर नाद करता हुआ वह दौड़ गया, 'विराध ने पकड़ लिया' सोचकर ऋषिगण आतंकित हो उठे ॥ ८६ ॥ चील जिस प्रकार झपट्टा मारकर मछली को ले जाती है उसी प्रकार माया कर वह सीता को आकाश में ले गया। राक्षस के अंगों पर सीता का सौन्दर्य ऐसा खिल उठा मानो अंजन पर्वत पर मणि जगमगा रही हो ॥ ८७ ॥ सीता स्वर्ण-सी और विराध काष्ठ जैसा हो गया। मानो काले पर्वत पर स्वर्णलता जगमग कर रही हो। निशाचर घोर-मेघ और बिजली-सी लग रही थी। मानो कोयले के पास अग्नि जल रही हो ॥ ८८ ॥ अतरिक्ष पर स्थित हो बिराध हँसकर बोला—तुम कहाँ के प्रवंचक तपस्वी बने हुए हो। हाथ में तो धनुष-वाण देख रहा हूँ, साथ में सुन्दरी नारी है। तुम दूसरे तपस्वियों की भिक्षा हड़प कर घूम रहे हो ॥ ८९ ॥ वल्कल पहने हुए, सिर पर जटा-भार है, फिर त्रैलोक्य-मोहिनी कन्या तुम्हारे साथ है।

परिधान वाकलि शिरत जटा भार * त्रैलोक्य मोहिनी कन्या लगत तोमार
धर्म्म विरोधीक देखिवाक नुहि योग * तोरा दुइक मारि कन्या करो उपभोग २६९०
हेर देख त्रिशूल हातत तुलि धरो * तोरा दुइरू मारिया रुधिर पान करो
आराधिलो ब्रह्माक दिलन्त तेहे वर * तुमि हेन लक्षको मोहोर नाहि डर ९१
हेन शुनि रामे पाचे बुलिला वचन * दशरथ सुत आमि आसि सेलो वन
त्रिभुवने वीर मोक नाहि समसर * प्राणे येवे जीवि जानकीक परिहर ९२
हेन शुनि विराधर परम हरिष * एहेन्ते से राम मन करि विमरिष
आन हाते मरो मोर पाप अन्त भैल * एहि मने गुणि खड्ग तोलाइवाक लैल ९३
क्रोध करि निशाचरे बोले खर्व्व वाणी * विराध राक्षस मोर कथा लयो जानि
त्रिभुवन वीर माजे आमाक बखानि * पेसो यमघरे आजि एइ शूले हानि ९४
क्षत्री जाति हुया तुमि भैलाहा तस्कर * पर नारी हरिलाहा वनर भितर
चोर दुइ टेण्टनक मोर नाइ डर * मारिया पठाओं याहा यमर नगर ९५
नारी चुरि करिलाहा आति वर रङ्गे * प्राण हरुवाइला आसि कामिनीर सङ्गे
भैलाहा मानुष जाति राक्षसर भक्ष * तोमाक जिनिते किछु नाहिके अशक्य ९६
श्रीरामे वोलन्त लखाइ केने धरो जीउ * विराधर अङ्गे देखो जनकर जीउ
वाघे येन धरिले हरिणी नोहे स्थिर * हरिहरि बान्धै मोर नसहे शरीर ९७
अञ्जन नयनी पूर्ण चन्द्रमा वदनी * जनक राजार तुमि कुलर नन्दिनी
दशरथ वोहारीर हेन से विपत्ति * राहुये ग्रसिले चन्द्र नक्षत्र रेवती ९८
आमि विद्यमानत सीतार एत दूर * वासवर स्त्रीक येन हरिल असुर

धर्म विरोधी को देखना नही चाहिए। तुम दोनों को मारकर मैं इस कन्या का उपभोग करूँगा ॥ २६९० ॥ यह देख मैं हाथों मे त्रिशूल उठा रहा हूँ, तुम दोनों, को मारकर रक्त-पान करूँगा। ब्रह्मा की आराधना कर मैंने वर प्राप्त किया है। तुम जैसे लाखों आ जायें तो मुझे डर नही ॥ ९१ ॥ यह सुनकर राम ने कहा— हम दशरथ के पुत्र वन में आये हुए हैं। त्रिभुवन में कोई वीर हमारे समान नहीं है। यदि तू जीता रहना चाहता है तो जानकी को छोड़ दे ॥ ९२ ॥ यह सुनकर विराध परम हर्षित हुआ, उसने मन में विचार किया, यही राम हैं, इनके हाथ ही मरने पर मेरे पाप का अन्त हो जायेगा। यह सोचकर वह राम को क्रोधित करने लगा ॥ ९३ ॥ क्रोधकर निशाचर कठोर वचन कहने लगा—मैं विराध राक्षस हूँ, मेरी बात भलीभाँति समझ लो। त्रिभुवन के वीरों में मैं प्रशंसित हूँ, इस शूल से मारकर आज तुम्हें यमलोक भेज दूँगा ॥ ९४ ॥ क्षत्रिय होते हुए भी तुम तस्कर हो। वन में आकर पर-नारी का हरण कर लिया है। मैं तुम दोनों प्रवंचक चोरों से नहीं डरता, तुम्हें मारकर अभी यमलोक भेज रहा हूँ ॥ ९५ ॥ तुमने बड़े हर्ष से नारी की चोरी की है। इस कामिनी संग आकर अब तुम्हें प्राण खोने पड़ेंगे। तुम उस मनुष्य जाति के हो जो राक्षसों के भक्ष्य हैं। तुम्हें जीत लेना कुछ भी अशक्य नहीं है ॥ ९६ ॥ श्रीराम बोले—लक्ष्मण, विराध के शरीर पर सीता को देख मैं भला प्राण कैसे रखूँ? जिस प्रकार शेर के पकड़ लेने पर हरिणी स्थिर नहीं रहती, (सीता भी उसी प्रकार छटपटा रही है)। हरि, हरि बांधवी सीता, यह मेरा शरीर सह नही पाता ॥ ९७ ॥ आँखों में अंजनवाली, पूर्ण चन्द्रमा जैसी वदनवाली राजा जनक की कुल-नन्दिनी, राजा दशरथ की बहू पर ऐसी विपत्ति आ पड़ी है। मानो राहु ने चन्द्र और रेवती नक्षत्र को ग्रस लिया है ॥ ९८ ॥ मेरे रहते ही सीता को इतना सहना पड़ रहा है। मानो इन्द्र की पत्नी को असुर ने हरण कर लिया

प्राण तेजों कैकेयी पूरोक मनोरथ * आबे अबिकले राज्य करोक भरत ९९
कौशल्या जननी पितृ अयोध्यार पति * दुइ हन्तो कैकेयीत करिलो भकति
तथापितो नूपूरिल पापिष्ठीर मन * मारिवाक लागि मोक पठाइलेक बन २७००
लक्ष्मणे बुलिला पाचे हात योर करि * चित्त थिर करियोक मन्यु परिहरि
मइ भृत्य थाकन्ते तोमार किवा डर * त्रिभुवन जिनिते शकति एकेश्वर १
आज्ञा करियोक मइ बिराधक मारो * भरतर यत मान राक्षसते सारो
हेन बुलि वीरे धनु टङ्कार करिल * शबदे पृथिबी स्वर्ग आशेष भरिल २
रामे बुलिलन्त बाप शुनरे लखाइ * राक्षसे बुलिल निन्दा मोर मुख चाइ
मोर विद्यमानत सीताक निले हरि * बिराधक मारि पेशो यमर नगरी ३
बिराधक चाइ रामे बुलिलन्त हास * मारिलो पापिष्ठ आजि जीवन्ते न यास
ऋषि सब भुञ्जि तइ हैलि महा माल * तोक मारि गुचाओं आजि पृथिवीर शाल ४
मइ भाले जीवन्ते सीताक तइ पाइबि * मोहोर हातत आजि यम घरे याइबि
क्षुद्र मृग हुया मत्त सिंहक जगाइलि * मरिबाक लागिया गरल विष खाइलि ५
सिंहर भार्य्याक तइ शृगाले वाञ्छस * आपोनार मृत्यु मूढ़ आपुनि साञ्चस
मोर विद्यमानत सीताक हरिनेस * शियालत शिङ्ग पर्व्वततो मेरु देश ६
एहि बुलि क्रोधे राम धनुक धरिल * सातोटा नराचनिया गुणत युरिल
खल खल करि रामे बुलिलन्त हास * मारिलो पापिष्ठ हेरा भैले सर्व्वनाश ७
आकर्ण पूरिया धनु आजुरि आनिल * मारो मारो बुलि शर सत्वरे हानिल
बिजुली चटक येन चलिल नराच * हृदयत फुटिया वझाइल पिठि पाच ८

है। मैं प्राण तज दूँगा, कैकेयी का मनोरथ पूर्ण हो। भरत अब निश्चिन्त होकर राज्य करे ॥ ९९ ॥ माता कौशल्या और अयोध्यापति पिता दशरथ दोनो ने ही कैकेयी की भक्ति की तथापि उस पापिनी का मन नही भरा। मुझे मरवा डालने के लिए वन में भेजा ॥ २७०० ॥ तब लक्ष्मण ने हाथ जोड़कर कहा—मनोवेदना तजकर अपना चित्त स्थिर कीजिये। मुझ सेवक के रहते आपको क्या भय है? प्रभु मै त्रिभुवन को जीत सकता हूँ ॥ २७०१ ॥ विराध का वध करने हेतु मुझे आज्ञा दें। भरत पर जो अभिमान हुआ है वह इसी राक्षस पर उतारूँ। यों कहकर वीर ने धनुष टंकारा। उस शब्द से सम्पूर्ण धरती और स्वर्गलोक परिपूर्ण हो गया ॥ २ ॥ राम ने कहा—वत्स लक्ष्मण, सुनो। मेरे मुख की ओर देखते हुए राक्षस ने निन्दित वचन कहे है। मेरे विद्यमान में सीता को हरण कर लिया है। इस विराध को मारकर यमलोक भेजना है ॥ ३ ॥ विराध की ओर देखकर राम ने हँसते हुए कहा—पापी, तुझे आज मै मार डालूँगा, तू जीता न बचेगा। ऋषियों का भक्षणकर तू महामल्ल (पहलवान) बन गया है। तुझे मारकर आज पृथ्वी का कंटक दूर करूँगा ॥ ४ ॥ मेरे जीवित रहते भला तू सीता को पा सकता है? मेरे हाथों से आज तुझे यमलोक जाना पड़ेगा। क्षुद्र मृग होकर तूने मतवाले सिंह को जगाया है, मरण हेतु मानो विष खा लिया है ॥ ५ ॥ तू सियार होकर सिंह की भार्या को पाना चाहता है? मूढ़, तूने अपनी मृत्यु स्वयं बुला ली है। मेरे विद्यमान में सीता को हर ले जा रहा है। कहीं शृगाल के भी सींग होता है? क्या पर्वत पर भी मेरु देश होता है? ॥ ६ ॥ यों कहकर रामचन्द्र ने क्रोध से धनुष धारण किया। सात नाराच प्रत्यंचा पर चढ़ाये। खल-खल अट्टहास कर उन्होंने कहा—रे पापी, तुझे मैं मार डाल रहा हूँ, तेरा सर्वनाश हो जायेगा ॥ ७ ॥ प्रत्यचा को कान तक खीचकर 'मारा, मारा', कहकर तत्क्षण वाण छोड़े। बिजली की कौंध की भाँति

नराच रामर येवे निशाचरे पाइल * अन्तकाले यमे येन विराध किटाइल
आठ गोटा सिद्ध हाते आचारि पेलाइल * त्रिशूल सम्मुख करि लक्ष्मणक धाइल ९
प्रलयर मेघे येन तेजिले आटास * ऋषिगण वन जन्तु भैला महात्रास
मारो मारो तोक आजि करोहो निर्म्मूल * एहि बुलि लक्ष्मणक हानिला त्रिशूल २७१०
बासवर वज्र येन शूल याइ वैया * चाहिया आछन्त राम हाते धनु लैया
बिस्वाद शवदे येन याइ यम दण्ड * खुर पति वाणे रामे कैला खण्ड-खण्ड ११
पुनरपि रामे महा क्रोधत ज्वलिल * सुवर्णे रचित शर गुणत युरिल
हानिलन्ते विराधक लागिया चूटिल * नपारिल एराइवाक हियात फुटिल १२
रामे येवे राक्षसक प्रहार करिल * सीताक भूमित थैया ढलिया परिल
भूमिकम्प यान्ते येन पर्व्वत लरय * सेहिमते राक्षसर शरीर कम्पय १३
मुखर शोणिते गेरु धारा निकलय * काकूति करिया पुरातन कथा कय
हात योर करि वाक्य बोलय विराध * क्षमियो गोसाजि करिलोहो अपराध १४
नामत डम्बरु कुवेरर अनुचर * ताहान चरण सेवा करिलो विस्तर
शुनियोक प्रभु तिनि लोकर ईश्वर * ताहानेसे शापे आसि भैलो निशाचर १५
बासवर अपेश्वरी रम्भा यार नाम * रूपे गुणे त्रिभुवने नाहिक उपाम
देखिया मोहित हुया महा अभिलाषे * बिविध विनोदे आछिलोहो तान पाशे १६
क्रीड़ा कौतूहलत अनेक काल गैल * एहि मते कुवेरत मन्द सेवा भैल
कोप करि मोक प्रभु बुलिला वचन * निशाचर हुया चल दण्डकर वन १७

नाराच चले। वे विराध का हृदय भेदते हुए पीठ की ओर निकल गये ॥ ८ ॥ राम के नाराच निशाचर के समीप पहुँचते ही विराध वैसे ही सावधान हो खड़ा हो गया मानों अन्तकाल का यम हो। आठो सर्व-विजयी वाणो को उसने हाथों से पकड़-पकड़कर फेंक दिया फिर त्रिशूल को सम्मुख कर वह लक्ष्मण की ओर धावित हुआ ॥ ९ ॥ वह प्रलय-मेघ की भाँति गरज उठा जिससे ऋषियों और वन-जन्तुओं को महात्रास हुआ। "मरा, मारा, तुझे आज निर्मूल कर डालूंगा" कहता हुआ उसने लक्ष्मण की ओर त्रिशूल फेंका ॥ २७१० ॥ त्रिशूल इंद्र के वज्र की भाँति तेजी से चला, राम हाथ में धनुष लिये देख रहे थे। प्रचण्ड शब्द से मानो यम-दड चल पड़ा हो, ऐसे त्रिशूल को राम ने क्षुरपति वाण से खंड-खंड कर डाला ॥ ११ ॥ पुन. राम महाक्रोध से जल उठे और स्वर्ण-जड़ित वाण प्रत्यंचा पर चढाकर छोड़ा। वह वाण विराध की ओर चला, उसे वह रोक न पाया और वाण उसके हृदय में चुभ गया ॥ १२ ॥ जब राम ने राक्षस पर प्रहार किया तब वह सीता को भूमि पर रखकर ढल पड़ा। भूकम्प होने पर जैसे पर्वत हिलने लगते है, राक्षस का शरीर भी उसी प्रकार कंपित होने लगा ॥ १३ ॥ मेरु की धारा-सी मुख से रक्तधारा वह चली। वह विनती करता हुआ पुरानी कथा सुनाने लगा। हाथ जोड़कर विराध बोला—हे देव, क्षमा कीजिये, मुझसे अपराध हुआ ॥ १४ ॥ मै डम्बरु नाम का कुवेर का अनुचर हूँ। उनकी चरण-सेवा निरन्तर करता रहता था। त्रिलोक-ईश्वर प्रभु, सुनिये, उन्ही के अभिशाप से मैं निशाचर बन गया हूँ ॥ १५ ॥ इन्द्र की रंभा नाम की अप्सरा जिसके रूप, गुण की त्रिभुवन में तुलना नही है, उसे देखकर मैं मोहित हो गया और महान् अभिलाषा से नाना प्रकार का विनोद करता हुआ उसके संग रहा ॥ १६ ॥ ऐसे क्रीड़ा-कौतूहल में अनेक काल बीत गया। इस कारण कुवेर की सेवा मन्द पड़ गयी। तव प्रभु कुवेर ने क्रोधित होकर मुझसे कहा—तू निशाचर वन. दंडक वन में जाकर रह ॥ १७ ॥ दशरथ के पुत्र राम होंगे, उन्ही के हाथो तेरी मृत्यु होगी। उस समय जब शाप से तेरा उद्धार

रामे रूपे हुइब दशरथर नन्दन * ताहान हातत तोर हैबेक मरण
तेंसानिसि हैब तोर शापर उद्धार * आसिया देखिबि तोर पुत्र परिवार १८
कुबेरर शापे आसि निशाचर भैलो * ब्राह्मण ऋषिक मारि महापाप कैलो
तयु दरशने पूर्व्वकथा सुमरिलो * शान्ति सीता हरि घोर दोष आचरिलो १९
तोमार हातत मोक मरिबाक साध * सिकारणे करिलो दारुण अपराध
एबे तयु शर परि प्रकृतिक गैलों * मातृ बुलि सीताक नमारि हेरा थैलों २७२०
त्रिजगत नाथ मोक करियोक दाया * गातखानि पूरियो आमार निज काया
राक्षसर आमार एहिसे कुल धर्म्म * हौक मोर गति राम करियोक कर्म्म २१
एहि बुलि निशाचर ढलिया परिल * राम-राम बोलन्ते जीवन निकलिल
पर्ब्बत सदृश परि गैल कलेवर * देखिया हरिष भैल राम लक्ष्मणर २२
लक्ष्मणे खानिला गात पर्ब्बत गह्बर * ताते दहिलन्त राक्षसर कलेवर
दिव्य रूप धरि सिटो स्वर्ग चलि गैल * पुत्र परिवार समे एक थान भैल २३
रामर चरित्र शुनियोक निरन्तर * परम कृपालु गुण देखियो रामर
भार्य्या बैरी राक्षसर करिलन्त कर्म्म * देखा केन ईश्वरर बिपरीत धर्म्म २४
नबाचन्त जाति कुल भजन मात्रके * एतेके परम सिद्धि दिबन्त सबाके
जानिया कृपालु गुण भजियो रामक * राम बुलि दहियोक पापर बीर्य्यक २५

श्रीरामर सीता देवीक आश्वास दान, शरभङ्ग मुनिर दर्शन; सुतीक्षणर आश्रम प्रवेश आरु तेओंर लगत कथोपकथन

दुलड़ी

अनन्तरे रामे हाँ बान्धै, बुलिया सीतार गले धरिल ।
अनेक निर्भय बचन बुलिया आश्वास ताङ्क करिल ॥

हो जायेगा, तब अपने पुत्र-परिवार से तू पुनः आकर मिल सकेगा ॥ १८ ॥ कुवेर के शाप से मैं निशाचर बन गया। ब्राह्मणों, ऋषियों को मारकर महापाप किये, आपके दर्शन से पूर्व-कथा का स्मरण हो आया। सती सीता का हरण कर घोर पापाचरण किया ॥ १९ ॥ आपके हाथों मुझे मरने की साध थी इसी कारण ऐसा दारुण अपराध किया। अब आपके बाणों की चोट से अपने मूल रूप को प्राप्त हो गया हूँ। सीता को न मारकर 'माता' कहकर छोड़े जा रहा हूँ ॥ २७२० ॥ त्रिभुवननाथ मुझ पर कृपा करो। यहाँ गढ़ा खोदकर मेरे शरीर को जला दे। हम राक्षसों का कुलधर्म यही है। मेरी सुगति हो इसके लिए हे राम, मेरी अंत्येष्टि संस्कार करे ॥ २१ ॥ यह कहकर निशाचर भूमि पर ढल पड़ा, राम-राम कहते हुए उसके प्राण निकल गये। उसका पर्वत-समान शरीर पड़ा रहा। यह देखकर राम-लक्ष्मण को हर्ष हुआ ॥ २२ ॥ लक्ष्मण ने पहाड़ी गुफा-जैसा गढ़ा खोदा, वहीं राक्षस के शरीर को जला दिया। वह दिव्य रूप धारणकर स्वर्ग चला गया और पुत्र-परिवार के संग उसका मिलन हुआ ॥ २३ ॥ राम का चरित्र निरन्तर सुनना चाहिए। देखो, राम का परम कृपामय गुण है। भार्या वैरी राक्षस की भी उन्होंने अन्त्येष्टि की। प्रभु का ऐसा ही विपरीत धर्म है ॥ २४ ॥ उनका भजन करते ही वे जाति कुल का विचार नहीं करते और सबको परमसिद्धि प्रदान करते हैं। राम के ऐसे कृपालु गुण को समझकर भजन करो और 'राम' नाम लेकर पाप के पराक्रम को भस्म कर डालो ॥ २५ ॥

दारुण राक्षसे तोमाक हरिल मिलिल परम दुःख।
ताहाक मारिया सन्तोष लभिलो देखिया तोमार मुख॥ २६
पूर्ब्बते तोमाक बुलिलो बनत लभिबा दुःख अपार।
सिसब वचन साक्षाते फलिल प्रहादृल बोल आमार॥
पाचे लक्ष्मणक राघवे बुलिल राक्षस हेत आशेष।
सीता रक्षा करि इटो वन एरि चलियाओं आन देश॥ २७
लक्ष्मण जानकी समन्विते राम मने बिमरिषि चाहन।
करि मनोरङ्ग ऋषि शरभङ्ग आश्रमक गैया पाइल।
एक अदभुत देखिलन्त पाचे रामे कतो दूरे थाकि।
धवल छत्रेक प्रकाशन्ते आछे येन पूर्णिमार शशी॥ २८
दिब्य पुरुषेक साक्षाते देखन्त आदित्य येन प्रभाव।
जाज्ज्वल्य समान ज्वलन्ते आछय भूमि नोचोवय पाव॥
रत्ने विरचित मुकुट शिरत एतिनि भुवने सार।
सुनिर्म्मल वस्त्र गावत शोभय नाना दिव्य अलङ्कार॥ २९
तान समसर पुरुषेक तैत करि आछे हात योर।
कतोहो दूरत हरित वरण देखिलन्त चारि घोड़॥
सुवर्णर मुठि रचित धवल चामर दुतय धरि।
दुइ पाशे दुइ नारी सेवा करे त्रैलोक्य मोहे सुन्दरी॥ २७३०
देवता सकले स्तुति नति करे गन्धर्व्वे गीत योगावे।
हेन चमत्कार रूपे तैते थित भैल अन्तरीक्ष भावे॥

श्रीराम का सीताजी को आश्वासन देना, शरभंगमुनि के दर्शन, सुतीक्ष्ण का आश्रम-प्रवेश और उनके साथ वार्तालाप

इसके पश्चात् राम ने 'हा प्रिये' कहते हुए सीता के गले लगकर अनेक प्रकार के निर्भय वचन कहते हुए उन्हे आश्वासन दिया। भयंकर राक्षस ने तुम्हे पकड़ लिया था, इससे मुझे बड़ा दुःख हुआ है। उसे मारकर तुम्हारा मुख देख मुझे बड़ा सन्तोष मिला है॥ २६॥ मैंने पहले ही कहा था, वन मे अपार दुःख मिलेगा। मेरी वे बातें प्रत्यक्ष हो रही है, मेरे वचन सत्य हो रहे हैं। इसके पश्चात् राम ने लक्ष्मण से कहा—यहाँ अनेक राक्षस रहते है। सीता की रक्षा करते हुए यह वन छोड़कर चलो हम दूसरे देश मे चले जायें॥ २७॥ लक्ष्मण-जानकी सहित राम ने मन मे इस प्रकार विचारकर प्रसन्न मन से शरभंगऋषि के आश्रम मे पहुंचे। रामचन्द्र ने कुछ दूर रहकर वहाँ का अद्भुत दृश्य देखा कि पूर्णिमा-चन्द्र जैसा एक श्वेत-छत्र प्रकाशित हो रहा है॥ २८॥ आदित्य जैसे प्रभाववाले एक दिव्य पुरुष को उन्होने देखा, जो अग्नि के समान प्रकाशमान था और जिसके पैर भूमि पर नही पड़ते थे। त्रिभुवन मे श्रेष्ठ मणि रत्न-जड़ित मुकुट उसके मस्तक पर था। शरीर में सुनिर्मल वस्त्र और विविध आभूषण सुशोभित थे॥ २९॥ उनके ही समतुल्य एक पुरुष हाथ जोड़े हुए है, कुछ दूर हरित्-वर्ण चार घोडे चर रहे है, सोने की मूठवाले दो-दो चँवर लिये दो ओर दो त्रैलोक्य मोहिनी सुन्दरी नारियाँ सेवा कर रही थी॥ २७३०॥ देवगण स्तुति-विनती कर रहे थे, गंधर्व गीत गा रहे थे। इस प्रकार अद्भुत रूप से वे अन्तरिक्ष मे स्थित थे। राघव बोले, भाई लक्ष्मण, तुमसे कहता हूँ सुनो—हरित्-वर्ण घोड़े

राघवे बोलन्त सैयाइ लक्ष्मण कहों शुनियोक काज ।
हरित वरण घोटक सहिते एहेन्ते से देवराज ॥ ३१
एहि बुलि पाचे रामे लक्ष्मणक सीताक पाशत थैला ।
बर अद्भुत देखिया राघवे कथा सुधिबाक गैला ॥
कतोहो दूरत देवगण समे रामक इन्द्रे देखिल ।
ऋषिक सम्बोधि आथ बेथ करि स्वर्गक लागि चलिल ॥ ३२
शरभङ्ग महा- मुनित बासवे कथा कहिन्तिहि यान्त ।
हेरा देखियोक आमाक देखन्ते श्री रामचन्द्र आसन्त ॥
देवता सबर कार्यक साधिया मारिबा रामे रावण ।
जाना मुनिबर तैसानि इहान आमासार दरिशन ॥ ३३
हेनय सम्भेद कहि इन्द्रदेव स्वर्गक चलि गैलन्त ।
पाचे राम सीता लक्ष्मणे ऋषिक कौतूहले देखिलन्त ॥
रामक देखिया चालिलन्त गाव महाऋषि शरभङ्ग ।
परम ईश्वर आसिला मानक बुलि भैला बर रङ्ग ॥ ३४
अनन्तरे रामे ऋषिक प्रणामि पुछिलन्त सेहि कथा ।
ऋषिये रामत आदि अन्त कहि कहिला येन व्यवस्था ॥
आमाक स्वर्गक निबाक लागिया आसि भैला देवराज ।
तोमाक देखिया आथवेथ करि चलि गैला स्वर्गमाज ॥ ३५
तुमि हेन महा अतिथिक आसि भाग्ये दरशन भैलो ।
सेहिसे कारणे जानिबाहा राम स्वर्गक लागि न गैलो ॥
तोमार प्रसादे तपर प्रभावे पाइलोहो अक्षय लोक ।
तोमार चरण सादरिलो आवे अनुज्ञा मोक दियोक ॥ ३६
राघवे बोलन्त शुनियोक मुनि कथा शुनि भैलो रङ्ग ।
आमाक उचित स्थान उपदेशि स्वर्गे यायो शरभङ्ग ॥

सहित ये ही देवराज है ॥ ३१ ॥ यह कहकर लक्ष्मण को सीता के पास रखकर उस बड़े अद्भुत दृश्य को देख पूछने के लिए राम आगे बढ़ गये । कुछ दूर से देवगण सहित इन्द्र ने राम को देखा और शीघ्रता से ऋषि से यह कहकर स्वर्ग चला ॥ ३२ ॥ महामुनि शरभंग से इन्द्र यह कहते हुए जाने लगे—ऋषिवर देखिये, हमें देखने हेतु श्रीरामचन्द्र आ रहे है । देवगणों का कार्य सिद्धकर राम रावण को मारेंगे । मुनिवर, इसी कारण ये हमे आकर दर्शन दे रहे है ॥ ३३ ॥ यह रहस्य की बात बताकर इन्द्रदेव स्वर्ग चले गये । इसके पश्चात् राम, लक्ष्मण-सीता ने ऋषि को कौतूहल से देखा । राम को देख महर्षि शरभग उठ खडे हुए । यह सोचकर बड़ा ही आनन्द हुआ कि परमेश्वर ही आज मेरे आश्रम मे आये है ॥ ३४ ॥ इसके पश्चात् राम ने ऋषि को प्रणाम कर वह बात पूछी । ऋषि ने जो कुछ हुआ था सब आदि से अन्त तक विस्तार पूर्वक बताया । उन्होंने कहा—मुझे लेने हेतु स्वर्ग से देवराज आये हुए थे पर तुमको देखते ही शीघ्रता से स्वर्ग लौट गये ॥ ३५ ॥ तुम जैसे महान् अतिथि के दर्शन आज बड़े भाग्य से ही हुआ । राम, समझ लो कि इसी कारण मैं स्वर्ग नही गया, तुम्हारे प्रसाद और तपस्या के प्रभाव से मैंने अक्षय लोक प्राप्त कर लिया । तुम्हारे चरणों के दर्शन हो गये, अब मुझे आज्ञा दो ॥ ३६ ॥ राघव बोले, मुनिवर सुनिये आपकी बाते सुनकर बड़ा हर्ष हो रहा है । हमारे रहने के लिए कौन सा स्थान योग्य है, यह बताकर आप स्वर्ग चले जाये । ऋषि ने राम से कहा—तुम सुतीक्षण मुनि के

ऋषिये रामक बोलन्त सुतीक्ष्ण मुनिर पाशक यायो।
तान उपदेशे परम हरिषे फल मूल सुखे खायो॥ ३७
हेन बुलि महा- मुनि शरभङ्गे आपुनि कुण्ड ज्वालिल।
विष्णुक सुमरि मन्त्रक उच्चरि आशेष घृत ढालिल॥
कौतूहले देखि आछन्त लक्ष्मण सीता राम हृषीकेश।
राम बुलि डेव दिया अगनित भैलन्त मुनि प्रवेश॥ ३८
कतोक्षणे पाचे ताहाङ्क दहिया अगनि येवे निमाइल।
परम हरिषे शरभङ्ग ऋषि दिव्य शरीरेक पाइल॥
रामक सुमरि दिव्य रूप धरि ऋषि स्वर्गे चलि गैला।
लक्ष्मण जानकी राघवे देखिया बर कुतूहल भैला॥ ३९
तेरहन्ते गैया राक्षसे खाइवार ऋषिक तिनि देखिल।
आन सब ऋषि- गणक राघवे अभय दानक दिल॥
अनन्तरे तिनि सुतीक्ष्ण मुनिर प्रवेशिला गैया थान।
फल मूल जले रामक ऋषिये करिलन्त बहुमान॥ २७४०
सुतीक्ष्ण मुनिये रामक अनेक सादरिला अनुपाम।
हरिषे आश्रम समीपत थित भैलन्त प्रभु श्रीराम॥
अनेक पुराण काहिनी कहिला राघवे ऋषि सहित।
हरिष हृदय दिन कतिपय बञ्चिला सुखे तहित॥ ४१
परम आनन्दे ऋषिर चरण धूला शिरे तुलि धरि।
रङ्ग मने तिनि हन्ते चलि गैला आश्रमक परिहरि॥
दुइ भाइर हाते धनु तूण बाण खड्गक धरि विशेष।
तिनिहन्ते मिलि हरिषे भ्रमन्त नानाविध वन देश॥ ४२
परम पवित्र रामर चरित्र शुना समाजिक सुखे।
जगत तारण हेतु वने वन भ्रमन्त ईश्वर दुखे॥

पास जाओ। उनके उपदेश से परम हर्ष-पूर्वक मुख से फल-मूल खाओ॥ ३७॥ यों कहकर महामुनि शरभंग ने अपने ही हाथ से अग्नि-कुन्ड प्रज्वलित किया। विष्णु का स्मरणकर मन्त्र उच्चारण करते हुए उसमें प्रचुर घी डाला। सीता-राम-रूपी हृषिकेश और लक्ष्मण कौतूहल से देखते रहे। "राम" कहकर कदम बढा मुनि अग्नि मे प्रवेश कर गये॥ ३८॥ कुछ समय पश्चात् जब उन्हें दग्धकर अग्नि बुझ गयी तब परम हर्ष से शरभंग मुनि ने दिव्य शरीर धारण किया और राम का स्मरण करते हुए दिव्य-रूप धारणकर वे स्वर्ग चले गये। यह देख लक्ष्मण, जानकी और राम को बड़ा ही कौतूहल हुआ॥ ३९॥ वहां से चलकर राम ने राक्षसों द्वारा खाये हुए तीन ऋषियों को देखा। वहाँ के अन्य समस्त ऋषियों को रामचन्द्र ने अभय-दान दिया। तदनन्तर तीनों जाकर सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रम में पहुँचे। मुनि ने फल-मूल-जल द्वारा राम का बहुत ही सम्मान किया॥ २७४०॥ सुतीक्ष्ण मुनि ने राम को अनेक प्रकार से स्वागत-अभ्यर्थना की। प्रभु श्रीराम हर्ष से आश्रम के समीप ही रहने लगे। ऋषि के साथ वे अनेक पुराण-कथाओं की चर्चा किया करते। इस प्रकार उन्होंने परम हर्ष से वही कुछ दिन बिताये॥ ४१॥ इसके पश्चात् परम हर्ष से ऋषि की चरण-धूलि मस्तक पर लेकर वे तीनों प्रसन्नता से आश्रम छोड़कर आगे बढ़े। दोनों भाई हाथों में धनुष, तरकस, बाण, खड्ग लिये हुए चलते थे। इस प्रकार तीनों हर्ष से विभिन्न वन-प्रदेशों मे भ्रमण किया करते॥ २७४२॥

याहार चरण धूलाक न पान्त महा महायोगी जने ।
भकतर पदे हेनय ईश्वरे फुरन्त कण्टक बने ॥ ४३
यिटो महेश्वर समस्ते जीवर आत्मा अन्तर्य्यामी सम ।
भकत जनर शत्रु मित्र हेतु ताहाङ्क देखि विषम ॥
भकतर शत्रु भैल तान शत्रु भकतर मित्रे मित्र ।
परम ईश्वर देवक देखियो चरित्र केन विचित्र ॥ ४४
शान्तक तारन्त दुष्टक मारन्त एहि बेला बिपदत ।
हेनय गुणक जानिया रामर चरणत दिया चित्त ॥
समस्त धर्म्मर शिरत प्रकाश करे यार गुण नाम ।
हेनय रामक चित्तत धरिया डाकि बोला राम राम ॥ ४५

धर्म्मभृत्य मुनिर मन्दकन्नि मुनिर वृत्तान्त कथन आरु श्री रामचन्द्रर पुनर सुतीक्षण मुनि दर्शन

पद

आपोनार कृपा गुण बुद्धिर कारणे * भार्य्या भ्रातृ समे राम घुरे बने-बने
निस्तारोक लोक मोर एहि गुण गाइ * एहि बुलि आनन्दे फुरन्त बन चाइ ४६
फल मूल सहिते देखिला तरुवर * सरोबरे देखिला विविध जलचर
हरिण चोवारि पशु देखिला बिस्तर * शूकर गवय शशा भालुक कुञ्जर ४७
येवे आसि तथा अस्त यान्त दिवाकर * प्रहर मानत देखिलन्त सरोबर
काहाको ने देखि तैत शुनै नृत्यगीत * धर्म्म भृत्य ऋषिर गै चापिला सन्नित ४८

हे सामाजिकगण, सुखपूर्वक राम का परम पवित्र चरित्र सुनो। ईश्वर जगत के उद्धार हेतु वन-वन में भ्रमण करते है। महायोगी-जन भी जिनकी चरणधूलि प्राप्त नहीं कर पाते, भक्तों के कारण वे ही ईश्वर काँटों भरे वन में घूमा करते है ॥ ४३ ॥ जो महेश्वर समस्त जीवों की आत्मा, अन्तर्यामी और सबके प्रति सम-भाव रखनेवाले है, वे भक्तजनों के शत्रु-मित्र हेतु विषम (शत्रु-मित्र भावयुक्त) दिखाई देते है। भक्त का शत्रु उनका भी शत्रु है, भक्त का मित्र उनका भी मित्र है। परमेश्वर प्रभु का चरित्र कितना विचित्र है देखो ॥ ४४ ॥ जो शान्त शिष्टों का उद्धार और दुष्टों का संहार करते है, वे इस समय विपत्तियों में पड़े हुए है। प्रभु राम के ऐसे गुणों को समझ-कर उनके चरणों में मन लगाओ। सभी धर्मो के शीर्ष स्थान पर जिसके गुणनाम प्रकाशित होते हैं वैसे राम को चित्त में धारणकर पुकार-पुकार राम-राम कहो ॥ ४५ ॥

धर्मभृत्य मुनि द्वारा मन्दकन्निमुनि का वृत्तान्त कथन और श्रीरामचन्द्र का पुनः सुतीक्ष्ण मुनि के दर्शन करना

अपनी कृपा-गुण वृद्धि हेतु (भक्तों पर अधिकाधिक कृपा करने हेतु) पत्नी और भाई सहित श्री रामचन्द्र वन में घूमने लगे। मेरे इन गुणों का गानकर लोग संसार से पार हो जाये—इसी विचार से राम वन में घूमने-फिरने लगे ॥ ४६ ॥ फल-मूल वाले वृक्षों, विविध जलचरों वाले सरोवर, हरिण, चमरी गाय, शूकर, गवय, खरगोश भालू, हाथी आदि अनगिनत जानवरों को देखते हुए वे घूमा करते थे ॥ ४७ ॥ एक बार घूमते-घूमते सूर्यास्त के एक प्रहर पश्चात् उन्होने एक सरोवर देखा। वहाँ नृत्य गीत का शव्द सुनाई दे रहा था परन्तु कोई दिखाई न देता था। तव वे धर्मभृत्य ऋषि के पास पहुँचे ॥ ४८ ॥ रामचन्द्र ने ऋषि को प्रणामकर उस सम्वन्ध मे पूछा—

प्रणामिया राघवे पूछिला सेहि काज * किवा वाद्यभण्ड शुनो सरोवर माज
रामक सम्वोधि ऋषि सहरिष मने * आदि अन्ते कहिवाक लागिला तेखने ४९
मन्दकन्नि नामे आछिलन्त मुनिवर * तपर प्रभावे निर्म्मिलन्त सरोवर
उग्र तपस्याक तान भैल विमरिष * वायु भक्षिलन्त दश हाजार वरिष २७५०
तप देखि इन्द्रर व्याकुल भैल मन * आमाक खेदाया जानो लवे त्रिभुवन
सवे देवे मिलि पाचे विमरिष करि * ऋषिक मोहिते पठाइलन्त अपेश्वरी ५१
इन्द्रर आज्ञाक अपेश्वरी गैया लैल * तप भङ्ग करिवाक लागि चलि गैल
भङ्गी भावे लय लासे करे नृत्य गीत * हाते ताल धरि गावे गीत सुललित ५२
विचित्र भाषण वोलावय तान सने * शुनि मोह भैल ऋषि भागिल धियाने
पञ्च अपेश्वरी नाम एहि सरोवर * पञ्च कन्या लैया ऋषि आछन्ट भितर ५३
पुण्य वले जले स्थित मन्दकन्नि ऋषि * पञ्चकन्या लैया आछे सरोवरे पशि
हेन शुनि हरिष लक्ष्मण राम सीता * मुनिर आश्रम चाइ फुरे चतुर्भिता ५४
ऋषि गणे रामक आराधे अहर्निश * विविध विनोदे गैल ए दश वरिष
दशम वरिष येवे भैल निवर्त्तन * पुनरपि सुतीक्ष्ण मुनित दरिशन ५५
सुतीक्ष्ण मुनित रामे पूछिलन्त काज * कोन दिशे आछन्त अगस्ति ऋषिराज
ऋषिये रामक रङ्गे अर्च्चना करिल * अगस्तिर ठाइक पन्थ उद्देशिल ५६

इल्वल बातापिर वृत्तान्त वर्णन आरु अगस्ति मुनिर आश्रम प्रवेश

ऋषिर चरण धूलि शिरत लैलन्त * तिनिहन्ते आश्रमक परिहरि यान्त

मुनिवर, सरोवर में वाजों की ध्वनि कैसी सुनाई दे रही है ? राम को सम्वोधित करते हुए ऋषि प्रसन्नता से आदि-अन्त विवरण कहने लगे ॥ ४९ ॥ मन्दकन्नि नाम के एक मुनिवर थे जिन्होने तप के प्रभाव से सरोवर का निर्माण किया । उग्र तपस्या करने हेतु विचारकर उन्होंने दस हजार वर्ष केवल वायु भक्षण किया ॥ २७५० ॥ उनकी तपस्या देखकर इन्द्र का मन व्याकुल हो उठा, उन्होंने सोचा हमें खदेड़कर ये सम्भवतः त्रिभुवन को छीन लेंगे । सव देवताओं ने विचार-विमर्श कर ऋषि को मोहित करने हेतु अप्सराओ को भेजा ॥ ५१ ॥ इन्द्र की आज्ञा से अप्सराएं जाकर ऋषि का तप भग करने का प्रयास करने लगी । नाना प्रकार की अंग-भगियों से तान-लयों से नृत्य-गीत करने और हाथो से तालियाँ वजा-वजाकर सुललित गीत गाने लगीं ॥ ५२ ॥ ऋषि को सुनाकर मधुर-मधुर विचित्र वोलियाँ वोलने लगी जिन्हें सुनकर ऋषि मोहित हो गये, उनका ध्यान टूट गया । यह वही पंच-अप्सरा नाम का सरोवर है । वे ऋषि पंचकन्याओ के साथ इसके भीतर निवास कर रहे हैं ॥ ५३ ॥ अपने पुण्य वल से ऋषि पंचकन्याओं सहित सरोवर के जल में निवास कर रहे हैं यह सुनकर राम-लक्ष्मण-सीता प्रसन्न हुए और ऋषि के आश्रम को चारो ओर घूम-घूमकर देखने लगे ॥ ५४ ॥ ऋषिगण दिन-रात राम की आराधना किया करते थे । इस प्रकार दस वर्ष वीत गया । जव दसवाँ वर्ष वीता तो पुनः राम सुतीक्ष्ण मुनि के वहाँ गये ॥ ५५ ॥ राम ने उनसे पूछा—ऋषिराज अगस्त्य किस दिशा मे निवास करते हैं ? ऋषि सुतीक्ष्ण ने राम की अर्च्चना प्रसन्नतापूर्वक करते हुए उन्हें अगस्त्य-मुनि के आश्रम को जाने का मार्ग वताया ॥ ५६ ॥

इल्वल वातापि का वृत्तान्त वर्णन और अगस्त्य मुनि के आश्रम में प्रवेश

ऋषि की चरणधलि सिर पर लेकर तीनों आश्रम से निकल आगे वढ़े । रामचन्द्र

राघवे बोलन्त लखाइ बार्त्ताक न पाइल * दुइ गोटा असुरे अनेक ऋषि खाइल ५७
इल्वल बातापि नामे असुर दुइ भाइ * स्वच्छन्द स्वरूपे आसिलेक एहि ठाइ
ज्येष्ठ गोट इल्वल ब्राह्मण बेश धरे * पितृ श्राद्ध बुलि ऋषि निमन्त्रण करे ५८
बातापिक मेष पशु गोट करि थय * ऋषिगण आनि तान पाव पखालय
निदारुण असुरे अनेक माया जाने * माया सेष गोटक आगत लागि आने ५९
सबारे आगते मेष मारि प्राण लय * श्राद्धदिन बुलि सेइ मांस बिलावय
दिव्य शालि तण्डुले ऋषिक देइ भात * मेष मांसे रान्धय व्यंजन पाञ्च सात २७६०
आचमन करि ऋषि बैसे तार ठाव * आइस अरे बातापि इल्वले पारे राव
ऋषि पेट फुटिया ओलावे तेतिक्षण * दुइ भाइ मिलि पाचे करय भोजन ६१
अगस्ति सकले कथा शुनिला श्रवणे * इल्वलर थानत गैलन्त तेतिक्षणे
देखि दुइ भाइ काणाकाणि करि चाइल * याहाक खुजिब सिटो आपुनिये पाइल ६२
अगस्तिये दुइ भाइक करि सम्भाषण * छले भुञ्जिबाक मने प्रार्थिलन्त अन्न
अनेक दिनर परा महा हाबिलासे * अन्न भुञ्जिबाक लागि आइलो तयुपाशे ६३
आन ऋषि मते ताङ्को अन्नदान करे * आति बुद्धि कच्छप तरत परि मरे
हासिया इल्वले बोले आति पेट छोट * एकेश्वरे केमने भुञ्जिबा मेष गोट ६४
निकटते हइब आसि श्राद्धर बासर * एति क्षण निर्वत्तिया यायो मुनिबर
आनो ऋषिगण समे आनिबो मताइ * परिपूर्ण रूपे पाचे भुञ्जिबा आताइ ६५
अगस्ति बोलन्त भोक धरिते न पारो * आउर किछु नाहि पवे इहातेसे हारो

ने कहा—लक्ष्मण, तुमने यह कथा न सुनी होगी। दो असुर थे, जिन्होंने अनेक ऋषियों को मारकर खा डाला था ॥ ५७ ॥ वे इल्वल और वातापि नाम के दो भाई थे। दोनों स्वच्छन्द रूप धारण कर यहाँ आये। बड़ा इल्वल ब्राह्मण-वेश बना लेता। "पिता का श्राद्ध है" ऐसा बताकर ऋषियों को आमंत्रित करता ॥ ५८ ॥ वह वातापि को भेंड़ा बना देता और ऋषियों के आने पर वह स्वयं उनके पैर धोता। निष्ठुर असुर अनेक प्रकार की माया जानता था। माया के उस भेड़े को वह ऋषियों के पास लाता ॥ ५९ ॥ सबके सम्मुख वह भेड़े को काट डालता। 'श्राद्ध-दिवस है' बताकर वही मांस उन्हें वितरित करता। दिव्य शालिधान के चावल का भात परोसता। भेड़ के मांस से पाँच-सात व्यंजन बनाता ॥ २७६० ॥ आचमन कर ऋषिगण जब उसके स्थान पर बैठ जाते तो वह 'अरे वातापि' आ जा! कहकर पुकारता। तब वातापि ऋषियों का पेट फाड़कर निकल आता। फिर दोनों भाई उन ऋषियों को खा डालते थे ॥ ६१ ॥ अगस्त्य मुनि ने यह वार्ता सुनी और तुरन्त इल्वल के यहाँ जा पहुँचे। उनको देखकर दोनों भाइयों ने आपस में कानों में बात की कि जिसे हम खोजना चाहते थे, वह स्वयं आ पहुँचा है ॥ ६२ ॥ अगस्त्य मुनि ने दोनों भाइयों को सम्बोधित करने के बहाने उनसे खाने हेतु अन्न माँगा। उन्होंने कहा—अनेक दिनों से बड़ी अभिलाषा थी इस कारण अन्न-भोजन हेतु तुम्हारे पास आया ॥ ६३ ॥ बहुत अधिक बुद्धि रखने के कारण जिस प्रकार कछुआ नीचे आकर मर गया था, उसी प्रकार उन दोनों भाइयों ने भी अन्य ऋषियों की भाँति उन्हें भी भोजन करवाने का निश्चय किया। इल्वल ने हँसकर कहा—आपका पेट तो बड़ा छोटा है। भला समूचा भेंड़ा आप अकेले कैसे खा सकेंगे? ॥ ६४ ॥ श्राद्ध का समय नजदीक आ रहा है। इस कारण हे मुनिवर, अभी रुक जाइये। अन्य ऋषियों सहित आपको भी बुलवा लूँगा। तब आप परिपूर्ण रूप से सब कुछ भोजन कीजियेगा ॥ ६५ ॥ अगस्त्य मुनि ने कहा, मैं भूख सह नही सकता। मेरे

शुना दानपति मइ बोलोहो तोमात * आउर आछे नाहि मेष गोटा पाञ्च सात ६६
मारिलेक मेषगोट ताहान आगत * मेष सङ्गे रान्धिल व्यञ्जन पाञ्च सात
इल्वले बोलय मोर विधि सुप्रसन्न * एहि बुलि अगस्तिक भुञ्जाइलेक अन्न ६७
हेन बुलि ऋषि मेष भोजन करिल * मन्त्रे गङ्गाजल कमण्डलुत भरिल
मन्त्रन्यास करिया आशेष जल पील * तपर प्रभावे मेष जीर्णता करिल ६८
इल्वले बोलय ओरे भयाइ वातापि * मेष रूप धरिया सत्वरे आस चापि
ऋषिये बोलय केने बोल हेनवाक * अगस्तिर गर्भवह्नि दहिलेक ताक ६९
अस्त्र धरि इल्वले आसिल आग वाढ़ि * डेव दिया अगस्ति खड्ग लैला काढ़ि
क्रोधदृष्टि चाहिलन्त संहरित मने * चक्षु अगनित भस्म भैगैल तेखने २७७०
एहिमते ऋषि दुयो भाइक संहरिल * देव ऋषिगणे ताङ्क प्रशंसा करिल
हेनय ऋषिक आमि हुइबो दरिशन * तेहे समे हरिषे करिबो सम्भाषण ७१
एइ कथा गोट रामे कहि लक्ष्मणत * अगस्तिर भाइर प्रवेशिला आश्रमत
बञ्चिला रजनी ऋषि कैला बहुमान * आर दिन पाइला गैया अगस्तिर थान ७२
परम हरिषे गैला दक्षिणर दिश * देखिला सहस्र सङ्ख्या अगस्तिर शिष्य
विदूरते रामर ऋषिक लक्ष भैल * हातर पावर नख फुलि फुलि गैल ७३
भोबोकार दाढ़ि शन पाञ्जि केश पाशि * सकले गावर लोम फुलि गैल काशि
येन पुण्डा कुमुण्डाक देखोते विशेष * तापलीया मुण्ड तालु माने नाइ केश ७४
एहेन्तेसे बातापिक परिणाम निल * गण्डुषते सातो सागरर जल पील
एहेन्तेसे बाउल हरि शङ्करर सम * क्षमाये पृथिवी कोपे कालान्तक यम ७५

पास और कुछ है नहीं, इसी से मैं हारा हूँ। इल्वल बोला, मुनिवर सुनिए और पाँच-सात भेंड़े तो हैं नहीं यही एक है ॥ ६६ ॥ उसने मुनि के सम्मुख ही भेंड़े को काट डाला। भेड़े के साथ पाँच-सात व्यजन बनाये। इल्वल ने यह कहकर कि मेरा विधि सुप्रसन्न है, अगस्त्य मुनि को भोजन करवाया ॥ ६७ ॥ उन्होंने भेंड़े को खा डाला। इसके पश्चात् गगाजल को अभिमन्त्रित कर कमण्डल में भर लिया और मंत्रन्यास कर प्रचुर जल पिया। अपने तप के प्रभाव से उन्होने भेंड़े को पचा डाला ॥ ६८ ॥ इल्वल ने पुकारकर कहा—अरे भैया, वातापि भेंड़ा बनकर तू शीघ्र ही पास आ जा। ऋषि अगस्त्य बोले—अब ऐसी बात क्यों बोलते हो ? अगस्त्य की उदराग्नि से वह तो भस्म हो चुका है ॥ ६९ ॥ तब इल्वल अस्त्र लेकर आगे बढ़ आया। लपककर अगस्त्य मुनि ने वह खड्ग छीन लिया। संहार करने की इच्छा से उन्होने जैसे ही उसकी ओर क्रोधपूर्वक देखा, इल्वल तत्क्षण भस्म हो गया ॥ २७७० ॥ इसी प्रकार ऋषि ने दोनों भाइयों का संहार कर डाला। देव, ऋषि आदि ने उनकी प्रशंसा की। ऐसे ऋषिवर के हम दर्शन करेंगे। प्रसन्नतापूर्वक उनसे वार्तालाप करेंगे ॥ ७१ ॥ यह कथा लक्ष्मण को सुनाकर राम अगस्त्य मुनि के भाई के आश्रम में पहुँचे। ऋषि ने उनका बडा मान किया। वही रात बिताकर दूसरे दिन वे अगस्त्य मुनि के आश्रम में पहुँचे ॥ ७२ ॥ राम परम हर्ष से दक्षिण दिशा में जाकर हजारों की संख्या में अगस्त्य मुनि के शिष्यों को दिखायी पड़े। इससे राम ने ऋषि को देखा, उनके हाथ पैरों के नाखून फूल-फूल उठे थे ॥ ७३ ॥ दाढ़ी बढ़ी हुई थी, बाल सन जैसे थे, शरीर के रोम खिले हुए काँस के समान श्वेत थे। घुटे सिरवाले तपस्वियों जैसे उनका सिर भी घुटा हुआ था, उस पर बाल नहीं था ॥ ७४ ॥ ये ही वातापि का अन्त करनेवाले हैं, चुल्लुओं में भरकर सात समुद्र का जल पी डाला है, ये हरि और शंकर के समान निरुद्विग्न रहते हैं, क्षमा में पृथ्वी के समान और क्रोध में कालान्तक यम जैसे

रामर बार्ताक लखाइ ऋषिक जानाइल * शिष्यक पठाइया ऋषि रामक नियाइल
परम बिनये रामे सहरिष भावे * सीताये लक्ष्मण समे नमिलन्त पावे ७६
आशंसा करिया ऋषि पुछिला कुशल * बहुभावे अर्च्चिया दिलन्त फल-जल
रामक बुलिला ऋषि धर्म्मर चरित्र * तुमि आसि भैला मोर थानर पवित्र ७७
हेन बुलि ऋषि दिव्य धनु एक दिल * तूण दुइ अक्षय रामत समर्पिल
धनु पाइ रामे बर सहरिष भैला * ऋषिये ताहार गुण कहिबाक लैला ७८
एहि धनु बिष्णुये थापिला देवराज * असुरक देखिया स्वर्गर कैला वाज
ब्रह्माये स्रजिला अस्त्र शत्रु खेदि खाइ * याहाक हानिले शर व्यर्थक नयाय ७९
विश्वकर्म्मे गढ़िलेक अनेक यतने * वासवे दिलन्त मोक कौतूहल मने
धनुर्व्बाण भरे वसुमती नोहे थिर * त्रिभुवन बिजयी तुमिसि महाबीर २७८०
धनुर्व्बाण रामे येवे शिरत चड़ाइल * आकाश निर्म्मल आरो खड्गेक पाइल
ऋषिये बोलन्त राघवक मनोरमे * सुखेथित हुयो तुमि आमार आश्रमे ८१
श्रीरामे बोलन्त आक बर भाग्ये पाइ * सीता समे एथा थाकिबाक नुयुवाइ
वञ्चिबाक योग्य थान कैयो वितोपन * ऋषिये वोलन्त यायो पञ्चवटी बन ८२
सावधाने थाकिबाहा राक्षस आशेष * सीताक राखिबा भाले मोर उपदेश
लक्ष्मणे युरिया कर बुलिलन्त वाणी * मोक एक खानि धनु दियो महामुनि ८३
हेनकथा शुनि मुनि हास तुलिलन्त * दिव्य धनुखान अनि ताहाङ्क दिलन्त
विश्वकर्म्मे निर्म्मिलन्त धनु अनुपाम * शरचय दीर्घ शुद्ध माणिकर काम ८४

है ॥ ७५ ॥ लक्ष्मण ने राम का समाचार ऋषि को दिया। तब ऋषि शिष्यों को भेजकर राम को लिवा ले गये। परम विनयपूर्वक सहर्ष भाव से सीता, लक्ष्मण, राम ने ऋषि के चरणों में प्रणाम किया ॥ ७६ ॥ ऋषि ने आशीर्वाद देते हुए कुशल पूछा। अनेक प्रकार से उनकी अर्चना कर फल-जल दिया। उन्होंने ऋषि-धर्म के सम्बन्ध में राम को बताते हुए कहा—तुम्हारे आगमन से मेरा आश्रम पवित्र हुआ। ऐसा कहकर ऋषि ने उन्हें एक दिव्य धनुष और दो अक्षय तरकश प्रदान किया। धनुष पाकर राम बड़े प्रसन्न हुए। ऋषि ने उस धनुष के गुण वर्णन करते हुए कहा—॥ ७८ ॥ देवराज इन्द्र ने इसे विष्णु को दिया था। जब असुरों ने स्वर्ग पर अधिकार कर लिया था तब इसी धनुष के द्वारा विष्णु ने उन्हे स्वर्ग से निकाल दिया था। ब्रह्मा द्वारा निर्मित यह अस्त्र शत्रुओं को खदेड़कर विनष्ट करता है। जिसे आघात किया जाता है उसे यह अव्यर्थ अस्त्र नही छोड़ता ॥ ७९ ॥ यह धनुष अनेक यत्नपूर्वक विश्वकर्मा ने बनाया था। बड़े कौतूहल से देवराज इन्द्र ने यह मुझे दिया था। इन धनुष और बाणों के भार से धरती स्थिर नही रह सकती। इन्हें पाकर अब तुम त्रिभुवन विजयी महावीर बन गये हो ॥ २७८० ॥ जब रामचंद्र ने धनुष और बाणों को अपने मस्तक पर धारण किया तब आकाश-जैसा चमकीला एक निर्मल खड्ग भी उन्हें प्राप्त हुआ। ऋषि ने प्रसन्नता से कहा—राम, तुम सुखपूर्वक मेरे आश्रम में निवास करो ॥ ८१ ॥ श्रीराम ने कहा—मुनिवर, यह तो मेरा बड़ा भाग्य है। पर सीता सहित यहाँ रहना मैं उचित नहीं समझता। हमे रहने के लिए सुन्दर कोई और स्थान बताइये। ऋषि बोले, राम, तुम पंचवटी में जाओ ॥ ८२ ॥ अनेक राक्षस वहाँ निवास करते हैं। अतः सतर्कता से रहना और सीता को उत्तम रूप से रखना, यह मेरा उपदेश है। लक्ष्मण ने हाथ जोड़कर कहा—महामुनि, मुझे भी एक धनुष दीजिये ॥ ८३ ॥ यह सुनकर मुनि ने हँसकर उन्हें भी एक दिव्य धनुष लाकर दिया। उस अनुपम धनुष का निर्माण विश्वकर्मा ने किया था, उसके

रत्न विरचित दिला अक्षय दुइ तूण * धनुशर पाया भैला हरिष लक्ष्मण
ऋषिर चरण-धूला शिरत लैलन्त * तिनिहन्ते आश्रमक परिहरि यान्त ८५

पञ्चवटी बनपथत जटायुर लगत श्रीरामर कथोपकथन आरु लक्ष्मण शूर्पणखार नाक-काण छेदन

रङ्गे तिनिहन्ते पञ्चवटीक चलन्त * पथत जटायु गृध्रराजे देखिलन्त
रामक बोलन्त दशरथर तनय * बापहार मित्र मइ हुयो परिचय ८६
पितृहेन जानि राम महातुष्ट मने * ताङ्क बहुमान करिलन्त तेतिक्षणे
राघवे बोलन्त शुनियोक गृध्रराज * कोन वंशे उतपति कहियोक काज ८७
हेन शुनि कहिते लागिला पक्षीवर * नामत बिनता तेहें दुहिता दक्षर
स्वामीत भकता आति परम सुन्दरी * रूपे गुणे त्रिभुवने नाहि सरबरि ८८
काश्यपे बिहाइला ताङ्क शुनियोक काज * ताहान गर्भत उपजिला पक्षीराज
गरुड़र पुत्र आमि काश्यपर नाति * ज्येष्ठ भाइ आरो मोर आछन्त सम्पाति ८९
मोर नाम जटायु जानिबा शुद्धभाव * मोर थान जाना येन बपाहार ठाव
हेन शुनि राघव हरिषवर भैला * गृध्रराज समे पञ्चवटी चलि गैला २७९०
स्नान पान करि निते गोदावरी जले * महासुखे भुञ्जिला अमृत सम फले
जटायुक राघवे करिला बहुमान * आशंसिया पक्षी गैला आपोनार थान ९१

वाण लम्बे थे जिन पर शुद्ध मणियाँ जड़ी हुई थी ।। ८४ ।। उन्हे रत्नजड़ित दो अक्षय तरकश भी दिये। उन धनुष-वाणो को पाकर लक्ष्मण बड़े प्रसन्न हुए और ऋषि की चरण-धूलि मस्तक पर लगायी। इसके पश्चात् तीनों आश्रम को छोड़कर चल पड़े ।। ८५ ।।

पंचवटी के मार्ग में जटायु के साथ श्रीराम की वार्ता और लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा के नाक-कान काटना

तीनों बड़े आनन्द से पंचवटी की ओर चल पड़े। मार्ग में उन्हे गृध्रराज जटायु ने देखा। जटायु ने कहा—दशरथ के पुत्र राम, मै तुम्हारे पिता का मित्र हूँ। हमसे जान-पहचान होओ ।। ८६ ।। उसे पिता के समान जानकर राम ने बड़े सतुष्ट मन से उसका सम्मान किया। राम बोले, गृध्रराज, आपका जन्म किस वंश में हुआ है, बताइये ।। ८७ ।। पक्षीवर जटायु यह सुनकर कहने लगे—राजा दक्ष की कन्या विनता थी जो परम पतिव्रता और सुन्दर थी। रूप-गुण में त्रिभुवन में उसकी तुलना नहीं थी ।। ८८ ।। कश्यप मुनि ने उससे विवाह किया था। उसके गर्भ से पक्षीराज गरुड़ का जन्म हुआ। हम गरुड़ के पुत्र और कश्यप के नाती है। मेरे एक बड़े भाई भी हैं जिनका नाम सम्पाति है ।। ८९ ।। शुद्ध विचारवाले राम, मेरा नाम जटायु है। मेरे निवास-स्थान को अपने पिता का ही घर समझो। यह सुनकर रामचंद्र बड़े प्रसन्न हुए और गृध्रराज के संग पंचवटी चले आये ।। २७९० ।। गोदावरी के जल में स्नान-मज्जन आदि कर परम आनन्द से अमृत-समान फल खाये। राम ने जटायु का बड़ा सम्मान किया। उन्हे आशीर्वाद दे पक्षीराज जटायु अपने निवास-स्थान को चला गया ।। ९१ ।। आत्मीय-जन के समान मानकर पक्षीराज के चले जाने पर तीनों अनेक विनोद करते हुए वहाँ रहने लगे। त्रिभुवन का पालन

बन्धुजन देखि येबे पक्षीराज गैला * बिबिध बिनोदे तिनिहन्ते थित भैला
श्रीराम लक्ष्मण सीता त्रिभुवन पाल * पञ्चवटी देशत बञ्चिला कतो काल ९२
रावणर बहिनीर शूर्पनखा नाम * फुरन्ते भ्रमन्ते देखे बसि आछे राम
कमल नयन दीर्घ बाहु मनोरम * मनोहर बेश त्रिभुवने नाहि सम ९३
बदन मन्डल शोभे पूर्ण शशधर * रुचिकर कर्ण कम्बु कण्ठ मनोहर
सुन्दर नासिका सम नोहे तिल फुल * बन्धुलि अधिक शोभे अधर रातुल ९४
सिंहबन्ध स्कन्ध केश नील आकुञ्चित * वक्षस्थले सुन्दर उदर त्रिबलित
भुजयुग मृणाल कोमल सुललित * मदनर धनुसम भ्रुव सुबलित ९५
रत्नर शलाका सम आङ्गुलि ज्वलय * हस्त पद्मे शोभे आरकत नखचय
उरु रामकल सुबलित जङ्घा दुइ * चरणर कान्ति पद्मकोषो समनुइ ९६
अङ्गुलि उज्ज्वल नख चन्द्रमाक गञ्जे * पदतल ध्वज बज्र यवे आति रञ्जे
हेन चमत्कार रूप लावण्य प्रचुर * कोटि कन्दर्पर दर्प देखि होवे चूर ९७
सुन्दरी सीताक देखि मने परि ताइ * किनो स्वामी पाइले एइकत तपसाइ
देव देवी क्रीड़े येन स्वर्गे सुखे बसि * रोहिणी सहिते येन क्रीड़े पूर्ण शशी ९८
बिमरिष करे शूर्पनखा मने मन * एहे स्वामी नोहे येबे निष्फल जीवन
हेन बेश धरो आमि त्रैलोक्य मोहन * मोक देखि रामर भोलय येन मन ९९
ताहान धरिणी आछे कोन वा सुन्दरी * अजिवन्त मोहोत ताहाङ्क परिहरि
बृद्धा राक्षसीर माया जानय आशेष * निजरूप एरि भैल मोहिनीर बेश २८००
यथा बसि आछन्त राघव हृषीकेश * पाव चालि राक्षसी आगत परबेश

करनेवाले श्रीराम, लक्ष्मण और सीता पंचवटी में कितना ही काल व्यतीत किया ।। ९२ ।। रावण की बहन शूर्पणखा एक बार घूमती-फिरती हुई वहाँ आयी और राम को बैठे हुए देखा। कमलनयन राम की लम्बी भुजाएँ मनोरम थीं। उनका रूप ऐसा मनोहर था जिसकी तुलना त्रिभुवन मे नही है ।। ९३ ।। पूर्ण चन्द्रमा की भाँति उनका वदन-मंडल शोभायमान था। कान बड़े मोहक, कंठ शंख-जैसा मनोहर था, सुन्दर नासिका तिल-फूल से भी अधिक सुन्दर और अधर बिम्बाफल से भी अधिक लाल व सुन्दर था ।। ९४ ।। उनके कन्धे सिंह के जैसे नील केश घुंघराले, वक्षस्थल सुन्दर तथा उदर त्रिबलीयुक्त थे। दोनों भुजाएँ मृणाल-सी कोमल और सुललित तथा भौहे कामदेव के धनुष-जैसी टेढ़ी थी ।। ९५ ।। उनकी उँगलियाँ रत्न की शलाकाओं-जैसी दमक रही थी, हाथ कमल के समान शोभायमान और नख रक्तवर्णी थे। उरु कदलीवृक्ष-जैसे, दोनों जाँघें सुन्दर गोलाइयों वाली, चरणों की कांति कमल-कोष से भी अधिक मनोहर थीं ।। ९६ ।। उँगलियों की उज्ज्वलता चन्द्रमा को भी लज्जित कर रही थी, ध्वज, वज्र, जौ के चिह्नों से युक्त चरण बहुत ही रंजित थे। ऐसे चमत्कार रूप जिसमें प्रचुर लावण्य था, उन्हें देख कोटि कामदेव का दर्प भी चूर-चूर हो जाता था ।। ९७ ।। सुंदरी सीता को देख वह मन-ही-मन सोचने लगी—इसने कितनी तपस्या से यह कैसा अपूर्व पति पाया है। ऐसा लगता है कि देव-देवी सुख से स्वर्ग में क्रीड़ाएँ कर रहे है या पूर्ण-चंद्रमा रोहिणी से क्रीड़ा कर रहा है ।। ९८ ।। शूर्पणखा मन-ही-मन यही विचार-चिन्तन करती रही। यदि इन्हें पतिरूप में प्राप्त न कर सकी तो जीवन ही निष्फल है। मैं ऐसा त्रैलोक्य-मोहन वेश धारण करूँगी जिसे देख राम का हृदय मोहित हो जाये ।।९९।। इनकी गृहिणी भी कौन ऐसी सुन्दरी है, उसे छोडकर ये अवश्य मुझे अपनायेगे। वह वृद्धा राक्षसी अशेष माया जानती थी, अपना वेश छोड़कर उसने मोहिनी वेश धारण किया ।। २८०० ।।

त्रिभुवन मोहिनी सुन्दरी भैल बाला * रामर आगत गैया करे केलि कला २८०१
अल्पहास्य करि हेन बुलिला वचन * केने हेन वेश धरि आसि भैला वन
स्वरूप एरिया केने तापसर वेश * कहिर गन्धर्व्व आसि भैला बन देश २
असङ्ख्यात राक्षस आछय एरि थान * ऋषि सब मारिया रुधिर करे पान
कोया हन्ते आसिला,कोनबा बाप माव * कि कारणे तेजिलाहा आपोनार थाव ३
किवा नाम तोमार कमन जाति कूल * स्वरूप करिया कहियोक आदि मूल
रामे बुलिलन्त बाप दशरथ राज * तान सत्य पालि आसि भैलो बनमाज ४
कौशल्या जननी जाना मोर नाम राम * मोर भाइ कनिष्ठ लक्ष्मण आन नाम
जनकर जीव एन्ते सुवदनी सीता * पतिव्रता रमणी आमार बिवाहिता ५
राज्यर भोगत एन्त करिया नैराश * आमार लगत आसि लैला वनवास
किवा नाम तोमार कहियो वितोपनी * कोन थाने उतपति संसार मोहिनी ६
काहार रमणी कोन थाने तोर बास * किकारणे आसिला आमार तुमि पाश
शङ्करर भार्य्या किवा तुमि से पार्व्वती * रोहिणी भरणी चित्रा नुहिवा रेबती ७
किवा अपेश्वरी तुमि गन्धर्व्वर नारी * कटाक्षते त्रिभुवन मोहिवाक पारि
शुनियोक राम मइ कहवो काहिनी * शूर्पनखा नाम लङ्केश्वरर बहिनी ८
ऋषि सब मारिया भुञ्जोहो प्रति नित * धर्म्म स्थान विध्वंसी दण्डकारण्ये थित
तोमार स्वरूप देखि हुया गैलो भोल * सुन्दर बदने मागो आलिङ्गन कोल ९
मानुषर छार नारी परिहरि योक * तोमार आमार दृढ़ आलिङ्गन होक

हृषिकेश राघव जहाँ बैठे हुए थे, राक्षसी धीरे-धीरे वहाँ पहुँची। वह त्रिभुवन-मोहिनी सुन्दरी बाला बनकर राम के सम्मुख जा अनेक कलाओं से केलि करने लगी ।। २८०१ ।। मृदुहास करती हुई उसने कहा—इस प्रकार वेश धारणकर तुम वन में किसलिए आये हो ? अपने स्वरूप को छोडकर यों तपस्वी का वेश किसलिए धारण किये हुए हो ? तुम क्या गन्धर्व हो जो यों वन मे फिर रहे हो ? ।। २ ।। यहाँ अनगिनत राक्षस रहते है जो ऋषियों को मारकर उनका रक्तपान करते है। तुम कहाँ से आये हो ? तुम्हारे माँ-बाप कौन है ? किस कारण अपने स्थान को छोड़कर आये हो ? ।। ३ ।। तुम्हारा नाम क्या है, जाति-कुल क्या है ? अपनी वश-परम्परा मुझसे सत्य बताओ। राम ने कहा—मेरे पिता राजा दशरथ है। उनका सत्य पालन करने हेतु मैं वन मे आया हूँ ।। ४ ।। समझ लो कि कौशल्या मेरी माता है, मेरा नाम है राम। यह मेरा कनिष्ठ भाई है, जिसका नाम लक्ष्मण है। यह जनकनन्दिनी सुन्दर रूपवाली सीता पतिव्रता नारी और मेरी व्याहता है ।। ५ ।। ये लोग राज्यभोग को तजकर मेरे साथ वनवास मे आये है। सुन्दरी, बताओ तो तुम्हारा नाम क्या है ? विश्वमोहिनी तुम्हारा जन्म कहाँ हुआ है ? ।। ६ ।। तुम किसकी पत्नी हो, तुम्हारा निवास कहाँ है ? किस कारण तुम मेरे पास आई हो ? क्या तुम शंकर की पत्नी पार्वती हो या रोहिणी, भरणी, चित्रा या रेवती हो ? ।। ७ ।। तुम कोई अप्सरा हो या गंधर्व की पत्नी हो जो अपनी कटाक्ष से त्रिभुवन को मुग्ध कर सकती हो ? शूर्पणखा बोली—सुनो राम, मैं सारी बाते बताती हूँ। मेरा नाम शूर्पणखा है, मै लकेश्वर रावण की बहन हूँ ।। ८ ।। ऋषियो को मार-मारकर नित्य खाया करती हूँ, धर्म-स्थानो को विध्वंस करती हुई दडक-वन मे रहती हूँ। तुम्हारा रूप देखकर मैं मोहित हो गयी हूँ, सुन्दर वदनवाले, मै तुम्हारी गोद में आलिंगन चाहती हूँ ।। ९ ।। इस मानवी नगण्य नारी को त्याग कर दो, तुम्हारा और मेरा दृढ़ आलिंगन हो। मै जिसकी भी पत्नी क्यों न होऊँ, उससे डर क्या है ? मेरा बड़ा

मइ यार भार्य्या भैलो तार किबा डर * श्रेष्ठ भाइ आमार दुर्जय लङ्केश्वर २८१०
त्रिभुवन विजयी समान नाहि केव * तान पाशे खाट्य त्रिदश कोटि देव
बिभीषण कुम्भकर्ण भाइ रावणर * आरो खर दूषण आछय बीरबर ११
रावणर पुत्र महाबीर इन्द्रजित * यार नाम शुनि त्रिभुवने भयभीत
सीताक एरिया राम मोक करा सार * आपुनि पशिलो आसि सुलक्ष्मी तोमार १२
प्रभुर मुखर येवे बचनेक पाओं * मानुषी सीताक एति क्षणे मारि खाओं
तोमार स्वरूप देखि बियाकुल गाव * सीताक एरिया राम मोत करा भाव १३
मोहिनीर बोले राम बिस्मय पाइल * करिया ईषत हास्य लक्ष्मणक चाइल
परिहास बोले ताइक बुलिलन्त राम * धन्यतो जीवन तोर शूर्पनखा नाम १४
महा पतिव्रता नारी आछे मोर सीता * मोहोक नालागे चल लक्ष्मणर भिता
आमार बचन तइ दृढ़मने धर * मयाइ अनाथ शिशु तारो गति कर १५
सीतार रामर चित्त दृढ़भावे लखि * लक्ष्मणर पाशक चलिला शूर्पणखी
ताहान स्वरूप देखि कौतूहल मन * कर योरे सुन्दरी आगत उपसन्न १६
शूर्पणखा बोले शुना लखाइ महाबीर * कामदेव येन शोभे तोमार शरीर
सम्पूर्ण चन्द्रतो करि शोभय बदन * प्रफुल्ल कमल जिनि प्रकाशे नयन १७
रुचिकर कर्ण कम्बु कण्ठ मनोहर * नासा तिल फुल जिनि चिबुक सुन्दर
मदनर धनु सम भ्रुवे करे कान्ति * अरुण अधर दन्त मुकुतार पान्ति १८
शिर चक्राकृति नील आकुञ्चित केश * त्रिभुवन जिनि रूप मनोहर बेश
तप्त सुवर्णर कान्ति शरीर निरुज * मृणाल सदृश सुबलित दुइ भुज १९

भाई लंकेश्वर श्रेष्ठ और दुर्जय है ।। २८१० ।। उसके समान त्रिभुवन-विजयी और कोई नही है। तीस करोड़ देवता उसकी सेवा किया करते है। विभीषण, कुम्भकर्ण रावण के भाई हैं। इनके अतिरिक्त वीरवर खर-दूषण भी है ।। ११ ।। रावण का पुत्र महावीर इन्द्रजित है जिसका नाम सुनकर तीनों लोक भयभीत रहते है। राम, सीता को छोड़कर मुझे अपनाओ। मैं सुलक्ष्मी तुम्हारे पास स्वयं आ गयी हूँ ।। १२ ।। प्रभु, तुम्हारे मुख से संकेत-वचन भर पाते ही मानवी सीता को अभी-अभी मारकर खा सकती हूँ। तुम्हारा स्वरूप देख मेरा शरीर व्याकुल हो रहा है। राम, सीता को छोड़ कर मुझसे प्रेम करो ।। १३ ।। उस मोहिनी के वचन से विस्मित होकर राम ने ईषत् हास्य कर लक्ष्मण की ओर देखा। राम ने उसे परिहास करते हुए कहा—तेरा नाम शूर्पणखा है, जीवन भी तेरा धन्य है ।। १४ ।। मेरी सीता महान् पतिव्रता नारी है। मुझे अब तो नहीं चाहिये अतः तू लक्ष्मण के पास जा। मेरी बात तू दृढ़ता से मन में रख ले। भाई लक्ष्मण अनाथ शिशु है, तू उसकी भी गति लगा दे ।। १५ ।। सीता के प्रति राम का चित्त दृढ़ता से लगा देख शूर्पणखा लक्ष्मण के पास चली। उनका स्वरूप देख शूर्पणखा के हृदय में बड़ा कौतूहल हुआ। हाथ जोड़ वह सुन्दरी उसके सामने खड़ी हो गयी ।। १६ ।। शूर्पणखा बोली, महावीर लक्ष्मण, सुनो; तुम्हारा शरीर कामदेव जैसा सुशोभित है। मुखमंडल पूर्ण चंद्रमा से भी अधिक शोभायमान और नयन खिले कमल से भी अधिक सौन्दर्यमय हैं ।। १७ ।। कान वड़े रुचिकर, कंठ शंख जैसे मनोरम, नासिका तिल-फूल से भी अधिक शोभामय और ठोढ़ी बहुत ही सुन्दर है। भौंहें कामदेव के धनुष-जैसी कान्तिवाली, होंठ अरुण; दाँत मोतियों की पंक्तियों जैसे, ।। १८ ।। सिर, छत्राकार, केश नीले घुंघराले हैं। मनोहर वेश त्रिभुवन को जीतनेवाला है। नीरोग शरीर की कान्ति तप्त स्वर्ण-जैसी, सुन्दर गोलाइयों वाली भुजाएँ मृणाल-जैसी है ।। १९ ।। नाखून चंद्रमा की अपेक्षा भी कान्तिमान्, करतल लाल, अँगुलियाँ रत्न-

नखचन्द्र जिनि आरकत करतल * रत्नर शलका सम अङ्गुलि उज्ज्वल
वक्षस्थल सुन्दर उदर त्रिवलित * उरु करीकर सम जङ्घा सुवलित २८२०
नव पद्मकोष सम दुइ खानि चरण * रूप देखि मोह हय देव मुनिगण
चम्पक कलिका सम आङ्गुलिर पान्ति * आरकत नखचन्द्र चय करै कान्ति २१
पदतल रातुल पङ्कज मनोरम * शरीर शीतल कान्ति कोटि चन्द्र सम
दण्डकार वन तिनि भुवनत सार * इहात रमण होक तोमार आमार २२
येहेन नदीर जल न थाकय वहि * सेहिमते नरर यौवन याय बहि
तोमार आमार रूप जगतते सार * गुचायो आशेष दुख आशेष निकार २३
लक्ष्मणे बोलन्त शुन ओरे शूर्पनखी * तोर रूपे कमन युवते प्राण राखि
पराधीन प्राणीर जीवन काछो धिक * निष्फल प्रार्थना मोत करिछस किक २४
राघवर भृत्य मइ नोहो स्वतन्तर * मोहोक भजिलि दुख लभिलि विस्तर
उत्तम कूलत तोर जन्म शूर्पनखा * रावणर बहिनी दासत करा आशा २५
तोर कथा शुनन्ते मोहोर उठे हासि * मोर भार्य्या भैले जानकीर हुइबि दासी
उच्छिष्टक खाया निते थाकिवि सीतार * अनिद्रे थाकिबि पाइवि क्षुधार निकार २६
तोर मोर देखादेखि हुइबेक न पाइव * शोके दुखे तोहोर यौवन वहि याइब
तोहोर यौवन भाव तेवेसे साम्फल * परिवर्त्ती दुनाइ रामर पाशे चल २७
लक्ष्मणर वचनक सार करि लैल * परिहास नुबुजि रामर पाशे गैल
मदने दगध भैल बियाकुल चित्त * एक दोवा करि पाइल रामर सन्नित २८
राघवत कहे मोक एरिल लक्ष्मणे * स्वरूपतो आसि भैलो तोमार कारणे

शलाकाओं-जैसी, वक्षस्थल सुन्दर, उदर त्रिबलीयुक्त; उरु हाथी के सूँड़-जैसे, जाँघे सुन्दर गोलाइयों वाली है ।। २८२० ।। दोनो चरण नये कमल-कोष की भाँति है । तुम्हारा रूप देखकर देव मुनिगण मुग्ध हो जाते है । चम्पाकलियों की भाँति उँगलियों की पंक्तियाँ हैं । आरक्त नख चन्द्रमा की भाँति कातिमान है ।। २१ ।। चरण-युगल लाल कमल के समान हैं । शरीर की स्निग्ध कान्ति कोटि चन्द्रमा के समान है । यह दंडक-वन त्रिभुवन मे श्रेष्ठ है । यहाँ तुम और हम मिलकर रमण करें ।। २२ ।। नदी का जल जैसे रुका नही रहता उसी प्रकार नर का यौवन भी निकल जाता है । तुम्हारा और मेरा रूप विश्वभर में श्रेष्ठ है । तुम मेरी अन्तहीन वेदना और विरह का दुःख मिटा दो ।। २३ ।। लक्ष्मण ने कहा—अरी शूर्पणखा, सुन ! तेरा यह रूप देखकर भला किस युवा के प्राण स्थिर रह सकते हैं ? पराधीन प्राणी के जीवन को धिक्कार है । तू भला मुझसे यह निष्फल प्रार्थना क्यो कर रही है ? ।। २४ ।। मै रामचन्द्र का सेवक हूँ, स्वतन्त्र नही हूँ । मुझे अपनाकर तो तुझे अनेक दुःख ही होगे । शूर्पणखा तेरा जन्म उत्तम कुल में हुआ है, तू रावण की बहन है, मुझ जैसे दास को तू पाना चाहती है ? ।। २५ ।। तेरी बात सुनकर मुझे हँसी आती है । मेरी पत्नी होने पर तो तुझे राम की दासी होना पड़ेगा । सीता की जूठन खाकर तुझे रहना पड़ेगा । बिना सोये रहकर क्षुधा का कष्ट सहना पड़ेगा ।। २६ ।। तेरी-मेरी भेंट भी नही हो पायेगी । शोक और दुःख से तेरा यौवन नष्ट हो जायेगा । तू पुनः राम के पास चली जा, तभी तेरा यौवन-भाव सफल होगा ।। २७ ।। लक्ष्मण का वचन मानकर, उनका परिहास न समझ, वह राम के पास गयी । उसका चित्त काम द्वारा दग्ध हो रहा था । धीरे-धीरे कदम बढ़ाती हुई राम के सम्मुख पहुँची ।। २८ ।। उसने राम से कहा—मुझे लक्ष्मण ने छोड़ दिया है । और यों भी पहले मैं तुम्हारे लिए ही आयी थी । मानवी सीता को तुम सुन्दर कहते हो ? उस पापिनी के हेतु मुझे अपमानित कर रहे

मानुषी सीताक तुमि मानाहा सुन्दरी * पाविष्ठीर काजे मोक अवमान करि २९
मोर सतिनीक देखिबाको नोहो योग * सीताक मारिया आजि करो उपभोग
मानुषी नारीक मारि पेघो यमपाशे * तुमि समे क्रीड़ा पाचे मनत उल्लासे २८३०
रामर भार्य्याक ताइ भुञ्जिबाक मने * राक्षसीर बेशक धरिला तेतिक्षणे
भयङ्कर बेश भैल पेटगोट खाल * लह लह जिह्बाखान देखिते विशाल ३१
आकट बिकट दन्त उच्च नाक गोट * केशपाश विकृत लेरवा दुइ ओठ
डिमरुर पात येन खसमस गाव * लोमचय उभता भेङ्गुरा दुइ पाव ३२
दुइ गोट चक्षुज्वले अगनिर थान * कुरि गोटा नख ताइर बज्रर समान
भयङ्कर वेशे जानकीर पाश पाइल * राहुर भार्य्याये येन रोहिणीक धाइल ३३
आथबेथ करि रामे भेटिलन्त आग * प्राण भाइ लक्ष्मण सत्वरे लइयो लाग
दुखकाले जानकीक देह प्राणदान * झाण्टे आसि काट राक्षसीर नाक काण ३४
रामर बचन येबे परितोल पाइल * हाते खाण्डा धरिया लक्ष्मण बीरे धाइल
शियालीक लागि येन केशरी किटाइल * नाक काण काटि ताइक डाकिया पठाइल ३५
स्त्रीजाति कारणेसे राक्षसी जीलेक * नाकर काणर तेज आपुनि पिलेक
आर्त्तनाद करि ताइ कान्दन्तेहि याय * लक्ष्मणे पाइलेक बुलि फिरि फिरि चाय ३६
आखि दुइ तरल मुखत नाइ पान * लक्ष्मणर हाते आसि भैलोहो निर्व्याण
कटा नाक काण दुइ हाते धरि नेइ * गिरिषाइ परिल खरर आगे गइ ३७
खर दूषणर आगे परिया कान्दय * नाकर काणर विषे बचन नासय
विपरीत देखि दुयो चाहिया आछय * खन खन करि शूर्पणखा कथा कय ३८

हो ।। २९ ।। वह मेरी सौत तो देखने योग्य भी नही है । सीता को मारकर आज मैं उपभोग करूँगी । मानवी सीता को मारकर मैं यमलोक भेज दूँगी और तुम्हारे साथ मन के उल्लास से क्रीडा करूँगी ।। २८३० ।। राम की पत्नी सीता को भक्षण करने हेतु उसने तत्क्षण राक्षसी का वेश धर लिया । उसका रूप भयंकर बन गया । पेट पिचक गया, लपलपाती जीभ विशाल हो गयी ।। ३१ ।। दाँत भीषण विकट, नाक ऊँची, केश-पाश विकृत, ओंठ झुलसे हुए, शरीर गूलर के पत्तों जैसा रूखा, रोंये खड़े, दोनों पैर टेढ़े-मेढ़े बन गये ।। ३२ ।। अग्नि की बेदी जैसी जलती आँखें, बीसों नाखून वज्र के समान हो गये । भयंकर वेश धारणकर वह जानकी के पास पहुँची । मानों राहु की पत्नी रोहिणी के सम्मुख पहुँची हो ।। ३३ ।। राम ने शीघ्रता से खड़े होकर उसे रोका । बोले—प्राण भाई लक्ष्मण ! शीघ्र यहाँ आ पहुँचो । संकट में जानकी के प्राण बचाओ । शीघ्र आकर इस राक्षसी के नाक-कान काट डालो ।। ३४ ।। जब राम का आदेश मिल गया तब लक्ष्मण हाथ में खड्ग ले दौड़ आये । सिंह मानो शृंगाली पर झपट पड़ा । उसके नाक-कान काटकर लक्ष्मण ने भगा दिया ।। ३५ ।। नारी होने के कारण ही राक्षसी बच गयी । नाक और कान का रक्त उसके मुँह में बहने लगा—उसने अपने ही रक्त का पान किया । आर्त्तनाद करती रोती हुई वह भागी । कहीं लक्ष्मण पकड़ न ले इस आशंका से बार-बार मुड़-मुड़कर देखती जाती थी ।। ३६ ।। आँखों से आँसू बह रहे थे, मुँह में पानी नहीं था । लक्ष्मण के हाथ मैं मर गयी । कटे नाक-कान दोनों हाथों से पकड़कर चिल्लाती हुई वह खर के सम्मुख जा पड़ी ।। ३७ ।। खर दूषण के आगे गिरकर वह रोने लगी । नाक-कान के बिना वचन नहीं निकलता था । खर-दूषण दोनों यह अनहोनी देखकर देखते ही रह गये । खिन-खिन करती हुई शूर्पणखा कहने लगी ।। ३८ ।। खर-दूषण सुनो, तुम लोग इसका प्रतिविधान करो । भला नाक-कान की पीड़ा अब कितना सहन

शुन खर-दूषण करियो प्रतिकार * नाकर काणर पीड़ा सैबो कत आर
तोमार भगिनी मोर देखियो विपत्ति * मानुषे करिले मोर एदूर सङ्गति ३९
ताइर बिपत्ति देखि क्रोधिलेक खर * कमन मुगुधे याय यमर नगर
रावणर वहिनीक कराइले अपमान * मरिचार लागिया काटिले नाक काण २८४०
आपोनार दोषे सिटो आपुनि नाशय * कोप करि छागे गल कटार घसय
कटकटाइ धार कोने खुजि फुरे काटि * यम-करणत कार मलचिल पाति ४१
मृग हुया कोन जने जगाइलेक वाघ * क्रोध करि श्रृगाले सिहर भैल आग
क्षुद्र पशु हुया कोने जङ्काइलेक हाती * खङ्गाल गोमर कङ्कालत दिले लाथि ४२
स्वभावे मानुष जाति आमासार भक्ष्य * असुरेओ कदाचितो न छारे विपक्ष
नाहि के प्रयास जिनिवाक नागलोक * झाण्टे कह कोने हेन करिलेक तोक ४३
कोनजने नाक काण काटिले तोमार * कह शीघ्र करि मोत साधो प्रतिकार
हेन शुनि शूर्पनखा बुलिलेक वाणी * शुन दुइ भाइ मइ कहओं काहिनी ४४
फुरन्ते भ्रमणे मइ गैलो पञ्चवटी * देखिलो मानुष दुइ तापसीया जाति
तूण वाण खड्ग हातत धरि चाप * वर वर वीर को लगाइते पारे काप ४५
राम लक्ष्मणर माजे सीता वर नारी * ताइर रूपक कोने वर्णाइबाक पारि
तरुण सुन्दर तिनि एक थाने थित * भुञ्जिवाक लागि मइ चापिलो सन्नित ४६
धरिया लक्ष्मणे काटिलेक नाक काण * सिकारणे मोहोर विपत्ति एतमान
तिनिरो शोणित करिवाक पाओं पान * तेवे से होवय मोर यश वहुमान ४७
शूर्पणखा वाक्ये खर क्रोधे भैल वश * तेतिक्षणे पाञ्चि दिला चैध्यय राक्षस

करूँ? तुम्हारी बहन मुझ पर यह विपत्ति आ पड़ी है। मनुष्य ने आज मेरी ऐसी दुर्गति कर डाली है ॥ ३९ ॥ बहन शूर्पणखा की विपत्ति देखकर खर क्रुद्ध हो उठा। बोला, कौन है वह मूर्ख जो यमलोक जाना चाहता है? रावण की बहन का उसने अपमान किया है। मरने हेतु नाक-कान काट डाले हैं ॥ २८४० ॥ अपने ही अपराध से वह स्वयं नष्ट होनेवाला है। मानो क्रोधित हो बकरा अपने गले पर कटार चला रहा हो। अपने गले को कटकटाकर कौन काटने दौड़ रहा है। किसे यमलोक का बुलावा आ गया है? ॥ ४१ ॥ मृग होकर किसने बाघ को जगाया? क्रोधित होकर श्रृगाल सिंह के सामने आया है। क्षुद्र पशु होकर किसने हाथी को उत्तेजित किया है? क्रोधी गेहुँअन सर्प की कमर पर लात मारी है? ॥ ४२ ॥ स्वभावतः मानव जाति हमारा भक्ष्य है। असुर भी कभी हमारे विपक्षी नहीं बनते। नागलोक जीतने में भी हमें प्रयास नहीं करना पड़ता। शीघ्र बता तेरी ऐसी दुर्गति किसने की है? ॥ ४३ ॥ किस व्यक्ति ने तुम्हारा नाक-कान काटा है? शीघ्र मुझसे बताओ जिससे मैं इसका प्रतिकार करूँ। यह सुनकर शूर्पणखा बोली—दोनो भाई सुनो, मैं सारी कथा सुनाती हूँ ॥ ४४ ॥ मैं घूमती-फिरती हुई पंचवटी पहुँची थी वहाँ तपस्वी जाति के दो मनुष्यों को देखा। तरकश, वाणों, खड्ग और हाथों मे धनुष लिये वे दोनों बड़े-बड़े वीरों को भी पराभूत कर सकते हैं ॥ ४५ ॥ राम-लक्ष्मण के बीच श्रेष्ठ नारी सीता है। उसके रूप का भला कौन वर्णन कर सकता है? तीनों तरुण सुन्दर एक ही स्थान पर थे। मैं उन्हें भक्षण करने हेतु समीप गयी ॥ ४६ ॥ तब लक्ष्मण ने मुझे पकड़कर नाक-कान काट डाले। इसी कारण मुझ पर इतनी सारी विपत्ति आ पडी है। मेरा यश और मान तभी बढ़ेगा जबकि उन तीनों का रक्तपान कर सकूँ ॥ ४७ ॥ शूर्पणखा की बात सुनकर खर क्रोधित हो उठा। उसी क्षण उसने चौदह राक्षसों को भेजा, बोला—महावीर चौदह राक्षसों! उन तपस्वियों

शुनियोक चैध्यय राक्षस महाबीर * सत्वरे मारियो एइ पियोक रुधिर ४८
चैध्यय हाजार दल तुलत आछिल * सहस्रेक दल माजे एकैक बाछिल
आगुवान युजे पाच गुचिया थाकिल * रणक याइबाक बीर काचने काचिल ४९
बाघ हेन चैध्य गोटा राक्षसे जाम्पिल * चरणर प्रहारत पृथिवी काम्पिल
रावणर बहिनी चलिला आगुवान * समर भूमिक लागि करिल पयाण २८५०
चैध्यय बीरर अङ्गारर वर्णगाव * चलि गैल मेघ येन राघवर ठाव
सत्वर गमने पञ्चबटी देश पाइल * रामे देखि लक्ष्मणत तेखने जनाइल ५१
शुना रामायण हौक जन्मर साफल * कलिमल गुचि महामिलिबे मङ्गल
घोर संसारक तेवे तरिबाहा सुखे * पलाउक पातक राम राम बोला मुखे ५२

चैध्य जन राक्षसर लगत युद्ध आरु सिहँतर रण

झुमुरी

रामे लक्ष्मणक चाइ * बोलन्त देखियो भाइ
चैध्यय राक्षस आसे * युजिबाक अभिलाषे २८५३
सीताक राखिबि तइ * राक्षसक युजो मइ
एति क्षणे घोर शरे * मारि पेषो यम घरे ५४
एहि बुलि आदेशिल * जानकीक रक्षादिल
कवचे ढाकिल तनु * सुवर्णे रचित तनु ५५
हाते दिव्य शर लैला * रामे आग बाढ़ि गैला
राक्षसक भगवन्त * सम्बुधिया बुलिलन्त ५६

को शीघ्र ही मार डालो जिससे यह उनका रक्त-पान कर सके ॥ ४८ ॥ वे चौदह राक्षस चौदह हजार के समकक्ष थे। एक-एक सहस्र के दल के बराबर थे। युद्ध करने मे अग्रमामी थे। पीछे हटनेवाले न थे। युद्ध में जाने हेतु वीरों ने कमर कस लिया ॥ ४९ ॥ चौदह राक्षस बाघ के समान कूदने दहाड़ने लगे। उनके चरण-प्रहार से पृथ्वी कम्पित होने लगी। रावण की बहन शूर्पणखा आगे-आगे चली। सबने समर-भूमि को प्रयाण किया ॥ २८५० ॥ चौदह वीरो के शरीर का वर्ण कोयले-सा काला था। सभी काले बादलों की भाँति राम के निवास-स्थान पर पहुँचे और शीघ्र ही पंचवटी पहुँच गये। राम ने उन्हें देखते ही लक्ष्मण से बताया ॥ ५१ ॥ रामायण श्रवण करो जिससे जन्म सफल हो। कलिमल मिटाकर महा-मंगल प्राप्त हो। तभी घोर ससार से सुखपूर्वक उद्धार पा सकते हो। मुख से राम-राम कहो जिससे पाप भाग जाये ॥ ५२ ॥

चौदह राक्षसों के साथ युद्ध और उनका वध

राम ने लक्ष्मण की ओर देखते हुए कहा—देखो भाई, चौदह राक्षस युद्ध करने के अभिप्राय से आ रहे हैं ॥ ५३ ॥ तुम सीता की रक्षा करो, मै इन राक्षसों से लड़ूंगा। अपने भयंकर बाणों से मारकर इन्हें यमलोक भेज दूंगा ॥ ५४ ॥ यह आज्ञा दे जानकी की रक्षा की व्यवस्था कर राम ने कवच से अपने शरीर को आवृत्त किया और हाथ में स्वर्ण-निर्मित धनुष उठा लिया ॥ ५५ ॥ हाथ में दिव्य बाणों को लेकर वे आगे बढ़ गये, राक्षसों को सम्बोधित करते हुए भगवान बोले—॥ ५६ ॥

दशरथ सुत राम * जानिबि आमार नाम
पितृर आज्ञाक धरि * निज थान परिहरि ५७
तापसर धरि वेश * आसि भैलो वन देश
आमासाक कि कारणे * खेदिया आसस बने ५८
किसक लगास खेद * येवे नोहे कन्ध छेद
तारे परिवर्त्ति चल * नुहि तेवे पाइबि फल ५९
शुनिया राक्षस जाक * राघवक बोले वाक
आपुनहि मरिबाक * आमासाक दिलि डाक २८६०
जान तोक पाइल यमे * खर महा वीर समे
बिरोध सञ्चिलि किक * तोहोक आछोक धिक ६१
शूर्पणखा नाक काण * काटि तयु विद्यमान
केने मन्द कर्म्म कैलि * आपुनि त्रिशूल लैलि ६२
खर प्रभु पाञ्चिलेक * तोक आजि दिवो सेक
आमि चैध्य बीरवर * तइ आछ एकेश्वर ६३
आजि आमि थैबो यश * इन्द्रत शरण लस
तथापि एराण नाइ * खेदिया मारिवो याइ ६४
दुर्घोर सङ्कट बने * तोक राखे कोन जने
वेढ़ि वोले थाक थाक * दिलेक अस्त्रर जाक ६५
मूषल शकति शर * आरो गदा मुद्गर
चैध्य जने मारे आसि * देखि रामे तुलि हासि ६६
धनु गुण माजिलन्त * प्रभुदेव भगवन्त
राक्षसर अस्त्र जाक * अवलेप करि ताक ६७
हासिया आनिला शर * छेदिलन्त निरन्तर
निज अस्त्र भैल छन्न * देखि बीर चैध्य जन ६८

समझ लेना मेरा नाम दशरथ-पुत्र राम है। पिता की आज्ञा मानकर अपनी जन्मभूमि को छोड़, तपस्वी-वेश धारणकर इस वन-प्रदेश मे आया हूँ। भला किस कारण तुम हमें मारने के लिए आ रहे हो? ।। ५७-५८ ।। हमे किस कारण दुःख देना चाहते हो? तुम्हारा गला न कटे, इस हेतु तुम लौट जाओ। नहीं तो उसका फल तुम्हें भोगना पड़ेगा ।। ५९ ।। यह सुनकर राक्षसों ने राम से कहा—स्वयं मरने के लिए तुमने हमें आमन्त्रित किया है ।। २८६० ।। महाबीर खर के साथ भला तुमने विरोध क्यों किया। समझ लो कि तुम्हें यम ने पा लिया है। तुम्हें धिक्कार है ।। ६१ ।। तुमने शूर्पणखा के नाक-कान काटकर कितना बुरा कर्म किया है। स्वयं त्रिशूल अपने ऊपर लिया है ।। ६२ ।। हमे प्रभु खर ने भेजा है, तुम्हे हम अच्छा पाठ सिखायेंगे। हम चौदह महावीर है, तुम केवल अकेले हो ।। ६३ ।। आज हम तुम्हे मारकर अपनी कीर्ति रखेंगे। इन्द्र की शरण जाने पर भी तुम बच नही पाओगे, तुम्हें खदेड़कर मारेंगे ।। ६४ ।। वन में इस भयंकर संकटकाल में तुम्हे बचानेवाला कौन है? —यों कहते हुए राम को घेरकर राक्षसो ने प्रवल अस्त्रसमूह की वर्षा करना आरम्भ किया ।। ६५ ।। मूसल, शक्ति, वाण, गदा, मुद्गर आदि चौदह राक्षसों ने बरसाना शुरू किया। यह देख प्रभु भगवन्त राम हँसते हुए धनुष पर प्रत्यचा चढ़ायी और गर्व से राक्षसों के अस्त्रो का निराकरण करते हुए वाणो की वर्षा करना आरंभ किया और उनके छोड़े अस्त्रों को निरन्तर काटने लगे। अपने अस्त्रों को नष्ट हुए देखकर

राघवक क्रोध करि * चतुर्द्दिशे शूल धरि
बाघ येन रुधिलेक * चारि पाशे बेढ़िलेक ६९
मारो मारो राम तोक * देख गैया यमलोक
राघवक एहि बुलि * हानिलेक शूल तुलि २८७०
हानि रामे चैध्य शर * शूल छेदि राक्षसर
थाक थाक बुलि माति * राक्षसक खेदि यान्ति ७१
त्रैलोक्यर नाथ राम * महाक्रोधे बहे धाम
शिलीमुख चैध्य पाते * प्रहार करिल झाण्टे ७२
हृदयत फुटि गैल * पिठि पाचे बाज भैल
देख ने देख बेगे * पृथिवीत सेहि छेगे ७३
पातालक गैल वइ * तैत न थाकिल रइ
नागर लोकक गैल * परिवर्त्ती आसि भैल ७४
दशो दिश परकाशि * रामक नमिल आसि
तूणत पशिला पाचे * देव गण देखि आछे ७५
चैध्यय राक्षस मरि * पाचे गिरिसित करि
धरणीत परि गैल * भूमि कम्पि कम्पि गैल ७६
शुनियोक सभासद * रामर चरित्र पद
पापर साक्षाते यम * शुनियोक मनोरम ७७
इसे धर्म अनुपाम * जानि शुना अविश्राम
पोरोक पापर दाम * डाकि बोला राम राम ७८

खर दूषणर बध; रावणर मारीचर समीप लै गमन

पद

राक्षसक मारि रामे रण जय भैला * रङ्ग मने आपोन थानक लागि गैला

चौदह वीरों ने बाघ-जैसे क्रोधित हो शूल ले चारों ओर से घेर लिया ॥ ६६-६९ ॥ "राम, तुझे हम मार डालेंगे; मारकर यमलोक भेज देंगे", ऐसा कहते हुए उन राक्षसों ने शूल उठाकर राम की ओर फेंका ॥ २८७० ॥ रामचन्द्र ने शूलों को काट डाला और 'ठहरो-ठहरो' कहते हुए राक्षसों को खदेड़ना शुरू किया ॥ ७१ ॥ महाक्रोध के मारे त्रैलोक्यनाथ राम के शरीर से स्वेद-धारा बहने लगी। उन्होंने चौदह वाणों से राक्षसों के वेग से प्रहार किया ॥ ७२ ॥ वे वाण उनके हृदय को भेदकर और पीठ की ओर निकल गये और शीघ्रता से पृथ्वी को भेदकर पाताल में चले गये। वहाँ भी विना रुके वे वाण नागलोक में पहुँचे, पुनः वहाँ से लौटे और दशो दिशाओं को प्रकाशित करते हुए आकर राम को प्रणाम किया तथा तरकश में प्रविष्ट हो गये। देवगण यह सब कुछ देख रहे थे ॥ ७३-७५ ॥ मारे हुए वे चौदहों राक्षस घोर नाद करते हुए धरती पर गिर पड़े। उनके गिरने से धरती काँप उठी ॥ ७६ ॥ सभासदगण सुनिये, राम के चरित्र-सम्वन्धी पद पाप के साक्षात् यम है। इन मनोरम पदों को सुनिए ॥ ७७ ॥ यही अनुपम धर्म है ऐसा समझकर निरन्तर श्रवण करते रहो। पुकार-पुकारकर 'राम-राम' कहो, जिससे पाप की ढेरी भस्म हो जाये ॥ ७८ ॥

खर-दूषण वध : रावण का मारीच के समीप जाना

राक्षसों को मारकर राम युद्ध मे विजयी हुए। वे वड़ी प्रसन्नता से अपने स्थान

सीताये लक्ष्मणे देखिलन्त दूरे बसि * राहुत मुकुत येन पूर्णिमार शशी ७९
राम सीता लक्ष्मणे कौतुक वर पाइला * एक थान हुया तिनि फल मूल खाइला
सुमित्रार सुत येवे वार्त्ताक पुछिला * आपोनार जय कथा सकले कहिला २८८०
चैध्यय राक्षस नामे मारिलन्त लखि * आग पाच चाहन्ते पलाइल शूर्पणखी
रामर बीरत्व देखि बर भय भैल * खरर आगत गैया कान्दिबाक लैल ८१
खरे बोले माव केने विलाप करस * वैर मारिबाक गैल चैध्यय राक्षस
आर किवा सतकार करिबो तोमार * झाण्ट करि कह माव साधो प्रतिकार ८२
शूर्पणखा बोले तइ कि कार्य करिबि * रामर हातत खर आपुनि मरिबि
राघवे मारिले तोर चैध्यय राक्षस * दण्डकर वने तइ वीर बोलावस ८३
तोहोर बीरत्व निते ऋषि मारि खास * झाण्टे वन परिहरि देशक नयास
दुख सागरत मोर नाहिके उद्धार * तइ वीर भैलि पृथिवीर महाभार ८४
रावणर भाइ हुआ भैलि कुलाङ्गार * एहि मुखे मोहोर करिबि प्रतिकार
रावणर आगे तइ मुनिष बोलाइलि * राक्षस गणर तइ अधिकार पाइलि ८५
आपोनार प्राण खालि राखिबाक चाइलि * चैध्य गुटि वपुराक मिछात मराइलि
श्रीराम लक्ष्मण दुइक बीर भाले जान * मोहोर वाक्यर तइ जानिबि प्रमाण ८६
रावणर बहिनीर गति हेन मान * प्रतिकार नोहे येवे तेजिवो पराण
कोप करि खरे वोले खरतर वाक * कि कारणे माव हेन बोलस आमाक ८७
तोर दुख देखि मोर दहे सर्व्व गात्र * मारिबो रामक आजि मानुहेसे मात्र
दुइ भाइक मारिया पठाइबो यमघर * कोटियेक रामे मोर नोहे समसर ८८

पर आये। लक्ष्मण और सीता ने दूर से देखा। रामचन्द्र राहुयुक्त पूर्णिमा के चन्द्र-जैसे दीख रहे थे ।। ७९ ।। राम-सीता-लक्ष्मण बड़े आनन्दित हुए और तीनो ने मिलकर फल-मूल खाया। सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण के समाचार पूछने पर राम ने अपनी विजय की कथा सुनायी ।। २८८० ।। रामचन्द्र ने चौदह राक्षसों को मार डाला देख शूर्पणखा आगे-पीछे देखती हुई भाग चली। राम की वीरता देख वह बहुत ही भयभीत हुई। खर के पास जाकर वह पुनः रोने लगी ।। ८१ ।। खर बोला— बहन रो क्यों रही है। वैरियों को मारने हेतु चौदह राक्षस गये थे। भला अब तुम्हारा कौन-सा सत्कार करूँ ? बहन, शीघ्र कहो जिससे मै प्रतिकार कर सकूँ ।। ८२ ।। शूर्पणखा बोली, खर, भला तू प्रतिकार क्या करेगा ? राम के हाथों तुम्हें खुद भी मरना होगा। राम ने तेरे चौदह राक्षसों को मार डाला, तू इस दंडक वन में वीर कहालता है ? ।। ८३ ।। तेरी वीरता तो इसी में है कि प्रतिदिन ऋषियों को मारकर खायाकरता है। शीघ्र वन को छोड़कर अपने देश क्यों नही चला जाता ? दुख-समुद्र से मेरी रक्षा का कोई उपाय नही है। तू वीर क्या हुआ है पृथ्वी का महाभार बना है ।। ८४ ।। रावण का भाई होकर भी तू कुलांगार है। इसी मुँह से तू भला मेरा प्रतिकार करेगा ? रावण के सम्मुख तू बड़ा गर्व किया करता था और इसी से राक्षसों का अधिकार तुझे मिल गया था ।। ८५ ।। तू केवल अपने प्राण रखना चाहता है। बेचारे चौदह राक्षसों को झूठ-मूठ मरवा डाला। श्रीराम-लक्ष्मण दोनों वीरों को तू भली-भाँति जानता है। मेरी बातों का प्रमाण भी तुझे मिल जायेगा ।। ८६ ।। रावण की बहन का ऐसा अपमान हुआ। यदि इसका प्रतिकार नही हुआ तो मैं प्राण तज दूंगी। खर ने क्रुद्ध होकर तीव्रता से कहा—बहन, भला मुझे इस प्रकार क्यों कहती है ? ।। ८७ ।। तेरा दुःख देखकर मेरा सारा शरीर जल रहा है। राम तो मनुष्य मात्र है, उसे आज अवश्य ही मार डालूँगा। दोनों भाइयों को मारकर यमालय

गदा हानि राम लक्ष्मणर हरो जीव * दुहानो शोणित आजि धरणीत पिव
शुन बोलो बहिनी करियो मनरङ्ग * शुनि आछा कहित आमार रणभङ्ग ८९
इन्द्र आदि करिया यतेक आछे देव * समस्त आमार समान नाहि केव
हेम शुनि शूर्पणखा उल्लासि गैलेक * आशेष प्रशंसा ताक बुलिबे लैलेक २८९०
भैलाहा सार्थक तुमि रावणर भाइ * रङ्गमन भैलोहो बिपुल बल पाइ
खरे बोले दूषण सुनह मोर वाणी * सब साजे रथखान साजि देह आनि ९१
चैध्यय सहस्र आरो राक्षसर बल * एति क्षणे सब साजे चलाउ सकल
सेनापति दूषणेयो सैन्यक सजाइल * सबे अस्त्र शस्त्र निया रथत चराइल ९२
टाङ्गि चुरि कटारी शकति धनुशर * परशु मूषल भिण्डिपाल मुद्गर
त्रिकण्टक परिघ पाषाण कुन्त प्राश * गदा बज्र लोहार त्रिशूल नागपाश ९३
अर्द्धचन्द्र चन्द्रहास खड्ग पटिश * शतघ्नी तोमर शर बेलेख कुलिश
खर बीर बचन दूषणे शिरे लैल * सुवर्णे मण्डित रथ आगेनिया थैल ९४
ताहात चलिल खर युजिबाक मन * मेरुर शिखरे येन काल मेघ खन
चतुर्द्दिशे बेढ़ियाय निशाचर बले * येन काल पर्ब्बतत मेघ खन चले ९५
चलय रामक धरि तेजय आटास * ज्वन्लत अग्निल येन पतङ्गर झास
खरर घोटक सब आकाशक जाम्पे * रथभरे सकल पृथिबी खन काम्पे ९६
उदयास्त गिरि मेरु मन्दर टलिल * स्वर्ग माजे देवतार हृदय लरिल
खर महाबीर येवे युद्धक चलिल * रथर ऊपरे तार शगुण परिल ९७
रुधिरर वर्ण गावे आकाशे उदय * मांस शोणितर हार पुष्पे बरिषय

भेज दूँगा। करोडों राम भी मेरे समान नहीं हो सकते ।। ८८ ।। गदा से चोट कर राम-लक्ष्मण के प्राण ले लूँगा। आज धरती दोनों का रक्तपान करेगी। बहन, मन में प्रसन्न होवो। हम कभी रण से भागे है, क्या तुमने कही यह सुना है ? ।। ८९ ।। इन्द्र आदि समेत जितने देवगण हैं युद्ध में कोई भी हमारी बराबरी नही कर सकते। यह सुनकर शूर्पणखा को उल्लास हुआ, वह उसकी अशेष प्रशंसा करने लगी ।। २८९० ।। तुम्हारा रावण का भाई होना सार्थक है। तुम्हारा विपुल बल पाकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। खर ने कहा, दूषण, मेरी बात सुनो। मेरे रथ को सभी प्रकार से सुसज्जित कर ले आओ ।। ९१ ।। और राक्षसों की चौदह सहस्र सेना को इसी क्षण सभी साजों से सज्जित कर ले चलो। सेनापति दूषण ने भी सेना सजायी और सभी अस्त्र-शस्त्र ले जाकर रथ पर सजा दिया ।। ९२ ।। टाँगी, छूरी, कटारी, शक्ति, धनुष, वाण, परशु, मूसल, भिन्दिपाल, मुद्गर, त्रिकंटक, परिष, पाषाण, कुन्त, प्राश, गदा, वज्र, लोह-त्रिशूल, नागपाश, ।। ९३ ।। अर्द्धचन्द्र, चन्द्रहास-तलवार, खड्ग, पट्टिश, शतघ्नी, तोमर, अनगिनत वाण, कुलिश आदि अस्त्र-शस्त्रों को वीर खर के कथनानुसार दूषण ने स्वर्ण-मंडित रथ पर सजाकर उसे ले जाकर सम्मुख रख दिया ।। ९४ ।। युद्ध करने की इच्छा से खर उस पर जा चढ़ा। ऐसा प्रतीत होता था, मानों मेरु के शिखर पर काला मेघ हो। निशाचर-सेना उसे चारों ओर घेरकर ऐसे चल रही थी मानों काले-पर्वत पर मेघ चल रहे हों ।। ९५ ।। राक्षस-सेना प्रचंड कोलाहल करती हुई राम की ओर इस प्रकार चली मानों जलती अग्नि में पड़ने हेतु पतंगे टूटे जा रहे हों। खर के घोड़े आकाश में छलांगें भर रहे थे। रथ के भार से पृथ्वी काँपने लगी थी ।। ९६ ।। उदय-अस्त-पर्वत, मेरु-मंदर पर्वत टलमलाने लगे। स्वर्ग में देवताओं का हृदय प्रकम्पित होने लगा। महाबीर खर ने जब युद्ध-हेतु प्रयाण किया तो उसके रथ पर गिद्ध आ बैठा ।। ९७ ।। आकाश और शरीर रक्त-वर्ण हो उठा,

येनो पूर्ब्बकाले राहु सूर्यक ग्रासिल * पाताल पृथिवी काम्पे निर्घात परिल ९८
गर्द्दभे काढ़य राव शृगाले नादय * रामर लोकर मांस भुञ्जिते साधय
दक्षिण दिशत परि रावे ढोण्डा काक * मुखत अगनि निकलय जाके जाक ९९
वाम हात पाव चक्षु फुरे निरन्तर * उतपात देखि वर बुलिलेक खर
हेन लक्षगुण यदि होवे उतपात * तथापितो मोहोर कटाक्ष नाहि आत २९००
मोक बुलि अजय बिजय वीर खर * त्रिभुवन जिनिते शकत एकेश्वर
खर वीर बचने निर्भय सबे भैल * चतुर्द्दिशे बेढ़ि निशाचर वल गैल १
आकाशत कौतुके यतेक देवगण * आसिया मिलिल युद्ध चाहिवाक मन
श्येन गामी पृथुश्याम यज्ञ शत्रु वीर * दुर्ज्जय परवीराक्ष विहङ्गम धीर २
पुरुष कलिकामुख मेघमाली ख्यात * वरास्य रुधिरासन महामाली तात
बार वीर लरि गैल खरवीर आगे * आरो चारि वीर महा दूषणर लगे ३
स्थलाक्ष प्रमाथि आउर महान कपाल * लरि गैला त्रिशिरा पिछत यमकाल
वासवक धारे येन दैत्यगण धाइल * निशाचर वले राघवर पाश पाइल ४
विदूरते रामर सैन्यक लक्ष्य गैल * लक्ष्मणक सम्बुधिया बुलिवाक लैल
देख देख लखाइ परिहर बनफल * शूर्पणखा चलाइलेक निशाचर वल ५
श्रावणर मेघ येन ढाकिल गगन * निशाचर वल हेरा पाइला दरिशन
आजिसि मिलिल आसि प्रथम समर * रथर उपरे देख महावीर खर ६
उतपात देख सब सैन्यर ऊपरे * सकल राक्षस मारिवोहो एकेश्वरे
मोर बोले लखाइ हाते धनुशर धर * जानकीक लैया याहा गह्बर भितर ७

फूलों से मांस और रक्त की लड़ी झरने लगी। प्रारम्भ में ही मानो राहु ने सूर्य को ग्रस लिया, पाताल-पृथ्वी प्रकम्पित होने लगे, वज्रपात होने लगा ।। ९८ ।। गधे चीखने लगे, शियार बोलने लगे। राम के द्वारा मारे जानेवालों के मांस खाने की इच्छा प्रबल हो उठी। दक्षिण दिशा में ढोण्डा कौवे चीखने लगे। उनके मुँह से लगातार आग की लपटें निकलने लगीं ।। ९९ ।। बायाँ हाथ, पैर, आँखें बार-बार नाचने लगे। बड़े-बड़े उत्पात देखकर खर कहने लगा—इस प्रकार के लक्षगुणे उत्पात भी यदि हों तथापि मैं उन पर बिन्दुमात्र आक्षेप नही करता ।। २९०० ।। मुझे अजेय, विजयी वीर खर कहते हैं, मैं अकेला ही त्रिभुवन विजय कर सकता हूँ। वीर खर के वचनों से सभी निर्भय हो उठे। उसे चारों ओर से घेरकर निशाचर-वाहिनी चलने लगी ।। १ ।। युद्ध देखने की इच्छा से सभी देवगण आकाश में आ जुटे। वीर श्येनगामी, पृथुश्याम, यज्ञ शत्रु दुर्जय परवीराक्ष, धीर विहंगम, पुरुप, कलिकामुख, विख्यात मेघमाली, वरास्य, रुधिरासन, महामाली आदि बारह वीर महावीर खर के आगे-आगे वेग से चले और चार महावीर दूषण के साथ चले ।। २-३ ।। स्थलाक्ष, प्रमाथि और महा-कपाल त्रिशिरा के संग-संग प्रचंड यम के समान चल पड़े। दैत्यों ने जिस प्रकार इंद्र पर धावा किया था, उसी प्रकार निशाचर-सेना रामचन्द्र के समीप पहुँची ।। ४ ।। दूर से उस सेना को आते देख राम लक्ष्मण से कहने लगे—देखो, देखो लक्ष्मण, वनफल लाना छोड़ो। शूर्पणखा निशाचरी सेना लेकर आ रही है ।। ५ ।। श्रावण के मेघ जैसे आकाश ढँक लेते है, उसी प्रकार निशाचरी सेना दिखाई दे रही है। आज ही प्रथम युद्ध का अवसर आया है। वह देखो, रथ पर महावीर खर आ रहा है ।। ६ ।। देखो, सारी सेना उत्पात करने आ रही है। मैं अकेले ही इस सारी सेना को मार डालूंगा। लक्ष्मण, मेरी बात मानकर तुम हाथ में धनुष-वाण ले लो और जानकी को लेकर गुफा में चले जाओ ।। ७ ।। मेरी शक्ति समझकर कोई उत्तर

आमार शकति जानि नेदिबि उत्तर * जानकी सीताक मात्र भाले रक्षा कर
राघवर वचनक शिरे तुलि लैला * जानकीक लैया गिरि गह्वरक गैला ८
हेन देखि रामचन्द्रे हरिषक पाइला * अभेद सन्नाहा निया गावत चराइला
सुवर्ण सन्नाह लैला बाकलि एरिया * आदित्य उदय येन आन्धार फेरिया ९
हाते धनु धरि राम मेदिनीत थिउ * राक्षस बलर देखि उरि गैला जीउ
तीरक पाइलेक येन सागरर जल * दमकिया थाकि गैल राक्षसर बल १०
सैन्यक आकलि रामे थाकि गैल हासि * राक्षसर बले बेढ़िगालि पारे आसि
केहो बोले धर धर केहो बोले मार * मानुष गोटक केने राखि आछो आर ११
सैन्य तम्भिबार देखि वार्त्ताक न पाइल * खर बीरे दूषणक बाक्य पुरुजाइल
शुन रे दूषण तइ मोहोर बचन * कि कारणे स्तम्भिया रहिल सैन्यगण १२
सागर स्तम्भिल येन काखरक पाइ * इहार कारण भाइ देखि आस याय
दूषणे देखिया आसि खरत जनाइल * रामक देखिया सब प्रजा भय पाइल १३
एकल रामक देखि कौतुक पाइल * चन्द्रक ग्रासिते येन राहुये किटाइल
सारथिक बोलय सत्वरे रथ डाक * रामर पाशक लागि चपाउ तोमाक १४
सारथिये रथनिया चपाइलेक कोल * धर धर बुलि बर उथलिल रोल
चतुर्हिशे बेढ़िया बोलय मार मार * गदा मुद्गर हाने शकति कुठार २९१५
मेरुक बेढ़िया येन वारिषार मेघे * रामक बेढ़िया शर बरिषय बेगे
राक्षसर अस्त्र येन नदी याय बहि * राघव सागरे ताक थाकि गैला महि १६

न देना। केवल जानकी सीता की रक्षा उत्तम रूप से करते रहो। राघव का वचन मानकर लक्ष्मण सीता को लेकर पर्वत की गुफा में चले गये ॥ ८ ॥ यह देख रामचन्द्र को हर्ष हुआ। उन्होंने अभेद्य कवच धारण किया, वल्कल-वसन उतारकर स्वर्ण-कवच पहन लिया। ऐसा लगता था, अन्धकार विदीर्ण कर सूर्य का उदय हुआ हो ॥ ९ ॥ हाथों में धनुष लेकर रामचन्द्र धरती पर खड़े हो गये। उन्हें देखकर राक्षस सेना के प्राण उड़ गये। जिस प्रकार तट पर पहुँचकर सागर का जल रुक जाता है, वैसे ही राक्षस-सेना रामचन्द्र के समीप आकर रुक गयी ॥ २९१० ॥ राक्षस-सेना को देखकर राम हँसकर दृढ़ता से खड़े हो गये। राक्षसों की सेना उन्हें घेरकर गालियाँ देने लगी। कोई कहता था, पकड़ लो, पकड़ लो, कोई कहता था—मारो, मारो। इस मानव को भला और क्यों छोड़े हुए हो? ॥ ११ ॥ सेना के स्तंभित होकर रुक जाने का कोई कारण समझ न पाकर वीर खर ने दूषण से यह वचन कहा—दूषण सुनो, तट तक पहुँचकर जैसे सागर स्तंभित हो जाता है उसी प्रकार सेना स्तम्भित होकर किस कारण रुक गयी? ॥ १२ ॥ भाई, तुम जाकर इसका कारण जान आओ। दूषण ने देख आकर खर को सूचना दी कि राम को देखकर सारी प्रजा भयभीत हो उठी है ॥ १३ ॥ राम को अकेले देखकर उन्हें बड़ा कौतुक हुआ। चंद्रमा को ग्रसने हेतु जैसे राहु दौड़ता है, उसी प्रकार वे भी उतावले हो उठे। सारथि से कहा—शीघ्र ही रथ आगे बढाओ और हमें राम के सम्मुख पहुँचा दो ॥ १४ ॥ सारथि रथ राम के पास ले गया। तब वहाँ पकड़ो, पकड़ो की ध्वनि गूँज उठी। राम को चारों ओर से घेरकर 'मारो, मारो' कहने लगे और गदा, मुद्गर, शक्ति, कुठार, आदि की चोट करने लगे ॥ १५ ॥ जैसे मेरु को घेरकर वर्षा के मेघ पानी की वर्षा कर रहे हों, उसी प्रकार राम को घेरकर वे बाण-वर्षा करने लगे। राक्षसों के अस्त्र बहती नदी की भाँति गिरने लगे, राघवरूपी समुद्र उन्हें अपने में विलीन कर अविचल रहा ॥ १६ ॥ परिघ, पट्टिश, पाषाण,

परिघ पट्टिश परे पाषाण त्रिशूल * अर्द्धचन्द्र छुरि पाश आदि अस्त्र मूल
शतघ्नी त्रिकण्टक परिल वहुत * देखिया हासन्त राम दशरथ सुत १७
रामक वेढ़िल देखि निशाचर वले * आकाशत डरि गैल देवता सकले
काणा काणि लागि गैल देखन्त संशय * राघवे जिनन्त किवा राक्षसे जिनय १८
चैध्यय सहस्र राक्षसर शरजाक * धर धर मार मार उथलिल वाक
है है शवदे दिलन्त कोलाहल * प्रचण्ड वावत येन सागर आस्फाल १९
क्रोधिलन्त राम येन कालान्तक रुद्र * मारो आजि राक्षस पिम्परा बलक्षुद्र
टङ्कार करिला राम धनुर आस्फाल * निरन्तरे राक्षसर काणे दिल ताल २९२०
जगतर नाथे क्रोध करिया मनत * एक कोटि नराचक चराइला गुणत
काटन फुटन बाण गुणर चुटिल * वायुबेगे गैया सवे सेनात फुटिल २१
श्री रामचन्द्रर शर व्यर्थक नयाय * राक्षस दलक सवे वेढ़ि वेढ़ि खाय
यार गात परे सिटो तेतिक्षणे मरे * कतो कतो अस्त्र देखिला ते प्राण हरे २२
पलाय राक्षस वल नाहिके विश्राम * यि दिशक पलाय आगते देखे राम
श्री रामचन्द्रर शर येन यम दण्ड * सहस्रसंख्यात करिलन्त खण्ड खण्ड २३
शर अगनित राक्षसर छार खार * सूर्यर किरणे येन फेरिल आन्धार
वहिन लागि येहेन पुरिल वासवन * रामर नराचे राक्षसक करे छन्न २४
शरर प्रहारे निशाचर वल छेदि * मांसे भैल कर्द्दम शोणिते भैल नदी
अस्त्रे भैल आजि केशे येहेन शेवाल * देखिया हासन्त राम त्रिभुवन पाल २५

त्रिशूल, अर्द्धचन्द्र, छूरी, पाश आदि अस्त्रों की वर्षा होने लगी। शतघ्नी, त्रिकंटक आदि अनेक अस्त्र गिरने लगे। वह देखकर दशरथ-सुत रामचंद्र हँसने लगे ॥ १७ ॥ राक्षसों की सेना ने राम को घेर लिया, यह देखकर आकाश में सभी देवता भयभीत हो उठे। हृदय मे संशय जगने के कारण वे आपस में 'राम जीतेंगे या राक्षस'—इस विषय में कानाफूसी करने लगे—चौदह हजार राक्षसों के अस्त्र-शस्त्र गिर रहे थे। 'पकड़ो, पकड़ो, मारो, मारो' का कोलाहल गूंज रहा था ॥ १८ ॥ राक्षस 'है-है' शब्द से ऐसे कोलाहल कर उठे, मानो प्रचंड पवन से सागर उफन रहा हो ॥ १९ ॥ क्षुद्र चीटियों के समूह की भाँति आज राक्षसों को मार डालूंगा कहकर राम कालान्तक रुद्र की भाँति क्रोधित हो उठे। राम ने धनुष उठाकर टंकार किया। उस ध्वनि से राक्षसों के कान मे ताले पड़ गये ॥ २९२० ॥ जगत के नाथ ने मन में क्रुद्ध होकर एक करोड़ नाराचो को प्रत्यचा पर चढ़ाया। प्रत्यंचा से काटने, फोड़नेवाले वाण छूटने लगे और वे वायुवेग से जाकर सेना पर पड़ने लगे ॥ २१ ॥ श्री रामचन्द्र के वाण कभी व्यर्थ नही होते, वे राक्षसों की सेना को घेर-घेरकर खाने लगे। वे जिसके शरीर पर पड़ते थे वह तत्क्षण मर जाता था। कुछ तो अस्त्रों को देखते ही प्राण तज देते थे ॥ २२ ॥ राक्षसो की सेना व्याकुल होकर भागने लगी। वह जिधर भागती थी उधर ही राम दिखाई देने लगते थे। श्री रामचन्द्र के वाणों ने यमदंड की भाँति हजारों की सख्या में राक्षसों को खंड-खंड कर डाला ॥ २३ ॥ रामचन्द्र के शररूपी अग्नि में राक्षस भस्मीभूत होने लगे। मानो सूर्य की किरणों ने अन्धकार का विनाश कर डाला। जिस प्रकार अग्नि बाँस के जंगल को जला डालता है उसी प्रकार रामचन्द्र के नाराचों ने राक्षसों का विनाश कर डाला ॥ २४ ॥ वाणों के प्रहार से रामचन्द्र ने निशाचरी सेना को छिन्न-भिन्न कर डाला, उनके माँस की कीचड़ और शोणित की नदी वन गयी। उनके अस्त्रों से आज राक्षसों के केश शैवाल-से वन गये। यह देख त्रिभुवन के पालनहार प्रभु राम विहँसने लगे ॥ २५ ॥ राम ने

देखिलन्त राम तिनि भाग रण शेष * गन्धर्व्व अस्त्रक हानिलन्त हृषीकेश
आशेष बलक मारि यमक डाकिल * किछु मात्र अवशेष सेनार थाकिल २६
यिबा किछु बल रणे न भैलेक छन्न * आश्वास बचने ताक बुलिला दूषण
मइ मारो रामक हुयोक सन्धु क्षण * सैन्यक चाहिया हेन बुलिला बचन २७
दिब्य एक शरक राघवे तुलि लैल * दूर हन्ते ताहाक खरर लक्ष्य गैल
माया अस्त्र धरि पाचे क्रोध बर करि * हुः बुलि राघवक हानिलेक धरि २८
माया अस्त्र खरर रामक लागि याय * अगनि कुण्डक येन गगने उधाय
रामे माया अस्त्र हानिलन्त तेतिक्षण * अस्त्रे अस्त्र लागि आकाशत भैल छन्न २९
अस्त्रगोट खरर निष्फल येवे भैल * यमदण्ड सदृश शरेक रामे लैल
ज्वलन्त अग्नित येन दहे तृण बन * राघवर शरे सवे प्रजा भैल छन्न २९३०
सैन्य परि बार देखि दूषणे खङ्गाइल * सचल पर्ब्बत येन राघवक धाइल
धनुत जुरिया आनि पाञ्चटा नराच * हृदयत फुटिया बजाइल पिठिपाच ३१
रुधिरे प्रकाशे अति श्याम शरीरत * तमोमय देखिलन्त राम भगवन्त
क्षणेक चेतन पाइ कोपे रघुराज * षाठि शरे भेदिलन्त हृदयर माज ३२
अचेतन हुया वीर परिल रणत * जीव आसि भैल स्वस्थ पाइल क्षणिकत
धनु धरि बोले आजि लैबोंहो पराण * राघवक हानिलेक असंख्यात वाण ३३
राघवे देखन्ते शरे चतुर्द्दिशे चाइल * आपोनार शर हानि काटिया पेलाइल
शर छन्न देखि बीर कोपे ज्वलि गैल * तिनिपाट भल्ल शर हानिया पठाइल ३४

देखा कि तीन चौथाई युद्ध समाप्त हो गया तब उन्होंने गन्धर्वास्त्र छोड़ा। उस अस्त्र ने असंख्य सैनिकों को मारकर यमलोक भेज दिया। केवल थोड़ी-सी सेना बची रही ॥ २६ ॥ जो कुछ सेना युद्ध में बची हुई थी उसे देखकर आश्वासन देते हुए दूषण ने कहा—तुम लोग सावधान हो जाओ, मैं राम को मार डालूँगा ॥ २७ ॥ राघव ने एक दिव्य वाण उठा लिया। खर ने दूर से ही यह देख, बहुत ही क्रोध कर मयास्त्र धारण किया और 'हुह' कहते हुए रामचन्द्र की ओर आघात किया ॥ २८ ॥ खर का मायास्त्र रामचन्द्र की ओर वैसे ही चल पड़ा जैसा कि अग्नि कुण्डल (आकाश-वाण) आकाश में उड़ता है। तब रामचन्द्र ने भी मायास्त्र का संधान किया, दोनों अस्त्र आकाश मे टकराकर विनष्ट हो गये ॥ २९ ॥ खर का अस्त्र विनष्ट हो जाने पर रामचन्द्र ने यमदंड जैसा वाण ले लिया। जलते अनल मे जैसे घास का जंगल जल जाता है उसी प्रकार रामचंद्र के वाण से खर की सारी प्रजा विनष्ट हो गयी ॥ २९३० ॥ सेना समाप्त हो गयी यह देखकर दूषण अत्यधिक क्रुद्ध हो उठा, वह सचल पर्वत की भाँति रामचन्द्र की ओर दौड़ पड़ा। उसने पाँच नाराच धनुष पर छोड़े जो रामचन्द्र की छाती भेदकर पीठ की ओर से निकल आये ॥ ३१ ॥ रामचन्द्र के श्याम शरीर पर रक्त अत्यधिक चमकने लगा। प्रभु भगवान राम के सम्मुख अँधेरा-सा छा गया। क्षण भर में सचेत होकर रघुराज कुपित हो उठे और साठ वाणों से उसके हृदय का मध्यस्थल वेध डाला ॥ ३२ ॥ वीर दूषण अचेत-होकर रथ पर गिर पड़ा। क्षणभर बाद चेतना पाकर वह स्वस्थ हुआ। उसने धनुष धारण कर कहा, आज प्राण ले लूंगा और रामचन्द्र को असंख्य वाणों से आघात किया ॥ ३३ ॥ रामचन्द्र के देखते-देखते उसके वाण चारों ओर छा गये। उन्होने अपने वाणों से उन्हें काट डाला। अपने वाणों को विनष्ट होते देखकर वीर दूषण क्रोध से जल उठा। उसने तीन भल्ल वाण छोड़े ॥ ३४ ॥ यह देख रामचन्द्र ने दृढ़ता से वाणों का प्रहार किया और उन्हें काट डाला। इसके पश्चात् राम ने एक

देखि रामचन्द्रे शर प्रहारिला डाटि * राघवर बाणे ताक पेहलाइलेक काटि
पाचे रामे प्रहारिल एक पाट बाण * दूषणर हातते काटिल धनुखान ३५
धनु काटिबाक देखि दूषण खड्गाइल * पर्ब्बत शिखर सम परिघेक पाइल
बाजर लोहाक शुद्ध सुवर्णे जड़िल * चतुर्द्दिशे ताक वज्र अगनि गढ़िल ३६
याहिते नोवारि अस्त्र येहेन आदित्य * त्रिदिश देवता देखि भैल भयभीत
सुरासुर गण दिशाविश पलाइ गैल * चमत्कार आदित्य मेघर आर भैल ३७
दुइ हाते धरिया दूषण धारे धाइल * यम दण्ड लैया यमे येहेन किटाइल
शिखर सहिते येन पर्ब्बतेक याय * अति मद गर्व्वत काहाको न डराय ३८
येन वृत्र असुरे इन्द्रक रणे धाइल * परिघ धरिया राघवर पास पाइल
देखिया रामर किछु मन गैल भागि * हानिल सहस्रशर परिघेक लागि ३९
परिघक परि शर गैल दिशादिश * बरिषण जले पर्व्वतक करे किस
आग मुड़ि मुड़ि शर भूमित परिल * देखिया रामर बर हृदय कम्पिल २९४०
परिघ विनाश नाइ मनत गुणिल * खरपति अस्त्र दुइ गुणत जुरिल
सेहि अस्त्र हानि कलो दूरक खेदिल * परिघे सहिते दुइ बाहुक छेदिल ४१
बाहु छेद भैल वीर भूमित परिल * एकतरे सातो खान पृथिवी लरिल
प्रमत्त हस्तीर येन दान्त काढ़ि लैल * दूषण वीरर हेन मते प्राण गैल ४२
दूषण परिल देखि खरे खड्गे आइल * मारो मारो बुलि पाचे राघवक धाइल
त्रिशिरा बोलय क्रोध करा उपशाम * देखियोक एतिक्षणे मारियोक राम ४३

वाण से प्रहार किया और दूषण के हाथ का धनुष काट डाला ।। ३५ ।। धनुष कट जाने पर दूषण क्रुद्ध हो उठा और पर्वत-शिखर जैसा एक परिघ उठा लिया। वज्र-कठोर लौह को स्वर्ण से जड़ा हुआ था। उसे चारो ओर वज्राग्नि द्वारा निर्मित किया गया था ।। ३६ ।। सूर्य के समान प्रकाशमान उस अस्त्र की ओर देखा नहीं जा सकता था। तैंतीस देवगण उसे देखकर भयभीत हो उठे। सुर-असुर सभी विभिन्न दिशाओं में भाग गये। चौंककर सूर्य मेघ की ओट में चला गया ।। ३७ ।। उस परिधि को दोनों हाथों से उठाकर दूषण वेग से धावित हुआ मानो यमदण्ड हाथ में ले यम प्रस्तुत हों। शिखर सहित मानो कोई पर्वत धावित हो रहा हो, प्रचंड मद-गर्व से वह किसी से भयभीत नहीं था ।। ३८ ।। वृत्रासुर जिस प्रकार युद्ध मे इन्द्र की ओर धावित हुआ था उसी प्रकार दूपण परिघ लिये राघव के निकट पहुँच गया। उसे देख राम का हृदय कुछ निराश-सा हुआ। उन्होंने परिघ को लक्ष्य कर सहस्रों वाण छोड़े ।। ३९ ।। परिघ से टकराकर वे वाण विभिन्न दिशाओं में बिखर पड़े। भला वर्षा का जल पर्वत का क्या कर सकता है? नोक मुड़-मुड़कर वे वाण धरती पर गिरने लगे। यह देख राम का हृदय वहुत अधिक कम्पित होने लगा ।। २९४० ।। परिघ का विनाश नही हो सकता—मन में ऐसा सोचकर राम ने दो क्षुरप्र अस्त्र प्रत्यचा पर चढाये। उस अस्त्र का प्रयोग कर दूषण को वायव्यास्त्र से चोट कर उसे कुछ दूर पीछे भगा दिया और परिघ समेत दोनो भुजाओं को काट डाला ।। ४१ ।। भुजाएँ कट जाने पर वीर दूषण भूमि पर गिर पड़ा। साथ ही सातो पृथ्वी हिल उठी। प्रमत्त हाथी के मानो दाँत निकाल लिये हों, इसी भाँति वीर दूषण के प्राण ले लिये ।। ४२ ।। दूषण को गिरा देख खर क्रोधित होकर 'मार मार' करता वड़े वेग से रामचन्द्र की ओर दौड़ा आया। त्रिशिरा बोला, क्रोध तजिये। देखिये इसी क्षण मै राम को मार डालूँगा ।। ४३ ।। या तो रामरूपी अग्नि को आज निरग्नि कर डालूँगा या राम के वाणो से मरकर स्वर्गगामी होऊँगा। त्रिशिरा के वचनों से

राम अगनिक आजि निरग्नि करिबो * नुहि राम शरे परि स्वर्गक चलिबो
त्रिशिरार बोले खर मने परि भाइ * रामक युजिबे लागि ताहाक पठाइ ४४
त्रिशिरा वीरक येवे पठाइलेक खरे * हृदयत रामर बिन्धिले दश शरे
शरर प्रहार येवे राघवे पाइलन्त * क्षुद्र हरिणेक येन सिंहये धाइलन्त ४५
रथे चरि युजय त्रिशिरा महावीर * क्रोधिल रामक देखि नसहे शरीर
वायुबेगे चैध्य पाट शर प्रहारिल * बज्र येन त्रिशिरार हियात फुटिल ४६
षोलशर मारि चारि घोराक काटिल * एक बाणे ध्वज काटि भूमित पारिल
आउर सात शर मारि रथक भेदिल * आठ शरे सारथिर कन्धक छेदिल ४७
अन्तरीक्ष भावे ताक नेदेखिल केव * हाते धनुशर भेदिनीते दिल डेव
क्रोधिलेक त्रिशिरा काम्पय कलेवर * हृदयत रामर भेदिल दश शर ४८
त्रिशिराक वहुशरे राघवे भेदिल * नव शरघनि तिनि शिरक छेदिल
तिनि शृङ्ग काटा येन पर्ब्बत टलिल * अनेक शोणित तिनि कन्धर झरिल ४९
त्रिशिरा परिल रणे देखि आछे खर * मनत गुणय एवे भैल एकेश्वर
रामर शकति देखि बोले बीर खर * किनो इटो अद्भुत शकति मानुषर २९५०
चक्षु मुदि लेओ आरभय न पलाय * इहेन समर एरिबाको नुयुवाय
निशाचर बल पलाइ दशोदिश याय * रामर अबाध्य शरे खेदि खेदि याय ५१
खरे बोले सारथि सत्वरे डाक रथ * आजि से देखिबि मोर युजर महत
रामक मारिया यम कवले पठाओं * नुहि संग्रामत परि स्वर्गे चलि याओं ५२

खर को भाई दूषण की याद आ गयी और उसने राम से युद्ध करने हेतु वीर त्रिशिरा को भेजा ॥ ४४ ॥ खर ने जब वीर त्रिशिरा को भेज दिया तो उसने आते ही दस वाणों से राम के वक्षस्थल को वेध डाला। वाणों के प्रहार के पश्चात् रामचन्द्र त्रिशिरा की ओर इस प्रकार से .धावित हुए जैसे कि सिंह क्षुद्र हिरण की ओर धावित होता है ॥ ४५ ॥ महावीर त्रिशिरा रथ पर चढकर युद्ध कर रहा था। उसे देखकर रामचन्द्र के अंग-अंग क्रोधित हो उठे। उन्होने वायुवेग से चौदह वाणों का प्रहार किया, जो वज्र की भाँति त्रिशिरा के हृदय में चुभ गये ॥ ४६ ॥ सोलह वाणों से घोड़ों को मार डाला, एक वाण से ध्वजा काटकर भूमि पर गिरा दिया और सात वाणों से चोट कर रथ को तोड़ डाला। आठ वाणों से सारथि का मस्तक काट डाला ॥ ४७ ॥ रामचन्द्र ने इतनी शीघ्रता से यह किया कि अन्तरिक्ष से कोई भी देख नही पाया। त्रिशिरा हाथ में धनुष-वाण ले धरती पर उतरकर दौड़ा। क्रोध के मारे उसका शरीर कांपने लगा। उसने दस वाणों से राम का हृदय वेध डाला ॥ ४८ ॥ अनेक वाण मारकर रामचन्द्र ने त्रिशिरा को छेद डाला। नौ वाण मारकर उसके तीनों मस्तक काट डाले। वह तीन शिखर-कटे पर्वत की भांति गिर पड़ा, तीनो कंधों से बहुत-सा रक्त प्रवाहित हुआ ॥ ४९ ॥ युद्ध में त्रिशिरा को गिरते देख खर ने मन ही मन सोचा—अब मै एकाकी हो गया। राम की शक्ति देखकर वीर खर वोलने लगा—इस मनुष्य की कैसी अद्भुत शक्ति है ॥ २९५० ॥ आँख मूँदने पर भी उससे भय मिटता नही और ऐसे सग्राम को छोड़ देना भी उचित नही लगता। राक्षसों की सेना दसो दिशाओं मे भागने लगी। राम के वाण उनके पीछे-पीछे धावित हुए ॥ ५१ ॥ खर वोला—सारथि, रथ शीघ्र ले आ। आज ही युद्ध में मेरा पराक्रम देखना। आज या तो राम को मारकर यमलोक भेज दूंगा या संग्राम में मरकर स्वर्ग चला जाऊँगा ॥ ५२ ॥ सारथि ने तत्क्षण रथ को आगे वढ़ाया। खर ने असख्य वाणो के प्रहार द्वारा पवन आने-जाने का मार्ग भी रोक दिया। महावीर

सारथियो तेतिक्षणे चलाइलेक रथ * शरे हानि निरोधिला मारुतर पथ
दशोदिश निरोधिल महाबीर खरे * निरन्तरे आकाशक छानिलेक शरे ५३
वायुर सञ्चार नाइ इकूल सिकूल * सूर्य रश्मि नाशि भैल आन्धार विपुल
मेघे ढाकिलेक येन सूर्य आर भैल * खरे बोले वैर मारि यमघरे गैल ५४
क्रोधे रामदेवे धनु आस्फाल करिल * एके बारे स्वर्ग मर्त्य पाताल लरिल
आपोनार शरे तार बाणक छेदिल * सहस्रेक शरे तार शरीर भेदिल ५५
चौत्रिश अस्त्रको भाले दुइ हन्तो जानन्त * नराच तोमर शर दुहन्तो हानन्त
दुहान्तरो शर सवे चालिला गगन * आउरे आउरे लागि शर आकाशत छन्न ५६
हाते धनुर्व्बाण खर रथे भैल थित * सुरासुरगणे देखि भैल भयभीत
सिंहक देखिया येन सिंहये किटाइल * रामक देखिया खर महाबीरे धाइल ५७
धनुर्व्बाण धरि राम युजन्ते आछन्त * टंकार करिया राम समरे नाचन्त
खुरपति वाणे तार धनुक छेदिल * अनेक सहस्र शरे शरीर भेदिल ५८
आन धनु धरि खरे शर प्रहारिल * राघवर धनु छेदि कवच काटिल
रामर कवच धनु माटित परिल * हेन देखि खरे वर आटासेक दिल ५९
उभफोल करिया खरर शर वहे * विह्वल भैलन्त राम शरीर न सहे
कतो वेलि रघुनाथे चेतन पाइलन्त * अगस्ति दिवार धनु तुलिया लैलन्त २९६०
जाज्ज्वल्य समान कोपे जगतर वापे * विष्णुर शरक निया जुरिलन्त चापे
आग पाच मन करि भैल सव साज * शरे हानि छेदिलन्त सुवर्णर ध्वज ६१
क्रोधिया बोलन्त आजि लैबोहो पराण * दुइ तन माजत हानिला दश वाण
खरतर प्रहारे कोपित भैल खर * हृदयत रामर विन्धिला दश शर ६२

खर ने वाणों से दसो दिशाओ को आवृत्त कर दिया, उसके वाणों से आकाश भर गया ॥ ५३ ॥ उसके वाणों से पवन का इधर-उधर चलना रुक गया, सूर्यकिरण ढँककर महान अन्धकार फैल गया। वाणो ने मेघों जैसे सूर्य को ढँक लिया। खर बोला—वैरी मरकर यमलोक पहुँच गया है ॥ ५४ ॥ रामचन्द्र ने क्रोध के मारे धनुष चढ़ाया जिससे स्वर्ग, मर्त्य पाताल हिल उठे। अपने वाणों से खर के वाणो को काट डाला और हजारों वाणों से उसका शरीर वेध डाला ॥ ५५ ॥ चौतीस प्रकार के अस्त्रों का प्रयोग दोनों ही जानते थे। नाराच, तोमर, वाण आदि द्वारा दोनों ही प्रहार करने लगे। दोनों के वाणो से आकाश भर गया। एक दूसरे के वाणों से टकराकर वे आकाश मे ही विनष्ट होने लगे ॥ ५६ ॥ हाथ में धनुष-वाण लिये खर रथ पर स्थित हो गया। सुर-असुर आदि उसे देखकर भयभीत हो उठे। सिंह को देख सिंह जिस प्रकार सावधान होकर आक्रमण करता है, उसी प्रकार राम को देख महावीर खर धावित हुआ ॥ ५७ ॥ हाथ मे धनुष वाण ले राम युद्ध कर रहे थे, वे धनुष टकारते हुए मानो नृत्य-से कर रहे थे। उन्होंने क्षुरप्र वाण से खर का धनुष काट, अनेक सहस्र वाणों से उसके शरीर को वेध डाला ॥ ५८ ॥ तब खर दूसरा धनुष लेकर वाणों का प्रहार करने लगा। उसने राम का धनुष काट, कवच को भी वेध डाला। उनके धनुष और कवच भूमि पर गिरे देख खर अट्टहास कर उठा ॥ ५९ ॥ आर-पार भेदकर खर के वाण चलने लगे। रामचन्द्र के शरीर में असहनीय पीड़ा हुई, वे विह्वल-से हो उठे। कुछ क्षण में सचेत होकर रघुनाथ ने अगस्त्य मुनि का दिया हुआ धनुष उठा लिया ॥ २९६० ॥ जगत के पिता रामचंद्र अग्नि के समान कुपित हो उठे और विष्णु का वाण प्रत्यंचा पर चढ़ाया। मन में सोच-विचारकर वे सब प्रकार से प्रस्तुत हो गये और वाण मारकर स्वर्ण-ध्वज को काट डाला ॥ ६१ ॥ उन्होंने

दुइ हन्तर शरे दुयो भैलन्त जर्ज्जर * पङ्काफूल भैलन्त रुधिरे कलेवर
एकेबारे धनुशर दुइ हन्तो धरिल * अनेक सहस्र शर दुयो प्रहारिल ६३
पुष्पित पलाश सम दुइरो कलेवर * दुर्घोर रणत दुयो वीर समसर
रामे पाचे तिनि शर हियात ताड़िल * एक बाणे ध्वज काटि भूमित पारिल ६४
धनु काढ़ि सारथिर कन्धक छेदिल * मरिया सारथि पाचे भूमित परिल
रथभङ्ग देखिया खरर हृदि खेद * मोर रथ भाङ्गिलेक अभेद अच्छेद ६५
त्रिदशेयो देखन्त खरर रथ भङ्ग * बैरर बिपत्ति देखि आति बर रङ्ग
आकाशत थाकिया कौतुक आति मने * दुन्दुभि संवाद करिलन्त घने घने ६६
गदा धरि खरे धरणीत डेव दिल * पृथिवी कम्पिया सातो पाताल लरिल
राघवे बोलन्त खर सुनरे पापिष्ठ * सकलो ऋषिर तइ चिन्तिलि अनिष्ट ६७
दण्डका बनत तइ भैलि मन्द रोग * तोक राखिबेक खानितेको नुहियोग
अन्याय करिलि यत तार फल पाइबि * मोहोर हातत बेटा यमघरे याइबि ६८
हेन शुनि खरे पाचे बुलिलेक वाणी * मोहोक मारिबे एतिक्षणे केने जानि
मिछात करस राम मनत उल्लास * गदार चोटत किवा यमघरे यास ६९
अलपिक मनुष्य तोहोर आछो धिक * बीर हुया बीरक गरिहा कर किक
गुणवन्त जनर आने से गुण कहे * सुगन्ध पुष्पर गन्ध पवनेसे बहे २९७०
त्रिदश देवता तोर होक अनुबल * तथापितो मारि तोक निबो रसातल
हाते गदा धरि खरे रामक किटाइल * येन नारायणक कैटभ वीरे धाइल ७१

क्रुद्ध होकर कहा, आज मै तेरा प्राण ले लूँगा और उसके दोनों स्तनों के बीच दस वाण मारे, तीव्रतर प्रहार से खर कुपित हो उठा और राम के दस वाण मारकर रामचंद्र की छाती को वेध डाला ।। ६२ ।। दोनों के वाणो से दोनों जर्जर हो उठे रुधिर से दोनों के शरीर लथपथ हो गये। दोनों ने एक ही वार में धनुप-वाण उठा लिये और दोनों ने अनेक सहस्र वाणों का प्रहार किया ।। ६३ ।। दोनों के शरीर खिले हुए पलाश की भाँति हो उठे। उस भयंकर सग्राम मे दोनो वीर एक-दूसरे के समकक्ष थे। तत्पश्चात् राम ने उसके हृदय में तीन वाण मारे। एक वाण से ध्वजा काटकर भूमि पर गिरा दिया ।। ६४ ।। धनुष को काटकर सारथि का गला काट डाला। सारथि मरकर भूमि पर गिर पड़ा। रथ टूटा हुआ देखकर खर के हृदय मे वड़ा दुःख हुआ। वह सोचने लगा—मेरे अभेद अच्छेद्य रथ को भी राम ने तोड़ डाला ।। ६५ ।। तीस देवताओं ने भी देखा, खर का रथ टूट गया। शत्रु को संकट में पड़ा देख उनके मन में वड़ा हर्ष हुआ। मन मे परम प्रसन्न होकर उन्होंने आकाश मे ही रहकर वार-वार दुन्दुभी बजायी ।। ६६ ।। खर गदा लेकर धरती पर कूदकर धावित हुआ। पृथ्वी कम्पित हुई। सातो पाताल हिल उठे। रामचन्द्र वोले—पापी खर, सुन। तू सभी ऋषियों का अनिष्ट किया करता है ।। ६७ ।। दंडक वन में तू बुरे रोग जैसा है। तुझे क्षणभर भी जीवित रखना उचित नहीं। तूने जितना अन्याय किया है उसका फल भोग तुझे करना ही होगा। रे दुष्ट ! मेरे हाथों तुझे यमलोक जाना ही पडेगा ।। ६८ ।। यह सुनकर खर ने कहा—तू मुझे किस प्रकार मार सकता है, यह तो अभी ही पता चलेगा। राम, तू मन में मिथ्या ही उल्लास कर रहा है। गदा के आघात से तुझे यमलोक जाना ही पड़ेगा ।। ६९ ।। अल्पशक्तिवाले मनुष्य, तुझे धिक्कार है। वीर होकर भी तू वीर का तिरस्कार क्यों करता है ? गुणवान् व्यक्ति का गुण दूसरे ही बखानते है। सुगन्ध फूलों की गंध पवन ही वहन किया करता है ।। २९७० ।। तीसों देवता यदि तेरी ओर से लड़ने आवें तो भी तुझे मारकर मैं

हानिलेक गदा गोट येने यमदण्ड * टलवल करय मेदिनी सातो खंड
खलकिल सागर लरिल नागपुर * रथे चरि चमकिल देवता असुर ७२
गदा वहि याइ येवे रामर सन्नित * मनत तरसि भैला विह्वल चरित
शर हानिवोहो हेन कैला विमरिष * एहि सापे पर्व्वतक करिवेक किस ७३
अगनिर अस्त्रक राघवे तुलि लैल * शङ्करक शूल त्रिपुरर सज भैल
हानिल अगिनर अस्त्र गगने उधाइ * सर्प गिलिवाक येन गरुड़क याय ७४
विस्तर तुलात येन अगनि लागिल * राघवर शरे गदा निर्व्वाण करिल
गदागोट छन्न भैल देखि आछे खर * तरतरि कम्पिल सकल कलेवर ७५
धूमकेतु हेन गदा भूमित परिल * कम्पिल अनन्त फणा मुनियो लरिल
बुलिलन्त राघवे चाण्डाल निशाचर * पापर चरित्र तइ दुर्ज्जन बर्व्वर ७६
तोहोक मारिया यम कवले पठाओं * पाचे आन्त विचारिया ऋषि सव चाओं
खरे वोले राम न तो यमघरे यास * सिकारणे तइ मोक मारिवाक चास ७७
अस्त्रहीन देखि तोर हरषित मन * मोर अस्त्र आछय पर्व्वत तरुगण
हेन वुलि राक्षस कुपित वर भैल * दुइ हाते पर्व्वतेक उपारिया लैल ७८
लीलाये हानिला वीर राघवक चाइ * निर्घातर सदृश पर्व्वत गोट याय
क्रोधिया राघवे हाते धनुक धरिल * शरे हानि गिरि खण्ड खण्डेक करिल ७९
खररो शरीर शरे जर्ज्जर करिल * येन मन्दरर गेरु रुधिर क्षरिल
शोणितर गन्धत प्रमत्त वर भैल * खड़्गेक धरि राघवक खेदि गैल २९८०

रसातल को भेज दूंगा। हाथ में गदा लेकर खर राम से युद्ध करने को प्रस्तुत हुआ। जैसे कि वीर कैटभ नारायण से युद्ध करने को धावित हो ।। ७१ ।। यमदंड-जैसी उस गदा के प्रहार से मानो सात द्वीपोंवाली धरती टलमलाने लगी। सागर में खलबली मच गयी, नागों की पुरी मे उथल-पुथल मच गयी, रथ पर चढ़े देवता असुर चौक उठे ।। ७२ ।। जब गदा राम की ओर चला, तब वे मन में आतंकित हो विह्वल-से हो उठे। उन्होंने वाणों का प्रहार करने हेतु संकल्प किया। सोचा—यह सर्प भला पर्वत का क्या कर सकता है? ।। ७३ ।। शंकर ने जिस प्रकार त्रिपुर का वध करने हेतु शूल धारण किया था उसी प्रकार रामचद्र ने आग्नेयास्त्र उठा लिया। आग्नेयास्त्र का संधान करते ही वह आकाश में वैसे ही उड़ने लगा, जैसे कि सर्पो को लीलने हेतु गरुड़ धावित हो ।। ७४ ।। अग्नि-जैसे रुई की ढेरी को जला डालती है, उसी प्रकार रामचन्द्र के वाण ने गदा का विनाश कर डाला। खर ने जब देखा कि गदा नष्ट हो गया तो उसका शरीर थर-थर कांपने लगा ।। ७५ ।। गदा धूमकेतु की भाँति भूमि पर पड़ गया, उसके भार से शेषनाग कम्पित हो उठे, मुनिगण भयभीत हो भागने लगे। राम बोले—रे चाण्डाल, निशाचर तू पापी दुर्जन बर्बर है ।। ७६ ।। तुझे मारकर यम के हाथ भेज दूंगा। इसके पश्चात् अनुसधान कर ऋषियों को निर्भय करूंगा। खर वोला, राम, तुझे स्वयं यमलोक जाना है, इस कारण मुझे मारना चाहता है ।। ७७ ।। मुझे अस्त्रहीन देखकर तेरा मन हर्षित हो रहा है। परन्तु मेरे अस्त्र तो पर्वत हैं, वृक्ष है। यह कहकर राक्षस परम कुपित हो उठा और दोनों हाथों से पर्वत उखाड लिया ।। ७८ ।। उसने लीला पूर्वक राम की ओर पर्वत फेंक मारा। वह पर्वत वज्र की भाँति चल पड़ा। तव रामचन्द्र ने क्रोधित होकर हाथों में धनुष उठा लिया और वाणों से चोट करता हुआ पर्वत को खंड-खंड कर डाला ।। २९७९ ।। उसने खर के शरीर को भी वाणों से जर्जर कर डाला। मन्दर पर्वत से गेरु झरने की भाँति उसके शरीर से रक्त-धारा झरने लगी। वह

राक्षसक देखि राम क्रोध बर पाइल * बासवे दिबार अस्त्र गुणत चराइल
शर हानि राघवे बोलन्त थाक थाक * अस्त्रर अगनि निकलय जाके जाक २९८१
वज्रे भेदिलेक येन पर्व्वतर माज * हृदयत फुटिया पिठित भैल बाज
प्रलयत येन मेरु पर्व्वत टलिल * शर परि खरर जीवन निकलिल ८२
रामर हातत येवे राक्षस परिल * सुरासुर नरे जयराम जोकारिल
देवता सकले पुष्पवृष्टि करिलन्त * ब्रह्म ऋषि गणे शुभ दृष्टि चाहिलन्त ८३
आकाशर सिद्धगण भूमित नामिल * बेद पढ़ि राघवक आशीर्बाद दिल
आकाशत थाकि ब्रह्मा अवनत हुइ * करिवे लागिला पाचे तुति चारि मुइ ८४
नमो नमो राम करो चरणे प्रणति * तुमि नारायण सदानन्द लक्ष्मी पति
याक स्मरि तरे महा महापापी गण * प्रणामो देवरो देव प्रभु निरञ्जन ८५
तुमि ब्रह्मा तुमि विष्णु तुमि त्रिपुरारी * जगत् कारणे नमो तुमिसे मुरारी
तुमि सञ्चा सबे मिछा जगत यतेक * संसारत नाहिके तोमार बेतिरेक ८६
नाहि आदि अन्त मध्य पुरातन हरि * जगत के व्यापिया आपुनि आछा धरि
कारण माया आदि यत अधीन याहार * पूर्ण ब्रह्म मूर्त्ति राम करो नमस्कार ८७
नमो भकतर चित्त बित्त आत्मा देव * एहि बुलि देवे समे करिलन्त सेव
ब्रह्मा हर पुरन्दर आदि देवगण * राम कथा कहि गैला स्वर्गर भुवन ८८
गौरी महादेव दुयो गैलन्त कैलाश * राघवे गैलन्त सीता लक्ष्मणर पाश
तिनिहन्ते तहिते लागिला गला गलि * आउरे आउर चाहि हासिलन्त खलखलि ८९

रक्त की गंध से प्रमत्त सा हो उठा और खड्ग लेकर रामचन्द्र की ओर धावित हुआ ।। २९८० ।। राक्षस खर को आते देख राम को बड़ा ही क्रोध हुआ और इन्द्र का दिया हुआ अस्त्र प्रत्यचा पर चढ़ाया । रुक जा, रुक जा, कहते हुए रामचन्द्र ने उस अस्त्र से खर पर प्रहार किया । उस अस्त्र से अग्नि की अविराम शिखाएँ निकलने लगी ।। २९८१ ।। वज्र ने मानो पर्वत के बीचोबीच भेद डाला हो, उसी प्रकार वह अस्त्र खर के हृदय को भेदकर पीठ की ओर से निकल आया । प्रलय में मानो मेरु पर्वत ढह गया हो, उसी प्रकार उस बाण से खर के प्राण निकल गये ।। ८२ ।। राम के हाथों राक्षस का पतन होते ही देवता, असुर, नर आदि सभी 'जय राम' का निनाद करने लगे । देवताओं ने पुष्पवर्षा की, ब्रह्मर्षियों ने शुभ दृष्टि से अवलोकन किया ।। ८३ ।। आकाश के सिद्धगण भूमिपर उतर आये और वेद-पाठ करते हुए आशीर्वाद देने लगे । आकाश में रहकर ही ब्रह्मा सिर झुकाकर चारों मुखों से स्तुति करने लगे ।। ८४ ।। नमो, नमो राम तुम्हारे चरणो में प्रणाम करता हूँ, तुम नारायण, सदानन्द, लक्ष्मीपति हो । जिसे स्मरण कर महान से महान पापी तर जाते हैं, ऐसे देव-देव प्रभु निरंजन को प्रणाम है ।। ८५ ।। तुम ब्रह्मा, तुम विष्णु, तुम त्रिपुरारी हो, तुम्हीं जगत कारण मुरारी हो, तुम्हें प्रणाम है । संसार में जो कुछ भी है सभी मिथ्या है, केवल तुम्ही सत्य हो । तुम्हें छोड़कर संसार मे और कुछ भी नहीं है ।। ८६ ।। तुम्हारा आदि, मध्य, अन्त नहीं है, हे हरि, इस विश्व में व्याप्त रहकर तुमने सबको धारण कर रखा है । कारण, माया आदि सभी जिसके अधीन हैं ऐसे पूर्णब्रह्म मूर्तिराम को हम नमस्कार करते हैं ।। ८७ ।। जो देव भक्तों के चित्त, वित्त और आत्मा हैं, उन्हें नमस्कार है । ऐसा कहकर देवताओं सहित उन्हें प्रणाम किया । ब्रह्मा, हर, पुरन्दर आदि देवगण राम-कथा कहते हुए स्वर्गलोक चले गये ।। ८८ ।। गौरी और महादेव दोनों कैलाश पर चले गये । रामचन्द्र सीता और लक्ष्मण के पास गये । तीनों वही परस्पर गले लगने लगे । एक दूसरे को

राक्षसर वध यत कहिलन्त राम * सीतार मनत भय भैल उपशाम
ऋषि सबे रामक करिला बहुमान * आशंसा करिया गैल आपोनार थान २९९०
सीताये रामर गले धरिलन्त टानि * सजल नयने देवी बुलिलन्त वाणी
प्रतिज्ञा पालिया प्रभु राक्षस मारिला * दुर्घोर भयत ऋषि गणक तारिला ९१
श्रीराम लक्ष्मण सीता सुखे भैल थित * खर वध देखि भय शूर्पणखा भीत
भायेकर शोके ताइर दहे सर्व्वगावे * लङ्का लागि चलि गैला अन्तरीक्ष भावे ९२
विमानत देखिल दुर्ज्जय लङ्केश्वर * चौपाशे वेढ़िया आछे पात्र निरन्तर
मुख्य मुख्य मन्त्री सबे थिर भैल आगे * वासुकिक वेढ़ि येन महा महानागे ९३
वसि आछे राजा सिंहसनर उपरे * राहु थिर भैल येन मेरुर शिखरे
कालमेघ खण्ड येन शरीरर वर्ण * कुण्डले मण्डित शोभे कुरिखान कर्ण ९४
आरकत कुरि गोटा चक्षु जातिष्कार * मेघत ज्वलय येन कुरि गोटा तार
पाञ्च पाञ्च आङ्गुलि ए कुरिखान कर * पाञ्च पाञ्च शिरे येन कुरि अजगर ९५
भयङ्कर पाव दुइ दश गोटा शिर * दश शृङ्ग सम येन काल गिरि थिर
ऐरावत गजर दन्तर महा घावे * कर बान्धि प्रलम्भिल रावणर गावे ९६
इन्द्रे करिलन्त यत वज्रर प्रहार * साञ्च बान्धि आछे ए भो शरीरे ताहार
वर्ष दश हाजार ब्रह्माक आराधिला * तपर प्रभावे सिटो दुष्कर साधिला ९७
पातालरो वासुकिक रणचेर करि * तक्षक नागर भार्य्या आनिलेक हरि
पृथिवीर राजार स्वर्गर देव लोक * स्त्री काढ़ि काढ़ि आनि ज्वालिलेक शोक ९८

देख-देखकर खिल-खिलाकर हँसने लगे ।। २९८९ ।। रामचन्द्र ने राक्षसों के वध के सम्बन्ध में सभी कथा सुनायी जिसे सुनकर सीता के मन की आशंका मिट गयी। ऋषियों ने रामचन्द्र का अनेक प्रकार से सम्मान किया और प्रशंसा करते हुए अपने अपने स्थान को चले गये ।। २९९० ।। देवी सीता राम के गले लग गयी और सजल नयन से यह वचन कहने लगी—प्रभु, आपने प्रतिज्ञा का पालन करते हुए राक्षसों का वध किया और प्रचड आतंक से ऋषियों को मुक्त किया ।। २९९१ ।। श्रीराम, लक्ष्मण, सीता सुखपूर्वक वहाँ स्थित हुए। खर को मारा गया देख शूर्पणखा भयभीत हो उठी। भाई के शोक से उसका सम्पूर्ण शरीर जलने लगा। वह आकाशमार्ग से लंका चली आई ।। ९२ ।। उसने विमान में दुर्ज्जय लंकेश्वर को देखा जिसे पात्र-गण निरंतर घेरे हुए थे। मुख्य-मुख्य मंत्रीगण आगे खड़े थे मानों वासुकि को बड़े-बड़े नागगण घेरे हुए हों ।। ९३ ।। राजा रावण सिंहासन पर उसी प्रकार बैठा हुआ था, मानों मेरु शिखर पर राहु आसीन हो। काले मेघ-खंड की भाँति उसके शरीर का वर्ण था, बीस कान कुन्डल मंडित शोभायमान थे ।। ९४ ।। बीस चमकती आँखे आरक्त थी मानो मेघ में बीस तारे जल रहे हों। पाँच-पाँच अंगुलियों वाले बीस हाथ इस प्रकार थे मानो पाँच-पाँच सिर वाले बीस अजगर हों ।। ९५ ।। भयंकर दो पैर और दस सिर ऐसे थे मानो दस शिखरोंवाला काला-पर्वत खड़ा हो। इन्द्र ने रावण के हाथ बाँधकर ऐरावत के दाँतों से उसके शरीर पर प्रचंड आघात किया था ।। ९६ ।। इन्द्र ने उस पर वज्र के जितने प्रहार किये थे, सब की निशानियाँ उसके शरीर में पडी है। दस हजार वर्ष तक ब्रह्मा की आराधना कर तपस्या के प्रभाव से उसने वह दुष्कर कर्म साधन किया था ।। ९७ ।। पाताल के वासुकी नाग को पराजित कर उसने तक्षक नाग की भार्या को अपहरण कर लिया था। पृथ्वी के राजाओ तथा स्वर्ग के देवों की स्त्रियों को वलपूर्वक छीन-छीन उसने शोक की ज्वाला जला दी थी ।। ९८ ।। लंका में रावण को निर्भय स्थित देख शूर्पणखा उसके

लङ्का माजे निर्भय रावण भैलथित * देखि शूर्पणखा गैया चपिल सन्नित
शूर्पणखा बोले शुन दादा लङ्केश्वर * सुखेथिर भैला तुमि लङ्कार भितर ९९
राजा राजेश्वर शुना त्रिभुवन नाहा * मोहोर बिपत्ति हेरा माथा तुलि चाहा
एतमान राजा हुया चिन्ताहीन भैला * एवेसे जानि लो तुमि यमघरे गैला ३०००
तिनियो भुवन मावे तोर भैल यश * चर पठाइ देशे देशे बार्त्ता नलवस
मातोबाल हुआ तुमि नुवुजिला काज * फुकते हराइला दादा हेन राज ३००१
दूषण त्रिशिरा खर आरो सेना यत * मानुषे करिला सव संग्रामत हत
परम दुर्ज्जय बीर राम बुलि याक * सेहिसे बिपत्ति हेन करिले आमाक २
हेन शुनि रावणर क्रोध बर भैल * घृत पाइ येहेन अग्नि ज्वलि गैल
शुन बोले शूर्पणखा कह मोत काज * कहिर मानुष आसि भैल बन माज ३
किवा ऋषि ब्राह्मण नुहिबा क्षत्रि जाति * कि कारणे तोक हेन करिलेक शास्ति
किवा अस्त्र रणत हानिल ताक खर * झाण्ट करि कह मोत तार कोन शर ४
किबा जाति किबा कुल तार कोन थान * कि कारणे तोमार काटिल नाक काण
सिंहर लाङ्गुल धरिवाक हात मेले * कसाल गोमर खङ्गे परिहास खेले ५
प्रमत्त गजर दान्त आजुरिते याय * मरिवाक लागि केने वाघे हाल वाय
शङ्कर ब्रह्मात येवे पशय शरण * तथापि मोहार हाते हैबेक मरण ६
कोनजन मोर माथे दिलेक चरण * अविलम्बे देखिबेक यमर करण
शूर्पणखा बोले शुना थिर करि मन * दशरथ पुत्र दुई आसि भैल बन ७
ज्येष्ठ गोट महाबली तार नाम राम * छोट गोट खरतर लखाइ तार नाम
राम लक्ष्मणर माजे सीता बरनारी * ताइर रूपक कोने वर्णाइते पारि ८

समीप गयी। शूर्पणखा बोली—भैया लकेश्वर, सुनो, तुम तो लंका में सुख से निवास कर रहे हो ॥ २९९९ ॥ हे त्रिभुवन नाथ, राज राजेश्वर रावण, मेरी जो विपत्ति हुई है उसे सुनो, और सिर उठाकर देखो। इतने वड़े राजा होकर तुम निश्चित पड़े हो। अव समझ गयी कि तुम्हें यमलोक में जाना ही है ॥ ३००० ॥ तीनों भुवनों में तुम्हारा यश फैला हुआ है परन्तु तुम देश-देश मे चर भेजकर वार्ता नहीं लेते। मतवाले से होकर तुम अपना कर्तव्य नहीं समझते। भैया, इस राज्य को तुमने एक ही फूंक से खो डाला है ॥ ३००१ ॥ दूषण, त्रिशिरा, खर सहित जितनी सेना थी, मनुष्य ने सबको सग्राम में हत कर डाला। परम दुर्जय वीर जिसे राम कहते हैं, हमारी इस विपत्ति का कारण वही है ॥ २ ॥ घी के संयोग से जैसे अग्नि धधक उठती है, शूर्पणखा के वचन सुनकर रावण उसी प्रकार जल उठा। वह कहने लगा—शूर्पणखा, बता तो वन में भला वह कहाँ का मनुष्य आ गया ? ॥ ३ ॥ वह ब्राह्मण ऋषि है या क्षत्रिय जाति का है ? उसने तेरी यह दुर्गति किस कारण से की ? खर ने उस पर कौन सा अस्त्र चलाया ? शीघ्र बता, उसके वाण भला कौन-से है ? ॥ ४ ॥ उसकी जाति क्या है, उसका वंश कौन-सा है, वह किस स्थान का रहनेवाला है ? उसने किस कारण तेरे नाक-कान काट लिये। सिंह की पूंछ पकड़ने के लिये हाथ बढ़ानेवाला, क्रुद्ध नाग से परिहास कर खेलनेवाला भला वह कौन है ? ॥ ५ ॥ प्रमत्त हाथी का दाँत उखाड़ना कौन चाहता है ? मरने के लिये कौन बाघ से हल चलवाता है ? वह यदि शंकर और ब्रह्मा की शरण जाये तो भी मेरे हाथों से उसकी अवश्य मृत्यु होगी ॥ ६ ॥ वह कौन नर है जिसने मेरे सिर पर चरण रखा है ? उसे अविलम्ब यमलोक देखना पड़ेगा। शूर्पणखा बोली, मन स्थिर कर सुनो, दशरथ के दो पुत्र वन में आये है ॥ ७ ॥ जो वड़ा है, उस महाबली का नाम

त्रिभुवन मोहिनी सुन्दरी वर वाला * मन्दोदरी नुहि काणि आङ्गुलिर कला
देव विद्या धरि ताइ किवा अपेश्वरी * लक्ष्मीये आछन्त किवा सीता रूप धरि ९
सेहि बर रमणी गावत नाहि यार * निष्फल जीवन तार सब राज्य भार
कोल चापिलोहो मइ मुञ्जिबाक मने * धरि नाक काण मोर काटिल लक्ष्मणे ३०१०
खरे समे पाचे मइ समर कराइलो * रामर हातत खर भयाइक मराइलो
फुरि फुरि मइ राघवर भुज चाओं * केन मते हाने शर उदिश न पाओं ११
बिजुली चटक येन सत्वर गमन * आगते देखिलो निशाचर भैल छन्न
बज्रर सदृश देखो राघवर चाप * ताहाक रणत भुजिवेक कार बाप १२
शक्र चाप येहेन स्वर्गत प्रकाशय * राघवर चाप तातो अधिक ज्वलय
दूषण त्रिशिरा खर तिनि महावीर * प्राण छराइलन्त रामे परिल शरीर १३
चैध्यय सहस्र आरो यतेक राक्षस * राम अगनित येन परि गैल मस
रामर वीरत्व देखि हृदय लरिल * सरल वृक्षत येन निर्घात परिल १४
खर बध शुनि शोक अनेक करिल * सीतार शुनिया नाम दुख पासरिल
राघव दुर्ज्जय हेन मने गुणि चाइल * सीतार रूपक शुनि हरिषक पाइल १५
जानकीक हरि आनि सव सारो * उपाय विशेषे पाचे दुयो भाइक मारो
उपाय गुणिल पाचे हरिवाक सीता * रथे चरि चलिगैल मारीचर भीता १६
सागरर पार भैल दिव्य रथे चरि * मारीचर थाने गैया पाइल दरादरि
मारीचर देखिल शिरत जटा भार * कृष्ण सार छाल परिधान गावे तार १७

राम है। जो छोटा है उस तेजस्वी का नाम लक्ष्मण है। राम-लक्ष्मण के बीच सीता सुन्दरी नारी है। उसके रूप का वर्णन भला कौन कर सकता है ? ॥ ८ ॥ उस त्रिभुवन मोहिनी, सुन्दरी, श्रेष्ठबाला की तुलना में मन्दोदरी तो कनिष्ठिका उँगली के बराबर भी नहीं है। वह देवी, विद्याधरी अप्सरा है, या लक्ष्मी ही सीता का रूप धारण कर उतरी है ?॥ ३००९ ॥ वह ऐसी नारी है, जिसके बिना सारा राज्य भार और जीवन निष्फल है। मैं उसे खा डालने के लिये समीप गयी। तब लक्ष्मण ने मुझे पकड़कर नाक-कान काट डाला ॥ ३०१० ॥ इसके पश्चात् खर के साथ मैंने युद्ध करवाया और राम के हाथों भाई खर को मरवाया, मै घूम-घूम कर राम का युद्ध देखती थी परन्तु वह किस प्रकार वाण चलाता है, उसका पता ही नही मिलता था ॥ ३०११ ॥ बिजली की चमक की भाँति वह वेग से चलता हुआ था। मेरे सामने देखते-देखते निशाचर सेना विनष्ट हो गयी। रामचन्द्र का धनुप वज्र की भाँति दीख रहा था। उससे युद्ध कर सके, यह किसके बाप की शक्ति है ॥ १२ ॥ स्वर्ग में जिस प्रकार इन्द्र धनुप प्रकाशित होता है, राम का धनुप उससे भी अधिक जगमगा रहा था। खर, दूषण और त्रिशिरा इन तीनो महावीरो के प्राण राम ने ले लिये। उनके शरीर गिर पड़े ॥ १३ ॥ और जो चौदह हजार राक्षस थे वे सभी रामरूपी अग्नि मे मच्छरों की भाँति गिरकर विनष्ट हो गये है। राम की वीरता देख हृदय दहल उठा, लगा, सरल वृक्ष पर वज्रपात हो रहा है ॥ १४ ॥ खर के वध का समाचार सुनकर रावण ने अनेक शोक किया पर सीता का नाम सुनकर दुःख भूल गया। उसने मन में विचार कर देखा, राम अजेय है। सीता का रूप सुन उसे बडा हर्ष हुआ ॥ १५ ॥ उसने सोचा, जानकी को हर लाकर राम के सभी अभिमान नष्ट कर दूंगा। इसके पश्चात् कुछ विशेष उपाय कर दोनों भाइयो को मार डालूंगा। सीता के हरने का उपाय चिन्तन कर, रथ पर सवार हो वह मारीच के पास चला आया ॥ १६ ॥ दिव्य रथ पर चढ़कर वह सागर के पार चला आया

कृश भैल देहा तार आति ध्यान मने * तप करि आछय दुर्ब्बार तपोबने
रावणक मारीचे करिला बहुमान * सतकार लभिल बसिया सेहि थान १८

रावणे बोलय मारीचर मुख चाइ * तुमि हेन हितकारी लङ्कायते नाइ
बुद्धि बले पौरुषे तोमार नाइ सम * अरिर दमने येन कालान्तक यम १९

सहस्रेक प्रमत्त हस्तीर सम बल * तुमि समे जिनिलोहो देवता सकल
तुमि हेन हित मोर आन केहो नाइ * बोलो एक कार्य मोक दियोक उपाय ३०२०

साधिते न पारे आने विमरिषि पाइलो * तयु तप भङ्ग सेहि कारणे करिलो
श्रीराम लक्ष्मण दुइ दशरथ सुत * यि थाने मारिल मोर राक्षस बहुत २१

त्रिशिरा दूषण आरो प्राण भाइ खर * सबाको मारिया रामे निला यमघर
मनुष्य गोटर आचरित एत मान * मोर बहिनीर काटिलेक नाक काण २२

मोहोत खाटय निरन्तरे देवासुर * करय मानुष गोटे मोक एत दूर
मोर बोल कर ममाइ युजिबाक याओं * रामक मारिया यम करणे पठाओं २३

रामर चरित्र शुनियोक सबे नरे * नामेसे तरिबे घोर संसार सागरे
राम हेन नाम शुनिबाक मनोरम * कलिर पापर येन कालान्तक यम २४

ब्रह्मार बाञ्छनि नरतनु आछा पाइ * जानिया सत्वरे फुरा राम नाम गाइ
संसारर दुख इसे उपशाम करे * जानि राम राम घुषियोक निरन्तरे ३०२५

और बड़े वेग से मारीच के स्थान पर पहुँचा। उसने देखा, मारीच मस्तक पर जटाभार लिये, शरीर पर कृष्णसार मृग की खाल पहने हुए है ॥ १७ ॥ अत्यन्त ध्यान आदि के कारण उसका शरीर दुवला हो गया है। तपोवन में रहकर वह घोर तपस्या कर रहा है। मारीच ने रावण का बड़ा मान किया। उससे सत्कार प्राप्त कर रावण उस स्थान मे बैठ गया ॥ १८ ॥ मारीच की ओर देखते हुए रावण ने कहा—तुम्हारे जैसा मेरा हितकारी लंका मे भी कोई नहीं है। बुद्धि, बल, पौरुष में तुम्हारी समता कोई नही कर सकता। शत्रु के दमन में तुम कालान्तक यम के समान हो ॥ ३०१९ ॥ तुम्हारे शरीर में हजारों प्रमत्त हाथियो के बराबर वल है। तुम्हारे सग मैंने सभी देवताओ को जीता है। तुम्हारे समान हितैषी मेरा और कोई नही है। तुमसे एक वात के सम्बन्ध में कह रहा हूँ। तुम मुझे उसका उपाय वताओ ॥ ३०२० ॥ मैने विचार कर देखा है कि वह कार्य दूसरे से नही हो सकता। इसीसे तुम्हारा तप भगकर तुमसे कह रहा हूँ। श्रीराम-लक्ष्मण दोनों दशरथ के पुत्रों ने दंडक वन में मेरे अनेक राक्षसो को मार डाला है ॥ ३०२१ ॥ त्रिशिरा, दूषण और प्राणप्रिय भाई खर आदि सबको मारकर रामने यमालय भेज दिया है। मनुष्य होकर भी उसका इतना अहंकार है कि उसने मेरी बहन के नाक-कान काट डाले हैं ॥ २२ ॥ देवासुर निरंतर मेरी सेवा किया करते है, भला यह मनुष्य मुझे इस प्रकार कर सकता है ? मामा मारीच, मेरी वात मानो, मैं युद्ध करने चला हूँ। राम को यमलोक भेज दूंगा ॥ २३ ॥ राम का चरित्र सब लोग सुने, नाम से ही घोर ससार-रूपी सागर पार कर सकते हैं। राम नाम सुनने मे मनोरम है, व्यक्ति के पापों का कालान्तक यम है ॥ २४ ॥ ब्रह्मा भी जिसकी कामना किया करते हैं, वही नर-शरीर तुम्हें मिला है। ऐसा समझ राम नाम का गान करते रहो। यह संसार का दुःख मिटानेवाला है। ऐसा समझकर निरन्तर राम, राम कहते रहो ॥ २५ ॥

छवि

रामर घरिणी आछे सीता नामे सुबदनी त्रिभुवन सार एक वाला ।
मन्दोदरी आदि करि यत मोर पटेश्वरी पूरिते नपारे एक कला ॥
हेन मोत कहिलेक शूर्पणखा बहिनीये शुनि चित्त धरिते न पारो ।
जनक जीउक हरि मुख्य पटेश्वरी करि रामत सकले मान सारो ॥ ३०२६
सीतार शोकत तार तेज बल हानि हैब शरीर याइबेक तार जसि ।
हाते धनु काण्ड धरि रामक निर्भये मारो दण्डुका बनत पाचे पशि ॥
आमार वचन भङ्ग नकरा मारीच मामा वाक्य मोर दृढ़ करि धर ।
सुवर्णर मृग हुइ सीतार आगत गइ कोमल बनत तइ चर ॥ २७
सीतार वचन शुनि श्रीराम लक्ष्मण दुइ याइबतोक धरिवाक लागि ।
गाण्डि देखा येन करि त्वरित गमन धरि गहन वनत याइवा भागि ॥
शून्य आश्रमत पाचे सीताक रथत तुलि चलि याइवो आपुनार थात ।
एत कार्य्य करिलात मोक अनुग्रह हय करिवो तोमाक वहुमान ॥ २८
एतेक वचन शुनि मारीचे मनत गुणि हातयोरे आगे भैल थिर ।
रामर नामक शुनि रावणक बुलिलेक कम्पे तार सकल शरीर ॥
राम येन वीरवर न जानस लङ्केश्वर कार बोले मारिवाक यास ।
सुखर भितरे तोर एतमति करिलेक कुलक्षय करिवाक चास ॥ २९
नृपति सबत चाटु प्रिय बोल बोलन्ताक शतेक सहस्र कैत नाइ ।
हित पथ अप्रियक बुलिवेक यिटो जने कोटि माजे गुटि एक पाय ॥
रामर वीरत्व मइ भाल मते जनि आछो त्वरिते लङ्कात लागि याहा ।
इटो सब यत गह तेजिया भागिन तुमि ज्ञाति समे राज्यक कराहा ॥ ३०३०

राम की पत्नी सुन्दर रूपवाली सीता त्रिभुवन मे एक श्रेष्ठ नारी है, मन्दोदरी समेत मेरी जितनी पटरानियाँ हैं, वे उसकी एक कला को भी पूर्ण नही कर सकतीं। शूर्पणखा बहन ने ऐसा मुझसे बताया है। यह सुनकर मेरा चित्त वश मे नहीं रहा है। मैं जानकी का हरण कर मुख्य पटरानी बनाऊँगा और राम का सारा घमड चूर कर दूँगा ॥ २६ ॥ सीता के शोक से उसके तेज, बल सब नष्ट हो जायेंगे, उसका शरीर जीर्ण-शीर्ण हो जायेगा। इसके पश्चात् हाथ मे धनुष वाण ले दण्डक वन में जाकर मैं राम को निर्भय हो मार डालूँगा। मामा मारीच, मेरे वचन भंग न करो। मेरे वचनों को दृढ़ता से मन में धारण करो। तुम स्वर्ण–मृग बनकर सीता के सम्मुख जा, कोमल-कोमल घास चरते रहो ॥ २७ ॥ सीता के वचन सुनकर श्रीराम, लक्ष्मण दोनों ही तुम्हें पकड़ने जायेगे। तुम अपने शरीर को दिखाते. दौड़ाते हुए गहन वन में भाग जाना। इसके पश्चात मैं सूने आश्रम में जाकर सीता को रथ पर चढा अपने स्थान में चला जाऊंगा। यदि इतना कार्य कर सको तो मुझपर बड़ा अनुग्रह होगा मैं तुम्हारा बड़ा मान करूँगा ॥ २८ ॥ यह वचन सुनकर, मन में विचार करता हुआ, मारीच हाथ जोड़कर उसके सम्मुख खड़ा हो गया। उसने रावण से कहा—राम का नाम सुनते ही उसका सारा शरीर कम्पित होने लगता है। हे लंकेश्वर रावण, राम जैसे वीरवर को तू नहीं जानता। भला जिसके कहने से तू उन्हे मारने चला है? सुख में तेरी ऐसी मति किसने करदी, जिससे तू अपना वंश-नाश करना चाहता है ॥ ३०२९ ॥ राजाओं की चाटुकारिता कर प्रिय वचन वोलने वाले सैकड़ों-हजारो भला कहाँ नही है? अप्रिय परन्तु हितकारी मार्ग के संबंध में कहनेवाला करोडों में कोई एक ही मिला करता है। राम की वीरता मैं अच्छी तरह जानता हूँ। तू

हरि हरि लङ्केश्वर तोहोर प्रसादे सब राक्षसक हरिलेक शङ्का ।
हृदयर माजे तोर हेन बुद्धि फिरि गैल हराइल माणिक पुरी लङ्का ॥
आसन्न कालत आसि बिनाशन बुद्धि भैल माथे तोर यमकाल नाचे ।
अगनिर शिखा सम सीताक हरिबे चास मरिबार कतकाल आछे ॥ ३१
राम येन बीरवर ना जानस लङ्केश्वर ताहान आगत तइ माखि ।
आमार बचन धरि सीतादेवी परिहरि देशक चलाहा प्राण राखि ॥
मोर बोल हित येवे नुशुनस लङ्केश्वर देव धर्म्म सबे हुइबा साक्षी ।
यिटो पात्र मन्त्री तोक हेन उपदेश दिल ताहार फुटिल दुइ आखि ॥ ३२
राम देव सुचरित सकल जनर हित देव द्विज गुरुत विनीत ।
पितृर बचने कित सर्ब्ब दोष बिवर्ज्जित त्रिभुवन राजाक उचित ॥
जनकर जीउ सीता राघवर बिवाहिता पतिव्रता धर्म्मे आति थिता ।
तोर मृत्यु सन्निहित मति भैल बिपरीत सि कारणे यास तान भिता ॥ ३३

मारीचर लगत रामर कथोपकथन

दुलड़ी

रावणे बोलय मारीच ममाइ तुमि मोर महा पात्र ।
मोक कि करिते पारय राघवे मानुष गोटसे मात्र ॥
दशरथ सुत पापर चरित्र न जानय धर्म्म लेश ।
स्त्रीर बचने भार्य्या मातृ समे आसि भैल बनदेश ॥ ३०३४

शीघ्र ही लंका लौट जा। ये सब अनुचित कार्य छोड़कर, भगिना रावण, तुम बंधु-बांधवों समेत राज्य करता रह ॥ ३०३० ॥ हरि, हरि, लंकेश्वर रावण, तेरे ही कारण राक्षसगण आशंका-मुक्त हो सके है। पर तेरे हृदय में इस प्रकार बुद्धि फिर गयी है जिससे कि मणियों की लंकापुरी खो जानेवाली है। मृत्युकाल में तेरी बुद्धि विनष्ट हो गयी है, तेरे सिर पर यम काल नाच रहा है। अग्नि-शिखा जैसी सीता को तू हरना चाहता है, भला तेरे मरने में अब कितना समय रह गया है ? ॥ ३०३१ ॥ राम किस प्रकार वीरवर है, लंकेश्वर, तू नही जानता, उनके सम्मुख तू मक्खी-सा है। मेरा वचन मानकर सीता देवी को छोड़कर, अपने प्राण बचाकर तू देश लौट जा। यदि तू मेरे हितकारी वचन नही सुनेगा तो लंकेश्वर, देव-धर्म सभी साक्षी रहेंगे। जिस सामन्त या मंत्री ने तुझे इस प्रकार का उपदेश दिया है, उसकी दोनों आँखें फूटी हुई हैं ॥ ३२ ॥ प्रभु राम का चरित्र उत्तम है, वे सभी जीवों के हित-कारक हैं, देव, द्विज, गुरु के प्रति वे नम्रता रखते हैं। वे पिता के वचनों पर अविचल रहने वाले तथा सभी दोषों से मुक्त है। उन्हें तो त्रिभुवन का राजा होना उचित है। जनकनन्दिनी सीता, राघव की विवाहिता पत्नी हैं, वह पातिव्रत धर्म में अविचल रहने वाली हैं। मृत्यु सन्निकट होने के कारण ही तेरी मति विपरीत हो गयी है इसी से तू उनके समीप जाना चाहता है ॥ ३०३३ ॥

मारीच के साथ रावण का वार्तालाप

रावण बोला—मामा मारीच, तुम मेरे अपने महाआत्मीय हो। राघव मेरा क्या कर सकता है, वह तो मनुष्य मात्र है। पाप-चरित्र दशरथ का पुत्र धर्म का लेश-मात्र नहीं जानता। स्त्री के वचनों से पत्नी और भाई के साथ उसे वन प्रदेश में आना पड़ा है ॥ ३४ ॥ मनुष्य राघव बड़ा वीर है, यह भला तुम कैसे जानते हो ?

मानुष राघव होवे बरवीर केमने तइ जानस ।
कि कारणे मोक मारीच ममाइ वाक्य विष बरिषस ॥
त्रैलोक्य बिजयी दुर्ज्जय रावण मोक बीर ने देखस ।
मोहोर आगत मानुह रामक मुनिष बुलि लेखस ॥ ३५
बापेके बनक डाकिते न हय पितृत सिटो भकत ।
तेह्लय सहस्र कोटि एको रामो नुहिके मोक शकत ॥
कुबेर ददाक युद्धत जिनिया लङ्का देश काढ़ि लैलो ।
त्रिदशक जिनि रणचेर करि कीरितिक बर थैलो ॥ ३६
पाताल पुरत न भैले शकत मोक बर बर नागे ।
मानुष गोटक मुनिष बोलस कि हेतु मोहोर आगे ॥
इटो पृथिवीर राजा गण यत महाबीर बोलाइ लेक ।
सिसब समस्त मोहोर आगत उचित दण्ड पाइलेक ॥ ३७
मारीच ममाइ तुमि महाबीर मोहोर बचन शुन ।
नुपुछिले कथा आपुनि कहबै मन्त्रीर नुहिके गुण ॥
त्रिदशे रामर सहायक भजि एहिसे कार्य साधिब ।
तथापि सीताक हरि लङ्का निबो दैवे ताक न बाधिब ॥ ३८
जानिबा ममाइ मोहोर सीताक रामे आर न पाइबेक ।
गम्भीर सागर तरिया के मने लङ्काक लागि याइबेक ॥
अवश्येके मइ जानिबा खरर करिबोहो प्रतिकार ।
पुनरपि तुमि हेन लघु बोल मोक नुबुलिबा आर ॥ ३९
हेन शुनि पाचे मारीचे बोलय रावणर मन जानि ।
कोन नो विधाता जानकी सीताक एथा मिलाइलेक आनि ॥
तोहोर क्षयर कारणेसे जानो सीता उतपति भैल ।
सकले राक्षस कुलर माथात काली पेची परि गैल ॥ ३०४०

मामा मारीच, किस कारण तुम मेरे ऊपर इस तरह वाक्य-रूपी विष-वाण की वर्षा कर रहे हो ? मैं त्रैलोक्य-विजयी रावण हूँ। तुम मुझे वीर नही समझते और मेरे सम्मुख उस मानव राम को ही वीर पुरुप कहकर बखान करते हो ? ।। ३५ ।। वह पिता का भक्त है इसी से तो पिता ने उसे वन मे भेज दिया है। वैसे-वैसे सहस्र कोटि राम भी मेरे समकक्ष नही हो सकते। मैंने कुबेर भाई को युद्ध में पराजित कर लंका छीन ली है, तीसों देवों को रण में पराजित कर बड़ी कीर्ति रखी है ॥ ३६ ॥ पातालपुरी के बड़े-बड़े नाग भी मुझे हरा नही सके तो फिर इस मनुष्य की वीरता का वखान मेरे सम्मुख किस हेतु कर रहे हो ? इस पृथ्वी के जो-जो राजा महावीर कहलाते थे, वे सभी मेरे सम्मुख उचित दंड पा चुके है ॥ ३७ ॥ मामा मारीच, तुम महाबीर हो, मेरे वचन सुनो। विना पूछे अपने आप वात कहना मंत्री का गुण नही। यदि तीसों देवता राम के सहायक वनकर यह कार्य साधन करें तथापि मै सीता को हर कर लंका ले जाऊँगा, दैव भी इसे नही रोक सकता ॥ ३८ ॥ तुम समझ लो मामा, कि मेरी सीता को राम अव पा नही सकेगा। वह भला गंभीर सागर पार कर लंका में कैसे पहुँच पायेगा ? तुम समझ लो, कि मैं अवश्य ही खर का प्रतिशोध लूँगा। तुम पुनः इस प्रकार के लघु वचन मुझसे न कहना ॥ ३०३९ ॥ यह सुनकर रावण का मन समझ, मारीच कहने लगा—पता नहीं कौन विधाता जानकी सीता को यहाँ ले आया है ? समझ लो कि तुम्हारे विनाश के लिए ही सीता की उत्पत्ति हुई है। सारे राक्षस-कुल के मस्तक पर काली उलूकी आ बैठी है ॥ ३०४० ॥

कमन मुगुध मन्त्रीये तोहोक हेनय बुद्धि दिलेक ।
तोक न सहिया कोने हेन मते लङ्कापुरी दहिलेक ॥
रावण राजार श्री सम्पत्तिक देखिते कोने नो पारे ।
सेहिसे कारणे रामर हातत उपाय करिया मारे ॥ ४१
आपोनार मइ कथाक कहओं शुनिवि राजा रावण ।
बलर गर्ब्बत पूर्ब्ब काले मइ गैलो दण्डकार वन ॥
बाछिया अनेक राक्षस सेनाक तुलत करिया लैलो ।
महा महा ऋषि- सबक मारिया भुञ्जिया तृपिति भैलो ॥ ४२
पाचे एकबार बिश्वामित नामे ऋषिर थानक गैलो ।
राक्षसे सहिते यज्ञ छन्न करि अनेक ऋषिक खाइलो ॥
धर्म्मर चरित्र ऋषि बिश्वामित्र तेहो आति बर तपी ।
परम कृपालु अधर्म्मक डरे मोक ना मारिल शापि ॥ ४३
आति महाक्रुर राक्षस जातिर आसङ्गक बर पाइलो ।
राक्षसक लैया निते निते गैया ऋषिगण मारि खाइलो ॥
हेन देखि आछे विश्वामित्र पाचे गैला अयोध्याक लागि ।
दशरथ महा- राजात ऋषिये रामक आनिला मागि ॥ ४४
पूर्ब्बकाल मते यज्ञ आरम्भिया ऋषि सबे करे काम ।
दिव्य धनु शर हातत धरिया राखिया थाकिला राम ॥
ऋषिकं भुञ्जिया लाण्टा पाया पाचे चापिलोहो गैया कोल ।
देखा देखा राम बुलिया ऋषिर उथलिल महा रोल ॥ ३०४५
आकाशत देखि पाचे मोक लागि रामे करिलन्त शर ।
महाबेगे गैया हियात परिया कम्पि गैल कलेबर ॥

किस मूढ़ मंत्री ने तुम्हें इस प्रकार की बुद्धि दी है। तुमसे ईर्ष्या कर किसने इस प्रकार से लंकापुरी में आग लगा दी है? राजा रावण की श्री, सम्पत्ति किसें नही सुहाती है जिस कारण वह उपाय कर राम के हाथों तुम्हे मरवा डालना चाहता है? ॥ ३०४१ ॥ राजा रावण, सुनो, मैं तुम्हें अपनी कथा सुनाता हूँ। बल के घमंड से मैं पूर्वकाल में दंडक वन में गया था; साथ चुन चुनकर अनेक राक्षसों की सेना भी ले ली थी। महान् ऋषियों को मार-मारकर बड़ी तृप्ति से खाया करता था ॥ ४२ ॥ तत्पश्चात् एक वार विश्वामित्र नाम के मुनि के स्थान पर पहुँचा और यज्ञ-विध्वंस कर अनेक ऋषियों को खा डाला। धर्म-चरित्र, ऋषि विश्वामित्र, वे अनेक बड़े तपस्वी है, वे परम कृपालु हैं, अधर्म से डरते है, मुझे अभिशाप देकर वध नहीं कर डाला ॥ ४३ ॥ अत्यन्त महाक्रूर राक्षस जाति का उत्तेजन पाकर मै राक्षसों को संग ले, नित्य जा-जाकर ऋषियों को मार-मारकर खाया करता। यह देखकर अंत में विश्वामित्र अयोध्या गये और महाराज दशरथ से राम को मांग लाये ॥ ४४ ॥ पहले की भाँति यज्ञ आरंभ कर ऋषिगण अपने कार्य करने लगे, हाथों में दिव्य धनुष-वाण लिये राम उनकी रखवाली करते रहे। ऋषियों को खाने के लिए आक्रमण करते हुओं को देखकर, मैं उनके समीप चला आया। देखो, देखो राम, कहते हुए ऋपियों का महा कोलाहल छा गया ॥ ४५ ॥ अंत में आकाश की ओर देखते हुए राम ने मेरी ओर वाण छोड़े। महावेग से वह वाण जाकर मेरे वक्ष में लगा और मेरा शरीर काँप उठा। राम का प्रहार शंकर के त्रिशूल की भाँति था। उससे मेरे सम्मुख अंधकार छा गया। मै अचेतन होकर सेमल की रुई की भाँति

देखो अन्धकार रामर प्रहार येन शङ्करर शूल।
चेतन न पाइलो आकाशे उराइलो येन शिमलिर तूल ॥ ३०४६
इन्द्रर वज्रर प्रहारते शालि गावत मोर परिल।
बरर प्रसादे मोहोर गावर लोम गाछो न लरिल ॥
यत यत अस्त्र करिल प्रहार मोहोक देव असुर।
मोहोर कठिन गावत परिया सबे भैल मषिमूर ॥ ३०४७
आपुनि जानाहा नृपति रावण मारीच यिमत बीर।
कहो स्वरूपत रामर शरत परिल देखो शरीर ॥
तूला येन ठाने राघवर वाणे गगनक खेराइ लेक।
निमिषे के निया सागर चड़ाया सिकूलत पेलाइ लेक ॥ ३०४८
पाचे चिरकाले कथमपि तथा चेतन मइ लभिलो।
बन्धुजन देखि— वाक धीरे धीरे लङ्काक लागिया गैलो ॥
अद्यापि रामर प्रहार सुमरि धरिते न पारो मन।
सबे परिहरि सि कारणे तप करो एहि तपोबन ॥ ३०४९
शुना लङ्केश्वर विस्तर दुखक पाइलो आमि अनुपाम।
येखन तेखन सुमरन्ते देखा हेर आसि पाइलेक राम ॥
एहि से निमित्त एरिलोहो चार भार्य्या पुत्र परिवार।
प्राण अवशेष केवले मोहोर तप मात्र भैल सार ॥ ३०५०
स्वर्गर भितरे यतेक देवता पातालर यत नाग।
इटो पृथिवीर यत राजा आछे तोमाक करिया आग ॥
येबे सबे मिलि एकल रामक एके बारे करे रण।
राघवर शर— चोटत जानिबा सबारे हुइबे मरण ॥ ३०५१
मोहोर वचन सार जानि तुमि उलटि लङ्काक याहा।
बिभीषण बुद्धि— मन्तत इसब कथाक पुछिया चाहा ॥

आकाश में उड़ गया ।। ४६ ।। मेरे शरीर पर इन्द्र के वज्र के प्रहार जैसी चोट पड़ी है, पर वर के प्रसाद से मेरे शरीर का एक रोम भी नही हिला था। देवो-असुरों ने मुझ पर जितने भी अस्त्रों का प्रहार किया था, वे मेरे कठिन शरीर पर पड़कर विनष्ट हो गये थे ।। ३०४७ ।। राजा रावण, मारीच कैसा वीर है यह तुम स्वयं जानते हो। मैं सत्य कहता हूँ, राम के वाणों से मेरा शरीर गिर पड़ा। राघव के वाण ने मुझे रुई की भाँति आकाश मे उड़ा दिया और क्षण मात्र में सागर पार कर उस पार फेंक दिया ।। ४८ ।। बहुत समय के पश्चात् वहाँ किसी प्रकार मुझे चेतना आयी और मैं वन्धु-वांधवों से भेंट करने लंका मे चला आया। आज भी राम का प्रहार स्मरण कर मैं मन स्थिर नही कर पाता। इसी कारण सब कुछ छोड़कर इस तपोवन में तपस्या किया करता हूँ ।। ३०४९ ।। लंकेश्वर रावण, सुनो, मुझे अनेक अतुलनीय कष्ट झेलने पड़े है। जब तब स्मरण करते ही देखता हूँ, कि राम आ पहुँचे हैं, इसी कारण पत्नी, पुत्र, परिवार सबको छोड़कर केवल प्राण भर बचाए तप मात्र को सार किये हुए यहाँ हूँ ।। ३०५० ।। स्वर्ग में जितने देवता है, पाताल के जितने नाग है, तुम समेत पृथ्वी के जितने राजा है, यदि सभी मिलकर अकेले राम के साथ एक वार युद्ध करें तो समझ लो कि राम के वाणों के प्रहार से सबकी मृत्यु हो जायगी ।। ३०५१ ।। मेरे वचन को सार समझकर तुम लंका में लौट जाओ और वुद्धिमान विभीषण से पूछ देखो, अपनी बहन त्रिजटा से भी पूछो, यदि वे तुम्हे साहस

त्रिजटा तोमार बहिनीक सुधि येवे तारा देइ साहा।
तिनिरो सन्मते पाचे नृपवर जानकीक हरिवाहा ।। ३०५२
तोर हित पक्ष त्रिजटा बहिनी हित बिभीषण भाइ ।
दुइहन्तर परे लङ्कार भितरे तोर इष्ट केहो नाइ ।।
तारा दुइ जने तोक यिटो बोले सेहि बोल सार करा।
चटुवा मन्त्रीर बचन नृपति बिदूरते परिहरा ।। ३०५३
हेनय हितक नुशुनिया तुमि करा येवे आन मन।
सब बन्धु जन मराइ बाहा तेवे लङ्काराज्य हुइबे छन ।।
दुर्ज्जय रामर हातत समस्ते बल दर्प हुइबे चूर ।
अबिलम्बे तेवे देखिबा नृपति दुर्ब्बार ए यमपुर ।। ३०५४
रामर चरित्र परम अमृत सुना सभासद जन।
निश्चये जानिबा इसे महाधर्म्म कलिर्मल करे छन ।।
पुण्यक सञ्चियो यमक बञ्चियो संसार करि मोचन।
एरि आन काम बोला राम राम घुषियोक घने घने ।। ३०५५

रावणर प्रति मारीचर कटूक्ति; मारीचर माया-मृग शरीर धारण; रावणर तपस्वी वेशे सीतार ओचरलै आगमन

पद

मारीचर बचनत कूपित रावण * आति बर क्रोधे पाचे बुलिला बचन
हाओरे पापिष्ठ मइ करिलोहो किस * कि कारणे मोक बरिषस वाक्य विष ३०५६
निष्ठुर बचन किय बोल एतमान * भूमित रैलेक येन ब्रीर्य्य हीन बाण
लखिलो पापिष्ठ राघवर भारि खाइले * सि कारणे मोक अपमान कराइले ५७

दें तो तीनों की सम्मति से तुम जानकी का हरण करना ।। ५२ ।। त्रिजटा बहन तुम्हारी हितैषिनी है, विभीषण भाई हितू है। इन दोनों के सिवा लंका में तुम्हारा इष्ट कोई भी नही है। वे दोनों तुम्हें जो कहें उसी को सार मान लो और चाटुकार मंत्रियों के वचन दूर ठुकरा दो ।। ५३ ।। यदि ऐसे हितैषियों के वचन न सुनकर तुम भिन्न विचार रखोगे तो सारे बंधु-बांधव मारे जायेगे और लंका राज्य विनष्ट हो जायेगा। दुर्ज्जय राम के हाथ बल का तुम्हारा सारा घमंड चूर हो जायेगा और राजा रावण, शीघ्र ही तुम्हें दुर्निवार यमपुर के दर्शन करने पड़ेंगे ।। ५४ ।। हे सभासद जनो, परम अमृतमय राम का चरित्र सुनो। निश्चय मानो यही महाधर्म कलिमल का नाश करने वाला है। अन्य कामों को छोड़कर बार-बार राम नाम का घोष कर, पुण्य-संचय करो, यम के हाथ से बच जाओ और संसार के बन्धनों से मुक्त हो जाओ ।। ३०५५ ।।

रावण के प्रति मारीच की कटूक्ति; मारीच का माया-मृग शरीर धारण करना; तपस्वी वेश में रावण का सीता के पास आना

मारीच के वचन सुनकर रावण कुपित हो उठा। बहुत अधिक क्रोध से वह यह बोलने लगा। हाय रे पापी, मैंने भला क्या किया है? किस कारण तू मुझ पर विष-वाक्य की वर्षा कर रहा है ।। ३०५६ ।। तू इतना निष्ठुर वचन क्यों बोलता

घूरि घूरि बोलस निष्ठुर मोक वाणी * दुर्व्वार रावण मोर कथाक न जानि
खाण्डे हानि तोक आजि करिबो दोहार * राघवे करोक आसि तोर प्रति कार ५८
तोर वचनक मइ करिलोहो लक्ष्य * मोक एरि बोल राघवर हित पक्ष
प्राणे येवे बर्तिवि मोहोर वाक्य कर * नुहि एतिक्षणे पेषाइ बोहो यम घर ५९
राम पाशे गैले तोर जीवन संशय * मोहोर हातत एतिक्षणे हुइवि क्षय
याबि वा नयाबि झाण्टे बोल केन मन * यावे न तो पेशो आजि यमर करण ३०६०
हेन शुनि मारीचर त्रास वर भैल * सक्रोध वचने ताक माति वाक लैल
मरिवार काले आचन्दियो असदृश * सुहृदर वचनक देखो येन बिष ६१
रामर हातत परि स्वर्ग चलि याइबो * तोर दुख सुख किछु देखिते न पाइबो
सीताक हरिले तोर हुइबे गल पाश * रामर हातत झाण्टे हुइबे विनाश ६२
अनिष्ट करिया आछ यत देवासुर * रामर हातत आटि मुटि हुइबे चूर
त्रिदशर शापे तोर आयु भैल क्षीण * जगतर मनुष्ये जीवन्त कत दिन ६३
रामतो मरिब मरिबोहो रावणत * जीवन नाहिके येन गुणिलो मनत
तोहोर हातत किय प्राणक सुजाओं * रामर हातत परि स्वर्गे चलि याओं ६४
हेन शुनि रावण हरिष वर पाइल * आशेष प्रशंसि ताक रथत चराइल
रामक सुमरि तार मने भय घोर * काटिवाक लागि येन लैया चाप चोर ६५
शीघ्र वेगे गैया राघवर थान पाइल * मारीचक रावणे वचन पुरु जाइल
देखियो कदली वन राघवर थान * मृगरूप धरि मोर साधा वहु मान ६६

है ? भूमि पर पड़े हुए बाण की भाँति तू वीर्य-हीन हो गया है। पापी, मैं देख रहा हूँ, तूने राम से उत्कोच लिया है, इसी कारण मेरा अपमान कर रहा है ।। ५७ ।। मैं दुर्निवार रावण हूँ। मेरी बात को न समझ कर तू बार-बार मुझसे निष्ठुर वचन बोल रहा है। आज तलवार से तुझे दो खड कर डालूँगा। देखूँ, राघव कैसे आकर तुझे बचाता है ।। ५८ ।। मैंने तेरे वचनों पर ध्यान रखा है। मुझे छोड़कर तू राम के हित-पक्ष के वचन कह रहा है। यदि तू प्राणों से बचना चाहता है तो मेरे वचन मान। नही तो मैं इसी क्षण तुझे यमलोक भेज रहा हूँ ।। ३०५९ ।। राम के पास जाने पर तेरा जीवन-संशय है परन्तु मेरे हाथ में इसी क्षण तेरा विनाश हो जायेगा। तू जायेगा या नही, बता तेरी इच्छा क्या है ? जा, अन्यथा तुझे अभी यमलोक भेज रहा हूँ ।। ३०६० ।। यह सुनकर मारीच को बड़ा त्रास हुआ। वह क्रोध से रावण से कहने लगा—मरने के काल में तू अनुचित आचरण करने चला है। सुहृद-वचन तुझे विष जैसे लग रहे हैं ।। ३०६१ ।। मैं राम के हाथ से मरकर स्वर्ग चला जाऊँगा, तेरा दु.ख शोक देख नही पाऊँगा। सीता का हरण तेरे गले की फाँस बन जायेगा; राम के हाथों से तेरा शीघ्र ही विनाश हो जायगा ।। ६२ ।। तू जितने देवासुरों का अनिष्ट करता आया है अब राम के हाथों पीसा जाकर चूर-चूर हो जायेगा। तैंतीस देवों के अभिशाप से तेरी आयु भी क्षीण हो आयी है, भला संसार का प्राणी कितने दिन जीवित रहता है ।। ६३ ।। मैंने मन मे विचार कर लिया है कि जीवन तो बचने वाला नहीं है। मुझे तो राम के हाथ से भी मरना है, या रावण के भी हाथों से। तो तेरे हाथों से क्यों प्राण छोड़ूँ ? क्यों न राम के हाथों से मरकर स्वर्गवासी बनूँ ? ।। ६४ ।। यह सुनकर रावण बड़ा प्रसन्न हुआ और उसकी बड़ी प्रशंसा करते हुए रथ पर चढ़ाया। राम के स्मरण से उसके मन में घोर आतंक था। मानो किसी चोर को काट डालने के लिए ले जाया जा रहा हो ।। ६५ ।। वे दोनों शीघ्रता से रामचन्द्र के स्थान को पहुँचे। रावण मारीच से कहने लगा—वह कदली वन

रथे चरि रावण लुकाया भैल थित * मारीच राक्षस तेवे नामिल भूमित
धीरे धीरे याइ भरि ना वाढ़य आग * काटिबाक नेइ येन अष्टमीर छाग ६७
बिमरिष करय मारीच महावीर * हरि हरि हरुवाइलो सुन्दर शरीर
रावण राजार आजि हितपथ चाओं * रामर हातत परि स्वर्गे चलि याओं ६८
हेन बुलि मारीचे धरिल मृग माया * मनोहर वेश शुद्ध सुवर्णर काया
रजतर अर्द्ध चन्द्र दुइ पावे वलय * तारा सम थाने थाने माणिक ज्वलय ६९
जाज्वल्य समान ज्वले रत्नमय बुक * थाने थाने प्रकाशय सोणार भुमुक
तरङ्ग बरङ्ग करि चतुर्द्दिशे याय * सीता देवी देखन्त कोमल घास खाय ३०७०
सुवर्णर मृगक देखिया रङ्ग मन * रामक सम्बुधि सीता बुलिला वचन
आश्चर्य मृगक प्रभु देखियोक राम * माणिक खचित शुद्ध सुवर्णर काम ७१
तिनिओ भुवने सार दण्डकार बन * हेन सब मृग यत होवे उतपन
एतेक कार्यक प्रभु तोमात मेलाओं * इहार छालत येवे बसिबाक पाओं ७२
एहि मृग मारि छाल आनि दिया मोक * अयोध्याक गैया कथा कहिबाक हौक
एहि छाल आनि नगरक लैया याओं * अन्तेषपुरत कथा कहिबाक पाओं ७३
टीकर सुस्वामी प्रभु चरणत लागो * कौतूहल मने इटो मृगगुटि मागो
आति बर आशा मोर न करियो भङ्ग * आक पाइले प्रभु तेवे होवे महा रङ्ग ७४
धरिबाक पावा येवे आति बर भाल * नोहे मृग मारि मोक आनि दिया छाल
तुमि आमि दुइ हन्ते थाकि बोहो बसि * रोहिणी सहिते येन आकाशत शशी ७५

वाला राम का निवासस्थान देखो, मृग रूप धारण कर तुम मेरा बड़ा कार्य सिद्ध करो ।। ६६ ।। रथ पर चढ़ा हुआ रावण छिपा रहा, राक्षस मारीच तव भूमि पर उतरकर धीरे धीरे चला। उसके चरण आगे नही बढ़ते थे, ऐसा लगता था मानो अष्टमी के वकरे को वलि देने ले जाया जा रहा हो ।। ६७ ।। महाबीर मारीच मनमें विचार करने लगा—हरि, हरि, यह सुन्दर शरीर मुझे खोना पड़ रहा है। आज राजा रावण जिसे अपना हित समझता है वही करूँगा और राम के हाथ से प्राण तजकर स्वर्ग चला जाऊँगा ।। ६८ ।। यह कहकर मारीच ने माया-मृग का रूप धारण किया। उसका वेश बड़ा मनोरम था, सम्पूर्ण शरीर शुद्ध-स्वर्ण का था। बीच-बीच में चाँदी के अर्धचद्र और दोनो पैरों में वलय थे, स्थान-स्थान पर तारों की भाँति मणियाँ जगमगा रही थी ।। ३०६९ ।। रत्नमय वक्ष विद्युत की भाँति जलता था। उसके स्थान-स्थान पर स्वर्ण की छटा थी। वह तरंग की भाँति हिलता-डुलता चारों ओर घूम रहा था। देवी सीता को दिखा-दिखाकर कोमल घास चरने लगा ।। ३०७० ।। स्वर्ण-मृग देखकर सीता का मन परम उल्लसित हो उठा। राम को सम्वोधित करते हुए वह कहने लगी—प्रभु राम, इस आश्चर्य मृग को देखिये। शुद्ध स्वर्ण के काम पर मणियाँ जड़ी हुई हैं ।। ३०७१ ।। जहाँ ऐसे मृग उत्पन्न होते हैं, वह दंडक वन त्रिभुवन में सार है। जिससे इसकी खाल पर बैठ सकूँ, हे प्रभु, तुमसे यही कार्य करवाना चाहती हूँ ।। ७२ ।। प्रभु इस मृग को मार मुझे खाल ला दीजिये, जिससे, अयोध्या में लौटकर मैं कुछ कथा कह सकूँ। इसकी खाल मैं नगर में ले जाना चाहती हूँ जिससे कि अंतःपुर में इसकी कथा सुना सकूँ ।। ७३ । हे मेरे मस्तक के प्रभु ! मैं तुम्हारे चरणों में पड़ती हूँ। मन में कौतूहल के कारण केवल यह मृग भर तुमसे माँगती हूँ। मेरी इस अति वड़ी आशा को भंग न करो, इसे पाने पर प्रभु, मुझे असीम आनन्द होगा ।। ७४ ।। इसे यदि पकड़ सको तो वड़ी अच्छी वात है। अन्यथा मृग को मारकर मुझे खाल ला दो। उस पर तुम और मैं दोनों ऐसे बैठा

सीतार बचन पाचे राघवे आकलि * निश्चये जानिलो सीता तुमिसे आजली
कत शुनि आछा मृग सुवर्णर काया * निष्ट करि जाना इटो राक्षसर माया ७६
पुनरपि सीता देवी उत्तर बुलिला * निश्चये जानिलो आवे आमाक भाण्डिला
ताहाक भाण्डाहा याक देखिलो साक्षात * आन किबा बस्तु प्रभु खुजिलो तोमात ७७
पतिव्रता धर्म राखि तोमार लगत * राज्य सुख एरि फुरो घोर अरण्यत
कोन बस्तुछार खुजिलोहो पशु छाल * इहाक निदिया पातिलाहा आल जाल ७८
पशु नुइ यदि हुइ राक्षस निश्चय * तथापि मारिते प्रभु तोमार लागय
एहि हेतु तुमि आसि आछा बन माज * इहाक मारिया साधियोक देव काज ७९
सीतार बचन राम शुनि रङ्ग मन * सम्बुधिः बोलय शुन भैयाइ लक्ष्मण
जनक जीउर बाप शुनिलि बचन * एहि मृग चवरित बसिबाक मन ३०८०
अवश्ये पूरिबो जानकीर मनोरथ * आङ्क अपमान दिबो कमन महत
सुवर्णर मृगछाले बसि थाकिबेक * नेत कमलर सुख इहाते पाइबेक ३०८१
मइ चलि गैलो हेरा मृग मारिबाक * यावे नासो तावत सीताक राखियोक
लक्ष्मणे बोलन्त ददा देखो असदृश * मृग हेन बेश नोहे करा बिमरिष ८२
ऋषि गणे कहिया आछन्त मोत काज * मारीच राक्षस आछे दण्ड कार माज
राजा गण यत मृग मारिबाक चाय * सुवर्णर मृग हुया सबाहाङ्के खाइ ८३
कहित देखिला मृग वर्ण सुवर्णर * माणिक काञ्चन देखा पोवाल रत्नर
हित पक्ष चिन्तियोक बिमरिष करि * मारीच राक्षस आइल मायारूप धरि ८४

करेंगे, जैसेकि आकाश में रोहिणी सहित चद्रमा रहता है ॥ ७५ ॥ इसके पश्चात् सीता के वचनों पर विचार कर राघव बोले— सीता, अब मुझे निश्चय समझ में आ गया कि तुम हठी हो। तुमने भला कहाँ सुना है कि मृग का सोने का शरीर होता है ? सत्य समझ लो कि यह राक्षस की माया है ॥ ७६ ॥ सीता ने पुनः उत्तर देते हुए कहा—मै निश्चय समझ गयी कि तुम मुझे प्रवचित कर रहे हो। जिसे मैं साक्षात् सम्मुख देख रही हूँ उसे तुम असत्य कह रहे हो। प्रभु, मैंने केवल इसके अतिरिक्त तुमसे और क्या मांगा है ? ॥ ७७ ॥ मै पातिव्रत धर्म का पालन करती हुई राज्य-सुख छोड़ तुम्हारे संग घोर अरण्य में घूम रही हूँ। इस नगण्य पशु-खाल के सिवा तुमसे भला और क्या चाहा है ? इसे न देने के कारण ही तुम इतनी बहानेबाजी कर रहे हो ॥ ७८ ॥ यदि यह पशु नही है, राक्षस है, तो भी इसे तुमको मारना चाहिए। इसी कारण तो तुम वन में आये हुए हो। इसे मारकर देव-कार्य सिद्ध करो ॥ ७९ ॥ सीता के वचन सुनकर राम के हृदय में कौतूहल हुआ। उन्होने लक्ष्मण से कहा—भाई लक्ष्मण ! सुनो, तुमने तो जानकी के वचन सुन ही लिये। यह इस मृग की खाल पर बैठना चाहती है ॥ ३०८० ॥ मैं अवश्य ही जानकी की मनोकामना पूरी करूँगा। भला इसका अपमान मैं कैसे कर सकता हूँ ? यह सोने के मृग-छाले पर बैठी रहेगी, इसके कमल जैसे नेत्रों को इससे सुख मिलेगा ॥ ३०८१ ॥ मै मृग मारने जा रहा हूँ, जब तक मैं लौट न आऊँ तब तक सीता की रखवाली करते रहना। लक्ष्मण बोले—भैया, यह तो बड़ा विपरीत देख रहा हूँ। मन में विचार कीजिये इसका वेश तो मृग की भाँति नहीं है ॥ ८२ ॥ ऋषियों ने मुझसे बताया है, राक्षस मारीच दंडक वन में रहता है। जो राजा मृग मारने जाते हैं, स्वर्ण-मृग बनकर वह सभी को खा जाता है ॥ ८३ ॥ सुवर्ण का, मणि-कांचन पुखराज आदि रत्नों का मृग भला कहाँ होता है। आप मनमे विचार कर कल्याण-पक्ष का चिन्तन कीजिये। मारीच राक्षस ही माया रूप धारण कर

राघवे बोलन्त येवे मारीचेसे आइला * ऋषिर यतेक कोप सुजिबाक पाइला
दण्डका बनर आजि गुचाइ एरो शाल * सीताक आनिया दिबो सुवर्णर छाल ८५
सकले गावत देखो राजयोग्य रत्न * अवश्य इहाक लागि करिबोहो यत्न
तारा-मृग गोट आरो स्वर्गत आछय * ताहार सदृश इटो वनत नाचय ८६
यि सब आछिल रत्न आमासार ठावे * तातो आतिरेक देखो हरिणर गावे
एति क्षणे मृग आमि याइबो मारिबाक * सावहित रूपे तुमि चाइबा जानकीक ८७
एहि बुलि रामे मृग मारिबाक मने * सुसम्भृत हुया चलि गैल तेति क्षणे
धनुर्व्वाण साजि गैला थान परिहरि * लक्ष्मण थाकिला जानकीक रक्षा करि ८८

श्लोक

कर्म्मणा बाध्यते बुद्धिर्न्न बुद्धया कर्म्म बाध्यते * सुबुद्धि रपि रामोऽयं हैमं हरिणमन्वगात्

पद

रामक देखिया तार हृदय कम्पिल * गहन बनक लागि गमन करिल
देख नेदेख वेगे हरिण पलाय * दारुण राक्षसी माया करन्तेहि याय ३०८९
तेति क्षणे देखि येति क्षणे देइ लुकि * जुइ आङनीर मते दिवय भुमुकि
आधा मुण्डो येन निशाचर माया धरे * दण्ड डुइर पथे गाण्डि देखाव न करे ३०९०
खण्ड खण्ड मेघ येन चन्द्रक ढाकिल * खनो खनो देखि खनो लुकाया थाकिल
श्रान्त भैल राम वार राक्षसक चाइ * बृक्षर गोरत लुकाइलन्त छाया पाइ ९१

आया है ।। ८४ ।। रामचन्द्र ने कहा—यदि मारीच राक्षस ही आया है तब तो आज ऋषियों का कोप मिटाने का अवसर आया है। आज मैं दंडक बन का कटक मिटाकर ही रहूँगा और सीता को स्वर्ण की खाल ला दूंगा। इसके समस्त शरीर में राजयोग्य रत्न देख रहा हूँ। मै अवश्य ही इसके लिए प्रयत्न करूंगा। एक तारों वाला मृग तो स्वर्ग में है उसी के सदृश यह वन में नाच रहा है ।। ८६ ।। हमारे यहाँ जितने रत्नादि थे उनसे भी अधिक तो इस मृग के शरीर पर देख रहा हूँ। मैं अभी मृग मारने जा रहा हूँ। तुम सावधान रहकर जानकी को देखना ।। ८७ ।। यह कहकर रामचन्द्र मृग मारने की इच्छा से प्रस्तुत होकर उसी क्षण चल पड़े। धनुष-वाण से सज्जित हो वे आश्रम से निकले, लक्ष्मण जानकी की रखवाली करते रहे ।। ८८ ।। कर्म द्वारा बुद्धि बाधित होती है। बुद्धि द्वारा कर्म बाधित नहीं होता। रामचन्द्र की सुबुद्धि भी स्वर्ण-मृग के पीछे-पीछे चली गयी। राम को देखकर उस मृग-रूपी मारीच का हृदय काँप उठा। वह गहन वन में चला गया। अत्यन्त वेग से मृग भागा जाता था। वह जहाँ जाता था वही राक्षसी माया फैलाता जाता था ।। ३०८९ ।। वह जब झाँकने लगता था तभी दिखाई देता था। अग्नि की शिखा की भाँति उसकी झलक दीख जाती थी। भुतही आग की भाँति निशाचर मारीच माया धारण करता था। दो दंड के मार्ग पर उसका शरीर दिखाई नहीं देता था ।। ३०९० ।। बादलों के खंडों ने मानो चन्द्रमा को ढँक लिया। क्षण-क्षण दिखाई देता था, क्षण में छिप जाता था। उस राक्षस को देखकर रामचन्द्र बड़े थक गये। वे छाया पाकर वृक्ष के तले छिप गये ।। ३०९१ ।। रामचन्द्र जब इस प्रकार विश्राम कर रहे थे, तब वह वृक्षों के बीच माया धरकर चरने लगता था। रामचन्द्र ने जब जान लिया कि दूर मारीच चर रहा है, तब उन्होंने कान तक प्रत्यंचा खीच उसे वाण मारा ।। ९२ ।। राघव का वाण जैसे ही मारीच के हृदय में लगा, उसी क्षण उसके

रामो थाकिलन्त येवे श्रम परिहरि * मृद्‌गण माजे पशि चरँ माया धरि
दूरत मारीच चरे हेनय जानिल * आकर्ण पूरिया ताक शर प्रहारिल ९२
हियात परिल येवे राघवर बाण * तेतिक्षणे मारीचर छारि गैल प्राण
रावणर हित पक्ष मरन्ते बुलिल * लक्ष्मणक सम्बुधिया आटासेक दिल ९३
हा हा लखाइ मोर सुभाषित भाइ * झाण्टे लाग तव मोर प्राण खानि याय
आटास शुनिया हिया ऋषिर लरिल * पर्ब्बत आकार हुया राक्षस परिल ९४
शुनिलन्त सीताये रामर थाने राव * स्वामीर मरण शुनि काम्पे हात पाव
तरल तयन करि चतुर्भित चान्त * लक्ष्मणक सम्बोधिया शीघ्रे बुलिलन्त ९५
शुनिला लखाइ तुमि राघवर बाणी * कमन बिधिये मृग मिलाइलेक आनि
हा हा प्रभु किनो मइ अकार्य करिलो * दण्डुका बनत आनि स्वामीक मारिलो ९६
झाण्ट करि चला लखाइ शुना मोर बाक * सत्वरे रामर गैया प्राण खानि राख
तुमि सखा भैले न याइबन्त यमपुर * झाण्टे चल राखा मोर शिखर सिन्दूर ९७
भ्रातृत भकत तुमि लक्ष्मण कुमार * रामक मारय हेरा घोर निशाचर
आपद कालत सबे हिताहित जानि * स्वामी भिक्षा मागो बापु मोक दिया आनि ९८
भये चमकिला येवे जनकर जीउ * हात योरे लक्ष्मण आगत भैला थिउ
भय परिहरि देवी करियोक रङ्ग * इटो रबि तलत रामर नाइ भङ्ग ९९
समर करन्त येवे देवासुर नरे * सबाको राघवे जिनिलन्त एकेश्वरे
परम दुर्ज्जय राम त्रिभुवने बीर * भय परिहरि दृढ़ करियो शरीर ३१००
यिबा राव शुनि देवी पठोवा आमाक * कदाचितो नुहिबे रामर हेन बाक
स्त्री जाति कारणे तोमार हेन भय * मृग मारि आसिवन्त नाहिके संशय ३१०१

प्राण निकल गये। मरते-मरते भी, रावण के पक्ष मे हित हो ऐसा वचन वह बोला और लक्ष्मण को सम्बोधित करते हुए जोर से चीख पड़ा ।। ९३ ।। हाय, हाय, मेरे सुन्दर वचन कहने वाले भाई लक्ष्मण, मेरे प्राण निकल रहे है; शीघ्र मेरे पास आ जाओ। उसकी चीख सुनकर वन के ऋषियों के हृदय काँप उठे। राक्षस मारीच पर्वत जैसा बनकर गिर पड़ा ।। ९४ ।। सीता ने जब राम के स्थान से पुकार सुनी, तब पति की मृत्यु की आशंका से उनके हाथ-पैर काँपने लगे। सजलनयन होकर वह चारों ओर देखने लगी। उन्होंने तत्क्षण लक्ष्मण को संबोधित कर कहा—।। ९५ ।। लक्ष्मण, तुमने रामचन्द्र के वचन सुने है न ? न जाने किस विधि ने यह मृग यहाँ ला दिया था। हाय, हाय, प्रभु, मैंने कैसा अनुचित कार्य किया। दडक वन मे लाकर स्वामी को मरवा डाला ।। ९६ ।। लक्ष्मण, मेरा वचन मानकर तुम शीघ्र ही जाकर राम के प्राण बचाओ। तुम यदि उनके साथ हो जाओ तो वे यमलोक नहीं जायेंगे, तुम शीघ्र चलकर मेरी माँग के सिन्दूर को बचा लो ।। ९७ ।। कुमार लक्ष्मण, तुम भाई के भक्त हो। राम को अब निशाचर मार रहा है। संकट काल में सभी हित-अहित को समझकर हे वत्स, मैं तुमसे पति की भिक्षा माँगती हूँ। तुम मुझे उन्हें ला दो ।। ९८ ।। जब जानकी भय से अधीर हो पड़ी, तब लक्ष्मण हाथ जोड़ उनके पास खड़े हो गये। बोले— देवी, भय छोड़कर मन मे प्रसन्न होइये। इस सूर्य के नीचे राम किसी से पराजित नही हो सकते ।। ३०९९ ।। देव, असुर, नर यदि एक साथ उनसे युद्ध करें तब भी वे अकेले उन सबको जीत सकते है। राम परम दुर्जय, त्रिभुवन में वीर है, आप भय छोड़कर अपने शरीर को दृढ़ कीजिये ।। ३१०० ।। हे देवी, आप जिस पुकार को सुनकर मुझे भेजना चाहती हैं, रामचन्द्र की पुकार कभी वैसी नही हो सकती। नारी जाति होने के कारण ही आपको ऐसा भय हो रहा

हेन शुनि सीता देवी कोपमन भैला * निष्ठुर बचने ताङ्क बुलिबाक लैला
हाओरे पापिष्ठ दुराचार दुरचित्त * आजिसे जानिलो राघवर येन हित २
रामर मरणे तोर आति बर सुख * गाव गुटि बाघ तोर हरिणर मुख
मुखत अमृत तोर चित्त विषघट * कार्य्य पाया आवे हेर पातिलि कपट ३
मोक भाण्डि बोलस रामर नुहि राव * आजिसि आछोहों मइ राघवर ठाव
हाओरे चण्डाल भरतर मारि खाइलि * चाटु बाकु करिया रामर लगे आइलि ४
सतिनीर पुत्र कदाचित नोहे चित * न जानिया रामे तोक चपाइले सञ्चित
लखि लोहो पापिष्ठ तोहोर येन आश * रामर मरणे मोक भजिबाक चास ५
स्वामी अविहने अगणित जास दिबो * गलत कटारि हानि तेखने मरिब
चरणे नुचुबो पर पुरुषक आन * कि कारणे पापिष्ठ करस अपमान ६
आपुनि इतर हुआ बाञ्छा करो मोक * राम मत्त गज आगे मृग देखो तोक
हेन बुलि सीता हृदयत मुष्ठि हानि * केश आजुरिया रबे कान्दन्त गोसानी ७
सीतार दुर्बार बाक्य शुनिया लक्ष्मणे * भूमि काण परशि बुलिला तेतिक्षणे
तुमि मोर देवी रामचन्द्र आदि देव * दुइ हान चरण छारि आन नाहि केव ८
हेनय स्वभाव निदारुण स्त्री जाति * भाइ भाइ बेल गावे माजे दिया काटि
अयुगत बोल मोक बुलिलाहा किक * क्षिप्रबादी दारुणी तोमाक आछो धिक ९
चन्द्र सूर्य्य बायु वसुमती हुइबा साखी * सीता परिहरि चलो आपोनाक राखि
बासनाये बुलिलन्त बियाकुल मने * केने ऐकेश्वरे थित हुइबा घोर बने ३११०

है। रामचन्द्र मृग मारकर लौट आवेंगे, इसमें कोई संदेह नहीं ।। ३१०१ ।। यह सुनकर देवी सीता के मन में बड़ा क्रोध हुआ। निष्ठुर वचन से वे लक्ष्मण से बोलने लगीं—हाय रे पापी, दुराचारी, दुष्ट चित्तवाला, आज ही समझ गयी कि राघव का कैसा हितू है ।। २ ।। राम के मरण से तुझे बड़ा आनन्द है; तेरा मुख हरिण जैसा (कोमल, विनम्र, भोलाभाला) पर शरीर बाघ जैसा (हिंसक) है। तेरे मुख पर अमृत है परन्तु अंतर विष भरे घड़े के समान है। अवसर पाकर तू कपट जाल फैलाये हुए है ।। ३ ।। मुझे यह कहकर प्रवंचित करना चाहता है कि यह राघव की पुकार नहीं है। क्या मैं राघव के संग आज से रह रही हूँ? अरे चांडाल, तूने भरत की रिश्वत खायी है। चाटुकारिता कर राघव के सग आ गया है ।। ४ ।। तू सौत का बेटा है, कदापि विश्वसनीय नहीं है। तुझे न जानकर राम ने अपने पास रखा है। पापी, तेरे मन में जो आशा है, मैं सब कुछ देख चुकी हूँ। राम के मर जाने पर तू मुझे पा लेना चाहता है ।। ५ ।। स्वामी के न रहने पर मै आग में कूद पड़ूँगी, गले में पूरी कटार घोंपकर उसी क्षण मर जाऊँगी परन्तु अन्य किसी परपुरुष को मैं पैर से भी नहीं छूऊँगी। पापी, भला तू किस कारण मेरा अपमान कर रहा है? ।। ६ ।। स्वयं नीच होकर भी मुझे पाना चाहता है, मैं तो राम रूपी मतवाले गज के सम्मुख तुझे मृग जैसा क्षुद्र समझती हूँ। यह कहकर देवी सीता छाती पर घूँसा मारकर, बाल नोच-नोचकर जोर-जोर से रोने लगी ।। ७ ।। सीता के दुर्वार वाक्य सुन, लक्ष्मण भूमि और कान छूकर कहने लगे—तुम मेरी देवी हो, रामचन्द्र आदिदेव हैं। इन दोनों चरणों से भिन्न मेरा और कोई नही है ।। ८ ।। निर्मम स्त्री जाति का ऐसा ही स्वभाव है, वह वीच से काटकर भाई-भाई को पृथक-पृथक कर देती है। तुम मुझसे इस प्रकार अनुचित वचन क्यों कह रही हो? शीघ्रता से बोलने वाली, दारुणी, तुम्हे धिक्कार है ।। ३१०९ ।। चन्द्रमा, सूर्य, वायु, वसुधा तुम साक्षी रहना, तुम्हें ही रक्षक बनाकर मैं देवी सीता को छोड़े जा रहा हूँ। हे देवी, व्याकुल मन

विमङ्गलो देखोहो अनेक बिपरीत * कत भाग्ये पाइला तुमि रामर सन्नित
आपुनि जानाहा एथा राक्षस आशेष * याइवो कि न याइवो झाण्टे करियो आदेश ११
सीताये बोलन्त झाण्टे चल लखाइ वीर * राम राव शुनि मोर न सहे शरीर
स्वामी अविहनत गरल बिष खाइवो * नुहि गदावरी जले प्राणक सुजाइब १२
लक्ष्मणे सीताक गैया प्रदक्षिण करि * चरणे प्रणामि हाते धनुर्व्वाण धरि
रामर पाशक लागि चलिला बिमने * सीतार लिखित ताक वाधिब केमने १३
राघवर पाशक लक्ष्मण येवे यान्त * सीतार स्नेहत पुनु उलटिया चान्त
लक्ष्मण गैलन्त येवे राघवर भिता * घोर अरण्यत एकेश्वरी भैला सीता १४
श्रीराम लक्ष्मण येवे नाहिकन्त पाशे * कान्दन्ते आछन्त स्वामी मरण तरासे
धूलि धूसरित आति चान्त चारि दिशा * चन्द्र अविहने येन अन्धकार निशा १५
लक्ष्मण गैलन्त जानकीक दिया पिठि * वरंशीया रावणर पुडनते से दृष्टि
वसिया आछन्त सीता सुनिर्म्मल देशे * सन्नित चापिल गैया भिक्षुकर वेशे ३११६
मेराइलेक गावत कपिन एक वस्त्र * पा मौत चरिल सिटो कान्धे एक छत्र
काखे जुलि कन्था कमण्डलु धरि हाते * माथात रुद्राक्षमाला तपस्वी साक्षाते १७
श्रीराम लक्ष्मण दुइ चन्द्र सूर्य्य भैला * सीता सन्ध्या एरिया वहुत दूर गैला
अन्धकार रावण चापिल गैया कोल * सीतार रूपक देखि हुया गैल भोल १८
मदने दगध देह शरीर न सहे * सीताक पाइलेक येन शनैश्चर ग्रहे
सीताक देखिया चक्षु न भाषय आर * मने मने गुणे कन्या जगतर सार १९

से तुम मुझसे इस प्रकार दुर्वचन कह रही हो, परन्तु इस घोर वन में तुम भला अकेली कैसे रहोगी ? ।। ३११० ।। मैं अनेक विपरीत अशुभ बातें देख रहा हूँ । कितने भाग्य से तुम्हें राम का संग मिला है, तुम स्वयं जानती हो यहाँ अनेक राक्षस रहते हैं । मैं जाऊँ या न जाऊँ शीघ्र आदेश दो ।। ३१११ ।। सीता बोली, वीर लक्ष्मण, तुम शीघ्र ही जाओ । राम की पुकार मेरे शरीर से सहन नहीं हो रही । पति के न रहने पर मैं विष खा लूँगी, या तो गोदावरी के जल मे प्राण तज दूँगी ।। १२ ।। तब लक्ष्मण ने सीता की प्रदक्षिणा कर, चरणों में प्रणाम किया और धनुष-बाण लेकर अनमने भाव से राम के पास चले । सीता के भाग्य में जो लिखा था उसे वे कैसे रोक सकते थे ।। १३ ।। लक्ष्मण रामचन्द्र के समीप जाते हुए स्नेह के कारण सीता को बार-बार मुड-मुड़ कर देख रहे थे । लक्ष्मण जब रामचन्द्र के पास चले, तब उस घोर अरण्य में सीता अकेली रह गयी ।। १४ ।। श्रीराम-लक्ष्मण कोई भी उनके पास नहीं थे, वे स्वामी की मृत्यु की आशंका से रोने लगीं । धूलि-धूसरित हो वे चारों दिशाओं में देख रही थी, मानो बिना चन्द्रमा के अंधकार रात हो ।। ३११५ ।। लक्ष्मण जानकी को छोड़कर चले गये । बंसी से मछली पकड़ने वाले की दृष्टि जैसे बंसी की लकडी पर लगी रहती है, उसी प्रकार रावण की भी दृष्टि सीता पर लगी थी । उसने देखा, सीता पवित्र स्थान पर बैठी हुई है । वह भिक्षुक का वेश धारण कर उनके समीप पहुँचा ।। ३११६ ।। उसने अपने शरीर में एक कौपीन वस्त्र लपेट लिया । पैरों में उसने पनही पहन ली और कन्धे पर एक छतरी ले ली । काँख में कथरी दबाये, हाथ में कमंडल लिये, गले में रुद्राक्ष माला डाले वह साक्षात् तपस्वी बन गया ।। १७ ।। श्रीराम और लक्ष्मण दोनों चन्द्र-सूर्य सीता-रूपी संध्या को छोड़कर बहुत दूर चले गये । अंधकार-रूपी रावण उसके समीप आ गया । सीता का रूप देख वह विभोर हो उठा ।। १८ ।। काम से उसकी देह ऐसे जलने लगी जिसे शरीर सहन नहीं कर पाता था । सीता पर मानो शनिश्चर की दृष्टि पड़ गयी । सीता

रावणक डरे पक्षी न काढ़य राव * मारिबाक डरे धीरे धीरे बहे बाव
सूर्य्ये एरिलन्त निज प्रचण्ड प्रभाव * अनुकल हुया योगावन्त तार गाव ३१२०
दुर्व्वार राक्षसे भिक्षु बेशक धरिल * कतोहो दूरत थाकि आशंसा करिल
बेदध्वनि उच्चरिल दीर्घ करि रावे * सीताक बुलिबे लैल विनय स्वभावे २१
काहार रमणी तइ कहियोक काज * कि कारणे आसि भैला घोर बन माज
शरीरर कान्ति देखिबाक अनुपाम * कैर हन्ते आसिला तोमार किवा नाम २२
तोहोर बदन पूर्ण चन्द्रर उदय * चामरक जिनिया प्रकाशै केश चय
भ्रुव युग ज्वलै येन चाप मदनर * मनोहर कटाक्ष कामर पञ्चशर २३
कुण्डल लरय देखि मिलिल तरास * तोर मुख देखि राहु गैल शशीपाश
युवत मोहन किनो अधरर कान्ति * सुपक्व दाड़िम बीज दशनर पान्ति २४
बदन ऊपरे दुइ नयन ज्वलय * खञ्जन युगल येन कमने चरय
ललित बलित निरन्तर स्तन भार * उपरत परि ज्वलै गजमति हार २५
गगनत येन चन्द्र रेखा द्वितीयार * आतिशय रञ्जय, गञ्जय यत तार
रातुल कमल येन पदतल तोर * बलित आङ्गुलि येन चम्पकर कोर २६
त्रिबलित उदर कङ्काल आति सरु * साक्षाते देखिय येन हरर डमरू
सुबलित बाहु पीन नितम्ब जघन * रातुल चरण युगे मोहे मुनि गण २७
देखि तोर लीला गति आति बर लाजे * मत्त गज गुचि गैल सरोबर माजे
रत्न काञ्चि कङ्कण नूपुर रुण झुण * जले पशि थाकिल सकले हंस गण २८

को देखकर उसकी पलकें गिरती न थी। वह मन ही मन सोच रहा था, यह कन्या जगत का सार है ॥ ३११९ ॥ रावण के भय से पक्षियों ने भी बोलना वंद कर दिया, मारने के भय से पवन भी धीरे-धीरे बहता था। सूर्य अपना प्रचंड प्रभाव छोड़कर अनुकूल बन उसके शरीर को सुख देनेवाला बन गया ॥ ३१२० ॥ प्रचंड राक्षस ने भिक्षुक वेश धारणकर, कुछ दूर रह सीता की प्रशसा की। उच्च स्वर से उसने वेदध्वनि का उच्चारण किया और सीता से विनीत भाव से वचन कहने लगा—॥ २१ ॥ तुम किसकी पत्नी हो, किसलिए वन में आयी हुई हो? बताओ। तुम्हारे शरीर की कान्ति देखने मे अनुपम है। तुम कहाँ से आयी हो, तुम्हारा नाम क्या है?॥ २२ ॥ तुम्हारा बदन तो ऐसा है मानो पूर्ण चन्द्रमा उदित हो। तुम्हारे केश चँवर से भी अधिक उज्ज्वल व प्रकाशित हैं। तुम्हारी दोनों भौंहें ऐमे जलती हैं मानो कामदेव के धनुष हों। मनोहर कटाक्ष मानो काम के पंचवाण है ॥ २३ ॥ हिलते कुंडलों को देख त्रास होता है। तुम्हारा मुख देखकर राहु मानो चन्द्रमा के पास चला गया हो। अधरों की कान्ति यौवन में कितनी मोहक है? दाँतों की पंक्ति पके हुए दाड़िम के बीज हैं ॥ २४ ॥ मुखमंडल पर दो नयन ऐसे जल रहे है मानो खंजनों की जोड़ी चर रही है। स्तनों का भार ललित-बलित है, उनके ऊपर गज मोती का हार जगमगा रहा है ॥ २५ ॥ आकाश में मानो दूज के चन्द्रमा की रेखा और अधिक चमकीले तारे सुशोभित हों। लालकमल मानो तुम्हारे चरणकमल है। सुन्दर रेखांकित उँगलियाँ मानो चम्पा की कलियाँ हों ॥ २६ ॥ उदर त्रिवलि युक्त, कमर बहुत ही पतली मानो शिव का डमरू हो। बाहे सुगोल, नितम्ब और जाँघे मोटी है। लाल चरण मुनियों को भी मुग्ध करते हैं ॥ २७ ॥ तुम्हारी लीला-गति देख बहुत ही लज्जित हो, मतवाला गज भी सरोवर में चला गया। रत्नमय कांचि, कंकन, रुनझुन करते नूपुरों की ध्वनि से मानो सभी हंसगण जल में प्रवेश कर गये है ॥ २८ ॥ रवि के उदय से जैसे कमल प्रकाशित होता है, वैसे ही तुम्हारे

तोर रूपे अलङ्कार शोभे आतिशय * कमल प्रकाशे येन रबिर उदय
शङ्करर भार्य्या किबा तुमि महामाया * माधवर लक्ष्मी किवा आदित्यर छाया २९
वासवर भार्य्या किबा रम्भा अपेस्वरा * देव-गुरु भार्य्या किवा तुमि सती तारा
जगतर रूप गुण एकत्र करिल * अनेक प्रबन्धे लोक विधिये गढ़िल ३१३०
त्रैलोक्य जिनिते मदनर पञ्चबाण * वेश देखि कमन मुगुधे धरे प्राण
राज राजेश्वर पटेश्वरीक उचित * हेन तोर वनवास किनो विपरीत ३१
दण्डकार वन एथा राक्षस वहुत * कोथाहन्ते आसि भैला कहियो प्रस्तुत
हेन शुनि सीता बर विस्मयक पाइल * ऋषि वेश देखि ताक मात पुरुजाइल ३२
जनकर जीउ मइ नाम मोर सीता * दशरथ शशुर रामर विवाहिता
वापर आदेशे राम आसि भैला वन * तुलत आसिल मोर देवर लक्ष्मण ३३
वनवास दुखे आति तिनिरो निकार * पञ्चिचश वरिष आवे स्वामीर आमार
रूपे गुणे त्रिभुवने धनुर्द्धर सार * षोड़श वरिष आवे सम्पूर्ण आमार ३४
शुनियोक मुनिराज कौतूहल मने * निशाचर वल मारिलन्त एहि थाने
त्रिशिरा दूषण खर परम दुर्ज्जय * रामर हातत गैल यमर निलय ३५
चैध्यय सहस्र आसिलेक निशाचर * रामर हातत परि गैला यमघर
दुर्व्वार राक्षस रामे यत यत पाइल * राघवर वाणे सवे खेदि खेदि खाइल ३६
रावणे बोलय सीता तोर रूप सार * हेन रूपवती त्रिभुवने नाहि आर

रूप से अलंकार अत्यन्त शोभित हो रहे है। तुम क्या शंकर की पत्नी देवी महामाया हो या माधव की लक्ष्मी हो ? या आदित्य की छाया हो ? ।। ३१२९ ।। तुम इन्द्र-पत्नी शची हो या रंभा अप्सरा हो अथवा तुम देव गुरु वृहस्पति की पत्नी सती तारा हो ? विधाता ने मानो संसार के सभी रूप-गुण एकत्र कर अनेक प्रयत्न से तुम्हारा निर्माण किया है ।। ३१३० ।। मदन के पंचवाण की भाँति तुम्हारा रूप तीनो लोकों को जीत सकता है। इसे देखकर भला कौन मूढ़ प्राण धारण कर सकता है ? जिसे राज-राजेश्वर की पटरानी होना उचित है, भला उसे वनवास हो, यह कैसी विपरीत बात है ? ।। ३१३१ ।। इस दंडक वन में अनेक राक्षस रहते हैं वताओ तो तुम कहाँ से यहाँ आ गयी ? यह सुनकर सीता को वड़ा विस्मय हुआ। ऋषि के वेश मे उसे देखकर कहने लगी—।। ३२ ।। मैं जनक-नन्दिनी हूँ, मेरा नाम सीता है। दशरथ मेरे ससुर है, मैं राम की विवाहिता पत्नी हूं। पिता के आदेश से रामचन्द्र को वन में आना पडा है। उनके साथ मेरे देवर लक्ष्मण भी आये हैं ।। ३३ ।। हम तीनों को वनवास में अनेक कष्ट उठाने पड़ रहे है। अभी मेरे पति पचीस वर्ष के है। वे रूप-गुण में त्रिभुवन में सबसे श्रेष्ठ धनुर्द्धर है। मेरी आयु अब सोलह वर्ष पूरी हो रही है ।। ३४ ।। हे मुनिराज, यह सुनकर आपके मन में विस्मय होगा कि मेरे पतिदेव ने इसी स्थान में निशाचरों की सेना का वध कर डाला है। परम दुर्जय खर, दूषण, त्रिशिरा राम के हाथों यमलोक पहुँच चुके है ।। ३५ ।। यहाँ चौदह हजार निशाचर थे, सभी रामचन्द्र के हाथों यमलोक पहुँच चुके हैं। रामचन्द्र को जहाँ-जहाँ राक्षस मिले, उनके वाणों ने उन सभी का पीछा करते हुए समाप्त कर डाला है ।। ३६ ।। रावण बोला—सीता, तुम्हारा रूप सबसे श्रेष्ठ है। तुम्हारे जैसी रूपवती त्रिभुवन में कोई नहीं।

रावणर आत्म परिचय प्रदान; ताके शुनि सीतार कटूक्ति

बदन ज्वलय येन पूर्णिमार शशी * देखि युवा जन मरे काम शरे पशि ३७
सीताये बोलन्त शुनियोक तपोधन * मृग मारिबाक गैला श्रीराम लक्ष्मण
खानितेक ऋषिराज करियो विश्राम * एतिक्षणे आसिबन्त लक्ष्मण श्रीराम ३८
तुमि हेन ऋषिक देखिव कौतूहले * पूजिवन्त आसि यथायोग्य फले जले
दशस्कन्धे बोले शुना मोर वाक्य सीता * मइ लङ्केश्वर आसि भैलो तयुभिता ३९
देशते आछन्ते सबे काहिनी शुनिलो * साक्षाते देखिया बर कौतुक लभिलो
पातालर नागलोके मोके करे सेव * स्वर्ग गैया जिनिलो त्रिदश कोटि देव ३१४०
हरि शङ्करक आवे मोर नाहि शङ्का * सागर मध्यत मोर स्वर्णपुरी लङ्का
चौषट्टि कलाक जानो चैध्य शास्त्रनय * यतेक पञ्चिचश तत्त्व आमात आछय ४१
अरि बीरदमन रावण मत्त गज * मानुष रामक एरि सीता मोक भज
आन सब राजार यतेक पटेश्वरी * जिनि आनि दिबोहो तोमार चेड़ी करि ४२
इहात अधिक किनो करिबोहो तोक * इन्द्रर शचीयो आसि तोमाते खाटोक
दशदिक पालर नारीक सबे जिनि * ताको दिब आनि करि तोर सेवकिनी ४३
मन्दोदरी मोहोर प्रधान पटेश्वरी * सबे कन्या लैया तोते थाको सेवा करि
आजि हन्ते दूर हैब तोहोर दुर्गति * कोटि कोटि राक्षसर मइसे अधिपति ४४
मोहोर बदन सीता माथा तुलि चाहा * वनफल एरि त्रिभुवन फल खाहा
तिनिओ भुवन माजे यतेक सुन्दरी * स्वामीक मारिया सबे आनि आछो धरि ४५

रावण का अपना परिचय देना; उसे सुनकर सीता की कटूक्ति

तुम्हारा मुखमंडल पूर्णिमा-चन्द्र जैसा जल रहा है। उसे देख युवा-जन काम वाण से पीड़ित हो मरे जाते है ॥ ३७ ॥ सीता बोली—हे तपोधन, सुनिये, श्रीराम और लक्ष्मण मृग मारने गये है। ऋषिराज, आप क्षण भर विश्राम कीजिये। श्रीराम लक्ष्मण कुछ ही समय मे आ पहुँचेंगे ॥ ३८ ॥ आप जैसे ऋषि को देख उन्हें बड़ा कौतूहल होगा। वे यथा योग्य फल-जल आदि से आपका पूजन करेंगे। तब दशानन बोला—सीता, मेरे वचन सुनो। मैं लंकेश्वर तुम्हारे समीप आया हूँ ॥ ३९ ॥ अपने देश मे रहते ही मैने सारी कथा सुनी थी, आज सम्मुख देखकर मुझे बड़ा कौतुक हुआ है। पाताल के नागगण मेरी सेवा किया करते है, मैने स्वर्ग में जाकर तीस कोटि देवों को जीत लिया है ॥ ३१४० ॥ विष्णु और शंकर से मैं डरता नही हूँ। मेरी स्वर्णपुरी लंका सागर के मध्य में है। मै चौसठ कलाओं, चौदह नीति शास्त्रों का ज्ञाता हूँ। संसार में जो पचीस विभूतियाँ है वे सब मेरे पास हैं ॥ ३१४१ ॥ मैं रावण मतवाले गजराज की भाँति शत्रु-वीरों का दमन करने वाला हूँ। सीता, मनुष्य राम को तजकर मुझे भजो। अन्य राजाओं की जितनी पटरानियाँ है सबको जीत लाकर तुम्हारी दासियाँ बना दूंगा ॥ ४२ ॥ इससे अधिक तुम्हारे लिए क्या करूँगा? इन्द्र की शची भी आकर तुम्हारी सेवा करेगी। दस दिग्पालों को जीतकर उनकी सभी नारियों को तुम्हारी सेविकाएँ वना दूँगा ॥ ४३ ॥ मंदोदरी मेरी प्रधान पटरानी है। अन्य सभी कन्याओं को लेकर वह तुम्हारी सेवा करती रहेगी। आज से तुम्हारी सारी दुर्गति मिट जायेगी। मैं कोटि-कोटि राक्षसों का अधिपति हूँ ॥ ४४ ॥ सीता, सिर उठाकर मेरे चेहरे की ओर देखो, वन-फल को छोड़ त्रिभुवन-फल खाओ। तीनों भुवनों में जितनी सुन्दरियाँ है, उनके पतियों को मार, तुम्हारी सेवा में पकड़

तोक सेवा करि सवे थाकोक हरिषि * तारागण माजे तइ पूर्णिमार शशी
ब्रह्मार वरत कामदेव रूप धरो * तुमि आमि लङ्कात वसिया राज्य करो ४६
परिहर यानुहक मोत करो भाव * गाव चाल सीता झाण्टे याओ निजठाव
मदने दगध मोर न सहे अन्तर * त्रैलोक्यर नाथ रावणक स्वामी· वर ४७
रावणर बोल शुनि अन्तर्गते भय * राक्षस जानिया तान शरीर कम्पय
दारुण वचन शुनि सीता कुपिलन्त * निष्ठुर वचने ताक बुलिवे लैलन्त ४८
हाओरे रावण वर्व्वर निशाचर * अविलम्वे याइवाक चाहा यम घर
रामर घरणी मोक भजिवाक चास * मरिवाक लागि काल कूट विष खास ४९
त्रिशूलर उपरत नाचिवाक चास * महापापी हुया तइ स्वर्ग करआश
हुया जुइ अङ्गनी चन्द्रक धार देस * ज्वलन्त अग्निक वेटा वस्त्रे वान्धि नेस ३१५०
तीखाल खाण्डात जिह्वा घषिवाक चास * वह्नि कुण्ड माजे येन पतङ्गर झास
रामर भार्य्याक नीच राक्षसे वाञ्छस * सूचिर मुखत दिया नयन जाण्टस ५१
गले शिला वान्धितइ तर समुद्रक * क्षुद्र पक्षी हुया धार देह गरुड़क
वेङ्ग हुआ तेरञ्चर आगत मिलस * एनि साप हइया तइ पर्व्वत गिलस ५२
विराइल वाघिनी समे कर परिहास * पृथिवीर जन्तु आदित्यर धारे यास
सिंहर भार्य्याक शृगालर अभिलाष * शान्ती सीता मोक तइ भजिवाक चास ५३
सुखर भितरे तोर मति भैल मन्द * अविलम्वे राघवे छेदिवे दश स्कन्ध
गरुड़रे काकरे येहेन पटन्तर * शियाल सिंहर होवे येहेन अन्तर ५४

कर ला दूँगा ॥ ४५ ॥ तुम्हारी सेवा करते हुए सभी प्रसन्न रहेंगी। तारों में पूर्णिमा के चाँद जैसी शोभित रहोगी। ब्रह्मा के वर से मैं कामदेव रूप धारण कर लूँगा, हम तुम दोनों बैठकर लंका का राज्य करेंगे ॥ ४६ ॥ तुम मानव राम को छोड़, मुझमें मन लगाओ। सीता शीघ्र उठो, हम अपने स्थान को चले जायें। कामदग्ध मेरा अन्तर पीड़ा सह नही पा रहा है। त्रैलोक्यनाथ रावण को तुम स्वामी के रूप में वरण करो ॥ ४७ ॥ रावण के वचन सुनकर सीता के अन्तर में वड़ा भय हुआ। उसे राक्षस जानकर उनका शरीर कंपित होने लगा। रावण के दारुण वचन सुनकर सीता कुपित हो उठी और निष्ठुर वचन से उससे कहने लगी—॥ ४८ ॥ अरे वर्वर, निशाचर रावण ! तू शीघ्र ही यमलोक जाना चाहता है। राम की गृहिणी मुझे तू भोगना चाहता है ? मरने के लिए कालकूट विष खाना चाहता हैं ॥ ३१४९ ॥ तू त्रिशूल पर नाचना चाहता है ? महापापी होकर भी तू स्वर्ग की आशा रखता है ? तू अग्नि-स्फुलिंग मात्र होकर चन्द्रमा को उधार देना चाहता है ? जलते अग्नि को तू मूढ़ ! वस्त्र मे बांधना चाहता है ?॥ ३१५० ॥ तीखे खड्ग पर जीभ घिसना चाहता है ? वह्निकुंड में मानो पतंग की भाँति कूदना चाहता है। नीच राक्षस, तू राघव की पत्नी को पाने की अभिलाषा रखता है। सूई की नोक पर आँख रखकर दवाना चाहता है ॥ ३१५१ ॥ गले में पत्थर वाँधकर तू समुद्र को तैरना चाहता है ? क्षुद्र पक्षी होकर गरुड को चुनौती देना चाहता है ? मेंढक होकर नाग के सामने आना चाहता है ? छोटा-सा साँप होकर तू पर्वत को निगलना चाहता है ? ॥ ५२ ॥ विड़ाल होकर वाघिन से परिहास करना चाहता है। पृथ्वी का जानवर होकर सूर्य के समीप जाना चाहता है ? तू शृगाल होकर सिंह की भार्या की अभिलाषा करता है ? मैं सीता सती हूँ, तू मुझे भोगना चाहता है ? ॥ ५३ ॥ सुख में रहते-रहते तेरी मति भ्रष्ट हो गयी है। अविलम्ब रामचन्द्र तेरे दसों मस्तकों को काट डालेंगे। गरुड़ और कौवे की जैसी तुलना है, शृंगाल और सिंह में जैसा

गिरि नदी समुद्रे अन्तर होवे यत * राम देवे तेहोर देखय सेहिमत
राघवक एरि केने तोहोक भजिबो * गङ्गाक एरिया केने कूपत मजिबो ५५
गाधक भजिबो केने सिंहक एरिया * सुकुताक खाइबो केने अमृत तेजिया
आमार आगत की लघु बोल मात्ति * आमाक जानिबि पतिब्रता महाशान्ती ५६
स्वप्ने ज्ञाने मने राघवर दृढ़ काया * चरणे नुछुइबो पर पुरुषर छाया
घृत परिहरिया किहक घोल पिबो * रामर आपचु काचु तोर मुण्डे दिबो ५७
राघवर शरे तोर जिह्वा छिरिबेक * राक्षस सकले तोर किवा करिबेक
सीतार बचने तार क्रोध सम्पजिल * अगनित निया येन घृत दान दिल ५८
मोहोर वीरत्व सीता तइ न जानस * सिकारणे रामक मुनिष बखानस
नुहि धनुर्द्धर राम तेज बल हीन * न जानय शास्त्रनय धर्म्मतो विहीन ५९
एतेकेसे राम पितृ वाक्यत थाकिल * नीच जानि दशरथे देशर डाकिल
गुणवन्त भरतक दिला सबे राज * निर्गुण रामक पठाइलन्त बनमाज ३१६०
तोर स्वामी राम येवे मुनिष होवय * भायेकक मारि केने राज्य न लवय
क्षत्रि जाति हुआ बहे शिरे जटाभार * हेन देखि हास्य रव उठये आमार ६१
तोर स्वामी मानुष जीवेक कत दिन * अलप कालेते हार आयु हुइबे क्षीण
मृतक स्वामीर सीता गृह परिहर * लङ्कात पशिया युगे युगे राज्य कर ६२
ब्रह्मार बरत मोर अवध्य शरीर * स्वर्ग मर्त्य पातालतो मोक नाहि बीर
त्रिदशक जिनिलो आवर नाहि शङ्का * ज्येष्ठ भाइ कुबेरर काढ़ि लैलो लङ्का ३१६३

अंतर होता है— ।। ५४ ।। पर्वतीय नदी और समुद्र में जो अंतर है, प्रभु राम और तुझमें उसी प्रकार अन्तर है। रामचन्द्र को छोड़ मैं तुझे क्यो भजूँगी ? गंगा को छोड़ भला किसलिए मैं कुएँ में पड़ूँगी ? ।। ५५ ।। सिंह को छोड़कर भला मैं गधे को क्यों भजूँगी ? अमृत तजकर मैं घोंघा क्यों खाऊँगी ? मेरे सम्मुख तू कैसी नीच बोली बोलता है। मुझे समझ ले कि मै पतिव्रता और महासती हूँ ।। ३१५६ ।। स्वप्न में, ज्ञान में, मन में राघव का शरीर दृढ़ता से समाया हुआ है। मैं पर-पुरुष की छाया चरण से भी नही छूऊँगी। घी को छोड़कर मैं भला छाछ क्यों पीऊँगी ? रामचन्द्र की मैली फटी कंचुकी तेरे सिर पर फेक मारूँगी ।। ५७ ।। राघव के वाण तेरी जीभ को फाड़ डालेगे। राक्षसगण तेरे लिए क्या कर पायेगे ? सीता के वचनों से रावण का क्रोध वैसा ही भड़क उठा, मानो अग्नि में घी डाल दिया हो ।। ५८ ।। सीता, मेरी वीरता का तुझे पता नहीं है। इसी कारण तू राम को श्रेष्ठ बताकर वर्णन कर रही है। तेज, वल से हीन राम धनुर्द्धर भी नही है। वह शास्त्र, नीति भी नही जानता, धर्म से भी हीन है ।। ३१५९ ।। इसी कारण राम पिता के वचनों पर रह गया। उसे नीच जानकर ही दशरथ ने राज्य से निकाल दिया। सारा राज्य गुणवान् भरत को दे दिया और निर्गुण राम को वन मे भेज दिया ।। ३१६० ।। यदि तेरा पति श्रेष्ठ होता, तो भला भाई को मारकर राज्य क्यों नही छीन लेता ? क्षत्रिय कुल का होने पर भी सिर पर जटा-भार ढोया करता है, यह देख हमें बड़ी हँसी आ जाती है ।। ३१६१ ।। तेरा पति तो मनुष्य है, वह भला कितने दिनों तक जीवित रहेगा ? अल्पकाल में ही उसकी आयु क्षीण हो जायेगी। सीता, मृतक पति का गृह त्याग कर दो, और लंका में प्रविष्ट होकर युग-युग राज्य करो ।। ६२ ।। ब्रह्मा के वर से मेरा शरीर अवध्य है; स्वर्ग, मर्त्य, पाताल में भी मेरे समान कोई वीर नही है। मैंने तीसों देवों को जीत लिया है, अब मुझे कोई शंका नहीं है। वड़े भाई कुबेर से मैंने लंका छीन ली है ।। ६३ ।। और उनसे पुष्पक विमान,

आरो लैलो धन जन पुष्पक विमान * सव देश चलै सिटो महा दिव्य यान
कैलासक गैया लैल हरत शरण * सिकारणे कुबेरर न भैल मरण ३१६४
बासवक जिनि लैलो बीरत्व मोर शुन * यमक जिनिया आरो जिनिलो वरुण
सुरगण जिनिलो जिनिलो रुद्र गण * मोक सम वीर नाहि इ तिनि भुवन ६५
लङ्कात खाटन्त आसि सव देव लोक * ताक देखि सीता तोर कौतूहल होक
भुञ्जिबि मानुष हुया राक्षसर भोग * बनबास निकार तोहोर नुहि योग ६६
आपुनि आसिया तोत पशिलो शरण * नुहिबि सुन्दरी तइ निकारुण मन
एतिक्षण मोक येवे स्वामी न वरिबि * पाच काले सीता मोक सुमरि मरिबि ६७
पृथिवीर राजा सब युजि बश्य कैलो * महादेवे सहिते कैलास तुलि लैलो
जगतते सार यत आमाकेहे योग * लङ्कात पशिया सीता करियोक भोग ६८
त्रिभुवन नृपति तोहोर भैल दास * अनुगत जन परिहरि बाक चास
मोहोर बचन येवे नैराश करिव * सुखे दुखे तोक आजि अवश्य हरिव ६९
रावणर बोल शुनि उरि गैल जीव * कोपे भये बुलिलन्त जनकर जीउ
मोहोक हरिया येवे पातालक यास * तहितो राघवे तोर चिन्तिव विनाश ३१७०
हाड़ी जाति हुया पढ़िबाक चास वेद * अविलम्बे राघवे करिव स्कन्ध छेद
हरर घरिणी हरि जीवाक आसस * इन्द्रर शचीक हरि मरणक लख ७१
हरि बाक पारस चन्द्रर रोहिणीक * सत्यवन्त भार्य्या निबे पार सावित्रीक
बशिष्ठर अरुन्धती पार हरिबाक * तथापितो नोवारिबि रामर सीताक ७२

धन-जन छीन लिये। वह दिव्य-यान पुष्पक विमान सभी देशों में चला करता है। कैलास पर्वत पर जाकर शिव की शरण लेने के कारण ही कुबेर की मृत्यु नही हुई ।। ६४ ।। मेरी वीरता के सम्बन्ध में सुन ! मैंने इन्द्र को जीत लिया है, यमराज और वरुण को भी जीत चुका हूं। देवो को मैंने जीत लिया है, रुद्रगणों को जीता है। मेरे समान वीर इस त्रिभुवन मे कोई नही है ।। ६५ ।। सभी देवता लंका में आकर मेरी सेवा किया करते है। सीता, चलो, उन्हें देखकर तुम्हे कौतूहल होगा। मानवी होकर भी तुम राक्षसो का भोग भोगो, वनवास का दुःख झेलना तुम्हारे लिए उचित नहीं ।। ६६ ।। मै स्वयं तुम्हारी शरण ले रहा हूँ, हे सुन्दरी, तुम मन में निर्मम मत बनो। यदि अभी मुझे पति रूप में वरण नही करती तो सीता, इसके पश्चात् मेरा स्मरण कर मरती रहोगी ।। ६७ ।। मैंने पृथ्वी के सभी राजाओ को युद्ध में पराजित कर वशीभूत कर लिया है। महादेव सहित कैलास को उठा लिया है। संसार मे जितने सार-तत्व है, सब केवल हमारे ही अधिकार मे है। सीता, लंका में प्रवेश कर तुम उनका भोग करो ।। ६८ ।। त्रिभुवन का राजा मै तुम्हारा दास बन गया हूँ। तुम इस अनुगत जन को छोड़ना चाहती हो ? यदि मेरे वचनों को तुमने निराश किया तो समझो कि सुख हो या दुःख, तुम्हें अवश्य हर ले जाऊँगा ।। ३१६९ ।। रावण के वचन सुनकर सीता के मानो प्राण उड़ गये। क्रोध और भय से जानकी बोलने लगी। यदि मुझे हरकर तू पाताल में भी जायेगा, तो भी राघव अवश्य तेरा विनाश कर डालेंगे ।। ३१७० ।। अधम जाति का होकर वेद पढ़ना चाहता है ? अविम्लब राघव तेरा मस्तक काट डालेंगे। शंकर की गृहिणी पार्वती को हर कर तू जीवित रहना चाहता है ? इन्द्र की शची को हर कर तुझे मरण ही प्राप्त होगा ।। ३१७१ ।। तू चन्द्रमा की रोहिणी को हरण कर सकता है, सत्यवान की पत्नी सावित्री को ले जा सकता है, वशिष्ठ की अरुंधती का हरण कर सकता है, तथापि तू राम की सीता को नहीं ले जा सकता ।। ७२ ।। मै लंका के लिए अग्नि-कुंड हूं। मुझे ले जाने पर

लङ्कार अगनिकुण्ड मोक येन्ने निवि * रामर हातत मूढ़ अवश्य मरिवि
मुनिषर वेटा होस क्षणिक बिथान * प्रभुर हातत सह एक गोटा वाण ७३
कि तइ सहिबि श्रीरामर बाण टान * लक्ष्मणर शर चोटे तेजिबि पराण
स्त्रीर आगत मुनिषाइ बखानस * मोहोर प्रभुर तइ कथा न जानस ७४
अपकार करिलि यतेक देवासुर * राघवर हातत सकले हुइब चूर
कुपित रावण वाक्य शुनिया सीतार * ऋषिवेश एरि रूप भैल आपोनार ७५
कुरि काण दशनाक कुरिखान हात * डाङर कपाले चित्र दश गोटा माथ
दश मुख माजे कुरि नयन वलय * येन कुरि कुण्डा बहिन पर्व्वते ज्वलय ७६
काल वर्ण देहा येन अञ्जन पर्व्वत * भयङ्कर वेशे थिय भैगैल आगत
कर करि चोबावय कुरि पारि दान्त * एके बेले टाने येन कुड़िखान जान्त ७७
क्रोधिया रावणे बोले खरतर वाक * हरिबो पापिष्ठी त्रिभुवने नाहि राख
हा ओरे पापिष्ठी मोक हेनय सिद्धान्त * चवरर चोटे तोर सारि एरो दान्त ७८
मोक न जानस तइ रावण विशाल * अगनिरो अगनि यमर यम काल
रामक बखान मोर आगत मुनिष * सहस्रेक रामे मोक करिबेक किस ७९
शुनियोक सभासद रामर चरित * आत परे नाहि धर्म्म दुर्घोर कलित
राम हेन नाम इटो संसारते सार * बोला राम राम पोरा पापर भाण्डार ३१८०

मूढ़, राम के हाथों तेरी अवश्य मृत्यु हो जायेगी। यदि तू सद्वंश में जन्मा है तो क्षणभर ठहर जा। प्रभु के हाथ का एक वाण तो सह ले ॥ ७३ ॥ तू भला श्रीरामचन्द्र का वाण क्या सह सकेगा? लक्ष्मण के ही वाण की चोट से तेरे प्राण निकल जायेंगे। नारी के सम्मुख तू अपनी श्रेष्ठता का बखान कर रहा है, मेरे प्रभु की बात तो तू नहीं जानता ॥ ७४ ॥ तूने सभी देवासुरों का अपकार किया है। रामचन्द्र के हाथ से तेरा सारा अहंकार चूर-चूर हो जायेगा। सीता के वचन सुनकर रावण कुपित हो उठा। उसने ऋषि वेश छोड़कर अपना रूप धारण कर लिया ॥ ७५ ॥ बीस कान, दस नाक, बीस हाथ, दस सिरो के बडे कपालों पर चित्रित थे। दसों मुख-मंडलों पर बीस नयन ऐसे चमक रहे थे मानो पर्वत पर बीस अग्नि-कुंड जल रहे हों ॥ ७६ ॥ काले वर्ण का शरीर मानो अंजन-पर्वत हो, भयंकर वेश धारण कर वह सम्मुख खड़ा हो गया। दाँतों की बीस पंक्तियाँ कड़कड़ाता पीस रहा था मानो एक ही बार में बीस चक्कियाँ चला रहा हो ॥ ७७ ॥ रावण क्रोधित होकर तीव्र वचन बोलने लगा—पापिनी, तुझे अवश्य हर लूंगा। त्रिभुवन मे कोई रख नहीं पायेगा। रे पापिनी, मुझे तू इस प्रकार तिरस्कार करती है? थप्पड़ मारकर मैं तेरे सभी दाँत तोड़ डालूंगा ॥ ७८ ॥ मैं महान रावण हूँ, तू नही जानती? मैं अग्नि का भी अग्नि, यम का काल यम हूँ। मनुष्य राम की श्रेष्ठता बखान तू मेरे सम्मुख करती है? सहस्रों राम भी मेरा क्या कर सकते है? ॥ ३१७९ ॥ हे सभासदो! राम का चरित्र सुनो। भीषण कलिकाल में इससे वढ़कर कोई धर्म नही है। राम का नाम इस संसार में सार है। राम-राम वोलो, जिससे पाप का भंडार जल जाये ॥ ३१८० ॥

रावणर अहङ्कार

छवि

आकाशे थाकिया मइ धनुत जुरिवो शर स्वर्गपुर फुरिबोहो वले ।
पृथिवीक झङ्कारिया जलर तलक निवो पर्व्वतक तुलिवो सकले ॥
वायुर पथक भेदि सूर्य्यपथ निरोधिवो मुदिवोहो चन्द्रर पथक ।
पातालक विदारिवो नागर लोकक मारि शोषिवोहो सातो सागरक ॥ ३१८१
तुषिवोहो राक्षसथ तुषि वन्धु समस्तक वैर सव निदलिवो यत ।
ज्वलिवोहो अग्नि सम क्रोध सव साफलिया त्रैलोक्यक उच्छेदो समस्त ॥
यतेक देवता देखि सव मान सारिवोहो यमक जिनिवो घोर रणे ।
वासवक जिनि मइ अमरावतो विध्वंसिवो मोक युजिवेक कोन जने ॥ ८२
वरुणक युजे यिनि नागपाश काढ़ि लैवो अगनिक जिनिवो संग्रामे ।
कुवेर ददाक यिनि पुष्पक विमान निलो मोक कि करिवे तोर रामे ॥
स्वर्ग मर्त्य पातालत वीर आछे यत यत समस्त जिनिलो सबाक ।
लिनियो लोकर माजे यतेक सुन्दरी आछे हरि आनि आछोहो लङ्का ॥ ८३
शङ्करे सहिते मइ कैलासक तुलि लैलो सुरासुरे मोक करे सेव ।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर एइ तिनि व्यतिरेके मोक उपासय यत देव ॥
त्रैलोक्यर राजा यत सेवै मोर चरणत मइ राजा तिनोओ लोकर ।
तोक हरि लङ्का निवो स्वामी देवरक तोर मारि पेयो यमर नगर ॥ ८४
रामर चरित्र पद शुनियोक सभासद मरणक आगत ने देखा ।
तिले तिले टुटे आयु कैत परे प्राण वायु जीवनर जलर येन रेखा ॥
यत देखा वन्धुधन सवे मिछा अकारण मायाये करिले एक ठाइ ।
मरि याइवा एक तिले काल-अजगरे गिले राम नाम विने गति नाइ ॥ ८५

रावण का अहंकार

आकाश में रहकर मैं धनुष पर बाण चढ़ाऊँगा और बलपूर्वक स्वर्ग-पुरी में घूमूँगा। पृथ्वी को झकझोरकर जल के नीचे ले जाऊँगा, सभी पर्वतों को उखाड़ डालूँगा। पवन-मार्ग को भेदकर सूर्य का मार्ग रोक दूँगा, चन्द्रमा का मार्ग बंद कर दूँगा। पाताल को विदीर्ण कर डालूँगा, नागो को मारकर सातों सागरों को सोख लूँगा ॥ ३१८१ ॥ सभी शत्रुओं को विदलित कर सभी बन्धुओं समेत राक्षसों को सतुष्ट करूँगा। क्रोध में अग्नि की भाँति जलकर समस्त त्रैलोक्य को उच्छेद कर डालूँगा। जितने भी देवता है सबका मान-मर्दन करूँगा, यम को भी युद्ध में जीत लूँगा। इन्द्र को जीतकर मैं अमरावती का विध्वंस कर डालूँगा। मुझसे भला कौन व्यक्ति युद्ध कर सकता है ? ॥ ८२ ॥ युद्ध में वरुण को जीतकर नागपाश छीन लूँगा; अग्नि को भी संग्राम में जीत लूँगा। भाई कुवेर को जीतकर मैंने पुष्पक विमान छीन लिया है। तेरा राम भला मेरा क्या कर सकता है। स्वर्ग-मर्त्य पाताल में जितने भी वीर हैं, मैंने सबको सग्राम मे जीत लिया है। तीनों लोक में जितनी सुन्दरियाँ है, सबको हरण कर लंका मे रख दिया है ॥ ३१८३ ॥ शकर सहित मैंने कैलास को उठा लिया था। देव-असुर सभी मेरी सेवा करते हैं। ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर केवल इन तीनों देवों को छोड़ अन्य सभी देव मेरी उपासना करते हैं। त्रैलोक्य मे जितने राजा है, सब मेरे चरणों की सेवा करते हैं। मैं तीनों लोकों का राजा हूँ। तुझे

शास्त्रर बुजियो मज्जा नामेसे देवर राजा नामेसे करिबे परित्राण ।
कलित लभिबा गति नामत करियो रति नाहि आन नामर समान ॥
रामत करियो आश चरणत लैयो वास तेजा धार भास मुस काम ।
माधव कन्दलि कबि रामर चरित्र छबि रचिलन्त बोला राम राम ॥ ३१८६

रावणर सीताहरण आरु जटायुर लगत युद्ध

पद

क्रोधिया रावण गैया जानकीक पाइल * बाम हाते केशे धरि तुलि आल गाइल
अशेष यतने निया अङ्के बसाइलेक * राहु रोहिणीक येन चन्द्रे धरिलेक ३१८७
उरु दुइत हात दिया डेव करिलेक * आथ बेथ करि गैया रथक पाइलेक
आकाशर माजे शीघ्र करिल उरावे * दुर्घोर भयत सीता कान्दे दीर्घ रावे ८८
उत्रावल चित्त भैल शिहरिल गाव * हाकले बिकले कान्दे काम्पे हात पाव
हा हा प्रभु राम मोर तुमि निज पति * तोमार भार्य्याक हरे रावण दुर्मति ८९
दुष्टक दण्डिबे प्रभु भैला अवतार * मोहोक रावणे हरे करा प्रतिकार
हरि हरि लखाइ सत्वरे लह लाग * सिंहर महिषी हरे निशाचर छाग ९०

हरण कर मै लंका में ले जाऊँगा और तेरे स्वामी व देवर को मारकर यमलोक भेज दूँगा ॥ ८४ ॥ हे सभासदो ! राम के चरित्र संबंधी पद सुनो । क्या तुम मृत्यु को अपने सम्मुख नहीं देख रहे हो ? क्षण-क्षण में आयु घटती जा रही है, प्राण-वायु न जाने कहाँ निकल जाये, जीवन तो जल की रेखा जैसा है । ये बंधु-धन आदि जो दिखाई देते हैं, सभी अकारण, मिथ्या है । माया ने उन सबको एकत्र कर रखा है । तुम एक क्षण में मर जाओगे, कालरूपी अजगर लीलता जा रहा है, राम नाम के बगैर गति नहीं है ॥ ८५ ॥ शास्त्र का मर्म समझ लो, राम नाम ही देवो का राजा है; नाम ही संसार से परित्राण कर सकता है । कलिकाल में नाम से ही गति प्राप्त कर सकते हो, इसलिए नाम में ही मन लगाओ, नाम के समान और कोई नही है । राम में ही आशा रखो । उनके चरणों में शरण लो, बेकार कामों को छोड़ दो । कवि माधव कन्दली ने राम के चरित्र की छवि रचना की है । सभी राम-राम बोलो ॥ ३१८६ ॥

रावण द्वारा सीता-हरण और जटायु के साथ युद्ध

क्रोधित होकर रावण जानकी के पास चला गया । बायें हाथ से बाल पकड़कर उठा लिया । अशेष यत्न से लेकर गोद में बिठाया; मानो रोहिनी को चन्द्रमा में राहू ने पकड़ लिया हो ॥ ३१८७ ॥ दोनों जाँघों पर हाथ दे शीघ्रता से चरण बढ़ाते हुए रथ पर बैठाया । आकाश में उसने शीघ्र ही उड़ान भरी । अत्यधिक भय के मारे सीता जोर-जोर से रोने लगी ॥ ८८ ॥ चित्त उतावला हो उठा, शरीर सिहर उठा । फूट-फूटकर रोने लगी । हाथ-पैर काँपने लगे । हाय हाय, प्रभु राम मेरे तुम अपने पति हो । तुम्हारी पत्नी को दुर्मति रावण हर कर लिये जा रहा है ॥ ८९ ॥ हे प्रभु, तुमने दुष्ट के दमन हेतु अवतार लिया है । मुझे रावण हरण कर रहा है, तुम इसका प्रतिकार करो । हरि-हरि लक्ष्मण, तुम शीघ्र ही मुझसे मिलो । सिंह की रानी को निशाचर बकरा हरे लिये जा रहा है ॥ ३१९० ॥ हरि-हरि, विधाता

हरि हरि विधि किनो करिलि विपत्ति * हेन भैल सङ्गति हराइलो निज पति
टीकर सुस्वामी किय धरिवाहा जीव * रावणे हरिया नेइ जनकर जीउ ९१
कैकेयी शाशुरी मनोरथ सिद्धि भैल * दारुण शोकत शशुरर प्राण गैल
वन देवताक मइ करो नमस्कार * रामत कहिवा हेन विपत्ति आमार ९२
पर्ब्बतर ऊपरे जटायु रौद्रे गान्त * क्रन्दन शुनिया तेहो चतुर्द्दिशे चान्त
सीताक रावणे नेन्त तान लक्ष्य गैल * येन वज्रपात तान हृदयत भैल ९३
नया नया पापी बुलि दिला पखा चाट * शीघ्र वेगे भेण्टिलन्त मारुतर बाट
उरावते तल वलि पर्ब्बत लरिल * शाल ताल वृक्ष सव खसिया परिल ९४
पथ भेण्टिलन्त पक्षी जटायु प्रचण्ड * पखार वावत मेघ भैल खण्ड खण्ड
दीर्घ तुण्ड शकट शरीर नोहे छोट * पखा समे उरे येन महागिरि गोट ९५
आकाशत थाकिया वोलन्त पक्षीराज * क्रूर रावण तइ हेन से निलाज
एतमान राजा हुया अन्याय करस * धर्म्मपथ एरि परदाराक हरस ९६
दशरथ समे मोर एके कलेवर * प्राणे येवे जीवि मोर बधू परिहर
सीताक राखिया तोक समरे मारिवो * तोक रथे समे गिलि सीताक तारिवो ९७
मइ वृद्ध भैलो तोर युवत शरीर * तिनियो भुवने तोक लेखि महावीर
वज्र सम नख एभो वज्र सम तुण्ड * आजुरिया तोर छिण्डिवोहो दश मुण्ड ९८
मोर बधू हर तोर एत मान बुक * भैरार आगत आसि मिलिल जेनुक
कोन वस्तु होस मोक नह समसर * नाख ठोठ प्रहारे पेपिवो यमघर ९९

तूने यह कैसी विपत्ति डाल दी ? ऐसा सयोग मिला कि अपने पति को खो बैठी। हे मेरी माँग के स्वामी ! रावण जानकी को हर ले जा रहा है। तुम कैसे जीवन धारण करोगे ? ।। ९१ ।। दारुण शोक से ससुर के प्राण गये ही थे, आज सास कैकेयी का मनोरथ भी सिद्ध हो गया। वनदेवता ! तुम्हे मैं नमस्कार करती हूँ। जैसे मेरी विपत्ति का समाचार रामचन्द्र से बताना ।। ९२ ।। पर्वत के ऊपर जटायु धूप ले रहा था। क्रन्दन सुनकर वह चारों ओर देखने लगा। उसने देखा, सीता को रावण लिये जा रहा है। उसके हृदय पर मानो वज्रपात हुआ ।। ९३ ।। न जा, न जा पापी, कहते हुए उसने पंख फैला दिये और शीघ्र वेग से पवन का रास्ता रोक लिया। उसके उड़ने से तलवलाहट के साथ पर्वत हिल उठा। शाल-ताल आदि वृक्ष टूट-टूटकर गिरने लगे ।। ९४ ।। प्रचंड पक्षी जटायु ने राह रोक ली, उसके पंखों की वायु से मेघ खड-खड हो गये। लम्बी चोंच वाला मोटा-ताजा शरीर कोई छोटा नहीं था, लगता था कि कोई पंखवाला महान् पर्वत उड़ रहा है ।। ९५ ।। आकाश में रहकर ही पक्षीराज बोलने लगा—रे क्रूर रावण ! तू ऐसा निर्लज्ज है। इतना बड़ा राजा होकर भी अन्याय करता है। धर्ममार्ग छोड़कर पर-नारी का हरण कर रहा है ? ।। ९६ ।। दशरथ का और मेरा एक ही कलेवर समझ। यदि प्राण बचाना चाहता है तो मेरी बहू को छोड दे। सीता की रक्षा करते हुए मैं तुझे युद्ध में मार डालूँगा। रथ सहित तुझे लीलकर सीता का उद्धार करूँगा ।। ९७ ।। मैं वृद्ध हो गया हूँ, तेरा शरीर युवा है, तीनों भुवनों में तुझे महावीर मानता हूँ। परन्तु मेरे ये नाखून बज्र के समान है, चोंच भी वज्र जैसी है। मैं नोच-नोचकर तेरे दसों सिरों को पृथक-पृथक कर डालूँगा ।। ९८ ।। तेरा इतना साहस कि तू मेरी बहू का हरण करे ? मोर के सम्मुख आज घोंघा आ पहुँचा है। तू चाहे जो भी हो, कभी मेरे बराबर नहीं हो सकता। नाखून और चोचों के प्रहार से तुझे यमलोक भेज दूँगा ।।९९।। यदि तू प्राण बचाना चाहता है, तो सीता को इसी क्षण परित्याग कर। नही तो मूढ, आगे बढ़कर

प्राणे येवे जीबि सीता एर एतिक्षण * नुहिवा मुगुध आग वाढ़ि देह रण
त्रिदशर शत्रु तोक मारि मान सारो * रामर बैरक आजि विगुटि या मारो ३२००
हेन शुनि क्रोधे बोले रावण लटक * कि बुलिला चार मुवा लटक चटक
अबिलम्बे याइबि मन्द यमर करण * कि कारणे जोङ्कावस त्रैलोक्य रावण १
कोप करि फुरावय कुरि गोटा आखि * चन्द्र सूर्य्य बायु वसुमती हुइबा साखी
त्रिदशर राजा मइ रावण प्रचण्ड * शरे हानि मुगुध करिबो खण्ड खण्ड २
हेन बुलि धनुर्व्वाण तुलिया धरिल * येन पर्व्वतर मेघे जल बरिषिल
रावणर शरे गैया चौदिशे बेढ़िल * जटायुर पाखा बावे समस्ते उरिल ३
नाना अस्त्र नराच हानय कनियाली * अर्द्ध चन्द्र हानिया रावणे पारे गालि
कुन्त याठी शर यत आगत मिलिल * सापक गरुड़े येन जटायु गिलिल ४
मारो पक्षीराज आजि लैबोहो पराण * बज्रर सदृश हानि लेक दश बाण
ठास ठोस करि गैया गावत परिल * नाहि भ्रुव भङ्ग लोम गाछो न लरिल ५
ज्वलिला जटायु येन अगनि चटक * मारोहो रावण पेषो यमर कटक
डेव दिया तार गैया रथत चरिला * चरणर नखे क्षत विक्षत करिला ६
ठोठर प्रहारे पिठि करिलन्त घाव * आजुरि काटिला तार मांस एक नाव
केशत धरिया तार घण्टाक लारिला * दुइ पावे धरि तार धनुक भाङ्गिला ७
ठोठे आञ्जुरिया किरीटिक काटिलन्त * उपर देशक लागि क्षेपि पठाइलन्त
आकाशत सूर्य्य येन किरीटि ज्वलिल * जाज्वल्य समान हुया भूमित परिल ८

मुझसे युद्ध कर। तीसों देवों के शत्रु! तुझे मारकर तेरा घमंड चूर कर दूँगा। राम के शत्रु को आज यंत्रणा देकर मार डालूँगा? ॥ ३२०० ॥ यह सुनकर दुष्ट रावण क्रोध से बोला—अरे कुरूप मुँहवाला दुष्ट पक्षी तू क्या कह रहा है? अरे मंदमति! तुझे अविलम्ब यमलोक जाना पड़ेगा। तू त्रैलोक्य-विजयी रावण को क्यों भड़का रहा है? ॥ ३२०१ ॥ वह क्रोध के मारे बीसों आँखे फाड़कर देखने लगा। चन्द्र, सूर्य, पवन, धरती, साक्षी रहना। मैं तीसो देवों का राजा प्रचड रावण हूँ। अरे मूढ़, तुझे बाणों से मारकर खंड-खंड कर डालूँगा ॥ २ ॥ यह कहकर उसने धनुष-बाण उठा लिया और जिस प्रकार मेघ पर्वतों पर जल बरसाते है उसी प्रकार बाणों की वर्षा करने लगा। रावण के बाण चारों ओर छा गये। पर जटायु के पंखों की वायु से वे सब उड़ गये ॥ ३ ॥ नाराच, कन्यालि बाण, अर्धचन्द्र बाण आदि से आघात कर रावण गालियाँ देने लगा। कुन्त, बरछे, बाण जो भी सामने मिले. गरुड़ जिस प्रकार साँपों को लील लेते हैं उसी प्रकार जटायु उन अस्त्रों को व्यर्थ करता गया ॥ ४ ॥ पक्षीराज को आज मार डालूँगा—ऐसा सोचकर रावण ने वज्र सदृश दस बाण मारे। ठाँय-ठाँय कर वे बाण जाकर जटायु के शरीर पर पड़े। पर उसका बाल भी बाँका नही हुआ ॥ ५ ॥ अग्निशिखा की भाँति जटायु जल उठा। वह कहने लगा—रावण को मारकर आज यमलोक भेज दूँगा। कूदकर वह रावण के रथ पर चढ़ गया और पैरों के नाखूनों से उसे क्षत-विक्षत कर डाला ॥ ६ ॥ चोंच के प्रहार से पीठ पर घाव कर दिया। खरोंच कर उसका एक खंड मांस काट लिया। बाल पकड़कर उसके गले की घंटी को झकझोर दिया। दोनों पैरों से पकड़कर उसका धनुष तोड़ डाला ॥ ७ ॥ चोंच से नोचकर उसके किरीट काट डाले और उन्हें ऊपर के देशों में फेंक दिया। आकाश में सूर्य की भाँति किरीट चमक उठे, फिर बिजली की भाँति वे भूमि पर गिर पड़े ॥ ८ ॥ चार गधे उसके रथ को खींच रहे थे, जटायु ने लातों से प्रहार कर उन्हें मार डाला। गज के अंकुश की भाँति उसके नाखूनों और चोंच

चारिगोटा गद्दभे वहय रथ तार * मारिला जटायु दिया लाथिर प्रहार
गजर अङ्कुश सम नख ठोठ लागि * सारथिर तार माथा गोट गैल भागि ९
वज्र सम दुइ पाव माथात हानिल * मूर्च्छा गैया दशानने यमक देखिल
पक्षीराज रावणक विभत्स करिल * ब्रह्मार वरत दशस्कन्ध पुनर्जोल ३२१०
उराव करिला पक्षी मारुतर पथ * शीघ्र वेगे लाथि हानि भाङ्गिलन्त रथ
हेन देखि रावणर हृदय लरिल * सीताक कोलात करि भूमित परिल ११
येवे परि आछय रावण निशाचर * सम्वुधिया वुलिल जटायु पक्षीवर
शुनरे रावण मोर नोह सम सर * प्राणे येवे जीवि मोर वधू परिहर १२
मोक सम नोहस रामक कि करिवि * उत्सर्गर छाग येन अवश्ये मरिवि
रावणे वोलय मोक कत वोल आर * करिलाहा आपुनि सकले प्रतिकार १३
चिन्तिलाहा मित्रर येहेन योग्य काज * ठावक लागिया चलि याहा पक्षीराज
आरकाय खेद येवे आमाक करिवा * एतिक्षणे तुमि मोर हातत मरिबा १४
अवश्य सीताक मइ हरि निवो लङ्का * तुमि हेन लक्ष को मोहोर नाहि शङ्का
जटायु वोलन्त पुनर्व्वोल हेन थान * श्रान्त भैलो वर मोक क्षणिक विथान १५
जर जर बृद्ध देहा लागिल प्रयास * क्षणितेक थाक आजि जीवन्ते न यास
जटायुर श्रम जानि ताहार हरिष * आउर कियाचाओं वुलि करि विमरिष १६
कोले करि सीताक आकाशे वहियाय * पक्षीराज जटायु भूमित आछे चाइ
खेदि गैया तार पाचे पिठित चरिला * दुइ पाखा मेलि ताक सावटि धरिला १७
स्तन दुइर माजे नख आरोप करिला * आञ्चुरिया येन कला खोलक छिरिला

के आघातों से उसके सारथि का सिर टूट गया ॥ ९ ॥ वज्र की भाँति दोनों पैरों से रावण के सिर पर मारा। रावण मूर्च्छित होकर मानों यमराज को देखने लगा। पक्षीराज ने रावण की दुर्गति कर डाली, पर ब्रह्मा के वर से रावण पुनः जी उठा ॥ ३२१० ॥ जटायु ने पुनः वायु-मार्ग मे उड़ान भरी और शीघ्र वेग से लात मारकर रथ को तोड़ डाला। यह देखकर रावण का हृदय काँप उठा, सीता को गोद में लेकर वह भूमि पर गिर पडा ॥ ११ ॥ निशाचर रावण को भूमि पर गिरा देख पक्षीवर जटायु ने उसे संबोधित कर कहा— सुन रे रावण, तू मेरी वरावरी नही कर सकता, यदि प्राण वचाना चाहता है तो मेरी वहू को छोड़ दे ॥ १२ ॥ तू तो मेरे बरावर भी नहीं है, भला तू राम का क्या करेगा ? वलि के वकरे की भाँति तुझे अवश्य मरना होगा। रावण बोला— मुझसे तुम और क्या कह रहे हो ? तुमने तो स्वयं अपना सारा प्रतिकार कर लिया है ॥ १३ ॥ तुमने मित्र के योग्य कार्य करना चाहा है पर पक्षीराज अव अपने स्थान को चले जाओ। अव यदि मेरे कार्यो में वाधा दोगे तो अभी-अभी तुम्हें मेरे हाथों मरना होगा ॥ १४ ॥ मैं सीता को अवश्य ही हरकर लंका ले जाऊँगा। तुम जैसे लाखों की मैं शंका नही करता। जटायु बोला— तू इस स्थान में पुनः इस प्रकार कह रहा है। मै वहुत थक चुका हूँ, क्षण भर विश्राम कर लूँ। मेरी देह वृद्ध और जर्जर हो गयी है इसलिए प्रयास करना पड़ रहा है। क्षण भर ठहर जा, आज तू जीवित नही बच पायेगा। जटायु को थका जानकर रावण को हर्ष हुआ। उसने सोचा और क्या करूँ ? ॥ १६ ॥ गोद में ले वह आकाश मे उड़ गया, पक्षीराज जटायु भूमि पर से देखता रह गया। तत्पश्चात् उसका पीछा कर पीठ पर चढ गया, दोनो पंख फैलाकर उसे पकड़ लिया ॥ १७ ॥ दोनों स्तनों के बीच नाखून गड़ा दिये और खरोंचकर काली चमड़ी को फाड़ डाला। हाथी पर जैसे महावत बैठकर अंकुश द्वारा उसे आघात करता है, उसी प्रकार जटायु के

हातीर उपरे येन माहुत चरिल * नख अङ्कुशर घावे रावण टलिल १८
परम विह्वल हुया चतुर्द्दिशे चाय * पिठित जटायु येन मत्त गज प्राय
हिया मुण्ड गल पिठि सकल शरीर * नख ठोठ प्रहारे करिला छिराछिर १९
ठोठे धरि धरि तार केश आजुरिल * सोटा सोट भैल आलु समे उभारिल
माथात चारिया पाचे जान्तिलन्त पाव * भूमित परिल राजा विह्वल स्वभाव ३२२०
कतोहो दूरत निया जानकीक थैल * चवरे मुठिये पाचे युजिबाक लैल
कुरिगोटा मुठि हानिलेक एके वेले * गरुड़र पुत्र ताक सहिलन्त हेले ३२२१
चवरे मुठिये लाथि हानय अथाक * हानिलन्त जटायु पाखार चाट ताक
नखे ठोठे किल भुकु महा कुटाकुटि * प्रयासिला दुयो वीर बल गैल टुटि २२
भ्रुकुटा भ्रुकुटि लागि गैल धुमाजय * राक्षसर चटकर बल हैल क्षय
रावणर शरीरर शोणित वहय * मन्दर गिगिर येन गेरु निर्झरय २३
निरन्तरे शरीरर बहवे रकत * रावणे बोलय मइ नुहिको शकत
न्याय युजे युजो येवे मारिबेक मोक * अन्याये युजिबो आवे येन युवाइ होक २४
हेन भावि डावर काढ़िल चन्द्र हास * मारो पक्षीराज आजि जीवन्ते न यास
रावणर मन जानिलन्त पक्षीराज * पखा चाट मारिलन्त हृदयर माज २५
दुर्ब्बार प्रहारे तार हाड़ विहरिल * कतोहो दूरत चिते रावण परिल
थाक थाक बोल आरो जटायु बुलिल * रावणे बोलय मोर आवेसे बुरिल २६
माया करि डेव दिया दूरत परिल * चरणर प्रहारत पृथिवी लरिल
पाखिचाट करि आगे जटायु खेदिल * चन्द्रहास हानि पाखा रावणे छेदिल २७

नख के आघात से रावण विचलित हो उठा ॥ १८ ॥ परम विह्वल होकर वह चारों ओर देखने लगा। जटायु उसकी पीठ पर मतवाले गज की भाँति बैठा था। नाखूनों और चोंच के प्रहार से जटायु ने रावण की छाती, मस्तक, गला, पीठ आदि सारा शरीर क्षत-विक्षत कर डाला ॥ ३२१९ ॥ चोंच से पकड़-पकड़कर उसके बाल नोच डाले। वे लस्त-पस्त हो गये, आलू जैसे उन्हें उखाड़ लिये। इसके पश्चात् सिर को छोड़कर रावण के पैरों पर झपट्टा मारा, राजा रावण विह्वल होकर भूमि पर गिर पड़ा ॥ ३२२० ॥ उसने कुछ दूर ले जाकर जानकी को रख दिया और थप्पड़ों व घूँसों से जूझने लगा। एक ही समय में बीस घूँसे मारे, परन्तु गरुड के पुत्र जटायु ने उसे अनायास झेल लिया ॥ २१ ॥ रावण थप्पडों, घूसों, लातों से उसे लगातार प्रहार करने लगा। जटायु ने उसे पंखों से आघात किया। दोनों वीर नाखूनों, चोंच, मुक्कों, घूँसों आदि से भयंकर मार करने लगे, इससे दोनों की शक्ति क्षीण हो गयी ॥ २२ ॥ दोनों भयंकर क्रोध से घमासान युद्ध करने लगे। राक्षस और जटायु दोनों का बल घट गया। रावण के शरीर से रक्त बहने लगा, मानों मन्दर पर्वत से गेरू की धारा झर रही हो ॥ २३ ॥ उसके शरीर से निरन्तर रक्त बहने लगा। रावण कहने लगा—मैं इससे लड़कर पार नहीं पा सकता। न्यायपूर्वक युद्ध करूँ तो यह मुझे मार डालेगा। चाहे जो भी हो अब मैं अन्याय से ही लड़ूंगा ॥ २४ ॥ यह सोचकर वड़ा चन्द्रहास तलवार निकाल ली और कहा—पक्षीराज, अब मैं तुझे मार डालूंगा। तू जीवित बचकर नही जा सकता। पक्षीराज जटायु ने रावण का अभिप्राय समझ लिया और पंखों से छाती पर आघात किया ॥ २५ ॥ प्रचंड प्रहार से उसकी हड्डियाँ विखर-सी गयी और रावण छिटककर कुछ दूर जा गिरा। जटायु वोल उठा—ठहर जा, ठहर जा। रावण सोचने लगा—अब तो मेरा सर्वनाश होने वाला है ॥ २६ ॥ माया कर, कूद वह दूर जा पड़ा, उसके चरणों के प्रहार से पृथ्वी

पाव दुइ छेदिल काटिया दुइ पाश * हेनमते जटायुर मिलिल विनाश
माया युजे युजिलन्त आपोनाक राखि * इन्द्रे येन पर्व्वतर छेदिलेक पाखि २८
जटायु मरिया येवे भूमित परिल * सागर खलकि मही मन्दर लरिल
जटायुक मारिया रावण रङ्गमने * आपोनार सम्भार विचारि पशि बने २९
रथखान भाङ्गिल सिञ्चिल वस्तु यत * चामर ढोलार दुइर नाहिकय माथ
छत्र दार परि हुया आछे दुइ छिर * सारथिर मुण्ड नाहि देखिल शरीर ३२३०
सीताये धरिला चापि जटायुर गले * आशेप कान्दिला देवी हाकले बिकले
हरि हरि मोहोर बान्धव पक्षीराज * पापिष्ठीर कारणे मरिला वनमाज ३१
मोक एरि चलिला जनक येन वाप * सब कुटुम्बक करि तोमात सन्ताप
दुर्गति कालत तुमि मोर भैला साहा * जनकर जीउ मातो माथा तुलि चाहा ३२
दशरथ येन तुमि मोहोर शशुर * बोवारी अनाथा करि याहा यमपुर
कहि एरि गैले मोर दुस्तरण नाव * बाहिरे भितरे मोर पोरे सर्ब्ब गाव ३३
शान्ती सीता हओं येवे तत्त्व परमाण * राघवत् कहिले याइव तोमार पराण
अशेष सन्तापे सीता क्रन्दन करिला * रावण आसय देखि वृक्षत धरिला ३४
एर एर बुलि सीता करन्त विराव * आजुरिया कोले धरि करिला उराव
सीता लैया चलि गैल गगनर माज * देवक सम्बुधि ब्रह्मा बुलिलन्त काज ३५
जनकर जीउ हरे रावण पापिष्ठ * राखवर द्रोह करि मरिवेक निष्ठ

काँप उठी। पंखों से आघात करता हुआ जटायु उसके पीछे-पीछे दौड़ा। रावण ने चन्द्रहास से उसके पंख काट डाले ।। २७ ।। दोनो ओर काटकर उसके दोनों पैर भी काट डाले। इस प्रकार जटायु का अन्त हो गया। अपने को बचाने के लिए उसने माया पूर्वक संग्राम किया और इन्द्र ने जैसे पर्वतों के पंख काट डाले थे उसी प्रकार जटायु के पंख काट डाले ।। २८ ।। जटायु जब मरकर भूमि पर गिर पड़ा, तब सागर मे खलबली मच गयी, धरती, मंदराचल काँप उठे। जटायु को मारकर रावण बड़ी प्रसन्नता से अपने साज-सामान खोजने वन में गया ।। २९ ।। रथ टूटा हुआ था, सारी वस्तुएँ बिखरी हुई थी, चँवर डुलाने वालों के सिर नही थे, छत्र-धारक दो खंड होकर पड़ा हुआ था। उसने देखा सारथि का सिर न था, केवल शरीर ही पड़ा हुआ था ।। ३२३० ।। सीता जटायु का गला पकड़ फूट-फूटकर रोने लगी। हरि, हरि, हमारे बांधव पक्षीराज, इस पापिनी के कारण आज तुम्हे वन में मरना पड़ा ।। ३१ ।। तुम मेरे पिता जनक जैसे थे। अपने सभी कुटुम्बियों को संतप्तकर, मुझे छोड़कर तुम चले जा रहे हो। दुर्गति के क्षण में तुम मेरे सहायक बने। मैं जानकी तुम्हें पुकार रही हूँ, सिर उठाकर देखो ।। ३२ ।। तुम मेरे ससुर दशरथ जैसे हो। बहू को अनाथिनी बनाकर तुम यमलोक चले जा रहे हो। हे मेरे दुस्तर सागर की नाव ! तुम कहाँ छोड़ गये ? बाहर भीतर मेरा समस्त शरीर जल रहा है ।। ३३ ।। यदि मैं सत्य ही सती सीता होऊँ, तो तुम्हारे प्राण रामचन्द्र के कहने के पश्चात् ही जायेंगे। सीता असीम दुःख से क्रन्दन करने लगी। रावण को आते देख उन्होंने वृक्ष को पकड़ लिया ।। ३४ ।। 'छोड दे, छोड दे', कहती हुई सीता जोर-जोर से चीख पड़ी। उन्हें बलपूर्वक खीचकर गोद में ले रावण ने उड़ान भरी। सीता को लेकर वह आकाश में चला गया। तब देवताओं को सम्बोधित करते हुए ब्रह्मा कहने लगे— ।। ३५ ।। पापी रावण जानकी का हरण कर लिये जा रहा है। राघव से द्रोह करने के कारण निश्चित रूप से इसकी मृत्यु होगी। सीता को ले जाता हुआ रावण ऐसा लग रह था मानों चील मांस का टुकड़ा लिये जा रही हो।

मांसक लभिया येन लइजाय हेङ्गल * आकाशे रावण येन मेघर चेङ्गल ३६
बिजुली चटक येन गोसानीर कान्ति * तारा येन जिकि परे अलङ्कार कान्ति
रावणर अङ्गे रूप सीतार बलिल * अञ्जन पर्व्वते येन माणिक्य ज्वलिल ३७
राक्षसर कोले देवी परम निर्म्मल * मेघक फेरिया येन चन्द्रर मण्डल
रावणर पाशे सीता माणिक ज्वलिल * निशाकाले शोभे येन पर्व्वत सलिल ३८
बायुवेगे लरय सीतार बस्त्रखान * मेघत लागिल येन रबिर किरण
रावणर कोले रूप सीतार उज्ज्वल * सरोवर माजे येन फुल्ल उतपल ३९
इन्द्रनील पाशत माणिक आतिरेक * कषटि शिलात येन सुवर्णर रेख
नाना रत्न अलङ्कार सीतार बलय * येन कालमेघ-खण्ड रावण ज्वलय ३२४०
स्तन माज हन्ते आसि परि गैल हार * गगनर हन्ते येन गङ्गा अवतार
शोके दुखे सीतार शरीर भैल कृश * रावणर बुलिलन्त करि बिमरिष ४१
हा ओरे पापिष्ठ सद्गति नाहि तोर * एतमान राजा हुया भैल तिरी चोर
अनेक प्रकारे आमि बिमरिषि पाइलो * माया-मृग पठाइ दिलि रामक गुचाइलो ४२
रामर रावक तोर राक्षसे काढ़िल * सेहिसे कारणे मोक लक्ष्मणे छारिल
लगस आछिल हन्ते लक्ष्मण देवर * ताहाने शरते गैलि हन्ते यमघर ४३
तिरी चोर पापिष्ठ हाड़ीर आउथा खाहा * गले शिला मारि दुष्ट मारिबाक याहा
स्वामीक निजिनि केने मोक नेस बले * झाण्टे चल पापिष्ठ हाड़ीर मार्ग तले ४४
सुबुद्धि न भैल तोर मरिबार काले * शिशिर शुषिब तोक राम रबिजाले

आकाश में रावण मानो उड़ते हुए वादल की भाँति प्रतीत हो रहा था ।। ३६ ।। देवी सीता की कान्ति बिजली की भाँति थी, उनके अलंकारों की कान्ति तारों की भाँति जगमगा रही थी । रावण के शरीर पर सीता का रूप ऐसा प्रतिफलित हो रहा था मानों अंजन पर्वत पर मणियाँ जगमगा रही हों ।। ३७ ।। परम निर्मल देवी सीता राक्षस की गोद में वैसी ही लग रही थी मानो मेघों को आवृत्त कर चंद्रमंडल हो । रावण के पास सीता रूपी मणि वैसी ही चमक रही थी जैसे कि रात्रि काल में पर्वत से निकली जलधारा शोभित हो रही हो ।। ३८ ।। पवन-वेग से सीता का वस्त्र हिल रहा था मानो मेघ में सूर्य की किरणे चमक रही हों । सरोवर में खिले हुए कमल की भाँति रावण की गोद में सीता का उज्ज्वल रूप जगमगा रहा था ।। ३९ ।। इन्द्र नील मणि के बंधन मे मणि चमकती हो, या कसौटी-पत्थर पर स्वर्ण की रेखा हो । सीता के चमकते हुए विविध रत्नाभूपण वैसे ही लग रहे थे मानो काले-मेघ खण्ड रूपी रावण जल रहा हो ।। ३२४० ।। उसके स्तन के बीच से आकर हार उसी प्रकार गिर पड़ा मानो आकाश से गंगा का अवतार हुआ हो । दुःख-शोक से सीता का शरीर सूख गया । विमर्ष होकर उन्होने सीता ने कहा, ।। ३२४१ ।। अरे पापी, ! तेरी सद्गति, नही होने वाली है । इतना बड़ा राजा होकर तू नारी चोर वना है । हमने अनेक प्रकार से सोच-विचार कर देखा है कि तूने माया-मृग को भेजकर श्रीरामचन्द्र को दूर हटा दिया है ।। ४२ ।। तेरे राक्षस ने ही रामचन्द्र की भाँति पुकार की थी । इसी कारण लक्ष्मण मुझे छोड़ गये । यदि देवर लक्ष्मण मेरे पास होते तो उन्हीं के वाणों से तुझे यमलोक जाना पड़ता ।। ४३ ।। नारी चोर, पापी, नीचों का जूठन खानेवाला, दुष्ट, तू गले में पत्थर वाँधकर मरने जा रहा है । पतिदेव को जीते विना मुझे वलपूर्वक क्यों लिये जा रहा है । अरे पापी, तू शीघ्रता से नीचों के पतन-कार्य में जा रहा है ।। ४४ ।। मरने के काल में तेरी सुबुद्धि नही आयी, सूर्य-किरण-जैसे राम तुझे ओस-कणों की भाँति सोख लेगे । सीता ने अपने शरीर के सभी

यत अलङ्कार सीता गावर काढ़िल * देवाङ्ग वसने ताक प्रवन्धे वान्धिल ३२४५
पाञ्च वानरक पर्व्वतत भेण्ट पाइला * सवारे माजत लागि क्षेपिया पठाइला
शान्ती सात मइ येवे हओं तत्त्वसार * रामर हातत लागि याउक अलङ्कार ३२४६
रावणे लक्षिल दिश निहालन्ते काज * भूषण परिल पाञ्च वानरर माज
पाञ्चागुटि वानरे ऊर्द्धक लागि चाइला * राक्षसर अङ्गे कन्या एका भेण्ट पाइला ४७
आकाशे मेलिया याइ दीर्घ केश तार * मनत विस्मये वुलि लैला अलङ्कार
जटायुर प्रहारे विह्वल चित्त भैल * दक्षिण एरिया राजा पूर्व्वदिशे गैल ४८
ऋष्यमुख गिरि पाइल चम्पा सरोवर * दिश लक्षि पाचे लङ्का गैल लङ्केश्वर
निज मृत्यु सीता लैया रावण चलय * अरण्य एराया पाइल वरुण आलय ४९
अन्तरीक्ष गति वीरे समुद्र एराइल * शीघ्रवेगे गैया पाचे लङ्कापुरी पाइल

रामर मारिवलै वीर नियुक्त-करण : रावण-सीतार कथा काटाकाटि

राज्यत पशिया अन्तःपुरे पाचे गैल * निर्ज्जन थानत गैया जानकी थैल ३२५०
राक्षसी लोकक तथा रक्षण विहिल * सीताक चाहिवा भाले उपदेश दिल
येवे जानकीक आन पुरुषे देखय * तोमाके ताहाके चापि काटिवो निश्चय ५१
हीरा मणि माणिक सीता यतेक मागय * शङ्का एरि दिवा आनि यिकिछु लागय
एहि वुलि राजा निज मण्डप पाइलेक * महावीर आठ गोटा मताइ आनाइ लेक ५२

आभूषणों को खोल लिया और अपने रेशमी वस्त्र में उन्हें यत्न से वांधा ॥ ३२४५ ॥ और पर्वत पर वैठे हुए पाँच वानरो को देख उन्होंने उनके वीच वह फेंक कर कहा— मैं यदि सत्य ही सती सीता होऊँ तो ये अलंकार राम के हाथ जा पहुँचें ॥ ४६ ॥ रावण ने उस दिशा में दृष्टि डाली। सभी आभूषण जाकर पाँच वानरो के वीच गिरे। पाँचों वानरों ने ऊपर की ओर दृष्टि डाली तो राक्षस की गोद में एक कन्या दीख पड़ी ॥ ४७ ॥ जिसके लम्वे केश आकाश में फैले हुए थे। उन लोगों ने मन में विस्मित होकर आभूषण उठा लिये। जटायु के प्रहार से राजा रावण का चित्त विह्वल हो रहा था। वह दक्षिण दिशा की ओर जाना छोड़ पूर्व दिशा की ओर गया ॥ ४८ ॥ और ऋष्यमूक पर्वत, चम्पा सरोवर पहुँचा। इसके पश्चात् दिशा देखकर लंका मे चला आया। अपनी मृत्यु रूपी सीता को लेकर रावण चल रहा था, अरण्य पारकर वह वरुणालय यानें समुद्र तक आया ॥ ३२४९ ॥ वहाँ से आकाश मार्ग द्वारा समुद्र पारकर अत्यन्त वेग से वह लंकापुरी पहुँच गया।

राम को मारने हेतु वीरों की नियुक्ति करना; रावण और सीता के वीच वाक्-वितंडा

रावण अपने राज्य मे जाने के पश्चात् अंतःपुर में गया और जानकी को ले जाकर एक निर्जन स्थान में रख दिया ॥ ३२५० ॥ उसने राक्षसियों को सीता की रक्षा में नियुक्त कर दिया और उन्हें उपदेश दिया कि सीता की देखभाल अच्छी तरह करना। यदि जानकी की ओर कोई दूसरा पुरुष दृष्टि डालेगा तो तुम्हे और उसे वन्दी कर अवश्य ही काट डालूँगा ॥ ५१ ॥ सीता हीरा-मणि-माणिक जो भी चाहे, उसे जो कुछ आवश्यकता हो, तुम निःशंक होकर ला देना। यह कहकर राजा रावण अपने निवास स्थान को चला गया और आठ महावीर राक्षसो को वुला भेजा ॥ ५२ ॥ चन्द्रकेतु, कालकर्ण, वीर कम्पानन, यक्ष-शत्रु, महावाहु, राक्षस भीमकर्ण, तालजंघ,

चन्द्रकेतु फालकर्ण वीर कम्पानन * यज्ञशत्रु महाबाहु राक्षस भीष्मकर्ण
तालजङ्घ सुप्रतघ्न आठ वीर बर * देव सबो सदृश नोहय एकें कर ५३
शुना महाबीर गण सावधान मने * झाण्ट करि याहा तुमि दण्डकार बने
राघवे मारिल मोर खर-दूषणक * ताहार घरिणी हरि आनिलो घरक ५४
दुइ भाइ मिलि किवा आलोचय काज * बार्त्तक जानाहा गैया दण्डकार माज
मारिबाक पारा येवे आति बर भाल * एतेके पलाइ मोर हृदयर शाल ५५
आठको पठाओं आमि कार्य्यक उपेक्षि * महाबीर माजे तोमासाक भाले लेखि
नृपतिर आदेशक शिरे तुलि लैल * राजाक प्रणामि आठो वीर लरि गैल ५६
राक्षसक मारि रामे कीर्ति बर थैल * तथा गैया सबे लुकि दिया थित भैल
आठ गोटा निशाचर पठाया रावणे * कृत कृत्य भैलो हेन मानिलेक मने ५७
अन्तेष पुरक लागि गैल तेति क्षणे * सीताक राखय देखे राक्षसिनी गणे
शरीर भेदिल तार मदनर बाणे * तेतिक्षणे चलि गैल जानकीर थाने ५८
सम्बुधिया सीताक बोलय लङ्केश्वर * देख देख जानकी मोहोर धौलिवर
आमार थानत ना जानिया ताप शीत * चन्द्रे सूर्य्ये अनुकूले सेवा करे नित ५९
मोहोरेसे मन जानि वायु करे गति * देवासुर गणे मोक करय प्रणति
चन्द्रज्योति बास सूर्य्य ज्योति पथ पाइल * शुक्ल मेघ खान येन आकाशे उधाइल ३२६०
भूमि सब देखि सीता सुवर्ण रतन * हेन देखि जानकी मोहोत दियो मन
शुनियोक सीता सैन्य यतेक आमार * सत्ये सत्ये मइ सब्रे लेखा दिबो तार ३२६१
बाषट्टि हाजार मुख्य राक्षसर बल * तेहनय दुइ गुण मुख्य पिशाच सकल
एकै एकै भृत्य आछे सहस्र सहस्र * अनुकूले सेवा करि थाकय अजस्र ६२

सुप्रतघ्न ये आठ महान् वीर थे। देवगण भी उनके एक-एक की बराबरी नहीं कर सकते थे ।। ३२५३ ।। रावण ने इन वीरों से कहा—महावीरों, तुम लोग सावधान चित्त से सुनो। तुम शीघ्रता से दंडक वन में चले जाओ। राम ने मेरे खर-दूषण को मार डाला है। उसकी पत्नी को मैं हरण कर लाया हूँ ।। ३२५४ ।। अब दोनों भाई मिलकर परस्पर कौन सी चर्चा कर रहे हैं, तुम दंडक वन में जाकर इसका समाचार लो। उन्हें यदि मार सको तो बहुत ही अच्छा है। इससे मेरे हृदय का काँटा निकल जायेगा ।। ५५ ।। अन्य कामों की उपेक्षा कर मैं तुम आठों को भेज रहा हूँ क्योंकि तुम महावीरों में उत्तम हो। नृपति के आदेश को शिरोधार्य करते हुए प्रणाम कर वे आठों वीर शीघ्रता से चले गये ।। ५६ ।। राक्षसो को मारकर रामचन्द्र ने बड़ी कीर्ति अर्जित की थी। वे सभी वहाँ जा छिपकर रहने लगे। आठ निशाचरों को भेजकर रावण ने मन ही मन सोचा कि 'मैं कृतकृत्य हो गया'। ।। ५७ ।। वह उसी क्षण अन्तःपुर मे चला गया, देखा, कि वहाँ राक्षसियाँ सीता की रखवाली कर रही है। काम-वाण से उसका हृदय बिंध गया। वह उसी क्षण जानकी के समीप चला आया ।। ५८ ।। रावण ने सीता को सम्बोधित करते हुए कहा—जानकी, मेरे विशाल धवल राजमहल को देखो। शीत-ताप यहाँ का अनुभव नही होता। चन्द्र-सूर्य नित्य अनुकूल होकर सेवा करते है ।। ५९ ।। मेरी इच्छा के अनुसार पवन चलता है, देवासुर गण मुझे सिर झुकाया करते है। यहाँ नित्य चाँदनी का निवास है, सूर्य-किरणों का अवाध प्रवेश है। यह भवन श्वेत मेघ की भाँति आकाश में ऊँचा उठा हुआ है ।। ३२६० ।। यहाँ सम्पूर्ण भूमि स्वर्ण-रत्नों से परिपूर्ण है। इसी कारण सीता, अब तुम मुझमें मन लगाओ। सीता, सुनो, हमारी जितनी सेना है, मैं उन सबका सही-सही लेखा दे रहा हूँ ।। ६१ ।। बासठ हजार तो मुख्य राक्षसों की सेना

रणभूमि यान्ते चालि चले चारि पाख * प्रत्येकरे लगे पाइक बाइश बाइश लाख
बाल वृद्ध एरिया सैन्यर दिल लेखा * मन्यु परिहरि मोक शुभ दृष्टि देखा ६३
रामक एरिया सीता मोत कर भाव * मइ हेन स्वामी नारी भरि नगराव
ए तिनि भुवने जान सकले आमार * सोण रूप रजत मणि माणिक भण्डार ६४
हस्ती घोरा रथ मोर त्रैलोक्यते सार * समर्पिलो तोमात सकले राज्य भार
सहस्र संख्यात मोर यत पटेश्वरी * दासी दास आछे यत आरो मन्दोदरी ६५
सबे तोत खाटक चरणे सेवा करि * याक येन योग्य दिबा हाते तोला करि
येहि आज्ञा कर सीता साधिबाक पारि * मयो तोर भैलो भातुटिर अधिकारी ६६
हृदयर दुख बान्धै दूर परिहर * त्रिभुवन नाथ रावणक स्वामी वर
मोक रामे मारिवन्त मने आछ छान्दि * कहित सुनिलि सीता मइ भैलो वन्दी ६७
अगनि शिखात कोने जास करिबेक * मोकतो न जानो एक वीरे जिनिवेक
मोके योर नाइ गड़ आवर दुर्ज्जय * चतुर्द्दिशे वेढ़ि घोर सागर आछय ६८
रामे तोक निव हेन आशा परिहर * चरणत धरो मोक अनुग्रह कर
पुष्पक विमान तिनि भुवनते सार * इहाते रमण हौक तोमार आमार ६९
दशगोटा शिरे तोर चरणक जान्तो * मुखे खेर धरिया कातरि करि मातो
राज राजेश्वर मइ तोर भैलो दास * इहात अधिक किनो वहुमान चास ३२७०
बिरह अगनि मोर पोरे कलेवर * अधर अमृत दाने उपशम कर
रावणर बोल शुनि जानकी गोसानी * तुलत अगनि येन बुलिलन्त वाणी ७१

है। उनसे दुगुनी पिशाच सेना है। एक-एक के हजारों भृत्य है। उनकी सेवा में अनगिनत लोग लगे रहते है ।। ६२ ।। चतुरंगिनी सेना सजकर रणभूमि मे चला करती है। हर अंग के साथ बाईस-बाईस लाख पाइक या पैदल सेना रहती है। बालक-वृद्धो के अतिरिक्त यह सेना का लेखा मैने दिया है। मन का सोच छोड़कर मेरी ओर शुभ दृष्टि से देखो ।। ६३ ।। सीता, राम को छोड़कर मुझमे मन लगाओ। मेरे जैसा पति तुम्हे और कोई नही मिलेगा। इन तीनों भुवनो मे जान लो कि सोना-चाँदी, मणि-माणिक के सभी भडार हमारे है ।। ६४ ।। मेरे हाथी, घोड़े, रथ त्रिभुवन में श्रेष्ठ है। यह सम्पूर्ण राज्य-भार तुम्ही को सौप रहा हूँ। सहस्रो की संख्या में मेरी जो पटरानियाँ है, दास-दासी है, और रानी मन्दोदरी भी, ।। ६५ ।। ये सभी तेरे चरणों की सेवा करती रहेगी। तुम इन्हे अपने हाथो से उठाकर जितना चाहो दे सकती हो। सीता, तुम जो भी आदेश दोगी मैं सभी पालन करूँगा। मै तुम्हारे अन्न का अधिकारी मात्र हूँ ।। ६६ ।। बांधवी, तुम हृदय का दु:ख छोड़ दो, त्रिभुवन के स्वामी मुझ रावण को पति रूप मे वरण करो। यदि तुम्हारे मन में यह भाव है कि राम मुझे मार डालेगे, तो क्या तुमने यह सुना है कि मै कही वन्दी हुआ हूँ ? ।। ६७ ।। अग्निशिखा मे भला जलने जायेगा ? मुझे तो कोई भी वीर जीत नही सकता। एक तो मेरी ही बराबरी नही है, दूसरे गढ भी दुर्जेय है जिसके चारो ओर सागर घेरे हुए है ।। ६८ ।। राम तुम्हें ले जा सकेगा ऐसी आशा छोड़ दो। मै चरण पकड़ता हूँ, मुझपर कृपा करो। यह पुष्पक विमान तीनों लोकों मे सार है। यही तुम्हारा हमारा रमण हो ।। ६९ ।। दसो सिरों से मै तुम्हारे चरण दबाऊँगा, मुँह में तृण-लेकर विनयपूर्वक कह रहा हूँ। मैं राज-राजेश्वर होने पर भी तुम्हारा दास बन रहा हूँ। इससे अधिक बहु-मान तुम्हे क्या चाहिए ? ।। ३२७० ।। विरह अग्नि में मेरा शरीर जल रहा है। अपने अधरामृत को देकर उसे शान्त करो। रावण के वचन सुनकर देवी जानकी रुई में अग्नि की भाँति तीव्र वचन कहने लगी ।। ७१ ।। मै दशरथ की बहू और

दशरथ बधू मइ रामर घरिणी * आसिया मिलिलो तोर कुल-संहारिणी
दीर्घबाहु महाबीर सुस्वामी आमार * बितोपन देहा येन काम अवतार ७२
एकोवे प्रकारे ताङ्क तइ नोह तुल * माणिकर आगे येन लोहचर फुल
पूर्ब्बे अस्त सूर्य्य येवे पश्चिमे उदित * तथापितो जानकीर न लरिब चित्त ७३
बर्ब्बर रावण तइ नुबुजस काज * आमाक लाघव बाक्य बोलस निलाज
महेशर जटात अङ्कुश दिते चास * नरकर पलु स्वर्गभोगे कर आश ७४
आसन्न कालत तोर बिनाशन बोध * सिकारणे मोक तइ बोल अनुरोध
मोहोर एकान्त पति राम प्राणनाथ * चरणे नुचुबो पर पुरुषर माथ ७५
शङ्कर ब्रह्मात येवे पंशस शरण * तथापितो राम हाते तोहोर मरण
तोहोक राखन्त यदि दश दिक्पाल * तथापितो राम तोर हैब यमकाल ७६
स्वामी आगे थाकन्ते आनिलि हन्ते येवे * बिराधर मते यम गैले हन्ते तेवे
नारी चोरा पापिष्ठ तोहोक आछो धिक * एवे तइ बीर आसि बोलावस किक ३२७७

सीतार अभिशाप

झुमुरी

रामे तोक मारिबन्त * मोर मान सारिबन्त
लङ्का पुरी दहिबन्त * दुर्गतित तारिबन्त ३२७८
तोर अन्त दहिबन्त * अनुशौच करिबन्त
दुष्ट जन नाशिबन्त * हाते धनु धरिबन्त ३२७९

राम की गृहिणी हूँ। मैं तेरे वंश की संहारिनी के रूप में यहाँ आयी हूँ। मेरे पति श्रेष्ठ, दीर्घबाहु, महावीर है। उनका शरीर कामदेव-सा सुन्दर है ॥ ७२ ॥ तू तो किसी भी प्रकार से उनका समतुल्य नहीं है। माणिक के सामने तू लोहे का फूल है। सूर्य यदि पूर्व मे अस्तमित और पश्चिम में उदित होने लगे, तथापि जानकी का चित्त डिगनेवाला नहीं है ॥ ७३ ॥ बर्बर रावण तुझे कर्तव्य का बोध नहीं है, इसी कारण अरे निर्लज्ज तू मुझसे हीन वचन बोलता है। तू महेश की जटा में अंकुश लगाना चाहता है। नरक का कीडा स्वर्ग-भोग की आशा रखता है ॥ ७४ ॥ तू जानता है कि तेरा विनाश काल आसन्न है, इसी कारण मुझे अनुरोध के वचन बोलता है। प्राणनाथ रामचन्द्र ही मेरे एकमात्र पति हैं। मै परपुरुष का मस्तक चरण से भी स्पर्श नही करूँगी ॥ ७५ ॥ यदि तू शंकर-ब्रह्मा की शरण में भी जाये तथापि श्रीरामचन्द्र के हाथो तेरी मृत्यु निश्चित है। यदि दशों दिक्पाल तेरी रक्षा करें तथापि रामचन्द्र तेरे लिए महाकाल यम बन जायेगे ॥ ७६ ॥ यदि मेरे स्वामी के सम्मुख रहते तू मुझे ले आता तो बिराध की भाँति तुझे भी यमलोक पहुँच जाना पड़ता। नारी-चोर पापी, तुझे धिक्कार है। अब तू भला अपने को वीर किस प्रकार कहता है ? ॥ ३२७७ ॥

सीता का अभिशाप

रामचन्द्र तुझे मार डालेगे। मेरा मान बचायेंगे। लंकापुरी को भस्म कर डालेगे। मुझे दुर्गति से उद्धार करेंगे ॥ ३२७८ ॥ तुझे अन्त में जलना पड़ेगा, पश्चाताप करना होगी। रामचन्द्र हाथों में धनुष धारणकर दुष्टजनों का नाश

हेले सिन्धु तरिवन्त * शोक परिहरिवन्त
कौतुकक करिवन्त * शत्रुगण मारिवन्त ३२८०

सीतार पुनर कटूक्ति; ब्रह्मार आदेशत सीताक इन्द्रर पायस-दान; सीताक नेदेखि रामर खेद

पद

कदाचितो तोर वचनक न धरिवो * नुहि मइ निराहारे पराणे मरिबो
दुराचार रावण होवस तइ तपी * अधर्म्मक डरे तोक न मारोहो शापि ३२८१
शान्ती सीता मोक वले धरिवाक चास * त्वरिते मरिते लागि लस गल पाश
गुच गुच निशाचर सन्नित न चाप * करि वोहो भस्म नुहि दिया चण्ड शाप ८२
सीतार बचन शुनि नृपति रावण * राक्षसिनी लोकक बुलिला तेतिक्षण
स्वामीर सन्ताप येवे नुगुचै मनत * राखिया थाकाहा निया अशोक वनत ८३
जनकर जीउ येन होवय सरस * प्रति टनके येन कार्य्य होवे बश
रावणर वाक्य सवे शिरे तुलि लैल * सीता माज करिया राक्षसी लरि गैल ८४
त्रिभुवने सार आति अशोकर वन * स्वर्गत ये हेन देवराजर भुवन
कल्पतरु पारिजात मन्दार सन्तान * सुवर्णर वृक्ष सव ज्वले थाने थान ८५
त्रैलोक्यते सार यत वृक्ष निरन्तर * सुनिर्म्मल जले शोभे दिव्य सरोवर
सुवर्णर खाट खड़ि सुशोभित घाट * पुष्पर सुरभि गन्धे सुशोभित बाट ८६
रावणर बन यत स्वर्गतो उपाम * तार माजे वृक्ष एक शिशपा ये नाम

करेंगे ॥ ७९ ॥ वे अनायास समुद्र पार करेंगे, मेरा शोक मिटायेंगे, शत्रुओ को मारकर लीला दिखायेंगे ॥ ३२८० ॥

सीता का पुनः कठोर वचन कहना, ब्रह्मा के आदेश से इन्द्र का सीता को पायस प्रदान, सीता को न देखकर राम का खेद

मैं निराहार रहकर मर जाऊँगी तथापि कदापि तेरे वचन नही मानूँगी। दुराचारी रावण, तू तपस्वी हो सकता है, पर मैं अधर्म के भय से तुझे शाप देकर मार नही रही हूँ ॥ ३२८१ ॥ मुझ सती सीता को तू बलपूर्वक पाना चाहता है; शीघ्र मरने हेतु गले में फाँस लगा रहा है। हट जा, हट जा, निशाचर! तू मेरे पास न आ। नही तो प्रचंड शाप देकर तुझे भस्म कर डालूँगी ॥ ८२ ॥ सीता के वचन सुनकर राजा रावण ने उसी क्षण राक्षसियों से कहा—इसके मन मे जब तक पति का दुःख मिट नहीं जाता, तब तक के लिए इसे अशोक वन मे ले जाकर रखो ॥ ८३ ॥ जानकी जैसे आनन्दित हो, प्रत्येक क्षण उसे वश मे करने के कार्य करो। सब राक्षसियाँ रावण के वचन शिरोधार्य कर सीता को अपने मध्य में रख शीघ्र दौड़ गयी ॥ ८४ ॥ अशोक वन, त्रिभुवन मे अत्यंत श्रेष्ठ था, वह स्वर्ग में देवराज इन्द्र की निवासभूमि-सा था; कल्पवृक्ष, पारिजात, मंदार, संतान, अमलतास आदि के वृक्ष उसमें स्थान-स्थान पर जगमगा रहे थे, ॥ ८५ ॥ त्रिभुवन में जितने श्रेष्ठ वृक्ष हैं सभी वहाँ सुशोभित थे। वही सुनिर्मल जल-पूर्ण दिव्य सरोवर सुशोभित था। सोने की सीढ़ियोंवाले उसके घाट बड़े ही सुशोभित थे तथा मार्ग पुष्प के सौरभ और गंध से सुसज्जित थे ॥ ८६ ॥ रावण का वह उपवन स्वर्ग से भी अधिक सुन्दर था। उसमें

सुवर्ण माणिक भूमि ताहार गुरित * राक्षसिनी माजे सीता भैल उपस्थित ८७
सीतार हरणे चित्त सबार भागिल * काणा काणि कथा सबे लङ्कात लागिल
रामर भार्य्याक हरि न करिल भाल * राक्षसगणर हृदयत दिल शाल ८८
केहो बोले राम सबे साधिबन्त काज * हरुवाइले लङ्केश्वर लङ्का हेन राज
कतो बोले भाया तइ भय परिहर * रावणक राघवे नोहय समसर ८९
ब्रह्माये बोलन्त शुनियोक देवराज * निराहारे जानकी आछन्त लङ्का माज
वार्त्ता नापाइ राघवर हैबन्त बिनाश * आमरा सबर हैब निष्फल प्रयास ३२९०
झाण्ट करि इन्द्र तुमि लङ्का चलि याहा * राघवर वार्त्ता जानकीत जनाइ बाहा
पायस दियोक जानकीर बिद्यमान * पतिव्रता नारीर तेवे से रहे प्राण ९१
ब्रह्मार आज्ञाक इन्द्रे शिरत लैलन्त * हातत पायस लैया लङ्काक गैलन्त
निद्रावाण राक्षसिनीगणक हानिल * अचेतने परि गैल किछो न जानिल ९२
चिन्ता शोके थिर भैल जनकर जीव * हातत पायसे इन्द्र आगे भैल थिय
देखियोक सीता हेर आमि देवराज * समस्ते कुशल राम लक्ष्मणर काज ९३
भुञ्जियो पायस शोक करा परिहार * शत बरिषतो क्षुधा न लागिबे आर
गुचिब पियास सब शरीर जुराइब * अविलम्बे तुमियो रामर कोल पाइब ९४
रावणक रामे आसि त्वरित मारिब * आमि सब सहाये तोमाक निस्तारिब
शङ्का एरि मोर वाक्य बेद परिमाण * राक्षसी लोकक हानि आछो निद्रा बाण ९५
सीताये बोलन्त तेवे वाक्य जानो सत्य * तुमि येवे इन्द्र मइ जानो केन मत

एक अशोक का वृक्ष था। उसके तले की भूमि सोने और मणियों से जड़ी हुई थी, वहीं सीता राक्षसियों के सहित उपस्थित हुई ।। ८७ ।। सीता को हरण कर लाने से लंका के सभी लोगों के हृदय टूट गये। सारी लंका में यह कानाफूसी चलने लगी कि राम की पत्नी को हरण कर रावण ने अच्छा नहीं किया है। इसने राक्षसों के हृदय में काँटे बो दिये है ।। ३२८८ ।। कोई कहता, राम अपने सभी कार्य सिद्ध कर लेंगे; लंकेश्वर रावण लंका जैसा राज्य खो रहा है। कुछ लोग कहते थे, भैया, तू भय छोड़। राम रावण की बराबरी नही कर सकते ।। ८९ ।। ब्रह्मा ने देवराज इन्द्र से कहा, जानकी लंका में निराहार है। रामचन्द्र का समाचार न पाकर वे मर जायेंगी, हम सबके प्रयास निष्फल हो जायेगे ।। ३२९० ।। इन्द्र, तुम शीघ्रता से लंका चले जाओ और उन्हें रामचन्द्र का समाचार सुनाओ। जानकी के हाथ में पायस दे देना, तभी उस पतिव्रता नारी के प्राणों की रक्षा हो सकती है ।। ३२९१ ।। ब्रह्मा का आदेश शिरोधार्य कर इन्द्र हाथ में पायस ले लंका चले गये। निद्रा-वाण का प्रयोग कर उन्होने राक्षसियों को इस प्रकार अचेत कर दिया, जिससे उन्हें कुछ भी पता नहीं चला ।। ९२ ।। जानकी चिन्ता-शोक से कातर थी। हाथों मे पायस लेकर इन्द्र उनके सामने खड़े हो गये। बोले, देखो सीता, मैं देवराज इन्द्र हूँ, राम-लक्ष्मण का सब कुछ कुशल है ।। ९३ ।। तुम शोक छोड़कर यह पायस खा लो। इससे सौ वर्ष में भी तुम्हें कभी क्षुधा नही लगेगी। सारी तृषा मिट जायेगी, शरीर शीतल हो जायेगा। इसके पश्चात् रामचन्द्र से भी शीघ्र ही तुम्हारा मिलाप होगा ।। ३२९४ ।। रामचन्द्र शीघ्र ही आकर रावण का वध कर डालेंगे और हम सबकी सहायता से तुम्हारा उद्धार करेंगे। मेरे वचन वेद-वाक्य के समान सत्य है, तुम शंका न करो। मैं राक्षसियों को 'निद्रावाण' मारकर यहाँ आया हूँ ।। ३२९५ ।। सीता ने कहा— तुम्हारा वचन संभवतः सत्य है। पर तुम इन्द्र हो यह मैं किस प्रकार समझूँ ? रामचन्द्र ने मुझसे देवराज के रूप के संबंध में बताया है। तुम छद्म वेश छोड़कर

रामे कहि आछे देवराजर स्वरूप * छद्म परिहरि धरा आपोनार रूप ९६
शुनि इन्द्रे धरिलन्त आपोन स्वभाव * जाज्वल्य समान भूमि नो चोवय पाव
चक्षुत निमिष नाहि दिव्य वस्त्र गावे * हाते वज्र धरि थित अन्तरीक्ष मावे ९७
जानकीये बोलन्त जनक येन बाप * तोमाक देखिया मोर गुचिल सन्ताप
जानिलो तुमिसि भैला स्वामीर सनाथ * एतमान अनुग्रह आछय आमात ९८
बासवे पायस थैला जानकीर आग * जनकर जीवे करिलन्त तिनि भाग
राम लक्ष्मणक लागि दुइ भाग वढ़ाइला * एक भाग परमान्न आपुनियो खाइला ९९
जनकर जीउ येवे पायस खाइलन्त * सीताक सम्बुधि इन्द्रे स्वर्गक गैलन्त
सीता शान्त भैला किछु इन्द्रर वचने * रामर काहिनी कहो दण्डकार वने ३३००
मृगरूप राक्षसक मारि रघुवर * उतपात मन राव शुनि राक्षसर
आथे बेथे चलिलन्त आपोनार थाव * पाचत भृगाले काटिलेक चण्डराव ३३०१
राघवे बोलन्त मोर पोरे सर्व्वगाव * काढ़िलेक मायामृगे मोर थाने राव
भृगालर नाद शुनि बियाकुल चित्त * लखाइ एरि आछे जानो सीतार सन्नित २
चिन्ता करि रामदेवे शीघ्रे वहि यान्त * पथत लक्ष्मण आसे ताक देखिलन्त
हा हा लखाइ किनो तुमि करिला अकाज * सीताक एरिया आइलि घोर वनमाज ३
कि काज करिलि तइ लक्ष्मण ये बाप * सहिते ना पारो आउर हृदयर ताप
कि कारणे बाप तइ आइलि मोर भिता * घोर अरण्यर माजे जानो मरे सीता ४
आशेष बिलापे निज थाने गैल चलि * सीताक नेदेखि तापे परिलन्त ढलि
हरि हरि कत दुख दिले मोक बिधि * जनकर जीउ भैल सपोनर निधि ५

अपना रूप धारण करो यह सुन इन्द्र ने अपना रूप धारण किया ।। ९६ ।। वे विद्युत् की भाँति तेजस्वी थे, उनके चरण भूमि का स्पर्श नही करते थे। पलकें गिरती न थी, शरीर पर दिव्य वस्त्र था, हाथ मे वज्र लेकर वे अंतरिक्ष में स्थित थे ।। ९७ ।। जानकी बोली, तुम मेरे पिता जनक जैसे हो। तुम्हे देखकर मेरे संताप मिट गये। अब मुझे ज्ञात हो गया है कि तुम मेरे स्वामी पर सदय हो। हम पर तुम्हारा इतना अनुग्रह है ।। ९८ ।। इन्द्र ने जानकी के सम्मुख पायस रख दिया। जानकी ने उसे तीन भागों में बाँट दिया। राम लक्ष्मण के उद्देश्य से दो भाग निकाल दिये। एक भाग पायस स्वय खाया ।। ९९ ।। जानकी के पायस खा लेने पर उन्हें सम्बोधित कर इन्द्र स्वर्ग लौट गये। इन्द्र के वचनों से सीता कुछ शान्त हुई। अब दंडक वन में रामचन्द्र की कथा कहता हूँ ।। ३३०० ।। राघव ने मृग रूपी राक्षस को मार डाला पर उसकी पुकार सुनकर उनका मन विचलित हो उठा। वे शीघ्रता से अपने निवास स्थान की ओर लौट पड़े। उनके पीछे सियार जोर से बोल उठे ।। ३३०१ ।। रामचन्द्र बोले, इस मायामृग ने मेरे जैसी पुकार की है। इससे मेरा शरीर जलने लगा है। सियार की बोली सुनकर उनका चित्त इस आशंका से और भी व्याकुल हो उठा कि कहीं लक्ष्मण सीता को छोड़कर चला न आवे ।। २ ।। यह सोचते हुए प्रभु रामचन्द्र शीघ्रता से चले आ रहे थे। मार्ग में देखा कि लक्ष्मण चला आ रहा है। वे कहने लगे—हा-हा लक्ष्मण, तुमने यह कैसा अनुचित कर्म कर डाला। तुम सीता को घोर वन मे छोड आये ।। ३ ।। अरे वत्स लक्ष्मण, तुमने यह क्या कर डाला ? हृदय का दुःख अब मुझसे सहन नही होता। तुम भला मेरे पास क्यों चले आये ? कही मेरी सीता घोर अरण्य में मर न गयी हो ? ।। ४ ।। अशेष प्रकार से विलाप करते हुए वे अपने निवास-स्थान को आये। सीता को न देखकर रामचन्द्र दुःख के मारे ढल पड़े। वे कहने लगे—हरि, हरि, मुझे विधाता ने यह कैसा

कैक गैला बान्धै सीता मोर प्राणेश्वरी * आमाक अनाथ करि गैले परिहरि
जानकीर शोके मोर प्राण खानि याउक * दण्डुकार बनत शृगाले बेढ़ि खाउक ६
कतेक करिलो मइ इटो घोर पाप * राज्य नाश भैल आरो मरिलन्त बाप
बन्धुजन एरिया बनक आइलो तिनि * हराइलो सीताक ऐते मिलिल बिघिनि ७
कहि गैले सीता मोर दुखर सैतरी * झाण्टे मात मोर हेरा प्राण याइ हरि
सर्व्वाङ्ग सुन्दरी बान्धै सुबदनी सीता * यक्षे बा राक्षसे हरि निले कोन भिता ८
हेन बुलि कान्दिलन्त धरणीत लुटि * हा सीता बोलन्ते पराण जाय फुटि
हरि हरि लखाइ तइ कि करिलि मोक * अगनि लगाइलि गावे कि करिबो तोक ९
सीताक एरिया गैलि दहे शोके मोक * खाण्डा हानि मरो मइ तोर सुख हौक
सीता अबिहने न लागय राज्यभार * बिषप्राय देखो मइ सकले संसार ३३१०
प्राणेश्वरी बिने मइ मरिबो बनत * एवे कैकेयीर हौक कौतुक मनत
राघवर शोके लक्ष्मणक मारे पुलि * दुइहाते रामक धरिला वीरे तुलि ११
शुनियो समाजे इटो रामायण कथा * इटो संसारत सुख नाहिके सर्व्वथा
इहाके ईश्वर रामे करिला बिदित * ते सम्बे लभिला दुख एरा इटो भित १२
परमं ईश्वर राम सीता जगन्माव * देखाइलन्त बिषयी जनर इटो भाव
महाधर्म्मी यिटो अधर्म्मर नाहि लेश * सियोजने संसारत भुञ्जे महा क्लेश १३
ईश्वर ईश्वरी दुयो देखाइलन्त ताक * तासम्वार नाहि दुख जाना निष्ट बाक
हेन जानि विषयर आशा दूर करि * निरन्तरे नरे डाकि बोला हरि हरि १४

दुःख दिया। जानकी भी आज मेरे सपनों की निधि बन गयी ।। ५ ।। हाय, हाय, मेरी वान्धवी, प्राणेश्वरी सीता हमें अनाथ छोड़कर तुम कहाँ चली गयी ? जानकी के शोक से मेरे प्राण भी निकल जाये। दंडक वन मे शृगाल इसे घेरकर खायें ।। ६ ।। मैंने कितना घोर पाप किया है जिससे कि राज्य का विनाश हुआ, पिता जी की मृत्यु हो गयी। बधुजनों को छोड़कर हम तीनो वन में आये परन्तु यहाँ भी ऐसा विघ्न आ पड़ा कि सीता को भी मैंने खो दिया ।। ७ ।। मेरे दुःख की सहचरी सीता कहाँ चली गयी। शीघ्र बोलो, मेरे प्राण निकले जा रहे हैं। सर्वांगसुन्दरी, बान्धवी, सुन्दर वचन बोलनेवाली सीता, तुम्हे यक्ष या राक्षस कौन किस ओर हर ले गया ? ।। ८ ।। यह कहकर रामचन्द्र धरती पर लोटकर रोने लगे। हा सीता, हा सीता, कहते हुए मानों उनके प्राण निकलने लगे। हरि, हरि, लक्ष्मण तूने मुझे क्या कर डाला, मेरे समस्त शरीर में अग्नि जला दी। अब मैं तुझे क्या करूँ ?।। ९ ।। तू सीता को छोड़ गया, अब शोक मुझे दग्ध कर रहा है। मै खड्ग मारकर मर जाऊँ, तेरा सुख हो। सीता को छोड़कर मुझे राज्य-भार नही चाहिये। मै इस सम्पूर्ण संसार को विष जैसा देख रहा हूँ ।। ३३१० ।। प्राणेश्वरी के बिना मै वन में जाकर मर जाऊँगा। अब कैकेयी के मन में आनन्द होवे। रामचन्द्र के शोक से लक्ष्मण भी जलने लगे। उन्होंने दोनों हाथों से राम को धीरे-धीरे उठाया ।। ११ ।। सामाजिक गण, यह रामायण कथा श्रवण करो। इस संसार में सुख सर्वथा नही है। ईश्वर रामचन्द्र ने इसी को प्रकट किया है। उन सबको भी यहाँ दुःख ही उठाना पड़ा, इसलिए इसका मोह छोड़ दो ।। १२ ।। राम परमेश्वर है, सीता जगन्माता हैं। इन्होंने विपयी जनों की यह लीला दिखायी है। जो महान् धार्मिक है, अधर्म का लेशमात्र जिसमें नही है, उसे भी संसार में महान् कष्ट भोगने पडते है ।। १३ ।। ईश्वर और ईश्वरी दोनों ने यही दिखाया है। परन्तु यह सत्य समझो कि उन दोनों को वास्तविक कोई दुःख नहीं है। ऐसा जानकर विषयों की आशा छोड़कर निरन्तर पुकार-पुकार कर हरि-हरि बोलो ।। ३३१४ ।।

लक्ष्मणर प्रवोध दानत रामर क्रोध

दुलड़ी

हेट मुण्डे गुणि लक्ष्मणे बोलन्त ददा शुना मोर बाणी ।
आपोनार निज करमर दोषे मरिला सीता गोसानी ॥
चित्त थिर करि शुनियोक ददा मोत एरा असन्तोष ।
स्वरूप काहिनी कहो शुनियोक मोर किछु नाहि दोष ॥ ३३१५
साक्षाते तोमार येन आर्त्तनाद शुनिलन्त सती सीता ।
चमकिया देवी मोक बुलिलन्त चल राघवर भिता ॥
राघवर वाक शुनिया मोहोर हेरा प्राण फुटिजाय ।
स्वामी भिक्षा मइ मागोहो तोमात दियोक आवे लखाइ ॥ १६
प्रबोधिया मइ बुलिलो ताहाङ्क नुहिवा देवी हताश ।
इटो रवि तले जाना कदाचितो रामर नाहि विनाश ॥
महाक्रोध करि बुलिलन्त सीता मोहोर वचन शुनि ।
हा ओरे पापिष्ठ लखिलोहो मइ नया तइ यिवा गुणि ॥ १७
सतिनीर पुत्र इहाके से लागि आसि आछ वन माज ।
चुम्पि आछ मने रामर मरणे मोक भजिवाक चास ॥
दुर्व्वार वचन शुनिया मोहोर हृदय कम्प लरिल ।
कहो स्वरूपत सरल वृक्षत निर्घात येन् परिल ॥ १८
सेहिसेकारणे जानिवाहा प्रभु हाते धनु शर धरि ।
महामन्यु करि तोमार पाशक गैलो सीता परिहरि ॥
हेन जानि आवे मन्युक तेजिया करियो दृढ़ो मनत ।
उठियोक ददा सीताक खुजित पशियो इटो वनत ॥ १९

लक्ष्मण के सांत्वना देने पर राम का क्रोध

सिर झुकाये, मन में विचार कर लक्ष्मण ने कहा, भैया, मेरे वचन सुनिये । स्वयं अपने ही कर्म-दोष से देवी सीता को मरना पड़ा है । भैया, चित्त स्थिर कर सुनिये, मुझपर असंतुष्टि छोड़ दीजिये । मैं सत्य कथा सुना रहा हूँ; मेरा कोई अपराध नहीं है ॥ ३३१५ ॥ साक्षात् आपकी ही भाँति आर्तनाद सुनकर सती सीता ने चौंककर मुझसे कहा, शीघ्र ही राघव के पास चले जाओ । अरे, राघव की पुकार सुनकर मेरे प्राण निकले जा रहे हैं । लक्ष्मण, तुमसे मैं स्वामी की भिक्षा चाहती हूँ, मुझे उन्हें ला दो ॥ १६ ॥ मैंने उनको सांत्वना देकर कहा—देवी, हताश न होओ, इस सूर्य के तले कदापि राम का विनाश होनेवाला नहीं है ऐसा समझ लो । मेरे वचन सुनकर सीता ने महाक्रोध कर कहा—अरे पापी, तू क्या सोचकर नहीं जाता, मैं समझ गयी हूँ ॥ १७ ॥ अरे सौत के बेटे ! क्या इसीलिए तू वन में आया है । तू मन में सोचता है कि राम के मर जाने पर मुझे भोगेगा । उनका यह दुर्वार वचन सुनकर मेरा हृदय भी कम्पित हो उठा । मैं सत्य कहता हूँ कि सरल वृक्ष पर मानों वज्रपात हुआ ॥ १८ ॥ हे प्रभु ! आप जानिये कि इसी कारण हाथों में धनुप-बाण लेकर मन में अनेक विचार करते हुए सीता को छोड़ मैं आपके पास गया । ऐसा सोचकर अब दुःख करना छोड़ मन को दृढ़ कीजिये । भैया, उठिये, हम सीता को खोजने हेतु इस वन में प्रवेश करें ॥ १९ ॥ जिस व्यक्ति ने सीता को हरण कर लिया है, उसकी

थिटो जने सीता हरिया निलेक तार आयु भैल क्षीण ।
तोमार अनिष्ट चिन्तिया पापिष्ठ जीवे सिटो कत दिन ।।
राघवे बोलन्त शुनियो लखाइ हेनसे तइ अबोध ।
तोर कि कारणे स्त्रीर बचने एत मान भैल क्रोध ।। ३३२०
मइ किबा हेन बाक्य कन्ते तोक कत खुञ्चि खुञ्चि मारि ।
मोहोर विधिये लिखित ताहाक बाधित आर न पारि ।।
एहि बुलि हाते धनु शर धरि दुयो चालिलन्त गाव ।
सीताक खुजिते खुजिते गैलन्त बिकल आति स्वभाव ।। २१
यतेक दुर्गम थाने खजिलन्त नाना विध बन देश ।
बिलर भितर पर्ब्बत गह्वर चाहिला दुयो अशेष ।।
बित बित करि नदी गोदाबरी चाहिला तार दुइ तीर ।
बहु बने चाया सीताक नपाया पोड़य शोके शरीर ।। २२
पांचे महाक्रोध करिया मनत रामदेव महाबीर ।
हाते अग्निशर धरि रघुवर मेदिनीत भैला थिर ।।
क्रोधिया राघवे बचन बोलन्त जाज्ज्वल्य समान आखि ।
मोर दोष नाइ चन्द्र सूर्य्य बायु बरुण हैबाहा साक्षी ।। २३
त्रिदश देवता सबाको सम्बुधि क्रोधे बुलिलन्त वाणी ।
येवे भाले भाले याइबे जानकीक एति क्षणे दिया आनि ।।
नुहि त्रिदशक एहि शरे मारो आजि सबे मान सारो ।
समस्ते नागक संहरो सकले पाताल पुर बिदारो ।। २४
सीतार सन्तापे तिनियो भुवन थाकिबाक सुखे नेदो ।
परम दुर्व्बार शरक हानिया तिनियो लोकक भेदो ।।
दशरथ तन— यर मोर तेवे कथाक केवे न जानि ।
यत सुरासुर सबाके मारिबो आजि एइ शरे हानि ।। २५

आयु क्षीण हो गयी है । वह पापिष्ठ आपका अनिष्ट चिन्तन कर कितने दिन जीवित रह सकता है ? राघव बोले—लक्ष्मण, सुन, तू इतना अबोध है, भला नारी के वचनों से तुझे किस कारण इतना क्रोध हुआ ? ।। ३३२० ।। परन्तु मै अब तुझे ऐसे वाक्य-वाणों से खोद-खोदकर क्या मारूँ ? मेरे विधि ने जो लिख दिया है, उसे तो अब बाधा नही दे सकता । यह कहकर हाथों में धनुष-वाण लेकर दोनों उठ पड़े । वे सीता को खोजते-खोजते अत्यधिक व्याकुल हो उठे ।। २१ ।। जो-जो दुर्गम स्थान थे, अनेक प्रकार के वन-प्रदेश थे, उन लोगों ने सर्वत्र खोजा । विलों में, पर्वतों-गुफाओं में दोनों ने अविराम खोज देखा । गोदावरी के दोनों तटों पर कण-कण ढूँढ़ मारा, अनेक वनों में देखा, पर सीता को न पाकर शोक से शरीर जलने लगा ।। २२ ।। इसके पश्चात् महावीर प्रभुवर रामचन्द्र ने महाक्रोध कर हाथ में अग्नि वाण ले धरती पर खड़े हो गये । उनकी आँखें अग्नि शिखा की भाँति जल उठी, वे क्रोध से बोलने लगे—चन्द्र, सूर्य, वायु, वरुण साक्षी रहना; मेरा कोई दोष नहीं है ।। २३ ।। तीसों देवों को सम्बोधित कर वे कहने लगे—यदि तुम सव कल्याण चाहते हो तो शीघ्र इसी क्षण जानकी को ला दो । नहीं तो इसी वाण से (सकल) देवों को मारकर सभी अहंकार चूर कर दूँगा । समस्त नागों का संहार कर पातालपुरी को विदीर्ण कर डालूँगा ।। २४ ।। सीता के सन्ताप से मै तीनों भुवनों को सुख से रहने नही दूँगा । परम दुर्बार वाण मारकर तीनों लोकों को भेद डालूँगा । मै दशरथ-पुत्र राम हूँ ।

यक्ष राक्षसक सबाके मारिवो आवर गन्धर्व्व गण ।
मोहोर मन्दक आचरिया सुखे थाकिवेक कोन जन ॥
कमन दुर्ज्जने सीताक निलेक शीघ्रे आनि दिया मोक ।
तेवेसे आमार पलाइवेक सवे दारुण हियार शोक ॥ २६
नुहि तेवे मइ उदयास्त गिरि सवाक हानि फुरिवो ।
अग्निर अस्त्रक हानिया तिनियो भुवन आजि पुरिवो ॥
शुन शुन वोलो भैयाइ लक्ष्मण क्षमिवाक नुयुवाय ।
शीतल प्राणीक जानिवि निश्चय केहोजने नडराय ॥ २७
शनैश्चर क्रूर— ग्रहर नामत सर्व्वस्व सवे तेजय ।
आति साम्य चन्द्र ग्रहर निमित्ते फुल पातो ने दिवय ॥
हेन बुलि राम धनुक धरिया टङ्कार आति करिल ।
टल वल करि तिनियो भुवन एकत्र हुया लरिल ॥ २८
परम अमृत रामर चरित्र शुनिवाको कौतूहल ।
शुनियो सकल परम मङ्गल धर्म्म इसे सुनिर्म्मल ॥
खाया दाया सुखे वसिया शुनन्ते पूरे मनोरथ काम ।
अविद्यार हात एराइवा साक्षात डाकि वोला राम राम ॥ ३३२९

लक्ष्मणर सान्त्वना दान । राम-लक्ष्मणर सीता-अन्वेषण, जटायुर लगत साक्षात् आरु जटायुर शवदाह

पद

गगनक मुखे राम जुरिलन्त शर * हातत धरिला चापि लक्ष्मण कुमार

तो भी मेरी कथा कोई नही जानता । आज इस वाण से ही मैं सभी सुर-असुर सबको मार डालूँगा ॥ ३३२५ ॥ मैं यक्ष, राक्षस, गंधर्व सभी को मार डालूँगा । भला मुझसे मंद आचरण कर कौन सुख से रह सकता है । कौन दुर्जन सीता को ले गया ? मुझे शीघ्र ला दो । तभी मेरे हृदय का दारुण शोक मिट सकेगा ॥ २६ ॥ नही तो मैं उदयगिरि से लेकर अस्तगिरि तक सर्वत्र सबको मारता फिरूँगा, आग्नेयास्त्र का संधान कर आज तीनो भुवनों को जला डालूँगा । सुनो भाई लक्ष्मण, किसी को क्षमा करना उचित नही है । यह निश्चय समझ लो कि शीतल रहनेवाले प्राणी से कोई भी डरता नही ॥ २७ ॥ क्रूर ग्रह शनि के नाम पर सभी सब कुछ दान आदि किया करते है, अत्यंत सौम्य ग्रह चन्द्र के निमित्त कोई फूल-पत्ती भी नही देते । यह कहकर राम ने धनुष लेकर घोर टंकार किया । इससे खलवली मचने के कारण त्रिभुवन एक साथ कम्पित हो उठा ॥ २८ ॥ राम का परम अमृतमय चरित्र सुनकर कौतूहल होता है । यही परम पवित्र, मगलमय धर्म है, इसे सभी लोग श्रवण करो । खा-पीकर सुखपूर्वक वैठकर सुनने पर सभी मनोरथ के कार्य पूर्ण हो जाते हैं । अज्ञान से मुक्ति मिल जाती है । पुकार कर राम-राम कहो ॥ ३३२९ ॥

लक्ष्मण द्वारा सांत्वना प्रदान, राम-लक्ष्मण का सीता-अन्वेषण, जटायु से साक्षात्कार और जटायु की अंत्येष्टि

रामचन्द्र ने आकाश की ओर देखकर वाण का संधान किया । तब कुमार लक्ष्मण ने उनका हाथ पकड़ लिया । राम से कहा—भैया, व्याकुलता छोड़ दीजिये ।

रामक बोलन्त ददा तेजियो बिकल * प्रजाक संहरि आवे पाइबा कोन फल ३३३०
आपदत क्रोध येवे करिबा आपोने * जगतर बर्व्बरक बुजाइब के मने
तुमिसे शङ्कर ब्रह्मा तुमिसे दैत्यारि * निमेषे के त्रिभुवन दहिबाक पारि ३१
आपुनि स्रजिला इटो सकले जगत * ताक संहरिबा आवे कमन महत
शीतल स्वभाव एरि उग्र केने भैला * त्रैलोक्य दहिते हाते धनुशर लैला ३२
एकर दोषत केने मारिबा सबाक * चिन्तियो उपाय पाइ यिमते सीताक
इटो सब क्रोधे आन किछु न साधय * कीर्त्ति छन्न होवे परलोकक बाधय ३३
लक्ष्मणर बोले राम भैला शान्त मन * देखिलन्त पाचे भागि आछे रथखान
राघवे बोलन्त लखाइ देखा विपरीत * रथ ध्वज भागि परि आछय भूमित ३४
भग्नरथ देखि सर्ब्ब कार्य्यक बुजिल * सीतार कारणे एथा दुइबीर युजिल
हेन बुलि भ्रमिते लागिला सबे बन * कतो दूरे जटायुक भैला दरशन ३५
पक्षीर सकले गाव तेजे तोल बोल * धनुशर जुरि राम शीघ्रे यान्त कोल
देख देख लखाइ तइ बार्त्ताक न पाइल * एहि पक्षीराजे से सीताक मोर खाइल ३६
मायावन्त राक्षस चटक रूपे खाइल * मोर प्राणेश्वरीक गर्भते भराइल
हरि हरि बान्धे सीता जनकर जीउ * आर ठोठ प्रहारे तोहोर गैल जीउ ३७
लखाइ देवरक तोर पाशर गुचाइलि * द्वीपत पतङ्ग येन प्राणक सुजाइलि
हाओरे पापिष्ठ आजि तोर मान सारो * मोर सीता खाइलि तोक बिगुटिया मारो ३८
हेन बुलि रामे शर धनु जुरिलन्त * चक्षु मेलि जटायु रामक देखिलन्त

प्रजा का संहारकर अब कौन-सा फल मिलेगा ? ।। ३३३० ।। आपत्ति-काल में यदि आप ही क्रोध करेंगे, तो संसार के अन्य बर्बरों को कैसे समझायेंगे, आपही शंकर, ब्रह्मा हैं, आपही दैत्यारि विष्णु है। आप निमिषमात्र में त्रिभुवन को भस्म कर सकते है।।। ३१ ।। इस समस्त जगत का सर्जन आपने ही किया है। अब भला इसका संहार करने में कौन सी बड़ाई होगी ? अपना शीतल स्वभाव छोड़कर उग्र क्यों हो उठे हैं ? त्रिभुवन को भस्म करने हेतु हाथों में धनुष-बाण क्यों ले लिये ? ।। ३२ ।। एक के अपराध के कारण सबको क्यों मारना चाहते है ? अब ऐसे उपाय का चिन्तन कीजिये जिससे सीता को पा सकें। इस प्रकार क्रोध करने से तो कुछ भी सिद्ध नहीं होगा। इससे कीर्ति नष्ट होगी, परलोक का मार्ग भी रुक जायेगा ।। ३३ ।। लक्ष्मण के कथन से राम का मन शान्त हुआ। इसके पश्चात् उन्होंने देखा कि रथ टूटा हुआ है। राघव बोले—लक्ष्मण, देखो, यह कैसी विपरीत बात है। रथ की ध्वजा टूटकर भूमि पर पड़ी हुई है ।। ३४ ।। टूटे हुए रथ को देख यह समझ में आया कि यहाँ सीता के लिए दो वीरों का युद्ध हुआ है। ऐसा सोचकर वे दोनों वन में घूमने लगे। कुछ दूर जाने पर उन्हें जटायु दिखाई पड़ा ।। ३५ ।। पक्षीराज जटायु का सारा शरीर रक्त से लथ-पथ था। धनुष पर बाण चढ़ाये राम शीघ्र ही उसके समीप पहुँच गये। उन्होंने कहा—देख-देख लक्ष्मण तुझे कुछ पता नहीं है, इसी पक्षीराज ने मेरी सीता को खा डाला है ।। ३६ ।। इस मायावी राक्षस ने पक्षी के रूप में मेरी प्राणेश्वरी सीता को खाकर उदरस्थ कर लिया है। हरि-हरि, बान्धवी, जनकनन्दिनी सीता, इसी के चोंच के प्रहारों से तेरे प्राण निकल गये हैं ।। ३७ ।। तूने अपने देवर लक्ष्मण को अपने समीप से हटा दिया और इसी कारण दीप में पतंग की भाँति अपने प्राण खोने पड़े। अरे पापी, आज मैं तेरा अहंकार चूरकर डालूंगा। तूने मेरी सीता को खा डाला है, मैं तुझे अशेष कष्ट देकर मार डालूंगा ।। ३८ ।। ऐसा कहकर रामचन्द्र ने धनुष पर बाण चढ़ा लिया, तब जटायु

आय वेथ करिया बोलन्त राम राम * दुर्ब्बार क्रोधक मोत करा उपशाम ३९
सीताक राखन्ते मोक टुटि गैल आयु * गरुड़र पुत्र मोक बोलय जटायु
रावण राक्षसे तयु सीताक हरिल * हेन जानि ताक आसि बाढ़ि रण दिल ३३४०
युज हारि बार पाचे भूमित परिल * चन्द्रहास हानि पाचे पाखाक काटिल
मोर महामित्र तयु बाप दशरथ * अग्नित पुरिलो पिम्पलर दिया पथ ४१
सीतार कारणे मोर प्राण खानि रैल * सि कारणे तोमात सकले कथा कैलो
हेन शुनि दुइ भाइ कान्दिला बिकले * चापिया धरिला दुयो जटायुर गले ४२
हरि हरि पक्षीराज कि भैल सन्ताप * आजिसि मरिल मोर दशरथ बाप
हा हा मरिलोहो बुलि दिला दीर्घ राव * अगनि लगाइले येन पोरे सर्व्वगाव ४३
कहिर रावणे मोर हरि निल सीता * तोमाक मारिया पाचे गैल कोन भिता
कोन वंशे उतपति तिरीचोर नट * सीता हरि निला तार कमन कपट ४४
मारिया पठाओं ताक यमर कटक * तोमाक जीयाइब पितृ समान चटक
जटायु बोलन्त हेन नुबुलिवा मोक * अनुग्रह आछे येवे तेजियोक शोक ४५
सदगति भैल तयु आगत मरिबो * चटक योनिते मइ संसार तरिबो
तुमियो करिवा पिण्ड जलाञ्जलि दान * इहात अधिक किवा चाओं बहुमान ४६
साफल लभिलो पृथिवीत अवतार * तोमार प्रसादे भैलो संसारर पार
शुनियोक राम तुमि खेदक न पाइवा * मङ्गल चाहिलो जानकीक तुमि पाइवा ४७
परम ईश्वर तुमि भैला अवतार * राक्षस कुलक तुमि करिवा संहार
विश्वश्रवा तनय रावण दुराचार * ताक मारि कार्य साधिवाहा देवतार ४८

ने आँखें खोलकर राम की ओर देखा। वह शीघ्रता से कहने लगा—राम, राम, मेरे प्रति दुर्वार क्रोध तज दो ॥ ३९ ॥ सीता की रक्षा करने के प्रयास में मेरा जीवन चला गया। मैं गरुड़-पुत्र जटायु हूँ। राक्षस-रावण तुम्हारी सीता को हर कर ले जा रहा है, ऐसा जानकर आगे बढ़ मैंने उससे संग्राम किया ॥ ३३४० ॥ वह युद्ध मे हारकर भूमि पर गिर पड़ा, तत्पश्चात् चन्द्रहास असि से मेरे पंख काट डाले। तुम्हारे पिता दशरथ मेरे महामित्र है। चीटे को मार्ग देकर मुझे अग्नि में जलना पड़ा है ॥ ४१ ॥ सीता के कारण मेरे प्राण चले गये हैं। इसी कारण तुमसे सारी कथा सुनायी है। यह सुनकर दोनों भाई व्याकुल होकर रोने लगे। दोनों भाई जटायु के गले लग गये ॥ ४२ ॥ हरि, हरि, पक्षीराज यह कैसा संताप हमें मिल रहा है। आज ही मेरे पिता दशरथ की मृत्यु हुई है। हाय, हाय, हम मर गये—कहते-कहते राम जोर से चीख पड़े। अग्नि से मानों उनका शरीर जलने लगा ॥ ४३ ॥ कहाँ का वह रावण मेरी सीता को हर ले गया है? तुम्हें मारकर वह किस ओर गया है? उस नारी-चोर, नट की उत्पत्ति किस वंश में हुई है? वह किस प्रकार का कपटी है कि सीता को हर ले गया? ॥ ४४ ॥ कहो, उसे मारकर यमलोक भेज दूँ। पक्षीराज तुम्हें पिता के समान मानकर जीवित कर दूँ। जटायु बोला—मुझसे ऐसा न कहो। यदि तुम्हारा अनुग्रह मुझ पर है तो शोक छोड़ दो ॥ ४५ ॥ तुम्हारे सम्मुख मरूँगा, इससे मेरी सद्गति हो जायेगी; पक्षी-योनि मे जन्म लेकर भी मैं संसार से तर जाऊँगा। तुम भी मुझे पिंड और जलांजलि दोगे। इससे बढ़कर मुझे और बड़ा कौन-सा मान चाहिए ॥ ४६ ॥ मेरा संसार में जन्म लेना सफल हो गया क्योंकि तुम्हारे प्रसाद से मैं संसार से पार हो रहा हूँ। सुनो राम, तुम खेद न करो, तुम्हारी मंगल-कामना करता हूँ, तुम जानकी को प्राप्त कर लोगे ॥ ४७ ॥ तुम परमेश्वर हो, संसार में तुमने अवतार धारण किया है। तुम

सीताक लभिबा कीर्त्ति करिबा बिस्तार * आके शुनि मणि लोके तरिब्रे संसार
महापाप बिमोचन तयु गुण नाम * साक्षाते देखिलो मोर सिद्धि भैल काम ४९
तोमाक सुमरि मोर याओक प्राण बायु * राम राम सुमरन्ते आछन्त जटायु
परम आनन्दे चाइ आछा दुयोभाइ * सेहि समयते जटायुर प्राण चाप ३३५०
चक्षु उलटाया धरणीत दिला ठोठ * सर्व्वाङ्गे परिल ढलि कलेवर गोट
प्राण छारि गैल मुख व्यादान करिल * घाड़ गोट पालटाया भूमित परिल ५१
कम्प कम्प करिया शरीर गैल काटि * मरिल जटायु वीर काश्यपर नाति
श्रीराम लक्ष्मण ग्रीवे चापि धरिलन्त * दुस्तरर वन्धु बुलि मन्यु करिलन्त ५२
चिताखान निर्म्मिलन्त वहल विस्तार * ताते तुलि वाङ्क करिलन्त संस्कार
दुइ भाइ दिला पाचे पिण्ड जलाञ्जलि * रौ माछे दिलन्त चटकर काक बलि ५३
सब कार्य्य करि लरि गैला बीर दुइ * बनत फुरन्त आति आकुलित हुइ

राम-लक्ष्मणर कबन्धर लगत साक्षात् आरु कबन्धर उपदेश

पाया दुइको कबन्धे धरिले कुतुहले * गिलिबाक लागि कोल चपाइलेक बले ५४
राघवे बोलन्त सिद्धि कैकेयीर काज * पापिष्ठीर काजे प्राण याइब बनमाज
भरते करोक राज्य करि रङ्ग मन * धिक धिक मोहोर जीवन अकारण ५५
लक्ष्मणे बोलन्त नुइ अनुशोच बेला * दुर्घोर आपरे पाइले नुयुवाइ हेला
झाण्ट करि आसा दुयो खड़गक धरियो * दुराचार राक्षसर बाहुक छेदियो ५६

राक्षस वंश का संहार करोगे। रावण विश्रवा का पुत्र है। उसे मारकर तुम देवों का कार्य सिद्ध करोगे ।। ४८ ।। तुम सीता को प्राप्त करोगे, निज कीर्ति का विस्तार करोगे जिसे सुनकर, गानकर, लोग संसार से तर जायेंगे। तुम्हारे गुण-नाम महापाप को मिटानेवाले है। मैं साक्षात् देख रहा हूँ कि मेरे कर्म सिद्ध हो गये ।। ४९ ।। तुम्हारा स्मरणकर मेरे प्राणवायु निकल जायें—कहकर जटायु 'राम, राम' का स्मरण करने लगा। दोनों भाई उसे परम-आनन्द से देखते रहे, उसी समय जटायु के प्राणवायु निकल गये ।। ३३५० ।। उसने आँखें उलटकर धरती से चोंच लगा लिया। सारे अंग-सहित सम्पूर्ण शरीर ढल पड़ा। उसके प्राण निकल गये, मुख खुल गया, गला मोड़कर वह भूमि पर गिर पड़ा ।। ५१ ।। काँपता हुआ उसका शरीर जड़-सा हो गया। इस प्रकार कश्यप के नाती वीर जटायु की मृत्यु हो गयी। श्रीराम-लक्ष्मण ने उसकी ग्रीवा दबा ली। 'संकट का मित्र' कहकर अनुशोचना की ।। ५२ ।। उसके लिए बड़ी-सी चिता बनायी और उसे उस पर रखकर अग्नि-संस्कार कर दिया। इसके पश्चात् दोनों भाइयों ने पिंड और जलांजलि दी। रोहू मछली से जटायु की काक-बलि दी ।। ५३ ।। सारे कार्य करने के पश्चात् दोनों वीर वहाँ से शीघ्रतापूर्वक चले गये और परम व्याकुल हो अरण्य में घूमने लगे ।।

राम-लक्ष्मण की कबन्ध से भेंट और कबन्ध का उपदेश

तभी दोनों से कबन्ध की भेंट हो गयी। कबन्ध ने उन्हें अनायास पकड़ लिया और उन्हें खा जाने हेतु बलपूर्वक समीप खींच लिया ।। ५४ ।। राघव बोले—अब कैकेयी की कार्य-सिद्धि हो गयी। उसी पापिनी के कारण आज वन में हमारे प्राण जा रहे हैं। अब भरत प्रसन्नतापूर्वक राज्य करें। मेरे निष्फल जीवन को धिक्कार है ।। ५५ ।। लक्ष्मण ने कहा—यह अनुशोचना का समय नहीं है। विषम संकट में

कबन्धे बोलन्त तोरा दुइजन कहिर * हाते धरि जानितो क्षत्रिय महावीर
त्रिभुवने नाहि हेन मुनिष अचल * तोरा दुइक टानन्ते टुटिल मोर बल ५७
देवासुर माजे यत मुनिष देखिलो * सबातो अधिक तोरा सबक देखिलो
मोर हाते परिया न भैले एमो काल * किनो निदारुण एमो मुनिष बिशाल ५८
बिधिये आहार मोर मिलाइलेक आनि * वावे लैयो मारो बोला आपोनक हानि
कवन्ध राक्षस पाचे बलत घाटिल * दुइ भाइ खाण्डा लैया दुइ हात काटिल ५९
वाहुछेद भैला देखि रङ्ग वर पाइल * राम लक्ष्मणक जानि मात पुरुजाइल
कैरा परा आसि भैला तोमार कि नाम * त्रिभुवने नाहि वीर तोमार उपाय ३३६०
लक्ष्मणे कहिला आपोनार यत काज * आमासार पितृ दशरथ महाराज
कैकेयीर बोले वने पठाइलन्त बापे * आपोनो मरिला पाचे आमार सन्तापे ६१
एहेन्तेसे राम बर निकारक पाइला * इहान घरणी वन माजत हराइला
ताहाङ्क खोजन्ते फुरो आति दुख मन * तुमि कोन हेन वेशे कहा एतिक्षण ६२
कवन्धे बोलय भैला राम अवतार * आमार भैलेक आवे शापर उद्धार
पूर्ब्बत आछिलो आमि गन्धर्ब्बर वेश * राक्षस स्वरूप धरि आइलो बनदेश ६३
ऋषि सकलक पाइ अन्याय करिलो * स्थूलशिरा नामे ऋषि आमाक शापिल
आमि महाऋषिर जनिलि तइ भय * विकृत राक्षस हुइवि नाहिके संशय ६४
हात योरे पाचे मइ करिलो कातर * शाप अनन्तरे ऋषि मोक दिला वर
यि कालत रामचन्द्र हुन्त अवतार * तेहे गैया वाहुछेद करिवे तोमार ६५

पड़ जाने पर उसकी अवहेलना न करना ही उचित है। आइये, हम दोनों शीघ्रतापूर्वक खड्ग धारण करें और इस दुराचारी राक्षस की भुजाएँ काट डालें ॥ ५६ ॥ कवन्ध बोला—तुम दोनों कहाँ के हो, हाथ से पकडने पर तो लगा है कि क्षत्रिय महावीर हो, त्रिभुवन में तुम दोनों जैसे अविचल रहनेवाला कोई मनुष्य नही है। तुम दोनों को खीचने में मेरा वल टूट गया ॥ ५७ ॥ देवासुरों में जितने मनुष्य हमने देखे हैं, तुम दोनों को उनसे कही अधिक पाया है। वह सोचने लगा मेरे हाथों में पड़कर इन दोनों की मृत्यु नही हुई, ये दोनो विशाल मनुष्य कितने निदारुण है ॥ ५८ ॥ विधि ने मेरा आहार मिला दिया है, इसी कारण बाँहों मे लेकर मारना चाहता था पर अब तो अपनी ही हानि हो रही है। अन्त में राक्षस कवन्ध वल मे हार गया। दोनों भाइयों ने खड्गों से दोनों भुजाएँ काट डाली ॥ ५९ ॥ भुजाएँ कट जाने पर कवन्ध बड़ा ही प्रसन्न हो उठा और राम-लक्ष्मण को पहचानकर कहने लगा—तुम लोग कहाँ से आ गये ? तुम्हारे नाम क्या है ? त्रिभुवन मे कोई वीर तुम्हारे समकक्ष नहीं है ॥ ३३६० ॥ तब लक्ष्मण ने उन्हें अपना सारा परिचय देते हुए कहा—हमारे पिता महाराज दशरथ हैं। कैकेयी के वचन से पिताजी ने हमें वन में भेज दिया, पर हमारे संताप से अन्त में उनकी भी मृत्यु हो गयी ॥ ६१ ॥ यहाँ वन में रामचन्द्र को वहुत ही कष्ट उठाना पड़ा है। इनकी पत्नी वन में ही खो गयी है। हम बड़े दुखी मन से—उसे ही खोजते घूम रहे हैं। तुम इस वेश में कौन हो, अब हमें बताओ ॥ ६२ ॥ कवन्ध बोला—राम का अवतार हो गया; मुझे अब शाप से मुक्ति मिली। पहले मैं गन्धर्व था। राक्षस का रूप धरकर वन में आया ॥ ६३ ॥ ऋषियों को पाकर उन पर अत्याचार करने लगा। तब स्थूलशिरा नाम के ऋषि ने अभिशाप दिया—तू हम महर्षियों को आतंकित करता है, इससे तू विकृत राक्षस बन जायेगा, इसमें कोई सन्देह नही है ॥ ६४ ॥ मैने हाथ जोड़कर विनती की, तब मुनि ने शाप देने के अनन्तर वर भी दिया—जिस काल में रामचन्द्र का अवतार होगा,

तैसानि आपोन देह पाइबा महाबीर * एहि बुलि अन्तर्द्धान भैला स्थूलशिर
दनु नामे भैलो आमि राक्षस बिशाल * आराधिलो ब्रह्माक जपिलो चिरकाल ६६
महायत्न करिया ब्रह्माक आराधिलो * चिरकाल जीवाक तेहेन्ते बर दिल
ब्रह्मार बरत मरिबाक नाहि डर * इन्द्रक समर करिलोहो एकेश्वर ६७
लक्षिलन्त सुरपति आमार प्रबन्ध * बज्र हानि शरीरे बैसाइला मोर स्कन्ध
देखियोक शिर मोर नहिके गलत * शरीरे पशिया रैल बज्रर घावत ६८
देवराज आमाक करिला हेन दान * बरर प्रभावे तभो न गैल परान
स्तुति करि बुलिलो शुनियो देवराय * चक्षु मुख नाहि दियो जीवार उपाय ६९
हेन शुनि इन्द्रदेव पाइला मनोदुख * दीर्घ दुइ बाहु दिला हृदयत मुख
प्रहरेक पथ माने हात मेलि पाओं * पशु सब मारि आनि गोटहि चोबाओं ७०
तोमार प्रसादे आवे पाइलो निज थान * झाण्टे करि पोरा मोक हौक दिव्य ज्ञान
गात खानि कबन्धक चितात तुलिल * अनेक प्रबन्धे ताक दो भायो पुरिल ७१
जगतर नाथे संस्कारक करिल * राक्षस गुचिया दिव्य रूपक धरिल
आकाशत थाकि भैल गन्धर्ब्बर बेश * रथे चरि रामक बोलय उपदेश ७२
शुनियोक राम तिनि भुवनर नाहा * उपाय बोलोहो तुमि पूर्ब्बदिशे याहा
चम्पा नामे सरोबर कत दूरे थित * ऋष्यमुख गिरि आछे तार सन्निहित ७३
सुग्रीव बानर आछे ताहाते लुकाइ * बाली राजा गुचाइलेक देशर डकाइ
बाली राजा जिनिल सुग्रीव हारि दुखे * पाञ्च गुटि बानर आछय ऋष्यमुखे ७४

वे ही आकर तेरी भुजाएँ काट डालेंगे ।। ६५ ।। तब तू महावीर, अपना पूर्वशरीर पा जाएगा । यह कहकर स्थूलशिरा मुनि अन्तर्हित हो गये । तब मैं दनु नाम का विशालकाय राक्षस बन गया और बहुत समय तक जप करते हुए ब्रह्मा की आराधना की ।। ६६ ।। इस प्रकार महान् यत्नपूर्वक मैंने ब्रह्मा की आराधना की । तब ब्रह्मा ने मुझे चिरकाल तक जीवित रहने का वर दिया । ब्रह्मा के वर से मुझे मृत्यु का भय नहीं रहा । और मैंने अकेले ही इन्द्र से संग्राम किया ।। ६७ ।। देवराज इन्द्र ने मेरा प्रबन्ध देखकर वज्र का आपात कर मेरे मस्तक को शरीर में धँसा दिया । देखिये, मेरे गले पर सिर नहीं है । वह वज्र के आघात से शरीर में घुस गया ।। ६८ ।। देवराज ने हमें इस प्रकार का कर दिया, तो भी वर के प्रभाव से मेरे प्राण नही निकले । मैंने स्तुति की—देवराज, सुनिये । मेरे आँखें, मुख नहीं है, मुझे जीवित रहने का उपाय दीजिये ।। ६९ ।। यह सुनकर देवराज इन्द्र मन में दुखी हुए और मुझे दो लम्बी भुजाएँ दीं तथा हृदय में ही मुख बना दिया । मै हाथ बढाते ही पहर भर का मार्ग पा लेता हूँ और पकड़-पकड़कर पशुओं को मार-मार समूचा ही चबा जाता हूँ ।। ३३७० ।। आपके प्रसाद से अब मुझे अपना स्थान प्राप्त हो गया । अब मुझे शीघ्र ही जला डालिये जिससे दिव्य-ज्ञान हो जाये । उन दोनों भाइयों ने गढ़ा खोदकर कबन्ध को चिता पर रखा और अनेक यत्न से दोनों भाइयों ने उसे दाह दिया ।। ७१ ।। जगत के नाथ ने उसका संस्कार किया तब राक्षस-शरीर छोड़कर उसने दिव्य रूप धारण कर लिया । गन्धर्व का वेश धारणकर वह आकाश में स्थित हो गया और रथ पर चढ़कर राम को उपदेश देता हुआ कहने लगा—७२ ।। हे त्रिभुवन-नाथ रामचन्द्र ! सुनिये । मैं उपाय बतलाता हूँ । आप पूर्व-दिशा में जाइये । यहाँ से कुछ दूरी पर चम्पा नाम का सरोवर है । उसके निकट ही ऋष्यमुख पर्वत है ।। ७३ ।। वानर सुग्रीव वहीं छिपा हुआ है । उसे राजा वाली ने मारकर देश से निकाल दिया है । राजा वाली के विजयी होने पर पराजित सुग्रीव दुख से पाँच

ज्ञाण्ट करि आपुनि चलियो शाग वाढ़ि * ज्येष्ठ भाइ वाली तान भार्य्या निला काढ़ि
तेहे समे गैया तुमि कराहा सखीत्व * मारिब रावणे तेहे हैव उपस्थित ७५
हेन बुलि कवन्ध स्वर्गक चलि गैला * रङ्गे राम लक्ष्मण तथाक चलि गैला

श्रीराम-लक्ष्मणर चम्पा सरोवर दर्शन

दुइ भाइ पाइला गैला चम्पा सरोवर * कङ्क बक चक्रवाक देखिला विस्तर ३३७६
जलचर अनेक देखिला जातिष्कार * कुमुद कमल पुष्प देखिला अपार
चम्पार भितरे बसि आछे एक सिद्धा * नामत शवरी ताइ अति बर वृद्धा ७७
राम-लक्ष्मणक जानि विनय स्वभावे * नारायण जानिया नमिला दुइरो पावे
आउरे आउर काहिनी कहिला सेहि थाव * कौतुकते शवरीये चालिलेक गाव ७८
इन्द्रे पठाइ दिला ताइक दिव्य एक यान * ताते चरि शवरीये भैला अन्तर्द्धान
श्रीराम लक्ष्मणे चान्त सरोवर चम्पा * चतुर्द्दिके वेढ़ि आछे नागेश्वर चम्पा ७९
देव नाग रुवा जाति कनौर धुन्धुर * लवङ्ग मालती गन्ध सञ्चरय दूर
गुटि मालि तगर रायति यूती कुन्द * पारिजात सन्तान चन्दन वुन्दा बुन्द ३३८०
मनर दर्पण येन सुनिर्म्मल जल * सूर्य्यंर किरण येन रकत कमल
सुगन्ध पवन वहे मनत उल्लास * कुमुद प्रकाशे चम्पा सरोवर पाश ८१
जल पद्म स्थल पद्म देखि जातिष्कार * सेवाली नेवाली पुष्प देखिला अपार
मधुपायी चटक थाकय भरि पूरि * शवदते मधुपाज करँ फुरि फुरि ८२

वानरों के साथ ऋष्यमुख पर्वत पर रह रहा है ।। ७४ ।। उसके बड़े भाई बाली ने उसकी पत्नी को भी छीन लिया है। आप शीघ्र आगे बढ़ वहाँ जाइये और सुग्रीव से मित्रता कीजिये। आप वहाँ उपस्थित हो, उसकी सहायता से रावण-वध कर सकेंगे ।। ३३७५ ।। यह कहकर कवन्ध स्वर्ग को चला गया। राम-लक्ष्मण भी प्रसन्न हो उसके कहे अनुसार आगे बढ़ गये।

श्रीराम-लक्ष्मण का चम्पा-सरोवर-दर्शन

दोनों भाई चम्पा-सरोवर पहुँचे। वहाँ उन्होंने अनेक कंक, बगुले, चक्रवाक आदि पक्षी देखे ।। ३३७६ ।। वहाँ अनेक सुन्दर-सुन्दर जलचर पक्षी, अनगिनत कुमुद, कमल के फूल देखे। चम्पा सरोवर में एक सिद्धा बैठी हुई थी। उसका नाम शवरी था, वह बड़ी वृद्धा थी ।। ७७ ।। उसने राम-लक्ष्मण को आया जान, नारायण मानकर दोनों की चरणवन्दना की। उसने उन्हें और भी अनेक कथाएँ सुनायीं और बड़े आनन्द से खड़ी हो गयी ।। ७८ ।। इन्द्र ने उसी क्षण एक दिव्य-यान भेज दिया। शवरी उस पर चढकर अन्तर्हित हो गयी। तब श्रीराम-लक्ष्मण ने चम्पा-सरोवर को देखा जिसे चारों ओर से नागेश्वर, चम्पा आदि वृक्ष घेरे हुए थे ।। ७९ ।। देवों, नागों द्वारा रोपे हुए कर्णिकार, धुन्धुर, लवंग, मालती आदि की सुगन्ध दूर-दूर तक संचारित हो रही थी। मल्लिका, तगर, रायति, जूही, कन्द, पारिजात, सतान, चन्दन आदि प्रचुर खिले हुए थे ।। ३३८० ।। मन के दर्पण की भाँति उसका जल बड़ा ही निर्मल था, सूर्य-किरणों जैसे रक्त-कमल खिले हुए थे। मन मे उल्लास जगानेवाला सुगन्धित पवन प्रवाहित हो रहा था और चम्पा-सरोवर में कुमुद प्रकाशमान हो रहे थे ।। ८१ ।। सुन्दर-सुन्दर अनगिनत जल-पद्म, स्थल-पद्म, हरसिंगार, नवमल्लिका के फूल उन्होंने देखे। असंख्य मधुप और पक्षियों से वह स्थान परिपूर्ण था। मधुप गुंजारते हुए

राघवे बोलन्त लखाइ कामर पयाण * शरीर भेदिल मोर काम पञ्चबाण
चम्पा सरोवर देखि रामर हरिष * कतक्षण तहित करिला बिमरिष ८३
लक्ष्मणे बोलन्त ददा करियो गमन * कबन्धर बोल हैब सकले शोभन
दुइ भाइ चलि गैला सुस्थिर गमने * पर्ब्बतर कोलं गैया पाइला तेतिक्षणे ८४
पर्ब्बतत उठि रामे देखिलन्त पथ * दिव्य फल पुष्पचय देखिला समस्त
पर्ब्बतर निकटत पन्थ बहि यान्त * नाना सब गुल्मलता वृक्ष देखिलन्त ८५
नाना सब मृग पक्षी देखिलन्त तथा * पाञ्चगुटि बानर बसिया आछे तथा
एतेके अरण्य काण्ड भैल समापति * माधवे भणन्त महामानीये शुनन्ति ३३८६

दुलड़ी

नमो नमो राम दुर्ब्बादल श्याम तनु आति अनुपाम ।
सर्ब्ब पुरुषार्थ शिरत प्रकाश करे यार गुणनाम ॥
सर्ब्ब श्रुति रत्न शिरत बिराज याहार पद कमल ।
सर्ब्ब धर्म्म सार यार यश राशि मङ्गलरो सुमङ्गल ॥ ३३८७
हेनय परम ईश्वर आपुनि राम रूपे अवतरि ।
गृहस्थर यत धर्म्मक प्रकाश करिलन्त महाहरि ॥
धर्म्मवन्त सन्त शीतल स्वभाव समस्ते गुण आलय ।
सर्ब्ब धर्म्ममय निज यशचय प्रचारिला कृपामय ॥ ८८
महन्त सबर कर्णर भषण परम अमृतमय ।
इहार श्रवण कीर्तने तरय महा महा पापीचय ॥
जानिया रामर चरित्र शुनियो समाजिक यत यत ।
परम सुगम इसे महाधर्म्म दुर्घोर कलियुगत ॥ ८९

घूम-घूमकर मधुपान कर रहे थे ॥ ८२ ॥ राघव बोले—लक्ष्मण, देखो, काम का प्रयाण हो रहा है। काम ने पंचवाणों से मानों मेरे शरीर को वेध डाला है। चम्पा सरोवर देखकर रामचन्द्र बड़े हर्षित हुए। इसके पश्चात् वहाँ कुछ समय सीता के लिए मन में दुख किया ॥ ८३ ॥ लक्ष्मण बोले—भैया, आगे चलिये। कबन्ध के कहे अनुसार सब कुछ मंगल होगा। दोनों भाई धीर भाव से चलते गये और कुछ क्षण पश्चात् पर्वत के समीप पहुँचे ॥ ८४ ॥ पर्वत पर चढ़कर राम ने मार्ग देखा; वहाँ जो दिव्य फल-फूल खिले हुए थे, सभी देखे। उन्होंने देखा कि पर्वत के निकट से होकर मार्ग चला गया है। वहाँ अनेक प्रकार के लता-गुल्म, वृक्ष आदि शोभायमान हैं ॥ ८५ ॥ वहाँ अनेक प्रकार के मृग, पक्षी दिखाई दे रहे थे। वहीं पाँच वानर भी बैठे हुए दिखाई पड़े। यही अरण्यकांड समाप्त हुआ। माधव-कन्दलि वर्णित यह कथा महामानी गण श्रवण करते है ॥ ८६ ॥ दूर्वादल श्याम, अत्यन्त सुन्दर शरीर वाले, जिनके गुण-नाम सभी पुरुषार्थो के शीर्ष पर प्रकाशित है, जिनके चरण-कमल सभी श्रुति-रत्नों के मस्तक पर विराजित है, सर्व-धर्म-सार जिनकी यश-राशि मंगल का भी सुमंगल है, उन रामचन्द्र को बार-बार नमस्कार है ॥८७॥ ऐसे परम हरि, परमेश्वर ने स्वयं रामरूप में अवतार धारण कर गृहस्थों के आचरण करने योग्य धर्मो को प्रकाशित किया। वे धर्मवन्त सन्त, शीतल-स्वभाव, समस्त गुणों के आलय हैं। उन्ही कृपामय परमेश्वर ने सर्व-धर्ममय अपने यशसमूह का प्रचार किया है ॥ ८८ ॥ राम-कथा महन्त भागों के कानों का भूषण, परम अमृतमय है। इसके कीर्तन से महान् से महान् पापी भी तर जाते है। ऐसा जानकर हे सामाजिक गण, सबको राम-चरित्र

घोर कलि मले सवाको व्यापिले देखा स्थिर करि बुद्धि ।
यत चित्त वित्त अपवित्र मैल नाहि शरीरर शुद्धि ॥
मलिन जनर धर्म्मत कर्म्मत जाना नाहि अधिकार ।
दुइ गुटि अक्षर राम नाम लैया तरियो सुखे संसार ॥ ३३९०
ब्रह्मा आदि देवे वाञ्छिया न पावे भारत तनुर काया ।
हेनय परम दुर्ल्लभ शरीर किवा भाग्ये आछापाया ॥
हेन जानि जन्म जीवन साफलि धरा माधवर नाम ।
डाकि मुख भरि वोला उच्च करि निरन्तरे राम राम ॥ ३३९१

॥ इति अरण्यकाण्ड समाप्त ॥

का श्रवण करना चाहिए। इस भयंकर कलिकाल मे यही परम सुगम महाधर्म है ॥ ८९ ॥ अपनी बुद्धि को स्थिर कर देखो, घोर कलि-मल ने सवको व्याप्त कर रखा है। यहाँ सबके चित्त, सभी वित्त आदि को इसी कलि-मल ने अपवित्र कर रखा है, शरीर भी शुद्ध नही रह पाये हैं। समझ लो कि मलीन जनों का धर्म-कर्म में अधिकार नही होता। अतः केवल दो अक्षरों वाला 'राम' नाम लेकर सुख-पूर्वक संसार से तर जाओ ॥ ३३९० ॥ ब्रह्मा आदि देवगण इस भारत में शरीर धारण की इच्छा रखने पर भी प्राप्त नही कर पाते। ऐसा परम दुर्लभ शरीर तुमने कितने भाग्य से प्राप्त किया है। ऐसा समझकर जन्म और जीवन को सफल वनाने हेतु माधव का नाम लो और मुँह भरकर उच्चकंठ से निरन्तर राम-राम कहो ॥ ३३९१ ॥

॥ अरण्यकांड समाप्त ॥

किष्किन्ध्या काण्ड

श्रीरामर सैते सुग्रीवर सन्मिलन

पद

प्रणामिलो राम तिनि त्रैलोकर नाथ * निशाचर रावणक बधिला लङ्कात
सुग्रीवर हित बुद्धि बालीर मरण * माधवे भणिला श्रीरामर चरण ३३९२
रामायण कथाक शुनय यिटो जने * पाप मृग पलाइ येन सिंह दरशने
बिजुली चटक येन अथिर संसार * राम सुमरणे कोटि पुरुष उद्धार ९३
शुना सभासद राम चरित्र उत्तम * समस्त लोकर इसे धर्म्म मुख्यतम
इहार स्मरणे सुखे तरिबा संसार * जानि रामचन्द्रर कथाक करा सार ९४
अरण्यकाण्डर कथा भैला समापति * किष्किन्ध्याकाण्डर कथा शुनियो सम्प्रति
सीताक विचार करि श्रीराम लक्ष्मण * ऋष्यमुख पर्ब्बतक पाइला दुयोजन ९५
श्रीराम लक्ष्मण दुयो पर्व्वते उजान्त * दूरे बसि पाञ्चटि बानरे देखिलन्त
सुग्रीवे बोलन्त शुना बीर हनुमन्त * केरबा मनुष्य दुइ आमाक आसन्त ९६
जाना बाली दादा आति स्वभावे कपटी * चर करि पठाइला मनुष्य दुइ गुटि
कार्य्यटि लखिले आतिशय लागे डर * शीघ्रे गैया पशो आसा गिरिर गह्वर ९७
एहि बुलि सावहिते गैला कतोदूर * पद भरे मेदिनी कपिला नागपुर
शरीरर वायु लागि भाङ्गे बृक्षडाल * सिंह ब्याघ्र पलाइल महिष शृगाल ९८

श्रीराम के संग सुग्रीव का मिलन

त्रिलोकनाथ राम, जिन्होंने लंका में निशाचर रावण का वध किया उन्हें प्रणाम है। सुग्रीव के हित के लिए बाली की मृत्यु हुई श्रीराम की चरण-वन्दना करते हुए माधव कन्दली इसका वर्णन कर रहे हैं ।। ३३९२ ।। जो रामायण कथा श्रवण करता है, उसके पाप-रूपी मृग मानों सिंह के दर्शन से भाग जाते है। यह संसार बिजली की कौंध की भाँति अस्थिर है। यहाँ राम के स्मरण-मात्र से कोटि पुरुषों का उद्धार हो जाता है ।। ९३ ।। सभासदगण, राम के उत्तम चरित्र सुनो, यही समस्त लोकों का मुख्यतम धर्म है। इसके स्मरण से संसार से सुखपूर्वक तर सकते हैं। ऐसा जानकर रामचन्द्र की कथा को सार बना लो ।। ९४ ।। अरण्यकांड की कथा समाप्त हो गयी, अब किष्किन्ध्याकांड की कथा सुनो। श्रीराम-लक्ष्मण दोनों सीता को खोजते हुए ऋष्यमुख पर्वत के समीप पहुँच गये ।। ९५ ।। श्रीराम-लक्ष्मण, दोनों पर्वत पर चढ़ने लगे, दूर बैठे हुए पाँच वानरों ने उन्हें देखा। सुग्रीव ने कहा—वीर हनुमान सुनो। कहाँ के ये दो मनुष्य हमारी ओर चले आ रहे है ? ।। ९६ ।। तुम तो जानते ही हो, भाई बाली बड़ा कपटी स्वभाव का है। सम्भवतः उसने अपना चर बनाकर इन दोनों को भेजा है। उसके कार्य देखने पर बड़ा डर लगता है। चलो, हम शीघ्र ही गिरि-गुफा मे घुस जायें ।। ९७ ।। यों कहकर वे सभी के साथ कुछ दूर चले गये। उनके पद-भार से धरती और नाग-लोक काँप उठे। उनके शरीर की हवा से वृक्षों की डालियाँ टूटने लगीं। सिंह, बाघ, महिष, शृगाल भागने लगे ।। ९८ ।।

पलाइ गैया गह्वरत आछे पाञ्चजन * सिस्थानते विमरिषि आछे कतोक्षण
सुग्रीवे बोलन्त शुना उठा वायुसुत * जिज्ञासि चाहियो होवे नोहे वालीदूत ९९
तेतिक्षणे हनुमन्त राजार आदेशे * राम लक्ष्मणत पाचे ब्राह्मणर वेशे
कर योर करि पूछिलन्त रङ्गमने * कँर दुइ मनुष्य फुरस कि कारणे ३४००
सर्ब्बाङ्ग सुन्दर एको गुणे नुहि हीन * किवा कोन देव किवा नृपतिर चिन
काहार कुमार कोन कार्य्यत फुराहा * किवा हेतु दुइजने पर्ब्बते उजाहा ३४०१
लक्ष्मणे बोलन्त वृद्ध शुनियो ब्राह्मण * दशरथ राजाक जानन्त देवगण
तान श्रेष्ठा महिषी कौशल्या यार नाम * ताहान गर्भत उतपति श्रेष्ठ राम २
मोर नाम लक्ष्मण कनिष्ठ शत्रुघन * सुमित्रार गर्भे आमि भैलो उत्पन
श्रेष्ठ भाइत भकत भैलोहो ततपर * जानिवाहा मोक राघवर अनुचर ३
कैकेयी नामत नारी रूपे विद्याधरी * वृद्ध नृपतिर आति हुया पटेश्वरी
नामत भरत तान तनयक लागि * सत्य कराइ राजात लैलन्त राज्य मागि ४
रामे राज्य न पाइलन्त विधिर कपटे * राजायो मरिल कैकेयीर उदभटे
जनक जीयारी राघवर विवाहिता * न जानो रावणे हरिनिल कोन भिता ५
सीताक खोजन्त राम अनेक प्रवन्धे * सुग्रीव राजार वार्त्ता जनाइला कवन्धे
वानर राज्यत गैया लैयोक शरण * हेन हित तुमि किछु करियो ब्राह्मण ६
शुनि हनुमन्ते धरि आपोनार वेश * राघवक प्रदक्षिण करिला आशेष
भाले शुनि आछो राम देवर काहिनी * सुग्रीवर दैवे विधि मिलाइलन्त आनि ७

भागकर गुफा मे जा पाँचों ही देर तक आपस में विचार-विमर्ष करते रहे। सुग्रीव बोले—पवनसुत सुनो, तुम उठो। ये दोनों वाली के दूत हैं या नही, उनसे पूछ देखो ॥ ९९ ॥ राजा का आदेश पाकर हनुमान तुरंत ब्राह्मण-वेश धारणकर राम-लक्ष्मण के समीप पहुँचे। हाथ जोड़कर प्रसन्न मन से पूछा—तुम दोनों मनुष्य कहाँ के हो, किस कारण से यों घूम रहे हो? ३४०० ॥ तुम सर्वांग सुन्दर हो, किसी भी गुण से हीन नही हो, तुम कोई देव हो या कोई नृपति हो? तुम किसके कुमार हो, किस कार्य से यों घूम रहे हो? दोनों किस कारण पर्वत पर आरोहण कर रहे हो? ३४०१ ॥ लक्ष्मण बोले—वृद्ध ब्राह्मण, सुनिये। राजा दशरथ को देवगण भी जानते हैं। उन्ही की श्रेष्ठ महिषी, जिनका नाम कौशल्या है, उनके गर्भ से श्रेष्ठ राम का जन्म हुआ है ॥ २ ॥ मेरा नाम लक्ष्मण है, मेरा कनिष्ठ भाई शत्रुघ्न है, हम दोनों सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए हैं। मैं अपने वड़े भाई की भक्ति मे तत्पर हूँ, मुझे राघव का अनुचर समझो ॥ ३ ॥ कैकेयी नाम की नारी, जो विद्याधरी-सी रूपवती है, वृद्ध राजा दशरथ की बड़ी प्रिय पटरानी है। उसने अपने पुत्र के लिए, जिसका नाम भरत है, राजा से प्रतिज्ञा करवा कर राज्य माँग लिया ॥ ४ ॥ विधि के कपट से राम राज्य न पा सके। कैकेयी की निर्ममता के कारण राजा की भी मृत्यु हो गयी। राघव की पत्नी जनकनन्दिनी सीता को भी रावण न जाने किस ओर हरकर ले गया ॥ ५ ॥ अनेक प्रकार से राम-सीता को खोज रहे है। कवन्ध ने सुग्रीव राजा के सम्वन्ध मे वताते हुए कहा है कि वानर-राज्य में जाकर शरण लो। ब्राह्मण, ऐसा समझकर अव तुम भी कुछ हित करो ॥ ६ ॥ यह सुनकर हनुमान ने अपना वेश धारणकर राघव की अनन्त प्रदक्षिणाएँ की। वे कहने लगे—हमने प्रभु राम की कथाएँ अनेक सुनी हैं। सुग्रीव के सौभाग्य से विधि ने आपसे मिला दिया है ॥ ७ ॥ मुझे सुग्रीव का दूत हनुमान कहते हैं। मैं समझ गया, राजा के दुख का अव अन्त हो गया है। क्योंकि आप आज यहाँ आ मिले हैं,

सुग्रीवर दूत मोक बुलि हनुमन्त * जानिलोहो नृपतिर दुख भैल अन्त
यिहेतु इठावे आसि आपुनि मिलिला * बानर कुलर घोर दुर्गति खण्डिला ८
एहि बुलि हनुमन्ते दुयो भाइक लैया * तेतिक्षणे सुग्रीवत भेटाइलन्त गैया
देखिया सुग्रीव आति उल्लसि गैलन्त * दुहान्तरो काहिनी कहन्त हनुमन्त ९
क्षत्रिय कुलत भैला श्रीराम लक्ष्मण * दुइ भाइ लैला आसि तोमात शरण
रामर सपत्नी मातृ आछन्त कैकेयी * दशरथ राजार बल्लभा महादइ ३४१०
उच्चादिते न पारिया ताहान बचन * दुइ पुत्र बोहारीक पठाइलन्त बन
विधिर कपटे रामे राज्यक न पाइला * बनत आसिया सीता भार्य्याक हराइला ११
दुर्गति खण्डिल बिधि भैल सुप्रसन्न * त्रैलोक्यविजयी रामे मागन्त शरण
हनुमन्त बचने खण्डिल मनोभय * तमोमय गुचि येन आदित्य उदय १२
अगनित घृत येन ढालिल अपार * आठ गुण तेज भैल सुग्रीव राजार
बायुसुते आमार इष्टक साधिलन्त * रामक आनिया मोक तुष्ट कराइलन्त १३
मनुष्य स्वरूपे नारायण अवतार * अल्प साध्ये पाइलो भैल कल्याण आमार
मोर सिद्धि भैल सबे गुचिल दुर्गति * दशम एराया एकादश बृहस्पति १४
आगते अगनि ज्वालि बन्धाइलन्त मित्र * सत्य करिलन्त दुयो अनेक बिचित्र
अगनिक प्रदक्षिण दुयो करिलन्त * आउरे आउरे चान्त कौतुकर नाहि अन्त १५
चाहन्ते चाहन्ते चक्षु न भाषय आर * मित्रता करन्ते देखि आनन्द अपार
अनेक सुकृत करि बन्धाइलन्त मित्र * सत्य करिलन्त दुयो अनेक बिचित्र १६
शुनि आछो तोहोर यतेक उपेक्षित * हनुमन्ते सब कथा करिला बिदित
राज्य एरि आसिलाहा अति घोर बने * तोमार भार्य्याक हरि निलेक रावणे १७

तो वानर-कुल की दारुण दुर्गति समाप्त हो गयी ॥ ८ ॥ यों कहकर हनुमान ने दोनों भाइयों को लेकर उसी क्षण सुग्रीव के समीप पहुँचा दिया। उन्हें देखकर सुग्रीव बड़े ही उल्लसित हो उठे। हनुमान ने उन दोनों की कथाएँ कह सुनायीं ॥ ९ ॥ क्षत्रिय-वंश-जात श्रीराम-लक्ष्मण दोनो भाइयों ने आज आकर आपकी शरण ली है। राजा दशरथ की रानी, महादेवी कैकेयी श्रीराम की सपत्नी-माता हैं ॥ ३४१० ॥ कैकेयी को दिये गये वचन का उल्लंघन न कर पाने के कारण राजा ने दोनों पुत्रों और पुत्र-वधु को वन में भेज दिया। विधि की प्रवंचना से राम को राज्य नहीं मिल पाया। वन में आकर उन्हें अपनी भार्या सीता को भी खोना पड़ा है ॥ ११ ॥ दुर्गति मिटी, विधाता सुप्रसन्न हुआ। त्रिलोक-विजयी राम आज आपकी शरण माँग रहे हैं। अन्धकार को मिटाकर जैसे सूर्य का उदय होता है उसी भाँति हनुमान के वचनों से सुग्रीव के मन का भय मिट गया ॥ १२ ॥ अग्नि में अपार घी ढालने पर जैसे अग्नि प्रचंड रूप से धधक उठती है उसी प्रकार राजा सुग्रीव का तेज आठ-गुणा बढ़ गया। सुग्रीव ने कहा—पवनपुत्र ने हमारा इष्ट साधन कर दिया। राम को लाकर मुझे तुष्ट कर दिया ॥ १३ ॥ हमने मनुष्य रूप में नारायण के अवतार रामचन्द्र को अनायास प्राप्त कर लिया। हमारा कल्याण हुआ। मुझे सिद्धि मिल गयी, सारी दुर्गति मिटी, दशम स्थान को छोड़कर मानो बृहस्पति एकादश पर आ गया ॥ १४ ॥ तदुपरान्त सम्मुख अग्नि प्रज्वलित कर दोनो ने मित्रता की और अनेक विचित्र शपथें की। दोनों ने अग्नि की प्रदक्षिणा की और दूसरे कपिगण अपार हर्ष से देखते रहे ॥ १५ ॥ उन्हें देखते-देखते नेत्रों की पलकें ही नही गिरती थीं। उन्हें मित्रता करते देख सबको अपार आनन्द हुआ। अनेक उत्तम विधियों द्वारा मित्रता स्थापित की और दोनों ने अनेक विचित्र शपथें कीं ॥ १६ ॥ सुग्रीव ने कहा—आप पर जो

सत्य करि बुलिलोहो शुनियोक मिता * त्रिभुवन बिचारिया आनि दिबो सीता
पातालक नेइ यदि आनि दिबो तुलि * सत्ये सत्ये इन्द्रक युजिवो एकावली १८

ब्रह्मा बिष्णु महेशक तुषि वोहो पूजि * त्रिभुवन विचारि सीताक दिबो खुजि
सावधान होवा प्रभु कथा एक कहो * कन्या एक नेन्ते सबे हन्ते देखिलोहो १९

दश शिर कुरि बाहु मने अवगाइ * सेहिसे सीताक निले आछिलोहो चाइ
कोले करि आलगाइ वायुपथे याइ * राम राम बुलिया कान्दन्त सीता आइ ३४२०

झुमुरी

आकाशर पथे यान्ति * दश दिशे निहालन्ति
भये अति चमकन्ति * क्रन्दन करिया यान्ति ३४२१

लक्ष्मणक सुमरन्ति * राम राम उच्चरन्ति
पर्व्वतत उजावन्ति * माथागोट चपरान्ति २२

आमासाक देखिलन्ति * अधोमुखे निहालन्ति
अलङ्कार खसावन्ति * आञ्चलत वान्धिलन्ति २३

माज लागि क्षेपिलन्ति * वचनक वुलिलन्ति
मइ येवे हओं शान्ती * रामे आक लभिवन्ति २४

आराव करन्ते यान्ति * शरीरत लुकावन्ति
हओं तेन्ते सीता शान्ती * देखि सत्य करिलन्ति ३४२५

विपत्तियाँ आयी है, सब कुछ हनुमान ने मुझे सुनाया है। आप राज्य छोड़कर अत्यन्त घोर वन में आये हुए हैं। आपकी पत्नी को रावण हर ले गया है ॥ १७ ॥ मित्र, सुनिये मैं शपथपूर्वक कहता हूँ, मैं त्रिभुवन खोजकर सीता को ला दूंगा। यदि पाताल में ले गया है तो मैं वहाँ से उठाकर ला दूंगा। सत्य कहता हूँ, मैं इन्द्र से भी अकेले ही संग्राम करूँगा ॥ १८ ॥ ब्रह्मा, विष्णु, महेश की पूजा कर संतुष्ट करूँगा और त्रिभुवन में ढूँढ़कर सीता को खोज दूंगा। प्रभु, सावधान होकर सुनिये, एक कथा सुनाता हूँ। हम सबने एक कन्या को ले जाते देखा था ॥ १९ ॥ उसके दस सिर, बीस हाथ थे, जिसे हमने देखा था, सोचते हैं कि वही सीता को ले गया है। सीता को गोद में लिये वह पवन-मार्ग से जा रहा था; माता-सीता 'राम, राम' कहकर रो रही थीं ॥ ३४२० ॥ वह आकाश-मार्ग से जाती हुई दसों दिशाओं में निहार रही थीं। भय के मारे बहुत ही चौंक रही थी और क्रन्दन करती जा रही थीं ॥ २१ ॥ वह लक्ष्मण का स्मरण कर रही थीं और 'राम, राम' पुकार रही थीं। उन्हें जब रावण पर्वत पर चढ़ा ले जा रहा था, तब वह सिर पीट रही थीं ॥ २२ ॥ उन्होंने सिर झुकाकर हमें देखा। अपने आभूषणों को खोलकर अपने आँचल में बाँध लिया ॥ २३ ॥ और हमारे बीचोबीच फेंक दिया तथा यह बात कही—यदि मैं सती होऊँ तो इन आभूषणों को प्रभु राम अवश्य प्राप्त करेंगे ॥ २४ ॥ वह चीखती हुई अपने शरीर को छिपा लेती थीं। वह सती सीता ही थी इसी कारण शपथ खा रही थीं ॥ ३४२५ ॥

सीतार अलङ्कार चाइ रामर शोक

पद

अभिप्राय आछे अलङ्कार देखित * आगते जानिया तेवे करो उपस्थित
आसिलेक नासिलेक जानकी सीतात * हुयो परिचय देखि आपुनि साक्षात ३४२६
राघवे बोलन्त शुना बचन आमार * प्राणतो अधिक मोर तुमि मित्र सार
करियोक हृदयर सन्तोष बिस्तार * सञ्चा चक्षु देखोहो बान्धेर अलङ्कार २७
अलङ्कार सुग्रीवे आगत आनि थैला * दुइ हात मेलि रामे हृदयत लैला
हा प्राणेश्वरी बुलि कान्दि मूर्च्छा गैला * भूमित परिया प्रभु' अचेतन भैला २८
क्षणेके चेतन पाइ त्रैलोक्यर नाथ * हा सीता बुलि मुठि हानन्त हियात
बिहा करि आनिबोहो आति अनुयोगे * तोक मोक बञ्चिलेक अयोध्यार भोगे २९
नेत्रक मेलिया एक दिशक नचाइलो * पियासे पीड़िया जल खुजिया न पाइलो
हा कैक गैलेनो प्रथम बिहा नारी * दशरथ नृपतिर प्रथम बोहारी ३४३०
एहि अलङ्कारे आछिलाहा मोर पाशे * दुर्ज्जय रावणे हरि निलेक आकाशे
एहि बुलि अलङ्कार हृदये धरिला * आति आर्त्तरावे रामे क्रन्दन करिला ३१
रामर बिलाप देखि लक्ष्मण सुग्रीवे * आशेष सन्तापे मुठि हानिलन्त हिये
बानरर राजा पाछे शरिला आश्वास * शोके किछु न साधय नुहिबाहा त्रास ३२
सन्धुक्षण भैला पाचे त्रैलोक्यर नाहा * शोक दुख अगनि शरीर करे दाहा

सीता के आभूषण देखकर राम का शोक

यदि उन आभूषणों को देखने की आपकी इच्छा हो तो आपके सम्मुख लाकर उपस्थित करूँ। वे आभूषण जनकनन्दिनी सीता के है या नही, आप स्वयं देखकर उनका परिचय लें ।। ३४२६ ।। राघव ने कहा—मेरे वचन सुनो। हे मित्र, तुम मेरे प्राणों से भी अधिक प्रिय हो। तुम मेरे हृदय की सन्तुष्टि बढ़ाओ, मैं अपने नेत्रों से प्रिया सीता के आभूषण देखना चाहता हूँ ।। २७ ।। सुग्रीव ने वे आभूषण लाकर रामचन्द्र के सम्मुख रखे। दोनों हाथ बढ़ाकर राम ने उन्हें अपने हृदय में लगा लिया। 'हा प्राणेश्वरी, कहकर रोते-रोते वे मूर्छित हो गये। प्रभु राम भूमि पर पड़कर अचेत हो गये ।। २८ ।। क्षण भर में सचेत होने पर त्रिलोकीनाथ रामचन्द्र ने 'हा सीता' कहकर छाती पर मुक्का मारा। बड़े अनुराग से तुझे विवाह कर लाया था, पर अयोध्या के भोगों ने मुझे और तुझे वंचित कर दिया ।। २९ ।। नेत्र खोलकर मैंने और किसी दिशा की ओर नहीं देखा। प्यास से पीड़ित होकर खोजने पर कहीं भी मुझे जल नहीं मिला। हाय, मेरी प्रथम विवाहिता पत्नी, दशरथ राजा की पहली पुत्रवधु, तुम कहाँ चली गयीं ? ।। ३४३० ।। ये ही आभूषण पहने तुम मेरे पास रहती थीं, तुम्हे हरणकर दुर्ज्जय रावण आकाश-मार्ग से ले गया। यह कहकर रामचन्द्र ने आभूषणों को अपने हृदय से लगा लिया और वे अत्यन्त आर्त कंठ से क्रन्दन करने लगे ।। ३१ ।। राम का विलाप सुनकर लक्ष्मण व सुग्रीव अशेष संताप से छाती पर मुक्के मारने लगे। इसके पश्चात् वानरों के राजा सुग्रीव ने उन्हें आश्वासन देते हुए कहा—शोक करने से कुछ होने का नहीं है। इसलिए हे रामचन्द्र, आप त्रस्त म होइये ।। ३२ ।। तत्पश्चात् त्रैलोक्यनाथ राम प्रकृतिस्थ हुए और बोले—शोक-दु:ख की ज्वाला मेरे शरीर को जला रही है, मै क्रोध सहन नही कर पा रहा हूँ, मेरे अंग उससे जल रहे है। सीता को लाकर उस क्रोध और दुख:रूपी अनल को शान्त

सहिवे नोवारो क्रोध ज्वलय प्रत्येक * सीताक आनिया ताक लागे नुमाइबाक ३३

झुमुरी

धनु तुलि धरिबोहो * पृथिवीक फुरिबोहो
अनन्तक चालिबोहो * नागलोक खानिबोहो ३४३४
रिपुगण मारिबोहो * असुरक दारिबोहो
भैरवक तुषिबोहो * सागरक भूषिबोहो ३४३५
बीरत्वक प्रकाशिबो * त्रैलोक्यक बिनाशिबो
शरे शरे खाञ्चिबोहो * सागरक शुषि बोहो ३४३६
त्रिदशक वञ्चिबोहो * आनदेव सञ्चिबोहो
आजि कीरितिक निबो * सब यम मुखे दिबो ३४३७

बालि-दुन्दुभिर युद्धवर्णन

पद

सुग्रीवे बोलन्त मित्र मोर बोल करा * वीरत्वक साफलिया पौरुषक धरा
मोहोर वचने तुमि शोक परिहरा * बाली बध करि मोर सत्यक उद्धारा ३४३८
श्री राम बोलन्त मोर शरीर न सहे * हरिल चेतन ज्ञान सीतार बिरहे
सघने निश्वास वहे सीतार बिकले * एके शोके मरो आरो तयु उत्रावले ३९
उभय प्रकारे मोर मनर आकुल * पुछो आवे तोमार दुखर कैयो मूल
कि कारणे कन्दल करिला दुइ भाइ * बनवास खाटा किक भार्य्या हेरुवाइ ३४४०

करना है ।। ३३ ।। मैं धनुष उठाकर सारी पृथ्वी पर भ्रमण करूँगा। अनन्त को छान डालूँगा और नागलोक को खोद डालूँगा ।। ३४ ।। शत्रुओं को मारूँगा, असुरों को विदारित कर डालूँगा; भैरव को तुष्ट करूँगा और सागर को भूषित करूँगा ।।३५ ।। अपनी वीरता प्रकाशित करूँगा, त्रैलोक्य का विनाश कर डालूँगा। वाणों से विदीर्ण कर डालूँगा। सागर को सोख लूँगा ।। ३६ ।। देवगण को देवत्व से च्युतकर दूसरे देवों की प्रतिष्ठा करूँगा। आज मैं अपनी कीर्ति प्रतिष्ठित करूँगा। सबको यम के मुँह में भेज दूँगा ।। ३४३७ ।।

बाली और दुन्दुभि के युद्ध का वर्णन

सुग्रीव ने कहा—मित्र, मेरी बात मानिये। अपनी वीरता को सफल बनाते हुए पौरुष धारण कीजिये। मेरे वचनों से शोक करना छोड़ दीजिये, मेरे वचन मानकर आप शोक छोड़ दीजिये और बाली का वधकर मेरी प्रतिज्ञा पूरी कीजिये ।। ३४३८ ।। श्रीराम ने कहा—सीता के विरह ने मेरी चेतना हर ली है। मेरा शरीर इस विरह को सहन नहीं कर पा रहा है। सीता के वियोग से मेरी लम्बी साँसें चल रही है। एक ओर तो मैं इस शोक से मरा जा रहा हूँ, दूसरे तुम्हारे दुख से उतावला हो उठा हूँ ।। ३९ ।। दोनों प्रकार से ही मेरा अन्तर व्याकुल हो रहा है। अब तुमसे पूछ रहा हूँ, तुम्हारे दुख का कारण क्या है ? किस कारण तुम दोनों भाइयों ने विवाद किया है, पत्नी को खोकर तुम वनवास-दुख का किसलिए भोग रहे हो ? ।। ३४४० ।।

आपदे ग्रासिले भार्य्या हरुवाला किक * शुनि पाचे बधिबोहो दुर्ज्जय बालीक
पाचे से करिबा तुमि मोर प्रतिकार * मारिलो जानिबा बाली बैरक तोमार ४१
त्रैलोक्य बिजयी आछे एको पाट शर * न करिबा तुमि बाली बानरक डर
सुग्रीवे बोलन्त शुना प्रभु राम देव * मोर बाली ददाक समरे नाहि केब ४२
आदित्य उदय हन्ते छारि याइ पुरी * तेतिक्षणे आसे चारि सागरक फुरि
बल कटालिबाक ददार येवे मन * हाम्फुलिया पर्ब्बत उपरि करे छन ४३
शिखर भाङ्गिया हाते खेलावय ढोप * त्रिदशे काम्पय देखि बालीर आटोप
आवर काहिनी कहो शुना प्रभु राम * असुरेक आछिल दुन्दुभि तार नाम ४४
तिनियो लोकत वर शुनिछो प्रधान * सागरत गैया मागिलेक युद्ध दान
असुरक सम्बुधिया मातन्त सागर * हाओरे असुर तोक नुहो समसर ४५
हेमवन्त पर्ब्बत आछे तोक प्रतिबल * रणत हरिष आछे तँके लागि चल
शीघ्रे आण्टाइलेक हेमवन्त पर्ब्बतक * दर्पे बुलिबाक लैल असुर लटक ४६
शुना गिरिराज महादेवर शशुर * मोक रण दिया तइ चल यमपुर
हेमवन्ते बोलन्त तोक नोहो सम * किष्किन्ध्यार बाली राजा तोर हैबे यम ४७
येवे प्रनु मरिबाक तोर आछेमन * जाण्टे करि भाङ्ग गैया तार मधुबन
दुर्ब्बार असुर सिटो बर रण लोभी * किष्किन्ध्याक लागि बेगे चलिला दुन्दुभि ४८
महिषर रूप धरि असिल दुर्ब्बार * रणक हरषे माते आरोप टङ्कार
अगनि समान फुरावय दुइ आखि * शृङ्ग आगे परिया दोहार होवे माखि ४९

संकट में पड़कर तुमने अपनी पत्नी को किस प्रकार खो दिया ? यह सुनने के पश्चात् मैं दुर्जय बाली का वधकर डालूँगा। इसके पश्चात् ही तुम मेरे दुख मिटाने का उपाय करना। समझ लो कि मैंने तुम्हारे शत्रु बाली को मार ही डाला है ॥ ४१ ॥ मेरा एक-एक वाण है जिससे त्रिलोक को जीता जा सकता है। तुम वानर बाली से कोई डर न करो। सुग्रीव ने कहा, प्रभु रामदेव, सुनिये। मेरे बड़े भाई बाली के साथ समर में कोई समकक्ष नही है ॥ ४२ ॥ वह सूर्योदय होते ही पुरी से निकल जाता है और उसी क्षण चारों सागरों का भ्रमणकर लौट आता है। अपने बल को मापने की उसकी जब इच्छा होती है तो वह पर्वत के शिखर को तोड़-फोड़ डालता है ॥ ४३ ॥ शिखरों को तोड़कर वह अपने हाथों में गेंद खेलने लगता है। बाली का बल-दर्प देखकर देवगण भी काँपा करते है। प्रभुराम, आपको और भी कथा सुना रहा हूँ। सुनिये, दुन्दुभि नाम का एक असुर था ॥ ४४ ॥ सुना है, वह तीनों लोकों में प्रधान असुर था। उसने सागर के समीप जाकर युद्ध का दान माँगा। असुर को सम्बोधित करते हुए सागर ने कहा—अरे असुर, मैं तो तेरी समकक्षता नही कर सकता ॥ ४५ ॥ हेमवन्त पर्वत तेरे बल के समकक्ष है। यदि युद्ध में तुझे हर्ष होता है तो उसी के पास जा। तब वह असुर शीघ्र ही हेमवन्त पर्वत के समीप पहुँचा और वह दर्प से बोलने लगा—महादेव के ससुर गिरिराज हेमवन्त सुनो; मुझे युद्ध का दान देकर तुम यमलोक पहुँचो। तब हेमवन्त ने कहा—मैं तेरा समकक्ष नहीं हूँ परन्तु किष्किन्ध्या का राजा बाली तेरा यम होगा ॥ ४७ ॥ यदि तुझे मरने की इच्छा है तो शीघ्र ही जाकर उसका मधुवन तोड़ डाल। वह दुर्वार असुर दुन्दुभि बड़ा रण-लोभी था। वह शीघ्रता से किष्किन्ध्या को चल पड़ा ॥ ४८ ॥ वह प्रचंड भैंसे का रूप धरकर आया। रण के हर्ष से वह प्रचंड दर्प से बार-बार हुंकार करने लगा। वह अग्नि के समान अपने दोनों नेत्रों को नचा रहा था। उसके सींग इतने तेज नुकीले थे कि उनके सामने पड़कर मक्खी भी दो टुकड़े हो जाती थी ॥ ४९ ॥ उसकी पूँछ की चोट से

मेघ खण्ड खण्ड होवे पाया लाञ्ज चाटि * खुरार प्रहारे जल वजाइ माटि फाटि
घसमसि लगाइलेक पशि मधुवन * खाया दाया विध्वंसिया करिलेक छन ३४५०
दुवारर पाट लाथि मारिया भाङ्गिल * द्वारीक मारिया घोर आटासेक दिल
लागिल चमक वने निर्घात परिल * निरन्तरे बानरर कर्णे ताल दिल ५१
अहङ्कार करिया दुन्दुभि पारे गालि * शुनि न सहिया वाज भैला बीर बाली
हस्तीक लागिया येन सिहये फिटाइल * तारा आदि पटेश्वरी लगे चलि आइल ५२
कुसुम चन्दने अलङ्कारे देहा भरि * चौपाशे योगाय छत्र चामरक धरि
तारागण समे नारी लगे चलि यान्ति * येन पूर्णिमार चन्द्र सदा करे कान्ति ५३
समर भूमित वाली देखिलन्त पाचे * पर्व्वत सदृश चण्ड महिषेक आछे
असुरक वाली राजा मातिला सम्बुधि * जङ्काइ मोक यमपुरी गैलि मन्दबुधि ५४
काले तोक पाइले मधुवन विनाशिलि * वालीक निचिनि बेटा गर्व्वते नशिलि
क्षुद्र मृग हुया मत्त सिहक जोकाइलि * विपाङ्गे परिलि बन्धु देखिते न पाइलि ५५
दुन्दुभि बोलय ओरे शुन वाली राय * स्त्रीर आगत केने मेला मिछा टाइ
मोर हाते मरिवि राखन्ता नाहि केव * सत्वरे सुमर येवे आछे इष्ट देव ५६
लुकाओं आजि वाली नाम मोर लेञ्ज चाटे * मइ राजा हओं आजि एइ दण्ड पाटे
पाञ्जर फुरिया मारो शृङ्गार आचारे * शिर खुलि भाङ्गो नुहि लाथिर प्रहारे ५७
हासि बाली बोलै शृङ्गे विन्धि एर मोक * मुठिर प्रहारे यमपुरे निबो तोक
शुनिया दुन्दुभि शृङ्ग वैसाइलेक डाटि * बोम्वाले रुधिर बाज भैला हिया फाटि ५८

मेघ खंड-खंड हो जाते थे। खुरों की चोट से धरती फटकर पानी निकलने लगा था। उसने मधुवन मे प्रवेश कर हलचल मचा दी। खा-पीकर विध्वंस कर सम्पूर्ण रूप से विनष्ट कर डाला ।। ३४५० ।। लात मारकर द्वार का चौखटा तोड़ डाला और द्वार-रक्षक को मारकर प्रचंड नाद किया। वन में चकाचौंध मच गयी, मानो वज्रपात हुआ हो। वानरों के कानों में मानो ताला पड़ गया ।। ५१ ।। अहंकार से भरकर दुन्दुभि गालियाँ देने लगा जिसे सुनकर सहन न कर पाने के कारण वाली बाहर निकला। लगा, हाथी को मानों सिंह ने ललकारा हो। तारा आदि वाली की पटरानियाँ भी उसके साथ निकल आयी ।। ५२ ।। कुसुम, चन्दन, विविध आभूषणों आदि से शरीर युक्त कर वे चारों ओर से वाली को घेरे छत्र-चँवर आदि लिये हुए थी। ताराओं की भाँति वे नारियाँ वाली के साथ-साथ चल रही थीं। उनके बीच वाली पूर्णिमा के चन्द्र की भाँति कान्तिमान लगता था ।। ५३ ।। इसके पश्चात् वाली ने देखा कि समर-भूमि में एक प्रचंड भैंसा पर्वत जैसा खड़ा है। तब राजा वाली ने असुर को सम्बोधित करते हुए ललकारा कि अरे मन्दबुद्धि, तू मुझे छेड़कर यमपुरी जाना चाहता है ।। ५४ ।। तुझे काल ने ग्रस लिया है, इसी कारण तो तूने मधुवन का विनाश किया है। अरे दुष्ट, तूने वाली को पहचाना नहीं और अहंकार के कारण अपना विनाश कर लिया। छोटा-सा मृग होकर तूने सिंह को छेड़ा है। रे बन्धु, तू संकट में पड़ा है, यह भी तुझे दिखाई नही देता है ? ।। ५५ ।। दुन्दुभि बोला—अरे राजा वाली, सुन। स्त्रियों के सम्मुख मिथ्या घमंड क्यों करता है ? तू मेरे हाथों मरेगा, तुझे कोई भी बचानेवाला नही है। यदि कोई तेरा इष्टदेव हो तो उसका शीघ्र स्मरण कर ले ।। ५६ ।। आज अपनी पूंछ की चोटों से तेरा वाली नाम मिटा दूंगा। और इस राजदंड और राज-पाट का राजा मैं बनूंगा। अपनी सीगों की चोटों से तेरे पंजर चूर-चूर कर डालूंगा और लातों के प्रहार से सिर की खोपड़ी तोड़ डालूंगा ।। ५७ ।। वाली हँसकर बोला—मुझे सींगों से वेधन की बात छोड़ दे।

बाली बसाइला मुठि चोट बर पाइ * कपाल फुलिया ढाकि रुधिर बजाइ
क्रोधिल असुर घोर लभिया प्रहार * गर्ज्जि खेदि याय येन मेघ बारिषार ५९
निर्घात परिल येन आटास पारिल * बायुबेगे बाली रायर समीप चापिल
दुन्दुभि आसिल खेदि देखि, बीर बाली * जाम्प दिया तेतिक्षणे धरि आङ्कोवाली ३४६०
बज्जर सदृश लागि गैल जरा जरि * महिषे बानरे पृथिवीत गड़ागड़ि
बानरक महिषे आचारे शृङ्गे तुलि * दुन्दुभिक नखे बाली पोलाइलन्त फालि ६१
महाघोर नादे दुयो दोहाङ्क गर्ज्जन्त * पृथिवी कम्पिया गैया पाताल पर्य्यन्त
बन्ध छन्द बिबन्ध लागिला यत यत * प्रहारिबे सम्बरिबे दुहान्तो शकत ६२
थिब लेञ्ज करि दुयो खेलना करन्त * सब देवगणे धर्म्म धर्म्म सुमरन्त
त्रिदशक देखि क्रोध करिया दुन्दुभि * हानिबाक लागि गैला दुइ शृङ्ग उभि ६३
तबध नयने फोकारय आति बागी * उश्वास लागिया बृक्ष सब याइ भागि
दुइ शृङ्ग ज्वले येन शनाइ त्रिशूल * त्रिदश बोलय भैल बालीर निर्म्मूल ६४
सकल बानर बल भै गैल बिभङ्ग * इन्द्रपुत्र बालीर नाहिके भुरु भङ्ग
लीलाये बानर राजा गाव चालिलन्त * शृङ्गत धरिया ताक टानिया लैलन्त ६५
रिपुकुल मर्द्दन दुर्ज्जय बीर बाली * आपोन शरीरे ताक पेलाया निढालि
दुइहात धरि ताक तुलि आल गाइला * बाम पावे लाथि हानि क्षेपिया पठाइला ६६
प्रहरेक पथ गैया परिल उफरि * ऋष्यमुख पर्ब्बतर कत दूर जुरि
आछन्त मातङ्ग ऋषि अगनिर सम * सेहि पर्ब्बतते तान आछन्त आश्रम ६७

मैं तुझे अपने घूंसो की चोटों से यमलोक भेज दूँगा। यह सुनकर दुन्दुभि ने आकर सींगों से आघात किया, जिससे बाली की छाती फटकर तेजी से रक्त बहने लगा ।। ५८ ।। बड़ा आघात पाकर बाली ने दुन्दुभि को घूँसा मारा। इससे दुन्दुभि का सिर फटकर रक्त बहने लगा। प्रचंड प्रहार से असुर दुन्दुभि कुपित हो उठा। वह इस प्रकार गर्जना करता धावित हुआ मानों वर्षा का मेघ हो ।। ५९ ।। वह इस तरह से घोर चीत्कार कर उठा मानो बज्रपात हुआ हो। और वायुवेग से राजा बाली के समीप आ गया। दुन्दुभि को वेग से आते देख वीर बाली ने कूदकर उसी क्षण उसे बाँहों में भर लिया ।। ३४६० ।। वज्र की भाँति उन दोनों में खीचा-तानी मच गयी। भैंसे और वानर दोनों धरती पर लुढ़कने-लोटने लगे। भैंसा दुन्दुभि ने वानर-बाली को सींगों से उठाकर नीचे पटक दिया और बाली ने नखों से दुन्दुभि को फाड़ डाला ।। ६१ ।। महाघोर नाद से दोनों एक दूसरे पर गर्जना करने लगे। पृथ्वी पाताल तक प्रकम्पित हो उठी। बंध, छन्द, बिबंध आदि जितने दाँव-पेंच होते हैं, सभी का प्रयोग कर वे दोनों आत्म-रक्षा करते हुए एक-दूसरे पर प्रहार करने लगे ।। ६२ ।। दोनों पूँछ उठाये मानो खेल रहे थे जिसे देख सभी देवगण "धर्म, धर्म" स्मरण करने लगे थे। देवों को देखकर दुन्दुभि क्रोधित हो दोनों सीग उठाये बाली को मारने हेतु दौड़ पड़ा ।। ६३ ।। वह अत्यन्त क्रोध से आँखें फाड़कर डकारने लगा। उसकी साँसों की हवा से सारे वृक्ष टूट गिरने लगे। दोनों सीग ऐसे चमक रहे थे मानो शाणित त्रिशूल हो। देवतागण बोल उठे—बाली का अब निर्मूलन हो गया ।। ६४ ।। सभी वानरी-सेना बिखरकर भागने लगी परन्तु इन्द्र-पुत्र बाली की उससे भौंह भी टेढ़ी नहीं हुई। वानर-राज बाली लीला-पूर्वक आगे बढ़ा और सीग पकड़कर उसे खींच ले चला ।। ६५ ।। शत्रु-कुल का नाश करनेवाला दुर्जय वीर बाली ने उसे अपने शरीर से धक्का देकर नीचे गिरा दिया। तत्पश्चात् दोनों हाथों से पकड़कर उसे उठाया और बाये पैर से लात मारकर दूर फेंक दिया ।। ६६ ।। दुन्दुभि छिटककर

ध्यान करि आछे ऋषि हरिकेसे चिते * सकल शरीर तान तितिल शोणिते
ऋषिये बोलन्त कोने पापक सञ्चिल * सकल शरीर मोर शोणिते तितिल ६८
असुर क्षेपिया कोने चिन्तिलेक मन्द * ऋष्यमुख पर्ब्बते परिबे तार स्कन्ध
एहि बुलि ऋषि तेँर चालिलन्त गाव * जलत नामिया पखालिला हात पाव ६९
विष्णुक सुमरि मन्त्र जपिला मनत * आसन भिरिया प्रभु बसिला ध्यानत
खेदि नासे बाली दादा सेहिसे निदाने * पलाइ पञ्च वानर आछोहो एहि थाने ३४७०

बाली-मायावन्तर युद्ध वर्णन

आउर काहिनी कहो शुनियो श्रीराम * दुन्दुभिर श्रेष्ठ भाइ मायावन्त नाम
भ्रातृ शोके सियो आसि मागिलेक रण * दुइ भाइ साजि निकलिल तेति क्षण ३४७१
बानरर राजा बाली वीरत्वे प्रधान * पाचत चलिलो मइ पर्ब्बत समान
दुइभाइक देखि सिटो असुर डरिल * महावेगे पर्ब्बतर गह्वरे पशिल ७२
चन्द्रावती रजनी देखिय बहुदूर * देखिल गह्वर माजे पशिल असुर
ददा मोक बोले तइ थाक इ थानत * यावे नाशो मइ असुरक करि हत ७३
करिलो कारुण्य मइ चरणत धरि * जीवन मरण जानिबोहो केने करि
बाली बोले गर्त्त भरि दुग्ध होवे बाज * निश्चय जानिबा मरिलोहो बाली राज ७४
नचेत बिबरे बाज होवे तेजचय * असुरक मारिलो मोहोर भैल जय

एक प्रहर के मार्ग की दूरी पर ऋष्यमुख पर्वत के वड़े भाग को घेरकर जा गिरा। अग्नि-तुल्य ऋषि-मातंग का आश्रम उसी पर्वत पर था ॥ ६७ ॥ चित्त में हरि का ध्यान करते हुए उन ऋषि का शरीर दुन्दुभि के रक्त से तर हो गया। ऋषि बोल उठे—मेरे समस्त शरीर को रक्त से तरकर किसने यह पाप संचित किया ? ॥ ६८ ॥ असुर को यहाँ फेंककर किसने मेरा अहित चिन्तन किया है ? जिसने ऐसा किया है, ऋष्यमुख पर्वत पर उसका सिर गिरेगा। यह कहकर ऋषि ने उठकर जल में उतर अपने हाथ-पैर धोये ॥ ६९ ॥ और विष्णु का स्मरणकर मन में मन्त्र का जाप किया तथा आसन लगाकर पुनः ध्यान करने वैठे। इसी कारण वाली भाई मुझे खदेड़ते हुए यहाँ तक नहीं आता और हम पाँच वानर इसी स्थान में रह रहे है ॥ ३४७० ॥

बाली-मायावन्त के युद्ध का वर्णन

हे श्रीरामचन्द्र, और एक दूसरी कथा कहता हूँ, सुनिये। दुन्दुभि के वड़े भाई का नाम मायावन्त था। भाई के शोक से उसने भी आकर वाली से युद्ध की माँग की। तब हम दोनों भाई सजकर उसी क्षण निकल आये ॥ ३४७१ ॥ वानर-राज बाली वीरता में श्रेष्ठ है। उसके पीछे पर्वत-सदृश मैं चला। हम दोनों भाइयों को देख वह असुर डर गया और महावेग से वह पर्वत-गह्वर में जा घुसा ॥ ७२ ॥ चाँदनी वाली रात के आगमन में अभी बहुत विलम्ब था। वाली ने देखा कि असुर पर्वत गह्वर में जा घुसा है, तब भाई वाली ने मुझसे कहा—तू इसी जगह तब तक रह, जब तक मैं असुर को मारकर न आ जाऊँ ॥ ७३ ॥ तब मैने उसके चरणों में पड़कर विनती करते हुए पूछा, आप जीवित है या मृत, किस प्रकार से मुझे पता चलेगा ? वाली बोला—यदि गह्वर उमड़कर दुग्ध की धारा वह निकले, तो अवश्य समझ लेना कि मैं राजा वाली मारा गया हूँ ॥ ७४ ॥ यदि विवर से रक्त की धारा वह चले, तो समझना कि मैंने असुर को मार डाला है, विजय मेरी हुई है। तू जरा भी डर मत।

मारिबो असुर किछु न करिबि भय * तथापितो मोर मने नुगुचे संशय ७५
निषेधबचन पुनु बुलिलो बिस्तर * हित बोल नुशुनिया पशिला भितर
द्वार राखि आछिलोहो पञ्चदश मास * ददार तेजिलो मइ जीवनर आश ७६
बजाइल शोणित आसि गर्त्तगोट भरि * निश्चये जानिलो मोर ददा गैला मरि
गह्वर भितरे बर आराव शुनिलो * शिलागोट दिया भये दुवार मारिलो ७७
आसि भैलो चिरकाल किष्किन्ध्या नगर * देखि मोक रङ्ग भैल सकरे लोकर
मरिलेक बाली जिज्ञासिले पात्र लोक * सेइ दण्डे पाटे राजा करिलेक मोक ७८
समस्त देशर यत भालुक बानर * मोते आसि सेवा करे सबे निरन्तर
प्रकाशय आति सिंहासन माणिकर * ताते बसि भोग करो येन पुरन्दर ७९
कतो काल सुखे आछो राज्य प्रतिपालि * आसिलन्त असुर मारिया बीर बाली
मइ राजा भैलो देखि बिहरिल चित * क्रोधिलेक अगनित येन दिले घृत ३४८०
पात्र गण समे बाढ़ि चरणे धरिलो * प्रणति पूर्ब्बक मइ प्रणाम करिलो
पितृसम श्रेष्ठ भाइ प्राण तो अधिक * आसिला कुशले एराइला दुर्गतिक ८१
आसिलाहा तुमि मोर गुचिल अपाय * राज्य चारि दण्ड पाट दिलो समुदाय
पञ्चदश मास द्वार राखिया आछिलो * गर्त्त भरि तेजपुञ्ज बजाइल देखिलो ८२
भये शिलगोट गह्वरर द्वार जुरि * शोके कान्दि कातिआसि भैलो निजपुरी
पाचे पात्र मेले सबे कार्य्य आलोचिल * अराजक भये मोक राज्ये जोकारिल ८३

मैं अवश्य ही असुर को मार डालूँगा। तथापि मेरे मन का संशय नहीं मिटा ॥ ७५ ॥ मैंने पुन: उसे निषेध करते हुए कई बार समझाया। मगर वह मेरे हितकारी वचनों को अनसुना कर अन्दर घुस गया। मैं पन्द्रह मास तक द्वार की रखवाली करता रहा और भाई के जीवन की आशा छोड़ दी ॥ ७६ ॥ अन्त में उस गह्वर को परिपूर्ण कर रक्त की धारा वह चली। मैंने निश्चित रूप से समझ लिया कि भैया बाली की मृत्यु हो गयी है। उस गह्वर के भीतर से बड़े जोरों का चीत्कार सुनायी पड़ा। तब मैंने भय के मारे एक शिला से उस द्वार को बन्द किया ॥ ७७ ॥ और तुरन्त किष्किन्ध्या पुरी में आ पहुँचा। मुझे देखकर सभी लोग बड़े ही आनन्दित हुए। सामन्त लोगों ने मुझसे पूछा—क्या बाली मारा गया? और उसी क्षण मुझे राजा बना दिया ॥ ७८ ॥ देशभर में जितने भालू और वानर थे सभी आ-आकर मुझे सेवा-प्रणाम करने लगे। मणिमय सिंहासन बड़ा ही प्रकाशमान था, उस पर आसीन मैं इन्द्र की भाँति भोग करने लगा ॥ ७९ ॥ राज्य का प्रतिपालन करता हुआ मैं कुछ काल तक सुख से रहा। इतने में वीर बाली असुर को मारकर लौटा। मैं राजा बन गया हूँ यह देखकर उसका चित्त विक्षुब्ध हो उठा। अग्नि में घी डालने पर जैसे वह धधक उठता है, उसी प्रकार वह क्रोध से जल उठा ॥ ३४८० ॥ मैंने सामन्तों सहित आगे बढ़कर चरण पकड़ लिये और विनय-पूर्वक उसे प्रणाम किया। कहा—पिता तुल्य बड़े भाई, आप मेरे प्राणों से भी अधिक प्यारे हैं। संकट पारकर आप कुशल-पूर्वक आ पहुँचे ॥ ८१ ॥ आपके आ जाने से मेरे समस्त अमंगल मिट गये। मैं राज्य छोड़कर राजदंड, सिंहासन सब कुछ आपको सौंप रहा हूँ। मैं पन्द्रह मास तक द्वार की रखवाली करता रहा, तभी दिखाई पड़ा कि समूचे विवर को भरकर रक्त की धारा निकल रही है ॥ ८२ ॥ भय के मारे मैं एक शिला से गह्वर का द्वार बन्द कर शोक से रोता हुआ अपनी पुरी में चला आया। तत्पश्चात् सभी सामन्तों ने सभा में बैठकर चर्चाएँ कीं और अराजकता के भय से मुझे राज्य पद पर अभिषिक्त कर दिया ॥ ८३ ॥ तथापि मुझसे जो दोष हुआ है, भैया, उसे क्षमा कर

तथापि करिलो दोष दया क्षमा कर * चरणत धरि स्तुति करिलो बिस्तर
क्रोधे तथापितो मोक नेदिले उत्तर * स्वाभावते क्रूर जाति दारुण बानर ८४
शान्त करिबक पारि सज्जनर मन * भाङ्गिले गढ़िव पारि सुवर्ण भाजन
दुर्ज्जनर मन शान्त करण नयाय * मृत्तिकार पात्र गढ़ न लवे दुनाइ ८५
महाक्रोधे वाली राजा पातिया समाज * पात्रक सम्बुधि कहिवक लैला काज
आमार कथाक शुनियोक सर्व्वलोक * दोष गुण बिचारिया गरिहिबा मोक ८६
असुर मारिबे प्रति दुयो भाइ गैलो * बिवरे पशिया आक दुवारते भैलो
भयंकर शिला गोट दुवारत दिया * सुखे राज्य करे भ्रातृवधू सम्बरिया ८७
रणक त्यजिया आसि लैले राज्य भार * भ्रातृर बिपक्ष भैल सोदर आमार
दुरमन्द बुद्धि दुष्ट सोदर पापिष्ठ * प्राण मारि हैवोहो सोदरबधी निष्ठ ८८
शुनियोक रामचन्द्र तुमि महामित्र * आमार दुखर कथा अनेक बिचित्र
देशर डाकिले एक खानि वस्त्र दिया * राज्य भोग करे मोर भार्य्या सम्बरिया ८९
दुख भुञ्जि कतो दिन फुरो वने वन * तथापि वालीर मोत नाहि शान्त मन
बिमरिषि मोर युजिवाक भैल मन * द्वीप द्वीपान्तरर जराइलो कपिगण ३४९०
ज्येष्ठ भाइक युजिलोहो प्राणर कातरे * त्रिभुवन लोक कम्पे दुइरो पयो भरे
चवर चम्पट किल लाठिर प्रहार * दान्ते नखे आञ्चरिया करिलो बिदार ९१
तेजे तोल बोल भैल दुहानो शरीर * मोत करि वलत अधिक वाली वीर
मरण सङ्कट मोर मिलि गैल वर * मर्म्म थान चाइ मइ वसाइलो चापर ९२

दीजिये। इस प्रकार उनके चरणों में पड़कर अनेक स्तुति की। तथापि उसने क्रोध के मारे मेरे कथन का कोई उत्तर नहीं दिया। वानरों की जाति स्वभाव से ही क्रूर होती है ॥ ८४ ॥ सज्जनों के मन को शान्त किया जा सकता है। स्वर्ण-निर्मित आभूषणादि टूट जाने पर वनाये जा सकते हैं, परन्तु दुर्जनो के मन को शान्त नही किया जा सकता। वैसे ही, जैसे कि मिट्टी का वर्त्तन एक बार फूट जाने पर फिर नहीं बनाया जा सकता ॥ ८५ ॥ महाक्रोध से राजा वाली ने समाज को एकत्रित किया और सामन्तों को सम्बोधित कर कहने लगा—सभी लोग मेरे वचन सुनें। दोष-गुणों का विचार करने के पश्चात् ही मुझे दोष देना ॥ ८६ ॥ हम दोनों भाई असुर मारने गये थे। मैं विवर में घुसा और इसे द्वार पर ही रखा। भयंकर शिला द्वार पर रखकर यह यहाँ आ भाई की पत्नी को भी लेकर सुख-पूर्वक राज्य कर रहा है ॥ ८७ ॥ युद्ध को छोड़कर यहाँ आकर इसने राज्यभार ले लिया; सहोदर भाई होकर भी इसने मेरे विरुद्धाचरण किया है। रे मन्द-बुद्धि, दुष्ट, पापी, सहोदर होने पर भी तू दूर हो जा। तेरा प्राणवध कर मैं निश्चय सहोदर-घाती (नहीं) बनूंगा ॥ ८८ ॥ रामचन्द्र ! आप महान् मित्र है। हमारे अनेक विचित्त दुखो की कथा सुनिये। वाली ने मुझे एक ही वस्त्र में देश से निकाल दिया और मेरी भार्या को छीनकर वह राज-भोग कर रहा है ॥ ८९ ॥ दुख सहता हुआ मैं कितने ही दिन से जंगल-जंगल घूम रहा हूँ। तथापि मेरे प्रति वालि का मन शान्त नहीं हुआ है। विचार-विमर्ष करने के पश्चात् मैंने उससे लड़ने का विचार किया। और इस कारण द्वीप-द्वीपान्तर से वानरों को एकत्रित किया ॥ ३४९० ॥ अपने प्राणों की रक्षा हेतु बड़े भाई वाली से मैंने संग्राम किया दोनों की वीरता से त्रिभुवन कम्पित हो उठा। थप्पड़ों, घूंसों, लातों के प्रहार और दाँत-नखों से नोंच-खरोचकर एक-दूसरे के शरीर को फाड़-चीर डाला ॥ ९१ ॥ दोनों के शरीर रक्त से लथपथ हो गये। वल में वाली मेरी अपेक्षा अधिक वलशाली वीर है। अन्त में मेरा वड़ा मृत्यु-संकट आ गया,

मूर्च्छा गैला बाली देखि मनत चिन्तिलो * ऋष्यमुख पर्व्वतक भिरि लर दिलो
ऋषि शापे बालीर मोहोर हित भैल * खेदि गुरि नपाइ वाली किष्किन्ध्याक गैल ९३
दुइ भाइ कन्दल करिलो यि कारणे * कहिलो सकल कथा तोमार चरणे
एवे तयु पावे प्रभु पशिलो शरण * तोमार भकति देव दुर्गति तारण ९४
एवे तयु बलर कटाल येवे पाओं * मारिवाहा बालीक तेवे से पतियाओं
पर्ब्बत आकार दुन्दुभिक लाथि हानि * एक योजनर पथ पेलाइ लेक आनि ९५
तुमि लाथि हानिया पेलाइते पारा ताक * तेवे जानो पारिवा वालीक मारिवाक
सुग्रीवर वाणी शुनि राघवे हाम्फुलि * दुन्दुभिर शरीरक बाम पावे तुलि ९६
वृद्ध आङ्गुलिये ताक आचारि पेलाइल * देखि पाञ्च वानर कौतुक वर पाइल
परिलेक शत योजनर गैया पथ * सुग्रीवे बोलन्त नुपूरिल मनोरथ ९७
हेनमते बल कटालिबाक नापारि * असुरक् वाली राजा तेतिक्षणे मारि
मास शोणित गावे समस्ते आछिल * लाथि हानि प्रहरर पथक क्षेपिल ९८
जङ्का मात्र आछे इटो अस्थिपुञ्ज सार * ताक उच्छादिला नाहि प्रत्यय आमार
देखा सात गाछ ताल आछे वक्र भावे * तिनि गछ भेदी ददा एकेशर घावे ९९
सातो ताल भेदा यदि तुमि एके शरे * तेवे से संशय गुचे मनर आमारे
आनन्द मिलय तयु प्रमाणक पाओं * वालीक मारिवा प्रभु तेवे पातियाओं ३५००
राघवे बोलन्त सात गाछ ताल सार * वक्र भावे आछे अर्द्धचन्द्रर आकार
कचु येन भेदो एके शरर प्रहारे * गुंचाइबो मनर जिया सकले तोमारे ३५०१

तव मैंने वाली के मर्मस्थान को लक्ष्यकर थप्पड़ जमा दिया ।। ९२ ।। वाली को मूर्छित हुआ देखकर मन ही मन सोचता हुआ मैं ऋष्यमुख पर्वत को बड़े वेग से भाग चला। वाली को ऋषि ने जो शाप दिया था, उससे मेरा हित हुआ। मेरा पीछा करते हुए पकड़ न पाने पर वाली किष्किन्ध्या को लौट गया ।। ९३ ।। हम दोनों भाइयों ने जिस कारण विवाद किया था, वह सब आपके चरणों में निवेदन किया। हे प्रभु, अब मैं आपके चरणों की शरण ले रहा हूँ। हे देव, आपकी भक्ति दुर्गति से तारनेवाली है ।। ९४ ।। अब आपकी शक्ति कितनी है यह जान सकूँ तो मुझे विश्वास हो जाये कि आप वाली को मार सकेंगे। वाली ने पर्वताकार दुन्दुभि को लात से उड़ाकर एक योजन तक उछाल फेंका था ।। ९५ ।। आप यदि लात से उस (कंकाल) को उड़ा फेंके तव मुझे विश्वास हो जायेगा कि आप वाली को मार पायेंगे ।। ९६ ।। तव रामचन्द्र ने अँगूठे से उसे उछाल फेंका, यह देख पाँचों वानरों को वड़ा आश्चर्य हुआ। वह सौ योजन का मार्ग पारकर जा गिरा। सुग्रीव ने कहा—मेरा मनोरथ पूरा नहीं हुआ ।। ९७ ।। इस प्रकार से तो शक्ति का अनुमान नही लगा सकते। क्योंकि जव राजा वाली ने असुर को मारा था तव उसके शरीर में मांस, रक्त सव कुछ था और उसने उसे लात मार एक प्रहर का मार्ग पार कर उछाल फेंका था ।। ९८ ।। परन्तु अव तो इसका अस्थि-सार कंकाल मात्र ही रह गया है। इसे ही आपने उछाल फेंका है, इससे मेरा विश्वास नही हो पाया है। देखिये, वे सात ताड़ वृक्ष टेढ़े-मेढ़े रूप से खड़े हैं। भाई वाली उनमे तीन वृक्षों को एक ही वाण से वेध डालता है ।। ९९ ।। यदि आप सातों ताड़ वृक्षों को एक ही वाण से वेध सकें, तभी मेरे मन का संशय मिट सकता है। आपके वल का प्रमाण पाकर मुझे आनन्द होगा और आप वाली को मार सकेंगे यह वात तभी विश्वास कर सकूँगा ।। ३५०० ।। रामचन्द्र बोले— ये सात ताड़ वृक्ष अर्धचन्द्र के आकार में वक्र-भाव से हैं। इन्हें मैं एक ही वाण के प्रहार से अरवी के डंठल की भाँति वेध डालूंगा और तुम्हारे सारे संशय मिटा

नेत्र फुराइ मातिलन्त राजा वीर बाली * एवे तोर मुखर बजाइल बर गालि
असमर्थ प्राणीर वचन चतुरालि * सिंहर आगत येन शृगालर टालि १९
मोर पाटे राजा भैले न मारिलो तय * आर कत सहिबो नीचर पराभव
एहि बुलि शाल वृक्ष उपारि आनिल * सामर बुलिया सुग्रीवक प्रहारिल २०
सुग्रीवे देखन्त वृक्ष चापिलन्त कोल * बाहुत चापर दिया करिला हाम्फोल
कटाक्ष नयने चाहिलन्त आग पाच * मुठिर प्रहारे भाङ्गिलन्त शाल गाछ २१
वृक्ष भाङ्गि सुग्रीवे ओ करन्त आस्फाल * शीघ्रवेगे सुग्रीवे हानिला दुइ शाल
दण्ड दुइर पथ माने बृक्ष छानि याय * समरत बसि राजा बाली राजा आछे चाइ २२
देखिलेक बाली बृक्ष सेपिले आमाक * अदभुत शाल दुइ हानिलेक ताक
चारि बृक्ष एकठाइ परि भैल चूर * अगनि फलिका निकालिला बहुदूर २३
राघवे बोलन्त बापु शुनियो लखाइ * अदभुत समर करन्त दुइ भाइ
हेन रण नयो देखो पृथिवी भितरे * कौतुक लभिबा बाली मारो एके शरे २४
ब्रह्मा बिष्णु महेश्वर देव पुरन्दर * अश्विनी कुमार आरो जयन्त कुमार
जामदग्नि कुबेर बरुण शशधर * स्वकि स्वकि याने चड़ि चाहन्त समर २५
निजरथे सूर्य युद्ध चाहन्त प्रबन्धे * बासवे चाहन्त युद्ध ऐरावत स्कन्धे
इन्द्रदेवे देखिलन्त सुग्रीवर गले * सूर्य्ये दिला दिव्यमाला आतिशय ज्वले २६
बाली को दिवन्त इन्द्रदेवे दिव्यमाला * ताक पाइ बालीर ज्वलन्त आति काला
सूर्य्यर बीर्य्यत सुग्रीवर उतपति * बाली राजा भैला इन्द्र देवर सन्तति २७

भाग सच्ची है, दस भाग व्यर्थ की है। तुम मुझे मार सकोगे, भला यह बात कौन विश्वास करेगा ? फूस की आग क्या सागर सुखा सकती है ? ।। १८ ।। राजा वीर बाली ने आँखे तरेर कर उसे ललकारा— अभी ही तेरे मुखसे बड़ी गालियाँ निकल रही है। असमर्थ प्राणी की तो केवल वचन की चतुराई भर रहती है, जैसे कि सिंह के सम्मुख शृगाल की दुष्टता भरी चतुराई ।। १९ ।। मेरे राज-पाट पर तू आकर राजा बन बैठा था तो भी तुझे मारा नही। नीच से भला और कितना पराभव सहन करूँ ? यह कहकर बाली शालवृक्ष उखाड़ लाया और 'अपनी रक्षा कर' कहते हुए सुग्रीव पर प्रहार किया ।। ३५२० ।। सुग्रीव ने देखा कि वृक्ष समीप आ गया तो बाँहों पर हथेलियों से ताल देते घोर नाद किया और कटाक्ष दृष्टि से आगे-पीछे देखा तथा घूंसे-प्रहार से शालवृक्ष को तोड़ डाला ।। २१ ।। वृक्ष तोड़कर सुग्रीव भी आस्फालन करने लगा और शीघ्र वेग से उसने दो शाल वृक्षों से प्रहार किया। वे वृक्ष दो दण्ड के मार्ग को व्याप्त करते हुए चले। रणभूमि मे स्थित राजा बाली देखता रहा ।। २२ ।। जब बाली ने देखा कि सुग्रीव ने मेरी ओर वृक्ष फेंक मारे है, तब उसने भी दो अद्भुत शालवृक्षों को लेकर उसकी ओर प्रहार किया। चारों वृक्ष एक स्थान में पड़कर चूर-चूर हो गये। उनसे बहुत दूर-दूर तक अग्नि स्फुलिंग निकल कर फैल गये ।। २३ ।। राघव बोले— वत्स लक्ष्मण, सुनो। ये दोनों भाई तो अद्भुत समर कर रहे है। ऐसा युद्ध तो मैने संसार मे कहीं नही देखा है। बाली को एक ही बाण से मार देने पर तुम्हें बड़ा आनन्द आयेगा ।। २४ ।। ब्रह्मा, बिष्णु, महेश्वर, इन्द्र, अश्विनीकुमार, जयन्तकुमार, जमदग्नि-सुत परशुराम, कुबेर, वरुण, चन्द्रमा आदि देवगण अपने-अपने यानों पर सवार होकर युद्ध देखने लगे ।। २५ ।। अपने रथ पर आसीन सूर्य बड़े ध्यान से युद्ध देखने लगे। इन्द्र ऐरावत पर चढकर युद्ध देख रहे थे। इन्द्र ने देखा सुग्रीव के गले में सूर्य देव ने बहुत ही उज्वल दिव्य माला पहना दी है ।। २६ ।। तब इन्द्रदेव ने बाली को भी दिव्य माला पहना दी।

देववीर्य्ये जात दुइ हन्तरो दिव्य काया * चिनन न याय येन दर्पणर छाया
सूर्य्यर लगत देव यतेक आछय * सुग्रीव जिनन्त बुलि करे जय जय २८
बासवर लगे देव आछे यत यत * बाली जिनन्तोक बुलि बाञ्छय मनत
देवतार आशीर्ब्बादे दुहानो उल्लास * दुयो दिव्य माला पिन्धि करन्त प्रकाश २९
अवसान भैल येवे बृक्षर समर * तरुबन छिन्न भैल कत प्रदेशर
लेञ्जे मेराइ पर्ब्बतक उपारि आनिला * सुग्रीवक लागि बीर बालीये हानिला ३५३०
शत्रुक दलिलो बुलि क्षेपिला पर्ब्बत * सुग्रीव देखन्त गिरि आसन्त पथत
लेञ्जे मेराइ धरिलन्त मातङ्गर लीला * सुग्रीवे हानिला रङ्गे गिरि शृङ्ग शिला ३१
शिखरे शिखरे एक थान भैला दुइ * पृथिवीत परि गैला चूर्णीकृत हुइ
दुइ हान्तको दुइहन्ते चाहन्त क्रोध दृष्टि * आथे बेथे करे दुयो पर्ब्बतर वृष्टि ३२
शिखरे शिखरे परिउफरिया याय * शरीरत परि गैया अगनि बजाय
देव वीर्य्य कलेवर अग्नि से साक्षात * पर्ब्बत परिया कि करिबे ता सम्बात ३३
देखिलन्त सुग्रीवे पर्ब्बत गोट आसे * एक प्रहरर पथ बेढ़ि आगे पाचे
आरो प्रहरर पथ होवय चड़ाये * लाथि हानि सुग्रीवे भाङ्गिल बाम पावे ३४
सुग्रीवे पर्ब्बत गोट हानिलन्त बले * मन पवनर वेगे गिरि गोट चले
तेनय दुइ गोट बाली पर्ब्बतक लइ * लेञ्जे मेराइ हानिलन्त सुग्रीवक गइ ३५
पर्ब्बते पर्ब्बते भैला आकाशे आन्दोल * अगनि कणिका ज्वलि गैला स्वर्ग कोल

जिसे पाकर बाली का पौरुष और अधिक प्रचंड ज्वलन्त हो उठा। सुग्रीव की उत्पत्ति सूर्य के वीर्य से हुई थी। राजा बाली देवराज इन्द्र का पुत्र था ।। २७ ।। देव-वीर्य से उत्पन्न उन दोनों की दिव्य काया पृथक पहचानी नहीं जाती थी, मानो दोनों दर्पण में पड़े एक दूसरे के प्रतिबिम्ब हों। सूर्य के साथ जितने देव थे, सुग्रीव की विजय-कामना करते हुए जय-जय कहते थे ।। २८ ।। इन्द्र के साथ जितने देव थे, मन ही मन कामना करते थे कि बाली विजयी हो। देवताओं के आशीर्वाद से दोनों का बड़ा उल्लास था। दोनों ही दिव्यमाला पहनकर प्रकाशित हो रहे थे ।। २९ ।। वृक्षों का युद्ध समाप्त हो जाने पर देखा गया कि कितने ही प्रदेश के तरुवन छिन्न-भिन्न हो गये हैं। तब वीर बाली ने पूँछ से लपेटकर पर्वत उखाड़ लिया और उससे सुग्रीव पर प्रहार किया ।। ३५३० ।। शत्रु का दलन करने हेतु उसने पर्वत फेंक मारा। सुग्रीव ने देखा—पर्वत उसके ऊपर चला आ रहा है। तब उसने हाथी की भाँति अनायास पूँछ से लपेट कर शिलामय गिरि-शिखर को उठा लिया और उसे फेंक मारा ।। ३१ ।। दोनों पर्वत शिखर एक ही स्थान में आकर टकरा गये और पृथ्वी पर पड़कर चूर-चूर हो गये, दोनों एक दूसरे को क्रुद्ध-दृष्टि से देखने लगे और एक दूसरे पर लगातार पर्वतों की वर्षा करने लगे ।। ३२ ।। शिखर पर शिखर पड़कर दूर छिटक जाते थे, और जब वे दोनों के शरीरों पर पड़ते थे तो चिनगारियाँ निकलने लगती थी। दोनों के देव-वीर्योत्पन्न शरीर मानों साक्षात् अग्नि थे। भला उनपर पर्वत गिरकर क्या कर सकते थे ।। ३३ ।। सुग्रीव ने देखा, आगे-पीछे एक प्रहर का मार्ग रोकता हुआ एक पर्वत चला आ रहा है। तब उसने भी एक प्रहर का मार्ग कूद कर पार कर लिया और बायें पैर से मारकर उस पर्वत को चूर कर दिया ।। ३४ ।। पुनः सुग्रीव ने बलपूर्वक दूसरा पर्वत फेंक मारा। वह पर्वत मानो और पवनवेग से चल पड़ा। तभी बाली ने दो पर्वतों को पूँछ में लपेटकर उठाया और सुग्रीव की ओर फेंक मारा ।। ३५ ।। पर्वत से पर्वत शून्य में जा टकराया और उनसे अग्नि-स्फुलिंग निकल कर स्वर्ग तक व्याप्त हो गये। त्रिभुवन में अद्भुत शब्द गूँज उठा और नर, नाग;

त्रिभुवने लागि गैला अद्भुत शबद * नर नाग देवगण भै गैला तबध ३६
भासि आसि परिल शबद करि दुइ * आउरे आउर थाकिलन्त चमकित हुइ
थिय लेञ्ज करि लागि गैल हिञ्चा हिञ्चि * बाहु दाम्फि मारिया आन्दोल किचाकिचि ३५३७
थाक थाक मारो बुलि उथलिल रोल * दुइ भाइ दुहाङ्को धरिला कोले कोल
दुइ भाइ युद्ध करे एक पिण्ड हुइ * प्रमाणत देखिय पर्ब्बत येन दुइ ३८
येहेन दिग्गज दुइ पर्ब्बत भेदय * टलबल वसुमती बासुकी कम्पय
कैलासे चकित आति भैलन्त ईशान * सागरत ढउ भैला पर्ब्बत समान ३९
मेरुर शिखर फुटि निकलिल जल * दुयो भाइर आन्दोले मेदिनी जाय तल
पातालर हुल स्थूल भैला नागगण * घने घने कम्पि गैला अनन्तर फण ३५४०
देवासुर गन्धर्ब्ब मनुष्य विद्याधर * चमत्कारे थाकि गैला भुवन भितर
तबध नयन भैला मनत विस्मय * कि कारणे भैल आसि अकाले प्रलय ३५४१

झुमुरी

एहिमते वीर दुइ * युजे एक पिण्ड हुइ
शरीरत उठे जुइ * बले दुइ क्षीण नुइ ३५४२
बाहु बाहु बान्धिलन्त * पावे पावे छान्दिलन्त
फुरि फुरि टानिलन्त * ग्रीवे ग्रीवे जरिलन्त ४३
हिये हिये ताड़िलन्त * तुलि तुलि पारिलन्त
घुण्टा येन लागिलन्त * आर्त्तनाद छारिलन्त ४४
घोरा येन लवरे * असंख्यात चवरे
हात पाव बिहरे * हस्ती येन चिहरे ४५

देवगण स्तब्ध हो गये ।। ३६ ।। वे दोनो पर्वत शब्द करते हुए भूमि पर गिर पड़े। जिससे सभी लोग विस्मित रह गये। दोनों पूँछ उठाये खीचातानी करने लगे। बाँहों पर हथेली बजाते (ताल देते) हुए प्रबल रूप से जूझने लगे ।। ३७ ।। 'ठहर, ठहर, मारता हूँ' के शब्द गूँजने लगे। दोनों भाइयों ने एक दूसरे को बाँहों में बाँध लिया। एक पिंड जैसे होकर दोनों भाई युद्ध करने लगे। उनका आकार ऐसा लगता था मानो दो पर्वत लड़ रहे हों ।। ३८ ।। मानो दो दिग्गज पर्वत वेध रहे हों, उसी प्रकार उनके युद्ध से पृथ्वी टलमलाने लगी, बासुकी काँपने लगा। कैलास पर्वत पर ईशान-महादेव चकित हो उठे; सागर में पर्वत जैसी ऊँची तरंगें उठने लगी ।। ३९ ।। मेरु-शिखर विदीर्ण कर जल की धारा वह चली, दोनों भाइयों के आलोड़न से धरती धँसने लगी। पाताल में नागगणों में खलबली मच गयी, अनन्त के फन बार-बार प्रकम्पित होने लगे ।। ३५४० ।। देवासुर, गन्धर्व, मनुष्य, विद्याधर आदि विश्व में चमत्कृत रह गये। किस कारण अकाल में ही यह प्रलय उपस्थित हो गया ? यह सोचकर मन में विस्मय होने के कारण उनके नेत्र स्तब्ध रह गये ।। ४१ ।। इसी प्रकार वे दोनो वीर एक पिंड जैसे होकर जूझने लगे। शरीर से आग निकलने लगी, बल में से कोई भी क्षीण न था ।। ४२ ।। बाँहों से बाहों को बाँध लिया, पैरों को तान लिया। घूम-घूमकर एक दूसरे को खीचने लगे। कंधे से कंधा मिला लिया ।। ४३ ।। एक दूसरे की छाती पर आघात करने लगे, उठा-उठाकर नीचे पटकने लगे। दोनों को चक्कर आ गया। दोनों ही आर्तनाद करने लगे ।। ४४ ।। अनगिनत थप्पड़ों का आघात करते हुए वे घोड़े की भाँति दौड़ रहे थे, हाथ-पैर चला-चलाकर हाथियों की भाँति चिंघाड़ रहे

किल मुकु लाठि हानि * भूमित आफाले आनि
आञ्जुरि आनय टानि * फुरो दुयो छिद्र छानि ४६
दुइको दुयो पारे गालि * बाहुत मारय तालि
युजय सुग्रीव बाली * दुयो वज्रर बटालि ३५४७

पद

राघवे बोलन्त किबा करो कैक याओं * सुग्रीव मित्रक मइ हाते हरुवाओं
कोन दैवविधि मोक प्रबन्धे चलिल * शत्रु मित्र एको आकलिबे नोवारिलो ४८
दुहानो शरीर एके सम एके काला * दुहानो गलत देखो सुवर्णर माला
बाली बुलि मारो येवे सुग्रीव मरिब * संसारत मोर बर अख्याति थाकिब ४९
किनो करो विधि मोक मारिल बिछुहि * संसारत पापी किनो भैलो मित्रद्रोही
लक्ष्मणे बोलन्त दादा शुनियोक राम * असन्तोषे सारिबाक नोवारिबे काम ३५५०
याक प्रति भैल प्रभु तोम्हार प्रबन्ध * सहस्र युगत तार परिबेक स्कन्ध
तिनियो जगत यदि एकत्र होवय * तथापि तोमार मित्र हुइब रण जय ५१
बाली नृपतिर हात सुग्रीवे एराइल * कङ्कालत धरिया बालीक आलगाइल
हुः बुलि आफालिल पृथिवीक लागि * बोम्बाले रुधिर बहे कुम्भस्थल भागि ५२
बाली मूर्च्छा गैल बुलि इन्द्रे करे शोक * शुभ शुभ जय जय करे सूर्य्य लोक
कतो बेलि बाली राजा चेतनक पाइला * आसरिश क्रोध करि सुग्रीवक धाइला ५३
येहेन हस्तीक सिंहे पेलाइले निढालि * सुग्रीवक सेहिमते आकलिला बाली
त्रिशूल समान नखर चोट घालि * सुग्रीवर शरीरक पेलाइला बखालि ५४

थे ।। ४५ ।। मुक्के, घूँसे चलाकर लातों से मार-मारकर भूमि पर पछाड़ गिराते थे। दोनों हाथों से पकड़कर खींच लाते थे और एक दूसरे की त्रुटि की घात में लगे रहते थे ।। ४६ ।। दोनों एक दूसरे को गालियाँ देते थे, बाँहों पर ताल ठोंकते थे। बाली-सुग्रीव दोनों इस प्रकार युद्ध कर रहे थे; दोनों ही बज्र के समान थे ।। ४७ ।। राघव बोले— अब मैं क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ? मित्र सुग्रीव को मैं हाथों-हाथ खो रहा हूँ। कौन दैव-बिधि मेरा विरुद्धाचरण कर रहा है, जिससे कि मै शत्रु-मित्र पहचान ही नही पा रहा हूँ ।। ४८ ।। इन दोनों के शरीर एक ही जैसे हैं, दोनों का पौरुष भी एक ही सा है। दोनों के गले में देखता हूँ स्वर्ण की मालाएँ पड़ी है। यदि बाली के भ्रम से बाण चला दूँ तो सुग्रीव मरेगा और संसार में मेरी कुख्याति रह जायेगी ।। ४९ ।। क्या करूँ विधि ने मुझे विमुख कर मार डाला। मैं संसार में कैसा पापी मित्र-द्रोही बना। लक्ष्मण बोले—भैया रामचन्द्र, सुनिये, असंतुष्टि से कोई भी काम नहीं बनता ।। ३५५० ।। हे प्रभु, जिसके प्रति आपका विरोध-भाव है, चाहे सहस्र युगों के बाद भी हो, उसका सिर कटकर गिरे बिना न रहेगा, यदि तीनों लोक विपक्ष में एक हो जायें, तो भी आपका मित्र अवश्य समर-जयी बनेगा ।। ५१ ।। सुग्रीव ने राजा बाली के हाथों से अपने को छुड़ा लिया और बाली की कमर पकड़कर उसे अलग किया। 'हुँह' कहकर उसने बाली को भूमि पर पछाड़ दिया। बाली का कुम्भस्थल फूट जाने के कारण रक्त की धारा बहने लगी ।। ५२ ।। बाली को मूर्च्छित समझकर इन्द्र शोक करने लगे। सूर्यलोक के देवगण 'शुभ शुभ, जय जय' करने लगे। कुछ क्षण में राजा बाली सचेत हो उठा और प्रचंड क्रुद्ध होकर सुग्रीव की ओर दौड़ पड़ा ।। ५३ ।। सिंह जैसे हाथी को उछालकर फेंक देता है, बाली ने सुग्रीव को उसी प्रकार उछाल दिया; त्रिशूल जैसे नखों से आघात कर उसने सुग्रीव के

चेतन हरिया गैल सुग्रीव वीरर * खोम्वाले रुधिर वहि याय शरीरर
चेतन लभिया वोले नोहो समसर * थाकिलन्त वेश धरि येन मृतकर ५५
वाली राजा देखय निज्र्जीव भैलदान्त * विमरिषि वोले भैल वैरर उपान्त
भुवन दहिया येन वह्नि भैला शान्त * प्रहार न करि खानितेक जिराइलन्त ५६
शुना सामाजिक जन रामर चरित * कलिमल विनाशन परम अमृत
देखियो रामर केने लीला विपरीत * वनर वानर समे करिला सखित्व ५७
शरण मात्र के प्रभु एको नवाचन्त * हेनसे कृपालु देव राम भगवन्त
जानिया रामर पावे पशियो शरण * दुर्ल्लभ मनुष्य तनु परे केति क्षण ५८
निसीम जनम शत कोटिर अन्तरे * कत भाग्यवशे जीवे नर देहा धरे
ब्राह्मण शरीर तातो महा श्रेष्ठतर * हेन जनमक नेपालय यिटो नर ५९
केवल पालय मात्र इन्द्रियक नित * करिलेक आपोनाक आपुनि वञ्चित
दुर्ल्लभ अमृत येन लभिया हातत * आपुनि ठेलिया पेलाइलेक प्रमादत ३५६०
हेन जानि राम पावे पशियो शरण * रामरे से सेवा नर तनुर पालन
राम कथा शुना हौक जन्मर साफल * बोला राम राम महा त्रिलोक मङ्गल ३५६१

छवि

धीरे धीरे चक्षु मेलि बालीक आगत देखि विमरिषि आछन्त सुग्रीव ।
आरो येवे वाली राजा दुनाइ प्रहारे मोक तेवे मोर सङ्कलय जीव ॥
एहि बुलि तेति क्षणे विजुली चटक येने देख ने देख वेगे उठि ।
दुइ हात तुलि धरि वजूर सदृश करि कुम्भस्थले वसाइलेक मुठि ॥ ६२

शरीर को नोच-बकोट डाला ॥ ५४ ॥ वीर सुग्रीव की चेतना चली गयी और शरीर से रक्त की धारा बहने लगी । चेतना लौटने पर सुग्रीव यह सोचकर कि मैं बाली के समकक्ष नहीं हूँ, मृतक जैसा वेश धरकर पड़ा रहा ॥ ५५ ॥ राजा बाली ने देखा कि सुग्रीव के दाँत निश्चेष्ट, प्राणहीन जैसे हो गये हैं; तो उसने मन में विचार कर कहा—'शत्रु तो समाप्त हो गया' और संसार को जलाने के बाद जैसे अग्नि शान्त हो जाती है उसी प्रकार बाली सुग्रीव को और प्रहार न कर, क्षणभर विश्राम करने लगा ॥ ५६ ॥ हे सामाजिक जनो, राम का चरित्र सुनिये । यह कलि-मल का नाश करने वाला परम अमृत है । देखो तो राम की लीला कैसी विपरीत है कि उन्होंने वन के वानर से मित्रता कर ली ॥ ५७ ॥ नाम-स्मरण करते ही वे प्रभु अपना पराया कुछ भी नहीं गुनते हैं । भगवान राम ऐसे ही कृपालु देव हैं । ऐसा समझकर राम के चरणों की शरण लो । नहीं तो दुर्लभ मनुष्य-जीवन का अन्त होते कितना समय लगता है ? ॥ ५८ ॥ शतकोटि अनन्त जन्मों के पश्चात् बड़े ही भाग्य से मनुष्य नर-देह प्राप्त करता है । ब्राह्मण का शरीर तो उसमे भी महा श्रेष्ठतर है । ऐसे जन्म को जो नर रामभक्ति द्वारा पालन नहीं करता— ॥ ५९ ॥ केवल अपने इन्द्रिय-मात्र का पालन करता है, वह अपने आपको स्वयं वञ्चित करता है । वह मानो दुर्लभ अमृत को अपने हाथों में प्राप्त कर स्वयं प्रमाद-वश ठुकरा कर फेंक देता है ॥ ३५६० ॥ ऐसा समझकर राम के चरणों की शरण लो, राम की सेवा ही इस मानव-तन का पालन है । रामकथा सुनो, जिससे जन्म सफल हो । 'राम, राम' कहो जिससे महा मंगल प्राप्त हो ॥ ६१ ॥ धीरे-धीरे आँखें खोलकर बाली को सम्मुख देख सुग्रीव विचार करने लगा—यदि राजा बाली मुझे पुनः प्रहार करे तो मेरे प्राण नहीं बचेंगे । यों सोचकर उसी क्षण बिजली की कौंध की भाँति अकस्मात् वेग से

बालीर कपाल भाङ्गि बोम्वाले रुधिर बहे महाबीर सुग्रीवे देखिल ।
बालीक मूर्च्छित जानि पवन सञ्चारे टानि थिय लेज करिलर दिल ।।
रामर दिशक चाइ सक्रोध नयन करि घन घन पाचे चान्ते यान्त ।
कतो बेलि बाली राय पाचे चेतनाक पाइ चक्षुमेलि सुग्रीवक चान्त ।। ६३
सुग्रीव पलाइ जाय कोपे कम्पमान काय उठि महाबेगे खेदा दिल ।
ऋष्यमुख गिरि माने खेदि गुरि नपाय लाग निर्बत्तिया किष्किन्ध्या पशिला ।।
ऋष्यमुख गिरि पाया परिया सुग्रीव बीरे महाचोटे केङ्काइबाक लइला ।
श्रीराम लक्ष्मण दुइ नलनील हनुमन्त आसि सुग्रीवक बेढ़ि रइला ।। ६४
कतो बेलि चेतनक लभिला सुग्रीब बीरे रामक आगत देखिलन्त ।
घावर बिषत आति क्रोधे राघवक चाइ गरिहा बचन बुलिलन्त ।।
कोवा रामचन्द्र मइ तोमार कमन शत्रु केन हेन कपट करिला ।
मोर प्राण बैरी बाली ताहार हातत निया कि कार्य्यत मराइते चाहिला ।। ६५
जाना राम मइ येवे बालीक शकत तेवे पलाइ किय आछो पर्ब्बतत ।
आण्टाबो नोवारो जानि तथापि युजिबे गैलो तोमार पौरुष बचनत ।।
बालीर हातत मोर अस्थि मज्जा चूर भैला तुमि रङ्ग चाहिया आछिला ।
बालीक आगत पाइ शर प्रहारिया तुमि कि कार्य्ये बालीक न मारिला ।। ६६
किनो निदारुण तुमि दशरथ पुत्र राम तयु बिने मन्द मति नाइ ।
एहिसि कार्य्यत तुमि निज भार्य्या हरुवाया बने बने फुरा दुइ भाइ ।।
ब्रह्म-बध सुरापान गुरुर भार्य्याक हरे महापाप सुवर्णहरण ।
राज-बध पितृ-बध गुरुतिरी मारे आनो आचरे यतेक पापगण ।। ६७

खड़े हो, दोनों हाथ उठा, बज्र के सदृश बनाकर बाली के कुम्भस्थल में मुक्का जमा दिया ।। ३५६२ ।। महावीर सुग्रीव ने देखा, बाली का ललाट फूट गया और प्रचंड धार से रुधिर बहने लगा । बाली को मूर्च्छित जानकर पवन वेग से पूँछ उठाये वह दौड़ पड़ा । क्रुद्ध दृष्टि से वह बार-बार पीछे मुड़-मुड़कर राम की ओर देखता जा रहा था । कुछ समय पश्चात् राजा बाली ने चेतना प्राप्तकर आँखें खोल सुग्रीव की ओर देखा ।। ३५६३ ।। सुग्रीव भागा जा रहा था, क्रोध से उसका शरीर कंपित हो रहा था, बाली ने उठकर प्रचंड वेग से सुग्रीव का पीछा किया । परन्तु ऋष्यमुख पर्वत के पास पहुँचकर वीर सुग्रीव भूमिपर गिर पड़ा और भयंकर चोटों के कारण कराहने लगा । श्रीराम, लक्ष्मण, नल, नील आदि ने सुग्रीव को घेर लिया ।। ३५६४ ।। कुछ समय पश्चात् सुग्रीव की चेतना लौटी और उसने रामचन्द्र को सम्मुख पाया । आघातों के दर्द से क्रोधपूर्वक राघव की ओर देखते हुए वह तिरस्कार-पूर्वक यह वचन कहने लगा—कहो तो रामचन्द्र, मै तुम्हारा कैसा शत्रु हूँ जिससे कि तुमने इस प्रकार कपट किया । बाली मेरे प्राणों का वैरी है; उसके हाथ किस कारण मुझे मरवाना चाहा ? ।। ३५६५ ।। राम, यदि मैं बाली से अधिक शक्तिमान होता तो भला भाग कर पर्वत पर किस लिए रहता ? मैं जानता था कि बाली से मैं पार नहीं पाऊँगा, तथापि तुम्हारे पौरुष-पूर्ण वचनों से उत्साहित हो मैं उससे लड़ने गया । बाली के हाथ मेरी अस्थि-मज्जा चूर-चूर हो गयी, तुम केवल रंग देखते रहे । बाली को सम्मुख पाकर भी किसलिए बाण से प्रहार कर उसे नहीं मारा ? ।। ३५६६ ।। दशरथ-पुत्र राम तुम कितने निर्मम हो । तुम जैसा मन्दमति और कोई नहीं है । इसी कार्य के कारण अपनी पत्नी को खोकर तुम दोनों भाई जंगल-जंगल भटक रहे हो । ब्रह्म-वध, सुरापान, गुरुपत्नी-हरण, स्वर्ण की चोरी, राजवध, पितावध, गुरुपत्नी-वध

मित्रदोष महापाप सबाहाते गुरुतर इहाक आचरे यिटो नर ।
जानिबा निश्चय राम नरक भुञ्जिया मरे यावे थाके चन्द्र दिवाकर ॥
हेन मित्रद्रोह पाप करिबाक लागि राम जानिलो तोमार हैल मन ।
सूर्य्यर वंशत तुमि जनम लभिला किया धिक धिक तोमार जीवन ॥ ६८
निष्ट करि पूर्व्वकाले बुलिवाहा हन्ते राम मइतो नमारो वालीराय ।
तेवे कि कारणे मइ मरिवाक लागि रङ्गे वालीक युजिलो हन्ते याइ ॥
वालीर प्रहारे मोर सर्व्व अङ्ग चूर भैल क्षत बिक्षत भैल काया ।
कतवा कालक लागि शरीरत पीड़ा रैल तुमि रङ्ग आछिलाहा चाया ॥ ६९
रघुवंशे शिरोमणि साक्षाते ईश्वर देव तुमि समे कैल मित्रवती ।
एकेशरे त्रिभुवन जिनिबाक पारा तुमि तेवे मोर हेनसे विपत्ति ॥
सुग्रीवर वाक्ये प्रभु अतिशय हुआ लाज बुलिलन्त सुग्रीवक चाइ ।
यतेक बुलिला मित्र बुलिते उचित हुइ किन्तु शुना कहो अभिप्राय ॥ ७०
तोरा दुइ भाइर देखो राम तुल्य कलेवर सूर्य्यवेन ज्वले मनोहर ।
दुइहन्तरो शिरे दिव्य सुवर्णर माला ज्वले निचिनिया न करिलो शर ॥
शत्रु बुलि मारो योनु मित्रर विनाश होवे शुनि मन्द बुलिवेक लोक ।
लक्ष्मणे सहिते चिन्ति न पाइलो उपाय मइ जानि तखि निनिन्दिबा मोक ॥ ७१
क्षमियोक मोर दोष न करिवा असन्तोष वालीक वधिबो सारे सार ।
आपोनार अलङ्कार परिहरि तुलसीर माला तुमि पिन्धियो आमार ॥
दिन चारि थाकियोक घाव सब पालम्पोक पाचे सवे किष्किन्ध्याक याओं ।
इवार वालीक देखि मारि येवे न पठाओं तेवे ब्रह्म वध शाप पाओं ॥ ७२

आदि जितने पापाचरण हैं. ॥ ३५६७ ॥ उन सबसे मित्र-दोष रूपी महापाप सबसे बड़ा है। इसका आचरण करनेवाला जब तक चन्द्र-सूर्य रहते हैं तब तक नरक भोगकर मरता है। ऐसा मित्र-द्रोह रूपी महापाप करने को तुम्हारी इच्छा हुई है। सूर्यवंश में तुम्हारा जन्म किसलिए हुआ? तुम्हारे जीवन को धिक्कार है ॥ ३५६८ ॥ यदि पहले ही तुमने सत्य-सत्य कह दिया होता कि मैं तो राजा वाली को नहीं मारूँगा, तब भला मैं किस कारण बड़े उल्लास से मरने हेतु वाली के संग लड़ने के लिए जाता। वाली के प्रहारों से मेरे सारे अंग चूर चूर हो गये, शरीर क्षत-विक्षत हो गया। कितने कालों के लिए मेरे शरीर में पीड़ा रह गयी, तुम केवल रंग देखते रह गये ॥ ३५६९ ॥ रघुवंश-शिरोमणि तुम साक्षात् देव ईश्वर हो, तुम्हारे संग मैंने मित्रता की। तुम एक ही बाण से त्रिभुवन विजय कर सकते हो, तो भी मुझपर ऐसी विपत्ति आयी। सुग्रीव के वचनों से प्रभु रामचन्द्र ने बहुत ही लज्जित हो, सुग्रीव की ओर देखते हुए कहा— मित्र, तुमने जो कुछ कहा है, कहना उचित है; परन्तु सुनो मैं अपना अभिप्राय सुनाता हूँ ॥ ३५७० ॥ देखता हूँ कि तुम दोनों भाइयों के शरीर एक ही जैसे, सूर्य की भाँति मनोहर, उज्ज्वल है। दोनों के सिरों पर दिव्य स्वर्ण-मालाएँ दमक रही हैं, दोनों को पहचान न पाकर बाण नहीं छोड़ा, यदि शत्रु को मारने जाकर मित्र का विनाश हो जाये, तो सुनकर लोग बुरा कहेंगे। लक्ष्मण के साथ चिन्तन कर, कोई उपाय मैंने नहीं देखा, मित्र, ऐसा समझकर मेरी निन्दा न करो। ॥ ३५७१ ॥ मेरे अपराध क्षमा करो; असन्तोष न करो। मैं निश्चित रूप से वाली का वध करूँगा। अपना आभूषण उतार कर तुम हमारी तुलसी की माला पहन लो। चार-छः दिन रह जाओ घावों को सूखने दो, इसके पश्चात् हम सभी किष्किन्ध्या चलेंगे। इस बार वाली को देख यदि उसे मार न डालूँ तो मुझे ब्रह्महत्या का पाप लगे ॥ ३५७२ ॥ यों कहकर

एहि बुलि रघुनाथे अमृत समान हाते मार्जिजलन्त मित्रर शरीर ।
पूर्व्बतो अधिक करि शत गुण तेजबल लभिला सुग्रीव महावीर ॥
शुनियोक सर्व्बजन पुण्य कथा रामायण इसे महाधर्म्म अनुपाम ।
गुचिबे संसार दुख लभिबा परम सुख निरन्तरे बोला राम राम ॥ ३५७३

श्रीरामर द्वारा बाली बध

पद

राघवर बचने सुग्रीव रङ्ग पाइला * चरणत धरि बीरे प्रबोध कराइला
न जानि गर्ज्जिलो दोष क्षमा रघुपति * इह परलोके प्रभु तुमि मोर गति ३५७४
महा पापी सबो तरे नाम लइले यार * ताहाङ्क निन्दिलो पाप सञ्चिलो अपार
अज्ञानीर दोष क्षमियोक नारायण * तोमार अभय पदे पशिलो शरण ७५
घावर बिषत मोर हरिल चेतन * बुलिलोहो ईश्वरक गरिहा बचन
सहजे बानर जाति तरल सदाय * तुमि कृपामय ताक क्षमिबे युवाय ७६
शुनिया राघवे ताङ्क आश्वास करिला * दिन तिनि चारि माने घाव पालम्पिला
सुग्रीवे रामर माला शिरत धरिला * प्रदक्षिणे राघवक प्रणाम करिला ७७
जय बाञ्छा करि सुमङ्गल आचरिला * वाली रायक धावे शुभ समरे पशिला
सुग्रीव लक्ष्मण राम सहिते चलन्त * पाछे यान्त नल नील आर हनुमन्त ७८
बुलिला राघवे सुग्रीवक दिया डाक * मारो अबिलम्बे मित्र चिनायो आमाक
एहि बुलि धनु धरि श्रीराम लक्ष्मणे * सावधाने थाकिलन्त किष्किन्ध्यार बने ७९

रघुनाथ ने अपने अमृतोपम हाथों से मित्र सुग्रीव के शरीर का मार्जन किया। इससे महावीर सुग्रीव को पहले की अपेक्षा सौगुना तेज-बल प्राप्त हुआ। सभी जन पुण्य-कथा रामयण सुनें। यही अनुपम महाधर्म्म है। इससे संसार के दुःख मिट जाते हैं, परम सुख प्राप्तकर सकोगे। इसलिए निरंतर राम राम बोलो। ॥ ३५७३ ॥

श्रीराम द्वारा बाली-वध

श्रीराम के वचनों से सुग्रीव को बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने रामचन्द्र के चरण पकड़कर धीरज धारण किया। हे रघुपति रामचन्द्र, बिना जाने मैने आप पर जो गर्ज-गर्ज कर दोष लगाये हैं उन्हें क्षमा कीजिये। इस लोक और परलोक में आपही मेरी गति हैं ॥ ७४ ॥ जिसका नाम लेने पर महापापीगण भी तर जाते है, उनकी निन्दाकर अपार पाप का संचय किया। नारायण, अज्ञानी का अपराध क्षमा कीजिये। मै आपके अभय पदों की शरण लेता हूँ ॥ ७५ ॥ घावों की वेदना से मेरी सुध खो गयी थी, मैने ईश्वर को निन्दासूचक वचन कहे। वानर जाति सहज ही चंचल पानी जैसी मति वाली होती है। हे कृपामय, आपको उसे क्षमा करनी चाहिए ॥ ७६ ॥ यह सुनकर रामचन्द्र ने उसे आश्वासन दिया। तीन चार दिनों में उसके घाव सूख गये। तब सुग्रीव ने रामचन्द्र की दी हुई माला सीस चढ़ायी और प्रदक्षिणा कर राघव को प्रणाम किया। ७७ ॥ विजय की आकांक्षा से उसने सुमंगल कृत्य किये। राजा वाली पर आघात करने हेतु शुभ समर में प्रविष्ट हुआ। राम-लक्ष्मण सहित सुग्रीव चल पड़ा। उसके पीछे-पीछे नल, नील और हनुमान चले ॥ ७८ ॥ सुग्रीव को पुकार कर रामचन्द्र ने कहा—मित्र, हम वाली को अविलम्ब मार डालेंगे, तुम केवल

सुग्रीव गर्ज्जन्त गैया दुवारत वसि * कि करस वाली राजा गह्वारत पशि
निचिन्ति आछह ददा वार्त्ताक न पाइला * तोमार कनिष्ठ भाइ काल हुया आइला ३५८०
सत्य करि जाना ददा वचन आमार * परिछेदा करि देखा पुत्र परिवार
पटेश्वरी लोक देखा आरो यत तिरी * आजिधरि तोमार खण्डाइवो राजशीरि ८१
सुग्रीवर नाद शुनि वाली रायर कोप * आजि तोक मारो बुलि करय आटोप
त्वरिते बजाइल बीरे आर्त्तनाद करि * आग बाढ़ि विनावन्त तारा पटेश्वरी ३५८२

छवि

टीकर सुस्वामी मोर बलवन्त प्राणेश्वर बानर कुलर निजनाहा।
माणिकर दण्ड पाट परिहरि प्रभुदेव कि कारणे समरक याहा॥
प्राण तो अधिक मोर अङ्गद कुमार आछे मइ आछो शान्ति पटेश्वरी।
इन्द्रर पुरतो धिक प्रकाश करन्ते आछे देखा इटो किष्किन्ध्या नगरी॥३५८३
आपोनार बाहुबले बैर सब जिनिलाहा वर यश राशि तुमि पाइला।
सुदुर्ज्जय रावणक काखत टिपिया लैया चारियो सागर फुरि आइला॥
सात पृथिवीत यत भालुक बानर आछे तोमार चरणे करे सेव।
कोन नो अशक्य कार्य्य साधिबाहा सम्प्रतिक समरक याहा प्रभु देव॥ ८४
स्वपनर कथा कहो शुनियोक प्रभु तयु हृदयत लागि गैल माटि।
उपरक हइया गोड़ तोहार शरीर गोट समूले पशिल माटि फाटि॥
सिंहासन बसि रङ्गे सुग्रीव देवरे मोर तिनि कोणा इटा गोट गिले।
हेनय स्वपन जाना याके याके देखिवय ताते गया राजश्री मिले॥ ८५

हमें परिचय भर दे देना। यों कहकर श्रीराम-लक्ष्मण धनुष-बाण लिये किष्किन्ध्या के वन में सतर्कता पूर्वक रह गये॥ ७९॥ सुग्रीव वाली के द्वार पर जाकर गर्जने लगे। अरे राजा बालि, तू द्वार पर बैठा बैठा क्या कर रहा है? अरे भाई, तू तो निश्चित है? तुम्हें क्या यह समाचार नही मिला कि तुम्हारा छोटा भाई काल बनकर आया है? ॥ ३५८०॥ भाई, मेरे वचनों को सत्य समझो; अपने पुत्र-परिवार को अन्तिम बार के लिए देख लो। अपनी पटरानियो और स्त्रियों को भी देख लो; आज से तुम्हारी राज्य-लक्ष्मी चली जाने वाली है॥ ८१॥ सुग्रीव की ललकार सुनकर राजा वाली कुपित हो उठा; 'आज तुझे मार ही डालूँगा', कहकर गरज उठा। प्रचंड नाद करता हुआ वीर वाली तत्क्षण निकल पड़ा; तभी उसकी पटरानी तारा आगे बढ़कर करुण स्वरों मे कहने लगी—॥८२॥ हे मेरे सुहाग के उत्तम स्वामी, बलवन्त प्राणेश्वर, वानर कुल के स्वामी, आप ये मणि-माणिक्य के राजदंड और सिंहासन तजकर किस कारण समर में जा रहे हैं? प्राणाधिक मेरा कुमार अंगद है, और परम सती पटरानी मैं हूँ। देखिये, यह किष्किन्ध्या नगरी इन्द्रपुरी से भी अधिक प्रकाशमान है॥ ८३॥ अपने बाहुबल से आपने सारे शत्रुओ को जीत लिया है, अपार यश आपको मिला है? अत्यन्त दुर्जय रावण को, काँख के नीचे दबा कर चारों सागरो तक भ्रमण कर आये हैं। सातों पृथ्वी पर जितने भालू-बानर है, सभी आपके चरणों की सेवा करते हैं। अब कौन सा ऐसा अशक्य कार्य है, जिसे साधने हेतु प्रभुदेव, आप समर में जा रहे है॥ ८४॥ हे प्रभु सुनिये, मै अपने स्वप्न की बात सुना रही हूँ। आपकी छाती मे मिट्टी लिपटी हुई थी; धरती फट गयी और पैर ऊपर किये हुए आपका समूचा शरीर उसमे जा प्रविष्ट हो गया। देवर सुग्रीव सिंहासन पर बैठा बड़े ही उल्लास से तिकोनी ईंट

बाली बोले शुन ओरे पटेश्वरी तारा मोर युगत बचन हलि सहि ।
हेनकि जानह तइ पृथिवी मण्डल माजे बालीक जिनन्ता आछे कहि ॥
उदय गिरिक लागि हिमालय पर्ब्बतक निबाक आछय मोर शवय ।
मोर समरक लागि आह्वान करन्ते आछे सुग्रीव कमन बीर बख ॥ ८६
मोर प्राण गोट बान्धं ताते दिया आरोपिया सुग्रीवक बाढ़ि दिब रण ।
समर भूमित गैया सुग्रीवक रणे जिनि पालटि आसिबो एति क्षण ॥
स्वपनर कथा यत कहिलाहा प्राण जाया जानिबा सकले आल जाल ।
बाधा बचनक तुमि नुबुलिबा पटेश्वरी झाण्टे चलि याओं युद्ध शाल ॥ ८७
तारा बोले प्राणेश्वर टोकर सुस्वामी मोर आवर काहिनी कहो शुना ।
डाहिनर चक्षु मोर सघने सघने फुरे आक हृदयत भाले शुना ॥
विन तिनि चारि भैल सुग्रीव देवरे मोर तोमात समरे हारि गैल ।
हेन जाना बिना साहे दुवारत बसि आसि पुनरपि गर्जिबाक लैल ॥ ८८
आवर काहिनी कहो शुनियोक प्राणनाथ कार्य्यंबर भै गैल विचित्र ।
रिपु कुल बिमर्द्दन रघुकुल शिरोमणि राम भैला सुग्रीवर मित्र ॥
आछोक पृथिवी खण्ड स्वर्ग सात पातालर जिनिते पारय देवासुर ।
जानिबा स्वरूप रूपे तोमार कनिष्ठ भाइ तेहे राम भैला पखापुर ॥ ८९
राघव सहिते प्रभु बिबादक नुयुवाय शुनियोक बोलो हित काज ।
आपोनार कनिष्ठक सुग्रीव बीरक आनि सत्वरे पातियो युवराज ॥
सोदर कनिष्ठ भाइ ताहान मुखक चाइ दोषचय क्षमियोक सर्ब्ब ।
तोमातेसे दान मान ठेस रोस न करिब ताहान नो कात आछे गर्ब्ब ॥३५९०

समूचा लील रहा था । ऐसे स्वप्न में जो व्यक्ति दिखाई दें तो, उसे ही राज्य-लक्ष्मी प्राप्त होती है ॥ ८५ ॥ वाली बोला, अरी मेरी पटरानी तारा, मेरे उत्तम युक्ति-युक्त वचनों को सुन । तू क्या यह जानती है कि इस पृथ्वीमंडल में बाली को जीत सके ऐसा कोई भी कहीं है ? मेरी इतनी सामर्थ्य है कि मैं हिमालय पर्वत को उठाकर उदयगिरि तक ले जा सकता हूँ । सुग्रीव कैसा बड़ा वीर है कि वह मुझे युद्ध के लिये ललकार रहा है ॥ ८६ ॥ प्रिये, मेरे प्राणों की बाजी लगाकर मैं सुग्रीव से युद्ध करूँगा । युद्ध में जाकर सुग्रीव को युद्ध में पराभूत कर मैं इसी क्षण लौट आऊँगा । प्राण-प्रिये, तुमने जो सपने की बात कही है, समझ लो कि वे सभी झूठे हैं । रानी, तुम रोकने की बात न कहना, मैं शीघ्र ही युद्धभूमि में चले जाना चाहता हूँ ॥ ८७ ॥ तारा बोली, मेरी मांग के उत्तम स्वामी और कथा आपको सुनाती हूँ । मेरा दाहिना नेत्र बार-बार फड़क रहा है, इसे अपने हृदय में भली भाँति चिन्तन कर लीजिये । केवल तीन चार दिनों के पहले ही देवर सुग्रीव आपसे युद्ध में हार गया था । आप विचार कीजिये कि क्या वह बिना साहस के ही इस प्रकार द्वार पर आकर गरज रहा है ? ॥ ८८ ॥ प्राणनाथ, और अन्य एक कहानी बताती हूँ सुनिये । शत्रु-वंश का विनाश करनेवाले रघुकुल शिरोमणि रामचन्द्र सुग्रीव के मित्र बने हैं । वे सम्पूर्ण पृथ्वीखंड, स्वर्ग और पाताल के सभी देवासुरों को जीत सकते हैं । उनके स्वरूप को पहचान कर ही आपका छोटा भाई सुग्रीव राम से मित्रता कर शरण गया है ॥ ८९ ॥ हे प्रभु, मेरे हितकारक वचन सुनिये । राघव के संग विवाद करना उचित नहीं है । अपने छोटे भाई वीर सुग्रीव को लाकर शीघ्र ही युवराज बनाइये । सहोदर कनिष्ठ भाई के मुँह की ओर देखते हुए उसके सभी दोषों को क्षमा कीजिये । अभिमान से रोप न कीजिये । आपसे ही तो उसका मानदान है; उसका भला और

किष्किन्ध्या नगर माजे भालमते जानिलेक वाली राजा सुग्रीव बीरक ।
राजार निदाने आनो सर्व्वलोक सुखे आछे आक प्रभु न जाना किसक ॥
माधव कन्दली भणे शुनियोक सर्व्वजने रामर चरित्र कथा सार ।
शुनन्ते अमृत सम पापर साक्षात यम जानि राम बोला बारे बारे ॥३५९१

पद

वालो बोले शुना ओरे पटेश्वरी तारा * रूपे गुणे वितोपनी संसारते सारा
जानि आछो राम दशरथर तनय * ताङ्क लागि किछु मोर भय न जन्मय ९२
सागर शुकान्त रामे एक पातशरे * देवक खेद पशि स्वर्गर भितरे
उपारिबे पारा सातो द्वीपा पृथिवीक * तेहो रामे कि करिव दुर्ज्जय वालीक ९३
स्त्री वैरी पितृ वैरी सीमा वैरी नोहो * राज्यर निमित्ते आमि दुइ भाइ भुजो
कोन अपराधे रामे वधिव आमाक * वाहुरिया प्राणेश्वरी घरे वसि थाक ९४
तथापि बालीक तारा बुजाइ बुलिलन्त * भकतर पदे रामे अन्याय करन्त
भकतवत्सल गुण एतेके रामर * सुग्रीव भकति तान्ते करे निरन्तर ९५
एतेके संशय प्रभु देखोहो मनत * क्रोधे वाली बोले मोक बुजावस कत
निचुकीया थाक किछु नुबुजस काज * एहि बुलि चलिला युद्धक हुया साज ९६
प्रबोधिला येवे वाली पौरुष वचने * पालटि वसिला तारा असन्तोष मने
बाधाक नुशुनि वाली समरक जाय * माथार उपरे काक शगुण वर्णाय ९७
वामपाशे सर्प जाय डाहिने श्रृगाल * काक गृध्र पाखिर आकाशे कोलाहल

गर्व का स्थान कहाँ है ? ॥ ३५९० ॥ किष्किन्ध्या नगर में तो सब लोग राजा वाली और वीर सुग्रीव को भली-भाँति समझ गये हैं। राजा की सुव्यवस्था के कारण सभी लोग यहाँ सुखपूर्वक रह रहे हैं। प्रभु, भला और कौन सी बात आपकी अनजानी है ? माधव कन्दली कहते हैं—सभी लोग राम की चरित्र-कथा सुनें। यही सार है। सुनने में यह अमृत के समान है, पाप का साक्षात् यम है, ऐसा समझकर बारम्बार 'राम राम' कहो ॥ ३५९१ ॥

वाली बोला—अरी पटरानी तारा सुनो ! तुम रूप-गुण में संसार भर में सुन्दर और सार हो। दशरथ-सुत राम को मैं जानता हूँ। उनसे मुझे कुछ भी भय उत्पन्न नही होता ॥ ९२ ॥ राम एक ही बाण से सागर को सुखा डालते है। स्वर्ग में प्रवेश कर देवों को खदेड़ सकते है, सप्तद्वीपा धरती को उखाड़ सकते हैं, तथापि राम दुर्जेय वाली का क्या कर सकते है ? ॥ ९३ ॥ हम दोनों भाई राज्य के निमित्त लड़ रहे है, मैं स्त्री-वैरी, पितृ-वैरी या सीमावैरी (राज्य-सीमा या घर की सीमा लेकर शत्रुता करने वाला) नहीं हूँ। तो फिर राम मुझे किस अपराध से मेरा वध करेंगे ? प्राणेश्वरी, तुम लौटकर घर जाकर बैठी रहो ॥ ९४ ॥ वाली के ऐसा कहने पर भी तारा ने उसे समझाते हुए कहा—रामचन्द्र भक्त हेतु अन्याय भी करते हैं। राम भक्त-वत्सल गुणवाले हैं। सुग्रीव निरन्तर उनकी भक्ति करता है ॥ ९५ ॥ इसी कारण हे प्रभु, मेरे मन में संशय हो रहा है। तब वाली ने क्रोध से कहा—मुझे तू क्या समझाती है ? तू कुछ भी नहीं समझती, अतः मौन रह। यह कहकर वाली युद्ध हेतु प्रस्तुत होकर चल पड़ा ॥ ९६ ॥ वाली ने जब पौरुष वचनों से उसे धीरज बँधाया तो मन ही मन असन्तुष्ट तारा वहाँ से लौट गयी। उसके बाधा देने पर भी अनसुना कर वाली युद्धक्षेत्र में चला। उसके सिर के ऊपर

चण्ड बायु बहे खोला खापरर जाक * किष्किन्ध्यात रुधिरे बरिखे जाके जाक ९८
हाञ्चि जेठी नमानिया रणका गमन * बाली सुग्रीवर दुइर भैल दरिशन
दुइको दुइ तर्जिया गर्जिया पारे गालि * लागि गैल समर सुग्रीव वीर बाली ९९
बज्रर सदृश दुइरो हानन्त चवरे * लाथि हानि प्रहारे निर्घात येन परे
बृक्षे बृक्षे हानिलन्त शिखरे शिखरे * किल भुकु चबरे मारन्त निरन्तरे ३६००
अदभुत समर करन्त दुइ भाइ * आकाशत देबगणे आछे युद्ध चाइ
धनुत जुरिया शर रामे सावधाने * दुइहानो समर चाइ आछा विद्यमाने ३६०१
दुइयो बीरे आरोपे धरिला कोले कोले * पृथिवी कम्पिया गैल दुइहानो आन्दोले
गम्भीरत मेरुयेन गहीने सागर * येन मेरु मन्दर युजन्त एकतर २
हरि शङ्करर येन मिलिल समर * ग्रहयुद्ध भैल येन मङ्गल बुधर
बलि बासवर येन लागिल समर * बाली सुग्रीवर युद्ध सेहि पटन्तर ३
बाली बोले शुन ओरे सुग्रीव दुन्दुर * मुष्टिर प्रहारे तोक निबो यमपुर
कुम्भस्थले मुठि हानि लवरिया ताने * परि मूर्च्छा गैल बीर नमरिल प्राणे ४
पाचे कटो क्षणे तान आसि भैल जीव * भयङ्कर शालबृक्ष हानिला सुग्रीव
हृदयत परि बीर बाली मूर्च्छा गैला * कतोक्षण अनन्तरे सिन्धु क्षण भैला ५
रामचन्द्र देखन्त आसज भैला बरे * सुग्रीव घातन्त बाली रायर बल चरे
निचिनि नमारि पूर्ब्बे अपयश पाइलो * मारो बुलि शपत करिया पुनु आइलो ६

कौवे और गिद्ध मँडराने लगे ।। ९७ ।। बाँयी ओर साँप और दाहिनी ओर शृगाल निकलने लगे; कौवे, गिद्ध आदि पक्षी आकाश में कोलाहल करने लगे। प्रचंड वायु बहने लगा, खुले खप्परों से किष्किन्ध्या पर रक्त की प्रबल वर्षा होने लगी ।। ९८ ।। छींक, छिपकली आदि (अपशकुनो) को न मानकर बाली युद्ध को गया। बाली-सुग्रीव दोनों सम्मुख आ गये। दोनों ही एक दूसरे को गरज-गरजकर गालियाँ देने लगे। सुग्रीव और वीर बाली में युद्ध छिड़ गया ।। ९९ ।। दोनों एक दूसरे पर वज्र के समान थप्पड़ों से चोट करने लगे। लातों से प्रहार करते हुए एक दूसरे पर वज्र की भाँति टूट पड़े। एक दूसरे पर वृक्षों, पर्वतों आदि से प्रहार करने लगे। घूँसों, मुक्कों, थप्पड़ों से लगातार मारने लगे ।। ३६०० ।। दोनों भाई अद्भुत समर करने लगे। आकाश में देवगण उनका युद्ध देखने लगे। रामचन्द्र धनुष पर बाण चढाकर सतर्कतापूर्वक वहीं रहकर दोनों का युद्ध देखने लगे ।। ३६०१ ।। दोनों वीरों ने गरजते हुए प्रचण्ड दर्प से एक दूसरे को बाँहों मे बाँध लिया। दोनों के आन्दोलन से पृथ्वी काँपने लगी। गांभीर्य में मेरु की भाँति, गहराई में सागर से, वे दोनों इस प्रकार युद्ध कर रहे थे मानो मेरु और मन्दराचल एक संग लड़ रहे है ।। २ ।। मानो हरि और हर में युद्ध हो रहा हो, या मंगल और बुध में ग्रह-युद्ध चल रहा हो। मानो बलि और इन्द्र में युद्ध हो रहा हो, बाली-सुग्रीव के युद्ध की तुलना केवल उन्ही से हो सकती है ।। ३ ।। बाली बोला—अरे झगड़ालू सुग्रीव! सुन। तुझे मैं मुक्के के प्रहार से यमलोक भेज दूँगा। और दौड़कर उसने सुग्रीव के कुंभस्थल में मुक्का मारा, वीर सुग्रीव गिरकर मूर्च्छित हो गया परन्तु प्राण नही निकले ।। ४ ।। इसके पश्चात् कुछ ही क्षणों मे चेतना लौटी और सुग्रीव ने भयंकर शाल वृक्ष से बाली पर प्रहार किया। हृदय पर आघात लगने के कारण वीर बाली मूर्च्छित हो गया और कुछ क्षण के पश्चात् ही उसकी चेतना लौटी ।। ५ ।। रामचन्द्र ने देखा, यह तो बड़ा बुरा हुआ। राजा बाली का बल चढ़ता जा रहा है, वह सुग्रीव को मार ही डालना चाहता है। पहले तो पहचान न पाने के कारण बाली को मार नही सका। इससे

आवे केने चाहि आछो वेखिया आगत * नाहि दोप भगत दोहीक करो हत
एहि बुलि शरपाट गुणे चराइलन्त * वालीर हियात लक्ष-हानि पठाइलन्त ७
विस्वार शब्दे शर चले आकाशत * सन्धाने परिल वालीरायर हृदयत
क्रौञ्च पर्व्वतक येन भेदिल कुमारे * हियात पशिया शर भैल पशि आरे ८
हा मरिलोहो बुलि परिगॅल वाली * पृथिवीक शरीरके शरे भैला शालि
साधिलोहो सुग्रीव मित्रर यत काज * एहि बुलि राघव बनर भैला बाज ९

वालीर श्रीराम-निन्दा

माथा पालटाइ वाली पाञ्जरक चाइल * वन हन्ते आसन्ते रामक भेट पाइल
गुञ्ज हेन चक्षु फुराइ पारिलन्त गालि * धिक धिक राघव अधम पापशाली ३६१०
पापमय राम तुमि पापर आचार * पाप-बुद्धि राम इटो शरीर तोमार
नुबुलिया शर तुमि करिलाहा किक * तोमार वीरत्व राम आछो धिक धिक ३६११
क्षत्रि जाति वीर तुमि नुहिका गहन * नुबुलिया शर करिलाहा कि कारण
बुलिया आमाक करिलाहा हन्ते रण * परिवर्त्ति भैल हन्ते तोमार मरण १२
लाज एरि राम तुमि माथा तुलि चाहा * हृदय विदारि मोर शोणित पियाहा
कोन काजे वनर वानर मारिलाहा * डोखरा डोखर करि मांस काटि खाहा १३

बड़ा ही अपयश मिला है। 'मैं वाली को मारूँगा'—ऐसा शपथ कर पुन: आया हूँ ॥ ६ ॥ तब मैं सम्मुख देखकर भला क्यों आँखें खोले हुए हूँ ? मैं भक्त-द्रोही का वध करूँगा इसमें कोई दोप नहीं। यह सोचकर रामचन्द्र ने वाण प्रत्यंचा पर चढ़ाया और वाली की छाती को लक्ष्य करते हुए छोड़ दिया ॥ ७ ॥ प्रचंड शब्द करता हुआ वाण आकाश में उड़ चला और लक्ष्य के अनुसार राजा वाली के हृदय पर जा लगा। मानो क्रौंच पर्वत को कुमार कार्तिकेय ने वेध डाला हो। उसी प्रकार वाण वाली के हृदय को वेध कर आर-पार निकल गया ॥ ८ ॥ 'हाय मर गया' कहता हुआ वाली भूमि पर गिर पड़ा। उस वाण ने वाली के शरीर के साथ-साथ पृथ्वी को भी वेध डाला। 'मित्र सुग्रीव का कार्य सिद्ध कर दिया' ऐसा सोचते हुए राघव वन से निकल आये ॥ ३६०९ ॥

वाली द्वारा श्रीराम की निन्दा

सिर घुमा वाली ने करवट बदलकर देखा, वन से निकलकर आते हुए रामचन्द्र उसे दिखाई पड़े। गुंजाफल जैसी आँखों को फिरा कर वह गालियाँ देने लगा। राघव, अधम, पापकर्मा, तुम्हे धिक्कार है ॥ ३६१० ॥ राम तुम पापमय हो, तुम्हारा आचार पाप का है। राम तुम्हारा यह शरीर भी पाप-बुद्धि का है। मुझे बिना सूचित किये तुमने वाण क्यों मारा ? राम, तुम्हारी वीरता को मैं धिक्कार देता हूँ ॥ ११ ॥ क्षत्रिय जाति के, वीर होने पर भी तुममें गांभीर्य नहीं है। मुझे बिना सूचित किये भला वाण क्यों मारा ? यदि मुझे सूचित कर तुम युद्ध करते तो बदले में अवश्य तुम्हारी मृत्यु हो गयी होती ॥ १२ ॥ राम, लज्जा छोड़कर तुम सिर उठा देखो; मेरे हृदय को विदीर्ण कर निकला हुआ रक्त पान करो। भला तुमने किस प्रयोजन से वन में रहनेवाले मुझ वानर को मारा ? अब मेरे मांस को टुकड़े टुकड़े कर खाओ ॥ १३ ॥ तुम तो न मेरा मांस ही खाओगे और न मेरी खाल ही

आमाक मारिला आसि कोन काजे भाल * मांस ना खाइबाहा तेबे निषिन्धिवा चाल
नुभुञ्जे उत्तम जाति आमार मांसक * यज्ञत ना लागे बानरर पञ्च नख १४
शुनि आछो राम सर्ब्ब कार्य्यत गरिष्ठ * देव गुरु पितृ यत सबाहाते इष्ट
जानिलो तोमाक सबे तपस्वीते बर्ज्य * येन धरि आछा बिरालर ब्रह्मचर्य्य १५
पृथिवीर पति तुमि भैला अकारण * उत्तम नारीर स्वामी येहेन टेण्टन
हा किनो भैल तयु गति बसुमती * अधब आचार राम भैल तब पति १६
सुमरणे पाप हरे आदित्यर बंश * तोमार उपरि यत सबे धर्म्म अंश
सूर्य्य बंश समस्तर शिरर मुकुट * निर्म्मल कुलर तुमि भैला कालकूट १७
दशरथ नृपतिक भाले जानो आमि * अद्‌भुत क्षत्रिय तेहो युगुत संग्रामी
ताने पुत्र दुइ भैला अधम आचार * बिमुखे मारिया पाइला कुल खिलिङ्गार १८
मोक बुलिलाहा हन्ते सीतार कार्य्यक * आजि बान्धि आनि दिबे पारो रावणक
आमाक एरिया सुग्रीवक कैला सार * सिंह एरि शृगालत आसिका तोमार १९
सुग्रीवे साधिवे कार्य्य नोवारिबे भाले * यदिवा साधिब कार्य्य आति चिरकाले
रावणक सुग्रीवे पारय कि करिते * आनि दिबे पारो रावणक तिलिकते ३६२०
पूर्ब्बकाले रावणे ब्रह्मात वर पाइ * स्वर्ग मर्त्य पातालक फुरावे कम्पाइ
भङ्ग मानिलन्त इन्द्र आदि देवगण * किष्किन्ध्यात आसि मोत मागिलेक रण ३६२१
मइबोलो रावण बसिय थाक घरे * स्नान करि आसो मइ चारि ओ सागरे
रावणे बोलय भाले कर आटि मुटि * जीव घेवे बानरा करिबि साटि सुटि २२

पहनोगे तब भला किस उत्तम कार्य हेतु तुमने मुझे मारा है ? उत्तम जाति के लोग हम बानरों का मांस नही खाते। बानरों के पंच-नख यज्ञ-कार्य में भी नहीं लगता ।। १४ ।। हमने तो सुना है कि राम, तुम सभी कार्यो में श्रेष्ठ हो। देव, गुरु, पितृगण सबके इष्ट हो। अब जान गया कि तुम सभी तपस्वियों मे वर्जनीय हो। तुमने मानों बिडाल-ब्रह्मचर्य धारण कर रखा है ।। १५ ।। कपटी धूर्त जैसे किसी उत्तम नारी का पति बन जाये उसी प्रकार तुम पृथ्वी के स्वामी अकारण ही हुए हो। हाय री वसुमती, तेरी भला कैसी गति है, कि अधम आचार वाला राम तुम्हारा पति बना है ? ।। १६ ।। सूर्यवंश स्मरण-मात्र से पाप हर लेता है। तुम्हारे पहले जितने लोग हुए सभी धर्म के अश रहे। सूर्यवंश सबके सिर का मुकुट है, इस निर्मल वंश मे तुम कालकूट जनमे हो ।। १७ ।। राजा दशरथ को हम उत्तम रूप से जानते है। वे अद्‌भुत क्षत्रिय, योग्य योद्धा थे। उनके ही दो पुत्र तुम अधम आचरण करनेवाले हुए हो। छिपे-छिपे मुझे मारकर वंश में कलंक लगाया है ।। १८ ।। मुझसे यदि सीता के उद्धार-कार्य के सम्बन्ध में बताया होता, तो मै आज ही रावण को बन्दी कर ला देता। मुझे छोड़कर तुमने सुग्रीव को ही मुख्य समझा, सिह को छोड़कर तुमने शृगाल की शरण ली है ।। १९ ।। सुग्रीव उत्तम रूप से तुम्हारा कार्य साधन नही कर सकता। यदि करे भी तो बहुत ही विलम्ब से कर पायेगा। सुग्रीव भला रावण का क्या कर सकता है ? रावण को मैं निमिष मात्र में ला दे सकता हूँ ।। ३६२० ।। पूर्वकाल में रावण ब्रह्मा से वर प्राप्त कर स्वर्ग, मर्त्य, पाताल को कंपित करता हुआ घूमता था। इन्द्रादि देवगण उससे युद्ध मे पराभूत होकर भाग गये। रावण ने किष्किन्ध्या में आकर मुझसे युद्ध करने की चुनौती दी ।। ३६२१ ।। मैंने कहा—रावण, मेरे यही तू प्रतीक्षा कर, मैं चारों सागरों में स्नान कर आऊँ। रावण बोला—रे वानर वाली, तू उत्तम रूप से अपनी व्यवस्था कर ले। प्राण निकलने के समय तुझे इधर-उधर तड़पते रहना पड़ेगा ।। २२ ।। रावण के इस उपेक्षापूर्ण वचन से मुझे बड़ा ही क्रोध

लाघव वचने महे क्रोध वर पाइलो * काखत नि दावतिया वुलि आलगाइलो
दशमुख रावणक धरि वाहु मेलि * दोङ्गा दोङ्गि पारे बुढ़ा हालर चेङ्गेलि २३
सर्पक धरिया येन गरुड़े उरान्त * रावणक लइया मइ गैलो सागरान्त
नाके मुखे रावणर धरिलो जपाइ * उसमिल पेट तार हृदि सिद्धि नाइ २४
पूर्व्वदिश दक्षिण पश्चिम उत्तरत * सन्ध्या करि फुरि लोहो चारि सागरत
दण्ड दुइर भितरे समुद्रे सन्ध्या करि * त्वरितेआसिया भैलो किष्किन्ध्यानगरी २५
दुवारत थैया वोलो आवे देह रण * हारिलो हारिलो वुलि धरिल चरण
मिनति कातर वाणी वुलिल आदोष * भङ्ग मानि चलि जाय आपोनार देश २६
वाट भेटि पाचे ताक अङ्गदे धरिल * फङ्कालत लाङ्गुले शतेक पाकदिल
सागरत निया पाचे जोवोराइवे लइल * टोपला वाहन्ते फला धातु मात्र रैल २७
हेन देखि अङ्गदक वुलिलो वचन * छार पुत्र इटो मोर शरणीय जन
मोर वाको एरिदिला अङ्गदकुमार * लाञ्छना लभिया गैल लङ्कार भितर २८
हेन रावणक राम तुमि करा डर * रणचेर येन मोर घरर डिङ्गर
पठाया दिलोहो हन्ते मात्र आज्ञावाणी * माठे करि सीताक दिलेक हन्ते आनि २९
ताके लागि सुग्रीवक आश्रय करिला * आमाक विमुखे वधि अधर्म्म करिला
अधिक निन्दिवे राम मोर नाहि काज * आचारत हीन राम धर्म्मे भैला बाज ३६३०
शुनि रामे वोलन्त वानर गञ्जाकारी * मोक गरिहस आग पाच निविचारि
दुर्ज्जन चञ्चल मन्द तरल वानर * शुन यि कारणे तोक करिलोहो शर ३६३१

आया। अपनी काँख के नीचे दबाकर उसे उठा लिया। मैंने जब दशानन रावण को हाथ बढ़ाकर पकड़ लिया तो वह हाथ में पड़ी चेंगेनी मछली की भाँति छटपटाता हुआ निकल जाने का प्रयास करने लगा ॥ २३ ॥ जिस प्रकार सर्प को पकड़कर गरुड़ उड़ता है, उसी प्रकार मैं रावण को लेकर सागर-पार चला गया। मैंने रावण के नाक-मुँह को बन्दकर दिया, उसका पेट फूल उठा, शरीर की सुध-बुध नहीं रही ॥ २४ ॥ पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर सभी दिशाओं में संध्या-वंदन करता हुआ चारों सागरों तक घूम आया। दो दंड सध्या-वंदन कर मैं शीघ्र ही किष्किन्ध्या नगरी लौटा ॥ २५ ॥ उसे द्वार पर रखकर बोला—अब मुझसे युद्ध कर। उसने 'हार गया, हार गया' कहकर मेरे चरण पकड़ लिये। अनेक विनती करते हुए कातर वाणी बोलने लगा। और वहाँ पलायन कर अपने देश चला गया ॥ २६ ॥ तब अंगद ने उसका मार्ग रोककर उसे अपनी पूँछ मे लपेट सैकड़ों चक्कर खिलाये और इसके पश्चात उसे सागर मे डुबकियाँ खिलाने लगा। पूँछ से रावण को इस प्रकार गठरी जैसा बाँध लिया था जिससे वह एक खड धातु मात्र रह गया ॥ २७ ॥ यह देखकर मैंने अंगद से कहा—पुत्र, इसे छोड दे, यह मेरी शरण में आया हुआ जन है। मेरे वचन पर कुमार अंगद ने उसे छोड़ दिया और वह इतनी लांछनाएँ सहकर लका चला गया ॥ २८ ॥ जो रावण युद्ध से डरकर भाग गया मानो मेरे यहाँ का दास हो। ऐसे रावण से, राम, तुम डरते हो ? मैं उसे केवल आदेश-वचन भेज देता, वह सीता को सिर पर चढ़ाये लाकर सौंप देता ॥ २९ ॥ इसी के लिए तुमने सुग्रीव की शरण ली है ? और मुझसे विमुख होकर मेरा वध कर अधर्म किया। राम, तुम्हारी अधिक निंदा करने की मुझे आवश्यकता नहीं है। आचारहीन राम, तुम धर्महीन भी हो गये हो ॥ ३० ॥ यह सुनकर राम ने कहा—अरे मुझे गालियाँ देने वाला वानर तू आगा-पीछा सोचे बिना ही मेरा तिरस्कार कर रहा है। दुर्जन, चंचल, मदमति वानर, मैंने तुझे जिस कारण बाण से मारा है, सुन ! ॥ ३१ ॥ यह सारा संसार हम इक्ष्वाकुवंशियों का

इक्ष्वाकु बंशर राज्य सकले आमार * अवश्ये खण्डिबे लागे पृथिवीर भार
खण्ट चोर मच्चल यतेक दुराचार * याक येन अनुरूपे करय संहार ३२
भरत भैलन्त राजा सोदर आमार * अनुचिते पिम्परारो निचिन्तय मार
दुष्टक करोहो दण्ड ताने बाक्य पालि * कोन कार्य्ये आमाक निन्दस दुष्ट बाली ३३
यि बुलिल बिमुखत मारिलोहो शर * इहार उत्तर शुन पापिष्ठ बानर
पूर्ब्बे यत राजागणे धर्म्म आचरिला * येने तेने पशु मत्स्य कच्छप मारिला ३४
जाल पाति मारय पाचत खेदि शरे * बने आर हुया मारे पलाइबाक डरे
याठी जोङ्गे मारे कतो कुराफान्द पाति * नाना मते मारथ बानर पशु जाति ३५
कार्य्यत लखिलो तइ पापिष्ठ बानर * कनिष्ठर भार्य्याक करिया आछ घर
सुग्रीव हेनय भाइक देशर डाकिलि * भ्रातृबधू सम्बरिया बर यश पाइलि ३६
प्रतिज्ञा साफलि सुग्रीवक दिबो राज * तोक मारि पठाओं आजि यमर समाज
साफलिल अङ्गीकार पालिलो सत्यक * अकार्य्ये निन्दस मोक बानर लटक ३७
घोर घोर पाप तइ यत आचारिति * सग्रामत परि प्रायश्चित्तक करिलि
तोर गति भैल बाली मोर हाते परि * स्वर्गे चलि याहा दिव्य बिमानत चरि ३८
बाली बोले रामचन्द्र करो नमस्कार * तोमार रचना इटो सकले संसार
निचिनिया तोमाक बुलिलो सर्ब्ब बाक * पशिलो शरण प्रभु क्षमियोक ताक ३९
तोमार शरत मोर भैल सद्गति * अङ्गदक अनुशौच करोहो सम्प्रति
निते निते पुत्र मोर कोले चापि क्रीड़े * रामर शरत करि पुत्र शोके पीड़े ३६४०

है। जो पृथ्वी के भार हैं, उन्हें अवश्य ही दंड देना है। चोर, मिथ्यावादी और जितने बड़े दुराचारी है, उन सबको, जो जैसा है उसके अनुरूप ही हम सहार करते हैं ॥ ३२ ॥ मेरे सहोदर भरत राजा बने है। वे अनुचित रूप से किसी चीटी को भी मारना नही चाहते। उनका वचन मानकर मै दुष्टो को दंडित किया करता हूं। दुष्ट बाली, तू किस कारण मेरी निन्दा कर रहा है ? ॥ ३३ ॥ तूने जो कहा कि मैंने छिपकर वाण मारा है, तो रे पापी बानर, इसका भी उत्तर सुन। पूर्वकाल मे भी जिन-जिन राजाओं ने धर्माचरण किया था, जैसे तैसे पशुओं, मत्स्यों, कच्छपो को वे मारा करते थे ॥ ३४ ॥ किसी को जाल फैलाकर मारते थे, कभी पीछा करते हुए वाणों से मारते थे। वे कहीं भाग न जाये, इस डर से वन में छिपकर मारा करते थे। कभी भाले, बरछे से, तो कभी नुकीला फदा लगाकर विविध प्रकार से वन के पशुओं को वे मारते थे ॥ ३५ ॥ तेरे कार्यो से मैंने देखा कि तू पापी वानर है। तू अपने छोटे भाई की पत्नी को लेकर रह रहा है। सुग्रीव-जैसे भाई को तूने देश से निकाल दिया है, और भाई की पत्नी को लेकर बड़ा यश अर्जित किया है॥ ३६ ॥ अपनी प्रतिज्ञा सफल कर मैं सुग्रीव को राज्य दूंगा और तुझे मारकर यम-लोक भेज दूंगा। मेरा प्रण सफल हो गया, मैने सत्य-पालन किया। अरे दुष्ट वानर ! तू बिना कारण मेरी निन्दा कर रहा है ॥ ३७ ॥ तूने जितने घोर पापाचार किये हैं, आज युद्ध में मारा जाकर उन्ही का प्रायश्चित्त किया है। बाली, मेरे हाथों से मरकर तेरी सुगति हो गयी, अब दिव्य विमान पर चढकर स्वर्ग चला जा ॥ ३८ ॥ बाली बोला, रामचन्द्र तुम्हें नमस्कार है, यह सम्पूर्ण संसार तुम्हारी रचना है। तुम्हें न पहचान कर जो दुर्वचन कहे, प्रभु, मैं तुम्हारी शरण आया हूँ; उनके लिए मुझे क्षमा करो ॥ ३९ ॥ तुम्हारे वाण से मेरी सद्गति हो गयी परन्तु सम्प्रति मुझे अंगद के लिए अनुशोचना हो रही है। मेरा पुत्र अंगद नित्य मेरी गोद में चढ़कर खेल किया करता है। हे राम, तुम्हारे वाण की अपेक्षा पुत्रशोक ही मुझे

आचम्बिते शोक मोर मिलिल विशाल * काहात शरणे प्रताइ बञ्चिबेक काल
हा अङ्गदाइ मोर प्राण समसर * एको दुख न जानिलि सुखीया कुमार ३६४१
मइ मरियाओं हेरा अङ्गदाइ वापि * बाप बुलि थाकिबि काहार कोल चापि
हरि हरि विदगद सुवलित देहा * सब कुटुम्बत करि ताते बर नेहा ४२
आथे बेथे रामे मोक देशर डाकिल * सुजिबे न पाइलि धार लागिया थाकिल
शुन शुन बोलो मोर सुग्रीव सोदर * मन्यु परिहरि मोक कोले चापिधर ४३
गर्भत आछिलो दुइ भाइ एके ठाइ * कोन दैव विधिये पेलाइले बिहराइ
तोमार आमार कपालत नाहि योग * दुइ भाइ मिलि न करिलो राज्य भोग ४४
हरि हरि बान्धवे मोर तारा पटेश्वरी * बिपाङ्गे मरिलो तोर बचन न धरि
बालीर कारुण्य शुनि कान्दन्त सुग्रीवे * हाकले बिकले मुठि हानिलन्त हियै ४५
कि करिलो पापीमइ अधमत श्रेष्ठ * राज्य लोभे हरुवाइलो पितृ सम ज्येष्ठ
ददा बोलो मुण्ड तुलि चाहा मोर मुख * प्राण मोर सङ्कले तोमार देखि दुख ४६
हेन बुलि दुइ भाइ धरि कोले कोले * नगरी व्यापिल दुइरो क्रन्दनर रोले
थाकिलन्त सुग्रीव वालीक मन्यु करि * आर्त्तनाद शुनिलन्त तारा पटेश्वरी ४७
हिये मुठि हानिया स्वामीर पाशे जाय * बानरी सहस्रे बेढ़ि लगते वजाय
स्वामी पाशे चलय विकले दिश चाइ * देखन्त नगर माजे वानर पलाय ४८
पलाइ दारि दुरि करि मनत विभङ्गे * थारे थारे कहे कथा वानरर सङ्गे
जाम्प दिया कतोहो वृक्षर आगे चरे * वृक्ष एरि कतो कतो गह्वरत परे ४९

अधिक पीड़ा दे रहा है ।। ३६४० ।। अकस्मात् मुझे इस प्रबल शोक ने घेर लिया है; मेरा पुत्र अब किसकी शरण मे अपना जीवन वितायेगा ? हा मेरे प्राण तुल्य अगद ! तू सुखी राजकुमार है, किसी तरह का दुख तुझे ज्ञात नही है । ३६४१ ।। मैं जब मर रहा हूँ ! बेटा अगद, अब 'पिता' कहकर भला तू किसकी गोद चढ़ेगा ? हाय, हाय, तेरा सुवलित अत्यधिक कोमल, गम्भीर शरीर है, सभी कुटुम्बियो की अपेक्षा उसी पर मेरा सबसे अधिक स्नेह था ।। ४२ ।। अति शीघ्र राम ने मुझे इस देश से निकाल दिया । तू पितृ ऋण चुका नही पाया । वह ऋण तुझे लगा ही रह गया । अरे मेरे सहोदर भाई सुग्रीव ! सुग्रीव ! सुन, तुझसे कह रहा हूँ । अब मनोदुःख छोड़कर मुझे अपनी गोद मे ले ले ।। ४३ ।। हम दोनों भाई मातृगर्भ में एक ही स्थान मे रहे थे । परन्तु तुम्हारे-मेरे भाग्य में यह योग न था । इसी कारण दोनो मिलकर राज्य-भोग न कर सके ।। ४४ ।। हरि, हरि, अरी मेरी बान्धवी पटरानी तारा, तेरे वचनों को न मानने के कारण आज निरुपाय सा मर रहा हूँ । वाली की करुण वाणी सुनकर सुग्रीव अत्यधिक व्याकुल होकर छाती पर मुक्का मारकर रोने लगा ।। ४५ ।। हाय, अधमाधम पापी मैंने यह क्या कर डाला । राज्यलोभ से पिता के समान अपने ज्येष्ठ भ्राता को खो दिया । भैया, मैं कहता हूँ, सिर उठाकर मेरे मुख की ओर देखो । तुम्हारा दुख देखकर मेरे प्राण निकले जा रहे है ।। ४६ ।। यों कहकर दोनों भाइयों ने एक दूसरे को आलिंगन कर लिया । उन दोनों का क्रन्दन-रव सम्पूर्ण नगर में व्याप्त हो गया । सुग्रीव बाली के लिए शोक करता रहा । उसका आर्तनाद रानी तारा ने सुना ।। ४७ ।। मुक्के से छाती पीटती हुई वह पति के समीप चल पड़ी । सहस्रों वानरियाँ उसे घेरकर साथ-साथ चली । व्याकुल हो, चारों दिशाओं में देखती हुई वह पति के समीप चली । उसने देखा, नगर में वानर भागे जा रहे हैं ।। ४८ ।। मन मे अत्यन्त सत्रस्त होकर वे इधर-उधर भाग रहे थे । अन्य वानरों के संग बातें भी खड़े-खडे करते थे । कोई-कोई कूदकर वृक्ष पर चढ़ जाते थे, कुछ वृक्षों को छोड़

किच किच करिया बानरे पारे डकि * रामे पाइले बुलि देय निकुञ्जत लुकि
ताराये बोलन्त शुनियोक कपिगण * स्वामीर बार्त्ताक कहियोक एतिक्षण ३६५०
कि कारणे पलाइ सबे बानर बिपुल * अथिर चरित्र देखो चित्त बियाकुल
पटेश्वरी आइ तुमि बार्त्ताक न पाइला * राम रूपे काल हुया ग्रासिबाक आइला ३६५१
हेनबीर नतो देखि नतो शुनि काणे * अपार सागर बल गगन समाने
त्रिभुवन काम्पय बालीर पद भरे * हेन बीर मारिलेक एकेपात शरे ५२
स्वामी तोर निजीवन्त कंक लागि यास * अङ्गद पुत्रक निया मराइबाक चास
परिबर्त्ति आस माव किष्किन्ध्या नगर * राजा पातियोक निया अङ्गद कुमार ५३
किष्किन्ध्या राखिते पारा तान बुद्धि बले * आन कपिगण मरे नृपति बिकले
स्वामीर बार्त्ताक येवे निश्चय पाइलन्त * हिये मूठि हानि तारा देवी कान्दिलन्त ५४
बानरी सकले बेढ़ि प्रबोध बोलन्त * स्वामीर पाशक दरादरि आण्टाइलन्त
शुना सभासद राम कथा अनुपाम * पापर भाण्डार पोरा बोला राम राम ५५

तारार बिलाप

छबि

बालीक देखिला गैया मूर्च्छिते बवन्ते आछे कथमपि आछे मात्र प्राणे ।
निश्चेष्टे आछन्त परि उभकोल करि आति शालि आछे राघवर बाणे ।।

गड्ढों में जा गिरते थे ।। ४९ ।। किच्-किच् करते हुए बानर इधर-उधर झाँकते थे । 'राम आ गया' कहकर निकुञ्जों में छिप जाते थे । तारा बोली, हे कपियो, सुनो, इसी क्षण पति का समाचार बताओ ।। ३६५० ।। ये विपुल वानरगण भागे क्यों जा रहे है ? इनके चंचल-चरित्र देखकर मेरा चित्त व्याकुल हो रहा है । (तब बानरों ने कहा) रानी माँ, तुमने क्या यह समाचार नही सुना ? राम काल-रूप बनकर ग्रसने हेतु आ पहुँचे है ।। ३६५१ ।। उनके जैसा वीर न तो कभी देखा है और न कानों से सुना ही है । उनका सागर जैसा अपार बल, गगन के समान है । जिस बाली के पद-भार से त्रिभुवन कम्पित होता था, वैसा वीर एक ही वाण से मारा गया ।। ५२ ।। तुम्हारा पति अब जीवित नहीं है, तुम अब कहाँ जा रही हो ? क्या तू पुत्र अंगद को ले जाकर मरवाना चाहती है ? हे माँ, तू यहाँ से किष्किन्ध्या नगर लौट जा और कुमार अंगद को राजपद पर अभिषिक्त कर ।। ५३ ।। उसी के बुद्धि-वल से किष्किन्ध्या की रक्षा हो सकती है । अन्यथा राजा के शोक से व्याकुल कपिगण मर ही जायेगे । जब देवी तारा ने पति का समाचार निश्चित रूप से पा लिया तब वह अपनी छाती पर मुक्का मारकर रोने लगी ।। ५४ ।। सभी बानरियाँ उसे घेरकर धीरज बँधाने लगीं । वे सब शीघ्रतापूर्वक पति के पास उसे ले गयी । सभासद वृन्द, अनुपम राम-कथा श्रवण करो । राम, राम कहकर पापों का भण्डार भस्म कर लो ।। ३६५५ ।।

तारा का विलाप

तारा ने जाकर देखा, बाली मूर्छित पड़ा हुआ है । केवल किसी प्रकार प्राण-मात्र है । रामचन्द्र के बाण से आर-पार बिंधा हुआ वह निश्चेष्ट पड़ा हुआ है । पति को घेर कर, उसकी छाती पर गिर-गिरकर सभी हाहाकार करती हुई रोने लगी । उसे चारों ओर से घेरकर झुण्ड के झुण्ड रोती हुई बन्दरियों की रुदन-ध्वनि

स्वामीक बेढ़िया गैया हृदयत परि परि कान्दे सबे हाकले बिकले ।
समस्ते दिशक बेढ़ि बान्दरी मेलेके कान्दे स्वर्गक लङ्घिल सिटो बोले ।। ३६५६
वाली राजा पृथिवीत परिवार देखि मइ किकारणे धरि आछो जीव ।
अङ्गदाइ कुमारक कोले करि लइया प्रभु काहार आगत हुओं थिव ।।
अङ्गद कुमार हेरा क्रन्दन करन्ते आछे तयुदुइ चरणत परि ।
सहस्रेक महादइ क्रन्दन करन्ते आछे भूमित परिया गड़ागड़ि ।। ५७
शिखर सिन्दूर मोर खसाइलाहा प्रभुदेव राजयोग्य आनो अलङ्कार ।
पतिव्रता नारी हुइया केनमते वहिबोहो महादुख विधवार भार ।।
मइ याक तर्ज्जिलोहो सेहि मोक गर्ज्जिवेक विरहते थाकिवोहो परि ।
अनाथ हैवेक मोर अङ्गद कुमार यातो स्वामी सङ्गे गैलोहन्ते लरि ।। ५८
याहार प्रसादे मइ पृथिवी मण्डल माजे आछिलोहो राज राजेश्वरी ।
शत्रुपक्ष नृपतिर यत पटेश्वरी गण आछिल मोतेसे सेवा करि ।।
आनर स्वामीये गैया मोहोर स्वामीये गैया अन्तर आछिल बहुदूर ।
हेन मोर प्राणनाथ विछुड़कि कार्य्ये याहा लगते चलिबो यमपुर ।। ५९
आकुल व्याकुल करि क्रन्दन करन्ते आछे राजार कोलात पटेश्वरी ।
तोमाते से बाढ़िलेक तारार सुवाग यत कैक याहा मोक परिहरि ।।
आमार बचन तुमि नुशुनिला प्रभुदेव आन्धार करिला दशदिश ।
आपदर समयत सुहृदय बचनक देखिलाहा तुमि येन बिष ।। ३६६०
पुत्र येवे राजा हय बोलावय राजमाव अनुरूपे सम्पदक पाप ।
हात तोला करि आनि किछु किछु धन देइ यदिबा होवय बाप भाइ ।।

स्वर्ग को भी पारकर गयी ।। ३६५६ ।। (तारा विलाप करने लगी) राजा बाली धरती पर पड़े हुए हैं, मैं उनकी पत्नी हूँ। भला यह देखकर मैं किस कारण जीवन धारण किये हुए हूँ ? हे प्रभु, कुमार अंगद को गोद में लेकर मैं अब किसके समक्ष खड़ी होऊँगी ? अरे, कुमार अगद तुम्हारे चरणों में पड़कर रुदन कर रहा है; सहस्रों रानियाँ भूमि पर लोट-पोट होकर क्रन्दन कर रही है ।। ५७ ।। हे प्रभु देव ! तुमने मेरी माँग का सिन्दूर और राज-योग्य सभी अलंकार उतार लिये, पतिव्रता नारी होकर भी अव मैं किस प्रकार से वैधव्य-भार रूपी महादुःख वहन कर सकूँगी ? मैं अव तक जिस पर कठोर शब्दों से शासन करती थी, अव वही मुझपर गरजेगा। मुझे विरह में पड़ा रहना पड़ेगा। मेरा कुमार अंगद भी अनाथ हो जायेगा। इससे तो पति के संग शीघ्रता से चले जाना ही उत्तम होता ।। ३६५८ ।। जिसके प्रसाद से मैं पृथ्वी मंडल पर राजराजेश्वरी वनी हुई थी, शत्रु-पक्ष की पटरानियाँ केवल मेरी ही सेवा करती थीं; अन्य नारियों के पति और मेरे पति के बीच बहुत ही अन्तर था। मेरे ऐसे प्राणनाथ, तुम हमसे विछुड़कर किसलिये चले जा रहे हो ? मैं भी तुम्हारे संग यमलोक चलूँगी ।। ५९ ।। आकुल, व्याकुल होकर पटरानी तारा राजा वाली के वक्ष पर पड़ी रुदनकर रही थी। तारा का सुहाग तुमसे ही वढ़ा हुआ था; मुझे छोड़कर तुम कहाँ जा रहे हो ? प्रभु देव, तुमने मेरे वचन नहीं माने, और उस कारण मेरी दसों दिशाएँ अंधेरी कर दी। संकटकाल में सुहृद के वचन तुम्हें विष जैसे लगे ।। ३६६० ।। पुत्र जव राजा होता है तो वह राजमाता कहलाती है, और उसी के अनुरूप सम्पदा प्राप्त करती है। यदि पिता या भाई होते हैं तो ये हाथ-खर्च के लायक धन दिया करते है। परन्तु पति यदि राजा हो, तो पत्नी को सर्वस्व का अधिकार प्राप्त हो जाता है, वह मुख्य पटरानी वनती है। प्राणनाथ, तुम भी ऐसे ही

स्वामी राजा भैले सबे सर्ब्बस्वरे अधिकार हुइबे पाय मुख्य पटेश्वरी ।
हेन प्राणनाथ तुमि आमाक एरिया याहा किक लागि प्राण आछो धरि ।। ३६६१
शुनियो सुग्रीव बीर स्वामीर सोदर भाइ तुमि श्रेष्ठ देवर आमार ।
आपोनार सुख हेतु स्वामीक मराइया मोर कुलर अनाइला खिलिङ्कार ।।
एवे बर यश पाइला श्रेष्ठ भाइक नचाहिला आमाक चाहिबा किबा आर ।
तोर मने सुख हौक भायेररे लगे मोक गले आनि डाङ्ग दिया मार ।। ६२
गुणिचाओं तोक बाजे बानर कुलर माजे आर कोन आछे दुराचार ।
श्रेष्ठ भाइ पितृसम तान तइ भैलि यम किनो यश लभिला अपार ।।
तारार बिलाप देखि लक्ष्मण सुग्रीव बीर श्रीरामचन्द्र कृपामय ।
विपरीत शोक शाले तिनिरो शरीर दहे चक्षु ढाकि लोतक बहय ।। ६३

तारार अभिशाप

पद

तारा बोले चाहा राम परम सात्त्विक * बिमुख समरे स्वामी मारिलाहा किक
जाज्वल्य समान भैलो स्वामीर सन्तापे * तोमाक दहिते पारो पतिव्रता शापे ६४
तोमाक शापिले येवे जीवे मोर स्वामी * तेवेसे तोमाक शापि भस्म करो आमि
येन आन बेला न कराहा हेन पाप * सीमा दण्ड थैया अनुरूपे दिओं शाप ६५
बाहुर प्रतापे तुमि सीताक लभिबा * अगनित परीक्षिया अयोध्याक निबा
तयु जाया सीतादेवी हन्त महाशान्ति * तोमाक बिछुइ अल्पकाले एरि वन्ति ६६

थे। मुझे छोड़कर कहाँ चले जा रहे हो ? मैं अब किसके लिए प्राण धारण किये हुए हूँ ? ।। ३६६१ ।। हे वीर सुग्रीव, सुनो ! तुम मेरे पतिदेव के सहोदर भाई हो, मेरे श्रेष्ठ देवर हो, अपने सुख के लिए तुमने मेरे पति का वध करवाकर वंश मे कलंक लगा दिया। तुमने तो अब बड़ा यश कमाया है। जबकि तुमने अपने ज्येष्ठ भाई को न चाहा तो भला हमें क्या चाहोगे ? (वह क्रोध से कहने लगी) तेरे मन में सुख हो, भाई के साथ-साथ मेरे गले पर डंडे से मार दे ।। ६२ ।। मैं विचार कर देख रही हूँ कि वानर-कुल में तुझ-सा दुराचारी और कौन है ? पिता के समान तेरा बड़ा भाई था, तू उसका वैरी होकर काल बन गया। तुझे कैसा अपार यश मिल गया है। तारा का विलाप सुनकर वीर लक्ष्मण, सुग्रीव, कृपालु रामचन्द्र, इन तीनों को पुनः शोक जलाने लगा। वे आँखें ढककर आँसू बहाने लगे ।। ६३ ।।

तारा का अभिशाप

तारा बोली, परम सात्विक राम, देखो तो, मेरे पति, जो तुमसे युद्ध नहीं कर रहे थे, उन्हें तुमने किसलिए मारा ? पति के सन्ताप से मैं अग्नि के समान बन गयी हूँ। मैं पतिव्रता हूँ, तुम्हें अभिशाप देकर भस्म कर सकती हूँ ।। ६४ ।। तुम्हें शाप देने पर यदि मेरे पति जी उठें, तो तुम्हें अभी शाप देकर भस्म कर डालती। पुनः जैसे इस प्रकार का पाप तुम न करो, इस कारण सीमित दण्ड देकर अनुरूप शाप तुम्हें दे रही हूँ ।। ६५ ।। अपने बाहुबल से तुम सीता को प्राप्त कर लोगे, परन्तु अग्नि में उनकी परीक्षा करने के पश्चात् ही तुम अयोध्या में ले जाओगे। तुम्हारी पत्नी सीता-देवी महासती है, वे तुमसे अल्प समय पश्चात् ही विछुड़ जायेगी ।। ६६ ।। मैं जिस प्रकार पति-वियोग से मर रही हूँ, उसी प्रकार तुम भी देवी सीता के संभोग से वंचित

मइयेन मरो हेरा स्वामीर बियोगे * तोमाक बञ्चिब सीता देवीर सम्भोगे
बिछोह लगाइया हृदयत दिया शाल * करिबा कातर तमो याइबन्त पाताल ६७
पाचे कतो क्षणे सन्धुक्षण भैला बाली * चक्षु मेलि कुटुम्बक चाहिला निहालि
देखन्त अङ्गद चरणत परिआछे * सबे बन्धुजन बेढ़ि कान्दे आगे पाचे ६८
डाइन हाते अङ्गदको आलिङ्गि धरिला * बामहाते धरिया ताराक बोध दिला
परिच्छेद करिया देखोहो भार्य्या पोक * यमपुरे गैले मोक नेरिबेक शोक ६९
हरि हरि पुत्र मोर तारा पटेश्वरी * बिछोह लगाया हेरा मइ याओं मरि
सन्तानक एरिलो एरिलो हृदि खेद * तोमार आमार भैल दृष्टि परिच्छेद ३६७०
भैयाइ सुग्रीव तइ मोर बाषय शुन * मृतक भ्रातृर नधरिबि दोष गुण
युवराज करि अङ्गदक भाले राखा * मोर बल वीर्य्य पुत्र हैब तोर सखा ३६७१
खुरते भातिजे आदित्यको दिबि धार * इन्द्र देवतातो भय नुहिबे तोमार
तोमार बिपुल बले किछु नुहिबेक * मोर पुत्रे अनेक राक्षस मारिबेक ७२
सुग्रीवक ग्रीवेधरि मुखे चुमा दिल * अङ्गद पुत्रक हाते हाते समर्पिल
मोर पुत्र नोहे वाप तोमार तनय * भाल मते अङ्दक पालिते लागय ७३
कुलत थाकय यदि एकोदर भाइ * एकर तनय आछे आस कारो नाइ
सेहि पुत्र गुटि सबाहारे होवे सार * जल पिण्ड दाने करे बंशक उद्धार ७४
शुन बोलो प्राण बाप तनय अङ्गद * तोहोर खुरात पाइबि सकले सम्पद
आति सेवा एरि धर्म्मे करिबि सेवलि * आति सेवा करिया पाताले गैला बलि ७५
प्रणामोहो रामचन्द्र करि हात योर * अल्पमति तरल बानर मुखपोर

हो जाओगे। सीता को विरहिणी बनाकर, हृदय में काँटे चुभोकर, तुम उनसे कातर अनुनय करोगे, तथापि वे तुम्हें छोडकर पाताल चली जायेंगी ॥ ६७ ॥ इसके कुछ क्षण पश्चात् वाली की चेतना लौटी। उसने आँखें खोलकर अपने कुटुम्बीजनो को निहार-निहार कर देखा। उसने देखा, अंगद चरणों में पड़ा हुवा है, अन्य सभी बन्धुजन आगे पीछे घेर कर रो रहे हैं ॥ ६८ ॥ उसने दाहिने हाथ से अंगद को आलिगन कर लिया और बाये हाथ से तारा को पकड़कर आश्वासन दिया। निश्चित सिद्धान्त कर मैं आज अपनी पत्नी और पुत्र को देख रहा हूँ। यमलोक में पहुँचने पर भी मुझे शोक से छुटकारा नहीं मिलेगा ॥ ६९ ॥ हरि, हरि, हे मेरे पुत्र अंगद और पटरानी तारा, तुमसे बिछुड़कर मैं मर रहा हूँ। मैं सन्तान को छोड़ जा रहा हूँ, हृदय का खेद छोड़ रहा हूँ। तुम्हारी हमारी दृष्टि अन्तिम बार के लिए मिल रही है ॥ ३६७० ॥ भाई सुग्रीव, मेरे वचन सुन। मृत भाई का दोषगुण स्मरण न रखना। अंगद को युवराज बनाकर उत्तम रूप से रखना। मेरे बलवीर्य वाला यह पुत्र तेरा सखा बनेगा ॥ ३६७१ ॥ दोनो चाचा-भतीजे मिलकर आदित्य को भी चुनौती दे सकते हो। तुम्हारे विपुल बल से कुछ नही हो पायेगा। मेरा यह पुत्र अनेक राक्षसों को मारेगा ॥ ७२ ॥ उसने सुग्रीव की ग्रीवा पकड़कर मुँह चूम बेटे अंगद को उसके हाथ समर्पित कर दिया। कहा—यह अंगद हमारा पुत्र नहीं तुम्हारा है, तुम पिता हो। अंगद को अभी अच्छी तरह पालना है ॥ ७३ ॥ यदि कुल में सहोदर भ्राता रहता है, तो भाई की संताने उसी की होती है और किसी की नही। वह एक पुत्र ही सबका सार होता है, जल पिंडदान द्वारा वह वंश का उद्धार करता है ॥ ७४ ॥ प्राणप्रिय बेटा अंगद, सुन ॥ तू अपने चाचा में ही सब प्रकार की सम्पदा प्राप्त करेगा। अति सेवा न कर, धर्म में मति और सेवाभाव रखना। क्योंकि अति सेवा करने के कारण ही बलि को पाताल में जाना पड़ा ॥ ७५ ॥ रामचन्द्र

शरबिषे यतेक करिलो खिलिङ्कार * इसब दोषक प्रभु क्षेमिबा आमार ७६
सुवर्णर पङ्कज यतेक पद्ममाला * याक परिधाने श्रीधर समकाला
बासवे दिलन्त मोक माणिके उज्ज्वला * ग्रीव हन्ते काढ़िया दिलन्त सेहि माला ७७
लक्ष्मणक दिया बा आपुनि ग्रीवे धरा * नुहि सुग्रीवक दिया राज्यक जोकारा
अङ्गद कुमार मोर तारा पटेश्वरी * दुइहन्तको प्रभु पालिबाहा भाल करि ७८
बालीक प्रबोधि पाचे मातिलन्त राम * भार्य्यार पुत्रर शोक करा उपशाम
तोमात अधिक करि सुग्रीवे पालिब * अभिनन्दा भावे राजभोगे काल निब ७९
शुनियो सुग्रीव मित्र मोर बोल करा * बाली देन्त माला आपोनार ग्रीवे धरा
श्रेष्ठ भाइक लागि किछु न करिबा शोक * पुष्परथे चरि यान्त बाली स्वर्गलोक ३६८०
लैयो प्राण भाइ बुलि बाली माला दिल * हरिष विषाद मने सुग्रीवे पिन्धिल
आतिशय शोभा करे दशगुणे काला * देखि येन मेरुर शिखरे सूर्य्य ज्वाला ३६८१
भैयाइ सुग्रीव मोर हेर प्राण यान्ति * आषारेक मातोहो शुनियो तारा शान्ति
विपाङ्गे मरिलो तोर बचन नुशुनि * पुत्रक पालिबि मोर दोषक नुगुणि ८२
आपद कालत तोर एके बुधि तरि * मइ यमघरे याओं बचन न करि
एहि बुलि बाली राजा भैला निशवद * शरबिषे दुइ चक्षु भैलन्त तवध ८३
खर मर भैल बाली रायर हात भरि * अचेतन भावे थाकिलन्त दान्त तरि
मुख भैला निर्ब्बाण नासात श्वास नाइ * पालटिल चक्षुदुइ आदित्यक चाइ ८४

मैं हाथ जोड़कर आपको प्रणाम करता हूँ। मैं अल्पमति मुखजला चंचल बानर हूँ। वाण की वेदना के कारण आपको जितने दुर्वचन कहे, हे प्रभु मेरे उन सब दोषों को क्षमा कीजिये ॥ ७६ ॥ सुवर्ण के कमलों वाली जो पद्म-माला मेरी है, जिसे पहनने से विष्णु जैसी शोभा होती है, मणियों से उज्वल उस माला को इन्द्र ने मुझे प्रदान किया था। अपने गले से निकालकर वह माला देते हुए बाली ने कहा—इसे आप लक्ष्मण को दीजिए या स्वयं पहनिये अथवा राज्य में जयनाद गुंजाते हुए सुग्रीव को दीजिए। अंगद मेरा पुत्र है, और तारा पटरानी है। प्रभु इन दोनों का आप उत्तम रूप से पालन करें ॥ ७७-७८ ॥ तब बाली को धीरज बँधाते हुए रामचन्द्र ने कहा—हे बाली तुम भार्या और पुत्र का शोक परित्याग कर दो। सुग्रीव इनका पालन तुमसे भी उत्तम रूप से करेंगे। ये सबसे अभिनन्दित हो राजभोग करते हुए अपना जीवन बितायेंगे ॥ ७९ ॥ सुनो मित्र सुग्रीव, तुम मेरा वचन मानो। बाली जो माला दे रहे हैं, उसे अपने गले में पहन लो। बड़े भाई के लिए अब कोई शोक न करो। बाली अब पुष्प-रथ पर चढ़कर स्वर्ग चले जा रहे हैं ॥ ३६८० ॥ प्राणसम भाई, लो कहकर (बाली ने) सुग्रीव को वह माला दे दी। हर्ष-विषाद-युक्त मन से सुग्रीव ने वह पहन ली। वह दसगुनी अधिक उज्वल होकर अत्यन्त शोभित करने लगी। ऐसा दिखाई देता था मानो मेरु शिखर पर जलता हुआ सूर्य हो ॥ ३६८१ ॥ बाली बोला—भैया सुग्रीव, देखो, मेरे प्राण निकल रहे है, सती तारा तुमसे एक शब्द कह रहा हूँ। तुम्हारे वचन न मानकर इस संकट में पड़कर मर रहा हूँ। मेरे दोषों पर ध्यान न देकर पुत्र का पालन करना ॥ ८२ ॥ संकटकाल में तुम्हारी एक ही युक्ति से मैं तर सकता था पर तुम्हारे वचन न मानकर आज मैं यमलोक सिधार रहा हूँ। यह कहकर राजा बाली मौन हो गया। वाण की वेदना से दोनों आँखें स्तब्ध हो गयी ॥ ८३ ॥ राजा बाली के हाथ-पैर खिंच गये, दाँत लग गये, वह अचेत हो गया। मुँह फैल गया, नाक से साँस चलना रुक गया, सूर्य की ओर देखते हुए हाथ पैर खिंच गये ॥ ८४ ॥ नील ने जब देखा कि राजा बाली के प्राण निकल गये तो

नीले देखिलन्त वाली राजार निर्व्वाण * आजुरिया काढ़िलन्त राघवर बाण
रुधिरे पूरित शर गावर वजान्ति * चिकिमिकि करेयेन आदित्यर कान्ति ८५
सागरत स्नान करि रुधिर गुचाइ * रामर तूणत आसि पशिल दुनाइ
शरीरर वोम्वाले रुधिर वहि यान्ति * विजुली चटक येन देखि तार कान्ति ८६
स्वामीक वेढ़िया कान्दे पटेश्वरी लोके * सुग्रीव कान्दन्त आति ज्येष्ठ भाइर शोके
रामचन्द्र लक्ष्मण कान्दन्त हनुमन्त * सैन्ये समे चारि पात्र आरो जाम्बुवन्त ८७
तारा वोले स्वामी तुमि गैला परलोक * यमर पुरत प्रभु सुमरिबा मोक
यार मुठि प्रहारे मेदिनी मेले चिर * हेन स्वामी धरणीत त्यजिला शरीर ८८
हा स्वामी तुमि कोन कार्य्यक साधिला * सुग्रीवक डाकि भ्रातृबधू सम्भरिला
धर्म्मपथ एरि पाप करिला सकल * अविलम्बे पाइला सेइ अधर्म्मर फल ८९
अङ्गद कान्दन्त आति वियाकुल चित्त * हृदयत मुठि हानि परिला भूमित
हा वाप कि करि करिला निमाखिति * महाशान्ति माव मोर भैला अनाथिनि ३६९०
राजार कुमार कान्दे धरणीत लुटि * हा वाप वोलन्ते पराण याय फुटि
दीघल गहन पथे चलिला आपोने * तयु भार्य्या पुत्र आवे पालिबेक कोने ३६९१
राघवे वोलन्त मित्र शुनियो उचित * विस्तर क्रन्दने नुहि मृत कर हित
झाण्टे चिता साजियोक वहल बिस्तर * ताते तुलि करायोक बालीर संस्कार ९२
रामर वचन येवे भैला अवसान * पाचे वीर लक्ष्मणे दिलन्त समिधान
शोक एरि सुग्रीव प्रेतर कार्य्य चाहा * कैंरा तारा देवी तुमि किष्किन्ध्याक याहा ९३
चतुर्द्दोल यानत वालीक निया तोला * गिरि नदी समीपत शीघे निया पोरा

उसने खींचकर राम का वाण निकाल लिया। शरीर से निकला हुआ वह वाण सूर्य की कान्ति की भाँति जगमगा रहा था ॥ ८५ ॥ सागर में स्नान कर रक्त लघुकर वह पुनः राम के तूण में आकर प्रविष्ट हो गया। वाली के शरीर से रक्त की प्रवल धारा वह चली। उसका रूप विजली की चमक की भाँति लग रहा था ॥ ८६ ॥ पति को घेरकर पटरानियाँ रो रही थी। ज्येष्ठ भाई के शोक से सुग्रीव रो रहा था। रामचन्द्र, लक्ष्मण, हनुमान और सेना सहित जाम्बवन्त रो रहे थे ॥ ८७ ॥ तारा कहने लगी—हे पतिदेव, आप परलोक चले गये। प्रभु, यमलोक से मेरा स्मरण करना। जिसके मुक्के के प्रहार से धरती फट जाती थी, ऐसे पतिदेव, आपको धरती पर शरीर त्यजना पड़ा ॥ ८८ ॥ हा स्वामी, आपने कौन का कार्य किया था? सुग्रीव को निकालकर भ्रातृवधु को अपना लिया था। धर्ममार्ग छोड़कर सव प्रकार के पापकार्य किये थे, इसी कारण अविलम्ब उस अधर्म का फल आपको भोगना पड़ा ॥ ८९ ॥ चित्त में अत्यन्त व्याकुल होकर अंगद रोने लगा और हृदय पर मुक्का मारकर धरती पर गिर पड़ा। हाय पिता जी, क्या करूँ, आपने हमें एकदम निराश्रय कर डाला। महासती मेरी माता भी अनाथ हो गयी ॥ ३६९० ॥ राजा वाली का पुत्र धरती पर लोट लोट कर रो रहा है, 'हाय पिता जी' कहते उसके प्राण निकले जा रहे हैं। दीर्घ गहन मार्ग पर आप स्वयं चल पड़े परन्तु आपके पत्नी-पुत्र का पालन पोषण कौन करेगा? ॥ ३६९१ ॥ राघव बोले, मित्र सुग्रीव, उचित बात सुनो। वहुत अधिक रोने से मृतक का हित नहीं होता। तुम शीघ्र फैली हुई बड़ी चिता सजाओ और उस पर चढ़ाकर वाली की अन्त्येष्ठि संस्कार करो ॥ ९२ ॥ राम के इस प्रकार कह चुकने के पश्चात् लक्ष्मण ने कहा—सुग्रीव, शोक करना छोड़कर अव प्रेत-कार्य करो। इसके पश्चात् हे तारादेवी, तुम किष्किन्ध्या को चली जाओ ॥ ९३ ॥ चार कहारों वाली पालकी पर वाली को चढ़ाओ और शीघ्रता

अङ्गदे पितृर दिबा पिण्ड जलाञ्जलि * हनुमन्त आदि सबे कार्य्यक सङ्कलि ९४
शिरोगत करिलन्त लक्ष्मणर बोल * तेतिक्षणे तारा आनाइलन्त चतुर्द्दोल
अङ्गदे सुग्रीव दोला तुलिया धरिल * खुरते भातिजे गिरि नदी तीर निल ९५
आनो वर वर वीर पर्व्वत आकार * हाते कान्धे बहिलन्त मृतकर भार
कान्दन्ते कान्दते लैया गैला चतुर्द्दोले * बालीक पुरिला गैया गिरि नदी कोले ९६
दन्त काष्ठ काक बलि आरु स्नान बलि * अङ्गदे पितृर दिला पिण्ड जलाञ्जलि
निज गुरुब्राह्मणे दिलन्त स्वाहि पाहि * अङ्गदे करिला कर्म्म विधिवते चाहि ९७
नानाबिधदान करिलन्त बृषोत्सर्ग * हनुमन्त सुग्रीव समस्ते ज्ञाति वर्ग
दाने माने सब ज्ञाति लोक तुष्ट भैला * पुष्परथे चरि बाली स्वर्गे चलि गैला ९८
समस्ते बानर गणे कार्य्यक सङ्कलि * रामर चरणे आसि करिला सेवलि
हनुमन्ते रामक करिला बहुस्तुति * तोमार प्रसादे भैल बालीर मुकुति ९९
आषारेक बोलो बुलिबाक लागे डर * भरि चारि पाञ्च जायो किष्किन्ध्या नगर
राज्य झङ्कारियो सुग्रीवक तयु मित्र * तुमि परशिले हैब आमर पवित्र ३७००
रामचन्द्र बोलन्त शुनियो बायुसुत * आमार मित्रर अकल्याण आछे कैत
बनबास खाटो पालि पितृर आदेश * चैध्यय बत्सर नाहि नगरे प्रवेश ३७०१
शुनियोक हनुमन्त गबाक्ष गवय * मैन्द द्विविद शुना बीर समस्तय
नल गन्धमादन सुषेण नरहरि * ब्रह्मार तनय ओबा शुनियो केशरी २
तारबीर पनस शुनियो जाम्बुवन्त * दधिमुख यूथपति आवर आछन्त
इन्द्रजानु सुजानु शुनियो बीर नील * ऋषभ शरभ आरो शुनियो सुशील ३

से पर्वतीय नदी के समीप ले जाकर दाहकर्म करो। अंगद, तुम पिता को जलांजलि देना। हनुमान आदि सभी लोगों ने कार्य समझ लिया ॥ ९४ ॥ और लक्ष्मण का आदेश शिरोधार्य किया। तारा ने उसी क्षण चार कहारों वाली पालकी मँगवायी। अंगद और सुग्रीव ने पालकी उठायी और दोनों चाचा, भतीजे मिलकर उसे पर्वतीय नदी के समीप ले गये ॥ ९५ ॥ अन्य बड़े बड़े पर्वत-समान वीरों ने, हाथों-कंधों से मृतक का भार उठाया, और सभी ने रोते हुए पालकी पर चढ़ा, वाली के शव को पर्वतीय नदी के तट पर ले जाकर दाह किया ॥ ९६ ॥ काष्ठ, काकबलि और स्नान-बलि आदि कर्मों को करते हुए अगद ने पिता को जलांजलि दी। अपने गुरु ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा दी और इस प्रकार अंगद ने विधिवत् सभी कर्म किये ॥ ९७ ॥ हनुमान, सुग्रीव आदि सभी कुटुम्बीजनों ने वृषोत्सर्ग, तथा नाना प्रकार के दान किये। दान-मान से सभी आत्मीय-कुटुम्बीजन तुष्ट हुए और बाली पुष्परथ पर आसीन हो स्वर्ग चला गया ॥ ९८ ॥ सभी बानरों ने समस्त कार्यों को पूर्णकर राम के चरणों में आकर प्रणाम किया। हनुमान ने रामचन्द्र की बड़ी स्तुति की और कहा—प्रभु, आपके प्रसाद से ही बाली की मुक्ति हुई ॥ ९९ ॥ मैं आपसे एक शब्द कहना चाहता हूँ, पर कहते हुए मुझे डर लगता है। यहाँ से किष्किन्ध्या नगर थोड़ी ही दूरी पर है, प्रभु, वहाँ चलकर अपने मित्र सुग्रीव का राज्याभिषेक कीजिये। आपके स्पर्श से वे सब प्रकार से पवित्र हो जायेंगे ॥ ३७०० ॥ रामचन्द्र ने कहा—पवनसुत हनुमान, सुनो, हमारे मित्र का अमंगल कहाँ हो सकता है। पिता का आदेश पालन कर मैं वनवास का पालन कर रहा हूँ। चौदह वर्ष मेरे लिए नगर-प्रवेश वर्जित है ॥ ३७०१ ॥ हनुमान, गवय, गवाक्ष, मैन्द, द्विविद, नल, गन्धमादन, सुषेण, नरहरि, ब्रह्मा-सुत केशरी, महावीर पनस, जाम्बवन्त, यूथपति-दधिमुख इन्द्रजानु, सुजानु, वीर नल, ऋषभ, सुशील वृषभ, शरभ, सम्पाति, सर्वभक्ष आदि गोल अंगुलियों वाले

सतानु सम्पाति सर्व्वभक्ष शुनियोक * गोलाङ्गुल जाति कपि आछा यतलोक
सबे महाबीर येन देवर समाज * सबे मिलि सुग्रीवक जोकारियो राज ४
वालीसुत महाबीर आछन्त अङ्गद * सबे मिलि दिबा ताङ्क युबराज पद
आमार बचने सबे हेला परिहरि * समस्ते वानरे जायो किष्किन्ध्या नगरी ५
चलियो सुग्रीव मित्र लोवा दण्डपाट * प्रजापति पालि आज्ञा करि बाहा छाट
नटे भाटे ब्राह्मणे मङ्गल करन्तोक * सम्पिलो तोमाते तारादेवी आछन्तोक ६
श्रावणादि मास मुख्य वारिषार काल * दिनते आन्धार महामेघर घञ्चाल
वानर लोकर आतो किछु नाहि काज * इटो चारि मास महासुखे करा राज ७
आमि थित हैवो प्रस्रवण गिरि वरे * सीतार निमित्ते चित्त उत्रावल करे
कात्तिक निवृत्ति गैले आग्रहण मासा * सीताक खुजिवे येन नमातिले आसा ८
सुग्रीवे बोलन्त आवे भैल प्रतिकार * भार्य्याक लभिलो अकण्टक राज्य भार
सीताक खुजिवो आमि चारि मास पन्चे * धार लागि मित्रर आमार गावे आछे ९
रामक प्रणाम करि भालुक वानरे * नगरीत प्रवेश भै गैल चप करे
चतुर्द्दोले सुग्रीव ओवारि पयोसार * सुग्रीव बोलन्त विधि प्रसन्न आमार ३७१०
ओवारि भितरे पाञ्च रत्नर भाण्डार * शुभ शुभ जय जय भै गैल जोकार
दण्ड छत्र पताका विचित्र नृत्य गीत * सुगन्ध शीतल वाते प्रमोदित चित ३७११
नानाविध चित्रखांन आति बितोपन * देखि सुग्रीवर उल्लासिया गैल मन
पदूलि पदूलि सबे पुतिला तोरण * सुवर्णर दीप घट सुगन्ध चन्दन १२
दूर्व्वाक्षत पञ्चरत्न थैला निरन्तरे * पशिलन्त सुग्रीव श्रीमन्त बास घरे

कपि जाति के जितने लोग है, सभी सुने। तुम सभी महावीर देव-समाज जैसे हो, सभी मिलकर सुग्रीव का राज्याभिषेक करो ॥ २-४ ॥ वाली-सुत महावीर अंगद को तुम सब मिलकर युवराज पद प्रदान करना। मेरा वचन मान, अवज्ञा न कर सभी वानर किष्किन्ध्या नगर को जाओ ॥ ५ ॥ मित्र सुग्रीव, जाओ और राज-दंड, राजसिंहासन ग्रहण करो। प्रजापति बनकर अपनी प्रजा को आज्ञा देना। नट, भाट, ब्राह्मण मंगलगान करें और मैं तुम्हारे हाथ देवी तारा को सौंप रहा हूँ ॥ ६ ॥ श्रावणादि चार माह वर्षा के मुख्यकाल हैं। इन दिनों मेघों के आडम्बर के कारण दिन को अन्धकार छाया रहता है। यहाँ वानरों के रहने का कोई प्रयोजन नही है, इन चार माह तुम महासुख से राज करो ॥ ७ ॥ मैं गिरिवर प्रश्रवण पर निवास करूँगा। सीता के निमित्त मेरा चित्त उतावला हो रहा है। कार्तिक बीत जाने पर अगहन माह में जैसे मेरे बिन कहे सीता के संधान हेतु चले आना ॥ ८ ॥ सुग्रीव बोला—अब सारा प्रतिकार हो गया, मैंने निष्कंटक राज्यभार और पत्नी को प्राप्त कर लिया। हमारे शरीर पर मित्र का ऋण चढा हुआ है। हम चार माह पश्चात् सीता की खोज करेंगे ॥ ९ ॥ भालू और वानरो ने राम को प्रणाम कर तुरन्त नगर में प्रवेश किया। पालकी पर चढकर सुग्रीव ने राजभवन में प्रवेश किया। उसने कहा—हमारे विधि प्रसन्न है ॥ ३७१० ॥ राजभवन के अन्दर पंचरत्नो का भण्डार था। सुग्रीव के प्रवेश करते ही 'शुभ शुभ, जय जय' की ध्वनि गूंज उठी। राजदड, छत्र, पताका आदि सुसज्जित थे, विचित्र नृत्य-गीत हो रहे थे, सुगन्ध शीतल पवन से चित्त आमोदित हो रहा था ॥ ३७११ ॥ भाँति-भाँति के सुन्दर-सुन्दर चित्र सुसज्जित थे जिन्हें देखकर सुग्रीव का मन उल्लसित हो उठा। सब लोगों ने अपने वाहरी द्वारों पर तोरण बना रखे थे। सुवर्ण के दीप, कलस, और सुगन्धित चन्दन दूर्वा, अक्षत आदि पंचरत्न रखे थे। इस प्रकार सुग्रीव ने

शुना रामायण पद यत सभासद * शुनन्ते मङ्गल मिले गुचय आपद १३
यार येन मनर बाञ्छित पूरे काम * निरन्तरे नरे डाकि बोला राम राम ३७१४

सुग्रीवर राज्य अभिषेक

छबि

अन्तेषपुरर हुन्ते महन्त सुग्रीव बीर रत्न मण्डपक चापि गैला।
मन्त्री पात्रगणे मिलि सेवालि करिया पाचे बारे बारे प्रशंसिबे लैला।।
सुवर्ण रजत रत्ने शरीरक मण्डिलन्त अलङ्कारे देखि हेममय।
हरिषत बदनर कान्तिचय प्रकाशय येन देखि सूर्यर उदय।। ३७१५
हनुमन्त आदि करि मुख्य मुख्य पात्रगण रामर आज्ञाक शिरे लैल।
भाल भाल दूतगण देशे देशे पठाइ दिया सम्भार मिलाइ आनि थैल।।
गङ्गा देवी आदि करि यत यत तीर्थ आछे आरो सात सागरर जल।
सुवर्णर अष्टघट अगरु सुगन्धि जले भरि आमडालि दिल फल।। १६
पण्डित सकले खड़ि धरि शुभलग्न करि शुभदिन चाइ शुभक्षण।
दुइपाट महादइक अलङ्कारे मण्डिलन्त अङ्गचय देखि सुशोभन।।
सुबर्णर सिंहासने सुग्रीव नृपति आति लीलारूपे थाकिलन्त बसि।
डाहिनत लोमा देवी बामत बसिला तारा नक्षत्र माजत येन शशी।। १७
ब्राह्मण सकले रङ्गे सुमङ्गल करिलन्त पातिलन्त गणपति घट।
नाना भाव भङ्गि करि विद्याधरे नाचे गावे असंख्य योगान भाट नट।।

अपने निवास गृह में प्रवेश किया। सभासद गण रामायण पद सुनें। इसके श्रवण से संकट कट जाते है, मगल मिलता है।। १२-१३।। जिसका जो वाँछित है, मनोकामना पूर्ण हो जाती है, अतः हे लोगों निरन्तर पुकार-पुकार कर राम-राम कहो।। १४।।

सुग्रीव का राज्याभिषेक

अन्तःपुर से महावीर सुग्रीव रत्नमंडप में गया। मन्त्री-सामन्त आदि मिलकर सेवा प्रणाम कर बार-बार उसकी प्रशंसा करने लगे। सोने, चाँदी, रत्न आदि से शरीर को मंडित किया। अलंकारों में मंडित शरीर सोने जैसा दिखाई देने लगा। प्रसन्नता से उनके शरीर की कान्ति इस प्रकार प्रकाशित होने लगी मानों सूर्य का उदय हो रहा हो।। ३७१५।। हनुमान सहित मुख्य-मुख्य सामंतों ने राम का आदेश शिरोधार्य कर उत्तम दूतों को विभिन्न देशों में भेजकर राज्याभिषेक की सामग्रियाँ मंगवा ली। गंगा सहित जितने तीर्थ हैं उनके और सातों समुद्रों का जल मँगवाया, सोने के आठ कलसों के जल में अगरु आदि सुगन्धित वस्तुओं को डालकर रखा। आम आदि फलों की डालियाँ भर ले आये।। १६।। पंडितों ने शुभ लग्न की गणना कर शुभ दिन, शुभ क्षण निकाला। दोनों पटरानियों को आभूपणो से मंडित किया इससे उनके अंग अधिक सुन्दर हो उठे। राजा सुग्रीव बड़े आनन्द से स्वर्ण-सिंहासन पर बैठा। उसके दाहिने देवीलोमा बैठी, बायें तारा, मानो क्षत्रों के बीच चन्द्रमा हो।। १७।। ब्राह्मणों ने हर्षपूर्वक सुमंगल ध्वनि की, गणपति का कलस स्थापित किया। अनेक प्रकार की भाव-भंगीकर विद्याधर नाचने गाने लगे, अनगिनत भाट-नट अपनी कलाएँ दिखाने लगे। अनगिनत शब्दों से कोलाहल उमड़ पड़ा, वहाँ हलचल मच गयी। अनगिनत शब्दों के नाद से आकाश परिपूरित हो गया, बन्धुवर्ग

असंख्यात शवदर कोलाहल उथलिल हुलस्थूल लागिगैल तय ।
असंख्य शब्दरनाद गगन पूरिया गैल वन्धुवर्गे करे जय जय ॥ १८
बीर ढाक ढोल बाजे तवल डगर दण्डि शब्द शुनिया कोलहल ।
भेमच क्षेमचचय झाझर रेमचि बाजे रामताल आरु करताल ॥
टोकारि केन्दरा रुद्र विपाञ्चि दोतरा वाजे बीणा बाँशी दोशरी मोहरी ।
जिजिरि काहालि शिङ्गा भेरी डाके निरन्तर स्वर्ग भुवनको गैला पूरि ॥ १९
धवल चामर करे धरि दुइ पात्रे आति आगे पाचे थाकि गैल ढुलि ।
निर्म्मल चन्द्रर सम धवल छत्रेक आनि धरिलन्त कौतूहले तुलि ॥
पण्डित ब्राह्मण गणे बह्नित आहुति दिल कन्यागणे करिल मङ्गल ।
द्विजगणे मंत्र पढ़ि दूर्व्वाक्षत दिला माथे आरो सात सागरर जल ॥ ३७२०
हनुमन्त जाम्बुवन्त गवाक्ष केशरी आरो दधिमुख नलनील आर ।
यथायोग्य विधि आसि निरन्तरे पात्रगणे जयजय करय जोकार ॥
सुवर्ण मुकुता फले सिञ्चिलन्त कौतूहले कि कहिबो ताहार महिमा ।
भनत हरिषे तय नारीगणे जोकारय ध्वनि सिटो गैल स्वर्गसीमा ॥ ३७२१
हनुमन्त आदि करि मुख्य मुख्य पात्रगण मिलिलन्त सकले समाज ।
तारा देवी तनयक महावीर अङ्गदक तेखने पातिला युवराज ॥
महन्तक पालिवाहा दुष्टक करिबा दण्ड राज्य जन न करिबा पीड़ा ।
तारा लोमा दुइ भार्य्या दुइ पाशे लैया राजा सुग्रीव करन्त काम क्रीड़ा ॥ २२
एहि बुलि पात्रगणे अङ्गदक नियोजिल सुग्रीव भैलन्त महाराजा ।
रामर चरण सेवा प्रसादे परम सुखी हुया रैला किष्किन्ध्यार प्रजा ॥
शुना सभासद चय साक्षाते अमृतमय रामर चरित्र अनुपाम ।
माधव कन्दलि भणे बुलियोक घने नेने डाकि उच्च करि राम राम ॥ २३

जय-जय करने लगा ॥ १८ ॥ युद्ध में बजने वाले नगाड़े, ढोल, तवला, डगर दण्डि, भेमच, क्षेमच, झाझर, रेमचि, रामताल, करताल, टोकारि, केन्दरा, रुद्र, वीणा, विपञ्चि, दोतारा, वीणा, बासुरी, दोशरी, मोहरी, जिजिरि, काहालि, सींगा, भेरी, ढाक, आदि वाद्यों के निरन्तर शब्द से स्वर्ग, भुवन परिपूर्ण हो गया ॥ १९ ॥ हाथों में श्वेत चँवर लिये दो सामन्त और ढोल बजाने वाले-पीछे खड़े हो गये, निर्मल चन्द्र जैसा धवल छत्र बड़े आनन्द से उस पर लगाया गया । पंडित ब्राह्मणों ने अग्नि में आहुति दी, कन्याओं ने मंगल-पाठ किया । द्विजों ने मन्त्र पाठकर सिर पर दूर्वा-अक्षत, और सात सागरों का जल डाला ॥ ३७२० ॥ हनुमान, जाम्बवान, गवाक्ष केशरी, दधिमुख, नल, नील आदि सामन्तों ने यथायोग्य विधिपूर्वक आकर जय-जय ध्वनि की । सोना, मोती आदि के द्वारा सुग्रीव को जिस प्रकार हर्षपूर्वक विभूषित किया, उसकी महिमा का क्या वर्णन करूँ ? मन के आनन्द से नारियाँ आनन्द-ध्वनि करने लगी । वह ध्वनि स्वर्ग की सीमा लाँघ गयी ॥ ३७२१ ॥ हनुमान समेत सभी मुख्य-मुख्य पात्रों के समाज ने जुटकर तारादेवी के पुत्र महावीर अंगद को तभी युवराज बनाया । महत् पुरुषों का पालन, दुष्टों को दंडित करते हुए, राज्य के प्रजाजनों को उत्पीड़ित न कर, तारा लोमा दोनों भार्याओं को दोनों पार्श्व में लेकर राजा सुग्रीव आप काम-क्रीड़ा कीजिए ॥ २२ ॥ इस प्रकार कहकर अगद को राज कार्य में नियोजित किया । सुग्रीव महाराजा बना । राम की चरण-सेवा के प्रसाद से किष्किन्ध्या की प्रजा परम सुखी होकर रहने लगी । सभासदगण, राम का अनुपम चरित्र साक्षात अमृतमय है । माधव कन्दली कहते हैं, उच्च कंठ से बार-बार राम-राम कहो ॥ ३७२३ ॥

सुग्रीवर प्रति राम लक्ष्मणर क्रोध

पद

प्रस्रवण नामे गिरि नेत्र अनुपाम * बारिषा कालत सिटो बञ्चिबे उत्तम
लक्ष्मणे निर्म्मिला बासा नदी सन्निहिते * दुइ भाइ चारिमास बञ्चिला तहिते २४
श्रावण मासत मुख्य बारिषाइ काल * दिनान्ते आन्धार महामेघे कोलाहल
सुरभि शीतल आति दक्षिणार बावे * कोकिलर कुहुनादे निद्राक योगावे २५
प्रमत्त भ्रमरे तेन मालतीक शोषे * बिरहिनी नारीर बिरह चित्ते घोषे
मेघर गर्ज्जन शुनि भैरा करे नाद * सीताक सुमरि रामे करन्त बिषाद २६
कैंक गैल सीता मोर बचन अमृत * प्राणेश्वरी अबिहने नरहय चित्त
स्वभावे बारिषा काले काम आतिरेक * एक गोटा दिने जाय एक बरिषेक २७
राघवे बोलन्त लखाइ नसहे पराण * शरीरक दहे मदनर पञ्च बाण
चम्पक मालती गन्धे हृदय न सहे * प्राण सङ्कलय येन सीतार बिरहे २८
लक्ष्मणे बोलन्त ददा लेजियो बिकल * आतिशय शोके हैबा शरीर दुर्ब्बल
बलिष्ठ रावण स्थूल पर्ब्बत येहेने * दुर्ब्बल शरीरे ताक युजिबाहा केने २९
प्रबल अगनि येन दहे तृण बन * सहजे ज्वलन्त सखा होवन्त पवन
दीपर अगनि निमावन्त सेहि बावे * सुहृद जनर होवे तेनेइ स्वभावे ३७३०
सन्ताप एरिया ददा न करियो शोक * अमृत समान फल मूल भुञ्जियोक

सुग्रीव पर राम का क्रोध

प्रस्रवण नाम का पर्वत नयनों को सुख देने वाला है। वर्षा ऋतु वहीं उत्तम रूप से बितानी है। इस प्रकार सोचकर लक्ष्मण ने नदी के समीप डेरा बनाया और वहीं दोनों भाइयों ने चार माह बिताये ।। ३७२४ ।। श्रावण का माह वर्षा का मुख्यकाल है। दिनान्त होते ही अन्धकार हो जाता है और प्रचंड बादलों का कोलाहल गूंजने लगता है। सुगन्धित बहुत ही शीतल दक्षिण पवन चलने लगता है। कोकिल की कुहू-कुहू बोली से निद्रा आ जाती है ।। २५ ।। प्रमत्त भ्रमर मानो मालती को चूस लेता है। बिरहिनी नारी का चित्त उसके विरह की घोषणा करता है। मेघों की गरज सुनकर मयूर बोलने लगता था। ऐसे काल में सीता का स्मरण कर राम विषाद से कहने लगे ।। २६ ।। मेरे वचनों की सुधारूपिणी सीता कहाँ चली गयी ? प्राणेश्वरी के बगैर मेरा चित्त शान्त नहीं हो पा रहा है। स्वभावतः वर्षाकाल में काम-वासना बढ़ जाती है। एक-एक दिन एक-एक वर्ष सा बीतता है ।। २७ ।। राम बोले—लक्ष्मण, मेरे शरीर को मदन के पंचबाण दग्ध कर रहे हैं, प्राण इसे सहन नहीं कर पा रहे हैं। हृदय चम्पा, मालती की गन्ध सहन नहीं कर पा रहा। सीता का विरह मानो प्राण निकाले ले रहा है ।। २८ ।। लक्ष्मण बोले—भैया व्याकुलता छोड़ दीजिये, अत्यन्त शोक करने पर आपका शरीर दुर्बल हो जायेगा। रावण विशाल पर्वत-सा बलिष्ठ है। उससे भला दुर्बल शरीर को लेकर किस प्रकार लड़ सकते है ।। २९ ।। प्रबल अग्नि जिस प्रकार तृण वनों को दग्ध कर डालती है, यदि उस अग्नि का सखा पवन बन जाये तो वे और सरलता से जल जाते है। पर वही पवन दीपक की अग्नि को बुझा देता है। सुहृदजनों का स्वभाव ऐसा ही हुआ करता है ।। ३७३० ।। भैया, सन्ताप तज दीजिये, शोक न कीजिये। अमृत जैसे फल-मूल खाइये। इस प्रकार वे दोनों प्रस्रवण गिरि पर निवास कर रहे थे—उधर

बारिषार प्रस्रवण गिरिते आछन्त * सुग्रीवक निते हनुमन्त चिञ्चरन्त ३७३१
मारुतिये बोलन्त सुग्रीव महाराज * कार्त्तिक निर्वत्ति गैल हेन नुयुवाय
नैयो आसि खोजन्ते आपुनि येवे चाय * तेवेसे मित्रर हन्ते कल्याणक पाय ३२
राम मित्र भैलो तिनि त्रैलोकार सार * यात हन्ते भैला तुमि दुर्गति उद्धार
पटेश्वरी गण पाइला गुचिल बिपद * याहार प्रसादे तुमि पाइला राज पद ३३
हितबोल शुना एरियोक राजभोग * सतते पाइबा नारीगण उपयोग
सुखे दुखे चाहन्त वीरत्व युचुवाय * रामे खेदि आसिले भालर चिह्न नाइ ३४
सम्पद समये हिताहितक न जानि * राजभोग एरिया शुनियो हितबाणी
एहिमते पात्रगणे हित बुलिलन्त * कटाक्षे सुग्रीव वीरे गर्व्वे थाकिलन्त ३५
गैल आग्रहयणर दिवस कतिपय * अरुण नयने रामे क्रोधिया बोलय
देखिला लक्ष्मण भाइ बानरर नय * सबे गुणे पिठि दिया एखनो नासय ३६
आपुनि सुखते आछे मोहोर बुरिल * निलाज बानर सब गुण पासरिल
मित्र खुजि पाइलोहो बनर पशुजन * जले रेखादिले येन गुचे तेति क्षण ३७
किष्किन्ध्याक लखाइ तुमि करियो पयाण * सहजे लटक बानरक धरि आन
पण्डित जनक येन भाण्डि गैल बोवे * बटालि नकाटे येन बिना हाठुरिये ३८
रामर बचन शुनि लक्ष्मणर खङ्ग * मारो बानरक आजि क्षुद्र से पतङ्ग
तोमाक भाण्डिल ददा हेर आसो बुलि * किष्किन्ध्या नगरी पाइया करय धुन्धुलि ३९

हनुमार नित्य सुग्रीव को पुकार-पुकार कर कहते थे ।। ३७३१ ।। पवन कुमार कहते थे—महाराज; सुग्रीव, कार्तिक का माह बीत चला है। आपको ऐसा करना उचित नहीं है। मित्र के आकर बिना कुछ कहे या माँगे, यदि आपही जाये, तभी वह व्यक्ति मित्र हेतु कल्याण प्राप्त कर सकता है ।। ३२ ।। राम मित्र बने हैं, यह त्रैलोक्य का सार है। जिसके कारण तुम्हें दुर्गति से उद्धार मिला है। तुम्हे पटरानियाँ मिली हैं, और विपत्ति मिटी है। उन्हीं के प्रसाद से तुम्हें राजपद प्राप्त हुआ ।। ३३ ।। मेरे हितकार वचन सुनो, राजभोग छोड़ दो; नारियों का भोग तो तुम्हें निरन्तर प्राप्त होता ही रहेगा। सुख-दुख में जो भी हो, वीरता दिखाना उचित नही है। राम यदि पीछा कर आ जायें तो कल्याण का चिह्न नहीं रहेगा ।। ३४ ।। सम्पद-काल में हित-अहित का ज्ञान नही रहता। राजभोग तजकर हितकारी वाणी मानो। इसी प्रकार सामन्तों ने हितकारक वचन कहे। पर वीर सुग्रीव ने उन पर कटाक्ष करते हुए घमंड से भरा रहा ।। ३५ ।। अगहन के कुछ दिवस भी इसी प्रकार बीत गये। तब रामचन्द्र ने आंखें लाल कर क्रोध पूर्वक कहा—भाई लक्ष्मण, वानर की नीति देखी; सभी प्रकार से उसने मुंह मोड़ लिया है, यहाँ आता तक नही है ।। ३६ ।। वह तो स्वयं सुख से रह रहा है, केवल हमारा ही सब कुछ डूब गया। वह निर्लज्ज वानर सारे गुण भूल गया है। मैंने भी मित्र खोजकर वन के इस पशु को ही पाया। जल में रेखा खींचने पर जैसे वह उसी क्षण मिट जाती है। (उसी प्रकार सुग्रीव की मित्रता भी क्षणिक रही) ।। ३७३७ ।। लक्ष्मण, तुम किष्किन्ध्या जाओ और उस दुष्ट वानर को सहज ही पकड़ लाओ। पंडितजन को जिस प्रकार जल की धारा बहा ले गयी थी; बिना हथौड़ी की चोट के बटाली जिस प्रकार नहीं काटती, (उसी प्रकार विना कठोरता के सुग्रीव काम नही आयेगा) ।। ३८ ।। राम के वचन सुनकर लक्ष्मण को क्रोध आ गया। वे कहने लगे—पतिंगे जैसे क्षुद्र उस वानर को आज मै मार डालूंगा। भैया, वह आपको आश्वासन देकर धोखा दे गया है। अब किष्किन्ध्या नगर पहुँच कर वह धूर्तता कर

बालीक मारिला तुमि सिटो भुञ्जे राज * तुमि घोर बने सिटो धौलिबर माज
धान्यक पीड़िया बिनाइबने थाके जरि * गृहस्थर गले कण्ठा लारि कत पारि ३७४०
स्वरूप बोलोहो नो बोलोहो मिछा वाजि * बानर कुलर यम हुइया याओं आजि
शरे हानि पेलाइ वोहो सुग्रीवक छेदि * बानर रुधिरे बहाइ वोहो घोर नदी ३७४१
श्रीरामे बोलन्त लखाइ शुन राजनय * गम्भीर चरित्रे काज वेण्टु नगणय
सरसे टनके येबे नासे मोर पाश * निष्ठुर बचने लगाइबाहा गर्भ त्रास ४२
यिटो शरे बालीराम गैल यमपुर * बुलिबा सम्प्रति तूणे आछे सेहि शर
एके शरे श्रेष्ठ भाइ मरिल तोहारि * तुमि पुत्रु मरिबाहा पुत्र परिबारि ४३

दुलड़ी

रामक प्रणामि लक्ष्मण कुमार चलिला अन्तेषपुर ।
चरण प्रहारे पृथिवी काम्पय मेदिनी मेलय चिर ॥
सक्रोध नयने सत्वर गमने अन्तेषपुरक पाइला ।
हाते बृक्ष शिला पर्व्ब धरिया प्रचण्ड बानरे धाइला ॥ ४४
नगरीर माजे दारि दुरि लागि बानरर हुलस्थुलि ।
गोत्र मेलेकक अङ्गदे पठाइल राजात जनाओं बुलि ॥
तारा देवी सङ्गे आछे मन रङ्गे राजाक लाग न पाइल ।
नगरी राखिबे लागि हनुमन्ते अनेक सैन्य चलाइल ॥ ४५
एकोहो बानर पयाणे चलिल हस्तीर येन प्रमाण ।
कतोहो शतेक कतो सहस्रेक बानरे करे पयाण ॥

रहा है ॥ ३९ ॥ वाली को तो आपने मारा, राज वह कर रहा है। आप घोर वन में रह रहे है, वह राजभवन में निवास कर रहा है। जिस प्रकार धान के खेत में झाड़-झंखाड़ उसे कष्ट दिया करते है। गृहस्थ को कंठी जैसे शोभा नही देती (उसी प्रकार सुग्रीव राजा बनने के योग्य नही है) ॥ ३७४० ॥ मैं सत्य कहता हूँ, मिथ्या दंभ नही करता। आज मै वानर-वंश का काल बनकर जा रहा हूँ। वाण मारकर सुग्रीव को छेद डालूंगा, वानरों के रक्त से प्रवल नदी बहा दूँगा ॥ ३७४१ ॥ श्रीराम ने कहा—लक्ष्मण, राजा की नीति सुनो! गम्भीर चरित्र बने रहने से काम नहीं निकलता। हे भाई! सीधी बात कहने पर यदि वह मेरे पास न आवे तो निर्मम वचन कहकर घोर आतंक फैला देना ॥ ४२ ॥ कह देना कि जिस वाण से राजा वाली यमलोक सिधारा है, तूण में सम्प्रति वह वाण भी है। एक ही वाण से तुम्हारा बड़ा भाई मारा गया। पुनः तुम भी पुत्र-परिवार समेत मारे जाओगे ॥ ४३ ॥

राम को प्रणाम कर कुमार लक्ष्मण अंतःपुर को चले। उनके चरण-प्रहार से पृथ्वी कम्पित हो रही थी, मेदिनी फट रही थी। क्रोध पूर्ण नेत्रों से अत्यन्त बेग से चलकर वे अन्तःपुर पहुँचे। उन्हें आते देख हाथों में वृक्ष, शिला, पर्वत आदि लिये हुए बड़े-बड़े प्रचंड वानर धावा कर आये ॥ ४४ ॥ नगर में भाग दौड़ मच जाने के कारण वानरो मे हलचल फैल गयी। अंगद ने राजा सुग्रीव को सूचना देने हेतु अपने संगी-साथियों को भेजा। परन्तु राजा सुग्रीव बड़ी उमंग और आनन्द से तारादेवी के साथ था। इस कारण वे उससे मिल न सके। तब नगर-रक्षा हेतु हनुमान ने अनेक सेनाओ का संचालन किया ॥ ४५ ॥ आकार में हाथी जैसा एक-एक वानर आगे बढ़ चला। वैसे ही कितने सैकड़ों हजारों वानरों ने प्रयाण किया।

हाते वृक्ष शिला उपारि धरिला कोटि असंख्यात धाइल ।
लक्ष्मण बीरर मूर्त्तिक देखिया बानर भागि पलाइल ॥ ४६
कतो भयहन्ते थमकि थाकिल केहो बोले लओं प्राण ।
केहो बोले आक दिओं वृक्ष जाक पर्ब्बत शिखर मान ॥
धनुत टङ्कार करिला लक्ष्मणे बानर बल डाकिल ।
सिंह दरशने मृग हुया येन बानर बल भागिल ॥ ४७
पात्र मन्त्रीगणे इङ्गिते जानिया राजात गैया जनाइल ।
आनो केहो नहे खरतर वेगे लक्ष्मण बीरेसे आइल ॥
हनुयो बोलन्त तैसानि बुलिलो आपुनि चलि यायोक ।
सद्बुद्धि माने आशु न फलिल ताहार फल पायोक ॥ ४८
सुग्रीवे बोलन्त शुन हनुमन्त शुना सबे कपिगण ।
इन्द्रको जिनिवे सामर्थ आछय आछोक राम लक्ष्मण ॥
सातो पृथिवीर भालुक बानर योगावे माणिक गन्ध ।
आगक चाहन्ते गुणन्ते गाठन्ते पाचक चाहन्ते आन्ध ॥ ४९
आछोक पृथिवी सपत सागर बासुकी छानिबे पारि ।
किन्तु मित्र भाव कमने वञ्चिबो राम बर उपकारी ॥
आमार उपरे लक्ष्मण आसिल कार्य्यर शङ्कट पुछो ।
मोक सद्बुद्धि दियो हनुमन्त आगबाढ़ो पाचगुचो ॥ ३७५०
करयोर करि वचन बोलन्त बायुसुत हनुमान ।
स्वरूप बुलिला तोमार सदृश बलवन्त नाहि आन ॥
राघवर शरे सात ताल भेदि पशिल गैया पाताल ।
पर्ब्बत भेदिया तूणत पशिल सिटो आछे यमकाल ॥ ३७५१

करोड़ों की संख्या में अनगिनत वानर वृक्ष, शिलाएँ आदि उखाड़कर हाथों में ले, धावित हुए परन्तु वीर लक्ष्मण का उग्र रूप देखकर वे सभी डरकर भाग गये ॥ ४६ ॥ कुछ तो भय के मारे ठहरे रह गये । कोई बोला—इसके प्राण ले लें । किसी ने कहा—वृक्षों, पर्वत शिखर की इस पर वर्षा करें । धनुष टंकार कर लक्ष्मण ने वानर दल को ललकारा । सिंह को देखते ही जैसे मृग भाग जाते है, उसी प्रकार वानर सेना भाग चली ॥ ४७ ॥ मन्त्री-सामन्त आदि ने संकेत से जानकर राजा को सूचना दी कि यह तो और कोई नहीं, बड़े तीव्र वेग से वीर लक्ष्मण ही आ रहे हैं । हनुमान ने कहा—मैंने पहले ही कहा था कि आप रामचन्द्र के पास चले जाइये परन्तु आपको सद्बुद्धि शीघ्र नहीं आयी । अब उस का फल आप भोगिये ॥ ४८ ॥ सुग्रीव बोला—हनुमान सुनो, सभी कपिगण सुने, हममें इन्द्र को भी जीतने की सामर्थ्य है । राम-लक्ष्मण की तो बात ही क्या है । सातों पृथ्वी (देश) के भालू-बानर हमारे लिए मणि-मुक्ताओं, गन्ध-द्रव्यों की आपूर्ति किया करते है । आगे देखते हुए, विचार चिन्तन करते हुए, पीछे को देखते हुए अन्धे क्यों हो रहे हो ? ॥ ४९ ॥ सात समुद्रों सहित पृथ्वी को हम जीत सकते है, वासुकी को बन्दी कर सकते हैं परन्तु मित्रता की भावना भला किस प्रकार छोड दें ? क्योंकि राम हमारे बड़े हितकारी है । हम पर चढ़ाई कर लक्ष्मण आये हे, इस संकट काल में हमे क्या करना चाहिए, हे हनुमान, हमें सद्बुद्धि दो, हम आगे बढे या पीछे हटें ॥ ३७५० ॥ तब हाथ जोड़कर पवनसुत हनुमान ने कहा—राजा सुग्रीव, आपने सच कहा, आपके जैसा बलवान और कोई नहीं है । राघव का बाण सात ताड़-वृक्षो को वेधकर पाताल तक प्रवेश कर गया था,

हेन राम तयु सखित्व भैलन्त कतबा जन्मर फले ।
बालीक मारिया पटेश्वरी निला राज्य भुञ्जा अबिकले ॥
याहार प्रसादे पाइला राज्यश्रीक ताहाङ्क दिया पोथान ।
बानरर लोके अचेतन भैला चक्षु आछन्तेहि काण ॥ ५२
लाजत बिमुख नुहिया नृपति मोर बाक्ये मन करा ।
रामर बचने लक्ष्मणे खङ्गिल ताने चरणत धरा ॥
विनय काकूति बुलि आग बाढ़ि लक्ष्मणे लैयो शरण ।
तेहे राखिलन्ते जानिबा शिलात हानिले नाहि मरण ॥ ५३
धनुर टङ्कार करिया लक्ष्मणे वानर सैन्य भङ्गाइल ।
माणिके मण्डित नगरी याहन्ते सिंह दुबारक पाइल ॥
सपत बेवन्धा एराइ अनन्तरे अभ्यन्तरे पयोसार ।
महादइ गण देखिला लक्ष्मण अलङ्कारे जातिष्कार ॥ ५४
रत्ने बिरचित ज्वले थानखान हासो हासो येन करे ।
पटेश्वरी सम- न्विते सुग्रीवक देखिला खाट उपरे ॥
लक्ष्मण बीरक देखिया सुग्रीव त्वरिते चालिला गाव ।
साष्टाङ्गे प्रणाम करे तिनि जने भैला अवनत भाव ॥ ५५
डाहिन पाञ्जरे लोमा पटेश्वरी येहेन रूपे पार्ब्बती ।
वामत सुन्दरी तारा वसि आछे एको अङ्गे नाहि क्षति ॥
लक्ष्मण बीरक देखि सेहि ठावे भै गैल मलिन चान्द ।
राहुक देखिया येहेन मलिन भैल पूर्णिमार चान्द ॥ ५६
पाद्य अर्घ आच- मन दिलाराजा आरो मधुपर्क दान ।
सुवर्णर खाट माथे निया दिल करि अति बहुमान ॥

पर्वतों को भेदकर वह तत्पश्चात् रामचन्द्र के तूण में आकर प्रविष्ट हो गया। वह प्रचंड काल जैसा वाण अब भी है ॥ ३७५१ ॥ ऐसे रामचन्द्र कितने जन्मों के फलस्वरूप आपके मित्र बने हैं, उन्हीं की कृपा से बाली को मारकर उसकी पटरानी को ले लिया और निर्बाध राज्य-भोग कर रहे हैं। जिनके प्रसाद से राज्यश्री को प्राप्त किया उन्हें ही आप पैरों के नीचे रख रहे है। वानर होकर आँख, कान रहते हुए भी अचेतन हो रहे हैं ॥ ५२ ॥ हे राजा, लज्जा के मारे विमुख न होकर मेरे वचनों पर ध्यान दीजिये। राम के कथन से लक्ष्मण क्रोधित हो उठे है, आप उनके चरण पकड़िये। विनयपूर्वक स्तुति वचन कहते हुए लक्ष्मण की शरण लीजिये। यदि वे शरण में रख ले तो समझ लीजिये कि शिला पर पटक देने पर भी मृत्यु नही हो सकती ॥ ५३ ॥ धनुष टकारते हुए लक्ष्मण ने वानरी सेना को खदेड़ दिया, और आगे बढ़कर मणि-मण्डित नगरी के सिंह द्वार तक आ पहुँचे। सात चहारदीवारी पार कर इसके पश्चात् उन्होंने भीतर प्रवेश किया। उन्होंने देखा—नारियाँ आभूषणों से मंडित है ॥ ५४ ॥ रत्न विरचित वह स्थान हँसता हुआ सा जगमगा रहा था। पटरानियों समेत सुग्रीव पलंग पर था। वीर लक्ष्मण को देखकर सुग्रीव शीघ्रता से उठ खड़े हुए और तीनों ने बड़ी विनम्रता से उन्हें साष्टांग प्रणाम किया ॥ ५५ ॥ रूप में पार्वती की भाँति पटरानी लोमा दाहिनी ओर और सुन्दरी तारा, जिसके किसी अंग में कोई क्षत न था, वाये थी। वीर लक्ष्मण को वहाँ आये देखकर सब मलीन चाँद जैसे हो गये। मानो राहु को देखकर पूर्णिमा का चाँद मलीन हो गया हो ॥ ५६ ॥ राजा सुग्रीव ने लक्ष्मण को पाद्य-अर्घ्य और

रामर कनिष्ठे बोलन्त दूतर नुहि हेन व्यवहार।
ददा बुलिवार कार्य्य न साधिले नलैवोहो सतकार ॥ ५७
हाओरे बानरा मित्रक वञ्चिलि अज्ञान गर्द्दभ पशु।
भृत्य हुया तेल कुढ़ बोलावस गृहस्थर गावे खसु ॥
सिंह हरिणक मारिल शृगाल पशुर बर उठानि।
एकर पियासे मरय इतरे भुञ्जय डाबर पानी ॥ ५८
रामर कार्य्यक हेला करि तइ मोक कर सतकार।
दुष्टर विनय यतेक बोलस मोत निविकास आर ॥
पर्व्वतक पिठि दिलि मूढ़ तइ शुनरे निलाज चार।
शरे हानि तोर प्राण काढ़ि लैवो त्रैलोक्यो नाहि निस्तार ॥ ५९
हेनय जानिबि हितक चिन्तिलि पाचे उपकार करे।
कुलीन पराणि भैले भाले तार मने सदबुधि धरे ॥
ददार आशय शुनरे वानरा चेतन लभ मनत।
यिटो शरे हानि बालीक मारिल अद्यापि आछे तूणत ॥ ३७६०
ददा बुलिलन्त दुष्ट वानरत मोहोर आदेश कह।
नतो सङ्कोचय प्रकटे आछय बाली मारिबार पह ॥
सुग्रीवे आपने बन्धुगण समे चलि याहा बाली पथे।
तोर धितिङ्गालि मोत निविकावे फल दिवो भालमते ॥ ३७६१
एतिक्षण ददा तैंत आछन्तोक मइ पुनु ताहान दूत।
अन्तर मलिन शरीर तोहोर करिबोहो चूर्णीकृत ॥
बानर गोटर एतमान सास मारो पाञ्जरक फुलि।
लक्ष्मण वीरर तेवेसे पलाइ हृदयर गुलगुलि ॥ ६२

मधुपर्क दिया। स्वर्णनिर्मित आसन अपने सिर पर लेकर बड़ा मान करते हुए उन्हें बैठने को दिया। राम के छोटे भाई लक्ष्मण ने कहा—दूत को ऐसा व्यवहार करना नहीं चाहिए। यदि भैया ने जो कार्य कहा है, वह सिद्ध न कर सकूँ तो सत्कार ग्रहण नहीं करूँगा ॥ ५७ ॥ अरे अज्ञानी, गर्दभ, पशु वानर, तूने मित्र से वंचना की है। तू भृत्य होकर शरीर में तेल चुपड़ रहा है, उधर गृहस्थ का रूखा शरीर फट रहा है। हिरण को तो सिंह ने मारा पर शृगाल का घमंड बढ़ गया है। एक तो प्यासा मर रहा है, दूसरा डाब (कच्चे नारियल) का पानी पी रहा है ॥ ५८ ॥ राम के कार्य की अवहेलना कर तू मेरा सत्कार कर रहा है। दुष्ट जिस प्रकार कपट-पूर्वक विनय वचन बोलते हैं, वैसे ही तू चाहे जितना ही मुझसे क्यों न कहे, मेरे हाथ वे बचेंगे नहीं। अरे निर्लज्ज, सुन, तूने पर्वत से मुँह मोड़ा है। मैं वाण से मारकर तेरे प्राण निकाल लूँगा। त्रैलोक्य में तुझे निष्कृति नहीं मिलेगी ॥ ५९ ॥ यह समझ ले कि बाद को उपकार करेगा ऐसा मानकर तूने अपना हित-चिंतन किया। यदि कोई उत्तम कुलीन मनुष्य होता तो उसके मन में सद्बुद्धि रहती। अरे वानर, सुन, अब भी मन में सचेत होकर भैया की शरण ले। जिस वाण से उन्होंने वाली को मारा है, वह अब भी उनके तूण में है ॥ ३७६० ॥ भैया ने कहा है, दुष्ट वानर से जाकर मेरा आदेश कहना कि वाली को मारने का अस्त्र छिपा नहीं है, सामने ही है। सुग्रीव को भी अपने बन्धुओं सहित वाली के मार्ग पर चले जाना होगा। तेरी धूर्तता मेरे सम्मुख नहीं चलेगी; मैं तुझे उत्तम रूप से फल दूँगा ॥ ३७६१ ॥ भैया तो अभी वहीं हैं तिस पर मैं उनका दूत हूँ। तेरे मलीन

हेर आसो बुलि आमाक भाण्डिलि चारि मास गैल बहि ।
तइ इठावत राज भोगावस ददार निकार तहि ।।
हाओरे बानरा मुण्ड तुलि चाहा देखरे दारुण शर ।
एहि शरे हानि प्राण तोर लैबो पठाइ दिबो यमघर ।। ६३
एतेक कहन्ते सुग्रीव राजार बुक दुर दुर करे ।
कटाक्ष नयने सङ्कुचित मने योनु हानि एरे शरे ।।
सिंह दरशने मृगयूथ येने शरीर बरे कम्पावे ।
सम्पुष्ट अञ्जलि करि तिनि जने नमिला लक्ष्मण पावे ।। ६४
दुइ पटेश्वरी सहिते नृपति जोरहाते भैल थिव ।
मिनति बचन बुलिवे लागिला तारा सुषेणर जीव ।।
शुनियो लक्ष्मण दशरथ सुत रामर कनिष्ठ भाइ ।
असोधने केने स्वामीक निन्दह आमार कर्म्मक पाइ ।। ६५
आतिशय तुमि कोप न करिबा न करिबा आति खेद ।
बिष बृक्ष यदि आपुनि रोवय तात न करियो छेद ।।
तोमार क्रोधत इयो स्वामी मरिब तेवे कोन यश पाइब ।
बिड़ालीर यदि दोषक धरिया नितेहि हान्ति पेलाइब ।। ६६
अनेक आमार बचन आछय चरणे प्रभु तोमार ।
सुग्रीवे आमार क्रूर नोहन्त सन्त महन्तर सार ।।
गुणीगण माजे याहाक लेखिबा खड़ि माटि धरि आगे ।
हेनय स्वामीक निन्दन्ते आछाहा आमार बर अभागे ।। ६७

अन्तर वाले शरीर को मै चूर-चूर कर डालूंगा। वानर का इतना साहस! तुझे मैं थप्पड़ मारूँगा तभी मुझ वीर लक्ष्मण के हृदय का रोष मिट पायेगा ।। ६२ ।। अरे 'तूने तो शीघ्र ही आ रहा हूँ' कहकर हमें धोखा दिया है। चार महीने बीत रहे तू यहाँ राज-भोग कर रहा है; वहाँ भैया तड़प रहे है। अरे वानर, सिर उठाकर देख, यह मेरा प्रचड वाण देख। इसी वाण से तेरे प्राण ले लूँगा और यमलोक भेज दूँगा ।। ६३ ।। लक्ष्मण की यह वाणी सुनकर राजा सुग्रीव का हृदय धड़कने लगा, वह कटाक्ष से देखता हुआ मन में संकुचित होकर सोच रहा था कि कही वाण छोड़कर मार न डाले। सिंह को देखने पर जिस प्रकार मृग यूथ का शरीर बहुत ही कम्पित होने लगता है, उसी प्रकार तीनों ने हाथ जोड़कर लक्ष्मण के चरणों में प्रणाम किया ।। ६४ ।। दोनों रानियों सहित राजा लक्ष्मण के सम्मुख हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। सुषेण की कन्या तारा विनयपूर्वक कहने लगी, हे राम के छोटे भाई, दशरथकुमार लक्ष्मण, सुनो, हमारे कर्मो को देखकर बिना पूछे मेरे पति की निन्दा किसलिए कर रहे हो? ।। ६५ ।। तुम न अत्यधिक क्रोध करो और न अधिक खेद करो। यदि अपने हाथ से विषवृक्ष को भी रोपा है तो उसे भी काट न डालो, यदि तुम्हारे क्रोध से मेरे ये पति भी मारे जांय तो तुम्हें कौन-सा यश मिलेगा? यदि बिल्ली के दोष को मानते रहें तो रोज-रोज हाँडियों को बाहर फेंकना होगा ।। ३७६६ ।। प्रभु, तुम्हारे चरणों में हमें बहुत कुछ निवेदन करना है, हमारे ये सुग्रीव क्रूर नही, सन्त-महन्तों में प्रमुख हैं। गुणीगणों मे जिनकी गणना सबसे प्रथम होती है, ऐसे पति की निन्दा तुम कर रहे हो, यह हमारा ही बड़ा दुर्भाग्य है ।। ६७ ।। स्वप्न में भी ज्ञान में राम मात्र ही इनकी गति है। ये अन्य देवों को नही जानते; किस प्रकार से रामचन्द्र सीता को प्राप्त कर सकते है यही इनका योग-ध्यान

स्वपने गियाने रामे मात्र गति देव न जानन्त आन।
केन मते रामे सीताक पाइवन्त हेन से योग धिआन ॥
दशोदिश लागि दूतक पाञ्चिल भालुक वानर आनि।
रामर पाशक याहा चप करे कालर प्रमाण जानि ॥ ६८
शुना सभासद रामायण पद देखियो केने आसुख।
ईश्वर रामक सखित्व करिया तथापितो पावे दुख ॥
सकामी प्राणीर दुख नुगुचय आक भालमते जानि।
सकाम त्यजिया रामक भजिया वोला रामराम बाणी ॥ ६९

सुग्रीवर आदेशत वान्दर सैन्य गोट खाय

पद

अनन्तरे मातिला सुग्रीव महावीर * दोष क्षमा करियोक वानर जातिर
एकेवारे मृत्यर दोषर नेदि फल * जाति वृत्ति एके आमि बानर चञ्चल ३७७०
तोमार कोपक देखि डरावे वानर * रामर आछय कोप सवार उपर
तोमात शरण लैलो येन युवायोक * रामर चरणे निया नेण्टायोक मोक ३७७१
बिमरिषि वोला यदि एकेश्वरे याओं * नुहिदिन दश थाका सैन्यक जोराओं
इटो दुयो जना दासी मइओ भैलो दास * तोमार कोपक देखि बर लागे त्रास ७२
सुग्रीवे काकूति भावे स्तुति बुलिलन्त * लक्ष्मण वीरर कोप भैल उपशान्त
विमरिषि बचन बुलिला निष्टे निष्ट * मोक कोप एरा मइ तोमार कनिष्ठ ७३
मित्रद्रोही नहा तुमि भकत रामर * कि करिवा प्रस्त्रवणे गैया एकेश्वर
दिन दश थाको मइ सैन्य जोराइयोक * रामर पाशक चप करे चलियोक ७४

है। भालू-वानरों को बुलवाकर इन्होंने दसों दिशाओं में दूत भेजा है। काल का प्रमाण जानकर तुम लोग शीघ्रता से राम के पास जाओ ॥ ६८ ॥ हे सभासदगण, रामायण-पद श्रवण करो। देखो, यह कितने आश्चर्य की बात है कि ईश्वर राम से मित्रता करने पर भी व्यक्ति कैसे दुख पाता है। यह उत्तम रूप से जानकर कि सकामी प्राणियों का दुख नहीं मिटता, सकाम-भाव छोड़कर राम को भजते हुए 'राम-राम' वचन कहो ॥ ३७६९ ॥

सुग्रीव के आदेश से वानर-सेना का एकत्रित होना

इसके पश्चात् महावीर सुग्रीव कहने लगा—वानर जाति के दोषों को क्षमा कीजिये। एक ही बार में सेवक के दोष का फल न दीजिये। जाति, वृत्ति से हम तो चंचल वानर ही है ॥ ३७७० ॥ आपके कोप को देखकर वानर भयभीत हो गये हैं, रामचन्द्र का कोप तो सब पर है ही। मैं आपकी शरण ले रहा हूँ, जैसे आप उचित समझें राम के चरणों में ले जाकर उनसे मुझे मिला दीजिये ॥ ३७७१ ॥ विचार कर कहें तो मैं अकेला ही चल सकता हूँ। अन्यथा दस-पाँच दिन रुक जाइये मैं सेना को जुटा लूँ। ये दोनों आपकी दासियाँ हैं, मैं दास हूँ। आपका क्रोध देखकर हमें बड़ा आतंक हुआ है ॥ ७२ ॥ सुग्रीव के विनम्र भाव से स्तुति करने पर वीर लक्ष्मण का कोप शान्त हुआ। उन्होंने सोच-विचारकर कहा—तुमने सत्य कहा है। परन्तु मेरे क्रोध की बात छोड़ दो, मैं तुमसे छोटा हूँ! तुम द्रोही नहीं, राम के भक्त हो, पर प्रस्रवण पर्वत पर अकेले जाकर क्या करोगे? मैं यहाँ दस-पाँच दिन ठहर जाता

कैरा हनुमन्त बुलि राजार आदेश * कोटि असंख्यात दूत पाञ्चा देशेदेश
उदयास्त गिरि यत मेरु मन्दरर * समस्ते आसोक यत भालुक बानर ७५
सप्तद्वीपा बसुमती सपत सागर * यतमाने चन्द्र सूर्य्य किरण पोहर
आमारेसे अधिकार सबे निष्ट जानि * तिनि दिन भितरते सैन्य दिबा आनि ७६
आपुनि जानाहा येन नृपति प्रचण्ड * शीघ्र करि नासिले करिबो उग्रदण्ड
मोहोर आदेश येहि येहि लोक पाले * दशदिन भितरते आसोक सकले ७७
आपुनि जानिया चिन्तियोक हित काज * मित्रर थानत नपाओं येन मइ लाज
यिबा दूत गैया आछे आदेश पालोक * ताको लागि पठायो उपर चालेक ७८
राजार आदेश येबे पाइला बायुसुत * देशे देशे दूत पठाइ दिलन्त बहुत
राजार आदेश येवे हनुमन्ते पाइला * समस्त देशर यत बानर जोराइला ७९
नृपतिर आज्ञा बाणी शिरोगत मानि * आसिलेक सेनागण दशोदिश छानि
आकाश छानिया येन फरिङ्ग उजान्त * आपोनार यूथे यूथे किष्किन्ध्या पाइलन्त ३७८०
सिह येन बिड़िङ्ग केरीर नाहि चुटि * मन्दर गिरिर आइल तिनिशत कोटि
निपुन्द शरीर लुङ्गरिया बर्ण कान्ति * हेन देखि स्वर्ग कोल एके जाम्पे यान्ति ३७८१
यिबा पर्ब्बतत अस्त यान्त दिवाकर * तैर परा शत कोटि आसिल बानर
कैलासर आसिला बानर कुरि शत * तामर सदृश देखि शरीर साक्षात ८२
फलमूल भुञ्जि मात्र थाके अहर्णिश * हेमवन्त हन्ते आसि भैल कोटि त्रिश
बिन्ध्य हन्ते आठ कोटि आसिल बानर * आङ्गारर बर्ण सबाहारे कलेवर ८३

हूँ, तुम सेना एकत्रित करो। इसके पश्चात् शीघ्र ही राम के समीप चलो ॥ ७३-७४ ॥ हनुमान को बुलाकर राजा सुग्रीव ने आदेश किया—करोड़ों की संख्या में अनगिनत दूतों को देश-देश में भेजो। मेरु-मन्दराचल तक उदयास्त तक फैले हुए जितने पर्वत हैं, उन पर रहनेवाले सभी भालू-बानर शीघ्रता से चले आवें ॥ ७५ ॥ सात समुद्र, सप्त-द्वीपा पृथ्वी पर सूर्य-चन्द्र की किरणें जहाँ-जहाँ पड़ती हैं, सब पर हमारा प्रभुत्व है, ऐसा निश्चय जानकर तीन दिन के भीतर ही सारी सेनाएँ एकत्र हो जाएँ। राजा कितने प्रचंड हैं, यह सभी स्वय जानते हैं। यदि सभी शीघ्रतापूर्वक न आ जाये तो उग्र दण्ड दूंगा। मेरा आदेश जिन-जिनको मिल जाये, सभी दस दिन के भीतर यहाँ आयें ॥ ७७ ॥ तुम स्वयं चिन्तन कर जो कार्य हितकर हो समझ लेना। जैसे मित्र के यहाँ जाकर मुझे लज्जित न होना पड़े। आदेश-पालन हेतु जो दूत चल पड़े है उन्हें भी ऊपर से यह वार्ता भेज दो ॥ ७८ ॥ राजा का आदेश पाकर पवनसुत हनुमान ने विभिन्न देशों में अनेक दूत भेज दिये और उनके द्वारा सभी देशों के बानरों को एकत्रित किया ॥ ७९ ॥ राजा का आदेश शिरोधार्य कर दसों दिशाओं को व्याप्त करते हुए सेनाएँ आकर वहाँ समवेत हुईं। आकाश में जिस प्रकार टिड्डी दल झुंड के झुंड उड़ा करते हैं उसी प्रकार अपने यूथों में बानरी सेनाएँ किष्किन्ध्या में आकर उपस्थित हुईं ॥ ३७८० ॥ सिह जैसे अद्‌भुत आकृतिवाले, जिनका शरीर नाटा नही था, ऐसे मन्दर पर्वत के तीन सौ करोड़ बानर उपस्थित हुए। सुगठित शरीर, चमकीले वर्ण-कान्तिवाले वे ऐसे बलवान थे मानो एक-एक छलांग में स्वर्ग तक लपक जायें ॥ ३७८१ ॥ जिस पर्वत पर दिवाकर अस्तभित होते है, वहाँ से सौ करोड़ बानर आये। कैलास से बीस सौ बानर आये, जिनके शरीर साक्षात् तांबे की भाँति दिखाई देते थे ॥ ८२ ॥ निरन्तर फल-मूल खाकर रहनेवाले हिमालय से तीस करोड़ बानर आकर उपस्थित हुए जिनका शरीर अंगार-वर्णी था, ऐसे करोड़ बानर विंध्याचल से आये ॥ ८३ ॥ उदयगिरि के स्वाद-रस का निरन्तर भोग करनेवाले दस करोड़ बानर

उदय गिरिर सदा भुञ्जि स्वाद रस * तैरहन्ते आसिल वानर कोटि दश
आनो पर्व्वतर यत आइल यूथे यूथ * कोने वर्णाइवेक कपि कटक बहुत ८४
क्षीरोद तीरर यत कटक वानर * तमाल पुष्पर वर्ण सब कलेवर
नारिकल फल भुञ्जे सुखी सदाचारी * तैरहन्ते आसिला यत वर्णाइते न पारि ८५
भालुक वानर यत कटक बहुत * सुग्रीव राजात आसि जान दिल दूत
आदेश गोसाइ देखा गगन मण्डल * हेरा आसि भैल प्रभु तयु सैन्यबल ८६
दूतर वचन शुनि करि सतकार * हरिषे माटित भरि नपरे राजार
हाङ्कारि आनिल यत अमात्य समाज * लक्ष्मणे बोलन्त सबे पूर्ण भैल काज ३७८७

ससैन्ये सुग्रीवर श्रीरामर समीपलै गमन

हरिषे लक्ष्मण सुग्रीवर धरि गले * राजार आदेशे उठिलन्त चतुर्द्दोले
आगत लक्ष्मण पिचे सुग्रीव चरिला * वाम पाशे यान्ते शुभ मङ्गल परिला ३७८८
दुइहाङ्को ढोलन्ते याइ धवल चामर * शिरे श्वेत छत्र येन ज्वले शशधर
आगे पाचे असंख्यात वानर चलय * जय जय रामचन्द्र बुलि जोकारय ८९
कतोहो दूरते दुयो भैला भूमिपाव * पाइला कतोक्षणे गैया राघवर ठाव
लक्ष्मणे सुग्रीवे करिलन्त कृताञ्जलि * रामर चरण दुयो करिला सेवलि ३७९०
हातयोरे सुग्रीवे थाकिल राम बुलि * अपराध सुमरि हियार गुल गुलि
कृताञ्जलि करिलन्त वानर सकल * सूर्य्य अस्त यान्ते येन सङ्कोचे कमल ३७९१

आये। अन्य पर्वतों से भी यूथ के यूथ वानर आये। वानरों की उस विशाल सेना का वर्णन कौन कर सकता है? ॥ ८४ ॥ क्षीरसागर के तट पर रहनेवाले जिनके शरीर का वर्णतमाल पुष्प की भाँति था, नारियल फल खानेवाले सुखी, सदाचारी वानर कितने आये उसका वर्णन नहीं किया जा सकता ॥ ८५ ॥ भालू-वानरों की विशाल सेनाओं के आगमन की सूचना दूतों ने आकर राजा सुग्रीव को दी। हे प्रभु, देखिये आपका आदेश गगनमंडल में व्याप्त हो गया है। आपकी सेनाएँ आ पहुँची हैं ॥ ८६ ॥ दूतों के वचन सुनकर सुग्रीव ने उनका सत्कार किया। हर्ष से उसके पैर धरती पर नहीं पड़ते थे। उसने मन्त्री-समाज को बुलवा लिया। लक्ष्मण बोले—सभी कार्य पूर्ण हो गये ॥ ३७८७ ॥

सेना सहित सुग्रीव का राम के समीप आगमन

हर्ष से लक्ष्मण ने सुग्रीव को आलिंगन कर लिया और राजा के आदेश से पालकी पर सवार हुए। आगे लक्ष्मण और उनके बाद सुग्रीव चढ़ा। उनके प्रस्थान करते समय बायीं ओर शुभ मंगल सगुन होने लगे ॥ ८८ ॥ सेवक दोनों को श्वेत चँवर डुलाते चल रहे थे। उनके मस्तकों पर जगमगाते चन्द्रमा की भाँति श्वेत छत्र शोभित थे। आगे-पीछे असंख्य वानर 'जय, जय, रामचन्द्र' की ध्वनि करते चल रहे थे, ॥ ८९ ॥ कुछ दूर जाकर वे धरती पर उतर गये और चलते हुए कुछ क्षण पश्चात् रामचन्द्र के स्थान पर पहुँचे। लक्ष्मण और सुग्रीव दोनों ने हाथ जोड़कर रामचन्द्र के चरणों में प्रणाम किया ॥ ७३९० ॥ 'राम' कहकर सुग्रीव हाथ जोड़ खड़े रहे। अपने अपराध का स्मरण करते हुए उनके हृदय में बड़ी वेदना हो रही थी। वानरों ने भी आकर हाथ जोड़ प्रणाम किया। वे उसी प्रकार संकुचित हो रहे थे, जैसे कि सूर्यास्त होते समय कमल संकुचित हो जाते हैं ॥ ९१ ॥ राघव ने कटाक्ष से चारों

कटाक्षे राघवे चाहिलन्त चतुर्भिति * असंख्य पदाति देखि सुग्रीव सहिति
कोल चापि बुलिलन्त शोक परिहरि * सजन गरिहा किछु परिहास करि ९२
बसिया आछन्त येवे समाजक रञ्जि * सुग्रीवक रामचन्द्रे छलबादे गञ्जि
साधु साधु सखि तुमि मोर महामित्र * आमार कार्य्यत देखो उत्रावल चित्त ९३
अल्पेसे अन्तर मात्र वचन कार्य्यत * मुखत अमृत देखि कपट मनत
हनुमन्त प्रमुख्ये शुनियो कपियत * स्वरूप काहिनी कहो शास्त्रर सम्मत ९४
दुष्टा भार्य्या शठमित्र मै गैल याहार * स्वामीक सेवक जने करे अहङ्कार
सर्पे समन्विते येन एके घरे बास * सिजनर जाना नाहि जीवनत आश ९५
अधर्म्मत भक्षपर होवे निते नित * अवश्येके नोवारिबे धन उपार्ज्जित
धर्म्म अर्थ काम तार एकोवे निमिले * हेन नृपतिक जाना आपदेसे गिले ९६
सुग्रीव आमार जाना मित्र सेहिमत * अविचारे मित्रवति करिलो पूर्ब्बत
आन्ते हन्ते सीता पाइबो हेन आशा कैलो * आछो सीता पाइवो मित्रभावत नरैलो ९७
आन्त आशा करि दुख पाइलो अतिरेक * शठमित्रे कत भाग्ये कार्य्यत साधिबेक
किन्तु तथापितो करि आछो मित्रवति * शुनियो सुग्रीव मित्र वचन सम्प्रति ९८
यि किछु बुलिलो बाक्य हृदय खेदत * इसब आमार दोष न लैवा मनत
यिमते सीताक पाओं ताक चिन्तियोक * सीताक पाइलेहे सब गुचे दुख शोक ९९
रामर बचने लाज सुग्रीव पाइलन्त * माथा चपराया कतोक्षण आछिलन्त
दीर्घश्वास एरि प्रणामिला जानुशिरे * करयोरे बचन बोलन्त धीरे धीरे ३८००

ओर देखा। सुग्रीव सहित असंख्य पदातिक सेना को देख, शोक छोड़कर सुग्रीव के समीप अपने जन को तिरस्कार करने के मिस कुछ परिहास से कहने,॥ ९२ ॥ समाज को आनन्दित करनेवाले रामचन्द्र वहाँ बैठकर सुग्रीव को तिरस्कार करते से बोले—'सखे धन्य-धन्य तुम मेरे महामित्र हो। हमारे कार्य के लिए तो देखता हूँ तुम्हारा चित्त उतावला है॥ ९३ ॥ तुम्हारे वचन और कार्य में केवल अल्प मात्र अन्तर है। मुँह में अमृत है, मन में कपट। हनुमान आदि कपिगण सुनो, मैं शास्त्र-सम्मत सत्यकथा सुनाता हूँ॥ ९४ ॥ जिसकी भार्या दुष्टा और मित्र शठ, जिस स्वामी के सेवक अहंकार रखते हैं, वह मानों सर्प के संग एक ही गृह में निवास कर रहा हैं। समझ लो कि उस व्यक्ति को जीवन में कोई आशा नहीं है॥ ९५ ॥ वह अधर्म द्वारा नित्य दूसरों का भक्ष्य बनता है (दूसरे उसे विनष्ट कर डालते है), वह अवश्य ही धन उपार्जित नहीं कर सकता, उसे धर्म, अर्थ, काम कुछ भी प्राप्त नहीं होता। ऐसे राजा को तो संकट ही ग्रास कर लेता है॥ ९६ ॥ सुग्रीव हमारा उसी तरह का मित्र है, बिना विचारे मैंने पहले इससे मित्रता कर ली थी। मैंने यह आशा की थी कि इनके द्वारा हमें सीता मिल जायेगी पर सीता तो क्या मिलेगी, मित्र-भावना भी नहीं रह गयी॥ ९७ ॥ इन पर आशा लगाकर मुझे अत्यधिक दुख ही मिला। ऐसा भाग्य कहाँ है कि शठ मित्र द्वारा कार्य सिद्ध हो जाये। तथापि मैं इनसे मित्रवत् आचरण कर रहा हूँ। मित्र सुग्रीव, अब मेरे वचन सुनो॥ ९८ ॥ हृदय के दुख से मैंने जो कुछ वचन कहा है, हमारा वह दोष मन में न लेना। सीता को जिस उपाय से प्राप्त कर सकूँ, उसका चिन्तन करो। सीता को पाने पर ही सारे दुख-शोक मिट सकते है॥ ९९ ॥ रामचन्द्र के वचनों से सुग्रीव लज्जित हुआ, अपने सिर को पीट कर कुछ क्षण खड़ा रहा। तत्पश्चात् दीर्घश्वास छोड़कर घुटने टेक रामचन्द्र को प्रणाम कर हाथ जोड़ धीरे-धीरे कहने लगा॥ ३८०० ॥ हे कृपामय प्रभु, मेरे सभी दोष क्षमा कीजिये। हम तरल-मति वानर स्वभाव से ही चंचल हैं, लक्ष्मण के कथन

कृपामय प्रभु दोष क्षमियो सकल * तरल वानर आमि सहजे चञ्चल
लक्ष्मणर बोले दुख पाइलो यतमाने * तोमार कोपक सहिबेक कार प्राणे ३८०१
सातोद्वीपा पृथिवीर कटक अपार * ताहाङ्क जोराते हैल बिलम्ब आमार
माथा तुलि देखियोक सैन्य आछे चापि * सूर्य्य किरणक ढाकि गगन बियापि २
सागरे नगरे गिरि नदीत पवने * कतो नील पीत कतो शुकुल बरणे
पियाल लोहित वर्ण देखिय विचित्र * रङ्गे रामे बोलन्त सामर्थ मोर मित्र ३
सुनियो सुग्रीव मित्र मोक चिनायोक * कार किवा नाम कोवा कतमान लोक
शुनि हाङ्कावन्त सुग्रीव वीरवर * सैन्य समे आसियोक रामर ओचर ४
शुनि वीर कपिगण उल्लासिया गैला * आपोनार सैन्य रङ्गे सङ्गे करि लैला
रामर पाशक आति आड़म्बरे आसे * येहेन फरिङ्ग उरे बानर आकाशे ५
श्रीराम लक्ष्मण समे आछन्त आकलि * प्रथमे आसिया मिलिलन्त शत बली
आति आड़म्बरे वीरे करे आटि मुटि * तान लगे आसिला बानर शतकोटि ६
पाचे आसि मिलिलन्त सुषेण नृपति * काञ्चनर वर्ण तनु सूर्य्यर जेउति
सुग्रीवर शशुर तारार तेहो पिता * अयुतेक बानर योगावे चतुर्मिता ७
युबराज अङ्गद वालीर तेहो सुत * देखन्ते रिपुर त्रास मिले अदभुत
निश्चये शुनिलो आन कटक यतेक * सहस्रेक पद्म आरो शङ्खये शतेक ८
कषटिर वर्ण देखि याहार निश्चय * दशकोटि सैन्य लैया आसिलन्त गय
सहस्र संख्यात कोटि लैया हनुमन्त * आसिलन्त यार बल वीर्य्य अपर्य्यन्त ९
आङ्गारर वर्ण तनु आगत मिलिल * शतकोटि वीर समे एन्ते वीर नील

से हम सभी को दुख हुआ ही था; प्रभु, आपका कोप किसके प्राण सहन कर सकते हैं ? ॥ ३८०१ ॥ सात-द्वीपा पृथ्वी की अपार सेनाओं को एकत्रित करने में हमें विलम्ब हो गया। आप सिर उठाकर देखिये, आकाश को परिव्याप्त कर सूर्य की किरणों को ढँककर सेनाएँ समीप आ रही है ॥ ३८०२ ॥ सागर, नगर, गिरि, नदी, पवन आदि सर्वत्र रहनेवाले, कोई नीले तो कोई पीले, कोई श्वेतवर्ण वाले, तो कोई लाल-पीले आदि विचित्र वर्णों के बानर देखिये। तब रामचन्द्र ने प्रसन्नता से कहा— मेरे मित्र, तुम बड़े सामर्थ्यवान हो ॥ ३८०३ ॥ मित्र सुग्रीव, सुनो, इनमें किसका क्या नाम है, प्रत्येक की सेना में कितने वानर हैं, मुझसे परिचय करवाओ। यह सुनकर वीरवर सुग्रीव ने उच्च कंठ से पुकार कर कहा—सेना समेत रामचन्द्र के पास आ जाओ ॥ ३८०४ ॥ सुग्रीव की पुकार सुनकर कपिगण बड़े उल्लसित हुए और हर्षपूर्वक अपनी सेनाओं को संग लेकर बड़े ही आडम्बर से राम के समीप उसी प्रकार चले जैसे टिड्डियाँ आकाश में उड़ती हैं ॥ ३८०५ ॥ श्रीराम लक्ष्मण के साथ निरीक्षण कर रहे थे। सबसे पहले शतवली उनके पास आया। बड़े ही आडम्बर से वह वीर युद्धार्थ प्रस्तुत था। उसके संग शतकोटि वानर आये ॥ ३८०६ ॥ इसके बाद राजा सुषेण उनसे मिला। उसका वर्ण सोने जैसा, और शरीर सूर्य की भाँति प्रकाशवान था। वह सुग्रीव का ससुर, तारा का पिता था। उसके चारों ओर दस हजार वानर चल रहे थे ॥ ३८०७ ॥ वाली-सुत युवराज अंगद, जिन्हें देखते ही शत्रुओं को अद्‌भुत त्रास होता है। निश्चित रूप से सुनने मे आया है कि उनकी सेना में एक सहस्र पद्म और एक सौ शंख वानर थे ॥ ३८०८ ॥ जिनके वर्ण निश्चय ही कसौटी-पत्थर जैसे थे, ऐसे दस सहस्र की सेना लेकर गय वहाँ उपस्थित हुआ। जिनके बलवीर्य की कोई सीमा नही है, ऐसे सहस्रकोटि वानरों को लेकर हनुमान वहाँ आये ॥ ३८०९ ॥ अंगार-वर्ण शरीर वाले शत कोटि वीरों के साथ वीर नल

मैन्द्य द्विविद कोटि कोटि सैन्य यार * पाञ्च कोटि सैन्य लैया आसिलन्त तार ३८१०
आछिला केशरी पाचे ब्रह्मार तनय * ताहान लगत सैन्य बहुत आछय
पद्म केशरर वर्ण सबारो शरीर * मारुतर पिता एन्त प्रख्यातर वीर ३८११
धूम्र आसि मिलिल लागिल हुक हुक * दशकोटि सेना माने सकले भालुक
ब्रह्मार नन्दन आसि भैला जाम्बवन्त * आन लगे भालुक कटक अपर्य्यन्त १२
चिरकाल जीवन्त बुद्धिर नाहि अन्त * अनेक उपाय सन्धिकार्य्य साधिवन्त
बिश्वकर्म्मासुत हेरा आसि भैल नल * असंख्य बानर सेना वीर महाबल १३
लगे कोटि शङ्ख सेना आसिल सम्पाति * आसिल गवाक्ष आरो गोङ्गुल जाति
अनन्तरे महाबीर आसिला पनस * तान लगे आसिलन्त बानर कोटि दश १४
गन्धमादनक लेखि बीर गणितात * तान लगे आसिल बानर असंख्यात
आनो यत बीर आइल कोने लैबो नाम * राम लक्ष्मणक सबे करय प्रणाम १५
द्वीप द्वीपान्तरर आसिल यत यत * असंख्य पदाति मइ लेखा दिबो कत
सुग्रीवे बोलन्त राम चाहियो आकलि * सेनार भिरत बसुमती जाइ तलि १६
गिरि गुहा पर्व्वत जुरिल दशोदिश * कटक देखिया रामचन्द्रर हरिष
सुग्रीवक बोलन्त शुनियो कपिराज * एवेसे जानिलो मित्र सिद्धि भैल काज १७
शुनिया उज्ज्वल मुख भैलन्त सुग्रीव * कर जोरे रामर आगत भैल थिय
किवा आज्ञा होवे प्रभु आदेश सकाल * किवा गृहे आनि दिबो दश दिगपाल १८
बासवक आनो किवा आनो बासुकीक * बान्धि आनि दिओं पृथिवीर नृपतिक
नाहिके असाध्य मोर तयु प्रसादत * बश्य करि दिओं आनि तिनियो जगत १९

उपस्थित हुआ। कोटि-कोटि सेनाओं वाले मैन्द्य, द्विविद पाँच कोटि सेना लेकर उपस्थित हुए ।। १० ।। (सुग्रीव ने बताया) ये केशरी ब्रह्मा के पुत्र है, इनके सहित अनेक सेना आयी है। सबके शरीर पंच-केशर जैसे वर्ण के हैं। ये मारुति हनुमान के पिता प्रख्यात वीर है ।। ३८११ ।। इसके पश्चात् धूम्र के आते ही वहाँ खलबली मच गयी। उसकी दसकोटि सेना में सभी भालू थे। ब्रह्मा के पुत्र जाम्बवन्त अपने संग अनगिनत भालुओं की सेना लेकर उपस्थित हुए ।। १२ ।। चिरकाल अमर, अनन्त बुद्धिवाला, अनेक उपायों से संधिकार्य साधन करने में निपुण विश्वकर्मा सुत नल यहाँ आये है जिनके संग वीर महाबली असंख्य वानर सेना है ।। १३ ।। कोटिशंख सेना लेकर सम्पाति, गवाक्ष आये जिनकी सेना में काले मुखवाले जाति के वानर थे। इसके पश्चात् महावीर पनस आया। उसके साथ दस कोटि बानर आये ।। १४ ।। गन्धमादन जैसे वीर इने-गिने ही हैं; जिसके साथ अनगिनत वीर वानर आये और भी जितने वीर आये, उनके नाम कौन गिना सकता है ? सभी आ-आकर राम-लक्ष्मण को प्रणाम करने लगे ।। १५ ।। द्वीप-द्वीपान्तरों से और भी जितने-जितने आये, भला मैं उनका लेखा-जोखा क्या दूँ ? सुग्रीव ने कहा—राम, उधर देखिये, सेना की भीड़ से पृथ्वी ढँक सी गयी है ।। १६ ।। उस विशाल सेना से गिरि, गुफा, पर्वत दसो-दिशाएँ व्याप्त हो गयीं जिसे देखकर रामचन्द्र को हर्ष हुआ। उन्होंने सुग्रीव से कहा, मित्र कपिराज, सुनो, अभी ही मैं समझ गया कि कार्यसिद्धि हो गयी ।। १७ ।। रामचन्द्र के वचन सुनकर सुग्रीव का मुख उज्वल हो उठा। हाथ जोड़कर वह राम के सम्मुख खड़ा हो गया। बोला, प्रभु क्या आज्ञा है, शीघ्र आदेश दीजिये, क्या आपके पास दसों दिग्पालों को ला दूँ ।। १८ ।। क्या मैं देवराज इन्द्र को या बासुकी को ला दूँ या पृथ्वी पर के जितने नृपति हैं उन्हें बाँध लाऊँ ? हे प्रभु आपके प्रसाद से मेरे लिए असाध्य कुछ भी नहीं है। मैं तीनों लोकों को आपके अधीन कर ला सकता हूँ ।। १९ ।। सुग्रीव के वचन

शुनि हासि राघवे वोलन्त शुना मित्र * सवाको जिनिवे पारा इटो कोन चित्र
इसव कार्य्यत किछु प्रयोजन नाइ * सीताक यिमते पाइ चिन्तियो उपाय ३८२०
देशे देशे भाल दूतगण चलि चाउक * प्रवन्धिया रावण सीताक खुजि चाउक
शुनि जानि मोत आसि जनाइयो बार्त्ताक * दुष्ट रावणक मारि आनिवो सीताक ३८२१
रामर वचन हेन सुग्रीवे शुनिला * वाछि वाछि दूतगण आगक आनिला
बिनोदक प्रथमत वुलिला वचन * भालभाल वाछि लगे लैलो दूतगण २२
पूर्व्वदिश प्रति आपुनिहि चलि जाहा * अविलम्वे सीतार वार्त्ताक जनाइ बाहा
तात पाचे वोलन्त कहिरा शतवली * उत्तर दिशक तुमि शीघ्रे याहा चलि २३
अपर्य्यन्त देश ताक वर्णाइवोहो कत * कतो कतो कहो यिवा परय मनत
वहुल गान्धार देश कर्णाट काम्वोज * मत्स्यर पुलिन देश ऋषिराज भोज २४
कौरव कुकुर आरो कङ्क नाम देश * थाने थाने भालमते खुजिवा निःशेष
हेमवन्त हेमकूट नैषध्य आकुल * पर्व्वत गह्वर वने खुजिवा सकल २५
विन्ध्य गिरि महीन्द्र पर्व्वते भाले चाहा * आनो यत गिरि आछे ताक आकलाहा
रावणर चित्तक नपारि वुजिवाक * कैत लुकाइ थवे निया गोसानी सीताक २६
किवा शान्ति पुण्य राखि आछन्त गोसानी * रावणर वार्त्ताक जनाइवा निष्ठा जानि
सुषेण स्वशुर तुमि पश्चिमे जायोक * कोटि संख्या दूत वाछि लगत लैयोक २७
रावण सीताक प्रवन्धिया खुजि चाहा * अविलम्वे आमात वार्त्ताक जनाइ बाहा
कैरा युवराज वुलि राजार आदेश * कर जोरे अङ्गद आगत परवेश २८

सुनकर रामचन्द्र ने हँसकर कहा—मित्र सुनो, तुम सवको जीत सकते हो, इसमें कौन-सी विचित्रता है। पर इन सव कार्यो की कोई आवश्यकता नही है; सीता को किस प्रकार पा-सकते है, इसके उपाय का चिन्तन करो ।। ३८२० ।। देश-देश में उत्तम-उत्तम दूत चले जाये और विशेष प्रयास कर रावण तथा सीता का अनुसंधान करें। सव कुछ जान-सुनकर मुझे समाचार सुनाये। तव मैं दुष्ट रावण को मारकर सीता को ले आऊंगा ।। ३८२१ ।। राम के ऐसे वचन सुनकर सुग्रीव चुने हुए दूतो को उनके सम्मुख ले आया। सर्वप्रथम विनोद नामक वानर से कहा—चुन-चुनकर दूतों को अपने संग ले लो ।। २२ ।। और पूर्व दिशा की ओर चले जाओ। सीता का समाचार अविलम्व हमें आकर सुनाओ। तत्पश्चात् पराक्रमी शतवली से कहा—तुम शीघ्र ही उत्तर दिशा की ओर जाओ ।। २३ ।। उस दिशा में अनगिनत देश है, किन-किन का वर्णन करूँ? तो भी जिन-जिनका स्मरण हो रहा है, वताता हूँ। विशाल गांधार देश, कर्णाक, कम्वोज, मत्स्य, पुलिन देश, ऋषिराज भोज, कौरव, कुकुर और कंक नाम के देशों मे स्थान-स्थान पर, नि.शेष रूप से भली-भाँति खोज करना ।। २४ ।। हेमवन्त, हेमकूट, कष्टमय निषेध देश की गिरि-कन्दराओं मे भी सभी खोजना ।। २५ ।। विंध्याचल पर्वत, महेन्द्र पर्वत पर उत्तम रूप से देखना। और भी जितने पर्वत है सबमें अनुसंधान करना; रावण के चित्तको समझा नहीं जा सकता कि वह देवी सीता को ले जाकर कहाँ छिपा रखे! ।। २६ ।। क्या वह देवी अपने पुण्य-वल से सतीत्व वचाए रख रही है? सच सच जानकर रावण का समाचार सूचित करना। ससुर सुषेण, आप पश्चिम में जाइये। करोड़ों की सख्या में दूतो को चुनकर अपने संग ले लीजिये ।। २७ ।। रावण एवं सीता को उत्तम रूप से प्रयत्न कर खोज करे और उनका समाचार अविलम्ब हमें सूचित करें। युवराज अंगद को राजा सुग्रीव ने आदेश देकर बुलवाया, अंगद उनके सामने हाथ जोड़ खडा हो गया ।। २८ ।। (सुग्रीव ने कहा—) तुम दक्षिण दिशा को चले जाओ और रावण सीता के सच्चे समाचार सूचित करो।

दक्षिण दिशक लागि तुमि चलियायो * रावण सीतार निष्ठ बार्त्ताक जनायो
तोमार तुलत याहन्तोक हनुमन्त * मैन्द द्विविद तार यान्त जाम्ववन्त २९
दधिमुख केशरी पनस बीर गय * नल नील धम्राक्षक आवर गवय
सेहिसे दिशत रावणर निज पुरी * थाने थाने भालमते चाइवा फुरि फुरि ३८३०
एकोवे थानत भेदे खुजिया न पावा * सागरर माजत लङ्कात पाचे चावा
बाट भेण्टि सागरत आछे छायाग्राही * ताइ पाइले गिलिवे सन्धाने चाइवा चाहि ३१
रावणर निज स्थान लङ्काये नगरी * पाइवाहा सीताक खुजि समुद्रक तरि
यतमान चन्द्र सूर्य्य किरण पोहर * यमपुर माने खुजिवाहा निरन्तर ३८३२
तात पाचे जाइवाहा दक्षिणर दिश * घोर अन्धकार तात करिबाहा किस
सातो खान पृथिवी समुद्र सातो खान * नदी नद पर्व्वत गह्वर यत वन ३३
सङ्कट प्रकट गम्य माने फुरि चाइवा * निश्चय जानिया आसि वार्त्ताक जनाइवा
न करिवा हेला केहो रामर कार्य्यत * सवारो भकति हौक राम चरणत ३४
फैरा हनुमन्त बुलि राघवे मताइल * संगोप्य कहिवे प्रति समीप चपाइल
तुमिहे सीताक खुजि पाइवाहा निश्चय * प्राणेश्वरी तोमाते से याइवन्त प्रत्यय ३५
देखिले हरिष हैवा आतिमन तुष्टि * हेरा मोर लैया याहा हातर आङ्गुष्ठि
ताङ्को परीक्षिवा केने भाल मन्दे आछे * निश्चय जानिया मोत कहिवाहा पाचे ३६
सीतार संगोप्य बार्त्ता आनिवा निश्चय * येनमते होवे तान्त आमार प्रत्यय
एहि बुलि गले ताङ्क चापिया धरिल * सीताक सुमरि राम क्रन्दन करिल ३७
मारुति बोलन्त ताप त्यजा रघुपति * जन्मे जन्मे तयु पदे हौक मोर गति

तुम्हारे साथ हनुमान, मैन्द, द्विविद, और जाम्ववान ।। ३८२९ ।। दधिमुख, केशरी, पनस, वीर गय, नल, नील, धूम्राक्ष और गवय जायेंगे। उसी दिशा में रावण की अपनी पुरी भी है, तुम लोग स्थान-स्थान मे घूम-घूमकर अच्छी तरह देखना ।। ३८३० ।। जब किसी स्थान मे उन्हें खोज न पाओ तो सागर के मध्य अवस्थित लंका में जाकर देखना। मार्ग रोककर सागर में छायाग्रही राक्षसी रहती है। वह पकड़ ले तो लील जायेगी। इसलिए बड़ी सावधानी से खोजते देखते जाना ।। ३८३१ ।। लंकापुरी रावण का निज स्थान है। सागर पारकर वहाँ सीता की खोज पा सकते हो। चन्द्र, सूर्य की किरणें और प्रकाश जहाँ तक पहुँचती है, यहाँ तक कि यमलोक तक भी निरन्तर खोज देखना ।। ३२ ।। इसके पश्चात् दक्षिण दिशा में जाना, पर वहाँ घोर अन्धकार है, इसलिए क्या कर सकोगे ? सातो लोक, सात समुद्र, नद, नदी, गुफाएँ और जितने वन हैं ।। ३३ ।। जहाँ जाने में अनेक प्रकार के संकट हैं, सर्वत्र घूम-घूमकर देखना और निश्चयपूर्वक जान आकर समाचार सूचित करना। कोई भी राम के कार्य में अवहेलना न करना, श्रीराम के चरणों में सबकी भक्ति होवे ।। ३४ ।। इसके पश्चात् रामचन्द्र ने हनुमान को बुलवाया। कुछ गुप्त बात कहने हेतु उन्हे समीप ले आये। कहा, तुम्हीं सीता को निश्चित रूप से खोज पाओगे। प्राणेश्वरी सीता तुम्हीं पर विश्वास कर सकेगी ।। ३५ ।। तुम्हे देखकर वह मन में अत्यधिक तुष्ट होकर प्रसन्न होवेगी। तुम मेरे हाथ की अंगूठी लेते जाओ। तुम सीता की भी परीक्षा करना कि वह अच्छी-बुरी किस तरह रह रही है ! यह सब निश्चित रूप से जानकर बाद को मुझे बताना ।। ३६ ।। सीता की संगोपनीय वार्ता अवश्य ही लाना जैसे कि उस पर मेरा विश्वास हो सके। यह कहते हुए राम ने हनुमान को जोर से गले लगा लिया और सीता का स्मरण करते हुए क्रन्दन करने लगे ।। ३७ ।। मारुति ने कहा— हे रघुनाथ, आप दुख न कीजिये, जन्म-जन्म में आपके चरणों में मेरी मति रहे। चूंकि

येहेतु तोमार भैल आमात प्रत्यय * सीतार वार्त्ताक दिवो नाहिके संशय ३८
मोक अनुग्रह करिलाहा कृपामय * एतेके जानिलो भाग्य आमार आछय
प्राणक उत्सर्गि तयु कार्य्यक साधिवो * थाका सुखे सीतार वार्त्ताक आनि दिवो ३९
सुग्रीव बोलन्त ओवा करा दूत लोक * प्रभुर चरणे सेवा सबारे थाकोक
फुरि फुरि रावण सीताक चाहियोक * रामक आसिया सवे वार्त्ता कहियोक ३८४०
आपुनि चिन्तियो येन होवय युगुत * येने तेने प्रभु कार्य्य साधियो प्रस्तुत
माहेकक लागि क्षान्ति दिलो तोमा साक * हेला एरि रात्रि दिने खुजिवा सीताक
माहेकत नाहा येवे प्रभु कार्य्य साधि * नाक काण काटिवाहो हेवा अपराधी ३८४१
शुनिला सवेओ चण्ड आदेश राजार * रामर चरणे सवे करि नमस्कार
येहि येहि दिशे याक याक आज्ञा भैल * राजाक प्रणामि सेहि दिशे चलि गैल ४२
निःशेष करिया फुरे ग्राम नगरत * नदी नद तीरे फुरे गिरि गह्वरत
पूर्व्वत विनोद उत्तरत शतवली * चलिल सुषेण दिश पश्चिम आकलि ४३
एक मास खुजि लुरि सीताक न पाइल * विनय पूर्व्वके आसि राजात जनाइल
शुनियोक सुग्रीव नृपति शिरोमणि * तिनियो दिशत आमि चाहिलो आपुनि ४४
रावण सीतार कोनो नापाइलो उद्देश * एवे कि करिवो प्रभु करियो आदेश
सुग्रीवे बोलन्त सवे थाका कार्य्य बुजि * तिनियो दिशत केहो नपाइ लाहा खुजि ४५
अङ्गदक मारुतिक दिलो महाभार * तेसम्वे सीतार वार्त्ता पाइबा सारे सार
दक्षिण दिशक गैला यतेक वानर * रावण सीताक खुजि फुरा निरन्तर ३८४६

आपका मुझ पर विश्वास हो गया है, अतः मैं सीता की वार्ता ले आऊँगा, इसमें कोई संशय नहीं रहा ।। ३८ ।। कृपामय, आपने मुझपर अनुग्रह किया है, अतः मैं समझ गया हूँ कि मेरा सौभाग्य अवश्य ही है। मैं प्राणोत्सर्ग करके भी अपका कार्य-साधन करूँगा। आप सुखपूर्वक रहिये; मैं सीता की वार्ता ला दूंगा ।। ३८३९ ।। सुग्रीव ने कहा—हे दूतो, तुम सब ऐसा कार्य करो जिससे प्रभु के चरणों में सबकी भक्ति रहे। घूम-घूमकर रावण, सीता की खोज करना और आकर सभी रामचन्द्र से वार्ताएँ कहना ।। ३८४० ।। जब जहाँ जैसा करना उचित हो स्वयं सोच-विचार कर करना। जिस किसी प्रकार से प्रस्तुत रहकर प्रभु का कार्य साधन करना। तुम सबको माह भर का समय दे रहा हूँ, ढिलाई छोड़कर दिन रात सीता को खोजना। यदि प्रभु का कार्य साधन कर एक माह में लौट न आओ तो तुम अपराधी होओगे, तुम्हारे नाक-कान काट लिए जायेंगे ।। ३८४१ ।। सबने राजा सुग्रीव का कठोर आदेश सुना। जिसे-जिसे जिस-जिस दिशा में जाने की आज्ञा दी गयी थी, राम के चरणों में नमस्कार कर, राजा सुग्रीव को प्रणाम कर सभी उस-उस दिशा की ओर चल पड़े ।। ४२ ।। सभी निःशेष रूप से ग्राम-नगर में भ्रमण करने लगे। नद-नदी के तटों पर, गिरिगुफाओं में वे घूमने लगे। पूर्व दिशा में विनोद, उत्तर में शतवली, पश्चिम दिशा में खोजते हुए सुषेण चल पड़े ।। ४३ ।। माह भर खोज-ढूँढ़कर सीता को नहीं पाया, तब विनयपूर्वक आकर उन सबने राजा को सूचित किया—हे नृपतिशिरोमणि सुग्रीव, सुनिये। हमने तीनों दिशाओं में स्वयं घूम-घूमकर देखा ।। ४४ ।। परन्तु रावण, सीता का कोई पता नहीं चला। अब क्या करें, प्रभु, आदेश दीजिये। सुग्रीव ने कहा—जबकि तीनों दिशाओं में कोई भी खोजकर उन्हें नहीं पा सके हो तो तुम सभी अपने-अपने कार्य समझ कर यहीं रहो ।। ४५ ।। अंगद और मारुति पर महाभार सौंपा गया है। यह निश्चित है कि वे सीता का समाचार अवश्य प्राप्त करेंगे। दक्षिण दिशा में जितने वानर गये थे, वे रावण-सीता को खोजते हुए निरन्तर घूम रहे थे ।। ४६ ।।

अङ्गदर असुर-बध

गोखोज समान करि चाहिला विचारि * खुजिया न पाइला सीता जनक जीयारी
सकले दिशत चाइ फुरा थाने थान * असुरेक देखिलन्त पर्ब्वत समान ३८४७
शरीरर वर्ण येन मेघ करे कान्ति * दशन भीषण आतिशये चलि यान्ति
अङ्गदे बोलन्त योनो एहिसे रावण * युद्धक प्रवन्ध करिलन्त तेतिक्षण ४८
महाक्रोधे असुरेओ करिला आस्फाल * दुइ हाते अङ्गदे धरिला दुइ शाल
बालिपुत्रे दुइ शाल हानिला प्रचण्ड * मुठि हानि असुरे करिला खण्ड खण्ड ४९
पर्ब्बत शिखरक हानिला असुर * लाथि हानि अङ्गदे करिल ताक चूर
महाक्रोधे दुयो बीरे करिला हाम्फोल * माल बान्धे जुरिया धरिला कोलेकोल ३८५०
सन्निपात बान्धे बान्धि असुरे धरिल * चक्रवात बान्धे बान्धि अङ्गदे पारिल
थिय हुया असुरे धरिला चक्रबान्ध * ढालिल अङ्गद न लखिया शिलकन्ध ५१
बले आति कुशल अङ्गद महाबली * मुठि बान्धि जुरिया हासन्त खलखलि
उपरत चरिया धरिला हाते हाते * माथा मुरि असुरर धरिला हियाते ५२
मुठि बान्ध एरिलन्त करिया उपाय * हे सनि करिया अङ्गदक खेदि याइ
असुरक बालि पुत्रे खेदि लाग पाइल * लाथि हानि कतोदूर क्षेपिया पठाइल ५३
अङ्गद बोलन्त किवा चाहि आछो आर * मुठि हानि असुरक पठाओं यमद्वार
एहि बुलि हियात बसाइला वज्र मुठि * हिया चूर हैया तार प्राण गैल छुटि ५४

अंगद द्वारा असुर का वध

गोपद के समान कण-कण ढूँढकर देखा, पर कहीं जनकनन्दिनी सीता नही मिली। सभी दिशाओं में प्रत्येक स्थान में खोज ढूँढकर घूमते हुए उन्होंने पर्वतसमान एक असुर को देखा ॥ ३८४७ ॥ शरीर का वर्ण मेघ जैसा कान्तिमान था, दाँत बड़े भयकर थे, वह बड़े वेग से चला आ रहा था। अंगद ने कहा, 'संभवत: रावण यही है,' और वे उसी क्षण युद्ध का प्रबन्ध करने लगे ॥ ४८ ॥ महाक्रोध से असुर ने भी आस्फालन किया तब बाली-पुत्र अंगद ने दोनों हाथों से दो शाल वृक्षों को उखाड़ लिया और उन दोनों शाल-वृक्षों से असुर पर प्रचंड आघात किया; परन्तु असुर ने मुक्का मारकर उन्हें खंड-खंड कर डाला ॥ ४९ ॥ तब असुर ने पर्वत-शिखर उठाकर आघात किया, अंगद ने लात मारकर उसे चूर-चूरकर डाला। दोनों वीरों ने महाक्रोध से हुंकार किया, मल्ल की भाँति एक दूसरे को बाँहों में बाँध लिया ॥ ३८५० ॥ असुर ने अंगद को सन्निपात-बंधन से बाँध लिया तो अंगद ने चक्रवात-बन्धन से बाँधकर उसे गिरा दिया। खड़े होकर असुर ने चक्रबन्ध से अंगद को जकड़ लिया, पर अंगद ने उसे शिला-बन्ध द्वारा अनायास गिरा दिया ॥ ३८५१ ॥ महाबली अंगद बल में बड़ा ही कुशल था। राक्षस को मुट्ठी के बन्धन में जकड़कर खल-खल हँसने लगा। उसे गिराकर ऊपर चढ बैठा और उसके हाथों को पकड़ लिया, तथा असुर का सिर मोड़कर छाती से लगा दिया ॥ ५२ ॥ राक्षस ने उपाय कर मुट्ठी का बंधन छुड़ा लिया और प्रचंड नाद करता हुआ अंगद पर चढ़ दौड़ा। बालीपुत्र अंगद दौड़कर असुर के पास गया और उसे लात से मारकर कुछ दूर फेंक दिया ॥ ५३ ॥ अंगद ने कहा—अब और देखना क्या है, मुक्का मारकर अभी-अभी असुर को यम के द्वार भेज दे रहा हूँ। यह कहकर उसने राक्षस के हृदय पर वज्र जैसे मुक्के की चोट की, जिससे राक्षस का हृदय चूर-चूर होकर प्राण उड़ गये ॥ ५४ ॥

घोर आर्त्तनाद करि असुर परिल * वज्रर पतने येन पृथिवी ललिल
देखि रामसेना घुषिलन्त जय जय * धन्य युवराज धन्य वालीर तनय ५५

असुर परिले अनन्तरे कपिगणे * सीताक विचारि फुरे अनेक यतने
वर वर पर्ब्बतत चाहिला सकले * अनेक गहने विचारिला जले स्थले ५६

पर्ब्बतेक देखिला मेरुर समसर * उठिला ताहात गैया भालुक वानर
आकाश लङ्घिया आछे एकैक उठान * पृथिवीक देखिय सराव परमाण ५७

ताते चड़ि कपिगण भैगैल विह्वल * सागरक देखि येन गोखोजर जल
पूर्ब्बत देखिला रवि प्रचण्ड उदय * उत्तर दिशत देखि गिरि हिमालय ३८५८

दक्षिणत यमपुर देखि तमोमय * पश्चिम दिशत अस्तगिरिक देखय
परम विस्मय हुया अङ्गदे पुछय * कि बुद्धि करिब आवे वायुर तनय ५९

मारुति बोलय बुद्धि न धरय आर * परम सङ्कट गिरि उठि लो दुर्व्वार
सीताक न पाइया एके मनत असुख * भागरे पीड़िल आति शुकाइ गैल मुख ३८६०

सूर्य्यर किरणे वर तापे गाव पोरे * पियासिल वानरे आकुल जल नोरे
गल तालु शुखाइ गैल मुखे नाहि पान * जल नापाइ बोले भैल प्राणर निर्य्याण ६१

हताशे वसिला सवे दक्षिणक लक्षि * कतो दूरे उरे देखे जलचर पक्षी
राजहंस चक्रवाक उरय सारङ्ग * डाउक शराली कोढ़ा चटक बिहङ्ग ३८६२
लरुआलि भेला घोग आरु उरिकङ्क * पातिकाउर पानीकाउर आरु मत्स्यरङ्ग

घोर आर्तनाद कर असुर गिर पड़ा, धरती ऐसे हिल उठी मानो वज्रपात हुआ हो। यह देखकर राम की सेना ने 'जय, जय' ध्वनि की 'वाली-सुत युवराज धन्य हो,' का घोष गूंज उठा ॥ ५५ ॥ असुर के मारे जाने पर कपिगण अनेक यत्न से पुनः सीता की खोज में घूमने लगे। सभी ने बड़े-बड़े पर्वतों पर देखा, अनेकों घोर जंगलों में, जल-स्थल में खोजा ॥ ५६ ॥ उन सब ने एक ऐसा पर्वत देखा जो मेरु के समान था। भालू-वानर उस पर चढ गये। उस पर्वत का एक-एक शिखर आकाश छू रहा था, वहाँ से सारी पृथ्वी एक हाँड़ी के समान दिखाई देती थी ॥ ५७ ॥ उस पर चढ़कर कपिगण विह्वल हो उठे। वहाँ से सागर गोखुर का पानी जैसा प्रतीत हो रहा था। वहाँ से पूर्व दिशा में प्रचंड सूर्य का उदय दिखाई देता था। उत्तर दिशा में गिरि हिमालय दीख रहा था ॥ ५८ ॥ दक्षिण में तपोमय यमलोक और पश्चिम में अस्ताचल दिखाई पड़ा। परम विस्मित होकर वाली-सुत अंगद ने पूछा—हे वायु-सुत हनुमान, अब हम कौन सा उपाय करे ? ॥ ३८५९ ॥ मारुति हनुमान ने कहा—हम इस परम दुर्वार संकट-संकुल पर्वत पर चढ़ गये है। अब तो मेरी बुद्धि कोई काम नही करती। एक तो सीता को न पाने के कारण चित्त में दुख है। तिसपर से अत्यधिक थकावट से मुख सूख गये हैं ॥ ३८६० ॥ सूर्य की किरणों के प्रचंड ताप से शरीर जल रहे हैं। ये प्यास के मारे व्याकुल हो रहे हैं, पर पानी नही है। तालू, गला सूख गये, मुँहँ में पानी नही रहा, सभी कहते हैं कि जल बिना प्राण निकले जा हैं। सभी दक्षिण दिशा की ओर मुँह किये हताश भाव से बैठ गये। उन्होंने देखा कि कुछ दूरी पर राजहंस, चक्रवाक, सारंग, डाहुक, तीतर, शराली, कोढ़ (जलमुर्गी), ॥ ६१-६२ ॥ भेला, घोग, उरिकंक, भाँति-भाँति के कौवे, मत्स्यरंग आदि जलचर पक्षी उड़े जा रहे हैं।

बानर-सेनार स्वयम्प्रभार आश्रम प्रवेश

ताक लागि लरिल बानर समस्तय * भयङ्कर गर्त्तगोट देखि लागे भय ३८६३
पृथिवीर मुख येन बहल बिस्तार * हनुमन्ते बोले किनो गर्त्तेक अपार
सकले वानरे धरिलेक हाते हाते * जलपान मने सबे पशिलेक ताते ६४
चक्षुये ने देखे मुखे मातन्त मातर * एक मासे पाइला भैल गर्त्तर भितर
कतो बेलि पाइला गैया बिबरर ओर * प्रकाश देखिया भय गुचिल दुर्घोर ६५
द्विती अम्रावती येन स्वर्ग माजे सार * कार दिव्य स्थान इटो किवा नाम आर
दीघि सब आछय काञ्चन रत्नमय * सुवर्णे रचित खाट बिचित्र ज्वलय ६६
सुवर्णर पङ्कजे शोभय जलहार * सुवर्णर मगरे कच्छपे पारे बुर
दिव्य देवालय ज्वले सुवर्णर शोभा * कन्या एक बसि आछे सूर्य्य येन प्रभा ६७
हनुमन्ते करयोरे नमस्कार करि * बोलन्त कहियो माव काहार नगरी
पियासे आकुल आति अथिति बानर * जल आकुलित हैया पशिलो बिबर ६८
ध्यान भङ्ग करिलो एरियो मनताप * बुभुक्षित प्राणे न करय कोनपाप
ज्ञाने आछो आमि किबा देखिलो सपोन * स्वरूप कहियो न करिया कोप मन ६९
एकेश्वरे आछा माव कमन कारणे * पाचे जलपान करो हरषित मने
स्वयम्प्रभा सती कथा कहे बानरत * मय नामे दानवेक आछिल पूर्ब्बत ३८७०
दानवर विश्वकर्म्मा दर्पिष्ट असुर * तेहे इटो निर्म्मिला काञ्चनमय पुर
हेमा अपेस्वरी चित्रसेनर सुन्दरी * इठावते तेहो आछिलन्त क्रीड़ा करि ७१

बानर-सेना का स्वयंप्रभा के आश्रम में प्रवेश

उसे देखकर सभी बानर उसी ओर दौड़ पड़े। वहाँ एक भयंकर गड्ढा देखकर उन्हे बड़ा भय हुआ ।। ६३ ।। वह पृथ्वी के मुख की भाँति फैला हुआ और विस्तृत था। हनुमान ने कहा—यह विस्तारवाला गड्ढा कैसा है ? सभी बानरों ने एक-दूसरे के हाथ पकड़ लिए और जल पीने हेतु उसमें प्रवेश कर गये ।। ६४ ।। उन्हें आँखों से कुछ दिखाई नहीं देता था, केवल मुख के शब्द ही सुनायी देते थे। एक माह चलने के बाद उस गड्ढे के भीतर प्रविष्ट हो सके। कुछ समय पश्चात् उन्हें गड्ढे का छोर मिला। वहाँ प्रकाश देखकर उनका भयंकर भय मिट गया ।। ६५ ।। वह स्थान स्वर्ग में श्रेष्ठ दूसरी अमरावती जैसा था। (वे सोचने लगे) यहाँ किसका स्थान है, इसका नाम क्या है ? वहाँ के बडे-बड़े तालाब स्वर्ण-रत्नमय थे, उनकी स्वर्ण-निर्मित सीढ़ियाँ विचित्र रूप से जगमगा रही थी ।। ६६ ।। उनका जल स्वर्ण-कमलों के हारों से शोभित हो रहा था। सोने के मगर और कछुवे उसमें डुबकियाँ लगा रहे थे। स्वर्ण की भाँति जगमगाते हुए दिव्य देवालय जगमगा रहे थे। वहाँ सूर्य जैसी प्रभा वाली एक कन्या बैठी हुई थी ।। ६७ ।। हनुमान ने हाथ जोड़ नमस्कार कर पूछा—माता बताइये, यह किसकी नगरी है ? प्यास से हम बानरगण व्याकुल होकर निराश्रित हो रहे है। जल के लिए आकुल हो हमने इस विवर में प्रवेश किया है ।। ६८ ।। हमने आपका ध्यान भंग किया है। इसके लिए मन मे दुख न कीजिये। विभुक्षित जीव कौन से पाप नही करते ? हम होश में है या कोई सपना देख रहे हैं, हे माता, मन में क्रोध न कर सत्य-सत्य बताइये ।। ३८६९ ।। माता आप यहाँ अकेली किसलिए है, इसके पश्चात् हम प्रसन्न-मन जल पीयेंगे। तब सती स्वयंप्रभा वानरों को यह कथा सुनाने लगी। पूर्वकाल में मय नाम का एक दानव था ।। ३८७० ।। वह दानवों का

इन्द्रे बज्र हानि आसि दुइको धरि निल * इन्द्र देवे नगरी हेमाक पाचि दिल
चिन्ता परिहरा कथा कहिलो सकले * तेतिक्षणे सबाको तुषिला फले जले ७२
पनु कथा कहिला बानर सब लक्षि * प्राणत अधिक मोर हेमा नामे सखी
सि कारणे आछो मइ पुरीखान राखि * रात्रि दिने करो ध्यान केने पाओं सखी ७३
स्वयम्प्रभा नामे मइ गन्धर्व्वर जीउ * एहि थाने थाकोहो धियाइ सदाशिबु
स्वयम्प्रभा बोलन्त तोमात पुछो काज * स्वरूप कहियो मोत न करियो लाज ७४
कॅर हन्ते फुरा तोरा कोथेर बानर * कि कारणे आसि भैला गर्त्तर भितर
कोनबा राजार चर कहियो निर्णय * स्वरूप शुनिया मोर गुचोक सँशय ७५
हनुमन्ते कथा कहिलन्त निरन्तरे * येनमते मित्रवती सुग्रीव बानरे
रामचन्द्रे येनमते आसि भैल वने * येनमते सीता हरि निलेक रावणे ७६
सीताक खोजन्ते राम सुग्रीवक पाइला * तारा दुइ पाचे मित्रवती बन्धाइला
बाली बध सुग्रीवर अभिषेक कथा * कहिलाहा आदि अन्त येहेन व्यवस्था ७७
राघवे सुग्रीवे पाचे कार्य्य आलोचिल * सीताक खुजिबे लागि आमाक पाञ्चिल
राघवर आज्ञा शिरे धरिया हरिषि * बानर सकले चाहि फुरो दिशादिशि ७८
मासेकक लागि क्षान्ति दिया पठाइलन्त * गर्त्तत पशिबे मासेकर भैल अन्त
फल मूल दिया माव खण्डाइला निकार * तुमि भैला माव आमि तनय तोमार ७९
नपाओं उदिश गर्त्त गहन अपार * आत केन मते आमि हैबोहो निस्तार
शुनि स्वयम्प्रभा रङ्ग लभिला अपार * राम सेना बुलि करिलन्त नमस्कार ३८८०

विश्वकर्मा होने के कारण बड़ा घमंडी था। उसी ने स्वर्णमयी पुरी बनायी है। चित्रसेन की सुन्दरी पत्नी अप्सरा हेमा भी यहीं क्रीड़ा कियाकरती थी ॥ ३८७१ ॥ तब इन्द्र बज्र से आहत कर दोनों को पकड़ ले-गया। परन्तु इसके पश्चात् उसने हेमा को यह पुरी दे दी, मैने सारी कथा तुम्हें सुना दी, तुम लोग चिन्ता छोड़ दो। यों कहकर स्वयंप्रभा ने सबको जल-फल द्वारा तुष्ट किया ॥ ७२ ॥ इसके पश्चात् वानरों को देखते हुए कहने लगी—हेमा नाम की मेरी सखी प्राणों से अधिक प्यारी है। इसी कारण मैं इस पुरी की रखवाली कर रही हूँ और रात-दिन यही ध्यान लगाये हुए हूँ कि किस प्रकार सखी को पा सकूँगी ॥ ७३ ॥ मैं स्वयंप्रभा नाम की गन्धर्वों की कन्या हूँ। यहाँ सदाशिव का ध्यान करती हुई रह रही हूँ। स्वयंप्रभा ने कहा, मैं तुम लोगों से पूछती हूँ, मुझसे लज्जा न कर सच-सच बताओ ॥ ७४ ॥ तुम लोग कहाँ के बानर हो और किस कारण घूम रहे हो? किस कारण इस गड्ढे में प्रविष्ट हुए हो? निश्चय रूप से बताओ, तुम किस राजा के चर हो? सत्य वचन सुनकर जिससे मेरा संशय मिट जाय ॥ ७५ ॥ तब हनुमान ने उन्हें बानरसुग्रीव और रामचन्द्र की मित्रता विषयक वह कथा सुनायी। रामचन्द्र किस प्रकार वन में आये, रावण ने किस प्रकार से सीता का हरण कर लिया ॥ ७६ ॥ सीता को खोजते हुए राम सुग्रीव को किस प्रकार मिले, उन दोनों में मित्रता किस प्रकार हुई; बाली-बध, सुग्रीव का अभिषेक आदि की सारी कथा अन्त तक सुनायी ॥ ७७ ॥ (उन्होंने बताया) रामचन्द्र और सुग्रीव ने अन्त में विषय की आलोचना कर सीता को खोजने के लिए हमे भेजा। रामचन्द्र की आज्ञा हर्षपूर्वक शिरोधार्य कर हम बानरगण चारों दिशाओ में सीता को खोजते हुए घुम रहे हैं ॥ ७८ ॥ हमें एक माह की अवधि निश्चित कर भेजा गया था परन्तु इस गह्वर में प्रवेश किये ही एक माह बीत चुका है। हे माता, तुमने फल-मूल देकर हमारे कष्टों को मिटा दिया। तुम हमारी मां सदृश हो, हम तुम्हारे पुत्र हैं ॥ ३८७९ ॥ यह गढ्ढा गहन अपार है इससे हम किस प्रकार निकल सकते हैं?

किनो भाग्य तुमि सब राम दूत लोक * रामर चरणे मोर भकति थाकोक
शुना राम दूत लोक बचन आमार * पशिलाहा गर्त्त इटो महा अन्धकार ८१
यम करणक गैले आछे परिवर्त्त * ततोधिक दुर्ब्बार देखोहो इटो गर्त्त
चक्षु मुदि सबेओ बाहुत मोर धरा * मोर तपोबले सबे गर्त्तर निस्तरा ८२
हेन शुनि तेतिक्षणे वानर सकले * ताहान बाहुत धरिलन्त कौतूहले
लीलाये सबाको सती तुलि आलगाइला * स्वयम्प्रभा तपोबले गर्त्तर बजाइला ८३
दक्षिणसागरे बिन्ध्य पर्ब्बतर कोले * तैत थैया पाचे स्वयम्प्रभा बाक्य बोले
बाहुक एरियो सबे चक्षुक मेलियो * भैलाहा गर्त्तर बाज प्रसन्न देखियो ८४
हेन शुनि कपिगण चक्षुक मेलिल * भैलोहा निस्तार बुलि बाहुक एरिल
स्वयम्प्रभा तपोबल बानरे देखिल * मनत हरिषे ताङ्क प्रबोध करिल ८५
धन्य धन्य स्वयम्प्रभा जीवन तोमार * राघवर सेना कपि भालुक अपार
तपोबले एके खन हाते तुलि धरि * लीला रूपे भैलाहा गर्त्तर बाज करि ८६
दुर्गति एराइलो बर तोमार कारणे * तोमार भकति होक रामर चरणे
प्रशंसा बचने स्वयम्प्रभा तुष्ट भैला * बिदाय करिया निज स्थाने चलि गैला ३८८७

कपिसैन्यर सागर-दर्शन आरु सम्पातिर सैते साक्षात्

अनन्तरे कपिगणे माथा तुलि चाइल * गम्भीर बिस्तार सागरक भेट पाइल
पर्ब्बत समान ढौ उठले अपार * आकाशे सागरे दुइको देखि एकाकार ३८८८

यह सुनकर स्वयंप्रभा बहुत प्रसन्न हुई और राम की सेना समझ कर उन्हें नमस्कार किया ॥ ३८८० ॥ कहा—कितने सौभाग्य की बात है कि तुम सब राम के दूत हो। राम के चरणों में मेरी भक्ति रहे। हे राम-दूतो, हमारे वचन सुनो, तुमने जिस महा अन्धकार गड्ढे में प्रवेश किया है ॥ ३८८१ ॥ यम के यहाँ से लौट आना संभव हो, पर इस गड्ढे से निकलना उससे अधिक कठिन है। तुम लोग आँखें मूँदकर मेरे हाथ पकड़ो और इस प्रकार मेरे तपोबल से गड्ढे से बाहर निकल जाओ ॥ ८२ ॥ यह सुनकर बानरों ने उसी क्षण कौतूहल से उसके हाथ पकड़े। उस सती स्वयंप्रभा ने सबको अनायास उठा लिया और उसके तपोबल से सभी गड्ढे से बाहर निकल गये ॥ ३८८३ ॥ विन्ध्यपर्वत की तराई में दक्षिण के सागर के किनारे उन्हें रखकर स्वयंप्रभा बोली—मेरे हाथों को छोड़ सब लोग आँखें खोल दो। प्रसन्नता से देखो कि तुम गड्ढे से निकल आये हो ॥ ८४ ॥ यह सुनकर कपियों ने आँखें खोल दीं। 'अब हमारा उद्धार हुआ' सोचकर उसके हाथ छोड़ दिये। बानरों ने स्वयंप्रभा का तपोबल देखा और मन में अत्यन्त प्रसन्न होकर उसे प्रबोध-वचन कहे ॥ ८५ ॥ स्वयंप्रभा तुम्हारा जीवन धन्य है। अपने तपोबल से एक ही हाथ से उठाकर तुमने राघव की अपार सेना के बानरों और भालुओं को अनायास लीलापूर्वक गड्ढे से बाहर निकाल दिया ॥ ८५ ॥ तुम्हारे कारण हम बड़ी विपत्ति से मुक्त हो गये। राम के चरणों में तुम्हारी भक्ति होवे। उनके प्रशंसापूर्ण वचनों से स्वयंप्रभा तुष्ट हुई और उन्हें विदाकर अपने स्थान को लौट गयी ॥ ३८८६ ॥

कपिसेना का सागर-दर्शन और सम्पाति से भेंट

इसके पश्चात् कपियों ने सिर उठाकर देखा तो गम्भीर विस्तारवाला सागर उन्हें दिखाई पड़ा। उसमें पर्वतों के समान अपार-तरंगे उछल रही थीं। आकाश और

कुम्भीर मगर मत्स्य कच्छप सकल * आङ्क निया सागरर उथलय जल
पृथिवी एरिया ढौ स्वर्गक लङ्घय * अगाध दुर्गम सिटो वरुण आलय ८९
महोदधि विन्ध्य सम पर्ब्बत मूलत * तात गैया वसिलन्त कपिगण यत
आलोचिबे लैला सब महा महा बली * विमरिषि बोले क्षान्ति गैलेक उकलि ३८९०
प्रचण्ड नृपति काटिबेक काण नाक * सीताक न पाइलो किनो मिलिल बिपाक
केहो बोले एरिलोहो पुत्र परिवार * नाक काण काटिलेक कि कार्य्य जीवार ९१
केहो बोले लङ्घि एरो सागरर अन्त * मासेकत न पाइले नृपति दण्डिबन्त
श्रीराम लक्ष्मण सुग्रीवत अगोचरे * हेन स्थान आछे जाना कमन वानरे ९२
बन्धु बान्धवक एरि तेक लागि याओं * तेवे नृपतिर घोर दण्डक एराओं
मनत आलोचि केहो केहो बोले बाक * एभो येवे पाओं आमि सीतार बार्त्ताक ९३
जान दिया नृपतिक करिबो कातर * तेवे किय आमाक दण्डिबे नृपबर
डरे काउ बाउ करे कतोहो बानर * ताक देखि तारे पाचे दिलन्त उत्तर ९४
न याइबोहो आमि सवे भय परिहर * आसा पलाइ गैया थाको द्वीप द्वीपान्तर
हनुमन्ते बोलन्त शुनियो ओबा तार * छवालर थान भैलो चरित्र तोमार ९५
आदेशि पठाइबे शर लक्ष्मण कुमारे * विचारिया वधिवेक त्रैलोक्य भितरे
अङ्गदे बुलिला बाक्य सबाहाङ्के चाइ * निष्टे जानो मोहोर प्राणर रक्षा नाइ ९६
क्रूर खुरते पाइले दण्डिबे आमाक * मइ पुनु न याइबो बुलिलो सत्य बाक
मइ मात्र आछो तान शत्रु अवशेष * क्षमा न करिब अपराध एक लेश ९७

सागर दोनों एकाकार दिखाई दे रहे थे ।। ८८ ।। घड़ियाल, मगर, मछलियाँ, कछुवे आदि को लेकर सागर का जल उछल रहा था । उसकी तरंगे पृथ्वी को छोड़कर स्वर्ग को भी लांघ जाती थीं । वह वरुणालय समुद्र अगाध, दुर्गम था ।। ३८८९ ।। उस समुद्र के तट पर विंध्याचल के समान पर्वत के तले सभी कपिगण जा बैठे । सभी महाबली वीर परस्पर चर्चा करने लगे । विचार-विमर्श कर वे कहने लगे—(लौटने की) अवधि पूरी हो गयी ।। ३८९० ।। प्रचंड नृपति नाक कान काट डालेंगे । सीता को हम खोजकर निकाल नही पाये । यह कैसा दुर्भाग्य है । कोई कहता था—हमने पुत्र-परिवार को छोड़ा, तिस पर राजा नाक-कान काट डालेंगे, तो फिर हमें जीवित रहने का क्या प्रयोजन है ? ।। ३८९१ ।। कोई कहता था—सागर को लांघकर पार जाने की बात छोड़ो । महीने के अन्त में यदि राजा हमें न पाये तो अवश्य दंड देंगे । श्रीराम, लक्ष्मण और सुग्रीव के अगोचर कोई स्थान है तो कौन वानर उसे जानते हो, बताओ ।। ३८९२ ।। बन्धु-बान्धवों को छोड़कर हम वहीं चले जायें । तभी राजा के घोर दंड से बच सकते है । मन में विचारकर कोई कहता था—यदि अब भी हम सीता का समाचार पा सकें, ।। ९३ ।। तो राजा को जीवन न्योछावर कर कातर स्वर में विनती करेंगे । तब फिर हमें राजा क्यों दड देंगे ? कितने वानर तो डर के मारे चीख पुकार करने लगे । यह देख उसके बाद के एक बानर ने उत्तर दिया— ।। ९४ ।। हम सब लौटकर नही जायेंगे, भय छोड़ दो । चलो, हम सब भागकर द्वीप-द्वीपान्तरों में चले जाये । हनुमान ने कहा—भला इसकी बात तो सुनो ! तुम्हारे चरित्र तो नन्हे बच्चों जैसे हो गये है ।। ९५ ।। कुमार लक्ष्मण जब अपने बाण को आदेश कर भेजेंगे तो वह त्रैलोक में भी हमें खोजकर वध कर ड़ालेगा । अंगद ने सबकी ओर देखते हुए कहा—तुम लोग निश्चित समझ लो कि मेरे प्राण नहीं बच सकते ।। ३८९६ ।। क्रूर चाचा यदि मुझे पा जायेंगे तो अवश्य दंडित करेंगे । अतः मैं सत्य कह रहा हूँ कि मै लौटकर नही जाऊँगा । उनके शत्रुओ मे से केवल मैं ही बचा हुआ हूँ, इसलिए वे मेरा

छल पाइले नाक काण काटिबे समस्त * सिन्धि खुजि फुरन्ते दुवारे पाइल पथ
एतकाल रहि आछो रामर निदाने * मइ येन मत ताक ज्ञाति लोके जाने ९८
हा विधि किनो दण्ड करिले आमाक * न पाइलोहो रामर चरण सेविकाक
मारुति बोलन्त शुना भय परिहरि * शुद्ध भाव राजाक नोबोलो हेन करि ९९
परम धार्म्मिक राजा धर्म्म तान काज * किष्किन्ध्यात तोमाक पातिला युवराज
पूर्ब्बे दया तोमाक बालीर येन ठान * सुग्रीव बीरर दयावन्तत समान ३९००
तुमिसि कुमार तान तारा पटेश्वरी * स्थिर होवा अङ्गद बिकल परिहरि
हनुमन्ते नृपतिर गुण बखानिल * शुनि बीर अङ्गदर गा न सहिल ३९०१
यिजने राजार सेवा करन्त सदाय * सिजने राजार गुण कहिबाक पाय
सुजान पात्रर होवे हेन व्यवहार * दोष एरि गुण मात्र करय राजार २
एतेकेसे सुग्रीवर बखानिला गुण * कहिबे ना लागे सबे जानोहो आपोन
तार गुण मोर आगे बखानस किक * सुग्रीव ये धार्म्मिक कोन आछे अधार्म्मिक ३
आमार मावक तेहो करिलन्त घर * श्रेष्ठ भाइर पटेश्वरी मातृ समसर
हेन अधार्म्मिके पातिलाहा धर्म्मशील * एतेके तोमार आमि चित्तक लखिल ४
आमि नयाइबो आर किष्किन्ध्या नगर * निष्ट करि जानिबाहा सकले बानर
कुशद्वीप लागि शीघ्रे करिबो पयाण * युवराजे अङ्गीकार करिलन्त टान ५
शुनि चिन्ता शोके बाक्य बोले सेनागण * भैलन्त आमार राम मृत्युर कारण
तानपदे निज भार्य्या पुत्रक हराइलो * दुख सागरत मजि पारक न पाइलो ६

बिन्दु मात्र अपराध क्षमा नहीं करेंगे ।। ९७ ।। यदि उन्हें कुछ बहाना मिल जाये तो नाक-कान सब काट डालेंगे। वे सेंध मारना चाहते थे कि दरवाजे में ही मार्ग मिल गया। इतने दिनों तक तो मैं केवल रामचन्द्र की कृपा से ही बचा हूँ। मैं कैसे हूँ यह तो केवल आत्मीय जन ही जानते हैं ।। ९८ ।। हाय विधाता, तुमने हमें कैसा दंड दिया। हम राम की चरण-सेवा भी नहीं कर सके। मारुति ने कहा—सुनो, भय छोड़ दो, पवित्र भावनावाले राजा के प्रति इस प्रकार कहना नहीं चाहिए ।। ३८९९ ।। राजा परम धार्मिक हैं। धर्म ही उनका कार्य है। इसी कारण तो तुम्हें किष्किन्ध्या का युवराज बनाया है। पहले बाली जिस प्रकार तुम पर कृपादृष्टि रखते थे; वीर सुग्रीव तुम पर उसी प्रकार कृपादृष्टि रखते हैं ।। ३९०० ।। तुम उनके कुमार हो, तारा उनकी पटरानी है। अंगद, व्याकुलता छोड़कर स्थिर होवो। जब हनुमान ने राजा का इस प्रकार गुण वर्णन किया तो उसे सुनकर वीर अंगद का शरीर सह न सका ।। ३९०१ ।। जो सदा राजा की सेवा करता रहता है, राजा के गुण उसे ही कहना उचित होता है। सुजान व्यक्ति का ऐसा आचरण होता है कि वह राजा के दोषों को छोड़कर केवल गुणों का वर्णन किया करता है ।। ३९०२ ।। अतः तुमने भी सुग्रीव के गुणों का बखान किया है, यह तो कहना ही नहीं है, सभी जानते हैं कि तुम उनके अपने हो। परन्तु मेरे सम्मुख उसके गुणों का वर्णन भला किसलिए कर रहे हो ? यदि सुग्रीव धार्मिक है तो फिर अधार्मिक कौन है ? ।। ३९०३ ।। सुग्रीव ने मेरी माता को पत्नी बनाकर रख लिया है। बड़े भाई की पटरानी माता के समान होती है। ऐसे अधर्मी को तुम धर्मशील कह रहे हो, अतः मैं तुम्हारे चित्त की भावना को समझ गया हूँ। ३९०४ ।। सभी वानरगण सत्य-सत्य समझ लें, मैं अब किष्किन्ध्या नगर लौटकर नहीं जाऊँगा। मैं शीघ्र ही कुशद्वीप को प्रस्थान कर जाऊँगा। इस प्रकार युवराज अंगद ने कठोर प्रतिज्ञा कर ली ।। ३९०५ ।। यह सुनकर चिन्ता तथा शोक से सेना के वानरों ने कहा—राम ही हमारी मृत्यु के कारण बन गये हैं। उन्हीं

एहिमते चिन्ता सबे करिवा अधिक * कपाले चापर मारि गरिहे बिधिक
घोर निशाकाल तैते भैल निरन्तरे * वर वर वृक्षे वृक्ष शिला लैल करे ७
पर्व्वतक छानि सवे चपकरे रैल * अन्ये अन्ये कथा सवे कहिबाक लैल
कैकेयीक निन्दे आरो राजा दशरथ * राघवक पठाइलेक घोर बनपथ ८
केहो केहो दोष देइ रामक अधिक * सुवर्णर मृग देखि खेदि गैल किक
केहो केहो बिमरिषि दोषय सीताक * लक्ष्मणक पठाइलन्त बुलि मन्द बाक ९
कतो कतो जने दोषे सुग्रीव राजाक * रामक पातिले मित्र वधिते आमाक
कैर राम कैर सीता कोने जाने ताङ्के * ताहान निमित्ते आसि परिलो बिपाङ्गे १०
हेन कथामाते सिटो प्रहाइ गैल राति * सेहि पर्व्वतत पक्षी आछन्त सम्पाति
जटायुर श्रेष्ठ भाइ पुत्र गरुड़र * चिरकाल तथाते आछन्त पक्षीवर ३९११
वानरर रोल शुनि नेत्र मेलिलन्त * पर्व्वतर तलक निहालि देखिलन्त
वानरक देखिया मनत वर तुष्ट * चिरकाले मिलिल आधार हृष्ट पुष्ट १२
गर्भाग्नि बञ्चिवो आजि धरिया आनिवो * वानर सवक आजि बाछिया मिलिबो
आधार देखिया तार रङ्ग भैल मन * आपोनार निज भाषे करिला गर्ज्जन १३
पक्षीर प्रचण्ड नाद सबेओ शुनिल * सवारो मनत महा सन्ताप मिलिल
कैत कि शुनिलो अन्ये अन्यत सोधय * सवेयो सवाते कय नजाने निर्णय १४
केहो वोले पर्व्वतर शिखर खसिल * केहो वोले नोहे मेघ गर्ज्जन करिल
केहो वोले इन्द्रे हानिलन्त वज्रवाण * नुहि भङ्ग भैल एक ऋषिर धियान १५

के चलते हमें अपनी पत्नी और पुत्रों को खो देना पड़ा है, दुखसागर में डूबकर हमें किनारा नहीं मिल पा रहा है ।। ३९०६ ।। इसी प्रकार सब अनेक चिन्ता करते हुए सिर पीट-पीटकर विधाता को गालियाँ देने लगे । तभी वहां घोर रात हो आयी । सभी बड़े-बड़े वृक्षों पर चढ़ गये और हाथों मे शिलाएँ और वृक्ष ले लिए ।। ३९०७ ।। वे तुरन्त सारे पर्वत पर फैल गये और अन्यान्य कथाएँ कहने लगे । वे कैकेयी और दशरथ की निन्दा करने लगे, जिन्होंने रामचन्द्र को घोर वन के मार्ग में भेजा ।। ३९०८ ।। कोई-कोई राम को अधिक दोष देने लगे कि वे सुवर्ण का मृग देखकर पीछे-पीछे दौड़े क्यों गये ? कोई-कोई विचार कर सीता को दोष देते थे कि उन्होंने दुर्वचन कहकर लक्ष्मण को भेज दिया ।। ३९०९ ।। कोई-कोई राजा सुग्रीव पर दोष लगाते थे, कि उसने हमारा वध करने के लिए ही सुग्रीव से मित्रता की है । ये कहाँ के राम हैं कहाँ की सीता है, कौन जानता है ? उनके लिए ही आज हम इस प्रकार संकट में पड़े है ।। ३९१० ।। इस प्रकार वातचीत करते हुए वह रात वीत गयी । उसी पर्वत पर सम्पाति नाम का पक्षी रहता था । वह पक्षीवर जटायु का वड़ा भाई, गरुड़ का पुत्र था और वहीं चिरकाल से रह रहा था ।। ३९११ ।। वानरों का कोलाहल सुनकर उसने आँखें खोली और पर्वत की तराई में निरीक्षण किया । वानरों को देखकर वह मन में वड़ा सन्तुष्ट हुआ और कहने लगा—चिरकाल पश्चात् आज हृष्ट-पुष्ट वानर आहार के रूप में मिले है ।। ३९१२ ।। आज इन्हें पकड़-पकड़कर लाऊँगा और अपनी उदराग्नि को शान्त करूँगा । चुन चुनकर सभी वानरों को लील जाऊँगा । आहार (रूपी वानरों को) देखकर उसका मन वड़ा प्रसन्न हुआ । अपनी बोली में वह गरज उठा ।। ३९१३ ।। पक्षी का प्रचंड नाद सुनकर उन सव के मन में बड़ा ही संताप हुआ । सभी एक दूसरे से पूछने लगे, कहाँ क्या सुनाई दे रहा है ? सभी सवसे यही कहते थे कि वे निश्चित रूप से कुछ भी नहीं जानते ।। ३९१४ ।। कोई कहता था, पर्वत की कोई चोटी ढह पड़ी है, कोई कहता था, नहीं, मेघ गरज रहा है । कोई वोला,

केहो बोले न जानिल भूमिकम्प गैल * निश्चय नजानि कपिगण भय भैल
अनन्तरे बीरगण चाहिल निरेक्षि * पर्ब्बत उपरे देखे भयङ्कर पक्षी १६
पर्ब्बतेक आछे येन पर्ब्बत उपर * ठोट गोट देखि येन बज्र समसर
सम्पाति बोलन्त डाकि कैर कपिगण * स्वरूप न कह येवे करिबो भक्षण १७
हेन शुनि सबारे लागिल चमत्कार * बानर सकले बोले नाहिके निस्तार
भय हुया आउरे आउरक आङ्कोवाली धरे * काणा काणि करे सवे पाइले चिन्ता ज्वरे १८
स्थिर नोहे हात पाव काम्पे कलेवर * कतो कतो बोले पशि गह्वर भितर
कोन काले नतो देखि हेन पक्षीबर * गिरिर गह्वर येन मुखर भितर १९
हेन स्थान नतो देखि छटकर काय * इहाक एराइबो आजि कमन उपाय
इहारे गर्भते लीन हइवो निरन्तर * प्रलय मिलिल आसि बानर कुलर ३९२०
हा हा कैकेयी तइ कोन काज कैलि * बानर कुलर तइ संहारिणी भैलि
एकोरे न भैलो आमि माटिर पिण्डार * विधिये मिर्म्मिला करि चराइर आहार २१
राम कार्य्य निसिजिल कि काज करिलो * हरि हरि विधि किनो बिपाङ्गे मरिलो
साफल जटायु गरुड़र पुत्र बीर * रामकार्य्य साधन्तेहि त्यजिल शरीर २२
सीताक राखन्ते रावणक युद्ध दिल * अन्याय युद्धत ताङ्क रावणे मारिल
तेतिक्षणे येवे आमि ताङ्क लाग पाओं * तेवे किय आमि इटो पक्षीक डराओं २३
जटायु मरणे पाइले आमक बिपाके * निश्चय जानिलो पक्षी खाइबेक सबाके
हरि हरि किनो हृदयत खेद रैल * रामर भकति विने बृथा जन्म गैल
न पाइलोहो साधिबाक राघवर काम * एहि बुलि सबेयो सुमरे राम राम २४

इन्द्र ने वज्रबाण मारा है; अथवा किसी ऋषि का ध्यान भंग हुआ है ।। ३९१५ ।। कोई कहता था—पता नहीं, कहीं भूकम्प ही हुआ है । परन्तु निश्चित रूप से कुछ समझ न पाकर कपिगण बड़े ही आतंकित हुए । इसके पश्चात् वीरों ने निरीक्षण कर देखा तो पर्वत के ऊपर भयंकर पक्षी दिखाई पड़ा ।। १६ ।। मानो पर्वत के ऊपर और एक पर्वत बैठा हुआ है । उसकी चोंच वज्र की भाँति दीख रही थी । सम्पाति बोला—तुम सब बानर कहाँ के हो, यदि सत्य न कहोगे तो तुम्हें भक्षण कर डालूँगा ।। १७ ।। यह सुनकर सभी चमत्कृत हो उठे । वानरगण कहने लगे, अब तो निस्तार नहीं है । भयभीत होकर एक दूसरे को वे आलिंगन करने लगे । सब कानाफूसी करने लगे और चिन्ता रूपी ज्वर से पीड़ित हो उठे । ३९१८ ।। उनके हाथ-पैर स्थिर नहीं रह सके, समूचा शरीर कम्पित होने लगा । कोई कोई कहने लगे, चलो गड्ढे के भीतर घुस जायें । किसी काल में तो ऐसा विशाल पक्षी नहीं देखा है; इसका मुख पर्वत-गुफा जैसा विशाल है ।। १९ ।। ऐसा स्थान तो कोई दिखाई नहीं दे रहा है जहाँ जाकर इस पक्षी से बच सकें । इससे हम आज किस प्रकार बच सकते हैं ? इसी के उदर में हमें आज लीन होना है, आज वस्तुतः वानर-कुल का प्रलय आ गया है ।। ३९२० ।। हाय, हाय, कैकेयी, तूने कौन सा कार्य किया, तू वानर-कुल की संहारिणी बन गयी । हम मिट्टी के पुतले संसार में कुछ भी नहीं बन सके, विधाता ने हमें पक्षी का आहार बनाकर ही सर्जन किया है ।। ३९२१ ।। हमने यह क्या किया, राम का कार्य भी सिद्ध न हो सका । हरि, हरि, विधि, हमें किस प्रकार संकट में मरना पड़ा ? गरुड़ के वीर पुत्र जटायु का जन्म ही सफल रहा, जिसने रामकार्य-साधन हेतु ही अपना शरीर तज दिया ।। २२ ।। सीता की रक्षा हेतु उसने रावण से युद्ध किया और अन्याय-युद्ध में रावण ने उसे मार डाला । यदि उसी क्षण हम जटायु से मिल सकते तो आज इस पक्षी से डरना क्यों पड़ता ? ।। २३ ।। जटायु की मृत्यु

जटायुर नाम येवे सम्पाति शुनिल * चमकित हैया ओपरक ठोट दिल
सावधाने पृथिवीत पातलन्त काण * पूर्व्वापर कथा शुनि दिला समिधान २५
निष्ठ करि कहा तोरा कँर परा आइला * जटायुर कथा कोन जने सुमराइला
प्राणतो अधिक मोर सहोदर भाइ * तान मृत्यु शुनि मोर प्राण फुटि याइ २६
तुमि सब वानर आसिला कि कारणे * मोहोर भ्रातृक केने वधिल रावणे
कहियोक रामकथा शुनो काण पाति * जटायुर श्रेष्ठभइ नामत सम्पाति २७
जटायुर भाइ हेन शुनि कपिगण * भय गुचि किञ्चित प्रसन्न भैल मन
सबे हन्ते अङ्गदक अनुमति दिला * शुनि युवराजे कथा कहिबे लागिला २८
शुनियोक पक्षीराज कथा अनुपाम * सूर्य्यर वंशत राजा दशरथ नाम
तान श्रेष्ठ महिषी कौशल्या नामे सती * ताहान गर्भत रामचन्द्र उतपति ३९२९
कँकेयी नामत आरो पटेश्वरी भैला * ताहान वचने राम वनवासे गैला
सीता भार्य्या लक्ष्मण भ्रातृक लगे लैला * वनत रावणे सीता देवीक हरिला ३९३०
रावणक जटायु पथत युद्ध दिल * मूर्च्छा गैया दश स्कन्ध रथत परिल
जटायुक मारि पाचे अन्याय समरे * निज स्थाने सीताक निलेक निशाचरे ३१
लक्ष्मण एहिते वने फुरा रघुपति * सुग्रीवक पाया करिलन्त मित्रवति
मित्रत थाकिया रामे बालीक मारिल * तार राज्य सम्पात्तिक सुग्रीवक दिल ३२
राज्य पाइ सुग्रीवक आनन्द मिलिल * सीताक खुजिबे लागि आमाक पाञ्चिल
मासेकते लागि क्षान्ति दिला महाराय * खुजि हारा शास्ति भैलो सीताक नपाइ ३३

से ही हमें इस संकट में पड़ना पड़ा है। हम निश्चित रूप से समझ गये हैं कि यह पक्षी सबको खा डालेगा॥ हाय, हाय, हमारे अन्तर में यह कितना बड़ा खेद रह गया, राम की भक्ति के बिना जन्म व्यर्थ हो गया। हाय, हम रामचन्द्र का कार्य साधन नहीं कर पाये। —यों कहकर सभी 'राम, राम' स्मरण करने लगे॥ २४॥ जब सम्पाति ने जटायु का नाम सुना, तब उसने चौंककर अपनी चोंच ऊपर उठाकर देखा। बड़ी सावधानी से धरती से कान लगाकर वह सुनने लगा। पूर्वापर सारी बातें सुनकर वह बोला—॥ २५॥ सत्य-सत्य बताओ कि तुम लोग कहाँ से आये हो? जटायु की बात का स्मरण किसने दिलाया है? वह मेरा सहोदर भाई प्राणों से भी अधिक प्रिय है। उसकी मृत्यु सुनकर मेरे प्राण निकले जा रहे हैं॥ २६॥ तुम सब वानर यहाँ किसलिए आये हो, मेरे भाई का रावण ने किसलिए वध किया है? तुम लोग मुझे राम-कथा सुनाओ। मैं कान लगाकर सुन रहा हूँ। मैं जटायु का बड़ा भाई हूँ। मेरा नाम सम्पाति है॥ २७॥ 'जटायु का भाई हूँ' यह सुनकर वानरों का भय चला गया और मन कुछ प्रसन्न हुआ। सारी बातें कहने के लिए सबने अंगद को अनुमति दी। तब युवराज उसे कथा सुनाने लगा॥ २८॥ हे पक्षिराज, यह अनुपम कथा सुनिये। सूर्यवंश में दशरथ नाम के राजा थे। उनकी बड़ी रानी कौशल्या नाम की सती के गर्भ से रामचन्द्र का जन्म हुआ॥ ३९२९॥ उनकी कैकेयी नाम की दूसरी पटरानी थी, उसके वचनों के कारण राम को वनवासी बनना पड़ा है। पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण को संग लेकर वे वन आये। वन मे ही रावण ने देवी सीता का अपहरण कर लिया॥ ३९३०॥ जटायु ने मार्ग में ही रावण से युद्ध किया। दशानन मूर्छित होकर रथ पर गिर गया। जटायु को अन्याय-युद्ध में मारकर निशाचर रावण सीता को अपने स्थान में ले गया॥ ३१॥ लक्ष्मण के संग रघुपति वन में घूमने लगे और सुग्रीव से मिलकर मित्रता की। सुग्रीव से मित्रता करने के कारण उन्होंने वाली का वध किया और उसका राज्य तथा सम्पत्ति सुग्रीव को दे दी॥ ३२॥ राज्य पाकर

गोखोज प्रमाण करि बिचार करिलो * सीताक नपाइ खुजि विपाङ्गे मरिलो
पूर्ब्बापर कथा कत कहिलो सकल * कहियो तोमार कथा पक्षी महाबल ३४
बिन्ध्यागिरि ओपरत आछा कि कारणे * तुमि कि सीतार वर्त्ता जानाहा आपाने
तेवे पक्षीराज कहियोक विद्यमान * मृतकक येनमते दिया प्राण दान ३५
एहि कहि युवराज थाकिला नमाति * मरिल जटायु निष्ठे शुनिला सम्पाति
तोमार गावत प्रभु पाखा देखो नाइ * कहियोक पक्षीराज आर अभिप्राय ३६
बागरि परिला पाचे तासम्बार माजे * शोके आर्त्त रावे कान्दिलन्त पक्षीराजे
कनिष्ठर सन्तापे देखन्त अन्धकार * महा मर्म्मे तान बिषादर नाहि पारि ३७
हरि हरि प्राण भाइ तोक हरुवाइलो * कोन नो पापर फले देखिते न पाइलो
कैक लागि याओं आवे कोन काम * निरन्तरे नरे डाकि बोला राम राम ३९३८

भ्रातृर विनाश शुनि सम्पातिर शोक

दुलड़ी

एहिमते पाचे कान्दिया सम्पाति किछु सन्धुक्षण भैला।
अङ्गद प्रमुख्ये बानर गणत कथा कहिवाक लैला ॥
जानिलो आमार महाभाग्य भेल देखिलो राम सेनाक।
आमार पूर्ब्बर काहिनी कहओं शुनियोक सबे ताक ॥ ३९३९
गरुड़र पुत्र जटायु सम्पाति सहोदर दुइ भाइ।
जानिबा स्वरूपे एकखान द्वीपे दुयो हन्ते लैलो ठाइ ॥

आनन्दित हो सुग्रीव ने सीता को खोजने के लिए हमको भेज दिया। महाराज ने एक माह की अवधि निश्चित कर दी है। परन्तु सीता को खोजते-खोजते हम तंग आ चुके हैं, वह नहीं मिली है ॥ ३३ ॥ गोपद के समान कण-कण हमने छान मारा है, पर सीता को न पाकर हम संकट में पड़ मरे जा रहे हैं। हमने पूर्वापर सारी बातें बता दी, अब महाबली पक्षी, तुम अपनी बात बताओ ॥ ३४ ॥ तुम इस विंध्यपर्वत पर किस कारण निवास कर रहे हो ? क्या तुम्हें सीता का समाचार ज्ञात है ? तब पक्षिराज, हमसे अभी बताओ, हम मृतक जैसे हो रहे है, हमें इस तरह से प्राणदान दो ॥ ३५ ॥ यों कहकर युवराज अंगद मौन हो गया। 'जटायु सत्य ही मर गया' सम्पाति ने सुना। (अंगद ने पूछा) प्रभु, देखता हूँ तुम्हारे डैने नहीं है। इसका अभिप्राय क्या है, हमें बताओ ॥ ३६ ॥ पक्षिराज सम्पाति खिसककर उनके बीच आ गिरा और शोक से आर्तनाद कर रोने लगा। छोटे भाई के शोक से उसके सम्मुख अन्धकार छा गया, महान् वेदना से उसके विवाद का पार नहीं रहा ॥ ३७ ॥ (वह कहने लगा) हरि हरि, प्राणप्रिय भाई, तुझे मैंने खो दिया। किस पाप के फल से तुझे देख नही पाया ? अब मैं कहाँ जाऊँ, क्या करूँ ? निरंतर सब पुकार-पुकार कर राम-राम कहो ॥ ३९३८ ॥

भाई का देहान्त सुनकर सम्पाति का शोक

इस प्रकार शोक से रोने के बाद सम्पाति कुछ प्रकृतिस्थ हुआ और अंगद आदि वानरों को यह कथा सुनाने लगा। मैं समझ गया कि राम की सेना से मिल पाना हमारा महान् भाग्य है। मैं अपनी पूर्व-कथा सुनाता हूँ, तुम सब लोग सुनो ॥ ३९३९ ॥ गरुड़ के पुत्र जटायु और सम्पाति हम दोनों सहोदर भाई थे। सत्य-सत्य समझ लो

तोहोर यतेक नव्वै कोटि पाखा गजिया हैव सम्पूर्ण ।
एहि बुलि मोक महा ऋषि पाचे गैला चलि तपोवन ॥
ऋषिर वचने जानिलो निश्चय मोहोर मरण नाइ ।
किन्तु बर दुख हैल आसि मोर आहार पानी नपाइ ॥ ३९५२
भाइयो एरि मोछ कंक वा गैलेक पुत्रो मोर न जानय ।
अनन्तरे मुण्ड तुलिया देखिलो आसिल मोर तनय ॥
मोहोर अवस्था देखि पुत्रे पाचे करिल बर बिलाप ।
स्वस्थ हुया बोले आहारक लागि चिन्ता न करिबा बाप ॥ ३९५३
तोमार आगत स्वरूप वचन बोलो करि अङ्गीकार ।
निते सात घटि वेला हैवे पितृ योगाइबो आनि आधार ॥
पुत्र भैले तार पितृक शुश्रूषा अवश्ये करिवे लागे ।
एतेके तोमार आधार योगाइवे पाइलो आसि बर भागे ॥ ३९५४

सुपार्श्वर रावण-आंक सीतार दर्शन विवरण

पद

मोहोर कार्य्यत तार नाहि किछु हेला * आधार योगाइवे निते सात घटि बेला
एक दिना सात घटि निर्वत्तिया गैल * आधार आनिते पुत्र नव घटि भैल ३९५५
पञ्च गज शार्दूल कच्छप नाग चय * आधार देखिया मोर मनत बिस्मय
आपोनार पापे मइ पाखा पुरि भरो * मनत असुखे आमि आहार न करो ५६
असन्तोष देखिया सुपार्श्व गैल डरि * आकुति करय मोर चरणत धरि
आहार खाइयोक बाप न करियो रोष * कथा शुनि पाचे मोर ने देखिबा दोष ५७

सम्पूर्ण रूप से उग आयेगे। यों कहकर महर्षि अगस्त्य तपोवन चले गये। ऋषि के वचनो से हमने निश्चय रूप से समझा कि मेरी मृत्यु नहीं है। परन्तु भोजन-पानी न पाने के कारण मुझे बड़ा दुख हुआ ॥ ५२ ॥ भाई भी मुझे छोड़कर कहाँ चला गया, मेरे पुत्र को भी मेरे सम्वन्ध मे पता नही है। इसके पश्चात् सिर उठाकर देखा तो मेरा पुत्र खड़ा था। मेरी अवस्था देख पुत्र ने बडा विलाप किया। कुछ स्वस्थ होने पर उसने कहा—पिता जी, आप भोजन के लिए जरा चिन्तित न होइये ॥ ५३ ॥ पिताजी, आपसे शपथपूर्वक सत्य वचन कहता हूँ, नित्य सात घटिका समय होते ही मैं आपके लिए प्रचुर भोजन जुटाऊँगा। पुत्र होने पर उसे अपने पिता की सेवा-शुश्रूषा अवश्य ही करनी चाहिए। इस कारण आपको भोजन जुटाने का यह अवसर बड़े भाग्य से प्राप्त हुआ हैं ॥ ३९५४ ॥

सुपार्श्व का रावण और सीता को देखने का वर्णन करना

मेरे कार्यो में पुत्र सुपार्श्व जरा भी अवहेलना नही करता। नित्य सात घटिका समय होते ही मेरे लिए भोजन जुटाया करता है। एक दिन सात घटिका समय बीत गया, भोजन लाने में उसे नौ घटिका हो गयी ॥ ५५ ॥ पाँच हाथी, शार्दूल, नाग-समूह आदि लेकर उसे आते देख मुझे बड़ा विस्मय हुआ। अपने पाप के कारण पंख जलकर मैं मर रहा हूँ। मनस्ताप से मैंने भोजन नही किया ॥ ५६ ॥ मेरा असंतोष देखकर सुपार्श्व डर गया और मेरे चरणों में पड़कर विनती करने लगा। 'पिता जी, भोजन कीजिये, रोष न कीजिये। जब आप सारी कथा सुन लेंगे तो मेरा कोई दोष आपको दिखाई नही पडेगा ॥ ५७ ॥ मेरे विलम्ब का कारण सुनिये। आकाश-मार्ग से लंकेश्वर रावण जा रहा था। एक त्रैलोक्यसुन्दरी नारी आर्तनाद कर रो रही थी।

विलम्ब हुइबार मोर शुनियो कारण * आकाशर पथे याइ लङ्कार रावण
आर्त्त राव करि कान्दे त्रैलोक्य सुन्दरी * रामर भार्य्याक लङ्केश्वरे नेइ हरि ५८
जलचर थलचर भूमित पेलाइ * महाक्रोधे रावणक आमि गैलो धाइ
सीता समे रावणक आनिलोहो धरि * कारुण्य करय राजा करयोर करि ५९
सम्पातिर पुत्र तुमि गरुड़र नाति * व्यापि आछे जगतत तथेर सुख्याति
तोमार वंशर एको नोहो अपराधी * शत्रुर भार्य्याक नेओं केने मोक बाधि ३९६०
क्षत्री हुया रामे मोक मारि नेउक आसि * भार्य्या कि करिबेक तपस्वी बनवासी
एरि दिलो रावण तेखनि चलि गैल * सि कारणे आमार बिलम्ब आजि भैल ६१
पुत्रेर बचने पाचे भुञ्जिलो आधार * भ्रातृर बिरोधे हेन अवस्था आमार
सकले कहिलो यत आदि अन्ते कथा * तुमि सब कि कारणे आसि भैला एथा ६२
रामसेना सम्पातिर शुनिया बचन * बार्त्ता पाया सीतार हरिष भैल मन
अङ्गदे बोलन्त मइ बाली राजा सुत * सीता खुजि फुरो सबे श्रीरामर दूत ६३
मोहोर अङ्गद नाम बोले युवराज * सीता अन्वेषण हे आमार मुख्य काज
आमि आदि करि यत भालुक वानर * जानिवा सकले सेना सुग्रीव रामर ६४
कथा शुनि सम्पातिर हरषित मन * मनत परिल आसि ऋषिर बचन
स्वरूपत होवा यदि राम सेनागण * निश्चय जानिलो मोर सम्पद लक्ष्मण ६५
पुनरपि सम्पातिये बुलिला बचन * अङ्गद प्रमुख्ये शुना सब कपिगण
राम सेना होवे येवे गजिबेक पाखि * नुहि खाइबो सबाको पृथिवी हुइबा साक्षी ६६
एहि बुलि सम्पातिये करिलेक साक्षी * सकले गावर तान गजि आसे पाखि
पाखि देखि सबारो हरिष भैल मन * जय जय शबद करय कपिगण ६७

राम की पत्नी सीता को लंकेश्वर हर कर ले जा रहा था ।। ५८ ।। मैं (आपके लिए जिन्हें ला रहा था उन) जलचर, स्थलचर जीवों को भूमिपर फेंक महा क्रोध से रावण की ओर दौड़ गया। सीता समेत रावण को मैं पकड़ लाया! राजा रावण हाथ जोड़कर करुणापूर्ण विनती करने लगा ।। ५९ ।। तुम सम्पाति के पुत्र, गरुड़ के नाती हो। संसार में तुम्हारी प्रसिद्धि व्याप्त है। तुम्हारे वंश का तो मैं कोई अपराधी नही हूँ। मैं शत्रु की पत्नी को लिए जा रहा हूँ, इसमें तुम बाधा क्यों डाल रहे हो? ।। ३९६० ।। राम यदि क्षत्रिय है, तो वह मुझे मारकर अपनी पत्नी को ले जाये। भला उस तपस्वी वनवासी के लिए पत्नी की क्या आवश्यकता है? तब मैंने रावण को छोड़ दिया, वह तुरंत वहाँ से चला गया। इसी कारण आज मुझे विलम्ब हो गया ।। ३९६१ ।। पुत्र का यह वचन सुनकर मैने भोजन किया। भाई-भाई के विरोध के कारण हमारी यह अवस्था हुई है। हमने आदि-अन्त सारी कथा सुना दी। तुम यहाँ किस कारण आये हो, बताओ ।। ६२ ।। सम्पाति के वचन सुन, सीता का समाचार पाकर राम की सेना को बड़ी प्रसन्नता हुई। अंगद बोला—मैं राजा बाली का पुत्र हूँ, राम के दूत के रूप में हम सब सीता को खोज रहे हैं ।। ६३ ।। मेरा नाम अंगद है, युवराज भी कहलाता हूँ। सीता का अन्वेषण ही हमारा मुख्य कर्म है। मुझे लेकर जितने भालू-वानर हैं, समझ लो कि सभी सुग्रीव और राम के सैनिक है ।। ६४ ।। यह सुनकर सम्पाति का चित्त बड़ा हर्षित हुआ। उसे ऋषि के वचन स्मरण हो आये। वह बोला—सत्य ही यदि तुम लोग राम के सैनिक हो, तब तो मैं निश्चित रूप से समझ गया कि यह मेरे शुभदिन का लक्षण है ।। ६५ ।। सम्पाति पुनः कहने लगा—अंगद आदि सारे कपिगण, सुनो। यदि तुम सब राम की सेना हो तो अवश्य ही मेरे पंख उग आयेंगे। नहीं तो धरती साक्षी है कि मैं सबको भक्षण कर डालूँगा ।। ६६ ।। यह कहकर सम्पाति ने जैसे ही शपथ ली, उसके सम्पूर्ण शरीर में पंख उग आये।

आसिलन्त सुपार्श्व आहार पान लइ * सेनागण देखि वीर आकाशत रइ
सेनार माजत देखे पिता आछे वसि * पाखि गजिवार देखि मैलन्त उल्लासि ६८
तोमार पाखीक देखि हरिष अपार * परम सन्तोषे आजि भुञ्जियो आधार
मन तुष्टे भोजन करिल पक्षीराज * उराव करिल दुयो आकाशर माज ६९
आकाशर उपरे फुरन्त नाना भावे * खानिको प्रयास नाइ बाप पोर गावे
कतो वेलि भ्रमिया आसिल दुयो जन * वापत पुछन्त इटो कँर सेनागण ३९७०
सम्पाति वोलन्त पुत्र शुनियो वचन * सीता खुजि फुरन्त रामर सेनागन
एसम्वाक देखि मइ करिलोहो साक्षी * तेखने गजिल मोर नव्वै कोटि पाखि ७१
अङ्गदे वोलन्त सम्पातिर मुख चाइ * राम कार्य्ये हेला आपोनार कार्य्य नाइ
आग वाढ़ि सुपार्श्वे जुरिलन्त योर हात * राम सेना देखि आसि नमिलेक माथ ७२
एक वोल वोलो वुलिवाक लागे डर * उठा कष्ट देखा येवे तरिते सागर
सागर तरिते केहो न करिवा शङ्का * पिठित चराइया सवाहाङ्के निवो लङ्का ७३
सुपार्श्वर वाणी पाचे शुनि सेना वल * आमाक लङ्काक निवे तोर आछे वल
वोलस उठोक सवाहाङ्के निवे पारो * माज सागरत निया वुरवाइ मारो ७४
शुनिया सुपार्श्वे वोले मने क्रोध करि * सत्ये सत्ये वोलोहो बापर पावे धरि
तुमि यत यत आरो कोटि गुण होक * सवको निवाक पारो पिठित उठोक ७५
एहि वुलि सुपार्श्वे पिठिक पाति दिला * वर वर वीर गण पिठित उठिला
आनो सव सेनागण लोमत धरिल * सवाको पिठित लैया उराव करिल ७६

उसके पंख देखकर सबके मन पुलकित हो उठे। वानरों ने 'जय जय' का नाद किया ॥ ६७ ॥ सुपार्श्व उसी समय भोजन और पानी लेकर आ पहुँचा। सेनाओं को देखकर वह वीर आकाश में ही ठहर गया। उसने देखा सेना के बीच में पिता बैठे हुए हैं। पंख निकले देख, वह परम उल्लसित हो उठा ॥ ६८ ॥ बोला—पिताजी, आपके पंखों को देखकर मुझे बड़ा हर्ष हो रहा है। आप परम संतोष से भोजन कीजिये। मन में बहुत ही प्रसन्न होकर पक्षीराज सम्पाति ने भोजन किया और दोनों आकाश में उड़ान भरने लगे ॥ ६९ ॥ वे आकाश में नाना प्रकार से चक्कर लगाने लगे, बाप-बेटे, किसी के शरीर में कण भर भी थकान नहीं आयी। कुछ देर तक दोनों चक्कर लगाकर लौट आये। वह पिता से पूछने लगा। ये सेनाएँ किनकी हैं ॥ ३९७० ॥ सम्पाति बोला—पुत्र, सुनो। ये राम के सैनिक सीता को खोजते हुए फिर रहे हैं। इन्हें देखकर मैंने शपथ की, तो उसी क्षण मेरे नव्वे करोड़ पंख निकल आये ॥ ३९७१ ॥ अंगद ने सम्पाति की ओर देखते हुए कहा—राम के कार्य की अवहेलना करना आपके लिए उचित नही है। आगे बढ़कर सुपार्श्व ने हाथ जोड़, राम की सेना के समक्ष सिर नवाया ॥ ७२ ॥ उसने कहा—मुझे एक बात कहते हुए भय हो रहा है। यदि इस सागर को पार करने में तुम्हें किसी प्रकार का कष्ट अनुभव हो तो मुझपर सवार हो जाओ। सागर को पार करने में कोई भी शंका न करो। मैं सबको पीठपर चढ़ा लंका में ले जाऊँगा ॥ ७३ ॥ सुपार्श्व की वाणी सुनकर सैनिक बोल उठे—हमें लंका में ले चलने की तुम्हारी कितनी शक्ति है? तुम तो कहते हो कि सबको ले चल सकोगे। पर बीच समुद्र में ले जाकर डुबा मारोगे ॥ ७४ ॥ यह सुनकर सुपार्श्व ने मन में क्रोधित होकर कहा—मैं पिताजी के चरण पकड़कर सत्य-सत्य कहता हूँ, तुम जितने और भी करोड़ों गुने हो तो भी सबको ले चल सकता हूँ। तुम लोग मेरी पीठ पर सवार हो जाओ ॥ ७५ ॥ यह कहकर सुपार्श्व ने अपनी पीठ फैला दी, बड़े बड़े वीर पीठपर सवार हो गये। सेना के और सभी लोगों ने उसके पंखों को पकड़ लिये। सबको पीठपर लेकर उसने उड़ान भरी ॥ ७६ ॥ सेना को लेकर वह आकाश में लीला

सेना लैया आकाशत फुरे लीला करि * सेनागण डरे सुमरन्त राम हरि
जानकी भैलन्त आमासार क्षयङ्कारी * सागर जलत आनि पक्षी राजे मारि ७७
हेन शुनि सुपार्श्व गैया भूमित परिल * अङ्गदक नमि बीरे सेनाक नमिल
सेनागण बोले साधु सम्पातिनन्दन * तयु पराक्रमे आमि तुष्ट भैलो मन ७८
अङ्गद प्रमुख्ये सबे पुछिलन्त काज * तोमार कुशल सबे भैल पक्षीराज
बुलिला सि रावणे सीताक निले हरि * स्वरूप कि मिछा कहियोक दृढ़ करि ७९
एहि बुलि सम्पाति शिखरे चड़िलन्त * लङ्कार गड़क लागि मुण्ड तुलिलन्त
देखन्त लङ्कार माजे अशोक बनत * आछन्त गोसानी सीता शिशपा मूलत ३९८०
बेढ़िया आछन्त तैते राक्षसिनी गणे * जानिलो सीताक सुखे नेदिब रावणे
शिखरर परा नामिलन्त तेतिक्षणे * सम्पातिक देखिया बेढ़िल सेनागणे ८१
सम्पाति बोलन्त शुनियोक कपिगण * सत्य सुरूपत जाना आमार वचन
दुर्ज्जन रावणे सीता आनिलेक हरि * अशोक बनत थैया आछे बन्दी करि ८२
सकले देखिलो आमि पर्ब्बतत बसि * तरुतले बसि आछे अनेक राक्षसी
आनतो नोबोलो मिछा तुमि उपकारी * बिशेषत श्रीराम बंशर अधिकारी ३९८३
आउर उपदेश बोलो शुनियो समस्त * पूर्ब्बक उजाहा एक प्रहरर पथ
लङ्का लागि सेहिसे सम्मुख होवे बाट * चिन्तिलोहो राम कार्य्य गुचिल ललाट ८४
एहि बुलि सबाहाङ्के आश्वास करिया * बाप पो लरिला पाचे आकाश छानिया
पाचे सेनागणे सबे सबातो कहय * साधु साधु सुपार्श्वये सम्पाति तनय ८५
योगाइले आधार षाठि हाजार बरिष * तथापि नभैल तार मने किछु क्लेश
पिठित चड़िलो आमि सबे हृष्ट पुष्ट * आकाशे फुराइ देखि सबे भैलो तुष्ट ८६

कर उड़ने लगा। सेना के भालू-बानर डर के मारे 'राम हरि' स्मरण करने लगे। वे कहने लगे—जानकी हमें मारने वाली है। सागर जल में डालकर पक्षीराज हमें मार डालेगा ॥ ७७ ॥ यह सुनकर सुपार्श्व भूमि पर उतर गया, अंगद को प्रणाम कर उस वीर ने सेना को भी प्रणाम किया। सब कहने लगे, सम्पातिनन्दन तुम धन्य हो। तुम्हारे पराक्रम से हम संतुष्ट हुए हैं ॥ ७८ ॥ सम्पाति ने अंगद से कुशल पूछा। (सबने कहा) पक्षीराज, तुम्हारे कारण सब कुछ कुशल हुआ है। तुमने कहा है कि रावण सीता को हरण कर ले गया है, यह बात सत्य है या मिथ्या, दृढ़तापूर्वक बताओ ॥ ७९ ॥ तब सम्पाति एक चोटी पर चढ़ गया और लंका के गढ़ की ओर सिर उठाकर देखा। उसने देखा कि लंका के अशोक वन में देवी सीता शिशपा वृक्ष के नीचे बैठी हुई है ॥ ३९८० ॥ उन्हें राक्षसियाँ घेरे हुए हैं। उसने सोचा, रावण सीता को खुशी खुशी लौटा नहीं देगा। सम्पाति शिखर से उतर आया, सेना ने उसे चारों ओर से घेर लिया ॥ ८१ ॥ सम्पाति बोला—हे कपिगण, सुनो, हमारे बचन को सत्य-सत्य जानो। दुर्जय रावण सीता को हर लाया है। उसने उन्हें बंदी बनाकर अशोक बन में रख दिया है ॥ ८२ ॥ मैंने पर्वत पर से सब कुछ देखा है। वृक्ष के नीचे अनेक राक्षसियाँ बैठी हुई हैं। मैं दूसरों से भी मिथ्या नहीं कहता, और तुम तो मेरे हितकारी हो। विशेष रूप से श्रीराम के वंश के अधिकारी हो ॥ ८३ ॥ इसके अतिरिक्त मेरा उपदेश सुनो। तुम लोग यहाँ से एक प्रहर का मार्ग पूर्व दिशा की ओर चले जाओ। लंका के लिए वही मार्ग सामने पड़ेगा। इस प्रकार राम कार्य साधन का उपाय चिन्तनकर मैंने तुमसे बताया। तुम्हारा दुर्भाग्य अब मिट चला है ॥ ८४ ॥ यह कह कर सबको आश्वासन दे बाप बेटे दोनों आकाश में पंख फैला वेग से उड़ गये। इसके पश्चात् सभी एक दूसरे से कहने लगे—सम्पाति-पुत्र सुपार्श्व धन्य है ॥ ८५ ॥

जाम्बये बोलन्त शुनियोक सेनागण * विमरिषि बोलो सबे यार येन मन
सम्पातिर कथा किछु न कैवा रामत * सीतार वार्त्ताक पाइले ताहार मुखत ८७
सम्पातिर यश हैव आमासार नाइ * शुनि सेनागणे माते जाम्बवक चाइ
धन्य जाम्बवन्त तुमि बुद्धिमन्त सार * सबे भाल देखो आमि वचन तोमार ८८
अङ्गदे बोलन्त सेबे सेनागण चाइ * वृद्धर वचन मने करिते युवाइ
अङ्गदर जाम्बवर दुहानो वचन * शिरत धरिया लैलो सबे सेनागण ८९
एहिमाते किष्किन्ध्यार भैला समापति * द्विजराज माधव कन्दलि निगदति
शुनिलाहा सामाजिक रामर चरित्र * नाना रसे रसवन्त परम पवित्र ३९९०
आरो शुनि हुइयो सबे मनत सन्तोष * किन्तु बढ़ा टुटा न धरिवा गुण दोष
बाल्मीकि रचिला शास्त्र गद्य पद्य छान्दे * ताहाक विचार आमि करिया प्रवन्धे ९१
आपोनार वुद्धि अर्थ यिमत वुजिलो * सङ्क्षेप करिया ताक पद बिरचिलो
समस्त रसक कोने जानिवाक पारे * पक्षी सब उरय येन पखा अनुसारे ९२
कविसब निबन्धय लोक व्यवहारे * कतो निज कतो लम्भा कथा अनुसारे
देववाणी नुहि इटो लौकिक हे कथा * एतेके इहार दोष न लैवा सर्व्वथा ९३
रामर चरित्र बुलि तरियो संसार * अलस त्यजिया राम बोला वारे वार ३९९४

॥ इति किष्किन्ध्या काण्ड समाप्त ॥

उसने साठ हजार वर्ष पिता का भोजन जुटाया, तथापि उसके मन मे कुछ कलेश नहीं हुआ। हम सभी हृष्ट-पुष्ट वानर-भालू उसकी पीठ पर सवार हुए। उसने हमें आकाश मे घुमाया, यह देख हम सभी संतुष्ट हुए ॥ ८६ ॥ जाम्बवन्त ने कहा—हे सेना के लोगो, सुनो ! मैं सोच-विचार कर कह रहा हूँ तुम भी सोचकर अपनी इच्छा के अनुसार करो। सम्पाति की कथा राम से कुछ भी न बताना कि हमें सीता की वार्ता उसी के मुँह से मिली है ॥ ८७ ॥ इससे सम्पाति का यश होगा, हमारा नही; यह सुनकर सबने जाम्बवन्त की ओर देखते हुए कहा—जाम्बवन्त तुम धन्य हो। बुद्धिमानों मे श्रेष्ठ हो। तुम्हारा कथन ही हमारे विचार से सबसे अच्छा है ॥ ८८ ॥ अंगद ने सभी सेनाओं की ओर देखते हुए कहा—वृद्ध के वचन मानना उचित है। अंगद और जाम्बवन्त, इन दोनों के वचन सेना के हम सबने शिरोधार्य कर लिया, ॥ ८९ ॥ यही पर किष्किन्ध्या कांड की समाप्ति हो रही है। इसका वर्णन द्विजराज माधव कन्दली कर रहे है। हे सामाजिक गण, तुम सबने राम का चरित्र सुना। यह नाना रसों से रसपूर्ण परम पवित्र है ॥ ३९९० ॥ आगे भी सुनकर मन में सन्तुष्ट होओ, पर इसमें यदि कोई त्रुटि हो तो उस दोष पर दृष्टि न देना। वाल्मीक ने गद्य-पद्य छन्द में इस रामायण शास्त्र की रचना की है। उसी का विचार-चिन्तनकर हमने यथा-नियम अपनी बुद्धि के द्वारा जैसा-अर्थ समझा, संक्षेप कर पदो की रचना की। सभी रसों को कौन जान सकता है जैसे—पक्षी अपने-अपने पंखों के अनुसार ही उड़ा करते है ॥ ९१-९२ ॥ उसी प्रकार कविगण लोक-व्यवहार के अनुरूप ही कभी अपनी (कल्पना से) और कभी (शस्त्रों, जन-समाज मे प्रचलित कथाओं आदि से) प्राप्त कथाओं द्वारा अपनी-अपनी रचनाएँ किया करते है। यह देववाणी (संस्कृत) की रचना नहीं है, लोक-भाषा में रचित कथा है, अतः इसके दोषों को सर्वथा ग्रहण न करो ॥ ९३ ॥ यह राम का चरित्र (-विषयक कथा) है ऐसा समझकर संसार से तर जाओ; आलस्य छोड़कर बार-बार 'राम, राम' कहो ॥ ३९९४ ॥

॥ किष्किन्ध्या काण्ड समाप्त ॥

सुन्दरा काण्ड

दुलड़ी

नमो नारायण बिघिनि खण्डन रघुर नन्दन राम ।
सहस्रेक बाहु सहस्रेक शिर यार सहस्रेक नाम ॥
द्वापर सत्यक पालिया राघव सीता समे गैल बन ।
बोलन्त कन्दलि आन गति नाइ रामर दुइ चरण ॥ ३९९५

दक्षिण सागरर तीरत अङ्गद आदिर मन्त्रणा

पद

प्रणामिलो राम तिनि त्रैलोक्यर नाथ * निशाचर रावणक बधिला लङ्कात
सागरत सेतुबन्ध बालीर मरण * माधवे भणिला श्रीरामर चरण ९६
सुन्दर श्रीरामचन्द्र सुन्दर लक्ष्मण * सुन्दर ये सुग्रीव सुन्दर कपिगण
सुन्दर जानकी सीता जगतर आइ * सुन्दराकाण्डत किछु असुन्दर नाइ ९७
सम्पातिर बचनत खण्डिल बिषाद * कौतुके बानरे करिलन्त सिंहनाद
सबे सैन्य लैया आवे अङ्गदये बीरे * दक्षिण सागरे जाय उत्तरर तीरे ९८
सबाको सम्बुधि मातिलन्त युवराज * कमन महन्ते हित चिन्तिबेक काज
कोने दिबे गियातिक अभय दक्षिणा * एकडेवे शत प्रहरर पथ जिना ९९

विघ्न-बिनाशक, रघुनन्दन राम, जिनकी सहस्रों भुजाएँ, सहस्रों मस्तक हैं तथा जिनके सहस्रों नाम हैं, उन नारायण को नमस्कार है। पिता के सत्य का पालन करते हुए राघव सीता के साथ वन में गये। माधव कन्दलि कहते है, राम के दोनों चरणों को छोड़ अन्य गति नही है ॥ ३९९५ ॥

दक्षिण सागर के तट पर अंगदादि की मंत्रणा

जिन्होने लंका में निशाचर रावण का वध किया उन त्रिलोक-नाथ राम को मैं प्रणाम करता हूँ। बाली की मृत्यु के पश्चात् जिन्होने सागर पर सेतुबंध किया; माधव कन्दलि उन्हीं श्रीराम के चरणों का वंदन करते हुए इसका वर्णन कर रहे हैं ॥ ९६ ॥ श्री रामचन्द्र सुन्दर है, लक्ष्मण सुन्दर है, सुग्रीव सुन्दर है, कपिगण सुन्दर है, जगन्माता जानकी सीता सुन्दर है, इस सुन्दराकांड में कुछ भी असुन्दर नही है ॥ ९७ ॥ सम्पाति के वचनों से वानरों का विषाद मिट गया और वानरों ने कौतुक से सिंहनाद किया। वीर अंगद सारी सेना को ले दक्षिण सागर के उत्तरी तट पर आये ॥ ९८ ॥ सबको सम्बोधित कर युवराज अंगद ने कहा—वह कौन महान पुरुष है जो हित-चिन्तन करेगा? सम्बन्धियों को अनुग्रह कर कौन अभय देगा? एक छलाँग में कौन एक सौ प्रहर का पथ पार कर सकेगा? ॥ ९९ ॥ जो वीर लंकानगरी जा सकता है, वह चन्द्र की

यिटो बीरे याइवे पारा लङ्कार्य नगरी * चन्द्रेरो रोहिणी आनिवाक पारा हरि
बासवे राखन्त यदि करे बज्र धरि * स्वर्गर अमृत आनिवाक पारा हरि ४०००
आपदे मगन भैल ज्ञातिक उद्धार * कीरिति थाकक यावे चन्द्र दिवाकर
अङ्गदर वाणी शुनि बानर तवध * गुरुतर भावत वचन निशबद ४००१
पुनरपि अङ्गदे बुलिलन्त वाक * कमन महन्ते आवे नामाता आमाक
सैन्यर मध्यर हन्ते प्रचण्ड प्रभाव * वर वर बीर सवे चालिलन्त गाव २
कर योरे अङ्गदत बिनय वदति * ऐकेके बोलन्त यार यिमान शकति
प्रथमते गय बीरे दिला समिधान * डेवे याइवे पारो दश योजनर मान ३
गवाक्षे बोलन्त आपोनार वल यत * डेवे याइवे पारो कुरि प्रहरर पथ
गवये बोलन्त याइबो योजन तिरिश * सरवे खङ्गाइल पथ योजन चल्लिश ४
पञ्चाश योजन पथ गन्धमाहादन * मैन्द्य बोलन्त याइबो षाठियो योजन
द्विविदे खङ्गाइल पथ योजन सत्तरि * आशी प्रहरर पथ सुषेण ये हरि ५
नले बुलिलन्त आपोनार वल यत * डेवे याइवे पारो नब्बै योजनर पथ
तारे बिनावन्त वीर अङ्गदत गइ * दुइ अधिक याइते पारो योजन नब्बै ६
नीले बुलिलन्त आत्म शकति यतेक * एक मन्द याइते पारो योजन शतेक
ब्रहमार तनय जाम्बवन्त बृद्ध धागि * किनो गोटा गुटि धोर कवन्ताक लागि ७
बनत आछाहा सबे युवत वानर * दिग्गज समान सवे शरीर डाङ्गर
मोहोर समान बृद्ध नाहि निरन्तर * आमि कथा कओं शुना युवत कालर ८
नारायणे यैसानि वलिक छलिलन्त * दशोदिश पूरिया वामन उजाइलन्त
जटायु सहिते आमि प्रतिज्ञाक पूरि * तिनि वार प्रणामिलो काया कुरि कुरि ९

रोहिणी का भी हरण कर ला सकता है। यदि हाथ में वज्र धारण कर रखवाली करता रहे तो भी वह पुरुष स्वर्ग से अमृत हरण कर ला सकता है ॥ ४००० ॥ वह आपत्ति में डूबे हुए आत्मीयों का उद्धार करे। जब तक चन्द्र-दिवाकर हैं, तब तक उसकी कीर्ति रह जाये। अंगद के वचन सुनकर वानरगण स्तब्ध रह गये। गंभीर भाव में मग्न होने के कारण उनके मुखसे कोई वचन नही निकला ॥ ४००१ ॥ अंगद ने तव पुनः कहा—कौन महान् पुरुष आगे आते हो, हमसे क्यों नही बतलाते ? तब सेना के मध्य से प्रचंड प्रभाव वाले बड़े-बड़े वीर उठ खड़े हो गये ॥ २ ॥ अंगद के सम्मुख हाथ जोड़कर विनयपूर्वक जिसकी जितनी शक्ति थी, एक एक कर वे उसका वर्णन करने लगे। पहले वीर गय ने अपनी शक्ति का वर्णन करते हुए कहा—एक छलांग में मैं लगभग दस योजन जा सकता हूँ ॥ ३ ॥ गवाक्ष बोला—मेरा अपना जो बल है उसके अनुसार मैं एक छलांग में बीस प्रहर का मार्ग पार कर सकता हूँ। गवय बोला—मैं तीस योजन जा सकता हूँ। शरभ ने चालीस योजन जाने का दावा किया ॥ ४ ॥ गंधमादन ने बताया, पचास योजन, मयन्द ने कहा—मैं साठ योजन जा सकता हूँ। द्विविद ने सत्तर योजन, और वानर सुषेण ने अस्सी प्रहर का मार्ग जाने का दावा किया ॥ ५ ॥ नल ने अपना जितना बल है बताया, कहा—एक छलांग में मैं नब्बे योजन का मार्ग जा सकता हूँ। तार ने वीर अंगद से कहा—मैं बानवे योजन जा सकता हूँ ॥ ६ ॥ नील ने अपनी शक्ति का वर्णन करते हुए कहा, मैं निन्यानवे योजन जा सकता हूँ। ब्रह्मा के पुत्र प्रवीण जाम्बवन्त ने कहा—हर एक को अपना बल वर्णन करने की आवश्यकता भला क्या है ? ॥ ७ ॥ दिग्गज जैसे विशाल शरीर वाले युवा वानर वन में रह रहे हो। मेरे समान तो वृद्ध नही हुए हो। मैं अपने युवाकाल की कथा सुनाता हूँ सुनो ॥ ८ ॥ जब नारायण ने बलि की छलना की, वामन ने दसों दिशाओं

एभो बृद्ध भैलो बल कटालि विचारो * एक मन्द शतेक योजन याइते पारो
तथापि कार्य्यर न भैलन्त समापति * एवे बुलियोक यार यिमान शकति ४०१०
हनुमन्ते सबारो बचन आकलिया * नमाति थाकिला काण मुण्ड न लारिया
युवराजे बोलन्त आसज भैल काज * निशबद भैल सबे गियाति समाज ४०११
आमितो याइबाक पारो शतेक योजन * संशय देखोहो मने पुनरागमन
सबे ज्ञाति गणे अनुमति दिया मोक * राम कार्य्य साधन्ते येहेन युबाइ होक १२
जाम्बवन्ते बोलन्त भाल कथार प्रसन * भृत्य आछन्ते स्वामी बिदुर गमन
तोमाक आमरा सबे लङ्काक पठाइ * इठाइ थाकिया कार उरुवाइबो छाइ १३
तुमि लङ्का गैले येवे मिलय प्रमाद * आमाक दण्डिब राजा बचन संबाद
धरम पुरुष तुमि कपि कटकरे * नाव टल बल करे बिना काण्डाहारे १४
युवराज आपुनि जानिया राज धर्म्म * तोमाक राखिवे सबे हेन योग्य कर्म्म
तुमि एरि याइबा युवराज दण्डधरे * मइ बुढ़ा बानरे कोने कार बोल करे १५
खुजि पाइलो यिबा याइबे एके डेवे लङ्का * निशबद थाका सबे एरियोक शङ्का
सन्निटते पाया ये दूरत नाइ काज * रङ्गे ढङ्गे थाका सबे गियाति समाज १६
बृद्ध जाम्बवन्तक छवाल हुया भाढ़ा * बुढ़ा शालिखार ये चक्षुर भ्रूव काढ़ा
आखरेक मातो येवे आमाक न भङ्गा * दिने शतबार आइते याइते पारा लङ्का १७
बाली सुग्रीव दुयोबीर चमत्कार * आपोनातोधिक बल प्रशंसे तोमार
सबे हन्ते थाकियोक शङ्का परिहरि * खुजि पाइलो यियाबेक लङ्का ये नगरी १८

को घेरकर विराट-रूप धारणकर लिया, उस समय मैं और जटायु दोनों ने प्रतिज्ञा कर उनके विराट शरीर के चारों ओर तीन बार चक्कर लगाकर प्रणाम किया ।। ९ ।। अब तो मैं वृद्ध हो गया तथापि अपने बल का परिमाण समझते हुए कह सकता हूँ कि एक छलांग में निन्यानबे योजन जा सकता हूँ । परन्तु उससे भी तो कार्य सम्पूर्ण नहीं हो सकता । अब बतलाओ किसकी कितनी शक्ति है ? ।। ४०१० ।। हनुमान सबके वचन सुनकर मनमें चिन्तन करते हुए, कान-सिर बिना हिलाये मौन रहे । युवराज बोले—सभी आत्मीय जन मौन हो गये हो, यह तो अनुचित है ।। ११ ।। मैं तो सौ योजन जा सकता हूँ, परन्तु पुनरागमन में मुझे संशय है । रामकार्य साधन हेतु जैसा उचित हो वह करने हेतु सभी कुटुम्बीजन मुझे अनुमति दें ।। १२ ।। जाम्बवन्त ने कहा—यह तो अच्छा प्रश्न किया । भला भृत्य के रहते क्या स्वामी दूर जा सकता है ? हम सब तुम्हें लंका भेजकर यहाँ किसकी खाक छानते रहेंगे ? ।। १३ ।। तुम्हारे लंका जाने पर यदि कुछ अनिष्ट हो जाये तो राजा संवाद पाते ही हमें दंडित करेंगे । तुम कपि-सेना के धर्म-पुरुष हो । बिना कर्णधार के नाव टलमलाने लगती है ।। १४ ।। युवराज, तुम स्वयं राज-धर्म जानते हो । तुम्हें यहीं रखना है, यही योग्य कर्म है । युवराज तुम शासन-दंड छोड़कर चले जाओगे तो मुझ बूढ़े की बात भला कौन मानेगा ? ।। १५ ।। एक ही छलांग में जो लंका जा सकता है मैने उसे खोज पाया है । सब लोग मौन रहें शंका छोड़ दे । उसे नजदीक ही पा लिया है, दूर जाने की आवश्यकता नहीं है । आत्मीय-कुटुम्वी जनो, सब रंग-उल्लास में रहो ।। १६ ।। शिशु होकर भी इस वृद्ध जाम्बवन्त को ठगना चाहते हो । इस बूढ़े शालिख (साथी) की आँखों की दृष्टि तेज है एक शब्द कहता हूँ, हमसे बहाना न करो । तुम दिन में सौ बार लंका आ-जा सकते हो ।। १७ ।। वाली सुग्रीव दोनों वीर अपने से अधिक तुम्हारा बल देख चमत्कृत हो प्रशंसा किया करते है । सब लोग शंका छोड़ दें । जो लंका जायेगा उस पुरुष को मैंने खोज लिया है ।। १८ ।। मारुति की ओर देखकर जाम्बवन्त

मारुतिक चाहिया बोलन्त जाम्बवन्त * स्वस्थाने परोक्षे कोने सन्तोषक हन्त
प्रस्तावत नमाति केने धरियाछा चूक * उपेक्षा करियो केने ज्ञाति ये बन्धुक १९
बाढ़ि हनुमन्ते जुरिलन्त योर हात * बृद्ध जाम्बवन्त बुलि नमिलन्त माथ
याइबो लङ्कापुरी साधिबोहो प्रभु कर्म्म * कोन जने कहिबे मोहोर जाति धर्म्म ४०२०

हनुमन्तर जन्म विवरण

जाम्बवे बोलन्त ओवा ज्ञातिक आकला * देव अपेस्वरा काछिलन्त कुन्ती कला
तेहे आदिशापे आसि भैलन्त बानरी * कुञ्जर राजार जीक बिहाला केशरी ४०२१
मानुषर रूप धरि रूपे मनोहरे * सखि समे शिरस्नान करिला सागरे
नानान बिनोद थान मलय शिखरे * रूप देखि बायुक पीड़िल काम शरे २२
आलिङ्गिया सुन्दरीक धरिलन्त कोले * मनोमय मारुत आछिला काम भोले
अञ्जना बोलन्त शान्त पुण्य भैल छन * यावे नाहि शपो दरशियो कोन जन २३
करजोरे मारुत आगत भैल थिव * शङ्का परिहरा आसि जगतर जीव
आमार सङ्गमे अधर्मक नाहि डर * पुत्रेक हैबेक गरुड़र समसर २४
बीर गणितातो गणिबेक सातो आगे * गरुड़र मोहोर सदृश हैब बेगे
अदभुत वेगवन्त हैब महाबली * पर्ब्बतक उफारिया हानिबेक दलि २५
एहि बुलि बायु पाचे भैला अन्तर्द्धान * अञ्जनार गर्भत बाढ़िल हनुमान
केशरीर क्षेत्रे सर्ब्ब जनत बिदित * उपजि देखिला बीरे आदित्य उदित २६

ने कहा—स्वस्थान में परोक्ष रहकर क्यों सन्तोपी वने हुए हो ? प्रस्ताव पर कुछ न बोलकर अपने आत्मीय कुटुम्बियों की उपेक्षा कर, क्यों कोने में बैठे हुए हो ? ॥ १९ ॥ तब हनुमान ने आगे बढ़कर हाथ जोड़, वृद्ध जाम्बवन्त को सिर नवाया। कहा, मैं लंकापुरी जाकर प्रभु का कार्य साधन करूंगा। परन्तु कौन व्यक्ति मेरे जाति-धर्म के सम्बन्ध मे बतायेगा ? ॥ ४०२० ॥

हनुमान का जन्म-वृत्तान्त

जाम्बवन्त ने कहा—अपने इन आत्मीय जनों को देखो। पूर्वकाल में, कुन्तीकला नामकी देव-अप्सरा थी। वही शाप-वश आकर बानरी हुई। कुन्जर राजा की उस वेटी को केशरी ने विवाह किया ॥ २१ ॥ वह परम मनोहर मानवी रूप धारणकर सखी समेत सागर में जाकर जल क्रीड़ा करने लगी। इसके पश्चात् मलय शिखर पर क्रीड़ाएँ करने लगी। उसका रूप देखकर पवन काम-बाण से पीड़ित हो उठे ॥ २२ ॥ पवन ने उस सुन्दरी को गोद में आलिंगन कर लिया। मनोमय पवन देव काम-मग्न थे। अंजना बोली—आज मेरा सतीत्व का पुण्य नष्ट हो गया। मैं अभिशाप न दे दूँ, इसलिए जो भी हो आकर सम्मुख दर्शन दो ॥ २३ ॥ हाथ जोड़ पवन उसके सामने खड़े हो गये। कहा—तुम शंका छोड़ दो, मैं संसार के प्राण हूँ। मेरे साथ संगम मे अधर्म होने की आशंका नही है। तुम्हारा पुत्र गरुड़ तुल्य होगा ॥ २४ ॥ वीरों में भी उसकी गणना सबसे आगे होगी; वह वेग में मेरे और गरुड़ के समान होगा। वह अद्भुत वेगवान महाबली होगा। पर्वत को उखाड़कर फेक मारेगा ॥ २५ ॥ यह कहकर पवन अन्तर्हित हो गये। अजना के गर्भ में हनुमान बढ़ने लगे। यह सर्वजन-विदित है कि हनुमान ने केशरी के क्षेत्र में जन्म लेते ही सूर्य को उगते हुए देखा ॥ २६ ॥ यह सिन्दूरी फल खाने में अच्छा है, कहकर वे उसे पकड़ने के लिए धावित हुए।

सिन्दुरीया फल गुटि भक्षिबाक भाला * एहि बुलि आदित्यक आनिबाक धाइला
अनेक योजन पथ गगने चढ़िला * प्रचण्ड किरण लागि शिखरे परिला २७
शिखरे परिया भागि गैल हनुबाम * सिकारणे भैल हनुमन्त हेन नाम
सकले बानरे बुलिलेक स्तुति बाक * राखा बायु तनय जातिर काण नाक २८
स्तुति करिलेक येवे बानर भालुके * दशगुण तेज सहस्रेक गुण बुके
बाढ़िते लागिला हनुमन्त बीरबर * पूर्णिमा दिवसे येन सम्पूर्ण सागर २९
असम्भाव्य हात पावे समुद्रर कूले * आकाशर मेघ खण्ड खण्ड ये लाङ्गुले
खलखलि हासिलन्त हरिष प्रचुर * एक एक हासित तबध देवासुर ४०३०
वृद्ध पात्रगणक गै प्रणामि आदरि * शङ्का परिहरा याइबो लङ्काये नगरी
शुनियोक सबे मोर बाप येन वीर * प्रसिद्ध काहिनी कहो बीर केशरीर ४०३१
गन्धमादन हन्ते डेव करिलन्त * गोकर्ण गिरिर शिखरत परिलन्त
आछय प्रभास तीर्थ दक्षिण सागरे * ताते ऋषि सबे स्नान करे निरन्तरे ३२
शङ्खधवल नामे दिग्गजेक आइल * अनेक ऋषिक तंते मारिया पेलाइल
एकदिना भरद्वाज स्नानिबाक यान्त * हस्ती खेदि आने ताक बापे देखिलन्त ३३
डेव दिया पिठित परिला कपिराज * नखे फुलि दुइ चक्षु करिलन्त बाज
ताहार दशन दुइ लैलन्त उपारि * कुम्भस्थले बसाइल दशनर बारि ३४
परिल दिग्गज गोट केशरीर हाते * भरद्वाज ऋषिक राखिला अव्याहते
सबे ऋषि मिलिया बापक दिलाबर * पुत्रेक हैबेक गरुड़र समसर ३५
बीर गणितात गणिबेक सातो आगे * गरुड़र बायुर सदृश हैब बेगे
जाम्बवन्ते मोहोर कहिला जन्मकथा * कोटि योजन को याइबो नाइ अन्यवथा ३६

आकाश में अनेक योजन मार्ग ऊपर चढ़ गये, अन्त में प्रचण्ड किरणों के कारण शिखर पर गिर पड़े ।। २७ ।। शिखर पर गिरकर इनकी बायें हनु (ठोढ़ी) की हड्डी टूट गयी। इसी कारण इनका नाम हनुमन्त पड़ा। सभी बानरगण उनकी स्तुति करने लगे—हे पवनसुत, जाति-नाक बचाओ ।। २८ ।। जब बानर-भालुओं ने इस प्रकार स्तुति की, तो उनका तेज दस गुना बढ़ गया, हृदय की शक्ति सहस्र गुना बढ़ गयी। पूर्णिमा के दिन जिस प्रकार समुद्र बढ़ने लगता है, वीरवर हनुमन्त उसी प्रकार बढ़ने लगे ।। २९ ।। उनके असंभाव्य हाथ-पैरों से समुद्र का किनारा और पूँछ से आकाश के मेघ खंड-खंड होने लगे। वे बहुत हर्ष से खल-खल अट्टहास करने लगे, उनके एक-एक अट्टहास से देव-असुर स्तब्ध हो उठे ।। ४०३० ।। उन्होंने वयोवृद्ध व्यक्तियों को आदर-पूर्वक प्रणामकर कहा—तुम लोग शंका छोड़ दो, मैं लंका नगर जाऊँगा। मेरे पिता जिस प्रकार वीर थे, उन वीर केशरी की मैं कथा सुनाता हूँ, सुनो ! ।। ३१ ।। केशरी ने गंधमादन से छलांग लगायी तो जाकर गोकर्ण गिरि के शिखर पर पहुँच गये। दक्षिण-सागर-तट पर प्रभास तीर्थ है, जहाँ ऋषिगण निरन्तर स्नान किया करते हैं ।। ३२ ।। वहाँ शंख धवल नाम के एक दिग्गजने आकर अनेक ऋषियों को मार डाला। एक दिन मेरे पिता ने देखा, भरद्वाज ऋषि नहाने जा रहे है और वह हाथी उन्हें खदेड़े आ रहा है ।। ३३ ।। कपिराज कूदकर उसकी पीठपर चढ़ गये, अपने नाखूनों से उसकी आँखें निकाल ली और दोनों दाँत उखाड़ लिये। उन्हीं दाँतों से उसके कुम्भस्थल पर आघात किया ।। ३४ ।। केशरी के हाथ वह दिग्गज मारा गया; उन्होंने भरद्वाज ऋषि की रक्षा की। सभी ऋषियों ने मिलकर उन्हें वर दिया, तुम्हारा पुत्र गरुड़ के समकक्ष होगा ।। ३५ ।। वीरों में भी वह सबसे प्रमुख होगा। वेग में वह गरुड़ और पवन के सदृश होगा। जाम्बवन्त ने मेरी जन्म-कथा सुनायी है। मैं कोटि योजन भी जा

उदय गिरिर हन्ते सूर्य समे याइवो * गोसाइक जिनिया वेगे अस्तगिर पाइवो
मोहोर डेवत वसुमती याइवे तल * पर्व्वतक चड़ियो गैया गियाति सकल ३७
एतेक वचन येवे शुनिल वानरे * तेखने चरिल गैया पर्व्वत शिखरे
शिखरे चड़िल गैया वीर हनुमान * गिरि टलवल करे नसहे सन्ध्यान ३८
सिहे येन करे मृग चिपिल सकल * पातालर हन्ते आसि निकलिल जल
अमृततोधिक इटो कथा रामायण * बोला राम राम सवे समासद् जन ३९

झुमुरी

आशीर्व्वाद करियोक * राम मने धारियोक
दुर्गतित तरियोक * अचिन्तात थाकि योक ४४४०
अन्तरीक्ष गमने * येन झाण्टे पवने
सीताक कौतुक मने * पाइवो मइ दरिशने ४४४१
अङ्गदत यत भय * शुना ज्ञाति समस्तय
एरियो संशय चय * करियोक जय जय ४०४२

हनुमन्तर लङ्का यात्रा आर सुरसा आषारिकार साक्षात्

पद

अङ्गद जाम्बव मैन्द्य गवाक्ष गवय * केशरी पनस नल नील समस्तय
सवे हन्ते वोले वापु तुमि नासा नावे * आमि व्रत करिया थाकिवो एके पावे ४३
विचित्र पुष्पर माला एक दिल गढ़ि * आशीर्व्वाद करिलन्त सुमंगल पढ़ि
दुइ हात पाति हनुमन्ते ताक लैल * लङ्काक याइवाक हनुमन्त साजु भैल ४४

सकता हूँ, इसमें अन्यथा नहीं है ॥ ३६ ॥ मैं सूर्य के संग उदयगिरि से चलूँगा और सूर्य देव को भी अपने वेग से पराभूत कर अस्तगिरि तक पहुँच जाऊँगा। मेरी छलांग से वसुधा दब जायेगी, इसलिए बंधुओ, तुम सब पर्वत पर चढ़ जाओ ॥ ३७ ॥ वानर यह सुनकर तत्क्षण पर्वत-शिखर पर चढ़ गये। उनका भार सह न सकने के कारण पर्वत टलमल-टलमल करने लगा ॥ ३८ ॥ मानो सिंहने आकर पंजों से मृग को दबा लिया हो। हनुमान के दबाव से धरती धँसने के कारण पाताल से जल निकलने लगा। यह कथा-रामायण अमृत से भी अधिक मधुर है। ऐसा समझकर सभी सभासद जन राम-राम कहो ॥ ३९ ॥ हनुमान बोले—आप सभी मुझे आशीर्वाद दें और रामचन्द्र का ध्यान किये रहें। इस प्रकार आप सभी दुर्गति से तर जायेंगे, आप सभी निश्चिन्त रहें ॥ ४०४० ॥ पवन जैसी तीव्र गति से चलता हुआ मैं आकाश-मार्ग से जाऊँगा और सीता जी के दर्शन पाऊँगा ॥ ४१ ॥ अंगद जी आप सभी आशंका छोड़ दीजिये, हे बांधवो, सुनो, सभी संशय-भय छोड़ दो और जय-जय कहो ॥ ४०४२ ॥

हनुमान की लंका-यात्रा तथा सुरसा और छाया-ग्राहिणी आषारिका राक्षसी से भेंट

अंगद, जाम्बवन्त, मयन्द, गवाक्ष, गवय, केशरी, पनस, नल-नील आदि सबने हनुमान से कहा—हे हनुमान, आप जब तक नहीं लौटेंगे तब तक हम सभी एक पैर से व्रत धारण किये रहेंगे ॥ ४०४३ ॥ उन सबने फूलों की एक विचित्र माला बना दी और

दुलड़ी

राम लक्ष्मणक सुग्रीव बीरक करिया येन सतकार।
वायु ये बापक अञ्जना मावक प्रणामिला सातवार ॥
केशरी चरण शिरोगत करि त्रिदश देव धियाया।
महेन्द्र शिखरे जन्ताया बसिला लङ्कार दिशक चाया ॥ ४५
जाज्ज्वल्य समान दुइ चक्षु ज्वलय मङ्गल बुधर वर्ण।
पाच दुइ पाव सम्भव करिया सङ्कोचित दुइ कर्ण ॥
सागर लङ्घिया डेव करिलन्त आपोन गावर बले।
सकले गिरिये टलबल करे येन देखि याइ तले ॥ ४६
वृक्षसब यत वायुर बेगत लरिल बीरर तुले।
नक्षत्रर पथ जिकमिक करे नानान् बिचित्र फुले ॥
टाब टुब करि सागर माजत बृक्ष सब परे शिल।
जाया जन्तुमाने त्रासत पलाइ प्रलय काल मिलिल ॥ ४७
मत्स्य ये मगर नागे हुलस्थूल हेरासि पाइले गरुड़े।
गहीन गम्भीर जलत पशिल पातालक गैल बुरे ॥
हनुमन्त वीर शरीर बेगत सागर जल उल्लास।
पर्ब्वत सदृश ढौ उठलय निर्घात सम आस्फाल ॥ ४८
हनुमन्त बीर लङ्काक याहन्ते मारुत पथ आकाशे।
दीघल ये त्रिश योजन चलिया दश योजनर पाशे ॥
हेन अदभुत जनक देखिया विस्मय सकल जने।
गगने मेघ ये खण्ड खण्ड भैल शरीर बेगे पवने ॥ ४९

सुमंगल वचनों का उच्चारण करते हुए आशीर्वाद दिया। हनुमान ने हाथ फैलाकर उसे ले लिया और लंका जाने के लिए उद्यत हो गये ॥ ४४ ॥ हनुमान ने राम-लक्ष्मण, वीर सुग्रीव को सत्कारपूर्वक प्रणाम किया तथा पिता पवन और अंजना माता को सात बार प्रणाम किया। केशरी के चरणों का ध्यान करते हुए, देवों का स्मरण किया तथा लंका की ओर दृष्टि डालकर महेन्द्र पर्वत के शिखर पर बलपूर्वक बैठ गये ॥ ४५ ॥ उनके दोनों नेत्र मंगल-बुध ग्रहों जैसे उज्ज्वल हो चमक उठे। दोनों पावों को पीछे मोड़कर, दोनों कानों को संकुचित कर, अपने शरीर की सम्पूर्ण शक्ति लगाकर सागर लाँघने हेतु छलांग लगा दी तो समूचा पर्वत काँप उठा, ऐसा लगा मानो वह नीचे दबता जा रहा है ॥ ४६ ॥ वीर हनुमान के साथ सभी वृक्ष पवन-वेग से उखड़कर उड़ चले। उनके विचित्र फूल मानो नक्षत्रों का मार्ग जैसे जगमगाने लगे। वृक्ष और शिलाएँ टप्-टप् कर समुद्र में गिरने लगीं। सभी जंगली जानवर प्रलयकाल आया समझकर संत्रस्त हो भागने लगे ॥ ४७ ॥ मत्स्य, मगर और नागों में खलबली मच गयी कि कहीं गरुड़ तो नहीं आ पहुँचा। वे सारे जल-जन्तु गहरे पानी में चले गये और डुबकी लगा पाताल में प्रवेश कर गये। वीर हनुमान के शरीर के वेग से समुद्र का जल उछल उठा, मानो बज्राघात से पर्वत के समान तरंगें उछलने लगीं ॥ ४८ ॥ वीर हनुमान के आकाश में पवन-पथ से लंका मे जाते समय तीस योजन मार्ग को दस योजन की भाँति अनायास पार कर जाते थे। ऐसे अद्भुत जन को देखकर सभी लोग विस्मित हो उठे। हनुमान के शरीर के वेग से जो पवन चला उससे आकाश के मेघ खंड-खंड हो गये ॥ ४९ ॥ देवताओं ने कहा—हे नागमाता सुरसा, सुनो। लंका

त्रिदशे बोलन्त कहिरा सुरसा शुनियो नागर माता।
हनुमन्त वीर लङ्काक याहन्ते पथत विघिनि पाता ॥
तोमार मायात कमन बुद्धिये किमते एराया यान्त।
तेवेसे जानिया वायुर नन्दन राम कार्य्य साधिवन्त ॥ ४०५०
एतेक वचन शुनिया सुरसा पातिले राक्षसी माया।
सागर मध्यत दुइ पाव थापिल गगन मण्डल काया ॥
मारुतिक देखि सुरसा बोलय कैक याइबि तइआर।
विस्तर कालेसे आधार मिलिल बदन फैल बिस्तार ॥ ४०५१
हनुये बोलन्त दक्षर नन्दिनी आमाक तुमि निचिन।
रामदूत हुया लङ्काक याहाओं किसक पाता विघिनि ॥
मावे पुत्र बिहा- इले बानरा मुखर यास एराया।
पाचे रामे तोर प्रतिकार करोक क्षुधा वञ्चो तोक खाया ॥ ५२
एतेक वचन शुनि हनुमन्त क्रोधत ज्वलि अपार।
केतमते तइ मोक गिलिमेक वदन कर विस्तार ॥
शुनिया सुरसा मुख प्रकाशिल दश योजनक जुरि।
हनुमन्त वीरे शरीर वढ़ाइल हुइ गैल योजन कुरि ॥ ५३
सुरसा राक्षसी मुख प्रकाशिल भै गैल योजन त्रिश।
हनुमन्त वीरे काया वढ़ाइलन्त योजन भैल चल्लिश ॥
पञ्चाश योजन जुरिया सुरसा बानर भुञ्जित मन।
हनुमन्त वीरे शरीर वढ़ाइल बहले षाठि योजन ॥ ५४
सत्तरि योजन जुरिया सुरसा थाकिल मुख प्रकाशि।
हनुमन्त वीरे शरीर वढ़ाइल भै गैल योजन आशी ॥

जाते हुए वीर हनुमान के मार्ग पर विघ्न खड़ा कर दो। तुम्हारी माया को किसी युक्ति से, किसी प्रकार से यदि पार कर जायें, तभी समझना कि पवनसुत हनुमान राम-कार्य साधन कर सकेंगे ॥ ४०५० ॥ यह वचन सुनकर सुरसा ने राक्षसी माया फैलायी। उसने अपने दोनो पैर सागर में रखे और शरीर को गगन-मंडल में फैला लिया। हनुमान को देखकर सुरसा बोली—तू अब कहाँ जा पावेगा? बहुत दिन बाद आज मुझे आहार मिला है। यों कहकर उसने अपना मुख फैला दिया ॥ ५१ ॥ हनुमान ने कहा, दक्ष-नन्दिनी सुरसा, तुम मुझे पहचान नही रही हो। मैं राम का दूत बनकर लंका में जा रहा हूँ, तुम भला विघ्न किसलिए डाल रही हो? माता, तुम पुत्र को छोड़ दो। (तब सुरसा बोली—) तू मेरे मुँह का ग्रास छुड़ाकर जा नही सकेगा, बानर, अब तेरा राम ही तुझे बचावे, मैं तुझे खाकर अपनी शरीर-रक्षा करूँगी ॥ ५२ ॥ यह सुनकर हनुमान प्रचंड क्रोध से भयंकर रूप से जल उठे, बोले, तू मुझे किस प्रकार ग्रास कर सकेगी? अपना मुँह फैला। यह सुनकर सुरसा ने दस योजन तक अपना मुख फैला लिया। वीर हनुमान ने तब अपना शरीर ऐसा बढ़ाया कि वह बीस योजन फैल गया ॥ ५३ ॥ राक्षसी सुरसा ने तब तीस योजन तक अपना मुख फैलाया, तब वीर हनुमान ने अपना शरीर चालीस योजन तक बढ़ा लिया। बानर को खाने हेतु सुरसा ने अपना मुख पचास योजन बढ़ा लिया। तब वीर हनुमान ने साठ योजन तक शरीर बढा लिया ॥ ५४ ॥ सुरसा सत्तर योजन तक मुख फैलाकर खड़ी हो गयी। तब हनुमान ने शरीर बढ़ाकर अस्सी योजन के हो गये। बानर हनुमान को भक्षण करने की इच्छा से सुरसा ने नब्बे योजन तक मुख फैला दिया।

नब्बै योजनक जुरिया सुरसा बानर खुञ्जित मन।
हनुमन्त बीर, काया बढ़ाइलन्त हुइ गैल शत योजन ॥ ५५
विस्मय स्वरूपे सुरसा बोलय किनो बीर अतिरेक।
एतेक बुलिया मुख प्रकाशिल योजन अधिक शतेक ॥
बिस्तार बदन देखि हनुमन्ते अङ्गुष्ठ प्रमाण हुया।
पवन सञ्चार बेग धरि आति गर्भत पशिल गैया ॥ ५६
सुरसा देखिया बदन जपाइल जान्तिल बर सन्धाने।
बायुर तनय अञ्जनार सुत बाज हुया गैल काणे ॥
ऊर्द्धत थाकिया बुलिलन्त देवी पालिलो बाक्य तोमार।
रामदूत हुया चलिलो लङ्कात हेरा मोर नमस्कार ॥ ५७
सुरसा बोलय मइ तुष्ट भैलो लङ्काक चलिया याइयो।
अबयाहते तुमि सीतार बार्त्ताक रामत आसि जनायो ॥
त्रिदश देवर बचन पालिलो जानिलो बल अपार।
तिनियो भुवने तोमार सदृश नाहि बीर बलीयार ॥ ५८
जय रघुकुल कमल प्रकाश दिनकर सीतापति।
तोमार चरण पङ्कजत मन मजोक मोर सम्प्रति ॥
तयु गुण यश श्रवणे थाकोक मुखे नछारोक नाम।
दिया प्रभु मोक समाजिक लोक डाकि बोला राम राम ॥ ५९

पद

एहि बुलि गैल ताइ आकाशर पथे * स्वर्गर देवर आगे कहिल समस्ते
सीताक देखिबे किछु नाहिके संशय * त्रिदशर शुनियो कौतुक जय जय ४०६०

बीर हनुमान शरीर बढ़ाकर सौ योजन के हो गये ॥ ५५ ॥ सुरसा विस्मय से बोल उठी, कितना महान् वीर है यह ! यों कहकर सौ योजन से अधिक मुख फैलाया। उतना फैला हुआ मुख देखकर हनुमान तुरंत अंगूठे के बराबर छोटे बन गये और वायु-वेग से तुरन्त जाकर सुरसा के उदर में प्रवेश कर गये ॥ ५६ ॥ यह देख सुरसा ने बड़े यत्न से मुख बन्द कर लिया और जोर से दबाये रखा। पर पवन-सुत, अंजना-नन्दन हनुमान कान के मार्ग से निकल आये। ऊपर जाकर बोले, देवी, मैंने तुम्हारे वचनों का पालन किया है। मैं राम-दूत बनकर लंका जा रहा हूँ। तुम्हें मेरा नमस्कार है। सुरसा बोली, मैं तुम पर संतुष्ट हूँ। तुम लंका चले जाओ। तुम्हें कोई रोक नहीं पायेगा। तुम सीता का समाचार लाकर रामचन्द्र से निवेदन करो। मैंने त्रिदशों (देवताओं) के वचनों का पालन किया। समझ गयी कि तुम में अपार बल है। तीनों लोकों में तुम जैसा कोई बली वीर नहीं है ॥ ५८ ॥ रघुकुल कमल-प्रकाश-दिनकर, सीतापति रामचन्द्र की जय हो। तुम्हारे चरण कमल में मेरा मन सम्प्रति मग्न रहें। तुम्हारा गुण और यश मेरे श्रवणों में गूँजता रहे। मुख तुम्हारा नाम न छोड़े। यही वर मुझे दो। हे सामाजिक गण ! जोर से 'राम, राम कहो ॥ ४०५९ ॥

यह कहकर वह आकाशमार्ग से चली गयी और स्वर्ग के देवताओं के सम्मुख सारी बातें बता दीं। (सुरसा बोली) "हनुमान सीता को देख पायेंगे, इसमें कोई संदेह नहीं है।" तीसों देवताओं का कौतुकपूर्ण जय-जय नाद सुनायी देने लगा ॥ ४०६० ॥

सागरे बोलन्त शुना मैनाक पर्ब्बत * सखीत्व भावत किछु करियो महत
हेरा वायुतनय लङ्काक लागि यान्त * गाव तोला खानितेको बिश्राम करन्त४०६१
सागरर वाणी शुनि पर्ब्बतर राज * समुद्रक भेदिया तेखने भैल बाज
हनुमन्ते बोले किनो विधिति मिलिल * एकबार एराइलोहो सुरसा गिलिल ६२
किनो वेला लरिलो कि मोर ललाट * पर्ब्बते भेटिल आसि मारुतर बाट
लाञ्ज बारि मारिलन्त आकाशत गैया * शिखर परिल गैया चूर्णीकृत हुया ६३
मारुतिक सम्बुधिया बोलन्त मैनाक * बायुपुत्रे किसक आमाक दिला चाङ्क
पठाइलन्त सागरे तोमार उपकारे * पूर्व्वत सम्बन्ध आछे तोमार आमारे ६४
गिरि सब यैसानि आछिल पक्षधर * यैत उरि परे छन्न करय नगर
पुरन्दरे बज्र हानि काटिलन्त पखा * सिकालत बायुराज मोर भैल सखा ६५
उरुवाइ पेलाइ आनि सागरर जले * उपकार थाकिल न गैलो रसातले
सेहि हित चिन्तिलोहो खानिक जिरायो * फल मूल भुञ्जिया लङ्काक लागि यायो ६६
हनुमन्त बदति शुनियो गिरिबर * तोमार काहिनी शुनि आछो बहुतर
हेमवन्त सुत तुमि गौरीर सोदर * मैनाक तोमार नाम शाल शङ्करर ६७
न जानि तोमाक मइ करिलो प्रहार * अज्ञान दोषक तुमि क्षमियो आमार
अनेक काहिनी कथा कहिया बिचित्र * हनुमन्त सहिते भैलन्त महामित्र ६८
दुइको दुइ काहिनी कहिल मन तुष्टे * हनुमन्ते परशिला वृद्ध ये अङ्गुष्ठे
हनुमन्ते राम कार्य्ये आकुलित हुया * छुटिल नराच येन निकलिल गैया ६९

सागर ने कहा—मैनाक पर्वत, सुनो ! सखा की भावना से तुम कुछ महत्कार्य करो। देखो, पवन-सुत हनुमान लंका जा रहे हैं। तुम जरा अपना शरीर ऊँचा कर लो, जिससे कि वे कुछ क्षण विश्राम करें ।। ६१ ।। सागर के वचन सुनकर पर्वतराज मैनाक उसी समय समुद्र से बाहर निकल आया। हनुमान कहने लगे, भला यह कौन-सा विघ्न आ पहुँचा ? एक बार तो सुरसा ने निगल लिया था, उससे तो बच निकला ।। ६२ ।। मैंने किस कुलग्न में यात्रा की, मेरा भाग्य कैसा है कि अब पवन-मार्ग को रोककर यह पर्वत आ खड़ा हुआ है। उन्होंने आकाश में जाकर पूँछ से चोट की, जिससे पर्वत-शिखर चूर होकर गिर पड़ा ।। ६३ ।। तब मारुति को सम्बोधित कर मैनाक कहने लगा—हे पवन-सुत, आपने भला मुझे इस तरह से चोट क्यों की ? आपका हित करने हेतु मुझे सागर ने भेजा है, क्योंकि आपका हमारा पुराना सम्बन्ध है ।। ६४ ।। जिन दिनों पर्वतों के पंख थे, वे जहाँ-तहाँ उड़कर जा बैठते थे, और पर्वत-नगर आदि को विनष्ट कर देते थे। तब इन्द्र ने वज्र के आघात से पर्वतों के पंख काट डाले। उन्हीं दिनों पवन ने मेरे सखा बनकर सहायता की ।। ६५ ।। उन्होंने मुझे उड़ा लाकर सागर के जल में डाल दिया। उनके इस उपकार के कारण मैं बचा रहा, रसातल नहीं गया। इसी कारण मैं आपका हित चिन्तन कर रहा हूँ। आप क्षणभर रुककर विश्राम लीजिए। फल-मूल खाने के पश्चात् लंका में जाइये ।। ६६ ।। हनुमान बोले—हे पर्वतराज सुनिये। मैं आपकी कथा बहुत सुनता आया हूँ। आप हिमाचल के पुत्र और गौरी के सहोदर हैं, आपका नाम मैनाक है, आप शंकर के साले हैं ।। ६७ ।। मैंने अज्ञान से आप पर प्रहार किया है, इस अज्ञना-जनित दोष को आप क्षमा कीजिये। मैनाक और हनुमान ने अनेक विचित्र कथाएँ सुनाकर आपस में महा मित्र बन गये ।। ६८ ।। दोनों ने मन में प्रसन्न होकर अपनी-अपनी कथाएँ सुनायी। हनुमान ने अंगूठे से मैनाक को छुआ और राम-कार्य हेतु व्याकुल होकर तीव्र नाराच की भाँति चल पड़े ।। ६९ ।। हनुमान पवन-वेग से जा रहे थे। अकस्मात् उनका वेग रुक गया।

हनुमन्ते याहन्ते पवन सम जोर * बेग थिर भैल परे पाचात आजोर
बेग थिर भैल मोर किनो बिपरीत * पेलाइल काङकर येन सागरे चुहित ४०७०
चतुर्दिशे चाहिलन्त उर्द्धर प्रवेश * किछु ने देखिल तंत बिधिनिर लेश
विस्मये गुणन्त कपि सागरर माज * पूर्ब्बे कथा कहिल सुग्रीव कपिराज ४०७१
हेट माथा करि देखे सागरक चाहि * छायात धरिया टानि नेइ छाया ग्राही
छायात धरिया मोक नेस गिलिबाक * आपोनार प्रतिकार करो थाक थाक ७२
पर्ब्बत समान करि शरीर बढ़ाइल * देखि आषारिका कौतुक बर पाइल
तोक देखि आजि मइ भैलो महातुष्ट * चिरकाले आहार मिलिल हृष्ट पुष्ट ७३
एहि बुलि आषारिका गगने उधाइल * पाताल सदृश करि बेन्त गोट बाइल
पर्ब्बत समान जिह्वा बदने लरय * विकट दशन येन शूलर आन्वय ७४
सामर सामर आषारिका निशाचरी * एहि बुलि हनुमन्त ह्रस्व देहा करि
गर्भत पशिला गैया आति बर बेगे * उखसिल पेट येन जलन्धर रोगे ७५
गर्भत पशिया बारे करि महाकोप * नाड़ीचय छिरिया गलत दिला सोप
करे चट् फट् ताइ न पावे उशास * चक्षु उलटाया घोर तेजिले आटास ७६
नख दुइ फुलिलन्त हृदयर माज * मर्म्म थान भेदि कपिराज भैल बाज
प्रलयत येन मेरु पर्ब्बत टलिल * आषारिका कतो दूर जुरिया परिल ७७
हनुमन्त वीरर देखिया पराक्रम * देव मुनि गन्धर्व्वे सुमरे धर्म्म धर्म्म
मारिल यतेक ताइ नाइ आदि अन्त * कल्याणे आसन्तो वीर सिंह हनुमन्त ७८

पीछे की ओर से उन्होंने खिचाव का अनुभव किया। वे सोचने लगे—यह कैसी विपरीत बात देख रहा हूँ! मेरी गति वैसे ही रुक गयी है मानो सागर में किसी ने लंगड़ डाल दिया हो ॥ ४०७० । उन्होंने चारों ओर तथा ऊपर देखा। मगर वहाँ कोई भी विघ्न का लेशमात्र दिखाई न पड़ा। तब वे समुद्र के बीच स्थित होकर चिन्तन करने लगे—कपिराज सुग्रीव ने पहले एक कथा सुनायी थी ॥ ७१ ॥ उन्होंने सिर झुकाकर सागर की ओर देखा; एक छाया-ग्राहिणी राक्षसी उनकी छाया पकड़कर खीच रही थी। वे कहने लगे—अरे, तू मेरी छाया पकड़कर मुझे निगलना चाहती है, ठहर जा, मैं इसका प्रतिफल तुझे दे रहा हूँ ॥ ७२ ॥ उन्होंने अपना शरीर पर्वत के समान बढ़ा लिया। यह देख छाया-ग्राहिणी आषारिका को बड़ा कौतूहल हुआ। उसने कहा—तुझे देखकर आज मैं महा तुष्ट हुई हूँ। बहुत दिन बाद मुझे यह हृष्ट-पुष्ट भोजन मिला है ॥ ७३ ॥ यह कहकर आषारिका आकाश में उड़ आयी और पाताल तक अपना मुँह फैलाये खड़ी हो गयी। उसके मुँह में पर्वत जैसी जीभ हिल रही थी, विकट दाँत शूल की भाँति नुकीले थे ॥ ७४ ॥ 'सम्हल, सम्हल,' निशाचरी आषारिका! कहते हुए हनुमान अपने शरीर को छोटाकर बड़ी तेजी से उसके गर्भ में प्रवेशकर गये, जलन्धर रोग से जैसे पेट फूल उठता है, वैसे ही उसका पेट फूल उठा ॥ ७५ ॥ उसके गर्भ में प्रवेश कर प्रचंड क्रोध कर हनुमान ने उसकी आतें फाड़ डालीं और गले को बन्द कर दिया। वह निशाचरी साँस न ले पाने के कारण छटपटाने लगी। उसकी आँखें उलट गयीं और उसने प्रचंड चीत्कार किया ॥ ७६ ॥ कपिराज हनुमान ने उसके हृदय को नाखूनों से फाड़ डाला और मर्मस्थान को विदीर्ण कर बाहर निकल आये। प्रलय में मानों मेरु पर्वत ध्वस्त होकर गिर पड़ा हो, उसी भाँति आषारिका कुछ दूर में फैलकर गिर पड़ी ॥ ७७ ॥ वीर हनुमन्त का पराक्रम देखकर मुनि, गन्धर्व आदि 'धर्म, धर्म' स्मरण करने लगे। इस निशाचरी ने जितनों को मारा है, उसका आदि-अन्त नहीं। वीर सिंह हनुमान का कल्याण हो ॥ ७८ ॥ इन्द्र

इन्द्र आदि करियाक त्रिदशे डरान्त * अनेक दूरर पथ पवनो नयान्त
हेन जगतर बैरी मारिल बानरे * कीर्त्ति थाकिलेक यावे चन्द्र दिवाकरे ७९
आकाशत शुनिलन्त काहिनी कहन्ते * त्रिदशर बैरक मारिला हनुमन्ते
देवतार प्रसङ्गते कौतुकक पाइल * आकाश गमने कपि समुद्र छेराइल ४०८०

हनुमन्तर लङ्का दर्शन

लङ्कापुरी देखिलन्त त्रिकूट ऊपरे * दुति अमरावती येन समुद्र भितरे
सुबेल गिरिर शृङ्ग आति बितोपन * तहिते परिला गैया पवननन्दन ४०८१
सुबेलत बसिया गुणन्त महाबीर * प्रयास न भैल मोर सुस्थहे शरीर
सागर तरिया आइलो इटो कोन गह * कोटि योजनक याइबो ताको आछे साह ८२
शतेक योजन आइलो इटो कोन काज * इसब काहिनी कहिवाको लागे लाज
तरिलन्त सागर न भैल किछु शङ्का * सुबेलत बसिया बीरे देखिलन्त लङ्का ८३
माथा तुलि देखन्त आदित्य अन्त यान्त * करयोरे हनुमन्ते दिलन्त सिद्धान्त
जानु शिर करि जुरिलन्त योर हात * त्रैलोक्यर दीप बुलि नमिलन्त माथ ८४
खानितेक तम्भियोक राम कार्य्य साओं * दिवा भागे लङ्कार गड़क फुरि चाओं
हेन शुनि तुष्ट भैला काश्यप नन्दन * देखि हनुमन्तर हरिष भैल मन ८५
सुबेलर हन्ते वीर दृष्टिवलाइ चान्त * दिबा भागे लङ्कार गड़क देखिलन्त
सुबेलर नामि नगरीक लाग यान्त * अनेक बनक हनुमन्ते देखिलन्त ८६
गुञ्जरित शबदे भ्रमरा मधुपान * पद्मिनी दिघी जलाशय रम्य थान
सरल पियाल खर निखर खर्ज्जुर * शाल ताल तमाल गमारि बीजपुर ८७

समेत सकल देवता जिससे डरते थे, पवन भी वहुत दूर के मार्ग पर नही जाते थे, संसार की शत्रु उस निशाचरी को वानर हनुमान ने मार डाला। देवगण की वाणी सुनकर हनुमान बड़े प्रसन्न हुए और आकाश-मार्ग से वे समुद्र के पार चले आये ।। ४०८० ।।

हनुमान का लंका-दर्शन

हनुमान ने त्रिकूट पर्वत पर बसी हुई लंकापुरी को देखा। वह समुद्र के मध्य अमरावती जैसे दमक रही थी। सुवेल पर्वत का शिखर वडा ही सुन्दर था, पवन-नन्दन हनुमान उसी पर जा चढ़े ।। ८१ ।। सुवेल पर्वत पर बैठकर महावीर सोचने लगे, समुद्र पार करने मे तो मुझे कोई प्रयास नही करना पड़ा, मेरा शरीर स्वस्थ ही है। मैं समुद्र पार कर चला आया, यह कौन-सा कठिन काम था? मुझे तो साहस है कि करोड योजन भी जा सकता हूँ ।। ८२ ।। केवल सौ योजन पार कर आया यह कौन वडा कार्य हुआ? यह कहानी तो कहने में भी लज्जा आती है। सागर पार कर वीर हनुमान को कोई शंका नहीं हुई। उन्होंने सुवेल पर्वत पर बैठकर लंका को देखा ।। ८३ ।। सिर उठाकर देखा, सूर्य अस्तमित हो रहे है। हाथ जोड़कर हनुमान ने उन्हें अपना सिद्धान्त सुनाया सिर नमाकर उन्होंने हाथ जोड़ 'हे त्रिलोक के दीपक' कहकर सूर्य को प्रणाम किया ।। ८४ ।। यह सुनकर कश्यप-नन्दन सूर्यदेव वड़े प्रसन्न हुए। वह देखकर हनुमान हर्षित हो उठा ।। ८५ ।। सुवेल पर्वत पर से वीर हनुमान ने चारों ओर दृष्टिपात किया। दिन रहते ही लंका का गढ़ उन्होंने देखा। सुवेल पर्वत से उतरकर वे लंकापुरी की तरफ चल पड़े और मार्ग में उन्हे अनेक वन दिखाई दिये ।। ८६ ।। रमणीय स्थानों मे सरोवरों मे कमल खिले हुए थे। भौरे गुंजारते हुए

अश्वत्थ कपित्थ बट नारङ्ग बदर * तेन्तेलि कण्टकि आम जाम नागेश्वर
खाजुरि हारिठा आमलखि डहाफल * छातियाल गुवा नारिकेल ये श्रीफल ८८
सलङ्गा महरि आस कमला टेङ्गरा * कहूँ पिचुमर्द्दक ये सोलङ्गा आमरा
कदम्ब गुलाल पारिजातक आशेष * सेवती मालती गुटि माली ये विशेष ८९
बारय बसन्ते अनुकूले बहे वाव * षड़ृतु नछारय कोकिलर राव
अनेक आछय पशु चटक आशेष * सुवर्ण माणिक्य मणि रतन विशेष ४०९०
सागरे उथारि थैल मुकुतार दाम * चित्र विचित्र ताक देखि अपुपाम
लङ्कार समीप बने दिन गोटनिल * गधूलिका बेला बीरे परामरिशिल ४०९१
इसब शरीरे येवे पेषओं नगर * राक्षसे बान्धिया फुराइबे घरेघर
बिराल समान सङ्कुचित कलेवरे * हनुमन्ते चड़िलन्त प्राञ्चिर उपरे. ९२
गोधूलिका बेला श्रीदेखिला लङ्कार * दुति अम्रावती येन जगतते सार
अनेक प्रबन्धे विश्वकर्म्मे से निर्म्मिल * लङ्का वेढ़ि सुवर्णर गड़ प्राञ्चि दिल ९३
अनेक योजन पथ गगने उधाव * सुवर्ण माणिक मणि ज्वले ठावे ठाव
ठाइखान देखिलन्त बहल बिस्तार * गड़ गोटे वेढ़ि आछे सकले लङ्कार ९४
नाना यन्त्र साजि तात आछे शारी शारी * देवासुर सबे ताङ्क लङ्घिते न पारि
विषम सङ्कट आति दुर्गमर थान * देखि चिन्ता विष्ट भैला बीर हनुमान ९५
अङ्गद सुग्रीव नील आमि समे चारि * एतेकेसे सागरक तरिबाक पारि
शतेक योजन पथ सागरक तरि * इठावत वानर आसिबे केने करि ९६

मधुपान कर रहे थे। सरल, पियाज, खर, निखर खजूर, शाल, ताड़, तमाल, गभारि बीजपुर, ॥ ८७ ॥ अश्वत्थ, कपित्थ, वट, नारंग, बेर, इमली, कटंकी, आम, जामुन, नागेश्वर, खाजुरि, हारिठा, आँवला, डहा फल, छितवन, सुपारी, नारियल, श्रीफल आदि थे ॥ ८८ ॥ सलंगा, महरि, कमला, टेगरा, पिचुमर्दक, आमरा, कदम्ब, अनन्त पारिजात, गुलाल, सेवती, मालती, गुटिमाली, आदि विशेष वहाँ थे ॥ ८९ ॥ वहाँ नित्य वसन्त विराजित था, अनुकूल पवन बह रहा था; कोयल छहों ऋतुओं कूकना वन्द नही करती थी। वहाँ अनेक प्रकार के पशु और अनन्त प्रकार के पक्षी निवास करते थे, स्वर्ण, तथा मणि-रत्न विशेषरूप से परिपूर्ण थे ॥ ४०९० ॥ समुद्र वहाँ मोतियों की ढेरी लगा देता था। जो चित्र-विचित्र और अनुपम दिखाई देता था। वीर हनुमान ने लंका के समीप दिन बिताया और संध्या होने पर वे मन ही मन चिन्तन करने लगे ॥ ९१ ॥ यदि मैं इसी शरीर से लंकापुरी मे प्रवेश करूँगा तो राक्षस मुझे पकड़ लेंगे और घर-घर घुमाते रहेगे। (यह सोचकर) हनुमान, बिल्ली जैसा लघु रूप धारण कर दीवार पर चढ़ गये ॥ ९२ ॥ संध्या समय उन्होंने लंका का सौन्दर्य देखा। उसकी ज्योति मानो अमरावती की भाँति थी और संसार मे वह सबसे श्रेष्ठ थी। विश्वकर्मा ने अनेक प्रयास से उसका निर्माण किया था और पुरी के चारों ओर सोने की दीवार बना दी थी ॥ ९३ ॥ वह आकाश में कई योजन ऊँची उठी हुई थी। उसके स्थान-स्थान में स्वर्ण-मणि-माणिक झलमला रहे थे। हनुमान ने देखा कि लंका बहुत ही लम्बी चौड़ी फैली हुई है। समूची पुरी को गढ़ ने घेर रखा है ॥ ९४ ॥ वहाँ अनेक प्रकार के यन्त्र पक्तियों में साजे हुए थे। उस गढ़ को देव-असुर कोई भी लाँघ नही सकता था। वह स्थान विषम संकट का और परम दुर्गम था। उसे देखकर वीर हनुमान चिन्तामग्न हो उठे ॥ ९५ ॥ (वे सोचने लगे), अंगद, सुग्रीव, नील और मुझे लेकर ये चार ही व्यक्ति सागर पार कर सकते हैं। भला यहाँ वानर किस तरह आ सकते है ? ॥ ९६ ॥ वानर-वर्ग यहाँ आकर क्या करेगा ? दशरथ-सुत रामचन्द्र

बानर वर्गर इठावत कोन काम * किवा करिवन्त आसि दाशरथी राम
राम लक्ष्मण यातो अचिन्त्य प्रभाव * सिकारणे मनत किञ्चित दिओंठाव ९७

हनुमन्तर लङ्का प्रवेश आरु लङ्का-वर्णना

पाच कार्य्य थाकोक चिन्तिवो आग काज * डेव दिया परिलन्त नगरर माज
ठावे ठावे देखन्त राक्षसे पढ़े वेद * शास्त्र सब पढ़न्त शुनन्त अविच्छेद ९८
सुवर्णर हंस लड़् आलि चक्रवाक * सुवर्णर शरालि उदय जाके जाक
सुवर्णर मयना भाटो चुटिया शालिक * सुवर्णर कपवति फिञ्चा पुण्डरीक ९९
रङ्गथाने कौतूहले राक्षस मिलिला * कौतूहले खेलावय सुवर्णर घिला
भण्टा खेड़ि खेलावय कतो खेले झुण्टि * ठावे ठावे क्रीड़ा करे आकुटि भ्रुकुटि ४१००
छवाल मेलेक सवे करे हाता हाति * माल वान्धे युजय देखिते भाल आति
ढोप खेड़ि खेलावय कतो लुनि लुनि * गुवाल गुवाली खेले आनन्दित शुनि ४१०१
फ़ल फुलि टोकरा आवर जुवा पाश * ढलि युज खेले कतो लवरि हुताश
राक्षस यूथक देखिलन्त हनुमन्ते * रावणक सेवा करि ठावक आसन्ते २
कतोहो सुन्दर देहा कामर समान * कतो शिर दीघल लम्बित दुइ काण
हाण्डी शृगालीर वर्ण विहाड़ा सोगड़ा * विकृत खसुवा लालि गण्डा कुजा खोरा ३

यहाँ आकर क्या करेंगे ? तथापि राम-लक्ष्मण दोनों का प्रभाव अचिन्तनीय है, उन्हें मन में कुछ स्थान दिया जा सकता है, (वे दोनों यहाँ आकर कुछ कर सकते हैं यह सोचा जा सकता है) ।। ४०९७ ।।

हनुमान का लंका में प्रवेश और लंका का वर्णन

आगे चलकर क्या होगा, यह बात अभी सोचने की आवश्यकता नहीं, सम्मुख जो कार्य उपस्थित है उसी का चिन्तन करना है। (ऐसा सोचकर) हनुमान कूदकर नगर में प्रवेश कर गये। उन्होंने देखा, राक्षसगण स्थान-स्थान पर वेद पढ़ रहे हैं; निरन्तर सभी शास्त्र पढ-सुन रहे हैं ।। ४०९८ ।। स्वर्ण के हंस और चक्रवाक पक्षियों में दौड़ रहे थे, स्वर्ण के शरालि (टिट्टिभ, कुररी) पक्षी झुडों में उड़ते आ रहे थे। स्वर्ण की मैना, तोता, गोरैया, सारिका, कबूतर, उल्लू, पुंडरीक आदि पक्षी उड़ रहे थे ।। ९९ ।। हनुमान ने रंगस्थल में राक्षसों को कौतूहल से देखा। वे कौतूहल से सोने का गेंद खेल रहे थे। कहीं वे गोटियों, कौड़ियों के खेल खेल रहे थे तो कही छुलीछुलौवल खेल रहे थे। वे स्थान-स्थान में परस्पर केश पकड़ते या कबड्डी आदि क्रीड़ाएँ कर रहे थे ।। ४१०० ।। कही-कही लड़के और तार्किक आपस में लड़ झगड़ रहे थे। कही मल्ल जूझ रहे थे, जिसे देखकर बड़ा अच्छा लग रहा था। कही बड़ी उमंग से राक्षसियाँ कपड़े का गेंद उछालने का खेल खेल रही थी, कही आनन्दित होकर ग्वाले-ग्वालियाँ खेल कर रहे थे ।। ४१०१ ।। फल-फूल के उँगलियों से उछालने के खेल और कही जुआ-पाशा आदि के खेल हो रहे थे। कही-कहीं गेंद आदि उछालने के खेल में दौड़-धूपकर राक्षसगण थक गये थे। हनुमान ने देखा राक्षसों का समूह रावण की सेवा कर अपने-अपने स्थान को आ रहा है ।। ४१०२ ।। कुछ राक्षसों के शरीर कामदेव जैसे सुन्दर थे, किसी-किसी के सिर कान लम्बे-लम्बे थे ! किसी के शरीर का वर्ण हाथी के समान, किसी का सियार के समान था; कोई-कोई झुंड बाँधकर चलते थे तो कोई अकेले-अकेले। किसी का रूप विकृत, खुरदरा था, कोई लूला, लँगड़ा था ।। ४१०३ ।।

अन्धलार कान्धत पोङ्गुवा याइ चड़ि * पेङ्गुवार उद्देशे अन्धला काढ़े भरि
कतो कुजा कतो खोरा कतो गोट कला * कतोहो नारङ्गा सोभा कुण्डलीहा शोला ४
चालिया बिलुनिया पिट्टनैया कतो गोधा * गलण्डीया कतोहो सुनिया जोला जोधा
यार महा प्रतापे स्वर्गत लागे चाङ्ग * धनुर्द्धर बीर कोन्तकर रणरङ्ग ५
कतो निशा मान्ते भैल चन्द्रमा उदय * दशोदिश प्रसन्न खण्डिल तमोमय
सहाय भैलन्त चन्द्र बायुर पुत्रर * हनुमन्त कौतुके फ़ुरन्त घरे घर ६
शुना सभासद पद कथा रामायण * अमृततोधिक इसे करय शोभन
संसार तापत इसि करय निस्तार * बोला राम राम हौक पुरुष उद्धार ७

छबि

शङ्खिनी चित्रिणी नारी पद्मिनी हस्तिनी आदि त्रिभुवने यतेक सुन्दरी ।
दिग्बिजयत साजि देवासुर रणे जिनि लङ्केश्वरे आनिलेक हरि ॥
मन्त्री पात्र समस्तत समर्पिया राज्य भार तेसम्बे सहिते करे क्रीड़ा ।
नाकत आङ्गुलि दिया बोलन्त पवन सुत किनो भैल जगतरे पीड़ा ॥ ८
हरि हरि गोसानीक परिचय न भैलोहो खुजि पाइबो कमन प्रकारे ।
देव देवी प्रसादत इङ्गिते जानिबो मइ पतिब्रता धर्मब्यवहारे ॥
एहि बिमरिष करि डेव दिया परिलन्त सेनापति प्रहस्तर ठावे ।
तात पाचे महा पार्श्व ओवारि पशिल गैया शवद न करे येन पावे ॥ ९
कुम्भकर्ण बीरर ये ओवारि पशिल बीर आति बर बहुल बिस्तार ।
तैतो सीता गोसानीक खुजि लुरि न पाइलन्त विभीषण थाने पयोसार ॥

अंधे के कंधे पर लंगड़ा चढ़कर जा रहा था, अन्धा लंगड़े को लिये चलता जा रहा था। वहाँ कितने ही कूवड़े थे, कितने ही लंगड़े थे;. कितने ही बिलकुल काले थे। कितने ही नारंगी की भाँति थे, कोई कुडंली जैसे शोले लगाये हुए थे ॥ ४१०४ ॥ जिनके महान प्रताप से स्वर्ग में हलचल मच जाती थी, यम के साथ संग्राम करनेवाले ऐसे वीर वहाँ थे ॥ ४१०५ ॥ कुछ रात बीते चन्द्रमा का उदय हुआ। अन्धकार मिटा, दसो दिशाएँ प्रसन्न हो उठीं। चन्द्रमा पवन-सुत के सहायक बने। हनुमान कौतुक से घर-घर चक्कर लगाने लगे ॥ ४१०६ ॥ हे सभासदगण, भाषा में रचित यह रामायण-कथा सुनो ! यह अमृत से भी अधिक सुन्दर बनानेवाली है। यही संसार के ताप से उद्धार करनेवाली है। 'राम, राम' कहो, जिससे पीढ़ियाँ तर जायें ॥ ४१०७ ॥ शंखिनी-चित्रिनी, पद्मिनी, हस्तिनी आदि त्रिभुवन में जितनी सुन्दरी नारियाँ हैं, दिग्विजय के लिए अभियान कर, देवासुरों को युद्ध में पराजित कर उन सबको लंकेश्वर रावण हर लाया था। मन्त्री, सामन्त आदि पर राज्य का भार सौंपकर वह उन नारियों से विलास-क्रीड़ा करता था। नाक पर उंगली रखकर (स्तब्ध) पवनसुत कहने लगे, संसार पर भला यह कैसा अत्याचार है ॥ ४१०८ ॥ हरि, हरि, मैंने तो देवीसीता जी का परिचय भी नहीं लिया (उन्हें पहचानता भी नहीं) फिर उन्हें किस तरह से ढूँढ़ निकालूँगा ? देवी-देवताओं के अनुग्रह, उनके पतिव्रता धर्म व्यवहार के संकेत से मैं उन्हें पहचान लूँगा। मन में इस प्रकार विचार-विमर्श कर हनुमान कूदकर प्रहस्त के घर में पहुँच गये। इसके पश्चात् वे महापार्श्व के भवन में ऐसे प्रवेश कर गये जिससे पैरों से कोई शब्द न हो ॥ ४१०९ ॥ फिर वीर हनुमान कुम्भकर्ण के बहुत बड़े फैले हुए भवन में गये। वहाँ भी खोज-ढूँढ़ कर जब सीता नहीं मिली तो वे विभीषण के

लोमकर्ण अश्वकर्ण सङ्गुकर्ण राक्षसर विद्युजिह्व हस्तीर बदन ।
अर्द्धकेतु अर्द्धग्रीव मत्तग्रीव निकुम्भर कुम्भर ये यतेक भवन ॥ ४११०
सबाहारे चाहिलन्त पिढ़ा कान्थि कवन्धत खुजि लुरि नपाइला उद्याने ।
खुपिर भितरे पशि रन्धन शालार घरे खुजिलन्त नानाविध थाने ॥
नाद नाम निशाचरे शोणिताक्ष ओवारित खुजिलन्त आतिशय यत्ने ।
तात पशि रावणर ओवारि पशिला गैया चतुर्भित वेढ़ि ज्वले रत्ने ॥ ४१११
आति प्रति वन्धे ताक विश्वकर्मे निर्म्मिलन्त सुवर्ण माणिक थाने थाने ।
चन्द्र आदित्यतोधिक आति बितोपन ज्वले देखिलन्त वीर हनुमाने ॥
ओवारि मध्यत दिश्य थान खान देखिलन्त आति बर विस्तार गहन ।
निर्म्मल कमल सब परिमल वृक्षचय सुगन्धित वहय पवन ॥ १२

पद

तैतो खुजि लुरि नपाइ सीताक हताश * धौलिवरे पशिलन्त द्वितीय कैलास
सुवर्णर सूर्य्यर दिन रजतर शशी * दिन राति न जानिय ओवारित पशि १३
सुवर्णर यत काम मणिके टहक * राति दिन न जानय ज्वले भक भक
नागर भवन लिखि आछे समुदाय * हासो हासो करे येन मातिले पराय १४
बैजयन्ती नामे आछे इन्द्रर ओवारि * तातो उपाधिक आक बुलिबाक पारि
कान्ता मण्डपत सबे देखिला अशेष * सुनिर्म्मल जल तात पुखुरी बिशेष १५
सर्व्वाङ्ग दर्पण थैया आछे ठावे ठावे * कौतूहले लङ्कानाये चाहिबाक पावे
सहस्र संख्यात घोड़ा अनेक लाखर * राति दिने कछाइ थाके सोणर पाखर १६

घर में गये । लोमकर्ण, अश्वकर्ण, संगुकर्ण, हाथी जैसे मुँहवाले विद्युज्जिह्व, अर्धकेतु, अर्धग्रीव, मत्तग्रीव, निकुम्भ, कुम्भ आदि के जितने भवन थे ॥ ४११० ॥ उन्होंने सब में घूम फिर कर देखा, चारपायी पर, बिस्तरों पर, बड़ी खुले मुँह की पेटियों में, बागों में कही भी सीता दिखाई नही दी । छोटे कमरों में, रसोई घर में, विभिन्न प्रकार के थानों में उन्होंने खोज-खोजकर देखा । नाद नाम के निशाचर के यहाँ, शोणिताक्ष के भवन में, उन्होने बड़े यत्न से खोज देखा । वहाँ घुसकर फिर रावण के भवन में गये, जो चारों ओर से रत्नों से जगमगा रहा था ॥ ४१११ ॥ उस भवन को बड़े ही प्रयास से विश्वकर्मा ने निर्माण किया था । उसके स्थान-स्थान पर स्वर्ण-मणियाँ चमक रही थीं । हनुमान ने देखा, वह चन्द्र-सूर्य से भी अधिक सुन्दर प्रकाशमान था । भवन में उन्होंने रावण का निवासस्थान देखा जो लम्बाई-चौड़ाई में दूर तक फैला हुआ था । उसके सरोवरों में निर्मल कमल खिले हुए थे, वृक्षों से पराग झर रहे थे, सुगन्धित पवन वह रहा था ॥ १२ ॥ वहाँ भी खोज ढूँढ़कर जब सीता नही मिली तो वे हताश होकर द्वितीय कैलास के समान राजभवन में प्रवेश कर गये । वहाँ स्वर्ण के सूर्य का दिन था और चाँदी के चन्द्रमा की किरणें छिटक रही थीं । उस राजभवन में प्रवेश करने पर दिन-रात का पता नही चलता था ॥ १३ ॥ वहाँ सोने के सारे काम किये हुए थे जो मणियों से जगमगा रहे थे । दिन-रात का भेद-भाव किये वगैर झक-झक दमक रहे थे । नागरिकों से सारे भवन नाना प्रकार से चित्रित थे, ऐसा लगता था मानो पुकारने-बोलने ही वाले हैं ॥ १४ ॥ इन्द्र का राजभवन वैजयन्ती जैसा था, उसकी तुलना से भी इसे श्रेष्ठ कहा जा सकता था । वहाँ के मंडपों में उन्होने अनेक नारियों को देखा, वहाँ सुनिर्मल जल से पूर्ण अनेक तालाव थे ॥ १५ ॥ सम्पूर्ण अंग दिखाई दे, ऐसे दर्पण जगह-जगह रखे हुए थे । हनुमान ने कौतूहल से लंकानाथ रावण को भी वहाँ देखा ।

राउत सब सुशिक्षित रैवत पराय * हेन देखि लाम्फ दिया गगने उराय
हस्ती सबक चाया थाकय सचकिते * भार्गवर सदृश माहुत ससम्भृते १७
उत्तम सिन्दूरे सुमण्डित गण्डस्थले * ऐरावत हस्तीको जिनिते पारे बले
सर्व्वगाव मण्डित शोभन गण्डस्थल * पर्व्वत कन्दर येन कपाल बहल १८
तूणे काण्ड भरि सबे आछे धनुर्द्धर * सचकित थिल खाण्डाइत कोन्तकर
कतेक बर्णाइबो तार सैन्यक अपार * स्वर्गर देवक जिनि आछे बारे बार १९
एकेखाने आछे सापे नेउले छागे बाघे * मूषके चाचरि करे बिड़ालर आगे
घोटके महिषे सिहे गजे एक ठावे * काको केवे न घालय रावण प्रभावे ४१२०
हेन अदभुत येवे हनुमन्ते देखि * कतो दूरे देखिलन्त बिदगध पखी
मनुष्यर राव काढ़े सकल कालिका * मयना घरवा भाटौ चुटीया शालिका ४१२१
कतो कतो कन्ते पुरे रढ़े ढोण्डाकाक * सम्यके प्रभावे येन मनुष्यर बाक
कन्या सबे वचन शुनन्त कौतूहले * सर्व्वदाये भुञ्जावे पायस मधुफले २२
सीताक खोजन्त बीरे निर्ज्जन थानत * एकोवे प्रकारे नपाइ बिकल मनत
चिन्ता करे हनुमन्त बिकल स्वभाव * कतो दूरे शुनिलन्त आनन्दर धाव २३
किङ्किणीर शवद शुनिय रिणि रिणि * साक्षातटे लक्ष्मी अवतरिलन्त येनि
पुष्पक बिमान तिनि त्रैलोक्ये प्रख्यात * डेव दिया हनुमन्ते चड़िलन्त तात २४
पुष्पक गे नाम सिटो उत्तम विमान * तात परे नाहि आन स्वर्गे दिव्य यान
पूर्व्व पश्चिम एक प्रहरर पथ * उत्तर दक्षिणे बिस्तरित सेहिमत २५

वहाँ सहस्रों की संख्या में कई लाख घोड़े ऐसे थे जिन पर सोने की जीन दिन-रात कसी रहती थी ।। १६ ।। अश्वारोही सेना बड़ी सुशिक्षित थी । घोड़े श्वेत पर्वत की भाँति विशालकाय थे, ऐसा लगता था कि वे अपनी छलाँग से मानों आकाश में उड़ते जा रहे हों । परशुराम जैसे महावतों के साथ हाथियों को देख-देखकर हनुमान विस्मित रह जाते थे ।। १७ ।। वे हाथी गंडस्थल में उत्तम सिंपूर से मंडित थे । वे ऐरावत हाथी को भी अपनी शक्ति से जीत सकते थे । उनके कपाल पर्वत-कन्दराओं के समान विस्तृत थे ।। १८ ।। धनुर्धर राक्षस तूण में वाण भरकर लिये यमराज के दूतों जैसे सदा सतर्क खड़े थे । स्वर्ग को बार-बार जीतनेवाली रावण की अपार सेना का वर्णन कौन कर सकता है ? ।। १९ ।। लंका में साँप-नेवला, बाघ-बकरी एक ही साथ रहते थे । (वहाँ का शासन ऐसा कठोर था कि) चूहा भी बिलाव के समाने खेल करता था । घोड़ा-भैंस, सिंह-गजराज साथ-साथ रहते थे । रावण के प्रभाव से कोई किसी को चोट नहीं करता था ।। ४१२० ।। हनुमान ये सारे अद्भुत दृश्य देखते जा रहे थे । उन्होंने कुछ दूरी पर बहुत ही सुन्दर-सुन्दर पक्षी देखे । मैना, घरेलू तोते, पहाड़ी सारिका आदि निरन्तर मनुष्यों की बोली बोल रहे थे ।। २१ ।। किसी-किसी अन्तःपुर में कौवे भी मनुष्यों जैसी बोली बोल रहे थे । राक्षस-बालाएँ कौतूहलपूर्वक उनके वचन सुन रही थीं और उन्हें नित्य पायस और मीठे फल खिलाया करती थीं ।। २२ ।। वीर हनुमान सीता को सभी निर्जन स्थानों में खोजते हुए घूम रहे थे और किसी भी प्रकार से न मिलने के कारण मन में व्याकुल हो रहे थे । हृदय में व्याकुल होकर हनुमान चिन्ता कर रहे थे तभी उन्हें कुछ दूर से आनन्द की ध्वनि सुनायी पड़ी ।। २३ ।। रुनझुन, रुनझुन किंकिनी की ध्वनि सुनायी पड़ी मानो साक्षात् लक्ष्मी ही अवतरित हो रही है । वह तीनों लोकों में विख्यात पुष्पक विमान था, हनुमान कूदकर उस पर चढ़ गये ।। २४ ।। उस उत्तम विमान का नाम 'पुष्पक' था । स्वर्ग में भी उससे बढ़कर कोई और दिव्य यान नहीं था । वह विमान पूरब पश्चिम में एक प्रहर के मार्ग तक

ताहार समीपे आछे उत्तम ओवारि * तार गुण वर्णाइवाक प्रबन्धेसे पारि
ताहाक बुलिय चित्रकूट वासघर * क्रीड़ार भुवन खान मुख्य रावणर २६
स्वर्ग मर्त्य पातालर यतेक सुन्दरी * सार कढ़ा करि थैल एकथान करि
हनुमन्ते खोजे दुइ प्रहर निशात * देखिलन्त कन्यागण रत्नर शय्यात २७
लङ्केश्वरे याक येन नियमिया थैल * नृत्य गीत करिया प्रयासे निद्रा गैल
कतो नारी नृत्य करि शुतिल भागरे * हातत केन्दरा पावे सोणार घागरे २८
कामे निद्रा गैलेक मृदङ्ग धरि कोले * स्वामी बुलि बुलि ताक निद्रात सम्भोले
कतो कतो सुन्दरी शय्यात निद्रा गैलि * कालिणी खोपार माजे विहरित चेलि २९
काहारो शय्यात दुले सातेसीर हार * स्वर्गत येहेन जिकिमिकि करे तार
बदन कमल येन पूर्ण शशीकला * गान्थिवार आछे येन पङ्कजर माला ४१३०
आउरर गावत आउरे तुलिलेक भरि * कतोजनी अचेतने पारय घोङ्घरि
कतोजनी शुतिल काहाको केवे जड़ि * सियानर हन्ते माथा धाकिल बिहारि ४१३१
बक्रभावे शुतिलेक रञ्जाइत कटि * भङ्गिमाव करि येन रङ्गे नाचे नटी
बीणा वाम करे धरि शुतिला सुन्दरी * कतोजनी शुतिल मरुत कोले धरि ३२
कतोजनी निद्रागैल मृदङ्ग सावटि * स्वामी बुलि धरे ताके दाबति दाबति
रत्नर शय्यात केहो शुइल महासुखे * आगे पाचे दुइ हात पिठि करि मुखे ३३
हनुमन्ते बिचारि फुरन्त शारी शारी * कन्या शकलर सबे रूपक बिचारि
तत्तुल्य समान सबे रूपक आकलि * सबातो करिया सीता रूपक आगलि ३४

फैला हुआ था। उत्तर दक्षिण में भी उसी प्रकार फैला था ॥ २५ ॥ उसके समीप एक उत्तम भवन था। उसका गुण वर्णन बड़े प्रयास से ही किया जा सकता है। उसे 'चित्रकूट-वास-घर' कहते थे। वह रावण की मुख्य क्रीड़ास्थली थी, ॥ २६ ॥ स्वर्ग मर्त्य पाताल की जितनी सुन्दरियाँ थी, उन सबमें से सार-सार चुनचुन कर वहाँ इकट्ठा कर रखा था। आधी रात को हनुमान वहाँ सीता की खोज करने लगे। उन्होंने देखा, बालाएँ रत्न-शय्या पर पड़ी हुई हैं। लंकेश्वर रावण ने जिसे जिस विधि से रखा था, वहीं वे नृत्यगीत करती हुई थककर सोई पड़ी थीं। कितनी ही नारियाँ नृत्य कर थकावट के मारे हाथ में केदारा और पैरों में सोने के घुंघरू लिए ही सोई पड़ी थीं ॥ २८ ॥ कुछ नारियाँ कामवश मृदंग को गोद में लिए ही सोई पड़ी थी। उसी मृदंग को नींद में 'स्वामी, स्वामी' कहकर संबोधित करती थी। कितनी सुन्दरियाँ पलंगों पर सोयी हुई थी, उनके काले जूड़ों में अंग-वस्त्र उलझ गये थे ॥ २९ ॥ किसी की शय्या पर सतलड़ा हार ऐसे हिल रहे थे मानो स्वर्ग में तारे जगमगा रहे हों। उनके कमल-मुख पूर्ण चन्द्रमा की कला जैसे शोभायमान थे, लग रहा था मानों कमल माला गूँथने के लिए पड़े हुए है ॥ ४१३० ॥ वें एक दूसरे के शरीर पर पैर डाले हुए थी। कुछ तो नींद मे खर्राटे भर रही थी। कोई-कोई किसी-किसी को बाँहों में बांधे सोयी थीं, तकिये से उनके सिर उतर गये थे ॥ ३१ ॥ कोई-कोई कमर को टेढ़ी कर ऐसे सो रही थी मानो भाव-भंगिमा करती हुई नटी नाच रही हो। कोई सुन्दरी बायें हाथ में बीणा लेकर सोयी हुई थी, कुछ गोद में मरुत को लेकर सोयी पड़ी थीं ॥ ३२ ॥ कुछ तो मृदंग को ही बाँहो में भरे हुए सोयी हुई थीं और उसे बार-बार 'स्वामी, स्वामी' कहते हुए अंगों मे दबा लेती थी। कोई-कोई हाथों को आगे-पीछे कर पीठ के बल रत्न की शय्या पर सोयी थी ॥ ३३ ॥ पंक्तियों में सोयी हुई सारी कन्याओं के रूप देखते हुए उनमें सीता की खोज करते हनुमान घूम रहे थे, सभी का रूप बराबर-सा ही लग रहा था। उन्होंने सोचा—इन सबसे सीता का

सीता येवे रूपे गुणे नोहन्त अधिक * रावण नृपति हरि लानिबेक किक
कतो बेलि आछिलन्त करि बिमरिष * मध्य ओवारिर कपि धरिलन्त विश ३५
जय रामचन्द्र देव प्रभु महेश्वर * रघुकुल कमल प्रकाश दिनकर
जन्मे जन्मे मोर तयु पदे रति हौक * बोला राम राम सबे सभासद लोक ३६

छबि

ओवारि मध्यत दिव्य भिण्टि एक देखिलन्त सुवर्ण माणिक रत्न कर्म्मे।
दिव्य कन्या एक आछे क्रीड़ार भुवनी ताइ शुइछ गैया पिन्धि नेत क्षौम्ये ॥
अनेक सुन्दरी सबे राजार गावत धरि शुतिलेक आति मनरङ्गे।
डाङर वृक्षक येन नाना भावे बेढ़ि आछे कोमल माधवी लता सङ्गे ॥ ३७

दुलड़ी

एकैक सुन्दरी रूपक देखन्ते सूर्य्येओ रथ न बाय।
आन दिशि चक्षु बलाइते नोवारि एकैक कन्याक चाइ ॥
हरि हरि केने प्राण धरि आछे आसम्बार निज स्वामी।
कतेक नरक सञ्चिले पापिष्ठ रावणाये अधोगामी ॥ ३८
सुन्दरी गणर अङ्ग परशने अधिक घुमटि चरे।
घोङ्घारि शवद येहेन शुनिय निशानत बारि परे ॥
कुरिखान बाहु शय्यात लूलेइ विपक्षर हरे दर्प।
पाञ्च पाञ्च शिरे येहेन देखिय कुरि गोटा काल सर्प ॥ ३९
यतेक यतेक प्रहार करिल ऐरावत दन्त घावे।
बामस बान्धिया पालपि आछय रावण राजार गावे ॥

रूप तो निश्चय ही बढ़कर होना चाहिये ॥ ३४ ॥ यदि सीता इनसे रूप-गुण में अधिक न होती, तो रावण भला उन्हें हरण कर क्यों ले आता ? कुछ समय तक हनुमान इसी तरह चिन्तन करते रहे। इसके पश्चात् भवन के बीच से होकर एक ओर चल पड़े ॥ ३५ ॥ प्रभु महेश्वर देव रामचन्द्र, रघुकुल-प्रकाश-दिनकर, तुम्हारी जय हो, जय हो। तुम्हारे चरणों में जन्म-जन्म मेरा अनुराग रहे। सभी सभासदगण 'राम, राम' कहो ॥ ४१३६ ॥

राजभवन में उन्होंने स्वर्ण, मणि-रत्नों से बनी एक दिव्य वेदी देखी जिस पर एक कन्या जो क्रीड़ाभूमि में अतुलनीय थी, रेशमी वस्त्र पहनकर सोयी हुई थी। अनेक सुन्दरियाँ बड़ी प्रसन्नता से राजा का शरीर पकड़े इस प्रकार सोयी थी जैसे कोमल माधवी-लता अनेक प्रकार से बड़े वृक्ष को घेरे हुए हों ॥ ४१३७ ॥

वहाँ एक-एक ऐसी सुन्दरियाँ थी जिनका रूप देखकर सूरज भी रथ नहीं चलाते थे। एक-एक कन्या को देखकर आंखें दूसरी ओर मुड़ती ही न थी। हरि, हरि, इन सबके अपने पति किस प्रकार प्राण धारण किये हुए होंगे। इस अधोगामी पापी रावण ने कितना नरक संचित किया है ॥ ४१३८ ॥ उन सुन्दरियों के अंग-स्पर्श से अधिक निद्रा आ जाती थी, उनके खर्राटे ऐसे सुनायी देते थे मानो ढोल पर पानी की धारा गिर रही हो। शत्रुओं का दर्प चूर करनेवाले रावण की बीस भुजाएँ शय्या पर झूल रही थीं, ऐसा लगता था मानो पाँच-पाँच सिर वाले वे बीस काल-सर्प हैं ॥ ३९ ॥ ऐरावत ने अपने दाँतों से रावण के शरीर में जहाँ-जहाँ चोट की थी, वहाँ-वहाँ घट्ठे पड़ गये थे। त्रैलोक्यमोहिनी, कानों में कुंडल-मंडित, मोटी जाँघोंवाली, गजेन्द्रगामिनी, स्वर्ण से

त्रैलोक्य मोहिनी दिव्य कन्याजनी कुण्डले मण्डित कर्ण ।
उन्नत जघनी गजेन्द्र गामिनी तुहि सुवर्णर वर्ण ॥ ४१४०
बदन कमल आति सुनिर्म्मल उन्नत कठिन स्तवन ।
नाभि सुगभीर त्रिवली वलित उदर पीन जघन ॥
उरु ये युगल सुवर्णर तल साक्षाते राम कदली ।
त्रैलोक्य मोहिनी दिव्य कन्या जनी सोणार येन पुतली ॥ ४१४१
सोणार आरोहे रहि हनुमन्त वीरे भालमते चाइल ।
त्रैलोक्य मोहिनी दिव्य कन्या जनी मारुतिये भेट पाइल ॥
आति रूप गड़ देखि हनुमन्त नामिला ताहार हन्ते ।
सिथाने पोथाने फुरि फुरि वीरे चाहिलन्त भालमते ॥ ४२
रावण राजार हृदये चापिया धरिया आछय गले ।
काल पर्व्वतक वेढ़ि येनमते विजुली आचारे ज्वले ॥
आति रूपवती देखि हनुमन्ते विस्मय भैल अद्भुत ।
इहान रूपेसे निते मूर्च्छा यान्त दशरथ नृप सुत ॥ ४३
नमो रघुपति अगतिर गति तुमि देव कृपामय ।
तोमार चरित परम अमृत मुकुतिको विड़म्बय ॥
हेनय तोमार चरण पङ्कजे नुगुचोक मोर मति ।
समस्त समाजे डाकि राम बोला पाप याउक अधोगति ॥ ४४

हनुमन्तर खेद आरु सीता-दर्शन

पद

हनुमन्ते बोलन्त जनक जीउ सीता * हेनसे बिपत्ति राघवर विवाहिता
जनक जीउर अङ्ग रावणर गावे * बिप्रर कपिला येन चण्डालर ठावे ४५

भी अधिक उज्ज्वल वर्णवाली, ॥ ४१४० ॥ वह दिव्य कन्या, जिसके वदन-कमल बड़े निर्मल, ऊँचे स्तन कठिन, नाभि गहरी, पेट और जाँघे मोटी तथा त्रिवली-युक्त और स्वर्ण-मंडित-सी दोनों जाँघे केले के पौधों जैसी थी । वह त्रैलोक्यमोहिनी दिव्य कन्या सोने की पुतली की भाँति थी ॥ ४१४१ ॥ सोने की सीढ़ी पर खड़े होकर वीर हनुमान भली-भाँति निहारकर उस त्रैलोक्यमोहिनी दिव्य कन्या को देखते रहे । उसके अपार रूप को देखकर हनुमान उसके पास उतर आये । इधर-उधर घूम-घामकर उन्होने उसे अच्छी तरह देखा ॥ ४२ ॥ वह कन्या राजा रावण को छाती से लगी हुई गले को आलिगन किये हुये थी, मानो काले-पर्वत को घेरकर बिजली की शिखा दमक रही है । उस परम रूपवती को देखकर हनुमान परम विस्मित हो उठे । (उन्होंने सोचा) इनके रूप से संभवत: रामचन्द्र नित्य बेसुध रहते थे ॥ ४३ ॥ अगति के गति, रघुपति, तुम्हें नमस्कार है । देव, तुम कृपामय हो; तुम्हारा चरित रूपी परम अमृत के सम्मुख मुक्ति भी सकुचाया करती है । तुम्हारे ऐसे चरण-कमलों से जैसे मेरी मति कभी न छूटे । सभी समाज के लोग पुकार कर बोलो, जिससे पाप नष्ट हो जाये ॥ ४४ ॥

हनुमान का दुख प्रकट करना और सीता के दर्शन

हनुमान कहने लगे, रामचन्द्र की विवाहिता पत्नी जनकनन्दिनी सीता पर यह कैसी विपत्ति है ! जनक की कन्या के अग रावण के शरीर पर हैं, जैसे विप्र की कपिला

हरि हरि आइ तोर हेन भैल गति * राघवर भार्य्यार अधम भैल पति
हनुमन्ते कान्दे लोह मल छन्ते हाते * हेनसे विपत्ति भैल विधिर बिघाते ४६
उत्तम कुलर बधू राघबर नारी * अशोधने हेन थले बुलिते नोवारि
चित्त दृढ़ करि बीरे आलोचन्त काज * जनकनन्दिनी हेन नुहिब निलाज ४७
पुनरपि मनत गुणन्त हनुमान * कदाचितो न करिबा अमद्यक पान
आउठ हातर बेणी शुनियाछो भाल * केश जुखि मुख सुङ्गि लैबोहो प्रमाण ४८
एहि बुलि केश तार मेलिया जुखिल * आउठ हातरो एक विगते नाटिल
केश जुखि प्रमाण न पाइल हनुमन्त * ओचर चापिया मुख गोट सुङ्गिलन्त ४९
मुख सुङ्गि चाहन्ते मद्यर पाइल घ्राण * बोलन्त जानकी नुहिब हेन थान
राघवर वल्लभा जानन्त धर्माधर्म * प्राण याहन्तेओ न करिबा हेन कर्म ४१५०
शुनियाछो रावणर प्रिया पटेश्वरी * मय दानवर जीउ एहि मन्दोदरी
चित्त थिर करिलन्त वीर हनुमन्ते * सचकिते बाज भैल ओवारिर हन्ते ४१५१
पुष्पक विमाने चाहिलन्त निरन्तरे * हाण्डि शाले चाहिलन्त मन्दिरार घरे
प्रवेशिला मारुति खुजिया बहुदूर * बित बित करिया चाहिला अन्तेषपुर ५२
दुनाइ मारुति गैया प्राच्चीत चड़िया * बिलाप करन्त कपि सष्टाङ्गे परिया
हा बिधि कि कर्म्म करिलो हरि हरि * लङ्कात नाहिका रामदेवर सुन्दरी ५३
हेनमते चाहिलो मोहोर प्रतिबन्धे * जानिलो निजोये आइ देखि दशस्कन्धे
रावणर आतास बितास रूपे डरि * चमत्कार देखि आकाशते गैला मरि ५४

गी चांडाल के हाथ पड़ गयी हो ।। ४१४५ ।। हरि, हरि, मां सीता, तुम्हारी ऐसी गति हुई ! राघव की भार्या का पति अधम रावण बना है। कहते-कहते रोते हुए हनुमान ने हाथों से अपने आँसू पोंछे। वे कहने लगे—ऐसी विपत्ति विधि-विडम्बना से ही हुई है ।। ४६ ।। राघव की पत्नी सीता उत्तम कुल की वहू है। वे ऐसे स्थान में रहेंगी, बिना जाने ऐसा कहा नहीं जा सकता। चित्त को दृढ़कर मन में विचार करना उचित है। क्योंकि जनकनन्दिनी सीता ऐसी निर्लज्ज नहीं हो सकती ।। ४७ ।। हनुमान पुनः मन में चिन्तन करने लगे— जानकी कदापि मद्यपान नहीं कर सकती। मैंने सुना है कि उनकी वेणी आठ हाथ लम्बी है। मैं इसके केश मापकर और मुँह सूँघकर इसका प्रमाण लूंगा ।। ४८ ।। यह कहकर उन्होंने उसके केश फैलाकर मापा। वह आठ हाथ से एक वित्ता कम था। केश मापने पर जब प्रमाण न मिला तो उन्होंने उस बाला का मुँह सूँघकर देखा ।। ४१४९ ।। उसका मुँह सूँघने पर मद्य की गंध आयी। तब हनुमान ने कहा— जानकी ऐसी जगह नहीं रह सकतीं। रामचन्द्र की भार्या जानकी को धर्माधर्म का पता है। वे प्राण जाने पर भी ऐसे कर्म नहीं कर सकतीं ।। ४१५० ।। मैंने सुना है कि रावण की प्रिया पटरानी मयदानव कीं कन्या है, यह वही मंदोदरी है। वीर हनुमान ने अपना चित्त स्थिर किया। वे सचकित हो राजभवन से निकले ।। ४१५१ ।। उन्होंने पुष्पक विमान के चारों ओर और भीतर निरन्तर देखा। रसोई घर और मन्दिर के घर में भी देखा। सीता को खोजते हुए मारुति बहुत दूर निकल गये। उन्होंने अन्तःपुर का कोना-कोना छान डाला ।। ५२ ।। वे पुनः जाकर प्राचीर पर चढ़ गये और साष्टांग पड़कर विलाप करने लगे। हा विधि, हरि हरि, मैंने यह कौन-सा कर्म किया ? प्रभु राम की सुन्दरी भार्या सीता लंका में नहीं है ।। ५३ ।। मैंने तो सभी प्रकार से प्रयास कर खोज देखा। समझ गया कि माँ सीता दशकंधर रावण को देखकर जीवित नहीं रही है। रावण के भयंकर रूप देख भयभीत हो, चमत्कृत होकर आकाश में ही वे मर गयी हैं ।। ५४ ।। नहीं तो रावण के लाते हुए

तुहिके वा आनन्ते वा परिल सागरे * गोसानीक भुञ्जिलेक मत्स्य ये मगरे
नुहि तेवे लङ्काते वा स्वामीत भकते * मरिला गोसानी माव निराहार व्रते ५५
आशा भङ्गे किवा आदेशिलेक रावणे * गोसानीक भुञ्जिलेक राक्षसिनी गणे
मइ लरि गैले वर मिलिवे वृत्तान्त * सीतार नपाया वार्त्ता रामोनि जीवन्त ५६
अनन्तरे लक्ष्मणेओ एरिबन्त जीव * मित्रर कार्य्यंत थाकि मरिबा सुग्रीव
भरते शुनिवे प्राण सङ्कलिल रामे * पानै शिरे धरिया मरिब नन्दी ग्रामे ५७
बिकले मरिव सवे अयोध्यार लोके * कौशल्या सुमित्रा मरिबन्त पुत्रशोके
स्वामीर सन्तापे विकलित करि हिय * तारा लोमा मरिवन्त सुषेणर जीव ५८
मावर बापर शोके दग्ध कलेवर * पाचे प्राण एरिवन्त अङ्गद कुमार
राज्यत बढ़िव सवे लटक तस्कर * मनुष्ये मारिव सवे भालुक वानर ५९
उपजिलो पृथिवीत भाव विपरीत * किसक न जाप प्राण लङ्कानगरीत
मइ उपजिलोहो अधम पापाचार * सद्‌गति न भैल मोर ज्ञाति द्रोहीयार ४१६०
सागर तीरत निया सञ्जालोहो बुलि * वह्निकुण्ड ज्वालो मइ मरिबाक बुलि
सागरत जाम्प देओं खाउक जल जन्तु * वार्त्ताक नपाया राम आशा तेजिवन्त ४१६१
एहि बुलि मारुतिये माथा तुलि चाइल * अशोका वनिका खान दरशन पाइल
सम्पातिर वचनक परिल मनत * गोसानी आछन्त एहि अशोक बनत ६२
कौतूकत मारुति नाचन्त छेवे छेव * अशोक वनक लागि करिलन्त डेव
महावेगे परिला शवद गैल ठाट * सागर माजत येन परिल निर्घात ६३

ही वह सागर में गिर पड़ी हैं और मच्छ-मगर आदि उन्हें खा गये है ! नहीं तो लंका में लाने पर पतिभक्ति के कारण माँ सीता निराहार व्रत धारण कर मर गयी होगी ।। ५५ ।। अथवा आशा-भंग के कारण रावण ने राक्षसियों को आदेश दे दिया होगा और उन सबने उन्हें खा डाला होगा । मैं यदि यहाँ से शीघ्र ही लौट जाऊँ तो सबको पूरा वृत्तान्त ज्ञात हो जायेगा । सीता का समाचार न पाकर राम भी जीवित नही रहेंगे ।। ५६ ।। इसके पश्चात् लक्ष्मण भी अपना जीवन तज देंगे और सुग्रीव भी मित्र के कार्य में लगे रहकर जीवन तज देंगे । जब भरत को पता चलेगा कि राम ने प्राण तज दिये तो वे भी रामचन्द्र की पनही सिर पर लिये हुए नंदीग्राम में प्राण छोड़ देंगे ।। ५७ ।। अयोध्या के लोग व्याकुल होकर मर जायेंगे । कौशल्या, सुमित्रा पुत्र-शोक से मर जायेंगी । पति के संताप से हृदय विचलित हो जाने के कारण तारा और सुषेण की बेटी लोमा भी मर जायेगी ।। ५८ ।। माता-पिता के शोक से शरीर दग्ध होने के कारण कुमार अंगद भी प्राण तज देंगे । राज्य में चोर-तस्कर बटमार बढ़ जायेंगे । मनुष्य सारे भालू-वानरों को मार डालेंगे ।। ५९ ।। मैं संसार में विपरीत भाव के कारण ही उत्पन्न हुआ । लंकानगरी मे अब मेरे प्राण क्यों चले नही जाते ? मैं अधम पापाचार बनकर उत्पन्न हुआ हूँ, मुझ आत्मीय-द्रोही की सद्‌गति नहीं होगी ।। ४१६० ।। मैं सागर-तटपर जल मरने के लिए अग्निकुण्ड सजा लूंगा । सागर में कूद पड़ूंगा ताकि जलजन्तु खा डालें । तब कोई समाचार न मिलने के कारण रामचन्द्र सीता की आशा छोड़ देंगे ।। ६१ । यह कहते-कहते हनुमान ने सिर उठाकर देखा, तो अशोकवन पर उनकी दृष्टि पड़ी । उन्हें सम्पाति के वचन याद आगये कि सीतादेवी इसी अशोकवन में हैं ।। ६२ ।। मारुति हर्ष से नाच उठे और अशोकवन की ओर शीघ्रता से चल पड़े । बड़े वेग से उनके जाने के कारण चारों ओर ऐसा शब्द गूंज उठा मानों सागर में वज्रपात हुआ है ।। ६३ ।। त्रास के मारे पक्षी अपने घोंसलों से निकल ची-ची करते हुए ढप्-ढप् गिरने लगे, कितने ही पक्षी मर

त्रासत चटक सब बास परिहरि * चिओं चिओं ढप ढप कतो गैला मरि
बनजन्तु सबत लागिल कोलाहल * आइ बाप बुलिया पलाइ बनपाल ६४
बिचुरति भैलक लङ्कार यत जन * तवध करिल चक्षु राक्षसिनीगण
कतो बृक्ष आग भागि गुचिल आरम्भ * उझरा भिठित येन थाकि गैल स्तम्भ ६५
कतो वृक्ष भागि गैल शरीरर बावे * बिम्बा शबद शुनि आकाशे उरावे
अशोक चम्पक पुष्प नागेश्वर शिरि * हनुमन्त भैला येन पुष्पमय गिरि ६६
बनर कुसुम सब परँ खसि खसि * धूलि धूसरित कपि साक्षाते तपसी
सचकित हुया चान्त यान्त धुमि धुमि * वृक्ष तले देखिलन्त सुवर्णर भूमि ६७
सुवर्णर भूमि कतो कतोहो रूपार * पोबाल मुकुता मणि ज्वले जातिष्कार
नन्दन बनत आछे सुविचित्र काम * अशोका बनिका खानो तातो अनुपाम ६८
रावणर आदेशे निर्म्मिला विश्नकर्म्मे * क्रीड़ार भूबन मणि मुकुतार कर्म्मे
शिशपा बृक्षक देखिलन्त कतोक्षणे * गुरिगोट बेढ़ि आछे राक्षसिनी गणे ६९
बिकृत बिभाष कतो पेचार स्वभाव * भेङ्गुरा स्वभाव कतो देखिते कुभाव
कतो ऊर्द्ध नासिका हस्तीर येन शुण्ड * गाव गोट कृश देखि लोटरिया मुण्ड ४१७०
कतो नाक चेपेटा पतिला गोट मान * गावत परय हालि कुला हेन काण
अजमुखी गोमुखी शूकर श्वानमुखी * गोलैपेटी उरु हाते न पावय ढुकि ४१७१
बिहरिया आछय हस्तीर येन दान्त * छागलर हेन मुख सिंहर आक्रान्त
केहो जनीर मुण्ड केशाइल येन दल * दुइ तन लम्बित साक्षाते येन ढोल ७२

भी गये। वन-जन्तुओं में कोलाहल मच गया, अरे बाप, अरे बाप करते हुए वन-पाल भागने लगे ॥ ६४ ॥ लंका के लोगों की चेतना खो गयी, राक्षसियों की आँखें स्तब्ध हो गयी। कितने ही वृक्षों की ऊपर की डालियाँ टूटकर बिखर गयीं; वे ऐसे लगने लगे मानो उजड़े घर की नीव पर केवल खभे भर रह गये हैं ॥ ६५ ॥ कितने ही वृक्ष उनके शरीर की हवा से टूट गिरे और प्रचंड नाद से आकाश में उड़ने लगे। अशोक, नागेश्वर, चम्पा, शिरिष आदि वन के फूल झड़-झड़कर गिरने लगे। हनुमान ऐसे लगने लगे मानो पुष्पमय पर्वत हों। धूल से भरे वे साक्षात् तपस्वी जैसे लगते थे। वे सचकित होकर देखते हुए घूम-घूमकर जाने लगे और वृक्ष के नीचे स्वर्णमय भूमि देखी ॥ ६७ ॥ कहीं वह भूमि स्वर्ण की थी, कहीं चाँदी की, और पुखराज, मोती-मणियाँ आदि झलमला रही थी। नन्दनवन में विभिन्न प्रकार के बेल-बूटों के काम किये हुए हैं, अशोक-वन उससे भी अधिक अनुपम है ॥ ६८ ॥ रावण के आदेश से उसका निर्माण विश्वकर्मा ने किया था। वहाँ क्रीड़ा का संसार, मणि-मुक्ताओं के कामों, बेल-बूटों से जगमगा रहा था। कुछ क्षण पश्चात् उन्होंने शिशपा वृक्ष देखा, जिसके तल को घेरे राक्षसियाँ बैठी हुई थी ॥ ४१६९ ॥ कोई-कोई विकृत विभाषा बोल रही थी, किसी का स्वभाव उलूक जैसा था। किसी का स्वभाव टेढ़ा-मेढ़ा था, तो कोई देखने में कुत्सित थी। किसी की नाक ऐसी ऊँची थी, मानो हाथी की सूँड़ हो, किसी का शरीर दुबला पर सिर विशाल था ॥ ४१७० ॥ किसी की नाक पतीली की भाँति चपटी थी, किसी के सूप जैसे लम्बे कान शरीर पर फैले हुए थे। कोई-कोई बकरे जैसे मुखवाली थी, किसी-किसी का पेट इतना बढ़ा था जिससे वे हाथ से अपनी जाँघ को भी छू नहीं सकती थी ॥ ४१७१ ॥ किसी के दाँत हाथी के दाँत जैसे निकले थे, किसी का मुख सिंह द्वारा आक्रान्त बकरे जैसा था। किसी-किसी के सिर पर मन्दिर जैसे ऊँचे जूड़े बँधे हुए थे। दोनो स्तन ढोल की भाँति फैले झूल रहे थे ॥ ७२ ॥ कपास ओटने का पतथर जैस झूला रहता है, उनके ओठ भी उसी तरह लटकते हुए थे।

ओलमिल ओठ येन नवठनि शिल * रुधिर मांसक खाइ फरे किल किल
आलतार वर्ण केहो पिङ्गलीया काली * कतोहो कपिली वगी हाण्डी ये शृगाली ७३
कतो काणी कतो खुरी कतोहो गलण्डी * कनैयारी गञ्जकारी प्रचण्डी चामुण्डी
आग गुरि सरु येन शिलिखार भाञ्ज * हासन्ते देखिय येन दशनर माञ्ज ७४
आलखनी पिशाचनी कुलक्षणी चारी * एकेक शोषते पिये मद्य एको झारि
एक पाव दुइ पाव तिनि पाव चारि * जिह्वा खान मेलि थाके शरीर आवरि ७५
एक आखि दुइ आखि कारो तिनि आखि * दुइ काण हाले येन चटकर पाखि
तासम्बार माजे देवी संसारते सारा * मेघे येन ढाकि आछे सर्व्वोत्तम तारा ७६
केशे येन ढाकि आछे चम्पक मल्लिका * भस्मे येन ढाकि आछे अगनिर शिखा
थूलन्तर मलिन वसन परिधाने * वृक्षर मूलत आछा स्वामीक धियाने ७७
एक गोटा चेलारि भूमित लुटि आछे * चकिता हरिणी येन चान्त आगे पाचे
हनुमन्ते देखिया चकित भैल मन * मने आलोचन्त किनो रूप बितोपन ७८
सीता हरि येति क्षणे आनिल रावणे * ऋष्यमुखे देखिलो वानर पाञ्च जने
सेहि थान रूप गुण सेहिसि लक्षणी * आउठ हातर केश एक गोटा बेणी ७९
इहार कारणे मरिलन्त निशाचर * बिराध त्रिशिरा खर दूषण अपर
कबन्धक मारिलेक विकृत पुरुषेक * शूर्पणखार नाक काण काटिला प्रत्येक ४१८०
बालीवध करिलन्त करि एकेशर * सुग्रीवक करिलन्त राय राजेश्वर
अचला लक्ष्मीक दिला किष्किन्ध्या नगरी * तारा लोमा माला दिला तिनि पटेश्वरी ४१८१

वे खून और मांस को खा-खाकर खिल-खिलाती हँस रही थी। कोई महावर जैसी लाल थी, किसी का वर्ण पिंगल, तो किसी का काला था, कोई कपिली, कोई सफेद हाँड़ी जैसी तो कोई सिमारिन के रंग की थी ॥ ७३ ॥ कोई कानी थी, कोई लंगड़ी थी, किसी का घेघा निकला हुआ था, कोई ऐंची थी, कोई गजी थी, प्रचण्ड चामुडी की भांति झगड़ालू थी। कोई-कोई आरम्भ से अंत तक हर्रे की सिकुड़न की भाँति झुर्रियों वाली थी, जब वे हँसती थी तो दाँत के बीच का हिस्सा भी दिखाई पड़ने लगता था ॥ ७४ ॥ कोई अलक्षणी, पिशाचनी, कुलक्षणी, कुलटा एक-एक घूंट मे एक-एक घड़ा मदिरा पी जाती थी। किसी के एक, तो किसी के दो, किसी के तीन, तो किसी के चार पैर थे। समूचे शरीर को ढँककर वे अपनी जीभ फैलाये रहती थी ॥ ७५ ॥ किसी के एक आँख, किसी के दो, तो किसी के तीन आँखें थी। गौरैया के डैनों की भाँति किसी-किसी के कान हिल रहे थे। इन सबके बीच संसार में सर्वश्रेष्ठ देवी ऐसे बैठी हुई थी मानो सर्वोत्तम तारे को मेघों ने ढँक रखा है ॥ ७६ ॥ मानों केशों ने चम्पा, मलिका फूलों को, राखने मानो अग्निशिखा को ढँक रखा हो। मोटा-मैला वस्त्र पहने वह वृक्ष के मूल के समीप स्वामी के ध्यान में बैठी हुई थी ॥ ७७ ॥ एक वस्त्र पर भूमि पर लेटी थी, वह चकिता हरिणी जैसे आगे-पीछे देख रही थी। उनको देख हनुमान का मन चकित हो उठा, वे मन ही मन विचार करने लगे, सीता जी का रूप कितना सुन्दर है ! ॥ ७८ ॥ जब इन्हें रावण हरकर लिये आ रहा था, हम पाँच बानरो ने इन्हें ऋष्य मुख पर्वत पर देखा था। इनका रूप-गुण वही है; सारे लक्षण भी वे ही हैं, केश आठ हाथ लम्बे हैं और एक ही वेणी है ॥ ७९ ॥ इन्ही के कारण विराध, खर, दूषण, त्रिशरा तथा अन्य निशाचरों को मरना पड़ा है। इन्ही के कारण विकृत पुरुष कवन्ध मारा गया, शूर्पनखा के नाक-कान कट गये ॥ ४१८० ॥ इन्ही के कारण रामचन्द्र ने एक ही वाण से वाली को मार डाला तथा सुग्रीव को राज-राजेश्वर बनाकर अचला लक्ष्मी, किष्किन्ध्या नगरी, तारा, लोमा और माला ये तीन पटरानियाँ दी ॥ ८१ ॥

इहान कारणे धन्य जीवन आमार
मइओ लङ्का आसिलो सागर भैलो पार * सीता व्यतिरेके केने प्राणक एरन्त ८२
किनोटो अशक्य कर्म्म राघवे करन्त * सीता देवी शान्ति मइ केने बार्त्ता पाओं
केनमते राघवर हित करि याओं * दिन गोटा बञ्चो कैत कोन कार्य परँ ८३
पूर्ब्बदिके धवल कोकिल काक रड़े * रावण प्रबोध ओवारित बाजे चाओ
हनुमन्त आर भैला परशिला झाओ * हात मुख पखालि पन्हत पाले पाल ८४
पुरवासी लोके जागि करे कोलाहल * एकोबे प्रकारे सीता मनर न याय
प्रातःकाल सङ्कलित रावण रजाइ * सन्धित पञ्चम बाण हानिल पवने ८५
शरीर भेदिल दृढ़तर पञ्चबाणे * बिचित्र थानर हन्ते आसिल सकाल
सीताक सुमरि तार मदन बिशाल * सीताक सुमरि तार मनत खलक ८६
कर्पूर ताम्बुल खाइल मदन मोदक * अशोका बनक लागि करिल गमन
जानकीक स्मरि तार न सहय मन * कन्या सहस्रेक शीघ्र बेगे लैल लाग ८७
एकेश्वरे ठाव हन्ते लरि सातो आग * केहो जनी धरि याय रत्नर प्रदीप
सुगन्ध धूपक धरि चापिल समीप * कर्पूर ताम्बुल योगावय कतो नारी ८८
आगर कस्तुरी लैया कनक भृङ्गारि * करि हात लोहारि चापिल मन्दोदरी
तारा हेन झाकि पारे एकैक सुन्दरी * अशोका बनिका गैया पाइला तेतिक्षण ८९
सेवा करि चलिल कामिनी कन्या जन * माथा तुलि देखिलन्त रावण आसन्ते
अलङ्कार शवद शुनिला हनुमन्ते * शिंशपा बृक्षत थित पत्रहि आवरि ४१९०
लाम्फ दिया उजाइलन्त ह्रस्व देहा करि *

मैं भी (इन्हीं के कारण) सागर पारकर लंका आया हूँ। इन्हीं के कारण हम सबका जीवन धन्य हुआ है। रामचन्द्र कर न सकें भला ऐसा अशक्य कर्म कौन सा है? सीता के बगैर वे अपने प्राण भला क्यों नहीं छोड़ेंगे? ॥ ८२ ॥ मैं रामचन्द्र का हित किस प्रकार करूँ? सीता जी सती है, यह वार्ता मुझे किस प्रकार मिल सकेगी? पूर्व दिशा धवल होती जा रही है; कोकिल, कौवे बोल रहे हैं, (सवेरा हो चला है) किस प्रकार से, कहाँ जाकर अब दिन बिताऊँ? ॥ ८३ ॥ हनुमान झाऊ की डालियों की ओट में छिप गये। रावण को जगाने के लिए राजभवन में वाजे वज उठे। पुरवासी लोग जाग उठे वे हाथ-मुँह धोकर अपने-अपने मार्ग में निकल पड़े; चारों ओर कोलाहल छा गया ॥ ८४ ॥ राजा रावण प्रातःकाल में जग उठा। सीता उसके हृदय से किसी प्रकार भी नहीं जा रही थी। कामदेव के दृढ़तर पंच-वाणों ने उसका हृदय वेध डाला। उनकी संधि में पवन ने पाँचवाँ वाण मारा ॥ ८५ ॥ सीता का स्मरण होते ही उसका काम-भाव प्रचंड रूप से बढ गया, वह अपने विचित्र स्थान से शीघ्र ही निकल आया। उसने कर्पूर, ताम्बूल और मदन-मोदक खाया। सीता के स्मरण से उसके हृदय में खलवली मच गयी ॥ ८६ ॥ जानकी की स्मृति से उसका चित्त शान्त न रह सका। वह शीघ्रता से अशोकवन को चल पड़ा। एक ही बार में सभी स्थानों से चारों ओर सहस्रों कन्याएँ दौड़ी आकर शीघ्रता से रावण के साथ हो ली ॥ ८७ ॥ वे कन्याएँ हाथ में सुगन्धित धूप लेकर उसके पास आयी, कोई-कोई हाथ में रत्न के दीप लेकर आयी; सोने की सुराही, अगर, कस्तूरी आदि ले आयीं। कितनी ही नारियाँ कर्पूर-ताम्बूल आदि देने लगीं ॥ ८८ ॥ आकाश के तारे के समान कोई-कोई नारी दमक रही थी। हाथ जोड़कर मंदोदरी भी उसके पास आयी! सभी कामिनी-कन्याएँ अनेक प्रकार से रावण की सेवा करती हुई चली और सभी अशोकवन में आये ॥ ८९ ॥ हनुमान ने नारियों के गहनों की ध्वनि सुनी और सिर उठाकर देखा कि रावण आ रहा है। अपने शरीर को छोटा बनाकर कूद गये और अशोक के पेड़ की डालियों के वीच

रावण आसय देखि जानिल इङ्गिते * वायु पाया कदली काम्पय येन मते
ढाकि उरु उदर वसिला तरुतले * स्तन दुइ ढाकिलन्त वाहुवे युगले ४१९१
लाजे भये देवीर चक्षुर वहे लोह * सीताक देखिया रावणर वियामोह
जय जय रघुबंश तिलक राघव * यार नाम लैया तरे भव पराभव ९२
हेन राम नाम यिटो सुमरे सतत * कोने कहिवेक पारे ताहार महत
हेन राम चरणत पशिलो शरणे * बोला राम राम यत सभासद गणे ९३

सीतार मन घूरावलै रावणर चेष्टा आरु राक्षसिनीविलाकर नानाविध भय-प्रदर्शन

दुलड़ी

कतो दूर हन्ते रावणे मातय सीतार मुखनि चाइ।
लाज परिहर त्रैलोक्य सुन्दरी एखाने पुरुष नाइ॥
तोर रूप देखि व्यामोह भैलोहो थिर नोहे मोर गाव।
एमो कि तोमार खण्डिया न गैल हरि बार भङ्ग भाव॥ ९४
मुख तुलि मात सरस वदनी देखो मइ चन्द्रोदय।
अन्तर्गत मोर त्वरिते खण्डोक दारुण ए तमोमय॥
तोमार रूपक कोने वर्णाइवेक सकल गुण सम्पन्नी।
तिनियो भुवने आमि नैयो देखो तोर थान वितोपनी॥ ९५

वे छिप गये ॥ ४१९० ॥ संकेतों से सीता ने समझ लिया कि रावण आ रहा है, वायु में जैसे केले का पौधा काँपता है वे वैसे ही काँपने लगी। वे अपनी जांघों और उदर को ढँककर वृक्ष के नीचे बैठ गयी और हाथों से अपने दोनो स्तनों को ढँक लिया ॥ ४१९१ ॥ लज्जा और भय के मारे देवी की आँखो से आँसू बहने लगे। सीता को देख रावण को व्यामोह हो गया। रघुवंश-तिलक राघव, जिनका नाम लेकर संसार की विषय-वासनाओं के पराभव से उद्धार हो जाता है, उनकी जय हो, जय हो ॥ ९२ ॥ ऐसे राम नाम का जो निरंतर श्रवण करता है, उसका महत्व कौन बता सकता है ? ऐसे रामचन्द्र के चरणों की मैं शरण ले रहा हूँ। सभी सभासद गण राम, राम कहो ॥ ४१९३ ॥

सीता का मन परिवर्तन करने हेतु रावण का प्रयास और राक्षसिनियों द्वारा नाना प्रकार का भय-प्रदर्शन

कुछ दूर से सीता के मुख की ओर देखते हुए रावण ने पुकार कर कहा—त्रैलोक्य-सुन्दरी सीता, तुम लाज छोड़ दो, यहाँ कोई पुरुष नहीं है। तुम्हारा रूप देखकर मुझे व्यामोह हो गया है, मेरा शरीर स्थिर नही रह पा रहा है। तुम्हें हरकर लाने में जो विरोध-भाव तुम्हारे मन में जगा था, क्या वह अब भी मिटा नही है ? ॥ ९४ ॥ हे सरसबदनी, तुम सिर उठाकर बोलो, मैं चन्द्रोदय दर्शन करूँ। मेरे हृदय में जो दारुण अंधकार छाया हुआ है वह तुरन्त नष्ट हो जाये। तुम्हारे रूप का वर्णन भला कौन कर सकता है ? तुम सर्वगुण-सम्पन्ना हो। हे सुन्दरी, मैं तो संसार में तुम जैसी व्युतपन्न नही देखता ॥ ९५ ॥ हे सुन्दरी, तुम भूमि पर पड़ी हो, मन्दोदरी रत्न-शय्या पर है, तथापि वह तुम्हारे समान नहीं है, तुम देव-वंशजा हो। बिना अलंकारों के ही

तुमि ये सुन्दरी भूमित आछाहा मन्दोदरी रत्न शय्यात ।
तथापि तोमार सदृश नोहय देव गर्भे तुमि जात ॥
तोर अङ्ग भागे शोभा करँ आति बिना सब अलङ्कारे ।
देव योग्य येवे मण्डित होवय केने सहे काम धारे ॥ ९६
बनवासी जटी तापसीक एरि सीतादेवी मोक भजा ।
तोमार बापये जनक पातिबो पृथिवी मण्डले राजा ॥
तेहे ये आमार शशुर भैलन्त देखिबा केन महत ।
पृथिवीर राजा सकले खाटोक जनकर चरणत ॥ ९७
रावणक लाजे भये पिठि दिया सीताये दिला उत्तर ।
ब्रह्मार नन्दन पुलस्तिर नाति तुमि राजा लङ्केश्वर ॥
चैधय्य शास्त्रत आपुनि पार्गत बूजिय धर्म्म अधर्म्म ।
अयोग्य बचने शान्ती ये कन्यार किसक जनिय मर्म्म ॥ ९८
कुनय एरिया राजा लङ्केश्वर धर्म्मक धरा मनत ।
मोक निया तुमि झाण्ट करि दिया राघवर चरणत ॥
प्रभुर भकति लीलाये साधिया निर्भय कराइबो तोक ।
रामर प्रसादे चिरकाल भुञ्जा अकण्टके तिनि लोक ॥४१९९
तुहि परदारा हरिवार फल अबिलम्बे तइ पाइबि ।
प्रभुर सुवर्ण पखाया शरत सबान्धवे मरि जाइबि ॥
सपुत्र बान्धवे छन्न हैब तोर पिण्डको न थैब सञ्च ।
एभो चक्षुनखा पापिष्ठ रावण मोहोर स्वामी नवञ्च ॥४२००
मोक कामभावे चाहन्ते रावण चक्षुयो बाज न भैल ।
रामर भार्य्याक लाधव बोलन्ते जिह्बायो खसि न गैल ॥
आमार प्रभु कि ठावत नाहिका तोहोर भाग्यक पाइ ।
शापि भस्म तोक आजि न करओं धर्म्मर पथक चाइ ॥४२०१

तुम्हारे अंग अत्यंत शोभित है । वह देव-योग्य शरीर यदि आभूषण-मंडित हो तो फिर उसका काम-धार कौन सह सकता है ? ॥ ९६ ॥ वनवासी जटाधारी, तपस्वी को छोड़कर हे सीता, तुम मुझे भजो । मै तुम्हारे बाप जनक को पृथ्वीमंडल का राजा बनाऊँगा । वे ही मेरे ससुर बनेंगे, इससे बढ़कर बड़ाई और क्या हो सकती है ? पृथ्वी के राजागण जनक के चरणों की सेवा किया करेंगे ॥ ४१९७ ॥ लज्जा-भय से रावण की ओर पीठ देकर सीता ने उत्तर दिया—राजा लंकेश्वर, तू ब्रह्मा के नन्दन, पुलस्ति का नाती है । चौदह शास्त्रों में स्वयं पारंगत है, धर्म-अधर्म समझ सकता है । इस प्रकार अनुचित वचनों से मुझ सती कन्या के अन्तर में मर्मवेदना क्यों उत्पन्न कर रहा है ? ॥ ४१९८ ॥ राजा लंकेश्वर, अनीति छोड़कर मन में धर्म को धारण कर और मुझे शीघ्रता से रामचन्द्र के चरणों में सौंप दे । प्रभु की भक्ति लीलापूर्वक तुझे प्रदान करवाकर निर्भय करवा दूंगी । राम के प्रसाद से निष्कंटक रूप से तू तीनों लोकों को भोगता रह सकेगा ॥ ४१९९ ॥ अन्यथा पर-पत्नी को हरण करने का फल तुझे अविलम्ब मिलेगा । प्रभु के स्वर्ण-पंखों वाले बाणों से बन्धु-बान्धवो समेत तुझे मरना पड़ेगा । पुत्र-बन्धु-बान्धवों समेत तेरा नाश हो जायेगा । पिंड देने को भी कुल में कोई नही रहेगा । अत: पापी रावण, तू अन्धा न बन, मुझे पति से वंचित न कर ॥ ४२०० ॥ रावण, मेरी ओर कामभाव से देखने में तेरी आँखें फूट क्यों नहीं जातीं ? रामचन्द्र की पत्नी से कुवचन बोलने में तेरी जीभ क्यों गिर नही पड़ती ? ऐसा कौन-सा स्थान है जहाँ मेरे

सीताक चाहिया रावण बोलय हाओरे दुखिनी चारी ।
निर्भर स्वरूपे मातन्ते आछह जानस स्त्रीक नमारि ॥
मोर मुख चाइ उत्तर करस हाओरे दुर्ज्जनी जनी
आगम पुराण मोक बुजावस कोन ये साध्वी करणी॥४२०२
स्वर्ग मण्डलक पृथिवी जिनिया पाताल करिलो वश ।
त्रिदश आसिया मोक सेवा करे तापसीर गुण कस ॥
एतिक्षणे तोर स्वामी देवरक मारि पेयो एकेश्वरे ।
राज्य हरुवाइ विपाङ्के परिया जीयोक वन गोचरे ॥ ३
सीताये बोलन्त दुर्ज्जन रावण नमात गर्व्व विस्तर ।
शान्ती कन्या हरि आनिबार फले दुख पाइबि बहुतर ॥
प्रभुर आगत तइ थिर हुइबे भाले जानो तोर गहृ ।
मोहोर आगत ढङ्कुवा नफार आनत भावना कहृ ॥ ४
स्वामी देवरक परोक्षत मूढ़ा मुनिसाइ परिहरि ।
लाज बेलखक धोराक दिलेहे आनिलेक चुरि करि ॥
राघव स्वामीर आमि धर्मपत्नी ज्वालस मोहोर शोक ।
स्वामीर इंगित पाइले एतिक्षणे शापि भस्म करो तोक॥ ५
निर्भय नारीर आगत रावण मेलस आटाइ टाइ ।
निलाज भैलेहे वर सुखे जीवे केतो भात कठ लाइ ॥
नाक काटिबार गुणेक आछय सुखे वहे खरवाहा ।
तोहोर वीरत्व वाम पावे मलछो हाण्डि बान्दिं मरिवे याहा ॥ ६

प्रभु नही है। यह तो अपना भाग्य ही समझ कि मै धर्म-मार्ग को देखते हुए आज तुझे अभिशाप दे भस्म नही कर डालती ! ॥ ४२०१ ॥ तब रावण सीता की ओर देखते हुए कहने लगा—अरे दुखिनी कुलटा, मैं स्त्री का वध नही करता यह समझकर मुझसे निर्भीकतापूर्वक बातें कर रही है। अरी दुर्जनी, तू मेरे मुँह पर उत्तर दे रही है। तू कितनी बड़ी साध्वी है कि वेद-पुराण की बाते मुझे समझा रही है ? ॥ ४२०२ ॥ मैने स्वर्ग जीता है, पाताल और पृथ्वी को जीतकर वशीभूत कर लिया है। सारे देवता मेरी सेवा किया करते है, मेरे सम्मुख तू तपस्वी का गुण बखान कर रही है ? मैं इसी क्षण तेरे पति-देवर को एक साथ मार डाल सकता हूँ। (मगर मैं इसलिए छोड़ रहा हूँ कि) वे राज्य खोकर विपत्तियों मे रहते हुए वन-वन में भटकते रहें ॥ ४२०३ ॥ सीता बोली—दुष्ट रावण, अधिक अहंकार न कर। सती-कन्या को हरणकर लाने के कारण तुझे बहुत दुख भोगना पड़ेगा। प्रभु के सम्मुख तू खड़ा हो सके, क्या तेरा यह साहस है ? अपनी भावना दूसरों से प्रकट करना, मेरे सम्मुख डीग न मार ! ॥ ४२०४ ॥ मेरे स्वामी-देवर के परोक्ष में रे मूढ़, सारी मनुष्यता छोड़कर, सारी लाज-शर्म को ताकपर रखकर, मुझे चुराकर ले आया। मैं पतिदेव राघव की पत्नी हूं, तू मुझे शोक से जला रहा है। यदि पति का संकेत रहता तो तुझे इसी क्षण अभिशाप देकर भस्म कर देती ॥ ४२०५ ॥ रे रावण, तू मुझ निर्भय नारी के सम्मुख जोर-जोर से अपनी बड़ाई कर रहा है। निर्लज्ज होने पर तो जिस किसी के दरवाजे पर आसन लगाकर भात खा लिया जा सकता है। तेरे गुण तो केवल नाक कटवाने के हैं, उलटे तू बड़े आनन्द से उन पर घमंड करता है। तेरी वीरता तो बस बायें पैर से कुचल कर समाप्त हो जाने की है ॥ ४२०६ ॥

जय जय रघु वंश शिरोमणि रामचन्द्र कृपासिन्धु ।
तोमार चरण पङ्कजर मागो कृपा मकरन्द विन्दु ॥
तयु नाम मोर मुखे न छारोक चरण नेरोक मने ।
तेजि आन काम बोला राम राम यत समाजिक जने ॥ ४२०७

पद

सीतार शुनिया हेन नैराश वचन * क्रोधे दशग्रीव भैला रकत नयन
उरु दुइ कम्पावय पिसे हाते हात * कटाक्षे क्रोधिया आञ्चोरय दशमाथ ४२०८
गञ्ज करि बोलय राखक आसि राम * आजि खण्डाइबो तोर सीता शान्तीनाम
बले धरो पापिष्ठीक पृथ्वी दुइबा साक्षी * मोक स्वामी न बरे फुटिल दुइ आखि ४२०९
गौरब प्राणीसे उचितत लवे ठाव * हृटिलेसे नीच जन होवे शुद्ध भाव
गञ्ज करि धाइल लङ्कानाथ निशाचर * देखि क्रोध ज्वलि गैल बायुर पुत्रर ४२१०
मने मने गर्ज्जन्त न सहे तान बुक * पापिष्ठ राक्षसे आजि गोसानीक चोक
मने मने बोलन्त थाकिबि लरि कैक * हुओं बायुपुत्र आजि दिब तोक सोक ४२११
पावत पावक दिया आजुरिवो भिरि * आवर पावत धरि पेलाइबोहो छिरि
लाथि मारि भाङ्गि एरो दशमाथा खुलि * नुहि आजि मारि एरो पाञ्जरक फुरि १२
राघवर वैरी आजि निदलि पेलाओं * लाञ्जे बान्धि सागरत भुबुरि पकाओं
गञ्ज करि चलय लङ्कार महाराज * मन्दोदरी बोलय आसज भैल काज १३

(कवि माधव कन्दली कहते है कि) रघुवंश-शिरोमणि, कृपासिंधु रामचन्द्र आपकी जय हो, जय हो। मैं तुम्हारे चरण-पंकज की कृपा मकरन्द-विन्दु चाहती हूँ। तुम्हारा नाम जैसे मेरा मुख न छोड़े, तुम्हारे चरणों से मेरा चित्त पृथक न हो। और कामों को छोड़कर सभी सामाजिक लोग 'राम, राम' कहो ॥ ४२०७ ॥ सीता के इस प्रकार निराश करनेवाले वचन सुनकर क्रोध के मारे दशानन रावण के नेत्र क्रोध से लाल हो उठे। दोनों जाँघे काँपने लगीं, हाथ से हाथ मलने लगा। कटाक्ष से क्रुद्ध होकर वह अपने दसों सिरों के बालों को नोचने लगा ॥ ४२०८ ॥ सीता का तिरस्कार करता हुआ वह बोलने लगा—आज राम आकर तेरी रक्षा करे। मै आज तेरा सती सीता नाम खंडित कर दूंगा। धरती, तुम साक्षी रहना, मैं इस पापिनी को बलपूर्वक पकड़ रहा हूँ। इसकी आँखे फूट गयी है, इसलिए मुझे पति-रूप में वरण नही करती ॥ ४२०९ ॥ प्राणी का गौरव यही है कि वह उचित स्थान को ग्रहण कर लेता है। परन्तु नीच जनों को दंड देने पर ही उनकी भावनाएँ शुद्ध होती हैं। सीता का यों तिरस्कार कर निशाचर लंकानाथ वेग से धावित हुआ। यह देख हनुमान क्रोध से जल उठे ॥ ४२१० ॥ वे मन ही मन गर्जना करने लगे। उनकी छाती वह सह नही पा रही थी याने छाती क्रोध से जल रही थी कि यह पापी आज स्वामिनी सीता को त्रास दे रहा है! वे मन ही कहने लगे—तू भागकर कहाँ रहेगा? मैं यदि पवन-पुत्र हूँ तो आज तुझे अच्छी शिक्षा दूँगा ॥ ४२११ ॥ तेरे पाँव पर पाँव देकर टेढाकर दूँगा, पुनः दूसरे पाँव को पकड़कर फ़ाड़ डालूँगा। लात मारकर दसो सिरों की खोपड़ियों को चूर कर डालूँगा। या तुझे मारकर अस्थि-पंजर चूर-चूर कर डालूँगा ॥ १२ ॥ आज राघव के शत्रु को कुचल डालूँगा। पूँछ में बाँधकर समुद्र में डुबो दूँगा। लंकाराज रावण सीता का तिरस्कार कर आगे बढ़ा। मन्दोदरी ने सोचा, यह तो बड़ा अनुचित कार्य हो रहा है ॥ १३ ॥ पूर्वकाल में नल-कूबर ने

पूर्व्वकाले शापि आछे नलये कुवेरे * स्त्री वले धरिले मोहोर स्वामी मरे
आगवाढ़ि मन्दोदरी करिल प्रवोध * स्त्री सकलत प्रभु नुयुवाइ क्रोध १४
तोमार क्रोधक न सहन्त देवगणे * पुरणि काहिनी प्रभु न परय मने
आगवाढ़ि मन्दोदरी बुलिलेक वाणी * हस्तीक अङ्कुशे येन पालटाइ टानि १५
रावणे वोलय शुन राक्षसिनी लोक * येन तेनमते सीता वराइ दिया मोक
मासा दुइक लागि दिलो मइ दिन क्षान्ति * इहार भितरे येन सीता वश्ययान्ति १६
शेन तल कुपित बुलियो समुदाय * येन तेन मते भजे चिन्तियो उपाय
एतेक उपाये येवे वराइते नपारि * सवे हन्ते मिलिया सीताक खाहा मारि १७
राक्षसी लोकक राजा करिया आदेश * कन्यागण समे गैया गृहत प्रवेश
आशा भङ्गे लङ्केश्वरे परिवर्त्ति गैल * सीताक राक्षसी लोके डराइवे लैल १८
केहो वोले धर धर केहो वोले मार * आलखनी चारीक राखिय किय आर
भजिवि वा न भजिवि वोल झाण्ट करि * छिरिवोहो नखे तोर हृदय विदारि १९
माथात कामोर दिया छिण्डि एरो शिर * नुहि टेटु छिण्डि पिउ तपत रुधिर
एइटो मानुषी नारी सवातो कोमल * आशेष तृपिति पाइवो गावे हैव वल४२२०
सरमा राक्षसी वोले सीतादेवी शुन * मइ तोर जानो यत पतिव्रता गुण
राघवर आशाक दूरते परिहर * एहि पतिव्रता धर्म्म रावणत कर २१
विविध अङ्गते तोर लागा अलङ्कार * रूपत आमोद तिनि भुवनत सार
राघवर आशाक दूरते परिहरि * राजात भजिले हुइवे त्रैलोक्य ईश्वरी २२

इसे अभिशाप दे रखा है कि किसी स्त्री को वलपूर्वक पकड़ने पर मेरे पति रावण की मृत्यु हो जायेगी। मन्दोदरी ने आगे बढ़कर उसे सांत्वना देते हुए कहा—प्रभु, स्त्रियों पर क्रोध करना आपके लिए उचित नहीं ।। १४ ।। आपके क्रोध को तो देवगण भी सह नहीं सकते। प्रभु, क्या पुरानी कथा आपको स्मरण नहीं आती ? मन्दोदरी ने आगे बढ़कर रावण से यह वचन उसी प्रकार कहा जैसे कोई महावत अंकुश से हाथी को लौटा लावे ।। १५ ।। रावण वोला, राक्षसिनियो, सुनो, चाहे जैसे भी सीता को मेरे वशीभूत कर दो। मै दो महीने के लिए अवसर देता हूँ, इसी बीच जैसे भी हो सीता मेरे वशीभूत हो जाये ।। १६ ।। श्येन की भाँति हो या कपोत की भाँति, सव प्रकार के वचन वोलना, जिससे वह जैसे-तैसे मेरा चिन्तन करे इसका उपाय करना। इन उपायों से भी यदि सीता वशीभूत न हो तो सव मिलकर इसे मारकर खा जाओ ।। १७ ।। राक्षसियों को यों आदेश देकर राजा रावण ने कन्याओं के साथ जाकर अपने भवन में प्रवेश किया। आशा भंग हो जाने पर लंकेश्वर रावण का भाव वदल गया। राक्षसियाँ सीता को डराने लगीं ।। १८ ।। कोई कहती थी 'इसे पकड़ ले, पकड़ ले', कोई कहती थी, 'इसे मार डाल, मार डाल', 'इस अलक्षणी कुलटा को अब रखा ही क्यों जाये ? तू रावण को भजेगी या नही, शीघ्र वता, नहीं तो नाखून से तेरे हृदय को फाड़ डालेंगी ।। १९ ।। सिर दाँतों से काटकर तोड़ डालेगी, नही तो गला फाड़कर गर्म-रक्त पीयेंगी। यह मानवी-नारी सबसे कोमल है, इसे खाने पर असीम तृप्ति मिलेगी, शरीर में वल मिलेगा' ।। ४२२० ।। राक्षसी सरमा बोली, देवी सीता सुनो, तुम पतिव्रता हो, तुम्हारे सभी गुणों को मैं जानती हूँ। परन्तु अव राघव मिलेंगे, यह आशा दूर ही छोड़ दो। यही पातिव्रत-धर्म की भावना अब रावण मे रखो ।। ४२२१ ।। यदि तुम्हारे अंगों में विविध अलंकार हों, तो तुम अपने रूप से तीनों भुवनों में श्रेष्ठ होओगी। राघव की आशा को छोड़कर यदि तुम रावण को भजो तो तीनों लोको की अधीश्वरी बन सकोगी ।। २२ ।। सरमा जव इस प्रकार

ताइ येवे एतेक बचन बुलि गैल * तात पाचे बिकटा राक्षसी आसि भैल
लोकरे खोकरे जानकीक पारे गालि * रावणत भज तइ मोर बोल पालि २३
पुनरपि बोले तइ सीता कि करस * राम राम बुलि तइ मिछात मरस
सिपारर परा हरि आनिले रावणे * सागरक तरि तोक सनियात गान्थि २५
त्रैलोक्यर नाथ एरि तापसीक चास * पका कण्टकीक एरि डहा फल खास
ताइ येवे एतेक बचन बुलि गैल * हयमुखी नामे निशाचरी आसि भैल २६
चिउर तलक लागि ओलमिल ओठ * मौबास येन ओलमिल पेटगोट
शुनिबि जानकी सीता बोलो हयमुखी * तुमि आमि एतकाल हुया आछो दुखी २७
आमार दुर्गति खण्ड पुण्यक सञ्चय * मन्यु परिहरि भाव लोतक मलछ
हित बोल बोलो मइ सीता तइ शुन * रावणत भजिले अनेक हैब गुण २८
शत सहस्र कन्या पाइबे अधिकार * रावण अधीन हैब निश्चये तोमार
हितबोल नुशुनस क्रोध बर पाइबो * हृदय बिदारि तोर अग्रमांस खाइबो २९
माथात कामुरि मरमरिया चोबाइबो * हेनमते सीता तोक बिगुतिया खाइबो
ताइ येवे एतेक बचन बुलि गैल * बक्रमुखी नामे निशाचरी आसि भैल ४२३०
हाते शूल धरि आसि बोले क्रोध करि * बिभञ्जिया खाओं आसा खण्ड खण्ड करि
प्रघषा बोलय मारो कण्ठक मुचरि * राजात जनाइबो गैल आपुनिये मरि ३१
मरिबार नाओ शुनि नृपति रावणे * बुलिलन्त भुञ्जा गैया राक्षसिनी गणे
एहि बुलि जानकीर क्रोधे चाया मुख * तेवेसे गुचय मोर राखिबार दुख ३२

कहकर चली गयी तो विकटा नाम की राक्षसी आयी। वह नीच लोगों की भाँति सीता को गालियाँ देकर कहने लगी—तू मेरा वचन मानकर रावण को भज ।। २३ ।। वह पुनः कहने लगी—री सीता, तू भला क्या कर रही है ? राम का नाम लेकर क्यों बेकार मर रही है ? तुझे उस पार से राजा रावण हरकर ले आये हैं, अब समुद्र पारकर भला तुझे कौन ले जायेगा ? ।। २४ ।। तेरा कार्य-कारण देखकर तो मुझे हँसी आती है कि तू राजा रावण को छोडकर तपस्वी में मन लगाये हुए है। तू सुवर्ण को छोड़कर काँच की कंठी पहन रही है, सोना छोड़कर तेरा मन सनई की गाँठ पर लगा हुआ है ।। २५ ।। तू त्रैलोक्यनाथ रावण को छोड़कर तपस्वी को पाना चाहती है। पके फल को छोड़कर तू कच्चा फल खाना चाहती है। वह विकटा जब इस प्रकार कहकर चली गयी तो हयमुखी नाम की निशाचरी आ गयी ।। २६ ।। ठुड्डी तक उसका ओंठ लटका हुआ था, पेट ममाखियों के छत्ते सा झूला हुआ था, वह कहने लगी—सीता सुनो, मैं हयमुखी तुमसे कह रही हूँ, तुम और मैं दोनों ही अब तक दुखी बनी हुई हैं ।। २७ ।। हमारी दुर्गति मिटाकर पुण्य का संचय करो, माँ, दुख करना छोड़कर आँसू पोंछ लो। मैं हितकारी वचन करती हूँ। सीता, तू सुन, तू यदि रावण को भजेगी, तो अनेक गुण-लाभ मिलेंगे ।। २८ ।। शत-सहस्र कन्याओं का अधिकार तुझे मिल जायेगा। रावण निश्चय तुम्हारे अधीन हो जायेगा। तू हित-वचन न सुने तो मुझे वडा क्रोध आ जायेगा। तेरी छाती फाड़कर कलेजा खा जाऊँगी ।। २९ ।। सिर को दांतों से कड़मड़-कड़मड़ कर चबा जाऊँगी। सीता, तुझे इसी तरह से टुकड़े-टुकड़े कर खा जाऊँगी। जब हयमुखी इस प्रकार वचन कहकर चली गयी, तो वक्रमुखी नाम की निशाचरी आ पहुँची ।। ४२३० ।। हाथ में शूल ले वह क्रोध में भरकर वोली, आ, तुझे टुकडे-टुकड़े कर खा जाऊँ। प्रघषा निशाचरी वोली—इसे गरदन मरोड़ कर मार डालें और राजा से वता दें कि यह स्वयं मर गयी है ।। ४२३१ ।। इसके मर जाने की वात सुनकर राजा रावण कहेंगे कि सभी राक्षसियाँ जाकर इसे

अज मुखी बोले एइक विभञ्जिया खाओ * अमद्यत सानिया तृपिति वर पाओं
शूर्पणखा बोले मोर हेनय सम्मत * अजमुखी यि बुलिला लागिल मनत ३३
उचित कार्य्य केसे विशिष्टि बुलि मानि * सीतार मांसक निया अमद्यत सानि
निकुम्भिला बोले सखी एक कार्य्यकर * सीता येवे पटेश्वरी नुहि रावणर ३४
राक्षसी लोकर शुनि वचन प्रहार * भये तरसिया गाव काम्पय सीतार
शिंशपा वृक्षर तले जानकी गोसानी * ता सम्बाक सम्बुधिया बुमिलन्त बाणी ३५
हाओरे लारिकी जीया अधम बर्व्बर * सुख दुख न जानस तिनियो लोकर
प्राणीर वधत खानिते को नाहि मर्म्म * तुमि केने जानिवाहा पतिव्रता धर्म्म ४२३६
किनो मइ पापी मन्द केने कर्म्म करो * बिने राम एतकाल केने प्राण धरो
प्रभु न जानन्त मोक आनिलेक हरि * सिकारणे रावणे आछय प्राण धरि ३७
मोहोक यँसानि हरि आनिल रावणे * इटो कथा न जानन्त श्रीराम लक्ष्मणे
सिकारणे जीवन्ते आछय लङ्केश्वर * तिरी चोरा पापिष्ठ अधम बरबर ३८
तापसर वेश प्रभु होन्त जटाधारी * वनवासी दुखी प्रभु होवन्त निकारी
तथापितो प्रभु मोर परम देवता * मइ शान्ती पतिव्रता नारी विवाहिता ३९
कँसानि देखिबो लङ्का खानि पुरि याइवा * राक्षसिनी गणक शृगाले वेढ़ि खाइबा
चक्षु पूरि कँसानि देखिबो आनन्दक * राक्षसिनी लोके स्वामी बुलि कान्दिबेक ४०
त्रैलोक्यर राजा होवे यद्यपि रावण * तथापि छायात तार नेदिवो चरण
सवे हन्ते मिलि मोक मारिया खाइवाहा * इहात अधिक आर किनो करिवाहा २४४१
त्रिजटा जागिया बोले वृद्धाये राक्षसी * कुपित नयने माते शय्या माजे वसि
हाओरे लारिकी जीया किवा देखिवाहा * सीताक न खाहा तुमि आपोनाके खाहा ४२

भक्षण कर डालो; यह कहकर उसने क्रोधपूर्वक जानकी के मुँह की ओर देखकर कहा—इसकी रखवाली में मुझे जो दुख हो रहा है वह तभी जा सकता है ।। ३२ ।। अजमुखी बोली, इसे टुकड़े-टुकड़े कर मद्य में सानकर खाने में बड़ी तृप्ति मिलेगी । शूर्पणखा बोली, मेरा भी यही विचार है । अजमुखी ने जो कुछ कहा—वह मेरे मन में बहुत जँची है ।। ३३ ।। उचित कार्य को ही विशिष्ट कर्म कहना चाहिए । सीता के मांस को मद्य में सानकर खा डालो । निकुम्भिला बोली, सखी, यही कार्य कर जिससे सीता रावण की पटरानी न बन सके ।। ३४ ।। राक्षसियों के वचन-प्रहार सुनकर भय से त्रस्त हो सीता का शरीर काँपने लगा । शिंशपा वृक्ष के नीचे बैठी देवी सीता ने उन राक्षसियों को सम्बोधित कर कहा— ।। ३५ ।। अरी दुष्टा, अधम, वर्वर निशाचरियो, तुम सब, लोगों के सुख-दुख नहीं जानतीं । प्राणियों के वध में तुम तुम लोगों को क्षण भर दया नहीं आती, तो भला तुम पतिव्रता-धर्म क्या समझ सकती हो ।। ३६ ।। मैं कैसी पापिनी हूँ, मैं ऐसा मन्द कर्म कैसे करूँ? बिना राम के इतने समय तक कैसे प्राण धारण किये हूँ ? प्रभु के न रहने पर ही रावण मुझे हरकर ले आया है, इसी कारण रावण अब तक जीवित है ।। ३७ ।। मुझे जिस प्रकार रावण हर लाया है, श्रीराम-लक्ष्मण वह नहीं जानते । इसी कारण नारीचोर, अधम, वर्वर लंकेश्वर अब तक जीवित है ।। ३८ ।। प्रभु रामचन्द्र भले ही तपस्वी के वेश में हों, जटाधारी हों, दुखी वनवासी, संकटग्रस्त हों, तथापि मेरे प्रभु परम देवता हैं, मैं सती पतिव्रता नारी उनकी विवाहिता पत्नी हूँ ।। ३९ ।। लंका जल जायेगी, राक्षसियाँ 'स्वामी-स्वामी' कहकर रोयेंगी, यह मैं आनन्दित होकर कभी तो देखूंगी ।। ४२४० ।। राजा रावण भले ही तीनों लोक का राजा हो, तथापि उसकी छाया में कभी चरण नहीं दूंगी । तुम सभी मिलकर मुझे मारकर खा डालोगी, इसके अतिरिक्त तुम लोग और

हा हा आइ सीता तइ सुकोमल नारी * तोहोक निष्ठुर हेन बुलिते नोवारि
रखिलो रखिलो आइ भय परिहर * तोहोर दुर्गति गैल प्राय दूरन्तर ४३
लङ्कार आपद भैल राक्षसर क्षय * रावण बिनाश देखो राघवर जय
गोसाइक देखिलो मइ स्वपनर हन्ते * ससागरा पृथिवीक आसय गिलन्ते ४४
आरो हेन देखिलो राघव महावीर * महा कौतूहले तेन्त पियन्त रुधिर
रथखान देखिलन्त गजमन्त मय * सहस्रेक दन्ताले एकत्र हुया वय ४५
ताले चड़ि रामदेव अन्तरीक्षे यान्त * दिव्य अलङ्कारे शरीरक मण्डिलन्त
समुद्रे योगाइल निया शुकुल पर्ब्बत * श्रीराम लक्ष्मण सीता तार उपरत ४६
राजचिह्न धरिलेक क्षत्रेक धवल * मेरुर उपरे येन चन्द्रर मण्डल
पुष्पक यानत मइ देखिलो रामक * बामे सीता देवी डाहिनत लक्ष्मणक ४७
ताले चड़ि रामदेवे लङ्काक आसिला * तुमि समे देखिलोहो एकस्थान भैला
रावणक देखिलो निशून्य मुण्ड लण्डा * गल दादरि दिया आजोरे चामुण्डा ४८
पुष्पक यानर परा पेलाइला खसाइ * दक्षिण दिशक लागि लै याय धसाइ
कतोहो दूरर पथ यमपुर गैया * तहिते परिल गैया आउठानि खाया ४९
काउ बाउ करे बीरे दोङ्गा दुलि पारे * हात भरि खोरा येन उठिते नोवारे
देखिलोहो कुम्भकर्ण गर्द्दभत चरि * दक्षिण दिशक लागि याइ दर दरि ४२५०
असंख्यात नृत्य गीत करय योगिनी * राक्षसर तेज खाया किल किल ध्वनि
इ सब लक्षणे तोर दुर्गति खण्डय * तोहोर बैरक माव दैवेसे दण्डय ५१

क्या कर सकती हो ? ।। ४२४१ ।। तभी त्रिजटा नाम की वृद्धा राक्षसी जगकर अपनी शय्या पर उठ बैठी और क्रोधपूर्ण नेत्रों से देखती हुई कहने लगी, —अरी दुष्टा राक्षसियो, तुम सब क्या देख रही हो, सीता को न खाकर तुम स्वयं को खाओ ।। ४२ ।। हा, हा, माता सीता, तुम सुकोमल नारी हो। तुम्हें इस तरह के निर्मम वचन कहना नहीं चाहिए। माता, तुम शान्त होओ। भय छोड़ दो, तुम्हारी दुर्गति अब दूर हुई ही समझो ।। ४३ ।। लंका पर संकट आ पड़ा है, राक्षसो का नाश होगा, देखती हूँ रावण का विनाश होगा, रामचन्द्र की विजय होगी। मैंने प्रभु को देखा कि वे सागर से घिरी पृथ्वी को निगलने आ रहें है ।। ४४ ।। और यह भी देखा कि महावीर राघव बड़े ही कौतूहल से रावण का रुधिर पान कर रहे है, गजदन्तमय रथ को हजारों दाँतवाले हाथी एकत्रित होकर खीच ले जा रहे है ।। ४५ ।। उसी रथ पर चढ़कर प्रभु राम अन्तरिक्ष जा रहे हैं। उनका शरीर दिव्य अलंकारों से मंडित है। समुद्र ने उनके लिए एक श्वेतपर्वत को उनके सामने ला खड़ा कर दिया; श्रीराम-लक्ष्मण-सीता उस पर चढ़ गये ।। ४६ ।। रामचन्द्र के ऊपर धवल छत्र और राजचिह्न ऐसे सुशोभित हो रहे हैं मानो मेरुपर्वत पर चन्द्रमंडल हो। मैंने देखा रामचन्द्र पुष्पक यान में बैठे है, उनके बायें सीतादेवी और दाहिने लक्ष्मण है ।। ४७ ।। उस पर चढ़कर प्रभु राम लंका आये, और तुम्हारे साथ एक स्थान पर स्थित हुए। मैंने देखा, रावण के सिर कटे हुए है, उसके गले में फंदा डालकर चामुंडा खीचती ले जा रही है ।। ४८ ।। उसे पुष्पक यान से नीचे गिरा दिया और खींचती हुई दक्षिण दिशा को ले जाने लगी। कितनी ही दूरी पर यमपुर जा, वह पेट के बल गिर पड़ा ।। ४९ ।। वीर रावण चीख-पुकार कर विनती करने लगा; उसके हाथ-पैर टूट-से गये हैं, वह उठ नही पा रहा है। मैंने देखा, कुम्भकर्ण गधे पर सवार, तेजी से दक्षिण की ओर जा रहा है ।।५०।। अनगिनत योगिनियाँ नृत्य-गीत गा रही है? राक्षस का रक्त पीकर किल-किलाहट कर रही हैं। हे सीता, यह सब लक्षण बताते है कि तुम्हारी दुर्गति मिटनेवाली है, तुम्हारे वैरी को दैव ही

वाम नयन उरु वाम कलेवर * प्रत्यक्ष देखह सीता काम्पे वामकर
इ सव मङ्गले तोर स्वपनर फले * अविलम्वे स्वामी कोल पाइबि अविकले ५२
डालत वसिया मुख चाया रड़े काक * स्वामीर वार्त्ताक तोर छ इल जनाइवाक
त्रिजटार स्वप्नक धरिया विमरिष * दुखते खानिक देवी भैलन्त हरिष ५३
त्रिजटार वचने निश्चेष्ट सबे भैल * राक्षसिनी लोक यत परि निद्रा गैल
वेढ़िया शुइलेक आउरक आउरे जरि * कतो जनी आचेतन पारय घोड़्घारि ५४
आदि अन्त कथा यत समस्से आकलि * शुनिते लागिल हनुमन्त महावली
सार्थक ये मइ पृथिवीत उपजिलो * शान्ती सीता गोसानीक प्रत्यक्षे देखिलो ५५
रामर विपत्ति निते इहाङ्क सुमरि * मइ देखिलोहो सीता परम ईश्वरी
सहस्र संख्यात कोटि भालुक वानरे * पृथिवीर अन्त सवे खोजे निरन्तरे ५६
मोहोर कार्य्यर समापति हौक केने * राक्षसिनी लोके मोक न जानय येने
इ सवे जानिले वर हुइवेक आनुलि * मोक वन्दि कराइवेक रावणत वुलि ५७
सीताक नमाति मोर याइवे नुयुवाइ * कोन मते मातो मइ न जानो उपाय
आगत परिया येवे मातो एति क्षणे * वुलिव छलिते आइला आरका रावणे
सीताक नमाति येवे एहिमते याओं * राघवर चित्त केन मते पतियाओं ५८
वुलिवन्त वानराये आमाक भाण्डय * सीताक नेदेखि आसि देखिलो बोलय
मोर मने येन युवाइ करिवोहो गहा * राम कार्य्य साधन्ते त्रिदशे हुइबा सहा ५९
धीरे धीरे पढ़िवोहो सङ्गीत ये वाणी * येन मते पातियान्त जानकी गोसानी
नुहि तेवे आन उपायक करो पाचे * हेन शुनि अल्पकाय करिलन्त गाचे ४२६०

दडित करनेवाला है ।। ४२५१ ।। हे सीता, तुम प्रत्यक्ष देखो कि बायाँ नेत्र, जाँघ और बाँयें अंग फड़क रहे हैं। ये सारे तुम्हारे शकुन स्वप्न के फल को सूचित कर रहे हैं कि तुम अविलम्ब निश्चित रूप से पति की गोद प्राप्त कर लोगी ।। ५२ ।। डाली पर बैठकर कौवा मुँह की ओर देखता वोल रहा है। वह तुम्हारे पति की वार्ता ही सूचित करने आया है। त्रिजटा के स्वप्न के सम्बन्ध में विचार कर देवी सीता को दुख में भी आनन्द हुआ ।। ५३ ।। त्रिजटा के वचनों से सभी राक्षसियाँ वेसुध-सी निश्चेष्ट हो गईं और जहाँ-तहाँ पड़कर सोने लगी। एक दूसरे को हाथों से पकड़े सो रही, कुछ तो निद्रा मे वेसुध हो खर्राटे लेने लगी ।। ५४ ।। उनकी आदि-अन्त सारी बातों को विचार करते हुए महावली हनुमान सुनते रहे। वे सोचने लगे—मेरा पृथ्वी पर जन्म लेना सार्थक हो गया। क्योंकि मैंने अपने नेत्रों से सती सीता के साक्षात् दर्शन कर लिये ।। ५५ ।। इन्हीं की स्मृति से रामचन्द्र नित्य विपत्ति सहन कर रहे हैं। जिनकी खोज में सहस्रों वानर-भालू पृथ्वी के कोने-कोने को छान रहे हैं, मैंने आज उन्हीं परमेश्वरी सीता को देख लिया ।। ५६ ।। राक्षसियाँ मुझे देख न पाये, मेरा कार्य इस ढंग से किस प्रकार सम्पूर्ण होगा ? ये राक्षसियाँ यदि मुझे जान जायें तो वड़ी गड़वड़ी होगी ! ये रावण से कहकर मुझे वन्दी करवा देंगी ।। ५७ ।। सीताजी से कुछ कहे बिना मेरा यहाँ से चले जाना उचित नही है। किस प्रकार से इनसे बात करूँ, मुझे तो इसका कोई उपाय दिखाई नहीं देता। यदि मैं इनके सामने अभी जाकर कुछ कहने लगूँ तो ये कहेंगी कि कोई और रावण मुझे छलने के लिए आया है। सीता से वात किये विना यदि मैं यों ही लौट जाऊँ तो रामचन्द्र के चित्त को विश्वास किस प्रकार दिला सकूँगा ? ।। ५८ ।। वे कहेगे कि यह वानर मुझसे छलना कर रहा है, सीता को देखे विना ही आकर कह रहा है कि देखा है। मेरा मन जैसा उचित समझता है मैं वैसा ही करूँगा। हे देवताओ, राम-कार्य की सिद्धि में तुम मेरे सहायक होना ।। ५९ ।।

हात जोर करिया सीताक नमिलन्त * आति अल्प करिया बचन बुलिलन्त

सीतार लगत हनुमानर कथावार्त्ता

श्रीमन्त महाराजा दशरथ नाम * ताहान्त तनय श्रेष्ठ भैलन्त श्रीराम ४२६१
राजा पातिबाक दशरथ साज भैला * छोट मातृ कैकेयी राज्य काढ़ि लैला
शुभक्षणे भरतक राज्य दिल मागि * रामक पठाइल घोर बनबास लागि ६२
भ्रातृक भार्य्याक रामे तुले करि निल * बनमध्ये जानकीक रावणे हरिल
एहि बुलि हनुमन्त मौने थाकिलन्त * प्रियकथा शुनि देवी चौमिति चाइलन्त ६३
पूव-पश्चिम देवी उत्तरो लखिल * दक्षिण दिशतो सती किछु न लखिल
ऊर्द्धक चाहिल भाव बाम हात तरि * देखन्त बानर आछे कृताञ्जलि करि ६४
सीताये बोलन्त प्रणामोहो हरिहर * प्रणामोहो सूर्य्यक कुवेर पुरन्दर
बानरर मुखे शुनो यिसब बचन * स्वरूप स्वरूप होक नाहोक स्वपन ६५
सीताये बोलन्त बापू कैर हन्ते आइलि * मोहोर स्वामीर बार्त्ता केनमते पाइलि
शिशपात वहि हनुमन्ते बोले बाणी * तुमिनो काहार जीव कमन गोसानी ६६
शिशपार मूलत किसक आछा वसि * कि कारणे कान्दियो लोतक परे खसि
बासवर शचि किवा तुमि सौभागिनी * किवा आदित्यर छापाचन्द्रर रोहिणी ६७
हरिर लक्ष्मीसि किवा हरर पार्व्वती * बशिष्ठर भार्य्या किबातुमि अरुन्धति
हेन रूप नयो देखो भुवन मोहन * बिशाल नयन चन्द्र समान बदन ६८

सीता जी को विश्वास हो, इसलिए मैं धीरे-धीरे संगीत जैसी वाणी बोलूंगा। यदि इससे भी न हो सका तो इसके पश्चात् और कोई उपाय करूँगा। इस प्रकार चिन्तन कर उन्होंने वृक्ष पर ही अपने शरीर को संकुचित कर लिया॥ ४२६० ॥ हाथ जोड़ सीता को प्रणाम करते हुए धीरे-धीरे यह वचन कहने लगे—

सीता के साथ हनुमान की बातचीत

श्रीमन्त दशरथ नाम के महाराज थे। उनके श्रेष्ठ पुत्र श्रीरामचन्द्र हुए॥ ४२६१ ॥ दशरथ श्रीराम को राजा बनाने हेतु प्रस्तुत हुए परन्तु छोटी माता कैकेयी ने राज्य छीन लिया। उसने उस शुभ क्षण में राजा दशरथ से मांगकर भरत को राज्य दे दिया और राम को घोर वनवास में भेजा॥ ४२६२ ॥ रामचन्द्र, भार्या सीता और भाई लक्ष्मण को साथ ले वन को गये। वन में रावण ने जानकी का हरण कर लिया। यह कहकर हनुमान मौन हो गये। देवी ने प्रिय कथा सुनकर चारों ओर देखा॥ ६३ ॥ देवी ने पूरब, पश्चिम, उत्तर सभी ओर देखा, दक्षिण दिशा में भी सती को कुछ दिखाई न पड़ा। बायें हाथ की ओर जब उन्होंने ऊपर देखा तो दिखाई पड़ा कि एक बानर हाथ जोड़े हुए है॥ ६४ ॥ सीता बोली, हरि, हर को प्रणाम है। सूर्य, कुबेर, इन्द्र को भी प्रणाम है। मैं बानर के मुँह से जो वचन सुन रही हूँ वह सत्य होवे, केवल स्वप्न न हो॥ ६५ ॥ सीता कहने लगी—वत्स, तू कहाँ से आया है? मेरे स्वामी की वार्ता तुझे किस प्रकार प्राप्त हुई? अशोकवृक्ष पर बैठे हुए हनुमान कहने लगे—तुम किसकी कन्या हो, कौन देवी हो?॥ ६६ ॥ अशोकवृक्ष के तले क्यों बैठी हुई हो? किस कारण तुम्हारे आँसू बह रहे हैं? तुम क्या इन्द्र की पत्नी सौभाग्यवती शची हो? या आदित्य की छाया, चन्द्र की रोहिणी हो?॥ ६७ ॥ तुम हरि की लक्ष्मी हो या हर की पार्वती हो अथवा क्या तुम वशिष्ठ की पत्नी अरुन्धती हो? बड़े-बड़े नेत्र, चन्द्र के सदृश मुखमडल वाला तुम्हारे जैसा भुवन-मोहन रूप मैंने

आघारेक मातोहो स्वरूप येवे कोवा * तुमि देवी जनकर जीव होवा नोवा
सीता नाम तोमार रामर पटेश्वरी * तोमाक कि रावणे आनिलेक हरि ६९
सीता सन्धुक्षण हुआ दिलन्त उत्तर * दशरथ पुत्रवधू भार्य्या श्रीरामर
कौशल्या मोहोर शाशु लक्ष्मण देवर * सीता नाम बोले मोक जीउ जनकर ४२७०
राज्य दिबे लागि दशरथ साज भैला * छोट शाशु कैकेयी राज्यक काढ़ि लैला
पुत्र भरतक तेन्त राज्य दिल मागि * रामक पठाइल घोर बनवास लागि ७१
कतोकाल आछे येवे दण्डका बनत * रावणे हरिल मोक निर्ज्जन थानक
राक्षसी मध्यत दुख पाओं अतिरेक * इसब दुखत मोक यमेसे निलेक ७२
कैर परा आइले बापु कहियो प्रस्तुत * किवा रावणर किवा राघवर दूत
कर जोर करिया बोलन्त हनुमन्त * तोमार ये स्वामी राम कल्याणे आछन्त ७३
वार्त्ताक न पाया रामे खुजिला बहुत * हनुमन्त नाम मोर राघवर दूत
सुमित्रार पुत्र तेहे लक्ष्मण कुमार * पृथिवीते सार अकम्पन धनुर्द्धर ७४
शोभन पुरुष तेन्ते लखमन नाम * हेरा लोवा भाव तान सन्देश प्रमाण
एहि बुलि माथागोट पृथिवीत दिल * लक्ष्मणर कथा यत सीतात कहिल ७५
यि देखिला मृगगुटि सुवर्णर काया * मृग नुइ सिटो आइ राक्षसर माया
आछिल मारीच नामे एक निशाचर * रामक निलेक सिटो प्राय दूरन्तर ७६
ताहान शरीरे प्रहारिला बाण घाव * मरन्ते काढ़िले सिटो राघवर राव
हेन शुनि तोमार आसुख वर कर * लक्ष्मणको पठाइलाहा बुलि अनुत्तर ७७
लङ्केश्वरे दुइ भाइक उपाये गुचाइ * तोमाक हरिले पाचे एकेश्वरी पाइ
सीताये बोलन्त रावणाये आसि भैले * पुनरपि आसि मोक चलिवाक लैले ७८

और कही नही देखा है ।। ६८ ।। मैं दो शब्द तुमसे कह रहा हूँ, सत्य-सत्य बताओ, देवी, तुम जनक की कन्या जानकी हो या नही, बताओ । तुम्हारा नाम सीता है, तुम राम की पटरानी हो या नही ? तुम्हे रावण किस कारण हरण कर ले आया है ।। ६९ ।। सीता ने सतर्क होकर उत्तर दिया—मै महाराज दशरथ की पुत्रवधू और रामचन्द्र की भार्या हूँ ।। ४२७० ।। राजा दशरथ जब रामचन्द्र को राज्य देने हेतु प्रस्तुत हुए तो छोटी सास कैकेयी ने राज्य छीन लिया । उन्होने राजा से मांगकर भरत को राज्य दे दिया, और रामचन्द्र को घोर वनवास में भेज दिया ।। ७१ ।। दंडकवन में हम कितने समय रहे तभी उस निर्जन स्थान से मुझे रावण ने हर लिया । मुझे राक्षसियों के बीच अनेक कष्ट हो रहा है । इन दुःखों की अपेक्षा मुझे यमराज ही ले जाते तो अच्छा होता ।। ७२ ।। वत्स, तुम कहाँ से आये हो, बताओ, तुम क्या रावण के दूत हो या रामचन्द्र के ? तब हनुमान ने हाथ जोड़कर कहा—देवी, तुम्हारे स्वामी रामचन्द्र सकुशल हैं ।। ७३ ।। तुम्हारा कोई समाचार न पाकर रामचन्द्र ने बहुत ही खोज की है । मेरा नाम हनुमान है, मैं रामचन्द्र का दूत हूँ । सुमित्रा के पुत्र कुमार लक्ष्मण जो संसार में श्रेष्ठ अविचल रहनेवाले धनुर्द्धर है, सुमित्रा के तनय सुन्दर पुरुष उन्ही लक्ष्मण के कहे हुए संदेश के वचन प्रमाण-स्वरूप मैं तुम्हे सुनाता हूँ । यह कहकर हनुमान ने अपना सिर धरती से लगाया और लक्ष्मण की बातें सीता जी से कह सुनायी ।। ७४-७५ ।। माता, तुमने स्वर्ण के शरीर वाले जिस मृग को देखा था, वह तो मृग न था, राक्षस की माया थी । वह मारीच नाम का निशाचर था जो रामचन्द्र को बहुत दूर ले गया ।। ७६ ।। रामचन्द्र ने उसके शरीर पर बाण से चोट की । वह मरते समय रामचन्द्र की बोली में चीख पड़ा । यह सुनकर तुम्हारे मन में बड़ा दुख हुआ और तुमने अनुचित वचन कहकर लक्ष्मण को भेज दिया ।। ७७ ।। लंकेश्वर रावण ने दोनों

दूर गुव पापी आन जञ्जाल नपात * राघवरे बानररे किसब सञ्जात
एके बेलि आसिछिलि क्षेमा नाहि तव * कतेक नो सहिबो नीचर पराभव ७९
आमाक चलिया तइ कोन फल पाइबि * अधर्म्मर फाले बेटा अधोगति याइबि
मइ शान्ती कन्यार जनस आसि मर्म्म * हेन शुनि मारुति सुमरे धर्म्म धर्म्म ४२८०
शापि योनो भस्म मोक करन्त गोसानी * मनत तरासे कपि बिनावन्त बाणी
राक्षस नोहोओं आइ होओं रामदूत * तोमाके खुजिते आइलो पवनर सुत ८१
शङ्का परिहरि माव भाल मते चाहा * राक्षस नोहोओं भाले सम्प्रत्यय याहा
सीताये बोलन्त तेवे पाओं परमाण * राघवर रूप गुण कह केन थान ८२
किमत चरित्र केन अन्तर महत * लक्ष्मणर रूप गुण कह केन मत
मारुति बोलन्त माव भालमते शुन * येन देखिलोहो कहो राघवर गुण ८३
श्यामल सुन्दर मुख पूर्णिमार शशी * चक्षु दुइ ज्वले येन कमलर पासि
कम्बुग्रीव शोभन नासिका दुइ कर्ण * उत्तम शरीर मनोहर श्याम वर्ण ८४
छटा थान उन्नत उदर कण्ठ मुख * दुइ पान्ति दशन शुक्ल देखिबाक सुख
धनुर्व्वेद शारङ्ग याहार हाते थित * चारि वेद चतुर्द्दश शास्त्रत पण्डित ८५
दीन दुखी खोरा भेङ्गूराक अन्धकक * पुत्रर समान करि दरिद्र पालक
सुमित्रार पुत्र यिबा लक्ष्मण कुमार * पृथिवीत सार अकम्पन धनुर्द्धर ८६

भाइयों को इस प्रकार युक्ति से दूर हटाकर, तुम्हें अकेली पा, हरण कर लिया। तब सीता बोली—एक बार तो रावण ने मुझे छल लिया था, पुनः वही मुझे छलने आया है ।। ७८ ।। अरे पापी, दूर हट, पुनः कोई उपद्रव न कर। भला रामचन्द्र जी के साथ वानरों का क्या सम्बन्ध ? तू एक बार पहले आया था, अब तुझे क्षमा नही करूँगी। नीच के हाथ अपमान भला और कितना सहन करूँ ? ।। ७९ ।। मुझे छलकर तुझे कौन सा फल मिलेगा ? अरे, अधर्म कर्म कर तुझे अधोगति ही मिलेगी। मुझ सती नारी के मन को तू कष्ट दे रहा है ? सीता जी की यह बात सुनकर हनुमान 'धर्म, धर्म,' का स्मरण करने लगे ।। ४२८० ।। देवी कही मुझे अभिशाप देकर भस्म न कर डालें, मन में इस प्रकार संत्रप्त होकर हनुमान कातर स्वर से कहने लगे—माता, मैं राक्षस नहीं, राम का दूत हूँ। मैं पवनसुत हूँ, तुम्हें खोजता हुआ यहाँ आया हूँ ।। ८१ ।। माता, आशंका छोड़ मेरी ओर कल्याण-दृष्टि से देखो, विश्वास करो मैं राक्षस नहीं हूँ। सीता बोली—इसका प्रमाण तो तभी मिल सकता है—यदि तू बता सके कि राघव के रूप-गुण कैसे हैं, वे किस स्थान में रह रहे हैं ।। ८२ ।। उनका चरित्र कैसा है, उनका अन्तस् कितना महान है, तथा लक्ष्मण के रूप-गुण किस प्रकार हैं, बता। तब हनुमान बोले—माता, ध्यान से सुनो। मैने जैसा देखा है, राघव के गुणों का वर्णन कर रहा हूँ ।। ८३ ।। उनका श्यामल सुन्दर मुख पूर्णिमा-चन्द्र जैसा है, दोनों आँखें कमल की पंखुड़ियों की भाँति चमक रही है। कम्बु (शंख) के समान ग्रीवा, नाक और दोनो कान बड़े ही सुन्दर हैं। उनका उत्तम शरीर मनोहर कृष्ण-वर्ण का है ।। ८४ ।। उनका वक्षस्थल उन्नत है, तथा मुख, उदर, कण्ठ, श्वेत दाँतों की दो पंक्तियाँ देखने में बड़ा सुख मिलता है। धनुर्वेद के ज्ञाता उनके हाथ में शार्ङ्ग धनुष है। वे चारों वेदों तथा चौदहों शास्त्रों के पंडित है ।। ८५ ।। दीन-दुखी, लंगड़े, लूले, अन्धे को तथा दरिद्रों को वे पुत्र के समान पालन करनेवाले है सुमित्रानन्दन जो लक्ष्मण हैं, वे पृथ्वी पर सबसे श्रेष्ठ, अविचल रहनेवाले धनुर्द्धर है। ८६ ।। वे बड़े ही सुन्दर पुरुष है। उनका नाम लक्ष्मण है।

शोभन पुरुष तान लखमन नाम * विदग्ध शरीर कामदेवर उपाम
राघवरे वानररे मित्रवति भाव * सियो कथा कओं शुना जगतर माव ८७
वाली राजा सुग्रीव यवञ्जा दुइ भाइ * किष्किन्ध्या नगरे आछिलन्त एके ठाइ
राज्यर निमित्ते दुइरो कन्दल लागिल * दुइहानो युद्धत वृक्ष पर्व्वत भागिल ८८
रण हारि सुग्रीव पलाइल राज्य छारि * वाली राजा ताहान भार्य्याक लैल काढ़ि
पाञ्चगुटि वानरक देशर डकाया * सुखे राज्य करे सिटो भातृवधू लैया ८९
पाञ्चगुटि वानरे देशर हन्ते याइ * ऋष्यमुख पर्व्वते आछिला एकठाइ
श्रीराम लक्ष्मण फुरा तोमाक खोजन्ते * आमि सबे देखिलोहो पर्व्वतर हन्ते ४२९०
सुग्रीवर बोले वृद्ध ब्राह्मणर वेशे * शुद्धि करिवाक गैलो ताहान आदेशे
परीक्षिया वार्त्ता लैया भैलो परिचित * राघवरे सुग्रीवरे कराइलो सखित्व ९१
सत्य करिलन्त दुयो थिर करि चित्त * विपक्ष जिनिया आगे भार्य्या समर्पित
सत्य प्रतिपाले रामे वालीक मारिल * भार्य्याके राजाके सुग्रीवक आनि दिल ९२
सुग्रीव प्रतिज्ञा करिलन्त विमरिष * कोटि संख्या दूतक पठाइल दशोदिश
अङ्गदक दक्षिण दिशक आदेशिल * वर वर वीरक ताहान लगे दिल ९३
पाचे मोक श्रीरामे पाशक मातिनिल * गले धरि टान करि सावटि जातिल
सन्देशक दिया मोक सादरे पठाइल * तोमाक अनेक थाने खुजिया वेड़ाइल ९४
सिकूल मानत पाइलो तोमार उद्देश * सागर तीरत मैलो पाया उपदेश
सम्पाति कहिल कथा आसि अङ्गदत * रामर चरित्र यत मिलिल वनत ९५

उनका शोभामय विदग्ध शरीर कामदेव से भी सुन्दर है। रामचन्द्र तथा वानरों से संबंध किस प्रकार हुआ, हे माता, मैं वह कथा भी सुना रहा हूँ। जगत् की माता, तुम सुनो ॥ ८७ ॥ राजा वाली और सुग्रीव दोनो जुड़वें भाई थे। दोनों किष्किन्ध्या नगर में एक ही साथ रहा करते थे। राज्य के लिए दोनों में विवाद लग गया, दोनों के युद्ध में कितने ही पर्वत-वृक्ष टूट गये ॥ ८८ ॥ युद्ध में हारकर सुग्रीव राज्य छोड़ भागे और राजा वाली भातृ-वधू को ले सुखपूर्वक राज्य करने लगा ॥ ८९ ॥ वे पाँच वानर देश से निकलकर ऋष्यमुख पर्वत पर जा, एक ही साथ रहने लगे। श्रीराम-लक्ष्मण तुम्हें खोजते हुए जब घूम रहे थे तो हम पाँचों ने उन्हें पर्वत पर से देखा ॥ ४२९० ॥ सुग्रीव के वचन से वृद्ध ब्राह्मण का वेश धारण कर मैं उनकी जाँच करने के लिए सुग्रीव के आदेश से गया। उनकी जाँचकर समाचार ले, उनसे परिचय का आदान-प्रदान करवाया और रामचन्द्र व सुग्रीव में मित्रता करवायी ॥ ९१ ॥ दोनों ने अपना चित्त स्थिर कर विपक्षी शत्रु को जीतकर एक दूसरे की भार्या समर्पित करने की प्रतिज्ञा की। अपनी प्रतिज्ञा की पूर्ति-हेतु रामचन्द्र ने वाली का वध किया तथा राज्य व पत्नी सुग्रीव को समर्पित कर दी ॥ ९२ ॥ सुग्रीव ने जो प्रतिज्ञा की थी, उसके सम्बन्ध में विचार-विमर्श कर करोड़ो की संख्या में दूतों को दशो दिशाओं में भेज दिया। अंगद को दक्षिण दिशा में जाने का आदेश दिया और बड़े-बड़े वीरों को उनके साथ कर दिया ॥ ९३ ॥ इसके पश्चात् रामचन्द्र ने मुझे अपने पास बुला लिया, और मेरे गले को पकड़कर छाती से लगा लिया, मुझे अपना संदेश दे उन्होंने आदरपूर्वक मुझे विदा किया। हम तुम्हे खोजते हुए बहुत से स्थानों में पहुँचे ॥ ९४ ॥ तुम्हें खोजने के उद्देश्य से समुद्र के उस तट तक पहुँचे। संन्यासिनी के उपदेश से सागर के किनारे चले आये। सम्पाति ने आकर अंगद से सारी कथा बतायी जैसे रामचन्द्र ने वन में जो-जो चरित्र किये थे ॥ ९५ ॥ रावण ने जिस प्रकार से जटायु को मारा, अंगद ने वे सारी बातें सम्पाति से बतायीं। छोटे भाई के कार्य को स्मरण करते हुए

जटायुक येहिमते रावणे मारिल * अङ्गदे सिसव कथा पक्षीत कहिल
कनिष्ठर कार्य्यक सङ्कलि पक्षीराज * तोमाक चाहिया बोले आछा वनमाज ९६
सबेहन्ते आलोचिया आमाक पठाइल * लङ्कात तोमाक आसि खुजिया नपाइल
अशोक आसिया तोमाक खुजि पाइलो * आदि अन्त कथा यत तोमात कहिलो ९७
हेरा लैयो माव आति करि मन तुष्टि * राम नाम लिखि आछे रामरे आङ्गठि
एइ बुलि देवीर हातत निया दिल * ताक देखि गोसानीर चेतन हरिल ९८
कतो बेलि सीतादेवी चेतनक पाइल * रामर आङ्गठि निया शिरत चराइल
हरिषे उज्ज्वल किछु बदन निर्म्मल * राहुत मुकुत येन चन्द्रर मण्डल ९९
कौतुके उज्ज्वल मुख हरषित भाव * नसहे शरीर विपरीत शोक घाव
दुइ नयनर हन्ते बहि याइ नीर * कमल पत्रर येन झरय शिशिर ४३००
किनो मोर आनन्द उत्सुक करे मन * अमृत समान बाप तोहोर वचन
तोमार वचन सबे सम्प्रत्यय गैलो * शोक दुख एरि मइ सन्धुक्षण भैलो ४३०१
सार करि कथा मोत कह हनुमन्त * मोहोर कि स्वामी राम कुशले आछन्त
आन कथा हनुमन्त कह तइ पाचे * मोहोर कि देवर लक्ष्मण भाले आछे २
कौशल्या सुमित्रा कि आछन्त भालमते * कैकेयी गोसानी आछन्त कोन सते
भरतर कथा आवे कहियोक आजि * मोक कि निबन्त चतुरङ्ग दले साजि ३
बानरर राजा ये सुग्रीव बुलि याक * ताहान कि मन आछे आमाक निबाक
एकेसे कार्य्यक बापु संशय आमार * केन मते तइ सागरत भैलि पार ४
शतेक योजन पथ बरुण आलय * गहीन गंभीर नीर भयक जनय
हेनय दुर्गम घोर सागरक तरि * लङ्का नगरीक लागि आइले केन करि ५

पक्षीराज (सम्पाति) ने तुम्हारे लिए चारों ओर दृष्टि डालकर वताया कि तुम इस वन में हो ।। ९६ ।। सब लोगो ने चर्चा कर मुझे भेजा । लंका में आकर मैंने तुम्हें खोजकर कहीं नही पाया । ढूंढ़ते हुए अशोकवन में आने पर तुम्हें देखा । हे माता, इस प्रकार सारी कथा आदि से अन्त तक तुम्हें सुनायी ।। ९७ ।। माता, मन में प्रसन्न होकर राम-नाम लिखी हुई राम की यह अँगूठी लो । यह कहकर हनुमान ने अँगूठी देवी सीता के हाथ में दे दी । अँगूठी देखकर सीता की चेतना खो गयी ।। ९८ ।। कितने ही क्षण पश्चात् देवी सीता की चेतना लौटी । उन्होंने राम की अँगूठी लेकर माथे पर चढ़ायी । उनका मुखमंडल हर्प से कुछ उज्जवल हो उठा; मानो राहु-मुक्त चन्द्रमंडल हो ।। ९९ ।। प्रसन्नता से मुख हर्षित हो उठा, दूसरी ओर शोक का आघात पड़ रहा था, अतः उनका शरीर यह हर्ष का आवेग सहन न कर सका । दोनो नेत्रों से आँसू बहने लगे, मानो कमल के पत्तों से ओस-कण टपक रहे हों ।। ४३०० ।। सीता बोली, वत्स, अमृत-समान वचन सुनकर मेरा मन कैसे आनन्द से उत्सुक हो उठा है । तुम्हारे वचनों पर मुझे विश्वास हो आया । अव दुख-शोक मिटकर -मुझे ज्ञान आ गया ।। ४३०१ ।। हनुमान, यह सत्य-सत्य वताओ कि मेरे प्रभु रामचन्द्र सकुशल हैं न ? अन्य वातें पीछे कहना, पहले यह तो वताओ कि क्या मेरे देवर लक्ष्मण सकुशल है ? ४३०२ ।। कौशल्या, सुमित्रा क्या अच्छी तरह हैं ? देवी कैकेयी कैसी हैं ? आज मुझे भरत के वारे में वताओ । वे क्या चतुरंगिनी सेना सजाकर मुझे ले जायेंगे ? ।। ४३०३ ।। वानरों के राजा सुग्रीव की क्या मुझे ले चलने की इच्छा है ? वत्स, मुझे एक ही विषय में वड़ा संदेह हो रहा है कि तुमने सागर को पार कैसे किया ? ।। ४३०४ ।। वरुणालय सागर सौ योजन फैला हुआ है । उसका गहन गम्भीर जल भयोत्पादक है । ऐसे दुर्गम सागर को पारकर तुम लंकापुरी में कैसे

परम दुर्ब्बल तोर ह्रस्व देखो गाव * मारुति बोलन्त शुनियोक सती माव
तोमार प्रसादे मोर पवनत गह्र * तोमार स्वामीर चरणर अनुग्रह ६
गोखोज समान करि तरिलो सागर * इ सव संशय माव गुचायो मनर
सार करि कथा मोत कह हनुमन्त * मोहोर कि स्वामी राम कुशले आछन्त ७
किमत शशन स्नान भोजन करन्त * किवा चिन्ता करि मोक प्रभु सुमरन्त
किसक अशक्य कथा पुछिला आमात * श्रीराम निकारे मुखत नाइ मात ८
मल पङ्क धरिया माथात जटा भार * बछरि दिनत एकोदिन फलाहार
मात बोल नाइ किछु मनत हरिष * एकैक दिवस जाइ एकैक बरिष ९
तोमाक सुमरि तान धृति नाहि मने * उचावल हुया खुलिलन्त बने बने
रामर निकार शुनि जगतर आइ * महाशोके कान्दिलन्त धरण नयाय ४३१०
सीतार विलाप देखि हनुमन्त कपि * गोसानीर दुइ पावे माथागोट थापि
शुनियो गोसानी आइ एरियो बिकल * रामे बुलि पठाइलन्त बार्त्ता सुकुशल ११
श्रीमन्त राघवदेव सागर गम्भीर * पृथिवीत सार बीर निष्कम्प शरीर
कल्याणे आछन्त माव तोमाक सुमरि * रात्रि दिने चिन्ता तान भोग परिहरि १२
हनुमन्त वीरर वचन हेन शुनि * आशेष रामक लागि कान्दिला गोसानी
दुइ हानो बिलापे हनुमन्त वीरवर * आखरेक बोलो बुलिबाक लागे डर १३
बिलाप देखिया माव मोर वर शोक * सिकारणे बोलो माव येन लागे हौक
पिठित उठियो माव लोमे धर टानि * रामत भेटाओं निया जगत गोसानी १४

आये ? ॥ ४३०५ ॥ तुम्हारा शरीर तो परम दुर्बल और छोटा-सा देख रही हूँ। तब हनुमान बोले— सती माँ, सुनो, तुम्हारे प्रसाद से और तुम्हारे पति श्रीरामचन्द्र के चरणों के अनुग्रह से मेरी गति पवन से भी अधिक है ॥ ४३०६ ॥ मैं सागर को गोष्पद के समान अनायास पार कर गया। माता, तुम इस विषय में मन का सारा संशय छोड़ दो। तब सीता बोली—हनुमान, तुम सत्य बताओ, मेरे स्वामी रामचन्द्र तो कुशल से है न ? ॥ ४३०७ ॥ वे किस प्रकार से स्नान, भोजन, शयन आदि करते हैं ? क्या कुछ सोच-विचारकर प्रभु मेरा स्मरण करते हैं ? (हनुमान बोला) माता, तुमने यह कैसी वेदनादायक बात मुझसे पूछी है ? दुख के मारे श्रीराम के मुख में कोई शब्द नहीं रह गया है ॥ ४३०८ ॥ शरीर मे कीचड़ लगाये, सिर पर जटा-भार लिये वे दिन में एक बार केवल फलाहार भर करते है। उनके मन में न कोई हर्ष है और न वे किसी से बातें ही करते हैं। उनके लिए एक-एक दिन एक-एक वर्ष के जैसा बीतता है ॥ ४३०९ ॥ तुम्हारा स्मरण कर उनके मन में धीरज नही आता; उतावले होकर वन-वन घूमा करते हैं। राम के दुख की बात सुनकर जगन्माता सीता महाशोक से ऐसा रोने लगी, कि उन्हें संभाल पाना कठिन हो गया ॥ ४३१० ॥ सीता का विलाप देख कपि हनुमान देवी के दोनों चरणों मे सिर टेक कर कहने लगे—माता, व्याकुलता छोड़ दो, रामचन्द्र ने अपनी कुशल-वार्ता कहला भेजी है ॥ ४३११ ॥ श्रीमन्त रामचन्द्र सागर-जैसे गम्भीर हैं, पृथ्वी मे श्रेष्ठ निष्कंप शरीरवाले है। तुम्हारा स्मरण करते हुए वे सकुशल सभी भोगों को छोड़कर दिनरात तुम्हारी ही चिन्ता किया करते हैं ॥ ४३१२ ॥ वीर हनुमान के वचन सुनकर रामचन्द्र के लिए देवी सीता अशेष रुदन करने लगीं। दोनों ही विलाप करने लगे। वीरवर हनुमान ने कहा—माता, तुमसे एक शब्द कहता हूँ, कहने में यद्यपि डर लग रहा है ॥ १३ ॥ तुम्हारा विलाप देखकर मुझे बड़ा शोक हो रहा है इसलिए यह बात कह रहा हूँ, अब चाहे जो हो। माता, पीठ पर बैठ जाओ। मेरे बालों को जोर से पकड़ लो। हे जगन्माता, मैं तुम्हे ले जाकर

रामर चरणे निया तोमाक भेटाओं * आजि धरि दुइ हन्तरे दुर्गति खण्डाओं
सीताये बोलन्त बानरर मुख चाइ * निकटेर पो गोटर एतमान टाइ १५
तुला निबे नोवारय भार बान्धे शिले * गुण्डकुरि पुरवाये हातीगोट गिले
ढोल हेन डिमा पारे चुङ्गार बादुलि * पिपिया चटके पर्ब्बतक लवे तुलि १६
भय एरा माव मइ वीर हनुमन्त * पारो शत्रु जिनिबे बलर नाहि अन्त
शुनियोक माव मोर बाप केने बीर * प्रसिद्ध काहिनी कहो बीर केशरीर १७
गन्धमादनर हन्ते डेब फरिलन्त * गोकर्ण गिरिर शिखरत परिलन्त
ताहान क्षेत्रत मोक जनिलन्त बायु * अगनिर सखा यिटो जगतर आयु १८
आछोक तोमाक पृथिवीक पारो निते * लङ्का खान निबे पारो ससैन्य सहिते
मइ देखि आछो माव तुमि येन शान्ती * शिंशपा वृक्षत बसि आछिलो नमाति १९
भावत लक्ष्मण बुलिलेक हातजोर * कतेक बा बुलिल रावण मुख पोर
निर्भय स्वरूपे ताल पार भैल माव * मेरु कि टलय अल्प बिचनीर बाव ४३२०
मइ यि देखिलो श्रीरामत ताके कहो * आपोनार दुइ कर्ण येन शुनिलोहो
येनमते सम्प्रत्यय होवय सोतार * भूमित परिया भैला पर्ब्बत आकार २१
पुनरपि सङ्कोचित कलेवर हैया * सीताक प्रणामि वृक्षे चलिलन्त गैया
सीताये बोलन्त बाप होस रामदूत * आशेष गहन बन पवनर सुत २२
शतेक योजन आइले नाहिले संशय * कोटि योजनक याइबे पारस निश्चय
आमाक निबेक तइ पारस आपुनि * आखरेक बोलोहो चाहियो मने गुणि २३

राम से मिला दूँगा ।। १४ ।। तुम्हें राम के चरणों से मिला दूँगा, इस प्रकार आज मैं दोनों की दुर्गति मिटा दूँगा। तब सीता ने कपिराज के मुख की ओर देखते हुए कहा—नन्हें से बच्चे का इतना साहस ? रुई तो ढो सकता नहीं वह पत्थर का भार बाँध रहा ! नन्हा-सा चींटा हाथी को लीलना चाहता है। चोंगे में रहनेवाला चमगादड़ नगाड़े जैसा शब्द देना चाहता है ! नन्हा-सा पपीहा पर्वत को उठा लेना चाहता है ।। १५-१६ ।। (तब हनुमान बोले) माता, भय छोड़ दो, मैं वीर हनुमान हूँ, मैं शत्रुओं को जीत सकता हूँ, मेरे बल का पार नहीं है। माता, मेरे पिता केशरी कैसे वीर थे, उनकी प्रसिद्ध कथा सुनाता हूँ ।। १७ ।। गन्धमादन पर्वत से कूदकर वे गोकर्णपर्वत शिखर पर चले आये थे। उन्हीं के क्षेत्र में मुझे अग्नि के सखा और जगत के जीवन पवनदेव ने जन्म दिया ।। १८ ।। तुम्हारी तो बात ही क्या है, मैं समूची पृथ्वी को भी उठाकर ले जा सकता हूँ। समूची लंका को सेना सहित उठाकर ले जा सकता हूँ। मैं अशोकवृक्ष पर चुपचाप बैठा देखता रहा हूँ, माता तुम कितनी सती नारी हो ।। १९ ।। लक्ष्मण ने भावमग्न होकर (पञ्चवटी में तुम्हें समझाते हुए) कितनी बातें कही थीं, मुँह-भौं चढ़ाकर रावण ने आज कितनी बातें कही, (पर पति की चिन्ता तुमने नहीं छोड़ी) माता, तुमने वह सब निर्भीक रूप से पार कर लिया। मेरु क्या कहीं पंखे की हवा से टल सकता है ? ।। ४३२० ।। मैंने तो जो कुछ देखा है या सुना है श्रीरामचन्द्र से वही कहूँगा। यह सोचकर हनुमान ने सीता को जैसे विश्वास उत्पन्न हो, इसलिए भूमि पर उतरकर पर्वताकार रूप धारण कर लिया ।। २१ ।। पुनः अपने कलेवर को संकुचित कर, सीता को प्रणाम कर, वृक्ष पर चढ़ गये। सीता बोली—वत्स, तू राम का दूत है, अन्तहीन गहन वनों को ध्वस्त करनेवाले पवन का पुत्र है ।। २२ ।। तू सौ योजन पार कर आया है, इसमें तो कोई संदेह ही नहीं है, तू निश्चय करोड़ों योजन पार कर जा सकता है। मुझे तू स्वयं ही यहाँ से ले जा सकता है, पर तुझसे एक शब्द कहती हूँ, तू मन में विचार देख ।। २३ ।। यहाँ से तू मुझे किस प्रकार ले चलेगा ? लोग उधर

इठावर परा कि कार्य्यक निबे मोके * राघवर बलवीर्य्य हासिबेक लोके
सर्ब्बजने बुलिवे राघवे युज हारि * जिनि निबे नोवारिल आपोनार नारी २४
स्त्री चोरा पापिष्ठ मुनिष हेन जानि * सिकारणे जानकीक धरि करि आनि
मइ शान्ती कन्या हेन जानय जगते * पर पुरुषर अङ्ग छुइबो केनमते २५
बुलिबि रावण यिटो आनिलेक हरि * स्त्रीजाति पराधीन नोहे स्वतन्तरी
इटो शङ्काचय मने गुचिल आमार * अपार सागर केनमते भैले पार २६
यावे मोर शरीरत आछय गियान * शाण्ट करि गैया राम लक्ष्मणक आन
मोहोर आज्ञाये चलि जाइयोक सत्वरे * शिशपार तले वसि आछो एकेश्वरे २७
कि कारणे हैवो मइ राक्षसर भक्षी * मासेक थाकिबो मइ स्वमीक आपेक्षि
तथापि नासन्त यदि राम मोर स्वामी * आत्मघात करि तेवे मरिबोहो आमि २८
श्रीरामत वार्त्ता वाप जनाइवे सकले * येनमते आछो मइ शिशपार तले
राक्षसिनी लोके मोक परामव करे * आमाको दण्डिवे एहि मासेक अन्तरे २९
इ सब निकार मइ किमते एराओं * राघवर पाशक सत्वरे केने पाओं
मारुति बोलन्त चिन्ता करा परिहार * हेन जाना रावण ससैन्ये गेल मार ४३३०
असंख्यात सेनावल वानर अपार * लक्षेक हस्तीर बल पर्ब्बत आकार
मइ सम बीर कतो शत उपाधिक * शङ्का परिहरा निरुत्साह होवा किक ३१
असंख्यात सेनाये सुग्रीव कपिराजे * सागरक तरिवो भूषित सब साजे
श्रीराम लक्ष्मणे चपकरे आसिवन्त * रावणक मारि रामे तोमाक निवन्त ३२

रामचन्द्र के वल-वीर्य की हँसी उड़ायेंगे। सब लोग कहेंगे, रामचन्द्र युद्ध में हार-गये। अपनी पत्नी को वे जीतकर नहीं ले जा सके॥ २४॥ नारी-चोर, पापी रावण रामचन्द्र को मनुष्य समझा। इसी कारण वह जानकी को हरकर ले गया। तिस पर जगत जानता है कि मैं सती कन्या हूँ, मैं परपुरुप का शरीर किस प्रकार स्पर्श कर सकती हूँ॥ २५॥ तू कहेगा कि रावण मुझे जो हरकर ले आया था (तव क्या मैंने स्पर्श नहीं किया? तो इसका उत्तर है) स्त्री जाति पराधीन है, स्वतन्त्र नहीं। (रावण के हर लाने में मैं विवश थी) तू अपार सागर पारकर कैसे आया, इस सम्वन्ध मे मेरी जो शंकाएँ थीं वे मिट गयी हैं॥ २६॥ जब तक मेरे शरीर में चेतना रहे, शीघ्र ही जाकर राम-लक्ष्मण को तू ले आ। मेरी आज्ञा मानकर तू शीघ्र ही चला जा, मैं तब तक इसी अशोक-वृक्ष के नीचे अकेली वैठी रहूँगी॥ २७॥ मैं भला राक्षस की भक्षण-सामग्री क्यों वनूँगी? मैं महीने भर पतिदेव की प्रतीक्षा करती रहूँगी। इतने पर भी यदि मेरे स्वामी रामचन्द्र न आवें तो मैं आत्मघात कर मर जाऊँगी॥ २८॥ मैं इस अशोकवृक्ष के नीचे किस प्रकार रह रही हूँ, राक्षसियाँ मुझ पर कैसे अत्याचार कर रही हैं, महीने भर हो जाने पर रावण मुझे दंडित करेगा, वत्स, तू श्रीरामचन्द्र से सारी बार्ता कहना॥ २९॥ इन सब कष्टों को मैं किस प्रकार सहती रहूँ? किस प्रकार राघव के समीप शीघ्र पहुँचूं? मारुति बोले माता, चिन्ता न करो। तुम समझ लो कि रावण अव सेना सहित मारा गया॥ ४३३०॥ वानरों की सैन्य-शक्ति अपार, असंख्य और प्रचंड है। एक-एक वानर ऐसा है जिसमें सहस्रों हाथियों का वल है। वे पर्वताकर हैं, मेरे समान वीर कितने ही सैकड़ों हैं, तुम शंका छोड़ दो, यों निरुत्साहित क्यों हो रही हो?॥ ३१॥ असंख्य सेना सहित कपिराज सुग्रीव सभी सज्जा से भूषित हो सागर पार कर आयेंगे। श्रीराम-लक्ष्मण शीघ्र ही आवेंगे और रावण को मारकर तुम्हें ले जायेंगे॥ ३२॥ हे माता, (मैं तुमसे मिला दूं) इस बात का

येन मते राघवर पतियाइबा चित * सङ्केत कहियो आन जन अविदित
सङ्केत आछय किबा तोमारे रामरे * सेहि कथा कोवा चलि याइबोहो सत्वरे ३३
जानकी बोलन्त शुना बायुर नन्दन * कहिबो तोमार आगे सङ्केत बचन
रामर सीतार यत सङ्केत काहिनी * हनुमन्त आगे कहे जानकी गोसानी ३४
चित्रकूटे शुइल मोर उरुत सिथाने * काके मोर तने घाव करिलेक टाने
ताक लागि हानिलन्त इषिकार बाण * सि कारणे काकर दक्षिण चक्षु काण ३५
मानस शिलार फोंट कपालत दिल * साबटि धरिल पाशे गावे सञ्चरिल
ताक देखि दुइहन्ते से हासिलोहो टाने * गुणि चाहान्तोक ताक आन कोने जाने ३६
यि कथा कहिला माव कहिबोहो याइ * किछु किछु बस्तु आछे दिया जाओं खाइ
रामे येन पतियान्त गुणि चोवा मावे * येन मते तयु स्वामी पतियान यावे ३७
जय नमो रघुपति अगतिर गति * तोमार चरणे मोर निमजोक मति
तयु गुण नाम मोर मुखे नुगुचोक * तोमार कथाक कर्णे सतत शुनोक ३८
तेवेसे आमार सिद्धि होवें मन काम * सकल समाजे डाकि बोला राम राम ४३३९

दुलड़ी

जय नमो राम रघुर नन्दन त्रिभुवने बीर सार ।
जयति लक्ष्मण पुरुष उत्तम सुमित्रा देवी कुमार ॥
जय हनुमन्त बायुर नन्दन कपि बीर महामति ।
बोलन्त कन्दलि आत गति नाइ रामर चरणे गति ॥ ४३४०

विश्वास जैसे रामचन्द्र के चित्त को हो जाये, ऐसा कोई संकेत जो अन्य को ज्ञात न हो, मुझसे बताओ। यदि तुममें ओर रामचन्द्र में कोई संकेत हो तो मुझसे बताओ, मैं शीघ्र ही राम के पास चला जाऊँगा। सीता बोली—पवनसुत, सुनो, तुम्हारे सामने मैं संकेत-वचन बता रही हूँ। इसके पश्चात् रामचन्द्र और सीता के बीच जितनी सांकेतिक कथाएँ थीं, देवी सीता ने हनुमान से बतायी ॥ ३४ ॥ चित्रकूट में मेरी जाँघ पर सिर दिये रामचन्द्र सो रहे थे। तभी कौवे ने आकर मेरे शरीर में जोर से ठोकर मारकर घाव कर दिया। रामचन्द्र ने तब उसकी ओर लक्ष्य कर एक ऐषिक बाण छोड़ा। इसी कारण कौवे की दाहिनी आँख फूट गयी ॥ ३५ ॥ उसके कपाल पर मानस-शिला का टीका लगा दिया, उसे पाश में बाँध लिया, वह छटपटाने लगा। उसे देख हम दोनों ने जोर का ठहाका लगाया था। इसे विचारकर देखिये, दूसरा और कौन जानता है ॥ ३६ ॥ माना, तुमने जो कुछ कहा, मैं जाकर प्रभु रामचन्द्र से बताऊँगा। हनुमान बोले—अब मुझे यदि कोई वस्तु खाने को हो तो दे दो, मैं खाकर चला जाऊँ। जैसे रामचन्द्र को विश्वास हो जाये, तुम्हारे पति प्रभु राम को प्रत्यय हो जाये ॥ ३७ ॥ अगति की गति रघुपति की जय हो, तुम्हें नमस्कार है। तुम्हारे चरणों में मेरी मति लगी रहे। तुम्हारा गुण नाम मेरे मुँह से न छूटे, तुम्हारी कथा मेरे कान निरन्तर सुनते रहें ॥ ३८ ॥ तभी हमारी मनोकामना सिद्ध होगी। सभी समाज के लोग पुकार-पुकार कर राम-राम कहो ॥ ३९ ॥

त्रिभुवन में श्रेष्ठ वीर रघुनन्दन राम की जय हो। उन्हें नमस्कार है। सुमित्रा-नन्दन पुरुषोत्तम कुमार लक्ष्मण की जय हो। वायु-नन्दन, महामति, वीर कपिराज हनुमान की जय हो। कन्दली कहते हैं, राम के चरण ही एकमात्र गति है। इसके अतिरिक्त और कोई गति नहीं है ॥ ४३४० ॥

हनुमाने रावणर मधुवन ध्वंस करे

छवि

सङ्केत वार्त्तांक मइ यतमाने आनिलोहो सबे कथा कहिबोहो सार ।
मधुफल आनि दिओं भुञ्जिया तृपिति हुयो सन्देश दिबो आर वार ॥
जनक जीउर आइर मधुफल पाया हाते वायुपुत्रे मुखे आनिदिल ।
आठ गुणे प्राण आति दशगुणे तेज वल तेतिक्षणे तान सम्पजिल ॥ ४३४१
इटो मधुफल मांव कमन थानत आछे तार कथा कहियो आमात ।
एहि तोरणत पशि क्षत ये बिक्षत करि वार्त्ता कहि जाइबोहो तोमात ॥
इटो मधुफल कथा तोमात कहिले बाप सर्व्व कार्य्य करबे विनाश ।
एक एक वृक्ष तार कोटि राक्षसेहे रखे केमने लङ्घिवे तार पाश ॥ ४३४२
सकले राक्षसे मिलि तोक मारि पेलाइवेक रामे तेत वार्त्तांक न पाइव ।
आजि आसं कालि आसं बुलि बाट चाहिवन्त आमि ऐत वर दुख पाइब ॥
एहि बुलि सीता देवी दिव्य मणिगोट आनि काढ़िदिल चेलारिर हन्ते ।
प्रदक्षिणे सादरिया देवीक प्रणाम करि हात पाति लैल हनुमन्ते ॥ ४३४३
आसियो गोसानी माव एरियोक शोक भाव राघवक दिबो मणि निया ।
आपोन पौरुष वल प्रकाश करिया याइवो रावणक सन्देशक दिया ॥
एहि बुलि हनुमन्ते कतो दूर गैया पाचे मने मने गुणन्त वहुत ।
एक ये कार्य्यक आसि अनेक कार्य्यक करे सेहिसे उत्तम होवे दूत ॥ ४३४४
रणक हरिष मोर हात पाव चुलुकाया कण्डु आति करे निरन्तर ।
लङ्का नगरीत पशि खलमलि लगाइ पाचे चरण प्रणामो राघवर ॥

हनुमान द्वारा रावण के मधुवन का विनाश

सीता बोली—मेरे यहाँ जितनी संकेत-वार्ताएं हैं सब तुमसे बताऊँगी । मैं मधुफल ला देती हूँ, खाकर तृप्त होओ, इसके पश्चात् मैं पुनः संदेश दूंगी । जनकनन्दिनी सीता के हाथ से मधुफल पाकर हनुमान ने मुँह में डाला । उसे खाते ही उनमें आठ-गुनी जीवनी शक्ति, दसगुना तेजबल तत्क्षण उत्पन्न हो गया ॥ ४३४१ ॥ तब हनुमान ने पूछा, माता, यह मधुफल किस स्थान में हैं; मुझे बताओ । मैं उसके प्रवेशद्वार से प्रवेशकर उसे तोड़-फोड़कर तुमसे सारा समाचार बता, यहाँ से लौट जाऊँगा । सीता बोली—वत्स, इस मधुफल की बात तुमसे बताने पर, सभी कार्य विनष्ट कर डालोगे । उसके एक-एक वृक्ष की रखवाली करोड़ों राक्षस किया करते हैं । तुम उसके समीप किस प्रकार पहुँच सकोगे ? ॥ ४२ ॥ सभी राक्षस मिलकर तुम्हें मार डालेंगे तब राम को समाचार नहीं मिल पायेगा । तुम आज आओगे, सोचते हुए वे बाट जोहते रहेंगे, मुझे भी इधर अपार कष्ट होगा । यह कह सीता जी ने अंगवस्त्र से निकालकर दिव्य मणि उन्हें दे दी । हनुमान ने उनकी सादर प्रदक्षिणा कर प्रणाम किया और हाथ बढ़ाकर ले लिया ॥ ४३ ॥ वे कहने लगे, माता, अब मैं चल रहा हूँ, तुम शोक की भावना छोड़ दो । यह मणि मैं ले जाकर प्रभु रामचन्द्र को दूंगा । साथ ही रावण को भी इस बात की सूचना दे, उसके सम्मुख अपना बल-पौरुष प्रकट कर जाऊँगा । यह कहकर हनुमान कुछ दूर जाकर मन में अनेक सोच-विचार करने लगे । जो एक कार्य के लिए जाकर अनेक कार्य करता है वही उत्तम दूत है ॥ ४४ ॥ युद्ध करने में मुझे प्रसन्नता होती है, हाथ-पैर खुजला रहे हैं । मैं लंकापुरी में प्रवेश कर खलबली

मोर बल महिमाक न जानि जानकी माव मने आति करन्त संशय ।
आहाने आगत मइ एक माया धरो आजि, येन मते याहन्त प्रत्यय ।। ४३४५
एहि गुणि हनुमन्ते तेखने सीतार आगे धरिलन्त ब्राह्मणर वेश ।
हातत करण्डी कुश चवरि खोखरा छाति शन पाञ्जि हेन भैल केश ।।
आपोन लाङ्गुले तान कन्धर लगुण भैल जक जक करे फोट दान्त ।
थिर नजाय हात भरि वृद्ध ब्रह्मणर वेश देखि सीता हासि तुलिलन्त ।। ४३४६
जानकी बोलन्त माति गुणबान हनुमन्त तुष्ट बर कराइलाहा मोक ।
लङ्कार चौराशी हाटी घरे घरे फुरि आस राक्षसेनो कि करिबे तोक ।।
अनन्तरे हनुमन्त ब्राह्मणर वेशे गैया पशिलन्त राजार आवास ।
कालि गैल एकादशी आजि भैल दोवादशी लघनते भैलोहो हताश ।। ४३४७
शरीरर अग्नि मोर जाके जाके निकलय पारणा करिते आशकत ।
एकगुटि मधुफल भुञ्जिया तृपिति हुया बेद पढ़ो राजार आगत ।।
सौराष्ट्र देशर आमि महावेदगर्व्वी द्विज आसि भैलो राजार दुवारे ।
एकगुटि मधुफल भुञ्जिया तृपिति हुया कीर्ति कहि याइबोहो राजारे ।। ४३४८
अधिकारी सबे बोले भण्डारत फल नाइ खुजि लुरि चाहिलो बिस्तरे ।
वेदविद् ब्राह्मणक रिक्त हस्त न पठाया खुजि लैयो बाहिर भितरे ।।
हेन शुनि हनुमन्ते लाखुटित भिर दिया पशिला गैया बारिर भितरे
धूति करण्डी तामि चवरि बोकण्डी थैया चरिलाहा बृत्रर उपरे ।। ४३४९
लहना लहन करि मधुफल लागि आछे ताक देखि कौतुक बिस्तर ।
सकलहि मधुफल भुञ्जिया तृपिति हुया पाछे युद्ध करो लङ्केश्वर ।।

मचा, इसके पश्चात् रामचन्द्र के चरणों में प्रणाम करूँगा। मेरा बल और महिमा माता जानकी नही जानती, इस कारण उनके मन में बड़ा ही संशय है। उनके सामने मैं एक ऐसी माया करूँगा, जिससे उन्हें विश्वास हो जाये ।। ४५ ।। ऐसा विचार कर सीता के सम्मुख ही हनुमान ने ब्राह्मण का वेश धारण कर लिया; हाथ में कमण्डल, कुश, मृगछाला, छतरी धारण कर लिये। उनके केश सनई जैसे श्वेत हो उठे। उनकी पूँछ कंधे का यज्ञोपवीत बन गयी, उनके दाँत बाहर निकल-से आये, काँपने के कारण हाथ-पैर स्थिर न रहते थे। हनुमान का वह वृद्ध ब्राह्मण का वेश देखकर सीता को हँसी आ गयी ।। ४३४६ ।। जानकी ने कहा—गुणवान् हनुमान, तुमने मुझे बहुत सन्तुष्ट किया। तुम लंका के चौरासी बाजारों मे घर-घर घूम आओ। राक्षस तुम्हारा क्या कर लेंगे। तब हनुमान ने ब्राह्मण वेश में जाकर राज-भवन में प्रवेश किया। कहा,—कल एकादशी थी, आज द्वादशी हैं। मैं उपवासी रहकर हताश हो गया हूँ ।। ४७ ।। मेरे शरीर की अग्नि (क्षुधा-रूपी अग्नि) पुंज-पुंज निकल रही है; मैं पारण करने में अशक्त हूँ। एक मधुफल खाकर तृप्त हो जाऊँ तो राजा के सम्मुख जाकर वेदपाठ कर सकूँगा। मैं सौराष्ट्र देश का महावेद-गर्वी द्विज, राजा के द्वार आया हूँ। एक मधुफल खा, तृप्त होकर राजा की कीर्ति गानकर चला जाऊँगा ।। ४८ ।। अधिकारियों ने कहा—भंडार में फल नहीं हैं, हमने चारों ओर खोजकर देखा। वेदविद् ब्राह्मण को खाली हाथ लौटाना उचित नहीं, तुम बाग में जाकर खोज लो। तब हनुमान, धोती, फूल की करणी, ताम्रपात्र, चंवर, गठरी आदि रखकर वृक्षपर चढ़ गये ।। ४९ ।। देखा, मधुफल पेड़ों पर लदे हुए हैं। उसे देखकर उन्हें बड़ा कौतुक हुआ। उन्होने सोचा, सारा मधुफल खा, तृप्त हो, इसके पश्चात् लंकेश्वर से युद्ध करूँगा। वृक्ष की डाली

बायुसुत हनुमन्त मने मने गुणिलन्त वृक्षर डालत गैया चढ़ि ।
दिव्य विचित्र फल सुरस अमृतमय अदेव भुञ्जिवो केन करि ।। ४३५०
एक प्रहरर पथ राम लक्ष्मणक दिल कतोदूर सुग्रीव नृपति ।
आरो केत दूर याने सीताक उत्सर्गि दिल राघवत याहार भकति ।।
अङ्गदक आदि करि यत कपिगण आछे एके थाने करिया सन्मान ।
एक गाछ दुइ गाछ नाम करि उत्सर्गिल बायुसुत वीर हनुमान ।। ४३५१
अशोक वनिकाखान रावणर प्रिय थान वायुसुते ताक गैया पाइल ।
आजोर बिजोर करि डाल सव भाङ्गि मुरि समस्ते कलमो फल खाइल ।।
गण्डगलित करि मधुफल भुञ्जि वीरे ठिस् ठिस् करिलन्त पेट ।
गर्भर पुरीष जले खखारे सिङ्गुने बान्ति दुर्गम करिल सवे हेठ ।। ४३५२
वृक्ष सव उभारिया उभत करिया रइल रण्ड मण्ड करिलन्त वन ।
विश्व कर्म्मे निर्मिलिन्त माणिक सुवर्ण थान छन्न भैल क्रीड़ार भुवन ।।
स्वर्गर दिशक लङ्घे आम जाम कंटकीये खिरि आरु दशनैया कल ।
अपूर्ब्ब विचित्र आति सरस मधुर स्वाद हनुमन्ते भोगाइल सफल ।। ४३५३
सुगन्ध शीतल जल राजाक लागिया थैल निशेष करिया ताक पिल ।
यत यत दीघी सव क्रीड़ार भुवन सव खल मल करिया पुतिल ।।
अशोका वनिका खान हनुमन्ते भाङ्गिलन्त शबद मिलिल कोलाहल ।
यतेक राक्षस लोक चमत्कारे परिगैला काहारो कर्णत दिल ताल ।। ४३५४
स्वर्गर सदृश थान गन्धर्ब्ब भुवन सम रावणर मुख्य क्रीड़ा थान ।
आजोर पिजोर करि क्षतये विक्षत करि छन्न करिलन्त हनुमान ।।
विपरीत शरीरेक वानरेक देखि सवे महाभये पलाइ दरदरि ।
आग भेण्टि हनुमन्त लाथि भुकु उसासन्त चक्षु ढेलेका हाको घोङ्घरि ।। ४३५५

पर चढ़कर पवनसुत हनुमान ने मन ही मन सोचा, ये दिव्य सुमधुर रस वाले विचित्र अमृतमय फल हैं, इन्हें (इष्ट) देवों को प्रदान किये विना कैसे खाऊँ ? ।। ४३५० ।। उन्होंने एक-एक प्रहर का मार्ग उछालकर राम-लक्ष्मण को, राजा सुग्रीव को, और कुछ दूर जाकर सीता को फल अर्पित किये। हनुमान की रामचन्द्र पर भक्ति थी। इसके वाद अंगदादि वानरों को एक ही स्थान में सम्मान कर, एक-दो वृक्ष पवनसुत हनुमान ने समर्पित किये ।। ४३५१ ।। इसके वाद पवनसुत हनुमान रावण के प्रिय स्थान अशोकवन में जा पहुँचे। और उथल-पुथल मचा, डालियाँ तोड़-ताड़कर, सभी मधुफल खा डाले। भर पेट मधुफल खाकर वीर हनुमान ने मल-मूत्र, खखार-थूक आदि से चारों ओर गंदा कर डाला ।। ५२ ।। सारे वृक्षों को उखाड़कर-उलटकर समूचे वन को तहस-नहस कर डाला। विश्वकर्मा-निर्मित स्वर्ण-मणि का स्थान, क्रीड़ा की स्थली सब कुछ नष्ट हो गये। आकाशचुम्बी आम, जामुन, कटहल, खीरे, दसनामी केले आदि सरस, मधुर स्वाद वाले अत्यन्त अपूर्व विचित्र फलों को हनुमान ने खा डाला ।।५३।। राजा के लिए रखा हुआ जो सुगन्ध-शीतल जल था, उसे पीकर खत्म कर डाला। क्रीड़ा के लिए वनाये हुए जितने वड़े-वड़े तालाव थे, उन्हें एकदम गंदा कर पाट दिया। हनुमान जब अशोकवन को तोड़ने लगे तो उसका कोलाहल चारों ओर गूँज उठा। जितने राक्षस थे सभी चौंककर गिर पड़े, उनके कानों में ताला पड़ गया ।। ५४ ।। स्वर्ग के सदृश गंधर्व-लोक जैसा रावण का जो मुख्य क्रीड़ा-स्थान था, उसे उजाड़-पजाड़ कर, क्षत-विक्षतकर हनुमान ने विनष्ट कर डाला। विपरीत शरीर वाले एक वन्दर को देखकर सब लोग महान् भय से इधर-उधर भागने लगे। हनुमान उनके मार्ग रोककर

कतो कतो लाग पाया आञ्चोरन्त कामोरन्त समुदाय नमारन्त ताक।
बानरर प्रहारत विपरीत चोट पाया राक्षस पलाइ जाके जाक ॥
नमो नमो रघुपति तुमि अगतिर गति सुरासुरे आराधे याहाक।
तोमार अभय दुइ चरणे शरण लैलो दास बुलि धरियो आमाक ॥ ४३५६
तयु गुण नाम यशे मोहोर जीवन हौक तेवे मन पूरय आमार।
करा कृपा कृपामय यत समाजिक चय राम बुलि तरियो संसार ॥ ४३५७

पद

कतो राक्षसिनी बोले जनकर जीउ * इटो बानरक देखि उरि गैल जीव
तुमि समे कथाये आसिल निरंतर * तुमि जानाहा इटो कोथेर बानर ४३५८
सीता बोले न जानोहो कोथेर बानर * मोक चलिबाक आइल माया राक्षसर
हरि आनिलेक मोक रावण कपटी * तोहोरासे जाना सबे आसुटि कुसटि ४३५९
नाथुकार करिला जनक जीउ सीता * कतो राक्षसिनी गैल रावणर भिता
आवेशियो गोसाइ उद्यान गैल क्षय * बानरर कारणे राक्षसी निजीवय ४३६०
बानरेक आसि भैल पर्ब्बत आकार * अशोक बनिका छन्न करिल तोमार
दीघीसब पुखुरी आसिल भरि जले * ताके सबे पुतिल गर्म्भर खश मले ६१
तोमात कहिलो करियोक प्रतिकार * उपद्रव सहन न याय बानरर
तुमि अभिलाषे हरि आनिला याहाक * काहार शकति आछे मातिबे ताहाक ६२

आँखों से डराकर, चीख पुकार, गरजकर लात-मुक्के आदि से मारने लगे ॥ ५५ ॥ किसी-किसी को पकड़कर नोचने और दाँतों से काटने लगे। वे उसे एक दम मार नहीं डालते थे। हनुमान के प्रहार से प्रचंड आघात पाकर राक्षस झुंड के झुंड भागने लगे। रघुपति, तुम्हें नमस्कार है। जिसे सुरासुर आराधना करते है वही तुम अगति की गति हो। तुम्हारे अभय चरणों की शरण ले रहा हूँ। दास समझकर मुझे अपना लो ॥ ५६ ॥ तुम्हारा गुणनाम यश ही मेरा जीवन हो—तभी मेरा मन पूर्ण हो सकेगा। कृपामय, कृपा करो। हे सामाजिक गण, राम नाम लेकर संसार से पार उतर जाओ ॥ ४३५७ ॥

कोई-कोई राक्षसी कहने लगी—जानकी, इस बानर को देखकर तो हमारे प्राण उड़े जा रहे है। इसने तो तुम्हारे साथ बड़ी बाते की हैं। तुम जानती हो कि यह वानर कहाँ का है ॥ ५८ ॥ सीता बोली, मुझे पता नही कि यह बानर कहाँ का है। मुझे छलने के लिए यह किसी राक्षस की माया है। कपटी रावण मुझे हर लाया है। तुम्ही लोग इसके सारे छल-प्रपंच को समझ सकती हो ॥ ५९ ॥ जब सीता ने इस प्रकार (हनुमान को) पहचानने से नकार दिया तो कुछ राक्षसियाँ रावण के पास पहुँची और कहा—हे प्रभु, उद्यान नष्ट हो रहा है, एक वानर के उपद्रव से राक्षसियाँ जीवित नही बचेगी। आप (सेना को) आदेश दीजिये ॥ ४३६० ॥ पर्वताकार एक बानर आकर आपकी अशोकवाटिका को नष्ट कर रहा है। जितने पोखरे-सरोवर जल से भरे थे, उन सभी को अपने मल-मूत्र से भर डाला है ॥ ४३६१ ॥ आपसे हम निवेदन कर रही है, प्रभु, इसका प्रतिकार कीजिये। वानर का उपद्रव अब सहन नही किया जा सकता। आप जिसे पाने की अभिलाषा से हर लाये हैं, उससे कुछ कहने की शक्ति और किसकी हो सकती है ? ॥ ६२ ॥ देवी सीता के समीप के जितने वृक्षादि थे, दुष्ट वानर ने उन सबको नष्ट कर डाला। संभवतः वह इन्द्र का दूत है, या कुबेर का,

सीता गोसानीर यत समीपर वन * दुष्ट वानराये ताक करिलेक छन्न
किवा बासबर चर किबा कुवेरर * सीताक खुजिते आइल दूत राघवर ६३
हेन शुनि क्रोधत ज्वलिल लङ्केश्वर * मातिया पठाइल दूत अनेक किङ्कर
असंख्यात वानर तुलत याहा साजि * बेढ़ि गैया वानराक वान्धि-आन आजि ६४

राक्षस सेनार हनुमन्तक आक्रमण

राजार आदेशे असंख्यात निशाचर * करे धरि शकति परशु मुद्गर
चपकरे ससैन्ये अशोका वन पाइल * वानरक देखि कतो मारो करि धाइल ६५
सेनाक देखिया महाबीर हनुमन्त * अदभुत उच्चल बृक्षत चड़िलन्त
नसहय बृक्षभागि परे तान भरे * मधुबन छन्न करिलन्त निरन्तरे ६६
शिखरत चड़िया बाढ़िल हनुमान * शरीर देखिय येन पर्व्वत समान
तान पयोभरे भागि परय शिखर * रण्ड भण्ड भैगैल राजार घौलि बर ६७
जयति जयति राम लक्ष्मण जयति * सुग्रीव जयति वानरर अधिपति
मइ आसि भैलो सीता देखिबार हेतु * हनुमन्त नामेसे लङ्कार धूमकेतु ६८
चतुर्द्दशे वेढ़िले राक्षस महावली * हनुमन्ते देखिवा हासन्त खल खलि
लाञ्जगोट फुराइलन्त तोरणत वसि * राक्षसर सेना कतो मरिल तरसि ६९
चेतनक पाया कतो कतो बोले याक * सबे मिलि दिले दुर्घोर अस्त्रजाक
राक्षसर शरे चतुर्द्दिशक जुरिल * मारुतिर आटासत सबे उफरिल ४३७०
हनुमन्ते वृक्षगोट लैलन्त उपारि * सेनार माजत पशि कोबावन्त बारि
कारो पेट हात मुण्ड कुम्भस्थल भागि * घोर रणे गैल यम सदनक लागि ७१

अथवा सीता को खोजने के लिए राघव का ही दूत आया है।। ६३ ।। यह सुन लंकेश्वर रावण क्रोध से जल उठा और अनेक सेवकों को वुला भेजा। (उसने आदेश दिया) उस बानर की तुलना में तुम लोग अनगिनत संख्या में सजकर जाओ और उस वानर को घेरकर आज बांध लाओ ।। ४३६४ ।।

राक्षस-सेना का हनुमान पर आक्रमण

राजा के आदेश से अनगिनत निशाचरों की सेना हाथों में शक्ति, परशु, मुद्गर आदि लिये अत्यन्त शीघ्रता से अशोक वाटिका में प्रहुँची और वानर को देख, कुछ मार-मारकर दौड़ पड़े ।। ४३६५ ।। सेना को देख महावीर हनुमान एक अद्भुत ऊँचे वृक्ष पर चढ़ गये। उनका भार न सह पाने के कारण वृक्ष टूट गिरा। इसी तरह एक के वाद दूसरे वृक्ष को तोड़-तोड़ कर उन्होने मधुवन को नष्ट कर डाला ।। ६६ ।। शिखर पर चढ़कर हनुमान ने अपना शरीर बढ़ा लिया और वे पर्वत जैसे दिखाई देने लगे। उनके भार से पर्वत-शिखर टूट गिरते थे। राजा के भवन भी नष्ट-भ्रष्ट होने लगे ।। ६७ ।। (हनुमान कहने लगे) राम-लक्ष्मण की जय हो। वानरराज सुग्रीव की जय हो। मैं सीता जी के दर्शन हेतु आया हूँ—मेरा नाम हनुमान है, मैं लंका का धूमकेतु हूँ ।। ६८ ।। चौदह राक्षसों ने हनुमान को घेर लिया। उन्हे देख हनुमान खिल-खिला कर हँसने लगे। वे सिंहद्वार पर वैठकर अपनी पूंछ घुमाने लगे। राक्षसों के कितने ही सैनिक त्रास के मारे मर गये ।। ६९ ।। कुछ राक्षस चेतना लौटने पर कहने लगे—'ठहर, ठहर' और सब मिलकर भयंकर शस्त्रों से चोट करने लगे। राक्षसों के वाणों ने चारों दिशाओं को व्याप्त कर लिया परन्तु वे सभी मारुति के अट्टहास से दूर छिटककर जा पड़े ।। ४३७० ।। तव हनुमान ने एक वृक्ष को उखाड़ लिया और

कतो कतो पलाइ गैल सुदीर्घ निश्वासे * बार्त्ताक जनाइल गैया रावणर पाशे
आदेशियो गोसाइ उद्यान गैल क्षय * बानरर कारणे राक्षस निर्जीवय ७२
पुनरपि क्रोधे ज्वलि गैल लङ्केश्वर * साजि पारि पठाइल अनेक निशाचर
सागर सदृश सेना सबे यायो साजि * बेढ़ि गैया बानराक बान्धि आन आजि ७३
राजार आदेशे साजि गैल निशाचर * हाते तुलि धरिवा परशु मुद्गर
अस्त्र शस्त्र धरिया अशोका बन पाइल * बानरक देखि काट मार करि धाइल ७४
धर धर मार मार उथलिल बाक * सवे हन्ते बेढ़िया दिलेक अस्त्र जाक
राक्षसर शरे गैया चौभिति बेढ़िल * मारुतिर आटासत सबे उफरिल ७५
सुवर्णर स्तंभगोट लैलन्त उपारि * सेनार माजत पशि कोबावन्त बारि
रावणे युजक सेना पठाइल यतेक * एकै एकै कोबे मारे शतेक शतेक ७६
राक्षस गणक सबे मारिला बिगुटि * काहाको उभता गोरे माथा गोट पुति
कतो सेनागण संहारिल वृक्ष बारि * आटासते काहारो पराण गैल छारि ७७
हतशेष सेना गैया राजात जनाइल * शुनि लङ्केश्वरे असन्तोष बर पाइल

हनुमानर हातत जाम्बुमाली बध

प्रहस्तर पुत्रक करिल सनमान * चल जाम्बुमाली बानरक बान्धि आन ७८
प्रहस्तर पुत्र जाम्बुमाली वीरवर * बिकट दशन येन आटालर गड़
कालमेघ समदेहा बीर महाबल * माथागोट थुल येन पर्ब्बत सचल ७९

सेना के बीच प्रवेश कर उससे आघात करने लगे। राक्षसों मे किसी के पेट, हाथ, सिर, छाती, जाँघ आदि टूट गिरने लगे और वे यमलोक सिधार गये ॥ ४३७१ ॥ कुछ राक्षसों ने लम्बी साँसें लेते हुए भागकर रावण के पास पहुँच समाचार सुनाया। हे प्रभु, आदेश कीजिये, उद्यान नष्ट हो गया, इस बानर के मारे अब राक्षस जीवित नहीं बचेंगे ॥ ७२ ॥ लंकेश्वर रावण पुनः क्रोध से जल उठा और अनेक निशाचरों को अस्त्रों से सज्जित कर भेजा। कहा—सागर जैसी सेना सजकर जाओ और बानर को घेरकर पकड़ लाओ ॥ ७३ ॥ राजा के आदेश से निशाचर हाथों में परशु, मुद्गर ले सजकर चल पड़े। अस्त्र-शस्त्र लेकर वे अशोकवन पहुँचे और बानर को देख 'काट-मार' चिल्लाते हुए धावित हुए ॥ ७४ ॥ 'धर-धर' 'मार-मार' आदि शब्द गूँज उठे और सभी घेरकर अस्त्रों का प्रहार करने लगे। राक्षसों के बाणों ने चारों ओर आवृत कर लिया। मगर मारुति की दहाड़ से सभी छिटककर बिखर गये ॥ ७५ ॥ हनुमान ने सोने का एक खम्भा उखाड़ लिया। और सेना में घुसकर उसीसे प्रहार करने लगे। रावण ने जिस सेना को भेजा था, एक-एक चोट से उसके सौ-सौ वीरों को वे मार डालने लगे ॥ ७६ ॥ सभी राक्षसों को वे चुन-चुन कर मारने लगे, किसी-किसी को लातों से मारकर सिर तोड़ डाला। वृक्ष से आघात कर कितनी ही सेना का संहार कर डाला। किसी-किसी के प्राण तो उनकी दहाड़ से ही निकल गये ॥ ७७ ॥ बची हुई सेना ने जाकर राजा को बताया। सुनकर रावण को बड़ा असन्तोष हुआ।

हनुमान के हाथ जाम्बुमाली का वध

उसने प्रहस्त के पुत्र जाम्बुमाली का मान करते हुए कहा—जा, जाम्बुमाली, बानर को बाँध ला ॥ ७८ ॥ प्रहस्त का पुत्र वीरवर जांम्बुमाली के दाँत ऐसे भयंकर थे मानो वज्र के गढ हों। उस महाबली वीर का शरीर काले बादल जैसा था; सिर सचल पर्वत जैसा विशाल था ॥ ७९ ॥ उसके सिर पर रक्तवर्ण पुष्प-माला पहना दी

आरकत पुष्पमाला तार माथे दिल * रङ्गनीया वस्त्रे तार गाव आवरिल
गर्द्दभ युगुत रथ खान चलि जाय * आति मद गर्व्वत काहाको टर नाइ ४३८०
वज्रर सदृश तार धनुर टङ्कार * गगनर अन्तक शवद गैल थार
देखिलेक वानरक तोरण उपरे * बाहु दुइत प्रहारिल तीक्ष्ण दुइ शरे ८१
माथात विन्धिल एक गोटा कनियानि * अर्द्ध चन्द्रे वदनक पेलाइलेक छानि
रुधिरे पवनसुत देखिते विड़िङ्ग * रणक हरिषे हनुमन्ते दिला रिङ्ग ८२
तन दुतय माजे दश शरे ठासि * खल खलि करि वीरे तुलिलेक हासि
एवे जेवे जीवस मोहोर शराधात * आने येन धसमसि न करे लङ्कात ८३
शर पाया हनुमन्ते क्रोधे वर ज्वले * पर्व्वतेक मारिलन्त शरीरर बले
जाम्बुमाली देखे धाइ आसे वर टाने * पर्व्वतक काटिलेक दश गोटा वाणे ८४
गिरि मिछा भैल देखि क्रोधे हनुमन्त * आति वर शाल वृक्ष उपारि लैलन्त
कुमारर चाक येन फुराइलन्त धरि * जाम्बुमाली वीरर शिरक लक्ष्य करि ८५
वृक्षगोट फुरि आसे देखि निशाचरे * सियो वृक्ष काटिल दारुण छय शरे
बाहु दुइत विन्धिल निशित दश बाणे * कपालत एक गोटा त्रिन्धिल सन्धाने ८६
शराघावे मारुतियो क्रोध वर करि * सुदृढ़ परिघगोट हाते तुलि धरि
दुइहाते कोबेक बैसाइला कपिराजे * जाम्बुमाली राक्षसर हृदयर माजे ८७
हियात परिल येवे परघिर वारि * तेति क्षणे ताहार पराण गैल छारि
यतेक आछिल तार युद्धर सम्भार * चूर्णीकृत भैल नेदेखिल ताक आर ८८
जाम्बुमाली वीर येवे रणत परिल * शुनिया रावण राजा क्रोधत ज्वलिल
मन्त्री पुत्रगण सबे आदेश करिया * सबे मिलि वानराक आनियो धरिया ८९

और रंगीन वस्त्र से उसका शरीर आवृत कर दिया। गधे-जुते उसका रथ चला जा रहा था, अत्यन्त मद-गर्व के कारण वह किसी से भी डरता न था ॥ ४३८० ॥ उसके धनुष का टंकार वज्र सदृश था, जिसका शब्द आकाश को पार कर जाता था। उसने वानर को सिंहद्वार पर देख, दो तेज वाणों से उसकी ओर प्रहार किया ॥ ४३८१ ॥ एक वाण से सिर को वेध डाला और अर्ध-चन्द्र वाण से शरीर को छेद डाला। पवनसुत का शरीर रक्त से रंजित वहुवर्णी दिखाई देने लगा। रण के लिए हर्षित हो हनुमान गरज उठे ॥ ८२ ॥ उसके शरीर में दोनों ओर दस वाणों से वेधकर खल-खल करता हुआ वीर जाम्बुमाली हँस पड़ा। और बोला—यदि मेरे वाणो के आघात से अभी जिन्दा भी रह जाये फिर भी ऐसा कर दूँगा जिससे फिर लंका में गड़वड़ी न मचा सके ॥ ८३ ॥ वाणों के आघात स हनुमान क्रोध से वहुत ही जल उठे और अपने शरीर का बल लगाकर एक पर्वत उठाकर फेंक मारा। जाम्बुमाली ने देखा, वड़ा भयंकर पर्वत आ रहा है, तब दस वाण मारकर उसने पर्वत को काट डाला ॥ ८४ ॥ पर्वत को व्यर्थ जाते देख हनुमान क्रुद्ध हो उठे और विशाल शालवृक्ष उखाड़ लिया। उसे पकड़कर कुम्हार के चाक की भाँति घुमाने लगे और वीर जाम्बुमाली के सिर को लक्ष्य कर फेंका ॥ ८५ ॥ वृक्ष को अपनी ओर आते देख निशाचर ने उस वृक्ष को भी छः भयंकर वाणों से काट डाला, और हनुमान की दोनो वाँहों को दस वाणों से और कपाल को एक वाण से वेध डाला ॥ ८६ ॥ वाणों के आघात से वहुत क्रुद्ध होकर मारुति ने भी सुदृढ़ परिघ अपने हाथो में उठा लिया। कपिराज ने उस परिघ को दोनों हाथों से उठाकर राक्षस जाम्बुमाली के हृदय पर मारा ॥ ८७ ॥ हृदय पर परिघ का आघात पड़ते ही उसी क्षण उसके प्राण निकल गये। उसकी युद्ध की जितनी सामग्रियाँ थी, सब चूर-चूर हो गयी; वह उसे पुनः देख नही पाया ॥ ८८ ॥ वीर

आदेश करिया येवे राक्षसर नाथे * बायु सम घोराक जुरिल आथे-बेथे
मन्त्रीपुत्र सबे चलि गैल एके बारे * दशोदिश पूरिलेक धनुर टङ्कारे ४३९०
माथासब थलन्तर पर्ब्वत सच्चल * कालमेघ - दल येन राक्षसर बल
सकले मन्त्रीर पुत्रे बिमरिष करि * अस्त्रर प्रहार दिल चौभिति आवरि ४३९१
कौतूहले आटासेक दिल हनुमन्ते * आकाशक डेव दिला तोरणर हन्ते
काण्डे हानि यतमान दूरक नापाय * तहिते थाकिला बीरे अस्त्रक एराइ ९२
सेनामाजे मारुति परिला बेग टानि * हस्ती घोरा सेना मारे मुण्डे मुण्डे हानि
मन्त्रीपुत्रगण बीरे बिगुटि मारिया * कारो बज्रनखे चिरि टेटु मसारिया ९३
काहाको लाङ्गुल बारि काकोलाथि गोरे * काहाको टोकरे आण्ठु मुकति कामोरे
किल मुकु घराकाति कङ्कालत कोवे * काको तुलि आछारन्त बस्त्र येन धोवे ९४
मन्त्री पुत्र सकलको पाचे धरि आनि * कपाले कपाले सबे ठेकाठेकि हानि
सागरत येन मत्स्यत् मारिल मगरे * सब सेना मारिलेक पवनकुमारे ९५
शोणितर नदी बहे समर भूमित * अगम्य भै गैल अस्थि मांसे पङ्काकृत
हस्ती सब उटे घोरासब याइ भासि * तोरणत बसि बीरे तुलिलेक हासि ९६
मन्त्रीपुत्रबध शुनि रावणर भय * मनत विषादे राजा परम बिस्मय
किनो आपदेक आसि मिलिल लङ्कार * आवे पाति मलछिल दुष्ट बानरार ९७

जाम्बुमाली युद्ध में मारा गया, यह सुनकर राजा रावण क्रोध से जल उठा। उसने सारे मंत्री-पुत्रों को आदेश किया, सब मिलकर जाओ और बानर को पकड़ लाओ ॥८९॥ जब राक्षसों के स्वामी रावण ने उन्हें आदेश किया तो मंत्री-पुत्रों ने अपने रथों में शीघ्रता से वायु जैसे घोड़ों को जोड़ा और एक साथ निकल पड़े। उनके धनुषों की टंकार दशो दिशाओं में गूँज उठी ॥ ४३९० ॥ उन सबके सिर सचल पर्वत की भाँति विशाल थे। राक्षसों की सेना काले बादलों के समूह की भाँति थी। सभी मंत्री-पुत्र विचार विमर्ष कर हनुमान को चारों ओर से घेर कर अस्त्रों का प्रहार करने लगे ॥ ४३९१ ॥ हनुमान कौतूहल से जोर से दहाड़ उठे और सिंहद्वार से कूदकर आकाश मे चले गये। वाण जितनी दूरी तक नहीं पहुँच पाये, वीर हनुमान वहीं जाकर अस्त्र से बचकर रुके रहे ॥ ९२ ॥ मारुति प्रवल वेग से सेना में कूद पड़े और हाथी, घोड़े और सैनिकों के सिरों पर आघात कर मारने लगे। हनुमान मंत्री-पुत्रों को अत्यन्त कष्ट देकर मारने लगे। किसी को वज्र जैसे नाखूनों से फ़ाड़ डाला, किसी का गला घोंट दिया ॥ ९३ ॥ किसी को पूँछ से मारा, किसी को लातों से मारा, किसी-किसी को ठोकर मारकर, किसी-किसी को केहुनी से मारकर, किसी-किसी को दाँतों से काटकर मार डाला। मुक्के, घूँसे, कोहुनी से किसी की हड्डियाँ तोड़ डाली तो किसी को उठाकर ऐसे पटक दिया जैसे कि कपड़े धो रहे हों ॥ ९४ ॥ इसके पश्चात् मंत्री-पुत्रों को भी पकड़ लाकर उनके सिरों पर आघात कर मार डाला। जैसे सागर में मगर मछलियों को मार डाले उसी प्रकार हनुमान ने सारी सेना मार डाली ॥ ९५ ॥ युद्धभूमि में रक्त की नदी बह चली। वह हड्डी-मांस से पंकिल होकर अगम्य बन गयी। हाथी घोड़े उस रक्त-प्रवाह में बह जाने लगे। हनुमान पुनः सिंहद्वार पर बैठ हँसने लगे ॥ ९६ ॥ रावण ने जब सुना कि मंत्री-पुत्र मार डाले गये तो उसे बड़ा भय हुआ। राजा मन के विषाद से परम विस्मित हुए। लंका में भला यह विपत्ति कहाँ से आ गयी। इस दुष्ट बानर का अस्तित्व मिटा डालना होगा ॥ ४३९७ ॥

यूपाक्ष-बिरूपाक्ष आदिर लगत हनुमानर रण

कहिला यूपाक्ष बिरूपाक्ष भासकर्ण * दुर्द्धर्ष वीर प्रघस अञ्जन सम वर्ण
पाञ्च महावीर समरक याहा चलि * सावधाने युजिवा वानरा महावली ९८
पाञ्च महारथीक पठाओं एकेबारे * देवलोके सम नुहि एकैक तोमारे
पाञ्च वीरे गैया बानरक वन्दी करा * झाण्टे मोर हृदयर शैल्यक उद्धारा ९९
आदेश करिया पाचे राक्षसर राजे * समरक चलिल भूषित सब साजे
पाञ्च महारथी प्रवेशित समरत * मारुतिक देखिले तोरण उपरत ४४००
तीक्ष्ण पाञ्चसर लैया दुर्द्धरिष वीरे * टान करि विन्धिलेक हनुर शरीरे
शरघावे हनुमन्ते क्रोध वर पाइल * पर्व्वत समान करि शरीर वढ़ाइल ४४०१
आटासेक दिया कपि गगने चड़िला * शीघ्रवेगे गैया तार रथत परिला
रथ धनु सारथिये दुर्द्धरिष गावे * चूर्णीकृत हुया गैल शरीरर वावे २
यतेक आछिल तार युद्धर सम्भार * चूर्णीकृत हुया गैल नेदेखिल आर
दुर्द्धरिष परिलात असन्तोष पाइल * यूपाक्ष विरूपाक्ष दुयो खड्गे धाइल ३
तोरणत आछे हनुमन्तक आकलि * मुद्गर मूषल हानिलेक एके वेलि
हियात परिल कूट मुद्गरर शूल * मूर्च्छित परिला हनुमन्त महाबल ४
थूलन्तर शालवृक्ष लैलन्त उपारि * दुइहानो माथात बैसाइलेक एक बारि
एके वारि प्रहारे दुइहानो अन्त हइल * देखि पाछे प्रघस राक्षस ज्वलि गैल ५
भासकर्ण किटाइल त्रिशूल तुलि लैल * मार मार बुलि मारुतिक खेदि गैल
भासकर्णे त्रिशूले हानि प्रघसे पट्टीशे * वानरक हानि दुयो हासन्ते हरिषे ६

यूपाक्ष-विरूपाक्ष आदि के साथ हनुमान का युद्ध

रावण ने कहा—यूपाक्ष, विरूपाक्ष, भासकर्ण, दुर्धर्ष, वीर प्रघस काजल के समान वर्णवाले पाँच वीर युद्ध मे चले जाओ और महाबली बानर से सतर्कतापूर्वक युद्ध करो ।।९८।। मैं तुम पाँच वीरों को एक साथ भेज रहा हूँ, देवलोक में, तुम्हारे एक-एक के साथ युद्ध कर सके, ऐसा कोई नही है । पाँचों वीर जाकर वानर को बंदी बना लो और मेरे हृदय के काँटे को शीघ्र निकाल लो ।। ९९ ।। जब राक्षसराज ने आदेश दिया तो वे पाँचों राक्षस सभी साजों से भूषित हो युद्धभूमि में चल पड़े । पाँच महारथी समर में प्रविष्ट हुए, उन सबने हनुमान को सिंहद्वार पर बैठे देखा ।। ४४०० ।। वीर दुर्धर्ष ने पाँच तेज बाणों से हनुमान के शरीर को वेध डाला । बाणों की चोट से हनुमान को बड़ा क्रोध हुआ । उन्होंने अपना शरीर पर्वत जैसा बढ़ा लिया ।। ४४०१ ।। वे प्रचंड नाद कर आकाश में कूद गये और तीव्र वेग से उसके रथ पर आ गिरे । उनके शरीर की हवा से ही रथ, धनुष-सारथी समेत दूर्धर्ष का शरीर चूर-चूर हो गया ।। २ ।। उसके युद्ध के जो संभार थे सभी चूर-चूर हो गये । उन्हें वह फिर देख नहीं पाया । दुर्धर्ष के मारे जाने पर यूपाक्ष और विरूपाक्ष दोनों असन्तुष्ट हो उठे और क्रोध मे भर कर दौड़ पड़े ।। ३ ।। उन दोनों ने सिंहद्वार पर हनुमान को घेर लिया और एक ही साथ मुद्गर और मूसल से चोट किया । हनुमान के हृदय पर मुद्गर का शूल जा लगा । महाबली हनुमान भूमि पर आ गिरे ।। ४ ।। उन्होंने एक मोटा शालवृक्ष उखाड़ लिया और उससे दोनो के सिरों पर आघात किया । एक ही चोट से दोनों मर गये । यह देख प्रघस राक्षस क्रोध से जल उठा ।। ५ ।। भासकर्ण ने भी क्रुद्ध होकर त्रिशूल उठा लिया और 'मार-मार' कहता हुआ मारुति की ओर दौड़ पड़ा । भासकर्ण त्रिशूल से और प्रघास

रुधिरे पवनसुत देखिते शोभित * प्रभात कालर येन अरुण उदित
शरघावे मारुतिये कोप बर करि * नाग मृग सहिते पर्ब्बत हाते तुलि ७
दुइ हाते कोबेक बैसाइल बर टाने * एके बारे दुयो बीर मरिगैल प्राणे
पाञ्च सेनापति बधि करिल मारुति * पाचे सेना मरिलन्त बिगुटि बिगुटि ८
हस्तीये हस्तीक धरि आछारि मारिल * घोरे घोरे बाहुते बाहुते संहरिल
शोणिते बहाइल नदी समर भूमित * अगम्या समर भूमि देखि भयभीत ९
हस्ती सब हन्त द्वीप घोरा याय भासि * तोरणत बसि बीरे थाकिलन्त हासि
पाञ्च सेनापति बध शुनिल लङ्केश * अक्षकुमारक पाचे करिल आदेश ४४१०
याक याक पठाइलोहो परिलेक रणे * बानराक बान्धि बाप आन एतिक्षणे
बिमरिष अनेक करिलो मने थिर * बानराक युजन्ता लङ्कात नाहि बीर ४४११
तइ सिद्धशर तिनि त्रैलोक्यते सार * धरिते नोवारा येवे समरत मार
तोर आगे बानराये कोम वस्तु होवे * समरे हारिल तोत बासवर पोवे १२
कोने बा चिन्तिले हेन कर्म्म देवासुर * येनमते पराभवे बानरा दुन्दुर
उतोमन बचन शुनिले बापेकर * हरिष बदन भैला अक्षकुमारर १३
प्रबन्ध करिब आगे ताक धरिबार * नुहि तेवे शर हानि समरत मार
ताके डरे पलाइ सबे किङ्कर सकल * सावधाने युजिबे बानरा महाबल १४
उपदेश बचने आनन्द भैल तार * हरिष वदने चले अक्ष ये कुमार
सूर्य्य किरणर सम रथखान चले * तात निया चड़ाइलेक अस्त्रक सकले १५

पट्टिश से हनुमान पर चोटकर हर्ष से दोनों हँसने लगे ।। ६ ।। रक्तसने हनुमान ऐसे शोभित हो रहे थे जैसे कि प्रभात काल का उगता हुआ अरुण हो । वाणों के आघात से प्रचंड क्रोधित हो मारुति ने नाग-मृगों समेत पर्वत को हाथ से उठा लिया और दोनों हाथों से उसे फेंककर चोट की । उसके आघात से दोनों वीरों के प्राण निकल गये । मारुति ने पाँच सेनापतियों का बधकर चुन-चुन कर राक्षसों की सेना को मार डाला ।। ७-८ ।। हाथी को पकड़कर उसी से हाथी को मारा, घोड़े को उछालकर घोड़े को मारा । युद्धभूमि में उन्होने रक्त की नदी बहा दी । अगम्य समर भूमि को देख सभी भयभीत हो उठे ।। ४४०९ ।। सारे हाथी उसमें द्वीप जैसे लग रहे थे, घोड़े बहे जा रहे थे । तदुपरान्त वीर हनुमान सिंहद्वार पर बैठकर हँसने लगे । जब लंकेश ने पाँच सेनापतियों के वध का समाचार सुना तो उसने अक्षकुमार को आदेश किया— ।। ४४१० ।। बेटा, मैने जिसे भी भेजा वही युद्ध में मारा गया । तू अभी ही उस बानर को बाँधकर ले आ । मैंने मन में अनेक चिन्तन कर यही निश्चित किया कि उस वानर से लड़ सके ऐसा कोई वीर लंका में नही है ।। ११ ।। तू वाण चलाने में बहुत ही निपुण और तीनों लोको में श्रेष्ठ है । यदि उसे पकड़ न पाये तो युद्ध में मार ही डालना । भला तेरे सम्मुख वह वानर क्या है ? तेरे साथ युद्ध में तो स्वयं इन्द्र भी पराजित हो गया है ।। १२ ।। इस जुझारू वानर को हरा सके ऐसा कर्म देवासुरों में से तेरे सिवा और किसने सोचा है ? पिता के उत्साहपूर्ण वचन सुनकर अक्षकुमार का मुख प्रसन्न हो उठा ।। १३ ।। (रावण ने कहा—) पहले तो उसे पकड़ने का प्रयास करना चाहिए, यदि ऐसा संभव न हो तो वाणों से युद्ध में मार डालना चाहिए । वानर महावली है उसके भय से सभी किंकर भाग जाते हैं, इसलिए उससे सतर्कतापूर्वक युद्ध करना ।। १४ ।। पिता के उपदेश वचनों से अक्षकुमार को बड़ा आनन्द हुआ और वह प्रसन्न होकर युद्ध को चला । सूर्य-किरण-सा उसका

त्रिकण्टक भुषण्डी बिपाट मुद्गर * शतघ्नी ये नागपाश सुर धनु शर

अक्षकुमार वध

अक्ष ये कुमारे प्रवेशिल समरत * मारुतिक देखिले तोरण ऊपरत १६
हनुमन्ते डेव दिला मारुतिर पथे * राजार कुमार पाचे पाचे खेदे रथे
वरदत्त बाण बरिषय निरन्तर * दशोदिश ढाकिलेक बापुर पुत्रर १७
मेघे येन वरिषिल असंख्यात शरे * निरन्रे थाकिलेक अक्ष ये कुमारे
तेजे तोलबोल भैल सबे कलेवर * मनेमने गुणिते लागिल कपिबर १८
किनो इटो वीर देखो प्रचण्ड प्रताप * भालेतो देवक इटो जनालेक काप
इहेन बीरक येबे नमारो सत्वरे * उपेक्षिले व्याधि येन बाढ़े आथान्तरे १९
एहि बुलि रथेतार चापरेक दिल * रथ भागि चारि घोरा सारथि मरिल
सत्वर गमने याय वायुपथ भेदि * खाण्डा धरि प्रहार दिबाक याइ खेदि ४४२०
बामे शक्रचाप सम धनुर प्रकाश * दक्षिणत फिरावे ताखाल चन्द्रहास
देख नेदेख बेगे वायुसुत कपि * एके हाते दुइ पाव धरिलेक चापि ४४२१
एके हाते बले तुलि आलगाइल ताक * अक्षक फुराय येन कुमारर चाक
असंख्यात पाक ताक दिल टान करि * राजार कुमार गैल आकाशते मरि २२
पृथिवीत आछारिल मरा कलेवर * चूर्णीकृत हुया गैल अस्थि ये पाञ्जर
हातखानि छिरि माथागोट भैल चूर * राजार कुमार चलि गैल यमपुर २३

रथ चल पड़ा। उसने अपने त्रिकंटक, भुषंडी, बिपाट, मुद्गर, शतघ्नी, नागपाश, क्षुर, धनुष-वाण आदि सारे अस्त्रों को उसपर लाद लिया ॥ १५ ॥

अक्षकुमार वध

अक्षकुमार युद्ध में आया, उसने मारुति को सिंहद्वार पर बैठे देखा ॥ ४४१६ ॥ हनुमान पवन-मार्ग में कूद पड़े। राजकुमार अक्षकुमार उसके पीछे-पीछे रथ पर दौड़ने लगा। वर में प्राप्त बाणों की वह निरंतर वर्षा करने लगा। और पवनसुत को चारों ओर से ढँक दिया ॥ १७ ॥ अक्षकुमार बादलों से पानी की भाँति निरंतर बाणों की वर्षा करने लगा। हनुमान का समूचा शरीर रक्त से लथ-पथ हो गया। वे मन ही मन विचार करने लगे ॥ १८ ॥ यह वीर कैसा प्रचंड प्रतापी है, वास्तव में यह तो देवों को भी पराभूत कर चुका है। ऐसे वीर को यदि शीघ्र ही मार न डालूँ तो उपेक्षा करने पर यह शीघ्र ही बढ़ती हुई व्याधि की भाँति संकट का कारण बन जायेगा ॥ १९ ॥ यह सोचकर हनुमान ने उसके रथ पर एक थप्पड़ मारा जिससे उसके घोड़े मर गये, रथ टूट गया, सारथी भी मर गया। वह शीघ्रतापूर्वक पवन-मार्ग को भेद कर हनुमान को खांड़े से प्रहार करने हेतु दौड़ पड़ा ॥ ४४२० ॥ बाँयें इन्द्र धनुप की भाँति उसका धनुप चमक रहा था, दाहिने तेज चन्द्रहास असि घुमा रहा था। हनुमान ने यह देखा वह देखा और तीव्र वेग से दौड़कर एक हाथ से उसके दोनों पैर पकड़ लिये ॥ ४४२१ ॥ उसे एक ही हाथ से पकड़कर बलपूर्वक अलग कर लिया और अक्षकुमार को कुम्हार के चाक की भाँति घुमाने लगे। उसे आकाश में इतने जोर-जोर से अनगिनत वार घुमाया जिससे वह राजपुत्र आकाश में ही मर गया ॥ २२ ॥ उसकी मृत देह को हनुमान ने धरती पर फेंक दिया। जिससे उसका अस्थि-पंजर चूर-चूर हो गया। हाथ टूट गये, सिर चकनाचूर हो गया, राजपुत्र

राजार कुमार अक्ष येखने परिल * कतो दूर माने मही मन्दरो लरिल
कुमारर बध राजा शुनिल अनिष्ट * रावण नृपति बरे भैल शोकाविष्ट २४
ढलिया परिला राजा सिंहासन हन्ते * हा पुत्र बुलि राजा थाकिल कान्दन्ते
कैक गैल कुमार नन्दन हरि हरि * शुनि केनमते जीव माव मन्दोदरी २५
गन्धर्व्वक जिनि बाप यशक पाइले * बानर गोटर हाते प्राण हरुवाइले
मावरर दक्षिण मोहोर फन्दे वाम * आजि धरि गुचाइले आचुत कुखी नाम २६
दुयो हन्ते पुरि मरो प्रिय पुत्रशोके * बुलियो प्रबोद मन्दोदरीक मोहोके
तइ बिने दशोदिशे देखो अन्धकार * तोर शोक शेले दारे हृदय आमार २७
कैरा इन्द्रजित कुलनन्दन कुमार * झाण्ट करि हृदयर शैल्यक उद्धार
यतेक पठाइलो बाप परिलेक रणे * बानराक बान्धि बाप आन एति क्षणे २८
तोर आगे बानरा कमन बस्तु होवे * समुख समरे तोत हारिल वासवे
अनेक प्रकारे गुणि करिलोहो थिर * बानराक युजन्ता लङ्कात नाहि बीर २९
तुमितो वीरतो वीर त्रैलोक्यते भार * धरिवे नोवारा येवे समरते मार
पितृ मातृ मरो तोर प्रिय पुत्रशोके * वानरक धरि आनि मेटायोक मोके ४४३०
तात डरे पलाइ मोर किङ्कर सकल * विलम्ब नकर बाप शीघ्र करि चल
आदेश करिल येवे राक्षसर राजे * रणक चलिल बीर युजिबाक साजे ४४३१

अक्षकुमार यमलोक सिधार गया ।। २३ ।। अक्षकुमार जैसे ही मरकर धरती पर गिरा, कुछ दूर तक धरती और मंदराचल तक काँप उठा। अक्षकुमार के मारे जाने का दुःसंवाद सुनकर राजा रावण बड़ा शोकाकुल हो उठा ।। २४ ।। राजा रावण शोक से सिंहासन पर से ढल गिरा और 'हा पुत्र' कहकर रोने लगा। (वह कहने लगा) हाय, हाय, पुत्र कुमार जो सबको आनन्दित करता था, कहाँ चला गया। उसके मारे जाने का समाचार पाकर उसकी माँ मन्दोदरी कैसे जीवित रहेगी ? ।। २५ ।। अरे वेटा, तूने तो गन्धर्वो को जीतकर यश पाया था। पर इस वानर के हाथ तुझे मरना पड़ा। तेरी मां के दाहिने और मेरे बायें अग फड़क रहे है। आज से तेरी माँ का "अच्युत कुक्षि" (गोद कभी खाली न रहनेवाली) नाम खो गया ।। २६ ।। रे प्रिय पुत्र, तेरे शोक की आग से हम दोनों जल-मर रहे हैं। तू आकर मुझे और मन्दोदरी को सांत्वना दे। तेरे विना दशों दिशाओं में अंधेरा दिखाई दे रहा है। तेरे शोक रूपी अंगारे हमारे हृदयों को दग्ध कर रहे हैं ।। २७ ।। कुमार इन्द्रजित, तुम कहाँ हो, शीघ्र आकर हमारे हृदय के काँटे को निकाल दो। मैंने जिसे भेजा वही वानर के साथ लड़ाई में मारा गया। वेटा, तुम उस वानर को शीघ्र ही इसी समय पकड़कर ले आओ ।। २८ ।। तेरे सम्मुख समर में इन्द्र भी हार गया है फिर यह बानर तो चीज ही क्या है ? अनेक प्रकार से विचारकर मैंने तय किया है कि इस बानर से लड़ सके लंका में ऐसा कोई वीर नहीं है ।। २९ ।। तुम तो वीरों से भी बढ़कर त्रैलोक्य में श्रेष्ठवीर हो। यदि तुम उसे पकड़ न सको तो युद्ध में मार डालो। हम तुम्हारे माता-पिता प्रिय पुत्रके शोक से मर रहे है। वानर को मेरे पास पकड़कर ले आओ ।। ४४३० ।। उसके डर से मेरे सारे किंकर भाग जाते हैं, वेटा, विलम्ब न कर तुम शीघ्र ही वहाँ जाओ। जब राक्षसराज रावण ने ऐसा आदेश किया तो वीर इन्द्रजीत युद्ध के साज में लड़ने निकला ।। ४४३१ ।।

इन्द्रजितर लगत हनुमानर रण आरु बन्धन

त्रिकण्टक भूषण्डी विराट मुद्गर * शतघ्नी नागपाश खुर धनुशर
चारि गोटा नागे तार रथखान वहे * देवासुर नरे तार लाहारि नसहे ३२
तूणेशर भरिया युद्धक भैल साज * पताका सुवर्णमय मनुष्यर ध्वज
इन्द्रजित वीर गैया प्रवेश रणत * मारुतिक देखिले तोरण उपरत ३३
तोरणत वसिया चाहन्त घने घने * हरिष वदने थित युजिबाक मने
हेन देखि इन्द्रजित क्रोधे ज्वलि गैल * वचन प्रहारे आगे गजिबाक लैल ३४
कोथेर वानर तइ आसि भैले लङ्का * रावणर वंशक तोहोर नाहि शङ्का
ताहार प्रतापे त्रिजगत भयभीत * तोर कालान्तक आसि भैलो इन्द्रजित ३५
उद्यान भाङ्गिया सव सेनाक मारिले * मोर भाइक मारिया यशक बर पाइले
जम्बुमाली वीरको मारिलि तातो आगे * मोहोर हातत एराइ याइवे कत भागे ३६
कथा कह वानरा काहात तोर गह * आटि मुटि भाङ्गो आजि खानितेक रह
मोहोर क्रोधत तोक राखिवेक कोने * नपलाइवे मारि पेपो यमर सदने ३७
कोपे हनुमन्त इन्द्रजितक वोलन्त * गर्व्व नकरिव आजि करिबोहो अन्त
यत शर आछे मोर हान शरीरत * गर्ज्जि कत देखावस लोकर महत्त्व ३८
कपिर वचने क्रोध ज्वलिल ताहार * मारुतिक वेढ़ि दिल अस्त्रर प्रहार
रावणर तनये पवन - तनयर * जर्ज्जरित कृते भेदिलेक कलेवर ३९
हनुमन्ते उपारि लैलन्त तरुशाले * इन्द्रजिते काटिलेक दश कनियाले
दुनाइ मारुति प्रहारिल तरुजाक * शरे हानि मेघनादे काटिलन्त ताक ४४४०

इन्द्रजित से हनुमान का युद्ध और बाँधा जाना

त्रिकंटक, भुषंडी, विशाल मुद्गर, शतघ्नी, नागपाश, क्षुर, धनुष-वाण आदि अस्त्र-शस्त्र ले वह लड़ने चला। चार घोड़े उसके रथ को खींच रहे थे। उसका पराक्रम देव, असुर, नर कोई भी सह नहीं पाता था॥ ३२॥ तरकस में बाण भरकर वह युद्ध के लिए तैयार हुआ। उसकी पताका स्वर्णमयी, मनुष्य के ध्वज जैसी थी। वीर इन्द्रजित ने रणभूमि में प्रवेश कर मारुति को सिंहद्वार पर बैठे देखा॥ ३३॥ वे सिंहद्वार पर बैठे बार-बार देख रहे थे। मन में युद्ध करने की अभिलाषा लिये वे प्रसन्नवदन से स्थित थे। यह देख इन्द्रजित क्रोध से जल उठा, और वचनों से प्रहार करता-सा गरजने लगा॥ ३४॥ उसने पूछा—तू कहाँ का वानर, लंका में आया है। रावण-वंश के लोगों से भी तू डरता नहीं। जिसके प्रताप से तीनों लोक भयभीत रहते हैं, मैं तेरा वही कालान्तक इन्द्रजित आ पहुँचा हूँ॥ ३५॥ तूने वाटिका को तोड़कर सारी सेना को मार डाला। मेरे भाई को मारकर बड़ा यश प्राप्त किया। उससे पहले वीर जाम्बुमाली को भी मार डाला है, अब मेरे हाथ से बच भागकर कहाँ जा सकता है?॥ ३६। रे वानर, बता तू किसपर असन्तुष्ट है? आज तेरी हड्डी-पसली तोड़ डालूँगा, तू तनिक ठहर। मेरे क्रोध से तुझे बचानेवाला कौन है। भाग मत, तुझे मारकर यमलोक भेज दूँगा॥ ३७॥ हनुमान ने क्रोधपूर्वक इन्द्रजित से कहा—तू गर्व न कर, आज तेरा भी अन्त कर दूँगा। तेरे जितने बाण हैं, मेरे शरीर पर आघात कर। यों गरज-गरजकर लोगों के सामने अपना महत्व क्या दिखा रहा है?॥३८॥ हनुमान के वचनों से इन्द्रजित का क्रोध भड़क उठा। उन्हें घेरकर वह अस्त्रों का प्रहार करने लगा, रावण-सुत इन्द्रजित ने पवनसुत हनुमान का शरीर बाणों से वेधकर जर्जर कर डाला॥ ३९॥ तब हनुमान ने एक शालवृक्ष को उखाड़ लिया जिसे

आकाशते घोर युद्ध करिलन्त दुइ * इन्द्रजितें बोले अक्षे आक सम नुइ
मोक भङ्गाइलेक रणे आन कत थाके * लङ्कात नाहिके बीर युजन्ता इहाके ४४४१
भालेतो उद्यान मोर छन्न करिलेक * मनत गुणय किनो बीर आतिरेक
यत यत अस्त्र आक करिलो प्रहार * अणुमात्र निबिन्धिलो शरीरत आर ४२
काटन फुटन शर प्रहारिलो यत * परिसेके निबिन्धिल इहार गावत
किनो तोक अबध्य करि ब्रह्मा दिला बर * किछुके नोवारे परि बर बर शर ४३
शीघ्रे बन्दी केरो आक मारण न याय * शत्रुबल बाढ़े बिलम्बक नुयुवाय
प्रथम रोग येवे नेदय आषुधि * ब्याधि बाढ़ि गैले पाचे हत होवे बुद्धि ४४
राक्षसर बचन वानरे आछे छान्दि * नागपाश हानि मोक करिबेक बन्दी
बन्दी करिनिया करिबेक रण्ड भण्ड * राजार आगक तिले करिबेक दण्ड ४५
हानिले ब्रह्मार पाश हनुर गावत * वाण परि छिरिल हनुर शरीरत
ब्रह्मादेवे करिल आमाक उपहास * दुनाइ आसि बान्धिबो बानरा कँक यास ४६
चलि गैल इन्द्रजित ब्रह्मार पाशक * हेन थले कोप घोर करिला किसक
बान्धन नयाय ये किसर नागपाश * हेन देखि ब्रह्मादेवे तुलिलन्त हास ४७
मने मने गुणन्त आसज भैल काज * कपि बन्दी न भैलेयो मोहोरेसे लाज
पवनर तनय अबध्य हनुमन्त * रामदूत हुया ये लङ्कात आसिछन्त ४८
सीताको देखिल कार्य्य करिल विशेष * बन्दी छले देखान्तोक लङ्का येन देश
गुरु नुसुमरि तइ अकार्य्यं करिलि * गुरुक नाराधि ब्रह्म अस्त्रक हानिलि ४९

इन्द्रजित ने दस बाणों से काट डाला। हनुमान ने दुबारा उस पर वृक्ष से प्रहार किया; उसे भी इन्द्रजित ने बाणों से काट डाला ।। ४४४० ।। दोनों आकाश में घोर युद्ध करने लगे। इन्द्रजित बोला, अक्षकुमार इसके समकक्ष नहीं था। यह मुझे भी युद्ध में पराभूत कर रहा है तो फिर दूसरा कहाँ टिक सकता है? इसके साथ लड़ सके लंका में ऐसा कोई वीर नही है ।। ४४४१ ।। इसने हमारे उद्यान को नष्ट कर डाला; सोच रहा है कि कितना बली है यह ! हमने जितने बाणों से प्रहार किया, वे तो इसके शरीर में अणु भर भी वेध नहीं पाये हैं ।। ४२ ।। काटने फोड़नेवाले जितने बाणों का मैंने प्रहार किया, इसके शरीर में वे छूने लायक भी वेध नही पाये। उसे क्या ब्रह्मा ने अबध्य बनाकर वर दिया है, जो बड़े-बड़े बाण भी इसे लगकर कुछ कर नही पा रहे हैं ? ।। ४३ ।। इसे मारा नही जा सकता, इसलिए इसे शीघ्र ही बन्दी कर लूं। शत्रु का बल बढ़ता ही जा रहा है अतः विलम्ब करना उचित नही। प्रथम रोग होते ही अगर औषध-प्रयोग न किया जाये तो ब्याधि बढ़ जाने पर बुद्धि हत हो जाती है ।। ४४ ।। राक्षस इन्द्रजित के कथन से वानरराज हनुमान समझ गये कि यह नाग-पाश मारकर मुझे बंदी करना चाहता है। बंदी बनाकर ले जाने के पश्चात् मुझे परेशान करेगा, राजा के सामने ले जाकर दण्डित करेगा ।। ४५ ।। उसने हनुमान के शरीर पर ब्रह्मा का पाश मारा। हनुमान के शरीर पर वह बाण पड़कर टूट गया। (इन्द्रजित कहने लगा) ब्रह्मदेव ने मेरा उपहास किया है। मैं पुनः तुझे बन्दी बनाऊँगा; रे बानर, तू कहाँ जायेगा ? ।। ४६ ।। इन्द्रजित ब्रह्मा के पास चला गया। (ब्रह्मा ने पूछा—) यहाँ किस पर क्रोध करने आये हो ? (इन्द्रजित बोला)—यदि इससे किसी को बाँधा नहीं जा सकता तो भला यह नाग-पाश कैसा है ? यह देख ब्रह्मा जी हँस पड़े ।। ४७ ।। मन ही मन उन्होंने सोचा, यह कार्य तो अनुचित हो रहा है। यदि यह वानर बन्दी न हो तो मेरी लज्जा की बात है। पवनसुत हनुमान अबध्य है, वे रामदूत बनकर लंका में आये हुए है ।। ४८ ।। उन्होंने सीता को भी देखा और विशेष

हेन मन्द कार्य्यक किसक आचरिलि * गुरुपाव नवन्दिया पापक सञ्चिलि
अधर्म्मक आशे गुरु मनत नलैलि * मुगुध राक्षस भाल मन्द नाजानिलि ४४५०
अवलेप करि तइ कपिक हानिलि * पकाफल थैया काञ्चा फलक पारिलि
आपुनिओ लाज भैलि कुयशक पाइलि * राक्षस कुलर वर कीर्तिक अनाइलि ४४५१
किछुक नोवारि तइ एवे आसि भैलि * आग पाच नुगुणिया कोन कार्य्य कैलि
गुरुसे परमगुरु गुरु आदिदेव * गुरुबिने त्रिजगते आन नाहि केव ५२
गुरुक सुमरि येवे करस सन्धान * हानिवय तेवेसे ब्रह्मार नागवाण
तइ नुसुमरिले गुरुर चरणक * नागपाश किसक हानिलि वानरक ५३
गुरुक सुमरि येवे तइ हान शर * तेतिक्षणे मारिया पोथिवि यम घर
गुरुक सुमरि गैया क्षाण्टे वाण हान * तेवे वन्दी नभैलि करिवि अपमान ५४
ब्रह्मार वचने हरषित वर मने * रणभूमि पाइल आसि सत्वर गमने
गुरुक प्रणामि वाण धरि दुइ हाते * युद्धक प्रवन्धि थित अशोका बनते ५५
एवे तोक मारिवो वानरा कैक यास * ब्रह्मार अस्त्रक करि आछ उपहास
इन्द्रजिते रणमाजे ब्रह्माक नमिल * मारुतिक लागि ब्रह्म अस्त्रक हानिल ५६
ब्रह्मअस्त्र देखि कपि भैल हरिषित * बन्धन न भैले ब्रह्मा होवय लज्जित
वन्दी हुया कौतिके रावण आगे याइब * नगरर नरनारी मोक वेढ़ि चाइब ५७
तेवेसे कौतुक आमि पाइवोहो विस्तर * एहि बुलि वन्धन लैलन्त कपिबर
चेतन हरिला कपि भैला आकुलित * गिरिसित करि आसि परिला भूमित ५८

कार्य भी किये, अब वन्दी वनने के वहाने लंका जैसे देश को भी देख लें। (उन्होंने इन्द्रजित से कहा)—तूने गुरु का स्मरण न कर दुष्कार्य किया है। गुरु का स्मरण किये वगैर ही तूने ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया है ॥ ४९ ॥ तूने ऐसा मन्द कार्य का आचरण किसलिए किया? गुरु के चरणो की वंदना न कर पाप का संचय किया। अधर्म के कारण तूने गुरु का स्मरण नही किया। मूढ राक्षस, तुझे भले बुरे का ज्ञान नही है ॥ ४४५० ॥ गर्व के मारे पके फल को छोड़ कच्चे फल को तोड़ने की भाँति स्वयं भी लज्जित हुआ, अपयश भी लगा, राक्षस-कुल की महान कीर्ति को नष्ट किया ॥ ५१ ॥ विवश होकर अब तू मेरे पास आया है। आगा-पीछा विना विचारे तूने क्या कर डाला? गुरु ही परमगुरु है, गुरु आदिदेव हैं. गुरु बिना त्रिजगत में और कोई नही है ॥ ५२ ॥ गुरु को स्मरण कर जव तू ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करेगा तभी ब्रह्मा का वह नागपाश उन्हें आघात कर पायेगा। गुरु के चरणों का स्मरण किये बिना तूने हनुमान पर नागपाश क्यों छोड़ा? ॥ ५३ ॥ गुरु का स्मरण कर जब तू वाण का प्रयोग करेगा तो उसी क्षण यम तक को यमलोक भेज सकेगा। गुरु का स्मरण कर, जाकर शीघ्र ही वाण का प्रयोग कर। तब भी यदि हनुमान वन्दी न हो तो मेरा अपमान करना ॥ ४४५४ ॥ ब्रह्मा के वचनों से बड़े हर्षित मन हो शीघ्रता से आकर रण भूमि मे पहुँचा। गुरु को प्रणाम कर दोनों हाथों में वाण ले युद्ध करने हेतु अशोक वन मे आ पहुँचा ॥ ४४५५ ॥ वोला—वानर, ब्रह्मास्त्र का उपहास कर अब तू कहाँ जायेगा? इन्द्रजित ने युद्धभूमि में ब्रह्मा को नमस्कार किया और मारुति पर ब्रह्मास्त्र छोड़ा ॥ ५६ ॥ ब्रह्मास्त्र को देखकर हनुमान हर्षित हुए और सोचा, मैं बँध न जाऊँ तो ब्रह्मा लज्जित होगे। मैं वन्दी वनकर कौतुकपूर्वक रावण के सम्मुख जाऊँगा। नगर के लोग मुझे घेरकर देखेंगे ॥ ५७ ॥ तभी मुझे परम कौतुक मिलेगा। यह कहकर कपिवर ने वन्धन ग्रहण कर लिया। चेतना खो जाने के कारण कपि व्याकुल हो उठे और चीत्कार कर भूमि पर गिर पड़े ॥ ५८ ॥ वन्धन स्वीकार कर वीर हनुमान

बन्धनक लैया बीरे गुणे मने मन * चारियो जातित करि आकुलीन जन
मद्य मांस शोणितक खाइदिने राति * ब्रह्मअत्र हानि मोक पाइलेक खियाति ५९
बान्ध एराइबाध पारो आपोनार बले * लङ्का खान देखो गैया बन्धनर छले
त्रिदशर बरत अवध्य तिनिलोके * पापिष्ठ राक्षस कि करिते पारे मोके ४४६०
हनुमन्त बरबीर इन्द्रजिते जानि * आपुनिये मारुतिक बान्धिलेक टानि
राक्षस लोकक बोले आर किबा चाहा * झाण्टे साजि बान्धिनिया राजात भेटाहा ४४६१
इन्द्रजितर बाणी शुनि राक्षस गणे * दृढ़ करि आनि साङ्गि बान्धिला तेखने
देखिले बानर बर अचेतन भैल * इन्द्रजिते हरिषे अस्त्रक लैया गैल ६२
मारुतिक देखिया राक्षस क्रोध करि * मारै किल भुकु चवर हात गरि
लाथि भुकु मारै सबे करे गिरगिरि * मरा येन हनुमन्ते आछे दान्त तरि ६३
केहो बोले बानरा मारिले मोर भाइ * केहो बोले मारिलेक खुरत मोमाइ
कैर परा आसिले लङ्कार अग्निकुण्डे * एहि बुलि परिघे कोबावे आसि मुण्डे ६४
घसाया पिसापा लोटाया थेथलाया * साङ्गिबारि बान्धिया कान्धत तुलि लैया
बहन्ते बहन्ते प्रजा हताश भै गैल * कतो दूर निया पाचे गिरिसाइ थैल ६५
राक्षसर कान्धे कपि बन्दी हुया यान्त * माथा तुलि दिव्य समाखान देखिलन्त
मभार माजत बर दिव्य सिंहासने * चतुर्दिशे बेढ़ि आछे मन्त्री पात्रगणे ६६
प्रहस्त निकुम्भ महापार्श्व महोदर * पृथिवीक बेढ़ियेन चारियो सागर
आनो यत बीरगण याइ आगे पाचे * अस्त्र शस्त्र धरिया युजर सब काछे ६७
सेहि सिंहासने वहि आछे लङ्केश्वर * दशशिर कुरि बाहु देखि भयङ्कर
मारुतिक देखि आति मनत बिस्मय * भालेतो रावणे काको भय न करय ६८

ने मन ही मन सोचा, ये राक्षस चारों जातियों से भी नीच है; मद्य, मांस, रक्त आदि दिन-रात खाया करते हैं। मुझ पर ब्रह्मास्त्र का आघात कर आज इसने ख्यातिप्राप्त कर ली ।। ५९ ।। मैं अपनी शक्ति से बन्धन से मुक्त हो सकता हूँ परन्तु ऐसा न कर बन्धन के मिस लंकापुरी को देखूँगा। देवताओं के वर से मैं तीन लोकों में अवध्य हूँ। ये पापी राक्षस भला मेरा क्या कर सकते है ।। ४६६० ।। इन्द्रजित ने यह समझकर कि हनुमान महान वीर है, स्वयं आकर उन्हें मजबूती से बाँधा। उसने राक्षसों से कहा—अब देख क्या रहे हो ? इसे शीघ्र ही बाँधकर महाराज के पास ले जाओ ।। ६१ ।। इन्द्रजित के वचन सुनकर राक्षसगण ने शीघ्रता से सीकड़ी लाकर हनुमान को बाँधा। जब इन्द्रजित ने देखा कि वानर-वर हनुमान अचेत हो गये हैं तब इन्द्रजित हर्ष से अस्त्र लेकर चला गया ।। ६२ ।। मारुति को देखकर राक्षस क्रोध से मुक्के, घूँसे, और हाथों से थप्पड़ मारने लगे। सब उन्हें लातों, घूँसों से मारकर गरजने लगे। हनुमान मृत की भाँति दाँत निकाले पड़े थे ।। ६३ ।। कोई कहता था, इसी वानर ने मेरे भाई को मारा है। कोई कहता था, मेरे चाचा और मामा को मारा है, यह लंका के इस अग्निकुण्ड में कहाँ से आ गया, कहकर परिघ से उनके सिर पर चोट करते थे ।। ६४ ।। घिस पीटकर, घसीट कर, मार मारकर हनुमान को बाँध कर उन सबने कन्धे पर उठा लिया। उन्हें ढोते-ढोते प्रजाजन हताश हो गये। कुछ दूर ले जाकर चीखते हुए फिर उतार दिया ।। ६५ ।। बन्दी हनुमान राक्षसों के कन्धों पर चढ़कर जा रहे थे। उन्होंने सिर उठाकर रावण की दिव्य सभा को देखा। देखा सभा के बीच में बड़े दिव्य सिंहासन पर मन्त्री-पात्रगण आदि घेरे हुए थे ।। ६६ ।। मानो धरती को चार समुद्र घेरे हुए है, इस प्रकार अनेक वीर सब आगे पीछे जा रहे थे। अस्त्र-शस्त्र लेकर सब युद्ध करने के लिए प्रस्तुत थे ।। ६७ ।।

आक सम सुखी राजा नाइ रवि तले * सीताक हरिले आक कोन बिधि छले
पुनरपि निशाचरे साङ्गि बान्धि लैल * राजार आगत निया गिरिसाइ थैल ६९
वन्दी वानरक देखिलेक लङ्केश्वर * प्रहस्तक बोले पुछ कोथेर वानर
कि कार्य्यक मारिलेक अमार निशाचर * जम्बुमाली वीर आरु अक्ष ये कुमार ४४७०
प्रहस्त बोलय अरे कोथेर वानर * मिछा नुबुलिबि तइ किछु नाइ डर
तोक मारि आमरा कमन यश पाइबो * स्वरूप कहिले तोक मेलिया पठाइबो ४४७१
राजार विचित्र थान क्रीड़ार भुवन * अशोका वनक केने करिलिहि छन्न
कोनेवा पठाइले तोक आइलि कि कारणे * इन्द्रर चरिया पठाइलन्त नारायणे ७२
किवा यमे पठाइलन्त किवा दिनकरे * किवा यमदूत आइल लङ्कार भितरे
हनुमन्ते बोलन्त शुनियो मोर वाणी * लङ्का राज्य देखिवाक आइलो आपुनि ७३
इन्द्रे नपठाइल नपठाइल नारायणे * रामदूत हेन मोक जाने कोन जने
यमराजे दिनकरे पठाइवन्त केने * तरल वानर जाति आसि भैलो हेने ७४
राजार श्रीमुख आति देखिबाक स्वाद * सिकारणे आमार दारुण अपराध
आपोनार प्राणरक्षा नपरे कारणे * राक्षस गणक मइ मारिलोहो वने ७५
कुमारक मारिवाक नुदुषिवा मोके * शीघ्रे विहि आछे इ पण्डितसव लोके
एकोवे प्रकारे येवे एराइते नोवारि * आततायी भैले पाचे ब्राह्मण को मारि ७६
प्रहस्ते बोलय तोर कथा नोहे सच्चा * यतेक कहिलि माने सव तोर मिछा
एखन स्वरूप कह अधम वानर * प्राणखानि रक्षा कर मिछात न मर ७७

लंकेश्वर रावण उसी सिंहासन पर बैठा हुआ था। उसके दस सिर और बीस भुजाएँ बड़ी भयंकर दिखाई देती थीं। रावण को देखकर हनुमान के मन मे बड़ा विस्मय हुआ। यदि रावण किसी से भय नहीं करता तो उचित ही है।। ६८ ।। सूर्य के तले इसके जैसा सुखी राजा और कोई नही है। विधि की किस छलना से इसने सीता का हरण किया है? निशाचरों ने पुनः हनुमान को सेंगे पर चढ़ा लिया, और कोलाहल करते हुए राजा के पास रख दिया ।। ६९ ।। लंकेश्वर रावण ने बन्दी वानर को देखा। प्रहस्त से कहा—पूछो, कि यह वानर कहाँ का है? किस लिए वीर जाम्बुमाली और अक्षकुमार जैसे हमारे निशाचरों को मारा है? ।। ४४७० ।। प्रहस्त पूछने लगा—अरे, तू कहाँ का वानर है। तू मिथ्या न कहना, तुझे कोई डर नहीं है। तुझे मारकर भला हमे कौन सा यश मिलेगा। यदि सत्य कह दे तो तुझे मुक्तकर छोड़ देंगे ।। ७१ ।। महाराज के विचित्र स्थान क्रीड़ा की स्थली अशोक वन को तूने किसलिए नष्ट कर डाला? तुझे किसने यहाँ भेजा है? तू यहाँ किसलिए आया है? तू इन्द्र का चर है या तुझे नारायण ने भेजा है? ।। ७२ ।। तुझे क्या यम ने भेजा है या सूर्य ने? या तू यमदूत है जो लंका में आया है। हनुमान ने कहा, मेरे वचन सुनो। मैं लंकाराज्य देखने हेतु स्वयं आया हूँ—ऐसा कौन जानता है? भला मुझे यमराज या सूर्य किसलिए भेजेंगे? हम तो वैसे ही नीच वानर जाति ठहरे ।। ७४ ।। राजा का श्रीमुख देखने की बड़ी इच्छा थी। उसी कारण मुझसे यह भयंकर अपराध हुआ है। अपनी प्राण-रक्षा नहीं हो पा रही थी, इसी कारण मैंने अशोक वन मे राक्षसों को मारा ।। ७५ ।। कुमार को मारने के कारण मुझे दोष न दो। पंडितों ने यह विधान पहले ही दे रखा है कि किसी भी प्रकार से जब आततायी से बच नही पायें तो आततायी ब्राह्मण भी क्यों न हो, उसे मारा जा सकता है ।। ७६ ।। प्रहस्त बोला—तेरी बात सच नही है। तूने जो कुछ कहा है, सब मिथ्या है। रे अधम वानर, अब भी सच बता, अपनी प्राण-रक्षा कर, बेकार अपना जीवन मत खो ।। ७७ ।। मारुति ने कहा—सुन, अपनी बात

मारुति बोलय शुन कथार प्रस्तुत * जम्बुद्वीप हन्ते आइलो राघवर दूत
सीताको देखिलो सागरतो भैलो पार * स्वरूप बचन राजा शुनियो आमार ७८
बाली राजा आछिल तोमार बर इष्ट * बानरर राजा तान सुग्रीव कनिष्ठ
तेहेन्ते सन्देश कथा पठाइले तोमाक * सकले कहिबो कर्णपाति शुन ताक ७९
अबध्य दुर्ज्जय बीर राम हेन जानि * माथे तुलि सीतादेवी समर्पियो आनि
आमार बचन शीघ्रे करियो प्रबन्ध * तेवेसे जानिबा निष्ठे रक्षा परे कन्ध ४४८०
एतेके बचन शुनि नृपति रावण * क्रोध करि बोले अरे शुन पात्र गण
सबे बानरक किल बारि देस जाक * कोटि कोटि धाइल शुनि नृपतिर बाक ४४८१
गदा मुद्गरे कोबावय भिण्डिपाले * परिघे कोबावे केहो चर डावे गाले
राक्षसर बले यत पराभव देन्त * हनुमन्ते कपटे करन्त केन्त केन्त ८२
शुना रामायण सभासद लोक यत * रामर सेवार देखा परम महत्त्व
त्रैलोक्य सम्पद यिटो राजा लङ्केश्वर * रामदूत हनुमन्त बनर बानर ८३
एकेश्वरे लङ्कात लगाइले खलखलि * रावणक चमक देखाइला महाबली
श्रीरामर चरण सेवार देखा बल * जानि भजा राघवर चरण कमल ८४
परम यतने निते सन्तर सङ्गत * श्रवण कीर्त्तन मात्र करियो मनत
एतेके संसार ताप तरिबाहा सुखे * पलाओक पातक राम राम बोला मुखे ८५

दुलड़ी

हासित बदन पवन नन्दन हाओरे दुष्ट रावणा।
लङ्कात नृपति तइ योग्य नोहस पापिष्ठ मुगुध जना ॥
भाल बोलन्तेये बसिति भागय हितक देखह मन्द।
सुग्रीव राजार मुठिर प्रहारे तोर पारिबेक कन्ध ॥ ८६

स्पष्ट बताता हूँ। राजा मेरे सत्य वचन सुनो मैं राघव का दूत हूं, जम्बुद्वीप से आया हूं। मैंने सागर पार किया, सीता के भी दर्शन किये ॥ ७८ ॥ राजा बाली तुम्हारा बड़ा मित्र था, उसके छोटे भाई वानरराज सुग्रीव है। उन्होंने तुम्हें यह संदेश भेजा है, मैं सब कहता हूँ, कान खोलकर सुनो ॥ ७९ ॥ राम अवध्य दुर्जय वीर है, ऐसा जानकर देवी सीता को सिर चढ़ा ले जाकर उन्हें समर्पित कर दो। मैं जो कहता हूँ, तुम शीघ्र उसका प्रबन्ध करो, सत्य समझ लो कि तभी तुम्हारी गर्दन बची रहेगी ॥ ४४८० ॥ यह सुनकर राजा रावण ने क्रोध से कहा—सभासदगण सुनो! सभी मिलकर इस वानर को मुक्के और लाठी से मारो। राजा के वचन सुनते ही करोड़ों निशाचर दौड़ पड़े ॥ ८१ ॥ वे हनुमान पर गदा मुद्गर, भिन्दिपाल आदि से प्रहार करने लगे। कोई परिघ से मारता था तो कोई गाल पर थप्पड़ लगाता था। राक्षसी सेना उन्हें जितनी परेशान करती थी, हनुमान उतना ही कराहने का बहाना करते थे ॥ ८२ ॥ हे सभासदगण, रामायण कथा सुनो! राम की सेवा का परम महत्व देखो। लंकेश्वर राजा रावण त्रिलोक की सम्पदा का अधिकारी था, रामदूत हनुमान वन के वानर थे ॥ ८३ ॥ परन्तु हनुमान ने अकेले ही लंका मे खलबली मचा दी। उस महाबली ने रावण को भी चकित कर दिया। श्रीराम की चरण-सेवा का बल देखो! ऐसा समझकर राघव के चरण-कमलो का भजन करो ॥ ८४ ॥ परम यत्न से नित्य सन्तों के संग में रहकर मन से मात्र श्रवण-कीर्तन किया करो। तभी सुखपूर्वक संसार के तापों से तर सकोगे। मुँह से राम राम कहो जिससे सभी पाप दूर हो जायें ॥ ८५ ॥ पवननन्दन ने हँसकर कहा—अरे दुष्ट रावण, मूढ़, पापी, तू लंका का

मोहोर समान　भालुक वानर　कतो मोत करि चार।
　रामर आदेशे　सीताक खोजोहो　सातो सागरर पार॥
हेन कि रामक　ठेस न करस　कटकटाइ तोर घार।
　रामर भार्य्याक　सीताक हरिलि　यम रायक दिलि धार॥ ८७
जगतर द्रोह　आचरिया सुखे　लङ्कात रहिलि भाले।
　सीताक आनिया　आवेसे नशिलि　ग्रासिलेक तोक काले॥
समस्ते राक्षस　कुलर पापिष्ठ　तइ भैलि अधोगामी।
　एतिक्षणे तोक　मारिबाक पारो　धर्म्मक नेरोहो आमि॥ ८८
माटित चापर　मारिया राघवे　करियाछा अङ्गीकार।
　मोहोर भार्य्यार　वैरक निश्चये　मइसे चिन्तिवो मार॥
प्रभु राघवर　अङ्गीकार छन्न　यिहेतु न करो मइ।
　तातेसे मोहोर　हातत रावणा　जीवन्ते रहिलि तइ॥ ८९
तइ आछ उत्तम　सिंहासने वसि　मइ आछो परि भूमित।
　एतिक्षणे तोक　नमाइ बाक पारो　वामहाते धरि चुलित॥
यतेक राक्षसे　मोक कोबावय　तोहोर रङ्ग बढ़ावे।
　तइ आसि मोर　पावक सईस　धृति होक मोर गावे॥ ४४९०
जाज्ज्वल्य समान　क्रोध ज्वलि बोले　बानरक कर दण्ड।
　मोहोर आगत　एतिक्षणे आक　काटि कर खण्ड खण्ड॥
पशुजाति हुया　मोक बिगुतय　अधम आति बर्ब्बर।
　कहिरा प्रहस्त　आर किवा चास　क्षाण्टे खाण्डा तुलि धर॥ ४४९१
हेन वाणी शुनि　विष्णुत भकत　विभीषणे चालि गाव।
　कातर करोहो　ददा लङ्केश्वर　इटो कोप बाहुराव॥

राजा होने योग्य नहीं है। तुझ से भलाई की बात कहने पर उठ भागता है, हितकारी को बुरा मानता है। राजा सुग्रीव के मुक्के के प्रहार से तेरी गर्दन टूट गिरेगी॥ ८६॥ भालू-वानर आदि तो मेरे ही जैसे है, कोई-कोई तो मुझसे भी श्रेष्ठ हैं। हम रामचन्द्र के आदेश से सात समुद्र के पार तक सीता का संधान कर रहे हैं। तू क्या ऐसे राम से डरता नहीं ? तेरी गर्दन खुजला रही है। तूने राम की भार्या सीता का हरण कर यमराज को अवसर दे दिया है॥ ८७॥ जगत से विरोध कर सुखपूर्वक लंका में भली भाँति तू रहता आया था परन्तु अब सीता को हरण कर लाने के कारण विनष्ट हो गया; तुझे काल ने मानो ग्रस लिया। समस्त राक्षसकुल में पापी तू अधोगामी हुआ है। इसी क्षण मैं तुझे मार सकता हूँ परन्तु मैं धर्म का त्याग नहीं करूँगा॥ ८८॥ रामचन्द्र ने जमीन पर हाथ मारकर प्रतिज्ञा की है कि अपनी भार्या का हरण करनेवाले शत्रु को मैं ही मारूँगा। मैं प्रभु राघव की प्रतिज्ञा नष्ट नहीं करना चाहता, इसी कारण रावण तू मेरे हाथों से जीवित रह सका है॥ ८९॥ तू उत्तम सिंहासन पर वैठा हुआ है, मैं भूमि पर पड़ा हुआ हूँ, वायें हाथ से तेरे वाल पकड़कर अभी उतार सकता हूँ। जितने राक्षस मुझे मारकर तेरा आनन्द वढ़ा रहे हैं, तू आकर मेरे पाँवों को कुचल रहा है, मैं अपने शरीर में धैर्य लिये वैठा हुआ हूँ॥ ४४९०॥ तव रावण क्रोध से अग्नि के समान जल उठकर वोला—इस वानर को दंड दो। मेरे ही सम्मुख इसे अभी काटकर खंड-खंड कर डालो। यह पशु जाति का होकर मेरा तिरस्कार कर रहा है। यह अधम अत्यन्त वर्वर है। अरे प्रहस्त, अव क्या देख रहा है शीघ्र असि उठा ले॥ ९१॥ रावण का यह वचन सुनकर

चौध्यय शास्त्रत आपुनि पार्गत धर्म्मक एरिय किक।
कतनो शास्त्रत देखिया आछाहा दूतर ए प्राणान्तिक ॥ ९२
येहेन शुनय तेहेन बोलय दूतर हेनसे नय।
प्राणान्तिक कले दूते कदाचितो मिछा बाणी नोबोलय ॥
माथा मुण्डि पाञ्च चिरला करियो गाले दिया कालि चून।
बुकुर शान्तिये प्राणान्तिक नुहि गावे कर किछु खुन ॥ ९३
उचित बचन बुलिले बोपाइ पण्डित आमार भाइ।
क्रोधर वेगत दूतक दण्डिया क्षेणे अपयश पाइ ॥
कमन अङ्गत खुन करिबोहो येन होवे खण्ड खण्ड।
यिगोठे पठाइल अपमान पाउक दूतक देखिया दण्ड ॥ ९४
बानर जातिर लाञ्जेसे भूषण सब शरीरर मूल।
आमात आवेशे सुबुद्धि फड़िल पठायो पूरी लाङ्गुल ॥
यिगोठे इयाक दूत पठाइलेक तार प्रतिफल पाउक।
राम लखमने सुग्रीवे देखोक चेञ्चा पोरा हुया याउक ॥ ९५

हनुमन्तर लेजत जुइ दिया आरु लङ्कादाहन

पद

राक्षस लोकक आदेशिलेक रावण * झाण्ट करि मोर भण्डारर वस्त्र आन
बान्दरार लाञ्जत बान्धियो टानि टानि * तेले समे जोबरायो भण्डारर आनि ९६
राजार वचने भण्डारर वस्त्र आनि * बानरार लाञ्जत बान्धिला टानि टानि
कापोर नोजोरे तैल सबे भैल क्षय * पुनु पुनु मारुतिर लाङ्गुल बाढ़य ९७

विष्णुभक्त विभीषण खड़ा हो गया और बोला—भैया लंकेश्वर, मैं कातर प्रार्थना करता हूँ कि क्रोध त्याग दो। तुम स्वयं चौदह शास्त्रों में पारंगत हो, तब धर्म को क्यों छोड़ रहे हो? दूत के प्राण वध करना चाहिए, यह भला किस शास्त्र मे लिखा हुआ है? ॥ ९२ ॥ दूत का तो नियम है कि वह जैसा सुनता है वैसा ही बोलता है, यदि उसे मार भी डाला जाये तो दूत कभी मिथ्या वचन नहीं कहता। इसके सिर मुँडाकर पाँच चोटियाँ रख दो या गालों में चूना-कालिख लगाकर छोड़ दो या शरीर में कुछ क्षत कर दो जिससे हृदय शान्त हो, परन्तु प्राणों से न मारो ॥ ९३ ॥ (तब रावण बोला) मेरे पंडित भाई ने उचित वचन ही कहा है। क्रोधावेश में दूत को दंडित कर भला अपयश क्यों लें? इसके किस अंग को काट लिया जाय जिससे यह खंड-खंड हो जाये ताकि जिसने इसे भेजा है, वह दूत का दंड देखकर अपमानित हो ॥ ९४ ॥ पूँछ ही वानर जाति का भूषण है, यही उसके सारे शरीर का मूल है। मुझे अभी-अभी सुबुद्धि आयी है कि इसकी पूँछ जलाकर भेज दो, ताकि जिन राम-लक्ष्मण-सुग्रीव ने इसे दूत बनाकर भेजा है, इसके जले भुने शरीर को देखकर उनको उसका प्रतिफल मिल जाये ॥ ४४९५ ॥

हनुमान की पूँछ में आग लगाना और लंका-दहन

राक्षसों को रावण ने आदेश दिया, मेरे भंडार से शीघ्र वस्त्र ले आओ और इसकी पूँछ में खीच खींच कर लपेटो और भंडार से तेल लाकर तर कर दो ॥ ४४९६ ॥ राजा के आदेश से राक्षस भंडार से तेल लाकर खीच-खीचकर लपेटने लगे। वस्त्र पूरे न पड़े, तेल भी समाप्त हो गया। हनुमान की पूँछ लगातार बढ़ती ही जा रही

पकाइ पकाइ लाङ्ज बढ़ाइ हनुमन्त * कत बस्त लागिल नाहिके आदि अन्त
कर योर करि पाचे भण्डारी बोलय * भण्डारर तैल वस्त्र सवे भैल क्षय ९८
राजा बोले भण्डारी कर्पूर देओ खाहा * मन्दोदरी पाशक सत्वर करि याहा
सहस्र कन्यार तेन्त मुख्य पटेश्वरी * सबाहारे वस्त्र देओक खान खान करि ९९
हेन शुनि भण्डारीये नाथाकिल रैया * अन्तेप पुरत सिटो प्रवेशिल गैया
कर योरे भण्डारी जुरिला योर हात * आइ पटेश्वरी बुलि नमिलेक माथ ४५००
नतो शुना माव तुमि भैल आथान्तर * तोमार पाशाक पठाइलन्त लङ्केश्वर
जम्बुद्वीप हन्ते माव कपि एक आइल * इन्द्रजिते बन्धि आनि राजात भेटाइल ४५०१
लाङ्जे जुइ दिवे आदेशिल लङ्केश्वर * भण्डारर वस्त्र क्षय भैल निरन्तर
मन्दोदरी बोले किनो मिलिल अकाज * आवेसे जानिलो छन्न भैलो लङ्काराज २
एवे येवे वस्त्र मइ दिया नपठाओं * राजार बैलखे वर गरिहाक पाओं
राज पटेश्वरी हेन मने गुणि चाइल * खान खान करि सबे कापोर अनाइल ३
वस्त्र आनि भण्डारीर हाते आनि दिल * वस्त्र पाया भण्डारीओ तेखने चलिल
सियो वस्त्र निया पाचे लाङ्जत मेह्राइल * एकोमते वानराक जोरण नयाइल ४
कर योरे भण्डारीये बुलिल राजाक * आइ सकलर वस्त्रे नटिल इहाक
राजा बोले भण्डारी रामर बलीयार * वस्त्र काटि आन गैया जानकी सीतार ५
सहस्र राक्षसी आछे ताइक रक्षा करि * ता सम्बारो काटि आन खान खान करि
सीतार वस्त्रर कथा शुनि हनुमन्त * मनर विषादे कपि परामरिशन्त ६

थी ॥ ९७ ॥ घुमा-घुमाकर हनुमान ने अपनी पूँछ बढ़ा ली। उसमें कितना वस्त्र लगा इसका कोई आदि-अन्त नहीं था। हाथ जोड़कर अन्त में भंडारी बोलने लगा, भंडार के तेल और वस्त्र सब समाप्त हो गये ॥ ९८ ॥ रावण बोला—भंडारी, तुम्हें कर्पूर (-युक्त पान) देता हूँ, खा लो और शीघ्रता से मन्दोदरी के पास चले जाओ। वह सहस्र कन्याओं की मुख्य पटरानी है (उससे कहो) सब रानियों के एक-एक वस्त्र दें ॥ ४४९९ ॥ यह सुनकर भंडारी वहाँ रुके बगैर तुरन्त अन्तःपुर में गया और मन्दोदरी के सम्मुख हाथ जोड़, "पटरानी माता" कहकर सिर झुकाया ॥ ४५०० ॥ माता, तुमने क्या सुना नहीं, बडा अनर्थ हो गया है, उसी लिए लंकेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। हे माता, जम्बुद्वीप से एक वानर आया, जिसे बन्दी बनाकर इन्द्रजित राजा के पास ले आया है ॥ ४५०१ ॥ लंकेश्वर ने उसकी पूँछ में आग लगा देने को आदेश दिया है। परन्तु भंडार के सारे वस्त्र समाप्त हो चुके हैं। मन्दोदरी ने कहा यह कैसा दुर्योग आ पड़ा। अब मुझे अनुभव हो रहा है कि लंका का राज नष्ट हो जायेगा ॥ ४५०२ ॥ अब यदि मैं वस्त्र देकर न भेजूँ, तो राजा के यहाँ बहुत तिरस्कृत होना पड़ेगा। महारानी ने मन ही मन ऐसा विचार किया और सबसे एक-एक वस्त्र मँगवा लिया ॥ ४५०३ ॥ उन वस्त्रों को लाकर उसने भंडारी के हाथ में दिया। भंडारी वस्त्र लेकर तुरन्त चल पडा। उन वस्त्रों को भी ले जाकर पूँछ में लपेटा गया। परन्तु किसी भी प्रकार से हनुमान की पूँछ में पूरा न पड़ा ॥ ४५०४ ॥ हाथ जोड़कर भंडारी ने राजा से कहा—रानी माताओं के वस्त्रों से भी इसकी पूँछ पूरी नहीं पड़ी। रावण बोला, यह राम का भेजा हुआ आया है। इसलिए जाकर जानकी सीता का वस्त्र काट कर ले आ ॥ ४५०५ ॥ एक सहस्र राक्षसियाँ उसे पहरा दे रही है, उन सबसे भी एक-एक काटकर ले आ। सीता का वस्त्र लाने की बात सुनकर हनुमान मन में विषाद से सोचने लगे ॥ ४५०६ ॥ अपने मन में विचार करते हुए

पवनतनय आपोनार मने जानि * दीघल लाङ्जक तान टुटाइलेक आनि
डाइन पाक गुचि लाङ्ज बाम पाक कैल * उलट पालट लाङ्ज आति ह्रस्व भैल ७
येने तेने तेले बस्त्र अर्द्धेक तितिल * अगनि लगाया हनुमन्तक तुलिल
टानि जरि गलत बान्धिल दृढ़ करि * नगर फुराइते ताङ्क निल हाते धरि ८
हुलस्थूल लङ्काते लागिल कोलाहल * छवाल मेलेके बेढ़ि करे हात ताल
ढाक ढोल उरुलि मृदङ्ग लङ्का जुरि * सबे मिलि चाहा बानरार लाङ्ज पुरि ९
राक्षसर माजे कपि बन्दी हुया यान्त * आपोनार मनत आपुनि गुणिलन्त
रखीया बर्गक आमि एतिक्षणे मारि * राम लक्ष्मणर समीपक याइते पारि ४५१०
खाल खोप पुरिबोहो गुचाइबो संग्राम * दुर्गम गुचाया भूमि करिबोहो सम
तेबेसे लङ्काक आसिबार फल होवे * मने मने आलोचन्त पवनर पोवे ४५११
देखिया सरमा गैल जानकीर भीता * आथान्तर कथा माव नतो सुना सीता
तोमार बानर लङ्केश्वरे बन्दी कइल * लाङ्जत अगनि दिया नगरी फुराइल १२
हेन शुनि गोसानीर बाड़ि गैल शोक * हा हा यम किक लागि नेनिलाहा मोक
स्वामी मोर बार्त्ताक पाइवन्त चिरकाले * तातो नेदिलेक बिधि मोहोर कपाले १३
प्रणामो अगनिदेव बायु तयु सखा * हनुमन्त पुत्र मोर पुत्रवते राखा
येवे मइ नेजानोहो श्रीरामत परे * शीतल हुयोक हनुमन्तर शरीरे १४
अगनिक सीता येवे स्तुति करिलन्त * नदहन्त अगनिये शीतले ज्वलन्त
हनुमन्त सुस्थ हुआ मनत गुणन्त * सीतार प्रसादे मोक बह्नि तदहन्त १५

उन्होंने अपनी पूँछ को छोटा कर लिया। दाहिनी ओर खिचाव छोड़कर बायीं ओर घुमा लिया, उलटते-पलटते इस प्रकार पूँछ वहुत छोटी हो गयी।। ४५०७ ।। जैसे-तैसे तेल से वस्त्र आधा भीग पाया। उसमे आग जलाकर हनुमान को उठाया और उनके गले में खींच-खींचकर मजबूती से रस्सी बाँधी, फिर हाथ पकड़कर उन्हें नगर घुमाने ले चले।। ४५०८ ।। लंका में हलचल मच गयी, कोलाहल होने लगा। लड़के-बच्चे और तमाशबीन उन्हें घेरकर तालियाँ बजाने लगे। समूची लंका में ढोल-नगाड़े हुल-हुली और मृदंग की ध्वनि गूंजने लगी। सब मिलकर हनुमान की पूँछ जला देना चाहते थे।। ४५०९ ।। हनुमान बन्दी होकर राक्षसों के बीच चले जा रहे थे। उन्होने अपने मन में विचार किया, रक्षकों को अभी-अभी मारकर मैं राम-लक्ष्मण के समीप चला जा सकता हूँ ४५१० ।। परन्तु ऊबड़-खावड़ को बराबर कर संग्राम की अभिलाषा मिटा दूं, दुर्गम स्थलों को नष्टकर बराबर कर डालूं, मेरे लंका में आने की तभी सार्थकता हो सकती है—पवनसुत ने ऐसा मन ही मन विचार किया।। ४५११ ।। उन्हें देखकर सरमा सीता के पास गयी, बड़ी बुरी बात हो गयी, माँ सीता, क्या तुमने नही सुनी है ? तुम्हारे उस वानर को लंकेश्वर ने बन्दी बना लिया है। उसकी पूँछ में आग लगाकर नगर में घुमा रहे है।। १२ ।। यह सुनकर देवी सीता का शोक बढ़ गया। —हाय, हाय यम तुम मुझे क्यों नही ले गये ? मेरे स्वामी कुछ विलम्ब से समाचार पा लें, विधि ने यह भी मेरे भाग्य में नहीं लिखा है।। १३ ।। हे अग्निदेव मैं तुम्हें प्रणाम करती हूँ, तुम वायु के सखा हो, मेरे पुत्र हनुमान की तुम पुत्रवत् रक्षा करो। यदि मैं श्रीराम से परे और किसी को जानती न होऊँ, तो हे अग्नि, तुम हनुमान के शरीर पर शीतल हो जाओ।। १४ ।। जब सीता ने अग्नि की स्तुति की, तो अग्नि ने हनुमान को जलाया नही, शीतल बनकर हनुमान के शरीर में जलते रहे। हनुमान स्वस्थ होकर मन मे विचार करने लगे, सीता जी के ही प्रसाद से अग्नि मुझे जला नही रहे हैं।। १५ ।। देवी के प्रसाद से मुझे आग नहीं जला रही है, अब मैं

देवीर प्रसादे मोक नदहन्त वह्नि * तृपितिकि कराओं लगाओं लङ्का छानि
डाङर दीघल आछिलेक कलेवर * अल्पदेहा करि जरी गुचाइला गलर १६
करि शिरोगत आति रामर चरण * माधव कन्दलि बिरचिल रामायण
निमजोक मन मोर चरणे रामर * बोलो राम राम सभासद निरन्तर १७

दुलड़ी

पुनरपि वीरे शरीर बढ़ाइल ऊर्द्धक लाङ्गुल तरि।
आगल सञ्चारे डेव करिलन्त कतो दूर गैया परि॥
आथे वेथे गैया सोणार स्तम्भक दुइ हाते लैल उपारि।
राक्षस वर्गर सवारो कोवाइ ठेङ्ग आङ्गिलन्त बारि॥ १८
कतोहो मारिल कतोहो पलाइल दूरत कतो परिल।
एक लाम्फ दिया वीर हनुमान धवलिवरे चढ़िल॥
धवलिवरत वसि हनुमान आयाकं लाञ्ज आफालि।
इघरे सिघरे चालर उपरे लैयान्त अगनि ज्वालि॥ १९
इघरे सिघरे मण्डल आकारे · सव नगरक छानि।
आठ गुण प्राण दशगुण वल हनुवे ज्वाले अगनि॥
वायुये वोलन्त पुत्र हनुमन्ते समस्ते लङ्का दहन्त।
अगनिर सखा हुयासि पवन लङ्काक छानि वहन्त॥ ४५२०
सहस्र संख्यात माण्डलि फुटय आकर्ण शवद रोल।
लङ्का नगरीक धमे वियापिल स्वर्गमण्डलर कोल॥
प्रासाद सकल खसिया परय विचित्र धवलवरर।
प्रलयर बावे ढौ उथलिल उल्लाल भैल सागर॥ ४५२१
केहो कलकाटे केहो माटि सिञ्चे केहो आनि ढाले जल।
नुमाइवे नोवारि चेञ्चा पोरा भैला गावत नाहिके बल॥

समूची लंका मे अग्नि व्याप्त कर इनकी तृप्ति करा दूं। हनुमान ने अपने विशाल शरीर को सिकोडकर गले की रस्सी खुलवा ली॥ १६॥ राम के चरणों का ध्यान शिरोधार्य कर माधव कन्दली ने रामायण की रचना की। मेरा मन राम के चरणों में तल्लीन रहे, सभासदो, निरन्तर राम राम बोलो॥ १७॥ वीर हनुमान ने पुनः पूंछ ऊपर उठाकर शरीर बढा लिया और अनायास कूदकर कुछ दूर जा पडे। शीघ्रगति जाकर दोनों हाथों से सोने के खंभे को उखाड़ लिया और उससे राक्षसों को मार-मारकर पैर तोड डाले॥ १८॥ कितने ही मर गये, कितने ही भाग गये, कितने ही दूर जा गिरे, बाद में कूदकर हनुमान राजभवन पर जा चढ़े। राज भवन पर बैठकर हनुमान पूंछ ऊँचे उठाकर इस घर से उस घर छत के ऊपर आग लगाते चले॥ १९॥ इस घर से उस घर मडलाकार घूमते हुए सारे नगर को व्याप्त कर आठ गुने प्राण, दस गुने बल से हनुमान आग लगाते चले। वायु ने सोचा, पुत्र हनुमान सारी लंका को जला रहा है, वे अग्नि का सखा बनकर समूची लंका को घेरकर बहने लगे॥ ४५२०॥ भवनों के सहस्रो शहतीर चटखने लगे जिनका कान को बहरा कर देनेवाला शब्द गूँजने लगा। धुँआ लंकानगरी को व्याप्त कर स्वर्गमंडल तक पहुँच गया। विचित्र राजभवनों के प्रासाद टूट गिरने लगे। प्रलय-पवन के कारण सागर आलोडित हो तरंगें उठने लगी॥ २१॥ लंका में कोई केले के पौधे काट रहा था, कोई भूमि पर पानी सींच रहा था, कोई पानी डाल रहा था, आग बुझा न पाने के कारण सब झुलस

एकोवे प्रकारे लङ्कार अगनि निमान येवे न जाय।
काखतली याये यत घर पावे ताको खेदि खेदि खाइ ॥ २२
रावण राजार बर भय भैल बानरर देखि काज।
इन्द्रजित आदि प्रहस्त सहिते पलाइल सब समाज॥
राजा पलाइबार देखिया सकल राक्षसगण पलान्त।
पुत्र परिबार सबाको एरिया जीव राखि मात्र यान्त ॥ २३
जय जय राम प्रभु रघुपति तुमि अगतिर गति।
तोमार अभय चरण पङ्कजे करोहो सदा प्रणति॥
परम मङ्गल तयु गुण नामे हरे भकतर भय।
तेजि आन काज बोला राम राम यत समाजिक चय ॥ २४

पद

कतदूर हन्ते देखि दगध नगरी * कुटुम्बे कुटुम्बे कान्दे गलागलि धरि
अन्धला पेङ्गुवा छवा गर्भवती नारी * यतेक मरिल ताक वर्णाइते नपारि २५
समस्त लङ्कार घर पुरि हनुमन्त * आउल जाउल बायु चौपाशे बहन्त
बृक्ष सब भागे हस्ती घोरा पुरि मरे * गिर गिर शवद आक्रोशे बह्नि करे २६
लङ्कार दगध देखि सरमा राक्षसी * सीतार पाशक गैया कौतूहले बसि
हास्य करि बोले सीता शुना प्राणसखी * तोमार सम्पद काल आमि आछो लखि २७
तोमार बानरे लङ्केश्वरे बन्दी पाइल * लाञ्जत अगनि दिया नगरी फुराइल
पर्ब्बत समान हुइ मायावी बानर * डेवदिया चड़िल राजार धौलिवर २८
धवलिवरत परि लाङ्गुलर जुइ * सब लङ्का पुरि याइ भस्मी भूत हुइ
चाले चाले डेव दिया फुरिल लङ्कार * सबे लङ्का पोरय अगनि एकाकार २९

गये। शरीर मे किसी के बल न रहा। जब किसी भी प्रकार से लंका की आग बुझाना सम्भव नही हुआ तो वह आग नजदीक जितने घर पाती थी सबको लपक-लपक कर खा डालती थी ॥ २२ ॥ वानर का कार्य देख राजा रावण को बडा भय हुआ। प्रहस्त समेत इन्द्रजित आदि समाज के सारे लोग भागने लगे। राजा को भागते देख पुत्र-परिवार सबको छोड़ मात्र जीवन ही लिये सभी राक्षस भागने लगे ॥ २३ ॥ राम तुम्हारी जय हो, जय हो। तुम अगति की गति हो, तुम्हारे अभयं चरणों में मैं सदा प्रणति करता हूँ। परममंगल तुम्हारा गुण-नाम भक्त का भय हरण करता है, सभी सामाजिक गण अन्य काम छोड़, राम राम कहो ॥ २४ ॥ कुछ दूर से जलती हुई नगरी को देखकर एक दूसरे आत्मीय जनों के गले को आलिंगन कर रोने लगे। अन्धे, लँगड़े, लूले, गर्भवती नारी आदि कितने ही उस अग्नि में जल मरे, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता ॥ २५ ॥ सारी लंका के घरों को हनुमान ने जला डाला। उसके चारों ओर पवन उलट पुलट कर चक्कर लगा रहा था। वृक्ष जल-जल कर टूट गिर रहे थे, हाथी घोड़े जलकर मर रहे थे; अग्नि आक्रोश से भरकर 'गिर', गिर' का नाद कर रहा था ॥ २६ ॥ लंका को जलते देख राक्षसी सरमा कौतूहल से सीता के पास जा बैठी और हँसकर बोली—प्राण सखी सीता, सुनो! मैं देख रही हूँ तुम्हारे सुख का काल आ गया है ॥ २७ ॥ तुम्हारे उस वानर को रावण ने वन्दी बना लिया था और उसकी पूँछ में आग लगाकर राक्षस नगर में घुमा रहे थे। वह मायावी वानर पर्वत-सा बनकर कूदकर राजा के भवन पर चढ़ गया ॥ २८ ॥ पूँछ की आग भवन में लग गयी और सारी लंका अब जलकर भस्मीभूत हो रही है। वह वानर कूद-कूदकर

ऊन पञ्चाशत बायु लङ्कात वहिल * निशेष करिया सबे अगनि दहिल
लङ्कापुरि हनुमन्त करिलन्त चूर * तात पाचे पुरिला राजार अन्तपपुर ४५३०
लोमकर्ण प्रहस्तर विद्युतजिह्वर * कुमाररो पुरिलन्त दिव्य बासघर
सुवर्ण माणिक सबे रतन पोवाले * विश्वकर्मे प्रबन्धे निर्म्मिला चिरकाले ४५३१
प्रबन्धेसे गढ़िल नामिया स्वर्गहन्ते * दण्डेकर बोले पुरिलन्त हनुमन्ते
हेन शुनि देवी भैला परम हरिष * माथा तुलि चाहिलन्त पुरिबार दिश ३२
कतोक्षण कथा कैल सरमा सहिते * आतिशय मनोरङ्ग दुइहानो तहिते
सादरे मातिला सीता सरमाक चाइ * तुमि सम सुहृय आमार आन नाइ ३३
लङ्कापुरि हनुमन्ते भैलन्त हताश * सागर माजक लागि करिलन्त जास
आकाशर बाणी बीरे शुनिला तहित * मुखे चुञ्चि अगनिक पेलायो त्वरित ३४
शुनि हनुमन्ते कौतुकक बर पाइल * मुखे चुञ्चि अगनिक तेखने निमाइल
स्वस्थ भैला हनुमन्त गुचिल प्रयास * लङ्काक चाहिया वीरे तुलिलन्त हास ३५
श्रीरामर चरणक करि नमस्कार * केशरी वायुक प्रणामिला बारे बार
लङ्काक पुरिया वीर हरषित मने * माधवे भणिल श्रीरामर चरणे ३६
उजानि वाहन्ते मइ बाहिलोहो भाटि * लाभक चाहन्ते मूलक करिलोहो लाठि
लङ्काक दहन्ते मइ एको ना चाहिलो * नगरर लगे सीता देवीको बहिलो ३७

समूची लका में घूमने लगा। और अग्नि एकाकार होकर समूची लंका को जलाने लगी ॥ २९ ॥ उनचास पवन लंका में बहने लगे और अग्नि सबको निःशेष कर जलाने लगी। हनुमान ने लंकापुरी को चूर-चूर कर डाला, इसके पश्चात् राजा का अन्तःपुर भी जला डाला ॥ ४५३० ॥ लोमकर्ण, प्रहस्त, विद्युत्जिह्व के तथा कुमार मेघनाद के भी दिव्य निवास-स्थानों को जला डाला। जिस पुरी को विश्वकर्मा ने सुवर्ण, माणिक्य, प्रवाल आदि रत्नों से सयत्न अनेक दिनों मे निर्माण किया था ॥ ३१ ॥ स्वर्ग से यहाँ आकर विश्वकर्मा ने जिसे बड़े प्रयास से निर्माण किया था हनुमान ने उसे एक दंड में जलाकर भस्म कर डाला। यह सुनकर देवी सीता को परम हर्ष हुआ। उन्होंने सिर उठाकर उस ओर देखा जिधर पुरी जल रही थी ॥ ३२ ॥ कुछ देर तक उन्होंने सरमा से वार्तालाप की, दोनों के मन में बड़ा ही आनन्द हो रहा था। सरमा को सादर बुलाकर उसकी ओर देखते हुए सीता बोली—यहाँ तुम्हारे जैसा सुहृद मेरा और कोई नहीं है ॥ ३३ ॥ उधर लका को जलाकर हनुमान हताश हो गये और सागर में कूद पडे। वही उन्होंने आकाशवाणी सुनी कि मुँह से नोचकर अग्नि को शीघ्र ही फेंक दो ॥ ३४ ॥ यह आकाशवाणी सुनकर हनुमान को बड़ा कौतुक हुआ और मुँह से नोचकर आग को तभी बुझा डाला। इसके पश्चात् हनुमान स्वस्थ हो गये, उनकी थकावट मिट गयी, लंका की ओर देखकर वीर ने अट्टहास किया ॥ ३५ ॥ उन्होंने बार बार श्रीराम के चरणों को नमस्कार करते हुए, पिता केशरी और पवन को बार-बार प्रणाम किया। लका को जलाकर वीर हनुमान का चित्त बड़ा हर्षित हुआ। माधव कन्दली श्रीराम के चरणों (की वंदना करते हुए कथा) का वर्णन कर रहे है ॥ ३६ ॥ (हनुमान के हृदय मे चिन्ता भी हुई। वे सोचने लगे) मैं तो नदी के उद्यान में जाना चाहता था, पर भाटी की ओर चला आया। (याने विपरीत कार्य कर डाला।) लाभ चाहने के कारण मूल को भी खो दिया। लंका को जलाते समय मैंने कुछ भी सोच-विचार नही किया। नगर के साथ-साथ देवी सीता को भी जला डाला ॥ ३७ ॥ अब मैं जान गया कि

एवेसे जानिलो जीवनर नाहि फल * फाट दिया बसुमती याओं रसातल
एहि अगनित मइ जाम्प दिया मरो * तुहि तेवे बाढ़य अगनि जास करो ३८
हनुमन्ते अनेक गुणन्त मने मन * चञ्चल बानर जाति आति अचेतन
शान्ती सीता देवीक दहिंब बह्नि किक * एक तुहि सीताये दहन्त अगनिक ३९
एतहन्ते हनुमन्ते मने अवगाइ * चित्त थिर होक आसो गोसानीक चाइ
एको काले अगनि नयाइबो सीता बन * देखिलेहे तथापितो थिति होवे मन ४५४०
लङ्कापुरी हनुमन्ते करिलन्त छन्न * देशक याइबाक लागि उत्रावल मन
सीताक देखिते गैला कपि महावीरे * देखि हरिषिते प्रणामिला जानुशिरे ४५४१
साफल रामर आमि पाव आराधिलो * लङ्का पुरि बन भाङ्गि कार्य्यक साधिलो
रामर पाशक जाओं थाकिओ गोसानी * तोमार बचने माव आमारि मेलानि ४२
सीताये बोलन्त बापु एरि जाइबे मोक * तइ एरि गैले बापु पाइबो बर शोक
नतो एरि यान्ते मोर दगध हृदय * तइ एरि गैले मोर केने प्राण सय ४३
लङ्काक पोरन्ते बाप भैलोहो हताश * रात्रिगोट बञ्च आजि गुचोक प्रयास
कतो दूरे गोप्य थाने लुकि दिया थाक * कालि याइबे प्रभाते आश्वास बुलिबाक ४४
सीतार बचन माले कर्णपाति शुनि * सीताको अभय वाणी बुलिला आपुनि
अप्रयासे श्रीरामे निबन्त आसि साजि * बिलम्बत कार्य्यनाइ लरि जाओं आजि ४५
सीतादेवी यात्रा दिल सर्ब्ब सुकुशल * रक्षा बान्धि बुलिलन्त अव्याहते चल
देवीर नयने जल परिबार देखि * मारुतिर क्रन्दन लरिल हक हकि ४६

इस जीवन से कोई लाभ नही है। हे धरती माता, तुम फट जाओ मैं रसातल के भीतर चला जाऊँ। मैं इसी अग्नि में कूद पड़ूँगा या बड़वानल में जल मरूँगा ॥ ३८ ॥ हनुमान मन में अनेक प्रकार के सोच-विचार करने लगे। हम चंचल वानर जाति बड़े ही अज्ञानी है। सती सीता को अग्नि क्यों जलायेगा ? ऐसा हो नही सकता। सीता ही अग्नि को जला सकती है ॥ ३९ ॥ हनुमान ने इस प्रकार मन में विचार करते हुए सोचा, चित्त स्थिर होवे, मैं जाकर सीता जी को देख आऊँ। सीता जी जिस वन में हैं वहाँ अग्नि तो कभी जा नही सकता तथापि उनको देखने पर ही मन शान्त हो सकता है ॥ ४५४० ॥ हनुमान ने लंकापुरी को नष्ट कर दिया था। अब अपने देश लौटने के लिए उनका चित्त उतावला हो उठा था। महावीर हनुमान सीता को देखने गये, उन्हें देखकर घुटने टेक प्रणाम किया ॥ ४१ ॥ हमने राम के चरणों की जो आराधना की, वह सफल है। लंकापुरी का (अशोक) वन तोड़कर हमने कार्य साधन किया। हे देवी, आप यहाँ रहिये, मैं रामचन्द्र के पास चल रहा हूँ। तुम्हारा वचन ही हमारा सहारा है ॥ ४२ ॥ सीता बोली—वत्स, तू मुझे छोड़ जायेगा। वत्स, तेरे छोड़ जाने पर मुझे बड़ा शोक होगा। तू अभी गया नहीं, तभी मेरा मन दग्ध हो रहा है, तू यदि छोड़ जाये तो मेरे प्राणों को कैसे सहन होगा ॥ ४३ ॥ वत्स, तू जब लंका को जला रहा था, मैं हताश हो गयी थी। आज तू यह रात यही बिता ले जैसे कि थकावट मिट जाये। कुछ दूर गुप्त स्थान में जाकर छिपा रहा। आश्वासन का समाचार देने कल प्रातः जाना ॥ ४४ ॥ सीता के वचन ध्यान से सुनकर हनुमान ने उन्हें अभय वाणी सुनाते हुए कहा—श्रीराम मुझे स्वयं आकर विना प्रयास सजाकर ले जायेंगे। विलम्ब का कोई काम नही, मैं आज ही शीघ्रतापूर्वक चला जाऊँगा ॥ ४५ ॥ सीताजी ने उनकी यात्रा का सभी प्रकार सुन्दर सगुन बना दिया। उन्हें रक्षा बाँधकर बोली— तुम निबाध रूप से चले जाओ। देवी की आँखों से आँसू बहते देख हनुमान फूट-फूटकर

लङ्कापुरि रावणर दुखद जानिया * जनक जीउर दुइ चरण बन्दिया
अरिष्ट पर्व्वत आछे समुद्र तीरत * डेवदिया चड़िलन्त तार ऊपरत ४७

ताहान सम्भेर गिरि भार न सहय * जल सब निकलिक पशु भैल भय
टलवल करे गिरि वाजे कलकल * पर्व्वतर वाज होवे सिंह हस्तीगण ४८

हरिण बराह उट गवय महिष * पर्व्वतर हन्ते पलाइ जाय दिशोदिश
गिरि श्रृंग-वृक्ष-शिला परे खसि खसि * नागगणो वियाकुल पलाइ तरसि ४९

गन्धर्व्व चारण विद्याधर यत यत * मनोमय क्रीड़ा करि थाके पर्व्वतत
गिरि तल जाइ देखि चित्त गैल भागि * चमत्कारे पलाइ गैल पाजरक लागि ४५५०

अरिष्ट पर्व्वत दीघे योजन शतेक * चरावतो पञ्च मन्द होवय ततेक
पथालियो होवय योजन दशमान * तल गैया गिरि भैल भूमिर समान ४५५१

सागर मध्यत हनुमन्ते रिङ्ग दिल * सिपारर हन्ते कपि बलेओ शुनिल
सबेयो संबाको बोले एरियो विषाद * कौतूहले हनुमन्ते करि सिंहनाद ५२

यि करि नादय हनुमन्त महावली * सीताक देखिल हेन कार्य्यते आकलि
येवे नेदेखिल हन्ते जनकर जीक * किलकिल ध्वनि तेवे करिलेक किक ५३

गियाति वर्गर बर हरिष अनेक * केहो गीत गावे केहो हरिष प्रत्येक
कार्य्यक साधिया सवे आसे हनुमान * आवेसे सवारे रक्षा हैल नाक काण ५४

रोने लगे ॥ ४६ ॥ उन्होंने लंका जलाकर, रावण का दुःख जानकर, सीता जी के चरणों की वंदना की और समुद्र के किनारे जो अरिष्ट पर्वत था कूदकर उस पर चढ़ गये ॥ ४७ ॥ वह पर्वत उनका भार सह नहीं पाया, उसमें का सारा जल निकल गया और पशु आतंकित हो गये। पर्वत टलमलाने लगा, जल की कलकल ध्वनि होने लगी। सिंह, हाथी आदि पर्वत से निकल भागने लगे ॥ ४८ ॥ हरिण, वराह, ऊँट, गवय, भैंस आदि पर्वत से निकलकर सभी दिशाओं में भागने लगे। पर्वत-शिखर, वृक्ष, शिलाएँ टूट-टूटकर गिरने लगे। आतंक के मारे नागगण भी व्याकुल हो भागने लगे ॥ ४९ ॥ गधर्व, चारण, विद्याधर आदि, जो पर्वत पर मनोवांछित क्रीड़ाएँ करते हुए वहीं रह रहे थे, पर्वत को नीचे धँसते देख उनका चित्त टूट गया। वे शरण ढूँढ़ते हुए वहाँ से विस्मयाकुल हो भागने लगे ॥ ४५५० ॥ अरिष्ट पर्वत लम्बाई में सौ योजन था, उसकी ऊंचाई भी केवल पाँच योजन कम थी। चौड़ाई भी लगभग दस योजन थी। वह पर्वत हनुमान के भार से दबकर भूमि के बराबर हो गया ॥ ५१ ॥ समुद्र के मध्य जाकर हनुमान ने अट्टहास किया। उस पार से वानरों की सेना ने उसे सुना। सभी एक दूसरे से कहने लगे, विषाद छोड़ो। हनुमान कौतूहल से सिंहनाद कर रहे हैं ॥ ५२ ॥ वे जिस तरह से निनाद कर रहे हैं, उससे प्रतीत होता है कि उन्होने सीता को देखने का कार्य पूरा कर लिया है। यदि उन्होंने जानकी को न देखा होता तो वे किल-किल ध्वनि क्यों करते ? ॥ ५३ ॥ तब उन वानरों को बड़ा हर्ष हुआ, कोई गीत गाने लगा, कोई भाँति-भाँति से हर्ष मनाने लगा। सभी कार्य साधन कर हनुमान आ रहे हैं। अब हम सबके नाक-कान बच गये ॥ ५४ ॥ हनुमान ने हाथ से मैनाक पर्वत का स्पर्श किया और वहाँ से ऐसे वेग से चल पड़े जैसे कि धनुष की डोरी से बाण चल रहा हो।

मैनाक पर्ब्बत कपि परशिला करे * गुणत नराच येन छुटिल सत्वरे

हनुमन्तर प्रत्यावर्त्तन आरु वान्दर सैन्यर आनन्द

महेन्द्र गिरित परिलन्त महाबल * पाताल भेदिया आसि निकलिक जल ५५
सबारो माजत बसिलन्त कपिवर * सबे पास चापिलन्त बायुर पुत्रर
केहो गाव लुण्डे केहो गले आति धरे * कृताञ्जलि हुया केहो तुति नति करे ५६
केहो वृक्षपत्र आनि आनन्दे बिञ्चन्त * केहो केहो आनि मधुफल योगावन्त
जाके जाके रिङ्ग पारि धेमालि करन्त * चापरिर छेवे कतो आनन्दे नाचन्त ५७
हरिष बदन हनुमन्त बानरर * देखि पाश चापिलन्त अङ्गद कुमार
दुइ हात मेलि चाप धरिलन्त गले * दुइहन्तो बसिला गैया दिव्य शिलातले ५८
अङ्गदक आदि करि वानरर बल * पुछिलन्त हनुमन्त वार्त्ता कि कुशल
शुनियो अङ्गद मइ येन देखिलोहो * शान्ती सीता गोसानीर सब कथा कहो ५९
तिनियो लोकर हेन नैयो देखो धन्या * जनकनन्दिनी सम पतिव्रता कन्या
शान्ती सकलर माजे ताङ्क आगे गणि * सीता महाशान्ती सवाहारे शिरोमणि ४५६०
किनो भाग्यवन्त राजा पापिष्ठ रावण * गोसानीक हरिया जीवय एति क्षण
शुनि आछो बशिष्ठर भार्य्या अरुन्धती * अनुसूया रोहिणी ये लक्ष्मी सरस्वती ४५६१
चक्षु नैयो देखो आमि शुनियाछो काणे * सीतार समान शान्ती नुहि एको थाने
एतेक वचन शुनि सब कपिबले * धराधरि लुटालुटि करे कौतूहले ६२
धरणीत माथादि ऊर्द्धक पाव मेलि * पृथिवीत लुटि पारि करैं कतो केलि
शारी शारी हुया पृथिवीत दुइ पावे * ऊर्द्ध्व बाहु करि नाचे नाना भक्ति भावे ६३

हनुमान के प्रत्यावर्तन से बानर-सेना का आनन्द

महाबली हनुमान महेन्द्र पर्वत पर आ उतरे। उनके भार से महेन्द्र पर्वत ऐसा दब गया जिससे पाताल भेदकर जल निकलने लगा ।। ५५ ।। कपिश्रेष्ठ हनुमान सबके बीच में आ बैठे, सभी वानर पवनसुत के पास सट आये। कोई उनका शरीर सहलाता था, कोई गला पकड़ रहा था, कोई हाथ जोड़कर सिर झुकाये उनकी स्तुति करता था ।। ५६ ।। कोई वृक्ष के पत्ते लाकर आनन्द से हवा करता था, कोई मधुफल लाकर उनके सम्मुख रखता था। झुंड के झुंड वे मिलकर अट्टहास कर खेल-तमाशे करने लगे। कितने ही हाथों से तालियाँ बजा बजाकर आनन्द से नाच रहे थे ।। ५७ ।। हनुमान का आनन्दपूर्ण मुखमंडल देख कुमार अंगद उनके पास आये। उन्होंने दोनों हाथ फैलाकर गले लगकर आलिंगन किया। दोनों दिव्य शिला के तले जा बैठे ।। ५८ ।। अंगद से लेकर वानरी सेना के सभी जन हनुमान से पूछने लगे, समाचार कुशल है न ? (हनुमान कहने लगे) अंगद जी, सुनिये, मैंने जैसा देखा है, सती देवी सीता की सारी कथा सुनाता हूँ ।। ५९ ।। मैंने तीनो लोको मे जनकनन्दिनी जैसी पतिव्रता कन्या नही देखी, वे धन्य हैं। सभी सतियों में उनका स्थान प्रथम है, सती सीता सबकी शिरोमणि हैं ।। ४५६० ।। पापी राजा रावण कितना भाग्यशाली है कि देवी का हरण करने के बाद अब तक जीवित है। हमने वशिष्ठ की भार्या अरुन्धती, अनुसूया, रोहिणी, लक्ष्मी, सरस्वती के सम्बन्ध में सुना है ।। ६१ ।। हमने इनके सम्बन्ध में कानों से सुना है, आँखो से नही देखा, परन्तु सीता के समान सती कहीं भी नहीं है। यह सुनकर सभी वानर कौतूहल से एक दूसरे को पकड़ा-पकडी और जमीन पर लोटा-लोटी करने लगे ।। ६२ ।। धरती पर सिर रखकर ऊपर की ओर पाँव उठाकर, धरती पर लोट-

महारङ्गे नाचय गावय बर धूलि * डालत धरिया कतो ओलमा बादुली
जाम्बये बोलन्त बापु शुना वायुसुत * केनमते लङ्का गैला कहियो प्रस्तुत ६४
कि करन्त गोसानी आछन्त केनमते * कहित आछन्त सीता कहियो समस्ते
किबा बुलि पठाइल जनक जीउ सीता * महा पतिव्रता राघवर बिबाहिता ६५
केन बा सङ्केत आइल रामत कहित * तुमि बा कि कर्म्म करि आछिला तहित
शुनियो कहिबो यि पूछिला जाम्बवन्ते * येनमते डेव दिलो महेन्द्रर हन्ते ६६
याहन्ते देखिलो यत शुनि थाका कहो * सागर मध्यत आमि येन करिलोहो
प्रथमते समुद्रते सुरसाये पाइल * थाक थाक बुलि मोक वेगत तम्भाइल ६७
दक्षर नन्दिनी बोलो क्षमियो आमाक * रामदूत हुया जाओं सीता खुजिबाक
ताइ बोले जानो मइ दशरथ पोक * क्षुधाये पीड़िले क्षमा न करिबो तोक ६८
गोटे गिलिबोहो मोक पलाओक पेटर * राघवक तेवे मोर एतमान डर
भक्षकर शुनि मोर न सहिल गाव * किमते गिखिबे मोक बेन्त गोट बाव ६९
मोहोर वचन शुनि किटाइलेक ताइ * दशयो जनक जुरि आछे बेन्त बाइ
शरीर बढ़ाइला मइ योजन ये कुरि * त्रिश योजनर पथ थाकिलेक जुरि ४५७०
मोहोर चल्लिश ताइ पञ्चाशक करि * मोर भैल षाठि ताइर योजन सत्तरि
आशी योजनक आमि शरीर बढ़ाइलो * नब्बै योजनक ताइ बेन्त गोट बाइल ४५७१
पुनरपि करिलोहो योजन शतेक * समधिक बढ़ाइलेक ताइयो ततेक
गर्भत पशिलो आमि अंगुष्ठ प्रमाणे * दान्त चिपि धरिलेक बाज भैलो काणे ७२

पोट होकर कितने प्रकार की केलियाँ करने लगे। कतार बाँधकर धरती पर पैर रखे, हाथ उठाये अनेक प्रकार भक्ति-भावना से नाचने लगे ॥ ६३ ॥ महान् आनन्द से नाचने गाने लगे जिससे बड़ी धूल उड़ी। कितने ही वानर वृक्ष की डालियों पर चमगादड़ों की भाँति झूमने लगे। जाम्बवन्त ने कहा—वत्स पवनसुत हनुमान, सुनो! तुमने लंका में किस प्रकार प्रवेश किया, बताओ ॥ ६४ ॥ देवी सीता क्या कर रही हैं, वे कैसी हैं; कहाँ रह रही हैं, सब कुछ बताओ। राघव की विवाहिता, महापतिव्रता जानकी ने क्या कहा है; ॥ ६५ ॥ राम से कहने के लिए कौन-सा संकेत किया है, तुम वहाँ कौन-सा कर्म कर आये, बताओ। (हनुमान बोले)—जाम्बवन्त, सुनिये। आपने जो पूछा है, मैं बताऊँगा। जिस तरह से मैं महेन्द्र पर्वत से कूदा था, मार्ग में जाते हुए जो कुछ देखा, सागर के मध्य मे मैने जो कुछ किया सुनते रहिये, मै बतलाता हूँ। पहले-पहल समुद्र में मुझसे सुरसा की भेंट हुई, उसने 'ठहर, ठहर' कहकर बड़े वेग से मुझे रोका ॥ ६६-६७ ॥ मैंने कहा— दक्ष-कन्या, सुनो, मुझे क्षमा करो। मैं राम का दूत बनकर सीता को खोजने जा रहा हूँ। उसने कहा—मैं दशरथ के पुत्र को जानती हूँ। परन्तु मैं क्षुधा से पीड़ित हूँ, तुझे क्षमा नहीं करूँगी ॥ ६८ ॥ तुझे समूचा निगल जाऊँगी जिससे मेरी भूख मिट जाये। राघव से मैं जरा भी डरती नही। मुझे भक्षण करेगी, सुनकर मैं सह नही सका, (मैंने कहा), तू मुझे कैसे निगलेगी, अपना मुँह तो फैला! ॥ ६९ ॥ मेरे वचन सुनकर वह सतर्क हो उठी और अपना मुंह दस योजन फैला दिया। तब मैंने अपना शरीर बीस योजन बढ़ा लिया, तो उसने तीस योजन मार्ग तक अपना मुँह फैला लिया ॥ ४५७० ॥ मेरा शरीर चालीस (योजन) हो गया तो उसने (मुंह) पचास योजन फैलाया। मेरा साठ का हुआ तो उसका सत्तर का। मैंने अस्सी योजन शरीर बढ़ाया तो उसने नब्वे योजन मुँह फैलाया ॥ ७१ ॥ मैने सौ योजन का बनाया तो उससे भी अधिक बढ़ा लिया। मैं तब अँगूठे के बराबर होकर उसके गर्भ में घुस गया। उसने दाँतों को दबा लिया तो मैं कान से होकर निकल आया ॥ ७२ ॥ मैं

आकाशत थाकि बोलो देवी थाकियोक * स्वर्गक लरियो माव वर दिया मोक
महावेगे लरि भैलो पवनत आग * देखो बाट भेटि आछे पब्बंत मैनाक ७३
कल्याण कार्य्यत देखो बिघिन अनेक * हेन देखि भैल मोर क्रोध अतिरेक
सुवर्ण गिरिर श्रृंग उच्छित प्रधान * ताते लागि लाञ्ज बारि बैसाइलोहो टान ७४
अगनि बजाइल गिरिश्रृंगे निरन्तर * चूर्णीकृत भैल भागि पब्बंत शिखर
पाचे चिनि मैनाकर समे भैलो मित्र * अनेक पुरणि कथा कहिलो विचित्र ७५
बृद्धाङ्गुष्ठे परशिलो आदरित करि * दुनाइ लरि भैलो पवनर बेग धरि
कतो दूर यान्ते देखो बेग थिर भैल * कलेवर गोट मोर तम्भि आति रैल ७६
चतुर्दिशे चाहिलोहो ऊर्द्धर प्रवेश * किछु तात नेदेखिलो बिधिनिर लेश
हेटमाथ करि मइ सागरक चाइलो * छायाग्रासी गिलि नेइ गावे आण्टा पाइलो ७७
मोक देखि पाचे ताइर बर रङ्ग भैल * जल हन्ते उठिया राक्षसी माया कैल
तोक देखि आजि मइ भैलो बर तुष्ट * चिरकाले आधार मिलिल हृष्ट पुष्ट ७८
एहि बुलि आशारिका गगने उधाइल * पाताल सदृश करि वेन्त गोट बाइल
पब्बंत समान जिह्वा बदने लरय * त्रिशूल सदृश दान्त देखि लागे भय ७९
गर्भत पशिलो अल्प करि कलेवर * शरीर बढ़ाइलो येन पब्बंत मन्दर
स्वर्गत करन्त हाहाकार देवराज * पेट गोट विदारि तेखने भैलो बाज ४५८०
प्रलयत येन मेरु पब्बंत टलिल * कतो दूर जल जुरि राक्षसी परिल
आकाशत देवलोके कौतुक करन्त * जगतर बैरक मारिल हनुमन्त ४५८१

आकाश में खड़ा हो बोला, देवी, आप ठहरिये। माता, मुझे वर देकर आप स्वर्ग में जाइये, इसके पश्चात् महावेग से पवन से भी आगे चल पड़ा। देखा, तो मेरा मार्ग रोककर (मैनाक) पर्वत खडा है ।। ७३ ।। देखता हूँ, कल्याण-कार्य में अनेक विघ्न है, यह सोचकर मुझे अत्यधिक क्रोध हुआ। सुवर्ण गिरि का शिखर प्रधान रूप से उभरा हुआ था, वहाँ मैंने उसे पूँछ से जोर से मारा ।। ७४ ।। उससे उस गिरि शिखर पर से अग्नि स्फुलिंग निकलने लगे, पर्वत-शिखर टूटकर चूर-चूर हो गया। इसके पश्चात् मैनाक से परिचित होकर उससे मित्रता कर ली। और उससे अनेक पुरानी विचित्र कथाओं की चर्चा की ।। ७५ ।। आदर करते हुए मैंने उसे अँगूठे से स्पर्श किया और पवनवेग से पुनः वहाँ से चल पड़ा। कुछ दूर जाने पर देखा कि मेरा वेग रुक गया है। मेरा शरीर स्तभित होकर रुक गया ।। ७६ ।। मैंने चारों ओर, ऊपर की ओर देखा परन्तु वहाँ विघ्न का लेशमात्र दिखाई न पडा। मैंने सिर झुकाकर सागर की ओर देखा, तब मुझे अनुभव हुआ कि छायाग्रासिनी मेरी छाया को निगल रही है ।। ७७ ।। मुझे देखकर उस छायाग्रासिनी को बड़ा आनन्द हुआ। उसने पानी से निकलकर राक्षसी माया फैलायी। उसने कहा—तुझे देखकर आज मैं बड़ी तुष्ट हुई हूँ। बहुत दिन बाद यह हृष्ट-पुष्ट आहार मिला है ।। ७८ ।। यह कह कर राक्षसी आकाश में उड़ आयी और पाताल जैसा अपना मुँह बनाकर फैलाया। उसके मुँह में पर्वत जैसी जीभ हिल रही थी, त्रिशूल जैसे दाँत देखकर डर लगता था ।। ७९ ।। मैं अपने शरीर को छोटा बनाकर उसके गर्भ में प्रवेश कर गया और वहाँ अपने शरीर को मंदराचल जैसा विशाल बना लिया। देवराज इन्द्र स्वर्ग में हाहाकार कर रहे थे, तभी मैं राक्षसी का पेट विदीर्ण कर बाहर निकल आया ।। ४५८० ।। ऐसा लगा मानो प्रलय में मेरु पर्वत चंचल हो उठा हो, वैसे ही राक्षसी समुद्र को कुछ दूर तक व्याप्तकर पड़ गयी। आकाश में देवगण कौतुक करने लगे कि संसार की बैरिन को हनुमान ने मार डाला ।। ८१ ।। मैं सौ योजन समुद्र

शतेक योजन पथ सागर तरिलो * सुवेल गिरिर मइ शिखरे परिलो
शत्रुर मङ्गल यत उद्यान फुरिया * सवे लङ्का फुरिलोहो निसन्धि करिया ८२
पाचे गैया चड़िलोहो पुष्पक रथत * कन्या जन अनेक देखिलो सियानत
कतो दूरे देखिलो रावण आछे शुया * जगतर मोहिनी एक कन्या जन लैया ८३
ज्ञाति बंशे शुना सवे हृदयर कथा * मइ बोलो सीतार भैल हेनसे अवस्था
हेन देखि आमार उरुमि वर धाइल * मकमकि कान्दिलो दुखतो मात नाइल ८४
अनेक गुणिलो पाचे विमरिष करि * मयदानवर जीउ एइ मन्दोदरी
निश्चय करिया पुष्पकर वाज भैलो * अन्तेपपुर विचारिया खुजिया न पाइलो ८५
अशोका वनत पाचे डेवदिया गैलो * राक्षसी माजत सीता दरशन भैलो
वृक्षगोट आछय शिंशपा तार नाम * गुरि गोट माने तार सुवर्णर काम ८६
राक्षसिनी वर्गे आछे ताते गोष्ठि करि * आछन्त सवार माजे त्रैलोक्य सुन्दरी
निशा गोट वञ्चि मइ शिंशपार तले * अल्पदेहा ह्रस्व हुया वानर छवाले ८७
आछिलो जागर करि निशागोग गैल * प्रभाततेते देखि रावणा आसि भैल
कन्या सहस्रेक आइल तुले अनुसरि * सीताक साधिले पाचे करयोर करि ८८
प्रीति प्रकारे वाणी वोले लङ्केश्वर * अनेक मिनति भाव करिला विस्तार
बुलिला निष्ठुर सीता गुच नष्ट पाप * दूर हुओ मन्द नुहि देओँ चण्ड शाप ८९
नैराश वचन येवे शुनिल सीतार * मारिबार याइ पाचे सिटो दुराचार
आग वाढ़ि मन्दोदरी प्रीत प्रकारे * चण्डकोपे वाहु राइल रावण राजारे ४५९०
राक्षसी वर्गक राजा करिल आदेश * कन्यागण समे भैला लङ्कात प्रवेश
रात्रिगोट उरुवाइ परि निद्रा गैल * पाचे देवी समे मोर परिचय भैल ४५९१

पारकर सुवेल गिरि के शिखर पर जा पहुँचा। शत्रुओं के जितने मंगल-उद्यान थे उनमें घूमा, सारी लंका को छान मारते हुए घूमा ॥ ८२ ॥ इसके पश्चात् जाकर पुष्पक रथ पर चढ़ गया। वहाँ अनेक कन्याओं को देखा। कुछ दूर देखा कि एक जगन्मोहिनी कन्या को लिये हुए रावण सोया हुआ है ॥ ८३ ॥ हे मेरी अपनी जाति के वन्धुओ, मेरे अन्तर में जो वात आयी, सुनो। मैंने सोचा, सीता जी की आज ऐसी अवस्था है ! वह देखकर मेरे मन में वड़ी वेदना उमड़ आयी। मैं फूट-फूटकर रोने लगा। दुख के मारे मेरी बोली नहीं निकली ॥ ८४ ॥ अन्त में अनेक विचार कर मन में सोचा, यह तो मयदानव की कन्या मन्दोदरी है। ऐसा निश्चय कर मैं पुष्पक से निकल आया, अन्तःपुर में खोज-ढूँढ़कर भी सीता जी को नही पाया ॥ ८५ ॥ मैं तव कूदकर अशोक वन में चला गया और राक्षसियों के वीच सीता जी के दर्शन किये। वहाँ शिंशपा (अशोक) नामक एक वृक्ष है उसके तने के नीचे के भाग में सोने का काम किया हुआ है ॥ ८६ ॥ राक्षसियाँ वही झुंडों में है, उनके मध्य त्रैलोक्यसुन्दरी सीता जी है। उसी शिंशपा वृक्ष के नीचे मैंने लघु शरीरवाले वानर शिशु के रूप में रात वितायी ॥ ८७ ॥ रात भर मैंने जागकर वितायी। सवेरे देखा कि रावण आ पहुँचा है। उसके पीछे-पीछे अनुसरण करती हुई सहस्रों कन्याएँ आ पहुँची। हाथ जोड़कर रावण ने सीता जी को मनाया ॥ ८८ ॥ वड़ी प्रीति से लंकेश्वर रावण वचन कहने लगा और वड़ी विनम्रता का भाव दिखाया। पर निर्मम सीता जी ने कहा— अरे दुष्ट पापी, यहाँ से हट जा। अरे मन्द, तू दूर हो जा नहीं तो तुझे प्रचंड अभिशाप दे दूँगी ॥ ८९ ॥ रावण ने जव सीता जी का यह निराश करनेवाला वचन सुना तो वह दुराचारी उन्हें मारने को उद्यत हो गया। तव मन्दोदरी ने आगे वढ़कर प्रीति-पूर्ण वचनों से प्रचंड कोप से भरे राजा रावण को निवृत्त किया ॥ ५४९० ॥ राक्षसियों

अनेक संकेतकथा सीताक कहिलो * रामर आङ्गुठि दिया प्रत्यय जानिलो
हियात धरिया कान्दलन्त बर शोके * गोसानीर शोके पाचे पीड़िलेक मोके ९२
सन्देशक लभिया मेलानि लैलो मागि * दुनाइ लरि भैलो बन भाङ्गिबाक लागि
डाल भाङ्गो फल खाओं उपद्रव करि * रावणर मधुफले लगाइलो दादरि ९३
हेन शुनि मोक पाचे क्रोधिल रावण * साजिया पठाइल असंख्यात सेनागण
देखि सुवर्णर स्तम्भ लैलोहो उपारि * सबे सेना मारिलोहो सेइ स्तम्भ बारि ९४
प्रहस्तर पुत्र पाचे युजिबाक आइल * परिघर कोबे सियो यमघर पाइल
पाञ्च मन्त्रीपुत्र पाचे पठाइल रावणे * ताको मारि पठाइलोहो यमर करणे ९५
तात पाचे खेदि आइल अक्ष ये कुमार * दुर्व्वार रणत ताको करिलो संहार
पुत्र परिबार येवे राजा वार्त्ता पाइल * इन्द्रजित कुमारक युजत पठाइलो ९६
युजक आसिल येवे राजार कुमार * सियो समे युज मइ करिलो विस्तर
नियम युद्धत मोर न पाइलेक सन्धि * ब्रह्मपाश मारि मोक करिलेक बन्दी ९७
बन्ध एराइबाक पारो मन्त्रर प्रवले * दिन भागे लंका देखो बन्धनर छले
त्रिदशर बरत अवध्य तिनि लोके * राक्षस सकले किबा करिबेक मोके ९८
इन्द्रजिते बान्धि निले राजार पाशक * मुण्ड तुलि देखिलोहो दिव्य सभा एक
प्रहस्ते पूछिला मोत बिस्तर बचन * कोनेबा पठाइले तोक आइले किकारण ९९
प्रहस्तर आगे कथा कहिलो बिस्तर * सुग्रीवे पठाइले दूत करिया रामर
सीता खुजि आइलो सागरत भैलोपार * कहिलो सकले यत कार्य्यक आमार ४६००

को राजा आदेश देकर कन्याओं के संग लंका में चला गया। समूची रात बिताकर वह सोता रहा। इसके पश्चात् देवी सीता से मेरा परिचय हुआ ।। ९१ ।। मैंने सीता से अनेक संकेत-कथा कही। रामचन्द्र की अँगूठी देकर उनका विश्वास जगाया। उस अंगूठी को हृदय से लगा सीता जी बड़े शोक से रुदन करती रहीं। देवी के शोक ने मुझे भी पीड़ित कर डाला ।। ९२ ।। मैंने उनका संदेश प्राप्तकर उनसे विदा ली और उपवन को तोड़ने के लिये पुनः उसमें प्रवेश किया। वहाँ उपद्रव मचाते हुए मैं डालियाँ तोड़ता, फल खाता रहा। रावण के मधुफलों में अंकुशी लगा-लगाकर तोड़ने लगा ।। ९३ ।। यह सुनकर मुझ पर रावण बड़ा क्रोधित हुआ और अनगिनत सेना को सज्जित कर भेजा। उन्हें देख मैंने सोने का खंभा उखाड़ लिया, और उसी खंभे से सारी सेना को मार डाला ।। ९४ ।। इसके पश्चात् प्रहस्त का पुत्र लड़ने आया, पर वह भी परिघ की चोट से यमलोक सिधारा। इसके पश्चात् रावण ने पाँच मन्त्री-पुत्रों को भेजा। उन्हें भी मारकर यम-भवन भेज दिया ।। ९५ ।। उसके बाद अक्षकुमार वेग से आया। प्रचंड युद्ध में मैंने उसका भी संहार कर डाला। पुत्र के मरने का समाचार पाकर राजा रावण ने कुमार इन्द्रजित को लड़ने हेतु भेजा ।। ९६ ।। जब राजकुमार इन्द्रजित युद्ध करने आया तो उसके साथ भी मैंने बड़ा युद्ध किया। नियम-पूर्वक युद्ध में जब वह मुझे पराभूत न कर सका तो उसने ब्रह्मपाश मारकर मुझे बन्दी कर लिया ।। ९७ ।। प्रवलतर मन्त्र के द्वारा यद्यपि मैं बन्धन से मुक्त हो सकता था तथापि उसी बहाने लंका को देखने की मेरी इच्छा हुई। (मैने सोचा) मैं देवताओं के वर से तीनों लोकों में अवध्य हूँ। भला ये राक्षसगण मेरा क्या कर लेंगे ? ।। ९८ ।। इन्द्रजित बन्दी बनाकर मुझे राजा के पास ले गया। मैंने सिर उठाकर एक दिव्य सभा देखी। प्रहस्त ने मुझसे अनेक बातें पूछीं कि तुझे किसने भेजा, तू किस कारण यहाँ आया है ।। ४५९९ ।। मैंने प्रहस्त से अनेक बातें कहीं कि मुझे सुग्रीव ने रामचन्द्र का दूत बनाकर भेजा है। मैं सीता को ढूँढ़ता सागर पारकर आया हूँ। हमारे और भी

राघवर दूत शुनि क्रोधिया रावणे * काटिवाक लागि आदेशिला तेतिक्षणे
तार भाइ बिभीषणे प्राण राखिलन्त * प्रवोध बचने रावणक करि शान्त ४६०१
सकले राक्षसे मिलि एक बुद्धि पाइल * लांगुले कापोर बान्धि अगनि लगाइल
लाङ्जर अगनि लैया नगरी फुरिलो * लंकाक पोरन्ते वर चोटे भागरिलो २
नगरीर अगनित वर पाइलो ताप * सागरर माजक लागि करिलोहो जाप
आकाशर वाणीक शुनिया तेतिक्षणे * मुखे चुष्टिव अगनि नुमाइलो तेतिक्षणे ३
गुचिल अगनि मोर खण्डिल प्रयास * पुनरपि चलिगैलो जानकीर पाश
सीतार चरण धूला मायात करिलो * देवीर प्रसादे सब दुर्गति भरिलो ४
सबाको बुलिला दूते करयोर करि * रामर पाशक चलि यावों शीघ्र करि
यतेक संकेत देवी मोक बुलिलन्त * रामत कहन्ते सबे शुनिवा वृत्तान्त ५
अंगदे बोलन्त ओवा सबे याओं पाचे * एक कार्य्य करो ये सबारे मन आछे
सागरक तरोहो पर्व्वत बरिषणे * आछोक राक्षस कि करिब देवगणे ६
इन्द्रजित शुनु ब्रह्म अस्त्रत सुजान * ताको पाइले समरत करिबो निर्य्याण
विश्वकर्म्मा-सुत महावीर वर नल * सुमुख दुर्म्मुख आरु सुषेण प्रबल ७
बेगदरसि मैन्द्य आरु पनस द्विविद * धूम्रकेतु नप्प्रद्रथ प्रखर कुमुद
सबे महावली सबे युद्धत सम्भृत * बिलम्बत कार्य्य नाहि एहिसे युगुत ८
हनुमन्त तार ये विनोद महाबल * जाम्बवन्त आदि करि गियाति सकल
आनो आनो वीर यत आछा बहुतर * सवे हन्ते साजि पार हयो समुद्रर ९
सबे मिलि गैया आगे समुद्रक तरि * रावणक मारि सीता आनिबाक पारि
पाचे निया योगायोक राम चरणत * हेन कार्य्य करा आगे मोहोर सम्मत ४६१०

जितने कार्य थे मैंने बताये ! ॥ ४६०० ॥ मैं रामचन्द्र का दूत हूँ, सुनकर रावण ने क्रोधित हो मुझे काट डालने का उसी क्षण आदेश दिया। उसके भाई विभीषण ने प्रबोध-वचनों से रावण को शान्तकर मेरी जीवन-रक्षा की ॥ ४६०१ ॥ सभी राक्षसों ने मिलकर एक युक्ति सोची, मेरी पूंछ में कपड़े बांधकर आग लगा दी। मैंने पूंछ की आग के साथ ही नगरी की परिक्रमा की और लका को जलाते हुए बड़े परिश्रम के कारण थक गया ॥ ४६०२ ॥ पुरी की आग से मुझे बड़ा ताप लगा और मैं सागर में कूद पड़ा। उसी क्षण आकाशवाणी सुनकर मुँह से नोचकर आग बुझायी ॥ ४६०३ ॥ आग के बुझ जाने पर मेरी थकावट मिट गयी। मै पुनः जानकी जी के पास चला गया। सीना जी की चरण-धूलि सिर से लगायी और देवी के प्रसाद से सारी दुर्गति मिट गयी ॥ ४६०४ ॥ इसके पश्चात् हनुमान ने सबसे हाथ जोडकर कहा—चलो हम रामचन्द्र के पास अब शीघ्रता से चलें। देवी ने मुझे जो संकेत-वचन कहे है उसका वृत्तान्त रामचन्द्र से सुनाते समय सब लोग सुनियेगा ॥ ४६०५ ॥ अंगद ने कहा—ठीक है, हम सब अब चलें। परन्तु मेरा एक विचार है, यदि सबकी इच्छा हो तो ऐसा करो। पर्वतों की वर्षा कर हम सभी सागर के पार चले जायें, राक्षसों की तो बात ही क्या देवगण भी आयें तो हमारा क्या कर लेंगे ॥ ४६०६ ॥ सुनते हैं कि इन्द्रजित ब्रह्मास्त्र का ज्ञाता है, उसे पाने पर भी हम युद्ध में मार डालेंगे। विश्वकर्मा-सुत महावीर नल, सुमुख, दुर्मुख और प्रवल सुषेण ॥ ४६०७ ॥ वेगवान मैन्द, और पनस, द्विविद, धूम्रकेतु, नप्प्रद्रथ, प्रखर कुमुद सभी महावली है, सभी युद्ध-कुशल हैं। विलम्ब का कार्य नहीं है यही करना उचित है ॥ ४६०८ ॥ और हनुमान, वे तो अनायास ही महावली हैं, जाम्बवन्त आदि आत्मीय जन तथा और भी जो अनेक वीर है, सभी सज्जित होकर चलिये समुद्र के पार हो आयें ॥ ४६०९ ॥ सब मिल समुद्र पारकर

जाम्बये बोलन्त बचनक शुनाहित * आदेश करिला रामे सीताक खुजित
आज्ञा न करिला प्रभु जिनि आनिबाक * आमि जिनि आनि दिले न लैबा सीताक ११
रामर शान्तीक हरि निले यिटो जने * रणे जिनि ताक मारि आनन्तो आपोने
हठात् कार करि कहो भालक न पाइब * घाव छारि आयुधिये वेग्त याइब १२
सीता देखि आसिल उत्तम भैल काज * गाव तुलियोक चलो गियालि समाज
सबे गैया जनायोक राम चरणत * एहि कार्य्य भाल देखो मोहोर सम्मत १३
युगुत बचन शुनि सबहि सादरि * तेखने लरिल मारुतिक आग करि
मत्त गज सम सबे प्रबल बानर * रामर पाशक लरि भैल निरन्तर १४
गगनमण्डले येन मेरुर शिखर * जानकीर बार्त्ता पाया मुदित बानर
राघवर पाशक निसन्धि करि याय * खल-खल करि हासे कतो गीत गाय १५
धितिगालि करि पथ अनेक एराइल * प्रयासिल कपिगण मधुबन पाइल
जिराइबाक लागि सबे बहे धरणीत * सुग्रीवर मधुबन देखिलो त्वरित १६
मधुबन देखि जिह्वा करे लट पट * गह नाहि काहोरो जनाइते अंगदत

कपि सैन्यर मधुफल भक्षण आरु दधिमुखर लगत युद्ध

जाम्बवन्त कुमुद सुषेण आदि करि * सबारे जिह्वार पानी परे सरसरि १७
सबे हन्ते मिलि हनुमन्तत सुधिल * बायुसुते सबारो बचन न बाधिल
अंगद कुमार बापु बर यश पाओं * मधु दिया गियातिक तृपिति कराओं १८

रावण का वध कर सीता को ला सकते हैं। मेरे विचार से पहले यही काम करना उचित है। इसके पश्चात् राम के चरणों में उपस्थित होंगे ॥ ४६१० ॥ तब जाम्बवन्त ने कहा—मेरे हितकारक वचन सुनो। राम ने सीता को खोजने का आदेश दिया है। प्रभु ने उन्हें जीतकर ले जाने का आदेश नहीं दिया है। हम यदि जीत कर सीता को ले जायें तो वे ग्रहण नहीं करेंगे ॥ ४६११ ॥ रामचन्द्र की सती पत्नी को जो हरण कर ले गया है, उसे वे स्वयं वध कर ले आयेंगे। हम बलात् कुछ करना चाहें तो वे उसे पसन्द नहीं करेंगे, घाव चंगा होने के बजाय औषधि ही घातक बन जायेगी ॥ १२ ॥ सीता को देख आये, यही उत्तम कार्य हुआ। हे बन्धुओ, उठो, अब हम चलें। सब जाकर रामचन्द्र के चरणों में निवेदन करें। मेरे विचार से यही कार्य उत्तम होगा ॥ १३ ॥ जाम्बवन्त के उचित वचन सुनकर उसका आदर कर हनुमान को आगे कर वेग से चल पड़े। मतवाले हाथियों की भाँति सभी प्रबल वानर राम के पास निरन्तर दौड़ते हुए चले ॥ १४ ॥ जानकी का समाचार पाकर मुदित बानरगण आकाश में मेरु पर्वत जैसे विशाल, प्रचड हो चले, वे बड़े वेग और उल्लास से खल-खल हँसते गीत गाते राघव के पास चले; ॥ १५ ॥ हँसते-खेलते अनेक पथ पार चले आये। थके हुए सभी वानर मधुवन में पहुँचे। सभी विश्राम करने के लिए धरती पर बैठ गये। उन्हे शीघ्र ही सुग्रीव का मधुवन दिखाई पड़ा ॥ १६ ॥ मधुवन को देखते ही वानरों की जीभ ललचाने लगी परन्तु मधुवन (के फल खाने की अभिलाषा) को अंगद से कहने का साहस किसी में न था।

बानर-सेना का मधुफल खाना और दधिमुख के संग युद्ध

जाम्ववन्त, कुमुद, सुषेण आदि से लेकर सबकी जीभ से झरझर लार टपकने लगी ॥ ४६१७ ॥ सबने मिलकर हनुमान से पूछा, पवनसुत ने सबके वचन को ठुकराया नहीं। उन्होंने अंगद से कहा—वत्स अंगद, यदि मधु देकर आत्मीय स्वजनों को तृप्त

ताहान वचन वालि पुत्रे न वाधिल * सकले ज्ञातिक मधुवने मेलि दिल
याहाक यतेक लागे स्वेच्छा रूपे खाहा * उदर भराया सवे तृपितिक पाहा १९
आज्ञापाया कपिगणे वृक्षे गैया चड़ि * उत्तम मधुर वने लगाइल दादरि
दोनर समान यत मधुवास पावे * मुख मेलि धरि निया वानरे चोबावे ४६२०
केहो डेव दिया आडर वृक्षत चड़िया * आङ्गो वाले शाल बांश मुखत धरिया
विस्तारित करिया मुखत चिपि निया * परम सन्तोष पाइल मुखे मधु दिया ४६२१
मधु खाया खाया बोले नाण्टिल नाण्टिल * गण्डगोल करि सबे मधुबन पिल
आउल भैल कपि ढलो पलो करे गाव * फुरणि देखिया परे थिर नुहि पाव २२
कतो कतो निद्रा गैल फलक विछाइ * भूमित परिल केहो हामु कुरि खाइ
थुथु करे केहो केहो करे वान्ति * मधुवे पीड़िले कतो अचेतन आति २३
वन रक्षा वानर सकले वार्त्ता पाइल * हाते वृक्ष करि मार मार करि धाइल
दुइ भितिर लोके सवे कोवाकुबि करे * कतो धरा धरि करि माटित बागरे २४
अंगदर लोके रक्षालोकक भंगाइल * सवे गैया पाचे दधिमुखत जनाइल
राजार मातुल सवाहारे गुरुजन * अनेक वानर समे राखे मधुबन २५
वार्त्ता शुनि शाल वृक्ष लैलन्त उपारि * सेनार माजत पशि कोवावन्त बारि
दुइभिति सेनार कोवा कुवि आशरिष * धूला अन्धकारे नाकलिथ दशोदिश २६
मुण्डे मुण्डे हाने नख नखे वक्षस्थले * चवरे चापरे असंख्यात चोट घाले
दुइ दुइक धरि एक पिण्ड होवे जरि * छन्दे वन्धे युद्ध करे धरणीत परि २७

कर सकें तो वड़ा यश मिले ॥ १८ ॥ वालिपुत्र अंगद ने उनके वचन को नहीं ठुकराया और सभी स्वजनों को मधुवन में प्रवेश कर जाने दिया। कहा—जिसे जितना चाहिए इच्छानुसार खा लो, पेट भरकर सभी तृप्ति पाओ ॥ ४६१९ ॥ उनकी आज्ञा पाकर वानरगण ने वृक्षों पर चढ़, उत्तम मधुफलवाले वन में हलचल मचा दिया। दोने के समान जहाँ भी उन्हें मधु की गन्ध मिलती मुख फैलाकर सभी वानर उसे मुँह खोलकर पकड़ चवाते थे ॥ ४६२० ॥ कोई कूदकर किसी दूसरे वृक्ष पर चढ़ जाता था और शाल, बाँस आदि को मुँह से पकड़ लेता था। मुँह फैलाकर मधु निचोड़ उसमें डाल ले परम सन्तोष प्राप्त करता था ॥ २१ ॥ मधु खा-खाकर, नही मिला, नहीं मिला, कहता था, इस प्रकार हलचल, शोरगुल मचाते हुए सवने मधुफल का मधु पी डाला। सभी वानर मतवाले हो उठे, उनके शरीर-ढलमल हो उठे। परस्पर देखकर मचल उठते थे, पैर स्थिर नहीं रहते थे ॥ २२ ॥ कितने ही वानर पत्ते विछाकर सो जाते थे। कोई पेट के वल जमीन पर लोटते थे, कोई मुँह खोलकर थू-थू करता था तो कोई मधुमक्खियों के काटने के कारण अचेत-सा पड़ा था ॥ २३ ॥ वन की रक्षा करनेवाले वानर यह समाचार पाकर हाथ में वृक्ष लिये 'मार मार' कहते हुए दौड़ आये। दोनों ओर के वानर एक दूसरे को मारने लगे। कितने ही लोग एक दूसरे को पकड़कर जमीन पर लेट जाते थे ॥ २४ ॥ अंगद के सायवाले वानरों को मार भगाया। उन सवने जाकर दधिमुख से समाचार वताया। दधिमुख राजा सुग्रीव का मामा और सवका गुरुजन था। वह अनेक वानरों के संग मधुवन की रक्षा किया करता था ॥ २५ ॥ उसने वार्ता सुनकर शालवृक्ष उखाड़ लिया और सेना के वीच घुसकर मारने लगा। दोनों ओर की सेनाओं में भयंकर मार-पीट मच गयी। उससे उठी धूल के अन्धकार से दसों दिशाएँ नही दिखाई देती थी ॥ २६ ॥ एक का सिर पकड़कर दूसरे के सिर से मारते थे। नाखूनों से एक दूसरे का वक्षस्थल नोचते थे। चपतों, थप्पड़ों से अनगिनत चोटें करते थे। एक-दूसरे को पकड़कर एक पिंड जैसे हो जाते थे, धरती

कतो कतो कपि गैया बृक्षत चरिया * उपहास्य करे दधिमुखक चाहिया
राजार मातुल तोक भालमते जानि * सिञ्चबय गावे मुखे धूला माटि आनि २८
केहो केहो बोलय आपुनि बर लोक * समयर बेला तुमि निचिनाहा मोक
केहो बोले तुमि ओबा किसर पातर * मिछा युद्ध करि लाज होवास मातर २९
राजार मातुल तुमि देखि लागे डर * एहि बुलि हात फेरि दरशे पोकर
राजार मातुल बृद्ध बर पाइला दुख * एहि बुलि आपोनार हाते घसे मुख ४६३०
जाम्बवन्त प्रमुख्ये गबाक्ष नल गय * समुखे युजन्त मुख्य मुख्य बीरचय
अंगदे धरिया दधिमुखक आफालि * दुइ हाते अनेक चवर चोट घालि ४६३१
भूमित पेलाइ ताक ओपरक बसि * इभिति सिभिति करि दुयो गाल घसि
बालीपुत्रे मारिला हातर बर सुखे * राजार आगत गैल भिण्डाकार मुखे ३२
आछन्त सुग्रीव राम लक्ष्मणे सहित * दधिमुख ससैन्ये गै मिलिल तहित
नृपतिर बचनक शिरोगत करि * भूमित परिल लोह परे सरसरि ३३
मुखत नाहिके भास उर्म्मि बर धाइल * राजार इंगित भावे गोचर जनाइल
सुग्रीवे बोलन्त ओबा ममा दधिमुख * आमार मातुल तुमि कोने दिले दुख ३४
मधुबन किबा भैल कहियोक कथा * तोमार किमते भैल इमत अवस्था
दधिमुखे बोले बापु सबे बार्त्ता भाल * तोमार मातुल मोर चाहियोक गाल ३५
तोमार अंगद बीर कोथा हन्ते आइल * ससैन्ये आसिया मोर बनखान खाइल
शुनिया ससैन्ये गैया देखिलोहो ताक * प्रणति बुलिलो मुग्ध नुशुनिले बाक ३६

पर गिरकर अनेक कौशलों से युद्ध करते थे ।। २७ ।। कितने ही वानर वृक्ष पर चढ़कर दधिमुख की ओर देखते हुए उपहास करते थे कि तू राजा मामा है, तुझे हम भली भाँति जानते हैं । उसके मुँह में धूल और मिट्टी लाकर पोत देते थे ।। २८ ।। कोई-कोई कहते थे—आप बड़े आदमी ठहरे, जो समय पर मुझे पहचानते ही नही । कोई कहता था, अरे तुम कैसे योग्य पात्र हो, मिथ्या युद्ध का भाव दिखाकर मात्र लज्जित हो रहे हो ।। ४६२९ ।। राजा के मामा, तुम्हें तो देखकर डर लगता है । यह कहकर हाथ घुमाकर उसे चिढा देता था । राजा के बूढ़े मामा, आपको बड़ा कष्ट हुआ, कहकर कोई हाथ से अपना मुँह घिस लेता था ।। ४६३० ।। जाम्बवन्त सहित गवाक्ष, नल, गय आदि मुख्य वीरगण सम्मुख में युद्ध कर रहे थे । अंगद ने दधिमुख को पकड़कर दोनों हाथों अनेक थप्पड़ों से मारा ।। ३१ ।। भूमि पर पटककर उसके ऊपर चढ़ बैठा और उलट-पलटकर दोनों गाल घिसने लगा । वाली-पुत्र ने हाथों से बड़े ही आनन्द से उसे मारा, तब दधिमुख अपना वीभत्स रूप लिये हुए राजा के पास पहुँचा ।। ३२ ।। वहाँ सुग्रीव राम-लक्ष्मण के संग था, वही दधिमुख सेना सहित जा पहुँचा । राजा के वचनो को शिरोधार्य करते हुए वह भूमि पर पड़ गया । उसकी आँखों से दर-दर आँसुओं की धारा बहने लगी ।। ३३ ।। दुख के मारे उसके मुँह से वचन नहीं निकल रहा था, संकेतों से उसने राजा के सम्मुख अपना अभियोग प्रस्तुत किया । सुग्रीव बोला—अरे दधिमुख मामा, तुम मेरे मामा हो यह जानकर भी किसने ऐसा दुख दिया है ? ।। ३४ ।। मधुवन का क्या हुआ । तुम्हारी ऐसी अवस्था कैसे हो गयी ? मुझे सारी कथा सुनाओ । दधिमुख बोला—वत्स सुग्रीव, सारी वार्ता अच्छी है, तुम अपने मामा के गाल देखो ।। ३५ ।। तुम्हारा वह वीर अंगद न जाने कहाँ से आया और सेना सहित घुसकर मेरे वन को नष्ट कर डाला । मैं समाचार पाकर वहाँ सेना लेकर पहुँचा, उसे देखकर विनती की, परन्तु उस मूढ़ ने कोई बात नहीं सुनी । वह बात नहीं मानता, देख मैं भी क्रोध से भरकर दौड़ पड़ा और पहले जाकर

वचन नुशुने देखि भयो खंगे धाइलो * प्रथमते गैया सबे बानर भंगाइलो
आग बाढ़ि अंगदे आमाक धरि निल * भूमित पेलाया मोक हियात बसिल ३७
चवरर चोटे मोर गाल भाङ्गिलन्त * हेरा चाहियोक गोटे गोटे सरे दान्त
तुमि विद्यमाने मोर मिलय अकाज * अबिवेक भैलेक किष्किन्ध्या महाराज ३८
अनीति वाढ़िल सबे हैब रण्ड-भण्ड * मधुबन नष्ट भैल करियोक दण्ड
दूर हन्ते देखिया सोधन्त लखमण * तोमार पाशत इटो कॅर कपिगण ३९
आसिल कोथेर परा कि कथा कहय * हेटमाथ करि देखो लोहो मलचय
सुग्रीव बोलन्त देखा विधि अनुकल * दधिमुख नाम एन्त आमार मातुल ४६४०
कथा कन्त अङ्गद दक्षिण हन्ते आइल * सेनागण लैया मोर मधुफल खाइल
वार्त्ता भाल जानकीर इङ्गिते जानिल * दोषनाइ किछु मोर मधुबन पिल ४६४१
हास्य करि बोलन्त आमार होवा माउल * सब कथा एरि मोषलित भैल आउल
उससा देखिया गाल तुलिलन्त हासि * सबे सवाहाके चान्त बदन प्रकाशि ४२
हासन्त लक्ष्मण राम मुचुकु मुचुक * सलज्जिते दधिमुख भैलन्त निचुक
सुग्रीवे बोलन्त ममा न करिबा रोष * आमाक दियोक सबे अङ्गदर दोष ४३
दधिमुख मातुल सत्वर करि याहा * सब सैन्ये अङ्गदक शीघ्रे पठावाहा
बिलम्ब न करि तुमि लवरि जायोक * रामर आदेश अङ्गदक जनायोक ४४
नृपतिर वचनक शिरोगत करि * दधिमुख लरि गैल आस्त बेस्त करि
अङ्गदर आगे जुरिलेक जोर हात * युवराज कथा शुना कहओं तोमात ४५
सुग्रीव येहेन मोर तुमियो तेनय * ताहान्तो अधिक आवे तोमा केसे भय
यत कण्टकिलो माने किछुवे न भैल * मोहोर बचन येन तुला उरि गैल ४६

सारे वानरों को खदेड़ दिया। तब अंगद ने आगे बढ़कर मुझे पकड़ लिया, मुझे भूमि पर गिराकर छाती पर चढ़ बैठा ॥ ३७ ॥ थप्पड़ों की मार से मेरे गालों को तोड़ डाला, यह देखो मेरे दाँत एक-एक कर टूट रहे है। तुम्हारे रहते हुए मुझे इस तरह अत्याचार सहना पड़ा, हे किष्किन्ध्या के महाराज, यह तो बड़ा अविवेक का कार्य हुआ ॥ ३८ ॥ अनीति बढ़ गयी है, अब सब नष्ट-भ्रष्ट हो जायेगा। मधुबन नष्ट हो गया, तुम इसका दंड दो। दूर से देखकर लक्ष्मण ने पूछा, तुम्हारे पास ये वानर कहाँ के हैं ? ॥ ३९ ॥ ये कहाँ से आये हैं ? क्या कहते हैं ? देखता हूँ, सिर झुकाये ये आँसू भी पोंछ रहे हैं। सुग्रीव बोला, देखता हूँ, विधाता अनुकूल है। ये दधिमुख नाम के मेरे मामा हैं ॥ ४६४० ॥ ये कहते हैं कि अंगद दक्षिण से आ पहुँचा और सेना के साथ मेरे मधुफल खा डाले। संकेत से पता चलता है कि जानकी की वार्ता अच्छी है। मेरे मधुवन का मधु और फल खा डाले, इससे कोई दोष नहीं हुआ है ॥ ४६४१ ॥ सुग्रीव ने हँसकर कहा—तुम मेरे मामा हो, सारी बातें छोड़ दो, उसके मस्तिष्क में कुछ गड़बड़ी हुई है। उसके सूजे हुए गाल देखकर सब एक दूसरे की ओर देखते हुए हँसने लगे ॥४२॥ राम-लक्ष्मण मुस्कुराते थे, दधिमुख लज्जित होकर चुप हो गया। सुग्रीव बोला—मामा, तुम रोष न करो, अंगद का जो दोष हो सब हमारा है ॥ ४३ ॥ दधिमुख मामा, तुम शीघ्र चले जाओ, सारी सेना सहित अंगद को तुरंत भेज दो। विलम्ब किये विना तुम शीघ्र दौड़कर जाओ और राम का आदेश अंगद को सूचित कर दो ॥ ४४ ॥ राजा के वचन को शिरोधार्य कर दधिमुख वेतहाशा दौड़ गया। उसने अंगद से हाथ जोड़कर कहा—युवराज, मैं तुमसे यह बात कहता हूँ, सुनो ॥ ४५ ॥ मेरे लिए सुग्रीव जैसा है, तुम भी वैसे ही हो। सुग्रीव से अधिक अब मैं तुम से ही डरता हूँ। मैने राजा से कितना ही कहा, पर कोई फल नहीं हुआ,

श्रीराम लक्ष्मण तथा आछन्त दोभाइ * अनेक हासिला सबे मोर मुख चाइ
रामर आदेश भैल तोमाक याइबाक * शीघ्रे चलि जाइयो बाप खानिको न थाक ४७
दधिमुख बचनक अङ्गदे शुनिल * बालीपुत्रे ताङ्क पाचे आश्वास करिल

अङ्गद आदिर श्रीरामर समीप लै गमन, हनुमन्तर सीतार वृत्तान्त कथन

अङ्गदे बोलन्त ओवा शुना ज्ञाति लोक * याइबाक आदेश भैल शीघ्रे याइयोक ४८
अङ्गदर शुनि सबे युगुत बचन * हरिषक पाइलन्त सकले कपि गण
अङ्गद कुमार बापु यश बर पाइले * उभय कुलर बापु तृपिति अताइले ४९
राजार आदेश सबे शिरोगत करि * गिरिसाइ लरिल हनुक आग करि
मत्तगज सम सबे प्रमत्त बानरे * प्रस्रवण नाम गिरि पाइल अनन्तरे ४६५०
मारुतिक आग करि बरबर बीरे * रामर चरण प्रणामिल जानु शिरे
पाचे प्रणामिला लक्ष्मणर दुइ पावे * सुग्रीवक प्रणामिला आदरित भावे ४६५१
अनेक दूरक जुरि बसिल बानर * प्रस्रवण गिरिक जुरिला निरन्तर
राघवे बोलन्त ओवा शुना कपिगण * कोनबा देखिला सीता कहियो एखन ५२
कहित आछन्त सीता बञ्चन्त किमते * केन बा भोजन मोत कहियो समस्ते
कृताञ्जलि करि सबे जुरिलन्त हात * आदेश गोसाइ कथा कहिबो तोमात ५३
सबे मिलि मारुतिक आग करि दिल * राघवत हनुमन्ते समस्ते कहिल
अन्तेषपुरते सीता आछन्त यिमते * येन दुखे आछे देवी स्वामीत भकते ५४

मेरी बातें रुई की भाँति उड गयीं ।। ४६ ।। वहाँ राम-लक्ष्मण दोनों भाई थे, वे सभी मेरे चेहरे की ओर देखते हुए बहुत हँसे थे। तुम्हें वहाँ पहुँचने के लिए राम का आदेश हुआ है। मेरे बेटे, विलम्ब किये बिना तुम शीघ्र ही वहाँ चले जाओ ।। ४७ ।। बालीपुत्र अंगद ने दधिमुख का वचन सुनने के पश्चात् उसे आश्वस्त किया।

अंगद आदि का श्रीराम के समीप जाना, हनुमान का सीता का वृत्तान्त सुनाना

अंगद बोला—सुनो भाइयो, वहाँ पहुँचने का आदेश हुआ है। चलो शीघ्र ही चलें ।। ४८ ।। अंगद के युक्ति-युक्त वचन सुनकर सभी बानरों को बड़ा ही आनन्द हुआ। सब कहने लगे, कुमार अंगद, तुमने बड़ा यश अर्जित किया, तुमने दोनों ही कुलों को तृप्त कर दिया ।। ४९ ।। राजा का आदेश शिरोधार्य कर सभी हनुमान को आगे कर कोलाहल करते हुए वेग से चल पड़े। इसके पश्चात् सभी प्रमत्त बानर मतवाले गजराज के समान चलते हुए प्रस्रवण नाम के पर्वत पर पहुँचे ।। ४६५० ।। मारुति को आगे कर बड़े-बड़े वीरों ने जाकर राम के चरणों में घुटने टेककर प्रणाम किया। इसके पश्चात् सबने लक्ष्मण के चरणों में प्रणाम कर बड़े ही आदर भाव से सुग्रीव को प्रणाम किया ।। ४६५१ ।। सभी वानर दूर तक फैलकर बैठ गये। उन लोगों ने प्रश्रवण पर्वत को पूरा व्याप्त कर लिया। रामचन्द्र ने पूछा, हे कपियो, सीता को तुम लोगों ने कैसे देखा, अभी बताओ ।। ५२ ।। सीता कहाँ है, वह किस प्रकार से रह रही है, उसका भोजन कैसा है, सब कुछ मुझसे बताओ। सब वानरों ने अंजलि बाँधकर हाथ जोड़, कहा—हे प्रभु, आपने जो आदेश किया है वह सारी बातें बतायेंगे ।। ५३ ।। सबने मिलकर मारुति को आगे बढ़ा दिया। हनुमान ने रामचन्द्र से, सीता लंका में जिस तरह से रह रही है, स्वामी की भक्ति में लीन रहकर देवी जैसा

आछन्त गोसानी देवी शान्ति पुण्य राखि * चन्द्र सूर्य्य आदि देव जाने नव साखी
सीतार मुखत येन येन शुनिलन्त * तेनय स्वरूपे राघवत कहिलन्त ५५
शुनियो गोसाइ सादरे मन दिया * महेन्द्र पर्व्वत हन्ते डेवक करिया
सागर तरन्ते येन मिलिल बिघिनि * सुरेसा मैनाक आषारिका समे तिनि ५६
सवाको एराया आमि सुबेले चारिलो * निसन्धि करिया लङ्का नगरी फुरिलो
तयु चरणर गोसाइ अनुग्रह लेशे * एराया आसिलो उपाय उपदेशे ५७
लैयोक गोसाइ हेरा चिनिया आपुनि * होवे वा नुहिके एहि गोसानीर मणि
एहि बुलि रामर हातत निया दिला * टान करि रघुनाथे क्रन्दन करिला ५८
शुनियोक तुमि सबे मणिर व्यवस्था * उपजिला येनमते शुनो कहो कथा
पवित्र जलत उपजिला मणिरत्न * इन्द्रदेवे पाइलन्त करिया बर यत्न ५९
यैसानि इन्द्रर असुरर घोर रण * असुरे जिनिले हारिलेक देव गण
त्रिदश देवताये बापक मोर निल * देवक राखिया गैया दैत्यक जिनिल ४६६०
देवलोके बापक एहिटो मणि दिल * पृथिवीक लागि पाचे मणिक आनिल
मणिरत्न पाया बर आनन्द मिलिलि * प्रथम बहारि बुलि जानकीक दिल ४६६१
एहि मणि देखि मोर आनन्द मिलिल * बापक देखिला येन सीताक देखिल
हृदयत मणि लैया सादर करन्त * देखा वायुपुत्र बुलि प्राण सङ्कलन्त ६२
आजिसे मरिलो शोके हृदय न धरे * तपत खोलात दिले येन मत्स्य मरे
मणिक देखिया आगे हरिष मिलिल * सीताक सुमरि आवे अगनि ज्वलित ६३
हनुमन्त मोहोक पिठित करि लोवा * सीतार पाशत निया एतिक्षणे थोवा
चन्द्रबदनी देखो चक्षु मोर भरि * आलिङ्गिया थाकोहो लाजक परिहरि ६४

दुख उठा रही है, ये सारी बातें बतायी ॥ ५४ ॥ उन्होंने कहा—देवी सीता जी पवित्र सतीत्व की रक्षा करते हुए लंका में रह रही हैं। यह बात चन्द्र, सूर्य आदि देवता जानते हैं, नवग्रह इसके साक्षी है। हनुमान ने सीता के मुँह से जो जो सुना था, रामचन्द्र जी से सब कुछ ज्यों का त्यों कह सुनाया ॥ ५५ ॥ हे प्रभु, आप ध्यान से सादर सुनिये। मैं महेन्द्र पर्वत से कूदकर जब सागर पार कर रहा था तो सुरसा, मैनाक, आषारिका जैसे तीन विघ्न आ खड़े हुए ॥ ५६ ॥ सबको पारकर मैं सुबेल पर्वत पर जा चढ़ा और लंका में भली भाँति देखते हुए घूमा। हे प्रभु, आपके चरणों के अनुग्रह के लेश-मात्र से सारे विघ्नों को पारकर आया ॥ ५७ ॥ हे प्रभु, आप स्वयं इसे लेकर पहचान लीजिये कि यह देवी सीता जी की मणि है या नहीं। यह कहकर उन्होने रामचन्द्र के हाथ मणि दे दी। उसे जोर से दबाकर रामचन्द्र रो पड़े ॥ ५८ ॥ उन्होंने कहा—इस मणि की उत्पत्ति कैसे हुई, यह कैसे प्राप्त हुई, तुम सब लोग सुनो, मैं कथा सुनाता हूँ। इस मणि-रत्न की उत्पत्ति पवित्र जल में हुई। इन्द्रदेव ने इसे बड़ा प्रयत्न कर प्राप्त किया ॥ ५९ ॥ जब इन्द्र के साथ असुरों का घोर युद्ध हुआ तो उस युद्ध में असुर विजयी हुए, देवगण पराभूत हुए। तब देवतागण मेरे पिता को ले गये। पिता दशरथ ने देवों की रक्षा करते हुए दैत्यों को जीता ॥ ४६६० ॥ देवताओं ने पिता जी को यह मणि दी; वे इस मणि को धरती पर ले आये। उन्हें यह मणिरत्न पाकर बडा आनन्द हुआ था। पहली बहू जानकर उन्होंने यह सीता को दी ॥ ४६६१ ॥ यह मणि देखकर मुझे आनन्द आया, ऐसा लग रहा है कि मैंने पिता जी को और सीता को देख लिया। उन्होंने मणि लेकर हृदय से आदर किया। 'देखो वायु-पुत्र' कहकर प्राण तड़पने लगे ॥ ६२ ॥ आज शोक मेरे अन्तर में समा नहीं पा रहा है, मैं शोक से मर रहा हूँ। जैसे तप्त वर्तन में डालने पर मछली मर जाती है। पहले तो मणि

हनुमन्त बाप तइ मोर बोल शुन * सुजिवाक नोवारो तोहोर यतगुण
समुद्रक तरिया सीताक देखि आइले * रावणर हृदयत खलक लगाइले ६५
प्रथमत कथा बाप करिलाहा यत * भालमते नुशुनिलो शोकर बेगत
आरकायो प्रति प्रति कहि एरा मोक * सीतार कथात मोर चित्त थिर होक ६६
रामर आदेश पालि महावीर कपि * बिस्तारित करिया कहिल पुनरपि
सीतादेवी यि यि वाणी बुलि पठाइलन्त * रामर आगत कपि सबे कहिलन्त ६७
प्रभुर आगत बापु कहिबि सकले * येन दुख आछो बृक्ष शिशपार तले
राक्षसिनी लोके मोक पराभव करे * आमाक दण्डिव एहि मासेक अन्तरे ६८
एकैक दिनर दुख सहन नायाय * तथापितो थाकिबो मासेक बाट चाइ
नासन्ते ये येवे तथापितो निज स्वामी * आत्माघात करि तेवे मरिबोहो आमि ६९
मारुतिर मुखे हेन शुनिलन्त वाणी * अनेक कान्दिल रामे हिये मुठि हानि
बनगाछ लरन्ते एतेक डरे मरे * राक्षसीर माजत केमने प्राण धरे ४६७०
राक्षसिनी सकले सीताक उरुवाये * आमो प्राण न याइ दारुण शोक घावे
जीवन्ते शुनुहो मइ सीतार निकार * कोन गुण भैल मोर प्राण धरिवार ४६७१
हा हनुमन्त बुलि हात मेलि पाइल * आलिङ्गिया रामे आनि कोलात बैसाइल
इकालत बाप मोर एहिसे सन्देश * तोहोर प्रसाद आन नाहिके विशेष ७२
लङ्कार गड़र कथा कह केन थान * पम्पन कत बा दूर ऊर्द्ध कत मान
कतेक संक्रम आछे किबा भगा बृढ़ * लङ्घिते नोवारे जानो दुर्ग बरगड़ ७३

को देखकर मुझे हर्ष हुआ, परन्तु अब सीता का स्मरण करते हुए यह अग्नि सी जल रही है ।। ६३ ।। हनुमान, तुम मुझे पीठपर चढ़ा लो और अभी सीता के पास ले जाकर रख दो। मैं चन्द्रबदनी सीता को अपनी आँख भरकर देखूँ और लज्जा छोड़कर उसे आलिंगन किये रहूँ ।। ६४ ।। वत्स हनुमान, मेरी बात सुनो, तुम्हारे जितने उपकार हैं उनका मैं बदला चुका नही सकूँगा। तुम सीता को देख आये, रावण के हृदय में खलबली मचा दी ।। ६५ ।। पहले तुमने जो बाते कहीं, उन्हें मै शोक के वेग के कारण भली-भाँति सुन नही पाया। पुन: सब कुछ मुझे सुनाओ, जिससे सीता की बात सुनकर मेरा चित्त स्थिर होवे ।। ६६ ।। राम का आदेश मानते हुए महावीर हनुमान ने पुन: सब कुछ विस्तार से कह सुनाया। सीता देवी ने जो जो वचन कह भेजे थे, उन सबको हनुमान ने राम से कहा ।। ६७ ।। सीता जी ने कहा था—वत्स, मै जिस दुख से इस अशोक के नीचे रह रही हूँ, तू प्रभु के समक्ष सब कुछ बताना। राक्षसियाँ मुझे विवश कर रही है। ये सब मुझे इसी मास के भीतर ही दंडित करनेवाले है ।। ६८ ।। एक-एक दिन का दुख भी सहा नही जाता। फिर भी यहाँ महीने भर बाट जोहती रहूँगी। इतने पर भी यदि मेरे स्वामी यहाँ नहीं आते तो मैं आत्मघात कर मर जाऊँगी ।। ६९ ।। मारुति के मुँह से यह वचन सुनकर राम ने छाती पर मुक्का मार-मारकर अनेक रुदन किया। वे कहने लगे—जो सीता वन के वृक्षों को यों ही हिलते देख कर डर जाती थी, वह उन राक्षसियों के बीच किस प्रकार प्राण धारण किये हुए है ? ।। ४६७० ।। राक्षसियाँ सीता को त्रस्त कर रही हैं, इतने पर भी इस दारुण शोक के आघात से मेरे प्राण नहीं निकलते। मैं जीवित रहते हुए भी सीता के उत्पीड़न की बाते सुन रहा हूँ तो फिर मेरे प्राण धारण करने का क्या गुण रहा ? ।। ४६७१ ।। हा हनुमन्त, कहकर हाथ बढ़ाकर रामचन्द्र ने हनुमान को आलिंगन कर लिया और उन्हें गोद में ला बैठाया। वत्स, आज जो यह संदेश मुझे मिला है, यह और कुछ नहीं केवल तेरा ही प्रसाद है ।। ७२ ।। लंका के गढ़ के बारे में मुझे बताओ कि वह कैसी जगह है ?

शुनियो गोसाइ मइ येन देखिलोहो * लङ्कार गड़र कथा भालमते कहो
गड़खान देखिलोहो बहल विस्तार * गड़गोटे बेढ़ि आछे सकल लङ्कार ७४
दुब्बरि ये जलजन्तु भयङ्कर वेश * पद्म उत्पलर गन्धे आमोद आशेष
दृढ़ बन्ध फटक चारिगो दुवारत * वज्रलोहे निर्म्मिले चारियो राजपथ ७५
चारि संक्रमण आछे चारियो दुवारे * चन्द्रयेन आकाशत वैसाइल प्रकारे
तिनिखान साङ्को आछे सञ्चे आछे जुरि * पर दल आसन्ते चिरिया सवे बुरि ७६
एक खान आछे ताक देखिते आरम्भ * मणिमय सुवर्णर दिल दश तम्भ
लोहायन्त्र सव आछे दुवारत थित * भाल भाल मणि सव सुवर्ण गठित ७७
हेनमते साजि आति आछय सङ्किते * देखिया परय परदल सचकिते
रात्रिदिने राक्षसे राखय गज वाजी * खाण्डा सव घरावय धनुर्गुण साजि ७८
खालबाम पूरि लोहो भाङ्गिलो संक्रम * दुर्घोर गुचाया भूमि करिलोहो सम
लङ्काखान पुरिया करिलो छार मसि * ढोलर भितरे येन निङ्गनिये पशि ७९
लङ्का नष्ट करिया सागरे भैलो पार * मन सुखे मारा गैया राक्षस लङ्कार
तुमि रामदेवता लक्ष्मण सदा यार * तयु सङ्गे याहन्तेनो शङ्का आछे कार ४६८०
नलबीर सुग्रीव अङ्गद जाम्बवन्त * नील सेनापति आर लगत याइबन्त
तुमि आमि लक्ष्मण याइबोहो सव साजे * आन सेनागण वा लागय कोन काजे ४६८१
एतेके सहिते सवे राक्षसक मारि * रावणक मारि सीता आनिबाक पारि
सागर तरिते येवे आछय उपाय * तेवेसे अकष्टे सब सेना लङ्का यायि ८२

इसकी लम्बाई चौड़ाई और ऊँचाई कितनी है ? उसका द्वार कहाँ है, कितना दृढ़ है ? कहाँ-कहाँ टूटा हुआ है ? उसकी खाईं क्या इतनी चौड़ी और गहरी है कि उसे लांघा नहीं जा सकता ? ।। ७३ ।। तब हनुमान ने कहा—प्रभु, सुनिये, मैंने लंका के गढ़ को जैसा देखा है, उत्तम रूप से बता रहा हूँ। मैंने देखा है कि वह गढ व्यापक और विस्तृत है। गढ़ की खाईं ने समूची लंका को घेर रखा है ।। ७४ ।। अनेकों भयंकर वेश वाले जलजन्तु उसमें हैं, वह कमल-उत्पल के गंध से अपार सुरभित है। चारो द्वारों पर दृढ़ फाटक बने हुए हैं। चारों ओर के राजमार्ग वज्रलोह द्वारा निर्मित हैं ।।७५।। चारों द्वारों पर चार प्रवेश-पथ हैं। इन दीवारों के बीच लंकापुरी ऐसी है मानों आकाश में चन्द्रमा। उसमें तीन लोहे की जंजीरे हैं जो समूची खाईं को घेरे हुए हैं। दूसरों की सेना के आने पर सबको तोड़कर डुबो देते है ।। ७६ ।। उनमें एक ऐसा है जिसमें मणिमय सुवर्ण के दस खंभे हैं, उसके द्वारपर लोह-यंत्र खड़े हैं, जो उत्तम मणियों और स्वर्ण से खचित हैं ।। ७७ ।। लंका को इस प्रकार से सज्जित कर सभी सतर्क रहते हैं; शत्रुओं की सेना उसे देखकर स्तंभित रह जाती है। दिन-रात राक्षसगण हाथी घोड़े सहित उसकी रक्षा करते रहते हैं, धनुष की डोरी तैयार रखते है, अपने खड्गों को नित्य धार देते रहते हैं ।। ७८ ।। मैंने उसके प्रवेशद्वार को तोड़ डाला, ऊबड़-खाबड़ को बराबर कर दिया, लंका को जलाकर वैसे ही भस्म कर दिया जैसा कि ढोल के भीतर चूहा घुसकर उसे नष्टकर डालता हो ।। ७९ ।। लंका को नष्टकर मैं सागर के पार चला आया, हे प्रभु, अब आप आनन्दपूर्वक जाकर लंका के राक्षसों का वध कीजिए। लक्ष्मण जिनके सहायक हैं, वे आप रामचन्द्र देवता हैं, आपके संग लंका जाने में शंका किसे हो सकती है ? ।। ४६८० ।। वीर नल, सुग्रीव, अंगद, जाम्बवन्त और सेनापति नील आपके संग जायेंगे। आप, लक्ष्मण और मैं, सारे सज्जित हो चलेंगे। अन्य सेना के जाने की क्या आवश्यकता है ? ।। ८१ ।। इनके साथ जाकर सारे राक्षसों को मार, रावण का वधकर हम सीता को ला सकते हैं। यदि सागर पार करने का

राघवे बोलन्त चिन्ता खण्डिल आमार * सागर तरिब सबे मोर अङ्गीकार
तपर प्रभावे सबे शुषिबोहो जल * कौतुके लङ्काक याउक सबे सेना बल ८३
जय नमो राम आदि पुरुष मुरारि * भृत्य भयहारी अगतिर गतिकारी
महा महापापीको निस्तारे यार नाम * पतित पावन कृपामय प्रभु राम ८४
नुगुचोक रति मोर तोमार चरणे * बोला राम राम सबे समाजिक जने ८५

श्रीराम-लक्ष्मणर कपिसैन्य लै लङ्का यात्रा

दुलड़ी

कहिबा सुग्रीव आमार सुमित्र सत्वरे बचन पाला।
एहि शुभक्षणे विजय मुहूर्त्ते त्वरिते ससैन्य चला॥
कालि ये उत्तर फाल्गुनी नक्षत्रे आजि हुया आछे हस्ता।
दुयो ये नक्षत्रे सुमङ्गल कहे तारा दुइ सुप्रहस्ता॥ ८६
बिजय लक्ष्मण आमार कहय दक्षिण फुरे नयन।
रावण जिनिया सीताक आनिबो उछाह करय मन॥
आगे चलन्तोक नील ये कुमुद लक्षेक बानर बले।
कण्टक भाङ्गिया पथ मुकलाउक सुखे याइब समदले॥ ८७
बानरर राज कथाये याइबन्त मोहोर लखाइर समे।
येन असुरक धार करिलन्त इन्द्रे ये बरुण समे॥
एतेक रामर बचन शुनिला लरिला बानर जाति।
भालुक कटके हुक हुकि बर करन्ते चलिल आति॥ ८८

कोई उपाय हो तो सारी सेना कोई कष्ट किये बगैर लंका पहुँच सकती है॥ ८२॥ रामचन्द्र बोले, मेरी चिन्ता मिट गयी। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि सब सागर पारकर जायेंगे। मै अपनी तपस्या के प्रभाव से सारा जल शोषण कर लूंगा जिससे सारी सेना कौतुक से लंका पहुँच सके॥ ८३॥ आदिपुरुष मुरारी राम आपकी जय हो, भृत्य भयहारी अगति को गति देनेवाले आपको नमस्कार है। जिनका नाम महापापी को भी उद्धार करता है आप वही पतित-पावन कृपामय प्रभुराम हैं॥ ८४॥ तुम्हारे चरणों में मेरा अनुराग कभी घटे नहीं; सभी सामाजिक जन राम-राम कहो॥ ४६८५॥

कपि-सेना लेकर रामचन्द्र की लंकायात्रा

रामचन्द्र ने सुग्रीव से कहा—मेरे सुमित्र, मेरे वचन मानो। इसी शुभ क्षण में विजय हेतु तुरत सेना सहित प्रस्थान करो। कल तो उत्तर फाल्गुणी नक्षत्र होगा। आज हस्त नक्षत्र है। ये दोनों नक्षत्र सुमगल करनेवाले है, इन दोनों नक्षत्रों में कार्यारंभ करना उचित है॥ ८६॥ लक्ष्मण; मेरी दाहिनी आँख फड़क रही है, यह हमारी विजय का लक्षण सूचित कर रही है। मेरे मन में उत्साह आ रहा है कि रावण को मारकर मै सीता को ले आऊँगा। लाखों वानरों की सेना ले आगे-आगे नील और कुमुद चलें। वे काँटे आदि साफ कर राह निकालें, तो हम दल के साथ अनायास चल सकेंगे॥ ८७॥ सारी सेना वानरराज सुग्रीव, तुम्हारे आदेश से मेरे और लक्ष्मण के संग उसी प्रकार चलेगी जैसे कि इन्द्र-वरुण के साथ देवताओं की सेना ने असुरोंपर आक्रमण किया था। राम के वचन सुनकर वानर दौड़ पड़े। भालू और बानरों की सेना आनन्द-कोलाहल करती हुई तेजी से चल पड़ी॥ ८८॥ पूरब की ओर से वीरवर

पूब ये दिशत गन्ध महादन बीरबर चलि यान्त।
दक्षिण दिशत बैद ये सुषेण जाम्बवन्त चलि यान्त॥
चतुर्दिशे बेढ़ि बानरर राजा लरिलन्त सम दले।
महेन्द्र गिरिक पाइला गैया सबे रङ्ग ढङ्ग कौतूहले॥ ८९
केहो केहो बोले लङ्का नगरीर मारिबो राक्षस जाति।
रावणर बंश क्षय करिबोहो मर्त्यते थाकोक ख्याति॥
केहो केहो बोले लङ्का नगरीत आवे से लागिल शाल।
यतेक राक्षस पिशाच आछय सबारो मिलिल काल॥ ४६९०
आगत चलय नील ये कुमुद सकल पथ सोधन्ते।
मध्यर देशत राम लखमन अङ्गदये हनुमन्ते॥
अङ्गद पिठित चड़िया लखाइ लरिलन्त रङ्ग मने।
साक्षाते येहेन कुबेर देवक बेढ़ि याइ सर्ब्ब जने॥ ४६९१
हनुर पिठित श्रीराम चरिला अस्त्र शस्त्र सब साजे।
बज्र धरि येन युद्धक चलिल ऐरावत देवराजे॥
यात्रार प्रस्तावे दक्षिण नासिका उत्तर स्वर बहय।
किछु भय नाहि रणजित हुइबो सुमङ्गल बार्त्ता कय॥ ९२

पद

मृग पक्षीगण तेजे उत्तम सुस्वर * प्रसन्न दीपिति करि ज्वलन्त भास्कर
लङ्का दिशे देखिय उदित धूमकेतु * रावणर बंशर देखिय भय हेतु ९३
रावणक मारिया सीताक गैया पाइबो * सबे अव्याहते अयोध्याक लागि याइबो
बानरवर्गर श्रीयूथ मुख ज्वले * बेदे शास्त्रे पुराणे जानिबा सुमङ्गले ९४
रात्रिदिने चलि याइ सबे सेनागण * फल मूल मधु किछु न करे भोजन
आमार उपरि बंश आछिल यतेक * पुरोहित समन्विते चलन्त प्रत्येक ९५

गन्धमादन चला; दक्षिण की ओर से वैद्य सुषेण और जाम्बवन्त चले; बानरराज सुग्रीव चारों ओर से सेना सहित चल पड़ा। सभी बड़े रंग-उल्लास मे भरे महेन्द्र पर्वत तक पहुँचे ॥ ८९ ॥ कोई-कोई बोला—लंकानगरी की राक्षस जाति को मारकर रावण का वंश निर्मूल कर देंगे और विश्व में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। कोई-कोई कह रहा था—लंकानगरी में अभी ही संकट आया है; जो राक्षस-पिशाच वहाँ हैं उनका विनाश-काल आ पहुँचा है ॥ ४६९० ॥ आगे-आगे नील और कुमुद सारे मार्ग को साफ करते हुए चल रहे थे, मध्य में राम-लक्ष्मण, अंगद-हनुमान के संग चल रहे थे। अंगद की पीठ पर चढ़कर लक्ष्मण बड़े ही आनन्द से वेग से चल रहे थे, मानो देव कुबेर को घेरकर सभी चल रहे हों ॥ ४६९१ ॥ सारे अस्त्र-शस्त्रों से सजे हुए रामचन्द्र हनुमान की पीठ पर चढ़ गये। मानों देवराज इन्द्र अस्त्र-शस्त्र लेकर ऐरावत पर चढ़ युद्ध करने चल रहे हों। यात्रा के समय दक्षिण से होकर उत्तर की ओर त्वरित वायु बहने लगी, मानों वह कहती थी—कोई भय नही, रण मे विजय होगी ॥ ९२ ॥ मृग, पक्षी आदि उत्तम स्वर से कोलाहल करने लगे। ज्वलन्त सूर्यदेव प्रसन्न दीप्ति से प्रकाशित थे। रावण के वंश के भय का कारण होकर लंका की ओर उगता हुआ धूमकेतु दिखाई पड़ा ॥ ९३ ॥ सब सोच रहे थे, रावण को मारकर हम सीता को प्राप्त करेंगे और सब निर्विघ्न अयोध्या पहुँचेंगे। वानर-वाहिनी का मुँह बहुत ही उज्वल था, वेद-शास्त्र-पुराणो में वर्णित सुमंगल होने लगे ॥ ९४ ॥ सारी सेना दिन-रात चल रही थी,

देव दिव्य याने आमाथेर तार लक्षि * रावणर तार निज पराभव देखि
हेन सुलक्षण जानि सब सेनागणे * नाचन्ते गावन्ते याइ कौतूहल मने ९६
महेन्द्र एराया गैया पाइलन्त मलय * मधुर सुगन्ध नाना फलर आलय
अमृत समान सबे पाका फल खाइल * मनत हरिषे सबे उदर भराइल ९७
कमला कपुरा कण्टकी ये नारिकल * आम जाम्ब लेटेकु बदरी जवा बेल
करदइ आमरा बसन्त केन्दु फल * मधुरि मुहरि नानाबिध पका फल ९८
खाया खाया केतंके करय किल किलि * डालत धरिया कतो ओलमा बादुलि
लवरा लवरि उपरक लाञ्ज तुलि * गगन मण्डल गैया बियापिल ध्वनि ९९
ससैन्ये श्रीरामे पाइला सागरर तीर * रामचन्द्रे बोलन्त सुग्रीव महाबीर
इठावते सेना रौक थानथित करि * उपाय चिन्तियो केने सागरक तरि ४७००
सुग्रीवर बाको गैया सेनापति नील * भाग भाग करिया सेनाक थान दिल
अनेक दूरत छानि बसिल बानर * कपिक देखिय येन अपार सागर ४७०१
लक्ष्मणक सम्बुधि मातन्त श्रीहरि * सुमरिया सीताक अनेक मन्यु करि
कान्दिया बोलन्त बाप कि कार्य्य जीवाक * धरिते न पारो हृदि सुमरि सीताक २
हा हा बाप लक्ष्मण किमते धरो जीव * वरकष्टे आछे सीता जनकर जीव
मदने दगध देहा आमाक सुमरि * वर दुखे प्राण धरि आछे प्राणेश्वरी ३
हेनय कतेक दुख थाकिबेक सहि * तरुणर काल अकालते गैल बहि
आजि पाइवो कालि पाइबो मनत करन्ते * रात्रिदिने दगध सीताक सुमरन्ते ४

वह फल-मूल-मधु कुछ भी खाती नही थी। वे लोग देख रहे थे कि उनके पितर भी पुरोहितों के संग आगे-आगे चल रहे थे ॥ ९५ ॥ देवगण दिव्य यानों मे बैठे उनका सिलसिला देख रहे थे और रावण का पराभव स्पष्ट दिखाई दे रहा था। ऐसे सुलक्षण देखकर मारी सेना नाचती-गाती हुई कौतूहल से चली जा रही थी ॥ ९६ ॥ वे लोग महेन्द्र पर्वत पारकर मलय पर्वत पहुँचे जो मधुर और सुगन्धित अनेक फलों का भंडार था। सब लोग वहाँ बड़े ही आनन्द से भरपेट खा रहे थे ॥९७॥ नारंगी, कपुरा, कंटकी, नारियल, आम, जामुन, लेटेकु, बेर, बेल, आमला, बसन्त, केन्दुफल, अमरूद, मुहरी आदि अमृत-जैसे पके-पके फल खाने लगे ॥ ९८ ॥ खा-खाकर कुछ लोग किल-किलाहट से आनन्द नाद करने लगे। कुछ लोग चमगादड़ों की भाँति वृक्षों पर झूलने लगे। ऊपर पूँछ उठाकर वे दौड़-धूप करने लगे, उनकी ध्वनि सम्पूर्ण आकाश-मंडल में परिव्याप्त हो गयी ॥ ९९ ॥ रामचन्द्र सेना सहित सागर के तट पर आ पहुँचे। महावीर सुग्रीव ने रामचन्द्र से कहा, उचित व्यवस्था कर सेना को यहीं ठहराया जाय। इसके पश्चात् सागर को कैसे पार किया जाये इसका उपाय सोचा जाये ॥ ४७०० ॥ सुग्रीव के वचन सुनकर सेनापति नील ने सेना को खंड-खड बनाकर उचित स्थान दिया। बानरों ने अनेक स्थान को घेरकर अपना निवास-स्थान बनाया। बानरों की सेना अपार-सागर जैसी लग रही थी ॥ ४७०१ ॥ श्री रामचन्द्र सीता का स्मरण कर बहुत ही दुखी हो रोते-रोते लक्ष्मण से कहने लगे—वत्स लक्ष्मण, मुझे जीवित रहने से क्या प्रयोजन है ? सीता का स्मरण कर मैं हृदय में धैर्य नही रख पा रहा हूँ ॥ २ ॥ हा-हा-वत्स लक्ष्मण, मैं जीवित कैसे रहूँ जबकि जानकी बड़े कष्ट से जीवन बिता रही है। मेरा स्मरण करते हुए उसका शरीर काम-दग्ध हो रहा होगा. प्राणेश्वरी सीता बड़े ही दुख से जीवन-धारण किये हुए है ॥ ३ ॥ वह ऐसा दुख कितने दिनों तक सहती रहेगी, जबकि तरुणाई का काल अकाल में ही बीता जा रहा है। सीता से आज भेंट होगी, कल भेंट होगी, ऐसा सोचते हुए सीता के स्मरण से रात-दिन चित्त दग्ध हो रहा है ॥ ४ ॥ इस तरह सीता

सीताक सुमरि रामे शोक करिलन्त * लक्ष्मणे सम्बुधि पाचे शान्त करिलन्त
श्रीराम लक्ष्मण वीर सुग्रीव सहिते * सागर तरिते बुद्धि करिला तहिते ५
माधवे बोलन्त ऐत आछो एहिमाने * शुना येन भैल तैत रावणर थाने
लङ्का पुरि हनुमन्ते मधुफल खाइल * आशी सहस्र निशाचर मारि पेलाइल ६
इसब कार्य्यक देखि जानिलन्त मने * सबे कथा मावन कहिल बिभीषणे
रावणर मातृ ताइ बुलिय नैकेषी * सम्बुधि बोलय बिभीषणक राक्षसी ७
बुइ चक्षु फुटिल रावण भायेरर * हरि आनिले सीता जीव जनकर
सुखे ताक विधाताये थाकिवे ने दिल * श्रीरामर भार्य्या सीता हरिया आनिल ८
उपजि न गैले बेटा नेवछनि लैया * शान्ती कन्या हरिले बाढ़िले येन खैया
सर्व्व गाव मरि करङ्गने बाति ज्वले * सर्व्वनाश करि फुरे कन्यार बिकले ९
अधर्म्मत रति भैल सिठो दुराचार * पतिव्रता कन्या हरिलेक परदार
ब्राह्मण कुलर बेटा भैले अधोगामी * पेटत परिल छार पुरि मारो आमि ४७१०
रामर समान वीर नाहि धनुर्द्धर * पृथिवीक उलटाइते पारे एकेश्वर
सागरक शुषिते पारय शरे हानि * रणभङ्गे राक्षस पलाइ दिश छानि ४७११
राजार येहेन धर्म्म प्रजाये आचरि * तोमारेसे धर्म्मत राक्षस आछा धरि
धर्म्म पथ युगुतित तुमि भैला सार * रावण बुराये बंश करियो उद्धार १२
तुमिसि आछाहा बाप कुल निस्तारण * रावणे रामत येन पराय शरण
सीता समर्पिवाक बुलिबा राजनय * मोर बचनक बेटा काणे नुशुनय १३

का स्मरण करते हुए राम ने शोक किया। लक्ष्मण ने उन्हें सम्बोधित कर अन्त में शान्त किया। उसी स्थान मे श्रीराम-लक्ष्मण सुग्रीव सहित सागर पार करने हेतु युक्ति सोचने लगे ॥ ५ ॥ माधवकन्दली कहते हैं, यह कथा यहीं रखकर अब रावण के यहाँ जो कुछ हुआ उसे सुनो। लंकापुरी को जलाकर हनुमान ने मधुफल भी खा डाले, साथ ही अस्सी हजार निशाचरों को भी मार डाला ॥ ६ ॥ यह सारे कार्य देख, मन में विचारकर विभीषण ने जाकर माँ से सारी बाते कही। रावण की माँ, जिसका नाम नैकषी था, उस राक्षसी ने सुनकर विभीषण को सम्बोधित करते हुए कहा—॥ ७ ॥ तेरे भाई रावण की आँखें फूट गयी है, इसी कारण वह जनक-कन्या सीता को हर लाया है। उसे विधाता सुख से रहने देना नही चाहते, इसी से वह श्रीराम की भार्या सीता को हर लाया है ॥ ८ ॥ संभवत: उसके जन्म के समय उसकी गंदी चीजें पूरी साफ नहीं हुई थीं इसी कारण वह सती कन्या को हर लाया है; उसका विनाश बढ़ आया है। उसके सारे अंग तो मर चुके हैं केवल कमर में बत्ती जल रही है। कन्या के लिए व्याकुल हो वह अपना सर्वनाश करता घूम रहा है ॥९॥ वह दुराचारी अधर्म में रत हो चुका है। इसीलिए परस्त्री पतिव्रता कन्या को हर लाया है। वह ब्राह्मण वंश का पुत्र है, पर अधोगामी हो गया है। वह हमारे पेट से बेकार उपजा हैं, उसे हमें जला मारना चाहिए ॥ ४७१० ॥ राम के समान वीर धनुर्द्धर और कोई नही है, वे अकेले ही पृथ्वी को उलट सकते हैं। वे बाण मारकर सागर का भी शोषण कर सकते हैं। उनके बाण प्रहार से पराजित राक्षस दिशाओं में प्राण लेकर भाग जाते हैं ॥ ११ ॥ राजा का जैसा धर्माचरण होता है प्रजा भी उसी का आचरण किया करती है। तुम अपने धर्मबल से राक्षसों को धारण किये हुए हो। धर्ममार्ग के अनुसरण में तुम सर्वश्रेष्ठ हो। रावण ने तो वंश को डुबो डाला है, तुम्हीं इसका उद्धार करो ॥१२॥ बेटा, तुम्हीं एक वंश का उद्धार करनेवाले हो। रावण जैसे राम की शरण ले, सीता जी को समर्पित कर दे, इस कारण तुम उसे राजनीति की शिक्षा देना। मेरी बात तो

अद्यापि आछय शिशुकाल सुमरण * यैसानि कोलात मोर आछय रावण
दुइ मुखे तन पान करै अभिलाषे * आर आठगोटा मुखे मोक चापा हासे १४
नैकषीर बाणी बिभीषणे शुनिलन्त * मावक प्रणामि शीघ्रवेगे चलिलन्त

विभीषणर रावणक हित उपदेश दान

रावण बसिया आछे पात्र समन्विते * विष्णुत भकत गैया मिलिल तहिते १५
गहीन गम्भीर धीर बीर बिभीषण * रामत भकत आतिशय शुद्ध मन
राजनय समुचित धर्म्मक जानन्त * रावणक सम्बुधिया बाक्य बुलिलन्त १६
लङ्कापुरि हनुमन्त गैल येन मते * आपुनियो देखिलाहा पात्र समन्विते
काहार शकति आछे एक डेब करि * शतेक सहस्र पथ सागरक तरि १७
निसंशय मने आसि पशिल नगर * सर्ब्ब देश चाहिल फुरिल घरे घर
सीताको देखिले मारिलेक सेनागण * बन माङ्गि सिथानको करिले उच्छन्न १८
इन्द्रजिते युजिल युद्धर यत धर्म्म * नागपाशे बान्धिलेक इकि योग्य कर्म्म
दण्ड बिहिलोहो भाइ राखिलेक बध * लाञ्जर अगनि लङ्का करिले दगध १९
उत्तम अधम ये मध्यम कहे मन्त्र * सत्वर त्रिबिध करिबाक लागे तन्त्र
एकैक सुमन्त्री मोर बुद्धित अपार * आपुनि सकले जाना कि कहिबो आर ४७२०
एकेश्वरे मन्त्री येवे करय निश्चय * उत्तम बुलिया ताक कहे शास्त्र नय
अनेक मन्त्रीर येवे होवे एक मति * मध्यम बुलिय ताक मन्त्रर शकति ४७२१

वह कान से भी सुनना नहीं चाहता ।। १३ ।। अब भी मुझे रावण के बचपन की याद है । वह मेरी गोद में है । दो मुखों से बड़ी अभिलाषा से वह मेरे स्तन पान करता और उसके अन्य आठ मुँह मेरी ओर देखकर हँसा करते थे ।। १४ ।। नैकषी की वाणी सुनकर विभीषण उसे प्रणामकर वहाँ से शीघ्रता पूर्वक चल पड़े ।

विभीषण का रावण को हित-उपदेश देना

रावण अपने मंत्रियों के साथ बैठा हुआ था । विष्णु-भक्त विभीषण वहीं जा पहुँचे।। ४७१५ ।। धीर गंभीर विचारशील वीर विभीषण अत्यन्त शुद्ध मन वाले राम के भक्त थे । वे राजनीति और समुचित धर्म के ज्ञाता थे । उन्होंने रावण को सम्बोधित कर यह वचन कहा— ।। १६ ।। हे भाई, हनुमान लंका को जलाकर जिस प्रकार चला गया, अपने मंत्रियों समेत आपने भी देखा । एक छलांग में समुद्र पारकर सौ योजन का सागर पार कर जाये, ऐसी शक्ति और किसकी है ? ।। १७ ।। हनुमान निर्भयता से नगर में प्रवेशकर, घर-घर घूमा और सब कुछ देख गया । उसने सीता को भी देखा, सेना को मारा, अशोक वन को भी तोड़-ताड़कर नष्टकर डाला ।। १८ ।। इन्द्रजीत ने युद्ध के धर्मों के अनुसार उससे लड़ाई की । परन्तु उसने नागपाश से उसे बाँधा; भला यह उसका योग्य कर्म हुआ है ? (तब रावण बोला—) मैंने उसे दंड दिया था परन्तु भाई, तूने उसका वध करना रुकवा दिया । अपनी पूँछ की आग से उसने लंका को जला डाला ।। १९ ।। उत्तम, मध्यम या अधम जो तीन प्रकार की मंत्रणा दिया करते है, उनके अनुसार तीन प्रकार की शीघ्र व्यवस्था करनी चाहिए । मेरे एक-एक उत्तम मंत्री हैं जो अपार बुद्धि वाले हैं । आप लोग तो स्वयं जानते है, मैं भला क्या कहूँ ? ।। ४७२० ।। अकेला मंत्री जो निर्णय करता है नीति-शास्त्र उसे उत्तम कहता है । अनेक मंत्रियों के विचार यदि एक हों तो उस मंत्रणा की शक्ति को मध्यम कहा जाता है ।। ४७२१ ।। पुरुषार्थ का जिसमें कोई बल नहीं, दैव ही जिसे

पुरुषर तेन नाहि देवे से बोलय * अधम बुलिय ताक शास्त्रर आन्वय
राघव मुनिष येन जगत विदित * कहिलो काहिनी येन आमार उचित २२
तपरन्त राम वर पुरुष अगाध * लङ्का छन्न करिबन्त नाहिकय बाध
सुग्रीवक सखा करि राम महाबले * समदले सागर तरिब अबिकले २३
जानो मइ सीतालक्ष्मी जनक जीयारी * आर जानो राम मधुसूदन मुरारि
रामर हातत जानो मोर पाइब जीव * तथापि निदिबो सीता जानकर जीव २४
शुनि पात्र मेले उठि बोले रावणत * दुःस्वप्नर कथा प्रभु गुचायो मनत
प्रमादत लङ्का पुरि गैल हनुमन्ते * आमि जानिलात गह न मेलेक हन्ते २५
आछिलोहो हन्ते आमि सचकित मने * किसक करय पराभव अल्प जने
अस्त्र बले भरि पूरि आछै सब लङ्का * मनुष्य रामक प्रभु न करिबा शङ्का २६
शुनियोक सभासद रामर चरित्र * परम सुरस रस कर्णर अमृत
संसार व्याधिक फरै इसे उपशाम * निरन्तरे उच्च करि बोला राम राम २७

छवि

आपोन बलक प्रभु ताक नेदेखाहा तुमि त्रिभुवने जनिलाहा भय ।
पातालर बासुकिक जिनि भय लगाइलाहा आन कोन आगत थाकय ॥
दक्षिण दिशक गैया यमक जिनिला तुमि पश्चिमत जिनिला बरुण ।
इन्द्र आदि करियत त्रिदशक जिनिलाहा तुमि सब वीर आछे कोन ॥ २८
कैलासक चलिलाहा कुबेरर जिनिलाहा आनिलाहा पुष्पक विमान ।
स्वर्ग मर्त्य पातालत तोमार समान नाहि ब्रह्माक करिला बहुमान ॥

निश्चित कर देता है, उसे शास्त्र-विचार से अधम कहा जाता है। रामचन्द्र जैसे मनुष्य है वह तो विश्व भर में विदित है। मैंने सारी बात बता दी, अब हमें जैसा करना उचित है कहिये ॥ २२ ॥ तप में निरत रामचन्द्र बड़े वीर पुरुष हैं; वे लंका को बिना बाधा के नष्ट कर देंगे। सुग्रीव को सखा बनाकर अपनी प्रबल सेना सहित राम अविकल रूप से सागर तर आयेंगे ॥ २३ ॥ मैं जानता हूँ कि जानकी सीता लक्ष्मी हैं। यह भी जानता हूँ कि राम मधुसूदन मुरारी हैं, जानता हूँ राम के हाथों मेरा जीवन चला जायेगा। तथापि मैं जानकी को समर्पित नहीं करूँगा ॥ २४ ॥ तब सभी मंत्री उठ-उठकर रावण से कहने लगे, प्रभु, दुःस्वपन की बात अपने चित्त से मिटा दीजिये। हनुमान हमारे प्रमाद के कारण ही लंका को जला जा सकता है। यदि हम पहले से जानते होते तो ऐसा काम नही हो पाता ॥ २५ ॥ हम विस्मयाभिभूत-से यही सोचते रहे कि यह छोटा-सा जीव भला हमें पराभूत कर सकता है? प्रभु, लंका अस्त्र-शस्त्रों से भरी पूरी है, मनुष्य राम की आप शंका न करें ॥ २६ ॥ हे सभासदो, परम सुरस रसपूर्ण, कानों को अमृत समान लगनेवाला राम का चरित्र सुनें। यह संसार-व्याधि को मिटा सकता है। कवि कहता है, ऊँचे स्वर से निरंतर राम-राम कहो ॥ २७ ॥ (मंत्री बोले) हे प्रभु, त्रिभुवन में भय उत्पन्न करनेवाली अपनी जो शक्ति है, उसे आप नही देखते। आपने पाताल के वासुकी को जीतकर त्रस्त कर दिया था, भला आपके सामने और कौन ठहर सकता है? आपने दक्षिण दिशा में जाकर यम को जीता, पश्चिम में वरुण को जीता, इन्द्रादि सभी देवताओं को जीता। आपके समान वीर और कौन है? ॥ २८ ॥ कैलास को जाकर आपने कुबेर को जीता, और पुष्पक विमान ले आये। स्वर्ग, मर्त्य पाताल में आपके समान कोई नहीं है, आपने ब्रह्मा को संतुष्ट किया था। आप अकेले ही राम-लक्ष्मण, सुग्रीव, अंगद को मार सकते

राम देव लक्ष्मणक सुग्रीवक अङ्गदक एकेश्वरे मारिमा रणत ।
त्रैलोक्य विजय आमि एको एको सखा आछो न करिबा कटाक्षो मनत ।। २९
आछोक आमार आन इन्द्रजित कुमारे ये सबाको मारिबे समरत ।
इन्द्र आदि करि यत त्रिदश देवता आछे जिनि आछे दुर्घोर रणत ।।
यि वीर इन्द्रक जिनि लङ्काक आनिल बान्धि त्रिदशक करिलेक धार ।
ब्रह्माये आसिया पाचे प्रीति प्रकार करि स्वर्गको दिलन्त अधिकार ।। ४७३०
तथापि इन्द्रर मने महाभय नुगुचय इन्द्रजित नामक सुमरि ।
हेन वीर आछन्तेओ लङ्का कोने मारिबेक थाकियोक भय परिहरि ।।
स्वर्ग मर्त्य पातालत आछय यतेक वीर रणे हरि मानिबेक काप ।
हेन बीर आछन्तेनो तोमार काहाक भय मेघनाद प्रचण्ड प्रताप ।। ४७३१

प्रहस्तादिये रावणक कुमन्त्रणा दिये

पद

प्रहस्ते बोलय कि करिबे हनुमन्ते * आमि सबे युजिबो लङ्कार गड़ हन्ते
श्रीराम लक्ष्मण आरु सुग्रीवक मारि * नृपतिर हृदयर शैल्यक उद्धारि ३२
यज्ञकेतु नाम वीर पर्ब्बत आकार * ओठ कामुरिया बोले किक जिओं आर
राजार ये दुख जिनि गैल कपि गोट * ताके गैया मारि बर करिबो आस्फोट ३३
राक्षस सकल सबे थाकियो आमोदे * आपोनार भार्य्या पुत्र सहिते प्रबोधे
राम लक्ष्मण को मारो सुग्रीव को मारि * नृपतिर हृदयर शैल्यक उद्धारि ३४
बज्रदंष्ट्रे बोलो आजि एतिक्षणे याओं * तोमार बैरक मारि मारि धरि खाओं
परिघेक आछे मोर त्रिशूलर सम * श्रीराम लक्ष्मण सुग्रीवर हैबो यम ३५

हैं। तिसपर त्रैलोक्य को जीतने वाले हम आपके एक-एक सखा है, आप मन में जरा भी चिन्तन न करें ।। २९ ।। हममें दूसरों की बात ही क्या है, कुमार इन्द्रजीत ही सबको युद्ध में मार सकता है। इन्द्र आदि जितने देवता है उसने सबको भयंकर युद्ध में जीता है। वीर देवताओं को हराकर, इन्द्र को लंका में बाँध लाया था, बाद को ब्रह्मा ने आकर तरह-तरह के प्रेम-भाव से समझौता करवा कर स्वर्ग का अधिकार उसे दिलवाया ।। ४७३० ।। तथापि इन्द्रजित का नाम स्मरण कर इन्द्र के मन से महाभय नहीं मिटता। ऐसे वीर के रहते हुए भला लंका को कौन जीतेगा। आप भय छोड़ कर रहिये। स्वर्ग, मर्त्य, पाताल में जितने वीर हैं सब रण में पराजित हो आपकी अधीनता स्वीकार करेगे। प्रचंड प्रताप वाले मेघनाद जैसा वीर रहते हुए भी आपको भय किससे है ? ।। ४७३१ ।।

प्रहस्त आदि द्वारा रावण को कुमंत्रणा देना

प्रहस्त बोला, हनुमान क्या करेगा ? हम सब लंका के गढ़ से लड़ाई करेंगे। श्रीराम, लक्ष्मण और सुग्रीव को मारकर, राजा के हृदय का काँटा मैं निकाल दूँगा ।।३२।। पर्वताकार जो यज्ञकेतु नाम का वीर था, उसने होंठ चबाकर कहा, हम भला जीवित किसलिए रहेंगे। जो बानर यहाँ आकर राजा को दुख पहुँचा गया उसे जाकर मैं मार डालूँगा ।। ३३ ।। हे राक्षसो, तुम सब प्रसन्न रहो अपने पत्नी-पुत्र समेत शान्तिपूर्वक निवास करो। मैं राम-लक्ष्मण को और सुग्रीव को भी मारकर राजा के हृदय का काँटा दूर कर दूँगा ।। ३४ ।। बज्रदंष्ट्र ने कहा, हम अभी जाकर आपके शत्रुओं को

कुम्भकर्ण तनय निकुम्भ बुलियाक * क्रोधे सम्बुधिया बोले सकले लङ्काक
मोक पाठायोक मारो बानरक आगे * राम लक्ष्मण को लागि गोटा गुटि लागे ३६
राम लक्ष्मणक येवे सुग्रीव वीरक * हनुमन्त अङ्गदक नलये नीलक
मैन्दय द्विविद आरु वृद्ध जाम्बवक * एकेश्वरे मारि पेशो यम कारणक ३७
सबाहाङ्के गरिहि बोलन्त विभीषण * मनत एरियो सवे निशाचर गण
राम मेरु पर्व्वतक फुङ्के उरुवाहा * चाटु वचनक एरि नमाति थाकाहा ३८
एकेश्वरे आसिलेक वीर कपि गोट * लङ्का छन्न करि वर फरिले आछोट
ससैन्य सहिते लङ्कापुरी न राखिला * केनमते दम्भ चाटु बुलिबे लागिला ३९
खर बीर एकल देवक युजे काछे * लङ्कामाजे समबीर आन कोन आछे
सुबाहु मारीच वीर त्रिदशे आतङ्क * राम शरे परि भैल क्षुद्र से पतङ्ग ४७४०
शुना शुना ददा लङ्केश्वर यहाशय * तुमि नुपुछिले मोर बुलिते लागय
अप्रमत्त राम आसा युजिवाक मने * हेन महावीरक भङ्गाइब कोन जने ४७४१
भेद शाम दम ये उपाय निसिजय * तेवेसे विहिय दण्ड शास्त्रर आन्वय
प्रथमे युजक येवे करय उद्योग * सिटो प्राणी जनो ना जानय शास्त्र योग ४२
शुना बोलो वदा लङ्कानाथ निशाचर * राज्यक हितार्थे बोलो राक्षसकुलर
बन्धुजन राखि गैया राघवर मिसा * कल्याण साधियो गैया समर्पियो सीता ४३
कि काय्यंत जानकीक आनिलाहा हरि * प्रवल पुरुष समे बिबाद न करि
तुमि ये बेलल देखा आमि कान्धे लओं * रामर चरणे निया सीताक भेटाओं ४४

पकड़-पकड़कर खा डालेंगे। मेरे पास त्रिशूल जैसा परिघ है, मैं उसे ले राम, लक्ष्मण, सुग्रीव के लिए यम बन जाऊँगा ॥ ३५ ॥ कुम्भकर्ण के पुत्र निकुम्भ ने लंका के सभी को संबोधित करते हुए क्रोध से कहा—आप मुझे वानरों के सम्मुख भेज दीजिये। मैं राम-लक्ष्मण को भी संग्राम में पराजित कर दूंगा ॥ ३६ ॥ राम-लक्ष्मण के साथ ही वीर सुग्रीव, हनुमान, अगद, नल, नील, मैन्दय, द्विविद और वृद्ध जाम्बवन्त को अकेले ही पारकर यमलोक भेज दूंगा ॥ ३७ ॥ सबको तिरस्कृत करते हुए विभीषण ने कहा—राक्षसो, अपने मन की कामनाएँ छोड़ दो। राम रूपी मेरु पर्वत को तुम फूंक मारकर उड़ा दोगे, ऐसे चाटु वचन छोड़ चुप रहो ॥ ३८ ॥ एक वानर अकेला आया और समूची लंका को नष्टकर चला गया। तुम सेना सहित रहकर भी लंकापुरी की रक्षा नहीं कर सके। तब फिर दंभ से यह चाटुवचन क्योंकह रहे हो ?॥३९॥ वीर खर देवों से लड़कर उन्हें पराजित करनेवाला था, लंका में भला उसके समान वीर और कौन है ? सुबाहु, मारीच आदि वीर, जिनका आतंक तीनों लोको मे था, वे सब राम के बाणों से बिधकर क्षुद्र पतंग की भाँति गिर पड़े ॥ ४७४० ॥ हे भाई, लंकेश्वर ! सुनो, तुम न भी पूछो तो भी मेरा कहना उचित है। अप्रमत वीर राम युद्ध हेतु आ रहे हैं। उन जैसे वीर को कौन पराभूत कर सकता है ? ॥ ४१ ॥ उनसे साम, दाम, भेद आदि उपाय यदि नही चल सके, तभी दंड नीति का विधान करना चाहिए, ऐसा शास्त्र का कथन है। पहले पहल जो व्यक्ति युद्ध का आयोजन करता है वह भी शास्त्र का योग नहीं समझता ॥ ४२ ॥ हे लंकानाथ, राक्षसों के राजा, मैं राज्य तथा राक्षस-कुल के हितार्थ यह वचन कह रहा हूँ। रामचन्द्र के हाथ से बंधुजनों की रक्षा करो, इनके कल्याण-साधन हेतु जाकर उन्हे सीता को समर्पित कर दो ॥ ४३ ॥ प्रबल पुरुष से विवाद करना उचित नहीं। तुम किस कारण जानकी को हर लाये हो ? तुम यदि राम के समीप जाना नही चाहते तो यह दायित्व हम अपने कंधे पर ले सकते हैं और राम के चरणों में सीता को समर्पित कर आ सकते हैं ॥ ४४ ॥ स्त्री;

स्त्री बाल बृद्ध युवा राक्षसर कुल * बानरे भालुके यावे न करे निर्मूल
लङ्का तल ना याउक राघव सागरे * रामर भार्य्याक सीता सम्पियो सत्वरे ४५
बिभीषणे बुलिलन्त उदित बचन * रावण नृपति शुनि भैल खङ्ग मन
भ्रातृक चाहिया बोले सक्रोध नयने * मोक सुखी करिलेक तोहोर बचने ४६
पूर्ब्बत जानोहो बर मन्त्री बिभीषण * आवेसे जानिलो तइ अधर्म्मी दुर्ज्जन
अणुमात्र ना जानस राजधर्म्म नय * येहि बाक्य मुखे आसे सेहिसे बालकय ४७
कुम्भकर्ण रावणरो तइ भैलि भाइ * नैकषीर गर्भत तोहोर भैल ठाइ
मुनिषर भाइ हैया रणक डरास * राघवर नाम शुनि लागिल तरास ४८
आपोनाक एरि पर शकति करस * निजि जासि बाक्य तइ मिछात डरस
तपसीर भार्य्या हरि आनिलो सीताक * ना जानिया मूढ़जने गरिहे आमाक ४९
बापेकर बोले राम भैलेक तपसी * खाण्डा धनु धरि फुरे तपोबने पशि
माथे धूम जटा लागे त्रैलोक्य सुन्दरी * हेनय प्राणीक केहो गरिहा न करि ४७५०
बनवासी तपसीर इकि होवे धर्म्म * सकल राक्षस मारे इकि योग्य कर्म्म
सीता हरि ताहार खण्डिलो मोह जाल * रावणेसे मन्द तमो राघवेसे भाल ४७५१
पामर जातिर देखा अगाध संसार * अनुचित उचित नुबुजे प्रतिकार
कोन मन्द करिलोहो जानकीक हरि * अधार्म्मिक रामक उचित दण्ड करि ५२
बीर्य्यवन्त प्राणी येवे होवे आकशत * परपक्षे पीड़य आपुनि होवे हत
बिभीषण मन्दबुद्धि एहि भैल मति * रणत युजिते तोर नाहिके शकति ५३

बालक, युवा, वृद्ध समेत राक्षसों के वंश को जैसे बानर, भालू निर्मूल न कर डालें, राघव रूपी समुद्र में लंका डूब न जाये, इस कारण शीघ्र ले जाकर राम की भार्या सीता को उन्हें सौंप दो ।। ४५ ।। विभीषण ने जब उचित बचन कहा तो उसे सुनकर राजा रावण के मन में बड़ा ही क्रोध आया। उसने क्रोधपूर्ण नेत्रों से भाई विभीषण की ओर देखते हुए क्रोधपूर्वक कहा—तेरे वचन ने मुझे बड़ा सुखी किया ! ।। ४६ ।। मैं पहले जानता था कि विभीषण बड़ा मंत्री है। पर अब मै जान गया कि तू अधर्मी दुर्जन है। तू राजनीति धर्म अणुमात्र नही जानता। मुँह मे जो आ जाता है वही वाक्य बकने लगता है ।। ४७ ।। तू कुम्भकर्ण और रावण का भाई हुआ है, नैकषी के गर्भ में तुझे स्थान मिला है। ऐसे वीरों का भाई होकर तू युद्ध से डरता है? रामचन्द्र का नाम सुनकर तुझे त्रास हो रहा है? ।। ४८ ।। अपने लोगो को छोड़कर तू दूसरों की शक्ति पर भरोसा करता है। कोई बात न पूछकर तू झूठ-मूठ डरता है। मैं एक तपस्वी की भार्या सीता को हर लाया हूँ, यह जानकर मूढ़ तू मेरा तिरस्कार करता है? ।। ४९ ।। बाप के वचनों से राम तपस्वी बना है और हाथ में खड्ग व धनुष लेकर तपोवन में प्रविष्ट हो सिर पर जटा-भार और संग में त्रैलोक्य सुन्दरी को लिये घूमता फिरता है। ऐसे प्राणी को कोई फटकारता नही ।। ४७५० ।। सभी राक्षसों को मारता रहे, क्या वनवासी पुरुष का यह योग्य कर्म है? सीता का हरण कर मैंने उसका यह मोह-जाल कि रावण बुरा है और राम अच्छा है खंडित कर दिया ।।४७५१।। देखा जाता है कि पामर जातियाँ इस अगाध संसार में उचित-अनुचित कुछ भी प्रतिकार नही समझती। मैंने भला जानकी का हरण कर और अधार्मिक राम को उचित दंड देकर कौन सा बुरा कर्म किया है? ।। ५२ ।। जब वीर्यवन्त प्राणी अशक्त हो जाये तो उसे शत्रु पीड़ा दिया करते हैं और उसे मारा जाना पड़ता है। मंदबुद्धि विभीषण, तेरी ऐसी मति हो गयी है; युद्ध करने की तुझमें शक्ति नहीं है।।५३।। प्रहस्त बोला, लकेश्वर, आप बुद्धि के सागर है, आपने सार-वचन कहा है। मैं भी देख रहा हूँ राम को शत्रुओं से

प्रहस्ते बोलय तुमि बुद्धित सागर * सारोधृते वचन बुलिला लङ्केश्वर
आरोपदे रामर घाटन भैल वर * मरण समीप देखो जीवन कातर ५४
कुलवन्त पण्डित उत्तम बुद्धिमन्त * सि सि दूत करि यिटो सन्त ये महन्त
रामे दूत करिले बनर पशु जाति * एहि पदे रामर घाटन भैल आति ५५
वृहस्पति सम पात्र महा बुद्धिमन्त * विरूपाक्ष बोले शुना सुपात्र महन्त
राजाये बुलिला यत शास्त्र अवगाहि * स्वरूपत राघवत शास्त्र धर्म्म नाहि ५६
आरो एक पदे भैल आमार कुशल * निशाकाल भैले राघवर टुटे बल
निशाभागे युजिबो यतेक निशाचरे * मरिवन्त राम राजा भालुक बानरे ५७
युज नैयो पावे प्रजा थानतो विस्तर * युजिवाक उद्योग सकले राक्षसर
खाओं मारो करे प्रजा हाते अस्त्रधरि * सत्वरे मारियो गैया विलम्ब न करि ५८
सवाको निबारि मातिलन्त विभीषण * आवेसे जानिलो भैल विनाश लक्षण
राजलक्ष्मी एरिलेक रावण ददाक * सवाहारे मन राघवर युजिबाक ५९
शुना शुना ददा लङ्कानाथ निशाचर * मइ हित बोलो सबे राक्षस कुलर
गोत्र बन्धु राखि याओं राघवर मिता * हित वचनक मोर ने देखिवा तिता ४७६०
यतेक तोमार मन्त्री बोलय कुनय * आपुनि बा तुमि नुबुजाहा राजनय
हुइ नुइ तुमि गुणि चाहियो मनत * मोहोर वचन देखिवाहा हित पथ ४७६१
अरुन्धति ने देखय हित नुशुनय * दीप निर्व्वाणत यिटो गन्ध न पावय
सुहृदर बचनक ने देखय हित * सिसव प्राणीर जाना मरण सन्नित ६२
राजार मन्त्रीर भैल विपरीत मति * अधर्म्मे युगुत भैल विपरीत मति
सुहृदर वाक्य सबे नुरुचय याक * गत आयु प्राणी बुलि जानिबाहा ताक ६३

पराभूत होना पड़ेगा, उसके कातर-जीवन की मृत्यु समीप आ गयी है।।५४।। कहा है कि उसे ही दूत बनाना चाहिए जो कुलवन्त, पंडित, उत्तम बुद्धिमन्त हो तथा महान् विचारवान सत्पुरुष हो। राम ने ऐसा न कर वन की पशु-जाति को दूत बनाया, यही उसकी बड़ी हार है ॥ ५५ ॥ महा बुद्धिमान वृहस्पति जैसा मंत्री विरूपाक्ष बोला, हे उत्तम विचार वाले मंत्रियो, सुनिये, शास्त्रों का अवगाहन कर महाराज ने जो कुछ कहा है, वास्तव में राम का कोई शास्त्रोक्त धर्म नहीं है ॥ ५६ ॥ और भी एक तरह से हमारा कुशल होगा, क्योंकि रात के समय राम की लड़ने की शक्ति नही रहती। हम सभी निशाचर रात के समय ही संग्राम करेंगे जिसमें राजाराम भालू-वानरों के साथ मारे जायेंगे ॥ ५७ ॥ हमारी लंका की प्रजा को अपने स्थान में युद्ध का प्रचुर अवसर नहीं मिलता। इसलिए प्रत्येक राक्षस लड़ना चाहता है। प्रजा हाथ में अस्त्र लेकर 'मारो, काटो, खाओ' करती रहती है। अब विलम्ब किये बिना राम आदि सबको मार डालना चाहिए ॥ ५८ ॥ सबको चुप कराते हुए विभीषण बोले—मैं अब समझ गया कि सबके विनाश का लक्षण आ गया है ॥ ५९ ॥ हे भाई, लंकानाथ, राक्षस-राज, सुनो, मैं समस्त राक्षस-कुल के हित की बात कहता हूँ। मेरे हित-वचन को कड़वा न मानो। बन्धु-बान्धवों की रक्षा करने हेतु राघव के पास चलो ॥ ४७६० ॥ तुम्हारे जितने मंत्री हैं वे अनीति की बात करते हैं। वे स्वयं या तुम राजनीति नहीं समझते। अच्छा या बुरा तुम स्वयं मन में चिन्तन कर देखो तो मेरे वचनों में ही तुम्हें हित का मार्ग दिखाई देगा ॥ ६१ ॥ जो अरुन्धति को नहीं देखता, हित वचन नहीं सुनता, दीप के बुझने पर जिसे गंध नहीं मिलती, सुहृद के वचनों में जो हित नहीं समझता, समझ लो कि उन प्राणियों की मृत्यु सन्निकट है ॥ ६२ ॥ राजा के मंत्रियों की यदि विपरीत मति हो, वह विपरीत मति अधर्म में ले जाने वाली हो, सुहृद के वचन

अधर्म्मत रत भैले तुमि दुराचार * पतिव्रता कन्या हरिलाहा पर दार
तोमार संसर्गे आमि धर्म्म हरुवाओं * तुमि आछा ददा आमि राम पाशे याओं ६४
शुनियोक सर्व्वजने रामर चरित्र * बेदर रहस्य जानि पिया प्रति नित
महन्त सकले आक गावे अविश्राम * अप्रयासे सिजे धर्म्म अर्थ मोक्ष काम ६५
अवश्ये साधय सुख करिया आनन्द * हेनय रामर भजा पद मकरन्द
तेवेसे संसार सिन्धु अप्रयासे तरि * बोलन्त कन्दलि डाकि बोला हरि हरि ६६

रामर पदाघात पाइ बिभीषणर रामर समीप लै गमन

छबि

शुकान तृणत येन अगनि लागिया गैल राजा भैल आतिशय चण्ड ।
सिंहासनर हन्ते गावगोट चालिलेक डावरर काढ़ि लैया खाण्ड ।।
रावण राजाये पाचे लवर दिलेक भिरि येन क्रोधे मयमत्त हाती ।
बिभीषण बीरर ये हृदय माजत गैया क्रोधे मारिलेक एक लाथि ।। ६७
विष्णुर भकत बीर उचित बकता धीर आसनत आछिलन्त बसि ।
हियात लाथिर घाव सन्धानत चोट पाया तेतिक्षणे परिलन्त खसि ।।
मूर्च्छा गैया तेतिक्षण आछे पाछे बिभीषण सुस्थ हुया बसिल आसने ।
सुदीर्घ निश्वास तेजि कार्य्यर प्रभाव बुजि बिमरिषि आछिलन्त मने ।। ४७६८

दुलड़ी

शोक अग्नि येवे बर ज्वलि गैल असुखे काम्पय गाव ।
धर्म्म पथ चाहि बीर बिभीषणे चित्तत दिलन्त ठाव ।।

जिसे रुचिकर न लगते हों, समझना चाहिए कि उस प्राणी की आयु समाप्त हो गयी है ।। ६३ ।। तुम दुराचार अधर्म में निरत हो, पतिव्रता कन्या, दूसरे की पत्नी को हर लाये । तुम्हारे संग से हमें भी धर्म खोना पड़ रहा है । भाई, तुम रहो, हम राम के पास जा रहे हैं ।। ६४ ।। सभी जन राम का चरित्र सुनो, यह वेद का रहस्य है, ऐसा जानकर नित्य प्रति इसका पान करो । महत् लोग इसका निरंतरगान किया करते हैं, इससे धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष बिना प्रयास सिद्ध हो जाता है ।। ६५ ।। यह आनन्द संचार कर सुख देने वाला है । ऐसे रामचन्द्र के चरण-मकरंद का भजन करो । तभी विना प्रयास संसार-सागर पार कर सकते है । माधव कन्दली कहते हैं, पुकार पुकार कर 'हरि, हरि' कहो ।। ४७६६ ।।

रावण के पदाघात से पीड़ित विभीषण का राम के समीप जाना

विभीषण के वचन सुनकर राजा रावण उसी प्रकार प्रचंड क्रुद्ध हो उठा जैसे सूखे तृण में आग लग गयी हो । वह सिंहासन से उतर आया, वेग से खड्ग खींच लिया । मदमत्त हाथी की भाँति वह तेजी से दौड़ पड़ा और विभीषण के हृदय में जाकर क्रोध से एक लात मारी ।। ६७ ।। विष्णु-भक्त, उचित वचन कहने वाले वीर विभीषण आसन पर बैठे और कार्य का प्रभाव समझकर दीर्घ निश्वास छोड़ते हुए मन ही मन विचार-विमर्ष करने लगे ।। ४७६८ ।। जब विभीषण की शोकाग्नि वेग से जल उठी, अस्वस्थता से उनका शरीर काँपने लगा, पर धर्म-मार्ग का चिन्तन करते हुए वीर विभीषण ने उस वेदना को हृदय में ही रख लिया । वहाँ के सभी व्यक्ति संत्रस्त हो उठे, सम्पूर्ण रूप से सन्नाटा छा गया । सरस वचन कहकर प्रहस्त ने राजा के हाथ

सबे समज्यार त्रास लागि गैल फांस परि जीम गैल ।
चुम्बक बचने प्रहस्त वीरे ये हातर खड्ग लैस ॥ ६९
सिंहासनत बसिला राजार किञ्चित ताङ्क जुराइल ।
कतो बेलि राजा सुस्थक लभिला आरका शुरुति पाइल ॥
क्षणेक अन्तरे विभीषण वीरे राजार चापिल पाश ।
दक्षिण नासाये अति महादुखे काढ़िल दुम निश्वास ॥ ४७७०
आमाक लाथिर प्रहार दिलाहा आन प्राणी भाले जीवे ।
धर्म्मर पथक चाहिया ये आमि क्लेशक सहिलो हिये ॥
अधर्म्मी जनर संसर्ग दोषत बाढ़े आबिबेक कर्म्म ।
श्रीरामचन्द्रर समीपक गैले बाढ़िबे अनेक धर्म्म ॥ ४७७१
पापिष्ठ जनर संसर्ग दोषत धर्म्मक किक हराओं ।
थाकियोक तुमि ददा लङ्केश्वर रामर पाशक याओं ॥
रावण राजार पावक जानिया करिलन्त नमस्कार ।
आपोनाक चारि पात्रक लैलन्त आवर किछु सम्भार ॥ ७२
हाते गदा धरि बोलैं विभीषणे थाकियो पात्र समाज ।
विभीषण बैरी लङ्कार गुचायो सुखे भुञ्जा सबे राज ॥
शुना सर्व्वजन एरि आन मन रामकथामृतमय ।
एरि आन काम बोला राम राम पापर करा प्रलय ॥ ७३

पद

एतेके बचन बुलिलन्त विभीषणे * प्रणाम करिला गैया मावर चरणे
नैकेषीत समस्ते कहिला बिभीषणे * मइ भेट हइबो गैया रामर चरणे ७४
नैकेषी बोलन्त बापु मोर बोले थाक * यत अपराध दोष दियोक आमाक
रावण राजार मन्त्री यत भैला हीन * मनकष्टे रामार जीवेक कत दिन ७५

से खड्ग ले लिया ॥ ६९ ॥ फिर राजा को सिंहासन पर बैठाकर उसे शान्त करवाया । कुछ क्षण पश्चात् राजा रावण स्वस्थ हुआ, उसकी स्मृति लौटी । क्षणभर बाद वीर विभीषण राजा के पास पहुँचे और महादुख से दाहिनी ओर नाक से दीर्घ निश्वास लेकर बोले— ॥ ४७७० ॥ हमे तुमने लात प्रहार किया, दूसरे प्राणी उत्तम रूप से जीवित रहें, इसी कारण धर्म-पथ का विचार कर मैं हृदय में यह कष्ट सहता रहा । अधर्मी व्यक्ति के संसर्ग के दोष से अज्ञता के कर्म बढ़ जाते हैं । श्री रामचन्द्र के समीप जाने पर अनेक धर्म बढ़ जायेंगे ॥ ४७७१ ॥ हम, पापी जनों के संसर्ग रूपी दोष से भला धर्म को क्यों खोयें ? भाई लंकेश्वर रावण, तुम रहो, मैं राम के समीप जा रहा हूँ । विभीषण ने राजा रावण के पाँव पकड़कर प्रणाम किया, अपने चार साथियों को और कुछ सामग्रियाँ ले, हाथ में गदा उठा विभीषण वोले, सभी मंत्रियों और समाज के लोग रहो । वैरी विभीषण को लंका से निकालकर सब सुखपूर्वक राज भोगते रहो । (माधव कदली कहते है—) दूसरा मन छोड़कर सभी लोग अमृतमय रामकथा सुनें । अन्य कार्य छोड़कर राम-राम कहो और पाप को विध्वंस कर डालो ॥ ४७७३ ॥

ऐसा कहकर विभीपण ने वहाँ से चलकर माता के चरणों में प्रणाम किया, और नैकषी को सारी बातें सुना दी । (उन्होंने कहा) मैं अब रामचन्द्र के चरणों के दर्शन करूंगा ॥ ४७७४ ॥ नैकषी बोली—बेटा, मेरी बात से तू रह जा, जो कुछ अपराध हुआ है उसका दोष मुझे ही देना । राजा रावण के सभी मंत्री नीच हो गये हैं । वे

हितक बोलन्त तोर हिये दिला लाथि * जानिलोहो यमे तार मलचिले पाति
तइ एरि गैले मोक राखिबेक कोने * आरो जानो भुञ्जिबेक शृगाल शगुणे ७६
बिभीषणे बोलन्त थाकियो एहि भावे * रामत शरण मइ नतु लओं यावे
कुबेर ददात सोधो किबा बुद्धि पाओं * पाचे बिमरिषि श्रीरामर पाशे याओं ७७
बाढ़ि बिभीषणे जुरिलन्त योर हात * मावर चरणे पुनु नमिलन्त माथ
अनल सुनल बीर प्रघस सम्पाति * शरण मागिबे बिभीषणे लरिलन्ति ७८
अनेक प्रकारे पाइला मावत मेलानि * अन्तरीक्षे गैले पवनर बेग टानि
कैलास गिरिक लागि धरिलन्त पथ * सुधिबेक हित बिमरिषि कुबेरत ७९
महादेवे कुबेरे आछन्त पाशा खेलि * अनन्तरे धनदे चाहिला चक्षु मेलि
हरक बोलन्त प्रभु देखा विद्यमान * आमार पाशक आसिलात न पाइ थान ४७८०
पवन सञ्चारे आसि पाइला बिभीषण * करयोरे प्रणामिला हरर चरण
पाचे नमिलन्त कुबेरर दुइ पाव * आसने बसिला वीर आदरित भाव ४७८१
बिभीषणे सम्बुधि मातन्त देव हर * कहिते न लागे तोर सकले गोचर
रामर भार्य्याक हरि आनिला रावणे * सीताक सम्पिते बुलिलन्त बिभीषणे ८२
अनादि पुरुष तेन्ते जगत कारण * सुर नर मुनिजन सवे निस्तारण
निज रूपे सदगुणे न जानिब याक * हेन रामे प्रतिकार करिबेक ताक ८३
निर्गुण पुरुष निरञ्जन अबेकत * यात हन्ते उतपति समस्ते जगत
सुर नर मुनि गणे न पावन्त ओर * हेन रामे प्रतिकार साधिबेक तोर ८४

रामचन्द्र को मनोकष्ट देकर कितने दिन जीवित रह पायेगे ? ।। ४७७५ ।। हित-वचन कहने पर रावण ने तेरे हृदय में लात मारी है। मै जान गयी कि यम ने अब उसका दाना-पानी उठा लिया है। पर तेरे चले जाने पर मेरी देखभाल कौन करेगा ? मुझे सियार-गिद्ध खा डालेगे ।। ४७७६ ।। विभीषण बोले, माता, जब तक मैं रामचन्द्र के चरणों की शरण नही ले लेता तब तक तुम इसी प्रकार रहो। मैं कुबेर भैया से पूछूंगा, देखूं वे क्या उपाय बताते हैं। इसके बाद विचार-विमर्षकर श्रीराम के पास जाऊँगा ।। ४७७७ ।। इसके पश्चात् विभीषण ने आगे बढ़कर हाथ जोड़े और माँ के चरणों में पुनः सिर नवाया। अनल, सुनल, वीर प्रघस और सम्पाति भी राम की शरण लेने हेतु विभीषण के संग वेग से चल पड़े ।। ७८ ।। विभीषण ने अनेक प्रकार समझा-बुझाकर माता से स्वीकृत ली, और अन्तरिक्ष से होकर पवन वेग से चल पड़े। क्या करना उचित है इसकी चर्चा कुबेर से करने हेतु वे सभी कैलास के मार्ग पर चले ।।७९ ।। वहाँ महादेव और कुबेर पाशा खेल रहे थे। इसके पश्चात् कुबेर ने आँख उठाकर उन्हें देखा। उन्होने शिव से कहा—प्रभु, इन्हें देखिये, और कही स्थान न पाने के कारण ये हमारे पास आये है ।। ४७८० ।। विभीषण वहाँ वायुवेग से उपस्थित हुए और हाथ जोडकर शिव के चरणों मे प्रणाम किया। इसके पश्चात् कुबेर के दोनों चरणों में प्रणाम किया। आदर भाव से वीर विभीषण आसनपर बैठे ।। ८१ ।। विभीषण से शिव ने कहा—विभीपण तुम्हें कुछ बताने की कोई आवश्यकता नही है, मुझे सब कुछ ज्ञात है। रावण राम की भार्या सीता को हरण कर लाया है। विभीषण ने उसे सौप देने को कहा, ।। ८२ ।। रामचन्द्र जगत के कारणभूत, अनादि पुरुष हैं, वे सुर-नर-मुनि सबका उद्धार करनेवाले हैं। अपने रूप या सद्गुणों द्वारा भी जिन्हें जाना नहीं जा सकता, ऐसे रामचन्द्र ही उसका प्रतिकार करेंगे ।। ८३ ।। निर्गुण पुरुष, निरंजन, अव्यक्त, जिनसे समस्त जगत की उत्पत्ति हुई है, सुर, नर, मुनि जिनका ओर-छोर नहीं पाते, ऐसे प्रभुराम ही रावण के दुष्कार्य का प्रतिकार करेंगे।

लङ्का पुरि धारे आइला राघव श्रीहरि * सुग्रीव नृपति समे मित्रवत्ति करि
रावणक मारिया सीताक भेट पाइव * अव्याहते सबे अयोध्याक चलि याइब ८५
हेनय उद्देश येवे हरे वुलिलेक * दुयोको प्रणामि बिभीषण चलिलेक
ससैन्य रामक गैया देखिलन्त थित * आकाशे थाकिला चारि पात्रे समन्वित ८६
ऊर्द्धे चाहि सुग्रीवे येन देखिला ताहाक * लङ्कार राक्षस आसे युद्धक आमाक
सुग्रीवर इङ्गित जानिला कपिगणे * शिलावृक्ष उपारि लैलन्त तेतिक्षणे ८७
हुङ्कारिल प्रजागणे वानर सकले * किल किल ध्वनि करे यत कपिबले
इदिशर सेनागण याय ये सिदिश * बानर भालुकर भैलन्त उसमिस ८८
ऊर्द्धक चाहिया सवे करे कुतूहलि * लवरा लवरि करे ऊर्द्धे लाञ्ज तुलि
लवण सागर येन उथलिल वावे * टलमल वसुमती चरणर घावे ८९
केहो केहो वोले आजि तेजाइवोहो दान्त * केहो केहो वोले मारि दहिवोहो आन्त
आकाशत विभीषणे वुलिलन्त वाणी * वानर नृपति तुमि आमाक न जानि ४७९०
लङ्का हन्ते आसि भैलो रावणर भाइ * उचितक बोलन्ते प्रहार करा पाइ
लङ्कात एरिलो आपनार परिकर * आन गति नाइ दुइ चरण रामर ४७९१
शुनियो वानर राजा पुण्य सङ्कटियो * रामर समीपे निया मोक समर्पियो
सुग्रीवे बोलन्त मित्र थाका एहिभावे * रामत सकलो कथा पूछि आसो यावे ९२
एहि बुलि सुग्रीव गैया त्वरिते आण्टाइल * सकलो वार्त्ताक राम चरणे जनाइल
हेन शुनि रामर बिस्मय भैल मन * पात्र मेलेकक आनिलन्त तेति क्षण ९३

राजा सुग्रीव के साथ मित्रताकर, ।। ८४ ।। राघव श्रीहरि लंकापुरी के समीप आ पहुँचे हैं। वे रावण को मारकर सीता से मिलेंगे। और निर्विघ्न रूप से अयोध्या चले जायेंगे ।। ८५ ।। शिवजी ने जव इस प्रकार कहा तो विभीषण दोनो को प्रणाम कर चल पड़े। सेना सहित रामचन्द्र को उन्होंने जाकर बैठे देखा और चारों मंत्रियों के साथ वे आकाश में स्थित हो गये ।। ८६ ।। सुग्रीव ने ऊपर की ओर देखकर सोचा, लंका के राक्षस लड़ने के लिए आ रहे है। वानरों ने सुग्रीव का संकेत समझकर उसी क्षण वृक्ष और शिलाएँ उखाड़कर ले ली ।। ८७ ।। प्रजा सहित वानरगण हुंकार कर उठे। वानर-सेना किल-किल ध्वनि करने लगी। इस ओर की सेना उस ओर जाने लगी। वानरों-भालुओं में उथल-पुथल मच गयी ।। ८८ ।। सव कौतूहल से ऊपर की ओर देखने लगे। पूँछ ऊपर उठाये दौड़-धूप करने लगे। ऐसा लगा, मानो लवण-समुद्र पवन से उद्वेलित हो उठा। धरती चरणों के आघात से काँपने लगी ।। ८९ ।। कोई-कोई कहने लगे, आज दाँत को तेज करना है, कोई कहता था, आज इन्हें मारकर आँतें जला डालूंगा। तव आकाश में खड़े विभीषण ने कहा—हे वानरराज, तुम हमें नही जानते ।। ४७९० ।। हम लंका से आये हैं, रावण के भाई हैं। उचित वचन कहने के कारण (रावण ने) प्रहार किया, (इसी कारण हम यहाँ आये हैं)। हम अपने आत्मीय स्वजनो को लंका मे छोड़ आये हैं। रामचन्द्र के दोनों चरणों को छोड़कर हमारी और कोई गति नही है ।। ९१ ।। हे वानरराज सुनो, हमें रामचन्द्र के समीप ले जाकर समर्पित कर पुण्यलाभ करो। तव सुग्रीव वोला—मित्र, मैं जाकर जब तक रामचन्द्र से सारी वात पूछ न आऊँ तव तक तुम इसी प्रकार रहो, ।। ९२ ।। यह कहकर सुग्रीव तुरन्त राम के पास पहुँचा और रामचन्द्र के चरणों मे सारी वार्ता निवेदन की। वह सुनकर रामचन्द्र के मन में बड़ा विस्मय हुआ। उन्होंने अपने मंत्रणा देनेवाले व्यक्तियों को तत्क्षण वुलाया ।। ९३ ।।

रावणर भाइ मोत मागय शरण * दिबो बा निदिवो बोलो सबे पात्रगण
नीले बुलिलन्त बाणी अगनिर सुत * बैरक शरण दिते नुहिके उचित ९४
मोक पठाइयोक मइ याओं एकेश्वरे * मारिया पेलाओं गैया पर्व्वत शिखरे
अङ्गदे बोलन्त देखि बर आटकत * युजिबे नोवारो आमि करो अकपट ९५
आमार बचने प्रभु पाठायोक चरे * भालमन्द जिज्ञासिया आसोक ताहारे
पात्र मेलेके हेन बुलिला बचन * दुर्ज्जन राक्षस प्रभु नुबुजिव मन ९६
आमार बचने भाल दूत पठायोक * चरिया तहित गैले किवा करिबेक
हनुमन्ते सबाहारे शुनिया बचन * बोलन्त प्रणामि पाचे रामर चरण ९७
शुनियोक प्रभु रामचन्द्र कृपामय * बिभीषणे तयु पावे शरण पशय
अनेक जिज्ञासि आमि थिर करि पाइलो * रावणर सहोदर बर कष्टे आइल ९८
मइ जानो इटो प्राणी परम धार्म्मिक * शरण मागय ताक निदिबाहा किक
इन्द्रजिते बन्दी करि मोक आनिदिल * काटनिया बानरक राजा आदेशिल ९९
रावणर तङ्क देखि उठि तावक्षणे * शास्त्रनय देखाया राखिला बिभीषणे
श्रीरामे बोलन्त भाल हनुर उत्तर * यतेक बुलिला माने सबे रुचिकर ४८००
सकलो कार्य्यत तुमि मोर सात आग * देखिलो सबात करि मोत अनुराग
युद्धत क्रोधत मन्त्रणातो सातो आगे * मारुतिर बचन मोहोर मने लागे ४८०१
एकान्त भकत तुमि आराधा आमाक * साधु साधु बायुपुत्र प्रशंसो तोमाक
आनत पुछिलो माने चातुसे बुलिल * एहि बुलि श्रीरामे हनुक प्रशंसिल २

पूछा रावण का भाई आकर मुझसे शरण मांग रहा है। मै दूँ या नही, सभी मंत्रीगण बताये। अग्नि-पुत्र नील ने कहा, वैरी को शरण देना कदापि उचित नहीं है ॥ ९४ ॥ मुझे भेज दीजिये, ताकि मैं जाकर अकेले ही उन्हें उसी पर्वत-शिखर पर मार डालूँ। अंगद बोला—यह तो बड़े संकट की बात है। हम निष्कपट रूप से लड़ नहीं सकेंगे ॥ ९५ ॥ प्रभु, मेरा कहना है कि एक चर भेजा जाय, वह उससे भला बुरा पूछकर आवे। दूसरे लोगो ने कहा—प्रभु, दुर्ज्जन राक्षस का मन समझा नही जा सकता ॥ ९६ ॥ हमारा कहना है कि वहाँ किसी अच्छे दूत को भेजा जाय, चर जाकर क्या करेगा। सब के वचन सुनकर हनुमान ने राम के चरणो में प्रणाम कर कहा— ॥ ४७९७ ॥ प्रभु, कृपामय रामचन्द्र, सुनिये। विभीषण आपके चरणों में शरण लेने आया है। उससे बहुत-कुछ पूछ-ताछ कर मैंने निश्चित समझा है कि बहुत कष्ट पाने के कारण ही रावण का सहोदर आपकी शरण में आया है ॥ ९८ ॥ मैं जानता हूँ, यह व्यक्ति बड़ा ही धर्मात्मा है। जब वह शरण माँगता है तो आप शरण क्यों नहीं देंगे? जब इन्द्रजित मुझे बंदी कर राजा के पास ले गया था तो रावण ने 'इसे काट डालो' कहकर आदेश दिया था ॥ ९९ ॥ रावण का क्रोध देखकर उसी क्षण विभीषण ने उठकर नीतिशास्त्र की बात सुनाकर मेरी रक्षा की। श्रीरामचन्द्र ने कहा— हनुमान का उत्तर उत्तम है। इन्होंने जो कुछ कहा है मुझे रुचिकर लगा ॥ ४८०० ॥ तुम मेरे सभी कार्यो में आगे रहनेवाले हो, मैं देख रहा हूँ, तुम मुझसे सबकी अपेक्षा अधिक अनुराग रखते हो। युद्ध में, क्रोध का कारण उपस्थित होने पर, मंत्रणा देने में तुम सबसे बढ़कर हो। इसी कारण मारुति का वचन मुझे पसद आता है ॥ ४८०१ ॥ तुम मेरे एकान्त भक्त हो, मेरी आराधना करते हो, 'साधु, साधु' वायु-पुत्र, मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूँ। दूसरों से जो पूछता हूँ वह चाटुकारी वचन ही बोलता है। यह कहकर श्रीरामचन्द्र ने हनुमान की प्रशंसा की ॥ २ ॥ उन्होंने कहा— पितृघाती भी यदि शरण माँगता है, तो वैसे वैरी की

बापक काटिया यदि शरण मागय * सिसब बैरको रक्षा करिबे लागय
शरणक पाइ यिटो शरण ना दय * पातक बाढ़य पुण्यमाने हय क्षय ३
आछा तान भाइ यदि रावण आसय * ताहाको शरण दिबो शास्त्रे हेन कय
हेन शुनि सुग्रीवे ये हात ठार दिला * आकाशत थाकि विभीषणे यो आसिला ४
मनत हरिखे बुलिलन्त विभीषणे * विधि शुभक्षण मोर शुना पात्रगणे
एहि बुलि राघवर चरण स्मरन्ते * भूमित नामिला सबे आकाशर हन्ते ५
अस्त्र शस्त्र माने कत वृक्षत थैलन्त * निया विभीषणक सुग्रीवे भेण्टाइलन्त
देखि बिभीषणे करिलन्त योर हात * प्रणामि बोलन्त प्रभु शरण तोमात ६
लङ्कात एरिया आन सबे परिवार * आन गति नाइ बिने चरण तोमार
हेन वाणी येवे बिभीषणे बुलिलन्त * गले धरि कोले करि सावटि लैलन्त ७
श्रीराम बोलन्त लखाइ मोर वोल जान * आति शीघ्र करि सागरर जल आन
शुभदिन शुभतिथि यावे आतिरेक * करो बिभीषणक लङ्काते अभिषेक ८
राम वाक्य शुनिया लक्ष्मण लरिलन्त * चारि सागरर जल शीघ्रे आनिलन्त
सागरर जल आनि माथात ढालिला * रामे बिभीषणक लङ्कार भार दिला ९
राजा हैया विभीषण थाकिले तहिते * महा बलवन्त चारि पात्र समन्विते
लङ्का राज्यखानक पाइलन्त विभीषण * जय जय करये सकले सेनागण ४८१०
शुना बिभीषण तुमि बुद्धिवन्त सार * कमन प्रकारे सागरर हैबा पार
तेवेसे होवय सबाहारे प्रतिकार * येवे सेनागणे सवे सुखे होवे पार ४८११
एहि बाणी शुनिया मातिला बिभीषण * येहेन मनत परे कहिबो बचन
सागर तरिते एक करियोक व्रत * लक्ष्मण सुग्रीव राम सबार सम्मत १२

भी रक्षा करनी चाहिए। शरणागत को जो शरण नही देता है, तो उसका पाप बढ़ता है, पुण्य नष्ट हो जाता है ।। ३ ।। उसके भाई की तो बात ही क्या, यदि रावण भी शरण लेने आता तो उसे भी मैं शरण दूँगा, यही शास्त्र का वचन है। यह सुनकर सुग्रीव ने हाथ से संकेत किया, विभीषण आकाश से उतर कर आ गये ।। ४ ।। विभीषण ने मन में परम प्रसन्न होकर कहा— हे मन्त्रियो, सुनो, विधि मेरा शुभक्षण है। यह कहकर राम का चरण स्मरण करते हुए आकाश से भूमि पर उतर आये ।। ५ ।। अपने अस्त्र-शस्त्रो को कुछ वृक्षो पर रख दिया, सुग्रीव ने विभीषण को रामचन्द्र से मिला दिया। रामचन्द्र को देख विभीषण ने हाथ जोड प्रणाम कर कहा, प्रभु, तुम्हारी शरण मे आया हूँ ।। ६ ।। लंका में सारे परिवार को छोड़कर आया हूँ। तुम्हारी शरण के बगैर मेरी अन्य गति नही है। विभीपण के इस प्रकार कहने पर रामचन्द्र ने उन्हे गला पकड कर आलिगन कर लिया ।। ७ ।। श्रीराम ने कहा, लक्ष्मण, मेरी बात सुनो, शीघ्र ही सागर का जल ले आओ। शुभ दिन, शुभ तिथि बीतने के पहले ही विभीषण को लंका के राजपद पर अभिषिक्त करना ।। ८ ।। रामचन्द्र के वचन सुनकर लक्ष्मण तेजी से दौड़ पड़े और चार सागरों का पानी शीघ्र ही ले आये। सागर-जल लाकर विभीषण के सिर पर अभिषेक किया और लका का राज्य-भार विभीषण पर सौप दिया ।। ९ ।। राजा बनकर विभीषण अपने महाबलवान चारों मंत्रियों के साथ वही रहने लगे। विभीषण ने लंका का राज्य पा लिया, देखकर सारी सेना 'जय, जय' करने लगी ।। ४८१० ।। रामचन्द्र ने पूछा— सुनो विभीषण, तुम बुद्धिमानो में श्रेष्ठ हो। बताओ, सागर को पार कैसे किया जाय? सेना यदि सुखपूर्वक पार हो जाये तो सभी का प्रतिकार हो जायेगा ।। ११ ।। यह वचन सुनकर विभीषण ने कहा— मुझे जैसा स्मरण है, बता रहा हूँ। सागर पार

कुश पारि तिनिदिन निद्राय आछिल * रामक सागरे तेहो देखायो निदिल
जागिलन्त रामे क्रोधे रकत नयन * लक्ष्मणक सम्बुधिया बुलिला बचन १
आशकत देखि मोक न करय डर * देखा मोक बर हेला करय सागर
मृदु देखि कटाक्ष न करे आमासाक * उचित फलक दिओं निदिबाहा हाक १
कदाचितो कार्य्य निसिजिवे मृदु भावे * शान्त मूर्ति भैले ताक केहो न डरावे
शनैश्चर भये सबे सर्ब्बस्व तेजय * सोमग्रह नामे फुल पातको नेदय १५
धनुखान बापु मोर हाते गुण माजि * अगाध सागर मान शुकाइ थओं आजि
अग्निशर मारि आजि शुषि एरो जल * भरि गरि करि याओक बानर सकल १६
एहि बुलि रामे मारिलन्त अग्निवाण * शुषिल सकले जल देखि विद्यमान
तरत परिया सबे शिशु घरियाल * अगनि दगध देहा देखि लाल काल १७
शुकाइ सकले जल जन्तु सबे मरे * आसिलन्त सागर रामर पाशे डरे
रकत पुष्पर माला रकत अम्बर * शुद्ध तार हार अलङ्कार माणिकर १८
वैदूर्य्य मणिर सम शरीरर मर्म्म * सुमृदु कुण्डल सुशोभित दुइ कर्ण
नाना अलङ्कारे करि देखिय सुवेश * कृताञ्जलि करि आसि आगत प्रवेश १९
अल्प अल्प करि पाचे बुलिला उत्तर * आषारेक बोलोहो शुनियो रघुबर
तोमारे से बापे आनि थापिले जलत * स्वप्नत निदिलो देखा शुना यि कार्य्यत ४८२०
आनो आसिबार भैले खुजिबेक पथ * एहि बुलि स्वप्ने प्रभु न भैलो बेकत
तोमार बंशर बापु कृत्य राखियोक * अगाध सागर मोर नाम नुगुचोक ४८२१

करने के लिए एक व्रत कीजिये। (विभीषण का यह परामर्श) लक्ष्मण, सुग्रीव, राम, सभी को भाया ।। १२ ।। रामचन्द्र वहाँ कुश बिछाकर तीन दिन (भूमि पर) सोये। तथापि राम को सागर ने दर्शन ही नहीं दिये। तब राम ने जगकर क्रोध से आँखे लाल कर लक्ष्मण को सम्बोधित करते हुए कहा— ।। १३ ।। मुझे अशक्त देखकर यह सागर डर नही रहा है। देखो यह मेरी बड़ी अवहेलना कर रहा है। हमे कोमल समझ कर आँख उठाकर भी नही देखता; मैं इसे उचित फल दूंगा, मुझे रोकना मत ।। १४ ।। मृदु भाव से कभी कार्य सिद्ध नही होता। शान्तमूर्ति होने पर कोई उस व्यक्ति से डरता नहीं। जैसे कि शनिश्चर के भय से लोग सर्वस्व तजते हैं पर चन्द्रमा के लिए फूल-पत्ती भी नहीं चढ़ाते ।। १५ ।। वत्स, धनुष पर डोरी चढ़ाकर मेरे हाथ में दे दो। मैं आज इस अगाध सागर को सुखाकर रख दूंगा। आज मैं अग्निबाण मारकर सारा जल सोख लूंगा जिससे सभी वानर पैदल ही पार निकल जायें ।। १६ ।। यह कहकर रामचन्द्र ने अग्निवाण छोड़ा। उससे सागर का जल सूखने लगा। सूस, घड़ियाल, सब सूखे में आग से जलते हुए तड़पने लगे ।। १७ ।। जब जल सूखने पर जल-जन्तु मरने लगे, तब सागर डर के मारे राम के पास आया। वह लाल फूलों की माला और लाल वस्त्र पहने हुए था। उसके हार और मणियों के अलंकार बड़े शुद्ध थे ।। १८ ।। उसके शरीर की आभा वैदूर्य मणि की भाँति थी। दोनों कानों में कोमल कुंडल सुशोभित थे। अनेक अलंकारों में उसका वेश बड़ा सुन्दर लग रहा था। वह हाथ जोड़े हुए रामचन्द्र के सम्मुख आया ।। १९ ।। इसके पश्चात धीरे-धीरे उत्तर देते हुए कहने लगा— हे रघुवर, मै तुमसे कुछ निवेदन कर रहा हूँ, सुनो। तुम्हारे ही पूर्वज ने मुझे लाकर जल में स्थापित किया था। मैंने स्वप्न में क्यों नही दर्शन दिये उसका कारण सुनो ।। ४८२० ।। जब किसी दूसरे को भी आना होगा तो, वह मुझसे मार्ग माँगेगा, इसी कारण मैं स्वप्न में प्रकट नही हुआ। अपने वंश के कृत्य की रक्षा करो ताकि 'सागर अगाध है' यह प्रसिद्धि मिट न जाये ।। २१ ।।

जल जन्तु थाकोक जलत बान्धा सेतु * येनमते बान्धिबाहा कहो तार हेतु
तोमार सारथि नल आछन्त वानर * वीर विश्वकर्म्म ताक दिया आछेबर २२
शुनियोक पात्रमोर शुभाशय नल * तुमि चूइले वृक्ष शिला न याइबेक तल
पूर्ब्बत देवता लोके युद्धत न पारि * तोमार बापक निले असुरक हारि २३
असुरक मारिया देवक करि थित * तेसानि ताहान मोर परम सखित्व
सेहिसे सम्बन्धे तुमि तनय आमार * उपाय कहिलो आर सेतु बान्धिबार २४
एहि कथा कहिया सागर चलि गैला * सबे जल जन्तु मैल पूर्ण जल भैला
एहिसे उपाय कथा कहिला सागर * ताक शुनि महारङ्ग मनत रामर २५
बुलिलन्त राम पाचे शुनियो लक्ष्मण * धनुशर लैया मोर थैयो एतिक्षण
रामे माति बोलन्त सुग्रीव नल नील * हनुमन्त जाम्बवन्त अङ्गद सुनील २६
शुनिला कि सबे सागरर येन वाणी * क्षाण्ट करि सम्भारक मिलायोक आनि
राघवर वचने सुग्रीवे आदेशिल * पर्ब्बत बनत सबे वानर पशिल २७
आमरा कण्टकि जाम आम ये चम्पक * अशोक बकुल पिचुमर्द्द कपर्द्दक
पर्ब्बतर भितरत यत बस्तु पाइल * लताये सहिते आनि जलत पेलाइल २८
पृथिबीत खुजिया आनन्त निरन्तरे * नलबीर समे सेतु बान्धन्त सागरे
लवरा लवरि करि आनिवार देखि * रङ्ग मने दुइ बीरे ताके आछे लेखि २९
बापु हनुमन्त तुमि वाक्य आकलियो * वर वर वीरे पर्ब्बतक आनि दियो
रामर वचन मने करि नमस्कार * मैन्दय द्विविद आरु वालीर कुमार ४८३०
पनस गवाक्ष कपि द्विविद सुषेण * नील कुमुद आदि वीर कपिगण
हरिषे बानर बले पर्ब्बत आनन्त * सागर जलत थैले नले हात देन्त ४८३१

जल जन्तुओं को रहने दो और आप सेतु बांधो। जिस प्रकार से वह सेतु बांधना है मैं उसका उपाय बतलाता हूँ। तुम्हारे संग नल नाम का वानर है। वीर विश्वकर्मा ने उसे वर दिया हुआ है कि ॥ २२ ॥ मेरे प्रियपात्र शुभाशय नल, सुनो, तुम्हारा स्पर्श पाने पर वृक्ष और शिलाएं डूबेंगी नही। एवम् पूर्वकाल असुरों के साथ युद्ध में पराभूत हो देव उन्हें हराने हेतु तुम्हारे पिता जी को ले गये ॥ २३ ॥ तुम्हारे पिता जी ने असुरो को मारकर देवताओं को प्रतिष्ठित कर दिया। तभी से उनके साथ मेरी परम मित्रता है। इसी सम्बन्ध के कारण तुम मेरे भी बेटे लगते हो और मैंने भी सेतुबंधन का उपाय तुमसे बता दिया ॥ २४ ॥ यह बात कहकर सागर चला गया, सागर का जल फिर भर गया, जल-जन्तु पुन: सुखी हो गये। जब सागर ने रामचन्द्र से इस उपाय की बात बतायी तो उसे सुनकर राम के मन में बड़ा ही आनन्द हुआ ॥ २५ ॥ तब राम ने कहा, लक्ष्मण, सुनो। ये मेरे धनुष-बाण ले जाकर अब रख दो। रामचन्द्र ने पुकार कर कहा— सुग्रीव, नल, नील, हनुमान, जाम्बवन्त, सुनील, तुम सबने सागर के वचन सुन लिये। अब शीघ्रता से सेतु-बंधन की सामग्रियां ले आओ। रामचन्द्र के वचन सुनकर सुग्रीव ने वानरों को आदेश दिया, तब सभी वानर पर्वतों-वनों में प्रवेश कर गये ॥ २६-२७ ॥ अमड़ा, कंटकी, आम, जामुन, चम्पा, अशोक, बकुल, पिचुमर्द, कपर्दक आदि वृक्षों सहित पर्वतों में जो कुछ वस्तुएं मिली लताओं समेत उन्हें लाकर पानी में डाल दिया ॥ २८ ॥ पृथ्वी पर खोज-खोज कर वे सारी सामग्री ले आते थे और वीर नल के साथ सागर में सेतु बाँधते थे। उन्हें शीघ्रता से दौड़-धूप कर सामग्रियाँ लाते हुए राम-लक्ष्मण दोनों बड़ी प्रसन्नता से देखने लगे ॥ २९ ॥ (उन्होने हनुमान से कहा—) वत्स हनुमान, तुम मेरी बात सुनो, सभी बड़े-बड़े वीर मिलकर पर्वत उठा लाओ। राम के वचन सुनकर उन्हें नमस्कार कर

सवात अधिक हनुमन्त कपि सिह * लवरा लवरि करि पर्व्वतर शृंग
दुइ हाते दुइ गोटा आपोनार बले * शीघ्रे बेगे पेलावय सागरर जले ३२
महा पराक्रमी वीर वायुर नन्दन * याहार प्रभावे काम्पे तिनिओ भुवन
सन्नित दूरत माने यत खुजि पाइल * वृक्ष शिला पर्व्वतक तरित जराइल ३३
हनुमन्त पर्व्वत आनन्त बर वेगे * जलत पेलाइले छोवे नले सेहि छेगे
नाहि एक वीर हनुमन्त सरिवरि * पराक्रम देखि देवगण गैला, डरि ३४
त्रिजगत पति राम त्रिदशे सहाय * नले परशिले शिला तलक न याय
हेन देखि रामर हरिष आतिशय * राम बल जानि सेना करे जय जय ३५
बर बर पर्व्वत पावय यतमाने * हरिषे सबाक आनिलन्त हनुमाने
दीघले प्रमाण सेतु पञ्चिश दिवस * पथालिये भैल सेतु योजन ये दश ३६
हेन अद्भुत सेतु बान्धिलन्त जले * जय राम जय लक्ष्मण सेनागणे वोले
विश्वकर्म्मा सुत महा बीरवर नल * सागरत सेतु वान्धिलन्त महाबल ३७
असुर दानव दैत्य देवासुरगण * सेतुक देखिया ये सवार भय मन
साधु नल साधु नल करे कपिगण * नल हाते भैलेक उत्तम सेतुखन ३८
हनुमन्त आदि करि श्रीराम लक्ष्मण * परम हरिषे पार भैला कपिगण
राघवे वोलन्त मइ शिरे जटाधर * सुजिवे नोवारो गुण प्रशंसा तोमार ३९
जानिबि मोहोते तोर रहिवेक धार * साफल जीवन शुभकीर्ति भैला यार
धन्य धन्य नल तुमि विश्वकर्म्मा सुत * तोमार कीरति यश थाकिला बहुत ४८४०

मैन्द, द्विविद, वालीकुमार अंगद, पनस, गवाक्ष, वानर द्विविद, सुषेण, नील, कुमुद आदि वीर वानर प्रसन्नता-पूर्वक जा-जाकर पर्वत लाने लगे, वे जब उन्हें सागर के जल में डालते थे तब नल उन्हे हाथ से छू देते थे ।। ३०-३१ ।। कपि-सिंह हनुमान सबसे अधिक दौड़-दौडकर दोनों हाथों में दो-दो पर्वत-शिखर अपनी शक्ति से उखाड़ कर ले आते थे और बड़े वेग से समुद्र जल में डाल देते थे ।। ३२ ।। वायु-सुत महापराक्रमी वीर हनुमान ने, जिनके बल-प्रभाव से तीनों लोक काँपते रहते है, निकट या दूर वृक्ष-शिला, सब ला-लाकर सागर के किनारे जमा किया ।। ३३ ।। हनुमान बड़े वेग से पर्वत लाकर समुद्र में डालते थे, नल उन्हें उसी क्षण छू देता था। हनुमान जैसा कोई भी वीर वहाँ न था। उनका पराक्रम देख देवता भी डर गये ।। ३४ ।। तीनों लोकों के स्वामी राम और देवगण सहायक थे। नल के स्पर्श से शिलाएँ डूवती न थीं। यह देख राम बड़े प्रसन्न हुए। राम की शक्ति को जानकर सेनाएं जय-जय करने लगीं ।। ३५ ।। जितने बड़े-बड़े पर्वत मिले, हनुमान सभी को उठा लाये। लम्बाई में सौ योजन और चौड़ाई में दस योजन का वह सेतु पचीस दिनों में बाँधा गया ।। ३६ ।। ऐसा अद्भुत सेतु समुद्र-जल पर बाँधा गया; सेना जय राम, जय लक्ष्मण, कहने लगी। विश्वकर्मा-सुत महा वीरवर महावली नल ने सागर पर सेतु बाँध लिया ।। ३७ ।। असुर, दानव, दैत्य, देवता आदि सभी सेतु को देखकर भयभीत हो उठे। वानर गण 'नल-साधु' 'नल-साधु' कहने लगे। इस प्रकार नल के हाथ वह उत्तम सेतु वनकर तैयार हो गया ।। ३८ ।। उस पर से होकर हनुमान सहित समस्त वानरगण प्रसन्नता-पूर्वक सागर पार हो गये। रामचन्द्र ने कहा, मैं अपने सिर पर जटाधारी हूँ। तुम्हारे गुणो की प्रशंसा कर तुम्हारा ऋण चुका नही सकता ।। ३९ ।। तुम्हारा जीवन सफल हो गया, शुभकीर्ति रह गयी; जान लो कि मुझ पर तुम्हारा ऋण वना रहेगा। विश्वकर्मा-सुत नल तुम धन्य हो। तुम्हारी अनेक यश-कीर्ति अमर हो गयी ।। ४८४० ।।

सुग्रीवक आदि करि वानर भालुके * थाकिलन्त प्रभु राम सुवेल उच्चके
नमो नमो नित्य राम अनन्त अनादि * शिव सनातन शुद्ध बुद्ध वेद बादी ४८४१
मोर गति नाइ विना तोमार चरणे * बोला राम राम समासद यत जने ४२

छवि

एहि पथे पार भैला श्रीराम लक्ष्मण दुइ समदले चाप धरि करे।
राम सेतु नाम लोके इहार कीरिति वर थाकि गैल चन्द्र दिवाकरे ॥
आकाशत देवगणे परम हरिष मने महा प्रभु श्रीराम देवर।
जय जय राघवक लक्ष्मीदेवी नरन्तोक त्रिदश देवता दिलावर ॥ ४३

राघवर मस्तक परम आनन्द मने सिञ्चिलन्त पुण्य शुद्ध जले।
निज निज रथे चरि त्रिदश देवता माने स्वर्गक गैलन्त कौतूहले ॥
श्रीराम लक्ष्मणधीर सुग्रीव ये विभीषण थाकिलन्त वीर सब माने।
वानर कटक सेना पाचे बावे गीत गावे किलकिल करि थाने थाने ॥ ४४

भालुक वानर सेना गुहा गिरि गह्वरत थाकिलन्त सेतुक बियापि।
सुवेल पर्ब्बत हन्ते महेन्द्र गिरिक लागि थाकिलेक सेनागणे चापि ॥
केहो केहो शिलावृक्ष पर्ब्बत धरिया हाते लाञ्ज तुलि कतो पारे डेव।
रावणक गालि पारि भालुक वानर वले लङ्काक चाहिया गर्ज्जे केव ॥ ४५

हेन मते थाकिलन्त राम देव नारायण रघुनाथ जगतते सार।
माधव कन्दलि बोले श्रीराम जय जय रघुनाथ करियो उद्धार ॥
वाल्मीकि ये महाऋषि रामायण प्रकाशिल संसारत स्रजिल अमृत।
आक शुनि नरलोक कलित सद्‌गति होक आक शुनि होवे कृतकृत्य ॥ ४६

सुग्रीव समेत सभी वानर-भालुओं के साथ प्रभु राम सुउच्च सुवेल पर्वत पर उतरे। हे अनन्त, अनादि, नित्य, शिव, शुद्ध-बुद्ध, सनातन राम, जिनके गुण वेद वर्णन किया करते हैं; नमस्कार है, नमस्कार है ॥ ४१ ॥ तुम्हारे चरणो के सिवा मेरी कोई गति नही है। सभी सभासद जन राम, राम कहो ॥ ४८४२ ॥

श्रीरामचन्द्र और लक्ष्मण हाथों में धनुप-वाण लिये समस्त सेना सहित जिस मार्ग से पार उतरे वह संसार में 'राम-सेतु' नाम से प्रसिद्ध है। जब तक चन्द्र-सूर्य विद्यमान है तब तक के लिए यह कीर्ति रह गयी। आकाश मे देवगण ने परम हर्ष से महा प्रभु श्रीरामदेव की जय-जयकार करते हुए वर दिया कि लक्ष्मी देवी आपसे कभी अलग नही होगी ॥ ४३ ॥ देवताओं ने परम आनन्द से रामचन्द्र के मस्तक को पुण्य और पवित्र जल द्वारा सिंचित किया और परम कौतूहल से अपने-अपने रथो पर आरुढ हो स्वर्ग को चले गये। श्रीराम-लक्ष्मण, वीर सुग्रीव और विभीषण आदि वीर वहीं ठहरे। वानरों की सेना उल्लास से किल-किल करते हुए स्थान-स्थान पर गीत गाने लगी ॥ ४४ ॥ सेतु से लेकर गिरि, गुफ़ा, गह्वर आदि में व्याप्त होकर रहने लगे। सुवेल पर्वत से महेन्द्र पर्वत तक सेना व्यापक रूप से फैल गयी। कोई-कोई शिला, वृक्ष, पर्वत हाथो में ले-लेकर पूंछ उठाकर कूद रहे थे, कोई-कोई रावण को गालियाँ दे-देकर लंका की ओर देखते हुए गर्जना कर रहे थे ॥ ४५ ॥ जगत में श्रेष्ठ रघुनाथ, नारायण वहाँ रहने लगे। माधव कन्दली कहता है, श्रीराम आपकी जय हो। रघुनाथ आप हमारा उद्धार कीजिये। महर्षि बाल्मीकि ने रामायण प्रकाशित

माधव कन्दलि बिप्रे ताहाने चरण स्मरि करिलन्त श्लोकक उद्धार ।
रामर चरण बिना आन गति नाहि हेरा जानिबाहा मने करि सार ।।
थाकिलन्त रामदेवे सुवेलत प्रवेशिया समदले वितोपन थाने ।
माधव कन्दलि भणे कौतुके सुन्दराकाण्ड समापति भैला एहि माने ।। ४७

शुनियोक सभासद मधुर कोमल पद पुण्यकथा रामर चरित्र ।
यमपथ निवारण कलिमल संहारण महारस श्रवणे अमृत ।।
भव भय बिनाशन महा मोक्ष प्रकरण समस्त धर्म्मरे इसे सार ।
जानि शुना यत्न करि डाकि बोला हरि हरि तेवे सुखे तरिबा संसार ।। ४८

।। सुन्दराकाण्ड समाप्त ।।

कर संसार में अमृत का सिर्जन किया है । इसका श्रवण कर कलिकाल में नरलोक की सद्‌गति होती है, इसका श्रवण कर मनुष्य कृतकृत्य होता है । विप्र माधव कन्दली उन्ही के चरणों का स्मरण करते हुए उनके श्लोकों का (भाषा में) उद्धरण कर रहा है । अरे, राम के चरणों के बिना कोई गति नही है, यह मन में सार रूप समझ लो । सुबेल पर्वत पर प्रभु रामचन्द्र उस मनोरम स्थान में सेना सहित रहने लगे । माधव कन्दली कहता है, कौतुक से सुन्दरकाण्ड यहीं समाप्त हो रहा है ।। ४६-४७ ।। सभासद गण, मधुर कोमल पदों से युक्त राम के चरित्र रूपी पुण्यकथा का श्रवण करो । यह यमलोक के मार्ग से बचानेवाली, कलिमल का संहार करनेवाली, सुनने में अमृत महा-रस है । यह भव-भय-विनाशन, महा-मोक्ष-प्रकरण है, यही समस्त धर्म का सार है । ऐसा समझ कर यत्नपूर्वक 'हरि, हरि' पुकार कर कहो, तभी सुखपूर्वक इस संसार से तर जाओगे ।। ४८४८ ।।

।। इति सुन्दरकाण्ड समाप्त ।।

लंका काण्ड

रामं लक्ष्मण पूर्व्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं।
काकुत्स्थं करुणामयं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्म्मिकं ॥
राजेन्द्रं सत्यसन्धं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्त्ति।
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुल तिलकं राघवं रावणारिं ॥

दुलड़ी

नमो नारायण विघिनि खण्डन रघुर नन्दन राम।
सहस्रेक बाहु सहस्रेक शिरि यार सहस्रेक नाम ॥
बापर सत्यक पालिया राघवे सीता समे गैला बन।
बोलन्त कन्दलि आन गति नाइ रामर दुइ चरण ॥ ४९

रावणे शुक-सारणक श्रीरामर सैन्य चावलै पठाय आरु उलटि आहि रावणर आगत दूरत वर्णना

पद

प्रणामिलो राम तिनि त्रैलोक्यर नाथ * निशाचर रावणक बधिला लङ्कात
सागरत सेतुबन्ध वालीर मरण * माधवे भणिला श्रीरामर चरण ४८५०
रामे जल रामे थल रामेसे आकाश * रामेसे मन्दर मेरु रामेसे कैलाश
हेन राम चरण सुमरे यिटो नरे * अक्षय पुण्यक साञ्चे न याय यमघरे ४८५१
श्रीराम जयति दशरथर तनय * लक्ष्मण जयति श्रीरामत विनय
सुग्रीव जयति कपिराज बुद्धिमन्त * जयति जयति बायुसुत हनुमन्त ५२

विघ्न-खंडन, रघुनन्दन राम नारायण को जिनकी सहस्रो भुजाएँ, सहस्रों सिर, सहस्रों नाम है, नमस्कार है। राघव 'पिता के सत्य का पालन' हेतु सीता समेत वन को गये थे। कन्दलि कहते हैं, उन राम के दोनों चरणों के सिवा और अन्य कोई गति नहीं है ॥ ४८४९ ॥

रावण का शुक-सारण को श्रीराम की सेना देखने हेतु भेजना, दूतों का लौटकर रावण से वर्णन करना

तीनों लोकों के नाथ रामचन्द्र को प्रणाम है जिन्होंने लंका में निशाचर रावण का वध किया, सागर पर सेतु बाँधा, वाली को मारा। माधव कन्दलि उन्ही श्रीराम के चरणों का (स्मरण करते हुए) वर्णन कर रहे हैं ॥ ४८५० ॥ राम ही जल हैं, राम ही स्थल है, राम ही आकाश हैं, राम ही मन्दर मेरु है, राम ही कैलास हैं, ऐसे श्रीरामचन्द्र के चरणों का जो स्मरण करता है, वह अक्षय पुण्य का संचय करता है, उसे यमलोक में जाना नही पड़ता ॥ ५१ ॥ दशरथ-सुत राम की जय हो, श्रीराम की सेवा में विनम्र-भाव से रहनेवाले लक्ष्मणजी की जय हो, बुद्धिमान कपिराज सुग्रीव

ससैन्ये राघवे येवे तरिला सागरे * शुक सारणक आदेशिला लङ्केश्वरे
सागरत सेतुबन्ध करिला राघवे * हेनतो दुष्कर कर्म्म नतो करे केवे ५३
सुवेल पर्व्वते राम छपकारे स्थित * हेन देखि मोर भने ज्वलि गैला भीत
पौरुष आचरि किछु न करिबि दैन्य * भालमते लेखिबा रामर कत सैन्य ५४
शुक ये सारणे वानरर रूप धरा * छद्मरूपे पशिया सैन्यर लेखा करा
कत सेनापति पात्र कार केन बुक * लेखिया आसिबि कत बानर भालुक ५५
राजार आदेश वाणी शिरोगत करि * शुक ये सारणे बानरर रूप धरि
रामसेना माजत पशिया बर शङ्का * सागर माजत येन दुइ माछरङ्का ५६
देखय सुवेल गिरि पूरिला बानरे * सागरर तीर जुरि पर्व्वत शिखरे
दीर्घ शत योजन पथालि दश जुरि * हेन सेतु भालुक बानरे आछे पूरि ५७
इटो सेना लेखिते शकति आछे कार * आछोक लेखिवे देखन्तेहि चमत्कार
एहि बुलि दुइजने दुइ भिति हुया * किछु सेना देखिलेक माजत पशिया ५८
हेनमते सेना चाहे शुक ये सारणे * मायारूपे दुइहाङ्के चिनिला बिभीषणे
बानरर हाते निया बन्दि कराइलन्त * करयोर करिया रामत जनाइलन्त ५९
बिभीषणे बिनावन्त शुनियो श्रीराम * इटो दुइजनत आमार आछे काम
वानरर रूप धरि आइला दुइ जन * सैन्य लेखिवाक लागि पठाइला रावण ४८६०
राक्षसर माया प्रभु राक्षसे जानि * दण्ड करियोक येन युगुत आपुनि
श्रीराम बोलन्त शुना सारण ये शुक * चर दुइया आइलि किनो निदारुण बुक ४८६१

की जय हो, वायु-सुत हनुमान की जय हो, जय हो ।। ५२ ।। जब रामचन्द्र सेना सहित सागर के पार चले आये, तब लंकेश्वर रावण ने शुक-सारण को आदेश देते हुए कहा—राम ने समुद्र पर सेतु बाँध लिया। ऐसा दुष्कर कर्म तो कोई भी नही कर सकता ।। ५३ ।। राम अविचल रूप से सुवेल पर्वत पर स्थित है, यह देखकर मेरे हृदय में भय जग उठा है। पौरुष दिखाते हुए तुम किसी प्रकार का दैन्य न दिखाते हुए उत्तम रूप से देखना कि राम की सेना कितनी है ।। ५४ ।। शुक-सारण, तुम वानर का रूप धारण कर लो और छद्म रूप से राम की सेना में प्रवेश कर गिनती करो। उसमें कितने सेनापति है, कितने मंत्री हैं, किसका वल कैसा है, कितने वानर-भालु हैं, सबका लेखा कर आओ ।। ५५ ।। राजा की आदेश-वाणी शिरोधार्य कर शुक-सारण वानर-रूप धर राम की सेना में प्रवेश कर बड़े शंकित हुए, मानो सागर में वे दो माक्षरंका (पक्षी) हों ।। ५६ ।। उन दोनों ने देखा, सागर के तट से लेकर पर्वत-शिखर तक समूचा सुवेल पर्वत वानरों से परिपूर्ण है। लम्वाई में सौ योजन और चौड़ाई में दस योजन को व्याप्त कर भालू और वानर भरे हुए थे ।। ५७ ।। इस सेना को देख सके ऐसी शक्ति भला किसमे है ? गिनती की बात ही क्या, देखते ही विस्मय-जनक लगती है। यह कहकर दोनों ने दो ओर से अन्दर प्रवेश कर कुछ सेना को देखा ।। ५८ ।। इसी प्रकार शुक-सारण सेना देखने लगे, उन्हें माया रूप में विभीषण ने पहचान लिया। उन्होंने वानरों के द्वारा उन्हें वन्दी करवा लिया और हाथ जोडकर राम से जाकर वताया ।। ४८५९ ।। विभीषण ने कहा—श्रीराम, सुनिये, इन दोनों से हमें काम है। ये दोनों वानर का रूप धरकर आये हैं, इन्हें रावण ने सेना-निरीक्षण हेतु भेजा है ।। ४८६० ।। मैं राक्षस हूँ इसलिए राक्षस की माया पहचानता हूँ। जैसा उचित समझें आप इन्हें दण्ड दें। श्रीराम बोले—शुक-सारण ! सुनो, तुम्हारा यह कैसा साहस कि गुप्तचर वनकर यहाँ आ गये ! ।। ४८६१ ।। तुम दोनों सच कहना, मिथ्या न कहना। मैं तुम्हें अभय दे रहा हूँ, जहाँ अपनी इच्छा हो, वहाँ

स्वरूप कहिवि किछु नुवुलिवि मिछा * विलोहो निर्भय पाइयो आपोनार इच्छा
समस्ते कहियो कथा भय परिहरा * यिवा लेखा ना पाइला आरोका लेखा करा ६२

तोमाक मारिया आमि कोन फल पाइवो * रावण राजाक वाक्य सन्देह पठाइबो
करजोर करि बोले शुक ये सारणे * स्वरूपे स्वरूपे प्रभु पठाइला रावणे ६३

इटो सेना लेखिते बापर नाहि शक * येवे दया थाके चलो आपन देशक
तयु सेना लखिवेक काहार पराणे * त्राहि त्राहि रामदेव पशिलो चरणे ६४

रामचन्द्रे वोलन्त शुनियो चर दुइ * वार्त्ताक जनाइबि रावणर आग हुइ
सीताक हरिलि यिवा गर्व्वत थाकिया * सिटो वल दरशोक पौरुष राखिया ६५

आमि आसि मिलिलो ताहार यमकाल * निरन्तरे राक्षसर हुइवे बुन्दामार
आमार घरिणी हरि निल निशाचरे * दश शिर छेदिवो दुर्घोर दश शरे ६६

प्रणाम करिया दुइयो रामर चरणे * लङ्कात पशिला गैया त्वरित गमने
रावणर आगत आञ्जलि धरि हाते * आदेश गोहाइ वुलि नमिलेक माथे ६७

देवर आगत आमि कहो स्वरूपत * विभीषणे पाइया निया योगाइला रामत
धर्म्म पुरुष राम पराणे राखिया * तोमात सन्देह वाक्य पठाइला वुलिया ६८

लेखिते पठाइला तुमि राघवर दल * कोटि पुरुषतो कोने लेखिवे सकल
मुख्य मुख्य चिनाओं अपार यत लोक * प्रति प्रति चिनाओं मेह्लत चरियोक ६९

अमृतोधिक स्वाद कथा रामायण * सहरिष मने शुना सभासद गण
शुनन्ते मुकति होवे दुख उपशाम * वोलन्त कन्दलि सवे बोला राम राम ४८७०

तुम जा सकते हो। भय छोड़ दो, तुम सारी बातें वताओ। यदि कुछ और देखना शेष हो तो उसे भी देख लो ॥ ६२ ॥ तुम्हे मारकर हमे भला क्या मिलेगा, मैं तुम लोगों के जरिये राजा रावण के पास अपना सन्देश भेजूंगा। तव शुक-सारण ने हाथ जोड़कर कहा—प्रभु, हमें सत्य ही रावण ने भेजा है ॥ ६३ ॥ इस सेना को देखने की हमारे बाप की भी शक्ति नही है, यदि आपकी दया हो तो हम अपने देश लौट जाना चाहते हैं। आपकी सेना देख सके ऐसे प्राण किसके हैं, हे रामदेव, हम आपके चरणों की शरण ले रहे है, हमारी रक्षा करें ॥ ६४ ॥ रामचन्द्र ने कहा—दोनो गुप्तचरो, सुनो, तुम दोनों रावण के सामने यह वार्ता कहना— जिस गर्व के कारण तूने सीता का हरण किया है, अपने पौरुष की रक्षा करते हुए तू अपना वह वल दिखा ॥ ६५ ॥ मैं उसके काल यमराज की भाँति यहाँ उपस्थित हूँ, निरन्तर राक्षसों का प्रवल विनाश होगा। निशाचर ने मेरी पत्नी को हरण कर लिया है, मैं अपने प्रचण्ड वाणों से उसके दसो सिर काट डालूंगा ॥ ६६ ॥ दोनो ने राम के चरणों में प्रणाम कर शीघ्रता से जाकर लंका में प्रवेश किया। रावण के सम्मुख हाथ जोड़ 'प्रभु, आदेश कीजिये' कहकर सिर झुकाया ॥ ६७ ॥ प्रभु के सम्मुख हम सत्य कहते है, विभीषण हमें पाकर राम के पास ले गये। धर्मात्मा पुरुष राम ने हमारे प्राण रख लिये और आपके लिए ये सन्देश-वचन भेजे है ॥ ६८ ॥ आपने हमें रामचन्द्र की सेना की गणना के लिए भेजा था, परन्तु कोटि पुरुषों द्वारा भी क्या उसकी गणना हो सकती है ? उस अपार सेना में कुछ मुख्य-मुख्य का ही परिचय देगे ॥ ६९ ॥ हे सभासदगण ! रामायण-कथा अमृत से भी अधिक स्वादपूर्ण है, इसे सानन्द चित्त से श्रवण करो। इसके सुनने पर दुख मिट जाता है, मुक्ति मिलती है। कन्दली कहते हैं, सभी राम-राम कहो ॥ ४८७० ॥

दुलड़ी

शुक सारणर बचन शुनिया रावण मन्द स्वभाव ।
सैन्य लेखिबाक मेहुत चड़िल अनेक ताल उद्धाव ॥
ताहाते चरिया राजाये देखय असंख्य पदाति बल ।
सागरर तीर पर्ब्बत गह्वर ढाकिले सेतु सकल ॥ ४८७१
सारण चरक आदेश करय रावणाये दश शिर ।
मुख्य मुख्य पात्र सबाको चिनायो कोन केत मान बीर ॥
काहार कतेक सैन्य वा कमन नृपति कोन देशर ।
पृथिवी पर्ब्बत समुद्रर तीर थाके कोन द्वीपान्तर ॥ ७२
राजाक सम्बुधि सारणे बोलय शुनियो देव आदेश ।
लङ्काक चाहिया यि गोटा देखाया नादन्ते आछे आशेष ॥
सहस्रेक यूथ पदाति याहार लरन्ते तुलत लरे ।
इहाङ्के बोलय नील सेनापति कटाक्ष करय बरे ॥ ७३
पद्म केशरर बर्ण आरकत देखन्ते आति बिड़िङ्ग ।
लङ्काक चाहिया हासन्ते आछन्त धरिया पर्ब्बत शृङ्ग ॥
आकाशत लागि लाञ्ज फुरावय जगते गैल शबद ।
आकाशर मेघ खण्ड खण्ड भैल लङ्कार लोक तबध ॥ ७४
शङ्ख ये शतेक सैन्य आछे यार आर पद्म सहस्रेक ।
वालीर तनय एहि टो अङ्गद बलवन्त आतिरेक ॥
तोमाक रणक आह्वान करय आङ्गुलिर देइ ठार ।
इहने बीरक समरे युजिवे शकति आछे काहार ॥ ७५
श्रुतस नामे ये बानर समस्त आरो आछे आठ लाख ।
हाते वृक्षशिला पर्ब्बत धरिया नेरय रामर पाश ॥

शुक-सारण के वचन सुनकर मन्द स्वभाव वाला रावण अनेक ताड़-ऊँची किले की दीवार पर चढ़ गया। वहाँ चढ़कर राजा ने उस अनगिनत पदातिक सेना को देखा जो सागर के किनारे पर्वतों की घाटी और सभी पुलो को ढँके हुए थी ॥ ४८७१ ॥ दस सिरवाले रावण ने चर सारण को आदेश देते हुए कहा—सभी मुख्य-मुख्य पात्रों को, कौन कैसा वीर है, पहचान करवाओ। किसकी कितनी सेना है, कौन किस देश का राजा है, पृथ्वी, पर्वत, समुद्र के किनारे कौन किस द्वीपान्तरों में रहता है ? ॥ ७२ ॥ राजा को सम्बोधित कर सारण ने कहा, हे देव ! जैसा आदेश किया है, सुनिये। जो वानर लंका की ओर देखकर अपार नाद कर रहा है, जिसके चलने के साथ-साथ सहस्रों यूथों की पदातिक सेना दौड़ने लगती है, जो बडा कटाक्ष कर रहा है, उसे ही सेनापति नील कहते है ॥ ७३ ॥ जो कमल-केशर के वर्ण जैसा आरक्त है, देखने में जो बड़ा भयंकर है, लंका की ओर देखकर जो हाथ में पर्वत-शिखर ले हँस रहा है, जो गगनचुम्वी पूंछ हिला रहा है, जिसका शब्द जगत में गूंज रहा है, जिससे आकाश के मेघ खण्ड-खण्ड हो रहे हैं, लका के लोग स्तब्ध हो रहे है— ॥ ७४ ॥ जिसके साथ सैकड़ों शंख और सहस्रों पद्म सेना है, वही महा बलवान वाली-पुत्र अंगद है। वह अंगुलियों के संकेत से आपको युद्ध के लिए आह्वान कर रहा है, ऐसे वीर से संग्राम करे ऐसी शक्ति किसकी है ? ॥ ७५ ॥ यह श्रुतस नाम का बानर है, इसके साथ भी और आठ लाख वानर हैं, जो हाथों में वृक्ष-शिलाएँ-पर्वत आदि लिये राम के समीप से कभी पृथक नही होते,

दश कोटि बल निपिण्ड देशर कटाक्षे सबे आकले ।
सिटो मन करे लङ्काक मारिते पारय आपोन बले ॥ ७६
श्वेत शरीरक देखाहा याहार एहेन्ते वीर कुमुद ।
हाते वृक्ष धरि आछय याहार सैन्य एक अरबुद ॥
विश्व ये कर्म्मार पुत्रक देखाहा एहे महावीर नल ।
याहार तुलत लरे लक्ष लक्ष वानर ए महाबल ॥ ७७
एक थाने वसि आछे दुइ जन धूम्र वीर जाम्बवन्त ।
वृक्ष शिला करे धरिया याहार सैन्य आछे अपर्य्यन्त ॥
पूर्व्वर कालत देवासुर रणे मारिला सबे देवक ।
एइ दुई वीरे रणत अनेक आथान्तर करिलेक ॥ ७८
सैन्यर माजत प्रकाशि आछय लङ्काक चाहिया आछे ।
चलि यान्ते एक प्रहरर पथ जुरि याइ आग पाचे ॥
ऊर्द्ध आकाशक छानिया चलय तिनि प्रहरर पथ ।
श्रुतायुध नामे इहाके जानिय वानरर एन्ते नाथ ॥ ७९
हाण्डी शृगालीर वरण देखाहा सहस्र कोटि वानर ।
धूम्राक्ष ये नाम श्याल सुग्रीवर समरे विजय बर ॥
कोटि कोटि शत वानर चलय आर एक शत लक्ष ।
गोलाङ्गुल जाति वानरे बेढ़िल एहेन्ते वीर गवाक्ष ॥ ४८८०
सारणे कहिया आण्टाइलेक येवे रावणत कहे शुक ।
मृत्युर दुइ पुत्र देखाहा नृपति सुमुख आरु दुर्म्मुख ॥
मैन्द्य द्विविद देखाहा रावण येहेन पर्व्वत मान ।
ब्रह्मार वचने पूर्व्वत इ दुइ करिला अमृत पान ॥ ४८८१
दिग्गज समान वसिया आछय त्रैलोक्ये नाहिके शङ्का ।
रण्ड भण्ड करि राक्षस मारिया एहे पुरि गैला लङ्का ॥

जिसके साथ निर्पिड देश की दस करोड सेना जो सबकी ओर कटाक्ष से देखती है, वह चाहे तो अपनी शक्ति से ही लंका को जीत सकता है— ॥ ७६॥ श्वेत शरीरवाले जिस वीर को आप देख रहे है, वही वीर कुमुद है। जिसकी एक अरब सेना हाथो में वृक्ष लिए हुए है, जिसके संग लाखों महावली वानर-सेना धावित हो रही है, देखिये, वही विश्वकर्मा-सुत महावीर नल है ॥ ७७ ॥ एक स्थान पर जो दो व्यक्ति बैठे हुए हैं, जिनके पास हाथों में वृक्ष-शिलाएँ लिए हुए अपार सेना है, उनमे एक वीर धूम्र है, दूसरा जाम्बवन्त, पूर्वकाल में देवासुर युद्ध में देवताओं को पराभूत कर इन दोनों वीरों ने रणभूमि में उथल-पुथल मचा दी थी ॥ ७८ ॥ जो वीर अपनी सेना में प्रकाशमान लंका को निहारने मात्र मे एक प्रहर का मार्ग निकल जाता है। ऊपर आकाश तीन पहरों में मार्ग पार कर लेता है, उसे वानरों के नाथ श्रुतायुध नाम का वानर समझो ॥ ७९ ॥ हाथी-सियार के जैसे वर्णवाले जो सहस्र कोटि वानर जिसके साथ दिखाई देते है, समर मे महा विजयी वह सुग्रीव का साला धूम्राक्ष नाम का वानर है। जिसके साथ कोटि-कोटि शत और एक करोड़ गोल अंगुलियों की जाति वाले वानर घेरे हुए चलते हैं, यही वह वीर गवाक्ष है ॥ ४८८० ॥ जब सारण कह चुका, तब शुक ने रावण से कहा—महाराज, मृत्यु के वे दोनों पुत्रों सुमुख और दुर्म्मुख को देखिये। पर्वतों जैसे मैन्द्य और द्विविद को देखिये। इन दोनों ने पूर्वकाल मे ब्रह्मा के कथन पर अमृत पान किया था ॥ ८१ ॥ ये जो दिग्गज-जैसे बैठे हुए हैं, त्रैलोक्य में जिन्हें

आशेष गहन गम्भीरे सागर बलर नाहिके अन्त।
सागर तरिया सीता देखि गैल एन्ते बीर हनुमन्त ॥ ८२
श्याम कलेवर कमल लोचन सकल गुणे सागर।
पर्ब्बत मूलत बसिया आसन्त सम नाहि धनुर्द्धर ॥
अस्त्रत शास्त्रत सबातो पार्गत त्रैलोक्ये नाहि उपाम।
याहार सीताक हरि आनिलाहा एहेन्तेहे श्रीराम ॥ ८३
ताहार डाहिन पाशत नृपति नयन बलया चाहु।
तप्त सुवर्णर कान्ति ज्वले येन रामर दक्षिण बाहु ॥
लक्ष्मण कुमार इहाङ्क बोलय पर्ब्बत भेदन्त शरे।
देवासुर यक्ष राक्षस किन्नर तरतरि मान डरे ॥ ८४
राघवर बाम पाशत देखाहा आछन्त लङ्काक चाइ।
समरे शकत रामर भकत तोमार कनिष्ठ भाइ ॥
राज्य अभिषेक करिला राघवे चाहिया एक शुभक्षण।
तोमार रणत आह्वान करय दुर्ज्जय ए बिभीषण ॥ ८५
रामर दलत आवर काहिनी शुनिलो गैया आसन्ते।
बिधातार बाम नयनत धूलि परिला वायुर हन्ते ॥
कतो दूर लागि आछारि पेलाइला ब्रह्मा बाम करे धरि।
ताते उतपति कन्या एक भैला त्रैलोके मोहे सुन्दरी ॥ ८६
चन्द्रर समान बदन ज्वलय नेत्र नील उतपल।
त्रिबली वलित आति सुवलित कटाक्ष आति तरल ॥
बिपुल जङ्घिनी जगत मोहिनी उरु ये रामकदली।
रूपक साक्षात देखिय याहार मुनिगण याइ टलि ॥ ८७

शंका नहीं है, वे ही उथल-पुथल मचा सब कुछ विनष्ट कर राक्षसों को मार लंका जला गये थे; उनके सागर जैसा अशेष, गहन बल का अन्त नहीं है, सागर लाँघकर सीता को देख जानेवाले यही वीर हनुमान हैं ॥ ८२ ॥ ये जो श्याम-कलेवर, कमल-लोचन, सर्व-गुण-सागर पर्वत के नीचे बैठे हुए है, जिनके समान कोई और धनुर्द्धर नहीं है, जो अस्त्रों-शस्त्रों, सब में पारंगत है, त्रैलोक्य में जिनकी उपमा नहीं है, जिनकी सीता को आप हर लाये है, ये ही वे श्रीराम हैं ॥ ८३ ॥ उनकी दाहिनी ओर, हे महाराज, आँखें खोलकर देखिये, तपे सोने की भाँति जिनकी कान्ति जल रही है, वे राम के दाहिने हाथ जैसे हैं, उन्हें कुमार लक्ष्मण कहते हैं। वे वाणों से पर्वतों को वेध सकते हैं, देव-असुर-यक्ष-राक्षस-किन्नर सब इनके डर से थर-थर काँपते हैं ॥ ८४ ॥ राघव के बायीं ओर देखिये, लंका की ओर जो देख रहे हैं, जो युद्ध में बलशाली, राम के भक्त हैं, वे आपके छोटे भाई विभीषण हैं। शुभ क्षण देखकर राघव ने उनका राज्याभिषेक किया है, वे दुर्जेय विभीषण आपको युद्ध में आवाहन कर रहे हैं ॥ ८५ ॥ हमने रामचन्द्र की सेना में जाकर और एक कहानी सुनी है। वायु से उड़कर विधाता की बायीं आँख में धूल पड़ गयी, तब ब्रह्मा ने उसे बायें हाथ से निकाल कर दूर फेंक दी। उससे त्रैलोक्यमोहिनी एक कन्या की उत्पत्ति हुई ॥ ८६ ॥ उसका मुखमडल चन्द्रमा के समान जगमगा रहा था, नेत्र नीले कमल जैसे थे, त्रिवली घूमावदार अति सुन्दर थी, उसके कटाक्ष अत्यन्त तरल थे। मोटी जाँघों वाली वह जगतमोहिनी थी, उसके पैर लौकी जैसे थे, उसके साक्षात् रूप को देख मुनिगण भी विचलित हो जाते थे ॥ ८७ ॥ प्रजापति ब्रह्मा ने

अखिराज हेन नाम ये ताहान प्रजापति गणि थैला ।
रूपर सम्पत्ति देखिया सूर्य्यर मनत व्यामोह भैला ॥
कन्या लइया पाचे आपोन थानक चलिगा गैला भास्कर ।
मन्दर गिरित मनोमय रूपे सूर्य्ये दिला ताङ्क वर ॥ ८८
मोर तेज वल वीर्य्यत सुन्दरी पुत्रेक हुइवे तोमार ।
देवासुर यक्ष गन्धर्व्व राक्षसे समान नुहिवे यार ॥
त्रिदश असुर मानुष नागत अवध्य हुइवेक काय ।
पर्व्वत सवक चूर्ण करिवेक एकैक लाठिर घाइ ॥ ८९
सूर्य्यदेवे येवे ताङ्क वर दिया आपोन थानक गैला ।
त्रैलोक्यर चञ्चा करि देवराज मन्दर गिरिक आइआ ॥
अखिराज कन्या देखिया इन्द्रक पीड़िला मदन शर ।
मनत सन्तोष मिलिला ताहाङ्क वासवे दिलन्त वर ॥ ४८९०
यवञ्जा दुइ पुत्र तोमार विदित हुइवेक ए रवि तले ।
वानर स्वरूपे नृपति हुइवेक किष्किन्ध्यात वाहुवले ॥
एकैकक राम अवतारे मारि आवरक राज्य दिव ।
सेहिटो तोमार तनय आशेष देवर कार्य्य साधिव ॥ ४८९१
वर दिया येवे इन्द्र चलि गैला देवपुरी अमरावती ।
दिन माने आसि यवञ्जा दुइ पुत्र तान भैला उतपति ॥
ज्यैष्ठ भैला इन्द्र देवर तनय वाली राजा यार नाम ।
मित्रर कार्य्यत थाकिया ताहाङ्क शरे मारिलन्त राम ॥ ९२

छवि

लक्ष्मणर दक्षिणत आपुनि देखाहा राजा मेरु सम सुन्दर शरीर ।
सूर्य्यर वीर्य्यत आसि उतपति भैला जाना एहेन्ते सुग्रीव महावीर ॥

गणना कर उसका नाम अखिराज रखा । उसकी रूप-सम्पदा देखकर सूर्य के मन में व्यामोह हो गया । तत्पश्चात् भास्कर मनोमय रूप धारण कर उस कन्या को अपने मन्दर पर्वत स्थित स्थान को ले गये और उस कन्या को इस प्रकार वर दिया, ॥ ८८ ॥ हे सुन्दरी, मेरे तेज-वल-वीर्य से तुम्हारा एक पुत्र होगा । देव, असुर, यक्ष, गन्धर्व, राक्षस कोई भी उसके समान नही होगा । उसका शरीर देव, असुर, मनुष्य, नाग, सबके लिए अवध्य होगा । एक-एक लाठी की चोट से जो पर्वतों को चूर-चूर कर सकेगा ॥ ८९ ॥ सूर्यदेव जब उसे वर देकर अपने स्थान को चले गये तब तीनों लोकों को चमत्कृत कर देवराज इन्द्र मन्दर पर्वत पर पहुँचे । उस अखिराज कुमारी को देखकर इन्द्र को मदन के वाण पीड़ा देने लगे । मन को संतुष्ट करने के पश्चात् इन्द्र ने भी उसे वर दिया ॥ ४८९० ॥ इस सूर्य-तले के संसार में तुम्हारे दोनों जुड़वें पुत्र विख्यात होगे । अपने वाहुबल से ये किष्किन्ध्या के राजा बनेंगे । राम का अवतार होने पर वे एक को मार कर दूसरे को राज्य प्रदान करेंगे । तुम्हारा वही पुत्र देवों के अशेष कर्मों को सम्पन्न करेगा ॥ ४८९१ ॥ जब इन्द्र यह वर देकर इन्द्रपुरी अमरावती चले गये तो समय आने पर उसके दो जुड़वें पुत्र हुए । बड़ा इन्द्र का पुत्र हुआ जिसका नाम वाली है, जिसे मित्र के कार्य हेतु रामचन्द्र ने बाणो से मार डाला ॥ ४८९२ ॥

हे महाराज, आप स्वयं देखिये, लक्ष्मण की दाहिनी ओर मेरु जैसे सुन्दर शरीर वाले जो बैठे हैं, सूर्य के वीर्य से उत्पन्न ये ही महावीर सुग्रीव हैं । ये राघव के

राघवर मित्र इष्ट बालीर कनिष्ठ एन्ते किष्किन्ध्यार नृपति गरिष्ट ।
सातो द्वीपा पृथिवीर भालुक बानर लइया तोमारे से चिन्तय अनिष्ट ॥ ९३
इहान लगते कपि सैन्य बल चले यत लेखा आनि दिबोहो प्रत्येक ।
बलवन्त कोटि एक सहस्र बानर बल आरो चले लक्ष सहस्रेक ॥
सहस्रेक वृन्द सैन्य लगते लरन्ते लरे आवर शतेक महावृन्द ।
सहस्रेक संख्या आरो महापद्म सहस्रेक आगे पाचे करय खिखिन्द ॥ ९४
सङ्ग लागि आरो माने सुग्रीव राजार आवे आछे सैन्य सहस्रेक खर्ब्ब ।
सैन्यक देखिया यत बिपक्ष राजार डरे त्वरिते हरय सबे गर्ब्ब ॥
आछे राम लखमण विभीषण हनुमन्त जाम्बवन्त आरो नील नल ।
आपोन विपोहो बले सुग्रीव ये बीरबरे लङ्कापुरी निब रसातल ॥ ९५
राघवे तोमाक प्रति पठाइल वीरत्तु बुलि शुना ताक नृपति रावण ।
यिटो गर्ब्ब करि मोर सीता हरि निले सिटो आग बाढ़ि देओक आसि रण ॥
मोर तीक्ष्ण शरे तार अस्थि मज्जा भेदिबेक करिबेक शोणितक पान ।
दशशिर छेदिबोहो रणचण्डी पूजिबोहो रावण हुइबेक बलिदान ॥ ९६
आमि दुइ जानि शुनि हित बोल बुलिलोहो येवे हुइबा दुर्गति तारण ।
सीताक माथात करि गलत कापोर बान्धि पशा गैया रामत शरण ॥
तेवेसे सकले काज साधिबाक पारिबय रामदेव वर कृपामय ।
उनमत्त हुया येवे हित बाक्य नुशुनाहा राक्षस कुलर हैबे क्षय ॥ ९७
शुक ये सारणे येवे राम सेना चिनाइलन्त रावणर मने मने भय ।
क्रोधे कुरिगोटा चक्षु गुञ्जा हेन फुरावय चर दुइक चाहिया गर्ज्जय ॥

इष्ट-मित्र, बाली के छोटे भाई, किष्किन्ध्या के श्रेष्ठ राजा हैं। ये सात द्वीपों वाली पृथ्वी के भालू-बानरों को लेकर तुम्हारा अनिष्ट करना चाहते है ॥ ४८९३ ॥ इनके संग जितनी कपि-सेना चल रही है, मैं उनके प्रत्येक का लेखा दे रहा हूँ। बलवान एक सहस्र कोटि के साथ और लक्ष-सहस्र बानर सेना है। सहस्र वृन्द और सौ महावृन्द सेना इनके साथ धावित होती है। इसके अतिरिक्त और भी सहस्रों वृन्द तथा सहस्रों महापद्म सेना आगे-पीछे कोलाहल करती दौड़ती है ॥ ९४ ॥ सुग्रीव राजा के संग चलनेवाली और भी सहस्र खर्व सेना है जिन सेनाओं को देखकर डर के मारे विपक्ष के राजा का सारा गर्व तुरन्त चूर हो जाता है। वहाँ राम, लक्ष्मण, विभीषण, हनुमान, जाम्बवन्त और नील-नल हैं। अपने शरीर के बल से ये बीरवर एवं सुग्रीव सभी लंकापुरी को रसातल पहुँचा देंगे ॥ ९५ ॥ आपकी वीरता को चुनौती देते हुए राघव ने जो कुछ कहा है, महाराज रावण, सुनिये। (उन्होंने कहा—) वह जिसके अहंकार के मारे मेरी सीता को हर ले गया है, अब आगे बढकर मुझसे वह संग्राम करे। मेरे तीखे बाण उसकी अस्थि-मज्जा को वेधकर उसका शोणित पान करेंगे। मैं उसके दसों शिर काट कर, रणचण्डी की पूजा करूँगा, रावण बलिदान हो जायेगा ९६ ॥ हम दोनों सब कुछ जानबूझ कर हित-वचन कह रहे हैं, जिससे दुर्गति से तर सकें, आप सीता को सिर पर ले, गले में कपड़ा डाल, राम के चरणों की शरण लीजिये; तभी सभी कार्य सिद्ध कर सकेंगे, क्योंकि रामदेव बड़े कृपामय है। उन्मत्त होकर यदि हितकारक वचन न सुनोगे तो राक्षस-कुल का नाश हो जायेगा ॥ ९७ ॥ शुक-सारण ने जब राम की सेना का परिचय करवाया तो रावण के मन में भय हुआ, क्रोध के मारे बीसों आँखों को गुंजा की भाँति घुमाने-फिराने लगा और दोनो चरों की ओर देखकर

कमन कार्य्यत थाकि गुरुसेवा करिलाहा नीति शास्त्र केने पढ़िलाहा ।
आपोन राजक निन्दि शत्रु पक्ष नृपतिर तुमि सब गुण बखानाहा ॥ ९८
रामक मुनिष वर बखानाहा लारिकाये त्रिदशे खाटन्त मोर कोप ।
तिनि त्रैलोक्यर बीर तरतरि माने डरे मोर महा प्रचण्ड प्रतापे ॥
आमाक युजिते यदि हेन सैन्य सब आसे सहस्रेक कोटि शत जाम्पे ।
लङ्कार गड़र मोर सन्नित चापिया आसि अक्षते याइवेक कार बापे ॥ ९९
राघवर बानरक देखिया डराइला वरे तोमार सेवार आछो धिक ।
इसब राक्षस कुले उतपति लारिकाये तुमि सब भैला आसि किक ॥
सेवकक दण्डिबोहो आत किछु फल नाइ वर मोक कराइले ज्वाल ।
कैरा सेवतिया लोक आसि इटो दुइ गोटाक ढङ्का मारि मेढ़र निकाल ॥ ४९००
जय जय प्रभु बुलि शुक ये सारण दुइ आपोनेहि नामिला मेह्लर ।
राजार आदेश पाइया पात्र महोदरे आनि आगत योगाइला आनचर ॥
शार्दूल प्रमुख्य करि चरियाक सम्बुधिया आदेश करय लङ्केश्वर ।
रामर सेनात पशि लेखिया जनायो आसि कत आछे भालुक बानर ॥ ४९०१
शार्दूल प्रमुख्य करि चर सब गैला लरि आज्ञा पाया राजा रावणर ।
सुवेल पर्व्वत मूले राघवक समदले देखन्त आछय छप करे ॥
कतो लेखा करन्ते ये विभीषणे जानिलेक बुलिलन्त चार धृत वरे ।
बानरर हात गोरि लाथि लुथा घराकाति किल भुकु मारिला चबरे ॥ २
तरल वानरे पाइल राक्षसर चारियाक धितिङ्गालि करे भेण्टि भेण्टि ।
कतो कतो मुण्डे मुण्डे हानाहनि करे कतो चवरते निकलिला पेण्टि ॥

गरजने लगा। तुम लोगों ने किस कार्य में लगे रहकर गुरु-सेवा की थी ? नीति-शास्त्र किसलिए पढ़ा था ? अपने राजा की निन्दा कर, शत्रु-पक्ष के राजा के सारे गुण बखान रहे हो ? ॥ ९८ ॥ तुम लोग लबार की भाँति राम के पौरुष का बड़ा बखान कर रहे हो, जबकि मेरे विक्रम से देवगण भी मेरी सेवा में रहते हैं। तीनों त्रैलोक्य के वीर गण मेरे महान प्रताप से डर के मारे थर-थर काँपते हैं। हमारे साथ लड़के लिए यदि सहस्र कोटि संख्या में भी सेना, झुंड के झुंड आवें तो मेरे लंकागढ़ के समीप आकर बिना अंगहीन हुए किसका बाप लौट सकता है ? ॥ ९९ ॥ तुम्हारी सेवाओं को धिक्कार है कि राघव की बानरी-सेना को देखकर तुम इतने डर गये हो। अरे लबारो, इस राक्षस-कुल में भला तुम्हारा जन्म किसलिए हुआ है ? मैं अपने सेवकों को दंडित करूँ, इससे कोई लाभ नहीं है। तुम सबने मुझे बडा क्रोधित किया है। अरे सेवको, तुम लोग आकर इन दोनों को धक्का मारकर इस भवन से बाहर कर दो ॥ ४९०० ॥ शुक-सारण "जय जय प्रभु" कह कर खुद ही भवन से बाहर निकल गये। राजा रावण का आदेश पाकर मन्त्री महोदर ने दूसरे चरों को उसके सम्मुख ला उपस्थित किया। शार्दूल आदि चरों को सम्बोधित करते हुए रावण ने आदेश दिया—तुम सब राम की सेना में प्रवेश कर उसका लेखा-जोखा ले हमें सूचित करो कि भालू-बानरों की संख्या कितनी है ॥ ४९०१ ॥ राजा रावण की आज्ञा पाकर शार्दूल आदि सभी चर धावित होकर चले गये। उनका लेखा-जोखा कर ही रहे थे कि विभीषण ने पहचान लिया और उन्हें पकड़ने का आदेश दिया। वानर उन्हें पकड़ कर हाथ-लात, घूँसे, मुक्के, कोहनी, थप्पड़ आदि से मारने लगे ॥ ४९०२ ॥ चंचल वानरगण राक्षस-चरों को पाकर उन्हें पकड-पकड़ तरह-तरह के कौतुक-मज़ाक करने लगे। कोई-कोई उनके सिरों को एक दूसरों से पकड़-पकड़ कर मारने लगे, किसी-किसी ने थप्पड़ों से मारकर

काहाको आङ्गारे चूणे नाके मुखे दिल कतो जीव माने बिगुति पठाइल।
पाच चाइ चर सब लाखुतित भिर दिया राजार आगत गैया पाइल ॥ ३
शाद्दूले बिनावे बाणी आदेश गोसाइ हेरा खाण्डा पाइले होवय मुकुत।
शुक सारणे यत काहिनी कहिला माने सबे सत्य हय स्वरूपत॥
बिभीषणर ये काषे पैशन न याय राजा लाथि छय लागिला बुकुत।
राभे राखिलन्त काषे जीउ माने आसि भैलो बानरर वज्र ये भुकुत ॥ ४
जय जय नमो राम तुमि परिपूर्ण काम नररूपे भैला अवतार।
लक्ष्मणे सहिते आसि निज यश परकाशि पृथिवीर खण्डि लाहा भार॥
माधव कन्दलि भणे शुनियोक सर्ब्ब जने रामायण कथा अनुपाम।
वञ्चियो यमर पुर पाप होक मसिमुर निरन्तरे बोला राम राम ॥ ५

रावणे सीताक श्रीरामर माया-शिर देखुवाय आरु सरमाइ सीताक प्रबोध दिये

पद

रावणे बोलय शुनि शाद्दूलर बाक * मुख्य मुख्य बीरगण चिनायो आमाक
संक्षेपिया कहिबि बाहुल्य परिहरि * प्रति प्रति करि मोत कह झाण्ट करि ६
कतो कतो कहो कोने जानिब लिखिल * सुग्रीव अङ्गद हनुमन्त नल नील
दधिमुख दरिमुख गवय केशरी * जाम्बवन्त गवाक्ष सरभ गजहरि ७
तारक बिनोद गन्धमार्द्दन ये नल * सुमुख दुर्म्मुख हरि सुषेण प्रवल
बेगदसि मैन्द्य आरु पनस द्विविद * धूम्रमुख बलवन्त श्रुतस कुमुद ८

उनके पेट फुला दिये। कोई-कोई उनके मुँह-नाक में कोयला-चूना पोतते लगे। इस प्रकार उनके जीवन की अनेक प्रकार दुर्गति कर वहाँ से निकाल दिया। अपने पीछे की ओर मुड़-मुड़ कर लाठी टेकते हुए चर लंगड़ाते-लंगड़ाते राजा के पास आ खड़े हुए ॥ ४९०३ ॥ शार्दूल ने कातर शब्दों में कहा—हे प्रभु, खांडे से अगर हमें मार डालें तो हमारी मुक्ति हो। शुक-सारण ने जो कुछ कहानी कही है सब सम्पूर्ण रूप से सत्य है। हे राजा, विभीषण के पास तो जाया ही नहीं जा सकता, उन्होंने छाती में छह लातें मारी है। पास में राम ने देखकर हमारी रक्षा की, इसलिए वानरों के वज्र जैसे मुक्कों से बचकर जीवन-मात्र लेकर हम आपके समीप उपस्थित हुए हैं ॥ ४९०४ ॥ हे राम, तुम्हारी जय हो, जय हो, तुम्हें नमस्कार है, तुम परिपूर्ण-काम हो, तुमने नर रूप से अवतार ले, लक्ष्मण सहित आ, अपने यश का प्रकाश करते हुए, पृथ्वी का भार उतारा है। माधव कन्दली कहते हैं, सब लोग अनुपम रामायण-कथा श्रवण कर, यमपुर जाने से बचो, पाप को पराभूत करो। निरन्तर राम राम कहो ॥ ४९०५ ॥

रावण का सीता को श्रीराम का माया-सिर दिखाना, और सरमा का सीता को धीरज बँधाना

शार्दूल की बात सुनकर रावण ने कहा— मुझे मुख्य-मुख्य वीरों का परिचय करवाओ। बातों के विस्तार को छोड़कर मुझे संक्षेप में, एक-एक को शीघ्रता से बताओ ॥ ४९०६ ॥ (तब शार्दूल बोला—) हम कितना बतावें, उनका लेखा-जोखा कौन कर सकता है? सुग्रीव, अंगद, नल, नील, दधिमुख, दरिमुख, गवय, केशरी, जाम्बवन्त, गवाक्ष, सरभ, गजहरि, ॥ ४९०७ ॥ तारक, विनोद, गन्धमादन, नल,

साजिया आछय वीरवर विभीषणे * त्रिभुवन चमक प्रखर लक्ष्मने
मुख्य मुख्य चिनाइलोहो जानिलो यतेक * शतेक वत्सरे कोने लेखिव कतेक ९
विराध कवन्ध खर त्रिशिरार काल * अवधित शरत भेदिला सात ताल
वालीक मारिला यिटो ईषत समरे * हेन राम धावे आइला तोमार ऊपरे ४९१०
त्रैलोक्यर नारीगणे नाटिल तोमाक * राम अगतिर हरि आनिला सीताक
तोमार आगत यत कहिलो प्रमाण * आपुनि चिन्तियो येन होवय कल्याण ४९११
रामर काहिनी यत पात्र मुखे पाया * आलोचिल कार्य्य पाचे पात्रगण लैया
बलावल आलोचि मन्त्रीक विसर्जिजया * ओवारि पशिला सिटो चरक गर्ज्जिया १२
विद्युत् जिह्वक आदेशय लङ्केश्वर * मायारूपे स्रजियो रामर धनुशर
सीतार पाशक याइवो दगध शरीर * रेख रूपे स्रजि आन राघवर शिर १३
विद्युत्जिह्वे साजि योगाइलेक मायाशिर * सत्य काटियाछे येन वहय रुधिर
तूण वाण धनु छिन्न रामर सकले * रावणक साजिया दिलेक मायावले १४
ताहाक प्रसाद दिया नृपति रावणे * अशोका वनक गैया पाइला तेति क्षणे
राघवर शरधनु आर करि थैला * सम्वुधि सीताक पाचे वुलिवाक लैला १५
सीताक वेढ़िया आछे राक्षसिनी गणे * रावणक देखि पिठि दिला तेति क्षणे
गोसानीक सम्वुधि मातन्त लङ्केश्वर * वचन आकलि सीता मोक स्वामी बर १६
तोमार स्वामीये खर त्रिशिरा मारिल * सेहि कोपे तान आमि मानक सारिलो
यि गर्व्वत थाकि मोक कर अनादर * वार्त्ता कहो शुन तोर स्वामी देवरर १७

सुमुख, दुर्मुख, हरि, प्रवल सुषेण, वेगदसि, मैन्द, पनस, द्विविद, धूम्रमुख, वलवान श्रुतस, कुमुद, ॥ ४९०८ ॥ वीरवर विभीषण आदि सजे हुए हैं। प्रखर लक्ष्मण, त्रिभुवन मे चकाचौंध लगाये हुए है। मैं जिनको जान पाया हूँ उन सव मुख्य-मुख्य वीरों की पहचान करवा दी है। और भी कितने ही हैं, सो सालो मे भी उनका लेखा-जोखा कौन कर सकता है ? ॥ ४९०९ ॥ जो विराध, कवन्ध, खर और त्रिशिरा के काल हैं, जिन्होंने एक ही वाण से सात ताड़-वृक्षों को वेध डाला, छोटी-सी लड़ाई मे वाली को मार डाला, वे ही राम आप पर धावा करके आये हैं ॥ ४९१० ॥ तीनों लोकों की नारियों को लेकर भी आपका मन नही भरा, राम-रूपी अग्नि की सीता को हर लाये। आपके सामने हमने जो कुछ प्रमाण-वचन कहना था, कह डाला। अव कल्याण जैसे हो उसका चिन्तन स्वयं कीजिए ॥ ११ ॥ दूतों-मन्त्रियों के मुँह से राम की कथाएँ सुनकर, करना क्या चाहिए, सामन्तों-मन्त्रियों से इस पर विचार-विमर्श किया। बलावल के वारे मे चर्चा कर, मन्त्रियों को विदा कर, चरों पर गरज कर, उसने राजभवन में प्रवेश किया। उसने विद्युज्जिह्व राक्षस को आदेश दिया, माया से तुम राम के धनुष-वाण और राम का सिर विलकुल असली जैसा वना लाओ। मेरा शरीर जल रहा है, मै उन्हें लेकर सीता के पास जाऊँगा ॥ १२-१३ ॥ विद्युज्जिह्व माया से राम का सिर ऐसे वना लाया मानो अभी-अभी उसे काटकर लाया गया है; उससे रक्त बह रहा है। राम के धनुष-वाण-तरकस सभी टूटे-फूटे है, उसने ऐसा ही सव कुछ माया-वल से वनाकर रावण को दिया ॥ १४ ॥ उसे पुरस्कार देकर राजा रावण उसी क्षण जाकर अशोक वन में पहुँचा। पहले राम के (माया से वने) धनुष-वाणों को छिपा लिया और सीता को सम्वोधित कर कहने लगा— ॥ १५ ॥ सीता को राक्षसियाँ घेरे हुए थी। रावण को देखते ही सीता ने मुँह मोड़ लिया। लंकेश्वर रावण ने देवी सीता को सम्वोधित करते हुए कहा— हे सीता, मेरे वचन मान कर तुम मुझे ही पति रूप में वरण कर लो ॥ १६ ॥ तुम्हारे पति ने खरदूषण-त्रिशिरा को मारा

सुग्रीव सहिते राम सखित्व करिया * सुबेल पर्ब्बते आइल सागर तरिया
दुर्घोर भागरे वर प्रयासित भैला * सैन्य सबे रामचन्द्र परि निद्रा गैला १८
आग धरि आमार चरिया लागि आछे * निश्चेष्ट सैन्यक मोक जानदिला पाचे
सेनापति प्रहस्तक आनिलो हाङ्कारि * बानरक रामक निद्रात आसा मारि १९
आशेष राक्षस लैया सकले शङ्काते * प्रहस्ते देखिला गैया सुबेल पर्ब्बते
निश्चेष्ट सैन्यर माचे राम आछे शुया * प्रहस्ते काटिला माथा हाते खाण्डा लैया ४९२०
लक्ष्मणर पिठित प्रहस्ते दिला बारि * पूर्ब्बदिशे पेलाइला रामर पाश छारि
बिभीषण भयाइक मारिल शिर गुरि * सुग्रीवक मारिलेक गलगोट मुरि ४९२१
हनुमन्त परिल भाङ्गिल तार हनु * जानु भङ्गे परिलन्त बीर इन्द्र जानु
मैन्द्य द्विविदक मारिलन्त इन्द्रजिते * दधिमुख माथा काटि पेलाइला त्वरिते २२
अङ्गदक मारिला अनेक निशाचरे * कुमुदक पुष्पमाली करिला बिदरे
सुषेण परिल सुग्रीवर ये श्वशुर * जाम्बवन्त परिल ये बुद्धि भैला चूर २३
गदा मुद्गर घोर परिघर बारि * असंख्यात सेना परिलन्त प्राण छारि
गरकाइ मारिलन्त हस्ती घोरा रथे * सागरे परिल कतो गिरि गह्वरते २४
बिपाके परिल यत भालुक बानर * जिबा जील पलाइ गैला द्वीप-द्वीपान्तर
हेनमते तोर स्वामी गैला यमपुर * राघवर आशाबन्ध करियोक दूर २५
आबुधी बिबुधि सीता किछु न जानस * मूढ़ हुइया आपोनाक पंडित मानस
एभो मोत भज मोर यत महादइ * सबे थाकिबेक तार चरणक सेइ २६

था, इसी कारण मैंने उसका अहंकार नष्ट किया। तुम जिस अहंकार के कारण मेरा अनादर करती हो, मैं तुम्हारे उन स्वामी और देवर की वार्ता सुना रहा हूँ ॥ १७ ॥ राम सुग्रीव से मित्रता कर सागर लाँघ, सुबेल पर्वत पर आया। बहुत अधिक प्रयास करने के कारण वे थक गये और सेना सहित रामचन्द्र पड़कर सो गये ॥ १८ ॥ उनके पीछे लगे हुए हमारे चरो ने मुझे सूचित किया कि सब लोग निश्चेष्ट पड़े हुए हैं। तब मैने सेनापति प्रहस्त को बुलवा कर कहा—, सोये हुए बानरों-सहित राम को मार डालो ॥ १९ ॥ अनेक राक्षसों को साथ ले डरते-डरते प्रहस्त ने सुबेल पर्वत पर जाकर देखा, निश्चेष्ट पड़े हुए सेना के बीच राम सोया हुआ है। प्रहस्त ने हाथ में खाँडा लेकर उसका सिर काट डाला ॥ ४९२० ॥ प्रहस्त ने लक्ष्मण की पीठ पर चोट की और राम के पास से अलग कर पूरब की ओर फेंक दिया। उसने मेरे भाई विभीषण को मार कर सिर फोड़ डाला और गरदन मरोड़ कर सुग्रीव को मार डाला ॥ २१ ॥ हनुमान भी गिर पड़ा; उसकी हनु (जबड़ा) टूट गयी। वीर इन्द्रजानु की जन्तु (जाँघ) टूट जाने के कारण वह भी गिर पड़ा। मैन्द-द्विविद को भी इन्द्रजित ने मार डाला और शीघ्रता से दधिमुख का भी सिर काट डाला ॥ २२ ॥ अनेक निशाचरों ने अंगद को मार डाला; पुष्पमाली ने कुमुद को चीर-फाड़ डाला। सुग्रीव का ससुर सुषेण भी मारा गया, जाम्बवन्त भी मारा गया, उसकी बुद्धि चूर-चूर हो गयी ॥ २३ ॥ गदा, मुद्गर, प्रचंड परिघ की चोट से अनगिनत सेना के प्राण चले गये। हाथियों, घोड़ों, रथों ने कितनों को कुचल कर मार डाला। कितने ही सागर में, और पर्वत की खाइयों में जा गिरे ॥ २४ ॥ भालू, बानर आदि बड़े ही संकट में पड़े, जो बचे-खुचे थे, सब द्वीप-द्वीपान्तरों में भाग गये, इस प्रकार तुम्हारा पति यमलोक चला गया। अब तुम राघव की आशा करना छोड़ दो ॥ २५ ॥ भोली-भाली सीता, तुम तो कुछ भी नहीं जानती। मूढ होकर भी अपने को पंडित समझती हो। अब तुम मुझे अपना लो, मेरी सभी पटरानियाँ तुम्हारे चरणों की सेवा करती

कँवा विद्युत्जिह्व राघवर शिर आन * मोहोर वचन सीता देखोक प्रमाण
सीतार आगत थैला राघवर शिर * सत्ये काटिलेक येन वहय रुधिर २७
सीताये देखन्त मुख चन्द्रमा वदन * नील आकुञ्चित केश कमल लोचन
चारु ये निविड़ ज्वले दशन पङ्कति * हासो हासो करे ये चन्द्रर जेउति २८
सुशोभन नासिका लुलय दुइ कर्ण * उत्तम शरीर मुख देखि श्यामवर्ण
सत्ये काटियाछे येन वहय रुधिर * प्रत्यक्षे देखिला सीता राघवर शिर २९
हनुमन्त हाते दिया पठाइला आपुनि * शिरत आछय देखिलन्त सेहि मणि
देखिलन्त आवर रामर धनुवाण * शोक अगनिर तापे न सहे पराण ४९३०
रामर शिरक देखि तेजे तोलवल * हा प्रभु बुलि सीता चपाइलन्त कोल
क्षणु हृदयत बान्धे क्षणु बान्धे गले * लुटिया कान्दन्त देवी हाकले बिकले ४९३१
हा हा कँकेयी मोर पराणे न सहे * सर्व्वनाश करिलेक तोहोर कलहे
किनो विधि विपाकत राज्यक खण्डिले * किवा अपराधे आन प्राणक दण्डिले ३२
हरि हरि राघव मोहोर प्राणेश्वर * गुणर मन्दिर धीर प्रकृति सुन्दर
एत काले आछोहो तोमाक सुमरन्ते * तुमि मरिलाहा आमि नतोहो मरन्ते ३३
तोमार समान बीर नाहि साङ्गे साङ्गे * निद्रा मरणत किनो मरिला विपाङ्गे
राजनीति शास्त्र तुमि पढ़िला विशेष * कि कारणे निद्रा आसि गैला परदेश ३४
आसन्न कालत पण्डितर बुद्धि नाश * रक्षा निचिन्तिया प्रभु भैला सर्व्वनाश
आगर चन्दने भूषिलोहो सर्व्वक्षणे * सिटो शरीरक खाइव शृगाल शगुणे ३५

रहेंगी ॥ २६ ॥ ओ विद्युज्जिह्व, तुम राम का सिर ले आओ, सीता को मेरे वचनों का प्रमाण मिल जाये। विद्युज्जिह्व ने सीता के सामने राघव का सिर रखा; अभी-अभी काटा गया है, इस तरह से उसमें से रक्त वह रहा था ॥ २७ ॥ सीता ने नीले कुंचित केश और कमल-नयन वाला चन्द्र-मुख देखा। उसमें अत्यन्त सुन्दर दाँतों की कतारें चमक रही थी, चन्द्र-किरण जैसे वह अभी हँसा, अभी हँसा-सा कर रहा था ॥ २८ ॥ उसमें सुन्दर नाक, दो हिलते हुए कान थे। वह उत्तम शरीर और मुख श्यामवर्ण दिखाई पड़ रहा था। सचमुच ही काट डाला है इस तरह से उसमें से रक्त वह रहा था। सीता को मानो वह प्रत्यक्ष ही राघव का सिर दिखाई पड़ा ॥ २९ ॥ उन्होंने हनुमान के हाथ देकर जो मणि भेजी, वह सिर पर थी। इसके अतिरिक्त उन्होंने राघव के धनुष-वाण भी देखे। शोकाग्नि का ताप उनके प्राणों को असहनीय हो उठा ॥ ४९३० ॥ रक्त से लथपथ राम का मस्तक देख सीता ने 'हा प्रभु' कहकर उसे गोद में ले लिया। कभी उसे वह छाती से लगाती थी, कभी गले में बाँधती थी, देवी सीता परम आकुल-व्याकुल होकर लोट-लोट कर रोने लगी ॥ ४९३१ ॥ (वह कहने लगी—) हाय-हाय, कैकेयी, मेरे प्राणों को यह सहन नही हो रहा है। तुम्हारे कलह ने यह सर्वनाश कर डाला। विधि के किस निर्मम फेरे ने राज्य से वंचित किया। न जाने किस अपराध से इनके प्राणों को दंडित होना पड़ा ॥ ३२ ॥ हरि, हरि, राघव, मेरे प्राणेश्वर गुण-मन्दिर, धीर, सुन्दर-स्वभाववाले, तुम्हारा स्मरण करती हुई मैं इतने दिनों तक रहती रही। मेरे मरने के पहले ही तुम मारे गये ॥ ३३ ॥ तुम्हारे समकक्ष तो कोई भी वीर नहीं था; किस फेरे में तुम निद्रा में पड़े मारे गये। तुमने तो राजनीति शास्त्र का विशेष अध्ययन किया था, इस परदेश में आकर क्यों सोये रहे? ॥ ३४ ॥ संकटकाल में पंडितों की बुद्धि नष्ट हो जाती है। प्रभु, तुमने अपनी रक्षा की बात नही सोची, इसी से यह सर्वनाश हुआ। तुम्हारे जिस शरीर को मैं हमेशा अगुरु-चन्दन आदि से विभूषित रखती थी, उसे अब

सुनह रावण आमि पतिव्रता नारी * प्रमत्त वचन तोर सहिते न पारि
तोहोर प्रसादे येवे स्वामी शिर पाओं * प्रभुर लगत तेवे अनुगामी याओं ३६
हा हा राम सुमरन्ते सङ्कलोक जीव * तयु प्राणेश्वरी मरो जनकर जीव
वनबासे यान्ते प्रभु मोक नेरिलाहा * तुमि मरिलाहा प्रभु मोक लैया याहा ३७
गदाबारि लक्ष्मणर भाङ्गिलन्त पाशु * एकेश्वरे गैले तान्त सुधिवन्त शाशु
मोहोर हरण राघवर वार्त्ता शुनि * केनमते जीव तैत कौशल्या गोसानी ३८
आगम बिचारि कहिलन्त गुरुजने * सियो बोल मिछा भैल रामर मरणे
चिरकाल रामे भुञ्जिवन्त राज्यभोग * आलक्षणी सीता नोहे विधवार योग ३९
बिलाप करन्त सीता जनकर जीउ * हातयोरे दुवरी आगत भैला थिउ
धीरे धीरे बोले प्रभु भैला बिसङ्गति * पात्र समे आसिला प्रहस्त सेनापति ४९४०
आथे बेथे गैला राजा कथा शुनि मात्र * देखे दुवारते बहि आछे सबे पात्र
हातयोर करिया प्रहस्ते बिनावय * राम सेना प्रभुवेव छानिया आसय ४९४१
रावणे बोलय शुनि कथार प्रस्ताव * निशानत बारि दिया कटक जोराव
राजार आदेश भैला प्रहस्तर बोल * बाद्य भण्ड कोलाहल तमकिला रोल ४२
सब साजे राक्षसर सेना सब आइल * प्रहस्ते त्वरिते गैया राजात जनाइल
माधवे बोलन्त आरु एहिमाने थओं * जानकीर तहिते प्रबोध कथा कओं ४३
येतिक्षणे रावण सिथान छारि गैला * तेतिक्षणे माया शिर अन्तर्द्धान भैला
आवर ने देखिला सीता स्वामी शिर धनु * सरमा बोलन्त सीता सखी मरे जुनु ४४

सियार-गिद्ध खायेंगे ।। ३५ ।। रावण ! सुन, मैं पतिव्रता नारी हूँ। तेरा प्रमत्त वचन मुझसे सहन नही होता। तेरी दया से यदि स्वामी का सिर पा जाऊँ तो मैं प्रभु के साथ उनकी अनुगामिनी बनूँगी ।। ३६ ।। हा, हा, राम का स्मरण करते हुए मेरे प्राण छूटे। हे प्रभु, मैं तुम्हारी प्राणेश्वरी जानकी भी मर रही हूँ। प्रभु, तुमने वनवास में आते समय मुझे नही छोड़ा था, तुम जबकि परलोक जा रहे हो तो मुझे भी संग लेते जाओ ।। ३७ ।। मेरे हरण तथा राघव के मरण का समाचार सुनकर वहाँ देवी कौसल्या किस प्रकार जीवन-धारण करेंगी, ।। ३८ ।। गुरु जनों ने आगमादि शास्त्र का विवेचन करते हुए जो वचन कहा था, राम की मृत्यु से वह भी आज असत्य हो गया। (उन्होंने कहा था—) राम युगों तक राज्य भोग करेंगे, इस कुलक्षणी सीता का वैधव्य-योग नही है ।। ३९ ।। जनक-नन्दिनी सीता इस प्रकार विलाप कर रही थी, इतने में द्वारपाल हाथ जोड़े आकर रावण के सम्मुख खड़ा हो गया। उसने धीरे-धीरे कहा— प्रभु, बुरी बात हुई। मंत्रियों समेत सेनापति प्रहस्त आये हैं ।। ४९४० ।। उसकी बात सुनते ही राजा रावण अस्त-व्यस्त होकर वहाँ से चला गया। जाकर देखा कि सभी मन्त्री द्वार पर बैठे हुए हैं। हाथ जोड़कर प्रहस्त कहने लगा— प्रभु देव, राम की सेना घेरे आ रही है ।। ४९४१ ।। रावण ने यह सुनकर कहा— शीघ्र ही नगाड़े की ध्वनि कर सारी सेना को इकट्ठी करो। राजा के आदेश के अनुसार ही प्रहस्त ने आज्ञा दी। उसी समय, विविध वाद्यों का नाद गूँज उठा ।। ४२ ।। सब प्रकार के साजों से सजकर राक्षसों की सेना आ गयी। प्रहस्त ने शीघ्रता से जाकर राजा को सूचना दी। माधव कन्दली कहते हैं, यह कथा यहीं स्थगित कर अब जानकी की सान्त्वना की बात कह रहे हैं ।। ४३ ।। रावण के उस स्थान से चले जाते ही वह माया-सिर भी अन्तर्हित हो गया। सीता को अब न पति का सिर और न धनुष ही दिखाई पड़ा। उधर सरमा ने सोचा, क्या जाने (शोक से) देवी सीता मर ही जाये ।। ४४ ।।

शीघ्र गमने आइल चित्त नुहि थिर * सीतार विलाप देखि न सहे शरीर
नकान्दा नकान्दा सखी जनकर जीउ * तोर दुख देखि मोर संकलय जीउ ४५
रावणे यतेक बुलिलन्त मन्द वाक्य * बृक्षर आरत शुनि आछिलोहो ताक
निरन्तरे शुनिया आछिलो काणपाति * युगे युगे थाकि गैल तोहोर खियाति ४६
मइ कथा कहो सखी परिहरा शोक * आथे वेथे गैला राजा न सम्बुधि तोक
हेन देखिलोहो कार्य भैला आथान्तर * मने जानोचित्त थिर नुहि रावणर ४७
राम शिर छेदिलेक प्रहस्त राक्षसे * हेन पातियास सिंह मारिलन्त मशे
हेन कि जानस राम परदेशे गैया * सव सैन्य निद्रा गैला निश्चेष्ट परिया ४८
येन तेन प्राणी यदि परदेशे चाय * तार निद्रा नासे चिन्ते रक्षार उपाय
आपुनि जानस तोर येन प्राणपति * इयो बोल पतियास किनो मन्दमति ४९
स्वामी तोर गुणवन्त श्रीमन्त महन्त * सन्तक पालन्त यत असन्त नाशान्त
बुद्धिमन्त यशवन्त तेजवन्त सन्त * धृतिमन्त लज्जावन्त रूपवन्त कान्त ४९५०
बलवन्त वैर यत शरण पैशन्त * हासन्ते पातन्ते ताको राखिया थाकन्त
वैरर अन्तक बीर समर करन्त * तृण सम विनाशन्त काटन्त मारन्त ४९५१
शत्रु मित्र उदासीन यार गुण गान्त * शोक परिहरा तोर सुस्वामी जीवन्त
आरता लक्षण देखो तोर ज्वले कान्ति * अविलम्बे स्वामी कोल पाइबि महाशान्ती ५२
सत्य कथा कहो मोर तोर बर दाया * रामशिर यि देखिला राक्षसर माया
विद्युत्जिह्व नामे एक आछे निशाचर * राजार आदेशे साजिलेक धनुशर ५३

उसका चित्त अस्थिर हो उठा, वह शीघ्रता से वहाँ आयी। सीता का विलाप सुनकर उसका शरीर असहनीय हो गया। (वह कहने लगी—) सखी जानकी तुम न रोओ। तुम्हारा दुख देखकर मेरे प्राण निकले जा रहे है ॥ ४५ ॥ रावण ने तुम्हें जो कुछ मन्द वचन कहे हैं, मैं सबकुछ वृक्ष की ओट से सुन रही थी। मैं कान लगाये सब कुछ निरन्तर सुन रही थी, युग-युग तक तुम्हारी ख्याति रह गयी ॥ ४६ ॥ सखी, मेरी बात सुनो, शोक छोड़ दो। राजा रावण तुमसे बिना कुछ कहे अस्त-व्यस्त होकर चला गया, ऐसा लग रहा है कि कुछ अनहोनी हो गयी है। मैं मन से समझ रही हूँ कि रावण का चित्त स्थिर नहीं है ॥ ४७ ॥ राक्षस प्रहस्त ने राम का सिर काट लिया, इस बात पर प्रत्यय करना तो वैसा ही है जैसे कि मच्छर ने सिंह को मार डाला है, परदेश में आकर सारी सेना सहित वेसुध होकर राम सो गये थे, क्या इस बात पर कभी विश्वास हो सकता है ? ॥ ४८ ॥ सामान्य प्राणी भी यदि परदेश जाता है, तो अपनी रक्षा की चिन्ता से उसकी नींद चली जाती है। तुम्हारे प्राणपति कैसे हैं, यह तो तुम स्वयं जानती हो, तथापि कैसी मन्द-बुद्धि हो जो ऐसे वचनों पर विश्वास कर लेती हो ! ॥ ४९ ॥ तुम्हारे स्वामी गुणवान, श्रीमान, महान है। वे सन्तों का पालन करते हैं और असन्तों का विनाश करते है। वे बुद्धिमान, यशस्वी, तेजस्वी, सन्त, धृतिवान, लज्जाशील, रूपवान, परम कान्तिमय हैं ॥ ४९५० ॥ उनके बलशाली वैरी भी यदि उनकी शरण आते हैं, तो उनकी रक्षा करते हुए वे परम प्रसन्नता से उनका पालन करते है। संग्राम मे वे वैरियों का अन्त करनेवाले हैं। उन्हें वे घास-फूस की भाँति मार-काटकर विनष्ट कर देते हैं ॥ ४९५१ ॥ शत्रु हो या मित्र, या तटस्थ, सब कोई जिनके गुण गाया करते है, ऐसे तुम्हारे उत्तम स्वामी जीवित हैं, तुम शोक करना छोड़ दो। तुम्हारे शरीर में सुहागिनों के सारे लक्षणों से सारी कान्ति जगमगा रही है। महासती सीता, तुम्हें शीघ्र ही स्वामी का सान्निध्य प्राप्त होगा ॥ ५२ ॥ तुम पर मेरी बड़ी करुणा हो रही है, मैं सत्य कथा कहती हूँ, तुमने

मोहोर बोलत येवे पतियान नाइ * एखने आसिबो गैया तोर स्वामी चाइ
रावणे वा यिबा करे जानिबो सकले * मोक केहो चिनिते न पारे मायाबले ५४
सरमार बोले शोक गुचिल सकले * खर लागा धान येन बरिषण जले
सम्बुधि बोलन्त ताइक जानकी गोसानी * दुर्गति तारिणी सखी सुमधुर वाणी ५५
आकालर बन्धु येन सोदर बहिनी * मोर हित चिन्ति बिधि मिलाइलेक आनि
इहेन कालत मोर तुमि प्राण सखि * झाण्टे गैया आसा रावणर कार्य्य लखि ५६
निते निते सिटो मोक थाकय गर्ज्जन्ते * प्राण फुटि याय मोक रावणा तर्ज्जते
हा बिधि मइ कि करिलो हरि हरि * विधिये निर्म्मिला राक्षसर भक्ष्य करि ५७
रावणर बोले सबे राक्षसिनी लोक * आटास भाबुकि सबे उरुवाये मोक
कतो बेलि सखी बाट चाहिबोहो तोके * रामर मरणे प्राण त्यजिबोहो शोके ५८
सरमाये सीताक आश्वास आति करि * अन्तरीक्षे चलिला चिलनी बेश धरि
रावणेओ पात्रसमे आलोचिला यत * प्रत्येक जानिया ताक धरिला मनत ५९
युद्ध करिबाक लागि सुसम्भार भैला * इसबक आकलि रामर पाशे गैला
श्रीराम लक्ष्मण आछे हरषित मने * अशोका बनत गैया पाइला तेतिक्षणे४९६०
उत्रावल मने सीता आछिलन्त बसि * सरमा आसिला देखि गैलन्त उल्लासि
प्राणसखी आइल बुलि धरिलन्त गले * आपोनार आसनक दिला कौतूहले ६१
बार्त्ता पूछिलन्त सीता गुणे अनुपमा * सविशेष सब कथा कहिला सरमा
रावणर आलोचक शुना प्राण सखी * अविलम्बे स्वामी कोल पाइबाहा जानकी ६२

जो राम का सिर देखा है वह राक्षस की माया है। विद्युज्जिह्व नाम का एक निशाचर है, उसी ने राजा के आदेश से धनुष-बाण बनाये है ।। ५३ ।। यदि मेरी बात पर तुम्हें विश्वास नहीं है तो चलो, हम अभी चलकर तुम्हारे स्वामी को देख आवें। रावण क्या कर रहा है, यह सब भी जान जायेंगी। माया के बल से मुझे कोई पहचान नहीं पायेगा ।। ५४ ।। सरमा की बातों से सीता का सारा शोक वैसे ही मिट गया जैसे कि पका सूखा धान वर्षा के जल से छट जाता है। देवी जानकी ने उससे कहा— सखी, तुम्हारी सुमधुर वाणी दुर्गति हरण करनेवाली है ।। ५५ ।। तुम सहोदरा बहन की भाँति संकट मे मित्र हो। विधाता ने मेरी हितकामना से तुम्हें मिला दिया है। ऐसे काल में तुम्ही मेरी प्राण-सखी हो, तुम शीघ्र जाकर रावण के कार्य देख आओ ।। ५६ ।। रावण नित्य मुझ पर गरजता रहता है, उसकी डाँट-डपट से मेरे प्राण निकले जाते हैं। हाय विधाता, हरि, हरि, मैंने क्या किया है, (जिस कारण) विधाता ने मुझे राक्षसों का भक्षणीय बनाया है ? ।। ५७ ।। रावण की बातों से सभी राक्षसियाँ डांट-डपट कर चेतावनी दे-देकर (धैर्य) उड़ा डालती है। सखी, मैं कुछ देर तक तुम्हारी बाट जोहती रहूँगी, इसके बाद (यह जानकर कि) राम की मृत्यु हो चुकी है, मैं शोक से प्राण तज दूंगी ।। ५८ ।। सरमा, सीता को बहुत आश्वासन देकर चील का वेश धारण कर आकाश-मार्ग से उड़ चली। रावण ने अपने मंत्रियों से जो कुछ चर्चाएँ की सब कुछ जाकर उसने अपने मन मे धारण कर लिया ।। ५९ ।। ये सब युद्ध करने के लिए साज-सामान प्रस्तुत हो रहे है, जानकर इसके पश्चात् वह राम के पास गयी। (यह देखकर कि) श्रीराम-लक्ष्मण परम हर्षित हैं, वह उसी क्षण अशोक वन में चली आयी ।। ४९६० ।। सीता चित्त में उतावली-सी वहाँ बैठी हुई थी। सरमा को आते देख बड़ी उल्लसित हुई। 'प्राणसखी, आगयी' कहकर उसे गले से लगा लिया और कौतूहल से उसे अपने आसन पर बैठाया ।। ६१ ।। अनुपम गुणवती सीता ने उससे समाचार पूछा। सरमा ने सब कुछ विस्तार से कह

वृद्धमन्त्री एक बोल बुलिले ताहाक * तोमाक आमाक निया रामक दिबाक
तोमाको भर्त्सिले नलवय सदबुद्धि * मरन्ताक नलागय जीवार औषधि ६३
जानिलोहो तोमाक रावणे न सम्पिव * रामक युजिया सिटो कत काल जीब
निष्टे निष्टे तोमार निर्म्मल हैबे कुष्टि * रामकोले तोमाक देखिया हैवो तुष्टि ६४
विरलतो अनेक बुलिला सावधाने * बिनायुद्धे तोमाक नेदिबे दशानने
निश्चय जानिबा कथा कहिलो सकले * रामर कुशल सिटो याइब रसातले ६५
सीतायो जुराइला शुनि सरमार बाक * एतहन्ते रामसेना शबदर जाक

माल्यवन्तर रावणक उपदेश आरु उभय दलर सेनापति निर्देश

बानरर कोलाहल नादय भालुक * नगरत राक्षसर खलकिल बुक ६६
भेरुर निशान रोल शुनि लङ्केश्वर * पात्रक मिलाइला डरे पाइला चिन्ताज्वर
सम्बुधिया बोले राजा अमात्य सवक * राम आसि भैला हेरा खुजिते आमाक ६७
सैन्यक मिलाइला सिटो अरण्यर पशु * राक्षसर भक्ष्य शुनि कण्डुवाइबे लसु
सागरक तरिला करिया सेतुबन्ध * मोहोर हातत तार परिवेक कन्ध ६८
सैन्य साजियोक झाण्टे नुयुवाइ हेला * अल्प शत्रुमन्द करे प्रस्तावर बेला
किञ्चित कण्टके यदि बिन्धय पावत * उदबिग्न करे आति सकल गावत ६९

सुनाया। (सरमा बोली) प्राणसखी, रावण ने जो चर्चा की है, तो सुनो हे जानकी, तुम शीघ्र ही स्वामी का सान्निध्य प्राप्त करोगी ॥ ६२ ॥ एक वृद्ध मंत्री ने उससे तुम्हें और मुझे ले जाकर राम को सौप देने को कहा, (रावण ने) (उसका) तिरस्कार किया, वह सद्-परामर्श वैसे ही नही सुनता जैसे कि मरनेवाले को जीवित रहने की औषधि नहीं चाहिए ॥ ६३ ॥ मैं जानती हूँ कि रावण तुम्हें सौपेगा नही, पर राम से युद्धकर वह कितने समय जीवित रहेगा? सत्य मानो, तुम्हारा जीवन निर्मल हो जायेगा। राम के पास तुम्हें देखकर मुझे भी प्रसन्नता होगी ॥ ६४ ॥ तुम्हें लौटा देने को कहनेवाले विरले थे जो सावधानी से बहुत कुछ कह गये। परन्तु दशानन बिना युद्ध के तुम्हे कभी सौपेगा नही। मैंने सारी बाते तुमसे बता दीं। यह बात निश्चय मानो कि राम का कुशल होगा, वह रावण रसातल को जायेगा ॥ ६५ ॥ सरमा की बातें सुनकर सीता के प्राण भी शीतल हुए। इतने में राम की सेना के शब्दघोष सुनायी देने लगे।

माल्यवान का रावण को उपदेश देना और दोनों दलों के सेनापतियों का चुनाव

बानरों के कोलाहल और भालुओं के नाद से नगर के राक्षसों की छाती धड़कने लगी ॥ ४९६६ ॥ नगाड़े की ध्वनि सुनकर लंकेश्वर रावण ने मंत्रियों को बुलवाया। डर के मारे उसे चिन्ता-ज्वर हो गया। सभी अमात्यो को सम्बोधित कर रावण ने कहा— राम मुझे खोजते-खोजते यहाँ आ पहुँचा है ॥ ६७ ॥ उसने वन के पशुओं से अपनी सेना बना ली है। वे राक्षस के भक्ष्य हैं, (उनकी बात) सुनकर खुजली की स्थिति हो जाती है। उसने सेतुबंध बनाकर सागर पार कर लिया, मेरे हाथों उसका सिर गिरेगा ॥ ६८ ॥ शीघ्र ही सेना सजाओ, उपेक्षा करना उचित नहीं है। शत्रु छोटा होने पर भी अवसर चूक जाने पर अनिष्ट कर सकता है। छोटा-सा काँटा यदि पैर में चुभ जाये तो वह समूचे शरीर को पीड़ा देकर उद्विग्न कर डालता है ॥ ६९ ॥

राजार बचने सबे माथा चपराइला * मौने थाकिलेक आवर काहाको न चाइला
सम्बुधि बुलिला ताक वृद्ध माल्यवन्त * रावणर मातामह पात्र बुद्धिमन्त ४९७०
शुना कहो दशस्कन्ध येन राजनय * तइ नुसुधिले मोर बुलिते लागय
आग तल याइ यदि हातीयो बुरय * तोर सब कुलओ मोहोर बंश क्षय ७१
श्रेष्ठ पुरुषे ये तोक भालक नेदय * सीताक हरिलि सेइ अधर्म्मे खेदय
सदबुद्धि नेखेले कुबुद्धि अभ्युदय * रामधर्म्म उदय लक्ष्मीये आलिङ्गय ७२
सभात थाकन्ते उचितक न मातय * ताते प्रवर्त्तय तार अधर्म्म ज्वलय
जानि नो बोलय बिबुद्धिक आचरय * हेनय जनत सबे कलुष पशय ७३
धर्म्म कर्म्म सन्नाहा करि बैरक बधिबा * धरम सन्नाहा शुद्ध मुकति साधिबा
धर्म्मपथ एरि तुमि पापक साधिला * अगनि समान ऋषि सब डरुवाइला ७४
लङ्कात अनिष्ट भैला तोमार कारणे * पथे पथे शृगाले आराव करे घने
शूकर कुकुर सब फुरे पाले पाल * राक्षस कुलर भैला प्रलयर काल ७५
गो सबे प्रसवय गर्द्दभर छाव * नेउलर गर्भत इन्दुरर उद भाव
कुकुरे वानर होवे बिरालत वाघ * इरिकत उट होवे महिषत छाग ७६
स्वपनत नारी सब दिगम्बर बेश * राक्षस सबक धाइला मुक्त करि केश
मेघ सबे वरिषय पर्व्वत शिखरे * काक सबे बिनावय लङ्कार ऊपरे ७७
ठावे ठावे देखिया पुरुष मुण्ड लुण्डा * हस्ती मुण्डा दीर्घ तुण्डा खुखुण्डा चामुण्डा
कि कार्य्य करिलि तइ सीताक हरिलि * मन्द आचरिलि धर्म्मपथ नादरिलि ७८

राजा की बात पर सबने सिर पीट लिया। वे मौन रह गये और कोई किसी की ओर न देखता था। रावण का नाना, बुद्धिमान मंत्री, वृद्ध माल्यवान ने तब उसे संबोधित कर कहा— ॥ ४९७० ॥ रावण, राजनीति की बात मैं तुम्हें बता रहा हूँ, सुनो ! तुम न भी पूछो तथापि मुझे कहना उचित है। सिर का भाग डूब जाने पर हाथी भी पानी में डूब जाता है, उसी प्रकार तुम्हारे कुल का विनाश मेरे वंश का भी विनाश है ॥ ४९७१ ॥ श्रेष्ठ पुरुष जो तुम्हारी भलाई करने नही आते, इसका कारण है कि सीता का हरण करने का पाप तुम्हारे पीछे लगा हुआ है। (इसी कारण) तुममें सद्बुद्धि नही आती, कुबुद्धि का अभ्युदय हो रहा है। राम में धर्म का उदय है इसलिए लक्ष्मी उसका आलिगन करती है ॥ ७२ ॥ जो व्यक्ति सभा में रहकर भी उचित बात नही कहता, उससे उसे अधर्म होता है और उसे जलना पड़ता है। जो जानबूझ कर बोलता नही, विमूढ़ता का अवलम्बन किये रहता है, वैसे जन को सभी प्रकार का कलुष होता है ॥ ७३ ॥ धर्म-कर्म का अनुसरण कर ही शत्रु का वध किया जा सकता है। धर्म का अनुसरण कर ही शुद्ध मुक्ति का साधन हो सकता है। तुमने धर्म-मार्ग छोड़कर पाप-आचरण किया है और अग्नि जैसे ऋषियों को डरवाया है ॥ ७४ ॥ लंका में अनिष्ट तुम्हारे कारण ही हुआ है, इससे मार्गों पर बार-बार सियार फेकर रहे हैं। सूअर, कुत्ते सभी झुंडों मे घूम रहे है। राक्षस-कुल का यह मानो प्रलयकाल आ गया ॥ ७५ ॥ गाये गधों के बच्चे जन रही है, नेवले के गर्भ से चूहा हो रहा है। कुत्ते से वानर और बिल्लियों से बाघ, माँद में रहनेवाले जानवरों से ऊँट और भैंस से बकरे जन्म ले रहे हैं ॥ ७६ ॥ सपनों में दिगम्बर वेशवाली नारियाँ बाल खोले राक्षसों पर धावित हो रही हैं। बादल (मैदानों के बजाय) पर्वत-शिखरों पर वर्षा करते हैं। कौवे लंका के ऊपर करुण वाणी बोलते है ॥ ७७ ॥ स्थान-स्थान पर मस्तक झुकाये पुरुष और हस्ती-मुंडा, दीर्घ-तुंडा (लम्बे मुँह वाली) खुखुंडा (निकृष्ट) चामुंडा नारियाँ दिखलाई देती हैं। सीता का हरण कर तूने यह कैसा कार्य किया ? तूने

श्रीराम लक्ष्मण नारायण अवतार * सागरत सेतु वान्धे शकति काहार
तोक टङ्क देखाइलेक यिटो बालीराय * सियो बीर परिला रामर शर घाय ७९
बलहीन प्राणीर शरणे हवे योग * रामत शरण पशा करिया उद्योग
माथात करिया निया सीताक समर्प * पुत्र परिवार राख एर मान दर्प ४९८०
माल्यवन्त मौन भैला राजनय बुलि * सक्रोध नयने राजा चावे माथा तुलि
भ्रुकुटि कुटिल मुख आरकत खङ्गे * इठावक लागि कोने मातिला इहाङ्के ८१
रामक शकत देखा मोक अशकत * तोमार वचन मोर नपशे काणत
नजाना नुशुना तुमि थाकाहा नमाति * बृद्ध घागिर बोल गले खसि यान्ति ८२
तोर बोले सीतादिब चेपे कोन काठे * रामक मुनिष देखा रावणेसे घाटे
बापखने डकाइला आसिला वनवासे * मोहोक युजिबे खोजे वानरत आशे ८३
नुपुछिलो उपसन्न होवाहा आपुने * इसव कार्य्यक तोमासाक सोधे कोने
जानिलोंहो तुमियो रामर भारि खाहा * कि कराहा इठाइत घरत चलियाहा ८४
अनन्तरे माल्यवन्त चले धीरे धीरे * राजाक गर्जिया बुढ़ा चलिला मन्दिरे
गर्ब्बत थाकिया तइ ने देखह दिश * राम शरे फुटिया करिबे थिस मिस ८५
अल्प पानीर सल ददरा ददरि * राम शर घावे थाकिबिहि दान्त तरि
एहि बुलि माल्यवन्त गैला दरदरि * लोथरा बुढ़ार बोले पाइबाहा चेन्छेरि ८६
रावण राजाये पाचे सिंहासने वसि * पात्र मन्त्री मिलाया कार्य्यक बिमरिषि
निश्चय स्वरूपे समरक करि सार * प्रहस्तक पाञ्चिलेक पूर्वर दुवार ८७

बुरा आचरण किया है, धर्म मार्ग का समादर नहीं किया है ।। ७८ ।। श्रीराम-लक्ष्मण नारायण के अवतार है। (उनके सिवा) सागर पर सेतु बाँध सके, ऐसी शक्ति किसकी है ? जिस राजा बाली ने तुझे नाको चने चबवाये थे वह वीर भी रामचन्द्र के शराघात से मारा गया ।। ७९ ।। शक्तिहीन प्राणी के लिए शरण ले लेना ही उचित है। तुम प्रयत्न कर राम की शरण जाओ। सीता को सिर पर चढ़ा ले जा उन्हें समर्पित कर दो। मान-दर्प छोड़कर अपने पुत्र-परिवार की रक्षा करो ।।४९८०।। राजनीति के बारे में बताकर माल्यवान मौन हो गया। राजा रावण ने क्रोधपूर्वक उसकी ओर सिर उठाकर देखा। क्रोध के मारे उसकी भौंहे टेढ़ी हो गयी, नेत्र आरक्त हो उठे, (वह कहने लगा—) यहाँ इन्हें कौन बुला लाया है ? ।। ४९८१ ।। तुम राम को शक्तिमान और मुझे शक्तिहीन समझते हो। तुम्हारे वचन मेरे कानों में नहीं आते। तुम कुछ जानते-सुनते नहीं, इसलिए बिना कुछ कहे मौन रहो। बूढ़े हठी की बोली कहीं गले उतरती है ? ।। ८२ ।। किसके दबाव से तुम्हारे वचनों के अनुसार सीता को सौंप दूँ ! तुम राम को पौरुषवान् और रावण को छोटा समझते हो ? बाप के कहने से जो राम वनवास में चला आया वह वानरों के सहारे मुझसे लड़ना चाहता है ! ।। ८३ ।। मैंने तो तुमसे कुछ पूछा नहीं, तुम स्वयं आगे बढ़कर बताने आये हो। इन सब कार्यों के सम्बन्ध में भला तुमसे कौन पूछता है ? जान गया तुम भी राम की रिश्वत खाते हो, तुम यहाँ क्या कर रहे हो, घर चले जाओ ।।८४।। इसके अनन्तर माल्यवान धीरे धीरे चला जाने लगा। वह बूढा, रावण को फटकारता हुआ अपने भवन को आया। "तू गर्व के मारे दिशा-ज्ञान भूल गया है, राम के बाणों की चोटों से बिंधकर तू तड़पेगा ।। ८५ ।। तू छिछले पानी में रहने वाली मछली-जैसा कूद फाँद कर रहा है। राम के बाणों की चोटों से दाँत निपोर कर पड़ा रहेगा। यह कहकर माल्यवान तेजी से वहाँ से चला गया कि इस लोथरे बूढ़े के वचन से तुम कष्ट भोगोगे।" ।। ८६ ।। इसके पश्चात् राजा रावण ने सिंहासन पर बैठकर

दक्षिण दुवारे महापार्श्व महोदर * पश्चिम दुवारे इन्द्रजित ये कुमार
शुक सारणक आदेशय लङ्कानाथ * उत्तर दुवारे लागे तोमाक आमात ८८
मध्य थानत बिरुपाक्षक बिहिल * सबाहारे लगत अपार सेना दिल
पात्र विसर्ज्जिया राजा सबाक मण्डिल * कृतार्थ मानिया अन्तःपुरक चलिल ८९
रामचन्द्र लक्ष्मण सुग्रीव जाम्बवन्त * विभीषण अङ्गद आवर हनुमन्त
मुख्य मुख्य पात्र गण गवाक्ष गंबय * मिलिया करन्त सबे मन्त्रणा निचय४९९०
सागरक तरिलो पर्ब्बते बान्धि सेतु * कार्य्य आलोचिलो आसि भैलो यिबा हेतु
लङ्कार गड़क देखो त्रैलोक्य बिजय * रावणे साजय तात निशान बाजय ९१
हेन शुनि विभीषण शास्त्रत पण्डित * करयोर करिया रामर आगे थित
लङ्का गैया आसिला मोहोर चारि पात्र * क्षणितेक भैला सुधि आसिलेक मात्र ९२
अनल सुनल वीर सम्पाति प्रघस * पक्षीरूप धरिया आइला चारियो राक्षस
युजिते सम्भृत राजा बल चतुरङ्गे * हेन देखि आसि मोत कहिलन्त खङ्गे ९३
पूर्ब्बर दुवारे बीर प्रहस्तक दिल * महापात्र महोदर दक्षिणे थाकिल
पश्चिम दुवारे इन्द्रजितक थापिल * मध्य स्थानत बिरुपाक्षक बिहिल ९४
हस्ती घोरा रथ यत साजि समस्तय * राजभागी सेना यत राजार आछय
शुकये सारण समे उत्तर दुवारे * आपुनि रावण थित भैला छपकारे ९५
रावणे साजिया कुबेरक याइ धारे * षाठि लक्ष कोटि लक्ष याइ एकेबारे
आन सैन्य कतक लेखिया पाइबे उहु * परदल जिनय सत्वरे पाति बेहु ९६

मंत्रियों और सामन्तों से कार्यों के सम्बन्ध में चर्चा कर युद्ध ही करने का निश्चय किया और प्रहस्त को पूर्वीद्वार का भार सौंपा ।। ८७ ।। दक्षिणीद्वार पर महापार्श्व और महोदर को तथा पश्चिमद्वार पर कुमार इन्द्रजित को रक्षक बनाया । लंकाधिपति रावण ने शुक-सारण को आदेश दिया, उत्तरीद्वार पर मेरे साथ तुम्हारी आवश्यकता है ।। ८८ ।। मध्यस्थान पर विरूपाक्ष को नियोजित किया और सबके साथ अनगिनत सेना दी । सामन्तों को उपहार आदि से प्रसन्न कर राजा रावण ने विदा किया और प्रसन्न-मन अन्तःपुर को चला ।। ८९ ।। रामचन्द्र, लक्ष्मण, सुग्रीव, जाम्बवन्त, विभीषण, अंगद, हनुमान, गवाक्ष, गवय, आदि मुख्य-मुख्य सामन्त व मंत्री साथ मिलकर मंत्रणा करने लगे ।। ४९९० ।। हम पर्वतों से सेतु बाँध, जिस कारण सागर पार कर यहाँ आये, उसके बारे में विचार करें । वह त्रैलोक्य-विजयी लंका का दुर्ग देखो । वहाँ नगाड़े बज रहे है, रावण युद्ध के लिए वहाँ सज्जित हो रहा है ।। ९१ ।। यह बात सुनकर शास्त्रों के विद्वान् विभीषण राम के सम्मुख हाथ जोड़ खड़े हो गये, बोले— मेरे चार सामन्त लंका जाकर लौट आये है । अभी कुछ क्षण पहले मैं उनसे पूछकर जानकारी ले आया हूँ ।। ९२ ।। वे अनल, सुनल, वीर सम्पाति, और प्रघस, ये चारों राक्षस पक्षीरूप धारण कर घूम आये हैं । राजा रावण चतुरंगिनी सेना लेकर युद्ध करने के लिए प्रस्तुत हो रहा है । उन चारों ने क्रोध में भरकर मुझसे ऐसा ही बताया है ।। ९३ ।। पूर्वद्वार पर प्रहस्त को नियुक्त किया है । महोदर-महापात्र दक्षिणी द्वार पर हैं । पश्चिमद्वार पर इन्द्रजित को स्थापित किया गया है और मध्य-स्थान में विरूपाक्ष को रखा है ।। ९४ ।। जितने हाथी, घोड़े, रथ आदि है सब को सज्जित कर, राज-अधिकार-भोगी जितनी सेना राजा के पास है, उन सबके संग शुक-सारण सहित रावण उत्तरद्वार पर स्वयं दृढ़ता से स्थित है ।। ९५ ।। रावण ने जब कुवेर पर चढ़ाई की थी उस समय साठ लाख, करोड़ों लाख सेना एक साथ टूट पड़ी थी और भी कितनी सेना है, जिनकी गणना करना असंभव है, जो व्यूह बनाकर दूसरों के

विभीषण मुखत लङ्कार वार्त्ता पाइल * युद्धर वीरक सबे राघवे मताइल
सेनापति करिहा आगत मोर मिल * प्रहस्तर सम्मुख हइया तुमि नील ९७
असंख्य पदाति किबा करिबेक आसि * भाल सैन्य तुलत लैयोक बाछि-बाछि
सेनापति, सेनापति, लागा, घूमाजय * पूव दुवारर कार्य्य तोमात लागय ९८
वालीपुत्र अङ्गद बचन मोर पाल * महापार्श्व महोदर समरत ढाल
वीर गणनात तुमि बोपाहार सम * दक्षिण दुवारे राक्षसर होवा यम ९९
हनुमन्त कि करा निश्चिन्त मने आछि * भाल भाल सैन्यक तुलत लोवा बाछि
इन्द्रजिते रक्षा करे पश्चिम दुवारे * ताक धारे याहा तुमि आटोप टङ्कारे ५०००
उत्तर दुवारे राजा राखे लङ्काराजे * ताक युजिवाक मइ चलियाओं साजे
चारि गोटा पात्र लैया याइव विभीषण * आपुनि चलिव आरो भैयाइ लक्ष्मण ५००१
मध्यर थानत राजा सुग्रीव थाकन्त * जाम्बवन्त आदि यत सेनाये राखन्त
मानुषर बुद्धि यत वानरे धरन्त * सावधाने युजन्त बलर नाइ अन्त २
जयति श्रीराम देवतार आदिदेव * ब्रह्मा हरे याहार चरणे करे सेव
हेन रामपदे मोर थाकोक प्रणाम * बोलन्त कन्दलि डाकि बोला राम-राम ५००३

राम प्रभृतिर सुबेल पर्ब्बतर परा लङ्का-दर्शन आरु अङ्गदक दूत-रूपे लङ्कात प्रेरण

दुलड़ी

कार्य्यर व्यवस्था करिया राघवे लक्ष्मण समे चलिला।
सब कपिबल सहिते पर्ब्बत उपरे गैया चड़िला ॥

ऊपर शीघ्र विजय प्राप्त कर लेते है ॥ ९६ ॥ विभीषण के मुँह से लंका की वार्ता पाकर रामचन्द्र ने युद्ध करनेवाले वीरों को बुलवाया। बोले, नील, तुम्हे सेनापति बना रहा हूँ, तुम प्रहस्त का सामना करना ॥ ९७ ॥ उसकी असंख्य पैदल सेना आकर क्या करेगी ? तुम उसके अनुसार उत्तम सैनिको को चुन-चुनकर साथ ले लो। प्रहस्त के साथ, तुम नील, दोनों सेनापति, प्रचंड युद्ध करना। पूर्वीद्वार का कार्य तुम पर सौप रहा हूँ ॥ ९८ ॥ वाली-पुत्र अंगद, मेरे वचन मानो। महापार्श्व महोदर संग्राम में ढाल की भाँति अविचल है। वीरों के लेखे तुम भी अपने पिता के समकक्ष हो। तुम दक्षिणीद्वार पर उन राक्षसों के काल बनो ॥ ९९ ॥ हनुमान तुम निश्चिन्त मन यहाँ रहकर क्या कर रहे हो ? तुम उत्तम-उत्तम सैनिकों को चुन लो, इन्द्रजित पश्चिमद्वार की रक्षा में हैं, तुम प्रचंड बल से उसके सम्मुख जाओ ॥ ५००० ॥ उत्तरीद्वार की रक्षा राजा रावण कर रहा है, उससे लड़ने हेतु मैं सजकर चल रहा हूँ। (मेरे संग) चार सामन्तों को लेकर विभीषण चलेंगे और भाई लक्ष्मण स्वय चलेगा ॥ ५००१ ॥ मध्यस्थान में जाम्बवन्त तथा अन्य सेना सहित राजा सुग्रीव रहेंगे। मनुष्यों के समान बुद्धि अपनाकर यदि वानरगण सावधानी से युद्ध करे तो उनके बल का अन्त नहीं होगा ॥ २ ॥ देवताओं के आदिदेव श्रीराम की जय हो। ब्रह्मा-शिव आदि जिनके चरणों की सेवा करते हैं, ऐसे राम के चरणो में मेरा प्रणाम है। माधव कन्दली कहते हैं—पुकार कर राम-राम कहो ॥ ५००३ ॥

श्रीराम आदि का पर्वत पर से लंका-दर्शन और अंगद को दूत-रूप में लंका भेजना

सभी कार्यो की व्यवस्था कर राघव लक्ष्मण के साथ चले और सारी कपिसेना सहित सुवेल पर्वत पर चढ़ गये। उन्होंने सुबेल पर्वत पर चढ़कर अनुपम लंकापुरी को

सुबेलत चड़ि देखिलन्त लङ्का याहार नाहि उपाम ।
सूर्य्यर जेउति जिनिया बलय शुद्ध माणिकर काम ।। ५००४
सब कपिबल सहिते राघवे हरिषे लङ्का चाहन्त ।
विश्वकर्म्मे याक प्रवन्धे गढ़िल गुणर नाहिके अन्त ।।
उपवन सब निर्म्मिया आछय शारी शारी कोले कोल ।
पद्मिनी सकले सुगन्ध करय भ्रमरे करय रोल ।। ५
चारियो दुवारे राक्षस आछय चतुरङ्ग बले साजि ।
युद्धक हरिषे कान्धे भरि टोन कतो धर्नुगुण माजि ।।
कतोहो चालत प्राञ्ची उपरत कतोहो गड़पम्पले ।
आकर्ण शबदे दशदिश छानि येन काल मेघ दले ।। ६
लङ्कार राक्षस युद्धर सम्भृत देखय बानर बले ।
घोर आर्तनाद सब दिश छानि रिङ्ग दिला कौतूहले ।।
नाचय गावय खेरि खेलावय बानरे पारय उकि ।
स्वर्ग भुवनक लङ्घिया गैलेक भालुकर हुक हुकि ।। ७
रणक हरिषे भालुक बानरे करय बर आनन्द ।
एतहन्ते सूर्य्य अस्तगत भैला उदित सम्पूर्ण चन्द्र ।।
पर्व्वत ऊपरे निशागोट बञ्चि महासुखे निद्रा गैल ।
हासन्ते खेलन्ते नाचन्ते गावन्ते रजनी गोट पोहाइल ।। ८
प्रभात समये नमिलन्त राम पर्व्वत मूलत बसि ।
मुख्य मुख्य सब पात्रक मिलाइला कार्य्यक परामरिशि ।।
लङ्कार चौभिति जण्टाइबाक लागि अक्षय बल चलाइल ।
याक यिबा दिशे आदेशि आछय सम्भृत करि पठाइल ।। ९

देखा । सोने की लंका जिसपर विशुद्ध मणि-माणिक जड़े हुए थे, सूर्य-प्रभा को भी जीतकर अधिक उज्ज्वल थी ।। ४ ।। सारी वानरी सेना के संग राघव ने प्रसन्नतापूर्वक उस लंका को देखा, विश्वकर्मा ने अनेक प्रयास से जिसका निर्माण किया था, जिसके गुणों का अंत नहीं था । लंका में कतारों में पास-पास उपवन बनाये गये थे जिन्हें खिली कमलिनियाँ सुगन्धित कर रही थी, भौरे गुंजार कर रहे थे ।। ५ ।। चारो द्वारों पर राक्षस चतुरंगिनी सेना सजाये डटे हुए थे । युद्ध के लिए वे प्रसन्नतापूर्वक कन्धे पर तरकस लिये हुए थे, कितने ही राक्षस धनुष की डोरी को मांज रहे थे । कितने राक्षस छतों पर थे, कितने ही प्राचीरों पर और कितने ही दुर्ग की चौड़ी दीवारों पर थे । मुँह फाड़-फाड़ कर वे जो नाद कर रहे थे, वह दसों दिशाओं में काले मेघ-दलों की गरज की भाँति गूँज रहा था ।। ६ ।। लंका के राक्षसों को युद्ध के लिए प्रस्तुत देख वानरों की सेना प्रचंड चीख-पुकार करते हुए दशों दिशाओं को व्याप्तकर कौतूहल से ललकारने लगी । वानरगण नाचने गाने, खेलने, कूदने और जोर-जोर चीखने लगे । भालुओं का हुंकार स्वर्गलोक को भी पार कर गया ।। ७ ।। युद्ध करने के लिए हर्षित हो वानर-भालू बड़े ही आनन्द प्रकट कर रहे थे । इतने में सूर्य अस्त हो गया । पूर्ण चन्द्र निकला । वानर-सेना पर्वत के ऊपर रात बिताकर महासुख से सोयी । हँसते-खेलते, नाचते-गाते रात बीत गयी ।। ८ ।। प्रभात होने पर राम उतर आये और पर्वत के नीचे बैठकर मुख्य-मुख्य सामन्तों को कार्य का परामर्श करने हेतु बुलवाया । लंका को चारों ओर से घेर लेने के लिए अनगिनत सेना को उन्होंने संचालित किया । जिसे जिस दिशा में जाने की आज्ञा दी

पूब दुवारक नील सेनापति चलिगैला समदले ।
दक्षिण दुवारे अङ्गद कुमारे चलिला आपोन बले ॥
पश्चिम दुवारे जण्टाइवाक गैला हनुमन्त वायुसुत ।
पात्र बिसर्ज्जिया सबको दिलन्त आवर वल बहुत ॥ ५०१०
मैन्द्य द्विविदक राखन्त बलत नीलर डाइन बाम ।
अङ्गद बीरर लगत ऋषभ गवाक्ष गवय नाम ॥
सम्पाति प्रघस दुइ महावीर गैला हनुमन्त तुले ।
तार विन्द बीर प्रमुखये सुग्रीव नृपतिर अनुकूले ॥ ५०११
बिभीषण वीरे वेहु बिरचिला राघवर अनुमते ।
चौत्रिश कोटि बलवन्त वीर कपि प्रति प्रति दुवारते ॥
मध्यर स्थानत थाकिला सुग्रीव रामर समीप चापि ।
आरो फोटि कोटि वानर थैलन्त थाकिला गगन व्यापि ॥ १२
श्रीराम लक्ष्मण बीर बिभीषण शरे भरिलन्त तूण ।
गावर सन्नाहा चिकिमिकि करे माजिल धनुर गुण ॥
यथात रावण आपुनि आछय उत्तर द्वारक यान्त ।
स्वर्गर देवता लोकर हरिष जय जय घोषि लन्त ॥ १३
कतोहो बानर पयाणे चलिला द्वादश हस्तीर बल ।
कतो सहस्रेक कतोहो शतेक गजर समान बल ॥
कतो अयुतेक कतो नियुतेक कतोहो वल अपार ।
हाते वृक्ष शिला पर्व्वत धरिया चौभिति वेढ़ि लङ्कार ॥ १४
भालुक बानर पावर धूलाये जुरिल सब आकाश ।
दिश विदिशक एकोवे न जानी सूर्य्यर नाहि प्रकाश ॥
सब लोके लङ्का बेढ़ि रिङ्ग दिला राक्षस भैला तरासि ।
गर्भवती यत राक्षसी लोकर गर्भमाने गैला खसि ॥ १५

गयी थी, उसके अनुसार उन्हें सावधान कर भेजा ॥ ९ ॥ अपने दल के साथ सेनापति नील पूर्वी द्वार पर चला गया । अपनी सेना सहित कुमार अंगद दक्षिण द्वार पर चला । पश्चिमी द्वार को घेरने के लिए वायुसुत हनुमान चले । इस प्रकार सामन्तों को विदाकर रामचन्द्र ने उनके साथ और अनेक सेना दे दी ॥ ५०१० ॥ नील के दाहिने-बायें सेना में मैन्दय और द्विविद को कर दिया, वीर अंगद के साथ ऋषभ, गवाक्ष और गवय को कर दिया । सम्पाति और प्रघस ये दोनों महावीर हनुमान के साथ गये । तार विन्द जैसे वीरों को राजा सुग्रीव के संग कर दिया ॥ ११ ॥ राघव के कथनानुसार वीर विभीषण ने व्यूह रचना की । प्रत्येक द्वार पर चौतीस-चौतीस करोड़ वीरों को रखा । मध्यभाग में राम के निकट ही सुग्रीव रहे । और भी करोड़ों वानरों को ऐसे रखा जिससे आकाश ढँक गया ॥ १२ ॥ श्रीराम-लक्ष्मण और वीर विभीषण ने वाणों से तरकश भर लिये । धनुष की डोरी को ऐसा मांज लिया जिससे कि वह शरीर पर चमकती रहती थी । ये लोग उस उत्तरी द्वार को चले जहां रावण स्वयं था । यह देख स्वर्ग के देवताओं ने बड़े हर्षित होकर 'जय, जय' के नारे लगाये ॥ १३ ॥ कितने ही वानर जिनमें वारह-बारह हाथियों का वल था उनके साथ आगे बढ़ चले; सैकड़ों हजारों ऐसे थे जिनमें हाथी के समान बल था । कितने लाखों ऐसे थे जिनमें अपार वल था । हाथों में वृक्ष, शिलाएँ, पर्वत आदि धारणकर लंका को चारों ओर से घेर लिया ॥ १४ ॥ वानर-भालुओं के पैरों से उड़ी धूल सारे

पात्र समन्विते बिमरिष रामे बालीर पुत्र मताइला।
अनेक कठोर बचने रावण राजाक गर्ज्जि पठाइला ।।
हेनमत करि बुलिबि आसिया रण देउक आगबाढ़ि।
अविलम्बे तार राजलक्ष्मी श्रीक बिभीषणे दिबो काढ़ि ।। १६
रामक प्रणाम करिया अङ्गद आकाश बहिया यान्त।
पात्र समन्विते ओवारि कोलत रावणक देखिलन्त ।।
तारार तनय शरीरर कान्ति ज्वलय येन मार्त्तण्ड।
रावणर आगे परिलन्त येन मेरुर शिखर खण्ड ।। १७
राजाक सम्बुधि बचने बोलन्त शुन ओरे दशस्कन्ध।
श्रवण गोचरे मोक शुनि आछा बालीर पुत्र अङ्गद ।।
दाशरथी राम गुणे अनुपाम ताहानेसे आमि दूत।
तोमाक राघवे बचन सन्देश पठाइला बुलि बहुत ।। १८
यत यत कर्म्म तुमि करिलाहा ससारते अगोचर।
अनेक ऋषिर यज्ञ विध्वंसिला राजार दंशिला घर ।।
स्वर्गरो देवता गणक खेदिया असुर नाग छेदिला।
आचण्डिय करि तिनियो लोकक थाकिते सुखे नेदिला ।। १९
शास्त्रर बिहित यत सदकर्म्म तोर नाम शुनि भागे।
त्रिभुवने यत आछय सुन्दरी सबाको तोके से लागे ।।
स्वर्ग मर्त्य यत निश्चीक करिलि यतेक पाताल खण्ड।
सकले देशक कुण्टुरि फुरस येन उदयार षाण्ड ।। ५०२०
गुरु गर्ब्बितक एको न मानस येन भैलि तइ नट।
रामर भार्य्याक सीताक हरिलि दौलर भाङ्गिलि घट ।।

आकाश में ऐसे छा गयी जिससे दिशाएँ खो गयी, सूर्य का प्रकाश ढंक गया। सब लंका को घेर कर ललकारने लगे जिससे राक्षस त्रस्त हो उठे, गर्भवती राक्षसियों का गर्भपात हो गया ।। १५ ।। इसके पश्चात् सामन्तों से मंत्रणाकर रामचन्द्र ने बाली-सुत अंगद को बुला भेजा और रावण के प्रति अनेक कठोर वचन कहकर डाँट सुनाई—हे अंगद, तुम जाकर कहना, कि रावण आगे बढ़कर हमसे संग्राम करे। मैं शीघ्र ही उसकी राजलक्ष्मी और श्री छीनकर विभीषण को सौंप दूंगा ।। १६ ।। राम को प्रणाम कर अंगद आकाशमार्ग से चल पड़े और राजभवन में सामन्तों के साथ रावण को देखा। तारा के पुत्र अंगद के शरीर की कान्ति जलते हुए सूर्य की भाँति थी। वे मेरु शिखर-खंड जैसे रावण के आगे उतरे ।। १७ ।। उन्होंने राजा को सम्बोधित कर कहना शुरू किया—अरे दशानन, सुनो। तुमने कानों से मेरे सम्बन्ध में सुना होगा। मैं बाली-पुत्र अंगद हूँ। अनुपम गुणवाले जो दशरथ-नन्दन राम है मैं उन्हीं का दूत हूँ। राघव ने तुम्हें सुनाने के लिए बहुत कुछ संदेश देकर मुझे भेजा है ।। १८ ।। संसार से अगोचर रहकर तुमने जो-जो कर्म किये है, अनेक ऋषियों के यज्ञों को ध्वंस किया है, राजाओं के भवनों को ध्वस्त कर डाला है। स्वर्ग के देवताओं को खदेड़ दिया है। असुरों-नागों को पराभूत किया है। तीनों लोकों में उथल-पुथल मचाकर तुमने किसी को सुख से रहने नहीं दिया है ।। १९ ।। शास्त्रविहित जो सद्कर्म हैं, सब तुम्हारा नाम सुनते ही भाग जाते है। त्रिभुवन में जितनी सुन्दरियाँ है सव तुम्हें ही चाहिए। स्वर्ग-मर्त्य-पाताल में सर्वत्र तुमने खलबली और विध्वंस मचा डाला है। सभी देशों को उन्मत्त साँड की भाँति कुचलते फिरते हो ।। ५०२० ।। गुरुजनों या श्रेष्ठ पुरुषों

शियालत सिंह तइ भैलि मूढ़ा पर्व्वतक देश मेढ़ि।
तोक मारि यम करणे पठाओं कमने होवस लेढ़ि ॥ २१
रावणे बोलय दुर्ज्जय बानरा थाकिवि गौरव राखि।
गिरिवते लोके सुखे भात खाइ कुकुरर तिनि आखि ॥
मरण जीवन एको न जानस आसिलि एहि दिशक।
परर भार्य्याक परे हरि नेइ बानरा मर किसक ॥ २२
शुन बोलो ओरे दुर्ज्जन बानरा नाहि किछु तोर लाज।
कतदिन भैले वापेरक मारि छन्न करिलेक राज ॥
राजार तनय आनत खाटस ताते तोर मह मह।
परर अधीन दुर्ज्जन वानरा तपस्वीर यश कह ॥ ५०२
अङ्गदे बोलय शुनरे रावण तइ कतमान वीर।
यार शरघावे आकाश परय मेदिनी मेलय चिर ॥
रामर भार्य्याक हरिलि सीताक कटकटाइ तोर घार।
सपुत्र बान्धवे याइबि यमठावे विधिनि भैला लङ्कार ॥ २४
पुरुषर वेटा हवस रावण आग बाढ़ि देह रण
लाजत सीताक माथात करिया प्रणाम रामर चरण ॥
हेन येवे तइ न करस मूढ़ा त्रैलोक्यर गुचाओं शाल।
सपुत्र वान्धवे तोक मारिचोहो राक्षसर बुन्दामार ॥ २५
स्वर्गक लागिया पला नुहि येवे लुकास पाताल पुरे।
सागरत बुर दिले राख नाइ खेदि खाइब रामशरे ॥
यावे चुलत धरि नेयो बाज करि राढ़ि रण देह तोरा।
हृदयर गुल- गुलि पलुवाओं तोक मारो तिरी चोरा ॥ २६

का तुम जरा भी सम्मान नहीं करते, मानो तुम कोई नट हो। राम की पत्नी सीता का हरण कर तुमने मानो देवालय का घट फोड़ डालने का पाप किया है। अरे, तू सियार होकर सिंह का मुखौटा लगाये पर्वतों में विचरण करने की भाँति देशों को नष्ट कर रहा है। तू कैसा निकम्मा है; तुझे मार कर मैं यमलोक भेज दूँगा ॥ २१ ॥ रावण कहने लगा— दुर्जन वानर गृहस्थों के यहाँ कुत्ते की भाँति आकर सुख से खाना खाने के बजाय तुझे अपना गौरव बचाये रखना चाहिए। तुझे मरने-जीने की कुछ जानकारी नहीं है जो इधर चला आया है। अरे दूसरे की पत्नी को कोई दूसरा हरण कर ले जाता है तो बानर, तू उसके लिए क्यों मरने आता है ? ॥ २२ ॥ अरे दुर्जन वानर, सुन, तुझे तो जरा भी शर्म नहीं है, अभी कितने दिन हुए तेरे बाप को मारकर राज्य को नष्ट कर डाला है ? राजा का पुत्र होकर तू दूसरे की सेवा कर रहा है, यही तेरा घमंड है। पराधीन रहकर तू तपस्वियों के यश का बखान करता है ॥ २३ ॥ अंगद ने कहा—अरे रावण, सुन, तू कैसा वीर है ? जिनके शराघात से आकाश टूट गिरता है, धरती फटने लगती है, उन्हीं रामचन्द्र की भार्या सीता को तू हर लाया है। अपना गला कटवाकर तू पुत्र-बांधवों समेत यमलोक जायेगा; लंका पर संकट तू ले आया है ॥ २४ ॥ यदि तू पौरुष सम्पन्न व्यक्ति का बेटा है तो आगे बढ़कर संग्राम कर या लज्जा के मारे सीता को सिर पर चढ़ा चलकर राम के चरणों में प्रणाम कर। रे मूढ़, यदि तू ऐसा नहीं करता तो मैं पुत्र-बांधवों समेत तुझे मार डालूँगा, राक्षसों को अन्धाधुंध मारूँगा और त्रैलोक्य का काँटा मिटा दूँगा ॥ २५ ॥ तू यदि स्वर्ग में भी भाग जाये, या पाताल में जाकर छिप जाये, या सागर में डुबकी लगा दे, तो तेरी रक्षा

अङ्गद बीरर बचन शुनिला कुठार येन प्रहार।
तूलात अगनि लागिया येहेन उठिला कोप राजार ॥
कुरि गोटा चक्षु गुञ्ज फुरावय क्रोधत काम्पे अधर।
कैरा महोदर चारि गोटा पात्र झाण्टे खाण्डा तुलिधर ॥ २७
राजार आदेशे चारियो राक्षसे काछिला युद्धर काछे।
बालीर पुत्रर भ्रुभङ्ग नाइ धराइबाक मने आछे ॥
दुइखान बाहुत धरि अङ्गदर आजोरे राक्षस चारि।
शिल सेन्तु येन पाताले भेदिला कमने लारिते पारि ॥ २८
चारि राक्षसर बल कटालिया अङ्गदे तुलिला हास।
एहि मुखे तइ अल्पिक रावण रामक युजिबे चास ॥
कैलास पर्ब्बत समान चराव रावणर धौलिवर।
तारे उपरक डेव करिलन्त अङ्गद बीर बानर ॥ २९
चारि राक्षसक लैया आकाशक वेगधरि चलि यान्त।
येन चारि गोटा सर्पक धरिया गरुड़ पक्षी उरान्त ॥
अङ्गद बीरर शरीरर बावे राक्षस श्रुति हरिल।
राघवर शत्रु जानकीर बैरी भूमित परि मरिल ॥ ५०३०
शीघ्रवेगे गैया अङ्गद कुमार धवलिवरे चड़िल।
एक लाथि तार उपरे बसाइल शिखर खसि परिल ॥
प्रासाद शिखर भाङ्गिया अङ्गद करय आति आस्फोट।
रावण डरिया बोले इटो किनो दारुण बानरगोट ॥ ३१
रावण ओवारि रण्ड भण्ड करि लोकर ज्वालि तरास।
मारुतर पथे डेओ करि आसि पाइला राघवर पाश ॥

करनेवाला कोई नहीं है, राम के बाण तुझे खदेड़कर मारेंगे, तू आगे बढ़कर संग्राम कर नही तो तेरे बाल पकड़ खींच ले जाऊँगा और रे नारी-चोर, तुझे मारकर मन का क्षोभ मिटाऊँगा ॥ २६ ॥ रावण ने कुल्हाड़ी जैसे चोट करनेवाले वीर अंगद के बचन सुने, तो राजा का क्रोध वैसे ही भड़क उठा जैसे कि रुई में लगने पर आग। गुंजा की भाँति बीसों आँखें घुमा-घुमाकर देखने लगा, क्रोध के मारे उसके होंठ फड़कने लगे, (वह बोल उठा) महोदर आदि चार सामन्त कहाँ हो, तुम लोग खड्ग उठा लो ॥ २७ ॥ राजा के आदेश से चारों राक्षस युद्ध करने के लिए तत्पर हो उठे पर उस ओर बाली-सुत अंगद का भ्रूक्षेप न था, वे अपने को पकड़ा देना चाहते थे। वे चारों राक्षस अंगद के दोनों हाथों को पकड़कर खींचने लगे। पर वे पाताल तक गड़े हुए चट्टानी पुल की भाँति अविचल थे। उन्हें कैसे हिलाया जा सकता था ॥ २८ ॥ चारों राक्षसों के बल की जाँचकर अंगद हँस पड़े। बोले— अरे अल्पशक्ति रावण, तू इसी के बल पर राम से लड़ना चाहता है? कहकर वीर अंगद कैलास पर्वत के समान ऊँचे रावण के राजभवन के ऊपर कूदकर चढ़ गये ॥ २९ ॥ वे चारों राक्षसों को लिए कूदकर आकाश मार्ग से वेग में चले जा रहे थे मानों चार सर्पों को पकड़कर पक्षीराज गरुड़ उड़ता चला जा रहा हो। वीर अंगद के शरीर की हवा से राक्षसों के होश उड़ गये। राघव के शत्रु, जानकी के वैरी वे राक्षस भूमि पर गिरकर मर गये ॥ ५०३० ॥ कुमार अंगद शीघ्र वेग से जाकर राजभवन पर चढ़ गये और उस पर एक लात लगायी जिससे उसकी चोटी टूट गिरी। राजभवन की चोटी तोड़कर अंगद ने प्रचंड नाद किया जिससे डरकर रावण बोल उठा, यह कैसा भयंकर बानर है ॥ ३१ ॥

वालीपुत्र मुखे राघवे लङ्कार समस्ते बार्त्ताक पाइल ॥
आश्वास स्वरूपे हरिषे अङ्गद वीरर तेज बढ़ाइल ॥ ३२
लङ्कार चौभिति झाण्टाइबाक प्रति राघवे आज्ञा करिल।
गिरिसित करि सेना लरि भैला निर्घात येन परिल ॥
कतो बृक्ष धरि पयाणे चलिला काहारो हातत शिला।
चारिओ विशक निसन्धि करिया लङ्कार गढ़ बेढ़िला ॥ ३३
जय रघुवंश- तिलक केशव राक्षस कुल अगनि।
जयति लक्ष्मण यार गुण नाम सर्व्व धर्म्म शिरोमणि ॥
दुइहान चरण शिरत धरिया माधव कन्दलि भणे।
एरि आन काम बोला राम राम यत सभासद गणे ॥ ५०३४

युद्धारम्भ आरु इन्द्रजितर युद्धत श्रीराम लक्ष्मणक नागपाशेरे बन्धन

पद

ओबारिर भङ्ग देखि रावण खङ्गाइल * कहिर वानर गोट अदभुत आइल
चारिगोटा पात्र मोर मारिला डाङ्गर * युद्धर शकत बीर आति थूलन्तर ३५
आपोन विनाश जानि चिन्ता वर पाइल * सकल राक्षस बल चौपाशे जण्टाइल
लङ्काक कपिल वर्ण करिला वानरे * राक्षसे धाइलेक ताक महाआड़म्बरे ३६
वीरबाहु बल आरु सुबाहु वानरे * काठगड़ा निर्म्मिलेक आदेश रामरे
पूवर दुवारे कुमुदाक्ष नामे हरि * दशकोटि सेना लैया रहिला आवरि ३७

रावण के राजभवन को तहस-नहस कर, राक्षसों के मन में त्रास उत्पन्न कर, पवनमार्ग से कूदकर अंगद राघव से पास पहुँच गये। बाली-पुत्र के मुख से राघव ने लंका के सारे समाचार सुने और हर्ष से आश्वासन देते हुए वीर अंगद का तेज बढ़ा दिया ॥ ३२ ॥ लंका के चारों ओर झकझोर डालने के लिए राघव ने आज्ञा दी, जोरों से चीख-पुकार करती हुई सेना दौड़ पड़ी और वज्र जैसे टूट पड़ा। कितने ही वानर वृक्ष लेकर चले, किसी के हाथ में शिला थी। चारों दिशाओं को व्याप्त कर उन सबने लंका के गढ़ को घेर लिया ॥ ३३ ॥ राक्षस कुल के लिए अग्नि-स्वरूप रघुवंश-तिलक (रामरूपी) केशव की जय हो। जिनके गुण-नाम सर्व-धर्म शिरोमणि है उन लक्ष्मण की जय हो। दोनों के चरणों को सिर पर धारणकर माधव कन्दली कहते हैं, सभी सभासद गण अन्य कामों को छोड़कर राम राम कहो ॥ ५०३४ ॥

युद्धारंभ और इन्द्रजित के संग युद्ध में श्री लक्ष्मण का नागपाश से बाँधा जाना

(अंगद के द्वारा) राज भवन का टूटना देखकर रावण क्रोधित हो उठा (वह कहने लगा) यहाँ अद्भुत वानर कहाँ से आ गया? इसने मेरे चार बड़े-बड़े सामन्तों को, जो युद्ध में शक्तिमान वीर और बड़े पुष्ट शरीर वाले थे, मार डाला ॥ ५०३५ ॥ अपना विनाश जानकर उसे बड़ी चिन्ता हुई। उसने चारों ओर राक्षसी-सेना को इकट्ठा किया। वानरों के कारण लंका कपिलवर्णी हो उठी थी। राक्षस उन पर बड़े ही आडम्बर से टूट पड़े ॥ ५०३६ ॥ राम के आदेश से वीर बाहुबल और सुबाहु वानरों ने काठ की दीवारें बना डाली। पूर्वद्वार पर कुमुदाक्ष नाम का वानर दस करोड़

दक्षिण दुवारे काठगड़ाक आकलि * त्रिश कोटि बानर थाकिला महाबली
वाली रायर शशुर सुषेण नामे हरि * दशकोटि सैन्य लैया थाकिला आवरि ३८
उत्तर दुवारे आछे राम महावीर * लक्ष्मण श्रीहरि आरु दुर्ज्जय शरीर
गोलाङ्गुल जाति आरो गवाक्ष बानर * कोटि सहस्रेक राखे डाहिने रामर ३९
दशकोटि बानर रामर बाम पाशे * धूम्रे रक्षाकरन्त बैरर नाहि आशे
सरभ गवय गन्धमार्द्दन ये गजे * असंख्यात बानर फुरय सब साजे ५०४०
विभीषणे गदाहाते थाकिला उल्लासि * सब साजे रामर आज्ञार बाट चाहि
सुषेण फुरन्त कटकर चारि द्वार * सुग्रीवर बोले लैया कटक अपार ४१
सहस्र संख्यात अक्षौहिणी कपिबले * लङ्काक राघवे वेढ़िलन्त समदले
हातत पर्व्वत वृक्ष शिला शाल ताल * आकर्ण शबद मिलि गैला कोलाहल ४२
रावणे आदेशे सेनापति सब साज * सब साजे राक्षस लङ्कार होबा बाज
चारियो दुवारे चतुरङ्गदले तोल * निकलिला राक्षस राजार शुनि बोल ४३
सिन्दूरे मण्डित चलाइले मत्त गज * साक्षातते भार्गव माहुत सब साज
मेघत बिजुलि येन विभूषित काला * साक्षाते चलिला येन चन्द्रमार कला ४४
घोंरा सब साजिल भूमित नेदे पाव * येन देखि आकाशत करय उराव
सुशिक्षित बाहुते चलाइले बर जाम्पे * खुरार प्रहारे सबे बसुमती काम्पे ४५
रथ सब चलि भैला नगर बियापि * आकाशत मेघ सब चलिलेक चापि
कोटि सहस्रेक कोण्डकर कोवे धावे * समरे भङ्गाइबो देवराजा यदि आवे ४६

सेना लेकर घेरे रखा ।। ३७ ।। दक्षिणीद्वार पर उस काठ की दीवार की रक्षा में तीस करोड़ महाबली बानर स्थित हुए। राजा वाली के ससुर सुषेण नाम का बानर दस करोड़ सेना लेकर उसे घेरे रखा ।। ३८ ।। उत्तरी द्वार पर महावीर रामचन्द्र, दुर्ज्जय शरीर वाले लक्ष्मण थे। गवाक्ष और गोलांगुल जाति के सहस्रकोटि बानर रामचन्द्र की दाहिनी ओर रक्षा कर रहे थे ।। ३९ ।। रामचन्द्र की बायी ओर दस करोड़ बानर सेना ले धूम्र नाम का बानर रक्षा कर रहा था, वहाँ शत्रु की कोई गुंजाइश नहीं थी। शरभ, गवय, गन्धमादन, गज आदि असख्य बानर सभी साजों से सजकर घूम रहे थे ।। ५०४० ।। गदा हाथ में लिये विभीषण प्रसन्नतापूर्वक सभी साजों से सजकर राम के आदेश की प्रतीक्षा मे डट गये। सुषेण सुग्रीव के कहने पर अनगिनत सेना लेकर सेना के चारों द्वारों पर चक्कर लगाने लगा ।। ५०४१ ।। सहस्रों की संख्या में अक्षौहिनी बानर सेना द्वारा रामचन्द्र ने एक साथ समूची लंका को घेर लिया। हाथों में पर्वत, वृक्ष, शिला, ताड़, शाल-वृक्ष आदि ले बानरगण प्रचंड नाद करने लगे, जिससे वहाँ कोलाहल मच गया ।। ५०४२ ।। रावण ने तब सेनापति को आदेश दिया कि सब प्रकार से सजधजकर राक्षस लंका से बाहर निकलें। चारों द्वारों से चतुरंगिनी-सेना को आगे बढाओ। राजा का कथन सुनकर राक्षस निकल पड़े ।। ४३ ।। उन सबने सिन्दूर से मंडित मतवाले गजों को आगे बढ़ाया, सभी प्रकार से सजे हुए महावत साक्षात् परशुराम जैसे लग रहे थे। काले मेघ मानो बिजली से विभूपित हो। या साक्षात् चन्द्रमा की कला की भाँति हाथी सेना चल पड़ी ।। ४४ ।। सजे हुए घोड़े, जो भूमि पर पैर नही देते थे, ऐसे जान पड़ते थे मानो आकाश में उड़ रहे हों, प्रशिक्षित हाथों से चलाने पर जो घोड़े बड़े वेग से कूद जाते थे, जिनकी टापों के प्रहार से धरती काँप उठती थी, निकल पड़े ।। ४५ ।। नगर को व्याप्त कर रथ ऐसे निकल पड़े मानो आकाश के मेघ मिलकर चल रहे हों। कोटि-सहस्र बर्छेधारी, जो युद्ध में देवराज इन्द्र को भी परास्त कर सकते थे, वेग से धावित

बालीपुत्र मुखे　　राघवे लङ्कार　　समस्ते वार्त्ताक पाइल ।।
आश्वास स्वरूपे　　हरिषे अङ्गद　　वीरर तेज बढ़ाइल ।। ३२
लङ्कार चौभिति　　झाण्टाइबाक प्रति　　राघवे आज्ञा करिल ।
गिरिसित करि　　सेना लरि भैला　　निर्घात येन परिल ।।
कतो वृक्ष धरि　　पयाणे चलिला　　काहारो हातत शिला ।
चारिओ विशक　　निसन्धि करिया　　लङ्कार गढ़ वेढ़िला ।। ३३
जय रघुवंश-　　तिलक केशव　　राक्षस कुल अगनि ।
जयति लक्ष्मण　　यार गुण नाम　　सर्व्व धर्म्म शिरोमणि ।।
दुइहान चरण　　शिरत धरिया　　माधव कन्दलि भणे ।
एरि आन काम　　बोला राम राम　　यत सभासद गणे ।। ५०३४

युद्धारम्भ आरु इन्द्रजितर युद्धत श्रीराम लक्ष्मणक नागपाशेरे वन्धन

पद

ओवारिर भङ्ग देखि रावण खङ्गाइल * कहिर बानर गोट अदभुत आइल
चारिगोटा पात्र मोर मारिला डाङ्गर * युद्धर शकत बीर आति थूलन्तर ३५
आपोन विनाश जानि चिन्ता वर पाइल * सकल राक्षस वल चौपाशे जण्टाइल
लङ्काक कपिल वर्ण करिला बानरे * राक्षसे धाइलेक ताक महाआड़म्बरे ३६
बीरबाहु बल आरु सुवाहु बानरे * काठगड़ा निर्म्मिलेक आदेश रामरे
पूबर दुवारे कुमुदाक्ष नामे हरि * दशकोटि सेना लैया रहिला आवरि ३७

रावण के राजभवन को तहस-नहस कर, राक्षसों के मन में त्रास उत्पन्न कर, पवनमार्ग से कूदकर अंगद राघव से पास पहुँच गये। बाली-पुत्र के मुख से राघव ने लंका के सारे समाचार सुने और हर्ष से आश्वासन देते हुए वीर अंगद का तेज वढा दिया।। ३२ ।। लंका के चारों ओर झकझोर डालने के लिए राघव ने आज्ञा दी, जोरों से चीख-पुकार करती हुई सेना दौड पड़ी और वज्र जैसे टूट पड़ा। कितने ही वानर वृक्ष लेकर चले, किसी के हाथ में शिला थी। चारों दिशाओं को व्याप्त कर उन सबने लंका के गढ को घेर लिया ।। ३३ ।। राक्षस कुल के लिए अग्नि-स्वरूप रघुवंश-तिलक (रामरूपी) केशव की जय हो। जिनके गुण-नाम सर्व-धर्म शिरोमणि है उन लक्ष्मण की जय हो। दोनों के चरणों को सिर पर धारणकर माधव कन्दली कहते हैं, सभी सभासद गण अन्य कामों को छोड़कर राम राम कहो ।। ५०३४ ।।

युद्धारंभ और इन्द्रजित के संग युद्ध में श्री लक्ष्मण का नागपाश से बाँधा जाना

(अंगद के द्वारा) राज भवन का टूटना देखकर रावण क्रोधित हो उठा (वह कहने लगा) यहाँ अद्भुत बानर कहाँ से आ गया ? इसने मेरे चार बड़े-बड़े सामन्तों को, जो युद्ध में शक्तिमान वीर और बड़े पुष्ट शरीर वाले थे, मार डाला ।। ५०३५ ।। अपना विनाश जानकर उसे वड़ी चिन्ता हुई। उसने चारों ओर राक्षसी-सेना को इकट्ठा किया। वानरों के कारण लंका कपिलवर्णी हो उठी थी। राक्षस उन पर बड़े ही आडम्बर से टूट पड़े ।। ५०३६ ।। राम के आदेश से वीर वाहुवल और सुबाहु बानरों ने काठ की दीवारें वना डालीं। पूर्वीद्वार पर कुमुदाक्ष नाम का वानर दस करोड़

दक्षिण दुवारे काठगड़ाक आकलि * त्रिश कोटि बानर थाकिला महाबली
बाली रायर शशुर सुषेण नामे हरि * दशकोटि सैन्य लैया थाकिला आवरि ३८
उत्तर दुवारे आछे राम महाबीर * लक्ष्मण श्रीहरि आरु दुर्ज्जय शरीर
गोलाङ्गुल जाति आरो गवाक्ष बानर * कोटि सहस्रेक राखे डाहिने रामर ३९
दशकोटि बानर रामर बाम पाशे * धूम्रे रक्षाकरन्त बैरर नाहि आशे
सरभ गवय गन्धमाद्दंन ये गजे * असंख्यात बानर फुरय सब साजे ५०४०
बिभीषणे गदाहाते थाकिला उल्लासि * सब साजे रामर आज्ञार बाट चाहि
सुषेण फुरन्त कटकर चारि द्वार * सुग्रीवर बोले लैया कटक अपार ४१
सहस्र संख्यात अक्षौहिणी कपिबले * लङ्काक राघवे बेढ़िलन्त समदले
हातत पर्व्वत वृक्ष शिला शाल ताल * आकर्ण शबद मिलि गैला कोलाहल ४२
रावणे आदेशे सेनापति सब साज * सब साजे राक्षस लङ्कार होबा बाज
चारियो दुवारे चतुरङ्गदले तोल * निकलिला राक्षस राजार शुनि बोल ४३
सिन्दूरे मण्डित चलाइले मत्त गज * साक्षातते भार्गव माहुत सब साज
मेघत बिजुलि येन बिभूषित काला * साक्षाते चलिला येन चन्द्रमार कला ४४
घोंरा सब साजिल भूमित नेदे पाव * येन देखि आकाशत करय उराव
सुशिक्षित बाहुते चलाइले बर जाम्पे * खुरार प्रहारे सबे बसुमती काम्पे ४५
रथ सब चलि भैला नगर बियापि * आकाशत मेघ सब चलिलेक चापि
कोटि सहस्रेक कोण्डकर कोवे धावे * समरे भङ्गाइबो देवराजा यदि आवे ४६

सेना लेकर घेरे रखा ।। ३७ ।। दक्षिणीद्वार पर उस काठ की दीवार की रक्षा में तीस करोड़ महाबली बानर स्थित हुए। राजा बाली के ससुर सुषेण नाम का बानर दस करोड़ सेना लेकर उसे घेरे रखा ।। ३८ ।। उत्तरी द्वार पर महावीर रामचन्द्र, दुर्ज्जय शरीर वाले लक्ष्मण थे। गवाक्ष और गोलांगुल जाति के सहस्रकोटि बानर रामचन्द्र की दाहिनी ओर रक्षा कर रहे थे ।। ३९ ।। रामचन्द्र की बायीं ओर दस करोड़ बानर सेना ले धूम्र नाम का बानर रक्षा कर रहा था, वहाँ शत्रु की कोई गुंजाइश नहीं थी। शरभ, गवय, गन्धमादन, गज आदि असंख्य बानर सभी साजों से सजकर घूम रहे थे ।। ५०४० ।। गदा हाथ में लिये विभीषण प्रसन्नतापूर्वक सभी साजों से सजकर राम के आदेश की प्रतीक्षा में डट गये। सुषेण सुग्रीव के कहने पर अनगिनत सेना लेकर सेना के चारों द्वारों पर चक्कर लगाने लगा ।। ५०४१ ।। सहस्रों की संख्या में अक्षौहिनी बानर सेना द्वारा रामचन्द्र ने एक साथ समूची लंका को घेर लिया। हाथों में पर्वत, बृक्ष, शिला, ताड़, शाल-वृक्ष आदि ले बानरगण प्रचंड नाद करने लगे, जिससे वहाँ कोलाहल मच गया ।। ५०४२ ।। रावण ने तब सेनापति को आदेश दिया कि सब प्रकार से सजधजकर राक्षस लंका से बाहर निकलें। चारों द्वारों से चतुरंगिनी-सेना को आगे बढ़ाओ। राजा का कथन सुनकर राक्षस निकल पड़े ।। ४३ ।। उन सबने सिन्दूर से मंडित मतवाले गजों को आगे बढाया, सभी प्रकार से सजे हुए महावत साक्षात् परशुराम जैसे लग रहे थे। काले मेघ मानो बिजली से विभूपित हो। या साक्षात् चन्द्रमा की कला की भाँति हाथी सेना चल पड़ी ।। ४४ ।। सजे हुए घोड़े, जो भूमि पर पैर नहीं देते थे, ऐसे जान पड़ते थे मानो आकाश में उड़ रहे हों, प्रशिक्षित हाथो से चलाने पर जो घोड़े बड़े वेग से कूद जाते थे, जिनकी टापों के प्रहार से धरती कांप उठती थी, निकल पड़े ।। ४५ ।। नगर को व्याप्त कर रथ ऐसे निकल पड़े मानो आकाश के मेघ मिलकर चल रहे हों। कोटि-सहस्र बर्छेधारी, जो युद्ध में देवराज इन्द्र को भी परास्त कर सकते थे, वेग से धावित

खाण्डाये पदाति सब आराव करय * फलार छातित खसि कपाट परय
राक्षसर गिरे धूलि उरिला अपार * पृथिवीये गगने देखिय एकाकार ४७
राक्षस बानर बले देखादेखि भैला * बाद्य भण्ड रिङ्‌ झाण्टि उथलिया गैला
निशाचर सेना बले करे पाञ्च काण्डि * बानरक समरे शालय गाण्डि मुण्डि ४८
काष्ठ गड़ा बाज हुइया युजय बानर * शिला वृक्ष हानि मुण्ड भाङ्गे राक्षसर
राक्षसर सेनाये दिलेक अस्त्रजाक * शिलाये बानर बले चूर करे ताक ४९
कपिबले शिला वृक्ष हानिलेक यत * निशाचरे शरे चूर्ण करे आकाशत
आशेष बानर बल प्राञ्चीत चड़िल * वृक्ष शिला बरषि राक्षस संहारिल ५०५०
निशाचर सैन्य युजे प्राञ्चीत चड़िया * भूमित आछारि मारे वानरक निया
चापिया कोबावे गदा परिघर बारि * गड़हन्ते बानर परय प्राण छारि ५१
राक्षसेयो पटोवारे थाके ढाल धरि * लाथि हानि बानरे पेलावे चितकरि
राक्षसे बानरे लागि गैला हाता हाति * धूमा जय रणत लागिल लाथालाथि ५२
राक्षसे बानरे युजे हइया एक पिण्ड * चापिया परय येन पर्ब्बतर भिण्ड
राक्षसे बानर बल मारि मारि खान्त * राक्षसक मारिया बानरे दोहे आन्त ५३
बानरे आगक लागि दिबय लवर * बज्रर सदृश करि मारय चवर
चवरर चोटे सबे दशन सारय * बानरर हातत राक्षस कुलक्षय ५४
दुयो कुल सेनाये बोलय तोल तोल * प्रलयत येन दुइ सागर कल्लोल
राउत समे घोंरा मारि आन्तक बिचारे * लाथि हानि रथ भाङ्गे सारथिक मारे ५५

हुए ॥ ४६ ॥ खड्‌गधारी पैदल सेना नाद करने लगी। उनके कोलाहल से कपाट टूट कर गिरने लगे। राक्षसो के शब्दों से अपार धूल उड़ने लगी जिससे पृथ्वी और गगन एकाकार दिखाई दे रहे थे ॥ ४७ ॥ राक्षसों और बानरों की सेनाओं का आमना-सामना हुआ, दोनों सेनाएं वाद्यध्वनि, ललकार, शोर करती हुई उथल उठी। निशाचरो की सेना वाणों से चोटकर बानरों को युद्ध में आरपार छेद-वेध डालती थी ॥ ४८ ॥ काठ की दीवारों से निकलकर बानर लड़ने लगे। वे शिला-वृक्ष आदि से चोटकर राक्षसों के सिर फोड़ डालने लगे। राक्षसों की सेना जो अस्त्र-समूह छोड़ती थी बानरों की सेना उन्हें शिलाओं से चूर कर डालती थी ॥ ४९ ॥ कपि-सेना जितने शिला-वृक्ष आदि से चोट करती थी, निशाचर उन्हें आकाश मे ही चूर कर डालते थे। अनगिनत बानर सेना किले की दीवार पर चढ़ गयी। वृक्ष, शिला आदि की वर्षा कर राक्षसों का संहार किया ॥ ५०५० ॥ निशाचर सेना दीवार पर चढ़कर युद्ध कर रही थी और वानरों को पकड़-पकड़ कर पटक मारती थी। उनके पास जाकर गदा, परिघ आदि से चोट करती थी। किले पर से गिर-गिरकर वानरों के प्राण निकल जाते थे ॥५१॥ राक्षस भी ढाल लेकर कतारों में खड़े रहते थे और बानरों को लातों से मारकर चित्तकर गिरा देते थे। राक्षसों और बानरों में हाथापाई होने लगी। प्रचंड युद्ध में लातों से लड़ाई होने लगी ॥ ५२ ॥ राक्षस और बानर एक पिंड जैसे गुंथकर लड़ाई कर रहे थे। फिर ऐसे गुँथकर गिरते थे, मानो पर्वताकार खंड हों। राक्षस बानरों की सेना को मार-मार कर खा जाते थे, राक्षसों को मारकर बानर उनकी आँतें फाड़ डालते थे ॥ ५३ ॥ बानर सामने की ओर दौड़ जाते थे और वज्र की भाँति थप्पड़ मारते थे। थप्पड़ों की चोट से उनके सारे दाँत झड़ जाते थे, इस प्रकार बानरों के हाथों राक्षसों के वंश का नाश हो रहा था ॥ ५४ ॥ दोनों ओर की सेनाएं 'पकड़, उठा' शब्द कर रहीं थीं, मानो प्रलय में दो सागर कल्लोल कर रहे हों। सवार समेत घोड़ों को मारकर आँतें निकाल लेते थे, फिर लातों से मारकर रथ तोड़ डालते व सारथी को मार डालते थे ॥ ५५ ॥

अदभुत युद्ध भैला बानर राक्षसे * दुइमिलि सेनार रुधिरे नदी बहे
घोंरा सब मरिया सागरत भासि याय * दिग्गज समान हस्ती अन्तर्द्दिशे प्राय ५६
कटकर संग्राम संक्षेप करि थओं * मुख्य मुख्य बीरर युद्धर कथा कओं
इन्द्रजित अङ्गदर दुर्घोर समर * प्रजङ्घ राक्षस समे सम्पाति बानर ५७
जाम्बुमाली हनुमन्ते भैला घोर रण * मित्र घोषे सम्मुख भैलन्त बिभीषण
तपन राक्षस समे युजे बीर नल * सुकर्णक करे रण नील महाबल ५८
सुग्रीव राजाये समे युजय प्रजङ्घ * बिरूपाक्ष राक्षसक लक्ष्मणे अभङ्ग
अग्निकेतु यज्ञकेतु सुप्ररश्मि केतु * एहि चारि सम्मुख रामक युद्ध हेतु ५९
बज्र मुठि राक्षसक इन्द्र जानु सज * तपन सहिते युद्धकरे कपि गज
सुषेण सहिते युजे द्विविद बानरे * सुशीलक युजे बिन्दुमाली निशाचरे ५०६०
ऋषभेओ सम्मुखे युजय सारणक * जातिकाय कुम्भे दुइ मिलि बिनोदक
धूम्राक्षक मारुतिये केशरीर पिता * बेगदरशिये शुक राक्षसर भिता ६१
महापार्श्वक ये गन्धमाद्दने आकलि * बिद्युतजिह्ब राक्षसक युजे शतबली
मकराक्ष बीरर सम्मुख जाम्बवन्त * निकुम्भ राक्षस समे धूम्राक्ष युजन्त ६२
नरान्तक राक्षसे सम्मुख पनसक * गवाक्ष सहिते युद्ध करे देवान्तक
त्रिशिराये करय शरभ समे युद्ध * अकम्पन समे युजे बानर कुमुद ६३
कोटि कोटि समर लागिला घाटाघाटि * काण्डे काण्डे याठि जोङ्गे भैला काटाकाटि
निशाचरे कपिबले भ्रुकुटा भ्रुकुटि * कतो कतो भूमित परिया लुटा लुटि ६४

बानरों और राक्षसों में अद्भुत युद्ध होने लगा। दोनों ओर की सेनाओं के रक्त की नदी बहने लगी। घोड़े मर मरकर सागर में बह जाते थे। दिग्गज जैसे हाथी लगभग डूब-से रहे थे ।। ५६ ।। सेनाओं के संग्राम की कथा संक्षेप में कहकर अब मुख्य-मुख्य वीरों के युद्ध की कथा कह रहा हूँ। इन्द्रजित और अंगद में प्रचंड युद्ध होने लगा, राक्षस प्रजघ के साथ वानर सम्पाति लड़ने लगा ।। ५७ ।। जाम्बुमाली और हनुमान में घोर युद्ध होने लगा विभीषण और मित्रघोष का सामना हुआ। राक्षस तपन के साथ वीर नल लड़ रहा था, महाबली नील सुकर्ण के साथ युद्ध करने लगा ।। ५८ ।। राजा सुग्रीव के साथ प्रजंघ और राक्षस विरूपाक्ष के साथ लक्ष्मण का निरन्तर संग्राम होने लगा। अग्निकेतु, यज्ञकेतु, सुप्ररश्मिकेतु, ये चारों युद्ध करने के लिए राम के सम्मुख हुए ।। ५९ ।। बज्रमुष्टि राक्षस के साथ सजे हुए इन्द्रजानु और तपन के साथ गज नाम का बानर लड़ने लगा। सुषेण के साथ द्विविद बानर और बिन्दुमाली निशाचर के साथ सुशील युद्ध करने लगा ।। ५०६० ।। ऋषभ भी सारण का सामना कर लड़ने लगा। अतिकाय और कुम्भ दोनों मिलकर विनोद से लड़ने लगे, धूम्राक्ष के साथ मारुति के पिता केशरी और वेगदर्शी के साथ शुक राक्षस की लड़ाई होने लगी ।। ६१ ।। महापार्श्व के साथ गन्धमादन, विद्युज्जिह्व के साथ शतबली लड़ने लगा। वीर मकराक्ष का सामना जाम्ववन्त ने किया तथा निकुम्भ राक्षस के साथ वानर धूम्राक्ष लड़ने लगा ।। ६२ ।। नरान्तक राक्षस ने पनस का सामना किया और गवाक्ष के साथ देवान्तक लडने लगा। त्रिशिरा शरभ से युद्ध करने लगा और अकम्पन के संग वानर कुमुद लड़ने लगा ।। ६३ ।। करोड़ों सैनिकों में

त्रिदशे अजय वीरवर इन्द्रजित * गदा हानि अङ्गदक पारिला भूमित
दुइहात उच्चाया अनेक दूर तुलि * निष्ठुर कोवेक वैसाइला हुह बुलि ६५
गदार प्रहार येवे वालीपुत्र पाइला * दशगुण तेजवले रावणिक धाइला
चारि घोंरा रथर मारिला लाञ्ज वारि * सारथियो भूमित परिला प्राण छारि ६६
लाथि हानि रथक भाङ्गिला सेहिथाने * हेट मुखे इन्द्रजित परिला सन्धाने
ताहार तनय आति नादिला अपार * इन्द्रजिते वोले किनो वानरा दुर्व्वार ६७
कर्णमाने प्रजङ्घे टानिया धनुखान * सम्पातिक सन्धाने हानिला पंचवाण
शरहानि निशाचरे तुलिलन्त हास * दुर्ज्जन वानरा आजि जीवन्ते न यास ६८
क्रोधिलन्त सम्पाति मलिन मुख वर्ण * प्रजङ्घक वृक्ष हानिलेक अश्वकर्ण
माथात परिया भाङ्गिलेक शिर खुलि * प्रजङ्घ चलिला यम सदनक बुलि ६९
शर हानि तपन नलर पाशे गैल * तालुत मुटुकि दिया ढेल निकलाइल
रुधिर वजाइला मुखे परिला तपन * नलर प्रहारे गैला यमर सदन ५०७०
मारुतिक हासि जाम्बुमाली वीरे धाइल * दृढ़ शकतिर कोव हृदये वसाइल
ताहार रथत चरि कपि महावीर * चवरे छिण्डिल तार गिरि सम शिर ७१
निशाचरे मित्रघे अनेक शत शरे * विभीषण वीरक हानिला निरन्तरे
रावणर कनिष्ठ निशङ्क वीरवर * शरे हानि रणत छेदिला तार शिर ७२
सुग्रीवक प्रजङ्घे विन्धिला दशशरे * चातियाल वृक्षे वीरे निला यमघरे
विरुपाक्षे लक्ष्मणक शरजाक दिल * रामर कनिष्ठे ताक यमघरे निल ७३
अग्निकेतु यज्ञकेतु नाम निशाचरे * सुप्रतघ्न रश्मिकेतु चारि महावीरे
चारि मिलि राघवक दिला शरजाक * आमार हातत तुमि पलाइवाक थाक ७४

निर्मम ढंग से हुहकर चोट की ।। ६५ ।। वाली-पुत्र पर गदा का प्रहार पड़ते वे दसगुने तेज बल से इन्द्रजित की ओर दौड़ पड़े और उसके रथ के चारों घोड़ों को पूँछ की चोटों से मार डाला। उसका सारथी भी निष्प्राण होकर भूमि पर गिर पड़ा ।। ६६ ।। उन्होंने लात मारकर वहीं रथ को तोड़ डाला, इन्द्रजित चोट खाकर नीचे मुँह कर गिर पड़ा। उसका वेटा जोर से चीख पड़ा। इन्द्रजित कहने लगा, यह वानर कितना प्रचंड है ।। ६७ ।। प्रजंघ ने कान तक अपना धनुष खींच लिया और सम्पाति की ओर लक्ष्य कर पांच वाण छोड़े। वाणों का प्रहार कर निशाचर ने अट्टहास किया, बोला— अरे दुर्ज्जन वानर, आज तू जीवित नहीं जा सकेगा ।। ६८ ।। मटमैली मुखाकृतिवाला सम्पाति क्रोधित हो उठा और एक अश्वकर्ण वृक्ष से प्रजंघ पर चोट की। वह वृक्ष सिर पर पड़ने के कारण उसकी खोपड़ी फट गयी और प्रजंघ यमलोक चला गया ।। ६९ ।। वाणों की चोट करता हुआ तपन, नल के पास पहुँचा। नल ने उसकी तालु पर चोट की जिससे तपन की आँखे निकल आयीं, मुँह से रक्त वमन करता हुआ वह गिर पड़ा, इस प्रकार नल के प्रहार से तपन यमलोक सिधारा ।। ५०७० ।। मारुति की ओर अट्टहास करता हुआ वीर जाम्बुमाली धावित हुआ और उनकी छाती पर दृढ़-शक्ति से चोट की। महावीर हनुमान उसके रथ पर चढ़ गये और थप्पड़ मारकर उसका पर्वत जैसा सिर तोड़ डाला ।। ७१ ।। निशाचर मित्रघ ने अनेक सौ वाणों से निरन्तर वीर विभीषण पर चोटें की। रावण के कनिष्ठ भाई वीरवर विभीषण निर्भय थे। उन्होंने वाणों के आघात से उसका सिर काट डाला ।। ७२ ।। प्रजंघ ने सुग्रीव को दस वाणों से वेध डाला, सुग्रीव ने छितवन वृक्ष की चोटों से उसे यमलोक भेज दिया ।। ७३ ।। विरूपाक्ष ने लक्ष्मण को अनेक वाण मारे। राम के छोटे भाई लक्ष्मण ने उसे मारकर यमलोक भेज दिया। अग्निकेतु, यज्ञकेतु, सुप्रतघ्न, रश्मिकेतु इन चार महावीर

हेन शुनि राघवर क्रोध बर मने * चारि गोटा नराच जुरिला निया गुणे
शरे हानि शिर छेदिलन्त एकेकर * मरिया राक्षस गैला यमर नगर ७५
महेन्द्रक बाजूबर मारिलन्त तुष्टि * तेतिक्षणे ताहार पराण गैला चुटि
दिलेक सरभे द्विविदक शर जाक * मुष्टि हानि द्विविदेओ मारिलन्त ताक ७६
नील महाकपिक सुबेल निशाचरे * निरन्तरे शरीरक ताड़िलन्त शरे
ताहार रथक चाया दिला शर जाक * सुकर्ण मरिया गैला यमर सभाक ७७
बिन्दुमाली सुषेणक घोर समरत * असंख्यात अग्रे बिन्धिलेक शरीरत
महाबीर सुषेण कौतुके ताक पाइल * पर्व्वतर शृंगगोट हानिया पठाइल ७८
गदा लैया बिन्दुमाली रथर नामिल * एके कोबे गिरिर शृङ्गक संहरिल
क्रोधिला सुषेण येन मत्त गजलीला * आरका हानिला ताक असंख्यात शिला ७९
शिला बहि यान्ते बिन्दुमाली भेट पाइल * गदार प्रहारे चूर करिया पठाइल
निशाचरे बोले मइ किवा चाओं आर * सुषेणक बैसाइलेक गदार प्रहार ५०८०
सुषेण वानर अति समरे प्रचण्ड * राक्षसक हानिलेक पर्व्वतर खण्ड
शिलार प्रहारे तार हिया भैला चूर * बिन्दुमाली निशाचर गैला यमपुर ८१
एहिमते यतेकर द्वन्दयुद्ध भैल * रामसेना जिनिल राक्षस क्षय गैल
इन्द्रजित एरि सबे परिला निशेष * सूर्य्य अस्त गैल भैल रजनी प्रवेश ८२
निशायुद्ध भैल येन राक्षस बानरे * अन्धकारे निचिनय आपुन कि परे
भालुक बानर बुलि हाने निशाचरे * राक्षसर मतबुजि युजय बानरे ८३

निशाचरों ने मिलकर रामचन्द्र पर वाणों की झड़ी लगा दी, बोले—हमारे हाथों से बचकर तुम कहाँ जाओगे, ठहरो ! ।। ७४ ।। यह सुनकर राघव के मन में बड़ा ही क्रोध आया उन्होंने धनुष की डोरी पर चार नाराच चढाये और उनसे एक-एक कर चारों के सिर काट डाले। चारों मरकर यमपुरी पहुँच गये ।। ७५ ।। महेन्द्र को बज्र ने बड़े जोर से घूँसा मारा, उसी क्षण उसके प्राण निकल गये। शरभ ने द्विविद पर कई वाण छोड़े, द्विविद ने घूँसा मारकर उसे मार डाला ।। ७६ ।। सुवेल नाम के निशाचर ने महाकपि नील को निरन्तर वाणों से चोट की। नील ने उसके रथ को लक्ष्य कर बाण छोड़े; सुकर्ण (सुबेल) मरकर यम की सभा में जा पहुँचा ।। ७७ ।। घोर समर में बिन्दुमाली ने सुषेण के शरीर को अनगिनत वाणों से बिध डाला। उससे महावीर सुषेण को बडा कौतुक हुआ और उसने बिन्दुमाली की ओर एक पर्वत का शिखर फेक मारा ।। ७८ ।। तब बिन्दुमाली गदा लेकर रथ से उतर गया और एक ही चोट से गिरि-शिखर को चूर कर डाला। तब सुषेण मतवाला हाथी जैसा क्रोधित हो उठा और उसकी ओर अनगिनत शिलाओं से प्रहार किया ।। ७९ ।। शिलाओं को आ पहुँचते ही बिन्दुमाली ने गदा के प्रहार से उन्हें चूर-चूरकर डाला। "अब और मुझे क्या देखना है"— निशाचर बिन्दुमाली ने सोचकर सुषेण पर गदा का प्रहार कर दिया ।। ५०८० ।। बानर सुषेण सग्राम में अत्यन्त प्रचंड था। उसने राक्षस पर पर्वत का खंड उठाकर फेंक मारा। शिला के प्रहार से निशाचर बिन्दुमाली का हृदय चूर-चूर हो गया। वह यमलोक सिधार गया ।। ८१ ।। इस प्रकार से जिन-जिन में द्वन्द्व-युद्ध हुआ सबमे राम की सेना विजयी हुई; राक्षसों का नाश हुआ। केवल इन्द्रजित के सिवा सभी मारे गये। सूर्य अस्त हो गया, रात हो आयी ।। ८२ ।। राक्षसों और वानरों में रात्रि-युद्ध होने लगा। अन्धकार में कौन अपना है कौन पराया, कुछ भी सूझता न था। यह भालू-वानर है ऐसा अनुमान लगाकर निशाचर मारते थे। यह राक्षस जैसा है—समझकर वानर जूझते

कलीया मेघक येन कालमेघे थाइल * असंख्यात भालुके राक्षस खेदि खाइल
माथात कामोर मारे खेदि पावे जाक * यावे प्राण वर्त्ते कदाचितो नेरे ताक ८४
राक्षसेओ वानरक मारे हात गुरि * माथात कामुरि चोवावय मरमरि
खावा खाइ लागिया मिलिल धुमाजय * निशाचर भालुक अनेक मॅल क्षय ८५
राघवे देखन्त अन्धकार तमोमय * चतुर्द्दिशे वेढ़िलन्त निशाचर चय
यज्ञकेतु महापार्श्व वीर महोदर * शुक ये सारण वज्रदंष्ट्र निशाचर ८६
छयो बाणे रामर फुटिल छय शरे * चतुर्द्दिके आकाश वेढ़िला निरन्तरे
छय वाणे राघवे वेढ़िला मर्म्मस्थाने * छय हन्ते पलाइ गैला राखि जीवमाने ८७
सुवर्णर शर अग्निवर्ण आसरिश * अन्धकार फेरिया प्रसन्न दश दिश
यिदिशे राक्षस शर गुचि गुचि याय * रामर अव्यर्थ शरे खेदि खेदि खाय ८८
इन्द्रजित मने मने करे वर खङ्ग * वानर गोटर मोर एतमान भङ्ग
गुञ्जयेन चक्षु फुराइलेक क्रोध दृष्टि * अङ्गदक करिलेक घोर शरवृष्टि ८९
गदा मुद्गर हाने वहु शर जाक * दुर्ज्जन वानरा आजि मारो थाक थाक
शाल वृक्ष अङ्गदे फुराइला येन दाङ्ग * अस्त्र उफरिया गैला नुछुइलेक अङ्ग ५०९०
आथाके रावणि शर मारिते लागिला * गिरिसाइ अङ्गदर कटक भाङ्गिला
सैन्य भाङ्गिवार देखि अङ्गदे खङ्गिला * इन्द्रजित कुमारक हानिलेक शिला ९१
शिला परि रावणिर रथ गैला भागि * इन्द्रजिते डेव दिला पृथिवीक लागि
क्रोधिया वोलन्त आजि लैवोहो पराण * तेतिक्षणे रावणि भैलाहा अन्तर्द्धान ९२

थे ।। ८३ ।। काले मेघों पर मानों कालरूपी मेघ ने आक्रमण कर दिया, उसी प्रकार अनगिनत राक्षसों को भालुओं ने खदेड़कर खा डाला। खदेड़ने पर जो उनकी पहुँच में आ जाता उसी के सिर को दाँतों से पकड़ लेते और जब तक प्राण रहते, उसे नही छोड़ते थे ।। ८४ ।। राक्षस भी वानरो को हाथों, केहुनों आदि से मार रहे थे, उनकी खोपड़ी दाँतों से मड़-मड़कर चवा जाते थे। एक दूसरे को खा जाने के कारण वहाँ प्रचड़ हलचल मच गयी और अनेक राक्षस व भालू मारे गये ।। ८५ ।। रामचन्द्र ने देखा, तमोमय अन्धकार में निशाचरो ने चारों ओर से घेर लिया है। यज्ञकेतु, महापार्श्व, वीर महोदर, शुक, सारण, वज्रदंष्ट्र आदि छहों निशाचरों ने राम के छह बाणों से विधँकर चारो ओर आकाश को घेर लिया ।। ८६ ।। रामचन्द्र ने छह वाणों से उन छहो के मर्म-स्थानों को वेध डाला। तव छहों राक्षस प्राण बचाकर वहाँ से भाग निकले ।। ८७ ।। रामचन्द्र के सुवर्ण के वाण अग्नि के जैसे चमकीले थे। उन सवने अन्धकार को भेद कर दसों दिशाओं को प्रकाशमान कर दिया। राक्षसों के वाण जिधर से निकलते थे, रामचन्द्र के अव्यर्थ वाण उन्हें उधर ही खदेड़कर नष्ट कर देते थे ।। ८८ ।। तव इन्द्रजित ने मन ही मन वड़ा क्रोधित होकर सोचा, इन वानरों ने मेरी इतनी सेना का नाश कर डाला। उसने क्रोध भरी दृष्टि से अपनी गुंजा जैसी आँखे तरेर कर अंगद पर घोर वाण बर्षा की ।। ८९ ।। "रे, दुर्जन वानर, तुझे आज मार डालूंगा, ठहर, ठहर!" कहकर उसने गदा मुद्गर और अनेक वाणों से चोट की। अंगद ने एक शाल वृक्ष को लाठी की भाँति से ऐसे घुमाया जिससे इन्द्रजित के सारे अस्त्र दूर जा गिरे, अंगद के शरीर छू न सके ।। ५०९० ।। तव इन्द्रजित अविराम शर-वर्षा करने लगा। अंगद की सेना चीख-पुकार कर भागने लगी। सेना को भागते देख अंगद क्रोधित हो उठे और कुमार इन्द्रजित पर शिला से चोट की ।। ९१ ।। शिला के आघात से इन्द्रजित का रथ टूट गया, इन्द्रजित धरती पर कूद पडा। उसने क्रोध से कहा, "आज तेरे प्राण ले लूंगा।" और उसी क्षण वह अन्तर्हित हो गया ।। ९२ ।। वीर इन्द्रजित को युवराज

इन्द्रजित बीरक भङ्गाइला युवराजे * श्रीराम लक्ष्मण जिनिलन्त रणमाजे
देवलोके आकाशत आशेष हरिषे * तिनिरो माथात माला कुसुम बरिसे ९३
कपिबले मिलि अङ्गदक प्रशंसिल * साधु युवराज पितृनामक आनिल
इन्द्रे यात हारिलेक ताहाक भङ्गाइल * अदभुत बीरतो यशक बर पाइल ९४
अन्तर्द्धान हुइया बीर रावणि कुपिल * यज्ञभूमि संयोजिया अगनि ज्वालिल
मायावन्त राक्षसर लोहित वस्त्र माथे * अगनित हुनय लोहार स्रुव हाते ५०९५
कलीया छागल आनि माथा छेद करि * आहुतिक करय लोहार स्रुव धरि
भयरा काण्ठक आनि समिधे आपोने * यज्ञक कराय इन्द्रजित रङ्ग मने ९६
बरदत्त बीरे येवे आहुति दिलेक * सुवर्णर वर्ण उठिलेक पुरुषेक
मूर्त्ति धरि अगनिये लैलन्त समस्त * बहिन माज हन्ते उठिलेक दिव्य रथ ९७
हेम मय दिव्य रथ खान येन आछे * यत अस्त्र शस्त्र सब निबन्धिया आछे
स्वर्द्धि स्वस्ति मङ्गलक कैला द्विज गणे * यज्ञत तृपिति पाइला यक्ष रक्ष गणे ९८
रणजय हैब हेन पाइलेक मङ्गल * बिमरिषि बोले मेघनाथ महाबल
आजि मइ साधिबो बापर यत काज * राम लक्ष्मणक मारि पेषो यमराज ९९
निवारण करो आजि यत पृथिवीक * पशु जाति हुया युजिबाक आइलि किक
एहि बुलि आरोहिला सेइ दिव्य रथे * अन्तर्द्धान हुइया बीर गैला बायुपथे ५१००
रथखान चलय त्रिदशे अगोचर * राम लक्ष्मणक लागि प्रहारय शर
दुइहान्तोक अग्निशरे समरे नाछन्त * राक्षस कुलक येन दहन्ते आछन्त ५१०१

अंगद ने पराजित कर दिया; राम-लक्ष्मण युद्ध में विजयी हो गये—यह सोचकर स्वर्ग में देवगण बड़े हर्षित हो, तीनों के सिरों पर फूल बरसाने लगे ।। ५०९३ ।। वानर-सेना मिलकर अगद की प्रशसा करने लगी कि सचमुच युवराज ने पिता का नाम बढ़ाया है। इन्द्र भी जिससे हार गया था, उसी को इन्होंने हरा दिया। अद्भुत वीरता से इसने बड़ा यश पाया ।। ९४ ।। अन्तर्हित होकर रावण-पुत्र इन्द्रजित क्रोधित हो उठा। उसने यज्ञ-भूमि बनाकर अग्नि प्रज्वलित की। मायावी राक्षस सिर पर लाल वस्त्र धारण कर लोहे की अनगिनत श्रुवाओं से अग्नि मे हवन करने लगा ।। ९५ ।। काले बकरों की बलि देकर लोहे की श्रुवाओं से आहुतियाँ देने लगा। "भयरा" नाम का काठ लाकर स्वयं समिधा बनायी और बड़े प्रसन्न मन से इन्द्रजित यज्ञ करने लगा ।। ९६ ।। वर प्राप्ति हेतु जब वीर ने आहुति दी तो यज्ञाग्नि से एक पुरुष निकला जिसका वर्ण स्वर्ण जैसा था। मूर्तिमान होकर अग्नि ने सारी आहुतियाँ आदि ग्रहण कर लीं। इसके पश्चात् अग्नि के बीच से एक दिव्य रथ निकला ।। ९७ ।। घोड़ों समेत उस रथ पर सभी प्रकार के अस्त्र-शस्त्र सजाकर रखे हुए थे। द्विजों ने ऋद्धि स्वस्तिवाचन आदि मांगलिक कार्य किये। यक्ष-रक्ष उस यज्ञ से बड़े ही तृप्त हुए ।। ९८ ।। यह मांगलिक सूचना मिली कि रण में विजय होगी। विचारकर महाबली मेघनाद ने कहा—आज मै पिता के सारे कार्य सिद्ध कर दूंगा। राम लक्ष्मण को मार यमलोक भेज दूंगा ।। ९९ ।। आज मै पृथ्वी को वानर-भालुओं से रहित कर दूंगा। मैं बता दूंगा, वन के पशु जाति के होकर लड़ने क्यो आये थे ? यह कह कर इन्द्रजित उसी दिव्य रथ पर सवार हो गया और वीर अन्तर्द्धान होकर वायु मार्ग से चलने लगा ।। ५१०० ।। देवताओं से भी अलक्षित रहकर वह रथ चलने लगा और वह राम-लक्ष्मण पर वाणों से प्रहार करने लगा। दोनों मानों राक्षसकुल को दग्ध करने हेतु अग्निवाण छोड़ने लगे ।। ५१०१ ।। इन्द्रजित ने दोनों को चारों ओर

शुनि सबे राक्षसर उल्लासिल गावे * वाद्य भण्ड रिङ्ग जाण्टि ढाक ढोल वावे
इन्द्रजिते रणजय करिया आछय * नगर माजत नन्दि वधाइ वाजय ५१२१
माधवे वोलन्त कथा भैला जप्रजोल * एके हाते कोने धरिवेक दुइ शल
रावणिर कथा यत एखन आछोक * रामर काहिनी कहो वानरर शोक २२
सुग्रीव कान्दन्त राघवर पावे परि * हृदयत मुठि हाने माटित वागरि
हा मित्र कत मइ पातेक करिलो * तोमार आगत मइ किय न मरिलो २३
यमकरणक तुमि चलिला आपोने * हरिष वदनेमोक मातिबेक कोने
याहार प्रसादे हराइवार राज पाइलो * सिहेन मित्रक मइ कमने हराइलो २४
हरि हरि कैक याहा प्राणत लखाइ * जन्मान्तरे आछिलो सोदर दुइ भाइ
मइसे जानिलो मोत यतमान स्नेह * किय प्राण नयाय दारुण सार देह २५
विभीषणे आसिया देखन्त दुइ भाइ * वीर शयनत शुतिछन्त एके ठाइ
रामर चरणे धरि कान्दन्त सुग्रीव * गिरि साइ परि वोले किक धरो जीव २६
राम लक्ष्मणर भैला हेनसे विपति * दुइ हानो नासात नाहि पवनर गति
एतमान तेवे मोर मने भैला स्नेह * एहि शोक अगनित पेलाइ वोहो देह २७
एहि मित्र विभीषणे सुग्रीवक चाइल * जल लइया सुग्रीवर लोतक गुचाइल
नकान्दा नकान्दा मित्र परिहरा शोक * राजार आकुले हैवे आउल सर्व्ब लोक २८
सब सैन्य मित्र तुमि दुइ भाइक राखा * सेना थिर करो मइ सावहिते थाका
वानर भालुक सबे नुवुजिया मन * काणा काणि करे देखो सबे कपिगण २९

लगा—रात्रि-युद्ध में दोनों भाइयों को यमलोक भेज दिया, मैंने खर के मारने का वदला ले लिया ॥ ५१२० ॥ सुनकर सभी राक्षसों के शरीर उल्लास के मारे फूल उठे। वे नगाड़े, ढोल आदि वजाने और कोलाहल कर नारे लगाने लगे। इन्द्रजित रण में विजय प्राप्त कर आ रहा है, इस समाचार से नगर में वधावे वजने लगे ॥ २१ ॥ माधव कन्दली कह रहे हैं, विषय गड्ड-मड्ड हो गया। एक हाथ से भला दो सौल मछलियाँ कौन पकड़ सकता है ? इन्द्रजित की कथा अव यहीं रहने देते है, अव राम की कथा और वानरों के शोक की वात का वर्णन कर रहा हूँ ॥ २२ ॥ रामचन्द्र के चरणों पर गिरकर सुग्रीव रोने लगे और भूमि पर लोट-लोट कर छाती पर मुक्का मारने लगे। वे कहने लगे, "हा मित्र, मैंने कितना पाप किया, तुम्हारे आगे मैं ही मर क्यों नही गया ॥ २३ ॥ तुम तो स्वयं यमलोक चले, अव मुझे हर्षपूर्वक कौन पुकारेगा ? जिसके अनुग्रह से मुझे खोया हुआ राज्य मिल गया, वैसे मित्र को मैंने खो कैसे दिया ?" ॥ २४ ॥ हरि, हरि, प्राणप्रिय लक्ष्मण, तुम कहाँ चले ? हम तो किसी पूर्वजन्म में सहोदर भाई थे। मुझ पर तुम्हारा जितना प्रेम था, वह तो मुझे ही पता है। इस दारुण देह को छोड़कर मेरे प्राण क्यों निकल नहीं जाते ? विभीषण ने आकर देखा दोनों भाई एक ही स्थान पर वीर-शय्या पर सोये हैं, सुग्रीव राम के चरण पकड रो रहे है और चीख-चीख कर कह रहे है कि राम-लक्ष्मण पर ऐसी विपत्ति आ गयी, दोनों की साँस नही चल रही है, अब मैं प्राण कैसे धरूँ ? ॥ २५-२६ ॥ मेरे मन में इतना स्नेह है कि मैं भी इसी शोकरूपी अग्नि में शरीर छोड़ दूँगा ॥ २७ ॥ तव मित्र विभीषण ने सुग्रीव को देखा और पानी से उनके आँसुओं को धो, पोंछ दिया। कहा, मित्र! न रोओ, शोक करना छोड़ दो, राजा ही व्याकुल हो उठे तो सभी लोग उलझन में पड़ जाते है ॥ २८ ॥ मित्र, सारी सेना सहित तुम दोनों भाइयों की देखभाल करो, मैं सेना को संभालता हूँ, तुम सावधान रहो। देखो, भालू-वानर सभी मन की वात समझकर आपस में कानाफूसी करने लगे हैं ॥ २९ ॥ तव वानरराज

सन्धुक्षण भैलन्त सुग्रीव कपिराजे * चारि पात्र लैया विभीषण भैला साजे
गदा हाते चतुर्द्दिके सैन्य करि थिर * रामर सन्ताप तापे न सहे शरीर ५१३०
इन्द्रजित मायाबले सबाक जिनिया * लङ्कान्त पशिला गैया सब सैन्य लैया
जय जय वाद्य भण्ड बाजे आगे पाचे * भङ्गिभाव करि आछे राक्षस पिशाचे ३१
आउरे आउर हाताहाति डेवाडेइ पारे * काहाको भावुकि रिङ्ग काहाको चिहरे
परिहासे थापा भुकु भारिया पलाइ * पाइक भाइ धर बुलि ताके खेदि याइ ३२
मुखे चूण चुइ नाचे थिउयुरा करि * आशेष राक्षस मिलि बाजावे चापरि
दुइखान पाव तुलि उपरक मेले * छवालक भावुकि पारय चक्षु ढेले ३३
रावणे शुनय पुत्र रण जय भैला * इन्द्रजित पुत्र देखि उल्लासिया गैला
बापु आसि भैलि सार पितृ पितामह * किबा रण जिनिलि प्रस्तुत कथा कह ३४
चरणे परिया नमिलेक छप करे * बापेकत कहे इन्द्रजित बीरबरे
यार कार्य्ये चिरकाल निद्रा नयाबाहा * हृदि सिद्धि नाहिके निश्वास फोकाराहा ३५
यार कार्य्ये लङ्कापुरी भैल रण्ड भण्ड * ताहार करिलो आजि प्राणान्तिक दण्ड
दुइ भाइ परिया आछन्त रबितले * माया शरे बान्धि धरि थैलो माया बले ३६
खर ये दूषण त्रिशिरार मान पाइलो * राक्षस कुलर घोर सन्ताप गुचाइलो
सिंहासन हन्ते गाव चालि कौतूहले * हसित बचने चापि धरिलन्त गले ३७
रावणिक प्रशंसा करिला लङ्कानाथ * आश्वासि चुम्बन दिया घ्राणिलन्त माथ
मेघनाद बापु तोक प्रशंसिबो किक * कुलर प्रदीप भैला पितृतो अधिक ३८

सुग्रीव होश में आये और विभीषण चार सामन्तों को लेकर तत्पर हो गये। गदा हाथ में ले चारों ओर से सेना को खड़ा कर दिया, पर राम के सन्तापरूपी ताप को उनका शरीर सह नहीं पा रहा था ।। ५१३० ।। इन्द्रजित मायाबल से सबको जीतकर सारी सेना समेत लंका में चला गया। उसके आगे पीछे जय-जय के नारों के साथ बाजे बज रहे थे और राक्षस-पिशाच आनन्द से नाच-कूद रहे थे ।। ३१ ।। एक दूसरे के संग वे हाथापाई, उछल-कूद कर रहे थे। किसी को चीख-चीख कर डाँट-डपट रहे थे, किसी को चीखकर पुकारते थे। हँसी-मजाक में थप्पड़-घूंसे मारकर भाग जाते थे। पाइक (मजदूर) भाई पकड़, कहकर उसकी ओर भागे जाते थे ।। ३२ ।। किसी के मुँह में चूना लगाकर उसके सामने हाथ जोड़ खड़े हो जाते थे और यह देख अनगिनत राक्षस मिलकर तालियाँ बजाने लगते थे। कोई-कोई दोनों पैर ऊपर फैला देते थे, कोई-कोई आँखें फैलाकर बच्चों को डाँट-डपट रहे थे ।। ३३ ।। रावण ने सुना कि पुत्र इन्द्रजित ने रण में विजय प्राप्त कर ली है, उसे लौटे देखकर वह बड़ा ही प्रसन्न हुआ। बोला, बेटा तूने पितृ-पितामहों का नाम सार्थक किया, युद्ध में कैसे विजय प्राप्त की, बता ।। ३४ ।। तब वीरवर इन्द्रजित ने चरणों मे पड़कर प्रणाम किया। इसके पश्चात् बाप से कहने लगा—जिसके कार्यों से तुम्हें निरन्तर निद्रा नहीं आ पाती थी। हृदय में शान्ति नही थी, लम्बी सांसें खीचते रहते थे ।। ३५ ।। जिसके कार्यों से लंकापुरी नष्ट-भ्रष्ट हुई जा रही थी, आज उसके प्राणों का अन्तकर मैंने दंड दे दिया। दोनों भाई आकाश के नीचे पडे है। माया-बल से माया-बाणों से मैंने उन्हें बाँध रखा है ।। ३६ ।। खर, दूषण और त्रिशिरा का प्रतिशोध ले लिया राक्षस-कुल का संताप मिटा दिया। यह सुनकर रावण ने सिंहासन से नीचे आकर कौतूहल से हँसते-बोलते इन्द्रजित को गले लगा लिया ।। ३७ ।। लंकानाथ रावण ने इन्द्रजित की प्रशंसा की, उसे आश्वासन दे, चूमकर सिर को सूंघ लिया। बोला, बेटा मेघनाद, तेरी प्रशंसा कैसे करूँ ? तू पिता से भी बढ़कर वंश का प्रदीप हुआ है ।। ३८ ।।

मन्दोदरी सार्थक ये पतिव्रता सती * तइहेन पुत्र यार मइहेन पति
रावणिक आश्वासियो ठावक पठाइल * एकेकि करिबो बुलि बिमरिषि चाइल ३९
रावण राजार चित्त उत्रावल करे * सीतात कहिले योनो प्राण परिहरे
रावणे गुणय पाचे येहि किनो हय * स्त्रीजाति चञ्चल क्षणेके उलटय ५१४०
सीताये बुलिबे मोक मरिलेक स्वामी * रावणर पटेश्वरी किक नोहो आमि
स्त्रीजाति उत्रावल सर्व्वलोके भापि * बुलिब मृतक रामे कि करिबे आसि ५१४१
हेन शुनि रावणर मने मने हास * सीता पटेश्वरी हइब मने अभिलाष
दशग्रीव राजा पाचे कार्य्य बिमरिषि * आगक आनिला मालि वृद्धा ये राक्षसी ४२
शुनिला कि वचन त्रिजटा कृपामयी * इन्द्रजित पुत्र मोर भैला रण जयी
यि कारणे सीता मोक करय नैराश * ताहार स्वामीक पुत्रे करिला विनाश ४३
राम मरण देखि समर भूमित * नैराश देखिया मोत बलाइबेक चित
पुष्पक यानत निया सीताक तोलाहा * समर भूमिक लागि सीताक लैयाहा ४४
अबिलम्बे चला ऐत थाकि करा किक * प्रत्यक्षे देखिबे सीता मृतक स्वामीक
त्रिजटाक रावणे करिला बहुमान * अशोका वनत निला पुष्पक विमान ४५
जनकर जीउक सेहि विमानते तुलि * रथ डाकि चलिला रामर पाश बुलि
सीता देवी पुष्पक रथत चढ़िलन्त * जय नन्दि बधाइ लङ्कात शुनिलन्त ४६
रावणर आदेश शुनन्त सती सीता * रामर मरण लोके कहे चतुर्मिता
चक्षु बलाइ चान्त सीता बिमानर हन्ते * पृथिवीक ढाकिला वानर अपर्य्यन्ते ४७
दुइ पाशे सीताये चौदिशे आकलिल * सकले देखिला देवी वरण कपिल
कांस परि जिम गैला सकले वानर * वायु न वहन्ते येन तवध सागर ४८

प्रतिव्रता सती मन्दोदरी भी सार्थक हुई जिसके तेरे जैसा पुत्र और मेरे जैसा पति है। इन्द्रजित को आश्वासन देकर उसके स्थान मे भेज दिया। अव क्या करेंगे, इस बारे में चिन्तन करने लगा ।। ३९ ।। राजा रावण का चित्त उतावला हो उठा कि क्या जाने सीता से बताने पर वह प्राण न छोड़ दे। इसके पश्चात् रावण चिन्तन करने लगा, भला ऐसा कभी हो सकता है? स्त्री जाति चंचल है, क्षण में वदल जाती है ।। ५१४० ।। सीता सोचेगी, मेरे स्वामी को जवकि मार ही डाला तो मैं रावण की पटरानी क्यो न वन जाऊँ? सव लोग कहते है कि स्त्री जाति उतावली होती है। सीता कहेगी, अब मृतक राम आकर क्या करेंगे ।। ४१ ।। ऐसा विचारकर रावण मन ही मन हँस पड़ा; मन में अभिलाषा हुई कि सीता पटरानी बनेगी। इसके पश्चात् राजा रावण ने ऐसा सोच-विचारकर वृद्धा राक्षसी त्रिजटा को बुलवा भेजा ।। ४२ ।। कहा, कृपामयी त्रिजटा, तुमने सुना, मेरा पुत्र इन्द्रजित युद्ध में विजयी हुआ है। जिस कारण से सीता मुझे निराश करती है उसके उस स्वामी को तो मेरे पुत्र ने मार ही डाला है ।। ४३ ।। समरभूमि मे राम की मृत्यु देखकर, निराश हो अन्त मे मुझमें चित्त लगायेगी। तुम पुष्पक विमान में सीता को बिठा लो, और उसे युद्धभूमि में ले जाओ ।। ४४ ।। तुम यहाँ से अविलम्ब चली जाओ, रुके रहने की आवश्यकता नही,' जिससे सीता अपने मृत स्वामी को प्रत्यक्ष देख ले। रावण ने त्रिजटा का वड़ा मान किया और अशोकवन मे पुष्पक विमान को भेज दिया ।। ४५ ।। उस पर जनक-नन्दिनी को विठाकर चलो, राम के समीप चले, कहा। देवी सीता पुष्पक पर चढ गयी और लंका में राक्षसों का जयनाद और वधावा वजते सुना ।। ४६ ।। सती सीता ने रावण का आदेश सुना, सव लोग चारों ओर राम की मृत्यु के वारे में कह रहे थे। सीता विमान पर से ही आँखे घुमा-घुमाकर देखने लगी। देखा, अनगिनत वानरों से

श्री हानि भैलेक पाइलेक येन मन्दे * राम - लक्ष्मणक बेढ़ि बेढ़ि कतो कान्दे
सीता देवी आकलिला बिमानते थाकि * स्वामी देवरक कपिबले आछे राखि ४९
निश्चेष्ट स्वरूपे परि'आछन्त दुइ भाइ * शरे हानि इन्द्रजिते भैलन्त जण्टाइ
सकल शरीरे वहे बोम्वाले रुधिर * देखिया सीतार वहे नयनर नीर ५१५०
स्वामी देवरर मृत्यु भैल हेन जानि * पुष्पक रथत ढलि परिला गोसानी
पठाइवे आपोन केहो नाहि परिचय * बिमर्षित भैला देवी देखि तमोमय ५१
कतो वेलि शरीरत आसि भैला जीउ * हाकुले व्याकुले कान्दे जनकर जीउ
हरि हरि आलक्षणी प्राण धरो किक * काचक लागिया आनि हराइलो माणिक ५२
उतपात करे यिटो नेत कामलित * हेन प्रभु शुति आछा केवले माटित
हा हा राम मोहोर वल्लभ प्राणेश्वर * आमार अन्तरे प्रभु गैला यम घर ५३
राज्य भार धन यत असार करिला * दारुण समरे परि प्राणक सुजाइला
स्वामीर शोकत मोर प्राण हौक हत * अविलम्बे मेट पाइबो यम करणत ५४
प्राणे उत्सर्गिलो येवे भैलो परबासु * गोसानीक अनुशोच केने जीव शाशु
हेन कि दारुण संसारर मोर माया * रामत अधिक मोर गोसानीत दाया ५५
रामत अधिक मोर गोसानीत स्नेह * किक चारि नयाय दारुण छार देह
बुलिबन्त गैल प्राय चैध्यय बरिष * पथ चाहि थाकिबन्त परम हरिष ५६

भूमि ढँकी हुई है ।। ४७ ।। सीता ने इधर-उधर चारों दिशाओं में दृष्टि डाली, देखा सब ओर कपिल ही कपिल वर्ण दिखाई दे रहा है। सभी वानर एकदम मौन हैं। जैसे कि वायु न बहने पर सागर शान्त रहता है ।। ४८ ।। अनिष्ट होने के कारण सौन्दर्य नष्ट हो गया था। कोई-कोई राम लक्ष्मण को घेरकर रो रहे थे। देवी सीता ने विमान पर से देखा कि बानरगण पति और देवर की रखवाली कर रहे हैं ।। ४९ ।। दोनों भाई निश्चेष्ट रूप से पड़े हुए हैं। वाण मारकर इन्द्रजित ने उन्हें अचेत कर रखा है। समूचे शरीर से रक्त की धारा वह रही है, देखकर सीता की आँखों से आँसू बहने लगे ।। ५१५० ।। पति और देवर की मृत्यु हो गयी है, ऐसा जानकर देवी सीता पुष्पक रथ पर ही अचेत होकर गिर पडी। सोचा था कि किसी अपने जन को वहाँ भेजे, परन्तु ऐसे किसी से परिचय नहीं था। यह सोचकर देवी की आँखों के सामने अन्धेरा छा गया ।। ५१ ।। कितने समय के पश्चात् उनके शरीर में चेतना लौटी, तो जनक-नन्दिनी हाहाकार कर उन्मादिनी सी रोने लगी। हरि-हरि, मैं कुलक्षणी अव प्राण-धारण कैसे करूँ ? मैंने काँच के लिए मणि को खो दिया ।। ५२ ।। जो प्रभु कोमल गद्देदार विस्तर पर सोने पर भी उत्पात किया करते थे, वही तुम आज जमीन पर कैसे सो रहे हो ! हाय, हाय, रामचन्द्र, मेरे वल्लभ, प्राणेश्वर, मुझे छोड़कर तुम यमलोक चले गये ।। ५३ ।। तुमने राज्य-भार, धन, सवको असार मानकर छोड़ दिया। आज दारुण समर में पड़कर प्राण भी तज दिये। स्वामी के शोक में मेरे प्राण भी निकल जायें तो मैं भी शीघ्र यमलोक जाकर उनसे मिल सकूँगी ।। ५४ ।। देवी सीता दुख प्रकट करती हुई कहने लगीं—जव हम प्रवास में आये थे तो प्राणों को उत्सर्ग कर दिया था। अव हमारी सास देवी कौशल्या कैसे जीएँगी ? संसार के प्रति मेरी दारुण ममता कैसी है ? राम से अधिक मुझे तो देवी कौशल्या पर दया हो रही है ।। ५५ ।। राम से अधिक मुझे तो कौशल्या पर स्नेह है। तो मेरे प्राण इस तुच्छ शरीर को क्यों छोड़ नहीं जाते ? कहने को तो लगभग चौदह वर्ष बीत गये, कौशल्या परम हर्ष से बाट जोहती होगी ।। ५६ ।। द्वार-द्वार पर दीप-कलश रखेगी, उन्हें भला विधाता के कपट का क्या पता होगा ? सौभाग्यवती कल्याणी सीता कहने लगी—शास्त्रों

पदूलि पदूलि पातिवन्त दीप घट * तेहो केने जानिवन्त विधिर कपट
पण्डित शाशुत किबा कैला शास्त्र जानि * बुलिलन्त सीता देवी आयता कल्याणी ५७
राजधर पुत्र एन्ते हैव पुत्रवती * रामर मरण तेहो किछो न जानन्ति
विधवा लक्षण शुनि आछोहो लोकत * अणुमात्र ने देखेहो ' मोर शरीरत ५८
नीलफुल मृदुल कुन्तल सुकोमल * भुजयुग सुकोमल शुनय विरल
नेत्र नीलोत्पल सम तिल फुल नास * अविरल दशन दाड़िम्ब परकाश ५९
बाहु दुइ मृणालर कान्ति सरोवर * नील तन युग ज्वले आति मनोहर
हात दुइत पद्म दुइ आछय लिखिल * शङ्ख दुइ मुठिक विधिये निरमिल ५१६०
वलित गम्भीर नाभि जङ्घन विपुल * उदरक शोभय पङ्क्ति लोमाङ्कुल
उरु युग राम येन कदली कोमल * जङ्घा दुइ वर्त्तुल कुन्दत वलियाइल ६१
चरण युगल शोभे रकत कमले * आरकत कुरि नख प्रतिविम्ब ज्वले
कठोर वचनी नोहे सुकोमल ध्वनी * सर्व्व सुलक्षणी ये सम्पूर्ण वितोपनी ६२
एकोवे नेदेखो मोत कुलक्षणी छटा * किसक विधवा भैलो कहियो त्रिजटा
हेन वाणी शुनि पाचे त्रिजटा राक्षसी * सीताक प्रवोध बोले पुष्पकत वसि ६३
स्वामी देवरक तोर चाहातो जानकी * मृतकर मुख कि ज्वलय मकमकि
विषाद एरिया माव मन करा थिर * जीवन्ते आछन्त तोर सुस्वामी देवर ६४
पुष्पक विमाने इटो कल्याणक कहे * विधवा नारीक इटो खानिक न वहे
कुलक्षण तोहोर नेदेखो एक अङ्गे * विधवा नोहस ताक जानो साङ्गे साङ्गे ६५
शर परि मूर्च्छा गैया आछा दुइ भाइ * जीवन्त शुनिवि माव आनन्द वधाइ
धूम्र येवे आछय अगनि आछे ज्वलि * कार्य्यर ये निमित्ते कारण परिमिलि ६६

के अनुसार पंडित सास जी न जाने क्या-क्या कर रही है ॥ ५७ ॥ वह सोचती होगी, इन राज्यधारी पुत्र को पाकर वह पुत्रवती बनेगी। राम की मृत्यु के सम्बन्ध में तो उन्हें कुछ भी पता न होगा। परन्तु इस संसार में विधवा के जो-जो लक्षण मैंने सुने हैं उनमें से तो अणुमात्र भी मैं अपने शरीर में नहीं देखती ॥ ५८ ॥ जाँघे मृदुल है, केश सुकोमल हैं, दोनों हाथ इतने सुकोमल हैं कि सुनने में कम आता है। नेत्र नील कमल जैसे और नाक तिलफूल जैसे, घने दाँत दाड़िम जैसे हैं ॥ ५९ ॥ दोनों बाहें सरोवर के मृणाल जैसी हैं। नीले दोनों स्तन अत्यन्त मनोहर रूप से चमक रहे हैं। दोनों हाथों में दो कमल अंकित है, मुट्ठियों में विधाता ने दो शंख बना दिये हैं ॥ ५१६० ॥ नाभि घुमावदार, जांघे चौड़ी, उदर पर रोओं की पंक्ति सुशोभित है। दोनों पैर कोमल कदली जैसे रमणीय, दोनों जांघें अतीव मोहक ढंग से निर्मित हैं ॥ ६१ ॥ दोनों चरण रक्तकमल जैसे शोभित हैं, बीसों नाखून ऐसे आरक्त हैं मानो उनमें प्रतिविम्ब चमक रहा हो। वचन कठोर नही, सुकोमल ध्वनि निकलती है, सभी प्रकार से मैं सुलक्षणी और सुन्दर हूँ ॥ ६२ ॥ मुझे कुलक्षणी की कोई निशानी नही दिखाई देती। तब त्रिजटा, बताओ मैं विधवा क्यों हो गयी? यह वचन सुनकर राक्षसी त्रिजटा पुष्पक पर बैठी सीता को सान्त्वना देने लगी ॥ ६३ ॥ जानकी, अपने पति और देवर को जरा देखो तो सही! क्या मृतकों के मुख इस तरह चमकते है? मां, विषाद छोड़कर मन स्थिर करो, तुम्हारे अच्छे पति और देवर दोनों जीवित हैं ॥ ६४ ॥ पुष्पक विमान भी यही कल्याण-वाणी सुना रहा है। यह विधवा नारी को एक क्षण भी वहन नही करता। तुम्हारे किसी अंग में किसी प्रकार का कुलक्षण नही दिखाई देता। यह स्पष्ट ज्ञात हो रहा है कि तुम विधवा नहीं हुई हो ॥ ६५ ॥ बाण लगने के कारण दोनों भाई मूच्छित हो गये है, उनके चंगा होते

कान्दय ये राम सेना देखिया श्रीमन्त * निश्रीक देखिले जाना राम नि जीवन्त
एवमस्तु बुलि सीता थाकिला बिमाने * परिवर्त्ती गैला पाचे अशोकर वने ६७
सीता गैया रथक थापिला पूर्ब्ब थाने * जनक जीउर कथा आछो एहिमाने
घोर शर जाले बन्दी आछा दुइ भाइ * बर बर बीरे राखे चतुर्द्दिगे चाइ ६८
कतो बेलि रामे पाचे पाइलन्त चेतन * शोणिते शरीर भैला लोहित बरण
लक्ष्मणक देखिले शरीरे जीव नाइ * महाशर्म्मे फोकारन्त हा प्राण भाइ ६९
हा बिधि कि करिलो कैक लागि याओं * लक्ष्मण समान भाइ कैत खुजि पाओं
सीता गोसानीत जीवनत कोन फल * पृथ्वी फाट देन्त यदि याओं रसातल ५१७०
सव बन्धु एरि मोक करिलेक सार * लखाइ एरि चाप मोक कि कार्य जीवार
भार्य्या पुत्र बन्धु सब पाय यथा तथा * हेन न तो शुनोहो सोदर पाय कोथा ७१
मेघ सवे वृष्टि उपजावे दशोदिशे * मावर अपत्य एको दिशे न बरिषे
एभो प्राण भाइर शोके नरहे यावत * कि कथा कहिबो गैया सुमित्रा मावत ७२
सुमित्राये बुलिलन्त कहिरा लखाइ * किमते बुलिवो आइलो रणत पेलाइ
दुस्तरर सखा मोर वान्धव लखाइ * मोक एरि यास कैक प्राणर भैयाइ ७३
सीता हेन भार्य्याक प्रवन्धे खुजि पाइ * कैक गैले पाइबोहो लक्ष्मण हेन भाइ
दण्डका वनत मरो जानकीर शोके * सकरुण वाक्ये बापु प्रबोधिलि मोके ७४
मोर दुख देखि तोर शरीरत घाहा * यमपुरे गैलि बापु मोक लैया याहा
एके बेलि पाञ्च पाञ्च शत हान शर * सहस्र अर्ज्जुने तोक नोहे समसर ७५

ही तो तुम आनन्द का बधावा सुनोगी। जहाँ धुआँ निकलता है वहाँ आग जल रही है (ऐसा समझना चाहिए), कार्य जहाँ होता हो वहाँ कारण का भी प्रमाण मिलता है॥ ६६॥ राम की सेना उन्हें श्रीमन्त देखकर ही रो रही है। यदि उनकी श्री न होती तो पता चलता कि राम जीवित होनेवाले नहीं हैं। तब 'एवमस्तु' कहकर सीता विमान पर ही रह गयी और पुनः अशोक वन में चली आयी॥ ६७॥ सीता ने (पुष्पक) रथ को ले जाकर पहले के स्थान पर रखा। जानकी की कथा यहीं तक रखता हूँ। उधर दोनों भाई घोर वाणों के जाल से बन्दी थे। चारों ओर बड़े-बड़े वीर उनकी रखवाली कर रहे थे॥ ६८॥ कुछ देर बाद राम की चेतना लौटी। उनका शरीर रक्त से लाल हो रहा था। उन्होंने देखा, लक्ष्मण के प्राण नहीं-से है। वे महान् शोक से 'हाय, प्राणप्रिय भाई,' कहकर जोर से पुकारने लगे॥ ६९॥ हाय विधाता, क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? लक्ष्मण जैसा भाई ढूँढकर मुझे कहाँ मिलेगा? देवी सीता के जीवित रहने का फल क्या है? यदि पृथ्वी फट जाये तो मैं रसातल को चला जाऊँ॥ ५१७०॥ अपने सभी वन्धु-बाँधवों को छोड़कर लक्ष्मण ने मुझे ही सार समझकर अपनाया, अब वही लक्ष्मण चला जा रहा है, तो मेरे जीवित रहने का फल क्या है? भार्या, पुत्र, मित्र आदि तो जहाँ-तहाँ मिल सकते हैं, पर सहोदर भाई कहीं मिलता हो, ऐसा कभी सुनाई नहीं देता॥ ७१॥ मेघ दशोदिशाओं में वर्षा करते है परन्तु मां का पुत्र तो कहीं से बरसता नहीं। अब तो भाई के शोक से मेरे प्राण भी रहते नहीं। अब मां सुमित्रा से जाकर भला क्या कहूँगा?॥ ७२॥ सुमित्रा जब पूछेगी, लक्ष्मण कहाँ है? तो मैं उससे कैसे कहूँगा कि उसे रण में फेंक कर चला आया हूँ?॥ ७३॥ जब दंडक वन में जानकी के शोक से मर रहा था, वत्स, तू करुण वचनों से मुझे धीरज बँधाता था॥ ७४॥ वत्स, मेरा दुख देखने पर तेरे शरीर में वेदना होती थी। अब तू यमलोक जा रहा है तो मुझे भी साथ लेता जा। तू एक साथ पाँच-पाँच वाण छोड़ सकता है। सहस्रार्जुन भी तेरे समकक्ष नहीं है॥ ७५॥ इसी

एति क्षणे कोटि संख्या राक्षस मारिलि * माया शरे एवे केन चेतन हरिलि
शुनियो सुग्रीव मित्र मोर बोल करा * अङ्गद प्रमुख्ये किष्किन्ध्यार दिशधरा ७६
मित्रर धारक तुमि सकले सुफिला * ससाङ्गे प्राणक टाङ्कि अनेक युफिला
हनुमन्त जाम्बवन्त दधिमुख तार * निरन्तरे वीरे हित चिन्तिला आमार ७७
तुमि सब बन्धु हैवा जनमे जनमे * आमि चलि भैलो विधि लिखित करमे
आधुति याकिल मोर एके खान काज * बिभीषण बपुराये नपाइलन्त राज ७८
मिछात करिलो ताङ्क राज्य अभिषेक * यमकरणत दुख थाकिल अनेक
रावणि न मारे यावे शीघ्र यायो देश * हेनशुनि कपिबले कान्दिला आशेष ७९
लक्ष्मणर शोकत आकुल भैल मन * पुनु गैल मूर्च्छा राम हरिल चेतन
एतहन्ते बिभीषणे सेना थिर करि * चारि पात्र सहिते हातत गदा धरि ५१८०
पर्व्वतर आकार राक्षस देखे भाय * इन्द्रजिते पाइला बुलि बानर पलाइ
थिउ लाञ्जे पलाइ न चावे आउर पाच * जोलके जोलके परे इगाछ सिगाछ ५१८१
आउरे आउर बोले सवे भैलेक प्रलय * मायाशर मारि जुनु सबाको मारय
एहि बुलि निरन्तरे बानर पलाय * बाप भाइ ददा आउरे आउरक न चाय ८२
कका भाया सारा हेरा आसि पाइले मोक * व्यूह भङ्गे पलाइ मुण्ड बाजे ठाक ठोक
आउरे आउर डरे भूमिते परय * सहस्र संख्याते पाचे ताके गरकय ८३
राम लक्ष्मणक मारि माया परिहरि * आमाक मारिते आसे हाते गदा धरि
काल पर्व्वतेक येन हेरा आसे चाहा * आपनार जीव राखि सत्वरे पलाहा ८४

समय तूने करोड़ों राक्षसों को मारा है। पर माया के बाणों से अचेत क्यों हो गया? मित्र सुग्रीव, सुनो, मेरी बात मानो, अगदादि सहित किष्किन्धा को चल पड़ो ।। ७६ ।। तुमने मित्र का सारा ऋण चुका दिया है, सेना सहित प्राणपण कर तुमने बड़ा संग्राम किया। हनुमान, जाम्बवन्त, दधिमुख आदि वीरों ने निरन्तर मेरा हित-चिन्तन किया है ।। ७७ ।। तुम सभी जन्म-जन्म तक मेरे मित्र होओगे। हम तो विधि के लिखे कर्मवश नष्ट हो रहे हैं। मेरे मन में यही एक काम अपूर्ण रह गया कि विभीषण को लंका का राज्य नही दिला सका ।। ७८ ।। उनका राज्याभिषेक व्यर्थ ही किया, यमलोक में मुझे अनेक दुख भोगना है। इन्द्रजित तुम्हें न मार डाले इसके पहले ही शीघ्र देश चले जाओ। ऐसा सुनकर कपिसेना अपार क्रन्दन करने लगी ।। ७९ ।। लक्ष्मण के शोक मे मन व्याकुल हो जाने के कारण राम पुनः अचेत हो गये। इतने में विभीषण सेना को नियन्त्रित कर अपने चार सामन्तों सहित हाथ में गदा लिये वहाँ पहुँचे ।। ५१८० ।। पर्वतों जैसे आकारवाले राक्षसों को आते देख इन्द्रजित आ पहुँचे—सोचकर बानरसेना भागने लगी। बानर पूँछ उठाये आगे-पीछे देखे बगैर इधर-उधर भागने लगे। झुंड के झुंड इधर-उधर जाकर गिरने लगे ।। ८१ ।। एक दूसरे से कहने लगे—अरे प्रलय आ गया, माया-बाण मारकर अब वह सबको मार डालेगा। यह कहकर बानर निरन्तर भागने लगे, कोई भी बाप, दादा या और किसी को नही देखते थे ।। ८२ ।। अरे भैया-दादा, देखो, मुझे पकड़ने आ रहा है। कहकर व्यूह-भंगकर भागते थे जिससे एक दूसरे के सिर से सिर टकराकर ठक्-ठक् आवाज होती थी। एक दूसरे के डर से जमीन पर गिरते थे और हजारो उसे पैरों से कुचल डालते थे ।। ८३ ।। (वे कहते थे) इन्द्रजित, राम-लक्ष्मण को मारकर अब माया छोड़ हाथ में गदा लिये अब हमे मारने आ रहा है। अरे देखो, वह काले पर्वत के जैसा वह आ रहा है। अपना जीवन बचाने के लिए शीघ्र ही यहाँ से भाग चलो ।। ८४ ।। युवराज अंगद सुग्रीव से पूछने लगे—ऐसी कौन-सी विपत्ति आ पड़ी जिससे सेना भागी

सुग्रीवक बोलन्त अङ्गद युवराज किसक * पलाय सैन्य कि भैला अकाज
असख्य पदाति बल दशोदिशे याय * सागरह ढउ येन उथलिला बाइ ८५
अङ्गदे बोलन्त किक पूछिते लागय * राम परिवार देखि बानर पलाय
भालुक बानर पलाइ बिह्वल स्वभाव * काण्डार विहीने येन थिर नोहे नाव ८६
एतहन्ते विभीषणे हाते गदाले * राम लक्ष्मणर पाश चापिलन्त गै
बुलिलन्त धूम्रक सुग्रीव महाराजा * सैन्य पलाइ बार मइ आवे पाइलो मजा ८७
धूम्र चलि याहा झाण्टे सैन्य करा थिर * बोला इन्द्रजित नुहि बिभीषण वीर
शुनि भालुकर राजा शीघ्रबेगे धाइला * आश्वास करिया सबे सैन्यक चपाइला ८८
बिभीषणे तिन्ता हाते दुइरो मुख माजि * हेनसे अभाग्य मोर सुग्रीवरे साजि
हा मोर मित्र मोर हा हा रे लखाइ * दुयो एरि याहा मोक बिपाङ्गे पेलाइ ८९
हरि हरि आवे कैक याओं कि करिलो * एवेसे जानिलो मइ बिपाङ्गे मरिलो
आमार भतीजा किनो मन्द आचरिल * न्याययुद्धे नोवारिया अन्याये मारिलो ५१९०
याहार बलत व्यजिलोहो बन्धु लोक * सिटो गोसाइ चलिल अनाथ करि मोक
रावण ददार साफलिल मनोरथ * कि कार्य्य जीवन मइ चलो यमपथ ५१९१
सुग्रीवे बोलन्त मित्र व्यजि योक शोक * आपोनाक थिर करि आश्वासियो मोक
राम लक्ष्मणर शोके दहे अन्तर्गत * अगनिये पोरे पिम्पलि देस पथ ९२
राम लक्ष्मणक मायाशरे आछे जान्ति * सि कारणे मूर्च्छा गैया आछन्त नमाति
क्षणेके जीवन्त थिर करियोक मन * रावणक मारि लङ्का करिबन्त छन ९३

जा रही है ? अनगिनत पैदल-सेना दसों दिशाओं में ऐसी भाग रही है, मानो वायु से सागर में तरंगे उठ रही हों ।। ८५ ।। सुग्रीव ने अंगद से कहा—यह भी क्या पूछने की बात है ? राम को गिरते देख बानर भाग रहे हैं । विह्वल-स्वभाव के होने के कारण भालू-बानर वैसे ही भागते है, जैसे नाविक के बिना नाव स्थिर नही रहती ।। ८६ ।। इतने में ही विभीषण हाथ मे गदा लिए राम-लक्ष्मण के पास पहुँचे । तब राजा सुग्रीव ने धूम्र से कहा—सेना के भागने का कारण अभी ही समझ में आया ।। ८७ ।। धूम्र, तुम शीघ्र जाकर सेना को सम्हालो । बताओ कि ये इन्द्रजित नही, वीर विभीषण हैं । यह सुनकर भालुओं का राजा धूम्र शीघ्रता से वहाँ से दौड़ पड़ा और सारी सेना को आश्वासन दे लौटा लाया ।। ८८ ।। विभीषण ने पानी में हाथ भिगोकर दोनों के मुख पर सहला दिया । और कहने लगा—सुग्रीव के साथ-साथ मेरा भी कैसा दुर्भाग्य है । हा मेरे मित्र, हा हा लक्ष्मण, तुम दोनों मुझे संकट में डालकर कहाँ चले जा रहे हो ? ।। ८९ ।। हरि, हरि, अब मै कहाँ जाऊँ ? क्या करूँ ? अब मुझे पता चला कि मैं संकट में मारा गया । मेरे भतीजे इन्द्रजित ने यह कैसा काम कर डाला ? न्याय-युद्ध में न रुका तो अन्याय से मार डाला ।। ५१९० ।। जिसके बल पर मैंने अपने बन्धु-बान्धवों को छोड़ दिया, वही देव मुझे अनाथ छोड़कर, चला जा रहा है । भाई रावण का मनोरथ सफल हो गया । जीवन से अब मेरा क्या काम है ? मैं भी यमलोक के मार्ग में चलूँ ।। ९१ ।। सुग्रीव ने कहा—मित्र शोक छोड़ दो । अपने को स्थिर रखकर अब मुझे धीरज बंधाओ । राम-लक्ष्मण के शोक से मेरा अन्तर जल रहा है । एक तो अग्नि जला रही है तिस पर चीटे रेगते हुए मार्ग बना रहे हैं ।। ९२ ।। राम-लक्ष्मण को मायारूपी वाण ने दबाये रखा है । इसी कारण से मूर्च्छित होकर मौन पड़े हुए हैं । मन स्थिर करो कुछ ही क्षणों में ये जी उठेंगे, और रावण को मारकर लंका को नष्ट कर डालेगे ।। ९३ ।। यह सुनकर विभीषण का सन्ताप मिट गया, सुग्रीव ने कहा, सुषेण ससुर जी, सुनिये । मेरे आदेश से

शुनि बिभीषणर सन्ताप गैला दूर * सुग्रीव बोलन्त शुना सुषेण शशुर
आमार आदेशे झाण्टे चौदोल आनाहा * राम लक्ष्मणक किष्किन्ध्याकलैया याहा ९४
दुयो भाइक भालमते तैते निया चाहा * मोहोर लगते हनुमन्तक थोवाहा
ससैन्य चलाहा ऐत किछु नाहि काज * दुयो हन्ते रावण मारि छन करो राज ९५
सूर्य्य पुत्र हुइ मइ बीर बलियार * राक्षस शुकान वन पुरि करो छार
हनुमन्त बायुवे ज्वालिव निरन्तरे * कोटि एक रावणे नुहिवे समसरे ९६
साफलोहो वासुकि सदृशदुइ बाहु * रावणक ग्रासओ चन्द्रक येन राहु
देखन्तोक त्रिदशे मित्रर साधु काज * सीताक उद्धारि विभीषणे देओं राज ९७
नमो नमो रामचन्द्र प्रभु रघुनाथ * यार नाम गुणे करे पापक विघात
तोमात शरण लैलो नछारिबा मोक * बोला राम राम यत सभासद लोक ९८

श्री राम लक्ष्मणर नागपाश मोचन

छवि

सुग्रीवक आश्वासिया सुषेण बोलन्त बली देवासुरे देखिलोहो रण ।
दुर्व्वार दानवे रणे आशेष अस्त्रक जाने मारिला अनेक देवगण ।।
गुरु बृहस्पति जानि विशल्यकरणी आनि निरन्तरे मृतक जीयाइल ।
दिव्य औषधिर गन्ध येहिटो थानत आछे ताहार बार्त्ताक आमि पाइल ।। ९९
क्षीरोद सागर तीरे देवासुर गणे मिलि करिलन्त अमृतक पान ।
द्रोण चन्द्र नामे महा पर्व्वत दुतय तुलि सबहि निलन्त सेहि थान ।।
बायुसुत हनुमन्त शीघ्रवेगे याया ताक चिनिगैया आनन्त औषधि ।
श्रीराम लक्ष्मण दुइ जीवन्त हेनसे मते आन एको न जानोहो बुद्धि ।। ५२००

शीघ्र ही पालकी ले आइये और राम-लक्ष्मण को किष्किन्धा ले चलिये ।। ९४ ।। वहाँ ले जाकर दोनों भाइयों की भली-भाँति देखभाल कीजिये, मेरे साथ हनुमान रहें, और सेना सहित तुम सब चले जाओ, यहाँ रहने की कोई आवश्यकता नहीं है । हम दोनों ही रावण को मारकर लंकापुरी का राज्य विनष्ट कर डालेंगे ।। ९५ ।। मैं वीर बलवान सूर्यपुत्र हूँ, राक्षसरूपी सूखे वनों को जलाकर भस्म कर डालूँगा और हनुमान-रूपी वायु उस अग्नि को निरन्तर बढ़ा देंगे; करोड़ों रावण भी हम दोनों के समकक्ष नहीं होंगे ।। ९६ ।। मेरे ये वासुकी जैसी दोनो बाहें आज सफल हों, चन्द्रमा को जैसे राहु ग्रास कर लेता है, रावण को हम भी वैसे ही ग्रास कर लेंगे । देवतागण आज मित्र का यह सद्कर्म देखें । मैं सीता का उद्धार कर विभीषण को राज्य दूँगा ।। ९७ ।। जिनके नाम और गुण पाप को नष्ट कर डालते हैं उन प्रभु रघुनाथ रामचन्द्र को नमस्कार है । मैं तुम्हारी शरण आया हूँ, मुझे न छोड़ना । सभी सभासदगण राम राम कहो ।। ५१९८ ।।

श्री राम-लक्ष्मण का नागपाश-मोचन

सुग्रीव को आश्वासन देकर बलशाली सुषेण बोला—मैंने देवासुर संग्राम देखा है, युद्ध के अनेक अस्त्र जाननेवाले दुर्निवार दानवों ने उस युद्ध में अनेक देवों को मारा था । यह जानकर गुरु बृहस्पति ने विशल्यकरणी लाकर निरन्तर मृतकों को जिलाया था, उस दिव्य औषधि की गन्ध जहाँ है, उसका पता हमें ज्ञात है ।। ५१९९ ।। क्षीर समुद्र के तट पर देवासुरों ने मिलकर अमृत का पान किया था, इसके पश्चात् द्रोणचन्द्र

एत हन्ते बायुदेव काणत कहिला आसि राघवक चेतन कराइला ।
साक्षातते विष्णु तुमि अवतरि आछा प्रभु कि कारणे चेतन हराइला ॥
झाण्ट करि गरुड़क स्मरणये करियोक नागबान्ध हैबेक विनाश ।
देव कार्य्य साधियोक रावणक मारियोक सबारो गुचायो निरुत्साह ॥ ५२०१
बायुर वचने रामे चेतन लभिया मने पक्षीर राजाक सुमरिल ।
तेतिक्षणे गरुड़र हृदिकम्प लरिगैल लङ्का लागि उराव करिल ॥
पाखार बावत आति पृथिवी पर्व्वत यत सपत सागर खलकिल ।
मेघ कैला खण्ड खण्ड बिनता नन्दन चन्ड राघवर समीप चापिल ॥ ०२
गरुड़क देखि सबे नागपाश दूर गैल कतो कतो मरिलोहो जील ।
हाते जल लइया पाचे पक्षीराज सकरुणे दुयो भाइ शरीर माजिल ॥
दिब्य पुरुषेक येबे करतले परशिल गाव बेथा पलाइला सकल ।
पूर्ब्ब कालतोधिक शरीर प्रसन्न भैला षोल गुण आरो तेज बल ॥ ०३
निद्रार जागिया येन सचकिते दुयो भाइ उठिया बसिला तेति क्षणे ।
गरुड़े सहिते पाचे गलागलि लागि गैला सावरि चुम्बन्त घने घने ॥
आजि आमि दशरथ नृपतिक देखिलोहो किवा तुमि अज पितामह ।
याहार प्रसादे आमि रावणिर शरबन्ध एराइलो दुर्गति अनेक ॥ ०४
पक्षीराजे दुयो भाइर तेजबृद्धि कराइलन्त बचने अमृत बरिषिया ।
तोमार आपद जानि आसि भैलो बेग टानि सचकित मने तरसिया ॥
देव कार्य्य साधिलोहो तोरा दुइक आराधिलो रावणिर नागपाश भङ्गे ।
तैसानि हरिष हैबो रावण मारिया तुमि सीता समे थाकिबाहा रङ्गे ॥ ०५

नामक पर्वत के ऊपर उठाकर ले गये थे । वायुसुत हनुमान् वहाँ शीघ्र वेग से जाएँ और पहचान कर ओषधि ले आवे । इसी प्रकार से राम-लक्ष्मण दोनो बच सकते है । इसके अलावा और कोई बुद्धि मैं नही जानता ॥ ५२०० इतने में वायुदेव ने आकर रामचन्द्र को सचेत कर कानों में कहा, प्रभु तुम साक्षात् विष्णु हो, तुम तो अवतार लेकर आये हो, तब किस कारण अचेत पड़े हो ? शीघ्रता से तुम गरुड़ का स्मरण करो, नागपाश विनष्ट हो जायेगा । तुम देवताओं के कार्य साधन करो, रावण को मार डालो और सबका निरुत्साह मिटाओ ॥ ५२०१ ॥ वायु के वचन सुनकर राम सचेत हो उठे और पक्षीराज गरुड़ का स्मरण किया । उसी क्षण गरुड़ का हृदय हिल उठा और वे लंका को उड़ चले । पंखे की हवा से पृथ्वी और पर्वत समेत सातो सागरों में खलबली मच गयी । मेघों को खंड-खड करते हुए विनता-नन्दन गरुड़, राम के समीप पहुँचे ॥ ५२०२ ॥ गरुड़ को देखते ही सारा नागपाश दूर हो गया । कोई-कोई नाग मर भी गये । इसके पश्चात् हाथ में जल लेकर पक्षीराज ने सकरुण भाव से दोनों भाइयों के शरीर का मार्जन किया । जब उस दिव्य पुरुष गरुड़ ने स्पर्श किया तो उनके शरीर की सारी वेदना मिट गयी । पहले से भी अधिक उनका शरीर प्रसन्न हो उठा, सोलह गुण और तेज-बल बढ़ गये ॥ ५२०३ ॥ तब दोनों भाई मानो निद्रा से जगकर उसी क्षण उठ बैठे । इसके पश्चात् गरुड़ के संग गले लगकर बाँहों में भरकर बार-बार चूमने लगे, आज हमने पिता राजा दशरथ को देखा या तुम पितामह अज हो ? जिसके प्रसाद से हम इन्द्रजित के नागपाश से मुक्त हो अनेक दुर्गतियों से बच गये हैं ॥ ५२०४ ॥ पक्षीराज ने अपने वचनों से अमृत-वर्षाकर दोनों भाइयों की तेज वृद्धि कर दी । (उन्होने कहा) तुम पर संकट पड़ा है जानकर मै मन में विस्मित हो तड़पता हुआ शीघ्रता से आ पहुँचा । मैंने

दुयो भाइक प्रदक्षिणे प्रणामि गरुड़ येवे चलि गैला पथे मारुतर ।
हेन देखि नृत्य गीत लागि गैला भङ्गिभाव वानर भालुक समस्तर ॥
किछु किछु हुक हुकि कुमर्थोली नाच गीत वाद्य भण्ड बजाइला अपार ।
आउरे आउरे हाताहाति रिङ्गजोत परिहास लङ्घिलेक पर्ब्बत दुवार ॥ ०६
कटकर कोलाहल आकना शवद शुनि लङ्कात लागिला हुल स्थूलि ।
रावणर हृदि कम्प शुनिया लागिल शङ्क गगन मण्डले चाइला धूलि ॥
आथे वेथे शुनिबाक राक्षस पठाइला पाचे किनो आसि मिलिला विस्मय ।
आपद कालत शुनो वानरे हरिष करे आनन्द बधाइ जय जय ॥ ०७

धुम्राक्षर युद्ध आरु पतन

दुलड़ी

कार्य्यक ब्रजिया राक्षसे धावय काढ़य खर उशास ।
मुखे धान दिले आखै होवै येन हेनसि वन्धे निश्वास ॥
सम्बुधि बोलय आदेश गोसाइ कार्य्य बर असन्तोष ।
यि दुइ गोटाक रावणि मारिला बसि आछे थोस मोस ॥ ०८
श्री राम लक्ष्मण जीवन्त शुनिया हृदय कम्प लरिल ।
बैरर मुण्डत छार दिले येन निर्घात माथे परिल ॥
रावण राजार हानि भैला दान्त शुकाइ गैल ।
सकले राजार श्री समाखान येन कांस परि जिम गैल ॥ ०९

इन्द्रजित का नागपाश नष्ट कर देव-कार्य साधन किया, तुम दोनों की सेवा की, मुझे तभी हर्ष होगा जब तुम रावण को मारकर सीता समेत आनन्दपूर्वक रहने लगोगे ॥ ५२०५ ॥ दोनों भाइयों की प्रदक्षिणा कर जब गरुड़ प्रणाम कर वायु-मार्ग से चले गये तो यह देखकर सभी वानर-भालुओं में अपार आनन्द छा गया, अंग-भंगी, नृत्य-गीत होने लगे । कोई-कोई मुँह से चीखने, हँसने-चिल्लाने लगे । नृत्यगीत, और भाँति-भाँति के अपार बाजों की ध्वनियाँ करने लगे । कोई-कोई हाथापाई करने लगे । उनके परिहास और आनन्द कोलाहल की ध्वनि पर्वत-द्वार को लाँघकर गूँजने लगी ॥ ५२०६ ॥ वानर सेना का कोलाहल और उल्लास-ध्वनि सुनकर लंका में खलबली मच गयी । उसे सुनकर रावण को आशंका हुई, उसे हृद्कम्प होने लगा, आकाश-मंडल में उसने धूल उड़ते देखा । आपत्ति काल में भी देखता हूँ कि बानर हर्ष मनाते हुए जय-जयकार करते, आनन्द बधावा बजा रहे हैं । भला वहाँ कौन-सी विस्मयजनक घटना हो गयी है, निश्चित रूप से सुनकर पता लगाने हेतु उसने राक्षसों को भेजा ॥ ५२०७ ॥

धूम्राक्ष का युद्ध और पतन

वहाँ सारी घटना का पता लगाकर राक्षस लम्बी-लम्बी साँसें लेते हुए दौड़ पड़े, उनकी साँसें ऐसी हो गयीं थी मानो मुँह में अगर धान डाला जाये तो वह लावा की भाँति फूटने लगे । रावण को सम्बोधित कर उन दोनों ने कहा, हे प्रभु, घटना बड़ी असन्तोषजनक है । इन्द्रजित ने जिन दोनों को मार डाला था, वे वहाँ बड़े निर्विकार होकर बैठे हुए हैं ॥ ५२०८ ॥ श्रीराम लक्ष्मण जीवित है, ऐसा सुनकर रावण का हृदय काँप उठा; शत्रु के मस्तक पर मानो राख भर दे आया था, अपने सिर पर मानों वज्रपात हुआ । राजा रावण का मुख कुम्हला गया, उसकी श्रीहानि हो गयी, उसकी

हृदयत शाल परिल राजार मनत वर आसुख ।
हरिष बदने पात्र मेलेकक बोले राम केन कोख ॥
धूम्राक्ष वीरक आदेशाय राजा तइ युजिवाक चल ।
राम लक्ष्मणक मारि आस गैया भालुक बानर बल ॥ ५२१०
राजाक प्रणाम करिया त्वरिते धूम्राक्ष भैलेक बाज ।
राजार आदेशे ढोल टमकिल कोलाहल साज साज ॥
कतोहो रथत चड़िया लरिल कतोहो हातीत चड़ि ।
पवनर बेग सदृश धोंराये किल किल दर दरि ॥ ११
हेममय रथ साजि थैला तात चौत्रिश अस्त्र निबन्धि ।
धूम्राक्ष राक्षस ताहाते चड़िल भूषित करि प्रबन्धि ॥
पश्चिम दुवारे पयाणे चलिला यथा बीर हनुमन्त ।
पावर धूलाये आकाश चानिया निशाचर अपर्य्यन्त ॥ १२
धूम्राक्ष यि बेला रणक चलिला बिमङ्गल नानाबिध ।
ध्वजर उपरे पेचा परि गैल माथार ऊपरे गृध्र ॥
शेन ये शकुन आकाशे बणावे मण्डलि करय काक ।
हरिषे नादय कोलाहल करे मांस सव भुञ्जि वाक ॥ १३
नाना सब अद- भुतक देखिया हरिष नाहि ताहार ।
सागर समान बानर देखिया लागि गैल चमत्कार ॥
धूम्राक्ष राक्षस हनुर सैन्यत येवे भैला पयोसार ।
रणक हरिषे बानरे नाचय गावय गीत अपार ॥ १४
राक्षसे बानरे मिलि गैला युद्ध अस्त्रर दिलेक जाक ।
पर्व्वत शिखर बरिषि बानरे बोले अरे थाक थाक ॥

सारी सभा में सन्नाटा छा गया ॥ ५२०९ ॥ राजा के हृदय में मानों काँटा गड़ गया, मन दुखी हो गया परन्तु मुख पर प्रसन्नता दिखाकर मन्त्री, सभासदों से कहने लगा, राम कैसा नगण्य है । उसने वीर धूम्राक्ष को आदेश कर कहा—तुम लड़ने को जाओ और भालू-बानरों सहित राम लक्ष्मण को मार डालो ॥ ५२१० ॥ राजा को प्रणाम कर धूम्राक्ष शीघ्र ही निकल चला । राजा के आदेश से ढोल बजने लगा, 'तैयार हो जाओ', तैयार हो जाओ', कोलाहल होने लगा । कितने ही लोग रथ पर चढ़कर दौड़े, कितने ही लोग हाथी पर, कुछ लोग पवन जैसे वेगवान घोड़े पर चढ़कर नारे लगाते हुए धावित हुए ॥ ५२११ ॥ चौंतीस तरह के अस्त्रों से पूर्ण स्वर्णमय सजे रथ पर चढ़कर सभी सुचारु व्यवस्था कर राक्षस धूम्राक्ष निकल चला । पश्चिमी द्वार पर जहाँ वीर हनुमान थे, पैरों की धूल से आकाश भरते हुए अनगिनत निशाचर उधर से निकल चले ॥ १२ ॥ जिस समय धूम्राक्ष युद्ध में निकला अनेक प्रकार के अशुभ संकेत होने लगे । उसकी ध्वजा पर उल्लू आ बैठा और सिर के ऊपर गिद्ध । श्येन, गिद्ध, कौवे आदि आकाश में मंडली बनाकर मांस खाने हेतु आनन्दपूर्वक नाद करने लगे ॥ १३ ॥ अनेक प्रकार अद्भुत दृश्यों को देखकर धूम्राक्ष का आनन्द न रहा । सागर जैसे वानर-सेना देखकर वह विस्मित रह गया । जब राक्षस धूम्राक्ष ने हनुमान की सेना में प्रवेश किया तो युद्ध करने की प्रसन्नता से बानर अनेक गीत गाने और नाचने लगे ॥ १४ ॥ राक्षस और बानर मिलकर युद्ध करने लगे, अस्त्रों की वर्षा होने लगी । वानर पर्वत शिखरों की वर्षा कर 'अरे ठहर-ठहर' पुकारने लगे । करोड़ों की संख्या में एकत्र होकर पूँछों से राक्षसों को मारने लगे, सिर फूटकर, हृदय फट कर राक्षस

कोटि असंख्यात एक थान हुया कोवावे लाञ्जर बारि।
हिया मुण्ड भागि राक्षसे भूमित परय प्राणक छारि॥ १५
सहस्र संख्यात राक्षसे मिलिया वानर वलक धावे।
हस्ती रथ घोरे गरकाया मावे कतोहो खाण्डार घावे॥
रथत थाकिया वानरक शरे करन्त उभय कोल।
वानरर बले रिङ्ग दिया बोले मार मार तोल तोल॥ १६
निशाचर बले परिघर कोवे कतो शर घाव दिल।
नानाविध अस्त्रे वानर वलक यम करणत निल॥
वानर वलेओ वृक्ष शिला हानि हाती घोंरा बल रथ।
हिया मुण्ड सव अङ्ग चूर करि पठाइला यमर पथ॥ १७
सागरत हौ कोलाहल येन वानर वल खङ्गाइल।
आञ्चोरे कामोरे लाथिये चवरे राक्षस वल भङ्गाइल॥
धूम्राक्ष बीरर सैन्य निरन्तर पलाइ दश दिशे भेदि।
मांस ये कर्द्दम केश ये शैवाल रुधिरे वहय नदी॥ १८
नमो रघुनाथ चरणत माथ थैया लक्ष कोटि बार।
तमु गुण नाम अमृतर पान अधीन भैलो तोमार॥
परम कृपालु जानिया तोमार चरणे लैलो शरण।
पूरा मनकाम बोला राम राम यत सभासद गण॥ १९

पद

हेन देखि महावीर धूम्राक्ष प्रचण्ड * वानरक धाइल येन काल मेघ खण्ड
शर वरषिया सव छानिला आकाश * बानर वलर महा मिलिल तरास ५२२०

प्राणहीन हो भूमि पर गिरते थे॥ १५॥ सहस्रों की संख्या में राक्षस मिलकर वानरों की सेना पर चढ दौड़े। हाथियो, रथों, घोड़ों ने कितनों को कुचल मारा, कितनों को राक्षसों ने तलवारों से काट डाला। कोई-कोई रथ पर रहकर वाण मार वानरों के दो टुकड़े कर देते थे। वानरसेना चीख-पुकार कर 'मार-मार, पकड़ पकड़' कहती थी॥ १६॥ निशाचरों की सेना ने कितनो को परिघ से मारा, कितनों को वाणों से चोट की। नाना प्रकार के अस्त्रों से मार कर वानरों को यमलोक भेज दिया। वानरसेना भी वृक्षशिला, से चोट कर हाथी, घोड़े, सेना, रथ आदि के सिर हृदय आदि अंगों को चूरकर यमलोक के मार्ग पर भेज दिया॥१७॥ सागर में तरंगों की भाँति शोर करती हुई वानरों की सेना क्रोधित हो उठी। नाखून से खरोंचकर, दाँतों से काटकर, लातों-थप्पड़ों से मारकर राक्षस सेना को उसने तितर-बितर कर दिया। वीर धूम्राक्ष की सेना दसों दिशाओं मे भागने लगी। रक्त की नदी वहने लगी, उसमें पड़े मांस कीचड़ जैसे और वाल सेवार जैसे लगते थे॥ १८॥ रघुनाथ तुम्हें नमस्कार है। तुम्हारे चरणो में लाखों करोड़ों वार मस्तक रखकर तुम्हारे गुण-नाम रूपी अमृत का पान करता हुआ मैं तुम्हारे अधीन हो गया हूँ। तुम परम कृपालु हो ऐसा जानकर तुम्हारी चरणों में शरण ले रहा हूँ। सभी सभासदगण 'राम राम' कहो, जिससे मनोकामना पूरी हो जाये॥ ५२१९॥

यह देखकर महावीर प्रचण्ड धूम्राक्ष वानरों की ओर काले मेघ खंड की भाँति दौड़ पड़ा। उसने वाणों की वर्षा से सारे आकाश को ढँक दिया। जिससे बानर

अस्त्रक हानन्त बीर लैया गैला खेदि * पलाइ बानर बल दशदिशे भेदि
सैन्यर देखिया भङ्ग मारुति खङ्गिला * नाइस बुलि भेण्टिलन्त हाते धरिशिला ५२२१
धूम्राक्षे बोलन्त खल खलि हासि तुलि * तइ रण्ड भण्ड करि गैला लङ्का पुलि
यतेक मारिलि आजि तार फल पाइबि * मोहोर हातत परि यम घरे याइबि २२
हनुये बोलन्त तइ किसक तर्ज्जस * शरत कालर मेघ मिछात तर्ज्जस
तइ बेटा गर्ज्जिले आङ्गुलि हुइबे आउल * तोर मइ हुइबो आजि बापेर राउल २३
निशाचरे बोलय मारोहो थाक थाक * चतुर्द्दिशे बेढ़िया दिलेक अस्त्र जाक
ठास ठोस करि गैया शरीरे परिल * भ्रुभङ्ग नाहिके लोमगाछो न लरिल २४
हनुमन्त प्रमुखये रणत पसोरिला * धूम्राक्षक लागि हानिलन्त एक शिला
राक्षसर देखिया शरीर भैला काम्प * गदा हाते धम्राक्ष भूमित दिला जाम्प २५
रथर उपरे तार परि गैला शिल * सारथिये धनुरथे चापिया पेषिल
हनुमन्ते कोबावय हाते वृक्ष धरि * आशेष राक्षस गैला यमर नगरी २६
धूम्राक्षे गावर बले गदागोर तुलि * तन दुइर माजत कोबाइला हुह बुलि
गदार प्रहार पाइया कपि बीरबर * धूम्राक्षक हानिलन्त पर्ब्बत शिखर २७
माथार माजत येवे परिल शिखर * पर्ब्बत आकारे परिगैला निशाचर
आन यत बल खेदि मारय बानरे * यिबा किछु रैल गैल लङ्कार भितरे २८
साते पाञ्चे गैया पाचे राजात जनाइला * धूम्राक्ष परिला शुनि रावण खङ्गाइला

सेना महा सन्त्रस्त हो उठी ॥ २० ॥ वह वीर खदेड़ते हुए अस्त्रों का प्रहार कर रहा था, जिससे वानर-सेना दसों दिशाओं में भाग रही थी। सेना को भागते देख हनुमान क्रोधित हो उठे। 'आगे मत आओ', कहकर हाथ मे शिला लेकर उसके मार्ग को रोका ॥ ५२२१ ॥ धूम्राक्ष खिलखिलाता हँसकर बोला—तू लंकापुरी को तहस-नहस कर गया था। तूने जितनों को मारा है, आज उसका फल मिलेगा। मेरे हाथों तुझे यमालय पहुँचना है ॥ २२ ॥ हनुमान बोले—तू क्या धमकी देता है ? शरतकाल के मेघ की भाँति तू व्यर्थ ही धमकाता है। अरे, तेरे गरजने से मेरी उँगलिया भर उलझेंगी। मैं आज तेरे वाप का मालिक बन जाऊँगा ॥ २३ ॥ निशाचर बोला, ठहर-ठहर, मै अभी तुझे मारता हूँ। और वह चारों ओर से अस्त्रों की बौछार करने लगा। ठाँय, ठाँय कर वे अस्त्र हनुमान के शरीर पर गिरने लगे पर उन्होने उसकी परवाह नही की, उनका बाल भी बाँका न हुआ। ॥ २४ ॥ अब हनुमान आदि रण में प्रवृत्त हुए और धूम्राक्ष पर एक शिला से प्रहार किया। यह देखकर राक्षसों का शरीर काँप गया और धूम्राक्ष हाथ में गदा ले कूद गया ॥ २५ ॥ वह शिला उसके रथ पर गिरी और सारथी समेत धनुष व रथ को दबाकर पीस डाला। हनुमान हाथ में वृक्ष लेकर मारने लगे जिससे अनेक राक्षस यमलोक पहुँच गये ॥ २६ ॥ धूम्राक्ष ने अपने शरीर की शक्ति लगाकर एक गदा उठा ली और 'हुह' कहकर हनुमान के दोनों स्तनों के बीच प्रहार किया। गदा का प्रहार लगने पर वीरवर कपि ने धूम्राक्ष को पर्वत-शिखर से मारा ॥ २७ ॥ उसके सिर पर पर्वत शिखर आ पड़ते ही वह निशाचर पर्वताकार हो गिर पड़ा। और जितनी सेना थी सबको बानर खदेड़ कर मारने लगे; जो कुछ वच गये वे लंका मे जा घुसे ॥ ५२२८ ॥ कुछ ने जाकर राजा रावण को सूचना दी। धूम्राक्ष के पतन की बात सुनकर रावण क्रोधित हो उठा।

अकम्पन आरु बज्रदंष्ट्र सेनापति बरण आरु तेओं लोकर पतन

कैरा सेनापति बुलि आगत मताइल * आशेष राक्षस कुल त्वरिते सजाइल २९
रावणाये आदेशे कहिरा अकम्पन * मोर उपकारी तइ त्रिदशत रण
सब साज उइया तइ युजिबाक चल * मारि आस गैया मोर बैरक सकल ५२३०
चलि गैला बीरबर मङ्गल आचरि * राजाक प्रणामि समरक दिला धारि
आशेष राक्षस साजि गैला सुसम्भृते * शुभक्षण करि गैला चड़िया रथते ५२३१
रणत चलय वीर मङ्गल न पावे * वाम हात पाव काम्पे थिर नोहे गावे
ध्वजर उपरे तार परि गैल पेच * फुरि फुरि भावुकि करय केछ केछ ३२
बाधा सब न गणिया रणत प्रवेश * शरे हानि वानरक मारिला आशेष
सिहक देखिया येन पलाइ मृगयूथ * कतोहो परिला रणे पलाइला बहुत ३३
सेनागण भागे देखि मन नोहे थिर * मैन्द्य द्विविद नल तिनि महावीर
राक्षस बलत परि करय कदन * लाथि भुकु चवरे आशेष कैला छन ३४
तिनि बीरे कोबावन्ते थाइ थिउ लाञ्जे * ठास ठोस करि राक्षसर मुण्ड वाजे
आशेष राक्षस बल करिला निर्म्मूल * रुधिरे वहय नदी मांसे पङ्काकुल ३५
अकम्पने बोलय सारथि रथ डाक * सैन्य सब आश्वासि बोलन्त थाक थाक
आमि बीर थाकन्ते तोमार भय किक * शरे हानि मारो देखा वानर तिनिक ३६
सारथि डाकिला रथ अकम्पन वाके * तिनियो बीरर शर मारे जाके जाके
मैन्द्य कुमुदे नले हानिला शिलाय * सबहाङ्के अकम्पने भङ्गाइला लीलाय ३७

अकम्पन और बज्रदंष्ट्र को सेनापति बनाया जाना और उनका पतन

'सेनापतियो, कहाँ हो ?' कहकर रावण ने उन्हे समीप बुलवाया। असंख्य राक्षस तुरन्त सजकर आ गये ॥ ५२२९ ॥ रावण ने आदेश देते हुए कहा—'अकम्पन, सुनो। तुम मेरे हितकारी और देवताओ से युद्ध करनेवाले हो। सभी सज्जा से सजकर तुम लड़ने जाओ और मेरे सभी वैरियों को मार आओ ॥ ५२३० ॥ वीरवर अकम्पन मंगलाचरण करवाकर निकला और राजा को प्रणाम कर समर-भूमि को आगे वढ़ा। उसके संग असंख्य राक्षस सजकर शुभ क्षण देख रथ पर चढ़कर निकले ॥ ३१ ॥ वे वीर रण में चले पर उन्हें मंगल सगुण नही मिलता था। उनके वायें हाथ-पैर फड़क रहे थे, शरीर स्थिर नही रहता था, उसकी ध्वजा पर उल्लू आ वैठा और वह घूम-घूम चक्कर लगाकर 'कैंच, केंच', करने लगा ॥ ३२ ॥ परन्तु किसी तरह की बाधा की परवाह न करते हुए उन सबने युद्ध में प्रवेश किया और वाण चलाकर असख्य बानरो को मार डाला। सिंह को देखकर जैसे मृगों का झुड भागने लगता है, उसी प्रकार कितने ही बानर युद्धभूमि में गिरे और वहुत-से भाग गये ॥ ३३ ॥ सेना भाग रही है, देखकर मैन्द, द्विविद, नल ये तीनो महावीरो का मन स्थिर नही रह सका। वे राक्षसो की सेना में घुसकर उन्हे मारने लगे। लातों, घूँसो, थप्पड़ों से अनगिनत राक्षसों को मार डाला ॥ ३४ ॥ पूँछ उठाकर जब तीनों वीर राक्षसों को मारते थे तो राक्षसो के सिर एक दूसरे से टकराकर ठाँय-ठाँय वजते थे। उन सबने अनगिनत राक्षसी सेना को निर्मूल कर दिया, वहाँ रक्त की नदी बहने लगी, मांस से धरती पंकमयी हो गयी ॥ ३५ ॥ अकम्पन बोला, सारथी रथ को आगे वढ़ाओ। सेना को आश्वासन देते हुए पुकारने लगा 'ठहरो, ठहरो', मुझ जैसे वीर के रहते हुए भला तुम्हे भय कैसा है ? देखो, मैं वाणों से इन तीनो बानरों को मारे डाल रहा हूँ ॥ ३६ ॥ अकम्पन की बात सुनकर सारथी ने रथ को आगे बढ़ाया। वह तीनो

बानरर भालुकर तेजे बहे गाङ्ग * हनुमन्ते देखय तिनिरो भैला भङ्ग
डाक दिया बोले ओरे थाक न पलाहा * राक्षसर मोहोर क्षणेक युद्ध चाहा ३८
तिनि बीर रैला मारुतिक सखा पाइ * मारुतिर प्रति अकम्पने गैला धाइ
शरीरत बिन्धिलेक असंख्यात शरे * हनुमन्त वीरे ताक कटाक्ष न करे ३९
वायुपुत्रे कतो दूरे करिला लवर * उपारिया आनिलन्त शाल वृक्ष बर
लीला रूपे उच्चाया दक्षिण हात तुलि * अकम्पन वीरक हानिला हुह बुलि ५२४०
विस्कस शवदे शालवृक्ष आसे छानि * अकम्पने काटिलन्त अर्द्धचन्द्र हानि
खण्ड खण्ड हुया येवे परि गैला शाल * मारुति बोलय किनो मुनिष विशाल ५२४१
अश्वकर्ण नामे वृक्ष लैलन्त उपारि * आशेष राक्षस मारिलन्त वृक्ष बारि
देखि कुपिलन्त अकम्पन निशाचर * मारुति बोलन्त किनो मुनिष डाउर ४२
क्रोधिलन्त हनुमन्त बीर बलियार * बृक्ष फुरावन्ते कोल चापिला ताहार
गावर सन्धाने कोब बैसाइलेक तुलि * अकम्पन परिला माङिला शिर खुलि ४३
अकम्पन बीरक मारिला कपि सिंह * कौतुकते भालुक बानरे दिलारिङ्ग
राक्षसक बानरे मारिला यूथे यूथे * कतोहो मरिला लङ्का गैलेक बहुते ४४
रण जय भैलन्त श्रीमन्त मुख ज्वले * रामर पाशक चलि गैला कौतूहले
श्रीराम ये लक्ष्मण सुग्रीव बिभीषण * तेज बुद्धि बढ़ाइला प्रशंसि घने घन ४५
रावणे शुनय मारुतिर जय जय * अकम्पन परिला शुनिया भैला भय
कतो क्षणे बिमरिषि थिर करि चाइला * बज्रदंष्ट्र राक्षसक आगत मताइला ४६

वीरों पर झुंड के झुंड वाणों से प्रहार करने लगा। मैन्द, कुमुद और नल ने उस पर शिलाओं से प्रहार किया जिन्हें अकम्पन ने अनायास व्यर्थ कर दिया ॥ ३७ ॥ बानरों, भालुओं के रक्त की नदी बहने लगी। हनुमान ने देखा, तीनों हार रहे हैं; तब उन्होने पुकार कर कहा—अरे, ठहरो, भाग न जाओ। राक्षसों के साथ मेरा युद्ध क्षण भर देखो ॥ ३८ ॥ हनुमान को साथ पाकर तीनों वीर ठहर गये। तब अकम्पन हनुमान की ओर धावित हुआ। उनके शरीर को असंख्य वाणों से बेध डाला। पर वीर हनुमान ने उसकी परवाह नही की ॥ ३९ ॥ वायुपुत्र हनुमान कुछ दूर दौड़ गये और एक विशाल शालवृक्ष उखाड़ लाये और उसे लीलापूर्वक दाये हाथ से उठा 'हुह' नाद करते हुए वीर अकम्पन पर मारा ॥ ५२४० ॥ हहराता हुआ शाल वृक्ष को अपनी ओर आते देखकर अकम्पन ने उसे अर्द्धचन्द्र वाण मारकर काट डाला। जब वह शालवृक्ष टुकड़ा-टुकड़ा होकर गिर पड़ा तो मारुति ने कहा—यह कितना प्रचंड पौरुषवाला है ॥ ४१ ॥ उन्होने अश्वकर्ण नाम का पेड़ उखाड़ लिया और उस वृक्ष से चोटकर अनगिनत राक्षसों को मार डाला। यह देखकर निशाचर अकम्पन क्रोधित हो उठा। मारुति कहने लगे—यह कितना पराक्रमी है ॥ ४२ ॥ वीर वलशाली हनुमान कुपित हो उठे और वृक्ष को घुमाते-घुमाते उसके पास पहुँच गये। अकम्पन के शरीर का निशाना लगाकर चोट की जिससे उसकी खोपड़ी फट गयी; वह गिर पड़ा ॥ ४३ ॥ कपिसिंह हनुमान ने वीर अकम्पन को मार डाला तब भालू और बानरों ने कौतुक से उल्लास के नारे लगाये। बानरों ने यूथ के यूथ राक्षसों को मार डाला, कितने ही राक्षस मर गये और कितने ही भागकर लंका चले गये ॥ ४४ ॥ रण में विजयी होकर हनुमान का मुख श्री से दमकने लगा। वे कौतूहल से राम के पास चले आये। श्रीराम, लक्ष्मण, सुग्रीव, विभीषण ने उनकी बार-बार प्रशंसा कर तेज और बुद्धि को बढ़ाया ॥ ४५ ॥ रावण ने जब हनुमान का जय-जयनाद सुना, अकम्पन मारा गया, सुनकर उसके मन में बड़ा भय हुआ। कुछ क्षण बाद चर्चाकर

वज्रदंष्ट्रे तइ ये मारियो रामक * तइसे सहाये मइ जिनिलो यमक
देवासुर लोके येवे हारिलन्त तोक * घोर आपदत तइ तारि एर मोक ४७
वज्रदंष्ट्रे बोले तुमि मन कराथिर * रामर वलत मोक सम नाहि बीर
तपस्वीया दोगोटार छराओं आजि प्राण * त्रिशूल सदृश मोर देखियोक वाण ४८
राजाक प्रणामि चतुरङ्ग दले साजि * समरक चलिला धनुर गुण माजि
रणचण्डी सुमरि शिरत हात योरे * झाण्टि खाइ परिल रथर चारि घोरे ४९
बाहुरिया देखिल मुकुट केश मुण्ड * आकाशर हन्ते परिगैल अग्निकुण्ड
काक सबे काढ़े राव तार मुख चाइ * छवालको हाञ्चावे नाकत शाला वाइ ५२५०
वाधा सब नगणिया रणक हर्षित * तेति क्षणे बीर गैया आण्टाइला त्वरित
राक्षस वानरे भैला दुर्घोर समर * इमितिर सेना परिगैला यमघर ५२५१
राक्षसक भङ्गाइलेक वानरर बले * हेनि देखि वज्रदंष्ट्रे हासे खलखले
तृणर अगनि येन क्रोधे बर चण्ड * शरे हानि वानरक करे रण्ड मण्ड ५२
नदी वहे वानरर भालुक रुधिरे * देखि आति कुपिल सुग्रीव महाबीरे
डेवदिया सैन्यर माजत गैया परि * आशेषमारिला लाथि मुकु लाञ्ज बारि ५३
राक्षर शुकान वन सुग्रीव अगनि * असंख्यात संहरिला रणभूमि छानि
कतो वृक्ष हाने कतो शिखर प्रचण्ड * राक्षसक पिशाचक कैला खण्ड खण्ड ५४
रुधिर गम्भीर समपूर्ण नदी वहे * वज्रदंष्ट्रर देखि शरीर न सहे
आग भेण्टि बोलय वानरा थाक थाक * चतुर्द्दिशे बेढ़िया दिलेक अरमजाक ५५

निश्चित करते हुए उसने राक्षस वज्रदंष्ट्र को सामने बुलवाया ।। ४६ ।। कहा, वज्रदंष्ट्र, तुम्हारी सहायता से मैंने यम को जीता था, तुम जाकर राम को मार डालो । देव, असुर सभी तुमसे पराजित हो गये थे, इस घोर सकट में तुम मुझे बचाओ ।। ४७ ।। वज्रदंष्ट्र बोला, आप मन स्थिर कीजिये, राम की सेना में मुझे जीत सके, ऐसा कोई वीर नही है । ये त्रिशूल-सदृश मेरे वाण देखिये । इनसे आज मैं उन दोनो तपस्वियो को मार डालूंगा ।। ४८ ।। राजा को प्रणाम कर, चतुरंगिनी सेना सजाकर, धनुष की डोरी मांजकर, दोनों हाथ जोड़, सिर से लगा, रणचण्डी का स्मरण करते हुए वज्रदंष्ट्र युद्ध को चला । तभी उसके चारो घोड़े ठोकर खाकर गिर पड़े ।। ४९ ।। उसने मुड़कर देखा तो आकाश से मुकुट, केश और सिर समेत एक अग्निकुण्ड गिर पड़ा । उसके मुँह की ओर देखते हुए कौवे बोलने लगे । अपने बच्चों की नाकों में तिनके डाल छिकवा रहे थे ।। ५२५० ।। इन वाधाओं की ओर ध्यान दिये विना वह युद्धार्थ हर्षित हो तुरन्त निकल चला । राक्षसों और वानरो मे प्रचंड-युद्ध आरम्भ हो गया । राक्षसो की सेना यमलोक पहुँचने लगी ।। ५१ ।। राक्षसों को वानरों की सेना ने पराजित कर दिया, देखकर वज्रदंष्ट्र अट्टहास करने लगा । घास की आग की भाँति वह प्रचंड क्रोधित हो उठा और वाण मार कर वानरों को तितर-वितर करने लगा ।। ५२ ।। वानर-भालुओं के रक्त की नदी वहने लगी । यह देखकर महावीर सुग्रीव अत्यन्त कुपित हो उठे । वे कूदकर सेना में जा पड़े और लातों से, थप्पड़ों-घूसों से, पूँछ से मार-मार कर अनेक राक्षसों का वध कर डाला ।। ५३ ।। राक्षस सूखी घास जैसे और सुग्रीव अग्नि जैसे थे । उन्होंने सम्पूर्ण रणभूमि में असंख्य राक्षसो का संहार कर डाला । किसी पर वृक्ष से तो किसी पर प्रचंडशिला से चोटकर राक्षसों-पिशाचों को खंड-खंड कर डाला ।। ५४ ।। भरी हुई नदी के समान रक्त वहने लगा, यह देख वज्रदष्ट्र अधीर हो उठा । वह सामने आकर, अरे वानर, ठहर, ठहर कहता हुआ चारों ओर से घेरकर झुंड के झुंड अस्त्रों से प्रहार किया ।। ५५ ।। उन प्रहारों

प्रहारक नगणि सुग्रीव महावीर * चवरे छिण्डिल तार घोटकर शिर
डाले मूले शालबृक्ष धरिलन्त तुलि * वज्रदंष्ट्र बीरक हानिल हुह बुलि ५६
शालबृक्ष आइसे देखि घोर निशाचरे * बृक्ष काटि पेलाइला दारुण छय शरे
तरु चूर्ण भैला देखि राक्षसर बले * बज्रदंष्ट्रक प्रशंसन्त आति कौतूहले ५७
सूर्य्यर तनय रिङ्ग शुनिया खङ्गिला * आउर आते उपारिया आनिलन्त शिला
बिम्बाद शवरे येवे शिला वहि याय * वज्रदंष्ट्र डेव दिला हाते गदा लै ५८
रथर उपरे तार परिगैल शिला * सारथि घोटक रथ चापिया पेषिला
दुइ हाते आशेष बृक्ष आजुरिया थाके * हानि हानि मारय राक्षस जाके जाके ५९
बज्रदंष्ट्रे रथ भङ्गे यजय पयदा * बले हानिलेक बीरे भयङ्कर गदा
शिलात परिया चूर्ण येन परमण्ड * सुग्रीवर हृदयत भैला खण्ड खण्ड ५२६०
प्रहारक न गणि सुग्रीव मत्त सिंह * लाञ्जे उपारिया लैला पर्व्वतर शृङ्ग
मुण्डत हानिल निया ठाटकार करि * बज्रदंष्ट्र भूमित परिया गैला मरि ५२६१
राक्षस सेनागण पलाइला बिभङ्गे * बानरे खेदिया मारे आति बर रङ्गे
लङ्कात पशिला गैया यिबा किछु जील * सुग्रीव बीरक रामचन्द्रे प्रशंसिल ६२
बज्रदंष्ट्र परिलेक शुनिया रावणे * महा मर्म्मे विषाद करय घने घने
मन्त्रीगण समन्विते आलोचय काज * एवे केनमते थिर करि बोहो राज ६३
पात्र समन्विते राजा सबे चपकारे * चतुर्द्दिशे फुरि सैन्य चाहिला लङ्कारे
सब दिशा आकलिला चारियो दुवारे * देवासुर नरे केन्हो लङ्घिघते न पारे ६४

पर ध्यान न देकर महावीर सुग्रीव ने थप्पड़ मारकर उसके घोड़े का सिर अलग कर दिया और जड़-डालियों समेत एक शालवृक्ष उखाड़ कर 'हुह' नाद करते हुए वीर वज्रदंष्ट्र पर प्रहार किया ।। ५६ ।। शालवृक्ष को अपनी ओर आते देख उस घोर निशाचर ने छह प्रचड वाणों से उस वृक्ष को काट डाला, वृक्ष को कटा देखकर राक्षस-सेना बड़े कौतूहल से वज्रदंष्ट्र की प्रशंसा करने लगी ।। ५७ ।। सूर्य-तनय सुग्रीव राक्षसों की उल्लास-ध्वनि सुनकर क्रोधित हो उठे, वे दूसरे हाथ से एक शिला उखाड़ लाये। प्रचंड नाद करते हुए जब वे शिला ले बढे तब बज्रदंष्ट्र हाथ में गदा ले कूद पड़ा ।। ५८ ।। शिला उसके रथ पर पड़ी, और सारथी घोड़े रथ को दबाकर पीस डाला। दोनों हाथों में अनेक वृक्ष लेकर वे झुंड के झुंड राक्षसों को प्रहार कर मारने लगे ।। ५९ ।। रथ के विनष्ट हो जाने पर वज्रदंष्ट्र पैदल संग्राम करने लगा और बल लगाकर भयंकर गदा से प्रहार किया। शिला पर गिरकर जैसे अंडा फूट जाता है वैसे ही गदा सुग्रीव की छाती पर पड़कर चूर-चूर हो गयी ।। ५२६० ।। प्रहार की ओर ध्यान न देकर मत्त सिंह सुग्रीव पूँछ से एक पर्वत का शिखर उखाड़ लिया और उससे वज्रदंष्ट्र के सिर पर प्रहार किया। वज्रदष्ट्र भूमि पर गिर कर मर गया ।। ५२६१ ।। राक्षस सेना तितर-बितर होकर भागने लगी। बानर सेना उसे बड़े आनन्द से खदेड़-खदेड़ कर मारने लगी। जो राक्षस बच गये वे लंका में जा घुसे। रामचन्द्र ने वीर सुग्रीव की प्रशंसा की ।। ६२ ।। वज्रदंष्ट्र मारा गया, सुनकर रावण बड़े ही शोक से बार-बार विषाद करने लगा। वह मंत्रियों से चर्चा करने लगा कि अब क्या करना चाहिए। अब किस प्रकार से राज्य को अटूट रखूँ ? ।। ६३ ।। सामन्तो समेत राजा रावण ने तुरंत उठकर लंका के चारों ओर सेनाओं को देखा। चारों द्वारों को सभी ओर से घेर लिया, अब उसे देव-असुर, नर कोई भी लांघ नहीं सकता था ।। ६४ ।। माधव कन्दली कहते है—सभासदगण सुनो, यह रामायण कथा परम

बोलन्त कन्दलि शुना सभासदगण * परम अमृत इटो कथा रामायण ।
कर्ण भरि शुना भरक करा दुख दूर * बोला राम राम हौक पाप भषिभूर ६५

प्रहस्तर युद्ध यात्रा आरु प्रहस्तर चारि मन्त्रीर निधन

दुलड़ी

हाते शिला वृक्ष वानर भालुके चोदिशे आछे जण्टाइ ।
रावणे सम्बुधि बोलय शुनाहा प्रहस्त मोर मोमाइ ॥
असंख्य पदाति ढाकिलेक देखा नगरीखान आमार ।
दुर्घोर आपद काल मिलि गैला दुख हय महाभार ॥ ६६
आमि कुम्भकर्ण वीरेवा तुमि वा सेनारपति आमार ।
इन्द्रजित पुत्र अतिकाय वीरे पारय इसव भार ॥
आनर शकति नाहिके मोमाइ आपुनि गुणिया चाहा ।
पुत्र परिवार सवाके राखिया आपुनि युजक याहा ॥ ६७
भाल भाल अङ्ग लागिया सेनाक तुलत लैयोक वाछि ।
तोमात करिया आन नो सेवक मोर कि करिबे आसि ॥
तोमार सेनार रोल शुनि येन गहन सिहर राव ।
डरत वानर भागि पलाइवेक येहेन हस्तीर छाव ॥ ५२६८
रामर भालुक पलाइवेक येवे मानुष राम लक्ष्मण ।
शरे हानि तुमि मारिया पेलाइवा ठनगण दुइजन ॥
ब्राह्मण सकले स्वति पढ़न्तोक दुस्तरर हुयो नाहा ।
राक्षसर कुल यमघरे चले आपुनिये वाहुराहा ॥ ५२६९

अमृत है । इसे कान भर कर सुनो और दुख दूर करो । 'राम राम' कहो, जिससे पाप विनष्ट हो जाये ॥ ६५ ॥

प्रहस्त की युद्धयात्रा और उसके चार मंत्रियों का निधन

रावण ने प्रहस्त को सम्बोधित कर कहा—प्रहस्त मामा ! हाथों में वृक्ष शिलाएँ ले वानर-भालुओं ने चारों ओर से घेरे रखा है । देखो अनगिनत पदाधिक सेना ने हमारी नगरी को ढँक लिया है । हमारे लिए यह भयंकर संकट का काल आ पहुँचा है; इस महाभार से दुख होता है ॥ ६६ ॥ मैं, वीर कुंभकर्ण, या हमारे सेनापति तुम, पुत्र इन्द्रजित, वीर अतिकाय ही इस भार को उठाने मे समर्थ हैं । मामा, दूसरो की सामर्थ्य नही है, तुम स्वयं विचार कर देखो, पुत्र-परिवार सबकी रक्षा करने हेतु तुम युद्ध करने के लिए जाओ ॥ ६७ ॥ उत्तम-उत्तम सेना के अंगों को चुन-चुन कर अपने साथ ले लो । तुम्हारे सिवा मेरा और सेवक भला क्या कर सकता है ? तुम्हारी सेना की प्रचंड सिंह की दहाड़ सुनकर हाथी के बच्चों की भाँति वानर सेना भी डर कर भाग जायेगी ॥ ६८ ॥ राम के भालुओं की सेना जब भाग जायेगी तब तुम उन दोनो मनुष्यों—राम-लक्ष्मण को युद्ध में बाणों के प्रहार से मार डालना । ब्राह्मणगण स्वस्ति वाचन कर रहे हैं, तुम दुस्तर सागर मे नाविक बनो । राक्षसों का वंश यमलोक जा रहा है, तुम्ही इसकी रक्षा करो ॥ ६९ ॥ सेनापति प्रहस्त ने राजा रावण को सम्बोधित करते हुए कहा—यह संकट आयेगा, हम पहले से ही जानते थे । हमने सुनिश्चित

रावण राजाक सम्बुधि बोलय प्रहस्तये सेनापति ।
पूर्ब्बकाल हन्ते जानियाछो आमि मिलिबेक विसङ्गति ॥
सुदृढ़ बचने बुजाइलोहो आमि ताक देखिलाहा तिता ।
आपोन बुद्धिक बर करि तुमि राम ने दिला सीता ॥ ५२७०
गतानुशोचर किछु कार्य्य नाहि हेरा चलो युजिबाक ।
दाने माने सत- कारे चिरकाले बढ़ाइला तुमि आमाक ॥
राजात मेलानि पाइया चलि गैला सेनार पति प्रचण्ड ।
सारथि साजिया रथ योगाइलन्त साक्षातते स्वर्गखण्ड ॥ ७१
सागर समान सेना लरि मैला प्रहस्तर आगे पाचे ।
प्रजङ्घ प्रमुखये अनेक राक्षसे साजि याय वीरकाछे ॥
घने घने यत ब्राह्मण सकले माङ्गल्य करे प्रबन्धे ।
निरन्तरे लङ्का उथलि गैलेक घृतर आहुतिर गन्धे ॥ ७२
प्रहस्त पयाने चलिला अनेक मिलि गैला विमङ्गल ।
लङ्का नगरीर बाहिर भैलेक सकल राक्षस बल ॥
बानर भालुक साज साज बुलि लागि गैला कोलाहल ।
सब चपकारे जपाइलेक युज हाते धरि शिला शाल ॥ ७३
उभय बलत उचमिच मैला बानरे मारय किले ।
काहारो मुण्डक चवरे छिण्डय काहाको मारय शिले ॥
काको मारे बृक्ष शिखरे हानिया भूमिते पेलाइया पिषे ।
कतोहो राक्षस रणत परिला कतो पलाइ दश दिशे ॥ ७४
बानर बलको राक्षसे मारय हानिया शकति शूल ।
काण्ड खाण्डा गदा परिघर बारि हानिया करे निर्म्मूल ॥

वचनों से समझाया था, मगर तुम्हें वह बात कड़वी लगी, अपनी बुद्धि को ही सबसे बड़ा बनाकर तुमने राम को सीता नहीं लौटाई ॥ ५२७० ॥ अब बीती बात के लिए सोचने का कोई काम नही है । अब लड़ने के लिए चलो । तुमने दान-मान-सत्कार द्वारा हमे हमेशा आगे बढाया है । (इसलिए हम भी लड़ेंगे ।) राजा का आदेश पाकर प्रचंड वीर सेनापति प्रहस्त चल पडा । सारथी ने साक्षात स्वर्ग-खड के समान रथ को सजाकर उपस्थित किया ॥ ५२७१ ॥ सागर जैसी विशाल सेना प्रहस्त के आगे-पीछे दौड़ चली । प्रजंघ आदि वीर सजकर उसके पास चलने लगे । सारे ब्राह्मण बार-बार अनेक विधियों के अनुसार मंगलाचार करने लगे । घी की आहुति की गंध से लका निरतर परिपूर्ण हो उठी ॥ ७२ ॥ प्रहस्त के यात्रा करते समय अनेक प्रकार के अपशकुन होने लगे । सारी राक्षस सेना लंका से बाहर निकली । उन्हें देखकर भालू-बानरों की सेना—तैयार हो जाओ, तैयार हो जाओ, कहकर कोलाहल करने लगी । सभी तुरंत हाथों में शिलाएँ और शालवृक्ष उठाकर युद्ध के लिए प्रस्तुत हो गये ॥ ७३ ॥ दोनों सेनाएँ एक दूसरे से भिड़ गयी । बानरों ने राक्षसों को मुक्कों से मारना शुरू किया, किसी के सिर को थप्पड़ मारकर अलग कर देते थे, तो किसी को शिला के प्रहार से मार डालते थे । किसी को वृक्ष और पर्वत शिखर फेंक कर मारते थे और भूमि पर गिराकर पीस डालते थे । कितने ही राक्षस युद्ध में मारे गये । कितने ही दसों दिशाओं मे भाग गये ॥ ७४ ॥ राक्षस भी वानर सेना को शक्ति, शूल आदि के प्रहार से मारते थे, बाण, खड्ग, गदा, परिघ की चोटों से उनको निर्मूल कर रहे थे । दोनों ओर की सेनाओं के रक्त से मानों वर्षा की नदी बह चली । प्रहस्त के

वारिषा कालर नदी वहे येन उभय बल रुधिरे।
देखिया रणत कन्दल करय प्रहस्तर चारि वीरे ॥ ७५
जाम्वोनाद महा– नाद कुम्भहनु आरो वीर धुरन्धर।
एहि चारि वीरे आशेष बलक मारिला कपि वानर ॥
आपोनार सैन्य भागय देखिया द्विविद वीर खङ्गाइल।
धुरन्धर माथे शिला एक गोटा हानिया मारि पेलाइल ॥ ७६
प्रहस्ते समर– भूमित आपुने साक्षाते देखिया आछे।
दुर्म्मुख वानरे जाम्व ये मालीर मुण्ड भाङ्गिलन्त पाछे ॥
जाम्ववन्त वीरे समर माजत हाते तुलि लैला शिला।
महानाद वीरक हानिया पठाइला करिया मातङ्ग लीला ॥ ७७
कुम्भर हनुत शीघ्र वेग धरि परिलन्त गैया तार।
सेहि प्रहारते घोर निशाचर मरि गैला यमद्वार ॥
प्रहस्ते रणत देखिया आछय चारियो वीर परिल।
हाते धरि अस्त्र क्रोधे सवाहाङ्के विमुख वीरे करिल ॥ ७८
शुना सर्व्वजन रामर चरित्र अमृत इटो निर्म्मल।
कर्णभरि पान करियोक सुखे जन्मर हौक साफल ॥
कलियुगे धर्म्म नाहि आतपरे एहिसे शास्त्र युगुति।
त्यजि आन काम वोला राम राम लभिवा सुखे मुकुति ॥ ५२७९

प्रहस्त, प्रजङ्घ, सुप्रतघ्न, वृकासुर आदिर युद्ध आरु पतन

पद

प्रहस्ते भङ्गाइला रण कपि वल वधि * वेगे वहि याय वर शोणितर नदी
देखिया आकुल वर सेनापति नील * नाइस वुलि भेण्टिलन्त हाते धरि शील ८०

साथी चारों वीर यह देखकर युद्ध मे वानरो का विनाश करने लगे ॥ ७५ ॥ जाम्बोनाद, महानाद, कुंभहनु, और वीर धुरंधर इन चार वीरों ने असंख्य वानरो को मारा। अपनी सेना को भागते देख वीर द्विविद क्रोधित हो उठा और धुरंधर के सिर पर एक शिला का प्रहार कर मार डाला ॥ ७६ ॥ प्रहस्त ने युद्धभूमि में स्वयं देखा कि वानर दुर्मुख ने जाम्बुमाली का सिर तोड डाला। इसके बाद वीर जाम्बवन्त ने हाथ में शिला उठा ली और हाथी जैसी लीला से ही उससे वीर महानाद पर प्रहार किया ॥ ७७ ॥ तार नाम के वानरों ने शीघ्रगति से जाकर कुंभहनु पर प्रहार किया। उस प्रहार से वह घोर निशाचर मरकर यमलोक चला गया। युद्ध क्षेत्र में प्रहस्त ने देखा कि चारो वीर मारे गये, तब उसने क्रोध से हाथ में अस्त्र लेकर सभी वानर वीरों को भगा दिया ॥ ७८ ॥ सभी लोग राम के चरित्र सुने। यह अमृत जैसा निर्मल है। इसे श्रवण कर सुखपूर्वक पान करो जिससे जन्म सफल हो जाये। कलियुग मे इसके अलावा और कोई धर्म नही है, यही शास्त्र-युक्ति है। दूसरे काम छोड़ 'राम, राम' कहो तो सुखपूर्वक मुक्ति पा जाओगे ॥ ७९ ॥

प्रहस्त, प्रजंघ, सुप्रतघ्न, वृकासुर आदि का युद्ध और पतन

वानर सेना को मार कर प्रहस्त ने भगा दिया। वेग से वहाँ रक्त की नदी बहने लगी। यह देखकर सेनापति नील बड़ा व्याकुल हो उठा। उसने हाथ में शिला उठा

चारि घोंटा मारिल प्रहार करि टानि * प्रहस्तर हृदये मारिला वृक्ष टानि
सेनापति देखे रथ भाङ्गिला सकल * डेव दि नामिला हाते धरिया मुषल ५२८१
दुइ सेनापति लागिलेक जराजरि * कोलाहले परिया भूमित गरागरि
आपनार जयक दुइहान वर मन * लाथि भुकु चवर मारय घने घन ५२८२
दान्ते दान्त लागि गैला कामोराकामुरि * वर बेगे मारे नखे आञ्चुरि पिञ्चुरि
हियाये गै हियात मारय ठाट ठाट * सागर माजत येन परय निर्घात ८३
कोलाहल एरि वीर प्रहस्त कुशले * नीलर कपाले कोव बैसाइला मुषले
बोम्वाले गावर सवे वहय रुधिर * वर कोपे ज्वलिला संग्रामे नील वीर ८४
नील वीरे वृक्ष तुलि बैसाइला प्रहार * माथे परि भाङ्गिला कटाक्ष नाहितार
पर्व्वतर समान चराव तार काय * मुषलक उचचाया नीलक गैला धाइ ८५
अगनिर पुत्र नील समरे प्रचण्ड * शीघ्र करि तुलि लैला पर्व्वतर खण्ड
गावर सन्धाने हानिलेक ताक लागि * प्रहस्तर मुण्ड खण्ड खण्ड गैला भागि ८६
प्रहस्त राक्षस वीर भूमित परिल * टलवल करि आति पृथिवी लरिल
पलाइ राक्षस कतो व्यूह भङ्गे पाइल * वानरे मारिल कतो लङ्कात लुकाइल ८७
सेनापति प्रहस्त परिला येवे रणे * प्रजङ्घ राक्षस खेदि गैला कोप मने
नीलक प्रबन्धे धाइया याय हस्ती स्कन्धे * शूल शकतिक हाने मारिते प्रवन्धे ८८
दिग्गज समान वीर सेनापति नील * अश्वकर्ण वृक्षगोट उपारिया निल
गज कुम्भस्थाने वर टाने कोव दिल * आर्त्तनाद करि हस्ती ढलिया परिल ८९

कर उसको रोकते हुए कहा—आगे न बढ़ ॥ ५२८० ॥ जोर से प्रहार कर उसने प्रहस्त के चारों घोड़ो को मार डाला और जोर से एक वृक्ष से प्रहस्त के हृदय पर प्रहार किया। सेनापति प्रहस्त ने देखा कि समूचा रथ तोड़ डाला है तो हाथ में मूषल ले वह कूदकर उतर आया ॥ ५२८१ ॥ दोनों सेनापति एक दूसरे से गुत्थम-गुत्था हो गये और कोलाहल करते हुए भूमिपर गिरते लोटने लगे। दोनों अपनी विजय की बड़ी इच्छा रखते थे और एक दूसरे को लात-मुक्का, थप्पड़ आदि से वार-वार चोट कर रहे थे ॥ ८२ ॥ एक दूसरे को दाँतों से काटने लगे और नाखूनो से नोच-नोच कर बड़े वेग से मारने लगे। दोनों एक दूसरे की छाती पर ठाँय-ठाँय मारते थे, लगता था मानों सागर मे वज्रपात हो रहा हो ॥ ८३ ॥ कोलाहल करना छोडकर कुशल वीर प्रहस्त ने नील के कपाल पर मूपल से चोट की। उसके शरीर के सभी स्थानो से रक्त की धारा बहने लगी, तब वीर नील सग्राम में बड़ा कुपित हो जल उठा ॥ ८४ ॥ वीर नील ने वृक्ष उठाकर प्रहार किया, वह वृक्ष प्रहस्त के सिर पर पड़कर टूट गया, पर उसने उसकी परवाह नही की। उसका शरीर पर्वत जैसा ऊँचा था मूपल ले वह नील की ओर दौड़ पड़ा ॥ ८५ ॥ अग्निपुत्र नील सग्राम मे बड़ा प्रचंड था। उसने शीघ्रता से पर्वत का एक खड उठा लिया और उसके शरीर का निशाना करते हुए फेंक मारा। उसके आघात से प्रहस्त का मस्तक खंड-खंड होकर चूर हो गया ॥ ८६ ॥ वीर राक्षस प्रहस्त भूमि पर गिर पड़ा, जिससे पृथ्वी टलबलाती हुई काँप उठी। व्यूह भंग कर राक्षस इधर-उधर भाग गये। कुछ को वानरों ने मार डाला, कुछ लंका में जा छिपे ॥ ८७ ॥ सेनापति प्रहस्त के युद्धभूमि मे गिर पडने पर राक्षस प्रजंघ क्रोधित हो, उसकी ओर दौड़ गया। हाथी पर सवार होकर वह नील की ओर चढ दौडा और उसे मारने के लिए शूल-शक्ति का प्रहार करने लगा ॥ ८८ ॥ सेनापति नील दिग्गज जैसा विशाल था, उसने एक अश्वकर्ण वृक्ष उखाड़ लिया और हाथी के कुंभस्थल की ओर जोर से मारा जिससे हाथी आर्तनाद कर ढल पड़ा ॥ ८९ ॥ हाथी को गिरते

हस्ती परिवार देखि प्रजङ्घ कुपिला * मुषलक धरि पृथिवीक जाम्प दिला
वल दिया हानिलेक नील वीर लागि * कपालत परिया मुषल गैला भागि ५२९०
असंख्य शकति किवा कहिवो नीलरे * प्रजङ्घर मरा हस्ती तुलि लैला करे
नीलर वीर्य्यर कथा कहिते न जानि * मारिलेक प्रजङ्घक मरा हती हानि ९१
सुप्रतघ्न राक्षस नीलक याय धाया * आति भयङ्कर परिघक तुलि लैया
द्विविदर हियात मारिल एक वारि * मारिलेक ताहाके परिघ लैया काढ़ि ९२
ऐरावत सदृश हस्तीत गैया चड़ि * कालमुख निशाचर आइल दरदरि
जाम्ववन्त वीरक दिलेक अस्त्रजाक * बुद्धिमुका बुढ़ा आजि मारो थाक थाक ९३
जाम्ववन्त वोलन्त शुनरे कालमुख * आमात विरोध कर एतमान बुक
कोन वंशे होवस पतान येन तुष * एहि बुलि काढ़ि लैला गजर अङ्कुश ९४
माथात अङ्कुश खुञ्चि भाङ्गिलन्त खुलि * कालमुख गैला यमसदनक बुलि
लैला एक आजोरे हस्तीर दान्त काढ़ि * ताहाको मारिला सेइ अङ्कुशर वारि ९५
रथत चड़िया वीर वृकासुर धाइल * अस्त्रर प्रहारे जाम्ववन्तक भङ्गाइल
भालुक राजाक येवे विह्वल कराइल * आगवाढ़ि रण दिल सेनापति नील ९६
वृकक रथक दुइको नील वीरे पाइला * दुइ हाते आकाशक हानिया पठाइला
चारि घोंरा सारथि परिला रण भागि * वृकासुर मरि आसे पृथिवीक लागि ९७
हेट मुण्ड हुआ मरि आसे निशाचरे * लुम्फिया धरिला ताक शतेक वानरे
कतो हो दूरक लागि हानिलन्त वरे * आवर शतेके ताक धरिला लवरे ९८
वृकासुर देह धोप खेलाइवार मते * इमितिक सिमिति हानय दुयो हाते
केहो रथ घोंरा हाने केहो राक्षसक * कतोहो चापरि लरे आवरर पाशक ९९

देखकर प्रजघ कुपित हो उठा और मूषल पकड़ कर पृथ्वी पर कूद पड़ा। उसने वल लगाकर उस मूषल से नील पर आघात किया पर नील के कपाल से लगकर मूषल टूट गया ॥ ५२९० ॥ नील की कितनी प्रचंड शक्ति थी, उसका क्या वर्णन करें ? उसने प्रजघ के मरे हाथी को उठा लिया। नील के वल का वर्णन नहीं किया जा सकता, उसने उसी मरे हाथी से प्रजंघ पर प्रहार किया ॥ ५२९१ ॥ तब सुप्रतघ्न राक्षस अत्यन्त भयंकर परिघ ले नील पर चढ़ दौड़ा। उसने उस परिघ से द्विविद की छाती पर प्रहार किया। द्विविद ने उससे परिघ छीन कर उससे उसी को मार डाला ॥ ९२ ॥ तव ऐरावत जैसे हाथी पर सवार होकर कालमुख राक्षस दौड़ता हुआ आया, उसने वीर जाम्ववन्त पर अस्त्रों की झड़ी लगा दी और कहा, अरे सूखी बुद्धिवाला बूढ़ा, ठहर जा, आज तुझे मारता हूँ ॥ ९३ ॥ तव जाम्ववन्त ने कहा, रे कालमुख, सुन, तू मुझसे लड़ना चाहता है, तेरा इतना साहस ? अरे सूखी भूसी जैसा तू किस वश का है ? यह कहकर जाम्ववन्त ने हाथी का अंकुश निकाल कर ले लिया ॥ ९४ ॥ और उसके सिर पर मार खोपड़ी फोड़ डाली। कालमुख यमलोक चला गया। जाम्ववन्त ने एक ही झपाटे से हाथी का दाँत तोड़ लिया और उसे भी उसी अंकुश से मार डाला ॥ ९५ ॥ वीर वृकासुर रथ पर चढ दौड़ा और अस्त्रों के प्रहार से जाम्ववन्त को हरा दिया। उसने जव भालुओं के राजा को विह्वल कर डाला तो सेनापति नील आगे बढ़कर युद्ध करने लगा ॥ ९६ ॥ वीर नील ने वृकासुर और उसके रथ को पकड़ लिया और उन्हें उठाकर आकाश की ओर फेंक दिया, चारो घोडे सारथी समेत रथ टूट कर बिखर गये और वृकासुर मर कर धरती पर आ गिरा ॥ ९७ ॥ सिर नीचे कर मरा हुआ निशाचर नीचे आ गिरा। उसे सैकड़ों वानरों ने लोक लिया। फिर उसे कुछ दूर उठाकर फेंक दिया। फिर सैकड़ों वानरों ने उसे दौड़कर पकड़ लिया ॥ ९८ ॥ वानरों ने

गाव गोट धोप खेले बानरे उमलि * कतोहो लुम्फिया धरि हासे खलखलि ।
राक्षसबलक लागि हानिलन्त कुरि * निशाचरबल असंख्यात गैला मरि ५३००
नीलक अनेक सादरिला रामदेवे * आगे पाचे बानर नाचय छेवे छेवे
लक्ष्मण प्रमुखे प्रशसिला बारे बार * हरिषे उज्ज्वल मुख श्री ज्योतिष्कार ५३०१
नमो नमो राम राक्षसर अन्तकारी * देवर देवता आदि पुरुष मुरारि
गति मोर नाहि विने तोमार चरणे * बोला राम राम सभासद गणे ५३०२

रावणर युद्धयात्रा

छवि

प्रहस्त राक्षस येवे समरत परिलेक नीलर हातते प्राण गैल ।
शुनिया राजार माथे आकाशी सरग परि रावणर श्रीहानि भैल ॥
हरि हरि ममाइ मोर घोर समरर माजे इन्द्र यम कुबेर भङ्गाइले ।
दुस्तरर बन्धु मोर बानर गोटर हाते केनमते प्राणक सुजाइले ॥ ५३०३
शुनियोक पात्रलोक आहुति दियोक मोक आमि बर करिलोहो दोष ।
सब सैन्य नुयुजिया बैरक आसङ्ग दिया तार काजे पाइलो असन्तोष ॥
सबदले चपकारे आपुनि युजक चलो देख आजि मोर बल साङ्ग ।
श्री राम लक्ष्मण समे बानर भालुक मारि रुधिरे बहाइबो आजि गाङ्ग ॥ ५३०४

वृकासुर के शरीर को गेद खेलने की भाँति इधर से उधर दोनों हाथों से फेंक-मारने लगे। कोई रथ घोड़े को फेक मारते थे, कोई राक्षस को। कोई सिर झुकाकर दूसरे के पास दौड़ जाते थे ॥ ९९ ॥ राक्षसों के शरीरों को गेंद बनाकर बानर उल्लास से खेलने लगे, कितने ही उन्हें लोक-लोककर खिल-खिलाकर हंस पड़ते थे। उन सबने राक्षस सेना पर बीसों बार प्रहार किया। जिससे असख्य राक्षस-सेना मारी गयी ॥ ५३०० ॥ प्रभु रामचन्द्र ने नील का बड़ा ही आदर किया। आगे-पीछे बानर ताल-ताल पर नाचने लगे। लक्ष्मण आदि ने बार-बार उनकी प्रशंसा की। हर्ष से उज्वल उनकी मुखश्री दमकने लगी ॥ ५३०१ ॥ राक्षसों का अंत करने वाले देव्ताओं के देवता, आदि पुरुष, मुरारी, राम, आपको नमस्कार है। तुम्हारे चरणो को छोड़कर मेरी और कोई गति नही है। सभी सभासदगण राम राम कहो ॥ २ ॥

रावण की युद्ध-यात्रा

प्रहस्त राक्षस युद्ध मे गिर पड़ा, नील के हाथों उसके प्राण चले गये, यह सुनकर मानो रावण के सिर पर आकाश टूट पड़ा, उसकी श्री नष्ट हो गयी। (वह कहने लगा) हाय, हाय मामा मेरे, तुमने घोर सग्राम मे इन्द्र, यम, कुबेर को भी पराजित किया था। ओ मेरे सकट के मीत, बानरों के हाथ भला प्राण कैसे गँवाये ॥ ३ ॥ ओ सामन्तो, मंत्रियो, सुनो। मुझे आहुति दे डालो, मैंने बड़ा दोष किया है। सारी सेना सहित न लड़कर शत्रु को बढ़ावा दिया और इसीसे यह दुख मिला है। सारी सेना तुरंत साजकर युद्ध को चलो, मै आज स्वय चल रहा हूँ। आज मेरी शक्ति का प्रताप देखना। राम-लक्ष्मण समेत बानर-भालुओ को मारकर मैं रक्त की नदी बहा दूंगा ॥ ४ ॥ यह कहकर तीनों लोकों मे अजेय वीर दशानन ने रथ को सज्जित कर मंगवाया। उस रथ में सोने और मणियों के काम किये हुए थे, वह सूर्य-किरण जैसा

हेनु बुलि दशशिर   त्रैलोक्ये अजय बीर   रथखान अनाइलेक साजि ।
सूर्य्यर किरण सम   सुवर्ण माणिक काम   वायुवेगे चारि गोटा बाजि ॥
ताहाते चड़िया राजा   जय सुमङ्गलपढ़े   येन ज्वले कालमेघ खण्ड ।
अखण्ड मण्डल चन्द्र   सदृश छत्रेक तुलि   चलि गैला रावण प्रचण्ड ॥ ५३०५
त्रैलोकत भयङ्कर   साजि आइला लङ्केश्वर   पात्र पुत्रे दशदिश छानि ।
राक्षसर रिङ्गरावे   ढाक ढोल कोलाहले   स्वर्ग भुवनक गैला ध्वनि ॥
सुचल पर्व्वत सम   साक्षतते येन यम   असंख्यात बीर याय चलि ।
रावणर अनुकूले   समरत कौतूहले   नाचन्त हासन्त खलखलि ॥ ५३०६
चलि गैला लङ्केश्वर   कुन्जर घोटक उटे   टलबल मेदिनी मण्डल ।
सागरत ढौ सब   खलकि खलकि गैल   स्वर्गको लङ्घिला सिटो जल ॥
पर्व्वत मूलत वसि   रामदेवे पुछिलन्त   बिभीषण चिनायो आमाक ।
कोन कोन बीरगण   आमाक युजिबे आसे   हाते अस्त्रधरि जाके जाक ॥ ५३०७
श्रीरामक सम्बुधिया   बिभीषणे चिनावन्त   दक्षिण आङ्गुलि तरि तरि ।
देखियोक प्रभुदेव   यिगोटा आसय हेरा   मयमत्त हस्तीस्कन्धे चड़ि ॥
हस्तीर ये माथागोट   कम्पवन्ते आसे आति   चन्द्रक ग्रासिते येन राहु ।
अभिनव सूर्य्य सम   दुइ बाहु ज्वले येन   महावीर एहिटो सुबाहु ॥ ५३०८
सिंह कोन्तरर वर्ण   रथत चड़िया आसे   चक्र सम धरिशर चाप ।
समरत देवगणे   नाम शुनि पलावन्त   इन्द्रयो मानिल यात काप ॥
प्रमत्त गजर सम   शरीर सुन्दर येन   त्रिभुवने जनिलेक भीत ।
रावणर श्रेष्ठ पुत्र   महाबलन्त वीर   इहाक बोलय इन्द्रजित ॥ ५३०९

चमक रहा था, पवन जैसे वेग वाले चार घोड़े उसमे जुते थे। उस पर सवार होकर राजा रावण ने विजय का सुमंगल वाचन किया और ऐसा लगा मानो काला मेघ खड जल रहा है। अखंड-मंडल (पूर्णिमा के) चन्द्र जैसा छत्र धारण किये प्रचंड रावण चल पड़ा ॥ ५ ॥ तीनो लोको में भयकर लकेश्वर सामन्तों, पुत्रो से दसो दिशाओ से घिरा सजकर चल पड़ा। राक्षसों के कोलाहल के नारों, ढोल-नगाड़ो की ध्वनियाँ स्वर्ग-भूवन को भी पार कर गुंजाने लगी। सचल पर्वतों जैसे, साक्षात यम की भाँति असंख्य वीर उसके साथ चलने लगे। रावण के अनुकूल समर मे कौतुहल दिखाकर वे नाचते और खल-खल हँसते थे ॥ ६ ॥ लकेश्वर रावण चल पड़ा। हाथी, घोड़े, ऊँट आदि से धरती मंडल काँपने लगा। सागर की तरंगे उछलने लगी, उनका जल स्वर्ग को लांघ गया। पर्वत के मूल में बैठे प्रभु राम ने विभीपण से पूछा—हे विभीषण, हाथों में अस्त्र लिए झुड के झुड हमसे लड़ने के लिए कौन-कौन आ रहे है, तुम उनका परिचय करवाओ ॥ ७ ॥ विभीषण दाहिने हाथ की उंगली से संकेत करते हुए श्रीराम को सम्बोधित कर परिचय देने लगे। हे प्रभु ! देखिये, जो मदमत्त हाथी के कन्धे पर चढकर आ रहा है, जिसके हाथी का सिर बहुत कांप रहा है, चन्द्र को ग्रसने हेतु जो राहू जैसा आ रहा है, बाल-सूर्य की भाँति जिसकी दोनों भुजाएँ प्रकाशमान हैं, वही महावीर सुबाहु है ॥ ८ ॥ सिंह के केशर जैसा वर्णवाला, चक्र जैसा धनुष-वाण लिए जो रथ पर चढ़कर आ रहा है; जिसके नाम सुनते ही युद्ध मे देवगण भी भाग जाते है, इन्द्र को भी जिसने पराजित कर दिया था, जिसका शरीर प्रमत्तगज जैसा सुन्दर है, त्रिभुवन जिससे भयभीत होता है. वह रावण का बडा पुत्र महाबलवान वीर है, इसे इन्द्रजित कहते हैं ॥ ९ ॥ रावण के समीप ही स्वर्ण-रथ पर चढ़ा जो वीर धनुष टंकारता हुआ, बहुत गरजता लंका से निकला आ रहा है, इसे अतिकाय कहते है। जिसकी आँखे कुसुम फूल

रावणर सन्नितते चड़िया काञ्चन रथे यिटो बीर लङ्कार वजाइ ।
धनुर टङ्कार करि आसे आति गरजन्ते इहाक बुलिय अतिकाय ।।
ओर कुसुमर वर्ण दुइ चक्षु ज्वले यार पिठित चड़िया गर्दभर ।
यिगोटा आङ्गुलितरि आसय गर्जन करि इहाक बोलय महोदर ।। ५३१०
यिगोटा घोंरात चरि हातत शकति धरि चाहन्ते आसय आग पाच ।
शिखर सदृश माथ येन यम साक्षातत बज्रवेगे राक्षस पिशाच ।।
प्रलयर अग्निसम जाज्ज्वल्य समान कोपे खाण्डा तुलि आसये आसक्ष ।
हातीर पिठित थाकि फुरावय दुइ आखि खरर तनय मकराक्ष ।। ५३११
अगनि समान वर्ण रथत चड़िया आसे येन देखि कालमेघ खण्ड ।
नरान्तक बीरवर इहाकेसे बोलवय देवासुर कम्पन प्रचण्ड ।।
सिंह घोड्ग बाघ समे समूलि पर्ब्बत तुलि उच्चाया आसय यिबागोट ।
देवान्तक नाम इटो महाबल निशाचर इन्द्रेयो नसहे यार चोट ।। १२
धवल बृषत चड़ि सनाइल त्रिशूल धरि उच्चाया आसय हातगिरा ।
खरि पर्ब्बतत येन कालमेघखण्ड देखि इहाकेसे बोलय त्रिशिरा ।।
नाना भृत्यपुत्रगण बेढ़िया आछये यार उट घोंरा कुञ्जर बहुत ।
सदम्भ नामक बीर इहाङ्केसे बोलवय जिताम्बर राक्षसर सुत ।। १३
हाण्डि श्रृंगालीर वर्ण यिगोटा आसय हेरा पर्ब्बतर सदृश आरम्भ ।
शक्र चाप समधनु फुरावते आसे आति इहाकेसे बोलय निकुम्भ ।।
याहाक देखाहा हेरा हातत परिघ धरि चाहन्ते आसय दश दिश ।
विकुम्भ ये निशाचर इहाकेसे बोलवय देवासुर चमक मुनिष ।। १४
शरत कालर येन सम्पूर्ण चन्द्रर सम छत्रेक धरिला यार तुलि ।
सूर्य्यर किरण सम माथात किरीट ज्वले ढोलन्त चामर दुइ तुलि ।।

की भाँति चमक रही है, जो गधे पर चढा उंगली दिखा-दिखा कर गरजता हुआ आ रहा है, इसे महोदर कहते है ।। १० ।। जो हाथ मे शक्ति लिए घोड़े पर चढ़ा आगे-पीछे देखता हुआ चला आ रहा है, जिसका सिर शिखर जैसा है, जो साक्षात यम जैसे वज्रवेग से आ रहा है वह राक्षस-पिशाच है । जो क्रोध से प्रलयाग्नि जैसे धधकता, प्रचंड खड़्ग उठाये आ रहा है, हाथी पर सवार जो दोनों आँखे घुमा-घुमाकर देख रहा है वह खर का वेटा मकराक्ष है ।। ११ ।। जो अग्नि जैसे-वर्णवाले रथ पर चढा काले मेघ-खड जैसा दिखाई दे रहा है, इसी को वीरवर नरान्तक कहते हैं, यह प्रचंड राक्षस देव-असुर सबको कँपा देता है । सिंह, शार्दूल, बाघ समेत समूचे पर्वत को उठाये जो राक्षस चला आ रहा है, इन्द्र भी जिसकी चोट नही सह सकता, यह देवान्तक नाम का महाबली निशाचर है ।। १२ ।। धवल वृष पर चढ़ा, तेज त्रिशूल ले, मुक्का बँधा हाथ उठाये जो चला आ रहा है, सूखे पर्वत पर काले मेघ-खंड जैसा-दिखाई देने वाले उसी को त्रिशिरा कहते हैं । जिसे अनेक पुत्र, भृत्यगण और बहुत से ऊँट, घोड़े, हाथी आदि घेरे हुए है, इसे सदंभ नामका वीर कहते हैं, जो जिताम्बर राक्षस का पुत्र है ।। १३ ।। हाथी, सियारिन के वर्ण जैसा पर्वत सदृश आकारवाला इन्द्रधनुष जैसे धनुष को घुमाता हुआ जो आ रहा है, उसे निकुम्भ कहते है । जो हाथ में परिघ लिए दसो दिशाओं में देखता हुआ आता दिखाई देता है, अपने पौरुष से देव-असुर सबको चौंकाने वाला वही निशाचर विकुम्भ कहलाता है ।। १४ ।। जिस पर शरदकाल के पूर्ण चन्द्रमा जैसा छत्र लगा हुआ है, मस्तक पर सूर्य-किरण से किरीट दमक रहा है, दोनों ओर चँवर डुलाया जा रहा है, जिसके दस-मुख अग्नि जैसा उज्वल है, जिसका शरीर विंध्याचल जैसा है, इसे

अगनिर सम यार दशमुख ज्योतिष्कार विन्ध्यगिरि सम यार काय ।
इहाकेसे बोलवय दुर्ज्जन रावण ददा रिपुगण शवदे पलाइ ॥ १५
जय जय रघुनाथ प्रणामो नमाइ माथ तुमि देव दीनदुखहारी ।
भकत जनर यत दुख शोक विनाशन राक्षस कुलर क्षयङ्कारी ॥
निज यश गुणचय प्रकाशिला कृपामय जगतके करिला उद्धार ।
माधव कन्दलि भणे राम बोला सर्व्वजने तेवे सुखे तरिवा संसार ॥ ५३१६

रावणर श्रीराम-लक्ष्मणर सँते युद्ध आरु पराभव

पद

विभीषणे प्रति प्रति चिनाइला प्रत्येक * राघवे बोलन्त किनो चण्ड पुरुषेक
सूर्य्यर सदृश ज्वले तपर प्रभावे * चाहिते नपारि चक्षु ज्योतिये न धावे ५३१७
त्रैलोक्यत सार यत सैन्य रावणर * एको एको वीर येन यम कुबेरर
हाते अस्त्र धारिया युद्धक सवे जाम्पे * माले देवासुरे नर तरतरि काम्पे १८
साजे आसि भैला येवे वीर लङ्केश्वर * श्रीराम लक्ष्मणे हाते लैला धनुशर
रजक हरिषे गावे सन्नाहा चड़ाइला * त्रिपुर दहिते येन महादेव आइला १९
रावणे सैन्यक चाहि बुलिला आश्वास * आमि विद्यमाने कारो नाहि के विनाश
रण चाहि थाका मोर देखाहा प्रभाव * वानरर रुधिरे तर्पिबो चण्डीमाव ५३२०
एहि बुलि राजा शरचाप धरि करे * जाके जाके कपिक मारय घोर शरे
राम सेना बेढ़िया दिलेक अस्त्र जाक * शरे हानि निवारिवे नुछुइलेक ताक ५३२१

ही मेरा बड़ा भाई दुर्जन रावण कहा जाता है। उसकी आवाज पाते ही शत्रुगण डर के मारे भाग जाते हैं ॥ १५ ॥ रघुनाथ तुम्हारी जय हो, जय हो, देव तुम दीनों का दुख हरण करने वाले हो। भक्तजनों के दुख-शोक मिटाने वाले, राक्षस-कुल को क्षय करने वाले हो। जगत को उद्धार करने के लिए हे कृपामय, तुमने अपने यश और गुण आदि प्रकाशित किया है। माधव कन्दली कहते है, सभी लोग 'राम' कहें। तभी सुख-पूर्वक संसार से तर सकोगे ॥ १६ ॥

रावण का श्रीराम-लक्ष्मण के साथ युद्ध और पराभव

विभीषण ने इस प्रकार प्रत्येक का परिचय करवाया, तब रामचन्द्र ने कहा—यह कैसा प्रचड पुरुष है। तप के प्रभाव से यह सूर्य की भाँति जल रहा है। इसकी ज्योति ऐसी है कि इसकी ओर देखा नही जाता ॥ १७ ॥ रावण की सेना त्रिलोक में श्रेष्ठ है; एक-एक वीर यम, कुबेर की भाँति है। हाथ मे अस्त्र लेकर सब युद्ध में कूद पड़े हैं। उन्हें देखकर देव-असुर-नर थर-थर काँपते हैं ॥ १८ ॥ जब वीर लंकेश्वर सज कर आया तो राम-लक्ष्मण ने हाथों में धनुष-बाण उठा लिया। युद्ध करने की उमंग मे उन्होंने कवच चढ़ा लिया, मानो त्रिपुर-दहन हेतु महादेव आ पहुँचे हों ॥१९ ॥ रावण ने सेना की ओर देख आश्वासन देते हुए कहा, हमारे रहते अब किसी का विनाश नही हो सकता। अब संग्राम में मेरा प्रभाव देखते रहो। मैं वानरों के रक्त से माता चंडी का तर्पण करूँगा ॥ २० ॥ यह कहकर राजा हाथ में धनुषबाण ले, प्रचंड बाणों से झुंड के झुंड वानरों को मारने लगा। राम की सेना उसे घेर कर अस्त्र बरसाने लगी, रावण ने बाणों से उन्हें काट डाला, वे उसे स्पर्श नही कर सके ॥ २१ ॥ वह अनवरत

आथाके रावणे शर मारिते लागिल * राघवर सेना यत गिरिसाइ भागिल
आकाशत मेघ येन उरे चण्ड वावे * मत्स्य सव पलाइयेन कुम्भीरर घावे २२
दशग्रीवे मृगक खेदय येन बाघ * नाइस बुलि सुग्रीवे भेटिला तार आग
वल दिया समूलि पर्व्वत गोट तुलि * रावणक लागिया हानिला हुइ बुलि २३
पर्व्वतर बाघ घोङ्ग उफरन्ते याय * पशुसब उफरय नागे यो फोफाइ
रावणक लागि याय बिम्बाद शवदे * देखिया राक्षसगण थाकिला तवधे २४
यमदण्ड सदृश अनेक शत शरे * पर्व्वतक काटिया पेलाइला लङ्केश्वरे
खण्ड-खण्ड हुइया येवे गिरिगैला भागि * दिव्य अस्त्र जुरिलेक सुग्रीवक लागि २५
हा ओरे वानर तोर एतमान गह * रावण राजार आजि प्रहारक सह
एहि बुलि एक बाणे बिन्धिलेक छोहे * सेहि शरे कपिराज परिलन्त मोहे २६
रावणर शेर येवे बिन्धिला शरीरे * केङ्कावन्ते थाकिला सुग्रीव महावीरे
निश्चेष्ट देखिया सबे आपन राजाक * मुख्ये मुख्ये दिला रावणक शरजाक २७
गय ये गवाक्ष अङ्गद ज्योतिमुख * मैन्द्य द्विविद नील मनत आसुख
समूलि उभालि वृक्ष पर्व्वत बरिषे * हानि रावणर पूरिलन्त दशदिशे २८
निःसंशय रणत दुर्व्वार लङ्केश्वर * वज्र सम हानिला अनेक शत शर
रावणर अस्त्रचय येन यमदण्ड * वृक्ष शिखरक करिलेक खण्ड खण्ड २९
बानरर अस्त्र येवे नुछुइलेक ताक * रावणे हानिला असंख्यात शरजाक
अर्द्धचन्द्र बिपाट वेलख कनियाली * निरन्तरे बानरक थैला शालि शालि ३०
गिरिश गिरिश करि धरणीत शुया * सबहि थाकिला परि बिमूर्च्छित हुया
आन यत बीरगण भङ्गाइला रावण * सबेओ पशिला गैया रामत शरण ३१

वाणों की वर्षा करने लगा, जिससे राम की सेना चीखकर ऐसे भागने लगी, जैसे प्रचड-वायु से आकाश मे मेघ उडने लगते हैं, या मगर की चोटों से मछलियाँ भागने लगती है ।। २२ ।। रावण उन्हें इस प्रकार खदेड़ने लगा जैसे कि मृग को बाघ खदेड़ता है । 'ठहर जा', कहकर सुग्रीव ने उसका सामना कर रोका । उन्होने अपनी शक्ति लगाकर एक समूचा पर्वत उठा लिया, और 'हुह' कहकर रावण की ओर फेंका ।। २३ ।। उस पर्वत पर के बाघ, शार्दूल, उछल पड़े । पशु तो उछल कर फिक गये ही, नाग भी फुंकारने लगे । वे रावण की ओर विम्बानाद करते हुए टूट पड़े । यह देख राक्षस-गण स्तब्ध रह गये ।। २४ ।। जब पर्वत गिरकर टुकड़े-टुकड़े हो गया तो रावण ने सुग्रीव को लक्ष्य कर दिव्यास्त्र का संधान किया ।। २५ ।। (रावण कहने लगा) अरे बानर, तेरा इतना साहस ! आज राजा रावण का प्रहार सह ले तो सही, यह कहकर उसने निर्मम भाव से, एक वाण से, सुग्रीव को वेध डाला । उस वाण से मोहित होकर कपिराज गिर पड़े ।। २६ ।। जब रावण के वाण ने सुग्रीव के शरीर को वेध डाला तब महावीर सुग्रीव कराहने लगे । अपने राजा को निश्चेष्ट पड़े देखकर मुख्य-मुख्य वीर रावण पर वाणों की वर्षा करने लगे ।। २७ ।। गय, गवाक्ष, अंगद, ज्योतिमुख, मैन्द्य, द्विविद, नील आदि मन में बड़े दुखी हो, वृक्ष, पर्वत आदि को समूल उखाड़, दसो दिशाओं मे रावण पर प्रहार करने लगे ।। २८ ।। लंकेश्वर युद्ध में निस्संदेह दुर्निवार था; उसने वज्र जैसे कई सौ वाणों से प्रहार किया । रावण के अस्त्र-समूह यमदंड की भाँति थे । उसने उनके द्वारा वृक्षों और पर्वत शिखरों को खड-खंड कर डाला ।। २९ ।। बानरों के अस्त्र उसको स्पर्श नही कर पाये तब रावण ने असंख्य वाणों से उन पर प्रहार किया । अर्द्धचन्द्र, विपाट, वेलख आदि वाणों से उसने निरन्तर वानरों को वेध डाला ।। ३० ।। सब जोरों का शब्द करते हुए धरती पर मूर्च्छित हो गिर पड़े । और जितने वीर थे

रामे देखिलन्त पाचे रावणर जय * आपनार वीर यत मूर्च्छित होवय
धनुवाण साजि यान्त युजिवाक मने * आग बाढ़ि हात योरे वुलिला लक्ष्मणे ३२
शुनियोक ददा हेरा तोमात मेलाओं * आज्ञा करियोक मोक युजिवाक यामों
चिरकाल तोमार दुखर मान सारो * आज्ञा करियोक मोक युजिताक मारो ३३
आपुनि जानाहा ददा मइयेन वीर * शरे हानि रावणक छेदो दश शिर
कीर्त्तिक थैं एरो आजि एहि तिनिलोक * रावणे वधिते ददा आज्ञा दिया मोक ३४
राघवे वोलन्त वाप शुनरे लखाइ * मइ जानो तोक सम वीर केहो नाइ
दशग्रीव अभङ्ग दुर्व्वार वरदत्त * खलमलि लगाइलेक तिनियो लोकत ३५
युद्धत कुशल वर दुर्ज्जन राक्षस * छिद्र चाइ प्रहार करयेन मोस
आपोनाक राखिते ताहार सन्धि चाहा * हेला न करिया वापु युजिवाक याहा ३६
राघवत मेलाया लक्ष्मण चलियान्त * रावणर आगत हनुमन्ते भेण्टिलन्त
शर सब भाङ्गि मूरि एराइया पथत * डेव दि चड़िला गैया ताहार रथत ३७
रावणर आगे परि भावुकि आउस * किछु किछु भावुकिये जनाइला तरास
सम्वुधि वोलय ओरे दुर्ज्जन रावण * वररे से प्रसादे जिनिलि देवगण ३८
तोत हारिलेक यत सुरासुर नागे * विद्याधर गन्धर्व्व ये शवदते भागे
वानरत भय तोर भैल आथान्तर * नाकोटित किलाइ आजि निवो यम घर ३९
तोर मोर समर देखोक देव लोके * प्रथमे प्रहार तइ करि एर मोके
पाचे तोक मइ वाम हाते चर दिवो * शरीरर जीव काढ़ि यमघरे निवो ४०

सभी को रावण ने खदेड़ दिया। वे सब राम की शरण में पहुँचे ॥ ३१ ॥ राम ने देखा कि रावण की विजय हो रही है, अपने पक्ष के सारे वीर मूर्च्छित हो रहे हैं, तव वे धनुपवाण से सजकर लड़ने के लिए चल पडे। लक्ष्मण ने हाथ जोड़कर कहा—॥ ३२ ॥ तात, सुनिये; आपसे निवेदन करता हूँ। रावण से लडने जाने हेतु आप मुझे आज्ञा दीजिये। आपका दुख चिरकाल के लिए मैं मिटा दूँगा। मुझे आज्ञा दीजिये, मैं लड़-कर उसे मार डालूंगा ॥ ३३ ॥ तात, मैं कैसा वीर हूँ आप जानते ही है। मैं वाणों से रावण के दसों सिर काट डालूंगा। आज मैं तीनों लोकों में अपनी कीर्ति रख जाऊँ इसके लिए तात, आप मुझे रावण का वध करने की आज्ञा दीजिये ॥ ३४ ॥ राम ने कहा, वत्स लक्ष्मण, सुनो! मैं जानता हूँ, तेरे जैसा वीर कोई भी नहीं है, परन्तु वर पाकर यह दशानन दुर्निवार और अजेय होकर तीनों लोकों में खलवली मचा रहा है ॥ ३५ ॥ यह दुर्जन राक्षस युद्ध में बड़ा निपुण है। यह अवसर पाकर भैसे के जैसा प्रहार करता है। अपनी रक्षा करते हुए उसे मारने का प्रयास करना। उसकी उपेक्षा न कर तुम युद्ध करने के लिए जाओ ॥ ३६ ॥ राम से आदेश पाकर लक्ष्मण चल पड़े। रावण के सामने जाकर हनुमान ने उसका सामना किया। रावण के सारे वाणों को तोड़-तोड़, चूर-चूर कर मार्ग पर विखेर, हनुमान कूद कर उसके रथ पर चढ़ गये ॥ ३७ ॥ रावण के सम्मुख जाकर उसे डाँटने लगे। उनकी डाँट से रावण कुछ त्रस्त-सा हो उठा। हनुमान ने रावण को सम्वोधित करते हुए कहा—अरे दुर्जन रावण; तू वर के प्रभाव से ही देवगणों को जीत सका है ॥ ३८ ॥ सुर-असुर, नाग, सभी तुझसे हार गये, विद्याधर, गंधर्व तेरे शब्द सुनते ही भाग जाते हैं। वानरों से तेरे सर्वनाश का भय आ पहुँचा है। तेरे नाक पर मुक्का मारकर मैं तुझे यमलोक भेज दूँगा ॥ ३९ ॥ अव देवगण तेरा-मेरा संग्राम देखें। पहले तू ही मुझ पर प्रहार कर दिखा। इसके पश्चात् मैं तुझे वायें हाथ से थप्पड़ मारूँगा और शरीर से प्राण निकाल कर यमलोक भेज दूँगा ॥ ५३४० ॥ रावण वोला—तू और कितना वढ़-चढ़ कर वातें करता है? पहले तू मुझ पर प्रहार कर

रावणे बोलय कत बिकर्यस आर * प्रथमते मोक तइ करियो प्रहार
पाचे मोक केन मते चवर मारिबि * मोहोर प्रहारे तइ यमघरे याइबि ४१
मारुति बोलय करि आछोहो प्रहार * अक्षकुमारक पूर्ब्बे करिछो संहार
पुत्रशोके तोहोर हृदये दिलो शाल * पाचे तोक मारो आगे मोक चोट घाल ४२
क्रोधिलेक रावण कठोर शुनि वाणी * हृदयत चवरेक बैसाइलेक टानि
क्षणेक कम्पिया गैला कपि महावीर * साहाष्टम हुया थिर करिला शरीर ४३
वज्र सम चवर बैसाइला हनुमन्ते * फुरि फुरि लङ्कानाथे थाकिला कम्पन्ते
हाञ्चुटि घामिला राजा देखे तमोमय * भूमिकम्प यान्ते येने पर्ब्बत कम्पय ४४
हनुमन्ते कम्पाइलन्त त्रैलोक्य रावण * देव मुनि सिद्ध सब गन्धर्ब्ब चरण
आकाशत थाकि रिङ्ग दिला कौतूहले * हासन्त नाचन्त नृत्य करन्त सकले ४५
कतो बेलि लङ्कानाथे पाइलन्त चेतन * मारुतिक बुलिलन्त प्रशंसा बचन
साधु साधु बायुसुत बर यश पाइलि * मइ हेन बीरक एक चवरे कम्पाइलि ४६
मारुति बोलन्त अरे मइ केने भाल * मोहोर चवरे तोर ना भाङ्गिल गाल
आमार बीरत्व सबे आछो धिक धिक * मोहोर चवरे बेटा तइ जिलि किक ४७
उपालम्भ एरि मोक आरका प्रहार * मुठिर प्रहारे तोक पेचो यम द्वार
तोर मोर समर देखन्तो देव लोके * तेहे प्रशंसन्ते पाचे तोहोके बा मोके ४८
खर्ब्ब बोले रावणर मनत अतुष्टि * निर्घात शवदे हृदयत हाने मुष्ठि
दारुण प्रहारे कपि भैलन्त बिह्वल * ढलिया परिला येन पर्ब्बत सचचल ४९
हनुमन्त अचेतने परिबार देखि * नील बानरक धाइला ताहाङ्क उपेक्षि
शर वृष्टि करे येन मेघे ढाले जल * अर्द्धे अर्द्धे दश दिशे जुरिला सफल ५०

क्योंकि इसके पश्चात् मुझे तू थप्पड़ कैसे मार सकेगा, मेरे प्रहार से ही तू यमलोक चला जायेगा ।। ५३४१ ।। हनुमान बोले—मैं तो तुझ पर प्रहार कर ही रहा हूँ, पहले ही मैं अक्षकुमार का संहार कर तेरे हृदय में पुत्र-शोक का काँटा चुभो दिया है । पहले तू मुझ पर प्रहार कर, तब मैं तुझे मारूँगा ।। ४२ ।। हनुमान की कठोर वाणी सुनकर रावण क्रोधित हो उठा और उनकी छाती पर जोर का थप्पड़ मारा । महावीर कपि क्षणभर कांप गये, परन्तु तत्क्षण अपने शरीर को संभाल कर खड़े हो गये ।। ४३ ।। हनुमान ने उसे वज्र जैसी थप्पड़ मारी, जिससे रावण को चक्कर आ गया, वह काँपने लगा । उसे पसीना आ गया और उसकी आँखों के सामने अंधेरा छा गया । भूकंप में जैसे पर्वत काँपने लगते है, वह वैसे ही काँपने लगा ।। ४४ ।। पराक्रमी रावण को हनुमान ने कँपा डाला, यह देख, देव, मुनि, सिद्ध, गन्धर्व, चारण आदि आकाश मे रहकर उल्लास-ध्वनि करते हुए हँसने, गाने, नाचने लगे ।। ४५ ।। कुछ क्षण में लंकानाथ की चेतना लौटी, वह मारुति की प्रशंसा करता हुआ कहने लगा—वायुसुत, तू धन्य है, मेरे जैसे वीर को एक थप्पड़ से कँपाकर तूने बड़ा यश प्राप्त कर लिया ।। ४६ ।। मारुति बोले, अरे, मैं अच्छा कैसे हुआ कि मेरी थप्पड़ से तेरा गाल फट नही गया । मेरी वीरता को धिक्कार है; अरे, तू मेरी थप्पड़ की चोटों से जीवित कैसे रह गया ? ।। ४७ ।। अब उलाहना देना छोड़ तू मुझे पुनः प्रहार कर, मैं अपने मुक्के की चोट से इस बार तुझे यमालय भेज दूंगा । तेरा-मेरा सग्राम देवगण देख रहे है, अब वे ही तेरी या मेरी प्रशंसा करें ।। ४८ ।। हनुमान के कठोर वचनों से रावण के मन में क्रोध आ गया । उसने उनकी छाती पर मुक्का मारा जिससे वज्रपात का सा शब्द हुआ । दारुण प्रहार से कपि विह्वल हो उठे और चलायमान पर्वत की भाँति गिर पड़े ।। ४९ ।। हनुमान को अचेत होकर गिरते देख रावण उनकी उपेक्षा करता हुआ

नील सेनापतिक पीड़िला येवे शरे * रावणाक हानिलेक गिरिर शिखरे
आति वर वेगे आसे दशग्रीवे जानि * खण्ड खण्ड करिला अनेक शर हानि ५१
कतो वेलि हनुमन्ते पाइलन्त चेतन * नुवुजि थाकिला रङ्ग चाहिवाक मन
राव दिया वोलन्त रावण मन्द कर्म्म * मोक एरि आनक युजस कोन धर्म्म ५२
आन काण करि राजा शुनि नुशुनिल * इहाक प्रहारे प्राण याइवाक गुणिल
सेनापति समे रण करि वार छल * मारुतिक करिवाक चाहन्त निकाल ५३
वृक्ष वरषिया नीले दशो दिशे चाइला * असंख्यात शर हानि काटिया पेलाइला
तरु चूर्ण भैला देखि क्रोधे ज्वलि गैला * ह्रस्व देहा करि तार ध्वजत परिला ५४
इमाथार परा कपि सिमाथाक याइ * कुरि खान गालक माह्निला चवराइ
मन पवनर वेगे शीघ्रे कपि हाठि * खने रथे ध्वजे खनो मुण्डे मारे लाथि ५५
रावण नृपति शर करिते नपावे * विस्मये थाकिला राजा विह्वल स्वभावे
अगनिर अस्त्रक जुरिला लङ्केश्वर * डाक दिया वोले शुना मायावी वानर ५६
आपुन राखिते मोर यत आछे माया * एहि अस्त्रगोटे तोर परिवेक काया
मन्त्रक पड़िया शर हानिला रावणे * नीलर हियात गैया परिला सन्धाने ५७
वापखन प्रसादे आपन तेजवले * प्राणे नमरिया चलि परिल सच्चले
नीलक पारिया वीर लक्ष्मणक धाइल * मेघर गर्ज्जने रथ समीप चपाइल ५८
लक्ष्मण वोलन्त ओरे मायावी रावण * वानरक एरि या आमाक देह रण
प्रचण्ड वचन शुनि धनुर टङ्कार * राम हेन जानि मने क्रोध भैला तार ५९

नील वानर पर धावा किया। मेघ से जैसे जल की वर्षा हो, वैसे ही वाणों की वर्षा से उसने ऊपर, नीचे सभी ओर व्याप्त कर दिया ॥ ५० ॥ जब उसने सेनापति नील को वाणो से पीड़ित कर डाला तो नील ने एक गिरि-शिखर से रावण पर प्रहार किया। *गिरि-शिखर को वड़े वेग से आते देखकर दशानन ने अनेक वाणों की वर्षा द्वारा उसे खंड-खंड कर डाला* ॥ ५१ ॥ कुछ समय पश्चात् हनुमान की चेतना लौटी और वहाँ रंग देखने की इच्छा से चुपचाप पड़े रहे। इसके पश्चात् पुकार कर कहा, अरे मन्द कर्म करनेवाला रावण, तू मुझे छोड़ कर दूसरे से लड़ने लगा है, यह तेरा कैसा कर्म है ? ॥ ५२ ॥ रावण ने हनुमान की वातें सुनी-अनसुनी कर दी और विचार किया कि इसे प्रहार कर मार डालूँ। वह सेनापति नील से लड़ने का छल करने लगा और मारुति को रणक्षेत्र से निकाल देना या अधिक पीड़ा देना चाहा ॥ ५३ ॥ नील ने वृक्षों की वर्षा से दसों दिशाओं को व्याप्त कर डाला। रावण ने असंख्य वाणों के प्रहार से उन्हें काट डाला। वृक्षों को चूर-चूर हुआ देख, नील को वड़ा क्रोध आया। वह अपने शरीर को लघु वनाकर रावण की ध्वजा पर कूद पड़ा ॥ ५४ ॥ कपि ने इधर से उधर जाकर थप्पड़ों की मार से रावण के वीसो गालों को क्षत-विक्षत कर डाला। मन और पवन जैसे वेग से चलकर कपि कभी रथ को, कभी ध्वजा को तो कभी रावण के सिर को लातों से मारने लगा ॥ ५५ ॥ राजा रावण उस पर वाणों से आघात नहीं कर पाता था, इससे वह विमूढ़-सा हो गया। लंकेश्वर ने आग्नेयास्त्र का संधान किया, और पुकार कर कहा—अरे मायावी वानर, सुन ! ॥ ५६ ॥ अपनी रक्षा के निमित्त मेरी असंख्य मायाएँ हैं। मेरे इस अस्त्र के आघात से अभी तेरी मृत्यु हो जायेगी। रावण ने मंत्र पढ़कर वाण छोड़ा। वह जाकर नील की छाती पर लगा ॥ ५७ ॥ परन्तु अपने पिता अग्नि की कृपा से और अपने तेजवल से नील के प्राण नहीं गये, वह मूर्छित होकर गिर पड़ा। नील को गिराकर रावण वीर लक्ष्मण पर चढ दौड़ा, मेघों जैसा गरजता हुआ अपने रथ को उनके समीप ले आया ॥ ५८ ॥ लक्ष्मण वोले—अरे मायावी रावण,

कि मोर आनन्द राम तोक भेट पाइलो * खानितेक रह आजि यमक पठाइलो
लक्ष्मणे बोलन्त ओरे रावण दन्दुर * निष्फल रणर माजे गर्ज्जस असुर ६०
हेर देख आछो हाते धनु शर धरि * बिकथना एरि रणदेह झाण्ट करि
एतेक बचन शुनि नृपति रावण * लक्ष्मणक हानिल सनाइल सात वाण ६१
शर बहि आसन्ते सुमित्रे भेट पाइल * आपुनार शरे ताक काटिया पेलाइल
लक्ष्मणर शरे सातो वाणक छेदिल * आथाके रावणे शर मारिते लागिल ६२
निसन्धि करिया शर आसे वायु बेगे * सूर्य्यक ढाकिला येन श्रावणर मेघे
रावणर शरे देखे छानिला गगन * लक्ष्मणर शरे ताक करिलन्त छन्न ६३
आकाशक भेदिया शरर ज्योतिष्कार * सूर्य्यर किरणे येन फेरिला आन्धार
दशपाट शर तूणहन्ते बाछि लैला * आकर्ण पूरिया ताक हानिया पठाइला ६४
पिठित बजाइल शर परि हृदयत * मूर्च्छा याइ दशानन परिला रथत
चेतन लमिया क्रोधिलेक येनयम * कुरि गोटा शर प्रहारिला सर्प सम ६५
सन्धाने परिला लक्ष्मणर हृदयत * तमोमय देखिला लक्ष्मण भगवन्त
जाज्ज्वल्य समान क्रोधि सुमित्रा कुमार * धनुधरि षाठि शर करिला प्रहार ६६
हृदयत परि शर पिठित वजाइल * शर चोटे दशग्रीव द्विगुणे किटाइल
चतुर्द्दिके लक्ष्मणक दिला शर जाक * बानर आन्धारे ने देखिय आपोनाक ६७
हेन देखि लक्ष्मणे हानिला शरचय * अस्त्रचय काटिया गुचाइला तमोमय
दुयो बीरे वेगे शत प्रहार करय * शरे शरे खाञ्चिया चौमिति तमोमय ६८

वानरो को छोड़कर मुझसे संग्राम कर। लक्ष्मण के प्रचंड वचन और धनुष का टंकार सुनकर उन्हें राम ही जानकर रावण के मन में क्रोध हुआ ॥ ५९ ॥ वह बोला अरे, राम, तुझसे आज मिलकर मुझे कितना आनन्द हो रहा है, तू क्षण भर ठहर, अभी तुझे यमालय भेज रहा हूँ। लक्ष्मण बोले—अरे दुष्ट रावण, तू युद्ध में निष्फल गर्जन कर रहा है ॥ ६० ॥ देख, मैं हाथ में धनुषवाण लेकर खड़ा हूं। तिरस्कृत बातें कहना छोड़ शीघ्र मुझसे संग्राम कर। यह वचन सुनकर राजा रावण ने लक्ष्मण पर सात तेज वाण मारे ॥ ६१ ॥ सुमित्रानन्दन ने वाणो के आ पहुँचते ही अपने वाणों से उन्हें काट गिराया। इस प्रकार लक्ष्मण ने जव सातों वाणों को काट डाला तो रावण उन पर अबिराम वाण छोड़ने लगा ॥ ६२ ॥ सभी ओर से वे वाण वायु वेग से आने लगे। लगा, मानो आवाज से मेघो ने सूरज को ढँक लिया है। रावण के वाणों ने आकाश को छा लिया देख, लक्ष्मण ने अपने वाणों से उन्हें काट कर छिन्न-भिन्न कर डाला ॥ ६३ ॥ लक्ष्मण के वाण आकाश को भेदकर चमकने लगे, मानों सूर्य के किरणों ने अंधकार को भगा दिया हो। उन्होंने अपने तूण से दस वाण चुनकर निकाल लिए और उन्हें आकर्ण धनुष पर चढ़ाकर प्रहार किया ॥ ६४ ॥ वे वाण रावण की छाती में से होकर पीठ भेदकर निकल गये। और वह मूच्छित होकर रथ पर गिर पड़ा। चेतना लौटने पर वह यम के समान क्रोधित हो उठा और सर्प जैसे बीस वाणों से प्रहार किया ॥ ६५ ॥ वे वाण लक्ष्मण के हृदय पर लगे और भगवन्त लक्ष्मण के सामने अन्धकार छा गया। तब सुमित्राकुमार ने अग्नि की भाँति क्रुद्ध होकर धनुष उठाकर साठ वाणो से प्रहार किया ॥ ६६ ॥ वे वाण रावण की छाती भेद कर पीठ की ओर से निकल गये। उन वाणों के प्रहार से रावण और अधिक क्रोधित हो उठा। उसने लक्ष्मण के चारों ओर वाणों की झड़ी लगा दी। जिससे ऐसा अन्धकार छा गया कि वानरों को उस अन्धकार में अपने को भी दिखाई नही पड़ता था ॥ ६७ ॥ यह देख लक्ष्मण ने अनेक वाण छोड़े और रावण के उन अस्त्र-शस्त्रों को काट कर अन्धकार को मिटा डाला।

दुयो दुइर शर काटि गुचाइल आन्धार * रविर किरण आसि भैला पयोसार
प्रसन्न देखिया शर हाने आसरिश * जल स्थल आकाश पूरिला दशोदिश ६९
मेदिनी मण्डले दुयो बीर खरतर * दुइहानो शरीर आति शरे जराजर
दुइ हानो शरीर हन्ते वाह्य रुधिर * दुई पर्ब्बतर येन वहे गेरु नीर ७०
लक्ष लक्ष कोटि कोटि असख्य प्रमाण * दुइ हान धनुर हन्ते निकलय बाण
दुइ खान धनु देखि मण्डल आकार * वांश बाण फुटे येन शरर प्रहार ७१
दुयो वीर सम बले प्रहारय शर * निसन्धि करिया फुटि गैला कलेवर
आर कुश कण्टक दिवार सन्धि नाइ * बिपरीत देखि सर्व्वजने आछे चाइ ७२
तत्तुल्य समान दुयो बीर बलीयार * आकाशर शर काटि गुचाइला आन्धार
पुनरपि दुयो वीर शर प्रहारय * बाणे निसन्धिया आकाशत तमोमय ७३
विना निशा बिना मेघे घोर अन्धकार * वायु नवहन्त नाहि रबिर सञ्चार
पाखि समे शर दुइरो शरीरत पशे * मर्म्मस्थान भेदिया पाताल पुर पशे ७४
अस्थि चर्म्म मांस को विन्धिला दुइ शरे * तथापि तो दुयो बीर कटाक्ष न करे
अजय अभङ्ग दुयो करन्त संग्राम * त्रैलोक्यत सार दुयो बीरे अनुपाम ७५
सिंह हेन जाम्पन्त रणत नकम्पन्त * अबहिते युजन्त छिद्रक न पावन्त
आग बाढ़ि यान्त पाच लागि न पलान्त * तेलीयार जान्त येन चोवावन्त दान्त ७६
दुर्ज्जय रावण दशरथर कुमार * दुयो बीरे युजे तिनि त्रैलोक्यते सार
लक्ष्मणे हानिला असंख्यात शरचय * अस्त्र सब काटिया गुचाइला तमोमय ७७

दोनों वीर वेग से शत-शत प्रहार करते थे। उनके वाण एक दूसरे से मिलकर चारों ओर अन्धकार कर डाल रहे थे ॥ ६८ ॥ दोनों ने एक दूसरे के वाणों को काट कर अन्धकार मिटा दिया। रवि की किरणें पुनः धरती पर आने लगी। एक दूसरे को प्रसन्न देखकर अनवरत वाणों से प्रहार करने लगे। उससे आकाश, जल, स्थल, दसो दिशाएँ परिपूरित हो उठी ॥ ६९ ॥ इस भू-मंडल पर दोनों ही वीर वड़े प्रवल थे। परन्तु वाणों के प्रहार से दोनों के शरीर जर्जर हो उठे। दोनों के शरीर से रक्त ऐसा वहने लगा मानों दो गेरु के पर्वत पर से दो सोते बह रहे हों ॥ ७० ॥ दोनों के धनुषों से लाखों, करोड़ो की सख्या में वाण निकलने लगे। दोनों के धनुष मंडलाकार दिखाई दे रहे थे, शरों के प्रहार से ऐसी ध्वनि होती थी, मानो वाँस फूट रहे हों ॥ ७१ ॥ दोनों वीर समान शक्ति से शरों का प्रहार कर रहे थे। वे वाण शरीर को वेधते हुए प्रवेश कर जाते थे। शरीर में तिनके-सूई भर का स्थान नही रह गया था। अनहोनी स्थिति देखकर सभी लोग देखते रह गये ॥ ७२ ॥ दोनों वीर समान वलवान थे। उन्होंने आकाश में एक दूसरे के वाण काटकर अन्धकार मिटा दिया। पुनः दोनों वीर एक-दूसरे पर प्रहार करने लगे। पुनः वाणों से भर जाने के कारण आकाश अन्धकारमय हो गया ॥ ७३ ॥ रात के बिना या मेघों के बिना ही आकाश में घोर अन्धकार छा गया। वायु का वहना, सूर्य की किरणों का प्रवेश रुक गया। पंखों सहित वाण दोनों के शरीर में प्रवेश कर जाते थे और मर्मस्थान में प्रविष्ट होकर पाताल में घुस जाते ॥ ७४ ॥ वाणों ने अस्थि-चर्म-मांस को भी वेध डाला, तथापि उन वीरों ने कोई भ्रुक्षेप नही किया। अजेय, अपराजित दोनों वीर संग्राम कर रहे थे, दोनों वीर त्रिलोक में श्रेष्ठ और अनुपम थे ॥ ७५ ॥ वे सिंह के समान कूदते थे, युद्ध करने में कंपित नहीं होते थे, अनवरत संग्राम करते थे, कहीं किसी की त्रुटि या छिद्र नही पाते थे। वे आगे बढ़ जाते थे, पीछे भागते न थे। तेली के कोल्हू की भाँति दाँत पीसते थे ॥ ७६ ॥ रावण और दशरथ के पुत्र दोनों दुर्जय थे। तीनों लोको में श्रेष्ठ वे दोनों वीर संग्राम

आकाशत देवगण चाहिया आछन्त * रामर कनिष्ठ बीर समरे नाचन्त
अर्द्धचन्द्र हानिला बिपाट बसुदन्त * पर्ब्बतक बेढ़ियेन देवे बरिषन्त ७८
दशग्रीब कम्पि गैला शरर प्रतापे * ब्रह्मार दिवार अस्त्र जुरिलेक चापे
बलदिया हानिलेक शीघ्रे बहि याय * शर सब उराइला मेघक येन बाय ७९
लक्ष्मणर कपालत फुटिला सन्धान * बिमूर्च्छित भैला बीर हरिला चेतन
क्षणेके चेतन पाइला सुत सुमित्रार * रावणे गुणय किनो बीर बलीयार ८०
लक्ष्मणे हानिला ताक एगोटा नराचे * हृदयत फुटिया बजाइल पिठि पाचे
दशग्रीबे कम्पय लक्ष्मण हेन जानि * धनुखान छेदिलन्त अर्द्धचन्द्र हानि ८१
आकर्ण पूरिया धनु आजुरिया टाने * आरकायो बिन्धिला सनाइत शतबाणे
बिपरीत करिया रुधिर बहे गावे * घामि गैला लङ्कानाथे चेतन न पावे ८२
बिह्वल हैलेक राजा ढलोपलो करे * क्षणेके चेतन पाइला ब्रह्मादत्त बरे
मने मने राजा बोले किनो अस दृष्ट * त्रैलोक्य अजय इटो रामर कनिष्ठ ८३
आन लगे युजो येवे मोर हुइवे उलि * एहि बुलि ब्रह्मार शकति लैला तुलि
बलदिया हानिलेक लक्ष्मणक लागि * आकाशत देवगण पलाइलेक भागि ८४
आकर्ण पूरिया धनु आजुरिया टाने * शकतिक हानिलेक असंख्यात बाणे
आकाशत उठे येन बिधूम अगनि * देखिलन्त लक्ष्मणे शकति आसे छानि ८५
शकतित परि शर गैलेक उफरि * चमत्कारे लक्ष्मण थाकिला हियातरि
हृदयत परि चिते परिलेक ढलि * लक्ष्मणर शरीरक शक्ति थैला शालि ८६

कर रहे थे। लक्ष्मण ने असंख्य वाणों का प्रहार किया और रावण के सभी अस्त्रों को काटकर अन्धकार दूर कर दिया ।। ७७ ।। आकाश में देवगण देख रहे थे कि राम के छोटे भाई लक्ष्मण समर में नाच-से रहे है। उन्होंने रावण पर अर्द्धचन्द्र विपाट, वसुदन्त आदि अस्त्र ऐसे प्रहार किये मानो पर्वत को घेर कर देवगण वर्षा कर रहे हों ।। ७८ ।। वाणों के प्रताप से दशानन काँप उठा और उसने ब्रह्मा का दिया हुआ अस्त्र धनुप पर चढ़ाया और बल लगाकर छोड़ा। वह अस्त्र वेग से चला और लक्ष्मण के छोड़े वाणों को वैसे ही उड़ा दिया जैसे बादल को पवन उड़ा देता है ।। ७९ ।। वह अस्त्र लक्ष्मण के सिर से जा लगा, वीर लक्ष्मण मूर्च्छित हो गये, उनकी चेतना चली गयी। क्षण भर पश्चात् सुमित्रा-सुत लक्ष्मण सचेत हुए। रावण सोचने लगा, यह कितना प्रचंड वीर वलवान है ।। ८० ।। लक्ष्मण ने उस पर एक नाराच से प्रहार किया जो उसकी छाती में से होकर पीठ से निकल आया। रावण को काँपता हुआ जानकर लक्ष्मण ने अर्द्धचन्द्र वाण मारकर उसका धनुष काट डाला ।। ८१ ।। उन्होंने धनुष को कान तक खींचकर सौ वाणों से उसे पुनः बेध डाला। रावण संकट में पड़ गया। उसके शरीर से रक्त वहने लगा। लंकानाथ रावण पसीना-पसीना हो गया, उसकी चेतना लौटती न थी ।। ८२ ।। राजा रावण विह्वल होकर ढलमलाने लगा। कुछ क्षण पश्चात् ब्रह्मा के दिये वर से उसकी चेतना आयी। राजा रावण मन ही मन कहने लगा, यह कैसा अदृष्ट पुरुष है, राम का यह छोटा भाई तीनों लोकों में अजेय है ।। ८३ ।। इसके संग लड़ता रहूँ तो मेरा नाश हो जायेगा; यह सोचकर रावण ने ब्रह्मा की शक्ति उठा ली और उसे बल लगाकर लक्ष्मण पर प्रहार किया, यह देख आकाश के देवगण डर कर भाग चले ।। ८४ ।। लक्ष्मण धनुष को कान तक खींचकर असंख्य वाणों से उस शक्ति पर प्रहार करने लगे। लक्ष्मण ने देखा, आकाश में धूमहीन अग्नि की भाँति वह शक्ति बड़े वेग से आ रही है ।। ८५ ।। उस शक्ति से लगकर उनके सारे वाण छिटककर दूर जा गिरे; लक्ष्मण चमत्कृत होकर अपनी छाती को थामे रह गये। वह शक्ति उनकी

यिहेतु आपुनि महाब्रह्म शुद्ध सत * लक्ष्मणे आपुनि चिन्ति थाकिला मनत
नासात पवन नाहि गमनागमन * मृतक शरीर येन हरिला चेतन ८७
हस्तीक मारिया येन सिंहर आक्रांति * रथर नामिया राजा आनिवाक यान्ति
कुरिहाते धरि दशग्रीवे दङ्गा दिला * नारायण तेज अणुमात्र नलरिला ८८
रावणे वोलय किनो मुनिप आसुख * उपारिया निवपारो मेरु मन्दरक
महादेवे कैलासके तुलि आलगाइलो * राघवर कनिष्ठर ओचर न पाइलो ८९
हनुमन्ते गुणिलन्त मिलय अकाज * लक्ष्मणक निव लोजे लङ्कारये माज
हृदयत मारिलन्त वज्र सम मुष्टि * ससाङ्गे चलिला राजा प्राण याइ फुटि ९०
हनुमन्ते कम्पाइलन्त त्रैलोक्य रावणे * सिद्ध मुनि विद्याधर गन्धर्व्व चारणे
आकाशत देवगणे करे जय जय * मारुतिर वीरत्वक सबे प्रशंसय ९१
दुइ हाते तुलिया कान्धत करि लै * शीघ्र वेगे आण्टाइला रामर पाशे गै
लक्ष्मणर हियात शकति हुसकिल * पुनरपि रावणर टोणत पशिल ९२
सुमित्रानन्दन नारायण महाहरि * शरीर करिला सुस्थ ब्रह्मज्ञान
रावणो जिलेक पाचे वरर प्रसादे * क्रोधत ज्वलिला वानरर सिंह नादे ९३
आथ वेथ करिया आपुन रथे गैल * धनुशर धरिया युद्धर साज भैल
रामे देखिलन्त राक्षसर कुलि मालि * वर वर वीरक रावणे थैला शालि ९४
लक्ष्मण भयाइ वरकण्टे एराइलन्त * आपुनि साजिया रावणक धारे यान्त
राम येवे समर करिवे चलियान्त * कर जोड़े हनुमन्त वावय वुलिलन्त ९५

छाती पर आ गिरी, लक्ष्मण ढल कर गिर पडे, उनके शरीर को शक्ति ने वेध डाला ।। ८६ ।। लक्ष्मण स्वय शुद्ध सत्व परब्रह्म थे, अत: वे आत्मचिन्तन करते हुए मौन पड़े रहे । उनकी नाक से पवन का आना-जाना रुक गया; मृतक की भाँति उनकी चेतना चली गयी ।। ८७ ।। हाथी को मारकर जैसे सिंह आक्रामक हो उठता है, उसी प्रकार राजा रावण रथ से उतर कर लक्ष्मण को उठा लाने के लिए चला । उसने अपनी बीसों भुजाओ से उन्हें उठाना चाहा पर नारायण के तेजरूपी लक्ष्मण उससे कण भर भी उठ नही पाये ।। ८८ ।। रावण कहने लगा, यह कैसा प्रचंड पौरुषवाला व्यक्ति है, मैं तो मेरु-मंदराचल को भी उखाड़ कर ले जा सकता हूँ । महादेव समेत मैंने कैलास को भी उठा लिया था, परन्तु राम के इस छोटे भाई के समकक्ष मैं नही हो पाया ।। ८९ ।। हनुमान ने सोचा, यह लक्ष्मण को लंका ले जाना चाहता है, यह तो बड़ा अनिष्ट हुआ । उन्होंने रावण की छाती पर वज्र जैसा मुक्का मारा । राजा के प्राण उस प्रहार से सम्पूर्णरूप से निकल जाने लगे ।। ९० ।। त्रैलोक्य-विजयी रावण को हनुमान ने कँपा डाला, यह देख, सिद्ध, मुनि, विद्याधर, चारण, गंधर्व, तथा देवगण आकाश मे जय-जयनाद और मारुति की वीरता की प्रशंसा करने लगे ।। ९१ ।। हनुमान ने दोनों हाथों से लक्ष्मण को कंधे पर उठा लिया और शीघ्रता से रामचन्द्र के समीप पहुँचे, तब लक्ष्मण की छाती से शक्ति निकल कर पुन: रावण के तूण में प्रविष्ट हो गयी ।। ९२ ।। सुमित्रानन्दन नारायण महाहरि हैं । उन्होने ब्रह्मज्ञान-स्मरण कर अपने शरीर को स्वस्थ कर लिया । रावण भी वर के प्रसाद से जी उठा, वानरों का सिंह-नाद सुनकर क्रोध से वह जल उठा ।। ९३ ।। वह शीघ्रता से अपने रथ पर चढ़ गया और धनुष-वाण ले युद्ध-हेतु प्रस्तुत हुआ । राम ने देखा, राक्षसो के सेवकादि भी युद्ध में आ पहुँचे है; वड़े-वड़े वीरों को भी रावण ने वेध डाला है ।। ९४ ।। भाई लक्ष्मण उससे वड़ी कठिनाई से बच पाये है, तब रामचन्द्र स्वयं सजकर रावण के समीप चले । राम युद्ध करने के लिए चल पड़े हैं, देखकर हनुमान ने हाथ जोड़कर कहा—।। ९५ ।।

आदेश गोहाइ हेरा आरोहियो मोक * पिठित चड़िया रावणक युजियोक
एहि हौक बुलि रामे पिठित चड़िला * रावण बधिते सुमंगल पढ़िला ९६
इन्द्र देवे यान्त येन ऐरावत कन्धे * बिरोचन असुरक मारिते प्रबन्धे
रथत चड़िया आछे वीर लङ्केश्वर * श्रीराम वदित ओरे शुन निशाचर ९७
कि मोर आनन्द आजि तोक भेट पाइबो * स्त्री चोरा तोक आजि यमक पठाइबो
शरण पशस येवे ब्रह्मा देव पाश * जले बुर देस यदि तोर नाहि राख ९८
तोर अनुबल हौक देवासुर नरे * सबाहाङ्के मारिबो अवध्य मोर शरे
मोहोर घरिणी हरि आनिलि बर्बर * काले तोक ग्रासिले अधम निशाचर ९९
शकति बिन्धिलि तइ याहार शरीरे * सबंशे मारिब तोक लखमन बीरे
रामर बचने बीर रावण खङ्गाइल * अनेक तीखाल शर गुणत चड़ाइल ५४००
हनुमन्त बीरक बिन्धिल बरटाने * मारुतिर हृदयत फुटिला सन्धाने
मर्म्मस्थाने बिन्धिलन्त असंख्यात बाणे * बाढ़िते लागिला कपि दशगुण प्राणे ५४०१
एके तो अबध्य आरु राघवर यान * श्रीमन्त शरीर ज्वले मेरुर समान
हनुमन्त बीरक बिन्धिला येवे शरे * क्रोधिलेक राघव न सहे कले बरे २
आवर ताहाक शर करिते नेदिल * अर्द्धचन्द्र हानि रामे धनुक छेदिल
श्रीराम देवक मुनिष नाइ जोर * त्वरिते काटिला रावणर चारि घोंर ३
राघवर हातत अबध्य शर आछे * सारथिक काटि रथ भाङिलन्त पाचे
श्रीराम देवर प्रहार नोहे छोट * तूण बाण धनु काटिलन्त ध्वज गोट ४

हे प्रभु, आप मेरी पीठ पर सवार होकर रावण से संग्राम कीजिए। 'एवमस्तु' कहकर राम हनुमान की पीठ पर सवार हो गये और रावण के वध हेतु मांगलिक वचन पढ़े ।। ९६ ।। ऐसा लगा मानो देवराज इन्द्र ऐरावत के कंधे पर चढकर असुर बिरोचन का वध करने हेतु सजकर प्रयाण कर रहे है। वीर लंकेश्वर रथ पर सवार था, उसे सम्बोधित करते हुए श्रीरामचन्द्र ने कहा—अरे निशाचर, सुन ।। ९७ ।। तेरा सामना कर पाने के कारण आज मुझे कितना आनन्द हो रहा है। अरे, नारी-चोर, तुझे आज मै यमलोक भेज दूंगा। तू यदि ब्रह्मा जी की शरण मे भी जाये, पानी मे डुबकी लगा दे, तब भी तेरी कोई रक्षा कर नही सकता ।। ९८ ।। देव, असुर, नर कोई भी तेरे संग लड़ने हेतु आवे, चाहे वे अवध्य ही क्यो न हों, मै अपने वाणो से उसे मार डालूंगा। बर्बर, तू मेरी गृहिणी को हर कर ले आया है, अधम निशाचर, तुझे काल ने ग्रस लिया है ।।९९।। तूने जिसके शरीर में शक्ति का प्रहार किया है, वह वीर लक्ष्मण तुझे सवंश वध कर डालेगा। राम के वचन से वीर रावण क्रोधित हो उठा और अनेक तेज वाण अपने धनुप की डोरी पर चढ़ा लिए ।। ५४०० ।। उसने हनुमान को वल लगाकर प्रहार किया, वे वाण हनुमान की छाती में जाकर विंध गये। रावण के अनगिनत वाण कपि के मर्मस्थान को वेधने लगे, परन्तु वे दसगुने प्राणवत होकर वढने लगे ।। ५४०१ ।। हनुमान एक तो स्वयं अवध्य थे, दूसरे राघव के वाहन वने हुए थे। उनका ज्योतिष्मान शरीर मेरु जैसा दमकने लगा। जब रावण ने वीर हनुमान को वाणों से वेध डाला, तव रामचन्द्र को असह्य, अपार क्रोध हुआ ।। २ ।। उन्होंने रावण को वाण छोड़ने नही दिया, अर्धचन्द्र वाण से उसका धनुष काट डाला। श्रीरामचन्द्र की वीरता की तुलना नही हो सकती, उन्होंने तत्क्षण रावण के चारो घोड़ों को मार डाला ।। ३ ।। रामचन्द्र के हाथ मे अमोघ वाण थे, उनसे उन्होंने सारथी को मारकर रथ को भी तोड़ डाला। श्रीरामचन्द्र का प्रहार कम प्रचंड न था। उन्होंने रावण के तूण, धनुष-वाण समेत ध्वजा को भी काट गिराया ।। ४ ।। रावण भूमि पर गिरकर बहुत आहत हो

रावण भूमित परिपाइल वर भङ्ग * त्रिदश देवर ताक देखि वर रङ्ग
एके वाणे हानिलन्त रावणाक वुलि * पिठि पाचे वाज भैला हृदयक फुलि ५
विस्मयक पाया वीरे थाकिला तरासि * हात हन्ते अस्त्र तार परिलन्त खसि
सुरगणे चाहिया आछन्त एक दृष्टि * अर्द्धचन्द्र हानि रामे काटिला किरीटि ६
किरीटि परिला खसि हरिला प्रताप * दशग्रीव भैलन्त निर्व्विष येन साप
श्रीहानि रावण मलिन हुइया गैल * प्रचण्ड आदित्य येन तेजहीन भैल ७
राघवे वोलन्त मोर वचन आकल * जीव माने पठाओं लङ्काक लागि चल
जनत थाकिवे मोर रामहेन वीर * प्रयासिला रावणर काटिलन्त शिर ८
साष्टम स्वरूपे गैया हुयो सन्धुक्षण * साजि आस मारि पेयो यमर करण
वैलखिया लङ्केश्वर चपराइला माथ * ससैन्य आरका गैया पशिला लङ्कात ९
रावणाक देखिया निश्रीक मुख भैला * लङ्कापुरी खान कांस परि जिम गैला
रावण राजाक रामे समरे भङ्गाइल * देव मुनि ऋषि गणे आनन्दक पाइल १०
श्रीरामक प्रशंसिला अनेक आनर्ग * वाद्य भङ्ग शवदे पूरिला सप्तस्वर्ग
ब्रह्मादेवे स्तुति करिला विस्तर * पारिजात वरिषिला शिरर उपर ११
यत यत वीरगणे ढालिला रावणे * सवारो काढ़िला शर श्रीराम लक्ष्मणे
गाव सव मजिला अमृत सम हाते * दशगुण तेजवल एराइला आघाते १२
शुना सभासद रामायण कथा सार * कलियुगे आत परे धर्म्म नाहि आर
जानि महासुखे पान करा कर्ण भरि * निरन्तरे नरे डाकि वोला हरि हरि १३

गया। यह देख देवताओं को वडी प्रसन्नता हुई। रामचन्द्र ने एक वाण से रावण पर प्रहार किया जो उसके हृदय को वेधता हुआ पीठ की ओर निकल गया ॥ ५ ॥ वीर रावण विस्मित और त्रस्त हो गया। उसके हाथ से अस्त्र गिर पड़ा। देवगण एकटक यह दृश्य देख रहे थे। रामचन्द्र ने अर्द्धचन्द्र वाण से उसका किरीट काट डाला ॥ ६ ॥ किरीट गिर जाने पर रावण का प्रताप नष्ट हो गया। वह विषहीन सांप जैसा हो गया। श्रीहीन होने के कारण रावण मलिन हो गया। मानो प्रचंड आदित्य तेजहीन हो गया हो ॥ ७ ॥ रामचन्द्र ने कहा—रावण, तू मेरा वचन मान ले; अभी तेरा जीवन छोड़ देता हूँ, तू लंका चला जा। राम कैसा वीर है, वह प्रयास करता तो रावण का सिर काट लेता। यह वात जन-समाज में प्रचारित रहेगी ॥ ८ ॥ पुनः सचेत होकर, सजकर आ जाना, तव तुझे मारकर यमलोक भेज दूँगा। लज्जा से विह्वल होकर रावण ने अपना सिर पीट लिया और सेना सहित लंका मे चला गया ॥ ९ ॥ लंका के निवासियो ने जव रावण को देखा तो उनका मुख श्रीहीन हो गया। समूची लंकापुरी में सन्नाटा छा गया। राजा रावण को रामचन्द्र ने संग्राम में पराजित कर दिया, इससे देव, मुनि, ऋषियों को वड़ा आनन्द हुआ। वे रामचन्द्र की अनवरत प्रशंसा करने लगे ॥ १० ॥ वाद्यों की ध्वनि से सातों स्वर्ग परिपूरित हो गये। ब्रह्मा जी ने रामचन्द्र की अनेक प्रकार से स्तुति की, और उनके मस्तक पर पारिजात के फूल वरसाये ॥ ११ ॥ जिन-जिन वीरों को रावण ने मारा था, राम लक्ष्मण ने उन सभी के वाण निकाले और उनके शरीरों पर अमृत जैसे हाथ सहला दिये। इससे उनके आघात मिट गये, शरीर में दसगुने तेज-वल वढ़ गये ॥ १२ ॥ सभासदगण रामायण कथा सुनो, यही सार है। कलियुग में इससे वढकर और कोई धर्म नहीं है। ऐसा जानकर इसका मन भर कर श्रवण-पान करो। हे लोगों निरन्तर पुकार कर हरि, हरि कहो ॥ १३ ॥

कुम्भकर्णर निद्रा भङ्ग आरु युद्ध यात्रा

दुलड़ी

सिहासने गैया बसिला रावण रणत हताश हुइया।
पुराण काहिनी कहिबे लागिला पात्रक सबे मिलाइया॥
आशेष तपस्या करिलोहो आमि ब्रह्मादेवे दिला बर।
पाचे सम्बुधिया बुलिबे लैलन्त शुन ओरे निशाचर॥ १४
देव मनुष्यत यक्ष दानवत सबाते हुइबि अजय।
निश्चय करिया तोक बुलिलोहो मानुषत हुइबि भय॥
बरर प्रसादे तिनियो जगत थाकिते सुखे नेदिल।
रण्ड भण्ड करि मानुषे भङ्गाइले ब्रह्मार बर मिलिल॥ १५
पात्रगण यत आमार शुनियो आवर आसाज काज।
हेमवन्त गिरि पयाणे चलिलो आमार नभैला लाज॥
नन्दी दुवरीक आमि भेट पाइलो तेन्ते महेशर गण।
बानरर मुवा नन्दीक देखिया शिहरिल घने घन॥ १६
मुख चाइ चाइ भावुकि पारिलो बिगुति करि उखन्दि।
जाज्ज्वल्य समान कोपे ज्वलि गैल मोक सपिलन्त नन्दी॥
हाओरे बेटा दुर्ज्जन रावणा मोक तोर उपहास।
मोहोर सदृश मुख बानराये चिन्तिबे तोर विनाश १७
महन्त पण्डित भैयाइ बिभीषण मोक बुलिलेक हित।
आपद कालत मरण सन्नित ताक देखिलोहो तित॥
भाल भाल बीर त्वरिते पठाइया लङ्का भालमते राखा।
प्रहस्त मोमाइ समरे परिल सबे सचकिते थाका॥ १८

कुंभकर्ण का निद्रा भंग और युद्धयात्रा

युद्ध में हताश होकर रावण सिहासन पर जा बैठा और सभी मंत्रियो को पुरानी कथा सुनाने लगा। हमने अशेष तपस्या की थी, तब ब्रह्मा जी ने हमें वर दिया था। मुझे सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा था, अरे निशाचर, सुन! ॥ १४ ॥ तू देव, मनुष्य, यक्ष-दानव, सबसे अवध्य होगा। मैं निश्चय रूप से बता रहा हूँ, परन्तु मनुष्य से तुझे भय होगा। ब्रह्मा के वर के प्रसाद से तीनों लोकों को हमने सुख से नहीं रहने दिया, परन्तु सब कुछ नष्ट-भ्रष्ट कर अब मनुष्य ने हमें पराजित किया; ब्रह्मा का वर सामने आ गया ॥ १५ ॥ हमारे मंत्रीगण, हमसे और भी जो भयदायक कर्म हुआ है, उसे सुनो। मैं हेमवन्त पर्वत को पार कर आगे बढ़ चला था, मुझे कुछ भी लज्जा न थी। मेरी महेश के गण नन्दी से भेंट हुई। बानर के मुखवाले नन्दी को देखकर मैं बार-बार सिहर उठा ॥ १६ ॥ उसके मुख को देख-देखकर उसकी ओर व्यंग्य करता हुआ परिहास से मैंने ठहाके लगाये। तब नन्दी क्रोध से अग्नि जैसा जल उठा और मुझे अभिशाप दिया, अरे दुर्जन रावण, तू मेरा उपहास कर रहा है? मेरे जैसे मुखवाले बानर ही तेरा विनाश करेंगे ॥ १७ ॥ उत्तम विचार वाले, पंडित भाई विभीषण ने मेरे हितकारी वचन कहे थे, परन्तु मृत्यु के निकट पहुँचकर संकटकाल में वे मुझे कटु लगे। उत्तमोत्तम वीरों को अब शीघ्र युद्धभूमि में भेजकर लंका की उत्तम रूप से रक्षा करो। मामा प्रहस्त युद्ध में मारा गया, अब तुम सब सतर्क रहो ॥ १८ ॥ इन तीनों

इतिन भुवने राम लक्ष्मणक समान नाहि मुनिप ।
शरे हानि मोर अस्थि भेदिलेक शरीरे उधाइ विष ।।
घने घने मोर चेतन हरय वदन मलिन वर्ण ।
रामक युजन्ता आन केहो नाइ जगायोक कुम्भकर्ण ।। १९
छय मास सिटो निश्चेष्ट स्वरूपे आछन्त घुमटि याया ।
ताके जगाइबाक सत्वरे चलाहा भोजन सम्भार लैया ।।
राजार आदेशे कोटि असंख्यात राक्षस गैया आण्टाइल ।
दुवार पंशन्ते कुम्भकरणर नाकर वावे उराइल ।। २०
कतोहो राक्षस दुवार आरत वारर मूठात धरि ।
यिदिकि नाकर वाव नेखेलय पशिला गावकाति करि ।।
पर्व्वत समान पुरुषेक शुति आछे पुलस्तिर नाति ।
ताक जगाइवाक राक्षस सकले दृढ़ करि वान्धे गाति ।। २१
डेका पर्व्वतर समान वाढ़िल अन्न व्यंजनर मिठा ।
मेरुर समान चराव करिला खरिका जहार पिठा ।।
महिष बराह छागल मरिया थैला दौला दौलि करि ।
कोटि असंख्यात डाङ्गर कलस मद्य रुधिरक भरि ।। २२
देवाङ्ग वसन कुम्भकरणर गावत निया चराइल ।
सुगन्ध चन्दन पुष्पर मालाये भूषित आति कराइल ।।
चतुर्द्दिशे बेढ़ि राक्षस सकले रोल करिवाक लैला ।
आछोक जागिव कुम्भकरणर कर्णर पथे न गैला ।। २३
बाढ़य सहस्र राक्षसे मिलिया वढ़िया करय रोल ।
नाना वाद्यभण्ड काणत अटास तुम्बुले बजाय ढोल ।।

लोकों में राम-लक्ष्मण जैसा पौरुषवाला और कोई नहीं है । उसने अपने बाणों से मेरी हड्डियों को वेध डाला है, सारे शरीर में विष फैल गया है । बार-बार मेरी चेतना चली जा रही है, वदन का वर्ण मलिन हो रहा है । राम से लड़ सकनेवाला कोई नही है, इसलिए तुम सभी मिलकर कुंभकर्ण को जगाओ ।। १९ ।। वह छह महीने से निश्चेष्ट रूप से सोया हुआ है । उसे जगाने हेतु भोजन-सभार लेकर शीघ्र ही चलो । राजा रावण के आदेश से करोड़ों राक्षस कुंभकर्ण के समीप पहुँचे । परन्तु कुंभकर्ण के शयनगृह के द्वार पर पहुँचते ही उसकी साँस से निकली वायु से उड़ गये ।। २० ।। कितने ही राक्षसों ने द्वार की ओट से घर की लकड़ी को मुट्ठी से पकड़कर, जिधर उसकी नाक की हवा नही आ रही थी, उधर से कतरा कर घर में प्रवेश किया । पुलस्त का नाती कुंभकर्ण पर्वत के समान पुरुप जैसा सो रहा था । उसे जगाने के लिए राक्षसों ने दृढ़ता से अपनी कमर कस ली ।। २१ ।। अन्न-व्यंजनादि के पकवान ऊँचे पर्वत जैसे ढेर लग गये । खरिका-जहा (एक प्रकार का सुगधित चावल) के 'पीठा' नाम के पकवान मेरु जैसे ऊँचे हो गये । भैंसे, सूकर, बकरे आदि मारकर ऊँची ढेरी बनाकर रखा और करोड़ों की संख्या में मद्य-रक्त से भरे कलस लाकर रख दिये ।। २२ ।। उन सबने कुंभकर्ण के शरीर पर ले जाकर रेशमी वस्त्र रखे और उसे सुगन्धित चन्दन और पुष्पमाला से बहुत ही विभूषित किया । उसे चारों ओर से घेर कर राक्षस-गण कोलाहल करने लगे । परन्तु कुंभकर्ण का जगना तो दूर, वे शब्द उसके कानों में प्रविष्ट भी नही हुए ।। २३ ।। बारह सहस्र राक्षस मिलकर वहाँ प्रचंड कोलाहल करने और प्रचंड नाद करनेवाले नाना प्रकार के नगाड़े, ढोल आदि बजाने लगे ।

अन्तरीक्षे यत चटका उरय मरिया भूपित परे।
कुम्भकर्ण बीर आछोक जागिब अधिके घुमटि चरे ॥ २४
सहस्र संख्यात हस्तीये नादय दुइ दान्त भिरिया गावे।
छाटर बारित घोरा चिहरय गाधवे तेजय रावे ॥
भेरी शिङ्गा शङ्ख मुहुरि निशान तुम्बुले राजे काहाल।
सकले लङ्कात हुलस्थूल लागि काणत दिलेक ताल ॥ २५
आटास पारन्ते कतो राक्षसर गल सब गैला फाटि।
सबाहारे खर उशास बजाइ थाकिला बलत घाटि ॥
कतोहो राक्षस हताश हुइया रावणक जनाइलन्त।
तोमार भ्रातृक जगाइबे नोवारि अधिके घुमटि यान्त ॥ २६
रावणे बोलय सत्वरे चलाहा आछोक आमात सेवा।
येनमते पारा तेमने जगाया तोमात नाहिके वेथा ॥
आथ वेथ करि राक्षस लरिला राजात मेलानि पाया।
कुम्भकरणक जगाइबे लागिया गदा मुद्गर लैया ॥ २७
दश शत लोके हियात चड़िया लाथि बैसाइलेक टानि।
एकोहो नाकत पाञ्च पाञ्च शत कलसे ढालय पानी ॥
गदा मुद्गरे टानिया मारय आरो परिघर बारि।
सेवा करे बुलि घुमटि चरय गम्भीरे बाजे घोङ्घोरि ॥ २८
कतोहो राक्षस सहस्र संख्यात राक्षसेयो शारी हुइया।
शरीरर बले प्रहार करय गदा मुद्गर लैया ॥
दश शत लोके हियात चड़िया खिखिन्द करय वरे।
गाव यान्ते बुलि घुमटि चड़य मुखवाया दान्ततरे ॥ २९

उनका तुमुल नाद गूंज उठा। जिससे अन्तरिक्ष में उड़नेवाले पक्षी भी मरकर भूमि पर गिरने लगे, परन्तु वीर कुमकर्ण का जगना तो दूर, उसे और अधिक निद्रा आने लगी ॥ २४ ॥ कुंभकर्ण के शरीर में दोनों दाँत भिड़ाकर सहस्रों की संख्या में हाथी चिघाड़ने लगे, समीप के उपवनों में घोड़े हिनहिनाने लगे, गधे रेकने लगे, नगाड़े, सींगे, शंख, झाँझ, ढोल आदि का तुमुल नाद गूंजने लगा। लंका भर में उथल-पुथल मच गयी, लोगों के कानों में ताले-से पड़ गये ॥ २५ ॥ चीखने-चिल्लाने के कारण कुछ राक्षसों के गले फट गये। सब अपनी शक्ति लगाकर हार गये और लम्बी सांस लेते हुए हट गये। हताश होकर कितने ही राक्षसों ने रावण को जाकर सूचना दी कि आपके भाई को जगाया नहीं जा सकता। वह तो और अधिक निद्रामग्न होता जा रहा है ॥ २६ ॥ रावण बोला, मेरी सेवा रहने दो, यहाँ से शीघ्र जाकर, जैसे हो सके, उसे जगाओ। अच्छे-बुरे किसी भी उपाय की सोच मत करो। राजा का आदेश पाकर सभी राक्षस शीघ्रता से दौड़ पड़े और गदा, मुद्गर आदि लेकर कुंभकर्ण को जगाने लगे ॥ २७ ॥ एक हजार राक्षस उसकी छाती पर चढ़, जोर से लातों से मारने लगे। नाक के एक-एक छेद में पाँच-पांच सौ घड़े पानी ढालने लगे। गदा, मुद्गर, परिघ आदि से जोर-जोर से पीटने लगे। कुंभकर्ण को लगता कि ये सब मेरे शरीर की सेवा कर रहे है। उसे और गहरी निद्रा हो आयी, वह नाक से खर्राटे भरने लगा ॥ २८ ॥ कितने सहस्रों की संख्या में राक्षस कतार बाँध कर खड़े हो, शरीर की सारी शक्ति लगाकर गदा, मुद्गर से उसे प्रहार करने लगे। एक सहस्र लोग उसकी छाती पर चढ़ चीख पुकार मचाने लगे, परन्तु कुंभकर्ण को लगा, ये हमारे

आशेष राक्षसे केश आजोरय कतो पाकवय नाक।
काणत कामोरे मुकुटि लायिये वेढ़िया किलर जाक॥
कुम्भकर्ण येवे तातो नाजागिला सवारो गर्व्व भागिल।
कतोहो वेलात कालर प्रमाणे आपुनि पाचे जागिल॥ ३०
दुइ हात जुरि माथार उपरे पिठिक लागि निलेक।
पाताल सदृश वेन्तगोट वाया हामिगोट तुलिलेक॥
जिह्वाखान तार आलता गुलिल येहेन गिरि शिखर।
दुइ चक्षु देखि अरुण वरण उदय येन भास्कर॥ ३१
नासार पवन वहे तार अति फाल्गुण चैत्रर सम।
प्रजा संहरिते उठिया वसिला येन कालान्तक यम॥
आगत योगाया राक्षस सकले देखे सवे असदृष्ट।
ग्रास आठ साते खाया आण्टाइलेक व्यञ्जनये भात पिठ॥ ३२
मद्य ये रुधिर सुगन्ध जलक षाठि कलसेक पिल।
महिष वराह छागल मुञ्जिया अर्द्धेक पेट भरिल॥
प्रणाम करिया हातयोरे थाकि सकले राक्षस लोक।
सवाके सम्बुधि कुम्भकर्ण वोले किसक जगाइलि मोक॥ ३३
आमार भाइर लङ्केश्वर ददार कि भैला आसज काज।
आजि धरि सवे दुर्गति खण्डाओं धरि आनो देव राज॥
यूपाक्ष नाम ये राजार मन्त्रीये हात योरे विनावय।
आनसे कार्य्यत आयान्तर भैला देवत नाहिके भय॥ ३४
सीतार हरण सन्तापे राघवे सागरे भैलन्त पार।
पर्व्वत आकार वानर सकले चौभिति वेढ़ि लङ्कार॥

शरीर को दवा रहे हैं, जम्हाई लेता हुआ, [illegible]वा देता। 'ये हमारे शरीर दवा रहे हैं'—सोचकर वह और गहरी नीद मे पड़ जाता था॥ २९॥ अनेक राक्षस उसके वाल नोचनी लगे, कितने ही उसकी नाक पकड़ कर ऐंठने लगे, कान दांतों से काटने लगे, उसे घेरकर केहुने, लात, घूंसे से मारने लगे, जव कुंभकर्ण उससे भी नही जागा तो सवका गर्व चूर हो गया। वहुत समय वीत जाने पर वह काल के अनुसार स्वयं जागा॥ ३०॥ दोनों हाथ जोड़कर वह अपने सिर पर पीठ तक ले गया और पाताल जैसा मुख फैलाकर जम्हाई ली। उसकी जीभ महावर में रंगा हुआ मानो गिरि-शिखर था, दोनों आँखें मानो उगते हुए सूरज थे॥३१॥ उसके नाक की हवा फागुन-चैत में चलनेवाली आंधी जैसी थी, वह प्रजा का संहार करनेवाले कालान्तक यम जैसा उठ वैठा। उसके सामने प्रस्तुत व्यंजन-भात-पीठा आदि उसने सात-आठ ग्रास में ही खा डाला; इसे देख सव 'अव क्या होगा'_सोचने लगे॥ ५४३२॥ उसने मद्य, रक्त और सुगंधित जल से भरे साठ घड़े पी डाले। वहाँ के सारे भैसों, सूअरों, वकरों को खाकर उसका पेट केवल आधा ही भरा। सभी राक्षस हाथ जोड़कर उसके सामने खडे हो गये। सवको सम्वोधित करते हुए कुम्भकर्ण ने पूछा, तुम लोगों ने मुझे किसलिए जगाया?॥ ३३॥ हमारे भाई लंकेश्वर रावण पर कौन-सी विपत्ति आ पड़ी है? वताओ, आज मैं सवको पकड़ कर दुर्गति मिटा डालूँ। देवराज को भी चाहूँ तो पकड़ लाऊँ। यूपाक्ष नाम के रावण के मन्त्री ने हाथ जोड़ करुण वाणी से कहा—देवों से हमें कोई भय नहीं है। वल्कि एक अन्य कार्य से ही लंका पर संकट आया हुआ है॥ ३४॥ सीता के हरण के संताप से रामचन्द्र ने सागर पार कर लिया है और पर्वताकार वानरों ने लंका को

आपुनि जानाहा रावणे त्रैलोक्य जिनिला ईषत करे।
प्राणर संशय मिलिला रणत भङ्गाइला रामर शरे॥ ३५
किरीटि काटिया पेलाइला राघवे आसि भैला जीवमाने।
तोमाक जगाइबे आमाक पठाइल करन्त चिन्ता आथाने॥
कुम्भकर्णे बोले राजार असुख आमिनों किसक जीओं।
राम लक्ष्मणक रणमाजे मारि तपत रुधिर पिओं॥ ३६
कतोहो बानर भुञ्जोहो कतोहो पठाओं यमकरण।
शत्रुक जिनिया प्रणामोहो आसि ददार दुइ चरण॥
एतेक शुनिया नृपतिर पात्र महोदरे बिनावय।
तुमि ये शत्रुक जिनिवा इहात किछुवे नाहि विस्मय॥ ३७
तोमाक देखिबे राजार मनत उद्वेग करिते आछे।
आगे नृपतिर चरणे प्रणामि रणक चलियो पाचे॥
महोदरे बोले कुम्भकर्णं वीरे हरिषे गाव चलिल।
सहस्र कलस मद्यपान करि राजार पाशे चलिल॥ ३८
लङ्कार गड़ ये एक आण्ठु भैल आकाश छानिया याइ।
हेर निज काले पाइलेक बुलिया बानर भागि पलाइ॥
कतोहो रामत शरण पशय कतो सागरान्त लङ्घे।
कतोहो वनत लुकाइ थाकन्त कतो पलाइ व्यूह भङ्गे॥ ३९
किनो विपाङ्कत प्राणक सुजाइलो नेदेखिलो बन्धुलोक।
तुमि सव जीव माने पलाइबाहा हेरा आसि पाइले मोक॥
राघवे बोलन्त मित्र विभीषण त्वरिते दिया सिद्धान्त।
नारायण येन बलिक छलिया आकाश छानिया यान्त॥ ४०

चारों ओर से घेर लिया है। तुम स्वय जानते हो कि रावण ने अनायास ही त्रैलोक्य विजय कर लिया था परन्तु इस बार युद्ध में प्राण-संकट उपस्थित हो गया है, रामचन्द्र के बाणों से वे पराजित हो गये है॥ ३५॥ रामचन्द्र ने उनका किरीट काट गिराया, किसी प्रकार प्राण बचाकर वे यहाँ पहुँच पाये है। अपने राजभवन मे वे बड़े ही चिन्तित हैं और आपको जगाने के लिए हम सबको भेजा है। कुम्भकर्ण बोला, हमारे राजा पर विपत्ति पड़ी है तो भला हम जीवित क्यों रहे? राम-लक्ष्मण को मैं युद्ध में मारकर उनका गर्म रक्त पी डालूंगा॥ ५४३६॥ कितने ही वानरों को खा डालूंगा, कितनो को यमलोक भेज दूंगा और शत्रु को जीतकर भैया के चरणो मे प्रणाम करूँगा। यह सुनकर रावण के सामन्त महोदर ने करुण भाव से कहा—आप शत्रु को जीत लेंगे, इसमे कोई अचरज नही॥ ३७॥ आपको देखने हेतु राजा के मन में बड़ी उतावली है, इसलिए पहले राजा के चरणों में प्रणाम कर इसके बाद रण में चलिये। महोदर की बात सुनकर वीर कुम्भकर्ण हर्ष से उठ पड़ा और सहस्र घड़े मद्यपान कर राजा के पास चल पड़ा॥ ३८॥ लंका का किला उसके घुटने भर का ही था, वह आकाश छूकर चल रहा था, उसे देख, 'यमराज आ गया' कहते हुए वानर बिखरकर भागने लगे। कितने ही राम की शरण में पहुँचे, कितने ही सागर के पार चले गये, कितने ही वन में छिप गये, और कितने ही व्यूह भंगकर भाग गये॥ ५४३९॥ (वे कहने लगे) "किस संकट में पड़कर हमने अपने प्राण खो दिये। अपने आत्मीय-जनों से भी भेट नहीं हुई। अरे तुम सब तो अपने प्राण बचाकर भाग जाओगे, यह तो आकर हमें पकड़ ले रहा है।" रामचन्द्र ने कहा—मित्र विभीषण, शीघ्र बताओ। यह तो

हेनतो शरीर चक्षु नेदेखिलो आमि नुशुनिलो काणे।
इटो कोन वीर याहाक देखिया सैन्य पलाय जीवमाने ॥
रामर चरित्र साक्षाते अमृत शुना समासद लोक।
तेजि आन काम बोला राम राम पुरुष उद्धार होक ॥ ४१

कुम्भकर्ण युद्ध आरु सुग्रीवक लै लङ्का गमन

पद

विभीषणे बोलन्त एहिटो कुम्भकर्ण * मेरुर समान चार काल मेघवर्ण
हाते शूल धरि यम कुबेर भङ्गाइले * उपजिया अनेक सहस्र ऋषि खाइले ४२
इन्द्ररो खाइलेक आरो अपेश्वरा दश * प्रजा खाया संहरिला दारुण राक्षस
देवराजे शुनिया आसिला सब साजे * वज्रे ताड़िलन्त तार हृदयर माजे ४३
कुम्भकर्ण कुपिला वज्रर महा घावे * सूर्य्यर सदृश दुइ चक्षुक फुरावे
ऐरावत दान्त दुइ लैलन्त उपारि * वासवर हृदयत वेंमाइलन्त वारि ४४
हस्तीर दान्तर घावे इन्द्र मूर्च्छा गैला * कतो वेलि देवराज सन्धुक्षण भैला
सिद्धमुनि देवराजे एकथान हुइया * ब्रह्मात सकले कथा निवेदिल गैया ४५
वासवे बोलन्त देव आमि करो साक्षी * त्रैलोक्य दगध होवे किसक नराखि
जगत सञ्चिला तुमि अनेक उपाय * निशेष करिया ताक कुम्भकर्ण खाय ४६
शुनि प्रजापति सबे राक्षस मताइला * सबारो मालत कुम्भकर्ण भेट पाइला
ब्रह्मा ताक बोलन्त प्रजार भैलि काल * तयो वेटा भैलि पाट महादैर शाल ४७

ऐसा लग रहा है कि वलि को छलना करनेवाले नारायण ही आकाश व्याप्त कर चले आ रहे है ॥ ५४४० ॥ ऐसा शरीर तो न आंख से देखा था और न कान से ही सुना था। यह कौन वीर है जिसे देखकर सारी सेना प्राण वचाकर भागी जा रही है। सभासदगण सुनो, राम का चरित्र साक्षात अमृत है। अन्य काम छोड़कर 'राम राम' कहो जिससे पीढियों का उद्धार हो जाये ॥ ५४४१ ॥

कुम्भकर्ण का युद्ध और सुग्रीव को लेकर लंका गमन

विभीषण ने कहा—यह कुम्भकर्ण है। जो मेरु के समान है और जिसके शरीर का वर्ण काले मेघ के समान है। इसने हाथ में शूल लेकर यम, कुवेर को पराजित किया है। जन्म लेकर अनेक सहस्र ऋषियों को खाया है ॥ ५४४२ ॥ और इन्द्र की दस अप्सराओ को खा डाला। इस दारुण राक्षस ने प्रजा को खाकर संहार कर डाला। देवराज इन्द्र यह सुनकर सभी तरह से सजकर आये और उसके हृदय पर वज्र से प्रहार किया ॥ ४३ ॥ वज्र के प्रचंड आघात मे कुम्भकर्ण क्रोधित हो उठा और सूर्य जैसी अपनी आँखों को तरेरने लगा। उसने ऐरावत के दो दाँत उखाड़ लिये और उनसे इन्द्र के हृदय में आघात किया ॥ ४४ ॥ हाथी के दांत के आघात से इन्द्र मूर्च्छित हो गये। कितने समय वाद उनकी मूर्छा टूटी। तव सिद्ध-मुनियों के इन्द्र ने जाकर ब्रह्मा से सारी वात वतायी ॥ ४५ ॥ इन्द्र बोले, प्रभु, त्रैलोक जल रहा है, उसकी रक्षा कैसे होगी? हम सत्य साक्षी देते हैं। आपने अनेक उपायो से जगत की सर्जना की है, उन सवको निःशेष कर कुंभकर्ण खाये डाल रहा है ॥ ४६ ॥ यह सुनकर ब्रह्मा ने सभी राक्षसों को वुलवाया। उन सवके वीच कुंभकर्ण को भी उन्होने

वर मागि आछा मोर घुमटि याइबाक * निश्चेष्ट स्वरूपे चिरकाल शुति थाक
प्रलयत येन मते पर्ब्बत टलिल * अचेतने कुम्भकर्ण निद्रात परिल ४८
हातयोरे दशग्रीव करिला काकुति * चण्डशाप दिलाहा तोमार परिनाति
हाते बृक्ष रुया प्रभु पावे नोमारियो * निद्रार जागिवे लागि किछु दिन दियो ४९
ब्रह्माये बोलन्त तुष्ट तोहोर विनय * एकैक निद्राये थाकिवेक मास छय
एक दिना जागि सिटो करिब आहार * दश गुण हैवेक विपोहो बलियार ५०
रावणे तोमाक डरे जगाइला इहाङ्क * याक डरे बानर पलाय लागि शङ्क
आपुनि माराहा आक संग्रामर माजे * कपिगण आश्वासा थाकोक सब साजे ५१
श्रीरामे बोलन्त अग्निर पुत्र नील * सेना थिर करा हाते वृक्ष धरि शिल
आमि विद्यमाने तोमासार किवा शङ्का * आरका निसन्धि करि वेढ़ि थाका लङ्का ५२
नील सेनापतिये आदेश शिरे धरि * सैन्य थिर करि पुनु बेढ़िला नगरी
ऋषभ शरभ हनुमन्त नील नल * दुवार वेढ़िल हाते धरि तरु शाल ५३
रामर सेनाये येवे नगरी जण्टाइल * रावण ओवारि गैया कुम्भकर्ण पाइल
पुष्पके आछय राजा विह्वल स्वभावे * गुरु देवे दरा बुलि नमिलन्त पावे ५४
बाहु मेलि दशग्रीवे गलत वान्धिल * माथात चुम्बन दिया आसनेक दिल
आसनक लभिया बसिला कुम्भकर्ण * क्रोधत नयन दुइ आरकत वर्ण ५५
कि कारणे ददा तोर श्री नेदे जाकि * आमाक जगाइलि ददा कि कार्य्यक थाकि
काहात तोमार भय चिन्ता देखो मने * पाति मलचिला तार यमर करणे ५६

देखा। ब्रह्मा ने उससे कहा—तू प्रजाजनों का काल बन गया है। अरे तू भी पटरानी के लिए वेदना का कारण हो उठा है। तू सोये रहने का वर मांग रहा है। अतः निश्चेष्ट रूप से चिरकाल सोया रहा ॥ ४७ ॥ प्रलय में जैसे पर्वत ढह जाते है उसी प्रकार (ब्रह्मा के वचन से) कुंभकर्ण निद्रा मे अचेत हो गया ॥ ४८ ॥ तब रावण ने हाथ जोड़ विनती करते हुए कहा—प्रभु, आपने अपने पर-नाती को यह प्रचंड शाप दे डाला। प्रभु, हाथ से वृक्ष रोप कर उसे पैरों से न कुचलिये। इसे निद्रा से जगने का कुछ समय दीजिए ॥ ४९ ॥ ब्रह्मा बोले—तेरी विनती से मैं प्रसन्न हूँ। यह एक बार निद्रा में छः माह पड़ा रहेगा। एक दिन जगकर वह भोजन करेगा और दसगुना प्रचंड बलवान बन जायेगा ॥ ५० ॥ प्रभु रामचन्द्र, आज आपके डर से रावण ने इसे जगाया है। इसके आतंक से बानर भागे जा रहे है। संग्राम में आप इसे स्वयं मारिये और वानरों को सभी प्रकार से सुसज्जित रहने का अश्वासन दीजिये ॥ ५१ ॥ रामचन्द्र ने कहा—अग्निपुत्र नील, हाथ मे वृक्ष और शिलाएँ लेकर बानरों की सेना को स्थिर रखो। मेरे रहते तुम सब शंकित क्यों हो? सब लोग निर्भयतापूर्वक लंका को घेरे रखो ॥ ५२ ॥ सेनापति नील ने आदेश शिरोधार्य कर, सेना को स्थिर कर पुनः लंकापुरी को घेर लिया। ऋषभ, शरभ, हनुमान, नील, नल आदि ने हाथो में शाल वृक्ष लेकर लंका के द्वार घेर लिए ॥ ५३ ॥ रामचन्द्र की सेना के लकापुरी को घेर लेते ही कुंभकर्ण राजभवन पहुँचा। राजा रावण विह्वल-सा होकर पुष्पक में बैठा हुआ था। अपने बड़े भाई को गुरुजन मान 'भैया' कहकर चरणो में प्रणाम किया ॥ ५४ ॥ रावण ने हाथ फैला आलिंगन कर उसे गले लगा लिया। उसका सर चूम कर बैठने को आसन दिया। आसन पाकर कुंभकर्ण बैठ गया, उसके दोनों नेत्र क्रोध से आरक्त हो रहे थे ॥ ५५ ॥ (कुंभकर्ण ने पूछा)—भैया, तुम्हारा मुख आज क्यों नही श्रीसम्पन्न दिखाई देता? भला हमे किस कार्य के लिए जगाया है? तुम्हारे मन में किसके भय से चिन्ता दीख रही है? समझलो कि यमदूतो ने अब

वासवत भय यदि करोहो प्रलय * यमे कुनय करे कन्धक परय
वरुणे खेदय कुम्भकरणे छेदय * बीरतु करय ताक जीवाक नेदय ५७
स्वर्गे चलि याइबो देवलोकक डकाइबो * आदित्यक पाइबो वान्धि भूमित पेलाइबो
मुखगोट वाइबो अगनिक खेदि खाइबो * चमक लगाइबो सवे असुर मङ्गाइबो ५८
जगाइलाहा मोक भुञ्जिवोहो तिनि लोक * पलाइवेक मोक किछु पूरिवोहो कोख
अनुज्ञा दियोक मोक पातालपुरक * तोमार शोकते केहो सुखे नयाकोक ५९
तोमार एदूर पर्व्वतक करो चूर * मेरु मन्दरक शरे करो मपिमूर
एरह जञ्जाल कोने पातिला धञ्चाल * दशोदिगपाले मोर नसहे आस्फाल ६०
रावणे वोलय जानो तोहोर प्रताप * आजिहे गुचिल मोर हृदय सन्ताप
राम शरघावे घोर आपदे मजिलो * तोहोरेसे कारणे आरका उपजिलो ६१
सागरत सेतु वान्धि राम भैल पार * भालुक वानर समे कटक अपार
सव राक्षसर बल परिलन्त रणे * आमाको रणत रामे भङ्गाइल आपुने ६२
सुन बापु कुम्भकर्ण कर मोर वोल * राक्षस कुलक घोर आपदत तोल
तोक देखि पलाइल मोहोर हृदिखेद * वानरक मारि राम लक्ष्मणक छेद ६३
कुम्भकर्ण बोले वर करिला अकार्य्य * मइ येवे नोहो तेवे बुरे सामराज
यत किछु करिलोहो कुनय सकल * अविलम्बे पाइवा सेहि अधर्म्मर फल ६४
तुमि यत करिलाहा कोने वोले भाल * वाघ नमारिया केने आजोराहा छाल
मत्त गज जीवन्तते काढ़िया लोवा दान्त * कुपित सिहर येन आजोराहा आन्त ६५

उसकी जीवन-रेखा मिटा डाली है ।। ५६ ।। यदि तुम्हें इन्द्र से भय उत्पन्न हुआ है तो मैं प्रलय कर डालूंगा । यदि यमराज ने कोई अनीति की है तो उसका सिर गिरा ही समझो । वरुण ने खदेड़ा है तो कुंभकर्ण उसे मार डालेगा । उसे टुकड़े-टुकड़े कर जीवित रहने नहीं देगा ।। ५७ ।। मैं स्वर्गलोक चला जाऊंगा, देवताओं को मार भगाऊँगा, आदित्य (सूर्य) को पा लेने पर उसे बाँधकर भूमि पर गिरा दूंगा । मैं मुँह वाकर ही अग्नि को भगा-भगाकर खा डालूंगा, सबको चकाचौंध लगाकर सभी असुरों को पराजित करूँगा ।। ५८ ।। मुझे जगाया है, तो मैं तीनों लोकों को खा डालूंगा—तब जाकर मेरा पेट भरेगा, कछ भूख मिटेगी । मुझे आदेश दो तो तुम्हे शोक पहुँचाने वाला पातालपुर में जाकर भी सुख से नही रह पायेगा ।। ५९ ।। तुम्हारे मार्ग पर आने वाले पर्वत को भी चूर कर डालूंगा । मेरु, मदर पर्वतों को वाणों से ढहा दूंगा, यह सव चिन्ता छोड़ो, बताओ किसने यह गड़वड़ी मचा रखी है ? मेरे पराक्रम का सामना दसो दिग्पाल भी नही कर सकते ।। ६० ।। रावण वोला—तुम्हारा प्रताप जानता हूँ । आज ही मेरे हृदय का सन्ताप मिट गया । राम के वाणों की चोटों से घोर आपदाओं में निमग्न हो गया । तुम्हारे कारण ही पुनः जन्म मिला है ।। ६१ । राम, सागर पर सेतु बाँधकर चला आया है, उसके साथ भालू, वानर समेत अपार सेना है । युद्ध में सभी राक्षसों की शक्ति नष्ट हो गयी, राम ने स्वय हमें भी युद्ध में पराभूत कर दिया ।। ६२ ।। वत्स कुंभकर्ण सुनो, मेरी वात मानो । इस घोर संकट से राक्षस-कुल का उद्धार करो । तुम्हें देखकर मेरे हृदय का खेद जाता रहा । तुम वानरों को मारकर राम-लक्ष्मण के टुकड़े-टुकड़े कर डालो ।। ६३ ।। कुम्भकर्ण ने कहा, तुमने बड़ा अनुचित कार्य किया है । मैं यदि न रहता तो तुम्हारा साम्राज्य नष्ट हो जाता । तुमने जितने सारे अनाचार किये है, उन अधर्मों का फल अविलम्व मिलेगा ।। ६४ ।। तुमने जो किया है उसे भला अच्छा कौन कहेगा ? वाघ को मारे वगैर उसके खाल उघाडने मे क्यो लगे हो ? मतवाले गज के जीते जी उसके दाँत उखाड़ लेना चाहते हो, कुपित

मुख्य मन्त्रीसकले तोमाक बेढ़ि आछे * आगे चिन्तिबार काज चिन्तिलाहा पाचे
जाना येके हरिबाहा जनकर जीक * तेवे आगे राघवक नमारिला किक ६६
नीतिक एरिया यिटो प्रवर्तय बले * हेनय जनक जाना बिधाताये छले
अनिहिते हित यार हिते अनिहित * तेवे जानिबाहा तार मरण सन्वित ६७
कुम्भकर्ण बुलिलेक बिस्तर चिनाइ * संक्षेप पयारे धिक दिते नुयुबाइ
शुनि रावणर आति क्रोध ज्वलि गैला * माथा चपराइया ताक गर्ज्जिबाक लैला ६८
गुरु गौरवक नमानिया गर्ज्जे मोक * एहिसे कारणे तेवे जगाइलोहो तोक
यि करिलो सि करिलो करिलोहो ताक * मृतकक बधि उपलम्भस आमाक ६९
दुर्गति पतित भैलो करिलोहो मन्द * येवे उद्धारिबि कर त्वरिते प्रबन्ध
गैल कथा कहे यिटो बिगुटिया मारे * सेहिसे बान्धव यिटो आपदत तरे ७०
आपुनि चिन्ताहा येन करिबे युगुत * आपदे बान्धिल मोक कराहा मुकुत
मोहोर कुनय दोष नाहिके उपाम * तोहोर बिक्रमे सबे करा उपशाम ७१
रावण कुपिला कुम्भकर्ण बर भय * ज्येष्ठ भाइक सम्बुधिया आरका विनय
सन्तापक एराहा हियार गुलगुलि * रामक मारोहो शूले हृदयक फुलि ७२
लक्ष्मणक मारो आजि मारोहो अङ्गद * सुग्रीवक मारो आजि खण्डो राजपद
लङ्कापुरी यिबा करिलेक रण्ड भण्ड * ताहार करिबो आजि प्राणान्तिक दण्ड ७३
भालुक बानर बल यत आसि भैल * हेन जाना मोहोर पेटर माजे गैल
सकलहि सैन्य तयु पाशत थाकोक * एकेश्वरे मारि आसो पठाइ दिया मोक ७४

सिंह की मानो आँतें निकाल रहे हो ।। ६५ ।। तुम्हारे मुख्य-मंत्रीगण सभी तुम्हें घेरे हुए है (परन्तु) तुम्हे जिस काम का चिन्तन पहले करना चाहिए था, उसे तुमने बाद को सोचा । यदि तुम जनक-नन्दिनी को हरण करने की बात जानते थे तो पहले राम को मार क्यों नही डाला ।। ६६ ।। जो व्यक्ति नीति को तज कर बलपूर्वक करना चाहता है समझलो कि वैसे व्यक्ति को विधाता भी छल लेता है । जो अनहित को हित और हित को अनहित समझता है, समझलो कि उसकी मृत्यु निकट आ पहुँची है ।। ६७ ।। कुम्भकर्ण ने तिरस्कारपूर्ण अनेक बातें कही । यहाँ सक्षिप्त छन्दों में उनका वर्णन करना उचित नहीं है । उन्हें सुनकर रावण का क्रोध अत्यन्त भड़क उठा और अपने सिर को ठोंक कर उससे गरजकर कहने लगा ।। ६८ ।। मै तुझसे बड़ा हूँ, इस गौरव को न मानकर मुझ पर तू गरज रहा है । क्या इसी कारण मैंने तुझे जगाया है ? मैंने जो किया, सो किया, उसे तो कर ही चुका हूँ । तू मृतक को मार कर हमें उलाहना दे रहा है ? ।। ६९ ।। मैंने बुरा काम किया इससे दुर्गति में पड़ा हूँ, अब इससे जैसे उद्धार हो तू उसका शीघ्र प्रबन्ध कर । जो वीती बाते कहता रहता है वह तो दुर्गति देकर मारता है, बान्धव तो वही है जो संकट से उबारता है ।। ७० ।। जो करना उचित है आपही सोच । मुझे तो सकट ने पकड़ लिया है, तू मुझे मुक्त कर मेरे अनाचार, दोष आदि की तो कोई उपमा नही है । तू अपने विक्रम से उनका शमन कर ।। ७१ ।। रावण कुपित हो उठा इससे कुम्भकर्ण को बड़ा भय हुआ । अपने बड़े भाई को सम्बोधित कर विनयपूर्वक कहा—तुम संताप और हृदय का असमंजस छोड़ दो ।। ७२ ।। मैं शूल से हृदय बेधकर राम को मार डालूंगा । मैं आज लक्ष्मण को और अंगद को मार डालूंगा । सुग्रीव को मार कर उसका राजपद नष्ट कर दूंगा । जिन सबने लंकापुरी को तहस-नहस कर डाला है, आज मैं उन सबको प्राणदंड दूंगा ।। ७३ ।। यहाँ जितनी बानर-सेना आ पहुँची है, ऐसा समझलो कि वह सभी हमारे पेट में पहुंची है । सारी सेना तुम्हारे ही पास रहे, मुझे भेज दो; मैं अकेले ही

रामक मारिलो येवे भुञ्जा राजसुख * मइ येवे मरो नेदेखिबो तयु मुख
इयो बोल बुलिलो अधिक अनुवाद * रामक मारोहो शूले एराहा विषाद ७५
वीरत्व वचन शुनि कुम्भकरणर * अल्प क्रोध करिया बुलिला महोदर
किनो आति मदगर्व्व सम्प्रति तोमार * राजा मन्त्री कहो किछु नजानय आर ७६
रावणत अधिक तुमसे जाना नय * मिछासे जिनिला त्रिभुवन समस्तय
सकलहि नीतिक जानन्त लङ्केश्वर * नृपतिक निन्दा किक बुलिला बिस्तर ७७
एकले सवाक मारो हेन बुलिलाहा * मेरु पर्व्वतक फुङ्के उरुवाइते चाहा
लाहारि नसहे यार दूषण ये खर * हेनय रामक एन्ते युजे एकेश्वर ७८
दान्त भाङ्गा साप येन मिछात फोफाहा * एकले रामक गैया यूजिवाक चाहा
कुपित सिंहक हस्ती चावे जङ्कावाहा * काहाल गोमक हाते धरिवाक चाहा ७९
रामक मारिवो वाक्य मुखत वजाइल * चापरि चापरि फुरे देखा पाइल पाइल
चौद्ध सहस्र राक्षसक मारिलन्त * हेनय रामक एन्ते एकले भुजन्त ८०
तोमार वचन मोर नपशे काणत * इसव कथाक तुमि कहियो आनत
कोने कराइवेक रावणक परापति * नृपतिक निन्दा तुमि आति शिशुमति ८१
रावणक सम्बुधि वोलय महोदर * इहाङ्क रणक नपठाइवा एकेश्वर
रामक मारिया येवे सीताक पाइवाहा * इहार लगत आमासाक पठावाहा ८२
कुम्भकर्ण कुपि महोदरक चाहय * एहि बुद्धि राज्य हरुवाइल लारिकाइ
नृपतिसवर बुद्धि मत्त हस्ती गओं * नीति आङ्कुशेके यदि नकरिले सओं ८३

सबको मार आता हूँ ॥ ७४ ॥ जब मैं राम को मार डालूँ तो तुम सुखपूर्वक राज-सुख भोगते रहना और मैं यदि मर जाऊँ (पराजित होऊँ) तो तुम्हारा मुँह न देखूँगा। अधिक क्या कहूँ, यह भी कह देता हूँ कि राम को शूल से मार डालूँगा, तुम विषाद छोड़ो ॥ ७५ ॥ कुम्भकर्ण के वीरतापूर्ण वचन सुनकर महोदर ने जरा क्रोध से कहा—सम्प्रति तुम्हारा यह कैसा मद-गर्व हुआ है कि तुम और राजा मंत्री किसी को कुछ मानते नही ॥ ७६ ॥ रावण से अधिक तुम्ही नीति जानते हो ? तब तो इनका त्रिभुवन विजय करना मिथ्या ही हुआ। लंकेश्वर सभी नीतियाँ जानते हैं, तुमने नृपति को इतना निन्दा के वचन क्यों कहे ? ॥ ७७ ॥ तुम कहते हो कि अकेले ही सबको मार डालूँगा, तुम मेरु पर्वत को फूंक से उड़ा देना चाहते हो ? खर-दूषण जिसके पराक्रम को सह नही सके, ऐसे राम से तुम अकेले लड़ना चाहते हो ॥ ७८ ॥ तुम दाँत टूटे सर्प की भाँति निष्फल फुंकार रहे हो, अकेले राम से लड़ना चाहते हो। कुपित सिंह को मानो हाथी उत्तेजित करना चाहता है; काल-नाग को हाथ से पकड़ना चाहते हो ? ॥ ७९ ॥ राम को मारूँगा, यह वचन मुँह से तो निकला है, परन्तु उसे देखते ही ये दुबक-दुबक कर भागने लगेंगे। जिस राम ने चौदह हजार राक्षसों को मार डाला है, उनसे ये अकेले ही लड़ेंगे ॥ ८० ॥ तुम्हारे वचन मेरे कानों मे नहीं आते, तुम ये सब बाते दूसरो से कहना। रावण को विजय-प्राप्त कौन करवायेगा ? तुम तो बड़े शिशु-मति हो जो नृपति की निन्दा करते हो ॥ ८१ ॥ रावण को सम्बोधित कर महोदर ने कहा—इन्हें अकेले युद्ध में न भेजना। यदि राम को मारकर सीता को पाना चाहते हो तो इनके साथ हमें युद्ध में भेजना ॥ ८२ ॥ तब कुम्भकर्ण ने कुपित होकर महोदर की ओर देखा। कहा—दुष्ट ने ऐसी ही वुद्धि के कारण राज्य को नष्ट कर दिया। यदि राजाओं की बुद्धि को नीतिरूपी अंकुश से वशीभूत न रखा जाय तो वह मतवाले हाथी की भाँति उच्छृंखल हो जाती है ॥ ८३ ॥ मंत्री होकर भी राजा के विरुद्ध विचार रखता है। चोर की भाँति अकारण राज्य भोगता है। तुम सभी मंत्री

मन्त्री हैया राजार विरुद्धे मति लय * मिछातेसे भुञ्जा राज्य चोरर आन्वय
यि कार्य्यक करन्त ताहाके बोला भाल * तुमि मन्त्रीसकल अन्धला येन काल ८४
राजार कुनय यत तोमारेसे काजे * सबे दोष खण्डो आजि संग्रामर माजे
एहि बुलि हाते तुलि धरिलेक शूल * रामक मारिया आजि करोहो निर्म्मूल ८५
रावणे बोलन्त कुम्भकर्ण मोर भाइ * मिलिलेक हरिष विपोहो बल पाइ
रामक देखिया महोदरे डर पाइल * सिकारणे तोक इटो झवाल कराइल ८६
कुम्भकर्ण बीर समरक चलि याय * अलङ्कारे रावणे भूषिला तार काय
सूर्य्यर सदृश ज्वले मुकुतार हार * किरीटि कुण्डले करे आति ज्योतिष्कार ८७
अशेष राक्षस दिला तुलत ताहार * हाते शूल लैला माखि परिते दोहार
आकाश छानिया याय काय विपरीत * बामन उजान्त येन त्रैलोक्य ग्रासित ८८
हेमवन्त गिरि येन देखिय निश्चल * व्यूह भङ्गे पलाय देखि बानरर बल
कुम्भकर्ण बोले आजि सबे मान चाओं * राम लक्ष्मणक मारि बानरक खाओं ८९
बीरत्व वचन शुनि कुम्भकरणर * रिङ्गैक मिलिला सबे यत राक्षसर
खलक लागिया गैला गगनमण्डले * किनो करिबेक आक राघवर दले ९०
छय सहस्र बेओं उग्रत कलेवर * सहस्र धनुर मान पथालि डाङ्गर
सुवर्ण रतने सुमण्डित सब काय * काल पर्व्वतत येन चार लागि याय ९१
कुम्भकर्ण येवे समरक चलि याय * बाम चक्षु हात पाव कम्पे बाम काय
गृध्रे ये शकुन तार उपरे वर्णाय * आति मदगर्व्वत काहाको नडराय ९२
बाधासब नगणिया रणत प्रवेश * देखिया बानरबल भागिला आशेष
वीर बानरर यत शिला बृक्ष करे * कुम्भकरणर गावे ताड़िला समरे ९३

घोर अंधे हो जो राजा जो कहता है उसी को भला कहते हो ।। ८४ ।। राजा का अनाचार तुम लोगों के कार्यो के कारण ही है । मै संग्राम में ही सारे दोषों को खंडित कर दूंगा । यों कहकर उसने हाथ में शूल उठा लिया और कहा—आज राम को मार कर निर्मूल कर डालूंगा ।। ८५ ।। रावण बोला—मेरे भाई कुम्भकर्ण, मुझे शरीर में बल पाकर हर्ष हुआ है, राम को देखकर महोदर डर गया है, इस कारण तुम्हें इसने झमेले में डाला है ।। ८६ ।। वीर कुम्भकर्ण युद्ध को चल पड़ा, रावण ने उसके शरीर को अलंकारों से विभूषित किया । मोतियो का हार सूर्य की भाँति दमक रहा था, किरीट और कुण्डल उसे अत्यन्त चमकीला बना रहे थे ।। ८७ ।। उसके साथ अनगिनत राक्षसों को भेज दिया । कुंभकर्ण ने हाथ में ऐसा (तीखा) शूल लिया जिस पर गिरते ही मक्खी भी दो टुकड़े हो जाती थी । उसकी अद्‌भुत काया आकाश को ऐसा परिव्याप्त कर रही थी मानो त्रैलोक्य को ग्रसने (मापने) हेतु बामन बढते जा रहे हैं ।। ८८ ।। वह निश्चल हिमाचल पर्वत जैसा दिखाई दे रहा था । उसे देखकर बानरों की सेना व्यूह भंगकर भागने लगी । कुंभकर्ण बोला—आज मै सबको देख लूंगा, राम-लक्ष्मण को मारकर बानरों को खा डालूंगा ।। ८९ ।। कुंभकर्ण के वीरतापूर्ण वचन सुनकर सभी राक्षस कोलाहल करने, नारे लगाने लगे । आकाशमंडल में खलबली मच गयी—राघव की सेना इसकी क्या कर सकेगी ।। ९० ।। उसका कलेवर छह सहस्र हाथ लम्बा और एक सहस्र धनुप बराबर चौड़ा था । समूचा शरीर सुवर्ण और रत्न से सुमंडित था मानो काले पर्वत को आग लग गयी है ।। ९१ ।। जब कुंभकर्ण युद्ध को चला तो उसकी बायी आँख, हाथ, पैर, बाँया अंग फड़कने लगे । गिद्ध, उसके ऊपर मंडराने लगे, पर वह अत्यन्त मद में भरा हुआ किसी से डरता नही था ।। ९२ ।। उसने बाधाओं की परवाह न कर रण में प्रवेश किया । उसको देखते ही वानरों की

मांसे ये शोणिते पङ्काकुल रणस्थली * कुम्भकरणक यम सदृश आकलि
अगनि दहन्त येन शुकान वनक * एकेश्वरे खेदि मारे सबे बानरक १२
व्यूह भङ्गे पलाइ देखि सबे कपिगण * दशोदिशे लैल कतो रामत शरण
भालुक वानरे देखि पलाइला समस्त * नाइस बुलि सुग्रीवे भेण्टिला आसि पथ १३
मेरु मन्दरर सम सुन्दर शरीर * सम्बुधि बुलिल ताक कपि महाबीर
मोक निचिनस ओरे दुर्ज्जन राक्षस * मुनिष बोलाया केने पिम्परा मारस १४
विपोहो आछय वाढ़ि मोक देह रण * मारिया पेलाओं यास यमर करण
आते तोर गर्व्वर वर शरीर डाङर * वज्रे ताड़ि पेलावय पर्व्वत शिखर १५
विस्तर खाइवाक पारे आते महमह * शाल वृक्ष मारो मोर प्रहारक सह
माथात हानिया भाङ्गिवोहो शिर खुलि * तेवेसे पलाइवे हृदयर गुलगुलि १६
कुम्भकर्ण वोले जानो तुमिसे विशिष्ट * सूर्य्यर तनय तुमि वालिर कनिष्ठ
तोमाकेसे खेदोहो आनत नाहि काज * छन्न करिलाहा मोर लङ्का हेन राज १७
तुमि आसि भैलाहा लङ्कार धूमकेतु * मानुषे कि सागरे वान्धिवे पारे सेतु
शूले हानि मारोहो राक्षसे तोक खाओक * नृपति परिल बुलि वानर पलाओक १८
ठणगण दुइगोटा मानुष मारो पाचे * आगे तो प्रहार तइ करि एर गाछे
वचन तर्ज्जन एरि परुयाउ रण * तेवेसे जानिय येन वीरर लक्षण १९
क्रोधिया सुग्रीव वीरे करन्त आस्फाल * शीघ्र वेगे फुराइया हानिल तरु शाल
हृदयत परिया शवद भैला ठाट * अवछ्य शिलात येन परिल निर्घात २०

नाक-कान से होकर निकल आते थे। वह पर्वत-सदृश जितने वानरो को पाता, उन्हें मुँह में डाल कर समूचा चवा जाता था ॥ ११ ॥ मांस और रक्त से समूची रणस्थली पंकिल हो उठी; कुम्भकर्ण यम के जैसा दिखाई दे रहा था। अग्नि जैसे सूखी घास को जला देता है, उसी प्रकार वह अकेले सभी वानरों को भगा मारता था ॥ १२ ॥ सभी वानर व्यूह भंग कर चारों ओर भागते दिखाई देने लगे, कुछ वानर राम की शरण पहुँचे। सभी वानर-भालुओं को भागते देख सुग्रीव ने 'न भागो', कहकर उनका मार्ग रोक लिया ॥ १३ ॥ मेरु-मंदर जैसे सुन्दर शरीर वाले कुंभकर्ण को सम्वोधित कर महावीर कपि सुग्रीव ने कहा—अरे दुर्जन राक्षस तू मुझे पहचानता नही ? पराक्रमी होकर भी तू इन चींटियों (जैसे वानर, भालुओं) को क्यों मारता है ? ॥ १४ ॥ यदि तेरा सामर्थ्य है तो आगे बढ़कर मुझसे संग्राम कर। मैं तुझे मारकर यमलोक भेज दूँगा। तेरा शरीर वड़ा है इससे तुझे वड़ा अहंकार है। तू वज्र से पर्वत शिखरों को चूर कर डालता है ॥ १५ ॥ अधिक खा सकता है इससे दंभी वन गया है, मैं तुझे शाल वृक्ष से मारता हूँ, मेरे प्रहार को सहन कर। तुझे सिर पर चोट कर खोपड़ी चूर कर दूँगा तभी हृदय की अशान्ति मिटेगी ॥ १६ ॥ कुंभकर्ण वोला, जानता हूँ तुम विशिष्ट वीर हो, सूर्य के पुत्र और वाली के छोटे भाई हो। मैं आज तुम्ही को भगाऊँगा, दूसरे से कोई प्रयोजन नहीं है। तुमने मेरे लंका जैसे राज्य को नष्ट कर दिया ॥ १७ ॥ तुम लंका के धूमकेतु वने हो। नही तो, क्या मनुष्य कभी सागर पर पुल वाँध सकता है ? मैं तुम्हें शूल से मार डालूँगा, राक्षस तुम्हें खा डालेंगे और 'राजा गिरा' कहकर वानर सेना भाग जायेगी ॥ १८ ॥ इसके पश्चात् दोनों मनुष्यों को एक-एक कर मार डालूँगा, पहले तो तू ही वृक्ष से प्रहार कर देख ले। वचन से तर्जन-मर्जन करना छोड़ युद्ध में प्रवेश कर तभी तुझमें वीरों के लक्षण का पता चलेगा ॥ १९ ॥ तव वीर सुग्रीव क्रोधित होकर आस्फालन कर उठे और शीघ्रता से एक शालवृक्ष को घुमाकर फेंका। कुंभकर्ण के हृदय पर उस वृक्ष के पड़ते ही प्रचंड शब्द हुआ। मानो विशाल

कुम्भकरणत परि वृक्ष ये भागिल * बानर राजार बर थर्पोसि लागिल
राक्षसर बले देखि हरिषित भैला * कुम्भकरणर बर क्रोध ज्वलि गैला २१
सहस्रेक भारे लोहा गढ़िलेक शूल * कुम्भकर्ण बीरर सेहिसे अस्त्र मूल
दुइ हाते तुलि ताक हानिलेक बले * मनपवनर बेगे शीघ्रे आति चले २२
शूल आइसे देखिया सुग्रीव महाबीर * आकाशक डेव दिला दुर्ज्जय शरीर
आलागते धरिया आण्ठुत आरोपिल * माजभागे शूलपाट ठनारे भाङ्गिल २३
शूल भागि आटोप करन्त कपिराज * क्रोधिला राक्षस देखि संग्रामर माज
दुइ हाते थूलन्तर पर्ब्बतक तुलि * सुग्रीवक लागि हानिलेक हुह बुलि २४
महाबीर राक्षस हानिला महाबले * निर्घातर सदृश पर्ब्बतगोट चले
हृदयत परिया कम्पय महाबीर * मेरुर सदृश ढलि परिल शरीर २५
कुम्भकर्ण ढालिलन्त सुग्रीव केकान्त * क्षणेके चेतन पाइला मुखे नाहि मात
नृपति परिला देखि वानर पलान्त * कतो सेतुबन्धे याइ कतो सागरन्त २६
कुम्भकर्ण कौतूहले सुग्रीवक तुलि * हरिषे चलिला लङ्का नगरीक बुलि
सचचल पर्ब्बत येन श्रृङ्गे समे याय * मनत गुणिला आवे गुचिला अपाय २७
नृपतिक मारिलो आनक नाहि डर * आमासार भक्ष्य पशु भालुक बानर
दुइगोटा तपस्वी यिबा राम लखमण * मारिया पठाइबो पाचे यमर करण २८
लङ्कात मङ्गल पाचे उरुलिर जोक * पुष्प बरिषय सबे राक्षसिनी लोक
गृहर उपरे कतो प्राञ्चित चड़न्त * कुम्भकरणक लोके प्रशंसा करन्त २९

चट्टान पर बिजली गिरी हो ।। २० ।। कुम्भकर्ण पर गिरकर वह वृक्ष टूट गया । तब वानरराज सुग्रीव को कपकपी आ गयी । यह देख राक्षसों की सेना हर्षित हो उठी, कुम्भकर्ण का बड़ा क्रोध भड़क उठा ।। २१ ।। सहस्रों रूप से लोहा से जो शूल बनाया गया था, वही कुम्भकर्ण वीर का मुख्य अस्त्र था । उसे दोनों हाथों से उठाकर बलपूर्वक प्रहार किया । वह मन-पवन वेग से शीघ्रतापूर्वक चल पड़ा ।। २२ ।। दुर्जय शरीर वाले महावीर सुग्रीव शूल को आते देखकर आकाश में कूद गये और शूल को अनायास पकड़, घुटने से लगा 'ठनाक' से बीच में ही तोड़ डाला ।। २३ ।। शूल को तोड़कर कपिराज गरजने लगे । उन्हे रणभूमि के बीच देख राक्षस कुपित हो उठे । कुम्भकर्ण ने दोनों हाथों से एक विशाल पर्वत उठाकर 'हुह' करते हुए सुग्रीव पर फेंक मारा ।। २४ ।। महावीर राक्षस ने महाबल से प्रहार किया, वह पर्वत वज्र की भाँति चल पड़ा । हृदय में लगने के कारण महावीर सुग्रीव काँप उठे, उनका मेरु-सदृश शरीर ढलकर गिर पड़ा ।। २५ ।। कुम्भकर्ण के प्रहार से सुग्रीव कराहने लगे, क्षण भर में उनकी चेतना लौटी पर मुख से बोली नहीं निकलती थी । नृपति को गिरे देख वानर भाग चले । कितने ही वानर सेतुबंध को भागे और कितने ही सागर में ।। २६ ।। कुंभकर्ण अनायास सुग्रीव को उठाकर परम हर्ष से लंका नगर को चल पड़ा । मानो कोई लायमान पर्वत शिखर समेत चला जा रहा है, उसने मन में सोचा, अब सभी संकट मिट चुके ।। २७ ।। मैंने राजा को ही मार डाला, अब दूसरों से कोई डर नहीं है । ये वानर, भालू पशु तो हमारे भक्ष्य है । ये जो दो तपस्वी राम-लक्ष्मण हैं, इन्हें भी बाद को मारकर यमलोक भेज दूंगा ।। २८ ।। (कुंभकर्ण को आते देख) लंका में मंगलनाद और उलुकारी ध्वनि गूंज उठी, सभी राक्षसिनियाँ पुष्प-वर्षा करने लगी । कितने तो छतों पर, कितने तो प्राचीरों पर चढ़ गये; और कुंभकर्ण की प्रशंसा करने लगे ।। २९ ।। कुंभकर्ण सुग्रीव को लंका ले गया । इससे आकाश में देवगण विस्मित हो उठे, (वे कहने लगे) तीनों लोकों में इसके जैसा पौरुषवाला और कौन है ? युद्ध

देवगण आकाशत विस्मय मिलिल * कुम्भकर्ण सुग्रीवक लङ्का लागि निल
किनो आचलेक गोट त्रैलोक्य मुनिष * रामेनो इहाक रणे करिवेक किस ३०
हनुमन्ते बुलिलेक चेतनक पाया * कुम्भकर्ण लङ्का याइ सुग्रीवक लैया
मुठि एके ताहार भाङ्गिवो शिरखुलि * राजाक आनिवो राम सहितक बुलि ३१
येवे हेन आजि मइ करिवोहो सास * राजार वेलखे तिनि लोकत अयश
मोक कोप करिवन्त बीर बलीयार * आपुनि करिव आपोनार प्रतिकार ३२
येवे नपारन्त मइ आनिवोहो पाचे * लङ्कात मोहोर अविदित कत आछे
सैन्यगण पलाइ देखो ताके करो थिर * एहि बुलि गैला हनुमन्त महाबीर ३३
आश्वास बुलिया सबे सैन्यक चपाइ * छपकरे रहिला लङ्कार दिशचाइ
बिपोहो बाढ़न्त ज्योति बलगुण चारि * राजाक आनिवो आजि राक्षसक मारि ३४
आशीर्बाद पुष्प सती सबे देइ हाते * समस्ते परन्ते गैया सुग्रीवर माथे
उच्छ्रित निमित्ते कुम्भकर्ण नपरिल * सती सकलर सिटो वाक्य नलरिल ३५
कतोक्षणे शरीरत आसि भैला जीउ * मनत गुणन्त कपिराज ये सुग्रीव
मोहोक लङ्काक आनिलेक निशाचरे * इहाक मुनिष नाहि त्रैलोक्य भितरे ३६
नमो रामचन्द्र आदिदेव महेश्वर * याहार अधीन चराचर निरन्तर
नित्य शुद्ध बुद्ध यिटो जगत कारण * ब्रह्मा आदि देवे सेवे याहार चरण ३७
हेनय ईश्वर रामचन्द्र अवतरि * साधिला देवर कार्य्य असुर संहरि
मोर गति नाइ विने तोमार चरण * बोला राम राम यत सभासदगण ३८

में भला राम इसका क्या कर सकते हैं ? ।। ३० ।। हनुमान सचेत होकर कहने लगे सुग्रीव को लिये कुंभकर्ण लंका जा रहा है। मैं एक मुक्के से उसकी खोपड़ी तोड़ डालूँगा और राजा सुग्रीव को राम-लक्ष्मण के पास ले आऊँगा ।। ३१ ।। आज यदि मैं ऐसा साहस न करूँ तो राजा (सुग्रीव) के विना तीनों लोकों में भारी अपयश फैलेगा। ये वीर बलीगण मुझ पर कोप करेंगे और अपने आप अपना प्रतिकार करेंगे ।। ३२ ।। यदि मैं उन्हें न ला सकूँ तो लंका मे मेरा अविदित क्या है ? पर अभी देखता हूँ कि सेना चारों ओर भाग रही है, पहले उन्हें स्थिर करूँ। यह कहकर महावीर हनुमान चल पड़े ।। ३३ ।। आश्वासन देकर सारी सेना को लौटा लाये और लंका को ध्यान से देखने लगे। उनका क्रोध जितना बढने लगा, ज्योति-बल उससे चौगुने बढ़ने लगे। (वे सोचने लगे) आज राक्षस को मारकर राजा (सुग्रीव) को ले आऊँगा ।। ३४ ।। (उधर लंका में) सती नारियाँ जो आशीर्वाद के फूल हाथों से देती थी, वह सब सुग्रीव के सिर पर गिरते थे, अधिक ऊँचा होने के कारण कुंभकर्ण पर नही पड़ते थे, इसलिए सती नारियों के वचन मिथ्या नहीं हुए ।। ३५ ।। कुछ देर मे कपिराज सुग्रीव के शरीर में चेतना लौटी, वे मन ही मन सोचने लगे, यह निशाचर मुझे लंका में ले आया है, तीनों लोकों में इसके जैसा पौरुषवाला और कोई नहीं है ।। ३६ ।। चराचर विश्व निरंतर जिनके अधीन है, उन आदिदेव महेश्वर रामचन्द्र को नमस्कार है। जो नित्य शुद्ध-बुद्ध, जगत के कारण है, ब्रह्मा आदि देवता जिनके चरणों की सेवा किया करते है ।। ३७ ।। ऐसे ईश्वर रामचन्द्र ने अवतार धारण कर, असुरों का संहार कर देवों का कार्य साधन किया। हे प्रभु, तुम्हारे चरणों के सिवा मेरी और गति नही है। सभी सभासदगण राम-राम कहो ।। ३८ ।।

कुम्भकर्णर सैते श्रीराम-लक्ष्मणर युद्ध आरु कुम्भकर्णर पतन

पद

आस्फोट करिया कुम्भकरणर हियात मारिला गोरे ।
बोबकार करि दशन फुराया छिण्डिला नाक कामोरे ।।
दुइखान काण उपारि लैलन्त दुइ हाते नख आरोपि ।
शीघ्र वेग धरि आपोन थानक चलि गैला बीर कपि ।। ३९
देवगणे साधु प्रशंसा करन्त बानरे करन्त स्तुति ।
शुनिया हरिष बदन मिलिला प्रभातर सूर्य्य ज्योति ।।
हातर मुखर नाक काण लैया सबारे आगत थैला ।
श्रीराम लक्ष्मण बानर भालुके हासि उथलिया गैला ।। ४०
कुम्भकरणर नाकर काणर पीड़ाये चड़िला विष ।
पालटि आपुन सैन्यत पशिला कोप करि आसरिश ।।
आपुन नाकर शोणितर गन्धे बर मातोवाल भैला ।
राक्षस बानर भालुक सैन्यक चापि गिलिबाक लैला ।। ४१
कोटि असंख्यात भालुक बानर यत आङ्कोवालि पावे ।
पाताल सदृश मुखत भराया पागुलि दिया चोबावे ।।
नाकर काणर दुवारे बजाइ तारो नाहि आदि अन्त ।
प्रलय कालत सकले जगत यमे येन संहारन्त ।। ४२
आपुन नाकर शोणितर गन्धे पीड़िला सब शरीर ।
आपुन परक एकोवे नचावे कुम्भकर्ण महाबीर ।।
पर्ब्बत येहेन चापिया पिषय सकल बानरगण ।
त्रासे ये तरल बानर सकल रामत लैला शरण ।। ४३

कुंभकर्ण के साथ श्रीराम-लक्ष्मण का युद्ध तथा कुंभकर्ण का पतन

(सुग्रीव ने) प्रचड नाद कर कुभकर्ण की छाती पर पदाघात किया, अपने दांतों को फैलाकर नाक काटकर नोच लिया, दोनों हाथों के नाखून गड़ाकर दोनों कान उखाड़ लिये और वीर कपि सुग्रीव शीघ्रता से वेगपूर्वक अपने स्थान में चले आये ।। ३९ ।। देवगण साधुवाद देते हुए प्रशंसा और बानर स्तुतियाँ करने लगे, जिन्हें सुनकर उनका शरीर प्रभात के सूर्य किरण-सा खिल उठा । सुग्रीव ने अपने हाथ और मुँह में कुंभकर्ण के जो कटे नाक-कान थे, सबके सामने रखे, जिन्हें देख वानर, भालू, श्रीराम-लक्ष्मण सभी हँस पड़े ।। ४० ।। उधर कुभकर्ण को नाक-कान की पीड़ा से प्रचंड वेदना होने लगी और वह भयंकर क्रोध कर मुड़कर अपनी सेना मे प्रविष्ट हो गया । अपनी नाक और शोणित की गंध से वह बड़ा मतवाला हो उठा और राक्षस, बानर, भालू की सेना को पकड़-पकड़कर निगलने लगा ।। ४१ ।। कोटि अनगिनत भालू, बानरो को जहाँ भी वह अपने बाँहों में भर लेता और पाताल जैसे मुख में डालकर पागुर करता चबाने लगता । कितने ही वानर, भालू नाक-कान के छिद्रों से होकर निकल आते थे, उनका भी आदि-अत नही था । लगता था, मानो प्रलयकाल में यमराज सबका संहार कर रहे हैं ।। ४२ ।। अपनी नाक से बहते रक्त की गंध से महावीर कुंभकर्ण का सारा शरीर पीड़ित हो उठा, वह अपने-पराये का ज्ञान भूल गया । सभी वानरों को पकड़कर पर्वत-जैसे पीस डालता था, उसके त्रास से संत्रस्त बानरों ने जाकर राम की शरण ले

राम लक्ष्मणेयो सकल सैन्यक आश्वास वचन बुलि।
दोभायो गावत सन्नाहा चड़ाया धनु लैला करे तुलि॥
अक्षय तूणक शरे पूरि लैला धनुर गुणक माजि।
दुयो भाइ मिलि रणक चलिला सव चपकरे साजि॥ ४४
भालुक वानर वर वर वीरे दोभाइक वेढ़िया यान्त।
मेरुर सदृश गहन वीरक दुयो भाइ देखिलन्त॥
महामत्त हुइया सैन्यक भुञ्जय आपुन पर नवाछे।
सव रणभूमि एकले पशिया कन्दल करन्ते आछे॥ ४५
राघवे वोलन्त अरे कुम्भकर्ण मोहोर वाक्य आकल।
क्षुद्र ये पतङ्ग वलक मारिया पाइवि तइ कोन फल॥
हेरा देखा मोक माथा तुलि चाहा आछो धनुर्गुण माजि।
समर माजत तोहोक मारिया यमक पठाइवो आजि॥ ४६
तोर मृत्यु मइ मिलिलोहो आजि शुनरे राक्षस पाप।
भालुक वानर सैन्यक न मार मोहोर समीप चाप॥
शरीरत यत विपोहो आछय आमात सवे दरश।
मइ पुनु तोर कालान्त अगनि करन्त पतङ्ग जास॥ ४७
मेघर गम्भीरे हासिया वोलय भाल राम तइ टालि।
मइ सिटो खर दूषण तुहिके त्रिशिरा कवन्ध वालि॥
विराध मारीच राक्षस मारिया वाढ़िला तेज तोमार।
कुम्भकर्ण वीर आमाक जानाहा त्रैलोक्यत चमत्कार॥ ४८
सूर्यर बंशर तिलक राघव वानर कुलर नाहा।
मोहोर हातत घोर मुद्गर तुमि माथा तुलि चाहा॥
एहि अस्त्रेमइ पुरणि कालत देवक जिनिलो रणे।
असुर दैत्यक आशेष मारिया पठाइलो यमकरणे॥ ४९

ली॥ ४३॥ राम-लक्ष्मण ने भी सारी सेना को आश्वासन दे, अपने-अपने धनुष उठाकर वाण चढ़ा लिये। धनुष की प्रत्यचा चढ़ाकर अक्षण तूण को वाणों से पूर्ण कर लिया और सभी प्रकार से सजकर वे शीघ्रता से रण को चल पड़े॥ ४४॥ भालू, वानरो के बड़े-बड़े वीर दोनो भाइयों को घेरे चल रहे थे। उन दोनो ने आगे बढ़कर मेरु जैसे भयंकर वीर कुंभकर्ण को देखा। वह महामत्त होकर अपने पराये को न मानकर सेना का भक्षण कर रहा था। अकेले समूची रणभूमि में प्रवेश कर संग्राम कर रहा था॥ ४५॥ रामचन्द्र ने कहा, अरे कुंभकर्ण, मेरे वचन मान; इन क्षुद्र पतंगों जैसी सेना को मारकर तुझे कौन-सा फल मिलेगा? अरे मेरी ओर सिर उठाकर देख, मैं प्रत्यंचा चढ़ाये खड़ा हूँ। युद्ध मे तुझे मारकर आज यमलोक भेज दूंगा॥ ४६॥ अरे पापी राक्षस, आज मै तेरी मृत्यु बनकर आया हूँ। तू भालू-वानर सेना को न मार; मेरे सम्मुख आ। शरीर मे तेरे जितनी सामर्थ्य है सब हमें दिखा; पुनः मैं तेरा कालान्तक अग्नि हूँ, जिसमें तू पतंगा जलकर भस्म हो जायेगा॥ ४७॥ तव कुंभकर्ण हँसकर मेघ के समान गभीर वचन वोला—राम तू अच्छा चतुर है। परन्तु मैं वह खर, दूषण, या त्रिशिरा, कवन्ध, वाली नहीं हूँ, विराध मारीच आदि राक्षसों को मारकर तेरा तेज बढ़ गया है, परन्तु समझ कि मैं त्रैलोक्य का चमत्कार कुंभकर्ण वीर हूँ॥ ४८॥ सूर्य-वंश-तिलक, वानर-कुल-नाथ, तुम सिर उठाकर मेरे हाथ का प्रचंड मुद्गर देखो। मैंने इसी अस्त्र से पहले देवों को युद्ध में जीता है। असंख्य असुर-दैत्यों को मारकर

मोहोर हातत परिला आसिया तोमार मिलिला काल।
मुद्गर हानि दुयो भाइक मारि करो कपि बुन्दामार ॥
मोर नाक काण नाहिकय देखि हरिषक बर पाइल।
इहात मोहोर पीड़ा नाहिकय पिम्पराये येन खाइल ॥ ५०
तोमार शरक आगे हानि एरा यतेक तूणत आछे।
मोर मुद्गर प्रहारे मरिले तुमि कि करिबा पाचे ॥
मइ निद्रा गैया आछिलो जानिया तोमार नाछिल शङ्का।
बन्धु बान्धवक सबाके मारिया छन्न करिलाहा लङ्का ॥ ५१
गर्ब्ब बचनक शुनिया दारुण ज्वलिला कोप रामर।
कुम्भकरणर शरीरे ताड़िल अनेक सहस्र शर ॥
पर्ब्बतक येन फर्ब्बट हानिल कटाक्ष नाहिके तार।
विस्मय स्वरूपे राघवे गुणन्त किनो हिया बज्रसार ॥ ५२
यिटो शरे सात तालक भेदिलो पर्ब्बत भेदि पाताल।
फिरि आसि पुनु तूणत पशिल साक्षातते यमकाल ॥
दूषण खरर त्रिशिरा कवन्ध वालीर लैलो पराण।
कुम्भकरणर शरीरे बिफल भै गैला सिसब वाण ॥ ५३

पद

मुद्गर फुरावे गुवाले येन डाङ्ग * राघवर शरे ताक नुछुइलेक अङ्ग
कतो शरीरत परि गोटे याइ तल * कुम्भकर्ण वीरर बिपोहो बाढ़े बल ५४
मुद्गर तुलि कुम्भकर्ण खेदि याय * रामर पाशक लागि बानर पलाय
देखि चमत्कार भैला रामलक्ष्मणर * त्रैलोक्य ग्रासिते पारे घोर निशाचर ५५

यमलोक भेज दिया है ॥ ४९ ॥ तुम मेरे हाथ में आ पड़े हो, तुम्हारा काल आ पहुँचा है। मुद्गर के आघात से दोनों भाइयों को मारकर सभी बानरों को मार डालूँगा। मेरे कटे हुए नाक-कान देखकर तुझे बड़ा हर्ष हो रहा है। परन्तु इससे मुझे पीड़ा नहीं है, चींटी के काटने जैसा ही दर्द हो रहा है ॥ ५० ॥ तुम्हारे तूण में जितने वाण हैं पहले उनका प्रहार कर ले, नहीं तो मेरे मुद्गर के प्रहार से मर जाने पर उसके बाद तुम क्या करोगे ? मैं सोया हुआ हूँ—जानकर तुम्हें कोई शंका न थी, और हमारे बंधु-बांधवों को मार कर लंका को विध्वस्त कर डाला ॥ ५१ ॥ कुंभकर्ण के दर्पित वचन सुनकर राम को प्रचंड क्रोध आया और उन्होने उसके शरीर में कई सहस्र वाणों से आघात किया। परन्तु पर्वत पर मानो कंकड़ से मारा गया हो, ऐसे ही उसने कोई परवाह नहीं की। राघव विस्मित होकर सोचने लगे—इसका हृदय कितना बज्र का बना हुआ है ॥ ५२ ॥ जिस वाण से मैने पर्वत पाताल समेत सात ताड़ वृक्षों को वेध डाला था वह साक्षात यम-काल जैसा बाण भी लौटकर तूण में प्रविष्ट हो गया। खर, दूषण, त्रिशिरा, कबन्ध, बाली के प्राण जिससे ले लिए वे सारे वाण कुंभकर्ण के शरीर पर पड़कर विफल हो गये ॥ ५३ ॥ ग्वाला जिस तरह अपने डंडे को घुमाता रहता है, उसी प्रकार कुंभकर्ण मुद्गर घुमा रहा था। रामचन्द्र के वाणों ने उसका अंग तक स्पर्श नहीं किया। कितने ही वाण उसके शरीर में गिरकर नीचे गिर-गिर जाते थे, उनसे कुंभकर्ण के तन में बल बढ़ जाता था ॥ ५४ ॥ कुंभकर्ण मुद्गर उठा कर चढ़ दौड़ा, तब सारे बानर राम के पास भाग चले। यह देख राम-लक्ष्मण विस्मित हो गये, (सोचने लगे) यह घोर निशाचर त्रैलोक्य को ग्रास कर सकता है ॥ ५५ ॥ दोनों

दिव्य शर दुयो भाइ ताड़िला बिस्तर * हियात फुटिला वाण कुंभकरणर
क्रोधिया राक्षसे श्रीरामक धाइया याय * नाके काणे मुखे तार अगनि बजाय ५६
पर्व्वत आकार माथा गगन बियापि * राक्षस बानर बल पिसि नेइ छापि ।
सैन्यर उपरे दुइ हात आछारय * आपुन परक शत संख्यात मारय ५७
लक्ष्मणे बोलन्त शुना मोहोर वचन * रुधिरे प्रमत्त इटो नपावे चेतन
वर बर बीरे आर शरीरे चड़ाहा * दङ्गा दङ्गि करि आक भूमित पराहा ५८
चेतन लभिले आक कमने युजोक * पालटाइबे पारे इटो सकले त्रैलोक्य
यतवाल हुया आछे शोणितर गन्धे * हेला नकरिया आक युजियो प्रवन्धे ५९
लक्ष्मणर बचने हाम्फुलि सब साज * शरीरत चड़िला सरभ गय गज
वीर गन्धमाद्दन गवाक्ष जाम्बवन्त * नल नील अङ्गद वानर अपर्यन्त ६०
सहस्र संख्यात कपिगणे धरि हेलि * लाथि भुकु मारिया आवर पशे पेलि
आञ्चोरे कामोरे कतो किल भुकु मारे * चुलाड़ि करिया कतो केशर उभारे ६१
शरीर कम्पाया बीरे आटासेक दिला * सकल बानरबल उफरि परिला
चेतन हरिला कतो परि मूर्च्छा गैला * शत संख्या बानरर प्राण छारि गैला ६२
हानिलन्त लक्ष्मणे आशेष शरजाक * दिव्य अस्त्रसव हानि पीड़िलन्त ताक
एकगोट शर वीरे मने गुणि पाइल * आकर्ण पूरिया ताक हानिया पठाइल ६३
हियात परिया पिठि पाचे बाज भैला * शरर प्रहारे कुम्भकर्ण कम्पि गैला
आरो असंख्यात वीरे हानिलन्त शर * जर्ज्जरित कृते विन्धिलन्त कलेबर ६४

भाइयों ने अनेक दिव्य वाणो से उस पर प्रहार किया, वे वाण कुंभकर्ण के हृदय में चुभ गये । राक्षस क्रोधित होकर श्रीराम की ओर धावित हुआ । उसके नाक, कान, मुँह से आग निकलने लगी ।। ५६ ।। उसका पर्वताकार मस्तक आकाशव्यापी था, वह राक्षस कुचलकर वानर सेना को पीस डाल रहा था । वह सेना के ऊपर दोनों हाथ पटक रहा था और अपने-पराये लोगो को सैंकड़ों की संख्या में मार रहा था ।। ५७ ।। लक्ष्मण ने कहा—मेरे वचन सुनो, यह रक्त के कारण प्रमत्त कुभकर्ण सचेत नही है । बड़े-बड़े वीर इसके शरीर पर चढ़ जाओ और इसे खीच, पटक कर भूमि पर लिटा दो ।। ५८ ।। यह सचेत हो जाये तो इससे कैसे लड़ा जा सकता है, यह सारे त्रैलोक्य को उलट सकता है । यह शोणित की गंध से मतवाला हो रहा है, इसकी अवहेलना न कर उत्तम रीति से लड़ो ।। ५९ ।। लक्ष्मण के वचन सुनकर सब प्रकार से प्रस्तुत हो शरभ, गय, गज वीर गधमार्दन, गवाक्ष, जाम्बवन्त, नल, नील, अंगद आदि असंख्य बानर उसके शरीर पर चढ़ गये ।। ६० ।। सहस्रों की सख्या मे कपियों ने उसे पकड़ खीच कर लात, घूँसे मारने और धकियाने लगे । कुछ नोचते, काटते थे, कुछ घूँसे, मुक्के मारते थे, कोई वाल पकड़कर नोच लेते थे ।। ६१ ।। तव वीर कुंभकर्ण ने शरीर को हिलाकर चीख मारी जिससे समूची बानरी सेना छिटक कर दूर जा गिरी । कितने तो अचेत हो गये, कितने गिरकर मूर्च्छित हो गये, सैंकड़ो की संख्या में वानरों के प्राण निकल गये ।। ६२ ।। लक्ष्मण ने अनगिनत वाणों से प्रहार किया और दिव्यास्त्रों के आघात से उसे उत्पीड़ित कर डाला । अपने मन में विचार कर बीर लक्ष्मण ने एक वाण उठा लिया और कान तक धनुप की डोरी खीच उससे प्रहार किया ।। ६३ ।। वह वाण उसके हृदय में लगकर पीठ की ओर से निकल गया, उस वाण के प्रहार से कुभकर्ण काँप उठा । उन वीर ने और भी असंख्य वाण मारे जिसने उसके शरीर को वेध कर जर्जरित कर डाला ।। ६४ ।। आकाश से देवगण एकटक देखते जा रहे थे कि लक्ष्मण के वाणों से उसे चारों ओर से छा लिया । वाण के प्रचंड आघात से कुंभकर्ण कुपित

आकाशत देवे चाहि आछे एक चिति * लक्ष्मणर शरे ताक छाइला चतुर्भिति
कुम्भकर्ण कुपिला शरर महा घाय * मुद्‌गर फुराइया रामर पाशे याय ६५
श्रीरामे बोलन्त किनो मुनिष आछय * लक्ष्मणर शरक कटाक्ष न करय
बानरबलक सबे उपारि पेलावे * यमे येन खेदि आसे मोक लागि धावे ६६
वायव्य अस्त्रक रामे गुणत चड़ाइल * आकर्ण पूरिया ताक हानिया पठाइल
महाबेगे अस्त्र गैया तार लाग पाइल * मुद्‌गर समे हात काटिया पेलाइल ६७
पर्ब्बत शिखर येन बाहु ये परिल * बानर भालुक बल आशेष मरिल
आशेष बलर डरे मुखे मात नाइ * दुइ वीर युजन्त समस्ते आछे चाइ ६८
बाहु छेद भैला बीर चाहे आग पाच * बाम हाते उपारि लैलन्त शाल गाछ
बृक्ष थिय करिया रामक धाइया याय * राक्षस बानर परे शरीरर बाइ ६९
इन्द्र अस्त्र हानि रामे बुद्धि न घाटिल * वृक्ष समे तार सिटो हातक काटिल
निर्घात परिल येन बिदुर बियापि * राक्षस बानरबल दलिलेक चापि ७०
कुम्भकर्ण कुपिला उच्छ्रित बर काय * आति महाबेगे श्रीरामक धाइया याय
दुइ अर्द्धचन्द्र रामे गुणत चड़ाइला * दुइखान पाव तार काटिया पेलाइला ७१
चन्द्रक ग्रासिते येन राहु मुख बाया * चौराङ्गि शरीरे राघवक थाय धाया
मुखगोट देखि येन पाताल बिवर * सब पृथ्वी काम्पय नसहे पयोभर ७२
चमत्कारे रामे हाते धनुक धरिल * असंख्यात शरे तार मुखक भरिल
कुम्भकर्ण निशाचर हताशन भैला * निरुत्साही हुया गलगलाइबाक लैला ७३

हो उठा, वह मुद्‌गर घुमाता हुआ राम की ओर चला ।। ६५ ।। श्रीराम ने कहा, यह कितना पराक्रमी है कि लक्ष्मण के वाणो की परवाह भी नही करता। यह वानर सेना को विनष्ट कर डाल रहा है और मेरी ओर इस प्रकार दौड़ा आ रहा है, मानो यम मुझे खदेड़े आ रहा हो ।। ६६ ।। राम ने धनुष पर वायव्यास्त्र का संधान किया, और धनुष को आकर्ण खीचकर उससे प्रहार किया। प्रचंड वेग से वह अस्त्र उसके पास पहुँचा और मुद्‌गर समेत उसका हाथ काट डाला ।। ६७ ।। पर्वत शिखर जैसी उसकी भुजा नीचे गिर पडी जिससे असंख्य वानरो और भालूओं की सेना मारी गयी। कुभकर्ण के अशेष वल के डर से किसी के मुँह मे बात न थी। दोनो वीर लड रहे थे और अन्यसभी उन्हे देख रहे थे ।। ६८ ।। भुजा कट जाने पर वीर कुंभकर्ण आगे पीछे देखने लगा और बाये हाथ से एक शाल वृक्ष उखाड़ लिया। वृक्ष को खड़े उठाकर वह राम की ओर दौड़ा। राक्षस वानर सभी उसके शरीर की हवा से उड़ गिरते थे ।। ६९ ।। राम की बुद्धि पराभूत नही हुई। उन्होंने इन्द्रास्त्र का प्रयोग कर वृक्ष समेत उसकी वह भुजा भी काट डाली। बहुत दूर व्याप कर वह बिजली जैसा गिरा और राक्षसों व वानरों की सेना को कुचल डाला ।। ७० ।। कुंभकर्ण कुपित होकर अपने विशाल शरीर को फैला प्रचंड वेग से श्रीराम की ओर धावित हुआ। रामचन्द्र ने दो अर्द्धचन्द्र वाण प्रत्यंचा पर चढाये और उसके दोनों पैर काट डाले ।। ७१ ।। चन्द्रमा को ग्रसने हेतु दौड़ते हुए राहू जैसा कुभकर्ण अपने हाथ पैर विहीन शरीर मे ही राघव की ओर धावित हुआ। उसका मुँह पाताल के विवर-सा दिखाई दे रहा था, उसका भार न सह सकने के कारण समूची धरती काँपने लगी थी ।। ७२ ।। रामचन्द्र ने देखते-देखते हाथ से धनुष उठा लिया और अनगिनत वाण मारकर उसके मुँह को भर डाला। कुंभकर्ण निशाचर अब कुछ भी खाने योग्य न रहा; वह निरुत्साहित होकर गलगलाने लगा ।। ७३ ।। जब वह घोर निशाचर मोहग्रस्त हो गया तो राम ने उसे मारने हेतु यमदंड के समान वाण उठा लिया। इन्द्र ने जो वाणरूपी अस्त्र दिया था उसे वल

मोहोक लभिला येवे घोर निशाचर * यमदण्ड सम रामे धरिलन्त शर
इन्द्रे दिया शर अस्त्र हानिलन्त बले * मन पवनर वेगे सत्वरे निकले ७४
हियात भेदिला वाण कुम्भकरणर * पृथिवीक भेदि गैला पाताल भितर
वज्र हानि इन्द्रे येन गिरि फुलिलान्त * ठाटकार शवदे पूरिला गगनान्त ७५
रामे आरो वाणक मनत गुनि पाइल * दिव्य अस्त्र आरोपिया गुणत चड़ाइल
विधूम अगनि येन आदित्य प्रचण्ड * जाज्ज्वल्य समान देखि येन यमदण्ड ७६
आकर्ण पूरिया हानिलन्त महावली * सूर्य्यर किरण निवारिया याय चलि
वासवर वज्रे येन वृत्र असुरर * शिरच्छेद करिलन्त कुम्भकरणर ७७
माथागोट परिया लङ्कार बहुदूर * गृह मठ मण्डप करिला मथिपूर
चूर्णीकृत करिला प्राञ्चिर उपवन * स्त्री वाल्य वृद्धक आशेष कैला चूर्ण ७८
मेरुर सदृश परि गैला कलेवर * चूर्णीकृत भैला परि दुइ लक्ष वानर
लङ्कात ये आशेष तोरण खसि गैला * निरन्तरे नरे वर बिमूर्च्छित भैला ७९
हत शेष बले वर हताश नहैया * आथे वेथे राजाक ये जनाइलेक गैया
कुम्भकर्ण वध शुनि रामर शरत * मूर्च्छित रावण शरीरत नाहि तत ८०
आसनर खसिया परिला तेतिक्षणे * चेतनक हरिलेक त्रैलोक्य रावणे
बापर मरण देखि आसनर हन्ते * चारि भाइ मिलि गैला कान्दन्ते कान्दते ८१
देवान्तक नरान्त त्रिशिरा आतिकाय * हाकले विकले कान्दे पोरे सर्ब्बकाय
हरि हरि खुड़ाइ तोमार भैला काल * मानुपर शरघाव हेनसे विषाल ८२
महापाञ्च महोदर आदि वीरवर * कुटुम्ब स्वजने वेढ़ि कान्दिला बिस्तर
लङ्का नगरीत यत राक्षसर कुल * अन्तेष पुरत भैला शवद तुमुल ८३

लगाकर प्रहार किया; वह मन-पवन जैसे वेग से शीघ्रता से चल पड़ा ॥ ७४ ॥ वाण ने कुभकर्ण का हृदय वेध डाला और पृथ्वी को वेधता पाताल तक चला गया। जिस प्रकार बज्र के आघात से इन्द्र ने मानो किसी पर्वत को ताड़ित किया हो, उसी प्रकार प्रचंड गरज से कुभकर्ण ने दिगनत पूरित कर दिया ॥ ७५ ॥ रामचन्द्र ने मन मे चिन्तन करने पर और एक वाण को प्राप्त किया उस पर दिव्यास्त्र का आरोपण कर प्रत्यंचा पर चढाया। वह निर्धूम अग्नि और प्रचंड सूर्य जैसा उज्ज्वल, और यमदंड जैसा दिखाई दे रहा था ॥ ७६ ॥ महावली रामचन्द्र ने उसे कान तक खीचकर छोड़ा, वह सूर्य किरणों को विक्षरित कर चल पड़ा। जिस प्रकार वज्र ने वृत्रासुर का सिर काट डाला था, उसी प्रकार (उस वाण ने) कुंभकर्ण का शिरच्छेद कर डाला ॥ ७७ ॥ उसका सिर बहुत दूर छिटक कर लका मे गिरा और कितने ही गृह, मठ, मंडप आदि को विध्वस्त कर डाला। (कटे हुए सिर ने) दीवारों और उपवनों को चूर-चूर कर डाला और अनगिनत स्त्रियों बालकों, वृद्धों को चूर कर डाला ॥ ७८ ॥ उसका शरीर मेरु जैसा ढह पड़ा, जिससे दो लाख वानर चूर-चूर हो गये। लंका के अनगिनत द्वार ढह गये। कितने ही लोग अचेत हो गये ॥ ७९ ॥ उसकी बची हुई सेना बहुत अधिक हताश न हुई, शीघ्रता से जाकर उसने राजा को सूचित किया। राम के वाणों से कुंभकर्ण मारा गया, सुनकर रावण अशक्त-सा होकर अचेत हो गया ॥ ८० ॥ वह उसी क्षण सिंहासन से लुढ़कर गिर पड़ा, त्रैलोक विजयी रावण की चेतना चली गयी। पिता को मरा हुआ देखकर कुंभकर्ण के चारो वेटे रोते - रोते जा मिले ॥ ८१ ॥ देवान्तक, नरान्तक, त्रिशिरा, अतिकाय का शोक के मारे समूचा शरीर जलने लगा वे फूट-फूट कर रोने लगे। हाय, हाय, चाचा ही तुम्हारे काल हो गये। मनुष्य (राम) का वाणों का आघात ऐसा विषैला है ॥ ८२ ॥ महापाच, महोदर आदि श्रेष्ठ वीर और आत्मीय

कतो वेलि लङ्कानाथे चुरतिक पाइ * माथे भुकु दिया कान्दे हा प्राण भाइ
तोर बाहुबलक करिलो मइ आश * चुरति नधावे आवे भैलो निरुत्साह ८४
कैक गैलि मोक एरि भयाइ कनिष्ठ * एको एको कर्म्म करिलिहि असदृश
उपजिया अनेक सहस्र ऋषि खाइलि * आमार बंशर बर कीर्तिक अनाइलि ८५
सकल देवक तइ अकले भङ्गाइलि * नागलोक जिनिया यशक बर पाइलि
वज्रर प्रहार कटकटो न करिलि * मानुषर शरघावे पराणे मरिलि ८६
कहि गैलि बाप मोर बिभीषण भाइ * तोर बोल नुशुनिलो आपदक पाइ
माल्यवन्त मारीचेयो बुलिलन्त हित * दुर्गति कालत ताक देखिलोहो तित ८७
झाण्टे रथ साज आजि जीवाक नचाओं * श्रीरामक मारिया भयाइर मान पाओं
नुहि समरत परि रामर शरते * यमपुरे चलो कुम्भकर्णर लगते ८८
देवान्तक प्रमुखे मिलिया चारि भाइ * हातयोरे बुलिलेक आदेश बोपाइ
तोमार वैरक आजि निदलि पेलाओं * आदेश करियो हेरा युजिबाक याओं ८९
त्रिशिरा बोलय शुना बाप दशानन * सन्ताप एरियो मारो श्रीराम लक्ष्मण
मोर जोर न भैलेक देवर भुवने * श्रीरामक मारिबो हरिष करा मने ९०
त्रिशिरार वचने हरिष रावणर * बाहुरिया आइलायेन यमकरणर
सम्बुधि बोलय कुल प्रदीप सार्थक * सुपुत्रर प्रयोजन राखिबि बापक ९१

स्वजन घेरकर बहुत रोने लगे। लका नगर मे जितने राक्षस थे, सबके अंतपुर मे भयंकर रुलाई का नाद गूँजने लगा ॥ ८ ॥ कुछ क्षण पश्चात् लंकाधिपति रावण सचेत होकर सिर पर घूँसा मार-मार कर रोने लगा। हा, प्राण भाई मैंने तेरे बाहुबल की आशा की थी, अब मुझे ज्ञान नही रहा, मैं निरुत्साहित हो गया हूँ ॥ ८४ ॥ हे छोटे भाई, तू मुझे छोड़कर कहाँ चला गया ? तूने तो एक-एक कर्म बहुत ही अतुलनीय ढंग से किया था। उत्पन्न होते ही तूने अनेक सहस्र ऋषियों को खा डाला था और हमारे वंश की बड़ी कीर्ति फैलाई थी ॥ ८५ ॥ सभी देवों को तूने अकेले ही पराभूत किया था और नागलोक को विजय कर बड़ा यश प्राप्त किया था। तूने बज्र के प्रहार की भी कोई परवाह न की थी परन्तु आज मनुष्य के वाण से तू मारा गया ॥ ८६ ॥ अरे भैया विभीषण, तू कहाँ गया; तेरे वचन न मानने के कारण ही मुझ पर यह संकट आ पड़ा है। माल्यवन्त और मारीच ने भी हितकारी वचन कहा था, परन्तु दुर्गति-काल में वह कड़वा लगा ॥ ८७ ॥ शीघ्र ही रथ सजा ले, आज अपने जीवन को न देखूँगा। श्रीराम को मारकर या तो भाई का मान प्राप्त करूँगा, नही तो युद्धभूमि में राम के वाणों से मारा जाकर मै भी कुंभकर्ण के साथ ही यमपुरी चला जाऊँगा ॥ ८८ ॥ देवान्तक समेत चारों भाइयों ने हाथ जोड़कर कहा—तात, हमें आदेश दीजिये कि आपके वैरी को आज कुचल डालें। हमें युद्ध में जाने की आज्ञा दीजिए ॥ ८९ ॥ त्रिशिरा बोला, तात दशानन, सुनिये, संताप छोड़िये, मैं श्रीराम-लक्ष्मण को मार डालूँगा। देवों में या संसार मे मेरे जैसा बलशाली कोई नही है। मैं श्रीराम को मार डालूँगा आप मन में हर्षित होइये ॥ ९० ॥ त्रिशिरा के वचन सुनकर रावण को बड़ा हर्ष हुआ, वह मानो यमलोक से लौट आया। उसे सम्बोधित करते हुए कहा—तू मेरा सार्थक कुल-प्रदीप है। सुपुत्र की आवश्यकता इसीलिये है कि वह पिता के सम्मान की रक्षा करे ॥ ९१ ॥

अतिकायादि राक्षसर युद्ध आरु पतन

चारिगोट कुमारक मण्डि अलङ्कार * सुगन्ध चन्दन भूषि पुष्पे जातिष्कार
केहो गजे केहो घोंरे केहो याय रथे * महापञ्च महोदर चलय लगते ९२
चारिगोटा कुमार राजार दुइ भाइ * छयो महावीर लरि भैला आज्ञा पाइ
राजार चरण धूलि शिरत चड़ाइल * चतुरङ्ग दले सबे रणभूमि पाइल ९३
राक्षसर वल येवे समरक गैला * राघवर वले देखि सव साज भैला
जिङ्कोरिला कपिवल धरण न याय * वेढ़िया वरिषे वृक्ष शिखरर घाइ ९४
वृक्षसे सन्धाने कतो गिरिर शिखरे * राक्षस मारय कतो खाण्डार प्रहारे
राक्षसर बानरर रण घूमाजय * शिलार प्रहारे हुवे राक्षसर क्षय ९५
राक्षसवलर येवे अस्त्र गैला क्षय * बानरक तुलि तुलि बानर मारय
भालुकक मारे तुलि भालुकर गाय * रुधिर पियावे केहो मांस चोबाइ खाय ९६
हानिया आण्टाइला वृक्ष गिरिर शिखर * अस्त्र विरहित भैला भालुक बानर
फरबट येन राक्षसक तुलि तुलि * हानिया पाठावे गिरि शिखरक तुलि ९७
क्षणेके बानरवले राक्षस भङ्गइला * कुमारत गैया सवे शरण ये लैला
नरान्तके देखिलन्त निज सैन्य भङ्ग * कपिवल देखि तार मने वर खङ्ग ९८
महावीर नरान्तक राजार कुमार * घोंरात चड़िया गैला सैन्यर भितर
प्रासक उच्चाया बानरक मारे वारि * खड़गर घावे कतो प्राण याइ छारि ९९

अतिकाय आदि राक्षसों का युद्ध और पतन

चारों कुमारों को अलंकारो से मडितकर, सुगंधित चन्दन से भूषित, पुष्पों से सजाकर युद्ध के लिए भेजा। कोई हाथी पर, कोई घोड़े पर, और कोई रथ पर सवार होकर चला। महापंच और महोदर भी उनके साथ चले ॥ ९२ ॥ चारों कुमार राजा के दो भाई, ये छहों वीर आदेश पाकर वेग से चल पड़े। उन लोगों ने राजा की चरणधूलि सिर पर लगायी और चतुरंगिनी सेना सहित सभी रणभूमि में पहुँचे ॥ ९३ ॥ राक्षस-सेना जव युद्धभूमि में पहुँची तो उन्हें देख, राघव की सेना भी सजकर तैयार हुई। बानरी सेना नाद करती हुई ऐसे धावित हुई कि उसे रोका नहीं जा सकता था। वह राक्षसी सेना को घेरकर वृक्षों और शिखरों की वर्षा करने लगी ॥ ९४ ॥ कितने ही राक्षसों को वृक्षों के प्रहार से, कितनों को पर्वत-शिखरों के आघातों से और कितनों को खांडे की चोट से मार डाला। राक्षसों और बानरों का तुमुल-युद्ध छिड़ गया। शिलाओं के प्रहार से राक्षसों की सेना नष्ट होने लगी ॥ ९५ ॥ जव राक्षसी सेना के अस्त्र खत्म हो गये तो राक्षस बानरों को उठा-उठाकर उन्ही से बानरों को मारने लगे। भालुओं को उठा-उठाकर भालुओं को मारने लगे; कोई उनका रक्त पीने लगा, तो कोई चबाकर मांस खाने लगा ॥ ९६ ॥ वृक्षों और पर्वत शिखरों से प्रहार कर चुकने के पश्चात् भालू और बानर भी अस्त्र रहित हो गये। तव वे भी ढेले की भाँति राक्षसों को उठा-उठाकर पर्वत शिखरों पर फेंक, मारने लगे ॥ ९७ ॥ बानर सेना ने क्षण भर मे राक्षसों को तितर-बितर कर दिया। राक्षस भागकर कुमारों की शरण पहुँचे। नरान्तक ने अपनी सेना को भागते देखा तो बानरों की सेना को देख उसे बड़ा क्रोध आया ॥ ९८ ॥ राजकुमार महावीर नरान्तक घोड़े पर सवार हो, सेना के भीतर प्रविष्ट हुआ। वह प्रास उठाकर बानरों को मारने लगा, उसके खड्ग के आघात से कितनों के प्राण निकल गये ॥ ९९ ॥ जो-जो वीर उसे वृक्षों से मारने जाते

यत यत बीरे वृक्ष हानिबाक याय * सबाहाङ्के ढालय हानिया प्रास घाय
कुम्भकरणर हाते यतेक एराइल * नरान्तक रणे पुनु प्राणक सुजाइल ५६००
सुग्रीव देखन्त नरान्तक येन यम * प्रजा संहरिते आछे कालान्तक सम
आपुन सैन्यर येवे देखिला कदन * अङ्गदक सम्बुधिया बुलिला बचन ५६०१
शुनह अङ्गद बापु वीर वलीयार * सत्वर करिया राजकुमारक मार
इटोबीर जीवन्ते बानर हुइबे उलि * रावणर पुत्रशोके मारि एर पुलि २
अङ्गदे शुनिला येवे राजार आदेश * हाम्फोल करिया समरत परबेश
आन अस्त्र किछो नाहि नख आर दान्त * नरान्तक बीरक अङ्गदे बुलिलन्त ३
ओरे नरान्तक मोक यम हेन जान * बज्रर सदृश हृदयत प्रास हान
क्षुद्र ये पतङ्ग सम बानर नमार * पाचे तइ सह मोर मुठिर प्रहार ४
क्रोधे नरान्तक बारे चोवावन्त दान्त * हाओरे वानरा आजि तोक करो अन्त
काक आसि कि बोलह नाहिके उद्देश * एहि प्रास घावे तोर प्राण करो शेष ५
फुराइया हानिला प्रास अङ्गदक लागि * हृदयत परि सिटो प्रास गैला भागि
पर्ब्बतत परि येन दलि भैला चूर * अगनि कणिका उठि गैला बहुदूर ६
नरान्तक वीरर धवल आति घोर * उच्चैश्रवा सदृश पवन सम जोर
अङ्गदे हानिला मुष्टि कपालक लागि * तुरङ्गर ढेल निकलिला माथा भागि ७
बाहन परिला नरान्तक ये अतुष्टि * अङ्गदर कपलत हानिलन्त मुष्टि
बोम्बाले रुधिर निकलिया याइ धारे * बालीपुत्र काम्पि गैला मुष्टिर प्रहारे ८
क्षणेके अङ्गद सुस्थ करिला शरीर * बज्र सम मुष्टि धरिलन्त महावीर
वक्षस्थले टानिवर दिलन्त प्रहार * हृदि चूर्ण हैया प्राण छारि गैला तार ९

वह सभी को दौड़-दौड़कर प्रास से मार डालता था। कुम्भकर्ण के हाथ से जो बचे हुए थे, वे अव नरान्तक के हाथ मारे गये ॥ ५६०० ॥ सुग्रीव ने देखा, नरान्तक कालान्तक यम जैसा प्रजा का संहार कर रहा है। जव सुग्रीव की सेना का विनाश होने लगा तो उसने अंगद से यह वचन कहा—॥ ५६०१ ॥ वेटे महावली अंगद, सुनो, तुम शीघ्रता से इस राजकुमार को मार डालो। यह जीवित रहा तो बानरों का विनाश हो जायेगा। पुत्रशोक से रावण का समूल नष्ट कर दो ॥ २ ॥ जब अंगद ने राजा का आदेश सुना तो अट्टहास कर गरजते हुए युद्ध में प्रवेश किया। उसके पास नाखून और दांत के सिवा और कोई अस्त्र न था। अंगद ने वीर नरान्तक से कहा—॥ ३ ॥ अरे नरान्तक, तू मुझे अपना यम समझ। अपना वज्र जैसा प्रास मेरे वक्ष मे प्रहार कर। क्षुद्र पतंगों जैसे इन बानरों को न मार। आ, मेरे मुक्के का प्रहार सहन कर ॥ ४ ॥ क्रोध के मारे वीर नरान्तक दांत पीसने लगा। बोला, अरे बानर, आ, ठहर, आज तुझे समाप्त कर डालूंगा। तू किससे क्या कह रहा है, नहीं समझता, आज इसी प्रास के प्रहार से तेरे प्राण ले लूंगा ॥ ५ ॥ उसने प्रास घुमाकर अंगद पर प्रहार किया पर वह प्रास अंगद के वक्ष पर लगते ही टूट गया। मानो पर्वत पर गिरकर मिट्टी का ढेला चूर हो गया हो, उससे अग्नि के स्फुलिंग निकल कर दूर-दूर तक फैल गये ॥ ६ ॥ वीर नरान्तक का श्वेत घोड़ा उच्चैश्रवा जैसा था, उसका वेग पवन-सा था। अंगद ने उस घोड़े के सिर पर मुक्के से प्रहार किया जिससे उसका सिर फूट गया और आंखों के कोये निकल आये ॥ ७ ॥ सवारी के मारे जाने पर नरान्तक क्रुद्ध हो उठा, और अंगद के सिर पर मुक्के से प्रहार किया। अंगद के सिर से रक्त की धारा प्रवाहित होने लगी। वाली-पुत्र उस मुष्टि के प्रहार से कांप गया ॥ ८ ॥ क्षण भर में अगद का शरीर स्वस्थ हो उठा, उस महावीर ने बज्र जैसा मुक्का बांध लिया।

रणत परिल नरान्तक निशाचर * दश गुण तेज वल भैला अङ्गदर
देखि देवान्तके ये त्रिशिरा महोदर * अकल वीरक धाइला तिनि वीरवर ५६१०
क्रोधत ज्वलिया गैला तिनि वीरवर * अस्त्रजाले शरीर विन्धिला अङ्गदर
वालीपुत्रे समरत तिनिको धाइलन्त * लाथि भुकु काहाको खेकट करि दान्त ११
डाङ्गर वृक्षक पाचे आजुरि आनिल * सामर वुलिया देवान्तकक हानिल
समीप चापिला तरु येन कालदण्ड * त्रिशिरार शरे ताक कैला खण्ड खण्ड १२
वृक्ष शिला अङ्गदे आशेष वरिषिला * त्रिशिराये शरघावे सवाको काटिला
देवान्तके परिघे तोमारे महोदरे * त्रिशिराये अङ्गदक पीड़िलेक शरे १३
न करिले कटाक्ष अङ्गद महावले * महोदर गजक ताड़िला वक्षस्थले
दुइ चक्षु निकलिला मुष्टिर प्रहारे * दान्त दुइ आजुरिया लैलन्त ताहारे १४
दिला देवान्तकक हस्तीर दान्ते वारि * मूर्च्छा गैया परिला चेतन गैला छारि
कुञ्जर परिया गैला कुम्भस्थल भागि * देवान्तक डेव दिला पृथिवीक लागि १५
सन्धुक्षण भैला कतोक्षणे देवान्तक * परिघर कोवेक दिलेक अङ्गदक
वालीपुत्र परिलन्त पुत्र त्रिशिराइ * अङ्गदक हानिला अनेक शर घाय १६
शर वरिषणे वरिषय महोदर * तिनिहन्ते जन्ताइला पीड़िला निरन्तर
एके अङ्गदक तिनि राक्षसे युजन्त * देखिया धाइलन्त नील वीरे हनुमन्त १७
त्रिशिराक नील वीर हानिला शिखरे * रावणर पुत्रे ताक काटिलन्त शरे
चूर्णीकृत करिलेक गिरिर शिखर * देखिया हरिष देवान्तक निशाचर १८

और नरान्तक के हृदय पर वड़े जोर से प्रहार किया। उसका हृदय फट गया और प्राण निकल गये ॥ ९ ॥ निशाचर नरान्तक युद्ध में मारा गया, उससे अंगद का तेज और बल दसगुना बढ़ गया। यह देख, देवान्तक, त्रिशिरा, महोदर, ये तीनों वीर अकेले अंगद पर टूट पड़े ॥ ५६१० ॥ तीनों वीरवर क्रोध के मारे जल उठे और वाणों के जाल से अंगद के शरीर को वेध डाला। वाली-पुत्र अंगद भी तीनो से युद्ध करने दौड़ा, किसी को लात-घूंसो से मारा, किसी को दाँतों से काटा ॥ ११ ॥ इसके वाद एक वड़े वृक्ष को खींच उखाड लाया और 'संभाल' कहकर देवान्तक पर प्रहार किया, कालदंड जैसा वह वृक्ष उसके निकट पहुँचते ही त्रिशिरा ने अपने वाणों से उसे खंड-खंड कर डाला ॥ १२ ॥ तव अंगद उन पर अनगिनत वृक्षों और शिलाओं की वर्षा की। त्रिशिरा ने अपने वाणो के प्रहार से सबको काट डाला। देवान्तक ने परिघ से, महोदर ने तोमर से और त्रिशिरा ने वाणों से अंगद को पीड़ित कर डाला ॥ १३ ॥ महावली अंगद ने उस वात की परवाह भी नही की, और महोदर के हाथी के वक्षस्थल पर आघात किया। उनके मुक्के के प्रहार से उसकी दोनों आँखे निकल आयी; अंगद ने उसके दोनो दाँत उखाड़ लिये ॥ १४ ॥ और हाथी के दाँतो से ही देवान्तक को प्रहार किया। वह मूर्छित होकर गिर पड़ा, उसके प्राण निकल गये। हाथी का कुंभस्थल फट जाने के कारण वह गिर पडा, तव देवान्तक पृथ्वी पर कूद आया ॥ १५ ॥ कुछ क्षण मे देवान्तक को होश आया और उसने परिघ से अंगद पर चोट की। वाली-पुत्र अंगद गिरे तो त्रिशिरा ने पुन: अंगद पर अनेक वाणो से प्रहार किया ॥ १६ ॥ महोदर वर्षा की भाँति वाण-वर्षा करने लगा: उन तीनों ने मिलकर अंगद को निरन्तर पीड़ित किया। अकेले अंगद से तीनो राक्षस लड़ने लगे, यह देख वीर नील और हनुमान धावित हुए ॥ १७ ॥ वीर नील ने त्रिशिरा को वृक्ष के शिखर से प्रहार किया, रावण-पुत्र ने उसे वाणों से काट डाला। उसने गिरि-शिखर को चूर-चूर कर डाला, यह देख निशाचर देवान्तक वड़ा प्रसन्न हुआ ॥ १८ ॥ अपनी शक्ति से पकड़कर परिघ उठा, वह मारुति की ओर

आपुन शकति धरि परिघ उच्चाया * मारुतिक लागि शीघ्रबेगे गैला धाया
हनुमन्ते देखन्त आसय आथेबेथे * वज्रसम मुठि मारिलन्त तार माथे १९
चक्षु दान्त निकलिला माथागोट भागि * देवान्तक गैला यम सदनक लागि
राजार कुमार येवे परिला समरे * महोदरे नीलक बरिषे आति शरे ५६२०
निरन्तरे हानय चड़िया गजस्कन्धे * नीलक समर माजे मारिते प्रबन्धे
नील सेनापतिये पर्व्वतगोट तुलि * महोदर बीरक हानिला हुह बुलि २१
आकाशत लागिया उच्चाया बहु दूर * निशाचरे सारथिये चापि कैला चूर
खुड़ात परिला देखि त्रिशिरा खङ्गाइल * मारुतिक शर हानि चतुर्द्दिशे चाइल २२
बायुसुत बाढ़िलन्त येन हिमगिरि * घोंरा सब पलाइलन्त तार नखे छिरि
त्रिशिरा भूमित परि पाइल रथभङ्ग * भयङ्कर शकति हानिल बर खङ्ग २३
प्रलय कालर अग्निकुण्डर समान * देखि अन्तरीक्षे डेव दिला हनुमान
शकतिक हनुमन्ते दुयो हाते धरि * आण्ठु दिया भाङ्गिलन्त ठनाकृत करि २४
देखिया बानरबले रिङ्ग कोलाहल * प्रचण्ड बायुत येन सागर आस्फाल
क्रोधे ज्वलि गैला बीर त्रिशिरा कुमार * हृदयत प्रहार दिलेक खड़गर २५
वायुसुते आति बर करिया लवर * हियात हानिला वज्र समान छापर
त्रिशिरा मूर्च्छित भैला चेतनक छारि * हनुमन्ते ताहार खड़ग लैला काढ़ि २६
तेतिक्षणे चेतन लभिया कोपे उठि * हृदयत कपिर हानिला बज्र मुठि
मुठिर प्रहारे कपि बीर कम्पि गैला * फुरणि देखिया पुनः सन्धुक्षण भैला २७
बाम हाते केशेसमे किरीटी धरिला * जयघण्टा लारि आनि बाओं पाक करिला
सागर गहन बायुसुत महाबीर * खड़गर घावे छेदिलन्त तिनिशिर २८

शीघ्रता से चढ़ दौड़ा। हनुमान ने उसे वेग से आते हुए देख उसके सिर पर वज्र जैसा मुक्के का प्रहार किया ॥ १९ ॥ उसका सिर फूट गया, आँखे-दाँत निकल आये और इस प्रकार देवान्तक यमलोक पहुँच गया। जब राजकुमार युद्ध में मारा गया, तब महोदर ने नील पर अनेक वाणो की वर्षा की ॥ ५६२० ॥ वह निरन्तर हाथी के कंधे पर चढकर युद्ध मे नील को मार डालने हेतु वाणों का प्रहार करने लगा, सेनापति नील ने पर्वत उठाकर 'हुह' का निनाद करते हुए वीर महोदर पर प्रहार किया ॥ २१ ॥ वह आकाश मे वहुत ऊपर उठ गया और सारथी समेत निशाचर को चूर कर डाला। अपने काका को मारा गया देख, त्रिशिरा क्रोधित हो उठा और मारुति पर वाण-वर्षा कर चारों ओर देखा ॥ २२ ॥ पवनसुत हनुमान हिमगिरि जैसा विशाल हो उठे, उनके नाखूनों से विदीर्ण हो, घोडे भागने लगे। त्रिशिरा रथ के टूट जाने पर भूमि पर गिर पडा और बहुत ही क्रोधित होकर भयंकर शक्ति से प्रहार किया ॥ २३ ॥ प्रलयकालीन अग्निकुंड जैसी शक्ति को आते देखकर हनुमान आकाश में कूद गये और दोनों हाथों से पकड़कर उसे घुटनों से लगा ठन् से तोड डाला ॥ २४ ॥ यह देख बानर-सेना उल्लास से कोलाहल कर उठी। मानो प्रचण्ड वायु से सागर आलोड़ित हो उठा हो। वीर त्रिशिरा कुमार क्रोध से जल उठा और उनके हृदय पर खड्ग से प्रहार किया ॥ २५ ॥ पवनसुत ने प्रचण्ड वेग से धावित हो, उसके वक्ष में वज्र जैसी थप्पड़ लगायी। त्रिशिरा चेतनाहीन हो मूर्च्छित हो गया। हनुमान ने उसका खड्ग छीन लिया ॥ २६ ॥ उसी क्षण वह सचेत हो उठा और क्रोध से वज्र-से मुक्के की चोट उसके हृदय में की। मुक्के के प्रहार से वीर हनुमान काँप उठे। उन्हें चक्कर आ गया पर वे पुनः सचेत हो उठे ॥ २७ ॥ उन्होंने बाँये हाथ से उसके बालों समेत किरीट को पकड़ लिया और गला पकड़कर उसे कई बार घुमाया। पवनपुत्र सागर जैसे गंभीर महावीर थे; उन्होने

राजार कुमार येवे त्रिशिरा परिला * राघवर सेनाये कौतुके रिङ्ग दिला
पृथिवी कम्पाया येवे त्रिशिरा परिला * गदा फुरावन्ते महा पार्श्व निकलिला २९
वानरर सेनागण मारय अपार * ऋषभे भेण्टिला आसि पर्व्वत आकार
वरुणर पुत्र बानरर यूथपति * महापार्श्वे गुणे किनो दारुण शकति ५६३०
हृदयत वँसाइलेक गदार प्रहार * बोम्वाले निकलि गैला शोणितर धार
ऋषभेयो कतोक्षणे सन्धुक्षण हुइया * ताहार हातत गदा बले काढ़ि लैया ३१
माथात कोवेक तार वँसाइलेक टाने * शिर भागि महापार्श्व गैला यमथाने
शुभ शुभ जय जय भैला सवे लोके * देखि अतिकायक पीड़िला बर शोके ३२
मनत गुणय परिलेक तिनि भाइ * खुड़ा दुइ परिलेक बिपाकक पाइ
आजि राम लक्ष्मणक सकले वानरे * एकेश्वरे सवाको पठाइवो यमघरे ३३
मोर नामे इन्द्रेयो पलान्त रण छारि * कुवेरक कालक खेदाइलो गदाबारि
रथखान ज्वलय सहस्र रविज्योति * मण्डिया आछय मणि रत्न गजमति ३४
वहय ताहाक दुइ पाञ्चशत घोर * महाबेगे चलय पवन सम जोर
पर्व्वतर समान मुनिष अतिकाय * अस्त्रर प्रहारे सैन्य भङ्गावन्ते याय ३५
सवे सैन्य भङ्गभैला धरण नयाय * भालुक बानर उसमिसिया पलाय
श्रीरामे बोलन्त शुना मित्र विभीषण * इटोकोन बीर देखो भङ्गाइलेक रण ३६
सैन्यक मारय येन कालान्तक यम * जानिलोहो इहाक मुनिष नाइ सम
विभीषणे बोलय एहिटो अतिकाय * बीरत्व काहिनी आर कहन न याय ३७

खड्ग की चोट से उसके तीनों सिर काट डाले ।। २८ ।। राजकुमार त्रिशिरा जब मारा गया, तो रामचन्द्र की सेना बड़े कौतुक से नाद कर उठी । पृथ्वी को कम्पित कर जब त्रिशिरा मारा गया तव गदा घुमाते हुए महापार्श्व निकला ।। २९ ।। वह अपार बानरों की सेनाओं को मारने लगा । तव पर्वताकार ऋषभ ने आकर उसे रोका । वरुण-पुत्र वानरों के यूथपति महापार्श्व सोचने लगा, यह कैसा प्रचन्ड शक्तिमान है ।। ३० ।। उसने महापार्श्व पर गदा से हृदय में प्रहार किया । वहाँ रक्त की प्रवलधारा निकल चली । कुछ क्षण पश्चात् ऋषभ भी सचेत हो उसके हाथ की गदा बलपूर्वक छीन ली और उसके सिर पर जोरों से चोट की । सिर फूट जाने के कारण महापार्श्व यमलोक चला गया ।। ३१ ।। सभी लोकों में 'शुभ-शुभ' 'जय-जय' का नाद गूँज उठा, देखकर अत्यन्त शोक ने अतिकाय को पीड़ित कर दिया ।। ३२ ।। वह मन ही मन सोचने लगा, तीनों भाई मारे गये, दो-चाचा दैव दुर्विपाक से मारे गये । आज मैं राम-लक्ष्मण को सभी बानरों समेत अकेले ही यमालय भेज दूंगा ।। ३३ ।। मेरे नाम से इन्द्र भी युद्धभूमि छोड़कर भाग जाता है, कुवेर और यम को गदा के प्रहार से खदेड़ दिया था, मेरा रथ सहस्रों सूर्य की भाँति दमकता रहता है । इसमे मणि, रत्न, गजमुक्ताएं आदि जड़े हुए हैं ।। ३४ ।। इसे एक हजार घोड़े खीचते हैं । ये पवन जैसे वेगवान महाशक्ति से चलते हैं अतिकाय पर्वत जैसा पौरुष सम्पन्न था, वह अस्त्रों के प्रहार से सेना को खदेड़ने लगा ।। ३५ ।। सारी सेना भागने लगी, वह रोके नहीं रुकती थी । सारे भालू, बानर हाहाकार करते हुए भागने लगे । श्रीराम ने कहा, मित्र विभीषण, सुनो । देखो तो वह कौन वीर है जो युद्धभूमि में सेना को खदेड़ रहा है ।। ३६ ।। यह कालान्तक यम के समान सेना को मार रहा है । समझ गया हूँ कि इसके जैसा वीर कोई नहीं है । विभीषण ने कहा, यह अतिकाय है । इसकी वीरता की कथा कहकर अंत नहीं की जा सकती ।। ३७ ।। इसने सम्मुख युद्ध में इन्द्र को पराभूत कर दिया था । इसका तेज अग्नि, वरुण, यम भी सहन नहीं कर सकते । इसने ब्रह्मा की आराधना कर वर प्राप्त

बासवक भङ्गाइलेक सम्मुखर रणे * लाहारि न सहे यम अगनि बरुणे
ब्रह्माक आराधि इटो पाया आछेवर * देवासुर नाग यक्ष लोकत अमर ३८
सबे बश्य करिलेक एहि तिनिलोक * अवहिते युजियोक रावणर पोक
एतहन्ते अतिकाय सन्नित चापिया * रामक बुलिबे लैला गरब करिया ३९
यिटो बीरे मुनिष बोलावे आपुनाक * शकति आछय रण दियोक आमाक
हनुमन्त प्रमुखये बानरकुल रख * सकलहि बानर आमार निज भक्ष्य ५६४०
त्रैलोक्य जिनिलो मुनिषत मोर काज * इतर जनक युजिबाक लागे लाज
तार गर्ब्ब बचन शुनिया तेतिक्षणे * काण्डे तूण भरि धनु धरिला लक्ष्मणे ४१
आकर्ण पूरिया धनु करिला टङ्कार * शवदे पाइलेक गैया स्वर्गर दुवार
परिबर्त्ति आइला ध्वनि स्वर्गपुर हन्ते * प्रतिध्वनि गैला गिरि सागर पर्य्यन्ते ४२
पृथिवीर लोकर काणत ताल दिल * लङ्कात बिस्मय बर निर्घात परिल
अतिकाय बीरर लागिला चमत्कार * मनत गुणय किनो बीर बलियार ४३
लक्ष्मणक बोले तुमि बाहुरिया याहा * निद्रार ये सर्पक किसक जगावाहा
आमार हातत येवे नयाइबे पराण * झाण्ट करि हातर थै एर धनुबान ४४
त्रैलोक्य जिनिलो तइ बीर कोन बख * छवालक युजिबाक लागय बेलाख

छबि

आपुनार शरीरत ममत आछय येवे हित बोल नोरोचय तोक ।
यम करणक पाति मलचिला हेन जानि आगि बाढ़ि रणदेह मोक ॥ ४५
दिव्य अस्त्र यतयत मोहोर हातत आछे ताक कहिबार कार्य्य किस ।
यमदण्ड समसर शरर प्रहार सह तेवे तइ मुनिष हवस ॥

किया है कि देव, असुर नाग, यक्ष के हाथ कभी इसका मरण नहीं होगा ॥ ३८ ॥ इसने तीनों लोकों में सबको वशीभूत कर लिया है । इस रावण-पुत्र के साथ आप सतर्कता से लड़िये । इतने में अतिकाय निकट आकर गर्व से राम से कहने लगा—॥ ३९ ॥ जो वीर अपने को वीर्यवान समझता है उसमे शक्ति हो तो आकर हमसे लड़े । हनुमान समेत वानर-कुल को रोक रखो । ये सभी वानर हमारे भक्ष्य हैं ॥ ५६४० ॥ मैंने त्रैलोक्य विजय की है । अब मुझे पौरुष सम्पन्न व्यक्ति चाहिए । अन्य नीचे लोगों से लड़ने में मुझे लज्जा आती है । उसके गर्वित वचन सुनकर उसी क्षण लक्ष्मण ने तरकश में वाण भरकर धारण कर लिया ॥ ४१ ॥ उन्होने कान तक खींचकर धनुष का टंकार किया । वह शब्द स्वर्ग के द्वार तक पहुँचकर गूंज उठा । स्वर्गपुरी से लौटने पर उस ध्वनि की प्रतिध्वनि पर्वत सागर तक गूंज उठी ॥ ४२ ॥ पृथ्वी पर के लोगों के कानों में ताले पड़ गये । लंका में सब ऐसे चकित हो उठे मानो वज्रपात हुआ हो । वीर अतिकाय भी चमत्कृत हो उठा । मन ही मन सोचने लगा, यह कैसा वीर बलवान है ॥ ४३ ॥ लक्ष्मण से कहा तुम लौट जाओ । निद्रित सर्प को भला किसलिए जगा रहे हो ? यदि चाहते हो कि मेरे हाथों से तुम्हारे प्राण निकल न जायें तो शीघ्रता से हाथों से धनुष वाण छोड़ दो ॥ ४४ ॥ मैंने त्रैलोक्य जीत लिया है, तू ऐसा कौन-सा वीर है । बच्चे से लड़ने में करुणा आती है ।

अपने शरीर की यदि ममता है, (तो चला जा) हितकारी वचन तुझे अच्छा नहीं लगता । यमलोक में तेरी पुकार हुई है तो आगे बढकर मुझसे संग्राम कर ॥ ४५ ॥ मेरे हाथों मे जितने दिव्यास्त्र है, उनका वर्णन करने की क्या आवश्यकता है ? यदि मेरे

लक्ष्मणेयो सम्बुधिया राक्षसक बुलिलन्त अतिकाय किहक तर्ज्जस ।
आनत भावना कह शरत कालर मेघ मिछा तइ किसक गर्ज्जस ॥ ४६
वीर हुया यिटो बीरे मुनिषाइ न जानिया आनक निन्दय रणशाले ।
दुर्गति पतित भैले समरत परे यदि ताहाक निन्दय पाच काले ॥
मुनिषर पोव येवे मुनिस हवस तइ विपक्षक निन्दिते चाहस ।
वाढ़ि रण पौरुजाउ दान्त भागा साप येन मिछात किसक फोकारस ॥ ४७
आपुनाक बर करि आनक ताकर जानि बुलिलि ये आगे अनुसर ।
छवालर मुठि देख गुचाओं तोर बैलाख मारि पेषो यमर नगर ॥
लक्ष्मणर शरघावे घर्म्म चड़ि गैला गाढ़े ज्वलिलेक राक्षस अगनि ।
आकर्ण पूरिया धनु शरगोट मारिलेक आकाशे ज्वलन्ते याइ छानि ॥ ४८
रामर कनिष्ठे ताक अर्द्धचन्द्र वाण हानि अन्तरीक्षे काटिया पेलाइल ।
देव दैत्य नर यक्ष दानव यतेक नाग सबे हन्ते कौतुकक पाइल ॥
आर पाञ्च गोटाशर आतिकाये हानिलेक लक्ष्मणे हानिला पुनुताके ।
अनेक लक्षेक शरे सूर्य्यपथ रुधिलेक निशाचर ताहाङ्क आथाके ॥ ४९
सुमित्रा तनये जानि आपुनार शरे हानि अस्त्रे काटि पेलाइल सकल ।
आकर्ण पूरिया धनु अस्त्रगोट हानिलेक कपालत फुटिला सकल ॥
शरगोट पशि गैला ताक केहो नलक्षिल घटी घटी रुधिर वजाइल ।
कतो बेलि मूर्च्छा गैया आछिलेक अतिकाय क्षेणेकते चेतन पाइल ॥ ५६५०
सार्थक ये दशरथ कुलर नन्दन बीर तिनियो भुवने यश पाइले ।
स्वर्ग मर्त्य पातालक वराइलो मइ हेन बीर एक गोटाशरते कम्पाइले ॥

यमदंड-सदृश वाणो का प्रहार सह सके तभी (मैं मानूंगा) तू पराक्रमी है । लक्ष्मण ने भी उसे सम्वोधित कर कहा—अरे अतिकाय तू किससे अहंकारपूर्ण वचन कह रहा है ? तू दूसरों के सामने अपना बखान करना । तू तो शरतकाल का मेघ है (जो गरजता है पर बरसता नही ।) वेकार क्यो गर्ज रहा है ? ॥ ४६ ॥ वीर होकर भी जो वीर दूसरों का पराक्रम न जानकर युद्धभूमि मे निन्दा करता है, वह जब युद्ध में दुर्गति में पड़कर मारा जाता है तो वाद को उसकी सभी निन्दा ही करते है । तू यदि पराक्रमी का वेटा है, स्वयं भी पराक्रमी है और विपक्ष की निन्दा करना चाहता है तो आगे बढ़कर संग्राम कर । दाँत टूटे सांप जैसे वेकार क्यों फुफकार रहा है ? ॥ ४७ ॥ अपने को बड़ा और दूसरे को नगण्य मानकर तूने जो कुछ कहा है उसका आगे भी अनुसरण कर । तू बच्चे की मुट्ठी देखता है, तेरा गर्व अभी मिटा डालूंगा और मारकर यमलोक भेज दूंगा । लक्ष्मण के वाणों के आघात से उसे पसीना आ गया वह निशाचर क्रोध से अग्नि की भाँति जल उठा । उसने धनुष को कान तक खींचकर एक वाण मारा जो जलता-सा आकाश व्याप्त कर चला ॥ ४८ ॥ लक्ष्मण ने उसे अर्धचन्द्र वाण मारकर अन्तरिक्ष में ही काट डाला । देव, दैत्य, नर, यक्ष, दानव, नाग, सभी को बड़ा कौतूहल हुआ । अतिकाय ने और पाँच वाण छोड़े जिन्हें लक्ष्मण ने पुनः काट डाला । अनेक लक्ष वाणों से निशाचर ने उन्हें व्यथित करने के लिए सूर्य-मार्ग को भी रोक दिया ॥ ४९ ॥ यह जानकर लक्ष्मण ने अपने वाणों से प्रहार कर उसे अस्त्र से काट डाला । उन्होंने कान तक खीचकर एक ऐसे अस्त्र से प्रहार किया जिसने उसके कपाल को वेध डाला । वाण उसके कपाल में घुस गया, यह किसी ने भी नही देखा, कपाल से घड़ा-घड़ा रक्त निकलने लगा । अतिकाय कितने ही समय तक मूर्छित रहा । कुछ क्षण पश्चात् उसकी चेतना लौटी ॥ ५६५० ॥ (वह सोचने लगा) दशरथ-कुल-नन्दन वीर लक्ष्मण धन्य है इसने

आरकायो शरे हानि सूर्यपथ रुधिलेक लक्ष्मणक बेढ़ि तमोमय ।
देवगण रामसेना सबारे सम्भ्रम मन अन्तर्गते जालिलेक भय ।। ५१
सैन्यर बिभ्रम अति देखिया सुमित्रासुते बायव्यर अस्त्रक मारिल ।
रबिर किरणे येन अन्धकार फेरिलेक राक्षसर अस्त्र संहारिल ।।

पद

क्रोधिला रावणसुत बीर अतिकाय * हियात हानिला वज्र सम शरघाय ५२
अन्धकार तमोमय देखिला लक्ष्मणे * सन्धुकि अगनि अस्त्र लैला तेतिक्षणे
अगनिर अस्त्र बीरे हानिलेक मात्रे * राक्षसे काटिला ताक आदित्यर अस्त्रे ५३
दुइ अस्त्रे युद्ध भैला हुया एक ठाइ * आउरे आउरे चूर्ण पृथिवीत परियाइ
ऐषिकी अस्त्रक हानिलन्त निशाचरे * इन्द्र अस्त्रे निवारिला लक्ष्मण कुमारे ५४
यम अस्त्र निशाचरे करिल प्रहार * सुमित्रे वायव्य अस्त्रे करिला संहार
अस्त्रर प्रहार दुइरो तत्तुल्य समान * अतिकाय बलशील धनुर सन्धान ५५
तक्षकर सदृश हानिलन्त एक शर * हृदयत परि मूर्च्छा कनिष्ठ रामर
दशरथ सुते पाचे चेतनक पाइल * शर हानि रथ घोरा काटिया पेलाइल ५६
ध्वजक छेदित पाचे सारथिर शिर * भूमित परिला अतिकाय महाबीर
भूमित थाकिया शर हानय अपार * लक्ष्मणक छाया करिलेक अन्धकार ५७
आपुनार शरे पुनु काटिलन्त बीरे * अतिकाय बीरक बिन्धिला सशरीरे
दुइहानो शरक पुनु दुइहान्ते काटन्त * घोर समरर माजे दुयो नघाटन्त ५८

तीनों लोकों में यश पा लिया । स्वर्ग, मर्त्य, पाताल को पदाक्रांन्त करनेवाले मुझ वीर को इसने एक वाण से कंपा डाला है । उसने पुन: वाण-वर्षा करते हुए सूर्य के मार्ग को रोक दिया, लक्ष्मण को घेर कर अंधकार हो गया । देवगण, राम की सेना, सबके चित्त सशय में पड़ गये, सबके हृदय में भय उत्पन्न हो गया ।। ५१ ।। सेना को विभ्रम में पड़े देख लक्ष्मण ने वायव्यास्त्र छोड़ा । रवि की किरणें जिस प्रकार अन्धकार नाश कर देती हैं वैसे ही उस अस्त्र ने राक्षस के अस्त्र को नष्ट कर दिया ।

रावणपुत्र वीर अतिकाय क्रोधित हो उठा और उनके हृदय में वज्र जैसे वाण से प्रहार किया ।। ५२ ।। लक्ष्मण की आँखों के सम्मुख घना अंधकार छा गया । उस क्षण सचेत होकर उन्होंने अग्नि अस्त्र उठा लिया । उन्होंने जैसे ही अग्नि अस्त्र से प्रहार किया राक्षस ने उसे आदित्यास्त्र से काट डाला ।। ५३ ।। दोनों अस्त्र एक स्थान पर एकत्रित हो, युद्ध करने लगे । एक दूसरे को चूर-चूर कर पृथ्वी पर गिर जाने लगे । तब निशाचर ने ऐषिकी अस्त्र से प्रहार किया जिसका कुमार लक्ष्मण ने इन्द्र अस्त्र से निवारण कर दिया ।। ५४ ।। तब निशाचर ने यम अस्त्र से प्रहार किया । सुमित्रा-नन्दन से उसे वायव्यास्त्र से संहार किया । दोनों के अस्त्रों के प्रहार समान ही थे । बलवान अतिकाय ने धनुष का संधान किया ।। ५५ ।। उसने तक्षक जैसे एक वाण का प्रहार किया, लक्ष्मण के हृदय में लगने के कारण वे मूर्च्छित हो उठे । परन्तु उसके बाद दशरथ के पुत्र ने सचेत ही वाणों के प्रहार से रथ, घोड़े को काट डाला ।। ५६ ।। इसके पश्चात् उन्होंने ध्वजा और सारथी का मस्तक काट डाला । महावीर अतिकाय भूमि पर गिर पड़ा । वह भूमि पर से ही अनगिनत वाणों का प्रहार करने लगा । उन वाणों ने लक्ष्मण को घेरकर अंधेरा कर दिया ।। ५७ ।। पुन: वीर लक्ष्मण ने अपने वाणों से उन्हें काट डाला और वीर अतिकाय के शरीर को वाणों से बेध डाला । फिर

अजय अभङ्ग दुयो राजार कुमार * रुधिरे पङ्किकत देहा शरे जराजर
पृथिवी आकाशे जलजन्तुर विस्मय * किनो दुइ बीर युजे अभङ्ग अजय ५९
एतहन्ते आलोचिया जगतर आयु * लक्ष्मणर काणत कहिला आसि बायु
ब्रह्मा वर दिला इटो त्रैलोक्य विजय * ताहानेसे प्रहारे इहार हैबे क्षय ५६६०
आन एको प्रकारे नमरे अतिकाय * भेद कथा कहिलो यिमते बध याय
बरछिद्र शुनिलन्त वायुर मुखत * लक्ष्मणे ब्रह्मार अस्त्र चड़ाइला गुणत ६१
वेदमन्त्र अभिषेकि हानिलन्त ताक * अस्त्रर अगनि निकलय जाक जाक
चन्द्रर सूर्य्यर ज्योति चूर्ण आति भैला * अस्त्रर प्रहारे बसुमती टलि गैला ६२
दशोदिशा व्यापिया गुचिल तमोमय * सब दिश प्रकाशिया ब्रह्मास्त्र चलय
ब्रह्मास्त्रे व्यापिला अतिकाय चमत्कार * मुद्गर गदाये ताक करय निबार ६३
अस्त्र सब पूरि ब्रह्मअस्त्र याइ छानि * तुलात लागिल येन प्रचण्ड अगनि
रावणर पुत्र अतिकाय महावीर * लक्ष्मणर शरे तार छेदिलन्त शिर ६४
कुण्डल किरीटि समे छेदिलन्त शिर * शिखरर भरे येन पृथ्वी गिरगिर
आशेष परिल सेना ताहार लगत * कतोहो जनाइला गैया राजार आगत ६५
लङ्केश्वरे शुनिलन्त तनयर बध * बिमूर्च्छित भैला कुरि नयन तवध
चारि पुत्र परिला आवर दुइ भाइ * शुनि शोके रावणर प्राण फुटि याइ ६६
सारणे देखे आरो शोके तमोमय * मौने थाकिला सबे पात्र समस्तय
रावणे क्रन्दन करे चेतनक पाइ * कैंक गैले देवान्तक त्रिशिरा बोपाइ ६७

दोनों के वाणों को दोनों काटने लगे। घोर युद्ध में दोनों में कोई भी पराजित नहीं होता था।। ५८।। दोनों राजा के कुमार युद्ध में अजेय और पीठ न दिखानेवाले थे। दोनों के शरीर रक्त से सरावोर और वाणो से जर्जर थे। पृथ्वी, आकाश में प्राणियों और जल-जन्तुओं को विस्मय हुआ कि अशंक और अजेय ये दोनों वीर कैसे लड़ रहे हैं।। ५९।। इतने में विश्व की आयु के वारे में सोचकर वायु ने आकर लक्ष्मण के कानों में कहा—ब्रह्मा ने इसे वर दिया है कि यह त्रैलोक्य विजयी होगा। केवल उन्ही के (अस्त्र-ब्रह्मास्त्र के) प्रहार से यह नष्ट हो सकता है।। ५६६०।। और किसी भी प्रकार से अतिकाय मारा नही जा सकता। इसका वध जिस तरह से हो सकता है इसके रहस्य की बात बता दी। वायु के मुँह से वर के छिद्र (त्रुटि) के वारे में सुनकर लक्ष्मण ने धनुष पर ब्रह्मास्त्र का सधान किया।। ६१।। उसे वेदमंत्र से अभिषिक कर उस पर प्रहार किया। उस अस्त्र से लगातार आग निकलने लगी। चन्द्र, सूर्य की ज्योति भी उससे चूर्ण (मलिन या नष्ट-सी) हो गयी। उस अस्त्र के प्रहार से धरती काँप उठी।। ६२।। दसों दिशाओं में व्याप्त अंधकार मिट गया। सारी दिशाओं को प्रकाशित करता ब्रह्मास्त्र चल पड़ा। चमत्कृत अतिकाय को ब्रह्मास्त्र ने व्याप्त कर लिया, वह मुद्गर और गदा से उसका निवारण करने लगा।। ६३।। सारे अस्त्रों को जलाकर ब्रह्मास्त्र यों आगे वढता गया मानो रूई मे आग लग गयी हो। रावण का पुत्र अतिकाय महान् वीर था, लक्ष्मण के वाणों ने उसका सिर काट लिया।। ६४।। कुंडल-किरीट सहित उसके सिर को काट लिया। (उसके गिरने पर) मानो पर्वत-शिखर के प्रहार से पृथ्वी धँसने सी लगी। उसके शरीर के तले अनगिनत सेना आ पड़ी। कुछ सैनिकों ने जाकर राजा को सूचना दी।। ६५।। रावण ने जब पुत्र के वध का समाचार सुना, तो वह मूर्च्छित हो गया, उसके बीसों नयन स्तब्ध रह गये। चार पुत्र और दो भाई मारे गये, सुनकर शोक के मारे रावण के प्राण निकलने लगे।। ६६।। सारण के सामने भी शोक के मारे अंधेरा छा गया। सभी मंत्री आदि मौन रह गये, सचेत होने

कैक गैले देखिबोहो नरान्तक पोक * मन्दोदरी ज्वलिबेक दशगुण शोक
हा हा केने देखिबोहो पुर पटेश्वरी * कोल शून्य करिलोहो बान्धें मन्दोदरी ६८
एकें एकें पुत्र यार त्रैलोक्य विजय * ताहार मरणे केने प्राणक धरय
हरि हरि अतिकाय केने बध पाइले * सब देव जिनिया इन्द्रक बेलखाइले ६९
गर्ब्ब टुटि गैल मोर भैलो निरुत्साह * मोक एरि बाप केने यमघरे यास

इन्द्रजितर युद्धत बानर सैन्यर आरु श्रीराम-लक्ष्मणर मोह

इन्द्रजिते गाव चालि जुरिलेक कर * मइ चलि भैलो हेरा बाप लङ्केश्वर
एकेश्वरे सब कुमारर मान सारो * आज्ञा करियोक राम लक्ष्मणक मारो ५६७०
भालुक बानर यत तार अनुकूल * अकले सबाक मारि करिबो निर्म्मूल
सबाक संहरो आजि वरदत्त वाणे * वलिर यज्ञक येन छलिला बामने ७१
माथात चुम्बिया दशानने प्रशंसिला * सकल सम्भृते ताक रणत पेशिला
अलङ्कारे मण्डि तार रथत चलय * लङ्कार माजत येन सूर्य्यक ज्वलय ७२
हस्ती घोंरा रथ साजि निशाचरगणे * समर भूमित गैया पाइला तेतिक्षणे
राक्षसे तेक्षणे आनि योगाइला सम्भृत * यज्ञक करय बीरबर इन्द्रजित ७३
रणभूमि माजे निया अगनि थापिल * कलिया छागल आनि टिटु भसारिल
तपत ये रुधिरे लोहोर भरि स्रुवे * अगनिक पूजिला अक्षत तिल दुर्ब्बे ७४

पर रावण रुदन करने लगा—अरे देवताओं का नाश करने वाला वत्स त्रिशिरा, तू कहाँ चला गया ।। ६७ ।। अब कहाँ जाने पर बेटे नरान्तक को देखूँगा ? मंदोदरी दसगुने शोक से जल उठेगी । हाय, हाय, पटरानी (की वेदना) कैसे देख सकूँगा । बंधवी मंदोदरी की गोद सूनी कर दी ।। ६८ ।। जिसके एक-एक पुत्र त्रिलोक-विजयी हैं, उनके मरने पर वह अपने प्राण कैसे धारण कर रखेगी ? हाय-हाय, अतिकाय कैसे मारा गया । सारे देवों को जीत कर उसने इन्द्र को भी पराभूत किया था ।। ६९ ।। मेरा गर्व टूट गया, मैं निरुत्साहित हो गया । बेटे, मुझे छोड़कर तू यमलोक क्यों जा रहा है ।

इन्द्रजित के युद्ध में बानर सेना और श्रीराम-लक्ष्मण का मोह

इन्द्रजित ने उठकर हाथ जोड़े कहा, हे पिता लंकेश्वर, मैं अब चल रहा हूँ । अकेले ही मैं सभी कुमारों का मान पूरा कर दूँगा । आज्ञा कीजिये, (मैं जाकर) राम-लक्ष्मण को मार डालूँ ।। ५६७० ।। जो भालू, बानर उनके पक्ष के हैं, मै अकेले उन सबको मार कर निर्मूल कर दूँगा । अपने वरदान-प्राप्त वाणों से आज सबका उसी प्रकार संहार कर डालूँगा जैसेकि वामन ने बलि के यज्ञ में छलना की थी ।। ७१ ।। तब रावण ने उसके सिर को चूमकर प्रशंसा की और सारी सेना के संग उसे युद्ध में भेजा । इन्द्रजित अलंकारों से मंडित हो अपने रथ पर चला । ऐसा लगता था मानो लंका में एक सूर्य जल रहा हो ।। ७२ ।। हाथी, घोड़े, रथ आदि पर सजकर निशाचर-गण उसी क्षण युद्धभूमि में पहुँच गये । राक्षसों ने उसी क्षण सामग्रियाँ जुटा दीं और बीरबर इन्द्रजित यज्ञ करने लगा ।। ७३ ।। रणभूमि के बीच ले जाकर अग्नि की स्थापना की, काले बकरे की गरदन तोड़ डाली और उसका गर्म खून स्रुवा भरकर अक्षत, तिल और दूर्वा से अग्नि की पूजा की ।। ७४ ।। वह धीरे-धीरे मंत्र पढ़कर आहुतियाँ देने लगा । 'भयड़ा' काठ को रक्त से मंडित कर अग्नि में डालने लगा । अग्नि ने

आहुति करय मन्त्र पढ़े धीरे धीरे * भयड़ा काण्ठक हुने माखिया रुधिरे
मूर्त्तिधरि अगनिये लैलन्त सकल * रण जिनिबारे चिन पाइलन्त मङ्गल ७५
आह्वान करय बीरे राक्षस अस्त्रक * त्रैलोक्यत भय भैला हृदय चमक
सकल सम्भृते आइला अन्तरीक्ष रथे * ताते चड़ि आसिलेक मारुतर पथे ७६
अन्तर्द्धान भैला येवे बीर मेघनाद * श्रीराम लक्ष्मण सबे बानरे विषाद
मायाबले रावणि हानय शरजाक * बानर बिस्मय बर नलक्षिया ताक ७७
बीर कपिगण यत आकाशक गैला * इन्द्रजितक केहो खुजिया नपाइला
अन्तर्द्धान हुया त्रिदशत अगोचरे * सबाको शकति शूले बिन्धिलेक शरे ७८
सुग्रीवक आङ्गदक हनुये मन्तक * मैन्द्य द्विविदक धूम्राक्षक जाम्बवक
गोमुख ये वेगदरशिव ये नलक * सूर्य्यानलक ये चन्द्रानल ऋषभक ७९
नलक ये नीलक ये गन्धमार्द्दनक * शालिया थैलेक पृथिवीक शरीरक
सुषेण ये गवाक्षक ज्योति ये मुखक * सम्पातिक केशरीक गवय गजक ५६८०
दरीमुख दधिमुख बीर केशरीक * वानरक भालुकक सकल सैन्यक
ब्रह्माक आराधि इटो बरक पाइलेक * मायाबले रावणि सबाको जिनिलेक ८१
सब रणभूमिखान भालुक बानरे * निरन्तरे भरिलेक पर्ब्बत शिखरे
सब सेना निश्चेष्टे थाकिला दान्ततरि * चक्षुक तबध करि धरणीत परि ८२
श्रीरामे बोलन्त लखाइ हारिलोहो बुके * तोमार आमार शरे इहाक नुटुके
सब सेना मारिलेक आमासार आगे * श्रुति बुद्धि नधावय मारितेसे लागे ८३
दुइ भाइ आसा हाते धनुशर धरि * एतिक्षणे हैब बानरर संतोवारी
नाहि प्रतिकार आक ब्रह्मा दिला बर * दृढ़ मुठि करि हाते धनुशर धर ८४

मूर्तिमान होकर सब कुछ ग्रहण कर लिया। उसने रण में विजय के मांगलिक शगुन पा लिया ।। ७५ ।। वह वीर राक्षस इन्द्रजित अस्त्रों का आवाहन करने लगा। इससे तीनों लोकों के हृदय में विस्मय और भय उत्पन्न हो गया। सारा कार्य पूरा कर अंतरिक्ष-रथ पर सवार हो, वह पवन-मार्ग पर आ पहुँचा ।। ७६ ।। जब वीर मेघनाद अंतर्हित हो गया तो श्रीराम-लक्ष्मण समेत सम्पूर्ण वानरों को वड़ा विपाद हुआ। मायाबल से रावण-पुत्र मेघनाद वाणों का प्रहार करने लगा। उसे देख न पाने के कारण वानरों को बड़ा विस्मय होता था ।। ७७ ।। वीर बानरगण आकाश में गये पर इन्द्रजित को कोई खोज नही पाये। वह अन्तर्हित होकर देवताओं के भी अगोचर रह, सबको शूल और शक्ति से वेध डाला ।। ७८ ।। सुग्रीव, अंगद, हनुमान, मैन्दय, द्विविद, धूम्राक्ष, जाम्बवान, गोमुख, वेगदर शिवनल, सूर्यानिल, चन्द्रानल, ऋषभ, नल, नील, गंधमार्दन, आदि के शरीरो को पृथ्वी के साथ वेध रखा। सुषेण, गवाक्ष, ज्योतिमुख, सम्पाति, केशरी, गवय, गज ।। ७९-८० ।। दरिमुख, दधिमुख, वीर केशरी आदि वानर-भालुओं समेत सारी सेना को मायावल से रावण-पुत्र ने जीत लिया। ब्रह्मा की आराधना कर रावण-पुत्र ने ऐसा ही वर पा लिया था ।। ८१ ।। भालू बानरों ने सारी रणभूमि को निरन्तर पर्वत शिखरों द्वारा परिपूर्ण कर दिया। सारी सेना के दांत लग गये, निश्चेष्ट हो, वह आखें स्तब्ध कर धरती पर पड़ी रह गयी ।। ८२ ।। श्रीराम ने कहा—लक्ष्मण, हम हृदय से हार चुके क्योंकि तुम्हारे और हमारे वाण इसके निकट पहुँच नही पा रहे है। हमारी आँखों के सामने ही इसने सारी सेना को मार डाला, इसे कैसे मारें, इस बारे में हमारी विचार-बुद्धि नही चलती ।। ८३ ।। दोनों भाई हाथ में धनुष वाण लेकर आओ सामना करें, नही तो अभी बानरी सेना का विनाश हो जायेगा। ब्रह्मा ने इसे वर दिया है, अतः इसका प्रतिकार नही किया जा सकता। दृढ़-मुट्ठी से पकड़कर

एतहन्ते इन्द्रजित अन्तरीक्ष भावे * रामलक्ष्मणक बिन्धिलेक शरघावे
अचेतने परिला नाहिके रावचाव * दुइ भाइर नासात नेखेले प्राणबाव ८५
रावणी फुरिया चाहिलेक रणस्थली * एबेसे आण्टाइलो सब शत्रुक निदलि
एतेक गणिया बीर पशिला नगरे * बापेकर चरणत बन्दिला सादरे ८६
हरिष बदने कहिलन्त बापेकत * येनमते शत्रुसब मारिला रणत
तयु पद प्रसादे भैलोहे रणजय * निश्चिन्ते थाकाहा किछु नाहिके संशय ८७

दुलड़ी

सब सैन्य येवे पुत्रे मारिलेक लङ्केश्वरे हेन जानि।
इन्द्रजितक ये प्रशंसा बचने हृदय सन्तोष बाणी॥
साफल मावके गर्भे धरिलेक कुलर नन्दन पोक।
दुर्घोर आपद सागरे मजिलो बाप उद्धारिलि मोक॥ ८८
तोहोर गुणक कोने कहिबेक कीर्तिक बर ये थैले।
इन्द्रे मोक बन्दी करिया निवन्ते हातर काढ़िया लैले॥
प्रशंसा बचन कत बुलिबोहो छाटु नुयुवाइ तोक।
आजि सुखे बापु निद्राक पाइबोहो एराइलो ए पुत्रशोक॥ ८९
ब्रह्मार बचन मान्यता करिया क्षणेक आछिला परि।
हनुमन्ते पाचे चेतन लभिया उठिलन्त गावमूरि॥
बिभीषणे हनु- मन्तक देखिया किछु सन्धुक्षण भैला।
कोन कोन बीर पराणे जीवय शुद्धि करिबाक लैला॥ ५६९०
सकल सैन्यक निश्चेष्टे देखिया जाम्बवक चाहिलन्त।
पर्ब्बत आकारे परिया आछन्त कत दूरे देखिलन्त॥

हाथ में धनुष वाण धारण करो॥ ८४॥ इतने में ही इन्द्रजित ने अन्तरिक्ष में रहकर ही राम-लक्ष्मण को वाणो से प्रहार कर बेध डाला। दोनों अचेत होकर गिर पड़े, किसी को बोलने-चालने की शक्ति नही रही। दोनों भाइयों की नाक में प्राण-वायु भी नही चलता था॥ ८५॥ तब इन्द्रजित ने घूम-घूमकर रणभूमि को देखा। उसने सोचा, मैने अब सारे शत्रुओं को निर्दलित कर समाप्त कर दिया। ऐसा सोचकर वह वीर नगर में प्रविष्ट हुआ और बड़े आदर से पिता की चरण-वन्दना की॥ ८६॥ किस प्रकार उसने रण में सारे शत्रुओं को मार डाला, उसने प्रसन्न-बदन हो पिता से सारी बातें बतायीं। उसने कहा, आपके चरणों के अनुग्रह से मै रण में विजयी हो सका हूँ। आप निश्चिन्त रहिये, अब कोई संशय नही है॥ ८७॥

'सारी सेना को पुत्र ने मार डाला', लंकेश्वर ऐसा जानकर इन्द्रजित के हृदय को संतोष देनेवाला प्रशंसासूचक वचन कहने लगा। 'तेरे जैसे कुल-नन्दन पुत्र को गर्भ में धारण कर तेरी माता सफल हुई। मैं भयंकर संकट के सागर में फंसा हुआ था, बेटा, तूने मुझे उद्धार कर लिया॥ ८८॥ तेरे गुणों का वर्णन कौन कर सकता है, तूने बड़ी कीर्ति अर्जित की। इन्द्र जब मुझे बंदी कर ले जा रहा था, तूने उसके हाथ से छीन लिया। तेरी कितनी प्रशंसा करूं? बहुत अधिक कहना उचित नही है। बेटा, तूने पुत्र-शोक से मुक्त किया, आज मैं सुख से सो सकूंगा॥ ८९॥ उधर ब्रह्मा के वचन का सम्मान करते हुए हनुमान कुछ देर तक पड़े हुए थे, दूसरे ही क्षण सचेत होकर वे अंगड़ाई ले उठ गये। हनुमान को देख विभीषण को कुछ चेतना आयी। कौन-कौन वीर जीवित हैं, विचार करने लगे॥ ५६९०॥ सारी सेना को निश्चेष्ट देखकर जाम्बवन्त

सम्बुधि बोलन्त वापु कि जीयाहा आन कथा आछे पाच ।
ब्रह्मार नन्दन बुद्धिर सागर सबारो औषधि गाछ ॥ ९१
महामन्त्री बिभी- षणक सम्बुधि जाम्बवन्त बुलिलन्त ।
तेवेसे आमार बुद्धि थाके येवे वायुर पुत्र जीवन्त ॥
बिभीषणे बोले प्राज्ञ हुइया तुमि चेतनक हरुवाइला ।
श्रीराम लक्ष्मण राजाक एरिया हनुक केने पुछिला ॥ ९२
हनुमन्त येवे पराणे जीवय सब सेनावले जीव ।
वायुपुत्र येवे विनाश भैलन्त जीवन्ता बलो मरिब ॥
राम लक्ष्मणर प्रस्ताव नोहय बात्तो कथा पुछिबार ।
असाध्य कार्य्यक साधिवाक पारे सिसे बीर बलियार ॥ ९३
बिभीषण वीरे इङ्गित करिल हनुमन्त बीरबर ।
जाम्बवन्तर ये चरण वन्दिया मारुति दिला उत्तर ॥
सकल ज्ञातिर मान्यता पुरुष मोहोर पितृ समान ।
कि कार्य्यक मोक आज्ञा करियोक झाण्टे दिया समिधान ॥ ९४

हनुमन्ते औषध आनि सकलोरे मोह दूर करे

पद

जाम्बवन्ते मारुतिर ग्रीवत धरिल * एवेसे जानिलो सबे ज्ञाति निस्तारिल
इन्द्रजिते सकल सैन्यक गैला वधि * उपाय बोलोहो जाण्टे आनागै औषधि ९५
अति दूर पथ जाइते न पारय आन * जाण्टे रामसेनार दियाहा प्रानदान
इन्द्रजिते शरे मोक बिन्धिलेक टानि * रुधिर पूरित मुखे नपरशे वाणी ९६

को खोजा, देखा कि वह कुछ दूर पर्वत—जैसा पड़ा हुआ है। उसे सम्बोधित कर कहा—वत्स, क्या तुम जी रहे हो? दूसरी बात पीछे होगी। ब्रह्मानन्दन, बुद्धि के सागर सबके लिए तुम ओषधि के वृक्ष हो ॥ ९१ ॥ तब महामंत्री विभीषण को सम्बोधित कर जाम्बवन्त ने कहा—हमारी बुद्धि तभी रहेगी यदि पवनसुत जीवित हों। विभीषण ने कहा—तुम प्राज्ञ होकर भी चेतना खो बैठे हो। श्रीराम-लक्ष्मण और राजा सुग्रीव को छोड़कर तुमने हनुमान के बारे में क्यों पूछा? ॥ ९२ ॥ (तब जाम्बवन्त ने कहा) यदि हनुमान प्राण लेकर जीवित हैं तो सारी सेना जी उठेगी। यदि पवन-सुत मारे गये हों तो जो सेना जीवित है वह भी मारी जायेगी। राम-लक्ष्मण के समाचार की बात पूछने का वह प्रसंग नहीं है। केवल वही महावीर असाध्य साधन कर सकते हैं ॥ ९३ ॥ तब वीर विभीषण ने वीरवर हनुमान को संकेत किया। मारुति ने जाम्बवन्त की चरण-वन्दना कर उत्तर दिया, सभी स्वजनों के मान्य-पुरुष, मेरे पिता-तुल्य जाम्बवन्तजी, कौन-सा वह कार्य है, मुझे आज्ञा दीजिये, शीघ्र ही बताइये ॥ ९४ ॥

हनुमान का औषधि लाकर सबका मोह दूर करना

जाम्बवन्त ने हनुमान का कंधा पकड़ लिया और कहा—अब समझ गया कि सारे आत्मीयजनों का निस्तार हो गया। इन्द्रजित सारी सेना को वधकर चला गया है। मैं उपाय बतलाता हूँ तुम शीघ्र जाकर औषधि ले आओ ॥ ९५ ॥ अत्यन्त दूर का मार्ग दूसरे नहीं जा पायेंगे। तुम शीघ्र ही राम की सेना को जीवन-दान दो। इन्द्रजित के बाण ने मुझे बुरी तरह वेध डाला है। मुँह में रक्त भरा होने के कारण

समुद्र तरिया हेमवन्तक चलाहा * तात पाचे ऋषभ पर्ब्बत देखिबाहा
कैलासक देखिबाहा हरर आलय * दुइर माजे देखिबाहा पर्ब्बत ज्वलय ९७
चारियो औषध ज्वले दशोदिशे छानि * एक नाम आछे तार मृतसंजीवनी
विशल्यकरणी आर सन्धान ये करि * स्वरूप करणी समे औषध ये चारि ९८
अति सुकुमार दुइ राजार कुमार * राम लक्ष्मणर झाण्टे सैन्यक उद्धार
दुखत मुकति करा गियाति बर्गर * सत्वरे चलाहा बाप बिलम्ब न कर ९९
पर्ब्बते चड़िया कपिराज महाबीर * मेरुर सदृश करि बढ़ाइला शरीर
शर हानि तुलि बीर नादय आस्फाल * निशाचर लोकत काणत दिला ताल ५७००
लङ्का दलदोप करे तान पयोभरे * ससागरा पृथिवी काम्पय निरन्तरे
पातालत नागर मिलिला जोटा जोट * स्वर्गे उसमिस पालटय युगगोट ५७०१
लाङ्जथिय करिला बासुकियेन नाग * पिठिखान परिल डाङर भैला आग
दुइकर्ण सङ्कोच संभार करि पाव * लाम्फ दिगरुड़े येन करिला उराव २
देव द्विज बाप माव प्रणामि सादरि * डेव दिया यान्त येवे हनुमन्त हरि
अर्द्धेक पर्ब्बत सन्धानते गैला तल * चतुर्द्दिशे फोटकारे निकलिल जल ३
सरभ गवय गज हरिण केशरी * डेवर सन्धाने छेपनित गैला मरि
सर्पे प्राण तेजिलेक अर्द्धेक निकलि * पाषाण शिखर तरु गैला ढलि ढलि ४
दुर्घोर प्रचण्ड खर शरीरर बाइ * पर्ब्बत शिखर खसि लगते उराइ
कोटि कोटि सागरर जलत परिल * पाताले नागर फणामणियो लरिल ५
मर्त्त्यर भुवन कपि एराइला समस्त * वायुबाट एराया पाइलन्त स्वर्गपन्थ
मेरुगिरि देखिला सुवर्ण जातिष्कार * कतेक वर्णाइबो गुण देवता सभार ६

बोली नही निकल पा रही है ।। ९६ ।। तुम समुद्र पार कर हेमवन्त पर्वत को जाना। उसके पश्चात् तुम्हें ऋषभ पर्वत दिखाई पड़ेगा। शिव का आलय कैलास दिखाई पड़ेगा, उन दोनों के मध्य एक प्रकाशमान पर्वत दिखाई देगा ।। ९७ ।। वहाँ चार प्रकार की औषधियाँ दशो दिशाओं को व्याप्त कर प्रकाशित है। जिनमें एक का नाम मृतसंजीवनी है। विशल्यकरणी, सन्धानकरी, स्वरूपकरणी समेत ये चारों औषधियाँ है ।। ९८ ।। ये दोनों राजकुमार बड़े सुकोमल हैं, वत्स! तुम शीघ्र जाकर सेना सहित राम-लक्ष्मण का उद्धार करो। अपने आत्मीयजनों को दुख से मुक्त करो। वत्स ! तुम शीघ्र जाओ, विलम्व न करो ।। ९९ ।। तब महाबीर कपिराज हनुमान ने पर्वत पर चढ़कर अपना शरीर मेरु जैसा बढ़ा लिया। वीर हनुमान ने छोड़े वाण जैसे वेगवान हो प्रचंड नाद किया जिससे निशाचरों के कान में ताले पड़ गये ।। ५७०० ।। उनके विक्रम से लंका आलोड़ित हो उठी। ससागरा धरती निरन्तर काँपने लगी। पाताल में नागों में खलबली मच गयी, स्वर्ग में हलचल मची कि युग बदलने वाला है ।। ५७०१ ।। हनुमान ने वासुकी नाग जैसे पूँछ उठा ली, पीठ सिकोड़ ली, सामने का भाग बड़ा हो गया। दोनों कान सिकोड़ कर, पाँवों को संभालकर ऐसे कूद पड़े, मानो गरुड़ ने उड़ान भरी है ।। २ ।। देव, द्विज, पिता-माता को सादर प्रणाम कर जब हनुमान छलांग लगाकर चले तो उनके दबाव से आधा पर्वत नीचे दब गया और चारों ओर से फव्वारे जैसा जल निकलने लगा ।। ३ ।। शरभ, गवय, हाथी, हिरण, सिंह आदि उनकी छलांग के विक्षेप से ही मारे गये। सर्पो ने बांबी से आधा निकलकर प्राण तज दिये। पत्थर, चोटी और वृक्ष लुढ़कते हुए गिर पड़े ।। ४ ।। परम प्रचंड बेगवान शरीर की हवा से पर्वत शिखर टूटकर उनके साथ ही उड़ चले। करोड़ों सागर के जल में गिरे जिससे पाताल में नागों के फनों पर की मणियां भी हिल उठीं ।। ५ ।। कपिराज हनुमान मर्त्यलोक पार कर,

रविपन्थ सञ्चारे सागर एराइलन्त * रजत सङ्काश हिमवन्तक पाइलन्त
अत्यन्त उच्छ्रित गिरि देखिला कैलास * त्रैलोक्यत सार हरगौरीर निबास ७
ऋषभ पर्व्वत देखिलन्त कपिराजे * औषधर पर्व्वत देखिला दुइरो माजे
औषध ज्वलन्त माणिकर येन कान्ति * ज्योतिर प्रभावे नजानिय दिन राति ८
साहास्तम हुया हनुमन्त येवे यान्त * प्रदीप निर्व्वाणे येन औषध पलान्त
सम्बुधि बोलय कपि शुनरे पर्व्वत * राघवक नमानस मदर पर्व्वत ९
आजि देखा तोमार महत करोचूर * औषधक पलुवाइ निबि कत दूर
हेन बुलि पर्व्वतक धरि आङ्कोवालि * औषधर नाग मृग सहिते उघालि ५७१०
अन्तरीक्षे डेव करि महावीर कपि * पर्व्वत सहिते यान्त गगन बियापि
चक्राकारे धरि येन चलि यान्त हरि * औषधर प्रभावे प्रसन्न दिश करि ११
सूर्य्यर पथक पाइला गगनमण्डले * सूर्य्य ज्वले दुइगोटा येन सबे बोले
आटासेक दिया नमिलन्त कपिसिंह * चक्षु मेलि सकल बानरे दिला रिङ्ग १२
श्रीराम लक्ष्मणे औषधर गन्धपाइ * निर्व्विष शरीरे बसिलन्त दुइभाइ
औषधर प्रभावे सकल कपिगण * उठिया बसिला शरीरत नाइ बयान १३
अचिन्त्य प्रभाव औषधर ठाव छारि * गन्ध पाया सैन्य बसिलन्त शारी शारी
पूर्व्ववते वसिला श्रीमन्त भैला काय * दशगुण तेजबल गुचिला अपाय १४
औषध सहिते निया पर्व्वत शिखर * सबार माजत थैला पवनकुमार
श्रीराम लक्ष्मण आर भालुक वानरे * करिला प्रशंसा हनुमन्तक सादरे १५

वायु-मार्ग का अतिक्रमण कर स्वर्ग-पथ पर पहुँच गये। उन्होंने स्वर्ण से दमकते मेरु-गिरि को देखा। वहाँ देवों की सभा के गुण का क्या वर्णन करें ॥ ६ ॥ रवि-पथ से होकर उन्होंने बहुत ही ऊँचे कैलास पर्वत को देखा जो त्रैलोक्य में सार शिव-पार्वती का निवास है ॥ ७ ॥ कपिराज हनुमान ने ऋषभ पर्वत को देखा। उन दोनों के बीच औषधियों के पर्वत को भी देखा। औषधियाँ मणियों की भाँति दमक रही थी; उनकी ज्योति के प्रभाव से वह दिन है या रात कुछ पता नही चलता था ॥ ८ ॥ उन्हे लेने हेतु प्रस्तुत हो जब हनुमान आगे बढे तो औषधियाँ मानों दीप बुझाकर भाग गयीं। तब पर्वत को सम्बोधित कर हनुमान ने कहा—रे पर्वत, सुन। तू पर्वत जैसे मद के मारे, राघव को भी नही मान रहा है ॥ ९ ॥ देख, आज तेरा महत्व मैं चूर कर दे रहा हूँ। तू औषधियों को कितनी दूर खदेड़ ले जा सकेगा? यह कहकर पर्वत को बाँहों में भरकर औषधियों, नाग, मृग समेत उसे उखाड लिया ॥ ५७१० ॥ महावीर कपिराज हनुमान अन्तरीक्ष में छलांग लगाकर पर्वत को उठाये आकाश को व्याप्तकर चले जा रहे थे। मानों चक्राकार धारण कर हरि औषधियों के प्रभाव से दिशाओं को प्रसन्न कर चले जा रहे हों ॥ ११ ॥ आकाश-मंडल मे पहुँचकर वे सूर्य के मार्ग पर पहुँचे। सब कहने लगे, देखो मानो, दो सूर्य जल रहे हैं। जोर से नाद कर कपिसिंह हनुमान उतरे, बानरों ने आँखें खोल, हर्षनाद किया ॥ १२ ॥ औषधि की गंध पाकर श्रीराम-लक्ष्मण के शरीर से विष नष्ट हो गया, दोनों भाई उठ बैठे। औषधि के प्रभाव से सभी वानरों के शरीर से विष-वेदना जाती रही ॥ १३ ॥ औषधि के अचिन्तनीय प्रभाव से उस स्थान से दूर तक गंध पाकर सारी सेना कतारों में उठ बैठी। वे पहले की भाँति ही हो गये। उनके शरीर वैसे ही सौन्दर्यपूर्ण हो उठे, दसगुने तेज बल भर उठे, सारे अपाय मिट गये ॥ १४ ॥ औषधि सहित पर्वत शिखर लेकर पवन कुमार ने सबके बीच में रखा। श्रीराम-लक्ष्मण और भालू-वानरों ने हनुमान की सादर प्रशंसा की ॥ १५ ॥ (वे कहने लगे) वत्स हनुमान, तुम चिरकाल तक जीवित रहो। तुमने सारी सेना को जीवनदान

चिरकाल जीव बापु वीर हनुमान * सकल सैन्यक बापु दिला प्राणदान
राघवे बोलन्त हनुमन्त महाबुधि * पूर्ब्बर थानक निया थैयोक औषधि १६
श्रेष्ठ पुरुषर इटो पूर्ब्बर सञ्चित * आमासार नोहे योग्य मर्य्यादा लङ्घित
रामर आदेश वीरे शिरे तुलि लैला * पूर्ब्बर थानक निया पर्ब्बतक थैला १७
सत्वर गमने पथ लङ्घिया आशेष * तेतिक्षणे आसि भैल लङ्कात प्रवेश

बान्दर सैन्यर पुनराक्रमण

रावणे शुनय बानरर कोलाहल * प्रचण्ड बायुत येन सागर आस्फाल १८
सम्बुधि मन्त्रीक बोले इटो कि मिलिल * इन्द्रजिते मारिबार सबे सेना जील
ब्रह्मात पाइलेक बर इन्द्रजित पोवे * मोहोर करम फले सियो व्यर्थ होवे १९
रामक मुनिष नाइ कहिलोहो सार * यतेक यतन सबे निष्फल आमार
धूम्राक्ष ये अकम्पन प्रहस्त परिल * कुम्भकर्ण भाइयेन पर्ब्बत गोड़िल ५७२०
वज्रदशनक देवान्तक नरान्तक * अतिकाय बीर गैला यम बदनक
महापार्श्व महोदर त्रिशिरा तनय * रणत निधन भैला देखिबोहो कय २१
कुञ्जर घोटक उट राक्षस संख्याते * परिला लक्ष्मण राम बानरर हाते
एवे हेन बल नाइ बल आतिरेक * राम लक्ष्मणक ये सम्मुखे युजिबेक २२
सुग्रीव अङ्गद हनुमन्त आर नील * इहाङ्क युजिबे कोने अपाय मिलिल
तथापितो यत वीर राक्षस आमार * चारियो दुवारे बेढ़ि राखाहा लङ्कार २३
आदेश करिया राजा ओवारि प्रवेश * लङ्काक राखय बेढ़ि राक्षस आशेष

दिया है। रामचन्द्र ने कहा, महान बुद्धिवाले हनुमान, इस औषधि (वाले पर्वत) को पहले के स्थान पर रख आओ ।। १६ ।। श्रेष्ठ पुरुषो ने इसे पूर्वकाल से संचित कर रखा है, हमारे लिए इसकी मर्यादा का उल्लघन करना उचित नही। रामचन्द्र के आदेश को वीर हनुमान ने शिरोधार्य कर लिया और पर्वत को उसके स्थान पर ले जाकर रख दिया ।। १७ ।। शीघ्र बेग से सारे मार्ग को पार कर उसी क्षण उन्होंने आकर लंका मे प्रवेश किया।

बानरी सेना द्वारा पुन: आक्रमण

रावण ने बानरों का प्रचंड पवन से सागर के निनाद जैसा कोलाहल सुना ।। १८ ।। उसने मन्त्री को संबोधित कर पूछा, यह क्या हो गया ? इन्द्रजित ने सारी सेना को मार डाला था, वह जी उठी ? बेटे इन्द्रजित ने ब्रह्मा से जो वरदान पाया था, मेरे कर्म-दोष से वह भी व्यर्थ हो रहा है ।। १९ ।। मै सत्य कह रहा हूँ, राम जैसा पौरुषवान और कोई नही है। इसीसे हमारा सारा प्रयत्न निष्फल हुआ जा रहा है। धूम्राक्ष, अकपन, प्रहस्त सभी मारे गये, भाई कुंभकर्ण विशाल पर्वत जैसा गिर पड़ा ।। ५७२० ।। बज्रदंष्ट्र, देवान्तक, नरान्तक, अतिकाय जैसे वीर यमलोक चले गये। महापार्श्व, महोदर, बेटा त्रिशिरा, युद्ध में मारे गये। अब मुझे क्या देखना है ? ।। २१ ।। हाथी, घोड़े, ऊँट समेत असंख्य राक्षस राम-लक्ष्मण और वानरों के हाथ मारे गये। अब ऐसे महाबलवान कोई नहीं है जो राम-लक्ष्मण के सम्मुख जाकर लड सके ।। २२ ।। सुग्रीव, अंगद, हनुमान और नील, इनसे कौन लड़ सकेगा ? अब तो अमंगल ही होगा। तथापि हमारे जितने राक्षस वीर है, सब जाकर लंका के चारो द्वार घेर रखो ।। २३ ।। यह आदेश दे, राजा राजभवन में चला गया। असंख्य राक्षस

सुग्रीवे बोलन्त शुना वीर हनुमान * मान उद्धारिवार प्रस्ताव नाहि आन २४
चिन्ता वर शोके रावणर कष्ट मन * लङ्का बेढ़ि अगनि लगायो कपिगण
राजार आदेशे मवे जोण्डा धरि करे * गधूलि एराया चलि गैला निरन्तरे २५
हनुमन्त अङ्गद जाम्ववन्त वीर तार * सव सैन्य बेढ़िलेक चौपाशे लङ्कार
प्राञ्चिर उपरे चढ़ि चतुर्भिति छानि * निसन्धि करिया बेढ़ि लगाइला अगनि २६
राघवर अनुकूले घने वायु वहे * जाज्ज्वल्य समान रूपे लङ्का खान दहे
घोलिवर उपरे अगनि गैया चढ़े * पर्व्वतर शृङ्ग यत खसि खसि परे २७
वायुपथे जिनि शिखा गैला वहुदूर * ओवारि आण्टाइला सबे भैला मसिमूर
ओर आइ बोपाइ लङ्कात हुलस्थूलि * कल काटा पानी ढाला सिञ्चा माटि धूलि २८
धन धान्य एराहा पोवाक वाज करा * नाति नोतियान चावा वस्तु परिहरा
स्त्री बाल्य वृद्धत लागिल कोलाहल * दश प्रहरर पथ लागिल घञ्चाल २९
घोलिवर उपरे सुन्दरी यत नारी * यतेक मरिल पुरि कहिते नपारि
कतो चतुरङ्ग दले राक्षस वजाइल * टाकरे मोटकि लाठि वानरे भङ्गाइल ५७३०
हातीशाल घोराशाल गैला पुरि पुरि * कतोहो मरिल कतो लवरा लवरि
श्रीराम लक्ष्मण दुइ धनुर्गुण माजि * करिलन्त टङ्कार सम्भृते सव साजि ३१
लङ्का लागि हानिलन्त असंख्यात शर * प्रहारते खसे घोलिवरर शिखर
रावणर क्रोधत ज्वलिला सव गात्र * कुम्भ निकुम्भक बोले तेतिक्षणे मात्र ३२
कुम्भकरणर पुत्र भतिजा आमार * चतुरङ्ग दले ब्राण्टे बजायो लङ्कार

लंका को घेर कर रक्षा करने लगे। सुग्रीव ने कहा—वीर हनुमान, सुनो। मान उद्धार करने का और कोई अन्य प्रस्ताव नहीं है ।। २४ ।। चिन्ता और महान् शोक के कारण रावण के मन में बड़ा कष्ट है। कपिगण, तुम सब लंका को घेर कर आग लगा दो। राजा के आदेश से अपने हाथों में मशाल ले-लेकर सभी संध्या होने के पश्चात निकल आये ।। २५ ।। हनुमान, अंगद, जाम्ववन्त आदि वीरों ने चारों ओर से लंका को घेर लिया। चहारदीवारी के ऊपर चढ़, चारों ओर छा गये और पूरा-पूरा घेर कर आग लगा दी ।। २६ ।। रामचन्द्र के अनुकूल तेज पवन चलने लगा। अग्नि प्रचंड प्रकाशमान होकर लंका को जलाने लगा। अग्नि राजभवन पर चढ गया, वे पर्वत शिखरों जैसे टूट-टूट गिरने लगे ।। २७ ।। वायुमार्ग से विजय करती हुई शिखाएँ बहुत दूर तक चली गयीं। सारे भवन भस्म होकर ध्वस्त हो गये। लंका में अरे भैया, ओ बाबा आदि का शोर और हलचल मच गयी। राक्षस केले के पौधे काटो, पानी ढालो, मिट्टी-धूल फेंको-आदि चिल्लाने लगे ।। २८ ।। धन-धान्य छोड़ दो, बच्चे को निकालो, नाती, नातियों को देखो, सामग्रियों को छोड़ दो। स्त्री, बालक, वृद्ध आदि में कोलाहल मचा, दस प्रहर के मार्ग तक भयंकर उथल-पुथल मच गयी ।। २९ ।। भवनो के ऊपर जो सुन्दरी नारियाँ थी, उनमें कितनी जल मरी, कहना सभव नहीं। चतुरंगिनी सेना सजाकर कितने ही राक्षस निकले, रस्सी की भाँति उनकी लाठियों को मरोड़ कर वानरों ने खदेड़ दिया ।। ५७३० ।। हाथीशाला (पीलखाना), घुड़साल, सब जल गये, कितने ही पशु जल मरे, कितनो में दौडकूद मच गयी। श्रीराम-लक्ष्मण ने धनुष की डोरी चढ़ाकर सावधान हो, सब प्रकार से सज्जित हो टंकार किया ।। ३१ ।। लंका की ओर उन्होंने असंख्य बाणों का प्रहार किया जिससे राजभवनों के कंगूरे टूट गिरे। क्रोध के मारे रावण का सारा शरीर जल उठा, उसने उसी क्षण कुंभ-निकुंभ को बुलाकर कहा ।। ३२ ।। कुंभकर्ण के पुत्र मेरे भतीजे, तुम चतुरंगिनी सेना लेकर लंका से बाहर चलो। विन्दुमाली, विरूपाक्ष, उल्काजिह्व, शोणिताक्ष आदि चलो और कपि सेना का

बिन्दुमाली बिरूपाक्ष उल्काजिह्व चल * शोणिताक्ष प्रमुख्ये मारियो कपि बल ३३
नृपतिर आदेशेसे भूषित अलङ्कार * चतुरङ्ग दले समरत पयोसार
प्रख्यात बीरक सबे चलाइला रावणे * देखिया हरिष भैला सबे कपिगणे ३४
शाल ताल तमाल शिखर धरि धाइल * काण्डे खाण्डे षाठी जोङ्गे राक्षसे जण्टाइल
राक्षसे बानरे लागि गैला उसमिस * शरे तरु खाञ्चिला पूरिला दशोदिश ३५
बानरर हाड़ मुण्ड खड़गर घावे * निशाचरे पिशाचे काटिया बेलेगावे
आञ्चोरे कामोरे तरु गिरिर शिखरे * भालुक बानरे जान्ति परदल मारे ३६
दान्ते दान्ते नखे नखे मुठि किल घात * दुइ भितिर सैन्य परि गैला असंख्यात
कतोबेलि कपिबले राक्षस भङ्गाइल * देखि बज्रकण्ठ बीरे अङ्गदक धाइल ३७
दुइ हाते तुलि हानिलेक गदा बारि * बालीपुत्र मूर्च्छा गैला चेतनाक छारि
जीउ आसि भला कतोबेलि अङ्गदर * माथात हानिला टानि पर्ब्बत शिखर ३८
मुण्डगोट छिण्डिला प्रहार दिया टान * बज्रकण्ठ यमपुरे करिला पयाण
बज्रकण्ड गैला येबे यमसदनक * शोणिताक्षे अस्त्र बरिषय अङ्गदक ३९
वसुदन्त बिपाट परिघ चन्द्रहास * निरन्तरे बेढ़िला छानिया दिशपाश
खाण्डा तुलि शीघ्रबेगे याइ आगबाढ़ि * डेव दिया अङ्गदे खड़ग लैला काढ़ि ५७४०
गदागोट तुलि शोणिताक्ष बीरे धाइल * हातत मुटुकि दिया अङ्गदे खसाइला
रथे चड़ि प्रजङ्घ यूपाक्ष दुइ बीरे * अस्त्रक ताड़िला अङ्गदर सशरीरे ५७४१
तिनियो राक्षसे मिलि अङ्गदक युजि * मैन्द्य द्विविद चापिलन्त कार्य्य बुजि
बानर तिनियो राक्षसर तिनि मिलि * कामोरा कामोरि लाथि भुकु किलाकिलि ४२
दुयोजने आजोरा आजुरि जराजरि * येन छय पर्ब्बत भूमित गरगरि

सहार करो ।। ३३ ।। राजा के आदेश से सभी अलकारों से सजकर चतुरंगिनी सेना ले समर में प्रविष्ट हुए । सभी प्रख्यात वीरों को रावण ने संचालित किया, उन्हें देख कपिगण हर्षित हो उठे ।। ३४ ।। वे सब शाल, ताल, तमाल आदि वृक्ष उठाकर दौड़ पड़े । राक्षस वाण, खाँडे, भाले, बरछे आदि से उनसे लड़ने लगे । राक्षस और वानर गुत्थम-गुत्था हो उठे, वाणों से वृक्षों के टुकड़े-टुकड़े कर दिये, निशाचर-पिशाच आदि तलवार के आघात से वानरों के हाथ, सिर आदि काटकर टुकड़े-टुकडे अलग कर देते थे । भालू-बानरों की सेना राक्षसों को नोच लेती, दाँतो से काटती और वृक्ष के शिखरों से आघात कर मारने लगी ।। ३५-३६ ।। दाँतोंदाँत-नाखूनोनाखून, मुक्को, घूंसों आदि से एक दूसरो को मार-मारकर दोनो ओर की असख्य सेना मारी गयी । कुछ क्षण में बानरो ने राक्षसी सेना को खदेड़ दिया । यह देख वीर वज्रकंठ अंगद की ओर चढ़ दौड़ा ।। ३७ ।। दोनों हाथों से गदा उठाकर मारा । बालीपुत्र अचेत होकर मूर्च्छित हो गया । कुछ क्षण में अंगद की चेतना लौटी और उसने पर्वतशिखर उठाकर वज्रकंठ पर प्रहार किया । तब वज्रकंठ यमलोक सिधार गया । जब वज्रकंठ यमलोक सिधार गया, तो शोणिताक्ष अंगद पर अस्त्रों की वर्षा करने लगा ।। ३८-३९ ।। वसुदंत, विपाट, परिघ, चन्द्रहास ने आकर लगातार चारो दिशाओं से अंगद को घेर लिया । वे खाँडे उठा शीघ्रता से आगे बढ़ चले । अंगद ने कूदकर उनसे खाँड़ा छीन लिया ।। ५७४० ।। जब गदा उठाकर वीर शोणिताक्ष धावित हुआ तब उसके हाथों को मरोड़ कर अंगद ने तोड़ दिया । प्रजंघ और यूपाक्ष, ये दोनों वीर रथ पर चढ़कर धावित हुए और अगद के शरीर पर अस्त्रों से प्रहार किया ।। ५७४१ ।। तीनों राक्षस अंगद से जूझने लगे तब आवश्यक समझकर मैन्द्य और द्विविद समीप आये । तीनो वानर और तीनों राक्षस एक दूसरे को दाँतों से काटने, लातों, घूसों से, मुक्कों से मारने लगे ।। ४२ ।।

छयो लाठि चवरे छयको वेलेगाइल * अस्त्रे गिरि शिखरे छयक छये चाइल ४३
अङ्गदक प्रजङ्घे खेदय खाण्डा हाते * वालीपुत्रे वृक्षक ताड़िला तार माथे
प्रजङ्घेयो मुठि एक माथात ताड़िल * कतोक्षणे अङ्गदर चेतन छारिल ४४
सन्धुकिया बालिपुत्रे हानिलन्त मुठि * प्रजङ्घर प्राण गैला कुम्भस्थल फुटि
खोरत परिला देखि यूपाक्ष खड्गाइल * रथत नामिया खड्गक लैया धाइल ४५
शीघ्रे खेदि याहन्ते द्विविदे खेदि पाइल * हृदय स्थानत जाण्टि तुलि आलगाइल
ढेल निकलिला तार चक्षु भैला ठर * शोणिताक्ष वीरर देखिया खड्ग बर ४६
भाइक मेलाइवाक लागि जुरिला उपाय * द्विविदक हियात हारिला मुठि घाइ
ताक एरि द्विविदे शोणिताक्षक धाइल * शरीरर मांस यत काटि बेलेगाइल ४७
मेदिनीत पेलाइ शरीरे जाण्टिलन्त * शोणिताक्ष परिला प्राणर भैला अन्त
यूपाक्षक मैन्द्य वीरे बिपोहो कटालि * हृदयत जाण्टिया धरिला आङ्कोवाली ४८
अस्थिये पाञ्जरे तार भाङ्गि भैला चूर * दारुण राक्षस मरि गैला यमपुर
तिनि परिवार देखि राक्षस खसिल * कुम्भत सवेओ गैया शरण पशिल ४९

कुम्भ, निकुम्भ, मकराक्षर युद्ध आरु पतन

आश्वास करिया सबे सैन्य सुस्थ करि * रणक चलिला दिव्य धनुशर धरि
मैन्द्य बीरे तार आगे भेण्टिला हरिषे * चतुर्द्दिशे वेढ़ि वृक्ष शिलाये बरिषे ५७५०

एक दूसरे को खीचने-पटकने लगे, मानो छह पर्वत भूमि पर लोट-पोट रहे थे। छहो ने एक दूसरे को लातों-थप्पड़ों से मार कर एक दूसरे को अलग कर लिया, अस्त्रों और पर्वत-शिखरो को उठाकर छहो, छहों की ओर देखने लगे ॥ ४३ ॥ हाथ मे खाँड़ा लेकर प्रजंघ अंगद की ओर दौड़ा और बालीपुत्र ने उसके मस्तक पर वृक्ष से प्रहार किया। प्रजंघ ने भी उसके सिर पर एक मुक्का मारा जिससे कुछ क्षण अंगद अचेत हो गये ॥ ४४ ॥ चेतना लौटते ही अगद ने उसे मुक्के से मारा। प्रजंघ का कुंभस्थल फट गया, उसके प्राण निकल गये। अपने काका को मारे जाते देख यूपाक्ष क्रोधित हो उठा और रथ से उतर हाथ मे खड्ग ले दौड़ पड़ा ॥ ४५ ॥ उसे वेग से आते देख द्विविद दौड़ आया और उसे उठाकर हृदय-स्थान को दबा दिया। इससे उसकी आँखों के कोये बाहर निकल आये और आँखे फटी रह गयी। यह देख वीर शोणिताक्ष को बड़ा क्रोध हुआ ॥ ४६ ॥ भाई को छुड़ाने के लिए वह उपाय करने लगा और द्विविद के हृदय मे मुक्के से प्रहार किया। तब यूपाक्ष को छोड़ द्विविद शोणिताक्ष पर चढ़ दौड़ा और उसके शरीर के मासपिंडो को काट-काट कर अलग कर दिया ॥ ४७ ॥ धरती पर उसे गिराकर द्विविद ने उसके शरीर को दबाया। शोणिताक्ष इस प्रकार मारा गया, उसके प्राण चले गये। बीर मैन्द्य ने यूपाक्ष को प्रचड पराक्रम से अपनी बाँहों में लेकर छाती से लगा दबा दिया ॥ ४८ ॥ इससे उसके अस्थिपंजर चूर हो गये। वह भयकर राक्षस मारा जाकर यमलोक पहुँच गया। इन तीनों को मारा गया देख अन्य सभी राक्षस भाग गये और जाकर कुंभ की शरण ली ॥ ४९ ॥

कुंभ, निकुंभ, मकराक्ष का युद्ध और पतन

कुंभ, सारी सेना को आश्वस्त कर दिव्य धनुषवाण ले युद्ध को चल पड़ा। वीर मैन्दय ने उसके सम्मुख जाकर हर्ष से उसे रोका और चारों ओर से घेर कर वृक्ष, शिला आदि की वर्षा करने लगा ॥ ५७५० ॥ मैन्द्य ने कुंभ का मार्ग रोक लिया, यह देख बानर

मैन्दय भेण्टिलन्त देखि कुम्भर ये बाट * बानरे भालुके देखि रिङ्ग दिला झाण्ट
कुम्भकरणर पुत्र रणत आचल * शरे हानि बृक्ष तरु काटिला सकल ५१
मैन्द्य बीर हानिलन्त पर्व्वतर गोट * कुम्भ बीरे छेदिलन्त घोर शरछोट
बज्रर सदृश बाण जुरिला आरंभे * आकर्ण पूरिया ताक हानिलन्त कुम्भे ५२
पृथिवीके मैन्द्यके फुटिला बर टाने * निश्चेष्टे रहिला बीरे अन्तरीक्ष प्राणे
द्विविदे सन्नित चापि बोले हा हा भाइ * कुम्भक शिखर तरु बरिषय चाइ ५३
परम अभङ्ग बीर कुम्भकर्ण सुत * द्विविदक लागि शर हानिला बहुत
द्विबिद बानर बीर पर्व्वत आकार * कुम्भक शिखर तरु हानिला अपार ५४
कुम्भकर्णर पुत्र अभङ्ग समरे * सकल शिखर तरु काटिलेक शरे
भयङ्कर काल अग्नि जुरिलेक कुम्भे * द्विबिदर हृदयत हानिला आरम्भे ५५
मर्म्मस्थाने परिला चेतन नाहि गावर * चित हुया परिलन्त पर्व्वत आकार
द्विबिद परिला अङ्गदर आउल जाउल * अचेतने परिला देखिया दुइ माउल ५६
शूले हानि तरु समे शिखर बरिषे * कुमार चाहिया अन्धकार दशदिशे
अङ्गदर अस्त्रक आपन शरे छेदे * क्षणेके दुर्व्वार अस्त्रे कुम्भे ताक भेदे ५७
बालिर तनये यत हानय प्रारम्भे * शरे हानि लीलाये छेदय ताक कुम्भे
भयङ्कर दुइ बीरे बिन्धिलन्त बीरे * अङ्गदर दुइ चक्षु ढाकिला रुधिरे ५८
शोणित मलछि हाते शाल बृक्ष पाइल * क्रोधत गावर बले हानिया पठाइल
मन्दर सदृश शाल बृक्ष बहि याइ * ताको काटिलन्त कुम्भे सात शरघाइ ५९
यमदण्ड धरि येन हानिलन्त बाण * अङ्गद परिया गैला अन्तरीक्ष प्राण

और भालू सभी शीघ्र ही आनद से कोलाहल कर उठे। कुंभकर्ण का पुत्र कुंभ रण में अविचल था। उसने वाणों से वृक्ष आदि को काट डाला ॥ ५१ ॥ मैन्द्य वीर ने उसे पर्वत से मारा, तब कुंभ वीर ने उसे घोर वाण से काट डाला। धनुष पर वज्र से वाण लगाकर कानों तक खींच कुंभ प्रहार करने लगा ॥ ५२ ॥ वे वाण मैन्द्य को वेधकर पृथ्वी को भी छेद निकले, वीर मैन्द्य के प्राण अंतरिक्ष मे टग गये, वे निश्चेष्ट हो गये। द्विविद समीप आकर 'हा हा भाई', कहने लगा और कुंभ की ओर देख-देखकर वृक्ष, शिलाओ की वर्षा करने लगा ॥ ५३ ॥ कुंभकर्ण का पुत्र युद्ध में परम अजेय था। उसने द्विविद को अनेक वाणों से वेध डाला। पर्वताकार वीर द्विविद ने कुंभ पर अनेक वृक्षों और शिखरों से प्रहार किया ॥ ५४ ॥ कुंभकर्ण का पुत्र समर में अजेय था। उसने अपने वाणों से सभी शिखरों व वृक्षो को काट डाला। कालाग्नि जैसा भयकर वाण कुंभ ने धनुष पर चढ़ाया और द्विविद के हृदय पर आघात किया ॥ ५५ ॥ वह वाण मर्मस्थान में लगने के कारण द्विविद की चेतना नही रही, पर्वताकार द्विविद चित होकर गिर पड़ा। द्विविद के गिरने पर दोनो महारथियों को अचेत देख अंगद के हृदय में उथल-पुथल मच गयी ॥ ५६ ॥ वह शूल से प्रहार कर वृक्ष सहित शिखरों की वर्षा करने लगा। कुमार ने दसो दिशाओं में अंधकार देखा। उसने अंगद के अस्त्रों को अपने वाणो से काट डाला, कुंभ ने दुर्निवार अस्त्रों से क्षणभर में उसे वेध डाला ॥ ५७ ॥ वालीपुत्र अंगद प्रारंभ मे उस पर जितने ही अस्त्रो से प्रहार करता था, कुंभ वाणों से प्रहार कर उन्हें काट डालता था। भयंकर दोनों वीरों ने अंगद को वेध डाला, अंगद की दोनों आँखें रक्त से वंद-सी हो गयीं ॥ ५८ ॥ उसने हाथ से रक्त पोंछ कर शाल वृक्ष उठा लिया और क्रोधित हो शरीर की शक्ति से प्रहार किया। मंदर पर्वत जैसा शाल वृक्ष उड़ चला, कुंभ ने उसे सात वाण मार कर काट डाला ॥ ५९ ॥ उसने यमदंड जैसे वाण का प्रहार किया। अंगद गिर पड़ा, उसके

ओर वाइ बोपाइ चाहा निकुम्भर कोला * एहिसे बानर आमाथेर लङ्का पोला
अकल ये मोटे सब राक्षस भङ्गाइल * ताक मारि निकुम्भे यशक वर पाइल ७९
कुम्भकर्ण वीर सिटो मरिल मरिल * ताहार तनये हेनय ख्याति करिल
केहो वोले इहात हरिष नुयुवाइ * मायावी वानरे किवा करिबेक प्राय ५७८०
वायुसुते चेतन लभिला कतोक्षणे * आमाक लङ्काक नेइ राक्षस दुर्ज्जने
कोकोलित वैसाइलेक चवरेक तार * छिर गैल हृदय चेतन नाहि गार ५७८१
वायुपुत्रे हसोकि आकाशे डेव दिल * निशाचरे तेतिक्षणे चेतन हरिल
कतो दूरे हनुमन्ते भैलेक उधाव * परि निकुम्भर दुइ कान्धे दिला पाव ८२
दुइभिति कान्धत मारिया दुइ गोर * दुइ हाते माथा धरि विलन्त आजोर
बलवन्त बीरे उपरक दोङ्गा दिल * निकुम्भर माथागोट जटराइ छिण्डिल ८३
रामसेना माजे निया माथागोट थैला * अद्भुत देखि सबे कौतुकक पाइला
मारुतिक रामचन्द्रे आदरिला सुखे * वायुपुत्रे थाकिलेक प्रज्वलित मुखे ८४
रावणे शुनिला कुम्भ निकुम्भर बध * शोके दुःखे कतो वेलि भै गैला तबध
मकराक्ष बीरक आदेशे लङ्केश्वर * राम लक्ष्मणक गैया पेवा यमघर ८५
खरर तनय तुमि सम बोपाहार * समरत गैया राम लक्ष्मणक मार
तोमाक सदृश न भैलेक तिनि लोके * भालुक वानर मारि हित करा मोके ८६
तोहोर पाचते इन्द्रजित चलि याइव * आपुनि दारुण रणे भङ्गक न पाइब
कीर्तिया पियोक सबे सेनागण मारि * पितृबैरी गुचाइ एर शल्यक उद्धारि ८७
सचकिते मकराक्षे चालिलेक गाव * प्रदक्षिणे नमिला राजार दुइ पाव

है उसी ने हमारी लंका को जलाया था। जिसने अकेले ही सारे राक्षसों को पराजित किया, जिसे मार कर निकुभ को बड़ा यश मिला ॥ ७९ ॥ कुंभकर्ण वीर जो मरा सो मरा, उसके पुत्र ने ऐसी प्रसिद्धि प्राप्त की; किसी-किसी ने कहा, इसके लिए हर्ष करना उचित नही है। यह मायावी वानर न जाने क्या कर डाले ॥ ५७८० ॥ कुछ क्षण पश्चात् हनुमान की चेतना लौटी, उन्होंने देखा कि दुर्जन राक्षस हमे लंका में लिये जा रहा है। उन्होंने उसकी छाती पर एक थप्पड़ मारा। उसका हृदय फट गया और उसकी चेतना खो गयी ॥ ५७८१ ॥ वायुपुत्र धक्का मारकर, आकाश में कूद गये, उसी क्षण निशाचर अचेत हो गया। हनुमान कुछ दूर कूद गये, फिर नीचे आकर निकुभ के कधों पर पैर रखे ॥ ८२ ॥ दोनों कन्धो पर दो लात मार कर, सिर पकड़ दोनों हाथों से खीचा। बलवान वीर हनुमान ने ऊपर उछाल दिया, और निकुंभ का सिर मरोड़कर तोड़ डाला ॥ ८३ ॥ वह सिर ले जाकर उन्होंने राम की सेना के बीच रखा। यह अद्भुत कृत्य देखकर सब बड़े हर्षित हुए। प्रसन्नता से रामचन्द्र ने मारुति का स्वागत किया, वायुपुत्र का मुखमंडल प्रज्वलित हो उठा ॥ ८४ ॥ रावण ने सुना कि कुंभ-निकुंभ मारे गये तो शोक के मारे कुछ देर तक स्तब्ध रह गया। लंकेश्वर रावण ने वीर मकराक्ष को आदेश दिया— तुम जाकर राम-लक्ष्मण को मार कर यमलोक भेज दो ॥ ८५ ॥ तुम खर के पुत्र हो, अपने पिता के ही समान वीर हो। युद्धभूमि में जाकर राम-लक्ष्मण को मार डालो। तुम्हारे जैसा वीर तीनों लोकों मे कोई नही है। भालू और वानरों को मारकर मेरा हित करो ॥ ८६ ॥ तुम्हारे पीछे इन्द्रजित चला जायेगा। वह स्वयं भयंकर युद्ध मे पराजित न होगा। राम की सेना को मारकर सभी कीर्तिमान बनकर (मदिरा आदि) पान करो। अपने पिता के शत्रुओं को नष्ट कर हृदय का शूल मिटा दो ॥ ८७ ॥ मकराक्ष उसी क्षण उठ पड़ा और राजा के चरणो का नमन कर प्रदक्षिणा की। रावण ने उसका आलिंगन

रावणे आलिङ्गि विन्धाइलेक अलङ्कार * मेघत बिजुली येन देखि ज्योतिष्कार ८८
रथे चलिलेक घोरा येहेन उराइ * विस्तारित मेघक चालिला येन वाइ
हस्ती रथ चतुरङ्गे चले चपकारे * चतुर्द्दिशे बेढ़िया चलिला निशाचरे ८९
मकराक्ष चलिला अनेक विमङ्गल * घोरा सब कान्दय नयने बहे जल
रथर ध्वजक तार परि गैला खसि * उलटा पवन बहे शिखर बरिषि ५७९०
बाधा सब न मानिया कपाइलेक रण * देखि वृक्ष शिला लैया धाइल कपिगण
हस्ती घोरा बेढ़िया राक्षसे बेढ़ि मारे * बानरेओ नखे फुलि कुम्भस्थले दारे ५७९१
काण्डे काण्डे बृक्षे शिरे करे हानाहानि * बानरेओ राक्षसक मारे किल टानि
राक्षसे कपिक मारे गलत कामोरे * भालुकेयो पेट छिरि आन्तक बिचारे ९२
धनुशर धरि मकराक्षसे खङ्गाइल * एकेबीरे निरन्तरे बानर भङ्गाइल
श्रीराम लक्ष्मणे हाते धनुशर लैला * आगबाढ़ि आपुनार सेना थिर कैला ९३
मकराक्ष बोलन्त रामक कैत पाओं * पितृबैरी मारि आजि शैल्यक गुचाओं
आनत मोहोर कार्य्य नाहि एतिक्षण * पाचे लक्ष्मणक मारो सब कपिगण ९४
खोजन्ते खोजन्ते कतोदूरे भेट पाइल * तोमाकेसे राम बुलि मात पुरुजाइल
खरर तनय मोर मकराक्ष नाओं * तोमाक मारिया यमकरणे पठाओं ९५
चिरकाल हृदयर शैल्यक उद्धारो * तोमार शोणिते पितृ तर्पणक करो
बैर खुजि पाइलो कार्य्य नाहिके आनत * आमार पितृक पाइबा यमर थानक ९६
क्रूरता एरिया राम धर्म्मे युजे युजा * तोमार आमार कार्य्य भाले आजि बुजा

कर उसे आभूषण पहनाये। वह मेघ में बिजली जैसा ज्योतित दिखाई देने लगा ।। ८८ ।। वह रथ पर चढ कर चला, घोड़े ऐसे उड़ने लगे मानो फैले हुए बादलों को पवन उड़ाये लिये जा रहा है। हाथी, रथ समेत चतुरंगिनी सेना मिलकर चलने लगी, उसे चारों ओर घेरकर निशाचर चल पड़े ।। ८९ ।। जब मकराक्ष चल पड़ा तो अनेक असगुन होने लगे। घोड़े रोने लगे, उनकी आँखों से आंसू बहने लगे। उसके रथ की ध्वजा टूटकर गिर पड़ी, पर्वत-शिखरों की वर्षा करते हुए विपरीत पवन चलने लगे ।। ५७९० ।। उसने किसी बाधा को न मानकर युद्धभूमि को कंपित कर डाला। यह देख वानरगण वृक्ष-शिला लेकर दौड पड़े। हाथी-घोड़ों से घेर कर राक्षस उन्हे मारने लगे। बानर भी नाखूनों से उनके कुंभस्थल को फाड़ डालते थे ।। ५७९१ ।। राक्षस वृक्षों के तनों से वानरों के सिरों पर प्रहार करने लगे, वानर भी राक्षसों को प्रचंड मुक्कों से मारने लगे। राक्षस बानरों को मारते थे, उनके गले दाँतों से काट लेते थे, तो भालू उनके पेट फाड़कर आँतें निकाल लेते ।। ९२ ।। धनुष वाण लेकर मकराक्ष क्रोधित हो उठा। उस वीर ने अकेले ही वानरों को भगा दिया। श्रीराम-लक्ष्मण ने हाथ में धनुष-वाण उठा लिया और आगे बढकर अपनी सेना को स्थिर किया ।। ९३ ।। मकराक्ष ने कहा—राम को कहाँ पाऊँगा? आज पिता के वैरी को मारकर काँटा मिटाऊँगा। दूसरों से अब मेरा प्रयोजन नहीं है। राम को मारने के बाद लक्ष्मण और सारे वानरों को मारूँगा ।। ९४ ।। राम को खोजते-खोजते कुछ दूर जाने पर राम से मुलाकात हुई। वह कहने लगा—तुम्हें ही राम कहा जाता है? मैं खर का बेटा हूँ, मेरा नाम मकराक्ष है। तुम्हें मारकर मैं यमलोक भेज दूँगा ।। ९५ ।। चिरकाल के लिए हृदय का काँटा निकाल दूँगा। तुम्हारे रक्त से पिता का तर्पण करूँगा। मुझे वैरी मिल गया, अब दूसरे से प्रयोजन नहीं है। तुम यमलोक जाकर मेरे पिता से मिलोगे ।। ९६ ।। राम! क्रूरता छोड़कर धर्मयुद्ध करो, तब तुम्हारा हमारा कार्य (पराक्रम) अच्छी तरह समझा जायगा। देवगण यह अनुपम युद्ध देखें। मैं आज दशरथ-सुत का नाम मिटाकर ही

समर देखन्त सुरगणे अनुपाम * दशरथ तनयर गुचाइ एरो नाम ९७
श्रीरामे बोलन्त अरे पापी निशाचर * बापेरर लगे तोक पेशो यमघर
नुयुजय कुकुवाये नादय विस्तर * कहित कटुर वाणी शिखिलि बर्व्वर ९८
तोहोर बापेर खर त्रिशिरा दूषण * चंद्धय सहस्र मारिलोहो सेनागण
तहित नाछिलि कार्य्ये तइ बेटा जीलि * आजिसे आसिया मोर हातत परिलि ९९
हेन बुलि रामे हानिलन्त एकेशरे * तिनि शरे पथत छेदिला निशाचरे
आरकायो राघवे सनाइल तिनिशरे * कपालत ताहार बिन्धिला निरन्तरे ५८००
मकराक्ष क्रोधत ज्वलिया गैला पाचे * कपालत बिन्धिलन्त एकैश नराचे
आठटा नराचे रामे बिन्धिलन्त ताक * निशाचरे हानिलेक नराचर जाक ५८०१
दुइहानो नराचे आकाशत एक ठाइ * इकूले सिकूले वायु चञ्चरिल जाइ
दुइ पाशे भैला येन दुइखान आकाश * तमोमय भैला, नाहि रविर प्रकाश २
दुइ बीरे शर हानि दुहाङ्क बिन्धिल * सकल शरीरे येन आलता गुलिल
केमते लवन्त शर टानन्त हानन्त * देवासुरे दुइहानो अन्तक न जानन्त ३
अन्तरीक्षे थाकि यत किन्नर चारण * कौतुक चाहन्ते सबे अद्‌भुत रण
विद्याधर गन्धर्व्व चारण सिद्ध नागे * दुहाङ्क प्रशंसे मनत अनुरागे ४
समसर युद्ध केहो कातो न घाटिल * दुइहानो शरक दुयो समस्ते काटिल
अन्धकार फेरि भैला उज्ज्वल आकाश * किरण प्रकाशि दिश पूरिला प्रकाश ५
आसङ्ग पावय योनो रामे गुणिलन्त * मुठि प्रदेशत तार धनु काटिलन्त
सारथिक काटिलन्त आठोटा नराचे * रथभङ्गे मकराक्षे भूमि भैला पाचे ६

छोड़ूँगा ।। ९७ ।। श्रीराम ने कहा—अरे पापी निशाचर, तुझे तेरे बाप के पास यमलोक भेज दूंगा, 'पुरुवा' (पूरब से चलनेवाला पवन) लड़ता नहीं, केवल नाद बहुत करता है। अरे बर्बर, तूने यह कठोर वाणी कहाँ से सीखी ? ।। ९८ ।। तेरे बाप खर, दूषण, त्रिशिरा सहित चौदह हजार सेना को मैंने मार डाला था। तू वहाँ नहीं था इस कारण जीवित रहा। आज ही आकर मेरे हाथ पड़ा है ।। ९९ ।। यह कहकर राम ने उसे एक बाण से प्रहार किया जिसे निशाचर ने तीन बाणों से मार्ग में ही काट डाला। इसके पश्चात राम ने तीन तेज बाणों से उसके कपाल को निरंतर वेध डाला ।। ५८०० ।। तब मकराक्ष क्रोध से जल उठा। उसने इक्कीस नाराचों से राम के कपाल को वेध दिया। राम ने उसे आठ नाराचों से वेधा, निशाचर उन पर अनगिनत नाराचों से प्रहार करने लगा ।। ५८०१ ।। दोनों के नाराच आकाश में एक स्थान पर जमा हो गये और उनसे वायु का संचार इधर-उधर होने लगा। दोनों ओर मानो दो आकाश थे, चारों ओर अंधेरा हो गया, सूरज का प्रकाश नहीं आ पा रहा था ।। २ ।। दोनों वीरों ने बाणों का प्रहार कर दोनों को वेध दिया। उन दोनों के शरीरों में मानो महावर उड़ेल दी गयी हो। वे दोनों कैसे बाण लेते हैं, धनुष की डोरी खींचते हैं, प्रहार करते हैं, देव-असुर कोई भी उनके अन्त को नही जान पाता था ।। ३ ।। सारे किन्नर, चारण अंतरिक्ष में रहकर कौतुक देखने हेतु वह अद्‌भुत युद्ध देख रहे थे। विद्याधर, गन्धर्व, चारण, सिद्ध, नाग आदि मन के अनुराग के कारण दोनों की प्रशंसा करने लगे ।। ४ ।। दोनों में बराबरी की लड़ाई हो रही थी. कोई किसी से हारता न था। दोनों के बाणों को दोनों ने काट डाला। इससे अंधेरा मिट गया, उज्ज्वल आकाश दिखाई पड़ा, किरणों ने दिशाओं को प्रकाशित कर दिया ।। ५ ।। राम ने विचार किया, यह बहुत ढीठ हो गया है। उन्होंने उसकी मुट्ठी के पास से धनुष काट डाला। आठ बाणों से सारथी को काट डाला। रथ के टूट जाने पर मकराक्ष भूमि पर उतर

क्रोधि गैला राक्षस हृदय गुलगुल * अगनि सदृश हानिलन्त एक शूल
शूलगोट चलय तक्षक येन सर्प * देखि देवलोकर हरिला बल दर्प ७
अचिन्तते तेजबल श्रीराम देवर * शूल काटि पेलाइला हानिया निज शर
अद्भुत शर देखिलेक समस्तय * साधु साधु घोषि देवे करे जय जय ८
शूल परि गैल मकराक्षे दिल डाक * मुठि धरि बोलय मारोहो थाक थाक
यतमान शकति आछय हान हान * पाचे यम सदनक करिबि पयाण ९
बचन शुनिया रामे तुलिलन्त हास * मारोहो राक्षस तइ आर कोथा यास
पावक अस्त्रक धरि करिला कटाक्ष * सेहि अस्त्र घावे परि गैला मकराक्ष ५८१०
जयति राघव रघुबंशर तिलक * देवकार्य साधिया बधिला राक्षसक
निज गुणे पूरिलन्त भकतर काम * जानि निरन्तरे नरे बोला राम राम ५८११

इन्द्रजितर तृतीयबार युद्धयात्रा आरु माया-सीता बध

दुलड़ी

रामर हातत परिला शुनिया मकराक्ष महाबीर ।
क्रोधे महात्रासे रावण राजार ज्वलिला सब शरीर ॥
सम्बुधिया इन्द्र- जितक बोलय शुना बापु मेघनाद ।
आरका रणक चलि याहा घोर गुचायो मन बिषाद ॥ १२
एकयो प्रकारे दाशरथी राम समसर नोहे तोर ।
न्याय युजे येवे संशय देखाहा अन्याये चिन्तियो मोर ॥

आया ॥ ६ ॥ हृदय में ज्वाला होने के कारण राक्षस क्रोधित हो उठा और अग्नि जैसे एक शूल से प्रहार किया। वह शूल तक्षक सर्प की भाँति चला, देखकर देवताओं का बल का दर्प नष्ट हो गया ॥ ७ ॥ श्रीराम-चन्द्र का तेजवल अचिन्तनीय था। उन्होंने अपने वाण से प्रहार कर शूल को काट डाला। उस अद्भुत वाण को सबने देखा। देवताओं ने 'साधु, साधु' का उद्घोष कर 'जय, जय' नाद किया ॥ ८ ॥ शूल के गिर जाने पर मकराक्ष ने मुक्का तानकर पुकारा—ठहर, ठहर, तुझे मार डालूँगा। तेरी जितनी शक्ति है प्रहार कर, परन्तु अंत में तुझे यमलोक जाना ही पड़ेगा ॥ ९ ॥ उसके वचन सुनकर रामचन्द्र हँस पड़े। बोले—अरे राक्षस, तुझे मैं मार डाल रहा हूँ, अब तू जाता कहाँ है ? उन्होंने पावकास्त्र चढ़ाकर उसकी ओर कटाक्षपात किया। उस अस्त्र के प्रहार से मकराक्ष मारा गया ॥५८१०॥ राक्षस का वध कर जिन्होंने देव कार्य साधन किया उन रघुवंशतिलक राघव की जय हो। उन्होंने अपने गुणों से भक्तों की कामनाएँ पूरी कीं। ऐसा समझकर निरंतर 'राम, राम' कहो ॥ ११ ॥

इन्द्रजित की तीसरी बार युद्धयात्रा और माया-सीता-वध

राम के हाथ महावीर मकराक्ष मारा गया, सुनकर क्रोध और महात्रास से राजा रावण का समूचा शरीर जल उठा। उसने इन्द्रजित को सम्बोधित कर कहा— वत्स मेघनाद, सुनो, तुम और एक बार घोर युद्ध करने जाओ और मेरे मन का विषाद मिटाओ ॥ १२ ॥ दशरथ-पुत्र राम किसी भी दृष्टि से तेरा समकक्ष नहीं है। यदि न्याय-युद्ध में उसे मारने में कोई संशय दिखाई पड़े तो अन्याय से उपाय सोच कर मार डालना। वत्स, इन्द्र को अपनी शक्ति से पराभूत कर तूने इन्द्रजित नाम पाया है।

इन्द्रजित नाम पराइले वापुरे इन्द्रक वले भङ्गाइया।
मानुष दुगोटा वीर न मारस मोहोर कर्म्मक पाया॥ १३
एकोवे प्रकारे कौशल्या तनय समसर नोहे तोर।
सत्वरे कार्य्यक साधि आसा वापु शैल्यक गुचायो मोर॥
अलङ्कारे रथ मण्डित करिया रावणि कैला पयाण।
महावीर यत दुइपाशे चलय कतो भैला आगुवान॥ १४
रामर सेनार शिखर पर्व्वत वृक्ष करे लैया धाइल।
सम्मुख रणत प्रथम समरे राक्षस वल भङ्गाइल॥
राक्षसर वले हुया चपकरे दुयो वले घुमाजय।
अस्त्रक हानिया आञ्चोरे कामोरे दुइहानो अशेष क्षय॥ १५
इन्द्रजित वीरे धनुक टङ्कारि अस्त्रक हानिया चाइल।
राम लक्ष्मणक खोजन्ते चलय वानर वल भङ्गाइल॥
चौद्धय चौद्धय वानर फेलिया एकैक एकैक वाणे।
कतो कपिजाक विमुखे पलाइ कतोहो मरिल प्राणे॥ १६
अष्टादश शरे गन्धमार्द्दनक रावणि विन्धिला टाने।
विदुरर हन्ते नल वानरक ताड़िलेक नव बाणे॥
सात गोटा वाणे गवय वीरक गजक विन्धिला पाञ्चे।
आर यत यत वीरक चाहिया शरर प्रहारे खाञ्चे॥ १७
सकल सैन्यक रणक भङ्गाइया राम लक्ष्मणक पाइल।
निसन्धि करिया शरे अन्धकार दुहाङ्को वरे जन्ताइल॥
राम लक्ष्मणेयो काटन फुटन तीखाल अनेक वाणे।
रावणि वीरक फुलि पेलाइलेक भयङ्कर शर टाने॥ १८

परन्तु मेरे कर्मफल के कारण ही इन दो मनुष्यों को तू मार नहीं पा रहा है॥ १३॥ कौशल्या-सुत राम किसी भी प्रकार तेरा समकक्ष नही। वत्स, तू शीघ्र ही यह कार्य सिद्ध कर आ और मेरे हृदय के काँटे को निकाल दे। तब रावण-पुत्र मेघनाद रथ को अलंकारों से मण्डित कर चल पड़ा। सारे महावीर राक्षस उसके दोनो वगल मे होकर चले। कुछ तो आगे-आगे बढ़ चले॥ १४॥ उसे देखते ही राम की सेना हाथों में वृक्ष-पर्वत की चोटी लिए धावित हुई। उसके साथ सम्मुख युद्ध में पहले पहल सग्राम करते ही राक्षसी सेना बिखर कर भागने लगी। राक्षसी सेना फिर संभली और दोनों सेनाओं में घोर द्वन्द्व युद्ध मच गया। दोनों सेनाएँ अस्त्रों का प्रहार करती हुई नोचती खरोंचती, दाँतों से काटती थी। दोनों सेनाओं का बहुत नाश हुआ॥ १५॥ वीर इन्द्रजित धनुष का टंकार कर अस्त्रों का प्रहार करता हुआ राम-लक्ष्मण को खोजने चला। वानरसेना को उसने पराजित कर दिया। एक-एक वाण से वह चौदह-चौदह वानरों को मार डालता था। कितने ही वानरों के समूह विमुख हो भागने लगे, कितने ही मर गये॥ १६॥ अठारह वाणों से मेघनाद ने बड़े वेग से गधमार्दन को वेध डाला और दूर से ही नौ वाणों से वानर नल पर प्रहार किया। वीर गवय को सात वाणों से और गज को पाँच वाणों से वेध डाला। दूसरे सभी वीरों को भी उसने वाणों के प्रहार से रौंद डाला॥ १७॥ सारी सेना को युद्ध में पराजित कर वह राम-लक्ष्मण के पास पहुँचा। अपार वाणों से सम्पूर्ण अंधेरा कर दोनो को बहुत व्याकुल कर दिया। राम-लक्ष्मण ने भी काटने-छेदने वाले अनेक तेज भयंकर वाणो से प्रहार कर वीर इन्द्रजित को वेधकर फुला दिया॥ १८॥ तब वह वीर

तेतिक्षणे बीर अन्तर्द्धान भैला हुहान अस्त्रे न पावे ।
राम लक्ष्मणर शरीर बिन्धिल जर्ज्जरित कृत भावे ॥
दुयो बीर येन अशोक फुलिल रुधिरे बेढ़िल गाव ।
अस्त्र करिवार सन्धि न पावन्त भैला अचेतन भाव ॥ १९

छबि

लक्ष्मणे वोलय दादा श्रुति न धावय आर करियोक आवे कोन बुद्धि ।
मायावी राक्षस इटो चक्षुर गोचर नुइ काण्डे हानिवोहो कोन शुद्धि ॥
आरकाये यावे नतो दुइ भाइक मारे आसि मोहोत दियोक आज्ञा वाणी ।
सकल राक्षस कुल निर्म्मूल करोहे आजि एकले ब्रह्मार अस्त्रहानि ॥ ५८२०
कनिष्ठक सम्बुधिया रामदेवे बुलिलन्त विशिष्टर नोहे हेन धर्म्म ।
एकलर अपराधे समस्तके संहरिवा शास्त्रर निन्दित मन्द कर्म्म ॥
बर बर बीर सब आकाशक पठायोक ताक खुजि देखाओक आमाक ।
सम्मुख समरे तार प्राणक छराओं देखा अबंध हानिया ताक शर ॥ ५८२१
राघवर मन कथा अभिप्राय जानि तार मने बर मिलिला विषाद ।
त्वरिते समर छारि लङ्कात पशिला गैया त्रिदश कम्पन मेघनाद ॥
कतो वेलि थाकि तहि बिमरिष करिलेक बापक प्रसाद येन पाओं ।
माया सीता सञ्जोजिया सबारे आगत काटि निकुम्भिला बट मूले याओं ॥ २२
सबाको बञ्चिते लागि माया-सीता सञ्जोजिला साक्षातते जनकर जीव ।
आरकत करतल कुरिगोटा नखज्वले आति मनोहर कम्बुग्रीव ॥

अंतर्हित हो गया। दोनों के अस्त्र उस तक पहुँच नही पाते थे। उसने राम-लक्ष्मण के शरीर को बेधकर जर्जर कर डाला। दोनो वीरों के शरीर रक्त से सन गये। वे मानो पुष्पित अशोक वृक्ष जैसे लगने लगे। अस्त्र चलाने का उपाय उन्हें नही मिलता था। वे दोनों अचेत से हो गये ॥ १९ ॥

लक्ष्मण ने कहा, भैया, अब तो कुछ भी सुनायी तक नही दे रहा है। अब कौन-सी युक्ति करें? यह मायावी राक्षस आँखो से दिखाई नही देता, इसे किस उपाय से वाण से मारें? क्या जाने पुनः यह हम दोनों भाइयों को मार डालें, इसलिए मुझे आज्ञा दीजिए कि अकेले ब्रह्मास्त्र का प्रयोग कर सारे राक्षसवंश को निर्मूल कर डालूं ॥ ५८२० ॥ तब छोटे भाई लक्ष्मण को संबोधित कर रामचन्द्र ने कहा—जो विशिष्ट होते हैं, उनका ऐसा धर्म नही है कि एक के अपराध से सबको मार डाले। यह शास्त्रनिन्दित मंद कर्म है। तुम बड़े-बड़े वीरों को आकाश में भेजो जो उसे ढूंढ कर हमें दिखलावें। तब तुम देखना कि अवैध वाणों का प्रयोग उस पर कर सम्मुख समर में उसके प्राण ले लूंगा ॥ ५८२१ ॥ रामचन्द्र की मनोभिलाषा और अभिप्राय समझ कर इन्द्रजित के मन में बड़ा विषाद हुआ, देवों को कंपित करनेवाला मेघनाद तुरन्त युद्ध करना छोड़ लंका में चला गया। कुछ क्षण वहाँ रहकर उसने विचार किया कि पिता का अनुग्रह मिले इस कारण माया सीता बनाकर सबके सामने काटूंगा और सब बरगद के नीचे स्थित निकुम्भिला यज्ञभूमि जाऊँगा ॥ २२ ॥ सबको छलने हेतु उसने साक्षात् जानकी जैसा बनाकर माया सीता का निर्माण किया। उस माया सीता की हथेली रक्तवर्ण थी, बीसों नाखून जगमगा रहे थे, शख जैसी ग्रीवा बड़ी मनोहर थी, नाभि त्रिवली युक्त थी, स्तन कड़े उभरे हुए थे, सिर पर एक वेणीयुक्त उसका वेश मृदुल था।

त्रिवली वलित मध्ये उन्नत कठिन स्तन एक वेणी धरे मृदु वेश।
स्वामीर वियोग दुखे प्रभातर चन्द्र येन मुख भैल मलिन कुवेश ॥ २३
जय जय रामदेव चरणत करो सेव तुमि देव दीन दुःखहारी।
देवर साधिया काज पृथिवीक उद्धारिला दुर्ज्जन राक्षसगण मारी ॥
तयु पादपद्मे प्रभु एकान्त भकति होक मोक कृपा करियो इबार।
माधव कन्दलि भणे राम बोला सर्व्वजने तेवे सुखे तरिबा संसार ॥ २४

पद

आपुन रथत निया सीताक चड़ाइल * सब सैन्ये आरकायो रणभूमि पाइल
हनुमन्त प्रमुख्ये देखय विपरीत * सीता गोसानीक लैया आइल इन्द्रजित २५
मारुति देखन्त रथे रावण पुत्रर * शोके दुःखे जानकीर क्लेश कलेवर
मनत बोलन्त आर चेष्टा नोहे भाल * सीतार विपत्ति मोर हृदयत शाल २६
इन्द्रजिते सम्बुधि बोलन्त हनुमन्त * आजि हेरा समस्ते बैरक करो अन्त
लङ्कार अगनिकुण्ड जनकर जीव * एतिक्षणे शिर छेदि निकलिबो जीव २७
पाचे सुग्रीवक तोक समरत मारो * राम लक्ष्मणक मारि शैल्यक उद्धारो
सीतार केशत वाम हाते धरिलेक * दक्षिणर हाते खाण्डा थिय करिलेक २८
हनुमन्ते बोलन्त मोहोर बोल शुन * स्त्रीबध करस तइ राजनय कोन
बापेरे आनिल हरि परिला बिपाङ्गे * स्वामीर वियोग दुखे क्लेश भैला अङ्गे २९
बाप माव शाशु शशुरर अगोचर * अनाथिनी नारी आछे लङ्कार भितर
हेन नारी मारि तइ भालक न पाइबि * अधोगामी हुया घोर नरकत याइबि ५८३०

स्वामी के वियोग-दुख के कारण वह प्रभात के चन्द्रमा जैसी मलिन मुखवाली और कुवेश धारण किये हुए थी ॥ २३ ॥ जय-जय देव राम, तुम्हारे चरणों में प्रणाम है, देव, तुम दोनों के दुख हरण करनेवाले हो। देवों का कार्य साधन कर दुर्जन राक्षसों को मार तुमने पृथ्वी को उद्धारा। प्रभु, तुम्हारे चरणकमल में एकान्त भक्ति हो, मुझ पर इस बार कृपा करो। माधव कन्दलि कहते हैं, सभी लोग राम कहो, तभी सुखपूर्वक इस संसार से तर सकोगे ॥ २४ ॥

इन्द्रजित ने अपने रथ पर ले जाकर (माया) सीता को चढ़ाया। इसके पश्चात् सारी सेना सहित वह रणभूमि में पहुँचा। हनुमान आदि ने देखा, सीता-देवी को इन्द्रजित यहाँ ले आया है, यह तो बड़ी अनहोनी हुई ॥ २५ ॥ हनुमान ने देखा, रावण-पुत्र के रथ पर स्थित जानकी का शरीर शोक-दुख से दुबला हो उठा है। उन्होंने मन में कहा, अब कोई उचित प्रयत्न नही दिखता। सीता का संकट मेरे हृदय में कांटे जैसा चुभ रहा है ॥ २६ ॥ इन्द्रजित ने हनुमान को संबोधित कर कहा—अरे, आज मैं सारे वैरियों का अंत कर डालूंगा। यह जानकी लंका के अग्निकुंड सी है। इसी क्षण इसका सिर काट कर इसके प्राण ले लूंगा ॥ २७ ॥ इसके पश्चात् तुझे और सुग्रीव को युद्ध में मारूँगा तथा राम-लक्ष्मण को मारकर हृदय का काँटा निकालूंगा। उसने बायें हाथ से सीता के बाल पकड़ लिए और दाहिने हाथ से खड़ग उठाया ॥ २८ ॥ हनुमान बोले—अरे, मेरा वचन सुन! तू स्त्री-वध कर रहा है, यह कैसी राजनीति है? तेरा बाप इन्हे हरण कर लाया था, ये विपत्ति में पड़ी हुई थी, स्वामी के वियोग-दुख से इनके अंग दुबले हो गये हैं ॥२९ ॥ माता-पिता, सास-ससुर की आंखों से ओझल रहकर यह अभागिनी नारी लंका में रह रही है। ऐसी नारी को मारकर तेरा कल्याण

इन्द्रजिते बोलन्त बानर महापाप * एइर कारणे बहु लोकर सन्ताप
एक जनी मारिले अनेक लोक जीये * हेनर बिनाशे बर धर्म्मकेसे दिये ५८३१
मिछात निन्दस कपि समय न जानि * हेन बुलि सीताक काटिला खाण्डा हानि
हा राम लखाइ मोहोर प्राणनाथ * हेन बुलि भूमित परिल गैया माथ ३२
सीतार बिपत्ति देखि बीर हनुमन्त * दुर्ब्बार शोकत आतिशय कान्दिलन्त
हरिहरि परिछेदा देखिलोहो आइ * राम प्रभु जीबे केने तोमाक न पाइ ३३
हा हा आइ यातो मोर बोल न करिले * सिकारणे आजि हेरा पराणे मरिले
हेन बुलि पर्ब्बत गावर बले तुलि * हनिलन्त इन्द्रजित कुमारक बुलि ३४
मेघनाद बीरर सारथि सुशिक्षित * रथखान आनमिति निलेक त्वरित
सन्धाने हानिला बायुसुत महाबल * भूमित परिया हलहलि गैला तल ३५
धर्म्म धर्म्म सुमरन्त निशाचरगण * गिरि परि राजपुत्र क्षणे होवे चूर्ण
बायुपुत्र सम बीर नाहि महाबल * पृथिवी बिदारि गिरि गोट गैला तल ३६
इन्द्रजित समे तार समर भागिल * हनुमन्ते राक्षसक लङ्काक देखिल
अन्तर दगध भैला जानकीर शोके * सेहि कथा कहिबाक गैला सर्ब्बलोके ३७
रामर पाशक हनुमन्त चलि यान्त * राघवे पठाइला जाम्बवन्तक पाइलन्त
अर्द्धेक पथर परा ताक उलटाइल * शोके दुखे चलिया रामर पाशे पाइल ३८
राघवे बोलन्त देखो सबारे श्रीहानि * ओवा हनुमन्त किबा कार्य्यर बिधिनि
आमि आरो बोलो सबे भैला रणजय * सकले कपिर केने शोकर उदय ३९

न होगा। तू अधोगामी होकर नरक में पड़ेगा ॥ ५८३० ॥ इन्द्रजित बोला, अरे वानर, यह महापाप है। इसके कारण बहुत से लोगों को सतंप्त होना पड़ रहा है। इस एक को मार डालने पर अनेक लोग जीवित रहेंगे। इस कारण ऐसी नारी को मार डालने से बड़ा धर्म ही होता है ॥ ५८३१ ॥ अरे वानर, तू समय को न समझकर मेरी बेकार निन्दा कर रहा है। यह कहकर उसने खड्ग के प्रहार से सीता को काट डाला "हा राम-लक्ष्मण, हे मेरे प्राणनाथ", कहते हुए उसका सिर भूमि पर जा गिरा ॥ ३२ ॥ सीता का संकट देख वीर हनुमान प्रचंड दुर्निवार शोक के मारे बहुत रोने लगे। हरि-हरि, हे माता सीता, तुम्हें अन्तिम बार के लिए देख लिया। अब तुम्हें न पाकर भला प्रभु राम कैसे जीयेंगे? ॥ ३३ ॥ हा-हा माता सीता! तुमने मेरा कहना नहीं माना इसी कारण तुम्हें आप प्राण छोड़कर मरना पड़ा। यों कहते-कहते अपने शरीर का बल लगा एक पर्वत को उठा, कुमार इन्द्रजित पर फेंक मारा ॥ ३४ ॥ तब वीर मेघनाद का सुशिक्षित सारथी उसके रथ को तुरन्त दूसरी ओर ले गया। उसका निशाना साधकर महाबली पवनसुत ने जो पर्वत फेका वह भूमि पर गिर कर कँपाता हुआ नीचे धँस गया ॥ ३५ ॥ सारे निशाचर धर्म, धर्म' का स्मरण करने लगे। वे कहने लगे—पर्वत के गिरते राजकुमार चूर-चूर हो जाता। वायुपुत्र हनुमान जैसा महाबली वीर कोई और नही है। (उनके फेंकने से) पर्वत पृथ्वी को विदीर्ण कर नीचे चला गया ॥ ३६ ॥ इन्द्रजित जैसा वीर युद्ध में पराजित हो गया। हनुमान ने राक्षस को लंका में खदेड़ दिया। उनका अंतर जानकी के शोक से दग्ध हो रहा था। वह बात सबसे बताने हेतु वे चले आये ॥ ३७ ॥ हनुमान राम के पास चले। राम के भेजे हुए जाम्बवन्त से उनकी भेट हुई। हनुमान ने उसे बीच से ही लोटाया और शोक-दुख के मारे चलते हुए राम के पास पहुँचे ॥ ३८ ॥ राम ने कहा—सभी को मैं श्रीहीन देख रहा हूँ। हनुमान, कार्य पर कौन-सा विघ्न आ पड़ा है, हम तो सोच रहे थे कि सबने युद्ध में विजय प्राप्त की है, परन्तु सारे कपियों को कैसा शोक हुआ है? ॥ ३९ ॥ राम के वचनों से हनुमान शोकाभिभूत हो पड़े और

रामर बचने शोकाविष्ट हनुमन्त * सजल नयने जानकीर कथा कन्त
माथा चपराया जुरिलन्त योरहात * शुनियो गोसाइ तुमि रघुबंश नाथ ५८४०
क्किारणे सागरत बान्धिलाहा सेतु * एतक दुखक सहिलाहा यार हेतु
जनक जीयारी माव दुखुनी गोसानी * इन्द्रजिते काटिलन्त रणमाजे आनि ५८४१
अशेष बुलिलो ताक धर्म्मक चिनाइ * अनाथिनी नारीक काटिब्रे नुयुवाइ
पाविष्ठ अधम जाति क्रर अतिरेक * बामहाते केशक धरिया काटिलेक ४२
असह्य वचन शुनि हनुर मुखत * ढलिया परिला राम निज आसनत
अचेतन भैला हेन सब लोके जानि * कान्दन्ते वानरे माथे ढालिलेक पानी ४३
लक्ष्मणेओ महादुःखे गले धरिलन्त * हाहाकार करिया अनेक कान्दिलन्त
फुङ्कते फुङ्कते पाचे आसि भैला जीव * हा हा सीता कहि गैलि जनकर जीउ ४४
तोहोक सुमरि आकुलित करे मन * मिछात करिलो एतकाल घोर रण
सब लोक कदर्थिया करिलो दुखित * वीचि धान बुइलो येन उखरा भूमित ४५
कोथा गैलि प्राणेश्वरी पतिव्रता नारी * तोहोर गुणक आर वर्णाइते न पारि
तइ अबिहने जीवनत कोन फल * पृथिवी फाटन देइ याओं रसातल ४६
लक्ष्मणेओ शोके मुठि हानिला हियात * चापिया धरिला पाचे रामर ग्रीवात
बुलिलन्त प्रबोध वचन धर्म्म सार * तथापितो रामे शोके कान्दिला अपार ४७
शुनियोक ददा इटो देह मलपिण्ड * असार कदली येन उइ चुला भिण्ड
अथिर संसारे तुमि त्यजियोक मर्म्म * रिपु जिनिबार बुद्धि करियोक कर्म्म ४८
सेना थिर करि आसि भैला बिभीषण * देखन्त मलिन मुख सब कपिगण

सजल नयनों से जानकी की कथा सुनाने लगे। उन्होंने सिर पीटकर हाथ जोड़ लिए और कहा—हे प्रभु, रघुवंशनाथ, आप सुनिये ॥ ५८४० ॥ प्रभु, आपने किस कारण सागर पर सेतु बाँधा? जिसके लिए आपने इतना दुख सहा, उन जनकनन्दिनी, दुखिया देवी, माता सीता को आज युद्धक्षेत्र में काट डाला ॥ ५८४१ ॥ मैंने उसे धर्म का स्मरण दिलाकर बहुत समझाया कि 'अनाथिनी नारी को काट डालना उचित नहीं। परन्तु अधम जाति का वह पापी बड़ा ही क्रूर है। उसने सीता माता के केश बायें हाथ से पकड़कर काट डाला ॥ ४२ ॥ हनुमान के मुख से असहनीय वचन सुनकर राम अपने आसन पर ढलक गये। उन्हें अचेत जानकर सभी वानर रोते हुए उनके सिर पर पानी डालने लगे ॥ ४३ ॥ महान् दुख के मारे लक्ष्मण भी उनका गला पकड़कर हाहाकार करते हुए बहुत रोने लगे। रामचन्द्र पर हवा करते-करते चेतना लौटी। वे कहने लगे—हा-हा सीता, जनक-नन्दिनी, तुम कहाँ चली गयी ॥ ४४ ॥ तुम्हारा स्मरण कर मन व्याकुल हो जाता है, इतने समय तक मैंने बेकार ही घोर युद्ध किया। सारे लोगों को अपमानित कर दुखी बनाया, मानों बंजर भूमि पर धान बोया ॥ ४५ ॥ प्राणेश्वरी, पतिव्रता नारी, तुम कहाँ गयी? तुम्हारे गुणों का वर्णन नहीं किया जा सकता। तेरे बिना यह जीवन रखकर कौन-सा फल है? हे धरती, तुम फट जाओ, मैं रसातल चला जाऊँ ॥ ४६ ॥ लक्ष्मण ने भी शोक के मारे अपनी छाती पर मुक्का मारा और राम के गले से लग गये। उन्होने धर्म का तत्व समझाते हुए सांत्वना के वचन कहे। तथापि राम शोक के मारे अपार रुदन करते रहे ॥ ४७ ॥ भैया, सुनिये, यह शरीर मलपिंड है। केले के पेड़ जैसा असार और दीमक-पतंगों जैसा नश्वर है। इस असार संसार में आप शोक करना छोड़ दें और शत्रु को जीतने का कार्य करें ॥ ४८ ॥ इतने में सेना को स्थिर कर वहाँ विभीषण आ पहुँचे। उन्होंने देखा, सभी वानरों का मुख मलिन है। वे शीघ्रता से राम के समीप पहुँचे,

शीघ्र बेग धरिया रामर पाशे याइ * देखे गलागलि करि कान्दे दुइ भाइ ४९
प्रबोधन्त लक्ष्मणे रामर गले धरि * हेतु युगुतिक धर्म्म पथ अनुसरि

विभीषणे श्रीरामक प्रबोध दिये आरु लक्ष्मणर सैते निकुम्भिला यज्ञभूमिलै गमन करे

प्रणामि बोलन्त दशग्रीवर कनिष्ठ * कि कारणे देखो दुइ भाइ शोकाविष्ट ५८५०
सेना थिर करिबाक पठाइला आमाक * प्रति प्रति करिया थापिलो सेना जाक
किबा आथान्तर ऐत मिलिला आवर * सुग्रीवक आदि करि समस्ते बानर ५८५१
लक्ष्मणे बोलन्त शुनियोक विभीषण * तुमि नतो शुना तेवे इसब बचन
यार काजे एत लोक दुख निते नित * रण माजे सीताक काटिला इन्द्रजित ५२
बिभीषणे बोलय हेनय कि पतियाहा * इसब कथाक निया दूरत थवाहा
प्राणान्तिक भैलेयो नृपति लङ्केश्वर * न सम्पिब सीता हेन आमात गोचर ५३
आपुनि जानाहा मइ सहोदर भाइ * आमाक त्यजिला दवा जानकीक पाइ
युक्ति योग्य बोल यत बुलिलो ददाक * सबाहान हिते जानकीक सम्पिबाक ५४
आमार भतिजा इन्द्रजित दुष्ट चित्त * उपाय करिला सिटो तोमाक जिनित
माया सीता काटि गैला ससैन्ये त्वरित * निकुम्भिला बटे यज्ञ करय निश्चित ५५
नाना मन्त्र पढ़ि मन्त्र दिब अगनित * दिब्य बाजी समे रथ हैब उपस्थित
ब्रह्माक आराधि देवतात पाइ बर * रथे समे अवश्ये आसिब निशाचर ५६

देखा, दोनों भाई एक दूसरे का गला पकड़कर रो रहे हैं। लक्ष्मण राम का गला पकड़ कर मुक्ति और धर्ममार्ग के अनुसार सांत्वना दे रहे हैं ॥ ४९ ॥

विभीषण का राम को धीरज बंधाना और लक्ष्मण के साथ निकुंभिल यज्ञभूमि को गमन

उन्हें प्रणाम कर रावण के छोटे भाई विभीषण ने कहा— दोनों भाई आज शोकाविष्ट क्यों दिखाई दे रहे हैं ? ॥ ५८५० ॥ हमें आपने सेना को स्थिर करने हेतु भेजा था। हमने एक-एक कर सारी सेना को उनके स्थानों पर स्थापित किया। यहाँ फिर कौन-सी अनहोनी हो गयी जिससे सुग्रीव समेत सभी बानर शोकाकुल हैं ? ॥ ५८५१ ॥ लक्ष्मण बोले— विभीषणजी, यदि आपने यह सब नहीं सुना है, तो सुनिये। जिसके लिए इतने लोग नित्य दुख पा रहे है, उन सीताजी को युद्धभूमि में इन्द्रजित ने काट डाला ॥ ५२ ॥ विभीषण ने कहा— क्या इस बात पर विश्वास किया जा सकता है ? ऐसी बातों को दूर रखिये। राजा रावण प्राण जाने पर भी सीताजी को हमारे सम्मुख लाने हेतु न सौंपेगा ॥ ५३ ॥ आप तो जानते ही हैं कि मैं उसका सहोदर भाई हूँ। जानकी को पाकर भाई रावण ने हमें भी छोड़ दिया, सबके हितार्थ जानकी को सौंप देने हेतु जितने युक्तियुक्त वचन हमने कहे (उन्हें भी अनसुना कर दिया) ॥ ५४ ॥ हमारा भतीजा इन्द्रजित दुष्टचित्त है। उसने आपको जीतने के लिए ऐसा उपाय किया है। वह माया-सीता को काट कर सेना सहित शीघ्रता से चला गया है। वह अवश्य ही निकुंभिला जाकर वट वृक्ष के तले यज्ञ कर रहा है ॥ ५५ ॥ वह नाना प्रकार के मंत्र पढ़कर अग्नि मे आहुतियाँ देगा। तब उसके पास दिव्य अश्व-युक्त रथ उपस्थित हो जायेगा। ब्रह्मा की आराधना कर देवताओं से वर पाकर रथ

ब्रह्मा वरदाने यज्ञ करय निश्चय * यज्ञ समापिले हइब त्रैलोक्य बिजय
ब्रह्म अस्त्र आपुनि हैवेक उपस्थित * रथखान पाइबे जगतत अबिदित ५७
एहिमते गुणि इन्द्रजित बीरबरे * माया सीता साजि सिटो आनिला समरे
माया सीता काटिलेक खड़्ग धरि करे * समरर बिघ्नि आचरिया यज्ञ करे ५८
सेहि यज्ञ वटे पाइबेक रथ वर * सेहि रथे चड़ि आसिबेक निशाचर
यतमान वीरे केहो बधन न याय * अयुते नियुते ताक खुजिया न पाय ५९
यावे नतो बीरे यज्ञ समापत करे * हेन काले ताक यिटो मारिबाक पारे
ताहार हातते सिटो याइव यमपोहे * हेन बरछिद्र तार थैला पितामहे ५८६०
मायासीता सृजिलेक न करिबा शोक * इन्द्रजित बधिते उद्यम करियोक
इन्द्रजित वीरक मारक लखमन * यावदेके न करे यज्ञक समापन ५८६१
सुग्रीव सहिते तुमि ऐत थाकियोक * आमि समे लक्ष्मणक अनुज्ञा दियोक
सत्वरे दियोक कार्य्य बर अतिरेक * इहान हातते इन्द्रजित परिबेक ६२
श्रीरामे बोलन्त किनो बुलिला बचन * सीतार सन्तापे मइ न पाओं चेतन
सेहि कथा पुनश्च कहिला बिभीषणे * लक्ष्मणक बुलिला रावणि बध मने ६३
राघवे बोलन्त बापु मोर बोल बुजा * मायावी राक्षस सिटो अवहिते भुजा
आपुनि जानाहा रावणिर कूटबुद्धि * तोमाक आमाक येनमते गैला रुधि ६४
बिभीषण तुमि लक्ष्मणर लगे याहा * समर भूमित उपदेश बुलिबाहा
रामदेवे लक्ष्मणक धरि आलिङ्गिला * आशीर्बाद करिया बिजय यात्रा दिला ६५

सहित अवश्य ही निशाचर उपस्थित होगा ।। ५६ ।। वह अवश्य ही ब्रह्मा से वर पाने हेतु यज्ञ कर रहा है। यज्ञ समाप्त होने पर वह त्रैलोक्य-विजयी हो सकेगा, आप ही आप वहाँ ब्रह्मास्त्र उपस्थित होगा। जो रथ मिलेगा उसे विश्व मे कोई नही जानता ।। ५७ ।। यही विचार कर वीरवर इन्द्रजित माया-सीता की रचना कर इस युद्धभूमि मे ले आया था। उसने अपने हाथ में खड्ग लेकर माया-सीता को काटा और इस प्रकार युद्ध के विघ्न को परे हटाकर यज्ञ कर रहा है ।। ५८ ।। बरगद के तले के उस यज्ञ में वह उस श्रेष्ठ रथ को प्राप्त करेगा और वह निशाचर उसी रथ पर सवार होकर आयेगा। तव जितने भी वीर हैं किसी से भी वह मारा नही जा सकेगा, लाखों हजारों (प्रयत्न करने पर भी) उसे ढूँढ़ नहीं पायेंगे ।। ५९ ।। (यज्ञ समाप्त होने के पहले ही) जो उसे मार सकेगा उसी के हाथ वह यमलोक पहुँचेगा; पितामह ब्रह्मा ने उसके लिए यही बड़ा छिद्र रख दिया है ।। ५८६० ।। उसने माया-सीता का सृजन किया है, आपलोग शोक न करे और इन्द्रजित का वध करने हेतु उद्यम करे। वीर इन्द्रजित को यज्ञ समाप्त करने के पहले ही लक्ष्मण मार डालें ।। ५८६१ ।। सुग्रीव समेत आप यही रहें, हमारे संग जाने हेतु लक्ष्मण को आज्ञा दीजिये, आप शीघ्र आज्ञा दे दीजिये क्योंकि कार्य बहुत बड़ा है। इन्हीं लक्ष्मण के हाथ से ही इन्द्रजित मारा जायेगा ।। ६२ ।। श्रीराम ने कहा, तुमने यह कैसा वचन सुनाया, मैं तो सीता के सताप के मारे अचेत-सा हो रहा हूँ। इस पर विभीषण ने पुनः वही वात दुहरा दी और इन्द्रजित का वध करने हेतु लक्ष्मण को भेजने के लिए कहा ।। ६३ ।। राघव ने कहा— वत्स, मेरे वचन समझो, वह राक्षस बड़ा मायावी है, अतः सावधान होकर उससे लड़ना। तुम्हें-हमें जिस प्रकार उसने रुद्ध कर डाला था उस इन्द्रजित की कूटबुद्धि तुम स्वयं समझते हो ।। ६४ ।। विभीषण, तुम लक्ष्मण के संग जाओ और समरभूमि मे उसे उपदेश देना। रामचन्द्र ने लक्ष्मण को पकड़कर आलिंगन किया और आशीर्वाद देकर विजय-यात्रा का मंगलाचरण किया ।। ६५ ।। हनुमान, तुम भी लक्ष्मण के संग जाओ और जाम्बवन्त सेना सहित तुम

लक्ष्मणर लगत चलियो हनुमन्त * सेनागण लैया आरो यायो जाम्बवन्त
एहि बुलि रामदेवे आदेश करिला * ससैन्ये सहिते सवे तेखने लरिला ६६
रामर चरण रेणु माथे तुलि लैला * शीघ्र गमने रणभूमि प्रवेशिला
दूरते देखिला याइ रावणिर दल * निसन्धि करिया आछे राक्षस सकल ६७
बिभीषणे बुलिलन्त शुनियो लखाइ * ससैन्ये सहिते बीर आछे एहि ठाइ
निकुम्भिला नामे दिव्य बट विद्यमान * इन्द्रजिते रङ्गे यज्ञ करे सेहि थान ६८
यावदेके बीरे यज्ञ समापन्न करे * सैन्य भङ्गायोक जाण्टे सानाइबार शरे
सवारो माजत पाचे देखिबाहा ताक * कृत्यक समापि बीरे धाइबेक तोमाक ६९
मेघनादे पारे यदि कृत्य समापित * ब्रह्मअस्त्र पाइले पारे त्रैलोक्य जिनित
अन्तरीक्ष रथे चरि तिनि लोक दहे * हेन अगोचर बर दिला पितामहे ५८७०
यज्ञ समापित करिबाक न पारक * शीघ्रे निकुम्भिला वट मूलक यायोक
अन्याय युद्धत बर कौशल पाविष्ठ * न्याय युजे मारा आरु रामर कनिष्ठ ५८७१
हेन शुनि लक्ष्मणे शरजाक दिल * वानर भालुके बृक्ष शिला बरिषिल
गलत कामोर दिया भालुके आछारे * तेज पान करिया असंख्यकोटि मारे ७२
कतोहो बानरे राक्षसर धरि गले * चवर प्रहारे मुठि चोटे माथा फाले
कतो कतो बानरे मारय लाथि किले * घोरा काटि कामोराटा करे तरुशिले ७३
राक्षसर सेना रिङ्ग दिला बले नाचे * कतो शूल शकतिर प्रहारे नराचे
गदा मुद्गर बारि परिघर घावे * असंख्यात भालुक पेषिला यम ठावे ७४
दुयो भिति सेनासब आन्दोला आन्दोलि * भूमित पेलाया मारे पाञ्जरक फुलि

भी जाओ। यह कहकर प्रभु राम ने आशीर्वाद दिया, सभी उसी क्षण सेना सहित चल पड़े ।। ६६ ।। उन सबने राम की चरण-धूलि शिर पर धारण किया और शीघ्रतापूर्वक रणभूमि में प्रवेश किया। दूर जाकर उन सबने इन्द्रजित की सेनाओं को देखा। सारे राक्षस सम्पूर्ण रूप से घेरे हुए थे ।। ६७ ।। विभीषण ने कहा, लक्ष्मण, सुनो। सेना सहित वीर इसी स्थान पर हैं। यही निकुंभिला नाम का दिव्य वट वृक्ष है। उसी स्थान पर इन्द्रजित प्रसन्नता पूर्वक यज्ञ कर रहा है ।। ६८ ।। वह वीर यज्ञ पूरा न कर ले, इसी बीच अपने बाणों से वेधकर शीघ्र सेनाओं को पराजित कर दो। इसके पश्चात् वह सभी के वीच में दिखाई पड़ेगा, जो यज्ञ समाप्त कर तुम पर धावा करेगा ।। ५८६९ ।। यदि मेघनाद यज्ञ समाप्त कर ले तो त्रैलोक्य जीतने हेतु ब्रह्मास्त्र प्राप्त कर लेगा। वह अन्तरिक्ष में चलनेवाले रथ पर सवार हो तीनों लोकों को जलाया करता है। उसे अलक्ष्य रहने का ऐसा ही वर पितामह ने दिया है ।। ५८७० ।। वह जैसे यज्ञ समाप्त न कर पाये इस हेतु तुम शीघ्रता से वट-मूल में पहुँचो। यह पापी अन्याय-युद्ध में बड़ा ही कुशल है। हे रामानुज लक्ष्मण, तुम उसे न्याय-युद्ध में मार डालो ।। ७१ ।। यह सुनकर लक्ष्मण ने कितने ही वाण छोड़े और वानर-भालू वृक्ष-शिलाएँ बरसाने लगे। भालू राक्षसों के गलों को दाँतों से काटकर पटक देते थे। अनगिनत करोड़ों को रक्त पीकर मार डालते थे ।। ७२ ।। कितने ही वानर राक्षसों के गले पकड़कर, थप्पड़ के प्रहार से, मुक्कों की चोटों से, उनके सिर फोड़ डालते थे। कितने ही वानर उन्हें लातों-मुक्कों से मारते थे, और घुमाकर मोड़कर वृक्ष-शिलाओं से पीस डालते थे ।। ७३ ।। राक्षसों की सेना ने वल के अहंकार से नाच कर नारे लगाये। कितनों ने शूल, शक्ति और नाराचों का प्रहार किया। गदा, मुद्गर की चोटों, परिघ की मार से अनगिनत भालुओं को यमलोक भेज दिया ।। ७४ ।। दोनों ओर की सेना में उथल-पुथल मच गयी। वे एक दूसरे के पंजर को तोड़कर भूमि पर पटक मार

नखे दान्ते विदारिया यमक पेषय * असंख्यात वानर राक्षस गैला क्षय ७५
लखमन बिभीषण आरो जाम्बवन्त * आन सेना सब मुख्य मुख्य बलवन्त
हनुमन्ते भङ्गाइला आवर भिति पशि * निशाचर बल भाङ्गि पलाइल तरसि ७६
कतो सेना पलाइ याइ महाभय मन * यज्ञे एरि इन्द्रजित करिला गमन
रथत चरिला बायुवेग चारि वाजी * सबे अस्त्रे शस्त्रे निबन्धिया आछे साजि ७७
बृक्ष हानि कपिबले आकाशत चाइल * शरे हानि इन्द्रजित काटिया पेलाइल
सेनागण पालटिया रावणित गहे * वानरर भालुक प्रहार बरे सहे ७८
हनुमन्ते शालबृक्ष लैलन्त उपारि * सेनार माजत पशि कोबावन्त बारि
एकेक प्रहारे वीरे अनेक मारन्त * अन्तकाले यमे येन प्रजा संहारन्त ७९
कोपे प्रकाशन्त येन अगनि सदृश * आपुनि शरक धरि करे आ सरिश
लाङ्गुले मेढ़ाया कतो कतो आछारिल * करे धरि आस्फालिया अनेक मारिल ५८८०
इन्द्रजिते बोलय मारोहो थाक थाक * मारुतिर फोल जाण्टे चलायो आमाक
एहिसे अजय वीर काको नाहि शङ्का * एकेश्वरे आहि इटो पुरि गैला लङ्का ५८८१
सारथिये रथ आनि चपाइला सन्वित * हनुमन्ते बोलन्त शुनरे इन्द्रजित
येन मते वासवक जिनिलि राक्षस * सिसब शकति आजि आमात दरश ८२
वायुर पुत्रर शकतिक आजि बुज * राक्षसर माया एरि न्याय युजे युज
कोलाहले मल्लबान्धे नोहे अस्त्रघाव * येने तेने मोकजिनि मुनिष बोलाव ८३
एहि बुलि कोप करि वीर हनुमन्त * नानाविध बृक्षशिला अस्त्र वरिषन्त
बृक्ष वृष्टि भैला देखि इन्द्रजित वीरे * शत सहस्रेक ताड़िलेक दृढ़तरे ८४

डालते थे। वे नखों और दाँतों से फाड़कर एक दूसरे को यमलोक भेज रहे थे। इसी तरह अनगिनत वानरों और राक्षसों की सेना मारी गयी ॥ ७५ ॥ लक्ष्मण, विभीषण और जाम्बवन्त सहित सेना के जितने मुख्य-मुख्य वीर थे, वे तथा हनुमान और भीतर प्रवेश कर गये, जिससे भयभीत हो निशाचर-सेना भाग खड़ी हुई ॥ ७६ ॥ जब सेना के कितने ही राक्षस मन में आतंकित हो भाग चले, तब इन्द्रजित यज्ञ छोड़ आगे आया। पवन के समान वेगवान चार घोड़ोंवाले सभी प्रकार अस्त्र-शस्त्रों से उत्तम रूप से सजे रथ पर सवार हुआ ॥ ७७ ॥ वानरों की सेना उस पर वृक्षों का प्रहार कर आकाश में कूद गयी। इन्द्रजित ने वाणों के प्रहार से उन वृक्षों को काट डाला। तब सेना लौटकर इन्द्रजित की शरण में आ गयी और वानर-भालुओं का कठिन प्रहार सहन करने लगी ॥ ७८ ॥ हनुमान ने एक शाल वृक्ष उखाड़ लिया और सेना में घुसकर उसी से प्रहार करने लगे। जिस प्रकार महाप्रलय के समय यमराज प्रजा का संहार करते हैं वैसे ही वे एक-एक वार प्रहार से अनेक वीरों को मार डालते थे ॥ ७९ ॥ वे क्रोध के मारे अग्नि-जैसे प्रकाशित हो रहे थे। इन्द्रजित के छोड़े वाणों को पकड़ कर तोड़ डालते थे। कितनों को अपनी पूँछ में लपेट कर पटक दिया, कितनों को हाथ पकड़ उछाल कर मार डाला ॥ ५८८० ॥ इन्द्रजित बोल उठा—ठहरो, ठहरो, इसे मारता हूँ। सारथी, शीघ्र इसके पास हमें ले चलो। यह वह अपराजेय, किसी से शंकित न होने वाला वीर है, अकेले ही आकर जो लंका को जला गया था ॥ ८१ ॥ सारथी रथ को हनुमान के पास ले आया। हनुमान बोले, इन्द्रजित, सुन। तूने जिस तरह से इन्द्र को जीता था, आज वह सारी शक्ति हमें दिखा ॥ ८२ ॥ आज तू मुझ वायुपुत्र की शक्ति को समझ ले और राक्षसी माया छोड़कर न्याय-युद्ध कर। या तो शोर करता हुआ मल्ल-युद्ध कर या अस्त्रों का आघात कर। चाहे जिस प्रकार हो मुझे जीतकर अपना पराक्रम बता ॥ ८३ ॥ यह कहकर हनुमान कुपित होकर अनेक

महाक्रोधे इन्द्रजित जपाइलेक रण * लक्ष्मणक सम्बुधि बोलन्त बिभीषण
देखियो लक्ष्मण हेरा रावणर सुत * बायुर पुत्रक धाइला क्रोधे यमदूत ८५
एहिटो समय जाना आक मारिबार * निर्द्दय स्वरूपे शर करियो प्रहार
यज्ञ एरि गैला बीर समरक गृहे * एहि समयत छिद्र भैला पितामहे ८६
इन्द्रजिते हनुमन्ते भैला घोर रण * यज्ञर शालाक दरशान्त बिभीषण
देखियो लक्ष्मण हेरा गणपति घट * कालमेघ खण्ड येन निकुम्भिला बट ८७
यज्ञर सम्भार माने थाने थाने थैल * आधा यज्ञ करि बीरे युजिबाक गैल
समापति करि येवे बटमूल पावे * एकेश्वरे मायायुजे त्रैलोक्य भङ्गावे ८८
बिभीषणे बोलन्त शुनियो कपिगण * यज्ञशाला भाङ्गिबाक करियो यतन
बिभीषण बचनक शुनिया बानरे * यज्ञर शालाक बेढ़िलन्त निरन्तरे ८९
तरल बानर बले यज्ञशाला पाइला * यत उपकरणक भाङ्गिया पेलाइला
दधि दुग्ध गुड़ मधु हाण्डि हाण्डि पिल * घृतर कलसी तुलि मुखत बाकिल ५८९०
आम जाम पनियाल नानाबिध फल * आथे बेथे गिले कतो दशनैया कल
किछु किछु करिया कतोहो उकि पारे * राक्षस गणक यज्ञ दारु हानि मारे ५८९१
लक्ष्मणे आटोप करि धनु गुण माजि * दृढ़ मुठि धनु धरि समरक साजि
सम्बुधि बोलन्त अरे शुन इन्द्रजित * संग्राम दिवाक लागि दृढ़ कराचित्त ९२
बिभीषणे चिनाइलेक इङ्गितते जानि * कोपे मेघनादे हेन बुलिलन्त बाणी
बापर कनिष्ठ तुमि सोदर खुड़ाइ * कतमान यश पाइबा भातिजा मराइ ९३

प्रकार के वृक्ष और शिलाओं की वर्षा करने लगे। वृक्ष की वर्षा देखकर वीर इन्द्रजित ने दृढ़ता के साथ सैकड़ों हजारों वाण छोड़े ।। ८४ ।। महा क्रोधित इन्द्रजित ने संग्राम आरम्भ किया। तब लक्ष्मण को सम्बोधित कर विभीषण ने कहा— लक्ष्मण, देखो रावण-सुत इन्द्रजित यमदूत की भाँति क्रोधित होकर हनुमान पर धावित है ।। ८५ ।। यही इसे मारने का समय है। तुम निर्भय होकर इस पर बाणों का प्रहार करो। यह वीर यज्ञ छोड़कर युद्ध करने के लिए आ गया है। पितामह ब्रह्मा ने इसी समय का छिद्र रख छोड़ा है ।। ८६ ।। इन्द्रजित और हनुमान में घोर युद्ध शुरू हो गया। विभीषण ने लक्ष्मण को यज्ञशाला दिखायी। लक्ष्मण, देखो, वही गणपति का कलश है, निकुंभिला-वटवृक्ष काले मेघखंड जैसा दिखाई दे रहा है ।। ८७ ।। स्थान-स्थान पर यज्ञ की सामग्रियाँ रखी हुई हैं, यज्ञ अधूरा छोड़कर वीर युद्ध करने गया है। यदि इन्द्रजित यज्ञ समाप्त कर वट-तले आ जाये तो समझो कि वह अकेले ही मायामय संग्राम में तीनों लोकों को पराजित कर सकता है ।। ८८ ।। विभीषण ने कहा— बानरो, सुनो, यज्ञशाला को तोड़ने का प्रयत्न करो। विभीषण के वचन सुनकर बानरों ने यज्ञशाला को घेर लिया ।। ८९ ।। चंचल बानरों ने यज्ञशाला में पहुँचकर सभी उपकरणों को तोड़ डाला। दही, दूध, गुड़, मधु हाँड़ी-हाँड़ी पी गये। घी का घड़ा उठाकर मुंह में उँड़ेल लिया ।। ५८९० ।। आम, जामुन, पनियाल, अनेक नाना प्रकार के फल और दसनैया केले, कुछ बानर जल्दी-जल्दी निगलने लगे। ऐसा कुछ-कुछ कर, फिर झाँककर देखते थे और राक्षसों पर यज्ञ की लकड़ी से प्रहार करते थे ।। ९१ ।। लक्ष्मण ने प्रचंड दर्प से धनुष की डोरी चढ़ाकर दृढ़ मुट्ठी से धनुष पकड़ युद्ध हेतु प्रस्तुत हो, इन्द्रजित को संबोधित कर कहा— अरे इन्द्रजित, सुन। तू हमसे संग्राम करने हेतु अपने चित्त को दृढ़ कर ले ।। ९२ ।। विभीषण ने संकेत से उसकी पहचान करवा दी है, समझकर कुपित हो मेघनाद कहने लगा— चाचा, तुम हमारे पिता के सहोदर छोटे भाई हो। अपने भतीजे को मरवाकर तुम्हें कौन-सा

तुमि महा पापिष्ठ ये मोहोर खोरत * कतधर्म्म पाइबा मोर चिन्तिया बिघात
कतेक वर्णाइवो गुण अधम खुड़ार * पुत्रक मराइबे प्रति मन भैल यार ९४
वंशद्रोह करिलाहा व्रत भैला छन्न * हेनसे निर्द्दय भैला निवारुण मन
देशर डाकिला वापे जानिमन्द भाव * लङ्काक चाहिया आवे पोरे सर्ब्बगाव ९५
यि वंशत उपजिला ताके करा क्षय * अगनि उपजि येन काष्ठक दहय
यदि मोर पितृ तोर नोहे गुणवन्त * अपर यतेक जने गुण बखानन्त ९६
तथापि तोमाक वोलो खुरा शुन * यिटो पर पर सिटो नोहय आपुन
मोर पिता तयु पितृ सम ज्येष्ठ भाइ * तेजिला समस्ते वन्धु राघवक पाइ ९७
आमार मरणे केने तोमार वाञ्छित * विश्वासघातक कथा कहिला वैरत
तोमार समान आछे कोन मन्द बुद्धि * वैरर सेवक भैला आमात नुसुधि ९८
विभीषणे वोलन्त भातिजा इन्द्रजित * छोटकाले तइ गुरु गर्व्वी अबिनीत
पिता पुत्रे तोहोरा प्रधान अधार्म्मिक * परिवर्त्ति वोले मोक निन्दिलाहा किक ९९
पुलस्ति ऋषिर वंशे उतपति हुया * वाहुर प्रसादे तिनि भुवन बराया
कमन नृपति हेन मन्द कथा छरि * देव गन्धर्ब्बर नारी आनिलेक हरि ५९००
जगत प्रसिद्ध राम तान भार्य्या हरे * देव ऋषिसबर सवाय द्रोह करे
हेन जानि एरिलोहो तोमार पिताक * आउर उपालम्भ केने वोलाहा आमाक ५९०१
ऋषिर यज्ञक भुञ्जि करिलेक नष्ट * विशिष्ट जनर ज्वालिलाहा मन कष्ट
त्रैलोक्यर लोकक कम्पाइल थिउ दण्डे * वापु पुते याइबि तोरा नरक प्रचण्डे २

मान-यश मिलेगा ! ॥ ९३ ॥ मेरे चाचा होकर भी तुम महापापी हो। मेरी हत्या करवाकर तुम्हें कौन-सा धर्म होगा ? उस अधम चाचा के गुणों का और क्या वर्णन करूँ जिसे पुत्र (जैसे भतीजे) को मरवाने की इच्छा है ॥ ९४ ॥ मेरा व्रत नष्टकर तुमने वंश-द्रोह किया है। निष्ठुर हृदय वाले तुम ऐसे निर्दय हो गये हो ? तुम्हें गंदे विचार का जानकर ही पिता ने तुम्हें देश से निकाल दिया था। अब लंका की बात सोचकर मेरा सारा शरीर जल रहा है ॥ ९५ ॥ तुम जिस वंश में पैदा हुए हो उसी का नाश करने में वैसे ही लगे हो जैसे अग्नि जिस (अरणि) काठ से उत्पन्न होती है उसे ही जला डालती है। दूसरे लोग चाहे जितने ही गुणों का बखान करें, मेरे पिता यदि तुम्हारे विचार से गुणवान नहीं हैं, फिर भी चाचा, तुमसे कहता हूँ, सुनो ! जो पर है वह पर ही है। वह कभी अपना नहीं हो सकता। मेरे पिता तुम्हारे पिता जैसे बड़े भाई हैं। तुमने राघव को पाकर अपने सारे बन्धुओं को छोड़ दिया ॥ ९६-९७ ॥ हमारी मृत्यु तुम्हारी कामना किसलिए हो उठी कि तुमने विश्वासघात कर उसके बारे में शत्रु से बता दिया। तुम्हारे जैसा मन्दबुद्धि और कौन है कि हम से कहे बगैर तुम वैरियों के सेवक बन गये ॥ ९८ ॥ विभीषण ने कहा— भतीजे इन्द्रजित, बचपन से ही तू महादर्पी और दुर्विनीत रहा है। तुम दोनों पिता-पुत्र मुख्य अधार्मिक रहे हो। उलटे बचन कहकर मुझे निन्दित क्यों कर रहे हो ? ॥ ५८९९ ॥ ऋषि पुलस्त के वंश में जन्म पाकर बाहुबल से तीनों लोकों को जीतकर देवों-गन्धर्वो की नारियों को हरण करने का निन्दित आचरण किस राजा ने किया है ? ॥ ५९०० ॥ रामचन्द्र जगत-प्रसिद्ध हैं, उनकी भार्या का हरण किया। देव-ऋषि— सबका सदैव द्रोह करता है। ऐसा जानकर ही मैंने तुम्हारे पिता को छोड़ दिया। इसलिए मुझे उपालंभ क्यों दे रहे हो ? ॥ ५९०१ ॥ ऋषियों के यज्ञों को उन्हें खा-खाकर नष्ट किया, विशिष्ट जनों को कष्ट देकर हृदय को जलाया। दण्ड लेकर त्रैलोक्य के लोगों को कँपा दिया। तुम दोनों पिता-पुत्र प्रचंड नरक में जाओगे ॥ ५९०२ ॥ तुम्हारा पिता पतिव्रता सीताजी को हर लाया, उन्हें लौटा देने

पतिव्रता सीतादेवी हरि आनिलेक * दिबाक बुलिलो ताक काण नेदिलेक
हित बोल बोलन्ते बसति नाश भैल * लाथि मारि आमाक देशर बाज कैल ३
रामर चरित्र शुनियोक सर्ब्ब जन * केतिक्षणे कत मिले दुष्मह मरण
नजानि इहाक जन्म याय आले जाले * रामर चरण भजा यावे आछा माले ४
भारतबरिष पाइले हेला नुयुवाइ * केतिक्षणे परे इटो नरतनु काय
एते जानि समस्ते एरियो आनकाम * माधव कन्दलि भणे बोला राम राम ५

इन्द्रजित बध

छबि

राक्षस कुलन्त आमि उतपति लभिलोहो धर्म्म छारि नजानिलो आन ।
आपोनार कथा निया आनत लगास आनि बोला मोक पापे से प्रधान ॥
लक्ष्मणर शरे तोर आटि मुटि भाङ्गिबेक अन्याय करिलि यत यत ।
बापे पुते तोर आर देखा देखि नहैबेक रणमाजे प्राणे हुइबि हत ॥ ६
हेन शुनि महाबली कोपे अग्नि समज्वलि ताड़िलेक बचन प्रहार ।
याक तुलि माल साजि आनिला खुराइ आजि सिटोवोहे सदृश आमार ॥
तोमाके ये लक्ष्मणक आजि थान दिबो दुइक दुर्ब्बार यमर सदनत ।
पाचे दुहानर सङ्गे सेनागण मारो रङ्गे भालुक बानरगण यत ॥ ७
दुइबारे दुइ भाइक समरत मारिलोहो माथा नकाटिलो बर घिणे ।
खाण्डारेसे छेर मोर सुमित्रानन्दन बीर केनमते बोला मोक जिने ॥

के लिये कहा तो उसने अनसुनी कर दी । हितकारी वचन कहने के कारण हमारी बस्ती उजड़ गयी । हमें लात मारकर देश से निकाल दिया ॥ ५९०३ ॥ सभी लोग राम के चरित्र सुनें । न जाने किस क्षण कहाँ आकर दुस्सह मृत्यु मिल जाये । इसे न समझकर, जन्म यों ही व्यर्थ जंजालों में बीत रहा है । जब तक भले चंगे हो, राम के चरणों का भजन करो ॥ ५९०४ ॥ भारतवर्ष में जन्म लेकर अवहेलना करना उचित नहीं । न जाने कब किस क्षण यह नर-शरीर नष्ट हो जाये । यह जानकर सभी दूसरे काम छोड़कर, माधव कन्दलि कहते हैं, राम राम कहो ॥ ५९०५ ॥

इंद्रजित-वध

विभीषण ने कहा— यद्यपि मैंने राक्षस-कुल में जन्म लिया, धर्म को छोड़ और कुछ न जाना । तू अपनी बात लेकर दूसरों पर लगाता है, मुझे ही प्रमुख पापी कहता है । तूने जितना अन्याय किया है उसके फलस्वरूप लक्ष्मण के बाणों से अहकार टूटेगा । तुम दोनों बाप-बेटों, अब एक दूसरे को देख नही पाओगे । युद्ध में तेरे प्राण चले जायेंगे ॥ ५९०६ ॥ यह सुनकर महाबली इन्द्रजित ने क्रोध से अग्नि के समान जलकर वचन का प्रहार किया । बोला— जिसे तुम महावीर मल्ल जैसा बनाकर लाये हो, चाचा, वह हमारे समकक्ष नहीं है । तुम्हें और लक्ष्मण को आज मैं दोनों को ही दुर्निवार यमलोक में भेज दूंगा । इसके पश्चात् बड़े आनन्द से दोनों के संग भालू-बानर, सभी सेनाओं को मार डालूंगा ॥ ५९०७ ॥ मैंने दो-दो बार दोनों भाइयों को युद्ध में मारा था, घृणा के कारण ही उनका सिर नहीं काटा । वह मेरे खड्ग का बकरा है । फिर तुम, वीर सुमित्रानन्दन मुझे जीतेगा, यह कैसे कहते हो ? तुम मेरे चाचा होकर मूत्र में तैर रहे हो और लक्ष्मण को बड़ा उत्तम वीर कहते हो । यह बात क्या विश्वसनीय है

तुमि हेन खुराइ मोर मूत्रत सान्तोरा येन लक्ष्मणक वोला बीर भाल ।
इकि कथा पतियावा मानुषे मारिवे पारे वाघ मारिलेहे पावे छाल ॥
हास्य करि किञ्चितेक लक्ष्मणेओ बुलिलन्त शुनरे अधम निशाचर ।
आपुनाक वर करि परक निन्दय यिवा ताके बुलि निलाज पामर ॥
यिवा वहुवीरगण जिनि आछे करि रण राव पारे परिधरणीत ।
ताके बोले सर्व्वजने थिर वीर धीर रणे सेहि वीर जगते विदित ॥ ९
परम कुच्छाह वाक्य परिहरि यिटो वीरे समरत जिनिवे पारय ।
गम्भीर चरित्र तार सिसे वीर वलीयार सर्व्वजने ताके वखानय ॥
प्रलयत बैश्वानरे समस्तके दग्ध करे तेहे गैया काहाक तर्ज्जन्त ॥ ५९१०
मायावले चोरवृत्ति दुइ भाइक जिनिया ये ताते से तोर ये वरगह ।
मौनक आचारि मइ सव कार्य्य साधिबोहो शरर प्रहार मोर सह ॥
शुनि कोपे निशाचर शानाइल अनेकर ताड़िलेक लक्ष्मणर गावे ।
येन पर्व्वतर परा वहि याइ गेरु धारा वोम्बानले रुधिर वजावे ॥ ११
सम्बुधि वोलन्त अरे शुन सुमित्रार सुत आउर तइ अयोध्या नपाइवि ।
हा प्राण भाइ बुलि रामदेवे कान्दिवन्त मोर हाते यमघरे याइवि ॥
लक्ष्मणे वोलन्त अरे वर्व्वर ये निशाचर वचने नपारि जिनिवाक ।
समरे विमुख है लङ्काक न पाइवि तइ निश्चय मारिवो आजि याक ॥ १२
हेन बुलि धनु धरि कर्णपूरि दृढ़ करि हानिलन्त तीक्ष्ण पाञ्चवाणे ।
महावेगे हृदयर अभ्यन्तर पशिशर रावणि तेजिला येन प्राणे ॥

कि मनुष्य मुझे मार सकता है ? वाघ को मारने पर ही उसकी खाल मिलती है ॥ ५९०८ ॥ कुछ हँसकर लक्ष्मण ने भी कहा, अरे अधम निशाचर, सुन। जो अपने को बड़ा समझकर दूसरो की निन्दा करता है उसे ही निर्लज्ज पामर कहते हैं। जिसने, जो वीर भूमि पर गिरकर चीत्कार कर रहे हैं ऐसे अनेक वीरों को युद्ध कर जीता है, उस व्यक्ति को ही सभी लोग युद्ध में धीर, वीर, स्थिर कहा करते हैं। वही वीर विश्व-विख्यात है ॥ ५९०९ ॥ परम कुत्सा (निन्दा) की बात करना छोड़ जो वीर युद्ध में जीत सकता है, उसका चरित्र गम्भीर होता है, वही वीर बली कहलाता है। सभी लोग उसी का वखान किया करते हैं। प्रलयकाल में अग्नि सभी को दग्ध करता है, परन्तु वह जाकर किस पर तर्जना करता है ? वायुराज पर्वत, वृक्ष, वन सबको उखाड़कर नष्ट-भ्रष्ट कर डालता है, परन्तु वह किस पर गर्जना करता है ? ॥ ५९१० ॥ चोर-वृत्ति अपनाकर माया-बल से तूने दोनों भाइयों को जीता था, इसी कारण तेरा अहंकार बढ गया है। मैं मौन आचरण कर सभी कार्य साधन करूँगा, तू मेरा प्रहार सह तो सही। यह सुनकर निशाचर मेघनाद क्रोधित हो उठा और अनेक तीव्र बाणों से लक्ष्मण के शरीर पर प्रहार किया। पर्वत पर से मानो गेरू की धारा बह रही हो, उसी प्रकार लक्ष्मण के शरीर से प्रचंड रक्त की धारा बहने लगी ॥ ११ ॥ इन्द्रजित ने सम्बोधित कर कहा— अरे सुमित्रानन्दन, सुन, तू पुनः अयोध्या लौटकर जा नहीं सकेगा। हा ! प्राण-भाई, कहकर राम रोवेंगे, मेरे हाथों तुझे यमलोक जाना होगा। लक्ष्मण ने कहा— अरे वर्वर निशाचर, बातों से ही किसी को जीता नहीं जा सकता। तू आज युद्ध से विमुख हो, लंका पहुँच नहीं पायेगा, ठहर, आज तुझे अवश्य ही मार डालूँगा ॥ १२ ॥ यह कह कर धनुष की डोरी कान तक खींचकर दृढ़ता के साथ उन्होंने तेज पाँच वाण मारे। वे वाण महावेग से उसके हृदय को वेध अन्दर पहुँच गये, मानो इन्द्रजित के प्राण निकल गये। सभी लोग पुण्यकथा रामायण सुनें, जिससे पाप के

शुनियोक सर्व्वजन पुण्य कथा रामायण पापर मुण्डत दिया बारि ।
एराइटो आन मन राम बोला घने घन अन्तके पलाउक प्राण छारि ॥ १३

पद

आमाक बोलस चोरिबृत्ति निशाचर * एहि बुलि दारुणे हानिला तिनि शर
अन्याय नकरा आजि देखा मोर युज * इन्द्रजित बीरर ये पौरुषता बुज १४
सात शरे लक्ष्मणक बिन्धलेक टाने * हनुमन्त बीरक बिन्धिल दश बाणे
महा खङ्गे रकत नयन निरन्तरे * बिभीषण बीरक ताड़िला शत शरे १५
शर जुरि लक्ष्मणे गम्भीर करि गति * बोले इन्द्रजित तोर पाइलो परापति
तइ बोलावस योद्धा बीर आतिरेक * रथत चड़िया मोक निन्दिलि अनेक १६
शुन अरे दुराचार अधम दुर्ज्जन * हेरा तोर सब गाव कराओं भूषण
रणत पागल तइ अशकति भैलि * बर थरमरि हुया भङ्गावस बेलि १७
आमार बिपोहे बढ़ावस लघु बाके * यमपुरे पेषो आजि घोर शरजाके
एहि बुलि महाबीरे तीक्ष्ण दश शरे * सन्नाहा काटिया पेलाइलन्त निरन्तरे १८
शरीरर भेदि गैला इपार सिपार * कतो बेलि नाछिलेक चेतन ताहार
इन्द्रजिते दृढ़ मुठि धनु धरि करे * आकाशक निरन्तरे छानिलेक शरे १९
लक्ष्मणेओ शर हानि काटिया पेलाइल * दुयो बीर कतोक्षणे भङ्गक नपाइल
लक्ष्मणे इन्द्रजिते दुयो नघाटन्त * दुइहानर शरे सब दुइहानो काटन्त ५९२०
शतेक सहस्र कोटि शरर प्रमाण * दुइ हानो चापर हन्ते निकलिल बाण

सिर पर डंडा पड़े। दूसरी ओर मन लगाना छोड़ दो तथा बार-बार राम, राम कहो जिससे यमराज प्राण लिये भाग जाय ॥ ५९१३ ॥

इन्द्रजित ने "हमें तू चोर वृत्तिवाला निशाचर कहता है"— यह कहकर तीन प्रचंड वाणों से प्रहार किया। वह कहने लगा— यदि तुम अन्याय न करो तो मेरी लड़ाई देखो। वीर इन्द्रजित का पौरुष कैसा है, समझो ॥ १४ ॥ यह कहकर उसने दृढ़ता के साथ सात वाणों से लक्ष्मण को वेध डाला। वीर हनुमान को भी दस वाणों से वेध दिया। महाक्रोध से लाल आँखे कर उसने निरन्तर एक सौ वाणों से प्रहार किया ॥ १५ ॥ अपने धनुष पर वाण चढ़ाकर अपनी गति को गम्भीर करते हुए लक्ष्मण ने कहा— इन्द्रजित, अब तेरा अन्तकाल आ गया। तू बड़ा प्रबल वीर योद्धा कहलाता है। रथ पर चढ़कर तूने मेरी अनेक निन्दा की है ॥ १६ ॥ अरे अधम, दुराचारी दुर्जन, सुन। देख अभी तेरा सारा शरीर (वाणों से) भूषित कर दे रहा हूँ। तू युद्धहेतु उन्मत्त है, परन्तु अब अशक्त हो गया है। बड़ा गरज-तरज कर समय बिता रहा है ॥ १७ ॥ अपने लघु वचनों से तू मेरे शरीर को उत्तेजित कर रहा है। आज तुझे प्रचंड वाणों से यमलोक भेज दे रहा हूँ। यह कहकर महावीर ने दस तीक्ष्ण वाणों से प्रहार कर उसके वाणों को निरन्तर काट डाला ॥ १८ ॥ वे वाण उसके शरीर को इस पार से उस पार तक बेध गये, जिससे कुछ क्षण तक उसकी चेतना ही नहीं रही। इन्द्रजित ने दृढ़ मुट्ठी से धनुष को पकड़कर आकाश को निरन्तर वाणों से छा दिया ॥ १९ ॥ लक्ष्मण ने भी वाणों के प्रहार से उन्हें काट डाला। कुछ समय तक दोनों वीर डटे रहे, कोई भी पीछे न हटा। लक्ष्मण, इन्द्रजित— दोनों ही एक दूसरे से पराजित न होने वाले थे। दोनों के वाण दोनों ही काट डालते थे ॥ ५९२० ॥ सैंकड़ों, सहस्रों, कोटि-कोटि वाण दोनों के धनुषों से

तेखने प्रसन्न होवे तेखने आन्धार * त्रैलोक्य अजय दुइ मुनिष युबार २१
आकाश निसन्धि करि शरे शरे छाइल * सूर्य्यर ज्योतिये आर एको नबजाइल
निसन्धि भैलेक आर नेदेखि प्रसन्न * दुइहान समर ने देखय देवगन २२
निशामय भैला येन मेघ तमोमय * दुयो सेना थमकिल केहो नायुजय
दुयो शरे हानि दुयो फुटिला अपार * अशोक पलाशयेन देखि ज्योतिष्कार २३
शोणित सिन्दुरे येन दीपिति करय * पर्ब्बतर हन्ते येन बहे गेरुमय
पाखिसबे शर पशि शरीर कम्पाइ * कतो शरीरक भेदि पातालक याइ २४
देव असुरर बल उलमाल चित * लक्ष्मणे जिनन्त किबा जिने इन्द्रजित
बिभीषणे लक्ष्मणर कोल चापिलन्त * कनियाल बिपाट अनेक हानिलन्त २५
आन एको ओछ नोहे शर बरिषन्त * असंख्यात राक्षस सेनाक मारिलन्त
आपदार सेनागण सब चप करे * रावण कनिष्ठे निया योगाइला समरे २६
सिंहक देखियायेन हरिण पलाइल * रावणित गैया सबे शरण सोमाइल
बिभीषणे बोलन्त शुनियो कपिगण * दियोक आमार बचनत सबे मन २७
त्रैलोक्यते सार आति एइ पापीजन * इ परिले जानिबाहा परिल रावण
पुत्रर बधर मइ बोलोहो उपाय * अयुगुत कर्म्म करिबाक नुयुवाइ २८
उपदेश दिया हेरा समरत मारो * रामर कार्य्यत थाकि हेन पाप करो
मोहोर कारणे प्राण पुत्रर मरण * देखो मोर शोके इटो झरय नयन २९
कोलाये बोकाये तुलिलोहो मेघनाद * मायामय संसारर ज्वलय बिषाद

निकलने लगे। उन वाणों के कारण क्षण में उजेला, तो क्षण में अंधेरा हो जाता था। वे दोनों पौरुषवाले वीर त्रैलोक्य में अजेय थे ॥ २१ ॥ आकाश को सम्पूर्ण रूप से घेरकर दोनों के वाण छा गये, जिनमें से होकर सूरज की किरणें भी नीचे नहीं पहुँच पाती थीं। आकाश अब प्रसन्न नहीं दीखता था ॥ २२ ॥ चारो ओर मानो अन्धकारमय बादल छा जाने के कारण रात जैसा हो गया। दोनों ओर की सेना बिना लड़े स्तब्ध हो देखती रही। एक दूसरे को वाणों का प्रहार कर दोनों ही अपार रूप से बिध गये। वे दोनों अशोक-पलाश जैसे रक्तवर्ण दिखाई देने लगे ॥ २३ ॥ रक्त-सिन्दूर जैसे दमकता है, पर्वत से जैसे गेरू की धारा बहती हो, (वे ऐसे ही हो गये)। पंखयुक्त वाण एक दूसरे के शरीर में घुसकर कँपा देते थे। कितने ही वाण उनके शरीरों को वेधकर पाताल को निकल जाते थे ॥ २४ ॥ देव और असुरों के चित्त द्विविधा में पड़े हुए थे— लक्ष्मण जीतेंगे या इन्द्रजित जीतेगा। विभीषण लक्ष्मण के पास आये और अनेक प्रचंड सायकों से प्रहार करने लगे ॥ २५ ॥ और कुछ भी सोचे-विचारे बिना वे वाणों की वर्षा करने लगे और अनगिनत राक्षसी सेना को मारा डाला। संकट में पड़ी हुई सेना आपस में कहने लगी— रावण का छोटा भाई विभीषण ही इन्हें युद्ध में ले आया है ॥ २६ ॥ जिस प्रकार सिंह को देख हिरण भाग जाते हैं, उसी प्रकार वे सभी जाकर इन्द्रजित की शरण पहुँचे। विभीषण ने कहा— बानरो, सुनो, हमारे वचन पर सभी ध्यान दो ॥ २७ ॥ यह इन्द्रजित त्रैलोक्य में सबसे बड़ा पापी है। यह मारा जाये तो रावण को भी मरा ही समझो। रावण-पुत्र के वध का उपाय मैं बताता हूँ। यद्यपि अनुचित कर्म करना उचित नहीं है ॥ २८ ॥ मैं उपदेश देकर इसे युद्ध में मार रहा हूँ। राम के कार्य में रहकर मैं यह पाप कर रहा हूँ। मेरे ही कारण प्राण-पुत्र (इन्द्रजित) का मरण होगा, इस शोक से मेरी आँखों से आँसू झरते हैं ॥ २९ ॥ मैंने अपनी गोद में लेकर इन्द्रजित को बड़ा किया है। मायामय इस संसार के विषाद से मैं जल रहा हूँ। अनगिनत मुख्य निशाचर युद्ध में मारे गये, परन्तु जब तक यह

असंख्य परिल मुख्य निशाचरगण * यावत नपरे इटो नमरे रावण ५९३०
कपिगण क्षाण्ट करि सैन्य भङ्गावाहा * लक्ष्मणे मारिबो आउर पाचे देखिबाहा
बिभीषणे हेन मते बिपोहो बढ़ाइल * हनुमन्त जाम्बवन्त सबे सेना धाइल ३१
अनेक अस्त्रक धरि पर्ब्बत शिखर * सम्मुखे ये युजय बानर निशाचर
दुयो भिति सेनागण लागिल तुम्बुल * बृक्ष शिला बरिषन्त शकति त्रिशूल ३२
जाम्बवन्ते एकभिति समर भङ्गाइल * राक्षस बलत नदी रुधिरे बहाइल
बिभीषणे आपोनार सैन्य समन्विते * असंख्य राक्षस बल भङ्गाइला त्वरिते ३३
हनुमन्ते भङ्गाइला आवर भिति पशि * निशाचर बल सबे पलाइला तरसि
इन्द्रजित धाया गैला लक्ष्मणर पाशे * दुइ बीरे युजे शरे जुरिया आकाशे ३४
दुयो दुइहानर शर काटिया पेलाइल * तत्तुल्य समरे केहो भङ्गक नपाइल
दुइ बीर युजय रणत दुयो सम * दुयो दुइहान्तक प्रहारय येन यम ३५
हिंसा हिंसिकरि युजे येन दुइकाल * त्रैलोक्यत सार दुयो मुनिष बिशाल
सिंह समे जाम्पन्त रणत नकम्पन्त * अस्त्र सब हानन्त नाहिके आदि अन्त ३६
अवहिते युजन्त छिद्रक नपावन्त * खल खलि हासन्त बिपोहो प्रकाशन्त
त्रैलोक्यत अजय दुर्ज्जय कलेवर * पुत्र दशरथर तनय रावणर ३७
शनाइबार शर यत हानन्त अपार * मेदिनी मण्डले दुयो मुनिष युजार
दुइहन्ते दुइहाक्क किछु ओछक नयान्त * तेलियार जान्त येन चोबावन्त दान्त ३८
दुयो दुइक युजिबाक सन्धि आति चान्त * आस बुलि याहन्त पाचक नपलान्त

मारा नहीं जाता, रावण नहीं मरेगा ॥ ५९३० ॥ हे बानरो, शीघ्रता से तुम लोग राक्षसी सेना को पराजित करो, उसके पश्चात् देखना कि लक्ष्मण इन्द्रजित को मार डालेंगे। विभीषण ने इस प्रकार उनका उत्साह बढ़ाया तो हनुमान-जाम्बवन्त समेत सारी सेना धावित हुई ॥ ३१ ॥ अनेक अस्त्रों और पर्वत-शिखरों को धारण कर निशाचर और बानर आमने-सामने आकर लड़ने लगे। दोनों ओर की सेना में तुमुल-युद्ध होने लगा। वे वृक्ष, शिला, शक्ति, त्रिशूल आदि की वर्षा करने लगे ॥ ३२ ॥ एक ओर जाम्बवन्त ने युद्ध में राक्षसों को पराजित किया और राक्षसी सेना के रक्त की नदी बहा दी। विभीषण ने अपनी सेना के साथ मिलकर शीघ्रता से असख्य राक्षसी सेना को पराजित किया ॥ ३३ ॥ दूसरी ओर से प्रवेश कर हनुमान ने पराजित किया। राक्षसी सेना संत्रस्त होकर भाग खड़ी हुई। तब इन्द्रजित धावित हो लक्ष्मण के पास पहुँचा। दोनों वीर आकाश को व्याप्त कर वाणों द्वारा जूझने लगे ॥ ३४ ॥ दोनों ने एक दूसरे के वाण काट डाले। दोनों समतुल्य थे, इस कारण कोई किसी से पराजित नहीं होता था। दोनों बराबर के वीर युद्ध कर रहे थे, दोनों एक दूसरे पर यम के समान प्रहार कर रहे थे ॥ ३५ ॥ दोनों एक दूसरे की हिंसा करते हुए दो कालों जैसे लड़ रहे थे। वे दोनों संसार में श्रेष्ठ विराट पौरुषवाले थे। वे दोनों सिंह के समान कूदते थे, युद्ध में कंपित न होते थे। ऐसे अस्त्रों का प्रहार करते थे जिनका आदि-अन्त न था ॥ ३६ ॥ दोनों बड़ी ही सतर्कता से युद्ध करते थे, किसी तरह का छिद्र या त्रुटि न पाते थे। अट्टहास करते थे, अपना दैहिक बल प्रकट करते थे। दशरथ-पुत्र लक्ष्मण तथा रावण-पुत्र इन्द्रजित, दोनों के शरीर त्रैलोक्य में अजेय, दुर्जय थे ॥ ३७ ॥ दोनों ही तेज किये हुए अपार वाणों से एक दूसरे पर प्रहार कर रहे थे। पृथ्वीमंडल में दोनों ही युद्ध में अपार पौरुषवान थे। दोनों ही एक दूसरे से कुछ कम नहीं थे। तेली के कोल्हू जैसे दोनों क्रोध के मारे दाँत पीस रहे थे ॥ ३८ ॥ दोनों, एक दूसरे से लड़ने हेतु अवसर ढूँढते थे। 'आ' कहकर आगे बढ़ जाते थे, पीछे नहीं भागते थे। कौन कम

कोन ओठ कोन पर बुलिते न पारि * देवगणे चिन्ता बर करे बुके हारि ३९
आउरे आउरक बोले मिलिल प्रलय * किवा इन्द्रजित किवा लक्ष्मणे जिनय
दुइखान धनु देखि मण्डल आकार * टङ्कार शवद आति शुनि चमत्कार ५९४०
अन्तर नेदेखि बाण शर हानिवार * त्रैलोक्यते सार दुयो मुनिष युजार
आकाशर काटिया गुचाइला अन्धकार * किरण परशे मुख देखि आउरे आर ४१
दुयो दुइहान्तक रणे आशेष हानन्त * बाणे अन्धकार केहो काको नेदेखन्त
अन्धकार गुचि पुनु प्रसन्न होवय * दुयो बीरे समरत प्रकाश करय ४२
सारथिर शिर छेदिलन्त एक बाणे * इन्द्रजित भूमित परिल बर टाने
बानर बलर मने भैला बर रङ्ग * विक्रमे भेदिला तार भैला रथ भङ्ग ४३
क्षत बिक्षत करि सेनाक मारिल * दुर्घोर समर भैला राक्षसे हानिल
हेन देखि इन्द्रजित बर लाज पाइल * तेखने सारथि रथ आगत योगाइल ४४
ताते चड़ि महाबीरे कोप करि टान * लक्ष्मणक प्रहारिला असंख्यात बाण
प्रमाथि बानर बीरे गन्ध ये माईने * सियो रथ उपरे परिला दुयो जने ४५
सम्बर शरीरे यान्ति निरुत्साही करि * मुखे तेज निकलिया घोंड़ा गैला मरि
जाज्ज्वल्य समान ज्वलि बीर इन्द्रजित * सैन्यक बोलन्त तुमि न करिबा भीत ४६
क्षणेके थाकियो युद्ध प्रवन्धे न भागि * रथ साजि आसो यइ नगरीक लागि
नगरी पशिया झाण्टे साजिलेक रथ * अलङ्कारे मण्डिलेक घोटक समस्त ४७
धनु बाण साजिला सम्भार यत यत * समर भूमिक गैया पाइला क्षणेकत
शरे हानि बानरक भङ्गाइला रणत * शरण पशिला गैया बीर लक्ष्मणत ४८

है, कौन अधिक, कहा नही जाता था। देवगण मन में हार मानकर बड़े ही चिन्तित हो रहे थे ॥ ३९ ॥ उनके टंकार के शब्द सुनकर अति विस्मयजनक एक दूसरे से कह रहे थे, प्रलय आ गया ॥ ५९४० ॥ इन दोनों के वाण-प्रहार में कोई अन्तर दिखाई नही देता। ये दोनों ही संसार में पौरुष में श्रेष्ठ हैं। कभी आकाश के वाणों को काटकर अंधेरा मिटा देते थे जिससे किरणों के स्पर्श से एक दूसरे का मुख देख लेते थे ॥ ४१ ॥ दोनों ही एक दूसरे पर अशेष प्रहार कर रहे थे। वाणो से अन्धकार हो जाने के कारण कोई किसी को देख नहीं पा रहे थे। पुनः दूसरे ही क्षण अन्धकार मिटकर उजेला हो जाता; दोनों वीर युद्धभूमि को इस प्रकार प्रकाशित कर रहे थे ॥ ४२ ॥ लक्ष्मण ने एक वाण से सारथी का सिर काट डाला। इन्द्रजित बड़े वेग से धरती पर गिर पड़ा। बानर-सेना के मन में बड़ा आनन्द हुआ, बड़ी वीरता से वेध डालने के कारण उसका रथ टूट गया ॥ ४३ ॥ प्रचंड युद्ध में राक्षसो को प्रहार कर उन सबने राक्षसी सेना को क्षत-विक्षत कर मार डाला, यह देख इन्द्रजित को बड़ी लज्जा हुई, तभी सारथी ने दूसरा रथ सम्मुख प्रस्तुत किया ॥ ४४ ॥ उस पर चढ़कर वीर इन्द्रजित ने प्रचंड क्रोधकर लक्ष्मण को असंख्य वाणों से प्रहार किया। बानर-वीर प्रमाथि, गन्धमार्दन, ये दोनों उस रथ पर कूद पड़े ॥ ४५ ॥ अपने शरीर को संयमित कर, दबाकर, निरुत्साहित कर दिया, जिससे मुख से रक्त निकल आने के कारण घोड़े मारे गये। वीर इन्द्रजित अग्नि के समान जल उठा और सेना से कहा— तुम लोग डरो मत ॥ ४६ ॥ तुम लोग क्षण भर विना भागे युद्ध के प्रवन्ध में लगे रहो। मैं नगरी में जाकर रथ सजाकर आ रहा हूँ। उसने नगरी में प्रवेश कर शीघ्रता से रथ सजाया और घोड़ों को अलंकारों से मंडित किया। ४७ ॥ धनुष-वाण आदि सभी आवश्यक संभारों से उसे सजाया और दूसरे ही क्षण युद्धभूमि में उपस्थित हो गया। उसने वाणों का प्रहार कर सभी बानरों को युद्ध में पराभूत कर दिया। वे सभी लक्ष्मण की शरण में पहुँचे ॥ ४८ ॥ यह देख हनुमान

हेन देखि हनुमन्ते बोले लक्ष्मणक * मोहोर पिठित चड़ि युज राक्षसक
हनुर पिठित याइ चड़िल लक्ष्मण * समरक लागि बीरे करिला गमन ४९
येन युद्ध भैला देखन्तेहि भयङ्कर * मरि गैला अनेक बानर निशाचर
सुमित्रार सुत बीर रण माजे जानि * धनुर्गुण छेदिलन्त एक बाण हानि ५९५०
आवर गुणक पाचे मेघनादे दिल * सियो गुण शर हानि लक्ष्मणे छेदिल
हृदयत पञ्च बाण हानिला ताहारे * इन्द्रजित मूर्च्छा गैला दारुण प्रहारे ५१
पाञ्चबाण बाज भैला हृदयक फुलि * पृथिवी बिदारि गैला पातालक बुलि
रुधिरे लेपित रावणिर सब अङ्ग * सिन्दूरर वर्ण येन पञ्चम भुजङ्ग ५२
कतो बेलि इन्द्रजिते चेतनक पाइल * शरे हानि लक्ष्मणक चतुर्दिके चाइल
निसन्धि करिया शर हानय आथाके * बानरत परिया मरय जाके जाके ५३
लक्ष्मणक आवरिया घोर निशाचरे * बिभीषण बीरक ताड़िला दश शरे
रावणर कनिष्ठे करिला प्रतिकार * हृदयत पाञ्चबाण हानिला ताहार ५४
इन्द्रजितक ये फुलि बाण बाहिराइल * शरर बिषत बीर रावणि खङ्गाइल
पावकर अस्त्रक हानिला तेतिक्षणे * रुद्र अस्त्रे निबारिला बीर बिभीषणे ५५
अद्भुत समर खोरत भातिजार * आकाश पृथिवी शरे देखि एकाकार
एके येवे हानन्त आवरे संहारन्त * बरदत्त दुहान्तो जिनिते न पारन्त ५६
सहस्र ज्वालिया भैला दुइरो कलेवर * प्राणक टाङ्किया युजे दुयो बीरबर
समरत पाचमरि नकरिला केवे * बिस्मयक मिलिला असुर नाग देवे ५७

ने लक्ष्मण से कहा— मेरी पीठ पर चढ़कर राक्षसों से युद्ध कीजिये। लक्ष्मण हनुमान की पीठ पर चढ़ गये और युद्ध हेतु आगे बढ़े ॥ ४९ ॥ उन दोनों में जैसा युद्ध हुआ वह देखने में बड़ा ही भयंकर था। उसमें अनेक बानर और निशाचर मारे गये। सुमित्रा-नन्दन लक्ष्मण युद्ध में सुप्रसिद्ध वीर थे। उन्होंने एक बाण चलाकर इन्द्रजित के धनुष की डोरी काट डाली ॥ ५९५० ॥ मेघनाद ने दूसरी डोरी चढ़ायी, उसे भी लक्ष्मण ने वाण के प्रहार से काट डाला और उसके हृदय में पाँच वाण मारे। उस दारुण प्रहार से इन्द्रजित मूर्च्छित हो गया ॥ ५१ ॥ वे पाँचों वाण उसके हृदय को बेधते हुए आरपार निकल गये और पृथ्वी को विदीर्ण करते हुए पाताल तक चले गये। रावण-पुत्र इन्द्रजित के सारे अंग रक्त से सन गये। वह सिन्दूर से सना हुआ पंचम भुजंग (तक्षक) जैसा लगने लगा ॥ ५२ ॥ कुछ समय पश्चात् इन्द्रजित की चेतना लौटी, उसने लक्ष्मण को वाणों से प्रहार कर चारों ओर देखा। वह सम्पूर्ण रूप से घेरकर लगातार वाणों का प्रहार करने लगा। बानरों पर पड़ने के कारण वे झुंड के झुंड मरने लगे। ५३ ॥ उस घोर निशाचर ने लक्ष्मण को वाणों से आवृत कर वीर विभीषण को दस वाणों से प्रहार किया। रावण के छोटे भाई विभीषण ने उन्हें रोक दिया और इन्द्रजित के हृदय में पाँच वाणों से प्रहार किया ॥ ५४ ॥ वे वाण इन्द्रजित को बेध कर आरपार निकल गये। उन वाणों की चुभन की पीड़ा से वीर इन्द्रजित क्रोधित हो उठा। उसने उसी क्षण आग्नेयास्त्र का प्रहार किया, जिसे वीर विभीषण ने रुद्रास्त्र से निवारण कर दिया ॥ ५५ ॥ दोनों चाचा-भतीजे में अद्भुत युद्ध छिड़ गया। उनके वाणों से आकाश और पृथ्वी एकाकार हो उठी। जब एक वाणों का प्रहार करता तो दूसरा उन्हें नष्ट कर देता। दोनों ही वर प्राप्त होने के कारण, कोई किसी को जीत नहीं पाता था ॥ ५६ ॥ दोनों के शरीर सहस्रों अग्नि-शिखा के प्रकाश जैसे हो गये। दोनों प्राणों का मोह छोड़कर युद्ध कर रहे थे। कोई भी युद्ध में पैर पीछे नहीं हटाता था। उसे देख असुर, नाग, देव, सभी को बड़ा

हेन देखि रावणिर शरीरे न सहे * येहि अस्त्र दिला ताक मय मातामहे
मन्त्र पढ़ि महाबले हानिलेक ताक * अस्त्रर अगनि निकलय जाके जाक ५८
आकाश छानिया बेगे बाण बाहिराइल * कुबेरे दिबार अस्त्र लक्ष्मणे चड़ाइल
मन्त्र पढ़ि हानिलन्त ज्वलिला अगनि * दुइ अस्त्रे एक स्थान अन्तरीक्षे छानि ५९
दुइ अस्त्र उथलिया गैला बामालय * निष्प्रभ हुया आकाशते गैला क्षय
खण्ड खण्ड हुया अस्त्र धरणीक पाइल * दुयो बीरे महा लाजे माथा चपराइल ५ .६०
लक्ष्मणे हानिया वाण करय आस्फोट * सारथिर ताहार काटिल माथागोट
नियमन्ता नाहिके रथर चारि घोंरा * रथ खान फुरय पवन सम जोरा ६१
इन्द्रजित फुरय रणर चारि पाश * देखिया बानरबले तुलिलन्त हास
किछि किछि करिया वानरे पारे उकि * मार्ग दरशिया कतो पारय भाबुकि ६२
रामसेना हासन्त खेखट करि दान्त * चारि घोंरा फुरे रावणिक देखिलन्त
परिहास भङ्गि भावे नादय भालुक * आकर्ण शबदे मिलि गैला हुक हुक ६३
चारि घोंरा फुरय रणर चारि पालि * इन्द्रजिते लक्ष्मणक पारिलन्त गालि
अरे सुमित्रार सुत खानितेक रह * सारथिक मारिले इयात मह मह ६४
एतमान राजपुत्र हेन से महत * नीचर हातत मोक हसुवास कत
रामर कनिष्ठ बीर तइसे लक्ष्मण * आति अल्पमति तइ लघुतर जन ६५
सात्विक नहस तइ हवस निलाज * मारिछो अनेक बार तोक रणमाज
दुयो भायेरर माथा न काटिलो घिणे * सिसब बचन किय नपरय मने ६६

विस्मय हुआ ।। ५७ ।। यह देख इन्द्रजित का शरीर अधीर हो उठा । उसके नाना ने उसे जो अस्त्र दिया था उसे मन्त्रपूत कर महाशक्ति से प्रहार किया । उस अस्त्र से झुंड के झुंड अग्नि की लपटें निकल रही थीं ।। ५८ ।। वह वाण आकाश को व्याप्त करता हुआ चल पड़ा । तब लक्ष्मण ने कुबेर का दिया हुआ अस्त्र चढ़ाया । उसे मन्त्रपूत कर प्रहार किया । उससे अग्नि निकलने लगी; दोनों अस्त्र आकाश व्याप्त कर एक ही स्थान में आ गये । टकराने के कारण उछलकर दोनों अस्त्र चक्कर काटने लगे और निष्प्रभ होकर आकाश में ही नष्ट हो गये । वे दोनों अस्त्र खंड-खंड होकर धरती पर आ गिरे । दोनों वीरों ने बड़ी लज्जा से अपने अपने सिर पीट लिये ।। ५९-६० ।। लक्ष्मण ने वाण से प्रहार कर सिंहनाद किया और उसके सारथी का सिर काट लिया । रथ के चारो घोड़ों की लगाम थामनेवाला कोई न रहा । रथ पवन जैसे वेग से इधर-उधर चक्कर लगाने लगा ।। ६१ ।। इन्द्रजित युद्धभूमि में चारों ओर चक्कर लगाने लगा । यह देखकर बानर-सेना हँसने लगी । बानर किच-किचाते हुए नारे लगाने लगे । उसके भटकने पर परिहास करने लगे ।। ६२ ।। चारो घोड़े इन्द्रजित को लेकर चक्कर लगा रहे हैं, देखकर राम की सेना दाँत निकाल खिलखिला कर हँसने लगी । परिहास की भंगिमा से भालू भी नाद करने लगे । उनका व्यंग्य भरा हास कान फाड़नेवाले शब्दों से मिल गया ।। ६३ ।। चारो घोड़े युद्धभूमि में चारों ओर चक्कर लगाने लगे तब इन्द्रजित लक्ष्मण को गालियाँ देने लगा । अरे सुमित्रा के वेटे लक्ष्मण, जरा ठहर जा । सारथी को मारकर यहाँ तेरा बड़ा घमंड हो गया है ।। ६४ ।। ऐसा राजकुमार होकर भी तेरा यही गुण है, मुझे आज नीचों के द्वारा क्यों हँसवा रहा है ? लक्ष्मण, तू राम का छोटा भाई है पर लघुतर-जन होने के कारण तू बड़ा अल्पमति भी है ।। ६५ ।। तू सात्विक नहीं, परम निर्लज्ज है । मैंने तुझे अनेक बार युद्ध में मारा है । मैंने घृणा के कारण ही तुम दोनों भाइयों के सिर नहीं काटे ! ये सारी बातें तुझे ध्यान में क्यों नहीं आईं ? ।। ६६ ।।

महाबीर यिटो हवे तोरा भङ्गहय * हारिया जिनय कतो जिनिया हारय
तिनियो लोकक रणे जिनिलन्त बलि * नारायणे ताहाको पाताले थैला छलि ६७
माया युजे युजिलि लक्ष्मणे बोले आगे * कि कथा कहन्ते तोर बैलक्षण्य लागे
निर्गत प्राणीर नाहि कंत भात कठ * न्याय युजे युजि वेटा पाचे मोक हेठ ६८
आजि येवे जीवस निन्दिबि पाचे मोक * लक्ष्मणर हातत देखिबि यमलोक
इटो चक्षे आर नेदेखिबि माव बाप * लक्ष्मण बीरर आजि बुजिबि प्रताप ६९
नीचर ये पराभव एराइलो आपुने * तिनियो भुवने तोक राखिबेक कोने
देवताक यत दुख दियाछ दन्दूर * मोर हाते सकलो भावना हैब चूर ५९७०
लक्ष्मणर बोले कोप ज्वलिला मनत * अगनि ज्वलिला येन शुकान बनत
असुरर अस्त्रक रावणि तुलि लैल * मन्त्र पढ़ि आनिया धनुर गुणे थैल ७१
आकर्ण पूरिया ताक हानिलन्त बले * अस्त्रर मुखर जाके अगनि निकले
त्रैलोक्यत चमत्कार भैला भयभीत * लक्ष्मणे नपारे जानो आपुन राखित ७२
लक्ष्मणेओ शिव मन्त्र पढ़िया मनत * महेशर अस्त्र आनि चड़ाइला गुणत
बल दिया हानिला आकाशे चलियाय * रावणिर अस्त्र सब खेदि खेदि खाय ७३
रावणिर अस्त्रयत सबे भैला क्षय * इन्द्र वरुणर अस्त्र रणत हानय
सुमित्रार तनय सकल गुण जानि * संहरिला अस्त्र आपुनार बले हानि ७४
यत यत शर माने हानिला अपार * दशरथ सुते ताक करिला संहार
हताश नहैया बीर रावणि गुणय * रामर कनिष्ठ बीर त्रैलोक्य अजय ७५

जो महाबीर होता है युद्ध में उसकी भी पराजय हो जाती है। कहीं वह हार कर जीतता है तो कहीं जीतकर हार जाता है। राजा बलि ने तीनों लोकों को जीता था, पर उन्हें भी छलकर नारायण ने पाताल में रख दिया ।। ६७ ।। लक्ष्मण ने कहा— अरे, तूने तो पहले माया द्वारा युद्ध किया था। कौन-सी बात कहने में आज तुझे विलक्षणता लग रही है ? जो प्राणी निकल जाता है (जिसके प्राण चले गये हैं) उसे कहीं भी 'भात और चटाई' (शरण या जगह) नहीं मिलती। पहले तू न्याय-युद्ध कर। इसके पश्चात् मुझे तिरस्कृत करना ।। ६८ ।। आज यदि जीवित रहे तब बाद में मेरी निन्दा करना। तुझे लक्ष्मण के हाथों ही यमलोक देखना है। इन आँखों से अब तुझे अपने माँ-बाप को नहीं देखना है। आज तुझे वीर लक्ष्मण का प्रताप ज्ञात होगा ।। ६९ ।। नीच के हाथ अपने पराभव को मैं स्वय मिटा चुका हूँ। अब तीनों लोकों में कौन तेरी रक्षा करेगा ? अरे बिग्रही स्वभाववाले, तूने देवताओं को जितना दुख दिया है, आज मेरे हाथों तेरी वे सारी भावनाएँ चूर हो जायेंगी ।। ५९७० ।। लक्ष्मण के वचन से इन्द्रजित के मन में क्रोध जल उठा, मानो सूखे वन में अग्नि जल उठी हो। इन्द्रजित ने आसुरी अस्त्र उठा लिया और मन्त्र पढ़कर उसे धनुष की डोरी पर रखा ।। ५९७१ ।। डोरी को कान तक खींचकर बल लगाकर उसने अस्त्र छोड़ा। अस्त्र के मुख से प्रचंड अग्नि निकलने लगी। तीनों लोकों में विस्मय भर गया, सभी भयभीत हो उठे— क्या लक्ष्मण अपनी रक्षा कर पायेंगे ? ।। ७२ ।। लक्ष्मण ने भी मन ही मन शिवमन्त्र पढ़कर शिवास्त्र को डोरी पर चढ़ाया। उसे बल लगाकर छोड़ा। वह अन्तरिक्ष से होकर चलने लगा और इन्द्रजित के अस्त्रों को खदेड़कर खा जाने लगा ।।७३।। इन्द्रजित के रावण से प्राप्त सारे अस्त्र नष्ट हो गये। उसने इन्द्र और वरुण के अस्त्रों का प्रहार किया। सुमित्रानन्दन ने सभी रहस्य समझकर जो जो अस्त्र उसने चलाए अपने बल से प्रहारकर उन अस्त्रों को नष्ट कर डाला। वीर रावण-सुत हताश नहीं हुआ। वह सोचने लगा— राम का यह छोटा वीर भाई त्रैलोक्य में अजेय है ।। ७४-७५ ।। मेरे जितने अस्त्र

यत यत अस्त्र मोर सबे संहरिल * जानिलो इहार हाते मरण मिलिल
देव मुनिगण आरो गन्धर्ब्ब चारणे * मन्त्र पढ़ि असंख्यात जिनन्तो लक्ष्मणे ७६
अव्याहते पावन्तो रामर सन्निहित * त्रैलोक्यर शत्रु मरि याउक इन्द्रजित
जगतर मावे राखन्तोक रणचण्डी * स्वर्ग मर्त्य पाताले दुर्गति याउक खण्डि ७७
एहि बीर परिले सबारो सुस्थ हय * सकाले मारन्तो आक सुमित्रातनय
दुयो बीर समरक उच्चक न यान्त * दिव्य अस्त्र हानि सब दिक पूरिलन्त ७८
दश दिश तमोमय भैला अन्धकार * दिनत आन्धार नेदेखिय आउरे आर
असंख्यात शर हानि गुचाइलन्त तम * दुयो बीरे युजे मेरु मन्दरर सम ७९
पाचमरि नकरे अजय दुयो बीर * शरघावे जर्ज्जरित दुइहानो शरीर
पाञ्चदिन पाञ्चराति भैला घोर रण * आकाशत हरिषे नाचन्त देवगण ५९८०
साधु साधु महाबीर त्रैलोक्य मुनिष * देवगणे प्रशंसा करन्त आसरिश
कुशर कण्टक दिते ठाइ नाइ गावर * सिन्दूरर वर्ण येन देखि एककार ८१
अस्थि चर्म्म मांसक भेदिला शर जाके * तथापितो दुयो बीरे बिमुखे नथाके
दुयो भिति सेना घोर युद्धक आकलि * निश्चले थाकिला येन चित्रर पुतलि ८२
दुइहानो शरीर आति देखि असदृश * रावणर पुत्र दशरथर कनिष्ठ
एतहन्ते लक्ष्मणेओ अस्त्र गुणि पाइला * यिटो शरे देवराजे असुर भङ्गाइला ८३
नमस्कार करि आनि जुरिला गुणत * रामर चरण दुइ सुमरि मनत
तक्षक सर्पर सम सदृश विशाल * निशाचर असुर बंशर क्षय काल ८४

थे, इसने सबका संहार कर डाला। समझ गया, इसीके हाथ मुझे मरना होगा। (दूसरी ओर) देव, मुनिगण और गन्धर्व, चारण आदि लक्ष्मण की विजयकामना से असंख्य मन्त्रों का पाठ कर रहे थे ॥ ७६ ॥ (वे कह रहे थे) त्रैलोक्य का शत्रु इन्द्रजित मारा जाये, लक्ष्मण निर्बाध रूप से राम के निकट पहुँच जायें। जगन्माता रणचंडी इनकी रक्षा करें। स्वर्ग-मर्त्य-पाताल की दुर्गति मिट जाये ॥ ७७ ॥ यह वीर मारा जाये तो सभी का मंगल हो, इसे सुमित्रानन्दन शीघ्र ही मार डालें। दोनों वीर युद्ध में एक दूसरे से कम न थे, उन दोनों ने दिव्य-अस्त्रों के प्रहार से दिशाओं को परिपूरित कर दिया ॥ ७८ ॥ दशो दिशाएँ तमोमय हो जाने के कारण अन्धकार हो गया। दिन में ही अंधेरा हो जाने के कारण कोई किसीको देख नहीं पाता था। दोनों ने ही अनगिनत बाणों का प्रहार कर वह अन्धकार मिटा दिया। दोनों वीर मेरु-मन्दर की भाँति (अविचल) युद्ध कर रहे थे ॥ ७९ ॥ दोनों अजेय वीर अपने पैर पीछे नही करते थे। वाणों के प्रहार से दोनों का शरीर जर्जर हो उठा था। दोनों में पाँच दिन, पाँच रात युद्ध होता रहा। आकाश में देवगण हर्ष के मारे नाच रहे थे ॥ ५९८० ॥ त्रैलोक्य में विक्रमी महावीर, साधु! साधु! कहकर देवगण बड़ी प्रशंसा कर रहे थे। दोनों के शरीर वाणों से ऐसे बिंधे हुए थे कि उनमें कुश का काँटा रखने का भी स्थान न था। वे सिन्दूर वर्ण जैसे एकाकार दिखाई दे रहे थे ॥ ८१ ॥ वाणों के समूह ने उनके अस्थि, चर्म, माँस तक को बेध डाला था तथापि दोनों वीर युद्ध से विमुख नहीं हुए। दोनों ओर की सेनाएँ उस युद्ध को देखकर चित्र के पुतलों जैसी निश्चल रह गयी ॥ ८२ ॥ रावण-पुत्र इन्द्रजित और दशरथ के छोटे बेटे लक्ष्मण, इन दोनों के शरीर बड़े ही वीभत्स दिखाई देने लगे। इतने में लक्ष्मण ने चिन्तनकर वह अस्त्र पा लिया। जिस वाण से देवराज इन्द्र ने असुरों को पराभूत किया था ॥ ८३ ॥ उस वाण को नमस्कार कर, लक्ष्मण ने रामचन्द्र के दोनों चरणों का मन ही मन स्मरण कर, प्रत्यंचा पर चढ़ाया। वह वाण तक्षक सर्प जैसा विशाल

सुवर्ण माणिक दिव्य रचित रतने * विश्वकर्म्मे निर्म्मलन्त अनेक यतने
द्वादश आदित्य आनि लेखियाछे तात * सूर्य्यमुख नामे पर जगत प्रख्यात ८५
इन्द्र आदि करिया यतेक देवगण * लक्ष्मणक दिला इन्द्रजित वध मन
आकर्ण पूरिया धनु आजुरिया आनि * दृढ़तर लक्ष्मणे बुलिला हेन बाणी ८६
रामदेव हुन्त येवे धर्म्मत प्रधान * देव द्विज गुरु छारि न जानन्त आन
भकत वत्सल सदकर्म्मे सदा रत * भकति करन्त सदा हरि शङ्करत ८७
ताहान किङ्कर मइ रामे मोर नाथ * एहि शरे रावणिर संहारोक माथ
रुद्र मन्त्र आनि ताते जपिला सकिले * टङ्कारे हानिला आकाशक छानि चले ८८
चलि याइ अस्त्र मारुतर पथ भेदि * गरुड़े याहन्त बेगे येन सर्प खेदि
ग्रीवत परिला याइ वीर रावणिर * किरीटि सहिते तार छेदिलन्त शिर ८९
कुण्डल युगल चन्द्र सम ज्योति करे * कतो दूरे पेलाइलन्त लक्ष्मणर शरे
वानर भालुके देखि डेवा डेइ पारे * राक्षस बलक सबे खेदि खेदि मारे ५९९०
रावणिर सेनागण बिभङ्गे पलाइल * कतो सागरर जले पशिया लुकाइल
भालुक सेनाये कतो खेदि खेदि खाइल * गट्बरे पशिल कतो बानरे भङ्गाइल ९१
दशो दिशि गैल कतो वनत पशिल * लङ्कात पशिल कतो समरे परिल
इन्द्र आदि करिया सकल देवगण * सुर मुनि प्रशंसन्त साधु लखमण ९२
चिरकाल एराइलोहो राक्षसर भय * बाद्य भण्ड शवद मिलिला जय जय
नृत्य गीत कौतूहले मण्डिला आकाश * सुगन्धि शीतल बायु मलया उलास ९३

और निशाचर असुर-वंश को नष्ट करनेवाले काल के समान था ।। ८४ ।। वह दिव्य सुवर्ण-माणिक और रत्नों द्वारा रचित था, उसे बड़े ही यत्न से विश्वकर्मा ने निर्माण किया था। उसमें द्वादस आदित्यों को लाकर चित्रित किया गया था, वह वाण 'सूर्यमुख' नाम से विश्व विख्यात है ।। ८५ ।। इन्द्रादि समेत जितने देवगण हैं —उन सबने लक्ष्मण को इन्द्रजित का वध करने की प्रेरणा दी। प्रत्यंचा को कान तक खीचकर दृढ़तर लक्ष्मण ने यह वचन कहा— ।। ८६ ।। यदि प्रभु रामचन्द्र सबसे प्रमुख धर्मनिष्ठ हैं, देव, द्विज, गुरु को छोड़ और किसी अन्य को नहीं जानते हों; वे यदि भक्तवत्सल, सदा सद्कर्मो मे निरत रहनेवाले, हरि और शंकर की सदा भक्ति करनेवाले हों— ।। ८७ ।। मैं उन्हीं का किंकर और रामचन्द्र ही मेरे नाथ होवें, तो यह वाण इन्द्रजित के मस्तक का सहार कर डाले। उन्होंने उसपर सभी रुद्रमन्त्रों का जाप किया और टंकारकर प्रहार किया। वह अस्त्र आकाश को व्याप्तकर चल पड़ा ।। ८८ ।। वह अस्त्र पवन-मार्ग को चीरता हुआ आगे बढ़ा। मानो सर्पो को खदेड़ते हुए गरुड़ बड़े वेग से चले जा रहे है। वह अस्त्र जाकर वीर इन्द्रजित की ग्रीवा में लगा और किरीट समेत उसके मस्तक को काट डाला ।। ८९ ।। उसके दोनों कुण्डल चन्द्रमा जसे जगमगा रहे थे, लक्ष्मण के वाण ने उस सिर को कुछ दूर ले जाकर गिरा दिया। यह देख बानर-भालू आनन्द-नाद करने लगे और राक्षस-सेना को खदेड़-खदेड़कर मारने लगे ।। ५९९० ।। इन्द्रजित की सेना पराभूत हो भाग गयी। कुछ तो समुद्र के जल मे घुसकर छिप गये। कितनों को खदेड़-खदेड़कर भालुओं की सेना ने खा डाला। बानरों से पराभूत हो कुछ गड्ढों में जा छिपे ।। ५९९१ ।। कितने ही निशाचर दसो दिशाओं में भाग गये, कितने ही वनों में घुस गये, कुछ तो लंका में जा घुसे और कितने ही युद्ध में मारे गये। इन्द्रादि सभी देव, मुनि आदि साधुवाद देते हुए लक्ष्मण की प्रशंसा करने लगे ।। ९२ ।। बहुत समय के लिए राक्षसों का भय जाता रहा। अनेक वाद्यों का नाद जयघोष के साथ मिलकर गूँज उठा। नाच और

निर्म्मल शीतल जल वहे नद नदी * शुभ शुभ जय जय तिनि लोक भेदि
वानर भालुकगण नाचे शारी शारी * ऊर्द्धक तुलिया हात कतो उकि पारि ९४
किछि किछि हुक हुकि शवद तुम्बुले * पृथिवीत माथा दिया फुरावे लाङ्गुले
कतो कतो भुकु मारि दिवय लवर * आन छले मार्ग लोण्डि वैसावे चवर ९५
घोंरा काटि मारे कतो आन भिति चाइ * आउर आउरे परिहास मारे किल गाइ
गलागलि करि वोले आमि भाग्ये जीलो * लक्ष्मण गोसाइर कार्य्ये कल्याण मिलिलो ९६
याहार प्रसादे एराइलोहो सवे दुख * इन्द्रजित परिल देखिवो वन्धुमुख
वोलन्त कन्दलि रामचरणेसे गति * वोला राम राम पाप याउक अधोगति ९७

छवि

इन्द्रजित वीर वैरी समरे निःशेष करि हरिषक पाइला लखमण।
हनुमन्त जाम्ववन्त आदि करि कपिगण सवारो हरिष भैल मन ॥
लक्ष्मणर शिरे देवे पुष्प वृष्टि करिलन्त आकाशी गङ्गार वहे जल।
देवर समाजे नाना उत्सव मिलिला सवे वासवे करन्त कौतूहल ॥ ९८
विभीषण आदि करि भालुक वानर सवे लक्ष्मणक प्रशंसा करिल।
सार्थक तुमिसे वीर इन्द्रक जिनिला यिटो ताक मारि यमघरे निल ॥
विजय दुन्दुभि वाइ परम हरिष मने श्रीराम पाशक चलिला।
परम हरिष मन उरुलि जड्कारघन शुनि रामे आनन्द लभिला ॥ ९९
राघवर अनुगते परम सादर भावे प्रणामिला पाचे जानु शिरे।
वातोक पुछिला रामे न कहिला लखमणे कहिलन्त विभीषण वीरे ॥

गाने से आकाश व्याप्त हो गया और शीतल सुगन्धित मलयवायु उल्लसित होकर वहने लगी ॥ ९३ ॥ नद-नदियों का जल निर्मल और शीतल होकर वहने लगा। 'शुभ-शुभ', 'जय-जय' नाद तीनों लोकों को भेदकर गूंजने लगा। कतारों में वानर-भालू हाथ उठा-उठाकर, आनन्दोल्लास की ध्वनि करते हुए नाचने लगे ॥ ९४ ॥ किचकिचाहट, हुहुंकार आदि का तुमुल नाद करते हुए पृथ्वी पर सिर लगा वे अपनी पूंछों को हिलाने लगे। कितने ही एक दूसरे को घूंसा मारकर भाग जाते थे, कोई-कोई दूसरे के चूतड़ पर थप्पड़ मारते थे ॥ ९५ ॥ कोई-कोई दूसरी ओर जाकर घोड़े जैसे लोट रहे थे। एक दूसरे का परिहास करते हुए शरीर पर मुक्का मारते थे। वे एक दूसरे का गला पकड़कर कहने लगे, हम भाग्य से ही जीवित रहे। प्रभु लक्ष्मण के कार्य से हमारा कल्याण हुआ ॥ ९६ ॥ इन्ही के अनुग्रह से सभी दुखों से छुटकारा मिला, इन्द्रजित मारा गया, हम सवको अपने वन्धु-वान्धवो का मुख देखने को मिलेगा। कन्दलि कहते हैं, राम के चरण ही गति हैं। राम, राम कहो जिससे पाप का पतन हो जाय ॥ ५९९७ ॥

वीर वैरी इन्द्रजित को युद्ध में समाप्त कर लक्ष्मण हर्षित हुए। हनुमान, जाम्ववन्त समेत सभी कपियों का मन हर्षित हुआ। देवों ने लक्ष्मण के सिर पर पुष्प वर्षा की, आकाश-गंगा का जल वहने लगा, देव-समाज अनेक प्रकार के उत्सव करने लगा, इन्द्र के मन में कौतूहल हुआ ॥ ५९९८ ॥ विभीषण समेत सभी वानर-भालुओं ने लक्ष्मण की प्रशंसा की— 'जिसने इन्द्र को जीत लिया था, उसे मारकर यमलोक भेज दिया, तुम्हीं सार्थक वीर हो।' वे विजय-दुन्दुभि वजाते हुए परम हर्षित होकर श्रीरामचन्द्र के पास चले। वे परम हर्ष से वार-वार 'उलु' ध्वनि कर रहे थे, सुनकर रामचन्द्र को आनन्द हुआ ॥ ९९ ॥ उनके समीप पहुँचकर लक्ष्मण ने परम आदर से उनके घुटने में सिर लगा

थिटो बासवक थिनि यश पाइला त्रिभुवने यार थैला इन्द्रजित नाम ।
हारिलन्त देवगण करिया दुर्घोर रण याक नाहि समरे उपाम ।। ६०००
हेन बीर अद्‌भुत रावणर श्रेष्ठ सुत मरि गैला सिटो यमथाने ।
ताहार छेदिला शिर लखमण महाबीर तीक्ष्णतर महा दिव्य बाणे ।।
एतेक शुनिया रामे हरिष लभिला मने आतिशय उत्सवक पाइल ।
लक्ष्मणक कोले धरि माथात चुम्बन करि नानाबिध उत्सवक पाइल ।। ६००१
राम देवे प्रशंसिल साफल साफल बीर उद्धारिला हृदयर शाल ।
हतभैला इन्द्रजित आनक नाहि के भीत रावणक बधिबो सकाल ।।
पाञ्चदिन पाञ्चराति निरन्तरे युद्ध करि बधिलाहा बीर इन्द्रजित ।
कीर्ति थैला महीतले यावे चन्द्र दिवाकरे आजिसे आनन्द भैलचित्त ।। २
राघवे आनन्द पाइ मने महा रङ्गहुया बोलन्त मरिल लङ्केश्वर ।
एबेसे जानिलो मइ सीता दरशन हुइबो रावण याइबेक यमघर ।।
तुष्ट हुइबे त्रिदशर लङ्केश्वर पापतर अधर्म्मे नाशिब निशाचरे ।
आवे देव ऋषिगणे हरिष हैबन्त मने तुष्ट हुइब देव पुरन्दरे ।। ३
बिभीषण निमित्तत रावणि भैलेक हत मरिया गैलेक यमघर ।
हनुमन्त जाम्बवन्त आदि करि कपिगण सुहृद आछिला जन्मान्तर ।।
एहि बुलि पुनरपि आलिङ्गि चुम्बन करि लक्ष्मणक देवता श्रीराम ।
राम सेना यत आछे सबहि हरिषे पाचे उत्सव लभिला अनुपाम ।। ४
रामर चरित्रचय साक्षाते अमृतमय सावधाने शुना सर्ब्बजन ।
आयु क्षणे क्षणे याय बिलम्बक नुयुवाय झाण्टे लैयो रामत शरण ।।

प्रणाम किया । राम ने उनसे समाचार पूछा, पर लक्ष्मण ने नहीं कहा, तब विभीषण ने बताया । जिसने इन्द्र को जीतकर त्रिभुवन में यश पाया था जिसका नाम इन्द्रजित हो गया था, जिससे प्रचंड रण में देवगण हार गये थे, युद्ध में जिसकी उपमा नहीं थी; ।। ६००० ।। ऐसा अद्‌भुत वीर, रावण का श्रेष्ठ पुत्र मारा जाकर यमलोक पहुँच गया । महा वीर लक्ष्मण ने अपने तीक्ष्णतर महा दिव्य बाण से उसका सिर काट डाला, यह सुनकर राम मन में बड़े हर्षित हुए । उन्हें बड़ा आनन्द मिला, लक्ष्मण को आलिंगन कर सिर को चूम, उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई ।। ६००१ ।। प्रभु राम प्रशसा करने लगे— वीर, तुम बड़े सफल, धन्य हो । तुमने मेरे हृदय का काँटा मिटा दिया । इन्द्रजित मारा गया, अब दूसरे से कोई डर नहीं, मैं शीघ्र ही रावण को मार डालूँगा । तुमने पाँच दिन पाँच रात निरन्तर युद्ध कर वीर इन्द्रजित का वध कर डाला । विश्व में जब तक चन्द्र-सूर्य वर्तमान रहेंगे तब तक (न मिटनेवाली) तुमने बड़ी कीर्ति रखी । आज ही मेरा चित्त आनन्दित हुआ ।। २ ।। रामचन्द्र आनन्दित हो, मन में परम प्रसन्नता के साथ बोले— अब तो (समझो कि) रावण भी मारा गया । मैं अभी जान गया कि रावण यमलोक पहुँचेगा और सीता को देख पाऊँगा । देवगण तुष्ट होंगे, पापी रावण का अधर्म निशाचरों का विनाश करेगा । अब देव-ऋषिगण मन में हर्षित होंगे, देवराज इन्द्र तुष्ट होंगे ।। ३ ।। विभीषण की सहायता से ही इन्द्रजित मारा गया । मरकर वह यमलोक पहुँचा । हनुमान जाम्बवन्त समेत सभी कपिगण मेरे जन्म-जन्म के सुहृद है । यों कहकर रामचन्द्र ने लक्ष्मण को पुनः आलिंगन कर चूम लिया । रामचन्द्र की सारी सेना भी आनन्दित हुई । उन्हें भी अनुपम प्रसन्नता हुई ।। ४ ।। राम का चरित्र साक्षात् अमृतमय है सब लोग सावधानी से सुनें । आयु क्षण-क्षण बीत रही है, अब विलम्ब करना उचित नहीं, शीघ्र ही राम

दुर्घोर संसार तेवे महासुखे तरिबाहा मुखत नेरिवा हरिनाम ।
माधव कन्दलि भणे हरिक धरियो मने बोला निरन्तरे राम राम ॥ ५

रावणर क्रोध आरु सीताक काटि बलै उद्यत

पद

राम देव थाकिलन्त कौतूहल भावे * वार्त्ता परि परि गैला रावणर ठावे
रणशेष थिवा इन्द्रजितर लगर * करयोर करि वोले देव लङ्केश्वर ६००६
शुनियोक राजा चित्त करियोक थिर * शुना रणे परिलन्त इन्द्रजित बीर
इन्द्रे याक हारिला आउर सुरगणे * हेन वीर जिनिलन्त दुर्ज्जय लक्ष्मणे ७
पाञ्चदिन पाञ्चराति देखिलोहो रङ्ग * दुर्घोर समरे केहो नेदिलेक भङ्ग
लक्ष्मण वीरक कोने युजिवेक आन * नाहिके सदृश मेघनादर समान ८
लक्ष्मणर शरे गावे उधावय विष * वातुल भैलाहा एको नपान्त उदिश
शिरश्चेद करिलन्त लक्ष्मणर शरे * निर्म्मल स्वर्गक पाइल तोमार कुमारे ९
लङ्केश्वरे शुनिलन्त तनयर वध * निश्चले परिला कुरि नयन तबध
विमूर्च्छित भैला तमोमय अन्धकार * फुरणि देखिला चित्त थिर नोहे तार ६०१०
सुशीतल जले तियाइलन्त मन्त्रीगणे * अनन्तरे कतोक्षणे लभिला चेतने
चेतन लभिया उठि राजा दशग्रीवे * हा हा पुत्र बुलि मुठि हानिलन्त हिये ११

की शरण लो । तभी इस दुर्घोर संसार को परम सुख से पार कर जाओगे, मुँह मे हरिनाम लेना न छोड़ो । माधव कन्दलि कहते हैं, हरि को मन में धारण करो और निरन्तर राम, राम कहो ॥ ६००५ ॥

रावण का क्रोध और सीता को काट डालने हेतु उद्यत होना

प्रभु राम इस प्रकार प्रसन्न हो रहे थे उधर वह वार्ता धीरे-धीरे रावण के पास पहुँची । इन्द्रजित के जो साथी युद्ध में बचे हुए थे, वे हाथ जोड़कर प्रभु लंकेश्वर से कहने लगे ॥ ६००६ ॥ रे महाराज, चित्त स्थिर कर सुनिये । युद्ध में वीर इन्द्रजित मारे गये । इन्द्र और देवगण जिनसे हार गये थे ऐसे वीर को दुर्जेय लक्ष्मण ने जीत लिया ॥ ७ ॥ हम पाँच दिन पाँच रात तक उनका (युद्ध रूपी) खेल देखते रहे । उस दुर्घोर युद्ध में कोई भी पराभूत नही हुआ । वीर लक्ष्मण से और कौन लड़ सकता है, मेघनाद सदृश वीर और कोई नहीं है ॥ ८ ॥ लक्ष्मण के वाणों के प्रहार से उनके शरीर में विष चढ़ गया, वे उन्माद-से हो गये, उन्हें कुछ भी सूझता नही था । लक्ष्मण के वाण ने उनका सिर काट डाला —इस प्रकार आपके कुमार ने निर्मल स्वर्ग प्राप्त किया ॥ ९ ॥ लंकेश्वर ने पुत्र मेघनाद की मृत्यु के वारे मे सुना । वह निश्चल हो कर गिर पड़ा, उसके बीसो नयन स्तब्ध हो गये । वह मूर्छित हो गया, चारों ओर तमोमय अन्धकार छा गया । चक्कर आ गया, उसका चित्त स्थिर न रहा ॥ ६०१० ॥ उसे मन्त्रियों ने सुशीतल जल से सींचा । उसके अनन्तर कुछ क्षण वाद उसकी चेतना लौटी । चेतना पाकर राजा रावण ने 'हा-हा पुत्र' कहकर अपने हृदय पर मुक्का मारा ॥ ६०११ ॥ राजा गंभीर नाद करता हुआ क्रन्दन करने लगा । वह मन के विषाद के कारण विलाप करने लगा । हरि-हरि, वेटा तूने तो सुरपति इन्द्र को पराजित कर दिया था और इन्द्रजित नाम से वड़ी कीर्ति प्राप्त की थी ॥ १२ ॥ त्रिभुवन में

क्रन्दन करय राजा गम्भीर येनादे * बिलाप करय राजा मनत बिषादे
हरि हरि बाप सुरपतिक भङ्गाइले * इन्द्रजित नाम बर कीरिति आनाइले १२
त्रिभुवने चमत्कार मुनिष बोलाइले * लक्ष्मणर हाते केने प्राण हरुवाइले
स्वर्गत इन्द्रक जिनि मनालेक काप * पृथिवीर राजा तोर न सहे प्रताप १३
पातालते हारिला यतेक सुर नागे * मानुषे मारिले तोक मोर कर्म्म भागे
मेरु पर्व्वतक शरे पारस फुलित * हेमवन्त पर्व्वतक पारस तुलित १४
प्रचण्ड अगनि बाप किमते जुराइले * लक्ष्मणर हाते परि किमते बुराइले
हा मेघनाद मोक कैक एरि याय * तोर शोके प्राण फुटे कँगैलि पुताइ १५
त्रिशून्य देखो अन्धकार दशोदिश * शोक सर्पे दंशिले शरीरे उधाइ बिष
तोर माव बापे एदे केनमते जीबो * राजन्धर पुत्र बुलि फोकार करिबो १६
बिधवा भारक वहिबेक बधूलोके * तेहोर निमित्ते मरिबोहो पुत्रशोके
तोक यार शङ्का आवे सबे भैला दूर * अचिन्ते करिब निद्रा देवता असुर १७
मोर से बुरिल जगतरे भैला रङ्ग * एहि बुलि रावणर उठि गैला खङ्ग
दशगुटि माथा कम्पावय कुरि कर्ण * क्रोधे कुरिगोटा चक्षु सिन्दूरर बर्ण १८
कुरि पालि दशन चोबावे कर करि * दशखान यान्ते येन तेली तेल पेरि
हाते हाते पिषय कण्डुलि करे शिर * घने घने कम्पे तार सकल शरीर १९
हातत खड्ग धरि चालिलेक गाव * सीताक काटिबे याइ प्रचण्ड प्रभाव
आति बर खङ्गे राजा येइ भिति चाइ * सिभितिर प्रजा यत पाचत लुकाय ६०२०
पुत्रर मरण मोर पापिष्ठीर काजे * आजि काटि पेलाओं अशोक बन माजे
मोहोर लङ्कात आसि सोण गुइ पशिल * अमात्य सहिते पुत्र रणत नाशिल २१

महान पौरुषवान के रूप मे ख्याति पायी तो लक्ष्मण के हाथ भला प्राण क्यों खो दिये। तूने स्वर्ग में इन्द्र को जीतकर अपना विक्रम मनवा लिया। पृथ्वी पर के राजा तेरे प्रताप को सहन नही कर सकते थे ।। १३ ।। पाताल में जितने देव-नाग थे सभी हार गये थे परन्तु मेरे कर्म माव के कारण मनुष्य ने तुझे मार डाला। तू वाणों से मेरुपर्वत को भी उड़ा डाल सकता था, हेमवन्त पर्वत को भी उखाड़ डाल सकता था ।। १४ ।। बेटे, यह प्रचंड अग्नि किस तरह से लगा दी, लक्ष्मण के हाथ पड़कर तू कैसे डूब गया ? हा मेघनाद, मुझे छोड़कर तू कहाँ चला जा रहा है ? अरे बेटे, तेरे शोक से प्राण निकले जा रहे हैं, तू कहाँ चला गया ।। १५ ।। मुझे तीनों लोक सूने और दसों दिशाएँ अंधकार दिखाई दे रहे है। शोक रूपी सर्प ने मुझे डँस लिया है, शरीर में विष चढ़ता जा रहा है। तेरे माता-पिता हम अब कैसे जी सकेंगे ? 'राज्य को धारण करनेवाले बेटे' कहकर चीखते रहेगे ।। १६ ।। बहुएं वैधव्य-भार को वहन करेंगी, उनके कारण हम पुत्रशोक से मारे जायेंगे। जो तेरे कारण शंकित थे उनकी सारी शंकाएँ मिट गयी। अब देवता-असुर निश्चित सोयेंगे ।। १७ ।। मेरा ही सब कुछ डूब गया पर जगत को आनन्द हो रहा है। यह कहते-कहते रावण को क्रोध आ गया। उसके दसों सिर, बीसों कान काँपने लगे, क्रोध के मारे बीसों आँखें सिन्दूर जैसी लाल हो उठी ।। १८ ।। बीसों पंक्तियों के दाँत कड़-कड़ पीसने लगा, मानो कोई तेली दस कोल्हुओं से तेल पेर रहा हो। वह हाथ से हाथ पीसने लगा, सिर खुजलाने लगा, उसका सारा शरीर बार-बार काँपने लगा ।। १९ ।। वह हाथ में खड्ग उठाकर खड़ा हो गया। प्रचंड प्रभाव वाला रावण सीता को काट डालने हेतु चल पड़ा। अत्यन्त क्रोध में भरा हुआ राजा रावण जिधर देखता था, उसी ओर की सारी प्रजा पीछे जाकर छिप जाती थी ।। ६०२० ।। इस पापिनी के कारण ही मेरे पुत्र का मरण हुआ। आज उसे अशोक वन में जाकर

माया सीता काटिलेक पुत्र वीरवरे * स्वरूप सीताक काटि पेयो यमघरे
तपस्बीर गहे मोक दिया थाके पिठि * मइ यदि माले थाको कन्यार कि लाठी २२
सीताक काटिया तपस्बीर मान सारो * समर भूमित पाचे दुयो भाइक मारो
आलोचि दक्षिण हाते खाण्डा तुलि लैला * अशोक वनत राजा कोपे चलि गैला २३
दूरे वसि सीता देवी आकलिला ताक * रावणाये आसय आमाक काटिवाक
शुनि आछो लक्ष्मणे बधिला इन्द्रजित * पुत्रशोके आसे राजा आमाक काटित २४
वावे येन कदली काम्पवन्त देखि मूर्त्ति * डरे थर पशि गैला हरिलेक चुत्ति
अन्तकाले माधवक सुमरन्त माव * आन गति नाहिके रामर दुइ पाव २५
अरविन्द मन्त्रीये जानन्त अभिप्राय * रावणक मन्त्री वाधा करिलन्त याइ
आगबाढ़ि बोले शुना लङ्केश्वर नाथ * हेन कि घाटन बुद्धि जनिल तोमात २६
पुलस्ति बंशत तुमि भैला उतपति * तिरिवध करिते तोमार अयुगुति
समस्त विद्यात तुमि शास्त्रत पण्डित * शोकर बेगत केने करा गरिहित २७
हठारकार कर्म्म एरि त्यजियोक रोष * मने गुणि चावा जानकीत किवा दोष
तिरीवध महापाप नकरियो सार * यावे चन्द्र दिवाकरे कुयश तोमार २८
शुकान घावत घषा आकनार आठा * इन्द्रजित मरिल सीताक किय काटा
षाण्डे धान खाइलेक तान्तिर काटे वाटि * आने चुरि करिलेक आनर चुलकाटि २९
सीताक काटिया पुत्र जियाइवाक पारि * तेवे काटियोक आरो एक लक्ष नारी

काट डालूंगा। मेरी लंका में यह गोह आ पैठी है जिससे अमात्यों समेत मेरा पुत्र युद्ध में मारा गया ॥ ६०२१ ॥ वीरवर पुत्र ने माया-सीता को काट डाला था आज मैं सच्ची सीता को काटकर यमलोक भेज दूंगा। यह सीता तपस्वियों के घमंड के मारे मुझसे मुँह मोड़े रहती है। मैं यदि ठीक रहूँ तो कन्याओं की क्या कमी है ? ॥ २२ ॥ सीता को काटकर मैं उन तपस्वियों का मान नष्ट कर दूंगा। इसके पश्चात् युद्धभूमि में दोनों भाइयों को मार डालूंगा। यह सोचकर राजा रावण ने दाहिने हाथ मे खड्ग उठा लिया और क्रोध में भरा हुआ अशोक वन में चला आया ॥ २३ ॥ दूर बैठी हुई सीता देवी ने देखा कि हमें काटने के लिए रावण चला आ रहा है। हमने सुना है कि लक्ष्मण ने इन्द्रजित को मार डाला है, पुत्रशोक से राजा रावण मुझे काटने के लिए चला आ रहा है ॥ २४ ॥ जैसे हवा में केले का पौधा काँपता है, उसका रूप देखकर सीता वैसे ही काँपने लगी। डर के मारे वह स्तब्ध हो गयी उसके होश उड़ गये। मृत्युकाल में माता सीता माधव का स्मरण करने लगी, राम के दोनों चरणो को छोड़कर और अन्य गति नहीं है ॥ २५ ॥ मंत्री अरविन्द ने उसका अभिप्राय समझ लिया, उस मंत्री ने जाकर रावण को रोका। वह आगे बढ़कर बोला— प्रभु लंकेश्वर सुनिये। आप में यह विनाशक बुद्धि कैसे उत्पन्न हो गयी ? ॥ २६ ॥ आप पुलस्त के वंश में उत्पन्न हुए हैं, नारी का वध करना आपके लिए अनुचित है। आप सभी शास्त्रों और विद्याओ मे पंडित हैं, शोक-वेग से ऐसा गर्हित कर्म क्यों कर रहे हैं ? ॥ २७ ॥ हठ के कर्म को छोड़कर रोष तज दीजिए। मन में विचार कीजिये कि जानकी का क्या दोष है ? नारी वध करना महा पाप है, उसे न अपनाएं, (यदि आप ऐसा करें तो) जब तक चन्द्र-सूर्य रहेंगे, आपका अपयश फैला रहेगा ॥ २८ ॥ सूखे घाव में आप आक का गोंद क्यों लगाते हैं ? इन्द्रजित मर गया, इस कारण सीता को क्यों काट रहे है ? धान तो खाया साँड़ ने और जुलाहे की रीढ की हड्डी का मांस काटें ? किसी और ने चोरी की और किसी दूसरे के बाल मूड़ें ? ॥ २९ ॥ यदि सीता को काट डालने पर पुत्र को जिलाया जा सके तो और एक लाख नारियों को

हितबाक्य बोलो राजा धरियो मनत * एहि कोप सफलियो राम लक्ष्मणत ६०३०
अरबिन्द बोले राजा कोप पालटाइल * अङ्कुशर घावे येन हस्ती बाहुराइल
लङ्केश्वरे पाइला याय अन्तेष ये पुर * कोलाहल शुनिलेक क्रन्दन तुम्बुल ३१
क्रन्दन शुनिया राजा तेखने ओलाइल * मनत असुखे गैया मण्डपक पाइल

रावणर युद्धयात्रा

यत बल आछिल रणर अवशेष * युजिबाक लागि राजा करय आदेश ३२
करयोर करिया बोलय लङ्केश्वर * बचनक शुन मोर यत निशाचर
चपकरे समदले झाण्टे याहा चलि * निर्भये युजियो गैया सब सैन्य मिलि ३३
अवहिते युजिबाक करियो यतन * आन यत एरिया रामक करा रण
रामक जिनिले जाना जिनिबो सवाके * सबे मिलि बेढ़ि मारा अकले रामके ३४
रामक बेढ़िया सबे करिबाहा शर * बाणाघाते हैवन्त शरीर जराजर
आमि पाचे चलिबो आपन रथ साजि * राम लक्ष्मणर नाम लुकाइ एरो आजि ३५
पुत्रशोके आवे मोर सब गाव दहे * हाजारेक रामे आजि लाहारि न सहे
रावण सागर माजे राघव मजोक * नैराशित हुया साता आमाक भजोक ३६
हेन शुनि चलि गैला राक्षस समस्ते * असंख्यात हय हस्ती चतुरङ्ग रथे
सबे चपकरे गैया जपाइलेक रण * देखि रिङ्ग दिला वानरर सेनागण ३७

काट डाले। महाराज, मैं हित वचन कहता हूँ; आप इसे मन में धारण कीजिये। अपने इस कोप को राम-लक्ष्मण पर उतारकर सफल कीजिये ॥ ६०३० ॥ अरविन्द के वचन से राजा रावण का क्रोध दूसरी ओर मुड़ गया। मानो अंकुश की चोटों से हाथी को मोड़ लिया। लंकेश्वर रावण अन्त:पुर चला गया, वहाँ उसने तुमुल रुदन का कोलाहल सुना ॥ ६०३१ ॥ रुदन सुनते ही राजा रावण तभी निकल आया और मन के दुख से अपने मंडप को पहुँचा।

रावण की युद्धयात्रा

युद्ध से बची हुई जितनी सेना थी, राजा रावण ने सबको युद्ध करने का आदेश दिया ॥ ६०३२ ॥ हाथ जोड़कर लंकेश्वर बोला— मेरे सभी निशाचरो, मेरे वचन सुनो। शीघ्रता से कतारों में सजकर तुम लोग चले जाओ। सारी सेना मिलकर निर्भयता से युद्ध करो ॥ ३३ ॥ सभी बड़ी सावधानी से लड़ने का प्रयास करना। अन्य सबको छोड़कर राम से युद्ध करना। यदि राम को जीत सको तो समझ लेना कि सबको जीत सकते हो। सब मिलकर राम को घेरकर मार डालो ॥ ३४ ॥ तुम्हारे पीछे-पीछे मैं भी अपना रथ सजाकर चलूँगा। आज राम-लक्ष्मण के नाम मिटा कर ही छोड़ूँगा ॥ ३५ ॥ अब पुत्रशोक के मारे मेरा समूचा अंग जल रहा है। हजारो राम भी अब मेरी ज्वालामय पराक्रम सह नही पायेंगे। रावण रूपी सागर में राघव डूब जाये, निराश हो सीता मुझे भजन करे ॥ ३६ ॥ यह सुनकर सारे राक्षस असंख्य घोड़ों, हाथियों, रथों आदि पर सवार हो चतुरंग वाहिनी सजा वहाँ से चल पड़े। सभी शीघ्रता से रणभूमि में पहुँचे, उन्हे देखकर बानरों की सेना कोलाहल कर उठी ॥ ३७ ॥ बानरो और राक्षसों में भयंकर युद्ध आरम्भ हो गया। निशाचर मृत्यु का भय भूलकर युद्ध करने लगे। जिस प्रकार पाटा पर धोबी पटककर वस्त्र धोया करता है, निशाचर बानरों की पीठ पर उसी प्रकार सीधे प्रहार करने लगे ॥ ३८ ॥

वानरे राक्षसे युद्ध भैला भयङ्कर * मरणक भय एरि युजे निशाचर
पयदा पाइले वस्त्र धोवे येन धोवे * पिठित आसन कोवावय थिउ कोबे ३८
वानरर मुण्ड गाण्डि फालिया पेलावे * हात पाव छिण्डे सबे खड़गर घावे
हस्ती घोंरा छेपि मारि भङ्गाइल सकले ~ वानरेयो पाचे खेदि गैल परवले ३९
काहाको मारन्त निर्घात लाथि किले * घोंरा काति कामोरे टाकरे तरुशिले
नाक मुख काण दान्ते कामुरिया छिण्डे * राक्षस बलक मारि थरैं मिण्डे मिण्डे ६०४०
हात पाव मछरिया शरीर पचावे * पाचे ताक वानरे मादल करि बावे
राक्षस भङ्गावे कतो कपि सवे तोले * समयुद्धे कतोवेलि हिन्दला हिन्दोले ४१
हेन देखि समरे सम्मुख भैला राम * गन्धर्व अस्त्रक लैया आति अनुपाम
एके राम युजन्ते शतेक राम देखि * अस्त्र सब प्रहारन्ते केहोवे नलक्षि ४२
दशदिशे धनुखान फुरे येन चाक * चतुर्दिशे वोम्वाले निकले शरजाक
लवरन्ते जोरन्ते क्षेपन्ते शरचय * रणे केहो रामक लक्षिते नपारय ४३
पूब्र ये दिशत देखि पश्चिमतो देखि * दक्षिण दिशत देखि उत्तरतो लखि
अगनि नैऋत कोण वायव्य ऐशान * अधे ऊर्द्धवे दशोदिशे करिला सन्धान ४४
हेनमते राम देवे वाण वरिखन्त * शर वरिखन्ते एको बीरे न लक्षन्त
हेन शीघ्र वेगे याइ शरचय परे * हस्ती घोंरा रथीये सारथि रथ मारे ४५
वृक्ष झङ्कारन्ते येन सरे पका फल * राक्षसर मुण्डे भूमि जुरिला सकल
सहस्रेक राम येन देखिया चौफाले * सकल सेनाक पीड़िलेक इन्द्रजाले ४६
आरकाये युजन्त देखन्ते एकेश्वरे * क्षय काल मिलिला सकल राक्षसरे
निशाचर जाजि भैला राघवे समुद्र * प्रलय कालत येन काल अग्नि रुद्र ४७

वे वानरो के सिर और चूतड़ फाड़ डालते थे, उनके हाथ पैर खड्ग के आघात से छिन्न कर डालते थे। हाथी घोडों ने सबको कुचलकर भगा दिया। इसके पश्चात् वानरों ने भी शत्रु-सेना पर आक्रमण किया ॥ ३९ ॥ किसी को लगातार लात-घूंसों से मारते थे, किसी को केहुनों से मारते दाँतों से काटते थे और तरु-शिलाओं से प्रहार करते थे। दाँतों से काटकर नाक, मुँह, कान आदि नोच लेते थे और राक्षसों की सेना को मारकर ढेरियाँ लगा देते थे ॥ ६०४० ॥ हाथ पैर मरोड़कर शरीर को चूर कर डालते थे और वाद में उन्हें वानर मृदंग की भाँति वजाते थे। कहीं वानर मिलकर राक्षसों को भगाकर वदला लेते थे। इसी प्रकार वरावरी के युद्ध में कितनी ही देर तक उथल-पुथल मची रही ॥ ६०४१ ॥ यह देख अत्यंत अनुपम गंधर्वास्त्र को लेकर रामचन्द्र युद्ध में सामने आये। लड़ते हुए एक ही राम सैकड़ो राम की भाँति दिखाई देने लगे। उन्हें अस्त्र का प्रहार करते कोई भी देख नही पाता था ॥ ४२ ॥ उनका धनुष दसों दिशाओं में चाक की भाँति घूमने लगा था और उससे चारों ओर प्रचंड वाणों के समूह निकल रहे थे। वाणों को लेते, डोरी पर चढ़ाते और छोड़ते समय युद्ध में कोई भी राम को देख नही पाता था ॥ ४३ ॥ वे पूरव में भी दिखाई देते थे और पश्चिम में भी। वे उत्तर में भी दीखते थे दक्षिण में भी। आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य, ईशान, ऊपर-नीचे दसों दिशाओ में वे वाण चला रहे थे ॥ ४४ ॥ प्रभु राम इसी प्रकार वाण-वर्षा कर रहे थे पर उन्हें वाण-वर्षा करते कोई भी वीर देख नही पाता था। वे वाण इतनी शीघ्र गति से जाकर उन पर पड़ते थे कि हाथी, घोड़े, रथी, सारथी सबको मार डालते थे ॥ ४५ ॥ वृक्ष को झकझोर देने पर जैसे पके फल गिर पड़ते हैं, उसी प्रकार राक्षस के सिरों से सारी भूमि भर गयी। चारों ओर सहस्रों-जैसे राम ही दिखाई देते थे, इस प्रकार उन्होंने सारी सेना को इन्द्रजाल कर पीड़ित कर डाला ॥ ४६ ॥

केहो बोले मोर हस्ती गैल यमघर * केहो बोले आमार मारिल हयबर
केहो बोले आमार ये मरिल तनय * केहो बोले मोर भाइ गैला यमालय ४८
मरिल मरिल शुनि राक्षसर बाणी * राम देवे बधे ताक वधन्ते नजानि
रथ दश हाजार छेदिला तेतिक्षणे * अष्टाशी हाजार आरो छेदिला रावणे ४९
चौराशी सहस्र घोंरा राउत समे मारि * त्रिश लक्ष पदातिक मारिला मुरारि
चारि दण्डे एके ये प्रजाक करि क्षय * महाबीर राम देवे लभिला विजय ६०५०
सुग्रीवक चाहि रामे बुलिलन्त वाणी * इटो दिब्य अस्त्र मित्र केहोवे नजानि
आमि आक जानओं आउर महादेव * गन्धर्ब्बर अस्त्र आक नजानय केव ५१
सुग्रीव सुनिया बर आनन्दक पाइल * आति प्रशंसाये सबे तेजक बढ़ाइल
राम हाते परिलेक सेनापति दश * बिमर्द्दन विद्युत्‌जिह्व चक्रादि राक्षस ५२
कुम्भहनु खररुद्र बीर शङ्कुकर्ण * बीरलक्ष हयग्रीव आवर तपन
हस्तीकर्ण समन्विते दश सेनापति * रामर हातत परि भैला सदगति ५३
गन्धर्ब्बर अस्त्रत परिया मोक्ष भैल * देव बिमानत चड़ि स्वर्गलोके गैल
राम देवे समरत यत सेना मारि * माधव कन्दलि कहिलन्त अल्प करि ५४
रामर युजर कथा कि कहिबो आर * बाहुल्य करिते नाहि संक्षेप पयार
हतशेष राक्षस लङ्काक लागि गैला * नरनारी क्रन्दन तुम्बुल रोल भैला ५५
नमो नमो नारायण राम रघुपति * तोमार चरणे मोक न छारोक मति
सदाय नेरोक मुखे तयु गुण नाम * पातक छारोक डाकि बोला राम राम ५६

देखने में एक होने पर भी वे विभिन्न रूपों में युद्ध कर रहे थे। सभी राक्षसों का विनाश-काल आ पहुंचा। राघव समुद्र थे, तो निशाचरगण सेवार। रामचन्द्र प्रलय कालीन काल अग्निरुद्र-से हो उठे थे ।। ४७ ।। कोई कहता था, मेरा हाथी यमलोक पहुँच गया। कोई कहता, हमारे श्रेष्ठ घोड़े को मार डाला। कोई कहता, मेरा तो पुत्र मारा गया। कोई कहता, मेरा भाई यमलोक सिधार गया ।। ४८ ।। 'मर गये', 'मर गये', राक्षसों की ऐसी वाणी सुनकर रामचन्द्र उसे ऐसे वध कर डालते थे कि उनका वध करना पता भी नहीं चलता था। उन्होने उस युद्ध में दस हजार रथों को विनष्ट कर डाला और रावण की अट्ठासी हजार सेना को मार डाला ।। ४९ ।। सवारों समेत चौरासी हजार घोड़ों को मारकर मुरारि रामचन्द्र ने तीस लाख पैदल सेना का वध कर डाला। चार दंड के समय में इतनी प्रजा का संहार कर महा वीर रामचन्द्र विजयी हुए ।। ६०५० ।। उन्होंने सुग्रीव की ओर देखकर कहा— मित्र, इस दिव्य-अस्त्र के बारे में कोई भी नहीं जानता, केवल मै जानता हूँ या महादेवजी जानते हैं। इस गंधर्व-अस्त्र के बारे में और कोई नहीं जानता ।। ६०५१ ।। यह सुनकर सुग्रीव बहुत आनन्दित हुआ। बडी प्रशंसा कर सबने उनका तेज बढ़ाया। रामचन्द्र के हाथ दस सेनापति मारे गये। विमर्द्दन, विद्युत्‌जिह्व, राक्षस चक्रादि, ।। ५२ ।। कुंभहनु, खररुद्र, वीर शंकुकर्मा, वीरलक्ष, हयग्रीव और तपन, हस्तीकर्ण समेत ये दस सेनापति राम के हाथ मारे जाकर सद्‌गति प्राप्त हुए ।। ५३ ।। गधर्व-अस्त्र से मारे जाकर उन्हें मोक्ष मिल गया। वे देव-विमान पर सवार हो स्वर्गलोक सिधारे। प्रभु रामचन्द्र ने युद्ध में जितनी सेना मारी, माधव कन्दली ने उनका वर्णन थोड़े मे ही किया है ।। ५४ ।। राम के संग्राम की बात और क्या बतायें ? विस्तार-बाहुल्य नही करता, संक्षेप में ही 'पयार' छन्द में निबद्ध कर रहा हूँ। मरने से बचे हुए राक्षस लंका को भाग गये, वहाँ नर-नारियों के रुदन से तुमुल कोलाहल मच गया ।। ५५ ।। रघुपति राम नारायण तुम्हें बार-बार नमस्कार है। तुम्हारे चरणों को मेरी मति कभी न छोड़े। मुख कभी

छवि

एतहन्ते लङ्केश्वर	शुनिलन्त निरन्तरे	तिरी लोक अनेक कान्दय ।	
कतो कतो आजोरय	हिया मुण्ड धाकुरय	कतो कतो विधिक निन्दय ॥	
केहो बोले सखी वाइ	कि कारणे यमराय	एत दुःखे नेनिलेक मोक ।	
सिहेन सुन्दर स्वामी	कोथा गैले पाइबो आमि	आवर माणिक मुवा पोक ॥	५७
कतो कतो बोले आइ	हा गुणवन्त भाइ	हा हा वाप कैं गैले शशुर ।	
बान्धव ममाइ आवे	कोथा गैले लाग पाओं	मुठि हानि हिया करो चूर ॥	
रावण राजार तेवे	हेन मति करिलेक	आमार भैलेक वद्ध भारि ।	
त्रैलोक्यर कन्यागणे	इहाङ्क नाटिले देखा	जानकीक आनिलेक हरि ॥	५८
यिटो बीरे मारिलेक	खर आरु दूषणक	मारीच त्रिशिरा कुम्भकर्ण ।	
सम्मुखेओ लङ्केश्वर	हारिलेक श्रीरामत	मुख भैला निश्रीक बिबर्ण ॥	
देख अरे पुत्र भाइ	समरत हत भैला	बुरिल पराय देखो राज ।	
एभो निया जानकीक	राघवत न सम्पय	विरहत मरय निलाज ॥	५९
सवे गाव मारिलेक	करङ्कणे वाति ज्वले	विरहर कमन प्रस्ताव ।	
चुलि समे मुण्ड नाइ	दुयो हाते धरि येन	तैल बुरावय सर्ब्ब गाव ॥	
गाओंत वसति नाइ	सीमाक गुणय येन	नृपतिक कुलक्षणे पाइल ।	
निर्व्वाण कालर दीप	ज्वलिया निमाइयेन	देख तोर माने बुरि आइल ॥	६०६०
घरे ये वाहिर तोर	क्रन्दनर ऊर्म्मि रोल	काण येन फुटय राजार ।	
तिरीर विरोध बर	वचन शुनिया कोपे	अगनि उधाइ गैला तार ॥	

तुम्हारे गुण-नाम को न छोड़े। पुकारकर 'राम, राम' कहो जिससे पाप मिट जाये ॥ ५६ ॥ तब रावण को नारियो का वड़ा रुदन निरन्तर सुनाई देने लगा। कितनी ही नारियाँ अपने बाल नोच रही थीं, कितनी ही अपनी छाती और सिर पीट रही थी, कोई-कोई विधाता की निन्दा कर रही थी। कोई-कोई कह रही थी, अरे सखी, वहन, यमराज इतने दुख पर भी मुझे क्यों ले नही गया ? उसके जैसा सुन्दर पति और वह हीरे के समान चेहरे वाला वेटा मुझे कहाँ मिलेंगे ॥ ५७ ॥ कोई-कोई कहती थी— अरी माँ, हाय गुणवान भाई, हाय, हाय, वाप, हा— ससुर, कहाँ चले गये ? वान्धव मामा से अव कहाँ जाने पर मुलाकात होगी। मुक्का मारकर अपना हृदय चूर कर डालूंगी। उसने (विधाता ने) राजा रावण की ऐसी गति कर डाली जो हमारा वन्धन और भार वन गया। देखो, इस राजा रावण का मन त्रैलोक्य की कन्याओ से नही भरा, जाकर जानकी को हर लाया ॥ ५८ ॥ जिस वीर ने खर-दूषण को मार डाला, मारीच, त्रिशिरा, कुंभकर्ण का वध किया, उन श्रीराम के सम्मुख जाकर लंकेश्वर भी हार गया, उसके मुख का रंग उतरकर श्री-हीन हो गया। अरे देखो, इसके पुत्र-भाई युद्ध मे मारे गये, इसका राज्य भी डूबा जा रहा है परन्तु यह निर्लज्ज अब भी जानकी को ले जाकर रामचन्द्र के हाथ सौंप नहीं देता, विरह मे जल रहा है ॥ ५९ ॥ समूचा शरीर नष्ट हो गया, परन्तु जाँघों में अव भी दीपक जलता है, विरह का यह कैसा प्रसंग है ? वाल समेत सिर नही रह गया। पर दोनों हाथों से पकड़कर सारे शरीर को तेल में डुबो रहा है। गाँव में जन-मानवों का निवास नही रहा, पर यह सीमा-घेरे वन्दी की बात सोचता है। राजा को कुलक्षण ने ग्रस लिया है। जिस प्रकार दीप वुझने के पहले धधककर वुझ जाता है, देख। उसी प्रकार तेरा सव कुछ डूवने जा रहा है ॥ ६०६० ॥ तेरे घर-वाहर रुदन के लहरों का नाद गूंज रहा है। —(ये वातें) सुनकर राजा रावण के कान फटने-से लगे। वह नारियों के ऐसे बड़े विरोध-वचन

ओर पलाशर बर्ण कुरि गोटा चक्षुज्वले फुरे येन कुमारर चाक ।
कहिबा सारथि मोर रथखान साज गैया झाण्ट करि योगाये आमाक ॥ ६१
एतेक बुलिया सिटो आदेश करिला येवे दुरजय राक्षसर राजे ।
साजि आनि सारथिये रथखान योगाइलेक आर बेथ करि सब साजे ॥
माणिक रतन सूर्य्य सुवर्ण रतने आति निर्म्मल पोवाल बन्ध होड़े ।
सबे अस्त्र सुसम्भृत रथखान साजिलेक चलि गैल लङ्केश्वर बीरे ॥ ६२
मत्त आर उनमत्त बिरुपाक्ष बीरक ये आदेशय नृपति रावण ।
सकल सेनाक तोरा साजिया चलायो झाण्टे समरक लागि एतिक्षण ॥ ६३

दुलड़ी

आजि देखिवाहा मोहोर शकति राम लक्ष्मणक मारो ।
पुत्र भाइ यत रणत परिला तार मान सब सारो ॥
बिपक्षर सेना अगाध तरुत राघव लक्ष्मण मूल ।
सुग्रीव सहिते सब सेना तार डाल पात फल फुल ॥ ६४
गुरि काटि आजि पेलाओं ताहार मानुष दुइगोट घालि ।
पाचे सबे डाल निदलि पेलाओं बानर बर टङ्कालि ॥
सब चपकरे चलि रैला राजा सारथि डाकिला रथ ।
गगनमण्डल धूलाये ढाकिल अन्धकार बायुपथ ॥ ६५
शङ्खर शबद भेरुर निशान सकल सैन्यर रोल ।
दशदिश छानि घोर गलाराव बयपिला स्वर्गर कोल ॥
रावण नृपति हाते धनु धरि आटोपे पूरि टङ्कारे ।
एक गोटा बाण सन्धाने हानिया पञ्चाश बानर मारे ॥ ६६

सुनकर कुपित हो उठा, उसके हृदय की आग भड़क उठी और बीसों आँखे पलाश के फूल जैसे लाल हो जल उठी, वह कुम्हार की चाक की भाँति चक्कर लगाने लगा। (वह बोल उठा) अरे सारथी, कहाँ है, जाकर मेरा रथ सजा ला, शीघ्र मेरे सम्मुख उपस्थित कर ॥ ६०६१ ॥ ऐसा कहकर जब दुर्जय राक्षसराज ने आदेश किया तो सारथी ने रथ को सभी सामग्रियों से सम्पूर्ण रूप से सज्जित कर उसके सम्मुख उपस्थित किया। मणि-रत्नों, सूर्यकान्तमणि, स्वर्ण-रत्न और अत्यन्त निर्मल प्रवाल व हीरों से सजा, सभी अस्त्र-शस्त्रों से सारथी ने रथ को सुसज्जित किया। वीर लंकेश्वर उस पर सवार होकर चल पड़ा ॥ ६२ ॥ राजा रावण ने मत्त, उन्मत्त और विरूपाक्ष वीरों को आदेश दिया— तुमसारी सेना को सुसज्जित कर इसी क्षण युद्ध के लिए संचालित करो ॥ ६०६३ ॥

(रावण बोला) आज तुम लोग मेरी शक्ति देखना। मैं राम-लक्ष्मण को मार डालूँगा। पुत्र-भाई और जितने लोग युद्ध में मारे गये हैं, उन सबका बदला ले लूँगा। अनन्त वृक्ष रूपी विपक्षी सेना के मूल राघव और लक्ष्मण हैं। सुग्रीव सहित सारी सेना उसकी डालियाँ, पत्तियाँ फल फूल हैं ॥ ६०६४ ॥ इन दोनों मनुष्यों को मारकर आज मैं उसकी जड़ काट डालूँगा। इसके पश्चात बड़ी बोलियाँ बोलनेवाले डालियों-से उन वानरों को कुचल डालूँगा। (रावण के वचन सुनकर) सब तुरन्त चल पड़े। सारथी ने राजा का रथ हाँका। उसकी धूल ने गगन-मंडल को ढँक दिया, वायु का मार्ग अन्धकार हो गया ॥ ६५ ॥ शंख-नाद, नगाड़े की ध्वनि, सारी सेना का कोलाहल, कण्ठों से निकले घोर नाद दसो दिशाओं में व्याप्त हो गये और स्वर्गलोक में भी परिव्याप्त हो

विरूपाक्षक ये आदेशय राजा मार झाण्टे परदल।
राजार आदेशे समरे भङ्गाइले सकले बानर बल॥
वानरर वल गिरिसाइ भागिल पाइल सुग्रीवर कोल।
राजार भागिया सैन्यक वोलय आर किबा चास तोल॥ ६७
राजार आगत राक्षसबलर तेजबल आटि मुटि।
काण्डा खाण्डा कोवे वानर सेनाक पिषिया लै याय काटि॥
रावण नृपति धनुवाण धरि पाइल राघवर पाश।
सुग्रीव वोलन्त सुषेण शशुर सेना रक्षा करि थाक॥ ६८
रामर वलर विपोहो वाढ़िल निर्भय बचन शुनि।
लाञ्जर वारिये कोवाइ लै यान्त राक्षसबलक घुनि॥
आपोन बलक सुषेण वीरक सेना रक्षा करि थैया।
डाङर दीघल शाल तरु लैया भङ्गाइल सेना कोवाया॥ ६९
पर्ब्वत शिखर वृक्ष बरिषिया रुधिरे नदी बहाइल।
यतेक एराइल विरुपाक्षर ये कोलक लागि पलाइल॥
सुग्रीव नृपति विरुपाक्ष वीरे लागिला दारुण रण।
धनुर टङ्कार करि निशाचरे हानिला नराचगण॥ ६०७०
खाण्डा याठी शर एको न मानिया सुग्रीव बानर राजे।
गावर सन्धाने परिलन्त गैया ताहार रथर माजे॥
रथर तरुण चारि गोट घोंरा परि हामुकुरि खाइ।
घार मुण्ड समे परि चूर भैला रुधिर मुखे बजाइ॥ ७१
हिया पिठि पेट मथिमूर भैला चक्षुर निकलि ढेल।
निरुत्साह हुया शरीर जान्तने सबे यमघरे गैल॥

गये। हाथ में धनुष उठाकर राजा रावण ने प्रचण्ड दम्भ से टंकार किया। वह एक-एक वाण का निशाना लगाकर पचासों वानरो को एक साथ मार डालता था॥ ६६॥ राजा रावण ने विरूपाक्ष को आदेश दिया, शत्रु-सेना को शीघ्रता से मार डालो। उन राक्षसों ने राजा के आदेश से युद्ध में सारी वानर-सेना को पराजित कर दिया। वानर-सेना चीत्कार करती हुई भाग चली और सुग्रीव के पास पहुँची। सुग्रीव ने भागती हुई सेना से कहा— तुम लोग (भागकर) और कौन-सी वड़ाई चाहते हो? ॥ ६७॥ राजा रावण के सामने राक्षस-सेना का तेज-वल वढ़ गया। राक्षस खड्गों के आघातों से बानर-सेना को काट-पीस ले जाने लगे। राजा रावण धनुष-वाण लिये रामचन्द्र के समीप पहुँच गया। तव सुग्रीव ने कहा— ससुर सुषेण, आप सेना को सम्हाले रहिये॥ ६८॥ सुग्रीव के निर्भय वचन सुनकर राम की सेना का साहस बढ गया। वे अपनी पूँछों की चोटों से राक्षस-सेना को पीट-पीटकर धुनने लगे। सुषेण को अपनी सेना की रक्षा का भार सौंपकर सुग्रीव ने एक विशाल शाल-वृक्ष उठाकर उससे मारकर राक्षस-सेना को खदेड़ दिया॥ ६९॥ पर्वत शिखरों और वृक्षों की वर्षा कर उसने रक्त की नदी वहा दी। जो राक्षस वच गये वे विरूपाक्ष के पास भाग आये। राजा सुग्रीव और वीर विरूपाक्ष में प्रचण्ड युद्ध छिड़ गया। उस निशाचर ने धनुष टंकार कर नाराचों का प्रहार किया॥ ६०७०॥ परन्तु वानरराज सुग्रीव खड्ग भाले, बाण आदि की कुछ परवाह न कर उसके रथ पर कूद पड़ा। इससे विरूपाक्ष के चारों तरुण घोड़े मुँह के बल गिरे और गले, सिर समेत गिरकर चूर हो गये, मुँह से रक्त निकलने लगा॥ ६०७१॥ उनके हृदय, पीठ और पेट विनष्ट हो गये, आँखों के कोये

एकहि चवरे	सारथिर शिर	छिण्डिया बीरे पेलाइल ।
बराह शकति	विरूपाक्ष बीरे	प्राणर सन्देह पाइल ॥ ७२
सुग्रीव राजार	शरीर शकति	भाङ्गिलन्त रथगोट ।
करे धनु धरि	घोर निशाचर	करय बर आस्फोट ॥
हस्ती एकगोटा	रावणे पठाइल	येन ऐरावत सम ।
ताहाते चड़िया	विरूपाक्ष युजे	साक्षाते येहेन यम ॥ ७३
आशेष भालुक	बानर भङ्गाइल	भैल जर्जरित शरे ।
सूर्य्यर पुत्रर	शरीर ढाकिल	बाण घावे निरन्तरे ॥
क्रोधे बाण घावे	कपि महाबीरे	मुठि एक धरि टानि ।
आटोप करिया	गावर सन्धाने	गज कुम्भस्थले हानि ॥ ७४
कपाल फुटिया	तेज बहि याइ	येहेन गेरुर धार ।
कतो दूरे गैया	हस्ती परिलेक	पर्ब्बत सम आकार ॥
मृतक हस्तीर	डेव दि नामिल	खाण्डा बारु लइया धाइल ।
सेहि समयत	कपि महाबीर	आर न खाण्डाक पाइल ॥ ७५
दुयो महाबीर	करे बारु धरि	बारुर दिलेक छाटि ।
छाटिर शवदे	स्वर्गक लङ्घिल	दौलर लरे कपाटि ॥
महाश्रमे दुयो	खड्ग चर्म्म धरि	फुरय करि मण्डल ।
आउरे आउरक	कोब बैसावन्त	दुयो चाहि दुइरो छल ॥ ७६
दुयो दुइहान्तक	कोब बैसावन्त	थाकिला भूमित परि ।
कतो बेलि उठि	खाण्डा बारु एरि	कोलाहल जराजरि ॥
दान्ते दान्ते भैला	कामोरा कामुरि	शिरे हाने ठात ठात ।
हियाये हियाये	सन्धाने हानय	गावत चवर घात ॥ ७७

निकल आये, उस शरीर के दबाव से निरुत्साहित हो सभी यमलोक पहुँच गये। वीर ने एक ही थप्पड़ से सारथी का सिर उड़ा दिया। बराह जैसी शक्ति वाले वीर विरूपाक्ष को अपने प्राणों का संशय उपस्थित हो गया ॥ ७२ ॥ राजा सुग्रीव के शक्तिमान शरीर ने रथ को तोड़ डाला। हाथ में धनुष लेकर घोर निशाचरगण बहुत ही चीत्कार करने लगे। रावण ने ऐरावत जैसा एक हाथी भेज दिया, उस पर सवार होकर विरूपाक्ष साक्षात् यम की भाँति युद्ध करने लगा ॥ ७३ ॥ उसके बाणों से अनेक बानर जर्जरित हो भाग गये। उसने सूर्यपुत्र सुग्रीव के शरीर को निरन्तर बाणों से प्रहार कर ढंक दिया। बाणों के आघात से क्रोधित हो महा वीर कपिराज ने एक कठोर मुक्का बाँधकर प्रचड वेग से उस हाथी के कुम्भस्थल को लक्ष्य कर प्रहार किया ॥ ७४ ॥ हाथी का सर फट जाने पर रक्त ऐसा बहने लगा मानो गेरू की धारा हो। कुछ दूर जाकर वह पर्वताकार हाथी गिर पड़ा। उस मरे हुए हाथी पर से विरूपाक्ष कूद पड़ा और एक खड्ग हाथ में उठाकर दौड़ पड़ा। उसी समय महा वीर कपि को एक नया खड्ग मिल गया ॥ ७५ ॥ दोनों महा वीरों ने एक दूसरे का हाथ पकड़कर, एक दूसरे पर चोटे करने लगे। उस आघात के शब्द स्वर्ग को पार कर गये और देवालयों के द्वार हिल गये। दोनों बड़े परिश्रम पूर्वक खड्ग और ढाल ले मंडल बनाकर चक्कर लगाने लगे। वे दोनों एक दूसरे का छिद्र पाकर एक दूसरे पर चोट करते थे ॥ ७६ ॥ दोनों एक दूसरे पर प्रहार कर अन्त में भूमि पर गिर पड़े। कुछ समय पश्चात् खड़े होकर खड्ग रखकर चीखते हुए एक दूसरे से गुँथ गये। वे एक दूसरे को दांतों से काटने लगे, एक दूसरे के सिर पर ठाँय-ठाँय मारने लगे, एक दूसरे की

सुग्रीव राजाये राक्षस बीरक लाथिरे दिला प्रहार।
श्रम करि बीर अन्तर भैलेक शरीर न पाइला तार॥
राक्षसे खाण्डार कोब बैसाइलेक बानर राजार गावे।
बहु दूर जुरि सुग्रीव बीरर रुधिर धारे बजावे॥ ७८
कतो वेलि उठि सन्धि पाइया राजा दिलन्त बर लवर।
शङ्ख प्रदेशत निर्घात सदृश बैसाइला टानि चवर॥
कुम्भस्थल शिर कपाल भाङ्गिया बहय नदी रुधिर।
सुग्रीव बीरर हातत परिल बिरूपाक्ष महाबीर॥ ६०७९

पद

बिरूपाक्ष परिला रावणे चाहि आछे * सकल राक्षस सेना पलाइ याय पाचे
मारय बानरे खेदि थियलाञ्ज बारि * निशाचर भूमित परय प्राण छारि ६०८०
मत्त राक्षसक ये आगत भेट पाइल * सम्बुधि रावणे ताक आगत मताइल
शुन बाप मत्त मोर बचन नेहेला * यतेक खाइलाहा सुजिबाक एहि बेला ८१
मत्त नाम शुनि तोर जगतते त्रास * संशय कालत मोर तोते बर सास
दुस्तर कालत बाप कर मोर बोल * राम-सागरत मजो भेल हुया तोल ८२
राजात मेलानि पाइ मत्त चलि याइ * शरे हानि बानर भङ्गाइल समुदाय
सुग्रीव भेण्टिल आग थाक थाक बुलि * अति बर शिलागोट हानिलन्त तुलि ८३
बीर मत्त राक्षसे शिलाक आइसे जानि * खण्ड खण्ड करिला अनेक शर हानि
आरकायो हानिला सुग्रीव वृक्ष डाले * ताक छेदिलन्त मत्ते घोर कनियाले ८४

छाती पर मारने लगे और शरीर पर थप्पड़ों से प्रहार करने लगे॥ ७७॥ राजा सुग्रीव ने उस वीर राक्षस को लात से प्रहार किया, वह वीर बड़े श्रम से दूर हट गया। सुग्रीव उसके शरीर को पकड़ नहीं पाया। तब राक्षस ने बानर-राज के शरीर पर खड्ग से प्रहार किया। वीर सुग्रीव के शरीर से रक्त की धारा निकलकर बहुत दूर तक फैल गयी॥ ७८॥ कुछ समय पश्चात् सचेत हो राजा सुग्रीव चढ़ दौड़ा और राक्षस के शंख-प्रदेश (कन्धे) पर बज्र-जैसा थप्पड़ जोर से जड़ दिया। इससे उसका कुम्भस्थल, सिर और कपाल फूट गये। नदी-धारा-जैसा रक्त बहने लगा। वीर सुग्रीव के हाथ महा वीर विरूपाक्ष मारा गया॥ ६०७९॥

रावण ने देखा, विरूपाक्ष मारा गया और सारी राक्षस-सेना भाग रही है। वानर खदेड़कर पूँछ उठा-उठा उन्हें मार रहे हैं। जिससे निशाचरगण प्राण छोड़ भूमि पर गिर जा रहे हैं॥ ६०८०॥ अपने सम्मुख रावण ने मत्त नाम के राक्षस को देखकर उसे पुकारकर बुलाया। अरे वत्स मत्त! सुन, मेरे वचनों, की अवहेलना न कर। तूने हमारा जितना खाया है उसका उधार चुकाने का यही समय है॥ ६०८१॥ तेरा 'मत्त' नाम सुनते ही विश्व में त्रास मच जाता है, इस संशयकाल में मुझे तुम्ही पर बड़ा भरोसा है। वत्स, इस दुस्तर समय में मेरे वचन मान। मैं राम रूपी सागर में डूबा जा रहा हूँ। तू बेड़ा बनकर मुझे उठा ले॥ ८२॥ राजा का प्रोत्साहन पाकर मत्त चल पड़ा और अपने वाणों से प्रहार कर सारे वानरों को खदेड़ दिया। सुग्रीव 'ठहर, ठहर' कहकर उसके सामने आ गया और बहुत बड़ी शिला उठाकर उसे प्रहार किया॥ ८३॥ वीर मत्त ने उस शिला को आते देखकर अनेक वाणों के प्रहार से उसे खंड-खंड कर डाला। पुनः सुग्रीव ने उस पर वृक्ष की डालियों से प्रहार किया। उसे भी मत्त ने प्रचण्ड सायकों से काट डाला॥ ८४॥ तब सुग्रीव को वहाँ एक

सूर्य्यर तनय तथा परिघेक पाइल * बारि हानि चारि घोंरा मारिया पेलाइल
डेव दिया मत्त पाचे भूमित परिल * गदागोट धरि गैया समरे पशिल ८५
दुयो युद्ध करे बर गहन पयदा * सुग्रीवे परिघ लैला मत्ते लैला गदा
दुयो बीर दुहान्तक हानिलन्त बारि * एकेबारे भूमित परिला प्राण छारि ८६
चेतन लभिला दुयो उठिला लवरे * राजाक गै मत्ते धरिलेक कोलाहारे
हिये हिये आस्फाल बाजय धात धात * सागर माजत येन परय निर्घात ८७
मुष्ठिर प्रहार येन बज्रर निपात * लाथिर प्रहार दुयो मारे असंख्यात
चवरर चोटे भिण्डाकार भैला गाल * बाहु बाहु निबन्धिला बान्ध येन माल ८८
माल युद्ध एरि खाण्डा धरिलेक मत्त * हानिलेक कोब पशिलेक अरण्यत
आजोर दिलेक खाण्डा हसकिया आइल * सन्धि पाइया कपिराजे कोबेक बैसाइल ८९
मुण्डगोट छिण्डि तार परिला भूमित * खङ्गिला रावण देखि उनमत्त चित्त
हाते हाते पिषय कण्डुति करे शिर * घने घने काम्पे तार सकल शरीर ६०९०
राघवर कौतूहल राक्षसर क्षय * सुग्रीवक बेढ़िया दिलेक जय जय
मत्त परिबार देखि उन्मत्ते धाइल * अङ्गदर सेना शर बरिषिया चाइल ९१
काण्डे काण्डे याठी जोङ्गे असंख्यात मारे * मृगयूथ पलाइ येन केशरीक डरे
सेना भाङ्गिबार देखि बर खड्ग भैल * बालीसुत अङ्गदे परिघ तुलि लैल ९२
माथात दिलन्त तार परिघर बारि * परिलेक उनमत्त चेतनक छारि
उनमत्त परिलेक जाम्बवर रङ्ग * शिला हानि चारि घोंरा रथ कैला भङ्ग ९३

परिघ मिल गया, उसके प्रहार से उसने चारों घोड़ों को मार डाला। तब मत्त कूदकर भूमि पर आ गया और एक गदा उठा युद्ध करने लगा ॥ ८५ ॥ सुग्रीव परिघ और मत्त गदा ले, दोनों ही बड़ी प्रचण्डता से युद्ध करने लगे। दोनों ने एक दूसरे को प्रहार किया और दोनों ही अचेत होकर भूमि पर गिर पड़े ॥ ८६ ॥ दोनों सचेत हो शीघ्रता से उठ खड़े हुए और मत्त ने राजा सुग्रीव को बाँहों में दबोच लिया। दोनों की छातियाँ एक दूसरे से टकराकर ऐसे 'धात्-धात्' बज उठती थीं मानो सागर में बज्रपात हो रहा है ॥ ८७ ॥ उनके मुक्कों का प्रहार बज्रपात जैसा था, दोनों एक दूसरे को लगातार लातों से प्रहार कर रहे थे। थप्पड़ों की चोटों से दोनों के गाल फूल गये। एक दूसरे की बाँहें ऐसे गुँथ गयी मानो दो मल्ल हों ॥ ८८ ॥ मल्लयुद्ध करना छोड़ मत्त ने खड्ग उठा लिया और सुग्रीव को प्रहार कर जंगल में जा घुसा। सुग्रीव ने खीचा तो खड्ग निकल आया, सचेत होकर कपिराज ने उसी से मत्त पर प्रहार किया ॥ ८९ ॥ उसका सिर कटकर भूमि पर जा गिरा, यह देख रावण का चित्त उन्मत्त-सा हो उठा, वह क्रोधित हो गया। वह हाथ से हाथ मलने लगा; सिर खुजलाने लगा, उसका शरीर बार-बार कम्पित होने लगा ॥ ६०९० ॥ राक्षसों के नष्ट होने पर रामचन्द्र की सेना को कौतूहल हुआ, उन सबने सुग्रीव को घेरकर 'जय जय' कार किया। मत्त को गिरते देख राक्षस उन्मत्त धावित हुआ और अंगद की सेना को देख वाण-वर्षा करने लगा ॥ ६०९१ ॥ वृक्षों के तनों, भालो-बरछों आदि के प्रहार से वह असंख्य सेनाओ को मारने लगा। सिंह से भयभीत हो मृगों का समूह जिस प्रकार भागने लगता है, (वैसे ही बानरों की सेना भागने लगी)। अपनी सेना को भागते देख बालीसुत अंगद को बड़ा क्रोध हुआ। उसने एक परिघ उठा ली ॥ ९२ ॥ उसके सिर पर परिघ से प्रहार किया, उन्मत्त अचेत होकर गिर पड़ा। उन्मत्त को अचेत देखकर जाम्बवन्त को बड़ा आनन्द हुआ। उसने शिला के प्रहार से उसके चारो घोड़ों को मारकर रथ को तोड़ डाला ॥ ९३ ॥ कुछ समय बाद उसकी चेतना लौटी, उसने अंगद पर एक बड़े

कतो वेलि चेतन आसिया भैला तार * अङ्गदक दिला प्रभु कुठार प्रहार
कुठारर छोट पाया कपालर पाश * मूर्च्छागत अङ्गदर हरिल उशास ९४
क्षणेके चेतन भैला अङ्गदर गावे * पितृर समान तेज उल्लासि स्वभावे
वज्रर समान करि हानिलन्त मुठि * परिला उनमत्त तार प्राणे गैला फुटि ९५
राक्षसर सेना देखि सवे दिला भङ्ग * वानरर वले देखि सवे दिला रिङ्ग
रथत चड़िया चाहि आछे लङ्कानाथे * परिल उनमत्त बीर अङ्गदर हाते ९६
आपोन सेनार राजा देखिलन्त क्षय * मनर विषादे आति परामरिशय
प्रसिद्ध यतेक वीर परिल रणत * कुम्भकर्ण भाइ परिलन्त समरत ९७
शुन शुन सारथि मोहोर वोलकर * समीप चपायो रथ सत्वरे रामर
मोहोर लङ्कात राघवर घसमसि * सब मान सारो आजि समरत पशि ९८
रामक मारिया आजि सव मान सारो * बिभीषण मारि पाचे लक्ष्मणक मारो
सुग्रीवक मारो कपि भालुकर मूल * हनुमन्त प्रमुख्ये समस्त कपिकुल ९९
सबाको मारिया यमपुरे देओं ठाइ * एहि बुलि आदेशिल सारथिक चाइ
रामर चरित्र शुनियोक सर्व्वजन * हरि हरि बुलि करा बैकुण्ठे गमन ६१००

दुलड़ी

रावण आदेश शुनिया सारथि घोंरा डाकिबाक लैला।
मने कोप करि पुलस्तिर नाति युजिबाक लागि गैला॥
राजा रावणर रथर शवद आकाशे ध्वनि मिलिल।
वर वर वीर पोड़िया रणत बरहि गर्व्वे बुलिल॥ ६१०१

कुठार से प्रहार किया। अपने कपाल पर परिघ की चोट पाकर अंगद की साँस रुक गयी, वह मूर्च्छित हो गया॥ ९४॥ क्षण भर में अगद के शरीर में चेतना लौटी उसके उल्लासपूर्ण स्वभाव में ही पिता के समान तेज भरा हुआ था। उसने बज्र के समान बनाकर मुक्के का प्रहार किया। उन्मत्त गिर पड़ा। उसके प्राण निकल गये॥ ९५॥ राक्षसों की सेना यह देखकर भाग चली। वानरों की सेना यह देख उल्लास से कोलाहल कर उठी। लंकानाथ रावण रथ पर सवार हो यह देख रहा था कि वीर उन्मत्त अंगद के हाथों मारा गया॥ ९६॥ अपनी सेना का विनाश देख राजा रावण अत्यन्त विषाद से मन में विचार करने लगा— जितने सारे प्रसिद्ध वीर थे सभी युद्ध में मारे गये। भाई कुम्भकर्ण मारा गया॥ ९७॥ अरे सारथी! सुन, मेरा आदेश मान। शीघ्र रथ को राम के समीप ले चल। मेरी इस लंका में राघव का उपद्रव हो रहा है। आज युद्ध में जाकर मैं उसका सारा घमण्ड नष्ट कर दूंगा॥ ९८॥ राम को मारकर आज सारा घमण्ड चूर कर दूंगा। इसके पश्चात् विभीषण को मारकर लक्ष्मण को मार डालूंगा। बानर और भालुओं के मूल रूपी सुग्रीव का तथा हनुमान समेत समस्त बानर-सेना को मार डालूंगा॥ ९९। सबको मारकर यमलोक भेज दूंगा —यों कहकर रावण ने सारथी की ओर देख आदेश किया। सभी लोग राम का चरित्र सुनो और 'हरि, हरि' कहकर वैकुण्ठ में गमन करो॥ ६१००॥

रावण का आदेश सुनकर सारथी ने घोड़ों को हाँका। पुलस्त्य का नाती रावण मन में क्रोधित होकर युद्ध करने हेतु गया। राजा रावण के रथ का नाद आकाश तक जाकर ध्वनित होने लगा। उसने वड़े-वड़े वीरों को उत्पीड़ित कर वड़े ही गर्व से कहा—॥ ६१०१॥ उसने पुकारकर कहा— अरे बानरो! सुनो, मैं ही रावण हूँ।

राव ,दिया बोले शुनरे बानरा आमिसि हेरा रावण।
याहार शकति आछय आमाक आगबाढ़ि दिया रण॥
कोन बीर आछा आगबाढ़ि युजा आपुन बल प्रकाशि।
काहार शकति कोने जन्म दिले सम्मुख हुयोक आसि॥६१०२
मोर यत बीर मारिले रणत यत मोर सेनागण।
पुलस्तिर नाति हओं यदि आजि ताहाक करिबो रण॥
मूलक ढालिले डाले कि करिब करिबोहो तार काज।
राम लक्ष्मणक रणत मारिया पेषो आजि यमराज॥ ३
एतेक बचन बुलिया रावण करिलेक सिंहनाद।
समरक मने आटोपे चलय चौदिशे गैला शबद॥
येन नारायण देवताक भय पलाइ असुरर दल।
रावण राजाक देखिया पलाय बानर भालुक दल॥ ४
श्रीरामे देखिया आश्वास बुलिया समस्ते सेना चपाइल।
मित्र बिभीषण बुलिया बचन पाशक लागि मताइल॥
इटो कोन बीर समरक मने आसे चमत्कार करि।
उच्च रथे चरि महा कोप करि आसे धनुबाण धरि॥ ५
येन ग्रीष्मकाले दुतय प्रहरे प्रचण्ड रविर ज्योति।
चक्षुक मेलिया नयन भरिया चाहिबाक आशकति॥
सम्मुखे आमाक आसे युजिबाक येन पर्बतर थान।
हेनय गम्भीर गहन पुरुष नतो देखो बीर आन॥ ६
हेनमत रूप धरिया आछय तिनियो लोके अजय।
मित्र बिभीषण सत्वर करिया करियोक परिचय॥
बिभीषणे बोले शुना राम देव बार्त्ताक तुमि नपाइला।
एहिटो रावण देवर कण्टक युजिबाक लागि आइला॥ ७

जिसकी शक्ति है वह आगे बढ़ आकर हमसे युद्ध करे। कौन वीर हो, अपना बल दिखा आगे बढ़कर लड़ो, किसकी शक्ति है, किसने तुम्हें जन्म दिया है, आकर हमारे सम्मुख होवो ॥६१०२॥ मेरे जितने वीरों को, जितनी सेनाओं को युद्ध में मारा है, यदि मैं पुलस्त्य का नाती हूँ तो आज उससे युद्ध करूँगा। मूल को ही काट डाला जाय तो डालियाँ क्या करेंगी ? मैं ऐसा ही कार्य करूँगा। राम-लक्ष्मण को युद्ध में मारकर आज मैं यमराज के यहाँ भेज दूंगा ॥ ३ ॥ इतना कहकर रावण ने सिंहनाद किया, वह युद्ध करने की इच्छा से सदर्प आगे बढ़ा। चारों ओर उसका शब्द गूंज उठा। जिस प्रकार नारायण से भयभीत होकर असुर-सेना भाग गयी थी, उसी प्रकार राजा रावण को देखकर बानर-भालुओं की सेना भागने लगी ॥ ४ ॥ श्रीरामचन्द्र ने यह देख, आश्वासन देते हुए सारी सेना को एकत्रित किया और पुकारकर मित्र विभीषण को अपने पास बुलाया। उन्होंने पूछा— सभी को विस्मित करता हुआ युद्ध करने हेतु ऊँचे रथ पर सवार हो, महा क्रोध से धनुष-बाण लिये हुए यह कौन वीर आया है ? ॥ ५ ॥ ग्रीष्मकाल के द्वितीय प्रहर में जिस प्रकार सूर्य की ज्योति प्रचंड हो उठती है, उसकी ओर आँख खोलकर देखना असंभव होता है, उसी प्रकार यह पर्वत का थान जैसा हमारे सम्मुख युद्ध करने को आ रहा है। ऐसा गंभीर-गहन पुरुष तो और कोई नहीं देखा ॥ ६ ॥ यह तीनों लोकों में अपराजेय ऐसा रूप धारणकर आ रहा है, मित्र विभीषण तुम शीघ्रता से इसका परिचय दो। विभीषण बोला— प्रभु राम, सुनिये,

सम्मुखे तोमार आसे युजिबाक धर मार रोल करि।
ससैन्ये युजिबा प्रभु राम देव अवहेला परिहरि॥
सुरासुर नरे गन्धर्ब्ब किन्नरे पातालर यत नागे।
सबे रावणत हारिलेक रण यार नाम शुनि भागे॥ ८
आपुनि इहाक यतन करिया मारियो देव ईश्वर।
कीर्ति थाकिबेक धरणीमण्डले यावे चन्द्र दिवाकर॥
श्रीरामे बोलन्त मित्र बिभीषण यदि एहि लङ्केश्वर।
एवेसे मनर शैल्य दूर भैल मोर शाल हृदयर॥ ९
शुना नरलोक मुकुति मिलोक रामत भकति करा।
नकरे भकति यिटो मन्दमति सिटो जीवन्तते मरा॥
इह परलोक बान्धव माधव जानियो निश्चय करि।
बोलन्त कन्दलि पाप दूर हौक डाकि बोला हरि हरि॥ ६११०

लक्ष्मणर शक्तिशेल

पद

प्रबन्धे खुजिबो याक आगे उपसन्न * इदानीक भैला बिधि आमात प्रसन्न
दृष्टिर आगत आइल आर किबा चाओं * दशशिर छेदि यमकरणे पठाओं ६१११
आकर्ण पूरिया धनु आजुरिया निल * सर्पर सदृश वाण राघवे हानिल
रावणे देखय शर आसे बर टाने * आकाशते काटिया पेलाइला तिनिबाणे १२
राघवर शर येवे काटिला रावणे * धनुर टङ्कार बर करिला लक्ष्मणे
आकर्ण ये शवदे पर्ब्बत टलि गैल * बिम्बास शवदे दशदिश पूरि गैल १३

आपको यह समाचार नहीं मिला है। यही देवों का कंटक रावण है जो लड़ने आया है॥ ७॥ यह आपके सम्मुख लड़ने हेतु 'पकड़, मार' नाद करता हुआ आ रहा है। प्रभु रामचन्द्र, इसकी उपेक्षा न कर सारी सेना सहित इससे युद्ध करें। सुर-असुर-गंधर्व-किन्नर, पाताल के सारे नाग सभी रावण से युद्ध में हार चुके हैं, इसके नाम सुनते ही भाग जाते हैं॥ ८॥ आप इसे प्रयत्नपूर्वक मार डालिये। हे प्रभु ईश्वर, इससे आपकी कीर्ति जब तक चन्द्र-सूर्य रहेंगे तब तक धरती-मंडल पर रह जायेगी। श्रीराम ने कहा— मित्र विभीषण, अगर यही लंकेश्वर रावण है तब तो अब जाकर मेरे मन का काँटा निकल गया, मेरे हृदय की चुभन मिट गयी॥ ९॥ हे मनुष्यगण! सुनो, राम की भक्ति करो, जिससे मुक्ति मिले। जो मन्दमति भक्ति नही करता वह जीवित होते हुए भी मरा हुआ है। इस लोक और परलोक में बान्धव माधव ही है यह निश्चित जान लो। कन्दलि कहते हैं, पुकारकर हरि, हरि कहो, जिससे पाप दूर हो जायें॥ ६११०॥

लक्ष्मण को शक्ति लगना

रामचन्द्र कहने लगे— मैं जिसे प्रयास कर खोज रहा था वही सम्मुख उपस्थित है। अब विधि मुझ पर प्रसन्न है। यह मेरी दृष्टि के सम्मुख आ गया, और क्या चाहिए? इसके दसों सिर काटकर यमलोक भेज दूँगा॥ ६१११॥ उन्होंने धनुष को कान तक खींचा और सर्प जैसे वाणों का प्रहार किया। रावण ने देखा, बड़े प्रबल बाण आ रहे हैं, तब उसने तीन वाणों से उन्हें आकाश में ही काट डाला॥ १२॥ जब रावण ने राघव के वाण काट डाले, लक्ष्मण ने धनुष का बड़ा टंकार किया। उस प्रचण्ड शब्द

धनुर टङ्कार शुनि अन्तर्गते भय * रावण विस्मय भैला क्रोधर उदय
सम्बुधि बोलन्त शुना लक्ष्मण बीर * आजि समरत तोर छेदिबोहो शिर १४
मोहोर हातत आजि तोर हैब उलि * मारिया पठाओं तोक पाञ्जरक फुलि
तिनिलोक जिनिलो आमात मुनिषाइ * एतकाल नमारो छ्वाल उमलाइ १५
शुनिया लक्ष्मण बीर तुलिलन्त हास * तावे मात यावे नतो यमघरे यास
दशगोट शिर तोर छेदिबो सकल * बतासते खसि येन परे पका फल १६
बचन तर्ज्जन एरि पौरुजाउ रण * लक्ष्मणर सह आजि घोर वाणगण
मिछा नगर्ज्जय रणे थिबा हवे सुर * सम्मुखे समर देह रावण दुन्दुर १७
लक्ष्मणर बोल शुनि बर कोप पाइल * सकल सेनाक राजा शर हानि छाइल
राम लक्ष्मणक बेढ़िलेक घोर वाणे * असंख्यात कपिगण मरिल पराणे १८
सबाको एरिया राजा रामक पयाण * राघवे सम्मुख हाते लैया धनुवाण
दुयो बीर युजे सार तिनि भुवनत * सागर दुखान येन प्रलय कालत १९
रावणे यतेक हानिलेक शरजाक * आपोनार शरे रामे काटिलन्त ताक
राघवे हानिल कोटि असंख्यात शरे *आकाशते काटिया पेलाइला लङ्केश्वरे६१२०
सब शरे खाञ्चिला गगन निरन्तर * बहु शरे जर्ज्जरित दुइरो कलेवर
चिनिबाक नपारि आपुन कोन पर * कुहरि ढाकिल येन पौष ये मासर २१
लङ्केश्वरे ससागरा पृथिवी कम्पाया * प्रबन्धे युजय राजा पौरुष राखिया
एकेश्वरे रावण युजय कुरि बाहु * चन्द्र सूर्य्य कोले तार येन देखि राहु २२

से पर्वत काँप उठे, वह घोर शब्द दसों दिशाओं में पूर्ण हो गया ।। १३ ।। धनुष का टंकार सुनकर अन्तर में आतंक हो गया। रावण विस्मित होकर क्रोधित हो उठा। उसने सम्बोधित कर कहा— सुनो, लक्ष्मण वीर, आज समर में तुम्हारा सिर काट डालूँगा ।। १४ ।। आज मेरे हाथों तुम्हारा निर्मूलन होगा। तेरे पजर को टुकड़े-टुकड़े कर मार डालूँगा। मैंने तीनों लोक जीते हैं, तू हमें पौरुष दिखा रहा है। अब तक मैंने तुझे बच्चे को खिलाने जैसा व्यवहार कर नहीं मारा है ।। १५ ।। सुनकर वीर लक्ष्मण हँस पड़े, बोले, जब तक तू यमलोक नहीं जाता तभी तक बोलता रह। तेरे दसों सिरों को मै वैसे ही काट डालूँगा जैसे कि हवा से पके फल गिरते हैं ।। १६ ।। बोलना, गरजना छोड़; युद्ध में अपना पौरुष दिखा। लक्ष्मण के साथ आज घोर वाणसमूह हैं। जो शूर होता है वह युद्ध में कभी झूठ-मूठ तरजता गरजता नहीं। झगड़ालू रावण, आज तू सम्मुख रण कर ।। १७ ।। लक्ष्मण के वचन सुनकर रावण बहुत ही कुपित हो उठा। वाणों के प्रहार से उसने सारी सेना को ढँक लिया। उसने प्रचण्ड वाणों से राम-लक्ष्मण को घेर लिया। असंख्य बानर मारे गये ।। १८ ।। सबको छोड़कर राजा रावण रामचन्द्र की ओर चला। रामचन्द्र ने उसके सामने पहुँचते ही हाथ में धनुष-वाण उठा लिये। त्रिभुवन में श्रेष्ठ पराक्रमी दोनों वीर लड़ने लगे। मानो प्रलयकाल के दो सागर हों ।। १९ ।। रावण ने जितने वाण मारे रामचन्द्र ने अपने वाणों से उन्हें काट डाला। रामचन्द्र ने करोड़ों की संख्या में वाणों का प्रहार किया। लंकेश्वर ने उन्हें आकाश में ही काट डाला ।। ६१२० ।। सभी वाणों से आकाश निरन्तर भर उठा, अनेक वाणों से दोनों के शरीर जर्जर हो उठे। कौन अपना है, कौन पराया पहचाना नहीं जाता था, मानो पूस महीने के कुहरे ने ढँक लिया हो ।। ६१२१ ।। लंकेश्वर ससागरा पृथ्वी को कम्पित कर बड़े विक्रम से अपने पौरुष को दिखाता हुआ लड़ रहा था। रावण अकेले बीस हाथों से लड़ रहा था, वह गोद में चन्द्र-सूर्य को लिये हुए राहु जैसा जान पड़ता था ।। २२ ।। ताम्रमय अस्त्रों का प्रहार

लङ्केश्वर ताम्रमय अस्त्रक हानिया * दशदिश ढाकिलेक शरजाक दिया
नराच पङ्कति बाम कपालत हानि * सशरीरे दुइ भाइक बिन्धिलेक टानि २३
राम देवे शरे ताक जर्ज्जरित कृते * शरजाके भेदिलेक सब शरीरते
घोरयुद्ध भैल येन अनुराध यमे * अन्धकर युद्ध येन महादेव समे २४
नारायण समे येन कालनेमी दैत्य * ताड़कर युद्ध येन कार्त्तिके सहित
त्रिपुरक येन मते बधिला शङ्करे * तेनय दारुण युद्ध राम रावणरे २५
सबदिश जुरि शरवृष्टि अन्धकार * पृथिवी आकाश सबे देखि एकाकार
हानिला गन्धर्व्व अस्त्र राम महावीरे * सर्प निकलय तार पाञ्च पाञ्च शिरे २६
दुर्ब्बार शकति आकाशक छानि याइ * राक्षसर सेनागण खेदि खेदि खाइ
सर्पर सदृश सम विष शरचय * ओलान्ते आछय ताक देखि लागे भय २७
अन्तरीक्षे छानिया चलय नागबले * रथको बेढ़न्ते आछे रावणे आकले
असुरर अस्त्रक धनुत जुरिलेक * मन्त्र पढ़ि ताहाक रावणे हानिलेक २८
सिंह बाघ घोङ्ग सबे छानिया ओलाइ * एकल सर्पक सबे खेदि खेदि खाइ
राघवक बेढ़िलन्त गावक समस्ते * मन्त्र पढ़ि प्रहारिला पावकर अस्त्रे २९
अग्नि सूर्य्य सम येन निकलिला शर * अर्द्धचन्द्र पङ्कति चलय निरन्तर
बज्रर सदृश येन बजावय तुण्ड * आकाशे चलिल असंख्यात बह्निकुण्ड
असुरर अस्त्र खेदि बेगे चलि गैला * बाघ घोङ सिंह सबे पुरिया मारिला ६१३०
पुनरपि नासे शर पूरिया मरिल * श्रीरामर कार्य्य देखि रावणे डरिल
यमे दिवा शर अस्त्र रावणे हानिल * कूट मुद्गर बाणे गगन ढाकिल ३१

कर रावण ने वाणों के समूह से दसों दिशाओं को ढँक दिया। नाराचों को बायें कपाल पर प्रहार कर उसने दोनों भाइयों के शरीरों को बहुत वेध डाला ॥ २३ ॥ रामचन्द्र ने भी उसे वाणों के प्रहार से जर्जर कर डाला। वाणों के समूह से उसके सारे शरीर को वेध डाला। अनुराध और यम के बीच, अन्धक और महादेव के बीच जैसा युद्ध हुआ था, वैसा ही घोर युद्ध दोनों में हुआ ॥ २४ ॥ नारायण के साथ कालनेमी दैत्य का, तारकासुर के साथ कार्तिकेय का जैसा युद्ध हुआ था, त्रिपुर को जिस प्रकार से शंकर ने वध किया, वैसा ही दारुण युद्ध राम-रावण के बीच हुआ ॥ २५ ॥ वाण-वर्षा के कारण सारी दिशाओं में अन्धकार छा गया। पृथ्वी आकाश एकाकार दिखाई देने लगे। महा वीर राम ने गन्धर्व-अस्त्र का प्रहार किया जिसके पाँच-पाँच सिरों से सर्प निकलने लगे ॥ २६ ॥ दुर्वार शक्ति से वह आकाश व्याप्त कर चला और राक्षसों की सेना को खदेड़कर खाने लगा। सर्प जैसे विषमय वाण निकलने लगे जिन्हें देखकर भय लगने लगा ॥ २७ ॥ अन्तरीक्ष को परिव्याप्त को नाग-सेना चल पड़ी। रावण ने देखा, वे रथ को घेर रहे हैं। उसने धनुष पर असुर-अस्त्र का संधान किया और मन्त्र पढकर प्रहार किया ॥ २८ ॥ सिंह, बाघ, चीते सब व्याप्त कर निकलने लगे और सभी सर्पों को खदेड़-खदेड़कर खाने लगे। उन सबने रामचन्द्र के शरीर को घेर लिया, रामचन्द्र ने मन्त्र पढ़कर उन्हें पावकास्त्र से प्रहार किया ॥ २९ ॥ अग्नि-सूर्य जैसे वाण निकलने लगे, अर्धचन्द्र वाणों की कतारें निरन्तर निकलने लगीं। वे वज्र की भाँति मुँह बजाकर नाद करने लगे। आकाश में असंख्य बह्नि-कुण्ड चल पड़े। वह असुर-अस्त्र को वेग से खदेड़ चला तथा बाघ, चीते, सिंह सबको जलाकर मार डाला ॥ ६१३० ॥ पुनः रामचन्द्र ने उसके वाण को जलाकर नष्ट कर दिया, श्रीराम का यह कार्य देखकर रावण डर गया। यम के दिये हुए अस्त्र और वाणों का प्रहार रावण ने किया; कूट मुद्गर वाणों से आकाश ढँक गया ॥ ६१३१ ॥ असंख्य

असंख्यात खाण्डा याठी मुषल शतघ्नी * निसन्धि करिला सबे दशदिश छानि
क्षणतेक मात्रे ताक कौशल्यातनय * गन्धर्ब्बर अस्त्रे सबे करिलेक क्षय ३२
घोर शर चारि लक्ष धनुर बजाइल * गदा मुद्‌गर खाण्डा काटिया पेलाइल
रावणर अस्त्र येवे सबे भैला क्षय * कौतुके बानरे रिङ्ग दिला जय जय ३३
रामर पाशत थाकि भाबुकिर जाक * आङ्गुलिर ठारे दिया बोले थाक थाक
रावणे रामक हानिलेक शरजाक * छेदिलन्त आकाशते लक्ष्मणे ताहाक ३४
सुमित्रातनय वैरी बिमर्द्दन बीर * ध्वज काटि पेलाइलेक मानुषर शिर
रावणक आवरिया शरजाक दिल * लक्ष्मण प्रचण्ड समरत नघाटिल ३५
मण्डल आकारे धनु आजुरिला टाने * सारथिर शिर छेदिलन्त एक बाणे
बिभीषणे घोर गदा तुलि लैला करे * कालगिरि सम चारि घोंरा रावणरे ३६
मारिया पेलाइला ठाङ्गठिङ्ग बारि घावे * लङ्केश्वरे क्रोधे खेदि गैला भूमिपावे
बिभीषण लक्षि ये शकति हानिलेक * साक्षातते अगनि गगने चलिलेक ३७
राम देवे बाण हानिलन्त बर टाने * आकाशते काटिया पेलाइल तिनिबाणे
चारिखान हुया येवे शकति परिल * बानर भालुके कौतूहले रिङ्ग दिल ३८
शुनिया तेनय आति क्रोध रावणर * प्रलयर बह्नि येन प्रजा क्षयङ्कर
निर्म्मल शकति मने बिमरिषि पाइल * दुइ हाते धरि ताक तुलि आलगाइल ३९
भकर भकर करि अगनि बजाइ * बिभीषणे प्राणान्तिक मिलिला अपाय
लक्ष्मणे देखन्त तान प्राणर संशय * भकत जनक भाले राखिते लागय ६१४०
बिभीषणर आग हुया सुमित्रा कुमारे * रावणक निसन्धि ताड़िला घोर शरे
ठाङ्गठिङ्ग शबद शरर कोला रावे * हानिते नपारे लक्ष्मणर उपद्रवे ४१

खाँड़े, भाले, मूसल, शतघ्नी आदि ने दसों दिशाओं को सम्पूर्ण रूप से व्याप्त कर लिया। एक क्षण में कौशल्या-नन्दन ने गन्धर्व-अस्त्र के प्रहार से सबको नष्ट कर दिया ॥ ३२ ॥ उनके धनुष से चार लाख घोर वाण निकले और गदा, मुद्‌गर, खाँड़े सबको काट डाला। जब रावण के सारे अस्त्र नष्ट हो गये तो कौतुक से बानर जय जय नाद कर उठे ॥ ३३ ॥ राम के पास रहकर वे धमकियाँ देने लगे, उँगलियाँ उठा-उठाकर कहने लगे— ठहर, ठहर। रावण ने राम को वाणों से प्रहार किया, लक्ष्मण ने उन्हें आकाश में ही काट डाला ॥ ३४ ॥ सुमित्रा-नन्दन वैरियों का नाश करनेवाले वीर थे, मनुष्य के सिर वाले उसके ध्वज को काट डाला। रावण को आवृत कर उन्होने वाण छोड़े, प्रचण्ड लक्ष्मण युद्ध में न हारनेवाले थे ॥ ३५ ॥ उन्होंने अपना धनुष मंडलाकार खींचा और एक वाण से सारथी का सिर काट डाला। विभीषण ने हाथ में प्रचण्ड गदा उठा लिया। रावण के चारों घोड़े काले पर्वतों जैसे थे ॥ ३६ ॥ विभीषण ने गदा के प्रचंड प्रहार से उन चारों को मार डाला। लंकेश्वर भूमि पर उतर क्रोध से विभीषण की ओर दौड़ा। विभीषण को लक्ष्य कर उसने शक्ति का प्रहार किया, साक्षात् अग्नि आकाश में चल पड़ी ॥ ३७ ॥ रामचन्द्र ने बड़े वेग से वाण का प्रहार किया और उस शक्ति को आकाश में ही तीन वाणों से काट डाला। शक्ति जब चार टुकड़े होकर गिर पड़ी तो बानर-भालू कौतूहल से कोलाहल कर उठे ॥ ३८ ॥ वह सुनकर रावण को प्रलय की अग्नि-जैसा प्रजा विनाशकारी प्रचंड क्रोध हुआ। उसने मन में चिन्तन कर निर्मल शक्ति का आवाहन किया और उसे दोनों हाथों से उठा लिया ॥ ३९ ॥ उससे भकर भकर अग्नि निकल रही थी, विभीषण के प्राणों के अन्त होने का संकट आ गया। लक्ष्मण ने देखा, विभीषण के प्राणों का संकट उपस्थित है। भक्तजनों की रक्षा करनी चाहिए ॥ ६१४० ॥ विभीषण के आगे आकर सुमित्रा-कुमार ने घोर वाणों से रावण

शकति धरिया बीरे नयन फुराइल * कनिष्ठक एरि राजा लक्ष्मणक धाइल
सम्बुधि रावणे बोले शुन सुमित्रक * भाइक राखिला तुमि बरहि धार्मिक ४२
दशरथ राजार तइ प्रसिद्ध कुमार * एहि शकतिर घाव आपुनि सामर
रण-पण्डितक धाया अबोध छवाले * आजिसि जानिलो तोक पाइल यमकाले ४३
पिचला परिल येन बुढ़ार हातत * यमकाले नाचे देखो तोर उपरत
छातिर नातिल येन पशिल आङ्गुलि * इन्द्रजित बधर सुजिबो गुलगुलि ४४
सुमरण कर तोर गुरु बाप माव * चक्षुवे देखिबे आर नाहिके प्रस्ताव
प्रणाम करह ज्येष्ठ भाइर चरण * सम्बुधिया पेषो तोक यमर करण ४५
सुमरण कर तोर यत देव इष्ट * नाम लुकाइबो आजि रामर कनिष्ठ
एहि बुलि शकतिक हानिते सम्भृत * स्वर्गर प्रभाव हीन भैलन्त आदित्य ४६
मन्द तेज अगनि निष्प्रभ तारागण * मेरु गिरि टलिल शवद कल कल
दिशा दिशि पलाइल असुर सुरगण * चन्द्र मण्डलर ज्योति रहित किरण ४७
पातालतो तोलपार भैला सब नागे * पृथिवीयो प्रलय न भैला बर भागे
हानिला शकति दुइ हाते धरि बले * प्रलय कालर येन अग्नि सम ज्वले ४८
आकाश छानिया येन चले धूमकेतु * ऋषिसवे मन्त्र पढ़िलन्त शुभ हेतु
लक्ष्मणर हृदयत फुटिला सन्धाने * श्रीरामे बोलन्त भैयाइ जीवन्तो कल्याणे ४९
चित करि लक्ष्मणक पेलाइलेक जान्ति * येन क्रौञ्च गिरिक कुमारे भेदिलन्ति

को सम्पूर्ण रूप से प्रहार किया। वाणों के आघात से ठाँय-ठाँय प्रचंड नाद होने लगा। लक्ष्मण के उपद्रव से रावण विभीषण पर शक्ति का प्रहार न कर सका ।। ६१४१ ।। उस वीर ने शक्ति को उठाकर आँखें फिराईं और अपने छोटे भाई विभीषण को छोड़कर लक्ष्मण पर चढ़ दौड़ा। रावण ने उन्हें सम्बोधित कर कहा— सुमित्रा-कुमार, सुन, तू मेरे भाई की रक्षा करनेवाला बड़ा धार्मिक है ।। ४२ ।। तू राजा दशरथ का प्रसिद्ध कुमार है। इस शक्ति का प्रहार तू स्वयं सम्हाल। तू अबोध बालक (मेरे जैसे) रण-पंडित को आक्रमण करने आया है। आज समझ गया, तुझे यम-काल ने ग्रास कर लिया है ।। ४३ ।। सनई का पौधा मानो बूढ़े के हाथ आ पड़ा है। तेरे सिर पर यमराज नाच रहा है। तेरी उँगलियाँ छतरी की नली में आ फँसी हैं। आज इन्द्रजित के वध का बदला ले लूँगा ।। ४४ ।। आज अपने माता-पिता का स्मरण कर। अब उन्हें आँखों से देखने का कोई उपाय नहीं है। अपने बड़े भाई के चरणों में प्रणाम कर ले। तुझे सम्बोधित कर यमलोक भेज दे रहा हूँ ।। ४५ ।। तेरे जितने इष्ट देव हैं उनका स्मरण कर। राम के छोटे भाई के रूप में तेरा नाम मिट जायेगा। यह कहकर उसने बलपूर्वक शक्ति का प्रहार किया। स्वर्ग का सूरज भी प्रभावहीन हो गया ।। ४६ ।। अग्नि का तेज मन्द हो गया, तारे निष्प्रभ हो गये। मेरु पर्वत भी काँप उठा। कल कल शब्द होने लगा। असुर और देवगण चारों दिशाओं मे भाग गये। चन्द्रमण्डल की किरणें ज्योति-रहित हो उठी ।। ४७ ।। पाताल में भी नागों में उथल-पुथल मच गयी, बड़े भाग्य से ही पृथ्वी पर प्रलय होने से रह गया। दोनों हाथों से शक्ति को पकड़कर बल लगाकर प्रहार किया। वह प्रलयकाल की अग्नि के समान जल उठी ।। ४८ ।। मानो आकाश को व्याप्त कर धूमकेतु चल पड़ा हो, ऋषियों ने (धूमकेतु समझकर) मंगल के लिए मन्त्र-पाठ किया। वह शक्ति लक्ष्मण के हृदय में सीधे चुभ गयी। श्रीराम बोले, भैया, तुम जीते रहो तभी कल्याण है ।। ४९ ।। उस शक्ति ने लक्ष्मण को चित्त कर दबा दिया, जिस प्रकार कि कुमार कार्तिकेय ने क्रौञ्च पर्वत को वेध डाला था। वह शक्ति हृदय में लगकर पीठ की ओर से निकल गयी

हृदयत परि पिठिपाचे बाज भैल * पाताल पर्य्यन्ते हलहलि पशि गैल ६१५०
दशदिश पूरिलेक ताहार शबदे * यत जीया जन्तु शुनि थाकिला तबधे
विषादे रामर पोरे निरन्तरे देहे * चक्षुर लोतक परे कनिष्ठर स्नेहे ५१
विषादर काल नुहि मने गुणि चाइल * धनुवाण धरि रामे रावणक धाइल
हस्तीक घालिया येन सिंहर आक्रान्त * लक्ष्मणक आनिबाक राजा चलियान्त ५२
देखन्त आसय लक्ष्मणक धरिबाक * नाके काणे मुखेरामे दिला शरजाक
भाइर सन्तापे रामे दशगुणे चण्ड * शरीरर मांसक करिला खण्ड खण्ड ५३
आस्फोट करिया रामे बीर काछे काछि * अर्द्धचन्द्र नराच हानन्त बाछि बाछि
रावणक नाना शर हानि बनमाली * नाके मुखे गाण्डि मुण्डे थैला शालि शालि ५४
नाक मुण्ड जङ्कारे आजोरे हात पाव * श्रुतिक हरान्ते आछे आकुल स्वभाव
पाचगुचि रावण पलाइल प्राण राखि * दशोदिश निहालय कतो दूरे थाकि ५५
सुग्रीव अङ्गद हनुमन्त नल नील * लक्ष्मणर हियात शकति आजुरिल
यतमान शरीरर बले दङ्गा दिल * सबाको जर्जरीकृते शरे बिन्धि थैल ५६
ताहार शरक न गणिया रघुनाथे * शकतिक धरि आजुरिला बाम हाते
हुसकाइला शकतिक लक्ष्मणर गावँर * बल दिया माङ्गिला शबद ठाटकार ५७
येति क्षणे राघवे शकति आजुरिल * रावणे रामक बेढ़ि शरजाक दिल
ताहार शरक नगणिया रघुनाथे * लक्ष्मणक तुलिया लैलन्त बाम हाते ५८
सुग्रीव प्रमुख्य करि सकल बीरक * राघवे बोलन्त राखि थाका लक्ष्मणक
बनबास यि कार्य्ये खाटिलो बर दुखे * सीताक हराइलो चिरकालते असुखे ५९

और हहराती पाताल तक घुस गयी ।। ६१५० ।। उसके शब्द से दसों दिशाएँ गूंज उठी, जितने जीवित जन्तु थे वह शब्द सुनकर स्तब्ध रह गये । विषाद के मारे रामचन्द्र की सारी देह जलने लगी । छोटे भाई के स्नेह से आँखों से आँसू बहने लगे ।। ६१५१ ।। परन्तु उन्होंने सोच लिया कि यह विषाद का समय नहीं, और धनुष-वाण लेकर रामचन्द्र रावण पर चढ़ दौड़े । हाथी को मारकर सिंह जैसे चढ़ दौड़ता है, उसी प्रकार राजा रावण लक्ष्मण को उठा ले जाने हेतु आगे बढ़ा ।। ५२ ।। रावण लक्ष्मण को पकड़ने के लिए आ रहा है, देखकर रामचन्द्र ने उसके नाक, कान, मुँह में अनेक वाण मारे । भाई के संताप से राम दस गुने भयंकर हो उठे और रावण के शरीर के मांस को खंड-खड कर डाले ।। ५३ ।। प्रचड नाद कर राम ने वीर-वेश धारणकर चुन-चुनकर अर्ध-चन्द्र, नाराच आदि का प्रहार करना शुरू किया । इस प्रकार वनमाली राम ने रावण को अनेक वाणों से प्रहार कर नाक, मुँह, चूतड़, सिर आदि वेध डाले ।। ५४ ।। रावण नाक-सिर हिलाने तथा हाथ-पैर पटकने लगा । कान से कुछ सुनायी न देने के कारण वह बड़े व्याकुल स्वभाव का हो गया । रावण प्राण बचाकर पीछे हटकर भागा और कुछ दूर जा दसों दिशाओं में देखने लगा ।। ५५ ।। सुग्रीव, अंगद, हनुमान और नील ने लक्ष्मण के हृदय से शक्ति खींची । अपने शरीर का बल लगाकर जो लोग लक्ष्मण को उठाने लगे, रावण ने सबको वाणों के प्रहार से जर्जर कर वेध डाला ।। ५६ ।। उसके वाणों की परवाह न करते हुए रघुनाथ ने बायें हाथ से शक्ति को पकड़कर खीचा । उन्होंने लक्ष्मण के शरीर में लगी शक्ति जोर से खींच निकाली और बल लगाकर उसे 'खट' से तोड़ डाला ।। ५७ ।। जिस समय राम शक्ति को खींच रहे थे, रावण उन्हें घेरकर वाणों का प्रहार करने लगा । उसके वाणों की परवाह न कर रघुनाथ ने लक्ष्मण को बायें हाथ से उठा लिया ।। ५८ ।। सुग्रीव समेत सभी वीरों से राघव ने कहा, लक्ष्मण की रख-वाली करते रहो । हमने बड़े दुख से जिस कार्य हेतु वनवास का कष्ट सहन किया, चिरकाल

खर आरु दूषणक त्रिशिरा मारिलो * बालीक मारिया सुग्रीवक राज्य दिलो
बानर लोकक दुख दिलो यिवा हेतु * करिलो अशक्य सागरत बान्धि सेतु ६१६०
लङ्काक आसिलो कर्म्म मिलिल दुर्घोर * सकल कर्म्मर जाना एवे भैल ओर
तिरी चोरा पापिष्ठ आसिल दृष्टि पथ * खियाति थैवोहो आजि तिनियो लोकत ६१६१
मोहोर हातत आजि याइबे कत दूर * मारिया पाठाओं आजि बैर सुरपुर
हेन बाणी सुनिया बानर सामराजे * राखिया थाकिला लक्ष्मणक सब साजे ६२
हेन देखि धनुवाण धरि लङ्केश्वरे * मर्म्मस्थाने सबार भेदिला घोर शरे
जर्ज्जरित भैला येवे रावणर शरे * लक्ष्मणक एरि पलाइ भालुक बानरे ६३
सुग्रीव अङ्गद नील वीर हनुमन्त * जाम्बवन्त प्रमुख्ये बीरगणे राखिलन्त
राम देवे बोलन्त आवर न पलाहा * पर्ब्बत उपरे चड़ि दुइरो युद्ध चाहा ६४
एगोट परिव आजि राम वा रावण * कौतूहले रङ्ग चाहि थाका कपिगण
एहि बुलि रावणक दिला शरजाक * राक्षसत परिया मरय जाके जाक ६५
रावणे हानय असंख्यात शरजाक * आपोनार शरे रामे संहारन्त ताक
राम रावणर भैला तुम्बुल आस्फाल * दुइरो भैला शरीर सरङ्गा येन जाल ६६
धनुर टङ्कारे काणत देइ ताल * सकल गगने छाइल शरे कोलाहल
त्रिदश देवर भय मिलिल प्रलय * पृथिवी काम्पय टले नागर आलय ६७
त्रैलोक्य विजय दुइ मुनिष युजय * भङ्ग न परय तिनि लोकर विस्मय
दुयो वीर सम साक्षातते येन यम * बल अनुपाम रङ्ग देखिते सुगम ६८
सोन्त येन बहय बिन्धिला स्थाने मर्म्म * फुटे दुइ हात चर्म्मे दुइहान्तर तुल्य कर्म्म

असुखी बनकर सीता को खो दिया ।। ५९ ।। खर-दूषण और त्रिशिरा का वध किया, बाली को मारकर सुग्रीव को राज्य दिया, जिस कारण से हमने वानरों को इतना दुख दिया, सागर पर पुल बाँधकर असाध्य साधन किया; ।। ६१६० ।। लंका में आये, अब ऐसा दुर्घोर कर्म आ मिला, अब समझ लो कि ये सभी कर्म समाप्त हो आये हैं। नारी-चोर, पापी मेरे दृष्टि-पथ पर आ गया है, आज मैं तीनों लोकों में प्रसिद्धि रख जाऊँगा ।। ६१६१ ।। मेरे हाथ से बचकर यह और कितनी दूर जायेगा ? आज वैरी को मारकर स्वर्ग भेज दूंगा। ऐसी वाणी सुनकर वानरराज सुग्रीव सभी साजों से सज्जित हो लक्ष्मण की रखवाली करने लगा ।। ६२ ।। यह देख लंकेश्वर रावण ने धनुष-वाण लेकर सबके मर्मस्थानों को प्रचंड वाणों से वेध डाला। जब वानर-भालू रावण के वाणों से जर्जर हो गये, तो लक्ष्मण को छोड़कर वे भागने लगे ।। ६३ ।। सुग्रीव, अंगद, नील, वीर हनुमान, जाम्बवन्त आदि वीरों ने उन्हें रोका। रामचन्द्र ने कहा— और भागो मत। पर्वत के ऊपर चढ़कर दोनो का युद्ध देखो ।। ६४ ।। आज राम या रावण में से कोई एक गिरेगा। हे वानरो, तुम कौतूहल-पूर्वक रंग देखते रहो। यह कहकर रामचन्द्र ने रावण पर बाण छोड़े। वे वाण उस राक्षस पर झुण्ड के झुण्ड गिरने लगे ।। ६५ ।। रावण असंख्य वाणों से राम पर प्रहार करने लगा। राम अपने वाणों से उन्हें काट डालते थे। राम-रावण का तुमुल निनाद होने लगा, दोनो के शरीर छेदों वाले जालों जैसे हो गये ।। ६६ ।। धनुषों की टंकारों से कानों में ताले पड़ जाते थे, वाणों का कोलाहल समूचे आकाश में परिव्याप्त हो गया। देवताओं को भय हुआ कि प्रलय आ गया, पृथ्वी काँपने लगी, नागों का निवासस्थान काँप उठा ।। ६७ ।। त्रैलोक को जीतनेवाले दो पराक्रमी लड़ रहे थे, कोई भी पीछे नहीं हटता था, इससे तीनों लोकों को विस्मय हो रहा था। दोनो ही वीर समान थे मानो वे साक्षात् यम थे। उनका बल अनुपम था, युद्ध का रंग देखना सुगम था ।। ६८ ।। दोनो के शरीर से रक्त की धारा-सी बहने लगी, दोनो ने दोनो के मर्मस्थान वेध डाले।

भूषण्डि परिघ गदा रावणे हानय * आन सब दिव्य अस्त्र यतेक आछय ६९
रघुनाथ वीर दशरथर कुमारे * पथत काटिला ताक आपोनार शरे
थाक मारो बुलि दुयो अस्त्रक तुलिल * इकूले सिकूले दुयो दुइहाङ्को फुलिल ६१७०
शोणित सिन्दूर वर्ण भैला कलेवर * हुताशने हेसनि मिलिला रावणर
हिया पेट हात पाव राघवे बिन्धिल * बरर प्रसादे सिटो बर कष्टे जील ६१७१
रथ खान ताहार पाचक लागि निल * कतो दूरे पाच गुचि सन्धुक्षण भैल
रावणक भङ्गाया राघव श्री हरि * लक्ष्मणर पाशत बसिला मन्यु करि ७२
भ्रातृर नासात नेखेलय देखि बाव * कान्दिलन्त हृदयत हानि मुठिघाव
दुइ हाते माथा गोट कोलक चपाइ * हरि हरि कैक यास प्राणर लखाइ ७३
कोथा गैले पाइबोहो लक्ष्मण हेन भाइ * बज्र सार हिया किय फुटिया नयाय
यैसानि दण्डका बने मरो सीता शोके * सकरुण बोले बाप प्रबोधिला मोके ७४
मोर दुख देखि तोर शरीरत घाहा * यमपुरे यान्ते आवे मोक लैया याहा
हा हा देव बिधि मोर किमत जीवन * तिनि एक प्राण हुया आसि भैलो बन ७५
कहि गैले सीता बान्धै मोर प्राणेश्वरी * लखाइ एरि यास मोर एकेश्वर करि
सीतार शोकत केने पराण न गैल * लक्ष्मणर शोक तातो शतगुण भैल ७६
लङ्कात मरिल आसि अयोध्यार हन्ते * पराण धरिबो आर काहाक देखन्ते
आजिहे सीताक आमि एरिलो प्रत्याशा * आजिसे प्राणक मइ करिलो नैराशा ७७
लखाइ अबिहने मोर जीवने निष्फल * पृथिवी फाटल देह याओं रसातल

वे वाण चमड़ी भेदकर दो-दो हाथ भीतर चुभ जाते थे, दोनो के कर्म समान ही थे। रावण राम पर भुशुण्डी, परिघ, गदा तथा अन्य जितने भी दिव्यास्त्र थे उनसे प्रहार करने लगा ॥ ६९ ॥ दशरथ-नन्दन, वीर रघुनाथ ने उन सबको मार्ग में ही अपने वाणों द्वारा काट डाला। 'ठहर, तुझे मारता हूँ' कहकर दोनो ने अपने-अपने अस्त्र उठा लिये। इधर-उधर दोनो ने एक दूसरे को उड़ा-सा दिया ॥ ६१७० ॥ दोनो के शरीर रक्त से सिन्दूर-वर्ण हो गये, रावण की अग्नि ने मानो लपटें फैला दीं। रामचन्द्र ने उसके हृदय, पेट, हाथ, पैर वेध डाले। वह वर के प्रभाव से बड़े कष्ट से जीवित रह सका ॥ ६१७१ ॥ वह अपने रथ को पीछे हटा ले गया, पीछे हटकर कुछ दूर जा उसे होश आये। रावण को पराभूत कर श्रीहरि राघव दुखीमन से लक्ष्मण के पास आकर बैठ गये ॥ ७२ ॥ भाई की नाक में साँस की हवा न चलते देख अपने हृदय पर मुक्का मारकर रोने लगे। दोनो हाथों से लक्ष्मण का सिर अपनी गोद में ले लिया, (और कहने लगे) हरि, हरि प्राणप्रिय लक्ष्मण, तू कहाँ चला जा रहा है ? ॥ ७३ ॥ लक्ष्मण जैसा भाई कहाँ जाने पर मिलेगा, मेरा वज्र जैसा हृदय क्यों फट नहीं जाता ? `जब मैं सीता के शोक में दंडक वन में मर-सा रहा था, करुणापूर्ण वचनों से, हे वत्स, तुमने मुझे धीरज बँधाया था ॥ ७४ ॥ मेरा दुख देखकर तुम्हारे शरीर में वेदना होती थी, अब यमपुरी जाते समय मुझे भी साथ ले चलो। हा-हा दैव, विधि, मेरा जीवन कैसा है ? हम तीनों एक प्राण हो, वन में आये थे ॥ ७५ ॥ मेरी वान्धवी प्राणेश्वरी सीता कहीं चली गयी, और अब मुझे अकेला कर लक्ष्मण, तुम भी मुझे छोड़ जा रहे हो। सीता के शोक से मेरे प्राण क्यों निकल नही गये, उसके ऊपर लक्ष्मण का यह शोक सौ गुना हो गया ॥ ७६ ॥ अयोध्या से आकर लक्ष्मण लंका में मरे, अब मैं भला किसे देखकर प्राण धारण करूँगा ? आज ही हमने सीता को पाने की आशा छोड़ दी, आज ही मैंने प्राणो को निराश कर लिया ॥ ७७ ॥ लक्ष्मण के बिना मेरा जीवन निष्फल है। हे पृथ्वी, तुम फट जाओ, मैं रसातल चला जाऊँ। मित्र सुग्रीव, अंगद, नल-नील कहाँ

कैरा मित्र सुग्रीव अङ्गद नल नील * कहिरा सुषेण हेरा अपाय मिलिल ७८
लक्ष्मणर शोके मोर बुद्धि भैल आउल * अस्त्र सब पासरोहो भैलो येन बाउल
मृत्युकाल आसि मोर मिलिला समरे * शर धनु मोहोर हातर खसि परे ७९
प्राण सङ्कलय मोर थिर नोहे बुद्धि * लक्ष्मण जीवार कोने जानाहा औषधि
यतेक करिलो भैला सकले निष्फल * छाइत हुनिलो येन किछु नाहि फल ६१८०
मोहोर मरण लक्ष्मणर शोक जाले * कि कार्य्य चिन्तिया क्षाण्टे चिन्तिलो सकले
शुना रामकथा इटो सबे सभासद * मिलावे मुकुति गुचे संसार आपद ६१८१
हेन जानि सदाये स्मरियो हरिनाम * पलाउक पातक डाकि बोला राम राम

हनुमन्तर औषध आनिबलैं गमन

दुलड़ी

रामक सम्बुधि सुषेणे बोलय वैद्य धन्वन्तरी सुत ।
शुनियो राघव श्री रघुनन्दन सन्ताप त्यजा बहुत ॥
तोमार कनिष्ठ जीवन्त इङ्गिते जानिलो नगैल प्राण ।
हृदयत वायु गमनागमन जानिलो आछय प्राण ॥ ६१८२
नयन युगल नील उतपल नासा येन तिल फुल ।
बदन कमल नील उतपल उवले येन शशी तुल ॥
जिह्वा नकुञ्चिल सुनय चरण एरियो चिन्ता आपुने ।
तोमार वरत अबध्य शरीर मारिबाक परि कोने ॥ ८३
कैरा हनुमन्त वायुर नन्दन आमार बचन करा ।
दक्षिण दिशत आछे गिरिवर ताक लागि दिश धरा ॥

हो, हे सुषेण कहाँ हो, आज यह अमंगल आ गया है ॥ ७८ ॥ लक्ष्मण के शोक से मेरी बुद्धि उलझ गयी है, अस्त्रों को भूल गया, मानो बावला हो गया हूँ । युद्ध में मेरा मृत्यु-काल आ पहुँचा है । मेरे हाथ से धनुष-बाण गिरे जा रहे हैं ॥ ७९ ॥ मेरे प्राण निकले जा रहे हैं, बुद्धि स्थिर नही रही है; लक्ष्मण को जीवित करने की औषधि किसे ज्ञात है ? मैंने जो कुछ किया, सब निष्फल हो गया । मानो मैंने केवल राख में ही प्रहार किया जिसका कोई फल नही रहा ॥ ६१८० ॥ लक्ष्मण के शोक-जाल से मेरी मृत्यु होने-वाली है । मैंने तो सब कुछ सोच लिया, अब तुरन्त और सोचकर क्या होगा ? सभी सभासद यह राम-कथा सुनें, यह मुक्ति देती है, संसार के संकट दूर करती है ॥ ६१८१ ॥ ऐसा समझकर सदा हरिनाम स्मरण करो । पुकार-पुकार कर राम-राम कहो, जिससे पाप दूर भाग जाये ।

हनुमान का औषधि लाने हेतु जाना

वैद्य धन्वन्तरी के पुत्र सुषेण ने राम को सम्बोधित कर कहा— श्रीरघुनन्दन, राघव, सुनिये, अधिक सन्ताप करना छोड़ दीजिये । मैं संकेतों से जान गया हूँ, आपके छोटे भाई के प्राण गये नही हैं, ये जी जायेंगे । इनके हृदय में वायु का आना-जाना हो रहा है, इससे जान गया हूँ कि इनके प्राण है ॥ ६१८२ ॥ इनकी आँखें नीलोत्पल तथा नाक तिल-फूल जैसी है । इनका वदन-कमल भी नीलोत्पल जैसा है और चन्द्रमा जैसा दमक रहा है । इनकी जीभ सिकुड़ी नही है, चरण सुन्दर हो रहे हैं । आप चिन्ता तज दीजिये । आपके वर से इनका शरीर अवध्य है, इन्हें कौन मार सकता है ? ॥८३॥

गन्ध ये मार्द्दन नामे गिरि आछे देखिते आति बिड़ङ्ग।
तहिते जानिबा औषधि आछय सुशोभन गिरि शृङ्ग॥ ८४
रामर कनिष्ठ लक्ष्मण कुमार तोमार आमार हित।
ताहान जीवन तेवेसे होवय औषधि याइओ आनित॥
निशार भागत जीयाइबाक पारि दिन भैले प्राण याइ।
तोमार प्रसादे अकष्टे जीवन्त रामर कनिष्ठ भाइ॥ ८५
विशल्यकरणी यि ठान औषधि कहओं आमि तोमात।
रक्त चन्दनर बर्णलता तार हालधिया देखि पात॥
शोणितर बर्ण पुष्प देखि तार हरिताल बर्ण फल।
यावत रजनी प्रभात नोहय औषधि आनिते चल॥ ८६
राक्षसर माया बुजिया याइबाहा पातय जुनु बिघिनि।
हाहा हुहु एरे तहिते आछय गन्धर्ब्ब एकोटि तिनि॥
ताहाक तोमार जिनिते लागय बले पराक्रमे बुद्धि।
येन तेन मते उपाय करिया आनियो झाण्टे औषधि॥ ८७
सुषेण बीरक सम्बुधि मारुति हरिषे दिला उत्तर।
मोहोर प्राणक छारि दिबो यदि जीवन्त लखाइ कुमार॥
आपुन प्राणक छारि दिबे पारो आन कार्य्य कोन शक्य।
प्रभुर कार्य्यत थाकिया मोहोर किछुये नाहि अशक्य॥ ८८
राम सुग्रीवक जाम्बव बीरक आर बीर बिभीषण।
अङ्गद अपर मैन्द्य सिंहनाद आवर गन्धमार्द्दन॥
बीरबाहु नल सुबाहु नीलक केशरीक पनसक।
काहाको प्रणामि काहाको सावटि आकाशे दिला जोलक॥ ८९

पवन-नन्दन हनुमान तुम कहाँ हो, मेरा वचन मानो। दक्षिण दिशा में जो गिरिवर है, तुम उसकी ओर प्रस्थान करो। वहीं गंधमादन नाम का पर्वत है जो देखने में बड़ा सुहावना है। उसी के सुन्दर गिरिश्रृंग पर औषधि है, यह जान लो॥ ८४॥ रामचन्द्र के छोटे भाई कुमार लक्ष्मण हमारे-तुम्हारे सबके हितू हैं। तुम औषधि लाने हेतु जाओ तभी इनका जीवन बच सकता है। रात रहते ही इन्हें जिलाया जा सकता है, दिन होने पर प्राण चले जायेंगे। ऐसा करो कि तुम्हारे प्रसाद से राम के छोटे भाई अनायास जीवित हो जायें॥ ८५॥ विशल्यकरणी नाम की वह औषधि जैसी है, मैं तुमसे बताता हूँ। उसकी लता रक्त-चन्दन के रंग की, पत्ते पीले दिखाई देते है। उसके फूल रक्त वर्ण के और फल हरिताल रंग के दीखते हैं। रात बीतकर प्रभात हो जाये उसके पहले ही औषधि ले आने हेतु तुम चल पड़ो॥ ८६॥ तुम राक्षसों की माया समझकर जाना, वे संभवतः विघ्न डाल सकते है। हाहा-हुहु आदि तीन करोड़ गंधर्व वही रहते हैं, जिन्हें तुम्हें अपने बल, पराक्रम और बुद्धि से जीतना है। जिस प्रकार से भी हो उपाय कर शीघ्र औषधि ले आओ॥ ८७॥ वीर सुषेण को सम्बोधित कर मारुति ने हर्ष से उत्तर दिया, यदि कुमार लक्ष्मण जीवित हो जायें तो मैं अपने प्राण भी छोड़ दूँगा, और अन्य काम करने की क्या बात है, अपने प्राण भी मैं छोड़ सकता हूँ। प्रभु के कार्य में रहकर मेरे लिए अशक्य कुछ भी नही है॥ ८८॥ रामचन्द्र, सुग्रीव, वीर जाम्बवन्त, वीर विभीषण, तथा अन्य दूसरे वीरों, अंगद, मैन्द्य, सिंहनाद, गन्धमार्दन, वीरबाहु, नल, सुबाहु, नील, केशरी, पनस आदि किसी को प्रणाम कर, किसी को बाँहों में आलिंगन कर हनुमान आकाश में कूद पड़े॥ ८९॥ उनका शरीर मेरु जैसा विशाल था;

मेरुर समान थूल कलेवर आकाश लङ्घिया यान्त ।
भूमित थाकिया रावण नृपति मारुतिक देखिलन्त ॥
कालनेमी नामे राक्षसक राजा माति आनि सन्निहित ।
इसव दुर्गति कालत मोहोक तुमि करायोक हित ॥ ६१९०
हेरा देख तइ आकाश छानिया हनुमन्त बीर याय ।
लक्ष्मण जीवार औषधि आनिबे सुषेणे दिला उपाय ॥
गन्धमाईनक लागि चलि याइ औषधिक आनिबाक ।
सकले लङ्कार सवलोके भय अद्भुत देखि ताक ॥ ६१९१
विशल्यकरणी औषधक पाइले जीवन्त बीर लक्ष्मण ।
बर आयान्तर मिलिबेक तेबे जिनिया हारिलो रण ॥
इसव दुर्गति कालत मोहोर सत्वरे करह बाक ।
गन्धमाईनर कोले ऋषि येबे आश्रमक पाति थाक ॥ ९२
उपाय करिया बायुर पुत्र कआपुनार थाने निया ।
सादर करिया ताक सन्तोषिया फल मूल सबे दिया ॥
विनय प्रकारे सरोवर आछे ताहार निबि कोलके ।
जलत दुर्व्वार ग्राही एक आछे निबेक एके जोलके ॥ ९३
मारुति बीरक ग्राही निल येबे औषधि तेबे नपाइब ।
लक्ष्मण निजीव तार शोके तेबे राघबे प्राण छारिब ॥
सुग्रीव नृपति प्रमुख्ये मरिया सबे याइब यमालय ।
तोहोर प्रसादे विना युद्धे तेबे अप्रयासे हैबो जय ॥ ९४
एतेक आदेश शुनिलेक येबे दशमुण्ड रावणर ।
शीघ्रे ये गमने चलिला तेखने कालनेमी निशाचर ॥
पर्व्वत उपरे आश्रम पातिला ऋषिर बेशे कपट ।
गन्ध पुष्प दीप नैवेद्य पातिया आम ठालि दिला घट ॥ ९५

वे आकाश को लाँघकर चल पड़े। भूमि पर रहकर राजा रावण ने मारुति को देखा। तब राक्षसराज ने कालनेमी नाम के राक्षस को अपने पास बुलाकर कहा— मेरे इस संकट-काल मे तुम मेरा हित करो ॥ ६१९० ॥ वह देखो, आकाश को व्याप्त कर वीर हनुमान चला जा रहा है। सुषेण ने उसे लक्ष्मण को जिलाने की औषधि लाने हेतु उपाय बता दिया है। वह औषधि लाने हेतु गन्धमादन पर्वत जा रहा है, समूची लंका के सब लोग उसका अद्भुत रूप देखकर भयभीत हो रहे हैं ॥ ६१९१ ॥ विशल्यकरणी औषधि मिल जाये तो वीर लक्ष्मण जी उठेंगे और तब बड़ी दुर्गति होगी, हम युद्ध में जीतकर भी मानो हार जायेंगे। इस दुर्गति के अवसर पर तुम शीघ्र मेरा वचन मान लो और गन्धमादन पर्वत के बीच ऋषि-वेश में आश्रम बनाकर रहो ॥ ९२ ॥ उपाय कर तुम हनुमान को अपने आश्रम में ले जाना और उसे आदरपूर्वक संतुष्ट कर फल-मूल सब कुछ देना। नाना प्रकार विनय कर वहाँ जो सरोवर है, उसके बीच उसे ले जाना, उस सरोवर के जल में एक प्रचंड ग्राही रहती है वह एक ही छलांग में हनुमान को पकड़ ले जायेगी ॥ ९३ ॥ जब वीर मारुति को ग्राही ले जायेगी तो उन्हें औषधि मिल नहीं पायेगी, लक्ष्मण नहीं जीयेगा, उसके शोक मे तब राघव भी प्राण त्याग देंगे। राजा सुग्रीव आदि सभी मरकर यमलोक पहुँच जायेंगे। इस प्रकार तुम्हारे प्रसाद से बिना युद्ध के, बिना प्रयास के विजयी हो जाऊँगा ॥ ९४ ॥ दशानन रावण का यह आदेश सुनते ही निशाचर कालनेमी शीघ्र-गति से उसी क्षण चल पड़ा और ऋषि का कपटवेश धारणकर पर्वत पर आश्रम बना

हनुमन्ते येवे पर्ब्बतक पाइल उठिया भेण्टिला आग।
कोथा हन्ते आसि अतिथि मिलिला आमार बरहि भाग॥
आमार आश्रम साफल हैबेक पबित्र करियो ठांइ।
कतेक जनम भाग्ये हेन सब अपूर्ब्ब अतिथि पाइ॥ ९६

कोथा हन्ते आसि आजिसि मिलिला याइबाहा कमन थान।
आमार आश्रमे खानिक जिरायो किछु करो सनमान॥
बर हुताशन भैलाहा देखओं शरीरर बहे घर्म्म।
हेन अतिथिक पूजा सतकारे आमार बाढ़िबे धर्म्म॥ ९७

मारुति बोलन्त साक्षात आपुनि येन विष्णु अवतार।
बिलम्ब करिते मोर नुयुवाइ बरहि कार्य्य आमार॥
श्रवणे शुनिछा राजा दशरथ सूर्य्य बंशे बुलि याक।
ताहान तनय रामे पठाइलन्त कार्य्यक लक्षे आमार॥ ९८

रामक बनक पठाइला नृपति कैकेयी दारुण बाके।
बनत आछन्ते रावणे हरिया आनिला देवी सीताके॥
बालिक मारिया सुग्रीवक लैया बान्धिला सेतु सागरे।
रावण राजार भातृ पुत्र पात्र मारिलन्त रघुबरे॥ ९९

लक्ष्मण बीरक रावण नृपति शकति मारि जण्टाइल।
विशल्यकरणी औषध निबाक राघवे मोक पठाइल॥
तुमि समे आमि आलाप करिबे कत भाग्यबशे पाय।
आजि नगैलात बर आथान्तर बिलम्बक नुयुवाय॥ ६२००

लिया। वहाँ उसने गंध, पुष्प, दीप, नैवेद्य आदि सजाकर आम की डालियाँ और घट रख दिये॥ ९५॥ जब हनुमान पर्वत के समीप पहुँचे, वह उनके आगे मार्ग रोककर खड़ा हो गया। बोला, आप अतिथि कहाँ से आ मिले हैं, हमारा बड़ा ही भाग्य है। हमारा आश्रम सफल बनेगा, आप आकर इस स्थान को पवित्र कीजिये। कितने जन्मों बाद बड़े भाग्य से ही ऐसे अपूर्व अतिथि मिला करते हैं॥ ९६॥ आप आज कहाँ से आ मिले हैं. किस स्थान में जायेंगे? हमारे आश्रम में कुछ देर विश्राम कीजिये, आपका कुछ सम्मान करूँ। आप तो बड़ी अग्नि जैसे बन गये हैं, देखता हूँ, शरीर से पसीना बह रहा है, ऐसे अतिथि का पूजा-सत्कार करने पर हमारा धर्म बढ़ेगा॥ ९७॥ मारुति ने कहा—आप तो साक्षात् विष्णु-अवतार जैसे है। पर मुझे विलम्ब करना उचित नही होगा, हमारा कार्य बड़ा है। आपने कानों से तो सुना ही होगा, सूर्यवंश में जिन्हें राजा दशरथ कहते हैं, उनके पुत्र रामचन्द्र ने हमें भेजा है, उन्ही का कार्य हमारा लक्ष्य है॥ ९८॥ कैकेयी के दारुण वचन के कारण राजा ने रामचन्द्र को वन में भेजा। उनके वन में रहते समय रावण देवी सीता को हर लाया है। रामचन्द्र ने वाली को मारकर सुग्रीव को साथ ले सागर पर पुल बाँधा और राजा रावण के भाइयों, पुत्रों, सामन्तों को मार डाला है॥ ९९॥ राजा रावण ने वीर लक्ष्मण को शक्ति मारकर गिरा दिया है। उस हेतु विशल्यकरणी औषधि ले जाने के लिए राघव ने मुझे भेजा है। आपको कितने भाग्य से पाकर बातचीत कर पाया हूँ। आज यदि मैं वहाँ न पहुँच सकूँ तो बड़ी विपत्ति है। इस कारण मुझे विलम्ब करना उचित नहीं॥ ६२००॥

गन्धकाली अप्सरार मुक्तिलाभ

छवि

रामदूत हुया तुमि औषध आनिबे याहा आश्रमक पाइला बर भागे ।
आतिशये बहुमाने तोमाक आमार आजि मालमते सादरिबे लागे ॥
तोमार प्रसादे तेवे आजिसि जानिवा मोर नोहिकय धर्म्मत विघात ।
कतेक जन्मर भागे आपुनि आसिया मोर आश्रमत मिलिला साक्षात ॥ ६२०१
खानिक बिलम्ब ऐत नुहिबेक बुलि सिटो मारुति वीरक पाचे निया ।
सरोवर कोल छापि ऋषिर वेशक धरि सादरिला फल-मूल दिया ॥
चाप चुप करि तंत कालनेमी निशाचर हनुत आद्यन्त कथा कहि ।
एकहि जोलक दिया मारुति वीरक धरि जलक निलेक छायाग्राही ॥ २
सरोवर माजे निया मुखत भराया ताइ भेजाइल हनुर गावेदान्त ।
डाङ्गर शरीर करि मारुति ग्राहीक धरि जलर काखर तुलिलन्त ॥
पर्व्वत उपरे तुलि नखे दान्त विदारिया सकल मान्यक सारिलन्त ।
जगत प्रजार सवे आपचु नेवछनि दिया बिगुतिया ताइक मारिलन्त ॥ ३
आकाशत थाकि ताइ सम्बुधिया बुलिलन्त हनुमन्त तुमि पुण्यशाली ।
तोमार प्रसादे चण्ड ऋषिशाप एराइलोहो अपेश्वरा मइ गन्धकाली ॥
पूर्व्वर कालत मइ कुबेर प्रभुर ठाइ याइते आछो दिब्य रथे चढ़ि ।
प्रमादत थाकि वर उपद्रवे लागि गेला प्रचण्ड ऋषिर ठाइ बारी ॥ ४
घोरशाप दिया मोक बुलिला पापिष्ठी तइ दक्षिण दिशक लागि चल ।
गन्धमार्द्दनर कोले दिव्य सरोवर आछे देखिबि गै सुनिर्म्मल जल ॥

गन्धकाली अप्सरा का मुक्तिलाभ

कालनेमी बोला— तुम राम के दूत बनकर औषधि लाने को जा रहे हो, बड़े भाग्य से आश्रम में आये हो। आज तो तुम्हें अत्यन्त मान-सम्मान कर उत्तम रूप से स्वागत करना हमारे लिए उचित है। तुम्हारे प्रसाद से तब आज समझ लो कि धर्म में कोई व्याघात नहीं होगा। कितने जन्मों के भाग्य से स्वयं तुम साक्षात् आकर आश्रम में मिले हो ॥ ६२०१ ॥ यहाँ आने पर कुछ विलम्ब नहीं होगा, कहकर वह वीर हनुमान को ले चला। ऋषि का वेश धरे सरोवर के समीप पहुँचकर फल-मूल से उनका स्वागत किया। हनुमान के पास रह बड़े घुल-मिलकर कालनेमी निशाचर उनसे बातचीत कर रहा था, तभी एक ही छलांग लगाकर छायाग्राही हनुमान को पकड़कर जल में ले गयी ॥ २ ॥ सरोवर के बीच ले जाकर हनुमान को मुँह से पकड़ उनके शरीर में उसने दाँत गड़ा दिये। तब हनुमान ने अपना शरीर बढ़ा लिया और ग्राही को पकड़ कर पानी के किनारे ले आये। उसे पर्वत पर उठा ले गये और नाखूनों से दाँतों को फाड़-तोड़कर उसका सारा घमंड नष्ट कर दिया। जगत में (पापी) प्रजाओं को मिलनेवाले वीभत्स (दुर्गति) देकर उसे मार डाला ॥ ३ ॥ आकाश में स्थित रहकर उसने हनुमान से कहा— हनुमान, तुम पुण्यशाली हो। तुम्हारे प्रसाद से ऋषि के भयंकर शाप से मैं मुक्त हुई, मैं अप्सरा गन्धकाली हूँ। पूर्वकाल में मैं दिव्य रथ पर चढ़कर प्रभु कुबेर के स्थान में जा रही थी, मैं बड़े आनन्द मे भरकर प्रचंड ऋषि के आश्रम और बाग में उपद्रव करने लगी ॥ ४ ॥ तब मुझे घोर शाप देकर ऋषि ने कहा— पापिनी, तू दक्षिण दिशा को चली जा। गन्धमादन पर्वत के बीच दिव्य सरोवर है, वहाँ जाकर

सेहि जलमाजे पशि ग्राही वेश हुया थाक जलजन्तु भुञ्जिबा अपार।
रामकार्य्य साधिबाक हनुमन्त याइबे तथा तैसानिसे तोहोर उद्धार ॥ ५
सेहि बोल सम्पजिल तोमार हातत परि गन्धकाली मइ अपेश्वरी।
रामकार्य्य साधि योक कुवेरर ठावे याओं आपनार निजरूप धरि ॥
हनुमन्ते बोले तइ शुनियोक अपेश्वरी आपुनार सुखे चलि याहा।
आमार बृत्तान्त कथा कुबेर देवर ठावे तुमि आक सबे कहिबाहा ॥ ६
नमो नमो नारायण आदि देव सनातन यार नामे जगत उद्धार।
हेन राम पावे सेवि रचिला कन्दलि छबि श्रीरामर चरित्र पयार ॥
श्रवणे पापर क्षय मिले महा महोदय देइ धर्म्म अर्थ मोक्ष काम।
जानि सभासद लोक सबारो मुकुति हौक बोला निरन्तरे राम राम ॥ ६२०७

कालनेमी राक्षस आरु तिनि कोटि गन्धर्ब्बर बध; गन्धमादन आनयन आरु लक्ष्मणर जीवन प्राप्ति

पद

सुखे चलि याहा गन्धकाली अपेश्वरी * मोर किछु पुण्य भैला तोमाक उद्धारि
मारुति बचने कौतुक अन्तर्गते * कुबेरर ठावे गैला अन्तरीक्ष पथे ६२०८
हनुमन्ते ऋषिठावे फल मूल खाइल * रूप देखि ताहार बचन पुरुजाइल
बोलन्त नोहस ऋषि राक्षस पापिष्ठ * रावणे पठाइला तोक जानिलोहो निष्ठ ९
बचनेक शुनि बीर वायुर पुत्रर * निजरूप देखि कालनेमी निशाचर

देखेगी, उसका जल बहुत ही निर्मल है। तू उसी जल में प्रविष्ट होकर ग्राही का वेश धरे रह और असंख्य जल-जन्तुओं को खाती रह। रामचन्द्र के कार्य-साधन हेतु हनुमान वहाँ जायेंगे, उन्ही से तेरा उद्धार होगा ॥ ५ ॥ तुम्हारे हाथ से मारे जाकर वही वचन पूरा हुआ, मैं अप्सरा गन्धकाली अपना स्वरूप धारणकर कुबेर के स्थान में जा रही हूँ। तुम रामचन्द्र का कार्य-साधन करो। हनुमान ने कहा— अप्सरा, सुनो, तुम सुखपूर्वक चली जाओ, हमारी वृत्तान्त-कथा देव कुबेर से पुनः सब कुछ कहना ॥ ६ ॥ आदि देव सनातन, जिसके नाम से संसार का उद्धार होता है उन नारायण को बार-बार नमस्कार है। ऐसे रामचन्द्र की चरण-सेवा कर माधव कन्दलि श्रीराम के चरित्र को पयार-छवि छन्दों में विरचित किया जिसके श्रवण से पापों का नाश होता है, महान उन्नति प्राप्त होती है। यह धर्म, अर्थ, मोक्ष और काम प्रदान करता है। ऐसा समझकर हे सभासदो, निरन्तर राम, राम कहो जिससे सबकी मुक्ति हो जाये ॥ ६२०७ ॥

कालनेमी राक्षस और तीन करोड़ गन्धर्वो का वध, गन्धमादन लाना और लक्ष्मण को जीवन-प्राप्ति

अप्सरा गन्धकाली तुम आनन्द से चली जाओ, तुम्हारा उद्धार कर मेरा कुछ पुण्य हुआ है। हनुमान के वचनों से अन्तर में हर्षित हो, अप्सरा अन्तरिक्ष मार्ग से कुबेर के समीप चली गयी ॥ ६२०८ ॥ हनुमान ने ऋषि के समीप आकर फल-मूल खाया, उसका रूप देखकर हनुमान ने यह वचन कहा— तू ऋषि नही, पापी राक्षस है। मैं सत्य समझ गया, रावण ने तुझे भेजा है ॥ ९ ॥ वीर पवनसुत का वचन सुनकर कालनेमी निशाचर अपने रूप में प्रकट हो गया। उसका शरीर भयंकर पर्वताकार था, उसने

पर्व्वत आकार भयङ्कर कलेवर * बोले तोक मारिते पठाइले लङ्केश्वर ६२१०
माया युज करि तोक मारिया पठाइबो * मांस सब भुञ्जिया तृपिति वर पाइबो
कोन बस्तु एकल वानर ठनगण * प्रभु कार्य्य करि पेयो यमर करण ६२११
मायावन्त राक्षस अधम तइक्रूर * मारुतिर हातत भावना हैब चूर
बात कर्म्मे उरुवाइबो राक्षस तइ कोन * मइ माले थाकन्ते गै देखिबि रावण १२
एहि बुलि दुइ वीरे धरिला कोलारे * पृथिवीत परि येन पर्व्वत बागरे
हिये हिये आस्फाले वाजय ठात ठात * सागर माजत येन परय निर्घात १३
चवरर चोटे भिण्डाकार भैला गाल . वाहु वाहु वान्धनि वान्धिला येन माल
मुष्ठिर प्रहारयेन वज्रर निपात * लाथिर प्रहारे येन परय निर्घात १४
कोलात एरिया दुयो वीर अन्तरिला * दुयो वीरे दुहाङ्कु हानिला वृक्ष शिला
उपारि उपारि दुयो असंख्यात हाने * तरु शिला चूर्ण भैला कत दूर माने १५
कालनेमि कोल चापि वैसाइलेक मुठि * हनुमन्त मूर्च्छा भैला मर्म्मस्थाने फुटि
तेखने मारुति वीरे चेतनक पाइल * माज हृदयत तार किलेक बैसाइल १६
महा छोट पाइ काल कम्पि परि गैल * पराण आसिला पाचे सन्धुक्षण भैल
महाबेगे याइ सिटो मारिलेक लाथि * हनुमन्ते ताहाक मारिला घोराकाति १७
दुयो दुइहान्तक रणे धावे भिरि भिरि * पर्व्वतत प्रतिध्वनि बाजे गिरि गिरि
वाम हाते मारुति गलत धरि टाने * कालनेमि निशाचर मरिल पराणे १८
उपरत फुराइ आस्फालिलन्त शिलात * अस्थि चर्म्म चूर भैला प्राण भैलाहत
देवगणे करिलन्त पुष्प वरिषण * हनुमन्त वीर भैला आनन्दित मन १९

कहा— तुझे मारने के लिए लकेश्वर रावण ने (मुझे) भेजा है ।। ६२१० ।। माया-युद्ध कर तुझे मार डालूंगा और तेरा मांस खाकर बड़ी तृप्ति मिलेगी । हृष्ट-पुष्ट अकेला वानर, तू कौन चीज है ? प्रभु का कार्य कर तुझे यमलोक भेज दूंगा ।। ६२११ ।। तू क्रूर मायावी राक्षस है, तूने जो सोचा है वह मारुति के हाथ चूर-चूर हो जायेगा । अपने वात-कर्म पाद से तुझे उड़ा दूंगा, तू कौन राक्षस है ? मुझे भला रहते ही तू जाकर रावण को देखेगा ।। १२ ।। यह कहकर दोनो वीरों ने एक दूसरे को बाँहों में भर लिया, वे ऐसे गिरे मानो पर्वत ढहकर गिर रहे हैं । एक दूसरे की छाती पर प्रहार करने लगे जिससे 'ठात्, ठात्' शब्द होने लगा । मानो सागर में वज्रपात हो रहा हो ।। १३ ।। थप्पड़ों की चोटों से दोनो के गाल फूल उठे । एक दूसरे की बाँहें ऐसे गूंथ गयी मानो मालाएँ गूँथी हों (या दो मल्ल हों,) घूंसे का प्रहार ऐसा था मानो वज्रपात हो रहा हो । लातों के प्रहार से जैसे बिजली गिरती हो ।। १४ ।। दोनो एक दूसरे के बाहु-बन्धन से अलग हो गये और दोनो ने एक दूसरे को वृक्ष-शिलाओं से प्रहार किया । दोनो अनगिनत वृक्षों को उखाड़-उखाड़कर प्रहार करने लगे, कितनी दूरी तक के वृक्ष-शिलाएं चूर-चूर हो गयी ।। १५ ।। कालनेमी ने हनुमान के पास आकर मुक्का मारा । मर्मस्थान फूट जाने के कारण हनुमान मूर्छित हो गये । तुरन्त वीर मारुति की चेतना लौट आयी और उन्होंने कालनेमी की छाती पर घूंसा मारा ।। १६ ।। भयंकर चोट खाकर कालनेमी काँपकर गिर पड़ा, परन्तु बाद को प्राण लौट आये, वह सचेत हो गया । उसने जाकर महावेग से लात मारी, हनुमान ने उसे केहुने से प्रहार किया ।। १७ ।। - दोनो एक दूसरे से भिड़-भिड़कर युद्ध के लिए दौड़ते थे, जिससे उसकी 'गिरि, गिरि' प्रतिध्वनि पर्वत पर गूंज उठती थी । मारुति ने बाये हाथ से उसका गला पकड़कर खींचा जिससे निशाचर कालनेमी के प्राण निकल गये ।। १८ ।। हनुमान ने उसे ऊपर घुमाकर शिला पर पटक दिया । अस्थि-चर्म चूर हो जाने के कारण उसके प्राण चले गये । देवताओं

राक्षसक मारिया मारुति बीरबरे * डेव दिया चड़िलन्त पर्ब्बत शिखरे
औषधि खोजन्त उपदेश करि मन * तिनि कोटि गन्धर्ब्बक भैला दरिशन ६२२०
गन्धर्ब्बे बोलय तइ कहिर बानर * कि कार्य्ये आसिला गन्धमाद्र्दन शिखर
कोने बा पठाइले गन्धमाद्र्दन गिरिक * बानरर बेशे तुमि आसि भैला किक ६२२१
गन्धर्ब्बक हनुमन्ते बुलिला बचन * दशरथ सुत राम आसि भैला बन
ताहान धरिणी हरि आनिले रावणे * सुग्रीव सहिते राम भैला सखि बने २२
बालिक मारिया सुग्रीवक दिला राज * सागरक तरिया आसिला लङ्कामाज
शेष राक्षसर बल क्षय भैला रणे * पाचे लक्ष्मणक शक्ति हानिला रावणे २३
राघव सुग्रीव सुषेणर सुनि बुद्धि * आमाक निबाक ऐक पठाइला औषधि
पृथिवी भितरे राम नृपति आमार * इयो सब देशत ताहार अधिकार २४
औषधक चिनायो आमार बर भाग * तोमार थाकोक रघुबंशत सलाग
आमि सबे कहिबोहो सब उपकार * येन तोमासाक दया सम्पजे राजार २५
हेन शुनि खङ्गिला गन्धर्ब्ब तिनि कोटि * कंत आसि बानर लगाइलेक साटि मुटि
आमार नृपति हाहा हुहु ये गन्धर्ब्ब * राम तोर कोन बस्तु तात हेन गर्ब्ब २६
आमार पर्ब्बते आसि तोर धसमसि * बिपाङ्गे मरिलि गन्धमार्द्दनत पशि
आजि रामे करन्तोक तोर प्रतिकार * चर्तुर्भिति बेढ़िया बोलय मार मार २७
मारिबाक लागि सबे गन्धर्ब्ब किटाइल * हनुमन्ते दान्त ये खेकत करि धाइल
डेव दिया सबारो माजत गैया परि * आशेष मारिला लाथि भुकु लाञ्ज बारि २८
धरम सन्नाहा बीर एकेश्वर गुटि * हेला करि मारिला गन्धर्ब्ब तिनि कोटि

ने फूल बरसाये। वीर हनुमान मन में आनन्दित हुए ।। १९ ।। राक्षस को मारकर वीरवर मारुति कूदकर पर्वत-शिखर पर चढ़ गये। सुषेण का उपदेश स्मरण कर वे औषधि खोजने लगे। तभी तीन करोड़ गन्धर्वो को उन्होने देखा ।। ६२२० ।। गन्धर्वो ने पूछा— तू कहाँ का बानर है ? इस गन्धमादन के शिखर पर किसलिए आया है ? तुझे गन्धमादन पर्वत पर किसने भेजा है ? बानरवेश में तू यहाँ किस कारण आ पहुँचा है ? ।। ६२२१ ।। हनुमान ने गन्धर्वो से कहा— दशरथ के पुत्र राम वन में आये हुए हैं। उनकी पत्नी को रावण हर लाया, वन में राम ने सुग्रीव के साथ मित्रता की ।। २२ ।। उन्होंने बाली को मारकर सुग्रीव को राजा बनाया और सागर पारकर लंका में आये, राक्षसों की शेष सेना युद्ध में मारी गयी तब रावण ने लक्ष्मण पर शक्ति का प्रहार किया ।। २३ ।। रामचन्द्र और सुग्रीव ने सुषेण का परामर्श सुनकर हमें यहाँ की औषधि ले जाने हेतु भेजा है। इस पृथ्वी पर राम हमारे राजा है, इन सारे देशों पर उन्हीं का अधिकार है ।। २४ ।। हमारे बड़े भाग्य है (कि आप मिले) हमें औषधि की पहचान करा दीजिये। रघुवश पर आपकी कृतज्ञता रह जाये। हम सभी आपके उपकार का वर्णन किया करेंगे जिससे राजा रामचन्द्र के मन मे (आपके प्रति) कृपा उपजे ।। २५ ।। हनुमान की यह बात सुनकर तीन करोड़ गन्धर्व क्रोधित हो उठे। यह कहाँ का बानर आकर यहाँ इधर-उधर गड़बड़ी कर रहा है ? हमारे तो राजा हैं हाहा-हुहु गन्धर्व, तेरे राम कौन सी चीज है, जिससे इतना गर्व करता है ? ।। २६ ।। हमारे पर्वत पर आकर तेरा इतना उपद्रव ! इस गन्धमादन पर्वत पर प्रवेश कर तू निरुपाय हो मारा गया। आज राम तुझे बचावें तो भला। कहकर वे गन्धर्व चारों ओर से उन्हें घेरकर 'मार, मार' करने लगे ।। २७ ।। सभी गन्धर्व हनुमान को मारने हेतु दौड़ पड़े। हनुमान भी अपने दाँत पीसते हुए दौड़े। वे कूदकर उन सबके बीच जा पड़े और लातों, घूंसों, मुक्कों से अनगिनत गन्धर्वो को मार डाला ।। २८ ।। धर्म ही जिनका कवच

गन्धर्व्वक मारि वीर कपि हनुमन्ते * प्रवन्धे फुरन्त पाचे औषध खोजन्ते २९
परम औषध सिटो भैला अन्तर्धान * विचारिया अनेक फुरन्त हनुमान
निरीक्षि निरीक्षि वीरे चाहिला सकल * औषधि नपाया मने करन्त विकल ६२३०
आलोचन्त इदानिक करो कोन बुद्धि * औषध पाइबार कथा कात करो सुधि
इठावर गन्धर्व्वक मारिलो सकल * औषधर लक्षण नेदेखो फुल फल ६२३१
एकोमते औषधक खुजिया नपाइल * विलम्वक नुयुवाइ मने गुणि चाइल
उपदेश सुमरिया सुषेण वैद्यर * दक्षिण शिखर एहि गन्धमाद्दनर ३२
विस्तर विलम्व हैवो औषधि खोजन्ते * एहि वुलि भूमित नामिला हनुमन्ते
दुइ हात मेलि तार दुइ पाश पाइल * दोङ्गा दिया गिरिर शिखर आलगाइल ३३
प्रस्थे पाञ्च प्रहरर पथ सिटो पावे * दश योजनर पथ जुरिल उधावे
पाञ्चदश योजनक दीघले जुरिल * हनुमन्ते धरि मेदिनीर उपारिल ३४
हेन गिरि शिखरक हेलारूपे धरि * वायुसुत लरिला आकाशे डेव करि
वृक्ष समे कतो खण्डे खसिया परय * विहङ्गम पक्षी सम आकाशे उराय ३५
सर्प सव सुशोभन नाना अलङ्कारे * पृथिवीत परे आसि पर्व्वत आकारे
सिंह पशुगण सवे आकाशे उरय * कतो कतो डेव दिया परिया मरय ३६
गिरिवर कान्दय नयने जल ववे * हेनसे विपत्ति कैला पवनर पोवे
गेरुधारा वेढ़ि निकलिला पर्व्वतर * धाराये रुधिर येन वहय गावर ३७
विद्याधर गन्धर्व्व देवतागणे मिलि * कौतूहले विस्मये हासन्त खलखलि

था ऐसे वीर हनुमान ने अकेले होकर भी अनायास तीन कोटि गन्धर्वों को मार डाला। वीर कपि हनुमान ने गन्धर्वो को मारकर औषधि खोजने में बड़े आग्रह से घूमने लगे ।। २९ ।। वह परम औषधि अन्तर्हित हो गयी, हनुमान उसे खोजते घूमने लगे। वीर ने सब ओर निरीक्षण करते हुए देखा परन्तु औषधि न पाकर मन में व्याकुल हो उठे ।। ६२३० ।। वे विचार करने लगे, अब कौन सी युक्ति करें, औषधि मिलने के बारे में किससे पूछें ? इस स्थान के सभी गन्धर्वों को मैंने मार डाला, औषधि का कोई लक्षण या फूल-फल दिखाई नही देता ।। ६२३१ ।। किसी भी प्रकार से खोजकर जब हनुमान औषधि न पा सके तो उन्होंने मन में विचार किया कि अब विलम्ब करना उचित नहीं है। सुषेण वैद्य का उपदेश उन्होंने स्मरण किया कि यही गन्धमादन पर्वत का दक्षिण शिखर है ।। ३२ ।। औषधि खोजने में वहुत विलम्व हो जायेगा। यह सोचकर हनुमान भूमि पर उतर आये। अपने दोनो हाथ फैला कर शिखर के दोनो किनारों को पा लिया और धक्का दे, हिलाकर पर्वत-शिखर को अलग कर लिया ।। ३३ ।। वह शिखर चौड़ाई में पाँच प्रहर के मार्ग तक फैला था, ऊँचाई में दस योजन के मार्ग तक व्याप्त था, लम्वाई में वह पन्द्रह योजन को समेटे था, उसे हनुमान ने पकड़कर धरती पर से उखाड़ लिया ।। ३४ ।। ऐसे गिरिशिखर को अनायास धारण किये हुए पवनसुत आकाश में कूदकर वेग से चल पड़े। उस पर के वृक्ष कितने ही खंडों में टूट गिरते थे, पक्षियो जैसे आकाश मे उड़ते थे ।। ३५ ।। उस पर रहनेवाले अनेक आभूषणों से शोभित सर्प पृथ्वी पर पर्वताकार आ गिरते थे। सिंह आदि सारे पशु आकाश में उड़ते थे, उनमें से कितने ही कूदकर गिरकर मर जाते थे ।। ३६ ।। वह महान पर्वत रोने लगा, उसकी आँखों से जल वहने लगा— कि पवनसुत ने मेरी ऐसी विपत्ति कर दी। पर्वत के चारों ओर घेरकर गेरू की धारा निकलने लगी, वे धाराएँ शरीर के रुधिर की भाँति वहने लगी ।। ३७ ।। विद्याधर गन्धर्व तथा देवता मिलकर कौतूहल-विस्मय से खिलखिलाकर हँसने लगे। हनुमान, साधु-साधु, तुम्हारा

साधु हनुमन्त हुयो आरोग्य शरीर * तिनियो लोकत नाहि तयुसम बीर ३८
किनो बीर अभङ्ग पुरुष पुण्यशाली * शापत मुकुत अपेश्वरा गन्धकाली
कालनेमी निशाचर बिदित जगते * ताहाके मारिला पशु मारिबार मते ३९
तिनि कोटि गन्धर्व्व लीलाये संहरिल * एतमान पर्व्वतक तुलिया धरिल
अन्तरीक्ष पथे शीघ्र बेगे याय चलि * इहार समान बीर नाहि एको बली ६२४०
देवर प्रशंसा हेन शुनिया महिमा * अनन्तरे पाइला लङ्का नगरीर सीमा
मारुति आसय देखि गिरिशृङ्ग धरि * हुलस्थूल लागि गैला समस्त नगरी ६२४१
पूर्व्वकाले हनुमन्त लङ्का पुरि गैला * पर्व्वतर शृङ्ग धरि सेहि आसि भैला
इबार इहार हाते केहो निजीवय * एहि बुलि प्रजासबे मुण्ड सुमावय ४२
लङ्का नगरीत भय शङ्का लगाइलन्त * अनन्तरे पाइला आपनार प्रजा खण्ड
भालुक बानर बले आकाशे देखन्त * पर्व्वत धरिया हाते आसे हनुमन्त ४३
सुग्रीव कुमुद जाम्बवन्त आदि करि * आनन्दे चाहिला सबे एक दृष्टि करि
सन्निहित थाने आनि पर्व्वतक थैल * रामक नमिया पाचे बुलिबाक लैल ४४
प्रभु राम शुनियो सुग्रीव बिभीषण * सुषेण अङ्गद आदि शुन कपिगण
आमार विलम्ब देखि न पारिबा गालि * माया ऋषि चलिला रावण वाक्य पालि ४५
कालनेमी निशाचर ऋषि बेश धरि * सरोवर कोले मोक निलेक सादरि
ऋषि शापे अपेश्वरा ग्राही हैया आछे * थाम्प दिया धरि मोक लैया याइ पाचे ४६
ताक ताते तुलिया मारिलो नखे छिरि * शापत मुकुत भैला काली अपेश्वरी
कालनेमी राक्षस आछिल ऋषि बेशे * ताहाक मारिलो पाचे समर विशेषे ४७

शरीर आरोग्य रहे। तुम्हारे जैसा वीर तीनो लोकों में नहीं है।। ३८।। वे आपस में कहने लगे हनुमान कितने अपराजेय, पुण्यशाली वीर पुरुष है, उन्होंने गन्धकाली अप्सरा को शाप से मुक्त कर दिया। निशाचर कालनेमी जगत में प्रसिद्ध था, उसे पशुओं जैसे मार डाला।। ३९।। इन्होंने तीन कोटि गन्धर्वों को लीलापूर्वक मार डाला। ऐसे विशाल पर्वत को ऊपर उठा लिया और आकाश-मार्ग से शीघ्रता से चले जा रहे हैं। इनके जैसा वीर-बली कोई भी नहीं है।। ६२४०।। हनुमान देवताओं के मुख से ऐसी प्रशंसा और महिमा सुनते हुए अन्त में लंका नगरी की सीमा पर पहुँचे। पर्वत-शिखर को लिये हुए हनुमान को आते देख सारी नगरी में उथल-पुथल मच गयी।। ६२४१।। पहले हनुमान लंका को जला गये थे, अब वे ही पर्वत-शिखर लेकर आ पहुँचे है। इस बार इसके हाथ कोई जीवित नहीं रहेगा। —यह कहकर सभी लोग अपने सिर छिपाने लगे।। ६२४२।। लंका नगरी में भय और शंका व्याप्त कर हनुमान अन्त में अपने लोगों के समीप पहुँचे। भालू-बानर-सेना आकाश की ओर देखने लगी, हनुमान पर्वत-खण्ड लिये आ रहे हैं।। ४३।। सुग्रीव, कुमुद, जाम्बवन्त आदि सहित सब एक दृष्टि से उन्हें देखने लगे। हनुमान ने निकट स्थान में लाकर पर्वत को रखा और राम को नमनकर कहने लगे— ।। ४४।। प्रभु रामचन्द्र सुग्रीव, विभीषण, सुषेण, अंगद आदि कपिगण सुनें—हमारा विलम्ब देखकर हमें गालियाँ न दें! रावण का कथन मानकर माया-ऋषि वहाँ पहुँचा था।। ४५।। निशाचर कालनेमी ऋपिवेश धारणकर मुझे स्वागत कर सरोवर के बीच ले गया था। वहाँ ऋषि के अभिशाप से एक अप्सरा ग्राही बनकर रहती थी, उसने लपककर मुझे पकड़ लिया और ले जाने लगी।। ४६।। मैंने वहाँ उसे पकड़कर उठा लिया और नाखूनों से फाड़कर मार डाला। वह गन्धकाली अप्सरा शाप से मुक्त हो गयी। राक्षस कालनेमी ऋषिवेश धरकर वहाँ था, उसे प्रचन्ड युद्ध में मार डाला।। ४७।। निशाचर कालनेमी यमलोक

कालनेमी निशाचर गैला यमघरे * तरासे उठिला नाद पर्ब्बत गह्वरे
मोक युद्ध दिलेक गन्धर्ब्ब तिनिकोटि * सबाको मारिलो पाचे करिया निगुटि ४८
औषधक प्रतिबन्धे खुजिया नपाइलो * विलम्बक भये पर्ब्बतक लैया आइलो
आमार मनत येन सम्पजिल बुद्धि * आपुनि सुषेण चिनि लैयोक औषधि ४९
मारुतिक देवलोके प्रशंसा करन्त * चिरकाल जीव वापु वीर हनुमन्त
सुषेण चड़िला याइ पर्व्वत उपरे * विशल्यकरणी खुजि आनि अनन्तरे ६२५०
प्रतिबन्ध रूपे औषधिक खुजि पाइल * कौतूहले डाले मूले तुलिया लगाइल
पर्ब्बतर तुलि आनि शिलात पिषिल * लक्ष्मणर नासात लेपन करि दिल ६२५१
दिव्य औषधिर गन्ध शरीरे पशिल * निद्रार जागिया येन उठिया बसिल
शतगुण तेज भैला अभिनव देहे * दुइहाते धरि राम आलिङ्गिला स्नेहे ५२
दुइ नयनर नीर धारे बहि याय * कोथा गैया आछिला लक्ष्मण मोर भाइ
तइ निजिलिहि हन्ते निष्फल प्रयास * जीवनक लागि मइ करिलो नैराश ५३
हनुमन्त सुषेणर प्राण बुलावस * यावे चन्द्र मेदिनी थाकिवो दुइरो यश
मारुतिक प्रशंसा करन्त रामदेवे * आगे पाचे वानर नाचन्त छेवे छेवे ५४
रामर चरित्र शुनियोक सर्व्वजन * यावे प्राण थाके केवे नेरिवा कीर्तन
दुर्ल्लभ मनुष्य तनु सेन्थरे नपाइ * बोला राम राम हरि विने गति नाइ ६२५५

चला गया। उसके संत्रास का नाद पर्वत-गुफाओं में गूँज उठा। तीन करोड़ गन्धर्वो ने मुझसे युद्ध किया, उन सबको निगृहीत कर मैंने मार डाला ॥ ४८ ॥ अनेक प्रयास करने पर भी औषधि को खोज नही पाया, विलम्ब हो जाने के भय से पर्वत को ही उठा लाया। मेरे मन में जैसी बुद्धि उपजी (वैसा मैंने किया,) अब सुषेण स्वयं औषधि पहचान लें ॥ ४९ ॥ देवगण मारुति की प्रशंसा कर रहे थे— वत्स, वीर हनुमान, तुम चिरकाल जीवित रहो। इसके पश्चात् सुषेण पर्वत पर चढ़ गया और वहाँ से विशल्य-करणी खोज लाया ॥ ६२५० ॥ अनेक प्रयास के पश्चात उसने औषधि खोज निकाली और प्रसन्नता से डाल-मूल समेत उखाड़ ली। पर्वत से लाकर उसे चट्टान पर पीसा और लक्ष्मण की नाक में लगा दिया ॥ ६२५१ ॥ उस दिव्य औषधि की गन्ध लक्ष्मण के शरीर में प्रवेश कर गयी, तब वे ऐसे उठ बैठे मानो निद्रा से जगे हों। उनके अभिनव शरीर मे सौ गुना तेज आ गया, उन्हें दोनो हाथों से पकड़ रामचन्द्र ने स्नेह से आलिगन किया ॥ ५२ ॥ उनके दोनो नेत्रों से आँसुओं की धारा बहने लगी, (वे कहने लगे—) मेरे लक्ष्मण भाई, तुम कहाँ चले गये थे? तुम अगर जीवित नही होते तो सारा प्रयास निष्फल हो जाता। मैं जीवन में निराश हो गया था ॥ ५३ ॥ हनुमान और सुषेण तुम्हारे प्राणों को लौटा लाये हैं। जब तक चन्द्रमा और धरती रहेंगे, दोनो का यश रह जायेगा। प्रभु राम मारुति की प्रशंसा कर रहे थे, आगे-पीछे बानरगण ताल-ताल में नृत्य कर रहे थे ॥ ५४ ॥ सभी लोग राम के चरित्र सुनें। जब तक प्राण रहें, कीर्तन कोई न छोड़े। यह दुर्लभ मनुष्य-शरीर सरलता से नहीं मिलता। हरि के बिना गति नही, इसलिए 'राम, राम' कहो ॥ ६२५५ ॥

हनुमन्ते पुनः गन्धमादनक आगर ठाइत थै आहे

दुलड़ी

लखमण येवे उठिया बसिल देखिया बानर बले ।
आउरे आउरक हाताहाति करि नृत्य करे कौतूहले ॥
एवे रावणर शिरश्छेद हैब लक्ष्मण गोसाइ जील ।
श्रीराम गोसाइर कार्य्य सिद्धि भैला रावण बेटा मरिल ॥ ६२५६
एवेसे जानिलो पुत्र परिवार देखिबो बान्धव लोक ।
राघव गोसाइ भाइक पाइलन्त आमियो एराइलो शोक ॥
हेन बुलि बहु नृत्य गीत करि पर्ब्बत शिखरे चड़ि ।
देव भोग योग्य कलमौ फलत लगाइला गैया दादरि ॥ ५७
दौलर समान मउ बास तुलि मुखत दिया चोबावे ।
अमृत सदृश श्रीफल भुञ्जिला तृपितिक बर पावे ॥
इगाछे सिगाछे जलका जलोकि फलखान्त बाछि बाछि ।
सरोबरे नामि जलपान करि खानिक विश्रामि आछि ॥ ५८
मन पवनर बेगे नामि आसि पाइला पर्ब्बतर हेठ ।
राम सुग्रीवक बेढ़िया बसिल गण्डगोल करि पेट ॥
सुग्रीव बोलन्त शुना हनुमान रामर आदेश लैयो ।
गन्धमादर्द्दनर गिरिर शिखर पूर्ब्बर थानत थैयो ॥ ५९
ब्रह्माये सृजिला ए रम्य प्रदेश देवभोग्य उपभोग ।
इटो पर्ब्बतक एखाने थैबेक तोमार नुहिके योग ॥
सबाके प्रणाम करि बायुसुते पूर्ब्बे आनिबार मते ।
पर्ब्बत शिखर दुइहाते धरिया चलिला मारुत पथे ॥ ६२६०

हनुमान का गन्धमादन को पुनः पहले स्थान पर रख आना

लक्ष्मण जब उठ बैठे, तो वह देखकर बानर-सेना एक दूसरे के साथ हाथापाई कर नृत्य करने लगे। देव लक्ष्मणजी उठे, अब रावण का शिरच्छेद होगा। प्रभु श्रीराम की कार्य-सिद्धि हो गयी, दुष्ट रावण मारा गया ॥ ६२५६ ॥ अब हम जान गये कि पुत्र-परिवार, बन्धु-बान्धवों से भेंट होगी। प्रभु राम अपने भाई को पा गये, हम भी शोक से मुक्त हुए। यह कहकर अनेक नृत्य-गीत करते हुए वे पर्वत-शिखर पर चढ़ गये और देवताओं के उपभोग के योग्य कलमी फल खाने लगे ॥ ५७ ॥ मन्दिर के समान ऊँचे मधुमक्खियों के छत्ते तोड़कर मुँह में डाल चबाने लगे। अमृत जैसे श्रीफल खाकर वे बड़े तृप्त हुए। वे इस पेड़ से उस पेड़ पर कूद-फाँद करने तथा चुन-चुनकर फल खाने लगे। सरोवर में उतरकर पानी पी, कुछ देर विश्राम करने लगे ॥ ५८ ॥ मन-पवन के वेग से वे पर्वत की तराई में उतर आये और राम-सुग्रीव को घेरकर बैठ गये। (अधिक खाने के कारण) उनके पेट में गड़बड़ी होने लगी। सुग्रीव ने कहा—हनुमान, सुनो। रामचन्द्र का आदेश ले लो और गन्धमादन पर्वत के शिखर को पहले के स्थान में रख आओ ॥ ५९ ॥ ब्रह्मा ने उस रमणीय प्रदेश का सर्जन देवभोग्य-उपभोग बनाकर किया है। इस पर्वत को यहाँ रखना तुम्हारे लिए उचित नहीं होगा। सबको प्रणाम कर पवनसुत पहले जिस प्रकार ले आये थे उसी प्रकार पर्वत-शिखर को दोनो हाथों से उठाकर पवन-मार्ग से चल पड़े ॥ ६२६० ॥ लंका में रहकर राजा

लङ्कात थाकिया रावण नृपति मारुतिक भेट पाइल।
मुख्य मुख्य वीर महा बलवन्त राक्षस वल मताइल॥
फेरा महोदर घोर निशाचर सिंहमुख तालजङ्घ।
कङ्क भुण्ड वीर ए वज्र नयन उलुकामुख अभङ्ग॥ ६२६१
हस्तीकर्ण मेघ वर्ण आसियोक आमार वचन करा।
हनुमन्त वीर पर्ब्वत लै यान्त मायावले ताङ्क धरा॥
एतेक शुनिया राक्षस सकले वेढ़िले गैया आकाश।
सम्वुधि वोलय शुनरे वानर जीवन्ते आजि न यास॥ ६२
हाते धरिवार आशा नाहि तोर पर्ब्वत लै यास धरि।
हरि हरे आजि राखिते नपारे तोक निवो वन्दी करि॥
मारुति वोलन्त आमि नगणओं तोर यत मायावल।
दुइ हाते पर्ब्वत धरिया पापिष्ठ मारिवो आजि सकल॥ ६३
नख दान्त मोर अवकाशे आछे आरो आछे दुइपाव।
सवाहाके आजि यमघरे निवो मारिया लाञ्जर घाव॥
एतेक शुनिया राक्षस सकले वेढ़ि वोले याक थाक।
खाण्डा याठी धरि घोर निशाचरे दिलेक अस्त्रर जाक॥ ६४
मारुति वीरक प्रहार दिलेक अस्त्र दशोदिशे जुरि।
कपि महावीरे पर्ब्वत सहिते एराइलन्त गावमुरि॥
हनुमन्त वीरे राक्षस वलक क्रोधे खेदि लाग पाइल।
काहाको लाथिर प्रहार काहाको लाञ्जर कोव वैसाइल॥ ६५
चरणर नखे कतो विदारिल कतो कङ्कालत कोवे।
लाञ्जे मेढ़ाइ कतो तुलि आस्फालिल वस्त्र धोवे येन धोवे॥

रावण ने हनुमान को जाते देखा। उसने महावलवान मुख्य-मुख्य वीरों और राक्षस-सेना को वुलवाया और कहा— अरे महोदर, घोर निशाचर तालजंघ, सिंहमुख, कंक, वीर भुंड, ओ वज्रनयन, कभी पराजित न होनेवाले उलुकामुख, ॥ ६२६१ ॥ हस्तीकर्ण, मेघवर्ण, आओ। हमारा वचन मानो। वीर हनुमान पर्वत लिये जा रहा है, उसे मायावल से पकड़ लो। यह सुनकर सभी राक्षसों ने आकाश में जाकर घेर लिया और हनुमान को सम्वोधित कर कहा— अरे वानर, सुन ! तू आज जीवित नही जा पायेगा ॥ ६२ ॥ तू पर्वत लिये जा रहा है इसलिए हाथ से पकड़ेगा इसकी आशा नहीं है। आज हरि-हर भी तेरी रक्षा नही कर सकेंगे तुझे हम वन्दी वनाकर ले जायेंगे। मारुति ने कहा— तुम सवके मायावल की कोई परवाह हम नहीं करते। अरे पापियो, दोनो हाथों में पर्वत लिये रहकर भी हम आज सभी को मार डालेंगे ॥ ६३ ॥ मेरे नाखून और दाँत अभी मुक्त हैं, इनके सिवा दोनो पैर भी हैं। आज मैं सवको अपनी पूँछ से प्रहार कर यमलोक भेज दूंगा। यह सुनकर सभी राक्षसों ने उन्हें घेरकर 'ठहर, ठहर' कह उठे। खड्ग, भाले आदि अस्त्र लेकर घोर निशाचरों ने प्रहार किया ॥ ६४ ॥ उन सवने दसों दिशाओ को घेरकर वीर मारुति पर प्रहार किया। महा वीर कपि ने पर्वत समेत अपने शरीर को मोड़कर उन्हें व्यर्थ कर दिया। वीर हनुमान क्रोध कर धावित हो राक्षस-सेना के पास पहुँच गये और किसी को लातों से प्रहार किया, किसी को पूँछ से चोट की ॥ ६५ ॥ कितनों को पैरों के नाखूनों से विदीर्ण कर दिया, कितनों को कमर पर चोट की। कितनों को पूँछ में फंसाकर उठा, पटक दिया, जैसे धोवी कपड़ा धोता हो। किसी को जाँघों से चोट की, किसी को दाँतों से काटा, अनेक

काहाको जङ्घार बारि मारिलन्त काहाको दान्ते कामोरे ।
अनेक बीरक यमघरे निल मारि बज्र सम गोरे ।। ६६
बिगुटि बिगुटि राक्षस बलक हनुमन्ते मारिलन्त ।
मुख्य मुख्य यत राक्षस बलक लाञ्जे मेढ़ाइ धरिलन्त ।।
हनुमन्ते धरि टोपना बाहन्ते राक्षसक बान्धिटोप ।
सोणार गुणाय बान्धि आछे येन नील उत्पलर थोप ।। ६७
लाङ्गुले मेढ़ाइया मार्ग तले आनि विक्षेप करि प्रबन्धे ।
सेहि प्रहारते काण फाटि गैला नाक फुटि गैला गन्धे ।।
अनेक प्रकारे राक्षस बलक मारुति पराण लैल ।
काति भिति करि लाञ्जर हसोकि तालजङ्घ पलाइ गैल ।। ६८
रावण राजात काहिनी कहय काढ़य खर उशास ।
सम्बुधि बोलन्त दुर्ज्जन बानरा सबाके करिल नाश ।।
काहाको मारिल जानुबे ताड़िये काहाको लाञ्जर बारि ।
काहाको मारिल हियार सन्धाने काहाको चरणे तारि ।। ६९
हेनय बिबिध प्रकारे समस्ते राक्षस मारि पेलाइल ।
कतो बीरगण बानर दुर्ज्जने बातकर्म्म उरुवाइल ।।
कतोक्षणे मोर उशास नाछिल तार काजे मइ जीलो ।
हेन अद्भुत बलर काहिनी तोमार आगे कहिलो ।। ६२७०
हेन वाणी शुनि राजा रावणर भय आति भैला घोर ।
सकल बीरक मारुति मारिल कोला शून्य भैला मोर ।।
राक्षस मारिया गन्धमाद्दनक पाइला बीर हनुमाने ।
सेइ मते निया गिरिर शिखर थापिलन्त पूर्ब्ब थाने ।। ६२७१

वीरों को वज्र जैसे लात मारकर यमलोक भेज दिया ।। ६६ ।। राक्षस-सेना को उन्होंने व्याकुल कर मार डाला और मुख्य-मुख्य वीरों को पूँछ में फँसा लिया । हनुमान ने मानो राक्षसों को बंसी में चारे की भाँति फँसा लिया । उन्हें ऐसा बाँध लिया मानो सोने की डोरी में नील कमलों के गुच्छे को बाँध लिया हो ।। ६७ ।। पूँछ में उन्हें लपेटकर मार्ग से नीचे लाकर बड़ी निपुणता से पटक दिया । उस प्रहार से राक्षसों के कान फट गये, गन्ध से नाकें फट गयी । हनुमान ने अनेक प्रकार से राक्षस-सेना के प्राण ले लिये । किसी तरह शरीर को घुमा-फिराकर पूँछ के बंधन से छूटकर तालजंघ भाग गया ।। ६८ ।। उसने जोर-जोर से साँस लेते हुए राजा रावण से सारी कथा कह सुनायी । उसने रावण को सम्बोधित कर कहा— उस दुर्जन बानर ने सबका नाश कर डाला । किसीको अपने घुटनों से प्रहार कर मारा, किसीको पूँछ से चोट की, किसीको हृदय का निशाना कर मारा, किसीको पैरों से ताड़ित कर मारा ।। ६९ ।। इसी प्रकार विभिन्न प्रकार से उन्होंने सारे राक्षसों को मार डाला । उस दुर्जन बानर ने कितनों को अपनी अपान वायु (पाद) से उड़ा दिया । कितने समय तक साँस लिये बिना मैं पड़ा हुआ था, इसी कारण जीवित रह गया । उसके ऐसे अद्भुत बल की कथा मैंने आपसे कह सुनायी ।। ६२७० ।। यह सुनकर राजा रावण को बड़ा भय हुआ, सारे वीरों को मारुति ने मार डाला, मेरी गोद (मेरी नगरी) सूनी हो गयी । राक्षसों को मारकर वीर हनुमान गन्धमादन पर्वत पर पहुँच गये और पहले की भाँति उसके स्थान पर गिरिशिखर पर स्थापित कर दिया ।। ६२७१ ।। वीर हनुमान को सुनाकर देवगण अशेष स्तुति-प्रशसा करने लगे और कुछ क्षण पश्चात् वे प्रभु श्रीराम के पास आ

देवगणे स्तुति प्रशंसा करन्त शुनन्त बीरे आशेष ।
आर कतक्षणे परिलन्त आसि श्रीराम देवर पाश ॥
मारुति वीरक राघवे बुलिल अनेक सादर बाक ।
पर्ब्बतक निया पूर्व्व थाने थैला करिला हित आमाक ॥ ७२
लक्ष्मण भयाइर पराण रहिल तोमार बलक पाइ ।
सीतात कि कार्य्य मोहोर जानिवा मरिल हन्ते लखाइ ॥
मातृ भातृ एरि अयोध्याक छाड़ि करिलन्त सार मोके ।
आमियो पाचते मरिलओ हन्ते लखाइर दारुण शोके ॥ ७३
शुना सब्बंजन केदिन जीवन किय नुगुणाहा मने ।
धन जन यत त्यजिया सबाके चलिबा यम करणे ॥
घोर परलोक तैत केन हैव निचिन्ता तार उपाय ।
दुर्ल्लभ भारते नरतनु पाइ बिफले जनम याय ॥ ७४
परम बान्धव ईश्वर माधव इहलोके पावे गति ।
जानिया यतने रामर चरणे सदाये करा भकति ॥
भुञ्जिबा भुकुति लभिवा मुकुति नेरिबा मुखत नाम ।
धर्म्म शिरोमणि पापर अगनि डाकि बोला राम राम ॥ ६२७५

राम रावणर युद्ध आरु रावण वध

पद

युद्ध नकरिलो हन्ते कोन कार्य्य तात * प्राणक त्यजिलो हन्ते एहिटो लङ्कात
हनुमन्ते नकरिल हन्ते हेन काज * विभीषणे केनमते पाइल हन्ते राज ६२७६

पहुँचे । रामचन्द्र ने वीर मारुति का आदर करते हुए अनेक वचन कहे । तुमने पर्वत को पहले के स्थान में रख आये, हमारा उपकार किया ॥ ७२ ॥ तुम्हारा बल पाकर भाई लक्ष्मण के प्राण बच गये । सीता के उद्धार के कार्य की बात ही क्या जिस लक्ष्मण ने माता तथा भाई को छोड़कर मुझे ही सार समझा वह मर जाता । इसके पश्चात् लक्ष्मण के दारुण शोक से हम भी मर जाते ॥ ७३ ॥ सभी लोग सुनें, अब जीवन कितने दिन का है, यह बात मन में किसलिए विचार नही करते ? जितने धन-जन हैं सबको तजकर यमलोक को जाना है । वहाँ घोर परलोक कैसा होगा, क्यों उसको बचने का उपाय नही सोचते ? दुर्लभ भारत में नर-शरीर पाकर जन्म विफल जा रहा है ॥ ७४ ॥ ईश्वर माधव परम बान्धव हैं, (उसकी शरण लेने पर) इसी लोक में गति मिल जाती है । ऐसा जानकर सदा यत्नपूर्वक राम के चरणों की भक्ति करो । इससे भोग तो मिलेगा ही, मुक्ति भी मिलेगी । मुंह से राम का नाम न छोड़ो । (राम का नाम) धर्म शिरोमणि, पापों के (लिए) अग्नि (स्वरूप) है । इसलिए पुकार-पुकार कर राम, राम कहो ॥ ६२७५ ॥

राम-रावण का युद्ध और रावण वध

(रामचन्द्र ने कहा—) मैं युद्ध नही करता, उसकी आवश्यकता क्या होती ? इसी लंका में प्राण तज देता । हनुमान यदि वैसा कार्य नही करते तो विभीषण को राज्य कैसे मिलता ? ॥ ६२७६ ॥ लक्ष्मण ने राम को देखकर उत्तर देते हुए कहा— ऐसी

लक्ष्मणे रामक चाहि बुलिला उत्तर * हेनय काकूति वाणी नहय बीरर
प्रतिज्ञा पालन क्षत्रियर निज धर्म्म * रावणक नमारि आमात केने मर्म्म ७७
प्रतिज्ञा करिला तुमि रावण बधित * क्षान्टे मारा यावे अस्त नयान्त आदित्य
केतिक्षणे देखिबोहो रावण बीरर * तयु शर घावे छेदिवाहा दशशिर ७८
लक्ष्मणर बोले कोप ज्वलिला रामर * शीघ्रवेगे जुरिलन्त अग्निमय शर
राघवर शर आसे देखि महाबीर * अन्तरिला देखिया रावण दशशिर ७९
मायावले तथा याइ साजिलेक रथ * अलङ्कारे मण्डिलेक घोंटक समस्त
मनुष्यर मुख दिव्य चारिगोटा घोंर * उच्चैश्रवा सदृश पवन सम जोर ६२८०
कैलास समान उच्च दिव्य बरयान * महाज्योतिर्मय ज्वले अगनि समान
रतने माणिक्ये दिब्य रथ दीप्ति करे * ताते याइ चड़िलेक राजा लङ्केश्वरे ६२८१
देव मुनिगणे बोले किनो अनुचित * रावण रथत युजे राघव भूमित
समतुल्य नुहि कार्य्य अयोग्य अवश्ये * रामक लागय मान करिबे त्रिदशे ८२
सबारो बचन शुनि त्रिदशर राजे * आपोनार रथक पठाइला सब साजे
किङ्किणी बाजय रुण झुण ज्योतिष्कार * रत्ने ज्योतिष्कार तिनि भुवनते सार ८३
तरुण आदित्य समे महाज्योति ज्वले * रतने रचित करि आतिशय ज्वले
हरिताल बर्ण शक्तिवन्त चारि घोंर * अतिशीघ्र गमन पवन सम जोर ८४
कटके गठित चारु बासवर ध्वज * शकति तोमर अस्त्र आछे सब सज
इन्द्रर आदेशबाणी सादरे आकलि * रामर पाशक रथ निलन्त मातलि ८५
चापन्ते आछय आसि रथ ज्योतिष्कार * बिस्मय मिलिया गैला सकले प्रजार

दीनता की वाणी वीर की नही होती। प्रतिज्ञा का पालन करना क्षत्रिय का निजी धर्म है। रावण को बिना मारे हमसे इतना स्नेह किसलिए ? ।। ७७ ।। आपने रावण-वध की प्रतिज्ञा की है, अतः सूर्य के अस्तमित होने के पहले ही उसे शीघ्र मार डालिये। आपके वाणों के प्रहार से रावण के दसों सिरों को काटते हुए हम किस क्षण देख पायेंगे ? ।। ७८ ।। लक्ष्मण के वचन से रामचन्द्र का क्रोध भड़क उठा। उन्होंने बड़े वेग से धनुष पर अग्निमय वाण चढ़ा लिया। रामचन्द्र के वाण को आते देख महा वीर दशानन रावण हट गया ।। ७९ ।। वह मायाबल से वहाँ जाकर रथ की सर्जना की। सारे घोड़ों को गहनों से सुसज्जित कर दिया। मनुष्य जैसे मुख वाले वे चारों घोड़े उच्चैश्रवा जैसे थे, उनकी गति पवन-सी थी ।। ६२८० ।। वह यान कैलास जैसा ऊँचा और दिव्य था। वह महा ज्योतिर्मय अग्नि की भाँति जल रहा था। रत्नों, मणियो से वह रथ दीपित हो रहा था, राजा रावण जाकर उस पर चढ़ा ।।६२८१।। देव-मुनिगण कहने लगे, यह कैसी उलटी बात है कि रावण रथ पर चढ़कर लड़ रहा है और राम भूमि पर है। यह कार्य वरावरी का नही है, अवश्य ही अनुचित है। देवताओं द्वारा रामचन्द्र का मान करना उचित है ।। ८२ ।। सबके वचन सुनकर देवराज इन्द्र ने सभी प्रकार से सज्जित कर अपने रथ को भेज दिया। उस रथ मे लगी जगमगाती किंकिणी वज रही थी, तीनो लोकों का सार वह रथ रत्नों से चमक रहा था ।। ८३ ।। तरुण (प्रात:काल के) सूर्य की भाँति उसकी महान् ज्योति जल रही थी, रत्नों से जड़ित होने के कारण वह वहुत अधिक चमक रहा था। हरिताल वर्णी चार घोड़े बड़े शक्तिमान, पवन के समान वलशाली और तेज गति वाले थे ।। ८४ ।। इन्द्र का सुन्दर ध्वज सोने का वना था, उसमें शक्ति, तोमर आदि अस्त्र सजाकर रखे हुए थे। इन्द्र के आदेश-वचन आदर से मानकर मातलि राम के पास रथ ले गया ।। ८५ ।। जगमगाते हुए रथ को निकट आते देख सारी प्रजा को वड़ा विस्मय हुआ। रामचन्द्र,

राम देव लक्ष्मण सुग्रीव नील नल * अङ्गद मारुति बिभीषण कपिबल ८६
सबहन्ते मने गुणि आछन्त बहुत * स्वर्गहन्ते रवि सम रथ अदभुत
अनेक मायाक जाने निशाचरगणे * आमाक छलिते बुद्धि पातिला रावणे ८७
रामे येवे हेन वाक्य सबाको बुलिल * सुग्रीव बोलन्त इटो आमात लागिल
सारथिके घोंटकके अस्त्रके रथके * सबाके निश्चय करिबोहो लेण तेके ८८
रथखान नामि आसि रहिछे भूमित * बिभीषणे बुलिलन्त बचन तहित
राक्षसर माया मइ जानोहो समस्ते * देवलोके पठाइला आपुनि लैयो रथे ८९
कतोदूरे लङ्कानाथे आछय आकलि * रथे चढ़ि हातयोरे मातय मातलि
शुनियो राघव प्रभु राम दाशरथी * इन्द्रे पठाइलन्त मइ ताहात सारथि ६२९०
इन्द्र यम वरुणास्त्र आछय रथते * इन्द्रर मातलि मोक जाने त्रिजगते
युद्धर सम्भार दिया पठाइलन्त मोक * इहाते चड़िया रावणक बधियोक ६२९१
इन्द्रे पठाइलन्त एहि सन्नाहा पिन्धिया * समरक चला हाते धनुशर लैया
एकैक शकति पारि त्रैलोक्य जिनित * समस्ते सम्भृत किछु नलागे खुजित ९२
बिभीषण सुग्रीव अङ्गद सुशिक्षित * सबाके बुलिला रामे रथ परीक्षित
रामक कहिला याहा कार्य्यक आकलि * वासवे पठाइला रथ सारथि मातलि ९३
परीक्षा करिलो मइ जानिलो समस्त * एहि बुलि आगत योगाइला दिव्यरथ
देव विमानक रामे प्रणाम करिल * सारथि घोराक प्रदक्षिणे आदरिल ९४
रथत चड़िला रामे कौतूहल भावे * इन्द्रर सन्नाहा आनि चड़ाइलन्त गावे
श्रीमन्त अधिक कान्ति ज्वले राघवर * कैलास गिरित येन देव महेश्वर ९५

लक्ष्मण, सुग्रीव, नील, नल, अंगद, मारुति, बिभीषण आदि सहित वानर-सेना (के सब लोग) मन में अनेक विचार करने लगे। स्वर्ग से यह सूर्य जैसा अद्भुत रथ उतरा आ रहा है। निशाचरगण अनेक प्रकार की मायाएँ जानते हैं। रावण ने हमें छलने हेतु यह युक्ति निकाली है ॥ ८६-८७ ॥ जब रामचन्द्र ने यह वचन सबसे कहा तो सुग्रीव ने कहा— यह तो हमें चाहिए। सारथी, रथ, घोड़ों और अस्त्रों को हम निश्चय एक ही क्षण में अधिकार कर लेंगे ॥ ८८ ॥ तब विभीषण ने कहा— रथ उतरकर भूमि पर ठहरा हुआ है। मैं राक्षसों की सारी माया जानता हूँ। देवताओं ने इसे भेजा है, आप रथ को ग्रहण कर लीजिये ॥ ८९ ॥ कुछ दूर रहकर रावण निरीक्षण कर रहा था। रथ पर चढ़कर हाथ जोड़ मातलि ने कहा— प्रभु, दशरथ-नन्दन, राघव, रामचन्द्र, सुनिये। इस रथ को इन्द्र ने भेजा है, मैं उन्ही का सारथी हूँ ॥ ६२९० ॥ इस रथ में इन्द्रास्त्र, यमास्त्र, वरुणास्त्र आदि रखे हैं, मुझे संसार में मातलि के नाम से जानते हैं। देवराज ने युद्ध के ये उपकरण देकर मुझे भेजा है, इसी पर चढ़कर आप रावण का वध कीजिये ॥ ६२९१ ॥ इन्द्र का भेजा हुआ यह कवच पहनकर धनुष-बाण धारण कर आप युद्ध में चलिये। (रथ पर की) एक-एक शक्ति से तीनों लोकों को जीता जा सकता है। सब कुछ इस रथ पर सजा है, कुछ भी खोजना नही है ॥ ९२ ॥ 'रामचन्द्र ने विभीषण, सुग्रीव, सुशिक्षित अंगद, सबसे रथ का परीक्षण करने हेतु कहा। वह निरीक्षण-कार्य पूरा कर उन सबने राम से कहा— यह रथ इन्द्र ने भेजा है, यह सारथी मातलि है ॥ ९३ ॥ हमने परीक्षणकर सब कुछ जान लिया। यह कहकर उस दिव्य रथ को वहाँ उपस्थित किया। रामचन्द्र ने देव-विमान को प्रणाम किया। प्रदक्षिणा कर सारथी एवं घोडों का स्वागत किया ॥ ९४ ॥ प्रसन्नतापूर्वक रामचन्द्र रथ पर सवार हो गये और इन्द्र का कवच लेकर अपने शरीर पर धारण किया। श्रीमन्त रामचन्द्र की कान्ति अधिक जगमगा उठी। जैसे कैलास पर्वत पर देव महेश्वर

गन्धर्व्बर अस्त्र कोपे रावणे धरिल * रामे गन्धर्व्बर अस्त्रे ताक निबारिल
येहि येहि अस्त्रक हानय लङ्केश्वर * सेहि सेहि अस्त्र निबारन्त रघुवर ९६
सकल अस्त्रक येवे करिलन्त क्षय * राक्षसर अस्त्रक हानन्त दुराशय
रावणर अस्त्रचय धनुर टङ्काय * बासुकि सदृश सर्प हुया खेदि खाइ ९७
फोकारन्त शबदे दान्तर घोर बिष * मुखर अगनि निकलय दशोदिश
राघवे देखन्त सर्पे जुरिल समस्त * रामचन्द्रे अस्त्र प्रहारिला पाशुपत्र ९८
सूर्य्य अग्नियुत येन प्रहारिला शर * असंख्यात गरुड़ भैलेक सुवर्णर
अर्द्ध ऊर्द्ध दशोदिशे शर चलि याय * रावणर सर्प सब खेदि खेदि खाय ९९
रावणर अस्त्र यत सब भैला क्षय * आथाके निसन्धि राजा बाण बरिषय
बाणक हानिया छाइला दाश ये रथीक * सब गावे निसन्धि बिन्धिला मातलिक ६३००
चारियो घोंराक जर्ज्जरीकृत भावे * इन्द्रर ध्वजक ताड़िलेक बाण घावे
देखि निरन्तरे बाणमय दशोदिश * देव मुनिगणरो विस्मय आसरिष ६३०१
रामक पीड़िले शरे बीर लङ्केश्वरे * देव मुनि गन्धर्व्बर हृदि कम्पे डरे
कबन्धक देखि येन सूर्य्य भय हेतु * भकर भकर करि बेढ़ि धूमकेतु २
बुधग्रहे येहेन पीड़िल रोहिणीक * जेष्ठाक मङ्गले येन राहुवे शशीक
सागरत बिपरीत जलर कल्लोल * उर्म्मिर शबदे पाइल आदित्यर कोल ३
रघुर बंशर सबे नक्षत्रक जुरि * दारुण ग्रहक येन थाकि गैल पीड़ि
त्रैलोक्यत बिपरीत चमक लागिल * राघवर मोह देखि बिस्मय मिलिल ४

स्थित हों ।। ९५ ।। रावण ने क्रोधित होकर गन्धर्वास्त्र छोड़ा। राम ने भी गन्धर्वास्त्र द्वारा उसे शान्त कर दिया। रावण जिन-जिन अस्त्रों का प्रयोग करता रामचन्द्र उन सबका निवारण करते गये ।। ९६ ।। रामचन्द्र ने जब रावण के सभी अस्त्रों को नष्ट कर दिया तब उस दुरात्मा ने राक्षसों के अस्त्र का प्रहार किया। रावण के अस्त्र धनुष के टंकारने से बासुकि-सदृश सर्प बनकर धावित हो रहे थे ।। ९७ ।। वे नाद करते हुए फुंकारते थे, उनके दाँतों का घोर विष और मुख की अग्नि दसों दिशाओं में निकलने लगे। रामचन्द्र ने देखा, सर्पों ने सब कुछ व्याप्त कर लिया तब उन्होंने पाशुपतास्त्र का प्रहार किया ।। ९८ ।। उन्होंने मानो सूर्य और अग्नियुक्त वाणों का प्रहार किया जो सोने के असंख्य गरुड़ बन गये। ऊपर-नीचे सब ओर वे वाण चले जाते थे और रावण के सर्पों को खदेड़-खदेड़कर खा जाते थे ।। ९९ ।। रावण के सभी अस्त्र नष्ट हो गये। राजा रावण निरन्तर आकाश को व्याप्त कर वाणों की वर्षा करने लगा। उसने वाणों के प्रहार से दशरथनन्दन रामचन्द्र को ढँक दिया और मातलि के सारे शरीर को बिना जगह छोड़े बेध डाला ।। ६३०० ।। चारों घोड़ों को उसने जर्जर-सा कर डाला तथा वाणों के प्रहार से इन्द्र के ध्वज को बेध डाला। निरन्तर दसों दिशाओं को वाणमय देख, देव-मुनियों को भी बड़ा विस्मय हुआ ।। ६३०१ ।। वीर लंकेश्वर ने रामचन्द्र को वाणों से पीड़ित कर दिया। देव-मुनि-गन्धर्वों का हृदय डर के मारे काँपने लगा। 'भकर-भकर' करता धूमकेतु रूपी कबन्ध को देखकर जैसे सूर्य भयभीत हो उठे हों ।। २ ।। बुध ग्रह ने जिस प्रकार रोहिणी को, मंगल ग्रह ने ज्येष्ठा को, राहू ने चन्द्रमा को जैसे उत्पीड़ित कर डाला था, (रावण ने भी रामचन्द्र को वैसा ही उत्पीड़ित किया।) सागर की विपरीत दिशा में बहने वाले जल का नाद, और तरंगों का निनाद सूर्य तक व्याप्त हो गया ।। ३ ।। मानो रघुवंश के सभी नक्षत्रों को घेरकर दारुण ग्रहों को उत्पीड़ित कर रावण वहीं स्थित रहा। इस विपरीत स्थिति को देखकर तीनों लोकों में आश्चर्य फैल गया।

दशशिर कुरिबाहु शिरिमन्त काय * रावणाये युजय मैनाक गिरि प्राय
अचेतन भाव हेन देखिया रामर * श्रीहानि विभीषण कपि भालुकर ५
घोर शर वृष्टि प्रभु करिते नपारि * किञ्चित तरासे थित राघव मुरारि
रामे ध्यान करिलन्त वर विपरीत * परम आत्माक निया निबेदिला चित्त ६
महाकोपे ज्वलि पाचे गुणिलन्त मने * आमाक पीड़य चार निशाचर जने
आरकत चक्षु दुइ कोपे फुरावन्त * रावणक येन तेज अगनि दहन्त ७
रामर कोपत महीमण्डल लरय * गिरिर शिखर यत खसिया परय
भ्रूकुटि कुटिल मुख रकत नयन * देव मुनि चमकिला दिगपालगण ८
नदी नदगण माने पालटिया वहे * आवरे आवरे युद्ध लागिला बिग्रहे
रावणर हृदि कम्प राघवे कुपिल * भय हुया वोले आजि अकार्य्य मिलिल ९
त्रैलोक्य जिनिलो आवे कि भैला आमार * राघवे कुपिला येन यम अवतार
दुयोवीर युजे तिनि भुवनते सार * तिनिलोक कम्पिल लागिला तोलपार ६३१०
आउरे आउरक शर हानिला प्रवन्धि * पृथिवी स्वर्गर माजे भैला निसन्धि
राघवक प्रशंसा करन्त देवगणे * असुरे वोलन्त बीर जिनन्तो रावणे ६३११
देवता गन्धर्व्व ऋषि राघवर पक्ष * रावणर सखा दैत्य दानव ये यक्ष
रामे शर करिलन्त अनन्त अपार * आकाशर शर काटि गुचाइल आन्धार १२
तमोमय गुचि येन प्रकाश भास्कर * प्रसन्न बदन भैला देखिया रामर
रावणे छेदिला राघवर शरचय * हेनमते दुयो वीरे समर करय १३

राघव का मोह देखकर सबको विस्मय हुआ ।। ४ ।। दस सिर बीस हाथ वाले श्रीसम्पन्न शरीर वाला रावण मैनाक पर्वत जैसा लड़ रहा था । रामचन्द्र को अचेतन-सा देखकर विभीषण तथा वानर-भालुओं की श्री जाती रही ।। ५ ।। प्रभु रामचन्द्र घोर वाण-वर्षा न कर पाने के कारण वे मुरारी राघव कुछ त्रस्त-से होकर पड़े रहे । वड़ी विपरीत स्थिति को देखकर रामचन्द्र ने ध्यान किया, अपने चित्त को परम आत्मा में निवेदित कर दिया ।। ६ ।। इसके पश्चात् महान् क्रोध से जल उठकर मन में विचार किया कि यह दुष्ट निशाचर हमे उत्पीड़ित कर रहा है । क्रोध के मारे वे अपनी रक्तवर्णी आँखों को घुमाने लगे । मानो अपने तेज रूपी अग्नि से रावण को जला डालना चाहते हो ।। ७ ।। राम के क्रोध से महीमण्डल हिलने लगा । पर्वत-शिखर टूट-टूटकर गिरने लगे । उनकी भ्रुकुटी टेढ़ी हो गयीं, मुंह-आँखें रक्त वर्ण हो गये, देव-मुनि, दिक्पालगण चौंक उठे ।। ८ ।। नद-नदियाँ उलटकर वहने लगीं । राम-रावण मे पुनः प्रचण्ड युद्ध आरम्भ हो गया । रामचन्द्र के कुपित होने के कारण रावण का हृदय काँप उठा । उसने भयभीत होकर कहा, आज तो वड़ी अनहोनी होनेवाली है ।। ९ ।। मैंने तो तीनो लोकों को जीत लिया था अव क्या हो गया ? रामचन्द्र तो यम के अवतार की भाँति कुपित हो उठे हैं । तीनो लोको में श्रेष्ठ दोनो वीर एक-दूसरे से लड़ने लगे । तीनो लोक काँप उठे, उनमें उथल-पुथल मच गयी ।। ६३१० ।। दोनो एक-दूसरे पर वड़ी सावधानी से वाणों का प्रहार करने लगे । जिससे पृथ्वी और स्वर्ग के वीच का भाग भर गया । देवगण राघव की प्रशंसा करने लगे । असुर कहते थे कि रावण जीतेगा ।। ६३११ ।। देवता, गन्धर्व, ऋषि रामचन्द्र के पक्ष में थे, दैत्य-दानव-यक्ष आदि रावण के सखा थे । राम ने अनन्त अपार वाणों की वर्षा की और आकाश में रावण के वाणों को काटकर अंधेरा मिटा दिया ।। १२ ।। वह अंधकार मिटकर मानो सूर्य का प्रकाश फैल गया । यह देखकर राम का मुखमण्डल प्रसन्न हो उठा । रावण ने भी राम के वाणो को काट

अनन्तरे राम देव समरे अभङ्ग * अनेक अस्त्रक प्रहारिला करि खङ्ग
रावणेओ शरचय प्रहारिला ताङ्क * रामक अभङ्ग देखि रावणार शङ्क १४
जाज्ज्वल्य समान राजा कोपे ज्वलि गैला * कालान्तक सदृश शूलेक तुलि लैला
कतेक महिमा आर कहिबो ताहार * परन्ते दोहार माखि बज्र सम धार १५
पर्ब्बतर शृङ्ग येन शिखरे ताहारे * पाताल भेदिते पारे शूलर प्रहारे
धूम्रे बिरहित येन प्रलय अगनि * फोकारन्ते आङ्गार बजावे दिश छानि १६
अति बर आटास दिलेक लङ्केश्वरे * कम्प मिलि गैला जल सपत सागरे
पृथिवी पाताल स्वर्ग तिनियो लोकत * अन्तरीक्षे नाचे यत कम्पिल समस्त १७
आटासर जोटे बीर त्रैलोक्य कम्पाया * रामक बुलिला पाचे क्रोधदृष्टि छाया
देखि देख राम तोर प्राणान्तिक शूल * दोभाइक मारिया आजि करिबो निर्म्मूल १८
यत यत बीर मोर मारिला रणत * तार प्रतिफल आजि करो क्षणेकत
एहि शूल हानि मारो चल यमघर * रावण राजार एक प्रहार सामर १९
दोङ्गा दिया शूल बाण रावणे हानिल * अतिबर बेगे येन निर्घात परिल
अन्तरीक्षे महाबेग करिया चलय * रामे देखि शूलक ताड़िला शरचय ६३२०
पतङ्गक येनमते अगनि भुञ्जिल * रावणर शूले सब शरक छेदिल
रामे आकलिला सब शर नाश भैला * महाकाशे अगनि समान ज्वलि गैला ६३२१
मातलित करि याक बासवे पठाइल * सेहि शकतिक रामे तुलि आलगाइल
रथहन्ते आनि ताक सन्धाने हानिल * प्रलय कालर येन उलुका ज्वलिल २२

डाला। इसी प्रकार दोनो वीर युद्ध कर रहे थे ।। १३ ।। इसके पश्चात् युद्ध में अपराजेय रामचन्द्र ने क्रोधित हो अनेक अस्त्रों का प्रहार किया। रावण ने भी उन्हें वाणों से प्रहार किया। राम को अपराजेय देखकर रावण के हृदय में शंका होने लगी ।। १४ ।। राजा रावण क्रोध से अग्नि-सा जल उठा और यमराज के समान एक शूल उठा लिया। उस शूल की महिमा क्या बतायें, उसकी धार वज्र के समान ऐसी थी, जिस पर पड़ते ही मक्खी भी दो टुकड़े हो जाती थी ।। १५ ।। उसके शिखर पर्वत की चोटी जैसे थे। उस शूल के प्रहार से पाताल भी भेदा जा सकता था। वह धूमरहित प्रलय-अग्नि की भाँति था, उसे छोड़ते ही दसों दिशाओं को व्याप्त कर अंगारे निकलने लगते थे ।। १६ ।। लंकेश्वर ने प्रचण्ड नाद किया जिससे सात सागरों के जल में कम्पन होने लगा। पृथ्वी, आकाश, स्वर्ग तीनो लोकों में तथा अन्तरिक्ष में जितने नृत्य करनेवाले थे सभी काँप उठे ।। १७ ।। अपने घोर नाद से वीर रावण ने तीनो लोकों को कँपाकर राम की ओर क्रोध-दृष्टि से देखते हुए कहा— रे राम, तेरे प्राणान्त करने वाले इस शूल को देख। आज मैं दोनो भाइयों को मारकर निर्मूल कर डालूँगा ।। १८ ।। मेरे जितने वीरो को तूने युद्ध में मारा है, उसका प्रतिफल आज क्षण भर में तुझे मैं दूँगा। इस शूल के प्रहार से तुझे यमलोक जाना पड़ेगा। राजा रावण के एक प्रहार को सम्हाल ।। १९ ।। रावण ने वह शूल उठाकर प्रहार किया। ऐसा लगा कि बड़े वेग से वज्रपात हुआ है। वह शूल अन्तरिक्ष में महावेग से चला, उस शूल को (आते) देखकर अपने वाणों से उस पर प्रहार किया ।। ६३२० ।। अग्नि जैसे पतंगों को खा डालती है, रावण के शूल ने भी राम के वाणों को नष्ट कर दिया। राम ने देखा कि सारे वाण नष्ट हो गये, महाकाश में अग्नि के समान वे (वाण) जल गये ।। ६३२१ ।। तब रामचन्द्र ने मातलि द्वारा इन्द्र की भेजी हुई शक्ति उठा ली। उस शक्ति को रथ पर से उठाकर रावण की शक्ति को लक्ष्य कर प्रहार किया। वह शक्ति प्रलयकाल की उल्का-सी जल उठी ।। २२ ।। युगान्त काल में जैसे अग्नि जलती है, वैसे ही

युगान्त कालर येन अगनि ज्वलय * सकल आकाश खान देखि ज्योतिर्मय
अतिशय बेगे गै शूलक लाग पाइल * खण्ड खण्ड करिताक छेदिया पेलाइल २३
शकतिर घावे शूल माङ्गिया पेलाइल * लङ्का नगरीर सैन्य गिरिसाइ मागिल
रावणे 'निःशब्द भैला अद्भुत मानि * ताहाक ताड़िला रघुनाथे शर हानि २४
राघवर शरक त्रैलोक्ये नाहि योर * जर्ज्जरिते बिन्धिला रथर चारि घोंर
रावण राजार शरीरत असंख्याते * कपालते निसन्धि विन्धिला रघुनाथे २५
अशोक पलाश येन पुष्प ज्योतिष्कार * थाने थाने रुधिर निकलि गैल गार
रामे ताक तुलिलन्त भैलेक हताश * मूर्च्छा गैला रावणर हरिल उशास २६
तमोमय देखे येन फुरे दशोदिश * तीखाल शरर घावे उथलिला बिष
रथत पाछत वीर परिगैला खसि * क्षणेक निश्चेष्ट हैया थाकिल तरसि २७
बरर प्रसादे तार नगैलेक प्राण * राघवक हानिलेक असंख्यात वाण
अर्द्धे ऊर्द्धे आशे पाशे दक्षिणे उत्तरे * निसन्धि हानिला शरचय निरन्तरे २८
राघवे अनेक शर हानिया पठाइल * रावणर वाण छेदि आन्धार गुचाइल
शरे हानि रामे तार शरीरक शालि * बचने बिगुति रामे पारिलन्त गालि २९
राघवे बोलन्त ओरे पापिष्ठ रावण * अधर्म्मी दुर्ज्जन तइ अलपिक जन
कुयशक साधिलि लाजक पिठि दिलि * उपाये गुचाया मोर सीताक हरिलि ६३३०
सीताक हरिलि हन्ते मोहोर आगत * तोक थान दिलोहन्ते यमकरणत
कि मोर आनन्द आजि तोक भेट पाइलो * हेन जान तोक यमकरणे पठाइलो ६३३१

सम्पूर्ण आकाश ज्योतिर्मय हो उठा। रामचन्द्र की वह शक्ति बड़े वेग से रावण के शूल के समीप पहुँच गयी और उसे वेधकर खण्ड-खण्ड कर डाला ॥ २३ ॥ शक्ति के प्रहार से वह शूल टूट गया, तब लंकापुरी की सेना चीखती हुई भागने लगी। रावण इस कर्म को अद्भुत मानकर मौन हो गया। उसे रामचन्द्र ने वाणों के प्रहार से घायल कर डाला ॥ २४ ॥ रामचन्द्र के वाणों की तुलना तीनो लोकों में न थी, उन्होंने रावण के रथ के चारों घोड़ों को वेधकर जर्जर कर डाला। राजा रावण के शरीर को असंख्य वाणों से तथा कपाल को वाणों से पूरा वेध डाला ॥ २५ ॥ रावण-शरीर के स्थान-स्थान से रक्त ऐसा वहने लगा मानो अशोक, पलाश आदि के चमकीले फूल खिले हुए हों। रामचन्द्र ने उसे व्याकुल कर डाला, तो रावण हताश हो गया। साँसे वन्द हो जाने के कारण रावण मूर्छित हो गया ॥ २६ ॥ उसे दसों दिशाएँ अन्धकारमयी और चक्कर खाती-सी दिखाई देने लगी। तीखे वाणों के प्रहार से शरीर में वड़ी वेदना होने लगी। वीर रावण ढलकर रथ के पिछले हिस्से में गिर पड़ा। त्रस्त होकर वह क्षण भर निश्चेष्ट रहा ॥ २७ ॥ वर के प्रसाद से उसके प्राण नही गये, उसने उठकर राघव पर असंख्य वाणों का प्रहार किया। ऊपर-नीचे, आस-पास, उत्तर-दक्षिण सभी ओर भर-भरकर वाणों का निरन्तर प्रहार किया ॥ २८ ॥ राघव ने अनेक वाण मारे जिन वाणों ने रावण के वाणों को काटकर अँधेरा मिटाया। वाणों के प्रहार से रामचन्द्र ने उसके शरीर को बेध डाला और अपने वचनों से तिरस्कृत करते हुए गालियाँ दी ॥ २९ ॥ रामचन्द्र ने कहा— अरे पापी रावण! तू अधर्मी, दुर्जन और अल्पबुद्धि वाला है। हमें छलना द्वारा दूर हटाकर तूने मेरी सीता का हरण कर लिया। इस प्रकार लज्जा छोड़ दी और कुख्याति अर्जित की ॥ ६३३० ॥ यदि मेरे सामने तूने सीता का हरण किया होता, तो उसी स्थान में तुझे यमलोक भेज देता। तुझसे सामना कर आज मुझे कैसा आनन्द हो रहा है। समझ ले कि तुझे हमने यमलोक में भेज ही दिया है ॥ ६३३१ ॥ तेरा सिर काटकर मैं खर की-सी अवस्था कर दूँगा।

माथा काटि करो तोर खरर बृत्तान्त * शृगाल शकुने तोर बिचारक आन्त
हृदयत परि तोर गृध्रे मांस खाउक * जनकनन्दिनी शुनि कौतूहल पाउक ३२
रामर बचन येन बज्रर प्रहार * मर्म्मस्थान भेदि भैला श्रीहानि राजार
राव छाव नाहि हरिलेक बल दर्प * मन्त्र शुनि येहेन निर्ब्बिष कालसर्प ३३
मूर्च्छित भैलेक परापरक नजाने * हसकि हसकि परे यत बाण हाने
बानर भालुके बेढ़ि बरिषिला शिल * राघवर बाणघावे प्रमाद मिलिल ३४
रामे रावणक शर करन्त प्रहार * दशग्रीवे करिते नपारे प्रतिकार
सारथि देखन्त राजा चेतन हरिल * रथखान बाहुराया अन्तर करिल ३५
राखिया थाकिल निया लङ्कार कोलत * सन्धुकि रावणे पाइला चेतन गावत
हाओरे सारथि तइ किसक डरिलि * मइ नबोलन्ते केने रथ बाहुराइलि ३६
घोर संग्रामर हन्ते आन्तराइले किक * आमाक करिले लघु तुलात अधिक
तिनियो भुवने जाने पौरुष आमार * सबे नष्ट करिले बिपुल यशभार ३७
कुख्याति चलिल मोर देश देशान्तरे * रावण विमुखे पलाइ शत्रुकेसे डरे
रिपु यावे नाशङ्के मोहोर बोल शुन * सुमरस यद्यपि मोहोर यतगुण ३८
पौरुष राखिया मोर कुयश गुचाओं * समर भूमित लागि रथ बाहुराओं
रावणक सम्बुधि सारथि बोले बाक * कि कारणे प्रभुदेव गर्ज्जस आमाक ३९
रामशरे तोमार शरीर अशकत * शुनियो यिकारणे बाहुराइलो रथ
श्रान्त भैला प्रभुदेव घामिलेक गाव * मूर्च्छागते देखिलोहो आकुल स्वभाव ६३४०

सियार, गिद्ध तेरी आँतें निकालेंगे। गिद्ध तेरे हृदय पर बैठकर मांस खायें; यह सब सुनकर जनकनन्दिनी प्रसन्न हो ॥ ३२ ॥ वज्र के प्रहार की भाँति रामचन्द्र के वचनों ने रावण के मर्म स्थानों को बेध डाला जिससे राजा रावण की श्री नष्ट हो गयी। जिस प्रकार मन्त्र सुनकर कालसर्प विषहीन हो जाता है उसी प्रकार उसका बल-दर्प टूट गया, मुँह से बोली नहीं निकली ॥ ३३ ॥ उसे अपने पराये की सुध न रही, वह मूर्छित-सा हो गया। वह जितने वाणों का प्रहार करता वे हाथ से छूटकर गिर जाते थे। बानर-भालू उसे घेरकर वाणों की वर्षा करने लगे। रामचन्द्र के वाणों के प्रहार से वह मोहाच्छन्न हो गया ॥ ३४ ॥ राम रावण पर वाणों का प्रहार करते परन्तु रावण उनका प्रतिकार नही कर पाता था। सारथी ने देखा, राजा की चेतना नही रही है, तो रथ को मोड़कर वह दूर ले गया ॥ ३५ ॥ उसे लंका के बीच ले जाकर रखा। कुछ क्षण रुककर रावण के शरीर में चेतना लौटी। उससे कहा— हाय रे सारथी, तू डर क्यों गया ? मेरे कहे बिना रथ किसलिए लौटा लाया ॥ ३६ ॥ घोर संग्राम से मुझे किसलिए हटाया ? हमें तूने रुई से भी अधिक लघु बना डाला। मेरे पौरुष को तीनो लोक जानते हैं। तूने मेरे विपुल यश-भार को नष्ट कर डाला ॥३७॥ देश-देशान्तर में मेरी कुख्याति फैल गयी कि रावण शत्रु से डरकर युद्ध से विमुख हो भाग आया। यद्यपि मेरे गुणों को तू स्मरण रखता है तथापि अब मेरा कहना सुन, जिससे शत्रु के मन में सन्देह न हो ॥ ३८ ॥ अपने पौरुष की रक्षा कर अपनी कुख्याति मिटा सकूँ, इसके लिए युद्धभूमि में तू रथ को लौटा ले चल। रावण को सम्बोधित कर सारथी ने कहा— प्रभु, हम पर किस कारण गरज रहे है ? ॥ ३९ ॥ राम के वाणों से आपका शरीर अशक्त हो गया था, मैंने जिस कारण से रथ को लौटाया, सुनिये। प्रभुदेव, आप थक गये थे, शरीर पसीने-पसीने हो गया था, आपके मूर्छित होने पर स्वभाव व्याकुल होते देखा ॥ ६३४० ॥ आपके धनुष में टंकार न थी, वाण गिर-गिर पड़ते थे, मैंने सोचा, आपके प्राण अन्तरिक्ष में चले गये। राम के यमदूत

धनुर टङ्कार नाहि खसि परे वाण * मइ वोलो राजा अन्तरीक्ष भैला प्राण
रामर विशाल यमदूत सम शरे * चारिघोंरा हेसनि पारय निरन्तरे ६३४१
चिन्तिलोहो हित तुमि खानिक जिराहा * सन्मुखे डाकिवो रथ युजिवाक याहा
राजा बोले सारथि तेवेतो भाल मन * हरिषे हातर काढ़ि दिलेक कङ्कण ४२
सार्थक सारथि तइ शुन मोर वाक * समर भूमिक लागि झाण्टे रथ डाक
डाकिला सारथि रथ रावणर बोले * पावर सन्धाने सवे पृथिवी हिन्दोले ४३
रामे देखि बुलिलन्त शुनियो मातलि * परिर्वत्ति रावण आसय रणस्थली
गर्ज्जन करय येन कालमेघ खण्ड * शर वरिषन्ते आसे रावण प्रचण्ड ४४
दुर्व्वार वायु येन उरुवाइवो ताक * इन्द्रर सारथि अवहिति रथ डाक
सुरासुर मुनिगण सवात विदित * इन्द्रर सारथि तुमि अति सुशिक्षित ४५
छाटुता वचन किछो बुलिते न लागे * तुमि सखा भैला मोर निज कर्म्म भागे
राघवर वचने सारथि भैला तुष्ट * डाकिवे लागिला चारिघोंरा हृष्ट पुष्ट ४६
शीघ्रे रथ डाकिलेक डाहिनक बुलि * लङ्केश्वरे देखिलेक रथचक्र धूलि
महाकोपे दशग्रीवे असंख्यात शरे * रामर रथक ढाकिलेक निरन्तरे ४७
याक दशरथ सुत लैवोहो पराण * मातलिक हानिलेक असंख्यात वाण
राघवे तुलिया लैला वासवर चाप * अस्त्रसव हानन्त साक्षाते येन साप ४८
रावणे देखन्त शर आसे जाके जाक * आपोनार शरे चूर्ण करिलन्त ताक
दुयो दुइहान्तक शर करे अपर्य्यन्त * चौत्रिश अस्त्रक सबे दुइहान्तो जानन्त ४९
निसन्धि करिया शरे ढाकिला आकाश * अस्त्रे केहो दुइरो आरे नलक्षिल पाश
दुयो वीरे शरक क्षेपन्त असंख्यात * दुइहान्तरो शर दुयो करन्त निपात ६३५०

जैसे विशाल वाणों से चारों घोड़े निरन्तर चीख रहे थे ।। ६३४१ ।। मैंने इसी में भलाई सोची कि आप कुछ क्षण विश्राम करें, मैं अभी आपके सम्मुख रथ ला रहा हूँ आप युद्ध करने चलिये । राजा रावण ने कहा— सारथी, तव तो तुम्हारा विचार अच्छा है । उसने हर्षित हो अपने हाथ का कंकण निकाल सारथी को दे दिया ।। ४२ ।। वोला— मेरे सच्चे सारथी, तू मेरा कहना सुन, शीघ्र ही युद्धभूमि की ओर रथ को हाँक ले चल । रावण के कहने पर सारथी ने रथ को हांका, (उस रथ के घोड़ों की) टापों से सारी पृथ्वी हिल उठी ।। ४३ ।। राम ने उसे देखकर कहा, मातलि ! सुनो, रावण लौटकर युद्धभूमि में आ रहा है, वह काले मेघखण्ड के समान गरज रहा है । प्रचण्ड रावण वाण वरसाता हुआ आ रहा है ।। ४४ ।। उसे मैं दुर्निवार पवन की भाँति उड़ा दूंगा । इन्द्र-सारथी मातलि, तुम सावधानी से रथ हांको । इन्द्र के सारथी, सुर-असुर-मुनि सभी जानते हैं कि तुम बड़े सुशिक्षित हो ।। ४५ ।। तुम्हें प्रशंसा के वचन कहने की आवश्यकता नही है, तुम मेरे अपने कर्म-भाग्य से सखा बने हो । रामचन्द्र के वचन से सारथी हर्षित हुआ और चारों हृष्ट-पुष्ट घोड़ों को हांकने लगा ।। ४६ ।। उसने दाहिनी ओर शीघ्रता से रथ हाँका, लंकेश्वर रावण ने रथ के पहियों से उड़ी हुई धूल देखी । अत्यन्त क्रोधित होकर असंख्य वाणो से निरन्तर प्रहार कर रामचन्द्र के रथ को उसने ढँक दिया ।। ४७ ।। उसने कहा— दशरथनन्दन, ठहरो, मैं तुम्हारे प्राण ले रहा हूँ । उसने मातलि को असंख्य वाणों से प्रहार किया । रामचन्द्र ने इन्द्र का धनुष उठा लिया और सांपों जैसे असंख्य अस्त्रों का प्रहार किया ।। ४८ ।। रावण ने देखा, झुण्ड के झुण्ड वाण आ रहे हैं, उन्होंने अपने वाणों से उन्हें चूर-चूर कर डाला । दोनो, दोनो को अनेक वाणों से वेधने लगे, दोनो ही चौंतीसों अस्त्रों के जानकार थे ।। ४९ ।। उन दोनो ने समूचे आकाश को ढँक दिया, दोनो का कोई अस्त्र किसी के समीप नहीं पहुँच

एकहन्ते मिलिला विषम उतपात * दिवसते सन्ध्या आसि मिलिल लङ्कात
ओर पुष्पवर्ण भैला सब लङ्काखान * रावणर माथे तेज बरिषण टान ६३५१
रावणर उपरे मण्डलि करे काक * दक्षिण दिशत गृध्र भ्रमे जाके जाक
दशग्रीव राजार आगत भूमिकम्प * जोटा जोटा करि काके माथे दिला जाम्प ५२
निर्घात परिया गैला रथर ऊपरे * बायु बहे सम्मुखे धूलाये मुख भरे
रावण नृपति थाकिलेक शर जुरि * हानिते नपारे शर धनुत आजुरि ५३
काक कङ्कु शकुन सम्मुखे चाया बरे * जोटा जोण्टि करि गैया कतो आगे परे
बिमङ्गलु अनेक मिलिला उतपात * दशग्रीव राजार कटाक्ष नाहि तात ५४
चारिओ घोरार नयनर नीर बहे * अनेक अद्भृत बिमङ्गल कथा कहे
मुखचाइ फेरुवाये नादय हरिषे * रावणर मरण जानिया दशोदिशे ५५
रामर पाशत सुमङ्गल कथा कहे * सुरभि शीतल अनुकूले बायु बहे
दक्षिण नयन हात पाव कर्ण फन्दे * समरत जय हेतु मिलिला आनन्दे ५६
राम रावणर हेन अद्भुत संग्राम * येन हरि हिरण्याक्षे समर उपाम
आवर उपाम नाहि त्रैलोक्य भितरे * महा घोर युद्ध भैला राम रावणरे ५७
यत बल आछय दुइहानो शरीरत * यत अस्त्र जाने दुयो हानन्त रणत
राघवे युजय जानि जिनिबो रावण * रावणे युजय जानि आपुन मरण ५८
महावीर रावण दुर्ज्जय धनुर्द्धर * रामर ध्वजक लागि प्रहारिल शर
शर आसे देखि रामे मन्त्रक पढ़िल * ध्वजक नापाया शर पाताले पशिल ५९

सका। दोनो वीर असंख्य वाणों का प्रहार करने लगे। दोनो ही एक दूसरे के वाणों को नष्ट कर देते थे ।। ६३५० ।। उधर लका में भयंकर उत्पात होने लगे, दिन में ही लंका में सन्ध्या हो गयी। सारी लंका रक्तपुष्प-वर्णी हो गयी। रावण के सिर पर प्रबल वेग से रक्त बरसने लगा ।। ६३५१ ।। रावण के ऊपर कौवे चक्कर लगाने लगे, दाहिनी ओर झुण्ड के झुण्ड गिद्ध घूमने लगे। राजा रावण के सामने भूकम्प होने लगा, कौवों की जोड़ियाँ उसके सिर पर कूद पड़ने लगी ।। ५२ ।। उसके रथ पर वज्रपात हो गया, सामने की ओर हवा बहने लगी, धूल से मुँह भर जाने लगा। राजा रावण धनुष पर वाण चढ़ाये रहा परन्तु धनुष पर से वाण छोड़ नहीं सकता था ।। ५३ ।। कौवे, कंक, गिद्ध आदि रावण की ओर तीव्र दृष्टि से देखकर एक दूसरे से छीना-झपटी कर रहे थे। कुछ आकर रावण के सामने गिर पड़ते थे। लंका में अनेक अमंगल-जनक उत्पात होने लगे, राजा रावण उन पर कुछ भी ध्यान नही देता था ।। ५४ ।। चारों घोड़ों की आँखों से आँसू बहने लगे। अनेक अद्भुत अमंगलों की बातें होने लगीं। रावण का मरण जानकर दसों दिशाओं में सियार उसके मुँह की ओर देख-देखकर हर्ष से नाद करने लगे ।। ५५ ।। उधर राम के सामने सुमंगल की बातें हो रही थीं। सुगन्धित, शीतल, अनुकूल पवन चलने लगा। रामचन्द्र के दाहिने नयन, हाथ, पैर, कान फड़कने लगे, युद्ध में विजय हेतु शुभ सगुन आनन्द से मिलने लगे ।। ५६ ।। राम-रावण का यह अद्भुत संग्राम ऐसा था मानो हरि और हिरण्याक्ष में युद्ध हो रहा हो। उसके सिवा तीनो लोकों मे और कोई उपमा नही। राम-रावण के बीच ऐसा महा घोर युद्ध हुआ ।। ५७ ।। दोनो के शरीर में जितना बल था, दोनो जितने अस्त्रों का प्रयोग जानते थे, सबका प्रहार दोनो कर रहे थे। रामचन्द्र यह समझकर लड़ रहे थे कि रावण को जीतूंगा। रावण अपना मरण जानकर लड़ रहा था ।। ५८ ।। महा वीर रावण दुर्जय धनुर्धर था, उसने राम के ध्वज पर वाण से प्रहार किया। वाण को आते देखकर रामचन्द्र ने मन्त्र पढ़ा और रावण का वाण ध्वज पर पड़े बिना पाताल में घुस

रावणर शर येवे निष्प्रभता भैल * रामे यमदण्ड सम शर तुलि लैल
रावणर ध्वजक हानिला महाबले * आकाशत अगनिर कणिका निकले ६३६०
आकाशत देवगणे आछय देखिया * राघवर शरे ध्वज पेलाइल छेदिया
भूमित परिला ध्वज हुया खण्ड खण्ड * आकाशत हरिष मिलिला वाद्यमण्ड ६३६१
देखिलेक लङ्केश्वरे शर चूर्ण भैल * तूलात अगनि येन कोप ज्वलि गैल
बरिषिते लागिल अनेक शत शरे * चारिघोंरा रथर बिन्धिला निरन्तरे ६२
इन्द्रर घोटक रावणर शर जाले * रौद्र पाया हाले येन श्रीफलर डाले
आति तेज बले बर दीपिति करय * रावण राजार देखि मनत बिस्मय ६३
रामर घोंरार येवे कटाक्ष न भैल * आथाके रावणे शर वरिषिबे लैल
गदा परिघेक हाने शकति तोमर * गिरिशृङ्ग वृक्ष शिले हाने निरन्तर ६४
शूल शकतिक हाने त्रिकण्टिक खुर * अर्द्धचन्द्र शतघ्नी ये परशु प्रचुर
अङ्कुश वेलशमुख भल्ल कनियाले * मायाबले रावणे हानय भिण्डिपाले ६५
रावणर शरे छाइला सकल आकाश * रामर रथर किछु नलङ्घिला पाश
वानर ये भालुक सेनात गैया परि * रावणर शरे असंख्यात याइ मरि ६६
रामर शरीर येवे नुछुइलेक शरे * सहस्र संख्यात शर लङ्केश्वरे मारे
कतो सारथित परे कतोहो रथत * शताधिक फुटिला रामर शरीरत ६७
शरर प्रहारे राम वरकोपे धाइल * कोटि संख्या शर हानि रावणक छाइल
दुइहानर शर आकाशते एके ठाव * आउर आउरे निरन्तरे खिछाखिछि गाव ६८

गया ।। ५९ ।। जब रावण का वह वाण तेजहीन हो गया। तब रामचन्द्र ने यमदंड-सा वाण उठा लिया और महावल से रावण के ध्वज पर प्रहार किया। उससे आकाश में अग्नि की चिनगारियाँ निकलने लगी ।। ६३६० ।। आकाश में देवगण देख रहे थे, राघव के वाण ने रावण के ध्वज को काट गिराया। ध्वज खण्ड-खण्ड होकर भूमि पर गिर पड़ा। आकाश के देवगण हर्षित हो वाद्य बजाने लगे ।। ६३६१ ।। लकेश्वर ने देखा कि उसका बाण चूर-चूर हो गया तो वह क्रोध के मारे ऐसा जल उठा जैसा कि रुई मे अग्नि ! वह अनेक सौ वाण वरसाने लगा। राम के रथ के चारों घोड़ों को निरन्तर वेध डाला ।। ६२ ।। रावण के वाणों के जाल से वे घोड़े वैसे ही हो उठे जैसे कि धूप पाकर श्रीफल (वेल) की डालियाँ झुक जाती हैं। वे अत्यन्त तेज-बल से दीप्तिमान हो उठे, यह देख राजा रावण के मन मे वड़ा विस्मय हुआ ।। ६३ ।। राम के घोड़ों ने जब कोई परवाह नही की तो रावण अविराम वाणों की वर्षा करने लगा। गदा, परिघ, शक्ति, तोमर आदि का प्रहार किया; पर्वत-शिखर, वृक्ष, शिला आदि से निरन्तर प्रहार करने लगा ।। ६४ । शूल, शक्ति, तीन वाणों वाले त्रिकंटिक, क्षुर, अर्धचन्द्र, शतघ्नी, परशु, अंकुश, वेलशमुख, भल्ल, कनियाल नाम के छोटे वाण, भिन्दिपाल, आदि अनेक अस्त्रों का प्रहार मायावल से रावण करने लगा ।। ६५ ।। रावण के वाणों ने सारे आकाश को छा दिया पर वे रामचन्द्र के रथ के समीप नहीं पहुँच सके। वे वानर-भालुओं की सेना में जा गिरते थे। रावण के वाणो से असंख्य वानर-भालू मारे जा रहे थे ।। ६६ ।। जब वे वाण रामचन्द्र के शरीर को स्पर्श नही कर पाये तो लंकेश्वर रावण सहस्रों की संख्या में वाण छोड़ने लगा। कितने ही वाण सारथी पर गिरते थे, कितने रथ पर, शताधिक वाण राम के शरीर में चुभ गये ।। ६७ ।। वाणों के प्रहार से राम वड़े क्रोधित होकर धावित हुए और करोड़ों की संख्या में वाण मारकर रावण को आच्छादित कर दिया। दोनो के वाण आकाश मे एक ही स्थान पर मिलकर एक दूसरे से निरन्तर रगड़ खा रहे थे ।। ६८ ।। राक्षसों की सेना और वानरों की

राक्षसर सैन्य आर बानरर बले * करे अस्त्र शिला धरि थाकिला सकले
तवधे थाकिला दुइर समर आकलि * आर लैया नाचे येन चित्रर पुतली ६९
इकूले सिकूले नाहि बायुर सञ्चार * नेदेखि सूर्य्यर रश्मि भैला अन्धकार
दुइहान्तर शरचय लङ्घिला आकाश * अर्द्ध ऊर्द्ध दशदिशे नाहिके प्रकाश ६३७०
राम रावणर भैला तुम्बुल आस्फाल * प्रलयर मेघ येन दुइहान घञ्चाल
दुइहन्ते परिघ गदा हाने निरन्तर . अस्त्रर प्रतापे ढोउ सपत सागर ६३७१
पातालपुरत कम्पि गैला सबे सर्प * दैत्य दानवर हरिलेक बल दर्प
सप्तद्वीपा पृथिवी करय टलवल * सागरर ढौ भैला पर्व्वत सच्छल ७२
निष्प्रभ भैलन्त तारा शशी दिनकर * हुलस्थूल लागि गैला सकल लोकर
धर्म्म धर्म्म सुमरन्त यत ऋषिगण * रामर कल्याण हौक मरोक रावण ७३
घोंरे घोंरे लागि गैला कामोरा कामुरि * पताका पताका लागिलेक जरा जरि
दुयो रथे गैया लागिलेक ठेकाठेकि * पुनरपि दुइ बीर गैलेक हुसकि ७४
राघवे हानिला आठगोट दिब्य शर * चारिघोंरा रथर फुटिला निरन्तर
कतो दूर 'हुसकिया गैला पाच करि * सारथि डाकिला रथ धाइल दरदरि ७५
क्रोधिलेक रावण साक्षाते यमदूत * रामर शरीरे शर ताड़िले बहुत
कुशर ये कण्टक दिवार नाहि ठाव * जालर सरङ्गा येन भैला सर्व्व गाव ७६
तिनिलोक काम्पय रामर पयोभरे * उलट पालट जल सपत सागरे
ईश्वर समान कोन आछे त्रिजगते * तथापि करन्त लीला मानुषर मते ७७
देवासुर भङ्ग भैला रोमाञ्चित गाव * त्रैलोक्य तवध भैला नबहय बाव

वाहिनी अपने-अपने हाथों में अस्त्र और शिलाएँ धारण कर खड़े रह गये। वे दोनो के युद्ध को देखते हुए ऐसे लगते थे मानो उन्हें लेकर चित्र की पुतलियाँ नाच रही हों ।। ६९ ।। (यहाँ तक कि) इस ओर से उस ओर तक पवन भी नहीं चलता था। सूर्य की किरणें दिखाई नही देती थी, अंधेरा छा गया था। दोनो के वाण आकाश को पार कर जाने लगे जिनसे ऊपर-नीचे कही प्रकाश नही आ पाता था ।। ६३७० ।। राम-रावण भयंकर पौरुष से अपने अंगों को संचालित कर रहे थे। दोनो प्रलय-मेघ जैसे आतंक-जनक लग रहे थे। दोनो ही निरन्तर गदा और परिघ का प्रहार कर रहे थे। उनके अस्त्रों के प्रताप से सातों समुद्रों में लहरें उठने लगी ।। ६३७१ ।। पाताल-पुरी मे सारे सर्प काँप उठे। दैत्य-दानवों के बल-दर्प नष्ट हो गये। सप्तद्वीपों वाली पृथ्वी डगमगाने लगी। सागरों की लहरे पर्वतों की भाँति विशाल हो उठी ।। ७२ ।। तारे, चन्द्रमा, सूर्य निष्प्रभ हो गये। सभी लोकों में खलबली मच गयी। सारे ऋषि 'धर्म, धर्म' स्मरण करने लगे। 'राम का कल्याण हो, रावण मारा जाये' ।। ७३ ।। दोनो के घोड़े एक दूसरे को दाँतों से काटने लगे। दोनो की पताकाएँ एक दूसरे से उलझ गयी। दोनो रथ एक दूसरे से टकराने लगे। पुनः दोनो वीर एक दूसरे से दूर हट गये ।। ७४ ।। रामचन्द्र ने आठ दिव्य वाणों से प्रहार किया। रावण के रथ के चारों घोड़े बिद्ध हो गये। वे पीछे हटकर कुछ दूर भाग गये। सारथी ने (उन्हें मोड़कर) रथ को हाँका, वे तीव्रवेग से दौड़ते आ गये ।। ७५ ।। रावण साक्षात् यमदूत की भाँति क्रोधित हो उठा। उसने राम के शरीर में अनेक वाण मारे। उनके शरीर में कुश का काँटा रखने का स्थान भी नही बचा, सारा शरीर जाल के छेदों जैसा बन गया ।। ७६ ।। राम के पराक्रम से तीनो लोक काँपने लगे। सातों सागरों का जल उलट-पलट जाने लगा। ईश्वर के समान तीनो लोकों में भला कौन है ? तथापि वे मनुष्यों की भाँति लीला करते हैं ।। ७७ ।। रोमांचित होकर देवासुर भाग चले।

पातालत कम्पि कम्पि गैला नागगण * शान्ति स्वस्त्ययन करे देव, ऋषिगण ७८
राघवे धनुत जुरि खुरपति वाण * रावणर शिर लक्षि करिला सन्धान
देवगणे चाहि आछे मन करि थिर * कुण्डले मण्डित काटिलेक दशशिर ७९
शिर छिण्डि परिलेक शरीरर हन्ते * आउर माथा उठिला रामक गरजन्ते
राघवे काटिला ताको खुरपति शरे * आउर माथा उठिया रामक शर करे ६३८०
त्रैलोक्यर नाथ राम वले न घाटन्त * येखने उपजे माथा तेखने काटन्त
सवलोके चाहिया आछय असदृश * काटिले उपजे माथा ताहार सदृश ६३८१
पुनरपि पुनरपि शिर होवे तार * काटिलन्त रामे अष्टाधिक शतबार
बिस्मये गुणन्त राम इटो कि कारण * माथा काटिलेओ देखो नमरे रावण ८२
बिराध खरक मारिलोहो एहि वाणे * त्रिशिरार शिर छेदि निले यमथाने
कुम्भकर्ण बीरक पठाइलो यम दिश * रावणक पाया शर भैलेक निर्व्विष ८३
दशग्रीव राजा युजे परम हरिषे * राघवक बेढ़ि घोर मुषल वरिषे
श्रीरघुनन्दन राम समरे कुशल * भल्ल हानि चूर्ण कैला ताहार मुषल ८४
सात दिन सात रात्रि युद्ध निरन्तर * खानिको विश्राम नाहि राम रावणर
खनो पृथिवीत युजे खनो आकाशत * दुर्घोर समर कतो गिरि शिखरत ८५
एकोमते रावणक बधन नयाय * मातलि बोलन्त देव शुनियो उपाय
रावण अवध्य भैला पितामह बरे * इहाक मारियो शीघ्रे ब्रह्मदत्त शरे ८६
मातलिर वाणी शुनि रामे गुणि पाइल * ब्रह्म अस्त्र आनि रामे गुणत चड़ाइल
शरर अनेक गुण अगस्ति कहिल * रावण बधक प्रति राघवक दिल ८७

तीनो लोक स्तब्ध हो गये, हवा चलना बन्द हो गया। पाताल में, नागगण काँप उठे। देव-ऋषिगण शान्तिपाठ, स्वस्ति-वाचन करने लगे ॥७८॥ रामचन्द्र ने धनुष पर क्षुरपति वाण जोड़ा और रावण के मस्तक को लक्ष्य कर छोड़ा। देवगण मन स्थिर कर देखते रहे। (रामचन्द्र के वाण ने) कुण्डल-मण्डित दसों सिरों को काट डाला ॥ ७९ ॥ शरीर से कटकर सिर नीचे गिर पड़े। परन्तु राम पर गरजते हुए और सिर निकल आये। रामचन्द्र ने उन्हें भी क्षुरपति वाण से काट डाला। पुनः रावण के दूसरे सिर निकल आये और राम पर वाण छोड़ने लगे ॥ ६३८० ॥ त्रैलोक्य के नाथ रामचन्द्र वल से पराजित होनेवाले न थे। जैसे ही रावण के सिर निकल आते थे वे तुरन्त काट डालते थे। यह विचित्र स्थिति सव लोग देख रहे थे, उसका सिर काटने पर उसी के जैसा सिर निकल आता था ॥ ६३८१ ॥ बार-बार उसके सिर निकल आते थे। रामचन्द्र ने एक सौ आठ बार सिरों को काटा। विस्मय से रामचन्द्र सोचने लगे, यह कौन सा कारण है कि सिर काटने पर भी देखता हूँ रावण मरता नही ॥८२॥ मैंने इसी वाण से विराध-खर को मारा था, त्रिशिरा का सिर काटकर यमलोक भेज दिया था। वीर कुम्भकर्ण को यमलोक की ओर भेजा था। वही वाण रावण के पास पहुँचकर विषहीन वन जाता है ? ॥ ८३ ॥ राजा दशानन परम हर्ष से लड़ रहा था, रामचन्द्र को घेरकर घोर मूसलों की वर्षा करने लगा। श्रीरघुनन्दन राम युद्ध में वड़े निपुण थे, उन्होंने भल्ल के प्रहार से उसके मूसलो को काट डाला ॥ ८४ ॥ सात दिन सात रात तक निरन्तर युद्ध होता रहा। राम-रावण को जरा भी विश्राम न था। क्षण में वे पृथ्वी पर लड़ते थे तो दूसरे क्षण आकाश में, कभी गिरि-शिखरों पर प्रचण्ड युद्ध करते थे ॥ ८५ ॥ किसी भी प्रकार से रावण का वध नही हो पा रहा था, मातलि ने कहा— प्रभु, उपाय (बताता हूँ), सुनिये। पितामह ब्रह्मा के वर से रावण अवध्य है। इसे ब्रह्मा के दिये हुए वाण से शीघ्र ही मार डालिये ॥ ८६ ॥ मातलि का वचन सुनकर राम ने विचार

धनुत जुरिया रामे बुलिला बचन * कहियो मातलि दशग्रीवर कारण
कि कारणे तार मुण्ड हुवे उतपति * रामर वचन शुनि मातलि बदति ८८
पूर्ब्बे लङ्केश्वरे ये हरक आराधिल * नवगोटा शिर काटि हरक तुषिल
नवगोटा शिरे घृत दिया अगनित * आरो शिरगोट आछे छेदिते बाञ्छित ८९
दक्षिण हातत स्रुव बामे धरि शिर * काटि यज्ञ करिबाक चाहे महाबीर
दशमुण्डे घाव दिबे चाहे लङ्केश्वर * नकाट बुलिया खड्गे धरिला शङ्कर ६३९०
माथा काटिबाक नेदिलन्त देव हर * बोलन्त साहसी आर नाहि तोत पर
तोहोर साहसे तुष्ट भैलो लङ्केश्वर * बर लओ तोहोर बाञ्छित दिबो बर ६३९१
रावणे बोलय प्रभु यदि दिबा बर * देवगण दानव जिनिबो पुरन्दर
सुरासुरगण आनो यत नागलोक * तासम्बार हाते मोर मरण नहोक ९२
तुष्ट हुइया एहि बर दिला महेश्वरे * देव दानवक तइ जिनिबि समरे
यद्यपि समरे तोक जिनिबाक पारे * तथापि मस्तक तोर हैब बारे-बारे ९३
हेनमते बर लैला रावणे पूर्ब्बत * स्वरूप कहिलो देव तोमार आगत
ब्रह्मअस्त्र धरि प्रभु बधियो रावण * हेनमते सारथि कराइला सुमरण ६३९४
ब्रह्मअस्त्र मारियोक जगत ईश्वर * एहि अस्त्रे मरिया याइबेक निशाचर
अस्त्रर शरीर गोट देखि ज्योतिर्मय * पुङ्खत बायुक देखि मुखे सूर्य्यमय ९५
मेरु मन्दरर सम गुरुतर शर * प्रतिपदे थित देव सपत सागर
कुबेर बरुण बायु यमान्तक काले * ब्रह्मा महेश्वर हरि दश दिगपाले ९६

कर पा लिया और ब्रह्मास्त्र लेकर उन्होंने धनुष की डोरी पर चढ़ाया। इस अस्त्र के अनेक गुणों का वर्णन कर अगस्त्य मुनि ने रावण-वध हेतु रामचन्द्र को दिया था ॥ ८७ ॥ उसे धनुष पर चढ़ाकर रामचन्द्र ने कहा— मातलि, दशानन रावण का (ऐसा होने का) कारण बताओ। किस कारण उसके सिर उत्पन्न हो जाते हैं? राम के वचन सुनकर मातलि बोला— ॥ ८८ ॥ पूर्व काल में लंकेश्वर ने शिव की आराधना की थी, उसने अपने नौ सिरों को काटकर शिव को संतुष्ट किया। नौ सिरों को घी में डाल अग्नि में आहुति देने के पश्चात् शेष सिर को भी काट डालना चाहा ॥ ८९ ॥ उस महावीर ने दाहिने हाथ में स्रुवा और बाये हाथ में सिर पकड़कर काट-यज्ञ करने की कामना की। दसवें सिर पर लंकेश्वर ने चोट करना चाहा तभी शंकरजी ने 'मत काट' कहकर खड्ग पकड़ लिया ॥ ६३९० ॥ देव शंकर ने उसे सिर काटने नहीं दिया। कहा— तुझसे बढ़कर और कोई भी साहसी नहीं है। हे लंकेश्वर, तेरे साहस से मैं संतुष्ट हुआ हूँ। वर माँग। मैं तुझे तेरा वांछित वरदान दूंगा ॥ ६३९१ ॥ रावण ने कहा, प्रभु, यदि मुझे वर देना चाहते हैं (तो यही वर दीजिये कि) मैं देव-दानव सहित इन्द्र को जीत लूं। सुरासुरगण समेत और जितने नागगण हैं उनके किसी के हाथ से मेरी मृत्यु न हो ॥ ९२ ॥ संतुष्ट होकर महेश्वर ने उसे वही वर दे दिया— तू देव-दानव सबको युद्ध में जीत लेगा। यदि कोई तुझे युद्ध में जीत भी ले तथापि तेरे सिर बार-बार निकल आयेंगे ॥ ९३ ॥ इसी प्रकार रावण ने पूर्व काल में वर लिया था; देव, आपके सम्मुख मैंने सत्य बात कही। प्रभु, ब्रह्मास्त्र धारण कर रावण का वध कीजिये। सारथी ने इस प्रकार से स्मरण कराया ॥ ९४ ॥ जगत के नाथ, आप ब्रह्म-अस्त्र का प्रहार कीजिये। इसी अस्त्र से निशाचर मारा जायगा। उस अस्त्र का सम्पूर्ण शरीर ज्योतिर्मय था, उसकी पूंछ में वायु और मुख में सूर्य थे ॥ ९५ ॥ मेरु मन्दर के समान वह शर भारी था, उसके प्रत्येक चरण में देवगण, सप्त-समुद्र स्थित थे। कुबेर, वरुण, वायु, यमान्तक काल, ब्रह्मा, महेश्वर, हरि, दसों दिग्पाल आदि सभी देवताओं के

त्रिदश ये देवर शकति तेज वले * व्रह्माये सृजिला ताक अति कौतूहले
प्रतिवन्धे छाया आछे गरुड़र पाखि * प्रलय कालर येन अगनिक देखि ९७
वेदमन्त्र आनि ताते जपिलन्त रामे * चापते जुरिला रावणर वध कामे
ऋग यजु साम ये अथर्व्व वेद स्मरि * चारियो वेदर मन्त्रे जपिला मुरारि ९८
वह्निमुख नाम तार थैला प्रजापति * रावण वधक प्रति दिलन्त अगस्ति
आकर्ण पूरिया प्रहारिला रघुनाथे * शीघ्रे चलि गैला शर मारुतर पथे ९९
भकर भकर करि अगनि निकले * धूम्रे व्यापिलेक सब धरणी मण्डले
कम्पिल पर्व्वत मेरु सपत पाताल * त्रैलोक्ये वोलन्त भैल प्रलयर काल ६४००
त्रिभुवने चमक लागिल हुलस्थूल * दैत्य ये दानव यक्ष सवारे आकुल
वज्रर प्रहारे येन गिरिर कन्दर * रावणर हिया फुटि वाज भैला शर ६४०१
शोणिते तिन्तिला देहप्राण गैल छारि * सागरक गैल शर पृथिवी बिदारि
स्नान करि तेतिक्षणे सागर जलत * शुद्ध हैया पशिलन्त रामर तूणत २
शङ्करर अस्त्रे येन त्रिपुर दहिया * महेश्वर तूणे पुनु थाकिला पशिया
रावण राजार येवे छाड़ि गैला प्राण * हुसकिया हातर परिला धनुखान ३
रथहन्ते ढलिया परिला लङ्कानाथ * कलेवरे जुरिलेक कुरिशत हात
दुइकुरि शत हात जुरिलेक रथे * वानरे खेदिया मारे राक्षस समस्ते ४
कोटि संख्या भालुके खेदिया याक पावे * माथात कामुरि मरमरिया चबावे
अवशेष यत आछे निशाचर वल * लङ्का नगरत पशि कान्दय सकल ५
रावण परिल शुनि समस्त नगरी * हा हा कंक गैले मोक निमाखिति करि

तेज-वल-शक्ति से, व्रह्मा ने वड़े कौतूहल से उसकी सर्जना की थी। उसके प्रत्येक पोर में गरुड़ के पंख लगे हुए थे, वह प्रलयकाल की अग्नि जैसा दीख रहा था ॥ ९६-९७ ॥ रामचन्द्र ने वेद-मन्त्र का जाप कर उसे अभिमन्त्रित किया और रावण के वध की कामना से उसे धनुष पर चढ़ाया। ऋग्, यजु, साम, अथर्व वेद का स्मरण कर, चारों वेदो के मन्त्र से उन्होंने मुरारी का जाप किया ॥ ९८ ॥ प्रजापति ने उस अस्त्र का नाम वह्निमुख रखा था, और रावण-वध हेतु उसे अगस्त्य मुनि ने रामचन्द्र को प्रदान किया था। कान तक खींचकर रामचन्द्र ने उसका प्रहार किया। वह वाण शीघ्र ही पवन-मार्ग से चला ॥ ९९ ॥ उसमें से भक्-भक् अग्नि निकलने लगी। धुएँ ने समूचे धरती-मण्डल को व्याप्त कर लिया। मेरु पर्वत, सातों पाताल कंपित हो उठे। त्रैलोक्य के लोग कहने लगे, प्रलयकाल आ गया ॥ ६४०० ॥ त्रिभुवन में विस्मय के कारण खलवली मच गयी, दैत्य, दानव, यक्ष, सभी व्याकुल हो उठे। वज्र के प्रहार से जैसे गिरि-कंदराएँ विदीर्ण हो जाती हैं, उसी प्रकार रावण के हृदय को फाड़कर वाण निकल गया ॥ ६४०१ ॥ रक्त से उसकी देह तर हो गयी, प्राण निकल गये, पृथ्वी को फोड़कर वह वाण सागर को चला गया। उसी क्षण सागर के जल में स्नान कर शुद्ध हो वह अस्त्र राम के तूण में प्रविष्ट हो गया, ॥ २ ॥ जिस प्रकार शंकर का अस्त्र त्रिपुर का दाहन कर पुन: महेश्वर के तूण में प्रविष्ट हो गया था। जब राजा रावण के प्राण निकल गये, उसके हाथ से धनुष खिसककर गिर पड़ा ॥ ३ ॥ लंकाधिपति रथ से लुढ़ककर गिर पड़ा। उसका शरीर बीस सौ हाथ व्याप्त कर फैल गया और रथ चार सौ हाथ तक व्याप्त कर फैल गया। वानर सभी राक्षसों को खदेड़कर मारने लगे ॥ ४ ॥ कोटि संख्या में भालू जिसे खदेडकर पाते थे, उसी के सिर को पकड़कर कड़मड़ा कर चबा डालते थे। निशाचरों की जितनी सेना वची हुई थी, सभी लका में जाकर रोने लगे ॥ ५ ॥ रावण मारा गया, सुनकर सारी नगरी "हा, हा, हमे

कपिगण समस्ते करय कौतूहल * नाचय गावय हास्य करे खल खल ६
लाञ्जथिय करि करे लवरा लवरि * आवरे आवरे करे चवरा चवरि
कतो नाचे कतो गावे कतो हाततालि * भाबुकि पारिया कतो करय धेमालि ७
नाचे गीते गगन पूरिला सिंहनादे * बन्धु दरशन हैबो रामर प्रसादे
रामर हातत येवे परिला रावण * हा भाइ बुलिया कान्दन्त बिभीषण ८
दादा लङ्कानाथ तिनिलोक चमत्कार * किसक मरण मइ चिन्तिलो तोमार
कथा गैले पाओं लङ्केश्वर हेन भाइ * किनो राज्यसुख मोर तोमाक मराइ ९
किनोतो पापिष्ठ मइ जातित राक्षस * ज्येष्ठक मराइ किनो लभिलो कुयश
शय्यात शोवय पिटो नेतकामलित * हेनय शरीर आछे केवले भूमित ६४१०
याक सेवा करि थाके देवकन्यागणे * हेनय शरीर खाइब शृगाल शकुने
आमार बचन तुमि देखिलाहा तिता * माथात करिया किय नसपिला सीता ६४११
तार फले इष्ट बन्धु बान्धव मराइला * लङ्काक अनाथ करि प्राण हरुवाइला
बिभीषणे कान्दय राजार धरि गले * रामे प्रबोधन्त ताक नयन सजले १२
नकान्दा नकान्दा बिभीषण प्राण मित्र * हेनय अधीर छार संसार चरित्र
हारिया जिनय कतो जिनिया हारय * कहित शुनिला सर्व्वकाले भैला जय १३
उपजि मरय कतो मरि उपजय * अथिर संसार आक जाना महाशय
बाहुबले रावणे जिनिला तिनिलोक * हेनय बीरक मित्र नकरिबा शोक १४
सदगति भैल हाते परिला आमार * प्रेतकार्य्य करियोक रावण राजार
बिभीषणे बुलिलेक रामक सम्बुधि * इसब कार्य्यक प्रभु बोला किबा सुधि १५

अनाथ कर कहाँ गये !" करने लगी। सभी बानर आनन्द मनाने लगे तथा नाचने-गाने व खिल-खिल हास करने लगे ॥ ६ ॥ पूँछ उठाकर वे इधर-उधर दौड़-कूद करने लगे, एक दूसरे को थप्पड़ मारने लगे। कितने ही नाचने लगे, कितने ही गाने लगे, कितने ही हाथ से तालियाँ बजाने लगे, कितने ही धमकी दे-देकर मजाक करने लगे ॥ ७ ॥ नृत्य-गीत और सिंहनाद से आकाश गूँज उठा। (वे कहने लगे) राम के प्रसाद से मित्रों के दर्शन होंगे। राम के हाथ जब रावण मारा गया, विभीषण 'हा भाई' कहकर रोने लगा ॥ ८ ॥ भाई, लंकानाथ, तीनों लोकों को चमत्कृत कर रखनेवाले, मैंने तुम्हारी मृत्यु क्यों चाही ? कहाँ जाने पर लंकेश्वर जैसा भाई पाऊँगा, तुम्हें मरवाकर कौन सा राज्य-सुख मैंने पाया ॥ ९ ॥ जाति में राक्षस होने पर भी मैं कैसा पापी हूँ। बड़े भाई को मरवाकर मैंने कितनी कुख्याति अर्जित की। जो शय्या पर बहुमूल्य गलीचे पर सोया करता था, वह शरीर आज केवल भूमि पर पड़ा हुआ है ॥ ६४१० ॥ जिसकी सेवा देव-कन्याएँ किया करती हैं, वैसे शरीर को आज सियार और गिद्ध खायेंगे। मेरे वचनों को तुमने कड़वा समझा। सिर पर ले सीता को किसलिए सौंप नहीं आये ॥ ६४११ ॥ इसके फलस्वरूप तुमने अपने सम्बन्धियों, बन्धु-बांधवों को मरवा डाला, लंका को अनाथ कर अपने प्राण खो दिये। विभीषण राजा रावण के गले लगकर रोता रहा, राम सजल-नयन होकर उसे धीरज बँधाने लगे ॥ १२ ॥ प्राणमित्र, विभीषण, न रोओ, न रोओ। इस निस्सार संसार का चरित्र ऐसा ही अधीर है। यहाँ कोई हारकर जीतता है तो कोई जीतकर हारता है। सर्वत्र विजय ही हुई हो, ऐसा कहाँ सुना है ? ॥ १३ ॥ कोई उत्पन्न होकर मरता है तो कोई मरकर उत्पन्न होता है। समझो, यह संसार अस्थिर है। रावण ने बाहुबल से तीनों लोकों को जीता था, मित्र, ऐसे वीर के लिए शोक न करो ॥ १४ ॥ हमारे हाथ से मारे जाकर रावण की सद्गति हो गयी। अब तुम राजा रावण के प्रेत-कर्म करो। विभीषण ने राम को

अधर्म्म चरित्र भैला ज्येष्ठर आमार * प्रेतकार्य्य इहार नलागे करिबार
एके परदारा हरणर महापाप * आर सीता शान्ती तुमि जगतर वाप १६
देवक छेदिला महा बीर पापी जन * देवासुर नागर आनिला कन्यागण
शान्ती कन्या हरिलेक तार फल पाउक * अधोगामी हुया सिटो गलि खसि याउक १७
रामे बिभीषणक दिलन्त समिधान * मृतक जनक नकरिबा हेन ठान
संस्कार करिया मित्र तार काज साध * प्राणान्तिक भैले आर किबा अपराध १८
रामर वचने सुस्थ भैला बिभीषण * मन्दोदरी समे बाज भैला कन्यागण
रावणर अङ्गत धरिया नारीगणे * हा प्रभु बुलि कान्दे सजल नयने १९
हरि हरि आमाक करिला किनो विधि * एके बारे भैला सबे विधवार सिधि
लङ्कानाथ तुमि तिनिलोक चमत्कार * किमते मरण प्रभु मिलिल तोमार ६४२०
चरणत परि कान्दे कतो कतो नारी * दशनारी कान्दे दशमुखे चुमा परि
हृदयत परि कतो शोकाकुल भावे * रावणर हाते आपोनाक सावटावे ६४२१
केश आजोरय कतो चपराया माथे * पृथिवीत लोटालुटि कोटि असंख्याते
देवासुर सुन्दरी कान्दय विद्याधरी * गुण सव वर्णाइ लज्जाक परि हरि २२
एतहन्ते रावणर प्रिया पटेश्वरी * प्राणतो अधिक अति प्रिया मन्दोदरी
स्वामीक देखिया रणभूमित शयन * महाशोके मूर्च्छा गैया परिल तेखन २३
कतोक्षणे पटेश्वरी चेतनक पाया * आशेष कान्दिला निज सौभाग्य वर्णाया
टिकर ये सुस्वामी मोहोर निज नाहा * तुवा पटेश्वरी मातो माथा तुलि चाहा २४

सम्बोधित कर कहा, प्रभु, यह सब कार्य करने हेतु आप किस कारण कह रहे हैं ? ।। १५ ।। हमारे बड़े भाई का चरित्र अधर्ममय है, इसका प्रेत-कार्य करना उचित नही है । एक तो पर नारी का हरण ही महापाप है तिस पर जगत्-पिता आप और सती सीता की वात है ।। १६ ।। इस महा वीर पापी पुरुष ने देवताओं का विनाश किया है, देव-असुर-नागो की कन्याओं का हरण किया है । यह सती कन्या को हरण कर लाया है, उसका फल इसे मिलना चाहिये । अधोगामी होकर यह सड़-गल जाये ।। १७ ।। राम ने विभीषण को समझाया, मृतकजन के प्रति ऐसा वर्ताव करना नही चाहिए । मित्र, इसका संस्कार कर कार्य सिद्ध करो, मर जाने पर और क्या अपराध रह जाता है ?' ।। १८ ।। राम के वचन से विभीषण स्वस्थ हो गया । तब मन्दोदरी समेत राक्षस-कन्याएँ निकलकर आयी । नारियाँ रावण के अंगों को पकड़कर, सजल-नयन हो, हा, प्रभु कहकर रुदन करने लगी ।। १९ ।। हरि, हरि, विधि ने हमें कैसा कर डाला । एक ही बार में सभी विधवा वन गयी । लंकानाथ, तुम तीनो लोकों में चमत्कार थे, प्रभु, तुम्हारी मृत्यु कैसे हुई ।। ६४२० ।। कितनी ही नारियाँ चरणों में पड़कर रो रही थी, दसों मुखों को चूमकर दस नारियाँ रो रही थी । कितनी ही नारियाँ छाती पर गिरकर शोकाकुल हो, रावण के हाथों में अपने को बँधवा रही थीं ।। ६४२१ ।। कितनी ही सिर को पीटती अपने वाल नोच रही थी । कोटि-कोटि अनगिनत नारियाँ धरती पर लोट रही थी । देव-असुर-सुन्दरियाँ, विद्याधरियाँ, रावण के गुणो की वर्णना करती हुई लाज छोड़कर रो रही थी ।। २२ ।। तभी रावण की प्रिया पटरानी, प्राणाधिक प्रिय मन्दोदरी, पति को रणभूमि में शयन किये हुए देखकर महाशोक से तत्क्षण मूर्छित हो गिर पड़ी ।। २३ ।। कुछ क्षण में पटरानी मन्दोदरी चेतना पाकर अपने सौभाग्य का वर्णन करते हुए अपार रुदन करने लगी । 'मेरे सुहाग के स्वामी, मेरे नाथ, तुम्हारी पटरानी मैं बुला रही हूँ, सिर उठाकर देखो' ।। २४ ।। अपने महीन वस्त्र के आँचल से रावण की धूल पोंछती हुई बोली, सुनो, प्राणेश्वर, हमें

नेतर आञ्चोले रावणर शरीरर * धुला मचलिया बोले शुना प्राणेश्वर
किसक नमता तुमि आमाक निचिनि * बिकलते मरो मइ तुवा सोभागिनी २५
पूर्ब्ब व्यवहारक मोक किसक नुबुलि * किसक नादरिला मोक कोलात नातुलि
उठा उठा प्रभु तुमि मने अवगाइ * प्रिया मन्दोदरी याहा काहात पेलाइ २६
सर्ब्बगुण सम्पूर्ण कामिनी कण्ठहार * किमते सहिबो दुख बिधवार भार
स्वर्गत थाकय देवगण भय मने * पातालत थाकय यतेक नागगणे २७
पृथिवीर राजागणे थाके भयहन्ते * केहोबे नोवारि मारे मनुष्यर हाते
तेसानिये जानो राम नहन्त मानुष * खर दूषणक एरुवाइला येन तूष २८
अवध्य राक्षस यत मेरुर समान * श्रीरामर हाते भैला खेर ये पतान
बालिर सदृश बीर नाहि रबितले * स्वामीत अधिक करि शत गुण बले २९
एकपात शरते ताहार भैला अन्त * एतेके जानोहो राम मानुष नहन्त
इन्द्रेसे मारिला छले रामरूप धरि * अधर्म्मे ग्रासिला पतिब्रता नारी हरि ६४३०
बिभीषण देवरे बुलिला यत हित * कर्णपथे नगैल मरण सन्निहित
इन्द्रजित पुत्र मोर एरि कंक गैले * तोहोर पितार समे एक थाने भैले ६४३१
लङ्कानाथे तोक देखि त्यजिबन्त शोक * पिता पुत्रे मिलि एवे सुमरियो मोक
श्रीरामे बोलन्त बिभीषण शुनियोक * मन्दोदरी समे नारीगण पठायोक ३२
यि भैल सि भैल कान्दिबार कोन फल * प्रेतकार्य्य रावणर करियो सकल
बिभीषण राघवर अनुमति लैया * बृद्ध पात्र मन्त्रीगण आनिला मताया ३३
संस्कार करिते सबाहाके आदेशिल * नयन सजले नारीलोक प्रबोधिल
मन्दोदरी सहिते यतेक पटेश्वरी * सबाक पठाइला पाचे आश्वासक करि ३४

न पहचानकर तुम बात क्यों नही करते ? मैं तुम्हारी सुहागिन रानी वेदना से मरी जा रही हूँ ।। २५ ।। पुराने व्यवहार के अनुसार मुझसे क्यों बातें नही करते ? गोद में लेकर मुझे आदर क्यों नही करते ? प्रभु, तुम मन में विचार कर उठो, अपनी प्रिया मन्दोदरी को कहाँ छोड़े जा रहे हो ? ।। २६ ।। तुम सभी गुणों से सम्पूर्ण कामिनियों के कठहार थे, मैं किस प्रकार विधवा के भार का दुख सह सकूँगी । देवगण स्वर्ग में, नागगण पाताल में तुमसे भयभीत रहा करते थे ।। २७ ।। पृथ्वी के राजागण भयभीत रहते । कोई तुम्हें मार नहीं पाया, पर मनुष्य के हाथ ने तुम्हें मार डाला । मै तो तभी जानती थी, राम मनुष्य नहीं है; खर-दूषण को उन्होंने रुई की भाँति उड़ा दिया ।। २८ ।। मेरु जैसे जो अवध्य राक्षस थे वे श्रीराम के हाथ घास-फूस जैसे हो गये । संसार में वाली जैसा कोई वीर न था, वह स्वामी रावण से शतगुण बली था ।। २९ ।। एक ही वाण से उसका अन्त हो गया, तभी समझ गयी थी कि रामचन्द्र मनुष्य नही हैं । राम का रूप धरकर तुम्हें इन्द्र ने ही छल से मारा है, पतिव्रता नारी के हरण के कारण तुम्हें अधर्म ने ग्रास कर लिया ।। ६४३० ।। देवर विभीषण ने जो हितकारी वचन कहे, मृत्यु निकट आ जाने के कारण वे तुम्हारे कानों में नहीं गये । पुत्र मेरे इन्द्रजित, मुझे छोड़कर तू कहाँ चला गया ? अपने पिता के साथ तू एक स्थान पर हो गया ।। ६४३१ ।। तुझे वहाँ देखकर लकानाथ शोक छोड़ देंगे, अब पिता-पुत्र मिलकर मुझे स्मरण करना । श्रीराम ने कहा, विभीषण, सुनो, मन्दोदरी समेत नारियों को महल में भेज दो ।। ३२ ।। जो होना था सो हो गया, अब रोकर कौन सा फल मिलेगा ? सब मिलकर रावण का प्रेत-कार्य करो । विभीषण राघव की अनुमति लेकर वृद्ध सामंतों-मन्त्रियों को बुला भेजा ।। ३३ ।। सबको रावण का संस्कार करने का आदेश दिया और सजल-नयनों से नारियों को धीरज बँधाया । इसके पश्चात् मन्दोदरी

बिहिला सकले यत लागय तहित * बिनय प्रकारे गैला रामर सन्नित
राघवे बोलन्त शुन सेनापति नील * हनुमन्त जाम्बवन्त सुषेण सुनील ३५
असंख्यात सेना चलियोक चतुर्भिता * अविलम्बे साजि दिया रावणर चिता
दशोदिश गैला सबे रामसेनागण * आगर चन्दने निर्म्मिलन्त चिताखन ३६
बहुदूर जुरिलेक बहल विस्तर * उच्छित भैलेक येन पर्ब्बत शिखर
ताहात तुलिल निया रावणर काय * ठावे ठावे अगनि लगाइला समुदाइ ३७
पावे दिला कटत उरुत उरुखल * मुखत थापिला सात सागरर जल
राजगुरु ब्राह्मणर शरीरे न सहे * अगनित घृत देन्त आति वर स्नेहे ३८
घृत मिसलाया येन पशुगोट हुणे * मुखाग्निक दिलन्त कनिष्ठ बिभीषणे
आगर ये चन्दने सुघ्राणे उथलिल * अगनित घृत निया कलसे ढालिल ३९
बहु घृत पाया बह्निन स्वर्गक लङ्घिल * रावणक पुरि सर्व्व कार्य्य सङ्कलिल
राघवे हरिष पाइला रावणक मारि * देवतार हृदयर शैल्यक उद्धारि ६४४०
राम देवे रावणक मारिला प्रबन्धे * त्रिदश देवर मन पूरिला आनन्दे
देवराजे दिबाकर सन्नाहा थैला काढ़ि * चन्द्र येन मुख ज्वले प्रयासक छारि ६४४१
वासवर सारथिक राघवे मताइल * प्रशंसा करिया बहुमान्यक बढ़ाइल
सब सतकार करि बुलिल उत्तर * दिब्य बिमानक निया दियोक इन्द्रर ४२
यिमत समर भैला कहियो आपुने * मातलियो प्रणामिला रामर चरणे
राघवर बचनक सादरे आकलि * इन्द्रर पाशक रथ निलन्त मातलि ४३
सवकथा कहिलन्त देवर समाते * रामे रावणक मारिलन्त येनमते

समेत जितनी पटरानियाँ थी, सबको सांत्वना देकर महल में भेज दिया ।। ३४ ।। वहाँ जो कुछ आवश्यक था, सारे कार्य कर विभीषण विनयपूर्वक राम के समीप आया। राम ने कहा, सेनापति नील, हनुमान, जाम्ववन्त, सुषेण, सुनील, सुनो ।।३५।। असंख्य सेनाएँ चारों ओर घेरकर चलो और अविलम्ब रावण की चिता सजा दो। राम की सेनाएँ दसों दिशाओं में गयी, आगर और चन्दन की लकड़ी से चिता सजायी ।। ३६ ।। चिता ने लम्बाई-चौड़ाई में काफी दूर तक घेर लिया, इतनी ऊँची हुई मानो पर्वत-शिखर हो। उस पर ले जाकर रावण के शरीर को चढ़ाया, और सभी ने पूरी चिता में स्थान-स्थान में आग जला दी ।। ३७ ।। मूंज की चटाई पर पैरों को रखा, छाती पर गूलर की लकड़ी रखी और मुख मे सात समुद्रों के जल डाले। (अग्नि की प्रखरता) राजगुरु ब्राह्मण के शरीर सह नही पाते थे, वे सभी बड़े स्नेह से अग्नि में घी की आहुति दे रहे थे ।। ३८ ।। घी मिलाकर जैसे पशु को भूना जाता है। छोटे भाई विभीषण ने मुखाग्नि की। आगर और चन्दन की सुगन्ध फैल गयी, घड़ों घी लाकर अग्नि मे डालने लगे ।। ३९ ।। वहुत घी पाकर आग स्वर्ग के पार चली गयी और रावण को भस्म कर सारा कार्य पूरा कर दिया। रावण का वध कर देवताओं के हृदय का काँटा निकाल, रामचन्द्र हर्षित हुए ।। ६४४० ।। प्रभु राम ने रावण को बड़ी निपुणता से मार डाला, इससे देवताओं का चित्त आनन्द से भर उठा। उन्होंने देवराज के दिये हुए वाण निकालकर रखे, थकावट मिट जाने के कारण उनका मुख चन्द्र जैसा दमकने लगा ।। ६४४१ ।। रामचन्द्र ने इन्द्र के सारथी को बुलाया और उसकी प्रशंसा कर उसका बहुत मान बढाया। सभी प्रकार से उसका सत्कार कर यह कहा कि इस दिव्य विमान को ले जाकर इन्द्र को दे दो ।। ४२ ।। यहाँ जैसा संग्राम हुआ उनसे बताना। मातलि ने राम के चरणों में प्रणाम किया। राम के वचनों को सादर ग्रहण कर मातलि इन्द्र के पास रथ ले गया ।। ४३ ।। उसने सारी बात देवसभा मे बतायी कि किस

आनन्द करन्त राम कार्य्यक सङ्कलि * सुग्रीव सहिते थाकिलन्त गलागलि ४४
सार्थक मोहोर मित्र अति साधनर * याहार प्रसादे भैलो दुर्गति निस्तार
एकेखानि आछे मोर मनोरथ काज * प्रतिज्ञा सार्फलि बिभीषणे देओं राज ४५
उपकारी मित्र मोर महाबुद्धि पात्र * आमि ये निमित्त तेहे जिनिलेक मात्र
इहान प्रसादे दुर्गतित भैलो पार * इन्द्रजित परिला भूमिर महाभार ४६
रावणे मारिलो सिद्धि भैला मोर काज * बिभीषण मित्र तुमि लैयो लङ्काराज
शुना सभासद पद मन करि थिर * त्रैलोक्यत अजय रावण महा बीर ४७
सबन्धु बान्धव एके तिले भैला हत * धन जन गज बाजि नगैला लगत
एकेश्वरे चलि राजा गैला यमलोक * अनित्य संसारे आक केने देखियोक ४८
अन्तकाले धने जने त्यजय सबाक * जानिया बिषयसुख एरे साधुजाक
माधवर पाद पद्म स्मरन्त सदाय * याहार प्रसादे मुकुतिर पद पाइ ४९
इटो रामायण यिटो जने शुने भणे * अल्पते भकति बाढ़े रामर चरणे
संसारर ताप सिटो होवे उपशाम * पातेक छारोक डाकि बोला राम राम ६४५०

बिभीषणक राज्यत अभिषेक आरु सीताक श्रीरामर समीपलै आनयन

दुलड़ी

श्रीरामे बोलन्त शुनियो लक्ष्मण आमार बचन धरा।
एहि शुभक्षणे बिभीषणक निया सत्वरे राज्य जोकारा॥

प्रकार से राम ने रावण को मारा। इधर राम अपने कार्य को पूरा कर आनन्द करने लगे। वे सुग्रीव को आलिंगन करते रहे॥ ४४॥ (वे बोले—) मेरे कार्य-साधन के सार्थक मित्र हो, जिसके प्रसाद से हम दुर्गति से पार हुए। अब मेरा मनोरथ-कार्य केवल एक ही है कि प्रतिज्ञा पूरी कर विभीषण को राज्य दे दूं॥ ४५॥ ये मेरे उपकारी मित्र महा बुद्धिमान मन्त्री हैं। हम तो केवल निमित्त मात्र रहे, विजय तो उन्होंने ही पायी है। इनके प्रसाद से हम दुर्गति से पार हुए, पृथ्वी का महाभार इन्द्रजित का पतन हुआ॥ ४६॥ रावण को मारकर मेरा कार्य सिद्ध हो गया। मित्र विभीषण, तुम लंका का राज्य ग्रहण करो। सभासदो, इन पदों को मन स्थिर कर सुनो। महा वीर रावण तीनो लोकों में अजेय था,॥ ४७॥ वह बन्धु-बान्धवों सहित क्षण भर मे मारा गया। धन, जन, हाथी-घोड़े कुछ भी उसके संग नहीं गये। राजा अकेले ही यमलोक गया, इस अनित्य संसार में इसे कैसा देख रहे हो ?॥ ४८॥ अन्त काल में धन-जन सभी को छोड़ जाते हैं —ऐसा समझकर साधुजन विषय-सुख त्यज देते हैं, और जिनके प्रसाद से मुक्ति-पद मिलता है उन माधव के चरण-कमलों का सदा स्मरण किया करते हैं॥ ४९॥ यह रामायण जो सुनता है और जो गान करता है, अल्प में ही राम के चरणों में उसकी भक्ति बढ़ जाती है। उसके ससार के ताप शान्त हो जाते है। पुकार कर राम, राम कहो जिससे पाप नष्ट हो जायें॥ ६४५०॥

विभीषण का राज्य पर अभिषेक तथा सीता का राम के समीप आगमन

श्रीराम ने कहा— लक्ष्मण, सुनो, मेरे वचन मानो, इसी शुभ क्षण में विभीषण को ले जाकर शीघ्र राज्य-अभिषेक करो। यह वचन सुनकर वीर लक्ष्मण तुरन्त चल

हेन वाणी शुनि वीर लखमण त्वरिते चलिया याय।
चारिदिशे जय जङ्कार पारय वजावे नन्दी वधाइ ॥ ६४५१
शंख भेरी काङ्ख भेमचि खुमचि ढोलत परिल बारि।
राक्षस पिशाच हरिषे नाचय रावणर शोक छारि॥
कन्यागणे सवे मङ्गल करय ढोलय खेत चामरे।
चन्द्र सम शुक्ल छत्र एक तुलि धरिला शिर ऊपरे॥ ५२
अगनिर घृत आहुति करिया ब्राह्मणे दिला आशीष।
सुगन्धि पवने आमोद करय सुप्रसन्न दशोदिश॥
नाचे नटीगणे गायने गावय चपया पढ़य भाट।
एवे बिभीषणे नृपति भैलन्त खण्डिला दुख ललाट॥ ५३
सुवर्ण पाटत वसिलन्त राजा वेढ़िला पात्र मण्डले।
अभिषेक रङ्गे करिला लखाइ सुवर्ण घटर जले॥
वाद्य भण्ड पाञ्च शवदे रजाइ सकल सेनार रोल।
जय जय राम शवद उठिल पाइलेक स्वर्गर कोल॥ ५४
सम्भार बस्तुक लैया द्रुत करि चलि गैला बिभीषण।
रामर आगत हातयोर करि करिला पाचे सेवन॥
बिभीषण राजा सादर करिया यतेक वस्तु योगाइल।
बानर भालुक सहिते राघवे समस्ते सन्देश खाइल॥ ५५
हनुक सम्बुधि राघवे बोलन्त सीतार पाशक याहा।
येनमते आमि रावण मारिलो सि सब बार्त्ता जनाहा॥
श्रीराम देवर आदेश बचन मारुति शिरत लैला।
अशोका बनत सीतार पाशक सत्वरे गैया आण्टाइला॥ ५६
राक्षसी लोकर माजत गोसानी आछन्त मलिन बेशे।
पद्मर पुष्पर मालाक येहेने बेढ़िया आछय केशे॥

पड़े। चारों ओर जय-नाद हो रहा था, नन्दी बधाई बजा रहे थे ॥ ६४५१ ॥ शंख, भेरी, कांस्य-ताल के शब्द के साथ ढोलों पर भी चोटें पड़ने लगी। रावण का शोक छोड़कर राक्षस-पिशाच हर्ष से नाचने लगे। कन्याएँ श्वेत चँवर डुलाती हुई मंगलगान करने लगी— और चन्द्र जैसा श्वेत एक छत्र उठाकर उनके सिर पर धारण किया ॥ ५२ ॥ अग्नि में घृताहुति देकर ब्राह्मण आशीष देने लगे। सुगन्धित पवन सुप्रसन्न होकर दसों दिशाएँ आमोदित करने लगा। नटियाँ नाचने लगी, गायक गाने लगे, भाट चौपाई गीत पढ़ने लगे। इसी प्रकार विभीषण राजा बना, उसके भाग्य का दुख मिट गया ॥ ५३ ॥ राजा विभीषण स्वर्ण-सिंहासन पर बैठा, मन्त्रियों के समूह ने घेर लिया, लक्ष्मण ने बडी प्रसन्नतापूर्वक स्वर्ण-कलश के जल से अभिषेक किया। पाँच वाद्यों के समूह के साथ सारी सेना का कोलाहल गूँज उठा और "जय-जय राम" की जो ध्वनि उठी वह स्वर्ग तक पहुँच गयी ॥ ५४ ॥ सम्पूर्ण उपकरणों को लेकर विभीषण चला और राम के सम्मुख हाथ जोडकर उन्हें प्रणाम किया। राजा विभीषण ने आदरपूर्वक सारी वस्तुएँ रामचन्द्र के सामने रखी, वानर-भालुओ के साथ मिलकर राघव ने सारी मिठाइयाँ खायी ॥ ५५ ॥ हनुमान को सम्बोधित कर राघव ने कहा, तुम सीता के पास जाओ और जिस प्रकार से हमने रावण का वध किया, वह सारा समाचार उसे दो। हनुमान प्रभु श्रीराम का आदेश शिरोधार्य कर शीघ्र ही अशोक वन में सीता के पास जा पहुँचे ॥ ५६ ॥ देवी सीता राक्षसियो के बीच मलिन वेश धारण किए हुए थी।

प्रणाम करिया मारुति बोलन्त रामर वार्त्ता कुशल ।
तोमाक यिगोटे हरि आनिलेक सिटो गैला रसातल ।। ५७
तोमार देवर लक्ष्मण कुमारे बधिलन्त इन्द्रजित ।
बानर भालुक राक्षस बलक निलेक यम सन्नित ।।
श्रीराम गोसाइ रावणक मारि बिभीषणे दिला राज ।
लक्ष्मण कुशल सुग्रीव कुशल कुशल कपि समाज ।। ५८
यि सब प्रतिज्ञा करिलो गोसानी सबारो भैला पूरण ।
सागर तरिलो रामक आनिलो मराइलो दुष्ट रावण ।।
राघवे बुलिला जनकनन्दिनी आमार शुनक जय ।
तोमाक यि बेटा हरि आनिलेक सियो गैला यमालय ।। ५९
एतेक बचन शुनिया जानकी सीतादेवी महाशान्ती ।
हरिषे नयन युगल सजल क्षणेक थित नमाति ।।
मारुति बोलन्त जगत जननी किसक नेदा उत्तर ।
सत्ये स्वरूपत रामर हातत परिलेक लङ्केश्वर ।। ६४६०
बोलन्त गोसानी बापु हनुमन्त तोमाक नमताओं लाजे ।
हेन प्रिय कथा कहिबार योग्य प्रसाद नाहिके काजे ।।
मारुति बोलय दियोक प्रसाद आछय आमार योग ।
मनत सन्तोषे हासियो आमार स्वर्गतो अधिक भोग ।। ६४६१
एहिटो राक्षसी सकले तोमाक बिगुटि पारिला गालि ।
अनेक भुबुकि पारि डरुवाइले रावणर बाक्य पालि ।।
सिसब कथाक सुमरन्ते मोर आजिको नछारे शोक ।
टाकरे मुटुकि मारो तासम्बाक रावण आसि राखोक ।। ६२

कमल-फूलों की माला की भाँति उनके बाल घेरे हुए थे । उन्हें प्रणाम कर हनुमान ने राम की कुशल-वार्ता सुनायी और कहा कि तुम्हें जो हर लाया था, वह भी रसातल चला गया ।। ५७ ।। तुम्हारे देवर कुमार लक्ष्मण ने इन्द्रजित का वध किया तथा वानर-भालुओं ने राक्षस-सेना को यमलोक पहुँचा दिया । प्रभु श्रीराम ने रावण को मारकर विभीषण को राज्य दिया । लक्ष्मण सकुशल हैं, सुग्रीव सकुशल है, सारा कपि-समाज सकुशल है ।। ५८ ।। हे देवी, हमने जो प्रतिज्ञाएँ की थीं सभी पूरी हो गयी । हम सागर लाँघ आये, राम को ले आये और दुष्ट रावण को भी मरवा डाला । राघव ने कहा है— जनकनन्दिनी, हमारी जय-(वार्ता) सुनो । तुम्हें जो हर लाया था वह अधम भी यमलोक चला गया ।। ५९ ।। यह वचन सुनकर महासती देवी सीता के नेत्र हर्ष से सजल हो उठे, वे क्षण भर कुछ भी बोले बिना रह गयीं । हनुमान ने पूछा, जगज्जननी, तुम उत्तर क्यों नहीं देती ? सत्य ही रामचन्द्र के हाथों लंकेश्वर रावण मारा गया ।। ६४६० ।। देवी सीता बोली, वत्स हनुमान, मैं लज्जावश तुमसे कुछ कह नहीं पा रही हूँ । ऐसी प्रिय कथा कहने के योग्य प्रसाद और कुछ भी नहीं है । हनुमान ने कहा— वह प्रसाद हमें दो, हमें प्राप्त करने का योग है । तुम मन में सन्तुष्ट होकर हँसो तो वही हमारे लिए स्वर्ग से भी अधिक भोग होगा ।। ६४६१ ।। ये सारी राक्षसियाँ रावण का आदेश मानकर तुम्हें अनेक कष्ट देकर गालियाँ देती थी; अनेक डाँट-डपट कर डरवाती थी । उन सब बातों को याद कर आज भी मेरा शोक मिट नहीं रहा है । लगता है कि इन्हें पकड़कर ठोकरों से, मार डालूँ, रावण आकर इन्हें बचाये ।। ६२ ।। किसी को थप्पड़ों से, किसी को घूँसों से, किसी को मुक्कों से मार

काहाको चापरे काहाको भुकुरे काहाको मारओं किले ।
काहाको लाथिये चवरे मारओं काहाको मारओं शिले ॥
कारो आखि काढ़ि पेलाओं काहारो नाक काटि घसुयाओ ।
हेनसे आज्ञाक दिया यदि माव उचित प्रसाद पाओं ॥ ६३
गोसानी बोलन्त बापु हनुमन्त इहाक किक टक्कोसि ।
राक्षसिनी लोक स्वतन्तरी नोहे सवे रावणर दासी ॥
ताहार बचन हेला करे यदि नतो डरुवावे मोक ।
तेतिक्षणे मोक काटिते पारय त्रैलोक्ये नाहिके राख ॥ ६४
एवे ये आमाक मन्द नकरय आपुनि मरय डरे ।
काकूति करिया शरणे पशय हातत पावत धरे ॥
काहाक कोनेबा मारिते पारय काहाक राखय कोने ।
पूर्ब्बर जनमे यिटो पाप करे भुञ्जिया मरे आपने ॥ ६५
मारुति बोलन्त सीतादेवी माव धन्य धन्य साधु साधु ।
साफल चन्द्रर बंशे उतपन्न सूर्य्यर बंशर बधू ॥
अमृत बचने वर तुष्ट भैलो बुलिला येन उचित ।
कि कथा कहिबो झाण्टे बुलियोक रामर याओं सन्नित ॥ ६६
सीताये बोलन्त यतेक बुलिला येहेन जनक बाप ।
याहार प्रसादे सकल दुर्गति गुचिला शोक सन्ताप ॥
राघव प्रभुक देखिबाक मोर उत्रावल करे मन ।
टीकर स्वामीत जनायोक बाप मोक नेन्त एतिक्षण ॥ ६७
बायुसुते झाण्टे गमन करिला देवीर बन्दिया पाव ।
रामर आगत परिलन्त गैया मेरुर सम छराव ॥

डालूं । किसी को लातों से और थप्पड़ों से मारूँ तो किसी को पत्थरों से मार डालूं । किसी की आँखें निकाल लूं, किसी के नाक-कान काटकर घसीटूं । माता, यदि, तुम ऐसी आज्ञा दो तो मुझे उचित प्रसाद मिल जाये ॥ ६३ ॥ देवी सीता ने कहा, वत्स हनुमान, तुम इन सबका किसलिए तिरस्कार कर रहे हो ? ये राक्षसियाँ सभी रावण की दासियाँ हैं, कोई भी स्वतन्त्र नही । यदि ये उस समय रावण की अवहेलना कर मुझे डराती नहीं तो उसी क्षण रावण मुझे काट डालता । त्रैलोक्य में कोई मेरी रक्षा करनेवाला न था ॥ ६४ ॥ ये तो अब हमारा अनिष्ट नहीं करती, ये स्वयं ही डर से मरी जा रही हैं । ये विनती करती हुई हाथ-पैर पकड़कर शरण माँग रही हैं । कौन किसे मार सकता है और कौन किसकी रक्षा कर सकता है ? (वास्तव में) पूर्वजन्म में जो पाप कर आया है, मनुष्य उसी को भोगकर मरता है ॥६५॥ हनुमान ने कहा, माता सीतादेवी, साधु-साधु, तुम धन्य-धन्य हो । तुम्हारा चन्द्रवंश मे उत्पन्न होकर सूर्यवंश का वधू बनना सफल हुआ । तुमने जो उचित वचन कहा, उस अमृत-वचन से मैं बड़ा सन्तुष्ट हुआ । मैं रामचन्द्र के पास जा रहा हूँ । उनसे जाकर क्या बात कहूँ, शीघ्र कहो ॥ ६६ ॥ सीता ने कहा, तुमने जो कहा, ऐसा लगा कि पिता जनक (बोल रहे) हैं । जिनके प्रसाद से सारी दुर्गति, सभी शोक-संताप मिट गये; उन प्रभु राघव को देखने के लिए मेरा मन उतावला हो रहा है । वत्स, मेरे सुहाग के प्रभु से कहना कि वे मुझे इसी क्षण ले जायें ॥ ६७ ॥ तब पवनसुत ने देवी के चरणों की वन्दना कर शीघ्र ही गमन किया तथा राम के सम्मुख जाकर मेरु पर्वत की भाँति पड़ गये । इसके पश्चात् उनकी प्रदक्षिणा कर दोनो हाथ जोड़, देवी सीता का जो उत्तर था सब कुछ आदि से

प्रदक्षिण करि चरण बन्दिया अञ्जलि जुरिया कर।
आदि अन्त यत कहिला समस्ते देवीर येन उत्तर ॥ ६८
शुनियो गोसाइ चरण बन्दओं रघुर बंशर नाथ।
यिवा प्रयोजने सागर तरिला रावण बध लङ्कात ॥
सीता गोसानीक सत्वरे आनियो बिलम्बत कोन फल।
चिरकाले देवी तोमार चरण देखिवाक कौतूहल ॥ ६९
तोमार युद्धर कथा शुनि तान हरिष करिला चित्त।
आथ बेथ करि मोक पठाइलन्त आनिबाक सन्निहित ॥
एतेक शुनिया ऊर्म्मि बर धाइल रामे चपराइला माथ।
चक्षुर लोतक सर सरि परे गालत दिलन्त हात ॥ ६४७०
हरिषते आसि बिषाद मिलिल मारुतिर बाणी शुनि।
अधोमुख हुया रघुर नन्दन थाकिला मनत गुणि ॥
पृथिवीक चाइ राघव गोसाइ बिमरिष करि मन।
माथा तुलि चाइ बोलन्त कहिरा बीरबर बिभीषण ॥ ६४७१
जनक जीवर पाशक चलिया यायो आमासार बोले।
सागर जलते शिरस्नान करि आसोक चरि चौदोले ॥
एतेक बचन शुनि बिभीषण अशोका बने प्रवेश।
हातयोर करि बोलन्त गोसानी शुनियो स्वामी आदेश ॥ ७२
शिरस्नान करि अलङ्कारे सब गावे निया चड़ायोक।
चौदोले चड़िया रामर पाशक शीघ्र करि चलियोक ॥
मलिनता बेशे स्वामीक देखिबो नुयुवाइ शिरस्नान।
भूषित हुइबार कमन प्रस्ताव आनियो चौदले यान ॥ ७३
बिभीषणे बोले शुनियोक माता रामर बोल पालियो।
शिरस्नान करि अलङ्कार पिन्धि रामर पाशक यायो ॥

अन्त तक बताया ॥ ६८ ॥ हे रघुवंश-नाथ, प्रभु, आपके चरण-वन्दन कर कहता हूँ, सुनिये। जिस प्रयोजन से सागर लाँघा, लंका मे रावण का वध किया, अब उन देवी सीता को शीघ्र ले आइये, विलम्ब की क्या आवश्यकता है ? देवी सीता चिरकाल आपके चरण-दर्शन के लिए आग्रही है ॥ ६९ ॥ युद्ध में आपकी विजय की वार्ता सुनकर उन्होंने अपने चित्त में बड़ा ही हर्ष किया तथा आपके समीप ले आने के (आदेश) हेतु मुझे शीघ्र विदा किया। हनुमान के वचन सुनकर राम के (हृदय में) शोक की भावना प्रबल होकर दौड़ पड़ी, उन्होंने अपना सिर पीट लिया। आँखों से आँसू बहने लगे। गाल पर हाथ रख वे बैठ गये ॥ ६४७० ॥ हनुमान के वचन सुनकर मानो हर्ष में विषाद हो गया। सिर झुकाकर रघुनन्दन मन मे विचार करते रहे। धरती की ओर देखते हुए प्रभु राघव मन विमर्ष किये रहे, सिर उठाकर बोले, वीरवर विभीषण, सुनो, ॥ ६४७१ ॥ हमारा वचन मानकर जानकी के पास चले जाओ। सीता सागर-जल में स्नान कर पालकी पर चढ़कर आवे। यह वचन सुनकर विभीषण अशोक वन में गया और हाथ जोडकर कहा, देवी, स्वामी का आदेश सुनिये ॥ ७२ ॥ उत्तम रूप से सिर-स्नान कर सभी गहने शरीर पर धारण कर लीजिये, और पालकी पर चढ़कर शीघ्र रामचन्द्र के पास चलिये। सीता बोली— सिर-स्नान करना उचित नही, मैं मलीन वेश से ही स्वामी के दर्शन करूँगी। गहनों से भूषित होने का यह प्रस्ताव कैसा है ? पालकी ले आओ ॥ ७३ ॥ विभीषण ने कहा— माता, सुनिये, रामचन्द्र का

कन्यागणे आसि देवीक नोवाइला सुवर्ण घटर जले।
सुगन्धित जले शरीर माजिल तरुणी कन्यासकले ॥ ७४
यतने रचित नाना अलङ्कार बिभीषणे आनि दिला।
जनकनन्दिनी परम हरिषे रामर बोले पिन्धिला ॥
बस्त्र अलङ्कारे भूषित भैलन्त उज्ज्वलित अङ्गभाग।
चौदोले चड़िया ओवारक दिला बिभीषण भैला आग ॥ ७५
आगे सेवतिया लोके दूर करे हातत बेतर बारि।
त्वरिते रामर पाशक चलिला अशोका बनक छारि ॥
बिभीषणे राम आगत जनाइल आनिलो सीता गोसानी।
आदेश करियो प्रभु रघुनाथ आगत भेटाओं आनि ॥ ७६
एतेक बचन शुनि राम देवे डाहिन बामक चाइल।
हरिष बिषाद शोक आसि भैला दुयो एकथाने भैल ॥
कतोक्षणे राम रघुर नन्दन तेजिला दीर्घ निश्वास।
बिभीषण मित्र सीताक सत्वरे आनियो आमार पाश ॥ ७७
हेन बाणी शुनि त्वरिते चलिला अभिनव लङ्केश्वर।
कहिला मोहोर सेवतिया लोक झाण्टे सैन्य दूर कर ॥
सहस्र संख्यात सेवतिया सबे लोकक बावय आग।
हातत बेतरि गावत काञ्चनी माथात अलमा पाग ॥ ७८
चाट चोट करि कोबाइबे लागिला काहाको बेतर बारि।
दूर दूरान्तर पलाइ बानर रामर पाशक छारि ॥
सीताक देखित भालुक बानर बर अभिलाष करे।
आछोक देखिब थाकिबे नोवारे पलाइ कोबक डरे ॥ ७९

आदेश मानिये। सिर-स्नान कर गहने पहनकर, राम के पास चलिये। कन्याओं ने आकर देवी सीता को सुवर्ण-घट के जल से स्नान करवाया। तरुणी कन्याओं ने उनके शरीर को सुगन्धित जल से धुलाया ॥ ७४ ॥ यत्न से बनाये हुए अनेक प्रकार के अलकार विभीषण ने ला दिये। राम के कथनानुसार जनकनन्दिनी ने परम हर्ष से पहन लिये। वस्त्र-अलंकारो से भूषित देवी सीता के अंग जगमगा उठे। पालकी पर चढ़कर परदा डाल दिया। विभीषण आगे-आगे चला ॥ ७५ ॥ आगे-आगे सेवक हाथों में बेंत के डण्डे लिये लोगों को हटाने लगे। वे अशोक वन को छोड़ शीघ्रता से राम के पास चले। विभीषण ने जाकर राम को सूचित किया, देवी सीता को ले आये हैं, प्रभु रघुनाथ, आदेश दीजिये, आपके सम्मुख लाकर उन्हे उपस्थित करें ॥ ७६ ॥ यह वचन सुनकर प्रभु रामचन्द्र ने, दायें-बायें देखा। हर्ष और विषाद-शोक दोनो एक ही स्थान पर उपस्थित हुए। कुछ क्षण पश्चात् रघुनन्दन रामचन्द्र ने दीर्घ निश्वास ली और कहा— मित्र विभीषण, तुम सीता को शीघ्र हमारे पास ले आओ ॥७७॥ यह वचन सुनकर नया लंकेश्वर विभीषण शीघ्रता से चल पड़ा और जाकर अपने सेवको से कहा, हे सेवको, इन (बानर आदि) सेनाओं को शीघ्र यहाँ से दूर हटाओ। हाथों में बेंत, शरीर पर कांचनी वस्त्र और सिर पर अलकृत पगड़ी वाले सहस्रों की संख्या में सेवकों ने लोगों को आगे बढ़कर रोका ॥ ७८ ॥ किसी-किसी को चट्-चट् कर बेतों से पीटने लगे। राम के समीप के अलावा बानर दूर-दूर भागने लगे। सीता के दर्शन के लिए भालू और बानरगण बडे ही अभिलाषी थे। उन्हें देखे बिना रहा भी नही जाता था परन्तु मार के डर से भागने लगे ॥ ७९ ॥ सिर-माथे और जांघ को सौ-सौ बार हाथ

नमो रघुनाथ चपराया माथ जानुशिरे शतबार।
देवर कण्टक बधि रावणक करिला सीता उद्धार॥
भकत जनर देव दामोदर पूरा मनोरथ काम।
जानि सर्व्वजन एरि आन मन डाकि बोला राम राम॥ ६४८०

सीतार अग्नि-परीक्षा

पद

रामे देखिलन्त पलाइ भालुक बानर * सेवतिया कोबाया करिला दूरान्तर
क्रोधिया बोलन्त बानरर दुख जानि * ओवा बिभीषण मित्र हेन लघुप्राणी ६४८१
बानरेसे बन्धु मोर पितृ पितामह * यात हन्ते एराइलो दुर्गति अनेक
बानरक मारिबार कमन प्रस्ताव * आसम्बाक मारि मोर प्राणे देस घाव ८२
एहि कार्यो मोहोर करिला असन्तोष * पुत्रसबे मातृक देखिले किबा दोष
सबाक आनियो झाण्टे आश्वास करिया * सीताक चाहोक सबे नयन भरिया ८३
याहार निमित्ते दुख पाइल बहुतर * चाहिबाक मन करे भालुक बानर
बिबाह ब्यवहार यज्ञ अनुष्ठान काले * अवस्थाक निरुपण सयम्बर शाले ८४
सभा आगमन धर्म्म बिचारे नबोध * सबहि देखिब किछु नाहिक बिरोध
बिभीषणे लाज पाइला रामर बचने * सकल बानरगण आनाइला तखने ८५
आदेशिला राघवे मनत मन्यु भावे * ओवार गुचायो सीता आसो भूमिपावे
इङ्गितत रामर बचन अबगाइ * सकल प्रजाक आउरक आउरे चाइ ८६

से पीटते हुए वे बानर भाग चले। देवों के कंटक रूपी रावण का वध कर जिन्होंने सीता का उद्धार किया, उन रघुनाथ को नमस्कार है। वे देव-दामोदर भक्तजनों के मनोरथ पूरे करनेवाले है। ऐसा समझकर सभी जन दूसरे मे मन लगाना छोड़ पुकार-पुकारकर 'राम, राम' कहो॥ ६४८०॥

सीता की अग्नि-परीक्षा

रामचन्द्र ने देखा कि भालू-बानर भाग रहे है, सेवकगण उन्हें पीटकर दूर भगा रहे है। बानरों का दुख समझकर वे क्रोधित होकर बोले— अरे विभीषण मित्र, तुम ऐसे लघु जीव हो ?॥ ६४८१॥ ये बानर ही मेरे बन्धु है, पितृ-पितामह है, जिनके द्वारा हम अनेक दुर्गति से पार हुए। बानरों को मारने का यह कैसा प्रस्ताव है ? इन सबको मारकर मेरे प्राणों को ही चोटें पहुँचा रहे हो॥ ८२॥ ऐसा कर्म करके मेरे मन में असन्तोष उत्पन्न किया है। भला पुत्र यदि अपनी माता को देखे तो उसमें दोष कैसा ? इन सभी को आश्वासन देकर यहाँ बुला लाओ, सब लोग आँखें भरकर सीता के दर्शन करे॥ ८३॥ जिसके कारण इन्हें अनेक दुख झेलने पड़े, उसे देखने की इच्छा ये भालू-बानर रखते है। वास्तव में विवाह-उत्सव, यज्ञ-अनुष्ठान, स्वयंवर-शाला में, अवस्था का निरूपण करते समय सभा में आगमन से धर्म कोई विचार-बोध नही चाहता; उन स्थितियों में (नारियों को) सभी देखते हैं, इसमें कोई विरोध की बात नहीं। राम के वचन से विभीषण लज्जित हुआ और सभी बानरों को उसी क्षण बुलवा भेजा॥ ८४-८५॥ मन में असन्तुष्टि की भावना से रामचन्द्र ने आदेश दिया, सीता, परदा हटा दो और भूमि पर पैदल चलकर आओ। संकेत से राम के वचन समझकर सारी प्रजा एक दूसरे को देखने लगी॥ ८६॥ सभी सजल-नयन से भूमि को कुरेदने लगे और सोचने लगे,

सजल नयने सबे भूमि खछ्वन्त * सीता गोसानीक जानो राघवे एरन्त
विभीषणे चौदलर गुचाइला ओवार * तरासे सीतार निकलिल लोह धार ८७
जनक जीवर नयनर नीर वहे * सब कपिगणे देखि पराणे नसहे
मुखत कापर दिया कान्दन्त लक्ष्मण * भूमि चाया कान्दन्त अङ्गद विभीषण ८८
सुग्रीव ये कान्दन्त गवाक्ष जाम्ववन्त * नल नील केशरी पनस हनुमन्त
गोसानी कान्दन्त देखि नधरन्त बुक * आनमिति चाहिकान्दे वानर भालुक ८९
विभीषणे आगे सीता यान्त भूमिपावे * बुलन्ते देखिय फुटि रुधिर बजावे
अलङ्कार शब्द रुण-झुन करि भावे * येन लक्ष्मी चलि यान्त नारायण पाशे ६४९०
डाहिन सुवर्ण येन शरीरर कान्ति * शङ्करर पाशे येन दुर्गादेवी यान्ति
लाज पाया गोसानी परम महाशान्ती * सङ्कुचित भावे भाव गावते लुकान्ति ६४९१
लवनु पुत्तली येन सुकोमल गाव * एकोमिति नचाइ चलि यान्त जगमाव
गोसानीर रूप देखि वानर भालुके * परम आनन्दे चाहे हरषित बुके ९२
बोले जानकीक चाइ आनन्दक पाइलो * आमि सबे सार्थक रामर लगे आइलो
वानर भालुक सबे राक्षस विस्मय * सीतार सुरूपे सब जगत मोहय ९३
सीताक देखिया राम अन्तर्गते स्नेह * क्षणे सकरुण सबे निकरुण देह
दुख देखि रामर चक्षुर परे पानी * क्रोध करि पुनः ताक धरे टानि टानि ९४
धरन्ते धरन्ते लोह धरण नयाय * शोक दुख क्रोध सब भैला एकठाइ
समीप चापिला देवी स्वामी श्रीरामर * नमाति थाकिला रामे करि अनादर ९५
लाजे माथा नतोलन्त सङ्कुचित भावे * डरे देवी काम्पन्त कदली येन वावे

जाने देवी सीता को रामचन्द्र कहीं त्याग न दें। विभीषण ने पालकी का परदा हटा दिया, आतंक के मारे सीता के आँसुओं की धारा वह चली ॥ ८७ ॥ जानकी की आँखों से आँसू बह रहे हैं, देख, सारे कपियों के प्राण व्याकुल हो उठे। मुख को कपड़े से ढँककर लक्ष्मण रोने लगे। अंगद-विभीषण भी भूमि की ओर देखते हुए रोने लगे ॥ ८८ ॥ सुग्रीव, गवाक्ष, जाम्ववन्त, नल, नील, केशरी, पनस, हनुमान, सभी रोने लगे। देवी को रोते देख उन सबकी छाती फटने लगी। सभी वानर-भालू दूसरी ओर मुड़कर रोने लगे ॥ ८९ ॥ विभीषण को आगे कर सीता भूमि पर पैदल चलने लगीं। चलते समय पैर फटकर रक्त निकलने लगा। उनके गहनों का रुन-झुन, रुन-झुन शब्द हो रहा था, मानो लक्ष्मी, नारायण के पास चली हों ॥ ६४९० ॥ उनके शरीर की कान्ति सुवर्ण जैसी थी, मानो दुर्गादेवी शंकर के पास जा रही हों। परम महा-सती देवी सीता लज्जित हो ऐसी संकुचित हो गयीं मानो उनका शरीर, शरीर मे ही छिप गया हो ॥ ६४९१ ॥ उनका सुकोमल शरीर नवनीत की पुतली-सा था। किसी ओर देखे वगैर जगन्माता सीता चली जा रही थी। देवी का रूप देखकर वानर-भालू सभी अन्तर मे परम प्रसन्न हुए और देखते ही रहे ॥ ९२ ॥ वे कहने लगे कि जानकी को देखकर हम बड़े आनन्दित हुए हैं, हमारा रामचन्द्र के संग आना सार्थक हुआ। वानर, भालू, राक्षस, सभी विस्मित थे कि सीता का स्वरूप सारे जगत को मोहित करता है ॥ ९३ ॥ रामचन्द्र के अन्तर में स्नेह होने पर भी सीता को देखकर क्षण मे करुणा से भर उठे परन्तु शरीर के वाहर निष्करुण हो उठे। सीता का दुख देखकर राम की आँखों से आँसू निकलना चाहते थे, परन्तु वे क्रोध कर पुनः उसे वार-वार रोक रखते थे ॥ ९४ ॥ आँसू रोके न रुकते थे, शोक-दुख और क्रोध सब एक स्थान पर मिल गये थे। देवी सीता स्वामी श्रीराम के पास पहुँची। रामचन्द्र उनका अनादर करते हुए विना कुछ वोले मौन रहे ॥ ९५ ॥ देवी सीता लज्जा के मारे संकुचित भाव से

लाज भय एरिया स्वामीत बर स्नेहा * आपनाक शुद्ध जानि दृढ़ करि देहा ९६
चिरकाले देखिबाक बर हाबिलाषे * मुख चाहि कटाक्षे थाकिला एक पाशे
सीताक राघवे चाहिलन्त माथा तुलि * आरकत नयन हियार गुल गुलि ९७
महाक्रोधे बचन बुलिला रघुनाथे * जनकर जीव हेरा बोलोहो तोमाते
रावणक मारिया एराइलो लोकबाद * तोमाक आनिलो राखि बंशर मर्याद ९८
लोके बुलिबन्त राम हारिल अन्तरे * सिकारणे तिरीबैरी नमारिला डरे
निन्दाक एराइलो मइ आपन बंशर * कुत्सा बाणी एराइलोहो समस्त लोकर ९९
दैवदोषे राजा हरि आनिला तोमाक * पौरुषता बले आमि मलछिलो ताक
राघवर अभिप्राय इङ्गितते जानि *घामिला कम्पिला पाव डरिला गोसानी६५००
श्रीहानि भैला मुख मलिनता चन्द * मेघे येन ढाकिलेक पूर्णिमार चान्द
शुन मातो जानकी तोहोत नाइ काज * प्रतिज्ञा साफलि बिभीषणे दिलो राज ६५०१
प्रतिज्ञाक साफलिलो मारुति बीरर * मनोरथ सिद्धि भैला सुग्रीव मित्रर
तोमाक लागिया आमि नकरिलो काज * पौरुषता आचरि गुचाइलो सब लाज २
दशोदिश प्रसन्न मेलिया चक्षु चाहा * तोमाक एरिलो सीता यथा मन याहा
चिरकाल हरि तोक निलेक रावणे * तइ शुद्ध भाव हेन पतियाइब कोने ३
सान्तोर मेलिवे कोने शिला बान्धि बुके * कमन मुगुधे आर सम्बरिब तोके
रावणर गृहत आछिला चिरकाल * पुनरपि तोमाक निबाक नुहि भाल ४
तोमाक आनिले बर कुयश लभिबो * जन अपबाद हेतु तोमाक नेनिबो

सिर नहीं उठाती थीं। केले का पौधा हवा में जैसा काँपता है डर के मारे देवी उसी प्रकार काँपने लगी। अपने स्वामी में अत्यधिक स्नेह के कारण तथा अपने को शुद्ध जानकर, शरीर को दृढ़ कर, लाज-भय छोड़, चिरकाल से दर्शन की बड़ी अभिलाषा के कारण, सीता तिरछी आँखों से उनका मुख देखती हुई एक ओर खड़ी रही। राघव ने सिर उठाकर सीता को देखा; अन्तर के उद्वेग के कारण उनकी आँखे लाल हो उठी थी ।। ९६-९७ ।। रामचन्द्र ने महाक्रोध से कहा— जानकी, सुनो। तुमसे कहता हूँ, हमने रावण को मारकर लोकापवाद मिटाया। वश की मर्यादा की रक्षा करते हुए तुम्हें छुड़ा लाये ।। ९८ ।। (नही तो) लोग कहते, राम अन्तर में हार चुका है, इसी कारण डर के मारे स्त्री-बैरी को मारा नही। हमने अपने वंश की निन्दा मिटा दी। सभी लोग जो तिरस्कार-पूर्ण वचन कहते उन्हें भी मिटा दिया ।। ९९ ।। दैव-दोष के कारण राजा रावण तुम्हें हर लाया। हम अपने पौरुष के बल से उसे मिटा दिया। संकेत से राघव का अभिप्राय समझकर देवी सीता डरकर पसीने-पसीने हो काँपने लगी ।। ६५०० ।। श्री नष्ट हो गयी, चन्द्र जैसा मुख मलीन हो गया, मानो पूर्णिमा के चन्द्र को मेघ ने ढँक लिया। (राम बोले) सुनो जानकी, मुझे तुमसे कोई प्रयोजन नहीं है, मैने अपनी प्रतिज्ञा सफल कर विभीषण को राज्य दे दिया ।। ६५०१ ।। वीर मारुति की प्रतिज्ञा सफल की। मित्र सुग्रीव का मनोरथ सिद्ध हुआ। हमने तुम्हारे लिए कोई कार्य नही किया, पौरुष का आचरण कर अपनी सारी लज्जा मिटायी है ।। २ ।। आँख खोलकर देखो, दसों दिशाएँ प्रसन्न हैं। सीता, हम तुम्हें छोड़ दे रहे हैं, तुम्हारी जहाँ इच्छा हो चली जाओ। तुम्हें हर ले जाकर रावण ने अनेक-अनेक समय तक रखा। तुम शुद्ध-भाव हो, यह बात कौन विश्वास करेगा ? ।। ३ ।। अपनी छाती में शिला बाँधकर भला कौन व्यक्ति तैरना चाहेगा ? कौन मूढ़ अब तुम्हें सम्हालेगा ? अनेक समय तक तुम रावण के यहाँ रही। पुनः तुम्हें लेकर जाना उत्तम नहीं होगा ।। ४ ।। तुम्हें लेने पर बड़ी कुकीर्ति होगी। जन-अपवाद के कारण मैं तुम्हें नही लूँगा। तुम अब

लक्ष्मणत भज नुहि भज भरतत * विभीषण भज नोहे भज सुग्रीवत ५
त्रैलोक्य सुन्दरी हेन जानिया तोमाक * रावणे क्षमिवो हेन पतियास काक
स्वामीर बचन हेन शुनिया निष्ठुर * लाजे भये गोसानीर हिया घुर घुर ६
दुर्व्वार वचन शाले शालिलेक हिये * धीरे धीरे बुलिलन्त जनकर जीये
उत्तम कुलत आमि जनम लभिलो * महन्त कुलत मोक बापे बिहा दिल ७
आमाक इतर नारी सम देखिलाहा * नटर नटिनी येन आनक बिलाहा
पापिष्ठ रावणे मोक आनिलेक हरि * तिरी जाति पराधीन नहो स्वतन्तरी ८
अन्तर्गत मनक पालिलो नियमित * रात्रिये दिवसे मोर तोमातेसे चित्त
तुमि येन शङ्कि आमि नहो हेन ठान * देव धर्म्म साक्षी हुइबा पृथिवी प्रमाण ९
अन्तर्गत शुद्ध आमि हओं महाशान्ती * इतर पुरुषे येन लघु बोल माति
यैसानि खुजित मोक आइला हनुमन्ते * हेनय वचन बुलि पठाइलाहा हन्ते ६५१०
पराण त्यजिलो हन्ते ताहार आगते * सवसेना किक प्रयासिव हेनमते
नसुमरा मोर एक दिवसर गुण * निर्द्दय पुरुष जाति किनो निदारुण ६५११
भागि गैला लोहा आउर गढ़न नयाय * इकाले औषध चिन्तो येहेन उपाय
शुनियो लक्ष्मण माते आलखनी सीता * झाण्ड करि बापु तइ साजि देह चिता १२
आपुनि करिवो आपनार प्रतिकार * अगनित जास करो कि कार्य्य जीवार
हेन शुनि लक्ष्मणे रामर मित चाइल * चक्षु निमिषते राघवर आज्ञा पाइल १३
तेतिक्षणे सुमित्रार हृदयनन्दने * चिताखान निर्म्मिलन्त आगर चन्दने
रामर चरित्र शुना सावधान करि * निरन्तरे नरे डाकि बोला हरि हरि ६५१४

हो तो लक्ष्मण को भजो या भरत को भजो; या तो विभीषण को भजो या सुग्रीव को भजो ।। ५ ।। तुम्हे त्रैलोक्य-सुन्दरी जानकर भी रावण ने तुम्हें यों ही छोड़ दिया है, यह बात तुम किसे विश्वास दिलाना चाहती हो ? स्वामी का ऐसा निर्मम वचन सुनकर लज्जा और भय से देवी सीता का हृदय धड़कने लगा ।। ६ ।। प्रचंड वचन रूपी शूल ने हृदय को वेध डाला । जानकी ने धीरे-धीरे कहा— हमने उत्तम कुल में जन्म पाया है, श्रेष्ठ वंश में पिता ने हमारा विवाह किया, ।। ७ ।। आपने हमें नीच कुल की नारियों जैसा समझा, नटों की नटिनी जैसी मुझे दूसरों को सौंप देना चाहते हैं । पापी रावण मुझे हर लाया । स्त्रीजाति पराधीन है, वह तो स्वतंत्र नहीं है ।। ८ ।। मैं नियमित रूप से मन मे आपको पालती रही हूँ, दिन-रात मेरा चित्त आप ही में लगा रहता है । आप जिस प्रकार शंकालु हैं मैं वैसी नहीं हूँ, देव, धर्म साक्षी रहे, पृथ्वी प्रमाण हो ! ।। ९ ।। मैं अन्तर से शुद्ध महा-सती हूँ । नीच पुरुष जिस तरह से कुत्सित वचन बोला करते हैं, आप भी मुझे वैसा ही वोल रहे है । जब हनुमान मुझे खोजने आये थे, यदि उनसे इस प्रकार के वचन कह भेजे होते तो उन्ही के सम्मुख मैं प्राण तज देती; तव सारी सेना को इस प्रकार का प्रयत्न क्यों करना पड़ता ? मेरे एक दिन का गुण भी आप स्मरण नही करते, वास्तव में निर्दय पुरुष-जाति कितनी निर्मम है ।।६५१०-११।। अब टूटे लोहे से कुछ बनाया नही जा सकता । अब इस समय जैसा उपाय हो, औषधि का चिन्तन करना उचित है । लक्ष्मण सुनो, तुम्हे कुलक्षणी सीता बुला रही है, वत्स, तुम शीघ्रता से चिता सजा दो ।। १२ ।। मैं अपना प्रतिकार स्वयं ही कर लूँगी । मैं अग्नि में जल जाऊँगी, जीवित रहने की क्या आवश्यकता है ? यह सुनकर लक्ष्मण ने राम की ओर देखा, पल भर में राघव की आज्ञा प्राप्त कर ली ।। १३ ।। सुमित्रा-नन्दन ने उसी क्षण अगरु और चन्दन से चिता बनायी । सावधान होकर राम का चरित्र सुनो, निरन्तर पुकार-पुकार कर सब लोग 'हरि, हरि' कहो ।। ६५१४ ।।

छबि

चितात अगनि कुण्ड ज्वालिलन्त लखमणे हाण्डि हाण्डि ढालिलन्त घृत ।
जाज्ज्वल्य समान करि बह्निकुण्ड ज्वलि गैला सीतादेवी भैलन्त सम्भृत ॥
राघवर हृदयत शेल येन पशि गैला आथाके नयने जल बहे ।
सकल सेनार देखि हाहाकार लागि गैला महाशोके पराण नसहे ॥ ६५१५
हेटमाथे राघवक फुरि प्रदक्षिण करि प्रणामि जुरिला दुइकर ।
जन्मे जन्मे तुमि मोर टीकर सुस्वामी हुइबा लक्ष्मणेसे हइबन्त देवर ॥
दशरथ नृपतिसे शशुर हैबन्त मोर कौशल्या हैबन्त मोर शाशु ।
हरि हरि गोसानीक दरशन नभैलोहो हेरा मोर सीता परबासु ॥ १६
हातयोरे त्रिदशक नमस्कार करिया ये अगनिक करिया प्रणाम ।
स्वपने गियाने मइ आन किछु नजानओं अहर्निशे सुमरिलो राम ॥
कायवाक्यमने पाप निमिषेको नजानओं आछिलोहो शान्ती पुण्य राखि ।
हेन जानि अग्नि मोक उचित फलक दिबा तुमि देव जगतर साक्षी ॥ १७
आपनाक शुद्ध हेन जानिया निशंक भावे मुख भैला हरिष सरस ।
स्वर्गतो देवता बर्ग सबे चाहि आछिलन्त सीता दिला अगनित झास ॥
लङ्का नगरीत यत बाल्य बृद्ध युवाजन असंख्यात सेना निकलिल ।
शोके दुःखे अपमाने हाहाकार शब्द उठि महारोले गगन पूरिल ॥ १८
तिनिलोक भुवनत चाहि चाहि आछिलन्त आकाश पृथिवी खण्ड छानि ।
बानर भालुकगण हरि हरि बिषादत स्वर्गक पर्य्यन्ते ·गैला ध्वनि ॥
हा हा सीता शान्ती माव बुलि बुलि कन्यागणे बेढ़ि बेढ़ि सबे प्रशंसन्त ।
स्वर्गत देवता सबे शोकत पागल भैला धर्म्म धर्म्म सबे सुमरन्त ॥ १९

लक्ष्मण ने चिता मे अग्नि-कुण्ड जलाया, घड़े-घड़े घी डाला, प्रचंड रूप से अग्नि-कुण्ड जल उठा, देवी सीता प्रस्तुत हो गयीं। रामचन्द्र के हृदय में मानो शूल विद्ध हो गया, आँखों से अनवरत जल बहने लगा। यह देख सारी सेना में हाहाकार मच गया, इतना प्रचंड शोक हुआ जिसे प्राण सह नही पाते थे ॥ ६५१५ ॥ सीता ने सिर झुका, रामचन्द्र की प्रदक्षिणा की और दोनो हाथ जोड़कर प्रणाम किया। कहा— जन्म-जन्म में आप मेरे सुहाग के सुस्वामी हों। लक्ष्मण ही मेरे देवर हों, राजा दशरथ ही मेरे ससुर हों, कौशल्या मेरी सास हों। हरि, हरि, उन देवी के दर्शन नहीं कर सकी। (जो कहती थी—) देखो मेरी सीता प्रवास मे जा रही है ॥ १६ ॥ हाथ जोड़कर देवताओं को नमस्कार करती हुई असंख्य बार प्रणाम किया। कहा— स्वप्न में हो या जागरण में, और कुछ मै नही जानती, केवल राम का स्मरण करती रही हूँ। शरीर-मन-वचन से निमिष भर के लिए भी कभी पाप नही जानती, सतीत्व की पवित्रता बचाये रही थी। ऐसा समझकर ओ अग्नि, मुझे उचित फल देना। देव, तुम जगत के साक्षी हो ॥ १७ ॥ अपने को शुद्ध समझकर सीता निश्शंक थी, इसलिए उनका मुखमंडल हर्ष से सरस हो उठा। स्वर्ग से देवता-वृन्द देख रहे थे, सीता अग्नि में कूद गयी। लंका नगरी में जितने बाल-वृद्ध-युवा जन थे, उनके साथ-साथ अनगिनत सैनिक भी निकल आये। शोक-दुःख-अपमान से उनसे (मुख से) जो हाहाकार की ध्वनि हुई, उस महानाद ने आकाश को गुंजा दिया ॥ १८ ॥ तीनो लोकों, (चोदह) भुवनो में, आकाश-पृथ्वीखण्ड को पूर्ण कर बानर-भालू 'यह दृश्य देख रहे थे। 'हरि-हरि' उनके विषाद से (भरी) ध्वनि स्वर्ग तक जा पहुँची। "हा-हा सती सीता माता", कहती हुई कन्याएँ घेर-घेरकर उनकी प्रशंसा कर रही थी। स्वर्ग के सभी देव

ब्रह्मा महेश्वर हरि देवराज आदि करि आपोन आपोन रथे चढ़ि ।
सीतादेवी अगनित प्रवेश भैलन्त देखि सबेओ आसिला दरदरि ॥
देवता सबक देखि कृताञ्जलि करि उठि चिन्तिया थाकिल रघुनाथ ।
आकाशत थाकि सबे राघवक बुलिलन्त उच्चाया दक्षिण तुलि हात ॥ ६५२०
श्रेष्ठाये पुरुष तुमि ज्ञानमय महौषधि देवकार्य्ये आसिला भूमिक ।
सीतादेवी अगनित प्रवेश भैलन्त देखा उपेक्षि आछिला तुमि किक ॥
आमि सबे भाले जानों एहि पतिव्रता शान्ती हेन नारी नाहि सीता सम ।
आपोनाक निचिनिया हेन कर्म्म करिलाहा मुनिरो हवय मतिभ्रम ॥ ६५२१
देवताक सम्बुधिया रघुनाथे बुलिलन्त सबेयो बखाना मोर गुण ।
प्रति प्रति करि तेवे परिचय करायोक आमिनो देवता हओं कोन ॥
हेन जानो दशरथ नृपतिर पुत्रमइ कौशल्या ये देवीर तनय ।
मानुहर रूप धरि नर अवतार करि शत्रुगण करिलोहो क्षय ॥ २२
अमोघ स्तुतिक करि ब्रह्मादेवे बुलिलन्त तुमि नारायण महा हरि ।
उत्पत्ति मरण हन्ते असुरक संहरण शङ्ख चक्र गदा पद्म धरि ॥
मुनिगण तोमाकेसे स्थूलरूपे चिन्ते प्रभु मोक्षरूपे निर्णय नजानि ।
दारिद्र दुखक खण्डि तयु हृदिमण्डलिनी सीतादेवी लक्ष्मी ये गोसानी ॥ २३
रावण मारिते लागि त्रिदशर वोले स्वामी मर्त्यत भैलाहा अवतार ।
तुमिसि संसार प्रभु उत्पत्ति प्रलय हेतु असन्तक कराहा संस्थार ॥
एतहन्ते अग्नि आसि पुरुष मूर्तिक धरि जानकीक कोले तुलि लैला ।
सेहि वस्त्र अलङ्कारे दशगुण तेज कान्ति रामर आगत निया थैला ॥ २४

पागल-से हो उठे, सभी 'धर्म-धर्म' स्मरण करने लगे ॥ १९ ॥ देवी सीता अग्नि में प्रवेश कर गयी, देखकर ब्रह्मा, महेश्वर, हरि (विष्णु), इन्द्र, समेत सभी देव अपने-अपने वाहनों पर सवार हो शीघ्र ही वहाँ आ पहुँचे । सभी देवताओं को देखकर रामचन्द्र हाथ जोड़ चिन्तामग्न हो रहे । आकाश में ही रहकर सभी देवों ने अपने-अपने दाहिने हाथ उठाकर रामचन्द्र से कहा— ॥ ६५२० ॥ तुम श्रेष्ठपुरुष, ज्ञानमय महौषधि हो, देव-कार्य हेतु धरती पर आये हुए हो । देखो, देवी सीता अग्नि में प्रवेश कर गयी हैं । भला तुमने इनकी उपेक्षा क्यों की ? हम सभी भलीभाँति जानते हैं, यह पतिव्रता सती हैं, सीता जैसी नारी अन्य नहीं है । अपने को न पहचानकर तुमने ऐसा कर्म कर डाला । मुनियों का भी मतिभ्रम हुआ करता है ॥ ६५२१ ॥ देवो को सम्बोधित कर रघुनाथ ने कहा— सब लोग मेरे गुणों का बखान कर रहे हैं । तो एक-एक कर परिचय करवाइये कि हम कौन देवता हैं ? यह मैं जानता हूँ कि मैं दशरथ का पुत्र हूँ, कौशल्यादेवी का तनय हूँ, मनुष्य का रूप धरकर नर-अवतार ले शत्रुओं का विनाश किया है ॥ २२ ॥ श्रीराम की महान स्तुति करते हुए ब्रह्माजी ने कहा— तुम नारायण महाहरि हो । शंख, चक्र, गदा, पद्म-धारी हरि, असुरों के संहार और मरण हेतु तुम्हारी उत्पत्ति हुई है । हे प्रभु, मोक्ष रूप से निर्णय न कर पाकर स्थूल रूप से मुनिगण तुम्हारा ही चिन्तन किया करते हैं । यह सीतादेवी दारिद्र्यदुख-खंडिनी, तुम्हारे हृदय में विलास करनेवाली लक्ष्मीजी हैं ॥ २३ ॥ हे स्वामी, रावण को मारने हेतु देवताओं के कहने पर मर्त्यलोक में तुम्हारा अवतार हुआ है । प्रभु, तुम्ही संसार की उत्पत्ति व प्रलय के हेतु हो, असन्तों का संहार करनेवाले हो । इतने में अग्निदेव पुरुष-मूर्ति धारण कर आये और जानकी को गोद में उठा लिया । उसी वस्त्र-अलंकारों में सीताजी की कान्ति दस गुनी बढ़ गयी, उन्हें लाकर राम के पास रखा ॥ २४ ॥

शुनियोक सर्ब्बजन पुण्यकथा रामायण मनोहर रामर चरित्र ।
करा कर्णाञ्जलि पान मन करा सावधान दिया राम चरणत चित्त ।।
यत महापाप चय खण्डिबन्त कृपामय सुखे पाइबा बैकुण्ठत थान ।
जानि सभासद जाक राम बुलि छारा डाक होक सब पापर निर्वाण ।। ६५२५

पद

अगनि बोलन्त शुना जगतर बाप * मइ भाले जानोहो सीतात नाहि पाप
संसार माजत नाहि मोत अबिदित * सत्ये सत्ये जानकीर तोमातेहे चित ६५२६
भावबाक्य टनके बुलिला जानकीक * बिचनिर बावे मेरु टलिबन्त किक
आपुनि जानाहा प्रभु सीता व्यवहार * सम्बरियो गोसाइ बिलम्ब किक आर २७
राघवे बोलन्त तुमि शुनियो अगनि * सीता येन शान्ती आमि भाल मते जानि
नाजाना सीताक परीक्षिलो यि कारणे * जनत थाकिब राम हेन लघु जने २८
चिरकाल आछिला रावण ओवारित * स्त्रीजाति उत्रीवल जगते बिदित
हेनसे राघव तेहों अनुचितकारी * अशोधने सम्बरिला आनि हेन नारी २९
अगनित उत्तरिल जगत गोचर * कुत्या बाणी एराइलोहो समस्त लोकर
देवतासवर हेन थाके अनुरोध * एवे सीता सम्बरिबो नाहिके बिरोध ६५३०
ब्रह्माये बोलन्त प्रभु हुयो परिचित * दशरथ आसिलन्त तोमाक देखित
तुमि पुत्रे तराइला पाइलन्त स्वर्गलोक * परम बिभवे आदरन्त देवलोक ६५३१
हेन शुनि रघुनाथे माथा तुलि चाइल * पाचे दिव्य बिमाने बापक भेट पाइल

सभी लोग पुण्यकथा रामायण, रामचन्द्र के मनोहर चरित्र सुनो। मन को सावधान कर कान को अंजलि बना लो और राम के चरणों में चित्त लगाओ। वे कृपामय सभी पापों का खंडन कर देंगे और सुख से तुम्हें वैकुण्ठ में स्थान मिलेगा। हे सभासदो, इसीलिए 'राम' कहकर पुकारो जिससे सभी पाप नष्ट हो जाये ।। ६५२५ ।।

अग्नि ने कहा— हे जगत्पिता, सुनिये। मैं भलीभाँति जानता हूँ कि सीता का कोई पाप नहीं है। संसार में मुझसे अविदित कुछ नही है। सत्य ही जानकी का चित्त आप ही मे लगा है ।। ६५२६ ।। भावना के आवेश में जानकी को आपने कठोर वचन कहे हैं, परन्तु भला पंखे की हवा से मेरु पर्वत कहाँ टल सकता है? प्रभु, सीता का व्यवहार आप स्वयं जानते है। देव, इन्हें सम्हालिये, अब और विलम्ब क्यों? ।। २७ ।। राघव ने कहा— अग्निदेव, आप सुनिये। सीता जैसी सती है वह मैं भलीभाँति जानता हूँ। मैने सीता की परीक्षा किस कारण की, आप नहीं जानते। लोगों में यह बात प्रचलित रह जाती कि राम ऐसा लघु-मानव है ।। २८ ।। सीता बहुत दिनों तक रावण के राजभवन में रही। संसार जानता है कि नारीजाति उतावली होती है। ऐसी नारी को विना शोधित किये ग्रहण कर लिया। जो राघव ऐसे (महान्) है वे भी ऐसा अनुचित कार्य करते है ।। २९ ।। अग्नि से यह सीता निकलकर जगत के सम्मुख आ पहुँची, हमने इस प्रकार सभी लोगों की तिरस्कृत वाणी मिटा दी। देवताओं का अनुरोध मानकर अब मै सीता को ग्रहण करूँगा, इसमें कोई विरोध नही है ।। ६५३० ।। ब्रह्मा ने कहा— प्रभु, तुम्हें देखने के लिए दशरथ आये हुए है, इनसे परिचय प्राप्त करो। तुम जैसे पुत्र ने इनको तार दिया, जिससे ये स्वर्ग-लोक प्राप्त कर चुके है। परम वैभव सहित देवगण इनका स्वागत करते हैं ।। ६५३१ ।। यह सुन रघुनाथ ने सिर उठाकर देखा, इसके पश्चात् दिव्यविमान

चरण बन्दिला आथे बेथे गाव चालि * दशरथे आनन्दे धरिला आङ्कोवालि ३२
सीता देखि तासम्वार आनन्द मिलिल * पावहन्ते लक्ष्मणक तुलि सावटिल
रामक दुइहाते धरि कोलात बैसाइल * तिनिको देखिया वर कौतूहल पाइल ३३
राघवक सम्बुधि बोलन्त दशरथ * आजिसे आछओं मइ सप्तम स्वर्गत
कैकेयीर बचनक नापासरो भाले * अद्यापियो हियाक शालिल येन शाले ३४
पापिष्ठीर वचने पठाइलो बने तोक * प्राणक त्यजिलो पाइ निदारुण शोक
सार्थक कौशल्यादेवी सहिलेक शोक * बनहन्ते गैले देखिबन्त दुइ पोक ३५
साफल जनम पाइबो अयोध्यार लोके * श्री सिंहासने बाप देखिबन्त तोके
सीता सम्बरियो बाप जगतर आइ * स्वप्ने ज्ञाने मने थाके तोमाक धियाइ ३६
आमार बंशर बाप तुमि दीप खेव * रावणक मारि उद्धारिला यत देव
त्रैलोक्य विजय राम पूर्व्वे जानो तोक * सिंहासन राज्य दिबे चाहिलोहो तोक ३७
ज्येष्ठत भकत लखाइ धन्यतो जीवन * याहार कीरिति गैला तिनियो भुवन
सार्थक जानकी कुल वहारी आमारे * सीता शान्ती पतिव्रता बिदित संसारे ३८
रघूर वंशर भैला वर यशकारी * जनकनन्दिनी गुणवती महानारी
राम तुमि भालमते करा प्रतिपाल * तोमार बियोगे दुख पाइला चिरकाल ३९
तोमार कनिष्ठ राम भरतक पाल * तोमार भकते दुख सहे चिरकाल
शत्रुघन पालिवाहा कुमार निष्पाप * ज्येष्ठ भाइ हैले हवे कनिष्ठर बाप ६५४०
राघवे बोलन्त बाप बचन नबाधो * एखानि गोचर तयु चरणत साधो
बुलिला पापिष्ठी आर नचाहिबो तोक * कैकेयी मावर दोष सब दिया मोक ६५४१

में पिता दशरथ को देखा। व्यस्त-सा होकर, उठकर उन्होंने उनकी चरण-वन्दना की। दशरथ ने उन्हें परम आनन्द से आलिंगन कर लिया ॥ ३२ ॥ सीता को देख उन्हें बड़ा आनन्द हुआ। उन्होने अपने पैरों पर पड़े लक्ष्मण को उठाकर आलिंगन किया। दोनो हाथों से राम को पकड़कर अपनी गोद मे बिठाया। तीनो को देखकर उन्हें बड़ा कौतूहल हुआ ॥ ३३ ॥ दशरथ ने राघव को सम्बोधित कर कहा— आज ही मैं सप्तम स्वर्ग मे हूँ, ऐसा लगता है। मैं कैकेयी के वचनों को भूल नही पाता। वे आज भी हृदय को शूल की भाँति वेधते रहते हैं ॥ ३४ ॥ उस पापिन के वचनों के कारण तुम्हें मैने वन में भेजा और निदारुण शोक पाकर अपने प्राण तज दिये। कौशल्यादेवी सार्थक है कि उसने उस शोक को सह लिया। वन से लौटकर जाने पर वह अपने दोनो पुत्रों को देख पावेगी ॥ ३५ ॥ श्री-सम्पन्न सिंहासन पर तुम्हें अधिष्ठित देख अयोध्या के लोग अपने जन्म को सफल पायेंगे। वत्स, तुम सीता को ग्रहण करो, यह जगत की माता है। स्वप्न में, ज्ञान में, चित्त मे वह निरन्तर तुम्हारा ध्यान करती रहती है ॥ ३६ ॥ वत्स, तुम मेरे वंश का उद्धार करनेवाले दीप हो, रावण का वध कर सभी देवों का उद्धार किया। राम, मैं पहले से ही जानता था, तुम त्रैलोक्य-विजयी हो, इसी कारण तुम्हें राज्य देना चाहता था ॥ ३७ ॥ बड़े भाई के भक्त लक्ष्मण, तुम्हारा जन्म धन्य है, जिसकी कीर्ति तीनो लोकों में फैल गयी है। हमारी कुल-वधू जानकी धन्य है, सीता पतिव्रता सती के रूप में विश्व में विदित है ॥ ३८ ॥ गुणवती महानारी जनकनन्दिनी रघुवंश की बडी कीर्ति बढानेवाली हुई है। राम, तुम भलीभाँति इनका प्रतिपालन करो, तुम्हारे वियोग में इसने चिरकाल दुख पाया है ॥ ३९ ॥ राम, अपने छोटे भाई भरत का पालन करो, तुम्हारा वह भक्त अनेक दिनो से दुख सह रहा है। निष्पाप कुमार शत्रुघ्न का पालन करना। बड़ा भाई होने पर वह छोटे भाई के पिता-जैसा होता है ॥ ६५४० ॥ राघव ने कहा—

तोमार मनत यदि हेनय सन्तोष * समस्त एरिलो कैकेयीर यतदोष
एहि बुलि दशरथ स्वर्गक गैलन्त * श्रीराम लक्ष्मण सीता आकुल भैलन्त ४२
दशरथ गैला यदि देवर भुवन * बासवे रामक चाहि बुलि बुलिला बचन
रावण मारिला महावैरी जगतर * येन अभिमत प्रभु मोत लैयो बर ४३
श्रीरामे बोलन्त मोक येबे दिबा बर * जीयाया दियोक मोर भालुक बानर
दारुण संग्रामे यत बानर मरिल * तारासबे जीले मोक सबे बर दिल ४४
दुस्तरर वन्धुवर्ग बानर आमार * मोक पाइ एरिलेक पुत्र परिबार
अद्यापियो धरिबे नोवारो शोके बुक * जीयाया दियोक मोक बानर भालुक ४५
अमृतर बृष्टि करिलेक देवराज * श्रीरामर हित चिन्ति संग्रामर माज
दारुण समर माजे यतेक मरिल * निद्रार जागिया येन उठिया बसिल ४६
मनत परिला सबे रणे मरणक * साष्टांगे प्रणाम परि करिला रामक
शुना सभासद सब रामर चरित्र * पापर अगनि इटो कर्णर अमृत ४७
जानिया संसार तरिबार करा काम * पातेक छारोक डाकि बोला राम राम
माधव कन्दलि कहे आन काम एरि * निरन्तरे नरे डाकि बोला हरि हरि ६५४८

श्रीरामर अयोध्या-गमन

दुलड़ी

जीवन्ता मरन्ता बानर भालुके लागि गैला गलागलि ।
राघवर शत्रु रावण मरिल रङ्गे हासे खलखलि ॥

पिताजी, आपको वचन कहने से मैं रोकता नही, परन्तु आपके चरणों में केवल एक निवेदन करना चाहता हूँ । आपने कहा— पापिनी, अब तुझे नही देखूँगा । उस कैकेयी माता का सारा दोष मुझे दीजिये ।।६५४१।। "तुम्हारे मन को यदि इसी से संतोष होता है तो मैं कैकेयी के सारे दोषों को तज देता हूँ ।" —यह कहकर दशरथ स्वर्ग को चले गये, श्रीराम, लक्ष्मण और सीता व्याकुल हो उठे ।। ४२ ।। दशरथ जब देवलोक चले गये तब इन्द्र ने राम की ओर देखते हुए कहा— आपने जगत के महा वैरी रावण का वध किया; प्रभु, आपको जैसा चाहिए मुझसे वरदान लीजिये ।। ४३ ।। श्रीराम ने कहा— मुझे यदि वर देना चाहते हैं तो मेरे भालू-बानरों को जीवित कर दे । भीषण संग्राम में जो वानर मारे गये हैं, वे जी जाये तो मुझे सभी वर मिल गया ।। ४४ ।। हमारे बानर संकट के वन्धुवर्ग है । मुझे पाकर इन सबने अपने पुत्र-परिवार को तज दिया है । आज भी शोक के मारे मेरा हृदय शान्त नही रह सकता । मेरे उन बानर-भालुओं को जीवित कर दें ।। ४५ ।। तब देवराज ने संग्राम में श्रीराम का हितचिन्तन कर अमृत-वर्षा की । उस भयंकर संग्राम में जो बानर-भालू मरे थे, सब ऐसे उठ बैठे मानो निद्रा से जगे हुए हों ।। ४६ ।। सबको संग्राम में मरने की बात स्मरण हो आयी । तब उन सबने रामचन्द्र को साष्टांग प्रणाम किया । सभासदो, राम का चरित्र सुनो । यह पाप की अग्नि और कानों का अमृत है ।। ४७ ।। यह जानकर संसार से पार उतरने का कार्य करो, जिससे पाप छूट जाये । पुकार कर 'राम, राम' कहो । माधव कन्दलि कहते हैं— अन्य काम छोडकर, निरन्तर पुकार कर हरि, हरि कहो ।। ६५४८ ।।

श्रीराम का अयोध्या-गमन

जीवित और मरकर जीवित हुए बानर-भालू एक दूसरे को आलिंगन करने लगे ।

बन्धु परिवार देखिबोहो याइ मनत बर उल्लास।
हृष्ट पुष्ट हुया बानर भालुक चापिला रामर पाश ॥ ६५४९
सब देवगणे उत्साह बढ़ाइल करिल स्तुति आशेष।
राघवे सबाके सादर करिला स्वर्गत भैला प्रवेश ॥
हृदय सन्तोषे रात्रिगोट वञ्चि रजनी भैला प्रभात।
रामर चरण वन्दि बिभीषणे आञ्जलि जुरिला हाते ॥ ६५५०
शुनियो गोसाइ देव रघुनाथ मोक दिया समिधान।
सकले सम्भूत मिलाया आछोहो करियोक शिरस्नान ॥
आगर चन्दने भूषित करियो देव योग्य अलङ्कारे।
कन्यागण सबे गाव पखालोक प्रयास खण्डो तोमार ॥ ६५५१
सुवर्णर घट भरि थैया आछो सुगन्धि शीतल जल।
देवाङ्ग बस्त्रक परिधान करि शरीर करा निर्म्मल ॥
उचित वचन योग्य बुलिलाहा तुमि मित्र बिभीषण।
एहि सब साजे स्नान करायोक सुग्रीवादि कपिगण ॥ ५२
भरत भैयाइ मरन्ते आछय एरिलेक राजभोग।
ताहाङ्क देखिले तेवे आमासार शिरस्नान होवे योग ॥
रावणक मारि सीताक लभिलो आर किबा मइ चाओं।
सत्वरे कार्य्यक चिन्तियोक मित्र यिमते अयोध्या पाओं ॥ ५३
बिभीषणे बोले शुना रघुनाथ किसक आकुल करि।
आमात लागिया एके दिने गैया अयोध्या पाइला नगरी ॥
कुवेर ददाक रणत जिनिया रावणे काढ़िया लैला।
पुष्पक बिमाने तोमाक लागिया सम्भृत करिया थैला ॥ ५४

राघव का शत्रु रावण मारा गया —इससे वे बड़े आनन्द से खिल-खिलाकर हँसने लगे। अपने बन्धु-परिवार आदि को जाकर देख सकेंगे, इससे उनके मन में बड़ा उल्लास होने लगा। हृष्ट-पुष्ट होकर बानर-भालू राम के पास पहुँचे ॥ ६५४९ ॥ सभी देवताओ ने उनका उत्साह बढ़ाया और अपार स्तुति की। रामचन्द्र ने सब देवताओ का बड़ा मान किया, वे सभी स्वर्ग में चले गये। मन मे सन्तुष्ट हो, रात बिताकर जब प्रभात हुआ, तो विभीषण ने दोनो हाथ जोड़कर राम की चरण-वन्दना की ॥ ६५५० ॥ सुनिये, प्रभुदेव, रघुनाथजी, हमारी मनोकामना पूरी करे। हम सभी उपकरण लेकर प्रस्तुत हैं, आप सिर-स्नान कर लीजिये तथा अगरु-चन्दन से शरीर को विभूषित कर देव-योग्य अलंकार धारण कीजिये। सभी कन्याएँ आपको नहलायें, आपकी सारी थकावट मिट जाये ॥ ६५५१ ॥ सुवर्ण-घटो में सुगन्धित शीतल जल भरकर हम प्रस्तुत है। देवांग-वस्त्र (रेशमी वस्त्र) पहनकर शरीर निर्मल कीजिये। रामचन्द्र ने कहा— मित्र विभीषण, तुमने उचित और योग्य वचन ही कहा है। इन सभी सामग्रियों से तुम सुग्रीवादि वानरो को स्नान करवाओ ॥ ५२ ॥ मेरा भरत भाई, वहाँ राजभोग छोड़कर मर-सा रहा है। उसके देखने के बाद ही मेरे लिए सिर-स्नान करना उचित होगा। रावण को मारकर हमने सीता को प्राप्त कर लिया, और क्या चाहिए ? मित्र, अब तो शीघ्र इसका उपाय सोचो जैसे हम अयोध्या पहुँच सके ॥ ५३ ॥ विभीषण ने कहा— रघुनाथ, सुनिये, आप भला व्याकुल किसलिए होते हैं ? समझ लीजिये कि हमारे साथ ही आप एक ही दिन मे अयोध्या नगरी पहुँच जा सकेंगे। भाई कुवेर को रण में हराकर रावण जिस पुष्पक विमान को छीन लाया था, उसे आपके लिए प्रस्तुत

राम लक्ष्मणर	सीता गोसानीर	चरण मइ आराधो ।
लङ्का नगरत	कत दिन थाकों	एहिसे कार्य्यक साधो ।।
श्रीरामे बोलन्त	यि बोल बुलिला	उचित होवे प्रस्ताव ।
यि राज्य तोमार	आमार सि राज्य	किछु नाहि भिन्न भाव ।। ५५
अन्तर्गत शुद्ध	जानोहो तोमार	नकरिबा खिखियाट ।
कहिरा पुष्पक	रथ आनियोक	सत्वरे मेलायो बाट ।।
आवर बचन	बोलोहो तोमाक	शुनियो नृप लङ्कार ।
सुग्रीव प्रमुखये	सकल सेनाक	झाण्टे दिया अलङ्कार ।। ५६
रामर बचन	बिभीषण राजा	शिरोगत करि मानि ।
सुवर्ण रतन	माणिक पोवाल	सबाक दिलन्त आनि ।।
अलङ्कार पिन्धि	बानर भालुके	हरिषे उज्ज्वल मुख ।
रामर मनत	हरिष देखिया	सबार मनत सुख ।। ५७
रथखान आनि	आगत योगाइला	राघवे चड़िला तात ।
लक्ष्मण कुमार	पाचत चरिला	चड़िला सीता आगत ।।
रामे आदेशिला	सुग्रीव सुहृद	तुमि किष्किन्ध्याक याहा ।
बिभीषण मित्र	लङ्का नगरीत	अकण्टका राज्य खाहा ।। ५८
सब कपिगण	बानर भालुक	करिला अशक्य काज ।
बन्धु परिबार	देखियोक गैया	चलियो आपुन राज ।।
सबे हन्ते मिलि	रामत बिनावे	आमियो तुलत याओं ।
अयोध्याक गैया	नयन भरिया	तयु अभिषेक चाओं ।। ५९
तेवेसे आमार	मनोरथ सिद्धि	जीवन होवे साफल ।
पाचे आपोनार	देशक चलओं	तोमार देखि कुशल ।।
श्रीरामे बोलन्त	यदि सबे याहा	तेवे मोर बर भाग ।
सब सेनागण	सहिते सुग्रीव	सत्वरे चलियो आग ।। ६५६०

रखा गया है ।। ५४ ।। राम-लक्ष्मण और देवी सीता के चरणों की मैं आराधना करता हूँ तथा इसी कार्य की साधना करता हूँ कि आप लंका में कुछ दिन रहिये । श्रीराम ने कहा— तुमने जो कुछ कहा वह प्रस्ताव बड़ा उत्तम है । जो तुम्हारा राज्य है वह मेरा है, इसमें कुछ भिन्न भाव नहीं है ।। ५५ ।। तुम्हारा अन्तर परम शुद्ध है, यह मै जानता हूँ; तुम कोई हठ न करो । पुष्पक रथ कहाँ है उसे लाओ और शीघ्र ही रवाना करो । लंकाराज विभीषण, सुनो । तुमसे और भी कहता हूँ, सुग्रीव समेत सारी सेना को शीघ्र अलंकार प्रदान करो ।। ५६ ।। रामचन्द्र के वचन शिरोधार्य कर राजा विभीषण ने स्वर्ण-रत्न, मणि-माणिक आदि लाकर सबको दिया । गहने पहनकर हर्ष से बानर-भालुओं के मुख उज्ज्वल हो उठे । राम के मन में हर्ष देखकर सबके मन मे सुख था ।। ५७ ।। पुष्पक रथ लाकर रामचन्द्र के सामने रखा, राघव उस पर सवार हुए । इसके पश्चात् पहले सीता चढ़ीं, उनके बाद कुमार लक्ष्मण चढ़े । राम ने आदेश दिया, मित्र सुग्रीव, तुम किष्किन्ध्या जाओ । मित्र विभीषण, तुम लंका का निष्कंटक राज्य भोगो ।। ५८ ।। सारे बानर-भालू मिलकर ऐसा कार्य कर लिया जो दूसरों से सम्भव न था । अब सभी अपने-अपने राज्य में जाकर अपने बन्धु-परिवार आदि से मिलो । तब सब लोग राम से विनती करने लगे, हम भी आपके संग चलना चाहते हैं । अयोध्या जाकर आँखें भरकर आपका अभिषेक देखना चाहते है ।। ५९ ।। तभी हमारा मनोरथ सिद्ध हो, हमारा जीवन सफल बने । आपका कुशल देखने के पश्चात् हम अपने

विभीषण मित्र	सत्वरे चलियो	राक्षसगण समस्ते ।
रामर आदेशे	सवेयो चरिला	सेहिटो पुष्पक रथे ।।
रामर आदेशे	पुष्पकत चरि	चलि गैला अयोध्याक ।
समरभूमिर	थान चिनावन्ते	याहन्ते देवी सीताक ।। ६५६१
हेरा देखा तुमि	जनकनन्दिनी	त्रिकूट ऊपरे लङ्का ।
यात थाकि देव	रावणे जिनिल	काहाको नकरे शङ्का ।।
दारुण समर-	भूमिक आपुने	नयन वलाया चाहा ।
इठावते मइ	रावण वधिलो	भालमते आकलाहा ।। ६२
कुम्भकर्ण वीर	समरे मारिलो	कपिर खण्डिलो भीत ।
तोमार देवरे	मारिला समरे	इठावते इन्द्रजित ।।
प्रहस्त वीरक	मारिलन्त नीले	एहिटो समर थाने ।
अशेष राक्षस	वीरक मारिला	अंगद ए हनुमाने ।। ६३
असंख्य राक्षस	रणत मारिलो	लेखिते ताक नपारि ।
शकति हानिया	रावणे लखाइक	इथावते थैला मारि ।।
जम्बुद्वीपक ये	गैया हनुमन्ते	चन्द्र पर्व्वतक पाइल ।
विशल्यकरणी	औषध आनिया	लक्ष्मण भाइ जीयाइल ।। ६४
एहिसे थानत	मायाये रावणि	दोभाइक शरे वान्धिल ।
शरीरत जीव	नाछिल देखिया	वानरे बेढ़ि कान्दिल ।।
वायु आसि मोर	काणत जपिला	कराइल पाचे चेतन ।
तान उपदेशे	आमियो करिलो	गरुड़क सुमरण ।। ६५
उराव करिया	गरुड़ आसिया	माजिला अमृत हाते ।
ताहान प्रसादे	दुयोभाइ पाचे	आमि जीलो अव्याहते ।।

अपने देश जायेंगे। श्रीराम ने कहा, यदि सब लोग जाना चाहते हो, तो यह मेरा बड़ा भाग्य है। सुग्रीव सहित सारी सेना शीघ्र ही आगे बढ़ो ।। ६५६० ।। मित्र विभीषण, राक्षसों के साथ शीघ्र चलो। राम के आदेश से सभी उसी पुष्पक रथ पर सवार हुए। राम के आदेश से पुष्पक पर चढ़कर अयोध्या को चल पड़े। रामचन्द्र देवी सीता को समरभूमि के स्थानों का परिचय करवाते जाने लगे ।। ६५६१ ।। वह देखो, जनकनन्दिनी, त्रिकूट पर्वत पर लंका बसी हुई है। यहाँ रहकर रावण ने देवों को जीता था, और किसी से शंका नहीं करता था। इस भयंकर समरभूमि पर तुम दृष्टि डालकर देखो, इसी स्थान पर मैंने रावण का वध किया था; भलीभाँति देख लो ।।६२।। वीर कुम्भकर्ण को युद्ध में मारा था और बानरों का आतंक दूर किया था। तुम्हारे देवर लक्ष्मण ने यहीं इन्द्रजित को युद्ध में मारा था। इसी समरभूमि में प्रहस्त वीर को नील ने मारा था। अंगद और हनुमान ने अनेक राक्षस वीरों को यहीं मारा था ।। ६३ ।। जिन असंख्य राक्षसों को युद्ध में मारा था उनकी गिनती नहीं हो सकती। रावण ने लक्ष्मण को यहीं शक्ति के प्रहार से मार डाला था। तब हनुमान जम्बूद्वीप में जाकर चन्द्र पर्वत पर पहुँचे थे तथा विशल्यकरणी औषध लाकर लक्ष्मण भाई को जिलाया था ।। ६४ ।। इसी स्थान पर माया द्वारा रावण-कुमार ने दोनों भाइयों को बाँधा था। हमारे शरीर में प्राण नहीं था, देखकर वानर हमें घेरकर रोने लगे थे। इसके पश्चात् वायु ने आकर मेरे कानों में (कुछ मन्त्र) जपा और सचेत कराया। उनके उपदेश से हमने गरुड़ का स्मरण किया ।। ६५ ।। गरुड़ उड़ते हुए आये और हमें अमृत-हाथों से सहलाया। उसके बाद उन्हीं के अनुग्रह से हम दोनों भाई जीवित हुए। सीता, सुवेल

सुबेल पर्ब्बत देखियोक सीता बिस्तर चराव आति।
सागर तरिया सहित ससैन्ये एथात बञ्चिलो राति ॥ ६६
बिषम गहन सागर देखाहा यार नलक्षिय पार।
मन्दर सदृश ढौसब बाजे स्वर्ग सम एकाकार॥
आमार कीर्त्तिक देखियोक सीता सागरे बान्धिलो सेतु।
एहि पथ सब सैन्य पार भैला तोमार कार्य्यर हेतु ॥ ६७
आमार सेनार काठगड़ा देखा बहल सागर तीरे।
एहिटो ठावत दरशन भैलो मित्र बिभीषण बीरे॥
किष्किन्ध्या नगरी देखियोक सीता करिले अशक्य काज।
एकपात शरे बालिक मारिलो सुग्रीवक दिलो राज ॥ ६८
ऋष्यमुख गिरि देखाहा जानकी पम्पा सरोबर तीरे।
तोमाक खोजन्ते दरशन एथा भैलो हनुमन्त बीरे॥
सुग्रीव सहिते पर्ब्बत उपरे आमार भैल सखित्व।
एहिटो थानत दरशन आरो आथान्तर बिपरीत ॥ ६९
कबन्ध असुर आछिल एहिटो प्रहरर पन्थ बाहु।
आमि दुइ भाइक धरिया आनिल चन्द्रक येहेन राहु॥
खाण्डार प्रहारे बाहुक छेदिलो ताहाक मारि पेलाइलो।
एहिटो थानत जटायु बीरक आमि दरशन पाइलो ॥ ६५७०
तोमाक रावणे हरिबार कथा आमात तेहो कहिल।
काष्ठ संस्कार करि दुयो भाइ जटायु बीर दहिल॥
कदली बनक देखियोक सीता ज्वलिला शोके आमाक।
ऋषिबेश धरि इठाइत रावणे हरिया निले तोमाक ॥ ६५७१

पर्वत को देखो, जिसकी चढ़ाई बहुत अधिक है। सेना सहित सागर पार कर यही हमने रात बिताई थी ॥६६॥ वह विषम गहरा सागर देखो, जिसका पार दिखाई नही देता। इसमें मंदर पर्वत के समान लहरें उठती है, जो स्वर्ग के साथ एकाकार-सी लगती है। सीता, हमारी उस कीर्ति को देखो, हमने सागर पर वह सेतु बाँधा है; तुम्हारा कार्य-साधन हेतु इसी मार्ग से सारी सेना सागर पार हुई थी ॥६७॥ विस्तृत सागर के किनारे हमारी सेना की वह बड़ी दीवार देखो, इसी स्थान पर मित्र वीर विभीषण हमसे मिले थे। सीता, किष्किन्ध्या नगरी को देखो, यहाँ हमने असाध्य कर्म किया था। एक ही बाण से बाली को मारा, और सुग्रीव को राज्य दिया ॥ ६८ ॥ जानकी, पम्पा सरोवर के किनारे ऋष्यमूक पर्वत को देखो, तुम्हें खोजते हुए यही वीर हनुमान से भेंट हुई थी। पर्वत के ऊपर सुग्रीव के साथ हमारी मित्रता हुई थी। इस स्थान को देखो, जहाँ अनहोनी विपरीत घटना हुई थी ॥ ६९ ॥ यही कवन्ध नाम का असुर मिला था, जिसकी बाँहे एक-एक प्रहर के मार्ग तक फैली हुई थी। हम दोनो भाइयों को उसने इस प्रकार पकड़ लिया था जैसे कि राहु चन्द्रमा को पकड़ लेता है। हमने तलवार के प्रहार से उसकी बाँहें काटकर उसे मार डाला था। इसी स्थान पर हमने वीर जटायु के दर्शन किये थे ॥ ६५७० ॥ उन्होंने ही रावण द्वारा तुम्हे हर ले जाने की बात हमसे बतायी थी। हम दोनो भाइयों ने चिता तैयार कर वीर जटायु का दाह किया था। सीता, उस कदली वन को देखो, जिसने हमें शोक से जलाया है। इस स्थान में ऋषि-वेश धारण कर रावण तुम्हें हर ले गया था ॥ ६५७१ ॥ वह वन देखो, यही हमने प्रचंड युद्ध किया था तथा त्रिशिरा-खर-दूषण समेत चौदह हजार राक्षसों को मारा था।

हेरा वनखान देखियो इठावे अशेष करिलो रण ।
चौद्दय हाजार राक्षस मारिलो त्रिशिरा खर दूषण ॥
पञ्चवटी वन देखा शूर्पनखा खाइवाक धाइले तोमाक ।
लखमणे ताइक खड्ग धरिया जपाइ काटिलन्त नाक ॥ ७२
एहि ठावे आमि अगस्ति ऋषित पाइलो दिव्य धनुवाण ।
याहार प्रसादे रावण मारिलो देवक करिलो त्राण ॥
शरभङ्ग ऋषि आमासाक पाइ इठावे कैला सादर ।
ताहान थानत मारिया पेलाइलो विराध ए निशाचर ॥ ७३
अत्रि ऋषिर ये ठावत जानकी लभिलो गुण अपार ।
अनुसूया देवी तोमाक दिलन्त अङ्ग रञ्जि अलङ्कार ॥
चित्रकूट गिरि देखियोक सीता ओरका आसिया पाइल ।
एहिसे ठावत भरते आमाक पालटाइ निवाक चाइल ॥ ७४
हेरा मन्दाकिनी नदीक देखाहा शीतल निर्म्मल जल ।
इहार तीरत पितृपिंड दिलो येन वदरीर फल ॥
हेरा देखियोक जनकनन्दिनी आसिला पाइलो प्रयाग ।
भरद्वाज ऋषि आश्रमक पाइलो आमार वरहि भाग ॥ ७५
इठावरे परा नयन वलाया चाहियो अनेक दूर ।
गङ्गातीरे देखा मोर प्रिय सखा गुहक राजार पुर ॥
यि यि पथे आमि लङ्काक आसिलो दुनाइ आइलो सेइ पथे ।
विभीषण गुणे दुख नपाइलोहो आसिलो पुष्पक रथे ॥ ७६
जनकजीयारी सीता प्राणेश्वरी चाहा मन्यु परिहरि ।
रेणु रेणु करि हेरा देखियोक अयोध्या मोर नगरी ॥
शुना सभासद रामायण पद वैकुण्ठत यार इच्छा ।
एरि आन काम बोला राम राम जन्मक नकरा मिछा ॥ ६५७७

वह पंचवटी वन देखो, जहाँ शूर्पणखा तुम्हें खाने दौड़ी थी । लक्ष्मण ने तलवार लेकर बलपूर्वक उसकी नाक काट डाली थी ॥ ७२ ॥ इसी स्थान पर हमने अगस्त्य ऋषि से वह दिव्य धनुष प्राप्त किया था, जिसके प्रसाद से रावण को मार सका और देवों का त्राण किया । शरभंग ऋषि ने हमें पाकर यही आदर-सम्मान किया था; उनके स्थान में हमने विराध राक्षस को मार डाला था ॥ ७३ ॥ जानकी, अत्रि ऋषि के इस आश्रम में अपार गुण प्राप्त किया था तथा देवी अनुसूया ने तुम्हारे अंगों को सजाकर अलंकार प्रदान किया था । वह देखो सीता, चित्रकूट पर्वत आ पहुँचा । यही भरत ने हमें लौटा ले जाना चाहा था ॥ ७४ ॥ वह मंदाकिनी नदी को देखो, जिसका जल शीतल और निर्मल है । इसके तट पर पितरों को बेर के फलो जैसे पिंड दान किया था । वह देखो जनकनन्दिनी, हम प्रयाग आ पहुँचे । हम भरद्वाज ऋषि के आश्रम में पहुँच गये । हमारा बड़ा ही भाग्य है ॥ ७५ ॥ यहाँ से आँखे डालकर दूर-दूर तक देखो । देखो, गंगा के किनारे मेरे प्रिय सखा गुहक राजा की पुरी है । जिन मार्गो से होकर हम लंका पहुँचे थे पुनः उसी मार्ग से आये हैं । विभीषण के गुण के कारण हमें दुख उठाना न पड़ा, हम पुष्पक रथ से आये ॥ ७६ ॥ जनकनन्दिनी प्राणेश्वरी सीता, मन की वेदना तजकर मेरी नगरी उस अयोध्यापुरी के कण-कण देखो । सभासद-गण, जिन्हें वैकुण्ठ की अभिलाषा है, रामायण-पद सुनो, दूसरे काम छोड़कर राम-राम कहो, जन्म को व्यर्थ न करो ॥ ६५७७ ॥

श्रीरामर अयोध्या-प्रवेश आरु अभिषेकर आयोजन

पद

रामे चिनाइला सीता देखिला अशेष * पाछे भरद्वाज ऋषि आश्रमे प्रवेश
पुष्पकर हन्ते पाचे सबहि नामिल *श्रीराम लक्ष्मण सीता ऋषिक नमिल ६५७८
भालमते आदरिला ऋषि भरद्वाजे * सबेओ बसिल गैया ऋषिर समाजे
अवशेष कथा यत कहिला समस्ते * रामे रावणक मारिलन्त येनमते ७९
श्रीरामे बोलन्त ऋषि पुछोहो तोमात * भरतर यतकथा कहियो आमात
कुशले कि आछे मोर भाइ शुद्धमति *कौशल्या सुमित्रा माव भाले कि आछन्ति ६५८०
भरद्वाजे राघवक मिलन्त सिद्धान्त * शुनियोक भरतर यिमत वृत्तान्त
तोमार सदृश तान परिधान चिर *अस्थि चर्म्म मांस सार पङ्कित शरीर ६५८१
भाले शुनि आछो भरतर येनमत * भरत कुमार बर तोमाते भकत
निते पाने पूजन्त भोजन फल मूले * माव भाइ सहिते आछन्त अनुकूले ८२
तोमार निकार यत शुनिया बनत * सीतार हरण शुनि बिषाद मनत
सुग्रीव सखित्व बालि बीर भैला बध * हनुमन्ते करिलेक लङ्काक दगध ८३
नले सेतु बान्धिलन्त तोमार प्रबन्ध * समुद्र तरिया बधिलन्त दशकन्ध
बिभीषण राजा भैला सीतार निस्तार * सबकथा शुनि आछो बहल बिस्तार ८४
देवर राजात तुमि येन बर पाइला * अमृत बरिषि सब बानर जियाइला
सन्तोष मिलिला बर आमार मनर * येन अभिमत प्रभु मोत लैयो बर ८५

श्रीराम का अयोध्या-प्रवेश और अभिषेक का आयोजन

रामचन्द्र ने परिचय करवाया और सीता ने उस अपार दृश्य को देखा। इसके पश्चात् उन्होंने भरद्वाज ऋषि के आश्रम में प्रवेश किया। सब लोग पुष्पक से उतरे और श्रीराम, सीता तथा लक्ष्मण ने ऋषि को नमन किया ॥ ६५७८ ॥ भरद्वाज ऋषि ने उन्हें उत्तम रूप से स्वागत किया। सभी लोग ऋषियों के समाज में जाकर बैठे। राम ने रावण को जिस प्रकार वध किया वे सारी कथाएँ विस्तार से सुनायी ॥ ७९ ॥ श्रीराम ने कहा, ऋषि, आपसे पूछता हूँ, आप हमे भरत की सारी बाते बताइये। मेरे शुद्ध मति वाले भाई क्या सकुशल हैं? कौशल्या-सुमित्रा माताएँ अच्छी तरह हैं न? ॥ ६५८० ॥ भरद्वाज ने रामचन्द्र को विवरण सुनाते हुए कहा— भरत का जैसा वृत्तान्त है, सुनो! हे राम, वे तुम्हारे जैसे ही चीर पहने हैं। उनका शरीर भी अस्थि-चर्म-मांस भर होकर मलिन-पंकिल रह गया है ॥ ६५८१ ॥ भरत जिस प्रकार रहते हैं उसके बारे में बहुत कुछ सुना है। कुमार भरत तुम्हारे बड़े ही भक्त हैं। फल-मूल का भोजन करते हुए तुम्हारी पनहियों का पूजन करते हैं। वे माताओं और भाइयों सहित तुम्हारे अनुकूल है ॥ ८२ ॥ वन में तुम पर आयी हुई विपत्तियाँ सुनकर, सीता का हरण सुनकर उनके मन में बडा विषाद है। सुग्रीव से मित्रता के फलस्वरूप वीर बाली का वध हुआ। हनुमान ने लंका को दग्ध कर डाला ॥ ८३ ॥ तुम्हारे लिए नल ने सेतु बाँधा। समुद्र पार कर दशानन का वध किया। विभीषण राजा बने, सीता का उद्धार हुआ आदि बातें विस्तृत रूप से सुनता रहा हूँ ॥ ८४ ॥ देवराज से तुम्हें जो वर मिला, अमृत-वर्षा कर सारे बानरों को जिलाया, उससे हमारे मन को बड़ा संतोष मिला। प्रभु, तुम्हारी जैसी इच्छा हो मुझसे वर लो ॥ ८५ ॥

अनुग्रह आछे येवे मोक दिवा वर * सन्तोप करायो मोर भालुक वानर
अकालत समस्त वृक्षत फल होक * मधु होक कपि सवे भोजन करोक ८६
भरद्वाज ऋषिये बुलिला एवमस्तु * सकल वृक्षत होक मधुफल वस्तु
हरिषे वानर वर वर गाछे चड़ि * अमृत समान फले लगाइला दादरि ८७
कौतूहले रामे निशा वञ्चिलन्त तथ * प्रभात भैलन्त रवि किरण उदय
मने विमरिषि राम त्रिजगत नाहा * बोलन्त मारुति तुमि अयोध्याक याहा ८८
गङ्गातीरे श्रृंगवेर पुरक देखिवा * आमार कुशल गुह राजात कहिवा
पाचे तुमि नन्दिग्राम नगरीक याइवा * भरतर आगे सब कुशल जनाइवा ८९
रामक प्रणामि हनुमन्त गैला चलि * श्रृंगवेर पुरे गुह राजाक आकलि
ब्राह्मणर वेशे कथा कैला आदि अन्त * रावणक मारि राम लक्ष्मण आसन्त ६५९०
गुहराजे बोलन्त साफल मोर दिन * हरपित भैलो वर आनन्दर चिन
साफल जीवन्ते मइ आछो एतकाल * रामक देखिवो अयोध्यार महीपाल ६५९१
गुह नृपतित कहि उत्रावल मने * वायुसुत लरि गैला सत्वर गमने
नन्दिग्राम कोल पाइ शिरिमन्तवन * फले फुले जातिष्कार देखि सुशोभन ९२
दण्ड दुइर पन्थ होवे अयोध्यार हन्ते * नन्दिग्रामे प्रवेशिला वीर हनुमन्ते
सभार माजत वहि आछन्त भरत * धौत दान्तपान्ति जटा जुटेक मण्डित ९३
हरिठा भक्षण मात्र मलपङ्कधारी * शुक्ल चिर परिधान येन ब्रह्मचारी
चतुपार्श्वे वेढ़ि आछे मुख्य मुख्य पात्र * पानै पुरि थित शुद्ध अस्थि चर्म्म मात्र ९४
ब्राह्मणर वेशे हनुमन्त उपागत * आशीर्व्वाद करि बोले शुनियो भरत

राम ने कहा— यदि मुझे वर देने का आपका अनुग्रह है, तो हमारे भालू-वानरो को संतुष्ट करावें। फलने का समय न होने पर भी सभी वृक्षो में फल उत्पन्न हो। मधु हो जाये और सभी वानर उन्हें खायें ॥ ८६ ॥ भरद्वाज ऋषि ने कहा, 'एवमस्तु', सभी वृक्षों में मधु और फल-वस्तु लग जायें। हर्षित हो सभी वानर बड़े-बड़े वृक्षों पर चढ गये और अमृत जैसे फल तोड़ने के लिए कूद-फाँद लगा दी ॥ ८७ ॥ कौतूहल-वश रामचन्द्र ने वही रात वितायी। प्रभात में रवि-किरणों का उदय हुआ। त्रिलोक-नाथ रामचन्द्र ने मन मे विचारकर कहा— हनुमान, तुम अयोध्या जाओ ॥ ८८ ॥ गंगा के तट पर तुम श्रृगवेरपुर देखोगे। वहाँ के राजा गुह से हमारा कुशल कहना। इसके पश्चात् तुम नन्दिग्राम नगर जाना और भरत को कुशल सूचित करना ॥ ८९ ॥ राम को प्रणाम कर हनुमान चल पडे तथा श्रृंगवेरपुर में गुह राजा से मिलकर ब्राह्मण के वेश में आदि से अन्त तक सारी कथाएँ सुनायी कि रावण को मारकर राम-लक्ष्मण आ रहे हैं ॥ ६५९० ॥ गुहराज ने कहा, मेरा दिन (जीवन-काल) सफल है। बड़े आनन्द की निशानी पाकर में हर्षित हुआ। इतने समय तक जीवित रहना सफल हुआ क्योंकि राम को अयोध्या के भूपाल के रूप में देख पाऊँगा ॥ ६५९१ ॥ राजा गुह से यह कहकर मन में बड़े उतावले हो, पवनसुत वेग से चल पड़े। वे नन्दिग्राम पहुँचे, जहाँ के वन बड़े श्री-सम्पन्न थे। प्रचुर फल-फूलों से वह वडा ही सुन्दर दिखलाई पड रहा था ॥ ९२ ॥ अयोध्या से वह दो दंड का मार्ग था। वीर हनुमान ने नन्दिग्राम मे प्रवेश किया। भरत सभा मे बैठे हुए थे। वे जटाजूट से मंडित थे, दाँतों की पंक्ति धुली हुई थी ॥९३॥ वे केवल हरिठा-कन्द खाते थे। मलिन शरीर में पंक लगा हुआ था; वे ब्रह्मचारी की भाँति चिर श्वेत पहनावा पहने हुए थे। उनके चारों ओर मुख्य-मुख्य सामन्त घेरे हुए थे। दोनो पनहियो के पास वे शुद्ध अस्थि-चर्म मात्र होकर बैठे थे ॥ ९४ ॥ हनुमान वहाँ ब्राह्मण के वेश में पहुँचे और आशीर्वाद देकर कहा—

त्रिकुटक लागि याक आनिबाक गैला * रावणक मारि राम सीता समे आइला ९५
सकल राक्षस आर सब कपिगण * सुग्रीव आसिला आसिलेक बिभीषण
भरद्वाज थाने राम आछन्त प्रयागे * आमाक पठाइला बार्त्ता कहिबाक आगे ९६
गाव चालि भरत उठिला कौतूहले * साबटिया धरिलन्त ब्राह्मणर गले
हरिष भैलन्त आति कंकेयीर पोवे * सकल शरीर तान तियाइलन्त लोवे ९७
देव कि मनुष तुमि आसि भैला कोन * सुजिबाक नपारो तोमार इटो गुण
भालमते कहियोक शुनो सबकथा * हनुमन्ते कहिलन्त सकल व्यवस्था ९८
अयोध्या अवधि यत पथर बृत्तान्त * चन्द्रर मातृत सीता बर लभिलन्त
बिराधर बध शरभङ्ग आलापर * अगस्तित येनमते पाइला धनुशर ९९
शूर्पनखार नासा छेद खरर मरण * मारीचर बध येन सीतार हरण
जटायुक रावणे मारिल येनमते * पाखाछेद भैला रामे दहिला पथते ६६००
कबन्धक मारिलन्त शरायु सन्नित * सुग्रीव सहिते राम भैलन्त सखित्व
सुग्रीवर हेतु बालि बध आसरिश * बानर बलक पाञ्चि दिला दशोदिश ६६०१
सम्पातिक दरिशन समुद्र तरण * आपुनि भैलन्त जानकीक दरशन
लङ्कापुरी दहि पुनरपि आगमन * राम बिभीषण येनमत बिबरण २
सागरत सेतु बान्धि ससैन्ये तरिला * ये ये राक्षसक ये ये बानरे मारिला
इन्द्रजित परिलन्त लक्ष्मणर हाते * रावण मारिला रामे जगतर नाथे ३
सीताक करिल अगनित परीक्षण * सिकालत आछिला यतेक देवगण
लगे आसिलन्त दशरथ महाराय * सीता शुद्ध बुलिला त्रिदशक अवगाइ ४

भरत, सुनो। तुम जिन्हें लाने हेतु चित्रकूट तक पहुँचे थे, वे रामचन्द्र रावण को मारकर सीता के संग आ रहे हैं।। ९५।। सभी राक्षस और कपिगण, सुग्रीव और विभीषण भी आ रहे हैं। रामचन्द्र प्रयाग में भरद्वाज-आश्रम में है। हमें समाचार देने हेतु उन्होने पहले भेजा है।। ९६।। भरत कौतूहल से खड़े हो गये और ब्राह्मण को गले लगाकर आलिंगन किया। कैकेयी के पुत्र बड़े ही हर्षित हुए और उनका समूचा शरीर आँसुओं से भीग गया।। ९७।। उन्होंने पूछा, तुम देव या मनुष्य कौन यहाँ आये हो? तुम्हारे इस गुण का ऋण मैं चुका नहीं सकता। तुम अच्छी तरह बताओ, मैं सारी बातें सुनना चाहता हूँ। तब हनुमान ने सारी स्थिति का वर्णन किया।। ९८।। अयोध्या तक पहुँचने के मार्ग की घटनाओं का पूरा वृत्तान्त बताया। चन्द्र की माता से सीता की वर-प्राप्ति, विराध का वध, शरभंग से वार्ता, अगस्त्य मुनि से धनुष-बाण मिला,।। ९९।। शूर्पणखा की नाक काटी, खर की मृत्यु हुई, मारीच का वध किया। सीता का हरण हुआ, जटायु को रावण ने मारा, उसके पंख काट डाले, मार्ग में ही रामचन्द्र द्वारा उसका दाह किया,।। ६६००।। शरायु के समीप कवन्ध को मारा, सुग्रीव के साथ राम की मित्रता हुई, सुग्रीव के कारण अद्भुत रूप से वाली का वध किया, दसों दिशाओं में बानरों को भेज दिया;।। ६६०१।। सम्पाति से बानरों की भेंट हुई, स्वयं हनुमान ने समुद्र पार कर जानकी के दर्शन किये, लंकापुरी का दहन कर लौट आये, राम की विभीषण से भेंट हुई,।। २।। सागर पर सेतु बाँधकर सेना सहित उसे पार किया, जिन-जिन राक्षसो को जिन-जिन बानरों ने मारा; सब कुछ बताया। इन्द्रजित लक्ष्मण के हाथ मारा गया, जगत के नाथ राम ने रावण को मारा,।। ३।। उन्होने सीता की अग्नि में परीक्षा की, उस समय सभी देवगण उपस्थित थे, उनके संग महाराज दशरथ आये थे, देवताओं के सम्मुख सीता को उन सबने शुद्ध बताया, अग्नि ने स्वयं जानकी को गोद में उठाकर, सीता को शुद्ध बताकर

आपुनि अगनि जानकीक कोले तुलि * आनि दिला आपुनि सीताक शुद्ध बुलि
त्रिदश देवता जानकीक प्रशंसिला * त्रिदशर हन्ते रामे यशक लभिला ५
राघवक बासवे करिला वरदान * मरिला बानर यत लभिला पराण
आन देव सवे राघवक दिला वर * पुष्पकत चड़ि आसे जगत ईश्वर ६
पुछिलन्त भरते तोमार किवा नाम * तुमि समे एकत्र भैलन्त केने राम
तेहो ज्येष्ठ भाइ मोर पितृ समसर * हेन शुनि हनुमन्ते दिलन्त उत्तर ७
बायुसुत हनुमन्त जानिवा आमाक * लङ्केश्वरे हरि निल जानकी सीताक
ताहाङ्कु खोजन्ते दुइ राम लखमण * तेहो दुइसमे मइ भैलो दरशन ८
पाचे मइ तासम्वात पूछिलो वार्त्ताक * कि कारणे बने खुजि फुराहा काहाक
तोमरा ये कोन दुइ हवे किवा नाम * स्वरूप कहियो ऐत आछे कोन काम ९
अनन्तरे लक्ष्मणे ये बुलिला वचन * इहाङ्क बोलय राम आमाक लक्ष्मण
इहान भार्य्याक हरि निलेक रावणे * ताहाङ्क खोजन्ते आमि फुरो बने बने६६१०
मोर वर भाइ एहो वर धनुर्द्धारी * शतेक रावण भैले मारिवाक पारि
रावणर एन्ते यदि पान्त दरशन * मारि पठाइवाक पारे यमर सदन ६६११
लक्ष्मणे पुछिला पाचे आमार वार्त्ताक * तुमि एथा तुमि किक कि बोले तोमाक
कि कारणे निर्ज्जन वनत आगमन * आमात कहियो तुमि स्वरूप बचन १२
हेन जानि आमि यथायोग्य समुचित * राम लक्ष्मणर आगे करिलो बिदित
इन्द्रर तनय वालि नामे वीरवर * सूर्य्यसुत सुग्रीब ताहान सहोदर १३
दुइर विवाद भैला भार्य्यार निमित्ते * दुयोरो मध्यत मइ सुग्रीवर हिते
सुग्रीवक निकलिल वालि महाराजे * पलाया थाकन्त तेहे नगरर बाजे १४
सुग्रीवर लगत आमार वनवास * स्वरूप काहिनी आमि करिलो प्रकाश

वहाँ ला दिया, देवताओं ने जानकी की प्रशंसा की, देवताओं से राम ने यश प्राप्त किया, ।। ४-५ ।। राघव को इन्द्र ने वरदान दिया, मरे हुए वानर जीवित हो उठे, दूसरे देवों ने राघव को वर दिया, वे ही जगत्-ईश्वर पुष्पक पर चढ़कर आ रहे हैं ।। ६ ।। भरत ने पूछा, तुम्हारा नाम क्या है ? तुम्हारे साथ रामचन्द्र का मिलन कैसे हुआ ? वे मेरे बड़े भाई पिता के समतुल्य हैं। यह सुनकर हनुमान ने उत्तर दिया, ।। ७ ।। हमें आप पवनसुत हनुमान समझें। लंकेश्वर रावण ने सीता का हरण कर लिया था, राम-लक्ष्मण दोनो उन्हें खोज रहे थे; उसी अवसर पर हमें उन दोनो के दर्शन हुए ।। ८ ।। इसके पश्चात् मैंने उन दोनो से समाचार पूछा— किस कारण वन में किसे खोजते हुए आप लोग घूम रहे हैं ? आप दोनो कौन है ? क्या काम है ? सत्य कहिये; यहाँ क्या काम है ? ।। ९ ।। इसके पश्चात् लक्ष्मण ने कहा— इन्हें राम कहते हैं, हमें लक्ष्मण। रावण इनकी भार्या को हरकर ले गया, उन्हे खोजते हुए हम वन-वन में घूम रहे हैं ।। ६६१० ।। ये मेरे बड़े भाई बड़े धनुर्धर हैं, ये सैकड़ों रावणो को मार सकते हैं। यदि ये रावण को देख पायें तो उसे मारकर यमलोक भेज सकते है ।। ६६११ ।। इसके पश्चात् लक्ष्मण ने हमारा समाचार पूछा— तुम यहाँ क्यों आये हो ? तुम्हें क्या कहते हैं ? इस निर्जन वन में तुम्हारा आगमन किसलिए हुआ है ? तुम हमसे सत्य वचन कहो ।। १२ ।। ऐसा जानकर हमने राम-लक्ष्मण के सम्मुख यथायोग्य निवेदन किया। वाली नाम का इन्द्र का पुत्र वीरवर है। सूर्यसुत सुग्रीव उसी के सहोदर हैं ।। १३ ।। पत्नी के लिए दोनो के बीच विरोध हुआ। मैं इन दोनो में से सुग्रीव के पक्ष में था। महाराज वाली ने निकाल दिया, इसी कारण सुग्रीव भागकर नगर से बाहर निवास करते हैं ।। १४ ।। सुग्रीव के संग हम भी वनवासी बने हैं।

तुयोरो भार्य्याक हरि निले दुइजन * दुयोरो मित्रता शोभे शुनियो लक्ष्मण १५
हेन शुनि राम देवे बुलिलन्त बाणी * मित्रता ये करिब मित्रर मन जानि
सुग्रीव सहित राम भैला एकथान * दुयो दुइर मित्र पाचे भैला परमाण १६
बालिक मारिया सुग्रीवक दिला राज * सुग्रीवये करिला मित्रर यत काज
ससैन्ये राघव प्रयागत जिरावन्त * ब्राह्मणर बेशे आइलो मइ हनुमन्त १७
रामे पठाइलन्त बार्त्ता जनाइबाक लागि * साफलियो नयन तुमिसे पुण्यभागी
एतेक जानिया येन कार्य्य होवे योग * रघुबंश दीप तुम करियो उद्योग १८
भरते बोलन्त एवे खण्डिला बिषाद * प्रिय बार्त्ता कहिलाये कि दिबो प्रसाद
तयु उपकार इटो सुजो अणु एक * हृष्ट पुष्ट बाछि लैयो धेनु अयुतेक १९
अलङ्कारे मंडित कुण्डले शोभे कर्ण * तेहो शतकन्या नियो आर बहुधन
ग्राम सहस्रेक लैयो आर शतदासी * दुइ सहस्रेक दिला सुवर्णर बाँशी ६६२०
शत्रुघ्नक आदेशिला भरत कुमारे * श्वेत नेत पताका बिबिध अलङ्कारे
माङ्गल्य बिधान बाद्य करायो अपार * प्राणत अधिक राम आसन्त आमार ६६२१
तिनियो मातृत कह हेनय बार्त्ताक * कालि प्रबेशिब राम आसि अयोध्याक
भरतर बाणी शुनि कौतूहल पाइल * तेतिक्षणे शत्रुघने नगरी साज्चिल २२
साज्जि माञ्जि पदूलि पदूलि रइला कल * रत्नदीप दिला सुवर्णर घटे जल
लवङ्ग मालती माला सुगन्धक कहे * सुरभि शीतल अनुकूले बायुबहे २३
सुगन्ध चन्दने सुबासित दशोदिश * कौतूहले लोकर लागिल उसमिस
आनन्द बधाइ बर करि कुमर्यलि * पताका सोणार ध्वज धरे तुलि तुलि २४

हमने सत्य कथा प्रकट कर दी। हम दोनो की पत्नियों को (बाली और रावण) दोनो ने हरण कर लिया है। लक्ष्मण सुनो, दोनो की मित्रता सुन्दर होगी ।।१५।। यह सुनकर रामचन्द्र ने कहा— मित्र का मन समझकर ही मित्रता करेंगे। सुग्रीव के संग राम एक स्थान में मिले। बाद को प्रमाणित हो गया कि दोनो ही दोनो के मित्र हैं ।। १६ ।। रामचन्द्र ने बाली को मारकर सुग्रीव को राज्य दिया। सुग्रीव ने भी मित्र के सारे कार्य किये। राघव सेना सहित प्रयाग में विश्राम कर रहे हैं। मैं हनुमान, ब्राह्मण-वेश में यहाँ आया हूँ ।। १७ ।। राम ने आपको सूचित करने हेतु वार्ता भेजी है। पुण्य-भागी आप अब अपने नयनों को सफल करें। यह समाचार जानकर जैसा करना उचित हो, हे रघुवंशदीप भरत, आप वैसा ही उद्योग करे ।। १८ ।। भरत ने कहा, अब मेरा विषाद नष्ट हो गया। तुमने जो प्रिय वार्ता कही उसका कौन सा प्रसाद दूँ ? तुम्हारा यह उपकार मैं कण भर चुकाना चाहता हूँ, तुम चुनकर दस हजार गौएँ ले लो ।। १९ ।। अलंकारों से मंडित, कुण्डल से सुशोभित कानों वाली सौ कन्याएँ लो, और भी बहुत-सा धन लो। सहस्र ग्राम और सौ दासियाँ लो। उन्होंने दो हजार सोने की बंसियाँ भी दी ।। ६६२० ।। कुमार भरत ने शत्रुघ्न को आदेश दिया, श्वेत-रेशमी वस्त्रों की पताकाओं और विविध अलंकारों से सजाकर मंगल-विधान के अनेक वाद्य बजवाओ, हमारे प्राणप्रिय राम आ रहे हैं ।। ६६२१ ।। तीनो माताओं से यह समाचार कहो कि कल रामचन्द्र आकर अयोध्या में प्रवेश करेंगे। भरत के वचन सुनकर परम आनन्द पाकर शत्रुघ्न ने उसी क्षण नगरी को सजाया ।। २२ ।। नगर को झाड़-सजाकर हर द्वार पर केले के पौधे लगाये। रत्न-दीप जलाये, स्वर्णकलस में जल रखवाये। लवंग-मालती की मालाएँ सुगन्धि फैला रही थी। सुगंधित शीतल अनुकूल पवन बहने लगा ।। २३ ।। सुगंधित चन्दन से दसों दिशाएँ सुवासित हो उठीं। कौतूहल के मारे लोगो में उथल-पुथल मच गयी। आनन्द बधाई के कारण बड़ा कोलाहल करते हुए वे

सोणा रूपा सिञ्चे कतो मुकुतार बरि * इमिति सिमिति प्रजा लवरा लवरि
येइ येनमते आछे दिलेक लवर * छवाले कान्दन्ते मारे निसन्धि चापर २५
नारी सबे लरि भैला हरषे फरषे * कतो विमुकुत केशे काखत कलसे
सकल नगरी सुमण्डित अलङ्कारे * रतन माणिक ज्योति आति ज्योतिष्कारे २६
लास बेश करि नरनारी समुदाय * राम आसिवार शुनि आये बेये याय
चिरकाले देखिबो चाहिबो नेत्रभरि * नाना वाद्य बावे नाचे भङ्गिभाव करि २७
राम दरशन अभिलाषे नरनारी * महा कौतूहले आति अयोध्या नगरी
अनेक सहस्र चलि याइ मत्तगज * साक्षातते भार्गव माहुत सबसज २८
मेघर विद्युत येन बिभूषित काला * साक्षाते देखिय येन पर्व्वतर काला
अनेक सहस्र कोटि चले दिव्य घोंर * पक्षी सम सञ्चारे पवन सम जोर २९
सुशिक्षित राहुते चलावे जाम्पे जाम्पे * खुरार शवदे भूमि घने घने काम्पे
भरत चलिला पानेयुरि धरि माथे * अति शुक्ल चामर युगल धरि हाते ६६३०
राघवक लागि लैला धवल छत्रेक * येन पूर्णिमार चान्द उदित प्रत्येक
अयोध्यात शुनिलेक राजमन्त्री लोके * आग वाढ़िबाक गैला मनर उत्सुके ६६३१
कौशल्या सुमित्रा उठिलेक एकयाने * हर्षित लोतक झरे सजल नयने
देखिबोहो मुख आजि पुत्र महा बीर * मनत बिषाद वर भैला कैकेयीर ३२
मुखत मधुर मने मने गुणि आछे * हृदयत खुर चलि भैला पाचे पाचे
हय हस्ती रथ पदातिर घन रोल * आनन्द अपार शङ्ख भेरी ढाक ढोल ३३

पताकाएं और सोने के ध्वज ऊंचे-ऊँचे फहराने लगे ।। २४ ।। वे सोना-चाँदी और कितने ही मोतियों के समूह विखेरने लगे । इधर-उधर प्रजाजनों की दौड़-धूप लग गयी । जो जिस स्थिति में था वैसे ही उठकर दौड़ पड़ा । बच्चे यदि रोते थे तो उन्हें जोर से थप्पड़ मार देते थे ।। २५ ।। हर्षोल्लास से नारियाँ दौड़ पड़ीं, कितनों के वाल विखरे हुए थे, कितनी ही नारियाँ बगल मे घड़े लिये हुए दौड़ चली । सारी नगरी आभूषणों से उत्तम रूप से मंडित थी । रत्न-मणियों की ज्योति बहुत ही जगमगा रही थी ।। २६ ।। राम के आगमन की बात सुनकर नर-नारियों का समूह प्रेमवश अत्यधिक उल्लसित हो दौड़ पड़ा । अनेक दिन बाद उन्हें नयन भर कर देखेंगे, निरीक्षण करेंगे; ऐसा सोचकर नाना प्रकार की अंगभंगियाँ कर, वाद्य बजा नाचने लगे ।। २७ ।। राम के दर्शन की अभिलाषा से नर-नारियों समेत अयोध्या नगरी अत्यधिक कौतूहलमयी हो उठी । अनेक सहस्र मतवाले हाथी, साक्षात् परशुराम जैसे सजे हुए उत्तम महावतों समेत चल पड़े ।। २८ ।। विभूषित होने के कारण वे मेघ के विद्युत जैसे दीप्तिमान थे । वे साक्षात् पर्वतों जैसे दिखाई देते थे । अनेक सहस्र करोड़ दिव्य घोड़े चल रहे थे । वे पवन जैसे वेगवान और पक्षी जैसे तेज गति वाले थे ।। २९ ।। सुशिक्षित अश्वारोही सैनिक, दल के दल उन्हें चला रहे थे, उनके खुरों के नाद से भूमि बार-बार कम्पित हो रही थी । भरत रामचन्द्र की पनहियाँ अपने सिर पर धारण कर तथा हाथों में अत्यन्त श्वेत दो चँवर लेकर चल पड़े ।। ६६३० ।। राघव के लिए दो श्वेत छत्र ले चले, जो पूर्णिमा के उदित चन्द्रमा जैसे थे। अयोध्या में राजमंत्रियों ने (समाचार) सुना। वे मन मे परम उत्सुक हो स्वागत हेतु चल पड़े ।। ६६३१ ।। कौशल्या और सुमित्रा एक यान पर चढ़ीं, उनके सजल नयनों से हर्ष के मारे आँसू झरने लगे । वे सोच रही थीं, आज महा वीर पुत्र के मुख देख सकेंगी । कैकेयी के मन मे बड़ा विषाद हुआ ।। ३२ ।। उसके मुँह पर मधुर भाव था, पर वह मन ही मन चिन्तन कर रही थी । साथ ही उसके हृदय में छूरे चल रहे थे । घोड़ा, हाथी, रथ, पैदल सेना आदि का घोर नाद हो

समस्त नगरी नन्दिग्रामक चलिल * दल दोप करि सब पृथिवी लरिल
येतिक्षणे आसिबार कैला हनुमन्त * तेतिक्षणे देखे राम देवे नासिलन्त ३४
भरते बुलिला पाचे बायुर पुत्रक * हनुमन्त कि कारणे नेदेखो रामक
बानर जातिर किबा हेनय स्वभाव * चञ्चल चरित्र गति देखि ठावे ठाव ३५
राघव आसन्त बुलि मोत जनाइलाहा * हेनमते मोक तुमि भाण्डिबाक चाहा
आसिब नासिब राम बोला झाण्ट करि * एतिक्षणे किसक नासिला रामहरि ३६
हनुमन्ते बोलन्त आसिब राम देव * एहि बुलि आकाशक करिलन्त डेव
बायुपथे चलिया देखन्त हनुमन्त * कपिसेना फल खाइ रामे अपेक्षन्त ३७
आकाशर हन्ते नामि पवनर सुत * भरतर आगे याइ कहिला प्रस्तुत
अकालत भरद्वाज ऋषि बर आछे * निरन्तरे बृक्ष सबे फल धरे गाछे ३८
कपिसेना बृक्षत चड़िया फल खाय * राम देव आछन्त सेनार रङ्ग चाय
सेनाक अपेक्षि राम आछन्त तहित * कतो कतो कपि पार होवे गोमतीत ३९
कर्ण पाति शवद शुनियो बानरर * आकाश छानिला देखो धूलाये पावर
आकर्ण शवद सबे कर्णपथ भेदि * बानरे एराइला जानो मन्दाकिनी नदी ६६४०
किङ्किणी शवद वाद्य शुना रुण जुण * प्रसन्न देखिय येन रविर किरण
चक्षु बुलाइ चाहा तुमि कुमार भरत * गगन मण्डिया आसे दिव्य पुष्परथ ६६४१
अलङ्कारे सुमण्डित दीपिति अनेक * खसिया आसय येन सूर्य्य खण्ड एक
उपरे देखियो सीता राम लखमण * बिभीषण प्रमुखे यतेक कपिगण ४२
राघवे आसन्त बसि रथर उपरे * सूर्य्य प्रकाशन्त येन सुमेरु शिखरे

रहा था; अपार आनन्द से शंख, नगाड़े, ढाक-ढोल बज रहे थे ।। ३३ ।। सारी नगरी नन्दिग्राम को चल पड़ी, उसके आन्दोलन से सारी पृथ्वी हिल उठी । हनुमान ने जिस समय तक प्रभु राम के आ पहुँचने की बात कही थी, उतने समय तक वे आ नहीं पहुँचे । ।। ३४ ।। भरत ने पवन-कुमार से पूछा, हनुमान, किस कारण राम को नही देख रहा हूँ ? क्या बानरजाति का ऐसा ही स्वभाव है कि वे स्थान-स्थान पर चंचल चरित्र और गति वाले दिखाई पड़ते हैं ।। ३५ ।। तुमने मुझसे कहा था कि राघव आ रहे हैं, तुम इसी प्रकार मुझे छलना चाहते हो ? राम आयेंगे या नहीं, शीघ्र बताओ । अब तक राम-हरि किस कारण नही पहुँचे ?।। ३६ ।। हनुमान ने कहा— रामचन्द्र आयेंगे । यह कहकर उन्होने आकाश में छलाँग लगायी । पवन-मार्ग से चलकर हनुमान ने देखा— कपि-सेना फल खा रही है और प्रभु रामचन्द्र प्रतीक्षा कर रहे हैं ।। ३७ ।। आकाश से उतरकर पवन-कुमार ने भरत से सारी बातें कही कि ऋषि भरद्वाज के वर से अकाल में ही वृक्षों में निरंतर फल लगे हुए है ।। ३८ ।। कपि-सेना वृक्षो पर चढ़कर फल खा रही है, प्रभु रामचन्द्र सेना की आनन्द-लीला देख रहे हैं । राम वहाँ सेना की प्रतीक्षा में बैठे हैं । कितने ही वानर गोमती नदी पार कर रहे हैं ।। ३९ ।। कान लगाकर वानरों के शब्द सुनिये, देखिये उनके पैरों की धूल आकाश को परिव्याप्त कर रही है । उनका प्रचंड नाद कर्ण-पथ को भेदन करता आ रहा है । ऐसा लगता है कि वानरों ने मंदाकिनी नदी को तोड़ डाली है ।। ६६४० ।। किंकिणी की वाद्यध्वनि रुनझुन सुनो । रवि की किरणें भी प्रसन्न-सी हैं, देखो । कुमार भरत, आँखें डालकर देखिये, आकाश मंडित कर दिव्य पुष्पक विमान आ रहा है ।। ६६४१ ।। अलंकारों से मंडित होने के कारण उसकी दीप्ति अत्यधिक है । मानो सूर्य का एक खंड टूटकर आ रहा है । ऊपर देखिये, सीता-राम, लक्ष्मण, विभीषण सहित सारे कपिगण हैं ।। ४२ ।। राघव रथ के ऊपर बैठे आ रहे है । सूर्य, मानो सुमेरु-शिखर पर प्रकाशित हो रहे हैं ।

सकल प्रजार रिङ्ग कोलाहल रोल * जय जय राम ध्वनि पाइला स्वर्गकोल ४३
आकाशर हन्ते राम देवे देखिलन्त * वशिष्ठक आदि करि भरत आसन्त
रामे पुष्पकक चाइ बुलिला वचन * द्रुते आसे देखा भरतर सेनागण ४४
राघवर बचने पुष्पक रथवर * क्षणेकते आसि पाइला सबार ओचर
रथवरे पाइले धरणीमण्डलक * करयोरे सव प्रजा नमिला रामक ४५
भरतेयो नमिला रामर दुइपावे * जानकीक प्रणामिला तत्तुल्य स्वभावे
गदगद वाक्ये राम प्राणभाइ बुलि * पुष्पक रथत निया भरतक तुलि ४६
सुग्रीव अङ्गद हनुमन्त नल नील * सवार भरत वीरे कुशल पुछिल
तारा सबे स्वरूप धरिया मानुवर * आरोग्य कुशल पुछिलन्त भरतर ४७
भरतेओ विभीषण गलत धरिला * तोमार प्रसादे ददा दुखक तरिला
मारुतिक भरते करिला वहुमान * तुमिसे दिलाहा लक्ष्मणक प्राणदान ४८
शत्रुघने नमिलन्त दुयो भाइर पावे * जानकीक प्रणामिला सादरित भावे
आन वीर सकलक करिला आश्वास * काको गले वान्धि कारो मुखे चाइ हास ४९
राम देवे वशिष्ठक करिला प्रणाम * आशीर्व्वाद दिला दुयो चिरञ्जीव राम
कौशल्या मावक देखिलन्त रघुनाथे * चरणत परि धरि जान्तिलन्त माथे ६६५०
पावहन्ते कौशल्याये सावटिला गले * हरिषे लोतक वहे नयनयुगले
सुमित्राक नमिया नमिला कैकेयीक * दशरथ राजार तिनियो महावैक ६६५१
सकल प्रजाये वोले आमि भाले जीलो * आरका आसिला प्रभु आनन्द मिलिल
अनेक भकति स्तुति वाणी करि केलि * सवाक राघवे आदरिला हातमेलि ५२

सारी प्रजा के आनन्दपूर्ण कोलाहल का नाद, 'जय, जय, राम' की ध्वनि स्वर्ग की सीमा तक पहुँच गयी है ।। ४३ ।। रामचन्द्र ने आकाश से देखा कि वशिष्ठ को आगे कर भरत आ रहे हैं। राम ने पुष्पक को सम्बोधित कर कहा— भरत की सेनाएँ तेजी से आ रही हैं, देखो ।। ४४ ।। राम के वचन से रथश्रेष्ठ पुष्पक क्षण भर में सबके निकट पहुँच गया। विशाल रथ धरती-मंडल को पहुँचा, हाथ जोड़कर सारी प्रजा ने राम को प्रणाम किया ।। ४५ ।। भरत ने भी राम के चरणों में प्रणाम किया। जानकी को उसी प्रकार से प्रणाम किया। गद्गद वचन से राम 'प्राण-भाई' कहकर पुष्पक रथ पर भरत को चढ़ा ले गये ।। ४६ ।। वीर भरत ने सुग्रीव, अंगद, हनुमान, नल-नील सबकी कुशल पूछी। उन सबने मनुष्य-शरीर धारण कर भरत की आरोग्य-कुशलता पूछी ।। ४७ ।। भरत ने भी विभीषण को गले लगाकर आलिगन किया और कहा— भैया, आप ही के प्रसाद से दुख से पार हुए। भरत ने मारुति का बड़ा मान किया, कहा— तुमने ही लक्ष्मण को प्राण-दान किया ।। ४८ ।। शत्रुघ्न ने दोनो भाइयों के चरणों में नमन किया। जानकी को सादर भाव से प्रणाम किया। अन्य वीरों को भी उन्होंने सम्मानित किया, किसी को गले लगाया, किसी के मुख की ओर देखते हुए हँसकर मिले ।। ४९ ।। रामचन्द्र ने वशिष्ठ को प्रणाम किया, उन्होंने आशीर्वाद दिया— राम, तुम दोनो चिरंजीवी होवो। रामचन्द्र ने माता कौशल्या को देखा। उनके चरणों में गिरकर, चरण पकड़ अपने सिर से दबाया ।। ६६५० ।। रामचन्द्र को अपने चरणो पर से उठाकर माता कौशल्या ने उन्हें गले लगा लिया। हर्ष से उनके नयनों से आँसू बहने लगे। सुमित्रा को नमन कर रामचन्द्र ने कैकेयी को नमन किया। (इस प्रकार) उन्होंने राजा दशरथ की तीनो पटरानियों को प्रणाम किया ।। ६६५१ ।। सारी प्रजा कहने लगी— हम अन्न-पान समेत जी गये। प्रभु, आप पुनः लौट आये, (इससे हमें) बड़ा आनन्द हुआ है। रामचन्द्र ने अनेक भक्तिपूर्ण विनय-वचन कहकर, हाथ फैला सबका

भरते दुखानि पानै शिरर नमाइल * रामर पावत निया आपुनि पिन्धाइल
ददा अनुमति हेरा आछय आमात * आपुनि आसिला मोर अनाथर नाथ ५३
राज्यक लैयोक दादा तोमार आपुन * मइ अनाथक धर्म्म कर शतगुण
भरतर मन जानि भकत बत्सल * सकल बानर भैल नयन सजल ५४
रामे आनि भरतक कोलात बैसाइल * बिमाने चड़िया भरतर ठावे आइल
रथहन्ते नामिया बसिला आसनत * बान्धवबर्गक देखि हरिष मनत ५५
राघवे बोलन्त शुनियोक पुष्पयान * करिला आमाक तुमि बर बहुमान
आजि हन्ते कुबेरर हैयो गैया रथ * आमार काहिनी तान्त कहिबा समस्त ५६
रामक प्रणामि गैला दिब्य पुष्परथ * कुबेर देवर आगे कहिला समस्त
शुनियो गोसाइ रामे पठाइला आमाक * बहुमान्य करिया तोमाक बहिबाक ५७
कुबेरे बोलन्त शुना बिमान पुष्पक * रामे पठाइलन्त तोक आमार पाशक
सनमाने तुष्ट भैलो तान्त गैया कह * यावे राम पृथिवीत तावे ताङ्क बह ५८
रामपाशे गैलन्त पुष्पक महारथ * कुबेरर सतकार कहिला समस्त
हरिषे थाकिला राम सहरिष हुया * पुष्पक थाकिला रघुनाथक बहिया ५९
सुग्रीवे प्रमुख्ये ऋक्ष बानर यतेक * सबाको भरत बीरे बिनावे अनेक
सभार माजत वहि कैकेयीर सुते * रामक अञ्जलि जुरि बुलिला काकूते ६६६०
आमार मावर तुमि पालिया बचन * मोक राज्य दिया ददा तुमि गैला बन
बहिबाक नपारोहो गुरुतर भार * मइ राज्य दिलो ददा लैयोक तोमार ६६६१
अश्वर कि गतिक गाधवे पारे याइते * काके कि पारय हंस गमन अनाइते

स्वागत किया ।। ५२ ।। भरत ने दोनो पनहियों को सिर से उतारा और स्वयं ले जाकर राम के चरणों में पहनाया। भरत ने कहा— हे भैया, आपकी अनुमति हमें (पहले ही) मिली है। मुझ अनाथ के नाथ, आप पुन: लौट आये हैं ।। ५३ ।। अब हे भैया, आप अपने राज्य को ले लीजिये और मुझ अनाथ के धर्म को सौ गुना कर दीजिये। भरत का अभिप्राय समझकर भक्तवत्सल राम सहित सारे बानरों के नयन सजल हो आये ।। ५४ ।। राम ने भरत को लेकर अपनी गोद में बिठा लिया। वे विमान पर सवार हो भरत के निवास-स्थान पर पहुँचे। रथ से उतरकर वे आसन पर बैठे। बान्धववर्ग को देख उनके मन में बड़ा हर्ष हुआ ।। ५५ ।। राघव ने कहा— पुष्पक विमान, सुनो। तुमने हमारा बड़ा मान किया है। आज से तुम जाकर कुबेर का रथ बनो। हमारी सारी कथाएँ उनसे जाकर सुनाना ।। ५६ ।। दिव्य पुष्पक रथ राम को प्रणाम कर चला गया और देव कुबेर से जाकर सब कुछ कह सुनाया। (पुष्पक ने कहा—) प्रभु, सुनिये। रामचन्द्र ने हमारा बहुत मान कर आपका वाहन बनने के लिए हमें भेजा है ।। ५७ ।। कुबेर बोले— पुष्पक विमान, सुनो। राम ने तुम्हें हमारे पास भेजा है। उनसे जाकर कहो कि उनके सम्मान से मैं संतुष्ट हूँ। जब तक राम पृथ्वी पर रहें, तव तक तुम उन्ही की सवारी बनो ।। ५८ ।। महारथ पुष्पक राम के पास गया और कुबेर का सत्कारपूर्ण कथन कह सुनाया। रामचन्द्र हर्षित हो प्रसन्न हो उठे। पुष्पक रघुनाथ का वाहन बनकर रह गया ।। ५९ ।। सुग्रीव आदि जितने भालू-बानर थे, सभी को वीर भरत ने अनेक प्रकार से स्तुति की। सभा के बीच बैठकर कैकेयी-नन्दन भरत ने हाथ जोड़कर राम से यह विनीत वचन कहा— ।। ६६६० ।। हे भाई, आप मेरी माता का वचन पालन कर, मुझे राज्य देकर वन में चले गये थे। मैं यह गुरुतर-भार अब वहन नही कर सकता। भाई, मैं अब आपका राज्य सौंप रहा हूँ, आप ग्रहण कीजिये ।। ६६६१ ।। क्या गधा घोड़े की गति से जा सकता है? कौवा क्या हंस

मुषगोटे बहिते नोवारे एकेघुरे * गरुड़र वेगत कि शकत मयुरे ६२
यत दूर चन्द्र सूर्य्य किरण प्रकाश * सकल देशर राजा तोमारेसे दास
तोमारेसे आज्ञाकारी आछिलोहो आमि * आजि हन्ते राज्यक लैयोक आवे स्वामी ६३
कतभाग्य करिया तोमार पाइलो सङ्ग * आरका मिलिला मोर आसरिस रङ्ग
तोमार चरण देखि एराइलो सन्ताप * आजिसे जानिलो मोक नमरिल बाप ६४
रामे आकलिला भरतर हेन काज * सम्बुधि बोलन्त वाप एवे लैबो राज
गले छापि धरिलन्त हरिष मनत * श्रीसिहासने राम देवे बसिलन्त ६५
नन्दिग्रामे तिनि भाइ करि जटा छेद * भरते एराइला निदारुण हृदिखेद
लक्ष्मणो सकले करिलन्त परित्याग * भरतक स्नान कराइलन्त सब आग ६६
लक्ष्मणे स्नानिला शत्रुघने स्नानिलन्त * अनन्तरे रामचन्द्रे स्नान करिलन्त
बिभीषणे स्नानिलन्त तासम्वायो चारि * पाचे रङ्गे स्नानिलन्त राघव मुरारि ६७
कौशल्याक प्रमुख्ये सकल शाशुगणे * सीता गोसानीक स्नान कराइला यतने
अङ्गराग उज्वलिला अलङ्कारे मण्डि * कैलासत दीपिति करन्त येन चण्डी ६८
रामक पिन्धाइला देव योग्य अलङ्कार * रामदेव अधिक देखय जातिष्कार
सर्व्वजने सुमण्डित दीपिति करय * देव सभाखान येन भूमित ज्वलय ६९
भरते ये बोलन्त सुमन्त्र शुन बाक * क्षाण्टे रथ साजि आन याओं अयोध्याक
भरतर बचनक करि शिरोगत * तेखने सुमन्त्र साजि आनिलेक रथ ६६७०
श्रीरामे चड़िला याइ रथर उपरे * आपुनि बसिला रथे भरत कुमारे
धवल छत्रेक तुलि धरिला लक्ष्मणे * ढोले श्वेत चामर सुग्रीव बिभीषणे ६६७१

की चाल चल सकता है ? चूहा कोई गाड़ी का जुआ ढो नहीं सकता। मोर क्या गरुड़ के वेग की समकक्षता कर सकता है ? ॥ ६२ ॥ चन्द्र-सूर्य की किरणों का प्रकाश जहाँ तक है, वहाँ तक के सभी राजा आप ही के दास हैं। मैं आपका ही आज्ञाकारी रहा। हे स्वामी, आज से आप यह राज्य ग्रहण कर लीजिये ॥ ६३ ॥ कितने भाग्य से हे स्वामी, मुझे आपका संग मिला है। पुनः मुझे अत्यधिक आनन्द प्राप्त हुआ है। आपके चरण देखकर मेरे सारे संताप मिट गये। आज ही समझ गया कि मेरे पिता मरे नहीं हैं ॥ ६४ ॥ रामचन्द्र ने भरत के कार्य को निश्चित रूप से जान लिया। उन्होंने भरत को सम्बोधित कर कहा— वत्स, मैं अब राज्य ग्रहण करूँगा। उन्होंने भरत को आलिंगन कर गले लगा लिया। प्रभु रामचन्द्र श्री-सिंहासन पर आसीन हुए ॥ ६५ ॥ तीनो भाइयों ने नन्दिग्राम में ही जटा कटवा लिये। भरत ने अपने हृदय का निदारुण विषाद मिटाया। लक्ष्मण ने भी (जटा आदि) सब कुछ परित्याग किया। सबसे पहले भरत को स्नान करवाया ॥ ६६ ॥ लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न ने स्नान किया। उनके पश्चात् रामचन्द्र ने स्नान किया। विभीषण ने उन चारों को स्नान कराया। इसके पश्चात् मुरारी राघव ने बड़े आनन्द से स्नान किया ॥ ६७ ॥ कौशल्या समेत सभी सासों ने देवी सीता को परम यत्न से स्नान करवाया। उनके शरीर को अंगराग लगाकर तथा अलंकारों से मंडित कर चमकीला बनाया, जैसे कि कैलास में चंडी दीप्तिमयी हो रही हों ॥ ६८ ॥ राम को उन सबने देवयोग्य अलंकार पहनाये, जिससे प्रभु राम अधिक जगमग दिखाई देने लगे। सभी लोग उत्तम रूप से मंडित हो दीप्तिमान हो उठे, मानो देव-सभा धरती पर जगमगा रही हो ॥ ६९ ॥ भरत ने कहा, सुमंत्र, सुनिये। शीघ्र रथ सजा लाइये, जिससे हम अयोध्या को चलें। भरत के वचन शिरोधार्य कर सुमन्त्र शीघ्र ही रथ सजा लाया ॥ ६६७० ॥ श्रीराम जाकर रथ पर सवार हुए, कुमार भरत स्वयं रथ पर बैठे। लक्ष्मण ने श्वेत छत्र उठा धारण

शत्रुञ्जय आग पृष्ठे सुग्रीव चड़िला * अनेक हाजार गजे बेढ़िया लरिला
राम आसे देखि अयोध्याये रङ्ग भैला * सागरर ढौ येन उथलिया गैला ७२
षोड़श सहस्र नारी धरि फुल फल * सुवर्णर घट धरि करे सुमङ्गल
पदूलि पदूलि शुनि उरुलिर ध्वनि * अलङ्कृत प्रदीप थाकिला पुरी छानि ७३
बाँशीक बजावे कतो बजावे मार्दूल * खुमुचि भेमचि वाद्य डगर काहाल
थाने थाने शुभ शुभ पारें जय जय * भाट सबे नाना छन्दे चपया पढ़य ७४
नृत्यगीत आनन्दे बाजय करताल * नानाबिध माङ्गल्य शवद कोलाहल
बन्दीजने बेढ़िया चौदिशे स्तुतिनाद * ब्राह्मण सबर बेदध्वनि आशीर्ब्बाद ७५
सब जन मनोरथ पूरिया अशेष * अयोध्या पुरीत राम भैलन्त प्रवेश
प्रथमे कौशल्या आगबाढ़िल सम्भृत * सन्ताप एराइया सती भैला आनन्दित ७६
कौशल्यार चरणे तिनियो प्रणामिल * पावहन्ते कौशल्याये सावटि धरिल
परिया आछिलो राम बर सन्तापते * एतकाल आछिलाहा पुताइ बनते ७७
पुत्रशोक एराइलो देखिलो आवे तोके * अन्तर्गते दहे मोर सुस्वामीर शोके
हा हा तो टीकर स्वामी गोसाइ आमार * बनबास खाटि आइला सुपुत्र तोमार ७८
हरि हरि प्रभु करिलाहा बन्धुछेद * तोमाक सुमरि अहर्निशे हृदिखेद
श्रीराम लक्ष्मण सीता मनत बिकले * कौशल्याक प्रबोधिला नयन सजले ७९
सकल कथाक रामे कहिला मावत * आपुनार कथा यत लङ्कात बनत

किया। सुग्रीव और विभीषण श्वेत चँवर डुलाने लगे ।। ६६७१ ।। शत्रुघ्न के आगे पीठ की ओर सुग्रीव चढ़ा। अनेक हजार हाथी उन्हें घेरकर वेग से चलने लगे। राम को आते देख अयोध्या में बड़ा उल्लास छा गया, मानो सागर की लहरें उछल उठी हों ।। ७२ ।। सोलह हजार नारियाँ फूल-फल लिये, सुवर्ण के घट धारण किये सुमंगल गान करने लगी। प्रत्येक दरवाजे पर 'उरुलि' (नारियों के मुँह से उच्चरित मंगल ध्वनि) सुनायी देने लगी। अलंकृत प्रदीप सारी नगरी को व्याप्त कर जलने लगे ।। ७३ ।। कोई बंसी बजा रहा था, कितने ही लोग मृदंग बजा रहे थे। डुग्गी आदि बाजे बजने के कारण मार्ग में बडा कोलाहल मचा हुआ था। स्थान-स्थान पर लोग 'शुभ-शुभ, जय-जय' ध्वनि करने लगे। भाटगण नाना छन्दों में चौपाई-गीत पढ़ने लगे ।। ७४ ।। आनन्द के कारण नृत्य-गीत होने लगे, झाँझ बजने लगे। नाना प्रकार मांगल्य शब्दों से कोलाहल होने लगा। वंदीजन उन्हें चारों ओर से घेरकर स्तुति-नाद करने लगे। ब्राह्मणों की वेद-ध्वनि, आशीर्वाद के नाद गूँजने लगे ।। ७५ ।। सब लोगों के अशेष मनोरथ पूर्ण कर रामचन्द्र ने अयोध्यापुरी में प्रवेश किया। पहले कौशल्या आदर-पूर्वक आगे बढी। सन्ताप मिट जाने के कारण वे सती बड़ी आनन्दित हुईं ।। ७६ ।। तीनो ने कौशल्या के चरणों में प्रणाम किया। चरणों पर से उन्हें उठाकर कौशल्या ने छाती से लगा लिया। (कौशल्या बोलीं—) राम, इतने काल तक बेटे, तुम वन में थे, मैं सन्ताप में पड़ी हुई थी ।। ७७ ।। पुत्र, अब तुम्हें देखकर मेरा पुत्र-शोक मिट गया। परन्तु मेरा हृदय अपने पति के शोक से जल रहा है। हा हा, मेरे सुहाग के स्वामी, तुम्हारा पुत्र वनवास पूरा कर लौट आया है ।। ७८ ।। हरि-हरि प्रभु, तुमने बन्धुओं को तज दिया। तुम्हारा स्मरण कर दिन-रात हृदय में खेद हो रहा है। श्रीराम, सीता तथा लक्ष्मण ने मन में व्याकुल हो, आँखों मे आँसू भरकर कौशल्या को धीरज बँधाया ।। ७९ ।। लंका में, वन में जो कुछ हुआ था, राम ने माता से सारी बातें सुनायी। देवताओं के प्रसाद से तथा नित्य तुम्हारे आशीर्वाद से हम संकटों से पार हुए ।। ६६८० ।। भरत ने कहा— सुग्रीव, यह कार्य की बात सुनिये। पुण्य योग में सभी

आपद तरिलो सब देवर प्रसादे * निते निते तोमार आवर आशीर्ब्बादे ६६८०
बुलिलन्त भरते सुग्रीव सुना काज * पुण्ययोग रामक दियोक सवे राज
पृथिवी मध्यत तीर्थ आछय बहुत * चारि सागरक लागि पठायोक दूत ६६८१
भरतर बचन आदर करि लैल * पाञ्चशत तीर्थ जल आनिबाक गैल
चारि सुवर्णर घट चारि बीरे दिल * चारि सागरर जल आनिते पेथिल ८२
सुग्रीवर आदेशे ऋषभ महा बीर * दक्षिणर सागरर मिलाइलन्त नीर
पश्चिमक गैलन्त जाम्बव महाबल * सुवर्ण कुम्भत करि आनिलन्त जल ८३
बेगदसि बीर बल कार्य्यत बखानि * उत्तर सागरे गैया आनिलन्त पानी
बीरबर बलिष्ठ सुषेण महाबल * योगाइलन्त पूब सागरर हन्ते जल ८४
शास्त्रर बिहित यत बस्तु सबिशेष * अभिषेक माने यत करिला प्रवेश
सुवर्ण पाटत राम जानकीक थैल * सुमङ्गल आभरण शरीरत भैल ८५
शुना निरन्तरे इटो रामायण कथा * इहेन मानवी जन्म नकरियो बृथा
रामर चरित्र इटो शुना समासद * बोला राम राम पाइबा परम सम्पद ६६८६

श्रीरामचन्दर अभिषेक

दुलड़ी

बशिष्ठ गौतम अत्रि बिश्वामित्र बीतिहोत्र पराशर ।
कात्यायन भर- द्वाज वामदेव आदि मुनि निरन्तर ।।
बहुबिध फले नाना तीर्थजले राघव सीता स्नानिल ।
बिधि व्यवहारे अगनि ज्वालिया आशेष आहुति दिल ।। ६६८७

रामचन्द्र का राज्याभिषेक कीजिये। पृथ्वी में अनेक तीर्थ हैं। चारो सागरो से जल लाने हेतु दूत भेजिये ।। ६६८१ ।। सुग्रीव ने भरत के वचन को सादर ग्रहण किया और पाँच सौ तीर्थो का जल लाने हेतु (दूतों को भेजने) चल पडा। चार वीरों को चार सुवर्ण-कलश देकर चार सागरों का जल लाने हेतु भेज दिया ।। ८२ ।। सुग्रीव के आदेश से महा वीर ऋषभ ने दक्षिण सागर का जल लाकर उपस्थित किया। महाबली जाम्बवान पश्चिम में गया और स्वर्ण-कलश भरकर जल ले आया ।। ८३ ।। बल तथा कार्य मे प्रशंसनीय वीर वेगदसि उत्तर सागर जाकर पानी ले आया। बलिष्ठ वीरवर महाबली सुषेण ने पूर्व समुद्र से जल ला दिया ।। ८४ ।। शास्त्र-विहित जितनी वस्तुएँ अभिषेक हेतु (आवश्यक) हैं; उन सबको सविशेष लाकर उपस्थित किया। (उन सबने) स्वर्ण-सिंहासन पर राम और जानकी को आसीन किया तथा उनके शरीर मे सुमंगल आभूषण आदि पहनाये ।। ८५ ।। यह रामायण-कथा निरन्तर सुनो। ऐसा मानवी-जन्म व्यर्थ न करो। सभासदगण, यह रामायण-कथा सुनो, 'राम-राम' कहो, इससे परम सम्पदा प्राप्त कर सकोगे ।। ६६८६ ।।

श्रीरामचन्द्र का अभिषेक

वशिष्ठ, गौतम, अत्रि, विश्वामित्र, वीतिहोत्र, पराशर, कात्यायन, भरद्वाज, वामदेव आदि मुनियो ने निरन्तर बहु प्रकार के फलो तथा नाना तीर्थो के जल से रामचन्द्र और सीता को स्नान कराया तथा विधि-व्यवहार के अनुसार अग्नि जलाकर अनेक आहुतियाँ दी ।। ६६८७ ।। राज्य के जितने मुख्य, मुख्यतर ब्राह्मण तथा

राज्यर यतेक मुख्य मुख्यतर ब्राह्मण पात्र सकले ।
श्रीराम सीताक राज्य जोकारिला चारि सागरर जले ॥
नृत गीत बाद्य भण्डर शवदे मिलि गैला कोलाहल ।
रामर यि बेटा अनिष्ट चिन्तिले सिटो गैला रसातल ॥ ८८
सकल आकाश पूरिया आनन्द इन्द्रादि देव सकले ।
सब नदीजल सर्व्वौषधि गण दूर्व्वाक्षत फुले जले ॥
स्वर्गे देवबाद्य बजावे गन्धर्व्वे गावय बावय ताल ।
पृथिवी गगन स्वर्गर भुवन रिङ्ग ज्योति कोलाहल ॥ ८९
धवल छत्रेक तुलिया धरिल सुबिनीत शत्रुघने ।
शुक्ल ये चामरे ढुलिते लागिल सुग्रीव ये हनुमाने ॥
चन्द्रर सदृश धवल चामरे बिञ्चे आरो बिभीषणे ।
भरते आपुनि राज्य जोकारिला नानाबिध पात्रगणे ॥ ६६९०
रतने मण्डित शुद्ध सुवर्णर शतेक पद्मर माला ।
बायुत करिया इन्द्रे पठाइलन्त रामक भूषिया काला ॥
माणिके रचित ग्रीवक लागिया गज मुकुतार हार ।
कुबेरे आनिया रामक दिलन्त देखि बर जातिष्कार ॥ ६६९१
कर्म्मागते राज्य राघवे पाइलन्त हरिष बर मिलिल ।
हृष्ट पुष्ट बाछि एक लक्ष धेनु ब्राह्मणक दान दिल ॥
अयुत बलध त्रिश कोटि तोला दिलन्त शुद्ध सुवर्ण ।
अयुतेक ग्राम दिला धने जने सकल शस्ये सम्पूर्ण ॥ ९२
सूर्य्यर सदृश किरीटि उवलय सुवर्ण रत्ने खचित ।
अति सुशोभित बिचित्र मालाक पिन्धिला सुग्रीव मित्र ॥

सामन्त थे, सबने चार सागरों के जल से (अभिषेक कर) रामचन्द्र को राज्य पर प्रतिष्ठित किया। नृत्य, गीत-वाद्यादि के शब्दों के साथ यह कोलाहल गूँजने लगा कि "जिस अधम ने राम का अनिष्ट-चिन्तन किया, वह रसातल को गया" ॥ ८८ ॥ समूचे आकाश को परिपूरित कर, सभी नदियों के जल, सभी प्रकार की औषधियों, दूर्वा-अक्षत, फूल, जल आदि द्वारा इन्द्रादि देवगण आनन्द करने लगे। स्वर्ग में गन्धर्व-गण देव-वाद्य बजाने, गाने, ताल बजाने लगे। पृथ्वी, आकाश, स्वर्गलोक सर्वत्र आनन्द-ध्वनियाँ, ज्योति का प्रकाश, कोलाहल से परिपूर्ण था ॥ ८९ ॥ सुविनीत शत्रुघ्न ने धवल छत्र रामचन्द्र के मस्तक पर धारण किया। सुग्रीव और हनुमान श्वेत चँवर डुलाने लगे और विभीषण भी चन्द्रमा जैसे श्वेत चँवर से हवा करने लगा। अनेक सामन्तों सहित भरत ने स्वयं रामचन्द्र को राज्य अर्पित किया ॥ ६६९० ॥ रत्नमंडित शुद्ध स्वर्ण के सौ कमलों की माला वायु के जरिये रामचन्द्र को विभूषित करने हेतु इन्द्र ने भेजा। गले में पहनाने हेतु मणि-रचित गजमोतियों का हार, जो देखने में बड़ा ही चमकीला था; कुबेर ने लाकर रामचन्द्र को प्रदान किया ॥ ६६९१ ॥ शुभ कर्मों के उदय होने पर रामचन्द्र ने राज्य प्राप्त किया, (इससे लोगों को) बड़ा आनन्द मिला। रामचन्द्र ने एक लाख हृष्ट-पुष्ट गायें चुनकर ब्राह्मणों को दान किया। दस हजार बैल, तीस करोड़ तोला शुद्ध सोना उन्होने दान किये। धन-जन तथा सभी प्रकार के शस्यों से परिपूर्ण दस हजार ग्राम दान किये ॥ ९२ ॥ मित्र सुग्रीव को स्वर्णरत्न-जड़ित सूर्य जैसा जगमगाता किरीट तथा अति सुशोभित विचित्र माला पहनने हेतु मिला। 'वालीपुत्र' कहकर रामचन्द्र ने अंगद को अपने समीप बुलवाया

वालिपुत्र बुलि अङ्गदक रामे आगक लागि मताइल।
कनके रचित मणिमय दुइ कुण्डल तुलि पिन्धाइल ॥ ९३
चिकिमिकि करे रतन माणिक निरमल आति तार।
सीतार गलत राघवे पिन्धाइला शुद्ध मुकुतार हार ॥
देवाङ्ग बस्त्रक गावत चड़ाइला सब अलङ्कारे मण्डि।
नारायण पाशे येन लक्ष्मी देवी हरर कोलात चण्डी ॥ ९४
यतेक सुन्दरी तथाते मिलिला सुमण्डित अलङ्कारे।
कानि आङ्गुलिर रूपर सदृश नमिले केहो सीतारे ॥
सब नगरर सुन्दरी मिलिल सुविनीत वर वाला।
शरत कालर चन्द्रक येहेन वेढ़िला नक्षत्र माला ॥ ९५
लक्ष कोटि कोटि धन तार मूल्य स्वर्ण गजमति हार।
सीतादेवी ताक हातत लैलन्त काढ़िया आनि गलर ॥
मारुतिक लक्षे देवी सहरिषे हास्यमने आछे चाइ।
हासिया सीताक राघवे बोलन्त दियो याक अभिप्राय ॥ ९६
स्वामीर बचन शुनिया जानकी आनन्द हरिष पाइल।
बायुर पुत्रर लागि आपुनार कण्ठर हार पेलाइल ॥
हनुमन्त बीरे हरिषे पिन्धिला मनोमय गजमति।
मेरु पर्व्वतर उपरे शोभय चन्द्रर येन जेउति ॥ ९७
यत यत सब मुख्य कपिगण नल नील दधि तार।
सबार मनक पूरिया राघवे पिन्धाइलन्त अलङ्कार ॥
सकल सम्पति देखिया राघवे हरिष पाइला आशेष।
मास दिन तैत सुखते आछिला चलिला आपुन देश ॥ ६६९८

तथा स्वर्ण-निर्मित दो मणिमय कुण्डल उठाकर उसे पहनाया ॥ ९३ ॥ रामचन्द्र ने सीता के गले में शुद्ध मोतियों का हार पहनाया, जिसके अत्यन्त निर्मल रत्न-मणियाँ जगमगा रहे थे। सभी आभूषणों से मंडित हो सीता ने रेशमी वस्त्र शरीर पर धारण किया तथा (रामचन्द्र के समीप ऐसे विराजित हुईं, मानो) नारायण के समीप लक्ष्मीदेवी हों या शिव की गोद मे चंडी हों ॥ ९४ ॥ जितनी सुन्दरियाँ थीं, सब आभूषणों से मंडित होकर वहाँ एकत्रित हुईं; परन्तु कोई भी रूप में देवी सीता की कनिष्ठा उँगली के बराबर भी नही थी। सभी, नगरों की बड़ी विनम्र-सुन्दरी बालाएँ वहाँ आकर एकत्रित हुईं, मानो शरत्काल के चन्द्रमा को नक्षत्रसमूह ने घेर लिया हो ॥ ९५ ॥ सीतादेवी ने अपने गले से स्वर्ण-गजमोतीहार उतारकर अपने हाथ में ले लिया, जिसका मूल्य लाखों-करोड़ों मुद्राएँ था। सीताजी हनुमान की ओर लक्ष्य करती हर्षपूर्वक मन में हँसती देख रही थीं। रामचन्द्र ने सीता से हँसकर कहा— यह जिसे देने का तुम्हारा अभिप्राय हो, उसे दे दो ॥ ९६ ॥ पति का वचन सुनकर देवी सीता को बड़ा हर्ष-आनन्द हुआ और उन्होंने पवनसुत की ओर अपने गले की वह माला फेक दी। उस मनोमय गजमोतियो के हार को वीर हनुमान ने हर्षपूर्वक पहन लिया। वह ऐसा शोभायमान हुआ, मानो मेरु पर्वत पर चन्द्र की किरणें शोभित हो रही हों ॥ ९७ ॥ नल, नील, दधि आदि जितने भी मुख्य-मुख्य वानर थे, सबके मन को तुष्ट कर रामचन्द्र ने आभूषण पहनाये। सबकी समृद्धि और संतुष्टि देखकर राघव को अपार हर्ष हुआ। सभी लोगों ने वहाँ सुख से महीना भर रहने के पश्चात् अपने-अपने देश को प्रस्थान किया ॥ ६६९८ ॥

हनुमन्त प्रभृतिर निज-निज देश लै गमन आरु श्रीरामर राज्य पालन

छबि

राघवक परिहरि सबे येवे चलि भैला शोके कारो शरीर नसहे ।
बिभीषण सुग्रीवर यत कपि भालुकर आथाके नयने जल बहे ।।
श्रीरामे बोलन्त शुना बापु हनुमन्त तोक अलङ्कार नाहि योग्यपम ।
येहि अभिमत तोर मनत बाञ्चनि आछे आमात मागियो देओं बर ।। ६६९९
हातयोरे हनुमन्ते बर मागिबाक प्रति हरिषे आगत भैल थिय ।
यावदेके पृथिवीत रामकथा प्रचारय ततकाल थाउक मोर जीव ।।
सीतादेवी गोसानीर चरणर दास मइ बर मोक नलागय आन ।
गोसानीर अनुग्रह थाकय आमात येवे आर कि साधिबो बहुमान ।। ६७००
ग्रीवत सावटि धरि राम देवे कौतूहले बायुर पुत्रक दिला बर ।
यावदेके सप्तद्वीपा पृथिवी सागर सात थाके मेरु पर्ब्बत मन्दर ।।
आरोग्य शरीरे बाप थाका युवा कलेवरे अनुकूले बहिबेक बायु ।
आमार प्रसादे तोर किछु दोष नुहिबेक ततकाल हुइबे परमायु ।। ६७०१
रामर बचन अन्ते सीतादेवी दिला बर बायुर पुत्रर मुख चाइ ।
देव अपेस्वरा सबे तोर सेवा करिबेक इहात बिस्मय किछु नाइ ।।
यथात तथात तोक अचिन्ताते मिलिबेक अमृत सदृश मधुफल ।
देवतार उपयोग सुगन्धि शीतल जल चिन्तिलाते मिलिबे सकल ।। २
श्रीराम सीतार पद- धूलि शिरे तुलि लैला अधोमुख भैला हनुमन्ते ।
आपुन देशक लागि बिषादे चलिया भैला बामहाते लोह मलचन्ते ।।

हनुमान आदि का अपने-अपने देश को लौट जाना और श्रीराम का राज्य-पालन

रामचन्द्र को छोड़कर जब सब लोग चले जाने को तैयार हुए, तो उन्हें इतना शोक हुआ कि वह उनके शरीर को सहन नही होता था। विभीषण, सुग्रीव समेत सभी भालू-बानरों की आँखों से लगातार जल वहने लगा। श्रीराम ने कहा, वत्स हनुमान, सुनो। तुम्हारे लिए कोई भी योग्य अलंकार नहीं है। तुम्हारी जैसी इच्छा हो, जो मनोरथ हो, हमसे वर माँग लो, मैं तुम्हें दूँगा ।। ६६९९ ।। हाथ जोड़कर हनुमान वर माँगने हेतु हर्ष से आगे खड़े हुए। —जब तक पृथ्वी पर राम-कथा का प्रचार रहे, तब तक मेरा जीवन बना रहे। मैं देवी सीता के चरणों का दास हूँ, मुझे अन्य वर नही चाहिए। देवी का अनुग्रह यदि हम पर रहे, तो और कौन-सा बड़ा सम्मान साधन करना है? ।। ६७०० ।। पवनसुत को गले लगा आलिंगन कर प्रभु रामचन्द्र ने प्रसन्न हो वर दिया— जब तक सप्तद्वीपा पृथ्वी, सात सागर, मेरु-मंदर पर्वत रहें; वत्स, तुम नीरोग शरीर वाले, चिर युवा अंगों वाले बनकर रहो, पवन सदा तुम्हारे अनुकुल चलेगा, हमारे प्रसाद से तुम्हारा कोई दोष नही होगा, तुम्हारी परमायु उतने काल तक की होगी ।।६७०१।। राम के कथन के पश्चात् पवनसुत के मुँह की ओर देखते हुए सीताजी ने वर दिया— देव, अप्सराएँ सभी तुम्हारी सेवा किया करेंगे, इसमें विस्मय की कोई बात नहीं है। तुम्हारे चिन्तन किये बिना ही जहाँ-तहाँ तुम्हें अमृत जैसे मधुर फल मिला करेंगे। तुम्हारी इच्छा होते ही देवताओं के उपभोग करने योग्य सुगन्धित शीतल जल आदि सब कुछ प्राप्त हो जायेगे ।। २ ।। हनुमान ने श्रीराम-सीता की चरणधूलि अपने

बिभीषण मुख्य करि राक्षस चलिला सबे राघवत प्रसादक पाया ।
श्रीराम लक्ष्मण सीता कृपाये आकुल भैला थाकिलन्त सेहि दिश चाया ।। ३

सबे येवे आपुनार देशक चलिला रामे लक्ष्मणक बुलिलन्त काज ।
सीतादेवी पटेश्वरी आमि राजा राज्येश्वर बापु तुमि हुयो युवराज ।।
लक्ष्मणे बोलन्त ददा मोक क्षमा करियोक नलागय इसब जञ्जाल ।
इन्द्रजित कुमारर शरबिष जाल एराइ सुखे भोग भुञ्जो कतकाल ।। ४

एकोवे प्रकारे येवे लक्ष्मण नभैला रामे भरतक कैला युवराज ।
समाधिकरणी भैला बशिष्ठ कुलर गुरु विहिलन्त सपुत्रे समाज ।।
रामर राज्यत किछु अन्यायक नोवारय उचितत तुलि लवेकर ।
पृथिवीत सर्व्वशस्य उपजय मधुफल कुसुमे भूषित तरुवर ।। ५

वत्सर द्वादश शत आरोग्ये जीवय नर आवे जीये सहस्र संख्यात ।
नारीसबे सुस्वासीर पतिव्रता धर्म्म करे पितृ आगे पुत्र नोहे पात ।।
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र सबे आचरय याहार विहित येन धर्म्म ।
देव द्विज पितृ मातृ गुरु आराधन पर काहारो नाहिके नित्यकर्म्म ।। ६

नानाविध यज्ञसब राम देवे करिलन्त आपुनार मनोरथ पूरि ।
धन जन अलङ्कारे मण्डित सकल लोक सुगन्ध चन्दने करि भुरि ।।
यार येन नीतिचय कदाचिलो नपरय गुरुत भकति करे शिष्य ।
रामर राज्यत किछु अन्यायक नोवारय निते निते अयोध्यात विश्व ।। ७

सिर पर ले ली और सिर झुकाये रहे । बायें हाथ से आँसू पोंछते हुए बड़ी विषण्णता से वे अपने देश को चल पड़े । विभीषण समेत सभी राक्षस राघव का अनुग्रह प्राप्त कर चल पड़े । श्रीराम, लक्ष्मण, सीता भी कृपावश व्याकुल हो उठे और उनके जाने की दिशा की ओर देखते रह गये ।। ३ ।। सब लोग जब अपने-अपने देश को चले गये तब रामचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा— सीता पटरानी बनी, हम राजा राज्येश्वर हुए । वत्स, तुम युवराज बनो । लक्ष्मण ने कहा— भैया, मुझे क्षमा कीजिये, मुझे यह सब जजाल नही चाहिए । अब तो कुमार इन्द्रजित के बाणो के विषजाल से मुक्त हो, कुछ काल सुख से भोगो को भोगूँ ।। ४ ।। जब किसी भी प्रकार से लक्ष्मण ने युवराज बनना नही चाहा, तब रामचन्द्र ने भरत को युवराज बनाया । नित्य समाधि में रहनेवाले वशिष्ठ कुलगुरु बने तथा पुत्र सहित समाज-व्यवस्था की । राम के राज्य में कोई अन्याय नहीं कर सकता था, उचित रूप से कर वसूला जाता था । पृथ्वी पर सारे शस्य उत्पन्न होते थे, वृक्ष मधुफल एवं फूलों से विभूषित रहते थे ।। ५ ।। लोग नीरोगी रहकर बारह सौ वर्ष जीवित रहते थे और सहस्रो की संख्या में जीवित रहते । नारियाँ अपने सुस्वामियों के पतिव्रता धर्म का पालन करतीं, पिता के आगे पुत्र की मृत्यु नही होती थी । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, सभी अपने-अपने विहित धर्म का पालन करते । देव, द्विज, माता-पिता तथा गुरु की सेवा में निरत रहते । (इनके सिवा) किसी का कोई नित्यकर्म नही था ।। ६ ।। अपनी मनोकामनाओं को पूरा कर रामचन्द्र ने अनेक प्रकार के यज्ञ किये । सभी लोग धन-जन, आभूषणों तथा सुगंधित चन्दन से प्रचुर रूप से मंडित रहते थे । जिसके जो नीति-नियम थे, उनसे वह कभी स्खलित नही होता था, शिष्य, गुरु की भक्ति किया करता था । राम-राज्य में कोई अन्याय नही कर सकता था । अयोध्या में नित्य विश्व उपस्थित रहता था । (अयोध्या में सारे विश्व की छटा उपस्थित रहती) ।। ७ ।। रामायण-कथा श्रवण

रामायण कथा शुनि शरीर निष्पाप सब सकल आपद हेले तरि ।
यत सब धर्म्मचय सब अप्रयासे सिजे नयाइबेक यमर नगरी ॥
गुर्व्विणी अपुत्र जने रूपवती कन्यागणे मन अभिलाषे पावे स्वामी ।
आयु बाढ़े पावे सुख आरोग्ये जीवय लोक अन्तकाले होवे स्वर्गगामी ॥ ८
महाऋषि बाल्मीकिये रामायण करिलन्त साक्षाते जानिबा येन बेद ।
श्रवणे अमृतमय सकल पापर क्षय संसारर बन्ध होवे छेद ॥
कलिमल कलुषक बिनाशन यमपुरी जिनिबार शुना इटो खण्ड ।
प्रणामोहो सरस्वती श्रीराम देवेसे गति समापति भैला लङ्काकाण्ड ॥ ९
कबिराज कन्दली ये आमाकेसे बुलिवय करिलोहो सर्व्वजन बोध ।
रामायण सुपयार श्रीमहामाणिके ये बराह राजार अनुरोधे ॥
सातकाण्ड रामायण पदबन्धे निबन्धिलो लम्भा परिहरि सारोद्धत ।
महामाणिकर बोले काव्यरस किछु दिलो दुग्धक मथिले येन घृत ॥ ६७१०
पण्डित लोकर येवे असन्तोष उपजय हातयोरे बोले शुद्ध बाक ।
पुस्तक बिचारि येवे सैत कथा नपावाहा तेवे सवे निन्दिबा आमाक ॥
बले सागरक तरि दाशरथि राम हरि लङ्का नगरीत पयोसार ।
घोर समरक करि रावणक संहारिया देवतार चिन्तिला निस्तार ॥ ६७११
शुनियोक सभासद रामायण कथा इटो पातकर साक्षाते अगनि ।
महादुख गृहबास जानिया एरियो आस चिन्ता रघुवंश शिरोमणि ॥
अगनित परीक्षिया सीताक अयोध्या निया सकुटुम्बे भैला एकठाइ ।
माधव कन्दलि गाइला श्रीरामे अयोध्या पाइला जय जय आनन्द बधाइ ॥ ६७१२

से सारा शरीर निष्पाप हो जाता है। सभी, संकटों से अनायास पार हो जा सकते है। जितने धर्म-आचरण हैं, सभी विना प्रयास मिल जाते है, यमपुरी जाना नही पड़ता। गर्भवती, अपुत्रजन, (पुत्र तथा) रूपवती कन्याएँ मन की अभिलाषा के अनुरूप स्वामी प्राप्त करती है। आयु बढ़ने पर सुख मिलता है, लोग नीरोग होकर जीते हैं तथा अन्तकाल में स्वर्गगामी होते हैं ।।८।। महर्षि बालमीकि ने जिस रामायण की रचना की, उसे साक्षात् वेद समझो। सुनने में यह अमृतमय है, सभी पापों का नाश होता है तथा संसार के बन्धन मिट जाते हैं। कलिमल-कलुप को विनाश करनेवाला, यमपुरी को जीतनेवाला यह खंड सुनो। सरस्वती को प्रणाम करता हूँ। श्रीराम देव ही गति हैं, (इस प्रकार) यह लंकाकाण्ड समाप्त हुआ ।। ९ ।। हमे कविराज कन्दली कहते है। महामाणिक्य बराह राजा के अनुरोध से रामायण को सुन्दर पयार छन्द में सर्वजनबोध-गम्य बनाकर सप्तकाण्ड रामायण अतिरंजना या विस्तार छोड़कर सार-उद्धत कर पदबन्धों में रचना की। महामाणिक्य के कथन से कुछ काव्य-रस प्रदान किया, जैसा कि दूध को मथने से घी होता है ।। ६७१० ।। यदि पंडितजनो को असन्तोष हो तो हाथ जोड़कर मैं शुद्ध वचन कहता हूँ; यदि (मूल) पुस्तक में ढूँढ़कर वह कथा न मिले, तभी हमें सभी लोग निन्दित करें। दशरथ-नन्दन राम-हरि ने सेना सहित सागर पार कर लंकानगरी में प्रवेश किया और घोर संग्राम में रावण का संहार कर देवताओं के उद्धार की चिन्ता की ।। ६७११ ।। सभासदगण, सुनें। यह रामायण-कथा पाप की साक्षात् अग्नि है। गृहस्थ बनकर रहने में महादुख होता है, यह जानकर आशाएँ छोड़ दो और रघुवंश-शिरोमणि राम का चिन्तन करो। रामचन्द्र ने अग्नि में सीता की परीक्षा कर अयोध्या ले जाकर, कुटुम्बीजनों सहित एकत्रित हुए। माधव कन्दलि गा रहे हैं। श्रीराम अयोध्या पहुँचे, 'जय, जय' आनन्द-बधाई बजने लगी ।। ६७१२ ।।

दुलड़ी

नमो नमो राम दूर्व्बादल श्याम सर्व्वगुणे अनुपाम।
यार गुण नाम धर्म्म अनुपाम मुकुति सुखर धाम ॥
नित्य निरञ्जन दानव गञ्जन यिटो देव महेश्वर।
यार आज्ञा बाणी शिरे धरे जानि ब्रह्मा हर पुरन्दर ॥ ६७१३
यार आदि अन्त वेदे नजानन्त निर्गुण गुण सागर।
यिटो सर्व्वोत्तम नाहि यार सम मायार यिटो ईश्वर ॥
हेन देव हरि माया बश्य करि हित चिन्ति जगतर।
परमात्मा तत्व भैलन्त वेकत राजा दशरथ घर ॥ १४
राम रूप धरि राक्षस संहरि रावणर चिन्ति मार।
सर्व्व धर्म्ममय निज गुणचय करिला प्रभु प्रचार ॥
याहार श्रवण कीर्तने करय अधमक आति गति।
हेनय तोमार चरणत हौक मोहोर निर्म्मल रति ॥ १५
शुना सर्व्वजन कथा रामायण रामक मनत धरि।
रामर दुखानि चरण पङ्कज किसक थाका पासरि ॥
रामर परम कृपालु गुणक शुना करि स्थिर मन।
यिटो सर्व्वाधम होवे सर्व्वोत्तम रामत लैया शरण ॥ १६
बनर बानर चरणे रामर शरण लैलेक मात्र।
एतेके सिसबो ईश्वर रामर सहायर भैला पात्र ॥
निज भार्य्याबैरी रावण नृपति तार भाइ बिभीषण।
रामक भजिया भ्रातृक तेजिया रामत लैला शरण ॥ १७
एतेके ताहाङ्क परम सुहृद बुलि रामे धरिलन्त।
रावणक मारि यत राज्यभार ताहाङ्के सब दिलन्त ॥

दूर्वादल-श्याम सर्वगुणों मे उपमारहित, जिनके गुण-नाम अनुपम तथा मुक्ति-सुख के धाम हैं; उन रामचन्द्र को बार-बार नमस्कार है। नित्यनिरंजन, दानव-गजन, जो देव महेश्वर है, ब्रह्मा, शिव, इन्द्र जिसकी आज्ञा, वाणी समझकर शिरोधार्य करते हैं ॥ ६७१३ ॥ जिसका आदि-अन्त वेद भी नही जानते, जो निर्गुण, गुण-सागर हैं, जो सर्वोत्तम है, जिनके समान और कोई नही है, जो माया के ईश्वर हैं; ऐसे परमात्मा तत्व रूपी देव-हरि माया को अपने वश में कर जगत के हित-चिन्तन करने के कारण राजा दशरथ के यहाँ प्रकट हुए ॥ १४ ॥ राम-रूप धारण कर राक्षसों का संहार तथा रावण का वध कर प्रभु ने सर्वधर्ममय अपने गुणों का प्रचार किया, जिनके श्रवण-कीर्तन अधमों को परम गति देते है। तुम्हारे ऐसे चरणों में मेरी निर्मल रति हो ॥ १५ ॥ सभी जन राम को मन में धारण कर रामायण-कथा सुनो। राम के चरण-कमलों को किसलिए भूले रहते हो ? रामचन्द्र के परम कृपालु गुणों को मन स्थिर कर सुनो। राम की शरण लेने पर जो सबसे अधम हैं, वे भी सर्वोत्तम हो जाते हैं ॥ १६ ॥ वन के बानरों ने राम के चरणों में शरण भर ली थी, इसी कारण वे सब भी ईश्वर राम के सहाय के पात्र बने। भार्या-वैरी राजा रावण के भाई विभीषण ने भाई को तज कर राम का भजन किया और राम की शरण ले ली ॥ १७ ॥ इसी कारण उसे भी रामचन्द्र ने परम सुहृद मान लिया और रावण को मारकर सारा राज्य-भार उसे ही दे दिया। ऐसा समझकर सारे काम छोड़कर राम का भजन

एतेक जानिया रामत भजियो तेजिया समस्त काम ।
संसार सागर सुखे होवा पार डाकि बोला राम राम ।। ६७१८

।। इति लङ्काकाण्ड समाप्त ।।

करो। पुकारकर 'राम-राम' कहो तथा संसार रूपी सागर को सुखपूर्वक पार कर जाओ ।। ६७१८ ।।

।। इति लंकाकाण्ड समाप्त ।।

उत्तर काण्ड

मङ्गलाचरण

जय जय जगत जनक श्रीराम * पातकीयो तरे यार लैले गुण नाम
याक सुमरणे तरि दुर्घोर संसार * करो हेन रामर चरणे नमस्कार ६७१९
नमो नमो रघुकुलतिलक केशव * जय जय सीतार सन्तति कुश लव
राम गैल स्वर्गे सीता पाताले गमन * शङ्करे रचिला पद रामर चरण ६७२०
रामपादपद्म दुइ हृदयत धरि * गुरुर चरण मने नमस्कार करि
बिरचिबो उत्तराकाण्डर कथा सार * होक पद रामपादप्रसादे प्रचार ६७२१
शुना निरन्तरे पुण्यकथा रामायण * संसार निस्तरि यार बैकुण्ठक मन
रामनाम बिना नाहि संसार निस्तार * हेन जानि रामर चरित्र करा सार २२
रामनाम प्रमत्त सिहर महानादे * पलाय पापहस्तीयूथ परम विषादे
समस्त धर्म्मरे रामनामत निवास * सि सि महा जन यार नामत बिश्वास २३
राम वन गैला पालि पितृर आदेश * शुनियोक उत्तराकाण्डर कथा शेष
तहिते सीताक हरि निले लङ्कापति * सुग्रीवे सहिते पाचे भैला मित्रवति २४
सागरत सेतु बान्धि वधि रावणक * अग्निक परीक्षा आनि करिला सीताक
प्रसादे रञ्जिया यत भालुक वानर * करिलन्त राज्य दश हाजार बत्सर २५
जानकी सहिते भोग भुञ्जिला भुकुति * रामर सम्भोगे सीता भैला गर्भवती
कौशल्या प्रमुख्ये शाशु सबारो उत्सव * आनन्द हृदय देखि भैलन्त राघव ६७२६

जगत-जनक श्रीराम की जय-जय हो। जिनके गुण-नाम लेने से पापी भी तर जाते हैं; जिनके स्मरण से विकट संसार से तर सकते हैं; ऐसे राम के चरणों में नमस्कार करता हूँ ।। ६७१९ ।। रघुकुल-तिलक (राम रूपी) केशव को बार-बार नमस्कार है; सीता के सुपुत्र लव-कुश की जय-जय हो। रामचन्द्र ने स्वर्ग को प्रयाण किया, सीता पाताल गयी; (इस कथा को) राम के चरणों का ध्यान कर मैं शंकर पद में विरचित कर रहा हूँ ।।६७२०।। रामचन्द्र के दोनो चरण-कमलों को हृदय में धारण करते हुए, गुरु के चरणों में मन ही मन नमस्कार कर, मैं उत्तरकाण्ड की सार-कथा की रचना करूँगा। रामचन्द्र के चरणों के प्रसाद से इन पदों का प्रचार हो ।। ६७२१ ।। जो संसार से पार होकर बैकुण्ठ जाना चाहते हो, तो निरन्तर पुण्यकथा रामायण सुनो। राम-नाम के बिना संसार से निस्तार नही है, ऐसा समझकर राम के चरित्र को सार कर लो।।२२।। राम-नाम रूपी प्रमत्त सिंह के महानाद से पाप रूपी हाथियों का समूह परम विषाद से भाग जाता है। राम-नाम में ही समस्त धर्मो का निवास है। राम-नाम में जिसका विश्वास है, वही महा जन है ।।२३।। अब उत्तरकाण्ड की अन्तिम कथा सुनो। रामचन्द्र पिता का आदेश मानकर वन में गये थे। लंकापति रावण वहाँ सीता को हर ले गया था। इसके पश्चात् सुग्रीव से उन्होंने मित्रता की ।।२४।। सागर पर सेतु बाँधकर, रावण का वध कर, सीता को लाकर अग्नि में परीक्षा की। भालू-बानरों को अपने प्रसाद से प्रसन्न कर दस हजार वर्ष राज्य किया ।। २५ ।। उन्होने जानकी के संग भोगो को भोगा। उनके संसर्ग से सीता गर्भवती हुई। कौशल्या आदि सभी सासो को बड़ी प्रसन्नता हुई, वे उत्सव मनाने लगी। यह देख रामचन्द्र के मन में बड़ा आनन्द हुआ ।। ६७२६ ।।

सीतार बनबास

मिलिल दुर्योग पाचे बिधिर बिपाके * रामक कहन्त सीता स्वप्नर कथाके
शुनियोक प्रभुदेव साधो एक काज * स्वप्नत आछिलो आजि तपोवन माज ६७२७
ऋषिपत्नीगणे मोक सादरिला रङ्गे * आछिलो कौतुके आजि तासम्बार सङ्गे
तोमार प्रसादे सेइ पाओं तपोबन * तेवेसे मोहोर होवे साफल स्वपन २८
हेन शुनि रघुनाथ तुलिलन्त हास * नतो गुचे तोमार बनर हाबिलास
स्वपनर बस्तु कोने पावे सचेतत * हासिबेक इटो कथा नकैबा लोकत २९
एहिमते कतोदिन आछन्त राघव * चार मुखे शुनिला लोकर गला रव
दुर्म्मुख दुर्ज्जन जने देइ अपयश * सीताक निलेक हरि रावण राक्षस ६७३०
एकेश्वरी नारी सीता आछिल लङ्कात * किमते गैलन्त तात राघव सञ्जात
शुनि हेन दुर्ज्जन जनर अपवाद * रामर मनत महा मिलिल बिषाद ६७३१
भैल अधोमुख येन परिल निर्घात * कतेकर मुखत ढाकिबो दिया हात
इटो सूर्य्यबंशर कलङ्क कारो नाइ * सीतार त्यागत परे नेदेखो उपाय ३२
मने बिमरिषि रामे करिलन्त सार * जानकीर चिन्तात देखन्त अन्धकार
उगुल थुगुल चित नाहि सुख शान्ति * लक्ष्मणक बिरले बुलिला गुणि गान्थि ३३
बिपाङ्गे परिलो बाप उद्धारा आमाक * छल बादे दियो निया निर्ब्बास सीताक
नेदेखोहो आर येन जानकीर मुख * मरणतो करि लोक-अपबाद दुख ३४

सीता का वनवास

इसके पश्चात् विधि-विपाक से संकट आ गया। सीता (एक बार) रामचन्द्र से स्वप्न में देखी हुई बात कहने लगीं। प्रभुजी, सुनिये। मेरा एक कार्य सिद्ध कीजिये। आज मैं सपने मे तपोवन में थी ।। ६७२७ ।। मुझे ऋषि-पत्नियो ने बड़ी प्रसन्नता से स्वागत किया। आज बड़े आनन्द से उन सबके साथ रही। आपके अनुग्रह से यदि उस तपोवन में पहुँच सकूँ, तो मेरा सपना सार्थक हो जाये ।। २८ ।। यह सुनकर रघुनाथ हँस पड़े। कहा, वन में (रहने की) तुम्हारी अभिलाषा मिटती नही। भला सपने की वस्तु जगने पर किसे मिलती है ? दूसरे लोगों से यह बात न कहना, वे हँसेंगे ।। २९ ।। राघव कुछ दिन इसी प्रकार रहे। उन्होंने चरों के मुख से यह जन-रव सुना कि बुरे वचन कहनेवाले दुर्जन यह अपयश लगा रहे हैं— सीता को राक्षस रावण हर ले गया था ।। ६७३० ।। सीता नारी है, वह अकेली ही लंका में रही। राघव ने उस पर विश्वास कैसे कर लिया ? दुर्जन लोगों के लगाये ये अपयश सुनकर रामचन्द्र के मन में बड़ा विषाद हुआ ।। ६७३१ ।। उन पर मानो वज्रपात हो गया, उन्होने सिर झुका लिया। (वे सोचने लगे) कितनों के मुँह पर हाथ रखकर यह अपयश रोक सकूँगा ? इस सूर्यवंश में और किसी का ऐसा कलंक नही रहा है। सीता के त्याग के सिवा (इससे बचने का) कोई उपाय नहीं दीखता ।। ३२ ।। मन में विचार कर रामचन्द्र ने ऐसा निश्चय कर लिया। परन्तु जानकी की चिन्ता से उन्हें अँधेरा दिखाई देने लगा। उनके चित्त में उथल-पुथल मच गयी, सुख-शान्ति नहीं रही। सोच-विचारकर उन्होंने लक्ष्मण को एकान्त में बुलाकर कहा, ।। ३३ ।। वत्स, मैं संकट में पड़ गया हूँ, तुम मुझे उद्धार करो। सीता को बहाने बनाकर ले जाओ और निर्वासन दे दो। अब से जैसे मैं जानकी का मुँह न देखूँ क्योंकि लोकापवाद का दुख मरण से बढ़कर है ।। ३४ ।। राम का आदेश सुनकर लक्ष्मण रोने लगे, परन्तु

रामर आदेश शुनि कान्दन्त लक्ष्मण * नेदन्त उत्तर बुजि राघवर मन
रामे बुलिलन्त पाचे बचन बिचार * सीताक राखिबि येवे आगे मोक काट ३५
रामर कटाक्ष देखि लक्ष्मणर डर * रथ लैया गैला पाचे जानकीर घर
उठियोक रथे शान्ती माव कार्य्य जानि * देओं तपोबने रामे दिलन्त मेलानि ३६
हेन शुनि सीता शान्ती भैला सालङ्कृत * नुबुजिला एको राम स्वामीर इङ्गित
चरिलन्त रथत दुर्योगे नेइ टानि * लक्ष्मणे डाकन्त घोंरा लरिला गोसानी ३७
कतो बेलि पाइला गैया तपोबन माज * लक्ष्मणे बिनान्त कान्दि जानकीत काज
नामियोक माव अयोध्यार एरि आश * तोमाक दिलन्त आवे राघवे निर्ब्बास ३८
एहि बुलि मक मकि कान्दन्त लक्ष्मण * शुनि सीता गोसानीर हरिल चेतन
माटित परिल ढलि बिह्वल स्वभाव * कतोक्षणे सन्धुक्षण भैला शान्ती माव ३९
लक्ष्मणक चाइ पाचे लागिला बुलिते * उलटि अयोध्या याहा रामर सन्निते
मोर अर्थे तोमार सन्ताप बाप व्यर्थ * रामे निकालन्ते तुमि किसर सामर्थ ६७४०
मोहोर मरणे आत किछु नाहि खेद * गर्भर बिनाशे राम हैबा वंशछेद
आवे राम स्वामी सुखे भुञ्जन्तोक राज * मरि याओं मइ निमाखिति बनमाज ६७४१
एहि बुलि आउर नोवारिला मातिबाक * कान्दन्ते सुमित्रासुत गैला अयोध्याक
कैबो कतो सिटो सीता शान्तिर निकार * लक्ष्मणे एरिला देवी देखन्ते आन्धार ४२
सुनील शरीर शोके अगनिर बिष * कोन दिशे याओं एवे नपाओं उद्दिश
काम्पन्त कवली येन प्रचण्ड बतासे * मूर्च्छा गैया परिलन्त बनत हताशे ४३

राघव का मनोभाव समझकर कुछ उत्तर नहीं दिया। तब रामचन्द्र ने यह कठोर वचन कहा— यदि तुम सीता को रखना चाहते हो, तो पहले मुझे काट डालो ॥ ३५ ॥ राम की वक्रदृष्टि देखकर लक्ष्मण को भय हुआ। वे रथ लेकर जानकी के यहाँ चल पड़े। कहा— सती सीता मैया, अपनी मनोकामना पूरी हो रही है, जानकर रथ पर चढ़िये; रामचन्द्र ने तपोवन जाने हेतु अनुमति दी है ॥ ३६ ॥ यह सुनकर सती सीता ने आभूषण पहन लिये। वे अपने स्वामी रामचन्द्र का संकेत समझ नहीं सकीं। वे रथ पर चढ़ गयीं, संकट उन्हें खींचे ले चला। लक्ष्मण घोड़ों को हांकने लगे, देवी सीता तेजी से चल पड़ी ॥ ३७ ॥ कुछ समय पश्चात् वे तपोवन में जा पहुँचे। लक्ष्मण जानकी के लिए विलाप कर रोने लगे। माँ सीता, अब अयोध्या की आशा छोड़कर रथ से उतर जाइये। राघव ने आपको निर्वासन दे दिया है ॥ ३८ ॥ यह कहकर लक्ष्मण फूट-फूटकर रोने लगे। (लक्ष्मण की बात) सुनकर देवी सीता की चेतना चली गयी। वे विह्वलचित्त होकर धरती पर लुढ़क गयीं। कुछ क्षण बाद सती सीता माता की चेतना लौटी ॥ ३९ ॥ इसके पश्चात् लक्ष्मण को देखती हुई कहने लगी— तुम लौटकर रामचन्द्र के पास अयोध्या चले जाओ। वत्स, मेरे लिए तुम्हें सन्ताप करना व्यर्थ है। राम ने यदि मुझको निकाल दिया, तो तुम्हारी सामर्थ्य ही क्या है ? ॥ ६७४० ॥ मेरा मरण यहाँ हो जाये तो कुछ भी खेद नहीं, (दुख तो यह है कि) मेरा गर्भ नष्ट हो जाने पर रामचन्द्र का वंश लोप हो जायेगा। अब स्वामी रामचन्द्र सुख से राज्य भोगते रहें, मैं अभागिनी वन में मर जाऊँ ॥ ६७४१ ॥ यह कहकर वे और कुछ बोल नहीं सकीं। सुमित्रा-नन्दन लक्ष्मण रोते हुए अयोध्या चले आये ॥ सती सीता के दुख-कष्टों का क्या वर्णन करें ? लक्ष्मण के छोड़ जाने पर देवी ने (अपने चारों ओर) अँधेरा ही देखा ॥ ४२ ॥ शोक रूपी अग्नि का विष चढ़ जाने के कारण शरीर नीला हो गया। (वे सोचने लगी) किस दिशा में जाऊँ, कुछ भी नहीं सूझ रहा है। प्रचंड वायु से कांपते हुए केले के वृक्ष की भाँति वे भी काँपने लगी। हताशा के मारे वे वन में

बन जन्तु सबो कान्दे सीताक आवरि * कतो जने विञ्चे शिरे पक्षी छाया करि
चेतन लभिया माव कान्दन्ते तरासे * नरहय :प्राण राम स्वामीर नैराशे ६७४४
देखन्त जमक शोके अग्नि ज्वले गात * उठन्त बैसन्त माव परं धात धात

बाल्मीकिये सीताक आश्रमलै निये आरु लव-कुशर जन्म

करन्त सन्ताप सती आति दीर्घरावे * शिष्य समे बाल्मीकि मिलिल सेहि ठावे ६७४५
सीतार अवस्था देखि भैला सलोतक * कार्य्य लक्षि मने गरिहिला राघवक
रामत परिल आसि परम कुमति * हरि हरि महाशान्ती हेनसे बिपत्ति ४६
अनेक आश्वास बाणी बुलि शिष्य समे * जानकीक निला ऋषि आपोन आश्रमे
अनुक्षणे दहे देहा रामर बिरोधे * बाल्मीकि पुषिला पाचे ताङ्क जीउ बोधे ४७
फल फुल आहारे जीवन्त जगमाव * भूमित शयन धूलि धूसर स्वभाव
मलिन बदन सीता तापसीर वेश * खपिलन्त सिटो बनबास महाक्लेश ४८
लोतके पाञ्जरि भिजे नुगुचे सन्ताप * बाल्मीकिक देखन्त जनक येन बाप
काढ़न्त सघने देवी दीर्घ ये निश्वास * अनुदिने भैला आसि गर्भ दशमास ४९
ऋषिपत्नीगणे ताङ्क आवरिया आछे * उपजिला यवञ्जा कुमार दुइ पाचे
देव दीप्यमान दुयो शिशु सुकुमार * रामर समान मुख नासिका आकार ६७५०

ही मूर्च्छित होकर गिर पड़ी ।। ४३ ।। सीता को घेरकर सभी वनजन्तु भी रोने लगे। पक्षियों ने उनके सिर पर छाया कर दी, कितने ही पशु-पक्षी उन्हें हवा करने लगे। सचेत होने पर माता सीता त्रास से रोने लगी। स्वामी रामचन्द्र से मिलने की अब कोई आशा न रहने के कारण ये प्राण रहनेवाले नहीं हैं ।। ६७४४ ।। शोक रूपी अग्नि में उनका शरीर जलने लगा। वे (अपने सम्मुख) यम को देखने लगी। वे कभी उठती थी, कभी बैठती थीं और धम्म से गिर पड़ती थी।

बाल्मीकि द्वारा सीता को आश्रम में ले जाना और लव-कुश का जन्म

सती सीता बड़े जोर-जोर से सन्ताप करने लगी। तब वहाँ शिष्य समेत महर्षि बाल्मीकि आ पहुँचे ।।६७४५।। सीता की अवस्था देखकर (उनकी आँखों में) आँसू भर आये। राघव का ऐसा कार्य देख उन्होंने मन ही मन तिरस्कार किया। रामचन्द्र की बड़ी कुमति हो गयी है, हरि, हरि, इसी कारण महासती सीता पर ऐसी विपत्ति आयी है ।। ४६ ।। शिष्यों से अनेक आश्वासन के वचन कहकर ऋषि जानकी को अपने आश्रम में ले गये। रामचन्द्र के (उस कार्य के) विरोध से ऋषि का शरीर निरन्तर जलने लगा। उन्होने सीता को अपनी कन्या मानकर पालन किया ।। ४७ ।। जगन्माता सीता फल-फूल भोजन करती जीवित रही। भूमि पर शयन करने के कारण उनका शरीर स्वभावतः धूलि-धूसरित रहता। तपस्विनी का वेश धरे सीता का वदन मलिन रहता। वनवास की वह अवधि वे महान् क्लेश से बिताने लगी ।।४८।। आँसुओं से उनकी छाती भीगी रहती, तथापि सन्ताप नही मिटता था। बाल्मीकि को वे पिता जनक-जैसे मानती थीं। देवी सीता निरन्तर दीर्घश्वास लेती रहतीं। समय आने पर उनके गर्भ का दस महीना पूरा हो गया ।। ४९ ।। ऋषि-पत्नियाँ उन्हें घेरे रहतीं। बाद को उनके दो जुड़वाँ पुत्र उत्पन्न हुए। दोनो सुकुमार शिशु देवताओं की भाँति दीप्तिमान थे। उनके मुख-नाक रामचन्द्र के जैसे ही थे ।। ६७५० ।। उन्ही के जैसे

तेह्लय आयत नेत्र तनु चारु श्याम * ज्येष्ठ भैला कुश कनिष्ठर लव नाम
बाढ़न्त कुमार दुयो तपोवन माज * यत जात कर्म्म कराइलन्त ऋषिराज ६७५१
पढ़ाइलन्त निरन्तरे राजनीति तथा * शिखाइलन्त सातोकाण्ड रामायण कथा
जानिलन्त सबे अस्त्र शास्त्र येन नय * भैलन्त प्रबोध दुयो सीतार तनय ५२
रामर चरित्र दुयो भाये गावे गीत * कोकिलर कण्ठ सम शुनि सुललित
बजावन्त यन्त्र सब सुस्वर सुनाद *शुनिया वाल्मीकि देन्त दुइको आशीर्व्वाद ५३
होवा चिरञ्जीव लव कुश दुयो भाइ * देशे देशे रामर चरित्र फुरा गाइ
नगर ग्रामर समस्तरे रञ्जि चित * रामर सभात पशि दुयो गाइवा गीत ५४
शुनिया सन्तुष्ट हइव राघवर मन * दुइहान्तको सन्तोषे दिवन्त बहुधन
नलैवा किञ्चितो धन मोहोर वचने * रामर चरित्र मात्र गाइवा एक मने ५५
बाल्मीकिर आज्ञा दुयो शिरोगत करि * देशे देशे गान्त गीत हाते ताल धरि
अमृत मधुर शुनि कोकिलर स्वर * शुनिया आकुल चित्त समस्ते लोकर ५६
रामर चरित्र शुनि येन लागे ध्यान * नाइ क्षुधा तृष्णा सबे एरे अन्न पान
दुइहान्तरो रूपे गुणे गीते आति भूलि * बेढ़िया प्रशंसे प्रजा धन्य धन्य बुलि ५७
नलवन्त एको येइ यिवा देइ दान * फल मूल भोजन वाकलि परिधान
लवर कुशर कथा एहिमाने थओं * रामर तथात येन कार्य्य ताक कओं ५८
येहि दिना दिला निया निर्व्वास सीताक * नाहि अन्नपान प्रभु भैलन्त अवाक
कान्दन्ते कान्दन्ते भैला नयन तवध * करिलो पातकी गर्भवती स्त्रीर वध ५९

उनके नेत्र आयताकार थे, शरीर सुन्दर श्यामवर्ण थे, बड़े पुत्र का नाम कुश और छोटे का लव था। दोनो कुमार तपोवन में बढ़ने लगे। ऋषिराज बाल्मीकि ने उनके सारे जातकर्म संस्कार करवाये ।। ६७५१ ।। इसके साथ ही राजनीति पढ़ाई और सप्तकाण्ड रामायण-कथा की शिक्षा दी। नीति-नियम समेत सभी अस्त्रों और शास्त्रों का ज्ञान उन दोनो ने प्राप्त किया। सीता के दोनो पुत्र ज्ञानी बन गये ।। ५२ ।। दोनो भाई जब राम के चरित्र को गीत के रूप मे गाते, तो वह कोकिल के स्वर-सा सुललित सुनाई देता था। (वे दोनो) सभी यंत्रों को सुन्दर स्वर और सुन्दर नाद से बजाया करते, जिसे सुनकर बाल्मीकि दोनो को आशीर्वाद देते ।। ५३ ।। तुम लव-कुश दोनो भाई चिरजीवी बनो और देश-देश में राम का चरित्र गान करते हुए घूमते रहो। नगर-ग्राम (में निवास करनेवाले) सबके चित्त को अनुरंजित करते हुए राम की सभा में प्रविष्ट हो, दोनो, गीत गाना ।। ५४ ।। उसे सुनकर राघव का मन सन्तुष्ट होगा और तुम दोनो को सन्तुष्ट करने हेतु बहुत सा धन देंगे। परन्तु मेरा वचन मानकर तुम बिन्दुमात्र धन ग्रहण न करना। केवल एकाग्रचित्त से राम का चरित्र गाते रहना ।। ५५ ।। दोनो, बाल्मीकि की आज्ञा शिरोधार्य कर, हाथों में वाद्ययंत्र लेकर देश-देश में गीत गाते फिरने लगे। उनका अमृत-सा मधुर, कोकिल-सा स्वर सुनकर सभी लोगों के चित्त आकुल हो उठे ।। ५६ ।। राम का चरित्र सुनकर मानो सभी तल्लीन हो जाते थे, क्षुधा-तृष्णा मिट जाती थी, सब लोग खाना-पीना भी छोड़ देते थे। दोनो के रूप-गुण-गीत से सम्पूर्ण आत्म-विस्मृत होकर लोग घेर-घेरकर 'धन्य, धन्य' कह प्रशंसा करते थे ।। ५७ ।। कोई यदि कुछ दान करता था, वे नहीं लेते थे, फल-मूल भोजन करते, वल्कल पहनते थे। लव-कुश की कथा यहीं छोड़ता हूँ और रामचन्द्र के यहाँ जो हो रहा था, उसका वर्णन करता हूँ ।। ५८ ।। जिस दिन से सीता को निर्वासन दिया गया, प्रभु राम ने अन्न-जल छोड़ दिया, बात करना भी बन्द कर दिया। रोते-रोते उनके नयन स्तब्ध हो गये। (वे सोचने लगे) मुझ पापी ने गर्भवती

तेजिलो पातकी मइँ निदारुण मने * सि कि सुकोमली बाला जीवे घोर बने
सिंहे वाघे भुञ्जिवेक निर्ज्जनत पाइ * सजिहाते बधि मइ भैलो आततायी ६७६०
एहि बुलि रामचन्द्रे करन्त बिलाप * भरत लक्ष्मण शत्रुघनर सन्ताप
सीता बिने रामर नुगुचे हृदि खेद * निद्रा नाशे निशात लोतक नाहि छेद ६७६१
तेजन्त निश्वास सीता बुलि अहर्निश * देखन्त आन्धार रामचन्द्रे दशो दिश
इटो कथा थाकोक सम्प्रति एहिमते * शुना रामे अश्वमेध यजिला यिमते ६७६२

श्रीरामर अश्वमेध यज्ञ

एकदिना राघवे आछन्त समापाति * पुछिलन्त कथा पाचे वशिष्ठक माति
कोन यज्ञ आछे सर्ब्ब यज्ञते बिशिष्ट * निर्णय करिया मोत कहियो बशिष्ठ ६७६३
काहाक यजिले मनोरथ हवे सिद्धि * कहियो समस्ते महाऋषि येन बिधि
शुनिया बशिष्ठ पाचे दिला समिधान * नाहि पुण्य अश्वमेध यज्ञर समान ६४
पूर्ब्बतो सुद्युम्न भैला नृपति प्रतापे * स्त्री भैला राजा पाचे महेशर शापे
अश्वमेध यज्ञ यजि गोविन्दर पावे * भैलन्त पुरुष राजा यज्ञर प्रभावे ६५
अश्वमेध यज्ञ सम नाहि पृथिवीत * शुनि यज्ञ करिते रामर भैला चित
लक्ष्मणक आनि रामे नियोजिला काज * आमराओ करो अश्वमेध यज्ञराज ६६
सातद्वीपा पृथिवीर नृपति जोरायो * बाछि बाछि बिप्र सब सत्वरे आनायो
शुनियो लक्ष्मण भैयाइ दुखर सहतरी * मिलायो सम्भार बिलम्बक परिहरि ६७

पत्नी का वध कर डाला ।। ५९ ।। मुझ पापी ने निष्ठुर मन से उसे परित्याग कर दिया, क्या वह सुकोमल बाला घोर वन में जीवित रह सकती है ? उसे निर्जन में पाकर सिंह-बाघ ने खा डाला होगा । अपने दाहिने हाथ से आततायी मैंने उसका वध कर डाला है ।।६७६०।। यह कह-कहकर रामचन्द्र विलाप करते थे; भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न इससे संतप्त हो उठे । सीता के बिना रामचन्द्र के हृदय का खेद नही मिटता था । रात को निद्रा नही आती थी, आँसुओं का विराम न था ।। ६७६१ ।। 'सीता, सीता' कहकर दिन-रात लम्बी साँसें लेते रहते थे । रामचन्द्र को दसों दिशाएँ अन्धकार दिखाई देती थी। वह कथा सम्प्रति यहीं तक रहने देते है । रामचन्द्र ने अब जिस प्रकार से अश्वमेध यज्ञ किया, सुनो ।। ६७६२ ।।

श्रीराम का अश्वमेध यज्ञ

एक दिन राघव सभा में बैठे थे । वशिष्ठ को बुलाकर उन्होंने पूछा— सभी यज्ञों में विशिष्ट यज्ञ कौन-सा है ? हे वशिष्ठजी, आप निर्णय कर मुझसे कहें ।। ६७६३ ।। किसका यजन करने पर मनोरथ सिद्ध होता है ? महर्षि, सब विधिपूर्वक मुझसे कहिये । सुनकर वशिष्ठ ने निर्णय देते हुए कहा, अश्वमेध के समान पुण्यप्रद और कोई यज्ञ नहीं है ।। ६४ ।। पूर्वकाल में सुद्युम्न नाम का प्रतापी नृपति था । जो शिव के शाप से स्त्री हो गया था । गोविन्द के चरणों में अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान कर यज्ञ के प्रभाव से वह पुरुष बन गया ।। ६५ ।। अश्वमेध यज्ञ जैसा संसार में (अन्य यज्ञ) नही है, सुनकर राम के मन में वही यज्ञ करने की इच्छा हुई । लक्ष्मण को बुलाकर रामचन्द्र ने यह कार्य सौपते हुए कहा— हम भी यज्ञों में श्रेष्ठ अश्वमेध यज्ञ करें ।। ६६ ।। इस सप्तद्वीपा पृथ्वी पर जितने राजा है, सबको यहाँ एकत्रित करो । चुन-चुनकर विप्रों को शीघ्र ले आओ । मेरे दुखों के सहभागी भाई लक्ष्मण, सुनो । विलम्ब न कर तुम सभी उपकरण

रामर आदेशे पाचे पाञ्चि दिला दूत * भैला सबे हाङ्कारते नृपति अयुत
सुवर्ण रजते भरि असंख्य शकटे * रामर पावक आसि नमिल प्रकटे ६८
सुग्रीव अङ्गद नल नील हनुमन्त * आसिलन्त हरिषे बानर अपर्य्यन्त
अनेक भालुक समे आसि ऋक्षराज * विभीषण समे आइल राक्षस समाज ६९
भालुक बानर राक्षसर राजा तिनि * रामक प्रणामि भेण्टिलन्त भिनि भिनि
सुवर्ण रजत यत योगाइला सम्भार * राघवे करिला तासम्बाक सतकार ६७७०
यज्ञर सुनिया नाम यत महाऋषि * अयोध्या भरिल आसि परम हरिषि
विश्वामित्र अत्रि दूत गौतम गालव * पुलस्ति पुलह भृगु भागुरी भार्गव ६७७१
मरीचि च्यवन चन्द्रबिन्दु वेदसार * अगस्ति आस्तिक श्रुत कपिल कुमार
सुमन्त सनक सनातन सिद्धेश्वर * इसब प्रमुखये आइल मुनि निरन्तर ७२
नायाकिल दुखी भिक्षी दीन देशान्तरी * हाट बाट घाट सबे चलिला नगरी
पातालर नाग स्वर्गवासी देव यत * रङ्गे यज्ञ देखिबाक आसिला समस्त ७३
शुना सावधाने सबे रामर चरित्र * आतपरे धर्म्म आउर नाहिके कलित
स्वभावे कलिर लोक भैल मन्दमति * किमते साधिबे आन धर्म्म आउर गति ७४
कलिर भयत धर्म्मे कतो नापाय ठाइ * हरिर नामत रैला शरण सोमाइ
हेन जानि हरि भकतिर करा काम * शङ्करे रचिला डाकि बोला राम राम ६७७५

छवि

अनन्तरे राम देवे लक्ष्मणक बुलिलन्त शुनियो सोदर सर्व्वजान ।
पुण्यनदी गोमतीर तीरत सत्वरे गैया यज्ञभूमि करियो निर्माण ॥

जुटाओ ॥ ६७ ॥ लक्ष्मण ने रामचन्द्र के आदेश से दूत भेज दिये, उनके आह्वान से दस हजार राजा इकट्ठे हो गये । उन राजाओं ने असंख्य गाड़ियों पर सोना-चाँदी लाद कर आकर राम के चरणों में प्रकट रूप से नमन किया ॥ ६८ ॥ सुग्रीव, अंगद, नल-नील, हनुमान समेत अनगिनत वानर हर्षित होकर यज्ञ में आये । अनेक भालुओं समेत ऋक्षराज जाम्ववन्त आया, विभीषण के साथ राक्षससमाज आया ॥ ६९ ॥ भालू-वानर और राक्षसों के तीन राजाओं ने रामचन्द्र को प्रणाम कर अलग-अलग भेंट दी । उन सबने सोने-चाँदी समेत सारे उपकरण जुटाये । रामचन्द्र ने उन सबका सत्कार किया ॥ ६७७० ॥ यज्ञ का नाम सुनकर जितने महर्षि थे, सब परम हर्षित हो अयोध्या में आकर जुट गये । विश्वामित्र, अत्रि, दूत, गौतम, गालव, पुलस्त्य, पुलह, भृगु, भागुरी, भार्गव, परशुराम, ॥ ६७७१ ॥ मरीचि, च्यवन, चन्द्रविन्दु, वेदसार, अगस्त्य, आस्तिक, श्रुत, कपिल-कुमार, सुमन्त-सनक, सनातन-सिद्धेश्वर आदि मुनि निरन्तर आने लगे ॥७२॥ कोई भी दुखी, भिखारी, दीन और दूसरे देश का प्रवासी न रहा । सभी हाट-बाट-घाट वाले नगर में चल पड़े । पाताल के नाग, स्वर्गनिवासी, सभी देवगण बड़ी ही उमंग से यज्ञ देखने के लिए आये ॥ ७३ ॥ सभी सावधानी से राम का चरित्र सुनें । इसके समान कलियुग में और कोई धर्म नही है । कलि के लोग स्वभाव से ही मंदमति हो गये हैं, ये भला धर्म में अपनी गति किस प्रकार साधन करेंगे ॥ ७४ ॥ कलि के भय से धर्म को कही स्थान नही मिलता । वह केवल हरि के नाम में घुसा रह गया है । ऐसा समझकर हरि की भक्ति का काम करो । यह शंकर ने रचा है । पुकार-पुकारकर 'राम, राम' कहो ॥ ६७७५ ॥

इसके पश्चात् रामचन्द्र ने लक्ष्मण से कहा, सर्वज्ञानी भाई लक्ष्मण, सुनो । शीघ्र पुण्यनदी गोमती के तट पर जाकर यज्ञभूमि का निर्माण करो । राम का आदेश

रामर आदेश सिरे धरिया लक्ष्मण बीरे लरि गैला पृथिवी कम्पाय।
अनेक सम्भृत धरि सैन्यसब आग करि अलेख नृपति चलियाय ॥ ६७७६
गोमती नदीर तीरे रत्नर मन्दिर बीरे सजाइलन्त परम प्रारम्भे।
सुवर्णर काठि कामि रुहली माण्डली जेठी मणिमय मरकत स्तम्भे ॥
फटिके गठित बार हीरे बिरचित द्वार बान्धिला अनेक कान्थिबली।
सुवर्ण आसन पारि थैला सबे शारी शारी रजते रञ्जिला यज्ञस्थली ॥ ७७
अनेक योजन जुरि यज्ञर-निर्म्मिया पुरी नमिला रामर दुइ पाव।
बशिष्ठ प्रमुख्ये ऋषि हरिषे करिया आग रामे पाचे चालिलन्त गाव ॥
शिरर उपर करि धवल छत्रेक धरि 'यान्त हनुमन्त चिरञ्जीव।
राघवर दुइ पाशे चामरे ढोलन्ते आछे अभिनव लङ्केश सुग्रीव ॥ ७८
अलेख नृपतिचय बेढ़ि करे जय जय प्रणामि रामक नम्र भावे।
चपय पढ़य भाट बिद्याधरे करे नाट गुणगीत गन्धर्ब्ब योगावे ॥
कौशल्या प्रमुख्ये यत राजमाव चलियान्त असंख्य सुन्दरी याइ बेढ़ि।
अयोध्यार नरनारी उभति चलिल शारी रङ्गे खेले सुमङ्गल खेरि ॥ ७९
एहिमते यज्ञभूमि प्रवेश भैलन्त प्रभु रघुकुलतिलक मुरारी।
यतेक परम ऋषि सादरे बैसाइला आनि आसन पारिया शारी शारी ॥
ब्रह्मा बिष्णु महेश्वर आन देव निरन्तर रामर सभाक आइला चलि।
परम सादरे रामे करिला सेवलि शिरे आसने बैसाइला कृताञ्जलि ॥ ६७८०
पातालर यत नाग बासुकिक करि आग प्रबेशिला करिया उत्सवे।
आधारि पकाया सर्पे एकभिति बसिलन्त राघवक परम गौरवे ॥

शिरोधार्य कर वीर लक्ष्मण धरती को कम्पित करते हुए वेग से चल पड़े। अनेक संभार लिये, सेनाओ को आगे चलाकर अनगिनत राजा चल पड़े ॥ ६७७६ ॥ वीर लक्ष्मण ने गोमती के तट पर बड़े समारोह से रत्न का मन्दिर बनवाया, जिसमें सोने की छड़ें, तीर-कमान और धरहरे लगे थे। मरकत मणि के खम्भे थे; जिसके खपच्चे स्फटिक के बने थे, द्वार हीरों से विरचित थे। अनेक बरामदे बनाये। सोने के आसन पंक्तियों में बिछाकर रखे, और यज्ञभूमि को चाँदी से मंडित कर दिया ॥ ७७ ॥ अनेक योजन के विस्तार में यज्ञ की पुरी निर्माण कर रामचन्द्र के दोनो चरणों में प्रणाम किया। वशिष्ठ आदि ऋषियों को हर्ष से आगे कर उनके पीछे-पीछे रामचन्द्र चल पड़े। उनके सिर पर श्वेत छत्र धारण कर चिरजीवी हनुमान चले। 'रामचन्द्र के दोनो ओर लंकाराज विभीषण और सुग्रीव अभिनव चँवर डुलाते चले ॥ ७८ ॥ अनगिनत राजे रामचन्द्र को नम्रतापूर्वक प्रणाम कर घेरे हुए 'जय, जय' नाद कर रहे थे। भाट चौपाई-श्लोक पढ़ रहे थे, विद्याधर अभिनय कर रहे थे, गंधर्व गुण-गीत गा रहे थे। कौशल्या समेत राजमाताएँ अनेक सुन्दरियों से घिरी हुई चल रही थीं। अयोध्या के नर-नारी पंक्तियों में बड़े आनन्द से सुमंगल खेल खेलते हुए चल पड़े ॥ ७९ ॥ इसी प्रकार रघुकुलतिलक मुरारी प्रभु ने यज्ञभूमि में प्रवेश किया। जितने परम ऋषिगण थे, उन सबको सादर पंक्तियों में आसन लगाकर स्वागत कर बिठाया। ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर तथा दूसरे देवगण निरन्तर राम की सभा में चले आये। परम आदर से राम ने उन्हें सिर झुकाकर प्रणाम किया और हाथ जोड़ उन्हें आसन पर बिठाया ॥ ६७८० ॥ पाताल के जितने नाग थे, वासुकि को आगे कर सभी ने उत्सव में प्रवेश किया। सभी सर्प रामचन्द्र का गौरव बढ़ाते हुए गेंडुल मारकर एक ओर बैठ गये। जितने राज-राजेश्वर आये थे, सभी रामचन्द्र की आज्ञा पालन करते हुए सभा

यत राज-राजेश्वर आज्ञा पालि राघवर वहले वसिला सभा पाति ।
यज्ञ आरम्भिवो आवे वोलन्त सादरे रामे पुरोहित वशिष्ठक माति ।। ६७८१

दुलड़ी

वशिष्ठ वदति शुना रघुपति मिलिल परम चिन्ता ।
केने यज्ञभूमि प्रवेशिबा तुमि लगति नाहिके सीता ।।
आवे कि करिवा समार्य्ये यजिवा शास्त्रत एहिसे न्याय ।
शुनि रघुनाथ चपराइला माथ नपान्त चिन्ति उपाय ।। ६७८२
राघवर चित बुजिया इङ्गित भकत भरत काजि ।
प्रवन्धि यतने योगाइले तखने सुवर्णर सीता साजि ।।
भरत भ्रातृक प्रशंसिया रामे दृष्टि दिला प्रतिमात ।
सेहि मुख आखि सम्यके जानकी केवले नाहिके मात ।। ८३
सीताक सुमरि निश्वास तेजिल लोतक वहन्ते आछे ।
वशिष्ठे बुजाइल राघव जुराइल कुशहस्त भैल पाचे ।।
सीतार प्रतिमा समे यज्ञशाला प्रवेशिला रघुपति ।
शुभक्षणे पाचे यज्ञ आरम्भिला बशिष्ठर अनुमति ।। ८४
ऋषिसवे वेद पढ़े अविच्छेद अपेस्वरासवे नाचे ।
त्रैलोक्यर वाद्य एक ठाइ वाजे यज्ञ मण्डपर काछे ।।
प्रजार घञ्चाल शवद आस्फाल उथलिल महारोल ।
पृथिवी जुरिल आकाश पूरिल लङ्घिल स्वर्गर कोल ।। ८५
नमो रघुपति चरणे सम्प्रति प्रणति करो सर्व्वथा ।
कृष्णर किङ्करे रचिला शङ्करे उत्तराकाण्डर कथा ।।

लगा, फैलकर वैठ गये । रामचन्द्र ने पुरोहित वशिष्ठ को वुलाकर आदर से कहा—अव यज्ञ आरंभ किया जाय ।। ६७८१ ।।

वशिष्ठ ने कहा, रघुपति सुनो, वड़ी चिन्ता हो आयी है । तुम्हारे संग सीता नही हैं, तो तुम यज्ञभूमि में किस प्रकार प्रवेश करोगे ? शास्त्र का तो यही विधान है कि भार्या सहित ही यजन करना चाहिए । यह सुनकर रामचन्द्र ने सिर पीट लिया । विचार करने पर भी उन्हें कोई उपाय सूझ नही पड़ा ।। ६७८२ ।। राघव के चित्त का संकेत समझकर कर्मशील राम के भक्त भरत ने उन्हें प्रयत्नपूर्वक सान्त्वना देकर उसी समय सुवर्ण की सीता वनवाकर जुटा दी । भाई भरत की प्रशंसा कर रामचन्द्र ने प्रतिमा पर दृष्टि डाली । वही मुख, वही आँखें, मानो सम्पूर्ण रूप से जानकी ही थी, केवल बोलती न थीं ।। ८३ ।। रामचन्द्र ने सीता का स्मरण कर लम्बी साँस ली । उनकी आँखों से आँसू वह रहे थे । वशिष्ठ ने उन्हें समझाया, राघव शान्त हुए । इसके पश्चात् हाथ में कुश ले रघुपति ने सीता की प्रतिमा समेत यज्ञशाला में प्रवेश किया तथा वशिष्ठ की अनुमति से शुभ क्षण में यज्ञ प्रारम्भ किया ।। ८४ ।। सभी ऋषि लगातार वेद-पाठ करने लगे, अप्सराएं नाचने लगी, तीनो लोकों के वाद्य यज्ञमंडप के समीप एकत्रित हो वजने लगे । प्रजाजनो की रेल-पेल के कोलाहल का प्रचंड नाद उमड़ पड़ा, जिससे धरती पूर्ण हो गयी, आकाश भर गया और वह नाद स्वर्गलोक को पार कर गया ।। ८५ ।। रघुपति को नमस्कार है, आपके चरणों मे सर्वथा प्रणति करता हूँ । कृष्ण-किंकर शंकर ने यह उत्तरकाण्ड की कथा रचना की है । बुधजनो, सुनो । यह

शुना बुधजन केदिन जीवन मिलिबे घोर मरण।
अद्यापि नेदेखा नाइ आर रक्षा रामत लैयो शरण ॥ ८६
देवरो दुर्ल्लभ मनुष्य जन्मक जानि व्यर्थ करा किक।
मूढ़ जने येन नजानि विकय काचर मोले माणिक ॥
घोर परलोक तैते केन हौक तार चिन्तियोक काम।
एभो हेन करा अपोन उद्धारा डाकि बोला राम राम ॥ ६७८७

पद

शुनियोक राघवर यज्ञर महिमा * सुवर्ण रजत पात्र तार नाहि सीमा
बशिष्ठ प्रमुख्ये ऋषि मन्त्र उच्चारन्त * आरम्भिला यज्ञ राम प्रभु भगवन्त ६७८८
येइ येइ देवक पूजन्त मन्त्रे माति * आपुनि लवन्त सेइ देवे हात पाति
ब्रह्मा महेश्वरो पूजिलन्त येन नीति * भैला दुयो पूजा पाइ परम तृपिति ८९
सभाते आछन्त चतुर्भुज नारायण * चौपाशे उपासि पारिषद यतजन
शङ्ख चक्र गदा पद्म आछे चारि हाते * अर्च्चिलन्त रघुपति आति प्रणिपाते ६७९०
पाद्य अर्घ आचमनि मधुपर्क दाने * पूजिलन्त माधवक बिबिध बिधाने
दिलन्त नैवेद्य रत्न पात्र असंख्यात * आपुनि लैलन्त हरि मेलि चारि हात ६७९१
लक्षे लक्षे कराइलन्त बह्नित आहुति * त्रिदशे तृपिति भैला भुञ्जिया भुकुति
बासुकि प्रमुख्ये पातालर यत नाग * यथायोग्य पाइला सबे बलि बण्टा भाग ९२
सभात आछन्त यत ऋषि रङ्गमने * सबारो तुषिला मन बसन भूषणे
हय हस्ती रथ दोला दासी दास ग्राम * यार येन मन पूरि दिला प्रभु राम ९३

जीवन कितने दिनों का है, घोर मरण ही मिलेगा। अब तक देख नहीं रहे हो, अब बचने का उपाय नही है, राम की शरण लो ॥ ८६ ॥ देव-दुर्लभ मनुष्य-जन्म को जान-बूझकर किसलिए व्यर्थ कर रहे हो ? जैसे मूढजन न जानकर काँच के मोल मणि बेच देते हैं। घोर परलोक से कैसे पार जाया जा सके, इस विषय का चिन्तन करो। अब भी ऐसा करो कि अपना उद्धार हो। (इसके लिए) पुकार-पुकार कर राम-राम कहो ॥ ६७८७ ॥

रामचन्द्र के यज्ञ की महिमा सुनें। वहाँ सोने-चाँदी के इतने पात्र थे, जिनकी कोई सीमा न थी। वशिष्ठ आदि ऋषि मंत्रों का उच्चारण कर रहे थे। इस प्रकार प्रभु भगवान राम ने यज्ञ प्रारंभ किया ॥६७८८॥ मंत्रपाठ कर जिस देवता का आवाहन कर रामचन्द्र पूजा करते थे, वही स्वयं हाथ बढ़ाकर ले लेता था। रामचन्द्र ने रीति के अनुसार ब्रह्मा-महेश्वर का पूजन किया। दोनो ही पूजा पाकर परम तृप्त हो गये ॥ ८९ ॥ उस सभा में चतुर्भुज नारायण भी उपस्थित थे। उनके चारों ओर उनके सारे पारिषद उपासना कर रहे थे। उनके चार हाथों में शंख, चक्र, गदा, पद्म थे। रामचन्द्र ने प्रणिपात करते हुए उनकी अर्चना की ॥ ६७९० ॥ पाद्य, अर्घ्य, आचमन, मधुपर्क देकर (विष्णु रूपी) माधव को विविध विधान से पूजा की। असंख्य रत्न-पात्रों में नैवेद्य चढाया। हरि ने अपना हाथ बढ़ाकर वह ग्रहण किया ॥ ६७९१ ॥ अग्नि मे लाखों आहुतियाँ दी। भोगों को भोगकर देवगण तृप्त हुए। बासुकि समेत पाताल के सभी नागों को भी यथोचित बलि का भाग मिला ॥ ९२ ॥ सभा में सभी ऋषि बड़े आनन्दचित्त से रह रहे थे। (रामचन्द्र ने) वस्त्र-आभूषण देकर उनका मन भी सन्तुष्ट किया। जो व्यक्ति जो वस्तु चाहता था, घोड़े, हाथी, रथ, पालकी, दास-दासी,

राघवे बोलन्त पाचे भरतक चाइ * धनक आक्रोश मोर नकरा भयाइ
ब्राह्मणके दिया दान सर्व्वस्वके टाङ्कि * येइ यिवा खोजे दिबा नर्थवाहा बाङ्कि ९४
असंख्यात मन्त्री पात्र पाञ्चि दिला सङ्गे * भरते लागिला दान दिबे महारङ्गे
अलङ्कार वस्त्र सुवर्णर जारि खुरि * अविच्छेद देन्त ब्राह्मणर मन पूरि ९५
वरिषेक माने वीरे वरिषिले रत्न * दरिद्र प्राणीर गुचिलेक धने यत्न
याचन्तो नलवें धन नलागय बुलि * निबे नपारन्त रत्न बोजा बान्धि तुलि ९६
अलेख भाण्डार राघवर धनधान * सुवर्ण रजत रत्न असंख्य प्रमाण
अविच्छेदे दिला दान वीरे वरिषेक * निबे नुवारिल लक्ष भागरो भागेक ९७
यत चिरञ्जीव सब सर्व्वज्ञ यतेक * रामर यज्ञक करे प्रशंसा अनेक
अन्ये अन्ये सम्भाषन्त यत महामुनि * हेन अविच्छेद दान नतो कर्णे शुनि ९८
इन्द्र आदि करि यत दश दिगपाल * तेसम्बो बुलिला यत यज्ञ भाल भाल
सिसवर दान नुहि इहाक उपाम * धन्य अश्वमेध धन्य दाशरथि राम ९९
त्रैलोक्यर लोक राघवर सभासद * यज्ञर महिमा देखि नयन तवध
असंख्य प्रशंसा करे राघवक चाइ * एहिमते आनन्दे आछन्त रामराय ६८००
यज्ञर कथाक आवे थैलो एहिमाने * कुशर लवर गीत शुना विद्यमाने

लव-कुशर देशे-देशे रामायण-गान करि श्रीरामर यज्ञभूमि-गमन

वाल्मीकिर आज्ञा दुयो धरिया शिरत * रामायण गीत गाया भ्रमन्त राज्यत ६८०१

ग्राम आदि देकर सन्तुष्ट किया ॥ ९३ ॥ इसके पश्चात् रामचन्द्र ने भरत की ओर देखकर कहा— भाई, धन के बारे में मन में क्षोभ न करो। सर्वस्व न्योछावर कर ब्राह्मणों को दान करो। जो, जो कुछ माँगे, उसे देने में बाकी न रखना ॥ ९४ ॥ उन्होंने भरत के साथ असंख्य मंत्रियों और सामन्तों को भेज दिया। भरत बड़े ही आनंद से दान देने लगे। ब्राह्मणों की मनोवांछा पूरी कर आभूषण, वस्त्र, सोने के बर्तन आदि लगातार देने लगे ॥ ९५ ॥ लगभग एक वर्ष तक वीर भरत ने इतने रत्नों की वर्षा की, जिससे धन के प्रति दरिद्र व्यक्तियों की अभिलाषा मिट गयी। लोग लेने के लिए कहने पर 'नहीं चाहिए' कहकर नही लेते थे। वे बाँधकर बोझ बना उठाकर रत्न ले नही जा पाते थे ॥ ९६ ॥ अनगिनत सख्या में सोने, चाँदी, रत्न तथा धन-धान्य से रामचन्द्र के अनेक भडार भरे हुए थे। उन सबको वीर भरत ने लगातार एक वर्ष तक लगातार दान किया, लोग उसके लाख भाग का एक भाग भी ले नही जा सके ॥९७॥ जो चिरजीवी और सर्वज्ञ ऋषि आदि थे, वे राम के यज्ञ की अनेक प्रशंसा करने लगे। सभी महामुनि एक दूसरे से कहने लगे, ऐसे लगातार दान के बारे में कभी कान से सुना नहीं गया है ॥ ९८ ॥ इन्द्र आदि जितने दिग्पाल थे, वे कहने लगे कि जितने उत्तम-उत्तम यज्ञ हुए, उन सबके दान की तुलना इससे नही हो सकती। अश्वमेध यज्ञ धन्य है। दाशरथि राम धन्य है ॥ ९९ ॥ तीनो लोको के लोग रामचन्द्र के सभासद बने थे। यज्ञ की महिमा देखकर उनके नयन स्तब्ध हो गये। वे राघव को देखकर अनेक प्रकार से प्रशंसा करने लगे। इसी प्रकार राजा रामचन्द्र आनन्दपूर्वक रह रहे थे ॥ ६८०० ॥ यज्ञ की कथा अब इतने मे ही छोड़ता हूँ। अब लव-कुश के गीत सुनो।

देश-देश में रामायण-गान करते हुए लव-कुश का श्रीराम की यज्ञभूमि में पहुँचना

लव-कुश दोनो भाई वाल्मीकि की आज्ञा शिरोधार्य कर राज्य में रामायण-गीत

कर्णर अमृत रस रामर चरित्र * दुयो रङ्गे गावन्त लोकर रञ्जि चित्त
परम गम्भीर धीर सुबोध सुथिर * अनुक्रमे पाइला पाछे गोमतीर तीर २
रामर कटके आसि भैलन्त प्रवेश * हाते ताल धरि गीत गावन्त बिशेष
यन्त्र सब बजान्त शुनन्ते मनोहर * एरि भात पानी प्रजा शुने निरन्तर ३
रामर जन्मरे परा रावणर बध * रामायण शुनि सबे नयन तबध
कोकिलर स्वरत अमृतर करे वृष्टि * चावे चतुर्भिति नरनारी एकदृष्टि ४
गुणे गीते रूपे आलि प्रजा भैल भोल * परम नागरी नारीगण नेरे कोल
अमृत मधुर नाद शुनिते सुबेश * शुनि मोहे चक्षु केहो नकरे निमेष ५
कुशर लवर गीते मोहे सर्ब्बजन * आछे माने सर्ब्बस्व दो भाइक दिबे मन
बस्त्र अलङ्कार केहो याचे पञ्चामृत * पञ्चिश भोजने देइ भोजन सम्भृत ६
नलागय बुलि देन्त हासि समिधान * फल मूल आहार बाकलि परिधान
आमि बनबासीर धनत कोन काज * देखिया चरित्र आचरित सब राज ७
आनन्दे भरिल हिया हरषित प्राण * रामर आगत पात्र मन्त्री देइ जान
कँरवा दुइ गुटि शिशु आति सुकुमार * गावै आदि अन्ते प्रभु चरित्र तोमार ८
स्वर्ग मर्त्य पातालर गीताल यतेक * तोमार प्रसादे प्रभु देखिलो प्रत्येक
एकोवे पुरुषे नलो शुनो हेन गीत * कोकिलर स्वर येन बरिषे अमृत ९
शुनि रामे दिला लक्ष्मणक समिधान * दूत पठाइ शिशु दुइक इठावक आन
शिखिलेक गीत कँत काहार कुमार * केनमते गावे चाओं चरित्र आमार ६८१०

गाते हुए घूम रहे थे ।। ६८०१ ।। राम का चरित्र कानों के लिए अमृत-रस है। लव-कुश दोनो, लोगों के चित्त को रंजित करते हुए बड़ी प्रसन्नता से गा रहे थे। वे परम गंभीर, धीर, सुबोध, स्थिरचित्त बालक धीरे-धीरे गोमती के तट पर पहुँचे ।। २ ।। वे राम की सेना के बीच आकर प्रविष्ट हो गये और हाथ से ताल वाले वाद्य बजाकर विशेष गीत गाने लगे। वे जो यंत्र बजा रहे थे, वे सुनने में बड़े मनोहर थे। सारी प्रजा भात-पानी (खाना-पीना) छोड़ निरन्तर सुनने लगी ।। ३ ।। राम के जन्म से लेकर रावण-वध तक की रामायण-कथा सुनकर सबकी आँखें स्तब्ध हो गयी। वे, मानो कोकिल के स्वरों से अमृत-वर्षा कर रहे थे। चारों ओर के सभी नर-नारी एकटक उनकी ओर देख रहे थे ।। ४ ।। उनके गुण, गीत, रूप से प्रजा विभोर हो उठी। परम नागरी सुन्दरी नारियाँ उनके पास से हटती न थी। उनके अमृतमय मधुर नाद सुनकर, और सुन्दर वेश देखकर सबकी आँखे ऐसी मोहित हो गयी कि पलक झपकाना भी छोड़ दिया ।। ५ ।। सभी जनों को लव-कुश के गीतों ने मोहित कर लिया। उनकी इच्छा हुई कि अपने पास जो कुछ है, दोनो भाइयों को दे डालें। कोई उन्हें वस्त्र-आभूषण देना चाहता था, तो कोई पंचामृत। कोई पचीसों व्यंजनों से युक्त भोजन-सभार देना चाहता था ।। ६ ।। वे दोनो, 'नहीं चाहिए' कहकर उनका निराकरण कर देते। कहते— हमारा भोजन फल-मूल है, पहनावा वल्कल है, हम वन-वासियों के लिए भला धन की क्या आवश्यकता ? उनका ऐसा चरित्र देख सभी राजे विस्मित हो उठे ।। ७ ।। उनके हृदय आनन्द से भर उठे, प्राण हर्षित हो गये, राम के सम्मुख जाकर मन्त्री-सामन्त सभी सूचना देने लगे। (वे कहने लगे—) न जाने ये दोनो अति सुकुमार बच्चे कहाँ के हैं। प्रभु, आपका चरित्र आदि से अन्त तक गान कर रहे हैं ।। ८ ।। स्वर्ग-मर्त्य-पाताल के जितने गीत-गायक हैं; प्रभु, आपके प्रसाद से प्रत्येक को हमने देखा, परन्तु किसी पीढ़ी में ऐसा गीत नहीं सुना है। ये कोकिल के स्वर-सा अमृत बरसाते है ।। ९ ।। यह सुनकर रामचन्द्र ने लक्ष्मण से बताया, दूत भेजकर इन

रामर वचन शुनि सुमित्रार सुत * वाछि वाछि पाञ्चिला चतुर चारि दूत
गावन्ते आछन्त गीत रङ्गे दुयो भाइ * निवारिला दूते याइ आदेश बोलाइ ६८११
राजार आदेश पालि चलियो त्वरित * राज समाजक याइ दुयो गायो गीत
देखिवाक इच्छा आति करन्त राघव * शुनिया आनन्दे लरि गैल कुश लव १२
रूपे अनुपम आति सीतार सन्तति * गजमति गमन गम्भीर धीर मति
चलि यान्त राघवर समीपक प्रति * वेढ़ि नरनारीगणे चलिल उभति १३
वसि आछे राम रत्नमय सिंहासने * उपासन्त शत्रुघ्न भरत लक्ष्मणे
अशेष नृपति नम्रभावे तुति करे * श्वेतछत्र धरि ढोले धवल चामरे १४
गालव गौतम शान्त सुमन्त कार्त्तिक * अत्रि विश्वामित्र भृगु अगस्ति आस्तिक
पुलस्ति पुलह वसु वशिष्ठ प्रमुखे * आछन्त कौतुके वसि एकपाशे सुखे १५
विभीषण सुग्रीव जाम्ववन्त हनुमन्त * नल नील सुषेण वानर अपर्य्यन्त
लक्ष लक्ष वानर भालुक कोटि कोटि * चौपाशे उपासे सव वेढ़ि नट नटी १६
बावे विद्याधरे अपेस्वरा करे नाट * गावे गीत गन्धर्व्वे चपय पढ़े भाट
सिद्धमुनि आशंसिया कुसुम सिञ्चरे * वसिया आछन्त रामचन्द्र चमत्कारे १७
रत्नमय सिंहासने करन्त प्रकाश * चारु श्याम तनु ताते शोभे पीतवास
शिर छत्राकृति केश नील आकुञ्चित * सुसम ललाटे ज्वले तिलक ललित १८
अलका पङ्क्ति रत्न किरीटि उज्ज्वल * रुचिकर कर्णे मणि मकर कुण्डल
भ्रुव सुवलित नेत्र पङ्कज पराय * सुवेश नासिका ओठ कण्ठ कटि काय १९

दोनो शिशुओं को यहाँ ले आओ। उन्होंने यह गीत कहाँ से सीखा ? ये किसके कुमार हैं ? ये हमारे चरित्र को किस प्रकार गाते हैं ? देखें ।। ६८१० ।। राम के वचन सुनकर सुमित्रा-नन्दन ने चुन-चुनकर चार चतुर दूतों को भेजा। दोनो भाई बड़े रंग में गीत गा रहे थे। दूतो ने वहाँ पहुँचकर आदेश सुनाकर गाने से रोका ।। ६८११ ।। कहा— तुम लोग राजा का आदेश मानकर तुरंत चलो। राजसभा में चलकर दोनो, गीत गाना। रामचन्द्र तुम्हे देखने की वड़ी इच्छा करते हैं। यह सुनकर लव-कुश वहाँ आनन्दपूर्वक तेजी से चले ।। १२ ।। सीता के दोनो कुमार रूप में वड़े अनुपम थे। वे हाथी के समान चाल से चलते थे, गभीर, धीर मति वाले थे। वे रामचन्द्र के समीप चले आये, उन्हें घेरकर नर-नारीगण भी चले ।। १३ ।। रामचन्द्र रत्नमय सिंहासन पर वैठे हुए थे। भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न उनकी सेवा कर रहे थे। अनेक राजा विनम्रता से उनकी स्तुति कर रहे थे। श्वेत छत्र धारण कर धवल चँवर डुला रहे थे ।। १४ ।। गालव, गौतम, शान्त, सुमन्त, कार्तिक, अत्रि, विश्वामित्र, भृगु, अगस्त्य, आस्तिक, पुलस्त्य, पुलह, वसु, वशिष्ठ आदि मुनिगण कौतुक से सुखपूर्वक एक ओर वैठे थे ।। १५ ।। विभीषण, सुग्रीव, जाम्ववन्त, हनुमान, नल, नील, सुषेण आदि लाखों की संख्या में अनगिनत वानर, करोड़ों भालू, नट-नटियाँ उन्हें चारो ओर से घेरे हुए थी ।। १६ ।। विद्याधर वाजे वजा रहे थे, अप्सराएँ नाटक कर रही थी, गंधर्व गीत गा रहे थे, भाट चौपाई-श्लोक पढ रहे थे। सिद्ध मुनिगण प्रशंसा करते हुए फूल विखेरते थे, रामचन्द्र विस्मय का संचार करते हुए वैठे थे ।।१७।। वे रत्नमय सिंहासन पर वैठकर प्रकाशित कर रहे थे, उनका श्याम शरीर बड़ा ही सुन्दर था, जिस पर पीताम्वर शोभित हो रहा था। उनका सिर छत्राकार था, नीले केश घुंघराले थे, सुन्दर ललाट पर सुन्दर तिलक जगमगा रहा था ।। १८ ।। वालों की पंक्तियों में रत्न गुँथे थे, किरीट उज्ज्वल था, सुन्दर कानों में मणिमय मकर-कुण्डल थे। भौहें सुललित थी, नेत्र कमल जैसे थे, नाक, होंठ, कंठ, कमर, शरीर ब्रड़े सुन्दर थे ।। १९ ।। घने दाँत मोतियों की

निबिड़ दशन येन मुकुतार पान्ति * भुज युग केयूर कङ्कणे करे कान्ति
आरकत करय देखन्ते आति तुष्टि *सुदीर्घ आङ्गुलि ताते रत्नर आङ्गुष्टि ६८२०
मनोहर हिये मणि मुकुतार माला * कटित मेखला रत्ने चिकिमिकि ज्वाला
सुवलित उरु आरकत पदतल * रत्नर नूपुरे रञ्जे चरण कमल ६८२१
परम लावण्य मूर्त्तिमन्त कामदेव * सुरासुरे उपासि चौपाशे करे सेव
शारी शारी तुलि धरि आछे छत्रदण्ड * शरीरर कान्ति प्रकाशित सभाखण्ड २२
हेन चमत्कारे बसि आछन्त राघव * सेहि समयते प्रबेशिला कुश लव
नगरीया लोके आसि लगते उभति * देखि समज्यार प्रजा चावे सचकिति २३
राजार आदेशे दुयो सभामाजे उठि * प्रकाशे मेरुत येन चन्द्रमा दुगुटि
रामर समान श्याम तनुकरे कान्ति * सेहि थान नाक मुख शोभे दन्तपान्ति २४
पद्मपत्र सम सेहि आयतलोचन * रुचिकर कर्ण तेह्ल मधुर बचन
शिर छत्राकृति नील आकुञ्चित चुलि आजानुलम्बित बाहु सुदीर्घ आङ्गुलि २५
आरकत कर किशलय कम्बुगल * रामर सदृश दुइरो बाहु वक्षस्थल
सिंहबन्ध कन्ध कटि उरु करीकर * शिशु दुइक देखि आति आनन्द लोकर २६
परिल निजम प्रजा निरेखि आकृति * राघवक चाहावे शिशु दुइर भिति
नाइ भेद देखि रामे एरे एक काया * चिनन नयाय येन दर्पणर छाया २७
अन्यो अन्ये बोले किनो शिशु सुकुमार * सकले आकृति गति रामरे आकार
सेहि मुख आखि सुवलित हात पाव * इटो दुइरो कोननो सुवर्ण कुखि माव २८
येवे हन्ते नमैल बाकलि शिरधारी * रामरे तनय तेवे बुलिवाक पारि

पंक्ति जैसे थे। दोनो हाथ केयूर-कंकण से कान्तिमान थे। रक्तवर्ण हथेलियाँ देखते ही मन प्रसन्न हो जाता था। उनकी लम्बी अंगुलियो मे रत्न की अँगूठियाँ थीं ॥ ६८२० ॥ मनोहर हृदय पर मणि-मुक्ताओं की माला थी, कमर में रत्नो वाली मेखला जगमगा रही थी। उनकी जाँघे सुन्दर वलयित थी, चरण रक्त वर्ण थे, रत्नो के नूपुर उनके चरण-कमलों को रंजित कर रहे थे ॥ ६८२१ ॥ वे परम लावण्यमय मूर्तिमान कामदेव-जैसे थे। देव-असुर चारों ओर घेरे उपासना करते हुए सेवा कर रहे थे। वे पंक्तियो में छत्रदंड धारण किये खड़े थे, जिनके शरीर की कान्ति से सारी सभा शोभायमान हो रही थी ॥ २२ ॥ इस प्रकार विस्मय उपजाते हुए राघव बैठे हुए थे, उसी समय कुश और लव ने वहाँ प्रवेश किया। उनके साथ नगर के लोग आकर वहाँ सभासदों को देख बड़े विस्मित हुए ॥ २३ ॥ राजा के आदेश से दोनो, सभा में प्रविष्ट हुए और ऐसे प्रकाशित होने लगे, मानो मेरु पर दो चन्द्रमा हों। राम के जैसे उनके श्याम शरीर कान्तिमान थे, उनके ही जैसे नाक, मुख और दाँतों की पंक्तियाँ शोभायमान थी ॥ २४ ॥ उन्ही के जैसे पद्मपत्र-से आयत लोचन थे, कान सुन्दर थे, उनके वचन मधुर थे। मस्तक छत्राकार, बाल नीले-घुंघराले, हाथ, जाँघ तक लम्बे, अंगुलियाँ लम्बी-लम्बी थीं ॥ २५ ॥ हथेलियाँ किसलय जैसे लाल, गले शंख की भाँति तथा बाँह और वक्षस्थल राम के जैसे ही थे। कंधे सिंहों जैसे, कमर और जाँघे हाथी की सूँड़ के समान थीं, उन दोनो शिशुओं को देख लोगों को बड़ा आनन्द हुआ ॥ २६ ॥ उनकी आकृति देखकर प्रजा स्तब्ध रह गयी। राम को देख, उन दोनो शिशुओं की ओर देखने लगी। राम के और इनके शरीर एक ही जैसे है, कोई अन्तर नही। दर्पण के प्रतिबिम्ब की भाँति ये पहचाने नही जाते ॥ २७ ॥ एक दूसरे से कहने लगे, ये सुकुमार शिशु कैसे हैं? इनकी सारी आकृति, गति राम की जैसी ही है। वैसा ही मुख-आँखें, वैसे ही सुन्दर वलयित हाथ-पैर हैं। इन दोनो को धारण करनेवाली स्वर्ण-गर्भा माता कौन है? ॥ २८ ॥ यदि ये वल्कल

हनुमन्त शत्रुघन लक्ष्मण भरत * परम बिस्मय कथा कहन्त कर्णत २९
बनवासे गैला सीता शान्ती गर्भवती * ताहाने तनय योनो रामर सन्तति
सीता बिने राघवर भार्य्या नाहि आन * केनमते इटो दुइ रामरे समान ६८३०
एहिमते समज्याये करे काणाकाणि * शिशु दुइको देखि रघुबंश शिरोमणि
आनन्दे नधरे हिया शिहरे शरीर * महास्नेहे स्रवे दुयो नयनर नीर ६८३१
गुणत मनत रामे किनो बिपर्य्यय * दु दुइको देखिया केने आनन्द हृदय
अल्प बयसर शिशु दुयो महागुणी * हेन रूपवन्त ऋषिसुत नतो शुनि ३२
पाचे रामचन्द्रे दुइको बुलिला बचन * शुनि आछो तुमि दुइयो परम गायन
जानिलो गीतते तुमि दुइयो सुशिक्षित * केन कथा रामायण शुनो गावा गीत ६८३३

लव-कुशर श्रीरामर सभात रामायण-गान

शुनि पाचे रामर आदेश दुयो भाइ * दिला राग पुरि रङ्गे पञ्चम उच्छाइ
तार घोर मन्द्र नादे दुयो गीत गावे * एकजने ताल आउर जने मन्त्र बावे ६८३४
प्रथमे धरिला आदिकाण्ड रामायण * कैला सूर्य्यबंशी येन येन राजागण
इक्ष्वाकु काकुत्स्थ रघु अज नृपवर * भैला दशरथ राजा सूर्य्यबंशधर ३५
बीर्य्ये विष्णु सम सब श्रमे महेश्वर * क्षमाये धरणी धैर्य्य गम्भीरे सागर
प्रतापत आदित्य क्रोधत येन यम * नाहि नुपजिबे राजा दशरथ सम ३६

और सिर पर जटा धारण न किये होते, तो इन्हें राम के पुत्र ही कहा जा सकता था। हनुमान, शत्रुघ्न, लक्ष्मण, भरत आदि एक दूसरे के कान में यह परम विस्मय की बात कहने लगे ॥ २९ ॥ सती सीता गर्भवती स्थिति में वनवास को गयी है, यदि उन्हीं के पुत्र हैं तब तो राम की ही सन्तान हैं। सीता के सिवा राघव की अन्य कोई भार्या नही। ये दोनो राम के ही जैसे कैसे हुए ? ॥ ६८३० ॥ इसी तरह लोग आपस में कानाफूसी कर रहे थे कि ये दोनो शिशु रघुवंश-शिरोमणि दिखाई देते है। उनके हृदय में आनन्द समाता नहीं था, शरीर रोमांचित हो रहे थे, प्रत्येक की दोनो आँखों से महान् स्नेह के कारण आँसू बह रहे थे ॥ ६८३१ ॥ रामचन्द्र मन में विचार कर रहे थे, यह कैसी अनहोनी वात है ? इन दोनो को देखकर मेरे हृदय में आनन्द क्यों हो रहा है ? ये अल्पवय वाले दोनो शिशु महागुणी हैं। ऐसे रूपवन्त ऋषि-पुत्रों के बारे मे तो कहीं नही सुना है ॥ ३२ ॥ इसके पश्चात् रामचन्द्र ने कहा, हमने सुना है कि तुम दोनो बड़े उत्तम गायक हो। जान गया कि गीत मे तुम दोनो सुशिक्षित हो। रामायण की कथा कैसी है ? तुम गीत गाओ, मैं सुनूँ ॥ ६८३३ ॥

श्रीराम की सभा में लव-कुश का रामायण-गान करना

इसके पश्चात् राम का आदेश सुनकर दोनो भाइयों ने बड़े आनन्द से पंचम स्वर से रागिनी छेड़ दी। तार, घोर, मन्द्र नाद से दोनो, गीत गाने लगे। एक, ताल बजाता था; दूसरा, यंत्र बजाता था ॥६८३४॥ पहले उन दोनो ने आदिकाण्ड रामायण-गान शुरू किया। सूर्यवशी जो-जो राजा हुए, उनका वर्णन किया। इक्ष्वाकु, काकुत्स्थ, रघु, अज आदि नृप-श्रेष्ठों के पश्चात् राजा दशरथ सूर्यवंशधर हुए ॥ ३५ ॥ राजा दशरथ वीर्य में विष्णु-जैसे; सभी श्रमों में महेश्वर-जैसे, क्षमा में धरती-जैसे और गाम्भीर्य में सागर-जैसे थे। वे प्रताप में आदित्य, क्रोध में यमराज-जैसे थे। राजा दशरथ के जैसा ससार मे कोई राजा नही है, और न होगा ॥ ३६ ॥ उनके तीन पटरानियाँ,

शचीत अधिक तान तिनि पटेश्वरी * कौशल्या सुमित्रा आरु कैकेयी सुन्दरी
तिनित भैलन्त पाचे चारि पुत्र जात * ज्येष्ठ रामचन्द्र जात भैला कौशल्यात ३७
कैकेयीत भैलन्त भरत उतपन * सुमित्रात लक्ष्मण कनिष्ठ शत्रुघन
जगतरे जनक सम्यके श्रीराम * संसारत याक गुणे नाहिके उपाम ३८
सुबिनीत भरत लक्ष्मण शत्रुघने * करन्त भकति निते ज्येष्ठर चरणे
येन नारायण राम गम्भीर सागर * भैलन्त प्रदीप प्रभु काकुत्स्थ बंशर ३९
परम पुरुष सन्त शीतल स्वभाव * भैला लोकरञ्जन प्रजार बाप माव
पाइब कोनजने तान महिमार पार * गावँ लव-कुशे आदिकाण्ड कथा सार ६८४०
कोकिलर कण्ठे गावे ताले माने भेदि * शुनन्त समाजे आन भिति चित्तनेदि
रामर चरित्र गीत अमृत परम * कर्णभरि शुनें प्रजा परिया निजम ६८४१
किबा स्वपनते किबा शुनन्त सचेते * किबा पृथिवीत किबा आचन्त स्वर्गते
क्षुधा तृष्णा नालागे नाहिके एको ज्ञान * शिशु दुइरो गीतते लागिल येन ध्यान ४२
शुना निरन्तरे सबे रामायण पद * याहार कीर्त्तने तरि संसार आपद
कलित सदगति नाइ बिने रामनाम * शङ्करे रचिला डाकि बोला राम राम ६८४३

दुलड़ी

शिशु दुइर गीत परम अमृत सम्यके रामे शुनिया ।
किबा ये दिबन्त किबा नेदिबन्त आनन्दे नधरे हिया ॥
मनत सन्तोषे भरत भ्रातृक बुलिला माति यतने ।
षाठि कोटि टङ्का सुवर्ण आनिया इ दुइक दिया एखने ॥ ६८४४

कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी शची से अधिक सुन्दर थी । उन तीनो से आगे चलकर चार पुत्र उत्पन्न हुए । बड़े पुत्र रामचन्द्र कौशल्या से उत्पन्न हुए ॥ ३७ ॥ कैकेयी से भरत उत्पन्न हुए, सुमित्रा से लक्ष्मण और छोटे भाई शत्रुघ्न हुए । श्रीराम वस्तुत: जगत के जनक थे । संसार में जिनके गुणों की कोई तुलना नहीं थी ॥ ३८ ॥ सुविनीत भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न तीनो नित्य बड़े भाई के चरणो में भक्ति किया करते थे। रामचन्द्र, नारायण की भाँति गांभीर्य में सागर-जैसे थे । वे प्रभु काकुत्स्थ के वंश का प्रदीप बने ॥ ३९ ॥ वे परम पुरुष, संत-शीतल-स्वभाव वाले थे । वे लोकरंजक, प्रजा के माँ-बाप बने । उनकी महिमा का पार कौन पा सकता है ? लव-कुश आदि-काण्ड का कथा-सार गान करने लगे ॥ ६८४० ॥ ताल-लय से पूर्ण वे कोकिल-जैसे मधुर स्वर से गान कर रहे थे । दूसरी ओर ध्यान न देकर सारा समाज सुनने लगा । राम का चरित्र-गीत परम अमृत है, प्रजा उसे कान भरकर नीरव हो सुन रही थी ॥ ६८४१ ॥ उन्हें लगता था कि वे स्वप्न में सुन रहे है या सचेत होकर ? वे पृथ्वी पर हैं या स्वर्ग मे ? उन्हें न भूख लगती थी न प्यास, और न कोई ज्ञान ही था । उन दोनो शिशुओं के गीत में ही सबका ध्यान लगा हुआ था ॥ ४२ ॥ जिसके कीर्तन से सब प्रकार संसार के कष्टों से उद्धार होता है । ऐसा रामायण-पद सब लोग निरन्तर सुनो । राम-नाम के बिना कलिकाल में सद्गति नही मिलती । इसे शंकर ने रचा है । पुकारकर 'राम, राम' कहो ॥ ६८४३ ॥

दोनो शिशुओं का परम अमृत-जैसा गीत सम्यक रूप से सुनकर रामचन्द्र के हृदय में आनन्द समाता न था, वे क्या दे, क्या न दें सोचने लगे । मन मे सन्तुष्ट हो भाई भरत को बड़े यत्न से बुलाकर कहा— साठ करोड़ स्वर्ण-मुद्राएँ लाकर दोनो को अभी दे

दासी दास देश आसन अशेष बस्त्र अलङ्कारे मण्डि।
दियोक सत्वरे भरत कुमारे आमार वाक्य नखण्डि ॥
शुनिया भरते भण्डारर हन्ते अनाइला तेखने धन।
यतेक बुलिला ततोधिक दिला राघवर पूरि मन ॥ ४५
देखि दुयो शिशु हासिया बोलन्त आत नाहि प्रयोजन।
आमि वनबासी बसन बाकलि फलेसे निज भोजन ॥
आपुनि उदास इटो दासी दास कि करिबो बहुधन।
शिशु दुइर बाणी शुनि सबे प्राणी परम बिस्मय मन ॥ ४६
तासम्बार थति देखि रघुपति पूछन्ते स्नेहे कथाक।
काहार कबिता शिखिलेक गीत कोनबा गुरु तोमार ॥
आकृति सुन्दर काहार कुमार थाकियो कमन दिश।
शुनि कुश लवे बुलिला विनये आमि बाल्मीकिर शिष्य ॥ ४७
ताहान कबिता रामायण गीत शिखिलो शास्त्र बिचारि।
ऋषिर सन्मते समस्ते देशते हरिषे फुरो प्रचारि ॥
शुनि राम देवे आदरिला दुइको साधु साधु बुलि तथा।
यथात थाकिया तैर परा गावा शुनो रामायण कथा ॥ ४८
रामर आदेश शुनि कुश लवे रङ्गे ताल यन्त्र ठुकि।
धरिलन्त गीत रामर चरित शुनन्ते लोक उत्सुकि ॥
शुना पाचकथा दशरथ तथा आछन्त राजार घागी।
यज्ञक राखिवे ऋषि विश्वामित्रे निजन्त रामक मागी ॥ ४९
राजाये नेदन्त ऋषिये नेरन्त निलन्त आति आक्रोशे।
राम लक्ष्मणक धनुर्ब्बेद दिला शिखिला दुयो सन्तोषे ॥

दो ॥ ६८४४ ॥ मेरी बात का खंडन न कर दास-दासियाँ, भूमि, अनेक आसन, वस्त्र-आभूषण आदि से मंडित कर इन्हे शीघ्र दे दो। यह सुनकर भरत ने उसी क्षण भंडार से धन मँगवाया और रामचन्द्र का मन रखते हुए उन्होंने जितना कहा था, उससे अधिक दिया ॥ ४५ ॥ वह देखकर दोनो बालकों ने हँसकर कहा, इसकी कोई आवश्यकता नही है। हम वनवासी हैं, वल्कल पहनते हैं, फल ही हमारा नित्य भोजन है। हम स्वयं उदासीन हैं, इन दास-दासियों, बहुत धन से क्या करेंगे ? दोनो शिशुओ की वाणी सुनकर सभी लोग मन में परम विस्मित हो उठे ॥ ४६ ॥ उन सबकी मति देखकर रामचन्द्र ने स्नेह से यह बात पूछी— तुम लोगों ने किनकी कविता गीत के रूप में सीखी है ? तुम्हारे गुरु कौन है ? तुम्हारी आकृति सुन्दर है, तुम किसके कुमार हो ? किस ओर रहनेवाले हो ? यह सुनकर लव-कुश ने विनय से कहा— हम बाल्मीकि के शिष्य हैं ॥ ४७ ॥ उनकी कविता रामायण-गीत हमने शास्त्रो के अनुसार सीखा है। ऋषि की सम्मति से हम हर्ष से यह सारे देश में प्रचार करते हुए घूमा करते हैं। यह सुनकर प्रभु रामचन्द्र ने 'साधु, साधु' कहकर दोनो का आदर किया (और कहा) जहाँ से छोड़ा है, वहीं से पुन: गाओ, मैं रामायण-कथा सुनूँ ॥ ४८ ॥ राम का आदेश सुन कुश-लव ने आनन्द से ताल और यंत्र को प्रस्तुत कर राम के चरित्र का गायन शुरू किया। लोग उत्सुकता से सुनने लगे। इसके आगे की कथा सुनिये। राजा दशरथ अपने अनुभवी लोगो के संग (राज्य करते) थे। तब यज्ञ की रक्षा हेतु ऋषि विश्वामित्र राम को माँगकर ले गये ॥ ४९ ॥ राजा उन्हें देते नही थे। ऋषि भी छोड़ते नही थे। बड़े आक्रोश से वे ले गये। उन्होंने राम-लक्ष्मण को धनुर्वेद दिया, दोनो ने बड़े

प्रथमे पथत राक्षसी ताड़का ताड़िलन्त रघुवरे।
सुबाहुक मारि मारीच बीरक उरुवाला एकेशरे ॥ ६८५०
देखिया ऋषिर आनन्द मिलिल रामक लैलन्त सङ्गे।
जानकीर तथा शुनि स्वयम्बर मिथिलाक गैला रङ्गे ॥
जनक नृपति अनेक भकति करिलन्त बहुमान।
रामे उठि रङ्गे धनुक तेखने करिलन्त दुइखान ॥ ६८५१
सीतायो बरिला समर करिला भङ्गाइला यत राजाक।
सभार्य्ये रथत चड़ि लरिलन्त रङ्गे रामे अयोध्याक ॥
शुनि धनुर्भङ्ग खङ्गाइला परशु राम महा अहङ्कारी।
मनत बिचाट भेण्टिलन्त बाट कान्धत कुठार धारि ॥ ५२
याइंबाक नेदन्त बिनती बोलन्त पावे परि दशरथ।
रामे धरि शर परशुरामर छेदिलन्त स्वर्ग-पथ ॥
अनेक उत्सवे पाचे राम देवे गृहत भैला प्रवेश।
आनन्दे तहिते सीताये सहिते भुञ्जिला भोग आशेष ॥ ६८५३

छबि

आदिकाण्ड रामायण संक्षेपे कहिला दुयो अयोध्याकाण्डक गाइबे लैला।
दशरथ राजा पाचे पुत्रक समर्थ देखि राज्य जोकारिबे बाञ्छा भैला ॥
राघवर अभिषेक शुनिया आसिल लोक सुमङ्गल नादर शवदे।
शुनिया कैकेयी कथा बिधिनि पातिल तथा लैला राज्य भरतर पदे ॥ ६८५४
राजार बचने छान्दि सत्यजरि करि बन्दी गुचाइलन्त रामर निकालि।
लक्ष्मण जानकी सङ्गे बनत बञ्चिला रङ्गे राघवे पितृर बाक्य पालि ॥

संतोष से उसकी शिक्षा ली। मार्ग में पहले ताड़का राक्षसी को रामचन्द्र ने मारा। इसके पश्चात् सुबाहु को मारकर वीर मारीच को एक ही वाण से उड़ा दिया ॥६८५०॥ यह देखकर ऋषि को आनन्द हुआ। जानकी के स्वयंवर की बात सुनकर प्रसन्नता से वे रामचन्द्र को साथ ले मिथिला गये। राजा जनक ने उनकी बड़ी भक्ति करते हुए बड़ा मान किया। रामचन्द्र ने उठकर प्रसन्नतापूर्वक (वहाँ रखे हुए) धनुष को दो खंड कर दिया ॥ ६५५१ ॥ सीता ने भी राम को वरण किया। रामचन्द्र ने युद्ध में सभी राजाओं को पराभूत किया और पत्नी सहित रथ पर सवार हो प्रसन्नता से शीघ्रतापूर्वक अयोध्या चल पड़े। धनुष-भंग की बात सुनकर महा अहंकारी परशुराम क्रोधित हो उठे। मन में असन्तुष्ट होकर कंधे पर कुठार लिये उन्होंने मार्ग रोक लिया ॥ ५२ ॥ वे जाने देना नहीं चाहते थे। तब उनके चरणों में पड़कर दशरथ ने विनती की। राम ने वाण लेकर परशुराम के स्वर्ग का मार्ग काट डाला। अनेक उत्सव के पश्चात् रामचन्द्र ने गृह में प्रवेश किया और वहाँ सीता सहित आनन्द से अशेष भोगों को भोगा ॥ ६८५३ ॥

उन दोनो भाइयों ने रामायण के आदिकाण्ड की कथा संक्षेप में सुनायी और अयोध्याकाण्ड गाने लगे। इसके पश्चात् राजा दशरथ ने अपने पुत्र को समर्थ देखकर उन्हें राज्य समर्पित करने की इच्छा की। राघव के अभिषेक का समाचार पाकर लोग सुमंगल नाद का शब्द (उच्चारण) करते हुए आने लगे। यह बात सुनकर कैकेयी ने उसमें विघ्न डाल दिया और भरत के लिए राज्य माँग लिया ॥ ६८५४ ॥ राजा को अपने वचनों से फँसाकर, प्रतिज्ञा की डोरी से बाँधकर राम को निर्वासन देकर हटा

बृद्ध राजा दशरथ पुत्रशोके भैला हत नाहि आर चेतन गियान ।
रामर वियोग आगि पोरै शरीरत लागि छाड़िलन्त सन्तापते प्राण ॥ ५५
भरते नलैला राज नृपतिर प्रेतकाज करि खेदि गैलन्त रामक ।
कातर करिला आति रामे भरतक माति पालटाइ पठाइला राज्यक ॥
शुनियोक सर्व्वजन पुण्यकथा रामायण एरा आल जाल आन काम ।
हवै निते आयुपात चेतन नाहिके गात सघने घुसियो राम राम ॥ ६८५६

पद

ताले माने भेदि दुयो रामायण गावे * आजि येन भैल गैल कथाके देखावे
कहिला कारण कथा राजार मरण * हाहाकारे कान्दे समज्यार यत जन ६८५७
आजि येन दशरथ गैला परलोक * करन्त सन्ताप आति पात्र मन्त्रीलोक
शुनि राम लक्ष्मण भरत शत्रुघन * पितृशोके मकमकि करन्त क्रन्दन ५८
शुनिया कौशल्या समे यत राजमाव * स्वामीर सन्तापे हिये हाने मुष्टि घाव
लुटिया भूमित कतो ढाकुरन्त माथ * एरिया आमाक कैक गैला प्राणनाथ ५९
आमार समान नाइ नारी निदारुणी * प्राण धरो तोमार मरणकथा शुनि
एहि बुलि बिलाप करन्त असंख्यात * क्रन्दनर ऊर्म्मि उथलिल समज्यात ६८६०
प्रबोधन्त रामक सुग्रीव बिभीषण * शुना पाचकथा नाथ हुयो सन्धुक्षण
मित्र दुइर बचनत राघव जुराइल * राजमाव सबक लक्ष्मणे निचुकाइला ६८६१

दिया । पिता का वचन मानकर रामचन्द्र लक्ष्मण और जानकी के साथ प्रसन्नतापूर्वक वन में रहने लगे । बूढ़े राजा दशरथ पुत्रशोक से आहत हो गये, उनकी चेतना और ज्ञान फिर नहीं लौटी । राम के वियोग रूपी अग्नि उनके शरीर में प्रवेश कर जलाने लगी और सन्ताप के मारे उन्होने प्राण तज दिये ॥ ५५ ॥ भरत ने राज्य नहीं लिया । राजा दशरथ का प्रेतकर्म कर राम के यहाँ वेग से चल पड़े और राम से बड़ी विनती की । रामचन्द्र ने भरत को समझाकर राज्य में लौटा भेजा । संसार के जंजालों और अन्य कामों को छोड़कर सभी लोग पुण्यकथा रामायण सुनें । नित्य आयु घटती जा रही है, तथापि शरीर में चेतना नही आती; बार-बार 'राम, राम' का उद्घोष करो ॥ ६८५६ ॥

दोनो भाई ताल-मान से युक्त रामायण-गान करने लगे । वे राम-कथा का वर्णन इस प्रकार कर रहे थे, मानो आज ही की घटना हो । उन्होने राजा दशरथ के मरने की कारण-कथा सुनायी, जिसे सुनकर समाज के सभी लोग हाहाकार कर रोने लगे ॥ ६८५७ ॥ उन्हें लगा कि राजा दशरथ आज ही परलोक सिधारे हैं । मंत्री-सामन्त आदि भी बहुत शोक करने लगे । वह कथा सुनकर राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न भी फूट-फूटकर रोने लगे ॥ ५८ ॥ कौशल्या समेत सभी राजमाताएँ भी सुनकर पति के सन्ताप से छाती पर मुक्के की चोट करने लगी । कितनी ही रानियाँ भूमि पर गिर कर सिर पीट-पीटकर रोने लगीं । हमें छोड़कर प्राणनाथ, कहाँ चले गये ? ॥ ५९ ॥ हमारे समान कोई निर्मम नारी नही है कि तुम्हारी मरण-कथा सुनकर भी प्राण रखी हुई हैं । यह कहकर अनेक (नारियाँ) विलाप करने लगी । उनके रुदन की ध्वनि सभा में गूँज उठी ॥ ६८६० ॥ सुग्रीव-विभीषण रामचन्द्र को धीरज बँधाने लगे । नाथ, सचेत होकर आगे की कथा सुनिये । दोनो मित्रो के कथन से राघव को शान्ति मिली । सभी राजमाताओं को लक्ष्मण ने शान्त किया ॥ ६८६१ ॥ उन सबने आँख और

आञ्चले मुचिला मुख नयनर नीर * भरते करिला सबे समज्याक थिर
निशवदे प्रजा शुनि रामर आदेश * गावा पाचकथा शिशु शुनिबो बिशेष ६२
अयोध्याकाण्डर कथा थैला एहिमाने * अरण्यकाण्डक गाइबे लैला ताले माने
धरिलन्त गीत लव-कुशे पूर्व्ववते * चौद्धय बरिष रामे बञ्चिबा बनते ६३
नाहि अन्नपान पशुमांसहे आहार * सीताक देखन्ते अति रामर निकार
दुर्घोर सङ्कट बर दण्डकार बने * केवले सङ्गति तात भ्रातृ ये लक्ष्मणे ६४
आसि शूर्पनखी कामे बुलिलेक बाक * काटिला लक्ष्मणे ताइर धरि काण नाक
चौद्धय सहस्र सेना राक्षसे सहिते * खर दूषणक रामे मारिला तहिते ६५
शुनि आइल रावणे करिया आटि मुटि * आसिल मारीच सुवर्णर मृग गुटि
देखि खेदि गैला राम लक्ष्मणे ताहाक * दशग्रीवे निर्ज्जनत हरिले सीताक ६६
रावणक भये देवी गावते लुकान्ति * पाचे पाञ्च गुटि बानरक देखिलन्ति
काढ़ि तार खारु शरीरर हेम हार * तासम्बार माजत खेपिला अलङ्कार ६७
अशोकर बने थैया रावण दुर्व्वार * अनेक राक्षसी रक्षा दिलेक सीतार
लोतकर नाइ छेद फुकते कान्दन्ते * दण्डे युग सीतार रामक सुमरन्ते ६८
मृग मारि आसि रामे नेदेखि सीताक * जानकी जानकी बुलि दिया दीर्घ डाक
दुभायो दण्डका बने फुरन्त बिचारि * हा सीता बुलि घने निश्वास फोकारि ६९
फुरन्ते भ्रमन्ते रामे सीतारि निदाने * बिराध कबन्ध दुइको बधिलन्त प्राणे
सीताक राखन्ते पक्षी जटायु मरिल * राम लक्ष्मणे प्रेतकार्य्य सङ्कलिल ६८७०

मुख का जल अपने आँचलों से पोंछा। भरत ने समाज के लोगों को शान्त किया। राम का आदेश सुनकर प्रजा मौन हो गयी। राम ने कहा— बच्चो, आगे की कथा का गान करो। हम विशेष रूप से सुनेंगे ॥ ६२ ॥ अयोध्याकाण्ड की कथा यहीं तक कहकर वे दोनो ताल-मान द्वारा अरण्यकाण्ड गाने लगे। लव-कुश पहले की ही भाँति गीत गाने लगे। रामचन्द्र को चौदह साल वन में बिताना था ॥ ६३ ॥ दूसरा कुछ भी अन्न-पान न था, पशु-मांस ही आहार था। सीता का कष्ट देखकर राम को बड़ा दुख होता था। दंडक वन में उन पर घोर संकट आ पड़ा। वहाँ केवल भाई लक्ष्मण ही साथी थे ॥ ६४ ॥ वहाँ शूर्पणखा ने आकर कामवश बात कही, तब लक्ष्मण ने पकड़कर उसके नाक-कान काट डाले। वहाँ राक्षसों की चौदह हजार सेना समेत खर-दूषण को रामचन्द्र ने मार डाला ॥ ६५ ॥ यह सुनकर रावण वहाँ बड़ा प्रबन्ध कर आया। मारीच उसके साथ स्वर्ण-मृग बनकर आया। उसे देखकर राम-लक्ष्मण खदेड़ ले गये। रावण ने निर्जन में पाकर सीता का हरण कर लिया ॥ ६६ ॥ रावण के आतंक से देवी सीता अपने अंगों में सिकुड़ गयीं। इसके पश्चात् उन्होने पाँच बानरों को देखा। उन्होंने अपने हाथ का वलय और शरीर पर से स्वर्ण-हार निकालकर उन आभूषणों को उनके बीच फेंक दिया ॥ ६७ ॥ दुर्निवार रावण ने उन्हें अशोक वन में रख दिया और सीता की रखवाली करने हेतु अनेक राक्षसियों को नियुक्त कर दिया। सीता के आहें भरने और रोने में आँसुओं की धारा बंद नहीं होती थी। राम के स्मरण में सीता के लिए एक दंड का समय एक युग-सा हो गया था ॥ ६८ ॥ मृग मारकर लौटने पर जब रामचन्द्र ने सीता को न देखा, तो 'जानकी, जानकी' कहकर ऊँचे स्वर से पुकारने लगे। राम-लक्ष्मण दोनो भाई दंडक वन में 'हा सीता' कहकर बार-बार आहें भरते हुए सीता को खोजते घूमने लगे ॥ ६९ ॥ सीता की खोज में घूमते-फिरते समय विराध और कवन्ध दोनो का वध किया। सीता को बचाने जाकर जटायु पक्षी मारा गया। राम-लक्ष्मण ने उसका प्रेत-कार्य सम्पन्न किया ॥ ६८७० ॥ लव-कुश ने इस प्रकार अरण्यकाण्ड

करिला अरण्यकाण्ड कथा समापति * गाइवाक लागिला रङ्गे किष्किन्ध्या सम्प्रति
राम लक्ष्मणे दुयो दण्डकार हन्ते * ऋष्यमुख पाइला दुयो सीताक चाहन्ते ६८७१
सुग्रीवक दिला राज्य करि बाली बध * युवराज भैला पाचे कुमार अङ्गद
राजभोग पासरिल सुग्रीवे रामक * समय बुजिया नासे बानर लटक ७२
तर्ज्जिला अनेक ताङ्कु लक्ष्मण कुमार * देखाइलन्त निया बाली वधि बार शर
कम्पिल शरीर देखि सुग्रीव राजारे * अनेक बानर सेना आनाइला हाङ्कारे ७३
पृथिवीर बानर भालुक आसि भैल * सीताक खुजिबे द्वीप द्वीपान्तर गैल
एहिमाने किष्किन्ध्याकाण्डर कथा गैला * सुन्दराकाण्डक पाचे दुयो गाइबे लैला ७४
कहिलन्त सम्पाति यथात सीता आछि * नपाइलन्त लङ्काक याइबाक बीर बाछि
पाचे मारुतिर जन्म कैला जाम्बवन्त * सागर लङ्घिला तेवे बीर हनुमन्त ७५
अशोकार वने गैया देखिला सीताक * कहिला प्रणामि प्रभु रामर कथाक
राघवर दिला निया हातर आङ्गुष्ठि * देखिया हानिला हिया शोके सीता मुष्टि ७६
अनेक कान्दिला देवी स्वामीक सुमरि * हनुमन्त प्रबोधिला दान्ते तृण धरि
अलपते निबन्त रामे परिहरा खेद * हुइबे सबान्धवे दशानन कन्धछेद ७७
कपिर वचने जुराइलन्त सीता देवी * मारुति मेलानि पाइला गोसानीक सेवि
लङ्कात पशिला पाचे कृतकृत्य हुइ * बिध्वंसिला मधुफल उभताइ रुइ ७८
लीलाये करिला अक्षकुमारक नाश * इन्द्रजिते आसिया हानिला नागपाश
चितनि परिल बन्दी बीर हनुमन्त * रावणर आगे इन्द्रजित योगाइलन्त ७९
लाञ्जत लगाइल जुइ कापोर मेढ़ाइ * दिला डेब रङ्गे नागपाश होसकाइ

की कथा समाप्त की, उसके पश्चात् वे किष्किन्ध्याकाण्ड की कथा प्रसन्नतापूर्वक गाने लगे। राम-लक्ष्मण दोनो भाई दण्डक वन से सीता को खोजते हुए ऋष्यमूक पर्वत को पहुँचे ।। ६८७१ ।। वहाँ बाली का वध कर सुग्रीव को राज्य दिया और कुमार अंगद युवराज बना। राज्यभोग में सुग्रीव राम (के कार्य) को भूल गया। वह प्रगल्भ वानर समय के अनुसार नहीं आया ।। ७२ ।। तब कुमार लक्ष्मण ने उसे अनेक बार डाँटा और बाली को जिस वाण से मारा गया था, वह उसे भी दिखाया। वह देखकर राजा सुग्रीव का शरीर काँप उठा। उसने अनेक वानर-सेना को बुलवा भेजा ।। ७३ ।। संसार के सभी वानर-भालू वहाँ आ पहुँचे और सीता को खोजने हेतु द्वीप-द्वीपान्तर गये। यहाँ तक किष्किन्ध्याकाण्ड की कथा सुनायी, इसके बाद दोनो सुन्दरकाण्ड गाने लगे ।। ७४ ।। सीता जहाँ हैं, सम्पाति ने बताया; पर लंका में जा सके, ऐसा वीर वे चुन नहीं पाये। इसके पश्चात् जाम्बवन्त ने मारुति की जन्म-कथा सुनायी। तदनन्तर वीर हनुमान ने सागर को पार किया ।। ७५ ।। उन्होंने अशोक वन में जाकर सीता को देखा। उन्हें प्रणाम कर हनुमान ने प्रभु राम की बात बतायी। उन्होने सीता को राम के हाथ की अँगूठी दी, उसे देख सीता ने शोक के मारे अपनी छाती पीट ली ।।७६।। स्वामी राम का स्मरण कर देवी ने बड़ा रुदन किया। हनुमान ने दाँतों में लेकर तृण उन्हें धीरज बँधाया। तुम्हें रामचन्द्र शीघ्र ही ले जायेंगे, शोक करना छोड़ दो। बन्धु-बान्धवो सहित रावण का सिर काटा जायेगा ।।७७।। देवी सीता को हनुमान के कथन से बड़ी शान्ति मिली। सीता को प्रणाम कर हनुमान ने उनसे विदा ली। इसके पश्चात् वे कृत-कृत्य होकर लंका में घुसे और मधुफल के वृक्षों को उखाड़कर विध्वंस कर डाला। ७८ ।। उन्होंने अनायास अक्षकुमार को मार डाला। तब इन्द्रजित ने आकर नागपाश का प्रहार किया। वीर हनुमान बंदी होकर चित्त पड़ गये। उन्हें पकड़कर इन्द्रजित रावण के पास ले गया ।। ७९ ।। उनकी पूँछ में कपड़े लपेट

परम आटोपे पाचे कपि महामाले * नगर जुरिया जुइ लगाइला आस्फाले ६८८०
सकले राक्षसे भैल भयते तवध * लगाइल चमक लङ्का करिल दगध
सागर तरिया दुनाइ पृथिवीक आइल * सीतार दुखर कथा रामत जनाइल ६८८१
येनमते सीता राखिलन्त शान्ती पुण्य * निबेदिला जानकीर यतेक कारुण्य
कहिला सङ्केत कथा यत हनुमन्त * सीताक सुमरि रामचन्द्र कान्दिलन्त ८२
भूमित परिल शोके अगनि उधाइल * सुग्रीव लक्ष्मणे धरि रामक जुराइल
एमो तुमि सीताक नपाइबे कराशङ्का * चमका'चमक करि आनि दिबो लङ्का ८३
राक्षसर शोणिते भुञ्जाइबो काक गृध्र * हेन जानि कार्य्य आसि सबे भैला सिद्ध
सुग्रीवर शुनिया अनेक प्रौढ़ि बाद * गुचिल चित्तर किछु रामर बिषाद ८४
सागरत पन्थ पाचे मागिलन्त माजे * रामक नेदन्त देखा गर्ब्बे सिन्धुराजे
क्रोधे धरिलन्त वाण बिदारिबो हिया * उजरिल जलजन्तु पलाइ फाट दिया ८५
कम्पि गैल सागरतो लागिल चमक * पाद्य अर्घ दिया स्तुति बुलिला रामक
दिलो माजे पन्थ प्रभु चलियोक लङ्का *बान्धियोक सेतु तल याइबे नाहि शङ्का ८६
बानर नृपति पाचे कपिसेना लइ * बान्धिलन्त सेतु पर्ब्बतक कान्धे बइ
दीर्घे दशयोजन पथालि पाञ्च जुरि * पार भैल सेना सब सेतु भरि पूरि ८७
सीताक सुम्पिबे बुलिलन्त बिभीषण * उठिया मारिल लाथि दुन्दूर रावण
पशिल शरण आसि राघवत वरि * ताङ्कलङ्का राज्य दिला अङ्गीकार करि ८८

कर आग लगा दी। तब हनुमान नागपाश को खोलकर प्रसन्नतापूर्वक कूद पड़े। प्रचंड अट्टहास कर महा वीर कपि ने बड़े विक्रम से नगर भर में आग लगा दी ॥६८८०॥ सभी राक्षस भय के मारे स्तब्ध हो गये। सबको चमत्कृत करते हुए उन्होंने लंका को भस्म कर डाला। सागर पार कर वे इस पार की धरती पर आ गये और सीता की दुख की कथा रामचन्द्र को सुनायी ॥ ६८८१ ॥ सीता ने जिस प्रकार से अपने पवित्र सतीत्व की रक्षा की है, जानकी की सारी करुण-कथा उन्होंने रामचन्द्र से निवेदन की। हनुमान ने सीता की सारी सकेत-कथाएँ कह सुनायी। सीता का स्मरण कर रामचन्द्र रो पड़े ॥ ८२ ॥ वे शोक से धरती पर गिर पड़े, उनके शरीर में आग जल उठी। सुग्रीव और लक्ष्मण ने पकड़कर राम को शान्त किया। आप अब भी 'सीता न मिल सकेगी', ऐसी आशंका करते है। हम खलबली मचाकर समूची लंका यहाँ ला देंगे ॥ ८३ ॥ राक्षसों का खून कौवो और गिद्धों को खिलायेंगे। ऐसा समझ लीजिये कि सारे कार्य अब सिद्ध हो गये। सुग्रीव के अनेक ओजस्वी वचन सुनकर राम के चित्त का विषाद कुछ कम हो गया ॥ ८४ ॥ इसके पश्चात् रामचन्द्र ने सागर के ऊपर से मार्ग माँगा। पर सागरराज ने गर्व से मार्ग नहीं दिया। तब रामचन्द्र ने उसका हृदय विदीर्ण करने हेतु क्रोध से बाण उठा लिया। तव जलजन्तु भयभीत होकर भागने लगे ॥ ८५ ॥ सागर भी काँप उठा, उसमें भी खलबली मच गयी। तब उसने पाद्य-अर्घ्य देकर राम की स्तुति की। कहा— प्रभु, बीच से मार्ग दे रहा हूँ, आप लंका चलिये। आप सेतु बाँधिये, वह डूबेगा नहीं। आप शंका न करें ॥ ८६ ॥ तब वानरराज सुग्रीव ने बानर-सेना लेकर पर्वतों को कंधों पर ढो-ढोकर सेतु बाँधा। वह सेतु लम्बाई में दस योजन और चौड़ाई में पाँच योजन फैला हुआ था। उस सेतु को पूरा कर सारी सेना पार हो गयी ॥ ८७ ॥ विभीषण ने रावण से सीता को समर्पित करने को कहा। परन्तु झगड़ालू रावण ने उठकर उसे लात मारी। तब विभीषण रामचन्द्र की शरण में आया। रामचन्द्र ने उसे ग्रहण कर लंका का राज्य दे दिया ॥८८॥ लव-कुश, कथा में तन-मन लगाकर(या अभिनय के साथ)गा रहे थे। वह

लवे कुशे कथार भावना लगाइ गावे * आजि सम्पजिल येन हातते देखावे
सुन्दराकाण्डर कथा थैला एहि माने * लङ्काकाण्ड कहिबे लागिला विद्यमाने ८९
सुवेल पर्व्वते राम ससैन्ये जिराइया * प्रभाते वेढ़िया लङ्का कटके जोराइया
राखिल लङ्कार गड़ राक्षस समस्त * युद्धते परिल पाचे प्रथमे प्रहस्त ६८९०
देवान्तक नरान्तक रणत परिल * शुनिया ससैन्ये साजि रावण लरिल
मेघे येन गर्ज्जिया जङ्कारि दशमाथ * वानर कटक मारे क्रोधे लङ्कानाथ ६८९१
खड्गे खेदि यान्त राम साधो मान बुलि * देखिया कान्धत लैला हनुमन्ते तुलि
दिश पाश छानि रामे वरिषिला शर * भेदिलन्त हृदय निर्द्दय रावणर ९२
तोण बाण धनु ध्वज रथ हय चारि * काटिला तिलते चोटे अटोपे मुरारि
एहि मुखे फुरे कपि कटक कपटी * केशे समे रामे तार काटिला किरीटी ९३
नमारिला विरथी विधनु देखि ताक * दिलन्त मेलानि गैला रावण लङ्काक
जगाइ कुम्भकर्णक पठाइला दशग्रीव * घोर शरे रामे तार छराइलन्त जीव ९४
इन्द्रजित कुमारक लक्ष्मणे जिनिल * अन्तर्द्धाने इन्द्रजिते शर प्रहारिल
नागपाशे मूर्च्छा गैला रामे लक्ष्मणे * गरुड़े जीयाइला आसि दोनाइको तेखने ९५
कुम्भ निकुम्भ महापार्श्व महोदर * वज्रदंष्ट्र दुष्ट मेघनादर सोदर
असंख्य राक्षस आनो रणत परिल * जानि इन्द्रजिते क्रोधे युद्धक लरिल ९६
राक्षस कटक लैया आटोपे प्रकटे * यज्ञ आरम्भिला आसि निकुम्भिला वटे
विभीषणे कहिलेक सकले सम्भेद * लक्ष्मणे करिला शरे तार कन्धछेद ९७
पुत्रशोके अनेक कान्दिला लङ्कानाथ * साजिया वजाइल कोपे जङ्कारन्त माथ

घटना मानो आज ही हुई हो, ऐसे हाथ से संकेत करते हुए दिखाते थे। सुन्दरकाण्ड की कथा यहीं तक समाप्त कर वे लंकाकाण्ड का गायन करने लगे ॥ ८९ ॥ सुवेल पर्वत पर सेना सहित रामचन्द्र ने विश्राम कर प्रभात होते ही सेना को इकट्ठा कर लंका को घेर लिया। सारे राक्षस लंका के गढ़ की रखवाली कर रहे थे। पर सबसे पहले प्रहस्त मारा गया ॥ ६८९० ॥ देवान्तक, नरान्तक युद्ध में मारे गये, सुनकर रावण सेना सहित वेग से निकला। मेघ के समान गर्जना कर दसों सिर हिला-हिलाकर क्रोध में भरा लंकापति रावण वानरों की सेना को मारने लगा ॥ ६८९१ ॥ राम उसका गर्व चूर करने हेतु क्रोधपूर्वक वेग से बढ़ चले। देखकर हनुमान ने उन्हें अपने कंधे पर उठा लिया। रामचन्द्र ने दिशाओं को व्याप्त कर बाणों की वर्षा की और निर्मम रावण का हृदय वेध डाला ॥ ९२ ॥ उसका तूण, बाण, धनुष, ध्वजा, रथ, चारों घोड़े क्षण भर में पराक्रमी मुरारी ने काट डाला। कपि-सेना भी उसी ओर वेग से बढ़ गयी। रामचन्द्र ने केश समेत उसका किरीट काट डाला ॥ ९३ ॥ उसे रथ-हीन, धनुष-हीन देखकर राम ने उसे नहीं मारा; छोड़ दिया, तब रावण लंका में चला गया। रावण ने कुंभकर्ण को जगाकर भेजा। रामचन्द्र ने प्रचंड बाण से उसके प्राण ले लिये ॥ ९४ ॥ कुमार इन्द्रजित को लक्ष्मण ने जीता, तब इन्द्रजित ने अन्तर्हित होकर बाण मारे। उसके नागपाश से राम-लक्ष्मण मूर्छित हो गये। तब गरुड़ ने आकर दोनों भाइयों को उसी समय जिलाया ॥ ९५ ॥ कुंभ, निकुंभ, महापार्श्व, महोदर, वज्रदंष्ट्र, दुष्ट मेघनाद के भाई थे। इनके साथ और भी अनगिनत राक्षस युद्ध में मारे गये, यह जानकर क्रोधित हो इन्द्रजित वेग से युद्धभूमि में आया ॥ ९६ ॥ राक्षस-सेना लेकर बड़े दर्प से इन्द्रजित ने निकुंभिला वट के तले आकर यज्ञ आरंभ किया। विभीषण ने उसका सारा भेद बता दिया, तब लक्ष्मण ने बाण मारकर उसका गला काट डाला ॥ ९७ ॥ लंकानाथ रावण पुत्रशोक से बहुत रोया। क्रोध के मारे सिर हिलाता हुआ वह सजकर निकला।

रावणे मारिल आसि असंख्यात शर * सात दिन सात राति करिल समर ९८
तार शरे राघवर नोछोवे शरीर * बारे बारे रामे तार काटिलन्त शिर
तथापि नमरे दशग्रीव हेन जानि * लैला पात्रे प्राण तार ब्रह्म अस्त्र हानि ९९
जगतरे धूम्रकेतु गैला यमालय * स्वर्ग मर्त्य पातालतो करे जय जय
आपन पौरुषे रामे सङ्कलिला काज * मित्र बिभीषणत सम्पिला लङ्काराज ६९००
अग्निक परीक्षा आनि दिलन्त सीताक * करिलन्त ब्रह्मा तुति राम देवताक
दशरथ आसिला स्वर्गर परा चलि * पुत्र दुइ सहिते करिला गला गलि ६९०१
बनत बञ्चिला बाप मोर बाक्य पालि * रामक प्रशंसे कैकेयीक पारि गालि
पतिव्रता सीता शान्ती जगते प्रख्यात * किसक पुताइ आन्त नयास सञ्जात २
नाइ एको शङ्का आङ्क खेद करा किक * पाचे पितृबाक्ये सम्बरिला जानकीक
भार्य्या भ्रातृ समे रामे बिमानत चड़ि * परम आनन्दे आइला अयोध्या नगरी ३
भालुक बानर आरो राक्षस यतेक * आइला सबे रङ्गे देखिबाक अभिषेक
शुना रामायण मन करा उपशाम * समस्त समाजे बेढ़ि बोला राम राम ६९०४

छबि

शुनियोक पाचकथा रामक देखिया तथा भरते एराइला हृदिखेद ।
गैला आसि एकठाइ नन्दिग्रामे चारि भाइ करिला शिरर जटा छेद ॥
कौशल्या सुमित्रा शान्ती पुत्रक गलत बान्धि कान्दिलन्त अनेक कारुण्ये ।
सीतायो वर्णाया दुख सैला सलोतक मुख तासम्बार नमिल चरणे ॥ ६९०५
पाचे समदले राम अयोध्याक लरि गैला तुलि दण्ड बावे बाद्यमण्ड ।
राक्षस बानर नर भालुकर आन्दोलते तलबल करे महीखण्ड ॥

रावण ने आकर अनगिनत वाण मारे। सात दिन सात रात युद्ध किया ॥ ९८ ॥ उसके वाण रामचन्द्रजी के शरीर को छू नहीं पाते थे, रामचन्द्र ने बार-बार उसके सिर काटे। तथापि 'रावण मरेगा नहीं', ऐसा जानकर ब्रह्मास्त्र के प्रहार से उसके प्राण ले लिये ॥ ९९ ॥ जगत का धूमकेतु रावण यमलोक चला गया। स्वर्ग, मर्त्य, पाताल में रामचन्द्र का जय-जयकार गूंज उठा। अपने पौरुष से रामचन्द्र अपने उद्देश्य मे सफल हुए। उन्होंने मित्र विभीषण को लंका का राज्य सौंपा ॥ ६९०० ॥ सीता को लाकर अग्नि में परीक्षा की, देव रामचन्द्र की ब्रह्मा ने स्तुति की। दशरथ भी स्वर्ग से आये और अपने दोनो पुत्रों को गले लगाया ॥ ६९०१ ॥ वे कैकेयी को गालियाँ देते हुए रामचन्द्र की प्रशंसा करने लगे। कहा— 'वत्स, मेरा वचन मानकर तुम वन में आये'। पतिव्रता सीता सती के रूप में जगत-विख्यात है। बेटा, तुम इस पर क्यों विश्वास नहीं करते ? ॥ २ ॥ कोई शंका न होने पर भी तुम क्यों खेद कर रहे हो ? इसके पश्चात् रामचन्द्र ने पिता की बात मानकर सीता को ग्रहण किया। भार्या तथा भाई समेत विमान पर सवार हो, रामचन्द्र परम आनन्द से अयोध्या नगरी पहुँचे ॥ ३ ॥ भालू, वानर और जितने राक्षस थे, सभी प्रसन्नतापूर्वक रामचन्द्र का अभिषेक देखने आये। रामायण सुनकर मन को शान्त करो, सारा समाज मिलकर 'राम, राम' कहो ॥६९०४॥

इसके आगे की कथा सुनिये। राम को वहाँ (आये) देखकर भरत के हृदय का खेद मिट गया। वे चारों भाई नन्दिग्राम में आकर इकट्ठे हुए और अपने मस्तक की जटा मुँडवा लिया। सती कौशल्या और सुमित्रा ने पुत्रों को गले लगाये, अनेक करुणा से रुदन किया। सीता जब दुखों का वर्णन करने लगीं, तो उनका मुख आँसुओं से भीग गया। सीता ने उनके चरणों में प्रणाम किया ॥६९०५॥ इसके पश्चात् रामचन्द्र सबके

पटूलि पटूलि कल दीप घट फूल फल पुतिलन्त यात्रार तोरण ।
जातिष्कार नरनारी प्रशंसिया शारी शारी प्रणामन्त रामर चरण ॥ ६
शुभ समयत रामे पाटत वसिला आसि प्रजा करें माङ्गल्य अनेक ।
चारि सागरर जल योगाइला वानर बल वशिष्ठे करिला अभिषेक ॥
दुइ भाइ दुइ पाशे चामरे विञ्चन्त लासे भरते धरिला छत्र तुलि ।
शवदते काण फारे प्रजाये जोकार पारे जय जय राम राजा बुलि ॥ ७
मेघर गर्ज्जन येन मत्तहस्ती चिहरय आस्फाले वजाय गजघण्टा ।
पाइला दुख समरत भालुक वानर यत दिला रामचन्द्रे ताको वण्टा ॥
राजार सम्मान पाइ आनन्दर सीमा नाइ गैला देशे आदेश रामर ।
भ्रातृ सब समे रामे राजभोग भुञ्जिलन्त पाचे दश हाजार वत्सर ॥ ८
भैला महादें सीता स्वामीर चरण चिन्ता करन्त भकति प्रतिनिति ।
अयोध्यार देवभोग भुञ्जन्त भुकुति भोग रामरो वाढ़न्ते याइ प्रीति ॥
पूर्वकथा आपोनार शुनि राम देवतार परम हरिष मन भैल ।
समज्यायो एकचित्त कुश लवे गावे गीत लङ्काकाण्ड एहिमाने गैल ॥ ६९०९

दुलड़ी

उत्तराकाण्डक धरिला गाइवाक सीतासुत कुश लव ।
एहिमते पाचे मारि रावणक भैलन्त राजा राघव ॥
अयोध्याक पाचे अगस्ति आसिला अच्चिला रामे हरिषि ।
लङ्कार दगध रावणर वध पूछिला रामत ऋषि ॥ ६९१०

साथ शोभायात्रा कर वेग से अयोध्या आये । वादकगण बजाने की डंडी ऊपर उठाये नगाड़े-बाजे बजा रहे थे । राक्षस, वानर, मनुष्य, भालू आदि की चहल-पहल से धरती काँप-सी रही थी । प्रत्येक के द्वार पर केले के पौधे, दीप, घड़े, फूल-फल, वंदनवार आदि लगाये गये थे । सभी नर-नारी बहुत ही साफ-सुथरे, चमकीले होकर कतारों में खड़े प्रशंसा करते हुए रामचन्द्र के चरणों में प्रणाम करने लगे ॥ ६ ॥ शुभ लग्न में राम सिंहासन पर आसीन हुए, प्रजा अनेक प्रकार मंगल-विधान करने लगी । वानर-सेना ने चार सागरों का जल ला जुटाया, वशिष्ठ ने अभिषेक किया । दो भाई दो ओर से चँवर डुला रहे थे, भरत ने छत्र धारण कर रखा था । प्रजा 'जय, जय राजा राम' कहकर उद्घोष कर रही थी, उस घोर शब्द से कान फट रहे थे ॥ ७ ॥ मस्त हाथी मेघ-गर्जन जैसे शब्द से चिंघाड़ रहे थे । दर्प से गज-घंटे बज रहे थे । जिन वानर-भालुओं को संग्राम में दुख झेलना पड़ा था, रामचन्द्र ने उन सबको पुरस्कार दिये । राज-सम्मान पाकर उनके आनन्द की सीमा न रही । वे राम के आदेश से अपने-अपने देश चले गये । रामचन्द्र ने भाइयों के साथ दस हजार वर्ष तक राज-भोग भोगा ॥ ८ ॥ सीता पटरानी बनी । वे नित्य स्वामी का चरण-चिन्तन करती हुई भक्ति करती थीं । अयोध्या के देव-भोग, भोगों के उपकरण भोग करती थी । राम की प्रीति भी बढती जाती थी । अपनी पूर्व कथा सुनकर देव रामचन्द्र के मन में परम हर्ष हुआ । समाज के लोग भी लव-कुश के गीत तल्लीन होकर सुन रहे थे । इसी प्रकार लंकाकाण्ड गा सुनाया ॥ ६९०९ ॥

इसके पश्चात् सीता के पुत्र लव-कुश उत्तरकाण्ड गाने लगे । इसी प्रकार रावण का वध कर रामचन्द्र राजा बने । आगे चलकर अगस्त्य मुनि अयोध्या में

रामे अगस्तित सकले कहिला यि भैल बृत्तान्त तथा ।
ऋषियो कहिला हरिषे रामत रावणर जन्मकथा ।।
उपजिया येन- मते दशस्कन्ध करिला कर्म्म अद्भुत ।
हरर कैलास आलगाइ तुलि कैकेषी राक्षसीसुत ।। ६९११
स्वर्ग मर्त्यलोके पातालपुरतो डरते कम्पाइला आति ।
करिला इन्द्रको बन्दी मन्दमति सिटो पुलस्तिर नाति ।।
देव मनुष्यर यतेक सुन्दरी हरि निला महाचान्द ।
तिनियो लोकत हुण्टूरि फुरिले येन उदयार षाण्ड ।। १२
रामे पूछिलन्त शुनियो अगस्ति येन कथा शुनो तार ।
सिकालत तेवे कहित नाछिल एको बीर बलीयार ।।
अगस्ति बोलन्त शुनियो राघव यंत तार भैल भङ्ग ।
किष्किन्ध्यात सिटो समर मागिल बालीर तोलाइया खङ्ग ।। १३
ताक लैया बाली सन्ध्या करिलन्त काषे डावि धरि तुलि ।
बालीत शरण पशिला रावण हारिलो हारिलो बुलि ।।
सहस्र अर्ज्जुने नारीगण सङ्गे नर्म्मदात खेले खेरि ।
ताहातो समर मागिया निस्खले रावणाये लाज एरि ।। १४
बान्धि रणे जिनि सहस्र अर्ज्जुनि निल नगरक लागि ।
पुलस्ति आसिया राजात प्रार्थिया मेलाइलन्त भिक्षा मागि ।।
तथापि समर मागिया फुरय रावणर नाहि लाज ।
सुतलपुरतो पशिल साजिया वलिर यंते समाज ।। १५
दुवारत गैया देखे पुरुषेक सुन्दर रुचिर श्याम ।
रत्नर किरीटि बलय कङ्कण पीत बस्त्रे अनुपाम ।।

आये, रामचन्द्र ने हर्षित होकर उनका पूजन किया। ऋषि ने लंका के दहन, रावण-वध के बारे में रामचन्द्र से पूछा ।। ६९१० ।। राम ने वहाँ जो कुछ हुआ था, सब अगस्त्य से कह सुनाया। ऋषि ने भी प्रसन्नता से राम को रावण की जन्म-कथा सुनायी। जन्म लेकर दशानन ने अद्भुत कर्म किये, राक्षसी कैकेषी के उस पुत्र ने शिव के कैलास पर्वत को उठा लिया था ।। ६९११ ।। स्वर्ग-मर्त्य और पाताल-पुरी को भी उसने आतंक से कँपा डाला था। पुलस्त्य के उस मंदमति नाती ने इन्द्र को भी बंदी कर लिया था। उस दुष्ट ने देव-मनुष्यों की सभी सुन्दरियों को हर लिया था। वह तीनो लोक में उद्दंड बैल की भाँति दर्प से पददलित करता घूमता रहा ।।१२।। राम ने पूछा— अगस्त्यजी, उस रावण की जैसी कथाएँ सुनता हूँ, उस काल में क्या उसके जैसा कोई वीर बली नही था ? अगस्त्य ने कहा— राघव, सुनिये, जहाँ रावण की पराजय हुई थी (सुनाता हूँ)। रावण ने किष्किन्ध्या में आकर बाली को क्रोधित कर युद्ध माँगा ।। १३ ।। बाली ने उसे पकड़कर अपनी काँख के नीचे दवा लिया और वैसे ही लेकर संध्या-वंदन किया। तब रावण ने 'हार गया, हार गया' कहकर बाली की शरण ली। सहस्रार्जुन नारियों के संग नर्मदा में क्रीड़ा कर रहा था, खल रावण ने लज्जा छोड़ उससे भी युद्ध माँगा ।। १४ ।। युद्ध में जीतकर, रावण को वाँध, सहस्रार्जुन अपने नगर में ले गया। तब पुलस्त्य ने आकर राजा से प्रार्थना कर भिक्षा माँग उसे छुड़वाया। तथापि रावण को लज्जा नही आयी, वह सबसे युद्ध माँगता फिरता था। जहाँ वलि अपने समाज के साथ रहते है, उस सुतललोक में भी वह सज-धज कर पहुँचा ।। १५ ।। उस पुरी के द्वार पर पहुँचकर उसने सुन्दर रुचिर श्यामवर्ण एक पुरुष को देखा,

हार ये केयूर नूपुरे रञ्जित करे दिव्य गदा लइ ।
कटित मेखला गले वनमाला दुवारत आछा वइ ॥ ६९१६

छवि

देखि रावणर तनु जात जात शिहरय टेर करि आछिलेक चाइ ।
वलिरायर अभ्यन्तरे प्रवेशिला लङ्केश्वरे सिटो पुरुषक नोवोलाइ ॥
रावणक देखि वलि वसिवाक थान दिला नवसि वलित पूछे काज ।
तोमार दुवारे इटो पुरुषेक आछे कोन सत्वरे कहियो दैत्यराज ॥ ६९१७
वलि वोले लङ्केश्वर निचिनह वर्व्वर एहेन्ते तोहोर अन्तकारी ।
सुरासुरे करे सेव आमाठेर इष्टदेव आङ्के वोला ईश्वर मुरारि ॥
लङ्कानाथे शुनि आति लवर दिलेक काछि एहि विष्णु वुलि वर रागे ।
धरिवाक याइ सासि देखि हरि तुलि हासि दिला लाथि चरणर आगे ॥ १८
पाताल पृथिवी छारि लङ्कात उफरि परि मूर्च्छा गैला दुर्ज्जय रावण ।
राक्षसे फुङ्कन्ते पाचे कथमपि धातु आइल व्रह्मा वर दिवार कारण ॥
एहिमते ऋषिवर कहिलन्त निरन्तर यतेक ताहार गुण ग्राम ।
शुनन्ते परम रङ्ग रावणर जय भङ्ग शुनिया हासन्त प्रभु राम ॥ १९
नमो नमो रघुवंश- तिलक विष्णुर अंश श्रीरामचन्द्र सीतापति ।
जन्मे जन्मे रामे गति रामते करोक मति रामपावे थाकोक भकति ॥
कृष्णर किङ्करे भणे शुनियोक सर्व्वजने कलित कीर्त्तन धर्म्मसार ।
एरि भाषभुष काम डाकि वोला राम राम पापत लागोक वुन्दामार ॥ ६९२०

जो रत्न के किरीट, वलय, कंकण तथा पीताम्वर पहने अनुपम था । हार, केयूर, नूपुर से विभूषित वह हाथ में दिव्य गदा लिये हुए था । कमर में मेखला, गले में वनमाला पहने वह द्वार की रखवाली कर रहा था ॥ ६९१६ ॥

उसे देखकर रावण का शरीर थरथराने लगा, वह एकटक उसकी ओर देखता रह गया । उस पुरुष से कुछ कहे वगैर वह राजा वलि की पुरी मे प्रवेश कर गया । रावण को आया देख वलि ने वैठने को आसन दिया, परन्तु रावण न वैठा । उसने वलि से यह पूछा— दैत्यराज, शीघ्र वताओ, तुम्हारे द्वार पर वह कौन पुरुष है? ॥६९१७॥ वलि ने कहा— अरे वर्वर लंकेश्वर, तू उन्हें नहीं पहचानता ? वे ही तेरा अन्त करनेवाले हैं । सुर-असुर जिनकी सेवा किया करते हैं, वे हमारे ही इष्टदेव हैं, इन्ही को ईश्वर मुरारी कहते हैं । लंकानाथ ने सुनकर सावधान हो, 'यह विष्णु हैं', कहता हुआ वड़े रोष से उन्हें पकड़ने हेतु वड़े वेग से दौड़ा । उसका साहस देख हरि ने हँसकर उसे अपने चरण के अग्रभाग से लात मार दी ॥ १८ ॥ उसके वेग से वह दुर्जय रावण पाताल और धरती के पार उछलकर लंका में जा गिरा और मूर्च्छित हो गया । जव राक्षस उसे हवा करने लगे, तो चूँकि व्रह्मा ने वर दिया था, किसी प्रकार उसकी चेतना लौटी । इसी प्रकार ऋषिवर अगस्त्य ने रावण के गुणग्रामों का वर्णन किया । रावण की पराजय का विवरण वड़े कौतुक से सुनकर प्रभु राम हंसते रहे ॥ १९ ॥ रघुवंशतिलक, विष्णु के अंश सीता-पति श्रीरामचन्द्र को वार-वार नमस्कार है । जन्म-जन्म में राम ही गति हों, राम में ही मति रहे, राम के चरणों में भक्ति रहे । कृष्ण-किंकर कहता है, सव लोग सुनें, कलियुग में कीर्तन ही धर्म का सार है । वेकार के कामों को छोड़कर पुकार-पुकारकर 'राम, राम' कहो, जिससे पाप पर प्रचंड चोट पड़े ॥ ६९२० ॥

हनुमन्तर जन्म-विवरण

पद

अगस्तित रामे पाचे पुछिला संशय * महा बीर हनुमन्त त्रैलोक्य अजय
किसक नमारि महाबैरी बालीराय * ऋष्यमुख पर्बतत आछिल पलाइ ६९२१
देखिलोहो येन हनुमन्तर महत्त्व * बालीराजा जानो तान आगे तृणवत
यँसानि कन्दल भैल बाली सुग्रीवर * किय हनुमन्त तार नलैलन्त शिर २२
छेदियो संशय मोर मनर सर्ब्बथा * अगस्ति बोलन्त राम शुना पूर्ब्बकथा
अञ्जनात उपजिया दुर्ज्जय मारुति * क्षुधाय कान्दन्त कपि पृथिवीत शुति २३
सेहिबेला सूर्य्य आसि उदय भैलन्त * तङ्कालिया फलगुटि मानि हनुमन्त
दिला डेव धरिबाक मेलि दुयो बाहु * सेहि दिना सूर्य्यक ग्रासिबे आसे राहु २४
चिन्तन्त मारुति ताक चाहिटेर करि * इगोटा सुपक्क फल सिगोटात करि
ताक लागि दिला लाम्फ आदित्यक एरि * पलाइ उलटि राहु डरे पारे गेरि २५
काम्पन्ते काम्पन्ते लैल इन्द्रत शरण * किबा गोटे खाइबे खोजे मिलिल मरण
शुनि इन्द्रे आथे बेथे ऐरावते उठि * करे बज्र धरि धाइल बायुबेगे छुटि २६
पाचे पाचे धाइलन्त कपिर क्षुधा बर * एहिगोटे खेदे राहु देखि दिले लर
थमकिल इन्द्रे भये पाचगुचि यान्त * देखि ताक शिशु हनुमन्ते गुणिलन्त २७
महाचित्र विचित्र यवञ्जा इटो फल * इहाक भुञ्जिले भोक पलाइब सकल
एहि बुलि कौतूहले दिलेक जोलक * खाइबे लागि ऐरावत समे बासवक २८
एराइबे नपारि इन्द्रे मनत तरासे * शिशु हेन जानि बज्र हानिलन्त लासे

हनुमान का जन्म-वृत्तान्त

इसके पश्चात् रामचन्द्र ने अगस्त्य मुनि से अपने मन के संदेह के सम्बन्ध में पूछा। महा वीर हनुमान तीनो लोकों में अजेय हैं। महा बैरी राजा बाली को किसलिए न मारकर वे ऋष्यमूक पर्वत पर भागे रहते थे ? ॥ ६९२१ ॥ मैंने हनुमान की जैसी महत्ता देखी, उसके सम्मुख तो राजा बाली तृणवत था। बाली-सुग्रीव में जैसा कलह हुआ था, उसमे हनुमान ने उसका सिर क्यों उतार नही लिया ? ॥ २२ ॥ मेरे मन का यह संशय आप सर्वथा दूर करे। अगस्त्य ने कहा— राम, पूर्व कथा सुनो। अंजनी के गर्भ से जन्म लेकर दुर्जय मारुति पृथ्वी पर लेटे भूख से रो रहे थे ॥२३॥ उसी काल में सूर्य उगा। उसे तोड़ने लायक कोई फल समझकर हनुमान पकड़ने हेतु दोनो बाँहें फैलाकर कूद पडे। उस दिन सूर्य को ग्रसने के लिए राहु भी आ रहा था ॥ २४ ॥ उसे भी एकटक देखते हुए मारुति ने सोचा, यह उसकी अपेक्षा अधिक पका हुआ फल है। सूर्य को छोड़ हनुमान ने उसे ही पकड़ने हेतु छलाँग लगायी। भागता हुआ राहु लौटकर डर के मारे चीखने लगा ॥ २५ ॥ उसने काँपते हुए इन्द्र की शरण ली। कहा— यह न जाने कौन मुझे खाना चाहता है, मैं मर गया। यह सुनकर इन्द्र तुरन्त ऐरावत पर सवार हो, हाथ में वज्र ले वायुवेग से धावित हुये ॥ २६ ॥ कपि बड़े क्षुधित थे, इस कारण राहु के पीछे-पीछे दौड़े। यह मुझे खदेड़े आ रहा है, देखकर राहु भाग चला। इन्द्र भय के मारे सहम गया, वह पीछे भागा जा रहा था। उसे देखकर शिशु हनुमान ने विचार किया कि यह महा चित्र-विचित्र जुड़वाँ फल है, इसे खा लेने पर मेरी सारी भूख मिट जायेगी। यह सोचकर ऐरावत समेत इन्द्र को खा डालने के लिए कौतूहल से हनुमान ने छलाँग मारी ॥२७-२८॥ उन्हें रोक न पाने के कारण इन्द्र मन में

वाम हनु भागि पर्व्वतत परिलन्त * एतेकेसे आन नाम भैल हनुमन्त २९
सावटि धरिला वायु मृतक पुत्रक * अनेक कान्दिल क्रोध करिया इन्द्रक
पुत्रर लगत हौक सबार विनाश * हियार हरिल वायु नोह्लाय उशास ६९३०
हेन देखि भैलन्त त्रिदशे महात्रास * ब्रह्मात पूछिला केने नोह्लाय उशास
ब्रह्माये बोलन्त इटो कथा भैल टान * सबे मिलि चलि गैल शङ्करर थान ६९३१
महेशे बोलन्त खुजि नपाओं सर्व्वथा * सबे गैया विष्णुत पूछिला पाचकथा
माधवे बोलन्त आवे भैल विसङ्गति * वायुर पुत्रक मारिलन्त सुरपति ३२
पुत्रर सन्ताप पाया जगतरे आयु * सबारो हियार परा गुचिलन्त वायु
ऐतेकेसे नासै कारो नाकर निश्वास * आसा सबे याओं वायुदेवतार पाश ३३
एहि बुलि देवे समे विष्णु गैला लरि * पुत्र लैया वायु कान्दिलन्त पावे परि
दिला दुख साखी देखियोक चक्रपाणि * शिशुक मारिले मोर इन्द्रे वज्र हानि ३४
माधवे बोलन्त वायु करियो सञ्चार * परशिलो हेरा पुत्र जीयोक तोमार
जागि येन निद्रार उठिला हनुमान * दिलन्त त्रिदशे चिरञ्जीव वरदान ३५
एको देवतार अस्त्रे नुहिवे बिकल * शरीरत तान अपर्य्यन्त हौक वल
गैला सबे बर आनो दिया असंख्यात * सञ्चारिला वायु पाचे सबारो हियात ३६
वलर दर्पते हनुमन्त येन यम * फल मूल खान्त लुरि ऋषिर आश्रम
उभताइ रोवे तरु भाङ्गि छिङ्गि मठ * देखि सब ऋषिर लागिल मनकष्ट ३७
वृत्तिछेद करिले बानर इटो पाप * सबे मिलि आलोचि दिलन्त चण्ड शाप
साधिवे नलागे आर यावे रामकार्य्य * वलर प्रमाण नजानोक कपिराज ३८

त्रस्त हो उठा। शिशु समझकर उन पर धीरे-से वज्र का प्रहार किया। बाँया हनु (जबड़ा) टूट जाने के कारण वे पर्वत पर गिर पड़े। इसी कारण उनका दूसरा नाम हनुमान पड़ा ।। २९ ।। वायु ने अपने मृतक पुत्र को बाँहों में भर लिया और इन्द्र पर क्रोधित हो बहुत रुदन किया। पुत्र के साथ ही सबका विनाश हो जाये—सोचकर वायु ने सबकी प्राण-वायु को रोक लिया, जिससे सबकी साँसें रुक गयी ।। ६९३० ।। यह देख देवगण महात्रस्त हो उठे, ब्रह्मा से पूछा कि साँसें क्यों रुकी जा रही है ? ब्रह्मा ने कहा कि बात बड़ी विषम हो गयी है। सब मिलकर शंकर के यहाँ गये ।। ६९३१ ।। महेश ने कहा कि यह बात सर्वथा विचार में नहीं आ रही है। इसके पश्चात् सबने जाकर विष्णु से पूछा। माधव ने कहा— अब तो यह बड़ी विपरीत बात हो गयी। वायु-पुत्र को देवराज इन्द्र ने मारा है ।। ३२ ।। पुत्र के शोक से पीड़ित वायु ने सबके हृदय से जगत की आयु खीच ली है। इसी कारण किसी की नाक से साँसें नही चलती। अब चलो, सभी वायुदेव के पास चलें ।। ३३ ।। यह कहकर देवताओं के साथ विष्णु वेग से चल पड़े। वायु-पुत्र को लेकर उनके चरणों में गिर रोने लगे। इन्द्र ने वज्र के प्रहार से मेरे शिशु को मार डाला, हे चक्रपाणि, इसका प्रमाण देखिये; मुझे दुख पहुँचाया है ।। ३४ ।। विष्णु बोले, वायु तुम पवन को बहा दो। मैं तुम्हारे पुत्र को अपने स्पर्श से जीवित कर दे रहा हूँ। हनुमान, मानो निद्रा से जग उठे। देवताओं ने उन्हें चिरजीवी होने का वरदान दिया ।। ३५ ।। यह किसी भी देवता के अस्त्र से विकल नही होगा। इसके शरीर में असीम बल होगा। और भी अनगिनत वर देकर सभी चले गये। इसके पश्चात् वायु ने सबके हृदय में प्राण-वायु का संचार कर दिया ।।३६।। बल के दर्प से हनुमान यमराज की भाँति हो गये और ऋषियों के आश्रमो को उजाड़-पजाड़ कर फल-मूल खाने लगे। वृक्षों को तोड़कर, आश्रमों को उजाड़कर उल्टे स्वयं रोने लगते; यह देख ऋषियों के मन मे बड़ा कष्ट होने लगा ।। ३७ ।। (वे कहने लगे)

देखोक गोखोज येन सागर सङ्काश * सेइ शापे कपिर गुचिल सबे सास
एरिल प्रचण्ड भाव बायुर कुमार * आरो बालीराय मरा बानरक डर ३९
एतेकेसे बालीक नवधि हनुमन्त * ऋष्यमुख पर्ब्बतक लागि पलाइलन्त
कहिला रामत ऋषि सकले सम्भेद * शुनि रामचन्द्रर संशय भैला छेद ६९४०
अनन्तरे ऋषिक करिला सतकार * ऋषियो रामक प्रशंसिला बारे बार
एहिमाने भैला राम अगस्ति संबाद * गाइबे लैला जानकर निर्ब्बास बिषाद ६९४१
बोले कुशे लवे शुनियोक समाजिक * अनन्तरे पठाइ प्रभु रामे अगस्तिक
परम आनन्दे दश हाजार बत्सर * भुञ्जिलन्त अकण्टका राज्य रघुबर ४२
अयोध्यात महा महा मिलिल बिपत्ति * प्राणप्रिया समे रामे भुञ्जिला भुकुति
रात्रि दिने चरण चिन्तन्त सीता सती * स्वामीर संयोगे पाचे भैला गर्भवती ४३
रामर बाढ़न्ते याय नव नव प्रीति * आनन्दे आछन्त प्रभु भार्य्याये सहिति
मिलिल दुर्योगपाचे पाइलेक बिपाके * जनबादे दिला रामे निर्ब्बास सीताके ४४
कण्ठक सङ्कट बने थैलन्त लक्ष्मणे * भैल अचेतन आति देवी दुख मने
सीतार शुनिय येन आपद दुर्घोर * ताक कोने सम्यके कहिया पावे पार ४५
यिटो पुण्यतनु कृपामय राम देव * परम महन्त गुणे सम नाहि केव
अनुदिने पिम्परायो निचिन्तन्त मार * कर्म्म फले भैल यम तेहन्ते सीतार ४६

यह पापी बानर हमारी वृत्ति नष्ट कर रहा है। सबने मिलकर चर्चा कर यह प्रचंड शाप दिया— जब तक इसे रामचन्द्र के कार्य का साधन न करना पड़े, तब तक यह कपि-राज, अपने बल का प्रमाण न जान सके ।। ३८ ।। गो-खुर के बराबर की वस्तु को सागर जैसा देखे। इसी शाप से कपि का सारा साहस मिट गया। पवन-सुत ने सभी प्रचंड भावों का परित्याग कर दिया। इसी कारण राजा बाली को मारने में ये बानर डरते थे ।। ३९ ।। इसी कारण बाली का वध न कर हनुमान ऋष्यमूक पर्वत पर भाग गये थे। ऋषि ने रामचन्द्र से सारा रहस्य बताया। यह सुनकर रामचन्द्र का संशय मिट गया ।। ६९४० ।। इसके पश्चात् रामचन्द्र ने ऋषि का सत्कार किया। ऋषि ने भी बार-बार रामचन्द्र की प्रशंसा की। इसी प्रकार राम और अगस्त्य मुनि के बीच संवाद हुआ। इसके पश्चात् लव-कुश जानकी के निर्वासन की विषाद-कथा गाने लगे ।। ६९४१ ।। लव-कुश ने कहा— सभासदगण, सुनिये। इसके पश्चात् प्रभु रामचन्द्र ने अगस्त्य मुनि को विदा की। रघुवर परम आनन्द से दस हजार वर्ष अकंटक राज्य भोगा ।। ४२ ।। अयोध्या मे अनेक प्रकार के बड़े-बड़े संकट आने लगे। प्राण-प्रिया जानकी के संग रामचन्द्र ने भोगों को भोगा। सती सीता दिन-रात पति का चरण-चिन्तन करती रहती थी। स्वामी के संयोग से वे गर्भवती हुईं ।। ४३ ।। उन पर रामचन्द्र की नयी-नयी प्रीति निरंतर बढ़ती गयी। प्रभु राम भार्या सीता सहित आनन्द से रह रहे थे। इसके पश्चात् उन्हें दुष्चक्र ने आ घेरा, उन पर संकट घिर आये। लोकापवाद के कारण रामचन्द्र ने सीता को निर्वासन दे दिया ।। ४४ ।। उस संकट में लक्ष्मण ने सीता को काँटेदार वन में रख दिया। देवी सीता यह जानकर मन में बड़ा दुख होने के कारण अचेत हो गयी। सुनिये, सीता पर जैसी प्रचंड विपत्ति आयी, उसे सम्यक रूप से कहकर कौन पार पा सकता है? ।। ४५ ।। कृपामय देव रामचन्द्र का जिस प्रकार पुण्यमय शरीर है, वैसा गुणसम्पन्न परम महन्त कोई नहीं है। जो कभी एक चींटी को भी मारने की बात नहीं सोचती थी, कर्म फल से उसी सीता के लिए (वे ही रामचन्द्र) यम हो गये ।। ४६ ।। एक तो पतिव्रता नारी, दूसरे गर्भवती, उनको भी वध कर डालने की मति राघव को हो आयी। विधि ने उनके कपाल पर न जाने

एके पतिव्रता नारी आरो गर्भवती * ताहाङ्को बधिवे राघवर भैल मति
किनो विपर्य्यय विधि लिखिल कपाले * भैला राम स्वामी जानकर यमकाले ४७
प्रकटिया कहिला शान्तीर यत दुख * भैला आति समाजिको शोके अधोमुख
लवे कुशे आकुल करिला समज्याक * देखे येन आजि दिला निर्व्वास सीताक ४८
जानकीर निकार शुनिया सामराज * कान्दिलन्त मकमकि सकल समाज
हाहाकार शवद उठिल सभा छानि * रामर गावत येन लागिल अगनि ४९
सुमरिया पुनरपि राघवे सीताक * विषादृशे शोकानले छानिला हियाक
निमावार अगनि येन ज्वालिल दुनाइ * परम सन्तापे तापे प्राण फुटि याय ६९५०
मूर्च्छा गैया परिल राघव सिंहासने * धरिल बुरिल बुलि भरत लक्ष्मणे
शिरत सिञ्चन्त जल बिञ्चन्त चामरे * लगते कान्दन्त तान तिनियो सोदरे ६९५१
बशिष्ठ प्रमुख्ये ऋषि नधरन्त हिया * कान्दन्त सीतार शोके मुखे वस्त्र दिया
बिभीषण सुग्रीव जाम्बवन्त हनुमन्त * कान्दन्त सन्तापे परि कपि अपर्य्यन्त ५२
चेतन लभिया प्रभु राघवे दुनाइ * करन्त सन्ताप आति प्रियाक वर्णाइ
हा हा सीता शान्ती पतिव्रता सुचरिता * मोहोर बल्लभा सुमाङ्गिता विवाहिता ५३
भाग्येसे लभिलो भार्य्या कत तपसाइ * हातते विधाता ताक हरिला देखाइ
भैल परिच्छेदा देखा इजन्मक लागि * मइसि पातकी तोर भैलो वरभागी ५४
घोर वनवासे दुःखे नभैला निर्व्वाण * हरि निले रावणे रहिल तातो प्राण
आति सुचरिता शान्ती जनकर जीक * सजि हाते बधि भैलो राक्षसतोधिक ५५
दण्डका वनत आपोनार एरि चिन्ता * मोकेसे सेविलि सती तइ सुचरिता
पासरिबो किमते सिसब तोर गुण * किनो निदारुण मइ पुरुष दारुण ५६

कौन-सा संकट लिख दिया था, जिस कारण स्वामी राम, सीता के लिए काल रूपी यम बन गये ॥ ४७ ॥ उन दोनो ने सती सीता के सारे दुखो को बताया। सभासदगण भी वह सुनकर सिर झुकाये रह गये। सभासदों को लव-कुश ने शोकाकुल कर डाला। उन्हें ऐसा लगने लगा, मानो आज ही सीता को निर्वासन दिया गया है ॥ ४८ ॥ राम के साम्राज्य में जानकी का कष्ट सुनकर सारे समाज के लोग फूट-फूटकर रोने लगे। सारी सभा को गुँजाकर हाहाकार शब्द व्याप्त हो गया। राम के शरीर में मानो आग लग गयी ॥ ४९ ॥ पुनः सीता का स्मरण कर रामचन्द्र के हृदय को विष-जैसे शोकानल ने व्याप्त कर लिया। बुझी हुई आग, मानो पुनः जल उठी। प्रचंड संताप के ताप से मानो प्राण निकलने लगे ॥ ६९५० ॥ रामचन्द्र मूर्च्छित होकर सिंहासन पर गिर पड़े। हाहाकार करते हुए भरत और लक्ष्मण ने उन्हे पकड़ लिया। वे उनके सिर पर पानी डालने और चँवर से हवा करने लगे। साथ ही तीनो भाई रोने लगे ॥ ६९५१ ॥ वशिष्ठ आदि ऋषियों के हृदय भी दुख से भर गये, वे सीता के शोक से मुँह पर वस्त्र डाले रोने लगे। विभीषण, सुग्रीव, जाम्बवन्त, हनुमान आदि अनेक वानर वेदना से अधीर हो रुदन करने लगे ॥ ५२ ॥ प्रभु राघव पुनः चेतना पाकर प्रिया का वर्णन करते हुए बड़ा संताप करने लगे। हा-हा-सती सीता, पतिव्रता, सुचरिता, मेरी शुभाकांक्षिणी, विवाहित वल्लभा, ॥ ५३ ॥ कितनी तपस्याओ के सौभाग्य से तुम्हे भार्या-रूप मे प्राप्त किया था। विधाता ने उसे हाथ मे दिखाकर हर लिया। मैं देख रहा हूँ, इस जन्म के लिए तुमसे चिर-वियोग हो गया। मैं ही तुम्हारे कष्टो का कारण बनकर पापी बना ॥ ५४ ॥ घोर वनवास के दुखों मे भी प्राण नही गये। रावण ने तुम्हे हर लिया, तब भी प्राण रह गये। अत्यन्त सच्चरित्र, जनकनन्दिनी सती को अपने हाथों से वधकर राक्षस से भी अधम बना ॥ ५५ ॥ दंडक वन मे अपनी चिन्ता

अपार सागरे बान्धिलोहो शिला सेतु * सबान्धवे बधिलो रावण यार हेतु
हेनय प्रियाक मइ तेजिलो कमने * चण्डाल बुलिया गरिहिबे यिबा शुने ५७
एहि बुलि रामचन्द्रे करन्त बिलाप * भरत लक्ष्मण शत्रुघनर सन्ताप
बोलन्त प्रबोध सबे बेढ़ि भ्रातृलोक * सन्धुक्षण होवा ददा परिहरा शोक ५८
इटो खेद ददा हृदयत दियो ठाइ * आरकि कान्दिले सिटो जानकीक पाय
आपुनि सर्ब्बज्ञ सबे जाना येन नय * असार संसार इटो सबे मायामय ५९
पुत्र दारा बान्धव यतेक परिकर * हेन जाना सबे शोक सन्तापर घर
क्षणेके संयोग हवे क्षणेके बियोग * मिछा बिषयत किछु नाहि सुख भोग ६९६०
येन फेनचय आसि होवे एक ठाइ * जलर बेगत बाजि तिलेके मिलाइ
बान्धवर समागमे तेह्नय अथिर * धैर्य्यसे औषध ददा आपद व्याधिर ६९६१
प्रबोध शुनिया राम थाकन्त थमकि * सुमरन्ते सीताक कान्दन्त मकामकि
बहि याय दुयो नयनर नीर धारे * निचुकान्त धरि भ्रातृ सबे बारे बारे ६२
हा सीता बुलि क्षणे तेजन्ते निश्वास * आपुनि चिन्तिलो आपोनार सर्ब्बनास
किबा कर्म्म करो आवे याओं कोन भिता * इटो गृह बासे मोर नाहिकन्त सीता ६३
लैयो राज्यभार भैयाइ भरत सोदर * राज्यर नाहिके कार्य्य करो देशान्तर
सीता बिने दशोदिशे देखन्त आन्धार * राघवर नाहि आर सन्तापर पार ६४
सीतार यतेक शाशु कौशल्या प्रमुख्ये * हा सीता बुलिया कान्दन्त अधोमुखे
कान्दन्त आवरि आनो नारी असंख्यात * क्रन्दनर उझि उथलिला समज्यात ६५

छोड़कर सुचरिता सती, तुम मेरी ही सेवा करती रहती थी। तुम्हारे उन सब गुणों को भला मैं कैसे भूलूँ ? मैं कैसा निदारुण कठोर-हृदय पुरुष हूँ ।। ५६ ।। असीम समुद्र पर हमने शिलाओं का पुल बनाया। बान्धवों समेत रावण को जिसके कारण वध किया, ऐसी प्रिया को मैंने किस प्रकार तज दिया ? यह बात जो भी सुनेगा, वही मुझे चाण्डाल कहकर तिरस्कृत करेगा ।। ५७ ।। यह कहकर रामचन्द्र विलाप करने लगे। इससे भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न को बड़ा संताप हुआ। सभी भाई उन्हें घेरकर धीरज बँधाने लगे। भैया, सचेत होइये, शोक तज दीजिये ।। ५८ ।। भैया, अब हृदय में इसी खेद को बसा लें कि क्या अब रोने से जानकी मिल पायेंगी ? आप सर्वज्ञ हैं, सभी नीति-नियम जानते है कि यह असार संसार सब कुछ मायामय है ।। ५९ ।। पुत्र, पत्नी, बान्धव आदि जितने सम्बन्धी-जन हैं, ऐसा समझिये कि सभी शोक-सताप के घर हैं। इनसे क्षण में मिलन होता है, क्षण में वियोग। इन मिथ्या विषयों में सुख-भोग कुछ भी नही है ।। ६९६० ।। जिस प्रकार फेनों का समूह आकर एक स्थान पर जमा हो जाता है, पुनः जल के प्रवाह में पड़कर पल भर में विलीन हो जाता है; बान्धवों का समागम भी उसी प्रकार अस्थिर है। भैया, संकट रूपी व्याधि की औषधि धैर्य ही है ।। ६९६१ ।। उनके धीरज बँधानेवाले वचन सुनकर रामचन्द्र स्थिर हुए और सीता को स्मरण कर फूट-फूटकर रोने लगे। दोनो आँखो से आँसुओ की धारा बह चली। सभी भाई उन्हे पकडे बार-बार चुप कराने लगे ।। ६२ ।। 'हा-सीता', कहकर क्षण-क्षण में वे साँसें लेने लगे। कहने लगे, मैने अपना सर्वनाश स्वयं कर डाला। अब कौन सा कर्म करूँ ? किस ओर जाऊँ ? इस गृहवास में मेरी सीता नही रही ।।६३।। हे भाई भरत, यह राज्यभार तुम ले लो, मुझे राज्य की आवश्यकता नहीं; मैं अन्य देश में चला जाऊं। राघव, सीता के बिना दसों दिशाओं में अँधेरा ही अँधेरा देखने लगे, उनके संताप का पार नहीं रहा ।। ६४ ।। कौशल्या आदि सीता की जितनी सासें थी, वे 'हा-सीता', कहकर सिर नीचा किये रोने लगी। और दूसरी असंख्य नारियाँ रो रही

राघवर शोके लोक सकले व्याकुल * यार्थे येन भाग उभारिले वृक्ष मूल
वशिष्ठ उठिया पाचे बुलिला प्रबोध * सबाके कराइला ऋषि क्रन्दन निरोध ६६
रामक बोलन्त बाप तेजियो सन्ताप * कोने पारे विधिर लिखित एराबाक
येन भैल तोमार पूर्व्वर कर्म्मफल * सीतार निमित्ते तुमि तेजियो बिकल ६९६७
यार येन अवश्येके हैवेक सर्व्वथा * उत्तराकाण्डर आवे शुना पाचकथा

लव-कुशर परिचय

तोमार आगत शिशु दुइ गाउक दुइ गीत * भविष्यत कथा हुइबे आपुनि विदित ६९६८
शोक परिहरि रामे ऋषिर बचने * तेजिया निश्वास बसिलन्त सिंहासने
आखि मुख मुछि पाछे चित्त करि थिर * शिशु दुइक आदेश करिला धीरे धीर ६९
शुनो पाचकथा केने गायो दुयो भाइ * हेनबा आमार इटो हृदय जुराय
शुनि लवे-कुशे गीत गाइबाक लागिला * शुना जानकीर येन अबस्था मिलिला ६९७०
एरिला लक्ष्मणे दिया वनत निर्व्वास * कान्दिलन्त सीता शोके आति हुया त्रास
कोनबा जन्मर जानकीर आछे भाग *फल मूल चाहन्ते वाल्मीकि पाइला आग६९७१
अनेक आश्वास बुलि वचत प्रवन्धे * आश्रमत निया पुषिलन्त जीउ बोधे
तपोवने आछन्त दुखिता आति हुइ * उपजिला सीतार यवञ्जा सुत दुइ ७२
कुश-लव नाम थैला दुइहन्तरो ऋषि * रामायण गीत इटो शिकाइला हरिषि
आमि दुइ लव-कुश सीतार सन्तति * गाओं रामायण गीत आजन्म-प्रभृति ७३

थी। सभी सभासदों के रुदन की तरंगें उमड़ उठी ॥ ६५ ॥ राघव के शोक से सभी लोग ऐसे व्याकुल हो उठे, जैसे वृक्ष की जड़ उखड़ जाने पर उसकी चोटी भी गिर पड़ती है। इसके पश्चात् वशिष्ठ ने उठकर धीरज बँधाया और उन ऋषि ने सभी का रोना वन्द कराया ॥ ६६ ॥ राम से कहा कि वत्स, सन्ताप छोड़ो, विधि का लिखा हुआ कौन मिटा सकता है ? जो कुछ हुआ, वह तुम्हारा पूर्व का कर्मफल था। सीता के लिए तुम विकल मत होवो ॥ ६९६७ ॥ जिसका जैसा होना है, अवश्य होगा। अव उत्तरकाण्ड की आगे की कथा सुनो।

लव-कुश का परिचय

तुम्हारे सामने ये दोनो शिशु गीत गायें। तव भविष्य की वात का पता अपने आप चल जायेगा ॥ ६९६८ ॥ ऋषि के वचन से रामचन्द्र शोक करना छोड़, लम्वी साँस ले सिंहासन पर बैठ गये। आँख-मुख पोंछकर चित्त स्थिर कर, धीरे-धीरे उन दोनो शिशुओं को आदेश दिया ॥ ६९ ॥ हम आगे की कथा कैसी है, सुनना चाहते हैं। तुम दोनो भाई गाओ। सम्भवत: उससे हमारा यह हृदय ठंडा हो सके। यह सुनकर लव-कुश गीत गाने लगे। जानकी की जो अवस्था हुई, सुनिये ॥ ६९७० ॥ लक्ष्मण वन में निर्वासन दे छोड़ आये। सीता शोक से अत्यन्त त्रस्त होकर रोने लगी। जानकी का न-जाने किस जन्म का भाग्य था कि फल-मूल ढूँढ़ते हुए वाल्मीकि वहाँ आ पहुँचे ॥ ६९७१ ॥ सीता को अनेक आश्वासन के वचन कहकर बड़े यत्न से अपने आश्रम में ले जाकर कन्या के रूप में पालन किया। सीता वड़ी दुखी होकर तपोवन में निवास करने लगी। वहीं उनके दो जुड़वें पुत्र हुये ॥ ७२ ॥ ऋषि ने दोनो के नाम कुश और लव रखे और रामायण का यह गीत प्रसन्नता से सिखाया। हम दोनो लव-कुश सीता के बेटे हैं। आजीवन यह रामायण-गीत आदि गाया करते हैं ॥ ७३ ॥ इन्हें

आहाङ्के बुलिय लव मोर नाम कुश * सीतार तनय आमि जाना निरङ्कुश
महाऋषि बालमीकिर दुयो भैलो शिष्य * शुनि समज्यार महामिलिल हरिष ७४
गीतते जानिल सबे सीतार तनय * भालेतो रामर सबे आकृति आन्वय
किनो सुप्रसन्न बिधि भैला सब सिद्धि * राघवर हुइबेक आवेसे बंशवृद्धि ७५
शुभ शुभ बुलि प्रजा पारय जोकार * जानिल कुशल सबे जानकी सीतार
आछन्त कल्याणे नमरिया मोर शान्ती * आनन्दे नसय येन अन्योअन्ये माति ७६
सकल प्रजारे महा मिलिल हरिष * जय जय राघव घोषन्त दशोदिश
रामे जानिलन्त इटो मोहोर सन्तति * आनन्द सिन्धुत निमजिला रघुपति ७७
निश्चये जानिलो हवे सीतार तनय * शिहरे शरीर द्रवे आनन्द हृदय
परम स्नेहत आति नयन तबध * लोतके भेण्टिल कण्ठ बाक्य गदगद ७८
प्रेमरसे विपुल आकुल करे हिया * आसनरे परा परिलन्त जाम्प दिया
गलत बान्धिल दुइको धरि आथे बेथे * पुत्रशिरे सुङ्घन्त स्नेहत रघुनाथे ७९
धारे बहि याय दुयो नयनर नीर * तियाइला लोतके लव कुशर शरीर
बुकुत धरिया दुइ पुत्रक सावटि * सिंहासनत आसि बसिला उलटि ६९८०
महा स्नेहे धरि आसि भरत लक्ष्मण * गुचाइलन्त दुइरो आसि बाकलि बसन
पिन्धाइलन्त दुइको आसि दिव्य अलङ्कार * कुश-लवे करिला पितृक नमस्कार ६९८१
पुत्रमुख चुम्बन्त स्नेहत बारे बार * बनते जन्मिलि दुयो दुखीया कुमार
भैला ऋषिबेश दुख पाइलि लागे माने * तोमार निकार मइ पापीर निदाने ८२

लव कहते हैं, मेरा नाम कुश है। हम सीता के पुत्र निरंकुश है, समझ लो। हम दोनो, महर्षि बाल्मीकि के शिष्य बने। यह सुनकर सभासदों को बहुत ही हर्ष हुआ ।। ७४ ।। गीत से उन्हें पता चल गया कि ये सीता के पुत्र हैं। इसी कारण सारी आकृति राम से पूरी मिलती-जुलती है। विधाता कितना सुप्रसन्न है, सारी सिद्धियाँ मिल गयी। अब जाकर रामचन्द्र की वंश-वृद्धि होगी ।। ७५ ।। 'शुभ-शुभ' कहकर प्रजा नारे लगाने लगी। सब सीता की कुशल-वार्ता जान गये। मेरी सती सीता मरी नही, कल्याणपूर्वक है। इस बात पर लोगों का आनन्द हृदय में नही समाता था, वे एक दूसरे से कहकर प्रकट कर रहे थे ।। ७६ ।। सारी प्रजा को बड़ा हर्ष हुआ। दसों दिशाओं में 'जय, जय, राघव' नाद गूँजने लगा। राम को पता चल गया कि ये मेरे ही पुत्र हैं, तब रघुपति आनन्द-सिंधु में निमग्न हो गये ।। ७७ ।। 'निश्चयपूर्वक जान गया कि ये सीता के पुत्र है।' —सोचकर उनका शरीर रोमांचित होने लगा, हृदय द्रवित हो गया। परम स्नेह की अधिकता से उनकी आँखें स्तब्ध रह गयीं, आँसू बहकर गले तक पहुँच गये, वचन गद्‌गद हो उठे ।। ७८ ।। विपुल प्रेम-रस ने उनके हृदय को आकुल कर डाला। वे आसन से कूद पड़े। दोनो को रघुनाथ ने बड़ी उतावली से पकड़कर गले लगा लिया और पुत्रों के सिरों को स्नेह से सूंघने लगे ।। ७९ ।। उनकी दोनो आँखों से आँसुओं की धारा बह चली। उन आँसुओं ने लव-कुश के शरीर भिगो दिये। दोनो पुत्रों को अपने वक्ष में लगाये हुए वे लौटकर सिंहासन पर आ बैठे ।।६९८०।। भरत-लक्ष्मण ने उन्हें बड़े स्नेह से पकड़कर दोनो के वल्कल-वस्त्र उतार डाले। दोनो को उन्होंने दिव्य आभूषण पहनाये। लव-कुश ने पिता को नमस्कार किया ।। ६९८१ ।। वे बार-बार स्नेह से पुत्रों के मुँह चूमने लगे। रामचन्द्र कहने लगे— तुम दोनो दुखिया (निर्धन) कुमारों ने वन में जन्म लिया। तुम्हें ऋषि-वेश लेना पड़ा। अपार दुख भोगने पड़े मुझ पापी के कारण तुम्हें दंडस्वरूप कष्ट उठाने पड़े ।। ८२ ।। मैंने सोच लिया था कि मेरी प्राणप्रिया चल बसी है। आज ही पता चला कि प्राणश्वरी मेरी जीवित है। ऐसा

मइ बोलो हुइवे प्राणप्रिया गैल मरि * आजिसे जानिलो मोर जीवै प्राणेश्वरी
दुख पाइवे लागि आउर नरैल सीतार * आकस्मिते मइ पापी भुञ्जाइलो निकार ८३
एहि वुलि मकमकि करन्त क्रन्दन * लगत कान्दन्त दुयो सीतार नन्दन
धरा धरि करि कान्दिलन्त पुत्र वापे * देखिया कान्दन्त सवे समाज सन्तापे ८४
धरिला कौशल्या आसि नातिर गलते * एतमान भैला दुयो पुताइ वनते
हरि हरि वोहारी जानकी सुचरिता * निकारके लागि उपजिलि आइ सीता ८५
नगैल कतनो तोर कहान कुनाट * कोननो विधाता इटो लिखिला ललाट
तेजि राज्य आछस वनर पशि सान्धि * हा सीता वुलिया कान्दन्त राव वान्धि ८६
लक्ष्मण भरत शत्रुघने कान्दि आति * वशिष्ठ प्रमुख्ये ऋषि निषेधन्ति माति
जीवन्त जानकी कथा सकले कल्याण * किसक कन्दिया एमु सीतार निदान ८७
हरिष समये बिषादर कोन काम * हेन शुनि शोक तेजिलन्त श्रीराम
आखि मुख मुचिलन्त निश्वास तेजिया * सीताक सुमरि आर नरवन्त हिया ८८
आपुनि आनिवो आजि जानकीक याचि * आसनर हन्ते उठिलन्त राम काछि
लगते याइवाक साजिलन्त सामराज * अन्तेष पुररो नारीगण भैला वाज ८९
सीताक देखिवे लागि रामर आक्रान्त * भालुक वानर सेना लगते चलन्ति
टल वल करे मही लरिल कटक * आग वाढ़ि वशिष्ठे वुजाइला राघवक ६९९०

हनुमन्तादिर सीताक आनिवलै प्रेरण

मिलिल तोमात आसि सीतार वैराग * जानकीक नपाइवा यापुनि गैले लाग

कोई दुख नही, जिसे सीता ने न भोगा हो। मुझ पापी ने उसे अकस्मात् दुख भोगने को बाध्य किया है ।।८३।। यह कहकर वे फूट-फूटकर रोने लगे। उनके साथ सीता के दोनो पुत्र भी रोने लगे। बाप-बेटे एक दूसरे को पकड़े रो रहे थे। यह देख सारा समाज संताप से रुदन करने लगा ।। ८४ ।। कौशल्या ने आकर नातियों को आलिगन कर लिया। कहने लगी— ये हमारे नाती वन मे ही इतने बड़े हो गये। 'हरि, हरि' मेरी उत्तम चरित्र वाली वहू जानकी, वेटी सीता, केवल कष्ट भोगने के लिए ही तेरा जन्म हुआ ।। ८५ ।। तेरा अपयश और निन्दावाद कितना है, जो अब तक अन्त नही हुआ ? किस विधाता ने तेरे ललाट पर यह लिख दिया था ? राज्य छोड़कर तुझे दुर्गम वन में रहना पड रहा है। हा-सीता, कहकर वे चीखकर रोने लगी ।। ८६ ।। लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न भी वहुत रोने लगे। वशिष्ठ आदि ऋषि उन्हें समझाकर रोने को मना करने लगे। जानकी जीवित है, तब तो सब कुछ कल्याण है। अब सीता के लिए रो क्यों रहे हो ? ।। ८७ ।। हर्ष के समय में विषाद का भला क्या काम ? यह सुनकर श्रीराम ने शोक करना छोड़ दिया। उन्होने सांस लेते हुए आंख-मुंह पोंछा। सीता का स्मरण कर उनका हृदय स्थिर न रह सका ।। ८८ ।। आज मैं स्वयं जाकर जानकी को ले आऊँगा, कहकर रामचन्द्र प्रस्तुत हो सिहासन पर से उठ पड़े। उनके संग चलने हेतु राज्य के सभी प्रस्तुत हुए। अन्तःपुर की रानियाँ भी निकल पड़ीं ।। ८९ ।। सीता को देखने हेतु रामचन्द्र की उत्कट इच्छा जग उठी। भालू-वानरों की सेना उनके संग चल पड़ी। सेना के चलने से धरती टलमलाने लगी, तब वशिष्ठ ने आगे बढ़कर रामचन्द्र को समझाया ।। ६९९० ।।

सीता को लाने हेतु हनुमान आदि को भेजा जाना

हे राम, सीता के मन में तुम्हारे प्रति विराग उत्पन्न हो गया है। स्वयं जाने पर

महन्त बाछिया पठायोक आनलोक * करि आतिआकुति सीताक आनन्तोक६९९१
बशिष्ठर बोले राम बसिला उलटि * सीतार सन्तापे येन याय प्राण फुटि
शत्रुघन बिभीषण सुषेण मारुति * चारिको पाञ्चिला रामे करिया काकूति९२
चलियो चारियो बीर बाल्मीकिर ठाव * मोर अर्थे ऋषिर धारिबा दुइ पाव
भैलो आमि जमाइ सीता ताने भैला जीव * आनन्तोक प्रबोधि देन्तोक दान जीव ९३
नुहिबा देन्तोक मोक आश्रमते ठाइ * सीतार लगते थाको फल मूल खाइ
धरिबे नोवारो बुकु फुटे मोर प्राण * सीताक देखिले दुनाइ देन्त जीव दान ९४
मइ जानो जानकीक चुइले पाप हरे * तथापि दुर्ज्जने अपयश करि मरे
लोक अपबादक आमार बर चिन्ता * परीक्षा करिया दुनाइ सम्बरिबो सीता ९५
जानकीक बुलिबा एरोक असन्तोष * आवे बारेकर मोर मरषोक दोष
कोने पारे बिधि लिखिताक एराइबाक * करिबा कार्पूण्य मोर निमित्ते सीताक ९६
बाप हनुमन्त हेरा शुना मोर वाक * तोहोर निमित्ते पाइलो पूर्ब्बतो सीताक
येन तेनमते बुजाइ जानकीक आन * कि बुलिबो तोक बाप देह प्राण दान ९७
रामर कातरे कान्दिलन्त कपिराज * प्रणामि चारियो समज्यार भैल बाज
सीताक देखिते उत्रावल हनुमन्त * कतोक्षणे बाल्मीकिर आश्रम पाइलन्त ९८
बसिया आछन्त माव मलिन स्वभाव * स्वामीर चरण चिन्ति जगतर माव
मलिन बसन बेश क्लेश देहा क्षीण * धूलिये धूसर तनु तापसीर चिन ९९
फल मूल भक्षणत शुखाइला शरीर * सीताक प्रत्येके देखिलन्त चारि बीर
करिलन्त पृथिवीत परिया प्रणति *तासम्बाक देखि सङ्कोचिता भैला सती७०००

तुम्हें सीता से भेंट नहीं हो पायेगी। तुम वहाँ दूसरे उत्तम लोगो को चुनकर भेजो, जो जाकर सीता को अनुनय-विनय कर यहाँ ले आवे ॥ ६९९१ ॥ वशिष्ठ के कहने पर रामचन्द्र लौटकर सिंहासन पर आ बैठे। सीता के सन्ताप से मानो उनके प्राण निकले जा रहे थे। शत्रुघ्न, विभीषण, सुषेण, हनुमान इन चारों को रामचन्द्र ने अनुरोध कर भेजा ॥ ९२ ॥ तुम चारो वीर बालमीक के यहाँ जाओ, मेरे लिए ऋषि के दोनो चरण पकड़ना। कहना— सीता उनकी कन्या है, मैं उनका दामाद हुआ। सीता को धीरज बँधाकर ले आवे और मुझे जीवन-दान दें ॥ ९३ ॥ और ऐसा न हो तो मुझे ही आश्रम में स्थान दे। मैं भी सीता के साथ फल-मूल खाकर रहूँगा। मेरे प्राण छाती फाड़कर निकले जा रहे हैं, मैं उन्हें पकड़े नहीं रह पा रहा हूँ। सीता को देखने पर पुनः उनके द्वारा मुझे जीवन-दान मिलेगा ॥ ९४ ॥ मैं जानता हूँ कि जानकी को छूने पर भी पाप मिट जाते है। तथापि दुर्जन उसको अपयश लगाते हैं। लोकापवाद से हम बड़ी चिन्ता मे पड़ जाते हैं। पुनः परीक्षा लेकर सीता को मैं ग्रहण करूँगा ॥ ९५ ॥ जानकी से कहना, वह असन्तोष छोड़ दे। आकर एक बार मेरे दोषों का परिमार्जन कर दे। विधाता का लेखन कौन मिटा सकता है? मेरे हेतु सीता से अनुनय करना ॥ ९६ ॥ वत्स हनुमान, मेरा वचन सुनो। तुम्हारे कारण ही पहले मैं सीता को पा सका था। जैसे-तैसे भी समझा-बुझाकर जानकी को तुम ले आना। वत्स, तुमसे क्या कहूँ? मुझे प्राण-दान दो ॥ ९७ ॥ राम की कातरता देखकर कपिराज रो पड़े। उन्हें प्रणाम कर वे चारों राजसभा से निकले। हनुमान सीता को देखने के लिए बेचैन थे। कुछ समय पश्चात् वे वाल्मीकि के आश्रम में पहुँचे ॥ ९८ ॥ माता सीता का रूप मलीन हो गया था, वे जगत्-माता वहाँ स्वामी राम का चरण-चिन्तन करती हुई बैठी थीं। उनके वस्त्र और वेष मलीन थे। कष्ट के मारे शरीर क्षीण हो गया था। तपस्विनी की निशानी की भाँति उनका शरीर धूलि-धूसरित था ॥ ९९ ॥ फल-मूल

बस्त्रे आवरिया माव करि मुख काति * थाकिलन्त दिया हात गालत नमाति
शत्रुघन लङ्केश सुषेण हनुमन्त * सीतार अवस्था देखि चारियो कान्दन्त७००१
हा हा माव राघवर प्रिया महादे * तोहोर करिला बिधि हेनसे बिलाइ
शचीक अधिक आछिलेक परिछेद * भैला तापसीर बेश इसि हृदि खेद २
जगतर प्रभु राम देवर घरिणी * यार आल लवै अलेख्य सेवकिनी
अन्तेष पुरत फुरा नेतर तूलित * तृणेसे आसन आवे शयन भूमित ३
सुवर्णर तप्त येन आछिलेक कान्ति * जगत प्रख्यात तुमि माव महा शान्ती
प्राणतो अधिक रामे देखिले तोमाक * दिलन्त निर्व्वास किनो बिधिर बिपाक ४
अवस्था देखन्ते येन प्राण याइ फुटि * कान्दिलन्त मारुति माटित पारि लुटि
हरि हरि जगतजननी सीता आइ * किक जीव धरो देखि तोमार बिलाइ ५
सागर तरिलो लङ्का करिलो दगध * यार पदे दशानन ससैन्ये गैल बध
जगत ईश्वरी राघवर पटेश्वरी * तोमार बिपत्ति देखि किय नयाओं मरि ६
राजभार्य्या सकले योगान थाके धरि * याक सेवा करन्त स्वर्गर अपेश्वरी
हेन माव भैला ऋषि पत्नीर सङ्गति * कोननो कुयोगे हेन मिलाइले दुर्गति ७
कान्दि कान्दि हनुमन्ते करन्त कातर * मरषियो दोष माव प्रभु राघवर
सुमरिते तोमाक रामर हृदि खेद * दिने रात्रि नेत्रर लोतक नाहि छेद ८
हा सीता सीता बुलि तेजन्त निश्वास * बनतो अधिक तान सिटो गृहवास

भक्षण करने के कारण उनका शरीर सूख गया था। सीता को उन चारों में से प्रत्येक वीर ने देखा और धरती पर पड़कर प्रणाम किया। उन सबको देख सती सीता संकोच में पड़ गयी ॥ ७००० ॥ वस्त्र से ढँककर मुख झुका, वे गाल पर हाथ दिये मौन बैठी रही। शत्रुघ्न, लंकाराज विभीषण, सुषेण, हनुमान ये चारों सीता की अवस्था देख रोने लगे ॥ ७००१ ॥ हा-हा, माता, रामचन्द्र की प्रिय पटरानी, तुम्हें विधाता ने इस प्रकार संकट में डाल रखा है। हमारे हृदय में दुख इसी बात का है कि तुम्हारा गौरव तो इन्द्राणी से भी अधिक था; तो भी तुम्हें तपस्विनी का वेश धारण करना पड़ा ॥ २ ॥ जगत के प्रभु रामचन्द्र की गृहिणी, असंख्य सेविकाएँ जिनकी सेवा में नियोजित रहती थीं, अंतःपुर में जो कोमल शय्या पर चलती-फिरती थी; उनके लिए आज तृण का ही आसन है, भूमि पर ही वे शयन कर रही है ॥३॥ तुम्हारी कान्ति तप्त सुवर्ण की भाँति थी। माँ, तुम महासती के रूप में विश्वविख्यात हो। रामचन्द्र तुम्हें प्राणों से भी अधिक प्रिय मानते थे। विधि का कैसा चक्कर है कि उन्होंने तुम्हें निर्वासन दे दिया ॥४॥ 'तुम्हारी अवस्था देखकर प्राण निकले जा रहे हैं।' —कहते हुए हनुमान धरती पर लोट-पोटकर रोने लगे। 'हरि, हरि', जगत्-जननी सीता माता, तुम्हारी विपत्ति देखकर कैसे हम जीव-धारण करें ? ॥५॥ (जिसके कारण) हमने सागर लाँघ कर लंका को दग्ध किया; सेना सहित दशानन मारा गया। जगत-ईश्वरी तुम वही राघव की पटरानी हो, तुम्हारी विपत्ति देखकर हम मर क्यों नही जाते ? ॥ ६ ॥ राजरानियाँ जिनके लिए सारी सामग्रियाँ जुटाया करती, जिनकी सेवा स्वर्ग की अप्सराएँ किया करती थीं; ऐसी माता को ऋषि-पत्नियों के संसर्ग में रहना पड़ रहा है। किस कुयोग के कारण ऐसी दुर्गति मिली है ? ॥ ७ ॥ रो-रोकर हनुमान यह करुणा-पूर्ण वचन कहने लगे— माँ, प्रभु राघव के दोष क्षमा कर दो। तुम्हारे स्मरण से रामचन्द्र के हृदय में दुख हो रहा है। दिन-रात आँखों से आँसुओं की धारा टूटती नही ॥ ८ ॥ 'हा सीता, हा सीता' कहकर वे लम्बी साँसे लेते रहते है, उनका राज-भवन में रहना वनवास से भी अधिक (दुखदायी) है। रामचन्द्र तो यही मानते थे

मरिलाहा बुलि रामे हेनसे जानन्त * आपोनाक निन्दि आति फुकिते कान्दन्त ९
तोमार तनय दुइ लव आरु कुश * गाइल रामायण गीत जगते हरिष
आपोनार पुत्र बुलि पाचे चिनिलन्त * गलत बान्धिया दुइको रामे कान्दिलन्त १०
आश्रयत आछा तासम्बार मुखे शुनि * तोमाक निबाक आजि साजिल आपुनि
नपाइबाहा लाग बशिष्ठर शुनि बाक * तातेसे तोमाक निते पठाइला आमाक ११
अनेक कार्पण्य बुलिलन्त रघुपति * राघवर दोष मरषियो सबे सती
येन भैला तोमार तथापि देव स्वामी * दान्ते तृण धरिया काकूति करो आमि १२
पठाइला तोमाक रामे सादरि चोदल * असन्तोष तेजिया स्वामीर चला कोल
जातिष्कार होवा माव शरीरक मण्डि * आजि धरि दुइहानो दुर्गति याउक खण्डि १३
चारियो कातर करि अनेक बुलिल * शुनि जानकीर शोक अगनि ज्वलिल
सुमरि सुमरि बनबास महाक्लेश * चारिरो आगत देवी कान्दिला अशेष १४
कतोक्षणे सीताशान्ती शोकक तम्भाइ * बुलिला उत्तर पाचे चारिको शुनाइ
शुनियो सुषेण हनुमन्त लङ्केश्वर * शुना बाप शत्रुघन कनिष्ठ देवर १५
किसक आमाक आउर करा उत्पात *पासरि आछिलो दुनाइ अग्नि ज्वाल गात
आरो अयोध्यात भुञ्जिबोहो राजसुख * देखिबो दुनाइ आउर राघवर मुख १६
बोलाइबो घरणी आरो राघवर परे * नाइ तेवे निलाजिनी नारी मोत परे
मोक करिबार आछनरैल रामर * आरो नुबुलिबा करो सबाके कारत १७
आमाक निबेक आवे रामे कोन गन्धे * गर्भसमे तेजिलेक मारिबे प्रबन्धे
प्राण धरि आछो दुइ पुत्रर कारणे * हइबे अनाथिति शिशु मोहोर मरणे १८

कि तुम्हारी मृत्यु हो गयी है। वे अपनी निन्दा करते हुए फूट-फूटकर रो रहे हैं ।। ९ ।। तुम्हारे दोनो पुत्र लव और कुश सारे संसार को हर्षित करते हुए रामायण-गीत गा रहे थे। रामचन्द्र ने उन्हें पहचाना कि ये उन्ही के पुत्र है। तब उन्हें गले लगाकर रोने लगे ।। ७०१० ।। उनके मुँह से यह बात सुनकर कि तुम आश्रम में रह रही हो, तुम्हें ले जाने हेतु आज स्वयं प्रस्तुत हो गये। वशिष्ठ का यह वचन सुनकर कि तुम सीता से मिल नही पाओगे, तुम्हें ले जाने हेतु उन्होंने हमें भेजा है ।। ७०११ ।। रघुपति ने तुमसे कहने हेतु अनेक करुणापूर्ण वचन कहे हैं। सती सीता माँ, रामचन्द्र के सभी दोष क्षमा करो। वे चाहे जैसे भी हों, तथापि तुम्हारे स्वामी देव हैं। हम दाँतों में तृण दबाकर तुमसे प्रार्थना करते है ।। १२ ।। रामचन्द्र ने आदर से तुम्हारे लिए पालकी भेजी है, अब असन्तोष करना छोड़कर स्वामी के पास चलो। माँ, अपने शरीर को विभूषित कर निर्मल बन जाओ। आज तुम दोनो की दुर्गति मिट जाये ।।१३।। उन चारों ने बड़े करुणापूर्ण ढंग से बहुत अनुरोध किया। यह सुनकर जानकी की शोक-अग्नि जल उठी। अपने वनवास के महा कष्ट को स्मरण कर चारों के सम्मुख देवी ने अपार रुदन किया ।। १४ ।। कुछ क्षण में देवी सीता शोक के वेग को रोककर चारों को सुनाकर उत्तर देती कहने लगीं— सुषेण, हनुमान, विभीषण, सुनो छोटे देवर वत्स शत्रुघ्न, सुनो ।। १५ ।। मुझे अब तंग क्यों कर रहे हो ? मैं तो सब कुछ भूली हुई थी, पुनः शरीर में अग्नि क्यों जला रहे हो ? पुनः अयोध्या जाकर राजसुख भोगूँ, राघव का मुख पुनः देखूँ, ।। १६ ।। राघव की गृहिणी पुनः कहलाऊँ; तब तो मेरी जैसी निर्लज्ज नारी दूसरी कोई नही है। राम का मेरे लिए अब कुछ करना शेष नही रहा। पुनः यह सब न करना, मैं विनती करती हूँ ।। १७ ।। मुझे अब राम किस प्रयोजन से लेने के लिए आ रहे है ? जब कि गर्भ सहित मुझे मार डालने की व्यवस्था उन्होंने कर दी ? मैं केवल दो पुत्रों के लिए ही प्राणधारण किये हुए हूँ। मेरे मरने पर दोनो बच्चे अनाथ

दुखर सहाय शुना हनुमन्त बाप * मोहोर निमित्ते तेजियोक हृदिताप
भुञ्जो निजकर्म्म आत नाहि किछु खेद * रामर आमार जाना भैल परिच्छेद १९
दुर्ज्जनर बोले मोक करिला निकार * जानो मोर मने राम स्वामी यमकाल
नमारिला बनत राघवे मोक जानि * इबार काटिबे मोक हाते खाण्डा हानि७०२०
मइ येने जानो राम एनुवा निर्द्दय * लङ्काते तेजिलो हन्ते प्राणक निश्चय
तोहोरेसे बचनत रहिलो अभागी * किय पाइले हन्ते राम कदर्थिवे लागि ७०२१
यिटो निलाजिनी याउक रामर सञ्जात * तान कथा बाप सब नकैबा आमात
मोहोर अवस्था यत सबाते बेकत * दुनाइ येवे बोलो तेवे आमार शपत २२
शुनि सबे जानकीर बचन नैराश * आउर केवे मातिबाक नपाइलन्त सास
शत्रुघन बिभीषण सुषेण मारुति * तेजिल निश्वास बुद्धि हराइल चुरुति २३
शुना सर्व्वजन इटो कथा रामायण * बिमरिषि चावा ऐत केदिन जीवन
घोर परलोके यम यातना अपार * राम नाम विने नाइ तथात निस्तार २४
धर्म्मर भाङ्गिले कलि चारियो चरण * हरिर नामत धर्म्मे पशिल शरण
हेन हरि नामक सतते यिटो गावे * सि सि जने समस्त पुण्यक लाग पावे २५
निष्ठे जाना समस्त शास्त्रर इसे मज्जा * आन धर्म्म किङ्कर नामेसे तार राजा
आगम पुराण शास्त्र देखियो विचारि * कलित तरिबे आन कोन पुण्ये पारि २६
कारो चित्त बित्त शरीरत नाइ शुद्धि * स्वभावत कलिर मलिन भैल बुद्धि
कलिर परम धर्म्म जाना हरि नाम * शङ्करे रचिला डाकि बोला राम राम७०२७

हो जायेंगे ।।१८।। मेरे दुखो के सहायक, वत्स हनुमान, सुनो। मेरे लिए मन में कष्ट करना छोड़ दो। अपना कर्म-फल भोगूँ, इसमे मुझे कोई खेद नही। समझ लो कि राम का और मेरा सम्बन्ध कट चुका है।। १९ ।। दुर्जनों के वचनों से रामचन्द्र ने मुझे उत्पीड़ित किया। अपने मन में मैं समझ गयी हूँ कि स्वामी राम ही मेरे यम-काल हैं। जान-बूझकर ही राम ने मुझे वन में नही मारा, परन्तु इस वार तो मुझे अपने हाथ से खड्ग के प्रहार से काट डालेंगे ।। ७०२० ।। यदि मैं जानती कि राम ऐसे निर्दय हैं, तो लंका मे ही निश्चय अपने प्राण तज देती। मैं अभागी तुम्हारे वचन से ही जीवित रही। नही तो राम तिरस्कार करने के लिए मुझे कहाँ पाते? ।। ७०२१ ।। जो निर्लज्ज नारी हो, वही अब राम के पास जाये। वत्सगण, अब उनकी बात हमसे न कहना। मेरी अवस्था तो सबके सम्मुख प्रकट है। दूसरी बार यदि कहो, तो मेरी शपथ है ।।२२।। जानकी का ऐसा निराशापूर्ण वचन सुनकर पुनः किसी को कुछ कहने का साहस न हो सका। शत्रुघ्न, विभीषण, सुषेण, हनुमान, चारों ने लम्बी साँसें ली, उनकी बुद्धि खो गयी ।।२३।। सभी लोग यह रामायण-कथा सुने, विचार कर देखें कि जीवन कितने दिन का है। घोर परलोक में यम की अपार यातना भोगनी पड़ती है। राम-नाम के विना वहाँ निस्तार नहीं है ।। २४ ।। कलि ने धर्म के चारों चरणों को तोड़ डाला है। धर्म ने हरि-नाम में ही शरण ली है। ऐसे हरि-नाम का जो निरन्तर गान करता है, वह व्यक्ति समस्त पुण्यों का भाग पा जाता है ।। २५ ।। सत्य जानो कि यही सभी शास्त्रों का सार है। दूसरे धर्म इसके किंकर हैं, नाम ही उनका राजा है। वेद, पुराण आदि शास्त्रों का विचार कर देखो, कलि में और किस पुण्य से तर सकते है? ।। २६ ।। कलिकाल में किसी का चित्त, वित्त, शरीर शुद्ध नहीं; स्वभाव से ही कलि में बुद्धि मलिन हो गयी है। समझ लो कि कलिकाल में हरि-नाम ही परम धर्म है। यह शंकर ने रचा है। पुकार-पुकारकर 'राम, राम' कहो ।। ७०२७ ।।

दुलड़ी

सीतार नैराश शुनि चारि बीर करिलन्त माथा हेट ।
फल मूल लै आसिल बालमीकि ताङ्क पाइला पाचे भेट ।।
रामर गोचर चारिओ कहिला ऋषिर चरण लागि ।
अनेक कातर करिया राघवे पठाइला सीताक मागि ।। ७०२८
रामे ये बोलन्त मइ भैलो जोवाइ सीता ताने भैल जीउ ।
दुनाइ येन बिहा करान्तोक आनि तेवे देन्त दान जीव ।।
कतेक रामर कहिबो कातर गुचाइयो ताहान चिन्ता ।
समर्पियो निया परीक्षा करिया सम्बरिब रामे सीता ।। २९
बचन आमार गोसानी सीतार कर्णर पथे नयाय ।
येन तेनमते रामर निमित्ते आपुनि नियो बुजाइ ।।
रामर बिनय बालमीकि शुनिया बुलिला सीतार आगे ।
राघवर बाणी जनकनन्दिनी किसक बाधिबे लागे ।। ७०३०
तुमि पतिव्रता स्वामी सि देवता आपुनि जानियो भाले ।
पूर्ब्ब यत दोष मरषियो माव यि भैल यार कपाले ।।
मोहोर शपत दियोक सन्मत एरियो आति आक्रान्ति ।
बाल्मीकिर बाणी शुनिया गोसानी कान्दन्त मात्र नमाति ।। ७०३१
चरणे भमित आथाके लेखन्त नेदन्त एको सिद्धान्त ।
बाल्मीकि बुलिला जानकीर चित्त भैल किछु उपशान्त ।।
चारियो बीरक बुलिला बाल्मीकि रामर बचन पालि ।
प्रबोधि सीताक निबो समज्याक आमि प्रभाततै कालि ।। ३२

सीता के निराशापूर्ण वचन सुनकर चारों वीरों ने सिर झुका लिया। इसके पश्चात् फल-मूल लेकर बालमीकि आ पहुँचे, उनसे उनकी भेंट हुई। ऋषि के चरणों में प्रणाम कर चारों ने उनसे रामचन्द्र की बात कही कि रामचन्द्र ने अनेक कातर वचन कहते हुए सीता को बुला भेजा है (आपसे माँगा है) ।। ७०२८ ।। राम ने कहा है, सीता आपकी बेटी है, मैं इस कारण आपका दामाद हूँ। दोनो को आप लाकर पुनः विवाह करवा दें, आप मेरा जीवन-दान दें। राम की कातरता का वर्णन भला हम क्या करें, आप उनकी चिन्ता मिटाइये; आप उन्हें सीता को सौंप दें। रामचन्द्र सीता की परीक्षा लेकर पुनः ग्रहण कर लेंगे ।। २९ ।। हमारा कहना जैसे देवी सीता के कानों में न पड़े, किसी भी प्रकार से रामचन्द्र के लिए आप सीता को समझाकर ले चलिये। रामचन्द्र के कहे हुए विनय-वचन सुनकर बाल्मीकि ने सीता के सम्मुख जाकर कहा, जानकी, भला रामचन्द्र के वचन को ठुकरा देना कहाँ उचित है ? ।। ७०३० ।। तुम तो पतिव्रता हो, स्वयं भलीभाँति जानती हो कि स्वामी ही देवता है। जिसके भाग्य में जो था, वह हुआ; अब माँ, पहले के उन दोषों को क्षमा कर दो। मेरी शपथ है, तुम सम्मति दे दो; क्रोधावेश छोड़ दो। बाल्मीकि की बात सुनकर माता सीता कुछ बिना कहे केवल रोती रहीं ।। ७०३१ ।। वह अपने चरणों से भूमि पर लगातार लिखने लगीं, कुछ भी निर्णय नहीं दिया। बाल्मीकि समझ गये कि जानकी का चित्त कुछ शान्त हुआ है। बाल्मीकि ने चारों वीरों से कहा— राम के वचन मानकर मैं कल प्रातःकाल सीता को धीरज बँधाकर राजसभा में ले जाऊँगा ।। ३२ ।। मैं सीता को राम के पास पहुँचा दूँगा। वहाँ वह परीक्षा दे, सभी लोग देखें। सीता के लिए मैं भी संसार को ज्ञात

सवेयो देखोक   परीक्षा देन्तोक   योगाइबो निया रामत ।
  सीतार निमित्ते   जगत विदिते   करिबो मयो शपत ॥
हेन शुनि रङ्गे   गैलन्त चारियो   रामर पाशक प्रति ।
  यतेक वृत्तान्त   सकले कहिला   चरणे करि प्रणति ॥ ३३
रामे ये बोलन्त   शुना ऋषिसब   आन यत समाजिक ।
  वाल्मीकिये कालि   प्रभाते आनिब   समज्याक जानकीक ॥
लैवन्त परीक्षा   कालि सबे देखा   आजि यायो घराघरि ।
  एहि बुलि सभा   विसर्ज्जि उठिला   पुत्र दुइर हात धरि ॥ ३४
सीताक सुमरि   राघवर भैल   रजनी युग समान ।
  स्वपने सचित्तें   किछु नेदेखन्त   सीता बिने एको आन ॥
केतिक्षणे राति   प्रभात हुइबेक   उठि उठि चान्त येलि ।
  बैसन्त शोवन्त   धरन्त सावटि   पुत्र दुइक हात मेलि ॥ ३५
हा सीता सीता   बोलन्ते रामर   रजनी भैला प्रभात ।
  स्नान दान करि   देवक आदरि   बसिला आसि सभात ॥
लक्ष्मण भरत   शत्रुघन आदि   बसिला चिन्तिया काज ।
  वशिष्ठ प्रमुखे   महा महा ऋषि   बसिला पात्र समाज ॥ ३६
भालुक वानर   राक्षसे वेढ़िल   रामर साधिया प्रीति ।
  लक्षे लक्षे राजा   योगाने रहिला   राघवर चतुर्भिति ॥
दिव्य सिंहासने   आछन्त राघव   रञ्जिया सिटो समाज ।
  सीता सने तैते   प्रभाते लरिला   वाल्मीकि ये ऋषिराज ॥ ३७
सीतार परीक्षा   शुनि यत देव   दिव्य विमानते चाकि ।
  ब्रह्माये सहिते   बहिला आसिया   गगन मण्डल ढाकि ॥
यत नरनारी   आछे शारी शारी   जानकीक बाट चाइ ।
  उरुक मुरुक   करन्त उत्सुक   आसिबन्त सीता आइ ॥ ७०३८

करने हेतु शपथ करूँगा। यह सुनकर चारों प्रसन्न होकर राम के पास गये और उनके चरणो मे प्रणाम कर सारा वृतान्त कह सुनाया ॥ ३३ ॥ रामचन्द्र ने कहा, ऋषियो और सभासदो, सुनिये। वाल्मीकि कल प्रातःकाल राजसभा में जानकी को लेकर आयेंगे। हम परीक्षा लेंगे, कल आप सभी देखें, आज अपने-अपने घर जायें। यह कहकर सभा विसर्जित कर रामचन्द्र दोनो पुत्रों के हाथ पकड़कर उठ पड़े ॥ ३४ ॥ सीता का स्मरण करते हुए रामचन्द्र की रात युग के समान बीती। जागते में या सपने में वे सीता के सिवा और कुछ नही देखते थे। कब रात बीतेगी, सोचकर वे बार-बार उठ-उठकर सूरज को देखते थे। कभी बैठते थे, कभी लेटते थे, कभी दोनो पुत्रों को हाथ फैलाकर बांहो में भर लेते थे ॥ ३५ ॥ हा सीता, हा सीता, कहते हुए रामचन्द्र की रात बीती, प्रभात हुआ। स्नान-दान, देवता की पूजा कर, वे सभा में आ बैठे। लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न आदि भी अपने-अपने कार्यों का चिन्तन करते हुए आ बैठे। वशिष्ठ आदि ऋषि-महर्षि, सामन्त और सभी सभासद आकर बैठ गये ॥ ३६ ॥ भालू-बानर-राक्षस आदि ने आकर रामचन्द्र का प्रेम बढ़ाते हुए उन्हें घेर लिया। लाखों राजा अपने उपहार लिये रामचन्द्र के चारों ओर खड़े हो गये। उस समाज को हर्षित करते हुए रामचन्द्र दिव्य सिंहासन पर आसीन थे। उसी प्रातःकाल मे ऋषिराज वाल्मीकि सीता सहित वहाँ चल पड़े ॥ ३७ ॥ सीता की परीक्षा की बात सुनकर ब्रह्मा सहित सारे देवगण दिव्य विमानों पर आकाश-मंडल को परिव्याप्त करते हुए आकर स्थित हो

छबि

बरदोवा नामे ग्राम शस्ये मत्स्ये अनुपाम लौहित्यर जले अनुकूल ।
भैला सेहि ग्रामेश्वर यार नाम राजधर कायस्थ कुलर पद्मफुल ॥
तान पुत्र सूर्य्यबर महाबरा देशधर दानी मानी महायशी शिष्ट ।
यार यश एभु ज्वलै जयन्त माधव दलै दुयो भाइ याहार कनिष्ठ ॥ ७०३९
तान्ते हन्ते भैला जात समस्ते देशते ख्यात प्रसिद्ध कुसुम यार नाम ।
दाने माने भैला छार भौमिक मध्यते सार एकोगुणे नाहिके उपाम ॥
ताहाने सन्तति आति ज्ञानशून्य शिशुमति केशवर किङ्कर शङ्कर ।
दीर्घ ह्लस्व नाना छन्दे बिरचिल पदबन्धे शेषकथा उत्तराकाण्डर ॥ ७०४०
कर जोरे बृद्धलोक बोलो क्षमियोक मोक आमार अयोग्य इटो कर्म्म ।
पदत दूषण पाइ निन्दिबेक नुयुवाइ महन्त जनर क्षमा धर्म ॥
पूर्ब्ब कबि अप्रमादी माधव कन्दलि आदि तेहे बिरचिला रामकथा ।
हस्तीर देखिया लाद शशा येन फारे मार्ग मोर भैल तेह्लय अवस्था ॥ ७०४१
तुमि सब महागुणी रामर चरित्र शुनि करियो मनत महारति ।
कलित परम धर्म्म नाहि रामनाम सम आक नलै याय अधोगति ॥
परम पुरुष हरि यार नाम लैले तरि ताङ्क एरि आनकेसे भजे ।
येन अन्ध नाव एरि दुर्घोर संसारे परि कोटि जनमक लागि मजे ॥ ४२
कलित लभिया जन्म नाम एरि आन धर्म्म करि मरै थिटो मन्दबुद्धि ।
बिधाता छलना करै आपुनि चिन्तनि मरै कोछते आछन्त महौषधि ॥

गये । जानकी की बाट जोहते हुए सभी नर-नारी पंक्तियों में उत्सुकतापूर्वक खड़े एक दूसरे से कानाफूसी कर रहे थे कि माता सीता आनेवाली हैं ॥ ७०३८ ॥

बरदोवा नाम का ग्राम, जो शस्य-मत्स्य से पूर्ण अनुपम है, लौहित्य का अनुकूल जल जहाँ प्रवाहित होता है; उसी ग्राम के स्वामी, कायस्थ-कुल-कमल राजधर हुए थे । उनके पुत्र सूर्यबर हुए, जो देश के धारक, महा बरा (बरा पदवी-धारियों में श्रेष्ठ), दानी-मानी, महा यशशाली शिष्ट थे । जिनका यश आज भी उज्ज्वल है। जयन्त, माधव दलै ये दोनो उनके छोटे भाई थे ॥ ७०३९ ॥ सारे देश में विख्यात जिनका कुसुम (बर) नाम प्रसिद्ध है, उन्ही से उत्पन्न हुये । वे (कुसुम बर) दान-मान में बड़े ऊँचे और भौतिक कुल में श्रेष्ठ थे, जिनके किसी गुण की तुलना नहीं मिलती । उन्हीं की सन्तान केशव-किंकर नितान्त ज्ञानहीन, शिशु-मति शकर ने दीर्घ-ह्लस्व नाना छन्दों में के पदबंध में उत्तरकाण्ड की यह शेष कथा रची है ॥ ७०४० ॥ हाथ जोड़कर कहता हूँ, वृद्ध (ज्ञानी) जन हमें क्षमा करें, यह कर्म हमारे योग्य नहीं है । अतः पदों में कोई दोष मिले तो निन्दा करना उचित नही, क्योंकि क्षमा ही महन्तों (श्रेष्ठ जनों) का धर्म है । पूर्व के अप्रमादी कवि माधव-कन्दली आदि ने राम-कथा की रचना की है । जिस प्रकार हाथी की लीद देखकर कोई खरहा अपना गुह्य द्वार फाड़ना चाहे; मेरी स्थिति भी वैसी ही है ॥ ७०४१ ॥ आप सभी महा गुणी हैं, राम का चरित्र सुनकर मन में महान अनुराग उत्पन्न करें । राम-नाम के समान कलि में दूसरा कोई परम धर्म नही है । जो ऐसा नाम नही लेता, वह अधोगति प्राप्त करता है । जिनका नाम लेने पर संसार से तर सकते है, ऐसे परम-पुरुष जो हरि हैं; उन्हें छोडकर जो दूसरों का भजन करता है, वह करोड़ों जन्म के लिए दुर्घोर संसार में पड़कर वैसे ही डूब जाता है, जैसे कोई अंधा नाव छोड़कर सागर में पड़ डूब जाये ॥ ४२ ॥ कलि में जन्म पाकर नाम को छोड़

परम वान्धव नाम एरि कटे आन काम नुवुजिया शास्त्रर युगुति ।
जानि महासुखे थाकि राम राम बोला डाकि तेवे पाइवा हातते मुकुति ।। ७०४३

सीताक रामर सभालै आने आरु वाल्मीकिये शपत करे

पद

आत अनन्तरे येन मिलिल अवस्था * शुना सवे एक मने रामायण कथा
आछन्त राघव येवे दिब्यसभा पाति *आनन्त सीताक वाल्मीकिये बुलि माति ७०४४
ऋषिर वचन देवी वाधिवे नपारि * धीरे धीरे चलि यान्त जनक जीयारी
आग भैला वाल्मीकि पाचत यान्त सीता * लाजे अपमाने माव तनु सङ्कोचिता ४५
शिलिखा वोलोवा वस्त्रे अङ्ग ढाकि घूरि * आगक नेवाढ़े भरि नेन्तसे आजुरि
लाजे अपमाने येन गावते लुकान्ति * ऋषिर आक्रोशे समज्याक लागि यान्ति ४६
लवनु पुतली येन सुकोमली कायी * प्रत्येक भरित येन रुधिर वजाय
महा पतिव्रता सीताशान्ती सुचरिता * अधोमुखे यान्त चलि नचाइ एको भीता ४७
आने आसि देखन्ते मावर वर लज्जा * आसन्त जानकी जानि उभतिल प्रजा
समस्तरे आनन्द आकुल भैल चित्त * लवरय नरनारी सीताक देखित ४८
अन्तेषपुरत यत आछिल सुन्दरी * भैला वाज सवे कौशल्याक आग करि
असंख्य सीतार दासी रङ्गे यान्त चलि * पुहाइल आमार सवे आसन्त गोसानी ४९

दूसरे धर्म को अपनाकर जो मंदवुद्धि मरा करता है, शास्त्रों की युक्तियाँ न समझ, नाम रूपी परम वान्धव को छोड़कर जो अन्य कार्य करता है; उसके पास ही महौषधि रहने पर भी विधाता उसकी छलना करता है, वह स्वयं चिन्ता में पड़कर मरता है । ऐसा समझ कर पुकार-पुकारकर 'राम, राम' कहो, इससे महा सुख से रह सकोगे ही, तभी हाथ में ही मुक्ति भी मिल जायेगी ।। ७०४३ ।।

सीता को राम की सभा में लाना और वाल्मीकि द्वारा शपथ करना

इसके अनन्तर जैसी अवस्था हुई, सव लोग एक मन से रामायण-कथा सुने । जव राघव दिव्य सभा लगाकर इस हेतु वैठे थे कि वाल्मीकि समझा-वुझाकर सीता को ले आवें ।। ७०४४ ।। तव ऋषि के वचन को अस्वीकार न कर पाने के कारण जनक-नन्दिनी सीता धीरे-धीरे चल पड़ी । वाल्मीकि आगे-आगे चले, पीछे-पीछे सीता चली । लज्जा और अपमान से माता सीता का शरीर संकुचित-सा हो रहा था ।। ४५ ।। हर्रे से रँगे हुए वस्त्र से अपने शरीर को ढँककर वे मुड़ी जा रही थीं, पैर आगे को नही वढ़ते थे, उन्हें वे घसीटे लिये जा रही थी । लज्जा और अपमान से वे मानो अपने शरीर में ही छिपी जा रही थी । ऋषि की असन्तुष्टि के भय से वे राज-सभा में चली जा रही थीं ।। ४६ ।। नवनीत की पुतली-सी सुकोमल शरीर वाली सीता के प्रत्येक चरण से मानो रक्त वह रहा था । महा-पतिव्रता, सुचरिता सती सीता दूसरे किसी ओर न देख, सिर झुकाये चली जा रही थी ।। ४७ ।। दूसरे लोग आकर देखें, इस वात से माता सीता को वड़ी लज्जा आ रही थी । जानकी आ रही हैं, जानकर प्रजा उधर लौट पडी । आनन्द से सवका चित्त आकुल हो उठा । सीता को देखने हेतु नर-नारी दौड़ पड़े ।।४८।। अंतःपुर में जितनी सुन्दरियाँ थीं, सभी कौशल्या को आगे कर निकल पड़ीं । सीता की असंख्य दासियाँ वड़ी प्रसन्नता से यह कहती हुई निकल आयीं कि देवी सीता आ रही हैं, हमारे सारे दुख अब मिट गये ।।४९।। कानाफूसी करते हुए सभी लोग दौड़ चले ।

उरुक मुरुक करि याय लवरन्ते * थिवये शुकाइल गइ सीताक देखन्ते
कान्दे नरनारी अवस्थाक 'चाइ चाइ * नयनर नीर धारासारे वहि याय ७०५०
हरि हरि जगत जननी शान्ती आइ * तोमार करिले बिधि हेनसे बिलाइ
किय जीवों जानकीर देखि हेन दुख * कान्दे हुम हुमि प्रजा हुया अधोमुख ७०५१
कण्ठर नोहूलाइ बाक्य शोके गदगद * चलं नरनारी दुइ शारी निशवद
आतिशय दहे देहा देवीर दुखत * हात फोत मात्र शुनि लोकर मुखत ५२
काहाको नचान्त सीताशान्ती माथा तुलि * चरि यान्त अधिके हियार गुलगुलि
काको एको भाल मन्द नेदन्त सिद्धान्त * महादुखे अधोमुखे भाव चलि यान्त ५३
अमृत मथन्ते येन लक्ष्मी उपजिल * बिष्णुक बरिबे पितृ सहिते लरिल
बाल्मीकिर पाचत तेह्लय मत सीता * लासे लास चलन्त राम बिबाहिता ५४
नेरं नरनारी आउर जानकीर पाश * कतोक्षणे पाइल गैया समज्यार काष
बाल्मीकि सहिते उठिलन्त सभाशाला * मेरुत उदित येन चन्द्रमार कला ५५
बाल्मीकिक देखि आसनर उठि राम * करिला सादरे जानु परिया प्रणाम
ऋषियो उच्चरि वेदमन्त्र तुलि नाद * राघवर दिलन्त तुलसी आशीर्ब्बाद ५६
रामे नम्रभावे लैला दुयो हात पाति * थाकिलन्त सीता पाचे हुया एक काति
माथात ओह्लनि लाजे चपराया माथ * बाल्मीकि बोलन्त शुना वाप रघुनाथ ५७
बशिष्ठ प्रमुख्ये आछा सबे सामाजिक * रामर चरणे आनि दिलो जानकीक
येने आनिबो प्रबोध बुलि बाक * येन लागे आवे दियो परीक्षा सीताक ५८

परन्तु सीता को देखते ही खड़े-खड़े सूख गये। सीता की अवस्था देख-देखकर नर-नारी रोने लगे। उनकी आँखो से धाराओं में आँसू बह चले ।। ७०५० ।। 'हरि, हरि' जगत्-जननी, सती सीता माता, विधाता ने तुम पर ऐसी विपत्ति डाल दी। जानकी का ऐसा दुख देखते हुए भी हम जीवित क्यो हैं ? कहती हुई प्रजा सिर झुकाये फूट-फूटकर रो रही थी ।। ७०५१ ।। शोक से गद्गद होने के कारण उनके कंठ से वचन नहीं निकलते थे, दो पंक्तियों में नर-नारी मौन-भाव से चल रहे थे। देवी के दुख से उनके शरीर बहुत ही जल रहे थे, लोगों के मुँह से केवल 'हाय-हाय' शब्द ही सुनाई देता था ।। ५२ ।। सती सीता किसी को सिर उठाकर नही देखती थी, उनके हृदय का सन्ताप अधिक बढ़ा जा रहा था। किसी को किसी बात पर अच्छा या बुरा नही कहती थीं, माता सीता महा दुख से सिर झुकाये चली जा रही थी ।। ५३ ।। अमृत के लिए सागर मथते समय जैसे लक्ष्मी का उद्भव हुआ था, पिता सहित वह विष्णु को वरण करने हेतु वेग से चल पड़ी थी; उसी प्रकार बाल्मीकि के पीछे-पीछे रामचन्द्र की विवाहिता पत्नी सीता धीरे-धीरे चली जा रही थी ।। ५४ ।। नर-नारी सीता के समीप से हटते न थे, कुछ क्षण पश्चात् वे जाकर राजसभा के पास पहुँचे। वह बाल्मीकि के साथ सभागृह में आईं, मानो मेरु पर्वत पर चन्द्रमा की कला उगी हुई हो ।।५५।। बाल्मीकि को देखकर राम आसन से उठ पड़े और सादर घुटने टेककर उन्हें प्रणाम किया। ऋषि ने भी उच्च रव से वेद-मंत्र का घोष करते हुए राघव को तुलसीदल दे आशीर्वाद दिया ।। ५६ ।। रामचन्द्र ने दोनो हाथ बढ़ाकर विनम्रता से ले लिया। अपने सिर पर घूँघट डाले, लज्जा से अपना सिर पीटकर सीता एक किनारे पीछे की ओर खड़ी हो गयीं। बाल्मीकि ने कहा— वत्स रघुनाथ, सुनो ।। ५७ ।। यहाँ वशिष्ठ आदि सभी सभासद उपस्थित है; मैंने राम के चरणों में जानकी को ला दिया है। जैसा वचन कहकर उसे धीरज बँधाया जा सके, जैसा उचित समझें, सीता की परीक्षा लें ।। ५८ ।। जनक-नन्दिनी सती महा पतिव्रता हैं, इनमें कोई छिद्र ढूँढ़े भी नहीं मिलेगा। इनका

महा पतिव्रता सती जनक जीयारी * किञ्चितेको आन्त छिद्र नपाइबा बिचारि
परम निष्पाप देहा देखि हरे पाप * मिछात कलङ्क आङ्कु दिला हृदि ताप ५९
स्वपनत आन नाइ राघवत परे * हेन नतो शुनो शान्ती त्रैलोक्य भितरे
ऊर्द्धबाहु करि बोलो शुनियो समाजे * करिबो शपत आजि जानकीर काजे ७०६०
कोटि जन्मे यतेक करिलो सदकर्म्म * इयो जन्मे यत आचरिलो तप धर्म्म
धरि आछो ब्रत यिबा करि काय कष्ट * सीता दोषी हुवे येवे सियो हुवे नष्ट ७०६१
सत्य करि आवे बोलो समाजिके शुन * मोर ऊर्द्ध पुरुषे करिछे यिटो पुण्य
करिलो सुकृति पितृ देवताक तुषि * सियो नष्ट होवे येवे सीता हन्त दोषी ६२
तपर प्रभावे जानो भूत-भविष्यत * मोत आर करन्ता नाहिके त्रैलोक्यत
कहिलो स्वरूप राम आगत तोमार * येन लागै करा आवे आपुनि बिचार ६३
हेन शुनि जय जय करन्त समाजे * धन्य धन्य शान्ती सीता देववाद्य बाजे
आकाशर परा पुष्प वरिषिला माथे * कर योरे ऋषिक बुलिला रघुनाथे ६४
भइतो जानो शान्ती सीता परम निष्पाप * दुर्ज्जनर अपवादे देओँ हृदिताप
सम्बरिबो सीता तेवे सभार सन्मते * लक्षेक परीक्षा भैल तोमार शपते ६५
त्रिजगते जानिले सीतात शङ्का नाइ * आवे सबे दुष्टरे परिल मुखे छाइ
एहि बुलि आपुनि आसन दिला पारि * वसिलन्त वाल्मीकि ऋषिर गैया शारी ६६
रामे देखिलन्त पाचे जानकीर क्लेश * शिलिखा बोलोवा वस्त्र तापसीर वेश
फल मूल आहारे शरीर कृश आति * देखि हृदि दगध तवध रघुपति ६७

परम निष्पाप शरीर देखने पर पाप मिट जाता है। मिथ्या कलंक लगाकर इनके हृदय में संताप दिया है ।। ५९ ।। इनके लिए सपने में भी राघव को छोड़ और कोई नही है। इन जैसी सती नारी तीनो लोकों में कोई सुनने में नही आती। मैं हाथ उठाकर कहता हूं, सभासदगण सुनें, आज मै जानकी के लिए शपथ करूँगा ।। ७०६० ।। करोड़ों जन्मों में मैंने जो सद्कर्म किये, इस जन्म में जितने तप के धर्म का आचरण किया, शरीर को कष्ट मे डालकर जो व्रत अभी पालन कर रहा हूँ; यदि सीता दोषी हों, तो ये सब कुछ नष्ट हो जायें ।।७०६१।। मैं सत्य शपथ लेकर कहता हूँ, सभासदगण सुनें, मेरे पितरों ने जो पुण्य किया है, पितृदेवों को तुष्ट कर मैंने जो सत्कर्म किये हैं; यदि सीता दोषी हों, तो वे सभी नष्ट हो जायें ।। ६२ ।। तप के प्रभाव से मुझे भूत-भविष्य सब कुछ ज्ञात है, मुझसे कुछ छिपा सकनेवाला तीनो लोकों में कोई नही है। राम, तुमसे मैंने सत्य बात बता दी। अब जो करना चाहो स्वयं विचार करो ।। ६३ ।। यह सुनकर सभासद-गण जय-जय करने लगे। 'धन्य-धन्य, सती सीता' का घोष करते हुए देव-वाद्य बजने लगे। आकाश से सीता के मस्तक पर पुष्प-वर्षा होने लगी, रघुनाथ ने हाथ जोड़कर ऋषि से कहा— ।। ६४ ।। मैं तो जानता हूँ कि सती सीता परम निष्पाप है। दुर्जनों के अपयश लगाने के कारण ही इनके हृदय को कष्ट देता रहा हूँ। आपके शपथ से सीता की लाखों परीक्षा हो चुकी। अब यदि सभा की सम्मति हो, तो मैं सीता को ग्रहण करूँगा ।। ६५ ।। तीनो लोक अब जान गये कि सीता में शंका करने को कुछ नही है। अब सभी दुष्टों के मुख में कालिख लग गयी। यह कहकर रामचन्द्र ने स्वयं आसन लगा दिया, वाल्मीकि जाकर ऋषियों की पंक्ति में बैठ गये ।। ६६ ।। इसके पश्चात् रामचन्द्र ने जानकी के कष्ट पर विचार किया, देखा कि वह हर्रे से रंगा वस्त्र पहने, तपस्विनी का वेश धारण किये हुए है। फल-मूल के भोजन से उनका शरीर बहुत दुबला हो गया है। यह देखकर रामचन्द्र का हृदय जल उठा, वे स्तब्ध रह गये ।। ६७ ।। उनकी अवस्था देखकर रुलाई आ जाने लगी, परन्तु कौशल्या-नन्दन राम ने उसे धीरज

अवस्था देखिया आसे उभति क्रन्दन * धैर्य्ये धरिलन्त ताक कौशल्यानन्दन
बहयँ लोतक नयनर झर झरि * आथाके मोचन्त ताक हाते वस्त्र धरि ६८
कान्दन्त समाजे देखि सीतार निकार * देव ऋषि सबे देखि करे हाहाकार
कतनो एराइले माव मरणर घाट * रामर सीतार आवे खण्डिल ललाट ७०६९
एहि बुलि सवे लोके करँ काणा काणि * स्वस्थ भैला पाचे रघुवंश शिरोमणि

सीतार क्रोध आरु पाताल-प्रवेश

जानकीक स्नेहे भरतक लागि चाइल * वसिबाक लागि रत्न आसन बह्लाइल ७०७०
तिनियो देवरे आसि बुलिला बिनय * नबैसन्त सीता शोके दगध हृदय
कौशल्या प्रभृति शाशुसकले बुजान्त *आउर काको माथा तुलि नेदन्त सिद्धान्त७०७१
लाजे अपमाने येन हृदय बिदारे * वहर्वे लोतक दुयो नयनर धारे
जाज्वल्य समान कोपे चित्त नोहे शान्त * घने घने कटाक्षे रामक लागि चान्त ७२
स्नेहे जानकीक निरेखन्त रघुनाथ * सीतार कटाक्ष देखि चपरान्त माथ
भये लाजे जानकीक चाहिवे नोवारि * थाकिला सङ्कोच भावे राघव मुरारी ७३
दुख सब सुमरि ज्वलिल आति सती * सि बेला सीताक नाहि चाहिवे शकति
महाशोके कोपे आति कम्पमान काय * जाज्वल्य समान अगनिर शिखा प्राय ७४
अन्तर्गते रामर मिलिल महाभय * देखि समज्यार भैल परम बिस्मय
सीतार देखिया हेन क्रोधर आक्रान्ति * रामक करन्त भस्म शापि योनो शान्ती ७५

से रोका। उनकी आँखों से झर-झर करती आँसुओं की धारा बहने लगी। वे अपने हाथ में वस्त्र लेकर उसे बार-बार पोंछने लगे ॥ ६८ ॥ सीता का कष्ट देखकर सभा के लोग रोने लगे। देव-ऋषि सभी देखकर हाहाकार करने लगे। 'माता सीता किस प्रकार मृत्यु के चंगुल से बच गयीं ? राम-सीता के दुर्भाग्य अब समाप्त हो गये' ॥ ७०६९ ॥ लोग ऐसी बात की कानाफूसी करने लगे। कुछ क्षण पश्चात् रघुवंश-शिरोमणि राम स्वस्थ हुए।

सीता का क्रोध और पाताल-प्रवेश

जानकी के प्रति स्नेह से उन्होंने भरत की ओर देखा। (भरत ने) सीता के बैठने हेतु रत्न-जड़ित आसन बढ़ा दिया ॥ ७०७० ॥ तीनो देवरों ने आकर विनय-वचन कहे। परन्तु शोक से हृदय दग्ध होने के कारण सीता नही बैठीं। कौशल्या आदि सासें समझाने लगी, परन्तु सीता सिर उठाकर किसी को उत्तर नही देती थी ॥७०७१॥ लज्जा-अपमान से मानो उनका हृदय फट रहा था। दोनो आँखों से धाराओं मे आँसू बह रहे थे। बिजली की भाँति क्रोध के मारे उनका चित्त शान्त नहीं रहा। वह बार-बार कटाक्ष से राम को देखने लगी ॥ ७२ ॥ रघुनाथ स्नेह से जानकी को देख रहे थे, पर सीता का कटाक्ष देखकर उन्होने अपना सिर पीट लिया। भय-लज्जा से जानकी की ओर देख नही सकने के कारण मुरारी-राम संकोच-भाव मे पड़ गये ॥ ७३ ॥ सारे दुखों का स्मरण कर सती सीता प्रचंड रूप से जल उठी, उस समय सीता को देखने की उनकी शक्ति नही रह गयी। महान् शोक और क्रोध से बिजली-जैसा, अग्निशिखा की भाँति उनका शरीर बहुत काँपने लगा ॥७४॥ तब रामचन्द्र के अन्तर में बड़ा भय हुआ। यह देख सभासदों को परम विस्मय हुआ। सीता का प्रचंड क्रोध ऐसा था, मानो वह शाप देकर राम को भस्म कर डालेगी ॥७५॥ ऐसा लगा मानो आज संसार का प्रलय कर डालेंगी।

आजि योनो जगतर मिलान्त प्रलय * काम्पे तरतरि देव ऋषिर हृदय
नमाति आछिला देवी दुइ दण्डमाने * आरक्त आखि मुख कोपे अपमाने ७६
रामर भितिक पिठि दिया क्रोध भावे * चाइ समज्याक लाज एरि जगमावे
बुलिबे लागिला अति चित्त असन्तोष * कथा शुनि समाजे आमाक दिबा दोष ७७
सबाते बिदित मोर राम हेन स्वामी * सेवकिनी प्राय आन बिबाहिता आमि
बापखने पठाइले गैलेक बनबास * करिलो लगते चैध्य वरिष निर्व्वास ७८
एकेश्वरी नारी मइ नोहो स्वतन्तरी * नोवारिले राखिवे रावणे निले हरि
चाहिलो लङ्काते अपमाने मरिबाक * गैया एइ हनुमन्ते बाधिले आमाक ७९
प्राण राखि आछिलो स्वामीक बाट चाइ * रावणक मारि मोक आनिला बुनाइ
करिला परीक्षा रामे पेट्लाइ अगनित * तथापि नर्भल शान्त राघवर चित्त ७०८०
बुलिला बुजाइ आसि पाचे बापखने * तेवेसे आमाक सम्वरिला शुद्धमने
एकचित्ते करिलोहो आहाङ्केसे सेव * मइतो जानो स्वामीसे परम मोर देव ७०८१
स्वामी जप तप यज्ञ स्वामी योग ध्यान * स्वपने सचिते मइ निचिन्तिलो आन
तथापि आमात आन चित्त बिहरिल * चुमाते कामोर येन ओलगते किल ८२
दुष्टे दिले अपयश ताते आन त्रास * छले निया दियाइलन्त आमाक निर्व्वास
देखा देखा इटो केने स्वामीर मर्य्याद * किसक करिले एतमान छलबाद ८३
येवे लागै एरिवे आगते एरा मोक * गर्भते मारिबा चाइला दुइ गुटि पोक
स्वामीर कहन्ते गुण शरीर दगध * लैबेक खुजिला तिनि मा-पोर वध ८४

~~~~~~

देव-ऋषियों के हृदय थर-थर काँपने लगे। देवी सीता दो दंड तक कुछ बोले बिना रही। कोप और अपमान से उनकी दोनो आँखे लाल हो उठी ॥ ७६ ॥ जगन्माता सीता, राम की ओर से मुड़कर सभासदों की ओर देखती हुई, लज्जा छोड़, अपने चित्त का प्रचंड असतोष प्रकट करती हुई कहने लगी— सभासदो, हमारी बात सुनने के पश्चात् हमें दोष दे ॥ ७७ ॥ सभी को विदित है कि राम जैसे मेरे स्वामी हैं। मैं इनकी विवाहिता, सेविका जैसी हूँ। इनके पिता ने भेजा, तो ये वनवास को गये; मैंने भी इनके संग चौदह वर्ष निर्वासन भोगा ॥ ७८ ॥ मैं अकेली नारी हूँ, स्वतन्त्र नही। ये मेरी रखवाली नही कर सके, तो रावण मुझे हर ले गया (या रावण जब मुझे हर कर ले जा रहा था, तो ये मेरी रक्षा नही कर सके)। लंका में अपमान के कारण चाहा कि मर जाऊँ, परन्तु वहाँ जाकर इस हनुमान ने मुझे रोका ॥ ७९ ॥ स्वामी की बाट जोहती हुई प्राण रखे हुई थी। रावण को मारकर मुझे ये पुन: ले आये। राम ने मुझे अग्नि में डालकर परीक्षा ली। तथापि राघव का चित्त शान्त नही हुआ ॥ ७०८० ॥ इसके पश्चात् इनके पिता ने आकर समझाया, तभी इन्होंने शुद्ध मन से मुझे ग्रहण किया। मैंने एक मन से इन्हीं की सेवा की, मुझे ज्ञात है कि स्वामी ही मेरे परम देव हैं ॥७०८१॥ स्वामी ही जप-तप, योग-ध्यान हैं। जागने में या सपने में भी मैंने किसी अन्य का चिन्तन नही किया। तथापि मुझ पर से इनका चित्त हट गया, मानो इन्हें चुम्बन, दंशन-सा, आलिंगन मुक्के की चोट-सी लगी ॥ ८२ ॥ दुष्टों ने अपयश लगाया, इसी से ये त्रस्त हो उठे और छल से मुझे वन मे भिजवाकर निर्वासित कर दिया। आप लोग देखिये, भला यह स्वामी की कैसी मर्यादा है? किस कारण मुझसे इतनी छल-कपट की? ॥ ८३ ॥ यदि मुझे ये त्याग देना ही चाहते थे, तो पहले ही तज देते। परन्तु इन्होने तो गर्भ में ही मेरे दोनो पुत्रो को मार डालना चाहा। इन स्वामी के गुणों को कहने में शरीर जलने लगता है। ये तीन माँ-बेटों के वध का भागी बनना चाहते थे ॥ ८४ ॥ गर्भ समेत मुझे मार डालने की इनकी कामना रही। मेरे लिए राम का
~~~~~~

गर्भे समे मोक मारिबाक श्रद्धा भैल * करिबेक बाकी आउर रामर नरैल
सबे बोले एनुवा रामक भाल भाल * मइतो जानो मोर रामेसे यमकाल ८५
स्वामी हेन निदारुण कँत आछा शुनि * चाइबो इहान मुख मइ किबा गुणि
एहि बुलि जानकी कान्दन्त मकमकि * शोकानले हियार नुगुचे मकमकि ८६
नयनर लोतक धाराये याय बहि * अधोमुखे कतोक्षण आछिलन्त बहि
एकोमते नोवारा करिबे चित्त थिर * निशवद लोक शोक देखि गोसानीर ८७
सबे बोले आजि एको मिलिबे प्रमाद * चरन्तेसे याइ शान्ती सीतार बिषाद
धान दिले होवे आखै रामर मुखत * बलिकबे लागिला देवी दुष्मह दुखत ८८
राघवक चाइ कोपे कटाक्षे निरेखि * बोलन्त एरिला मोक तुमि किबा देखि
जानाये तेजिबा किय सम्बरिला आगे * पूर्बते मारिला हुइ येन युवाइ भागे ८९
किनो राम स्वामी मोर पुरुष दारुण * नुसुमरिलाहा एको दिवसर गुण
काष्ठते फरिल बज्रे बान्धिलेक हिया * दुर्ज्जनर बोलते निर्ब्बास मोक दिया ७०९०
कोन शत्रु तोमार करिलो किबा हानि * करिला एनुवा उग्रदण्ड किबा जानि
छलबादे दिला निया निर्ब्बासक मने * आकस्मिते तेजै येन भार्य्याक टेण्टने ७०९१
राक्षसतोधिक इटो तोमार कुमति * नाहि एको तिलो तिरीबध पाप भीति
तोमार उपरि बंश आछिल यतेक * कैयो कोने करिलेक एनुवा पातेक ९२
बिना अपराधत करिला हेन शास्ति * संसार जुरिल इटो मोर कुखियाति
जगतते मोक आउर नुबुलिबे भाल * करिलेक अनादोषे रामे कि निकाल ९३

और कुछ करना शेष न रहा। सब लोग ऐसे राम को 'उत्तम, उत्तम' कहा करते हैं। मै तो जानती हूँ कि राम ही मेरे लिए यम-काल हैं ॥ ८५ ॥ किसी का स्वामी ऐसा निर्मम हो, आप लोगों ने कहाँ सुना है ? अब और क्या सोचकर मैं इनका मुख देखूँ ? यह कहकर जानकी फूट-फूटकर रोने लगी। शोक रूपी अग्नि के मारे हृदय की जलन नही मिटती थी ॥ ८६ ॥ आँखों से धाराओं मे आँसू बहने लगे। वे सिर झुकाये देर तक बैठी रहीं। लोग किसी तरह अपने चित्त को स्थिर नही कर पा रहे थे। देवी का शोक देखकर लोग मौन हो गये थे ॥ ८७ ॥ सब कह रहे थे, आज कुछ अनहोनी होनेवाली है क्योंकि सती सीता का विषाद और बढ़ता ही जा रहा है। राम का मुख भी ऐसा हो रहा कि उस पर धान डालने पर खील बन जाये। असहनीय दुख के मारे देवी सीता बकने लगी— ॥ ८८ ॥ राघव की ओर क्रोध से देखती हुई कटाक्ष कर बोली— तुमने क्या देखकर मुझे त्यागा था ? यदि तुम जानते ही थे कि मुझे छोड़ दोगे, तो मुझे पहले ग्रहण किसलिए किया था ? यदि यही उचित समझते थे, तो पहले ही मार क्यों नही डाला ? ॥८९॥ मेरे स्वामी राम, तुम कैसे दारुण पुरुष हो कि कभी एक दिन का मेरा गुण भी स्मरण नही आया ? तुम्हारा हृदय काठ से जन्मा हुआ और बज्र से आवृत है कि दुष्ट के वचन पर ही मुझे निर्वासन दे दिया ॥ ७०९० ॥ मैंने तुम्हारी कौन सी शत्रुता की थी ? या कौन सी हानि पहुँचायी थी ? क्या समझकर तुमने मुझे ऐसा दंड दिया ? छलना की बात कहकर मुझे वन में निर्वासन दे दिया, जैसे कोई धूर्त-दगाबाज अकस्मात् अपनी भार्या को छोड़ देता हो ॥ ७०९१ ॥ तुम्हारी यह कुमति राक्षस से भी बढकर है। तुम्हारे मन में स्त्री-हत्या-पाप का कोई डर नहीं है। तुम्हारे वंश में जितने पूर्वज थे, बताओ तो किसने ऐसा पाप-कर्म किया था ? ॥ ९२ ॥ बिना अपराध के तुमने मुझे इस तरह दंड दिया कि मेरी यह कुख्याति विश्व भर में फैल गयी है। संसार अब मुझे भला नहीं कहेगा। कहेगा कि क्या राम ने बिना दोष किये ही ऐसी सजा दी होगी ? ॥ ९३ ॥ इस बार तुमने क्या करने के लिए मुझे बुलवाया ?

आउर कि करिवे लागि अनाइला इवार * येन पोरा घात घषा सनिया आमार
वन मानुषक आनि देखावा समाक * कतनो बिगुटि मारा मराक आमाक ९४
एमो तेवे तोमार नुपुरे मनोरथ * एके जुइ मरो आरो पिपलिर पथ
बोलाइबो तोमार आरो घरर घरणी * तेवे मोत परे नाहि नारी निलाजिनी ९५
जनक राजार मइ स्नेहर जीयारी * दशरथ नृपतिर प्रथम बोहारी
तुमि रामराजार आमिसि महादे * हेनतो आमार हेन करिला बिलाइ ९६
एहि बुलि महामर्म्मे गोसानी जानकी * पृथिवीत परिया कान्दन्त मकमकि
सीतार सन्तापे देखन्तारो मर्म्म चरे * हुमहुमि कान्दे लोक लोतक निगरे ९७
कोपे अपमाने आति चित्त नुहि थिर * हियात पशिल शाल नोहलाइ गोसानीर
बुलिवे लागिला दुनाइ मनत आसुख * आउर इटो स्वामी राघवर नचाओं मुख ९८
पृथिवीक कातर करन्त योर हाते * तुमि मोर माव जन्म लभिलो तोमाते
आउर येन नुशुनो रामर इटो नाउ * फाट दिया वसुमती पाताले लुकाओं ९९
स्वरूपत शान्ती पुण्य येवे आछो राखि * चन्द्र सूर्य्य वायु वसुमती हुइबा साक्षी
रामर पावत जाना मोर चित्त डाठ * तेवे वसुमती मोक झाण्टे दिया वाट ७१००
हओं येवे आमि पतिव्रता निरङ्कुश * राम विने आन येवे नजानो पुरुष
गुचोक आमार इटो कलङ्क ललाट * राघवर मुख नचाओं माव मेला फाट ७१०१
कायवाक्यमने येवे रामक आराधो * स्वपनतो राम विने आनक नसाधो
तेवे वसुमती मोक जान्ते दिया वाट * नचाओं रामर मुख माव मेला फाट २
करिलो सुदृढ़ चित्ते रामकेसे सेव * स्वामी व्यतिरेके नजानिलो आन देव

मानो मेरे जले घाव पर नमक छिड़क दे रहे हो ? वन में रहनेवाले लोगों को राजसभा दिखला रहे हो ? हम मरे हुए जनों को और कितना कष्ट देकर मार रहे हो ? ॥ ९४ ॥ इस बार भी तुम्हारा मनोरथ पूरा नहीं होगा। एक तो आग में जल रही हूँ, तिस पर कड़वी पीपर का पथ्य दे रहे हो। पुनः तुम्हारे घर की घरनी कहलाऊँ, तो मेरे जैसी निर्लज्ज नारी दूसरी कोई नही है ॥ ९५ ॥ मैं राजा जनक की प्यारी वेटी हूँ। राजा दशरथ की बड़ी बहू हूँ। राजा राम तुम्हारी मैं पटरानी हूँ। इतने पर भी तुमने मुझे इतना कष्ट दिया है ॥ ९६ ॥ यह कहकर बड़ी वेदना से देवी सीता धरती पर गिरकर फूट-फूटकर रोने लगीं। सीता के संताप से देखनेवालों की भी वेदना बढ़ गयी, लोग चीख-चीखकर रोने लगे, उनकी आँखों से आँसू बहने लगे ॥ ९७ ॥ क्रोध और अपमान से देवी सीता का चित्त स्थिर नही रहा, उनके हृदय में जो काँटा चुभ गया था, वह निकलता ही नही था। मनोवेदना के मारे वे पुनः कहने लगीं— मैं और इस स्वामी राघव का मुँह नही देखूँगी ॥ ९८ ॥ वे हाथ जोड़कर धरती से विनती करने लगी— मेरा जन्म तुम्ही से हुआ है, तुम्ही मेरी माता हो। पुनः जैसे राम का यह नाम न सुनूँ, इसलिए हे वसुमती, तुम फट जाओ, मैं पाताल में छिप जाऊँ ॥९९॥ मैंने यदि सत्य ही सती का पुण्य संचित किया है, तो चन्द्र, सूर्य, वायु, वसुमती साक्षी रहना। यदि राम के चरणों मे मेरा चित्त दृढ़ता से लगा हुआ है, तो वसुमती, मुझे शीघ्र मार्ग दे दो ॥ ७१०० ॥ यदि मैं निरंकुश पतिव्रता होऊँ, राम के विना किसी अन्य पुरुष को न जानती होऊँ, तो हमारे कपाल पर लिखा यह कलंक मिट जाये। मैं राघव का मुँह न देखूँ, इसके लिए हे माता, तुम फट जाओ ॥ ७१०१ ॥ मैं यदि तन, मन, वचन से राम की आराधना करती रही हूँ, राम के विना सपने में भी और किसी को न चाहा हो, तो हे वसुधा, मुझे जाने के लिए मार्ग दे दो। मैं राम का मुख न देखूँ, इसके लिए फट जाओ ॥२॥ मैंने सुदृढ़ चित्त से राम की ही सेवा की है, स्वामी को छोड़ किसी अन्य देव को न जाना है,

तथापि एनुवा मोर मिलिल ललाट * राघवर मुख नचाओं माव मेला फाट ३
बिगुति बिगुति रामे मातिलन्त मोक * आउर मइ नथाको नथाको इटो लोक
लागिल बैराग्य मने मिलिल बिचाट * दिया दिया दिया बसुमती झाण्टे बाट ४
दिला तिनिबार राव रामर बल्लभा * टलबल करि कम्पिबाक लैला सभा
ठातकार शवदे मेदिनी दिला फाट * उठिल सुवर्णमय सिंहासन खाट ५
चिकिमिकि करै आति रत्नर जेउति * सीताक सादरे योगाइलन्त बसुमती
चारि नागकन्या धरि आछे चतुर्भिति * अद्भुत देखिया सबे समाजे बिश्रुति ६
हनुमन्त आदि करि यत कपिबल * कि भैल बुलिया सबे हृदय बिकल
तथा भैल भरत लक्ष्मण शत्रुघन * रामर गावत आउर नाहिके चेतन ७
शुना सर्ब्बजन ऐत केदिन जीवन * मिछा धन जन जानि तेजियो यतन
रामर सीतार केने दुख ताक देखा * इटो गृहबास सामान्यर कोन लेखा ८
हेन जानि हरि भकतिक करा सार * तेवेसे तरिबे पारि संसार निकार
कार केतिक्षण परा मिलय मरण * बोला राम राम चिन्ता कृष्णर चरण ७१०९

दुलड़ी

पाचे पृथिवीर आदर देखिया त्वरिते उठिला सती ।
ब्रह्मा आदि करि सकलो देवक एकत्रे करिला नति ।।
बशिष्ठ प्रमुख्ये ऋषिक नमिला जानु पारि एकठाइ ।
करि कृताञ्जलि बुलिबे लागिला सीता उपरत चाइ ।। ७११०
जन्मे जन्मे हैबा जनकेसे बाप साधो मइ परबासु ।
दशरथ राजा हुइबन्त शशुर कौशल्या हुइबन्त शाशु ।।

तथापि मुझे ऐसा भाग्य मिला है। मैं राघव का मुँह नहीं देखूँगी, माता तुम फट जाओ ।। ३ ।। मुझे बार-बार कष्ट दे-देकर राम ने बुलवाया है, मैं अब इस लोक में नही रहूँगी, नही रहूँगी। मेरा मन ऊब चुका है, बिरागी हो गया है। वसुमती, मुझे शीघ्र मार्ग दे दो, दे दो, दे दो ।।४।। राम की प्रियतमा सीता ने तीन बार पुकारकर कहा। तब सारी सभा टलमलाकर काँपने लगी। प्रचंड ध्वनि से धरती फट गयी और उसमें से सुवर्णमय सिंहासन निकल पड़ा ।। ५ ।। उसमें लगे रत्नों की ज्योति जगमगा रही थी, उसे वसुधा ने सीता के लिए सादर आगे बढ़ा दिया। उस सिंहासन को चारों ओर से चार नाग-कन्याएँ धारण किये हुए थी। उस अद्भुत सिंहासन को देखकर सारे सभासद स्तब्ध रह गये ।। ६ ।। हनुमान समेत सारी बानर-सेना 'क्या हो गया' कहकर अन्तर में व्याकुल हो उठी। भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न स्तब्ध हो गये। राम के शरीर में भी चेतना नहीं-रही ।। ७ ।। सब लोग सुनें, यहाँ जीवन कितने दिन का है ? धन, जन मिथ्या है, समझकर इनका यत्न लेना छोड़ दो। देखो, राम-सीता को भी कैसे दुख उठाने पड़े, तब इस गृहवास में दूसरों की तो गिनती ही क्या है ? ।।८।। ऐसा समझकर हरि-भक्ति को अपना लो, तभी ससार के दुखों के पार जा सकते है। किसकी किस क्षण मृत्यु हो जाये, क्या पता ? अतः 'राम, राम' कहो, कृष्ण का चरण-चिन्तन करो ।।७१०९।।

इसके पश्चात् पृथ्वी का आदर देखकर सती सीता तुरंत उठ गयीं और ब्रह्मा आदि देवों को एक साथ प्रणाम किया। एक स्थान पर घुटने टेक वशिष्ठ आदि ऋषियों को प्रणाम किया और हाथ जोड़कर ऊपर देखती हुई कहने लगीं ।। ७११० ।। मैं यही प्रार्थना करती हूँ कि जन्म-जन्म में जनक ही हमारे पिता हों, राजा दशरथ ही ससुर हों,

दुखर सहाय भालुक बानर हुइब पुत्र समसर ।
भरत लक्ष्मण बीर शत्रुघन तिनिसि हुइबा देवर ।। ७१११
स्वपने सचिते आन नबाञ्छोहो रामेसे हुइबन्त पति ।
ताहान एहिसे दुखानि चरण जन्मे जन्मे हुइबा गति ।।
हुइबेक तनय महा शुभनय एहि लव-कुश दुइ ।
हेनय कलङ्क कवर्थना योनो आउर दुनाइ मोर नुइ ।। १२
नमि कौशल्याक बुलिला कारुण्य यि भैला मोर कपाल ।
दुइ गुटि पुत्रक सम्पिलो गोसानी करिवाहा प्रतिपाल ।।
आमात सञ्जात नाहिके रामर पुत्रक कमन काज ।
आछोक पालिव पुत्र बुलिबाको रामर लागिबे लाज ।। १३
कुशक लवक गलत बान्धिया कान्दिलन्त सीता शोके ।
तोमासाक बर करिते नपाइलो दैवे दण्डिलेक मोके ।।
अल्पते तोमाक करिलो छिण्डवा हेनसे मइ अभागी ।
तिनि मा पोर भैला देखा देखि आजि इजन्मक लागी ।। १४
दुयो भायेरे कन्दल नकरिबा एकत्रे बञ्चिबा काल ।
मोक लागि पुताइ चिन्ता नकरिबा यि भैला मोर कपाल ।।
तोमासार दुख दुर्गति लैयाओं जीया मोर लैया आयु ।
कुलक्षणी सीता पाताले चलिलो परिछेदा मोक चाउ ।। १५
एहि बुलि मका- मकि कान्दिलन्त पुत्र दुइर धरि गले ।
क्षणेके सन्धुकि आखि मुख पाचे मुचिला वस्त्र आञ्चले ।।
चित्त दृढ़ करि जानकी गोसानी भैला शोके मोहे हीन ।
परम सादरे करिला रामक तिनिबार प्रदक्षिण ।। १६

कौशल्या ही सास हों, मेरे दुख के सहायक भालू-बानर पुत्र के समान रहें, भरत, लक्ष्मण, वीर शत्रुघ्न तीनो हमारे देवर हों ।।७१११।। जागने में या सपने में मैं किसी दूसरे की कामना नही करती । राम ही हमारे पति हों, उन्ही के ये दोनो चरण जन्म-जन्म में मेरी गति रहे । महान् शुभ नीतिवान ये लव-कुश ही हमारे बेटे हों । पर ऐसा कलंक, ऐसा तिरस्कार पुन: जैसे मुझे न मिले ।।१२।। कौशल्या को नमन कर करुणापूर्ण वचन से वे कहने लगी, मेरे कपाल में जो कुछ था, वह हुआ; इन दोनो पुत्रों को हे देवी, आपके हाथ सौप रही हूँ । आप इनका प्रतिपालन करें । जबकि रामचन्द्र का हम पर ही विश्वास नहीं, तो फिर पुत्रों की तो बात ही क्या ? इनका पालन करना तो दूर रहा, इन्हे पुत्र कहने मे भी राम को लज्जा आयेगी ।। १३ ।। लव-कुश को अपने गले से लगाकर सीता शोक से रोने लगी । तुम लोगों को मैं बड़ा नही कर पायी, दैव ने मुझे दडित कर दिया । मैं ऐसी अभागिनी हूँ कि अल्प वय मे ही तुम लोगों को मैंने अनाथ कर दिया । आज इस जन्म के लिए तीनो, माँ-बेटो की अंतिम भेंट है ।। १४ ।। दोनो भाई विवाद न करना, एक साथ रहकर दिन बिताना । बेटो, मेरे लिए चिन्ता न करना, मेरे भाग्य में जो था, वही हुआ है । मैं तुम्हारी दुख-दुर्गति लेकर चली जाऊँ, तुम लोग मेरी आयु लेकर जीवित रहो । कुलक्षणी सीता पाताल में चली, अब मुझे देख नही पाओगे ।। १५ ।। यह कहकर दोनो बेटों के गले पकड़ सीता फूट-फूटकर रोने लगी । कुछ क्षण बाद सचेत हो, अपने वस्त्र के आँचल से मुख-आँख पोछे । चित्त को दृढ़ कर देवी जानकी शोक और मोह के कारण हीना-सी हो गयी । उन्होंने परम आदर से रामचन्द्र की तीन बार प्रदक्षिणा की ।। १६ ।। अपने वालों से रामचन्द्र

चरणर धूलि मलचिला चुलि बुलिला पाचे प्रणामि।
आवे प्रभु राज्य भुञ्जियोक सुखे याओं पातालक आमि ॥
हृदय खेदत यि किछु बुलिलो इ दोष क्षमा आमाक।
तोमार चरण सेविबे नपाइलो मोरेसे कर्म्म बिपाक ॥ १७
तुमि हेन स्वामी भैलोहो बञ्चित कोनबा पापर फले।
एहि बुलि आउर मातिबे नपारि करिल चक्षु छल्लले ॥
गद गद बावये बोलन्त थाकियो करिलो प्रभु मेलानि।
दिब्य सिहासने चड़िलन्त गैया कान्दन्त सीता गोसानी ॥ १८
बसुमती आसि आश्वासि सावटि बुलिला मधुर बाक।
गन्धे पुष्पे धूपे पूजिला प्रदीपे यत नागनारी जाक ॥
नागलोक छानि जय बाद्य बावे दुन्दुभि ध्वनि आस्फाल।
शिरत सुरभि पुष्प बरिषिल पशिला सीता पाताल ॥ १९
पति पुत्र सब सुहृद तेजिला परम बैराग्य मने।
येन चन्द्रकला मेघते लुकाइला सीता शान्ती तावक्षणे ॥
रामर बिचुइ हिये ज्वालि जुइ सीता पातालक गैला।
देखि अन्तरीक्ष धातु रामचन्द्र बिश्रुति बिह्वल भैला ॥ ७१२०
सिहासन हन्ते परि मूर्च्छा गैला शोकत देखे आन्धार।
रामक धरिया कान्दे आर्त्तरावे सीतार दुइ कुमार ॥
देखिया अद्भुत यत समाजिक कारो नाहि मात बोल।
रामर बिलाइ शिशु दुइक चाइ करे हाहाकार रोल ॥ ७१२१
देव ऋषि सबे सन्तापे कान्दन्त धरिते चित्त नपारि।
भालुक बानर कान्दे निरन्तर माटित पारि लोटारि ॥

की चरण-धूलि पोंछी और प्रणाम कर कहा— प्रभु, अब आप सुख से राज्य भोगते रहिये, मैं पाताल को जा रही हूँ। हृदय में दुख होने के कारण जो कुछ भी कहा, हमारा वह दोष क्षमा करना। आपकी चरण-सेवा न कर पायी यह मेरा ही कर्म-विपाक है ॥ १७ ॥ न जाने किस पाप के कारण आप जैसे स्वामी से मुझे वंचित होना पड़ा। इतना कहकर वे आगे बोल नहीं सकी। आँखें छलछला आयीं। गद्गद् वचन से 'प्रभु, अब रहिये, आपसे विदा ले रही हूँ।' —कहकर देवी सीता जाकर दिव्य सिंहासन पर चढ़ गयीं ॥ १८ ॥ वसुमती ने आकर, उन्हें आश्वासन देती हुई आलिंगन कर मधुर वचन कहा। सारी नाग-नारियों ने गंध, धूप, पुष्प, दीप से उनका पूजन किया। सम्पूर्ण नागलोक को गुँजाकर जय-वाद्य बजने लगे, दुन्दुभि का प्रचड घोष ध्वनित हो उठा। सीता के सिर पर सुगंधित पुष्पों की वर्षा हुई और वे पाताल में प्रविष्ट हो गयी ॥ १९ ॥ मन में परम वैराग्य होने के कारण उन्होंने पति-पुत्र और सारे सुहृदों को तज दिया और सती सीता उस क्षण ऐसे ही विलीन हो गयी, जैसे चन्द्रकला मेघ में छिप गयी हो। राम के विरहपूर्ण हृदय में आग जलाकर सीता पाताल चली गयी, तो रामचन्द्र अवाक-विस्मय में खोये हुए, विह्वल हो उठे और अंतरिक्ष की ओर देखने लगे ॥ ७१२० ॥ वे सिंहासन पर से गिरकर मूर्च्छित हो गये। शोक से सब कुछ अँधेरा दिखाई देने लगा। सीता के दोनो कुमार रामचन्द्र को पकड़कर आर्त-रव से रोने लगे। यह अद्भुत दृश्य देखकर सभासदों के मुख में शब्द नहीं रहे। दोनो शिशुओं को देखकर रामचन्द्र को बड़ा कष्ट हुआ। इस कारण वे शोक के मारे हाहाकार करने लगे ॥७१२१॥ देव-ऋषि सभी अपने हृदय को स्थिर न रख पाने के कारण संताप

भरत - लक्ष्मण वीर शत्रुघन भूमित परिला कान्दि ।
कौशल्या प्रमुख्ये मुठि हानें हिये सीता बुलि राव वान्धि ॥ २२
इहेन पुत्रक किमते तेजिलि वज्रे वान्धिलेक हिया ।
गावे जुइ ज्वालि माव कंक गैला एतिक्षणे देखा दिया ॥
सेवकिनी यत सीतार शोकत कान्दे पारे लोटालुटि ।
पाइला स्वर्गकोल क्रन्दनर रोल तुम्बुल रोलेक उठि ॥ २३
शुना सभासद रामायण पद दुख गृहवास देखा ।
रामर सीतार एनुवा विपाक सामान्यर कोन लेखा ॥
कालसर्पे गिले कंत मृत्यु मिले ताहार नाहिके थित ।
रामनाम विने निस्तार नाहिके दुर्घोर इटो कलित ॥ २४
भारत भूमित लभि नरतनु आक व्यर्थ करा किक ।
मूढ़जने येन नजानि विकय काचर वोले माणिक ॥
हेन अनुमानि चिन्ता चक्रपाणि अनादरि आन काम ।
कृष्णर किङ्करे रचिला शङ्करे डाकि वोला राम राम ॥७१२५

श्रीरामर पृथिवीर प्रति क्रोध आरु ब्रह्मार प्रवोध दान

पद

एहिमाने गैल इटो जानकीर कथा * आत अनन्तरे शुना रामर अवस्था
कतोक्षणे रघुनाथे चेतन पाइल * कंरा सीता बुलि येन छेञ्चान्त वातुल ७१२६
चेतन लभिया प्रभु वसिलन्त उठि * हा सीता बुलिया हानन्त हिये मुठि
सीता विने रामर चेतन नाहि गात * हा सीता बुलिया कान्दन्त रघुनाथ २७

से रुदन करने लगे । भालू, वानर सभी भूमि पर लोट-लोटकर निरन्तर रोने लगे । भरत, लक्ष्मण, वीर शत्रुघ्न भूमि पर गिरकर रोने लगे । कौशल्या आदि 'सीता, सीता' पुकारती हुई अपनी छाती पीट-पीटकर रोने लगीं ॥२२॥ अरे, तेरा हृदय वज्र से वना हुआ था, अपने ऐसे पुत्रों को किस प्रकार छोड़ दिया । अरी माँ, हमारे शरीर में आग जलाकर तू कहाँ चली गयी ? इसी क्षण आकर प्रकट हो जा । सभी सेविकाएं सीता के शोक से भूमि पर लोट-लोटकर रोने लगी । रुदन का वह प्रचंड कोलाहल स्वर्ग तक पहुँच गया ॥ २३ ॥ सभासदगण रामायण-पद सुनें, गृहवास में जो दुख है, उसे देखें; जवकि राम-सीता पर इतना संकट हुआ, तव सामान्य जनों की वात ही क्या है ? काल रूपी सर्प निगल रहा है, कहाँ कव मृत्यु हो जाये कुछ निश्चय नही । इस प्रचंड कलिकाल में राम-नाम के विना गति नहीं है ॥ २४ ॥ भारत-भूमि में जन्म लेकर इस मनुष्य-शरीर को विनष्ट किसलिए कर रहे हो ? जिस प्रकार मूढ़जन काँच के मोल मणि वेच देते हैं । ऐसा समझकर दूसरे कर्मों को परे रखकर चक्रपाणि विष्णु का चिन्तन करो । कृष्ण-किंकर शंकर ने इसे रचा है । पुकार-पुकारकर 'राम, राम' कहो ॥ ७१२५ ॥

श्रीराम का पृथ्वी के प्रति क्रोधित होना और ब्रह्मा का उन्हें धीरज बँधाना

यहाँ तक जानकी की कथा बीती । इसके पश्चात् अव रामचन्द्र की अवस्था सुनो । कुछ क्षण पश्चात् रामचन्द्र की चेतना लौटी, वे 'सीता कहाँ गयी' कहकर उन्माद की भाँति चीखने लगे ॥ ७१२६ ॥ प्रभु रामचन्द्र सचेत होकर उठ वैठे और 'हा सीता' कहकर अपनी छाती पर मुक्का मारने लगे । सीता के विना मानो रामचन्द्र के शरीर

कंतनो आछन्त शान्ती प्राणप्रिया मोर * समाजते बिचारि पारन्त हातालोर
बोलन्त बिश्रुति आति बाउल पराय * झाण्टे लाग लेयो प्राण लक्ष्मण भैयाइ २८
आरका रावणे हेरा हरि निले सीता * खुजि नपाओं बान्धे आवे गैल कोन भिता
बाप हनुमन्त तइ लङ्कात बिचार * प्राणत अधिक प्रिया हराइल आमार २९
सुहृद सुग्रीव मोक आपदत तोल * कोने निले सीताक सत्वर करि बोल
इबार निर्जीवो मइ जानकीर हेतु * भालुक बानर सब बान्ध शिला सेतु ७१३०
बिभीषण मित्र मोक कह हित चित्ते * मिथोबार पाइलो सीता तोमार निमित्ते
बान्धे अबिहने हेरा मरो प्राण फुटि * एहि बुलि माटित पारन्त लोटा लुटि ७१३१
सीता सीता बुलिया कान्दन्त गेरियाइ * गैल बान्धे मोक शोक सागरे पेल्लाइ
हा विधि देखिबे नपाइलो मइ भाले * एतेके लुकालि कंत मोहोर कपाले ३२
फुटे प्राण प्राणेश्वरी अग्नि लागे गात * करो तोक कातर पालटि मोक मात
आवेसे जानिलो तइ तेजिलि समूलि * परि मूर्च्छा यान्त कतो हा सीता बुलि ३३
देखिया सीतार ताप तेजि बोले लोके * रामो मरिबन्त आजि जानकीर शोके
हाहाकार करे प्रजा राघवक चाइ * रामो बसिलन्त पाचे किछु श्रुति पाइ ३४
नुगुचय रामर हियार शोकशाल *निश्चये जानिलो सीता लुकाइला पाताल
जानकीर बिरहे शरीर सब पोरे * पृथिवीक कातर करन्त हाथयोरे ३५
तोमारेसे जीउ सीता बसुमती आइ * ताहान सम्बन्धे जाना आमियो जमाइ
मोते रागे गैला सीता तोमारेसे ठाइ * बुलि माति देवी दुनाइ दियोक पठाइ ३६

में चेतना ही नहीं रही। 'हा सीता' कहकर रघुनाथ रोने लगे ।। २७ ।। 'मेरी प्राण-प्रिया, सती सीता कहाँ है ?' कहते हुए दरबार में खोजते हुए उथल-पुथल लगा दी। बावले की भाँति प्रलाप करते हुए कहने लगे— अरे प्राणप्रिय भाई लक्ष्मण, तुम शीघ्र उसके पीछे जाकर पकड़ लो ।। २८ ।। अरे पुनः रावण मेरी सीता को हरकर ले जा रहा है। उसे खोज नहीं पा रहा हूँ कि वह बान्धवी किस ओर चली गयी ? अरे वत्स हनुमान, तुम उसे लंका में ढूँढो। मेरे प्राणों से भी अधिक प्रिया खो गयी है ।। २९ ।। अरे सुहृद सुग्रीव, मुझे इस संकट से उबारो। कौन सीता को ले गया, मुझे शीघ्र बताओ। इस बार मै जानकी के लिए जीवित नही रहूँगा। भालू-बानर सब पुनः शिला-सेतु बाँधो ।। ७१३० ।। मित्र विभीषण, मुझे अपना हितू समझकर बताओ। उस बार भी तुम्हारी ही सहायता से सीता को प्राप्त किया था। बान्धवी सीता के विना प्राण निकले जा रहे हैं। यह कहकर राम भूमि पर लोटने लगे ।। ७१३१ ।। 'सीता, सीता' कहकर चीख-चीख रोने लगे। मेरी बान्धवी मुझे शोक-सागर में डालकर चली गयी। हाय विधाता, मै तो उसे भलीभाँति देख भी नही पाया, मेरे भाग्य-दोष से इतने में ही वह कहाँ छिप गयी ? ।।३२।। प्राणेश्वरी हमारे प्राण निकले जा रहे हैं, शरीर में अग्नि जल रही है, मै तेरी विनती करता हूँ, तू पुनः मुझे पुकार। अब मुझे पता चल गया कि तूने मुझे चिरकाल के लिए त्याग दिया। यह कहते-कहते 'हा सीता' कह, गिरकर मूर्च्छित हो गये ।। ३३ ।। यह देखकर सीता का शोक छोड़ लोग कहने लगे, अब तो रामचन्द्र भी जानकी के शोक से मर जायेगे। राघव को देखकर प्रजा हाहाकार करने लगी। इसके पश्चात् रामचन्द्र कुछ सचेत हो उठ बैठे ।। ३४ ।। रामचन्द्र के हृदय का शोक रूपी काँटा नहीं मिटता था। वे कहने लगे— मैं निश्चित रूप से समझ गया कि सीता पाताल में छिप गयी है। जानकी के विरह से उनका सारा शरीर जल रहा था। हाथ जोड़कर वे पृथ्वी से कातर स्वर से कहने लगे ।। ३५ ।। हे वसुमती माता, सीता तुम्हारी ही कन्या है। उसके नाते से मुझे भी अपना दामाद

तुहि मोक पातालपुरते दिया थान * हेनबा जुराइ जानकीक देखि प्राण
सीतारे लगते मोर येन युवाइ होक * फाट दिया देवी मयो याओँ परलोक ३७
प्रियार बिरहे देखा दहे सर्ब्ब अङ्ग * नकरिवा वान्धिवार दुनाइ डोले भङ्ग
महन्तर उचित नुहिके इटो कर्म्म * जीउ दिया निया दुनाइ इटो कोन धर्म्म ३८
सीतार विरहे जीव भैल येन दगध * शाशु हुया जमाइर किसक लोवा बध
एहिमते पृथिवीक करन्त कातर * एको भाल मन्द रामे नपाइला उत्तर ३९
अनन्तरे राघवे कातर परिहरि * मातिवे लागिला पृथिवीक कोप करि
एखो देखो नेदस सीताक उलियाइ * कातर करिलो पदे पाइले हैबे लाइ ७१४०
तइ मोक निचिनिलि दुर्म्मति वसुमती * जानो तोत कर्म्म निसिजिबे कुटुम्बती
मोत दोष नाहिके आपुनि भाङ्गा लाज * सीताक नेदिले आजि याइबे कोन राज ७१४१
शोकर जनके कोपे कम्पमान तनु * पृथिवीक लागिया धरिला शर धनु
गर्ज्जन्त जङ्कारि माथा थाक बसुमती * हटिलेहे नीचजन होवे शुद्धमती ४२
बोलस क्षेमिबे मोक कुटुम्बर गन्धे * निलि जीउ शाशु आरकिसर सम्बन्धे
हेनबा बुलिबि स्त्रीक नमारिबे वाण * नतो शुन ताड़कार छराइ आछो प्राण ४३
आपुनि मरन्ते आर किवा करे गोटे * दुराचारी पृथिवी लगाइलि खेड़ि मोते
जीवि येवे जानकीक देस बाज करि * नुहि हेर हृदय विदारो वसुन्धरी ४४
खण्ड खण्ड करि तोक निवो रसातल * शुषिवोहो शरे सात सागरर जल

समझो। मुझ पर कुपित होकर सीता तुम्हारे स्थान में चली गयी। हे देवी, उसे समझा-बुझाकर पुनः भेज दो ॥ ३६ ॥ नहीं तो मुझे भी पातालपुरी में स्थान दो, जिससे जानकी को देखकर प्राण शान्त हों। हे देवी, तुम फट जाओ, मैं भी परलोक चला जाऊँ, जिससे सीता के साथ मेरा मिलन हो जाये ।।३७।। देखो, प्रिया के विरह से मेरा समूचा शरीर जल रहा है। इसे पुनः टूटी रस्सी से बाँधने का प्रयास न करो। उत्तम व्यक्तियों का ऐसा कर्म उचित नही है। एक बार जीवन दे पुनः लौटा ले जाना —यह कौन सा धर्म है ॥ ३८ ॥ सीता के विरह से मानो शरीर जल चुका है। सास होकर दामाद की हत्या क्यों करना चाहती हो ? इसी प्रकार रामचन्द्र पृथ्वी से कातर स्वर से विनय करने लगे। पुनः राम को धरती से अच्छा-बुरा कोई उत्तर नही मिला ॥ ३९ ॥ इसके पश्चात् रामचन्द्र कातरता छोड़, कुपित हो धरती से कहने लगे— अरी धरती, देखता हूँ, तू अब भी सीता को निकाल नहीं दे रही है। मैंने तेरे चरणों में विनती की, इससे तेरा घमंड बढ़ गया ॥ ७१४० ॥ दुर्मति वसुमती, तूने मुझे पहचाना नहीं। मैं जान गया कि तुझसे आत्मीय कुटुम्ब की बात कहकर कोई काम नही निकलेगा। मेरा कोई दोष नहीं, तूने स्वयं लज्जा छोड़ने को विवश कर दिया है। सीता को न देकर तू अब किसके राज्य में जायेगी ।।७१४१।। शोक के मारे और क्रोध से राम का शरीर काँप रहा था, धरती को मारने हेतु उन्होंने धनुष-बाण उठा लिया। सिर हिलाकर वे गरजने लगे— वसुमती, ठहर, नीचजन ताड़ना करने पर ही शुद्ध विचार वाले बनते है ॥ ४२ ॥ मुझे यदि कहे कि कुटुम्बीजन के नाते क्षमा करना चाहिए; तो सुन, सास होकर तूने मेरे प्राण (प्राण-सी सीता) ले लिये तो और कौन सा सम्बन्ध रहा ? तू यों भी कह सकती है कि स्त्री को बाण से मारना नही चाहिए; तो सुन ले, मैं ताड़का के प्राण ले चुका हूँ ॥ ४३ ॥ आप ही यदि मरता हो, तो आदमी क्या करे ? दुराचारिणी वसुमती, तूने मेरे ही साथ होड ठान ली है। यदि जीवित रहना चाहती है तो जानकी को निकाल दे। नही तो देख, वसुधा, तेरा हृदय विदीर्ण कर डाल रहा हूँ ॥ ४४ ॥ तुझे खंड-खंड कर रसातल को भेज दूंगा। अपने बाणों

एहि घोर शरे सातो पातालक फुलि * आनिबो सीताक एतिक्षणे खानि तुलि ४५
आमार भार्य्याक राखिबेक कार बापे * आछोहो मरन्ते मइ सीतार सन्तापे
नाहि मोर दोष साखी हुइबा दिगपाल * एहि शरे बिदारिबो पृथिवी पाताल ४६
एहि बुलि रामे क्रोधे भिरिलन्त बाण * देखि सबे सभासदे तरतरिमान
काम्पे सुरासुर पातालर यत नाग * हंसर नामिया ब्रह्मा भेण्टिलन्त आग ४७
एरा एरा क्रोध राम मोर हाक शुनि * तुमि केने आपोनाक निचिना आपुनि
सकल संसार इटो तोमारे स्रजना * आपोनारे निजरूप आपुनि नाजाना ४८
पृथिवीक किय कोप करिबाक लागे * तुमि नतोहन्ते रामायण भैला आगे
ईश्वर निर्म्मित कर्म्म हुइबेक अवश्ये * जगत के जुरिबे तोमार इटो यशे ४९
एहि रामायण यिटो जने शुने भणे * बाढ़िबे भकति तार तोमार चरणे
लवे-कुशे गाउक गीत तोमार आगत * भविष्यत कथा हुइब आपुनि बेकत ७१५०
यार येन हुइबेक आपुनि आछे हुइ * पृथिवीक खङ्गिबे तोमार योग्य नुइ
किसक पासरा राम जगतर बाप * सीतार निमित्ते तुमि त्यजियोक ताप ७१५१
एहि पृथिवीरे खण्डिबाक लागि भार * किय नुसुमरा तुमि हैला अवतार
हेन जानि बाप आवे सम्बरियो क्रोध * चपराइला माथ रामे शुनिया प्रबोध ५२
ब्रह्मार बचने किछु भैला चित्त शान्त * शर धनु सन्धुकिया हातर तेजिलन्त
गुचाया बचने बिधि राघवर शोक * हंसयाने चढ़ि लरि गैला ब्रह्मलोक ५३
पुत्र दुइको धरि रामे सजल नयने * पुनरपि पालटि बसिला सिंहासने

से सात समुद्रों का जल सोख लूँगा। इसी प्रचंड वाण से सातों पातालों को फाड़कर इसी क्षण सीता को खोद उठा लाऊँगा ॥ ४५ ॥ मेरी भार्या को रख सके, ऐसा सामर्थ्य किसके बाप का है ? मैं तो सीता के संताप से मरा जा रहा हूँ। दिग्पालगण साक्षी रहें, मेरा कोई दोष नहीं है। इसी वाण से पृथ्वी और पाताल को विदीर्ण कर डालूंगा ॥ ४६ ॥ यह कहकर रामचन्द्र ने क्रोध से वाण चढ़ा लिया। यह देख सभी सभासद थर-थर काँपने लगे। सुर-असुर, पाताल के सारे नाग काँपने लगे। हंस से उतरकर ब्रह्मा उनके सामने खड़े हो गये ॥४७॥ राम, मेरा निषेध-वचन सुनकर क्रोध छोड़ दीजिये। आप भला अपने आप को पहचान क्यों नहीं रहे हैं ? यह समूचा संसार आपके द्वारा ही सर्जित है। आप अपने स्वरूप को आप ही नहीं जानते ॥४८॥ भला पृथ्वी पर आपको कुपित होना क्यों चाहिए ? आपके होने के पहले ही रामायण बन चुका है। ईश्वर-निर्मित कर्म अवश्य ही होकर रहेगा। आपकी यह कीर्ति समूचे विश्व में फैल जायेगी ॥४९॥ यह रामायण जो व्यक्ति सुनता है या कहता है, आपके चरणों में उसकी भक्ति बढ जायेगी। लव-कुश आपके सम्मुख रामायण-गीत गावें, तो भविष्य की कथा अपने आप प्रकट हो जायेगी ॥७१५०॥ जिसका जैसा होना है, वह अपने आप होता जा रहा है। पृथ्वी पर क्रोधित होना आपके लिए उचित नहीं। राम, आप जगत्-पिता हैं, यह क्यों भूले जा रहे हैं ? सीता के निमित्त आप अनुतप्त होना छोड़ दें ॥ ७१५१ ॥ इस पृथ्वी का भार खंडित करने हेतु आप अवतरित हुए हैं, यह बात स्मरण किसलिए नहीं करते ? ऐसा जानकर हे जगत्-पिता, आप क्रोध करना छोड़ दें। ब्रह्मा की यह प्रबोध-वाणी सुनकर रामचन्द्र ने अपना सिर पीट लिया ॥ ५२ ॥ ब्रह्मा के वचन से उनका चित्त कुछ शान्त हुआ। सचेत होकर हाथ से धनुष-बाण रख दिये। अपने वचनों से रामचन्द्र का शोक मिटाकर ब्रह्मा हंस-यान पर सवार हो ब्रह्मलोक चले गये ॥५३॥ रामचन्द्र दोनो पुत्रों को पकड़कर सजल नेत्रों से पुनः लौटकर अपने सिंहासन पर आ बैठे। सीता का स्मरण करते हुए सिर झुकाकर रघुनाथ बार-बार लम्बी साँसें लेने लगे ॥५४॥

सीताक सुमरि सने ओलमाया माथ * घने घने निश्वास तेजन्त रघुनाथ ७१५४
रामर विकल चित्त नुगुचिल जानि * पाताल पुररपरा निकलिल वाणी

पाताली बाणीर श्रीरामक सीतार वृत्तान्त कथन

तेजियो सन्ताप वाप होवा सन्धुक्षण * आउर दुनाइ दुर्लभ सीतार दरिशन ७१५५
परम वैराग्ये आसि पशिला पाताल * सिटो प्राणपुत्र दुइको करा प्रतिपाल
आउर जानकीर हन्ते परिहरा चिन्ता * इटो अवतारत नपाइबा बाप सीता ५६
कल्याणे आछन्त ऐत आइ सीता सती * पातालर लोके पूजे परम भकति
गन्धे पुष्पे धूपे येन विधि व्यवहार * स्वर्गत त्रिदशे आसि करे सतकार ५७
साधे इष्ट वर आसि गोसानीक सेवि * सातो पातालर सीता मुख्य देवी
तेजियोक शोक सिटो सीतार निमित्ते * सिटो शुभान्वित दुइ पुत्रक देखन्ते ५८
यार येन अवश्येके हैबेक सर्व्वथा * उत्तराकाण्डर आवे शुना पाचकथा
तोमार आगत दुइ भाइ गाउक गीत * भविष्यत कथा हुइवे आपुनि विदित ५९
वाल्मीकिर कृत रामायण येन वेद * तार कथा शुनि सवे पाइवा परिच्छेद
तुमि नतो हन्ते सिटो शास्त्र मैल आगे * अवश्ये हुइवेक येन येन हुइवे लागे ७१६०
पातालपुरर परा निकलिल वाणी * शुनि रामचन्द्रे ताक मने अनुमानि
वाल्मीकिक वुलिलन्त करिया प्रणति * कालिसि शुनिवो कथा थाकोक'सम्प्रति ७१६१
बिसर्ज्जिला सभा उठि आसनर हन्ते * प्राण फुटि याइ दुइ पुत्रक देखन्ते
शुतिला शय्यात दुइ पुत्र गले धरि * लोतके पाञ्जरि भिजे सीताक सुमरि ६२

राम के चित्त की व्याकुलता मिटी नहीं, जानकर पातालपुरी से यह वाणी निकली।

पाताली वाणी द्वारा श्रीराम से सीता का वृत्तान्त कथन

वत्स, संताप छोड़कर सचेत होवो। सीता का पुनः दर्शन दुर्लभ है ।। ७१५५ ।। परम वैराग्य से सीता ने आकर पाताल में प्रवेश किया है। अब प्राणप्रिय उन दोनो पुत्रों का प्रतिपालन करो। जानकी के लिए अब चिन्ता करना छोड़ दो। वत्स, अब इस अवतार में सीता नही मिल सकेंगी ।। ५६ ।। सती सीता यहाँ आकर कल्याण-पूर्वक है। परम भक्ति से पातालवासी उनकी पूजा करते हैं। गंध-पुष्प-धूप सहित विधि-व्यवहार के अनुरूप स्वर्ग के देवगण आकर उनका सत्कार किया करते हैं ।। ५७ ।। वे देवी सीता की सेवा कर उनसे इष्ट वर माँगा करते हैं। देवी सीता सातों पाताल की मुख्य देवी हैं। उन सीता के लिए अब शोक करना छोड़ दो। अब दोनो पुत्रों पर दृष्टि रखना ही शुभ है ।। ५८ ।। जिसका जो कुछ होना है, वह सर्वथा होगा ही। अब उत्तरकाण्ड की आगे की कथा सुनो। तुम्हारे सामने दोनो भाई गीत गायें, तब भविष्य की बातें अपने आप विदित हो जायेंगी ।। ५९ ।। बाल्मीकि-रचित रामायण, वेद के समान है। वह कथा सुनकर सबको सांत्वना मिलेगी। तुम्हारे अवतरित होने के पहले ही वह शास्त्र रचा गया है। उसमे जैसा-जैसा होने को कहा गया है, वह अवश्य ही होगा ।। ७१६० ।। पातालपुरी से जो बात निकली, उसे सुनकर रामचन्द्र ने मन में सोच-विचार किया और बाल्मीकि को प्रणाम कर कहा— अभी वह कथा रहे, कल उसे सुनेंगे ।। ७१६१ ।। उन्होंने आसन से उठकर सभा विसर्जित की। दोनो पुत्रों को देखकर उनके प्राण निकलने लगे। दोनो पुत्रों को गले लगाये वे शय्या पर लेट गये, पर सीता के स्मरण से निकले आँसुओं से छाती तक शरीर भीग गया ।।६२।। वे लम्बी

फोकारन्त निशास नाहिके चित्त शान्त * स्वपनतो सीता सीता बुलिया चेञ्चान्त
उठन्ते बैसन्ते भैल सुप्रभात राति * हैया शुचि सज्जन बसिला सभा पाति ६३
शुनिलन्त उत्तराकाण्डर कथा शेष * भैला येनमते सीता पाताले प्रवेश
बिह्वल भैलन्त येनमते रघुपति * आसि बुजाइलन्त येनमते प्रजापति ७१६४
पातालर हन्ते येन निकलिल बाणी * दिलन्त प्रबोध येन पृथिवी, गोसानी
राघवर आगत सकले कथा गाइल * शुनि बिपरीत राम किञ्चित जुराइल ६५
आउरे गाइबे चाहन्ते बाल्मीकि·दिला हाक * नुशुनिबा रामचन्द्र पाचर कथाक
शुनिया लोकर उतपात हैब चित्त * ऋषिर निषेधे दुयो तेजिलन्त गीत ६६
राम नतो हन्ते रामायण भैल गीत * हेन कथा शुनिया समाजे आचरित
साधु साधु बाल्मीकि तुमिसि महाऋषि * प्रशंसिला दशोदिशे ताहाङ्क हरिषि ६७
रामको बुजाइला बेढ़ि भ्रातृ मन्त्री लोक * नपलाइ रामर सीतार सिटो शोक
सुमरन्ते जानकीक फुटे येन प्राण * हाट फोट नुगुचे नुरुचे अन्नपान ६८
दुखमने सदाये थाकन्त गुणि गान्थि * आउर दुनाइ नभैल रामर सुख शान्ति
आपदर उपरि आपद तान भैल * एहिमाने पाताली काण्डर कथा भैल ६९
शुना सर्ब्बजने इटो रामायण पद * हेन जाना गृहबास परम आपद
रामर सीतार भैला एनुवा बिलाइ * कारो सुस्थ नाहि चावा मने अवगाइ ७१७०
आसम्बात धन जन जीवन यतेक * एइ आछे एइ नाइ सम्यके टाटेक
यत बन्धु बान्धव आगते याय मरि * तथापि नुपजे भय इहाक सुमरि ७१७१

सांसें लेने लगे, उनका चित्त शान्त नहीं रहा। सपने में भी वे 'सीता, सीता' कहकर चीख उठते थे। उठते-बैठते रात बीत गयी, सुप्रभात हुआ। सज्जन-वृन्द स्नान आदि से पवित्र होकर सभा में आ बैठे ॥ ६३ ॥ उन सबने उत्तरकाण्ड की अन्तिम कथा सुनी। जिस प्रकार सीता का पाताल में प्रवेश हुआ, रघुपति जिस प्रकार से विह्वल हुए, ब्रह्मा ने आकर जिस प्रकार से समझाया ॥ ६४ ॥ पाताल से जिस प्रकार वाणी निकली, पृथ्वी देवी ने जिस प्रकार से धीरज बँधाया, उन दोनो ने राघव के सम्मुख सारी कथा का गान किया। उसे सुनकर दुखी रामचन्द्र का चित्त कुछ शान्त हुआ ॥ ६५ ॥ वे आगे की कथा गान करनेवाले थे, तभी बाल्मीकि ने निषेध करते हुए कहा— रामचन्द्र, इसके आगे की कथा न सुनें। उसे सुनकर लोगों के चित्त में उथल-पुथल मच जायेगी। ऋषि के मना करने पर दोनो ने गायन बन्द कर दिया ॥ ६६ ॥ राम के बिना हुये ही रामायण-गीत का जन्म हुआ, यह बात सुनकर समाज के लोग विस्मित हो उठे। 'साधु, साधु बाल्मीकि तुम्ही महा-ऋषि हो', कहकर दसों दिशाओं मे लोग हर्षित हो उनकी प्रशसा करने लगे ॥ ६७ ॥ राम को घेरकर उनके भाई, मंत्री आदि सब लोगों ने समझाया पर राम के हृदय से सीता का वह शोक मिटा नही। जानकी के स्मरण से मानो उनके प्राण निकल जाने लगे। मनोवेदना नही मिटती थी, अन्नजल नही रुचता था ॥ ६८ ॥ वे दुखीमन से सदा विचार-चिन्तन में पड़े रहते थे। राम को पुन: कभी सुख-शान्ति नहीं मिली। उन पर संकट पर संकट पड़ने लगे। पाताल-काण्ड की कथा यही समाप्त हुई ॥ ६९ ॥ सभी जन यह रामायण-पद सुने। यह समझ लें कि गृह-वास परम संकट है। राम-सीता पर इतने संकट पड़े, तो मन में विचार कर देखें कि यहाँ किसी को सुख-शान्ति मिलने का नही है ॥ ७१७० ॥ यहाँ धन-जन-जीवन जो कुछ भी है, वह सब अभी है तो अभी नहीं, मानो जादू हो गया है। जितने बन्धु-बान्धव हैं, सभी हमारे सम्मुख ही मर जाते हैं, तथापि इसका स्मरण कर भी भय उत्पन्न नहीं होता ॥ ७१७१ ॥ अरे, काल तो पकड़ने ही वाला है, अत: यह बात

निचिन्ति नाथाका काले धरि लेक परा * येवे निस्तारिवा हरि भकतिक धरा
परलोके बान्धव परम हरिनाम * जानि आन एरि येहि बोला रामराम ७१७२

नाना राजाक पराभव कराइ श्रीरामे भरतादिर पुत्रसकलक राज्य दियाय

छवि

पातालखण्डर कथा एहिमाने गैल तथा शुनिलाहा समाजिकवर्ग ।
शुना स्वर्गखण्ड आवे येनमते सामराजे श्रीरामचन्द्र गैला स्वर्ग ॥
सीता पातालक गैला राघव आकुल भैला एकोमते चित्त नुहि शान्त ।
नेत्रर नुगुचे जल निनिमाइ शोकानल गुणि एको उपाय नपान्त ॥ ७१७३
यज्ञ साङ्ग करि देव दिलन्त दक्षिणा दान हीरा मरकत रत्न रामे ।
दुखी भिक्षी देशान्तरी दिला अदरिद्र करि सुवर्ण रजत दामे दामे ॥
राजा प्रजा द्विजगण सवारो तुषिला मन दिया बस्त्र भूषण अशेष ।
पाचे समदले गैला दुगुटि पुत्रक लैया अयोध्यात भैलन्त प्रवेश ॥ ७१७४
ओवारिर नतु बाज एरिलन्त राजकाज भैल येन गृहे बनबास ।
नाहि आन एको चिन्ता हा सीता हा सीता बुलि मात्र तेजन्त निश्वास ॥
नाहि एको कथा मात गालर नुगुचे हात दुगुटि पुत्रक चाइ चाइ ।
सदाय लम्बित मुख शयनतो नाहि सुख लोतके पाञ्जरि भिजि याय ॥ ७५
पार नाइ सन्तापर दण्डे युग समसर कैबो कत राघवर शोक ।
कौशल्या प्रमुख्य करि तिनि राजमाव मरि काले सबे गैला स्वर्गलोक ॥

विना सोचे न रहो, यदि उद्धार पाना चाहो तो हरि-भक्ति की शरण लो। हरि-नाम ही परलोक का परम वान्धव है। यह समझकर दूसरे को छोड़ वार-वार 'राम, राम' कहो ॥ ७१७२ ॥

अनेक राजाओं को पराभूत करवाकर श्रीरामचन्द्र का भरत आदि के पुत्रों को राज्य दिलवाना

सभासदगण, आप सवने सुना। अव पाताल-खंड की कथा यही समाप्त हुई। अव रामचन्द्र जैसे सारी प्रजा के संग स्वर्गगामी हुए, स्वर्ग-खंड की वह कथा सुनें। सीता के पाताल-गमन के पश्चात् राघव व्याकुल हो उठे, उनका चित्त किसी भी प्रकार से शान्त नही होता था। आँखों से आँसू थमते न थे, शोक रूपी आग वुझती न थी, वे विचार कर किसी प्रकार का उपाय निकाल नही पाते थे ॥ ७१७३ ॥ देव रामचन्द्र ने यज्ञ-कार्य पूरा कर हीरे, मरकत आदि रत्नों की दक्षिणा दी, सोने-चाँदी आदि की ढेरियाँ लगाकर उन्होंने दुखियों, भिखारियों और प्रवासियों को दरिद्रता-विहीन कर दिया। अपार वस्त्र-आभूपण आदि देकर राजा-प्रजा, द्विजगण, सवके मन को उन्होने संतुष्ट किया। इसके पश्चात् दोनो पुत्रों को ले शोभायात्रा करते हुए उन्होंने जाकर अयोध्या मे प्रवेश किया ॥ ७४ ॥ वे राजभवन से वाहर नही निकलते थे, राजकाज भी छोड़ दिया, मानो घर ही में उन्हें वनवास मिला हो। और कोई भी चिन्ता नहीं, केवल 'हा सीता, हा सीता' कहकर निःश्वास छोड़ते थे। वे कोई भी वात नही करते थे। गाल से हाथ नहीं हटता था, केवल दोनो पुत्रों को देखते रहते थे। मुख सदा झुका रहता था, सोने में भी सुख नहीं था, आँसुओं से छाती भीग जाती थी ॥ ७५ ॥ उनके

तासम्बार प्रेतकार्य्य सकले सङ्कलि दिला पिण्ड जलाञ्जलि राम नृप ।
भैल महा सदगति परम आनन्द मति पाइल सबे स्वामीर समीप ।। ७६
रामर प्रसादे सबे पाइलन्त अक्षय स्वर्ग मिलै वस्तु देव उपयोग ।
भार्य्यासमे दशरथ पूरिलन्त मनोरथ ब्रह्मा भुवनत भुञ्जि भोग ।।
आत अनन्तरे कथा शुना येन भैल तथा भरतर ममाइ युद्धाजित ।
रामर पाशक लागि अनेक सम्भार दिया पठाइलन्त गर्ग पुरोहित ।। ७७
रामे पाचे बार्त्ता पाइ ऋषिक गौरवे गैया आगबाढ़ि दण्ड दुइर पथ ।
अङ्गिरा पुत्रक पाचे बिदूरते भेण्ट पाइ भैल भूमिपाव एरि रथ ।।
गर्गक प्रणामि रामे अयोध्याक आनिलन्त पाइला रामे हरिष आशेष ।
आति आनन्दित मति येन गुरु बृहस्पति भैल इन्द्रपुरत प्रवेश ।। ७८
योगाइल रामत यत कम्बल चामर रत्न आर दश हाजार घोटक ।
सुवर्ण बाखरचय चिकिमिकि करे तय बेगे येन बिजुली चटक ।।
रामे पुछिलन्त गुरु मातुलर बार्त्ता भाल तोमाक पठाइला किबा काजे ।
गर्ग बोलन्त प्रभु हेन कार्य्ये पठाइलन्त सिटो युद्धाजित महाराजे ।। ७९
सिन्धु नदीतीर जुरि सैन्धव गन्धर्व्वराज रहि आछे करि महा गर्व्व ।
राज्य मारि पीड़े प्रजा पापी आरो लग लैया तिनि कोटि कटक गन्धर्व्व ।।
ताक मारि दुयो तीरे राज्य पातियोक प्रभु मइ हइबो सहाय लगत ।
शुनि गुणि रामराय बोलन्त पाचक चाइ शुना प्राण भैयाइ भरत ।। ७१८०

संताप का पार नहीं था, एक दंड एक युग-जैसा बीतता था; राघव के शोक के बारे में और क्या कहें। कौशल्या समेत तीनो राजमाताएँ काल प्राप्त होने पर मरकर स्वर्गलोक चली गयीं। राजा रामचन्द्र ने उन सबके प्रेत-कर्मादि संस्कार किये और पिंड-जलांजलि दी। उनकी महा-सद्गति हुई, वे सभी परम आनन्द-मति से अपने स्वामी के समीप पहुँच गयी ।। ७६ ।। राम के प्रसाद से सभी को अक्षय स्वर्ग मिला, उन्हें देव-योग्य वस्तुएँ प्राप्त हो गयीं। दशरथ ने अपनी भार्याओं के साथ ब्रह्मलोक में सारे भोगों को भोगकर अपने मनोरथ पूरे कर लिये। इसके पश्चात् जो घटनाएँ हुईं, उनकी कथा सुनो। भरत के मामा युद्धाजित ने पुरोहित गर्ग को अनेक सामग्रियाँ देकर रामचन्द्र के समीप भेजा ।।७७।। रामचन्द्र ने वह समाचार पाकर ऋषि के सम्मानार्थ दो दंड का मार्ग आगे बढ़कर स्वागत किया। इसके पश्चात् अंगिरा के पुत्र गर्ग के निकट आने पर रथ छोड़कर उतर पड़े और पैदल जाकर उन्हें प्रणाम किया। रामचन्द्र गर्ग मुनि को अयोध्या ले आये। उन्हें अपार हर्ष हुआ। गर्गजी भी बड़े आनन्द से ऐसे आये, मानो गुरु बृहस्पति इन्द्रपुरी में प्रविष्ट हो रहे हों ।। ७८ ।। उन्होंने रामचन्द्र को जितने कम्बल, चँवर, रत्न तथा जो दस हजार घोड़े साथ थे, सब सौंप दिये। उन घोड़ों पर सुसज्जित सोने और रत्न के आभूषण जगमगा रहे थे। वे घोड़े बिजली की चमक से भी अधिक वेगवान थे। राम ने पूछा, गुरुदेव, मामा का समाचार अच्छा है न? उन्होंने तुम्हें किस कार्य हेतु भेजा है? गर्ग ने कहा— प्रभु, मुझे महाराज युद्धाजित ने जिस कार्य से भेजा है, सुनिये ।। ७९ ।। सिन्धु नदी के तट को व्याप्त कर गंधर्वराज सैन्धव महा-गर्व से निवास कर रहा है। वह पापी अपने संग तीन करोड़ गंधर्वों की सेना लेकर राज्य पर अधिकार कर प्रजा का पीड़न कर रहा है। हे प्रभु, उसे मारकर सिंधु के दोनो तटों पर राज्य स्थापना कीजिये, मैं आपके संग रहकर सहायक बनूँगा। राजा रामचन्द्र ने इस बात को सुन, मन में विचार कर अपने पीछे की ओर मुड़कर देखते हुए कहा— प्राणप्रिय भाई भरत, सुनो ।। ७१८० ।। तुम सेना सजाकर चलो

चलियोक साज हुइ तक्षक पुष्कर दुइ पुत्रक दियोक राज्य बाण्टि ।
गन्धर्ब्बक बधि गैया राज्य करि बिभञ्जिया आनिबाहा करिया निघाण्टि ॥
रामर आदेश पाया पुत्र दुइक लगे लैया लरिला भरत समदले ।
राम लक्ष्मणे गैया आगवढ़ाइ भरतक पठाइलन्त अनेक मङ्गले ॥ ७१८१
ज्येष्ठर चरणधूलि शिरत लैलन्त तुलि करिलन्त आटोपे पयाण ।
कटकर गिरे आति दलदप वसुमती देवासुर तरतरिमान ॥
कतो दिने पाइला गैया मातुलर राज्य पाचे शुनि युद्धाजित महाराजा ।
परम कौतुक भैला भरतर लाग लैला सङ्गे साजि गज बाजी प्रजा ॥ ८२
शुनियोक सर्ब्बजन पुण्यकथा रामायण जाना नामधर्म्म बिपरीत ।
रामनाम मत्तसिंह शुनिया ताहार रिङ्ग पलाइ पाप-हस्ती हुया भीत ॥
कोटि शत तीर्थस्नान तप जप यज्ञ दान कोटि भाग ताक सम नुइ ।
राम बोले एकजने तार ध्वनि शुने माने सवारो पापत लागे जुइ ॥ ८३
नाम सुमरणे मात्र चण्डाले यज्ञर पात्र हुइवेक उचित किनो देखा ।
चारियो वेदर सार नामर आगत आर आन पातकर कोन लेखा ॥
शुनियोक शास्त्रमर्म्म किङ्कर सकले धर्म्म सवारे उपरि राजा नाम ।
हेन तत्त्व कथा जानि समज्यार यत प्राणी निरन्तरे बोला राम राम ॥ ७१८४

पद

आत अनन्तरे शुना येन कथा भैला * साजि युद्धाजिते भरतर लाग लैला
तवल मृदङ्ग ढोल शवद तुम्बुले * साजि एक स्थान भैला भागिने मातुले ७१८५
आलोचिया दुयो वीरे गन्धर्व्व बधित * दिला घाव निर्भये भरत युद्धाजित
तक्षक पुष्कर दुइ भरत कुमार * आग हुया सेनार लरिल चमत्कार ८६

और तक्षक-पुष्कर अपने इन दोनो बेटों को राज्य बाँट दो । उस गधर्व का वध कर, सवंश नाश कर राज्य को बाँटने के बाद तुम लौट आना । रामचन्द्र का आदेश पाकर अपने दोनो पुत्रों को संग ले, भरत सेना सहित वेग से चल पड़े । राम-लक्ष्मण ने भरत को आगे बढ़ाकर अनेक मंगल-वचन, शुभ सगुन सहित विदा किया ॥७१८१॥ भरत ने बड़े भाई की चरण-धूलि सिर पर चढाकर बड़ी सज-धज से प्रस्थान किया । उनकी सेना के कोलाहल से धरती आलोड़ित हो उठी, देव-असुर थर-थर काँपने लगे । कुछ दिन पश्चात् वे मामा के राज्य में पहुँचे । सुनकर महाराज युद्धाजित को बड़ी प्रसन्नता हुई, उन्होंने हाथी-घोड़े सजा-धजाकर प्रजा सहित आगे बढ़ भरत की अगवानी की ॥८२॥ सभी जन पुण्यकथा रामायण सुनें, समझ लें कि नाम-धर्म विपरीत हो गये हैं । राम-नाम मत्त सिंह है । उसकी दहाड़ सुनकर भयभीत हो पाप रूपी हाथी भाग जाता है । कोटि शत तीर्थ-स्नान, तप-जप, यज्ञ-दान ये सब राम-नाम के करोड़वें भाग के बराबर भी नहीं हैं । कोई व्यक्ति 'राम' कहे, तो वह ध्वनि जो सुनता है, उसके पाप में आग लग जाती है ॥ ८३ ॥ नाम-स्मरण मात्र से चांडाल भी यज्ञ का पात्र हो जाता है । इससे बढ़कर और क्या देखा है ? चारों वेदों का सार जो नाम है, उसके सम्मुख और पापों की कौन गिनती है ? शास्त्रों का मर्म सुनो, अन्य सभी धर्म तो किंकर हैं, नाम सबके ऊपर राजा है । ऐसी तत्व-कथा जानकर सभा के सभी लोग निरंतर 'राम, राम' कहो ॥ ८४ ॥ इसके पश्चात् जो कुछ हुआ, वह कथा सुनो । युद्धाजित सज-धजकर भरत से मिले । नगाड़े, ढोल, मृदंग आदि का तुमुल नाद गूंज उठा, सज-धजकर दोनो मामा-भानजे एक स्थान में आये ॥ ८५ ॥ भरत और युद्धाजित दोनो वीरों ने गन्धर्वों

सागर सङ्काश सेना याय एके जोपे * गन्धर्ब्बर राजा शुनि बजाइल आटोपे
तूण बाण धनु धरि करि आटि मुटि * पाटोवारे बजाइल गन्धर्ब्ब तिनि कोटि ८७
देखि भरतर ताक किटाइल कटके * धाइल धनु धरि येन सारोल चटके
बाघे येन गर्ज्जि आसि गन्धर्ब्बक ढाकि *प्रहारिल काण्ड खाण्डा याठी जोङ्ग जाकि ८८
महागर्ब्बे गन्धर्ब्बे नेदिला भङ्ग तात * करिला आपोन अस्त्रे अस्त्रक बिघात
परम आक्रान्त करि शत्रुर सेनाक * शरीरर सन्धाने अस्त्रर दिला जाक ८९
दुइ हाते कोबावे खाण्टखिट करि खाण्डे * घावर बिषत तेज बर्व धारा दण्डे
नोवारिले तापरिबे पाच गुचि याय * देखि खेदि गैलन्त भरत आगुवाइ ७१९०
सैन्धवे भेण्टिल आसि भरतर आग * मारि शर सर खड्गे गर्ज्जे येन बाघ
भरते सहिते भैल समर दुष्कर * सेना समे युजे दुइ तक्षक पुष्कर ७१९१
दुइहन्तरो लगते युजन्त युद्धाजित * बरिषिल शर तिनि बीरे बिपरीत
छेदिल भेदिल कारो उरु करीकर * ओठ कण्ठ कटि काटिलन्त कटकर ९२
तथापि गन्धर्ब्बे नेरै युजे बायुगति * भैल घोर रण सात दिन सात राति
आतासते काण फाड़ै येन बज्र परे * समस्तरे भय शुनि हृदि कम्प लरे ९३
भरतक गन्धर्ब्बे बुलिल आरम्फटि * दुनाइ नेदेखिबि आर अयोध्या उलटि
मोर घोर शरे आजि हुइबे तोर यम * भरते बोलन्त शुन सैन्धव अधम ९४
तोक काले पाइले आसि लपस लटक * एहि बुलि रथ ध्वज काटिला घोटक
दुइ शर मारि सारथिक थैला शालि * आठ शरे रथखान पेट्लाइला बखालि ९५

के वध का निश्चय कर निर्भय रूप से धावा किया। भरत के दोनो पुत्र तक्षक और पुष्कर सेना के आगे-आगे सबको विस्मित कर वेग से चल पड़े ॥ ८६ ॥ सागर-जैसी वाहिनी एक साथ, एक ही गति से चल पडी, गंधर्वो का राजा सुनकर बड़े दर्प से निकल आया। तूण, वाण, धनुष धारण कर बड़े पराक्रम से कतार बाँधकर तीन करोड़ गंधर्व निकल चले ॥ ८७ ॥ भरत की सेना उसे देखकर क्रोधित होकर आगे आयी और धनुष धारण कर वैसे चली, जैसे बाज छोटे पक्षियों पर झपटता है। बाघ की भाँति दहाड़ते हुए आकर गंधर्व को आवृत कर वाण, खड्ग, जगमगाते भाले आदि का प्रहार किया ॥ ८८ ॥ महा घमंडी वह गंधर्व पहले तो भागा नही, अपने अस्त्रों से उसने भरत की सेना के अस्त्र काट डाले प्रबल पराक्रम से शत्रु-सेना के शरीरों को लक्ष्य कर झुंड के झुंड अस्त्रों की वर्षा करने लगे ॥ ८९ ॥ दोनो हाथों में खड्ग लेकर खट्-खट् प्रहार करने लगे। प्रहार की चोटों से वह प्रवल धारा से रक्त वमन करने लगा। तथापि उसे हरा नही सके, वे पीछे हटने लगे। यह देखकर भरत उसे खदेड़ते निकल आये ॥ ७१९० ॥ तब सैन्धव ने आकर भरत का सामना किया। तेज वाणों से प्रहार कर वह बाघ की भाँति गरजने लगा। भरत के साथ उसका प्रचंड युद्ध हुआ। उसकी सेना से तक्षक और पुष्कर दोनो लड़ रहे थे ॥ ७१९१ ॥ उन दोनो के संग युद्धाजित भी लड रहे थे। तीनो वीरों ने शत्रुओ पर वाणों की वर्षा की। उन सबने सेना में किसी की जाँघ, किसी के पैर, किसी की कमर वेध डाले। किसी के होंठ, गला काट डाले ॥ ९२ ॥ तथापि गंधर्व पीछे न हटकर वायु वेग से लड़ रहे थे। उनमें सात दिन, सात रात तक युद्ध होता रहा। वे कान फाड़नेवाला ऐसा घोर नाद कर रहे थे, मानो वज्रपात हो रहा है। सुनकर सबके हृदय में भय हो रहा था, हृदय कंपित होने लगा था ॥९३॥ उस गंधर्व ने भरत को ललकार कर कहा— तू फिर से अयोध्या को लौटकर नहीं देख सकता। मेरा प्रचड वाण आज तेरा यम होगा। भरत ने कहा— अरे अधम सैन्धव, सुन ॥ ९४ ॥ अरे दुष्ट बकवादी, तेरा काल आ पहुँचा है।

तीक्ष्णतर शरे तार हृदयक भेदि * पेलाइलन्त अर्द्धचन्द्रे तार स्कन्ध छेदि
भरतर बीरत्व प्रशंसे सामराजे * पारे जय जोकार दुन्दुभि बाद्य बाजे ९६
सैन्धवक बधि बीर बिपुल बिक्रम * धनु धरि धाइलन्त सेनाक येन यम
दिब्य गन्धर्ब्बर बाण करिया प्रकाश * ढाकिल बिदिश दिश छानिया आकाश ९७
एक गुटि जोरन्ते परन्ते कोटि लक्ष * संहारिवे लैला शरे गन्धर्ब्ब बिपक्ष
आति खरतर भरतर शरे फुटि * निरन्तरे बधिला गन्धर्ब्ब तिनि कोटि ९८
गन्धर्ब्बक बधिया साधिला सबे जय * भरतर बीरत्व जगते प्रशंसय
धन्य धनुर्द्धर बीर रामर कनिष्ठ * मारि दुर्ज्जनक कार्य्य साधिला बिशिष्ट ९९
राघवर आदेश सुमरि पाचे वीरे * पातिलन्त नगर नदीर दुइ तीरे
तक्षक पुरीर नाम तक्षक रहिल। * पुष्करावती नामे पुरी पुष्करक दिला ७२००
सजाइल बिचित्र गृह प्रासाद उद्यान * दिला दौल दीघि सरोवर थाने थान
पुत्र दुइको दिला बाण्टि आरो यत राज * रामर आदेशे सबे सङ्कलिला काज ७२०१
राज्य पालिलन्त पाञ्च बत्सर तहित * उत्रावल चित्त आति रामक देखित
युद्धाजित मातृलत मागिया मेलानि * अयोध्याक आसिला भरत महामानी २
करिला ज्येष्ठर आसि चरणे प्रणाम * चिरकाले भ्रातृक देखिला श्रीराम
सजल नयने स्नेहे धरिला सावटि * भरते कहिला कथा सकले प्रकटि ३
गन्धर्ब्ब मारिया येनमते पाति राज * पुत्र दुइको दिला सबे निबेदिला काज
मेलन्त हरिष शुनि कौशल्यार सुत * भरतक अभिनन्दा करिला बहुत ४

यह कहकर उसके रथ, घोड़े, ध्वज आदि काट डाले। दो वाण मारकर सारथी को वेध डाला। आठ वाणों से रथ को टुकड़े-टुकड़े कर डाला ॥ ९५ ॥ अति तेज वाण से उसका हृदय बेधकर अर्धचंद्र वाण से उसका कंधा छेद डाला। सभी लोग भरत की वीरता की प्रशंसा करने लगे। वे जय-जयकार करने लगे, दुन्दुभि बजाने लगे ॥ ९६ ॥ विपुल विक्रम से वे वीर सैन्धव का वध कर यम की भाँति सेना पर चढ दौड़े। उन्होने दिव्य गन्धर्वास्त्र का सधान किया और वाणो की वर्षा से हर दिशा को परिव्याप्त कर दिया ॥ ९७ ॥ एक वाण छोड़ते ही करोड़ों, लाखों गंधर्व गिरते थे। वे वाणों से विपक्षी गंधर्वों का संहार करने लगे। भरत के अत्यन्त तेज वाणों से निरंतर बिंधकर तीन करोड़ गन्धर्व मारे गये ॥ ९८ ॥ गंधर्वो का वध कर उन्होंने विजय प्राप्त किया। भरत की वीरता की प्रशंसा ससार के सभी लोग करने लगे। 'राम के छोटे भाई धनुर्धर वीर भरत धन्य हो, तुमने दुर्जन को मारकर विशिष्ट कार्य साधन किया' ॥ ९९ ॥ रामचन्द्र के आदेश का स्मरण कर वीर भरत ने नदी के दोनो तटों पर नगरों की स्थापना की। तक्षकपुरी नगर में तक्षक रहा और पुष्करावती नाम की पुरी पुष्कर को दे दी ॥७२००॥ उन्होंने उन दोनो नगरों को विचित्र भवनों, उद्यानों आदि से सजाया। स्थान-स्थान पर देवालयों, झीलों और सरोवर बनवा दिये। और जितना राज्य था, दोनो पुत्रों में बाँट दिया। इस प्रकार राम के आदेश से सारा कार्य पूरा किया ॥७२०१॥ वहाँ उन्होंने पाँच वर्ष राज्य किया, इसके पश्चात् रामचन्द्र के दर्शन हेतु उनका चित्त अत्यन्त उतावला हो उठा। मामा युद्धाजित से विदा लेकर महा-मानी भरत अयोध्या चले आये ॥ २ ॥ उन्होंने आकर बड़े भाई रामचन्द्र के चरणों में प्रणाम किया। श्रीराम ने बहुत दिन पश्चात् भाई को देखा। उन्होंने सजल-नयन से स्नेहपूर्वक भाई को आलिंगन कर लिया, भरत ने सारी कथा उनसे कह सुनायी ॥ ३ ॥ जिस प्रकार गधर्वो को मारकर राज्य की स्थापना करते हुए दोनो पुत्रो को उन राज्यों में प्रतिष्ठित किया, सब कुछ उनसे निवेदन किया। सुनकर कौशल्या-नन्दन राम बड़े प्रसन्न हुए

आत अनन्तरे रामे चिन्तिलन्त कार्य्य * लक्ष्मणर पुत्र दुइको दिबो कत राज्य
थैबी कत दुयो कुमारक राजा पाति * पात्र मन्त्रीगणत सोधन्त प्रभु माति ५
भरते बोलन्त शुनियोक देवादेश * आछे कारु नामे रमणीय महादेश
मल्लभूमि शिखरभूमिक जानो माले * हेन शुनि रामे आदेशिला ततकाले ६
सङ्गे अङ्गदक लैया लरियो लक्ष्मण * चला चन्द्रकेतु समे भरत एखन
दुयो कुमारक दिया राज्य करि थिर * तेवेसे आसिबा अयोध्याक दुयो बीर ७
रामर आदेशे समदले दुयो भाइ * गैलन्त आटोपे पाचे पृथिवी कम्पाइ
लक्ष्मणे भरते आलि चिन्ति हित काज * दिला दुयो कुमारक कारु नामे राज ८
मल्लभूमि लक्ष्मणे आपुन चाइ फुरि * अङ्गदिया नामे तात पातिलन्त पुरी
धने धाने भरिया पातिला बहु प्रजा * अङ्गद पुत्रक तात पातिलन्त राजा ९
शिखरभूमित फुरि भरत कुमार * चन्द्रावती नामे तात पातिला नगर
बितोपन पुरी येन ज्वले अम्रावती * पातिलन्त ताते चन्द्रकेतुक नृपति ७२१०
थाने थाने दिला दीघि सरोबर आलि * बरिषेक बञ्चिला रामर आज्ञा पालि
प्रबोधिया पुत्र दुइक थापिला तहित * उत्रावल चित्त आति रामक देखित ७२११
अयोध्याक पाइला पाचे भरत लक्ष्मणे * बेढ़ि प्राणदिला आसि रामर चरणे
चन्द्रकेतु अङ्गदर निबेदिला कथा * दुयो भाइर भैला येन राज्यर व्यवस्था १२
शुनि रघुपति भैला आनन्द अपार * करिलन्त दुयो भाइक आति सतकार
प्रशंसिला साधु साधु मधुर बचने * एक पाशे बसिलन्त भरत लक्ष्मणे १३

और भरत का बडा अभिनन्दन किया ।। ४ ।। इसके पश्चात् राम ने सोचा कि लक्ष्मण के दोनो पुत्रों को कहाँ का राज्य दिया जाये । उन्होंने सामन्तों, मंत्रियों आदि को बुलाकर पूछा कि इन दोनो कुमारों को राजा बनाकर कहाँ स्थापित किया जाये ? ।।५।। भरत ने कहा— प्रभु, सुनिये । कारू नाम का एक महादेश है । उस मल्लभूमि, शिखर-भूमि को मैं भलीभाँति जानता हूँ । यह सुनकर रामचन्द्र ने तत्काल आदेश दिया ।। ६ ।। लक्ष्मण और भरत, तुम दोनो अपने संग अंगद और चन्द्रकेतु को लेकर शीघ्र जाओ । इन दोनो राजकुमारों को राज्य निश्चित कर देने के पश्चात् दोनो वीर अयोध्या लौटना ।। ७ ।। राम के आदेश से दोनो भाई सेना सजाकर चले, उनके प्रचंड कोलाहल से धरती काँप उठी । लक्ष्मण और भरत ने दोनो कुमारों का हित-चिन्तन करते हुए उन्हें कारू नाम का राज्य प्रदान किया ।। ८ ।। लक्ष्मण ने मल्लभूमि को घूम-फिर कर देखा और वहाँ अंगदिया नाम की पुरी बसायी । धन-धान्य से पूर्ण कर वहाँ अनेक प्रजाजनों को बसाया और पुत्र अंगद को वहाँ का राजा बनाया ।। ९ ।। कुमार भरत ने शिखरभूमि को देख-भालकर वहाँ चन्द्रावती नाम का नगर बसाया । वह नगर अमरावती की भाँति सौन्दर्य से जगमगाता रहता था । वहीं चन्द्रकेतु को राजा बनाया ।। ७२१० ।। वहाँ स्थान-स्थान पर झीलें-सरोवर-राजमार्ग आदि बनवाये और राम की आज्ञा के अनुसार वहाँ एक वर्ष बिताया । दोनो पुत्रों को धीरज बँधाकर वहीं स्थापित किया । इसके पश्चात् उनका चित्त राम को देखने हेतु उतावला हो उठा ।। ७२११ ।। भरत-लक्ष्मण दोनो अयोध्या पहुँचे और राम की परिक्रमा कर उनके चरणों में प्रणाम किया । उनसे चन्द्रकेतु व अंगद के सम्बन्ध में उन दोनो भाइयों की राज्य-व्यवस्था कैसी हुई, सारी बातें बतायीं ।। १२ ।। सुनकर रामचन्द्र को अपार आनन्द हुआ और उन्होंने दोनो भाइयों का बड़ा सत्कार किया । उन्हे 'साधु, साधु' कहकर मधुर वचनों से प्रशंसा की । भरत-लक्ष्मण दोनो रामचन्द्र के एक बगल में बैठ गये ।। १३ ।। इसके पश्चात् रामचन्द्र ने विचार किया कि शत्रुघ्न के भी दो कुमार हैं ।

आत अनन्तरे रामे आलोचिला पाचे * इटो शत्रुघनर कुमार दुइ आछे
कैत राज्य दिबो बुलि चपराइला माथ * गुणि गान्थि आपुनि पाइलन्त रघुनाथ १४
माति शत्रुघनक राघवे बुलिलन्त * लैयो गज वाजि साजि सेना अपर्य्यन्त
मथुराक लागि करा सत्वरे पयाण * परम सम्पन्न सिटो बितोपन थान १५
सुचरित सुबाहु तोमार पुत्र दुइ * लगते चलोक सैन्यसमे साज हुइ
लवण असुर मथुरार अधिकारी * पातियोक दुइको राजा तैते ताक मारि १६
शुनि शत्रुघने उठिलन्त तेतिक्षणे * परि प्रणामिला ज्येष्ठ रामर चरणे
यात्रा लैया हैला वाज अयोध्याक छारि * तमकिल तबला ढोलत दिया बारि १७
साजि गज वाजी प्रजा धरिलेक आग * स्नेहे कनिष्ठक रामे वढ़ाइलन्त आग
कराइला मङ्गल यत भरत लक्ष्मणे * साजि शत्रुघने लरिलन्त रङ्गमने १८
वावै वाद्यमण्ड दण्ड नचुवावे तुलि * कटकर गिरे आति उजरिल धूलि
बाजे गजघण्टा आतासे फारै काण * परम आरम्भे वीरे करिला पयाण १९
कतोदिने समीप पाइलन्त मथुरार * काछिया वजाइल शुनि लवण दुर्व्वार
असंख्य असुर सेना साजि वायुगति * करिला समर तिनि दिन तिनि राति ७२२०
पुत्र दुइ सहिते युजन्त शत्रुघन * वरिषिला वाणगण काटन फुटन
उरु करोकर कटि काटिलन्त जाङ्ग * असुरर शोणिते वहाइला ताते गाङ्ग ७२२१
करिलन्त समर असुर यत कोटि * एके ब्रह्म अस्त्र मारि करिला निगुटि
शत्रुघन अगनित पतङ्ग असुर * क्षणेके मरिल मरि घोर यमपुर २२
सेना बद्ध देखि खड्गे लवण दुर्ज्जय * हाते शूल धरि शत्रुघनक गर्ज्जय

इन्हें कहाँ राज्य दें, सोचकर अपने सिर को पीट लिया। परन्तु स्वयं ही विचार-चिन्तन कर रामचन्द्र को उपाय सूझ गया ।। १४ ।। शत्रुघ्न को बुलाकर रामचन्द्र ने कहा— तुम हाथी, घोड़े आदि से सजाकर विशाल सेना साथ ले लो और शीघ्र ही मथुरा के लिए प्रस्थान करो। वह परम सम्पन्न, सुन्दर स्थान है ।। १५ ।। तुम्हारे दोनो पुत्र सुचरित और सुबाहु भी सजकर सेना के साथ जायँ। मथुरा असुर लवण के अधिकार में है। उसे मारकर अपने दोनो पुत्रों को वही राजा बना दो ।। १६ ।। सुनकर शत्रुघ्न उसी क्षण उठे और बड़े भाई के चरणो में प्रणाम किया। यात्रा के सारे उपकरण लेकर वे अयोध्या से बाहर निकले। उनके यात्राकाल में तबला, ढोल आदि बाजे बज रहे थे ।।१७।। हाथी-घोड़े सजाकर प्रजाजनों ने आगे बढ़कर उन्हे विदा दी। छोटे भाई के स्नेह से रामचन्द्र ने भी उन्हे आगे बढ़कर विदा दी। भरत-लक्ष्मण ने मंगल-सूचक सारे कृत्य किये। शत्रुघ्न सज-धजकर प्रसन्न-चित्त से वेग से चल पड़े ।। १८ ।। शत्रुघ्न की सेना नगाडे आदि वाद्य बजा रही थी, हाथ की लाठियाँ उठाकर नचा रही थी। सेना के कोलाहल से बड़ी धूल उड़ने लगी। गज-घंटा बज रहे थे, हाथियों के चिघाड़ से प्राण फटे जाते थे। इस प्रकार परम आडम्बर से ही वीर ने प्रस्थान किया ।। १९ ।। कुछ दिन पश्चात् वे मथुरा में पहुँचे। उनका नाद सुनकर फेंटा बाँध दुर्निवार लवणासुर निकल आया। पवन की गति-वाली असंख्य असुर-सेना ने तीन दिन तीन रात सज-धजकर संग्राम किया ।। ७२२० ।। दोनो पुत्रो समेत शत्रुघ्न जूझ रहे थे। काटने-छेदनेवाले असंख्य बाणों की वर्षा की। पैर, कमर, जाँघ आदि काटकर उन्होने असुरों के रक्त की नदी बहा दी ।। ७२२१ ।। वहाँ के करोड़ों असुरों ने युद्ध किया, शत्रुघ्न ने एक ही ब्रह्मास्त्र का प्रयोग कर उन्हें ध्वस्त कर दिया। शत्रुघ्न रूपी अग्नि में पड़कर पतंग रूपी असुरों ने क्षण भर में मरकर घोर यमपुरी को परिपूर्ण कर दिया ।। २२ ।। सेना को ध्वस्त होते देख दुर्जय लवणासुर ने हाथ में

खाइबो मुण्ड जोण्ड कुण्ड येन याय देखि * पेलाइलन्त शूल तार शत्रुघने छेदि २३
भेदिलेक हृदय निर्द्दय याठी शरे * तथापितो पाचभरि असुरे नकरे
देखि दुनाइ भेदिलेक हाजारेक बाणे * नकरे कटाक्ष शत्रुघनर सन्धाने २४
क्रोधे धरि धावे बज्रमुष्ठि असदृष्ट * देखि अर्द्धचन्द्र जुरि रामर कनिष्ठ
आकर्ण पूरिया शर क्षेपिया पठाइल * लवणक काटि गाण्डि मुण्ड बेलगाइल २५
कतो दूर जुरि घोर असुर परिल * गिर गिर शवदत पृथिवी लरिल
प्रशंसिया देवे पुष्प बरिषे बिशिष्ट * धन्य धन्य धनुर्द्धर रामर कनिष्ठ २६
आकाशत देवे करे दुन्दुभि आस्फाल * जय जय प्रजार मिलिल कोलाहल
जयवाद्ये आन्दोले मेदिनी मेले फाट * लैला शत्रुघने गैया मथुरार पाट २७
फुराइला डेङ्गर सबे नगरे नगरे * नाहि लुरि लोध लोक गृहत सञ्चरे
भैल घिटि घिटि ग्राम नगर आशेष * करिया बिभाग पुत्र दुइको दिला देश २८
भैलन्त विदिश पुरे राजा सुचरित * सुबाहु नृपति भैला मथुरापुरीत
नाहि पाल पञ्चा प्रजा पालन्त निशेष * धने धाने बिपुल सम्पत्ति भैल देश २९
लवणक मारि राज्य करि अकण्टक * शत्रुघने दिला बाण्टि दुइ तनयक
भार्य्या पुत्रसमे मथुरात पाति पाट * थाकिलन्त रामर आज्ञात चाहि बाट ७२३०
शुनियोक समाजिक रामर चरित्र * लभिया दुर्ल्लभ जन्म भारत भूमित
रामनाम अमृतते तेजि अभिलाष * करियो किसत बिष बिषयत ग्रास ७२३१
देवर बाञ्छनि जन्म याय आले जाले * केतिक्षणे परा आसि धरिलेक काले

शूल लेकर शत्रुघ्न पर गरजने लगा। 'मै तेरा सिर खा डालूंगा', अग्निकुंड जैसे उस शूल को आते देखकर शत्रुघ्न ने उसे काट डाला ।। २३ ।। उन्होंने निर्मम होकर लवण की छाती भाले और वाणों से बेध डाली। तथापि वह असुर पैर पीछे नही हटाता था। यह देख पुनः हजारों वाणों से उसे वेध डाला तथापि वह शत्रुघ्न के वाणों की परवाह नही करता था ।। २४ ।। वह वज्र जैसे मुक्का बाँधकर क्रोध से शत्रुघ्न पर चढ़ दौड़ा, देखकर रामचन्द्र के छोटे भाई ने अर्धचन्द्र वाण का संधान किया। कान तक खींच वाण छोड़े, और लवण के सिर, जाँघे काटकर छिन्न-भिन्न कर दिया ।। २५ ।। वह घोर असुर कुछ दूर व्याप्त कर गिर पड़ा। 'गिर-गिर' शब्द से पृथ्वी हिल गयी। देवगण प्रशंसा करते हुए फूल बरसाने और 'राम के धनुर्धर छोटे भाई धन्य-धन्य हो' कहने लगे ।। २६ ।। आकाश में देवगण दुंदुभि का घोष करने लगे। उसके साथ प्रजाजनों का 'जय, जय' नाद मिलकर प्रतिध्वनित होने लगा। विजय-वाद्य बजने के कारण धरती फटने-सी लगी। शत्रुघ्न ने जाकर मथुरा का राज्य अधिकार में कर लिया ।।२७।। नगर-नगर में यह डुग्गी बजवा दी कि कोई भी व्यक्ति न भागकर अपने-अपने घर में ही रहे। ग्राम-नगर सबमें बड़ी हलचल मच गयी। शत्रुघ्न ने उस देश को अपने दोनो पुत्रों में बाँट दिया ।। २८ ।। विदिशपुर का राजा सुचरित बना और सुबाहु मथुरापुरी का राजा हुआ। किसी को दूसरे के सेवा-यत्न की आवश्यकता नही थी, इस प्रकार वे सारी प्रजा का पालन करते थे। देश धन-धान्य से विपुल सम्पत्तिवान् हो उठा ।। २९ ।। लवण को मार, इस प्रकार सारे राज्य को निष्कंटक बनाकर शत्रुघ्न ने उसे दोनो पुत्रों में बाँट दिया। भार्या-पुत्र सहित मथुरा में राज्य-स्थापना कर राम की आज्ञा की बाट जोहते हुए वे वहीं रहने लगे ।। ७२३० ।। सभासदगण, राम के चरित्र सुनें। भारत-भूमि में दुर्लभ जन्म लेकर राम-नाम रूपी अमृत की अभिलाषा तजकर किस विष रूपी विषय-भोग को ग्रास कर रहे हो ? ।। ७२३१ ।। देव-वांछित यह जन्म यों ही व्यर्थ जंजालों मे चला जा रहा है। काल ने पकड़ रखा है, न जाने

निचिन्ति नथाका यावे गावे आछे बल * झाण्टे लोवा रामनाम मरण समल ३२
नलागे भागर गावे नाहि धनहानि * शुनन्ते सन्तोष इटो रामनाम बाणी
उच्चारणे पापर प्रलय करे नाम * हेन जानि डाकि सबे बोला राम राम ७२३३

श्रीरामर ओघरलै कालर छद्मबेशे गमन

दुलड़ी

एहिमते रामे भ्रातृर पुत्रक राज्य येवे बाण्टि दिल।
शुनियोक पाचे बिमङ्गल येन अयोध्या मध्ये मिलिल॥
एके आकाशते उदित दुइ चन्द्र सघने निर्घात परे।
अना बतासते बृक्ष उभरय घने घने भूमि लरे॥ ७२३४
दिनते फेरुवा रावे घरे घरे मनुष्यर चापि कोल।
छानिया गगन शुनि कुकुरर क्रन्दनर ऊर्म्मि रोल॥
हालधि रुधिर बरिषय धारे देखावे पुरी उच्छाद।
हेन उतपात देखि राघवर मनत महा बिषाद॥ ३५
सीतार बियोगे दण्डे युग याय नकरे निद्रा निशात।
इटो उतपाते जानिलो अवश्ये मिलाइबे एक बिघात॥
हा बान्धे सीता तेजि गैलि मोक मारिया बुकत घाव।
सुमरि शान्तीक लोतक निगरे पोरे कर्म्मे सर्ब्बगाव॥ ३६
प्रियार सन्तापे प्रभु राघवर मनत नुगुचे क्लेश।
सेहि समयत आसिलन्त काल ऋषिर धरिया बेश॥

किस क्षण मरना पड़े। जब तब शरीर में बल है, राम का चिन्तन किये बिना न रहो। शीघ्र राम-नाम लो, जिससे मरण को सहारा मिले॥ ३२॥ राम-नाम लेने में शरीर मे थकावट नही लगती, धन-हानि नही होती, यह 'राम-नाम' वाणी सुनने में सन्तोष होता है। राम का नाम उच्चारण करते ही पापों का प्रलय कर डालता है। ऐसा समझकर सभी पुकार-पुकारकर 'राम, राम' कहो॥ ७२३३॥

श्रीराम के समीप काल का छद्मवेश में आगमन

इसी प्रकार रामचन्द्र ने अपने भाइयों के बेटों में राज्य विभाजित कर दिया, इसके पश्चात् अयोध्या में जैसे अमंगल होने लगे, सुनिये। एक ही आकाश में दो चाँद उग आये। बार-बार वज्रपात होने लगा। बिना हवा के वृक्ष उखड़कर गिरने लगे, बार-बार भूमि हिलने लगी॥ ७२३४॥ दिन में ही घर-घर मनुष्यों के निकट आकर सियार फेंकरने लगे, आकाश परिव्याप्त कर कुत्तों की तरंगित रुदन-ध्वनि सुनाई देने लगी, हल्दी और रक्त की वर्षा धाराओं में होने लगी, पुरी उजाड़-सी दिखाई देने लगी। ऐसे उत्पातों को देखकर राघव के मन मे बड़ा विषाद हुआ॥ ३५॥ सीता के वियोग से उनका एक दंड युग के समान बीतता था, रात को नींद नही आती थी। वे सोचते थे— इन उपद्रवों से यह लग रहा है कि अवश्य ही कोई संकट आनेवाला है। हा, प्रिया सीता, छाती पर चोट कर तू मुझे छोड़ गयी। सती के स्मरण से उनकी आँखों से आँसू झर रहे थे, काम करते हुए समूचा शरीर जल रहा था॥३६॥ सीता के सताप के कारण प्रभु रामचन्द्र के मन से कष्ट नही मिटता था। उसी समय ऋषि का वेश धारण कर काल वहाँ आया। सिंहद्वार पर लक्ष्मण से भेंट होने पर वहीं खड़े रहकर कहा—

सिह दुवारत रहिया कहिल लाग लक्ष्मणक पाइ।
नामत सुरुति आमि ब्रह्मऋषि आसिलो रामर ठाइ॥ ३७
राघवत आछे गोप्य प्रयोजन झाण्टे दियो गैया जान।
लक्ष्मणे जनाइल राघवे नियाइल ऋषिक करि सम्मान॥
सादरे आसन आनि पराइदिल रामे आपोनार काछे।
हुयोक बिजय बुलि ऋषि सेइ आसने बसिला पाचे॥ ३८
ऋषित कुशल पुछि रघुपति सुधिलन्त पाचे काज।
आमार थानक कोन कामे आइला तुमि महा मुनिराज॥
ऋषिये बोलन्त तेवेसे कहिबो करा आगे अङ्गीकार।
तुमि आमि कथा कहन्ते यि देखे सेहिसे बध्य तोमार॥ ३९
सुनि लक्ष्मणक दुवारत थैया बुलिलन्त रघुनाथ।
आमाक देखिते सिटो जन आसं सत्ये काटिबोहो माथ॥
पूछिलन्त पाचे बिरले ऋषित आवे कंयो कोन काम।
ऋषिये बोलन्त जाना मइतो काल आसि आछो प्रभु राम॥ ७२४०
त्रिदशे सहिते आलचि गोचर करिया पठाइला बिधि।
यिटो कार्य्ये प्रभु पृथिवीक गैला भैल सिटो सबे सिद्धि॥
एमो आपोनाक किय निचिनाहा तुमि सनातन हरि।
सृष्टिर पूर्ब्बक स्रजिला जगत मायाक सहाय करि॥ ७२४१
अनन्त शय्यात शुतिया आछन्ते बाढ़िल नाभि कमल।
दशोदिश सिटो प्रकाशे उज्ज्वल सूर्य्यर येन मण्डल॥
सेहि नाभिपद्मे ब्रह्मा उपजिला जानिला बेद सुलभे।
उपजि हरिल चारियो बेदक दानव मधु-कैटभे॥ ४२

मेरा नाम सुरुति है। मैं ब्रह्मर्षि हूँ। राम के यहाँ आया हूँ॥ ३७॥ रामचन्द्र से मुझे कुछ गुप्त प्रयोजन है, शीघ्र जाकर उन्हें सूचना दो। लक्ष्मण ने जाकर सूचित किया, तो रामचन्द्र ने ऋषि का सम्मान कर बुलवा भेजा। बड़े आदर से अपने समीप आसन डलवा दिया। 'विजय हो' कहकर ऋषि उस आसन पर बैठा॥ ३८॥ ऋषि का कुशल पूछने के पश्चात् रघुनाथ ने आने का प्रयोजन पूछा— मुनिराज, आप हमारे यहाँ किस प्रयोजन से आये हैं? ऋषि ने कहा— यह बात तभी बताऊँगा, पहले आप प्रतिज्ञा कीजिये कि आपके हमारे बीच वार्तालाप के अवसर पर यदि कोई आकर देख ले, तो वह आपके हाथ वध के योग्य होगा॥ ३९॥ सुनकर लक्ष्मण को द्वार पर रखकर रघुनाथ ने कहा— मुझे अब जो भी देखने हेतु आयेगा, सत्य ही उसका मस्तक काट डालूँगा। इसके पश्चात् ऋषि से रामचन्द्र ने एकान्त में पूछा— अब कहिये, आपका प्रयोजन क्या है? ऋषि ने कहा— प्रभु राम, आप तो जानते हैं कि मैं काल हूँ॥ ७२४०॥ देवताओं से चर्चा कर ब्रह्मा ने मुझे आपके पास भेजा है। प्रभु, आप जिस कार्य हेतु पृथ्वी पर आये थे, वह सब सिद्ध हो चुका। आप सनातन हरि है, अब भी आप अपने को किसलिए पहचानते नही? आप ही ने सृष्टि के पहले माया का सहारा लेकर जगत का सर्जन किया था॥ ७२४१॥ अनन्त शयन में सोते समय आपका नाभि-कमल बढ़ गया, वह सूर्य-मंडल की भाँति दसों दिशाओं में उज्ज्वल प्रकाशमान हो उठा। उसी नाभि-कमल से ब्रह्मा उत्पन्न हुये। उन्हें अनायास वेदों का ज्ञान प्राप्त हो गया। तभी दानव मधु-कैटभ ने उत्पन्न होकर चारों वेदों का हरण कर लिया॥ ४२॥ उन्हें चक्र से मारकर आपने स्वयं वेदों का उद्धार किया था।

तार चक्रे छेदि बेद उद्धारिला आपुनि तुमि पूर्व्वत ।
तारे अस्थि भैल पूर्व्वत समस्त यतेक शिला पर्व्वत ॥
सृष्टि करिबाक करिला आदेश ब्रह्मा स्रजिलन्त भूमि ।
समस्ते सृष्टिक विष्णुरूपे प्रभु आपनि पालिला तुमि ॥ ४३
नरसिंह रूपे हिरण्यकशिपु मारिला हिया विदारि ।
बराह स्वरूपे हिरण्यक छिरि आनिला तुमि उद्धारि ॥
धरि मत्स्यकाय सत्यव्रत राय प्रलय जले तारिला ।
कच्छप स्वरूपे पिठित मन्दर धरिला करिया लीला ॥ ४४
अदितिर गर्भे भैला अवतार अद्भुत वामन काय ।
चलिया वलिक त्रैलोक्य काढ़िया इन्द्रक दिला दुनाइ ॥
चरणर नखे कटाह फुटाइला गङ्गा परशिया भरि ।
फुरन्त तोमार पावर सम्वन्धे जगत पवित्र करि ॥ ४५
सम्प्रति आपुनि आसि कौशल्यात तुमि आछा अवतरि ।
करि सेतुवन्ध बधि दशस्कन्ध आनिला सीता उद्धारि ॥
त्रिदशर सवे सङ्कुलिला कार्य्य हरिला भूमिर भार ।
आउर ऐत प्रभु थाकिबाक प्रति उचित नुहि तोमार ॥ ४६
त्रिदशे सहिते ब्रह्माये पठाइल अनेक बुलिला नति ।
करियो आमाक कृपा पुनु नाथ आसा इठावक प्रति ॥
स्वर्गर लोकक करियो सनाथ सिथानक परिहरि ।
अनेक कातर करिया त्रिदशे पठाइला बुलि सादरि ॥ ४७
हेन शुनि हासि राघवे बोलन्त शुन पुत्र तइ काल ।
ब्रह्मार बचन करिबाक लागे अवश्येके प्रतिपाल ॥

पूर्वकाल में उन्ही दानवों की अस्थियों से सारे शिला-पर्वत बने । आपने ब्रह्मा को सृष्टि करने का आदेश दिया था, तब उन्होंने भूमि का सर्जन किया । प्रभु, आपने विष्णु के रूप से स्वयं सृष्टि का पालन किया ॥ ४३ ॥ नरसिंह-रूप से हिरण्यकशिपु का हृदय विदारित कर मार डाला । वराह के रूप में हिरण्याक्ष का वध कर धरती का उद्धार किया । मत्स्य का रूप धारण कर प्रलय के जल से राजा सत्यव्रत का उद्धार किया । कच्छप के रूप में पीठ पर मंदराचल को धारण कर लीलाएँ कीं ॥ ४४ ॥ अद्भुत वामन-रूप धारण कर अदिति के गर्भ से आप उत्पन्न हुए । वलि को छलकर त्रैलोक्य को हरण कर पुनः इन्द्र को प्रदान किया । अपने चरणों के नाखूनों से ब्रह्म-कटाह फोड़ डाला, चरणों के स्पर्श से पवित्र गंगा आपके चरणों से सम्पर्कित होने के कारण विश्व को पवित्र करती हुई भ्रमण कर रही हैं ॥ ४५ ॥ सम्प्रति आप कौशल्या के गर्भ से संसार में अवतरित हुए हैं । सेतु बाँधकर रावण का वध करने के पश्चात् आप सीता का उद्धार कर लाये । आपने देवताओं के सभी कार्य पूरे कर दिये, भूमि का भार हरण कर लिया । प्रभु, अब और यहाँ रहना आपके लिए उचित नहीं है ॥ ४६ ॥ देवों समेत ब्रह्मा ने आपसे अनेक विनय-वचन कहकर मुझे भेजा है । हे नाथ, हम पर पुनः कृपा कीजिये, अपने स्थान को चलिये । इस लोक को छोड़ अब स्वर्ग के लोगों को सनाथ कीजिये । अनेक कातर वचन कहकर देवताओं ने आपको सादर बुला भेजा है ॥ ४७ ॥ यह सुनकर रामचन्द्र ने हँसकर कहा— अरे पुत्र काल, तू सुन, ब्रह्मा के वचन का अवश्य ही प्रतिपालन करना चाहिए । तू ब्रह्मा से कहना, अपने दोनों पुत्रों को प्रतिष्ठित करने के पश्चात् मैं चलूँगा । इसी प्रकार रामचन्द्र एकान्त में काल के

बुलिबि बिधिक तेवेसे चलिबो पुत्र दुइक थापि थैं ।
एहि मते राम आछन्त बिरले काले समे कथा कैं ॥ ४८
शुना सर्ब्बजन कथा रामायण रामक मनत धरा ।
किय नाहि शङ्का निचिन्ति नथाका काले धरिलेक परा ॥
बिषय सम्पद परम आपद आरु भाल करि माना ।
हरिर भकति एहिसे सम्पत्ति आक दृढ़ करि जाना ॥ ४९
रामनाम हेन बान्धव नपाइबा शुनियो शास्त्र सम्प्रति ।
पुत्र नाम धरि हेलात उच्चरैं कर्र नामे तारो गति ॥
जाति अजातिक एकोवे नबाछे हेनसे हरिर नाम ।
पापर अगनि धर्म्म शिरोमणि जानि बोला राम राम ॥ ७२५०

लक्ष्मण-बर्ज्जन

पद

एहिमते काले समे कहि कथा मात * आछन्त बिरले बसि प्रभु रघुनाथ
गुणन्त किमते तेजो भकतर आशा * सेहि समयत ऋषि आसिल दुर्ब्बासा ७२५१
मूर्त्तिवन्त क्रोध येन देखिय प्रत्येक * आगे पाचे बेढ़ि आसि शिष्य अयुतेक
द्वारत रहिला आसि कतो दूर जुरि * देखि लक्ष्मणर येन धातु गैल उरि ५२
मठ जुरि रहिया आछिला कतोक्षण * बोलन्त शुनरे कथा कुमार लक्ष्मण
जान देस सत्वरे रामत आछे काज * मातन्तोक मोत आसि झाण्टे हैया बाज ५३
देखिया लक्ष्मणे प्रणिपात करि आति * बसिबाक आदरे दिलन्त पिरा पाति
करियो आसने ऋषि क्षणिक विश्राम * शुनन्त सङ्कोच्य किबा कथा प्रभु राम ५४

साथ वार्ता कर रहे थे ॥ ४८ ॥ सब लोग रामायण-कथा सुनो । राम का स्मरण करो, काल ने पकड़ ही रखा है । अब भी शंका क्यों नहीं करते ? यह बात चिन्तन किये बगैर न रहो कि विषय-सम्पदाएँ परम संकट (के कारण) हैं । यह और भलीभाँति मान लो । इस बात को दृढ़ता से जान लो कि हरि की भक्ति ही एक मात्र सम्पदा है ॥ ४९ ॥ सम्प्रति शास्त्रों को श्रवण करो, राम-नाम जैसा बान्धव नहीं मिलेगा । (अजामिल के) पुत्र का नाम लेकर अनायास उच्चारण करने पर भी नाम ने उसका भी उद्धार कर दिया । हरि का नाम ऐसा है कि वह जाति-अजाति कुछ भी भेद नहीं रखता । राम-नाम पाप की अग्नि तथा धर्मों का शिरोमणि है । ऐसा समझकर 'राम, राम' कहो ॥ ७२५० ॥

लक्ष्मण का परित्याग

इसी प्रकार काल से वार्तालाप करते हुए प्रभु रघुनाथ एकान्त में बैठे हुए थे। वे सोच रहे थे, भक्तों की आशा किस प्रकार छोड़ूं ? उसी समय ऋषि दुर्वासा आ पहुँचे ॥ ७२५१ ॥ वे मूर्तिमान क्रोध-से दिखाई दे रहे थे । उनके आगे-पीछे दसों हजार शिष्य घेरे हुए आ रहे थे । वे सभी, द्वार पर आ कुछ दूर तक घेरे खड़े हो गये । उन्हें देखकर लक्ष्मण के मानो होश उड़ गये ॥ ५२ ॥ कुछ क्षण दर्प से बिना कुछ बोले खड़े रहने के बाद दुर्वासा ने कहा— कुमार लक्ष्मण, सुन । शीघ्र राम को सूचना दे, उनसे मेरा प्रयोजन है । वे शीघ्र बाहर आकर मुझसे वार्ता करें ॥ ५३ ॥ देखकर लक्ष्मण ने उन्हें बड़े विनय से प्रणाम कर उनके बैठने हेतु आसन लगा दिया । कहा—

करिलन्त शपत शुनाया सभा मध्य * आसि इ वेलात यिटो सिटो मोर बध्य
आछन्त सम्प्रति प्रभु गोप्य सम्भाषणे * जानि क्षणितेक ऋषि वसियो आसने ५५
शुनिया दुर्व्वासा अति ज्वलिल क्रोधत * तरङ्ग वरङ्ग खङ्गे आखि आरकत
कर कर करि कोपे दशन चोवान्त * कि बुलिलि लक्ष्मण कटाक्ष दृष्टि चान्त ५६
शुन दुराचार तइ लक्ष्मण कुमार * रामे तोक काटिलि मरिवि एकेश्वर
सवंशे करिबो भस्म मइ चण्ड शापे * मोहोर आगत आजि याइबे तोर बापे ५७
कंसाल सर्पक जङ्काइबाक कर सास * नतो दुराचार गोटेरर आण्टा पास
दशन प्रकटि चटि करन्त छर्पति * क्रोधे येन उभरि फुरन्त फिरिङ्गति ५८
देखि लक्ष्मणर अन्तर्गते अति त्रास * हा कि करिलो आवे भैलो सर्व्वनाश
काले ग्रासिलेक आउर नाहि प्रतिकार * चिन्तन्ते देखन्त दुखे लखाइ अन्धकार ५९
गुणि गान्थि पाचे थिर करिला लक्ष्मणे * एकले मरिबो मइ राम दरशने
नगैले सवंशे खाइब दुर्व्वासा राक्षस * एकेश्वरे मरो मइ परम श्रेयस ७२६०
ब्रह्मशापे नहोक सकले कुलक्षय * मोर मृत्यु होक आर करिलो निश्चय
चलिला लक्ष्मण महा मनत विचाट * भितर पशिला पाचे छारिया कपाट ७२६१
आगक नबाढ़े भरि विवर्ण वदन * रामत जनाइला दुर्व्वासार आगमन
यिवये मरिल राम लक्ष्मणक देखि * आथे वेथे पठाइलन्त कालक उपेखि ६२
किसक आसिलि लखाइ आमाक काटित * हा नष्ट भैलो बुलि परिला माटित

ऋषि, आप क्षण भर आसन पर विश्राम करें। प्रभु राम अभी कुछ गोपनीय बात सुन रहे है ।।५४।। उन्होंने सभा के बीच सबको सुनाकर यह शपथ की है कि इस समय जो वहाँ आयेगा, वह उनके द्वारा वध कर डालने योग्य होगा। प्रभु अभी गोपनीय चर्चा में हैं। ऐसा जानकर हे ऋषि, आप क्षण भर आसन पर बैठें ।। ५५ ।। यह सुनकर दुर्वासा क्रोध से अत्यन्त जल उठे। प्रचंड क्रोध के कारण उनकी आँखें लाल हो उठीं। वे किट-किटाकर दाँत पीसने लगे। कटाक्ष दृष्टि से देखते हुए बोले— रे लक्ष्मण, तू क्या कहता है ? ।। ५६ ।। अरे दुराचारी, कुमार लक्ष्मण, सुन। राम यदि तुझे काट डालें तो तू अकेला ही मरेगा। परन्तु मैं अपने प्रचंड शाप से तुझे वंश-सहित ध्वंस कर डालूँगा। मेरे सम्मुख (तू ही नहीं) तेरा बाप जायेगा ।। ५७ ।। क्रुद्ध सर्प को छेड़ने का तू साहस करता है ? या सभी दुराचारी-समूह का तुझे प्रोत्साहन मिल गया है ? दुर्वासा दाँत निकालकर बार-बार पीस रहे थे। क्रोध के मारे मानो चिनगारियाँ निकली पड़ती थी ।। ५८ ।। यह देखकर लक्ष्मण के अन्तर में बड़ा त्रास हुआ। हा, अब क्या करूँ, सर्वनाश हो रहा है। काल ने ग्रस लिया है, अब बचा नहीं जा सकता। सोचते हुए दुख के मारे लक्ष्मण को अँधेरा दिखाई देने लगा ।। ५९ ।। अनेक सोचने-विचारने के पश्चात् लक्ष्मण ने निश्चय किया कि मैं राम के दर्शन कर अकेले ही मरूँगा। यदि मैं न जाऊँ तो यह दुर्वासा रूपी राक्षस सारे वंश समेत खा डालेगा। मैं अकेले मरूँ, यही परम श्रेय है ।। ७२६० ।। ब्रह्म-शाप से मेरा समूचा वंश नष्ट न हो जाये, इसकी बजाय मेरी मृत्यु हो जाये, यही मैंने निश्चय किया। लक्ष्मण चल पड़े, उनके मन में बड़ी ही उद्विग्नता थी। वे द्वार से आगे बढ़कर भीतर प्रवेश कर गये ।। ७२६१ ।। उनके पैर आगे न बढ़ रहे थे, मुखमंडल विवर्ण हो गया था। उन्होंने जाकर रामचन्द्र से दुर्वासा के आगमन की सूचना दी। रामचन्द्र लक्ष्मण को देखकर मानो खड़े-खड़े मर गये। उन्होंने शीघ्रता से काल को सम्बोधित कर विदा कर दी ।। ६२ ।। अरे लक्ष्मण, तू हमारे द्वारा वध होने के लिए क्यों चला आया ? लक्ष्मण रामचन्द्र के चरण पकड़कर रोने लगे ।।६३।। कहा— यह दुख करना अभी छोड़िये, इसके लिए पुनः समय मिलेगा।

दुःसह दुखत रामे देखिला जमक * छिवावे पावत धरि लक्ष्मणे रामक ६३
एरा एरा इटो खेद आक पाइवा पाचे * दुर्ब्बासा राक्षस दुबारत बसि आछे
सबंशके मारे शाप अगनित पुलि * करियो प्रबोध येन लागे मालि बुलि ६४
चेतना लभिया प्रभु तेजिला निश्वास * हा बिधि आवेसे करिलि सर्व्वनाश
बिवर्ण बदने दुवारर भैला बाज * चट मटि करि बसि आछे ऋषिराज ६५
भ्रुकुटि कुटिल मुख क्रोधे आन्धियारी * बिकट पिङ्गट जण्टा भोबोकार दाड़ि
हाते गले शिरे रुद्राक्षर जण्टा जोट * जक जक करे दान्त चरा चर फोट ६६
धरि आछा रुद्राक्ष तुलसी माला माथे * कान्धत पारिया छाति धरि आछा हाते
कटित कपिन करङ्कार जलपात्र * चौपाशे उपासि आछे अयुतेक छात्र ६७
ऋषिर मूर्त्तिक देखि राघव शङ्कित * करिला प्रणाम प्रभु परिया भूमित
कृताञ्जलि बोलन्त सुमरि धर्म्म धर्म्म * आज्ञा करियोक मोक साधो कोन कर्म्म ६८
शुनि दुर्ब्बासार भैल प्रसन्न बदन * शुनियोक राम रघुकुलर नन्दन
तोमार गृहत अन्न व्यञ्जन भुञ्जित * हाजारेक बत्सरर परा आछे चित्त ६९
आहिलो एहिसे कामे कैलो प्रयोजन * शिष्ये समन्विते मोक करायो भोजन
येनमते आमार सन्तोष हवे मन * दियो पञ्चामृत समे राजयोग अन्न ७२७०
लक्ष्मणे बोलन्त मने कैर धूमकेतु * मोर बध भागी भैल भुञ्जिबार हेतु
एहि कथा आगे मोत नकहिलि किक *भुञ्जाइलोहो हन्ते अन्न ब्राह्मण कोटिक ७२७१
ऋषिर आक्रोशे देखि शङ्कित राघवे * अन्नपान आपुनि साजिला सबान्धवे
आगत योगाइल आनि अनेक यतने * देखि दुर्ब्बासार महा तुष्ट भैल मने ७२

उधर दुर्वासा रूपी राक्षस द्वार पर बैठा हुआ है। वह शाप रूपी अग्नि में जलाकर समूचे वंश को मार डालेगा। उसे जैसे भी हो समझा-बुझाकर शान्त कीजिये ।। ६४ ।। प्रभु रामचन्द्र सचेत होकर लम्बी साँस छोड़ी। हाय, रे विधाता, तूने इस बार सर्वनाश कर डाला। यह कहकर वे विवर्ण-मुख हो, द्वार से बाहर आये। वहाँ ऋषिराज दुर्वासा क्रोधित हो बैठे हुए थे ।। ६५ ।। उनकी भौहें टेढ़ी हो गयी थी, मुख क्रोध के मारे काला-सा हो गया था, उनकी जटाएँ विशाल और मोटी-मोटी थी, दाढ़ी बहुत ही घनी तथा बढ़ी हुई थी। हाथ, गला, सिर पर रुद्राक्ष की मालाएं थी। दाँत जगमगा रहे थे, वे मानो चराचर को जला डालना चाहते थे ।। ६६ ।। वे सिर पर रुद्राक्ष और तुलसी की मालाएँ धारण किये हुए थे। छतरी कंधे पर रखे हाथ से पकड़े हुए थे। कमर में कौपीन पहने थे तथा संन्यासियो का जलपात्र लिये थे। दसो हजार छात्र उनके चारों ओर रहकर सेवा कर रहे थे ।। ६७ ।। ऋषि की वह मूर्ति देखकर राघव शंकित हो उठे। प्रभु ने भूमि पर पड़कर उन्हे प्रणाम किया। 'धर्म, धर्म' स्मरण कर हाथ जोड़ बोले— मै कौन-सा कार्य करूँ, आप आदेश करें ।। ६८ ।। यह सुनकर दुर्वासा का मुख-मंडल प्रसन्न हो उठा। कहा— रघुकुल-नन्दन राम, सुनिये। आपके यहाँ आकर अन्न-व्यंजन खाने हेतु हजारों वर्ष से हमारी इच्छा रही है ।। ६९ ।। इसी काम के लिए हम आये हैं, अपना प्रयोजन हमने बता दिया। शिष्यो समेत हमे आप भोजन कराइये। जिस प्रकार से हमारा मन संतुष्ट हो जाये। हमें पंचामृत समेत राज-योग अन्न प्रदान करें ।। ७२७० ।। सुनकर लक्ष्मण ने मन ही मन कहा— यह कहाँ का धूमकेतु है ! स्वयं भोजन करने हेतु यह मेरे वध का भागी बना। अरे, पहले मुझसे यह बात क्यों नही बतायी ! मैं करोड़ों ब्राह्मणों को भोजन करवाता ।। ७२७१ ।। ऋषि का कोप देखकर शंकित रामचन्द्र ने अपने बान्धवो के साथ स्वयं अन्न-पान सजाया और बड़े यत्न से ऋषि के सम्मुख प्रस्तुत किया। देखकर दुर्वासा मन में बड़े संतुष्ट हुए ।।७२।।

करि परिपाति पाचे शिष्यसमे ऋषि * भुञ्जिबे लागिला अन्न परम हरिषि
घन क्षीर क्षीरिचा खाइलन्त लागे माने * नधरय पेट पिठा पना परमाने ७३
दधि दुग्ध घृत घोले भैल गण्डगोल * ओफन्दिल उदर देखिय येन ढोल
लोभत भुञ्जन्त तथापितो जाण्टि जाण्टि * नपारन्त राखिबे मातन्ते आसे बाटि ७४
नपान्त उशाह आति ओलमिल घार * शुइ शुइ पेट कतो तोलन्त उगार
टन टन पेट कतो ढिलान्त कपिन * दुइ हाते उरै द्रव्य देखि लागे घिण ७५
खाइबे कतो नपारि करन्त हाइ फुइ * नखान्ततो याचन्ते थाकन्त थिय हुइ
दधि दुग्ध पञ्चामृते वहाइलन्त गाङ्ग * एहिमते ऋषिर भोजन भैल साङ्ग ७६
भुञ्जि खाइ ऋषि पाचे शिष्य समे उठि * राघवक प्रशंसा करन्त मन तुष्टि
चिरञ्जीव राम तुमि पुरुष उत्तम * एहि बुलि गैला पाचे दुर्व्वासा आश्रम ७७
आत अनन्तरे आरु शुना पाच कथा * राम लक्ष्मणर येन मिलिल अवस्था
गैलन्त दुर्व्वासा येवे भुञ्जि निज घर * प्रवेशिल रामत दुष्मह चिन्ताजवर ७८
कालर बचन यिटो सुमरि शपत * लखाइर देखिया मुख भैल श्रुतिहत
हृदय दहवे शोके अगनि उजरि * प्राण येन याय कुञ्चि आसे हात भरि ७९
ओठ कण्ठ शुकाइ मुख परिल जामर * गावत चेतन आर नाहिके रामर
भेदिल हृदय लक्ष्मणर शोक शाले * जमक देखिया प्रभु परिल निढाले ७२८०
रामर देखिया सिटो दुख विपरीत * कान्दे महामर्म्मे मन्त्री पात्र पुरोहित
झरै आति लोतक रामक चाइ चाइ * हा विधि राघवर एनुवा बिलाइ ७२८१

इसके पश्चात् परम हर्षित हो ऋषि शिष्यो के साथ बड़े सिलसिलेवार ढंग से अन्न और पान की वस्तुएँ खाने-पीने लगे। घनी खीर, रवड़ी जितनी हो सकी खायी। पीठा, मिठाई और पकवान इतना खाया कि और अधिक पेट मे समाता न था ॥ ७३ ॥ दही, दूध, घी, मठे आदि से गड़बड़ी हो गयी। पेट ऐसे निकल आये, मानो ढोल हो। तथापि लालच के मारे ठूँस-ठूँसकर खाते ही जाते थे। खाना पेट में ठहरता न था, बात करते ही निकल आने लगता था ॥ ७४ ॥ वे सांस भी ले नही पा रहे थे, उनके गले झुक गये। कुछ तो पेट के बल लेटे-लेटे डकार लेने लगे। पेट इतने फूलकर कठोर हो गये कि बहुत-से अपने कौपीन ढीले करने लगे। दोनो हाथ से सामानों को ऐसे उड़ाते थे कि देखकर घिन लगने लगती थी ॥ ७५ ॥ कितने ही लोग खा न सकने पर 'हाय-हुई' कर रहे थे। न खा पाने पर भी खड़े होकर और माँग रहे थे। रामचन्द्र ने दही-दूध-पंचामृत की नदी बहा दी। इसी प्रकार ऋषि का भोजन पूरा हुआ ॥७६॥ खा-पी चुकने के पश्चात् ऋषि ने शिष्यों समेत उठकर राघव का मन तुष्ट करते हुए प्रशंसा की— चिरंजीव राम, तुम उत्तम पुरुष हो। यह कहकर दुर्वासा अपने आश्रम को चले गये ॥७७॥ इसके अनन्तर आगे राम-लक्ष्मण की जैसी अवस्था हुई, सुनो। खा-पीकर जब दुर्वासा अपने आश्रम को चले गये, तो राम के मन में प्रचंड चिन्ता रूपी ज्वर ने प्रवेश किया ॥ ७८ ॥ काल के वचन, अपनी प्रतिज्ञा का स्मरण कर तथा लक्ष्मण का मुख देख वे अचेत-से हो गये। शोक रूपी दहकती अग्नि से उनका हृदय जलने लगा, प्राण निकलने-से लगे, हाथ-पैर सिकुड़-से जाने लगे ॥ ७९ ॥ राम के ओंठ, कंठ सूख गये और उनका मुख सूख गया। राम के शरीर में मानो चेतना नही रही। लक्ष्मण के शोक रूपी काँटे ने उनके हृदय को वेध डाला। प्रबल मनोवेदना से प्रभु संज्ञाहीन-से हो गये ॥ ७२८० ॥ राम का वह विपरीत दुख देखकर महावेदना से मंत्री-सामन्त-पुरोहित रोने लगे। राम को देख-देखकर आँसुओ की धारा बहने लगी। वे कहते थे— हाय विधाता, रामचन्द्र पर भला इतना संकट ! ॥ ७२८१ ॥ यह

देखि लक्ष्मणर शोके शरीर दगध * आछिल लक्ष्मण तम्भि नयन तबध
बुलिबे लागिला पाचे चित्त दृढ़ करि * उठा उठा प्राण ददा शोक परिहरि ८२
मोहोर निमित्ते ददा तेजा आउर मर्म्म * प्रतिज्ञा पालन क्षत्रियर महा धर्म्म
मोक काटि सत्य करियोक प्रतिपाल * ललाटे लिखित मोर एहि यमकाल ८३
नाहि किछु चिन्ता आत येन भैल भागे * अवश्येके उपजिले मरिबाक लागे
हेन जानि ददा मोर पदे खेद एरा * जगतके संहरे कालत नाहि बरा ८४
दृढ़ करा चित्त इटो तेजियो बिकल * सत्यभ्रष्ट भइले सवंशे याइबे तल
कृपा करियोक ददा धर्म्मत नघाटा * सत्यक साफल करि झाण्टे मोक काटा ८५
लक्ष्मणर बचने अधिके उधाइ जुइ * आछिलन्त दुइ दण्ड परि मौन हुइ
मृतक आकार एको नाहि मात बोल * चतुर्भिति शुनि मात्र हाहाकार रोल ८६
कांस्य परि जिन गैल अयोध्या नगरी * कि भैल बुलिया फुरे सोधा सोधि करि
धान दिले होवै आखि प्रजार मुखत * रामर हरिल ज्ञान दुष्मह दुखत ८७
लक्ष्मण बोलन्त इटो नुहिके उचित * तुमि सूर्य्यवंशी राजा जगते विदित
तोमार असत्ये सामराजे हुइबे नष्ट * हेन जानि ददा मोर पदे एरा कष्ट ८८
प्रबोधे नुगुचे आउर रामर बिकल * मेलिलन्त किछु दुयो नयन कमल
कथमपि बसिलन्त दुष्मह दुखत * मातिबे खोजन्ते नासे वचन मुखत ८९
लोतके कण्ठक भेण्टे बाष्य गदगद * धीरे धीरे शोधन्त शुनियो सभासद
बशिष्ठ प्रमुख्ये मन्त्री पात्र पुरोहित * नाइ मोत श्रुति आवे कोवा हिताहित ७२९०

देखकर शोक के मारे लक्ष्मण का शरीर दग्ध होने लगा। लक्ष्मण स्तंभित हो गये, उनकी आँखें स्तब्ध हो गयी। परन्तु वे अपने चित्त को दृढ़ कर कहने लगे— प्राणप्रिय भैया, शोक तजकर उठिये ॥ ८२ ॥ भैया, मेरे लिए स्नेह छोड़ दीजिये क्योंकि प्रतिज्ञा का पालन करना क्षत्रिय का महान धर्म है। मुझे काटकर अपने सत्य का पालन कीजिये। मेरे भाग्य में यही मृत्यु लिखी है ॥ ८३ ॥ भाग्य में जो कुछ है, उसके लिए मुझे कोई चिन्ता नही क्योंकि जन्म लेने पर अवश्य मरना ही पड़ता है। ऐसा समझ कर भैया, मेरे लिए दुख करना छोड़ दीजिये। जगत को संहार करनेवाले काल से कोई भी बड़ा नही है ॥ ८४ ॥ आप अपने चित्त को दृढ़ कर विकलता छोड़ दीजिये। सत्य-भ्रष्ट हो जाने पर वंश-सहित डूब जायेंगे। भैया, कृपा कीजिये, धर्म से पीछे न हटिये। सत्य की रक्षा कर शीघ्र ही मुझे काट डालिये ॥ ८५ ॥ लक्ष्मण के वचन से राम के हृदय की अग्नि और अधिक जल उठी। वे दो दंड तक मौन हो पड़े रहे। मृतक की भाँति वे कुछ बात या शब्द नहीं करते थे। उनके चारों ओर केवल हाहाकार ध्वनि ही सुनायी देती थी ॥ ८६ ॥ अयोध्यापुरी में सहसा वैसा ही सन्नाटा छा गया, मानो काँसे का बर्तन अचानक गिरकर स्तब्ध हो गया हो। लोग एक दूसरे से 'क्या हुआ' पूछते-पाछते घूम रहे थे। प्रजा का मुख वैसे ही जलने लगा, मानो उसमें धान डालने पर लावा हो जाये। प्रचंड दुख के मारे राम की चेतना चली-सी गयी ॥ ८७ ॥ लक्ष्मण ने कहा— यह काम उचित नहीं है। आप सूर्यवंशी राजा के रूप में विश्व भर में प्रसिद्ध है। आपका वचन असत्य हो जाये तो साम्राज्य नष्ट हो जायेगा। इस कारण भैया, मेरे लिए दुख करना छोड़ दे ॥ ८८ ॥ इस प्रकार समझाने पर भी राम की व्याकुलता मिटती न थी। उन्होंने अपने कमल-नयनों को कुछ खोला। प्रचंड दुख से वे किसी प्रकार उठ बैठे। बोलना चाहते हुए भी उनके मुख से बोली नही निकलती थी ॥ ८९ ॥ आँसू उनके कंठ तक बह रहे थे, वचन गद्‌गद हो उठे। उन्होंने धीरे-धीरे पूछा— सभासदगण, वशिष्ठ आदि सभी सामन्त व पुरोहितगण, सुनिये।

म

करिलो शपत मइ कालर वचने * हेनते देखिले मोक भैयाइ लक्ष्मणे
थिर करि कोवा येन सत्यत नघाटो * मइ विह खाओं किवा लक्ष्मणक काटो ७२९१
शुनि कतोक्षण माने आछि गुणि गान्थि * विनावन्त रामत मनत नाहि शान्ति
शुनियो स्वरूप वाप प्रभु रघुपति * अन्तकाले मिले महन्तरो विसङ्गति ९२
आउर नकरिवा वाप लक्ष्मणक आश * तुमि सत्य तेजिले जगते हैवे नाश
सत्यतेसे आछे रहि मही चराचर * सत्यसम धर्म्म आउर नाहि पुरुषर ९३
सत्य प्रतिपालि देखा राखि धर्म्मपथ * तुमि हेन पुत्रको तेजिला दशरथ
सत्यक पालन्ते पुत्रशोके भैला नाश * सत्य राखि आपुनि खपिला वनवास ९४
जानिया लखाइर पदे एरियो विकल * तोमार असत्ये सामराजे याइवे तल
देशर डाकियो राखि लक्ष्मणर प्राण * महन्त जनर त्यागे बधर समान ९५
सवार सन्मत शुनि कौशल्यानन्दन * चाइल लक्ष्मणर मुख जुरिला क्रन्दन
तोको हरुवाओं आवे मोहोर कपाले * आवेसे जानिलो मोक ग्रासिलेक काले ९६
कोन सते वुलिवो तेजिवो आवे तोक * इजन्मक लागिया सावटे आसि मोक
जुराउक शरीर कतोक्षणे थाको चाइ * मरियो नपाइवो आउर तोर हेन भाइ ९७
मोक तेजि यिमते मरिल दशरथ * तइ अविहने मयो याइवो यमपथ
विदेशर संतरि ऐ लखाइ वाप * परिछेदा देखोहो समीप मोर चाप ९८
सीतारो सन्तापे इटो येन भैल चुलि * तोर शोक अगनि आवे मारे पुलि

मुझे ज्ञान नही रहा है। आप लोग मुझे हित-अहित समझाकर कहें ॥ ७२९० ॥ काल के वचनानुसार मैंने शपथ खायी थी, इसी वीच वहाँ जाकर मुझे भाई लक्ष्मण ने देख लिया। आप निश्चित रूप से वतायें, जिससे मैं सत्य से न गिरूँ। क्या मैं ही विष खा लूँ या लक्ष्मण को काट डालूँ ? ॥ ७२९१ ॥ यह सुनकर वे लोग कुछ क्षण मन में विचार करते रहे। उनके मन में शान्ति न थी। इसके पश्चात् विनयपूर्वक राम से कहने लगे, वत्स रघुपति, सत्य वात सुनो। अन्तकाल में महान पुरुषों की विचार वुद्धि में भी गड़वड़ी हो जाती है ॥ ९२ ॥ वत्स, अव लक्ष्मण की आशा न रखो। तुम यदि सत्य छोड़ दोगे तो संसार विनष्ट हो जायेगा। सत्य पर ही यह चराचर जगत प्रतिष्ठित है। सत्य के समान पुरुष को कोई और धर्म नहीं है ॥ ९३ ॥ देखो, सत्य का प्रतिपालन कर, धर्म-मार्ग की रक्षा करते हुए राजा दशरथ ने तुम जैसे पुत्र को भी तज दिया था। सत्य का पालन करने जाकर पुत्रशोक से वे मर गये, सत्य की रक्षा कर स्वयं तुमने भी वनवास भोगा ॥ ९४ ॥ ऐसा समझकर लक्ष्मण के लिए व्याकुलता छोड़ दो। तुम्हारे सत्य से हट जाने पर साम्राज्य डूव जायेगा। लक्ष्मण के प्राण न लेकर तुम देश से निकाल दो। क्योंकि श्रेष्ठ जनों का परित्याग ही उसके वध के समान होता है ॥ ९५ ॥ सवके विचार सुनकर कौशल्या-नन्दन लक्ष्मण के मुख की ओर देख रुदन करने लगे। मेरे दुर्भाग्य से अव तुम्हें भी खोना पड़ रहा, अव समझ गया कि मुझे काल ने ग्रस लिया है ॥ ९६ ॥ 'मैं तुम्हें तज रहा हूँ'—भला मैं यह वात किस मुँह से कहूँ ? अव इस जन्म के लिए मुझे आकर आलिंगन कर लो। कुछ क्षण तुम्हें देखता रहूँ, जिससे मेरा शरीर शान्त हो। तुम्हारे जैसा भाई अव मेरे मर जाने पर भी नही मिलेगा ॥ ९७ ॥ मुझे तजकर जिस प्रकार पिता दशरथजी मर गये, उसी प्रकार तुम्हारे न रहने पर मैं भी यमलोक के मार्ग पर चला जाऊँगा। मेरे विदेश के सहायक वत्स लक्ष्मण, देखता हूँ कि अव सव समाप्त हो रहा है, तुम मेरे समीप आ जाओ ॥ ९८ ॥ सीता के संताप से यह शरीर वालों जैसा (रूखा-सूखा) हो गया है। अव तुम्हारी शोक-अग्नि उसे जला डाल रही है या समूल नष्ट कर दे रही है। ऋषि

आसि ऋषि दुब्बीसा खोचनि भैल दाण्डि * कालर बचने तोर भैलो तल गाण्डि ९९
इटो चक्षु आउर तोक नपाइबो देखित * मोहोर मरण जाना भैल सन्निहित
मोक देखिबाक दुनाइ नपाइबि लखाइ * आइस गलागलि करिथाको दुइ भाइ ७३००
एहि बुलि कनिष्ठर धरि गले बान्धि * भैलन्त मूर्च्छित राम मकमकि कान्दि
ज्वलिल अगनि दुनाइ उठिल जमक * लक्ष्मणे कान्दन्त धरि सावटि रामक ७३०१
बेढ़ि करै दुभाइक सन्ताप सभासदे * लक्ष्मणे बुजान्त पाचे बाक्य गदगदे
इटो असन्तोषे बाक्य नुहिबेक भाल * करा सत्य पालि मोक सत्वरे निकाल २
चेतन लभिया प्रभु बसियो आसने * झाण्टे निकालियो मोक बोलन्त लक्ष्मणे
एरिलो एरिलो बोला सबारो सम्मति * रामो समुख भैला बुलिबाक प्रति ३
आजोरन्ते नासे मात मनत आसुख * लासे लासे मातन्त भातृर याहि मुख
एभो तोक लक्ष्मण बोलन्ते हरे मात * परिलन्त निढाले चेतन नाहि गात ४
लक्ष्मणे बोलन्त ददा दृढ़ करा चित्त * महन्त जनर हेन नुहिके उचित
सत्यक पालिया प्रभु झाण्टे एरा मोक * सन्धुकि बसिला पाचे रामे तेजि शोक ५
कण्ठर नोहलाइ बाणी येन भैल ज्वर * बोलन्ते बोलन्ते पाचे चित्त करि दृढ़
लोतके तितिल मुख मुचिला आञ्चले * बुलिबे लागिया रामे नयन सजले ६
देव-धर्म्म समस्ते समाजे हुइबा साखी * सोदरर मर्म्मछेद करो सत्य राखि
जानिया समान आवे बध परित्यागे * एरिलो लक्ष्मण तोक येन होक भागे ७

दुर्वासा आकर चिता में शव जलाने का डण्डा-सा बन गया। काल के वचन ने तुम्हारे शरीर को (चिता में) डाल दिया ।। ९९ ।। इन आँखों से अब तुम्हें देख नही पाऊँगा। समझ लो कि मेरी मृत्यु समीप आ गयी है। लक्ष्मण, अब पुनः मुझे देख नहीं पाओगे। आओ, हम दोनो भाई गले मिलकर पड़े रहें ।। ७३०० ।। यह कहकर रामचन्द्र छोटे भाई का गला पकड़, आलिंगन कर फूट-फूटकर रोते हुए मूर्च्छित हो गये। अग्नि मानो पुनः जल उठी, उसकी लपट पुनः बढ़ गयी। लक्ष्मण भी राम को आलिंगन कर रोने लगे ।। ७३०१ ।। सभासदगण दोनो भाइयों को घेरकर सताप करने लगे। तब लक्ष्मण उन्हें गद्‌गद वचन से समझाने लगे। इस असन्तोष से वचन उत्तम न होगा। सत्य का पालन कर मुझे शीघ्र निकल जाने का आदेश दे दीजिये ।। २ ।। प्रभु,, सचेत होकर शीघ्र अपने आसन पर बैठिये। मुझे शीघ्र निकल जाने का आदेश दीजिये। लक्ष्मण कहने लगे— सबकी यही सम्मति भी है। मुझे आप 'तज दिया, तज दिया' ऐसा कह दीजिये। रामचन्द्र भी वैसा कहने हेतु प्रस्तुत हुए ।। ३ ।। मनोवेदना के मारे प्रयास करने पर भी मुँह से बोली नही निकलती थी। वे भाई का मुख देखते हुए धीरे धीरे कहने लगे। 'अब तुम्हें लक्ष्मण……' कहते-कहते उनकी बोली रुक गयी। उनके शरीर में चेतना नही रही, वे अशक्त हो पड़ गये ।। ४ ।। लक्ष्मण बोले— भैया, अपने चित्त को स्थिर कीजिये। महत्-पुरुषों के लिए ऐसा करना उचित नही। प्रभु, आप सत्य का पालन करते हुए मुझे शीघ्र तज दीजिये। इसके पश्चात् राम शोक छोड़कर सावधान हो बैठ गये ।। ५ ।। उनके कण्ठ से वाणी नहीं निकलती थी, मानो उन्हें ज्वर हो गया हो। परन्तु उसके पश्चात् उन्होंने चित्त को दृढ़ कर लिया। आँसुओं से उनका मुख भीग गया था। उसे अपने आँचल मे पोंछ लिया। इसके पश्चात् सजल-नयन हो रामचन्द्र कहने लगे— ।। ६ ।। 'देव, धर्म, समाज सभी साक्षी रहना। सत्य की रक्षा करते हुए आज मैं सहोदर भाई का प्रेम तोड़ रहा हूँ। वध करना और परित्याग करना दोनो को बराबर मानकर लक्ष्मण, तुम्हें तज रहा हूँ; अब मेरे भाग्य में चाहे जो हो' ।। ७ ।। ऐसा कहते-कहते वेदना ने उनके समूचे शरीर को आवृत कर

एतेक बोलन्ते मर्म्मे छानिलेक गाव * निढाले परिल राम मृतक स्वभाव
नेखेलाय प्राणवायु येन वज्रपात * भरत कान्दन्त येन परिल निर्घात ८
रामे तेजिलन्त जानि तेखने लखाइ * शरीरर अलङ्कार पेह्लाइला खसाइ
दिव्यवस्त्र एरि लैल मलिन वसन * करिलन्त माति भरतक सम्भाषण ९
हाते तृण धरिया करोहो काउ वाउ * मोक चिन्ता एरिया रामक भाले चाउ
सावधाने थाकिवा लागिल हेरा दिन * एहि बुलि रामक करिला प्रदक्षिण ७३१०
चरणर धूलि तुलि माखिलन्त माथे * आछन्त तवध हुया परि रघुनाथे
करयोर करिपाचे बुलिला लखाइ * जन्मे जन्मे बान्धव तुमिसि हैवा भाइ ७३११
तोमार कनिष्ठ मइ हुइवो दास प्राय * एहि दुइ चरणक सेविवो सदाय
करिलो मेलानि ददा थाकियोक बुलि * दुनाइ दुनाइ'दुयो चरणर लैला धूलि १२
पात्र मन्त्री सबाको बुलिला हित वाक * चाइवा सबे मिलि मोर प्राणर ददाक
एहि बुलि लक्ष्मणे चिण्डिला मोह पाश * अधोमुखे मौन हुया लरिला निर्व्वास १३
ढाकि कान्दे प्रजा धातु सम्यके उरिल * अन्तेषपुरत ऊर्म्मि रोलेक उठिल
अयोध्याक जुरि हेन हावालत गुरि * हा बाप लखाइ आजिसि यास एरि १४
हरि हरि किनो इटो विधिर कपट * राघव प्रभुत भैल एनुवा दुर्घट
दण्डे युग याय एके सीतार सन्तापे * लखाइ बिने किमते जीवन्त आवे वापे १५
एहिमते शोके लोक कान्दे अविच्छेद * लक्ष्मणे गैलन्त हृदयत दिया खेद
उजाइ कतो दूर सरयूर तीरि तीरि * बसिला लक्ष्मण पाचे पद्मासन भिरि १६

लिया। रामचन्द्र मृतक जैसे अशक्त होकर पड़ गये। मानो उन पर वज्रपात हो जाने से प्राणवायु रुक गयी हो। भरत भी ऐसे रोने लगे मानो बिजली टूट गिरी हो ॥ ८ ॥ राम ने तज दिया, समझकर लक्ष्मण ने उसी क्षण अपने शरीर के आभूषण उतार डाले। दिव्य वस्त्र उतारकर मलिन वस्त्र पहिन लिया। उन्होंने भरत को पुकारकर यह बात कही ॥ ९ ॥ हाथ में तृण धारण कर मैं आपसे विनती करता हूं, भरतजी, आप मेरा शोक छोडकर रामचन्द्र की कुशलता पर ध्यान रखे। आप सावधान रहें, हमारे दिन पूरे हो चुके हैं। यह कहकर लक्ष्मण ने रामचन्द्र की प्रदक्षिणा की ॥ ७३१० ॥ उन्होंने रामचन्द्र की चरण-धूलि उठाकर सिर पर लगायी। रघुनाथ उस समय स्तब्ध हो पड़े रहे थे। इसके पश्चात् लक्ष्मण ने हाथ जोड़कर कहा— जन्म-जन्म में आप ही मेरे बान्धव-भाई बनें ॥ ७३११ ॥ मैं आपका छोटा भाई, दास जैसा बनूं और इन दोनो चरणों की निरन्तर सेवा करता रहूँ। भैया, आप रहें, मुझे विदा दें। कहकर पुनः उन्होंने रामचन्द्र के दोनो चरणों की धूलि ली ॥ १२ ॥ लक्ष्मण ने सामन्तों, मंत्रियों सबसे हितकारी वचन कहे। मेरे प्राण-प्रिय भैया की आप सभी देख-भाल करें। यह कहकर लक्ष्मण ने मोह का बन्धन तोड़ डाला और सिर झुका मौन हो निर्वासन को चल पड़े ॥ १३ ॥ प्रजाजनों की चेतना खो-सी गयी, वे मुँह ढाँपकर रोने लगे। अंतःपुर में रुदन की ध्वनि सागर-तरंगों के नाद-सा गूंज उठी। समूची अयोध्या को व्याप्त कर हाहाकार गूंज उठा। हा, बाप लक्ष्मण, आज तुम छोड़ें जा रहे हो ॥ १४ ॥ हाय, हाय, विधि का यह कपट कैसा है कि प्रभु रामचन्द्र पर ऐसा संकट आ पड़ा। एक सीता के संताप मे ही उनका एक पल एक युग के समान जाता है, अब वे बाप राम-लक्ष्मण विना कैसे जीवित रहेंगे ? ॥ १५ ॥ इसी प्रकार लोग शोक के मारे लगातार रो रहे थे। लक्ष्मण उनके हृदय मे खेद उपजाकर चले गये। वे सरयू के किनारे-किनारे धारा की विपरीत दिशा में कुछ दूर चले। इसके पश्चात् वहाँ पद्मासन लगाकर बैठ गये ॥ १६ ॥ अपनी बुद्धि को स्थिर कर शरीर के

नियमिला नवद्वार करि थिर बुद्धि * धरिला धारणा प्राणबायुक निरोधि
इन्द्र आदि देवे पुष्प बरिषिला शिरे * परम रूपक चिन्तिबाक लैला धीरे १७
ऊर्द्धक क्षेपिया प्राण करिलन्त त्याग * मूर्द्धास्फुटि बजाइल परम तेज भाग
भैल दिब्य देहा कोटि सूर्य्यर जेहति * इन्द्र आदि देवे करिलन्त स्तुति नति १८
बाइल दिब्य बाद्यचय छानिया गगन * स्वर्गक गैलन्त दिब्य बिमाने लक्ष्मण
त्रिदश देवता देखि कृतकृत्य भैल * लक्ष्मणर कथा आवे एहिमाने गैल १९
शुना सभासद सबे रामायण कथा * राम लक्ष्मणर हेन मिलिल अवस्था
इटो गृहबास सामान्यर कोन लेखा * स्वपनर सम निधि धन जन देखा ७३२०
दुर्घोर मृतक किय नाकलिय काछे * हेन जाना अन्तके केशत धरि आछे
आउर एरुवन्ता नाहि कलिर हातर * परम बान्धव एके माधवत पर ७३२१
हेन जानि दिया राम चरणत चित्त * करापान रामनाम परम अमृत
बिचारि बेदरो देखा एहिसे युगुति * रामर नामेसे देइ परम मुकुति २२
बिषय बिलासे निला इहेन जन्मक * छाइर अर्थे पोरे येन जाति चन्दनक
महारत्न मणि येन सम नाइ मोले * ताक सलाइ आनि काच मणि पिन्धे गले २३
एके काक मांस सियो आह्र्य कुकुरर * अति अल्प सियो देखा तुहिके बिस्तर
ताको महा प्रबन्ध करिया नपाय लाग * यदि पावै ताको आसि आने खोजे भाग २४
सेहिमते बिभत्स बिषय यत सुख * ताके लागि होवा केने कृष्णत बिमुख
कृष्णर किङ्करे कहे इसे तत्वसार * बोला राम राम एरा पापर भाण्डार ७३२५

नव-द्वारों को संयमित किया और प्राण-वायु का निरोध कर ध्यानस्थ हो गये। इन्द्रादि देवों ने उनके सिर पर पुष्पवर्षा की। इसके पश्चात् वे अपने परम रूप का धीरे-धीरे चिन्तन करने लगे ।। १७ ।। उन्होंने ऊपर निक्षेप कर अपने प्राणो का त्याग कर दिया। उनका ब्रह्मरंध्र फूटकर परम तेज का अश निकल गया। उनका दिव्य शरीर करोड़ों सूर्य के समान दीप्तिमान हो उठा। इन्द्रादि देवों ने उनकी स्तुति तथा प्रणति की ।। १८ ।। आकाश को व्याप्त कर वे दिव्य वाद्य बजाने लगे। लक्ष्मण दिव्य विमान पर स्वर्ग चले गये। देवता उन्हें आते देख कृतकृत्य हो उठे। लक्ष्मण की कथा अब यहीं समाप्त हुई ।। १९ ।। सभी सभासद रामायण-कथा सुने। जब कि राम-लक्ष्मण की ऐसी अवस्था हुई, तो इस ससार में गृह-वास करनेवालों की गिनती ही क्या है? यहाँ जो धन-जन हैं, समझो कि वे सब सपने की निधियाँ हैं ।। ७३२० ।। प्रचंड मृत्यु को अपने समीप क्यों नहीं देख पाते? ऐसा समझ लो कि काल बालो को पकड़े हुए है। केवल परम बान्धव माधव के सिवा कलि के हाथों से और कोई बचावनहार नही है ।।७३२१।। ऐसा समझकर राम के चरणों में चित्त लगाओ। राम-नाम रूपी परम अमृत का पान करो। वेदों का अध्ययन कर देखो तो ज्ञात होगा कि वेद की युक्ति भी यही है कि राम-नाम ही परम मुक्ति देनेवाला है ।। २२ ।। ऐसे जन्म को विषय-विलास में वैसे ही बिता रहे हो, जैसे कि कोई राख के लिए विशुद्ध चन्दन वृक्ष को जला डाले। यह राम-नाम महारत्न-मणि के समान अनमोल है। काँच के मनको के बदले उसे देकर ये काँच (विषय-भोग आदि) गले मे पहन रहे हो ।। २३ ।। एक तो कौवे का मांस, तिस पर कुत्ते का खाया हुआ, विचार कर देखो, वह भी अधिक नही, अति अल्प है। वह भी अनेक प्रयत्न करने पर भी नही मिलता। यदि मिल भी जाये तो दूसरे आकर उसमें हिस्सा माँगने लगते है ।। २४ ।। विषयों के सारे सुख वैसे ही बीभत्स हैं। उसी के लिए भला कृष्ण से विमुख किसलिए हो रहे हो? कृष्ण का किंकर कहता है, यही तत्वों का सार है। राम-राम बोलो, पापों के भंडार को छोड़ दो ।। ७३२५ ।।

लक्ष्मण-वर्ज्जनत रामर खेद

दुलड़ी

लक्ष्मणर कथा	एहिमाने गैल	रामर शुना बिलाइ।
शोकसागरत	गैल तल प्रभु	श्रुति ज्ञान आउर नाइ॥
लक्ष्मणर शोक	प्रचण्ड बतासे	सीतार सन्ताप आगि।
शुखान अरण्य	रामचन्द्र भैला	दहे हृदयत लागि॥ ७३२६
येतिक्षणे एरि	लक्ष्मण गैलन्त	मरिल राम समूलि।
उठि उठि लुटि	परिया कान्दय	हा प्राण लखाइ बुलि॥
परिछेदा करि	आजिसि तेजिलि	भैयाइ इजन्मक लागि।
तोहोर सन्तापे	प्राण धरो किक	नगैल हृदय भागि॥ २७
पितृ मातृ मोर	मरिल तेजिया	जानकी गैल पाताले।
सन्तापिलो ताको	तइ एरिलाते	आवेसे ग्रासिल काले॥
दण्डका वनतो	तइसि प्राणदिलि	जुरुवाइलि मोर शोक।
दुखर सहाय	कं गैलि लखाइ	अनाथिति करि मोक॥ २८
किनो सुलक्षण	भैयाइ लक्ष्मण	तोर गुण कंबो कत।
भ्रातृ मातृ राज्य	तेजि वनबासे	तइ गैलि मोर लगत॥
सीताक आमाक	उपकार करि	फुरिलि भृत्य समान।
सिमब सुमरि	किय नयाओं मरि	रहि आछो एभो प्राण॥ २९
जानिलो भैयाइ	मोहोर चिन्ताइ	मरिबि तयो बनत।
याइबो खेदितोक	येन युवाइ हौक	मोहोर तोरे लगत॥

लक्ष्मण के परित्याग से राम का खेद

लक्ष्मण की कथा यही तक रही। अब रामचन्द्र के दुख-कष्ट की कथा सुनिये। प्रभु राम शोक-सागर मे डूब गये, उन्हे कहने-सुनने का ज्ञान न रहा। लक्ष्मण के शोक रूपी प्रचंड पवन ने सीता के सताप रूपी अग्नि को धधका दिया, रामचन्द्र सूखे अरण्य की भाँति हुए, जिनके हृदय मे लगकर वह दग्ध करने लगी ॥ ७३२६ ॥ जिस क्षण से लक्ष्मण छोड़ गये, रामचन्द्र सम्पूर्ण रूप से मर-से गये। वे उठ-उठकर, गिर-गिरकर 'हा प्राणप्रिय लक्ष्मण' कहते हुए रोने लगे। अरे भाई, आज तुमने इस जन्म के लिए सम्पूर्ण रूप से छोड़ दिया। तुम्हारे सताप से मैं कैसे प्राण धारण करूँ, मेरा यह हृदय टूट क्यों नही गया ? ॥२७॥ मेरे पिता-माता छोड़कर मर चुके, जानकी पाताल चली गयी, सताप को भी सह लिया था, परन्तु आज तुम छोड़ गये, इससे अब निश्चय काल ने ग्रस लिया। दंडक वन में तुमने ही मेरे शोक को शान्त कर प्राण दिये थे। मेरे दुखों के साथी लक्ष्मण, मुझे अनाथ कर तुम कहाँ चले गये ? ॥ २८ ॥ तुम कैसे शुभ लक्षणों वाले थे। भैया लक्ष्मण, तुम्हारे गुण का कितना वर्णन करूँ ? भाई, माता तथा राज्य को तजकर तुम मेरे संग वनवास में गये थे। सीता का और मेरा उपकार करते हुए भृत्य की भाँति साथ घूमा करते थे। उन सबका स्मरण कर मैं मर क्यों नही जाता ? अब तक प्राण किसलिए धारण किये हुए हूँ ? ॥२९॥ जानता हूँ भैया, मेरी चिन्ता के मारे तुम भी वन मे जाकर मर जाओगे। चाहे जो भी हो, मैं भी तुम्हारे पीछे दौड़ता हुआ चला जाऊँगा। उन्होने सामन्तों और सभासदो से कहा— शीघ्र ही सामग्रियाँ ले आओ। मैं ऊब चुका हूँ, अब राजदंड व सिंहासन भरत को दे दूँगा ॥ ७३३० ॥ देवगण मुझे

पात्र मेलेकक बोलन्त सत्वरे सम्भार आनियो साजि ।
मिलिल बिचार राजदण्ड पाट भरतक दिवो आजि ॥ ७३३०
देवलोके मोक उत्पात करे स्वर्गक याइबाक लागि ।
आवेसे सियारि उपार करिले भैयाइर विरह आगि ॥
दहवे शरीर चित्त नुहि थिर नेदेखि लखाइक मरो ।
आसियो सत्वरे भैयाइ भरत तोक अभिषेक करो ॥ ७३३१
लक्ष्मणर शोके नपारो रहिवे दहवे हाड़रो मज्जा ।
मोक पाइले काले जानिया सकाले हुयोक पाटत राजा ॥
रामर बचने बीर भरतर लागिल गावत जुइ ।
मकमक करि क्रन्दन करिया बोलन्त आञ्जलि हुइ ॥ ३२
किसक आमार बुलिलाहा हेन ददा निकारुण काज ।
तोमार चरण सेवार निमित्ते पूर्व्वतो नलैलो राज ॥
लवक कुशक बाण्टि दियो राज्य मोर नाइ आत इच्छा ।
चलिवो लगत तोमार शपत मातो येवे मइ मिछा ॥ ३३
राघव चलिबा अयोध्या एरिवा सवे निष्ट वार्त्ता पाइल ।
यत नरनारी शिशु आग करि द्वारत आसि जन्ताइल ॥
ऊर्म्मि करिलोक कान्दिवे लागिल पोरे सवे सर्व्व अङ्ग ।
आमाक एरिया याइबे खोजा नाथ माथात मारिया दाङ्ग ॥ ३४
तुमिसि आमार मुख्य प्राण प्रभु स्वरूप करिलो हिया ।
नछारिबो लाग भरतक त्याग नकरि लगते निया ॥
एहि बुलि प्रजा आराव करय हुया सवे एक जरि ।
भितरतो पात्र मन्त्रीगणे कान्दे रामर पावत परि ॥ ३५
वशिष्ठे बोलन्त शुना रघुपति आवे हुइवे कोन काज ।
तोमार वियोगे प्रजा निर्जीवेक मरिवे समस्ते राज ॥

स्वर्ग जाने हेतु तंग कर रहे हैं । इस बार भाई लक्ष्मण की विरह-अग्नि ने जलाकर उस पार लगा दिया । शरीर जल रहा है, चित्त स्थिर नहीं है, लक्ष्मण को न देखने के कारण मर रहा हूँ । शीघ्र आओ भाई भरत, मैं तुम्हारा अभिषेक कर दूँ ॥ ७३३१ ॥ लक्ष्मण के शोक के मारे मैं रह नहीं पा रहा हूँ । हड्डियों की मज्जा भी जल रही है । मुझे काल ने ग्रस लिया है, ऐसा जानकर शीघ्र ही तुम सिंहासन पर राजा बनो । राम के वचनों से वीर भरत के शरीर में आग लग गयी, वे फूट-फूटकर रोते हुए हाथ जोड़कर बोले— ॥ ३२ ॥ भैया, यह निर्मम कर्म करने हेतु हमें किसलिए कह रहे हैं ? आपकी चरण-सेवा के निमित्त हमने पहले भी राज्य नहीं लिया था । आप लव-कुश को राज्य बाँट दीजिये, मुझे इसकी कोई इच्छा नहीं है । मैं भी आपके संग चलूँगा । मैं यदि मिथ्या कहता होऊँ, तो आपकी शपथ है ॥ ३३ ॥ रामचन्द्र अयोध्या छोड़कर चले जायेंगे, सब लोगों को यह निश्चित वार्ता मिली । तब सभी नर-नारी शिशुओं को आगे कर द्वार पर आ जमा हो गये । कोलाहल करते हुए लोग रोने लगे, उनके सारे अंग जलने लगे । प्रभु, आप हमारे मस्तक पर डंडा मारकर चले जाना चाहते हैं ! ॥ ३४ ॥ प्रभु, आप ही हमारे मुख्य प्राण हैं । आपसे अन्तर की बात सत्य कह रहे हैं । हम आपका साथ कभी न छोड़ेंगे । भरत को त्याग न कर आप अपने संग ले चलिये । यह कहकर प्रजाजन सब इकट्ठे होकर जोर-जोर से चीखने लगे । भीतर भी सभी सामन्त और मन्त्रीगण राम के चरणों में गिरकर रुदन करने लगे ॥ ३५ ॥

तुमि कृपामय पुरुष प्रजार पूरा मनोरथ नाथ ।
हेन शुनि गुणि आछे पाचे प्रभु राघवे तुलिका माथ ।। ३६
बोलन्त शुनियो पात्र मन्त्री लोक केन अभिमत काज ।
करि करयोर परिया भूमित विनावें पात्र समाज ।।
प्रभुर पावत एतेक गोचर यदि अनुग्रह थाके ।
सपुत्र बान्धवे चलिबो लगत नियोक नाथ आमाके ।। ३७
निश्चय जानिलो जनेको निजीवो यदि तेजि याहा तुमि ।
देखि अनुराग लोकर राघव कान्दिलन्त हुमहुमि ।।
बोलन्त शुनियो पात्र मन्त्री मोर यत लोक अयोध्यार ।
क्षाण्टे होवा साज याइवे खोजा येवे लगत सबे आमार ।। ३८
यत पशु पक्षी वृक्ष अयोध्यार जीया जन्तु यत प्राणी ।
समस्त नगरे साजोक सत्वरे आज्ञा मोर निष्ट जानि ।।
लोकेसे आमाक नेरे येवे आमि तेजि याइवो कोन सते ।
सत्ये सत्ये बोलो हौक येइ लागे प्रजार इटो लगते ।। ३९
शुनिया जोकार प्रजाये पारय जय जय राम बुलि ।
प्रभुर लगत याइवो आनन्दत येन नाचे हात तुलि ।।
यत नरनारी आबाल पर्य्यन्ते अयोध्या मध्यत वसि ।
नापितक माति काम कराइ आति गावें तैल कुड़ घसि ।। ७३४०
स्नान करि जले सर्व्वस्व सकले ब्राह्मणक दान करे ।
गिन्धि धौत वस्त्र भूषित चन्दने आनन्दे चित्त नधरे ।।
अलङ्कारे सवे शरीर मण्डय यार येन मत आछे ।
अनेक उत्सवे अयोध्यार लोके स्वर्गक याइवाक काजे ।। ७३४१

वशिष्ठ ने कहा— रघुपति, सुनिये, भला इससे कौन लाभ होगा ? आपके वियोग से प्रजा जीवित नही रहेगी, समूचा राज्य नष्ट हो जायेगा। आप कृपामय पुरुष हैं। हे नाथ, आप प्रजा के मनोरथ पूरे कीजिये। यह बात सुनते हुए रामचन्द्र मन में चिन्तन कर रहे थे, उन्होने सिर उठाकर देखा ।। ३६ ।। वे कहने लगे, हे सामन्तो, मन्त्रियो, हमें अपना विचार क्या है, बताइये। हाथ जोड़कर, भूमि पर पड़कर सामन्तो और दरबारियों ने विनयपूर्वक कहा— प्रभु, आपके चरणो मे यही कहना है कि यदि हम पर आपका अनुग्रह हो तो हम सब पुत्रों, बान्धवो सहित आपके संग चलना चाहते हैं। हे नाथ, हमें ले चलिये ।। ३७ ।। हम निश्चय जानते हैं कि यदि आप हमे छोड़कर चले जायेंगे तो कोई भी जीवित नहीं रहेगा। लोगो का अनुराग देखकर रामचन्द्र फूट-फूट कर रोने लगे। कहा— हे मेरे सामन्तो, मन्त्रियो, अयोध्या के सभी लोगो, सुनिये। हमारे सग यदि चलना चाहते हैं, तो शीघ्र प्रस्तुत हो जाइये ।। ३८ ।। अयोध्या के जितने पशु-पक्षी, वृक्ष, जीवित जन्तु, जितने प्राणी हैं; मेरी निश्चित आज्ञा जानकर सारे नगर के लोग शीघ्र प्रस्तुत हो जाये। जबकि लोग ही हमें छोड़ते नही, तो हम भला किस प्रकार से उन्हें छोड़ जा सकते है ? मै सत्य-सत्य कहता हूँ, इसी प्रजा के साथ जो होना है, हो जाये ।। ३९ ।। यह सुनकर प्रजाजन 'जय-जय राम' कहकर नारे लगाने लगे। 'हम भी प्रभु के संग चलेगे' सोचकर मानो हाथ उठा-उठाकर नाचने लगे। अयोध्या के सभी नर-नारी शिशुओं समेत नाइयों को बुलाकर क्षौर-कर्म करवा, शरीर में बहुत तेल-उबटन लगाकर, ।। ७३४० ।। जल में स्नान कर सबने सर्वस्व ब्राह्मणों को दान करने लगे। धुले हुए वस्त्र पहन, चन्दन से विभूषित हो, उनके चित्त मे आनन्द

शुना सभासद रामायण पद पातकर धूमकेतु ।
अपार संसार सुखे होवा पार रामनामे बान्धि सेतु ॥
दुष्ट कलि-सर्पे सबाको दंशिले भैल श्रुति हतबुद्धि ।
रामनाम इटो अमृत बिनाइ नाइ नाइ महौषधि ॥ ४२
यतेक पातेक संहरिबे पारे रामर नामे सम्प्रति ।
ततेक पातेक करिबे पापीर बापर नाहि शकति ॥
अगनित येन तृणे नोजोरय पापरो तेह्नय नाम ।
इसि धर्म्म निज मुकुति बाणिज्य जानि बोला राम राम ॥ ७३४३

लव-कुशर राज्याभिषेक आरु श्रीरामचन्द्रर लक्ष्मणर अन्वेषण

पद

शुनियोक पाचकथा आत अनन्तरे * लक्ष्मणर शोके स्वस्थ नभैल रामरे
केतिक्षणे गुचे हेन मनत विचाद * लवक कुशक एरिदिला दण्ड पाट ७३४४
बिन्ध्य पर्व्वतर कोले पुरी कुशवती * तथात पातिला निया कुशक नृपति
अम्रावती नगरे भैलन्त लव राजा * दिला दुइको बिभञ्जिया गज बाजी प्रजा ४५
सुवर्ण रजत रत्न अलेख भण्डार * दिला सबे बाण्टि दिव्य बस्त्र अलङ्कार
नथैलन्त घाटि रामे पुत्रस्नेहे आति * करिला आश्वास दुयो तनयक माति ४६
नकरिबा द्वन्द्ववाद राज्यर निदाने * कालक बञ्चिबा दुयो एके जीव प्राणे
दुइत परे दुइहानो कुटुम्ब आउर नाइ * अल्पते छेण्डवा भैले दुइहन्तो पुताइ ४७

समाता न था । जिसके पास जैसे आभूषण थे, सब उनसे अपने शरीर को मंडित करने लगे । स्वर्ग में जाने हेतु अयोध्या के लोग अनेक उत्सव मनाने लगे ॥ ७३४१ ॥ सभासदो, रामायण-पद सुनो । यह पाप का धूमकेतु है । राम-नाम का पुल बाँधकर इस अपार संसार से पार निकल जाओ । कलि रूपी दुष्ट सर्प ने सबको डस लिया है, वेद-शास्त्र भी यहाँ हत-बुद्धि हो चुके हैं । राम-नाम रूपी इस अमृत के बगैर और कोई महौषधि नही है, नही है ॥४२॥ राम का नाम इस काल के जितने पापों का नाश कर सकता है, उतना पाप कर सके, पापी के बाप की भी इतनी शक्ति नही है । अग्नि जिस प्रकार तृणों को दग्ध कर तृप्त नही होती, पाप के क्षेत्र में नाम भी वैसा ही है । मुक्ति के व्यापार में यही (नाम) अपना धर्म है, ऐसा समझकर 'राम, राम' कहो ॥ ७३४३ ॥

लव-कुश का राज्याभिषेक और श्रीरामचन्द्र का लक्ष्मण को खोजना

इसके पश्चात् आगे की कथा सुनिये । रामचन्द्र लक्ष्मण के शोक से मुक्त न हो सके । मन का यह विपाद कुछ समय बाद कम हुआ, तब रामचन्द्र ने लव-कुश को राजदंड तथा सिंहासन प्रदान कर दिया ॥७३४४॥ विन्ध्याचल पर्वत के बीच कुशवती नगरी थी, वहीं ले जाकर कुश को राजा बनाया । अमरावती नगर में लव को राजा बनाया । उन दोनो में हाथी, घोड़े, प्रजा आदि बाँट दी ॥ ४५ ॥ सोने, चाँदी, रत्नों के अनगिनत भंडार, दिव्य वस्त्र, अलंकार आदि सबको बाँट दिये । अत्यन्त पुत्रस्नेह के कारण राम ने कुछ भी बाकी न छोड़ा । दोनो पुत्रों को बुलाकर उन्होंने अपने वचनों से उन्हें आश्वस्त किया ॥ ४६ ॥ राज्य के लिए तुम लोग आपस में विरोध न करना । दोनो एक जीव, एक प्राण से होकर दिन बिताना । तुम दोनो को छोड़कर दोनो का

दारुणी जानकी एरि पशिल पाताल * नपाइलो करिबे आबे मइ प्रतिपाल
बिधाता दण्डिले बुलि पुत्र दुइक धरि * कान्दिलन्त मकमकि सीताक सुमरि ४८
हा बान्धै येतिक्षण तेजिलि आमाके * एतेके जानिलो पाइले परम बिपाके
कतेक पातेक करि आछो महाघोर * आपदर उपरि आपद मिले मोर ४९
मजिलो सीतार तापे अपार सागरे * खाइ लक्ष्मणर शोक कुम्भीर मगरे
पुलै पुत्र त्याग दुख अगनि वाड़व * हैबेक नरैल आर मोर पराभव ७३५०
आवे दुइ पुताइ परिच्छेदा देखा मोक * तोमासाक तेजि याओं मयो परलोक
एतेक बोलन्ते शोक अगनि गैल ज्वलि * तिनि बापे पुते कान्दिलन्त गलागलि ७३५१
बुजान्त बशिष्ठे शुना कौशल्या-नन्दन * येन भैल भैल आवे तेजियो क्रन्दन
आखि मुख मुछि पाछे दशरथ सुत * मथुराक लागि शीघ्रे पठाइ दिला दूत ५२
सत्वरे आसोक शत्रुघन प्राण भाइ * नजानिला बापु मोर यि भैल बिलाइ
एरिले लखाइ मयो याओं परलोक * रात्रि दिन कारि आसि आमाक देखोक ५३
शुनि गैल दूत दिन निशा नाइ सुस्थ * कहिलेक कथा शत्रुघनत समस्त
लक्ष्मणर शोके स्वर्ग यान्त राम राजा * तुलत भरत यत अयोध्यार प्रजा ५४
कुश लव दुइ कुमारर अभिषेक * सकलो बृतान्त दूते कथा कहिलेक
शुनि शत्रुघने कान्दिलन्त आतिशय * आवेसे मिलिल आमाथेर कुलक्षय ५५
पात्र मन्त्री सबातो कहिला कथा यत * बुलि माति पुत्र दुइक थैलन्त राज्यत
आन रथ बुलि सारथिक लागि चाइल * तेजी घोँरे जुरि रथ सारथि योगाइल ५६

और बढ़कर कोई आत्मीय नही है। पुत्रो, तुम दोनो अल्प-वय मे ही मातृ-पितृहीन हो गये ।। ४७ ।। निर्मम जानकी तुम्हे छोड़कर पाताल मे प्रवेश कर गयी। मैं भी अब तुम लोगों का प्रतिपालन नही कर पाया। विधाता ने ही दंडित किया है —कहकर रामचन्द्र दोनो पुत्रों को पकड़, सीता का स्मरण करते हुए फूट-फूटकर रोने लगे ।। ४८ ।। हाय, बान्धवी सीता, जिस क्षण तू हमे छोड़ गयी, तभी समझ गये कि हमे घोर सकट ने घेर लिया है। मैंने न जाने कितने महाघोर पाप किये हैं, जिससे संकट पर सकट पड़ रहे हैं ।। ४९ ।। सीता के ताप से मैं दुख के अगम सागर में डूब चुका हूं. तिस पर लक्ष्मण के शोक रूपी मगर-घड़ियाल खा रहे है। पुत्र-त्याग रूपी वाड़व-अग्नि जला रही है। मेरे पराभव का और कुछ वाकी न रहा ।। ७३५० ।। दोनो पुत्रो, अब मुझे अन्तिम बार के लिए देख लो। अव तुम्हें तजकर मैं भी परलोक जा रहा हूँ। ऐसा कहते-कहते रामचन्द्र की शोक रूपी अग्नि जल उठी। तीनो बाप-बेटे एक दूसरे के गले से लगकर रोते रहे ।। ७३५१ ।। वशिष्ठ ने समझाया, कौशल्यानन्दन, सुनो, जो होना था हुआ, अब रोना छोड़ो। तब दशरथनन्दन राम ने आँख-मुँह पोछकर शीघ्र ही मथुरा को दूत भेज दिया ।। ५२ ।। ताकि प्राणभाई, शत्रुघ्न शीघ्र चला आवे। मुझ पर जो संकट आ पड़ा है, वह बेचारा उसे नही जानता। मुझे लक्ष्मण ने तज दिया है, मै भी अब परलोक चल रहा हूँ। वह जैसे रात-दिन चलकर यहाँ आ हमसे मिल ले ।। ५३ ।। यह कथन सुनकर दूत बिना विश्राम रात-दिन चलकर शत्रुघ्न के समीप पहुँचे और सारी कथा सुनाई कि लक्ष्मण के शोक मे राम स्वर्ग सिधार रहे है, साथ में भरत और अयोध्या की प्रजा ।।५४।। मथुरा जाकर दूत ने लव-कुश दोनो कुमारो के अभिषेक की सारा वृत्तान्त कह सुनाया। उसे सुनकर शत्रुघ्न बहुत ही रोये। अब हमारा कुल-क्षय होने जा रहा है ।। ५५ ।। उन्होने अपने सभी सामन्तो, मंत्रियों से सारी कथा कह सुनायी और दोनो पुत्रो को समझा-बुझाकर राज्य मे ही रख दिया। 'रथ ला' कहकर उन्होंने सारथी की ओर देखा। सारथी ने तेज घोड़े जोतकर रथ

चड़िलन्त ताते हाते धरिया भार्य्याक * दिने राति रथ डाकि पाइला अयोध्याक
सेहिबेला रामे चलिवाक साज हुइ * स्नान करि पिन्धिलन्त धौत बस्त्र दुइ ५७
भैला निराहार राम जगत ईश्वर * ज्वलन्त अग्निर बर्ण कान्ति कलेवर
शत्रुघन देखि आसि नमिलन्त माथे * गले बान्धि ताहाक कान्दिलन्त रघुनाथे ५८
महसि राक्षसे खाइलो सोदर भैयाइक * चक्षुये देखिबे बापु नपाइलो लखाइक
आवर छार जीवनत नाहि मोर काज * धरिलो लखाइर पथ तेजि इटो राज ५९
चलिबाक प्रति उत्रावल राघवर * आगे परि शत्रुघने करन्त कातर
मोको सङ्गे निया ददा चरणत धरो * तुमि अबिहने अकारणे मैयो मरो ७३६०
बुलिलन्त आश्वास भ्रातृक प्रभु राम * होक सिद्धि तोर अभिमत मन काम
नकरि बिलम्ब बाप साजियो सत्वरे * शुना पाछ कथा आवे आत अनन्तरे ७३६१
यत ऋक्ष राक्षस यतेक कपिबर्ग * निश्चये जानिला राम स्वामी यान्त स्वर्ग
परम बिषाद आसि मिलिल मनत * कान्दन्ते परिल आसि रामर आगत ६२
बिभीषण सुग्रीव अङ्गद जाम्बवन्त * नल नील मुख्य आनो कपि अपर्य्यन्त
कान्दि कान्दि कहन्त माटित नमाइ माथ * आमाक काहाक दिया याहा रघुनाथ ६३
येवेसे याइबाक खोजा आमासाक छारि * एतिक्षणे मुण्डत माराहा तेने बारि
तोमाक नेदेखि प्राण राखो केनमते * याइब सकुटुम्बे बाप तोमार लगते ६४
तुमि अबिहने बाप मिलिवे मरण * यि दिन देखिलो इटो तोमार चरण
गृहतो नाहिके सुख सेहि दिना हन्ते * दण्डे युग तयु पद नेदेखि थाकन्ते ६५

उपस्थित किया ।। ५६ ।। शत्रुघ्न अपनी भार्या का हाथ पकड़े उस रथ पर सवार हुए और दिन-रात रथ चलाते हुए अयोध्या पहुँच गये। उस समय चलने हेतु प्रस्तुत हो रामचन्द्र ने स्नान कर धुले हुए दो वस्त्र पहने ।। ५७ ।। जगत के ईश्वर राम निराहार रहे, उनके शरीर की कान्ति अग्निवर्ण-सी जलने लगी। शत्रुघ्न ने उन्हें देखकर आ चरणों में सिर झुकाया। रघुनाथ उन्हें गले लगाकर रोये ।। ५८ ।। राक्षस मैंने सहोदर भाई को खा डाला। वत्स, लक्ष्मण को आँखों से देख नहीं पाया। इस निष्फल जीवन से मुझे अब कोई प्रयोजन नहीं है। इसलिए यह राज्य छोड़कर लक्ष्मण का मार्ग पकड़ लिया है ।। ५९ ।। चलने के लिए उतावले राघव के चरणों में पड़कर शत्रुघ्न विनती करने लगे— भैया, मैं आपके चरणों में पड़ता हूँ, मुझे भी साथ ले चलिये। आपके न रहने पर अकारण मेरी भी मृत्यु हो जायेगी ।। ७३६० ।। तब प्रभु राम ने छोटे भाई शत्रुघ्न को आश्वासन देते हुए कहा— तुम्हारा अभिमत और मनोकामना सिद्ध हो। वत्स, विलम्ब किये बिना शीघ्र ही प्रस्तुत हो जाओ। इसके पश्चात् आगे की कथा सुनिये ।।७३६१।। जितने भालू, राक्षस, वानर आदि के समुदाय थे, उन सबने निश्चयपूर्वक जान लिया कि स्वामी रामचन्द्र अब स्वर्ग जा रहे हैं, तो उनके मन में परम विषाद हुआ। वे रोते-रोते राम के पास आकर पड़ गये ।। ६२ ।। विभीषण, सुग्रीव, अंगद, जाम्बवन्त, नल, नील तथा और भी जितने अनगिनत वानर-गण थे, वे सभी भूमि पर सिर नवाकर रोते हुए कहने लगे— हे रघुनाथजी, आप हमें किसके हाथ सौंपे जा रहे हैं ? ।। ६३ ।। यदि हमें छोड़कर चले जाना चाहते हैं, तो इसी क्षण हमारे सिरों पर डंडे से प्रहार कीजिये। आपको देखे बगैर हम प्राण किस प्रकार रखें ? हे तात, हम कुटुम्ब समेत आपके साथ चलेंगे ।। ६४ ।। हे पिता, आपके बिना हम मरण को प्राप्त हो जायेंगे। हमने जिस दिन से आपके ये चरण देखे, उसी दिन से घर में भी कोई सुख नहीं मिलता। आपके चरण देखे बगैर एक दंड एक युग के समान बीतता है। ऐसा समझकर हे पिता, अब हमारे प्राणों का वध न करें।

हेन जानि बाप आवे नबधिवा प्राणे * सबान्धवे याइबो आमि याहा यिटो थाने
येन लागे लगते खपिबो वनवास * आशा नकरिवा भङ्ग भैलो तयु दास ६६
कान्दे सबे एहिमते मनत आसुखे * प्रबोधन्त रामे पाचे मनत आसुखे
सुनियो सुग्रीव सखि सूर्य्यर नन्दन * मोहोर शपत आउर नकरा क्रन्दन ६७
बिपद बान्धव तुवा वानर भालुक * नकान्दा नकान्दा आवे हैयोक निचुक
तुमि सबे येवे आवे नेरिला आमाक * कोन छले एरि याइबो मइ तोमासाक ६८
सत्वरे साजियो आजि यार याइबे लागे * तोमासार लगे येन युवाइ हौक आगे
प्राणतो अधिक प्रिय भरत आमार * सत्ये सत्ये नेरिबो करिलो अङ्गीकार ६९
ऐतथाके माने यत भालुक वानर * आउर केहो नुबुलिवा वाक्य मानुषर
आपोनार जाति भाषे वरिबे वचन * हेन शुनि भैल सबे हरिषित मन ७३७०
मोरा प्राण मित्र विभीषण लङ्केश्वर * थाकें इटो यावदेके चन्द्र दिवाकर
तावे तुमि लङ्कात भुञ्जियो राज्य भोग * तोमाक नपाउक उपसर्ग जरा रोग ७३७१
शुना बृद्ध जाम्बवन्त महा हितकारी * तोमार गुणक आमि सुजिते नपारि
यावदेके नुहिके प्रलय उपस्थित * तावे तुमि आरोग्ये थाकियो पृथिवीत ७२
जाम्बवन्त बिभीषण नकरिवा खेद * हेरा दिलो आपुनि स्वरूप परिच्छेद
आउर दुनाइ दुयो मोक नेदिबा उत्तर * शुना हनुमन्त बाप वायुर कुमार ७३
करिलि यतेक तइ मोर उपकार * किछु शुजा नगैला थाकिल मोत धार
तोर गुण मोर मुखे वर्णाइके कतेक * अचला भकति मोत थाकिल प्रत्येक ७४
यावे रामायण मोर प्रचारे भूमित * तावे तुमि अप्रयासे थाका पृथिवीत
भकतिक प्रवर्ताया वायुर कुमार * मोक कल्प अवसाने पाइबे दिलो वर ७५

आप जिस स्थान मे जा रहे हैं, अपने वान्धवों समेत हम भी वही चलेगे। चाहे जैसे भी हो आपके संग हम वनवास मे दिन वितायेंगे। हम आपके दास बने हैं, हमारी आशा भंग न करे ।। ६५-६६ ।। इस प्रकार मनोवेदना से सभी रोने लगे। रामचन्द्र भी मन में दुखी हो उन्हें आश्वासन देने लगे। सूर्यनन्दन सखा सुग्रीव सुनो, मेरी शपथ है, और रुदन न करो ।।६७।। तुम सभी वानर-भालू मेरे सकट के वान्धव हो, अब न रोओ, न रोओ, शान्त होओ। जबकि तुम सबने हमे नही छोड़ा, भला मैं अब किस प्रकार से तुम लोगो को छोड़ जा सकता हूँ ? ।। ६८ ।। तुम लोग जो चलना चाहते हो, शीघ्र प्रस्तुत हो जाओ। अब तुम लोगों के संग भाग्य मे जो होना है, हो। भरत मेरे प्राण से भी अधिक प्यारा है। मैं सत्य-सत्य अंगीकार करता हूँ कि तुम्हे नही छोड़ूँगा ।। ६९ ।। यहाँ जितने भालू-बानर रहें, कोई भी और मनुष्यों की बोली न बोले। अपनी जाति की बोली में बात करें। यह सुनकर सभी मन में हर्षित हुए ।।७३७०।। प्राणप्रिय मित्र विभीषण लंकेश्वर, सुनो। जब तक ये चन्द्र-सूर्य रहे, तब तक तुम लका में राज्य-भोग करते रहो। व्याधि, जरा और रोग तुम्हें छू नही पायेगे ।। ७३७१ ।। महा हितकारी वृद्ध जाम्बवन्त, सुनो। तुम्हारे गुणों से हम उऋण नही हो सकते। जब तक प्रलय उपस्थित न हो, तब तक तुम निरोग रहकर पृथ्वी पर निवास करते रहो ।।७२।। जाम्बवन्त, विभीषण, तुम लोग खेद न करना। हाँ, मै स्वयं तुम्हे अपने से अलग कर रहा हूँ। तुम दोनो पुनः मुझे उत्तर न देना। वायुनन्दन वत्स हनुमान, सुनो ।। ७३ ।। तुमने मेरा जितना उपकार किया, उसका कुछ भी मैं चुका नही पाया, मुझ पर ऋण रह गया। मेरा मुख तुम्हारे गुणों का कहाँ तक वर्णन करे ? मुझ पर तुम्हारी प्रत्येक प्रकार से अचल भक्ति रहेगी ।। ७४ ।। जब तक धरती पर रामायण का प्रचार रहे, तब तक तुम बिना प्रयास पृथ्वी पर बने रहो। हे वायुकुमार, मेरी भक्ति का प्रचार करते हुए कल्प का अन्त

शुनि मारुतिर महा मिलिल सन्ताप * मोक तेजि याइबे खोजा जगतर बाप
निजीवो नेदेखि एइ दुखानि चरण * कान्दन्त आवेसे मोर मिलिल मरण ७६
मारुतिक धरि रामे करन्त क्रन्दन * बोलन्त शुनियो बाप बायुर नन्दन
मोहोर निमित्ते शोक कर बाप दूर * यथात भकत थाके तेते बिष्णुपुर ७७
परम कल्याणे थाक सबान्धवे कपि * नेदिबा उत्तर आउर मोक पुनरपि
एहि बुलि रामचन्द्र उठिला सचले * लक्ष्मणक देखिबाक परम बिकले ७८
शुक्ल वस्त्र परिधान भैला कुशहस्त * धरिलेक लाग आसि नगरी समस्त
शोभे धौतवस्त्रे अति यत प्रजाचय * येहि दिके देखे सबे बगा धौतमय ७९
राघवो पाइलन्त पाछे सरयूर तीर * लक्ष्मणर शोके करे दगध शरीर
हा बाप भैयाइ तइ गैलि कोन थान * करन्त सन्ताप तापे फुटे येन प्राण ७३८०
खोज गुरि लक्ष्मणक बिचारिया चाओं * चक्षुगोटे हेनवा भैयाइक देखा पाओं
एहि बुलि लरिला राघव बनमाली * सरयूर तीरे तीरे खोजत निहालि ७३८१
कैतनो आछस भैयाइ यान्त उक्रियाइ * मोक देखा दे ऐ प्राणर लखाइ
तोहोरेसे शोके सब शरीर दहय * चाओं चक्षुगोटे तोक जुराउक हृदय ८२
लक्ष्मण लक्ष्मण बुलि दिया यान्त गेरि * कैतनो आछस आवे बाप मोर एरि
नुबुजस मात मइ तोर श्रेष्ठ भाइ * कियनो नेदसमात बनर रजाइ ८३
एहिमते कान्दि कान्दि यान्त तीरि तीरि * देखन्त लक्ष्मण आछे पद्मासन भिरि
एहि मोर भाइ धातु नाभिल समूलि * दिलन्त लबर राम जीलो जीलो बुलि ८४

होने पर मुझे प्राप्त करोगे, मैं वर देता हूँ ।। ७५ ।। यह सुनकर हनुमान को बड़ा संताप हुआ कि जगत के पिता रामचन्द्र मुझे छोडकर चले जाना चाहते है। मै दोनो चरणों को देखे बिना जीवित नही रह सकूंगा। इस बार मेरा मरण हो गया, सोचकर वे रोने लगे ।। ७६ ।। मारुति को पकड़कर रामचन्द्र भी रोने लगे। कहा, वत्स वायुनन्दन, सुनो। वत्स, मेरे लिए शोक करना छोड़ दो। जहाँ मेरा भक्त रहता है, वही विष्णुलोक वैकुंठ है ।। ७७ ।। हे कपि, तुम बान्धवों सहित कल्याणपूर्वक रहो, मुझे पुन: कोई उत्तर न देना। यह कहकर रामचन्द्र उठ पड़े और लक्ष्मण को देखने हेतु परम व्याकुल हो चल पड़े ।। ७८ ।। वे श्वेत वस्त्र पहने, हाथो मे कुश लिये हुए थे। सारी नगरी के लोग उनसे मिलने चले आये। धुले हुए वस्त्र पहने सारे प्रजाजन बड़े शोभायमान हो रहे थे। जिधर देखिये सभी ओर श्वेत धुले वस्त्रमय दिखाई देता था ।। ७९ ।। इसके पश्चात् राघव भी सरयू के तट पर पहुँचे। लक्ष्मण का शोक उनके शरीर को दग्ध कर रहा था। हा, वत्स, भाई लक्ष्मण, तुम कहाँ गये ? वे सभी संताप कर रहे थे, दुख के मारे मानो प्राण निकले जा रहे थे ।। ७३८० ।। खोज करने पर संभवत: लक्ष्मण को पा जाऊँ, अपनी आँखो से संभवत: भाई को देख पाऊँ, ऐसा सोचकर सरयू के किनारे-किनारे पद-चिह्नों को देखते हुए वनमाली (के अवतार) राघव वेग से चल पडे ।। ७३८१ ।। वे सभी ओर यह पुकारते चले जा रहे थे— अरे भाई, तुम कहाँ हो। अरे प्राणप्रिय लक्ष्मण, मेरे सामने हो जाओ। तुम्हारे शोक से समूचा शरीर जल रहा है। अपनी आँखों से तुम्हें देख लूँ, जिससे हृदय शीतल हो जाये ।। ८२ ।। वे 'लक्ष्मण, लक्ष्मण' पुकारते चले जा रहे थे। ओ वत्स, मुझे छोड़कर तुम कहाँ हो ? तुम क्या मेरी बोली नहीं समझ पा रहे हो, अरे, मैं तो तुम्हारा बडा भाई हूँ। हे वन के राजा, तुम भी बोलते क्यों नही ? ।। ८३ ।। यह कहते रोते हुए रामचन्द्र सरयू के किनारे-किनारे चले जा रहे थे। देखा, लक्ष्मण पद्मासन लगाये हुए है। अरे, यही मेरा भाई है। रामचन्द्र की सुध-बुध बिल्कुल न रही। वे

आथे वेथे बान्धिलन्त गलत राघव * देखन्त नाहिके प्राण आछे मरा शव
दुनाइ दशगुणे शोक अग्नि गैल ज्वलि * शवके सावटि प्रभु परिलन्त ढलि ८५
नाइ येन श्रुति ज्ञान रामो गैला मरि * शत्रुघन भरते कान्दन्त दुइको धरि
कान्दे परि परि प्रजा प्राण याय फुटि * निरन्तरे नारीर हृदये हाने मुठि ८६
हा प्राणनाथ नेदेखिलो आमि आसि * तोमार मरणे एमो आछो प्राण राखि
दारुण हृदय किय एमो नयाय भागि * निज प्रजा एरि गोसाइ गैला कोन लागि ८७
एहि बुलि वालित बागरि फुरे लोके * जुइ येन ज्वले लक्ष्मणर सिटो शोके
कान्दे वेढ़ि भालुक बानर कोटि कोटि * स्वर्गक लङ्घिले क्रन्दनर ऊर्म्मि उठि ८८
शुना सभासद इटो रामायण कथा * देखा अन्तकाले केन रामर अवस्था
परिल इ परा सेइ मरण बिघात * नपारि तर्किबे आरु कृष्णर मायात ८९
जानिया कृष्णत करा एकान्त भकति * कलित हरिर नाम कीर्त्तनत गति
आउर धर्म्म कलित नामत परे नाइ * एओ तेवे शास्त्रर नुबुजि अभिप्राय ७३९०
सत्य युगे पूजे बिष्णु धरिया समाधि * महा महा यज्ञ त्रेता युगत आराधि
येन गति द्वापरत पूजि भक्तिभावे * कलित कीर्त्तन करि सबे फल पावे ७३९१
एतेकेसे कलि श्रेष्ठ चारि युगमाजे * प्रशंसे कलिक महा महन्त समाजे
धर्म्म अर्थ काम मोक्ष कीर्त्तनते पाय * कलित परम मुख्य तरण उपाय ९२
जानि अप्रयासे तरा हरिनाम धरि * यार भये अन्तक कास्पन्त तरतरि
जगत बान्धव इटो माधवर नाम * शङ्करे रचिला डाकि बोला राम राम ७३९३

'जी गये, जी गये' कहते हुए दौड़ पड़े ।।८४।। रामचन्द्र ने उतावला होकर उन्हें गले से लगा लिया। तभी देखा, लक्ष्मण के प्राण नही है, केवल मरा शव पड़ा हुआ है। पुनः शोक रूपी अग्नि दस गुणी जल उठी। लक्ष्मण के शव को बाँहों में बाँधे प्रभु संज्ञाहीन हो ढल पड़े ।।८५।। रामचन्द्र की चेतना भी खो गयी, मानो वे भी मर चूके। भरत और शत्रुघ्न दोनो को पकड़कर रोने लगे। प्रजाजन भी भूमि पर लोट-लोटकर रोने लगे, उनके प्राण निकलने-से लगे। नारियाँ निरन्तर अपने हृदय पर मुक्का मारने लगी ।। ८६ ।। हा प्राणनाथ लक्ष्मण, हम आकर भी तुम्हे देख नही पाये। तुम्हारे मरने पर भी अब तक प्राण धरे हुए है। यह दारुण-हृदय अब भी टूट क्यों नही जाता ? अरे गोसाईं, अपने प्रजाजनों को छोड़कर कहाँ चले गये ।। ८७ ।। यह कहकर लोग रेत पर गिरकर लोट रहे थे। लक्ष्मण के शोक से उनके हृदय में आग-सी जल रही थी। करोड़ो भालू-वानर उन्हे घेरकर रो रहे थे। उस रुदन की ध्वनि व्याप्त होकर स्वर्ग को पार कर गयी ।। ८८ ।। सभासदो, यह रामायण-कथा सुनो। देखो, अन्तकाल मे रामचन्द्र की कैसी अवस्था हुई। मृत्यु का यह आघात उन्हे भी इस लोक में भोगना पड़ा। कृष्ण की माया के कारण इस पर तर्क कर कुछ पार नही पा सकते ।।८९।। यह समझकर कृष्ण पर एकान्त भक्ति रखो। कलिकाल मे हरि का नाम-कीर्तन ही गति है। नाम के अलावा कलि का अन्य धर्म नहीं है। तथापि लोग शास्त्रों का अभिप्राय नही समझते ।।७३९०।। सत्ययुग में समाधि लगाकर विष्णु का पूजन कर, त्रेतायुग मे बड़े-बड़े यज्ञ कर, उनकी आराधना कर तथा द्वापरयुग में भक्तिभाव से पूजा कर जो गति मिलती थी, कलियुग मे नाम-कीर्तन कर ही वे सारे फल मिल जाते है ।।७३९१।। इसी कारण चारो युगो मे कलि ही श्रेष्ठ है। महा-महन्तो के समाज कलि की प्रशंसा किया करते हैं। कीर्तन द्वारा धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष मिल जाता है। यही कलि मे उद्धार का मुख्य उपाय है ।।९२।। ऐसा जानकर हरि-नाम ले अनायास तर जाओ। जिसके भय से काल भी थर-थराकर काँपने लगता है। यह माधव का नाम विश्व का बान्धव है। शंकर ने इसकी रचना की। पुकार-पुकारकर 'राम, राम' कहो ।।७३९३।।

लक्ष्मणर शवदाहन आरु प्रेतकार्य्य समापन

दुलड़ी

शुना पाचकथा रामर अवस्था येन भैला सिटो थाने ।
रामे लक्ष्मणक आलिङ्गि आछिला परि दण्ड दुइ माने ॥
कतोक्षणे पाचे चेतन लभिया बातुल येन चेञ्चान्त ।
रावणे आरका शकति हानिले भैयाइर भैल उपान्त ॥ ७३९४
शुनियो सुषेण बैद्य औषधक कथा कैयो केन ठान ।
हनुमन्त बाप बिलम्ब नकरि बिशल्यकरणी आन ॥
सीताक चाहन्ते लखाइक हराइलो करिबो कोन उपाय ।
अयोध्यात आवे किमते जीवन्त शुनिया सुमित्रा आइ ॥ ९५
उठियो लखाइ प्राण फुटि याय तोरेसे दारुण शोके ।
किनो अपराध बान्धव करिलो किय नमातस मोके ॥
दिव्य शय्या एरि निर्यणित परि कतनो पार घुमटि ।
नजागे समूलि उठ उठ बुलि तोलन्त कतो सावटि ॥ ९६
अयोध्यार लोके तोके बेढ़ि आछे चाउ चक्षु मेलि बाप ।
निरन्तरे राज नारी कान्दि मरै तोहोर नपाइ आलाप ॥
जानो मोत रोषे नमात भैयाइ निर्ब्बास दिबार पदे ।
मोर नाइ दोष दुर्ब्बासा दारुणे पेहलाइले तोक आपदे ॥ ९७
आइल धूमकेतु ताहारेसे हेतु करिलोहो मर्म्मछेद ।
मोक अपयश दिया नमातस आतेसे हृदय खेद ॥

लक्ष्मण का शवदाहन और अन्त्येष्टि

इसके पश्चात् उस स्थान में राम की जैसी अवस्था हुई, वह कथा सुनो । वहाँ पड़े हुए रामचन्द्र लक्ष्मण को दो दंड तक आलिंगन किये हुए थे । कितने समय बाद सचेत होकर वे बावले की भाँति चीखने लगे । रावण ने पुनः शक्ति मारी है, इसी कारण भाई लक्ष्मण का जीवन-अंत हो गया है ॥ ७३९४ ॥ वैद्य सुषेण, सुनो, किस स्थान में औषधि है, शीघ्र ही बताओ । वत्स हनुमान, विलम्ब किये बिना विशल्यकरणी ले आओ । सीता को पाने के लिए लक्ष्मण को खो दिया, अब कौन-सा उपाय करूँ । यह बात सुनकर अयोध्या मे अब माता सुमित्रा कैसे जीवित रहेंगी ? ॥ ९५ ॥ लक्ष्मण सुनो, तुम्हारे दारुण शोक से हमारे प्राण निकले जा रहे है । हे बन्धु, मैंने कौन सा अपराध किया है, तुम मुझसे बात किसलिए नही करते ? दिव्य शय्या छोड़कर इस दूर की भूमि पर पड़े तुम कितना सो रहे हो । आलिंगन कर उठाने पर भी, 'उठो,उठो' कहकर पुकारने पर भी जग नहीं रहे हो ! ॥ ९६ ॥ वत्स, अयोध्या के लोग तुम्हें घेरे हुए हैं, आँख खोलकर देखो, राजनारियाँ तुम्हारी बात सुन न पाकर निरन्तर रो-रोकर मरी जा रही है । अरे भाई, जानता हूँ कि तुम्हे निर्वासित करने हेतु मुझ पर रोष करने के कारण तुम बोल नही रहे हो । मेरा कोई दोष नही है, दुर्वासा ने ही तुम्हें सकट में डाला है ॥ ९७ ॥ वह धूमकेतु तुम्हारे ही कारण आया था । उसी कारण मैंने तुमसे स्नेह-सम्बन्ध तोड़ लिया । मुझे अपयश देकर बोलते नही, यही मेरे हृदय में दुख का कारण है । यद्यपि तुम ध्यानस्थ होने के कारण वायु रोककर पड़े हुए हो, इसी कारण नाक से साँस नही चल रही है; तथापि मैं जान गया कि तुम मर गये और इसी बार

योनो ध्यान करि वायु आछ धरि तातेसे नासे उसास।
जानिलो मरिलि आवेसे करिलि समूलञ्चे मोक नाश ॥ ९८
दण्डका वनतो लगते आछिलि नेरिलि क्षणेको सङ्ग।
छोट हन्ते तोर पितृतो अधिक मोतेसे आति आसङ्ग ॥
आवे किनो गैले मोक तेजि गैले किनो तोर बज्र हिया।
कान्दन्त सन्तापे जगतर वापे भाइर मुखे मुख दिया ॥ ९९
प्राणर लक्ष्मण तोक पठाइ बन दिनते दुइ चक्षु खाइलो।
मोहोर शोकत प्राणे भैलि हत देखिवे तोक नपाइलो ॥
ग्रासिलेक काले तोहोर सन्तापे मइ कंत रैबो क्रूर।
एमो हेन कर आमाको सुमर लगे याओं यमपुर ॥ ७४००
हेनवा तोहोर सन्ताप पासरो लगे लैया याहा मोक।
राम लक्ष्मणर भाइ भैयालक प्रशंसे सकल लोक ॥
तोर एह्न हिया मोक काक दिया कोन सते यास एरि।
फुकिते कान्दन्त तापत पारन्त लखाइ लखाइ तुलि गेरि ॥ ७४०१
कैरा मन्त्रीचय चिता सज्जालियो ताते दुइ भाइक तुलि।
किय आछा चाइ अगनि लगाइ लगे मारा मोक पुलि ॥
आउर कदाचितो लाग लक्ष्मणर नछारिवो मइ कोल।
हेन शुनि सवे कान्दे आर्त्तरावे उथलिला ऊर्म्मिरोल ॥ २
बशिष्ठे बुजान्त प्रभु रघुनाथ थिर करा तुमि चित्त।
बिमरिष मने बिस्तर क्रन्दने मृतकर नोहे हित ॥
येन लागे वाप प्रेतकार्य्य करा इमत सन्ताप एरा।
सबेयो मरि काले कि करिब कालत नाहिके बरा ॥ ३

तुमने मुझे समूल नष्ट कर दिया ॥ ९८ ॥ तुम दडक वन में साथ थे, क्षण भर भी मेरा संग छोड़ते न थे। छोटा भाई होने पर भी मुझ पर पिता से भी अधिक भक्ति थी। इस बार न जाने क्या हो गया कि तुम मुझे छोड़ गये ? तुम्हारा हृदय कैसा बज्र है। जगत के पिता रामचन्द्र भाई के मुख मे मुख लगा, सन्ताप से रोने लगे ॥९९॥ हे प्राणप्रिय लक्ष्मण, तुम्हें वन में भेज दिन में ही अपनी दोनो आँखें नष्ट कर बैठा। मेरे शोक के मारे तुम प्राण छोड़ बैठे, मै तुम्हें देख नही पाया। तुम्हारे संताप से मुझे भी काल ने ग्रस लिया, मैं क्रूर अब किस प्रकार से रहूँगा ? अब ऐसा करो कि मुझे भी स्मरण कर लो, मैं भी तुम्हारे संग यमलोक चला जाऊँ ॥ ७४०० ॥ ऐसे भी मैं तुम्हारा संताप भूल सकूँगा, यदि तुम मुझे संग ले चलो। राम-लक्ष्मण हम दोनो के भाई-पन को सारा ससार प्रशसा करता है। तुम्हारा ऐसा हृदय है, मुझे किसके हाथ देकर, किस प्रकार से छोडे जा रहे हो। रामचन्द्र इस प्रकार फूट-फूटकर रो रहे थे, संताप के मारे 'लक्ष्मण, लक्ष्मण' कहकर पुकार उठते थे ॥ ७४०१ ॥ मन्त्रीगण, कहाँ हैं ? चिता सजाइये और उस पर दोनो भाइयों को चढ़ाकर उसमें आग लगा, मुझे भी साथ ही जला मारिये। आप सब क्या देख रहे है ? मैं अब कदापि लक्ष्मण का संग नहीं छोड़ूंगा। यह सुनकर सभी ऊँचे स्वर से रोने लगे जिससे प्रचंड कोलाहल हुआ ॥ २ ॥ वशिष्ठ समझाने लगे, प्रभु रघुनाथ, तुम अपना चित्त स्थिर करो। विमर्ष वदन से अधिक रुदन करने से मृतक का कोई हित नहीं होता। चाहे जैसे भी हो, वत्स, संताप करना छोड़ दो और लक्ष्मण की अन्त्येष्टि करो। क्या करोगे, काल आने पर सबको मरना ही होगा। काल से बड़ा कोई नही है ॥ ३ ॥ दिव्य देह धारण कर कुमार लक्ष्मण तुमसे मिलने

दिव्य देहाधर लक्ष्मण कुमार आपेखि सङ्ग तोमारे।
ज्ञान दृष्टि देखो लक्ष्मण स्वर्गत आछन्त इछिति कारे ॥
अल्पते भ्रातृर लभिबा सङ्गति तेजियो बाप बिलाप।
बशिष्ठर बोले राघवर किछु गुचिल चित्तर ताप ॥ ४
पाचे रघुपति चिता ज्वालि तैति लखाइर देहा दहिला।
सीतार बहिनी ताने प्रिया पत्नी लगते गैला ऊर्म्मिला ॥
स्वामीर समीप पाया अप्रयासे भैला आनन्दित मति।
यत प्रेतकार्य्य सङ्कलिल सबे बिधिवते रघुपति ॥ ५
शुना सबे नर राम लक्ष्मणर केन भैल आक देखा।
सदाय हताश इटो गृहबास मनुष्यर कोन लेखा ॥
लभिया भारते नरतनु यिटो नकरे हरि कीर्त्तन।
हृदयते हरि आछन्त जानिया निचिन्ते तान चरण ॥ ६
सिटो मूढ़मति एरिया भकति कर्म्मत करे बिश्वास।
ताक परिहरा जीयन्तते मरा भातिर येन निश्वास ॥
हेन निष्ठ जानि चिन्ता चक्रपाणि हरिर सुमरि नाम।
पुरुष उद्धारा आपोन निस्तारा डाकि बोला राम राम ॥ ७४०७

श्रीरामर स्वर्ग-गमन

पद

आत अनन्तरे शुनि समस्त समाज * सङ्कलिला रामे लक्ष्मणर प्रेतकाज
आउर सुख शान्ति नाइ राघवर मने * निश्चय करिला प्रभु स्वर्गक गमने ७४०८

हेतु प्रतीक्षा कर रहे हैं। ज्ञानदृष्टि से देखो कि वे स्वर्ग में किस की इच्छा कर रहे हैं? कुछ ही समय में भाई का संग मिल जायेगा, इस कारण, वत्स, विलाप करना छोड़ दो। वशिष्ठ के वचन से रामचन्द्र के चित्त का ताप कुछ मिटा ॥ ४ ॥ इसके पश्चात् वही चिता जलाकर लक्ष्मण की देह का संस्कार किया। सीता की बहन, लक्ष्मण की प्रिय पत्नी उर्मिला साथ गयी। बिना प्रयास के वह अपने स्वामी के पास पहुँचकर आनन्दित हुई। सारे प्रेतकार्य-अंत्येष्टि आदि रामचन्द्र ने विधिपूर्वक पूरे किये ॥ ५ ॥ सभी लोग सुनें, राम-लक्ष्मण की कैसी अवस्था हुई इसे देखो। यह गृह-वास सदा हताशा से भरा हुआ है, मनुष्य की गिनती ही क्या है? जो व्यक्ति भारत में मानव-शरीर ग्रहण कर हरि-कीर्तन नही करता, हृदय में हरि निवास करते है, जानकर भी उनके चरणों का चिन्तन नही करता, ॥ ६ ॥ वह मूढ़मति भक्ति को तजकर कर्म में विश्वास करता है। उसे छोड़ दो, वह जीता हुआ भी मरा है। जैसे भाथी (लुहार की धौकनी) साँस लेती है, (वैसे ही वे लोग भी साँस लेते हैं) ऐसा निश्चित जानकर चक्रपाणि का चिन्तन करो। हरि का नाम स्मरण कर अपनी पीढ़ियों का उद्धार करो स्वयं भी पार उतर जाओ। पुकार-पुकारकर 'राम,राम' कहो ॥ ७४०७ ॥

श्रीराम का स्वर्ग-गमन

इसके पश्चात् सारे समाज के लोग सुनें, रामचन्द्र ने लक्ष्मण की अन्त्येष्टि-क्रिया समापन की। रामचन्द्र के मन में अब कोई सुख-शान्ति नहीं रही। प्रभु राम ने स्वर्ग जाने का निश्चय कर लिया ॥ ७४०८ ॥ उन्होंने पुरोहित वशिष्ठ से यह वचन

पुरोहित वशिष्ठक बुलिला वचन * एरि पृथिवीक करो स्वर्गक गमन
करायोक येन लागे यात्रार विधान * विहिलन्त बशिष्ठे विशिष्ट अनुष्ठान ९
दीप घट दधि दूर्ब्बाक्षते रञ्जि थलि * चरे समे शारी शारी रोवाइला कदली
दियाइला मण्डल आलि पथे थाने थान * मैल शुभक्षण राघवत दिला जान ७४१०
करिलन्त रामे सरयूत पाचे स्नान * सुवर्ण रजत रत्न करिलन्त दान
पिन्धिलन्त धौत दिव्य वस्त्र रुचिकर * गन्धे पुष्पे माल्ये अलङ्कृत कलेवर ७४११
करिलन्त यात्रा जगतरे प्रभु राम * माधव माधव मुखे उच्चारन्त राम
आपोनार निज रूप धरि हृदयत * लरिलन्त धैर्य्यभावे सबारो आगत १२
चतुर्भिति जय जय राम मात्र शुनि * उच्चरन्त मूलमन्त्र यत महामुनि
वेदमाता गायत्री लरिला अग्रदेशे * चलिल चारियो वेद ब्राह्मणर बेशे १३
वाम पाशे लक्ष्मी यान्त जगत मोहिनी * दक्षिणे चलन्त आनो नारी बितोपनी
दिव्य धनुशर पुरुषर रूप धरि * पाचत चलिला राघवक अनुसरि १४
आसिया आकाशी गङ्गा सिञ्चिलन्त जल * मूर्त्तिमन्त मन्त्रगणे पढ़न्त मङ्गल
वसुमती तुति नति करन्त एकत्र * याय धरि उपरत मेघे श्वेत छत्र १५
सुग्रीव प्रभृति यत वानर भालुके * चले सालङ्कृत हुया परम उत्सुके
करे कुलि मालि महा जय जय नादे * जीवन्ते स्वर्गक पाइबो प्रभुर प्रसादे १६
शत्रुघ्न भरत भकत यत राजा * चौपाशे उपासि याय अयोध्यार प्रजा
पिन्धि धौत कापोर सकले परिवारे * गन्धे पुष्पे भूषित अमूल्य अलङ्कारे १७
ब्राह्मणर हाते करे सर्ब्बस्व उत्सर्ग * रामर प्रसादे पाइबो जीवन्तते स्वर्ग
वाल वृद्ध युवा जीव पिम्परा पर्य्यन्ते * चलि याय राघवर महिमा कहन्ते १८

कहा— मैं पृथ्वी को छोड़ स्वर्ग-गमन करूंगा। इसके लिए आवश्यक यात्रा का विधान कराइये। तब वशिष्ठ ने विशिष्ट अनुष्ठान करवाया ॥ ९ ॥ दीप, घट, दही, दूर्वा, अक्षत आदि से उस स्थान को रंगित कर सेवकों द्वारा पंक्तियों में केले के पौधे लगवाये। मार्ग पर, स्थान-स्थान पर मंडल बनवाये और शुभ क्षण आ पहुँचने की सूचना राघव को दी ॥ ७४१० ॥ इसके पश्चात् रामचन्द्र ने सरयू में स्नान किया और सोने-चाँदी, रत्न आदि दान किये। उन्होंने धुला हुआ रुचिकर दिव्य वस्त्र पहना और अपने शरीर को गंध, पुष्प, धूप, माला आदि से अलंकृत किया ॥ ७४११ ॥ जगत के प्रभु रामचन्द्र ने यात्रा की। वे अपने मुँह से 'माधव, माधव' का उच्चारण कर रहे थे। अपने स्वरूप का ध्यान हृदय में करते हुए, वे धैर्यपूर्वक सबके पहले वेग से चल पड़े ॥ १२ ॥ चारों ओर केवल 'जय, जय राम' मात्र सुनायी पडता था। सारे महामुनि मूल-मंत्रों का उच्चारण कर रहे थे। वेद-माता गायत्री उनके आगे-आगे वेग से चल पड़ी। चारों वेद ब्राह्मण के वेश में चल पड़े ॥१३॥ उनके बायीं ओर जगतमोहनी लक्ष्मी चल रही थीं। दाहिनी ओर दूसरी सुन्दरी नारियाँ चल रही थी। दिव्य धनुष-बाण पुरुष का वेश धारण कर राघव का अनुसरण करते हुए पीछे-पीछे चले ॥ १४ ॥ आकाशी गंगा ने आकर जल का सिंचन किया। मूर्तिमान हो मन्त्रगण मंगलपाठ कर रहे थे। वसुमती उनके साथ स्तुति-प्रणति कर रही थी। मेघ उनके ऊपर श्वेत छत्र धारण कर चल रहे थे ॥ १५ ॥ सुग्रीव आदि सारे वानर-भालू परम उत्सुक होकर आभूषणों से सजे हुए चल पड़े। वे जय-जय नाद करते आनन्दपूर्वक कहते थे— प्रभु के प्रसाद से जीते जी हमें स्वर्ग मिलेगा ॥ १६ ॥ शत्रुघ्न, भरत और सारे भक्त राजा तथा अयोध्या की प्रजा चारों ओर उपासना करती चली जा रही थी। सारे परिवार के लोग धुले वस्त्र पहनकर गंध-पुष्प से भूषित अमूल्य आभूषणों से अलंकृत हो, ॥ १७ ॥ ब्राह्मणों के हाथ

छाग गरु गान्ध गण्ड गावय शृगाल * कुकुर बिड़ालि बरा हरिणर पाल
घोटक कण्टला उट मेठन महिषे * युथे युथे हस्तीसब चले सहरिषे १९
काउर कैरा मैरा पार पिरिका वरल *कोरञ्च चकोर फिञ्चा पेञ्चा चेञ्चावल
सरालि शालिका सारु हंस जाइ मरा *बालिवण्टा बटा टुणि टिपसि टोकरा ७४२०
इसब प्रमुख्ये पशु पक्षी यत आछे * तृण तरु लताचयो चले पाचे पाचे
रामर प्रभावे भैल सबातो चेतन * परम हरिषे करँ स्वर्गक गमन ७४२१
किरीटि कुण्डल महा हेममय हारे * चिकिमिकि करँ रत्नमय अलङ्कारे
याय मने हृष्ट पुष्ट रङ्गे तुष्टि चलि * तुलि छत्रदण्ड बाद्यभण्ड कुरुस्थलि २२
भैला रामचन्द्र इन्द्र सम उपसन्न * चन्द्र सूर्य्य दुइ भिति भरत शत्रुघन
सुग्रीव प्रभृति यान्त यत महीपाल * रूपे प्रकाशन्त सबे येन दिगपाल २३
भालुक वानर देव सेनार आकृति * ऋषि सब भैल येन गुरु बृहस्पति
निरन्तरे नर बिद्याधर एरे सरि * नारी सबे चले अपेश्वरी बिद्याधरी २४
चिकिमिकि अलङ्कारे करे चतुर्भिति * करँ तारागण येन स्वर्गत दीपिति
चिरल पताका रथ ध्वज छत्र दण्ड * आकाशे प्रकाशे येन मेघ खण्ड खण्ड २५
परम श्रीमन्त देहा दिब्य रूपधर * निष्पाप निर्म्मल सकलोरे कलेवर
नृत्य गीते आनन्दते नाहि चिन्ता शोक * महा कौतूहले चलि यान्त स्वर्गलोक २६
शुने सामराजे राम स्वर्गक गमन * चाहिबाक आसे आनो देशी सब जन
मिलँ अनुराग तासम्बारो अन्तर्गते * घर बारी एरि चले रामर लगते २७

सर्वस्व न्योछावर कर रहे थे कि राम के प्रसाद से जीते जी स्वर्ग प्राप्त हो जायेगा। बालक-वृद्ध-युवा यहाँ तक कि चींटी तक जीव राघव की महिमा वर्णन करते हुए जा रहे थे ।। १८ ।। बकरी, गाय, गधे, गेंडे, गवय, सियार, कुत्ते, बिल्लियाँ, सूकर, हिरणों के झुंड, घोड़े, कन्टला, ऊँट, पहाड़ी मेठन गायें, भैंस, हाथी ये सारे यूथ के यूथ परम प्रसन्नता से चल पड़े ।। १९ ।। कौवे, कोयल, मोर, कबूतर, पिरिका, बेई, क्रौंच, चकोर, फिंचा, उलूक आदि जोर से पुकारते हुए चले। वनहंस, सारिका, सारंग, हंस, मोर, बालिवंटा, बटा, दर्जिन पक्षो, टिपसि, टोकोरा आदि पक्षी समेत— ।। ७४२० ।। जितने पशु-पक्षी थे, उनके अलावा तृण, तरु, लताओं का समूह भी पीछे-पीछे चल पड़ा। राम के प्रभाव से सबमें चेतना आ गयी। वे भी परम हर्ष से स्वर्ग को चल पड़े ।। ७४२१ ।। रामचन्द्र किरीट-कुंडल, महा हेममय हार से तथा रत्नमय आभूषणों से जगमगा रहे थे। वे बड़े दृढ़-मानस, बड़ी संतुष्टि तथा परम प्रसन्नता से छत्र-दंड उठाये चल रहे थे। बाजे बज रहे थे, कोलाहल मच रहा था ।। २२ ।। रामचन्द्र इन्द्र जैसे शोभायमान हुए, उनके दोनो ओर भरत-शत्रुघ्न चन्द्र-सूर्य की भाँति थे। सुग्रीव आदि सभी राजे चल रहे थे, सब रूप में दिग्पालों जैसे प्रकाशित हो रहे थे ।। २३ ।। भालू-वानर देवताओं की सेना का रूप धरे हुए थे, ऋषिगण गुरु बृहस्पति जैसे बन गये थे। पुरुष विद्याधरों जैसे रूपवान बनकर तथा नारियाँ अप्सराओं-विद्याधरियों जैसी चल रही थी ।। २४ ।। चारों ओर आभूषणों से जगमगा रहे थे, मानो तारे स्वर्ग में ज्योतित हो रहे हों। झालरदार पताकाएँ, रथ की ध्वजाएँ, छत्र-दंड आदि आकाश में ऐसे प्रकाशित हो रहे थे, मानो मेघखंड हों ।। २५ ।। परम श्रीमन्त शरीर, दिव्य रूप धरे हुए सबके अंग निष्पाप-निर्मल थे। नृत्य-गीत आनन्द से किसी प्रकार की चिन्ता या शोक उन्हें न था। सभी महाकौतूहल से स्वर्गलोक की यात्रा कर रहे थे ।। २६ ।। राज्य के प्रजाजन राम के स्वर्गगमन के बारे में सुनकर, जितने सारे देशी जन थे, सभी उन्हें देखने आये। उन सबके अन्तर में भी अनुराग उत्पन्न हो रहा था, वे भी घर-बार

सरयूर तीरे तीरे अति अनुपाम * पुत्रवते प्रजाक पालन्ते यान्त राम
तिनि दिन तिनि रात्रि यान्त एकाकूले * रहिलन्त हिमवन्त पर्व्वतर मूले २८
विविध वाद्यर नादे शवद आस्फाल * जय जय राघवर प्रजार कोलाहल
छत्रे दण्डे वाद्ये भण्डे लोके भरि पूरि * थाकिलन्त पर्व्वतर कतो दूर जुरि २९
अनन्तरे राम आसि बार वार्त्ता शुनि * ब्रह्मा विष्णु महेश्वर लरिला आपुनि
दश दिगपाल इन्द्र आदि देव यत * तिनिको आवरि नामि आसिल लगत ७४३०
सिद्ध मुनि विद्याधर किन्नर चारण * नाचन्ते आसन्त नामि अपेस्वरागण
गन्धर्व्वे योगावे गीत मृदङ्गर ध्वनि * लक्ष कोटि विमान आकाश आसे छानि ७४३१
चिकिमिकि करे ज्योति चाह्न नयाय * असंख्यात सूर्य्य येन नामे एकै ठाइ
वाजे घण्टा सोणार किङ्किणी रुण जुन * ऊर्द्धमुखे सचकिते चावै सर्व्वजन ३२
देखि करैं राघवर प्रजा जय जय * स्वर्गवासी सुरभि कुसुम सिञ्चारय
देव दिव्य यान तल छानि नामि आसे * दिन राति नमनिय रत्नर प्रकाशे ३३
चन्द्र सूर्य्य समान एकैक दिव्यरथ * वाञ्छा मात्रे मिलै तैते यत मनोरथ
तथाते विचित्र गृह प्रासाद उद्यान * हीरा मरकत रत्न रञ्जे थाने थान ३४
निर्म्मल कमले सरोवर सब शोभे * भ्रमरे करय केलि मधुगन्ध लोभे
रथते विचित्र नृत्य गीत वाद्य ध्वनि * असंख्यात देवकन्या रूपे बितोपनी ३५
श्रवण अमृत सुललित गावे गीत * शुनि पुरुषर चित्त कामे बिमोहित
हेन दिव्य यान लैया देवगण लरि * आसिला रामक निवे लागि आग बाढ़ि ३६

छोड़कर रामचन्द्र के संग चल पड़े ॥२७॥ अत्यन्त अनुपम सरयू के किनारे-किनारे सारी प्रजा को पुत्रवत् पालते हुए रामचन्द्र चल रहे थे। तट पर से होकर तीन दिन तीन रात चलकर वे हिमवन्त की तराई में पहुँचे ॥ २८ ॥ विविध बाजों के नाद से प्रचंड शब्द हो रहा था। 'जय-जय राघव' नाद से प्रजा का कोलाहल हो रहा था। छत्र-दंड, वाद्य की ध्वनि तथा जनसमूह से वह अंचल भर गया। वे पर्वत के कुछ दूर तक घेर कर रह गये ॥ २९ ॥ इसके अनन्तर रामचन्द्र के आगमन की वार्ता सुनकर ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर स्वयं दौड़ गये। दसों दिग्पाल, इन्द्र आदि देवगण साथ मिलकर वेग से आये और उन तीनों को घेर लिया ॥ ७४३० ॥ सिद्धमुनि, विद्याधर, किन्नर-चारण तथा नाचती हुई अप्सराएँ भी उतर आयी। गंधर्व गीत गा रहे थे और मृदंग वजा रहे थे, लाखों-करोड़ों विमान आकाश को व्याप्त कर आ पहुँचे ॥ ७४३१ ॥ उनकी ज्योति जगमगा रही थी, जिसकी ओर देखा नही जा रहा था, मानो असंख्य सूर्य एक स्थान में उतर आये हों। घंटे और सोने की किंकिणी की रुनझुन वज रही थी। सभी लोग सचकित हो सिर उठाकर ऊपर देख रहे थे ॥ ३२ ॥ यह देखकर रामचन्द्र की प्रजा 'जय, जय' करने लगी। स्वर्गवासी सुगंधित फूलों की वर्षा करने लगे। देवों के दिव्य यान नीचे की धरती को पूरा कर उतर आये। उनके रत्नों के प्रकाश से दिन और रात का भेद समझा नही जाता था ॥ ३३ ॥ एक-एक दिव्य रथ चन्द्र-सूर्य के समान था, इच्छा करने मात्र से वहाँ मनोरथ की वस्तुएँ प्राप्त हो जाती थी। वहाँ विचित्र गृह, भवन, उद्यान वन गये थे। हीरा, रत्न, मरकत आदि स्थान-स्थान को विभूषित कर रहे थे ॥ ३४ ॥ सारे सरोवर निर्मल कमलों से सुशोभित हो रहे थे। भौंरे मधुगंध के लोभ से केलि कर रहे थे। विचित्र नृत्य-गीत, वाद्यध्वनि करती हुई परम रूपवती असंख्य देव-कन्याएँ रथों पर बैठी थी ॥ ३५ ॥ वे सुनने में अमृत के समान सुललित गीत गा रही थीं, जिन्हें सुनकर पुरुषों के चित्त काम-मोहित हो जाते थे। ऐसे दिव्य यानों को लिये हुए देवगण रामचन्द्र को लेने हेतु अगवानी करते आ गये ॥३६॥

राघवक देखि देवगणर आह्लाद * पुष्प सिञ्चारिया करे दुन्दुभि सम्बाद
देवता मनुष्य देखा देखि करे आसि * अन्ये अन्ये दशन प्रकटि करे हासि ३७
ब्रह्मादेवे सादरे करिया योर हात * राघवक लगाइला हंसरे परा मात
शुनियोक रामचन्द्र प्रभु रघुनाथ * देखियोक त्रिदश देवक तुलि माथ ३८
तुमि त्रिभुवन पति जगतरे गति * तुमिसि अचिन्त्य गुण अनन्त शकति
प्रकृतित अन्तर परम तुमि तत्त्व * आदि अन्त नजानिय तोमार महत्त्व ३९
तुमि भार हरा बारे बारे अवतरि * दुष्टक दण्डिया महन्तक रक्षा करि
तुमिसि ईश्वर सुरासुरे करे सेव * अनन्त तुमिसि थाका नथाकय केव ७४४०
शुनियो नरेन्द्र रामचन्द्र कृपामय * आछे पुरातन तनु तयु तेजोमय
बिद्यमाने बिमानते देखा हृषिकेश * भ्रातृगण समे आन्ते हुयोक प्रबेश ७४४१
हेरा सुरासुरे सेवा करे प्रणिपाते * देखा गदा पद्म शङ्ख चक्र चारिहाते
पूर्व्वरूप तोमारे आहाङ्के बिष्णु बुलि * हुयो परिचय कृपामय माथा तुलि ४२
शुनि रघुपति पाचे ब्रह्मात बदति * इसि मोर मुख्य प्रयोजन प्रजापति
देखा आसि आछे राजा प्रजा पात्रचय * पशु पक्षी बृक्ष तरु लता समस्तय ४३
अनुगत भकत सम्यके मोर प्राण * आगे आङ्क दियोक अक्षय मोक्षस्थान
मोते पतियासे सबे आसिल लगते * आवे आसम्बाक तेजि याओं कोन सते ४४
दिव्य बिमानते सबे चड़ोक सम्प्रति * दियोक सत्वरे प्रजापति अनुमति
पाचेतेसे याइबो बोलो वचन निश्चय * बिनावन्त बिधि धन्य धन्य कृपामय ४५

राघव को देखकर देवताओं को बड़ी प्रसन्नता हुई। वे फूल बरसाते हुए दुन्दुभि बजाकर नाद करने लगे। देवता-मनुष्य एक दूसरे के संग आकर मिलने लगे। एक दूसरे की ओर दाँत दिखाकर हँसने लगे ।। ३७ ।। ब्रह्माजी ने सादर हाथ जोड़कर हंस के ऊपर से ही राघव को पुकारा। प्रभु रघुनाथ रामचन्द्र, सुनिये। सिर उठाकर सभी देवताओं को देखिये ।। ३८ ।। आप त्रिलोकनाथ जगत की एक मात्र गति है। आप अचिन्त्य गुण वाले अनन्त शक्ति है। प्रकृति के परे आप परम तत्व है। आपका आदि-अन्त और महत्व कोई नही जानता ।। ३९ ।। आप संसार में बार-बार अवतार लेकर दुष्टों का दमन तथा सत्पुरुषों की रक्षा कर भूमि-भार हरण किया करते हैं। सुर-असुर जिनकी सेवा करते हैं, वे ईश्वर आप ही है। आप अनन्त हैं, एक मात्र आप ही रहते है और कोई नहीं रहता ।।७४४०।। कृपामय नरेन्द्र रामचन्द्र, सुनिये। आपका पुरातन तेजमय जो शरीर है, हृषीकेश, उसे विमान पर विद्यमान देखिये। अपने भाइयों के संग आप इसमें प्रवेश कीजिये ।। ७४४१ ।। देखिये, सुरासुर उन्हें प्रणिपात कर सेवा कर रहे हैं ।। देखिये, उनके चारों हाथों में शंख, चक्र, गदा, पद्म है। यह आपका ही पूर्वरूप है, इन्हें ही विष्णु कहते हैं। कृपामय, आप सिर उठाकर इनसे परिचित होइये ।। ४२ ।। यह सुनकर रघुपति ने ब्रह्मा से कहा— हे प्रजापति ब्रह्माजी, इन्हीं से मेरा मुख्य प्रयोजन है। आप आकर देखिये, यहाँ राजा, सामन्त, प्रजाजन, पशु, पक्षी, वृक्ष-लता, सभी उपस्थित है ।। ४३ ।। ये मेरे अनुगत भक्त वास्तव में मेरे प्राण हैं। पहले इन्हें अक्षय मोक्ष-स्थान प्रदान कीजिये। मुझ पर विश्वास रखकर ये सभी मेरे साथ आये हुए हैं। अब इन सबको छोड़कर मैं किस प्रकार जा सकता हूँ? ।। ४४ ।। हे प्रजापति, ये अब दिव्य विमान पर सवार हो, आप शीघ्र हो अनुमति दीजिये। इनके पश्चात् ही मैं चलूँगा। मैं निश्चय वचन कहता हूँ। तब ब्रह्मा ने वेदनापूर्ण स्वर से कहा— कृपामय, आप धन्य है, धन्य है ।। ४५ ।। ब्रह्मलोक से ऊपर सान्तानक नाम का एक मोक्ष-स्थान है। जिसकी कोई तुलना नही है। आपकी प्रजा दिव्य

आछे मोक्षस्थान ब्रह्मलोकर उपर * सान्तानक नामे तार नाइ पटन्तर
तयु प्रजा दिव्य भोग भुकुति भुञ्जन्ते * तथाते थाकोक महाप्रलय पर्य्यन्ते ४६
बानर भालुक यत देव अवतार * प्रवेशोक पूर्ब्ब देहे आदेश आमार
एहि तीर्थजलते सत्वरे करि स्नान * आसि आरोहोक अविलम्बे दिव्य यान ४७
ब्रह्मार आदेश राघवर अभिमत * जाम्प दिया परे प्रजा तीर्थर जलत
चोञ्च गुचि होवे तते दिव्य कलेवर * सूर्य्यसम ज्वले देहा येन बिद्याधर ४८
सहस्र संख्यात बिद्याधरी अपेश्वरी * गावे गावे गोचि बिमानत नेइ धरि
सिंहासने बसि सिटो पावे आति तृप्ति * इन्द्रर समान करे पुरुषे दीपिति ४९
किरीटि कुण्डल दिव्य वस्त्र अलङ्कार * गन्धे पुष्पे चन्दने भूषित जातिष्कार
शिरर उपरे श्वेत छत्र तुलि धरि * धवल चामरे ढोले पद्मिनी सुन्दरी ७४५०
कर्पूर ताम्बुल साजि योगावे रमणी * हात भरि धरि जान्ते कतो बितोपनी
बाया मृदु मृदङ्ग करन्त कतो नृत्य * बाया हात तालि गावे सुललित गीत ७४५१
सुरभि शीतल अनुकूल वायु बहे * बिबिध आमोद गन्ध सर्ब्बदाये कहे
नुगुचे बसन्त मत्त कोकिलर नाद * शुनि पुरुषर मन सदाये उन्माद ५२
नारी सबे जलत मजिया महारङ्गे * बिमानत वसिया प्रकाशे स्वामी सङ्गे
त्रैलोक्य मोहिनी रूप लयलास गति * येन कैलासत शोभे शङ्कर पार्ब्बती ५३
यत पशु पक्षी वृक्ष बन निरन्तर * जलत नामिले होवे दिव्य कलेवर
बिमानत उठि इन्द्र येन करे भोग * दिव्य नारी गणे सेवे याक येन योग ५४
सन्तोषन्त चित्त बितोपन नृत्य गीति * पलु पिम्परायो पाइल परम इछिति

भोगों को भोगती हुई, वही महा प्रलयकाल तक निवास करे ।। ४६ ।। सभी बानर, भालू, देव-अवतार हैं । हमारे आदेश से वे अपने-अपने पूर्व शरीरों में प्रवेश कर जाये । इसी तीर्थ-जल में शीघ्र ही स्नान कर अविलम्ब आकर दिव्य यान पर सवार हो ।।४७।। ब्रह्मा का आदेश और रामचन्द्र की स्वीकृति पाकर प्रजाजन कूद-कूदकर तीर्थ के जल में पड़ने लगे । उनके शरीर का आवरण मिटने पर वहीं दिव्य रूप धारण करने लगे, उनकी देह ऐसी दमकने लगी मानो वे विद्याधर हों ।। ४८ ।। सहस्रों की संख्या में विद्याधरी अप्सराएँ, शरीर से शरीर मिला, पकड़कर विमान पर ले जाती थी । सिंहासन पर बैठकर उन्हें बडी तृप्ति मिलती थी । पुरुषगण इन्द्र जैसे दीप्तिमान हो रहे थे ।। ४९ ।। किरीट-कुंडल, दिव्य वस्त्र, आभूषण, गंध-पुष्प-चन्दन से भूषित वे बड़े ज्योतित दिखाई देते थे । उनके सिर पर श्वेत छत्र लगाकर पद्मिनी सुन्दरियाँ धवल चँवर डुला रही थी ।। ७४५० ।। कर्पूर-ताम्बूल सजाकर नारियाँ उन्हें दे रही थी, कितनी ही सुन्दरियाँ उनके हाथ-पैर पकडकर दबा रही थी । कितने ही जन मृदुल ताल से मृदंग बजाकर नृत्य कर रहे थे, हाथ से तालियाँ बजा-बजाकर कितने ही लोग सुललित गीत गा रहे थे ।। ७४५१ ।। सुरभित-शीतल अनुकूल हवा बह रही थी । वह नाना प्रकार की आमोदित करनेवाली गंध सदा ढोकर ले आती थी । वसन्त और मत्त कोयल की ध्वनि मिटते न थे, उन्हें सुनकर पुरुषों के चित्त में सदा उन्माद भर रहा था ।। ५२ ।। नारियाँ बड़े आनन्द से जल में प्रवेश कर विमानों पर बैठी अपने स्वामियों के संग प्रकाशित हो रही थी । उनका त्रैलोक्य मोहिनी रूप और लय-लासपूर्ण गति ऐसी थी, मानो कैलास पर्वत पर शंकर-पार्वती शोभायमान हो रहे हों ।। ५३ ।। जितने पशु-पक्षी, वृक्ष-वन थे, वे जल में उतरते ही दिव्य कलेवरधारी बन जाते थे । विमान पर चढ़कर इन्द्र की भाँति वे भोग करते थे । दिव्य नारियाँ सबकी यथायोग्य सेवा कर रही थी ।। ५४ ।। मनोहर नृत्य-गीत करती हुई वे सबके हृदय को संतुष्ट करती थी । इस

रामत भकत भैल राक्षस यतेक * सियो दिब्य कलेवर लभिला प्रत्येक ५५
चड़े दिब्य बिमाने साक्षाते येन देव * भुञ्जे दिब्य भोग करे नारीसबे सेव
जय जय राघव घोषन्त महानादे * आमियो मुकुति भैलो प्रभुर प्रसादे ५६
शुना रामायण सबे सभासद यत * हरि भकतिर देखा परम महत्त्व
तृण बन बृक्ष पशु पतङ्गरो गति * एकोवे नबाछे देखा हरिर भकति ५७
दोषर सागर इटो कलि यदि पापी * आछे एक गुण आत महत तथापि
कृष्णर कीर्त्तन मात्र करियो प्रवन्ध * कृष्णक सुहृद पावे छिण्डे कर्म्मबन्ध ५८
एतेके कलिसि भाल भकतर मते * दुराचारो तरे गुण नाम कीर्त्तनते
आन धर्म्म गैला गुचि कृष्णर लगत * तथापि नोपजे किय चेतन गावत ५९
हेन जानि बुधजन तेजियोक हेला * रामनाम मध्यत धर्म्मर सबे मेला
मिछातेसे मरा सबे आलासत थाकि *रचिला शङ्करे राम राम बोला डाकि ७४६०

छबि

आत अनन्तरे सबे शुनियोक निरन्तरे राघवर कथा आसरिस ।
भकत प्रजार प्रभु परम इछिति चाइ मने महा मिलिल हरिष ।।
तृण बन पशु पक्षी राक्षसर रङ्ग रोलि मिले महा मनत उल्लास ।
भकत इछित कार देखि राम देवतार खल खल सम्पजिल हास ।। ७४६१
आञ्जर पाञ्जर चाइ देखन्त गोटेक नाइ बिमाने चड़िल सबे प्रजा ।
केवलेसे तिनि भाइ बहि आछो समुदाय जानि बिमरिषि राम राजा ।।

प्रकार कीड़े-चीटियों को भी परम गति मिल गयी । राम के भक्त जितने राक्षस थे । उन सभी को भी दिव्य रूप प्राप्त हो गया ।। ५५ ।। दिव्य विमानों पर चढ़े वे साक्षात् देवताओं जैसे नारियों द्वारा सेवित होकर दिव्य भोग कर रहे थे । वे महानाद से 'जय-जय राघव' का घोष करते हुए कहते थे— हम भी प्रभु के प्रसाद से मुक्त हो गये ।।५६।। सभी सभासदगण रामायण सुनें । हरि-भक्ति का परम महत्व देखो । तृण, वन, वृक्ष, पशु-पतंग सबको गति मिली । देखो, हरि की भक्ति किसी में कोई भेद नहीं बरतती ।। ५७ ।। यह पापी कलि यदि दोषो का सागर है तो भी इसमे एक महद्गुण भी है । यदि यहाँ केवल कृष्ण के कीर्तन मात्र का आयोजन करें तो कृष्ण सुहृद के रूप में प्राप्त हो जाते हैं और सारे कर्म-बन्धन टूटकर मुक्ति मिल जाती है ।। ५८ ।। इस कारण भक्तों के विचार से कलिकाल ही उत्तम है । कृष्ण के गुणनाम-कीर्तन से इसमें दुराचारी का भी उद्धार हो जाता है । दूसरे सारे गुण तो कृष्ण के साथ ही चले गये । तथापि तुम्हारे शरीर में चेतना क्यों नही आती ? ।। ५९ ।। ऐसा समझकर हे विचार-शील व्यक्तियो, अवहेलना करना छोड़ दो । राम-नाम में ही धर्म के सारे मेले लगे हैं । भोग-विलास में लगे रहकर बेकार ही मर रहे हो । शंकर ने इसकी रचना की है । पुकार-पुकारकर 'राम, राम' कहो ।। ७४६० ।।

इसके पश्चात् सभी लोग निरंतर राघव की अनुपम कथा सुने । अपने भक्त प्रजा-जनों की परम सद्गति देखकर रामचन्द्र के चित्त में बड़ा आनन्द हुआ । तृण-वन, पशु-पक्षी, राक्षसों की रँगरेलियाँ देख मन में बड़ा उल्लास हुआ । अपने भक्तों की वांछित सदगति देख प्रभु देव रामचन्द्र खिल-खिलाकर हँसने लगे ।। ७४६१ ।। अगल-बगल सब ओर दृष्टि डालकर उन्होने देखा कि कोई भी वहाँ नही है, सारी प्रजा विमानों पर चढ़ चुकी है । केवल हम कुल तीन भाई ही यहाँ बैठे हुए हैं, ऐसा जान, मन में विचार कर राजा रामचन्द्र ने भी भाइयों समेत उस तीर्थ में उतरकर शीघ्रता से स्नान किया

भ्रातृगण समे सिटो तीर्थत नामिया पाचे सपटे करिला गंया स्नान ।
मनुष्य स्वभाव तेजि ज्वलें ज्योति शरीरर सहस्रेक सूर्य्यर समान ॥ ६२
देखि देवे हात तुलि जय जय राम बुलि पुष्पचय सिञ्चारिला शिरे ।
शत्रुघन भरतर ज्योतिर्मय कलेवर प्रवेशिला रामर शरीरे ॥
यिटो विष्णुरूप धरि प्रकाश करन्त हरि तेहो ब्रह्मतत्त्व स्वरूपते ।
राघवर गंया काय विजुलिचटक प्राय प्रवेशिला विष्णुर रूपते ॥ ६३
चारि हस्ते चारि अस्त्र शरीरत पीतवस्त्र दिव्य वनमाला दोलें गले ।
कण्ठत कौस्तुभ मणि मकर कुण्टल ढुलि चिकिमिकि करे गण्डस्थले ॥
रत्नर मुकुट माथे अङ्गद वलय हाते वाखर आङ्गुलि आङ्गुलित ।
नयन पङ्कज पासि बयने ईषत हासि ललाटे तिलक सुलम्वित ॥ ६४
हिये गजमति हार जिलिमिलि पेछन्दार श्याम शरीरत कान्ति करे ।
क्षिकि पारे अलङ्कार चान्तो आति चमत्कार मेघे येन विजुली सञ्चारे ॥
कटित कनक काञ्चि दिव्यरत्ने आछे साञ्चि जुरें पाद पङ्कजे नूपुर ।
अरुण नखर पान्ति चन्द्रतो अधिक कान्ति करे दरशने दुख दूर ॥ ६५
रत्नर शलखानय प्रकाशे आङ्गुलिचय रत्नमय उजशन्ति रञ्जित ।
देखि आति सुकोमल मनोहर पदतल ध्वज वज्र अङ्कुशे अङ्कित ॥
भकत अभय पात्र तापहारी श्वेत छत्र संसार सागरे महानाव ।
सेवे पारिषद यत रत्नपीठ ओपरत प्रकाशन्ते आछे दुइ पाव ॥ ६६
बिपरीत देखि देवे आनन्दे दुन्दुभि दावे फुङ्के मुखे शङ्ख भेर तुलि ।
रामर विमान वेढ़ि प्रजार जोकार गेरि जय जय भगवन्त बुलि ॥

और मनुष्य स्वभाव तजकर उनके शरीर की ज्योति सहस्रों सूर्यो के समान जलने लगी ॥ ६२ ॥ यह देखकर देवताओ ने हाथ उठाकर 'जय, जय राम' कहते हुए उनके सिर पर पुष्प-वर्षा की । भरत और शत्रुघ्न के ज्योतिर्मय शरीर राम के शरीर मे प्रविष्ट हो गये । जो विष्णुरूप-धारी हरि प्रकाश करते हैं, वे भी वास्तव में ब्रह्म-तत्व ही हैं । राघव का शरीर विजली की चमक जैसे जाकर विष्णु के रूप में प्रविष्ट हो गया ॥ ६३ ॥ उनके चार हाथों में चार अस्त्र थे, शरीर पर पीताम्वर था, दिव्य वनमाला गले में हिल रही थी । कंठ मे कौस्तुभ मणि, मकर-कुंडल हिल-हिलकर उनके गालों पर चमक रहे थे । मस्तक पर रत्न-मुकुट, हाथों में अंगद-वलय, उँगलियों मे मणि-जटित अँगूठियाँ थी । उनके नयन-कमल के पंखुडियो की भाँति, अधरो पर मंद हास, ललाट पर सुलम्बित तिलक था ॥ ६४ ॥ छाती पर गजमुक्ता का हार, जगमग लड़ियो वाला पेसन्दार नाम का अलंकार श्याम-शरीर पर कान्तिमान था । देखने में बड़े ही चमकीले आभूषण ऐसे जगमगा रहे थे, मानो मेघों में विजली कौंध रही हो । कमर में दिव्य रत्नों से खचित सोने का कमरबन्द था । चरण-कमलों को भरकर नूपुर शोभित थे । अरुणवर्णी नख-पंक्तियाँ चन्द्रमा से अधिक कान्तिमान थीं, जो दर्शन से दुख हरनेवाली थी ॥ ६५ ॥ रत्नों की शलाकाओ जैसी रत्नमयी अँगूठियों से रंजित उँगलियाँ प्रकाशित हो रही थी । ध्वज, वज्र, अकुश-अंकित मनोहर पदतल देखने में बड़े ही सुकोमल थे । उनका श्वेत छत्र भक्तों को अभय देनेवाला, तापहारी, संसार-सागर मे महा नाव था । रत्नपीठ पर विराजमान उनके दोनो चरण बड़े प्रकाशमान थे । जिन्हें उनके पार्षदगण सेवा कर रहे थे ॥ ६६ ॥ यह अनहोनी देखकर देवगण आनन्द से दुन्दुभि बजाने लगे, शंख और भेरु बाजे मुँह मे लगाकर फूँक बजाने लगे । रामचन्द्र के विमान को घेरकर प्रजा 'जय, जय भगवन्त' कहकर उच्च कंठ से निनाद

महिमा बर्णाया आति   सिद्धमुनि करे स्तुति   शिरत सिञ्चारि पारिजात ।
नाना बाद्य बावे जाकि   बिमाने लरिला ढाकि   सूर्य्य येन ज्वले असंख्यात ।। ६७
पृथिवीरे परा लङ्घि   गीत गाया याय खाञ्चि   क्रमे छय स्वर्गक एराइ ।
छिन्न छोण्डा छत्र दण्डे   उठलिया बाद्य भण्डे   पुण्यबायु तुले आलगाइ ।।
यतलोक स्वर्गबासी   महिमा देखिया आसि   परम बिस्मय हुया मने ।
एहिमते राम हरि   लोकर आनन्द करि   लरि यान्त ब्रह्मार भवने ।। ६८
रामे पाचे देखिलन्त   लक्ष्मणो लगते यान्त   दिव्य रूपे करिया प्रकाश ।
आनन्दर सीमा नाइ   दुयो दुहुक आछे चाइ   करन्त कौतुक महाहास ।।
आतिशय स्नेहभावे   नमिला लक्ष्मणे पावे   गुचिल सकले शोक क्लेश ।
रङ्गे राम बनमाली   सावटन्ते आङ्कोवालि   तेहो भैला रामते प्रबेश ।। ६९
अपेस्वरा नृत्य करे   गावे वावे बिद्याधरे   खम दम मृदङ्ग तुम्बुल ।
दशो दिशे जयध्वनि   तुति पढ़े सिद्धमुनि   हरिषे बरिषे दिव्य फुल ।।
एहिमते प्रजाबर्ग   पाइलन्त अक्षय स्वर्ग   नाइ आर आनन्दर पार ।
ब्रह्मलोक सन्निधान   सान्तानक नामे थान   निर्म्मिल नगर जातिष्कार ।। ७४७०
शारी शारी यानचय   याक येन योग्य हय   थाकिलन्त कतो दूर जुरि ।
चन्द्र सूर्य्य येन पान्ति   ज्वलै बिमानर कान्ति   पातिला बहल महापुरी ।।
भालुक बानर नर   पशु पक्षी निरन्तर   दिव्य देह धरि बिपरीत ।
एकान्ते रामक पूजे   स्वर्गत भुकुति भुञ्जे   शुनि निते रामर चरित्र ।। ७४७१

करने लगी। उनकी महिमा का वर्णन करते हुए सिद्ध-मुनिगण उनके मस्तक पर पारिजात-फूल बरसाकर स्तुति करने लगे। चमकीले नाना प्रकार के बाजे बजने लगे। आकाश को ढँककर विमानों पर चढ़े वे वेग से चल पड़े मानो अनगिनत सूर्य जल रहे हो ।। ६७ ।। धरती पर से ऊपर उठकर गीत गाते हुए क्रमशः छः स्वर्गो को पार करते हुए वे जाने लगे। उनके टूटे हुए छत्र-दंड को, वाद्य-ध्वनियो के बीच पवित्र वायु उठाये हुए ले जा रही थी। स्वर्ग के सभी निवासी उपस्थित हो उनकी महिमा देखकर मन में परम विस्मित हुए। इसी प्रकार हरि रूपी रामचन्द्र लोकों को आनन्दित करते हुए ब्रह्मलोक को शीघ्रता से चले जा रहे थे ।। ६८ ।। इसके पश्चात् राम ने देखा, दिव्य रूप धारण कर प्रकाश करते हुए लक्ष्मण भी साथ चल रहे हैं, उनकी प्रसन्नता की सीमा न रही। दोनो एक दूसरे को देखते हुए कौतुक से बड़ा हास करने लगे। अत्यन्त स्नेह से लक्ष्मण ने रामचन्द्र के चरणों में प्रणाम किया। उनके सारे शोक-क्लेश मिट गये। बड़े हर्ष से वनमाली रामचन्द्र ने उन्हें आलिगन किया, तब वे भी उन्ही में प्रविष्ट हो गये ।। ६९ ।। अप्सराएँ नृत्य करने लगी, विद्याधर गाने-बजाने लगे, मृदंग के तुमुल नाद से प्रचंड कोलाहल मच गया। दसों दिशाओं में जयनाद हो रहा था, सिद्ध-मुनिगण स्तुति पाठ कर रहे थे। हर्ष से वे फूल बरसा रहे थे। इसी प्रकार प्रजाजनों को अक्षय स्वर्ग प्राप्त हुआ। उनके आनन्द का पार न रहा। ब्रह्मलोक के निकट सान्तानक नाम का लोक था, जिसमें निर्मल, उज्ज्वल नगर बसे हुए थे ।। ७४७० ।। जिसे जो मिलना उचित था, उसके योग्य यान पंक्तियों में कितनी ही दूर घेरकर लगे हुए थे। उन पंक्तिबद्ध विमानों की कान्ति चन्द्र-सूर्य की भाँति थी। वहाँ विशाल महापुरी का निर्माण हुआ। भालू, बानर, नर, पशु-पक्षी आदि अपूर्व दिव्य देह धारण कर वहाँ रहने लगे। वे एकान्त मन से राम का पूजन करते, स्वर्ग का भोग भोगते तथा नित्य राम का चरित्र सुनते रहते हैं ।। ७४७१ ।। रामचन्द्र की सभा में बैठकर करोड़ों चन्द्रमा की भाँति जगमगाते हुए वे रामचन्द्र के गुण परम आनन्द से गान करते रहते है। सान्तानक लोक प्राप्त कर,

रामर समात बसि ज्वलै येन कोटि शशि रामगुण गावन्त आह्लादे ।
सान्तानक पाया स्थान अमृत करिया पान कृतकृत्य रामर प्रसादे ॥
कीट पतङ्गबर्ग लभिया अक्षय स्वर्ग कारो नाहि आनन्दर सीमा ।
एहिमते रामहरि असाध्य कर्म्मक करि भकतिर देखाइला महिमा ॥ ७२
स्वर्ग मर्त्य पातालत बिधातार समाजत सिद्ध यत देवासुर लोक ।
रामर चरित्रचय सम्यके अमृतमय शुनि येन पिये ढोका ढोक ॥
जगतरे निस्तारण - पुण्यकथा रामायण आक शुनै मर्ण यिटो नरे ।
पातेकत लागे जुइ देवरो पूजनी हुइ बञ्चे सातो स्वर्गर उपरे ॥ ७३
रामर चरित्र इटो शुनिवाक इच्छा यिटो हाहाकार करे तार पापे ।
एरि पलाइ तावक्षणे उजारे हरिर नामे प्रचण्ड वह्निर येन तापे ॥
हेन जानि सभासद शुना रामायण पद मुकुतिक यार अभिलाष ।
आमार कविता जानि निन्दा नुबुलिला वाणी नकरिबा आत उपहास ॥ ७४
रामर चरित्रचय पातेकर अग्निमय महा मोक्षफल आत आछे ।
येइ सेइ जुइ देइ तथापितो दहि नेइ येन अग्नि एकोवे नवाछे ॥
नजानिया यिटो दम्भ करे महा उपालम्भ ताहाको आञ्जलि करो पुष्ट ।
स्वरूप कहिलो बाणी ताको महालाभ जानि निन्दि मात्र हौक मोक तुष्ट ॥ ७५
निज पुण्य क्षय करे आमार अधर्म्म हरे येवे क्षेमा नकरो तथापि ।
शुनियोक निरन्तरे तेवेतो आमात परे आउर कोन आछे महापापी ॥
इ कथा थाकोक भाले यावे नतो धरे काले हरिर नाम करियो कीर्त्तन ।
सिटो मृत्यु समयत हुइबे श्रुतिबुद्धि हत हरिबेक मुखत बचन ॥ ७६

अमृत पान करते हुए वे रामचन्द्र के प्रसाद से कृतकृत्य होते हैं । कीट-पतंग-समुदाय को भी अक्षय स्वर्ग मिला, उनके आनन्द का पार न रहा । इसी प्रकार हरिरूप रामचन्द्र ने असाध्य कर्म करते हुए भक्ति की महिमा दिखलायी ॥ ७२ ॥ स्वर्ग-मर्त्य-पाताल में, ब्रह्मा के समाज में, सिद्ध आदि जितने सुर-असुर लोग हैं, सभी रामचन्द्र के अमृतमय चरित्र ऐसे श्रवण करते रहते हैं मानो वे अमृत का घूँट पी रहे हों । पुण्यकथा रामायण संसार का उद्धार करनेवाली है । जो लोग इसे सुनते हैं या सुनाते है, उनके पापों में आग लग जाती है; वे देवों के भी पूजनीय बनकर सप्तस्वर्गों से भी ऊपर निवास करते है ॥ ७३ ॥ राम का यह चरित्र सुनने की जो इच्छा रखते हैं, उनका पाप हाहाकार करता है, वह उसी क्षण उसे छोड़ भागता है । हरि का नाम प्रचण्ड अग्नि के ताप की भाँति उसे जला डालता है । ऐसा जानकर सभासदो, जिसे मुक्ति की अभिलाषा है, यह रामायण-पद सुनो । यह मेरी कविता है, ऐसा जानकर निन्दा-वचन न वोलना, इसका उपहास न करना ॥ ७४ ॥ राम का चरित्र पाप के लिए अग्निमय है, महा मोक्षफल इसमें है । जैसे अग्नि में जो कुछ डाला जाये, उसका बिचार किये बगैर अग्नि उसे जला डालती है, उसी प्रकार बिना जाने-समझे जो महादंभी, बड़ा उपालम्भ देता है, उसे भी हाथ जोड़कर यह पुष्ट करता हूँ कि मैं सत्य वचन कह रहा हूँ, उसे भी महालाभ मान, वह केवल मेरी निन्दा कर ही संतुष्ट रहे ॥ ७५ ॥ वैसा व्यक्ति अपने पुण्यों को नष्ट करता है, हमारा अधर्म स्वयं हर लेता है, इतने पर भी क्या उसे क्षमा न कर दूँ ? सब लोग सुनें, तब तो वैसी स्थिति में हमसे बढ़कर और महापापी कौन है ? यह कथा यही तक भले रहे, जब तक आकर काल पकड़ नही लेता, हरि का नाम-कीर्तन कर लें । उस मृत्यु के समय में सुनने की शक्ति और बुद्धि नष्ट हो जायेगी, मुँह से वचन नहीं निकलेगा ॥७६॥ मरण को अपने समीप जान लें और जब तक चेतना है, हरिनाम की शरण ले लें । वेदों

मरणक देखा काछे यावत चेतन आछे लैयो हरिनामत शरण।
नामत नकरि रति कलित नपाइबा गति बेदे कहे एहिसे बचन।।
शास्त्रत एहिसे मज्जा हरिर स्मरण राजा आन पुण्य किङ्कर इहार।
हेन नामे नाइ इच्छा पण्डित बोलावे मिछा आनमते नतरे संसार।। ७७
रामे पितृ मातृ सुत सुहृद सोदर बन्धु रामे आत्मा रामे जीव प्राण।
रामे जप यज्ञ दान रामेसे परम ज्ञान रामे कोटि शत तीर्थ स्नान।।
रामे मोर इष्टदेव रामेकेसे करो सेव गति मोर रामर चरण।
रामे धर्म्म रामे कर्म्म रामेसे बान्धव मर्म्म जानि लैलो रामत शरण।। ७८
हेन जानि मोर चित्त रामर चरण चिन्त विषय चिन्तार एरि काम।
पापत पचा लोक चारि मोर मुखे आग बाढ़ि सर्ब्बदाये बोला राम राम।।
तरिबार करा काम कर्णे शुना रामनाम गीतबाद्य नुशुना बिफले।
आवे चक्षु दुराशय एरियोक मायामय राममय देखियो सकले।। ७९
नमो प्रभु भगवन्त नाइ यार आदि अन्त भकतिते याहार सन्तोष।
हुया मूढ़मति मन्द करो रामायण पद क्षेमा प्रभु बढ़ा टुटा दोष।।
सम्यके अमृत भाण्ड उत्तम उत्तराकाण्ड एहिमाने भैला समापति।
कृष्णर किङ्करे भणे राम राम घोषा घने पापमाने याउक अधोगति।। ७४८०

।। उत्तरकाण्ड समाप्त ।।

का भी यही कहना है कि नाम में रति हुए बिना कलिकाल में गति नहीं मिलेगी। शास्त्रों का सार भी यही है कि हरि का स्मरण राजा है, दूसरे पुण्य इसके किंकर है। ऐसे नाम में जिसकी इच्छा नही है, वह व्यर्थ ही पंडित कहलाता है, दूसरे प्रकार से संसार से उद्धार नहीं हो सकता।। ७७ ।। राम ही पिता-माता-पुत्र-सुहृद-सहोदर भाई हैं, राम ही आत्मा, राम ही जीव के प्राण है। राम ही जप-यज्ञ-दान हैं, राम ही परम ज्ञान हैं, राम ही सौ करोड़ तीर्थस्थान है। राम ही मेरे इष्टदेव है, राम ही की मैं सेवा करता हूं, राम के चरण ही मेरी गति है। राम ही धर्म हैं, राम ही कर्म हैं, राम ही मर्मी-बान्धव हैं, ऐसा जानकर मैंने राम की शरण ली है।।७८।। ऐसा जानकर, हे मेरे चित्त, विषय-वासना का काम छोड़कर राम के चरणों का चिन्तन कर। पाप में सड़नेवाले लोक को छोड़कर, हे मेरे मुख, आगे बढ़कर सदैव 'राम, राम' कहता रह। हे मेरे कान, निष्फल गीत-वाद्य आदि सुनना छोड़ संसार से तरने का काम कर, राम-नाम सुनता रह। अरे दुराशय मेरे नयन, मायामय संसार को छोड़ दे, सबको राममय देख।। ७९ ।। प्रभु भगवान को नमस्कार है, जिनका आदि-अन्त नही है, भक्ति से ही जो संतुष्ट होते है। मंदमूढ़-मति होकर भी पदों में मैंने रामायण बनायी है। प्रभु, इसकी भूल-चूक क्षमा करो। वास्तव में अमृत के भाण्ड रूपी उत्तम उत्तरकाण्ड यही समाप्त होता है। कृष्ण-किंकर कहता है, बार-बार 'राम, राम' का घोष करो, जिससे पाप का पतन हो जाये।।७४८०।।

।। उत्तरकाण्ड समाप्त ।।

विज्ञप्ति

विश्व-वाङ्मय से निस्रित अगणित भाषाई धारा ।
पहन नागरी-पट सबने अब भूतल-भ्रमण विचारा ॥

प्रकाशित हो चुके हिन्दी अनुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण ग्रन्थ:—

१ गुजराती—गिरधर रामायण (रचनाकाल-१८३५ ई०) हिन्दी अनुवाद, नागरी लिप्यन्तरण पृष्ठ संख्या १४६४ मूल्य ६०.००
२ मलयाळम—अध्यात्म रामायण (एळुत्तच्छन् कृत १५वी शती) हिन्दी अनुवाद, नागरी लिप्यन्तरण पृ० सं० ७५२ मू० ४०.००
३ ,, —महाभारत-एळुत्तच्छन् (१५वीं शती) पृ० १२१६ मू० ४०.००
४ ओड़िया—तुलसी-रामचरितमानस—ओड़िया लिपि में मूलपाठ तथा ओड़िया गद्य-पद्य अनुवाद । पृ०सं० १४६४ मू० ५०.००
५ बंगला— कृत्तिवास रामायण (आदि, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्ध्या और सुन्दर)—१५वीं शती । हिन्दी पद्यानुवाद सहित नागरी लिप्यन्तरण पृ० ६२४ मू० २५.००
६ ,, कृत्तिवास लंकाकाण्ड— ,, गद्यानुवाद पृ० ४८८ मू० १५.००
७ कश्मीरी—रामावतारचरित-प्रकाशराम कुर्यग्रामी कृत पृ० ४८९ मू० २०.००
८ ,, ललद्यद—नागरी मूलपाठ सहित हिन्दी गद्य तथा संस्कृत पद्यानुवाद । पृ० १२० मू० ७.००
९ राजस्थानी—रुक्मिणी मंगल-पदम भगत कृत । पृ० ३०० मू० १५.००
१० तमिळ— तिरुक्कुरळ्-तिरुवल्लुवर कृत । २००० वर्ष से अधिक प्राचीन नागरी लिप्यन्तरण, गद्य-पद्य हिन्दी अनुवाद, पृ० ३५२ मू० २०.००
११ कन्नड— रामचन्द्रचरित पुराणं-अभिनव पम्प विरचित जैन-सम्प्रदाय रामचरित्र (११वी शती) पृ० ६९० मू० ४०.००
१२ तेलुगु— मोल्ल रामायण (१४वीं शती) पृ० ४०० मू० २०.००
१३ ,, रंगनाथ रामायण (१३वीं शती) अनु. पृ. १३३५ मू० ६०.००
१४ मराठी—श्रीरामविजय-श्रीधरकृत (१७वीं शती) पृ० १२२८ मू० ४५.००
१५ अरबी— ज़ादे सफ़र (रियाज़ुस्सालिहीन) प्रामाणिक हदीस प्र० खण्ड पृ० ३३६ मू० १२.००
१६ फ़ारसी—सिर्रे अक्बर (दाराशिकोह कृत उपनिषदों की व्याख्या) हिन्दी में पृ० २८० मू० २०.००
१७ उर्दू— शरीफ़ज़ाद: (मिर्ज़ा रुस्वा कृत) पृ० १३६ मू० ५.००
१८ गुरमुखी—गुरू ग्रन्थ साहिब प्रथम सैंची (चतुर्थांश) पृ. ९६८ मू. ४०.००
१९ ,, श्रीजपुजी सुखमनी साहब गुरमुखी पाठ तथा ख्वाज: दिलमुहम्मद कृत उर्दू पद्यानुवाद—दोनों नागरी लिपि में; पृ० १६४ मू० ८.००
२० ,, सुखमनी साहिब मूल गुटका नागरी लिपि । मूल्य ४.००

२१ सिन्धी— सामी, शाह, सचल की त्रिवेणी पृष्ट ४१५ मू० २०.००
२२ नेपाली—भानुभक्त रामायण पृ० ३४४ मूल्य २०·००
२३ तमिऴ—कम्ब रामायण बालकाण्ड (९वीं शती) पृ० ६५२ मू० ४०·००
२४ असमिया—माधवकंदली रामायण (१४वीं शती) पृ० ९४३ ,, ६०·००
२५ ओड़िया—वैदेहीश-विलास उपेन्द्रभञ्ज कृत (१८वीं शती) ,, ६५·००
२६ बाइबिल-सार (सालोमन के नीति-वचन) ,, २·००
२७ बहुभाषाई— 'वाणी सरोवर' त्रैमासिक पत्र वार्षिक मूल्य १०·००

प्रचारित प्रकाशन (ल.कि.घ.)

२८ क़ुर्आनशरीफ़ मूलपाठ अरबी तथा नागरी लिपि में पृ० ५२० मू० २०.००
२९ ,, ,, तथा हिन्दी अनुवाद सहित पृ० १०२४ मू० ४०.००
३० ,, केवल हिन्दी अनुवाद पृ० ५३० मू० २०.००
३१ ,, क़ौरानिक कोश (पठनक्रम) पृ० १९२ मू० १०.००

यन्त्रस्थ तथा कार्याधीन चल रहे अन्य ग्रन्थ :—

१ तमिऴ— कम्बरामायण अयोध्याकाण्ड अनुमानित पृष्ठ ७००
२ गुरमुखी—गुरुग्रन्थ साहिब २,३,४ सैंची ,, ३०००
३ गुजराती—प्रेमानन्द रसामृत ,, ६००
४ उर्दू— गुजश्त: लखनऊ (शरर) ,, ३५०
५ तेलुगु— पोतन्नकृत भागवतमु (१३वीं शती) ,, २०००
६ ओड़िया—जगमोहन बलरामदास रामामण ,, १०००
७ फ़ारसी—सिर्रे अक्बर खण्ड २-३ ,, ६००
९ अरबी— बुखारी शरीफ़ (ल.कि.घ.) ,, ३०००
१० ,, क़ौरानिक कोश वर्णानुक्रम (ल.कि.घ.) ,, ३००
११ मराठी—श्री हरिविजय (श्रीधर कृत) ,, १२००
१२ ,, श्री संत एकनाथ भावार्थ रामायण ,, ३०००
१३ कोंकणी—ख्रीस्त पुराण ,, ५००
१५ कन्नड—तोरवे रामायण (१६वीं शती) ,, ९००
१६ बंगला—कृत्तिवास रामायण उत्तरकाण्ड ,, ५००
१७ हिब्रू— बाइबिल ओल्ड टेस्टामेण्ट ,, २०००
१८ ग्रीक— ,, निउ टेस्टामेण्ट ,, १०००
१९ संस्कृत—(तुलसी) रामचरितमानस का मूलपाठ सहित संस्कृत पंक्ति-अनुपंक्ति पद्यानुवाद ,, १०००

भुवन वाणी ट्रस्ट

४०५/१२८, 'प्रभाकर निलयम्', चौपटियाँ रोड, लखनऊ-२२६००३

'प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक संत की बानी ।
सम्पूर्ण विश्व में घर-घर है पहुँचानी ॥'



प्रतिष्ठाता—नन्दकुमार अवस्थी